



त्रमो त्र्यु क व्यवसम्बद्ध अवस्थो सायपुर्वमानर्वागण्य

सुत्तागमे

नन्ध वा

विक्राप्यक्षत्रविविद्याच्या रूपकार सुन्नेग**ण इक्षेत्रक स**्वाजक्यस्थानेत्र नी

बांओ अंसो

टिप्पणयरिमिद्वाईहि समलेकिओ

STATES

पुष्पत्रिममुका संपादिओ

स्मृत्यवाचन 'रेएवे रोस' गुरमामक्रमणीपुव्यर्पवास्त्रव-केल्युक संस्थानकी तकामतानाना द र विक्रिक्तिकारिकार्यकान्त्रियम् त्यावे राजवास कृतः

चीनं सराव

plante south [millig south

[gg# 9/4]

प्रकाशक-नावृ रामकाल जैन तहसीलदार मंत्री-श्रानुत्रागमप्रकाशकसमिति केनस्थानक, रेज्ये रोड, गुड्गांव-छायमी (पूर्व-पंजाब)

सर्वाधिकार समितिहारा नुरक्षित

मुद्रुक---

लक्ष्मीबाई बारायण कींधारी, विश्ववागर त्रेष्

गमोऽन्यु णं समजनस भगवजी गायपुर्वमहाबीरस्य

SUTTAGAME VOLUME II

Containing next 21 sutras)

Sum SREPHULCHANDH MAHARAJ

Published by

BABU RAMLAL JAIN, TAHSILDAR

SIGNELBRY OF

SRUSH PRABASAKA SAMITE

OURGAON CANTULE P. (

V. E. 2011

1954 A. D.

HIRST EDITION] 1900 COPIES [PRICE 28 kg.

Published by:
Bahn Raudai dun, Tabsildar

Somethick of

Su Sitragama Prakásaka Samin Gurgaon came (R.P.)

ALL RECEIVS RESERVED BY THE SAMER.

Printed by:Laxmibai Narayan Chaudhara
at the Nirnaya Sagar Fress,
26-28, Kolbhat Street, Bonnay 2.

समप्पणं

आण विशाप सस सणस्य स्वक्रवा नहा, जेसिसुवप्सेण सजांतक्रणे संतिसंचारो

हूमो, जाणमन्सुभचरिसजोगेण संपदाहगवार्यचणुम्मूलणनिष्क्रयं पस्तो, जेसिं

बोहववणेहिं असंडअससुहममो छदो, जेसिसपारमणुमाहवण्क्रमुख्काहदाणेण सह लेहणकलाए पडसी जावा, जेसि णं धारणावयहाराणुसारं

पयासणमिणं वहण्, तेसिमजाप्यसस्थाणुराहमप्यडिवद्यविहारिक्रवहनिकामपरोववारिसंतसुहमस्युद्धारगमहारिसिपवरमविरपयिभूसि
वणायपुस्तमहावीरजङ्गणसंघाणुषाहगयसमापरमपुक्त १०८

सिरिजङ्गस्यिक्तिरचंद्महारायाणं पुणीयसमरणे

हिवयविसुद्धमसिपुष्टवर्गं वारसुकंगचडकेवचडम्
कावस्सवसंज्ञयमेयं सुसागमवीयमंसं

समप्यिणोमि ।

पुष्फभिक्खू

णमोऽत्यु णं समणस्य भगवनो णायपुत्तमहापीरस्य श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमिति के स्थापन करने का कारण

श्रीज्ञातपुत्र महावीर जैनसंबीय मुनिश्री फूलबंदजी महाराज जैनधर्मोपदेष्टाकी सेवामें एक किसानने वैदिक प्रेस श्रजमेर द्वारा प्रकाशित चारों वेदोंकी एक पुस्तक पेश की तथा विनयपूर्वक निवेदन किया कि क्या जैन शास भी एक पुस्तकाकारके रूप में कहीं मिलते हैं ? श्रीमहाराजने फर्माया कि नहीं। इस घटना के समय वहां की जैन सभा और विशेषतया जैनधर्मोपदेशाजी को यह तुटि बहुत ही अखरी और वका ही खेद हुआ। जैनसाधु सैंकड़ों की संख्यामें होते हुए और लाखों धनिक श्रावक होनेपर भी वे जैन सिद्धान्तका अणुमात्र भी प्रचार न करें ! कितना खेद है, सच तो यह है कि अपनी पवित्र समाजके पास प्रेस और प्लेटफॉर्म जैसी आधुनिक प्रचारकी सामग्री न होनेके कारण इतर लोकसमाज का बहुभाग जैनकिद्धान्तों से बिल्कुल अपरिचित है। ईसाइओंने एक अरबसे अधिक रुपया व्यय करके जगत भरकी ५६६ भाषाओंमें बाईबिलका प्रचार किया है इसी भौति गीता और कुरान आदि का प्रचार सी करोड़ों प्रतियोंमें पाया जाना है परन्तु अपने स्त्रसिद्धान्तों का प्रचार लोकमाणामें कितना है ? इसका उत्तर हम सगर्व मस्तक उठाकर नहीं दे सकते।

इस भारी बनीको प्रा करनेके लिए श्रीमहाराजने हमें यह प्रेरणा ची कि कमसे कम १०० लोकमाधाओं में २२ स्वॉकी १००००० एक लाख प्रतिबंका प्रकाशन करके भारत के कोने २ में जैनसिद्धान्तोंका विस्तार किया जाय । अतः स्वायम, अर्थागम और उभयागमकी प्रकर्ष एवं आर्थ पद्धतिसे "श्रीस्वागमप्रकाशकसमिति" ने इस भगीरथ कार्य को अपने हाथमें लिया है और कार्य आरंभ कर दिया है अतः जिनशासनके प्रेमियोंको उचित है कि समितिके प्रकाशनों का स्वाय्वाय आप स्वयं करें और अपने घरमें भी समस्त कुदुंबमें साध्याय तपका उत्साह पैदा करें के स्वाध्यायसमं तपः ।"

मंत्री-रामकाक जैस श्रीत्त्रायमप्रकाशकतमिति गुक्गॉन-कावनी (पूर्व पंडाब)

णमोऽत्यु वं समणस्य मगवनो णायपुत्तमहावीरस्य श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमिति (गुकुगाँव पूर्व पंजाब)

हवाई त्फानकी अंघड़ प्रगतिके समान चलनेवाले इस युगमें प्रचार के कार्यका महत्व समझाने की व्यावस्थकता नहीं रह जाती। क्यों कि "मूली गाजर और साग मी बोलनेवाले के ही बिकते हैं।" इसे कौन नहीं जानता। तहतुसार हमारी संस्थाने मी जिस कामका भार उठाया है, जैन जगनको इस विषय में कुछ समझानेकी आवस्थकता है यदि आप ध्यान देकर पद जायें तो परिस्थिति समझनेमें तनिक मी विलंब न होगा।

इस संस्थाको साधन-सामग्री मिलनेपर पाँच कार्य अपनी समाज के हितार्थं करने हैं. जैसे कि-

- (१) आगम सूत्र तथा भगवान् के सिद्धान्तोंको लोकभाषाओंमें प्रगट करना।
- (२) अपने मुनिराजोंको प्रस्तर एवं प्रकांड निद्वान बनाना ।
- (३) दुनियाभरके पुस्तकालयोंमें आगमस्त्रों के पहुँचानेकी व्यवस्था करना ।
- (४) जैन धर्मके तत्वीका प्रचार करनेके लिए उनकोटीके योग्य छेन्सक और प्रचारक तैयार करना तथा भारत के मुख्य २ केंद्रोंमें चर्कासंघ स्थापन करना, जिनमें अनेकालीय चर्चाकार मगवानके स्याद्वाद को विश्वव्यापी बनानेमें तारतम्य चर्चा कर सकें।
- (५) जैन-विचारोंकी अपेक्षा रखकर जैन-यूनीवरसिटी स्थापन करना।
 इनमें सबसे पहुछे १-२-३ नं० के कार्योंको सफल बनानेका निक्षय किया है।
 पहुला कार्य-सूत्रागम, अर्थागम और उभयागमकी सौत्रिक रीतिके अनुसार
 ३२ आगमोंका मूल तथा उनके हिन्दी आदि अनुवाद प्रकाशित किए जार्येगे।
 तदनन्तर ३२ आगमोंकी प्राइतदीका और संस्कृतदीका आधुनिक युगकी
 पदितिसे रची जार्येगी। जो कि अपने समयकी अमृतपूर्व और अश्रुतपूर्व वस्तु
 होगी। साथ ही समाजनें प्राइत भाषाके प्रचारार्थ 'प्राइत्तं' या 'पाइयं' जैसे पत्र
 मी निकाल जार्येगे जिसमें सात्र प्राइत और अर्थमागधीके देखोंको ही स्थान
 मिलेगा। सूत्रागमप्रकाशनके साथ २ एक 'प्राइतकोष' प्राइतगाषाबद्ध तैयार किया
 जारहा है। जिसकी १९१८ गाथाओंकी रचना भी हो सुकी है। यह सागरके
 समाम बढ़ा और रचनावें अदितीय विस्त्यक और स्थमतानें इतना उत्तम होगा
 कि किर किसी भी प्राइसकोषक आश्रम केकी तिकिक भी सावश्वकता व पदेगी।

इसके अतिरिक्त स्थानकमासी घारणा के अनुसार त्रिशांक्षेत्राकांकापुरुषचरित्र और एक हजार क्याओंका एक बड़ा कथाकीष भी तैयार किया जायगा। ये दोनों प्रन्थ भी प्राकृत में ही रचे जायेंगे।

आपको यह मी स्मरण रहे कि 'छत्तागमे' नामक पहला प्रंच १२५० पेजका महान् पुस्तकरंत्र प्रकाशित हो चुका है जिसमें १९ अंग स्त्र समाविष्ट हैं दूसरा भाग आपके करकमलोंगें है ही, जिसमें शेव १९ स्त्रोंका समाविष्ट हैं जो कि प्रत्येक जैव के 'गृहपुस्तकालय' की अमूल्य विभृति है और साधु मुनिरा-जोंके हृहयकी तो आदर्श वस्तु है । अधिक क्या लिखा जाय! हाय कंगनको आरसी क्या! वस्तुका तथ्य सामने प्रस्तुत है इसे वेसकर आपका अंगरात्मा एकदम यही कह उठेगा कि यह तो बौद्धोंके "ए-र-रि-य-क्, क्यू-अर-रिय-क्" के समान् महाकाय विभृति हमारी समाजमें मी है! इसका अर्थागम और उभयागम लोकभाषाभाषियों के लिए तो मानो सम्ययम्गलका महाभंडार ही होगा। इसका वेहस्त्र इतना विशालतम होगा जैसा कि एनसाईकलोपीडिया-जिटानिका का महाभंब होता है। इस प्रंवमहोदिबों जिस जटिल विषयको ढूंढोंगे उसका उत्तर तुरंत आपको उत्तीमें मिलेगा! मिलेगा! मिलेगा! और फिर मिलेगा! यह छाती टोक कर दावेसे कहा जा सकता है, जिनवाणी के द्वारसे भला कोई मुमुख या जिज्ञान कभी निराश लौटा है! कमी नहीं। तब फिर रेडियोपर यहा तहा बोलनेवालोंकी तृती वंद हो आयगी।

ये प्रकाशन इतने शुद्धतम और पनित्र होंगे कि धर्मानंदकीशांची 'जैसे धर्मोप-हासकोंके पैरके तके से धरती सिसकती प्रतीत होगी । आगमके तीनों मार्गोका साध्याय आपको बता देगा कि सचमुच जैन धर्म कितना विश्वव्याप्य धर्मे है।

जमी २ हाल ही में विश्वशांतिक इच्छुक (कममग ४० देशके) विद्वानोंकी एक समा शांतिनिकेतनमें हुई थी। उन्होंने वहां जैनधमंसंबंधी बची खूब जी मर कर की थी। जिसका सार कलकता यूनीवरिटिनिक मंतर्राष्ट्रीय ख्याविप्राप्त कां. कालीवास नागने स्पष्टशक्दोंमें विना किसी कागलपेट के यह प्रकट किया है कि "जैन धर्म सार्वमीयिक धर्म है।" पर्न्तु बेदका विषय है कि जैनोंने जैनशिक्षान्तोंका विश्वम्यापी अचार ही नहीं किया, वस्त्र यह अधिकविश्वका कीकप्रिय वर्ष बकता। सन कहा जाय तो जैन साहित्यका प्रवार हुनियामें सीवें मागर्ने सी

१ छंदनमें "तिहिश एण्ड फॉरेन नाइबिक सोसायटी" नामकी एक संस्था बहुत पुरानी है। इसका उद्देश बाह्यिकता प्रचार करना है। इसके १२० वें नियमके बहुत कुछ झातच्य सामग्री मिलती है इसका कुछ सारमाय इस प्रकार है।

खोकमाधाओं इष्टिगत नहीं है। फिर भी जैन धर्मने भारतीयपंस्कृतिके नाते श्रद्धल कुछ अर्थण किया है। सबसुब मानवजीवनकी सार्थकता भी इसीमें समाई हुई है। जोकि प्रखेक मानव के लिए उपादेय और आवश्यक है। विश्वसिद्धान्तके समान इसका प्रचार करनेकी भी पूरी ज़हरत है। जब अखिल विश्व के विद्वान् इतने ऊंचे स्पष्ट अभिप्राय दे रहे हैं तब हमारे पास विशेष समझाने के लिए क्या कुछ शेष रह गया है?

विश्वजगत्में एनसाईकलोपीडिया ब्रिटानिका नामक प्रसिद्ध प्रेंच है। इमारें प्रिय आगमनय भी उसी पद्धतिक अनुसार महनीयता और महानता प्राप्त होंगे। एनसाईकलोपीडिया ब्रिटानिका प्रंथ १२० वर्ष पहिले बना है। अवतक कई परिवर्तनोंके साथ २ उसकी १४ आवृक्तिएँ निकली हैं। प्रकाशनकी दृष्टिसे यह ३५ बार प्रकाशित हुआ है। प्रलेक संस्करण के प्रकाशन के समय कमसे कम १० छाखसे ५० छाख तक प्रतिएँ प्रकाशित हुई हैं। कुछ दानियोंके प्रोत्साहन मिल्नेसे हम भी इसी परिपाटी के अनुसार जागमनयको सारे संसारके योग्य और सुक्षेमल ह्यांमें पहुँचाना चाहते हैं। जिससे दो अरब मानवप्रजा छाम उठा सके। ऐसी आशा ही नहीं बल्कि हमारा पूर्ण दृढ़ विश्वास है। मान्न आप तो प्रस्तुत आगम पाकर उनका स्वाध्याय करके हमारे हौसके को बढ़ाएँ।

इम संस्थाकी स्थापना सन् १८०४ ई. में होनेके पश्चात् इसने बाईबिलकी ३४५०००,००० प्रतियों प्रसिद्ध करके वितरण की हैं और अब तक ५६६ भाषाओं में बाईबिक प्रसिद्ध किया है।

बाईविलका अनुवाद अप्रजीसाम्राज्यकी ३६६ भाषाओं में हो बुका है। भारत-वर्ष में १०२ आषाओं में वह अब तक छए चुकी है। इस संस्थाके पुस्तकों का मूल्य लागत पर व लियाजाकर लोगोंकी शक्तिके अनुसार लिया जाता है। गोरपे-लकी प्रकाशित बाईविल आपको भारतवर्षमें आधे पैसेमें मिलेगी और चीनमें एक पेनीकी ६ प्रति मिलेगी। तथा जहां पैसेकी व्यवस्था न हो वहां स्थासस्य जो वस्तु मिल सकती हो उसी वस्तुको छेकर पुस्तक दिया जाता है। कोरियामें पुस्त-कर्के भारसे तुमना अनाच छेकर बाईविल दिया जाता है। तथा किसीको अधिक आवस्यकता बतानेपर एक बाद्य केकर बाईविलकी एक प्रति से जाती है। भारत-वर्षमें तो लाखों प्रतिर्हें भुष्त श्री से जाती हैं।

नीत- जैनवार के सांव बाजबीर उदार कवापति करोव्यतिकोंने की क्या करी इस प्रकार की और व्यास विका है ! समजान सहाबीर की प्रकार कैनको देन है और उसे सम्बार की बाजोकी उवांतिये ही पूरा किया जा सकता है । एनसाईकलोपीडिया विटानिका हजार पेजका बोल्युम है इसी मौति तीस बोल्युमका वह एक सेट है अर्थात वह महान अंथ तीस हजार पेजोंने पूरा हुआ है। इसी प्रकार हम आगमनयको इससे भी बना बनानेके इच्छुक हैं। यशिप इस मगीरथ-कार्यको पूरा करनेमें कई वर्ष लग सकते हैं फिर भी कागज़के मिलनेमें सगमता और प्रेसका सुभीता मिल सके तो हम इस भीष्मकार्यको १० वर्षमें पूर्ण करनेका दावा कर सकते हैं। परन्तु हमारी समाजके ऐसे सद्भाग्य कहां? फिर भी जगतके मानव आशाकी दीवार पर खड़े हैं। पुरुषार्थ करना ही तो मान्न अपना कम है।

रामको सुप्रीवका साथ मिला तो लंकापर रामको विजय प्राप्त हुई। बुद्धको तो मात्र पंचवगाँयभिष्ठां अपने जीवनका योग दिया तो आज ८० करोबसे अधिक बीद दुनियापर छाए हुए हैं। इसी प्रकार प्रत्येक कार्यमें पुष्टसइयोगकी आव-र्यकता हुआ ही करती है। इसी रिष्टेंसे आपको झानपुत्र महावीर भगवानके शासनका सम्मानच्यत्र कंचा उठाने के लिए इस संस्थाके सहायक बनकर सके साथियोंकी माँति सेवाकी आवश्यकता है और इसे जातीयता एवं गामप्रदायिकाकों मोंह और मेदभावकों छोबकर साथ दें तो अतिउत्तम हो। इसकी उन्नति कामना और सेवाकी अभिलाया की साथ पूर्ण करने के लिए सहयोगियोंके नाते आप मी स्थान, संरक्षक, सहायक और सदस्य बनकर २०००)१०००)'२००० और २००० की आर्थिक सेवा द्वारा जिमचासनके उत्थानका बीजारोपण करें। कपर लिखित बारों वर्गोंके आजीवन सदस्योंको एक एक प्रतिके रूपमें समिति के प्रकाशन अमूल्य मेंट दिए जायेंगे। सिमृतिकी नीतिका निर्धारण करते समय उनसे सब प्रकारका परामर्श किया आयगा। अब तक जिन साथियोंकी सेवासे यह भीच्या कार्य हो रहा है उनका विवरण इस प्रकार है।

अवतकके साधी-

स्तंभ-श्रीमान् रोठ शेशुलाल कत्याणजी (कराचीके भूतपूर्व थ. ८. जैन संचके प्रमुख) वंबई ।

, जाला प्यारेलात जैन द्राव अंतरनाथ Q. ह. ।
, श्रीमान, शेठ रतनचंद नीसमदास वाठिया मु॰ पो॰ पनचेल खि॰ कोसावा ।
, मास्टर दुर्गाप्रसाद जैन B. A. B. T. मु॰ गुर्गॉब-साववी ह. २. ।
जैन संघ द्राँडायखा पश्चिम सानवंश ४९००) वेसमें मेखा स्पार्ट सारो ।
माहंगाके कई सहहस्थोंकी ओरसे २०००) स्पार्ट सारो, इसे शेठ रामवी अंदरण माहंगा (हैपीहोस-तैकिंग कॉस रोड)। श्रीमान् श्रेठ विजयकुमार जुनीळाल फूलपगर C/o जुनीळाल वृद्धिचंद फूल-कार १३६० भवानीपेठ पूना ।

संरक्षक-औमान् शेठ मोहनलाल धनराज कर्णानट (कोयालीकर) C/o रूप-चंद सुनीलाल कोयालीकर १३५८ मनानीपेठ, पूना ।

,, श्रीमान् होठ धूलचंद महता, न्याबर ।

,,

,,

33

श्रीमान् श्रेठ नाथालाल पारख-माद्वंगा, मुंबई १९ 'कागज़की सेवा' ।

श्रीमान् शेठ चुनीलाल जसराज मुखोत मु॰ पनवेल (कोलावा)।

,, श्रीमान् शेठ छबीलदास त्रिभुवनदास लीवडी बाले हाल रंगून ।

श्रीमान् लाहा ओंप्रकाश जैन द्राह अंदरनाथ ।

श्रीमान् लाला दर्शनप्रकाश जैन द्गुङ अंबरनाथ ।

थीमती सोतिदेवी प्यारेलाल जैन दुग**र अंब**रनाय ।

,, श्रीमान् शेठ तुगराजजी श्रीश्रीमाल C/o शेठ नवलमल प्नमनंद सु० पो० बेक्ला, जि॰ नासिक ।

सहायक-श्रीमती लील।देवी चुनीलाल फूल्पगर १३६० भवानीपैठ पूना ।

थीमती पतासीबाई धनराज कर्णाबट (कोबालीकर) C/o स्पचंद बुनीलाल १३५८ भवानीपैठ पूना।

D. हिम्मतलाल एण्ड कं॰ १२-१४ काजी सम्यद स्ट्रीट संबद्धे मं॰ ९ ।

श्रीमान् वीरचंद हरखचंद संडडेचा धामोरीकर मु॰ येक्डा (नासिक) ।

> ,, नाँदमल माणकलाल मंडछेचा थामोरीकर, कपका बाजार मु॰ पो॰ येवला (नासिक)।

श्री॰ व॰ स्था॰ जैन संघ धरणगाँव और हिंगोना १०००) प्रेसमें। श्रीमान् श्रेठ भगजी माई मूळचंद दप्तरी निवास तैलंग कॉस रोड प्र. १ मार्टगा संबर्ध १९३

काला सुमेरचंद तस्मीचंद-चंद्रभान जैन आयर्न मच्छ बंबई-देहती। श्रीमान शेठ मियलाल गुलाबचंद मेवाबाले ६२५) 'कायज् ' माईगा सुंबई १६। बोरा मधीलाल लक्ष्मीचंद ५००) 'कायज् खारी' ठि. रानदे रोड, ३. केन, ब्रामनंदिरनी बाजुमां, प्रीमियर हाईस्कृतना स्वयर, त्रीजे गाके स्म नं. १७ द्वादर। श्रीमान, बीमनवास स्थानक गोती इसी ३५०। 'बातक बाती' (विकसाइन)।

सव्स	-श्रीमान् शेठ धनराज दगद्राम संवेती भवानीवेठ पूचा ।
"	श्रीमान् फूलचंद उत्तमचंद [े] कर्णावट (कोयालीकर)
,,	C/o रूपचंद उत्तमचंद २३ भवानीपैठ पूना ।
,,	श्रीमती शांतादेवी फूलचंद कर्णावट (कोयालीकर)
	२३ भन्नानीपैठ पूना ।
دۈ	श्रीमान् रूपचंद दगड्राम मुथा, १३४ नामापेठ पूना ।
,,,	श्रीमान होठ चंद्रभान स्पचंद कर्णावट इचलक्रंजीवाले २६१।२
~	बुधवारपेठ पूना ।
٠, دو	श्रीमान् होट कालीदास भाईचंद शाह पोनइनाका सेल पेट्रोल पंप
•	२५९) कागज़की सैवा नॉर्थ सतारा।
,,	श्रीमान् शेठ माणकचंद् राजमल बाफणा बड्गाँव ता॰ मावल पूना ।
33	श्रीमान् होठ मणीलाल केशवजी खेताणी चाटकोपर मुंबई ।
**	श्रीसान् बाबू रामलाल जैन तहसीलदार गुक्गाँव छा. ११. P. ।
,,	श्रीमान् शेठ पानाचंद बाह्याभाई महता २५१। 'छपाई साते'
	मार्दुगा, मुंबई १९ ।
**	श्रीमान् केठ अस्तलाल अविचल महता २५१) 'छपाई साते'
	मादुंगा, मुंबई १९।
,,,	डॉ. चुनीलाल दामजी वैद्य ४१२ पायधुनी मुंबई नं. ३ ।
,,	श्रीमान् रोठ वेलजी कमैंचंद कोठारी C/o मणिलाल एक कम्पनी
	भ३ चकला स्हीट, सुंबई मं० ३ ।
"	श्रीमान् क्षेठ कांतिकाल र्रे. गांधी माहुंगा, मुंबई १९।
,,	श्रीमान् शेठ सुसराज धनराज ताकेश (तीन रिम कागज़की सेवा) १५ ससून रोड पूना स्टेशन ।
	श्रीमान नरभेराम मोरार्जी महेता C/o विसको संबरनाब C. R. :
,,	श्रीमान् शेठ आईर्वद काकाणी मार्द्वमा मुंबई १९ ।
55	शीमान् केसरमल इजारीमल भारीबास मु॰ पौ॰ क्रीपरगांव,
**	जि॰ शहमदनगर C. R. ।
32	श्रीसमन्त जैनसंब सोनई, ता॰ नेवासा, कि॰ आह्मब्यवार
	C/o केसरवंद क्वंबनमळ, विविद्याः
	भीमान् समीकास सम्बंद गांधी, भारत्, संबद्धे ।

श्रीमान् त्रिकमजी लाषाजी मु॰ पो॰ जुसरदेव (M. P.)।
श्रीवर्धमान स्था. जैन सेच शाहादा प. सा. २००)।
श्रीमान् वस्तावरमल चांदमल मंसाली केतिया (M. B.)।
श्रीमान् शेठ धनराज पगारिया मु॰ हिंगोना पू. सा.।
श्रीमान् श्रीमतराय जैन B. A. दादर मुंबई।
श्रीमान् लीवराज लानंदराम बांठिया पनवेल (कोलावा)।
श्रीमान् लाला कुलवंतराय जैन नारायण श्रुव स्ट्रीट मुंबई।
श्रीमान् केसरचंद आनंदराम बांठिया मु॰ पनवेल (कोलावा)।
श्रीरावसाहेव किशनलाल नंदलाल पारस येवला (जि॰ नासिक)।
श्रीमान् शेठ चेरसी नरसी भाई मु॰ त्रंबोळ (रापर) कल्लवाला,
बसनजी वीरजी, जोसी बाग पारसी चाल, मु॰ कल्याण (जि॰
थाणा)।
श्रीमान् शेठ शोमांचंद धूसरमल बाफ्या घोवनदी पो॰ सिसर
(पूना)।
श्रीमान् शेठ रविचंद मुसलाल शाह, संघवी सदन, दादर।

.,



प्रकाशकीय

आजके इस वैज्ञानिक युगर्मे जहां मनुष्यने विज्ञानके द्वारा नहे र व्यवहारीप-योगी वस्तुओंका आविष्कार किया है वहां महान से महान संहारक उदाजनवम जैसे श्राक्षोंका भी । यह सब किसलिए ? मेरी सना नमस्त संसारपर छा जाए. में ही सबका प्रभु हो जाऊं। एक और तो शकोंकी होड़में एक देश दूसरे देशसे आये निकल जाना चाहता है तब दूसरी ओर आधुनिक जनता का अधिक भाग गृहकी न चाहकर शांतिकी शंखना करता है। परन्तु शांति शक्षोंके बलवृते किए गए युद्धोंसे नहीं मिल सकती । शांतिका बास तो आध्यात्मिकतामें है मौतिकनामें नहीं, और कातपुत्र महावीर भगवान्के द्वारा प्रतिपादित भागम आध्यात्मिकतासे भरपूर हैं, उस आध्यात्मिकताके प्रसारके छिए शातपुत्र महाबीर जैनसंघानुवायी उप्रविहारी जैन सुनि १०८ श्रीफलचंडनी महाराजयी विशुद्ध प्रेरणासे गमितिने आगमोंके प्रकाशनका कार्य अपने हाथमें लिया है जिसका प्रथम फल ११ अंग सुत्रों से यक 'स्वलाहाम' के प्रवस भाग के रूपमें आपके सन्मुख आ चुका है। ३२ सूत्रोंको 'सत्तागम' के रूपमें एक ही जिल्दमें देनेकी उत्कट इच्छा होते हुए भी प्रंपराजका देह-सूत्र बढ़ जानेसे ११ अंगोंका प्रथम मंत्रा अलग बनाना पड़ा और यह दूयरा औरा आपके मनक्ष है जिसमें १२ उपांग, ४ छेद, ४ मूल और आवश्यक इस प्रकार २१ सूत्रोंका समावेश है। परिशिष्टमें कल्पसूत्र सामायिक तथा प्रतिकारण सूत्र भी हैं। इसका सारा श्रेय जैनधर्मीपदेषा उपविद्वारी यंग-सिंध-उत्तरप्रदेश-बिहार-पांचाल-हिमाचल-महाराष्ट्र-गुजरात-मध्यभारत-मरूसलादि-देश-पावनकर्ता परम पुञ्च १०८ श्रीफुलबंदजी महाराज को है जिन्होंने अपना अमृत्य समय देकर इस महान् श्रंथ का संवादन किया है। आपकी विद्वता, बस्तुल और प्रमाव सर्वविदित है। आपने 'नवपदार्थज्ञानसार' 'परदेशी की प्यारी बारों' 'गल्यकुसुमाकर' 'गरूप-कुममकोरक' 'सम्यक्तवक्रणनी' 'आयम सन्द प्रवेशिका' आदि कई प्रयों की रचना की है। 'बीरत्वति' की विस्तृत टीका, शांतिप्रकाशसारमंत्रकी, आदि संस्कृत रचनाए भी की हैं। आपके द्वारा किया गया मेरी 'अजगेरमनि-सम्मेखन बाजा' के रूपमें अजमेर साञ्च-सम्मेलन का इतिहास इतिहासिशेषमाँ एवं कान्येचकी के लिए अलांत उपयोगी है। आएने कई एक अंबोंका सन्दर संपादन भी किया है। इस 'सुर्शागम' का संपादन करके आपने जो उपकार किया है वह वर्णया-तीत है। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशनमें जिन २ महाबुगायोंने प्रसाद हा परोक्ष स्थमें किसी भी प्रकारकी जिनवाणीकी सेवा की है जनका हम हार्रिक आसार मानते हैं, साथ ही म्लॉके निकले हुए अलग २ प्रकाशनोंपर अथवा प्रथम अंशपर जिन २ मुनिवरोंने अपनी २ शुभ मम्मतिएँ मिजवाई हैं हम उनके अनुगृहीत हैं। सहधर्मि महानुभावोंसे निवेदन हैं कि वे इस पवित्र कार्यमें महयोग देकर हमारे उत्साहको बदाएँ।

इम हैं जिनवाणीके सेवाकांशी,

प्रधान-मास्टर दुर्गाप्रसाद जैन B. A. B. T. मंत्री-याद रामलाल जैन तहसीलदार

'सुत्तागमे' पर लोकमत

(२५) कवि ग्रुनि श्री नानचंद्रजी म० सायला ५।२।५४

मेही भाई श्रीशंभुलाल कल्याणजां ! तमारा तरफशी पोष्टकार्ड अने वीजे के त्रीजे दिवसे 'शुनागमे' वृं दळदार बोल्युम पोष्टपार्मलशी मल्युं. पुस्तक आवी रीते सुंदर आकारमां (अगियार अंग मेगा) बंधाएल हुने एनी कल्पना पण न हती. हुं एम मानतो हतो के बधा पुस्तको छूटा छूटा हुने "पण आ तो घणुं सुंदर काम धयेल छे. आमाना कागळो पण सारा छे. आ ऊपर श्री एम चोव्हस थाय छे के शास्त्रोद्धारनुं कार्य गृहस्थिको करता कोई शुविहित अने कर्मानिष्ठ साधु करे तो ते नेत्रुं सर्वीचम निपत्रां शके छे! आवा कार्योमां साधुने जहर अपवाद महन करवा पढ़े छे पण हिम्मत होय तो परिणामे एमी योख कदर जहर थाय छे. अस्तु! श्रीकृतवंद्रजी म० ने अमारा अभिनंदन पहोंचाहको.

× × ×

आ पढति अमोने गमी हे. एकंदर मुत्रोना मूळ्याठोर्तु प्रकाशन अस्री हतुं. श्रीफुलनंद्रजी महाराजे आ खोट पूरी करी हे. ता. १९-१-५४ सायस्त्रा (२६) श्रीभ्रामजी स्वामी जेतपुर २४-११-५३

••• द्वारापसे ए मामर्त ११ अंगोना स्क्रपाठबाखुं मजबूत बाइंडिंग साथे मंगल पुस्तक बुक-पोड वी मोकळेल ते मत्त्रुं हे, अने से पवित्र पुस्तक महाराजधीनां करकमळमां बहुमानपूर्वक स्थापित कर्तुं हे. से मंगल पुस्तकतुं वर्धन करी महा-राजधी बणाव हर्षित बचा हे. शासनपति महावीर प्रभुता पंचम गणधरे ११ अंगोनी गूंभणी करी त्यार वी कत्यारपुर्यामां १९ अंगोर्तु एकत्र पुस्तक बहार पबेल होय से मां आ पहेलां य शुन प्रसंग बन्यों हे, अने से शासन सेवा रहिक मुनि श्री पूक्षण्यंत्यी सामीनी मुनीत भावनाने से आसारी है. × × × (१०) परिष्टियों सामीनी स्थापित पुष्प अने पंच संसाम बीतक समाव- बाक्ष एहवा है पुष्पचंद्रजित् स्वामिन्! आपश्री वीतरागप्रणीत जिनागमोनी मायाना अने तेमां दर्शावेका भावोना घणाज निष्णात होई आपश्रीए जिनागमोनारातुं जे मंगल कार्य हाय धर्युं हे ते मंगलकार्य आपश्रीना हाथयी निर्वित्रपणे चाल रहो, अने आपना सत्पुरुषार्थयी जेम बने तेम बेळासर आपश्रीए घारेल छाभकार्य पूर्ण थाओ एहवी मारी आपना प्रत्ये हार्विक छाभ भावना हे. सुनागमे= स्त्रागमोना मृळपाठ रूपे ११ अगियार अंगो प्रगट थया हे तेनुं काम घणुं संदर थयुं हे. कारण के आप ते भावाना निष्णात होई आपनाज हाथ थी मृळपाठ लखाई प्रसक्तांपी नैयार थयेल, अने ते पवित्र आगमो मुंबई निर्णयसागर प्रममां छपाया, जेथी सुवर्ण अने मुगंब बन्नेनो सुमेळाप थयो हे, ते जोई इद्यमां प्रमोद भाव उद्भवे हे. हवे पछीनुं आगमोद्धार अंगेनुं दरेक कार्य तेवुं च मृंतर बनो तेम हुं इच्छुं लुं. लिखी—लींबड़ी संप्रदायना मंगळस्वरूप स्वर्गस्य गुरुषेव मंगलजी स्वामीना शिष्य मुनि शामणी.

(२८) आर्यमुनि हीरालालजी मः इतिया २८-८-५४ 'मुत्तागमे तन्य णं एकारसंगसंजुओ पढयो अंगो' देखकर प्रसन्नता हुई । सारी प्रति गुढ है । इस तरह उपोग, छेद, मूल, आवद्यक जन्दी बाहर पढ़ेंगे । म्हाध्यायवालों के लिए 'सुनागमे' बहुत ही उपयोगी है ।

आर्थ जैस सुनि श्रीहीरास्त्रास्त्रजी म० (२९) आपश्री तर्पर्या संगोधिन 'स्तागमे' (मृत्रम्यो) प्रगट ध्या हे. जेती केटलीक नक्सो अमन आवेली, जे जोता संतोष धयो. आम शासीय साहित्य अवे अन्य धार्मिक साहित्य आपर्था तरफवी संगोबित धरे प्रचार पामे हे जेवी समा-जने अलस्य लाभ मळे हे. समाज आपर्शाजीमो ऋषी हे. सुनि रक्षाचंद्रमा वंदन कल्ल-मांडवी

(३०) भवया संपादिओं इक्षारसंगर्धजुत्तो पढमो अंखो सुतानमस्य सुवादस्वेण सृदिओं तह्या भोमवासरे संपत्तो, सो साभारसिक्यों मए । दिक्कियहं णीओ सो महागंथो, तम्ह संखितपागयवागरणविस्त्रों वि सुद्ध स्वदंतिओऽस्य । तस्य संसोत्हणं सगीचीणं कयमत्य भवया । एसो गंथो सउद्यायकरणे अञ्चावणे अञ्चावणे वा बहुवओगी अत्य साहगाणमिति । अस्त प्रताबि सुद्धमानि संदि, बह चेव क्ष्र-गावि प्रताबि हिवासो है विक एसो महागंथों ।

रयणचंदी सुजी-संडणसरं (सांस्थी क्रम्क) (२१) सुनि श्री फूलवंत्रजी सहाराज! सायकी श्रीरसे 'श्रुपायके साथ मं श्रूपां- रसंगरंजुओ पहमी अंसी' देख कर अत्यन्त प्रसक्षता प्राप्त हुई। इसी तरह उपांग, केंद्र, मूळ और आवश्यक भी चीच्र ही बाहर पहें तो बहुत अव्यक्त हो। अगर कुछ टाइप बड़ा होता तो कमनम्दवालोंको भी पढ़में सुविधा होती। सावमें अर्ज़ है कि शांतिनिकेतन, नालंगों विदेशसे आए अनेक विद्यार्थी जैनधर्मविषयक सिद्धान्तको जाननेकी बड़ी उत्कच्टा रखते हैं। 'सुतागमें' के साथ 'अरथागमें' भी होना आवश्यक है।

अब तक जो २ जैनागम जैनममाजकी ओरसे बाहर पड़े हैं उनमें कुछ न कुछ जुटियां अवस्य रही हैं और किसी २ जगह अन्यके ऊपर छीटाकची भी की गई है। इन बातों की आक्त्यकता नहीं। मूळ पर मूलका जो आक्तय हैं वही रहना ठीक है। 'सुनागमें' की यह प्रति बहुत ही शुद्ध है।

मुनि श्री हीरालालजी म० सरिया

- (३२) गत वर्ष श्रीमुत्रागमप्रकाशकनिर्मात गुढगाँवसे प्रकाशित मृत्रोंमें द्वितीय आचारांग मृत्रादिकी पुस्तक एवं इस वर्ष भी श्रीभगवती मृत्रादि प्राप्त हुए। आपके स्तुल प्रयक्षके लिए कोटिशः श्रन्थवाद है। आगमोंका प्रकाशन इस प्रकार किया जावे तो अत्युक्तम रहेगा—
- (१) मुल एवं भावार्य टिप्पणी युक्त परिशिष्टमें पारिभाषिक शब्दकोप एवं जैनधमंके विशेष सिद्धान्त और मान्यताओं पर प्रकाश ।
 - (२) मूल एवं हिंदी टीका न अति बिस्तृत और न अत्यन्त संक्षिप्त ।
 - (३) मूल संस्कृत छाया एवं संस्कृत टीका ।
 - (४) मूल संस्कृत झाया संस्कृत टीका एवं हिंदी अनुवाद ।

इन चार प्रकारके प्रकाशनोंके बाद या साथ २ अन्यान्य भाषाओंमें अस्यु-तम समुबाद भी विकास जायें।

एक विद्येष निवेदन यह भी है कि अनुवाद या टीकाएँ अपने सिदान्त परक अदामय होनी चाहिएँ। आवके प्रभाव वाले की छाया परनेसे वह आजकी वस्तु होगी, त्रिकालकी वस्तु नहीं।

इसके साथ ही अभिधान-राजेन्द्र कोपकी माति मूल प्राक्टत-संस्कृत-टीका और हिंचीटीका वाका 'पुण्ककोस' भी निकलवाना नाहिए। उसकी अध्यन्त आवश्यकता है। एक ही स्थान पर जिज्ञालुको आगर्गोके एक विषय पर सारे पाठ मिल सकें और अध्यतपान करनेके समान पाठक प्रसन्नताका अनुभव करने कने '''।

यानि श्रीकेषसम्बन्धित साहित्यरमः उन्नीत

(३३) आपकी ओरसे बुकपोष्ट द्वारा मेजा हुआ 'द्धतागमे' का आठवाँ पुष्प प्राप्त हुआ । अत्र विराजित श्री मेचाइ-भूषणजीके सुनिष्य कवि श्रीशांतिलालजी म. ठा. ४ की सेवामें प्रस्तुत किया । मुनिश्रीने आश्रन्त अवलोकन करके ये उन्नार प्राप्ट किए हैं—''पुस्तकराज शुद्ध एवं सुंदर है, यह वीरवाणीका अमृत्य रक्ष है। सम्पादक मृतिश्री शाखशानका सम्पादन करके माधुताकी घड़ियोंको सफल कर रहे हैं। महाराज श्रीफुलचंद्रजी स्वामी दिग्गज विद्वान् है, ऐसे मुनिपुंगव द्वारा संपादित साहित्य जगतके कोने २ में प्रसारत हो इसी शुमेन्छाके साथ चरणकमलमें शत शत वंदन हो।''

मंत्री-च० स्था॰ था॰ संघ रामा (मेवाड़)

(३४) श्रीमान् जेठ रन्नवंदजी मीलमदामजी वोठिया! जनजिनंद्र! आपका मेजा हुआ 'सुनागमे' श्रीमेवाइमूचण २००८ मंत्री श्रीमोतीस्तालजी म० मा० श्री सेवामें पेश किया. उनके पट्टशिष्य पं० शास्त्रस मुनि श्री अंबा-सा० श्री सेवामें पेश किया. उनके पट्टशिष्य पं० शास्त्रस मुनि श्री अंबा-सालजी म० ने अवलोकन कर यह सम्मिन प्रदान की है कि—"यह आगम-रत्नाकर महाम्यं न्वाध्याय-अनुगांगयों तथा शास्त्रजोंके लिए अस्वन्त उपयोगी है। इम प्रकार जनागमोंका मंदर नंकलन देखनेका मुभवसर प्रथम बार ही धाप्त हुआ है। मम्पादक मुनिश्री जनधर्मोंपदेश महामान्य श्रीफुलचंद्रजी भ० की यह उन तब ही पूरी हो सकती है कि जब इस अनीखे प्रयोग प्रचार सब देशांतरोंने हो, साथ ही प्रयोक संप्रहालय और एइपुन्तकालय में एक्खा जाय और इनका स्वाध्याय किया जाय। प्रथंपाजका संकलन आदरणीय तथा प्रशंसनीय है।"

मंत्री वर स्थार जैन भार संघ रेलवाड़ा (मेवाड़)

(३५) श्रीप्यारेलाल जैन(अंबरनाथ कि द्वारा ११ अंगोंका एक सेंट 'सतागमे' का मिला उसे श्रीमुनि मांगीलालजी म० ने अवसे इति तक अवलोकन किया, बदा यन्नीय हुआ और उन्होंने खुब यराइना करते हुए यह सम्मति पेश की- ''सुनाममे' का संकलन अनोके ढंगसे किया है, इसके गृह रहस्यको पूर्णशासक ही समझ सकते हैं अझ या दुर्निद्यश्च नहीं। आपके अधक परिश्रमसे ही यह कार्य पूर्ण हो पाया है अस्तु वधाई! इसमें शुद्धिपर अच्छे प्रकारसे स्थान रकता गया है। वर्तमान ढंगसे यह आयोजन आदरणीय है, इसी ढंगके सौजिक प्रकाशनकी आज आवश्यकता है। में चाहना हुं कि आपश्ची अन्य स्त्रोंका भी इसी प्रकार पुनरदार करें ताकि ये शुद्ध प्रतियां जगतीतलमें श्रामक तमस्त्रोमको हुर कर सही मार्गको प्रकाशित कर मकें। श्रीसुनि-मांगीलालजी मान्य सींचपीकली-मुंबई १२

(नोट) आपने इन पृष्ठपटोंपर अंकित मम्मतियोंसे यह तो जान ही लिया होगा कि ये प्रकाशन कैसे हैं। वैसे तो सब संप्रदायों के मुनियों और सहासतियों एवं जिज्ञासुओंकी ओरसे सुत्रोंकी मार्गे धड़ाधड़ आती रहती हैं. अर्थात सुत्रोंका प्रचार आशासे अधिक हो रहा है। ११ अंगों से युक्त 'नुनागमे' महान् प्रयकी प्रशंसा बड़े र महाविद्वानोंने मुनकंठसे की है। यह अपूर्व प्रथराज केंब्रिज, वार्थिग-टन, यहे, फिलाडेल्फिया, कैलीफोर्निया, कीबीळेंड, न्यूयार्फ, प्रिस्टन, चिकागो (अमेरिका), अमेर, आपान, चीन, पैरिय, सिंगापुर, मुंबई, कलकता, बनारस, महाम, आगरा, पंजाब, ढेहली, भांडारकर ओरेटियल इंस्टीव्यूट पुना आदिके महापुरनकालयों एवं यूनिवर्सिटियोंमें भी शोभा प्राप्त कर चुका है । तथा वहांसे प्याप्त संख्यामें प्रमाणपत्र और प्रशंसा पत्र आए हैं जिन्हें प्रयराज के देहस्त्रके अत्यधिक बर जाने के कारण नहीं दिया गया । अधिक क्या कहें इसकी ज्यादह प्रशंसा करना मानों सूर्यको दीपक दिखाना है। इसी प्रकार अर्थागम और उमया-गमा को भी यथासमय मनियों महासतियों एवं जिज्ञासुओं के करकमलोंमें पहुँचा-कर समिति अपना ध्येय पुरा करनेका प्रयक्त करेगी। समिति यही चाहती है कि हमारे मुनिगण प्रकाण्ड विद्वान बनकर जिन-शायनका उत्थान करें एवं आसमों का सबैज प्रचार हो। अंजी

Letter No. 1

True copy of the letter received from Prof. Daniel . H. H. Ingals, Cambridge.

Cambridge Mass, June 5, 1954.

I have received the beautiful Nirnaya Sagar edition of the Suttagame. I express my deep thanks to Muni Shri Fulchandji Maharaj for generosity. It would be merit enough to print so large a portion of the religious writings of the Jains in one convenient volume. It really deserves the thanks of all scholars.

The volume is not only an ornament of my library but is frequently put to use.

Letter No. 2

I have continued to read in the first volume which I find excellently edited and Singularly free of misprint. I should certainly be thankful to receive a second Volume.

Prof. Danial H. H. Ingals.

Letter No. 3

HARDING MUNICIPAL LIBRARY

Suttagame is a go al addition

to books of the library.

I hope you will also kindly present the next Volume which is under preparation.

Thanking you.
Krishna Gopal M. A.
Librarian.

Note: The e are not only the 3 letters. Besides there are number of other receipts of letters received from Various Universities & libraries all over the world which could not be published since their addition would increase the size of the Volume.

Secretary.



णमोऽत्यु णं समजस्स मगवमो जायपुरामहावीरस्स जैन धर्मके दस नियम

(१) जगत्में दो द्रव्य Substances मुख्य हैं, एक जीव Soul दूसरा अजीव Nonsoul । अजीवके पुद्रल Matter, धर्म Medium of Motion to Soul and Matter जीव और पुद्रलके चलनेमें सहकारी, अधर्म Medium of Rest to Soul and Matter जीव और पुद्रलके ठहरनेमें सहकारी, काल Time बर्तना लक्षणवान और आकाश Space स्थान देने वाला, इस प्रकार ५ मेद हैं।

(२) खमाक्की अपेक्षा सब जीव ममान और गुद्धखरूप हैं। परन्तु अनादि-क्राळसे क्रीक्प पुत्रलोंके संवंधसे वे अशुद्ध हैं। जिस प्रकार सोना कानसे

मिहीमें भिका हुआ अधुद्ध निकलता है।

(३) उक्त कर्ममलके कारण इस जीवको नाना योनियोंमें अनेक संकट भोगने पश्ते हैं और उसीके नष्ट होनेपर यह जीव अनन्तक्षान-अनन्तदर्शन-अनन्तस्रस और अनन्तक्षकि सादि को जो कि इसकी निर्जा सम्पत्ति है और जिसे सुक्ति कहते हैं प्राप्त करता है।

- (४) निराकुछता लक्षणयुक्त मोक्षस्यकी प्राप्ति इस जीवके अपने निजी पुर-षार्वके अधिकारमें है किसीके पास मांगनेसे नहीं मिछती।
- (५) पदार्थीके सहपका यह सराध्यान Right belief सराहान Right Knowledge और सरा आचरण Right Conduct ही यथार्थने मोक्षका साधन है।
- (६) वस्तुएँ अनन्त धर्मात्मक हैं, स्वादाह ही उनके प्रस्तेक धर्मका सस्वतासे प्रतिपादन करता है।
- (७) सत्य-भाषारणमें निम्न-विक्षित बातें गर्भित है, यथा-
 - (क) जीव मात्र पर दशा करना, कभी किसीको शरीरसे कष्ट न देना, बजानसे द्वरा न कहना और मनसे दुरा न विचारना ।
 - (क) कीष-मान-माया-कोम और मत्सर लादि क्यायमान्से आत्माको मिलन व होने देला, उसे इनके प्रतिपदी गुणीसे सदा पवित्र रक्षना । (ग) इंद्रियों और मनको क्या करना एवं बहिरेग क्योस् संसारमावर्में किम न होना ।

২ প্রয়াত সত

- (घ) उत्तम क्षमा-निर्लोभता-सर्जता-मृदुता-छाघवता-शौच-संयम-तप-त्याग-ज्ञान-प्रदाचर्यात्मक धर्मको धारण करना ।
- (ङ) स्ट-नोरी-कुक्षील-मानवद्रोह-विश्वासधात-द्रोह-रिश्वत देना छेना-दुर्व्यसन आदि निन्धकार्योसे ग्लानि करना अर्थात् उन्हें खागना ।
- (८) यह संसार खयं सिद्ध अर्थात् अनादि अनंत है इसका कर्ता हर्ती कोई नहीं है।
- (९) आत्मा Soul और परमात्मा God में फेवल विभाव और खमावका अंतर है। जो आत्मा रागद्वेषस्य विभावको छोडकर निजखभावस्य हो जाता है उसे ही परमात्मा कहते हैं।
- (१०) अंच-नीच-छूत-अछूनका विकार मनुष्यका निजका किया हुआ विकार है, वैसे मनुष्यमात्रमें प्राकृतिक भेद कुछ भी नहीं है। मंत्री



सूयणा

पयासणमिणसम्ह धम्मणुरूण गरिमाजियमेरूण साहुकुळचूलामणीण अहिलसग्णु-णसणीण वत्तव्यदत्तकलत्पुत्तमित्ताण पसंतिवित्ताण अभिगव्य सम्गतवतेयदिताण पोम्मं व अलिसाण पागयजणमुच्छाविद्दाणनियाणविस्यगामविर्याण पंचविद्दायारनिरस्यार-चरणांनरयाण भवोयहितारणतरंडाण अण्णाजतमोहप्यंडमायंडाण मोहेमनिवारणवरं-**ऋाण पासंडिमाणसेलमङ्गबजदंडाण वाउरिव अपडिबद्धाण तवसिरिसमिद्धाण सम्म**-**अकायजिणमयसम्मयसहुमयरवियारसयलभवसिद्धियलोयहिययंगमाण स्रसंजयपंच-**पमियतर्त्यरकरणतुरंगमाण दुज्यअणंगमायंगभंगसारंगपुंगवसरिच्छाण सुयणंबुरुहबोहणअण्णाणमोहतिमिरभरहरणघम्मु जोयकरणिकत हिच्छाण दुहतस्उम्मू लणेक्कसरपत्रणाण चरित्तणाणदंसणफलञ्जुद्धमुणिद्सउणमेखणाण सार्यसिकं व स्रुद्धमणाण पार्विधणोद्दृहुयासणाण संसार्ण्णवमजंतजीवगणतारणसमत्यवोहित्याण अह्रिव धीरिमापिडहत्थाण जिजपवयणगयणनिसायराण मेराजाणचरणाइनिम्मल-गुणरयणर्यणायराण नियसुद्भुवएसदेसणाणिष्णासियभव्यजंतुवायजीवियभूयसम्म-दंसणणासणप्रकासिच्छादंसणुगगगरलाण दुज्जणदुभ्वयणप्रवणबाए वि अतरलाण विसयसुद्दनिष्पिवासाण सुक्कागिद्दवासपासाण दूरपरिन्तत्तविद्दगिच्छाअरद्दरद्दभीइहासाण मित्तसत्तुजणजुम्मसमाणमणोविठासाण नवविहवंभचेरगुत्तिसम्मसंरक्खणेकपरायणाण कुरुमदङ्गनिवहविदंसणनारायणाण सुसत्यविसारयाण जिणधम्मपसारयाण .मरालुव्य पर्गुणखीरगहणदोसंबुविवज्जणवियक्खणाण कयछकायरक्खणाण स्तं व अणप्पक्तवियप्पसंकप्पञ्चण्णाण संतिमुत्तिअज्ञवसद्दवलावबाइपुण्णाण घरामंडलञ्ज सम्बसहाण भवदुक्खायवसंतत्तपंथिसंतिदायगदहाण चंदणवणं व सुसीयलाण जस-व्छाइयघरणीयलाण कंदप्पद्प्यदलजिबसह्नाण नीसह्नाण नियनिस्वमवयणकलारंजि-म्सयलकोगाण सव्वहा निम्ममयाए निरासीक्रयसोगाण आर्बुट्य तेयसा फुरंताण म्मुध्व मुक्तिमंताण जियतिजयदप्पकंदप्पमक्तगयनियङकुंभयङद्रुणसीहाण निरीहाण जिणगणहरसमणुन्निष्णसम्ममस्गाणुयाईण निहिलागमपारयाईण परजियपियहिय-स्यिकुडमासीण सगळगुणरासीण माणावमाणपसंसर्णिदणळाहाळाहसुहदुह्समाणम-साण अंद्यमाळिव्य फेरियदुम्मइतमसाण संतिमुत्तीण सियकितीण बीवुन्य अप्परि-पगईण जिजपवयंजाणुसारमहंज अमयनिग्गसुन्य सोमसहावाण महापहावाण पंचा-णुष्य दुष्पवंसिषजाण सम्रहजणाभिगमणिजाण साराणपभावगाण जीवे सम्मागे निगाण जन्मजरमरणक्कोलकोलजलपढलपुण्णविविह्महार्यक्समु**ह्नसंतलहक्षणक्षनकः**

अणवर्यविसप्पिररोगसोगमयराइमीमभवण्याड **मव्ये घम्मदोषीतारणसमङ्ग**-कुसलकण्णधाराण धीरधुरघवल्लव्य उव्यक्तियदुव्यहपंचमहव्ययगुक्रमाराण उद्दिविय गहीराण मोहमक्रिक्वीराण पाबदावरिंगनीराण दुरियरयसमीराण जिणधम्मरह्यु-सारहीण धम्मकहीण तिगुत्तिबम्गावसीकयबुद्धमणस्साण अवगयबुग्गमसिद्धंतरहस्साण अपसत्यासवदार्निरोहगाण बहुभव्वजणसमाजबोहगाण जिइंदियाण भम्मपियाण पंचविद्दसञ्ज्ञायविहिविद्दाणविद्दावणसावद्दाणाण अहिलजगजेतुजायवियरंतसमयदा-्णाण भवजलहिबुद्दंतजंतुसंतरणअणहबरजाणाण भवसयवारयवंधणविच्छेयनिमि-त्तसत्ताणाण समतिणमणिलेबुकंचणाण छड्डियमयतण्हावंचणाण खण्णाणतिमिरावरि-**थर्अं**तरण**यणजणताविद्दण्णतदु**ग्घाडणारिहतव्यिमलयाहेउपरमणाणंजणाण निरंजणाम कम्ममहीक्हकुमइलउप्पाडणगर्इदाण परतित्थियमियमइंदाण कासकुकु-मालिनिम्मलजसभरपरिमरियभुवणयलाण दारिहदुमदवानलाण सोमुख्य सोम्मयागु-णगरिद्वाण सञ्बसाहुजणपनिद्वाण सीहुव्य असंसोहाण आहिवाहिउवाहिकसायम्गिउ-ल्हबणमेहसदोहाण विजयलोहनिय डिमयकोहाण पणहुसेपदायपक्तवायमोहाण अण्णाणंघयाराविदयदावियमुत्तिसम्गाण शयस्ववशाण कि बहुणा सञ्चसाहुगुणीय. माजुत्ताण ससहरुव्य विबुह्जणमणचओरामंदाणंददावगमव्यहिययकेरववियासगनिय-सियमुजसञ्ज् । धवलियदियंतर्भण्यञ् तिथयचक्कविहरूणपयदमाहप्पपावकलेकवंकतण-मुत्ताण अजपरमपुजाण वंदणिजाण ४ सिरि १०८ सिरिफकीर खंदमहारायाण भारणावषहाराणुसारं बहुइ जइ मे प्यासेण करत वि किंचि वि लाहो होहिइ तो सपयत्तसाइहं मण्णिस्सं, दिहिमुर्णक्सरजोजगदोसा काहिंपि कावि असुदी होत सोहिजा, पेसिजाउ ससम्मई, इमस्स सज्झायं कहु बुद्दा निराबाई सहं पाउणतुत्ति । गुरुपयंबुरुहदुरेहो-पुष्फिमक्ख्

सुचना

यह प्रकाशन मेरे धर्मगुरु धर्माचार्य साधुकुळ शिरोमणि १०८ श्रीफकीरचंद्रजी महाराज (खर्गाय) के धारणान्यवहारानुसार है । यदि कोई दृष्टि-सुत्रणादि दोष हो तो खाध्यायप्रेमी सज्जन सुभारकर पर्दे । यदि इस प्रयत्न से मुसुबुओं को ज्ञानसाधनाका जाम निका तो परिश्रम सफल समझकर सन्तोष होगा । इसका अहर्निश खाध्याय करते हुए वे निराबाध सुख प्राप्त करें । सुनिगम अपनी सम्मति समितिको मेजें ।

गुरुषरणवंपरीक **गुण्यामिक्यू**

षड्भाषामयं बीरस्तोत्रम्

विद्यानां जन्मकन्द्रसिभुवनभवनास्रोकनप्रत्यसोऽपि, प्राप्ती दाक्षिण्यसिन्धः पितृवचनवशास्तोत्सवं छेखशालाम् । जैनेन्द्री शब्दविशा पुरत उपविशन् खामिनो देवतानां, शन्दवहाण्यमोधं स दिशतु मगवान् कीशलं वैशकेयः ॥ १ ॥ (पंस्कृतम्) जो जोईसरपुंगवेहि हियए निकंपि झाइजए, को सम्बेस पुराणवेयपभिद्रगंबेस गीइजए। जो इत्यद्भियआमलं व सयलं लोगत्तयं जाणए. तं वंदे तिजयम्पुरं जिणवरं सिडत्यरायंगयं ॥ २ ॥ (प्राकृतम्) देबिंदाणये वंदणिजचलणा सञ्चेवि सम्बण्युणो. संजादा कर गोतमा अबि तया अस्सप्पसादा दुते । सो सिद्धत्यमिहाणभूवदिसदो जोगिंदचूडामणी, भव्याणं भवदुक्खलम्बद्रुणो दिजा यहं सासदं ॥ ३ ॥ (शौरसेनी) दुस्टे संगमके शुळे मयकके घोलोवसग्गावलिं. क्रव्वंतिवि न लोशपोशकळुशं येणं कदं माणशं । इंदे अत्तिपछे ण णेह्बहुरूं योगीशस्त्रगामणी, को वीके पलमेक्षके दिशांतु में नेजन्तपुजन्तणं ॥ ४ ॥ (मागधी) कंपेतिकसिपंडकं खडहड फुट्टेतवंशंहयं, उच्छक्तंतमहक्षवं कडयडतुर्द्वतसेलग्गयं। पातम्मेन सुमेरकंपनकरं बालत्तलीलावलं. वीरस्स पहुणो जिमान जयतु क्खोनीतळे पायडं ॥ ५ ॥ (वैद्याची) इंदो वेदणरेखि जासु महया हल्लोहळेणागओ, जज्जाई मुणिहंसओ हियटए अक्जे निरंभेविण । साहु बोप्पियु बासु कोह महिमा नो तीरए माणवी. पाए वीरजिणेसरस्य नमहं सीसक्षडे अम्बहे ॥ ६॥ (अपनंशः)



गुरुस्तुतिः स्रोकाः

ध्यानायस्यावैधिद्धिः प्रभवति निक्षिलज्ञानस्पोऽमरो यो, ध्येयः सिक्षत्स्वरूपो विमलगुणयुतो रागवन्थादिश्चत्यः । सर्वज्ञोऽनन्तदाक्तिर्विधिधविकरो योगिभिध्योनगम्यः, सोऽयं कल्याणसूर्तिः परमकरूणया रक्षताद्वो जिनेशः ॥ १ ॥

त्रिखरिणी

स जीवः पुण्यादिप्रकृतिगुणतोऽनन्तविभवः, स्वयं कर्ता भोकाऽऽगमगिरिजिनेन्द्रः कवितवान् । कदाविको वृद्धिः सतिरपि न चास्यास्ति ग्रुभदः, स नः कुर्ग्याच्छान्ति जिनसुरवरोऽनायनिष्यनः ॥ २ ॥ सूर्ग्यथन्द्रो प्रहादिर्गगनतलगतन्तारकादिर्भवेऽस्मिन्, जीवो देहानुकूलः सितिरनलजलं नायुरप्रिमैनोऽपि । चैतन्यं पुत्रलोऽपि प्रथिनगुणयुतः सिद्धभावानुकूलं, एतस्तर्वं मिलित्वा प्रभवति सुवनं पातु श्री वीरदेवः ॥ ३ ॥

धम्मैव्यत्ययकरे, मर्लामसाचारे, पश्चमारकक्ती सर्वेदुःखाकरे, विविधवेदना-मग्ने, केवामपि प्रवृत्तिर्मा भूयादिति स्वाद्वादांगयोगान्तर्गतद्यासत्याचौर्य्यक्रश्चस्य्यो-परिप्रहादिपंचिवधयम् महावत)परिपालनासक्तिकता जिनेन्द्रेर्मुनिपदे नियुक्तास्तथा-SSगमनिगमोक्तधर्मप्रचारपर।यणाश्च ॥

जिनधरमानुया, देवगुरुमक्तिप्रवणमानमाः, श्रमणवचनश्रद्धावन्तो, नान्यवा-बादिनो, जैनागतनवतत्त्वावगन्तारो, द्वितीयाश्रमस्थाः श्रावक(गृहस्थ)पदे शोभिता भगवद्भिः॥

सिवदानन्दरूपेण, वीतरागेण, जिनेन, कर्मवन्धादवन्धो भूत्वा सर्वानन्दा-नन्दितेन, न्यापकसभावेन, सर्वविदा अपुनराइतिरूपा मुक्तिनिरूपिता ॥

चतुर्यकास्तानते च त्रिविधतापसन्नप्तमानजनतप्पेणाय इत्तगणधरावतारेण, जिनोकद्वादशांगविशिष्टशिष्टशासाध्ययनाध्यापनादिधर्मवृद्धिप्रवृत्तिकृते परोपकारक-रवेन स्थितो धर्मादिस्पोऽनादानिजनाचारः श्रीमता सुवर्माषार्येणोदाद्वतः ॥

तेन चतुर्विषरंवरंगिसापुसाप्नीनां श्रामकश्राविकाणामन्योत्यमधर्माविश्वति-पूर्वकथर्मविचारणाय यात्राऽऽविश्रावो मन्यते स्म ॥ सुधर्माचार्यत एकसप्ततितये पट्टे विरवधयिद्योतमानमहाकविपरिकरकुमुदाकर-राकानिश्चाकरश्रीजैनगणालिसमास्यादितचरणारविन्दमकरन्दश्रीनास्रामजैनाचार्येण सुतचारित्रप्रचारयोर्जिनधर्मयोः प्रचारेण स्वान्तेवासिभ्यो मुनिवेत्र(२५)मितेभ्यः जिनोदितसिद्धान्तं प्रतिपाद्यादिजिनोकाऽनादिजिनधर्मप्रचारोभिहितः ॥

ततः क्रमशः पंचसप्ततिनमपृष्टस्थितेन सर्वेषङ्जीवनिकायाभ्युदयप्रकृतये उत्तम-चंद्राचार्यणाचार्यपदं सुशोमनं कृतम् । तत्समकातीनम् जैनाचार्यो मजुलालो जातः । यथ निगमागमनकृत्योतिषशास्त्रजन्यरहस्यादिपारंगमः ॥

श्रीमदुत्तमचंद्र जैनाचार्यानुसरणशीलब्रह्मचर्याश्रमसम्पन्नमृसंयमीभूतमव्यप्रवो-धकतपस्तिप्रवरो रामलालजैनमुनिर्जातः॥

यदन्ते निवासाईत्य श्रीमच्छ्रीमालवंशसमुन्यश्रस्य वार्डक्य(स्वितर)पदिवभूषि-तस्य मृदुलस्वभावस्य पूर्वजन्मजन्मान्नरकर्मस्यगर्थं श्रीमान् जैनमुनिवर्ण्यश्रीफकीर-चन्द्रमाधः समिजातः ॥

यतः-

नमाम्यहं श्रीशक्कीरचन्द्रं, गुणाकरं किवरपूज्यपादम् । बोगीश्वरं तोषकरं खरूपं, ठावण्यगात्रं बहुसीस्वकारम् ॥ १ ॥ भवन्तमीशं भजतोऽनुजातु, दुःखान्यूर्कं कानि च नापि तापैः। पाणिस्थविन्तामणिमंगभावं, का निकेतिः पीडियतं शक्षाक ॥ २ ॥ भक्तया जना ये तव पादसेवां, कुर्वन्ति सनते त लमन्ति चैव । न दु:खदौर्भाग्यमयं न मारिः, समरन्ति ये श्रीधापकीरचंद्रम् ॥ ३ ॥ भव्या जना ये सुनमन्ति नित्यं, तेषां मनीषां सपलीकरोति । लक्ष्मीं ब्रोराज्यरति प्रभृति, विद्यावरश्रीललनासुन्सानि ॥ ४ ॥ कविः सुबुद्ध्या गुरुसिक्षघोऽपि, कस्ते गुजान् वर्णमितुं समर्थः । तथाऽपि त्वद्रकिर्तथ पुष्पः, करोति नित्यं गुणवर्णनां ते ॥ ५ ॥ महार्णवे भूधरमसकेऽपि, स्मरन्ति ये खामिफकीरचन्द्रम् । सुबैः सहायान्ति नराः खषान्नि, ततो भवन्नि प्रणमानि कामम् ॥ ६॥ न रोगशोका रिपुभूतबक्षा, नवप्रहा राक्षसदस्युचोराः । न पीडयन्ति ग्रुक्तममंत्री, स्तस्मानराणी शिवदायकोऽस्ति ॥ ७ ॥ जैनाब्दसम्बोधनपूर्णसन्द्रः, मत्सेक्केच्छामितदेवनृक्षः । शमप्रधानस्तु श्रुसाधुनूर्ति-, जनिश्वरः स्वामिपाकीरचन्द्रः ॥ ८ ॥ इत्यं गुरोरष्टकमुत्तमं यः, प्रभातकाके पठते सदैव । कि दुर्वम तस्य कारलवेडपि, सिम्बन्ति सर्वीषि समीवितानि ॥ ९ ॥

अय श्रीपुष्पाष्टकम्

नीराय सातपुत्राय, महावीराय तायिने । जिनाय वर्षमानाय, श्रमणाय नमो नमः ॥ १ ॥ यस्य दुर्वासना सान्ता, सान्तेच्छो यो मुनीश्वरः । तस्मै ककीरयन्द्राय, नमोऽस्तु शिवमूर्तये ॥ २ ॥ यस्य विष्यस्सदाचारी, पुण्येन्दुमुनिसंसकः । शास्त्रनत्त्वविशेषस्न, स्तस्मै सानास्मने नमः ॥ ३ ॥ दुःस्वभाजां नितान्तं यो, दुःसान्धतरणिर्मुदा । तस्मै नमोऽस्तु शान्ताय, जिनेशपदसेविने ॥ ४ ॥

शार्वलिकीडितवृत्तम्

श्रीमद्देवजिनेन्द्रपाद्युगल।ऽम्भोजाऽर्त्रनाऽऽमक्तधीः, संसाराम्ब्रनिधौ निममजनतोद्वाराय पोतोऽस्ति यः। बैनाचारवतामबोधहरणे भाखत्समी ज्ञानविद्-, भक्ताऽज्ञानविनाशकृद्धिजयतां श्रीपुष्पचनदो सुनिः॥ १॥ यस्यान्तःकरणे दबोन्नतिकरी विज्ञानमात्मन्यदः. संमारोरगमीतिहजनपदाऽशेषार्तिहो योऽनिशम् । शान्तो यो निजयर्मरक्षणपरो खाध्यायध्याने रतः, सोऽयं साधुशिरोमनिर्विजयते पुष्पेन्युर्यको सुनिः ॥ २ ॥ मिक्षायाचनहेननं गृहबतां येषा गृहे प्रेति य-. स्तेषां पापचयं प्रयाति रविषा नैशं यथा ध्वान्तकम् । सारामारविकारणे व नितरा समं मनो मस्य है. श्रीमान्युष्यश्रमी मुनिर्विजवनां सः श्रीपुरोस्सेक्षः ॥ ३ ॥ मुक्तरार्थं यतते च यो जितरिपुः श्रादार्चितान्त्राविको, शानाचाररतो विद्यक्षमनसा पादाम्बकातिः सदा । जीवापदविनिवारणेऽतिकुबळर्सीयाऽसरेसे मतिः, सोऽमं की जनतान्त्रका सुनिवरः पुन्नेन्द्रसंत्रो सुनिः ॥ ४ ॥ द्रं दुःसन्यं वजेश सत्ता बार्शनात्कर्मानं, यहाचा जननामनः सञ्ज्ञपतां स्वत्या विद्यदं भवेतः। यस्यास्ति भ्रमणं द्विताय च सनां नासाव दःखान्यचेः. स श्रीपुष्पश्चनिरसदा विजयतां कल्यानमृतिर्यकम् ॥ ५ ॥

नानादेशगतेर्जनीर्जनस्थापीयूषपानेप्सभि-,
जैनाऽजैनगतस्य यस्य मुखतो निस्तं कथा भूमते ।
यस्यासी नितरां विहारकरणं लोकोपकाराय च,
तं पाबाद्यमो जिनो विषयतः मुण्येन्दुसंसं मुनिम् ॥ ६ ॥
यदाणी च सदा सुधारससमाऽविद्यान्धकारापहा,
यच्छीलेन जना मुदं च मनसा खंलक्थवंतः पराम् ।
यत्कीर्तिर्विशदा दिगन्तवितता राराज्यमाना सदा,
अव्यातं जिनराजमिकिनिरतं श्रीपुष्यचंद्रं जिनः ॥ ७ ॥
शास्त्रोधानमुत्तर्यविषयवेर्देवंन्द्यो स्वर्श योऽनिसं,
साधूनां प्रवरो निरस्तविषयो यस्यानुरागो गुरौ ।
गंगावीरसमस्समुख्यस्तरो यस्यास्ति नीतिर्मतौ ,
सः श्रीपुष्पविधुर्मुदा विजयतां सर्वाधिदिद्वप्रदः ॥ ८ ॥
साधुसेवानुरक्तन, चन्द्रशेखरदाममंगा ।
कृतं पुष्पाष्टकवितत् , पुष्पेन्दुमक्तिहेनवे ॥ १ ॥

इति श्रीकासीस्थपण्डितचन्द्रशेखरदार्मा व्याकरणन्यायाचार्यविरचितं पुष्पाष्ट्रकं सम्पूर्णम

॥ श्रीः ॥

दिनाङ्कः १२-११-१५५४

श्रीमतां श्रद्धेयानां पुष्पमिश्चवर्य्याणाः

---- स्तवः -

यदीयवचनाविर्विकृतभावनानाविनी । कृतुविकृतुदावठीरविरमस्युदस्यम् ॥ धुषारसमयी परा सुजनमानसोक्षाविनी । सदा मुनिवरामणी जगति पुष्पभिक्षं स्तुमः ॥ १ ॥ करातकक्षिकाळवाविरसमोद्द्यस्योजयै—। रपस्ततनुरप्यसी सुजनमफसावीं सब्भू ॥ स्वक्रेपदियानेन वै य जनियं निरस्यद् व्यथी । सदा मुनिवरामणी क्षमति सुकाविश्वं स्तुमः ॥ २ ॥ वितानितत्तपोषलोऽतनुमङ्गलापादको । जिनप्रवचनानुगो दमिनसर्वसङ्गत्मको ॥ महागुणगणावहो सकलमोहविश्वंसको । जयत्वविरतं सुधीनद्रवरपुष्पभिद्धः स्वयम् ॥ ३ ॥

रचियता

ग. भि. जोशी.

काव्य-वेदान्त-पुराण-तीर्थः, साहित्यप्राज्ञः, रा. भा. कोविद्. हिंदी सनद, पनयेल (कोलावा) ।

वसीससुत्तणामहुगं

वीद्वितं-आयारंगं पढमं, बीयं स्यगढंगं अक्खार्यः।

ठाणंगं च तह्यं, समवायंगं इवह बालु चउत्यं ॥ १ ॥
पंचमं च कु भगवंदं, णायाधम्मवद्गा य भवे छहं ।
उवासगदसंगं स-नमं अहमं अंतगडदसंगं ॥ २ ॥
अणुनरोववाइयं, नवमं दममं पण्हावागरणं ।
इक्षदसमं विवागर्सुयं इड इक्षारसंगाइं मणियाइं ॥ ३ ॥
उववाइयं तह राय-पसेणियं जीवामिगमो य पुणो ।
पण्णवणा तह जंबुद्दीवपण्णत्ती चंदपण्णत्ती ॥ ४ ॥
गूरपण्णत्ती तहा, णिरयावित्या कप्पिया पुष्फिया ।
पुष्फवृत्विया य वण्डि-दसाओ वारमाई उवंगाइं ॥ ५ ॥
ववहार-विहक्ष्प-णिसीह-दसास्यवस्यं धेहिं च ।
वत्तारि उ सुताई, छेयाइं सण्वाई सत्त्वीसं ॥ ६ ॥
दमवेयालियं तहा, उत्तरज्ञ्चणं णंदिस्सुयं च ।
अणुओगहारं तह, चत्तारि इमाइं मूलसुताई ॥ ७ ॥
आवस्सयमुतं तह, वत्तीसमं भणियं जिणवरेहिं ।
विविहत्थवोहयाई, भव्यजीवहें छओं दंसियाई ॥ ८ ॥

कता-कच्छी मुणिरयणचंदो



पद्दावली मंगलायरणं

तुय विलंबिय विसं-भवियणंड्यभासणभक्तरो, सुवणवंषवईहियदायगो । पणस्वासवचक्रणियावली, विजयत उसहोऽत्य जिणाहिनो॥ १॥

वेयालीयं-सुमई बहवेऽभिहाणओ, गुणजुना पुण इत्य दुह्हा ।

युमइं गुणओऽभिहाणओ, पणमामीसमणंतसम्गुणं ॥ २ ॥

पंजनामरं-जगप्पमीयदायगं पणहुमोहसायगं ।

समीसचितवासिषं परप्पसंपयण्डियं ॥

विसिद्धदेसणाञ्चणाइसिद्धिसम्गदंसगं ।

णमो अर्णनसम्ममगविस्ससंगर्णदर्ग ॥ ३ ॥

दोहयं-घाइचउक्तयकम्मविणासा, लख्महोदयकेवलबोहं।

जोगनिरोहसमस्सियकायं, झामि सया मुणिसुव्वयणाहं ॥ ४ ॥

मंद्कता-भव्यागारं पसमजलहिं सक्तपूर्याविपोम्सं,

मेहस्सामं विमलमइदं भिण्णसंसारचकं ।

संसारदिप्यवहणणिई मेहगंभीररावं,

तं संखंकं पवरविहिणा णिमिणाहं धुणेहं ॥ ५ ॥

सिहरिजी-समं चेओ जस्स प्यणइधरणिंदे य कमढे,

महाबेसत्तोमग्गिबिसर्विद्देऽहसतमे ।

मणोऽभिद्वनायाऽमरविद्यविदुल्लो जगइ जो,

धुणे तं वामेयं जियसुरतरं भव्यवर्णं ॥ ६ ॥

सर्लिकीडियं-बीरो विस्तविजेठकामविजई बीरं न को जानए,

वीरेजेच विशेष्टियं जगमिणं बीराय सम्बं मम ।

बीरा निस्सियवं सुदक्षजलही बीरस्स णाणं महं, बीरे सम्बगुणा वसंति दिस में बीरा! सिरिं सासई॥ ७॥

अइ पदाबसी पारन्भिज्ञह

चरिमतित्वयरो जायपुरामहावीरो दुरियरयसमिरो पायदाविधानीरो मेर-गिरिचीरो जाको ॥ तप्पट्टे पंचामयाणहरो सुहरमो निद्धियकछतकम्मो वालीस्य-'सहम्मो क्यसहरूकमो हुको ॥ ९ ॥ तप्पट्टे शाळाजंबू वाल्यंमयारी सत्तावीस-हियपंचसयसहरिक्कथारी चरियछत्तालुसारी आगमबिहारी हुको ॥ २ ॥ तप्पट्टे पमचणामधारको गहिनसंघभारको समस्वित्यहियकारको सगगारको सुत्रव-धारको पारको भूको ॥ ३ ॥ तको इसनेवालियणगेवा संघणेवा समस्वाइनेवा सिर्धामचणामायरिको ॥ ४ ॥ तक्वंतरं जसनेक्यइनामो विकियकामो विद्वरि-यगामाणुगामो सुनिर्वर्शनसगुणधामो ॥ ५ ॥ तप्पच्छा अङ्गाणवंतो पसंतो संतो दंतो धम्मारामे विद्देतो संभूहआयरिको ॥ ६ ॥ तथाणेतरं अज्ञमङ्-बाह् चलणाणचउदहपुक्वधारगो दमाकप्पत्रवहारकारगो स्वसमुद्धारगो ॥ ७ ॥ तप्पट्टे उक्तिस्त्रवंभयारी धूलमहमुखी गुणी गणी सञ्बसाहुसिरोमणी स्वलगुण-गणसणी ॥ ८ ॥

अज्ञावित्तं-अज्ञमहागिरिवेलिस्सर्ही संतीयरिओ क्रमण पुणी।

पण्णवणाकनारो सामीयरिको गुणी जाको ॥ १ ॥ संडिक्षे जिणधम्मी समुद्दको गंदिली तहा गुणवं। सिरिणारीहित्थरेब्यसंहित्श्रोणाम आयरिया ॥ २ ॥ सीहिनरी सिरिमंती जागजुणको पुणे व गोविंदी। भूयदिण्णैंबायरिको लोहाँचरिको गुणई। उ ॥ ३ ॥ दुव्यर्सदेवहिगँणी वीर्देशहो नदेव सिवसंहो । असवीरसेणेजिजामयी य गुणिओ जैसस्सेणो ॥ ४॥ हरिससेणैंजेयसेणो जयपालगैंजी तहेव वेचरिसी। भीमसेवर्गावरिको तप्पेंट कर्मसीहो य ॥ ५ ॥ रायरिसीसरदेवसेर्पसंकरसेको य इन्डिक्कीहो उ रीमरिसी तह पर्जमी आयरिओ पुजाहरिसँग्मी ॥ ६॥ कुसलप्पेहो य उमर्णावरिको अवसेर्जपुर्जीवीयरिसी । गणी सिरिदेवेंचंदी सुँदस्सेणी महौतीही ॥ • ॥ मेहसेणी जयराओं गेंथसेणी तह व मिसंसेणी य। विजयसीहसिचरायां लार्खायरिको तहा कमसो ॥ ८॥ गाहा-जाजायरियभूकीमो, कवकीयरिको तहा । जीर्वस्सी तेयर्गेनो न, हरजीजील अविमं ॥ ९॥

जावस्ता तथरामा में, इरजीमाम इपिन १९॥ जीवरामो व धर्ममी, विस्तामांवरिको तहा । मर्जेजीमानधेको उ. ममोनिमाइकारतो ॥ १०॥ मार्थुरासायरिको में, तप्तहे मामसामरो । स्टब्हीचंव्यायरिको, तप्तहे सीसराहिते ॥ १९॥ दायार्गिमी गुणवंती, उत्तर्मेंचंदो कितिमं ।
समणे दामळीलो म, तबसी भहरवस्ते ॥ १२ ॥
पेंकीरचंदो तस्वीत्रेक्ष्णेरप्ययिम्सिलो ।
पुष्पतिर्वेख् तबलणं-, तेवासी य महागुणी ॥ १३ ॥
तेण संपाहलो एसो, मञ्जाणं उदकारको ।
'सुत्तावासे' महागंथो, सिंधुकंगविहारिणा ॥ १४ ॥
अज्ञावित्तं-तस्स य अंतेवासी सेवाभावी अणेगगुणजुतो ।
अस्य सञ्जावित्तं-तस्स य अंतेवासी सेवाभावी अणेगगुणजुतो ।
अस्य सञ्जावित्तं तस्साच सीसो जिणेंचंद्भिक्क्ष्यू .
पद्मवली जेणेसा विरह्मा ।
संतीभवणअंवरनाहणामे,
संघस्स अद्वा ग्रगुरूकिवाए ॥ १६ ॥
अज्ञा-इकैरिसुष्णणेतिप्यमिए वरिसे य मग्गसिरमासे ।
सक्तस पंचमीए रगणा एसा ममत्त ति ॥ १७ ॥



णमोऽत्यु णं समणस्य भगवनो णायपुरामहाबीरस्य पासंगियं किंचि

स्यस्तजगजीवाणसप्यञ्चामाभिलासा बहुए, एयं चाबस्मयं पि । जेण स्वद्व-सणुयज्ञम्मेण ण क्यसमहियं तज्जम्मसम्बर्धः । अप्पहियद्वा चेव जणो पवस्यवस्यण-सज्ज्ञायकरणतवज्ञवसंजमाङ्कजेष्ठ पबहुदः । धम्मकरणं पि णाणेण विणा ण संभवह ति णाणमाहृष्यं । वृत्तं च-

> णाणं मोहमहंधयारलहरीसंहारस्त्रगमो, णाणं दिहुअदिहुरहुघडणे संकप्पकप्पहुमो । णाणं दुज्जयकम्मकुंजरघडापंचलपंचाणणो, णाणं जीवअजीववस्युविमरस्सालीय्णे लोयणं ॥ १ ॥

तण्याणं च पंचिवहं. तम्मि वि मुम्याणं विसित्मइ णेगाण भव्यजीवाणमुब-यार्त्तणओ । सुए ति वा मिद्धंते ति वा सुने ति वा सत्ये ति वा आगमे ति वा एगद्वा । आगमे तिबिहे प०, तंजहा-मुनागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे । एसो जो महागंधो तुम्ह करकमले विजाइ तब्बारत्नुनंगच उद्घेयच उम्लावस्स यसंज्ञुओ टिप्पण-परिसिद्धाईहिं ममलंकिओ सुनागमस्य थीओ अंसो । पदमी अंसो नाव इकारसंग-संगओ इओ पुर्वित सस धम्मायरिएहिं परमपुजलिरिप्रफ्रिमक्लुहिं संपादिओ सिरि-मुलायमपर्यामगसमिईए पर्यासिओ वहए नि मुविइयमेव मन्बेसि । स्तारमणिय-सज्झायमणणचित्रणणिदिद्वाराणेणमत्तपरस्वणाणं होहित । कि कायव्यं मए कि करेमि केण पहेण गंनव्यं केण जामि कि हेयं कि लेयं किमुवादेयं ति जाणितु सुत्तागम-सज्ज्ञायकारगो अनाणं धम्मे ठाविस्सइ परं धम्मे ठाविस्सइ । केण कम्मेण जीवो णेरङ्ओ वा तिरिओ वा मणुओ वा देवी वा सिद्धो वा जायह तृव्यण्णणमस्सिमित्य। णत्यि कोवि विस्तओ जो मुसागमे णन्धि । दब्बाणुखोगो मगवईपण्यवणाईसु । धम्म-कहाणुओगो (चरियाई) ताब आयारे महावीरचरियं, सूबगढे उसभजिणअहाण-उद्युमअद्गार्दणं, ठाणे महापडमचरियं, समवाए महापुरिसाणं माउपिउपुव्यम-बणामाई, भगवईए रोहाऽणगारखंधयतामलिखिबराबरिखिमहाबळउसहदत्तदेवाणंदा-जमालिगंगेयअइमुत्तगोसालयोदायणमिगावईजयंतीसोमिलाईण वारियाई संति । छह-सत्तमहमणवर्मेकारसमंगाई सब्बहा कहामया चेव । ओववाडए अंवडचरिवं, रामपरी-णहए स्रियाभदेवचरियं पएसिकहाणयं च, जीवाजीबाभिगमे विजयदेवचरियं, जंबही-वपण्णतीए उसहजिणचरियं भरहचक्किचरियं च. ब्रिरियाविक्रयात्रपंचवंगाई सम्बद्धाः

चित्रमयार्, उत्तर्ञायणे कविलणमिहरिएशिचित्तसंभूयद्वयारगम्गायरियसंबद्दाय-श्चियापुत्तकाणाहिस्य जिसस्दर्भाकरहणे सिकेसिगोयमजयघोस्ति असघोसाईणं, पढमे परि-सिद्धे कप्पमुत्ते वीरवरियं पासचित्रं अरिष्टणेमिचरियं रिसमिकणचरियं च । ससमय-परसमयक्तव्यया ससमयठावणा परसमयणिराक्ररणाइदंसणविसओ स्यगवे समस्य । गणियाणुओगो चंदम्रपञ्जनीआईसु । चरणकरणाणुओगो (आयारवञ्जर्ण) ताव आसारे दमवेयालिए एवसाईसु । पायच्छितविहाणाइयं चडसु हेयसतेसु । पमाणण-यणिक्खेववागरणसत्तमरणवकव्वरसाइयं अणुओगहारे । आवस्सयकिषं साहुसावयाणं साहुसावयावस्यए । अलमइवित्थरेण चतारि वि अणुओगा सुद्वुस्वेणमस्सि संति । एसुत्तमजिन्नास्म सुसुक्ख्ण गुननाहगान सञ्जनान अगुदमनानसाहर्न । चित्तचद-लयाद्रीकरणसञ्जूत्रमोबाओ सुत्तागमसञ्झाओ । अओ चेंब समणेणं भगवया णाय-पुत्तमहावीरेणं चाउकारुसज्झायकरणमुवदिद्वं भावियं च-'सज्झाएणं जीवो णाणावर-विजं कमां खवेड्'। अजावहि जेतियाई ग्रताई पगासियाइमण्पेहि ताई अङ्भारजुताई दुव्बहाई य । गामे गामे ण होति पुत्बयालयति मुणिणो जया जं धुत्तमिच्छंति तया नं ण लहंति । इमं लक्ष्मीकिचा दोष्ठ पुत्थएष्ठ बत्तीसं पि मुत्ताई मम धम्म-गुरुहिं परमपुजसिरिपुप्फभिक्स्हिं संपादियाई । एयमञ्जुयमविद्यमभूगपुन्वमस्सुय-पुरुवमत्थि जं एक्के पुरुषए इक्कारसंगाई बीए बारसुवंगाई चउन्नेयाई चउन्तलाई साबस्स-हुंगाई। अओ जिण्णासुणो मुणियो सजसायमिमस्स कडू णाणसुद्धि कुणंतु ति विण्यवेड् गुरुकमकमलमसलो-सुमित्तमिक्ख



षमोऽत्यु णं समणस्य भगवजो णायपुत्तमहावीरस्स सिरिसुत्तागमगंथस्स सारह्वभूमिया

सिरितिश्ययरेहिं जगजीवुद्धरणहुं विविहोबएसें दिण्णो, जं महासिन्निपरेहिं गण-हरेहिं मणसीकाद्धणं दुवालसंगीरूवेणं (हुवालसंगद्धनारूवेणं) ग्रंफिकणं तप्पवारो क्जो ।

इक्षिकंगस्तीवरि तेसि पुद्वीकराई पुढो पुढो आयरिएहिं कमेणं दुवालस्वंगाई जिम्मियाई संति । साहूणमायारिवयारसुद्धीकराई च चत्तारि छेयसताई जिम्मियाई । सब्देवितो अंगुवंगस्तितो पमाणणयजिक्केववागरणप्यसुद्दविसयसुत्ताई चत्तारि मूख-स्ताई सारक्वाई जिम्मियाई । तओ पच्छा अंतिममावस्सगस्ततं (उभओ-काळं वयशराणं मूळ्तराइगुणेहिंतो अत्तसुद्धीकारयं) जिम्मियं ति ।

बारसमस्स दिद्विवायंगस्स विच्छेए इकारसंगाई, दुवालयुवंगाई, चत्तारि छेय-ग्रुताई, चत्तारि मूलाई, बत्तीसमं चावस्सगयुत्तं एयाई बत्तीससुत्ताई सिरिथाणगवासि-जइणसमाजेण मण्णिजंति ।

प्य बत्तीसागमेषु साहुसावगाईणं णायव्योबादेयख्डुणीयविस्याणं वण्णको समित्य । अत्तकम्भवम्मणाणदंसणचित्तसम्भत्ततववीरिमप्पमाणणयिककेविक्कः यववहारमिच्छत्तकसायप्पमायापमायावयजोगळोगाळोगछ्यच्वजीवाइणवतत्तकंसासंसा-रकम्मवंघोदयउदीरणावेयणाणिज्यरामुक्खणिरयतिरिक्खमणुयदेवप्पमुद्दाणं विविद्दविस्याणं इमेसु स्रतेषु अहद्वियं मरूबमणंतणाणीद्दिमुवदंसियमत्य ।

विस्सेऽणेगे धम्मा, अणेगाइं सत्याइं, अणेगा य मयपहा विज्ञमाणा संति।
तेसिं धम्मसत्यमयपहाणं पवत्तगा वि णेगे संज्ञाया । उत्रक्तपरोयविसयाणं वत्तव्यया
जारिसा जङ्गागमेसु पुढोकरणपुञ्चया गृहरहरसजुना य पष्वक्खणाणीहिं दंसिया
अत्य तारिसा इयरधम्मसत्येसु ण लब्मइ । केवलणाणीहिं लोए यावरजंगमा अह-विरुविणो पयत्था जारिसा केवलदंसणेण विद्वा तारिसा जणहियद्वयाए आधिवया,
पण्णविया, पह्विया, दंसिया, जिदंसिया । जया अण्णसत्यप्यवत्तगेहिं जं किषि कहियं
वा दंसियं वा पवत्तियं वा तं सन्वं केवलं पण्णावलेण वा जहाणुह्वेण वा, जं हि
सन्वेसिं मण्णिकं णो होड ति ।

एएसिं बत्तीसमूलग्रत्ताणमस्था भासंतराई थेगेहिं क्याई पगासियाई संति । किंदु सञ्झायकरणद्वाए कमित विसयं तेष्ठ मूलग्रतेष्ठ जिरिक्सणद्वाए केवलं मूलग्रताई चेव कअसाहगाई भवंति । तेसिं पुढो पुढो बत्तीसं पहकहओ-पुरस्वाई एवीकरणेहिंतो

एरो वा दोसु वा विभाएस जह चेव सम्बस्तासंगहो हविजा ता अईव सुगमया होउ ति सत्यविसारएहिं महप्पेहिं अप्पसाईहिं जड्णसाहिकप्पयारगेहिं जड्णेयरजणाणं जङ्गधम्मरसियकुव्वंतेहिं जङ्गधन्मिप्पयारकए विविह् परिसहसहिजमाणेहिं उग्ग-विद्वारीहिं शुनायमपारीहिं इचाइणेगोत्रमारिहेहिं मुणिवरेहिं सिरिप्प्कमिक्सहिं महाक्ट्रं सहिता बत्तीसमूलसुत्तञ्जयस्य सुत्तागमंसदुयस्य संपादणं क्यं । एसि पयासो पसंसणिको अत्थ । सिरिसुनागमपगासगसमिईए पगासं जीवाई संति पिहप्पिहाई दोसु पुरथएसु य बत्तीसं सुताई।

तिहं चेव महापुरिसेहिं दोविभायगुंफियसुनागमगंथस्स (बत्तीससुताणं) सार-रूवभूमियं संलिहिरं पेरिओम्हि ति । अर्णतणाणिप्यस्वियअमुह्णणमणंतणाणणिहाण-रुवाणमेसि सुत्तागमाणं सारं महासमत्थणाणिणो चेव समदबोहिऊणमक्खाइउं वा छिहिउं वा समत्था संति । अहं तु अप्पण्यू एसि सारमवनोहिउं वा कहिउं वा छिहिउं वा णेव समत्थो भवामि । तहवि महप्पार्ण किवाए पेरणाइ य अप्पमईए अं किन अप्पमिव द्वतागमाणं सारहवं लिहियमत्थि मए तं ससंतेहिं स्तागमिवण्यूहिं क्रीकरणीयमिति, इत्रेव अञ्भत्थणा । सुण्यूसु कि बहुणा ? ॥

सियकिण्हणवमी गुरुवासरो

विक्रमीयसंबच्छरं २०११) संतचलणसेवगो कच्छी मुणी-



णिदंसणं

इह अणाइअणंतदुकसप्पउरसंसारिम जम्मसाइदुक्ससंगताणं जणाणं ण अस्मं विणा विरंतणसोक्सं ति । णाणाभवि ण अम्मसंभवो णि परमोवसारिहि गण्डदेशि दुवालसंगं गणिपिडगं गुंकियं । तमणुसिन्तु पिद्धिरागरिएहि उवंगाइयाई सत्ताई विरद्धाई । एसो सच्यो अक्सयओससमाणो 'सुन्तागरी' ति वुषद । इसो गंबो अद्यमागहीए जहा-''भगवं च णं अद्यमागहाए आसाए अम्ममाइक्सद । सा वि य णं अद्यमागहा आसा तेसि सब्वेसि आरियमणारियाणं अप्पणो समासाए परिण्यामेण परिण्याद'' ।

सयलाओ इमं नाया विसंति एत्तो य जैति वायाओ । एति समुद्दं चिम जैति नामराओ चिम जलाई ॥

ति वयणाणुमारं सम्बभासामृत्यमणेण पुलहा खु पाइयभासा । तातु विविद्दातु य सदरसेणीमागहीमरहाङ्क्रवाइपागयभासातु अदमागहा भामा विविद्साइ अप्यणे उद्यम्माहिकेण । असो चेव "देवा णं अंते! कयराए भामाए भासंति ? कयरा भामा भामाञ्चमाणी विविद्साइ ? गोयमा! देवा णं अद्भमागहाए भासाए भासंति, सा वि य णं अद्भमागहा भासा भासिजमाणी विविद्साइ" ति तुत्तं ।

अद्धमागहीसहस्स वृत्पति कृष्वाणा केइ जणा 'अद्धं मागध्याः' ति वृत्पत्तिबलेण इमीए भागाए मागहीभासाजणियत्तं पिष्टपाएँति । एरं 'अद्धमगघस्येयं' ति बत्युभूय-वृत्पत्तिमणुमरिय मगहावसएकदेसस्म चेवेयं मृत्रभूया भागति विश्वियं । अभो अद्ध-मागहीमओऽयं गंघी विच्छएण सयलजणाणं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित-संपत्तिपुष्टवयं सुगइसाहगमत्त्व ति ण संसयलेसो थि ।

एयस्स स्तागमस्य इकारसंगस्त्रसंख्यो पडमो अंसो पगसिको बहुए। तस्त चैव अवरोऽवरिक्षो एगवीसङ्गतसंज्ञतो बीको अंसो इयाणि पगसिखाइ। दिष्टि-बायाभिहाणं बारसममंगं ताव बोच्छिणं। एएसि बारसण्डमंगाणसुवंगभूवाणि बारसस्त्रमणि कहियाणि।

तेत्र य आयारंगसुणस्य उपंगभूए पत्रमे क्रमेण य बारसमे बोवबाइयसुसे णयरिउजाणाइवण्णणं वीरसमोसरणं तथोभेया क्रोलियमिममणं धम्मकहा सिद्धहः वण्णणाइयमस्य । तेरसमे स्यगवंगसुणस्य उवंगभूए दाययसेण्यक् स्राभदेवपए-सीरायक्हाणयं विष्ययमुक्लन्भइ विस्वरेख । चत्रद्वसमे ठाणंगस्स उवंगभूए खीवा-जीवासिगमसुसे जीवानीवसेक्छप्पण्णंतररीवविद्यदेवजंबुरीवाहेणं व्यवनं समुक्

क्रकाह । क्लारसमे समबायस्स वयंगम्य प्रकाशकास्त्रसे जीवसियमेयवित्वरो ठाण-अप्यबद्ध महिद् विसेसवर्कति उस्ताससम्याकोणिकरमा करमेमा सासरीरपरिणामकसाय ई-वियपकोगळेलाका बह्विइसम्मराअंतकिंदियाओगाहणाकिरियाकम्मप्यवीर्वचनियर्वयेय-वैयाहारीवजीगहेसंग्यापरिजामजोगजाजपरिजामपवियारवावेयजासमुग्यायक्णकी कम्भइ। तोळसमे विवाहपणानीए उर्वगम्ए जंबुद्दीवपणण चिसुचे वंबुदीववणणां रिसहदेवचरितं भरद् वक्रवष्टिकद्दाणयं जिनजम्मामिसेयाह्यं समुववण्यियं । सत्तार-समहारसमेत्र णागायम्मकदाउकंगभूएत् चंद्रपण्णसिस्रूरपण्णसिस्यसेस्य चंद-क्षांडलपमाणं सूरगद्दणक्खततारगाइमंडकाणं जुत्तिजुत्तं बण्यणं । तिहिणक्खत्तवाहीरत्त-हालमाणमाह्यं च फुर्ड कहियं । एगृणवीसहमे उदासगदसाउवंगमूए **जिरया**-हिल्यासुरो वेणियरायदसपुताणं कहाणयं, तहेव स्रोणियवरितं चेडएण संगामो क्रिंगणे मयाणं रेसि तत्तमाइराहो उपविष्णिको । बीसहमे अंतमबदसादवंगभूए प्ययद्धितियासुचे पउमञ्जाराइदसकृमाराणं परिचत्तरायविभवाणं णावपुत्तमहा-रमामिणो पासे पञ्चयणं देवल्येगसंपत्ती य बण्जिया । इसवीसहमे अणुत्तरोववाह्य-क्षाउनंगभूष **पुष्फियासुसे चं**दस्रसुक्ददेवाह्यं पुन्नकमकम्माद्विदारी वर्ष्णिको । विमहमे पण्डाबागरकुनंगभूष पुष्कासुखियाद्यसे शिरिदेवीपशिवृदसण्डं देवीणं भवो साहिओ । तेवीमहमे विदागद्ययस्त्रवर्गे विदावसायुक्ते बलगहस्स ह्हाइवारससुयाणं पुञ्चभवकहानयं सनित्यरं संज्ञायसेण देवगइसंपत्ती य साहिया । ्रियाणंतरं संबंधाइस दोसपरिहारोबायपविवायमार्थं चल्रकं स्रेयस्ताणं स्व कीरइ । तेसु पढमे अणुक्रमेण य चउनीसइमे **समहारे** पायस्कितविहीवद-म् वित्यरेण साहियं वहए। पणवीसहमे विह्यान्यसुस्ते साहुसाहुणीणं रूपा-क्षिडुस्बेण उवदंसिओ। छन्वीसइमे जिसीहरुचे पायन्छितानि तहाणनिहाणाणि है बन्धियाणि । सत्तावीसर्मे **हस्तासुधक्यांचे अ**समाहिठाणसकदोसतेतीः क्षणाऽऽयरियहुसंपयाचित्रसमाहिठाणस्कारस्वासगप**रिमाना**रसभिक्**सपरि**माप-क्षाकप्यमहामो**हणी**यठाणण**विधालक्ष्यणं** ।

ति चटण्हं छेपछताणमणंतरं अईवटवशुताणि चतारि मूळसुताणि पारिक्षा-जेस कमेण अद्वाधीसहमे द्रस्तियास्त्रियसुत्ते भम्ममाहप्पं सामण्यपुष्वयं रणणकायमेयपिकसणामहावारवयणविद्यद्वियाबारपणिहिनिणयमिवसुसंज्या-रगद्वारसठाणनिनतत्त्वरियासहत्रं निहानवं । एगूयतीसहने उत्तर्रासुम्बो गरिसहतुहह चत्ररंगपमायापमावयकाममरणद्वागणियं ठिक्षप्रस्कृत्वसुमनत्ति-वर्षातियावसमणव्यापमावयकाममरणद्वागणियं ठिक्षप्रस्कृतसुमनत्ति- व्यरणिविह्यमायठाणकम्मपयशैक्षेत्राभणगारभग्गजीवाजीविमत्ती कविकाइणे हापुरिसाणं वरियाइं व । तीसइमे णंदीसुनी बेरावकी सोयामेवा पंवविह्णाणसस्वं वंतग्गयनुद्धिमेवा सत्तसस्वं व वित्ववेणुवविण्णयं । एक्सीसइमे अणुओगव्यर-गुत्ते स्थावस्तयाणुपुर्व्वीणामपमाणणयणिकसेवाईणं स्वित्थरं वण्णणं । वत्तीसइमे गावस्त्वयसुत्ते आवस्तववत्तव्वया । पढमे परिसिट्ठे कप्यसुत्ते वीराइ-ग्रतिणचरियाई सुत्तविहणकालो जिणंतराई गणहरवण्णणं वेरावली सामायारी य । विषय परिसिट्ठे सामाइयपाठा गहणपारणविही । तक्ष्य परिसिट्ठे सावयावस्त्रय-(परिक्रिट्ठे सामाइयपाठा गहणपारणविही । तक्ष्य परिसिट्ठे सावयावस्त्रय-(परिक्रिट्ठे सावयावस्त्रय-

एवंक्षंण अणोरपारसिंधुमिरसे एयिम 'सुत्तागरो' विविद्दविसयाणमपुन्तो संगद्दो । अओ जिणधम्मसक्त्रं जिण्णास्हिं जणेहिं एस गंथो अत्रस्तं पढेयम्बो । सज्ज्ञाएण णाणावरणीयकम्मन्वओ स्रयणाणत्त्रणाणस्य य संलद्धी भवद । णियय-सज्ज्ञायणिसेत्रणेण तवकम्मसहकडेण णाणस्स सरमावत्याक्त्वं परमणाणं पि मुलहं । अओ चेव तुत्तं 'णं सज्ज्ञायसमं नवो' ति शिवेएइ-

गजाणणिमः जोसीतिणामधिको, कव्यवेशंतपुराणतित्थो, साहि-चपण्णो, रद्वभासाकोविओ (हिंदी सनद्), पणवेलत्थ 'हाईस्कूल' सक्रयपार्यअञ्जावगो ।



तुलनात्मक अध्ययन

सीत्रिक--

- १ औपपातिकस्त्रमें तपके १२ भेदोंका वर्णन एवं ठाणांगस्त्रके छठे ठाणे और भगवतीगत तप-वर्णन । 'वण्णको जहा उववाइए' कई सूत्रोंमें मिलता है।
 - २ रायपसेणइयमें सूर्याभ एवं जीवाजीवासिगममें विजयदेवका वर्णन ।
- ३ प्रण्यवणाके बहुतसे पाठ भगवतीस्त्रानुगत हैं। सिद्धसंबंधी श्रीपपातिकस्त्रकी बहुतसी गायाएँ पण्णवणामें दृष्टिगत होती हैं।
 - ४ जंबूद्वीपप्रक्रप्ति एवं स्थानागसूत्रके नवमस्थानगत पर्वत-द्रह-नदी-नामादि ।
- े चंद्रप्रज्ञप्ति एवं सूर्यप्रज्ञपिके आरंभक्रममें थोड़ा सा भेद है शेष पाठ अक्षरकाः मिलना है।
 - ६ वृहत्कम्पमें स्थानांग व्यवहार तथा निशीथके पाठ मिलते हैं।
- ् ५ दशाश्रुतस्कंधमें १-२-३-९ दशा समवायके अनुसार आचार-सम्पत् आदि स्थानांगके अनुसार हैं। विशेषके लिए देखो टिप्पण ।
- ८ दशवैकालिक एवं आचारांगका पिंडेघणा-अध्ययन भाषा-अध्ययन (पण्ण-णाम् अध्ययः भाषापद्) पांच महावर्तोका वर्णन मिलना जुलता है, एवं आचारांग अ॰ २४ गाथा ८ तथा दशः अ॰ ८ गा॰ ६३ समान है।
 - ९ उत्तराध्ययनके २२ वें अध्ययनकी और दशवैकालिकके दूसरे अध्ययनकी। इब्र गाथाएँ।
- १० नंदीसूत्र तथा समवायगत अंगसूत्रोंका वर्णन ।
- ११ अनुयोगद्वार-सात स्वर आठ विभक्ति स्थानांगके अनुसार हैं।
- है १२ श्रावकावश्यकमें बारह व्रतींके अतिबारादि उपासकदशाके प्रथम अध्ययनके सरार हैं।
- १३ कल्पस्त्र-महावीरचरित्र आचारांगके अनुसार, ऋषमचरित्र जंबुद्वीपप्रक्रिकि सार । दशक्रतस्कंथके ८ वें अध्ययनका परिशिष्ट तो है ही ।
 - (नोट) स्थानांग एवं समवायांगके आधारसे कई सूत्र रचे गए हैं अतः उनके कई सूत्रोंमें पाए जाते हैं। अन्तकृष्शांगगत अतिमुक्तकृमारका शेष वर्षन नतीस्त्रमें है। और भी कई सूत्रोंके पाठोंमें साम्यता है। बहां तो मात्र कुछ ा सा दिग्दर्शन कराया गया है।

वरीय---

१ अंगोंकी पदसंख्या आदिमें बहुत कुछ समानती है।

९ देखो पद्खंडागम प्रथम भाग ।

वगनरणविहिपमायठाणकम्मपयगैळेसाअणगारमगजीवाजीवविभत्ती कविळाइंणं महापुरिसाणं निर्यादं न । तीसइमे णंदीसुन्ते वेरावली सोयामेया पंनविहणाणसङ्वं तदंतगायबुद्धिमेया द्वतसङ्कं न वित्वरेणुक्विण्यं । एक्सतीसइमे अणुओगद्रार-सुन्ते स्वयावस्तयाणुपुञ्चीणामपमाणणयणिकस्तेवाईणं स्वित्यरं वण्णणं । वत्तीसइमे आवस्त्ययसुन्ते आवस्तयक्तव्या । पढमे परिसिद्धे कप्यसुन्ते वीराइ-नरजिणनरियाई सुत्तल्हणकालो जिणंतराई गणहरक्णणं वेरावली मामायारी य । बीए परिसिद्धे सामाइयपाटा गहणपारणविही । तद्या परिसिद्धे सावयावस्तय-(पिक्समण)सुन्तं मूल्याहजुन्तं भासापाटठाणेसु कोष्टुगदिष्णपाटं ।

एवंहवेण अणोरपारमिञ्जसित्ते एयम्म 'सुसागमे' विविद्यविस्थाणमपुरुवो संगद्दो । अभो जिल्पधम्मसहवं जिल्लासृहिं जणेहिं एस गंथो अवस्स पढेयध्यो । सज्हाएण णाणावरणीयकम्मलओ सुयणाणत्त्रणाणस्य य संख्दी भवद । णियय-सज्झायणिसेवणेण तवकम्मसहकढेण णाणस्स चरमानत्थास्त्रं परमणाणं पि मुलहं । अओ चेव वृत्तं 'णं सज्झायसमं तवो' ति जिवेएइ-

गजाणणभि. जोसीतिणामधिक्को, कव्यवेदंतपुराणतित्थो, साहि-चपण्णो, रहुमासाकोविजो (हिंदी सनद), पणवेलस्य 'हाईस्कूल' सक्कयपाइयअज्यावगो ।



तुलनात्मक अध्ययन

सीत्रिक--

- १ श्रीपपातिकस्त्रमें तपके १२ भेदोंका वर्णन एवं ठाणांगस्त्रके छठे ठाणे और भगवतीगत तप-वर्णन । 'वण्णओ जहा उवत्राइए' कई स्त्रोंमें मिलता है।
 - २ राज्यसेणइयमें सूर्याम एवं जीवाजीवामिगममें विजयदेवका वर्णन ।
- ३ पण्णवणाके बहुतसे पाठ सगवतीसूत्रानुगत हैं। सिद्धसंबंधी औपपातिकसूत्रकी बहुतसी गाथाएँ पण्णवणार्मे दृष्टिगत होती हैं।
 - ४ अंबुद्वायप्रक्रप्ति एवं स्थानांगस्थ्रके नवमस्थानगत पर्वत-द्रह्-नदी-नामादि ।
- ५ चंद्रप्रज्ञप्ति एवं सूर्यप्रज्ञप्तिके आरंभकममें थोबा सा भेद है शेव पाठ अक्षरकाः मिलता है।
 - ६ बृहत्करूपमें स्थानांग व्यवहार तथा निश्चीथके पाठ मिलते हैं।
- ७ दशाश्रुतस्कंधमें १-२-३-९ दशा समयायके अनुसार आचार-सम्पत् आदि स्थानागके अनुसार हैं। विशेषके लिए देखो टिप्पण।
 - ८ दशवैकालिक एवं आचारांगका पिंडेषणा-अध्ययन भाषा-अध्ययन (पण्ण-णास्त्रका भाषापद) पांच महावर्तोका वर्णन मिलना जुलता है, एवं आचारांग १०२४ गाथा ८ तथा दश० अ०८ गा० ६३ समान है।
 - ९ उनराध्ययनके २२ वें अध्ययनकी और दशवैकालिकके दूसरे अध्ययनकी अग्राक्षाएँ।
 - 🖁 १० नंदीस्त्र तथा समबायगत अंगसत्रोंका वर्णन ।
 - १९ अनुयोगद्वार-सात खर भाठ विभक्ति स्थानांगके अनुसार हैं।
 - १२ श्रावकावश्यक्में बारह त्रतोंके अतिचारादि उपासकदशाके प्रवम अध्ययनके सार हैं।
 - १३ कत्पस्त्र-महावीरचरित्र आचारांगके अनुसार, ऋषभचरित्र बंबुद्वीपप्रश्नतिके सार । दश्कुतस्कंषके ८ वें अध्ययनका परिचिष्ठ तो है ही ।
 - (नोट) स्थानांग एवं समवायांगके आधारसे कई सूत्र रचे गए हैं अतः उनके कई सूत्रोंमें पाए जाते हैं। अन्तकृशांगगत अतिमुक्तकृमारका शेष वर्णन वर्तीस्त्रमें है। और भी कई सूत्रोंके पाठोंमें साम्यता है। यहां तो मात्र कुछ । सा दिग्दर्शन कराया गया है।

वरीय--

- 🤋 जंगोंकी परसंख्या आरिमें बहुत कुछ समानती है ।
- वेसो पद्संडागम प्रथम भाग ।

२ प्रतिक्रमणमें नवकार मंत्र नैसा ही है केवल 'आयरियाणं'के बदले 'आइरि-याणं' बोलते हैं। 'इरियावहिया' 'तस्स उत्तरी'के पाठ मी कुछ अन्तरके साथ उसी प्रकार हैं। 'लोगस्स' का पाठ इस तरह है-

'कोयस्पुजोयगरे, धम्मतित्यंकरे जिणे वंदे । भरिहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव केवलिणो ॥'

'उसहमिजियं॰' शेष उसी प्रकार । 'मुबिहिं॰' वाली गाधामें 'तिजंस' के स्थानपर 'सेयंस' है । 'च जिणं' के स्थानपर 'भयवं' है । 'कुंधुं च जिणवरिंदं, अरं च मिहिं च मुक्वयं च निर्मे ।' शेष तहत् है । 'कोगस्स उसमा' की जगह 'कोग्रसमा जिणा सिद्धा' है । 'आरोगणाणलाई, दिंतु समाहिं च में बोहिं । चंदेहिं निम्मलयरा, आइ-बेहिं अहियं पयासंता । सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥' आदिमें थोड़ा सा अंतर है । 'चतारि मंगलं' का पाठ उसी मांति है । १२ वर्तों के अतिचार मी मिलते जुलते हैं । 'खामेमि सब्बे जीवा॰ 'के स्थानपर 'खम्मामि सब्बजीवाणं, सब्बे जीवा समंतु मे । मेत्ती मे सब्बभृदेशु, वेरं मज्वं न केणवि ॥'

३ 'धम्मो मंगलमुक्तिद्वं॰'की जगह 'धम्मो मंगलमुहिद्वं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तस्स पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥'

४ 'अयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए। जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्यं न वंघइ ॥ ८ ॥' की जगह 'बदं चरे जदं चिट्ठे, जदमासे जदं सये। जदं भुंजेज भासेज, एवं पावं न बज्झइ ॥' (मूलाचार)

(नोट) और भी बहुतसे पाठोंमें साम्यता है। विशेषके छिए दैगंबरीय धावध-प्रतिक्रमण देखें। इसके अतिरिक्त दिगंबरोंके कई प्रंथोंमें 'सुक्तागमे'के पाठोंका अनुकरण है।

वैदिक---

- १ 'एगं जाणइ से सब्बं जाणइ'-'आत्मनि विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति' ।
- २ 'अप्पा सो परमप्पा'-'अयमात्मा ब्रह्म' 'श्रष्टं ब्रह्माऽस्मि' 'तत्त्वमसि'।
- ३ 'णाणे पुण मियमा भारा'-'प्रज्ञानं ब्रह्म' ।
- ४ 'अपुणरानित्ति'-'न पुनरावर्तते' (यद्गत्वा न निवर्तते)।
- ५ 'एगे आया'-'एकोऽहं' 'एको ब्रह्म न'।
- ६ 'तका जत्य ण विजाई, मई तस्य ण गाहिया'---'यतो वाची निवर्तते, अप्राप्य मनसा सह ।'

- ७ 'मित्ती से सम्बम्एड'-'मित्रस्याहं चखुषा सर्वाणि भूतानि समीक्ये'।
- ८ 'अप्पा कता विकता य, हुद्दाण य सुद्दाण य ।'-'उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं, नात्मानमबसादयेत् ।'
- ९ 'अप्पा मित्तममित्तं च, दुपष्टियद्यपट्टिओ ।'-'आत्मैवात्मनो बंधुरात्मैव रिपु-रात्मनः ।'
- १० 'परिणामे बंघो, परिणामे मोक्खो'-'मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमी-क्षयोः ।' अथवा-'वायुनाऽऽनीयते मेघः, पुनस्तेनैव नीयते । मनसाऽऽनीयते कर्मे, पुनस्तेनैव नीयते ॥''
 - ११ "सासए लोए दम्बहुयाए'-'प्रकृतिः पुरुषश्चैन, उभवैते शाश्वते मते ।'
- १२ 'सएहिं परियाएहिं, लोगं ब्या कडेित य। तत्तं ते न वियाणंति, न विणासी कयाइ वि॥'-'न कर्नृत्वं न कर्माणि, लोकस्य स्जिति विसुः। न कर्मफलसंयोगः, स्वमावस्तु प्रवर्तते ॥'
- 9३ 'एवं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचणं ।'-'मा हिंस्या सर्वा भूतानि' 'मा हिंसी पुरुषं जगत् ।'
- १४ 'धम्मो मंगलमुक्किह्नं अहिसा॰'-'अहिंसा परमो घर्मः' । वैपीराणिक-
- ्र (१) श्रुतेश यावि प**रिवुद्ध**त्रीवी, नो वीससे पं**डि**य आश्चपण्णे । घोरा मुहुत्ता अवलं सरीर्र, भारंडपक्खीव चरंडप्पमत्तो ॥ ६ ॥ उत्तराध्ययन० अ०४॥
- या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जात्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥ महाभारत मी० अ०२६॥
 - (२) युहं बसायो जीवामो, जेसें मो णस्य कैचणं।
 मिहिलाए डज्यमाणीए, न मे डज्याइ किचणं॥ १४॥ उ० अ० ६॥
 मयुसं बत जीवामी, यस्य मे नास्ति किचन।
 मिथिलायां प्रशिप्तायां, न मे द्वाति किचन॥ ४॥ म० सां० अ० २६॥
 (३) पुढवी साली जवा चेन, हिरण्णं पद्यमिस्सह।
 पविपुण्णं जाळमेनस्स, इह विज्ञा तवं चरे॥ ४९॥ उ० अ० ६॥
 मराधिक्यां बीहिर्यनं, हिरण्णं पद्यानः विद्यः।
 सर्व तं नाळमेकस्य, सक्षादिद्यान्द्यमं चरेत्॥ ४४॥ म० अनु० अ० ९३॥

(४) जहेह सीहो व मियं गहाय, मण्चू नरं नेइ हु अंतकाले। न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥ २२ ॥ उ० अ० १३॥

तं पुत्रपञ्चसंपन्नं, व्यासक्तमनसं नरं । स्रप्तं व्याघ्रो मृगमिव, मृत्युरादाय गच्छति ॥ १८ ॥ म० शां० अ० १७५ ॥ (५) तं इक्कगं तुच्छमरीरगं से, विश्वगयं दहितं पावगेणं ।

भजा य पुत्ता वि य णायओ य, दायारमण्णं अणुसंकर्मति ॥ २५ ॥ उ० अ॰ १३ ॥

उत्सज्य विनिवर्तते, ज्ञानयः युद्धः सुताः ।
अपुष्पानफलान् वृक्षान्, यथा तातः पनित्रणः ॥ १०॥ म० उ० अ० ४०॥
(६) अन्भाह्यस्मि लोगस्मि, सन्दओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडंतीहिं. गिहंसि न रहं लमे ॥ २९ ॥ उ० अ० १४ ॥
एवमस्याहते लोके, ममंतात्परिवारिते ।
अमोघास्र पतंतीस्र, किं घीर इव भाषसे ॥ ७ ॥ म० शां० अ० १७५ ॥
(०) अलोलुयं मुहार्जाविं, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्यं गिहत्येस्र, तं वयं वृम माहणं ॥ २८ ॥ उ० अ० २५ ॥
निराशिषमनारंमं, निर्नमस्तारमस्तुतिम् ।
अक्षीणं क्षीणकर्माणं, तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥ ३४ ॥ म० शां० अ० २६३ ॥
(८) किण्हा णीला य कास य, तेस पम्हा तहेव म ।
मुक्केता य छद्धा म, णामाई तु जहक्षमं ॥ ३ ॥ उ० अ० ३४ ॥
पद्दर्जववणाः परमं प्रमाणं, इच्यो धूस्रो नीलमथास्य मध्यम् ।
एकं पुनः सह्यतरं सुखं द्व, हारिद्रवर्णं सुसुखं च शुक्रम् ॥ ३३ ॥ म०

बोद्धिक-

९ रायसेणइय-युक्तके समान दीवनिकायमें पायासी-युक्त मिलता है । मात्र योदा सा अंतर इस प्रकार है । यथा-पएसी-पायासी, केसीकुमार-कुमारकाश्यप, विक्त प्रधान-खत । एच्छाएँ और उनके उक्तर युक्ति प्रयुक्तिकों सहित बरावर से हैं । कंबोज देखके घोड़ोंकी बात जो 'रायपसेणइय' में है वह 'पायासी-युक्त' में नहीं है । इसी प्रकार स्थानदेवकृत नाळ्यरवनाएँ भी नहीं है । माबी वर्णनमें सी मेद है। बौद्धोंने 'रायपसेणइय' का कितना अनुसरण किया है इसका पूरा हाल दोनों सुत्रोंका अध्ययन करने से ही ज्ञात हो सकता है।

२ उत्तराष्ययनस्वकी बहुतची गायाएँ शान्दिक परिवर्तनके साथ धम्मपद्में पाई जाती हैं। जहां कुछ परिवर्तन भी है वह केवल नाम मात्र है, परन्तु विषय वर्षामें कोई अन्तर नहीं है।

उदाहरणार्थ---

(१-४) अकोसिजा परे भिक्खं, न तेसिं पिडसंजले। मरिसो होइ वालाणं, नम्हा भिक्ख् न संजले॥ २४॥ उ० २०० २॥

एवं २५-२६-२७ वीं गायाओंके स्थानपर घम्मपद् में निम्निक्खित गायाएँ पाई जानी हैं-पठवी नमी नो विरुद्धात, इन्दबील्एमो तादि सुक्बती। रहदोऽव अपेनकहमो, संसारा न भवन्ति नादिनो ॥ ६ ॥ घ० अरिहंतवमा ॥ खंती परमं नपो निनिक्खा, निब्बाणं परमं वदन्ति बुद्धा । न हि पब्बिजतो परूपवाती, समणो होति परं विहेठवन्तो ॥ ६ ॥ घ० बुद्धवग्ग ॥ सुत्वा रुसिनो बहुं, वाचं समणाणं पुथुवचनानं । फरुसेन ने न परिवज्ञा, निह संतो परिसेनि करोति ॥ ९३२ ॥ मुर्तानपात ॥ न ब्राह्मणस्स पहरेय्य, नास्स मुखेथ ब्राह्मणो । घी ब्राह्मणस्स इन्तारं, नतो घि यस्स मुख्येस ॥ ७ ॥ घ० व० २६ ॥

(५) जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥ ३४॥ उ० अ० ६॥
यो सहस्सं सहस्सेन, संगामे मानुसे जिने।
एकं च जेप्यमत्तानं, स वे संगामञ्जत्तमो ॥ ४ ॥ अ० सहस्सवग्ग ॥
(६) मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेणं तु मुंजए।
न सो स्वयन्तायधम्मस्स, कलं अक्ष्य सोलसि ॥ ४४॥ उ० अ० ६॥
मासे मासे कुसग्गेनं, बालो मुजेब भोजनं।
न सो संसत्धम्मानं, कलं अक्षति सोलसि ॥ १९॥ व० बालवग्ग ॥
(५) जहा परुमं जले जायं, नोबकिप्यइ बारिणा।
एवं अक्रितं कामेहिं, तं वयं बूस माहणं॥ २०॥ द० अ० २५॥

१ देखो दीचनिकाय M. T. W. राइस देवित द्वारा सम्पादित पाली टेक्स्ट साइटी द्वारा प्रकाशित ए० ३१६ से ३५८ पायाची-सुर्ग । द्विचीमाचामाची हुल संक्रसायन द्वारा अनुवादित महाबोदि प्रथमाकाकी और से प्रकाशित वनिकाय ए० १९९ से २११ तक पायाची-राजम्मसुर्ग देखें।

वारि पोक्सरपत्तेव. आरम्गेरिय सासपो । यो न लिम्पति कामेश्च, तमहं क्रुमि ब्राह्मणं ॥ १९ ॥ ४० ब्राह्मणवस्य ॥ (८) अहिला पुष्यसंजीगं, नाइसंगे य बंधवे। जो न सज्जइ मोगेसु, तं वयं बूम माहुणं ॥ २९ ॥ उ० अ० २५ ॥ सञ्बसञ्जोजनं छेत्वा, यो वे न परिनस्सति । संगातिगं विसञ्जूनं तमहं क्र्रामे ब्राह्मणं ॥ १५ ॥ घ० व० २६ ॥ (%) एए पाउकरे बुद्धे, जेहि होइ सिणायओं । सब्दक्रमविणिम्मुकं, तं दयं वृम माहुणं ॥ ३४ ॥ उ० अ० २५ ॥ उसभं प्वरं थीरं, महेसिं बिजिताविनं । अनेजं नहातकं बुद्धं, तमहं ब्रुमि त्राह्मणं ॥ ४० ॥ ४० व० २५ ॥ (१०) अप्पा मित्तममितं च०॥ ३७॥ उ० ४० २०॥ असना' व कर्न पापं, असना संकिलिस्सति । अत्तना अकर्त पार्प, अत्तना' व विसुज्यति ॥ मुद्धिअमुद्धिपत्रतं, नञ्जो अञ्जं विसोधये ॥ ९ ॥ ५० अत्तवस्य ॥ ३ चिनमंभूनिजातक उत्तराध्ययनसूत्रके १३ वें अध्ययनके अनुसार है। ४ अंगुत्तरनिकायमें उत्तराध्ययनसूत्रके १६ वें अध्ययनके 'नो निसांधे इत्थीणं क्यंतरंति वा॰' के ममान पाठ मिलता है जैसे कि-'अपि च स्तो मीतुगामस्स महं सुणाति तिरो कुट्टा वा तिरो परकारा वा इसंतिया वा भणंतिया वा गार्थ-तिया वा रोदंतिया वा सो तदस्साहेति तिककामेति तेन च विति आपजाति इदंपि सो त्रदाचारियस्स सण्डंपि छिदंपि वा सबलंपि वा कम्मासंपि अयं वुर्वात · · न परिमुखति दुक्खस्माति वदामि । अंगु • ७ वस्म ५ । ५ उत्तराध्ययनसूत्रके १८ वें अध्ययनमें वर्णित चार प्रत्येक्तुद्वोंकी कथाओंके समान क्रेमारजातकमें भी कुछ रूपान्तरके साथ चारों कथाएँ मिलती हैं।

मूल गाथाओंकी तुलना-

करकंड् कलिंगेषु, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गंधारेषु य णमाई ॥ ४६ ॥ उ० अ० १८ ॥ करकण्ड्र नाम कलिंगानां, गन्धारानाध नगाती । नमिराजा विदेहानां, पंचालानाध दुम्मुसो ॥ एए नरिंद्वसभा, निक्संता जिणसासणे ।

१ निजीयगत माउग्गाम श्रन्दका सनुकरण है।

पुत्ते रखे ठविताणं, सामण्ये पजुवद्विया ॥ ४० ॥ ४० ८० ९८ ॥ एते रह्या निहित्वान, पम्बज्जिस अर्कियना ॥ ५ ॥ कुंभारजातक ॥ मासूम होता है एक पद जानकर छोड़ दिया गया है ।

(नोट) इसके श्रातिरिक्त बौद्धप्रंथोंमें और मी जैनसाहित्यका बहुतमा अनु-करण है।

भाषात्मक-साम्य

वैदिक-

9 अर्थमामधीमें 'ऋ' के स्थानमें 'उ' होता है, जैसे-स्पृष्ट=पुष्ठ, उसी प्रकार वेद में भी, बैसे-कृत=कुठ (ऋग्वेद १, ४६, ४)।

२ अर्धमागधीमें कितनेक स्थानीपर एक व्यंजनका छोप होकर पूर्वका इस्तस्यर रीघे होता है, जैसे-पर्यति=पासइ, उसी प्रकार वेदमें भी, जैसे-दुर्लभ=द्लभ (ऋ॰४,९,८), दुर्णोश=दूणाश (शुक्र्यजुःप्रातिशास्य ३,४३)।

३ अधमागधीमें शब्दके अन्त्य व्यंत्रनका लोप होता है, असे-ताबत्=ताब, उसी प्रकार वेदमें भी, जैसे-पश्चान्=पद्या, (अथवंसंहिता १०, ४, ११), उचान्= उचा (तैतिरीयसंहिता २, ३, १४), मीचान्=नीचा, (तै० १, २, १४)।

साम्य अर्धमागधी वैदिक

४ संयुक्त य-र-का लोप श्याम≔साम श्याच=त्रिच (शत० १, ३, ३, ३३) प्रगत्भ=फाञ्भ अग्रगत्भ=अफाल्म (तै०४,५,६९)

५ संयुक्त वर्णका पूर्व आस=अंब असात्र=असत्र (ऋ•३,३६,४) स्वर् इस्व

रोदसीप्रा=रोदसिमा (ऋ०१०,८८,१०)

६ 'व' को 'ब' रण्ड=डंड तुर्देभ=ब्डम (बाजसनेविसं० ३, ३६)

पुरोदाश=पुरोदाश (ग्रु॰ ३, ४४)

७ 'भ' को 'ह' वाशा≔वाहा प्रतिसंधाय≔प्रतिसंहाय (गोपथ २, ४)

< संयुक्त व्यंत्रकोंमें क्षिष्ट=किलिङ्क सर्वाः=हवर्गः (तै॰ ४, २, ३)

स्तरका आगम

तन्यः=त्तुयः (तै० बा॰ ७, २२, १; ६, २, ७) ९ प्रथमाके एकवचतर्ये जिलो संसाधरो अजाजत (ऋ० सं० १०, १९०, ६)

'मो' सो चित् (१६० छं० १, १५९, ३००१३)

- १० तृतीयाके बहुवचनमें देवेहि देवेभिः 'हि' के अनुरूप 'भि'
 - ११ चतुर्थीके स्थानमें जिनाय≔जिणस्स चतुर्थ्यें बहुलं छंदसि (पाणिनि० षष्ठी २,३,६२)
 - १२ पंचमीके एकवचनमें 'त्' का लोप जिणा टचा
 - १३ द्विवचनके स्थानमें देवी=देवा इन्द्रावरुणी=इन्द्रावरुणा बहुवचन
- (नोट) इसके अतिरिक्त ऋग्वेद आदिमें प्रयुक्त वंक, वहू, मेह, पुराण इत्यादि शब्द समान हैं।

संस्कृत-

बहुतसे शब्द अर्थमागधी और संस्कृतमें समान पाए जाते हैं। जैसे-'आगम' 'उडा' 'डिम्म' 'उड़ा' इत्यादि।

पाछि---

- ९ 'कम्म' 'धम्म' शब्दके तृतीयाके एकवचनमें 'कम्मुणा' 'धम्मुणा' दोनोंमें होता है।
- २ अर्धमागघीकी तरह पालिमें भी भूतकालके बहुवचनमें 'इंसु' प्रत्यय लगता है, जैसे-गच्छिस इत्यादि ।
 - ३ षष्टीकं स्थानमें 'स्य' के स्थानमें दोनोंमें 'स्स' होता है।
 - (नोट) इसके अतिरिक्त बहुतसी बातोंमें समानता पाई जाती है।

शौरसेनी--

अर्थमागधी और शौरसेनीमें भी बहुतसी समानता है, केवल अर्थमागधीमें जहां 'त' और 'द' का लोप होता है वहां शौरसेनीमें 'द' होता है, जैसे-गच्छइ=गच्छदि, जया=जदा। 'ह' के स्थानमें 'घ' जैसे-माह=नाध।

महाराष्ट्री-

अर्धमागधीमें तथा महाराष्ट्रीमें बहुतसा साम्य है, विक्खल आदि बहुतसे शब्द तथा 'ऊज' प्रत्य दोनोंमें पाए जाते हैं। विशेषताके लिए देखी 'छत्तागमे' प्रथममागकी प्रस्तावना।

े देशीय-भाषा			
हिंदी	अर्घमागधी	हिंदी	
•	भज	आज (गुजराती 'आजे')	
	कोइ	कोई ,,	
	गुलिया	गोली ,,	
	घर	घर (,,'घेर')	
	जोव्वण	जोबन ं,,	
	रस्सी	रस्सी	
	सोरह	सोरठ ,,	
(नोट) इसके अति।		अर्धमागधी के शब्द हिंदीमें	
प्रचलित हैं।	G	• •	
गुजराती	अर्घमागधी	गुजराती	
•	अगला	आगिखयो	
	आहीरी	आहीरण	
	उग्घाड	उघाडवुं	
	उत्तरंग	ओतर्ग	
	एकक	एकलो	
	कवेलु	कवर्लु (निक्युं)	
	जाणिकण	जाणीने	
	णत्थ	नथी	
	तु ञ्स	রুজ	
	पडइ	पडे छे	
	ब दावेड्	वश्रावे के	
	व हू सं क ल	बहु	
	चेमर चेमर	सौंकळ (हिंबी) संभार बुं	
	स द्ध रो	यमार्यु ससरो	
	वि यास		
	- 40 19 177	सियाळ (हिंदी 'सियार')	
	हेहा	हे ठ	
(नोट) ये तो आधुनिक गुजराती के उदाहरण हैं। प्राचीन गुजराती तो अर्थमागधीसे मिलते जुलते शन्दोंसे भरी पड़ी है।			

पंजाबी	अर्घमागधी	पंजाबी
	कम्म	कम्म
	ভা জ	শ জ
	चरम	चम्म
	हरू	53
	नस्य	नस्य
	कक्ख	कनस (इत्यादि)

(नोट) इसी प्रकार और भी बहुतसी भाषाओंने अर्धमागधीका अनुकरण किया है, जैसे-मायर-पियर=मादर-पिदर (फारसी)। इंग्लिशमें ज़रा और बदल-कर मदर-फ़ादर हो गया है।

येतिहा/सक-

हिंदुओं में सबसे प्राचीन वेद माने जाते हैं उनमें भी तीर्थंकरोंका उक्केस पाया जाता है। जैसे कि 'ॐ कैलोक्यप्रतिष्ठितानां चतुर्विशतितीर्थंकराणां अध्यक्षकादि-वर्षमानान्तानां सिद्धानां शरणं प्रपद्ये। ऋग्वेद अ० २५ । इसके अतिरिक्त २-२, २-३-१, २-३-३, ७-१८, १०-२२, १०-९९-७, देखें।

अक्ष रक्ष **अरिप्रनेक्षिः** स्वाहाः, सोऽम्माकं अरिष्टनेमिः । यजुर्नेद अ॰ २५ ।

ॐ नमोऽर्हन्तो ऋषमो वा ॐ ऋषभं पवित्रम् । यजु० अ० २'२ मंत्र १९ । ॐ खस्ति न इंद्रो इद्धथ्रताः खस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । खस्ति नन्ताक्ष्मौं अरिएनेमिः स्वन्ति नो वृहस्पतिर्दधानु । ऋ० अ० ९ अ० ६ । पौराणिक—

नाऽहं रामो न में बाञ्छा, न च भोगेषु में मनः । केवलं शांतिमिच्छामि, खात्मनीब जिनो यथा ॥ योग॰ मुमुखु॰ अ॰ अ॰ ॥ 'जैना एकस्मिनेब वस्तुनि उभये निरूपयंति' । प्रभासपुराण ।

दर्शनबर्त्भवीराणां, सुरासुरनमस्कृतः । नीतित्रित्तमकर्ता यो, युगादौ प्रथमो जिनः ॥ मतु० ॥ नाभिस्तु जनयेत् पुत्रं, सर्वदेश्यां सहाद्युति । ऋषमं क्षत्रियं ज्येष्टं, सर्वक्षत्रियपूर्वजम् ॥ अद्यपु० ॥ •••••नीरागीषु जिनो विमुक्तकरमार्सनो न वस्मास्परः ॥ अद्यपु० ॥ प्रथमं ऋषभो देवो. जैनधर्मप्रवर्तकः ।

जैनवर्मस्य विस्तारं, कृतवान् जगतीतले ॥ श्रीमालपुराण ॥ हत्ते पात्रं दशानाश्च, तंहे वस्त्रस्य भारकाः ।

अक्रिमान्येव वासांसि, घारयन्तोऽरूपभाविणः ॥ २५ ॥ शिवपु • अ • २१ ॥ श्रीमालपुराजके ७३ वें अध्यायका ३३ वो क्लोक भी इससे मिलता जुलता है। बुदके कई प्रश्नोमें ना(श-ट)तपुत्त-महाबीरका नाम जाता है परन्तु सुत्रोमें बुदका नाम नहीं है। कारण जैनधर्म बुद्ध धर्मसे प्राचीन है। न्यायवर्शनमें--

- १ आगमोंके अनुसार न्यायमृत्र, विप्रहृष्यावर्तनी, उपायहृदय (बाँद) मी बार प्रमाण मानते हैं।
 - २ पूर्ववन्के उदाहरणमें 'माया पुत्तं जहा णहुं, जुक्कां पुषरागयं। काइ पनामजाणेजा. पुब्बस्मिंगण केणइ ॥ तंत्रहा-खतेण वा वण्णेण वा लंखणेण वा मसेण वा तिलएण वा' (अनुयोगद्वार) जैसा ही उदाहरण उपायहदय में भी मिलता है। यथा-वडंगुलि सपिडगमुर्घानं बालं हुटा पक्षाहुद्धं बहुश्रुतं देवदतं हुट्टा षडंगुलिस्मरणात् सोऽयमिति पूर्ववत् ।
 - ३ 'जहा एगो पुरिसो तहा वहवे पुरिसा' (अनुयोग॰) ऐसा ही उदाहरण ाठर और गौडपादने भी दिया है, यथा-पुष्पिनाम्बदर्शनात्, अन्यत्र पुष्पिता क्षा इति । इत्यादि ।

वैकानिक-

हैं विकास द्वारा सीहत आगसिक सिद्धान्त

- ९ आगर्मोमें कहा है कि शब्द (sound) जद मूर्तिमान और खोकके अन्त क प्रशाहित होने वाला है, आजके विशानने भी प्रामोफोन और रेडियो का आवि-कार करके वह सिद्ध कर दिया है।
- २ आकारांगस्त्रमं बनस्पतिमं जीवांका अस्तित्व बताने के स्टिए निज्ञ छञ्चाणादिए 'आइथम्मर्य' उत्पन्न होनेवाला है, 'बुड्डियम्मर्य' इसके ऋरीरमें इदि होती है, वित्तमंतर्यं चैतन्य है, 'छिकं सिलाइ' काटने पर सूच जाता है, 'बाहारमं' भाहार महण करता है, 'अणिवर्व' 'असासवें' इसका शरीर भी अलिख और अशासत ं चओवचइवं' इसके शरीरमें भी घट बढ़ होती रहती है। सुप्रसिद्ध देशानिक गरीशनंद वसु ने अपने परीक्षणों द्वारा उपरोक्त सब सक्षण विद किए हैं जिसे मस्त वैकानिक लोग मान बुके हैं।
 - १ मानमीन समस्त इंट्योंको समादिमाना है। इसी बातको प्रतिक प्राणीताकः

वेता J. B. S. हॉल्डनने भी माना है, वे कहते हैं कि मेरे विचारमें जगत्की कोई आदि नहीं है।

४ जैनधमें किसीको सृष्टिका कर्ता हर्ता नहीं मानता, इसे आजका विज्ञान भी स्वीकार करता है।

५ शब्द-ज्योति-ताप और आतपको आगमने पुदूल कहा है जिसे विज्ञानने भी मेटर Matter के रूपमें मान लिया है। और इसे भी खीकार किया है कि ये सब पुदूल-द्रव्यके पर्यायविशेष हैं।

६ प्रसिद्ध भूगर्भ-वैज्ञानिक फांसिस अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक Ten years under earth में लिखते हैं कि मैंने पृष्ठिविक ऐसे ऐसे रूप देखे हैं जिनसे पृथिविमें जीवत्वक्सिक्त प्रतीत होती है। अभी तक वे निश्चय पर नहीं पहुँच सके परन्तु आगर्मोने तो स्पष्ट कहा है कि पृथ्वीकायमें जीव है।

अस्थानांग स्त्र ५-२-३ में आता है कि स्त्री बिना संयोगके भी शुक्र पुद्रल घरण कर गर्भवती हो सकती है। आधुनिक विज्ञानवेत्राओंने भी कृत्रिम गर्भावान हारा इसे सिद्ध कर दिया है।

८ आगम पदार्थकी अनीश्वरता और आत्माकी अजर-अमरता बनाते हैं, जिसे सुविख्यात वैज्ञानिक डाल्टन (Dalton) ने Law of conservation द्वारा सिद्ध कर दिखाया है। परन्तु आत्माकी तह तक विज्ञान अब तक नहीं पहुँच सका।

 भगवान् महावीरके गर्भस्थानान्तरण को कई लोग असंभव मानते हैं जिसे प्राणीशास्त्रवेत्ता डॉ. चांग ने बोस्टन विश्वविद्यालयकी जैन रसायनशालामें गर्भस्थानांतरण-परीक्षणों द्वारा सिद्ध किया है। अमेरिकन हिरनीके गर्भबीजको एक अंग्रेज़ी हिरनीके गर्भाशयमें स्थानान्तरित करनेमें उन्हें सफलता भी मिली है।

१० आगम कहते हैं कि द्रव्याधिकनय की अपेक्षा न कोई द्रव्य घटता है न यहता है जो रूपान्तर होता है वह उसका पर्याय है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि कोई पुद्रल (Matter) नष्ट नहीं होता, केवल दूसरे रूप (Form) में बदल जाता है। वे लोग इसे Principle of Conservation of Mass and Energy कहते हैं।

१९ आगम मानते हैं कि पानीकी एक बूंदमें असंख्य जीव होते हैं। वैशानि-कोंने भी स्कुमवीक्षण यंत्र द्वारा पानीकी एक बूंदमें २६००० से भी अधिक जीव केंसे हैं और यह भी मानते हैं कि बहुतसे जीव ऐसे हैं जो स्क्मवीक्षणयंत्र द्वारा भी नहीं देखे जा सकते । देखो 'हाई निकोलको मिकोप्स बाई द मिलियन पैनियन द्वारा १९४५ में प्रकाशित' ।

१२ मगवान् महावीरने पुत्रलकी अपरिमेय शक्ति वताई है, जिसे आजके विज्ञानने 'एटमवम' 'अणुवम' 'उद्जनवम' आदिसे सिद्ध कर दिखाया है।

१३ जैनशालानुसार लोहेका सोनेमें परिवर्तन करना संभव है जिसे विज्ञानने भी खीकार किया है कि सोनेक एक परमाणुमें ७९ प्रोट्रोन्स (Protrons) और लोहेके परमाणुमें ३६ प्रोट्रोन्स होते हैं, यदि दोनोंकी संख्या किसी प्रकार सम कर दी जाय तो वह सोनेका परमाणु हो सकता है।

१४ ध्यान और योगसंबंधी सिद्धान्त के लिए डा. प्रे वाल्टरकी The living

brain नामक पुस्तक देखें।

9५ प्रसिद्ध वैज्ञानिक आस्टाइनका 'ध्योरी ऑफ रिलेटिविटी' स्याद्वादसे ब्रह्मतसा साम्य रखना है ।

१६ विज्ञानने जीव, पुद्रल, आकाश (Space), काल (Time) और

कर्मास्तिकायको भी 'ईथर' के रूपमें माना है।

९७ आगम कहते हैं कि परमाणुं पुरूल कभी स्थिर और कभी चल रहता । वैज्ञानिकोंने भी 'हाइड्रोजन' के एलेक्ट्रोनको बाहिर और भीतरके इत्तमें किथित काल तक चल विचल होते देखा है।

१८ आगमों में परमाणु अनन्त प्रकारके और अत्यन्त सूक्ष्म कहे हैं, वैज्ञानिक नन्तता तक तो नहीं पहुंच सके फिर भी उन्होंने १४ प्राष्ट्रमरी पारटीकलस् ने हैं। और वे यह खीकार करते हैं कि Primary Particles इतने में हैं कि उनमेंसे कइयोंको वे महाशक्तिशाली यंत्रों द्वारा भी नहीं देख सके। १९ प्रीवोंका उत्पत्ति स्थान मृत शरीर (अन्तरमुदूर्नके बाद) जीवित प्राणीका और पुद्रल भी हो सकता है ऐसा जैन शास्त्र मानते हैं। जिसे किसी अपेन्से चौथी हाइपोधिसिस (Hypothesis IV) द्वारा वैज्ञानिकोंने भी कार किया है।

२० शाओं में वर्णित अवगाहना आदि को कई लोग असंभव सानते हैं, उन्हें जनवरी १९५४ के **स्वंडे स्टेण्डर्डमें रेडिपशानके बारेमें फ्रेंक खेळेंजर** रा लिखित छेख देखना चाहिए। रेडिएशनसे प्रतिवर्ष सवा इंचके हिसाबसे गाई में इदि बताई है। यदि अवसर्पिणीके छठे आरेका मनुष्य उत्सर्पिणीके मा काल तक जिसका अंतर १० कोडाकोड़ी सागरोपम होता है तीन गाळकी अवगाहना वाला हो तो कोई आश्चर्य नहीं। आगम मानते हैं कि मनुष्यके संस्थान, संहनन, आयुष्य, अवगाहना, भूमिके वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदिमें अवसर्पिजी कालमें हास और उत्सर्पिणीकालमें कमशः बृद्धि होती है। इसके लिए मार्टिनिज़ द्वारा लिखित 'विचित्र रेक्टिएशन एवं उनका आश्चर्यकारक प्रभाव' नामक लेख देखें। (नोट) ऐसे अनेक तथ्य हैं जिनको विज्ञानने स्वीकार किया है। और कई तथ्यों तक तो वह अभी पहुंच भी नहीं सका है। सच है कहां जकवादी विज्ञान और कहां अध्यात्मवादी आगम! दोनोंमें ज़र्मान आस्मानका अंतर है।



णमोऽत्यु णं समणस्स मगवनो णायपुत्तमहावीरस्स संपादकीय

जैनधर्म क्या है !—'जि' जये धातुसे 'इणसिन्जिदीकुर्यिविभ्यो नक्' नक् प्रत्ययान्त होकर 'जिन' शब्दसे 'जैन' बना है अर्थान् 'रागादिशत्रून् जयसीति जिनः' आन्तिरिक रागद्देष और कर्मादि शत्रुओंका विजेता 'जिन' कहलाता है और उसके अनुगामी जैन हैं। जिनके 'जगत्प्रभु' जगत्के प्रभु, 'सर्वक्र' सर्व पदार्थोंके ज्ञाता, 'त्रिकालविद्' तीनों कालकी अवस्थाओंके जानने वाले, 'देवाधिदेन' देवोंके सर्वोपिर देव आदि गुणवाचक बहुतसे विशेषण हैं। इसके अतिरिक्त 'साधु साध्वी श्रावक श्राविका' इन चारों तीर्थोंके संस्थापक होने से 'तीर्थकर' या 'तीर्थकर' कहलाते हैं। केवलज्ञान होनेसे 'केवली' और 'अर्हन्' मी हैं। इनका प्रतिपादन किया हुआ धर्म जैनधर्म कहलाता है।

जनधर्म अनादि है, इसकी प्राचीनताके प्रमाण 'तुलनात्मक अध्ययन' के ऐतिहासिक प्रकरणमें देखें।

जैनधर्मकी मान्यता—इस दश्यमान सृष्टिमें जो भी वस्तु आदि इन्द्रियों द्वारा अथवा अतींद्विय ज्ञानसे जानी जाती हैं या दृष्टिगोचर होती हैं, उनके दो विभाग हैं जब और चेतन; जबमें जीव नहीं है और चेतन जीव है। जीवोंकी गणना संख्यात सीर असंख्यात से नहीं बल्के अनन्तसे हैं। जीव भी दो प्रकारके हैं—एक कमेंसे मुक्त अर्थात सिद्ध, दूसरे संसारी। इन संसारी जीवोंके अनेक रितिसे अनेक भेद हैं। सबमें समान जीवत्व होने पर भी जब पदार्थके साथ उनका किसी अंग्रोमें संबंध होनेके कारण वे नए २ रूपमें दिखते हैं। उन संसारी जीवोंके चार भाग हें—नारक, तिर्मेच, मनुष्य और देव। नारकीय जीव अपने पापोंका फल अधीलोकमें और देव अपने पुण्यका फल खर्गलोकमें भोगते हैं। इस मर्खलोकमें मनुष्य पर्याय सबसे श्रेष्ठ है। तिर्मेच पंचिद्रियके पांच मेद हैं— जलवर (पानी में रहने वाले मच्छ कच्छादि), स्थलचर (भूमिपर चलने वाले गाय भैस वकरी आदि), केचर (आकाश्रमें उन्हें वाले पड़ी कबृतर आदि), उरपुर (छातीसे रेंग कर चलने वाले सर्पादि), भुजपुर (भुजासे चलने वाले नेवला संदर आदि)। ये सब चलने फिरने वाले अस जीव (जंगम) कहलाते हैं। इनके अति-रिक्त पुण्यी पानी अग्नि वायु और वनस्पतिके जीव स्थावर हैं। ये इतने स्क्म हैं

१ जीवपन्नवा णं भंते! कि संख्या असंख्या अणंता? गीयमा! नी संख्या, नो असंख्या, अणंता। 'पण्णवणा' पांचवां पद, ३०९ प्रष्ठ।

कि इंद्रियोंके भी अगोचर हैं। वनस्पतिका 'निगोद' नामक एक विभाग है, जिसमें सृष्ट्रिके अग्रभाग जिनने बारीक स्थानमें भी अनन्त जीव हैं। कर्मीका आवरण होनेके कारण ये जीव संसारी कहलाते हैं। अन्यजीव योग्य सामग्री और संयोग मिलनेपर मनुष्यगतिको पाकर फिर कर्मीका सर्वथा निकंदन करके मोक्षको प्राप्त होना है। मोक्ष होने पर आत्मा अगुनराष्ट्रित अवस्थाको पाना है।

जैनोंकी दृष्टिमें जगत् अनादि अनंत हैं, इसकी रचना करनेवाला कोई नहीं है *। और अन्यमतावलंबी भी यही मानते हैं कि "नामतो जायते भावो, नाभाबो जायते सनः।" अर्थात् "असत्की उत्पत्ति नहीं होती और मत्का गर्वथा अभाव नहीं होता।"

जैनधर्म ईश्वरको कर्ना हर्ता नहीं मानता । वास्तवमें 'परिक्षीणयकलकर्मा ईश्वरः' अर्थात् समस्त कर्म क्षय होने पर आन्मा ही ईश्वर अवस्थाको प्राप्त होता है । अथवा यों कहिए कि आत्माका गुद्ध खरूप ही परमात्मा है ।

जैनधर्म जीवके द्वारा किए गए कर्मीका फल 'किसी अन्य शक्ति द्वारा सिलना है' ऐमा नहीं मानता । जो जैसा कमें करता है उसे कमें द्वारा वैसा ही फल मिलता हैं। जैसे मदान बनाने वाला मनुष्य अपने मदान बनानेके कर्मसे अपने आप समनल भूमिसे ऊँचा उठता जाता है, बुतुबमीनार पर चढने बाला व्यक्ति बढ़ना हुआ अपने आप ऊँचा चला जाता है, इसी प्रकार उत्तम क्षमा दशा सत्यादि उत्तम साधनका कर्ना अपने आप खर्मादि उत्तम गतिको पाना है । ऐसे ही जो ज्ञीन खोदनेवाला मनुष्य जितनी ज्मीन खोदता है वह उतना ही समतल भूमिसे नीचा होना चला जाता है, इसी तरह पाफ्कर्म करने वाला जीव अपने आप हिंगा असत्य द्रोह दगा आदि अञ्भक्तिके निमित्तसे अध्य गतिको प्राप्त होता है । यदि मनुष्य दुग्धादि पौष्टिक पदार्थीका सेवन करता है तो उन पदार्थोंके द्वारा अपने आप शरीर सुंदर और सुदद हो जाना है, इसी विधिसे शुभ प्रकृतियोंका स्वजन करने बाला अनेक श्रूभसंयोगीको प्राप्त करता है। विष मक्षण करनेवाला प्राणी उस विषके प्रयोगसे अपने आप गर जाता है, धतुरा खानेवाला मुर्छित हो जाता है, कारण वस्तका खभाव अपना काम करता है। जैसे पानी अपने स्वाभाविक गुणसे स्वयं नीचेका मार्ग पक्तता है तब घुआँ या आगकी ज्वालाओंको अपने आप कर्ष्वगामी होते देखा जाता है। आत्मा और पुद्रल

^{* &#}x27;'अनाचनिघने द्रब्ये, स्वपर्यायाः प्रतिसणम् । उन्मजन्ति निमक्कन्ति, जसक्क्ष्लोस्वक्रके ॥ भा० प० ॥

अनंतकालसे एक दूसरेके साथ संयुक्त रहते हुए भी आत्मा पुद्रलब्प और पुद्रल आत्मारूप नहीं हुआ, न होता है और न होगा। कारण वस्तु अपने स्वभावमें सदैव स्थिर है।

स्याद्वाद् - जैन धर्मकी सबसे बड़ी विशेषता स्याद्वाद है। पदार्थमें रहे हुए विभिन्न गुणोंको सापेक्षतया स्वीकार करना 'स्याद्वाद' है। जैसे कोई व्यक्ति अपने पुत्रकी अपेक्षासे पिता है एवं पिता की अपेक्षासे पुत्र है, और भी कई अपेक्षाओंसे उमकी कई संज्ञाएँ हैं। इसी प्रकार स्याद्वादकी दृष्टिसे द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा लोक नित्य है और पर्यायार्थिक नयकी दृष्टिसे लोक अनित्य है। अध्या मों कहिए कि 'षड़दर्शन जिन अंग भणीजे' अर्थात् स्याद्वादक्पी समुद्रमें अलग २ मतरूप नदिएं आकर अमेदरूप होकर मिलती हैं।

अहिंसा—अहिंसाका स्थ्म विवेचन जितना जैनधर्में है उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता । अहिंसाकी माधनासे ही भारतवर्षको खनंत्रता प्राप्त हुई है, जिसे वेखकर शनैः २ आजकी दुनिया उसकी ओर आकर्षित होकर प्रगतिश्रील हो रही है । जैनधर्म मानता है कि "सक्ते जीवा पियाउया०" "सब्दे जीवा वि इच्छंति, जीविंड न मरिज्जिडं 10" Live and let live. Not Killing is Living. इसके अतिरिक्त जैनधर्म मत्य, अचीर्य, ब्रह्म-चर्य, अपरिप्रह, संयम, तप और त्याग पर भी पूरा २ भार देता है ।

जैनधर्म सेद्धान्तिक दृष्टिसे जातिवाद और छूतछानको नहीं मानता "कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खित्रओ० ॥" अर्थान् ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि सब कर्मा-नुसार हैं जन्मसे नहीं। हरिकेशसुनि जैसे शूद्रजातीय मी-देवेंकि पूजनीय थे।

स्त्रीके समानाधिकार—चतुर्विध सेघमें जहां साधु और श्रावकका स्थान है वहां साध्वी और श्राविकाका मी । चंदनवाला आदि कई महासितयोंने मुक्ति प्राप्त की है।

जैनागर्मोर्ने वर्णित गणतंत्रके आघार पर ही आजके गणतंत्रकी उत्पक्ति हुई है।

शाल और किया-जैनधर्म 'शानकियाभ्यां मोक्षः' अर्थात् शान के द्वारा वस्तुका तथ्य जानकर उसी भाँति आवरण (किया) द्वारा मोक्ष मानता है।

आगम कहते हैं कि 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा'—जो कर्म-ग्रह होते हैं वे ही धर्मश्रह होते हैं।

बाह्य युद्धका निवेष-'अव्यवामेव मुख्याहि, कि ते बुज्येज

बज्यभो । अप्पाणमेच अप्पाणं, जइता सुहमेह्य ॥' बहरी बुदें से कुछ न होगा आंतरिक युद्ध करके आंतरिक शत्रुओंपर निवय पाओ तब ही सचे ग्रसकी प्राप्ति होगी । इसी प्रकार जैन धर्म आत्म-दमन पर ही जोर देता है-'अप्पा चेव दमेयक्वो, अप्पा दु खलु दुहमो । अप्पा दंतो सुही होइ, अस्ति लोप परत्थ य ॥'

कर्मसिद्धान्त — जैनवर्ममें आठ कर्म माने हैं । ज्ञानावरणीय (यह जीवके ज्ञान पर आवरणस्य है जैसे वादल स्यंको ढेंक छेता है), द्र्याना-वरणीय (जो जीवकी दर्शनशिकको ढेंकता है जैसे द्वीन किसीको राजासे मिलनेमें विद्य करता है), वेदनीय (जो सुख दु:स्वक अनुभव कराता है, सातावेदनीय शहदलिय तलवारके समान और असातावेदनीय विष्ठिम खन्नके समान है), मोहनीय (यह आत्माके स्वरूपको भुलाता है जैसे दारू पीने वाला अपना मान भूल जाता है), आयुक्तम (वंदीगृहमें वंदीके समान यह जीवको नाना गतियोंमें रोके रखता है), नामकर्म (भिन्न २ गतियोंमें उत्पन्न करता है वित्रकार और वित्रके सदश), गोनक्तम (यह ऊंच और नीच अवस्थाका मेद करता है कुम्हार और उसके बर्तन की तरह), अन्तरायकर्म (यह कर्म जीवको दान, लाभ, भोग, उपभोग और शक्ति वंचित रखता है)।

दो प्रकारका असे — जैनधर्ममें धर्मके दो साधक बताए हैं, साधु और श्रावक । साधु अहिंसा, सत्य, अचीर्य, ब्रह्मवर्य और अपरिग्रहका सांगोपांग पूर्णतया पालन करता है तब श्रावक इनकी मर्यादा करता है। इसके अतिरिक्त तीन गुणवत और चार शिक्षावतोंका भी पालन करता है।

ब्रह्मतत्व् ---जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आक्रव (कमैप्रकृतिके आनेका मार्ग), संवर (कमैप्रकृतिको आत्मामें आनेसे रोकना), निर्जरा (बारह प्रकारके तपसे कमैहप रजको आत्मासे प्रथक् करना), बंध (कमैप्रकृतिका आत्मामें वृध और पानीकी तरह मिलना), मोख (कमैप्रकृतिसे तीनों उपायोंसे आत्माका मोक्ष होना) ये नव तत्त्व हैं। यदि इस संबंधमें कुछ विशेष जानना हो तो जिज्ञास 'संवपदार्थकानस्वार'का अवलोकन करें।

वैनसाहित्य-वैनोंकी पंत्या कम होते हुए भी उनका साहित्य विशासतम है। अर्थमागधी पंत्कृत प्राकृत अपभंश हिंची गुजराती राजस्थानी आदि भाषाओंमें उनके अनेक प्रंच पाए जाते हैं, इसके अतिरिक्त व्याकरण व्याय काव्य कोच खंद ज्योतिष सामुद्रिक योग खरशास वैश्वक आदिके प्रंच भी गुण्कृत प्रमाणमें उपस्था है।

जैनसाहिलमें आगमोंका स्थान सर्वोष है। आगम सिद्धान्त शास्त्र और स्त्र एक ही बात है। स्त्र की पद्धति कुछ बौद्धोंने भी है जैसे सुत्रनियात, पायासीसत्तं आदि। हिंदुओंने व्याकरण और न्याय आदि प्रंथ स्त्रनद्ध ही हैं। जैनागम तो सबके सब स्त्रहम हैं ही।

स्त्रकी ब्युत्पत्ति-'अल्पाक्षरविशिष्टत्त्रे सति बद्धवंबोधकत्वं स्त्र-त्वम्' अर्थात् जिसमें अक्षर बोढ़े हों और अर्थबोध अधिक हो उसे मृत कहते हैं, अथवा 'स्त्रसिख स्त्रम्' स्त के डोरेमें जिस प्रकार अनेक रहां के मणके पिरोए जाते हैं इसी तरह जिसमें बहुतसे अर्थोका संग्रह हो वह सृत्र होता है। पुनश्च-

अपनांधमहत्यं, बत्तीसा दोसविरहियं जं च । लक्ष्मणजुत्तं सुत्तं, अट्टहि य गुजेहि उववेयं ॥ १ ॥ सूत्रोंके मेदोपमेद-

उस्सर्गसूत्र-जिसमें किसी वस्तुका सामान्य विधान हो, जैसे-'नो कव्यह णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा भामे तालपछंबे परिवाहित्य।'

अपवादस्त्र-जो उत्सर्गका बाधक हो, यथा-'कप्पद् णिव्यंथाण वा णिव्यंथीण वा पक्के तालपलंबे मिण्णे अभिष्णे वा पडिगाहिसए।' उत्सर्गापवाद-जिसमें दोनों हों, जैसे-'नो कप्पद्र णिक्यंथाण वा णिक्यंथीण वा पारियासियस्सः''णण्णत्थ आगाडेहिं रोगायंकेहिं' ॥ १८६॥ बृहत्करूप॥

प्रकरणस्त्र-जिसका प्रकरणानुसार नाम हो, जैसे-'काविछीयं' केसि-गोयसिखं' इत्यादि ।

संज्ञासूत्र-जिममें सामान्यतया किसी विषयका वर्णन हो, जैसे 'वृश्येका-सिक' आदि, जिनमें आचारादि का सामान्य निरूपण है।

कारकस्त्र-जिसमें प्रश्लोत्तरके साथ २ शंकाका समाधान भी हो । जिन प्रश्लोत्तरोंके साथ 'से केवाद्वेणं ''से एएजद्वेजं ''' लगे हैं वे सब कारकस्त्र हैं ।

स्त्रके साठ गुण-

णिहोर्स सारवंतं च, हेउबुश्तमलंकियं । उवजीयं सोषयारं च, सियं महुरमेव य ॥ १ ॥

- १ निर्देश-सब प्रकारके दोबोंसे रहित ।
- २ सारवाम्-जिसमें सारगरित विषय हो।
- रे हेतुयुक्त-जिसमें वर्षित विषयको हेतु आविसे त्यष्ट किया गया हो।

- ४ अलंकत-जो उपमा उत्प्रेक्षा आदि अलंकारोसे अलंकत हो ।
- ५ उपनीत-जिसमें उपनय हों।
- ह सोपखार-जिमकी भाषा शुद्ध और मार्जित हो ।
- मित-जिसमें अक्षर थोड़े हों और भाव अधिक हो।
- ८ मधर-जो मुनतमें अत्यन्त मधुर हो ।

कोई २ छ गुण भी मानते हैं-'अप्पक्खरमसंदिखं, सारणं विस्सको-मुदं। अत्योभमणवर्कं च, सुत्तं सव्यण्णुभासियं॥' १ अस्पासर-जैसे मामायिकम्त्र, २ असंदिग्ध-जिसमें शंका के लिए स्थान न हो, ३ सार-वान्-प्रवत्त, ४ विश्वतोमुख-जिसमें चारों अनुयोगोंका समावेश हो. जैसे-'धम्मो मंगलमुक्टिं' ५ अस्तोमक-जिसमें च वा आदि निपातीका निर-थंक प्रयोग न हो, ६ अनवश्-जिसमें मावद न्यापारका उपदेश न हो।

स्त्रके ३२ दोष-अलियमुष्यायजणयं, निरम्थयमष्टायं स्वतं वृहिलं । निस्सारमहियमूणं, पुणवसं वाह्यमजुर्चं ॥ १ ॥ कमभिष्ण-वयणमिण्णं, विभक्तिमण्णं च लिंगमिण्णं च । अणमिहियमप्यमेष य, सहावहीणं वयहियं च ॥ २ ॥ कालजितिष्यमिष्यमेष प, सहावहीणं वयहियं च ॥ २ ॥ कालजितिष्यमिष्यमेष पिरुदं च वयणमिसं च । अत्थावसीदोसो, नेओ असमासदोसो य ॥ ३ ॥ उवमाकवगदोसो, णिहेसप्यत्थसंधिदोसो य । एय य ह सुसदोसा, वसीसा हुति णायव्या ॥ ४ ॥

- १ अलीकदोष-जो सन्को असत् कहे, जैसे-आत्मा नहीं है।
- २ उपधातवोष-जो प्राणियोंकी धातका कारण हो, जैसे-'वैदिकी हिंसा हिंसा न अवति'।
- रे निरशंकदोष-जिसका कोई अर्थ न हो।
- ४ अपार्धकदोष-असंबद्ध अर्थवाला ।
- ५ छलदोष-विपरीन अर्थवासा ।
- ६ द्वहिलदोष-भाषव्यापारपोषक ।
- ७ निस्सारदोष-साररहित ।
- ८ अधिकदोष-अभिक पर अक्षर मात्रा बाला ।
- ९ हीनदोष-अक्षर पद मात्रा बादि से हीन ।
- १० पुनरुक्तवोष-जिसमें एक ही विषयको बारंबार पुररात्रा सवा हो।
- ११ ज्याहतदोष-को पूर्वापर विरोधी हो।

- १२ अयुक्तदोष-जिसमें युक्तिश्रस्यता हो।
- **१३ कमिश्रदोच-अ**नुकमरहित ।
- १४ वयम्भिषादोष-भिसमें वयमकी गरवर हो।
- १५ विमक्तिमिश्वदोष-विमक्तिक वैपरीख ।
- १६ किंगभिष्ठदोष-तीनों लिगोंमें फेरफार हो।
- १७ अनुसिहित्वीच-अपने विदान्तके विद्रह हो ।
- १८ अपद्योष-जिसमें डांदिक त्रुटियां हो ।
- १९ स्वभाषद्वी सन्तेष-जिसमें वस्तुसाभावके विरुद्ध कवन हो । जैसे-'आन क्षीतल होती है ।'
- २० व्यवहितदोष-जो अप्रसंविक हो।
- २१ कालदोप-जिसमें भूतकालके स्थानमें वर्तमान तथा वर्तमानके स्थानमें भूतकालका प्रयोग हो अर्थात् कालसंबंधी अगुद्धिएँ हों।
- २२ यतिवृश्य-जिसमें विधान चिन्हों की वहादियाँ हों।
- २३ छवियोष-असंकारस्य ।
- २४ समयविक्यदोष-अपने मत से विक्यता ।
- २५ वचनमात्रदोष-निर्देतकता ।
- २६ अर्थापशिदोष-जिसके अर्थमें भापति हो सके।
- २७ असमासरोष-जिसमें समासकी प्राप्ति होने पर भी समास न किया गया हो।
- २८ उपसादीय-जिसमें हीन अवना अधिक ना निरुपम उपमाएँ नी गई हों।
- २९ कपकरोष-अधूरा वर्णन ।
- ३० विर्वेशदीय-जिसमें निर्देष्ट पर्वोकी एकवाक्यता न हो।
- देर पदार्थकीय-को पर्यायको पदार्थ और पदार्थको पर्याय सहे ।
- १२ स्रंडिकोष-विसमें वहां संविकी प्राप्ति हो वहां न की हो, अथवा अयुक्त रीतिए की यह हो।
- ३२ श्राह्माध्याया-चार संव्या प्राप्तकाल १, सन्यादकाल २, संव्याकाल ३, सव्यशक्ति ४) ओंके समय, चार पूर्विमा एवं महाप्रतिपराएँ (चैत्रह्मा १५, सरी १, आवासहात १५, वरी १, आविनहात १५, वर्ष १, कार्तिकहात १५, वरी १) १२ ।

सीवारिकशरीर संबंधी १० असाम्याय अस्ति ३३, मांस १४

रुधिर १'८, पड़ी हुई अञ्चलि १६, समीपमें जलने बाला दसकान १७, चंद्रप्रहण १८, सूर्यप्रहण १९, मुखिमा-राजा-सेनापति-देश-नायक-नगरकोठ का मरण २०, राज्यसंशाम २१, धर्मस्थानमें मनुष्य और तियेच पंचेद्रियका बल्डेशर २२।

आकाश-संबंधी १० अस्वाध्याय-उन्कापात २३, दिशाबीके लाल होनेका समय २४, अकालगर्जना २५, विजली वसकते समय २६, विर्धात २७, यूपक-गुक्रपक्षको एकम-योज और तीजकी संध्या २८, यथालिस-अमुक २ दिशाजीमें चोड़े चोड़े अन्तरमें विजर्शके समान प्रकाश होते समय २९, धूमिका-धूंबर ३०, महिका-कोहरा (घूंघ) पहते समय ३९, रजोश्रष्ट ३२।

इन २२ अस्वाध्यायोंको टालकर दिन और गतके पहले और वीये प्रहरमें कालिक सूत्रोंका खाध्याय करना बाहिए। खाध्याय संबंधी नियमके भंग करने-वाले के लिए प्रायाधित निषीयसूत्रके १९ वें उद्देशकमें देखें।

यह भी ज्ञात रहे कि अस्ताध्यायकाल को हिंदुओं के पंचोंमें भी वर्जित किया है। जन्म प्रकार अमान विहास भेरवी देश स्थामकत्याण आदि रागोंका समय निश्चित है, असमयमें वे अच्छे नहीं लगते, इसी प्रकार सुत्रोंका स्थाप्यायकाल निर्धारित है, अर्थात् 'काले कालं समायरे।'

स्वोखारविधि-स्वांका उषारण करते समय स्वलना न हो, ज़बान न लबखका जाय। अलग २ परोंको मिलाकर और मिले हुए परोंको नोककर न पड़े। अपनी ओरसे क्षेपक न करे। सांगोपांग परिपूर्ण पढ़े। बोपके नियमानुसार पढ़े। यथास्थान उचारण करे। गुक्से वाचना लेकर पढ़े। जैसा कि अनुयोगद्वारस्थान कहा है कि "युन्तं उचारेयम्बं—अक्खलियं, अमिलियं, अववामिकियं, पहिपुण्यं, पविपुण्यांसं, कंठोद्वविष्यसुक्तं, गुरुवायणोक्तयं।"

स्त्रक्याक्याके ६ शेव"संहिया य पयं चेव, पयरथो पयविकाहो । बालणा य पसिन्धी य, खिकाई विक्रि लक्क्षणं ॥" १ संहिता-पदका अस्कलित उचारण, जैसे-'करेणि अंते ! सामाइवं-' २ पद-उपरोक्त वाक्यमें 'करेणि' एक पद है, 'अंते !' बूलरा पद है, 'सामाइवं' तीसरा पद है। ३ पदार्थ-उपरोक्त पर्देके अर्थ ।

ध पर्विद्राह--पदच्छेद करना ।

५ बाह्ममा-'नवु' 'न ब' आदिए शंका उत्पन्न करना ।

६ प्रसिद्धि-उठाई गई संकाओंका समुचित समाचान ।

उपक्रम, निक्षेप, अनुगम और नय द्वारा भी स्त्रोंकी व्याख्या की जाती है। इनका विवरण अनुवोगद्वारस्त्रमें विस्तारपूर्वक पाम जाता है।

वर्तमावकालमें उपखण्य सूत्र-

१९ अंग, (१२ वें अंग दृष्टिशद्का विश्वेद हो जुका है) १२ उपांग, बार हेद, बार मूल और आवश्यक इस प्रकार १२ सून वर्तमानमें प्रामाणिक माने जाते हैं। अंगोंका वर्षन समवायांगस्त्र एवं नंबीस्त्रमें पाया जाता है। शेष स्त्रोंके नाम नंबीस्त्रमें हैं। उपांग चंहा केवल निर्माविकादिमें पाई जाती है। फिर भी १२ अंगोंके १२ उपांग माने जाते हैं। बंगस्त्रोंसे अतिरिक्त आवागोंकी अंगवादा संसा मी है, जिसके दो भेद हैं—आवश्यक और आवश्यक—व्यतिरिक्त। आ० व्य०के भी हो नेव हैं—आवश्यक और आवश्यक—व्यतिरिक्त। आ० व्य०के भी हो नेव हैं—काकिक और उत्कालिक। कालिकों उत्तराध्ययन, दशा-काल-व्यवहार, निष्ठीय, जंबुदीपप्रकारि, बंदप्रकारि और निर्माविकादि पांच उपांग परिगणित हैं। उत्कालिकों द्वानेकालिक, लोजपातिक, राजप्रसीम, बोबाजीवाभियम, प्रशा पत्ना, नंबी, अनुवोगद्वार, स्वंप्रकारि सिक्तिहत हैं। कालिकस्त्रका स्वाध्याय नियत समयपर ही किया जाता है। उत्कालिकस्त्रोंका स्वाध्याय यथोचित समयमें भी किया वा सकता है। वंशीस्त्रनिर्दिष्ट केव सूत्र वर्तमानमें नहीं हैं। अंगस्त्रोंका सहत्व और उनका विषयारि (सुलाइकारी के प्रथम अंकों दिया जा चुका है। हिसीय अंकों स्थातिक स्वाधिक स्वधिक स्वाधिक स्वधिक स्वाधि

बारह उपांग-

प्रधास सर्याय-भीषपातिसम्बार्ध वंपायनरी, पूर्णभद्र स्थान, असोक दक्ष, पृथ्वीविका-यहरू, क्रेमिक शास, कारियी राबी, सातपुत्र महावीर भगवान्का समयस्य, सर्वे १२ सेन्द्र, साम्रणण, क्रेमिकका महावीर प्रभुक्ती वंदना के लिए खागसन, बहरादि देवींका आता, अमवानकी देखना, अंवस परिणायक आवकता चरित्र, क्रेमिकसभुव्यारा और सन्तर्वि सिक्टीका वर्णन है।

विशीय वर्षान-राज्यसीयमें स्वानदेवक सगवात महाबीर खामीकी वंदमा के लिए जाना, गीतमसानी हारा उसके पूर्वनकी प्रकार, अगवात हार स्वामदेवक पूर्वनक्षणन, प्रदेशी राजाक केवीसुनिते प्रमोतार, अंतमें प्रदेशी हारा भारमध्यद्वा पाकर व्रतप्रहणादि विषय वर्णित हैं। यह सत्र साहित्यका रमप्रद प्रय हैं ऐसा विटरनिट्ज़ का कहना है।

तृतीय उपांग-जीवाजीवाभिगममें जीव अजीवका विस्तृत सहप, "

वित्रयदेवका वर्णन, छप्पन अन्तरद्वीपादिका उहेन्त्र है ।

खतुर्थं उपांग-प्रज्ञापनासूत्रमें जीव, अजीव, अप्तव, बेथ, संबर, निर्करा और मोक्षका सम्यक् निरूपण है। इसके अतिरिक्त लेज्या, समाधि, लोकस्वरूप आदिका वर्णन भी है, इसमें ३६ पद (प्रकरण) हैं। इसके संकलनकर्ना श्रीतुषर्मा-वार्यसे २३ वें पदृश्यित आर्थ इयामाखार्थ थे। प्र≔प्रकष्टनया, शापना≔अववोध करना प्रशापना, अर्थात् जिसमें पदार्थका परिपूर्णक्यसे खक्ष्य जाना जा सके।

पंचम उपांग-जंबूद्वीपप्रक्रिमें जंबूद्रीपका सविस्तर वर्णन है। कालचक, ऋषभदेव मगवान और भरत बकवतीका जीवनचरित्र भी वर्णित है। वास्तवमें

यह भूगोलविषयक ग्रंथ है ऐसा चिटरनिट्ज़ का कहना है।

छुटे एवं सातवें उपांग-चंद्रप्रकार और स्थेप्रकार नेप्र तथा स्यादि उपोतिषचकका वर्णन है। होनोंके आरंभ-कमके बोड़ेसे मेदके अतिरिक्ष शेष सब पाठ समान हैं। इनके २० प्रामृत हैं। जिनमें मण्डलगति संख्या, स्थेका तिर्थक परिभ्रमण, प्राकाश्य क्षेप्र परिमाण, प्रकाश संस्थान, केश्या प्रतिधात, ओवःसंस्थिति, स्यांवारक, उदयसंस्थिति, पौरणी छाया प्रमाण, योगस्वरूप, संक्रमणोंका आदि अन्त, संक्रमणोंके मेद, चंद्रमाकी वृद्धि अपवृद्धि, उयोत्का प्रमाण, शीग्रगति निर्णय, उयोतका लक्षण, स्यवन तथा उपपात, चन्त्रस्वीदिकी उचाई, उपका परिमाण, चन्द्रादिका अनुभाव वर्णित है। वे दोनों उपाण खगोल विषयक हैं। ५-६-७ वे उपाणको विषयक क्षेप्र (Scientific Works) माना है।

आठवें उपांग-निरियाविकारों मगभ-नरेश मेजिक (अंससार-वीद-साहित्यमें विविसार) का कोणिक (अजानशश्रु) के द्वारा मरण (जिसका स्वेक-वीद प्रयोगें भी पाया जाना है) आदिका कथन है। इसके अतिरिक्ष कामकुमारा-दिका अपने नाना वैशालिनरेश चेटकरे साथ युद्धमें सकते हुए मारा कामा, उनकी नारक गति और मविष्यमें मीक्ष होनेका वर्णन है।

नवम उपांग-कल्यावतंसिकामें क्रेणिक राजाके १० पीत्र प्याङ्गाराविका भगवान महावीर प्रमुकी सेवामें चीक्षाप्रहण, देवगद्विगमन और अविश्वमें मोक्स होनेका कथन है। इसके १० अध्ययन हैं। दसर्वे उपांग-पुष्पिकार्वे १० देव देवियोंका भगवान महावीर खामीकी वंदन। के छिए आना, गौतमखामीकी उनके पूर्वभवकी पुष्छा, भगवान द्वारी १ पूर्वभव-कवन, चन्द्र, सूर्व, महाशुक्त (पूर्वभवमें सोमिछ ब्राह्मण), बहु पृत्तिया (पूर्व- भक्ते गुमहा साध्वी), पूर्णभद्र, माणिभद्र, बल, शिव,और अनादित देवके पूर्व- वन्भका वर्णन है।

न्याद**हर्षे उर्पाग-पुष्पक्षकार्मे श्री ही आदि १० देवि**र्पोकी पूर्वजन्मकी करणीका कथन है । इसमें १० **अध्ययन हैं** ।

बारहर्षे उपांग-वृष्णित्रामें वृष्णिवंशके बलभद्रजीके १२ पुत्र निवद-कुमारादिका भगवान् अरिष्टनेमिके पास बीक्षाप्रहण, सर्वार्थसिद्धगमन, मिक्षप्यमें मोक्ष पावेका अधिकार् है ।

बार छेवस्ब-

प्रथम छेद-स्थवहारस्त्रमें दश उदेशक हैं। प्रथम उद्देशकर्में आले-चना (Confession) विथि । ब्रितीय उद्देशकर्में सहपार्थिक दोषित होने पर साधुका कर्तन्य । तीसारे जहेशाकर्ते आचार्य उपान्याय आदि 🕟 पदविया किसे दी जायें और किसे नहीं, साथ ही उनके गुणोंका विवरण । स्वीको उद्देशकर्मे आनार्यदिको नदुर्मास और विहारकालमें कितने साधुओंके साथ रहना। र्याचर्वेमें प्रवर्तनी के किए विधान नौयेके अनुसार । छठेमें भिक्षा स्थेडिल (शीचभूमि) वसति वहां और किसप्रकार विश्वित करना तथा अमुक २ स्वलना-ओंके किए प्रायमित । स्वातवेंसें दूसरे संवादे में से आई हुई साव्यकि साथ कैसा व्यवहार रक्षना और साष्ट्रियों के लिए नियम, खाष्याय और पदवीदान. अमुक संयोगोंमें गृहस्थकी आज्ञा छेकर प्रवर्तन करना। आदर्शिमें गृहस्थके मकानका कितने भाग तक उपयोग करना, पीठ ककक (पाट पाटलादि) की प्रहण विचि, पात्र आदि उपकरण और मोजनका परिमाण । शबवेंदी सञ्चातर (स्थान देनेवाके) का कदन, उसके मकानादिको उपयोगमें छेने न छेनेका रमष्टीकरण, निद्धप्रतिमादा बारायन केते होना चाहिए। इष्टाम उद्देशकार्ने वो प्रकारकी जतिमा (अभिमद्) तथा दो प्रकारका परिषद्, पांच व्यवद्वार, बार जातिके पुरुष (साधु), बार जातिके आवार्य और शिष्य, स्थविर एवं विष्य की तीन भूमिकार्षे, अञ्चक स्थका अस्त्रास कर आदेश करना आदिका करन है ।

दिलीय केयू-बृद्रश्यास्पर्मे क जीवक है, इसमें मुख्यतमा सामु साव्यामा

[ा] स्थानोंके संबंधने सेक्ट नहास्त्रके केल प्रक्रम है।

आचारकल्प वर्णित है। जो पदार्थादि कमैबंधके हेतु और संयमके बायक हैं जैनके लिए 'न कप्पइ' शब्दका उपयोग किया है अर्थात 'नहीं कल्पता है,' नया जो संयमकी साधनामें सहायक, स्थान, वस्त्र, पात्र आदि हैं उनके संबंधमें ' 'कप्पइ' कल्पनीय कहा है। अमुक अकार्य (दोष) के लिए १० प्रायमित्तमें साधक किस प्रायश्चितका अधिकारी है। साथ ही कल्पके छ प्रकार आदिका कथन है।

तिय छेद-निशीधस्वमें प्रायिक्षताधिकार है, इसमें २० उद्देशक हैं, १९ उद्देशकों गुरुमासिक लघुमासिक लघुनातुर्मातिक और गुरुवातुर्मासिक प्रायिक्षतका वर्णन है, २० वें उद्देशकों इनकी विधि बताई गई है। स्खलना करनेवाले साधुओं के लिए शिक्षारूप निशीवस्त्र है। दूसरे शब्दोंमें इसे धर्म-नियमोंका कोष या दंडचंग्रह (पेनल कोड) कहा जाय तो युक्तियुक्त ही है। प्राय-थितका अर्थ है कि भूलकर एक बार जिस अक्ट्यका सेवन किया हो उसकी आलोबना करके शुद्ध होना और पुनः त्याप्य कर्मका आचरण न करना।

चतुर्थ छेद-दशाश्चतरकंश्वसें दश अध्ययन हैं, जिनमें कमशः अममा-श्विके २० स्थान, २१ सबनदोष, ३३ अशातना, आवार्यकी आठ सम्पदाएँ और है उनके मेद, शिष्यके लिए चारप्रकारकी मिनय प्रवृत्ति मेद सहित, जित्तसमाधिके १० स्थान, श्रावक की ११ प्रतिमाएं नया साधुकी १२ प्रतिमाएँ, पर्यूषणाक्रमें, महामोहनीयकर्मवंथके ३० स्थान तथा नय निदानों (नियाणों) का वर्णम है। इनमें व्ययहार, मृहत्कल्प और दशाश्चतस्कंश्वकी रचना आर्थ मन्न-वाह आचार्य ने की है।

चार मूलस्त्र-

प्रथम मूलस्य-द्रावैकालिका १० अध्ययन और हो क्लिकाएँ हैं। इसकी रचना १४ प्र्वंधर श्रीक्षरयंभवाचार्यने अपने शिष्य (प्रत्र) मनाकृषिय के लिए प्र्वंभिसे उद्भुत करके की है। इसके दश अध्ययन हैं और इसे विकालमें भी पड़ा आ सकता है अतः इसका नाम दश्येकालिक है। इसके प्रथम अध्ययनमें वर्गकी प्रशंमा और साधुकी अमर-जीवनके साथ तुलना; जिलीस अध्ययनमें विकालिक उपाय, रचनेमि और राजीमतीका उदाहरण; तृतीस अध्ययनमें साधुके ५२ अनाचीणं; खतुर्ध अध्ययनमें प्रद्यीयनिकायका सरूप; पाँचवें अध्ययनके प्रथमोद्देशकां विकालिका प्रथमें विकालिका प्रथमोद्देशकां विकालिका प्रथमोद्देशकां विकालिका प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रथम प्रयोग विकालिका प्रथम प

१ इसका विशेष कथन कस्पस्थसे शातका है।

भिक्षाकालादिः छाठे अध्ययममें माधुक १८ कत्यः सारावें अध्ययममें व्यवसादित साधुके बोक्तं न बोलने बोक्य मायाका वर्णनः माठवें अध्ययममें साधुके आवारः मुववें अध्ययमके प्रथमोदेशकमें विनयका स्वत्यः, गुरुका आकामनाका पुण्यिणाम, द्वितीय उद्देशकमें विनय तथा अविनयका करू, तृतीय उद्देशकमें किन २ गुणोंक समावरवि पूजनीय होता है, खनुवें उद्देशकमें विनय, शुन, तथ और आवार समाधिका वर्णन है। वृश्वें अध्यवममें भिक्के गुण वर्णित हैं अर्थन किन २ गुणोंके भिक्क होता है। यहाति खूलिकामें संयममें स्थित करनेवाली १८ वार्तेः द्वितिय खूलिकामें साधुका आवार विवार, वासकरूप, विहार मोक्तमित आदिका करन है। कई इन वृश्विकामें महाविद्ध क्षेत्रसे काई हुई मानते हैं परम्यु कई कारणोंने इसे गुणिन-कुक नहीं माना जा सकता। वे श्रीक्षण्यंभवाषार्थ की रचनाएँ न होने पर मी प्रासाविक मानी गई हैं।

बितीय मल-उत्तराज्यवनमें १६ अध्ययन हैं, यह सारा स्त्र ही अलान-वदायक ज्ञानकी निविक समान है। इसके प्रथम अध्ययनमें विनयका विस्तार-पूर्वक क्यन है । जिलीय अध्ययमध्ये परिवर्शके नाम और सायुक्ते उनके सहन करनेका उपदेश है । तृतीय अध्ययनमें मनुष्यत-धरंभवन-श्रदा और संवनमें रफ़रणा, इन बार अंगोकी दुर्वमताका वर्णन है। बातुर्व अध्ययनमें ट्रटीकी ब्दी नहीं है अर्थात् जीवनकी सम्मेयुरता और प्रमाद-अप्रमादका सहप समझाया मवा है। पांचावें अध्ययकार्मे अकाम(शत-अक्षान)मरण सकाम(पंडिन)-मरण का विस्तारपूर्वक वर्णन है । छठे अध्ययमञ्जे साध्वाचारका संक्षिप्त वर्णन है। सासर्वेमें कामी पुरुषकी बकरेड बीवनके साथ तुलना, काकिनी, आपपल, तीन व्यापारियोंके उदाहरण हैं। आहतींसे कपिल केवलीका चरित्र, लोभ तृष्णा बारि दुर्गुणोंके त्यागका उपदेश है । मुक्कें अध्ययममें मनिराजका रीक्षा के लिए वचन होना, इन्हरू साथ प्रभोत्तर आदि । दशावेंसे इसके स्वे परोके समान बावव बीवककी बबरता तथा समयमात्र का जी तमाद न करनेकी शिक्षा । स्याद-ह्वेंसे विद्या व मिल्वेके ५ और क्रिका मात करनेके ८ कारव, विनीतके १५ और अविनीतके १४ कक्ष्म, महुब्रुपकी १६ उपमाएँ । बारहवें में इरिकेशीयक शुनिका भरिम, तपकी महता, जातिकाक्का बीडण, जाववक्ष तथा आध्वातिपक सामका सस्य । सेराहवेंसे विशा संगतिका पूर्वभव, दोगोंका विसना, विशासनिका महाराखी स्परेश, प्रेंशत निवानके फरण महाराखी मतारिकी महत्तिमें असम-

र्थता, दुर्गतिगमन, चिनका मोक्ष होना । १५ में हैं ह जीवोंका पूर्वभव, इपुखर नगरमें जनम और फिर पारस्परिक मिलाप, अन्तमें सूरपुरोहितकी क्ली यशा और उनके दो पत्र, इपकार राजा और कमलावती रानीका एक दूसरेक कारण । वैराज्यलास, दीक्षाप्रहण एवं सोक्षप्राप्ति । १५ वेंसे भिन्नके लक्षण और गुण । १६ वेंग्ने बरावर्यके १० असमाधिस्थान । १७ वेंग्ने रापध्रमणका स्वरूप । १८ वैसे संयति राजाका सूग्याके लिए जाना, उद्यानमें अईसालि सुनिक। उपनेका, राजाका दीक्षाप्रहण और मुक्ति-प्राप्ति । १९ वेंग्रें राजनुमार मृगापुत्र का साधुको देखकर जातिस्मरण, माता पितासे संवाद, नरकादि गतियोंके दृ:खोंका वर्णन, संयमप्रहण, मोक्षप्राप्ति । २० वेसं श्रेष्ठिक नरेशका अनाशीमनिका दर्शन प्राप्त करना, सनाथना अनायनाका स्वरूप, राजाकी धर्ममें इंड ध्रद्धा होना । २१ वेसे समुद्रपालका वध्य चौरको देखना, संवेदप्राप्ति, रीक्षाप्रहण तथा मोक्ष । २२ वैसे भगवान अरिप्टनेमिका विवाह के लिए जाना. पत्र पश्चियों पर करूगा ला कर उन्हें वंधनमुक्त कराना. वीक्षाप्रहण, सनी राजीमतीको गुफामं देखकर रथनेमिका संय-मसे विचलित होना, सतीके उपदेश द्वारा उसका पुनः संयममं स्थिर होना, अन्तर्ये मोक्षप्राप्ति । २३ वेंग्रें मुनि केशीकुमार और गीनमन्यामीका संबाद, अन्तर्मे केसीध्रमण द्वारा भगवान महावीर कथित पांच महावतीं हा स्वीकार । २५ से हैं पांच समिति और तीन गुप्ति, इन आठ प्रवचन-माताओं का वर्णन । २५ वेंसे जयघोष विजयघोषका चरित्र, बाग्राणके यथार्थ लक्षण । २६ वेसे १० सामावारी और साधुकी दिनरात्रिचर्या का कथन । २७ वेंग्रे गर्गाचार्य द्वारा अविनीन शिष्योंका त्याग । २८ वेंसे मोक्षमार्गमें गतिमान होनेके उपाय । २९ वेंसे सम्यक्त्व पराक्रमकं ७३ बोल, उनका फल । ३० वेंसे बाह्म और अध्यंतर तपका विवरण । ३१ वेंमें चरणविधि । ३२ वेंमें प्रमादस्थान और उनसे बने रहनेके उपाय । ३३ वेंग्रें आठों कर्मीका विम्तारपूर्वक वर्णन । ३४ वेंग्रें छहों सेड्या-ओंके नाम, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थिति आदिका विस्तृत वर्णन । ३५ वेंमें साधुके गुण और ३६ वें अध्ययनमें जीव तथा अजीवके नेद विन्तारसे बनाए हैं। श्वातपुत्र महावीर मगवान्ने मोक्ष पानेके समय यह सूत्र फर्माया था, जैसा कि कथित स्त्रकी अन्तिम गांधासे स्पष्ट है।

११ पाउकरे बुखे, जायप परिजिब्बुए । छत्तीसं उत्तरज्ञाप, अवसिद्धीयसंग्रप ॥ २७१ ॥ इसी स्पृतिको बनाए रखने के लिए दिवालीसे अगके दिन अर्थात् कार्तिक शुक्रा प्रतिपदाको समेरे ही उत्तराच्ययनस्त्रका संपूर्ण म्याध्याय (पाट) किया जाता है। तृतीय मूल-नम्दीस्त्रमं संघ स्तृति, तीर्थकर गणधरादि स्थविरावसी, परि-वद्, पांचों ज्ञानोंका खरूप विन्तारपूर्वक वर्णित है।

चतुर्थ मूल-धतुषोगद्वारमें आवश्यक, शुनस्कंषके निक्षेप, उपक्रम, आनुपूर्वी, दश नाम, प्रमाण, निक्षेप, अनुगम और नयका पूर्ण विस्तारते उत्तेख है। इसमें ७ सार, ८ विभक्ति, ९ इस सादि विषय विश्लेष उत्तेखनीय हैं। यह आये रिक्षितान्यार्थ इन है। जिसके ये दो प्रमाण हैं-

प्रधान-पंत्कृतका प्रयोग किसी स्त्रमें नहीं है परंतु इसमें पावा जाता है।
कुसारा-उदाहरणोर्ने 'तरंगवदकारे, मलगवहकारे' आदि भी इसकी पवाहर्तिताको स्वित करते हैं।

वर्षीसर्वा आवश्यकस्य - इसमें सामाविक, चतुर्विश्वतिस्तव, वंदनक, प्रतिक्रमण, कारोरसर्व और प्रसास्थान इम छहाँ आवश्यकोंका वर्षन है।

परिशिष्ट परिचय-प्रधम परिशिष्टमें कल्पसूत्र समिहित है जो कि चतुर्व केर दृशासुलस्कंधका आठवाँ अध्ययन है। इसमें सालपुत्र महाबीर मगवान, पार्थमान, अरिष्टनेनि और ऋषमदेव इन चारों तीर्वकरोंका चरित्र है। इसके अतिरिक्त इसमें गणधरादि स्वविरावली और सामाचारी भी वर्णित हैं।

हितीय परिशिष्टमें सामाविकत्त्र विविसहित दिवा गवा है।

वृतीय परिशिष्टरें आवकायस्यक् प्रतिकामण)सूत्र विविसहित है। भाषा-पाठोंके स्थानपर कोष्ठकर्ने मूलपाठ दिए हैं ताकि समझने में समसता हो।

स्वोंने प्रयुक्त क्षेत्-जागमों में गावाओंका प्रवीग व्यविक है, इसके अति-रिक वैताकीय, उपवाति, जायों का प्रवीग भी पावा जाता है।

मर्त्तुरा अकाशमधी विशेषता-

१-पाठश्रविका पूरा २ समृत रक्का गवा है।

२-बुक्तम संपादन श्रद प्रतियोंडे आधारपर किया गया है।

ं रे-माठान्तर गरीन पंचतिसे विस् हैं।

४-दिपाम भी बनारवान प्रमुख किए गए हैं।

५-अंतर्ने परिविष्ठ भी मिष् पण् हैं।

६-द्वारायक सम्बंधन की इसके पूर्व दिया गया है।

अन्याम्य-केष भी दे दिया गया है ।

कार्यक्षित्रहरू नायम संसका कार्य पुरा होनेचे कमान ४ गहीये वाय साहुंगा १ क्षणा २ म चतुर्मासमें द्वितीय अंशका कार्य प्रारंभ होकर सनैः २ चलता रहा और प्रवंकः व चतर्मासमें सम्पन्न हुआ।

सहयोगी-मेरे अंनेवासी शिष्य सुमिसमिक्खू ने 'पासंनियं किंखि' नामक लेख लिख नर 'मुत्तागमें' के सौदर्शमें जो अमिन्नद्धि की है और वर्णित विषयोंको स्पष्ट करके बताया है वह उल्लेखनीय है।

मेरे अंतेवासी प्रशिष्य जिन्नचंद्रियन्त् ने अप्रमत एवं आगस्क अवस्थामें संशोधनका कार्य अपने हाथमें लेकर जो सहयोग दिया है उसे तो कभी भुरतया ही नहीं जा सकता। इन दोनोकी सेवा जीवनके अंग तक स्पृतिपयमें रहेगी।

मुनिश्ची रतनचंदजी महाराज (कच्छी) ने 'स्तागमे' की जो सारस्म भूमिका प्राकृतमें लिखी है उनका आभार माने बिना कैसे रहा जा सकता है। आपने तो मानों सागर को गागरमें बंद कर दिया है।

पंडितबर्य श्री गजानन जोशी शास्त्री(पनवेस्त)ने जो प्राइतनें 'निवृंसणं' लिखा है वह उनकी योग्यताका परिचायक एवं असिनंदनीय है, और प्राकृतके अभ्यास के लिए प्रेरणा देना है।

इनके अतिरिक्त प्रगट या अप्रगट रूपमें जिन २ सहानुभावोंने सहयोग दिया है उनका आमार मानता हूं।

रपष्टीकरण-(१) कल्पम् अमं २४ तीर्षकरों के आंतरोंने महाबीर-निर्वाण के ९८० वर्ष पीछे स्त्रोंके लिखे जानेकी जो घटना है वह देवर्दिंगणी क्षमाश्रमककी है, क्योंकि इतिहासकार अपने समय तकका विवरण दिया ही करते हैं।

- (२) दान्द्रकोश गाधाबद्ध सामुबाद तैयार हो रहा है, १९९८ गाधाओंकी रचना भी हो चुकी है, अतः शब्दकोश नहीं दिया गया।
- (३) अन्य उपयुक्त विषय जो कि प्रथके बढ़ जानेके कारण रह गए हैं वे अन्यत्र दिए जार्येंगे।

अन्तिम-इस प्रकाशनमें यदि कहीं कोई भूल रह गई हो या विदान्तके विश्व हुआ हो तो उसका ख़ालिस हदयसे अनन्त विद्धों की साक्षीसे 'सिक्कासि दुकार्ड'।

गच्छतः स्वालनं कापि, भवत्येव प्रमावृतः । इसन्ति दुर्जनास्तत्र, समाव्यति सवानाः ॥ शांतिमवन अंवरनाथ C. R. अगुस्वरणव्यतिस् दिनाक २१-१२-१९५४ पुण्यानिकस्

व्याकरण-दोष

उपसर्ग

उपसर्ग चातुके पूर्वमें लगाए बाते हैं, वे धातुके मूल अधेमें परिवर्तन करके कहीं विशेष अर्थ और कहीं विपरीत अर्थ तथा कहीं भिन्न अर्थके योनक होते हैं। आह ो सीमा से बाहर, अतिशय; आह्+कासह=आहकासह-वह सीमासे बाहर अति जाता है, अथवा उद्देशन करता है। अहि] उत्पर, अधिक, प्राप्त करना; अधि अहि+चिट्टा=अहिचिट्टा-नद उपर गठता है। अहि+गच्छा = अहिराच्छा - नह प्राप्त करता है। अधु (अञु)] पीडे, समान, समीप; अणु+गच्छर्=अलुगच्छर्-वह पीछे जाता है। अणु-करइ=अणुकरइ-वर् अनुकरण करता है। अभि ो सन्मुख, पास; अभि+गडछइ=अभिगडछइ—वह सन्मुख जाना है, अहि अथवा पासमें जाता है। 'अब ो नीचे, तिरस्कार; अव+घरह=अवयरह-ओ+यरह=ओयरह---वह भी शेषे उत्तरता है। अव+गणह=अवगणह—वह तिरस्कार करता है। आ] उत्तरा, विपर्वेय, मर्योदा; आ+गच्छद्=आगच्छद्—वह शाता है। अव) निपरीत, पीडे, उलटा; अव+क्रमप=अवक्रमप्-ाइ पीडे फिरता है अप / (बीडता है) । अप+सर्इ=अपसर्इ-ओ+सर्इ=ओसर्इ-व्ह भी विशेष्टता है। ो क्रेंचा, क्रवरः **सकावसम्**-नह संवर जाता है। (उत्) उद्देश-यह उठता है। उप ्रेपासमें: उपागच्छा-रह समीपमें जाता है। (34){ नि र वर्षर् नोचेः निभयकार् निमयकार् निमयकार् निमयकार् निमयकार् च है। विश्वस्थ नद नीचे निरता है। परा विकार बीके परा+िक्षण-पराक्षिकर-वर दारता है। पका विकासक् नह मानता है।

परि) विशेष, परिवर्तन होना, चारों ओर; परि+तूसइ=परितृसइ—गर्द पिक) विशेष प्रमन्न होना है। परि+सदृद=परिवर्द्य=वह बदलना है।

परियडइ-वह चारों ओर घूमना है।

पिट-पित ते सामने, उलटा; पिडि+भासद=पिटिभास्पद-वह सामने बोसता पिर-पद है। पद+जाणद=पहजाणद-वह पितजा करता है। (प्रति)

ष (प्र)) आगे, प्रकर्ष; पयाह्-बह आगे बाना है। व्य ∫पयासेह-बह विशेष प्रकाश करता है।

बि] विशेष, विशेष, विशेषायः, वियाणेइ-वह विशेष रूपसे जानता है।

विस्सरद-वीसरद-वह भूलता है।

सं (सम्)] मली भाँति; सं+गच्छइ=संगच्छइ-नह भनी भाँति मिलता है।
निद् | निश्चय, आधिक्य, निषेध; निज्जिषेद्र—नह निश्चयसे विजय पाता है।
निरिक्खइ—नह निरीक्षण करना है।
नी सर्ह-नह बाहर निकलना है।

तुर् हु:सपूर्वक, तुष्टतार्थः, तुल्लंबेह—कठिनाईने उत्वयन करता है । तुल्स-हु हेह-दूसहेह—वह तुःख सहन करना है। दुरायार-तुष्ट आचरण ।

(नीट) निर् दुर् इन उपमगींके रेफका विकल्पसे लोप होता है, परन्तु रेफसे, परे स्वर होनेपर लोप नहीं होता, जब रेफका लोप नहीं होता तो पथान्यती व्यंजनमें रेफ मिन जाता है और उस व्यंजनको दित्य होता है। वैसं-निर्भ सहो=निर्महो, नीमहो, निसहो; निर्+अंतरं=निरंतरं; दुर्+सहो=बुस्सहो, सुसहो, दुसहो; दुर्+उत्तरं=दुहत्तरं।

अच्यय

सदरां त्रिषु क्षित्रेषु, सर्वासु व विभक्तिषु। वत्रतेषु व सर्वेषु, यत्र व्येति तदव्यवम्॥

(१) अ अण=निवेधार्थ, अह=इसके बाद, अहरा=तत्काल, अहंद=विषक्र, अंग=आमंत्रण, अन्तर अन्तरेण=अभावयुक्त, अंते अंतो=वीचमें, अक्टंट्रा=अक्ट-स्नान, अचिरं=जल्दी, अवस्तं=निरन्तर, अज=आज, अविरं=सतत, अतिं=

९ आविर् व्यक्ते, तु प्रथम्भावे, पाउ पाउर् प्राकास्ये, सद् अद्धासानिस्य-धिकं प्रस्यन्तरे ।

अतिक्रम, अत्य=है, अदु अदुत्तरं=इसके पीके, अदुवा=अमया, बहो=नीचे, अभि= सन्मुख, अभिनयाणे २=बार बार, असं=पर्यात, अवि=मी, असर्=वार २, अहा-नरं=इसके पकात्, आ=मर्योदा-अभिनिषि, इह इति इव=इस प्रकार-समाप्त, इव= समान, इंखि इंसि=घोदा, उदाहु=पक्षान्तर, उपरि उप्प उदारे=ऊपर, उस्सम्बं≔ प्रायः, एव=ही, एवं=इस प्रकार, एवमाइ=इत्यादि, एवामेव=इसी प्रकार, कि=क्या, किर्ण=विश्वासार्व, किर किस=विध्यार्थ, कीस=किस किए, कु=सराव, ससु= निक्षम, सिएएं=शीप्र, च ब=समुख्यायंड, चे(केर)=संमानवार्थ, कर्=वर्ध, जाय=जब तक, ताय=तब तक, जुगवं=एक्ट्म, झति=झटएट, व≔नहीं, वं= वाक्यासंकार, वनरं क्वरि=केनल, बहु=निवेषार्थं, वाषा=अनेत, वु=प्रश्रवाचढ, ण्यं=निवयप्र्वंक, को=नहीं, ति ति=इस प्रकार और समाप्ति अवे, दु=समुख्याये, य=वाक्यालेकार, दिया=दिन, दुडु=सराय, दूरा=दूर, धणियं=अतिशय, चिक् विर=विद्यारार्व, मणु=संकार्व, नमो=नमस्कार, पच्छा=पीडे, पमिर=प्रसृति, पाओ= प्रातः, पायं=प्रायः, वि≒नी, पिव=इव, पुढो=पृक्क, पुण पुणो=पुनः, पुरा=पहछे और आगे, पुरत्वा पुरच्छा पुरे=आगे, वहिं वाहि=वाहर, अंते !=प्न्यसंबोधन, मिसं=अतिशय, भुजो २०वाद २, वे भो |≈संबंधन, वित=व्य, मिहो=परस्पर, मुसा=असला, मुदा=क्यर्व, मुहुं २=बार २, व=व, रह रहो=एकान्त, राओ= रातमं, वि=भी, विव व्य=इव, सर्=एक बार, संपर संपरं=अव, सक्सं=साक्षात्, समंता=बहरों और, समिनं २=बीरे २, सर्कि समं=साब, समं=सनं, समनं=निरंतर, सार्व=संप्ता, सुर्र=चिरकाल, स्ए=कानेवाकी कल, सुबु= अव्या, सेवं=ऐसा ही है, इंता=स्वीकार, इंदि हं भी=आमंत्रण, इकि २=प्रतिदिव, इदि=खेदार्थक, हलं=बीग्, दिखे=बीता हुआ कर, हुरत्वा=बहिर्देश, दे=संबोधन, देहा=नीचे, हे हो=आसंज्ञान ।

(२) उपसर्गोकी गणना भी सम्परमें ही है।

(१) सन्तिकारम् अन्ययः सम्बादिकारः, केर्क्कारे, केर्यक्रपासि इत्या, कोर्क्कारे, इर्यक्ष्यं, क्याई क्याईक्कारे, क्याईक्रपासिका, इस्यादोक्ता, सिक्यादोक्तान्तीन बार, क्रिंचिक् कर्या, इति इस्याचि इस्राचिक्त्यातः, क्याक्रपास, समाक्रादाः, क्योक्तिसते, एत्य इत्यक्ष्यां, स्वयक्त्यां, अत्यक्त्यां, स्वयक्त्यां, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्याः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्तः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्यः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्त्यः, स्वयंक्तः, स

- (v) हेत्वर्षं कृत्न्त-संबंधक भूतकृत्न्त मी अन्ययमें ही सम्मिलित हैं।
- (५) अम् प्रत्ययान्त समास भी अध्ययमें ही परिगणित हैं। वैसे-अहोनियं।
- (६) इकारान्त 'दिसि' आदि शब्दोंकी भी समासमें अञ्चय संग्ना होती हैं। वया-दिसोदिसिं, गुम्मागुम्मिं, घराघरिं इत्यादि ।

वेरक रूप-

- (१) घातुके मूलहपको 'भ' 'ए' 'आव' 'आवे' प्रत्यय लगाकर तनस्कालके युरुषवोधक प्रत्यय लगानेसे प्रेरक रूप सिद्ध होता है।
- (२) धातुमें उपान्त्य 'अ' हो तो 'अ' अथवा 'ए' प्रत्यय रूगाते समय 'अ' को 'आ' होता है, जैसे-इसाइ-हासाइ, हासेइ, इस्तावाइ, इस्तावाइ !
- (३) उपान्ल 'इ' 'उ' होनेपर दोनोंको गुण होता है, वया-कुह-बोहह, तुक-सोडह इलादि।
 - (४) 'आवे' प्रत्यय परे होनेपर 'अ' को कहाँ २ 'आ' होता है, जैसे कारावेड !
 - (५) 'भम्' धातुका प्रेरक रूप 'भ्रमाडेप्ट' भी बनता है। उपरोक्त चारों प्रत्यय लगाकर सब प्रेरक रूप सिद्ध किए जाते हैं।

इच्छादर्शक आदि अन्य प्रक्रियाएँ त-सरकारे-जरास्का (क्रांका)-क विद्रा सम्ब

सनन्त-जुगुप्तते=जुगुच्छइ (दुगुंछइ)-वह निंदा अथवा कृता करता है।

पिपास्ति=पिधासर-वह पीनेकी इच्छा करता है। शुक्ष्यते=सुरुष्-सर्-वह सेवा करता है अथवा मुननेकी इच्छा करता है। सुरुष्तामाण व॰ छ॰।

थङ्गस्त-सालप्यते=सालप्पर-स्पत्न करता है। सासप्यमाण व॰ इ॰। चंकम्यते=संकम्मइ-बहुत बलता है।

यङ्जुगन्त-चङ्कमीति≔वंकमर्-गर २ वन्ता है। नामघातु-दमदमायते=दमदमार्-दमदमायर्-भारंगर करता है। गुरुकायते=गुरुआर्-गुरुआयर्-गुरुके समान भागरण करता है। स्नी-प्रत्यय

- (१) अकारांत शन्दके पीछे 'डा' प्रत्यव संगानेसे सीसिंग आकारांन्स सम्बद्ध वन जाता है, जैसे-वाल-वाला, अस्मा आदि ।
 - (२) 'बी' प्रलयसे होने वाके रूप-सत्यवाह-सत्यवाही आदि।
 - (३) भाष मिथापैक प्रखबात से 'जी' प्रखब होता है, वैके-वासाविधी वाहि।

- (४) 'धाणी' प्रत्ययसे निष्यच होनेशके सीक्य-ईद-ईदाणी ।
- (५) 'डि' 'डा' प्रस्वय कवने ने दिसा-दिश्च बादि विद्व होते हैं।
- (६) 'ती' प्रत्यय क्रमने पर क्रीलिंगमें 'मह' शब्दसे 'महती' होता है।
- (v) जिन्सू बादि शब्दोंको सीलिंगमें 'बी' प्रत्यव होता है, जैसे-जिन्सूबी, साहुबी आदि ।
- (८) 'जी' प्रत्य परे होनेपर 'तिस्त' और 'मास' शब्दके जकारको हकार होता है, जैसे-वीसिजी, पुण्णमाधिणी ।
- (नोट) इनके अतिरिक्त महस्रिया-महास्त्रिया-महास्त्रवादि भी सीप्रत्यय-निष्पच जानने चाहिएँ ।



सुत्ताणुक्रमणिया

सुनाणामं	पिहसंसा
खुराणान ओववार्यमुर्ग	1.10/1.011
जानगर्य <u>क्त</u> रायपसेणइयं	×9
	9 o ¹ 2.
र्जावाजीवाभिगमे	
पुष्णावणास् मं	₹ ६५
अं ब हीबपण्णत्ती	પર્વેષ
चंद्पण्णनी	६७३
स्रियपणाती	<i>ज</i> ंद इ
जिरियाव लिया (क प्पिया)ओ	المالونو
क प्पवित्रं सियाओ	908
पुरिकयाओ	ક્રહ
पुष्फच्लियाओ	১८५
विष्हिदमाओ	७९२
ववहारो	49.4
बिह्क प्पश्च न ं	८३१
णिसीह युत्तं	645
दसानुयक्संघो	595
दसवेयालियमुत्तं	374
उत्तर ् अयणपुत्तं	444
पं बी युत्तं	1049
अणुओगदारसुत्तं	9064
आवस्ययमुर्ग	1154
	1147
परिसिद्धाणुकमिवा	
पदमं परिगिद्धं (कप्पमुत्तं)	•
बीयं परिसिद्धे (मामाइयस्तर्स)	Αŧ
तइयं परिसिद्धं (सावयावस्ययं(पिकसमण)सुनं)	**



श्रीयत्रागमप्रकाशकमितिके 'आद्यम्तंभ'



श्रीमान हाता व्यारेलाल जैन मिटगुमरीवाले हाल अंबरनाथ (१.४).

परिचय—आपकी जिनशासन और गुरुभक्तिमें अहितीय प्रयृत्ति रहती है।
गामायिक किए बिना आप भोजन पान भी नहीं करते । प्रतिमास गुरुबारको
आयंबिल उपवास करते हैं। अपनी कमाईका १० वा भाग धर्मार्थ लगाने हैं।
पामाणिकतामें आप धावकधर्मक अनुकृत बनाव करते हैं। आपके दो मुपुत्र और दो मुपुत्रियां हैं। आपने अपना स्थानीय मकान बनवानेसे पहले गृह-उपाध्य भपने धर्मायानके लिए बनवाया है। आपका जीवन मंतीषी और धार्मिक मर्यादाके अनुमार है। यस तो यह है कि आप जैसे आदर्श जैनकी समाजको आवस्यकता है।

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवमो जायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

बारस उनंगाइं

तत्थ मं

ओववाइयसुसं

तेणं कालेणं तेणं समग्णं चंपा नाम नगरी होत्या, रिद्धत्विमियसमिद्धा प्रमुह्य-आइण्णजनमणुस्सा इलसबसहस्मसंकिह्नविक्रिक्कद्वपणनसे उसीमा कुरुउसंडेयगामपडरा उच्छुजबसाविकविया गोमहिसगवेठमप्पभूया उक्कोवियगाय-गंठिमेयगभडतकरसंडरकसरहिया सेमा विस्वद्वा शुमिक्ला वीसत्यसुहावासा अणेगकोडिक्दं वियाद्रकाविव्युवसुद्दा णडणहगजहमात्रमु द्वियवेलंबवक्द्य गपवगळासगः आङ्क्सगरुंसमसत्मद्भवनीनियअणेयतास्वयराणुचरिया आरामुखाणअगडतला-गरीहियविपश्चिगुणोववेया नंदणवणस्त्रिभप्पगासा उव्विद्धविउलगंभीरसायफलिङ् चक्रगयमुसुंदिओरोह्सयध्िषजमलक्ष्याद्यमसुप्पवेसा चणुक्रदिकवंकपागारपरिविस्तना क्रविसीसयवहरहयसंद्वियविरायमाणा अहासम्बद्धरिवदारगोपुरतोरणडण्यमस्विभक्तरा-यमगा क्रेयायरियरह्यदरफलिइइंदफीका विवर्णिचक्रेत्रसिप्पियाइण्णकिव्युयसुहा निचाडगतिगवडक्ववरप्रभिवादणविविद्ववसुपरिमंदिया सुरम्मा नरवह्णविद्द्रणामहिः वरपदा अनेगवरतुरगमत्तकुं जररहपहकरसीयसंदमाणीयाहण्यवाणजुनगा विमुद्रलण-वगक्रिमिसोभियज्ञका पंहरवरभवणसण्णिमहिया उत्तामणमणपेरक्रविज्ञा पासादीया दरिसणिका अभिकता परिक्षा ॥ १ ॥ तीसे णं चंपाए जगरीए बहिया उत्तरपुरत्विमे विसीमाए पुष्पभद्दे वासं उजाने होत्या रम्मे० ॥ २ ॥ तस्स पं उजावस्स बहुमज्स-दसभाए एत्य वं महं एके असोमश्ररपायवे प० कुसमिकुसविगुद्धस्मलमूळे मूलमति कंदमंते संघमते तवामते सावमंते प्यातमंते पत्तमंते पुण्यमंते फल्मते बीवमंते अणुप्रव्यस् गायस्कद्भावपरिणय् एक्कवंचे वर्णेयसाळे वर्णेगसाहप्पसाहविकिमे अधेगनरवाम-गुप्पसारियकारोजस्थाविकसम्बद्धांचे अच्छिर्पते अविरस्तरते अवार्धपते अणर्थयपते निबूबकर्डचंड्रक्ते ववहरिवनिसंतक्तमारंथकार्गमीरदरिसनिजे उवविकायणवतरुण-पनपत्रपद्मोगकराज्यवार्वतंकिसस्यवृद्धमासप्रशाससोहियवरंकुरग्गसिष्ट्ररे विर्वं कुसमिए नियं माइए नियं क्रमहए जियं शबहए नियं गुलहए नियं गोच्छिए नियं वमलिए नियं

जुवलिए णिश्वं विणमिए णिश्वं पगमिए णिश्वं वृक्षमियमाइयलवहयथवहवगुल्ड्स--गोच्छियजमिलयजुवन्दियविणमियपणमियमुविभनपिडमेर्जारनिर्देसस्घरे सुस्बरिण-सयणमालकोइलकोहंगकभिगारककोइलकजीवंजीवगणंदीमुहकविलपिंगलक्सगकारं-डचक्रवायकलहंससार्गभवेगसउणगणसिह्णविरद्यसर्णाङ्यमहुरमरणाङ्ग् सुरम्से संविडियद्वियभमरमहुर्यारेपह्करपरिव्हिन्तमणहुः पयकुतुमागवलोत्तमहुरगुमग्रमंतगु जंतरेतमारो अब्भेतरपुष्कफले बाहिरपत्तीच्छणं, पत्तेहि य पुष्फेहि य उच्छणा-पडिवलिच्छको साउफले निरोयए अकंटए णाणाविह्युन्यस्युम्मसंटवगरम्समोहिए विचिनमुहकेउभूए वावीपुक्तारणीदीहियामु य धृनिवेसियरम्मजालहरण् पिडिमणी-हारिसमुगंधिमृहसुर्शिमणहरं च महया गंधदाणि मुयंने णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवकः घरकमृहसे उक्ते उबहुँ अणेगरहजाण मुग्गसिवियपिवसीय भे पुरम्से पासादीए दरिस-णिजे अभिन्ते परिन्ते। मे णं असोगवरपायवे अण्णेहि बहाह निकएहिं लडएहिं छत्तोविहें सिरीसेहिं सत्तवणीहें दहिवणीहें लोदेहिं धर्वहि चंदणहे अजुणेहैं णीवेहिं कुडएहिं सब्वेहिं फणसेहिं दाखिमेहिं मालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगृहिं प्रोवगेहिं रायहक्लेहिं लंदिहक्लेहिं सध्दओ समेना संपरिक्लिन । ते णं तिलया लड्या जाव णंदिहक्ता कुमिक्कुमिक्कुम्बन्धुला मुलमंती कंद्रमंती, एएर्नि बण्णओ भाषियच्यो जाव सिबियपविमोयणा नुरम्मा पासादीया दरिमणिजा अभिन्वा परिस्वा । ते णं तिलया जाव णंदिरुक्ता अण्णेहि बहुहि पउमलयाहि णागलवाहि असोगलबाहि चंपगलबाहि चृयलबाहि वगलबाहि वासंतिगलबाहि अइमुनयलयाहि कुंदलयाहि सामलयाहि मध्यओ समेना मंपरिक्सिना । ताओ प पउमलयाओं णिचं कुमुमियाओं जाव वर्डिसयधरीओं पामाबीयाओं दरिसणिजाओं अभिम्बाओ पढिम्बाओ ॥ ३ ॥ तस्य णं अमोगदरपायवस्य हेट्टा इंसिं संध्यमकाणि एत्थ ण महं एके पुटविसिलापद्दए पण्णते, विक्संभागामउस्सेद्दसुप्पमाणे किन्द्रे अंजणघणकिवाणकुवलयहलधरकोसे जागासकेसकजलैनीखंजणसिंगभेदविद्वय जंबूफल-अमणकमणवंघणणीलुप्पलपत्तनिकरअयसिकुसुमप्पगासे मरगयमसारकलिर्गणयणकीय-रामिवण्णे णिद्ध्यणे अद्वसिरे आयंमयतस्त्रेवमे सुरम्मे ईहामिग्रउसभतुरगन्रवार-विहगवालगिकणगरुरुसर्भन्मरकुं जरवणलयपडमलयभितिचेते आईणगरुप्यून्रजन-णीयनूलफरिसे सीहासणसंठिए पासादीए दरिसिक्जि अभिन्ये पिछह्दे ॥ ४ ॥ तन्थ णं चंपाए णयरीए कृणिए णामं राया परिवसह, मह्याहिमवंतमहंतमहत्त-मंदरमहिंदसारे अश्वंतविमुद्धदीहरायकुलवंससुप्पसूर् जिरतरं रायलक्कणविराह्यंवसंवे बहुजणबहुमाणपूर्ण सम्बगुणसमिद्धे खतिए मुद्दए मुद्धाहिसिते माठपिउसुबाए दगक्ते

सीमंकरे सीमंघरे सेमंकरे सेमंघरे मणस्मिह जनवयपिया जनवयपाछे जनवसपुरोहिए क्षेत्रकरे केउकरे गरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवर्ग्य पुरिमासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिसबर्ग-।हत्वी अन्ते दित्ते विक्तिक्रणविजनभवणसम्बासमञ्जाणवाहणाङ्ग्ले बहुभजबहुजायस्वर्यए आओनप्योगस्पत्रते विच्छवियपदरमत्तपाणे बहदासीदास-गोमहिसगंतलगप्पमूए परिपुण्णजंतकोसकोह्वागाराउद्दागारे बन्दवं दुव्बलक्यामिने ओहयर्केटयं निह्यकंटयं मलिसकंटमं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयस्तुं निह्यस्तुं मलिबसर्सुं उदियस्तुं निजियससुं पराइयसत्तुं ववगवदुन्मिक्सं मारिभयविष्पमुद्धं केंमें सिवं मुभिक्से पसंतर्डियडमरे रजं पसासेमाण निहरह ॥ ५ ॥ तस्स णं कोनि-यस्म रण्णो धारिणी नामं देवी होत्या, सुक्मालपाणिपाया अहीणपिडपुण्णपंचिदिय-सरीरा लक्ताणवंजणगुणोदवेया माणुम्माणप्यमाणपद्मिप्रणसुजायस्व्वंगसुंदरंगी ससिः सोमाकारकंतपियदंसणा सुरूबा करबारूपरिमियपसस्यतिबलियबलियमञ्जा कुंडलक्रि-हियगंडलेहा कोमुद्दरविषयरिवमलपिडपुण्णसोमवयणा सिंगारागार्वाहवंसा संगय-गयहसियमिवयविहियविकाससल्लियसंलावविद्यक्ताववारकुसला पासाबीया दरि-सणिजा अभिस्वा परिकृता, कोबिएन रण्या संभसारपृत्तेणं सद्धि अनुरत्ता अविरता इहे सहफरिसर्सक्वगंधे पंचविहे माणुरसए काममीए पवणुमदमाणी विहर्द ॥ ६॥ तस्स णं कोणियस्स रण्यो एकं पुरिसे विजलकमवित्तिए भगवजी पवित्तिवाजए भगवओ तदेवसियं पवितिं निवेप्द, तस्त मं पुरिसस्त बहुवे अण्ये पुरिसा दिण्ण-अइभत्तवेक्या भगवजो पवित्तिवाउवा भगवजो तहेवसिवं पवित्ति विवेदेति ॥ ७॥ तेणं काळेणं तेणं समग्णं कोषिए राया भंभसारपुत्ते बाहिरियाए उबद्वाणसालाए अणेगगणनासगर्दं बनायगराईसरतलवरमाडं नियकोडं नियमेतिसहामेतिगणगडोवारिय अनवचेडपीडमहनगरविगससेद्रिसेणाक्डसस्ववाहद्यसंविवालसर्दि संपरिवृद्धे विह-रहु ॥ ८ ॥ तेर्च कार्रेच तेर्च समर्पं समगे भगवं महाबीरे बाइगरे तित्यगरे सहसंबुद्ध पुरिश्वनमे पुरिससीहे पुरिसमरपुंडरीए पुरिसमरगंघहत्वी अभयदए सम्बदए मग्ग-इत् सर्वक्य जीवद्य वीवो ताणं सर्वं गई पहुत धम्मदरवाउरंतचक्कदी अप्पटि-इपबरनावबंसवबरे वियहच्छाउमे जिसे जानए तिब्से तारए सुते मोसए हुदे बोहए सञ्ज्ञक् सञ्ज्ञहरिसी सिवमयसम्बद्धयमंतमक्ख्यमञ्जाबाह्मपुणरावतिर्व सिद्धिगह-भामधेर्य ठाणं संपाधितकामे भरहा जिणे केमधी सत्तहत्त्वस्सेहे समस्वत्ससंठाण-रंठिए वजरिसक्मारायसंचयने वासकोमवाउनेने कंकगहणी वनोयपरिणासे सटाण-पोसपिद्वंसरोक्ष्मरिषष् परामुप्पक्रमंबसरिसनिस्सासम्बर्भिष्यणे स्त्री निरायंकरत्तम-प्रसायकार्त्येयनिक्यमपछे वाह्यसक्तंत्रसंत्रसंत्रसंत्रस्य विश्वसरीर्गित्रवर्धेये छायाउज्योहर्य-

गर्मने वननिवित्रसुबद्धकक्षणणायक् अनारनिभविद्यमगसिरए सामलिबीडपनि-वियच्छोडियमिटविसयपसत्वतुहुमलक्खणसुगैषसुंदरभुवमोयगभिगनेसफअस्पहिङ्क-भगरगणणिद्धतिकुर्वनिविवकृषियययाहिणावत्तमुद्धतिरए दानिमपुष्पप्पासत्तव-णिजसरिसनिम्मलमुजिदकेसंतकेसभूमं। घण(निविव)छत्तागादत्तमंगदेसे विव्यवसः मल्द्रमहुर्चद्दसमणिढाले उडुक्रपिडपुण्णसोमवयणे अहीणप्रमाणजुत्तसमणे सुस्मकी पीणमंसलकवोलदेसभाए आणामियचावस्टलकिण्डस्भराइत्युकरिणकिद्धभम्हे अव-बालियपुंडरीयणयणे कोयासियधवलपत्तलच्छे गङ्गायगङ्ख्रतुंगणासे उपनियसि-लप्पदालविकालसिकाभाइरोड्डे पंदुरमसिसबलविमलकिमालसंखगोक्सीरफेणकेंद्र-दगरयमुणालियाधवलदंतसेका असंहदंते अप्पुतियदंते अविरत्नदंते मुखिद्धदंते युजायदेते एगदंतसेडीविव अणेगदंते हुयवहष्टिदंतभोयतनतविश्वस्नतनतलतालुजीहे अवद्वियद्वविमत्तवित्तर्मस् मंसलसंठियपसत्वमद्दूलविडलद्द्युए चडरगुलसुप्पमाण-कंबुवरसरिसम्गीवे वरमहिसवराहसीहसदूलउसभनागवरपरियुष्णविजलक्संधे जुग-सिबमपीणरहयपीवरपउद्वतुसंठियस्तिलिङ्गविसिद्ववणविरस्ववद्यसंचिपुरवरफलिङ्बहि-यसुए भुगईसरविउलभोगञायाणपलिहउच्छृत्वीहवाहू रणतलोवहयसउयमंगस-युजायलक्षणपसत्यअच्छिड्जालपाणी पीवरकोमलवरंगुली आर्यवर्गवनलिणसुद्रक इलिखणक्ले बंदपाणिलेहे स्रपाणिलेहे संखपाणिलेहे बक्रपाणिलेहे दिसामोत्बिय-पाणिलेहे चंदम्रसंखचकदिसासोत्थियपाणिलेहे कणगसिलायलुजलपसम्बस्मसन उनिवयिविच्छण्णपितुलक्छे सिरिक्छंकियक्छे अक्रंदुयक्षणगढ्यस्विम्मसमुजास-निश्वहयदेहधारी अद्वसहस्सपिष्ठपुष्णवरपुरिसकक्सणधरे सष्णयपासे संगयपासे संदरपासे समायपासे मियमाइयपीणरहमपासे उज्जुयसमसहियवधाराष्ट्रकाणस्य जाह-जलबहरमणिजरोमराई प्रसविहगसुजायपीणकृष्की प्रसोबरे सुरसरणे पदमविब-डणाभे गंगावत्तगप्याहिणावत्तरंगमंगुररविकिरणत्रकावोहियअक्टेसार्वतप्उमर्गमीर्-वियडणामे साहक्सोणंद्रमुसलद्प्पणणिकरियवर्क्णगच्छक्सरिसवर्वप्रविलयसम्ब पमुद्र्यवरनुरगसीहबरवहियकडी वरतुरगस्त्रआयसुगुज्सदेसे आङ्क्लाह्यक् जिक्का**ेदे** वरवारणतुक्रविक्रमविलसियगई गयससणसुजायसिक्रोक समुग्रमविम्यक्ष्यस् एणीकुरुविदानमबद्राणुपुरुव तथे संठियसुविक्षिष्टगृहगुप्के सुम्पद्वियकुम्यवारमसमे अणुपुन्वसुमेह्यंगुर्काए सण्णयत्गणुनंबणिद्धणकले रनुष्पलयत्तमस्यस्युकृतासकोमस्यत्वे अहसहरसवरपुरिसलक्खणधरे नगनगरमगरसागरचांसक्रंसमंगसेकिववलले विकि इन्दे हुयवहनिद्मावलियनवितावियतकणर्विकरणसरिसतेष् अवासवे अममे वास-चणे छित्रसोए निस्वछेदे वयगयपेमरागहोसमोहे निर्मायस्स प्रवयनस्स देखन्

सत्वनाको पर्दश्चाक्ष् समजनपर्दे समजनविव्यरिकास्य चन्नतीसविजवयणारसेमपते कातीसस्यवयणाइसेस्पता आगासगर्ग चहेर्च आगासएमं छत्तेणं आगासि-शाहि जागराहि जागासफलिआसएगं सपानवीडेणं सीहासलेणं धन्मज्ञाएणं पुरक्षो पकडिजामाणेने चटरसङ्घे सम्गासाहस्वीहि छत्तीसाए अजियासाहस्तीहि सदि संपरिकुडे पुज्यानुपुर्वित चरमाणे नामानुस्मामं बृह्यसमाने सुईसुहेर्ण विहरमाणे चंपाए गयरीए बहिया उद्यमगरम्गामं उद्यागए चंपं नगरि पुष्णमई खप्पाणं समोसिरिउकामे ॥ ९ ॥ तए णं से पवित्तिकाउए इमीसे कहाए कडाई समाजे इनुदृहितामाणंविए पीवमणे परमसोमणस्मित् इतिसबस्यिमप्पमाणहित्व व्हाव सुद्धप्पवेसाई मंगलाई बत्याई पवरपरिहिए अप्यमहरबामरकासंकियसरीरे सयाको निहाको पिक्किक्समह सबाओं तिहाओं यंडिजिन्सनिता चंपाए नवरीए सञ्जीसञ्जीषं जेजेव कीजियस्स रण्यो गिहे जेनेव बाहिरिया छब्ह्यानसाका जेनेव कृतिए रामा मेनसारपुत्ते तेनेव उदागच्छा २ ता करमसपरिमाहिन सिरसावर्त मरकए अंबलि कर् कएकं विवाएकं बबाबेड २ ना एवं बवासी--जस्स में देवामुणिया इंसमें बेबंति जस्स में देवामुणिया देशनं पीहंदि जस्स मं देवानुष्पिया देशनं पत्यंति वस्स मं देवानुष्पिया देसके अभिक्रमंति अस्त णं देवाणुणिया जामजीयस्तवि सवजवाए इहराह वाच हियवा मवंति, से थं समने मगर्व महावीरे पुरुवाणुपुष्टि चरमाचे गामाणुरुवामं बहुजमाने वंपाए वयरीए उवनगरगासं उवागए वर्ष जगरि पुष्णमई उजार्च समोसरिङकाने, तं ह्यं मं देवाणुप्पियाणं पिक्कुयाए पियं निवेदेनि, पियं ते मध्य ॥ १०॥ तप् मं से कृषिए राजा मंगसारपुत्त तस्स पविक्तिवाउगस्स मंतिए एगमहं सोबा विसम्म रहुदुहु जाय हियए विवसिववर्कमलजगणवको प्यक्तिवयरकागतुन्तियकेयुर-मतरकुंडसद्दारविरावंतरह्यक्छे पासंवपसंवमाणघोसंतम्सणवरे ससंगर्न तृरियं चवसं नरिंदे सीहासवाको सब्भक्के २ ना पावपीढाको प्रवोबहर २ ना पाउँगाको ओश्चर २ ता अवहरू पेच रावक्तुवाई तंबहा-बार्ग १ इसे २ उप्पेसं ३ बाह्याची ४ बातवीवर्ण ५ एगसाडियं उत्तरासंगं करेह २ ता आगंते चोक्से परमञ्जूम्य अंबतिमङ्गियगहत्वे तित्वगरामिमुहे सत्तङ्क प्याई अञ्चगच्छा सत्तङ्क क्याई अञ्चनिकता वामं आर्चु अंबेह वामं जार्चु अंबेता दाहिणं बार्णु परवितकेति सार्द्र विश्वतो सुदार्थ परवितांति निवेतेह र ना हेसि प्रमुख्याह प्रमुख्याना करगतुक्थियर्विक्रमाओं भुवाओं पश्चिसाहरह २ ता करवल जाय कहु एवं वयाची-णनोऽत्यु में बहिद्देशार्थ सगरंशार्थ बाहगरार्थ तिस्थगरार्थ सर्थसंबुद्धाने पुरिशामार्थ प्रतिस्त्रीहार्च प्रतिस्वरपुंचरीयार्च प्रतिसवर्गयहत्वीर्थ सीगुरामार्च सीगनाहार्च

•

लोगहियाणं लोगप्रंवाणं लोगपज्ञोयगराणं अभगद्याणं जनमुद्याणं मग्नद्याणं सरणदयाणं जीवटयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं भम्मनायनाणं धम्मसारमीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवद्यीणं दीवो ताणं गरणं गई पर्हा अप्पडिह्यः वरनाणदंसणधराणं वियहछत्रमाणं जिणाणं जावयाणं निष्णाणं तारयाणं बुद्धार्थ वोह्याणं मुत्ताणं मोयगाणं सञ्बन्धणं सञ्बदरिसीणं निवमयलमस्यमणंतमकन्त्रय-मन्दाबाहमपुणरावित्तासिद्धिगडनामधेयं ठाणं मपनाणं, नयोऽत्यु णं समणस्य भग-वओ महावीरस्य आइगरस्स तित्थगरस्य जाव मंपः विजकामस्य सम धम्मायवियस्स धम्मोबएसगरम, वंदामि णै भगवंतं तत्व गयं इह गए, पासउ मे (मे में) भगवं नत्थ गए इह गयंति करु बंदर णमंसङ् वंदिला णमंसिता सीहःगणबरगए पुरन्थाभिसुहे निसीयइ निसीइना तस्स पवितिवाजयस्य अद्वुन्तरमयसहस्तं पीडदाणं दलयइ दलइना सकारेइ सम्माणेइ सकारिता राम्माणिना एवं वयासी---अवा णं देवाणुष्पिया ! सम्रोग भगवं महावीरे इहमागच्छेजा इह समीर्मारजा इहेव चंपाए णयगैए बहिया पुण्णभेद् उज्राणे भद्वापिडस्त्रं उम्महं उम्मिण्हिला संत्रभेगं तवसा अप्पाणं आवे-माणे विद्वरेजा तया णं मम एयमद्वं निवेदिजासित्तिकरु विमाजिए ॥ ११ ॥ तए मं समने भगवं महावीरे कहं पाउपप्रायाए रयणीए फूहुप्पलकमलकोमलुः म्मिलियंमि अहा(अह)पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगासकियुवसुवसुहगुंअदरागमसिसे कमलागरसंडबोहए उद्दियम्मि मृरे महस्सरसिम्मि दिणयरे तेयसा अलंते जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभेद्दे उजाणे तेणेव उवागच्छा २ ना अहापिकम्लं उग्नहं उगिणिहना मंत्रमेणं तत्रसा अप्याणं भावेमाणे विष्टरह ॥ १२ ॥ सेणं कालेणं तेर्ण नमएणं नमणस्म भगवओं महावीरस्स अंतेबासी बहुवे नमणा भगवंती अप्पेगह्या उग्नप्टबह्या भोगपव्यह्या राह्ण्य । णाय । कोरव्य । स्तिमपटबह्या भडा जोहा सेणावई पमत्यारो सेट्टी इच्या अण्णे य बहुवे एवयाइणो उनमजाइकुलस्य-विणयविष्णाणवण्णालावण्यविक्रमप्रहाणमोभगगकंतिज्ञा बहुधणवण्याणिचयपरिकालः फिडिया णरवहगुणाहरेगा इच्छियभोगा सुहसंपलिया कियागफलोबर्ग 🕊 मुणिय विभयसोक्सं जलबुब्बुयसमाणं कुसम्गजलबिंदुचंबलं जीवियं व णासण अद्भुविमाणं त्यसिव पद्यगलस्यं संविधुणिना णं चर्ना हिर्णणं जाव प्रव्यद्या, अप्पेगइया अद्यसासपरिआया अप्पेगइया मासपरिआया एवं दुमास तिमास जाव एकार्म० अप्येगहया वासपरिकाया दुवास० तिवास० अप्येगह्या अचेगवासपरि-भाया संजमेणं नवसा अध्याणं भावमाणा विहरति ॥ १३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहुवे निर्माषा समवंतो अप्पेगस्या

आर्मिणिबोहियणाणी जाब केवलणाणी अप्रेगद्या मणबलिया वयबन्या काय-बलिया अप्पेगहवा संबेशं माषाशुरगहमस्या ३ अप्पेगहवा बेलोगहिएला एव जहोसां? ० विष्पोसित अमोसित सम्बोमित अप्पेगइया कोट्टवर्सा एवं घीय-बुद्धी पटवृद्धी अप्पेगह्या प्यावनारी अप्पेगह्या मंभिक्रगोया अप्पेगहया सीरागव अप्पेगहया महुआसवा अप्पेगइया सप्पिआसवा अप्पेगहया अवन्धीणमहाणसिय एवं उज्जमंड अप्पेगहया विउलमंड विउन्बितिष्टमा बारणा विज्ञाहरा आगासाह-वाहणां ।। अप्पेगह्या कमगावलिं त्वोक्स्मं परिवण्णा एवं एमावलिं खुद्वागनीहतिः कीरियं तत्रोकस्यं परिवण्या अप्येगद्वया सहालयं सीइनिकीरियं त्वोकस्यं परिवणा भद्दपितमं महाभद्दपितं सञ्दक्षोभद्दपितं आयंबिलबद्धमाणं तबोकामं परिचणा मासियं मिक्सपिडिमे एवं दोमासियं पिडमे विमासियं पिडमे जाव मनमासियं भिक्तपुरिक्षे परिकरणा अध्येगङ्गा पहमे सनराइंदियं भिक्तपुरिक्षे परिकरणा जाव तचे मगराइंदियं भिक्खपडिमं पिडकणा अहोराइंदियं भिक्खपडिमं पडिकणा एकराईदिये भिक्खपंडिमं पंडिकणा सत्तसत्त्रीयं भिक्खपंडिमं अद्वद्दमियं भिक्ख-पाँडमं जनजनमयं मिकसपडिमं दमदसमियं मिकसपडिमं सहियं मोयपडिमं पडिकणा महक्रियं मोसप्डिमं पडिकणा अवसज्ज्ञं चंदपडिमं पडिकणा वहर(वजा)-मर्ज्स चंदपहिमं परिवरणा संजमेणं तबसा अप्पाणं भावेमाणा विद्वरंति ॥ १४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समारणं समणस्य भगवको महावीरस्य अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो ब्राहसंपण्णा कुल० बल० रूप० विषय० णाण० दंसण० चरित्त० लजा० लाघव० भोवंसी तेयंसी बचंसी असंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जिय-इंदिया जियमिहा जियपरीसहा जीवियासमरणभयविष्पमुद्धा वयप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पद्वाणा चरणप्पद्वाणा जिन्नहप्पद्वाणा निच्छवप्पद्वाणा अज्जबप्पद्वाणा सहव-ध्यहाणा लाध्यप्पहाणा संतिप्पहाणा मुनिप्पहाणा विजापहाणा संतप्पहाणा वेबप्पष्टाणा वंभप्पष्टाणा नयप्पष्टाणा नियमप्पद्धाणा सावप्पद्धाणा सोयप्पद्धाणा चार-बच्चा लजातबस्रीजिइंदिया सोही अभियाणा अप्पुस्प्रया अबहिन्नेसा अप्पडिलेस्सा ध्यामकारया दंता इसमेव निमांचं पावयणं पुरक्षोकाउं विहर्रति । तेति णं भगवं-तार्थ आक्रावाबावि विदिता भवेति परवाबा विदिता भवेति आयावार्य जमहत्ता नल-वर्णामेव अस्त्रातंत्रा अच्छिरपरिणवागरणा र्यणकरंडमसमाणा कृतियावणभ्या पर्-वादिवयमक्षा द्वाकसंगिको समलगनिपिडगवरा सञ्जक्तरसञ्जिदाहको सञ्जञा-साजगामिको अजिला जिलसंकासा जिला इव अवितहं बागरमाणा संजमेणं तबसा कारवार्थ आवेकाणा विहरंति ॥ १५ ॥ तेर्थ कार्रेणं तेर्णं समयन् समयस्य भगवनी

महानीरस्म अंतेवासी यहने अणगारा भगवेनी इरियामसिया भागासिया एसका-समिया आयाणभं उमनिकन्येवणामसिया उचारपामवणकेलनियाणवाद्यपरिकाली-वामसिया मणगुना वयगुना कामगुना गुना गनिहिया गुन्धेभयारी असमा अविश्वका ष्टिण्यसंथा व्हिष्णमोया निरुबलेवा कंमपाईव सक्तीया गल इब निरंगणा जीको विक अप्पांडहरगांड अधकागांपित जाराबदः आदिसमालगार्गात पागढभावा करनी इव गुनिदिया पुरुषरपने व निरुष्ठेवा गगणमिव निरार्छवणा अधिको इच निरास्क्रा चंदो इव सोमलेमा सरो उव विचानेया सागरो इव गंभीया विद्वारी इव सटकारी विष्यमका मेदरो ६व अप्पक्तेपा मार्यमलिलं व सुद्धाहियया आंग्राविम्हणे व एश्-जाया भारडपक्खी व अप्पमना कंजरो इब सोंडीरा वसनो इब जाबत्यामा सीहो इव रद्धितमा बसंधरा इव मन्यकासनिसहा सहग्रहग्रामणे इव तेयसा जर्मना सन्धि णं तेसि णं भगवंताणं कृत्यः पष्टिकंधे भवडः से य प्राष्ट्रकंधे बाउडियहे प्रणाते तंत्रहा-दव्यओ खिनभो कालओ भावओ, दब्यओ र्ण सचिनाचिनमासिएस दब्बेस. केमओं गामे वा णयरे वा रण्णे वा केरे वा खरे वा घरे वा अंगण वा, कासओ समए वा आवित्याए वा जाव अवणे वा अण्णागरे वा बीहुकालसंजींगे, भावजी कोह वा माणे वा मामाए वा छोड़े वा भए वा हासे वा एवं तेम्न ज भक्ष । ते र्ण भगनंती वामानासवर्ज अह गिम्हहेर्मतियाणि मामाणि गामे एगराह्या जयरे पंचराइया वासीचंदणसमाणकःया समलेहकंचना समग्रहदुक्का इहलोगपर्लोग-अप्पडिबद्धा संसारवारगामी कम्मजिन्वायणद्वाए अन्भुद्विया विद्वरंति ॥ १६ ॥ तेमि णं अगर्वनाणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं इसे एयाम्बे अस्थितरबाहिरस् नवावहाणे होत्था, नंजहा-अधिभनरए छन्निहे बाहिरएवि छन्निहे ॥ १७ ॥ से कि तं बाहिरए १२ छिनिहे प०, नंबहा-अधमणं सणो(अवसो)यरिया मिक्सायरिवा रमपनिचाए कायकिलेसे पडिसंतीणया ! से कि ते अगसणे ? २ दुविहे प्रश्नते, नंजहा --इनिर्ण्य आवकहिए य । से कि तं इनरिष्? २ वर्णगविद्दे क्यारी, तंजहा —चडत्यमने छट्टमते अद्वभने दसममते बारसमते चडहसमते सोलसमते महमासिए भत्ते मासिए भन्ते दोमासिए भत्ते तेमासिए भत्ते चलमासिए भूते वलमा सिए भने छम्मासिए भने, से तं इत्तरिए। से कि तं आवकहिए? २ दुविहे क्ष्मोरे, तंजहा-पाओवगमणे य अनपन्यक्साणे य । से कि तं पाओवगमजे ? २ इतिहै पण्णते, नंजहा - वाधाइमे य निव्वाचाइमे य नियमा अप्यविक्रमे, से से पाओव-गमणे । से कि तं असपबक्ताणे ? २ दुविहे पण्यति, तंजहा---वाचाहमे व निम्बा-षाइमे य णियमा सप्पारिकामे, से तं भाषप्यक्याणे, से तं अणस्के । से कि सं

कोमोसरिया ? २ दुविहा पण्याना, तंबहा-दब्बोमोयरिया य भावोमोयरिया य. से कि नं दम्बोमोयरिया है २ दुविहा पण्णाना, तंजहा-उपगरणदम्बोमोयरिया य भन्न-पाणवन्त्रोमोधरिया थ । से कि ने उदगरणदन्त्रोमोधरिया ? २ निविद्या पणाणा. तंजहा-एगे बत्ये एगे पाए विश्वनोदगरणसाहज्जणया, से तं उदगरणवन्त्रोसीयरिया । से कि नं अनपाणवन्त्रोमोयरिया ! २ अनेगविहा पण्णना, तंबहा-अहुपमाणमेने कबले आहारमाणे अप्पाहारे, दवाससपमाणमेले कवले आहारमाणे अवद्रोमोर्यारया, सोलसपमाणमेते कवले आहारमाणे द्वागपनोमोर्वारया. बडव्हीसपमाणमेने कवले आहारमाणे प्लोमोयविया. एकतीसप्रमाणमेले कवळे आहारमाणे किंचुणोमोर्यार्या बतीनपमाणमेने सबसे आहारमाचे पमाणपता एको एगेजवि वासेर्ज उजयं आहार-माहारेमाणे समणे णिमांचे गो पद्ममरसमोत्रति बत्तव्यं सिया. से तं अत्तपाणद्ववी-मोयरिया, से तं इच्चोमोयरिया । से कि तं भाषोमोयरिया ? २ अजेगविका प्रणाना तंजहा-अप्पन्नेहे अप्पमाणे अप्पमाए अप्पन्नोहे अप्पन्नहे अप्पन्नहे, से तं माबोमी-बरिया. ने तं ओमोबरिया। से किंतं निक्कायरिया ? २ अनेशविद्या कुमता, तंत्रहा-द्रव्याभिग्यह्चरए सेताभिग्यहचरए कालामिग्यहचरए भावामिग्यहचरए उदिसत्त-बरए णिविशत्तवरए उविश्वत्तिविश्वतवरए णिविश्वत्तउविश्वतंतवरए विश्वमाणवरए साहरिज्ञमाणनरए उनगीयनरए अवणीयनरए उननीयअवजीयनरए अवजी-क्षत्रकारिकरण संसद्धवरए असंसद्धवरए तजायसंसद्धवरए अच्चाववरए मोजवरए विक्रकासिए अविक्रकासिए पद्रकासिए अपुद्रकासिए सिक्सकासिए अमिक्सकासिए अन्यनिकायर ओवणिहिए परिमियपिंडवाइए सुदेसमिए संखायतिए, से तं मिक्सा-बरिया । से कि तं रसपरिचाए ? २ अणेगविहे पण्णते, तंबहा-जिब्दि(य)तिए पणीयरमपरिचाए मार्थवित्रए कायामित्यमोई मरसाहारे विरसाहारे अंताहारे यंताहारे सहाहारे. से तं रसपरिचाए । से कि तं कायकिकेसे ? २ जनेगबिट्टे पण्यते. तंजहा-ठाणक्षिए ठाणहए इबुडुआसणिए पडिम्हाई वीरासनिए नेसजिए दंडावए करहसाई आयाम् अवारहए अनंद्वमए अणिह्नहुए सञ्चनानपरिकम्मविभूसविप्सुके से लं कायकिकेसे । से कि तं पडिसंसीवया ? २ चडिवहा पण्यता, तंजहा-देदिय-पविसंतीकता कतावपविसंतीकया जोगपविसंतीकया विवित्तसम्भासकतेवणया, से कि तं इंदियपविसंतीणमा ? १ पंचविद्या पण्यता. तंत्रहा-सोइंदियविसयप्पयार. विरोही वा सोइंदिविशयपराष्ट्र अस्येख् रागदोसनिग्गहो वा विश्वदियविसप्यपमा रनिरोहो ना वर्विकादिवविसवपराष्ट्र अत्येष्ठ रागदोसनिरगहो वा वाणिदिवविसवप्यवा-रिनिरोही का बार्निदियनिसन्वर्गासु अत्वेसु रोगदीसनिरमही वा विव्यविसन्वरूप

बारितरोहो वा जिन्निदियांवसयएनम् अत्येम् रागदोसांनरगहो वा फासिदियवस्य-प्यवारनिरोहो वा फानिटियनिस्यपंत्रम् अत्येस् रागदोमानस्यहो हा. ने नं इंदियक डियंतीणया । मे कि तं कमायर्पाडमंत्रीणया । २ च स्टिका प्रणाला तंजहा-कोह-म्युदयनिरोहो वा उदयपणस्स वा कोहस्म विफर्लाकरणं माणस्मदयनिरोहो का उद-अपक्तम् व। माणस्य विफलीकरणं मायाद्यवर्णिगेहो वः उदयपक्तात् वा मायात्र विफलीकरणं लोहस्मद्यणिरोहो वा उदयपनम्य वा लोहस्य विफलीकरणं, मे ते कमायपडिमंत्रीणया? मे कि तं जोगपडिमंत्रीणया? २ तिविहा एकामा, त्रेजहा-मण जोगपहिसंलीणया वय बोगपडिसंलीणया बाय जोगपहिलांलीणया । में कि ते मण-जोगपडिसेटांणया है ? अवन्यत्मणांणगोही वा कुमलगणद्वीरण वा. ये ते गण-जोगपडिसेनीणया । से कि नं वयजोगपडिसेतीणया? व अक्नमलवर्याचरोही वा कसलवयउदीरणं वा. से नं वयजोगर्पाष्टगंदीणया । से कि रं कायजोगर्पाष्टगंदीणया ? २ जण्णं सुसमाहियपाणिपाए कुम्मो इव गुलिटिए सञ्ज्ञगायपहिसेनीण चिद्रह से तं कायजोगपडिमेलीणया । से किं तं त्रिवित्तमयणामणसेवणया ! २ जं णं आरामेसु उजाणेम् वेयक्लेम् सभाम् पवास् पणियगिहेस् पणियमात्वास् इम्बीपयपंचनसंस्ताः विरहियाम् वसतीम् फाम्एमणि अपीटफलगरे आसंधार्गं उवसंपक्षिता णे विहरः, से तं पडिमंजीणया, मे तं बाहिरए तवे ॥ १८ ॥ में कितं अध्यितरए तवे ? २ छाँ व्यक्ते पण्णते. नंजहा-पायच्छितं विणओ वेयावचं सज्ज्ञाओ झाणं विष्ठस्मस्गो । से कि तं पायच्छिते ? २ दसविहे पण्यते, नंजहा-आलोयणारिहे पडिक्रमणारिहे नदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सरगारिहे तबारिहे छेबारिहे मूलारिहे अणबहुप्पारिहे पारेचिया-रिहे, से नं पायच्छिने । से कि नं विणए ? २ समितिह पण्णते, नंबहा-शाणविष्यप् दंसणांबणए चरिनांबणए मणविषए वहविषए कार्यविषए स्रोगोबसार्बिणए। से 🎋 नं जाणविष्यए ? २ पंचितिहै पण्णेते, नंजहा-अस्मिणिबोहियणाणविष्यए सुवनाणविष्यए ओहिणाणविगत् अणपजनगाणविषत् केवलमाणविषत् से तं मार्णावणत्। से कि तं टंमणविषाए ? २ दुविहे प्रणाने, भंजहा-सुस्स्मणाविषाए अणावासायणाविषाए । से कि तं मुस्मृनणाविषाएं ? २ अणगविहे पण्यामे, तंजहा- अन्मुद्वाणे इ वा आसमा-भिवमहे इ वा आमणप्यवाणे इ वा सकारे इ वा सम्माणे इ वा किइकाने इ वा अंजलिपागहे इ वा एंनस्म अणुगच्छणया ठियस्स पञ्चासणया गच्छंनस्स पिडसं-साहणया, से नं सुरम्सणाविषाए ॥ ने कि तं अणकासायणाविषाए ? २ पणयाजीसविहें यण्णते, नंबहा-अरहंताणं अणबासायणया अरहंतपण्णतस्स धन्मस्स अणबासाय-णया आयरियाणं अणवासायणया एवं उवज्यात्माणं चेराणं कुलस्स गणस्स संबस्य

किरियाणं संभोगियस्य आभिणिबोहियणाणस्य सुयणाणस्य ओहिणाणस्य मण-पञ्चकाणस्य केवलणाणस्य एग्सि चेव भागवहमाणे एएसि चेव वणानंजलणया. से तं अणकासायणाविष्णए में नं दंसणविष्णए । से कि तं चरित्तविष्णए ? > पंचित्रहे पण्णते, नंजहा-सामाइयचरित्तविणए हेदोबद्वाविषयचरित्तविणए परिहार्विमृद्धि-चरित्तविष्णस् सुद्वसमंपरासचरित्तविष्णस् अद्यवसासचरित्तविष्णस्, से नं चरित्रविष्णस् । से कि तं मणविषाएं ? २ द्विष्ठे पण्णते, तंत्रहा-पसत्वमणविषाम् अपसम्बमणविषाम् । से कि नं अपसत्यमणविष्यः ? २ जे व मणे साबजे संकिरिए संस्क्रमे दहार णिहरे फल्मे अण्डयकरे छेयकरे भेयकरे परितानणकरे उद्दरणकरे भुओवधाइए तहप्पगारं मणी जो पहारेजा. में तं अपसत्यमणीतिजय । से कि तं पमत्यमणी-विणए ? २ ते चेव पसत्यं णेयम्यं, एवं चेव वहविणकोऽवि एएहिं पएहिं चेव नेयन्त्रो. से तं वहविष्ण । से कि तं कायविष्णः ? २ द्विहे पण्णते, तंत्रहा-पसत्बकायविषणः अपसत्यकायविषणः । से कि तं अपसत्यकायविषणः ? २ सत्तविष्ठे पण्णते. तंत्रहा-अणाइनं गमणे अणाउनं ठाणे अणाउनं निसीयणे अणाउनं तुय-रूपे अणाउत्तं उम्रंष्णे अणाउत्तं पहंच्ये अणाउत्तं सर्व्यिदियकासजीयजीजायाः से तं अपसत्वकार्यावणए । से कि तं पसत्यकार्यावणए ? २ एवं चेव पसत्यं भाषियव्यं. से तं पसत्यकायविष्णए, से तं कायविष्णए । से कि तं कोगोबयारविष्णए ? २ सर्तावहे पण्णते. तंजहा-अञ्मासवत्तियं परच्छंदाण्वत्तियं कमहेतं क्यपंदिकिरिया अत्तरा-वेसणया देसकालण्या सम्बद्धेस अप्पत्तिकोमगा, से तं कोगोवबारविषए, से तं विकार । से कि तं वेशावन ? २ इसविष्ठे पण्णते, तंजहा-आगरियवेशावने उत्त-जारायवेशावचे सेष्टवेशावचे गिलाणवेशावचे तवस्मिवेशावचे चेरवेशावचे साह्रक्रिया-वेबावने कुरुवेबावने गणवेबावने संघवेबावने, से तं वेबावने । से किं तं सज्याएं ? २ पंचविहे प्रणाते, तंबहा-बायमा परिप्रदक्षणा परिसहणा अणुप्पेहा धन्सकहा. से ते सजहार । से कि ते झाणे ? २ चटव्यिहे पव्यति, तंबहा-अहज्झाणे स्हज्झाणे ध्यमाञ्चाने सम्बद्धाने, सहज्ञाने चल्लिहे पण्यते, तंत्रहा-अमणुण्यसंप्रधोगसंपर्वते तस्य विष्यकोगस्सतिसमण्यागरः बावि मगरः, मणुष्णसंपकोगसंपजते तस्स मविष्यः ओगस्सतिसम्ब्याग्य वाचि भवड, आयंक्संपओगसंपडते तस्स विष्पओगस्सतिस-मण्णामा यावि भक्त, परिजासियकामभौगसंपभोगसंपठते तस्स भविष्पभोगस्स-विवसम्भागप् यावि भवद् । भारत में शाणत्स बतारि सक्खणा पण्णता, तंजहा-कंदणया सोवणया तिप्यणया विसवणया । श्रृत्याणे चडव्यिहे पण्यते, तंत्रहा-विसायकंकी मोसायकंकी तेजायकंकी सारकस्त्रणायुक्की, सरस्स जं झाणस्स चतारि

सक्त्रणा फणना,तंत्रहा-उसण्यदोने बहुदोने अण्याणदोने आमर्चतदोसे । धम्मज्ञासे चडिन्हे चडप्पडीयारे पण्णते, नंजहा-आगाविजए अवायविजए विवायविजय मेठाणविज्ञतः । धम्मस्य णे झाणस्य चनारि सक्खणः पण्पताः, तंजहा-आणार्वः विसमाहदे उबएसहर्व सुनहर्व, धम्मस्य वं झाणस्स चनारि आलंबका पव्यासाः, नंजहा-बायना पुच्छमा परियहमा धम्मकहा, धम्मस्य में झामस्य बनारि अनुप्पेहाओ प्रणानाओं, तंजहा-अधिवाण्येहा असरणाण्येहा एगनाण्येहा संसाराण्येहा । सकः आणे वत्रविष्ठे चरप्रहोबारे प्रणाले, तंत्रहा-पृहणविस्के सविधारी १ एगलविवके अविवारी २ सुहमकिरिए अप्पडिवाई ३ नम् च्छिककिरिए अभिवही ४. सुबस्य ण झाणस्य चनारि सक्खणा पण्णनाः नंबहः-विवेगे विवसरगे अध्यक्के असम्मोडे. मुक्स्स में झाणस्स चनारि आसंबंधा कथना, नंबहा-संसी बनी अजाने सहवे. मक्स्स ण झाणस्य चतारि अण्पेहाओ क्यानाखो. तंत्रहा-अवायाणप्पेहा असुभाणुप्पेहा अर्णतिविभियाणुप्पेहा विष्यिणामाणुप्पेहा. से नं साने ॥ से कि नं विजन्सको ? २ दुविहे पण्यते, तंत्रहा-दव्यविजन्सको आवविजन्सको छ। से कि नं दव्यविजस्समी ? २ चंजियहे पण्णोत, तंत्रहा-सरीरविजस्समी गणवि-उस्मागे उवहिविउस्मागे भनपाणविउस्सागे, से ते दथ्वविउस्सागे, से कि ते भावविष्ठस्सर्गे ? २ तिविहे पण्णेने, तंजहा-कमायविष्ठस्सर्गे नेमारविष्ठस्सर्गे कम्मविउस्सारो, से कि तं कमायविउस्मारो है २ चत्रविबह्ने प्रणाते, तंबहा-कोहकसाब-विउस्सागे माणकलावविउस्सागे मायाकमावविउस्सागे लोहकसावविउस्सागे, से सं कमावविउस्समो, में कि नं संमारविउस्समो ! २ चउन्विहे पण्णेन, नंजहा नेरह्य-संसार्विउस्सम्मे तिरिवसंमारविउस्मम्मे मणुक्यंमारविउस्यम्मे देवसंमारविउस्सम्मे, से नं मंमारविउस्सगो, में कि नं कम्मविउस्सगो है २ अद्वविद्वे पण्यते, नंजाहा-णाणात्ररणि अकम्मवित्रस्मको दरिसणावरणि अकम्मवित्रस्मको वेवजीयकम्मवित-स्यागे मोहणीयकम्मवितस्यागे आत्यकम्मवितस्यागे जामकम्मवितस्यागे गोवकम् विज्ञम्मको अंतरायकम्मकिउस्सको, से तं कम्मकिउस्सको, से तं भावविजस्सको, मे तं विउस्पाने ॥ १९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समण्णं समणस्त भगका महाबी-रस्य बहुवे अणगारा भगवंती अप्येगह्या आयारधरा जाव विदाससुयवरा तस्य तस्य तहिं तहिं देसे देसे गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि पहाफि अप्येगह्या वार्वति अप्येगह्या पडिपुच्छंति अप्पेगह्या परियष्ट्रंति अप्पेगह्या अभुप्पेहृति अप्पेगह्या अभ्योगनीको विकलेवणीओ संवयणीओ जिल्बेयणीओ कउन्विहाओ महाको सहीत, अध्येयह्या उद्वंजाण् अहोसिरा झाणकोद्वोवगया संजमेणं तबसा अप्पाणं मावेमाणा जिहाति ।

संसार्भवन्तिमा भीया जम्मणवरमरणस्त्रणंभीरदुक्सफ्क्चुव्भिवपवरगलिलं संबोग क्योगवीइवितापसंगपसरियवद्वंधमहम्बिदलक्योसक्छणांवलवियलोभक्ल कर्णाबोकवहुरं अवसाणणकेणतिव्यक्तिसणपुरुंपुरुष्पभूयरोगवैयणपरिभवविक्रिवायः फक्सचरिसणासमावदियकविणकम्मप्रचरतरंगरंगतनिकम्बुभयतोयपट्टं कमायपाचा-सर्वकुरं भवस्यसहरसक्छस्यकसम्बर्धं पद्भयं अपरिमियमहिच्छक्त्रसमह्वाउवेग-उत्रुप्ममाणदगरयर्थभगारवरफेणपडरभासापिवासचवर्त मोहमहावलभोगभगमाण-गुप्पमाणुच्छ लंतपकोणियमपाणियपमायचंडवहुदुद्वसाययसमाह उद्दायमाणपञ्भारघोर-कंदियमहारयरवंतभेरवरवं अण्याणभर्मतमच्छपरिहत्वअधिहुईदियमहामगरनृहिय-वरियक्तोत्रुक्तमाणनवंतवकवंवलवकंत्युम्मंतजलसमूहं अस्हभयविसायमोगमि-व्यक्तरोत्तर्गकरं अणाइसेताणकमार्वकणकिसेसन्विक्तिसमुद्रुतारं अमरनरतिरियनिर-बगद्यमण्ड्विसप्रिक्तविदलकेतं चडर्तमहंतमणहरूमं हर्ष् संसारसागरं भीमदरि सणिजं तरंति विश्वमियनिष्पकंपेण द्वतियसकः संवर्श्वरकातुंगक्षयससंपदतेणं जाजसिर्यावसलम्सिएणं सम्मणविश्वद्धलद्धणिजामएणं धीरा संज्ञमपोएण सीलकलिया पसत्य ज्ञापनाव वायमणोहियपहाविएवं उज्ज मनवसायमाहियणि जारणज्ञवण वस्त्रोय-णाणरंसणविसुद्धवयभेडमरियसारा जिजवरवयणोविदिद्वमस्गेणं अकुडिलेण सिद्धि-महापष्टणामिमुद्दाः समणवरसत्त्ववादा ग्रह्णद्वर्त्तभासमुपन्त्रसासा गामे गामे एगरायं गगरे जगरे पंचरायं बृहजन्ता जिइंदिना णिन्सवा गयमवा सिन्तानित्तमीतिएस वण्येषु विरागर्य गवा संगवा विरवा मुना उद्वया गिरवक्ता साह विह्या चरंति धन्मे ॥ २०॥ तेणं कालेणं तेणं समराणं समणस्य भगवको महावीरस्य बहुवे असुरक्षमारा देवा अंतियं पाडम्भवित्वा कालमहाणीलसरिसणीलगुलियगवलस्यसिकुसुसप्पारमा विवसियसयक्तानिक पत्तकनिम्मक्ष्मसिस्यततेकण्यणा गरुलाययचज्ञतुंगणासा उननि वसिस्य पनासनिव फरसण्यिमा हरोडा पंडरससिसबलविमलणिम्मलसंखगो-क्खीरफेणद्गर्यसुणातिमाधवसदंतसेडी हुयवहणिदंतबोयतत्तत्वणिज्ञरत्ततस्तालु गरा। । वैसिसिसिकपुण्कप्पमासाई सुदुमाई असंकिलिहाई बत्याई पवरपरिहिया वर्ष च चढने समहदाता विद्यं च वर्ग असंपत्ता भेदे जोव्वणे वहमाणा तस्तर्भगग्रतुहिय-पन्यस्थानीनमसम्बद्धानिद्वपर्विद्वसूत्वा दसमुद्दार्गिद्वसगद्द्या मुरामणिविषगया ध्रस्या महित्रिया वहव्यस्या महस्यका महायसा महासोक्या महासुमागा हार्विरा-इनक्का बक्काडिक्वेनिक्स्या संवयक्रेडसम्हांडतस्त्रकाणीवधारी विक्तिवत्या-भरणा विविश्वतासामा किमल्डा बहाजका वर्षायका परिहिया बहाजका परिहास

केवना आसरबाँडी पलंबवणमालधरा । दिब्बंगं बज्जेगं दिव्वेगं गीवेगं दिव्येनं क्वेजं दिक्वेजं फानेणं दिक्वेणं संघाए(घशणे)णं दिक्वणं संठाणेणं दिक्यए इसीए दिब्दाग् जनीए दिव्दाए पभाए दिब्दाए छायाए दिव्दाग् अनीए दिब्देणं तेएणं दिव्हाए केसाए इस दियाओ उज्जोनेमाणा प्रभागमाणा समणस्य भगवभी महावीरस्य अतियं आगम्भागम्म रता समर्थ भगवं महावीरं तिक्खनो आयाहिणं पवाहिणे करें ति २ ता बेढेंति जर्मसेति चंदिना जर्मसिना जवासका जाइदरे सम्सम्माजा णसैसमाणा असिमुहा विभएणं पंत्रलिटडा पज्ञवासंति ॥ २३ ॥ तेणे फालेणे तेण मसएणं ममणस्य भगवशे महावीरस्य बहुवे अमुरिद्यक्तिया अवणवासी देवः अतियं पाउच्भवित्या णागपरणो मुक्जा विज् आगीया दीवा उडरी दिमावुमारा यपका-विवास मन्यवासी णागकागरुलवयरपुण्यकलससीहरूयगय्ववरस्य इस्ट्रमाणणि-जुनविचिनचिंघगया सुरुवा महिच्चिया मेनं तं चेव जाव पानुवामेति ॥ २२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणम्य भगवओ महावीरस्य बहुव वाणमंतरा देवा अंतियं पाउव्यक्तिया पिमाया भूया य जक्तार्क्न्यमिकंनर्किपुरिराभुवगवदणो य महाकाया गंधव्यणिकायगणा णिउणगंधव्यगीयरङणो अणपण्णियपणप्रियदिस-बादियभूयबादियकंदियमहाकंदिया य कृहंडपयए य देवा चंचलचवलविक्तकीलण दबप्पिया गंभीरहसियभणियपीयगीयणबणर्डं वणमालामेलमञ्डकुंडलमुच्छंद्वितः व्वियाहरणचारुविभूसणधरा मञ्बोडयपुर्भिकुमुमसुर्द्धयसंबनोभंतकंनविग्रमंतिवित्त-वणमालर्ड्यवच्छा कामगर्मा कामम्बद्धारी णाणाविहत्वण्णरागवर्षस्यचिक्तविहिद्यः णियंगणा विविहरेसीणेवत्थसगहियवंसा पमुडयकंदणकलहकेलिकोलाहलिपया हास-बोलबहुला अणेगमणिरयणविविद्दणिजुत्तविवित्तिचगया मुम्बा महिब्बिया बाब पजु-वार्माति ॥ २३ ॥ तेणं कारुंणं तेणं समग्गं समगरत भगवओ महावीरस्य बहुवे जोइ-सिया देवा अंतियं पाउच्मवित्था विहस्मई चैदस्रमुक्ताणिबरा राह् भूमके वहा य अंगारका य नत्तनविणजकणगवण्णा जे य गहा जोडसंगि चारं चरंति हेन्द्र य गहर-इया अद्वावीयविहा य णक्सनदेवगणा णाणासंठाणसंठि**वाओ य पंचवण्याओ ताराओ** ठियकेसा चारिणो य अविस्माममंडकगई परोयं णामंकपागडियविश्वमण्डहा महिष्टिया जाव पञ्चवासंति ॥ २४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्य भगवन्नो महाबीरस्स वेमाणिया देवा अंतियं पाउच्मवित्था सोहम्मासाणमणकुमार्मा**हेद्वंसकंतगमहासुक** सहम्याराणयराणयारणअबुयबई पहिद्रा देवा जिणदंशणुरमुयाग्रमणजानियहासा पास-गपुण्कगसोमणवित्रदिवन्छणंदियावतकामगमपीइगममणोगमविमकसव्यक्षोमद्यामि-जेहिं विमाणहिं ओङ्ण्णा वंदगा जिणिदं । सिगमहिसवराहस्रगलव्युरह्यगयवह्युक्नस्

माउसमं र्याविमपागहियाचिधमउद्या परिवित्वदम् उहतिरीहधारी कुंडलउद्योविया-णणा मः इदित्तसिर्या रत्तामः पउमपन्दगोरा सेया मुमक्णागंघकासा उत्तमविउव्विणी विविद्यन्यर्गभगवधरा महिष्ट्रिया महजुडया जाव पंजलिउडा पञ्जूबासीत ॥ २५ ॥ तए में चपाए नयरीए नियारगतिगचनक्षचरचडम्मुह्महापहपहेसु महया जनसहे द वा जणबुद्धे इ वा जणबीले इ वा जणकलकले इ वा जणुरूमी ति वा जणुक्तिया इ वा जणमंत्रियाए इ वा बहुजणी अन्यमञ्जलस एवमाइक्लइ एवं भासड एवं फ्लामेंड एवं पर्रवेड-एवं साहु देवाणुष्पिया ! समणे भगवं महाबीरे आइगरे तित्थगरे सर्यसंब्दे पुरिसुत्तमे जाव नेपावितकामे पुन्वागुपुर्विव चरमाणे गामाणुगामं रृहज्ञमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समीलडे इहेब चंपाए णयरीए बाहि पुण्णभहे उजाने अहापडिरूवं उमार्ट उमिनिक्शा संजमेणे तबसा अप्पाणे भावेमाणे बिहरड । तं महत्पलं धन्त भी देवाणुप्पिया । तहास्वाणं अरहंताणं भगवंताणं गामगोयस्तवि सवणयाण, किमेगपुण अभिगमणवैद्यणणर्मसणपडिपुच्छणपञ्जूबासवजाए ?, एक्स्स वि आर्थारयस्य धरिमयस्य मुवयणस्य सवणयाएं ?, क्रियंगपुण विजलस्य अल्बस्स महणवाए !, तं गच्छामो णं देवाणुष्पिया ! समणं भगवं सहावीरं वंदामो णगंसामो सकारेमो सम्माणमो कलाणं संगर्ल देवयं चेड्यं [विणएणं] पञ्चवासामो एयं ण पेचभवे इहमवे य हियाए महाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियसाए भवित्स-इतिकह बहुवे उम्मा उम्मपुत्ता भीगा भोगपुत्ता एवं दुपडोगारेण राहण्या खतिया माइणा भडा ओहा पसत्यारी मार्क्ड केच्छई केच्छईपुता अण्ये य बहुवे राईमरतक-बरमाहं वियक्षेतं वियहकारोद्विमेणावहसत्यवाहपिनहुओ अप्पेगहुका बंदणवृत्तियं अप्पे-गहुबा अमंसणबन्तियं एवं सङ्कारवितियं सम्माणवित्रयं दंसणवित्तियं कोछडलवित्रयं अप्येगात्मा अद्वविणिच्छयहेर्ड अस्प्रयाई मुणेरसामी सुवाई निस्संकियाई करिस्सामी अप्येगद्वा अद्वादं हेर्स्ट कारणाहं वागरणाहं पुन्धिस्तामो । अप्येगद्या सम्बक्षो सगंता मुख्ये अविला अगाराओ अजगारियं पव्यवस्तामो, पंचाणुव्यवस्यं सत्तासिक्खा-बहुवं दुवालसविदं गिहिधम्मं पडिवजिस्सामो, अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया जीयमेर्चतिकडु ज्याया सिर्साकंडेमालकडा आविखमणियुवण्णा कप्पियहारऽदहारति-सरवपासंबद्धांबद्धाणकडिसुरायसुक्त्यसोद्दाभरणा पनरनत्थपरिद्दिया चंदणोलित्तगाय-सरीरा । अप्येगह्या इयमया एवं गयमया रहगया सिवियागया संद्याणियागया अप्येगद्भा पामविद्वारचारिको पुरिसदगुरापरिक्सिता महमा उक्तिद्वितीहणायकोल-कलकार्तिणं पक्षु विभागमहाराष्ट्रहरवभूवंपिव करेमाणा वंपाए वयरीए सर्वामज्योणं णिमारकंति २ शा जेकेव पुष्णमेरे उजाणे तेणेव उवागरकंति २ ता समणस्त

भगवजो महावीरम्य अनुरसामंते छत्ताईए तित्यवराउमेसे पासंति पासिता जाण-वाहणाई अवर्शन २ ता जाणवाहणेहिंती प्रबोर्छनि एकोरुहिसा जेणव समने भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छेति उवागच्छिता समणं भगवं महाबीरे निक्सतो आयाहिणं प्याहिणं करेंति करिता बंदेति णमेसेनि वीतना णमेसिना गन्धानण्ये णाइद्रे सुस्स्समाणा गर्मसमाणा अभिमुहा विणएषं पंत्रांश्वडा पज्ञुबामेति ॥ २६ ॥ तए जं से पविभिवाउए इमीने कहाए लक्ष्ट्रे समाजे इद्वुद्ध जाव हियए व्हाए अपमहरघानरणालंकियमरीरे मयाओं गिहाओं पिंडणियसमङ मसाओं गिहाओं पडिणिक्समिना चंपाणगरि मञ्जंमञ्जेणं जेणव बाहिरिया सब्वेद हेतिसा वनाव्यम जाव णिसीयइ णिसीइला तस्स पवित्तवाज्यस्स अद्धलेर्ममयसहस्माई पीडवार्ण दलबाइ २ ता सकारेड सम्माणेड सकारेता सम्माणेता पडिविसजेड ॥ २०॥ तए णं से कृष्णिए राजा अंगमारपुत्ते बलवाउयं आमंतिर आमंतित। एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया! आभिमेकं इत्थिरयण पडिकप्पेहि, इयगयरहपवर-जोहकलियं व वाउरंगिणि सेर्ण सण्णाहेहि, सुमहापमुहाण य देवीणे बाहिरियाए उबद्वाणसालाए पाडिएक्सपाडिएकार्ड जत्ताभिमुहार्ड जुत्ताई आणार्ड उबहुवेह, चंपं णयरि मस्भितरबाहिरियं आसिनमित्तसुइसम्मद्धरत्येनरावणवीदियं भेवादमंचवर्यत्रयं णाणाविहरागट च्छियज्ञयपदागाइपडागर्मडियं लाउन्नोडयमहियं गोसीमगरमरस-चंदण जाव गंधवृद्धिभूयं करेष्ट्र कार्वेष्ट करिता कारवेता एवमाणांतयं प्रवृत्यकाहि. निजाडम्यामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदए ॥ २८ ॥ तए णं से बलवाउर कृषिएणं रण्या एवं बुत्ते समाणे हद्वनुद्ध जाव हियए करयलगरिग्गहियं सिरमावत्तं मत्थए अंजिल कह एवं वयासी-सामित्ति आणाए विणएणं वयणं परिसुणेइ २ ना इत्थिवाउयं आमंतें आमंतेता एवं वयासी-सिप्पामेव भो देवाणप्पिया ! कृषिवस्स रण्णो मंभसारपुत्रस्य आसिसेकं हत्थिरवणं पडिकप्पेहि, हवगगरहपुपर बोहक्कियं चाउरंगिणि सेणं सज्जाहेहि सज्जाहिना एवसाणतियं प्रवापणाहि । तए षं हे हत्थिवाउए बलवाउयस्म एयमद्रं मोचा आणाए विषाएणं क्यणं पहिसुचेद पहि-मुणिना छेत्रायरियउवण्सयङ्गिकस्पनाविकस्पेहिं सुणिउनेहिं उज्जलनेक्स्पहत्यपरि-विवयं मृसञ्जं धरिमयसण्णद्भवद्भक्षत्रभुत्रप्रीतियस्त्रक्रम्भोवेयवद्भक्तवरभूमण-विरायेनं अहियतेयजुत्तं सलल्धियवरकाणगुर्ववराह्यं पलंबतजुलमहुयरकवंशवारं कित-परिच्छेयपच्छ्यं पहरणावरणभरियज्ञुद्धसञ्जं सच्छतं सज्ज्ञयं सबंदं सपदागं पंचासेसकः परिमंडियाभिरामं ओसारियजमलजुगलघंटं विज्युपणदं व कालमेहं उप्पाइयपन्यमं 🧣 चंकमंतं मत्तं गुलगुलंतं मणपवणजङ्णवेगं भीमं संगामियाओसां आभिसेकं हत्यिरकां

पहिकाय: पाँडकापेणा हयगयग्रहपयर बोहकछित्रं चाउरेगिणि सेलं सच्याहर मण्या-हिना लेशंब बलवाडए सेजिब उदायन्यत उदायच्छिना एथमावसिबं प्रवर्णिणाः । तुए में संस्काउए जाजमालियं महावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणु-रिपया ! मुभद्रापसृष्ठाणं देवीणं बाहितियाए उच्हाणसास्त्राए वाहिएक्सरिएकाई जताशिमुदाई जुलाई जाणाई उबहुबेडि २ ता एकमाचनिर्व प्रचण्यिगाहि । तए में से जागमासिए बलवाउजस्य एकमई आजाए विजएनं वर्वण पडिसनेड पविस्तिता जेंगेब जाणमाला तेंगेव उदागरछा तेंगेव उदागरिकता जागाई पद्मवेकतेह २ ता जाशाहं संपम्बेह २ ना जाणाइं संबहेद जाणाई संबहेता जाणाहं शिक्ट जाणाई वीजिशा जाणाचे इसे पदीचेड २ ता जाणाई समछंकरेड २ ता जाणाई वरभंडग-मंडियाई करेड २ शा जैणेव बाहणसात्म तेजेव उदागन्छ तेजेव उदागन्छिना बाहणाई प्रकृतिक्रें २ ता बाहणाई संप्रमञ्जइ २ ता बाहणाई जीजेंइ २ ता बाहणाई अप्पालेड २ ना वृत्ते प्रवीगेड २ ना वाहणाई समसंकरेड २ ना वाहणाई वरशंहरामंदियाई करेड २ ता बाहणाई जाणाई जोएड २ ता पक्षोबलिद्धे प्रजीवयरे व मां आहर्ड आहरिता बहुमागं गाहेड २ ता जेणेव बसवाउए तेजेव उवायरछड २ता बलकात्यस्य एवमाणतियं प्रवास्थिणः । तए ण से बलवाउए गयरगतियं आमंतप्र २ ता एवं बयासी-सिप्पामेव भी देवाणुष्पिया ! चंपं नवरिं सन्भितर-बाहिरेवं आशित जाब कारवेता एवमाणतियं पचन्पिणाहि । तए नं से णवरगुतिए बस्बाडयस्य एवसहं आणाए विजएणं (वयणं) पविशुणेह २ सा चंपं जयरि मस्भितरबाहिरियं आसित जाब कारवेता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छ्य २ मा एकमाणितः प्रविचनः । तए गं से कलवाउए कोणियस्स रच्नो भेमसारपुनस्स आमिलेकं हत्थिरवर्ण पिडकिप्यं पासह हवमय जाव मण्याहियं पासह, सुमहापम्-हार्ग देवीण परिजागाई उबहुवियाई पासइ, चंप वयरि सम्मितर जाव गंधवहिन्यं कर्म पासद, पासिना इहतह विजमाणंदिए पीयमणे जाव हियए जेणेय कृणिए रावा अंभसारपुरे तेचीव उद्यागच्छा २ सा करमर जाव एवं बवासी-कृष्पिए न देवाणु-प्पिकार्य **आमिसेके ह**त्विरक्की ह्यगम्यरह्यवरजोहक्किया य चाउरेविकी सेणा मण्या-हिमा पुनक्तमुद्दार्ण च देवीर्थ बाहिरिनाए व उबहाणसालाए पाडिएकपाडिएकाई जत्तामिनुहाई शुक्ताई जानाई उच्छानियाई चंदा शबरी सन्भितरवाहिरिया आसित जान नैवनडिमूना कना, तं निर्जंतु नं देवाणुप्पिता! समणं मगर्व महानीरं अभिवृद्द्या ॥ १९ ॥ सङ् वं से कृषिए राजा संस्तारपुत्ते बस्त्रातस्त अंतिए एयमहे सोबा निसम्ब रक्षाह जान हियद जेनेद अप्रमसाका सेगेद स्वागन्छद २ ता अप्रमसाछ The state of the s

अणुपवित् २ ता अणेनवायाम जोभावस्तणवासर्गमऋनुद्ध स्रणेहि संते परिन्संने सयपागमहरनपागेहिं मुगंधने स्माइएहिं पीणिकोहि दर्पाणकेहिं सयगिकेहिं विह्नि-जेहिं नन्त्रिदियगायपन्हायणिजेहिं अस्मिगेहिं अस्मिगिए समाणं तेन्नवरमंति पडि-पुणापाणिपाबसुकुमालकोम्तनलेहि पुरिमेहि हेग्हि दक्षे परदेहि क्यलेहि मेहावीहि निरणितायोवगार्हि अधिमागनरिमहणुञ्चलणकर्णगुणिषमार् हे अद्विमहाण् मंगसुहार् नयागृहाए रोमसुहाए चडव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवगयवेबपरिस्समे अद्रगमालाओ पडिणिक्लमङ पडिणिक्लमिना जेणेव मज्जणपर्व तेणेव उदागच्छ तेणव उनागन्तिका मजणवरं अणुर्यावमह - त्ता समुनजान्त्रउलाभिरामे विचित्त-मणिरयणकृष्टिमन्छे रमणिजे ज्हाणमंडवंनि णाणामणिर्यणसनिविनंति ज्हाणपीदंति सहणिनको मुद्धोदएहिं गंधोदएहिं पुष्फोदएहिं मुहोदएहिं पुष्पो २ स्त्राणनपबरमञ्जय-विहीए मजिए तत्थ को उयमएहिं बहविहेहिं कहाणगपवरमञ्जणावनाणे पम्हरू-सुकुमालगंधकामाध्यवृहियंगे मरममुरहिगोसीमचंदणाणुलिकाने । अध्यमुमहरथद्-सरयणमसंवए सङ्मालावण्णगाविकेवणे आविद्धमणिस्वण्णे वरिपयहार्द्धहार्तिमरय-पालंबपलंबमाणकडिमुत्तमुकयमोभे पिणद्रांगिव अअंगृतिख्रगलन्ध्यंगयलन्ध्यकयामर्गे बर्कडगतुडिययंभियभुए अहियहबमस्मिरीए मुद्दियापिगलंगुलिए कुंडलटज्बोविआणणे मउटदिनसिर्ए हारोत्ययसुक्यरऽयवच्छे पालंबपलंबमाणपडस्क्यउनरिजे णाणामणि-कणगर्यणविमलमहरिहणिउणोवियमिसिमिसंनविस्त्रयमुसिलिद्वविसिद्वलङ्कशाबिद्ववीरय-लए । कि बहणा ? कम्परक्लए चेव अलंकि प्रविभृतिए णर्वई नकोरंटमह्नदामेण छनेणं धरिज्ञमाणेणं च उचामरदालवीऽयंगे मंगलज्ञधमहक्कालोए मजाणचराओ पष्टिनिक्खमः मज्जणवराउ पडिणिकसमिना अणेगगणनायगर्ददनायगराईसरतलय-रमाडंबियकोडंबियहरूममेद्विमेण(वर्सस्यवाह्द्युसंधिवालमर्द्धि संपरिवुडे धवस-महामहणिमाए इव गहगणदिप्यंतरिक्खनारागणाण मञ्झे सिख्य पियर्दसणे णरवई जेणेव बाहिरिया उवद्वाणमाला जेणेव आभिसंके इत्थिरयणे तेणेव उदागच्छड् उदागच्छिना अंजणगिरिकृहस्रिणभं गयद् पर्वहे हुस्डे नए णं नस्य कृणिशस्य रण्णो भंभसारपुनस्स आभिसेकं इस्थिरवर्ण वुक्टस्स समाणस्य तप्पदमयाए इमे अद्वद्वमंगलया पुरओ अहाजुपुन्नीए संपद्विया, संबद्धा-सोवत्थिय सिरिवच्छ णंदियावत ब्रह्माणग महासण कलस मच्छ द्प्यन, तबाऽणंतरं च ण पुष्णकल्याभिंगारं दिव्या य छत्तपडागा सचामरा दंसणरहयभालीयदरिसणिजा वाउद्यविजयवेजयंती य ऊतिया मगणतन्त्रमणुख्यंती पुरको अहालुपुन्वीए संपित्वना, तयाऽणंतरं च णं वेरुलिग्रमिसंतिषमलदंडं पर्लंडकोरंटमह्नदामोक्सोभियं चंद्मंडल-

निभं समूनियं विमलं आयवतं पवरं सीहामणं वरमियरयणपायपीढं सपाउयाजीयमः मावत्तं बहुकिकरकम्मकरपुरिमपायलपरिक्तिलं पुरओ महाणुपुन्नीए संपद्वियं । तयाऽजैनरं बहवे लड्डिमाहा कुंतमाहा चावमाहा चामरमाहा पाममाहा पोत्य-बमाहा फल्ममाहा पीढमाहा वीणमाहा कुनुबमाहा हडफ्पमाहा पुरशे अहाणु पुरुवीए संपद्धिया । तयाप्रणंतरं वहवे दंडिणी मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो हामकरा डमरकरा चाहुकरा वादकरा कंदण्यकरा दवकरा कोबुहया किहिकरा वायंता गायंता इसता गवंता भासंता सार्वेता रक्खंता आलोवं च करेमाणा जयरसहं परंजमाणा पुरक्षो अहाणुपुर्वीए संपद्धिया । तयाऽणंतरं जवाणं तरमब्रिहायणाणं हरिमेलामउत्माहिक्खाणं शुंचुचिक्किक्युलियनसम्बद्धनंत्रकाहंगं लंपणक्रमणधा-वणधौरणनिवईअइणसिक्सियगर्वणं रुकंतलामगळकाशवरभूमणाणं मुद्दभंदगजोच्लग-यासगअहिलागचामरगण्डपरिमंडियकवीणं किंकरवर्तरणपरिमाहियाणं अद्वसयं वर-तुरगाणं पुरओ अहाणुप्यीए संपद्विवं । तयाऽणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणे इंसीउच्छंगविसालघवलदंताणं कंचणकोसीपविद्वदंताणं कंचणमणिरयणभू-सियाणं परपुरिसारोइगर्सपउत्ताणं अद्वसयं गवाणं पुरओ अहाणुपुर्वीए संपद्वियं । तयाऽणंतरे सच्छत्तार्थ सज्ज्ञवार्थ सर्वटार्थ सपडागार्थ सतोर्थवरार्थ सर्वदिघोसार्थ सर्विविज्ञालपरिविक्ताणं हेमवयवित्ततिनिसकगगणिजुत्तदारुमाणं कालायसपुक्य-मेमिनंतकमार्थं सुतिविद्ववत्तमंदकशुराणं आइण्णवरतुरगसुर्वपउत्ताणं कुसळनरव्छेय-सारहियुसंपरगहियाणं वत्तीसतीणपरिमंडियाणं सकंकटवर्डेसनाणं सचावसरपहरणाव-रणभरिवज्ञहराजाणं अद्वसयं रहाणं पुरको अहाणुपुरुवीए संपद्वियं । तयाऽणंतरं च णं असिसत्तिकोंततोमरसूतकउडभिडिमालवजुपाणिसकं पाबताणीयं पुरवो अहाणुपु-म्बीए संपद्वियं । तए मं से कूमिए राया हारोत्ययसुक्यरहयवच्छे कुंबकटजोवियाणये मउडदित्तसिरए वरसीहे वरबई वरिंदे वरबसहे मणुबरायवसमकप्ये बन्भहियराय-तेवकच्छीए दिप्पमाने इत्थिक्संधवरगए सकोरंडमह्नदामेणं छतेणं घरिजमानेणं सेमबरचामराहि उद्मुख्यमाणीहि २ वेसमणो चेव गरवर्द अमरवर्दसम्मिमाइ इङ्गीए पहिरामिती इयुगम्पह्पम्बोहक्कियाए चाउरेगियीए सेणाए सम्कुग्ममनागमको जेवेव पुष्पभद्दे उजावे देवेव पहारेत्य गमणाए, तए वं तस्स क्वियस्स रण्णो मंगसारपुरस्य पुरनो महंभासा नासभरा उमनो पासि णागा पागभरा पिहनो रहर्सगिति । तए पं से कृषिए राया संमसारपुत्ते अन्धुमायमिंगारे पम्पद्वियतालियेटे उच्छिमकेनको प्रवीत्यमाञ्जीयजीए सञ्जिष्टीए सञ्जञ्जतीए सञ्जवकेणं सञ्जसमुदएजं सन्मादरेनं सम्बद्धिमूहेंए सम्बद्धिमूसाए सन्वर्धमनेन सन्बपुण्यांवमहासंकारेनं सन्ब-

तुडिबसद्मण्णिणाएणं महया द्श्वीत् महया जुतीए महया बलेणं महया समुद्रएणं मह्या घरतु डियजमगममगणावा इत्णं संस्थणवयहहमेरिझ हरिसरमुहिहुइसमुखनुरव-मुज्ञानदुंदुश्विणिम्बोनणाद्यरवेणं चंपाए णयरीए मज्यंमण्डोणं जिम्मच्छर् ॥ १० ॥ तुए वं तस्स कृषिशस्स रक्यो चंपालगीरं मञ्ज्ञमज्ज्ञेकं विकानस्त्रमाणस्स यहाँ अत्यऽस्थिया कार्यात्थया भोगत्थिया किन्विसिया करोडियः कार्यात्थिया कार्वाहिया संखियः चित्रया वंगलिया मुहमंगलिया वदमावा पुरनमावया संदियगणा ताहि इट्टाहि केनाहि पियाहि मणुण्याहि मणामाहि मणोमिरामाहि हिनयगमणिमाहि वस्तृहि जयविजयमंगलसाएहि अणबर्य अभिणदेना य अभियुणेना य एवं वयासी-त्रय २ णंदा ! जय २ महा ! भहं ते अजियं जिणाहि जियं (च) पालेहि जियमज्जे वमाहि । ईतो इव देवाणं चमरो इव अमुराणं धरवी इव नागाणं चंदी इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बहुई बामाई बहुई बासग्रयाई बहुई बागसहस्माई बहुई धासग-यमहरूपाई जणहूमसम्यो हहुनुहो परमाउं पालकाहि इहुजणसंपरिकुरो चंपाए असरीए अण्णेसि च बहुणं गामागरणयरलेडकान्यसम्बद्धानमुह्दपृष्णजासम्विगमसंबाहसंबि-वेमाणं आहेवर्षं पोरेवर्षं सामितं भट्टितं महत्तरगर्तं आधाईगरसेशावर्षं कारेमाणे पालेमाणे महयाऽऽहबणह्यीयवाइयतंतीतलतासतुडिवचचातुर्यगपहुष्पवाइयर्वणे विउ-लाई भोगभोगाई भुजमाणे बिहराहित्तिकडु जब २ सहं पर्वजीत । तए णं से क्षिए राया मंगमारपुरे णयणमालासहस्सेहि पेरिक्टजमाणे २ हिययमालासहस्सेहि अभि-गंदिजमाणे २ मणोरहमालामहस्मेहि विच्छिपमाणे २ ववणमाकासहस्त्रेहि अमिषु-व्यमाणे २ कंतिसोहरगगुणेहिं पत्थिजमाणे २ बहुणं जरणारिसहस्साणं दाहिणहरूवेणं अंजिलमालामहस्याई पाँडेन्छमाणे २ मंजुमंजुणा घोसेणं पडियुज्यमाणे २ मयणपं-तिसहस्माइं समझ्च्छमाणे २ बंपाए णवरीए मज्यांमज्येणं विमाच्छ्य २ ना जेवेव पुण्णभेद्दे उज्जाणे तेणेव उदागच्छ६ २ ता समगरस भगवनी महाबीरस्म अदूरसामंते छताईए तित्ययराइसेसे पासइ पासिता आमिसेक हत्विरवण ठवेइ ठविना आभिसे-काओ हत्यारवणाओ पयोबहुद २ ता अवहरू पंच राववहुद्दाई, तंबहा-सम्बं सर्त उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणं, जेलेब समणे भगवं महावीरे तेलेब उदानच्छ उदा-गच्छिता समर्ण भगवं महाबीरे पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छा, तंजहा-सन्विताणं दव्याणं विजनरणयाए १ अविशाणं द्वाणं अधिजसरणयाए २ इगसावियं उत्तरा-संगक्ररणेणं ३ वक्षुकासे अंजलियगहेणं ४ मजसी एमसभावकरणेणं ५ समर्थ अगर्व महावीर तिक्खरो आवाहिण प्रमृष्टिण करेड २ सा वंबर मर्मा वंबरमा णमंखिता तिविद्दाए पञ्जवसमाए पञ्जवासड्, तंत्रहा-सादवाए बादवाए याणसिवार्

काइबाए ताब संबुद्यसगहत्वपाए मुरस्तमाणे अमसवाणे अभिमुद्दे विणएणं पंजलि-उद्धे पञ्जुवासह, बाहबाए मं मं मगवं बागरेइ एवमेर्य भंते ! तहमेर्य भंते ! आंव-तहमेवं मंते ! असंदिक्षमेवं मंते ! इच्छियमेवं भंते ! पडिन्छियमेवं भंते ! इच्छियप-डिन्छियमेयं अंते ! से जहेयं तुब्से बदह अपिकृष्टमाचे पञ्जूबासइ, माणसियाए महमा संवेगं जणहता तिव्यवस्थाणुरागरतो पञ्जवासह ॥ ३१ ॥ तए गं ताओ समहाप्यहाओ देवीओ अंतो अंतेल्ट्रांस व्हायाओ नव्यालंकारविभृतियाओ वहुई ह्याहि चलाई बामधीहै बडसीहैं बडबरीहैं प्रजेसियाहैं बोबियाहि परवियाहें इसिगिनियाहि बासिइनियाहि कासियाहि स्वस्थाहि सिंहकेहि बनिहाहि भारबीहि पुलंबीक्कें पक्रमीक्कें बढ़कीक्कें मुखंबीक्कें समीरवाक्कें पारतीक्कें माधावेसीविवेसपरिमंडि-याष्टि इंगियवितिवपत्वियविवाणिवाष्टि सवेसणेवत्यमाहिववेसाष्टि चेवियाचकवालव-रिसपरकंप्रव्यसहनरवयंदपरिविक्सताओं अंतेवराओं विस्वव्यंति २ शा जेलेव पादि-एकजाणाई तेषेव उवायकान्ति उवायकिता पाडिएकपाडिएकाई जताशिमुदाई जुनाइं जाणाई दुस्हेंति दुस्हिता विश्वगपरिशास्त्राद्धं संपरिश्वदाओं नेपाए वाशीए मञ्जूमञ्जूणं विकारहंति निकारिहता जेनेब पुण्यमहे उजाने तेनेब उदापरहंति उज्ञागन्त्रिता समणस्य भगवजो महाबीरस्य अवरसामंते छताईए तित्यवराइसेसे पासंति पासिता पाडिएकपाडिएकाई जाणाई ठवंति ठविता जानेहितो क्योरवंति पचीवहिता बहुई चुआई जाव परिक्सिताओं जेणेव समये मगर्व महावीरे तेणेव उद्यागकारी २ ता सम्रणं भगवं महावीरं पंचविद्देणं अभिगमेणं अभिगकारी, तंत्रहा-सचिताणं दव्याणं विउत्तरणगाए अचिताणं दव्याणं अविउत्तरणगाए विज-ओवयाए गायलहीए वन्युष्पासे अंवलियगहेणं मणसो एगलकर्येणं समणं भगवं महाबीर तिक्क्षतो आयाहिण प्याहिण करेन्ति वंदेति णमंसति वंदिता णमंसिता कृषिवरायं पुरवो कडु ठिस्वाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुद्दाओ विवएणं पंजलि-डडाको पजुनार्वति ॥ ३२ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे कृषिवस्स भंमसार-पुत्तस्य सुअश्वसुद्धाणं देवीणं तीसे य महदमहाक्रियाए परिसाए इसिपरिसाए गुणि-परिसाए जङ्गिरसाए देवपरिसाए अनेगसमाए अनेगसमबंदाए अनेगसमबंदपरिवा-राए ओहकडे अहकडे महत्त्वके अपरिमियवत्वीरियतेवसाहप्पकंतिज्ञते सारवनवस्थ-वियमहुर्वजीरकोंचनिवधेसबुंबुनिस्सरे उरेनित्बहाए कंडेऽबहिवाए छिरे समाहण्याए व्यारस्थए व्यान्स्वाप् सम्बन्धरसंव्यानस्थाए पुरुवरताए सम्बनासानुगानिशीए सरस्त्रीए जीवनजीहारिया सरेजं अवसायदाए मासाए मासर जरिहा धम्मं परिक-हेरू । रोति सम्बंधि आदियमणारियाणं अविधाए यन्ममाहक्याह, साऽविय णं अद-

मागहा भामा तेमि मञ्जेमि आरियमणारियाचे अध्यणो मभामाए परिणामेणे महि-णमार, नंजहा-अध्य लोए अत्य अलोए एवं जीवा अजीवा वंधे मोसको पुण्णे पाने आमवे मंदरे वंग्रणा णिजरा अरिहंता चक्कवही बलदेवा वामुदेवा नरगा णेरहवा तिरिक्त जोणिया निरिक्ष जोणिणीओ माया पिया रिस जो देवा देवलोमा सिकी सिद्धा परिणिब्बाणं परिणिब्बुया अत्य पाणाइकाए मुसाबाए अविण्णादाणे मेहुणे परिमाहे अत्य कोहे माणे मन्या होने जान मिन्छादंसणसह । अत्य पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिसाह-वेरमणे जाव मिस्छादंगणमह्नविवेगे सन्धं अत्थिमानं अन्धिनि वयः, मध्ये णस्थिभावं णन्यिनि वयह, मुन्तिण्या कम्मा मुन्तिण्यक्ता भवंति, नृन्तिण्या कम्मा दुविकाकला अवंति, कुमइ पुकापावे, पवायंति जीवा, सफले ब्रह्मानपावए । धम्ममाइक्सह-इणमेव जिमांचे पादयणे मचे अणुलरे केवला संसुद्धे पडिपुण्णे जेगाउए सहकाणे सिद्धिसमे मुत्तिसमे णिव्याणसमे जिजाणसमे अविनहमिस्सि मब्बदुक्खपहीणमभे इहृद्विया जीवा सिञ्झंति युज्झंति मुचंति परिणिव्यार्येति सम्बद्धकाणमंतं करंति । एगका पुण एगे भवंतारो पुञ्चकम्मावसंमणं अण्णायरेसु देवलीएम् देवलाए उववलारी भवंति, महश्विएम् जाव महामुक्केस् इर्रमहएस् चिरद्रिश्एस, ते णं तत्य देवा भवंति महिश्वा जाव चिरद्रिश्या हारविराश्यवच्छा जाव प्रभासमाणा कृत्योवगा गङ्ककाणा ठिङ्ककाणा आगमेसिनहा जाव पविस्या. तमाइक्खड एवं खल चलहें ठाणेहें जीवा णेरडयताए कम्मं पकरेति चैरहबताए कमं पकरेना गैरइएस उववजंति. तंत्रहा-महारंभवाए महापरिमाहबाए पंचिदिय-बहुणं कृषिमाहारेणं, एवं एएणं अमिलावेणं तिरिक्खजोणिएस माइसयाए णियदिस-याए अलियनयणेणं उक्रंचणयाए वंचणयाए, मणुरसेयु पगइमहयाए पगइविणीयसाए साणुकोत्यवाए अमच्छरियवाए, देवेनु सरावसंत्रमेणं संत्रमासंत्रमेणं अकामणिजराए बालतवीकम्मेणं तमाइक्सइ-जह णरगा गम्मंति जै णरगा जा य देवणा णरग । सारीरमाणसाइं दुक्खाइं तिरिक्सकोणीए ॥ १ ॥ माणुरसं च अभिवं वाहिजरा-मरणवेयणापउरं । देवे य देवलीए देविति देवसोक्खाई ॥ २ ॥ जरनं तिरिक्ख-जोगि माणुमभावं च देवलोयं च । सिद्धे य सिद्धवसर्हि छजीवनियं परिकटेड ॥ ३॥ जह जीवा बज्जाति सुषांति जह य परिकिलिस्संति । जह दुक्साणं अंतं ऋरेति केई अपडिवडा ॥ ४ ॥ अष्टदहृष्टियनिता अह जीवा दुक्ससगर्म् विति । अह वेरम्प-मुक्तया कम्मसम्बर्ग विहारंति ॥ ५ ॥ जह रागेण कहानं कम्मानं पाक्यो फर-विवागी, जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुर्विति ॥ ६ ॥ तमेव धर्म दुविहे

आह्मसह, तंत्रहा-अगारधम्मं अथगारकमं स, अणगारकमो तात इह सल् सम्बन्धो सम्बन्धाए मुंडे अविना अवाराओ अणगारियं पञ्चयह सम्बन्धो पाणाइ-बाबाओ वेरमणं मुनावाय अदिण्णादाण व मेहुबा परिमाह राईभीयणाओ वेर-मणं अयमाउमो ! अवगारसाम्हए धरमे क्याने, एयस धरमस्म विक्लाए उर्वाहुए निगंधे वा निगंधी वा विहरमाने आगाए आराहए भवड़ । अगारघम्मं दुवाल-सबितं आहमसाह, मंत्रहा-पंच अणुव्यवाई विश्वि गुजव्यवाई चक्तारि सिक्याच्याहं, पंच अणुक्वयाहं, नंअहा-बूलाओ पाणाइबाबाओ बेरमणं धूलाओ मुमावायाओ वैरमणं धृताओ अदिनादाणाओ वैरमणं सदारसेनोसे इच्छापरिमाणे, तिण्णि गुणव्य-याइं तंत्रहा-अजत्यदंडवेरमणं दिसिन्ययं उवभीगपरिभोषपरिमाणं, चत्तारि सिक्साव-वाई, तंत्रहा-सासाइयं देसावगासियं पोसहोवदासे अतिहिसंविभागे, अपिन्छमा मारणंतिया संकेहणाञ्चणाराहणा अवमाउसो ! अगारसामइए धम्मे वण्यते, अगार-धम्मस्य सिक्साए उबद्विए समणोबासए समणोबासिया वा विहरमाचे आणाए आराह्य भवड ॥ ३३ ॥ तए णं सा सहहमहाछिया सब्सपरिसा समजस्य भगवओ महावीरसा अंतिए धरमं सोचा जिसम्म इच्चुड जाब हियया उद्घाए उद्घेर उद्घाए उद्विता समणे भगवं महाबीरं तिक्खतो आयाहिणं पवाहिणं करेड २ ता वंदए क्रमंसइ बंदिना क्रमंसिना अरथेगइया मुंडे अविता अवाराओ अक्यारियं क्व्यहया, अत्येगह्या पंचाणुञ्यह्यं सनासिक्सावह्यं दुषालसविहं गिहिधम्मं पष्टिवण्या, अव-सेमा में परिसा समर्ग भगवं महावीरं बंदइ वर्मसइ बंदिता वर्मसिता एवं बगासी-सुअक्साए ते संते ! किरांचे पाचवणे एवं सुपण्णते सुभाविए सुविणीए सुभाविह अणुत्तरे ते मंते ! विकांचे पावयणे, धम्मं वं आइन्खमाणा तुब्से उक्समं आइ-क्खह, उवसमं आइक्समाणा विवेगं आइक्खह, विवेषं आइक्समाणा वेरमणं आइक्सह, वेरमणं आइक्समाणा अक्टणं पावाणं सम्माणं आइक्सह, जित्य णं अन्ने केंद्र समने वा माइने वा जे एरिएं वस्ममाइक्खितए, किमंग पुण इत्तो उत्तरतरे ?, एवं बदिशा जामेंब दिसं पाउच्मूया तामेव दिसं परिगया ॥ ३४ ॥ राए नं कृषिए राया भंगसारपुत्ते समगरस भगवजो महाबीरस्स अंतिए भन्मं सोचा निसम्म इष्ट्रवंड जान हिनए उद्वाए उद्वेद उद्वाए उद्विता समर्थ भगनं महानीरं विक्खतो आवाहिण प्रमाहिण करेड् २ ता बंदड णमंसड वंदिता गर्मसिता एवं क्याची-सुव्यक्ताए ते भंते ! विकांचे पादवणे जाव किमंग पुण एती उत्तरतर ?, एवं महिला जामेव दिशं पातव्भूए तामेव दिशं परिणए ॥ १५ ॥ तए णं ताओ श्वमहाप्सुद्वाको देवीको समबस्य मगतको महाबीरस्स अंतिए धर्म सोबा निसम्म

इहुनुह जाव हिययाओ उहाए उहिता समणे भगवं महावीरं तिक्छनी आयाहिणं प्रयाहिणं करेग्नि २ ता वंदीत णमंसीतं वंदिना णमंसिता एवं वयासी-पुअक्खाएं ते भंते : जिमोधे पावयणे जाव किमंग पुण इनी उनग्तरं !, एवं वदिता जामेव : विश्व पाडव्यूयाओ तामेव दिसि पडिग्याओ ॥ सम्मोसरणं समर्चं ॥ ३६॥

तेणं कालेणं तेणं समारणं समाप्तरम् भगवओ महावीरस्य जेहे अंतेवासी इंदभई नामं अणगारे गोयमसगोनेणं सत्तरसहे समच उदससंठाणसंठिए बहरोसहनारायसंख्यणं कणगणलगतिष्यपम्हगोरे उम्मतदे दिनतवे तत्ततवे महातवे घोरतवे उराले घोरे घोरगुण घोरनवस्ती घोरबंभचरवासी उच्छवगरीरे संस्थितावेउरुरोयकेसे समयस्म भगवजो महाबीरस्स अद्रुपामंते उद्देशण अहोसिरे आणकोद्वीवगए संजमेणे तक्सा अप्यार्ण आविमाणे विष्ठरह । तए णे से अनवं गोयमे जायमके जायसंसए जाय-कोजहारे उपकाशके उपकासंसए उपकारते। उसे संज्ञायनके संज्ञायसंगए संज्ञाय-कोसहाहे सम्पारममंत्रे सम्पारमसंसए सम्पारमकोस्डाहे उद्घाए उद्देश उद्घाए उद्विता क्षेणेव समणे भगवं महाबीरे तेणेव उदागच्छा तेणेव उदागच्छिमा समणं भगवं महावीरं तिक्खनी आबाहिणं पदाहिणं करेड २ सा बंदड णर्मसङ बंदिना नर्मनिसा णज्ञासणं जाइदरे सुरससमाने जर्मसमाने अभिमहे विनएनं पंजलितहे पज्जनसमाने एवं वयासी-अंवे णं भंते ! असंजए अविरए अप्यहिद्वयुश्वक्यायपावकम्में सकिरिए असंबडे एगंतवंडे एगंतवाले एगंतमते पावकमं अण्डाड ? हेता अण्डाड १ । जीव ण भेते! असंजयअविरयभप्पडिहयपबक्कायपावकम्मे समिरिए असंबुक्ते एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसूत्रे मोहणिकं पावकम्यं अण्हाइ १ हंता अण्हाइ २ । जीव ण भेते : मोहणिजे कम्मं वेदेमाणे कि मोहणिजं कम्मं बंध्द ? वेदाणिजं कम्मं बंधह ?, गोयमा ! मोहणिजंपि कम्मं बंधह वंग्रणिजंपि कम्मं बंधह, प्राप्तस्य चरिममोहणिजं करमं वेदेमाणे वेयणिजं करमं बंधइ थो सोहणिजं करमं बंधह है । जीव ण भेते! असंबए अधिरए अप्यदिह्यप्रवस्त्रायपावकामे सकिरिए असंबुद्धे एगंतरंडे एगंतराले एगंतयुने ओसण्यतसपानवाई कालमासे कालं किया वेरहपुद्ध उवबज्ञः ! हंना उवबज्ञः ४ । जीवे णं भंते ! असंत्रए अविरए अपविद्वयप्रकाश-पावकम्म इओ बुए पेका देवे सिया? गोयमा! अन्येगह्या देवे सिया अस्वेगह्या णो देवे सिया, से केणद्वेर्ण मंते ! एवं वुषद-अत्येगइया देवे सिया अत्येगइया जो देवे सिया ? गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर्णयरणिगमरायहामिकेडक्व्वडमडेक्-दोणमुहपद्रणासमसंबाहस्राज्यवेसेसु अकामतन्हाए अकामसुद्राए अकामवंभवेरवासेनं अकासअव्हाणगरीयायवदंसमसगरेयअक्रमक्षपंकपरितावेकं अप्पत्तरो वा मुखतरो वा

कार्क अप्पार्ण परिकित्रेसंति अप्पनरो वा भुज्यस्रो वा कार्क अप्पार्ण परिकिटेसिना कासमानं कालं किया कव्यवरेष्ठ वालमंतरेष्ठ देवलोएस देवलाए स्ववसारी सर्वति. तहीं तेलि गई नहीं तेलि ठिई तहीं तेलि उपवाए पण्यते । तेलि में अंते ! देवामं केवार्य कार्त ठिई प्रमता ? गोबमा : वसवाशसहस्ताई ठिई प्रम्मता, अन्य मं संते : वैसि वंबाणं हड्डी वा लई वा करे इ वा करे इ वा बीरिए इ वा पुरिसकारपरकरने इ वा ? हंता अस्पि, ते ने मंते ! देवा परकोगस्साराहवा ? को इनके समहे ५ । से जे हम गामागरणगरणियमरायहाणिसेडकाव्यडमहंबदोणमुहपर्गासमसंबाहसांग्य-वेसेमु मणुमा भवति, तंजहा-अंडबदमा विगलबदमा इविबदमा चारमबदमा इत्व-चिक्रम्या पामचिक्रममा कामचिक्रममा चक्रचिक्रममा उद्गविक्रममा जिन्मचिक्रममा सीसच्छित्रमा सङ्ख्या सञ्जाच्छामा वेद्याच्छच्छामा हिर्द्यामा अस्य-प्पाडियमा दसगुप्पाडियमा बसगुप्पाडियमा नेवच्छिण्यमा तंडुकच्छिणमा क्रमनिसं-सक्साइयया ओलंबियगा संविधया चेलियया चीलियया माहियया पीकियया स्लाइ-यया स्लिमिणवा बारवत्तिया वज्हावतिया सीहपु व्यवस्था वयस्मिववृता पंकीस्वावा पंके कुल्या कल्यमयमा बस्रहमस्या विस्नामस्या अंतोसहमस्या विरिपहित्रमा तर-परिवमा मस्परियमा गिरिपक्खंदोलिया तस्पक्खंदोलिया मस्पक्खंदोलिया जलपरे-सिगा जलणपर्वसिगा विसर्भविकस्था। सत्योवाडियमा वेद्याणसिया विद्यपिद्यमा कंतार-मबगा दक्ष्मिकसम्बाग असंकिलिङ्गिरिणामा ते कारुमासे कार्य किया अन्त्रगरिस वाण-मैनरेस देवकोएस देवलाए उववतारो भवति, तहिं तेसि गई तहिं तेसि ठिई तहिं तेसि उन्दाए पण्यते, तेसि मं भेते ! देवाणं केवहयं कालं ठिवं पण्यता ? गोयमा ! बारसवाससहस्ताहं ठिई पन्नता । अत्य मं भंते ! तेसि देवाणं रही वा जुई वा असे इ वा बके इ वा बीरिए इ वा पुरिसकारपरक्षमें इ वा ! इंता अस्व, ते में अंते ! देवा परक्षोगस्ताराह्या ? शो इपहे समहे ६ । से जे इमे गामागरणवर्षितमराबहाणिकेड-कृष्यक्रमदंवदीषमुद्दपर्गासम्यंबाह्संनिवेसेसु मणुया भवंति, तंजहा-पगर्भर्गा पगर्-हर्वसता प्रमृद्यत्वकोह्नाणमामाकोहा मिटमद्वसंपण्या अल्लीणा विश्रीया सम्मापिउछ-रस्तमा अम्माविर्धे अवस्मानअवगणा अप्पिन्छा अप्पारंमा अप्पपरिमाहा अप्पेणं आरंबेर्ज अप्येज समारंबेचं अप्येजं आरंबसमारंबेणं विति क्येमाणा बहुई वासाई बाउमें पार्कति पालिता कारुमाले कार्ड किया जन्मवरेस वागमंतरेस देवकोएस देव-पाए उपमतारो अवंति, ताह रोति कई तहि तेति ठई तहि तेसि उपवाए पण्यते, देखि में अंते ! देवाचे केवाने कार्क ठिई कमाता ! गोनमा ! गठइसवाससहस्सा ७ । वे जाको इसाको मामागरणवर्षिनगरायहानिकेदकव्यडमदेवदोणसुद्दप्रणासमसंवा-

इसंनिवेसेसु इत्ययाओ भवंति, तंत्रहा-अंनी अंतेजरियाओ गयपहबाओ मयपहबाओ बालविहवाओ छहिबहिबाओ माइरक्लियाओ पियरक्लियाओ भागरक्लियाओ कुल-घररानिखयाओ समरकलरिक्तयाओ प्रमहणहर्ममुकेसकत्स्त्ररामाओ ववगयपुप्पग्रंथम-हारुंकाराओ अन्द्राणगसेयज्ञह्मलपंकपरिनावियाओ ववगयानीरदहिणवणीयसस्पिते-ह्रगुलहोणमहमञ्जर्मस्परिचनक्याहाराओ अप्पन्दाओ अप्परंभाओ अप्पन्रस्माहाओ अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं महारंभेणं अप्पेणं आरंभमहारंभेणं विनि क्यंनाणीओ अकामवंभचेरवासेणं तमेव पर्से हं णाडक्रमन्ति, ताओ णं इत्थियाओ एयास्वेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहुई बासाई सेसं नं चेद जाब बटमद्भि बामसहस्मारं हिई पण्णता < । से जे इमे गामागर्णयरणिगमरायद्वाणिलेडकञ्बडमर्डबदोणसङ्घट्या-समसंबाहमार्बनेसेसु मणुया भवंति, तंत्रहा-दगबिइया दगतत्या दगमनमा दगएका-रममा गोबमा गोब्बहया गिहिषम्मा धम्मचित्रमा अविरुद्धविरुद्धसुमाद्यगण्यभियञ्जी तेमिं सणुवाणं णो कप्पद्द इसाओ नव रसविगाईओ आहारित्रए, नंजहा-खीर् दर्हि णवणीयं सपि तेष्ठं फाणियं महं मर्खं मंसं, णण्णत्य एकाए सरिसवविषद्वंग् ते जं मणुया अप्पिच्छा नं चेव सब्दं गवरं चउरासीहवानगहस्साई ठिई वण्णना ६ । ये जे इमें गंगाक्तमा बाणपत्था नावमा भवति, नंजहा-होत्तिया पोत्तिया कोतिया जण्णह् सङ्गई यालई तुंपउद्वा दंतुक्वलिया उम्मञ्जगा गम्मञ्जगा निम्मञ्जगा संपक्षाला दक्किणकूलमा उत्तरकूलमा संसध्यममा कूलक्समा मिगलुद्धमा इत्थितावमा उद्देशमा दिमापोक्सिणो वाकवासिणो अंत्रुवासिणो बिलनासिणो जलवासिणो वेलनामिणी रमञ्जम्िया अंतुमिक्सणो बाउमिक्सणो सेवालमिक्सणो मूलाहारा केदाहारा नया-हारा पत्ताहारा पुष्काहारा भीवाहारा परिसादियकंदमुळनवपत्तपुष्कफळाहारा जलाभि-सेयकढिणगायभ्या आयावणाहि पंचन्गिताविहि ईगालमोहियं कंडुमोहियं कहसोहियं-पिव अप्पाणं करेमाणा बहुई वासाई परियागं पाउणंति बहुई बासाई परियागं पाउनिसा कालमासे कार्ल किया उद्योसेणं ओइसिएसु देवेमु देवनाए उववत्तारो सर्वति , पिल्ओवर्म वामसयमहस्समन्महियं ठिई, सेसं तं चेव आराह्या ? जो इजड्डे समहे ९० । से अ इमे जान सिबनिसेस पटनहया समणा मनंति, तंजहा-कंदणिया क्युद्रमा मोहरिया गीयरङ्गिया नवणसीला ते णं एएणं विद्वारेणं विद्वरमाणा बहुत्रं वासाई सामण्यपरि-यायं पाउणंति २ ना नस्स ठाणस्य अणास्त्रोहयअव्यविकंता काळमसे काळं किया उक्रोसेणं सोहस्में ऋषे कंदण्पिएस देवेसु देवताए उवनतारो अवंति, तहि तेसि गई तहिं तेसिं ठिई, सेसं तं चेव, णवरं पलिओवमं वाससहस्समध्यद्वियं ठिई ११। से जे इसे जान सिक्रवेसेमु परिव्यायमा भवंति, तंत्रहा-संबा बोई कविका मिनवा इंसा

परमहंसा बहुतदया पृष्टिकाया कहुपरिकायगा. तत्व सहद इसे शहु आहणपरिकायगा सर्वति, लंजहा-काहे य करकंडे या, अंबर्ड य परासरे। काहे दीवायके खेब, देवगरे य भारए ॥१॥ तत्म कल हमे अद्र सशिवपरिष्यास्या भवंति तंत्रहा-सीलंड समिहारे य ं जनगई भरगई इ.स.। विवेहे रायारामा रामारामे बच्चेद स 🛭 🤊 ॥ से जं परिव्यासना रिउन्वेय नम्ब्येयसामवेयकाहत्वणवेयहतिहासपंचमानं विस्पंद्रश्रद्वाणं संगोवंगाणं सर-इस्सार्ण नाउन्हें वेबाने सारमा पारमा चारमा बारमा सहमवी सङ्कितंतविसारया संखाने सिक्साक पे बागरणे छंदं जिल्हा जोइसामवणे अज्जेस व बंभज्जएस व सत्वेस सुपरिविद्विया याचि हत्या । ते णं परिन्यायमा दाणधन्मं च सीयधम्मं च तिरवा-भिसेयं न आध्वेसामा एक्जवेसामा परुवेसामा विष्टदंति, अन्नं अन्हे किंचि असडे भवड़ तण्णे उदएण व महिवाए व पक्कालियं सुई भवड़, एवं बळ वाम्हे चोक्का नोक्सायारा सुई सुइममायारा भवेता अभिसेयजलपुरूपाणी अविग्रेज समा ग्री-स्सामी, तेसि में परिव्यायमाणं भी कम्पड अगढं वा तलायं वा गडं वा बाहि वा पुरुक्तरिणि वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागरं वा ओगाहिसए, जन्मान्य अद्याणगमणे, जो कप्पड़ सगर्ड वा जाव संदमाजियं वा दुखेंहता जं गच्छित्त, तेसि णं परिव्यायगाणं णो कप्पइ आसं वा इतिंव वा उर्द वा गोणं वा महिसं वा खरं बा दुरुहिला णं गमिलए, देसि णं परिव्वायगाणं भी कप्पड नहचेच्छा ह वा जाव मागडपेच्छा ५ वा पेच्छिनए, तेसि परिव्यायगाणं जो कप्पड इरियाणं लेसणया वा षष्ट्रणया वा यंभणया वा खुसणया वा उप्पाडणया वा करिताए. तेसि परिव्यायगाणं भी कपड़ इत्यिकहा इ.मा भत्तकहा इ.मा देसकहा इ.मा राजकहा इ.मा नोरकहा इ वा अजवस्था इ वा अजरवदंडं करिसए, तेसि में पो कप्पइ अनुपासाणि वा तरक्यांकि का तंबपायांकि का जसक्यायांकि का सीसगपायांकि का रूपपायांकि का धुक्कापायानि वा क्ष्मायरानि वा बहुमुक्काणि घारित्तए, गण्यत्य राउपाएण वा द्वास्थाएंग का महिकापाएग वा, तेसि मं परिस्वास्थामं मो कप्पः समर्वेषणाणि वा तउन्दंशनामि वा तंबवंधनानि जाव बहुमुक्कानि धारितए, तेसि नं परिन्वारगार्व भो सम्पद् भाषाविद्ववन्तरागरभाई बत्याई भारताए, जन्मत्य एकाए घाउरताए तेति व परिव्यानगार्थ को कम्पह हारं वा अदहारं वा एगावलि वा असावलि वा कलगावसि वा रवणावसि वा मुरवि वा कंटमुरवि वा पालवे वा तिसरये वा कविसुरी वा इसमुद्दिवार्यतमं वा कववानि वा तुविवाणि वा अनवानि वा केवराणि वा क्रेंडकानि का सबर्व वा क्लामचि वा विणदित्तम्, जन्मस्य एगेणं तंत्रिएणं पवित्रमुखे, बेडि न परिव्यास्तानं यो स्टब्स् गैबिमवेडिमप्रिमसंबाहमे चटिनाहे सह

धारितम्, वष्णात्य एनेणं काणपूरेणं, तेसि वं परिवायगाणं को कम्पद् अकानुस्य का चंद्रणेय वा जुंजुनेण वा गायं अणुलिपिनए, मन्मत्य एकाए गैगामहिवाए, तेसि में कायह मायहए परवए जलस्स पडियाहितए, सेर्प्रवय वहमाण जो चेव में अवहनाचे, सेऽविय विमिओदए जो चंब जं कर्मोदए, सेऽविय बहुपमण्णे जो चंब जं अबहुर् पसाणों, सेडनिय परिपूछ की बंब में अपरिपूर्, सेडिवय में दिम्के को बेब में अदिण्ये, सेऽविस पिनिशए यो चेव यं हत्थपायचरुचममपक्खालयद्वाएं निणाइतए वा, तेसि वं परिकाशगाणं कप्पड् मागहए अद्धाद्य जलस्म परिकारिकाए, सेर्डावेस क्रमाणे जो चेव णं अवहमाणे जाव जो चेव णं आंद्रण्णे, सेऽविय इत्यपायवरू-व्यासप्तकालणहुयाए जो चेव मं पिवित्तए सिणाइत्तर वा ते जं परिव्वायमा एयारुवेमं विहारेणं विहरमाणा बहुई वासाई परिवायं पाटणंति २ सा कालमासं कालं किया वक्रोसेणं बंगलोए करेंपे देवनाए उदवनारी भवंति, ताहें तेसि गई नहीं तेसि दिई इस सागरोबमाई ठिडे पण्णता, सेसं तं नेव १२ ॥ ३७॥ तेणं कालेणं तेणं समर्पणं अम्बद्धस्य परिव्वायगस्य सत्त अंतुवासियगदं गिम्हकालमभवंति जेह्नाम्लमासेनि गंगाए महानईए उभओक्केणं कंपिकपुराओ णयराओ पुरिमतालं गयरं संपद्विया बिहाराए. तए णं तेसि परिव्यायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णोबायाए दीहमदाए भड़वीए दंनि देसंतरमणुपतार्ण से पुरुषमाहिए उदय अणुपुरुषेण परिश्रंजमाने शीणे. तए णं ते परिव्यामा शीणोदगा समाणा तण्हाए पारव्यमाणा २ उहराहा-नारमपरममाणा अण्णमण्णं सहार्वेति सहाविता एवं वदासी-एवं खलवे वाण्यिका ! अन्द इमीस अगामियाए जाव अडबीए कंचि देसेनरमणपत्ताणं से उद्दए जाब जीने र्त संयं खल देवाणुष्पिया ! अम्ह इमीसे अगामियाए जाब अडवीए उद्देशसानास्त्य सन्वओ नर्मता मरगणगवेगणं करिनएतिकह् अण्यमण्यस्स अंतिए एयम् पिङ्सुणंति २ ना तीलं अगामियाए जाव अडबीए उदगदातारस्य सम्बक्षी सर्मता ग्रमानाय-वेमणं करेन्ति करिता उदगदातारमलमभाषा दोषंपि अध्यमध्यं सहावेति सहावेता एवं वयासी-इह णं देवाणुप्पिया! उद्दगदातारी गतिव तं भी सह दूरवह सक्ट अदिण्णं निण्हिनए अदिण्णं साइजित्तए, तं माणं अम्हे इयाणि आवर्कासंनि अहिण्लं गिण्हामा अदिण्णं साहजामो मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सा तं सेर्व बाह्य अम्हं देवाणुष्पिया ' निदंडर्य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य मिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओं य पवित्रए य स**नेतियाओं य एतए य** वाहणाओं य पाउयाओं य भाउरनाओं य एगंते एडिसा वर्ग अहाणई सीमाहिसा बाङ्यासंधारए संबरिता संकेष्ट्याझोसियाणं भत्तपाणप**डियाद्वियायाणं पाओवग्याणं**

काले काणवर्षकामाणाणं निवृतित्तवृत्तिकहु अञ्चयनण्यस्य अतिष् एवसहं पडिमुर्णति अव्यासम्पारस अतिए० पहिसुनिता तिर्देडए य आव एवंते एडेंति २ मा गंगं अहालई ओगाइँति २ ता बाल्यासंबारयं संबरति २ ता बाल्यासंबारयं दुरुईति २ ता पुरस्थामिमुद्दा संपत्नियंश्वनिमक्षा करवल जाव कर् एवं क्यासी-श्वमोऽत्यु णं अरहंनाणं जाव संपत्ताचं, नमोऽत्य चं समचस्स भगवजो महावीरस्स जाव मंपाविउकामस्य, नमोऽर्यु वं अम्महस्स परिन्यायगस्य अम्हं चम्मायरिवस्स धम्मोवएसगस्य, पुथ्यि वं अन्ते अम्मदस्य परिज्याकारस्य असिए श्रुकापाणाङ्गाए पण्यनसाए जावजीवाए शृतए मुसाबाए भूत्व अविष्णादाचे प्रवस्ताए मानजीवाए सब्वे मेहणे प्रवस्ताए जाबजीबाए क्लूए परिसाहे प्यक्ताए शाबजीवाए इताणि अन्हे समगरम भगवओ महाबीरस्त अंतिए सम्बं पाणाइवार्य पथक्सामी जावजीवाए एवं जाव सन्वं परिकार प्राक्तकामी जावजीवाए सन्दं कोई सामें आवं सोई पेजं दोसं कलई सहस्रकार्ण पेसूरणं परपरिवार्ग सरहरई सामामीसं निष्कारंसमस्त्रं ककरणियं जोगं प्रवक्तामो जान्यीकाए सर्व असर्व पार्च साइमं साइमं चढिवर्दधि आहार्र क्षकसामी जावजीवार केवि व इसं सरीर इहं केतं विवं समाणं मणामं वेजं वेशासियं समयं बहुसम् अनुसम् भंडक्तेडगसमाणं मा नौ सीवं मा या उन्हें मा न बहा सा वो पिवासा मा वां वास्त्र मा वं चोरा मा वं देखा सा वं मसवा मा वं बाह्यवित्तिवसंनिबाह्यविविद्या गोगार्यका परीसदोबसम्मा कुर्वतृत्तिकड् एयंपि णं चर्मेहि उत्सासजीसासेहि बोसिरामोत्तिकहु संकेहणास्त्रज्ञाश्चरिया मत्त्रपाणपविया-इक्सिया पाओक्गमा कार्क अणवर्कसमाणा विहरति, तए में ते परिव्वाया बहुई अताई अवसवाए छेदेन्ति छेदिता आलोइयपिडकेता समाहिपता कालमासे कालं किया वंशलीए क्रम्मे देवताए उनवण्या, तहिं तेसि गई दससावरोबमाई ठिई प्रकारता, प्रत्तोगस्य आराह्या, सेसं तं चेव १३ ॥ ३८ ॥ बहुजने ण मंते ! अध्यक्षण्यस्स एवमाइक्सइ एवं भासइ एवं परुवेइ एवं साह अंबडे परिज्यायए कंपिसपुरे जबरे बरसए आहारमाहरेह, घरसए बसाई उनेह, से कहमेर्य मंते ! एवं ! नोबना ! अन्यं से बहुजमो अन्यमन्त्रस्य एवमाउनस्तर् जाव एवं परकेर-एवं साह सम्सवे परिकासए संवित्तपुरे जाव घरसए क्साई उतेर, सचे मं एसमहे, अहंपि ने गोषमा ! एवमाइनकामि जाव एवं परवेमि-एवं सह अस्महे परिव्यायम् बाव वसहि उके । से केणहेवं भेते ! एवं पुषाह-सम्मवे परिव्यायए वान वतिहै उदेह ! गोबमा । अम्महरस मं परिन्वानगरस मगहमहयाए जाव विश्वीयमाप् व्यक्तिम् अनिविद्यतेषं स्वीक्त्येणं उद्वं बाहाको प्रनिज्याय २

स्राभिनुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्म मुमेणं परिवासेणं वमस्वाहि जेसाहि विसुज्यमाणीहि अवया क्याइ तयावरमिजाने क्याणं स्थोवसमेणं इंहान्ह-सरतकार्यसमं हरेमाणस्य वीरियलदी वेडिव्यलदी ओहिंगाणलदी समुज्यात्र तए में से अध्यक्षे परिन्यायए ताए बीरियलदीए वेन्नव्वियलदीए ओहिणाणलदीए समुप्यक्याए जशकिन्हावमहेर्ड कंपिवपुरे नवरे घरमए जाव वसहि उनेइ, से तेच्छेर्ण सोयमा ! एवं सुचा:-अम्मंड परिव्वायम् कंपिहपुरे मयरे घरसए जाव बसर्के उपेड । पह में मेरे ' अम्मडे परिव्यायए देवाणुरियाणे अतिए मुंडे भविता अलाराओं अजगारियं पव्वरूपए ? जो उजहे नमहे, गोयमा ' अम्मन्ने जं परिस्वायए समजीवासए अभिगमजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरह, जबरे उसियकिस्हें कार्यायत्वारे नियत्तेतेउरयरदार्पयंसी ण वुचइ अम्मडस्न णं परिव्वायगस्म धृत्य पाणाइबाए पणन्याए जावजीवाए जाव परिस्महे गर्वरं संदंव सेहणे पणन्याए जाबजीवाए, अम्महरम णं णो कपड अक्समोबप्पमाणमेनीप जलं सबराई उत्तरित्तए भक्जस्य अद्यागगमणेणं, अम्म्डस्य णं णो ऋष्यः सगडं वा एवं त्रं चेव भाणियव्यं जाक जन्म एगाए गंगासहियाए, अस्सहस्य में परिन्दायगस्य मो क्रपड आहा-कम्मिए वा उद्देशिए वा मीमजाए इ वा अञ्चायरए इ वा पुरुक्तमे इ वा कीयगढे इ वा पानिषे ह वा अणिसिद्धे इ वा अभिहड़े इ वा ठइनए वा रहनए वा कंतारभत्ते इ वा दुव्भिश्खमते इ वा पाहुणगभते इ वा विकाणभने इ वा वर्दालयाभते इ वा भोत्तए वा पाइतए वा, अम्मडस्स णं परिव्वायगस्य जो कप्पर मूलभोयणं वा जाब बीयभोयणे वा भोतए वा पाइनए वा, अम्मडस्स पं परिव्वायगस्य चढिकहे अगत्यदंदं पचनवाए जावजीवाए, तंत्रहा-अवज्ञाणायरिए प्रमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवण्मे, अम्महस्म कप्पइ मागहए अद्वादए जलस्य परिज्ञाहितए सेऽविद बहमाणा नो चेव णं अवहमाणए जाव सेऽविय परिपूए नो चेव णं अपरिपूए सेऽविय मावजेनिकाउं णो चैव णं अणवजे सेऽविय जीवा इतिकडु णो चैव शं अजावा सेऽविय दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे सेऽविय दंतहत्थपायचरूचससपक्षाळ-णहुआए पिथितए वा णो चैव ण सिणाइत्तए, अम्मडस्स कप्पइ मागहए व आवए जलम्स पडिम्माहितए, सेऽविय बहुमाणे जाब दिशे नी चेव न आदिको सेऽविय सिणाउनाः णो चंद णं इत्यपायचरचमनपक्सालणहुयाए पिकिसए वा, अन्मदरस णो कप्पद्र अञ्चनियमा वा अण्यनिधमदेवमाणि वा बंदिसए वा वर्मकिसम् वा वाव पञ्जुबासिनए वा जज्जत्व अरिहंते वा अरिहंतसाहुजो वा। सम्मडे जं भंते! परिव्यायए कालमासे कालं किया कार्ह गच्छिहिइ ? कार्ह उवविवाहिइ ?, गोयमा !

अम्महे वं परिन्तायम् उत्रावमहि सीलव्यस्मुमवेरसणस्वयसामपोनदोववामेहि अध्याणं भावेमाणे बहुई बासाई समणोबासम्परियामं पाउनिहेड् २ सा मासिमाए क्रिक्णाः अप्पाणं झूलिता सिंह मत्ताई सणसमाए क्रेविता आलोइसपडियाँते . संमाहिएन कालमास काल किया बंगलोए कपी देवताए उपयोजिहिंद, गत्य र्थ अरबेगडगार्थ देवाणं दस सागरोबमाई ठिई क्याता, तत्व वं बम्मडस्यवि देवस्य दम सागरीवमाई ठिई । से पं भेते ! अम्मडे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्साएपं भवक्ष्यएणं ठिडक्सएणं अणंतरं चयं चहता कहिं गच्छिडिह कहिं उपविश्विद्धि ? गोयमा ! महाविदेहे बासे जाई कुलाई भवंति अश्वाई विताई विताई विच्छिण्यविद्यक्त-भवणस्यणास्यज्ञाणवाहणाई बहुभणजायस्यस्ययाई आधोगपभोगसंपरताई विच्छ-वियप उर्भणपाणाई बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाई बहुजणस्य अपरिभूबाई तहप्पगरिस इकेन्द्र पुमताए प्यामाहिइ । तए ण तस्त दारगस्त मन्भत्यस्त चेव समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पर्ण्या भविस्सइ, से मं तस्य मक्ष्यं मासार्थ बहुपडिपुण्णाणं अदद्वमाणराईदियाणं बीइकंताणं सुकुमालपाविपाए जाव ससिसोमा-कारे केंत पियदंसणे मुख्ये दारए प्याहिश, तए वं तस्त दारणस्त अम्मापियरो पडमे दिवसे टिइनबियं काहिति, जिइनदिक्से चंदस्रहंसजियं काहिति, छद्वे दिवसे जागरियं काहिति, एकारसमें दिवसे बीइकंते निनित्ते असुहजायकामकरणे संपत्ते बारसाई दिवसे अम्मापियरो इमं एयास्व गोणं गुजजिप्कृष्णं णामधेजं काहिंति-अन्द्रा मं अन्दं इमंसि दारगंसि गन्मत्वंसि चेव समाणंति चन्ने द्वपहण्या नं होउ मं अन्दं दारए दक्षपद्यमे णामेणं, तए मं तस्स दारगस्स अन्मापियरो णामधेजं करेहिति इडपहण्णेति । तं दहपहण्णं दार्गं अन्मापियरो साहरेगऽद्धवासजायमं जानिता सोअवंति तिहिकरणणक्वतमुद्वति कलायरियस्स उवनेहिति । तए णं से कलगरिए तं दहपर्ण्णं दार्गं छेहाइयाओ गणियप्यहाणाओ सरणस्वपञ्चवसामाओ कावनरिकलाओ सुत्तको य अत्यको य करणओ व सेहाविहिइ सिक्सामिहिङ् तंत्रहा-तेवं गणिवं स्वं णहं नीयं वास्यं सरगयं पुक्करगयं समतालं ज्यं जगवायं पासनं अद्वादयं पोरेकवं दगमहियं अण्यविहिं [पाणविहिं वत्वविहें विकेवणविहिं] सवणविहिं क्रजं पहेलियं मामहियं गाहं गीइवं सिलोयं हिरण्याज्ञति स्वण्याज्ञति गंशजुति चुन्यसुति आभरणविद्धि तस्त्रीपविकामं इत्थितव्यक्षणं पुरिसतव्यक्षणं इयल-क्याणं ग्यालक्याणं सोजलक्याणं कुबुडलक्याणं वकलक्याणं छगलक्याणं चम्मल-क्सणं दंधसम्बर्णं वासित्रक्सणं गवित्रक्सणं काकणित्रक्सणं वरश्वित्रं संधारमाणं नगरमार्थ बायुनिवेसमं सूर्व परिवृद्धं बारं परिवारं बहतूर्वं गरलवृद्धं सगडवृद्धं जुद्धं Sala Contract

निजुदं जुदाइजुदं मुद्रिजुदं बाहुजुदं लगाजुदं ईसस्यं छरणवाहं पणुक्वेयं हिरम्ब-पानं सवन्त्रपानं बहसेई मुत्तसेनं जालियासेई पत्तन्त्रेजं कडनक्छेजं सर्जावं निजीकं सउणस्यमिति बावतारिकलाओं सेहाविता सिक्सावेता अस्मापिईणं उवणेष्टिह । तए 📽 नस्त दहपुरुष्यस्य दारगस्य अस्मापियरो तं कलायवियं विउत्तेषं असणपाणसाद्याः साइमेणं बरवगंथमहालंकारेण य महारोहित सम्माणेहित सन् २ ना विदलं अधिया-रिर्द पीऽदाणं दलऽस्संति २ ना पडिविमजोहिति । नए षं से दहपहणी दारए बाइन-रिस्लापंडिए नवंगनुतपिडवोतिए अहारमदेसीमामाधिमारए गीवरहे गोपव्यणह्युमस्ट इयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्यमदी वियम्कवारी माहनिए अलं भोगममन्ये यावि भविस्पद्य । तए णं दहपद्रण्यं दारगं अध्यापियुरो बावनदिस्तापेदियं जाव अर्ल भोगसमस्यं विद्याणिना विडलेहि अण्णमोगेहि पाणभोगेहि लेणमोगेहि बत्यमोगेहिं समणभोगेहिं कामभोगेहिं उबणियंत्रेहिति, तए मं से इक्ष्यक्रमं दारए तेहिं विज्ञहेहिं अष्णमोगेहिं जाव स्यणभोगेहिं यो सजिहिंद जो रिव्यक्तिः यो गिज्यिहिं यो मुजिसहिं यो अञ्झोनवजिहिंद, से जहाजामए उपके इ या पउसे इ वा कुमुमे इ वा निल्णे इ वा सुभगे इ वा मुगंबे इ वा पोंडरीए इ वा महापंडिरीए ड वा सवपने इ वा महस्मपने इ वा मयमहस्मपने इ वा पंके जाए जांद मंबुद्धे णोत्रिष्पद् पंकरएषं णोविष्यद अलग्एणं, एवामेश ददपद्रण्णेवि दाग् कामेहि आए मोगेहिं संबुद्ध णोवलिप्पिहिइ कामरएगं भोवलिप्पिहिइ मोगरएगं णोवलिप्पिहिइ मिनणाडणियगस्यणसंबंधिपरिजणेणं, से णं तहास्याणं धेराणं अंतिए केसलं बोहिं बुजिमहिड केनलबोहिं बुजिमता अगाराओं अणगारियं पम्बद्दहिंद । से णं भविस्सद्द अणगारं भगवंत ईरियासमिए जाव गुलबंभयारी । तस्य मं भगवंतस्य एएणं विहा-रेणं विहरमाणस्य अर्णते अणुनरे जिल्लाचाए निरावरणे कलिणे पश्चिपुण्णे केवस-वरणाणदंगणे नमुप्पजिहिइ । तए णं से दहपर्ण्णे केवली बहुई बासाई केवलिप्र-यागं पाउणिहिंद २ ना मामियाए संलेहणाए अप्याणं झूसिना सर्ह्हे भताहं अणसणाए छेएता जस्मद्वाए कीरइ थेरकप्पभाव जिलकप्पभाव मुंडमावे अण्हालए सर्वतवलए केमलोए वंभन्तरवासे अन्तरमगं अणोबाहणमं भूमिसेजा फलहसेजा कहुसैजा परचरपवेसी उद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओं सिमणाओं णिंदणाओं गरहणाओं तालणाओं नज्ञणाओं परिभवणाओं पञ्चहणाओं उचावया गामधंद्रमा बाबीई परीसहोत्रसम्मा अहियासिजैति नमहुमाराहिता चरिमेहि उस्सासिक्सासेहि सिजिह-हिर बुज्जिहिर मुचिहिर परिणिव्वाहिर सव्बदुवन्सावर्मतं करेहिर १४ ॥ १९ ॥ चे जे इमे गामागर जान सण्णिवेसेमु पव्यस्या समणा मर्वति, तंबहा-जामरिय-

पहिजीया उद्रज्ञायपदिजीया कुरुपदिजीया गणपदिजीया आयस्य उद्रज्ञायाणं अंब्सकारमा अवण्यकारमा अकित्तिकारमा बहुद्धि असन्भावस्थावि सिन्छलासि-विकेतेहि य अप्पाणं च परं च नद्भयं च वृत्गाहेमाणा वृप्पाएमाणा विहरिना बहुई बागाई मामण्यापरियागं पाउणंति २ ना तस्य ठाणस्य अवासोडयअपहिकंता कालमासे कालं किया उद्योगेणं संतए कृष्ये देवकिव्यितिएस देवकिञ्चितियन्।ए उववनारी भवंति, तक्ष तेसि गई तरमसागरोबमाई ठिई अणागहमा सेम ते चेव १४ । से जे इसे राण्णिपीचिदयतिरिक्खओणिया पञ्चनया भवंति, तंजहा-जलयरा लहयरा चलयरा, नेसि णं अत्येगइयाणं सुमेणं परिणामेणं पसन्धेहिं अज्यवयाणेहि त्रेमाहि विमुज्यमाणाहि तयावरणिजाणं बत्माणं खञ्जावसमेणं इंहानूहमन्गणगवेसम्बं करेमाणाणं सन्नीपुन्वजाईसरणे समुप्पज्जर । तए यं त समुप्पण्याजाडमरा समापा सममेव पंचाणुक्वयाई परिवर्जनि परिवर्जना बहुहि सीत्रव्ययाणवरमणपचन्नाणपोसहोबवासेहिं अप्पाणं मार्वमाणा बहुई वासाई आउयं पालेनि पालिता भर्त पश्चनखंति बहुई भन्नाई अणमणाए छेर्पति २ ता आलोहय-परिशंना समाहिएना कालमासे कालं किया उद्योसेणं सहस्सारे कप्पे डेवनाए उन्तरनारी भवति, तहि तेसि गई अद्वारस सागरीयमाई ठिई पण्णता, परलोगस्य आगहरा, मेमं तं चेव १६ ! से जे हमे गामागर जाब सेनिबेसेम आजीविका भवंति, नंजहा-दुधरंतरिया तिघरंतरिया सत्तधरंतरिया उप्पलवंटिया घरसमुदाणिया विकाशंतरिया उष्टियागनणा, तेणं प्यारुवेणं विहारेणं विहरमाणा बहुई वालाई परियायं पारणिता कालमासे कालं किया उक्कोसेणं अयुए कप्पे देवताए उन्नतारो भवति, तहि निर्मि गई वार्वासं मागरोवमाई ठिई, अणाराहगा, सेसं ते चेव १७। से जे इमें गामागर जान मण्णिक्सेमु पब्बदया नमणा सर्वति, तंत्रहा-अनुकोश्चिया परपरिवादया भूदकांम्मया भुज्ञो २ को उपकारगा. ते ण एयास्वेण विहारेण विहर-माणा बहुई वाशाई सामण्णपरियागं पाउणंति पाटणिता तस्स ठाणस्स अणालोहय-अपिक्केता कालमासे कालं किया उक्तेसेणं अणुए कप्पे आमिओगिएस देवेसु देवताए उवक्तारो अवंति, तहिं तेलिं गई बाबीसं सागरोतमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा, सेसं तं श्रेष १८ । से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेसु णिण्हणा मवंति, तंजहा-बहुरया १ जीवपएसिया २ अध्वतिया ३ मामुच्छेदया ४ दोकिरिया ५ तरासिया ३ अवस्थिया ७ इचेते सत्त प्रयणणिण्हमा केवल(लं) बरियालिंगसामण्या मिन्छहिद्वी बहुहिं असन्मानुन्भावणाहिं मिन्छतामिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुमा**हेबाका कुप्पाप्**माका विद्**रि**ता बहुई बासाई सामण्णपरियागं पाउणंति २ ता रे स्ता-

कालमासे कालं किना उद्योमेणं उवस्मिम् गैवेजेम् देवनार उवक्तारो मवंति, तार्डः तेमि गई एक्नीम गामगेयमाई छिद्दं, परलोगस्य अणार दगा, सेसं तं चेद १६ से जे हमे गामागर जाय मांक्जवेसेयु मणुया भवंति, तंत्रह'-अपारंभा अप्पपरिसाहा धरिमया धरमाणुया प्रस्मिद्धा प्रस्मक्काई धरमप्यकोऽया धरमप्रक्रवणः धरमसमस्दावारा धरमेणं चेव वित्तिं कप्येमाणा मसीला मुख्यया मृप्यदिशाणंदः गाहाहि एगवाओ पाणाइ-वायाओं पर्डिविरया जानजीवाए एगचाओं आर्डिविरया एनं जाव परिसाहण्यो एस-बाओं कोहाओं साणाओं सायाओं लोहाओं पेंबाओं ठोता भी करहाओं अध्यक्ता-णाओं पेरक्काओं परवरिवायाओं अरहरहेंओं मायामीयाओं मिन्छारंगकमहाओं पहि-विरया जावजीवाए एएडाओ अपडिविरया, एएडाओ आरंभरामार्गमाओ परिवर्या जावजीवाए एगमाओ अपन्धियरया, एगमाओ करणकारावणाओ पहिनिस्या जावजीवाए एगवाओ अपिडांबरया, एगवाओ पर्यणायानणाओ पर्डाबरया जाव-जीवान गमनाओ प्रयापयावणाओं अपिढांबरया, गमनाओं कोहणपिहणतज्ञण-तालगनहबंबपरिकिलेपाओं पर्डियाया जाबजीया। एगचाओं अपिडीयर्या, एगचाओं ण्हाणमङ्ग्रवण्णगचिरुवणमङ्फरिनरगमवर्गभमञ्जातंकाराओ पर्डिवरया जावजीवाए एगचाओं अपिकविषया, जेवावण्ये तहापगारा सावज्ञजोगोवहिया कस्मेता परपाण-परियावणस्या कर्जाते तभी जाव एगवाओं अपिकांबरमा तंत्रहा —समणोशासमा भवंति, आंभगयजीवाजीवा उवलद्भुण्णपादा आसवसंवरनिज्ञा किरियाअहिमरूच-बंधमोक्तकुमना अमहंजाओ दंवामुर्णागजक्तरकत्त्वसक्तिवरिक्षगरूर्णावन्त्र-महोरग इएहिं इंश्वरणिहि लेगांथाओं पात्रयणाओं अणहत्रमणिजा जिलांचे पात्रसणि णिस्मंकिया णिद्रेन्त्रिया निब्बातिनिन्छा लद्धहा गहियहा पुन्छियहा अभिययहा विणिन्छियहा अर्हिमजपेम्माणुरागरना अयमाउसी : किसांचे पावयणे अहे अर्थ परमद्दे सेसं अगद्दे ऊनियफलिटा अवंगुयदवारा वियमंतेउरपरचरदारप्रवैसा चडरमद्वमुहिद्रपुण्णमासिणीम् पश्चिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपारुमाणा समणे निकांचे पासुग्रमणिजेणे असणपाणखाद्मसाइमेणं श्ररमपिकमाहकंबलपायपुं**रुणेणं शोसह**र भेमांत्रणं पडिहारएण य पीडरुलगसंज्ञासंभारएणं पडिलाभेमाणा विद्देति २ सा भनं पत्रक्वति तं बहुई भनाई अणराणाए छेदेति **छेदिना आलोहनपविश्वेता** समाहिपत्ता कालमासे कालं किथा उक्कोसेणं अनुए कप्पे देशताए उक्कतारी मनंति, तहिं तेनि गई वार्वीमं मागरीवमाई टिई आराह्या सेसं महेब २०। से के इसे गामागर जाव मण्णिवसेमु मणुवा भवति, तंजहा-अणारंभा अपरिस्महा धम्भिया जाव कप्पेमाणा मुसीला सुब्बया मुपढियाणेदा साहू सम्वाओ पाणाइनावाओं

परिवित्या जान सन्त्राओं परिगाहाओं परिवित्या सन्ताओं कोहाओं माणाओ मायाओं लोगाओं जाब मिन्छार्दसणमहाओं परिविरया सम्बाओं आरंभसमारंभाओं पश्चितिरया मञ्जाओ करणकारावणाओं पश्चितिरया सञ्जाओं पर्यणप्यावणाओं महिविरया सञ्ज्ञाओ क्रमणिकणतालणतहर्वेश्वपरिकितेसाओ पहिविरया सञ्जाओ ण्हाणमर्गनणमाविलेनणमर्फिर्सरसस्वगंधमजालंकाराओ पिर्कावरया त्रेयानण्य तह-प्याम मावज्जोगोवहिया बस्मंता परपाणपरियावणकरा कर्जित तेओवि पहि-बिग्या जावजीवाए मे जहाणामए अणगारा भवंति-इरियासमिया भागाममिया जाव इणमेर णिकांधं पादयणं पुरक्षोकाउं बिहर्रति तेसि णं भगवंताणं गुएणं विहारेणं विहरमाणाणं अरथेगहयाणं अर्णतं जाव केवलवरणाणदंनणे समुप्पज्जइ. ते बहुई बासाई केवलिपरियागं पाउणेति २ ता अत्तं पश्चक्कंति २ ता बहुई भनाई अणमणाए छेदेन्ति २ ता जस्सद्वाए कीरइ बेरकप्पभावे जिणकप्पभावे० अंतं करंति, जेसिंपि य ण एगडयाणं णो केवलवरनाणदंसणे समप्पाबंड ते वहाँ वासाई छउमरबगरियां पाटणन्ति २ ना आबाहे उपको वा अगुप्पको वा मनं पचरखंति. ते वहाँ भताई अणसणाए छेदेन्ति २ ता जस्सद्वाए कीरइ येरकप्यशावे जिणकप्पभावे जाव तसद्भाराहिना चरिमेहि स्मासणीसासेहि अणंतं अणुत्तरं निव्वाधार्यं निरावरणं करिणं परिपुष्णं केवलवरणाणदंसणं उप्पाहिति, तओ पच्छा सिज्यन्ति जाव अंतं करेन्ति । एगवा पुण एगे भर्वतारो पुव्यकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किया उद्योगेणं सम्बद्धसिद्धे महाविमाणे देवनाए उनवनारो भवंति. तर्हि तेसि गई तेनीसं सागरोबमाइं दिई, आराहगा, सेसं तं चेव २१। से जे इमे गामागर जाव सण्णिवेसेन मणुया मर्वति, तंजहा-सञ्बक्तामविर्या सञ्जराग-विरया सञ्जर्सगातीता सन्वसिणेहाइबंता अकोहा जिक्कोहा खीणकोहा एवं माणमाया-होहा अगुप्रवेण अद्व कम्यप्यकीओ सर्वेता उप्प लोयसप्रहाला हवंति २२ ॥४०॥ अणगारे णं अंते! आवियप्पा केवलिसमुख्याएणं समोहणिता केवलक्ष्पं लोयं फ़िलिया ण चित्रह ? इंता चित्रह. से पूर्ण मंते ! केवटकर्प कोए तेहिं णिजरा-पोमाकेष्टि फुडे ? इंता फुडे, छउमरचे णं मंते ! मणुरसे तेसि विज्ञरापोमालाणं किन्व बण्मेणं बण्णं गोंबेणं गोंबे रसेणं रसं फासेणं फासं जाणह पासह? गोयमा ' यो इषहे समहे, से केणहेणं अंते । एवं वुषह-छउमत्वे णं अणुस्से तेसिं णिजरापो-मालाजं जो किनि वज्जेजं वज्जं जाव जाजइ पासइ? गोयमा! अयं जं जंबुहीने २ सम्बद्धिवसमुद्दाणं सम्बन्धांतर्ए सम्बद्धार को तेत्रपुर्यसंठाणसंठिए को रहचक्रवाल-संकामसंक्रिए को प्रकारसम्भवासंकामसंकिए को परिप्रण्यनंदसंकामसंक्रिए एकं

जोयणगयमहस्सं आयामविक्लंभेणं निष्णि जोयणमयगदसगई सोखासहस्साई दोष्णि य सनावीस जोयणयण् तिष्णि य कोमे अद्वानीसं च अणुमयं तेरस य अंगुखाई अदंगुल्यं च किंचि बिसेमाहिए परिक्लेवेणं पण्णते, देवे मं सहिष्ट्रिए सहसुद्धम् सङ् व्यलं महाजसे महामुक्त्वे महाणुभावे नांबलेवणं गंधमसुगगरः गिण्हर् २ ता ते अवदाः लेड् २ ना जाव उणामेवत्तिकर् केवलकापं जेबुदीवं दीवं तिर्णः अन्छ्याणिवाएकि तिसः त्तकुत्तो अनुपरियहिता णं हव्यसागच्छेजा, से जूणं सोयसा ' से केमच्यापे जेषुरीने व तेहिं घणपोमालेहिं फुंड १ इंना फुंडे, छडमत्थे णं गोयमाः मणुम्से तेसि घणपोगा त्रणं किच्चि वर्ण्णणं वरणं जाव जाणइ पागड ! भगवं ! णो ! णहे नमहे, सं तेणहेणं गं(यमा) एवं बुचद-छटमत्थे णं मणुस्मे तेसि णिज्ञरापोम्मलाणं मा किचि वर्णाणं बण्णं जाव जाण्ड पासह, ए मृहुमा णं ने पोम्गला पण्णना, यमणाउमी ! मृत्वलोयंपि य णं ते फुमिता णं चिर्द्वति । कम्हा णं भेते ' केवनी समीहर्णान (तम्हा णं केवनी समुख्यायं गच्छेति ?, गोयमा : केवलीणं चलारं कम्मंमा अपन्विकाणा नवंति. तंजहा-वेयणिकं आउयं णामं गृनं, मन्वबहुए से वेयणिके कम्मे भवड, गृटक्योर्वे में आहर कम्मे भवद, विगमं यमं करेड बंचणीहें ठिइंहि य, विगममनकरणवात् वंघणेहि ठिइहि य एवं रातु केवना समोहणांत एवं खत् केवना ममुग्पायं गच्छेति । मर्काव णं भेते ! केवली समुख्यायं गन्छंति ? णो उणद्वे समद्वे. 'अकिना णे समुखायं, अणंता केवली जिणा । जरामरर्णावणमञ्जा, निद्धि वरगई गया ॥ ३ ॥ कटममण् णं भेते ! आउजीकरणं पण्णते ? गोयमा ! असंखेजनमङ्ग् अंनोमुहृतिष् वण्णेत । केविक्यमञ्चाए णं भेते ! कठममञ्जू प्रकास ! गोयमा ! अहुसमङ्ग् प्रकास, तंजहा-पटमे समण् दंहे यारेड बिडण् समण् कवाडं करेड् तंडण् समण् मंथे करेड् च उन्धे तमए लोगं पूरेड पंचमे समए लोगं पिडनाहरड छुट्टे समए मंधं पिडसाहरड गत्तमे गमण् कवाडं पहिसाहरह अद्भमे समए दंडं पहिसाहरड तओ पच्छा सरीरस्थे भवड । मेणं भेते ! तहा समुख्यायं गए कि मणजीगं जुंजह ? वयजीगं जुंजह ? कायजोगं जुंजह ?, गोयमा ! जो मजजोगं जुंजह जो बयजोगं जुंजह कायजोगं जुंजह, कायजोगं जंजमाणं कि ओराल्यिसरीरकायजोगं जंजह ? ओराल्यिमस्ससरीरकायजोगं जुंजह ? वंडिव्वयमरीरकायजोगं जंजह ? वेडिव्वयमिसमसरीरकायजोगं जुंजह ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजड? आहारगमिस्यसरीरकायजोगं जुंजह? कम्मासरीर-कायजोगं जुंबह?, गोयमा ! ओरालियसरीरकायजोगं जुंबह, ओरालियमिस्सरिर-कायजोगंपि जुंजइ, णो वेडव्वियसरीरकायकोगं जुंजइ णो वेडव्वियमिस्स-सरीरकायजोगं जुंजइ णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ जो आहारगमिससपरीर-

कायजोगं जुंजड कम्मासरीरकायजोगंपि जुंजइ पठमहुमेसु समएसु आराहियसरीर-काबजोगं तुंजह विश्यष्ठछ्ट्रमनमेसु समएसु ओरालियमिस्समरीरकायजोगं तंजट ताबचान्थ्यंचमेहि कम्मासरीरकावजोगं जुंजइ । से णं भेते ! तहा ममुख्यायगए किजार युज्यर मुखर परिनिन्वाड सव्वयुक्ताणमंतं करेड ? को उणहे समहे. से णं तओ पिट्टनियन्ड तओ पिट्टनियत्तिता इहमागच्छ २ ला तओ पच्छा मणजोगंपि जुंबह बयबोगंपि सुंबह कायबोगंपि जुंबह, मणत्रोगं जुंजगाणे कि सबभणजोगं जुंबर मोसमणजोगं जुंबर सबामोसमणजोगं जुंबर असबामो-समणजीर्ग जुंजह ? गोयमा ! सचमणजीर्ग जुंजह णो मोसमणजोर्ग जुंजह णो सचा-मोममण जोगं जंजड असमामोग्रमणजोगंपि जंजह, वयत्रोगं जुंजमाणं कि सम्बद्ध-जोगं जुंजड सोसवडजोगं जुंजड [कि] समामोसवडजोगं जुंजड असवामोसवडजोगं जुंजड ? गोयमा ! सन्दवहजोगं जुंजह जो मोसवहजोगं जुंजह जो सन्दामोमवहजोगं जुंजर अमबामोमवर्जोगंपि जुंजर, कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज वा विदेख वा मिसीएज या त्यहेज वा उल्लंबज वा प्रतंपेज वा उक्लेबणं वा अवक्लेवणं वा तिरियक्सेवणं वा करेजा पाढिहारियं वा पीठफलगसेजासंबारगं पश्चिपणेजा ॥ ४९ ॥ सं णं भंते ! तहा सजोगी सिज्यह जाव अंतं करेड ? णो इणद्वे तमद्वे. सेणं पुरुवामेव सण्णित्स पंचिदियस्स पज्जनगरम् बहुण्णजोगरम् हेद्वा असंखेजगुणपरिर्हाणं पढमं मणजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं बिदियस्स पज्जागस्स जहण्यजोगस्स हेट्टा असंके ज्युणपरिहीणं विद्यं वहजोगं निरुमह, तयाणंतरं च णं सुहमस्स पणगजीवस्स अपजनगरम् जहण्यजोगस्म हेद्रा असंखेजगुणपरिहीणं तहयं कायजोगं जिरुंभह, से गं एएणं उदाएणं पढमं मणजोगं णिरुंभइ २ ता वसजोगं णिरुंभइ २ ता कायजोगं जिदंभड २ ता जोगनिरोहं करेड़ २ ता अजोगतं पाउणड २ ता इंसिंहस्सपंच-क्सरज्जारणद्वाए असंकेजसमझ्यं अंतोमुहत्तियं सेलेसि पिडवजङ, पुख्यरझ्यगुण-सेडीयं च णं कम्मं तीसे सेकेसिमदाए असंखेजाहिं गुणसेडीहिं अणंते कम्मंसे खवेह वेयानजाउगणानगोए, इबेए चतारि कम्मंसे जुगवं खवेइ २ ता ओरालियतेया-क्रमाई सम्बाहि विप्यबहुणाहि विप्यबहुद २ ता उज्ज्तेदीपिवने अपूसमाणगई उद्गं एक्समएणं अविमाहेणं गंता सागारोवउत्ते तिज्याइ । ते णं तत्य तिद्धा इवंति सादीया अपञ्चवसिया असरीरा जीवचणा दंसणमाणीवउत्ता निद्धियद्वा निरेयणा नीरवा निम्मला वितिमिरा विद्वदा सासवमणाययदं कालं विद्वति । से केणद्रेणं मेते । एवं बुष्य-ते णं तत्य सिद्धा मर्वति सारीया अपज्यवसिया जाव विद्वेति ? गोवसा ! से जहाणासए चीवार्ण जनिगदद्वार्ण पुणरति अंकुरुपत्ती ण अवड, एवासेव

सिद्धाणं कम्मवीए दक्के पुणर्गव जम्मुप्पती न भवड़, से तेणदेणं गीयमा ' एवं पुणा-ते मं नत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपजवसिया जाव विद्वंति । जीवा पं वेहें ! सिज्यमाणा कयरंभि संघवणे सिज्यंति ? गोयमा ! वहरोगभणारायसंघयणे सिज्यंति, जीवा णं भेते ! सिज्झमाणा कयरेमि संठाणे सिज्झीत ? गोयमा ! छण्डं संठाणाण अण्ययरे संठाणे सिज्यति, जीवा णं भेते ' सिज्यमाणा यहार्गम्म उचने सिज्यति है गोयमा : जहण्येणं सत्तरयणीओ उद्योसेणं पंचधणुस्सहए निज्झति, जीवा णं भंते ! सिज्समाणा कमरस्मि आउए सिज्झिति ? गोयसा ! अतृष्णेणं साहरेगद्वदासाउए उक्कोंसेणं पुस्तकोडियाउए सिज्कांति । अस्थि धं भीते ! इसासे स्याणपहाए पुटबीए अहं सिद्धा परिवर्शत ? णो इणहें समद्धे, एवं जाव अहे सन्भाए, अस्थि णे भेने ! सोहम्मत्म कप्पस्स अहे सिडा परिवसंति ? णो इणहे समद्रे, एवं मध्त्रेमि पुच्छा, इसाजस्य सर्ववृत्मारस्य जाव अनुवृत्स गेविकविमाणाचं अणुनरविमाणाचं, अन्धि प मंत ! इसीपन्भाराए पुढबीए सहे सिदा परिवर्सित ? णो इणहे समहे, से कहि स्ताइ णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रथण पहाण पुरुवीए बहुसमर-मणिजाओ भूमिमागाओ उद्दं चंदिमस्रियमाहगणगक्सनताराभवणाओ बहुद्रं जोयणसयाई बहुई जोयणमहस्ताई बहुई जोयणसयमहस्याई बहुओ जोयणकोंबीओ बहुओ जोयणकोडाकोबीओ उच्चतरं उप्पद्या सोहर्म्मामाणम्णेकुमारमाहिद्वंभलेतम-महामुक्स्महस्सारआणयपाणयआरणकुष तिष्णि य अद्वारे गेविजविमाणाथाससय र्वाडवहना वित्रयवेजयंत् अयंत्रअपराजियसम्बद्धसिद्धस्य य महाविमाणस्य सम्बज्यार-हाओ धूभियम्गाओ द्वालमजोयणाई अबाहाए एत्य ण ईसीपन्भारा गाम पुढबी पण्णाना पणयानीसं जीयणसयमहस्साई आयामविक्संभेणं एमा जीयणकोडी बाबा-र्लासं सयसहस्ताई तीसं व महस्साई दोण्णि व अउजापण्ये जोयणसए 👫 विसेसाहिए परिरएणं, इतिपञ्नाराए ण पुढबीए बहुमज्ज्ञदंसभाए अहुजीयनिष् खेते अहुजीयणाई बाहहेलं, तयाऽनंतरं च न मायाए २ परिहायमाणी २ सम्बेख चरिमपेरंतेम् मन्छियपताओ तुषुयतरा अंगुरुस्स असंसेजदभागं बाह्नेणं पण्यशा । इंसीपन्भाराए णं पुरुवीए दुवालस णामधेजा पण्णता, तेजहा-इंसी इ वा देखीपन्धारा इ वा तण् इ वा सण्तम् इ वा सिखी इ वा सिद्धालम् इ वा मुशी इ वा मुशालम् इ वा लोयमो इ वा लोयमाथिमया इ वा लोयमापितुल्या इ वा सम्बंपाणम्य-जीवसत्तमुहावहा इ वा । ईसीपन्भारा ण पुरुषी सेमा संसत्तरुपिमससोविकमुणारुय-गरयद्वसारगोक्खीरहारवण्णा उत्ताषयछत्तसंठाणसंठिया सम्बक्षुणपुरुण्णयसई अच्छा सण्डा लम्हा घट्टा महा णीरमा किम्मला विष्यंका विश्वंकरच्छामा समरीचिया हुप्यंका

पाताबीया दरिसणिजा अभिस्वा परिस्वा, ईसीपन्भाराए ण प्रदवीए सीयाए व्यक्तिम सोगेते, तस्य जीयणस्य जे से उपस्थि गाउए तस्य में गाउयस्य जे मे उपीक्षे छन्भागे तत्य ण विद्वा अगर्वनो सादीया अपजयस्या अणेगजाहजरामरण-क्षेत्रिवे वणसंसारकारेकारीमावप्रकानकारम्बासवसहीपर्ववस्तमक्षेता सामयमणागय-भेर निर्देति ॥ ४२ ॥ गाहा-कर्ष्ट पविद्वा सिदा !, कर्ष्ट निद्धा पर्राद्वमा !। कहि बोदि बहता मं. कस्य यंत्रम कियाई ! ॥ १ ॥ अलोग पडित्या निहा, खोबमी य पहुड़िया । इह बोंदि चड्ना जं. तत्व गंतुण सिजाई ॥ २ ॥ जं मंठाणं तु इहं भवं अर्थ तस्य चरिमसमयंगि । आसी य परम्थणं तं संठाणं नहिं तस्म । है।। रीष्ट्रं वा हरूएं वा, अं चरिममंबे हवेज संठाणं । तन्ते तिभागहीणं, सिदाणोगाहणा मणिया ॥ ४ ॥ तिज्जि सया तेतीसा भणुतिमागो य होइ बोद्धन्ता । एमा खल सिद्धाणं, एकोसोगाहणा भनिया ॥ ५ ॥ चतारि य रसणीओ रयणित-भागूणिया य बोद्धक्या । एसा सहद सिद्धार्ण मिन्समञ्जोगाहणा भणिया ॥ ६ ॥ एका य होई रयणी साहीया अंगुलाई अह मवे । एसा खल सिद्धाण वहणाओगा-हणा भणिया ॥ ७ ॥ ओगाहणाएँ सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा । संठाण-मणित्येथं जरामरकविष्यमुकार्ण ॥ ८॥ जत्य य एमो सिद्धो तत्थ अणंता भव-क्सविमुक्ता । अण्णोज्यसमीमाठा पुद्रा सब्वे व स्त्रेगते ॥ ९ ॥ प्रसाह अणंत सिद्धे सन्त्रपएसेहिं नियमसी सिद्धा । तेनि वसंसेजपुणा देसपएसेहिं जे पुट्टा ॥ १०॥ असरीरा जीवपणा उवउत्ता दंशणे व जाणे व । सागारमणायारं रूक्सणमेर्य त सिदाणं ॥ १९ ॥ केवलमाणुक्उता जाणंति सम्बमावगुणमावे । पासंति सन्त्रभो बाह्य केनलदिद्रीअणंताहिं ॥ १२ ॥ णवि व्यत्य माणुसाणे तं सोक्सं णविय सम्बद्देवाणं । जं सिद्धाणं सोक्यं अक्याबाहं उक्पमाणं ॥ ९३ ॥ जं देवाणं सोक्यं सम्बद्धापिडियं अणंतगुणं। व य पादर् मुत्तिग्रहं चंताहि बम्मवस्मृहिं॥ १४॥ विकास सुद्दो रासी सन्बद्धापिकिको जङ् हवेजा । सोऽणंतवग्गभद्दको सन्वागासे ण आएजा ॥ १५ ॥ जह णाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुबिहे बिमाणंती । न चएइ परिच्छें उनमाएँ तहें अवंतीए ॥ १६ ॥ इव सिद्धाणं सोक्सं अणीवनं णरिक तस्स जीवन्यं । किनि विसेसेकेसी जीवन्यमिणं सुणह बोच्छं ॥ १७ ॥ जह सम्बद्धामशुनियं पुरिसो मोगूच भोवणं कोइ। तप्राखुद्दान्मिक्को अच्छेज जहा अभियतिचो ॥ १८ ॥ इस सम्बद्धास्तिका अनुसं निष्यागमुक्ताया सिद्धा । सासय-मन्त्रापाई चित्रीत सुही सुई पता ॥ १९ ॥ विदित्ति य दुद्धति य पारगगति य व्योगस्यकृति । सम्युक्षकम्बनिया अज्ञरा अज्ञरा असेवा व ॥ २०॥ विच्छित्व-

A CONTRACTOR OF A STATE OF THE STATE OF THE

सञ्बद्धकता जाइजरामरणबंधणविमुद्दा । अञ्चाबाहं सुक्तं अणुहोति सासयं सिद्धाः ॥ २९ ॥ अनुलमुहमागरगया अध्याबाहं अणोवमं पत्ता । यथ्यमणागवमदं विद्वेति सही सुरं पता ॥ २२ ॥ ओषवाइयउवंगं समर्तं ॥



श्रीयुत्रागमप्रकाशकर्मामेनिके 'स्तंभ'



्र सीमाह विकाय मार चुनिलास पूस्तकार, श्रवानी पेटः पूचा थेः २.



नमोऽत्यु णं समणस्स मगवनो जायपुरामहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्व णं रायपसेणइयं

तेणं कार्डणं तेणं समएणं आमलकत्या नामं नगरी होत्या, रिद्धत्थिमियसमिदा े जाव पासादीया दरिस**णिजा अभिस्ता पष्टिस्या ॥ १ ॥ तीसे णं आम**लकप्पाए ं नयरीए बहिया उत्तरपुरिक्षमे वितीभाए अंबसालनचे नामं उजाने होत्वा, रम्मे ं जाद परिकवे ॥ २ ॥ असोयवरपायवपुर्वविस्तितावस्यवत्तन्वया उववादयगर्नेणं नेया ॥ ३ ॥ सेओ राया धारिणी देवी, सामी समोसडे, परिसा निमाया जाव राया -पज़ुवासर ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं स्रियामे देवे सोहम्मे कप्ये स्रियामे विमाणे सभाए सुहम्माए स्रियामंति सिंहासणंति चटाई सामानियसाहरसीई अजहि अमामहिसीहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि समहि अणिएहि समहि अणि-माहिवईहिं सोलवहिं भागरक्खदेवसाइस्सीहिं अनेहिं कहुहिं स्रियामविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सर्वि संपरिवृदे महमाऽऽइयनक्रगीयवाइयतंतीतलताल-तुष्टियधणमुद्रंगपहुप्पवाहबरवेणं दिव्याई सीगसीपाई भुजमाचे विहरह, इसं च णं केनलकरपं जंबुदीवं दीवं विज्ञक्रेणं खोहिणा आभोएमाणे २ पासह । तस्य समर्ण भगवं महाबीर जंबुदीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्याए नयरीए बहिया अंबसालवणे उजाणे अहापिडस्बं उम्महं उमिणिहता संजमेणं तक्सा अप्पाणं मावेसाणं पासह पासिना इङ्कुद्धिनामाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए दिसम्सविसप्पमाणहियए वियसिमवरकमत्व्यायणे प्रयक्तियवरकद्यादुवियकेउरमञ्बक्तंत्रत्वरायंतरङ्ग्यवच्छे पाळंबपळंबसाणघोळंतभूसणघरे सर्सममं तुरियनवळं सुरवरे सीहासणाओ अन्भुद्धेह २ ता पायपीडाओ म्बोस्ट्र २ ता पाउवाओ ओमुयर २ ता एगसाबियं उत्तरासंग करेह २ ता तित्ववराभिशुदे सत्तद्वपमाई अणुगच्छद २ ता वामं जाणुं अंचेइ २ ता दाहिणं जाणुं भरमितलंसि जिहरु तिक्खतो सुद्धाणं भरमितलंसि निवेसेड् निवेसित्ता इसि प्रमुख्यह २ ता इरयस्यरिमाहियं दसणहं सिरसावतं मत्वए क्षंत्रकि कर् एवं क्यासी-गमीऽस्यु में अरिहंताणं अगमंताणं आह्मराणं तिस्वगराणं सर्वचंत्रकार्ण प्रतिस्तामार्थ प्रतिस्तिकार्थ प्रतिसवरपुंडरीयार्थ प्रतिसवरपंथहत्थीयां

लोगुनमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपजीवगराणं असपद्यार्वः चक्लद्रवाणं मसादयामं जीवदयाणं भरणद्याणं बोहित्य णं धामद्याणं भन्धेहैस-याणं भ्रमानायगाणं भ्रमागरहीणं धम्मवरचाउरेत्यकः ग्रीणं अप्यविक्रयंबरनाणवंश्यम-घराणं वयक्छउमाणं जिलाणं जावयाणं तिल्लाणं नार्याणं बुद्धाणं बोहयाणं सुन्नहर्वे मोयगाणं सब्दक्षणं सब्ददरिसीणं सिदमयलमहयमणंतमकत्वयमव्यावाहमपुणरायसिकः निदिगःनामधेर्य ठाणं संपन्ताणं, नमोऽस्य णं समणस्य मगवओ महाबीरस्य जाब संपायितकामस्य, बंदामि णं भगवस्यं तत्थगयं इह गए पायत में भगवं यत्थ यह उह्नयंति प्रवृ बंदद णमंसद नंदिना प्रमंतिना सीहासणास्यत् पुरुवासिस्हं सिष्ण-मणो ॥ ५ ॥ नए यं तस्य स्वियासस्य इस एयास्वे अस्मात्वए चितिए परिवर सणोगए मंकपे सम्पाजित्था-एवं सन्दु समणे अगवं महावीरे जंबुईांचे दीवे भारहे वासे आमलकप्याणयरीए बहिया अंबनालक्ष्यो उजाणे अहापिकक् नमाई उनिगण्डिना संजमेणं नवमा अप्पाणं भावेमाणं विदर्द नं महाफलं सुल नहास्वाणं भगवंताणं णामगोयस्सवि सवणयाए किमंग पुण अभिगमणवंदणणानंसणपिसपुरुखा-पञ्जामणयाए ?, एगरमवि आयरियस्त धरिमयस्य मुत्रयणस्य सुवध्याए !, किसंग पुण विउत्तरम अद्भरम गहणयाए ?, तं गन्छामि णं समणं भगवं महाबीरे बंदामि णमंसामि सकारेमि सम्माणेमि कलाणं मंगलं देवयं चेद्र्यं पञ्चवायामि, एवं मे पेचा हियाए यहाए खमाए जिस्मेयसाए आणुगामियनाए अविस्मातिकहु एवं संपेद्धेड एवं संपेहिना आभिओंगे देवे सहावेड र ता एवं वयासी-गवं खळ देवाणुण्या! ममणे भगवं महावीरे जंबुदीवे डीवं भारहे बासे आमलकपाए नयरीए बहिया अंबगालवर्ण उजाणे अहापिडिस्वं दमाहं उतिगण्डिला मंत्रमेणं तबसा अप्याणं भावेमाणे विहरत तं मन्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! त्रंयुद्दीवं दीवं भारतं वार्ष आमलकप्यं णयरि अंधमालवर्णं उजार्णं समणं भगवं महाबीरं तिक्खतो आयाहिण-पयाहिणं करेह करेना बंदह णसंयह बंदिना णसंखिना साई साई नासगीयाई साहेह याहिना समणस्य भगवजो महावीरस्य सव्यक्ती समेता जीयणपरिमंडलं जे सिन्धि तणं वा पर्ण वा कहं वा सक्तरे वा असुई अचोक्खं वा पूड्जं दुव्यिगांवं तं सर्व्य आहुणिय आहुणिय एगंते एडेह एडेना णश्चोदमं णाइसाह्यं पविरस्थपपुर्वासं रसन रेणुजिणायणं दिव्यं मुरिभगंधोदयवासं वासह बासिना विहयरवं सहुरवं महुरवं उवसंतरयं पर्वतरयं करेह करिना जलयलयभामुरप्यभूयस्स विट्यादस्स व्यवस्थानसः कुनुमस्त जाणुरसंहपमाणमितं ओहिं वासं वासह वासिता काकागुरमवरकुं पुरावपुरान भूवमचमचंतगंबुद्ध्यामिरामं सुगंभवरगंथियं गंधवरिभूवं विन्नं सुरवराणियसणाधीमं

क्रींड कारबेट करिना य फारबेना य खिल्पामेव मम एयमाणनियं पर्वाण्याह 11 के- । तए में ने आमिओनिया देवा सुरिवाभेमें देवेमें एवं वृक्ता समाणा हद्वतुद्व जार्ष हियया करयलपरिमाहियं दसनहं सिरसावशं मत्यए अंजलि कह एवं देवी स्टेडिन आणाए विचएणं वयणं पित्रपुणंति एवं देवी नहित्त आणाए विणएणं वयणं पित्रुणेना उत्तरपुरच्छिमे दिविभागं अवसमंति उत्तरपुरच्छिमं दिनिभागं अत्रवसिना वैडन्वियससुरथाएणं समोहणंति २ ना संखेळाई जीवणाई दंहं निस्मिरन्ति, नंजहा-रयणाणं वयराणं चेरुलियाणं सीहियक्साणं मसारग्रहाणं इंसगञ्जाणं प्रलााणं सोगंधियाणं ओइरमाणं अंजजाणं अंजज्युल्लगणं रम्नाणं जायस्वाणं अंकाणं फलिहाणं रिद्वाणं अहाबायरे प्रमाने परिसार्वति २ ता अहासहमे प्रमाने परियायंति २ ता दोबंपि वेउव्वियसमुख्याएणं समोहणंति २ ता उत्तरवैउव्वियाई स्वाई विउव्वंति २ ता ताए उक्किद्वाए पसस्याए करियाए व्यक्ताए बंडाए स्थापाए सिरवाए उद्वयाए विष्याए देवगईए तिरियमसंबेजाणं श्रीयसमुद्दाणं मञ्जामञ्जोणं वीद्वेषयमाणा २ जेणेव जंबरीये दीने जेणेन भारहे वासे खेणेन आमलकामा पायरी जेणेव अंबसालवणे ताजाणे जेणेव समणे भगवं महाबीरे तेणेव उदागच्छेति तेणेव उवागच्छिता समयं भगवं महावीरं विक्कृतो खायाहिषपमाहिणं करेंति २ ना वंदेति नमंद्रित वंदिता नमंदिता एवं वयाती-अन्द्रे वं मंते ! सुरियाभस्य देवस्य आभिओगा देवा देवाण्पियाणं बंदामी भर्मसामी सकारेसी सम्माणेमी कहाणं संगर्छ देवयं चेइयं पञ्जवासामी ॥ ८ ॥ देवाइ समणे भगवं महावीरे ते देवे एवं बयासी-पोराणमेसं देवा! सीयमेसं देवा! क्यमेसं देवा! करणिक्रमेसं देवा! आइक्समें देवा ! सन्भग्रणायसेयं देवा ! जण्णं भवणसङ्गाणसंतरकोडसियवेसाणियाः हेबा खरहंते आवंते बंदंति नमंसंति बंदिता नमंसिता तओ सहं सहं णामगोयाइं साभिति तं धोरासमेयं देवा ! जाव अञ्मण्णणायमेयं देवा ! ॥ ९ ॥ तए णं ते शामिकोविया देवा समनेनं भगवया महावीरेणं एवं वृत्ता समाणा हडू जान हिनया समर्थं भगवं महाबीरं बंदति जर्मसेति वंदिता जर्मसिता उत्तरपुरस्थिमं दिसीभागं कावक्रमंति अवक्रमिता वेडव्यिक्समुरुघाएणं समोहणंति २ ता संकेजाई जोगणाई दंडं निस्सिरंति, तंजहा-रवकार्च जान रिद्धाणं अहानागरे पोग्यके परिसार्वति २ ता दोबंदि बेटिनायसमञ्जाएनं समोहजाति २ ता संबह्धवाए विजनति, से जहा-नामच आगवारए सिया तसने बसर्व जुनाई जाणावंके [चिरसंघवणे] चिरमाहत्ये क्ष्यानियामिक्तरोश् संमान परिणए यणियमियमियमियन वस्ते वस्ते हुगतु घण-तु क्षिपसमास्वापके उरस्यवन्त्रमणागए सक्त्रमकञ्जयस् करिङ्गिम]बाह् संघण-

पनण अड्णपमहणसमत्ये छेए दक्से पद्वे कुसले मेहावी जिडणसिप्योदमा एमं अहै सलागाहरथमं वा दंडसंपुक्ताणि वा वेणुसलाइयं वा महाय रायंगणे वा रायंतेष्टरे वा देवकुलं वा समं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अनुरियमनवानमार्थभेरी विदेश सुनिडणं सव्यक्तो समंता संपमजेजा, एनामेव तेऽवि स्वियाभस्य देवस्स आसि-ओगिया देश संबद्ध्यवाए विडव्वंति २ गा समणस्य भगवजो महावीरस्य सम्बद्धी समेता जोयणपरिमण्डले जं किन्ति तणं वा वर्ग वा तहेव मध्ये आहणिय २ एगंते एडेंति २ ना खिप्पामेन उन्ममंति २ ना दोषंपि वेडव्नियसमुख्याएणं समोहणंति २ ना अञ्चयहरूए विस्ववंति २ मा से बहाणासए भइनदारए विसा नस्ने जान सिप्योवगए एमं महं दगवारमं या दगकुंभमं वा दगबालमं ना दगकल्पमं वा गहाय आरामं वा जाव पवं वा अनुविय जान सम्बक्षो समंता आनविसेजा. एवामेन तेऽवि स्रियामस्य देवस्य आभिओमिया देवा अब्भवर्क्षए वित्रव्वेति २ मा सिप्पामेव पत्रणत्रणायन्ति २ ना सिप्पामेव विज्ञयायंति २ ना समयस्य भगवनी महादीरसा सम्बन्धी समंता जोयणपरिमंडलं णबोदनं णाइमहियं तं पविरत्यप्रकृतियं रयरेणु-विणामणं दिव्यं सुरमिगंघोदगं वासं वासंति वासेना मिहयरयं पञ्चरयं महत्यं उक्संतरवं पर्मतरवं करेंति २ ता खिप्यामेव उक्सामंति २ ता तर्षाप बैडिक्ब-समस्याएणं समोहणंति २ ता पुष्कवहत्वर् विउन्वंति, से ब्रहाणामए मालागारदारए सिया नरुमे जाव सिप्पोवगए एवं महं पुष्पछाज्यं वा पुष्पपडत्कां वा पुष्पसंगीरवं वा गहाय रायंगणं वा जाव सञ्बक्षो समंता क्यागहगहियकरयळप०सङ्खिप्यमुद्धेणं दमदक्षेणं कुमुमेणं मुक्युप्कर्पुजीवबारकल्थियं करेजा, एवामेव ते सूर्विवासस्य देवस्य आभिओगिया देवा प्रप्रवहत्त्व विउन्त्रंति २ ता सिप्यामेव पत्रवत्वावन्ति जाव जोयणपरिमण्डलं जलभलयमासुरप्पभूयस्स विटह्नाइस्स इसद्द्रवस्तुस्तुनस्त जाणुस्तेह्पमाणमेति ओहिवासं वासंति वासिना कासागुरुपवरकेंदुरुवतुरुक्कपूनम-घमधनगंशुबु शामिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवहिभूवं दिल्वं सुरवरामियमणजोशं सर्हि कारयंति करेता य कारवेता य किप्पामेव उक्सामंति २ ता जेणेव समने भूगर्व महावीरे तेणेव उवागच्छेति तेणेव उवागच्छिता समर्ण भगवं महाबीरे विकासी जाव वंदिता नमंसिता समणस्य भगवजी महाबीरस्य अंतियाको अंवसास्वयणाओ उजाणाओ प**रिनिक्सर्गति परिनिक्समिता** ता**ए उक्किन्नए जान गीर्नथमाणा** ६ जेणेव सोहम्मे कृप्ये जेणेव स्विवामे विमाणे जेणेव समा सुव्याम जेणेव स्विवाम देवे तेणेव उवागच्छंति २ मा स्रियामं देवं करवळपरिस्माहेवे विरसायमं अस्यक् अंजलिं कहु जएणं विजएणं नदावेति २ ता तमाणतिनं प्रवासिकति ॥ १७ ॥

क्षा में से स्रिवान देवे देखि आभिनीमियाण देवाण अंतिए एयमई मोबा निस्मान रहतुह जाव हिबए पायलाणियाहिवई देवं सहाबेद सहावेता एवं वयाशी-विजानेव भी देवाणुण्यिया ! सुरियाने विभाज सभाए सहस्माए मेघोघरसियां भीर-व्यक्तिम् जोगनपरिमेडलं सुसर्वेटं तिक्युतो उल्लोडेगाने २ महमा २ सहेनं उक्कोसेमान २ एवं क्याहि-आणवेद में भी स्रियामे देवे गच्छई में भी मृतियामे देवे प्रेयुहीचे वीचे भारहे बासे आमरुकायाए जयरीए अंबसालवर्ण उजाणे समर्ण भगवं महाबीर अभिवंदए, तुब्भेद्रवि मं भी देवामुध्यिया ! सव्विद्वीए जाव णाइयरवेषं विचयपरिवालसिद्धं संपरिकृदा साइं २ जानविमाणाइं दुस्टा समाना अकालपरिहीणं चेव सरिवाभरस देवरस अंतियं पाउच्यवह ॥ ११ ॥ तए णं से पानताणियाहिनई देवे सुरियानेणं देवेणं एवं नुते समाणे हङ्काह जाव हियए एवं वंदा ! नहत्ति आणाए विषएणं ववणं पविद्युनेह २ ता जेणेच सरियाने विमाणे जेणेव सभा सहस्मा जेणेव नेधीचरसियगंगीरमहुरसहा जीवनपरिमंडला सुस्तरा षंटा तेंगव उदायच्छद २ ता तं वेथोपरसियगंगीरमहरसदं जोवणपरिमंडलं सुसरं घंटं तिस्ति उक्रकेर । तए वं तीसे मेचोक्रसिवगंभीरमहुरसङ्ग् जोवजपरिसंहत्सए स्तराए बंटाए तिक्सतो उवालिकाए समाचीए से स्रीकाभे विमाने पासायविमाण-निक्छडाविधेवसर्वेटापिक्छवासवसहरससंड्रके नाए यावि होत्या । तए णं तेसि स्रियामविमाणवासीयं बहुषं वेमाविवासं देवाय य देवीय व मुस्तग्रदस्तिवाद-मत्तिवस्यश्रद्युष्टियाणं प्रसर्वेटार्वविङ्क्ष्योकद्वविश्वयक्षयक्षियोहणे ऋए समाचे घोसणकोउद्दलविशकाव्यागनिताउवउत्तवाणवाणं से पात्रकाचीकाहिवदं देव तंत्रि पंडारवंति विसंतपर्वतंति सहया सहवा सहेकं उक्कीसेमाने उक्कीसेमाने एवं वयासी-ईत सुनंदु भवंतो सुरिवासविमाण्यासिनी बहुवे वेमानिया देवा य देवांको य स्रियामविज्ञाणबहुको व्यक्षं द्वियसुद्रार्थं आणवेह र्ण मी ! स्रियामे देवे यच्छह मं भो सुरियामे देवे जंबुदीवं २ मारहं वार्ध आमलकप्प नगरि जंबसालवर्ण क्षत्राणं समणं भयवं महावीरं व्यभिवंदए, तं तुन्भेऽवि णं देवाणुप्पिया ! सम्बद्धीए अवाक्यरिद्वीचा चेत्र सुरियामस्य देवस्य अतियं पाउण्मवद् ॥ १२ ॥ तए मं ते सुरिवामविमानवासियो बहुवे वैसाविया देवा देवीओ य पानगानियाहियहस्स देवस्स अतिए क्ष्मार्क सीवा जिसम्ब इष्टराह जाव हिनया अप्येगहवा वेदववतिसाए अप्ये-यहूँया श्रीक्षावित्यात् अप्येतकृता सकारवतिकाए एवं संमाणवतिकाए कोउद्दल-कतिवाप कारे कार्याई समित्सामी समाई अहाई हेच्दं परिवाई कारणाई वाग-कार्त प्राच्यासमी, अप्रेगात्मा सहिवामास देवस्य वयणमञ्जातमाणा अप्येगहमा

असमज्ञमणुद्रनमाणा अप्पेगङ्या जिलभक्तरामेणं अप्पेगङ्या बन्धोक्ति सन्देश जीयमेर्यनिकर् सञ्ज्ञिष्टीए जाव अकालपरिहीणा चेव सुरियामस्स देवस्य पाउच्मवंति ॥ १३ ॥ तए णं से सरियाभे दंवे ते सरियाभविमाणवासियो वेमाणिया देवा य देवीओ य अकालपरिशीणा चेव अंतियं पाउच्यवमाचे पाँची पालिया हद्वतद्व जाव हियए आभिओगियं हेवं सहावेड २ सा एवं बवासी-बिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अणेगसंभसयसंनिषिदं जीलाह्रेयसानसंजियार्थ इंहामिय उम्भतुर गनरम गर विहरानालगकिनर ठठसरस्र चमरके जरवणस्यप **डम्म**स्य संभग्गयदरबङ्गर वेडसापरिगदा सिरामं विज्ञाहरजगलज्ञयस्त्रेत्ज्रसंपिव अर्थागहरूपमालिणीयं स्वगसहरूसकलियं भिसमाणं भिक्तिगमाणं चयसहोयणलेखं युद्दकासं मस्सिगियस्यं घंटायल्यिनियमहरमणहरसरं सहं कंतं दरिमणिखं णिडणो-वियमितिमितितमणिर्यणधेटिया बालपरिक्तितं जोयणस्य समावित्यामं दिखं गमणमुखं सिम्घगमणं जाम दिव्यं जाणविमाणं बिडस्याहि विठिविता सिप्यामेव एयमाणतियं पविष्णाहि ॥ १४ ॥ तए णं से आसिओमिए देवे सुरिव्योणे देवेणे एवं युत्ते समाणे शुट्ठ जाव हियए क्रत्यलपरिगाहियं जाव पहिसुणेह पहि-सुणेना उत्तरपुरच्छिमं दिसीमागं अवसमह अवसमिता येउन्तियसमुख्याएणं समी-हणह २ ना संलेखाई जोयणाई जाव अहाबायरे प्रोत्मके परिसाहेड २ सा अहासहुमे पोग्गले परिवाएड २ ता दोबंपि वेडब्बियसमुग्याएवं समोद्विता अणेगसंभय्यमिष्विद्वं जाव दिग्वं जाणविमाणं विरुक्तितं प्रांते सावि होत्या । तए णं से आभिओमिए देवे तस्स दिव्यस्स आणविमाणस्य तिदिनि तिसीयाणपिः स्वए विजन्तर, तंजहा-पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेसि तिसीवाणप**रिक्त**नाणं इमे एयास्व कण्णावासे पण्णते, तंत्रहा-वर्रामया विस्मा रिद्वामवा पहसुत्ता वेक्लियानया खंभा स्वरूपक्ष्मया पत्रुपा कोहियक्समईको सूईको वक्रामका संथी जाजामणिमया अवलंबजा अवलंबजनाहाको य पासावीया आव परिस्ता । तिशि णं तिसोवाणपिकवमाणं पुरओ क्तेयं क्तेयं तोरणं क्लतं, तेशि णं तोरणाणं इमे एयामवे वण्यावासे प० तं०-तोर्षा णाणामणिसया भाषास्थितम् वंशेषः उवनिविद्वसंनिविद्वविविद्यतंतरास्योक्षिका विविद्वतरास्योक्षिका वाद प्रविक्षाः तेसि णं नोरणाणं उप्प अद्वद्धनंगलमा पण्याता, तंबदा-सोलिक्सिक्स्वणीदवा-वत्तवद्यमाणगभद्दासणकलसमच्छन्यका अत्व पविस्त्वा । हेस्स् व व हीर्जाच हस्ति बहने किण्हनामराज्ञए जान सुक्रिजनामराज्ञए अच्छे सब्दे सम्बन्धे बहरामवर्दे जलयामलगंधिए सुरम्भे पासारीए दरिसमिजे अभिक्षे प्रदेश्ये विस्त्या ।

वेति में तोरमानं उपि बहुबे छताइच्छते पटागाइपडाने चंटाजुबले उप्पलहत्थर कुष्पतिणसुभगसोगंधिवयों हरीयमहापों हरीयसम्पत्तसहस्सपतहस्यप् सम्बरयणामप् अाव पिडेक्वे विजन्बद् । तए पं से आभियोगिए देवे तस्य दिव्यस्स व्यानियाणस्य संतो बहुसमरमविज्ञं भूमिभागं निउच्चइ । से बहाणामए आलिंग-पुननारे ह वा सुइंग्युक्तरे इ वा सर्तके इ वा करतके इ वा चंदगंडले इ वा सरमंडले इ वा आर्यसमंडले इ वा उर्कानमो इ वा वसहनमो ह वा वराहनमे इ वा चीहचंग्मे इ वा व्यवस्थे इ वा छगसचम्मे इ वा चीन्यनम्मे इ वा अचेगार्चकुनीलगसहस्मविष्ए णाणाविह्पंचवनेहिं मजीहिं उवसोमिए आवडपचाव-उसेहिपसे हिसोतिययसो बत्थियपूर्वमाणगयद्भाणगम् छंडगम्य एंडग जार्मार् पुडावित्रप-उमपत्तनागरतरंगवसंतलमपउमलवमिनिनिति सच्छाएहि सप्पमेहि समरीहएहि सउजोएहिं पाणानिहपंबवणोहिं सुनीहिं स्वसीमिए राजहा-किन्हेहिं जीलेहिं लोहि-एहिं हालिहेहिं सुक्षिकेहिं, तस्य यां जे ते कियहा मधी तेति थं मणीयं इमे एमारूवे बण्णावासे पण्णते, से जहानामए बीमूलए इ.वा अंजणे इ.वा संजणे इ.वा कानले इ वा गवके इ वा गवकगुरिया इ वा भगरे इ वा भगराविष्या इ वा भगरपतंगसारे इ वा अंबूफ्ट इ वा अवारिक्के इ वा परहुए इ वा गए इ वा गयकले इ वा किन्द्रसप्ये इ वा किन्द्रकेसरे इ वा आगासचिमाके इ वा किन्द्रासीए इ वा किन्द्रक-णवीरे इ वा किम्हबंकुवीचे इ वा, भने एवास्त्रे खिया?, यो इनहे समहे, ओवरमं समगावसो ! ते मं किन्हा मणी इसो इद्वतराए सेव कंतलराए सेव मणुण्यतराए चेव मणामतराए चेव वजीर्थ पञ्चला । तस्य यं ने ते नीला मणी देसि नं मनीमं इमे एमास्ये कम्नावासे पम्नते, से जहानामए मिंगे इ वा मिंगपते इ वा सुए इ वा सुविषक्के इ वा वासे इ वा वासिपक्के इ वा मीली इ वा पीलीमेए े इ वा शीर्फ्यक्रिया इ वा सामा इ वा उचन्तरे इ वा वनराई इ वा इसमरवसने इ वा मोरम्मीवा इ वा अवस्तिकृतुने इ वा बाणकुतुने इ वा अंजनकेतियाकुतुने इ वा नीक्षुपछे इ वा भीकासीने इ वा जीकवंबुजीवे इ वा जीककमवीरे इ वा, भवेगास्वे क्षिया?, वो इणहे समझे, ते वं बीला मनी एसी बहुतराए नेव जाद वण्येणं पकाशा । तत्व नं जे ते खेडिका मणी तेति णं मणीणं इमेयास्वे बण्णावासे प्रकारी, से जहामानम् उरकारहिरे इ वा संसदिति इ वा नरहिरे इ वा वराहरहिरे इ का महिसकदिरे हं या बालियगोबे ह वा बालदिवागरे ह वा संसम्भरागे इ वा पुंजबूर्गि इ हा सामुज्जबुर्गि इ वा क्रियुग्कुमुने इ वा पालियांबकुमुने इ वा कार्क्किक इ का विकारणांक इ का व्यानमंत्र ह वा खोडियनकामणी इ वा

[राजनीयार्थे

उपसारसने इ वा किमिरागकंति इ वा बीजपिद्धपासी इ वा रसुपाट इ वा रसार सोगे इ वा रतकणकीरे इ वा रतकंश्रुजीने इ वा, भनेयाहर्व सिया?, वो समद्वे, ते मं लोहिया मधी इसो इहतराए चेत्र जाव वण्येमं पन । तस्य मं के हि हालिहा मणी तेसि वं मणीवं इमेयास्त्रं क्वावासे प्रकति-से अहावामए कंवर् के वा चंपलकी इ वा चंपामेए इ वा हरिन्दा उ वा हरिन्दामेग् इ वा हरिन्द्रगृतिया इ वा हरियालिया इ वा हरियालमेए इ वा हरियालगुलिया ह वा विवर्ध इ वा चित्ररंगराए इ वा वरकणमे इवा वरकणमित्रके इवा [मुवण्णसिप्पाए इ वा] वरपुरिसक्तणे इ वा अल्लंड्युम् मे इ वा व्यंपाकुसुमे इ वा वृद्धंविधाकुसुमे इ वा तडबडाकुतुमे इ वा घोसेडियाकुनुमे इ वा सुवण्णज्ञहियाकुसुमे इ वा मुहिरण्णकुसुमे इ वा कोरंटगवरमहदामे इ वा यीयवकुतुमे इ वा पीयासीने इ वा पीयकणवीरे इ वा पीयवंश्वतींव इ वा, भवेबाम्बं सिया है, जो इण्डे समद्वे, ते मं हालिहा मणी एतो इहुनराए चेव जाव बन्नेणं पण्यता । तत्व णं जे त शुक्तिका मणी नेनि णं मणीणं इमेयास्ते वण्यादाने पण्याने । से जहानामण् अने द वा संसे इ वा नंद इ वा कुमुदोदकदगरयदहिषणक्खीरक्खीरप्रे इ वा कोंचाक्ली इ वा हाराक्ली इ वा इंसावकी उ वा बलागावली इ वा चंदावकी इ वा मारहयबळाहए इ वा धंनाधीय-रुप्रपट्टे इ वा मालिपिट्टरासी इ वा कुंद्रपुष्करासी इ वा कुमुक्तरासी इ वा सुक्कि बाडी इ वा पिहुणांमंजिया ड वा भिसं इ वा मुणालिया इ वा गयदंते इ वा सर्वान दलए इ वा पोंडरियदलए इ वा सेवासोंगे इ वा सेवक्यवीर इ वा सेवक्श्वर्याचे इ वा, भनेवारूचे सिया?, शो रुखें समहे, ते शं सुविका मणी एती रहतरात सेव जान बनेणं पण्णना । तेसि णं मणीणं इमेग्राहवे गेथे पण्णते, से बहानामए सोब-पुडाण वा नगरपुडाण वा एलापुडाण दा बीयपुडाण वा बंबापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडास वा मक्सापुडास वा जातिपुडास वा जहियापुडाण वा महियापुडाण वा क्हाजमहिबापुडाण वा केमहपुडाण वा पाडलियुडाण वा णोमालियापुडाण वा अगुत्युडाण वा लवंगपुडाण वा वास्युडाण वा कप्रपुरपुडाण वा अणुवार्यसि वा ओमिजमाणाण वा कृष्टिजमाणाण वा मंकि-जमाणाण या उक्तिरिजमाणाण वा चिकिरिजमाणाण वा परिभुजमाणाण वा परिजा-इजमाणाण वा भंडाओं भंड साहरिजमाणाण दा ओराका समुख्या समाहरा वाणमण्डिन्द्रकरा सच्यको समंता गंबा अभिनित्सनंति, अवैसास्य विकार् णो इणडे समडे, ते णं मणी एसो इहतराए चेन गंधेचं पक्ता । देशि के मणीण इमेबाहर्व फाले प्रकार, से बहानामम् आह्येह का स्य ह का क्री

🌉 वा ववजीए इ वा इंसनस्भवतिया इ वा निरीसकुनुमनिवए इ वा वालकुनुय-विमहासी ह ना, अवेगास्चे सिया ?, जो इज्हे समहे, ते न मजी एको इहतराए चुँव जाव फासेणं पश्चता । तए णं से आमिओनिए देवे तस्स दिव्यस्स वीणविमाणस्य बहुमञ्जावेसभागे एरव ण महं पिच्छाचरमंडवं विउज्बह अणेगलंभ-संवसंनिविहं अन्युरगयद्धक्रमवर्वेद्द्यातोरणवर्ष्यसालभंक्रियार्गं मुसिलिह्रविनिहलह-संठियपतत्थवेस्र्लियविस्त्वक्षेत्रं माणामणि क्रमगर्मण विविधन्तः अलबेहुतामपुनिभन्त-भूमिभागं इंहामियदमभतुरगनरसगरबिह्मबाळगकिक्तरस्सरभवसर्कुं वर्षणळयप-उमलमभागिषितं सं० कंचणमणिर्यणध्भियागं गाणाविह्यंचक्णार्यटापडागपरि-मंडियम्गसिंहरं चवर्ल मरीहरूवयं विकिम्मुर्गतं लाउह्योह्यमहियं गोसीसन्तरस-रनवंदणदारदिवर्षचंगुलितसं उपविक्वंदणकलसं चंदणवरपुक्तातोरणपरिदुवारदेस-मार्गं आसत्तोसत्तविज्ञस्त्रम्बार्यम्बद्धामकस्त्रवं पंचवण्यसरसपुरमिमुक्कुप्पूर्पुजो-वयारकलियं कालागुरुपवरकुंद्रवस्तुरुकाभूकमध्यमंतर्गधुबुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवरिभ्यं अफ़्टरगणसंघरंबिकिल्णं दिल्वं हुडिबसर्सएमार्सं अच्छं जाव पडिस्वं। नस्स थं पिच्छाधरमंडनस्स अंतो बहुसम्रसम्बन्धमूमिमानं विउन्हर जाव मणीयं कासो । तस्स में रेच्छाघरमैडवस्स छात्रेयं विउच्यइं प्रत्यस्यभक्तिनिक्तं जान पडि-र्व । तस्स णं बहुसमर्मिञ्चस्स भूमिशागस्स बहुमञ्ज्ञवेसमाए एत्व णं एगं महं बहरामर्ग अवसारमं विजन्दर । मस्स णं अक्साडक्स्स बहुमजसदेसमाने एत्य ण महेर्ग मिर्पितियं विरुव्यह अह जोरणाई आसमिक्संमेणं चतारि जोरणाई बाहतेणं सन्वमविषयं अच्छं सण्हं जाव पिक्सं । तीसे णं मनिपेतियाए उनरि एत्व णं महेगं सिंहासमं विखम्बद्, तस्स णं सीहासगस्य इमेबास्वे वण्णावासे पण्यते-तविकासमा सकला रमयामया सीहा सीविकासा पाना जाणासमिसवाई पास-सीसगाई जंबूणयमबाई गराई सहरासका संघी णाणामधिमए वेचे, से जं सींद्रासमे इंद्रामियतयमञ्जूरमनरमगर्मिद्दगवालमक्षित्ररकसरमन्त्रमरकुंजरदणलय्-पडमस्वनतिविशे [सं]सारसारोवविश्वमित्ववपाववि अच्छरगमिश्वसप्रगणवतव-क्रवंतिकित्वकेतरप्रवास्त्रवासिरामे आहेमगस्यमुरणप्रजीवत्कप्रासम्बद्ध श्रुविरह्यस्य-ताचे उपविचक्तेमसुगुत्रपद्वपविच्छावने रर्तसुवरंतुए सुरम्मे पासाईए ४ । तस्स र्णः सिंहासमस्य श्वीर प्रत्य व महेर्ग विजयहरं विश्वास, संसंक(संस्क)कृत्वगर्य-अस्यमहिनकेणपुंजसंनियासे सम्बद्धणाययं सन्धं सर्ज् पासारीमं वृत्तिस्राज अभिन्य विक्रिके । तस्त ने बीहासंबद्धः देवरि विजयपुरस्य व बहुमणावेसमाने प्राच में सर्व पूर्व बयरामर्थ अंकृषे विक्रमा हरिए व ने स्थाराम्बेरि अंकृषेति

क्रेंभिक मुनादार्म विउव्यह । से मं कृंभिके मुतादामे अनेहि चटहि स्टाई मत्तादासिह तदब्बनपमाणेहि सव्वको समेता संपरिनित । ते मं इस्मा तबहै संज्ञसभा सत्रकापयरगर्मवियम्मा जाजामजिर्यणविविहहारयहार् उत्रसीवियसम्बद्ध इसि अवग्रमनगमसंपता पाएहि पुरुवाबर दाहिणुनरा गएहि मंदाये मंदायं एइजमाणानि के वर्डबनाणाणि २ वहमाचाणि २ उराक्षेणं मृण्येची मणहरेणं साणामणानिव्युहरूरेणं सरेणं ते पर्एं सञ्दक्षो समंता आपूरेमाणा २ सिरीए अर्ध्व २ उद्योगेमेमाचा चिट्ठांते । तए ण से आभिओगिए देवे तस्स मिंहासणस्स अवस्तरेणे उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं एतथ णं सूरियाभस्य देवस्य चडण्डं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भहासणसाहस्सीओ विउञ्बद, तस्य णं सीहासणस्य पुरच्छिमेणं एत्य णं सुरियामस्य देवस्य चउण्हं अगमहिसीणं मपरिवाराणं चतारि भदानगमाहस्सीओ विजन्मह, तस्स णं सीहालणस्स दाहिणपुरन्दिस्मेणं गृत्य णं सुरियासस्य देवस्स अस्मिनर-परिसाए अहुण्हं देवसाहम्सीणं अह भहासणसाहम्सीओ वित्रव्यः, एवं दाहिणेणं मज्जिमपरिसाए इसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विख्याइ दाहिण-प्रवास्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसर्वं देवमाहस्तीणं बारस भद्यसणसाहस्तीओ विजन्नड पचरियमेणे सत्तान्हं अणियाहिन्हंणं सत्ता भहासणे विजन्नह, तस्त जै सीहासणस्य च उदिभि एत्य णं सूरियामस्य देवस्य सीलसण्हं आयरक्खदेवसाह-स्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विडम्बद, तंत्रहा-पुरच्छिमेणं चतारि साहस्सीओ दाहिणेणं चतारि साहरतीओ प्रयत्यिमेणं चनारि साहरखीओ उत्तरेणं चतारि साहस्सीओ । तस्स दिव्यस्स आणविमाणस्स इमेदारूवे कृष्यावासे प्रकारे, से जहानामए अइर्रगयस्य वा हेमंतियबाकियस्रविसस्य वा सर्वरिवास्त्रच वा रति पर्जालयाण वा जनाकुसुमवणस्स वा विसुधवणस्स वा पारिवायवणस्स वा सामाजी समंता संक्रुतिमयस्म, भवेयास्वे सिया ?, णो श्वाहे समहे, तस्स णं विव्यस्स आय-विमाणस्य एतो इङ्घनराए चेत्र जाव वन्नेमं प्रकार, गंधी य फासी व जहा सनीमं है तए णं से आभिओगिए देवे दिव्यं जार्णाबमाणं विज्ञव्युह १ शा खेलेव सुरिवासे देवे तेणेव उचामच्छा २ सा सरियामं देवं करवळपरिव्यक्तियं जान **प्रकायिकाः** ॥ १५ ॥ तए ण से स्रियोभे देवे आमिओयस्स देवस्स अंतिए एवमा सोका निसान हा जान हियए दिव्यं जिणिदामिगमणजीमां उत्तरकेडिक्यस्यं विक्रव्यं विकृतिगर्ध चर्राह अमामहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहिं अणीपृष्टिं, तेयहा-नेवन्याजीपृष्ट् णहाणीएण य सदि संपरिवृदे तं विन्यं खाणनिमाणं अणुप्यातिनीकरिमाचे अर्थ मिहेर्ण तिसोमाणपडिस्वएणं दुस्दृद् दुरहिता विषय श्रीहास्य तेनेव

इबामस्क्रिण सीहासणवर्गाए पुरम्याभिमुहे सिकासको । तए वं तस्स मृरियाभस्म देवता बनारि सामानियसाइरसीओ तं दिन्वं जाणविमानं जणप्याहिनीसरेमाना इसिकिणं निमोवाणपिकस्वएणं दुरुईति वुरुहिता पत्तेयं पत्तेयं पुक्कत्येहि भहा-क्षेपिष्ट विशीयंति, अवसेसा देवा य देवीओ य तं विथ्वं जाणांवमाणं जाव हाहि-निर्मानाणप्रक्रियएणे व्यवंति व्यक्तिमा परार्थ परार्थ प्रमानकारीहि भहागणेटि निसीर्यति । तए णं तस्स सरियाअस्स देवस्य तं दिव्यं जाणविमानं नव्यवस्य समाणस्य अद्भद्ध महत्त्वमा प्रजो सहाणुप्रधीए संपन्तिया, नंजहा-नोत्थियसिरंबराह जन दण्या । त्यणंतरं च णं पुष्णकसमसिंगार दिव्या य सत्तपहारा सवासरा वंशणरह्या आन्त्रेयहरिसणिका बाउब्रवदिजयवेजयंतीपदागा स्वतिया गराणतलमण-लिइन्नी परओ जहाणपुरुवीए संपरिवना । त्यर्णतरं च णं बेठलिसक्रिसंतविसलस्यां पसम्बद्धोरंटमह्नदामोक्सोभियं चंद्रमंडलनियं समस्यियं विमलमायक्तं प्रवर्सीहामणं च मणिरयणमतिनित्तं सपायपीठं सपाउयाधीयनमाउत्तं बहुर्विकरामरपरिमाहियं पुरको अहाणुप्क्वीए संपरिवर्ध । त्युणंतरं च णं कर्रामयवहकद्वसंदिवससिक्दि-परिचडमडसपडडिए विसिद्धे अजेगवरपंचकणडस्मीसहस्स्तरिमए वरिमंडियामिरासे ् बाउद्भविवयवेवर्यतीपदागच्छनाइप्छनदछिए तुंगे गगमतसम्बुलिईत्सिहरे जोव-जसहस्तमृतिए महदमहालर महिंदजाए प्रजो महाग्रुपनीए संपत्थिए । तबर्गतरं च र्ण सुरूवनेवरपपरिकल्फिया सुराजा मन्वारंकारभूरिया महया सहयहगर-पहनरेणं पंच अजीवाहिनको प्रजो अहानुपञ्चीय संपरितया । स्थिनंतरं च र्ण बहवे आभिओगिया देवा देवीची व सएई सएई स्वेडि, सएई सएई विसेसेडि, सपहिं सपहि विवेदि, सपिं शएदिं नेजाएदिं, सपिं सपिं नेन्त्विदिं परको क्षाणुपन्त्रीए संपरित्रया] त्रवणंतरं च नं सुरियामविभाणवासिनी वहवे वेसाविधा देशा य देशीओ व सम्बद्धीए जाब रवेणं स्तियानं देवं पुरश्री पासको व महाको ंब सम्भुगन्धति ॥ १६॥ तए गं से स्रिवामे वेषे तेणं प्याचीवपरिक्रिकेणं बहरामसबहरूद्रसंठिएकं जाव जोक्नसहरसम्बिएकं महध्महारूएणं महिवज्झएकं प्रको कविकामणेर्ग वर्राष्ट्र सामाणिक्सहस्सेहि बाव सोस्पिहि आग्रस्कक्षदेश-साहरसीहिं क्वेडि व बहुहिं स्रिवामविमानवासीहिं वेमानिएहि वेवेडि वेसीडि व सर्वि संपरिश्वेह सम्बद्धीए काव रवेशं सोहम्मस्य कप्पस्य मण्डोमञ्जीशं तं दिव्यं देविति विश्वं देवातुरं दिन्यं देवालुमार्यं उपकावेमाणे उपलक्षमाणे उपलेमाणे उप देवेगाने विकामरेमाने परिजामरेमाने सेवेन सोहम्मस्स कप्पस उनाहि विजान-मार्ग रेजेव क्वामध्या. बोतवस्वराहरियएहिं निम्महेहिं बोवयमाचे बीईवयमाचे



ताए विक्रहाए जन्म निरियं अमंग्निजाणं दीवनसुदाणं सन्तंमप्रहेणं वीद्रमध्याचे वीर्वगमाणे जेणव नंरीमरवर दीवे जेणेव दाहिणपुरन्थिक रतिकरपव्यण रेडिंग उमागन्त्रः उसागन्तिमा सं दिव्यं देविष्ट्रं जाव देव्यं देवाणुभावं पिकसाहरेसामें १ परिसंग्वेबेमाणे २ जेणव जम्बुहाँचे रीवे नेणेव भारहे बासे जेणेव आमजकारी नयमं जेणेव अस्वसालवणे उजाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेत्र हवा-गच्छः उवागच्छिता समणं भगवन्तं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं निकल्तानी आयाहिणं पद्माहिणं करेड करिना समणस्य भगवनी महावीरस्य उनग्पुरिक्षिमे दिसिभाए तं दिव्वं जागविमाणं इसि चडरंगुलमसंपत्तं भरणितलेखि ठवंइ ठविता चउत् अस्तमहिसीहि सपरिवाराहि दोहि अणीयाहि-नंत्रहा गंधानाणिएम ब णदाणिएण य-सर्दि संपरिवृष्ट ताओ दिव्हाओ जार्गातमाणाओ पुरान्धमिल्लेण तिसोनाणपंडिस्त्रएणं पद्मोगृहुइ । नए णं तस्य मृरियाभस्य डेक्स्य जनारि सामा-णियसाहस्सीओं नाओ दिव्याओं जाणविमाणाओं उत्तरिक्टणं तिमोबाणपरिक्वणणं पचोरहंति, अत्रमेसा देवा य देवीओ य नाओ दिख्वाओ जाणविभाणाओं दाहिणि-क्लेणं तिसीवाणपडिस्वएणं पचोतहन्ति । तए णे से स्रियामे देवे चर्डाट अग्गम-हिसीदि जाव मोलसिंह आवरक्खदेवमाहस्सीहिं अण्णेहि य बहुरिं स्वियानविमाण-वासीहिं त्रेमाणिएहिं देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवृद्धे सन्त्रिश्वीए जात्र भाडयरवेणं जेणेव समणे भगवं महावीरं तेणेव उवागच्छद उवागच्छिता रामणं भगवं महाबीरं निक्खुतो आयाहिणप्याहिणं करेड् करिना बंदड नमंसड देदिता नमंसिना एवं वयासी-'अहं णं भंते ! सुरंगाभे देवे देवाणुष्पियाणं वन्दामि नर्मसामि जाव पक्-वामासि ॥ १७ ॥ सुरियाभाड समणे भगवं महाबीरे सुरियामं वेवं एवं वयासी-'पोराणमेयं स्रियामा ! जीयमेथं स्रियामा ! कियमेथं स्रियामा ! करणिजमेथं सारेगामा ! आइण्णमेर्य सारेगामा ! अञ्भण्णगायमेर्य सारेगामा ! जं णं भवणवह-वाणमंतर जोडमवेमाणिया देवा अरहेते भगवंते बंदेति नमसंति वंदिना नमस्तिहा तओ पच्छा माई साई नामगोताई साहिति ने पोराणमें सहिदासा है जान अञ्मण्णायमेथं सुरियामा !'। तए में सुरियामे देवे समर्थणं मगवया महावरिर्ण एवं यूत्रे समाणे हुद्द जाव समणं भगवं महावीर वंदह ममंसद वंदिला नमंसिता नवासण्णे नाइद्रे सुस्स्ममाणे णसंसमाणे अभिमहे विभएणं पंजिल्लेखे प्रमवासङ् ॥ १८-१९ ॥ नए में समणे भगवं महावीरे स्रियामस्स देवस्य सीचे अ महदमहालियाए परिसाए जाव परिसा जामेन दिसि पाउच्युवा तामेन दिसि पर्कि गया ॥ २० ॥ तए णे से स्विवामे देवे समयस्य भगवतो महावीरस्य अधियः

क्रमं सोचा निसम्म इहुतुह जाव हयहियए उद्घाए उद्घेर उद्घिणा समणं भगवं विद्यानीरे बंदर नमंसह बंदिता नमंसिता एवं वयासी-अहं वं मंते ! स्र्रियामे देवे कि कारिदिए अभवतिदिए ? सम्मदिद्वी मिच्छाविद्वी **? परित्तसंसारिए अर्ण**तसंसारिए ? खुलभवोहिए दुष्टमबोहिए ? आराहए विराहए ? वरिम अवस्मि ? ॥२१॥ स्रियामाड समणे भगवं महावीरे स्रियाभं देवं एवं वयावी-स्रियामा ! तुमं णं भवसिविए नो अभनमिद्धिए जान चरिमे जो अचरिम । तए जे से सुरियामे देवे समर्णेण भगवया महावीरेणं एवं बुत्ते समाजे इक्षुत्रुक्षित्रमार्थाहरू परमसीमणस्मए समर्थ भगवं महावीर वंदर नमंसर दंदिना नमंसिता एवं वयासी--तुब्भे मं भंते ! सर्व्य जायह सदवं पासह, सब्बजो जायह सब्बजो पासह, सब्बं कार्ल जायह सब्बं कार्क पासह, सन्वे भावे जाणह गन्ये भावे पासह । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! सस पुन्ति वा पच्छा या मम एयारूवं दिव्यं देविश्वि दिव्यं देवजुई दिव्यं देवाणुभावं सद्धं पत्तं अभियाणागर्यति, नं इच्छामिणं देवाणुण्याणं अतिपुम्बर्गं गोयमाइयाणं समणाणं निर्माधाण दिव्यं देविश्वं दिव्यं देवजुदं दिव्यं देवाणुभाषं दिव्यं बराम्म्बदं नहिंबहिं उदर्शतमए ॥ २२ ॥ तए णं समणे भगवं महाबीरे सुरियामेणं देवेणं एवं बुत्ते समाणे स्रियाभस्य देवस्स एवमद्वं गो आढाइ गो परियाणइ तुसिणीए संचिद्धः । तए मै से मिरियामे देवे समर्ण भगवन्तं महाबीरं दोषं पि तथं पि एवं वसासी---तुव्ने णं भेते ! सन्नं जामह जान उबदंशितएतिकह समणं भगवं महाबीरं तिक्खतो आभाहि-मप्याहिणं करेइ करिला वंदइ नमंसङ् वंदिला नमंसिला उत्तरपुरत्यमं दिसीभागं 'अवकामह अवकामिता नेउन्धियससुन्धाएणं समोहणइ समोहणिता संस्क्रिजाई जोयणाई ह्एडं निस्सिरह २ ता अहाबायरे० अहासुहुमे०। दोषं पि वेउव्ययसस्यग्धाएणं जाव श्रहुमगरमधिकं भूमिभागं चिडव्यइ। से बहा नामए आसिंगपुक्सरे इ वा जाव अणीणं फासो तस्य णं बहुसमरमणिजस्स भूमिमागस्स बहुमज्झदेसमागे पिच्छाघर-अण्डवं विजन्दर अणेगखंगसयसंविविद्वं वर्णयो अन्तो बहुसगरमणियं भूमिनागं इसोयं अक्साडगं च मणिपेदियं च विस्ववदः। सीसे णं मणिपेदियाए उवरि सीहासणं क्रापरिवार जाव दामा चिद्वन्ति । तत् णं से सुरियामे देवे समणस्स अमवओ महाबीरस्स आलोए पणामं करेड् करिता 'अणुआणड में भगवंतिकड् सीहासणबरगए तित्यवराभिमुहे संगित्सको । तए व से सुरियामे देवे तप्पवमवाए नानामनिकगगरयण-विमलमहरिष्ट्नित्रणोवियमिसिसिसिदिवरस्यमहाभरवक्षप्रगतुरिययरभूराणुक्षं पीवरं .पडम्बं दाहिणं भुगं पंसारेह तथी ण सरिसवाणं सरिश्वाणं सरिकवाणं सरिसलाक्जास्ववीध्ववसुणीववेवार्व एवामर्जवसक्वाहियांकक्रीयार्व बहुत्वी संवेति-

यग्गियत्याणं आविद्वतिलयामेलाणं पिणिद्वगेविज्ञकंत्रयाणं उप्पीलियन्तिपदः परिसरसफेणगावनारहससंगसपसंबवत्यंतिकत्रिक्तस्यानिसंस्थाणं एगावलिकस्टरहरू सोमंतवच्छपरिष्ठत्वभूसणाणं अद्भावं णह्सजाणं हेवकुमाराणं विम्यच्छा । नयचेतरं च ण नामामणि० जाव पीवरं पसंबं वामं भयं पसारेड तक्षो ण मरिसयार्क मरिन्तवाणं सरिव्ववाणं सरिमलावण्यस्वजोध्वणगुणोववेवाणं एगाभरण० दृहजो आविद्वतिलयामेलाणं पिणद्वरविज्ञकंचईणं नानामणिरयणभग-संवेकियमा ० र्णावराइयंगमंगाणं चैदाजणाणं चंददममनिलाशणं चंदाहियसोमदंगणाणं एका इव उज्जावमाणीणं सिंगारा० हसियमणिय० गहियाउजाणं अद्भयं नहस्रजाणं देवतुमा-रियाणं जिरगच्छह । तए जं से स्रियामे देवे अष्ट्रस्यं संखाणं विउव्वह अट्टगरं सखवा-याणं बिडब्बर. अ० सिंगाणं बि० अ० मिगवायाणं वि०. अ० संक्रियाणं वि० अ० संन्वियवायाणं विव. अव खरमहीणं विव अव खरमहिनायाणं विव. अव पेयाणं विव अ० पैयाबायगाणं वि०. अ० पिरिपिरियाणं वि० अ० पिरिपिरियाबायगाणं वि० एवमाड्याई एगुणपूर्ण आउर्जावहाणाई विउव्याह । तए ण ते बहुव देवकुमारा य देवकमारियाओ य सहावंड । तए णं ते बहवे देवकमारा य देवकमाराओ य सरिया-मेणं देवेणं महावित्रा समाणा हट्ट जाव जेणेव सरियामे देवे तेणव उदागच्छति तेणेव उवागच्छिमा सरियामं देवं कायन्वपरिगाहियं जाव बद्धाविता एवं वयासी-'मंदिसतु णं देवाणिपया ' जं अम्हेहिं कायव्य'। तए णं से सरियाओं देवे ते बहवे देवकुमारे य देवकमारीओ य एवं वयासी-'गच्छह जं तब्से देवाणांपया ' गमणं भगवंतं सहावीरं तिक्खती आर्याहणप्याहिणं करेह करिता बंदह नसंसह बंदिना नसंसिना गोयसा-इयाणं ममणाणं निरगंधाणं नं दिव्यं देविहिं दिव्यं देवजुडं दिव्यं देवाणुभावं दिव्यं बत्तीमडबर्द गर्शबर्द्ध उवरंसेह स्वरंसिता बिप्यामेब एयमाणतिबं प्रवापिणह । तए णं ते बहुवे देवकुमारा देवकुमारीओ य सुरियामेणं देवेणं एवं बुना समाणा हुद्र जाब करयम जाव परिमुणंति परिमानिता केपेव समये भगवं महाबीरे तेपेव उवागरकंति उवागरिक्षता समर्थ भगवं सहावीरं जाव नमंतिता जेणेव गोसमाहवा समणा निर्माया तेणेव जवागच्छेति । तए णं ते बहवे वेवक्रमारा देवक्रमारीक्षो व ममामेव समोसरणं करेंति करिता समामेव अवध्यांति अवध्यांता समामेव वक्रमंति एवं सहियामेव ओनमंति एवं सहियामेव उक्संति सहियामेव उज्जानिता संग्रामेव ओनमंति सगवामेव उन्नयंति उन्नामेना निर्मियामेव व्यापामेति निर्मियामेव उन्नयंति समामेत्र पगरंति पसरिता समामेत्र आउजविहाणाई गेर्व्हति समामेत्र पत्रापेस प्यार्डस पणवित्र । कि ते ? छरेषे मंदं सिरेण तारं केंत्रेण वितारं तिविद्वं तिसमगरे-

जगरवर्षं गुंजाऽबंदसङ्रोक्यृहं रत्तं तिठाणकरणसुद्धं सङ्ग्रहरगुंर्जतवेसतंतीतस्रतालस्य-व्याप्रसंपर्वा महरं समं सक्छियं मणोहरं मिडरिनियपयसंचारं सुरहसुणह्वरचारू को दिव्यं णहसूजं गेयं प्रमीया वि होत्या कि ते ? उद्भर्मनाणं संखाणं रिंगाणं संखियाणं खरमहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं पणवाणं पउहाणं, अप्का-लिखमाणाणं भेमाणं होरंमाणं, तालिखंताणं मेरीणं झहरीणं दंदहीणं. आलवंताणं सुर्याणं सुंदेगाणं नंदीसुंदेगाणं, उनालिजेनाणं आलिंगाणं केतंबाणं गोसहीणं महलाणं. मुच्छि अंताणं वीणाणं विपंचीणं वल्लंडणं. कृष्टि अंताणं महंतीणं कच्छमीणं चिन्नवीणाणं, मारिजंनाणं बद्धीलाणं स्वीमाणं नंदियोमाणं, फ्रिकंतीणं भामरीणं छन्मामरीणं परिवायणीणं, छिप्पंतीणं त्याणं तुंबवीणाणं, आमोडिजंताणं आमो-याणं झंझाणं नडलाणं. अच्छिजंतीणं मगुंदाणं हहुद्यीणं विचिद्यीणं, वार्जनाणं करडाणं डिंडिमाणं किणियाणं कडम्याणं. ताडिजंताणं दहरियाणं दहरगाणं कुनंबाणं कलियाणं मुझ्याणं, आतारिजीनाणं तलाणं नालाणं कंसनालाणं. घडिजीताणं रिनि-रिनियाणं स्तियाणं सगरियाणं समसारियाणं, फ्रांसिबंनाणं वेसाणं वेद्धणं वालीणं परिश्रीणं बद्धगाणं । नए णं से दिव्वे गीए दिव्वं बाह्म दिव्वे नेष्टे एवं अञ्सए सिंगारे उराले मण्डें मणहरे गीए मणहरे नहे मणहरे बाइए उपिंग्जलभूए कहकहभूए दिव्वं देवरमणे पवते याचि हात्था । तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य नमणस्य मगबओ महावीरस्य सोत्यिगविरिवच्छनंदियावत्तवद्वमाणगभहारणकळ-रामच्छदप्पणमंगाइमत्तिचित्तं णामं दिव्यं नहविद्धं उबदंसंति १ ॥ २३ ॥ तए णं ते बहुवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सम्मेष समीमरणं करेंति करिता तं चेव भाषि-यथ्वं जाव दिव्वे देवरमणे पक्ते थावि होत्या । तए णं ते बहवे देवकमारा य देव-कमारीओ य नमणस्स भगवओ महाबीरस्स आवडपवावडसेहिपसेहिसोत्यियसोवत्थि-बप्समाणवबद्धमाणगमच्छण्डमगरंडजारमारपूजाबिह्यउमपनसागरतारंगवसंतळबाप-उमलयमतिवित्तं णाम दिव्यं णहविहिं उवदंसेंति २. एवं च एकिकियाए णहविहीए समीसरणाड्या एमा बत्तव्यमा जाव विक्वे देवरमणे पक्ते यावि होत्या । तए णं ते बहवे देवकमारा देवकमारियाओ य समणस्य मगवओ महावीरस्स ईहामियउसम्बर् रगनरमगरविद्वगनारुगकिशररुसरमन्मरकं अरबणरुयप्रमुख्यमितिवर्षं णासं दिव्यं **महिमाहिं उनदंसीति ३. एमओ वंकं दहको वंकं एमओ सहं दहको सहं एमओ सह-**वालं दहानी चहावालं चहार महावालं जासे दिख्यं जहाविहें उपदेसंति ४. संटाविह-पविभक्ति च सरावित्रविभक्ति च बिद्धावित्रविभक्ति च इंसावित्रपः च एगावित्रपः य ताराबित्रः व मुत्ताबित्रः व कागाबित्रः व स्थावित्रः वासं दिकां षद्यिहिं उन्दर्भति ५, चंदुरामणप० च सुहरगमणप० च उरनासणुमामणप० चामे दिन्नं णदृषिद्धं उवदंसिनि ६, बंद्रारामणप० च सुराग्रमणप० च आगामणानमणाम् णामें '''दवदंमेंति ः, चंदावरणपः स्रावरणपः च आवरणावरणपः णामें '''उन्ने दंमीति ८, चंदत्थमणपः च स्रुत्थमणपः अरथमणऽन्त्रमणपः नामः अवदंसीति ५, चंदमंडलपविभक्ति च सुर्गंडला० च नागमंडलप- च जक्समंडलप० च भूय-मंडलप० च [स्क्बसमहोर्गगन्धव्यसंडलप० च] मंडल्प्संडलप० सामं ... उदहंसंति १०, उसभगंडसप० च सीहमंडसप० च दुर्यविसंविधं गर्याव० ह्यांविसियं गर्याव-लियं मत्तह्यविलसियं मत्तगर्यविलसियं मत्तह्यविलेखियं मत्तगर्यायः दुर्गावलस्थियं णामं ... णर्रावर्हि उवदंसिति ११. सागरपंपभक्ति च नागरप० च सागरनागरप० णाम '''उवटंबेंति १२, णंटाप० च चंपाप० च नन्दाचेपाप० णामे '''उवटंसेति १३. सच्छंडाप० च मर्बर्डाप० च जारप० च मारप० च मन्छंडमयरेड जारमारप० गार्म ... उबदंसति १४, 'क'ति ककारप० च 'ख्र'ति सकारप० च 'ग'ति सका-रपः च 'च'नि चकारपः च 'ङ नि ककारपः च ककारनाकारपकारकारकारपः णामं ... उबदंसिति १५. एवं चकारवस्मी वि १६, टकारवस्मी वि १७, तकारवस्मी वि १८, पकारवागी वि १९, अमीयपहरूप० च अंबपहरूप० च जेवपहरूप० च कोसंबपक्षवपत् च पक्ष्वपत् शामं ... उबदेसंति २०, पडमलयाप० जाव सामस्याप० च लदाप० णामं '''उवदंसेति २१, दुवणामं '''उवदंसेति २२, विलवियं णामं '' उप० २३, दुर्यावलंत्रियं णामं ... उप० २४, अंत्रियं २५, विमियं २६, अंत्रियरि-भियं २७, आरमडं २८, भसोलं २९, आरमङभसोलं ३०, उप्पर्धानवयपवर्त संकु-चियं पनारियं रयारदयं भेनं संभेनं णामं दिख्यं णद्रविहि उचदेसेति ३१ । तए णे ते बहुचे देवकुमारा य देवकुमाराओ य समामेव समोराग्ण करेति जाब दिव्वे देवरमण पवने यावि होत्था । तए मं ते बहुदे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणद्य भग-वओ महावीरस्स पुरुवभवयरियणिवर्द्धं च चवणचरियणिवद्धं च संहरणचिवनिवर्द्ध च जन्मणचरियनिवदं च अभिसेयचरियनिवदं च बालमावचरियनिवदं च ओञ्चल-चरियनियदं च कामभोगचरियनिवर्दं च निक्यामणचरियनिवर्दं च तक्करणचरियन निवर्दं च णाणुष्पामचरियनिवर्दं च तित्थपवत्तणचरियपदिनिव्याणचरियनिवर्दं स चरिमचरियानिवर्द णामं दिव्वं गद्दविह्नं उवदंतित ३२३ तए णं से बहुवे देवकुमाराः य देवकुमारीओ य चवन्त्रिहं बाहर्त बाएँति-तं जहा-ततं बिततं वर्ण झुसिरं । सप् . णं ते वहवे देवतुमारा य दंवतुमारियाओं य चडव्यहं गेर्य गायंति तंत्रहा-उविश्वतं पार्यनं मंदायं रोह्यावसाणं च । तए यं ते बहुवं देवतमारा व देवतमारियाओं क

चर्डाव्यहं णहिंबहिं उबर्दसंति तंजहा-अंचियं रिसियं आरभडं मसीलं च । तए णं ते बहुवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चडच्विहं अभिणयं अभिणएंति नंजहा-हिद्दंतियं पाहितियं सामभोविधिवाइयं अंतोमञ्जावसाधियं च । तए गं ते बहुयं देव-कुमारा व देवकुमारियाओ य गोयमाइयाणे समणाणं निम्मेयाणं दिव्वं देविद्धं दिव्यं देवजुई दिन्ने देवाणुभावं दिन्ने बत्तीसङ्बद्धं नाडयं उबदेशिया समणं भगवंतं महावीरं तिक्लुनी आयाहिषपमाहिषं करेंति करिना वंदंति नसंसंति वंदिना नसंसिना जेणेव स्रियामे देवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता स्रियामं देवं करवलपरिमाहियं सिरमादनं मत्थए अंजिले करू जएणं विजएणं वदावैति वदाविना एवं आणतियं पर्वाप्पणंति ॥ २४ ॥ तए णे से सुरियाभे देवे तं दिव्वं देविश्वं दिव्वं देवजुई दिव्यं ववाणुभावं पिंडमाहरह पिंडसाहरेला खणेषं जाए एगे एनभूए। तए ण से स्रीरेयाभे देवे समणं भगवंनं महावीरं तिक्चुक्ते आयाहिषपयाहिषं करेड् २ ता वंदड नमंसह वंदिका नर्मासना नियगपरिवालसर्दि संपरिवुढे नमेव दिव्यं जाणविमाणं दुरुद्द दुरुहिना जामेव विसि पाउन्भूए तामेव दिसि परिनाए ॥ २५ ॥ भंते ! ति भववं गौयमे समणं भगवंनं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदिता नसंसिना एवं बयासी-सरियामस्स णं भंते ? देवस्स एसा दिल्वा देविश्वी दिल्वा देवजुई दिल्वे देवाणुभावे कहिं गए कहिं अणु-्पविद्वे ? गोथमा ! सरीरं गए मरीरं अणुप्पविद्वे । से केपद्वेणं अंते ! एवं वृज्ञङ सरीरं मए सरीरं अणुप्पविद्वे ? गोयमा ! मे जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लिला ै गुता गुतदुवारा विवास विवासगंभीरा, तीसे वं कूडागारसालाए अदूरसामंते एस्थ ं ण महेंगे जणसमूहे चिद्वर, तए ण से जणसमूहे एगं महं अन्भवद्द्वगं वा वासवद-ें छगं व। महावायं वा एजवाणं पासइ पासिना तं कूडागारसारं अंतो भणुर्पावसिता ्रं णं चिद्धइ, से तेणद्वेणं गोयमा! एवं बुचइ-'सरीरं अणुप्यविद्वे' ॥ २६ ॥ कहिं णं र अंते ! सुरियाभस्स देवस्स सुरियाभे नामं बिमाणे पनते ? गोयमा ! जंब्हीवे हीवे मंदरस्य पञ्चयस्य दाहिणेणं इमीसे रयणप्यमाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमि-ं आगाओ उर्दू चंदिसस्रियगहगणनक्खतताराख्याणं बहुई जीयणाई बहुई जीयणस-बाई एवं सहस्साई सयसहस्साई बहुईओ जोयणकोटीओ जोयणसथकोटीओ जोयण-सहर्मकोडीओ बहुईओ जीयणस्यसहरमकोडीओ बहुईओ जीयणकोडाकोडीओ उर्दू दूरं वीहें वह सा एत्य णं सोहम्मे नामं कप्पे पक्ती पाई जपदीणायए उदीणदाहिणवि-त्यिण्ये अदर्चदसंठाणसंठिए अविमालिभासरासिक्णामे असंसेजाओ जीवणकोडा-कोडीओ आयामविक्संमेणं असंखेजाओ जोवणकोडाकोडीओ परिक्केवेणं एत्थ णं सोडन्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सारं भवंतीति मक्कार्य । ते णं

विमाणा सव्वर्यणाम्या अच्छा जार पहिस्या । तेति ण विमाणाण धर्मण्यादेतः आग पंच वर्डिसया प्रमणा लंजहा-असोगवर्डिसए सनवण्यवर्डिसए संपगवर्डिसए हे स्यविक्रिंग् मञ्जे सोहम्मविक्रम् ते मं विक्रमा नव्दरयणामया अच्छा वार्ष पहिल्ला । तका में सोहरमवर्डियगस्य महाविमागस्य प्रत्थिमेणं लिरियं असंग्रे-आहं जोबणसबसहस्साई वीइवडना एत्थ में सरियाअस्य देवस्स सरियाभे पार्म विकास काली अहतेरसन्नीयणगयमहत्त्वाई आयार्गातक्त्रीणे सन्त्रयालीसं च समस्टर्साई बावर्ष च सहस्राहं अद्भ य अहमालजोशगरात परिक्खेंबेलं । से यं हरोने पागारेण सब्बओं समेता संपरिकिन्ति से में पागारे तिर्णित जोयणस्याई वर्ष सबतेण, मुळे एवं जोयणसर्थ विक्लंबेण, मुक्ते प्रक्रम् जोयणाई विक्लंबेण इपि पणतीमं जोवणाहं विक्संभेणं । महे विन्धिणे मान्ने संनित्ते द्वपि तणुर बोपन्यसंद्राणसंद्रिए मञ्जरक्षाका अन्ते जाव पहिरूचे से ये पागारे पाणानिहर्य-चवणोहीं फविसीमएहिं उबसोमिए ने जहा-कण्हेहि य नीलेहि य लोहिएहिं हालि-रेडि सकिवेहि कविसीसएहि । ते णे कविसीसगा एवं जोवणे आयामेण अदजीवण विक्लंभेणं देसूणं जोगणं उद्दं उचनेणं सम्बर्गणासमा अग्रहा जाव पहिस्ता । सरियासस्य णं विमाणस्य एगमेगाए बाह्यए दारसहस्यं दारसहस्यं अवतीति मक्सार्य, ते णे दारा पेच जीवणसवाहे उन्हें उन्होंने अन्नहजाई जीवणसवाहे विक्तंभेणं तावड्यं चेव पवेसेणं मेथा वर्कणगश्मियामा इंहासियउस्भन्दरगणग्मनर-विहुगवालगकिकररुरस्यमस्कुं अरवणलयपद्रमलयम्तिकाः स्वंभवगयवरवेदः-यापरिगयाभिरामा विज्ञाहर्जमलज्ञ्यलजैतज्ञा विव अचीयहरूममारूणीया स्वगस-हस्सर्काल्या भिसमाणा भिन्धिसमाणा चक्नाहोयणलेखा सहस्रासा सहितीयहता ह वर्षा दाराणं तेनि होड नंबहा-बहरासमा किस्सा रिद्वासमा परहाया वैरुटियसमा खंभा जायम्बोदवियपवरपंचवन्नमणिरयणकोहिमतला हंसगब्यमया एक्स गोमेज-मया टंदकीला लोहियक्समईओ चेडाओ जोईरसमया उत्तरंगा सोहियक्समईओ सडेओ वयरामया संधी नाणामणिमया समुमाया वयरामया अवनका अमारापा-साया रययामयाओ आवत्रगगेडियाओ संक्रारपासगा निरंतरिवयणस्याङा वितीस चेन भितिगुलिया छप्पना तिकि होति गोमाणसिया नतिया जानामग्रिरयजनास-स्वगलीलद्रियमानमंजियाया वयरामवा कहा रययायया अस्तेहा सम्बत्वनिकमया उल्लेया गाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगरोहियकसपविवंसगर्यक्षीमा संकामका पक्ता पक्तवाहाओ जोईरसमया वंसा वंसक्तवेश्वयाओ रवयामहँको पश्चिमाओ जायस्वमईको ओहाउणीको बहरामईको उवस्पिन्छणीको संव्यवेसस्यवामाः झावबै

अंक्रायकणगढ्डतवणिज्ञभूभियागा सेवा संबातलनिम्मलनिम्मलद्दियणगौसीर्फेण-ं रुबक्षिगरप्पगासा तिलगरवणद्वचंदिनमा मामामणिदामालंकिया अंतो बहि च र् सन्हा नवनिज्ञवास्त्रयापत्वडा सुद्वफासा सस्सिरीयन्या पासाईया दरिमानजा अमिन्दा पिक्वा ॥ २७ ॥ तेमि मं दारामं उभनो पासे बहुआं निसीहियाए सोलप सालस चंदणकलसपरिवाडीओ पनताओ, ते ण चंदणकलसा वर्कमलपट-द्वाषा स्रस्वरवारिपडिपुण्या वंद्यक्षवयामा आविद्वकंदेगुणा पङ्गुप्यत्रविद्वाणा सम्बरयणामया अच्छा जाव पिंडस्वा महया इंदकुंभसमाणा पन्नना समणा-उसो ! । तेसि णं दाराणं उभओ पासे दृहुओ णिसीहियाए सौलय सोलय जाग-दम्तर्पारवादीओ पननाओ, ते णं णागदंता मुत्तात्रालंतरुतियहेमजालगवक्याजा-लक्षिकिणीयेटाजालपरिक्सिता अन्सुमाया अभिनिसिद्वा तिरियससंपरिगाहिया अहेपनगदस्या पनगद्धसंद्राणसंदिया सम्बन्धरामया अच्छा बाव पहिस्या महया महया गयदंतसमाणा पनता समगाउसी !। तेस णं जागदंतरस बहुवं किन्द्रसन्बद्धा वन्धारियमहादामकलावा णील ० छोहिय ० हालिह० सुक्षित्रसुलबदा बन्धारियमहाहास-कलावा, ते णं दामा सर्वाणज्ञलंबसमा सर्वज्ञपयरगर्महिया भाणाविष्टमणिरयणविध-· हद्दारः वसोभियसमुद्दया जाव सिरीए अर्ड्व अर्ड्व उवसोमेमाणा चिर्द्रति । तेसि णं णागदंताणं उपरि अवाओ सोलस सोलस नागदंतपरिवादीओ पसता ते णं णागदंता तं चेव जाव धयदंतसमामा पश्चता सम्रागडसो ! तेस पं णागदंत्रस बहवे रययामया सिक्सा पकता. तेस णं रययामएस सिक्सएस बहवे वेठलियामडेओ भूबप्रदीओ प० ताओ णं ध्वपदीओ कालागुरुपगरकुंदुरकतुरुकधूवमधमधंतगंधुदु-याभिरामाओ सुगंधनरगंधियाओ गंधवहिभुयाओ ओरालेणं सणुल्लेणं मणहरेणं घाणमणाविन्युइकरेणं गंधेणं ते पएसे सन्वको समंता आपरेमाणा आपरेमाणा जाव चिटंति । तेसि णं दाराणं उभको पासे दृहको जिसीहियाए सोलस सोलस सालमंजियापरिवादीको पश्चताको. ताको ण सालमंजियाको लीलद्वियाको सुपद-द्वियाओ सुक्रलंकियाओ जाजाविहरागवसजाओ जाजामहरिणद्वाओ मुद्धिनिजनसम-ज्याओं आमेल्याजमलञ्चयकवृद्धियजन्भुस्तवपीणरइयसंठिवपीवरपओइराओ रत्तावं-गाओं अविकारीओं विडिवसक्पसत्यलक्षणसंवेक्तिकारासिरवाओं इसिं असोगवर-पायवसम्बद्धमाओ बामहत्यमाहियमासाकाओ इसि अद्यच्छिकावस्वविद्विएषं दस-माणीको विव चक्कुक्तेयमकेसेहि म अवसदं सिजमाणीओ विव पुडविपरिणामाओ सासब्याव्युवगबाओ चन्दाणणाओं चंदक्तितिजीओ चंदबसमिकालाओ चंदाहि-स्टोगर्समाको उद्या विव उज्जोदेशामाको विज्ञुमणमिरिस्स्र्रिएपंतसेयमहिययरस-

नियामाओं सिंपारागारचारुवेसाओं पासाइयाओं जान चिहंति । तेसि णं साराणे उमओ पासे दृहओ जिसीहियाए मोलग सोलम जालकः गपरिवासीको प्रशाना, हो -णं जालक्ट्या सम्बरयणामया अच्छा जाव पहिरूवा : तेसि णं दाराणं अभवी पासे दहओ निसीहियाए मोलम मोलम घंटापरिवादीओ पक्ता, नासि णं घंटाणे इमेग्रास्य वकावासे पत्ते, तंत्रहा-जंदणयामईओ घंटाओं वयरामयाओं लालाओ जाजामजिमया घंटापासा नवजिज्ञमञ्चाओ संसालाओ रययामयाओ रज्ञा । नाओं णं घंटाओं ओहरमनाओं मेहस्सराओं हंगस्सराओं कंचरसराओं सीहस्मनाओं दंदहिरूपराओं जंदिरसराओं जंदियोसाओं संज्ञस्यगक्षी संज्ञ्चोमाओं सुरसराओं सन्मरधोसाओ उराटेणं मणकेणं नणहरेणं कन्ननधानिव्यवकरेणं गहेणं ते परसे सन्वक्षा समना आपूरेमाणाओ आपूरेमाणाओ जाव चित्रंति । नेसि णं दाराणं उमको पासे दुहुको जिसीहियाए मोलस सोलम वजमालापरिवाहीको पञ्चनानी, ताओं णं बणमालाओं णाणामणिमगद्मन्यकियलयपत्रवसमाजलाओं स्ट्रप्यपरिभक्त-माणमीहंतयस्मिरीयाओ पामाईबाओ ... । तेमि वं दाराणं उभओ पासे बुहुओ णिसीहियाए तोलम सोलस पर्गठमा पत्रमा. ते ण पर्गठमा अङ्गाङ्ग्याई जीयणस्याई आराम्बिक्ननं मेणं पण्नीसं जोगणगर्य बाहक्षेणं सम्बद्धयराम्या अच्छा जाव पहि-रूवा । तेसि ण पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं पामायवडेंमगा पत्तता, तेणं पामाय-वहेंसगा अब्राइजाइं जोवणस्थाइं उन्नं उन्नतेणं पणबीसं जोवणसर्व विक्संत्रिणं अन्भागयम्सियपहसिया विव विविह्मणिर्यणम्तिनिता वः। उद्भवित्रयदेजयंतपहा-गच्छताहरू छन्कलिया तुंगा गगणतलमणलिहेर्तासहरा आकेतररयणपंत्रहरियलिय व्य मणिकणगथ्यसियागा वियसियमञ्जलपाँउरीयतिस्वरस्यणद्वचंद्रचित्रा णाणासणिदासा-लेकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिजवालयापरबहा मुहफाया सरिसरीयम्बा पासा-इया दरियणिजा जाब टामा । तेसि णं दाराणं उमझो पासे सोलस सोलस तीरणा पनता, णाणामणिमया णाणामणिमएस खेमेस उवणिवटसचिवडा जाव परमह-रथगा । तेसि णं तोरणाणं परायं पुरसो दो हो सालभेजियाको पणताओ. जहा हैका तहेव । तेसि यं तोरणार्ण पुरवो नागर्दता पश्चता बहा हेहा बाब दामा । तेसि णं नोरणाणं पुरक्षे दो दो इवसंचाडा गवसंचाडा नरसंचाडा किवरसंचाडा विपरि-ससंचाडा महोरगसंबाहा गंधनवर्षधाहा उसमसंबाहा सम्बद्धनासवा अल्हा जाव पडिस्वा, एवं पंतीओ बीहीं मितुणाई । तेसि णं तोर्वाणं पुरको दो दो अउसलवाओ जाव सामन्याओं निषं करासियाओं सम्बर्गणासमा अच्छा जाव पविष्या । तेसि व तोरणाणं परलो दो दो विचासोवत्थिया पश्चता सम्बरस्काससा सन्दर्भ साथ पृष्टि-

क्या । तेसि मं तीरणाणं पुरनों दो दो चंदणकलसा पक्ता, ते णं चंदणकलमा बरक्मकाइह्यामा तहेव । तेकि मं तोरमामं पुरको दो दो मिंगारा पक्षमा, ते मं भिगारा परकमलपद्धाणा जाव मह्या अत्तगबस्हानिइतमाणा पवता समणाउसी !। रेसि में तोर्णामं पुरओ दो दो आर्यसा पानल, तेसि में आर्यसामं इमेगान्वे वसा-बासे पक्षेत्र, तंजहा-तविवासमा पर्गठमा अंकसया संदक्त अणुरवस्तियनिम्सलाए छावाए गमणुबदा चंदमंडरूपिकासा महबा महबा बदकायसमाणा पत्रना सम-णाउसो ! । तेसि णं तोरणाणं पुरभो दो दो कारनामधाला पनना अन्छतिन्छडिय-सास्त्रितंदुल्लाइसंदिद्वपिद्धाः इव चिद्धति सन्वजन्णयमया जाद परिस्या महया मह्या रहचक्कवालयमाणा पकता समणाउसी!। तेसि णै तीरणार्ण पुरओ दो दो पाउँओ, ताओ णं पाउँओ सक्छोदगपरिहत्याओ गामाबिहस्स फलहरियगस्स बहु-पडिपुनाओ विव चिद्वंति सम्बर्गणामहेंको अच्छाओ जाव पडिस्वाओ महर्ग महर्ग गोकिक रचक्रसमाणीओ पक्रमाओ समजाउसी!। तेसि णं तोरणाणं धुरओ दो दी सुपरद्वा पत्रमा गाणाविहभंडविरह्या इव विद्वति सम्बर्यणामया अच्छा जाव पडि-रुवा । तेसि णं तीरणाणं पुरक्षो दो दो मणोगुलियाओ पश्चताओ, तासु णं मणी-गुलियास बहबे सुवबरूपमया फल्मा पन्नता, तेस ण सुबबरूपमएस फल्मोस बहुवे वयरामया नागरंतया पकता, तेषु णं वयरामएसु णागदंतएसु बहुवे वय-रामया सिक्सा पक्षता, तेष्ठ णं वयरामएस सिक्सोस किण्हसत्तरिकगविच्छ्या णीलम्बलसिक्सवच्छिया लोहियम्बलसिक्सवच्छिया हालिह्मलसिक्सवच्छिया सिक्छ-द्वत्तरिक्रयवच्छिया बहुवे वासकरमा पक्तता सम्बन्धरिक्यसया अच्छा जाव पडिम्म्बा । तेति णं तोरणाणं पुरक्षो दो हो चिता रवणकरंडमा पनता, से जहा णामए रहा बाउरंतवहवद्दिस विते रमणकांडए वेहलियमणिफलिहपडलपबोयडे साए पहाए ते पण्से सम्बजी समंता ओमासइ उज्जोवेइ तबइ प्रमामइ एवामेव हैं वि विशा र्यणकरंडणा साए प्रमाए ते पएसे सम्बन्धो समंता ओमार्चति उज्जीवेति तर्वति प्रभासंति । तेसि वं तोर्णाणं पुरश्रो दो दो इयकंठा गयकंठा नरकंठा किसरकंठा किंपुरिसकेंठा महोरमकेंठा गंधन्यकेंठा उसमकेंठा सञ्चरयणामया अच्छा जात्र पिड-रूमा । तेसि णं तोरणाणं पुरको दो दो पुष्पकंगेरीको महत्तंगेरीको नुसकंगेरीको गंबकोरीओ बत्यकोरीओ आमरवाकोरीओ छिद्दरभकोरीओ पत्रताओ सञ्बरयणा-मगाओं अच्छाओ जान पविरुवाओ । तासु वं पुण्यत्वेगेरियासु जान सिस्टर्यवंगेरीस दो हो पुरस्त्रहळगाई जाद सिदारपण्डकगाई सन्वरमणामयाई अच्छाई जाव पिड-रुवाहं । देखि मं तोरमामं पुरको दो दो सीहासमा पण्णता । देखि मं सीहासमामं

क्ष्णको जाव दामा । तेसि गं नीरमाणं पुरस्रो दो दी रूपमया छता प्रवता, से . कं छना चेठलियमिमलदंडा जंबुनयक्तिया बहरसंधी मुत्ताजालपरिगयां महस्रहस्स-बर्कन्वणयलागाः दहरमलयसुर्गधिसक्वो उयस्राभिसीयलन्छायाः मंगलभतित्रिता चंदागारोक्सा । तेसि णं तोरणाणं पुरुषो दो दो चामगओ पश्चताओ, ताओ गं नामराओ नंदप्यमंबेहत्विववयरनानासणिरयणस्त्रियचिभदण्डाओ मृहमरयवरी-इबाळाओं संसंबर्कददगरयअगवमहियफेणपुंजसिषणासाओं सन्वरयणामयाओ अच्छाओ जाब परिस्वाओ । तेसि णं तोरणाणं पुरक्षो दो दो तेख्नसमुख्या कोट्ट-समुरुगा पनममुरुगा जोबगसमुरुगा तगरसमुरुगा एळासमुरुगा इतिबालसमुरुगा हिंगुलयसम्बन्धा मणोतिलासमुख्या अंत्रणसमुख्या सम्बद्धणामया अच्छा खाव पहिल्या ॥ २८ ॥ मुरियाभे ण विसाचे एगसेगे दारे अहमर्य नक्तान्याणे अह-सर्व मिगळावाणं गहहउसवाणं सन्तकावाणं विकासवाणं सर्वाणकावाणं सीह-ज्याणं उमभज्याणं अद्भवं सेवाणं चडविसाणाणं नागवरकेळणं एवामेव सपुष्वावरेणं सरियाभे विमाणे एवामेने दारे असीयं असीयं केउसहस्तं भव-तीति सक्खार्य। तेसि ण दाराणं एगमेगे दारे पण्यद्वि पण्यद्वि भीमा पनता, तेसि णं भोमाणं भूमिभागा उहीया य भाषियम्या, तेसि णं भोमाणे बहुमञ्झ-देसमागे पनेयं पतेयं सीहामणे, सीहासणवन्त्रशे सपरिवारो, अवसेसेस भोमेस फ्तेयं फ्तेयं भहासणा पश्चना । तेमि णं दाराणं उत्तमागारा सोलसबिहेंहिं रक्षेत्रिं उबसोहिया, तंजहा-राजेहिं जाब रिडेहिं. तेसि में दाराजं दिन्य असूद्ध मंगलगा सञ्ज्ञया जाब छनाइछना एवामेब सपुव्यावरेण सुरिवाम विवाण बसारि दारस-हत्या भवंतीति मक्लायं । सुवियाभस्य विमाणस्य चन्नहिसं पंच जोयजसवाई अबाहाए चनारि वणसंडा पन्नता, तंत्रहा-असीगवणे, सत्तिवणे, संपगवणे, स्थापके पुरिधिमेणं अमोगवणे दाहिणेणं सत्तवस्रवणे प्रवास्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं कृत्य-वणे। ने णं वणखंडा साइरेगाई अक्टोरसजोयणस्यसहस्साई आयामेणं पंच जोयणसयार्थं विक्खंमणं पत्तयं पत्तयं पागारपरिविक्ता किका किकोभासा गीला नीकोभासा इरिया इरिओ॰ सीया सीओ॰ निद्धा निद्धा तिस्वा तिस्वा किस्ता किण्हरस्था नीता नी० हरिया इ० सींबा सी० निक्का नि० भणकृतिस्थितस्थाना रम्मा महामेहनिउरवम्सा ते थं पायवा मूलमंती वश्वको ॥ २९ ॥ देशि णं वश्यकं बार्ण अंतो बहुससर्मिका भूमिभागा पण्णना से जहां नामाए आसिमपुक्यारे ह वा जान णाणानिहरंननक्ष्मेहिं सणीहिं व त्योहिं य उच्छोहिया, देशि यं गंबो फासी जैमन्त्रो अहहान । तेसि व वेते ! तथाण स मनीय स पुन्याकरदाविश्वत्तरा-

गएहिं बाएहिं संदायं संदायं एड्याणं वेडबाणं कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं महिमार्ग खोभियाणं उदीरियाणं केरिसए सहे मक्द ? गोयमा ! से जहानामए शीबाए व। संदयाणीए वा रहस्स वा सच्छलस्य सञ्ज्ञबस्य सर्घटस्य सपडागस्स सतोरणवरस्य सनंदिघोसस्य सिद्धांबिष्ट्रियजालपरिवित्तस्य हेमवयविकतिणियकः णगणि हुन दारुवायस्य सुर्सपिणद्भवस्ये इत्स्युरायस्य कालायस्यक्यणेमिजंतकस्यस्य आदृष्णवर्त्रगनुसंपडनस्य कुमलकार्च्छेयसारहित्तुसंपरिकाहियस्य सरगयवनीयती-णपरिमंडियस्य सक्कावयंसगस्य सनावसरफरणआवरणभरियशोहजुज्झस् जस्य रायंगणंसि वा रायंतेचरंसि वा रम्मंसि वा मणिकृष्टिमतलंसि अभिक्खणं अभिक्खणं अभिषद्विज्ञमाणस्य वा नियद्विज्ञमाणस्य वा श्रोराला मणोण्या मणोहरा कण्णमण-निव्युइकरा सहा सञ्चलो समंता अभिनित्सवंति, भवेगाकचे विया ? यो वणद्रे समद्रे । से बहा णामए वैयालियवीयाए उत्तरमंदामुच्छियाए अंके मुफ्डड्रियाए कुमालनर-नारिमुसंपरिग्गहियाए चंदणसारनिभ्मियकोणपरिषष्टियाए पुष्करत्तावरत्तकालसमयंमि मंदायं मंदायं वेहवाए पवेहवाए चालियाए षष्टियाए स्रोभियाए उदीरियाए ओराला मणुष्णा मणहरा क्रण्णमणनिब्बुहकरा सहा सब्बको समंता अभिनिस्तर्वति, मचेत्राख्वे शिमा ? यो इणहे समद्वे । से बहा नामए किन्नराण वा निःपुरिमाण या महोगगाण या गंधव्याण वा महमालवणगयाणं वा नंदणवणगयाणं वा सोमण-सवणगयाणं वा पंडगवणगयाणं वा हिमवंतमञ्ज्यमंदरविरिगृहासम्बागयाण वा एगओ सिबिटियाणे समागवाण सिबिसबाणे सम्विद्धाणं प्रमुद्दवपक्षीतियाणं नीय-.रडगंधव्यहसियमणाणं गर्जं पर्जं कर्षं गेर्यं प्रयद्धं प्रायकदं दक्तिकतं पार्यतं मंदायं रोह्यावसाणं सत्तसरसम्बागवं छद्दोसविष्यमुक्कं एकारसालंकारं अद्वराणीववेयं, शंकाऽवंबसहरोवगृढं रतं तिद्वाणकरणसुदं पनीयाणं, अवैयारुवे ? इंता सिया ॥ ३० ॥ रीति भ वणसंबाणं तत्य तत्य देसे देसे तहि वहिं बहुईओ स्कास्त्रिकाओ वावियाओ पुरुवरिणीओ चीहिमाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ विरुपंतियाओं जन्माओं राष्ट्राओं रययामबक्ताओं समरीराओं वयरामयपासाणाओं तबिष्यातलाको सुवण्णसुज्यारययबाद्धंयाको बेहल्यिमणिपालियपङ्कपचीयडाको सहोबारसङ्गाराको णाणामकितित्यसबदाको चडकोणाको काणुगन्वसुजायवप्प-गंभीरसीयकवालाओ संग्रनपराभितमुगालाको बहुप्रप्यलकुमुग्रवकिषसुमगसोगंघिय-पोंडरीयसम्बत्तसहस्तपतकेसरकुकोवियाको छप्पपपिपुजमाणकमकाको अच्छति-मलग्रिकपुष्णाको प्रविद्वासम्बद्धान्यसम्बद्धान्यस्य मिहणगपनि सरियाको प्रोसं पत्तवं परमक्षक्षम्परिक्षिताको पत्तवं पत्तवं क्ष्यस्यपिकिताको अप्पेगस्याको

आखुबोबमाओ अप्पेगहयाओ बाहजोबगाओ अप्पेगहयाओ खीरोबंबाओ अप्पेग-इयाओं क्लोबगाओं अप्येगहबाओं खोडोबगाओं अप्येगहबाओं पाईए उपसरकेर्य प्रजानाओं पासाहबाओं दरिसणिकाओं अभिन्याओं पहिन्याओं। तासि ये प्रावीयें आब बिलपंतीय परायं परायं चडांद्रामं बनारि तिसीवागपांत्रकवना पण्यानाः, तेनि वाँ तिसीवासपरिक्रवमाणं अवभेवारुवे बण्णावासे पण्णने नंत्रहा-वहरासवा नेमा ... तोरणाणे शया छणाइछन। य जेयव्या । नामि णं सुराखुरियाणं वायीणं जाव विस्तर्गतियाणं तत्य तत्य देसे देने नहिं नहिं बहवे उप्पायपन्यसमा नियापन्यसमा जगईपव्ययमा दारुइज्यप्ययमा दमसंहदा दमसंच्या दमसाक्रमा दमपायायमा उसहा कार्यक्रमा अंदोलमा गरूनंदोलमा मध्यस्यणामया अच्छा जाव परिस्वा । तेस र्ण उप्पायपन्वएमु जाव पक्खंदोलाम् बहुद्दे इंसामणादं कीचासणादं गरलासणादं उण्ण-यासमाई पणयानणाई वीहासणाई भद्दानणाई पक्खासणाई यगरामणाई उनभामणाई सीहामणाई परमासणाई दिसासोबन्धियाई सव्वर्यणामयाई अन्छाई जाब पहिण्याई । तेषु णं वणसंबेषु तत्थ तत्य हेसे देसे तहि तहि बहुये आछियण्या मालियण्या क्यलियरगा लगायरगा अच्छणघरगा पिरस्ट्रणघरगा मञ्जूणघरमा वसाहणघरगा गब्भवरमा मोहणवरमा मालवरमा जालवरमा कुमुमवरमा वित्तवरमा गंवन्त्रवरमा आवंतपर्गा तव्यवणामया अच्छा जाब पडिस्वा । तेनु णं आखिवधरगेनु जाब आग्रंसघरगेतु तर्हि तर्हि घरएमु बहुई हंसामुणाई जाब दिसासीबन्धिआसणाई मन्वरयणामयाई जाव पहिरूवाहं। तेसु मं वणसंहेसु तस्य तस्य देसे २ तहि तहिं वहवे जाहमेडवगा जुहियामंडवगा मिह्नग्रामंडवगा णवसालियामंडवगा कासंति-मंडवगा दहिवास्यमंडवगा सुरिक्रियमंडवगा तंबोलिमंडवगा सुद्वित्रमंडवगा णान-जयामेटवर्गा अङ्गुत्तयलयामेडवर्गा अच्छीयामेडवर्गा मालुयामेडवर्गा अच्छा सम्बर-यणामया जाव पहिल्हा । तेतु णं जाहमण्डबर्ग्यु जाव माळुगामेडबर्ग् वहते प्रक्रिकापरना हैसासणसंठिया जाव दिसासोवत्थियासणसंठिक अण्णे य बहुते वरमयणासमिविसिद्धसंठाणसंठिया पुढविसिकापहना पण्णला सममानुसी ! आईणस-रूयवृरणवणीयतूलकासा सम्बर्यणामया अच्छा जाव पृष्ठिरुवा। तस्य यं बहुवे वेमाणिया देवा व देवीको य आसमंति समेति विद्वंति निसीवीत तुमहेति रमंति लर्कनि कीर्कति किर्दति मोहिति पुरा पोरागार्ग समिक्याम समिकिताम सभावा कटाण कम्माण कहाणाज कहाणं पालविदार्गं प्रकल्यामाणा विद्देति ॥ २१ ॥ तेसि णं वणसंडाणं बहुमञ्झदेसमाए पत्तेत्रं पत्ते पासास्वतेसमा प्रणाता, ते औ पासायवर्षस्या पंच कोवयसयाई उन्ने उन्नोर्ण अनुस्वाई कोवनस्याई विक्सानेन

न्युग्गकपृतिवपहतिया इव तहेष बहुसमस्मिष्णभूमिभागो उहाेको सीहासणं स्परिवारं तत्व पं चतारि देवा महिष्टिया जाव पछिकोत्रप्रद्विहस परिवसंति, कहा-असोए सत्तपण्णे चंपए कूए । स्रियामस्स पं देवविमाणस्स अंतो बहुसमर-विभिन्ने भूमिभागे पण्यते, तंबहा-बनसंडविहुणे जाब बहुवे बेमाणिया देवा देवीओ व आसर्वति आव विद्वरंति, तस्स णं बहुसमरमजिजस्स भूमिमागस्स बहुमञ्ज्ञदेसे प्त्य णं महेने उनुमारियालक्ष्ये पण्यते, एमं जीवनसक्सहस्यं आयामविवस्त्रंभेणं तिष्मि जोगणस्यसहस्साई सोलम सहस्साई दोष्यि व सत्तावीसं जोगणसए तिश्वि य कोसे अहावीसं च अनुसर्य तेरस य अंगुलाई अदंगुलं च किविविसेस्पं परिक्नोतेणं, जोतर्णं बाह्येलें, सम्बर्जन्णवासम् अच्छे जान पतिस्ते ॥ ३२ ॥ से मं एगाए पटमबरबैहबार एरोण व बचसंडेण सम्बक्षी समेना संपरिखिते, सा यां पडमबरनेह्या अञ्चलीयमं उर्दू उक्तेणं एव व्युक्तयाहं विक्लंमेणं उपयारियके-वासमा परिकारिक, तीसे वं परमवरके बाए इमेबाइके बन्नादासे कनते, तंत्रहा-वयरायमा । सक्त्रकरूपस्था पत्रया नामामनियना क्लेबरा जानामविसया कलेबर-र्त्तचाडमा णाणासनिसमा स्वा जाणासनिसमा स्वसंभाडमा अंकासमा ० उन्हेरपञ्चनी सम्बद्धणामए अञ्चासके, सा र्ण परस्करकेट्या एगमेगेलं हेमकासेणं ए० गवक्स-बाहेमं ए॰ विकिणीवाकेणं ए० पंटाबाकेणं ए० मुसाबाकेणं ए० मणिवाहेणं हु॰ कणगवाकेण ए॰ स्थणकारोणं ए॰ पटमवारोणं सन्दर्शी समंता संपरिसिता. ते यं जासा तवजिञ्जलंबसगा आव निकंति । तीसे जं परसवरनेत्रसाए तत्य तत्व से २ तहिं तहिं बहवे हमसंबाहा जान उसमसंबादा सम्बर्गकाममा अच्छा जान किल्या पासाईया जान वीदीको पंतीको बिहुणाण क्याको से केन्द्रेणं शंते ! दि शुक्कर-पदमवरवेद्या पदमवरवेद्या ? गोयमा ! पदमवरवेद्वाप ण तत्व क्षा हेरी २ तहिं तहिं नेस्थास नेस्यामहास म नेस्यफलप्स य नेस्यपुर्वतरेस य जिस क्षेत्रवाहास क्षेत्रवासिस क्षेत्रपुरंतरेस स्रेस स्रेसहेस स्रेपकरस स्रेपुरं-हि परचेत्र परसवाहास परसपेरंदेस प्रवस्तुपंतरेस बहुवाहं उपसार पडमाई क्षेत्राहं मलिनाई द्वाराहं सीर्विवाहं पुंत्रशिवाहं सहापुंत्रशिवाहं सवस्ताहं सहस्त-क्षाहं सम्बद्धणासमाहं मण्डाहं - पविस्ताहं सहया वाशिकतासमापाई कणात इं नवाजसो ! हे एएगं बहुवं नोकाः ! एवं कुक्-पटनवरनेस्वा चटनवरनेस्या । ममार्काक्षा में संवे ! कि ग्रासवा कसासवा ? योगमा ! हिम. सामस्या सिय वासवा । वे केम्ब्रेस संते ! एवं कुन्त-तिस सासवा सिव असासवा ! सोयमा ! पहुनाएं सावना, काएकनेहिं गेवपकनेहिं सापलनेहिं कालनावेहिं वालसमा,

٤

से एएणहेणं गोयमा ' एवं बुक्ड सिय मासया निय अमानया । यडमर्वरकेखंड णे भेते ! कालओ केविषरे होड़ ! गोयमा ! ण क्यांवि णासि ण क्यांवि णासि ण -क्यावि न भविस्सइ, भूविं च भवइ य भविस्सइ य, धुवा णिवया सासवा अवस्वा अन्वया अवद्विया णिचा पत्रमवरवेद्या । मा णं पत्रमवरवेद्या एनेणं मणसंदेणं मन्त्रओं समंता संपरिक्सिता। से वं बणसेंडे इंस्काई हो जीवणाई वक्कवारूवि-क्खंभेणं उत्तवारियालेणममे परिक्लेवेणं वणसंडवकाओं भाषियक्त्री जान विहरेति । तस्य णं उवगारियालेजस्य चउद्दिसं चनारि तिसीवाणपदिग्यमा पण्याना वश्यको तोर्णः झया छन्।इन्छन्। तस्य णं उषयारिबालयणस्य उर्वारे बहुसमरमणिजे मुमिभाने पण्जेत जाव सणीर्ण फासो ॥ ३३ ॥ तस्स ण बहुसमरमणि अस्य सूमि-भागस्स बहुमञ्ज्ञदेसभाए एत्य णं महेगे मूलपासायवहेंसए प्रणाने, से णं मूलपा-सायवर्डिसए पंच जीयणसयाई उन्ने उचनेणं अन्नाइजाई जीयणसयाई विक्संभेणं अन्भुरगयस्तिय वण्णओ भूमिसानो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाषियध्यं अहत मंगलगा सया छनाइच्छता । से णं मूलपासायवर्डेमने अञ्चेहि चउहि पासायवर्डे-सएहिं तयकुत्रनप्पमाणमेतिहिं सञ्चओ समंना संपरिखिते, ते णं पासामवर्डेसगा अहाइजाइं जीयणसयाहं उन्नं उन्नतेणं पणवीसं जीयणसयं विक्संतिणं जाव बच्चको ते णं पामायविद्यसया अण्येहि च उहिं पासायविद्यस्पिहं तयसूचनप्पमाणसेतेहि सध्यओ समंता संपरिखिना, ते णं पासायवर्डसया पणवीसं जीयणसर्व उर्ष उन्ने न बासिंड जोयणाई अद्यजीयणं च विक्संभेणं अब्सुरगरमृशिय व्याची भूमिनागो उल्लोको सीहासर्ण सपरिवार मानियन्वं अङ्गढ्ढ संगलना अवा स्ता-इच्छन। ते णं पासायवडेंमगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयहुवसपमान-मेतेहिं सम्बओ समंता संपरिक्सिता, ते ण पासायवर्डसमा बासहिं जीयणाहं अढ जोयणं च उष्टुं उष्टतेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च विक्कंमेणं क्लबको उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं पासाय • उवरिं अहुद्ध मंगलगा सया छनास्छता ॥३४॥ तस्य णं मूलपासायवर्डेसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं गृत्य णं सभा सुद्वस्मा पण्यता, वृतं जोयणसर्व आयामेण पण्णासं जोयणाहं विकलम्मणं बावनरिं जीयणाहं सर्व उच्हीणं अणेगस्तम्भ...जाव अच्छरगण...पासाईबाः । सभाए में ग्रहम्बाए विविक्ति राजी दारा पण्णाता, तंजहा-पुरत्थिमेणं दाहिमेणं उत्तरेणं ते णं दारा सीलस जीवणाई उर्दू उचनेणं अह जोगणाई विक्खम्मेणं तावह्यं चेव प्रवेतेणं सेवा वर्कमक्ष्मिकागः जाव वणमालाओ, [तेसि मं दारामं उवरि अद्भुद्ध महत्वमा सवा स्थाहरूता] तेसि णं दाराणं पुरको पत्तेयं पत्तेयं मुद्दमण्डवे पण्णते, ते वं मुद्दमण्डवा एपं जीवणस्व

बाबामेणं पण्यासं जोबनाइं विक्संभेणं साहरेगाई सोलस जोवनाइं उद्धं उपरोणं क्ष्मको सभाए सरिसो, तिसि णं मुहमण्डवाणं तिदिसि तको हारा पण्णाता, तंजहा-परियमेणं वाहिनेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोकस जीवनाइं उद्वं उचतेणं अह जीवजाई विक्यंतिजं सायहर्वं चेव परेसीमं सेवा वर्षानगर्विधाना जाद बणमालाओ । तेलि णं मुद्दमंडवाणं भूमिमाना उह्नोया, तेलि णं मुद्दमंडवाणं उपरि अद्भुद्ध सङ्गलमा श्रमा छताइच्छता ।] तेथि वं सुद्द्यंडवावं पुरक्षो पत्तेयं पत्तेयं पेन्छाभरमंडवे पम्मते. महमंडबवनान्यमा जाव दारा भगिमामा बहोया । तेसि मं बहसमरमणि जाणं भूमिमागाणं बहमजसदेसमाए परोयं परोवं वहरामए अवसादए पण्यते. तेसि णं वयदामदाणं अवसाडमाणं महस्त्रक्षदेसभाए पत्तेवं पत्तेवं मिनपेदिया पणाता. ताओ मं मणियेदिवाओ अह जोवणाहं आवायविक्तंमेमं चतारि जोवणाहं बारहेलं सम्बाधिमाईओ बाच्छाओ जाब पहिस्ताओ, तासि वं मनिपेडियाणं उर्वीरे पत्तेवं पत्तेवं सीहासणे पण्यते. हीहासयकण्यतो सपरिवारो, वेसि णं पेन्छा वरमंदवाणं उवरि बहुह मंगलया सथा छताइछता, तेसि यं पेच्छावरमंडवाजं प्रत्थो पतेयं पतेयं मिषपेडियाओ परणताओं. ताको णं समिपेडियाओ अद जोसजाई सामामविक्संभेणं क्तारि जोवगाई बाडरेणं सम्बयमिनईको सन्धाको बाब परिस्थाओ, ताति मं मिनिपेडियाणं उनीरं परोयं परोयं महिंदजाया पञ्चला हे वं महिंदजाया सहिं जीवगाइं उद्ये उपतेर्थं अद्यक्तेषं उच्चेद्वेषं अद्यक्तेषं विरुप्तिणं करास्य "सिहरा पासाबीया ४ । तेशि यं महिंदणांबाणं उपरि शह्य अंगलमा श्रमा छताङ्ख्या तेति णं सहिदणानाणं पुरको पत्तेयं पतेयं जंदा पुरुविक्रीको पण्णताओ, ताओ र्ण पुरुवारियोओ एगं जोडणसर्व सामानेमं पुण्यासं सोमणां विक्यांसेणं दस जोदणाई उन्नेहेमं अच्छानी जाद बन्नानी-एमइनानी उद्धार्समं प्रमातानी. पत्तवं पत्तवं पत्तवस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्था पत्तवं पत्तवं वणसंस्थारिकातास्था तावि सं र्णदार्थं प्रकारियोणं तिथिसि तिसोबायपविस्थाना प्रणाता. तिसोबायपविस्थानाणं बन्नको, तोरणा सवा सताहसता । सभाए यं एकस्माए सदयासीसं सनोगकिया-राष्ट्रसीको पणकाको, संबद्धा-पुर्तिकोणं सोकससाहरहीको प्रवृत्विकोणं सोकस-साहरतीको वाशिक्षेत्रं अवसाहरतीको उत्तरेषं कासाहरतीको, तास वं सर्वोत्त्रकियास वक्षे प्रकारपामका पत्रमाः प्रकात, तेस् वं सुवक्षरपामपुत्र- क्रामेस अस्वे करावया भागवंता क्याता, तेष्ट्र वं बक्तवासूह मानदंतपूर किस्तुसकाक्यादिन महरामकावा विदेशि, सवाए में सहम्माप अववादीय गोसामहिनासहरतीको प्रकारको, यह अनोप्रक्रिक आव प्रामहत्त्वम्, तेस यं प्रामहत्त्वस् वाहे रवसस्त्रः रिक्रमा पण्णता तेमु णं रययामण्यु सिक्लोसु बहुवे वैठलियामह्याओ धूनुवाहिकाकी पण्णनाओ, नाओ णं धूवधिद्याओं कालागुरुपक्र जाव विद्वंति । सभाए व मुहम्माए अंतो बहुनसरमणिजे मूमिभागे पण्णते जाब मणीहिं उबसीमिए मिकासी य उहाेओ य, तस्स णं बहुत्यमरमणिकस्स भूमिभागस्स बहुमन्सदेसभाए एस्य णं महेगा मणिपेडिया पण्णता अह जोयणाई आवासमिक्संमेण चनारि जोनवाई बाहक्रेणं सव्वमणियाई अच्छा जाव पडिसवा, शीसे मं मणिपेडियाए तबीरे एत्य मं महेंगे सीहासणे पण्यते सीहाराजवण्यको सपरिवारो । तीसे जं विदिसाए एस्व जं महेगा मणिपेहिया पण्णता अद्भ जीयणाई श्रावासविक्लंमेणं चतारि जीयणाई बाह्हेणं सव्वयमिमया अच्छा जाब पडिस्वा, तीसे वं मृतिपेद्धियाए उवरि एस्ब णं महेगे देवसयणिजे पण्णते, तस्य णं देवसयणिजस्य इमेग्रास्वे वण्णावासे पण्णते, तंत्रहा-णाणामविमया विषया सोविषया पाया णाणामणिमयाई पायसी-समाई जंबुणयामयाई गत्तगाई वहरामया संबी जानामणिमए विके रक्यामई तुसी लोहियक्समया विव्योवणा तद्यविज्यमया गंडोब्ह्यणया से पं सद्यविज्ञ सार्क्रिंगण-वहिए उमओ बिन्नीयणे दुहलोडण्यए मञ्चे णयांमीरे गंगापुर्क्षणवालुयाउद्दास-साक्ष्मिए सुविरइयरयत्ताणे उवन्त्रियस्त्रोमदुगुक्रपष्टपडिच्छायणे आईणगरूयक्रूरणवजीय-त्लफासमउए रत्तंस्रवर्षवुए सरस्ये पासावीए "पडिरूवे ॥ ३५ ॥ तस्स वं देवस-यणिजस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेडिया पण्णता, अह जीयणाई आयामवि-क्खंभेणं चतारि जोयणाई बाह्रहेणं सन्वमणिमई जाव पडिस्का, सीसे चे मिक पेन्द्रियाए उवरि एत्थ णं महेने सङ्गण् महिंद्रज्ञाए पण्यते सिद्धे जीवजाई उर्चु उच्चतिर्व जीयणं विक्संभेणं वहरामए वहल्द्वसंठियद्वसिन्द्वि जान परिकृते, उनरिं अद्वर्ड मंगलमा समा छताइच्छना, तस्य यं सहस्माईद्वस्थस्य प्यस्थितेयं एत्व सं स्रियाभस्स देवस्स जोप्पाके नाम पहरणकोरी पचते सम्बन्धरामम् अच्छे जान पित्रहे तत्थ णं सूरियामस्य देवस्स फल्लिहरगणवामगणगावणुष्यसुद्धा बहुवै पहरणरयणा संनिक्तिता विद्वंति, उजका निसिया युतिक्सवारा पासावीया ...। सभाए कं सहस्माए उबरि बहुह संगलमा समा छताइकाता ॥ १६ ॥ समाप् णं सहस्माए उन्तरपुरिवमेणं एत्य णं महेगा उचवायसमा प्रणाता, बहा समाप् सुहम्माए तहेव जाद मानिपेडिया मह जोयणाई देवसवनित्र सदेव सवनि-जनमाओं अहुद्व मेंगलमा स्रया प्रताहरूता । तीरी में उपनाबसमाय उत्तरपुरतिय-मेणं एत्थ णं महेने हरए पण्यति एनं वोज्ञणसर्व आवाजेणं पण्यासं जोजकार्व विक्यंभिणं दस जीवणाई उन्तेहेणं सहेव से मं इरए एकाए एउमबरकेश्वाद स्वेत

वजवंदेण सम्बद्धी सर्वता संपरिविधारी । तस्य मं हरवस्य विविधं तिसोवाणपदि-कामा प्रमुख । तस्स में इरमस्म उत्तरप्रतियोगं एत्व में महेगा कमिसेगसमा फनता. सहस्मागमध्यं जाव गोमाणसियाओं मनिपेतिया सीदासर्व सपरिवारं जाव बामा चिह्नति, तत्य पं सुरियामस्य देवस्य सबह अभिसेवमंड संगिकिते चिह्नह्, अस्ट भेगलमा तहेव । तीसे में अभिसेमध्यार उत्तरपरिवनेषं एस्य में अलंबारि-बसमा पणता जहा समा बहुम्मा. ममिपेडिया यह जीवणाई सीहासणं सपरिवारं. तत्व णं सुरिवामस्य देवस्य सुबहु असंकारियमंडे संनिधिते चिह्नह, सेसं तहेव, वीसे मं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्यमेमं एत्य मं महेगा वचसायसमा प्रणाता. जहा उक्तायसमा जान सीहासणं रापरिवारे सन्तिमेहिया सद्ध मंगरमा ०. तत्व यं सरियागस्त देवस्य एस्य महेने पोत्यवरवणे संविधिकते चिद्रहः तस्स णं पोरवयर-बगरस इमेबाक्षे बण्यावासे पण्यते, तंजहा-दिहासईको कंत्रियाको तविध्यसए होरे माणामणियए गैठी रक्णामयाई पतागाई केरकियमए किप्पासणे विद्यासण साहणे तक्षिजमई संकात दिहामई मही पहरामई केटबी दिहामयाई अक्बराई प्रस्मिए केन्से । वरसायसभाए मं उवरि अद्युद्ध संगळना, दीसे मं ववसायसभाए उत्तर-प्ररिक्तिणे एत्य के नेदा पुरुवारिणी क्लाला इरवारिसा ॥ ३० ॥ तेणं कालेणं तेणं समाणं सरिवामे देवे अहणोवनणानित्य चेव समाणे पंचविद्यार प्रजतीए वक्तांआवं गच्छः तंत्रहा-आहारपक्तांए सरीरपक्तांए इंदिवरकतीए आण-पाणपजातीए भारतमणपजातीए. तर जं से सरिवासे देवें सर्वाणजानो अन्सहेर २ ता उक्वायसभाओ प्रतिकतिकेनं हारेणं निमान्छह, जेनेव हरए तेपेव उद्याग्यक २ ता हरवं अगुपराहिणीकरेमाणे २ पुरस्थिमिक्केणं सोर्प्यणं अगुपविसह २ ता पुरस्थिमिक्केणं तिसोबामपरिस्तवएणं प्रवोक्तड २ ता जलावगार्ड जलसञ्जयं करेड २ ता जलवित्रं करेड २ ता कलामिसेवं करेड २ ता आयंते चोक्चे परमस्डिभए हरवाओ क्वोत्तरह २ ता जेनेव अभिरोजसभा तेनेव उवागच्छा तेनेव उवागच्छिता अभिरोजसभं अनु-व्याहिणीकरेंक्यणे अध्ययवाहिणीकरेमांचे प्ररत्विभित्रेणं दारेणं अध्ययविसद अधु-योगिता जेवेव बीहासचे तेवेव उवागच्छ उवागच्छिता बीहासण्यरगए प्रत्याधि-मुद्रे सिक्सके । तम् वं सुरिवासस्य देवस्य सामाणिवपरियोषवक्ता देवा आसिओ-विए देव सहावेति सहाविता एवं वयावी-खिप्पामेव मो । देवाणुष्पिमा ! स्रिजामस्स बेवस्स सहार्ष सहर्ष सहर्ष विवक्तं इंदरिभसेयं उद्भवित । तए में ते व्यक्तिमाया देवां सामाविक्पहिसोवकोही देवेडि एवं प्रशा समागा हक जाव हिक्का करमक्परिया-हिनं क्रिस्तावर्तः मध्यम् अंवति पहु 'शुनं देवी । तह' ति आमाद विषयुर्व वयवं

पिंड्युणेति पिंडियुणिना उत्तरपुरत्थिमं दिसीमार्गं अवक्रमेति उत्तरपुरत्थिमं विद्धी-सार्ग अवक्रमिना वेउ जियससुरथाएण समोहणित समोहणिता संकेजाई जीवणाहे जाव दोखं पि वेडव्यियसमुख्याएणं समोहणिता अद्भाहस्यं सोविधवाणं क्रांसार्ण अद्भाहस्सं हृप्यम्याणं कलसाणं अञ्चलहस्सं मिश्रमशाणं कलसाणं अद्भलहस्सं सुकण्य-रुपामगाणं कलमाणं अदसहस्यं सुरक्षमिमगाणं कलसाणं अदसहस्यं रूपमिमगाणं कलताणं अदसहत्यं सवकारूपमित्रवाणं कलसाणं सहसहत्यं मोमिजाणं कलमाणं एवं भिगाराणं आवंसाणं थालाजं पाइंचं सुपद्धांनं बायकरगाणं रक्षणकरंडगाणं सीहामणाणं छताणं चामराणं तेह्नसमुम्माणं जाव अंत्रणसमुम्माणं स्थाणं विज-व्यंति विज्ञविकता से सामाविए य वेडब्विए य कलसे य जाव झए य निर्व्हति विण्हिला सुरियामाओ निमाणाओ पितिनसमंति पितिनसमिता ताए उक्तिद्वाए चक्काए जान तिरियमसंखेळाणं जान बीइवयमाणा बीइक्यमाणा जेणेन खीरोदयसमुहे तेणेव उवागच्छेति उवागच्छिता खीरोयां गिण्डंति जाई तत्यूप्पलाई जाव समसहस्मपनाई ताई निष्हिति विष्टिता खेणेब प्रकारीयए समेरे नेणेब उदागर्खित उवागच्छिता पुरुखरोदयं गेण्डंति निण्हिता जाई तत्थुप्पलाई जाब सयसहस्सपताई ताई गिण्हंति निण्हिता जेणेव समयक्षेते जेणेव भरहेरवयाई वासाई जेणेव मागहवरदामपमासाइं तित्याइं तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छता तित्योद्धां गेण्डंति गेण्डेता तित्यमद्दियं गेण्डंति गेण्डिता जेणेव गंगासिंधरमाइमवर्डको सहान्यंको तेणेव उवागच्छति उवागच्छिना साँकलोदगं गेव्हंति सिक्लोदगं गेव्हिता उनको-क्रम्मिट्यं गेण्हंति महियं गेण्हिला जेणेव चुड्रहिमवंतसिहरीवासहरपम्बद्धा तेणेव उदागच्छंति तेणेव उदागच्छिता दगं गेण्हंति । सम्बत्धरे सम्बद्धपे सम्बन्धे सम्बन्धे सम्बोसहिसिदस्थए गिण्हंति गिण्हिता जेजेव पडमपुंडरीबदहे तेजेव उदानकांति उवागच्छिता दहोदगं गेण्हंति गेण्हिता आई तत्य उप्पलाई आव सबसहस्तपताई ताइं गेण्हंति गेण्डिता जेणेव हेमवमएरवयाइं वासाइं जेणेव रोहियरोहियंसायुक्ण-कूलरूप्पकृताओं महाणईको तेणेव उनागच्छति, सिक्कोद्यं गेव्हंति गेव्हिसा उसानोः क्लमहियं निष्हंति निष्हिता जेणेन सहावहविसनावहपरियाना नहविसन्वक्षमा विजेष उवागच्छन्ति उवागच्छिता मन्यत्यरे तहेव जेवेव महाहिमवंतस्यिवासहरमञ्चा तेणेव उवागच्छन्ति तहेव जेणेव महापटसमहापुंडरीयहहा तेणेव उदागचांति उवागच्छिता दहोदमं मिण्डन्ति तहेब जेणेव हरिवासरम्मगवासाई जेणेव इरिवास-नारिकंताओं महाणहंको तेजेव उवागच्छति तहेव जेकेव पंथावहमासकंतपरिकाला वहवेयकुपव्यया तेणेव तहेव जेणेव जिसक्णीसमंत्रवासभर्यम्यका तहेव जेलेक

तिमिक्किमारिहहाओं तेमेव उनागच्छेति उनागच्छिता तहेन जेमेव महाविदेहे वासे केंगेव सीयासीओयाओ महाणईओ तेंगेव तहेव केंगेव सम्बन्धवहिविज्ञा जेनेव सन्त्रमागहबरदामपभासाइं तिरबाई तेनेव उदागकीत तेनेव उदागन्तिमा तिस्पोदगं गेण्डंति गेण्डिसा सर्वातरणईजी जेपेष सम्बद्धस्यारपञ्चया तेणेव उनामच्छति सम्बद्धारे नहेव जेणेन मंदरे पत्नए जेलेन भट्टमालनणे तेणेन उनामच्छेति सम्बद्धारे सम्बद्धारे सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः जेणेव शंदजवणे तेणेव उवावकांति उवागिकता सन्वतंत्ररे जाव सन्वोसक्रि-सिद्धस्यत् य सरसगोसीसनंदणं निष्टंति गिण्डिता जेनेव सोमणसब्यं तेथेव उपागरकंति सम्बद्धारे जाव सम्बोसहिसिद्धत्यए य सरसगोसीसबंदणं च दिव्यं च समणदामं निर्मात निष्कता जेणेव पंडगवये तेणेव उदायकांति उदायन्तिकता सम्बद्धरे जाव सम्बोसिहिसिहस्यए व सरसं च गोसीसचंदणं दिव्यं च सम्बन् डामं वहरमलगद्यनंषिजगन्वे निष्हन्ति विकिता एगको मिलावंति मिलाइता ताए उक्रिद्राए जाव जेणेव सोहरूने कन्ये जेणेव सरिवाने विमाणे लेणेव अभिसेयसभा जेगेव सरियामे देवे तेथेव उवायकांति छवागिकता सरिवामं देवं कर्यकपरिवाहियं सिरसायतं मत्वए अंत्रसि कर् जएणं विज्ञएणं बद्धाविति बद्धाविता तं सहस्थं महर्ष महरिहं विउसं इंटामिसेयं उक्टवेंति । तए वं तं सरिवासं हेवं चलारि सामानियसाहररीको चनारि अगगगहरीको सपरिवाराको तिक्वि परिसाओ सत अणियाहिन्द्रणो जान अनेनि नहचे सरियाभनियाणनासिनो देना य देनीओ य लेक्नि सामाविएडि य बेउव्यप्ति व बरकमलयङ्काणेडि य सुरमिकरवारिपरिप्रकृति चंदण-कयन्त्रिएहिं आविद्यकंडेग्रेणेहिं परम्पलपिहानेहिं प्रकृत्तकोयलकरयस्प्रदेशहिएहि अहसहस्सेणं सोवजियाणं कलसाणं जाव अहसहस्सेणं भोमिजाणं कलसाणं सन्दीट-एडि सम्बमियाहि सम्बद्धरोहि जाद सम्बोसहिसिद्धरपएडि व सम्बद्धीए जाव बाइएकं सहया सहया इंदामिसेएकं अमिसिनंति । तए कं तस्स सुविधागस्स देखास महया शहया ईलामिलेए बहुमाचे अप्पेयह्या देवा सुरियामं विमाणं अधीययं नाहमहिनं पविश्तकतिमरेणविषासणं दिव्यं सुर्रासगन्धीवगं वासं वासंति, अप्पेगडमा देश इसरयं नहरवं महरवं उनसंतर्यं परंतरवं करेंति, अप्पेगहना देश सरियामं विमाणं आविवर्धयाञ्चलेषां क्षारंगद्वरत्वंतराक्णवीद्वियं करेति, अप्पेगड्या देवा सहितानं विवासं वंबाइसंबक्तिमं करेंति, अप्येगहमा देवा स्रियानं विभागं णाणा-विद्यागोलियं अवपदागाडपदागमंत्रियं करेति, अप्येगह्या देवा स्रीवारं विमाणं कारकोदकानियं गोहीससरसर्गानंबणदहरविष्णपंत्रीक्षेत्रकं करेति, अप्येणदना देवा

सरियामं विमाणं उदन्त्रियनंद्यकलसं चंदणवडसुक्यनोरणपरिषुवारवेनमानं क्टेंकि, अप्येगड्या देवा स्रियामं विमाणं आसत्तोमत्तविउत्तवहत्वधारियमह्नदामकलावं करेति, अप्येगऱ्या देवा स्वियाभं विसाणं पंचवण्णसुरभिमुक्कपुरफपुंबोबयारकांजयं करेंति, अप्येगड्या देवा सरियामं विमाणं कालागुरुपवरकुंदुरुक्षनुरुक्ष ज्वमधमवंत्रवंषु दूर्याभि-रामं करेंति, अप्पेगइया देवा सरियामं विमाणं सुगंधवरगंधियं गंधवस्मियं करेंति. अप्येगद्रया देवा हिरण्यवासं वासंति, सुवण्यवासं वासंति, रयमबासं वासंति, वहन-बासं० पुरम्बासं० फल्यासं० मह्नवासं० गंबदासं० चुण्यवासं० आभरणवासं वासंति, अप्पेगइया देवा हिरण्यविहें भाएंति, एवं सुवसविहें भाएंति, रवणविहें पुण्कविहिं फलविहिं मलविहिं चुण्यविहिं बत्यविहिं गंधविहिं०, तत्य अध्येगह्या देवा आभरणविष्टिं भागंति, अप्पेयद्या चडव्यहं बाइतं वाइंति-ततं वितनं घणं धुसिरं, अप्पेगह्या देवा चउन्तिहं गेयं गायंति, तं०-उक्तिसत्तायं पायतायं मंदायं रोह्यावसाणं, अप्पेयद्या देवा दुवं नर्हावहि उबदंसित अप्पेयद्या विलंबियणहिल्हि उवदंसित अप्येगड्या देवा दुवविकंबियं जहविहें उबदंसित, एवं अप्येगड्या अवियं नर्हविहिं उवदंसेति, अप्पेगङ्या देवा आरमङं भसोलं आरमङमसोलं उप्पायनिवाय-पवत्तं संक्रुन्वियपसारियं रियारियं भंतसंभंतणामं दिन्वं णहिवहिं जववंसित, अप्पेगइया देवा चडब्बिहं अभिषयं अभिषयंति, तंत्रहा-हिट्टंतियं पाइंतियं सामंतोविषकाइयं लोगअंनोमज्झावसाणियं, अप्पेगडया देवा बुकारेति, अप्पेगइया देवा पीजिति, अप्येगइया लासंति, अप्येगइया इकारेंति, अप्येगइया विशंति, तंडवेंति, अप्येगइया वर्गात अप्दोर्डेत, अप्पेगइया अप्दोर्डेत वर्गात, अप्पे॰ तिवई छिदंति, अप्पे॰ गड्या इसहेसियं करेंति, अप्पेगइया इत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगइया रहचय-घणाइयं करेंति, अप्पेगइया हयहेसियहत्यगुलगुलाइयरहघणप्रणाह्यं करेंति, अप्पेगइया उच्छलेंति, अप्पेगइया पोण्डलेंति, अप्पेगइया उक्तिहियं करेंति, स० उच्छलेंति पोच्छलेंति, अप्पेगइया तिकि वि, अप्पेगइया उक्वेति, अप्पेगइया उप्पर्यति, अप्पेगइया परिवयंति, अप्पेगइया तिश्विव, अप्पेगइया **तीइमायंति**, अप्पेगङ्या दहरयं करेंति, अप्पेगङ्या भूमिचवेडं दलयंति, अप्पे॰ तिकि वि, अप्येगह्या गर्जित, अप्येगह्या विज्ञुयायंति, अप्येगह्या वासं वासंति, अप्येगह्या तिनिवि करेति, अप्येगह्या जलंति, अप्येगह्या तवंति, अप्येगह्या यतंति, अप्येगइया निश्चि वि, अप्येगइया इकारेंति, अप्येगइया शुकारेति, अप्येगइया धकारेति, अप्पेगह्या साई साई नामाई साहेति, अप्पेगह्या चतारि वि, अप्पेगह्या देवा देवसिवार्य करेंति, अप्पेगहमा देवुनीयं करेंति, अप्पेगहमा देवुनीय

करेंसि, अप्येगहवा देवा बह्दहर्ग करेंसि, अप्येगहवा देवा बुह्दहर्ग करेंसि, अप्ये-गहमा चेलुक्केन करेंति, अप्पेगहमा देवसिक्समं देखुकीमं देखुकिनं देवसहकहरां देवदृहदुहमं चेलुक्केषं करेति, अप्येमहमा उप्पलहत्वयमा जाव समग्रहत्त्वपत्तहत्व-गया, अप्येगह्या प्रक्रसहत्यमया बाव संबहत्यगवा हहतह जाव हिवसा सव्वकी नर्मना आहापेति परिधारेति । तए वं तं स्विनामं देवं कतारि सामानिवसाइरखीओ जाव मोलम आयरक्कदेवसाहरसीओ अन्ते व बहुदे स्वैतामरायहाणिकस्वन्या देवा व देवीओ य सहया सहया इंडासिसेगेण असिसिर्वति असिसिविता परेशं वर्त्रशं करमरूपरिमाहियं विरसावतं मस्वए अंवितं ऋहु एवं वसासी-क्रम जस नंदा ! क्रम जब महा : जम अब भंदा ! महं ते, अखिबं जिलाहि, जिबं च पाडेहि, जियमजहे वसाहि इंदो इव देवाणं वंदी इव ताराणं वसरो इव अधुराणं वरणी इव शावाणं मरहो इव मणुवानं बहुई पतिजोबमाई बहुई सामहोबमाई बहुई पतिबोबमसाबरो-वमाई चडण्डं सामाणियसाहस्तीचं जाव आवरवचावेवसाहस्तीचं सुरियामस्स विमाणस्य अकेसि व बहुणं सूनियामविमाचनासीचं वेदान य देवीच यं आहेदचं जान महया महया कारेमाणे पाकेमाणे निहराहितिकहु अय अब सह पटेंब्रेंसि । तए में से सरियाने देवे महया महया इंदानिसेनेम अभिनित समाचे अभिनेसमाओ पुरस्थिमिक्षेपं दारेणं निमाच्छा निमाच्छिता जैनेन आहेकारियसम्। तेनेन उदागस्त्रक उवागच्छिता अलंकारियसमं अञुज्यसाहिजीकरेमाणे २ अलंकारियसमं पुरस्विभिन्नेपं दारेणं अगुपविसा अगुपविसाता जेनेव सीहासने तेलेव उवागन्तक सीहासमब्दगर प्रत्यासिग्रहे संनितने । तए ण तस्य सरिवामस्य देवस्य सामाविक्यसिनोक्वनमा अलंकामियमंडं उबहुर्वेति, तए णं से स्वियामे देवे तप्पडमबाए प्रस्कर्मात्वाए खरमीए गंधकासाईए गायाई खहेर खहिला सरसेणं गोतीसबंदनेवं यादाई अवस्थित अगस्तिपता नासानीसासवायबोउनं चक्खारं वक्षप्रविस्तुतं हेमकासापेसवाहरेशं षक्तं दशमक्षियम्त्वमां आगासफालियसमपमं दिव्वं देववूसज्ञकं नियेतेह निर्यसेंगा हार विवादेड विवादेशा अदहार विवादेड २ ता एमावर्कि विवादेश विवादिश्ता मताबार्ति पिणदेड विश्वदिशा रसमावार्ति विश्वदेड विश्वदिशा एवं अंगवार्त केकराई करगाई सहिवाई करियलमं दसमहानेलो बच्छरात्तर्ग सरवि कंटमरवि पासंबं कुंडसाई ब्हाराणि गठडं मिसाहेड् गाँवमनेडिमप्रिमसंबाइनेशं चडिनहेचं महेणं मापश्यक्तां वित्र आप्याणं अलंकिसंविभृतियं करेड करिता दहरमलब्रहागंध-गंडिएडि गावार अर्थावेड विम्बं च समगतार्थ पिनदेड ॥ ३८ ॥ तए वं से सरियाने देते देशालकारेण सामानंत्रारेण आसारकारकारेण बस्यालकारेक चटन्त्रिकेण

अलंकारेण अलंकियविभृतिए समाणे परिपुण्यलंकारे सीहासणाओं अन्युद्धेर अन्यु-द्विशा अलंकारियमभाओ पुरत्थिमिलेणं दारेणं पिडणिक्खमः पिडणिक्खमिना जेणेव बबमायसभा तेषेव उवागस्टइ वबसायसमं अगुपयाहिणीकरेसाणे अगुपयाहिणी-करेमाणे पुरस्थिमिक्षेणं दारेणं अणुपविसद, जेणेव० सीहामणवर्गए जाव सर्वासको । तए फं तस्स सुरियाभस्य देवस्स सामाणियपरिसोववक्या देवा पोत्यवरव्यं उवर्णित्. तह थे से सुरियामे देवे पोत्ययस्यणं निष्हड निष्टिता पोत्थयस्यणं मुबद मुहत्ता पोत्ययरयणं विहाडेइ विहाडिना पोत्ययरयणं बाएइ पोत्ययरयणं वाएना धान्मयं ववनायं ववसइ ववसइना पोत्यवस्यणं पिंडनिनिकावइ सीहासणाओं अञ्मुद्धेह अन्युद्देता ववसायसभाओ पुरियमिक्षेणं दारेणं पहिनिक्खामिता जेणेव सभा मुहम्मा तेणेव पहारेत्य गमणाए । तए णं से सूरियामे देवं चलाहे सामाणिय-साइस्सीहिं जाव सोलसिंह आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अकेहि य बहुहिं सरियामिंव-माणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि दंवीहि य सदि संपरिवुडे सम्बद्धीए जाव नाटयरवेण जेणेव सभा गुहम्मा तेणेव उवागच्छइ समं गुहम्मं पुरस्थिमिहेणं दारेणं अणुपविसङ् अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छ्य सीहासणवरगए पुरस्थाश्रिमुहे ं सण्णिसण्णे ॥ ३९ ॥ तए णं तस्स मृरियाभस्स देवस्स अवस्तरंणं उत्तरपुरिधमेणं दिसिमाएणं चतारि सामाणियमाहस्सीओ चउनु महासणसाहस्सीयु निसीयंति, नए णं तस्म स्वियामस्स देवस्स पुरत्थिमिकेणं चनादि अस्ममहिसीओ चउस भहासणेसु निसीर्यति, तए णं तस्स स्रियाभस्स देवस्य दाहिणपुरस्थिमेणं अध्य-नरियपरिसाए अड देवसाइस्सीओ अडुस भहासणसाहस्सीस निसीयंति, तए श्री तस्स सूरियामस्स देवस्स दाहिणेणं मज्ज्ञिमाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ दससू भहासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स स्रियामस्स वेवस्स वाहिकपकाव्यकेणं वाहिरियाए परिसाए बारस देवमाइस्सीओ बारसस महासणसाइस्सीस निसीबीत, नए णं तस्स सुरियाभस्म देवस्स प्रवास्थिमेणं सत्त अधियाहिवश्णो सत्तहि भहासणहि णिसीयति, तए णं तस्स स्रियाभस्म देवस्स चडिति सोलस आयरमखदेवसाहस्त्रीओ मोलसाई भद्दासणसाहस्तीई विसीमंति, तंत्रहा-पुरत्यिमित्रेणं चतारि साहस्तीओ ... ते णं आयरक्या समद्यद्विम्मयस्यया उप्योक्तियसरासमपद्विया विमद्वनेनिजा आनिद्धविमलकरचिभपद्या गहियासहप्पद्दरणा तिगमाणि तिसंधियाई वयरामयकोडीन धण्हं परिज्ञ पडिवाइयकंडकलावा मीलपाणिको पीवपाणिको दत्तपाणिको क्राव-पाणिणो चारपाणिणो वस्मपाणिणो दंडपाणिणो समापाणिणो प्रसपाणिणो नीसपीय-रत्तवाववात्त्वन्मदृंडखम्यपासवरा बायरक्खा रक्खोवम युता युत्तपाकिया बुता

बुलवालिया प्लेबं फ्लेयं समयको विणयको किंद्ररम्या विद्वन्ति ॥ ४० ॥ स्रिया-अस्स में अंते ! देवस्स केंबडवं कालं ठिडे पण्णता ? गोबसा कतारि पण्लिओवमार्ड दिई पेण्णता । सुरियाभरस यं अंते ! देवस्त सामानियपरिसोक्कणमाणं देवाणं केवहमं कार्छ ठिई पण्यसा ! गोयसा ! चत्तारि पक्षिजोयमाई ठिई पण्यता, महिन्हिए महजूरए महत्त्वके महाबारी महासोवको महाजुआर्गे सुरिवासे हेवे, अहो यं अंते ! स्रियांने देवे महिश्विए जान महायुक्तांचे 🖰 ४९ 👭 "स्रियांनेमं भन्ते ! देवेणं सा दिस्या देविही सा विस्ता देवज़ई से दिस्ते देवाणुमाने किया रहे किया परे किया अभिसम्भागए ! पुष्यभवे के आसी ! किनागए वा. को वा गोलेजं ! क्यरेसि वा गामंति वा बाब संनिवेसंति वा है कि वा दवा कि वा भोवा कि वा किवा कि वा समावरिता, करस या तहारूवरस समणस्य वा माहणस्य वा अन्तिए एगमवि आरियं धरिमयं सुक्यणं सोचा निसम्म वं में स्रिकामणं देवेणं सा दिव्या देविश्वी जाव बेबाजुमावे रुद्धे पत्ते अभिसमझागए ?"।। ४२ ॥ "गोवया" इ समजे मगढं महाबीरे भगवं गोयमं आसम्तेता एवं बयासी--"एवं बाह्य गोयमा । तेणं कार्हेणं तेणं समएणं इहेव जम्मुदीवे दीवे मारहे वाले बेडवलाटे मामं जणवए होत्या रिक्रस्थिमिक्समिद्धे । तस्य मं केद्रमानद्धे जनवष्ट् सेयविका नामं नयरी होस्या रिद्धत्थिमेयसमिद्धा जान परिस्ता । तीसे नं सेयविद्याप नगरीए बद्धिया उत्तरपरत्थिये दितीभाए एत्य णं मिगवणे नामं उजाणे होत्या रम्मे नन्यणवष्यगासे सब्बोउसपुण्य-फलसमिद्रे समसुर्भिसीयकाए छाबाए सम्बन्धे चेव समग्रवद्रे पासादीए जाव पिक्ते । तत्य मं सेवियाए नवरीए पएसी नामं रावा होत्वा, सह्या हिमवन्त जाब बिष्ठरह, अवस्मिए अवस्मिद्धे अधन्त्रक्ताई अधन्त्राणुए अवस्मापळोई अधन्त्र-प्रजाने व्यवस्मरीतसम्बाबारे अध्योग चेत्र विति क्रिपेमाचे इनक्रिन्द्रभिन्तप्रवस्य पाने चारे की सह लोहिनपाणी साहसिए उक्कमणस्थानानानिमिक्टक्वसाई-संपन्नोगबहुके निस्हीके निम्बए निम्युणे निम्मेरे निप्यबन्धाणपोसहोनवासे बहुणं क्यवन्तरायक्रीवपस्पविकारियीतिवाणं वायाए वहाए उच्छेनकाए अधन्यकेस सन्-हिए गुरुणं मी अध्यक्ति, मी बिणगं परजार, समधमाहणाणं ''सी बिणगं परजार, सकस वि व जं जजवबस्य जो सम्मं करमरवित्ति पवते ।। ४३ ॥ तस्स जं पद्सित्स रको स्रिक्कन्ता नामं देवी होत्या सुकृतास्थाविषाया (पारिणीकणको) पर्यक्षमा रका सब्दि अगुरसा अविरता हों से कवे जाव विहरह । तस्स ने पर्रासस्स रको केंद्वे पुरेत सुरितकन्ताए देवीए अराए स्थितकन्ते नामं इसारे होरवा सहमास-पालियाएं जाब पविसते । से में स्थितकन्ते क्रमारे क्षवरामा विश्वीरमा, पएसिस

रको रजं न रहं न करं न बाइणं न कोसं न कोहागारं न धन्तेस्र क जनवर्षं . व संबमेद प्युवेक्खमाणे २ विहरह ॥ ४४ ॥ तस्स णं पएसिस रखी के भाउयवर्यसए विता नामं सारही होत्या अन्ते जाव बहु जणस्स अपरिभूष सामदण्य-भेगडक्यम्बलस्थमत्थद्द्वामद्विसारम्, उप्पत्तियाम् वेणस्याम् कविश्वयाम् पारिणावि-बाए चडिन्द्राए हुद्दीए उववेए, पएसिस्स रक्ते बहुतु कबेस व कारवेस व हुतुन्वेस व क्रांनीस व गुण्डीस व रहम्सेस व निच्छएस व वयहारेस व आएच्छानेजे बेही प्रमाणं आहारे आलम्बणं नक्स् मेडिभूए प्रमाणभूए आहारभूए आक्रम्सभूए चक्कुभए सव्बद्धाणसन्द्रभूमियासु सद्भुष्यए विडण्णविद्यारे रजापुराचिन्तए साबि हीत्था ॥ ४५ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएमं कुणाला नामं जणवए होत्या, रिक्टिन-मियसमिद्दे । तत्य णं कुमालाए जणका सावत्वी नामं नयरी होत्वा विह्नशिक्ष-समिद्धा जाव पिकस्त्रा । तीसे मं सावस्त्रीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्विमे दिलीमाए कोइए नामं उजाणे होत्या, रम्मे जाव पासादीए ४ । तत्य णं सावत्वीए नयरीए पएसिस्य रक्षो अन्तेवासी जियसम् नामं राया होत्या, महया हिमवन्त जाव बिहरइ । तए गं से पएसी राया अवया कयाइ महत्यं महत्यं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं मजावेद २ ता चित्तं सारहिं सदावेद २ ता एवं वयासी---"गन्छ णं चिता ! तुसं साविध नयरि । जियसतुस्स रक्षो इमं महत्यं जाव पाहुडं उवणेहि । आई तस्य रायकजाणि य रायकिकाणि य रायनीईओ य रायनवहारा य ताई जियसक्रुणा सर्वि सयमेव पचुवेक्खमाणे विद्दराहि"निकडु विसम्बिए ॥ ४६ ॥ तए मं से किते सारही पर्एसिणा रचा एवं बुत्ते समाणे हट्ठ जाव पढिसुनेता तं महत्वं जाव पाहुवं गेण्हर २ ता पएसिस्म रक्षो जान प**डि**निक्खमह २ ता सेम्रविमं नगरि म**ामग्रेशनं सेमेप** मए गिहे तेणेव उदागच्छा २ सा तं महत्यं जाव पाहु**रं ठवेद २ सा कोडुम्बिवपुरि**से महानेइ २ ता एवं वयासी--"खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया ! सन्छतं जाव वाउदवर्षः आसरहं जुत्तामेव उबहुवेह जाव प्रथप्पिणहं" । तए वं ते कोडुन्बियसुरिता तहेव पितनुष्रिणा सिष्पामेव संस्कृतं जाव जुदसकं वाटरचन्दं आसरहं जुतामेव उदहु-वेन्नि, नमाणतियं प्रविष्यणन्ति । तए जै से विते सारही कोड्रस्थिवपुरिसाणं अन्तिए एयमहं जाव हियए म्हाए संनद्धद्धविम्यमम् उपीकिक्सरासम्बद्धिः पिणदगेवजे वद्यभाविद्यविमलवर्गियपटे गहियाउइपहरणे ते महत्वं जाद काहुँद गेण्हर २ मा जेणेव बाउरकण्डे आसरहे तेणेव उवागरख्ड २ सा बाउरकर्ट आसहर वुन्हड २ ता बहुहिं पुरिसेहिं संगद्ध जान गहिनाउहपहरवेहिं सदि संपत्तिक सकोरिण्डमह्नदामेणं छतेणं धरिजमाणेणं २ मह्या भडनस्थररहृत्वस्य स्वीक्षा

साओं शिहाकी निमान्छह २ ता सेयवियं मुक्ति मज्यांमज्येनं निमान्छह २ ता मुहेहिं बारोडी पायरासेहि नाहविकिहेरि अन्तरावासेहि क्समाने २ नेवयमक्त्य जणवयस्स मर्जामकोणं केमेव कुमाळा जववर जेमेव साबत्वी मनरी तेमेव उदागच्छ २ स सावत्थीए नवरीए मञ्जांमञ्ज्ञेषं अलुपविसङ् २ शा जेणेव जियसशुस्स रशो निहे, जेणेव बाहिरिया स्वद्वाणसान्त्र, सेवेव स्वातस्वद २ शा तरह निविष्टह २ शा रहं उनेह २ शा रहाओं पचीरहरू २ ता से सहत्वं जाव पाहडे निण्डु २ ता जेपेव अध्यान्तरिया उबद्वाणमाला अवेद जिवसत् रावा तेजेद उदागच्छा २ ता जिवसत् रायं करवल-परिमाहियं जान कहू जएणं विजएणं बद्धाचेद २ ता तं सहत्वं जान पाहुडं उनमेह । तए मं से जियसपू राया विशस्स सारहित्स तं महत्यं काव पाहुडं पविच्छा २ ता नियां सारहिं सकारेड संगानेड ए० २ शा पडिविसजेड. रायमगर्गागारं च से आवासं वलवृह । तए मं से चित्ते सार्ही विस्तिकाए समाने जियसपुरस रको अन्तियाओ पविनिक्समा २ ता जेनेव बाहिरिया उन्ह्रामसामा जेनेव बाउरकटे खासरहे तेनेव उनामण्डह २ ता चाउम्बन्दं आसरहं दुख्हड २ ता सावस्थि नवरि मञ्जांमञ्जीवं जेवेव राममम्मानोपांडे आवासे तेचेव उवायख्य २ ता तरए निनिष्ट्ड २ ता रहे उनेइ २ ता रहाजी क्योरहर, म्हाए सुद्धव्यावेससं मंगकां नत्यां प्रत्यारिहए, अप्पारम्या-सरणाकंकिक्सरीरे, जिमिक्सतुत्तराताए वि य मं समाचे पुर्वावरण्डकालसमयंति गम्बन्देहि व नाडगेहि य उत्रनविकामणे २ समग्रहकामने २ स्वकारिकामणं २ इहे सर्पारसरसस्त्रमन्थे **प्रा**विहें साग्रसम् कामगोए प्रवत्नगरमाचे विहरङ ॥ ४० ॥ तेणं कारेणं तेणं समएणं पासाविको केसी नामं कुमारसमणे जहसंपके कुरुसंपके बळसंपन्ने स्वसंपन्ने विजयसंपन्ने नागसंपन्ने इंसजसंपन्ने चरित्रसंपन्ने छजासंपन्ने काववरंपके रुजाकाववरंपके ओर्यसी तेयंसी वर्षसी असंसी वियकीहें जिएमाण जिनमाए जिनमोहे जिममिह जिहन्दिए जिनमरीसहे बीवियासमरणभवनिप्यसके शायाहाचे गुवापहाचे करणप्यहाणे बरणप्यहाणे विकाहप्पहाचे निकायप्पहाचे क्राव्यप्यहाने शहनपाहाचे लाक्वप्यहाणे कन्तिप्यहाणे मुत्तिप्यहाणे विजय्यहाणे क्षनायहाने क्षान्यहाने नगण्यहाने निवसपहाने समयहाने सोनप्यहाने नागण्यहाने व्सक्ष्यक्षाचे करितव्यक्षाचे • व्यवस्युष्यी, चतनाचीवगए प्रवर्धि अलगारसएक्कि यांचे श्रंपारियुक्ते पुरुवाशुपुणि वरमाणे गामाशुगानं गृहजमाणे छत्त्वहेणं विहरमाणे केमेंन सामाधी नवरी जेमेन कोइए उजाने तेमेन उनावकार २ ता सानत्नीए नगरीय गाविका कोहर राजाने कारणिकार्य समाई समिन्छ २ शा संक्रमेणं रावसा व्यक्त सामग्रेक विद्वत ॥ ४८ ॥ सर् धं साजस्थीए वयरीय विवास्यतिगणउक-

चंचरचतमुहमहापरपहेलु मह्या अणसहे इ वा अणबहे इ वा अणबसमाडे इ वा जनबीरे इ वा जणउम्मी इ वा जणउद्दतिया इ वा जणसंतिवाए इ वा जाब पञ्चवासङ् । तए णं तस्य सारहिस्स तं महाजणसहं च जणकतकः व सुणेला व पासिना व इमेयास्वे अज्यात्थिए जाव समुष्यज्ञित्या-"कि नं अज सावत्वीए नयरीए इन्वमहे इ वा सन्दमहे इ वा रहमहे इ वा मजन्दमहे इ वा नागमहे इ का भूयमहे इ वा जक्समहे इ वा रूक्समहे इ वा विविमहे इ वा दरिमहे इ वा कंगडमहे इ वा नईमहे इ वा सरमहे इ वा सागरमहे इ वा अं र्ण इमे बहुबे उस्या भोगा राहना इक्खागा सतिया नाया कोर्क्या जाव इच्मा इब्सपुता व्हाया (जहोवबाइए जाव) अप्पेगइया हबगया अप्पेगइया गय । पायचारविहारेणं महचा र वन्दानन्दएहि निगान्छन्ति" एवं संपेहेड २ ता ब्युड्जपुरिसं सदानेड २ ता एवं वयासी-"कि णं देवाणुप्पिया! अञ्च भावत्थीए नयरीए इन्दमहे इ बा जाव सागरमहे इ वा जेणं इसे बहने उस्मा भीगा "निस्तन्त्रान्ति !"। तए णं से कबुडजपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमगाहियविभिच्छए चित्तं सारहि करयरु-परिगाहियं जाव बद्धानेना एवं बयासी-"नो सळ देवाणुष्पिया ! अञ्च सावत्यीए नयरीए इन्डमहे इ बा जाव सागरमहे इ बा जेणं इसे बहुवे जाब बिन्दाबिन्त्एहिं निमाच्छन्ति । एवं खलु भी देवाणुप्पिया । पासावविजे केसी नामे कुमारसम्बे जाइसंपन्ते जाव दृह्जमाणे इहमागए जाव बिहरह तेथे अन्य सामस्त्रीए भवरीए बहुवे उत्ता जाव इच्या इच्यापना अप्येगह्या बन्द्णवित्रगए आव सह्या बन्दा-वन्दणहें निमाच्छन्नि" ॥ ४९ ॥ तए णं से चित्ते सारही क्युड्अपुरिसस्स अस्तिए एयमहं मोबा निसम्म इष्टतुद्ध जाव हियए कोहम्बियपुरिसे सहाचेर २ ता एवं बवासी-"सिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! बाउरघण्टं आसरई जुतामेव उबहुके," आब सम्बन्धाः उबहुवेन्ति । तए णं से वित्ते सारही ण्हाए सदस्यानेसाई सहसाई बस्याई पदरपरिहिन् अप्यमहाचामरणालेकियसरीरे जेणेव वाउनकटे आसरहे तेणेव उवागच्छ्य र सा चाडायण्डं आसरहं दुरहह २ ता सकोरिष्टमस्यामेर्च छतेणं धरिज्ञमायेणं सह्या भटचडग विन्द्यरिक्सित सावत्वीनग्रीए मर्जामञ्ज्ञेणं निमास्त्रह २ सः स्रेकेष कोहुए उजाजे जेजेव केसी कुमार्समचे तेजेव उदामच्छ्य २ ता केसिकुमार्समचस्त अदूरमामन्ते तुरए निविष्हद २ ता रहं ठवेद २ ता रहाओं एकोएडड २ ता केंग्रेड केंद्र कुमारमाणे तेणेव उदागच्छा २ गा केसि कुमारसम्बं तिक्यातोः आमाहिनं प्याहिनं करेड २ गा वन्दइ नमंसह बै० २ ता नवासके नाहरूरे सुरस्यमाने वर्धसमने अधिकृष्टे पजिल्डें विणएणं पजुनासङ् । तए ये से केसी कुमारसम्बे विश्वस्य सार्योक्स

क्षेत्रे महदमहाक्रियाए महत्रपरिसाए जाउजामं धर्म परिकट्टेइ । तं जहा-सम्वाओ पाणाहवायाओं वेरमणं, सञ्जाओं मुसाबाबाओं वेरमणं, सञ्जाओं अदिचादाणाओं वेरमणं, मञ्चाओ बहिद्धादाणाओं वेरमणं । तए णं सा महस्महास्त्रिया महत्रपरिसा केसिस्स कुमारसमणस्य अन्तिए धर्म सोचा निसम्म जागेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिनि परिगया । तए णं से निते सारही केरिस्स कुमारसमणस्स अन्तिए घरमं सोंबा नियम्म इह जाब हियए उद्घाए उद्घेड १ ता केसि कुमारसमणं तिक्खतो आया-हिणं प्याहिणं करेड् २ ता बन्दड् मर्मसङ् बं० २ ता एवं क्यासी~"त्स्हानि णं मन्ते ! निस्तन्त्रं पाववणं । पत्तिवामि वं धन्ते ! निस्तन्तं पाववणं । रोएमि णं अन्ते ! ं निमान्यं पावयर्षं । अञ्चुद्वेमि पं सन्ते ! निमान्यं पावयर्षं । एवसेयं सन्ते ! निमान्यं पावयणं । तहमेर्यं भन्ते ! निस्मन्यं पाययणं । अविनहमेर्यं सन्ते ! निस्मन्यं पाय-यणं । असंदिखमेयं मन्ते ! निम्यान्यं पाडयणं । सन्ते णं एसमद्वे जं यं तुन्मे दयह्र" तिकटु वन्दइ नमंसइ वं० २ ता एवं बयासी-"अहा यां देवाणुष्पियाणं अन्तिए बहवे उम्मा भोगा जाव इन्मा इन्मपुत्ता विचा हिरण्णं विचा सुवण्णं, एवं घणं वसं बाहणं कोसं कोह्यागारं पुरं अन्तेष्ठरं, विचा विद्रसं ध्यक्तणगरवणमणियोत्तिग्रसंख--सिलप्यवालसन्तरारसावएकं विद्यक्षकता वियोवङमा दार्व दाहवार्व परिभावता मुख्या अविता अगाराओं अगगारियं पञ्चयन्ति, नो सह अहं ता संवार्गन विवा हिरण्यं तं चेव जाव पन्यहत्तरः। अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिर प्रवाणुक्यहवं सत्तरिक्या-बद्यं दुवालसमिदं चिहिश्यमं "पिकिश्वामं "पिकिश्वाम्" । "अव्यक्षितं देवाणुप्पिया । मा विकन्धं करेडि" । तए णं से चित्ते सारही केसिस्स क्रमारसम्बद्ध अन्तिए विद्याण्यक्यं जाव विद्विधन्मे उदसंपिकतार्थं विद्युरः । तए वं से विते सारती केसि कुमारसम्बं बन्दर् नमंसर् बं० २ ला जेबेद बाउरकटे आसरहे तेबेद वहारेख गमणाए । चाउनकरं आसर्ड दुखुइ २ ता जानेव दिसि पाउच्यूए तामेव दिसि पंडिगए ॥ ५० ॥ तए मं से चित्रे सारही समणोवासए जाएं अहिगवजीवाजीवें उनसम्प्रणयाने आसक्तेवर्गिकरवित्रीयाहियरणवन्वसोनखकुसके असहित्रो देवासुन रनागमुब्ध्वजनस्यार्कसार्कसार्किनर्विञ्चरिसमस्यानसम्बनहोर्गाईहि वेदगमेहि विका-न्याओं पायसमाखी अंगहकासमिक, निमान्ये पायसमें निस्तिकए निक्रेखिए निक्रिन तिलिक्षे सददे गहिनदे प्रक्रिक्ट बहिनको विनिष्ठिगरे बहिनिक्रपेस्माकरागरते अयमाउसी निमान्ने पानवने बहे जयं परसंद तेते अगदे, उतिगद्धतिह अवस्था-वकारे विकामने उरक्रप्रकृषे वाडक्सक्य विकालमासिनीस परिसार्क सेसहं सम्बं न्यं प्रकारमा समाग्रे निकान्ये प्राप्ताराचेत्रेयं भारत्मशामात्रमधार्मेणं शीवपालन-

सेजासंबारेणं वत्यपिडमाहकम्बलपायपुष्टकोणं श्रोसहभेमजेणं परिकासमाणे १ बहुद्धि सीलव्ययगुणनेरमणपचनकाणपोसहोवदासेहि य अप्याणं आवेमाणे बाई तत्व रायकजाणि य जाव रायमग्रहारायि य ताई जियसत्तुणा रजा सर्व्हि सयमेव प्रमुखे-क्समाने २ विहरइ ॥ ५९ ॥ तए णं से जियसत्तुराया अवया क्याइ महत्व जाब पाहुडं सजेइ २ ता चित्तं सारहिं सदावेद २ ता एवं वशासी---''गण्डाहि णे दुने चिता ! सेयवियं नयरि । पएसिस्स रको इमं महत्यं जाव पाहुबं उबकेहि । सम पाउमां च णं बहामणियं अवितहमसंदिदं वमचं विश्ववेहिं तिकहू विमिजिए ॥ तए णं से चित्तं सारही जियससूच्या रका विस्तिक्य समाणे ते महत्वे जाव निष्ट्र जाब जियसपुरस रक्षो अन्तियाओ पिडेनिक्समइ २ ता सावत्थीनगरीए मज्छेन मज्हेणं निकाच्छ्य २ ता जेलेव रायमकामोगाढे आवासे तेलेव उदागच्छ्य २ ता तं महत्यं जाव ठवेइ । ष्रहाए ०सरीरे सकोरेण्ट ... महसा ... पायकार विहारेणं महसा परिसदरगुरापरिक्सित रायसमामोगाढाओ आवासाओ निरमच्छ २ ता सावत्यीनय-रीए मज्यांमञ्ज्ञेणं निम्मच्छ६ २ ता जेणेन केह्य उज्जाणे जेणेन केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छह २ ता केशिकुमारसमणस्य अन्तिए धन्मं सोचा जाद इद्व ...जाव एवं वयाबी---"एवं सलु जहं मन्ते ! जियसत्तुणा रचा पएतिस्स रची हमं महत्वं जाव उवणेहित्तिकहु विसञ्जिए। तं गच्छामि णं अहं भन्ते ! सेववियं नयरि। पासा-रीया र्ण भन्ते ! सेर्यावया नयरी । दरिसणिका र्ण भन्ते ! सेर्यावया नयरी । अभि-स्वा णं भन्ते ! सेयविया नगरी । पडिस्वा णं भन्ते ! सेयविवा नगरी । समीसरह णं मन्ते ! सेयवियं नयरिं"। तए णं से केसी क्रमारसमणे वित्तेणं सारहिणा एवं वृत्ते नमाणं चित्तस्य सारहिस्स एयमद्वं नो आहाइ नो परिवास्तहः, तुस्तिवीए संवि इंद । तए णं से वित्ते सारही केसि इमारसमणं दोवं पि तवं पि एवं वयासी-"एवं सत्तु अहं भन्ते । जियमनुषा रका पएसिस्स रक्षो इमं महत्वं जाव विस्रक्षिए नं चेव जाव समोसरह णं भन्ते ! तुब्ने सेयवियं नयरि" । तए णं केही कुमार-समणे जित्तेणं सारहिणा दोवं पि तवं पि एवं बुत्ते समस्ये जित्तं सारहि पूर्व चयासी--"चिता ! से जहानामध् बणसण्डे सिया किन्द्रे किन्द्रोमासे आह पश्चिस्ते। से नृणं विता! से वजसण्डे बहुणं दुपस्चतप्पयमिमप्रपुपविश्वसरीसिवावां अधिका-मणिजे?" "हन्ता अभिगस्मिके "। तंति च मं विता! व्यस्तकंति वहवे विस्ता नाम पावसत्रणा परिवसन्ति के जे तेसि बहुन दुपमुन्दुप्पमिवपसुपविकारिक्षिणार्च ठियाणं चेव मंमसोवियं आहारेन्ति । से नूणं किसा । से क्यानके हेति कं अपूर्ण इपय जान विरीविवाणं अभिगमणिके?" "नो" हि.। "क्या वं?" "बेह्रि

सीबसम्बे"। "एवामेव चिता! तुन्मं पि सेम्बियाए नवरीए पएसी नामं राया परिकार अहम्मिए जाव नो सम्मं करमरविति पक्तेह । तं कहं मं अहं चिता! चैयवियाप नयरीए समोसरिस्सामि?"। तए णं से चित्ते सारही केसि इमारसमणं एवं क्यासी-'कि णं भन्ते! तुन्मं पएसिणा रका कायव्यं? अत्य णं भन्ते! सेयवियाए नवरीए अने बहुने इंसरतस्त्रहर जान सत्त्रबाहण्यभिद्रको जे णं देवाणु-ष्पियं बन्दिस्सन्ति आव पज्जवासिस्सन्ति, बिडलं असर्ण पाणं ब्राइमं नाइमं पिंडलाभेरपांन्त, पाडिहारिएण पीटपलगर्सेजासंबारेणं उवनिमन्तिरसन्ति"। सए र्ण से केसी कुमारसमणे चित्तं सारहि एवं वयासी-"अवि याड चित्ता! समोसरि-स्मामो" ॥ ५२ ॥ तुए पं से चित्ते सारही केसि क्रमारसमणं बन्दइ नर्मसइ बं० २ सा केंसिस्य क्रमारसम्बन्धः अन्तियाओं कोद्रयाओं उज्जाणाओं पिडेनिक्समंड २ ना जेणेव रायमग्गमोगाडे आवासे तेणेव उवागच्छा २ ता कोडम्बियप्रिसे सहावेह २ ता एवं वयासी-"विष्पामेव भी देवाणुप्पिया ! चाउरवष्टं आसरहं जुत्तामेव उबहुवेह" । जहां सेयवियाए नयरीए नियान्खंड तहेव बाब वसमाजे २ कुणालाजणत्रयसः मर्ज्यसम्बर्ण जेणेन बेद्धसम्बद्ध जणवए जेणेव संयदिया मसरी जेणेव सियवणे रजाणे तेणेन उनागन्छ। २ ता उजाणपाछए सहावेड २ ता एवं वयासी-"जवा जं देवाण-रिपया ! पासावविके केसी नाम कुमारसमये पुरुवालुपुर्वित चरमाचे गामाखुगामं दुइ-ज्यमाणे इहमागरिक्षजा, तथा णे तुन्मे देवाणुप्पिया ! केलि कुमारसमणं वन्दिजाह नमंतिज्ञाह नं॰ २ ता अहापिहरूमं उग्गहं अगुजानेजाह । पाडिहारिएमं पीढफलग जाव उपनिमन्तेजाह । एयमाणतियं खिप्पामेव पचप्पिणेजाह" । तए वं ते उजाणपालमा विशेष सारहिणा एवं बुशा समाणा इक्रुबड जाव हियबा करयल-परिमाहियं जाव एवं बयासी-"तह" ति । आणाएं विणएमं व्यर्ण पडिसणस्ति । ५३ । तए मं से बित सारही जेमेव सेबविया नगरी तेमेव उचापच्छद ? ता सेग्नियं नगरि मज्ज्ञेमज्ञेणं अगुपनिसह २ ता जेणेव पएतिस्स रची गिष्ठे जेणेव बाहिरियां उबद्राणसाला तेणेव उबागच्छह २ ता द्वरए निमिण्डह २ ता रहं ठवेड २ ता रहाको पन्नोसहह २ सा तं बहत्यं जाद गेण्डह २ ता जेनेव पएसी रावा तेणेव उवा-गच्छा २ सा पंपर्ति रावे बारवळ जाव बढायेसा तं सहत्यं जाव उपणेह । तए णं से पएसी राज्य विशास्त सारक्षिस्स ते महत्ये जात्र पविच्छा १ ता विशे सार्टि सकारेड संगणिह सं० २ सा पहिन्सिकेट । तए वं से निते मारही परविणा रका विस्रक्रिए समाजे हरू जांत्र हिमंद् पद्सित्स रही अस्तियाओं पढिनिक्समद २ ता जेंगेय आउग्यण्डे आसरहे रीवेव जवावनाइ र ता बाउरपंद आसरहे दुस्टर २ ता पुरए निविद्ध २ ता र मला∗

रहं ठवेड २ सा ग्हाओ पचोरहृइ २ शा ग्हाए अध्य० उप्पि पामायवरमा पुरसा-यहिं मुड्कमत्थएहिं वनीमडबदएहिं नाडएहिं बरतक्णीमंपउत्तेहिं उदनिकासाचे र उत्गाह्जमाणे २ उवजालिजमाणे २ इत्ने महरूरिम जाब विहरह ॥ ५४ ॥ तए मे केसीकुमारसमणे अजया कयाद पाडिहारिये पीटफलगसेआनंधारमं प्रवर्णिणह २ सा मायत्वीओ नयरीओ कोडुगाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ २ ता प्रबर्हि अवगारमएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केइयअदे जणवए जेणेव सेर्यावया नयरी जेणेव मिश्रवधि उजाणे तेणेव उवायच्छा २ ता अहापश्चिम्बं उग्गहं उन्गिष्टता संबंधेणं तबसा अपाणं भावेमाणे बिहरइ ॥ ५५ ॥ तए णं सेबवियाए नयरीए सिंघाडग " भहरा जणमहे इ वा ...परिना निगगच्छर् । तर् णं ते उत्जाणपालमा इमीने बद्धाम् स्टब्स् 🕟 समाणा हदानुद्र जाब हिथ्या जेलेव केसी कुमारसमणे नेणंब उदागरकन्ति २ मा केनि कुमारसमणे वन्दन्ति नमंगन्ति वं० २ ता अहापिकस्वं उम्महं अखुबाणन्ति • पाडिहारिएणं जाव संयारएणं उबनिमन्तेन्ति० नामं गोयं पुच्छन्ति० श्रीधारेन्ति० एगन्तं अवक्रमन्ति २ ता अक्रमकं एवं बयासी-"उत्स णं देवागुप्पिया ! वित्ते सारही इंसणं कंखड० जस्म णं नामगोयस्स वि सदणवाए इङ्कुट्छ जाव हियए अवड् सं णं एस केसी क्रमारममणे पुन्ताणुप्रध्धि चरमाणे गामाणुगामं पुरुवमाणे इहमागए इह संपने इह समोसदे इहेन सेयवियाए नवरीए बहिया मियनणे उजाले अहापंडि-रूवं जान विहरह । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्रस्य गारहिस्स एयसद्वं पियं निवएमो, पिर्व मे भवउ"। अनमञ्जरम अन्तिए एयमट्टं पिडमुणन्ति । अभिव सेयविया नयरी जेणेव चित्तस्य सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उदाग-च्छिनि २ ता चिनं सारहिं करयल जाब बढावेन्ति २ ता एवं वयासी-"अस्स मं देवा-णुष्पिया : दंसणं कंसन्ति जाव अभिलयन्ति, जस्स णं नामगोयस्स वि सक्षकाए हद् जाव भवह, से णं अयं केसी कुमारसमणे पुरुवाणुपुर्वि चरमाणे "समोस्ट जाव विहरइ ॥ ५६ ॥ तए मं से चिने सारही तेसि उद्याणपालमानं शन्तिए एवमई सीचा नियम्म रहनुद्व जाव आसणाओ अन्मुद्धेर, पायपीराओ पचोरहरू २ सा पारकाकीः ओमुयइ २ शा एगसावियं उत्तरासमं करेड् । अज्ञालिमउलियम्महत्वे केसिकुवारसम्-णाभिमुद्दे सत्तद्व पयाइं अणुगच्छाइ २ ता कर्यक्यदिमान्नियं व सिरसावर्त सत्वए सक्रकि कर् एवं वयासी-"नमोत्यु वं वरहन्तावं जाव संपत्तावं । मबोत्यु वं केशितः कुमार-समणस्य मम धम्मायरियस्य धम्मोवएत्यस्य । बन्दानि वं मगुबन्तं तत्वगरं इह्-गए। पासन मे'' तिकष्टु बन्दर नमंसर । ते उजाणपाकपु विवक्रेण बुल्यगन्बसहार्कः कारेणं सकारेड संमाणेड विडलं जीवियारिहं पीइसार्च वसमद्र २ सा पिडविसजेंड २ बा

कोडुम्बिबपुरिसे सहावेह २ सा एवं वयासी-"खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया! चाउ-स्थरं आसरहं जुलामेव उदहवेह जाव पश्चिणहं । तए यं ते कोडुम्बियपुरिमा जाव सिप्पामेन सच्छतं सञ्ज्ञयं जान उनहनिता तमाणतिवं पकप्पिणन्ति । तए ण से चित्ते सारही कोडुम्बियपुरिसायं अन्तिए एयमहं सोचा निसम्म हहतुह जाव हियए व्हाए वस्तिरे जेवेद चाउरवण्टे जाय दुरुहिता सक्तरण्ट "महया भडवड० तं चेव जाव पज्जनासइ धम्मकः जाव तए णं से चित्ते सारही केसिस्य कुमारसम-णस्स अन्तिए धन्मं सोचा निसन्म इद्वतुद्व॰ उद्वाए तहेव एवं वयासी—"एवं खळ भन्ते । अर्म्ह पएसी रावा अधिमाए जाव सबस्स वि णं जणवबस्स नी सम्मं करमरवित्ति पनतेह । तं वह णं देवाणुप्पिया ! यएसिस्स रक्षो धम्ममाइक्लेजा बहुगुणतरं लाख होजा पएसिस्स रको तेसि व बहुणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्तिस-विरीतिवाणं तेसि व बहुणं समणमाहणभिक्खयाणं । तं जह णं देवाणुण्यिया ! '''पएसिस्म बहुगुणतरं होजा सबस्स वि य णं जणवयस्स'' ॥ ५७ ॥ तए णं केसी कुमार्समणे वित्तं सारहि एवं क्यासी-"एवं सछ चडहिं ठाणेहिं चिता! जीवे केवलिपचर्ता प्रम्मं वो समजा सवणवाए । तं जहा-आरामगर्य वा उज्जाणगर्य वा समणे वा माहचं वा नो अभिगच्छा नो बन्दह नो नमंसह नो सकारेह नो संगाणेह को कहाण महाछ देववं चेहवं पञ्जवासेह, नो खड्ढाई हेऊई पसिणाई कारणाई बागरणाई पुच्छह, एएणं ठाणेणं विशा! जीवे केवलिपक्षतं धम्मं नो तमइ सक्ष्मबाए १। उत्तरसम्पर्ध समणं का तं केव जाव एएण वि ठाणेणं चिता । जीवे केविक्षणंतरं धम्मं तो समइ सबणयाए २ । गोयरमागर्य समणं वा माहनं वा जान नो फजुनासइ, नो विज्लेणं असमपाणसाहमसाहमेणं पिकानेह, मी अहाई जाब पुच्छ, एएणं ठावेणं बिता ! वीचे केविक्यमतं वस्यं नो लमइ सबणवाए रे । जत्व वि य ण समयेण वा माहरीय वा सर्दि असि-समागच्छा, ताल वि व कं इत्येण वा बत्येय वा छतेण वा अप्पार्थ आवरिता चिद्वह, जो सङ्घाई आप पुष्छह, एएण वि ठायेणं चिता ! वीवे केवलिपक्षतं धम्मं नो लमइ सक्लकाए ४ । एएई व व विता । चर्राई ठावेई जीने केनलि-पक्तं घम्मं नी कमा सबसवाए ॥ सर्वाह्यं अविहे विता ! जीवे केन्छीपसर्त धम्मं लक्षद् संबंधनाए । तं जहा-बादाममयं वा उजाजमयं वा समयं चा माहणं वा बन्दर समस्य प्रमान प्रमुक्तास अक्षतं जाव प्रकार, एएव जाव स्थार समणयाएं। ऐते उपस्प्रथार्थ गोवरकार्य स्थाप वा जाव प्रमुपासक विस्तेण जाव पविकामेह अक्टर बांच पुचक, मृद्दक हिंगा कार्य कि व में संस्थित वा गासी-

समागच्छ तस्य वि य ण नी हत्येण वा जाव आवरेलाणं चिट्टर, एएन वि ठायेणं विका ! जीवे केवलिपवर्त घम्मे लभइ सवणवाए । तुम्झे च णे विका ! पएसी राया आरामगर्य वा तं चेव सर्व्य भाषियन्वं आइलएपं गमएणे जाव अप्यापं आवरेसा चिद्रड । तं वहं णं चिता ! पएसिस्स रको धम्मग्राडक्शिस्सामी !" । सह णं से किते मारही केसि कुमारसमणं एवं क्यासी- 'एवं खरू मन्ते ! अक्षया क्याइ कर्योएहि चतारि आसा उवनमं उवनीया । ते मए पएसिस्स एको अन्नमा चेव उवणेया । ते एएणं खल भनते ! कारणेणं आहं पएसि रायं देवाणुण्यियाणं अन्तिए इञ्चमाणेस्यामि । तं मा णं देवाणुच्चिया ! तुद्भे पएछिस्स रक्को धम्म-माइक्समाणा गिलाएजाह । अगिलाए ण भंते ! तुन्मे पएसिस्स रच्ची धन्मसाइ-क्लेजाइ छंदेणं ॰"। तए णं से केसी कुमारसमणे चित्तं नारहि एवं वयासी-"अवि याड विता! जाणिरमामों" ॥ नए णे से विते मारही केर्सि कुमारसमणं बन्दह नमंसह वं० २ ता जेणेव बाउरकप्टे आसरहे तेणेव उदागरसह २ ता चाउरकप्टं आसरहं दुसहर, जामेव दिसिं पाउच्मूए तामेव दिसिं पिडमए ॥ ५८ ॥ तए कं से चित्ते सारही कहं पाउपमायाए रयणीए फुक्र्पलकमलकोमञ्जभिमिक्यिन्य अहा-पण्डरे पभाए कवनिवयावस्सए सहस्मरस्सिसे दिणयरे तेवसा जळने माझे मिहाओ निमाच्छइ २ ता जेणेब पएसिस्स रको मिहे जेणेब पएसी राया तेणेब उनागच्छद् २ ता पएसि रायं करयल जान कहू जएणं विजएणं बढानेह २ ता एवं वयासी-"एवं सन्त देवाणुष्पियाणं कम्बोएहिं बत्तारि आसा उवणयं उवणीया । ते य सए देवाणुष्पियाणं अस्तया सेव विषद्या । तं एह णं सामी ! ते आसे विद्व पासह" । तए मं से पएसी रामा विशे सारहिं एवं बमासी-"मच्छाहि मं दुर्भ चिना! तेहिं चेव चडिं आसेहिं आसरहं जुनामेव उबदुवेहि आव प्रमण्डि-गाहि"। तए ण से चित्ते सारही पएसिणा रण्या एवं चुते समाणे इहतुह बाव हिंबए० उन्द्रवेद २ ता एबमाणतियं प्रचण्यिणह । तए में से पएसी रावा चित्तस्स भारहिस्स अन्तिए एयमहं सोचा निसम्म **रहतुष्ठ** जाव अप्पमहम्याभरवालंकिमसरीरे साओ बिहाओ निम्बच्छ्द २ ता जेपासेन चाउनकट आसरहे तेवासेन उनायस्टन् २ ता नाउम्बर्ध आसरहं दुरुहर वेमवियाए नवरीए मञ्जानकोर्ग विमायह । तए णे से जिले सारही तं रई जेगाई जोयणाई उच्मानेह । तए णे से प्रवृत्ती राजा उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणं परिकिलन्ते समाणे चित्तं सारहि एवं बवाची-"विता । यरिकिलन्ते से सरीरे, परावतेहि रहं"। तए वं से विते सारही रहं परा-वतेत २ ता जेणेव मियवणे राजाणे तेणेव उचापरख्य २ ता पएसि रायं एवं वयासी-

"एस पं गामीं ! मियवणे उजाणे, एत्य पं आसार्ण समं किलामं सम्मं प्रवीणेमी"। तए थं से पएसी रागा चित्तं सारहिं एवं बयाबी-"एवं होट चित्ता !"। तए थं से विते सार ही जेणेड मियवणे उजाणे जेणेड केसिस्य कमारसमणस्य अदरसामन्ते तेणेव उदागन्छइ २ ता तुरए निमिण्डेइ २ ता रहं ठवेइ २ ता रहाओ प्योरहट २ ता तरए मोएड २ ना पर्सी रावं एवं ववासी-"एड णं सामी! आसार्ण समें किलामें सम्बं पहींगेमी"। तए वं से पएसी राजा रहाओ प्रचोरहड़ । विरोण सारहिणा सिद्धे आसाणं समं किलामं सम्मं पदीणेमाणे पासइ जस्य केसी तुमारसमणे महइ-महालियाए महत्रपरिसाए मञ्सगए महत्रा २ सहेणं धम्ममाइक्खमाणं । पासिता इमेगाव्ये अञ्चात्वए जाव समुप्पजित्या--"जहा सलु भी जह पमुवासन्ति, मुण्डा खल भी मुण्डं पमुनासन्ति, मृहा सलु भी मृतं पमुनायन्ति, अपण्डिया खलु भी अपन्नियं प्रमुवानन्ति, विक्विशाणा खलु भी तिन्त्रिशाणं प्रमुवासन्ति । से कीम मं एस पुरिसे को मुण्डे मुद्रे अपन्डिए निन्निकाणे सिरीए हिरीए उपगए उत्तप्यसरीर । एम णं पुरिसे किमाहादमाहारेड कि परिणामेड कि लाड कि पियड कि दलक् कि प्रमुख्कर, जे ने एमहाविधाए मणुस्यपरिसाए मज्झगए महया २ सहेणं युवाए ?" एवं संपेहेइ २ ता विनं सारहि एवं वयासी-"विता ! जहा खल भो जड़ पञ्चत्रासन्ति जाव बुवाए । साए वि व णं उजाणभूमीए नी संचाएमि सम्म पकामं पवित्रतिक्षण्" । तए ण से चित्र सारही पर्सीरायं एवं क्यासी-"एस णं सानी ! प्रामाविको केसी नाम कुमार्समणे जाइसंपन्ने जाव बरानाणीवगए आहो-हिए अनजीवी" । तए में से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं ववासी-"आहोहियं णं वयासि विता ! अवजीवियं च ण वयासि चिना ?" "इन्ता सामी आहोहियं ण वयामि अश्वतीविधं व धं दवासि"। "अभिगमणिजे धं विता! अहं एस पुरिसे ?" "इन्सा सामी ! अभिगमनिजैं"। "अभिगन्छामी जं चित्ता ! अम्हे एवं पुरिसं ?" "इन्ता सामी ! अभिगक्कामी" ॥ ५९ ॥ तए णं से पएसी राया वित्तेष सार-हिणा सर्वि जेनेव केसी कुमारसमने सेजेव उत्पाच्छर २ ता केसिस्स कुमारसमनस्स अदूरसामन्ते द्विचा एवं बनाची--"तुन्मे णं भन्ते । आहोहिया अवजीविया ?"। तए में केसी कुमारसमें प्यसि रायं एवं बयासी-"पएसी ! से जहाबामए अङ्गबा-णिया इ वा संसवासिया इ का वस्तवासिया इ को सुंकं मंखिउंकामा नी सम्मं पन्धं पुच्छ०, एवामेव वर्सी ! हु० विवयं भंगेडकामी नो सम्मं पुच्छित । से मूर्ण तव पएडी । असे पासिता अवभेगाको अन्सतिय जान समुण्याकारणा जारा खा भी अर्थ प्रमुक्तसानित जान पविवरिताए । से तूर्ण पासी ! अहे समहे ?"

"हन्ता अत्य" ॥ तए णं से पएसी रामा केसि कुमारसमयं एवं वयासी-"से के पं शन्ते ! तुउन्ने नाणे वा दंसणे वा जेपं तुउन्ने मम एयान्यं अउसत्पर्य आप संक्रपं समुप्पनं जाणह पासह ?'' । तए णं ने केसी कुनारसमणे पएसि रागं एवं वयासी-"एवं खब्द पएसी ! अम्हं समणाणं विम्नन्याणं पश्चविहे नामे प० तं जहा-सामिनिकोहियनाणे सुबनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केरलनाणे । से कि तं आश्विविविद्यानाणे ? आभिणिबोहियनाणे चउन्विहे पत्रने, तं जहा-उत्पही हैहा अवार धारणा । से कि तं उमाहे ? उमाहे दुविहे पश्चेत जहा नन्दीए जाब से तं आसिशियोहियनाणे । में कि तं सुयनाणे ? सुयनाणे दुविहे प॰ तं जहा-अह-पनिद्रं च अहवाहिरं च, सब्बं भागियव्यं त्रात दिद्विवाओ । ओहिनाणं भवपचर्यं बाबोक्समियं जहा नन्दीए । मणपञ्चवनाणे दुविहे प० नं जहा-उजुमई स बिउलमई य । तहेव केवलनाणं सब्दं भाषियव्यं । तस्य णं जे से आभिणबोहिय-माणे से ण समं अत्य । तत्य णं जे से सुवनाणे से वि य समं अत्य । तत्य णं जे से ओहिनाणे से वियममं अत्य । तत्थ णं जे से मणपाजवनाणे से वियममं अधि । तत्य णं जे से केक्जनाचे से णं ममं नत्थि, से णं अविहन्ताणं भगव-न्ताणं । इच्चेएणं पएसी ! अहं तब चडबिहेणं छउमस्थेणं पाणेणं इसेयास्वं अञ्चर-त्थियं जाव समुप्पन्नं जाणामि पासामि" ॥ ६० ॥ तए णं से पर्वी गया केसि कुमारसमणं एवं वयासी--''अहं णं भन्ते ! इहं उबबिसासि ?'' ''पएसी ! एखाए उजाणभूमीए तुमं सि चेद जाणए"। तए णं से पएसी राया वितेषं सारहिणा सर्दि केसिस्य क्रमारसमणस्य अदरसामन्ते उवविश्व २ ता केसि क्रमारसमणं एवं वयासी--''तूब्म ण मन्ते ! समणाणं निम्नन्याणं एसा सन्ना एसा पहला एसा दिही एमा रुई एस हेऊ एस उबएसे एस संकृपे एसा तुला एस आणे एस प्रमाणे एस समोसरणे जहा अन्नो जीनो अन्नं सरीरं नो तं जीनो तं सरीरं ?"। तर वं नेनी क्रमारसमणे पएसि रायं एवं नयासी---"पएसी ! अन्दं समणाणं निरगन्याणं एसा सचा जाव एस समीसर्थे जहा अची जीवी अर्च सरीर नी तं बीवी तं सरीरें । तए णं से पएसी राया केसि कुमारसमणं एवं नवासी- "जह णं सन्ते ! सुकां समणाणं निसान्याणं एसा सन्ना जाव समीसरणे जहा अजी जीवो अन् सरीरं की तं जीवो तं सरीरं । एवं बाह्य समं अञ्चए होत्या, इहेव अम्बुरीय वीचे सेववियाए नगरीए अधिमाए जाव सगरस वि व णं जणवगरस मी सम्म करमरविति वक्तेह् । से ण तुरुसं क्ताव्ययाए सुबहुं पावं करूमं कविकलुसं समन्त्रिणिता कालमासे कार्यः किया अवयरेषु नरएषु नेरह्यकाए उक्को । तस्स मं अध्ययस्य अहं नक्षुए होत्या

ं इहे कन्ते पिए मणुके थेजे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए रयणकरण्डगममाणे जीविउस्मविए हियसमन्दिजणणे उम्बरपुष्कं पिव दुक्क्से सवस्रवाए, किसङ्ग पुण पासणयाए । तं जड् णं से अज्ञए समं आगन्तुं वएजा-'एवं सकु नन्त्रया ! अहं तत्र अक्षए होत्था, इंह्रेव सेगवियाए नवरीए अधिन्मए जाव नी सन्में कर्भरविति पक्षेति । तए णे आहं सुबहुं पात्रं कम्मं कलिक्ट्रसं समजितिना नरएमु उनक्ते । तं मा णं मतुया । तुमं पि भवाहि अधन्मिए जाव नो सम्मं करमरविति पवतेहि । मा णं तुमं पि एवं चेत्र सुबहुं पावकम्मं जात उववजिहिति । तं जइ णं से अव्वए समें आगन्तुं एवं वएका तो पं आहं सद्देजा पत्तिएजा रोएजा वहा असी जीवो अश्वं सरीर नो तं जीवो तं रारीरं । जम्हा णं से अज्ञए समं आगन्तुं नो एवं वयासी तम्हा सुपहड़िया सम पहचा समणाउसो ! बहा तं जीवो तं सरीरं' ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं श्रयं एवं क्यासी---"अत्थ णं पएसी। तव स्रियकन्ता नामं देवी ?" "हन्ता अहिष" । "जइ णं दुसं पएसी ! तं सुरियकन्तं देवि ण्हायं सव्वालंकारविभृतियं केणइ पुरिसेणं सव्वालंकारविभृतिएणं सद्धि इहे सहफरिसरमस्य-गन्धे पर्वावहे माणुरसए काममोगे पचलुमबमाणि पासिजाति, तस्त वं तुर्म पएसी! पुरिसस्य के डण्डं निब्बतेजासि ?" "अहं णं मन्ते ! तं पुरिसं इत्यच्छिकां वा पाय-च्छिनां वा स्लाइयं वा स्लिभनां वा एगाहवं कृषाहवं जीवियाओ बनरोवएजा"। "अह णं पएसी! से पुरिसे तुमं एवं बएजा-- मा ताव में सामी! मुहत्तर्ग हत्थन्छिकां जाब जीवियाओं ववरीवेहि जाब तावाहं मित्तनाइनियगसयणसंबन्धिपरिजणं एवं वयामि-'एवं सञ्ज देवाणुष्पिया । पावाई कम्माई समाधरिता इमेयास्व आवई पावि-जामि, ते मा गं देवाणुष्पिया ! तुन्मे वि केंद्र पावाई कम्माई समायरत, मा गं से वि एवं चेव आवर्षं पाविश्वितिष्ठ अहा में अहं । तस्स णे तुमं पएसी। पुरिसस्स साणमाने एयम्बू पित्रमुणेकासि ?" "नो इषाद्वे समङ्के" । "कम्बा पं ?" "जम्हा णं भन्ते ! अवराही में से पुरिसे" । "एवामेव पएसी ! तव वि अवार होत्या इहेव सेववियाए नवरीए अवस्मिए जाव नी सम्मं करभरविति पवतेह । से णं अन्ह नतत्वयाए सुबहुं जान उबक्की । तस्त णं अजगस्स तुमं नतुष् होत्या रहे कन्ते जाब पास्त्रभार । से ण इच्छड् भाजुसे कोर्ग इन्त्रमागन्त्रितर, नो चेव ण संवाएइ इव्यसायन्त्रिताए । चन्नाह् ठामीह् प्रकृती ! अहुपोववकाए नरएसु नेरहए इच्छह माणुस लोगं हत्वमायविक्रतयु मो चैद चै क्वाएइ अहुयोजवकए नरएस नेरहए । से मे तत्य महरूपूर्व वेशकं वेद्यांने इच्छेजा सामुखं कोगे इव्यापनो चेव में संचाएर ... १। महुणोक्त्रका महत्तुः नेरहतः नर्यपाकेहि सुन्ते २ समहिष्क्रियमाणे इच्छा माण्छ

होगं हुन्बमागन्छित्तए नो चेन णं संनाएइ ... २ । अहुणोनननए नरएसु नेरइए निरयः बेयणिजांति कमांति अवस्तीर्णान अवेड्यंति अनिजिण्णांत : च्छद माणुपं क्षोपं ''नो बेब पं संवाएर ... १ । एवं नेरइए निरयाउमेंस कम्मेंस अक्खीणंस अवेइमेरी अनिक्रिणांसि इच्छा माणुसं सोगं "नो चेव ण संचाएड इञ्चमागच्छित्र ४ । क्षेप्क सडाह अपेहि पएसी ! अहुणोवनके नरएसु नेरइए उच्छइ माणुसं लोगं ...नो चेव में क्षंचाएर हम्ममामच्छिनए । तं सहहाहि मं पएसी ' जहा असी जीवी असं हरीर नो तं जीवो तं सरीरं"॥ १ ॥ ६१ ॥ तए णं सं पएसी राया केमि कुमार-समणं एवं वयासी-"अत्थ णं भन्ते ! एसा वना उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवामच्छा एवं खल भन्ते । सम अजिया होत्या रहेश सेयवियाए नयरीए धरिमवा वाब विति क्रयेमाणी समजोतासिया अभिगयजीवाजीवा सध्यो वण्यको जाब अध्यार्ण भावेमाणी विहरइ । सा णं तुज्झं वत्तव्ययाए सुबहुं पुण्णोवस्यं समज्जिणिता कारत्मासं कार्ल किया अवगरेम देवलोएम देवताए उपवका । सीसे में अजियाए अहं नसूए होत्या इद्वे कनते जाव पासणगाए । तं अउ णं सा अजिया समं आगन्तं एवं वएआ-'एवं खळ नत्त्वा ! अहं तन अजिया होत्या इहेव सेशवियाग नयरीए धरिमया जाव वित्ति कप्येमाणी समणोवाखिया जाव विद्वरामि । तए णं अहं सुबहं पुण्णोवचर्य समजिन णिना जाव देवलोएम् उववना । ते तुमं पि नतुवा ! भवाहि धर्मिमए जाव विहराहि । नए णं तुमं पि एवं चेव सुबहं पुष्णोवचयं सम ... जाव उनवज्जिहिति'। तं जह षं मा अजिया मम आगन्तुं एवं वएजा, तो णं अहं सहहेजा पतिएजा रोएजा जहा जसी जीसे अर्थ सरीरं नो ते जीवो तं सरीरं । जम्हा मा अजिया समं अस्पन्तं नो एवं बयासी तम्हा मुपडद्विया मे पडला जहा तं जीवो तं सरीरं नो असो जीवो सर्व सरीरं" ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएसीरायं एवं त्रयासी--''जह णं तुमं पएसी ! जहावं उक्षपडमाडमं भिक्षारकडुच्छ्यहत्थमयं देवकुलमणुपविसमाणं केई पुरिसे क्वाप्रदेखि ठिया एवं वएजा-'एह ताव मामी! इह मुहत्तमं आसावह वा विद्वह वा विद्वीयह वा तुगदृह वा' नस्य णं तुमं पएसी ! पुरिसस्त स्वणमवि एयमद्वं पश्चिसुणिजाति ?" "नो" नि॰। "क्रम्हा जं ?" "बन्ते ! अपूड २ सामन्ती"। "एवामैव पएवी ! सब वि अजिया होत्या इहेव सेमवियाए नयरीव धन्मिया जान विहरह । सा मं अर्म्ह वत्तव्ययाए सुबहुं जाव उक्कना, तीसे में अजियाए तुमं नतुए होत्या हहे जाव किमक्त पुण पासणयाए। सा णं इच्छा माणुसं लोगं इध्यमागन्धिकाए, नी चैव णं संचाएइ हन्त्रमार्वाच्छत्त्। चन्नहिं अणेहिं पएसी ! अहुणोतको देवे देवस्रोव्सु इच्छेजा माणुसं लोगं "नो बेद वं संवाएइ०६ अहुमोदद्वी देवे देवलोएस दिवेहिं

काममोगेर्ट मुख्डिए विदे गहिए अञ्झोबक्क, से वं माणुसे भोगे नो आडाह नो परिजाणाः, से णं इत्किज माणुर्धः नो चेत्र णं संचाएइ ... १ । अहुणोववकाए देवे देवलोएस दिस्बेहि कामओगेहि पुच्छिए बाद अज्योदको, तस्य व माणुस्त पेम्म बोलिएसए अवड, दिख्ये पेस्मे संस्कृते अवड, से वं इच्छेजा माणुसं ... नो चेव गं सनाएर '२। अहुणोवको देवे दिब्बेहिं सामभौगेहिं मुख्छिए जाव अञ्चोवको, नस्य मं एवं भवद्-द्वाणि गण्डे सुदुत्तं वर्ण्ड वाव इद अप्याउदा नरा कालधस्मुणा संजुना अवन्ति, से मं इच्छेजा माणुर्य ः नो चेव मं संचाएइ ः ३ । अहुलोहवके देवे दिब्बेहि जाव अज्होबको तस्य माणुस्सम् उरात्ने दुम्मन्ये पविकृते पविकोसे भवा. उद्गं पि स मं चतारि पद्म कोयणसुमाई ससुसे माणुससए गन्दे अभिसमा-गन्छा, से मं इन्हेब्स माणुर्स भने चेव मं संवाग् भव । श्वेप्टी बड़ि ठामेडि गएती ! अहणोवनके देवे देवलोएस इच्छेटा मागुसं कोपं इच्यमायध्विताए, नी क्षेत्र णं संचाएइ इक्सायक्तिए । तं सदहाहि थं तुमं पएसी ! बहा असी जीवी असं मरीरं नो तं बीबी तं सरीरं" ॥ २ ॥ ६२ ॥ तए मं से पएसी राजा केसि कुमार-ममणं एवं वयासी-"वास्थि मं भनते ! एसा पक्षा उपमा । इमेणं पुण कारणेणं नो उनागन्छद । एवं स्क्रुट भन्ते ! अहं शक्षया क्यांड बाहिनियार उनदाणसालाए अणेगगणनायगदण्डनायगराईस्रतलबरमाटंवियकोडस्वियडक्सेडिसेनावडसत्ववाह-मन्तिमहामन्तिगणगरीवादिवसम्बद्धपीरमहनगरनिगमत्यसंबिवारेही सदि संपरि-वुंडे व्हिरामि । तए वं मम मगर्गुतिया सामकां सत्येदं सनेवेश्रं अवज्ञोडयबन्धण-वदं वोरं उब्लेन्ति । तए ग्रं श्रद्धं तं पुरिसं जीवन्तं चेत्र अवक्रुम्मीए पविखनावेमि, अउमएणं पिद्वाक्षय्वं विद्वाबीम, अएक य तउएण य आयावीम, आयपबद्यएहि पुरिसोहं रक्काविन । तत् जं अहं अक्या क्याइ जेमानेव सा अउकुम्मी तेगामेव उवागच्छाम २ सा तं अवकृष्टिम उम्मानच्यावेमि २ सा तं पुरितं सबमेव पासामि । नो चेन में शीरी अनुकारीए केंद्र किये इ.वा मिनरे इ.वा अन्तरे इ.वा राई इ या जओ वं से जीवे अन्तोहितो बहिया निमाए। जह वं भन्ते े तीसे अउकुम्मीए होजा केह लिक्ने वा आब राई वा अओं मं से जीने अन्तोईंती बहिमा निमाए तो णं आई सहदेखा परिएका रोएका जहा अही जीवी वर्ष सरीर नी तं जीवी तं सरीरं। अन्द्रा मं अन्ते । तीसे अनुक्रमीए नरिव केंद्र विदे वा जाव नियगए तम्हा प्रकृष्टिया मे पहचा बहा तं बोको सं सरीरं नो अको जीवो अकं सरीरं ॥ तए मं केवी ब्रुगारसम्बे प्रदेशि राचे पूर्व ब्यासी-"वएसी । से बहानामए क्टा-गारसाला सिदा बुद्धांतिका सुना शुन्तुवारा निवायसम्मीरा । अर में केर पुरिसे

मेरि च इण्डं च गहाय कृडागाग्सालाए अन्तो २ अणुपविसद २ सा तीसे कृडागार-सालाए सम्बक्षी समन्ता धणनिचियनिरन्तरनिच्छिश्वाई द्वारवयणाई पिहेर । सीसे कृष्टागारसालाए बहुमज्सदेमभाए ठिका तं भेरि दण्डएणं महया २ सहेमं नाखेमा । में नूजं पएसी ! से णं सद्दे अन्तोहितो बहिया निमाच्छर !'' "इन्ना निमाच्छर"। ''अत्य णं प्रासी ! तीसे कूडमारसालाग् केइ छिड़े वा जाव राई वा जओ गं से संदे अन्तोहिती बहिया निम्मए ?" "नो उपद्वे समद्वे"। "एवामेश पएसी ! जीवे वि अप्यविद्वयगंड पुत्रवि मिचा सिलं मिचा पन्वयं निचा अन्तोहितो यहिया निमास्ट्रह । तं सहहाहि णं तुमं पएसी ! अजो जीवी ''तं सेव'' ॥ ३ ॥ ६३ ॥ तए जं पएसी रावा केसि कुमारसमणं एवं वयासी-"अत्य पं भनते ! एसा पना उदमा । डमेण पूण कार्गणं नो उदागच्छइ । एवं खलु भनते । अहं अभया क्याइ बाहिरियाए उबद्राणसालाए जाव बिहरामि । तए णं मर्न नगर्गुत्तिया ससक्सं जाव उन्णेन्ति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ वनरोनेमि २ ता अओक्रमीए पांस्ख-वामि २ सा अउमएणं पिहाणएणं पिहादेमि जाव पचहएहिं पुरिसेहिं रक्कादेमि । तए णं अहं असवा क्याइ जेणेव सा कुम्मी तेणेव उवागच्छामि २ ता तं अउकस्मि उगलच्छावेमि। नं अउकुर्निम किमिकुरिम पिव पासामि। नो चेव णै तीसे अउकुमसीए केड छिड़े वा जाव राई वा जओ णं ते जीवा बहियाईंतो अन्तो अणुशंबद्धा । जड़ णं तीसे अउनुरूमीए होज केंद्र छिट्टै जाव अगुर्पाबद्धा, तए मं अहं सहहेजा जहा अची जीवो तं चेव । जम्हा णं तीसे अउक्रमीए नस्थि केंद्र खिंदे वा जाव अणुपांवद्या तम्हा सुपदद्विया मे पडचा जहा नं जीवो तं सरीरं तं चेव" ॥ तए मं केरी कुमारसमणे पएसि रायं एवं वयासी-"अस्थि णं तुमे पएसी! कवाइ अए धन्नपुरुषे वा धमावियपुरुषे वा ?" "हन्ता अत्थि"। "से नृषं पुरुषी ! अर् धन्ते समाणे सब्वे अगणिपरिणए अवह ?" "हन्ता अवह" । "अस्यि व वर्षी ! तस्य अयस्स केइ छिड़े वा॰ जेणं से ओई बहियाहिंती अन्ती अणुपधिहु है" "नी इपहु ममहे"। "एवामेव पएसी! जीवो वि अप्यिक्त्यगई पुत्रवि मित्रा सिकं शिका वहियाहिंतो अन्तो अणुपनिसइ । तं सहहाहि णं तुमै पएसी ! ''नहेव'' ॥ ४॥ ६४ ॥ तए णं पएसी राया केसि कुमारसमणं एवं नवासी-"अत्य णं भन्ते ! एसा पना उनमा । इमेण पुण में कारणेण मी उदागच्छा । अन्ते ! के आहानामए केड पुरिसे तस्ये जाब ०सिप्पोत्रगए पम् प्रवक्ताकर्ग निसिरित्तव् 💯 "इन्सा पम्" । "जह णं भनते ! सी चेद पुरिसे बाले जात मन्द्विलाणे पश् होजा प्रवस्त्रकों निसिरित्तए, तो णं अहं सहहेजा जहा अची जीयो ते चेत्र । अस्ता श्री सन्ते । स

चैन से पुरिसे जान सन्दविनाणे नो पभू पक्षकाटमं निसिरिनए, तम्हा मुप्टाहिया में पहचा जहा तं जीको तं चंक" ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएनि रायं एवं वनाची-''से जहानामए केंद्र पुरिसे तरुने जाव विष्णीवगए नवएणं भणुणा नामग्राए जीवाए नवएषं उमुणा पभू पावकण्डगं निसिरिक्तए ?" "इन्ता पम्" । "मो चेव णं पुरिसे तक्ने जाद निरमित्योदमए कोरिहिएणं घणुणा कोरिहियाए जीवाए कोरिक्रिएणं उद्युणा पश्रू प्रवासण्डमं निसिरित्तए ?" "नो इणहे समहे" । "कस्हा र्ण है" "मन्ते ! तस्त पुरिसस्य अपजनाई उदगरणाई इवन्ति"। "एतामेव पएसी ! सो भेद पुरिसे बाके जाद सन्दिवसाणे अपजातीदगरणे, नो पशु पञ्चकण्डगं निसिरित्तए। तं सहदाहि णं तुमं पएसी! अद्धा अको जीको तं चेव" ॥ ० ॥ ६० ॥ तए गं पएसी रामा केसि कुमारसमणं एवं क्यासी-"कृतिय गं भन्ते ! एमा पना उनमा, इसेण पुण कारणेणं को उत्रागच्छा । भनते ! से जहानामए केड पुरिसे तस्ये आव ०सिप्पोबगए पम् एगं महं अयमारगं वा तडमभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ?" "इन्ता पभू"। "सो चेन पं भंते ! पुरिसे जुण्णे जराजजरिय-देहे सिहिलविकत्याविषह्यसे दण्डपरिमाहियमहत्ये पविरलपरिसहियदन्तसेढी जाउर किसिए पिनासिए दुम्बके किसन्ते नो पभू एवं महं अवभारवं वा जाव परिवहित्तरः । यह मं अन्ते ! स चेव पुरिसे जुल्ये जराजजरियवेहे जाव परिकिलन्ते पम् एवं महं अवमारं वा जाव परिवहित्तए, तो वं भहं सहहेजा '"तहेव । जम्हा णं मंते ! से चैव पुरिसे जुण्णे जाव किलन्ते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहिताप्, तस्का सुपाक्षिया मे पहचा "तहेव" ॥ तए मं केसी इसारसमये पर्सि रामं एवं ववासी-''से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जान ० किप्पोवगए नवियाए मिहजियाए नवएहिं सिक्सएहिं नवएहिं परिवयपिडएहिं पहु एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए !" "इन्ता पर्न"। "पएसी ! से चेन मं पुरिसे तक्के आव असिप्योक्शए जुन्मियाए दुन्बिक्सए पुज्यक्सह्याए विह्नियाए दुन्बलएहिं जुम्मएहिं पुण्यक्स-इएहि चिहिकतवप्रिणद्धएहि चिह्नएहि जुण्यएहि तुम्बलएहि वुणक्सहएहि परिययपि-डप्हें प्रमू एवं मई अग्रमार वा जाव परिवृद्धितए ?" "नो इपडे समहे"। "कम्हा र्ष ?" "अन्ते ! तस्स प्रतिसस्य ज्ञूच्याइं उत्तरारणाइं इवन्ति" । "पएसी ! से चेव से प्रतिसे जो जाव किलन्से लुज्जीवगरणे नो पश् एमं सई अयसार वा जाव परिचंदित्तम् । तं सहहाहि मं तुमं पएसी ! अहा असो जीवो असं सरीरं" ॥६॥६६॥ तए में से पएसी केर्सि क्रमारसममं एवं वयासी-"अस्व पं भनते ! जाव नी उद्यासकार । एवं माद्ध सन्ते ! जाव विद्यामि । तए मं सम नगरपुत्तिया

चोरं उबजेन्ति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवन्तगं चेव तुलेनि । तुलेना खबिच्छेर्य अकुरुवसाणे जीवियाओ बबरोविमि २ ता मयं तुलेमि । नो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवनतरस वा तुल्यिस्स सुयस्स वा तुल्यिस्स केइ आणते वा नाणने वा ओमने वा नुन्छने वा गुरुवते वा लहुवते वा । जर गं मन्ते । तस्म पुरिसस्स जीवनसम वा नुजियस्य मुक्स वा तुलियस्य केंद्र अवने वा जाव लहुयने वा तो णं अहं सहहेजा तं चैव । जन्हा णं मन्ते ! तरम पुरिमस्य जीवन्तस्य वा तुलियस्य मुधस्य वा मुख्यस्त परिव केद आणते वा लहुक्तो वा तम्हा मुपइह्रियः मे पर्का जहा तं जीवो "तं चेव" । तए णं केती कुमारसमणे पएसि रायं एवं वयासी-"अस्थि वं पर्वी ! हुने क्याइ बरबी धनतपुन्ने वा धमानियपुन्ने वा !'' "इन्ता अस्थि"। "अभि णं भएसी । तस्स बल्धिस्स पुष्णस्स वा तुलियस्य अपुण्णस्स वा तुलियस्य केंद्र अक्ती ना जान लहुगते ना ?" "नो इण्ड्रे समहे"। "एशमेन पएसी। जीवस्म **ज्युक्त्र्युयर्ग** पहुच बंावन्त्रस्य वा तुल्वियस्स मुयरम वा तुल्वियस्स मृत्यि केह आण्छे का जान सहुयते ना । नं सब्हाहि णं तुमं पएसी ! ... तं केन'' ॥ ७ ॥ ६७ ॥ तए ण पएसी रावा केसि कुमारसमणं एवं नवासी-"अस्थि ण अन्ते ! एमा जाब नो उवागच्छद । एवं खलु भन्ते ! अहं असवा जाव बीरं उवधिन्त । तए णं अहं तं पुरिसं सञ्ज्ञो समन्ता समभिन्होएमि । नो चैव मं तत्थ जीवं पासामि । तए णं जहं तं पुरिसं बुहाफालियं करेमि २ ता सम्बक्षो समन्ता समभिलोएमि । नो चेव जं तत्थ जीवं पासामि । एवं तिहा चउहा संखेळफालियं करेमि, नो चेव ण ताथ जीवं पामामि । जह मं भनते ! अहं तं पुरिसं दुहा वा तिहा वा वडहा वा संकेखहा वा फालियंमि जीवं पासन्तो तो वं अहं महहेजा को ं नं चेव । अमहा वं भन्ते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संक्षेत्रहा वा फालियंमि जीवं ल पासामि तम्हा मुपहद्विया से पहचा अहा ते जीवो ते सरीरं ''ते चेव" ॥ तए के केसी कुमारसमधे पएसि रावं एवं वसासी-"मृहतराए णं तुसं पएसी। ताओ तुच्छतराओ"। "के मं सन्ते ! तुच्छतराए ?" "पएसी ! से जहानामए केई पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोई च ओइश्रायणं च गहाय कहामं अडिव अणुर्गवद्वा । तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाण जाव किन्दि देसं अणुप्पता समामा एगं पुरिसं एवं वयासी-'अस्हे णं देवाणुप्पिया ! कहाणं अटविं पविसामी । एसी णं तुमं जोहमायणाओ जोई गहाय अम्हं अलणं साहेजासि । अहं तं बोहसायणे जोई विज्ञानेजा एतो मं नुमं बढ़ाओ जोई गहाय अर्म् असमं साहैजासि'ति-कर् बद्धाणं अवविं अणुपविद्धा । तए णं छ पुरिसे तजो सुकुत्तन्तरस्य तेसि पुरिसाणं

असमं माहेमितिकड् जेपेव जोइमायणे तेपेव उवागच्छा, बोइमाइणे जोइं विजनायमेव पासह । तए णं से पुरिसे जेणेत्र से कहे तेणेव उवागच्छह २ ना तं कहं सम्बजी समन्ता समिमलोएइ, नो चेव णं तत्व जोड़ं पासइ। तए णं से पुरिसे घरियरं बन्धइ, फर्सुं गिण्हइ, तं कहं दुहाफालियं करेड, सब्बओ समनता नमिन-कोएइ, नो चेव ण सत्थ जीई पासइ । एवं जाय संबेखकालियं करेइ, मञ्जओ समन्ता समित्रलेएइ, नो चेव णं तरथ जोइं पासइ । तए णं से पुरिस नंति बहुंसि दहाफालिए वा जाब संक्षेत्रफालिए वा जोई अपाममाणे सनते तनते परितनते निम्बिको समापे परसुं एगन्ते एडेइ २ ता परिवरं मुयइ २ ता एवं क्यासी-'अहो मए रोसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए'तिक दू ओह्यमणसंकप्पे चिन्दामोगसागगसंप-विद्वे कर्यळपल्हरसमुहं अङ्काणीकाए भूमिगबदिद्विए क्रियाइ । तए णं ते पृरिसा बद्धाई छिन्वन्ति २ ना जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छन्ति २ ना तं पुरिसं ओहग-मणसंकर्ष जाव क्रियायमार्थ पासन्ति रे ता एवं वयासी-'कि णं तुमं देवाणुरिपया ! ओह्यमणसंकप्ये जाव झिमायसि ?'।तए पं से पुरिसे एवं वयासी-'तृज्ये णं देवाणुप्पिया। बद्धाणं अद्धवि अणुपविसमाणा समं एवं वयासी-- अम्हे णं देवाणु-प्पिया ! बहुार्ण अडविं जाव पविद्वा । तए ण अहं तत्तो मुहुत्तन्तरस्स तुःआं असणं साहेमितिकडू जेनेव जोई बाब क्रियामि'। तए पं तेसि पुरिसापं एगे पुरिसे छेए दक्के पत्तक्के जाव उदएसक्कें, ते पुरिसे एवं दवासी---'गच्छह णं तुज्ले दवाणु-प्पिया ! व्हाया हव्यमायच्छेह, जा ने अहं असने साहेमि' तिकह परियर बन्धह २ ता परसे निष्दह २ ता सरं करेड, सरेण अर्राण महेड, जोई पाढेड २ ता जोडं संयुक्तेड, तेसि प्रस्तानं असनं साहेत् । तए नं ते प्रस्ता न्हाया जेनेव से पुरिसे तेनेव उवागच्छन्ति । तए णं से पुरिसे तेसि पुरिसाणं पुहासणवरगवाणं तं विउलं असणं पाणं बाह्मं साहमं सब्भेह । तए नं ते पुरिसा तं निस्तं असमं ४ आसाएमाणा वीसाएमाका जान विदुदन्ति । जिमियभुतुत्तरामया वि य णे समामा आयन्ता चोक्खा परमसुद्रभुवा सं मुरिसं एवं बवासी-'अहो जं तुमं देवाणुप्पिया! जहे मृहे अपन्डिए निविकाने अधुन्त्सकेदे, जे मं दुर्ग इच्छति कहुति दुहाकालियंति वा ॰ जोई पातिनाए'। से प्रमहेण पर्सी ! एवं तुषद मूहतराए के तुर्व पर्सी ताओ तुष्कतराओं ॥<॥६<॥ तम् मं पएसी रावा केसि कुमार्समणं एवं वयासी-"जुताए मं मन्ते ! तुन्मं इय क्षेत्राचे व्यवसाय कुरानं कुरालानं सहासकृतं विजीमार्थ विद्याणपत्तानं उदएसल-दाणं महं इबोडे महाविमाए महंचपरिसाए मण्डो उचानएहिं आउसेहिं आउसितए, टबाबसाई अवंतकाई वदंतितए, एवं विकास्तकाई॰ निकारकारि॰ ?"। तए

णे केसी कुमारसमणे पएमिं रायं एवं त्रवासी -- "त्राणासि णे तुमं पएसी ! 🐗 । परिसाओं पनताओं ?" "भन्ते ! नाणामि, चनारि परिगाओं पनता । ते नहा-खानियपरिमा माहाबद्धरिसा साहणपरिमा इनियरिमा"। "आणासि णं तुमं पएसी राया ! एयासि चडण्हं परिमाणं कस्त का दण्डनीई पक्षना !'' "हन्सा आणानि । जै णं सत्तियगरिसाए अवरज्ज्ञड से णं इत्यच्छित्रए वा पार्यान्छनए वा सीसच्छित्रए वा स्लाहए वा एगाहबे कुडाहबे जीवियाओं ववरोविज्य । जे ण गाहावप्रप्रिमाए अवरज्यह से मं तएम वा वेटेम वा पलालेम वा बेढिना अगणिकाएमं झामिका । जे णं माहणपरिनाए अवरज्ञाह से णं अणिहाहि अकनताहि बाव अमणामाहि यगृहिं उदालम्भिना कुण्डियालञ्चलम् वा सुलगलञ्चलम् वा कीग्ड, निविसस् हा आणविजाइ । जे नं इसिपरिमाए अवरज्झड़ से णं नाइअभिद्वार्हि जाव माइ-अमणामाहि वर्ग्मृहि उवालक्मर्" । "एवं च नाव पएसी ' तुमं वाणासि, तहा वि णं तुमं ममं वामंवामणं दण्डंदण्डेणं पिककृतंपिकृतंत्रणं पिक्तोमंपिकतोसेणं विवयाः संविवकासेणं वष्टिसं"। तए णं पएसी राया केसि कुमारसमणं एवं बयासी--"एवं खलु अहं देवाणुष्पिएहिं पत्तिकर्णं चेव वागरणंभं संस्था । तए मे सस इसेयास वे अञ्भत्थिए जात्र संकाये समुप्यजित्था-जहा जहा यं एयस्स पुरिसस्स वाभंवामेणं जाव विवक्षासंविवकासेणं वहिस्सामि, तहा तहा मं आहं नाणं व नाणोवलामं व करणं च करणोत्रलम्भं च दंसणं च दंसणोवलम्भं च जीवं च जीवोकतम्भं च जवलिस्सामि । तं एएणं कारणेणं अहं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं बाव विषयाः-संविवकामणं विष्टए"। तए णं केसी कृमारसमणे पएसीरायं एवं वयासी---"आकारि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारमा पकता ?" "इन्ता जाणामि, कताहि ववहारमा पत्रता-दंइ नामेंगे नो सक्तवंड, सक्तवेड नामेंगे नो देश, एये बेड वि सक्तवेड वि, एगे नो देह नो मझबेह"। "जाणासि में तुमै पएसी! एएसि बटम्बं पुरिसामें 🕏 ववहारी के अव्ववहारी ?" "हन्ता जाणामि, तस्य यं जे से पुरिसे देश नी सक्वीड से णं पुरिसं ववहारी, तत्थ णं जे से पुरिसे को देह सक्तवेह से णं पुरिसे कवहारी, तत्थ मं जे मे पुरिसे देइ वि सम्बद्ध वि से मं पुरिसे ववहारी, सत्य मं जे से पुरिसे नो देह नो सम्रदेह से मं अववहारी"। "एकामेव तुमं पि ववहारी, मी चेव मं तुमं पएसी ! अववहारी'' ॥ ६९ ॥ तए मं पएसी राया केसी कुमारसम्बं एवं वयासी-"तुज्हो मं भनते ! इय ह्रेया दक्ता जान उनक्सलमा । सनत्या नं भनते ! ममं कर्यलंति वा आमस्त्रं जीवं सरीराओ अमिनिवरिताणं सम्देशितए?"। तेथं काळेणं तेणं समएणं पएसिस्स रखी अदूरसामन्ते वाउकाए संयुक्त, राणवयससम्बाद

खुबह बेयइ चल्छ फन्दह बहुइ उदीरह तं तं भावं परिणमह । तए णं केसी कुमारममणे प्रति रायं एवं वयासी-"पामसि णं तुमं पर्सी रामा! एयं तणवणस्तई एयन्ते बाब मं तं आवं परिणमन्तं ?" "इन्ता पासामि"। "जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्यकायं कि देवो वालेड असुरो वा चालेड नागो वा किनारो वा चालेड किंप्रिंसो वा बालेड महोरगो वा बालेड गन्यव्यो वा बालेड ?" "हन्ता जाणामि, नो देशो चालेड जाब नो मनभग्वो वा चालेड, वातकाए चालेड"। "पासिस पं तुमं पएसी! एयस्य बाउकायस्य सम्बन्धिः सकामस्य मरागस्य समोहस्य सवैयस्स सकेतस्स ससरीरस्स रूवं"? "नो इणड्डे समड्डे"। "जइ णं नुमं पएसी राया! एयरस वाउकायस्य सक्षविस्स जाव ससरीरस्स कर्न न पासचि. तं कहं णं पएसी ! तव करगलेंसि वा आमलगं जीवं उनवंतिस्सामि ? एवं खळ पएसी ! इसठाणाई छउमत्ये मणुरसे सव्यक्तावेणं न जाणह न पासह। तं जहा-धन्मत्यिकायं १ अधन्मत्यिकायं २ आगासिकामं ३ बीवं असरीरवर्दे ४ परमाणुपोमालं ५ सहं ६ गन्धं ७ वायं ८ अयं जिणे अन्तिसह वा नो मबिस्सह ९ अयं सम्बदुक्खाणं अन्तं करिस्सह वा नो ना ...१०। एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सञ्दमावेणं जाणइ पासइ । तं जहा-चम्मत्यकायं जाव नो वा करिरसइ । तं सहहाहि णं तुमं पएसी! महा अची जीवो ''तं चेव'' ॥ ७० ॥ तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं बयारी-"से नूर्य भनते ! इत्यिस्स कुन्धुस्स य समे चेत्र जीवे !" "इन्ता पएसी । इत्यस्स य कुन्युरस व समे चेव जीवे" । "से नूर्ण भनते ! इत्यीओ कुन्यू अप्यक्रमानुराए चेद अप्यक्रिरियतराए चेद अप्यासवतराए चेद, एवं आहारनीहार-उरतासनीसासङ्खीए अप्पतराए चेव, एवं च कुन्युओ इत्बी महाकम्मनराए चेव महाकिरिय० ?" "इन्ता पएसी ! इत्यों कुन्यू अप्पक्रमतराए चेव० इन्युओ वा हरबी सहाकम्यतराए भेव ''तं भेव''। "कम्हा में मन्ते ! हरिबस्त य क्रन्युस्त य समे चेव और ?" "पर्वा से बहानामए कूडायारसाला तिया जाव गम्मीरा । अह ण केह पुरीसे औई का बीर्च वा महाय तं कुछागारसाठं अन्तो २ अणुपविसह। तीले कृहाबारपासाए सन्नकी सनन्ता वननिवयनिरन्तरनिक्काई दुवारवयणाई पिहेद २ सा सीक्षे कूडामारसामाए बहुमञ्जावेसभाए तं पहेर्व प्रतिवेजा । तए में से पहुँचे तं सूजागारसाकं मन्त्रों २ ओमासह उज्जोवेह तबह पमासेह, नो जेव णं बाहि । अह पं से हरिते से पर्वतं रहरएणं विहेना, तए वं से पर्वे तं रहर्यं अन्तो २ ओमासेह, जी क्षेत्र में शहरमस्य बाई जो केर में जूडागारसालाए बाई । एवं किलिकेषं बाज्यम्मिकित्वेषु परिचयपित्रमुकं भावतृषं अद्याद्यमं परवतृषं अद्यादयम्

कुलवेणं अडकुलवेणं चाउटभाइयाए अडभाइयाए मोलसियाए वसीसियाए बजयद्विवाएं दीवचम्पएणं । तए णं से पहेंचे डीवचम्पगरम अन्तो : ओभासह ४ नो चंब णं रीवयम्पगरम् बाहिं नो चेव णं चउमहियाए बाहिं नो चेव णं कूडागाम्सार्क नो चेद णं कुडागार्गालाए दाहि । एवामेद पएमी ' जीवे वि अं जारिम्यं पुल्बकम्मनिवदं बोंदि निव्वतेतः, तं असंखेजेहि जीवपर्सेहि यन्तितं करेह खोइयं वा महास्तियं वा । तं सहहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्तो जावो ''तं चेव' ॥ ७३ ॥ तए णं पएसी राजा केसि कुमारसम्बद्ध एवं वयासी-' एवं सन्तु भन्ते ' मम अजगस्य एसा सजा जाव समीमरणे जहा सं जीवों ने सरीर नी अजो जीवो अर्ज मरीरं । तथाणन्तरं च णं ममं पिउणो वि एसा सन्ना० । तथाणन्तरं मम वि एमा सन्ता जाव समोसर्णे । तं नो खनु अहं बहुपुरिसपरंपरामयं कुलनिस्सियं दिहि छण्डेरसामि"। तए णं केसी कुमारसमणे पएसि रावं एवं वयासी -- "मा णं नुमं पएसी ! पन्छाजुनाविए भनेजासि जहा व से पुरिसे अवहारए"। "के ण भन्ते ! से अयहारए ?" "पवसी । से जहानामए केइ पुरिमा अत्यन्थी अत्थनवेसी अन्य-लुद्भा अत्यकंखिया अत्यपिशसिया अत्यगदेसणमाए विडलं पवित्रभण्डमायाए सुबहुं भनावाणपत्थ्ययणं गहाय एगं महं अगामियं छिन्नावायं वीहमछं अडवि अणु-पनिद्वा । तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडबीए कंचि देसं अणुप्पत्ता नमाणाः एगं महं अयागरं पासन्ति अएणं सब्बओ समन्ता आइण्णं विन्धिण्णं सच्छडं उप-च्छडं फुटं गार्ट अवगार्ड पासन्ति २ ना हड्वउड जाब हियदा अश्रमणं सहावेन्ति २ ना एवं वयासी---"एस णं देवाणुण्यया ! अयमण्डे इद्वे करते जाव मणामे । मं सेवं सञ्च देवाणुन्पिया ! अम्हं अयभारए बन्धिनए'तिकतु अक्रमकस्स एयमई पिकपुन णेन्ति २ ता अयुभारं बन्धन्ति २ ता अहाजुपुब्बीए संपरिषया । तए यं ते पुरिसा तीसे अगामियाए जाव अडवीए कंचि देसं अगुपता समाणा एगं महं तडमागरं पासन्ति तडएणं आइण्णं तं चेव जाव महावेता एवं क्यासी-(एस णं देवाणुप्पिया । तडम-भण्डे जाद मणामे । अप्पेणं चेव तडएणं सुबहुं अए लब्सइ । तं सेवं बखु देवाणु-प्यिया ! अयभारए छोता तडयभारए बन्धितए' तिकृष्ट् अन्नमन्नस्य अन्तिए एयम्ड पडिसुणेन्ति २ ता अयभारं छडेन्ति २ ता तलसभारं बन्धन्ति । तस्य में एगे पुरिसे नो संचाएइ अयमारं छक्तिए तलसभारं बन्धिताए। तए में से पुरिसा ते पुरिसं एक वयासी--'एम णं देवाणुप्पिया ! त्रस्थानके जात सुनई अए अन्सई । तं छडेहि मं देवाणुष्पिया ! अयभार्षं, तडयमार्गं बन्धाहि' । तए पं से पुरिसे एवं वयासी-'दराहरे में देवाण्यिया । अप: निराहरे में देवाण्यिया ! अप: अहसार्थन-अपने में देवाणुष्पिया ! अए; असिलिद्धवन्थणबंदे में देवाणुष्पिया ! अए; धणियबन्धणबंदे मे हेबाणुष्पिया ! अए: नो संचाएमि अयभार्ग छहेना तत्वयभारगं बन्धिनए'। तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे नो संचाएन्ति बहुई आधनणाहि य पन्नवणाहि य आधनिनए बा प्रकारिताः वा. तया अहाणुप्रव्वीए संपत्त्रिया ॥ एवं तम्बागरं रूपागरं सुवण्णागरं रसणागरं वदगानरं ॥ तए णं ते पुरिसा जेणेव सवा २ जणवसा जेणेव साई २ नसराई तेणेव उवागच्छन्ति २ ता वहरविक्यणं करेन्ति २ ता मुबहुदासीदासगोमहिसगवेलमं गिण्डन्ति २ ता अद्भनत्मसियवर्डिसगे कारावेन्ति। ण्डाया अप्प० तप्पि पासाय-वरमया फुटमाणेष्टि मुद्दक्रमत्यएहि बत्तीसङ्बद्धएहि नाडएहि वरतस्मीसंपउत्तिहि उवनिकासमाणा उवलालिकसाणा हुद्रे सहफरिम जाय विहरन्ति ॥ तए पं से परिसे अयभारेण जेणेब सार नगरे तेणेव उवागच्छड । अर्थावक्षिणणं करेड २ ता तंसि अप्पत्नोहंसि निहियंसि शीणपरिष्यए ते पुरिसे उपि पासायवरमए जाव विहरमाणे पासइ २ ता एवं वयासी- अही णं अहं अधकी अपुण्यो अक्यत्यो अक्रयलक्खणो हिरिसिरिवजिए हीणपुण्यक्तकहसे दुर्न्तपन्तस्वकणे । जह णं अहं मिलाण वा नाईण वा नियनाण वा सुप्रेन्तओ, तो णं अहं पि एवं चंव उपि पासायबरगए जाब विडरन्ती'। से तेणदेणं पएसी ! एवं बुबह-मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताबिए भवेजासि जहा व से पुरिसे अग्रहारए"॥ ७२॥ एत्थ मं से पएसी रामा संबद्धे केसि कमारसमणं बन्दर जाव एवं बयासी-"नो खळु भन्ते ! अई पच्छाणुताविए अविस्सामि जहा व से पुरिसे अयमारिए । तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाचं अस्तिए केविपवत्तं धम्मं विसामित्तए" । "अहासुहं देवाणुष्पिया ! मा पविवन्धं करेहि"। घरमकहा जहा चित्तस्त, तहेव गिहियमां पविवज्ञह २ ता जेणेव सेमविया नगरी तेणेव पहारेत्य गमणाए ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएसि रायं एवं वयासी-"जाणासि तुमं पएसी । बद बायरिया पकता ?" "हन्ता कावामि, तओ कायरिया पकता । तं जहा-कलायरिए सिप्पाय-रिए घम्माबरिए"। "जाणासि वं तुर्म पएसी । तेसि तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपिक्ती प्रविश्वयन्ता ?" "हुन्ता जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उबलेवणं संमञ्जनं वा करेजा पुरुषो पुष्फाणि वा आणवेजा सजावेजा सन्धावेजा भोगावेजा वा, विश्वतं जीविवारिष्टं पीड्यार्थं दलएजा, पुत्ताणुपुत्तियं विति कप्येजा । जत्येव धम्मावरिवं पाविजा सत्येव वन्देजा नर्गरेजा सकारेजा संगायेजा कहानं मक्रके देवने चेड्ने वंजुनासेजा, कासुएसमिजेनं असमपाणबाइमसाइनेनं पडि-लामेखा, पालिकारिएणं मीवकलगरीजासँगारएणं उपलिमन्तेजा"। "एवं च ताद ७ ग्रसान

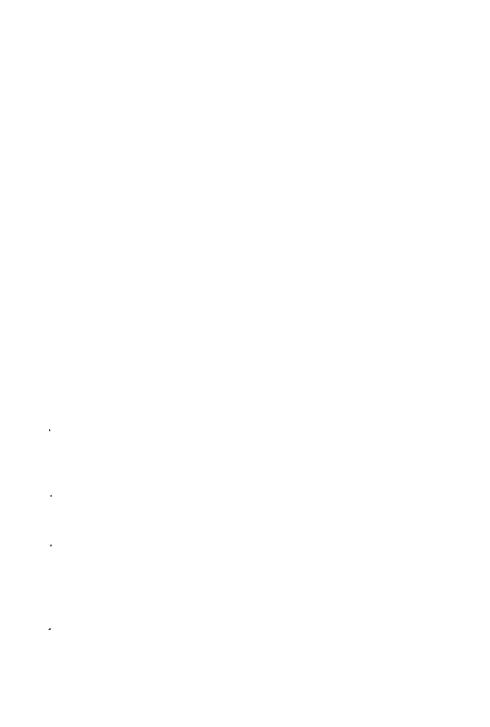
तुमं पएसी ! एवं जाणासि, तहा वि णं तुमं समें वामंशमेणं जान पहिला सकैं . एयमहं अक्लामिता जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्य समणाए"। नए भे से पहिसी राया केमि कुमारसमणं एवं वयासी-"एवं खलु भनते ! सम एयालवे अज्ञनिथए जाव ममुप्पजित्था—'एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वासंवामेणं जाव वहिए, तं सेयं खुद्ध में कई पाउप्यमायाए स्यणीए जात्र तेयसा जलन्ते अन्तेउर-परिवालसिंदं संपरिबुडस्य देवाणुप्पिए वन्दिनए नमेसिनाए, एयमहं मुजो २ सम्मं विगएणं स्वामित्तए तिकष्टु जामेव दिसि पाउच्भूए तामेव दिसि पिडेगए॥ ७३॥ तए णं से पएसी राजा बलं पाजप्यमाचाए रमणीए जाव तेयसा बलन्ते सहतुह जात हियए जहेव कृषिए तहेव निमान्छह, अन्तेराग्परियालसर्दि संपरिष्ठं पत्रविहेणं अभिगमेणं वन्दर नर्मसङ्, एवमद्वं भुजो २ सम्मं विशएणं खामेर् ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रको स्रिक्क-नप्पमुद्वाणं देवीणं तीसे य महद-महालियाए महत्रपरिसाए जाव धरमं परिकहेड । तए णं पएसी राया धरमं सोखा निसम्म उद्वाए उद्वेह २ ता केसि कुमारसमणं वन्दइ नर्मसह वं २ ता जेणेव सेर्यावया नयरी तेजेव पहारेत्व गमणाए॥ तए णं केसी कुमारममणे पएसिं रायं एवं वयासी--"मा णं तुमं पएसी ! पुन्नि रमणिजे भनिता पच्छा अरमणिजे भनि" जाति, जहां से वणसण्डे इ वा नस्साला इ वा इक्खुबाइए इ वा सलवाडए इ वा"। "कहं णं भन्ते ?" "जया णं चणमण्डे पत्तिए पुष्किए फळिए इरियगरेरिजमाणे सिरीए अईव २ उवसोसेमाणे चिद्धह, तया वं वणसण्डं रमणिजे भवह । अया वं वणसण्डं नो पत्तिए नो पुष्फिए मो फलिए नो इरियगरेरिजमाने नो सिरीए अईब २ उबनोभेमाणे चिट्ठह, तया णं जुण्णे झडे परियंडियपग्डुपते सुक्रस्ये इव मिलायमाणे चिद्रह, तथा णं वणमण्डे नो रमणिके भवर । जया चं नहसाला वि निजार वाहजाइ निषाजाइ हसिजाइ रमिजाइ, तथा ण नष्टसाला रमणिजा भवाइ । जया णं नष्टमाला नो निजइ जाव नो रमिजइ, तया णं नद्वसाला अरमिजा भवड । जया णं इक्खुवाडे छिजाइ सिजाइ सिजाइ विजाइ, तथा मं इक्खुवाडे रमणिजे मनइ । जया णं इक्खुवाडे नी छिजाइ जान तया णं इक्खुवाडे स्रामिजे भवतः। जया णं सलवाते उच्छुकाइ उत्तरकाइ मुलिकाइ सामाइ कियाई दिजाः, तया णं खलवाडे रमणिजे भवड । अया णं सकवाडे नो अन्यस्थाह पाप अरमणिजे भवद । से तेणद्वेणं पएसी ! एवं बुचह, मा में दुर्भ पएसी ! धुनिंद रमणिजे भनिता पच्छा अरमणिजे भविजासि बहा से बणसम्बे इ का॰"। सप चे पएसी राया केसि कुमारसमर्ग एवं नयाची--''नो सद्ध शन्दे ! अहं प्रश्नि रस्तिके

अविला पच्छा अरमणिजे भविस्पामि, जहां से वणसण्डे ड वा जाव खलवाडे इ वा । अर्ह णं सेर्बावयानमरीपामोक्साई सत्त गामसहस्याई चत्तारि भागे करिस्सामि । एवं भागं बलबाहणस्य दलइस्साम, एगं भागं कोद्वागारे खभिस्सामि, एगं भागं अन्ते-उरस्य दलहरूसामि, एरोणं भागेणं मह्हमहालयं कृहागारसालं करिस्सामि । तत्य पं बहुहिं पुरिसेहिं विजमइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं ४ उवक्सडावेता बहुणं समण-माहणभिक्खुयाणं पन्धियपहियाणं परिभाएमाणे २ बहुहिं सीलव्ययगुणव्ययवेरमण-पत्रक्लाणपोगहोक्वासस्स जाव विहरिस्सामि"तिकर् जामेव दिसि पाउच्भए तामेव दिसि पडिवए ॥ तए णं से पएसी राया ऋहं जाव तेयसा जलन्ते सेयबि-यापामोक्खाइं सत्त गामसहस्साई चतारि भाए करेह । एगं मार्ग बळवाहणस्स दलइ जाब कूडागारगालं करेडू, तत्थ णं बहुद्धि पुरिसेद्धि जाब उक्क्यबाबेना बहुणं समण जाव परिभाएमांचे विद्वरह ॥ ७४ ॥ तए णं से पएसी राया समणोवासए बाए अभिगयजीवाजीवे "बिहर्ड । जप्पिबई व णं पएसी राया समणीवासए जाए नप्पितिहं य णं रखं य रहं य वलं य बाहणं य कोसं य कोहानारं य पुरं य अन्तेवरं च अभवयं च अधावायमाचे बाबि विहरह । तए पां तीसे सूरियकन्ताए देवीए इमेबास्ट अञ्चातिषर जाव समुत्पजित्या-"त्रपानिई च णं पएसी रावा समणीवासए जाए तप्पिमई च मं रखें च रहें च जाब अन्तेटरं च ममं च जणवयं च अणाडायमाचे बिहरह । नं सेयं बद्ध में पर्सि रार्च केण वि सत्वपओगेण वा अभिगपओगेण वा सम्तप्पक्षोगेण वा विसय्पक्षोगेण वा उद्देशा सूरियक्नां कुमारं रजे ठविता सब्बेब र्जिसिर कारेमाणीए पाळेमाणीए विद्वरितए"तिकह एवं संपेद्देश २ ता स्वियकन्तं कुमारं सहाचेश्व २ ता एवं बबासी-"अप्याभिदं च मं पएसी राया समजीवासम् जाए तप्पनिदं च जं रजं च जाव अन्तेवरं च मर्म च जणवर्ग च माणुस्सए च कामधोगे अणादायसाणे बिहरह । तं सेर्य बालु तव पुता ! पएसि दावं केण्ड सरकप्रकोरोण वा जाव उद्विता संगमेन रजसिरि कारेमाणे पाकसाणे विद्वितस्" । तद् यं स्रियकन्ते क्रमारे स्वियकन्ताए देवीए एवं क्षेत्र समाजे स्रियकन्ताए देवीए एयमई मी आढाइ, नी परियाणाइ, उतिथीए संविद्धाः । तप् मं सीसे स्रिमकन्ताए देवीए इमेगारुवे अज्ञात्विए आव समुष्यक्रित्वा-"मा नं स्वितकत्ते कृषाहे पएसिस्य रत्तो इनं ममं रहत्त्वमेर्य करि-स्सद् "रिद्धाद्व प्रवृक्तिस्स समो क्रिकाम्य स सम्मानि स रहस्सानि स मिनरानि स अन्तरावि स पविकासरमानी २ निहरह । तए मं स्रियकन्ता देवी अनुवा कवाइ पएसिन्त रहते अन्तरं जानह २ ता असूर्य आव साहमं सन्ववस्थानन्यनासालंकारं

विमय्युओर्ग परजाइ । पार्तिस्स रक्षो ण्हायस्स सृहाराजवर्गयस्य तं विश्ववैज्ञतं अमर्ण ४ वत्यं जाव अलंकारं निस्तिरेइ, धायइ । तए णं तस्स पएसिम्स रही ते विससंजुत्तं असणं ४ आहारेमाणस्य मरीर्गांभि वेयणा पाउटभूया उजाला विउका पगाढा ककसा कडुया फल्या णिहुरा चण्डा तिल्वा दुक्का दुम्मा दुरहिवामा, पिन-जरपरिगयमरीरे दाहवक्किन्गए सार्वि बिहरइ ॥ ७५ ॥ तए ण से पएसी राया म्रिय-कन्ताए देवीए अताणं संपलदं जाणिता स्रियकन्ताए देवीए मणमा वि अप्यतु-स्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छा २ ता पासहसालं पमजह २ ता उबा-रपामकाभूमिं पिंडलेहेड् २ ता द्वासंचारमं संघरेड् २ ना दव्यसंचारमं सुरुहड् २ ता पुरत्वाभिमुहे संपलिय इनिसण्णे कृत्यलपरिमाहियं । सिरसावरं अङ्गलि मत्थए कडू एवं वयासी-''नमोत्थु णं अरहन्ताणं जाव संपन्ताणं । नमोत्थु णं केसिस्स कुमार्यमणस्य मम धम्मोवएसगस्य धम्मायरियस्य । बन्दामि णं भगवन्तं तत्थगर्व इहगए। पासउ मे अगवं नत्थगए इहगर्व तिकट्ट बन्दह नमंसइ। "पुटिंव पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अन्तिए धृत्रपाणाइकाए पव्यक्साए जाव परिगाहे । तं इयाणि पि णं तस्सेव भगवओ अन्तिए सध्वं पाणाइवायं पनक्सामि जाव परिमाहं, सर्व्य कोहं जाव मिच्छावंसणमत्नं, अकरणिजं जीर्ग प्यवन्यामि, चउल्बहं पि आहारं बावबीवाए पचक्कामि, जं पि व मे सरीरं इहं बाव फुसन्तुति एवं पि य णं चरिमेहिं कसासनिस्सासेहिं बोसिरामि''निकर् आखोइय-पडिक्रन्ते समाहिपते कालमासे कालं किया सोहम्मे कप्पे स्रियामे विमाणे उववायसभाए जाव क्ष्णओ ॥ तए णं से सुरियामे देवे अहुयोववसए सेव समाने पश्चविद्वाए पञ्चतीए पञ्चतिभावं गच्छा । तं जहा-आहारपञ्चतीए मरीरपञ्चतीए इन्द्रियपजतीए आणपाणपजतीए भासामणपजतीए । तं एवं सञ्ज भो सुरियामेणं देवेणं सा दिव्या देविष्टी दिव्या देवजुई दिव्ये देवाणुगार्वे रुद्धे परे अभिसमजागए" ॥ ७६ ॥ "सुरियाभस्स मं भन्ते ! देवस्स केव्हयं कालं ठिई पक्ता ?" "वीयमा ! चतारि पळिओवमाई ठिई पणता"। "से णं स्रियामे देवे ताओ देवळोगाओ आउक्सएणं भवक्सएणं ठिड्क्सएणं भागन्तरं चयं बद्दना कहिं समिहिर, करिं उववजिहिइ ?" गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवन्ति, ते बहा-अष्ट्राई दिताई विउक्ताई विस्थिण्णविपुलभवणसम्पासणजाणवाहणाई बहु्वणबहुव्याव-स्वरययाहं आस्रोगपक्षोगसंपठताहं विच्छद्वियपवरमत्तपाणाई बहुदासीदासमीमहि-सगवेलगप्पभूयाई बहुजणस्स अपरिभूयाई, तत्य अक्रयरेख कुळेखु पुताताएं पकाया-इस्सइ । तए णं तीस दारगीस गब्सगमंति चेव समाणीस अन्मापिकणं धर्मे द्रहा

^{है} पदका मिन्यद । तए णं तस्स दारगस्स नवण्हं मासाणं बहुप**रि**युण्णाणं अद्बहुमाण ै राईदियाणं वीइक्कन्ताणं सुकुमालपाविषायं अहीषपदिपुण्णपबिन्दियसरीरं लक्रसणः वजणगुणोवनेयं माणुम्माणपमाणपिषपुष्णगुजायसव्यक्तमुन्दरक्तं ससिसोमाकारं कन्तं पियर्दसणं मुस्यं द्वारयं पयाहिद्द । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे टिव्ववियं करेहिन्ति । तह्यदिवमे चन्द्रसूर्दंसणगं करिस्सन्ति । छद्वे दिवसे जागरियं जागरिस्मन्ति । एकारसमे दिवसे वीइक्टते संपत्ते बारसाहे दिवसे निव्वित्ते असूड्-जायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओवितिते विउतं असमपाणवाहमसाहमं उद्यक्ता वेस्सन्ति २ मा मिननाइनियगसयणसबन्धिपरियणं आमन्तेत्रा तओ पच्छा ण्डाबा अलंकिया भोयणमण्डवंति सहासमवरगया तेण मितनाइ जाव परिजणेण सद्धि विउतंः असणं ४ जासाएसाणा विसाएमाणा परिभुजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्सन्ति । जिमियभूतत्तरागया वि व णं समाणा आयन्ता चोक्सा परमसङभया तं मिननाइ आव परियणं विउत्हेणं वत्वयन्धमहालंकारेणं सकारेस्सन्ति संगापि-स्सन्ति स॰ २ ता तस्सेव मित्त जाव परियणस्स पुरओ एवं वहस्सन्ति-'बम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमेलि दारगेलि गरभगयंति चेव समार्गति घरमे दढा पहचा जाया, तं होउ णं अम्हं एक्स्स दारक्स दडपइक्रे नामेणं । तए वं तस्स दढपइक्षस्स दारगस्स अम्मापिवरो नामधेकं करिसान्ति-दढणको य २ । तए णं तस्स अम्मापियरो अनुपुरुवेणं छिव्यद्वियं च चन्दस्रियदरिमणं च धम्मजागरियं च नामधेजकरणं च परीसणमं च पजम्पणां च परिवद्दावणमं च पचरूमणगं च कृष्णवेहणं च संबद्धारपिक्केंद्र्णगं च चूल्नेवणयं च अचाणि य बहुणि गस्भाहाण-जन्मणाइयाई महवा इड्डीसकारसमुदएणं करिस्सन्ति ॥ ७७ ॥ तए णं से दढ-पर्के दारए प्रवणाईपरिक्खिले खीरघाईए मजनवाईए मन्द्रणवाईए अञ्चणाईए कीलाक्णवाईए, अवाहि य बहुदि सुजाहि विलाइयाहि वामधिवाहि वडिमेगाहि बम्बरीहि वससिवाहि जोन्दियाहि पञ्जविवाहि इसिनिजियाहि वास्त्रियाहि सासियाहि कउत्तिमाहि दमिलीहि सिंहकीहि आरबीहि पुक्किकीहि पक्कि है वहकीहि मुरंबीहि सवरीहिं पार्शीहिं नाणादेदीविदेसपरिमण्डियाहिं सदेसनेवत्वगहियवेसाहि इक्रि-यचिन्तिमपरिवसिमाणाहि निरमकुरस्कहि विजीवाहि चेवियानक्षेत्रास्तरकिकन्द-परिवालपरिकृषे वरिसपरक्षमुदमहपरवन्दपरिक्खिते हत्याओ हत्यं साहरिज्यमाणे २ उपनिवासामे २ अंकामो अंक प्रियुक्तमाणे २ उपनिवासाणे २ उपकारिकामाणे २ वक्गूहिजनाको ५ सक्याकिजनाचे २ परिवेदिजनाचे २ परिवृक्तिजनाचे २ रम्मेस मनिकोडिसरोकेसु परंपामाचे २ जिस्किन्दरमाहीचे विव वस्मगवरपाववे निवाब-

निञ्चाषायैसि सुहैसुहैणं पविविश्वस्सद ॥ ७८ ॥ तए णं तं दढपदणं दारगं अम्मापियरी साइरेगअहुवासमावर्ग जाविता सोमणीस तिहिक्तणनक्त्रसमुद्वतीस व्हार्न सच्चा-रंकारविभूसियं करेता मह्या इङ्गीनकारममुद्रएणं कलायरियस्य उवणेहिन्ति । नए जै से कलायरिए तं दकपड्कं दारगं छेहाइयाओ गणियायहाणाओं गठणहरापज-बसाणाओं बावसीरें कलाओं सुताओं य अत्थओं य गैथओं य करणओं य परिक्ला-वेहिइ य शेहावेहिइ य । तं जहा-छेई गणियं सर्व नई गीयं नाडये सरगर्य पोक्स्तरगर्य समताकं अ्वं जणवायं पामगं अद्वावयं पोरेकचं दगमहियं अचलिहिं पाणिविहिं वत्य-विहि विकेषणविहि समणविहि अर्ज पहेलियं मागहियं [निदाइयं] गाई गीडयं सिलोगं हिरकाजुर्ति मुक्जाजुर्ति चुक्जाजुर्ति आमरकविहिं तहणीपविक्रममें इत्थिलक्खणं पुरिस-क्रम्बर्ण इयलम्बर्ण गयलम्बर्ण गोणलम्बर्ण कुकुडलम्बर्ण छत्तलम्बर्ण दण्डल-क्सणे असिलक्सणं मणिलक्सणं कागणिलक्सणं वर्त्युविसं नगरमाणं सन्धावारं चारं पंडियारं वृहं पंडिवृहं चक्क्वृहं गरुलबृहं मगडवृहं जुदं निजुद्धं जुद्धाइजुदं लहिजुदं सुद्विज्ञं बाहुजुद्धं लयाजुद्धं ईसत्यं छरुप्पवार्यं घणुरुवेयं हिरण्णपागं सुवण्णपागं हत्तकेई बहुकेई नालियाकेई पत्तच्छेजं कडगच्छेजं सजीवं निजीवं सरणस्यमिति । तए ण से कलागरिए तं दहपहर्भ दार्ग डेहाइयाओ गणियणहाणाओ मउणस्यप-जनसाणाओं बावत्तरिं कलाओं धुनओं य अत्यक्षों य गन्धओं य करणकों य सिक्सावेता सेहावेना अम्मापिकणं उपणेहिह । तए णं तस्य दढपर्वस्स दारणस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउल्लेणं असणपाणसाइमसाइमेणं कृत्यगन्त्रमञ्जलकारेणं सकारिस्मन्ति संमाधिस्मन्ति स०२ ता विष्ठलं जीवियारिष्ठं पीइदाणं दळद्रस्मन्ति २ ता पिंडविसज्बेहिन्ति ॥ ७९, ॥ तए णं से दडपर्के दारए सम्मुक्तवालमावे विकासपि-णयमेते जोव्वणगमणुप्यते बाबतरिकळापण्डिए अद्वारसमिहदेशिप्यगारमासाविसारह नवज्ञप्रतपिंडवोहए गीयरई गन्धव्यनहकुतके सिक्नरागारचाहवेसे संगयगयहसियम-णियचिद्वियविकाससंकाननिउणजुत्तोवयार्कुसके हय बोही गयओही रहकोही बाहुबोही बाहुप्पमरी अर्कमोगसमत्थे साहसिए वियालकारी यावि मविस्सइ । तए श्रं से दद-पद्दं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्ष्वाळमार्वं जाव विवासमारि च विवासिसा विस्केरि अनमोगेहि य पाणमोगेहि य केमभीगेहि य बत्यभीगेहि व समन्त्रीगेहि व स्वान-मन्तेहिन्ति । तए णं से दहपहंते दारए तेहिं विडकेहिं अजभीनेहिं जाव सवस्थी-गेहिं नो सजिहिर नो गिजिहिर नो सुच्छिहिर नो अञ्होपवजिहिर । से जहामामए पत्रमुष्पके हैं वा पड़में हैं वा जाव समसहस्स्रधत है वा पहें कांच बढ़े चंत्रहे नोवलिप्पर पष्टरएवं नोवलिप्पर अक्षरएवं, एवानेव वृद्धकृति हारकृ कामेहि जाए भोगेहि संबद्धिए नोवलिप्पितिइ० मिलनाइनियगसयणसंबिन्धपरिज-षेणां। से णं तहास्वाणं थेराणं अन्तिए केवलं बोहिं बुजिहाहिंद २ ता मुण्डे भविता अगाराओ अगगारियं पव्वदस्सड । से गं अगगारे भविस्सइ, इरियासमिए जाव सहयहयासणे इव तेयमा जलन्ते । तस्म णं भगवश्रो अणुत्तरेणं नाणेणं एवं रंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं सहवेणं लाघवेणं लन्तीए गुत्तीए मत्तीए अण्तरेणं सम्बसंज्ञमन्वमुचरियफलनिन्वाणमग्रेणं अप्पणं भावेमाणस्य . अगन्ते अ<u>गुन्तरे</u> कसिणे प**हि**पुण्णे निरावरणे निव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्प-जिहिंड । तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सड, संदेवसण्यासरस्स लोगस्स परियागं जाणिहिइ । नं जहा-आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तकं कडं मणोमाण-सियं खड्यं भूतं पिडसेवियं आवीक्त्रमं रहोक्त्रमं-अरहा अरहस्सभागी, तं तं मण-वयकायजोगे वहमाणाणं सञ्चलोए सञ्चर्तावाणं सञ्बसावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ । तए णं दडपडमे केवली एयास्चेणं विहारेणं विहरमाणे बहुई वासाई केविलपरियार्ग पाउणिता अप्पणी आवसेसं आभोएता बहुई भूताई प्रवक्खाइ-म्सड २ ता बहुई भत्ताई अणसणाए छेइस्सइ २ ता जस्सद्वाए कीरड जिणकप्पभावे थेरकप्पभावे मुण्डमावे केसलोए बम्मचेरवासे अण्हाणगं अदन्तवणं अणुबहाणगं भूमिसेजा फलहसेजा परघरपवेसो लदाबलदाई माणाबमाणाई परेमि हीलणाओ निंदणाओं खिसमाओं तज्जणाओं ताडणाओं गरहणाओं उचावया विरूवस्या वावीसं परीयहोबसम्या यामकण्टमा अहियासिजनित तम्ह्रं आगहेहिई २ ता चरिमेहिं उस्सा-सनिस्सासेहिं सिजिनहिर बुजिनहिर मुचिहिर परिनिव्वाहिर सव्वदुक्खाणमन्तं करेहिइ" ॥ ८० ॥ "सेवं भन्ते ! सेवं भन्ते" ति भगवं गोयमे समणं भगवं महा-वीरं वन्दर नर्मसङ बं २ ला संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरह ॥ ८२ ॥ ॥ निक्केको ॥ रायपसेणस्यं समसं ॥



श्रीयुत्रागमप्रकाशक्यमितिके 'स्तंभ'



परिचय-आप मिन-तिके प्रमुख भी हैं। आपने मजोडे ब्रह्मचर्य वन याव-जीव के लिए प्रहुण किया है। आप रिटायर्ड लाइफ्का सद्पयोग जिनशासनकी सेवामं योग देकर करते हैं। आप समितिक सब कार्य दिलकी लगनसे कर रहे हैं। आपने म्यानीय उपाध्रय बनवाते समय टाइमका खब भोग दिया है, जहां तहां डेप्यटेशन लेकर पहुँचत रहे हैं. इधर उधरमे धन एकत्र करवाकर बड़ा मुंदर म्थानक बनवाया है। आपका अधिक समय

श्रीदुर्गाप्रसाद जैन B. A. B. T. हेडमास्टर गुड्गाँव-छावनी E. P.

संघ सेवामें ही व्यतीत होता है। आप स्वाध्यायप्रेमी तथा मुनिओं के अनन्य सेवक हैं।

आपके सुपुत्र श्रीकिशोरचंद जैन B. A. विरसिंहपुरकी कोलियारीके बड़े मैनेजर हैं। वे इस बड़ी भारी पोस्ट पर प्रामाणिकतासे काम करते हैं। सचमुच आप मानापिताके बफ़ादार और परम सेवक पुत्र हैं। आपका सदाचार और धर्मनिष्ठा अनुकरणीय है। आप जैसे पुत्र द्वारा कुल, संघ और देशका मान बढ़ सकता है। निर्मलकुमार तथा महेंद्रकुमार आपके दो और छोटे माई भी हैं।

नमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुरामहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्य णं जीवाजीवाभिगमे

णमो उसमाइयाणं चउवीमाए तित्थयराणं, इह खळु जिणमयं जिणाणुमयं जिनागलोमं जिनयमीयं जिनपर्वायं जिनस्वायं जिनागनिकं जिनपन्नतं जिन देश्तयं जिणपसुरुषं अणुरुषीहय तं सहहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा बेरा भगवंतो जीवाजीवासिगमणाममञ्जायणं पण्णवद्देस् ॥ १ ॥ से कि तं जीवाजीवासिगमे ? जीवाजीयाभिगमे द्विहे पश्चेत, तंजहा-जीवाभिगमे य अर्जावाभिगमे य ॥ २ ॥ से कि नं अजीवाभिगमें ? अजीवाभिगमें द्विहे पत्रते. तंत्रहा—स्विअजीवाभिगमे य अरुविअजीबासियमे य ॥ ३ ॥ से किं तं अरुविअजीबासियमे ? अरुविअजी-वाभिगमे दमबिहे प०. तंजहा-धम्मत्यिकाए एवं जहा पण्णवणाए जाव छेतं अरुविअजीवाभिगमे ॥ ४ ॥ से कि तं हविअजीवाभिगमे ? वविअजीवाभिगमे चउब्बिहे पण्णते, तंत्रहा—संघा संधदेसा संघप्पएसा परमाणुपोम्गला, ते समासबो पंचित्रहा पण्णता. तंबहा-बण्यपरिणया गंध० रस० फास० सेठाणपरिणया, एवं ते ५ जहा प्रव्यावणाए, सेर्स कविअजीवाभिगमे, सेर्स अजीवाभिगमे ॥ ५ ॥ से कि तं जीवाभिगमे ! जीवाभिगमे तुमिहे पण्णते, तंजहा-संसारसमायण्यगजीवाभिगमे य असंसारसम्बन्धानाजीबाजियमे स ॥ ६ ॥ से कि तं असंसारसमावकागजीबाजियमे हे २ इबिहे फ्लोरे. तंजहा- अणंतरसिद्धासंसारसमावण्यगजीवामिगमे च परंपर-सिद्धासंसारसमावणगजीवामिगमे य । से कि तं अणंतरसिद्धासंसारसमावणग-जीवाभिगमे ? २ क्वारसविहे क्यारे. तंबहा-तित्यसिदा जाव अणेगसिदा, सेतं अणंतरसिद्धाः । से कि तं परंपरसिद्धार्यसारसमानणगगनीवाभिगमे ? २ अणेगविष्ठे प्रणते. तंत्रहा-प्रमसमयविद्धां वसमयविद्धा जाव अर्णतसमयविद्धा, से तं परं-परविद्वारंसारसमाक्ष्णगजीवामियमे, सेतं असंसारसमाक्ष्णगजीवामियमे ॥ ७ ॥ से कि तं संसारसमावकवीकानिगमे ? संसारसमावण्यएस यं जीवेस इमाओ णव पिक्तीको एवमाहिकाति, तं०-एगे एवमाहेस-इविद्या संसारसमाकणमा जीवा प•, एने एक्काइंस-विविद्या संसारसमाकणना जीवा प॰, एने एक्माइंस-विविद्या

संसारगमावण्यमा जीवा ५०, एगे एवमाइंस-पंचविका संसारममावण्यमा जीवा प॰, एएणं अभिलावेणं वाब दर्साबद्दा संसारसमात्रणगरा जीवा पण्यता ॥ ८ ॥ तत्थ णं जे एवमाहंमु 'दुविहा संभारसमावण्यका अध्या प०' ते एवमाहंसु-तं०-नगा चेव शवरा चेव ॥ ९ ॥ से कि तं शावरा १ २ तिविद्दा पन्नना, तेजहा-पुटविकाइमा १ अ। उकाइमा २ वणस्मटकाइमा ३ ॥ १०॥ से 👫 तं पुटविकाइमा ? २ दुविहा प०. तं०-सृहुमपुढविकाइया य बायरपुदविकाइया य ॥ ५२॥ मे कि तं मुहुमपुटविकाट्या ? २ दुविहा प०, नं ०-पञ्चलमा य अपज्जलमा स । सेगहणिमाहा-मरीरोगाहणसंत्रयणसंठाणक्रमाय तह य हुंति मण्णाओ । रुविवियसमुख्याओ, मणी वंए य पज्रती ॥ १ ॥ विद्वी दंसणपाणे जोगुक्ओन तहा किमाहारे । उनदाय-ठिई समुख्यायववणगङ्गागई श्रेव ॥ २॥ १२ ॥ नेसि णं भंने ! जीवाणं क्डमगर्गा प्रणाता ? गोयमा ! तओ मरीरगा प०, तं०-ओगांलग् तेयए सम्मए ॥ तेनि णं भेते ! जीवाणं केमहालिया मरीरोगाहणा प० ! गो० ! जहकेणं अंगुला-संखेजस्भागं उक्कोसेणवि अंगुलासंखेजस्मागं ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं मरीरा किसंघयणा पण्णता ? गोयमा ! छेनद्रमंघयणा पण्णना ॥ तेसि णं मंते ! सरीरा किसंठिया पर् ! गोयमा ! मन्रचंदसंठिया पण्यना ॥ तेसि थं मंते ! जीबाणं बड् कसाया प्रणाना ! गोयमा ! चनारि कमाया प्रणाता. तंत्रहा-कोहकताए माणकसाए मायाकमाए लोहकसाए ॥ तेसि णं भंते ! जीवार्णं कड मण्याओ पण्यानाओ ? गोयमा ! बनारि सक्षाओ पण्णनाओ. तंजहा-आहारसण्णा जाव परिग्णहसका ॥ तेजि णं भंते ! जीवाणं कह देयाओं पण्णताओं ? गोयमा ! तिकि देसाओं पकताओं तंत्रहा-किफलेस्सा नीजलेस्सा काउलेस्सा ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं कह इंदियाई पण्णताई ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पण्णते ॥ तेसि वं भेते ! जीवार्ण कई समु-व्याया पण्णना ? गोयमा ! तको समुख्याया पण्णना, तंजहा-वेग्रणासमुख्याए कसायसमुख्याए मार्गितियसमुख्याए ॥ ते णं भंते ! जीवा कि सबी असबी ? गीयमा! नी सभी असभी ॥ ते णं भंते! जीवा कि इत्यिवेवा प्रतिसकेवा णपुंसगवेया ? गोयमा ! चो इत्धिवेया चो पुरिसवेया अपुंसगवेया ॥ हेसि च भंते ! जीवार्ण वह पजनीओ पण्णताओं ? नीयसा ! चतारि पजनीओ पण्णताओं, तैजह!-आहारपजती सरीरपजती इंदिक्पजती आजपालुपजती । तेति जे श्रीते ! जीवार्ज कद अपजतीओ पण्णताओ ? गोयमा ! चतारि अपजतीओ पण्णताओ, तंजहा-आहारअपजती जाव आणापाणुअपजती ॥ ते वं अंते ! जीवा कि सम्मनिकी मिच्छादिही सम्मामिच्छादिही ? गोयमा ! जो सम्मदिही विच्छादिही जी सम्मान

मिन्हादिही ॥ ते णं मंते ! जीवा किं चक्खरंसणी अचक्खरंसणी ओहिट्मणी केवसर्वसणी ? गोबमा ! नो चक्कुदंसणी अवक्खुदंसणी नो ओहिदंसणी नो केवल-हंसणी ॥ ते में मंते ! जीवा कि नाणी अण्याणी ? गोयमा ! नो नाणी अण्याणी, नियमा ्अण्याणी, नेजहा-महअसाणी सुयअण्याणी य ॥ ते णं भंते ! जीवा कि मणजोगी वयजोगी कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी नो वयजोगी कायजोगी ॥ ते पं मंत्र ! जीवा कि सागारोबडना अणागारोबडना ? गोयमा ! सागारोकडनावि अणागारीवडतावि ॥ ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेति ! गोयमा ! दव्यओ अर्णतपएसियाई खेतओ असंखेजपएसोगाढाई काल्झो अन्नयरसमयद्विहयाई भावओ वण्णमंताई गेथमंताई रसमंताई फासमेताई ॥ जाई मावओ वण्णमंताई आ० ताई कि एगवण्याई आ॰ द्वण्याई आ॰ तिवण्याई आ॰ चरवण्याई आ॰ पंचवण्याई आ॰ ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पहुच एगवण्णाइंपि दुवण्णाईपि तिवण्णाईपि चलकणाइंपि पंचनक्याइंपि आ०. विहाणम्माणं पहच कालाइंपि आ० जाव युक्तिस्लाइंपि आ॰, जाई बण्णको कालाई आ॰ ताई कि एगगुणकालाई आ॰ जाव अणंतगुणकालाई आ॰ ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि आ॰ जाव अणंतगुणकालाइंपि आ॰ एवं जाव सकिल्लाई ॥ जाई भावओ गंधमंताई आ० ताई कि एगगंधाई आ० वुगंघारं आ० र गोसमा ! ठाणमस्गर्ण पहुच एगगंघारंपि आ० दुगंधारंपि आ०. विहाणमस्यमं पहुच मुक्सिगंबाइपि आ० दुब्सिगंबाइपि आ०, जाई गंधओ मुक्सि-गंबाई आ॰ ताई कि एग्स्थास्क्रिगंबाई आ॰ जाव अणंतगुणसर्मिगंघाई आ॰ १ गोबमा । एगएणस्थितांबाहंपि जा० जाव अर्णतगुणस्थितांशाहंपि आ० एवं दुष्टिमगंधारंपि ॥ रसा जहा बण्णा ॥ जाई माबओ फासमैताई आ० ताई कि प्राफासहं आ॰ जाव अहुफासाई आ॰? गीयमा! ठाणमन्गणं पहुच नो एगफासाई आ॰ नी दुफासाई आ॰ नी तिफासाई आ॰ चडफासाई आ॰ पंचफासाईपि जाव अहफासाइंपि आ०, विद्वारामार्ग पहुच कनसदाइंपि आ० जाव छनसाइंपि आ॰. जहां फासओं सम्बाराइं आ॰ ताई कि एग्युणक्य-सराई आ॰ जाब अर्णत्तुणक्षकाराई सा ः शोबमा ! एगगुणक्षकार्शय आ ः जाव अर्णत्तुण-कारकाहरिक आ॰ एवं जाव शुक्का जैयन्ता ॥ ताई मंते ! कि प्रद्वाई आ॰ अपदाई था॰ ! गोतमा ! पुडाई था॰ मी अंपुडाई आ॰, ताई मंते ! कि ओगावाई आ॰ अयोगादाई बार ! शोबमा ! ऑगादाई बार नो क्रजोगादाई बार, ताई मंते ! किमजैतरीयादाई आ॰ प्रेप्रीयादाई आ॰ ? गोयमा ! अजैतरीयादाई आ॰ नी परिपरीवाहाई जाक साई भीते । कि बागई आक बाबराई आक ? मोबमा । अपहरिष

आ॰ बायराइंपि आहारेंति, ताई मेते ! कि उद्वे आ॰ अहे आ॰ तिरियं प्राहारेंति हैं गोगमा ! उद्वंपि आ॰ अहेवि आ॰ तिरियंपि आ॰, ताई भंते ! कि आई आ॰ मजेरे आ॰ पज्जवसाणे आहारेंति (गोयमा ! आहंपि आ॰ मज्हांवि आ॰ पज्जनसाणेवि आ॰. ताइं भंते ! कि सबिसए आ० अविसए आ० ! गोयमा ' सबिसए आ० नो अविसए आ॰, ताई भंते ! कि आणुपुर्वित आ॰ अणाणुपुर्वित आहारेति ? गोयमा ! आणुपुर्वित आहारेंति नो अणाणुप्रिंत आहारेंति. ताइं भंते ! कि तिविसि आहारेंति चउदिसि आहारेंति पंचिदिसि आहारेंति छदिसि आहारेंति ? गोयमा! निव्याचाएणं छदिसि. वाषायं पहुच सिय तिदिसि सिय चउदिसि सिय पंचविसि, उस्समकारणं पदुच वण्मजो काल नील जाव मुक्किल्लाई, गंधनो सुव्भिगंधाई दुव्भिगंधाई, रसओ जाब तिपमहुराई, फासओ कन्त्रहम्त्रम् जाव निद्धत्रकाहं. तेसि पौराणे कण्माणे जाव फासगुणे विष्प-विणामहत्ता परिपीलहत्ता परिसादहत्ता परिविद्धंसदत्ता अण्णे अपन्वे बण्णगुणे गंधगुणे जाव पामगुणे उप्पादता आयसरीरखेतोगाढे पोगगळे सम्बप्पणवाए आहारमाहा-रेंति ॥ ते णं अंते ! जीवा कओहिता उपवजाति ? कि नेरहएहिंनी उपवजाति तिरिक्खमणस्मदेवेहितो जबवजीत ? गोयमा ! नो नेरइएहिनो जबवजीत, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववजंति मण्रसिहितो उववजंति, नो देवेहितो उववजंति, तिरिक्क-जोषियपजनापज्ञतेर्वितो असंखेजवासाउयवज्ञेद्वितो उववज्रंति, मणुरसेहितो अकम्म भूमिगअसंखेजनासाउयवजेहिंतो उवनजीत, वकंतीउवनाओ भाषियव्यो ॥ तेसि पं मंत ! जीवाणं केवड्यं कालं ठिइं पण्णना ! गोयमा ! वहनेणं अंतोसहत्तं उद्योखेणवि अंतोमहर्त्तं ॥ ते णं भंते ! जीवा भारणंतियसमुख्याएणं कि समोह्या मरंति अस-मोहया मरेति ! गोबमा ! समोहयावि मरेति असमोहयाबि मरेति ॥ ते ण संते ! जीवा अणंतरं उब्बहिता कठिं गच्छंति ? कठिं उवनअंति ?-कि नेरप्रसु उवनअंति तिरिक्खजोणिएस उ॰ मणसीस उ॰ देवेस उदय॰ १, गोसमा ! नो नेर्प्रमु स्वय-जंति तिरिक्सजोणिएस उ॰ मणुरसेस उ॰ णो देवेस उथव॰। यह तिरिक्सजोणि-एस उवनजंति कि एगिदिएस उववजंति जाव पंचिदिएस उ० ? गोबमा ! एगिदिएस उत्तरजंति आव पंचेदियतिरिक्सबोधिएस उत्तरजंति. असंखे अवासास्वरकेस प्रजन्ता-पजनाएस उत्र॰, मणुरतेस अकम्मभूमाश्रंतर्वीकाशसंकेजवासार्व्यकोट प्रशान पञ्चतापुत्र उव० ॥ ते णं मंते ! बीवा बहगइया बहबागइया प्रव्यता ? गीववा ! कुगह्या दुआगह्या, परिता असंखेळा पण्णता समयाउसी! से तं सहुमपुरविकाह्या॥ १३ # से कि तं बायरपुरविकाद्या ? २ दुविहा पञ्चला, तंत्रहा-सम्बद्धावरपुरविकाद्या क करवायरपुरविकाहमा व ॥ १४ ॥ से कि तं सन्तवानरपुरविकाहणा है २ सस्तिका

पण्णता, तंजहा-कम्हमहिया, मेओ जहा पण्णवणाए जाव ते समासओ द्विहा पण्णता, तंत्रहा-पजनगा य अपजनगा य । तेसि णं भेते ! जीवाणं कट मरीरगा क्णाता ? गोयमा ! तुओ मरीरगा प०, नंजहा-ओगालिए तेयए कम्मए, तं चंद सन्तं नवरं चलारे लेमाओ, अवसेषं जहा सहमपुरविकादयाणं आहारो जाव णियमा छहिसि, उबवाओ तिरिक्खजोणियमणुस्मदेविहिंतो, देवेहिं जाव सोहम्मेसा-णेहिंतो, ठिई जहनेणं अंतोमुहत्तं उद्योसेणं बाबीसं बासमहस्साई । ते णं भंते ! जीवा मारणंतियममुख्याएणं किं समोह्या मरेति असमोह्या मरेति ! गोयमा ! समोह्यायि मरंति असमोह्यावि मरंति । ते णं मंते ! जीवा अणंतरं उव्वहिता काँहें गच्छंति ? काँहें उववजाति ?-कि नेरइएस उववजाति १०, पुच्छा, गो० नो नेरइएग्र उनवर्जात तिरिक्सजोणिएस उनवर्जित मणुरसेस उन० नो देवेस उन० नं चेव आव असंखेळवासाउयवजेहिंतो उ० 1 ते ण भंते ! जीवा बहुगहुया बहु-आगह्या पण्णता ? गोयमा ! दुगङ्या तिआगङ्या परिता असंखेजा प० समणा-उसो !, से तं बायरपुढविकाइया । सेतं पुढविकाइया ॥ १५ ॥ से कि तं आउका-इसा ? २ दुविहा पण्णाता. तंजहा-पुहुमआउकाइया य बायरआउकाइया य, बहुमभाउ० दुविहा पण्यता, तंत्रहा-पज्जता य अपजता य । तेसि णं भंते ! जीवाण कह सरीरया पळाला ? गोयमा ! तओ सरीरया पळाला, नंजहा-ओरालिए तेयए कम्मए, बहेब सुहुमपुढविकाइयाणं, णवरं विदुगसंठिया पण्णता, सेसं तं चेव जाव दुनह्या दुआगाइया परिता असंखेळा पण्णता । से तं छह्मआउकाइया ॥ १६ ॥ से कि तं बायरकाउकाइया ? २ अनेगविहा पण्णत्ता, तंजहा---ओसा हिमे जाब जे आवजे नहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णला, तंत्रहा-पज्रता य अपजता व, तं चेव सर्व णवरं विवुगसंदिया, बतारि छेसाओ, आहारी नियमा छित्सिं, उनकाओं तिरिक्सजोणियमणुस्सदेवेहिंतो, ठिई उड्केणं अंतोगुहुनं उड्डो-सेणं सत्तवाससहस्साई, सेसं तं चेद जहा वायरपुढविकाइया जाव दुगहया तिआगहया परिता असंकेजा प्रमता समवाउसी !, सेतं वायरआऊ, सेतं आउकाइया ॥ १०॥ से कि तं क्लस्सहकाइया ? २ दुविहा प्रकासा, तंत्रहा सहुमक्लस्सहकाइया य बाबरवणस्यह्काइबा म । से कि तं ग्रहुमवणस्यह्काइया १ २ दुविहा प्रणाता, तंजहा-पजातका य अपजातमा य तहेच जवरं अजित्यंच(संठाण)संठिया, दुगइया दुआवह्या अपरेता अर्गता, अवसेसं अहा पुरुविदाहयार्थ, से ते सहुमय-णस्यक्कार्या ॥ १८ ॥ से कि ते बायरक्णस्तहकाहमा ? २ दुविहा पण्णाता, तंबहा पतिकारीरवावरवणसाइकाइया व साहारणसरीरवावरवणसाइकाइया व

॥ १९ ॥ से कि तं पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काङ्या ? २ दुवाळसविहा पण्णता, तंजहा-स्वर्षा गुच्छा गुम्मा लया य वही य पव्चगा चेव । तणवळयहरियओस-हिजलरुहकुरुणा य बोद्धव्या ॥ १ ॥ से कि तं रुक्खा ? २ द्विहा पण्णना, तंत्रहा-एगनीया य बहुनीया य । से किं तं एगनीया ? २ अणेगविहा पण्णना, तंत्रहा---निवंबजंब जाव पुष्णागणागरुक्खे सीविष्ण तहा असोगे य. जे यावण्णे तहप्पगारा. एएसि णं मुलावि असंखेजनीविया, एवं कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता परोय-जीवा पुष्फाइं अणेगजीवाइं फला एगबीया, सेतं एगबीया । से किं तं बहबीया ? २ अणेगविहा पण्णता, तंजहा--अत्यियतंद्यउंबरकविद्वे अ(मलगफणसदाहिमण-म्गोहकाउंबरीयतिलयलउयलोद्धे धवे, जे यावण्ये नहप्पगारा, एएसि णं मूलावि असंखेजजीविया जाव फला बहबीयगा, सेतं बहबीयगा, सेतं कृत्या, एवं जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्यं. जाव जे यावने तहप्यगारा, सेत्रं कुहणा-नाणाविह-संठाणा रुक्खाणं एगजीविया पता । खंबोवि एगजीवो तालसरलनालिएरीणं ॥ १ ॥ 'जह सगलसरिसवाणं पनेयसरीराणं' गाहा ॥ २ ॥ 'जह वा तिलसङ्खलिया' गाहा ॥ ३ ॥ सेतं परायसरीरबायरवणस्सङ्काडया ॥ २० ॥ से कि तं साहारणसरीरबा-यरदणस्सइकाइया ! २ अणेगविहा पण्णता, तंत्रहा--आलए मूलए सिंगबेर्हिरिलि-सिरिलिसिस्सिरिलिकिहिया छिरिया छिरियबिसालिया कम्हकंदे वजकंदे सूरणकंदे सत्त्रहे किमिरासिभेहे मोत्यापिंहे हिलेहा लोहारी णीह[ठिह]चिभुअस्सकणी सीहकमी सीउंढी मुसंदी जे बावण्णे तहप्पगारा ते समासको दुविहा पण्णता. तंजहा---पजनगा य अपजनगा य । तेसि णं भंते ! जीवाणं कह सरीरगा पण्यता ? गोयमा! तओ सरीरगा पन्नता, तंजहा--ओरालिए तेयए कम्मए, तहेव जहा बायरपुरुविकाइयाणं, णवरं सरीरोमाहणः जहचेणं अंग्रलस्य असंबोजहमायं उकारीणं साइरेगओबणसहस्यं, सरीर्गा अजित्यंयसंठिया, ठिई जहनेणं अंतोग्रहत्तं उक्रोसेणं दसवाससहस्साई, जाब दुगडमा तिआगइया परिता अणंता पण्यता. सेतं बायरवणस्सइकाइया सेतां वणस्सइकाइया सेतां बावरा ॥ २१ ॥ से कि तं तसा ? २ तिबिहा पण्णशा, तंजहा--तेउकाइया वाउकाइया ओराह्य तसा पाणा ॥ २२ ॥ से कि नं तेडकाइया ? २ दुविहा पण्णता, तंजहा--- दुहमतेडकाह्या य बायरवे-उकाह्या य ॥ २३ ॥ से कि तं सहमते उकाह्या? २ जहा सहमपुरु विकाहमा नवरं सरीरगा सूहकलावसंठिया, एगगइया दुशांगह्या परिशा असंखेळा प्रव्यक्त, सेसं तं चेन, सेतं सहमतेतकाह्या ॥ २४ ॥ से कि तं बाबरतेतकाह्या श्रे अपेशबिहा पण्णता, तंत्रहा-इंगाडे आहे मुस्मदे जाव सरबंतमणिनिस्सिए, जो सावहे

तहप्यगारा, ते समासओ दुविहा पण्णता, तंत्रहा---पञ्जता य अपञ्चता य । तेसि णं भंते! जीवाणं वह सरीरगा पण्णता ? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णता, तंजहा---ओरालिए तेयए कम्मए, सेसं तं चेन, सरीरगा सड़कळावसंठिया तिकि छेस्सा, ठिई जहनेण अंतोसुहुतं उक्कोसेणं तिक्रि राईदियाई तिरियमणुस्सेहिंनो उनवाओ, सेसं तं चेव एगगइया दुआगइया, परित्ता असंखेळा पण्णता सेतं तेउकाइया ॥ २५ ॥ से कि तं वाउकाइया १ २ दुनिहा पण्णता, तंजहा - मुहुमवाउकाइया य बायरवा-उकाङ्या य, सहुमवाउकाइया जहा तेउकाइया णवरं सरीरा पडागसंठिया एगगाइया दुआगड्या परिता असंखिजा, सेतं मुहुमवाउकाइया । से कि तं बायरवाउकाइया ? २ अणेगविद्या पण्णता, तंजहा-पाईणवाए पडीणवाए, एवं जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णना, नंजहा-पज्जना य अपजना य। तेसि णं भंते! जीवाणं कड सरीरगा पण्णना ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णता, तंजहा-ओरान्त्रिए वेडिन्विए तेयए कम्मए, सरीरगा पडागसंठिया, बतारि समुग्धाया---वेयणाससुरघाए कसायससुरचाए मारणंतियससुरघाए वेउव्वियससुरघाएं, आहारी **जि**व्याघाएणं छिद्सि वाघारं पडुच सिग तिदिसि सिग चउदिसि सिग पंचदिसि, उनवाओं देवमणुयनेरइएस णस्यि, ठिई जहकेणं अंतोसुहुतं उक्कोसेणं तिकि वाससहस्साई, सेसं तं चेव एगगइया दुआगइया परिता असंसेजा पण्णता समणा-उसो!, सेत्तं बायरवालकाइया, सेत्तं वालकाइया ॥ २६ ॥ से कि तैं ओराला तसा पाणा ? २ चउव्हिं पण्णता, तंजहा-वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचंदिया ॥ २७ ॥ से कि तं बेइंदिया ! २ अमेगविहा पण्णता, तंत्रहा—पुलाकिसिया जाब समुद्दतिक्सा, जे यावण्णे तहप्पनारा, ते समासओ दुविहा पत्तणता, तंजहा-पज्जता य अपजता य । तेसि णं भेते ! जीवमणं कह सरीरगा पण्णता ? गोयमा ! तको सरीरगा प्रण्यता, तंजहा---ओरालिए तेयए कम्मए । तेसि णं भंते । जीवाणं केमहाळिया सरीरकोवाङ्ग्या प्रम्णता ? गोयमा ! बहुनेणं अंगुलासंकेजङ्भागं उक्तेसेणं बारसजोबणाई क्षेत्रद्वसंघयणा हुंडसंठिया, चत्तारि कसाया, चत्तारि सम्माओ, तिण्यि केसाओ, दो इंदिया, तथी समुखाया-वेगणा कसाया मारणं-तिया, नोसभी असची, मपुंसगवेयमा, पंच पजरीओ, पंच नपजरीओ, सम्माह्यिव निच्छादिद्वीव नो सम्मामिन्छादिद्वी, को चक्छ्वंसणी अचक्छ्रदंसणी गो वोहिदंसणी यो केवस्थ्रंसणी । ते णं मंते ! जीवा कि याणी अन्माणी ? गोमसा ! णाणीवि अव्याचीवि, वे वाणी वे निवमा दुव्याणी, तंत्रहा- सामिविकोहिक्याची प्रयमाणी व, के अनामी ते निगमा वसम्माणी—महम्मणाणी य स्वासमाणी

य, नो मणजोगी वहजोगी कायजोगी, सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि, आहारी नियमा छहिसँ, उनवाओ तिरियमणस्सेस् नेरहयदेवससंखेळवासाउयवळेस. ठिई जहनेणं अंतोमुहत्तं उद्योसेणं बार्स संवच्छराणि, समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति. कर्हि गच्छंति ? नेरहयदेवअसंखेजनासाउयवजेस गच्छंति. दगइया दुआगइया. परिता असंखेजा. सेतं बेडंदिया।। २८॥ से कि तं तेडंदिया? २ अणेगविहा पण्णता, तंजहा-- उवडया रोहिणिया जाव हन्धिमोंहा, जे यावण्णे तहप्पगारा, ते समासओ द्विहा पण्णता, तंजहा---पजता य अपजना य, तहेव जहा वेइंदियाणं, नवरं सरीरोगाष्ट्रणा उक्कोसेणं निश्चि गाउयाई, तिश्चि इंदिया, ठिई जहन्नेणं अंती-मुहनं उक्तोसेणं एगूणपण्णराइंदियाई, सेसं नहेव, दुगइया दुआगइया, परिता असंखेजा पण्णता. से तं तेइंदिया ॥ २९ ॥ से किं तं चडरिंदिया? २ अणेगविहा पण्णता, तंजहा-अंधिया पुलिया जाव गोमयकीडा, जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णता, तंजहा--- पज्जता य अपजता य, तेसि णं भंते! जीवाणं कइ मरीर्गा पण्णता ! गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णता तं चेत्र. णतरं सरीरोगाहणा उद्योसेणं बत्तारि गाउयारं, इंदियारं बत्तारि, चक्ख्दंसणी अचक्ख-दंसणी, ठिई उक्कोसेणं छम्मासा, मेसं जहा तेइंदियाणं जाव असंखेजा पण्णता, से तं चडरिदिया ॥ ३० ॥ से कि तं पंचेंदिया? २ चडव्विहा पण्णता, तंजहा---णेरङ्या तिरिक्केजोणिया मणस्सा देवा ॥ ३९ ॥ से कि तं नेरड्या? २ सन्तविहा पण्णता, तंजहा-र्यणप्पमापुढविनेरइया जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया, ते समा-सओ दुविहा पण्णता, तं ---पजता य अपजता य । तेसि णं भेते ! जीवाणं कह सरीरमा पण्णता? गोबमा! तस्रो सरीरमा पण्णता. तंत्रहा-वेडव्विए तेवए कम्मए । तेसि ण भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णसा ? गोयमा ! द्विष्ठा सरीरोगाहणा पण्णता. तंत्रहा---भवधारणिजा य उत्तरवेडिनया य. तत्व णं जा सा भवधारणिजा सा जहण्येणं अंगुलस्स असंखेजहमार्ग उद्योसेणं पंचधणु-सयाई. तत्य णं जा सा उत्तरवेडिवया सा जहण्येणं अंगुलस्स संखेजहमागं उद्दोरेणं थण्सहस्यं । तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरा किसंध्यणी प्रणाता ? गोयमा ! अण्डं संघयणाणं असंघयणी, जेबड़ी जेब छिरा जेब म्हाक जेब संघयणसरिय, जे पोरगस्त अणिद्वा अकंता अप्पिया असुमा अमुलुण्या अमधामा ते तेति संवायताए परिष-मंति । तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरा किसंडिया पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्यता, तंत्रहा-भववारणिका य उत्तरवेठविक्या य. तत्य भ जे ते अववारणिका हे इंडरेंठिया, तत्थ णं जे ते उत्तरवैतिकवा तीक इंडरेंटिया पण्याता, वतारि

कसाया बतारि सञ्जाओ तिण्णि छेसाओ पंचेदिया चनारि समुखामा आइला, सबीवि असबीवि, न्एंसगवेया, छप्पजतीओ छ अपजनीओ, तिविहा दिही, तिबि दंसणा, जाणीवि अन्याणीवि, जे जाणी ते नियमा तिजाणी, तंजहा-आभिण-बोहियणाणी सुयणाणी ओहिनाणी, जे अण्याणी ते अत्येगइया दुअण्णाणी अत्ये-गइया तिअण्णाणी, जे य दुअन्णाणी ते णियमा मङ्अण्णाणी सुयअण्णाणी य, जे तिअण्णाणी ते नियमा महक्षण्णाणी य सुयक्षण्णाणी य विभंगणाणी य, तिविहे जोगे, दुविष्टे उवओगे, छिट्टिसे आहारो, ओसण्णं कार्णं पहुच वण्णओ कालाइं जाव आहारमाद्दारेति, उचवाओ तिरियमणुस्सेन, ठिई जहन्नेणं दसवामसहस्साई उद्योसेणं तेणीसं मागरोबमाइं, द्विहा मरंति, उच्वट्टणा भाषियव्या जओ आगया, णवरि संमुक्तिक्रमेमु पिडिलिद्धो, दुगङ्या दुआगङ्या परिना असंखेळा पण्णता समणाउसो !, से तं नेरइया ॥ ३२ ॥ से किं तं पंचेंदियतिरिक्सकोणिया ? २ दुविहा पण्णना, नंजहा --- संमु विक्रमपंचेदियतिविक्स जोणिया य गञ्भवकंतियपंचिवयतिविक्स जोणिया य ॥ ३३ ॥ से कि तं संगुच्छिमपैचेंबियतिरिक्सजोणिया ? २ तिविहा पण्णना. तंत्रहा-जलगरा थलगरा खहगरा ॥ ३४ ॥ से कि तं जलगरा? २ पंचिवहा पण्णना, तंजहा-मच्छ्या कच्छमा सगरा गाहा संसमारा। से 👫 तं मच्छा ? एवं जहा पण्णवणाए जाव जे यावण्णे तहत्पगारा, ते समासओ दुविहा पण्णना, तंत्रहा--पञ्जना य अपजना य । तेसि णं भेते ! जीवाणं कड सरीरगा पण्णना ? गोबमा ! तओ सरीरमा पण्णता तंजहा-ओरालिए तेवए कम्मए. सरीरोगाहणा जहण्येणं अंगलस्य असंखेळहमागं उद्योसेणं जोयणसहस्यं, हेवद्वसंघयणी, हुंडसंठिया, चनारि कसाया, सण्याओवि ४, लेसाओ तिकि, इंदिया पंच, समुरवाया तिण्यि, णो सम्भी असम्भी, मर्पुसमबेया, पज्रतीको अपज्रतीओ य पंच. दो दिद्रीओ, दो दंसणा, दो नाणा, दो अञ्चाणा, दुषिहे जोगे, दुषिहे उबस्रोगे, आहारो छहिसिं, उबबाकी तिरियमणुस्पेहिंतो नो देवेहिंतो नी वेरहपृष्टितो, तिरिपृहिंतो असंखेख-वासाउयवजेहितो, अक्नमभूमगर्अंतर्शिवयअसंखेजवासाउयवजेषु मणुरसेसु, ठिई जहोंकों अंतोसहर्त उद्योसेणं पुष्पकोदी, सारणंतियसमुख्याएणं दुविहानि सरेति, अणंतरं उब्बहिता कहिं ? नेर्ड्एसमि तिरिक्सजोणिएसमि मणुरसेसमि देवेसमि, नेरहएकु रक्षण्यहाए, सेसेच पविसेहो, तिरिएकु सम्बेख उपवर्णति संबेजनासा-उएसपि वर्षकेजवासाउएसवि चउप्पर्ध परंबीसवि मणुरसेस सम्बेश कम्मभूमिएस नो अक्रमाभूतिगृद्ध अंतरशैनपृद्धवि संविज्यनासाउपुत्रवि असंविज्यनासाउपुत्रवि पजाराख्यी सपजाराख्यी हेवेस बाद बावमतरा, चडगड्या द्वबायह्या, परिता *६ छ***ता •**

असंखेजा पण्णना । से नं संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥ ३५ ॥ से कि नं थलयरसंमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णना, तंजहा--च उप्पयथलयरसंमु च्छिमपंचेदियतिरिक्ल जोणिया परिमप्पसंमु ० ॥ से कि नं च उप्पय-थलयरसंगुच्छिम॰ ? २ चडव्विहा पण्णना, तंत्रहा—एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्पया जाव जे वावण्णे तहप्पगारा ते ममामओ दुविहा पण्णता, तंजहा— पजता य अपजना य, तओ सगैरमा ओगाहणा जहल्लेणं अंगुरुस्म असंखेजहमागं उक्कोसेणं गाउयपुतृतं ठिई जहण्णेणं अनोमुहत्तं उक्कोसंणं चटरासीइवागसहस्माउं, सेसं जहा जलयराणं जाव चडगड्या दुआगङ्या परिता असंखेजा पण्णना, सेनं चउपप्ययलयरसंम् । से किं तं थलयरपरिसप्यसंग्रित्द्वमा ? २ द्विहा पण्णता. तंजहा—उरपरिसप्पतंमुच्छिमा भुयपरिनप्पसंमुच्छिमा । मे कि नं उरपरिमुप्प-संमुच्छिना ! २ चउब्बिहा पण्णता, तंजहा-अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किं तं अही ! अही दुविहा पण्णाता. तंजहा--दव्यीकरा मडलिणो य । से किं तं दव्वीरुगः ? २ अणेगविहा पण्णनाः, तंजहा--आसीविसा जाव से तं द्व्वीकरा । से कि नं मउलिणो ? २ अणंगविहा पण्णना, नंजहा — दिव्या गोणसा जाव से नं मङ्खिणो, सेनं अही । से कि नं अयगरा ! २ एगागारा पण्णता, से तं अयगरा । से किं तं अत्मालिया? २ जहा पण्णवगाए, से तं आसालिया । से किं तं महोरमा? २ जहा पण्णवणाए. से तं सहोरगा । जे यावण्णे तहप्पगरा ते समासओ दुविहा पण्णमा, तंजहा-पज्जता य अपजना य तं चेव, णवरि मरीरोगाहणा जहनेणं अंगुन्त्रस्त असंखेज व उक्कोर्सणं जोयणपुहुनं, ठिइं जहनेणं अंतोमुहुनं उक्कोर्सणं तेवण्णं नाससहस्याउं, सेसं जहा जलयराणं जाव चडगइया दुआगइया परिता असंखेजा, से तं उरर्पारसप्पा ॥ से किं नं भुवपरिसप्पसंमुच्छिमथलवरा ? २ अणेगविद्या पण्णता, तंजहा---गोहा णउला जाव जे यावचे नहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णसा, तंजहा--पज्जसा य अपज्जसा य, सरीरोगाहणा जहनेणं अंगुला-संखेजं उद्योसेणं धणुपहत्तं, ठिई उद्योसेणं वायालीसं वाससहस्साई सेसं जहा जलयराणं जाव चडगइया दुआगइया परिता असंखेळा फणता, से तं भुयपरिसप्प-संमुच्छिमा, से तं यलयरा ॥ से कि तं सहयरा? २ चउव्यहा पण्णता, तंत्रहा--चम्मपक्की लोमपक्की समुरगपक्की विस्थपक्की । से कि तं चम्मपक्की ? २ अणेगविहा पण्णता, तंत्रहा—बगुली जाव जे यावने तहप्पगारा, से नं चम्मपक्खी। से कि तं लोमपक्खी ? २ अणेगविहा पण्णता, तंजहा-- ढंका कंका जे यावके तहप्पगारा, से तं स्टोमपक्खी। से किं तं समुगगपक्खी? २ एगागारा पण्णता

जहा पण्णवणाए, एवं विययपक्खी जाव जे याक्ने तहप्यगारा ते समासओ दुविहा पण्याता, तंत्रहा-पज्जता य अपजता य, णाणतं मरीरोगाहणा जह० अंगु० असं॰ उक्कोसेणं धणुपुहत्तं ठिई उक्कोसेणं बावत्तरि बायमहस्साई, सेसं जहा जलगराणं जाद चउगह्या दुआगङ्या परिता असंखेजा पण्णता, से तं खहगर-संमुच्छिमतिरिक्लजोणिया, से तं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्लजोणिया ॥ ३६ ॥ से कि नं गब्भवकंतियपंचेंदियनिरिक्खजोणिया ? २ तिविहा पण्णता, नंजहा— जलयरा यलयरा खहयरा ॥ ३७ ॥ से कि तं जलयरा ? जलयरा पंचविहा पण्णाना, तंजहा- मच्छा कच्छमा मगरा गाहा सुंसमारा. सब्वेस भेदो भाषियव्यो तहेव जहा पण्णवणाए, जाब जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णता, तंजहा---पजना य अपजना य. तेसि णं भंते! जीवाणं कः सरीरगा पण्णता? गोयमा! चनारि मरीरगा पनना, नंजहा-ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए. सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज॰ उन्नोसेणं जोयणसहस्सं छिव्वहसंघयणी पण्णता. तंत्रहा वहरोसभनारायसंघयणी उसभनारायसंघयणी नारायसंघयणी अद्भनारायसंघयणी कीलियासंघयणी सेनद्रसंघयणी, छन्त्रिहा संठिया पण्णता, तंजहा---समचउरंशसंठिया णग्गोहपरिमंडल० साइ० खुज्ज० वामण० हुंड०, कसाया सब्वे सण्माओ ४ छेसाओ ६ पंच इंदिया पंच समुख्याया आइल्ला सण्णी नो अमण्णी तिनिहवेया छप्पञ्जतीको छअपज्जतीको दिल्ली तिनिहानि तिण्णि दंसणा णाणींव अण्णाणीवि जे णाणी ते अत्थेगइया दुणाणी अत्थेगइया तिकाणी, जे दुनाणी ते नियमा आभिणियोहियणाणी य सुयणाणी य, जे तिनाणी ते नियमा आमिणिबोहियणाणी द्वय॰ ओहिणाणी, एवं अण्णाणीवि, जोगे तिविहे उदओगे दुविहे आहारो छिद्दिसं उववाओं नेरइएहिं जान अहेसत्तमा तिरिक्सजोणिएस सन्वेषु असंखेजवासाउयवजेषु मणुस्सेषु अकन्ममूमगअंतरदीवगअसंखेजवासाउय-वजेयु देवेस जाव सहस्तारो, ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, दुवि-हावि मरंति, अर्णतरं उन्बहिता नेरहएस जाव अहेसलमा तिरिक्खजोणिएस मणुस्सेषु सब्बेषु देवेषु जाब सहस्सारो, चउगह्या चउआगह्या परिता असंखेजा पण्णता, से तं जरूपरा ॥ ३८॥ से कि तं शरूपरा ? २ द्विहा पण्णता, तंजहा---चडप्पया य परिसप्पा य । से कि तं चडप्प्या र चडब्बिहा पण्णता, तंत्रहा-एमखरा सो चेव मेदो जाव जे यावके तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णता. तंजहा-पजता य अपजता य, चतारि सरीरा भोगाहणा जहनेणं अंगुलस्स असं-केंज ॰ उद्योसेणं स गाउयाई, ठिई ज ॰ सं ॰ उद्योसेणं विद्य पिलओमाई नवरं उव्यक्ति।

नेरहएम् चउत्थपुडविं ताव गच्छंति, सेसं जहा जलस्याणं जाव चउगइया चउना-गइया परिता असंखिजा पण्णता, से तं चउप्पया । से कि तं परिसप्पा? २ दुविहा पण्णता, तंजहा- उर्परिसप्पा व भुग्रपरिसप्पा य, से कि तं उरपरिसप्पा ? २ तहेव आसालियबजो मेदो भाणियठवो. मरीरा चत्तारे. ओगाहणा जहण्येणं अंगुलस्स असंखे॰ उक्कोसेणं जोयणसहस्यं, ठिई जहकेणं अंतोमृहुतं उक्कोसेणं पुध्वकोडी उब्बहिता नेरइएसु जाब पंचमं पुढविं ताब गच्छंति, तिरिक्खमणुस्सेसु मप्बेसु, देवेस जाव सहस्सारा. सेसं जहा जलयराणं जाव चउगडया चउआगड्या परिचा असंखेजा से तं उरपरिसप्पा। से किं तं भुज्यपरिसप्पा? २ मेदो तहेव, चनारि सरीरगा ओगाहणा जहनेणं अंगुलासंखे । उद्दोसेणं गाउयपुहत्तं ठिई जहनेणं अंतोम्हर्न उक्कोसेणं पुल्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवर दोसं पुढविं गच्छंति, से तं भुयपरिसप्पा से तं थलबरा ॥ ३९ ॥ से किं तं खहबरा ! २ चड-व्यहा पण्णता, तंजहा-चम्मपक्खी तहेब भेदो, ओगाहणा जहनेणं अगुलस्स असंखे॰ उद्योसेणं धणुपृहत्तं, ठिई जहनेणं अंतोमृहत्तं उद्योसेणं पिलओवमस्स असंखेजहभागो, सेसं जहाँ जलयराणं, नवरं जाव तर्षे पुढविं गच्छंति जाव से तं सहयरगञ्ज्यवद्यं नियपंचेंदियतिरिक्त जोणिया. से तं तिरिक्त जोणिया ॥ ४०॥ से कि तं मणुस्सा ? २ दुविहा फणाता, तंजहा—संमुच्छिममणुस्सा य गञ्भवकंति-यमणस्या य ॥ कहि णं भंते ! संमुच्छिममणस्या समुच्छंति ! गोयमा ! अंतो मण्-स्सक्तेत जाव करेंति । तेसि णं भंते ! जीवाणं कड सरीरगा पण्णता ? गोयमा ! तिकि सरीरगा पक्ता, तंत्रहा-अोरालिए वेयए कम्मए० से तं संमुच्छिममणुस्सा । से कि तं गर्वभवकंतियमणुरसा ? २ तिविहा पण्णता, तंजहा-कम्मभूमगा अकम्म-भूमगा अंतरदीवगा, एवं माणुस्समेदो भाषियव्यो जहा पण्णवणाए तहा णिरवसेसं भाषियन्वं जाव छउमत्वा य केवली य, ते समासओ दुविहा पण्पता, नंजहा— पजता य अपजता य । तेसि णं भंते ! जीवाणं वह सरीरा प॰ ? गोयमा ! पंच सरीरया प॰ तंजहा---ओरालिए जाव कम्मए । सरीरोगाहणा जहनेणं अंगुलस्स असंक्षेत्र॰ उक्कोसेणं तिण्णि गाउगाई छवेव संघयणा छस्संठाणा । ते णं भेते ! जीवा कि कोहकसाई जाव लोभकसाई अकसाई ? गोयमा ! सम्बेबि । ते णं मंते ! जीवा कि आहारसज़ोबउत्ता जाव नोसज़ोबउत्ता ? गोयमा ! सब्देवि । ते णं भेते ! जीवा कि कम्हकेसा जाव अकेसा? गोयमा! सव्वेषि । सोईदियोबउत्ता जाव नोईदियोवउत्तावि, सन्वे समुख्याया, तंजहा-विवणासमुख्याए जाव केवलिसमुख्याए, संजीवि नोसंजी-असंजीवि, इत्यिवेयावि जाव अवेयावि, पंच पंजाती, तिविहावि दिशी.

चतारि इंसणा. जाणीवि अज्जाजीवि. जे जाणी ते अत्येगइया दुणाजी अत्येगइया तिणाणी अत्येगइया चउणाणी अत्येगइया एगणाणी, जे दुण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी य. अहवा आभिणिबोहियणाणी सयनाणी मणपजवमाणी य. जे चंड-णाणी तं जियमा आमिणिबोहियणाणी सुय० ओहि० मणपज्जवणाणी य. जे एच-णाणी ने नियमा केवलनाणी, एवं अनाणीवि दुअनाणी तिअण्णाणी, मणजोगीवि बङ्कायजोगीवि अजोगीवि, दुविह उवओगे आहारी छहिमि उववाओ नेर्डएहि अहे-सन्तमबजेहिं तिरिक्खजोणिएहिंतो. उववाको असंखेळवासाउगबजेहिं मण्लहिं अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखेजनासाउयवजेहिं. देवेहिं सव्वेहिं. ठिई जडहेणं अंतो-सहत्तं उद्योसेणं तिष्णि पलिओवमाई. दुविहावि मरंति, उच्चहिता नेरझ्याइस जाव अणुत्तरोववाइएस. अत्थेगइया सिज्झंति जाद अंतं करेंति। ते णं भंते ! जीवा कहगइया कड़आगड़या पण्णता ? गोयमा ! पंचगड़या चउआगड़या परिना संकित्वा पण्णता. सेर्न मणुस्मा ॥ ४९ ॥ से कि तं देवा ? देवा चडिवहा पण्णता, तंजहा- सवणवासी वाणमंतरा जोइसिया बेमाणिया। से किंतं भवणवासी ? २ दसविष्टा पण्णता, तंत्रहा---असरा जाब बाणिया. से तं भवणवासी । से किं तं वाणमंतरा ? २ देवभेदो सब्बो माणियव्यो जाव ते समासको द्विहा पण्यता, तंजहा---पजता य अपजता य. तेसि णं तओ सरीरगा-वेदन्त्रिए तेयए कम्सए । कोगाइणा दुविहा-भन्धारणिजा य उत्तरवेउव्विया य. तत्य णं जा सा भवधारिषजा सा जहनेणं अंगुलस्स असंखेजह-भागं उद्योगेणं सत्त रमणीको. उत्तरबेउव्या जहनेणं अंगलस्य संखेजह० उद्योगेणं जोग्रणसयसहस्तं. सरीरमा छण्डं संघयणाणं असंघयणां णेनडी गेव छिरा गेव ब्हार नेद संघयणमस्य. जे पोग्वस्य इद्रा कंता जाद ते तेसि संघायताए परिणमंति. किसंठिया? गोबसा! दुविहा पण्णता, तंत्रहा-भवधारणिजा य उत्तरवेउव्विया य. तस्य णं जे ते अवधारणिजा ते णं समयउरंतसंठिया पण्णता, तस्य मं जे ते उत्तरवेडिवया ते मं नामासंठामसंठिया पण्णता, चतारि कसामा चतारि सण्या छ केरसाओ पंच इंदिया पंच समुख्याया सचीव असचीव इत्य-केशादि परिस्केशावि नी न्यंसक्षेत्रा, पक्ती अवज्ञतीओ पंच, विश्वी तिकि, तिविष दंसवा, जाणीवि अञ्चाणीवि, जे नाणी हे नियम तिष्णाणी अष्णाणी मयणाह. दुविहे उद्योगे, तिविहे कोगे, आहारी विवमा छहिति, सोसबकार्य पहुच कणाओ हातिहस्यक्रिकाई जान आहारमाहारेति, उननाजो तिनियमग्रस्टेस, दिई जहनेये दस वाससहस्माई उद्योखेणं तेलीतं सागरीकारं, दक्षिमानं संस्ति, उच्चहिता से

नेरइएस गच्छंति तिरियमणस्सेस जहासंभवं. नो देवेस गच्छंति, दुगइया दुआगइया परिता असंखेजा पण्णता. से तं देवा. से तं पंचेंदिया, सेतं ओराला नसा पाणा ॥ ४२ ॥ धावरस्य णं भेते ! केवडयं कालं ठिई पण्णना ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमहत्तं उद्योग्नेणं बावीसं वासमहस्ताइं ठिई पण्णता ॥ तसस्य णं भंते! केवडयं कालं ठिर्ड पण्णता? गीयमा! जहण्णेणं अंतीगृहतं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोत्रमाइं ठिईं पण्णता । थावरे णं भंते ! थावरेति काळओ केनियरं होइ ! गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उस्सिप्पणीओ अवसप्पणीओ कालओ खेनओ अणंता लोया असंखेजा पुरगलपरियहा, ते णं पुरगलपरियहा आवलियाए असंखेजहभागो ॥ तसे णं भंते ! तसिन कालओ केविकरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं उन्नोसेणं असंखेजं कालं असंखेजाओ उस्स-पिणीओ अवसपिणीओ कालओं खेत्तओं असंग्रेजा लोगा ॥ थावरस्स णं भंते ! केवडकालं अंतरं होड ? गोयमा ! जहा तमसंचिद्रणाए ॥ तसस्स णं भेते ! केवइ-कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहनं उक्कोसेणं वणस्सङ्कालो ॥ एएसि णं भेते! तमाणं थावराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुष्ठा या विसेसाहिया वा ? गोयमा ! मव्यत्थोवा तमा थावरा अणंतगुणा, से तं दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णता ॥ ४३ ॥ पढमा दुविहप<mark>डिवसी समता ॥</mark>

तन्य जे ते एवमाइंसु तिविहा संसारसमावण्णमा जीवा पण्णमा ते एवमाइंसु, तंजहा—इत्बी पुरिसा णपुंसगा ॥ ४४ ॥ से कि तं इत्थीओ ? २ तिविहाओ पण्णनाओ, नंजहा—तिरिक्खओणित्थीओ मणुस्तित्थीओ देवित्थीओ । से कि तं तिरिक्खओणित्थीओ एण्णनाओ तंजहा—जल्यरीओ यल्यरीओ खह्यरीओ । से कि तं जल्यरीओ ? २ पंचिवहाओ पण्णनाओ, तंजहा—मच्छीओ जाव संसुमारीओ से तं जल्यरीओ । में कि तं यल्यरीओ ? २ दुविहाओ पण्णनाओ तंजहा—पण्डीओ य परिसप्पीओ य । से कि तं चउप्पइंओ ? २ वउव्विहाओ पण्णनाओ तंजहा—एगखुरीओ जाव सण्पक्षओं से तं चउप्पययल्यरितित्वखं जोण्णनाओ तंजहा—एगखुरीओ जाव सण्पक्षओं से तं चउप्पययल्यरितित्वखं जोण्णनाओ तंजहा—एगखुरीओ जाव सण्पक्षओं से तं चउप्पययल्यरितित्वखं जोण्णनाओ तंजहा—उर्परिसप्पीओ । से कि तं परिसप्पीओ ? २ दुविहाओ पण्णनाओ, तंजहा—उर्परिसप्पीओ य गुयपिसप्पीओ य । से कि तं उर्परिसप्पीओ ? २ तिविहाओ पण्णनाओं तंजहा—अहीओ अहिगरीओ महोरगीओ य, सेनं उर्परिसप्पीओ । से कि तं गुयपरिसप्पीओ ? २ अण्यविहाओ पण्णनाओं तंजहा—सर्बीओ सेरंघीओ गोहीओ णउलीओ सेथाओ सरबीओ सिरसंघीओ आवीओ सोबीओ सारीओं पह्नवाह्याओ चउप्पइयाओ मृसियाओ सुगुसियाओ चरोलियाओं गोहियाओं ओहियाओ जीहियाओं निरिवरा-

लियाओं सेतं सुयपरिसप्पीओ । सं किं तं खह्यरीओ ! चडब्विहाओ पण्णनाओ तंजहा-चम्मपक्खीओ जाव वियय० सेनं खहयरीओ, सेत्तं तिरिक्खजोणित्थीओ ॥ से कि तं मण्डिसत्थीओं ? २ तिविहाओं पण्णताओं तंजहा--कम्मभूसियाओं अकम्प-भूमियाओं अंतरदीवियाओं। से किं तं अंतरदीवियाओं? २ अद्वावीसहविहाओं पण्ण-त्ताओ, तंजहा--एग्वडयाओ आभासियाओ जाव सद्धदंतीओ, सेत्तं अंतरही ।। से कि तं अक्रमभूमियाओ ? २ तीर्सावहाओ पण्णताओ तंत्रहा—पंचस हेमबएस पंचस एरण्यास पंचस हरिवासेस पंचस रम्मगवासेस पंचस देवकरास पंचस उत्तरकरास. संनं अक्रमः । से कि नं कम्मभूमियाओं ? २ पण्णरसविहाओं पण्णनाओं, नंजहा-पंचस भरहेम पंचम एरक्एन पंचम महाविदेहेस, सेनं कम्मभूमगमणस्मिरधीओ. भंतं मण्डिंगत्थीओ ॥ से कि तं देवित्थियाओ ? २ चउव्विहाओ पण्णताओ तंजहा---भवणवासिर्वाविभयाओं वाणमंतरदेवित्थयाओं जोइसियदेवित्थयाओं वेमाणियदेवि-त्थियाओ । से कि नं भवगवासिदेविन्धियाओ ? २ दसविहाओ पण्णाताओ तंजहा---अमरकमारभवणवासिदेवित्थियाओ जाव थणियकमारभवणवासिदेवित्थियाओ. मे तं भवणवासिदेविन्धियाओ । से कि नं वाणमंतरदेविन्धियाओ ? २ अद्भविहाओ पण्ण-त्ताओं तंजहा--पियायबाणमंतरदेवित्ययाओं जाव गंधव्व० से तं वाणमंतरदेवित्य-याओ । में किं तं जोडसियदेवित्थियाओ ? २ पंचविहाओं पण्णताओं तंजहा—चंट-विमाण जोइसियदेविन्थियाओ सर० गह० नक्खन ० ताराविमाण जोइसियदेवित्य-थाओ, सेतं जोइसियाओ । से किं तं चेमाणियदेवित्थियाओ ! २ द्विहाओ प० तंजहा-सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थयाओ इसाणकप्पवेमाणियदेवित्थयाओ सेतं वेमाणितथीओ ॥ ४५ ॥ इतथीणं अंते ! केवइयं कार्ल ठिई पण्णना ? गोग्रमा एगेणं आएसेणं जहनेणं अंतोम्हतं उद्दोसेणं पणपनं पिलओवमाई एकेणं आएसेणं जहनेणं अंतोमुहत्तं उद्दोसेणं नव पिलओवमाइं एगेणं आएसेणं जहनेणं अंतोमुहत्तं उक्कोमेणं सत्त पिलओवमाई एगेणं आएसेणं जहनेणं अंतोमहत्तं उन्होसेणं पन्नासं पिलओवमाई ॥ ४६ ॥ तिरिक्खजोणित्थीणं अंते ! केबड्यं कार्ल ठिई पण्णना ? गो० जहन्नेणं अंतोमुहत्तं उद्दोसेणं तिष्णि पिक्रओवमाई । जलयरतिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णमा ? गोयमा ! जहकेणं अंतो॰ उक्को॰ पुरुवकोडी । चरुप्ययथलयरति-रिक्खजोमित्थीणं भंते ! केवडयं कालं ठिई पण्णता ? गो॰ जहा तिरिक्खजोणित्थीओ। उरपरिसप्ययलगरतिरिक्सजोणित्यीणं भंते ! केक्ड्यं कालं ठिई फणता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोसहत्तं उद्घोरेणं पुव्यकोडी । एवं भुवपरिसप्प । एवं श्रहसरतिरिक्खि-त्थीणं जहन्नेणं मंत्रोमहत्तं उन्हो॰ पिलओवमस्स मसंखेजहभागो ॥ मणुस्स्त्र्थीणं

भंते! केवड्यं कालं ठिई पण्णता? गोयमा! खेतं पहच जह० अंती० उन्नो० तिर्णिण पलिओवमाइं, धम्मचरणं पडुच जह० अंतो० उक्कोसेणं देम्णा पुव्यकोदी । कम्मभ्मयमणुस्सित्वीणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! खेतं पहुच जहनेणं अंतोमहत्तं उक्तोमेणं तिन्नि पिछओवमाई धम्मचरणं पहुच जहनेणं अंतो-महत्तं उक्कोसेणं देसणा प्रव्नकोडी । भरहेरवयकम्मभूमयमणुस्सित्थीणं भंते ! केन्द्रयं कालं ठिई पण्मना? गोयमा! खेतं पड्डब जहनेणं अंतोम्हर्न उद्योसेणं तिकि पलिओवमार्ड. धम्मबरणं पद्धच जहनेणं अंतीमु उन्होसेणं देशृणा पुन्वकोडी । पुट्वविदेहअवर्विदेहकम्मभूमगमण्मितत्थीणं अंते ! केवद्यं कारूं ठिई पण्णताः ? गोयमा ! खेतं पहुच जहनेणं अंती॰ उन्नोसेणं पुरुवकोडी, धम्मचरणं पहुच जहनेणं अंतोम् इतं उक्कोसेणं देस्णा पुन्तकोडी । अकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते ! केवडयं कालं ठिई पण्णना ? गोयमा ! जरमणं पहुच जहनेणं देमुणं पलिओवमं परिओवमस्य असंखेजहभागकणगं उक्कांसेणं तिनि पलिओवमाई, संहरणं पड्ड जहन्नेणं अंतोमुहत्तं उद्योसेणं देसणा पुरुवकोडी । हेमवएरण्यवए जन्मणं पहुच जहसेणं देसणं पहि-ओवमं प्रिओवमस्स असंखेजहमारोग द्यागं उक्कोसंगं प्रिओवमं संहरणं पहच जहन्नेणं अंतोमुहनं उन्नोसेणं देनृणा पुञ्चकोडी । हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमग-मण्टिस्ताथीणं भेते ! केवड्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जम्मणं पहुच जहनेणं देसणाइं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्य असंखेखहभागेण ऊजयाडं उद्यो॰ हो पलिओवमाई, संहरणं पड़ब जह अंतो अहो वेसणा पुरुवकोडी । देवकुरुउत्तर-क्रहज्ञकम्मभ्रमममण्डिसत्बीणं संते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जम्मणं पहुच जहकेणं देसपाइं तिष्णि पलिओश्रमाइं पलिओक्रमस्य असंखेळहुआरोण समग्राइं उद्दो॰ तिकि पलिओवमाई, संहरणं पहुच जहकेणं अंतोमहत्तं उद्दो॰ देसणा पुञ्चकोडी । अंतर्दीवगअकम्मभूमगमणुस्तित्वीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जम्मणं पद्भ अहक्षेणं देस्णं पिक्कोवमस्य असंखेळाइभागं पिलक्षोवमस्य असंखेजहमारेण ऊणयं उन्नो॰ पहिओवमस्स असंखेजहमार्ग संहरणं पहन्न जहनेणं अंतोम् • उक्को • बेस्पा पुञ्चकोडी ॥ देवित्यीणं संते ! केवइयं कालं ठिई पश्चता ? गोयमा ! जहनेणं दसवाससहस्साइं उन्होसेणं पणपनं पलिखोनमाई । अवणवासि-देविन्त्रीणं संते ! केवइयं काळं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहकेणं दसवाससहस्साइं उक्कोरेणं अद्धपंचमाइं पिल्लोशमाइं । एवं अधुरकुमारअवणवासिवेबितियगाए, नाग-कुमारभवणवासिदेवित्थियाएवि जहवेणं दसवाससहरूसाई उद्योसेणं देस्णाई पछि-ओवमाई, एवं सेसाणवि जाव यमियकमाराणं । बाजर्मतरीणं बहन्नेणं वसवास-

सहरसाहं उद्योसेणं अद्भपतिओवमं । जोइसियदेवित्थीणं भंते ! केवडयं कार्ल ठिई पण्यता ? गोयमा ! जहण्णेणं पिलओवमस्स अद्भमं भागं उक्कोसेणं अद-पछिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अन्महियं, चंदविमाण जोर्हासयदेवित्थियाए जहुंनेणं चउभागपिलओवमं उक्रोसेणं तं चेव, स्रविमाणजोहसियदेवित्ययाए जहकेणं चडमागपित्ओवमं उक्कोरेणं अद्भपित्ओवमं पंचिहं वाससएहिमन्महियं, महित्माणजोइतियदेवित्बीणं जहुळोणं चउभागपिळओवमं उक्कोसेणं अद्धपिटओवमं. णक्खर्तावमाणजोश्सियंद्वित्थीणं जहण्णेणं चउभागपिक्शोवसं उद्घोसेणं चउभाग-पिल्जोवमं साइरेगं, ताराविमाणजोइसियदेवित्थियाए जहन्नेणं अद्भागं पिल्जोवमं उद्यो माइरेगं अद्वभागपिक्योवमं । वेमाणियदेवित्थियाए जहण्णेणं पिक्योवमं टक्कोसेणं पणपन्नं पिठओवमाई, सोहम्मकप्पवमाणियदेवित्यीणं भंते ! केवड्यं कालं ठिडं प॰ ? गोयसा ! जहण्णेणं पलिओवमं उद्दोसेणं सन पलिओवमार्ड, ईसाण-देबित्थीणं जहण्णेणं साइरेगं पिलेओवमं उन्नोसेणं णव पिलेओवमाई ॥ ४७ ॥ उत्थी णं भंते! इत्थिति कालओं केविचरं होड ? गीयमा! एकेणाएसेणं जहनेणं एकं नमयं उद्योसेणं दस्तरं पत्तिओवमसयं पुन्नकोडिपुहत्तमन्महियं। एक्केणाएसेणं जहकेणं एकं समयं उद्योगेणं अद्वारम पिल्ञोवसाइं पुल्वकोडीपुहत्तमन्महियाइं। एक्केणाएसेणं जहुण्यंणं एकं समयं उक्कोसेणं चउइस परिज्ञोबमाई पुन्वकोडिपुहत्तम-क्रमहियांत्रं । एक्केपाएसेणं जह ० एकं समग्रं उक्को ० पतिओवमसर्य पुरुवकोडीपुहुनम-ब्सहियं । एकेणाएसेनं जह ० एकं समयं उक्को॰ पतिओवमपुहुत्तं पुव्वकोबीपुहुत्तम-डमहियं ॥ तिरिक्सजोनित्वी णं भंते ! तिरिक्सजोणित्यिति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं उद्दोरेणं तिचि पछिओदमाइं पुरुवकोढी पुहुत्तमञ्म-हियाइं, जलपरीए जहणींपं अंतोमुहुनं उक्कोसेणं पुन्वकोबिपुहुनं । नउप्पययलय-रतिरिक्खको॰ जहा ओहिया तिरिक्ख॰, उर्परिम्प्यीभुवपरिसप्पित्थी णं जहा जलमरीणं, खह्यरि॰ जहण्णेणं अंतीमुहुत्तं उक्को॰ परिस्नोवमस्स असंखेजहभागं पुज्यकोष्टिपुहुत्तमञ्ज्ञहियं ॥ मृश्वस्तित्वी वं मंते ! कालओ केविषरं होइ ? गोयमा ! क्तं पहुच जहण्णेणं अंतोमुहुतं उद्यो॰ तिक्षि पळिओवसाइं पुट्यकोडिपुहुत्तसब्महि-याई, धम्मानरणं पहुच बहु ० एवं समयं उद्घोतेणं देस्या पुरुषकोदी, एवं कम्मभूमि-सावि भरहेरवजावि, जबरं केतं पहुच बहु अंतो व्हारे तिथि परिख्योवमाइं देस्णपुन्तकोडीअब्सहियाई, क्रमक्रमं बहुव जहर एकं समयं उद्यो देस्णा पुल्वकोडी । पुल्वविदेह्शवदविदेहित्वी यं केतं पहुच जह अंतो उक्को पुल्य-कोशीपुहुतं, धम्मवर्षं पहुच जह । एकं समयं उक्कोसेणं देस्णा पुज्वकोसी ॥

अकम्मभूमियमण्टिसत्थी णं भंते ! अकम्मभूमि० कालओ केविचरं होड् ? गोयमा ! जम्मणं पहुच जह वस्मणं पिछञ्जोवमं पिछञ्जोवमस्स असंखेजहमागेणं ऊणं उद्योव तिण्णि पलिओवमाई । संहरणं पड्डच जरू अंनो० उन्नोसेणं तिन्नि पलिओवमाई देस्णाए पुव्यकोडीए अञ्महियाइं । हेमवएरण्णवए अकम्मभूमगमणुस्मित्थी णं भंते ! हेम० कालओ केविकरं होड ? गोधमा ! जम्मणं पहुच जह० देनुणं पिट-ओवमं पतिओवमस्य असंखेजहभागेणं ऊगगं, उन्हो॰ पतिओवमं । साहरणं पहच जह अंतोम् अको प्रतिओवमं देसुणाए पुन्तकोडीए अञ्महियं । हरिवासरम्म-यअकम्मभूमगमणुस्सित्थी णं भंते !. जम्मणं पड्ड जह ० देसुणाई दो पालओवमाई पिलओवमस्य असंग्वेजडभागेणं ऊणगाई, उन्हों - दो पिलओवमाई । संहरणं पड्ड जह अंतोम् । उक्को । दो पत्रिओवमार्ड देनणपुन्वकोडिमन्महियार्ड् । उत्तरकृतंद-वकुरूणं . जम्मणं पदुच जहन्नेणं देसणाई तिन्नि पालओवमाई पलिओवमस्य असं-खेजडभागेणं जणगाइं उक्को॰ तिक्ति पलिओवमाइं। संहरणं पहुच जह॰ अंतोमु॰ उद्यो ति ति पिल्ओवमाइं देसणाग् पुव्यकोडीग् अब्भहियाई । अंतरदीवाकम्मभूम-गमणुस्सित्थी ॰ ? गो ॰ ! जम्मणं पद्भ जह ॰ देमणं पलिओनमस्स असंखेजहभागं पळिओवमस्स असखेजहभागेण ऊणं उद्यो० पळिओवमस्स असंखेजहभागं । साहरणं पदुच जह ॰ अंतोम् ॰ उन्हो ॰ पलिओवमस्स अमंखेजहभागं देम्णाए पुव्वकोहीए अब्महियं ॥ देविन्धी णं भंते ! देवित्थिति काल०, जमेव संचिद्रणा ॥ ४८ ॥ द्रवीणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होड ? गोयमा ! जह ० अंतोमु ० उक्को० अणंतं कालं. वगरसङकालो. एवं सञ्जामिं तिरिकनाशीणं । मणुस्सित्थीए खेतं पड्ड अह० अंगो॰ उक्को॰ वणस्सहकालो, धम्मचरणं पहुच जह॰ एकं ममयं उक्को॰ अणंतं कालं जाव अवदूर्पामगलपरियष्टं देमृणं, एवं जाव पुरुवविदेहअवर्विदेहियाओ, अक-म्मभूमगमणुरिसत्थीणं मंते ! केवड्यं कालं अंतरं होड् ? गोयमा ! जम्मणं पहुच जहनेणं दमवामसहरसाइं अंतोम्हतमन्महियाई, उन्नो० वणस्सइकालो, संहरणं पडुच जह० अतोम् ० उन्हो० वणस्सङ्कालो, एवं जाव अंतरदीवियाओ । देवित्थियाणं मञ्त्रासि जह अंती उन्नो वणस्सइकालो ॥ ४९ ॥ एयासि णं मेते ! तिरिक्स-जोणित्ययाणं मण्स्सित्ययाणं देवित्ययाणं कयरा २ हिंतो अप्पा वा बहया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवाओ मणुस्सित्ययाओ तिरिक्सजोण-त्यियाओ असंक्षेज्रगुणाओ देवित्यियाओ असंखेजगुणाओ ॥ एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाणं जलयरीणं श्रलवरीणं खहयरीण य कयरा २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुष्का वा विसेसाहिया वा ? गोयमा! सम्बत्योवाओ खहयरतिरिक्खजो-

णित्ययाओ थलयरतिरिक्खजोणित्ययाओ संखेजगुणाओ जलयरतिरिक्ख० संखे-जगुणाओ ॥ एयाचि णं भेते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाण य कयरा २ हिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवग-अकम्मभूमगमणुस्यित्ययाओं देवकुरूत्तरकुत्रअकम्मभूमगमणुस्यित्ययाओं दोवि तुह्नाओ संखे जगु , हरिवासरम्मयवासअकम्मभूमगमणुस्सित्थयाओ दोवि तुहाओ संखेजगु . हेमनएरण्णवयअकम्मभूमगमणुस्सित्ययाओ दोवि तुक्काओ संखेळागु०, भरहेरवय-कम्मभूमगमणुस्मि॰ दोवि तुज्ञाओ संखेज्जगुणाओ, पुन्वविदेहअवरविदेहकम्म-भूमगमणुस्यित्ययाओ दोवि तुल्लाओ संखेजगुणाओ ॥ एयासि णं मंते । देवित्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कयरा २ हिंतो अप्पा वा वहरा वा नृक्षा वा विसेमाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्थोवाओ वेमाणियदेवित्थियाओ भवणवासिर्देविन्धियाओ असंनेजगुणाओ वाणमंतरदेवित्धियाओ असंस्टेजगुणाओ बोइस्यिदेवित्थियाओं संखेजगुणाओं ॥ एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाणं जलयरीणं यलयरीणं खहयरीणं मणुस्सित्ययाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं देवित्यीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कयरा २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा बिसे० ? गोयमा ! सव्बत्योवाओ अंतर-वीवगक्षकम्मभूमगमणुस्सित्ययाओ देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुरिसिधयाओ दोवि तुहाओ संखेजगुणाओ, हरिवासरम्मगवासअक्रमभूमगमण्यस्तित्वयाओ दोऽवि तुहाओ संखेजगु॰, हेमवएरण्णवयअकम्मभूमग॰ दोऽवि तुहाओ संखेजगु॰, भरहेरचयकम्मभूमगमणुस्सिन्बीओ दोऽवि तुल्लाओ संखेजगु०, पुर्व्वावदेहअवर-विदेसकम्मभूमगमण्रिसिरिय० दोर्डाव संखेजगु०, वेमाणियदेविरिययाओ असं-खेजगु «, भवणवासिदेवित्यियाओ असंखेजगु », सहयरतिरिक्खजोणित्यियाओ असं-खेजगु॰, थलयरतिरिक्सजोणित्ययाओ संखेजगु॰, जलयरतिरिक्सजोणित्ययाओ संखेजगुणाओ, वाणमंतरदेवित्ययाओ संखेजगुणाओ, जोइसियदेवित्ययाओ संखेज-गुणाओ ॥५०॥ इत्यिवेयस्स णं भंते ! कम्मस्स केवहयं कालं बंधिठई पण्णता ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दिवन्नो सत्तमागो पिलओदमस्स असंखेजहभागेण ऊणी उन्नो॰ पण्णरस सागरीवसकोडाकोडीओ, पण्णरस बाससबाई अबाहा, अबाहुणिया कम्मिठिई कम्मिणिसेको ॥ इत्यिवेए णं भंते ! किंपगारे पण्णते ? गोगमा ! फंफ-अग्गिसमागे पण्णते, सेतं इत्यियाओ ॥ ५१ ॥ से कि तं पुरिसा ? पुरिसा तिनिहा पणाना, तंजहा-तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा ॥ से कि तं तिरिक्स जोणियपरिसा ? २ तिविहा पण्णा, तंत्रहा-जलयरा थलवरा सहयरा

इत्यिभेदो भागियव्यो जाव सहयरा. सेतं सहयरा सेतं तिरिक्सओणियप्रिसा ॥ से कि तं मणस्सपरिसा ? २ तिविहा फणता. नंजहा-कम्मभूममा अकम्मभूममा अंतरदीयगा. सेतं मणुस्सपृष्टिसा ॥ से किं तं देवपृष्टिसा ? देवपृष्टिसा चडिनहा पण्णता, इत्यीमेओ भाषियन्त्रो जाव सन्बद्धसिद्धाः॥ ५२ ॥ पुरिसस्य णं भंते ! केनइयं कालं ठिई पण्णता? गोयमा! जह ० अंतोम ० उक्को ० तेत्तीसं सागरोत्रमाई। तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्साणं जा चेव इत्बीणं ठिई सा चेव माणियन्या ॥ देवपुरिसार्णाव जाब सब्बद्धसिद्धाणं ति ताब ठिडे जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्या ॥ ५३ ॥ परिसे णं अंते ! प्रिसेशि कालओं केविचरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतो० उन्नो० सागरोवमसयपुरुत्तं साइरेगं । तिरिक्खजोणियपुरिसं णं भंते ! कालओ केविष्टरं होड? गोयमा! जहकेणं अंतो० उक्को० तिकि पाँलओवमाडं पुन्वकोडिपुहत्तमन्महियाई, एवं तं चव, संचिद्रणा जहा इत्थीणं जाव खहयर-तिरिक्खजोणियपुरिसस्य संचिद्वणा । मणुस्सपुरिसाणं भेते ! कालओ केविवरं होइ? गोयमा ! खेलं पडक जहनेणं अंतो० उक्को० तिन्नि पिलओवमाई पुन्वकोडिपहत्त-मञ्महियाई, धम्मचरणं पहुच जह व अंती व उक्कोसेणं देसणा प्रव्यकोडी एवं सव्यत्य जाव पुरुवविदेहुअवर्विदेहु, अक्रमभूमगमणुस्यपुरिसाण जहा अक्रमभूमगमणुस्सि-त्थीणं जाव अंतरदीवगाणं जन्नेव ठिई सचेव संचिद्रणा जाव सञ्बद्धसिद्धगाणं ॥ ५४ ॥ पुरिसस्स णं भंते ! केवडयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जह ० एकं समयं उक्को व वणरमङ्कालो तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जह व अंतोमु व उक्को व वणस्सङ्कालो एवं जाव ब्लह्यरतिरिक्खजोणियपुरिसाणं ॥ सणुरसपुरिसाणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! सेतं पहुच जह अंतोमु अको वणस्सहकालो, धम्मचरणं पदुच जह • एक्सं समयं उन्नो • अणंतं काळं अणंताओ उत्स • जाव अवस्योगगळ-परियद्वं देसूणं, कम्ममूममाणं जाब विदेही जाव धम्मचरणे एको समझो सेर्स् जिहरबीणं जाव अंतरबीवगाणं ॥ देवपरिसाणं जहरू अंती । उन्नी । वणस्सक्तास्त्री. मवणवासिदेवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो, जह॰ अंतो॰ उक्को॰ वणस्सहकाको। आणयदेवपुरिसाणं भंते ! केवहयं कालं अंतरं होइ ? गोसमा ! जह० बासपुहत्तं उद्यो० वणस्सङ्कालो, एवं जाव गेवेजवेबपुरिसस्सवि । अणुत्तरोवबाइयदेवपुरिसस्स जहः वासपहत्तं उद्यो॰ संखेळाडं मागरोषमाइं साइरेगाइं अनुतराषं अंतरे एक्को आळावओ ॥ ५५॥ अप्पाबहुबाबि जहेवित्थिणं जाव एएरि गं संते ! देवपुरिसार्यं सवनवासीणं बाणअंतराणं जोइसियाणं वेमावियाण य कार्यरश्चितो अन्या वा बहवा वा तुला वा विसेसाहिया वा? गोयमा । सन्वत्योदा वेमानियदेवपरिसा भवणवड्डेदपरिसा

असंखे॰ वाणमंतरदेवपुरिसा असंखे॰ जोइसियदेवपुरिसा संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोषियपरिसाणं जलयराणं थलयराणं सहयराणं मणुरसप्रिसाणं क्रमभूमगाणं अक्रमभूमगाणं अंतरहीय ० देवपुरिसाणं भवणवासीणं घाणसन्तराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्माणं जाव सव्बद्धसिद्धगाण य क्यरेरहिंतो अप्पा वा बहुगा वा जाव विसेसाहिया वा? गोयमा ! सञ्बरघोवा अंतर्दीवगमणुस्सपुरिसा देवकुरूत्ररक्षकम्मभूमगमणस्सप्रिसा दोवि संखेज ० हरिवासरम्मगवास्थक ० दोवि संखेळागुणा हेमचयहेरणवयअक्रमा० दोवि संखे० भरहेरवयकम्मभूमगम्ग् ० दोवि संबे ० प्रविदेहअवरविदेहकम्मभ् ० दोवि संबे ० अणुनरोवबाइयदेवप्रिसा असंखे ० उवरिमगेविज्ञदेवपरिसा संखेज॰ मज्जिमगेविज्ञदेवपुरिसा संखेज ० हे द्विमगेविज्ञदेव-पुरिसा संखेज अञ्चयकापे देवपुरिसा संखे जाव आणयकापे देवपुरिसा संखेज । सहस्मारे कप्पे देवपूरिसा असंखे॰ महामुक्ते कप्पे देवपूरिसा असंखे॰ जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखे॰ मणंकुमारकप्पे देवपुरिसा असं॰ ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखे॰ सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखे॰ भवणवासिदेवपुरिसा असंखे॰ खह्यरति-रिक्सजोणियपुरिसा असंखे॰ थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखे॰ जलयरतिरिक्ख-जोणियप्रिसा असंखे॰ वाणमंतरदेवप्रस्सा संखे॰ जोइसियदेवप्रिसा संखेळगुणा ॥ ५६ ॥ पुरिसबेयस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधद्विई पण्णता ? गोयमा ! जह ॰ अद्र संबच्छराणि, उक्को ॰ दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दसवाससयाई अवाहा. अबाहणिया कम्मठिई कम्मणिसंओ ॥ पुरिस्तवेए णं भंते ! किंप्गारे पण्णते ? गोयमा ! बणद्विगजालसमाणे पण्णते, सेतं पुरिसा ॥ ५७ ॥ से किं तं णपुंचना ? णपुंसना तिबिहा पण्णता, नंजहा-नेरइयनपंसगा तिरिक्सजोणियनपंसगा मण्रसणपंसगा ॥ से कि तं नेरहयनपुंसना ? नेरहयनपुंसना सत्तविहा पण्णता, तंजहा-र्यणप्यभापुढ-विनेर्इयन्प्सना सङ्ख्यमापुढविनेर्इयन्प्समा जाव अहेसत्तमपुढविनेर्इयण्प्समा. से तं नेरहयण्पंस्या ॥ से किं तं तिरिक्खजोणियण्पंस्या ? २ पंचिवहा प० तं०-एगिंदि॰ बेइंदि॰ तेइंदि॰ चड॰ पंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगा ॥ से किं तं एगिंदि-यतिरिक्खनोणियनपूर्वसमा ? २ पश्चिष्ठा पण्णशा, तं० पु॰ आ० ते० वा० व० से तं एनिंदियतिरिक्सओणियणप्रंसचा ॥ से कि तं बेईदियतिरिक्सओणियणप्रंसमा ? २ अणेगविद्या पण्यता । से तं वेशंदियतिष्वजीणिय । एवं तेशंदियावि, पटरिंदियावि ॥ से कि तं पंचेंवियतिरिक्खओणियणपुंसगा १ २ तिविद्या पण्णता, तंजहा-जल्परा बलबरा सहयरा । से कि तं जलबरा ? २ सो चेव प्रकित्यमेदो आसालियसहिनो भाषियको. से तं पंचेदियतिरिक्खजोषियणपंसगा ॥ से कि तं मणुरसनपंसगा १ २

तिविहा पण्णना, नंजहा-कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा, मेदो जाव मा० ॥ ५८ ॥ णपुंसगस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जह० अंती० उक्को व तेशीसं सागरोवमाई ॥ नेरहयनपुंसगस्य णं भंते ! केवहयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जह ॰ दसवाससहरसाई उक्को ॰ तेत्तीसं सागरोबमाई, सब्वेसिं ठिई भाषियन्या जाव अहेसत्तमापुढविनेरहया । तिरिक्खजोषियणपुंसगरस ण भंते! केवर्य कालं ठिई प० ! गोयमा ! जह० अंतो० उद्यो० पृथ्वकोडी । एगिंदिय-तिरिक्खजोणियणपुंसग० जह० अंतो० उक्को० वाबीसं वाससहस्साई, पुढविकाइय-एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्स णं भंते! केवड्यं कार्क ठिई पण्णना ! गोयमा! जह अनो अने बाबीसं वाससहस्साइं, सब्वेसिं एगिदिश्रणपुंसगाणं ठिई भाणियव्या, बेइंदियतेइंदियचर्डोरेदियणपुंसगाणं ठिई भाणियव्या । पंचिदियतिरिक्ख-जोणियणपुंसगरस णं भंते ! केवइयं कालं टिई पण्णता ! गोयमा ! जह० अंती० उक्को॰ पुन्तकोडी, एवं जलयरतिरिक्खचउप्पययलयर्जरपरिसप्पमुयपरिसप्पखहयर-तिरिक्ख व सञ्वर्धि जह व अंतो व उन्नो व पुरुवकोडी । सण्रसणपुंसगरस णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! खेतं पहुच जह० अंतो० उक्को० पुन्वकोडी, धम्मचरणं पद्भव जढ अंतो । उक्को व देस्णा पृथ्वकोडी । कम्ममूमगभरहेरवय-पुञ्जविदेहअवर्तिदेहमणुस्सणपुंसगस्सवि तहेव, अकम्मभूमगमणुस्सणपुंसगस्स णं भंते! केवड्यं कालं ठिंड पण्णता? गोयमा! जम्मणं पहुच जह ० अंतो० उद्यो० अंनोम् ॰ माहरणं पहुच जह ॰ अंनो ॰ उक्को ॰ देसणा पुष्तकोडी, एवं जाव अंतर-दीवगाणं ॥ णपुंत्रए णं भंते ! णपुंत्रएति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं एकं समयं उको ॰ तहकालो। पोर्ड्यणपुंसए कं भंते !॰? गोयमा ! जह ॰ दस वाससहस्साई उद्धो॰ तेनीसं सागरोवमाइं, एवं पृडवीए ठिई भाषियन्वा । तिरिक्खजोषियणपुंसए णं भंते ! ति ॰ ? गोयमा ! जह ॰ अंतो ॰ उन्हो ॰ वणस्सङकास्त्रो. एवं एगिंदियण-पुंसगरस णं, वणस्मडकाइयस्सवि एवमेव, सेसाणं जह॰ अंतो॰ उक्को॰ असंखेजं कालं अनंखेजाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेतओ असंखेजा लोया। वेइंदियतेइंदियचर्डिरियनपुंसगाण य जह० अंतो० उक्को० संक्षेत्रं कालं। पंचिदिय-तिरिक्ख जोणियणपुंसए णं भेते १०१ गोयमा ! जह व अंतो व उद्यो पुष्यको हिपहर्त । एवं जलयरतिरिक्खन्तउप्ययलगरउरपरिसप्पभ्यपरिसप्पमहोर्गाणवि । मणुरसण-पुंसगरस णं भेते । ०१ खेतं पहुच जह व अंती व उद्गी व पुन्नकोचिपुहुतं, घम्मचरणं पहुच जह । एकं समयं उक्को । देसूचा पुज्यकोडी । एवं कम्मभूमगभरहेरवय-पुन्वविदेहअवरविदेहेस्रवि भाषियव्यं । अकम्मभूमगम्णस्यणपुंसए णं मंते । १

गोयमा ! जम्मणं पहुच जह । अंतो । उक्को । मुहुत्तपुहुत्तं, माहरणं पहुच जह । अंतो । उक्को व देसूणा पुरुवकोडी । एवं सञ्चेसि जाव अंतरहीवगाणं ॥ णपुंसगस्स णं भेते ! केवहयं कालं अंतरं होह? गोयमा! जह॰ अंतो॰ उक्को॰ सागरोबमसयपुहत्तं साइरेगं । णेरइयणपुंसगस्त णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जह० अंतो॰ उक्को॰ तरुकालो, रयणप्यभापुदवीनेरइयणपुंतपस्स जह॰ अंतो॰ उक्को॰ तरुकालो, एवं सन्वेभि जाव अहेमलमा । तिरिक्खजोणियणपुंसगरम जह० अंती० उक्को॰ नागरोबमसबपुहुत्तं साइरेगं । एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगस्म जह० अंतो० उक्रो॰ दो मागरोत्रससहस्माई संखेजवासमन्महियाई, पुढविज्ञाउतेउवाऊणं जह० अंती : उद्दो : वणस्मइकालो, वणस्मइकाइयाणं जह : अंतो : उद्दो : असंखेजं कालं जाव असंखेजा लोया, सेसाणं वेइंटियाईणं जाव खहयराणं जह अंतो० उक्को० वणन्मःकालो । मणुन्मणपुंमगस्य खेनं पद्धच जह० अंतो० उक्कासिणं वणस्मइकालो. धम्मवर्णं पदुःच जह० एगं समयं उद्घो० अर्णनं कालं जाव अवसूपीरगलपरियष्टं देन्णं, एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुर्वायदेहअवरविदेहगस्मवि । अकम्मभूम गमणुस्सणवंसगस्य णं भंते ! केवड्यं कार्लं० ? गो० ! जम्मणं पहुन्न जह० अंती० उद्धां वणस्सइकालो, संहरणं पडुच जह अंतो व उद्घो व वणस्सइकालो एवं जाव अंतरदीवगित ॥ ५९ ॥ एएसि णं मंते ! णेर्ड्यणपुंसगाणं तिरिक्त्वजोणिय-नपुंसगाणं मणुरसणपुंसगाण य कयरे कयरेहिन्तो जाव विसेमाहिया वा ? गोयमा ! मञ्बत्थोवा मणुरसणपुंसमा नेरहयनपुंसमा असंखेळगुणा तिरिक्खजोणियणपुंसमा अर्णतगुणा ॥ एएसि णं भंते ! रयणप्पहापुरुविणेरइयणपुंसमाणं जाव अहेसनमपुढ-विणेर्ड्यण्पंसगाण य कयरे २ हिंतो जाव विसेमाहिया वा १ गोयमा ! सन्बत्थोवा अहेसत्तमपृद्धविनेर्इयणपुंसगा छद्वपृद्धविणेर्इयणपुंसगा असंखेळगुणा जाव दोश्रपुढ-विणरहयणपुंसगा असंखेळगुणा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरहयणपुंसगा असंखे-ज्युणा ॥ एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियण-पुंसगाणं पुढविकाइय जाव वणस्सइकाइयएगिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं वेइंदि-यतेइंदियचउरिंदियपंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जलयराणं यलयराणं खह्यराण य क्यरे २ हिन्तो जाव विशेसाहिया वा ? गोशमा ! सम्बत्योवा खह्यरतिरिक्ख-जोषियणपुंसमा, बलयरतिरिक्खजोणियनपुंसमा संखेळ० जलयरतिरिक्खजोणियन-पंसगा संकेज वर्जीरियतिरि० विसेसाहिया तेईदियति० विसेसाहिया बेईदियति० विसेसा ० तेउक्काइयएगिंदियतिरिक्स • असंखेजनुणा पुढिकाइयएगिंदियतिरिक्सजो-विदा विसेताहिया, एवं आउवाउवणस्यहकाहयएगिरियतिरिक्खवोजियणपंसगा

अर्णतगुणा ॥ एएसि णं भंते ! मणुरसणपुंत्रगाणं कम्मभूमिणपुंसगाणं अकम्मभूमिण-पुंसगाणं अंतरदीवगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सञ्चत्थोवा अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सणपुंसगा देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमग० दोवि संखेज-गुणा एवं जाव पुरुवविदेहअवरविदेहकमा० दोवि संखेळगुणा ॥ एएसि र्ण भंते ! णेरइयणपुंसगाणं रयणप्पभापुढिवनेरइयन्पुंसगाणं जाव अहेसलमापुढिनेणेरइयण-पुंसगाणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिदियतिरिक्खजोणियनपुंसगाणं पुटविकाडय-एगिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं जाव वणस्मइकाइय० बेइदियतेइंदियचउरिंदिय-पंचिदियतिरिक्सओणियणपुंसगाणं जलयराणं थलबराणं खहयराणं मणुस्मणप्ंभगाणं कम्मभूमिगाणं अकम्मभूमिगाणं अंतरदीवगाण य कयरे २ हितो अप्पा वा ४? गोयमा ! मन्त्रत्थोवा अहेमत्तमपुढविणेरइयणपुंसगा छह्रपुढविनेरइयनपुंसगा असंखेज ० जाब दोचपुढविणेरह्यणपुं० असंखे० अंनरदीवगमणुस्सणपंसगा असंखेजगुणाः, देव-कुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमग० दोवि संखेजगुण। जाव पुरुवविदेहअवर्षिदेहकम्मभूमग-मणुस्सणपुंगना दोवि संखेजगुणा, रयणप्पभापुहविणेरइश्रणपुंगना असंखे॰ लहयर-पंचंदियतिरिक्त्वजोणियनपुंसगा असं० थलयर० संखेज० जलयर० संखेजगुणा चउरिंदियतिरिक्खजोषियः विसेसाहिया तेइंदियः विसे॰ बेइंदियः विसे॰ नेउद्या-इयएगिंदिय॰ असं॰ पुडविकाइयएगिंदिय॰ विसेमाहिया आउकाइय॰ विसे॰ वाउका-इय० विसेसा० वणस्यङकाङ्यएगिदियतिरिक्खजोणियणपंसगा अर्णतगुणा ॥ ६० ॥ णपुंररावेयस्य र्ण भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधिटिई पन्ना ? गोयमा ! जह० सागरोबमस्य दोश्चि सभभागा पछिओवमस्य असंखेळाइभागेण कणगा रक्को० वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोष्णि य बामसहस्माई अवाहा, अवाहृणिया कम्मिठई कम्मणिसेगो । णपुंसगबेए णं भंते ! किंपगारे पण्यते ? गोत्रमा ! महाणगरदाहस-माणे पण्यते समणाउसो!, से नं णपुंसगा ॥ ६९ ॥ एएसि णं मंते! इत्बीणं परिसाणं नपंसगाण य कयरे रहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्धोवा परिमा इत्बीओ संखे॰ णपुंसगा अणंत॰। एएसि ण भंते । तिरिक्खओणित्बीणं तिरि-क्स गोणियपुरिसाणं तिरिक्स जोणियणपुंसगाण य कमरे २ हिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्यत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा तिरिक्खजोणित्वीओ असंसे विरि-क्सओ॰ णपुंसगा अर्णतगुणा ॥ एएसि णं भेते ! मणुस्सित्बीणं मणुस्सपुरिताणं मणुस्सणपुंसगाण य कयरे २ हिन्तो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्ब० मणुस्सपुरिसा मणुरिसत्त्रीओ संबे॰ मणुरसणपुंगना असंखेळपुणा ॥ एएसि वं मंते ! देवित्वीणं देवपुरिसाणं णेरह्यणपुंसनाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्योचा

गेरह्यणपुंसगा देवपुरिमा असं० देवित्यांओ संखेजगुणाओ ॥ एएसि णं भंते ! तिरिक्सजोधित्भीणं तिरिक्सजोणियपुरिसाणं तिरिक्सजो०णपुंसगाणं मणुस्सित्भीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुरसनपुंसवाणं देवित्थीणं देवपुरिसाणं णेरइयणपुंसवाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बन्धोवा मणुस्तपुरिसा मणुस्सित्धीओ संखे० मणुस्सणपुंसगा असं ॰ णेरइयणपुंसगा असं ० तिरिक्खजोषियपुरिसा असं ० तिरि-क्खजोणित्ययाओ संखेळ० देवपुरिसा असं० देवित्ययाओ संखे० तिरिक्खजोणि-यणपुंसमा अणंतमणा ॥ एएसि णं मंते ! तिरिक्खजोणित्यीणं जलवरीणं यलवरीणं खहग्ररीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जलगराणं थलग्रराणं खहग्रराणं तिरिक्खजो ०-णपुंसगाणं एगिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पुढिविकाइयएगिदियतिरिक्खजो ०-णपुंसराणं जाव वणस्सइकाइय० वेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसराणं तेइंदिय० चउरि-दिय ० पंचेदियतिरिक्खजोणियणपुंत्रगाणं जलयराणं यलयराणं खहयराणं क्यरे २-हिंनो जाब विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणियपरिसा सहयर्रात रिक्स जीणित्थियाओ संखेज । थलयरपंचिंदियति रिक्स जीणियपुरिसा संखे॰ थलयरपंतिदियतिरिक्खजोणित्ययाओ संखे॰ जलगरतिरिक्खजो॰पुरिसा संसे॰ जलयरतिरिक्खजोणिरियमाओ संकेजगु॰ सहयरपंचिदियतिरिक्खजो०-गपंसगा असंखे॰ यलयरपंचिदियतिरिक्तजोणियनपुंसगा संखे॰ जलयरपंचेदिय-तिरिक्खजोणियनपुंसमा संखे॰ चडरिंदियतिरि॰ विसेसाहिया नेइंदियणपुंसमा विसेसाहिया बेडंदियणपंसमा विसेसा० तेउकाइयएगिदियतिरिक्खजोणियणपंसमा असं० पुढवि॰णपुंसगा विसेसाहिया आउ० विसेसाहिया वाउ० विसेसा॰ वणप्पड०-एकिन्दियणपुंसमा अणंतगुणा ॥ एएसि णं भेते ! मणस्सित्बीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं मणुस्यपुरिसाणं कम्मभूसगाणं अकम्मभूसगाणं अंतरदीवगाणं मणुस्सणपुंसगाणं कम्मभूमगाणं अकम्म० अंतरदीवगाण य कयरे २ हिन्तो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! अंतरदीविया मणुस्सित्ययाओ मणुस्सपुरिसा य एए णं दोवि तुक्का सब्दत्योवा देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सित्ययाओ मणुस्स-पुरिसा एए णं दोशिवि तुहा संसे॰ हरिवासरम्मगवासअकम्मभूमगमणुस्सित्यवाओ मणस्सप्रिसा य एए णं दोशिव तहा संखे हमवबहेरण्णवयसकम्मभ्यगमणस्सि-त्थियाओं मणस्सपरिसा य दोवि तुहा संखे॰ भरहेरवयकम्मभूमगमणस्सप्रिसा दोवि संखे॰ भरहेरवयकम्मभूमगमणुस्सित्यियाओ दोवि संखे॰ पुरुवविदेहुअवर्विदेहु-कम्मभूमगम्भूत्सपुरिसा दोवि संखे॰ पुत्रविदेहस्वरविदेहकम्मभूमगमण्रिसत्थ-याओ होति संबे॰ अंतरदीवयमण्स्यणपंसगा असंबे॰ देवक्टउत्तरक्रअकम्मभ-· \$ 致彻。

मगमणुस्सणपुंसमा दोवि संखेजगुणा एवं चेव जाव पुरुवविदेहकम्मभूमगमणुस्सण-पंसगा दोनि संखेजगुणा ॥ एयासि णं अंते ! देवित्शीणं भवणवासिणीणं वाणमन्स-रीणं जोइसिणीणं वेसाणिणीणं देवपरिसाणं भवणवासीणं जाव वेसाणियाणं सोहस्स-गाणं जाव गेवेजगाणं अगुत्तरोववादयाणं घेरहयणप्तगाणं रयणप्यभापुढविणेरइय-णपुंसनाणं जाव अहेसत्तमपुढविनेर्डय० कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ ? गोग्रमा ! सन्वत्थोवा अणुत्तरोवनाइयदेवपुरिसा उवरिमगेवेजदेवपुरिसा संखेजगुणा तं चेव जाव आणए कृष्पे देवपुरिसा संखेजगुणा अहेसलमाए पुरवीए णेर्ड्यणपुंसगा असंखेजगुणा छद्वीए पुढवीए नेरड्य० असंखेजगुणा सहस्तारे कप्पे देवपुरिसा असंखेळगुणा महासुके कप्पे देवपरिमा असंखेळगुणा पंचमाए पुरुवीए नेर्ड्यणपुंसगा असंखेजगुणा लतए रूप्पे देवपरिसा असंखेजगुणा चटत्वीए पुडवीए नेरङ्या असंखेज-गुणा बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेजगुणा तचाए पृद्धवीए नेरइय० असंखेजगुणा माहिंदे करपे देवपूरिमा असंखेजगुणा मणंकुमारकरपे देवपूरिसा असंखेजगुणा दोचाए पुढवीए नेरह्या असंखेजगुणा ईमाणे कृप्ये वेवपुरिता असंखेजगुणा ईसाणे करपे देवितिश्वयाओं संखेजनुणाओं सोहम्मे कर्ये देवपूरिसा संखेज व सोहम्मे कर्ये देवित्थियाओ संखे । भवणवासिदेवपुरिमा असंखे जगुणा भवणवासिदेवित्थियाओ संखेजगुणाओ इमीसे रयणप्यभापुढवीए नेरङ्या असंखेजगुणा वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेजगणा वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेजगणाओ जोइसियदेवपुरिसा संखेजगणा जोइसियदेवित्थियाओ संक्षेजगुणा ॥ एयासि णं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जल-यरीणं थलगरीणं सहयरीणं तिरिक्सजोध्यपुरिमाणं जलयराणं थलयराणं सहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसगाणं एगिदियतिरिक्खजोणियणपुंसगाणं पुढविकाइयएगिदि-यति • जो • जपुंसगाणं आउकाडयएगिंदियति • जो • जपुंसगाणं जाव वणस्सङ्काडय-एगिदियति • जो • णपुंसगाणं बेइंदियति • जो • णपुंसगाणं तेइंदियति • जो • णपुंसगाणं चडिरिदियति • जो • णपुंसगार्ण पंचेंदियति • जो • णपुंसगार्ण अलगरार्ण शलगरार्ण सहयराणं मणुस्सित्धीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरवीवियाणं मणुस्स-पुरिमाणं कम्मभूमगाणं अकम्म० अंतरबीबयाणं मणुस्सणपुंसमाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरबीवगाणं देवित्बीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोडसिणीणं वेमाणिणीणं वेत्रपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव रेखेळगाणं अणुत्तरीवबाइयाणं नेरहयलपुंसगाणं रयणप्यभापुत-विनेरइयणपुंसगाणं जाव अहेसत्तमपुरुविणेरइयणपुंसगाण य कथरे २ हिन्तो अप्या वा ४ ? गोयमा ! अंतर दीवअकम्मभनगम्मासिरवीओ मणस्तपरिसा व

एए णं दोवि तुल्ला सञ्चल्योबा, दंबकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सइरबीओ पुरिमा य एए णं दोवि तुक्का संखे ० एवं हरिवासरम्मगवास ० एवं हेमवयएरण्यवय ० भरहेरवयकम्मभूमगमणस्सप्रिसा दोवि संग्वे० भरहेरवयकम्मभूमगमणस्सिरवीओ संसे • पुन्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुरसपुरिसा दोवि संसे • पुन्वविदेहअवर-विदेहकम्म । मणुस्सित्ययाओ दोवि संखे अणुत्तरोववाइयदेवपुरिमा असंखेळगुणा उनरिमगेनेजवेनपरिसा संखे॰ जान आणए कप्पे देवपुरिसा संखे॰ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरहयणपुंसमा असंखे छद्वीए पुढवीए नेरहयनपुंसमा असं सहस्सारे कप्पे देवपूरिया असंखे महासक्के कप्पे देव असं पंचमाए पुढवीए नेरझ्यन-बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असं० तजाए पुरुवीए नेरइयण० असं० माहिंदे कप्पे देवपु० असंखे॰ सर्णकुमारे कप्पे देवपुरिसा असं० दोबाए पुढवीए नेरइयनपुंसगा असं ॰ अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सणपुंचना असंखे ॰ देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमग-मणस्मणपंसगा दोवि संखे॰ एवं जाब विदेहति, ईसाणे कप्पे देवपरिसा असं॰ इसाणकप्पे देवित्थियाओ संखे० सोहम्मे कप्पे देवपुरिसा संखे० सोहम्मे कप्पे देवित्याओं संखेज अवणवासिदेवपरिसा असंखे अवणवासिदेवित्ययाओ संबेजगुणाओ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरहयणपुंसगा असे॰ सहयरतिरिक्ख-जोणियपुरिसा असंखेजगुणा सहयरतिरिक्सजोणित्ययाओ संखे व शलयरतिरिक्स-जोणियपुरिया संखे॰ यलबरतिरिक्खजोणित्ययाओ संखे॰ जलबरतिरिक्खपुरिसा संसे॰ जलगरतिरिक्स बोणित्स्याओ संसे॰ वाणमंतरदेवपुरिसा संसे॰ वाणमंतर-देवित्यमाओ संखे॰ जोइसियदेनपुरिसा संखे॰ जोइसियदेवित्यमाओ संखे॰ खह-गरपंचेंदियतिरिक्सजोणियणपुंसगा संसे० थलगरणपुंसगा संसे० जलगरणपुंसगा संके चडरिंदियणपुंसमा बिसेसाहिया तेइंदिय विसेसा बेइंदिय विसेसा तेउकाइयएगिदियतिरिक्सजोषियणपुंसगा ससं० पुढवी० विसेसा० आउ० विसेसा० बाउ ॰ बिसेसा ॰ वणपद्धकाइयएनिंदियतिरिक्खजो ॰ णपुंसगा अर्णतपुणा ॥ ६२ ॥ इस्बीणं भंते ! केवहवं कारूं ठिडे पण्णता ! गोयमा ! एगेणं आएसेणं जहा पुन्ति मणियं, एवं पुरिसरसाव नपुंसगरसाव, संचिद्रणा पुणराव तिण्हंपि जहापुन्नि मणिया. बंतरीपे तिण्डंपि जहापुर्वि माधवं तहा नेयन्त्रं ॥ ६३ ॥ तिरिक्तजोणित्ययाओ तिरिक्काओणिनपुरिसेहितो तिपुणाको तिरुवाहिनाको मणुस्सिरियमाको मणुस्सपुरिसे-हिंतो सत्तावीसस्युणाओ सत्तावीसयस्वाहियाओ देवित्वयाओ देवपुरिसेहिंतो क्ती-सङ्ग्रणाको वर्रीसङ्क्वाहियाको सेतं विविद्या संसारसम्मवन्त्रमा जीवा प्रव्यक्ता छ

तिबिहेस होइ मेओ ठिई य संचिद्धणंतरऽप्पबहुं । वेयाण य बंधिटई वेओ तह किंपगारो उ ॥ ९ ॥ ६४ ॥ **दोखा तिबिहा पढिवत्ती समसा ॥**

तत्य जे ते एवमाइंस चउव्विद्दा संसारसमावण्यमा जीवा पण्याता ते एवमाइंस. तंत्रहा नेरह्या तिरिक्खजोणिया मणुस्मा देवा ॥ ६५ ॥ से कि तं नेरहया ? २ सत्तिहा प्रणता, तंत्रहा-पदमापुद्धिनेर्द्या दोसापुद्धिनेर्द्या ननापुद्धिनेर्० चउत्थापद्यविनेर्० पंचमापु०नेरङया छद्वापु०नेर० सत्तमापु०नेरङ्या ॥ ६६ ॥ पदमा णं भंते ! पुढवी किनामा किंगोत्ता पण्णता? गोयमा ! णामणं घम्मा गोत्तेणं रमणप्यसा । दोचा णं भंते ! पुढवी किनामा किंगोत्ता पण्णता ? गोयमा ! णामेणं वंसा गोत्तेणं सक्दरपमा, एवं एएणं अभिलावेणं सब्वासि पुच्छा, णामाणि इमाणि सेला तह्या अंजणा चउत्थी रिद्धा पंचमी मघा छद्वी माघवई सत्तमा जाव तमनमागोतेषं पण्णता ॥ ६७ ॥ इमा णं भंते ! रयणप्पभापुतवी केवड्या वाहक्षेणं पण्णता ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पमापुदवी असिउत्तरं जोयणमयसहस्सं बाहक्रेणं पणाना, एवं एएणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्या—आसीयं वत्तीसं अष्टावीसं तहेव वीसं च । अद्वारस सोलसगं अद्वत्तरमेव हिड्डिमिया ॥ १ ॥ ६८ ॥ इमा णं संते! रयणप्यभापुढवी कड्विहा पण्णता? गोयमा! तिविहा पण्णता, तंजहा-खरकंडे पंकबहुछ कंडे आवबहुछ कंडे ॥ इमीसे णं भंते ! रय० पुढ० खरकंडे क्कविहे पण्णते? गोयमा! सोलमविहे पण्णते, तंजहा-रथणकंडे १ वहरे २ वेरुलिए ३ लोहियक्से ४ मसारगहे ५ हंसगब्से ६ पुलए ७ सीगंधिए ८ जोइरसे ९ अंजणे १० अंजणपुलए ११ रयए १२ जागम्बे १३ अंके १४ फलिहे १५ रिद्धे १६ कंडे ॥ इमीसे णं अंत ! रयणप्यभापुढवीए रयणकंडे कड्बिहे पण्णते ? गोयमा ! एगागारे पण्णते, एवं जाव रिद्धे । इमीसे णं भेते ! रयणप्पभापुढवीए पंकवहुले कंडे कड़विहे पण्णते ? गोयमा ! एगागारे पण्णते । एवं आवबहुछे कंडे क्झविहे पण्णते ? गोयमा! एगागारे पण्णते । सक्करप्यमा णं भंते! पढवी कडविहा पण्णता? गोयमा! एवागारा पण्णता, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ ६९ ॥ इमीसे णे भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णता? गोयमा! तीसं णिरयावाससय-सहस्सा फणता, एवं एएणं अभिकावेणं सव्वासिं पुच्छा, इसा गाहा अणुगंतव्या-तीसा य पण्पवीसा पण्णरम दसेव तिष्णि य हुनंति । पंचूणसमसहस्यं पंचेव अणुत्तरा णरगा ॥ १ ॥ जाव अहेसत्तमाए पंत्र अ<u>णत्त</u>रा महङ्महालया महागरगा पण्णता, तंजहा ---काले महाकाले रोक्ए महारोक्ए अपस्क्राणे ॥ ७० ॥ अत्य णं मंते ! इमीसे र्यणप्यसाए पुढवीए अहे चणोदहीइ वा चणवाएइ वा तणुवाएइ वा ओवासंतरेइ वा ?

हता अस्थि, एवं जाब अहेसतमाए ॥ ७१ ॥ इमीसे णे भंते ! रयणप्पभाए पुढबीए खरकंडे केवडमं बाहक्षेणं पण्णते ? गोवमा ! सोकस जोयणसहस्साई बाहक्षेणं पनते ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए रयणकंडे केवइयं बाहक्षेणं पन्नते ? गीयमा ! एकं जोवणमहस्सं बाहबेणं पण्णते, एवं जाव रिद्रे । इमीसे णं भेते ! रब० पु० पंकबहरू कंडे केवइयं बाहलेणं पन्नते? गोयमा! चउरसीइजोयणसहस्याइं बाहलेणं पण्णते । इमीसे णं भंते! रयू० पु० आवबहुले कंडे केब्र्यं बाहुहेणं पक्ते? गोयमा! असीइ-जोयणसहस्साइं बाहक्षेणं पन्नते । इमीसे णं संते ! रयणप्पमाए पु॰ घणोदही केवइयं बाहक्रेणं पन्नते ? गोयमा ! वीसं जोयणसहस्साइं बाहक्षेणं पष्णते । इमीसे णं अंते ! रय० ५० घणवाए केन्द्रयं बाह्नहेणं पन्नते ? गोयमा! असंकेजाइं जोयणसहस्साई बाह्रह्रेणं पण्णते, एवं तणुवाएऽवि ओवासंतरेऽवि। सक्करप्प॰ भंते ! पु॰ घणोदही केव-इयं बाहहेणं पण्णते ? गीयमा ! वीसं जोयणसहस्साइं बाहहेणं पण्णते । सकरप्प॰ पु० धणवाए केन्द्रयं बाहत्रेणं प्रकाते ? गोयमा ! असंखे जोयणसहस्साई बाहत्रेणं प्रकाते. एवं तणुवाएवि, ओवासंतरेवि जहा सकरप्प० पु० एवं जाब अहेसत्तमा ॥ ७२ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्य० पु० असीउत्तरजोयणस्यसहस्तवाहह्नाए सेतच्छेएणं छिजमाणीए अत्थ दव्याइं वण्णनो कालनीललोहियहाळिह्युक्तिलाइं गंधनो सुर्मि-गंधाई दुव्मिगंधाई रसओ तित्तकहयकसायअंबिलमहराई फासओ कक्खडमउयगढ्-यलहुसीयउत्तिणणिद्वलुक्खाइं संठाणको परिमंडलबहुतंसचउरंसआययसंठाणपरिणयाई असमजयदाइं अव्वामकापुदाइं अव्वामकाओगाढाइं अव्वामकासिवेहपिखदाइं अव्या-मण्णवडताए चिट्ठंति ? हंता अत्य । इमीसे णं मंते ! रयणप्पभाए पु॰ खरकंडस्स सोलमजोयणसहरसबाहरूस्स केलच्छेएणं छिज्ञमाणस्स अत्य दच्याई वणाओ काल जाव परिणयाई ? हंता अस्य । इमीसे णं भेते ! रयणप्प० पु० रयणजामगस्स कंडरस जोयणसङ्स्सवाहक्रस्स खेलच्छेएणं छिज्ञ॰ तं चेव जाव हंता अत्थि, एवं जाव रिद्रस्त, इमीसे जं अंते ! रयणप्प० पु० पंकाबहरूस्य कंडस्स चउरासीइ-जोयणसहस्सवाहहस्स केरे तं चेव, एवं आवबहुलस्सवि अधीर्जोयणसहस्सवाहहस्स । इमीसे णं भंते ! रयणपा० पु० षणोदहिस्स वीसं जोयणसहस्सवाहहस्स खेतस्छेएण तहेव । एवं घणवायस्य अंसबोजजोयणसहस्सवाहहस्स तहेव, ओवासंतरस्सवि तं चेव ॥ सक्तरप्यभाए णं अंते ! पु॰ बत्तीसुत्तरजोदणसयसहस्सवाहहस्स खेताच्छेएण क्रिजमाणीए अत्थ दब्बाई बण्यको जाव घडताए चिट्ठति ? हंता अत्य, एवं क्णोदहिस्स वीसजोबणसहरसबाहक्करस घणवायस्स असंखेजजोबणसहरसबाहक्करस् एवं जान ओनासंतरस्य, जहा सकरप्पमाए एवं जान अहेसत्तमाए ॥ ७३ ॥

इसा ण भंते ! रयणप्प० प्र० किसंठिया पण्णता ? गोयमा ! सह्ररिसंठिया पण्णता । इमीसे णं भंते ! रक्णप्प॰ पु॰ खरकंडे किसंठिए पण्यते ? योगमा ! शक्ररिसंठिए पण्णते । इसीसे वं अंते ! रयणप्य० पु० रयणकंडे किसंक्षिए पण्णते ? गोयमा ! झहरि संठिए पण्णते, एवं जाव रिट्ठे, एवं पंत्रबहरेंवि, एवं आवबहरेंवि घणोदहीवि घणवाएवि त्णुताएवि ओवासंतरेवि, सञ्वे झह्ररिसंठिया पण्णता । सङ्करप्पमा णं भंते ! पुडवी किसंटिया पण्णता ? गोयमा ! झहरिसंटिया पण्णता. सक्ररप्यभाषदवीए घणोदही किसंठिए पण्णने ! गोयमा ! श्रक्षरिसंठिए पण्णते, एवं जाद ओवासंतरे. जहां सक्करप्पमाए वत्तव्यया एवं जाव अहेमत्तमाए ॥ ७४ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्प॰ पुडवीए पुरन्थिमिल्लाओ चरिमंताओ केवइयं अबाहाए लोयंने पण्णाने ? गोयमा ! दुवालमहिं जोयणेहिं अबाहाए लोयंते पण्णते, एवं दाहिणिलाओ प्रवन्धि-मिलाओ उत्तरिक्षाओ । सक्करपा॰ पु॰ पुरन्थिमिलाओ चरिमंताओ केवइयं अबाहाए लोबंते पण्णते ? गोयमा ! तिमागुणेहिं तेरसिंहं जोयणेहिं अबाहाए छोयंते पण्णते, एवं चडिहिसपि। बालयपा॰ पु॰ पुरत्थिमिलाओ पुच्छा, गोयमा ! सित्भागेहिं तेरसिहें जोयणेहिं अबाहाए लोयंते पण्णते, एवं चर्डाहसिंपि, एवं सम्बासिं चरमुनि दिसास पुच्छियव्यं। पंकप्प॰ चोहसहि जोयणेहि अबाहाए स्त्रेयंते पण्णते। पंचमाए तिमागूणेहि पन्नरसिंह जोयणेहिं अबाहाए लोयंसे पण्णते । छद्वीए सित्सागेहिं पन्नरसिंह जोयणेहिं अबाहाए लोयंते पण्णेते । सत्तमीए सोलसिंह जोयणेहिं अबाहाए लोयंते पण्यते, एवं जाव उत्तरिकाओ ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० पु० पुरत्यिमिक्ने चरिमंते कहविष्ठे पण्णते ? गोयसा ! तिविहे पण्णते, तंजहा--घणोदहिवलए घणवायवलए नणुवाय-बलए । डमीसे णं मंते ! रसणपा । पा दाहिषिक्षे चरिमंते कडविहे पण्णते ! गोसमा ! तिविहे पण्णते, तंजहा-एवं जाव उत्तरिक्रे, एवं सम्बासि जाव अहेसत्तमाए उत्तरिहे ॥ ७५ ॥ इमीसे णं अंते ! रयणप्य० पुरुवीए घणोदहिबलए केवडयं बाहुक्षेणं फणते ? गोयसा ! छ जोयणाणि बाहुक्षेणं फणते । सहरप्य० पु॰ घणोद-हिवलए केन्द्रयं बाहतेणं पण्णते ? गोगमा ! सतिभागाई छजीयणाई बाहतेणं पण्णते । बालबप्पमाए पुरुष्ठा, गोयमा ! तिभागुणाई सत्त जोवणाई बाहहेणं प० । एवं एएणं अमिलावेणं पंकप्पमाए सत्त जोयणाई बाह्रकेणं पञ्चति । ध्रमप्पमाए सतिमागाई सत्त जीयणाई बा॰ पण्णते । तमप्पमाए तिसागुणाई अद्व जीयणाई । तमत्मप्पमाए अद्व जोयणाई ॥ इमीसे णं मेते ! रवणप्प॰ पु॰ क्षणवासवळए केवहर्य बाह्रहेणं पण्णते ? गोयमा! अद्भपंचमाइं जोयणाइं बाह्मेणं । सक्षरण्यमाए पुच्छा, गोयमा! कोसूणाई पंच जोयणाई बाहसेणं पण्णते. एवं एएणं व्यक्तिसावेणं बाह्यस्प्याए पंच जोराजाई

बाह्रहेणं पण्णते, पंकप्यभाए सक्कोसाई पंच जोयणाई बाह्रहेणं पण्णते । धूमप्प-आए अद्दछद्वाई जोयणाई बाहक्षेणं पनते, तमप्पभाए कोस्णाई छजोयणाई बाहक्षेणं पण्णते, अहेपतमाए छजीयणाइं बाहक्षेणं पण्णते ॥ इमीसे मं संते! रयणप्प० पु० तणुवायवलए केवइयं बाहहेणं पण्णते ? गोयमा ! छक्कोसेणं बाहहेणं पण्णते, एवं एएणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभागे छक्कोसे बाहहेणं पण्णते । बाह्य-यप्पमाए तिभागणे सत्तकोसे बाहक्षेणं पण्यते । पंकप्पभाए पढवीए सत्तकोसे बाहक्षेणं पण्णते । धूमप्पमाए सृतिमागं सत्तकोसे । तमप्पमाए तिमागूणे अहुकोसे बाह्न्नेणं पनते । अहेमतमाए पुरवीए अहुकोसे वाहारेणं पण्यते ॥ इमीसे णं भंते ! स्यणप्प॰ पु वर्णोदहिबलयस्स छजोयणबाहस्रस्य खेताच्छेएणं छिज्जमाणस्स अस्य दव्याई वण्यओ काल जाव हंना अस्थि। सक्करप्यभाए णं मंते ! पु० चणोदहिबलयस्स सतिभागङजीयणबाहहरस खेलच्छेएणं छिज्ञमाणस्य जाब हेता अत्य, एवं जाब अहेसत्तमाए जं जस्त बाहुक्षं । इसीसे णं संते ! रयणप्प॰ पु० घणवायवलयस्स अद्भपंचमजीयणबाहस्रस्म खंतलेएणं क्रि॰ जाब हुंना अत्थि, एवं जाब अहेसलमाए ज जस्य बाहक्षं । एवं तणुवायवलयस्सवि जाव अहेसनमा जं जस्स बाहक्षं ॥ इमीसे णं भंते! रयमप्पमाए पुढवीए घणोदहिवलए किसंठिए पण्णते । गोयमा ! वहे वलया-नारसंठाणसंठिए पण्णेते जे णं इसं रयणप्पसं पुढविं सन्वओ० संपरिक्छिवित्ताणं चिद्रह, एवं जाव अहेसत्तमाए पु॰ घणोदहिवलए, णवरं अप्पणपणं पुढविं संपरिक्सि-वित्ताणं चिद्वह । इमीसे जं रयणप्य पु विषयायवलए किसंठिए पण्यते ! गोयमा ! बहे कलयागारे तहेब बाव जे णं इमीसे रयणप्प० पु॰ घणोदहिबलयं सञ्बजी समंता संपरिक्खिवसाणं चिद्धः एवं जाव अहेसत्तमाए चणवायवलए । इमीसे णं भंते ! रवणप्य॰ पु॰ तणुवायवळए किसंठिए पण्यते ? गीयमा ! वहे वलयागार-संठाणसंठिए जान जेणं इमीसे रयणप्प॰ पु॰ घणनायनलयं सन्वको समंता संपरिक्शिवताणं विद्वार एवं जाव अहेसत्तमाए तपुवायवलए ॥ इमा णं भंते ! रयणप्प प् केनहर्य आयामविक्संभेणं प॰ ? गोयमा ! असंसेजाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्संमेणं असंसेजाई जोयणसहस्साई परिक्सेवेणं पण्णशा, एवं जाव अहे-सत्तमा ॥ इमा णं भंते ! र्यणप्प॰ पु॰ अंते य मञ्ज्ञे य सव्वत्थ समा बाइक्वेणं पळाला ? हंता गोबमा ! इसा णै स्वण• पु• अंते व मज्हे व सव्वत्य समा बाहबेणं. एवं जाव अहेससमा ॥ ७६ ॥ इमीसे णं अंते ! रयणप्य० पुरु सम्बजीवा उपनणपुरुषा ? सञ्दर्शीया उपनण्या ?, गोयमा ! इसीसे ण रय • प्र • सम्बनीया उद्यक्तपुरुवा मी चेव णं सम्बजीवा उववण्या, एवं जाव अहेसलमाए पुढवीए ॥ इमा र्ण भंते ! रयण० पु० सन्त्रजीवेहिं विजढपुब्या ! सव्यजीवेहिं विजढा ?, गोयमा ! इमा ण रयण० पु॰ सव्यजीवेहिं विजदप्या नो चेत्र ण सव्यजीवविजता, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० पु० सञ्चपोश्गला पविद्वपुच्चा ? सव्य-पोरगला पविद्वा ?, गोयमा ! इमीसे णं रयण॰ पुढवीए सम्बपोरगला पविद्वपुच्या नो चेब णं सुव्वयोग्गला पविद्वा. एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ इमा णं भंते ! रयणप्यभा पुढवी सन्त्रपोग्गलेहिं विजन्तपुरुवा ? सन्वपोग्ग० विजन्त ?, गोयमा ! इमा णं रसणप्पभा पु० सञ्वयोगगलेहिं विजदप्वता नो चेत्र णं सव्वयोगगलेहिं विजदा, एवं जाव अहेसनमा ॥ ७७ ॥ इसा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कि सामया असामया ? गोयमा ! सिय सामया सिय असामया ॥ से केणद्रेणं भंते ! एवं वृत्तइ-सिय सासया सिय असासया ! गोयमा ! दव्वद्वयाए सासया, वण्ण-पज्जवेहिं गंभपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृषद्-तं चेव जाव सिय असासया. एवं जाव अहेमनमा ॥ इमा णं भंते : रयणप्पभा पु० कालओ केविचारं होड ! गीयमा! न कयाड ण आसि ण कयाड णित्थ ण क्याइ ण भविस्सइ भूविं च भवइ य भविस्सइ य धुवा णियया सासया अक्खया अव्वया अवद्विया णिचा एवं जाव अहेमलमा ॥ ७८ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिकाओ चरिमंताओ हेड्डिके चरिमंते एस णं केवडयं अबाहाए संतरे पण्णेत ? गोयमा ! असिउत्तरं जोयणसयसहस्यं अबाहाए अंतरे पण्णते । इसीसे णं भंते ! रयण० ५० उबरिक्षाओ चरिमंताओ खरस्य कंडस्म हेड्रिके चरिमंते एम णं केवडयं अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा ! सोलस जीयणसहस्साई अबाहाए अंतरे पण्णते इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उप-रिक्षओ चरिमंताओ रयणस्य कंडस्स हेब्बिक चरिमंते एस णं केन्ड्रयं अवाहाए अंतरे पण्णाने ? गोयमा ! एकं जोयणसहस्सं अबाहाए अंतरे पण्णाने ॥ इमीसे णं अंते ! रयण० पु॰ उबरिक्राओ चरिमंताओ वहरस्स कम्डस्स उबरिक्टे चरिमंते एस णं केवडयं अबाहाए अंतरे पण्णते ! गोयमा ! एकं जोयणसहस्यं अबाहाए अंतरे प०॥ इमीसे णं भंते ! रयण पु उविरिक्षाओ चिरिमंताओ वहरस्स कंडस्स हे क्लिके चरिमंते एस णं केवड्यं अबाहाए अंतरे प॰ ? गीयमा ! दो जोमणसहस्साइं इमीसे णं अवाहाए अंतरे पण्णते, एवं जाव रिद्वस्स उवरिष्ठे पन्नर्स जोयणसहस्साई, हेड्रिके चरिमंते सोलस जोबणसहस्साइं ॥ इमीसे णं भंते ! र्यणप्य० पु० उचरि-काओ चरिमंताओ पंकबहुलस्स कंडस्स उचिक्के चरिमंते एस णं अवाहाए केवहवं अंतरे पण्णते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णते । हेड्डिके चरिमेते एकं जोयणसयसहस्यं आवबहुलस्य उवरि एकं जोयणसयसहस्यं हेड्किले चरिमंते असीउत्तरं जोबणसयसहस्यं । चणोदहिउवरिक्ते असिउत्तरजोबणसयसहस्यं हेड्डिके चरिमंते दो जोवगसवसहस्साई । इमीसे ण भंते ! रवण० पुढ० घणवायस्स उवरिक्षे चरिमंते दो जोयणसयसहस्साई । हेट्टिके चरिमंते असंखेजाई जोयणमयस-हस्साइं। इमीसे णं भंते ! रयण० पु० तणुवायस्स उविरक्ते चरिमंते असंखेजाइं जोयगमयसहस्साइं अबाहाए अंतरे हेद्विक्षेत्रि असंखेजाइं जोयणसयसहस्साइं, एवं ओवासंतरेषि ॥ दोबाए णं भंते ! पुढवीए उवरिहाओ वरिमंताओ हेड्डिके चरिमंते एम णं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तरं जोयणसयसहस्सं अबाहाए अंतरे पण्णते । सक्करप्प० पु० उन्नरि चणोदहिस्स हेड्रिक्ने चरिमंते बाव-ण्युनरं जोयणमयसहस्सं अबाहाए०। घणवायस्य असंसेजाई जोयणमयसहस्साई पण्णनाई । एवं जाद उदासंतरस्तवि जाद अहेसनमाए, णदरं जीसे जं बाहन्ने तेण घणोवही संबंधेयव्यो बुद्धीए । सङ्करप्पमाए अणुसारेणं घणोदहिसहियाणं इमं पमाणं ॥ तत्राए अडवालीयुत्तरं ओवणसयसहस्सं । पंकप्पमाए पुढवीए चत्ताली-सुत्तरं जोयगमयसहस्सं । धूमप्पमाए पु॰ अद्वतीस्तरं जोयणसयसहस्सं । तमाए पु॰ छत्तीनुनरं जोयणसयसहस्यं । अहेसत्तमाए पु॰ अद्वावीसृतरं जोयणसयसहस्यं जाव अहेमतमाए णं भंते! पुढवीए उचरिह्नाओ चरिमंताओ उवासंतरस्य हेब्बिह चरिमंते केवड्यं अबाहाए अंतरे पण्णेन ? गोयमा ! असंखेजाई जोयणसयसहस्साई अबाहाए अंतरे पण्णते ॥ ७९ ॥ इमा णं भंते ! रयणप्पमा पुतवी दोचं पुटविं पणिहाय बाहरेणं कि दुहा विसेसाहिया संबेजनुणा ? वित्थरेणं कि तुहा विसेसहीणा संबेजन गुणहीणा १, गोयमा ! इमा णं रयण० पु० दोचं पुढ़िव पणिहास बाहुहेणं नी तुहा विसेसाहिया नो संस्केनगुणा, वित्थारेणं नो तुहा विसेसहीणा णो संसेन्नगुणहीणा । दोन्ना णं भंते ! पुढवी तन्नं पुढविं पणिहाय बाह्नेहेणं कि तुल्ला एवं नेव भाषियव्यं । एवं तका चटरबी पंचमी छट्टी । छट्टी णं भंते ! पुढवी सत्तमं पुढविं पविहाय बाहतेणं किं तुल्ला विसेसाहिया संकेजगुणा ? एवं चेव भाषियव्यं । सेवं भंते ! २ ॥ ८० ॥ पढमो नेप्रयउदेसो समसो ॥

कह णं मंते! पुढवीको पण्णताओ ? गोममा! सत्त पुढवीओ पण्णताओ, तंजहा--र्यणप्यमा जाव कहेसत्तमा ॥ इमीसे णं मंते! रयणप्य० पु० असी-उत्तरजोयणस्यसहस्सवाहकाए उपिर केवइयं खोगाहिता हेड्डा केवइयं बज्जिता मज्के केवइए केवइया निर्यावासस्यसहस्सा पण्णता ? गोममा! इमीसे णं रयण० पु० असीजत्तरजोयणस्यसहस्सवाहकाए उपिर एगं जोयणसहस्सं ओगाहिता हेड्डावि

एगं जोबणसहस्सं वजेता मज्से भडसत्तरी जोवणसबसहस्सा, एत्व णं रवणप्रभाए प् ॰ नेरहयाणं तीसं निरयावासस्यसहस्साई भवंतिश्विमक्खाया ॥ ते णं णरगा अंतो वहा बाहि चडरंसा जाव असुभा परएस नेयणा, एवं एएणं अभिकावेणं उपज्ञंजिक्रण भाषियव्यं ठाषप्पयाणुसारेणं, जत्य जं बाहुछं जत्य जत्तिया वा नरयावाससयसं-हस्सा जाव अहेसत्तमाए पृढवीए, अहेसतमाए मिज्यमं केवइए वह अणुत्तरा महइ-महालया महाणिरया पण्णता एवं पुच्छियव्यं वागरेयव्वंपि तहेव छद्विसत्तमासु काऊ य अगणिवण्णामा भाणिबव्वा ॥ ८९ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्रभाए पढवीए णरगा किसंठिया पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता, तंजहा —आविलयपविद्वा य आविलयबाहिरा य. तत्य णं जे ते आविलयपविद्वा ते तिविहा पण्णता. तंजहा---बद्दा नंसा चडरंसा, तत्थ पं जे ने आवलियबाहिरा ते णाणासंठाणसंठिया पण्णता. तंजहा-अयकोद्रसंठिया पिद्रपयणगसंठिया कंडसंठिया लोहीसंठिया कडाहसंठिया थालीसंठिया पिहडगसंठिया किमियडसंठिया किन्युडगसंठिया उडवसंठिया मरव-संठिया मुयंगसंठिया नंदिमुयंगसंठिया आलिंगयसंठिया सुघोससंठिया दहरयसंठिया पणवसंठिया पडहसंठिया भेरिसंठिया झल्लरीसंठिया कृतंबगसंठिया नालिसंठिया. एवं जाव नमाए ॥ अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए णरगा किसंठिया पण्णता ? गोयमा ! द्विहा पण्णता, तंजहा—बहे य तंसा य ॥ इमीसे णं मंते ! रयणप्पभाए पुरवीए नरगा केवड्यं बाहक्षेणं पण्णाता ? गोयमा ! ति फ्लि जोयणसहस्याइं बाहक्षेणं पण्णता. तंजहा --हेट्रा घणा सहस्यं अज्हे असिरा सहस्यं उपि संबुह्या सहस्यं, एवं जाव अहेमत्तमाए ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्य० प्र० नरगा केवह्यं आयामविक्खंमेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णाता ? गोयमा! दुविहा पण्णाता, तंजहा--संखेजवित्यका य असंखेजवित्यहा य, तत्य णं जे ते संखेजवित्यहा ते णं संखेजाई जोवणसहस्साई आयामविक्खंमेणं संखेळाडं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णता तस्य णं जे ते असंखेजवित्थला ते णं असंखेळाडं जोयणसहस्साडं आयामविक्खंमेणं असंखेजाडं जोयणसहस्साइं परिक्कोवेणं पण्णासा एवं जाव तमाए, अहेससमाए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा दुविहा पण्णता. तंत्रहा-संवेजवित्यहे य असंवेजवित्यहा य, तत्य शं जे ते संसे अवित्यहे से ण एकं जोयणस्यसहत्सं आयामविक्संमेणं तिनि जोयण-सयसहरताई सोलस सहस्साई दोषि य सत्तावीसे जोगणसए तिथि कोसे य अद्वावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाई अद्यंगुलयं च किविविसेसाहिए परिक्केवेणं पण्णेते. तत्थ णं जे ते असंसेखितव्यहा ते णं असंसेखाई जोवणसङ्करहरसाई आयाम-विक्खंभेणं असंखेजाइं जाद परिक्षोत्रेणं पणाता ॥ ८२ ॥ इमीसे णं संते ! रसण-

प्पनाए पुढनीए नरया केरिसया कणेणं पण्णना? गोयमा! काला कालोभासा गंभीरत्मेमहरिसा भीमा उत्तासणया परमिकण्हा वण्णेणं पण्णता, एवं जाव अहेसत्त-माए ॥ इमीसे णं अंते । रयणप्यभाए पुढवीए णरगा केरिसया गंधेणं पण्णना ? गोयमा ! से जहाणामए अहिसकेड वा गोमडेड वा सुणगमकेड वा मजारमंडेड वा मणुरसमढेइ वा महिसमढेइ वा मूसगमडेइ वा आसमढेइ वा हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा बग्धमंडइ वा विगमंडइ वा रीवियमंडेइ वा ममकुहियनिर्विणहुकुणिमवावण्ण-दुब्मिगंचे अमुद्दविलीणविगयवीभत्यद्विस्णिखे किमिजालाउलसंसत्ते. भवेयास्वे सिया?, णो इणड्डे समद्धे, गोबमा! इमासे णं रवणप्पभाए पुढवीए णरगा एती अणिहृतरमा चेव अकंततरमा चेव जाव अमणामनरमा चेव गंधेणं पण्णता, एवं जाब अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ इमीसे णं अंते ! रमणप्प० पु० णरया केरिसया फासेणं पण्णता ? गोसमा ! से जहानामए असिपतेइ वा खुरपतेइ वा कलंबचीर-यापतेइ वा मतिगोइ वा कुंतगोइ वा तोमरगोइ वा नारायगोइ वा स्लगोइ वा लजलगेइ वा भिंडिमालगोइ वा सुइक्लावेड वा कवियच्छ्रह वा विंचुयकंटएइ वा इंगालेइ वा जालेंद्र वा मुम्मुरेइ वा अचीइ वा अलाएइ वा मुद्धागणीइ वा, अंवे एयास्वे सिया?, षो इणहे समद्वे, गोयमा! इनीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एशो अणिह्नतरगा चेव जाव अमणामतरगा चेव फासेणं पण्णशा. एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ ८३ ॥ इमीसे णं भंते ! रगणप्पभाए पुढवीए नरगा केमहालया पण्णता ? गोयमा ! अयण्णं जेबुहीवे २ सम्बदीवसमुद्दाणं सन्वन्मंतरए सम्बद्धाए बहे तेहाप्वसंठाणसंठिए बहे रहचक्कवालसंठाणसंठिए बहे पुरुखरकण्णि-यासंठाणसंठिए के पिछपुण्णसंदसंठाणसंठिए एकं जोयणसयसहस्यं आयामविक्सं-मेणं जाब किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, देवे णं महिश्विए जाब महाणुमागे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्ट् इमं केवलकप्पं जंबुदीवं २ तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्त-खुती अणुपरियष्टिलाणं इञ्चमागच्छेजा, से णं देवे ताए उक्किद्वाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिरवाए उद्भूबाए व्यवणाए हेबाए दिव्हाए दिव्हगईए वीइनबमाणे २ अहण्णेणं एगाई था दुवाई वा तिवाई वा उक्कोसेणं अन्मासेणं वीश्वएका, अत्येगहर वीहबएका अत्येगहर नो वीहबएका, एमहाल्या णं गोयमा! इमीसे णं रवणप्पमाए पृद्धवीए णरया पण्यता, एवं जाव अहेसत्तमाए, जबरं अहेसत्तमाए अत्येगइयं नर्गं वीश्वएजा, अत्येगइए नर्गे नो वीश्वएजा ।। ८४ ॥ इमीसे मं मंते ! रवणप्रभाए पुढवीए पर्गा किन्या पण्यता ? गोयमा ! सम्बद्धरामया पञ्चला, तस्य सं भरएस बहुने जीना व पोरमका व अनकसंति निरुक्तमंति नयंति

उनक्खंति, सासया णं ते णरगा दब्बहुयाए बण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसफ्जवेहिं फासपज्जवेहिं असामया, एवं जाव अहेमसमाए ॥ ८५ ॥ इमीसे णं भेते ! रयणप-भाए पुढवीए नेर्ड्या कओहिंतो उववजाति कि अमण्णीहिंतो उववजाति सरीसिवेहिंतो उववर्जनि पक्सीहितो उववर्जित चडप्पएहितो उववर्जित उरगेहितो उववर्जित इत्थियाहिंतो उचवजंति मच्छमणुएहिंतो उचवजंति ? गोयमा ! असण्णीहिंतो उचनजंति जान मच्छमणुएहिंतीनि उननजंति, असण्पी खलु पढमं दोचं च सरीसिवा तइय पक्खी । सीहा जंति चडिंच उर्गा पुण पंचमिं जंति ॥ १ ॥ छट्टिं च इत्थियाओ मच्छा मणया य सत्तमि जीते । जाव अहेसनमाए प्रत्वीए नेरहया जी असण्णीहिंतो उववर्जनि जाव णो इत्थियाहिंतो उववर्जनि मच्छमणुस्सेहिंतो उवव-जंति ॥ इमीसे णं मेते ! रयणप्प० प० णेरह्या एकसमएणं केवह्या उवनजंति ? गोयमा! जहणोणं एको वा दो वा तिक्ति वा उक्कोसेणं संखेजा वा असंखेजा वा उबदर्जित, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे णं भेते ! रयणप्प० पुढवीए णेरइया समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा केवइकालेणं अवहिया सिया? गोयमा! ते णं असंखेजा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा असंखेजाहें उत्सप्पिणीओ-सप्पणीहिं अवहीरित नो चेव णं अवहिया सिया जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्प० पु० णेरझ्याणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णना ? गोबमा ! दुविहा सरीरोगाष्ट्रणा पण्णता, तंजहा---अबचारणिजा य उत्तरवेउव्विया य. तत्य णं जा सा भवधारणिज्ञा सा जहनेणं अंगुलस्य असंखेजहभागं उक्तोरेणं सत्त घण्डं तिण्णि य रयणीको छच अंगुलाई, तत्थ णं जे से उत्तरवेउच्चिए से जह० अंगुलस संखेजहमागं उन्हो॰ पण्णरस धणुई अङ्गाइजाओ रयणीओ. दोन्नाए भवधारणिजे जहणाओ अंगुलासंखेजहभागं उन्हो॰ पण्णास घण्डं अन्नाइजाओ रयणीको उत्तरवेउ-व्यिया जह अंगुलस्स संखेजङ्गागं उन्नो एक्सीसं घण्डं एका रयणी, तचाए भवधारणिजे एकतीसं घणुइं एका रयणी, उत्तरवेउव्विया बासिट्टं घणुई दोण्णि रयणीओ, चडत्बीए भवधारणिजे बासिंहें धणुई दोष्णि य रयणीओ, उत्तरवेडिब्बया पणवीसं वणुलयं. पंचमीए भववारणिजे पणवीसं घणुसयं, उत्तरवे० अङ्गाङ्खाइं थणुसयारं, छद्रीए भवधारणिखा अन्नाडखारं घणुसयारं, उत्तरवेडिव्यवा पंचध्यस-याई, सनमाए भवधारमिजा पंचधणुसयाई उत्तरकेउन्विए घणुसहस्सं ॥ ८६ ॥ इमीसे णं मंते ! रयणप्य० ए० जेरड्याणं सरीरया किसंथवणी पण्यता ? गौयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी, जेवड्डी जेव छिरा जवि ज्हारू जेव संघयणमस्य, जे पोग्गला अणिद्वा जाब अमणामा ते तेसिं सरीरसंघायत्ताए परिणमंति, एवं जाब

अहेसत्तमाए ॥ इमीसे णं भंते । रयण० पु० नेरइयाणं सरीरा किसंठिया पण्णता ? गोयमा ! तुविहा पण्णता तंजहा-अवधारणिजा य उत्तरवेडिवया य, तत्य णं जे ते भवधारणिजा ते हंडसंठिया पण्णता. तत्थ णं जे ते उत्तरवेउध्विया तेबि हंडसंठिया पण्णसा, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० पु० णेर-इयाणं सरीरगा केरिसया वण्णेणं पण्णता ? गोयमा ! काला कालोभामा आव परमिकण्हा वण्णेणं पण्णता. एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे णं भेते रयण० ५० नेरइयाणं मरीरया केरिसया गंधेणं पण्णता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेइ बा तं चेव जाव अहेमतमा ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० पु० नेरहयाणं सरीरया केरिनया फासंगं पण्णता ? गोयमा ! फुडियच्छविविच्छविया स्तरफरसमामश्चितरा फासेणं पण्णता, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ ८० ॥ इमीसे णं भेते ! रयणप्पभाए पुरुवीए जेरइआणं केरिसया पोग्गला द्धनासत्ताए परिणमंति ? गोयमा ! जे पोग्गला अणिद्रा जाव अमणामा ते तेसिं ऊपासताए परिणमंति, एवं जाव अहेसत्तमाए, एवं आहारस्मवि सत्तमुवि ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० ५० नेरइयाणं कह छेसाओ पण्णताओ ? गोयसा ! एका काउछेमा पण्णता, एवं सक्करप्पभाएऽवि, वालुयप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दो लेसाओ पण्णताओ तं - नीललेसा य काउलेसा य, तत्य जे काउडेसा ते बहुतरा जे णीलडेस्सा पण्णता ते शोवा, पंकप्यभाए पुच्छा, एका नीललेमा पण्यता, ध्रमप्पमाए पुच्छा, गोयमा ! दो हेस्साओ पण्यताओ, तंजहा-किष्हरूसा य नीललेस्सा य, ते बहुतरगा जे नीललेस्सा, ते थोवतरगा जे किण्ह-हेसा, तमाए पुच्छा, गोयमा ! एका किण्हलेस्सा, अहेसलमाए एका परमकिण्ह-हेस्सा ॥ इमीसे णं भंते ! रयण० पु॰ नेरइया कि सम्महिद्दी मिच्छादिद्दी सम्मामि-च्छादिङ्का १ गोयमा ! सम्मदिङ्कीवि मिच्छादिङ्कीवि सम्मामिच्छादिङ्कीवि, एवं जाव अहे-सत्तमाए ॥ इमीसे मं भंते ! रयण० ५० णेरहया कि नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! जाणीव क्रज्याणीव, जे जाजी ते जियमा तिजाजी, तंजहा-आमिणिबोहियणाणी सुबणाणी ओहिणाणी. जे अण्णाणी ते अत्येगड्या दुअण्णाणी अत्येगइया तिअ-बाणी, जे दुअबाणी ते णियमा महस्रवाणी य सुरक्षण्याणी य. जे निअवाणी ते नियमा महअण्याणी सुयअण्याणी विसंगणाणीवि, सेसा णं णाणीवि अण्याणीवि तिण्यि जाब अहेसलमाए॥ इमीसे ण भंते ! रयण० ५० कि मणजोगी वहजोगी कायजोगी ? गो । तिरिणाने, एवं जाव अहेसरामाए ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्रमाप् ० नेरह्या कि सागारोबङ्का अधावारोक्डका ? गीवमा! सागारोबङ्कावि अधागारोवङकावि. एवं जान अहेसत्तमाए पुढनीए ॥ [इनीसे णं भेते] रयणप्प० प्र० नेरहया ओडिणा

केनइयं खेतं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अदुद्वगाउयाई उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। सकरप्यमापु॰ जह॰ तिकि गाउयाई उक्रो॰ अबुद्धाई, एवं अद्धद-गाउयं परिहायइ जान अहेसत्तमाए जह० अदगाउयं उक्कोसेणं गाउयं] इमीसे णं भेते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कइ समुखाया पण्णता? गोथमा! वत्तारि समुग्धाया पण्णना, तंजहा-वयणासमुग्धाए कमायसमुग्धाए मार्ण-तियममुग्घाए बेउब्बियसमुग्धाए, एवं जाव अहेमत्तमाए ॥ ८८ ॥ इमीसे णं मंते! रयगप्पभा० पु० नेरइया केरिसयं खुहप्पिवासं पचणुभवमाणा विह-रंति ! गोयमा ! एगमेगस्स णं रयणप्पभापुढविनेरइयस्स असन्मावपहुषणाए सम्बोदही वा सम्बर्गागले वा आसगंसि पविन्तवेजा णो चेव णं से रग्रणप्र पु॰ णरहए तिने वा सिया विनण्हे वा सिया, एरिसया णं गोयमा! रयणप्पभाए गैरइया खुह्पियासं पचणुभवमाणा विह्रंति, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे गं भंते ! रयणप्यभाए पु॰ नेरह्या कि एगर्न पभू विडम्बितए पुहुत्तीप पभू विडम्बि-त्तए ? गोयमा ! एगतंपि पभू पुहुतांपि पभू विडब्तिनए, एगतं विडब्त्रेमाणा एगं महं मोगगरस्वं वा एवं मुद्धंिकरवत्तत्रसिसतीहरूगयासुसलवक्षणारायकुंततोमर-स्ललउडिभिडमाला य जाव मिडमालस्वं वा पुहुतं विउम्बेमाणा मोगगरस्वाणि वा जाव मिंडमालम्बाणि वा नाई संखेजाई णो असंखेजाई संबद्धाई नो असंबद्धाई सरियाइं नो अमरिसाइं विजन्नंति विडिवित्ता अग्गमण्यस्स कार्यं असिहणमाणा अभिरणमाणा वेयणं उदीरैति उजलं विउलं पगाढं कक्सं कहुयं फल्सं निहुरं बंडं तिय्त्रं दुक्सं दुरगं दुरहियासं, एवं जाव धूमप्पमाए पुढवीए । छहुसत्तमासु ण पुढवीसु नरदया बहु महताई स्रोहियकुंशूस्त्राई वहरामइतुंडाई गोमयकीजसमाणाई विउर्विति विउन्निना अनमनस्स कार्य समत्रेगेमाणा २ सायमाणा सायमाणा सयपोरामकिमिया विव चाछेमाणा २ अंतो अंतो अणुप्पविसमाणा २ वेयणं उदीरंति उजलं जाव दुरहियासं ॥ इमीसे णं मंते ! रयणप्य० पु० नेरह्मा कि सीबवेयणं वेंदेंति उसिणवेयणं वेदेंति सीओसिणवेयणं वेदेंति ? गोयमा ! जो सीयं वेयणं वेदेति उसिणं नेयणं नेदिति नो सीओसिणं, एवं जाव बालुयणआए, पंकप्पमाए पुच्छा, गोयमा ! सीर्यपि वेयणं वेयंति, उतिणेपि वेयणं वेयंति, नो सीओसिणवेयणं वेयंति, ते बहुतरगा जे उतिणं वेयणं वेदेंति, ते धोवतरगा जे सीयं वेयणं वेदेति । धूमप्पमाए पुच्छा, गोयमा! सीयंपि वेयणं वेदेति उसिर्णपि वेयणं वेदेति णो सीओ , ते बहुतरमा जे सीयवैयणं वेदेंति ते घोवतरणा जे उतिणवेयणं वेदेंति । तमाए पुच्छा. गोयमा! बीयं वेयणं वेदेति को उतिकां वेयणं वेदेति की सीकोसिकं

वेयणं वेदित, एवं अहेसतमाए णवरं परमसीयं ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्प० पु० णेरहया केरिसर्य णिर्यमवं पचणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! ते णं तत्य णिचं मीया णियं तसिया णियं ख़ुहिया णियं उब्बिगा नियं उपप्युया णियं वहिया नियं परममयुगमञ्जमणुबद्धं निरयभवं पचणुमबमाणा विहरंति, एवं जाव अहेसनमाए णं पुरवीए पंच अणुत्तरा महरमहालया महाणर्गा पण्णता, तंत्रहा—काले महाकाले रोस्ए महारोस्ए अप्पड्डाणे, तत्य इमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहि दंडसमादाणेहि कालमासे कालं किया अप्पइद्वाणे णरए णेर्ड्यनाए उवकण्णा, तंजहा--रामे जमदग्गिपुत्ते, दहाऊ लच्छडपुत्ते, वस् उवरिचरे, सुभूमे कोरन्वे, बंभद्ते चुलणिसुए, ते णं तत्थ नेरहया जाया काला काली० जाव परमाकेण्हा वण्णेणं पण्णाना, नंजहा-ते णं तत्थ वेयणं वेदेंति उजलं विउलं जाव दुरहियासं ॥ उसिणवेयणिजेमु णं मंते ! णरइएमु णेरइया केरिसयं उत्तिणत्रेयणं पचणुमवमाणा विहरति ? गोयमा ! से जहाणामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलवं जुगवं अप्पार्यके विरग्गहत्ये दढ-पाणिपायपासपिद्वंतरोरुसंघायपरिणए संघणपवणजवणवरगणपमहणसमत्ये तलजमल-जुयलबहुफलिहिमाबाहू चमाणिचियविक्रयवष्टमंचे चम्मेहगदुहणमुहियसमाहयणिचिय-गते उरस्मबलसम्ब्यागए छए दक्से पट्टे कुसले मिउने मेहाबी निउनसिप्पोवगए एगं महं अयपिंडं उदगवारममाणं गहाय तं ताविय ताविय कोष्टिय कोष्टिय उदिंग-दिय उन्भिदिय चुण्णिय चुण्णिय जाव एगाई वा दुयाई वा तियाई वा उक्कोसेणं अद्धमासं संहणे आ, से णं तं सीयं सीईभूयं अओमएणं संदंसएणं गहाय असन्माव-पहुवणाए उत्तिणवेयणिजेमु णरएसु पविश्ववेजा, से णं तं उम्मिसियणिमिसियंतरेणं पुणर्वि प्रमुद्धरिस्सामिणिकर् पविरायमेव पासेजा पविलीणमेत्र पासेजा पविद्धत्यमेव पासे आ जो चेंत्र जं संजाएड अविरायं का अविलीजं वा अविद्धरवं वा पुणरिव पचुदरिताए ॥ से बहा नामए मत्तमातंगे दुवए कुंजरे सिट्टहायणे पढमसरयकाल-समर्गत वा चरमनिदावकालतमबंति वा उच्हामिहए तण्डामिहए दवनिगजालाभिहए आउरे सुसिए पिवासिए दुच्यले किलंते एकं महं पुक्सिरिणि पासेचा वाउछोणं समतीरं अगुपुरुवसुत्रायवप्यांमीरसीयलजलं संख्यापत्तिमसुणालं बहुउप्पलकुमुय-णारिण प्रभगसोगं धियपुंडरी यमहापुंडरी यसय पत्तसहरूसपत्तकेसर फुलोवनियं छन्पर्यारे-भुजमाणकमळं अञ्ज्ञविमस्रतिक्रपुण्णं परिहत्यममंतमञ्जनकमे अणेगस्डणगण-मिहुणयविरङ्बसहुमह्त्रमहुरसरणाइयं तं पासह तं पासिता तं ओगाहर ओगाहिता से मं तत्य उन्होंपे पविणेजा तन्होंपे पविणेजा सहीप पविणेजा जरंपि पवि० दाईपि पवि॰ निहाएक वा प्यकाएक वा सई वा रहं वा विहं वा महं वा उवक्रमेका,

सीए सीयभूए संक्समाणे संक्समाणे सायासोक्खबहुळे यावि विहरेजा, एवामेव गोयमा! असब्भावपद्मवणाए उसिणवेशणि बेहितो णरएहितो णेरइए उव्बहिए समाणे जाई इमाई मणुस्सलोयंति भवंति गोलियालिंगाणि वा मोंडियालिंगाणि वा भिडियालिंगाणि वा अयागराणि वा तंबागराणि वा तदयागरा० सीसाग० रूपागरा० सुबन्नागराणि वा हिरण्यागरा० कंसारागणीड वा मुसागणीइ वा इदृयागणीइ वा कवेष्ट्रयागणीइ वा लोहारंबरिसेइ वा जंतबाइजुहीइ वा हंडियलित्थाणि वा गोलिय-लिस्थाणि वा सोंडियलि॰ णलागणीः वा तिलागणीः वा तुसागणीः वा. नत्ताः समजोडेभ्याइं फुन्नकित्रयसमाणाडं उकासहरूलाइं विणिम्मयमाणाइं जालामहरूमाइं पमुचमाणाइं इंगालसहरूसाइं पविक्खरमाणाई अंतो २ हृहयमाणाई चिट्ठेति ताई पासइ ताई पासिता ताई ओगाहइ ताई ओगाहिता से ण तत्थ उण्हेंपि पांवणजा तण्हंपि पविणेखा खुटंपि पविणेजा जरंपि पविणेजा दाहंपि पविणेखा णिहाएज वा पयलाएज वा सई वा रहे वा थिई वा मई वा उबलमेजा, सीए सीयभूए संकस-माणे संक्रममाणे यायासोक्खबहले यावि विहरेजा, भवेयारूवे छिया?, णो इणहे समहे, गोयमा! उत्तिणवेयणिजेस णरएस नेरइया एतो अणिइतरियं चेव उनिणवेयणं पश्चमभागा विहरंति ॥ सीयवेयणिजेय णं भंते गरएस गेरडया केरिसयं सीय-वेयणं पश्चभुभवमाणा विहरंति ? गीयमा ! से अहाणामए कम्मारदारए सिया नरुणे जुगवं वलवं जाव सिप्पोबगए एगं महं अयपिंडं इगबारसमाणं गहाय ताविय ताबिय कोहिय कोहिय जह । एकाई वा दुयाई वा तियाई वा उद्योसेण मासं हणेजा, से णं ते उसिणं उसिणभूयं अओमएणं संदंसएणं गहाय असन्मावपद्ववणाए सीयवे-यणिजेन गरएस पक्सिकेजा. से तं उम्मिसियनिमिसियंतरेण पुणर्शव प्रमुद्धार-स्सामीतिकरू पविरायमेव पासेजा, तं चेव णं जाव णो चेव णं संचाएजा पुणरवि पबुद्धरिनए, से णं से जहाणामए मत्तमायंगे नहेव जाव सोक्खबहुछे यावि विहरेजा एवामेव गोयमा! असम्भावपद्भवणाए सीयवेगणेहितो णरएहितो नेरहए उच्चहिए समाणे जाई इमाइं इहं माणुस्सलीए हवंति, तंजहा—हिमाणि वा हिमपंजाणि वा हिमपडलाणि वा हिमपडलपुंजाणि वा तुसाराणि वा तुसार्पुंजाणि वा हिमकुंडाणि वा हिमकुंडएंजाणि वा सीयाणि वा ताई पासइ पासिता ताई ओगाहर ओगाहिता से जं तत्य सीयंपि पत्रिणेजा तण्हंपि प॰ खहंपि प॰ जरंपि प॰ दाहंपि प॰ निहाएज वा पयलाएज वा जाव उसिणे उसिणभूए संक्रसमाणे संक्रसमाणे सामासोक्खबहरू मावि विहरेजा, गोयमा ! सीयवेयिषजेख नरएस नेरहमा एती अभिक्रतिरेथं चेव सीयवेयणं पत्रणुभवमाणा विहरंति ॥ ८९ ॥ इमीसे णं भंते ! रयणप्य० पु० षेरहयाणं केवडयं

कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्येणवि उद्योसेणवि ठिई भाणियव्या जाव अहेसत्त-माए ॥ ९० ॥ इमीसे णं मंते ! रयणप्पसाए पु० जेरइया अणंतरं उच्चहिय कहि गच्छंति ? कर्षि उनवर्जाति ? किं नेरइएस उनवर्जाति ? किं तिरिक्सजोणिएस उववजंति ? एवं उब्बहणा भाषियव्या वहा वक्रंतीए तहा इहवि जाव अहेसलमाए ॥ ९१ ॥ इमीसे मं भंते ! रचण० पु० नेरह्या केरिसयं पुढविकासं प्रब्लुमवमाणा विहरंति ? गोयसा ! अणिद्रं जाव अमणामं, एवं जाव अहेसत्तमाए, इमीसे णं मंते ! रयण० ५० नेरहया केरिसयं आउफासं पचणुभवमाणा विहरति ? गोयमा ! अणिह्रं जाव अमणामं, एवं जाव अहेमत्तमाए, एवं जाव वणप्यद्वपासं अहेसत्तमाए पुढवीए। इमा णं भेते ! र्यणप्यमापुढवी दोखं पुढविं पणिहाय सन्त्रमहंतिया बाह्क्षेणं सन्त्र-क्षुडिया सञ्जंतेमु ? हंता गोयमा ! इसा ण रयणप्यभापुढवी दोचं पुढविं पणिहाय जाब सव्यक्षकृतिया सर्वतेषु, दोचा णं भेते ! पुढवी तचं पुढविं पणिहाय सव्वमहं-तिया बाहलेणं पुच्छा, हंता गोयमा ! दोबा णं पुरवी जाब सन्वक्खुरिया सन्वंतेसु, एवं एएणं अभिलावेणं जाव छद्विया पुढवी अहेसत्तर्भ पुढविं पणिहाय सम्बन्ख्राह्रेया सब्बंतेसु ॥ ९२ ॥ इमासे णं भंते ! रयणपा पु । तीसाए नरयावाससयसहस्सेषु इक्सिकंसि निरयावासंसि सब्वे पाणा सब्वे भूया सब्वे जीवा सब्वे सत्ता पुढवीकाइय-नाए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नेर्ड्यनाए उचवनपुट्या ? हंता गोयमा ! असई अदुवा अणंतखती, एवं जाव अहेसतमाए पुढवीए भवरं जत्य जित्या भरना [इमीसे भं मंते ! रयणप्पभाए पु॰ निरमपरिसामंतेसु जे पुढविकाइमा जाव वणप्पहकाइमा ते णं भंते ! जीवा महाकम्भातरा चेव महाकिरियनरा चेव महाआसवतरा चेव महा-वैयणतरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसे णं रयणप्यभाए पुढवीए निरयपरिसा-मंतेसु तं चेत्र जाव महावेयणतरा चेत्, एवं जाव अहेसत्तमा] ॥ ९३ ॥ पुटविं ओगाहिता. नरगा संठाणमेव बाहतं । विक्संभपरिक्खेवे वण्णो गंधो य फासो य ॥ १ ॥ तेसि महालयाए उवमा देवेण होइ कायच्या । जीवा य पोरगला वक्रमंति तह सासना निरया ॥ २ ॥ उदवायपरीमाणं अवहास्वत्तमेव संघयणं । संठाणवण्ण-गंधा फासा उसासमाहारे ॥ ३ ॥ छेसा दिह्नी नाणे जोगुवकोगे तहा समुग्धाया । तत्तो सहायिवासा विडव्यणा वेमणा य भए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाणं ओवम्मं वेयणाएँ दुविहाए । उब्बहणपुदबी उ उववाओ सम्बजीवार्थ ॥ ५ ॥ एयाओ संग-इणिगाहाओ ॥ ९४ ॥ बीओ जेरहवउहेसी समसी ॥

इमीसे में अंते ! रवणप्पमाए पुत्रवीए नेरह्या केरिसयं पोगगलपरिणामं प्रवातु-अवमाणा विहरिति ? गोयमा ! अधिक्षं बात अमणामं, एवं जाव अहेसत्तमाए एवं १० सत्ता०

नेयम्बं गहा-पोगलपरिणामे वेयमा य लेसा य नामगोए य । अरई सए य सोगे बहापिवासा य वाही य ॥ ३ ॥ उस्सासे अणतावे कोहे माणे य मायलोमे य । चतारि य सण्णाओं नेरहयाणं तु परिणामे ॥ २ ॥ एत्य किर अहबयंती नरवसभा केसवा जलवरा य । मंडलिया रायाणो जे य महारंमकोइंबी ॥ ३ ॥ सिन्नमहत्तो नरएम होइ तिरियम्णएस चतारि । देवेस अद्भासी उक्कोसविउव्यणा भणिया ॥ ४ ॥ जे पोम्गला अणिद्वा नियमा सो तेसि होइ आहारो । संठाणं तु जहण्णं नियमा हुंडं तु नायब्वं ॥ ५ ॥ असुभा विउन्त्रणा खळ नेरइयाणं तु होइ सब्वेसि । वेडिनियं सरीरं असंघयणहंडसंठाणं ॥ ६ ॥ अस्साओ उचवण्णो अस्याओ चेव चयइ निरयमवं । सञ्जपुडवीम जीवो सञ्जेस ठिर्हावसेमेसं ॥ ७ ॥ उववाएण च मार्य नेरइओ देवकम्मणा वावि । अञ्जवमाणनिमित्तं अहवा कम्माणभावेणं ॥ ८ ॥ नेर-इयाणुप्पाओ उक्कोसं पंचजीयणसमाई । दुक्खेणभिद्वयाणं वेयणसमसंप्राप्टाणं ॥ ९ ॥ अच्छिनिमीलियमेलं नित्थ सुहं दुक्समेव पिडवर्द । नरए नेरङ्याणं अहोनिसं पचमाणाणं ॥ १० ॥ तेयाकम्ममरीरा सुहमसरीरा य जे अपजता । जीवेण मुक्रमेना वर्षात सहस्ससो मेर्य ॥ ११ ॥ अइसीर्य अइउण्हं अइतण्हा अइसुहा अइमर्य ना । निरए नेरहयाणं दुक्खमयाई अविन्सामं ॥ १२ ॥ एत्थ य भिन्नमुहुत्तो पोग्गल अमुहा य होट अस्माओ । उवबाओ उप्पाओ अच्छि सरीरा उ बोद्धक्वा ॥ १३ ॥ से तं नेरह्या ॥ ९५ ॥ तहओ नेरहयउहेसो समसो ॥

से किं तं तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पंचित्ता पण्णता, तंजहा— एगिदियतिरिक्खजोणिया बेइंदियतिरिक्खजोणिया तेइंदियतिरिक्खजोणिया चर्डारे-दियतिरिक्खजोणिया पंचिदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं एगिदियतिरिक्खजोणिया जाव वणस्मइकाइयएगिदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं पुढिबिद्धाइयएगिदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं पुढिबिद्धाइयएगिदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं पुढिबिद्धाइयएगिदियतिरिक्खजोणिया बायग्पुद्धिकाइयएगिदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं पुढुमपुढिबिद्धाइयएगिदिय-तिरि॰ ? र दुविहा पण्णता, तंजहा— पुढुमपुढिबिद्धाइयएगिदिय-तिरि॰ ? र दुविहा पण्णता, तंजहा— पुढ्धान्य अपज्यत्मसुद्धा॰ से तं पुढुम॰ १ सं किं तं बायग्पुढिबिद्धाइय॰ ? र दुविहा पण्णता, तंजहा— पुढ्धाइयएगिदिय॰ । से किं तं आउकाइयएगिदिय॰ ? र दुविहा पण्णता, एवं जहेव पुढिबिद्धाइयाणं तहेव, तेउकायमेदो एवं जाव वणस्सइकाइया से तं वणस्सइकाइयएगिदियतिरिक्ख॰ । से किं तं वेइंदियतिरिक्ख॰ ? र दुविहा पण्णता, तंजहा— पुढ्धाइयएगिदियतिरिक्ख॰ । से किं

बेइंदियति . से तं बेइंदियतिहि एवं जाव चर्डिंदिया । से कि तं पंचेंदियतिहि-क्सजोणिया १ २ तिविहा पण्णता. तंजहा--जलगरपंचेंदियतिरिक्सजोणिया यल-यरपंचेंदियतिरिक्खजो व सहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि तं जलयरपंचेंदि-यतिरिक्खजोषिया ? २ दुविहा पण्णता, तंजहा--संमुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्ख-जोणिया य गन्भवकंतियजस्यरपंचेंदियतिशिवस्तकोणिया य । से किं तं संस्थितन जलवरपंचिदियतिरिक्खजोणिया १ २ दुविहा पण्णला, तंजहा-पज्जलगर्समुच्छिम० अपजनगसंमु। क्रमजलयर्०, से तं संमुच्छिम०पैनिदियतिरिक्स० । से कि तं गच्मवर्कतिय जलयरपंचेंदियतिरिक्ख जोणिया ? २ दुविहा पण्णता. तंजहा---पज्रत-गगब्भवद्यंतियः अपजनगगब्भः से तं गब्भवद्यंतियज्ञलयरः, से तं जलयर्पचेंदि-यतिरिः । से कि तं बलगरपंचेदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तंजहा---च उप्पययलयरपंचिदिय । परिसप्पयलयरपंचिदियतिरिक्सजोणिया । से कि तं चउ-प्ययथलयरपंचिदिय॰ १ चडप्पय॰ दुविहा पण्णता, तंजहा-संमुच्छिमचडप्पयथ-लयरपंचेंदियः गञ्मवद्यंतियचउप्पयक्त्यरपंचेंदियतिविक्खजोणिया य. जहेव जल-यराणं तहेव चउक्कओ मेओ, सेतं चउप्पयदलयरपंचेंदिय । से किं तं परिसप्प-थलगरपंचंदियतिरिक्तः ? २ द्विष्ठा पण्णता. तंत्रहा - उरपरिमप्पथलगरपंचेंदि-यितरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि तं उरपरिस-प्पथलवरपंचंदियतिरिक्सकोणिया ? उरपरि॰ दुविहा पण्णता, तंजहा-जहेच जलयराणं तहेव चउक्को सेओ, एवं भुवपरिसप्पाणवि भाषियन्वं, से तं भुवपरि-सप्पथलयरपंचंदियतिरिक्सजोणिया, से तं थळगरपंचंदियतिरिक्सजोणिया । से कि तं सहयरपंचित्रतिरिक्सजोणिया ? सहसर० दुविहा पण्यता, तंजहा-संसच्छि-मसहयरपंचेदियतिरिक्सजोषिया गन्भवकंतियसहयरपंचेदियतिरिक्सजोषिया य । से कि तं संसच्छिमसहयरपंचेंदियतिरिक्सकोणिया ? संस० दुविहा पण्णता. तंजहा---प्रजनगसंमुच्छिमसह्यरपंचेंदियतिविक्सजोणिया अपजनगसंमुच्छिमसह-यरपंचेदियतिरिक्खजोमिया य. एवं गब्भवद्यंतियावि जाव पञ्चनगगब्भवद्यंतियावि जाव अपजलगगञ्भवदंतियावि । खहयरपंचेदियतिरिक्सजीणियाणं भंते ! कहविहे जोणिसंगहे पण्णते ? गोयसा ! तिबिहे जोणिसंगहे पण्णते, नंजहा-संख्या पोयया संमुच्छिमा, अंडवा तिबिहा पण्णता, तंबहा-इत्बी पुरिसा णपुंसगा, पोयबा तिविहा पण्णता. तंत्रहा--इत्थी प्रतिसा णपुंसवा, तत्य णं ने ते संसुच्छिमा ते सम्बे गपुंसना ॥ ९६ ॥ एएसि मं श्रेते ! जीवामं बद्द केसाओ पण्यासाओ ? गोसमा । ब्लोसासी पण्णमाओं, तंत्रहा---कण्डलेसा जाव सक्रलेसा ॥ ते ण अंसे ।

जीवा कि सम्मदिद्री मिच्छादिद्री सम्माभिच्छाविद्री ? गोयमा ! सम्मदिद्रीवि मिच्छादि-दीवि सम्माभिक्कादिदीवि ॥ ते णं भंते ! जीवा कि जाजी अज्जाजी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि तिष्णि णाणाडं तिष्णि अण्णाणाडं भवणाए ॥ ते णं संते ! जीवा कि मणजोगी वहजोगी कायजोगी? गोयमा ! तिविहावि ॥ ते णं भंते ! जीवा कि सागारीवउत्ता खणागारीवउत्ता ! गोयमा ! सागारीवउत्तावि खणागारीवउत्तावि ॥ ते णं मंते! जीवा कओ उवदक्रंति कि नेरइएहिंतो उव॰ तिरिक्सजोणिएहिंती उव० १ पुच्छा, गोयमा ! असंबेजवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगवजेहितो उव-वजंति ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कार्ल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमहत्तं उद्योसेणं पलिओवमस्स असंखेज्यभागं ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं कह समुख्याया पण्णता ? गोयमा ! पंच ममुख्याया पण्यता, तंत्रहा-वेयणाममुख्याए जाव तैयासमुर्धाए ॥ ते णं भंते! जीवा बारणंतियसमुर्धाएणं कि समोहया मरीत असमोहया मर्रति ? गोयमा ! समोहयावि म॰ असमोहयावि मरेति ॥ ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उथ्वष्टिता कहिं गच्छंति ! किं उववजंति ?—किं नेरइएस उथवजीते ? तिरिक्स० पुच्छा, गोयमा! एवं उच्चष्टणा भाषियभ्वा जहा वकंतीए तहेव ॥ तेसि णं भंते ! जीवाणं कद जाईकुलकोडिजोणीपसुहसबसहस्सा पण्णता ? गोममा ! बारस जाईकुलकोबीजोणीपमुहसयसहस्सा प० ॥ भुगपिसप्पश्चयरपेंबॅदिय-तिरिक्ख जोणियाणं मंते ! बद्धविहे जोणीसंगहे पण्यते ? गोयमा ! तिबिहे जोणीसंगहे पण्णते, तंजहा---अंडवा पोयवा संमुच्छिमा, एवं जहा सहयराणं तहेव, णाणतं जहनेणं अंतोमुहत्तं उद्योसेणं पुष्वकोडी, उव्यक्तिता दोषं पुरुषि गच्छंति, णव जाईकुरू-क्रेडीजोणीपमुहत्तयसहस्मा सर्वतीति मनखायं. सेसं तहेव ॥ उरपरिसप्पथलयरपंर्वे-दियतिरिक्सजोणियाणं भंते ! पुच्छा, जहेव भुवपरिसप्पाणं तहेव, णवरं ठिई जह-बेणं अंतोस्हतं उद्योसेणं पुञ्बकोडी, उन्बहिता जाव पैचर्सि युद्धिं गच्छंति, दस जाई-कुलकोडी ।। वडप्पययलयरपैचेदियतिविक्स । पुच्छा, गौयमा! दुविहे पण्णते, तंजहा-जराउया (पोयया) व संसुच्छिमा य. से कि नं बराउया (पोयया)? २ तिविहा पण्णता, तंजहा-इरबी पुरिसा णपुंसगा, तत्व वं जे ते संयुच्छिमा ते सब्दे णपुंसया । तेसि षं भंते ! जीवाणं कह केस्साओ पण्यताओ ! सेसं वहा पक्खीणं, णाणनं ठिई जहसेणं अंतोसहत्तं उस्रोसेणं तिनि पर्किओस्माइं. उव्यक्तिता चडिय पुढि गच्छंति, इस जाईकुक्कोडी ।। जलयरपंचेवियतिविक्सजोणियाणं पुच्छा, जहा भुयपरिसप्पाणं णवरं उव्यक्तिमा जाव अहेसत्तमं पुढवि अद्यतेस्स जारकुलकोबीजोणीपमुद्द पर ॥ चल्लियाणं मंते ! कह जाईकुलकोबीजोणीप-

महस्यसहस्सा प्रव्यक्ता? गोयमा! नव जाईक्क्कोबीजोगीप्यहस्यसहस्सा सम-क्काया । तेइंदियाणं पुच्छा, बोयमा! अद्वजाईकुल जाव मक्खाया । बेइंदियाणं भंते ! कह जाई० पुच्छा, गोयमा ! सत्त बाईकुठकोबीओणीपमुह० ॥ ९०॥ कड णं भंते ! गंघा पण्णता ? कड णं भंते ! गंधसया पण्णता ?, गोयमा ! सत्त गंबा सत्त गंत्रसया पण्णता ॥ कह णं अंते ! पुण्फजाईकुलकोडीजोणिपसुद्दसयसहस्सा पष्णता ? गोयमा ! सोलसप्पनजाईक्ककोडीजोणीपमृहसयसहस्सा पण्णता, तंजहा-चतारि जल्याणं चतारि यल्याणं चतारि महारुक्खियाणं चतारि महागुम्मियाणं ॥ कड ण भेते ! वहीओ कड बहिसया पण्यशा ? गोयमा! चत्तारि बहीओ चत्तारि बहीसया पण्णता ॥ वह णं भंते ! लयाओ वह लयासया पण्णता ? गोयमा ! अह लयाओ अद्र लयासया पण्णाता ॥ वह णं संते ! हरियकाया हरियकायसया पण्णाता ? गोयमा ! तओ हरियकाया तओ हरियकायसया पण्णत्ता. फलसहस्सं च बिंटबद्धाणं फलसहस्सं च णालबद्धार्ण. ते वि सन्वे दृष्टियकायमेव समोयरंति. ते एवं समणगम्म-माणा २ एवं समणुगाहिजमाणा २ एवं समणुपेहिजमाणा २ एवं समणुचितिजमाणा २ एएस चेव दोस काएस समीयरंति, तंजहा-तसकाए चेव थावरकाए चेव. एवा-मेब सपुन्याबरेणं आजीवियदिद्वेतेणं चतरासीह जाइकुलकोबीजोणीप्सहस्रयसहस्सा भवंतीति मक्खाया ॥ ९८ ॥ अत्थ णं भंते ! विमाणाइं सोत्यियाणि सोत्यियावत्ताइं सोत्यियपभाइं सोत्यियकन्ताइं सोत्यियक्वाइं सोत्यियकेसाइं सोत्यियज्ञायाई सोत्थियसिंगाराहं सोत्थियकुडाइं सोत्थियसिद्धाइं सोत्थलरवर्डिसगाइं? हंता अत्थि। ते में संते ! विमाणा केमहालया प॰ ? गोयमा ! जावडए में सुरिए उदेड जावडए में च सरिए अत्यमइ एक्डयाई तिण्णोवासंतराई अत्येगइयस्स देवस्स एगे विक्रमे सिया, से णं देने ताए अकिद्वाए तरियाए जान दिव्याए देनगईए बीहेनयमाणे २ जान एगाई वा द्याहं वा उद्योरेणं छम्मासा वीईवएजा, अत्येगह्या विमाणं वीईवएजा अत्येगह्या विसाणं नो वीईवएजा, एमहाख्या यं घोयमा ते विमाणा पण्यता, अत्य णं मंते ! विमाणाई अवीणि अविरावताई तहेव जाव अवृत्तरवर्दिसगाई ? इंता अत्य. ते वं भंते! विमाणा केमहालया प्रव्यक्ता? गोयमा! एवं जहा सोत्यी-(गांडे)जि जबरं एक्ट्रगांडं एंच डवासंतरांडं अत्वेगहयस्य देवस्स एगे विक्रमे सिया सेसं तं चेव ॥ अत्य णं भंते । विसाणाई कामाहं कामावताई जाव कामतरवर्डिस-याई ? इंता अरिव. ते मं भेते ! विभाषा केमहालगा पण्णता ? गोवमा ! वहा सोरवीणि णवरं सत्त उदासंतराइं विक्रमें सेसं तहेव ॥ अतिय पं मंदे ! विमानाई विजयाई केवयंताई जयंताई अपराजियाई ! हंता अत्य, ते ये भेते ! विभाणा कें ? गोयमा ! जावड्ए णं सूरिए उदेइ० एवड्याइं नव ओवासंतराई, सेसं तं चेव, नो चेव णं ते विमाणे वीईवएजा एमहालया णं ते विमाणा पण्णता समणाउसी!॥ ९९॥ पढमो तिरिक्खजोणियउदेसो समत्तो॥

कडविहा णं भंते ! संसारसमावण्यामा जीवा पण्याता ? गीयमा ! छव्विहा पण्याता , तंज्ञहा-पुरविकाइया जाव तमकाइया । से कि तं पुरुविकाइया ? पुरुविकाइया दुविहा पण्णता, तंजहा - सुहुमपुद्धविकाइया बायरपुद्धविकाइया य । से किं तं सुह-मपुडविकाह्या ? २ दुविहा पण्याना, नंजहा-पज्जाता य अपजाता य, मेत्तं मुह-मपुढविकाइया । से कि नं बायरपुढविकाइया ? २ दुविहा पण्णता, नंजहा---पजनगा य अपज्जाना य, एवं जहा पण्णवणापए, सण्हा सत्तविहा पण्णाता, बारा अणेगविहा पश्चना जाव असंखेजा, सेतं बायरपुरविकाइया, सेतं पुरुविकाइया, एवं चेव जहा प्रकावणाप्र तहेव निरवसेसं भाषियव्यं जाव वणप्यक्रकाइया, एवं जाव जत्थेगो तत्य सिय संखेजा सिय असंखेजा सिय अणंता, सेशं बायरवणपद्धकाइया, से नं वणस्सइकाइया । से कि तं तसकाइया ? २ चउव्विहा पण्णता, तंजहा---नेइंदिया तेइंदिया चरुरिदिया पंचेंदिया। से कि तं बेइंदिया? २ अणेगविहा पण्णना, एवं जं चेव पण्णवणापए तं चेव निरवसेसं भाषियव्यं जाव सव्बद्धसिद्धगढेवा, से तं अणुनरोववाइया, से तं देवा, से तं पंचेंदिया, से तं तसकाइया ॥ १०० ॥ यहविहा सद्भावनी वालुयापुरवी मणोसिलापु॰ सक्ररापु॰ खरपुरवी ॥ सण्हापुरवीणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जह० अंतोम् ० उक्कोसेणं एगं बाससहस्सं । सुद्भुदवीए पुच्छा, गोयमा ! जह० अंतोमु० उद्गो० बारस बामसहस्साई । बाह्यया-पढवीपुच्छा. गोयमा ! जह० अंतोमु० उक्को० चोइस वाससहस्साई । मणोसिला-पुढवीणं पुच्छा, गोयमा ! जह व जंतोमु व उक्को व सोलय वाससहरसाई । सकरा-पुडवीए पुच्छा, गोयमा ! जह • अंतोस • उक्को • सहारस वाससहस्साई । खरपुढ-विपुच्छा, गोयमा ! जह • अंतोम • उद्यो • बाबीस वाससहस्साइं ॥ नेरहयार्ण अंते ! केनइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जह० दस नाससहस्साई उद्यो० तेतीसं सागरोवमाइं ठिई, एयं सब्बं माणियव्यं जाव सब्बद्धसिद्धदेवति ॥ जीवे णं भेते ! जीविति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! सम्बदं, पुढविकाहए ण भंते ! पुढविका-इएति कालओ केविकरं होह ? गोयमा ! सब्बदं. एवं जाव तसकाहए ॥ १०९ ॥ पहुप्पन्युदिविकाइया में मेरी ! केवहकाल्प्स मिन्नेवा सिया ! गीयमा ! जहण्लप्य असंखेजाहि उत्सप्पणीओसप्पणीहि, उद्योसपए असंखेजाहि उत्सप्पणीओसप्प-

णीहि, जहसपयाओ उक्कोसपए असंखेजराणा, एवं जाव पहुप्पस्तवाउकाइया ॥ पहण्यक्रवणप्यक्रकाड्या णं भंते ! केवइकालस्य निक्षेत्रा निया ! गोयमा ! पङ्गप्यवण । जहरूपए अपया उद्योसपए अपया, पहण्यस्रवणप्यडकाड्याणं गरिव निक्रेक्णा ॥ पहण्यन्तसकाइयाणं पुच्छा. जहण्यपए सागरीवमसयपुरुत्तस्य उन्होसपए सागरीवम-सयपुरुषस्य, जहण्णपया उद्योसपए विसेसाहिया ॥ १०२ ॥ अविसुद्धकेसी ण भंते ! कणगारे असमोहएणं अप्याणेणं अविसुद्धरेत्सं देवं देवि अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इण्डे समझे । अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अनगारे असमोहएणं अप्पाणएणं विसुद्ध देवं देवि अणगारं जाणइ पामड ! गोयमा ! भो इणद्रे समद्रे । अविसुद्ध छेरसे णं भेते ! अगगारे समोहएण अप्पाणेणं अविस्रहहेरसं देवं देवि अगगारं जाणाः पासः ? गोयमा ! नो उणडे समदे । अविसद्धकेरसे ० अणगारे समोहएणं अप्याणेणं विसद्धकेरसं देवं देवि अणगारं जाणइ पामइ ! नो इणद्वे समद्वे । अविनुद्धहेरसे णं मंते ! अणगारे समोहयासमोहरणं अप्याणेणं अविसद्धलेस्सं देवं देवि अणगारं जाणह पासद ? नो डणड्रे समद्रे । अविसुद्धलेस्से ॰ अणगारे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देवि अणगारं जाणइ पासइ ? नो इणद्वे समद्वे । विमद्धिस्से णं भंते ! अणगारे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ! हंता जाणइ पासङ महा अविसद्धकेरसेणं स आलावगा एवं विसद्धलेरसेणवि स आलावगा भाणि-यन्या जान विसद्धत्रेस्से णं भंते । अणगारे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देवि अणगारं जाणह पासह ! हंता जाणह पासह ॥ १०३ ॥ अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति एवं भासेन्ति एवं पण्यवेति एवं पस्वेति-एवं खळ एगे जीवे एगेणं समएणं हो किरियाओ पकरेइ, तंत्रहा-सम्मत्तिवियं व मिच्छतकिरियं व. जं समयं सम्मनकिरियं पकरेइ ते समयं मिच्छतकिरियं पकरेइ. जं समयं मिच्छतकिरियं पकरेड तं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेड. सम्मत्तकिरियापकरणयाए मिन्छत्तकिरियं पकरेड मिच्छत्तकिरियापकरणयाए सम्मत्तकिरियं पकरेड, एवं खुळ एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ, तंजहा-सम्मत्तिरियं च मिच्छतिरियं च, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! अर्थ से अकाउत्थिया एकमाइक्खंति एवं भावंति एवं पञ्जवंति एवं परूर्वेति एवं सह्य एने जीवे एयेणं समएणं हो किरियाओ पकरेइ, तहेव जाव सम्मानिकिरियं च मिच्छतकिरियं च, जे ते एवमाइंसु तं णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एक्साइक्सामि जाद पस्वेमि-एवं खद्ध एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेड, तंजहा-सम्मत्तकिरियं वा मिळलाकिरियं वा, जं समर्थ सम्मत्तकिरियं पकरेड मो तं समयं मिच्छत्रकिरियं पकरेड, तं चेव जं समयं मिच्छत्रकिरियं पकरेड नो तं समयं सम्मत्तिकिरयं पकरेइ, सम्मत्तिकिरयापकरणयाएं नो मिच्छतिकिरयं पकरेइ मिच्छतिकिरियापकरणयाएं जो सम्मत्तिकिरयं पकरेइ, एवं खख एने जीवे एनेर्ज सम-एणं एगं किरियं पकरेइ, तंजहा—सम्मत्तिकिरयं वा मिच्छत्तिकिरयं वा ॥ १०४ ॥ बीको तिरिक्खजोणियउद्देशो समन्तो ॥

से कि तं मणुरसा ? मणुरसा द्विहा पण्णता, तंत्रहा संमुख्डिममणुरसा य गब्भवकंतियमणस्या य ॥ ३०५ ॥ से किं तं संमुन्छिममणुस्या १ २ एगागारा पण्णता ॥ कहि णं मंते ! संमुच्छिममणुस्ता संमुच्छंति ! गोनमा ! अंतोमणुस्मक्षेते जहा प्रभावणाए जाव सेत्तं संमुच्छिममणुस्सा ॥ १०६ ॥ से किं तं गञ्नवक्कंतिय-मणुस्मा १ २ तिविहा पण्णता, तंजहा कम्मभूममा अकम्मभूमगा अंतरवीवगा ॥ १०७ ॥ से कि नं अंतरवीवगा ? २ अद्वाबीसङ्बिहा पण्णता, तंजहा-एगृख्या आभासिया वेसाणिया जंगोलिया हयकणा ४ आयंसमुहा ४ आसमुहा ४ आसकणा ४ उकामुद्दा ४ घणदंता जाब सुद्धदंता ॥ १०८ ॥ कहि णं मंते ! दाष्ठिणिक्राणं एगोरुय-मणस्माणं एगोरुयहीवे जासं हवि पण्णते ! गोयसा ! जंबहीबे २ मंदरस्य पञ्चयस्य दाहिणेणं चुद्रहिमवंतस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरपुरच्छिमिहाओ चरिमंताओ लवण-समुद्दं तिकि जोयणसयाई ओगाहिता एत्य णं दाहिणिहाणे एगोस्यमणुस्सार्ण एग्रुयदीवे णामं दीवे पण्णते तिकि जोयणमयाई आयामविक्खेंमेणं णव एग्णपण्ण-जीयणसए किन्ति विसेसेण परिक्खेबेणं एगाए पडमबरवेइयाए एगेणं च बणसंबेणं सञ्जओ ममंता संपरिक्शित । सा णं पडमबरवेडया अह जोयणाई उर्दू उचलेणं पंच धणुसयाई विक्संभेणं एगुरुयदीवं मध्यओ समंता परिक्सेवेणं पण्णता । तीसे णं पडमहरकेड्याए अयमेयाल्बे बण्यावासे पण्णते. तंजहा-बहरामया निम्मा एवं वेड्यावणाओ जहा रायपसेणर्डए तहा भाषियन्वो ॥ १०९ ॥ सा णं पडमक्रवेह्या एगेणं वणसंडेचं सब्बओ समंता संपरिक्सिता । से णं वणसंडे देस्णाई दो जोमणाई नक्षवालविक्संभेणं वेदयासमेणं परिक्खेवेणं पण्णते. से णं वणसंडे किन्हे किन्हो-भासे. एवं जहा रायपसेणइयवणसंडवन्यको तहेव निरवसैसं भानिसम्बं, तणाण व वण्णगंचफासी सही तणाणं बाबीओ उप्पायपन्यया पुरुविसिकापस्या व माणियन्या जाव तत्थ णं बहवे बाणमंतरा देवा य देवीओ य आसमंति जाव निष्ठरेति ॥ ११० ॥ एगोरवदीवस्स वं दीवस्स अंतो बहुसम्रस्मिक्के भूमिभागे पण्यति, से अहाजामए आलिंगपुरुखरेड वा एवं सम्बिजे माणिकने जाव पुरुविसिकापृष्ट्यंति तत्य पं बहवे एगुरुयदीवया मणस्या य मणस्यीओ य आसर्यति जान विहरति, एगुरुयचीचे र्ण दीने तत्थ तत्थ देसे २ तक्षि २ वहने सहातया सोहातया क्यमाला शक्माला

णझ्याला सिंगमाला चंद्रामाला दंतयाचा सेलमाला णाम दुमगणा पण्णता समणा-उसो! कुसविकुसविग्रहरूनसम्ला मृत्यंतो कंदमंतो जाव बीयमंतो परीहि य पुप्फेहि य अञ्चल्णपिक्किला निरीए अईव २ उवसोहेमाणा उवसोहेमाणा विह्नंति, एगूरुयदीवे णं दीने स्वन्ता बद्दे हेरुयालवणा भेरुयालवणा सेरुयालवणा सेरुयालवणा सालवणा सरलवणा सत्तवण्णवणा पूमप्रक्रियणा खञ्जूरिवणा णालिएरिवणा कुसविकुसवि ० जाव चिट्ठति, एगूरुमवीवे णं दीवे तत्व २ देसे० बहवे तिलवा लबवा नग्गोहा जाव रायरुक्का णंदिरुक्का कुसविकुर्साव जाव चिद्वंति, एगूरुवरीवे णं दीवे तत्य · · बहुओ पउमलयाओं जाब सामलयाओं निश्वं कुसुमियाओं एवं लयावणाओं जहा उवबाइए जाव पिंडन्त्राओ, एगोरुयदीचे णं दीवे तत्थ २ · · बहवे सेरियागुम्मा जाव महाजाद्गुम्मा ते णं गुम्मा दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमंति विह्यरगमाहा जेण बायविह्यसगसाला एगोरम्यदीवस्स बहुसमरमणिज्ञभूमिभागं मुक्कपुष्कपुंजीवसारकलियं करेंति, एगोरुसदीवे णं दीवे तत्थ २ "बहुओ वणराईओ पण्णताओ, ताओ णं वणराईओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव रम्माओ महामेहणिउठंबभूयाओ जाव महडं गंधद्वणि मुयंतीओ पासाईयाओ ४। एगूत्यकीचे णं दीवे तत्थ २ "बहुवे मर्त्तगा णाम दुमगणा पण्णना समणाउसो ! जहा से चंदप्यमसणितिलागसीहुवारुणिफलपत्तपुष्कचोयणिज्ञा ससारबहुद्वजुत्तसंमारकालसंघयासदा महुमेरगरिद्वाभदुद्वजाईपसम्बमेश्वगसयाव खज्रम् इयासारकानिसायणस्यक्रकायरसञ्चराक्णरसर्गंधकरिसञ्जता मञ्जनिहित्यबहु-प्यगारा तदेवं ते मत्तंगयानि दुमगणा अनेगबहुनिविह्वीससापरिजयाए मजनिहीए उववेया फलेहिं पुण्णा बीसंदंति कुसनिकुसबियुद्धरूनसमूला जाव बिहुंति १। एगोस्यदीवे॰ तत्थ २ "बहवो भिनंगया जाम दुम्मजा प्रजाता समणाउसो !, जहां से बारगम्डकरगक्तसम्बद्धारियायंकंवणिउदंकबद्दावसुपविद्वरपारीचसगर्मिगार-करोडिसरगथरगपतीथालमत्यगवद्यल्याबद्यव्यवपद्गवारयविश्वत्रवद्यामणितद्वासुत्तिचार-पिणयाकंवयमणिरमणभत्तिचित्ता भागणविद्दीए बहुप्पनारा तहेव ते भिर्गगयावि हुमगणा अणेभबहुविविह्वीससाए परिणयाए भायणविहीए उनवेदा फलेहिं पुनाविद विसर्हति कुसविकुस वाव विद्वंति १। एगोस्मधीव णं धीवे तत्व २ "वहवे तुरिकंगा जाम बुमगजा पण्णता समणाउसो!, वहा से काल्किम्युवंगपणवपसह-द्र्रगकर डिडिसमंभाहोरं मकण्यियार सरमुहिमुगुंदसं सियपरिकी बञ्चगपरिवाइणिवं-सावेणुबीचासुचोसविवंचिमहर्कच्छभिरगसगातकताळकंसताळसुसंपउता विहानिडणगंबञ्चसमयकुलकेहि फेदिया तिद्वाणकरमञ्जदा सहेव ते तुर्वियंचवावि दुसमना मचेनवर्षिवहवीससापरिभागात् ततनिततभनक्षिरार् चडिनहार्

वाओजविहीए उववेया फलेहिं पुण्या विसद्दन्ति कुर्सविकुरविसुद्ध्वकानृता जाव विद्वति ३। एगोरुवरी० तत्य २ अबहवे दीवसिंहा णाम दुमगणा प्रणाता समणाउसो ।, जहा से संझाविरायसमए नवणिहिवरणो बीविया बह्नवालविंदे प्रभ्य-वडिपलिताणेहिं चणिउजालियतिमिरमद्दएं कणगणिगर्कुसुमियपालियातयवणप्पगासो कंचणमणिर्यणविमलमहरिहृतवणि मुजलविचित्त दंहाहिं दीवियाहि सहसा पजलिऊ-सवियणिद्धतेयदिप्पंतविमलगहराणम्यपदाहिं विनिमिरकरसुरपसरिउह्रोयचित्रियाहि जानुम्बलपहसियाभिरामाहिं सोहेमाणा तहेव ते धीवसिहावि दुमगणा अणेगबहु-विविह्वीमसापरिणामाए उज्जोयविहीए उबवेया फलेहि एण्णा विसर्दति कुमविकुमविक जाव चिद्वंति ४ । एगुरुयदीवे व तत्थ २ · · वहवे जोइसिहा णाम दुमगणा पण्णाता समणाउसी !, जहां से अचिकागयमर्यस्रमंड रूपडंतजकासहरसदिरपंतविज्ञु जलहु-यवहनिद्भुमजलियनिद्धंनधोयनमनवणिजिक्कियुयामोयजावामुयणकुसुमविमउ छिप्रपुं जम-णिरयणिकरणज्यहिंगुल्यणिगरस्वाडरेगस्वा नहेच ते जोडसिंहानि द्मगणा अणेगनह्वितिह्वीससापरिणयाए उज्जोयविहीए उववेया सुहक्षेस्सा मंदकेस्मा मंदाय-बलेस्सा कृडाय इव ठाणठिया अन्नमन्त्रमोगाडाहि लेस्साहि साए प्रभाए सपएसे सव्वओ समैता ओभासंति उज्जोवेति पमासंति कुसविकुसवि० जाव चिद्रंति ५ । एगूरुयदीवे० तत्य २ "बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पण्यता समणाउसी !, जहां से पेच्छाघरे विक्ति रम्मे वरकुनुमदासमालुजंक भासंतमुक्कपुप्पर्मुजोवबारकिए विग्निविचिनमञ्जलिरेदाममञ्जलिरिसमुदयप्पग्रको गृथिमवेदिमपुरिमसंचाइमेण मञ्जण छेयसि प्पियं विभागरद्वण सञ्बज्जो चेव समणुबद्धे विरुक्तन्वंतविष्पद्देवेहि पंचवण्णेहि कुसमदामेहिं मोहमाणेहिं सोहमाणे बणमालयमाए चेत्र दिप्पमाणे तहेब ते चित्तंग-यावि तुमगणा अणेगबद्दविविह्वीतसापरिणयाए मह्नविहीए उववेया कुमविकुर्साव । जाव चिद्वंति ६। एगूरुयदीवे॰ तस्थ २ · · बहुवे चित्तरसा णाम दुमराणा पण्मता सम-णाउसो !, जहा से मुगंधनरकलमसावितंतुलिविसिद्धणिव्यद्यवृद्धरे सारयध्यगृहसंह-महुमेलिए अइरसे परमण्णे होज उत्तमवण्णमंत्रमेते रण्णो जहा वा चक्कविस्स होज णिउणेहिं स्यपुरिसेहिं सजिएहिं नाउरकप्पसेयसिते इव ओयणे कळमसालिकिकति-एवि एके सम्बद्धानिउनस्यसगस्तिये अजेगसाल्यमगसंज्ञते अहवा पिष्ठपुण्यदन्तुव-क्सडेस सक्षए वण्णगंधरसफरिसजुत्तवलवीरियपरिणामे इंदियबलपुष्टिवद्वणे खुप्पिना-समहणे पहाणे गुलकटियर्खंडमच्छंडियउवजीए पर्तोयगे सन्द्रसमियगड्मे हुवेज परम-इडंगसंखते तहेव ते विशरसावि हुमनणा अणेगबहुविविह्बीससापरिणवाए मोयण-विहीए उनवेया धुसविकुसविक जाव चित्रंति ७। एगूमबदीने यंक तत्व २ " नहने

मिन्यंना नाम वुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से हार्द्रहारनष्टणगमउडकुंडल-वाञ्चताहेमजालमणिजालकणगजालगमुत्तगरु चिह्यकृष्टगासु हियएगावलिकंठसुत्तमंग-रिम्डरत्यगेनेजसोषिद्धत्तगचूलामणिकणगतिलगफुलसिदत्ययकण्णवालिससिस्ग्उसभ-चक्रगतलभंगतुष्टियहत्थिमालगवलक्ष्वदीणारमालिया चंदसूरमालिया इरिसयकेऊर-वलयपालंबअंगुलेजगर्कचीमेहलाकलाषपयरगपायजालघंटियखिखिणिरयणोद्दजालिय-नियदरणेटर्चलणमालिया कणगणिगरमालिया कंत्रणमणिरयणभतिवित्ता भूसर्णावही बहुप्पगरा तहेव ते मणियंगावि दुमगणा अणेगबहुविविह्वीससापरिणयाए भूसण-विहीए उनवेया कुर्साव॰ जाब चित्नेति ८ । एगूरूयरीवे॰ तत्थ २ · · बहुवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णेता समणाउसो !, जहां में पागारहालगचरियदारगोपुरपामायागा-सनलमंबत्रएगमालविसालगतिसालगच उरंभच उमालगब्भघरमोहणघरवलभिघरचि-त्तसालमालयभत्तिवरवदृतंसच्छरंसणंदियावत्तसंठियाययपंडुरतलमुंडमालहम्मियं अहव णं धवलहरअद्धमागहविष्ममसेलद्धसेलसंठियकृडागारद्वस्तविहेकोट्टगञ्रणेगघरमरणले-णआवणविङंगजालचंदणिज्रृहयपनरकनोयालिचंदसालियरूवविभक्तिकलिया भवणविही बहुनिगप्पा तहेव ते गेहागारावि दुमगणा अणेगबहुविविह्वीससापरिणयाए सुहार-हणे यहोत्ताराए महनिक्खमणप्पवेसाए दहरसोवाणपंतिकलियाए पहरिकाए मुहवि-हाराए मणोऽणुकूलाए भवणविहीए उबवेया कुसवि० जाव चिट्ठंति ९ । एगोस्यदीवे० तत्थ २ '''बहुचे अणिगणा णामं दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से आईणग-स्रोमतणुयकंबलदुगुह्नकोसेञ्जकालमगपद्रचीणंसुयञ्जणह्यनिउणनिप्पावियनिद्धगञ्जिय-चरणातवारवणिगयथुणाभरणचित्तसहिणगऋहाणगर्भिणिमेहणीलकजलब-हुवण्णरत्तपीयनीलसुक्रिक्रमक्स्ययमिगस्रोमहेमप्फरण्णगअक्सरत्तगसिधुओसभदामिलवं-गकलिंगनलिंगतंतुमसभक्तिचिक्ता वत्यविही बहुप्यगारा हवेज वरपष्ट्रणुकाया वण्णरा-नकलिया तहेव ते अणिगणावि दुमगणा अणेगबहुविविह्वीससापरिणयाए वत्यवि-हीए उचनेया कुसनिकुसनि॰ जान चिट्टंति १०। एगोरुयदीने णं भंते ! दीने मणु-यांगं केरिसए आगारमाषपढोगारे पण्णेने ? गोयमा ! ते र्ण मणुया अणुवमतरसी-मचारूवा भीगुत्तमगयलम्बणा भीगसस्सिरीया सुजायसन्वंगसंदरंगा सुपद्दद्वियसु-म्मनाहनसमा रतुःपरुपतमउम्हकुमालकोमस्तरस्य नगनगरसागरमगरनसंकार् क्याणंकिम्बलणा अणुप्कसुसाहर्यगुलीया उच्णयत्तगुर्तवनिदगहा संठिमधुसिलिङ्घा-इगुप्ता एजीकुरुविदावतवदाण्युन्वजंबा समुक्तिवासग्रहजाण् गयससणसुजावसण्यि-भोकः वरवारणमत्तुक्रविक्रमविक्रविक्याई युजायवरतुरगगुज्यवेसा आइण्णह्यीय विस्मृद्धेया प्रमुद्धम्यरत्त्ररियदीहमहरेगनहियककी साह्यसोगिरमुसलदप्पणनियरियवर-

कणगच्छरुसरिनवरवङ्रपल्चियमञ्झा उज्जुयसमसहियसुजायज्ञवतणुकसिणणिद्धसादेख-लडहमुकुमालमज्यरमणिखरोमराई गंगावत्तपयाहिणावत्ततरंगमंगुररविकिरणतक्णको-हियअकोसायंतपउमगेमीरवियडणामी ससविहगसुजायपीणकुच्छी ससीयरा सुइक-रणा पम्हवियडणामी सण्णयपासा संगयपासा सुंदरपासा सुजायपासा मियमाहय-पीणरहयपासा अकरंडुयकणगढ्यगनिम्मलमुजायनिम्बह्यदेहवारी पसत्थवत्तीसल-क्खणधरा क्रणगसिलायलुज्जलपसत्धम्मयलोवन्धियविच्छित्रपिहुलवच्छा सिरिक्च्छं-कियक्च्छा पुरवरफल्डिवष्टियभुया भुवगीसरविउलमोगआयाणफल्डिउच्छ्रुढवीहबाहू ज्यसभिभपीणरद्यपीवरपउद्वसंठियसुसिलिद्वविसिद्वयणिरसुबद्धसुनिगृहपव्यसंघी रत्ततलोवइयमउयमंसलपसत्यलक्षणमुजायअच्छिद्द्रजालपाणी पीवरवद्दियसुजायको-मलबरंगुलीया तंबतिलिणसुर्व्दरविद्वणक्खा चंदपाविलेहा सूरपाविलेहा संस्तपावि-केहा चक्रपाणिकेहा दिसासोत्थियपाणिकेहा चंदसूर्संख्नकदिसासोत्यियपाणिकेहा अणेगवरलम्बणुतमपसत्यसुइरइयपाणिलेहा वरमहिसवराहसीहसहूलउसमणागवर-पिंदुप्त्रविदलंदन्यमः वृद्धिया वृद्धित्रवाष्ट्रप्रमाणकंबुवरसिरसगीवा अवद्विवसुविमत्त-मुजायन्त्रितमंस् मंगलसंठियपसत्यसर् लविपुलहणुया उवन्त्रियसिलप्पवास्त्रविकप्रसान-भाहरोद्वा पंहरससियगलविमलनिम्मलसंखगोखीरफेणदगर्यमुणालिया धनलदंतसेदी अखंडदंता अफुडियदंता अविरलदंता मुजायदंता एगदंतसेडिय्य अणेगदंता हुयय-हनिद्धंनधोयनत्तनवणिअरत्ततलतालुजीहा गरूलाययउजुतुंगणासा अवदालियपोंडरी-यणयणा कोयासियधवलपत्तलच्छा आणामियचावरहलकिण्डपूराइयसंठियसंगयधायय-सुजायत्णुकसिणनिद्धभुमया अल्लीणप्यमाणजुत्तसवणा सुरसवणा पीणर्मसलक्वोलदेस-भागा अश्विरुग्गयबालचंदसंठिवपसस्यविच्छित्रसमणिडाला उद्ववद्पविषुण्गसोमववणा कतागारतमंगदेसा वणविचियसुबद्धस्वन्तपुण्णयक्**रागारणिमपिडियसीसे** दा**डिम**पु-फपगासतवणिजसरिसनिम्मलयुजानकेसंतकेसभूमी सामलिनोडपणणिनियछोडिन्नमि-उ विसयपसत्यद्य**हुमलण्यायद्वर्गभर्युद्धस्यमोयगर्मिनि**णील**कळल्पह्**द्वभमरगण**णिद्धल**-उरंबनिश्वियक्तंत्रियश्वियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया लक्क्सणवंजणगुणोववेया सुजायस्वि-मत्तमुल्यमा पासाइया दरिसणिजा अभिरूवा परिरुवा, ते ण मनुया ओहस्सरा हंसन्सरा कोंवस्सरा॰ नंदिघोसा सीइस्सरा सीइघोसा मंजुरसरा मंजुषोसा सस्सरा द्यस्थरिकमोमा छायाउ**जोइवंगमंगा कजरिसहबारावसंभवना समवउरसस्टाणसं**-ठिया सिणिदल्वी णिरायंका उत्तमपस्तवश्रद्धसनिष्द्रमत्तव् जन्नसलकंकसेयर्थवी-सर्वाजयसपीरा निरुवलेया अणुकोमदाउबेगा संस्कागहणी सर्वायपरिणामा सउणिका पोसपिद्वंतरोरुपरिणया विस्यहियउत्तवकुच्छी पउमुच्यकसरिसमंघविस्तासद्धरिमनयणा

अञ्चलुसर्व करिया, तेसि मलुवाणं चउसद्वि पिट्टिकर्डगा पण्णता समणाउसो !, ते र्षं मणुवा पगइमस्या पगइविषीयमा पगइउवसंता पगइपयणुकोह्माणमायास्रीमा मिउमहवसंपम्णा अहीणा महगा विणीया अप्पिच्छा असंनिष्ठिसंचया अचंडा विडि-मंतरपरिवसणा जिहिच्छिमकामगामिको य ते मणुमगणा प्रकाता समगाउसो 🗀 त्तेसि णं भंते । मणुयाणं केवङ्काळस्स आहारहे समुष्पज्ञह ? गोयमा । चउत्यमत्तस्स आहारहे समुप्पज्जड, एगोस्यमणुईणं भंते । केरिसए आगारभावपटीयारे पण्णते ? गोयमा ! ताओ णं मणुईओ सुजायसब्बंगसुंदरीको पहाणमहिलागुगिहिं जुत्ता अर्धत-विसप्पमाणपउमस्मालकुम्मसं ठियत्रिसिद्धचलणा उज्जमउयपीवरनिरंतरपुद्धसाहियंगु-लीया उण्णयरहयनिकणंव सङ्गिद्धणक्खा रोमरहियवदृलद्वसंठियअजङ्ग्णपसत्थलक्ख-णअकोप्पजंचजुयला सुणिम्भियसुगृहजाणुगंडलसुबद्धसंधी क्यलिक्संभाइरेगसंटिय-णिव्यणसुकुमालम् उयकोमलअबिरलस्यस्य हियस् जायबर्यीवर्णिरंतरोरः अद्वावयवीई-पृष्टसंठियपसत्यविच्छिनपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्धज-हणनरभारणीओ वज्रविराइयपसत्यलक्खणणिरोदरी निवलिवलीयतगुणमियमजिस-याओ उज्यसममहियजन तणुकतिण विद्धादेजलङहसु विमत्तसुजायकंतसोहंतरहरू-रमणिजरोमराई गंगावलपयाहिणावलतरंगभंगुरर्विकर्णतरुणवोहियअकोसायंतप-उमनणगंभीरवियहणाभी अणुव्भहपसत्यपीणकृष्की सण्णवपासा संगवपासा सुजाय-पासा मियमाइयपीणर्इयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायणिकनहयगायलड्डी कंचणकलससमप्रमाणसमसहिबसुजायलद्वच्चयआमेलगजमलजुयलबद्वियअञ्चलणयर-इयसंठियपओहराओ भुवंगणुपुग्वतणुयगोपुच्छवद्दसमसहियणमियआए अलल्यिबाहाओ तंबणहा मंसलग्गहत्या पीवरकोमलवरंगृलीओ णिद्धपाणिलेहा रविससिसंखचक्र-सोत्यियसुविभन्तसुविरस्थपाणिकेहा पीणुष्णयकस्थवत्यिदेसा परिपुष्णगलकनोला वजरेपलसुप्पमाणवंतवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्यहणुषा दाडिमपुप्पप्पगास-पीवरकंचियवराधरा सुंदरोत्तरोष्टा दहिदगरगचंदकंदवासंतिमउल्ब्यच्छिद्विमलदसणा र्भापकपत्तमत्रयमुकुमालतासुबीहा कमयरमुङलजकुकिस्थान्युमायत्रजुतुंगणासा सार्-यणवनम्भलनुस्यकुन्तरस्थिम् सदल्लिगरसरिसलक्षणअंभियकंतणयणा पत्तलचन्छा-वंततंबकोयणास्रो आणामियचावस्रकाकेण्डच्मराष्ट्रसंठियसंगयसायगराजायत्यकासण-णिद्रममुचा अहीवपमाणजुतस्वणा सुसवणा पीणमहुर्माणकांडलेहा चउरस्यसस्य-सम्मिष्डाका भ्रोमुहरयमियरविमकपिषुक्तसोमवयणा छत्तुक्रयउत्तिमंगा कुरिलसुसि-विद्युविहित्या क्षण्यसम्बादामिविकार्वस्त्रकस्त्वाविसीत्ययपदायज्ञवस्तर-सर-इवरमगरसुयपालअंकुसञ्ज्ञावनयीऽसञ्ज्ञुतगमक्रतसिरदामाभिसेयतोरणमेइनिस्टदिन-

वरमबणगिरिवरआयंसललियगयउसभरीह्चमरउत्तमपसत्यवतीसलक्सणघराओ हंससारेसगईओ कोइलमहुरगिरसुस्सराओ कंता सन्वस्स अणुनयाओ ववगयविक-पलिया वंगतुञ्बक्षणवाहीदोहुग्गसोगमुकाओ उच्चतेण य नराण थोवूणमूसियाओ सभावसिंगारागार्वारुवेमा संगयगयहतियभणियचे द्वियविलाससंलावणिउणज्ञत्तोवयार-कुसला सुंदरथणजहणवयणकर्चलणणयणमाला बण्णलावण्णजोव्यणविलासकलिया नंदणवणविवरचारिणीउव्व अच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिजा पासाईयाओ दरिमणि-जाओं अभिस्वाओं पडिस्वाओं । तासि में भंते ! मणुईणं केवदकालस्स आहारहे समुप्पज्जः ? गोयमा ! चउत्थभत्तस्य आहारहे समुप्पजङः । ते णं भंते ! मणुया किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! पुढविपु-फफलाहारा णं ते मणुयगणा पण्णता समणा-उमो ! । तीसे णं भेते ! पुढवीए केरिसए आसाए पण्णते ! गांयमा ! सं जहाणामए गुलेंड वा खंडेड वा सक्साइ वा मच्छंडियाइ वा मिसकंदेड वा पण्यडमोगएड वा पुष्प्रउत्तराइ वा परमुत्तराइ वा अकोसियाइ वा विजयात वा महाविजयाह वा वायंसोवमाइ वा उवमाइ वा अणोवमाइ वा चाउरके गोखीरे चउठाणपरिणए गुडखंडमच्छंडिउवणीए मंद्रिगकडीए वण्णेणं उववेए जाव फासेणं, भवेगारूवे सिया ?, नो इणड्डे समद्दे, तीसे णं पुढवीए एतो इड्डनराए चेव जाव मणामनराए चेव आसाए पण्णते, तेसि णं मंते । पुष्कप्ताणं केरिसए आसाए पण्णते ! गोयमा ! से जहानामण् रज्ञो चाउरतचक्रवहिस्म कक्षाणे प्वरुभोयणे सयसहस्सनिष्केने वण्णेणं उनवेए गंधेणं उनवेए रसेणं उनवेए फासेणं उनवेए आसायणिजे वीसायणिजे दीर्वाणजे बिहणिजे दप्पणिजे मयणिजे मदिवदियगायपल्हायणिजे, भवेयास्वे सिया?, जो इजड्डे समद्धे, तेसि जं पुष्फफलाजं एती इडनराए चेव जाव आसाए पण्णते । ते णं भेते ! मणुया तमाहारमाहारिना कहिं वसहिं उर्वेति ! गोयमा ! रुक्तांहालया णं ते अणुयगणा पण्णता समणाउसो!। ते णं भंते! रुक्सा किसंटिया पण्णता ? गोयमा ! कूडागारसंठिया पेच्छाघरसंठिया सत्तागारसंठिया झयसंठिया तोरणसंठिया गोपुरवेह्यचोपायाळगसंठिया अञ्चलगसंठिया पासायसंठिया हम्मतलसंठिया गवक्ससंठिया बालम्मपोत्तियसंठिया बलमीसंठिया अण्णे तत्त्र बहवे वर भवणस्यणासणवितिद्वसंद्राणसंद्रिया सुहसीयसञ्ज्ञाचा णं ते दुमगणा पण्मता समणाउसो ! ॥ अत्थि णं भंते ! एगोरुयदीवे दीवे गेहाणि वा गेहाक्याणि वा ! जो इणहे समहे, स्वस्त्रमेहालया णं ते मणुवगणा पण्णता समणाउसी!। अस्थि णं भेते! एगूरुवरीचे दीवे गामाइ दा गमराइ वा जाव सिनवेसाइ वा? जो इनहे समहे, जहिन्छियकासमामिणो ते मञ्जूमाणा प्रणका समणाउसो । अस्य ण सेरे !

एगूहमदीवे॰ असीइ या मसीइ वा कसीइ वा पणीइ वा विशव्याइ वा? नो इणहे समद्रे. वदगरअसिमसिकिसिपणियदाणिजा णं ते मण्यगणा पण्णता समणाउसो!। अत्थ णं मंते! एगुरुयदीवे० हिरण्येह वा सुवनेह वा कंसेह वा व्सेड वा मणीह वा मुत्तिएः वा विडलथणकणगर्यणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएजेइ वा? हुंना अत्य, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिन्वे ममत्तमावे समुप्पन्नइ । अत्य णं भेते ! एगोरुयदीवे॰ रायाद वा ज़बरायाद वा ईसरेद वा तलवरेद वा माडंबियाद वा कोईबियाइ वा इन्भाइ वा सेद्रीह वा सेणावईड वा सत्यवाहाइ वा? णो इणहे समट्टे, वक्रायइड्डीसकारा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो। अत्य णं भंते! एग्रुबर्वि दवि दासाइ वा पेसाइ वा सिस्साइ वा भयगाइ वा भारक्षमाइ वा कम्मगर्परिमाइ वा ? नो इणंद्रं समहे, वबगयआभिओगिया णं ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो!। अत्यि णं भंते! एगोहयदीने दीने मायाड वा पियाड वा भायाड वा भडणीड वा भजाइ वा पुताह वा ध्रुयाह वा सुणहाड वा ? हंता खरिय, नो चेव णं तेसि णं मणुयाणं तिन्वे पेमबंघणे समुप्पज्जह, पयणुपेज्जबंधणा णं ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो । अत्य णं भंते ! एगुरुवदीवे दीवे अरीड् वा वेरिएड् वा घायगाइ वा बहुगाइ वा पिडणीयाइ वा पश्चामित्ताइ वा? णो इणद्वे समद्वे, ववगयवेराणुर्वधा णे ते मणुयगणा पण्णता समजाउसो ! । अन्य जं भंते ! एगोरुयदीवे० मित्राइ वा वयंसाइ वा घडियाड वा सहीड वा सहियाड वा महाभागाड वा संगडवाड वा ? णो इजड्डे समहे, बबगयपेम्मा णं ते मृजुयगणा क्ष्णता समणाउसी!। अत्य णं भंते! एगोस्यवीवे० आवाहाइ वा वीबाहाइ वा जण्माइ वा सद्धाइ वा थालिपागाइ वा चोलो-वणयणाइ वा सीमंतोवणयणाइ वा पिइ(मय)पिंडनिवेयणाइ वा १ णो इण्डे समहे, बवगयआवाहविवाहजण्यनद्धथालिपानचोलोक्णयणसीशंतोब्णयणपिऽपिंहनिवेयणा र्ण ते मणुयगणा पण्णना समणाउसो !। अस्यि णं संते ! एगोरुमदीवे दीवे इंदमहाइ वा खंदमहाइ वा रहमहाइ वा सिश्महाइ वा बेसमणमहाइ वा मुग्दमहाइ वा णागमहाइ वा अक्खमहाइ वा भूयमहाइ वा क्यमहाइ वा तलायणइमहाइ वा दहमहाइ वा क्वयमहाइ वा स्क्लरोवणमहाइ वा? को इजद्वे समद्वे, बक्नयमहमहिमा जं ते मणुयगमा प्रमाना समणाउसो !। अस्वि गं भंते ! एगोस्यदीने दीने णडपेच्छाइ वा णष्टपेच्छाइ वा मह्रपेच्छाइ वा मुद्रियपेच्छाइ वा विश्वंबगपेच्छाइ वा सहगपेच्छाइ वा पदगपेन्छाइ वा अक्सायगपेन्छाइ वा सासगपेन्छाइ वा संसपे० संसपे० तुमहक्षये• तंबवीणपे॰ कीवपे॰ मागहपे॰ जहरो॰ ? जो इजड़े समझे. ववगवकोउहहा चं ते मणुक्यामा पण्यता समजाउसो !। अत्थि यं भंते ! एगुरुगदीने दीने समजाइ ना रहाइ

वा जाणाइ वा जुम्माइ वा गिल्लीइ वा थिलीइ वा पिपिलीइ वा पवहणाण वा सिवियाइ वा संदमाणियाइ वा ? णो इणहे समद्वे, पायचारविहारिणो णं ते मणुस्सगणा पण्णता समणाउसो !। अत्थ ण भंते ! एग्रुव्यदीवे॰ आसाइ वा हत्थीइ वा उद्दाई वा गोणाइ वा महिसाइ वा खराइ वा घोडाइ वा अयाइ वा एलाइ वा है हंता अत्य, नो चेद णं तेसि मणुयाणं परिमोगताए हव्यमागच्छंति । अत्य णं भंते ! एगोस्यदीवे दीवे गावीइ वा महिसीइ वा उद्दीइ वा अयाइ वा एलगाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसि मणुयाणं परिमोगताए हव्यमागच्छति । अत्थि णं भंते ! एग्ट्यदीचं दीवे सीहाड वा वरघाड वा विगाद वा दीवियाद वा अच्छाट वा परच्छाह वा परस्सराइ वा तरच्छाइ वा सियालाइ वा बिडालाइ वा सुणगाइ वा कोलसुणगाइ वा कोकंतियाइ वा ससगाइ वा वित्तलाइ वा विद्वललगाइ वा ! हंता अत्थि, नो चेव णं ते अण्ण-मण्णस्म तेसि वा मण्याणं किचि आबाहं वा पबाहं वा उप्पायंति वा र्छावन्छेयं वा करेंति, पगइभइगा णं ते नावयगणा पण्णता समजाउसी!। अस्थि णं भेते! एगूह्यदीने दीने सालीइ वा वीहीइ वा गोधूमाइ वा जवाइ वा तिलाइ वा इक्खड़ वा ! हंता अत्थ. नो चेव णं तेसिं मण्याणं परिभोगताए हव्यमागच्छंति । अन्धि णं मंत ! एगुरुयदीवे दीवे गताइ वा दरीइ वा धंसाइ वा मिगुइ वा खाएइ वा विसमेड वा विज्ञलेड वा भूलीड वा रेणूड वा पंकेड वा चलणीड वा ! णो इणडे समद्वे, एगूरुयदीवे णं दीवे बहुसमरमणिजे भूमिमागे पण्यते समणाउसी !। अस्य णं भंते ! एगुरुयदीवे दीवे खाणूड वा कंटएइ वा हीरएइ वा सक्दराइ वा तणक्यव-राइ वा पत्तकयवराइ वा असुईइ वा पूड्याइ वा दुव्मिगंधाइ वा अचीक्साइ वा र णो इणद्वे समद्रे, दवगयखाणुकंटगहीरसकरतणकगवरपत्तकगवरअसुइप्इयद्धानंधम-चोक्खपरिवाजिए णं एगूरुयदीवे पण्णते समणाउसो!। अत्य णं भंते! एगूरुय-दीवे दीवे दंसाइ वा मसगाइ वा पिस्रयाइ वा जूयाइ वा लिक्साइ वा ढंकुणाइ वा ? णो इणद्वे समद्वे, वदगयदंसमसगिषसुयज्यस्मिक्षदंकुणपरिविज्ञए णं एगुरुव-दांवे पण्णेस समणाउसी !। अस्यि णं भंते ! एमूह्यदीवे॰ अहीइ वा अयगराइ वा महोरगाइ वा ? हंता अत्य, नो चेव णं ते अनमसस्य तेसि वा मणुयाणं किनि आबाहं वा पबाहं वा छिमिन्छेयं वा करेंति, पगइमहगा णं ते वारुगगणा पण्णना समणाउसो !। अस्यि णं भंते ! एग्रुव्यदीवै० गहदंडाइ वा गह्मुसलाइ वा गहगजियाह वा महजुद्धाह वा गहसंघाहगाह था गहस्रवसम्बाह वा अञ्जाह वा अन्मरक्ताइ वा संसाह वा गंधव्यनगराइ वा गजियाइ वा विज्ञसाइ वा रखा-पायाइ वा दिसादाहाइ वा विकासवाह वा पंत्रबद्धीइ वा ज्वगाड वा जक्खालियाड

वा भूमियाइ वा महियाइ वा रंजग्धायाइ वा चंदीवरागाइ वा स्रोवरागाइ वा चंदपरिवेसाइ वा स्र्परिवेसाइ वा पिंडचंदाइ वा पिंडस्राइ वा इंद्यणूइ वा उदग-मच्छाइ वा अमोहाइ वा कविहसियाइ वा पाईणवायाइ वा पढीणवायाइ वा जाव सद्भायाइ वा गामदाहाइ वा नगरदाहाइ वा जाव सांग्णवेसदाहाइ वा पाणक्यय-जणक्खयकुलक्खयधणक्ख्यवयणभूयमणारियाइ वा १ णो इण्हे समद्वे । अस्यि णं भंते । एगूह्यरीवे दीवे डिंबाइ वा डमराइ वा कलहाइ वा बोलाइ वा खाराइ वा वेराइ वा महावेराइ वा विरुद्धरजाइ वा ? णो डणहे समहे, ववगयर्डिंबडमरकलह-श्रीत्रयाग्वेरविरुद्धर्जविविजया णं ते मणुगगणा पण्णता समणाउसो !। अस्यि णं भंते ! एगूरुयदीवे दीवे महाजुदाइ वा महासंगामाइ वा महासत्यपहणाइ वा महा-पुरिसपडणाइ वा महारुहिरपडणाइ वा नागवाणाइ वा खेणवाणाइ वा नामसवाणाइ वा बुन्भृह्याह वा कुलरोगाइ वा गामरोगाइ वा णगररोगाइ वा मंडलरोगाइ वा सिरोवंयणाइ वा अच्छिवेयणाइ वा कण्णवेयणाइ वा णक्कवेयणाइ वा दंतवेयणाइ ना नहवेगणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा जराइ वा दाहाइ वा कच्छूह वा स्वसराइ वा कुद्धाइ वा कुष्ठाइ वा दगराइ वा अरिमाड वा अजीरगाइ वा भगंदराइ वा इंदरगहाइ वा खंदरगहाइ वा कुमार्ग्गहाइ वा णागरगहाइ वा जक्तरगहाइ वा भूयग्गहाड़ वा उज्वेयग्गहाड़ वा धणुग्गहाड़ वा एगाहियाइ वा बेयाहियाइ वा तेया-हियाइ वा चउत्यगाइ वा हिययस्लाइ वा मत्थगस्लाइ वा पासस्लाइ वा कुच्छ-सूलाइ वा जोणिस्लाइ वा गाममारीइ वा जाव सन्निवेसमारीइ वा पाणवन्त्रय जाव वसणभूयमणारियाः वा १ णो इणहे समहे, वनगयरोगायंका ण ते मणुयगणा पण्णना समणाउसो । अत्थ ण भंते ! एगूरुयदीवे दीवे अइवासाइ वा मंदवासाइ वा धुनुद्वीह वा संदन्नुद्वीह वा उदगवाहाइ वा उदगपवाहाइ वा दगुन्भेयाह वा दगु-प्यीताइ वा गामवाहाइ वा जाव सिन्नवेसवाहाइ वा पाणक्खय॰ जाव वसणभूयम-णारियाइ वा ? णो इण्डे समद्वे, बवगयदगोबहवा णं ते मणुयमणा पण्णता समणा-उसी ! । अत्य णं भंते ! एगूरुवदीवे दीवे अधागराइ वा तम्बागराइ वा सीसाग-राइ वा सुवण्णागराइ वा रयणागराइ वा क्हरागराइ वा वसुहाराइ वा हिरण्णवासाइ ना सुवण्णवासाइ वा रयणवासाइ वा वहरवासाइ वा आमरणवासाइ वा परावासाइ ना पुष्पनासाइ वा फलवासाइ वा बीयवासा० महवासा० गंधवासा० वण्णवासा० चुणवासा॰ खीरवृद्धीः वा रयणवृद्धीः वा हिरण्णवृद्धीः वा सुवण्ण० तहेव जाव चुम्मवुद्वीइ या सुकालाइ वा दुकालाइ वा सुमिक्खाइ वा सुमिक्खाइ वा अप्परवाइ वा महरवाइ वा कवाइ वा महानिक्रवाइ वा अणिहाइ वा संण्णिहीइ वा संनिचयाइ वा ११ सुमा॰

निहीइ वा निहाणाइ वा निरपोराणाइ वा पहीणसामियाइ वा पहीणसेउयाइ वा पहीण-गोलागाराइं वा जाहं इसाई गासागरणगरखेडकव्वडमडंक्दोणमहप्रक्रणासमस्वाहस-निवेसेसु सिंघाडगतिगचटक्रवबस्वउम्हमहापहपहेसु णगरणिद्धमणगामणिद्धमणसु-साणगिरिकंदरसन्तिसेलोबद्वाणभवणगिर्देस सिक्षितिखताई चिद्वति ? नो इणद्वे समद्रे । एग्रुयदीवे णं भंते ! दीवे मणुयाणं केवड्यं कालं ठिडं पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं पलिओवमस्स असंखेजङभागं असंखेजङभागेण ऊणगं उन्नोसेणं पलिओवमस्स असंखेजहभागं । ते णं भंते ! मणुया कालमासे कालं किया कहिं गच्छंति कहिं उववजंति ? गोयमा ! ते णं मणुया छम्मासावसेसाख्या मिहणयाई पसर्वति अउणा-सीई राइंदियाई मिहणाई सारक्खंति संगोविति य. सारक्खिता संगोविता उस्मसिता निस्सिसत्ता कासित्ता छीइना अकिहा अव्वहिया अपरियाविया पिलिओवमस्स असंखिज्जइभागं परियाविय र सहंसुहेणं कालमासे कालं किया अनयरेस देवलोएस देवताए उदवतारो भवन्ति. देवलोयपरिगद्दा णं ते मणुयगणा पण्णता समणा-उसो ! ।। कहि णं भंते ! दाहिणिह्याणं आमासियम्णुस्साणं आमासियदीवे णामं दीवे पण्णते ? गोयमा ! अंबुद्दीवे दीवे चुह्रहिसवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणपुर-च्छिमिल्लाओ चरिमंताओ रुक्णसमुद्दं तिन्नि जोयण० सेसं जहा एगूरुयाणं णिर्वसेसं भाणियव्वं ॥ कहि णं भंते ! दाहिणिह्नाणं णंगोलियमणुस्याणं पुच्छा, गोयमा ! जंबुद्दीने दीवे मंदरस्य पञ्चयस्य दाहिणेणं चुह्नाहिमबंतस्य बासहरपञ्चयस्य उत्तरपञ्चत्थिमिह्नाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसयाइं सेसं जहा एग्रुव्यमणुरसाणं ॥ कहि णं भंते ! दाहिणिह्नाणं वेसाणियमणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! जंबद्दीवे दीवे मंदरस्य पञ्चयस्य दाहिणेणं चल्लहिमवेतस्य वासहरपञ्चयस्य दाहिण-पत्रत्यिमिहाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिण्यि जोयण० सेसं जहा एगूरुवार्ण ॥१९१॥ कहि णं भंते ! दाहिणिह्याणं हयकण्यासणुस्साणं हयकण्यदीवे गामं दीवे पण्याते ? गोयमा ! एग्रहयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिहाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहिता एत्य णं दाहिणिक्षाणं हयकण्णमणुस्ताणं हयकण्यदीवे णामं दीवे पण्णते. चत्तारि जोयणसवाई आवासविक्खंभेणं बारस जोयणसया पनद्वी किन्विविसेस्ना परिक्खेवेणं, से णं एगाए पडमवरवेदयाए अवसेसं जहा एगूरुयाणं । कहि षं भंते ! दाहिणिह्नाणं गयकाणमणुस्साणं पुच्छा, गोयसा ! आमातियदीवस्स दाहिणपुरच्छिमिहाओ चरिमंताओ लगणसमुद्दं चतारि जोयण-सयाई सेसं जहा हयक्रणाणं । एवं गोक्रणमणुस्ताणं पुच्छा, वेसाणियदीवस्स दाहिणपचिषमिक्षाओ चरिमंताओ लवणसमुदं चतारि जोग्रणसयाई सेसं जहा

ह्रवक्रमाणं । सङ्कृतिकणाणं पुच्छा, गोयमा! णंगोठियदीवस्स उत्तरपञ्चतिवमित्राओ चरिमंताओ लग्णसमुद्दं चतारि जीयणसग्रहं सेसं जहा ह्रयकणाणं ॥ आयंसमुहाणं पुच्छा, हयकम्पबदीवस्स उत्तरपरिच्छमिहाओ चरिमंताओ पंच जोयणसमाइं ओगा-हिता एत्य णं वाहिषिक्षाणं आयंसमुहमणुस्साणं आयंसमुहदीने णामं दीने पण्पते, पंच जोयणसयाई आयामविक्संभेणं, आससुद्दाईणं छ सया, आसकवाईणं सत्त, उक्तासु-हाईणं अहु, वणदंताईणं जाव नव जोयणसयाई, गाहा-एगूहरपरिक्केवो नव चेव सयाई अउणपन्नाई । बारसपन्नद्वाई हयकण्णाईणं परिक्सेवी ॥ १ ॥ आर्यसमुहाईणं पन्नरसेकासीए जोवणसए किन्निविसेसाहिए परिक्खेवेणं, एवं एएणं कमेणं उवउक्तिसण णेयन्त्रा चत्तारि चत्तारि एगपमाणा, णाणतं ओगाहे, विक्खंभे परिक्खेने पटमबीय-तइयचरकाणं उगाहो विक्लंभो परिक्लोवो भणिओ, चरत्यचरके छजोयणसयाई आयामविक्खंभेणं अद्वारसत्ताणउए जोयणसए विक्खंभेणं । पंचमचउके सत्त जोयण-सयाई आयामनिक्खंमेणं बाबीसं तेरसोत्तरे जोयणसए परिक्खेनेणं । छद्रचउक्के अद्वजीयणसयाई आयामविक्संभेणं पणवीसं गुणतीसजीयणसए परिक्सेत्रेणं । सत्तमचउके नवजोयणसयाई आयामनिक्खंभेणं दो जोयणसहस्साई अह पणयाछे जोयणसए परिक्खेवेणं । जस्स य जो विक्खंमो उम्माहो तस्स तत्तिको चेव । पढमबीयाण परिरक्षो ऊणो सेसाण अहिओ उ ॥ १ ॥ सेसा जहा एगूह्यदीवस्स जाव सुद्धदंतदीवे देवलोगपरिकाहा णं ते मणुक्याणा पण्यता समणाउसी ! ॥ कहि णं मंते ! उत्तरिक्राणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीने णामं दीने पण्णते ? गोयमा ! अंबुद्दीचे दीवे मंदरस्स पब्बयस्म उत्तरेणं सिद्दिरस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरच्छि-मिक्राओ चरिमंताओ अवणसमुद्दं तिण्णि जोयणसमाइं ओगाहिता एवं जहा दाहिणिक्षाण तहा उत्तरिक्षाण भाणियव्यं, णवरं सिहरिस्स वासहरप्यवयस्स विदिसासु, एवं जाव सुद्धदंतदीवेति जाव सेतं अंतरदीवगा ॥ ११२ ॥ से किं तं अकम्मभूमगमणुरसा ? २ तीसविहा पण्णता, तंजहा—पंचाहें हेमवएहिं, एवं जहा पण्यवणापए जाद पंचिंह उत्तरकुर्नाहें, सेतं अकम्मभूमया । से कि तं कम्म-भूमगा ? २ पण्णरसविद्वा पण्णता, तंजहा--पंचिह भरहेहिं पंचिहं एरवएहिं पंचिहं महाविदेहेहिं, ते समासओ दुविहा पण्णता, तंजहा-आरिया मिळेळा, एवं जहा पण्यवणापए काव सेत्तं आहिया. सेत्तं गञ्यवकंतिया. सेत्तं मणुस्सा ॥ ११३ ॥ म्युस्स्रहेसो समत्तो ॥

से कि ते देवा? देवा चउ व्यवहा पण्णता, तंबहां-भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया देमाणिया ॥ १९४ ॥ से कि तं भवणवासी १ २ दसविहा पण्णता, तंबहा-

असुरकुमारा जहा पण्णवणापए देवाणं मेओ तहा भागियम्बो जाव अणुतरोवचाह्या पंचविहा पण्णता, तंत्रहा-विजयवेजयंत जाव सव्बद्धसिखगा, सेतं अणुत्तरीवबाह्या ॥ १९५ ॥ कहि णं भंते ! अवणवासिदेवाणं भवणा पत्रता ? कहि णं भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ?. गोयमा ! इमीसे रसणप्पमाए पुढवीए असीउत्तरजोय-णसबसहस्सबाहल्लाए, एवं जहा पण्णवणाए जाव भवणवासाइया, त(ए)त्य णं सवणवासीणं देवाणं सत्त भवणकोडीको बाबतारि सवणावाससयसहस्सा भवति-तिमक्खाया, तस्य णं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति-असुरा नाग सुवन्ना य अहा पण्णवणाए जाव बिहरंति ॥ ११६ ॥ कहि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं भवणा प० पुच्छा, एवं जहा पण्णवणाठाणपए जाव विहरति ॥ कहि णं मंते ! दाहिणिहाणं असुरकुमारदेवाणं भवणा पुच्छा, एवं जहा ठाणपए जाव चमरे तत्व असरकमारिंदे असरकमारराया परिवसंड जाव विहरह ॥ १९७ ॥ चमरस्त णं भंते ! असुरिंदस्स असुरर्जो कड परिसाओ प० १ गो० ! तओ परिसाओ प०, तं०---समिया चंडा जाया. अध्भितरिया समिया मज्हे चंडा बाहिं च जाया॥ चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररको अध्भितरपरिसाए ऋ देवसाहस्सीओ पण्णनाओ ? मज्ज्ञिमपरिसाए कड़ देवसाहस्सीओ पञ्जताओ ! बाहिरियाए परिसाए कह देवसा-इस्सीओ पण्णताओ ? गोबमा ! वसरस्स णं असुरिंदस्स २ अधिमतरपरिसाए चउवीसं देवसाहस्सीओ पण्णताओ. मज्जिमियाए परिसाए अद्वावीसं देव॰, बाहि-रियाए परिसाए बत्तीसं देवसा० ॥ चंमरस्स णं मंते ! अद्वरिदस्स अद्वररण्णी अधिमतिरयाए प॰ कह देविसया पण्णता ? मजिल्लामियाए परिसाए कह देविसया पण्णता ? बाहिरियाए परिसाए कड देविमया पण्णता ?, गोयमा । चमरस्स णं असरिंदरस असररण्णो अधिभतिरयाए परिसाए अबद्धा देविसया प॰ मज्जिमियाए परिसाए तिकि देवि॰ बाहिरियाए अङ्गाइजा देवि॰ । चमरस्स णं मंते ! अयुरिदस्स असररण्णो अध्भितरियाए परिसाए देवाणं केवह्यं कालं ठिई पण्णना ? मजिसमियाए परिसाए॰ बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कार्ल ठिई पण्णता ! अब्मितरियाए परि॰ देवीणं केवड्यं कालं ठिई पण्णता? मजिझमियाए परि॰ देवीणं केवड्यं॰ बाहिरियाए परि॰ देवीणं के॰ ?. मोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स २ अब्मितरियाए परि॰ देवाणं अब्राहजाई परिक्रोबमाई ठिई प॰ मजिसमाए परिसाए देवाणं दो पलिओवमाई ठिई पण्णना बाहिरियाए परिसाए देवाणं दिवलं पिक अस्मितरियाए परिसाए देवीणं दिवर्ष्ट्रं पिछञ्जोवमं ठिई पण्णता मिजमियाए परिसाए देवीणं पिछ-ओवमं ठिई पन्णता बाहिरियाए परिक देवीणं अद्धपलिओवमं ठिई पन्णता ॥ से केणद्वेणं मंते ! एवं वृषद् वमरस्य अपुरिदस्य तओ परिसाओ पण्णताओ. तंजहा-समिया चंडा जाया. अब्भितरिया समिया मजिसमिया चंडा बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररहो अब्भितरपरिसाए देवा बाहिया इञ्चमागच्छंति यो अञ्चाहिया, मिज्समपरिसाए देवा वाहिया इञ्चमागच्छंति अञ्चाहियावि. बाहिरपरिसाए देवा अञ्चाहिया हञ्चमायच्छंति. अदत्तरं च णं गोयमा ! नगरे असरिंदे अमरराया अन्नयरेस उन्नावएस कवकोहंबेस समप्पनेस अधिमती-याए परिसाए सर्दि संमइसंपृच्छणाबहुछे बिहुरइ मिज्जमपरिसाए सर्दि पर्य एवं पवंचेमाणे २ विहरह बाहिरियाए परिसाए सिंद पयंदेमाणे २ विहरह, से तेणद्वेणं गोयमा! एवं वुच्ह-चमरस्स णं अदुरिंदस्स अदुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णताओ समिया चंडा जाया. अञ्भितरिया समिया मज्जिमिया चंडा बाहिरिया जाया ॥ ११८॥ कहि णं भंते ! उत्तरिक्राणं असुरकुमाराणं भवणा पण्णताः ? जहा ठाणपए जाव बली एत्य नइरोयणिंदे नइरोयणराया परिनसइ जान सिहरइ ॥ बलिस्य णं भेते ! वयरोयणिदस्य वडरोयणरह्यो वड परिसाओ प्रव्यक्ताओ ? गोयमा ! तिकिन परिमाओ प०, तंजहा-समिया चंडा जाया, अब्भितरिया समिया मिडामिया चंडा बाहिरिया जाया। बलिस्स पं भंते ! वडरोबणिंदस्स वडरोबणरको अस्भिनरियाए परिसाए कड देवसहरसा प॰ ! मजिझमियाए परिसाए कड देवसहरसा जाव बाहि-रियाए परिसाए कड देविसया पण्याता ?, गोयमा ! बलिस्स पं वडरोग्रणिंदस्स २ अध्यितिरियाए परिसाए वीसं देवसहस्सा पण्णता, मज्झिमयाए परिसाए चउवीसं देवसहस्सा पण्णता. बाहिरियाए परिसाए अद्वावीसं देवसहस्सा पण्णता. अव्भितरियाए परिसाए अद्धपंचमा देविसया पण्णता, मजिशमियाए परिसाए चतारि देविसया पण्णता, बाहिरियाए परिसाए अबद्धा देविसया पण्णता, बलिस्स ... ठिईए प्रच्छा जाब बाहिरियाए परिसाए बेबीणं केवहयं कालं ठिई पण्णता ?. गोयमा ! बलिस णं बहरोयणिंदस्स २ अस्मितरियाए परिसाए देवाणं अब्बह्नपत्निओक्सा दिवे पण्णता, मजिसमियाए परिसाए तिशि पिक्रेशेवसाई ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं अञ्चादकाई पलिओवमाई ठिई पण्णता, अस्मितरियाए परिसाए देवीणं अञ्चाद्वाइं पछिजोषमाइं ठिई मण्णता, मजिल्लामियाए परिसाए देशीणं हो पहिल्लोबसाई ठिई पण्णता. बाहिरियाए परिसाए वेवीणं दिवसं पलि-ओवमं ठिई पण्यत्ता, सेसं जहा चमरस्स अग्ररिदस्स अग्ररकुमाररण्यो ॥ ११९ ॥ किंड में सेते ! नागकसाराणे देवाणं अवणा पण्णता? अहा ठावपए जाव दाहिबि-हानि पुच्छित्रका बाद घरणे इत्य नागकुमारिये नागकुमारराया परिक्सड जाव

विहरह ॥ घरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमार्रण्णो कई परिसाओ प॰ ? गोयमा ! तिष्णि परिसाओ, ताओ श्वेव जहा चमरस्स । धरणस्स णं भंते ! णाग-क्रमारिंदस्स णागक्रमाररको अधिभतिरयाए परिसाए वह देवसहस्सा पक्ता जाव बाहिरियाए परिसाए ऋ देविसया पण्णता?, गोयमा! घरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए सद्धि देवसहस्साई मज्ज्ञिमियाए परिसाए सन्तिरं देवसहस्साई बाहिरियाए परिसाए असीइदेवसहस्साई अब्भितरपरिसाए कणनरं देविसयं पण्णतं मज्झिमियाए परिसाए पण्णासं देविसयं पण्णतं बाहिरियाए परिसाए पणवीसं देविसयं पण्णतं । घरणस्स णं ० रक्षो अब्मितरियाए परिसाए डेवाणं केषद्यं कालं ठिई पण्णता? मजिझमियाए परिमाए देवाणं केबइयं कालं ठिई पण्णता? बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णना ? अन्भितरियाए परिसाए देवीणं केवड्यं कालं ठिई पण्णता? मज्झिमियाए परिसाए देवीणं केवड्यं कालं ठिडे पण्णता ? बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवड्यं कालं ठिडे पण्णता ?, गोयमा ! घरणस्त ॰ रण्णो अब्भितरियाए परिमाए देवाणं साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिई पण्णता, मज्ज्ञिमियाए परिसाए देवाणं अद्धपतिओवमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं देस्णं अद्वपत्तिओवमं ठिई पण्णता, अब्भितरियाए परिसाए देवीणं देस्णं अद्भुष्टिओवमं ठिई पण्णता, मज्जिमियाए परिसाए देवीणं साइरेगं चउच्मागपिट-ओवमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं चटमागपलिओवमं ठिई पण्णता, अद्रो जहा चमरस्स ॥ किंह णं भंते ! उत्तरिह्नाणं णागकुमाराणं जहा ठाणपए जाव विहरइ ॥ भूयाणंदस्स णं भंते ! णागकुमारिंदस्स जागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कह देवसाहरसीओ पण्णताओ ? मजिन्नमियाए परिसाए कह देवसाहरसीओ पण्णताओ ? बाहिरियाए परिसाए कह देवसाइस्सीओ पण्णताओ ? अन्भितरियाए परिसाए कड देविसया पण्णता? मजिल्लामियाए परिसाए कड देविसया पण्णता? बाहिरियाए परिसाए कई देविसया पण्णता?, गोयमा! भूयाणंदस्त णं नागकुमारि-दस्स नागकुमाररको अब्भितरियाए परिसाए प्रवासं देवसहस्सा प्रकाना, मजिक्न-मियाए परिसाए सर्डि देवसाइस्सीओ पण्णताओ, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसाहस्तीओ पण्णताओ, अस्भितरियाए परिसाए दो पणवीसं देविसयाणं पण्णता, मजिल्लामियाए परिसाए दो देवीसया पण्णता, बाहिरियाए परिसाए पण्णतरं देविसयं पण्णतं । भूयाणंदस्स णं भेते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्यो अस्भितरियाए परिसाप देवाणं केवड्यं कारूं ठिई पण्णता जाव बाहिरियाए परिसाए देवीणं केवड्यं कालं ठिई पण्णता ?, गोयमा ! भूयाणंदस्स र्ण० अध्भितरियाए परिसाए देवाणं

देसणं पिछक्षोवमं ठिई पण्णता. मजिल्लामियाए परिसाए देवाणं साइरेगं अद्भपछिओवमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं अद्धपलिओवमं ठिई पण्णता, अस्मि-त्तरियाए परिसाए देवीणं अद्भपत्तिओवमं ठिई पण्णत्ता. मजिझमियाए परिसाए देवीणं देस्णं अद्भाव्यमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए देवीणं साइरेगं चउन्मागपितजोबमं ठिइं पण्णता, अद्घो जहा चमरस्म, अवसेसाणं नेणुदेवाईणं महाघोसपज्जवसाणाणं ठाणययक्तव्या जिरवसेसा भाजियव्या. परिसाओं जहा धरणभ्याणंदाणं (सेसाणं भवणबर्दणं) दाहिणिह्याणं जहा धरणस्स उत्तरिक्षाणं जहा भ्याणंदस्स, परिमाणंपि ठिईवि ॥ १२० ॥ कहि ण भंते! वाणमंतराणं देवाणं भवणा (भोमेजा जगरा) पण्णता? जहा ठाणपए जाव विहर्रति ॥ कहि णं भेते ! पियायाणं देवाणं भवणा पन्णता ! जहा ठाणपए जाव बिहरंति कालमहाकाला य तत्थ दुवे पिसायकुमाररायाणो परिवसंति जाव विहरंति. किंह णं भंते ! दाहिणिह्नाणं पिसायकुमाराणं जाव विहरति काले य एत्थ पिसाय-क्रमारिंदे पिसायकमारराया परिक्सइ महिश्वेए जाव विहरइ ॥ कालस्स ण भंते! पिसायकुमारिदस्स पिसायकुमाररण्णो कड परिमाओ पण्णताओ! गोयमा! तिणि परिसाओ पण्यताओ. तंबहा-इंसा तुडिया दररहा, अध्यितरिया ईसा मंजिसमिया तुडिया बाहिरिया दढरहा। कालस्स णं भंते! पिसायकुमारिटस्स पिसायकुमाररण्यो अब्भितरपरिसाए कइ देवसाहस्सीओ पण्णताओ जाव बाहि-रियाए परिसाए कह देविनया पण्णता ?, गो०! कालस्स णं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररायस्य अन्मितरियपरिसाए अद्भ देवसाहरूसीओ पण्णताओ मजिसम-परिसाए इस देक्साहस्तीओ पण्णताओ बाहिरियपरिसाए बारस देक्साहस्तीओ पण्णताओ अब्सितरियाए परिसाए एगं देविसयं पण्णतं मज्जिमियाए परिसाए एगं देविसर्य पण्णतं बाहिरियाए परिसाए एगं देविसर्य पण्णतं । कालस्स णं भंते ! पिसायकमारिंदस्स पिसायकुमाररण्यो अन्मितरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णता ? मजिझमियाए परिसाए देवाणं केवश्यं कालं ठिई पण्णता ? बाहि-रियाए परिसाए देवाणं केवइमं कार्ल ठिईं पण्णाता जाव बाहिरियाए॰ देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णता ?, नीयमा ! कालस्स णं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमा-ररण्यो अब्भितरपरिसाए देवाणं अद्यपिक्षीवमं ठिई पण्यता, मजिसमियाए परि-देवाणं देसूणं अद्भाक्तिओवमं ठिई पण्णता, बाहिरियाए परि॰ देवाणं साइरेगं चडच्यागपलिओबमं ठिई पण्यता, अन्मंतरपरि० देवीणं साइरेनं चडच्यागपिक-ओवमं ठिइं पण्णता, मजिल्लामपरि० देवीणं चउन्भागपलिओवमं ठिइं पण्णता,

बाहिरपरिसाए देवीणं देसूणं चउच्मागपलिओवमं ठिई पण्णता, अद्वो जो चेव चम-रस्स. एवं उत्तरस्यवि. एवं णिरंतरं जाब गीयजसस्य ॥ १२१ ॥ कहि णं मंते ! जोइसियाणं देवाणं विमाणा पण्णता ! कहि णं भंते ! जोइसिया देवा परिवसंति !. गोयमा ! उप्प दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमर्मणिखाओ भूमि-भागाओ सत्तणउए जोयणसए उन्नं उप्पद्दता दसुत्तरसया जोयणबाहत्नेणं. तत्य णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखेजा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा भवंतीतिम-क्खायं. ते णं विमाणा अद्भविद्वगसंठाणसंठिया एवं जहा ठाणपए जाव चंदमसरिया य तत्थ णं जोइसिंदा जोइसराय।णो परिवसंति महिश्विया जाव विहरंति ॥ सूरस्स णं भंते ! जोडसिंदस्स जोडसरण्यो कड परिसाओ पण्यताओ ! गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णनाओ, तंजहा--तंबा तुढिया पन्ना अध्भित्या तुंबा मज्ज्ञिमिया तुढिया बाहि-रिया पट्या. सेसं जहा कालस्स परिमाणं, ठिइंबि । अह्रो जहा चमरस्स । चंदरसबि एवं चेव ॥ १२२ ॥ कहि णं भते ! दीवसमुद्दा ? केवदया णं भते ! दीवसमुद्दा ? केमहाख्या णं भंते ! दीवसमुद्दा ? कि संठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किमागारभावपडीयारा णं भेते ! दीवसमृहा पनता ?. गोयमा ! जंबहीवाइया दीवा लवणाउया समृहा संठाणओ एगविहविद्वाणा वित्यारओ अणेगविहविद्वाणा रुगुणारुगुणे पदुप्पाएमाणा २ पवित्यरमाणा २ ओमासमाणवीईया बहुउप्पलपउमकुसुयणलिणसुभगसोर्गधियपीं-डरीयमहापोंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपप्पालकेसरोवचिया पत्तेयं पत्तेयं पत्रययरवेडया-परिक्खिना पत्तेयं पत्तेयं क्णसंडपरिक्खिता अस्सि तिरियकोए असंक्षेत्रा दीवसमहा सर्यभरमणपञ्जवसाणा पण्णता सम्ााउसो !॥ १२३॥ तत्य णं अयं जंबुहीये णामं दीवे दीवसमुद्दाणं अन्मितरिए सञ्बख्याए वहे तेह्नापूयसंठाणसंठिए वहे रहचक्रबालसंठाणसंठिए वहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए वहे पिकप्रमचंदसंठाण-संठिए एकं जोयणस्यसहरसं आयामविक्खंभेणं तिष्णि जोयणस्यसहरसाइं सोलसं य सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अद्वावीसं च घणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलयं च विकिशितिसाहियं परिक्खेवेणं पण्णते ॥ से णं एकाए जगईए सब्बओ समंता सेपरिक्खित ॥ सा णं जगई क्रष्ट जोगणाई उन्ने उन्होंचं मुळे बारस जोयणाई विक्खंभेणं मुज्जे श्रद्ध जोयणाई विक्खंभेणं उप्पि चत्तारि जोयणाइं विक्संभेणं मुळे विच्छिण्णा मुज्जे संखिता उप्पि तण्या गोपुच्छसंठाण-संठिया सन्वव इरामई अच्छा सन्धा लण्डा घट्टा महा णीरवा विम्मला णिप्यंका निकंकडच्छाया सप्पमा सस्सिरीया सङ्खोया पासाहेवा दरिसनिका अमिस्का पिक्ता ।) सा णं जगई एकेणं जालकदर्णं सम्बद्धो समंता संपरिक्याता ॥ से णं

जालकहए अद्वजीयणं उर्दू उचतेणं पंचधगुसयाई विक्संमेणं सम्बरयणामए अच्छे सण्हे लम्हे बहे महे णीरए णिम्मले णिप्पंके पिकंकडच्छाए सप्पमे [सस्सिरीए] समरीए सङ्खोए पासाईए दरिसणिजे अभिरूवे पिरुवे ॥ १२४ ॥ तीसे णं जगईए उप्पि बहुमज्झदेसभाए एत्थ में एगा सहई पडमवरवेदया प०, सा में पडमवरवेडया अद्धेजोयणं उन्ने उन्नेतेणं पेच धणुसयाई विक्संमेणं सन्वरयणामए जगईसमिया परिक्छेवेणं सम्बरयणामई०॥ तीसे णं पउमवरवेइयाए अयमेयारुवे बण्णावासे पण्णते, तंत्रहा--वहरामया नेमा रिद्वामया पहडाणा वेरुखियामया खंमा मुवण्णरूप्पमया फलगा बदरामया संधी छोहियक्खमईओ सईओ णाणामणिमया कहेबरा कडेबरसंघाडा णाणामणिमया स्वा नाणामणिमया स्वसंघाडा अंकामया पक्ला पक्लबाहाओं जोइरसामया वंसा वंसकवेद्वया य रययामईओ पहियाओ जायस्वमईओ ओहाडणीओ वडरामईओ उवरि पुञ्छणीओ सन्वसेए रययामए छायणे ॥ सा णं पडमबर्वेह्या एगमेगेणं हुमजालेणं एगमेगेणं गवन्खजालेणं एगमेगेणं विविधानालेणं जाव मणिजालेणं (कणयजालेणं रयणजालेणं) एगमेगेणं पटमबरजालेणं सन्बरमणामएणं सन्बन्धो समेता संपरिक्षिता ॥ ते णं जाला तब-षिज्ञलंबसगा सवण्णपयरगमंदिया णाणामणिरयणविविहहारद्वहार् वसोभियसमुद्या इसि अण्णमण्णमसंपना पुन्ताबरदाहिणउत्तरागएहि वाएहि संदाणं २ एजमाणा २ कंपिजमाणा २ लंबमाणा २ पक्षंसमाणा २ सहायमाणा २ तेणं ओरालेणं मणु-ज्येणं कज्जमजिञ्चहकरेणं सद्देणं सन्बओ समंता आपूरेमाणा सिरीए अईव २ उक्सोभेमाणा उद्द विद्वंति ॥ तीसे णं पउमवरवेड्याए तत्व तत्व देसे २ तर्हि तर्हि बहवे हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किण्णरसंघाडा किंप्सिससंघाडा महोरग-संघाडा गंधव्यसंघाडा वसहसंघाडा सव्यरयणामया अच्छा सण्हा रुण्हा पदा महा णीरया चिम्मला जिप्पंका जिक्नंकडच्छाया सप्पभा समरीया सङ्जोबा पासाईया दरिसणिजा अभिस्ता पविस्ता । तीसे णं परामवरवेहयाए तत्य तत्य वेसे २ तहिं ताहें बहवे इयपंतीओ तहेब जाद परिस्वाओ । एवं इयवीहीओ जाब परिस्वाओ । एवं हयमिहणाई जान पिक्साई ॥ तीसे णं परमवरवेड्याए तत्य तत्य देसे २ तिह तिहें बहने परामस्याओं नागस्याओं, एवं असोग० चंपम० सूपवण० बासंति० अस्-मुत्तग॰ कुंद॰ सामख्याओ णियं कुसुमिताओ जाव सुविहत्तपिंडमंजरिवर्डिसगधरीओ सक्वरमणाम्हें को अच्छाको सम्हाको लम्हाको पद्माको महाको गीरमाको गिम्मकाको णिप्पंकाओ विश्वंकरच्छायाओ सव्यमाओ समरीयाओ सउन्योगाओ पासाहगाओ दरिसणिकाको अभिक्ताको परिक्ताको ॥ तीसे मं परमक्रकेष्माए तत्व तत्व,

देसे २ तहिं तहिं बहुवे अक्स्वयसोत्थिया पण्णता सब्बरयणामया अच्छा ॥ से केणद्रेणं भंते ! एवं वृत्तर्—परमबर्वेश्या परमबर्वेश्या ? गोयमा ! परमबर्वेश्याए तत्य तत्थ देसे २ तहिं तहिं बेइयास वेडयाबाहास वेडयासीसफलएस वेडयाप्रशंतरेस खंभेषु खंभबाहासु खंभसीरेसु खंभपुडंतरेसु सुईसु सुईसुहेसु सुईफल्एसु सुईपुडंतरेसु पक्खेमु पक्खवाहासु पक्खपेरंतेमु बहुई उप्पलाई पउमाई जाव सयसहस्सपताई सव्वरयणामयाइं अच्छाइं सण्हाइं लण्हाइं घट्टाइं मद्राइं णीरयाइं णिम्मलाइं निप्पं-काई निकंकडच्छायाई सप्पभाई समरीयाई सउज्जोयाई पासाइयाई दरिसणिजाई अभिरुवाई पढिरुवाई महुया २ बासिकच्छत्तसमाणाई पण्णताई समणाउसी!, से तेणद्रेणं गोयमा ! एवं वृष्ण्य-पडमयरवेड्या २ ॥ पडमवरवेड्या णं अंते ! किं सामया असासया ? गोयमा ! सिय सासया सिय असासया ॥ से केणहेणं भेते : एवं वृषह— सिय सामया सिय असासया ? गोयमा ! द्व्यट्टयाए सासया वण्णपज्ञवेहि गेथपज्ञ-वेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं अमासया, से तेणद्रेणं गोयमा ! एवं व्यवह--सिय सासया सिय अमासया ॥ पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केविषरं होइ ? गोयमा ! ण क्यावि णासि ण क्यावि णार्थि ण क्यावि ण भविस्सइ भृति च भवड य भवि-रसइ य धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवद्विया णिचा पउमवरनेह्या ॥१२५॥ तीसे णं जगईए उपि वाहिं प्रसवरवेदयाए एत्य णं एगे महं वणसंडे पण्णते देसणाई दो जोयणाई चक्कवालविक्संमेणं जगईसमए परिक्सेंबेणं, किण्हे किण्हो-भासे जाव अणेगसगडरहजाणजुरगपरिमोयणे सुरम्मे पासाईए सण्हे रुष्टे महे नीर्ए निप्पंके निम्मले निकंकडच्छाए सप्पमे समिरीए सटजोए पासाईए दरिसधिजे अभिरूवे पडिरूवे ॥ तस्स णं वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिजे भूमिमागे पण्णते से जहानामए-आर्लिंगपुक्सरेइ वा सुईंगपुक्खरेइ वा सरतलेह वा करमलेह वा आयंसमंडलेइ वा चंदमंडलेइ वा स्रमंडलेइ वा उरक्मचम्मेइ वा उसभचम्मेइ वा वराहचम्मेइ वा सीहचम्मेइ वा वग्यचम्मेइ वा विगचम्मेइ वा दीविगचम्मेइ वा अणेगसंककीलगसहस्सवियर् आवडपचावडसेढीपसेढीसोत्यियसोबत्थियपसमाणवद्ध-माणमच्छंडगमगरंडगजारमार्फ्कावलिपउमपत्तसागरतरंगवासंतिळयपउमलयभति-चित्तेहिं सच्छाएहिं समिरीएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह्रपंचनण्येहिं तणेहि व मणीहि व उनसोहिए तंत्रहा--किण्डेहिं जान सक्षिक्षेष्टं ॥ तस्य णं जे ते किण्हा तणा य मणी य तेसि णं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, से अहानामए--जीनूएइ वा अंजजेइ वा संजणेह वा कजलेह वा मसीह वा गुलियाइ वा गवलेह वा गवलगुलियाइ वा ममरेह वा भगराविक्याह वा भगरपत्तगयसारेह वा जंबफलेह वा बहारिहेह वा

परपुष्ट्रपुर वा गएह वा गयकलमेह वा क्रष्ट्रसप्पेह वा क्रष्ट्रकेसरेह वा आगासचि-ग्मलेड वा कम्हासोएड वा किण्डकणवीरेड वा कम्हबंधजीवएड वा. भवे एयारुवे सिया ?, गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे, तेसि णं कण्हाणं तणाणं मणीण य इत्तो इद्वतराए चेन कंततराए चेन पियतराए चेन मणुक्कातराए चेन मणामतराए चेन नक्कोणं पण्णते ॥ तत्थ णं जे ते णीलगा तणा य मणी य तेसि णं इमेयाहवे कण्याबासे पण्णते, से जहानामए-मिंगेइ वा भिंगपतेइ वा चासेइ वा चासिपळेइ वा सुएइ वा सुयपिच्छेड़ वा णीलीइ वा णीलीमेएइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा उचंतएइ वा वणराईइ वा हलहरवसणेइ वा मोरम्गीवाइ वा पारेवयगीवाइ वा अयसिकुसुमेइ वा अंजणकेसिगाकुमुमेह वा णीलुप्पलेह वा णीलासोएइ वा णीलकणवीरेड वा णीलबंधजीवएइ वा, भवे एयास्वे सिया?, जो इजड्डे समद्दे, तेसि णं णीलगाणं तणाणं मणीण य एतो इद्वतराए चेव कंतनराए चेव जाव वण्णेणं पण्णते ॥ तत्य णं जे ते लोहियगा तणा य मणी य तेसि णं अयमेयाह्वे कण्णावासे पण्णते. से जहाणामए---ससगरुहिरेइ वा उरन्मरुहिरेइ वा णरुरुहिरेइ वा बराइरुहिरेइ वा महिसरुहिरेड वा वालिंदगोवएड वा बालदिवागरेड वा संझब्मरागेड वा गुंजद्धराएड वा जाइहिंगुळ्एइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालंकरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खा-रसएइ वा किमिरागेइ वा रत्तकंबलेइ वा चीणपिद्धरासीइ वा जास्यणकृष्टमेड वा किंसुयकुनुमेइ वा पालियायकुनुमेइ वा र्त्तुप्पलेइ वा रत्तासोगेड वा रत्तकणयारेइ वा रमबंधुजीवंड वा, भवे एयारूवे सिया है, नो इणड्रे समद्रे, तेसि णं लोहियगाणं तणाण य मणीण य एसी इड्रतराए चेव जाब वण्णेणं पण्णते ॥ तत्थ णं जे ते हालिहगा तमा य मणी य तेसि णं अयमेयाहवे वण्णावासे पण्णते. से जहाणामए---चंपएड वा चंपगच्छाहीड वा चंपयमेएड वा हालिहाड वा हालिहमेएड वा हालिहगुलियाड वा इरियाछेड् वा हरियाछमेएइ वा हरियालगुलियाइ वा चिउरेइ वा चिउरंगरागेइ वा चरक-णएइ वा वरकणगनिषसेइ वा सुवण्णसिप्पिएइ वा वर्पिरसवसणेइ वा सल्लहकुत्तमेइ वा चंपगकुसुमेइ वा कुहुं दियाकुसुमेइ वा (कोरंडगदामेइ वा) तडउडाकुसुमेइ वा घोसाडियाकुसुमेइ वा सुबन्धजुडियाकुसुमेइ वा सुहरिजयाकुसुमेइ वा [कोरिंटवरमञ्च-दामेइ वा] बीयगकुन्तुमेइ वा पीयासीएइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयवंधुजीएइ वा, भने एयास्त्रे सिया है, नी इणद्वे समद्वे, ते गं हालिहा तणा य मणी य एती इद्वयरा चेव जाव वण्णेणं पण्णता ॥ तस्य णं जे ते सुकिह्नगा तणा य मणी य लेसि णं अयमेयास्त्रे कणावासे पण्यते, से जहानासए-अंकेड वा संबोह वा चंदेड वा उंदेश वा अग्रमें(मुप्)श वा इचरएश वा (दहिषकेश वा सीरेश वा सीरपूरेश वा)

इंसाबलीड वा कोंचावलीड वा हारावलीड वा बलायावलीड वा चंदावलीड वा सारह-ववलाहएइ वा भंतभोयरूपपट्टेइ वा सालिपिद्धरासीइ वा कुंद्पुप्फरासीइ वा कुस्य-रासीइ वा सुक्किवाडीइ वा पेहणमिंजाइ वा बिसेइ वा मिणालियाइ वा गयदंतेइ वा लवंगदलेड वा पोंडरीयदलेड वा सिंद्वारमह्नदामेर वा सेयासीएर वा सेयकणवीरैह वा सेयबंधुजीएइ वा, मने एयारूने सिया ?, णो इणहे समहे, तेसि णं सुकिहाणं तणाणं मणीण य एतो इट्टतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णते ॥ तेसि णं मंते ! तणाण य मणीण य केरिसए गंथे पण्णते ? से जहाणामए-कोट्टपुडाण वा पत्तपुडाण वा चोयपुडाण वा तगरपुडाण वा एलापुडाण वा किरिमेरिपुडाण वा] संद्रणपुडाण वा कंक्सपृहाण वा उसीरपृहाण वा चंपगपुहाण वा महस्रगपुहाण वा दमणगपुहाण वा जाइपुडाण वा जहियापुडाण वा महियपुडाण वा णोमालियपुडाण वा वासंति-युद्राण वा केयहपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा पाडलपुडाण वा अणुवायंसि उध्भिज-माणाण वा णिक्सिजमाणाण वा कुट्टिजमाणाण वा रुविजमाणाण वा उक्तिरिजमाणाण वा विकिरिज्ञमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा मंडाओ वा भंडं साहरिज्जमाणाणं ओराला मणुण्णा घाणमणणिव्युहकरा सव्वको समंता गंवा अभिणिस्सवंति, भवे एयास्वे सिया ?, जो इजड्डे समद्धे, तेसि णं तजाणं मजीज य एतो उ इक्ष्तराए चेव जाद मणामतराए चेव गंधे पण्णते ॥ तेसि षं भंते ! तणाण य मणीण य केरिसए फासे पण्णते ? से जहाणामए-आईणेंड वा रूएड वा वृरेड वा णवणीएड वा हंसगब्सत्त्रीह वा सिरीसकुद्धमणिचएइ वा बालकुसुवपत्तरासीइ वा, भवे एवास्वे सिया ?, जो इजड़े समड़े, तेसि जं तजाज य मजीज य एती इड्डतराए चेव जाव फासेणं पण्णते ॥ तेसि गं भंते ! तथाणं पुव्यावरदाहिणउत्तरागएहिं बाएहिं मंदायं मंदायं एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं स्रोभियाणं चालियाणं फंदियाणं घडियाणं उदीरियाणं केरिसए सहे पण्णते ! से जहाणामए-सिवियाए वा संवमाणियाए वा रहवरस्स वा सङ्गतस्स सज्ज्ञयस्स सबंद्रयस्स सतोरणवरस्स समंदिषोसस्स सिंबिकिणहेमजालपेरंतपरिकित्तस्स हेमवयित्तविकित्ततिनिसक्णगनिज्ञत्तदाद्या-गरस सुपिणिद्धार्यमंडलधुर्गगरस कालायमयुक्तगणेमिजंतकम्मरस वाइण्णवरतरग-मुसंपरत्तसः कुरालणर्क्तेयसारहिमुसंपरिगहियसः सर्त्यवत्तीसतोण(परि)मंडियसः सकंकडवर्डिसगस्त सचावसर्पहर्णावरणभरियस्स जोहजुद्धसञ्चरस रायंगणंति वा भंते उर्राप्त वा रम्मंति वा मणिकोहिसतलंति अभिक्सणं २ अभियहिक-माणस्स वा विविध्यमाणस्स वा [पस्तवरतरंगस्य चंडवेगाइद्वस्स] ओहाला मणुष्णा सम्प्रमणिम्बुइक्टा सम्बन्धो समंता सहा अभिजिस्सवंति, सबै एयास्त्रे

सिवा ?, णो इणद्वे समद्वे, से जहाणामए-वियालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अंके सुप्त्रद्वियाए चंदणसारकोणपिडचिह्याए कुसलणरणारिसंपगिहयाए पक्षोसपन्तर-कलसमयंति मेदं मंदं एइयाए वेइयाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा कम्णमणणिब्बुहकरा सन्त्रओ समंता सहा अभिणिस्सवंति भवे एयाहवे सिया ?, जो इण्डे समहे, से जहाणामए-किन्गराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्याग वा भद्दसालवणगयाण वा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाण वा हिमवंतमलयमंदरगिरिगृहसमण्यागयाण वा एगओ सहियाणं संमुहागयाणं समु-विद्वार्ण संनिविद्वार्ण पसुइयपक्षीलियाणं गीयरइगंघव्यहरिसियसणाणं गेजं फ्लं क्रस्यं गेयं पयविद्धं पायविद्धं उक्सित्तयं पवत्तयं मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमण्णागयं अहरससुसंपर्कतं छहोसविष्यमुकं एकारसगुणालंकारं अहुगुणोववेयं गुंजंतवंसकुहरोवगृढं रनं तिट्टाणकरणसुद्धं महर्र समं सुरुठियं सकुहरगुंजंतवंसतंतीनलताललयगाहसु-संपर्जतं मणोहरं मजयरिभियपयसंचारं मुरइं सुणइं वरचारुहवं दिव्वं नष्टं मजं गेयं पगीयाणं, भवे एयारूवे सिया?, इंता गोयमा! एवंभूए सिया ॥१२६॥ तस्म णं वणसंडस्स तत्थ तत्य देसे २ तहिं तहिं बहवे खुडा खुडियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुंजालियाओ दीहियाओ (सर्सीओ) सर्पतियाओ सरसर्पतीओ बिल्पंतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ बहरामयपासाणाओ तवणिख्यमयतलाओ वेरिलियमणिकालियपडलफ्बोयडाओ सुनण्णसुन्म(ज्झ)रययमणिवालुयाओ सहोया-रायुजताराओ णाणामणितित्वसुबद्धाओ चाड(चड)क्षोणाओ समतीराओ आणुपुष्य-सुजायबप्पगंभीरसीयरूजलाओं संक्रणपत्तिभसम्पालाओं बहुउप्पलकुम्यणिलपुभ-गसोगंघियपाँडरीयसयपनसहस्सपत्तपुक्षकेसरोवचियाओ छप्पयपरिभुजमाणकमलाओ अच्छविमलस्रतिलपुण्णाओ परिहृत्यभ्रमंतमच्छक्रच्छमअणेगसरणमिहणपविचरि-याओ पत्तेयं पत्तेयं पडमवरवेडयापरिक्खिताओ पत्तेयं प्रतेयं वणसंखपरिक्खिन ताओ अप्पेगइयाओ आसबीदाओ अप्पेगइयाओ वारुणोदाओ अप्पेगइयाओ खीरोदाओ अप्पेगइबाओ घओदाओ अप्पेगइयाओ [इक्खु]कोदोदाओ (जमयरस-समरसोदाओ) अप्येगइयाओ पगईए उद्दर्ग(अमय)रसेणं पण्णताओ पासाइयाओ ४, तासि णं खुड़ियाणं वायीणं जाव बिरूपंतियाणं तस्य २ देसे २ तर्हि २ जाव बहवे तिसोवाणपिकस्यमा प्रजाना । तेसि यां तिसोबाणपिकस्यमाणं अयमेयास्ये वण्णावासे पण्णते, तंजहा--वहरामवा नेमा रिद्वामया पहडाणा वेरुलियामया खंमा सुवण्य-रुप्पामया परक्या बहुरासया संघी लोडियबखमईओ सुईओ जाणासमिसया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ पासाहयाओ ४ ॥ तेसि यं तिसोबाणपिकस्वगाणं पुरक्षो पत्तमं र

तोरणा प॰ ॥ ते णं तोरणा णाणामणिमयखंमेसु उवणिविद्वसण्णिवहा विविद्वसूर्याः तरोवचिया विविद्वताराख्योवचिया ईहामियउसभतुरगणरमगरविह्नग्वास्माकिण्यर-खंसुरगयवइर वेह्यापरिगया मिरामा रुरुसर मच भरकुं जरवणलयप उमलय भत्ति चिता विज्ञाहरजमलजुयळजंतजुताविव अचिसहरसमालणीया रूक्गसहस्सक्रिया मिस-माणा भिब्भिसमाणा चक्खुह्रोयणलेसा सुहुफासा सस्सिरीयस्वा पासाईया 😮 🛭 तेसि णं तोरणाणं उप्पं बहुवे अद्भवसंगलमा पण्णता तं - सोत्ययसिरिवच्छणंदियावत्त-वद्वमाणभहासणकलममच्छदप्पणा सन्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पिक्वा ॥ तेसि णं तोरणाणं उप्पि बहुवे किण्ह्वामरज्ज्ञया नीलवामरज्ज्ञया लोहियवामरज्ज्ञया हालिह्चामरञ्ज्ञया युक्तिक्षचामरञ्ज्ञया अच्छा सण्हा रूप्पपट्टा वहरदंडा जलगामल-गंधिया सुरुवा पासाइया ४ ॥ तेसि णं तोरणाणं उप्पि बहुवे छनाइछत्ता पडागाइ-पडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सवतहत्थगा सम्बर-यणामया अच्छा जाव पिंडह्या ॥ तासि णं खुड्डियाणं वात्रीणं जाव निरूपंतियाणं तत्थ नत्थ देसे २ तिहं तिहं बहुचे उप्पायपन्वया जियहपन्वया जगहपन्वया दारु-पव्ययमा दममंडवमा दममंचमा दममालमा दमपासायमा उत्तरा खुळा खहहडमा अंडोळगा पक्संडोलमा सम्बर्यणामया अच्छा जाव पिरुष्टा ॥ तेमु णं उप्पाय-पव्यएस जाव पक्खंदोलएस बहुवे हंमासणाई कोंचासणाई गरूलासणाई उण्णया-सणाई पणयासणाई दीहासणाई भहासणाई पबन्तासणाई मगरासणाई उसमासणाई सीहासणाई पत्रमासणाई दिसासोबत्थियासणाई सन्बरयणामयाई अच्छाई सण्हाई लण्डाइं चद्राइं मद्राइं णीरयाइं णिम्मलाइं निप्पंकाइं निकंकडच्छायाइं सप्पभाइं समि-रीयाइं सउज्जोयाइं पासाइयाइं दरियाणिजाइं अभिरूवाइं पिडेरूवाई ॥ तस्स णं वणसंडरस तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तहिं बहुवे आलिघरा मालिघरा कमलिघरा लयाचरा अच्छणचरा पेच्छणघरा मज्जणघरगा पसाहणघरगा गब्भघरगा मोहण-घरमा सालघरमा जालघरमा कुसुमघरमा नित्तघरमा गंधववघरमा आर्यसघरमा सन्वरयणागया अच्छा सण्हा लण्हा घडा मद्रा णीरया णिम्मला णिप्पंका निकंकड-च्छाया सप्पभा समिरीया सङ्बोया पासाईया दरिसणिजा अमिस्वा परिस्था ॥ तेयु ण आरु तरएस जाव आयंसघरएस बहु इंसासणाई जाव दिसासोवस्थिया-सणाई सम्बर्यणामयाई जाब पिक्सवाई ॥ तस्स णं बणसंडस्स सस्य तस्य देसे २ तर्हि तर्हि बहुवे आइमंडवमा जुडियामंडवमा मिक्रियामंडवमा णबमालियामंडवमा वासंतीमंडवगा द्धिवासुवामंडवगा स्रिक्षिमंडवगा तंथोलीसंडवगा सहियासंडवमा णागलयामंडवया अइमुत्तमंडवया अप्फोयामंडवया माळ्यामंडवया सामलयामंडवया

सम्बर्यणामया मिर्च ब्रह्मसिया णिर्च जाव पहिल्या ॥ तेसु णं जाइमंडवएसु जाव सामल्यामंडवएस बहुवे पुढविसिलापहुगा पुण्णता. तंजहा-अप्येगड्या इंसासण-संदिया अप्ये॰ कोंचासणसंदिया अप्ये॰ गरुलासणसंदिया अप्ये॰ उष्णयामणसंदिया अप्पे॰ पणबासणसंठिया अप्पे॰ दीहासणसंठिया अप्पे॰ महासुणसंठिया अप्पे॰ पक्खासणसंठिया अप्पे॰ मगरासणसंठिया अप्पे॰ उसभासणसंठिया अप्पे॰ सीहासणसंठिया अप्पे॰ परामासणसंठिया अप्पे॰ दिसासोत्थियासणसंठिया॰ प॰. तत्य बहवे वरसयणासणविसिद्धसंठाणसंठिया पण्णता समणाउसो ! आइण्णगरूय-बूरणवणीयतूलफासा मउया सम्बरयणामया अच्छा जाव पष्टिस्वा । तत्य णं बहवे वाणमंतरा देवा देवीओ य आसयंति सर्यति चिद्वंति णिसीयंति तुयदंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति प्रापोराणाणं समिण्णाणं सुपरिकेताणं समाणं कहाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पचणभवमाणा विद्वरंति ॥ तीसे णं जगईए उपि अंनो पउमबरवेदयाए एत्य णं एगे महं वणसंड पण्णते देसणाई दो जोयणाई विक्खंभेणं वेड्यासमएणं परिक्खेवेणं किण्हे किण्होभासे वणसंडबण्णाओ मणि-तणमहनिहणो जेयव्यो. तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा देवीओ य आसयंति सयंति चिद्रंति णिसीयंति तयहंति रमंति ठळंति कीडंति मोहंति परा पोराणाणं सचिष्णाणं स्परिकंताणं सभाणं कहाणाणं कडाणं कम्माणं कहाणं फलवित्तिविसेसं पञ्चणभव-माणा विहरंति ॥ १२७ ॥ जंबहीवस्स णं भंते ! चीबस्स कड दारा पण्णता ? गोयमा । चनारि दारा पण्णला, तंत्रहा—विजय वेजयंते जयंते अपराजिए॥ १२८॥ कहि णं अंते ! जंबहीवस्स वीवस्स विजए नामं दारे पण्णते ? गोयमा ! जंबहीबे दीवे मंदरस्य पट्यबस्स प्रतिधमेणं पणयालीसं जोबणसहस्साइं अबाहाए जंबुहीवे दीने परच्छिमपेरंते लक्णसमृहपुरच्छिमद्भस पचित्रभेणं सीयाए महाणईए उपि एत्य णं जंबदीबस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णते अद्र जोयणाइं उन्नं उन्नतेणं चतारि जोयणाई विक्खंमेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेए वरकणगथमियागे ईहामि-यउसमृतुरगन्रमगर्विहृगवालगकिम्णरुक्तरभन्मरकंजरवणलयपउमलगमितिको संभग्गयवरवहरवेहवापरिगयाभिरामे विज्ञाहरजमलजुगलजंतजुते इव अचीसहस्समा-लिणीए स्वगसङ्स्सक्तिए भिसमाणे मिन्भिसमाणे चक्छहोयणकेसे सहसान रीयरुवे बच्चो दारस्स तस्सिमो होइ तं०--वइरामया णिम्मा रिद्वामया पहडाणा वेरिक्रियामका संभा जागरूवीविषयपबर्एंचवण्णमणिरयणकोष्टिमतके इंसगन्ममण पहुए गोमेजमए इंद्रक्तींडे स्वेहियस्याम्बंभो दारचेदीओ जोइरसामए उत्तरंगे वैरुलियामया कवाना कररास्या संबी कोडियक्समईओ सईओ जाणासनिमया

समुग्गमा वहरामई अग्गलाओ अग्गलपासाया वहरामई आवत्तणपेढिया अंकृतर-पासए णिरंतरियधणकवाडे भित्तीस चेव भित्तीगुलिया छप्पण्या तिष्णि होंति गोमाणसी तत्तिया णाणामणिरयणवालम्बगलीलद्वियसालिमंजियागे वहरामए कृष्टे रययामए उस्सेहे सञ्चतविषाज्ञमए उह्रोए णाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसम-लोहियन्खपिडवंसगर्ययभोग्मे अंकामया पक्खवाहाओ जोइरसामया वंसा वंसकः वेक्ष्मा य रययामई पट्टियाओ जायस्वमई ओहाडणी वहरामई उनरि पुञ्छणी सन्बसेयरययामए छायणे अंकमयकणगकुडतवणिज्ञथ्भियाए सेए संखनलविमल-णिम्यलदहिषणगोखीरफेणस्ययणिगरप्पगासे तिलगरयणद्वनंदिकते णाणामणिमय-दामालंकिए अंतो य बहिं च सण्हे तवणिज्ञस्हलबालुयापत्थडे मुहण्कासे सस्सि-रीयरूवे पासाईए ४ ॥ विजयस्य णं दारस्य उभओ पासि दुहुओ णिसीहियाए दो दो चंदणकलसपरिवासीओ पण्णताओ, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइद्वाणा सुरभिवरवारिपिडिपुण्णा चंद्रणक्यचन्नागा आबद्धकंदेगुणा पुरुमुप्परुपिहाणा सव्वरय-णामया अच्छा सण्हा जाव पहिरूवा महया महया महिंदकुंभसमाणा पण्णता समणाउसो ! ॥ विजयस्स णं दारस्य उभओ पासि दृहओ जिसीहियाए दो दो जागर्दन-परिवादीओ, ते गं णागदंतगा मुनाजालंतर सियहेमजालगवनस्वजालसिंखिणीघंटा-जालपरिक्सिमा अञ्भूरगया अभिणिसिद्रा तिरियं मुसंपगहिया अहेपण्णगदस्या पण्णगद्धसंठाणसंठिया सञ्बरयणामया अच्छा जाव पहिरूवा महया महया गयदंत-ममाणा प॰ समणाउसो ! ॥ तेनु णं णागदंत्रामु बहुवे किण्हुसुत्तवद्ववरद्यारियमहृदाम-कळावा जाव सक्रिष्ठसमाबद्धवरघारियमञ्जदामकळावा ।। ते णं दामा तवणिजलंबसंगा णाणामणिरयणविविद्दहारद्धहार (उवसोभियसमुदया) <u>सुवण्णपयरगमंडिया</u> सिरीए अईव अईव उवसोमेमाणा उबसोमेमाणा चिद्वति ॥ तेसि णं णागदंतगाणं उनरिं अण्णाओ दो दो णागदंतपरिवाडीओ पण्णताओ. तेसि णं णागदंतगाणं मुत्ताजालंतरूसिया तहेव जाव समणाउसो!। तेस णं णागदंतएस बहवे रययामया रिक्रमा पण्णता, तेमु णं रययामएसु सिक्क्ष्मु ब० वेक्लियामईस्रो ध्वधडीको पण्णताओ, तंजहा-ताओ णं धूवचडीओ कालागुहपनरकुंदरकतुरक्रधूवमचमधंतर्ग-धुद्भयामिरामाओ सुगंधवरगंघगंधियाओ गंधवहिम्याओ ओराडेणं मणुण्णेणं काण-मणणिव्युद्दकरेणं गंधेणं तप्पएसे सम्बक्तो समंता खापूरेमाणीओं आपूरेमाणीओं अईव अईव सिरीए जाब चिट्नंति ॥ विजयस्म णं दारस्स उभनो पासि दुइनी णिसीहियाए दो दो सालिमंजियापरिवाडीको पण्याताओं. ताओ णं सालमंजियाओं लीलदियाओ सपगदियाओ सवलंकियाओ गाणागारवसणाओ पाणागहिपगदाओ

सुद्वीरोज्यमञ्ज्याओ आमेलगजमलजुगलबहिअन्मुण्णयपीणरहयसंठियपओहराओ रतावंगाओ असिबकेसीओ मिजविसवपसत्यत्वसणसंवेक्षियगासिरवाओ ईसिं असी-गवर्पायवसमुद्वियाओ वामहत्यगहियग्गसालाओ इंसि अद्वच्छिक्डन्सविदिएहिँ रुसेमाणीओ इव चक्खुहोयणकेसाहि अण्णमण्णं सिजमाणीओ इव पुढविपरिणामाओ सासयभावमुकायाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंददसमनिडालाओ चंदाहि-यसोमदंसणाओ उका इव उज्जोएमाणीओ विज्ञुभणमरीइस्र्दिप्पंततेयअहिययरसंनि-गासाओ सिंगारागारचारवेसाओ पासाइयाओ ४ तेयसा अईव अईव सोमेमाणीओ सोमेमाणीओ चिद्वंति ॥ विजयस्स णं दारस्स उभओ पासि दुहुओ णिसीहियाए दो दो जालकहगा पण्णता, ते णं जालकहगा सम्बर्यणामया अच्छा जाव परि-रूवा ॥ विजयस्स णं दारस्स उमओ पासि दुहुको णिसीहियाए दो दो घंटापरिवादीओ पण्णताओ. तासि णं घंटाणं अयमयास्ये बण्णावामे पण्णते, तंजहा-जंबूणयमहंओ घंटाओ बहरामईओ लालाओ णाणामणिमया घंटापासगा तवणिजमईओ संकलाओ रययामईओ रजूओ ॥ ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ इंसस्सराओ कोंक्सराओ पंदिरसराओ पंदिचोसाओ सीहस्मराओ सीहघोसाओ मंजुस्सराओ मंत्रघोसाओ मुस्सराओ मुस्सरिकाधोसाओ ते पएसे ओराहेणं मणुण्णेणं कण्णमणनिष्त्रहकरेणं सहेणं जाव चिह्नंति ॥ विजयस्य णं दारस्य उभयो पासि दुहुओ णिसीहियाए दो दो चणमालापरिवाहीओ पण्णत्ताओ, ताओ णं वणमालाओ णाणादुमलगाकिसलयपञ्चवसमाउलाओ छप्पयपरिभुजमाणकमलसोभंतसस्मिरीयाओ पामाइयाओ॰ ते पएसे उरालेणं जाव गंधेणं आपूरेमाणीओ जाव चिद्वंति ॥ १२९ ॥ विजयस्स णं दारस्स उमओ पासि दुहओ णिसीहियाए दो दो पगंठगा पण्णता, ते णं फांठगा चत्तारि जोयणाई आयासनिक्संमेणं दो जोयणाई नाहहेणं सन्वनहराममा अच्छा जाब पढिक्वा ॥ तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं पासायबर्डिसगा पण्णता, ते ण पासायवर्डिसगा चत्तारि जीमणाई उद्गं उचतेणं दो जीमणाई आया-मविक्संमेणं अन्युकायम्सियपहसियाविव विविह्मणिर्यणभतिवित्ता बाउद्भयविज-यवेजमंतीपडागच्छताइच्छतक्षिया तुंगा गयणयलमभिलंघमाण(णुलिहंत)सिहरा जालंतरस्यूणपंजरान्मित्यस्य मणिकणयश्मियागा वियसियसयवत्तर्पोडरीयतिलयर-यणद्वनंदिकता णाणामणिनयदामार्शकेया अंतो य बाहि च सण्हा तवणिजस्ट्स-वालुयापरवडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया ४ ॥ देखि ण पासायवर्डिसगाणं उद्योग परमस्त्रा जाव सामस्त्राभक्तिचिता सञ्चतविष्यममा अच्छा जाव परि-रूवा ॥ तेसि वं पासामविंसमार्थं प्रतेयं प्रतेयं अंतो बहुसमरमणिजे भूमिमारी १२ सत्ता०

पकारें, से बहाणामए आलिंगपुरुखरेड़ वा जाव मणीहिं उवसोशिए, मणीण गंधी बण्णो फासो य नेबब्दो ॥ तेसि णं बहुसमरमणिजाणं भूमिमाराणं बहुमजसदेसमाए पत्तेयं पत्तेयं मिणपेडियाओं पण्णताओं. ताओं णं मिणपेडियाओं जोयणं आसामबि-क्खंग्रेणं अद्वजोयणं बाहल्लेणं सञ्बरयणामङ्को जाव परिस्वाओ, तासि णं मणिपेहि-याणं उचरिं पत्तेयं २ सीद्वासणे पण्णते. तेसि णं सीहासणाणं अयमयास्ये बण्णावासे पण्णते. तंजहा-तद्यणिखमया चक्कवाला रययामया सीहा सोवण्णिया पाया जाणाम-णिमयाइं पायसीसगाइं जंबूणयमयाइं गत्ताइं वहरामया संधी नाणामणिमए वेश्व, ते णं सीहासणा ईहामियउसम जाव पडमलयभितन्तिता ससारमारोवइर्यावविहमणिरयण-पायपीडा अच्छरगमि उमम्रगनवतयक्रसंतिक्षसीहकेसरप्यत्थयाभिरामा उविचयस्थे-मद्गुक्रयपिक्वायणा सुविरद्वयरयत्ताणा रत्तेसयसंवया मरम्मा आईणगस्यवरणवणी-यत्लमउयफासा मचया पासाईया ४ ॥ तेसि णं सीहासणाणं उपि पत्तेयं पत्तेयं विज-यद्से पण्णते, ते णं विजयद्सा सेया संखंककुंददगर्यअनयमहियफेणपुंजस्त्रिगाना सञ्बदयणामया अच्छा जाव पिहरूवा ॥ तेसि णं विजयवृद्याणं बहुमञ्जादेमभाए पत्तेयं पत्तेयं वहरामया अंकुसा पण्णता, तेसु णं वहरामएस अंकुसँस पत्तेयं २ कुंभिका सुत्ता-दामा पण्णना, ते णं कुंभिका मुत्तादामा अनेहिं चउहिं चउहिं नदद्वचाप्यमाणमेतेहिं अद्धकं भिक्केहिं मुत्तावामेहिं सञ्बाओ सर्गता संपरिक्खिता, ते णं दामा तबणि अलंब-सगा सुब्रुणपयरगमंडिया जाव चिहुंति, तेसि णं पासायवर्डिसगाणं उप्पे बहुवे अहू-द्रमंगलगा पण्णता सोत्यिय नहेव जाव छत्ता ॥ १३०॥ विजयस्स णं दारस्स उभओ पासि दुहुओ णिसीहियाए दो दो तोरणा पण्णना, ते णं तोरणा णाणामणिमया तहेव जाब अद्भद्रमंगलगा य छत्ताइछना ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरश्रो दो दो सालमंजि-याओ पण्णनाओ, जहेव णं हेट्टा तहेव ॥ तेसि णं तीरणाणं पुरश्रो दो दो णानदं-तमा पण्णना. तं णं णागदंतमा मुत्ताजालंतरूसिया तहेव, तेसु णं णागदंतएसु बहुवे किण्हा सत्तवहवरचारियमञ्जदामकलावा जाव चिहंति ॥ तेसि णं तोरणाणं प्रस्रो दो दो हयसंघाडगा जाव उसमसंघाडगा पण्णता सव्वरयणामया अच्छा जाव परिस्वा, एवं पंतीओ वीहीओ मिहणगा, दो दो पडमलयाओ जाब परिस्वाओ, तेसि णं नोरणाणं पुरक्षो हो हो अनुसायसोवत्थिया पण्णता ते णं अवस्त्रमसोवत्थिया सञ्बरयणामया अच्छा जाब पहिल्ला. तेसि णं तोरणाणं परको दो दो चंदणकल्या पण्णता, ते णं चंदणकलसा वरकमलपङ्काणा तहेव सञ्वरमणामया जाव परिरुग समणाउसी ! ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरको हो दो मिंगारगा पण्णशा बरकमल्यः-द्वाणा जाव सम्बर्धणामया अच्छा जाव परिस्वा महत्या मनगयमहागिहस-

माणा पण्णता समणाउसी ! ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरखी दो दो आयंसगा पण्णता, तेसि णं आयंसगाणं अयमेयारूवे बण्णावासे पण्णते. तंत्रहा-तविश्वासया पगंठगा वेरुकियमया छरहा (शंभया) वहरासया वरंगा जाजामजिसया वलक्खा अंकमया मंडला अणोघसियनिम्मलासाए छायाए सब्बओ चेब सम्प्रबद्धा चंदमंडलपिन-गासा महया महया अद्भवायसमाणा पण्णता समणाउसो ! ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो बहरणामा बाला पण्णता. ते णं बाला अच्छतिच्छडियसालितंदलनह-संदद्भवहपिंडपुण्णा चेव चिंद्रंति सम्बजंब्रणयामया अच्छा जाव पबिरुवा महया महया रहचक्रसमाणा प॰ समणाउसो ।।। वेसि णं तीरणाणं पुरओ दो दो पाईओ पण्णताओ, ताओ णं पाईओ अच्छोदयपिहत्थाओ जाणाविहपंचवण्णस्स फलहरियगस्स बहुपिंडपुण्णाओ विव चिद्रंति सञ्बरयणामईओ जाव पंडिस्वाओ महया महया गोकलिंजगचकसमाणाओ पण्णताओ समणाउसो ! ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सुपद्भगा पण्णता. ते णं सुपद्भगा णाणाविहपंचवण्णपसाहणगर्भडविरहरा सन्बोसहिपडिपुण्णा सन्बरयणामया अच्छा जाब पडिस्या ।। तेसि णं तोरणाणं पुरको दो दो मणोगुलियाओ पण्णताओ ॥ तास णं मणोगुलियास बहुवे सुबण्ण-रूपामया फलगा पण्णता, तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलएसु बहुवे बहुरामया णाग्दंतचा मुत्ताजालंतरूसिया हेम जाव गयदंतसमाणा पण्णता, तेसु णं वहराम-एस जागदंतएम् बहवे रययामया सिक्स्या पण्णता. तेस जं रययामएस सिक्स्स वहवे वायकरगा पण्णता ॥ ते णं वायकरगा किण्हसत्तरिक्रगवत्थिया जाव सकि-**इस्तासिकगवत्यिया सब्दे देशलियामया अच्छा जाद परिह**्वा ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पण्णता, से जहाणामए--रण्णो चाउरंतचक-विदिस्स चित्ते रयणकरंडे वेठलियमणिफालियपडलपश्चीयडे साए प्रभाए ते पएसे सम्बंभो समंता ओभासङ उज्जोवेड तावेड प्रभासेड, एवामेव ते चित्तरयणकर-हगा पण्णता वेहिकयपडलप्योगहा साए पमाए ते पएसे सन्वयो समंता ओमा-सेन्ति जान प्रभासेन्ति ॥ तेसि णं तोरणाणं प्रस्को दो दो हयकंठमा जान दो दो उसमक्टमा प्रकाता सब्बरयणाम्या अच्छा जाव पहिल्वा ॥ तेस णं इय-कंठएस जाव उसमकंठएस हो हो पुष्फचंगेरीओ, एवं मह्नगंधवण्णचुण्णवस्थामरण-चंगेरीओ सिद्धत्वचंगेरीओ सम्बर्धणामईओ अच्छाओ जाव परिस्वाओ ॥ तास णं पुष्पाचीरीस जाब सिद्धत्यचीरीस दो हो पुष्पपडलाई जाब सि॰ सब्ब-रबणामयाई जाब पश्चिमवाई ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरक्षो दो दो सीहासणाई पण्णताई, वेसि णं सीहासमाणं अयमेगारूचे बण्णावासे पण्णते तहेव जाव पासाईया

४ ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरुषो दो दो कप्पछदालता पण्णता, ते णं छता केरिक-मिसंतविमलदंडा जंबूणयकश्चियाबद्दसंघी मुत्ताजालपरिगया अद्वसद्दस्वरकंत्रण-सलागा दहरमञ्यक्षगंधी सब्बोजयक्षरिमसीयञ्च्छाया मंगलभृतिचिता चंदागारोबमा वहा ॥ वेसि णं तोरणाणं पुरक्षो हो हो चामराओ पण्णताओ, ताओ णं चामराओ (चन्दप्पभवश्र वेठ्लियणाणामणिर्यणखन्ययदंडा) णाणामणिकणगर्यणविमलमहरि-हतवणिज्ञुजलविचित्तदंडाओ चिक्रियाओ संसंकर्कुद्दगरयथमयमहियफेणपुंजसण्णि-गासाओ सहमरवयदीहवालाओ सञ्चरयणामयाओ अच्छाओ जाव परिस्वाओ ॥ तेसि णं तोरणाणं पुरक्षो दो दो तिहससुम्मा कोष्टससुम्मा पत्तससुम्मा चोयससुम्मा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिंगुल्यसमुग्गा अंजणसम्बन्धा सन्वरयणामया अच्छा जाव पहिस्वा ॥ १३१ ॥ विजए णं दारे अद्भायं चक्कज्ञयाणं अद्भायं मिगज्ञयाणं अद्भायं गहरुज्ञयाणं अद्भायं जुगज्ज्ञ-बाणं (अड्डसयं रुख्यज्सयाणं) अड्डसयं छनज्सयाणं अड्डसयं पिच्छज्सयाणं अड्डसयं सरणिज्ञयाणं अद्सयं सीहज्झयाणं अद्सयं उसभज्ञयाणं अद्सयं सेयाणं चउविसाणाणं णागवरकेऊणं एवामेव सपुव्यावरेणं विजयदारे आसीयं केउमहस्सं भवइत्ति सक्खायं ॥ विजए णं दारे जब भोमा पण्णता. तेसि णं भोमाणं अंतो बहुसम्रमणिजा भूमिभागा पण्णता जाव मणीणं पासो, तेसि णं भोमाणं उप्पि उल्लेखा प्रसल्या जाब सामलयाभितिकता जाव सव्वतविष्ठामया अच्छा जाब पिंडस्वा, तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जे से पंचमे भोम्मे तस्स णं भोमस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं एगे महं सीहासणे पण्णते, सीहासणवण्णको विजयदूसे जाव अंकुसे जाव दामा चिट्ठंति, तस्स णं सीहासणस्स अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरियमेणं एत्य णं विजयस्स देवस्य चउण्हं सामाणियसहस्साणं चतारि भहासणसाहस्सीओ पण्णताओ, तस्स णं सीहासणस्स पुरच्छिमेणं एत्य णं विजयस्स देवस्य चलण्हं अगमहिसीणं सपरिवाराणं चतारि मद्दासणा पण्णना, तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्यिमेणं एत्य णं विजयस्स देवस्स अध्मितिरयाए परिसाए अड्डण्हं देव-साहस्सीणं अद्व महासणसाहस्सीओ पण्णताओ, तस्स णं सीहासणस्स दाहिणेणं विजयस्स देवस्स मजिल्लामियाए परिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस महासणसाहस्सीओ पण्णताओ, तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपश्रत्थिमेणं एत्य णं विजयस्स देशस्स वाहिरियाए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भहासुणसाहस्सीओ पण्णताओ श तस्स णं सीहासणस्स प्रवात्यमेणं एत्य णं विजयस्स देवस्स सत्ताव्हं अणियाहिवर्हणं सत्त भहासणा पण्णता, तस्स णं सीहासणस्य पुरस्थिमेणं दाहिणेणं पश्चरियमेणं

हरारेणं प्रत्य णं विजयस्य देवस्य सोलस आयरक्खदेवसाहरखीणं सोलस महासण-साहरसीओ पण्णताओ, तंजहा-पुरित्यमेणं चतारि साहरसीओ, एवं चउस्रवि जाव उत्तरेणं ज्तारि साइस्सीओ. अवसेरीस भोमेस प्तेयं प्तेयं महासणा पण्णता ॥१३२॥ विजयस्य णं दारस्य उपरिमागारा सोलसमिहेहिं रयणेहिं उक्सोभिया, तंजहा-र्यणेहिं वयरेहिं वेरलिएहिं जान रिडेहिं ॥ निजयस्स णं दारस्स उप्पि बहुने अहडू-मंगलगा पणाता, तंत्रहा-सोत्ययसिरिक्च जाव दप्पणा सम्बर्यणामया अच्छा जाब पढिरुवा । विजयस्स णं दारस्स उप्पि बहवे कष्टचामरज्ज्ञया आव सव्वरय-णामया अच्छा जाव पढिस्वा । विजयस्य णं दारस्य उद्पि बहवे छत्ताइच्छता तहेव ॥ १३३ ॥ से केजहेणं भंते ! एवं वुषाइ-विजए दारे २ ? गोयमा ! विजए णं दारे विजए णामं देवे महिश्विए महजुइए जाव महाणुभावे पिछश्रोवम-द्विहए परिवसइ, से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं संपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्स णं दारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसि च बहणं विजयाए रायहाणीए वत्यव्यगाणं देवाणं देवीण य आहेक्चं जाव दिव्याइं भोगभोगाई भुंजमाणे विहरह, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुषड-विजए दारे विजए दारे. अदुत्तरं च णं गोयमा ! विजयस्स णं दारस्स सासए णामधेजे पण्णते जण्ण क्याइ णासी ण क्याइ णत्य ण क्याइ ण भविस्सइ जाव अवद्विए णिचे विजए दारे ॥ १२४ ॥ कहि णं भेते ! विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णना ? गोयमा ! विजयस्य णं दारस्य पुरत्थिमेणं तिरियमसंखेळे वीवसमृहे वीइवडता अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साई ओगाहिला एत्थ पं विजयस्स देवस्स विजया णाम रायद्वाणी प० बारस जोयणसहस्साई आयामविक्खंमेणं सत्तरीसजो-यणसहस्साई नव य अडवाछे जोवणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं प०॥ सा णं एगेणं पागारेणं सञ्चलो समंता संपरिक्खिला ॥ से णं पागारे सत्ततीसं जीव-णाई अद्वजीयर्ण च उड्डं उच्चतेणं मूळे अद्वतेरस जीयणाई विक्खंमेणं मज्हेत्य सकोसाई छजोयणाई विक्खंमेणं उपि तिष्णि सदकोसाई जोयणाई विक्खंमेणं सरे विच्छिणो मज्हे संक्षिते उपि तणुए बाह्रें वहे अंतो वडरंसे गोपुच्छर्पठाणसंठिए सञ्जनगरामण अलोह जाब पविरुवे ॥ से मं पागारे णाणाविष्ठपंचवण्णेहिं कविसी-सएहिं उबसोमिए, तंबहा-फेल्डेहिं जाव ग्रहिलेहिं॥ ते णं कविशीसगा अडकोसं आयामेणं पंचायत्त्वाहं विवृद्धंमेणं देस्यमद्भीसं उन्नं उन्नतेणं सध्वमणिसया अच्छा जाव पश्चिमा ॥ विजवार णं रायहाचीर एगमेगार बाहार पणवीसं पणवीसं

दारसर्य भवतीति मक्खायं ॥ ते णं दारा बाविहें जीयणाई अद्वजीयणं च उच्चे उचतेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च विक्खंमेणं तावहर्य चेव पवेसेणं सेया वरकण-गश्भियागा इंहामिय॰ तहेव जहा विजए दारे जाव तपणिजवालुयपत्यला सहफासा सस्सि(म)रीया सुरुवा पासाईया ४। तेसि णं दाराणं उभओ पासिं दुहुओ णिसी-हिसाए दो दो चंदणकलसपरिवाहीओ पण्णमाओ तहेव भाषियव्यं जाव वणमा-लाओ ॥ तेलि णं दाराणं उभओ पासि दुहुओ मिसीहियाए दो दो पगंठगा फणात्ता, ते णं पर्गठगा एकतीसं जोयणाई कोसं च आयामिवक्खंभेणं पन्नरस जोयणाई अड्ढाइजे कोसे बाहकेणं पण्णता सन्त्रवहरामया अच्छा जाव पिहरूवा ॥ तेसि णं पर्यंठगाणं उपि पत्तेयं २ पासायबहिंसमा पण्णता ॥ ते णं पासायबहिंसमा एकतीसं जोयणाई कोसं च उद्गं उचलेणं पन्नरस जोयणाई अद्राहजे य कोसे आयामवि-क्खंमेणं सेसं तं चेव जाब समुरगया णवरं बहुवयणं भाणियव्वं । विजयाए णं रायहाणीए एगमेंगे दारे अद्भस्यं चक्कज्झयाणं जाव अद्भस्यं सेयाणं च जिसाणाणं णागवरकेळणं. एवामेव सप्व्यावरेणं विजयाए रायहाणीए एगमेगे दारे आसीयं २ केउसहस्सं भवतीति मक्खायं। विजयाए णं रायहाणीए एगमेंगे दारे (तेसि णं दाराणं पुरुषो) सत्तरस भोमा पण्णता, तेसि णं भोमाणं (भूमिभागा) उछ्लोबा (य) पडमलया॰मतिचिता ॥ तेति णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जे ते नवमनवमा भोमा तेसि ण भोमाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ सीहासणा पण्णता. सीहासणवण्णओ जाव दामा जहा हेट्रा. एत्य णं अवसेमेस भोमेमु पतेयं पतेयं भद्दासणा पण्णता । तेसि णं दाराणं उत्तिमंगा(उवरिमा)-गारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोहिया तं चेव जाव छत्ताइछता, एवामेव पुन्वावरेण विजयाए रायहाणीए पंच दारसया भवंतीति मक्खाया ॥ १३५ ॥ विजयाए णं रायहाणीए चउहिसिं पंचजीयणसयाई अबाहाए एत्थ णं चतारि वणसंडा पण्णता, तंत्रहा-असोगवणे सत्तवण्यवणे चंपगवणे चुयवणे, पुरस्थिमेणं असोगवणे दाहिणेणं सत्तवण्णवणे पचित्यमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चयवणे ॥ ते णं वणसंडा साइरेगाई दवालस जोयणसहस्साई आयामेणं एंच जोयणसयाई विक्खंग्रेणं पण्णता पत्तेयं पत्तेयं पागारपरिक्लिता किण्हा किण्होसासा क्यसंडक्ष्णओ साजि-यव्वो जाव बहुवे बाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति सयंति विद्वंति विश्वीगंति तुमहंति रमंति रुलंति कीलंति मोहंति परापोरांणाणं सुविष्णाणं सुविकंताणं समाणं कम्माणं कडाणं कडाणं फळवित्तिविसेसं प्रमुखमाणा विहरंति ॥ तेसि णं इपा-संडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं पासायवर्डिसया प्रवाता. ते वं पासायवर्डिसया

बाविंद्धं जोयणाई अद्वजीयणं च उन्नं उक्तेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च आयाम-विक्संमेणं अब्सुमायमूसिया तहेव जाव अंतो बहुसमरमणिजा भूमियागा पणाता उहाया परम अतिवित्ता आणियव्या, तेसि ण पामायवर्डिसगार्थ बहमज्झदेसभाग पत्तेयं पत्तेयं सीहासणा प्रण्णना वण्णावासो सपरिवारा, तेसि ण पासायवर्डिसगाणं उप्पि बहुबे अद्भद्रमंगलमा झया छताइछता ॥ तत्थ णं चतारि देवा महिन्निया जाब पिठओवमिद्विङ्या परिवसंति, तंजहा-असोए सत्तवणी चंपए चूए ॥ तत्य णं ते माण माणं वणसंडाणं साणं साणं पासायवर्डिसयाणं साणं साणं सामाणियाणं साणं साणं अग्गमहिसीणं नाणं साणं परिसाणं साणं साणं आयरक्खदेवाणं आहेक्बं जाव विहरनित ॥ विजयाए णं रायहाणीए अंतो बहुसमरमणिजे भूमिमारो पण्णेत जाव पंचवण्णेहिं मणीहिं उनसोहिए तणसद्विद्वूणे जाव देवा य देवीओ य आनयंति जाव विहरंति । नस्स णं बहसमरमणिजस्य भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं एगे महं उदयारियालयणे पण्णते बारस जायणमयाई आयामविक्खंभेणं तिश्वि जोयणसहस्साइं मत्त य पंचाणउए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं अद्धकोसं बाहुक्केणं सन्वजंबणयामएणं अच्छे जाव पडिस्वे ॥ से ण एगाए परामवर्वद्याए एगेणं वणसंडेणं सञ्बओ समंता संपरिक्सित पउमवरवेड्याए वण्णको वणसंड-वण्णओ जाव विहरंति, से णं वणसंडे देस्णाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंमेणं उवयारियालयणसमपरिक्खेवेर्ण ॥ तस्स णं उवयारियालयणस्स चउद्दिसं चत्तारि तिमोवाणपडिरुवगा पण्णना, वण्यक्षो, तेसि णं तिमोवाणपडिरुवगाणं पुरक्षो पत्तेशं पत्तेयं तोरणा पण्णना छताइछता ॥ तस्स णं उवयारियालयणस्स उप्पि बहसमर-मणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणीहिं उवसीभिए मणिवण्णओ, गंथी, पासो, तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिमागरस बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महं मूलपासाय-वर्डिसए पण्णते, से णं पासायवर्डिसए बावर्डि जोयणाई अद्वजीयणं च उड्डं उच्नेतणं एकतीसं जोयणाइं कोसं च आयामविक्संमेणं अन्भुम्गयमृतियप्पष्ठसिए तहेव, तस्स णं पासायविक्रिसगर्स अंतो बहुसम्रामाध्ये भूमिभागे पण्यते जाव मणिफासे उन्नोए ॥ तस्स णं बहुसमरमणिज्ञस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं एगा महं मणि-पेडिया पश्चरा, सा य एवं जीयणमायामनिक्संभेणं अद्धजीयणं बाह्रहेणं सन्वमणि-मई अच्छा सण्हा जान पिंडस्या ॥ तीसे णं मणिपेढियाए उनिरं एने महं सीहासने पकत्ते, एवं सीहासणवण्याओं सपरिवारो, तस्स णं पासायवर्डिसगस्स उप्पि बहुवे अद्वर्टमंगरुगा सबा छत्ताइछता ॥ से णं पासाववर्डिसए अण्णेहि चउहि सद्बूचतप्य-माणमेरेहि पासायवर्डिसएष्टि सम्बद्धो समेता संपरिक्किरे, ते मं पासायवर्डिस्ताः

एक्तीसं जोयणाई कीसं च उड्डं उच्चतेणं अदसोलसजोयणाई अदकीसं च आयाम-विक्खंभेणं अन्भुगयः तहेव, तेसि णं पासायविस्तयाणं अंतो बहुसमरमणिजा भूमिभागा उल्लोबा ॥ तेरि णं बहुमसरमणिजाणं भूमिभागाणं बहुमज्ज्ञदेसकाए फ्तेयं पत्तेयं सीहासणं पण्णतं, वण्णको, तेसि परिवारभया बहमज्झदेसभाए पत्तेयं २ भद्दामणा पण्णता, तेसि णं अद्भद्रमंगलगा सया छताइछता ॥ ते णं पासायवर्डिमगा अण्णेहिं चउहिं चउहिं तद्बुचनयमाणमेत्तिहें पासायबडेंसएहिं सम्बओ समेना संपरिक्खिता ॥ ते णं पासायवर्डेसगा अद्भोलमजोयणाई अद्भकोसं च उन्नं उन्न-त्तेणं देसुणाई अद्भ जीयणाई आयामविक्खंमेणं अब्भुरगय॰ तहेव, तेसि णं पासाय-वर्डेसगाणं अंतो बहुसमरमणिजा भूमिभागा उल्लोया, तेसि णं बहुसमरमणिजाणं भूमिमागाणं बहमज्झदेसमाए पत्तेयं पत्तेयं परामासणा पन्नता, तेसि णं पासायाणं अहुदुर्मगलगा भया छत्ताइछत्ता ॥ ते पं पासायवर्डेसगा अण्णेहि चर्डाहं तद्दु-चनप्पमाणमेत्रेहिं पासायवर्डेमएहिं सव्वओ समंता संपरिक्तिता ॥ ते णं पासाय-वर्डेसगा देमुणाई अद्र जोयणाई उर्द्ध उन्हत्तेणं देसुणाई चत्तारि जोयणाई आयाम-विक्खंभेणं अब्सुमाय० भूमिभागा उल्लोबा भहामणाई उवरिं मंगलगा झवा छनाइ-छता ॥ १३६ ॥ तस्स णं मूलपासायवर्डेसयस्स उत्तरपुरस्थिमेणं एत्थ णं विजयस्स देवस्म ममा सहस्मा पण्णना अद्धतेरसजोयणाई आयामेणं छ सक्कोसाई जोयणाई विक्खंमेणं णव जोयणाई उष्टुं उष्टतेणं, अणेगर्खंमसयसंनिविद्वा अञ्जुरगयसुक्त्यवहर-वेइया तोरणवररइयसालमंजिया ससिलिद्वविसिद्धलद्वसंठियपमत्थवेरलियविमलसंभा णाणामणिकणगर्यणसङ्यउज्जलबहुसमसुविभक्तित्र(णित्रिय)रमणिजकुद्विमतला ईहा-मियउसभतुरगणरमगरविद्दगबालगकिण्णरस्तुसरभन्यमर्कं अर्वणलयपउमलयभत्तिनि-ता थंमुग्गयबद्दरवेदयापरिगयामिरामा विजाहरजमलजुयलजंतजुताविव अचिसहस्स-मालणीया स्वयसहस्सकलिया भिममाणी सिन्भिसमाणी चक्सूक्लोयणकेसा सहफासा सस्मिरीयस्वा कंचणमणिरयणयूभियागा नाणाविद्वपंचवण्णघंटापडायपरिमंडियनन-सिंहरा धवला मिरीइकवर्यं विणिम्सुयंती ळाउल्लोइयमहिया गोसीससर्सरत्त्रचंदण-दहरदिन्नपंनंगुलितला उनन्धियनंदणकलसा नंदणघडसुक्यतोरणपडिद्रवारवेसभागा आमत्तोसत्तविठलच्छवन्षारियमह्नदामकलावा पंचवण्णम्रसम्प्रस्यम्भूकपुष्कपुंजीववार-कलिया कालागुरुपवरकुंदुरुकतुरुकधूबमधमधैतगंधुद्धशामिरामा सुगंधवरगंधिका ग्रेथ-वहिभ्या अच्छाराणसंपर्सविकिण्णा दिव्वतु डियमहरसहस्पणाइया सुरम्मा सव्वर्यणा-मई अच्छा जाव पडिम्प्या ।। तीसे णं सहम्माए सभाए तिदिसि तक्षो दारा प्रव्यक्ता तंत्रहा पुरत्यिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं ॥ ते णं वारा पत्तयं पत्तयं दो दो जोबणाई

उद्दं उनतेणं एगं जोयणं विक्संभेणं तावह्यं खेव पवेसेणं सेया वरकणगद्यसियागा जाव वणमालादारवज्ञको ॥ तेसि णं दाराणं पुरजो मुह्मंडवा पण्णता, ते णं सुहमंडवा अद्धतेरसजीयणाई आयामेणं छजीयणाई सक्कोसाई विक्संमेणं साइरेगाई दो जोयणाई उर्दु उचतेणं मुहमंदवा अणेगसंमसयसंनिविद्वा जाव उहोया भूमि-भागवण्णओ ॥ तेसि णं महमंदवाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं अद्भुद्ध संगठा पण्णता सोत्थिय जान मच्छ॰ ॥ तेसि णं महमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं पेच्छाघरमंडवा पण्णाना, ते णं पेच्छाघरमंडवा अद्धतेरसजीयणाई आयामेणं जाव दो जीयणाई उद्वं उकतेणं जाव मणिफासो ॥ तेसि णं बहुमञ्झदेसभाए परोयं परोयं बहरामय-अक्साडगा प्रणाता, तेसि णं वहरामयाणं अक्साडगाणं बहुमञ्झदेसभाए पत्तेयं २ मणिपीढिया पण्णत्ता. ताओ णं मणिपीढियाओ जोयणमेगं आयामविक्तंभेणं अद्वजीयणं बाहल्लेणं सञ्चमिषमईओ अच्छाओ जाव पढिस्वाओ ॥ तासि णं मणि-बीढियाणं उप्पि पत्तेयं पत्तेयं सीहासणा पण्णता, सीहासणवण्णओ जाव दामा परिवारो । तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उप्पि अद्रुद्धमंगलगा क्रया छताइछता ॥ तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ तिबिसिं तओ मणिपेहियाओ पण्णताओ, ताओ णं मणिपेहियाओ जोयणं आयामविक्लंभेणं अद्धजोयणं बाहहेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिस्वाओ ॥ तासि णं मणिपेडियाणं उप्पि पत्तेयं पत्तेयं महिंदण्याया अबद्ध-माइं जोयणाइं उच्चं उच्चतेणं अद्दकोसं उन्वेहेणं अद्दकोसं विक्संभेणं वहरामयवह-ल्डसंठियस्सिल्डिपरिघट्टमद्वसुपइद्विया विसिद्धा अणेगवर्पंचवण्णकुडभीसहस्सपरि-मंडियामिरामा वाउबुर्यावजयवेजयंतीपडागा छत्ताइछत्तकलिया तुंगा गयणयलमभि-र्लंघमाणसिंहरा पासाईया जान पडिमना ॥ तेसि णं महिंदज्ज्ञयाणं उपि अट्टहमंग-लगा झया छताइछता ॥ तेसि णं महिंदज्ययाणं पुरको तिदिसिं तओ णंदाओ पुक्सरिणीओ प॰ ताओ ण पुक्सरिणीओ अद्धतेरसजीयणाई आयामेणं सक्षोसाई छ जोयणाइं विक्संमेणं इसजोयणाई उच्चेहेणं अच्छाओ सण्हाओ पुरुखरिणीवण्यओ पत्तेयं पत्तेयं पजमवरवेड्यापरिक्सिताओं पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्सिताओं वण्णओ जाव परिक्रमाओ ॥ तेसि णं पुक्खरिणीयं पत्तेयं २ तिदिसिं तिसोवाणपिहरूका। प॰, तेसि णं तिसोवाणपडिरूबगाणं वण्णको, तोरणा भाणियन्वा जाव छताइच्छता । समाए णं सहस्माए छ मचोगुलियासाहस्सीओ वण्णताओ, तंजहा-पुरत्यिमेणं दो साहस्तीओ प्यत्यिमेणं हो साहस्तीओ दाहिणेणं एगसाहस्सी उत्तरेणं एगा साहस्ती. ताञ्च णं मणोगुलियाञ्च बहवे सुवव्णकृष्यायया फलगा पण्णता, तेसु णं सुवण्णकृष्या-मएस फलमेस बहवे बहरामया वागदंतमा पव्यत्ता, तेस वं बहरामएस नागदंतएस

बहुने किल्हमूत्तवहूवर घारियमह्नदामकलावा जाव सुक्तिहसुत्तवहूवरघारियमह्नदामकलावा, ते णं दामा तवणि अलंबसगा जाव चिद्वंति ॥ सभाए णं सुहम्माए छयोमाणसी-साहस्सीओ पण्णताओ नंजहा--पुरत्यिमेणं दो साहस्सीओ, एवं पचित्यमेणवि दाहिणेणं सहस्तं एवं उत्तरेणवि, तामु णं गोमाणसीसु बहुवं सुवण्णरूपमया फलगा प॰ जाव तेसु णं वहरामणुसु नागदंतएसु बहुचे रययासया सिक्सा पण्णता, तेसु णं रययामएसु सिक्कएमु ब॰ वेरुलियामईओ धूत्रघडियाओ पण्णताओ, ताओ णं धूनघडियाओ कालागुरुपवर्कुंदुरऋतुरुक जान घाणमणणिव्तुइकरेणं गंधेणं मन्त्रओ समंता आपूरेमाणीओ चिट्ठंति । सभाए णं मुहम्माए अंतो बहुरामरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणीणं फासो उल्लोया प्रमुख्यभतिचिना जाव सञ्बत्तवणिजमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १३७ ॥ तस्स णं वहसमरमणिजस्म भूमिभागस्म वहमज्ज्ञवेसभाए एत्थ णं एगा सहामणिपेदिया प०, सा णं मणिपेदिया दो जोयणाई आयामविक्खं-भेणं जोयणं बाहहेणं सन्वमाणमई जाव पडिरूबा ॥ तीसे णं मणिपेडियाए उपि एत्थ णं एगे महं सीहासणे पण्णते, सीहामणवण्णओ ॥ तीसे णं विदिमाए एत्थ णं एगा महं मणिपेडिया प० जीयणं आयामविक्खंमेणं अद्वजीयणं बाह्रहेणं मव्वमणि-सई अच्छा जाव परिरूवा ॥ तीमे णं मणिपेडियाए उपि एत्थ णं एगे महं देव-संबंधिजे पण्णते, तस्म णं देवसयणिजस्म अयमेवाहवे बण्णावासे पण्णते, तंजहा-नाणामणिमया पडिपाया सोवृष्णिया पाया नाणामणिमया पायसीसा जंबणयसयाहं गनाई वहरामया संधी णाणामणिमए चिचे रवयामया तुला लोहियक्खमया विज्वोयणा नवणिजमहे गंडोवहाणिया, से णं देवसयणिजे उभशे विज्वोयण दुहुओ उण्णए सङ्ग्रेणयगंभीरे मार्लिगणबहिए गंगापुलिणबालुउद्दालसालिसए ओय-वियक्खोमद्गुलपृष्टपिडच्छायणे सुविर्दयर्यताणे रतंस्यसंवृए सुरम्भे आईणगरू-यत्रणवणीयत्रुकपासम्बर्ध पामाईए ४॥ तस्म णं देवस्यणिजस्य उत्तरपुरस्थिमेणं एत्थ णं महर्ड एगा मणिपीढिया पण्याना जोयणमेगं आयामविक्खंमेणं अद्भजोयणं बाह्रहेणं सन्वमणिमई अच्छा जाव पडिस्त्वा ॥ तीसे णं मणिपीडियाए उप्पि एगे महं खुरए महिंदजराए पण्णते अद्भुद्रमाई जोयणाई उन्ने उन्नेतां अद्भुतेसं उन्ने हेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं वहरामयवहलद्वसंद्रिए तहेव जाव मंगलमा झया छत्ताइ-छना ॥ तस्म णं खुरमहिंदज्ज्ञयस्य पत्रत्यिमेणं एत्य णं विजयस्य देवस्य चुप्पारूए नाम पहरणकोसे पण्णते ॥ तत्य णं विजयस्य देवस्स फलिहरयणपामोक्सा बहुवै पहरणरयणा संनिविस्ता चिद्वंति, उज्जलसुणिसियसुतिक्सघारा पासाईया ४ ॥ तीचे णं समाए ब्रह्ममाए उप्पि बहुवे अद्भवनिक्या समा छताइछता ॥ ११८॥

सभाए णे झहम्माए उत्तरपुरत्विमेणं एत्व णे एगा महं उववायसभा पण्णता जहा सहस्मा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाएवि दारा सुहमंडवा सब्बं भूमिमार्गे तहेव जाव-मणिफासो (मुहम्मासमावत्तव्वया भाणियव्वा जाव भूमीए फासी) ॥ तस्स णं बहसमरमणिजस्स भूमिमागस्स बहमज्झदेसभाए एत्य णं एगा महं मणिपेडिया पण्णता जीयणं आयामविक्खंमेणं अद्वजीयणं बाह्रहेणं सन्वमणि-मई अच्छा जाव पहिरूवा, तीसे णं मणिपेडियाए उपि एत्य णं एगे महं देवसय-किजे पण्णते, तस्स णं देवसयकिजस्स वण्णको, उववायसभाए णं उपि अद्रह्मं-गलगा झया छताइछता जाव उत्तिमागारा, तीसे णं उदबायसभाए उत्तरपुर च्छिमेणं एत्य णं एगे महं हरए पण्णते. से णं हरए अद्धतेरसजीयणाई आयामेणं छक्तोसाई जोयणाई विक्तंमेणं दस जोयणाई उच्चेहेणं अच्छे सण्हे वण्पओ अहेव णंदाणं पुक्खरिणीणं जाव तोरणवण्णओ, तस्म णं हरयस्म उत्तरपुरस्थिमेणं एत्य णं एगा महं अभिसेग्रसमा पण्णता जहा सभागुहम्मा तं चेव निरवसेसं जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उहाए तहेव ॥ तस्त णं बहुनमर्मणिजस्त भूमिभागस्त बहुमज्झदेमभाए एत्य णं एगा महं मणिपेडिया पण्णता जीयणं आयामविन्संमेणं अद्वजीयणं बाह्रेलें सन्बम्भिमया अच्छा ।। तीसे णं मिणपेहियाए उपि एत्य णं महं एगे सीहासणे पण्णते, सीहासणवण्णओ अपरिवारी ॥ तत्थ णं विजयस्स देवस्स सुबहु आभिसेके भंडे संणिक्सिते चिट्ठह, अभिसेयसभाए उप्पि अद्वर्द्धमंगलगा जाव उत्ति-मागारा सोलसविहेहिं स्यणेहिं उवसोभिया, तीसे णं अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्य-मेणं एत्य णं एगा महं अलंकारियम्भा पण्णता अमिसेयसभावत्तव्वया भाणियव्या जाब गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पि सीहासणं (स)-अपरिवारं ॥ तत्थ णं विजयस्म देवस्य सुबहु अलंकारिए भंडे संनिक्खित चिद्वह, अलंकारिय॰ उप्पि मंगलगा झमा जाव (छत्ताइछता) उत्तिमागारा ॥ तीसे ण अलंकारियसहाए उत्तरपुरत्विमेणं एत्य णं एगा महं वदसायसभा पण्णत्ता, अभि-सेयसभावताच्या जाव सीहासणं अपरिवारं ॥ त(ए)त्थ णं विजयस्य देवस्स एगे महं पोत्ययरमणे संनिक्तिते चिहुर, तस्स णं पोत्ययर्यणस्य अयमेयारूवे वण्णा-वासे पश्चते, तंजहा---रिद्धामईओ कंबियाओ [रययामयाई पत्तगाई] तविष्क्रमए वोरे णाणामणिमए गंठी (अंकमयाई पत्ताई) वेठलियमए लिप्पासणे तबणिजमई संकल रिद्वामए छायणे रिद्वामया मसी वहरामई छेहणी रिद्वामयाई अक्सराई धम्मिए सत्ये बबसायसमाए णं उपि अद्वुद्धमंगलगा सया छत्ताइछता उत्तिमा-गारेति । तीसे मं बबसायसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्य णं एगा सहं जंदापुरुवारियी

फणना जं चेव प्रमाणं हरयस्स तं चेव सन्वं॥ १३९-१४०॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विजए देवे विजयाए रायहाणीए उववायसमाए देवसयनिजंस देव-द्संतरिए अंगुलस्स असंकेवङ्भागमेत्तीए बोंदीए विजयदेवताए उववण्ये ॥ तए णं से विजए देवे अहणोवनण्यमेत्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्यतीए पज्रतीमार्व गच्छड, तंजहा-आहारपज्तीए सरीरपज्तीए इंदियपज्तीए आणापाणपज्तीए भासामणपज्जतीए ॥ तए णं से विजए देवे देवसमणिजाओ अब्भुद्रेह २ ता दिव्यं देवद्सजुयलं परिहेड २ ता देवसयणिजाओ फ्बोरहड् २ ता उववायमभाओ परस्थिमेणं दारेणं जिम्मच्छड २ मा जेणेव हरए तेणेव उवागच्छड उवागच्छिता हरयं अणुपयाहिणं करेमाणे करेमाणे पुरिश्यमेणं तोरणेणं अणुप्पविसइ २ ना पुर-त्यिमिक्षेणं तिमोबाणपडिरूबएणं पचीरुहइ २ ता इरयं ओगाहइ २ ता जलाबगाहणं करेड २ ता जलमञ्जणं करेड २ ता जलकिई करेड २ ता आयंते चोक्खे परमग्रड-भूए हरयाओ पञ्चतरङ २ ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छह २ ता अभिसेयमभं अणुपयाहिणं करेमाणे पुरन्थिमिक्षेणं दारेणं अणुपविसह २ ता जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छ २ ना सीहासणवरगए पुरच्छामिसहे सक्लिसको ॥ तए णं तस्म विजयस्स देवस्स सामाणियपरिसोषवण्णमा देवा आमिओमिए देवे सहावेंति २ ना एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयस्स देवस्स महत्यं महत्यं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवद्भावेह ॥ तए णं ते आमिखोगिया देवा सामाणियपरिसोनवण्येहि एवं वुना समाणा इद्वतुद्व जाव हियया करयलपरि-ग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंअलिं कष्ट्र एवं देवा तहित आणाए विणएणं वयणं पडिनुणंति २ ता उत्तरपुरन्थिमं दिसीमागं अवक्रमंति २ ता वेउव्वियसमुखाएणं ममोहणंति २ ता संखेजाइं जोयणाइं दंडं णिसरंति तं०-रयणाणं जाव रिद्वाणं. अहाबायरे पोग्गले परिमार्डति २ ता अहासहमे पोग्गले परियायंति २ ता दोचंपि वेड वियममुखाएणं समोहणंति २ ता अड्टसहस्यं सोबण्णियाणं कलसाणं अड्टस-इस्सं रूप्पामयाणं कलसाणं अद्भाइस्सं मणिमयाणं अद्भाइस्सं स्वण्णरूपामयाणं अद्भाहरसं सुवण्णमणिमयाणं अद्भाहरसं रूप्यामणिमयाणं अद्भाहरसं भोमेजाणं अद्भरहस्सं भिंगारगाणं एवं आयंसगाणं बालाणं पाईणं सपहक्रुगाणं वित्ताणं रयणकरंडगाणं अद्भागं सीहासणाणं छताणं चामराणं अवपडगाणं बद्ध्याणं तब-सिप्पाणं खोरगाणं पीणगाणं तेश्चसमुक्गयाणं विउव्वंति ते सामाविष् विउव्विष् य कलर्स य जान तेलससुरगए य गेर्न्ड्स गेण्डिसा विजयाओं रायहाचीओ पवि-निक्समंति २ ता ताए उक्किन्नाए जान उक्क्याए दिव्याए देवगईए तिरियमसंबे-

ज्वाणं ग्रीवसमुदार्थं मज्बंमज्बेणं वीईवयमाणा २ जेणेव खीरोए समुद्दे तेणेव उदागरकंति तेणेव उदागरिकता खीरोदगं गिण्हंति गिण्हिता जाडं तत्व उप्पलाडं जाव सबसहस्सपत्ताइं ताई मिण्डंति २ ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवा-गच्छेति २ ता 'पुक्सरोदगं गेण्हंति पुक्सरोदगं गिण्हिता जाडं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहरूसपताइं ताइं गिण्डंति २ ता जेणेव समयखेते जेणेव मरहेरवयाइं बासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवाग-च्छिता तित्योदगं निण्हंति २ ता तित्यमहियं गेण्हंति २ ता जेणेव गंगासिधुरता-रत्तबहंसिक्का तेणेव उवागच्छंति २ ता सरिओदर्ग गेण्डंति २ ता उमओ तड-महियं गेण्हंति गेण्हिला जेणेव चुल्लहिमर्वतसिहरिवासहरपव्यया तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छिता सब्बत्वरे य सब्बपुष्फे य सब्बगंधे य सब्बमक्षे य सब्बोस-हिसिद्धत्यए य गिण्हंति सन्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हिना जेणेव पउमदहपुंडरीयहहा तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छिता दहोदगं गेण्हंति २ ता जाइं तत्य उप्पलाई जाव सयसहस्सपताई ताई गेण्हंति ताई मिण्हिता जेणेव हेमवयहेरण्णवयाई बासाई जेणेव रोहियरोहियंससुवण्णकूलरूपकूलाओं तेणव उदागच्छंति २ ता सिल्लोदगं गेण्हंति २ ता उभओ तडमहियं गिण्हंति गेण्हिता जेणेव सहावाइमालवंतपरियागा वहवेयकू-पव्यथा तेणेव उदागच्छंति तेणेव उदार्गाच्छता सव्वतुवरे य जाद सब्दोसहिसिद्ध-त्थए य गेण्हंति सब्बोसहिसिद्धत्थए गेण्हिता जेणेव महाहिमवंतरुणिवासहरपव्यया तेणेव उवागक्कंति तेणेव उवागक्किता मन्वपुष्फे तं चेव जेणेव महापउमरहमहा-पुंडरीयहहा तेणेक उदागच्छंति तेणेव उदागच्छिता जाइं तत्य उप्पलाई तं चेव जेणेव हरिवासे रम्माबासेति जेणेव हरिकंतहरिसिल्लाणरकंतणारिकंताओ सल्लिओ तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छिता सिललोदगं गेण्हंति सिललोदगं गेण्हिता जेणेव विश्वावङ्गंघावङ्बदृवेशक्रपञ्चया तेणेव उवागच्छीत २ ता सञ्चपुप्फे य तं चेव जेणेव प्यसहणीलवंतवासहरपव्यमा तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छिता सव्वत्वरे य तहेव जेणेव तिनिच्छिदहकेसरिवहा तेणेव उवागच्छंति २ ना जाई तत्य उप्पलाई तं चेव जेणेव पुरुवविदेहावरविदेहबासाई जेणेव सीयासीओयाओ महाणईओ जहा णईओ जेणेव सञ्चयक्षविधिजया जेणेव सञ्चमागहवरदामपभासाई तित्याई तहेव जहेर जेगेर सञ्जवक्खारपञ्चमा सव्वत्वदरे य जेणेक सम्बंतरणईओ सिल्लोदगं गेण्हंति २ ता तं चेव जेणेव संदर्भ प्रवास क्रेणेव भरसालवणे तेणेव उवागच्छंति सम्बद्धदरे य जाद सम्बोसहितिहत्यए य निष्हंति २ ता जेगेव णंदणदणे तेषेद उवामच्छेति २ ता सम्बत्वरे जाव सम्बोसहिसिद्धत्वे य सरसं च गोसीसचंदणं

निष्हंति २ ता जेणेव सोमणसवर्णे तेणेव उदागच्छंति तेणेव उदागच्छिता सञ्जतुवरे य जाव सन्वोसहिसिद्धत्यए य सरसगोसीसचंदणं दिव्यं च समणदामं गेण्हंति गेण्हिता जेणेव पंडगवणे तेणामेव समुवागच्छंति तेणेव समुवागच्छिता सब्बत्वरे जान सन्नोसिहसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं दिन्नं च ग्रमणोदामं दहरयमलय-सुगंधिए य गंधे नेण्हंति २ ता एगओ मिलंति २ ता जंब्हीवस्स पुरस्थिमिहेणं दारेणं णिग्गच्छंति पुरत्थिमिह्रेणं दारेणं निग्नच्छिता ताए उक्किद्वाए जाव दिव्याए देवगईए तिरियमसंखेजाणं दीवसमुहाणं मञ्झंमञ्जेणं वीहवयमाणा २ जेणेव विजया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति २ ना विजयं रायहाणि अणुप्ययाहिणं करेमाणा २ जेणंव अभिसेयसभा जेणंव विजए देवे तेणेव उचागच्छंति २ ता करयलगरिगाहियं सिरसावतं मत्यए अंजलि कर् जएणं विजएणं वदावैति विजयस्स देवस्स तं महत्ये महम्बं महरिहं विजलं अभिसेयं जबद्ववैति ॥ तए णं नं विजयदेवं चतारि सामा-णियसाहस्सीओ चत्तारि अगगमहिसीओ मपरिवाराओ तिण्णि परिसाओ सन अणिया सत्त अणियाहिवई सोलम आयरक्खदेवमाहस्सीओ अने य बहुवे विजयरायहाणि-वत्थन्वगा वाणमंतरा देवा य देवीओ य तेहिं माभाविएहिं उत्तरवेउ व्विएहि य वरकमलपहद्वाणेहिं सुरमिवरवारिपडिएण्णेहिं चंदणकयचचागेहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करयलसुकुमालकोमलपरिमाहिएहिं अद्भसहरमाणं सोवण्णियाणं कलसाणं रूप्यमयाणं जात्र अट्टसहरूमाणं भोमेजाणं कलसाणं सब्बोदएहिं सब्बमहि-याहि सन्वतुवरेहि सन्वपुष्फेहि जाव सन्बोसहिसिद्धत्यएहि सन्विष्ट्रीए सन्वजुईए सञ्चननेणं मञ्जसमुद्रएणं सञ्जायरेणं सञ्जविभूइंए सञ्जविभूमाए सञ्जसंभमेणं सन्त्रोरोहेणं सन्वणाद्रएहिं सन्वपुष्पनांधमक्षालंकारविभूसाए सन्वदिन्वतुष्टियणिणाएणं महया इङ्गीए सहया जुईए महया बलेणं महया समुद्रएणं महया तुरियजमगसमग-पडुप्पवाइयरवेणं संखपणवपडहमेरिक्षक्ररिखर्म्हिम्रवस्यंगहंद्हिहुद्धक्रणिग्योससंचि-णाइयरवेणं महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसिचंति ॥ तए णं तस्स विजयस्स देवस्य महया महया इंदामिसेगंसि वद्यमाणंसि अप्येगइया देवा णबोदगं णाइमहियं पविरलपप्रतियं दिव्यं सुर्भि र्यरेण्विणासणं गंघोदगवासं वासंति. अप्येगह्या देवा णिहयरयं णद्वरयं भद्ररयं पसंतर्यं उवसंतर्यं करेति, अप्येगह्या देवा विजयं रायहाणि सर्विभतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओविलतं सित्तसङसम्मङस्थंतरावण-वीहियं करेंति, अप्पेयह्या देवा विजयं रायहाणि मंचाइमंचकत्व्यं करेंति, अप्पे-गइया देवा विजयं रायहाणि णाणाविहरागरंजियससियज्ञयविजयवेजयस्तीपहागा-इपडागमंडियं करेंति. अप्येगझ्या देवा विजयं रायहाणि काउन्नोहयमहियं करेंति,

अप्येगइया देवा विजयं रा० गोसीमसरसरत्तंदणदहरदिष्णपंत्रंगुलितलं करेंति, अप्ये-गङ्या देवा विजयं० उविचयनंदणकलसं नंदणघडमुक्यतोरणपडिदुवारदेसमागं करेंति, अप्येगङ्या देवा विजयं । आसत्तोसत्तविजलवदृबग्धारियमह्रदामकलावं करेंति, अप्ये-गङ्या देवा विजयं रायहाणि पंचवण्णसरससुरभिसुङ्गुप्पसुंजीवयारकलियं करेंति, अप्येगङ्या देवा विजयं ० कालागुरुपवरकुंदु सक्तुरुकपूर्वड ज्झंतमध्यमेंतगंधु हुया मिरामं • सुगंधवरगंधियं गंधवहिभूयं करंति, अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासंति, अप्पेगइया देवा सुबण्णवासं वासंति, अप्पेगइया देवा एवं रयणवासं वहरवासं पुष्फवासं मझ-वासं गंधवासं चुष्णवासं बत्यवासं आहरणवासं, अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाइति, एवं सुवण्णविहिं रयणविहिं वइरविहिं पुष्कविहिं महविहिं चुण्णविहिं गंघविहिं बत्यविहिं आभरणविहिं भाउंति ॥ अप्पेगझ्या देवा दुयं णडविहिं उत्रदेसेंति अप्पेग-इया देवा विलंबियं णष्टविहि उवदंसैति अप्पेगइया देवा दुर्यविलंबियं णाम णष्टविहि उन्दर्सित अप्पेगइया देवा अचियं णहिवहिं उन्दर्सित अप्पेगइया देवा रिमियं णहिवहिं उबदंसेति अ॰ अंन्वियरिभियं णाम दिव्वं णहिवहिं उबदंसेति अप्पेगह्या देवा आरभडं णद्वविहिं उबदंसित अप्पेगइया देवा मसोलं णद्वविहें उबदंसित अप्येगह्या देवा आरमहमसोलं णाम दिन्वं णृहविहिं उवदंसित अप्येगह्या देवा उप्पायणिवायपवुत्तं संकुचियपसारियं रियारियं भंतसंभंतं णाम दिव्वं णदृविहिं उवदंसित, अप्पेगइया देवा चउविवहं वाइयं वाएंति, तंजहा-ततं विततं घेणं झुनिरं, अप्पेगर्या देवा चडिन्बहं गेयं गायंति, नंजहा---उक्तित्तयं पवत्तयं मंदायं रोइयावमाणं, अप्पेगइया देवा चडिबहं अभिणयं अभिणयंति, तंत्रहा—दिहंतियं पाडंतियं सामन्तोवणिवाइयं स्रोगमज्झावसाणियं, अप्पेगइया देवा पीणंति, अप्पेग-इया देवा शुक्कारेंति, अप्पेगइया देवा तंडवेंति, अप्पे॰ लासेंति, अप्पेगइया देवा पीणंति वुकारेंति तंडवेंति कासंति, अप्पेगइया देवा बुकारेंति, अप्पेगइया देवा अप्फोडेति, अप्पेगइया देवा वनगंति, अप्पेगइया देवा तिवई छिंदति, अप्पेगइया देवा अप्फोर्डेति वरगंति तिवई छिँदेति, अप्पेगइया देवा हयहेसियं करेंति, अप्पेगइया देवा इन्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगइया देवा रहचणवणाइयं करेंति, अप्पेगइया देवा हयहेसियं करेंति हत्यिगुलगुलाइयं करेंति रहचणचणाइयं करेंति, अप्पेगइया देवा उच्छोलंति, अप्पेगइया देवा पच्छोलंति, [अप्पेगइया देवा उक्किंद्वि करेंति] अप्पे-गहमा देवा उक्किट्टीओ करेंति, अप्पेराइमा देवा उच्छोरेंति पच्छोलिति उक्छिडीओ करेंति, अप्येगइया देवा सीइणायं करेंति, अप्येगइया देवा पायदइरयं करेंति, अप्ये-गइया देवा सूमिकवेडं इस्त्यंति, अप्येगहवा देवा सीहनायं पायदहरयं भूमिचवेडं

दलमंति, अप्पेगइया देवा हकारेंति, अप्पेगइया देवा बुकारेंति, अप्पेगइया देवा थकारेंति, अप्पे॰ पुकारेंति, अप्पेगइया देवा नामाई सार्वेति, अप्पेगइया देवा हकारेंति बुकारेंति थकारेंति पुकारेंति णामाइं सार्वेति, अप्पेगइया देवा उपपर्यति, अप्पेगइया देवा जिबगंति, अप्पेगइया देवा परिवयंति, अप्पेगइया देवा उप्पयंति • णिवयंति परिवयंति, अप्पेगइया देवा जलेति, अप्पेगइया देवा तवंति, अप्पेगइया देवा पतवंति. अप्पेगइया देवा जर्लात तवंति पतवंति, अप्पेगइया देवा गर्जेति, अप्पेगइया देवा विजयायंति. अप्पेगहया देवा वासंति, अप्पेगइया देवा गजांति विज्ञयायंति वासंति, अप्पेगइया देवा देवसिंबवायं करेंति, अप्पेगइया देवा देवुङ्कलियं करेंति, अप्पेगइया देवा देवकहकहं करेंति, अप्पेगइया देवा देवदृहदुहं करेंति, अप्पेगइया देवा देवसिन्नवायं देवउक्कलियं देवकहकहं देवदुहदुहं करेंति, अप्पेगइया देवा देवुओयं करेंति, अप्पेगइया देवा विज्ञुयारं करेंति, अप्पेगईया देवा चेछक्खेनं करेंति, अप्पेग-इया देवा देवाजोगं विज्ञयारं चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया देवा उप्पलहत्थगया जाव महरूसपत्ता पंटाहत्थगया करूमहत्थगया जाव तेह्नममुख्यमहत्थगया हद्भतद्र जाव हरिसवसविमुप्पमाणहियया विजयाए रायहाणीए सव्वको समेता आधार्वेति परिधार्वेनि ॥ तए ण तं विजयं देवं चतारि सामाणियसाहस्सीओ चतारि अग्ग-महिसीओ सपरिवाराओ जान सोलसआयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहने विजयरायहाणीवत्यव्या वाणमंतरा देवा य देवीओ य तेहिं वरकमलमङ्काणेहिं जाव अद्भराणं सोवण्णियाणं कलसाणं तं चेद जाव अद्वसएणं ओमेजाणं कलसाणं सन्दो दगेहिं सन्वमहियाहिं सन्वतुवरेहिं सन्वपुष्फेहिं जाव सन्वोसहिसिद्धत्थएहिं सन्वि-द्वीए जाव निरघोमनाइयरवेणं महया २ इंदाभिसेएणं अभिसिचंति २ ता पत्तेयं २ सिरसावर्त अंजलि करू एवं वयासी--जय जय नंदा! जय जय भरा! जय जय नंद भद्दं ते अजियं जिणेहि जियं पालयाहि अजियं जिणेहि सन्तुपक्कं जियं पालेहि मितपक्लं जियमञ्जे वसाहि तं देव! निरुवसमां इंदो इव देवाणं चंदो इव ताराणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं भरहो इव मणुयाणं बहुष्वि पलिओवसाई बहुणि मागरोबमाणि बहुणि पलिओवममागरोबमाणि चउण्हं सामाणिबसाहस्सीणं जाव आय-रक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्स वैवस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसि च बहुणं विजय-रायहाणिवत्यव्याणं वाणमंतराणं देवाणं देवीण य आहेवचं जाव आणाईसरसेणावचं कारेमाणे पालेमाणे विहाराद्वित्तिकहु महया २ सहेणं जयजयसई पर्वजंति ॥ १४१॥ तए णं से विजए देवे महया २ इंदामिसेएणं अमिसित समाणे सीडासणाओं अन्सदेह सीहासणाओ अञ्चेद्रता अभिसेयसभाओ प्रतिबमेणं दारेणं परिनिक्समः ६ ता

वेणामेव अर्छकारियसमा तेणेव उवायच्छा २ ता अर्छकारियसमं अण्पया-हिमीकरेमामे २ पुरत्थिमेणं हारेणं अणुपविसह पुरत्थिमेणं हारेणं अणुपविशित्ता जेचेव सीहासणे तेणेव उवागच्छड २ ता सीहासणवरगए पुरस्यांभिगृहे सिन्गसन्ते. तए णं तस्य विजयस्य देवस्य सामाणियपरिसोववण्णया देवा आमिओगिए देवे सहावेंति २ ता एवं वयाती-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स आलंकारियं मंडं उवणेह, तए णं ते आलंकारियं मंडं जाव उवद्ववेति ॥ तए णं से विजय देवे तप्पढमयाए पम्हलस्मालाए दिव्वाए सुरभीए गंबकासाईए गायाई लहेड गायाई इहेता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाबाइं अणुलिंगइ सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाबाई अणुल्पिना तओऽणंतरं च णं नासाणीसासवायवोज्ञां चक्खडरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवाइरेगं भवलं कणासाइसंतकम्मं आगासफलिहसरिसप्पमं अहयं दिव्यं देवस्तजयलं जियंसेड जियंसेता हारं पिजिद्धेड हारं पिजिद्धेता अद्धहारं पिजदेड अद्ध० एवं एगाविल पिणिषद एगाविल पिणिधेता एवं एएणं अभिलावेणं मुत्ताविल कणगाविलं रयणाविलं कडगाई तुबियाई अंगयाई केऊराई दसमुद्दियाणंतगं कडिस्ततगं वेयच्छिसुत्तर्ग सुरवि कंठसुरवि पालंब कुंडलाई चूडामणि चित्तर्यणसंकडं मउडं पिणिधेइ पिणिधिता गंठिमवेहिमप्रिमसंघाइमेणं चउव्यिहेणं सक्रेणं कप्परम्खयंपिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेड कप्पक्रसायंपिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेता दहरमलयसुगंबगंधिएहिं गंधेहिं गासाई सुक्षिडइ २ ता दिव्यं समणदामं पिणिदह ॥ तए णं से विजय देवे केसालंकारेणं वत्यालंकारेणं महालंकारेणं आभरणालं-कारेणं चडिन्बहेणं अलंकारेणं अलंकियनिभृतिए समाणे परिपुण्णालंकारे सीहा-सणाओ अन्सुद्रेह २ ता अलंकारियसभाको पुरच्छिमिक्नेणं दारेणं पहिनिक्समइ २ ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उदागच्छइ २ ता बदसायसभं अणुण्ययाहिणं करेमाचे २ पुरस्थिमिक्टेणं दारेणं अणुपविसङ् २ ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छड् २ ता सीहासणवरगए पुरत्यामिम्हे सम्निसम्मे । तए णं तस्स विजयस्स देवस्स आभिओगिया देवा पोत्ययस्यणं उवजिति ॥ तए णं से विजए देवे पोत्ययस्यणं गेण्डइ २ ता पोत्यबरवणं सुबह पोत्यवरवणं सुएता पोत्यवरवणं विहारेह पोत्ययरयणं विहादेनाः पोत्ययरयणं वाण्ड पोत्ययरयणं वाण्ना धन्मियं ववसायं परोण्हइ धम्मियं बदसायं कोविहता पोत्ययरयणं पिडिणिक्सिवेह २ ता सीहासणाओ अन्युहेर २ ता वक्सायसमानो पुरस्विमिन्नेणं दारेणं पिडणिक्समह २ ता जेमेव समा प्रहम्मा तेचेव पहारेत्व गमजाए । तए वं से निजए देवे चडहिं सामानिय-साहरसीहि जाव सोक्सक्षे सावरक्यादेवसाहरसीक्षे साव्यक्षीए जाव निग्धोसनाइय-१३ सता-

रवेणं जेणेव सभा सहस्मा तेणेव उवागच्छइ २ ता समं सहस्मं पुरस्थिमिक्टेणं दारेणं अणुपविसंड २ ता जेपीव मणिपेढिया तेपीव उद्यागच्छा २ ता सीहासणवरगए पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ १४२ ॥ तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहरसीओ अवस्तारेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं पत्तेयं २ पुरुवणत्येसु महासणेसु णिसीयंति । तए णं तस्स विजयरस देवस्स चतारि अगगमहिसीओ पुरत्थिमेणं पत्तेयं २ पुञ्चणत्थेसु भहासणेसु णिसीयंति । तए णं तस्स विजयस्स देवस्स दाहिणपुरस्थिमेणं अस्मितरियाए परिमाए अहु देवसाहस्सीओ पत्तेयं २ जाव णिसीयंति । एवं दक्किणेणं मज्झिमियाए परिसाए इस देवसाह्स्सीओ जाव णिसीयंति । दाहिणपचित्यमेणं बाहिरियापु परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पनेयं २ जाव णिसीयंति । तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पचित्थमेणं सत्त अणियाहिवई पर्तेयं २ जाव णिसीयंति । तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पुर्त्थिमेणं दाहिणेणं पचित्यमेणं उत्तरेणं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेयं २ पुव्यणत्वेसु भहासणेसु णिसीयंति, तंजहा-परित्यमेणं चनारि साहस्सीओ जाव उत्तरेणं च०॥ तं णं आयरक्खा सन्नद्भवद्भविम्मयकम्या उप्पीलियसरामणपट्टिया पिणद्भगेवेर्जायमलवर-चिंघपटा गहियाउहप्पहरणा तिणयाई तिसंधीणि वदरामया कोडीणि धणुई अभिगिज्स परियाइयकंडकलावा जीलपाजिजो पीयपाजिजो रत्तपाजिजो चावपाजिजो चारपाजिजो चम्मपाणिणो खरगपाणिणो दंडपाणिणो पासपाणिणो णीलपीयरत्तवावचारुचम्मख-गगदंडपायबरधरा आयरक्ला रक्लोबगा गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्तपालिया पर्नेयं २ समयओ विणयओ किकरभूयाविव चिह्नंति ॥ विजयस्स णं भंते ! देवस्स केबइयं कालं ठिई पण्णता ? गो० ! एगं पलिओवमं ठिई पण्णना, विजयस्स णं भंते ! देवस्य सामाणियाणं देवाणं केवड्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! एगं पलिओवमं ठिई पण्णता, एवंमहिच्चिए एवंमहज्जुइए एवंमहन्बले एवंमहायसे एवंमहायुक्खे एवंसहाणुभागे विजए देवे २॥ १४३॥ कहि णं मंते ! जंबुहीबस्स २ वेजयंते णामं दारे पण्णते ? गोयमा ! जंबुहीवे २ मंदरस्स पव्ययस्स दक्किणेणं पणयानीसं जोयणसहरूसाई अबाहाए जंबुद्दीवदीवदाहिणपेरंते लवणसमुद्दाहिणद्धस्स उत्तरेणं एत्य णं जंबुद्दीवस्स २ वेजयंते णामं दारे पण्णते अद्व जोयणाई उन्नं उन्नरेणं संबेव सन्त्रा वत्तन्त्रया जाव क्रिके। कहि णं अंते !० रायहाणी ? दाहिणेणं जाव वेजयंते देवे २ ॥ कहि णं मंते ! अंबुदीवस्स २ जयंते णामं दारे पण्णते ? मोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पञ्चयस्स पचित्वमेणं पणयालीसं जोबणसहस्साहं जंबुदीवप-वत्यिमपेरंते लक्षणसमुद्दपवत्यिमदस्स पुरच्छिमेणं सीओयाए बहानर्द्दए उपि एत्य णं

जंबहीबस्स दीबस्स अयंते णामं दारे पण्णते. तं चेव से प्रमाणं अयंते देवे पचित्यमेणं से रायहाणी जाव महिष्टिए० ॥ कहि णं भंते ! अंबुद्दीवस्स २ अपराइए णामं दारे पण्णते ? गोयमा ! मंदरस्स पब्बयस्स उत्तरेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए जंबुद्दीवे २ उत्तरपेरंते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धरस दाहिणेणं एत्य णं जंबुद्दीवे २ अपराइए णामं दारे पण्णते तं चेव पमाणं. रायहाणी उत्तरेणं जान अपराइए देवे. चडण्हवि अण्णंमि जंबुद्दीवे ॥ १४४ ॥ जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्य य एस णं केवइयं अबाहाए अंतरे प्रणते ? गोयमा ! अउणासीइं जोयण-महस्माई बावणं च जोयणाउं देसणं च अद्भुजीयणं दारस्स य २ अबाहाए अंतरे पण्णने ॥ १४५ ॥ जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्य पएसा लवणं समुद्दं पुद्रा " हंना पद्धा ॥ तं णं भंतं ! कि जंबुद्दीवे २ लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे नो खल ते स्वणसमुद्दे ॥ स्वणस्य णं भेते ! समुद्दस्य पएसा जंबुद्दीवं दीवं पुद्धा ? हंना पुद्धा । ते णं मंते ! कि ठवणसमुद्दे जंबुद्दीवे दीवे ? गोयमा ! ठवणे णं ते समुद्दे नो खळु ते जंबु-हींवे दीवे ॥ जंबुहींवे णं भेते ! दीवे जीवा उहाइता २ लवणसमुद्दे पचायंति ? गोयमा ! अत्येगह्या पश्चायंति अत्येगह्या नो पश्चायंति ॥ लवणे णं भंते ! समद्दे जीवा उद्दाइता २ जंबुहीने २ पश्चायंति १ गोयमा ! अत्थेगइया पश्चायंति अत्थेगइया नो पश्चायंति ॥१४६॥ से केणद्वेणं भंते ! एवं वृच्छ-जंबुहीवे २ ? गोयमा ! जंबुहीवे २ मंदरस्य प्य्वयस्य उत्तरेणं णीलवंतस्स वासहरपन्वयस्य दाहिणेणं मालवंतस्य वक्खारपञ्चयस्य पन्नत्थिमेणं गंध-मायणस्य वक्खारपञ्चयस्य प्रतियमेणं एत्थ णं उत्तरकरा णाम करा पण्णना. पाईणप-बीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया एकारस जोयणसहस्साइं अद्व बायाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्य विक्लंभेणं ॥ तीसे जीवा उत्त-रओ पाईणपटीणायया दुहओ वक्कारपव्नयं पुद्धा, पुरित्यमिक्काए कोडीए पुरित्यमिक्कं वक्खारपव्वयं पुद्रा, पश्चत्यिमिहाए कोडीए पश्चत्यिमिहं वक्खारपव्ययं पुद्रा, तेवणं जोयणसहस्साइं आयामेणं, तीसे धणुपद्वं दाहिणेणं सिद्वं जोयणसहस्साइं चतारि य अद्वारमुत्तरे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइसाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णते ॥ उत्तरकुराए णं मंते! कुराए केरिसए आगारमावपडीयारे पण्णते ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे मूमिभागे पण्णते. से जहा णामए आलिंगपुक्खरेड वा जाव एवं एगुरुपदीववत्तव्यया जाव देवलोगपरिमाहा णं ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो । णवरि इमे णाणतं छथणुसहस्तमृतिया दोछप्पन्ना पिट्टकरंडगसया अट्टममत्तस आहारहे समुप्पज्जह तिण्णि पिल्जोवमाई देस्णाई पिल्जोवमस्सासंखिज्जहमागेण कणगाई जहनेणं, तिश्वि पिक्कोक्साई उद्योक्षेणं. एग्णपण्णराईदियाई अणुपालणा. सेसं जहा एग्रवाणं ॥ उत्तरकराए णं कुराए छन्निहा मणुस्सा भणुसजंति, तंजहा-पम्हगंघा १ मियगंबा २ अममा ३ सहा ४ तेयालीसा ५ सिष्धारी ६ ॥ १४७॥ कहि णं भंते ! उत्तरकुराए कुराए जमगा नामं दुवे पव्वया पनता ? गोममा ! नीलवंतस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेणं अद्वचोत्तीसे जोयणसए चतारि य सत्तमागे जोयणस्स अबाहाए सीयाए महाणईए (पुळ्यपच्छिमेणं) उभओ कुछे इत्य णं उत्तर-कुराए २ जमगा णामं दुवे पटवया पण्णता एगमेगं जीयणसहस्तं उन्नं उन्नतेणं अहाइजाइं जोयणस्याणि उठ्वेहेणं मृत्रे एगमेगं जीयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं मज्हे अदद्वमाई जोयणसयाई आयामविक्खंमेणं उबरि पंचजोयणसयाई आयाम-विक्खंभेणं मूळे तिष्णि जोयणसहस्साई एगं च बावर्द्ध जोयणसयं किन्विविसेमाहियं परिक्खेवेणं मज्जे दो जोयणसहरूमाई तिज्ञि य बावत्तरे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पत्रते उवरिं पद्मरस एकासीए जीयणसए किंचिविसेमाहिए परिक्खेवेणं पण्णते. मुळे विच्छिणा मुज्जे संखिता उपि तण्या गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्व-कणगामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा पत्तेयं २ पडमवरवेश्यापरिविस्तत्ता पत्तेयं २ वणसंडपरिक्सिता, वण्णओ दोण्हवि, तेसि णं जमगपन्वयाणं उप्पि बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते बण्णको जाब आसयंति०॥ तेसि णं बहुसमरमणिजाणं भूमि-भागाणं बहमञ्ज्ञदेसमाए पत्तेयं २ पासायवडेंसगा पण्यत्ता. ते णं पासायवडेंसगा बावद्विं जोयणाई अञ्चजोयणं च उन्नं उन्नतेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च विक्संभेणं अन्युग्गयमूसिया वण्णको भूमिमागा उह्नोया हो जोयणाई मणिपेडियाको बरसीहा-सणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठंति ॥ से केणद्रेणं भंते ! एवं जुचह-जमगा पव्चया २ ? गोयमा ! जमगेमु णं पव्चएसु तत्थ तत्थ देसे २ तहि तहि बहुईओ खुराखुरियाओ वाबीओ जाब बिलपंतियाओ, तासु णं खुराखुरियास जाब बिलपंति-यासु बहुई उप्पलाई जाव सयसहस्सपताई जमगप्पमाई जमगवण्णाई, जमगा य एत्थ दो देवा महिश्विया जाव परिज्ञोवमद्भिष्या परिवसंति, ते णं तत्य पत्तेयं पत्तेयं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव जमगाणं पव्ययाणं जमगाण य रायहाणीणं अण्येसि च बहुणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवचं जाव पालेमाणा विह-रंति, से तेणद्वेणं गोयमा ! एवं० जमगपव्यया २, अदुत्तरं च णं गोयमा ! जाब णिका ॥ कहि णं भंते ! जसगाणं देवाणं जसगाओ नाम रायहाणीओ पण्णताओ ? गोयमा ! जमगाणं पञ्चयाणं उत्तरेणं तिरियमसंग्रेजे दीवसमृहे बीहवहत्ता अण्यंमि जंबुद्दीचे २ बारस जोवणसहस्साई ओगाहिसा एत्य णं जसगाणं देवाणं जसगाओ णाम रायहाणीओ पण्णाताओ बारसजोवणसहस्य जहा विजयस्य जाब महिक्किया+

जमगा देवा जसगा देवा ॥ १४८ ॥ कहि णं भंते ! उत्तरकुराए २ नीळवंतहहे णामं दहे पण्णते ? गोवमा ! जमगपन्त्रयाणं दाहिणेणं अद्ववीतीसे कोयणसए चत्तारि सत्तमागा जोबणस्य व्यवाहाए सीयाए महाणईए बहुमञ्हादेसमाए एत्य णं उत्तर-कुराए २ नीलबंतहरू नामं दहे पश्ती, उत्तरदिक्खणायए पाईणपडीणविच्छिन एगं जोयणसहस्तं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्लंमेणं दस जोयणाइं उन्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूळे चउक्रोणे समतीरे जाव पडिस्वे उमओ पासि दोहिं पडम-वरवेडयाहिं वणसंडेहि य सम्बक्षो समंता संपरिक्यिते दोण्डवि वण्णओ ॥ नीलवंत-दहरम णं दहरस तस्य २ जाव बहवे तिसोवाणपडिस्वगा पण्णता. वण्णको भाष-क्को जाव तोरणित ॥ तस्स णं नीलवंतरहस्स णं दहस्स बहुमज्झदेमभाए एत्य णं एगे महं परमे पण्णते. जोमणं आयामविक्खंभेणं नं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अद्भजोयणं बाहलेणं दम जोयणाइं उन्बेहेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ साइरेगाई दमद्भजोगणाई मध्यगोणं पण्यते ॥ तस्स णं पडमस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्यते, तंत्रहा-वहरामया मला रिद्रामए कंदे वेरुलियामए नाले वेरुलियामया बाहिरपत्ता जंबणयमया अस्भितरपत्ता तवणिज्ञमया केसरा कणगामई कण्णिया नाणामणिमया पक्खरियमगा ॥ सा णं कृष्णिया अद्धजीयणं आयामविक्खंमेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं कोसं बाह्रहेणं सम्बप्पणा कणगामई अच्छा सण्हा जाव पिछहवा ॥ तीसे णं कृष्णियाए उवरि बहुसमर्मणिखे देसभाए पण्णते जाव मणीहिं०॥ तस्य णं बहुसमरमणिजस्स भूमिमागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महं भवणे पण्णते, कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्लंमेणं देसूणं कोसं उन्नं उन्नतेणं अणेगखंभसयसंनिविद्धं जाव वण्णको. तस्स णं भवणस्स तिदिसि तओ दारा पण्णता पुरित्यमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा पंचभगुसवाई उन्नं उन्नतेशं अन्नाइजाई चणुसयाइं विक्संमेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया बरकागण्यसियामा जाव वणमालाउत्ति ॥ तस्स णं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णेत से जहा नामए-आर्लिंगपुरुखरेइ वा जाब मणीणं वण्णओ ॥ तस्स मं बहसमरमनि-जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं मणिपेडिया पणाता. पंवधणुसयाई आयामविक्संमेर्ग अबुहिमाई घणुसयाई बाह्रहेर्ण सम्बम्धिमई०॥ तीसे मं मित-पेढियाए उन्नरि एस्य मं एगे सहं देवसयनिजे पण्णते, देवसयनिजन्स वृष्णको ॥ से जं पडमे अञ्जेजं अद्वसएजं तद्बुसत्त्यमाणमेत्राजं पडमाजं सव्यको समंता संपरिक्सित ॥ ते ण पडमा अद्वजीयणं आयामविक्संमेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं कोसं बाह्रहेणं इस जोवणाई उज्वेहेणं कोसं उतिया जरूताओ साहरेगाई

दस जोयणार्ड सञ्बरगेणं पण्णतांडं ॥ तेसि णं पउमाणं अयमेयारूवे कण्णादासे पण्णते, तंत्रहा-नइरामया मूला जाव गाणामजिमवा पुक्खरत्थिभूगा ॥ ताओ णं कण्णियाओं कोसं आयामविक्खंभेणं तं तिग्णं स० परि० अदकोसं बाहक्रेणं सठक-कणगामईओ अच्छाओ जाव पडिस्वाओ ॥ तासि णं कण्णियाणं उप्पि बहसमर-मणिजा भूमिमागा जाव मणीणं वण्णो गंधो फासो ॥ तस्स णं पडमस्य अवह-त्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपरच्छिमेणं नीलवंतदृहकुमारस्य देवस्य चउण्हं सामाणियसा-हस्सीणं चतारि परमसाहस्सीओ पण्णताओ. एवं सब्बो परिवारो नवरि परमाणं भाषियव्यो ॥ से णं पडमे अण्णेहिं तिहिं पडमवरपरिक्खेबेहिं मन्द्रओ समंता संपरिक्खित. तंत्रहा-अध्भतरेणं मज्ज्ञिमेणं वाहिरएणं, अध्भितरए णं परमपरि-क्खेंत्रे वर्तासं पडमसयसाहस्सीओ प०. मजिन्नमए णं पडमपरिक्खेंने चत्तालीसं पडमसयसाहस्सीओ प॰, बाहिरए णं पडमपरिक्खेवे अहयालीसं पडमसयसाहस्सीओ पण्णताओ. एवामेव सपुन्वावरेणं एगा पउमकोडी वीसं च पउमसयमहस्सा भवं-तीति मक्खाया ॥ से केणद्रेणं भंते ! एवं वृत्तह-णीलवंतहहे दहे ? गोयमा ! णीलवंतहहे णं दहे तत्थ तत्थ जाउं उप्पलाइं जाव सयसहस्मपत्ताइं नीलबंतप्यभाइं नीलवंतवण्णामीई नीलवंतहहकुमारे य एत्य देवे जमगदेवगमो से तेणद्वेणं गोयमा ! जाव नीलवंतदहे २. णीलवंतस्य णं रायहाणी प्रव्वाभिलावेणं एत्थ सो चेव गमो जाव णीलवंते देवे ॥ १४९ ॥ नीलवंतहहस्स णं० पुरस्थिमपचस्थिमेणं दस जोयणाई अबाहाए एत्थ पं दस दस कंचणगपन्चया पण्णता, ते णं कंचणगपन्चया एगमेगं जोयणसयं उन्ने उच्चतेणं पणवीसं २ जोयणाई उब्वेहेणं मुळे एगमेगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्हे पण्णत्तरिं जोयणाइं [आयाम]विक्खंभेणं उवरिं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं मूळे तिष्णि सोले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं मज्हे होसि सत्ततीसे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं उवरि एगं अब्रावण्णं जोयणसयं किंचिविसंसाहिए परिक्खेवेणं मुळे विच्छिण्णा मज्झे संखिता उपि तणुया गोपुच्छ-संठाणसंठिया सञ्वकंत्रणमया अच्छा जाव पिहरूबा पत्तेयं २ पडमबरवेड्या० पत्तेयं २ वणसंडपरिक्सिना ॥ तेसि णं कंचणगपन्वयाणं उपि बहसमरमणिजे भूमिमारो जाब आसयंति . तेसि णं० पत्तेयं पत्तेयं पासायवर्डेसगा सम्बादद्वि जोयणाई उर्दू उन्न-त्तेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च विक्खंमेणं मणिपेडिया दोजोयणिया सीहासणं सप-रिवारं ॥ से केणद्वेणं भंते ! एवं वृषद् --कंबणगपञ्चया कंवणगपञ्चया ? गोबसा ! कंचणमेसु णं पत्नएसु तत्य तत्य व वाबीसु॰ उप्परुद्धं जाव कंचणमक्ष्णामाहं कंच॰ णगा देवा महिद्विया जाव विदरंति, उत्तरेणं कंचणगणं कंचणियाओ राज्ञहा-

णीओ अण्णंमि र्जवृ० तहेव सन्वं भाजियन्वं ॥ कहि णं मंते ! जंबुरीने रीवे उत्तरकुराए कुराए उत्तरकुरुहहे जामं दहे पण्णते ? गोयमा ! नील्वंतहहस्स दाहिणेणं अद्योत्तीसे जीयणसए, एवं सो चेव गमो णेयव्यो जो णील्जंतहहस्स सन्देसि सरिसंगी दहसिनामा य देवा. सन्वेसि पुरस्थिमपचित्रमेणं कंबणगपञ्चया दस २ एगप्पमाणा उत्तरेणं रायहाणीओ अण्णाम अंबुद्दीवे २ । वंदद्दे एरावणद्दे माल-वंतद्दे एवं एकेको णेयव्यो ॥ १५० ॥ कहि णं भंते ! उत्तरकुराए २ अंबूसुदंसणाए जंबुपेडे नामं पेढे फणते ? गोयमा ! जंबुहीबे २ मंदरस्स पञ्चयस्स उत्तरपुरच्छिमेणं नीलवंतस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपञ्चयस्स पचित्यमेणं गंधमायणस्स वक्खारपव्ययस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए पुरत्थिमिहे कुळे एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए जंबपेडे नामं पेडे पण्णते पंचजीयणसयाई आयामविक्संमेणं पण्णरम एक्कासीए जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्लेबेणं बहुमज्झदेसभाए बारस जोयणाई बाह्रहेणं तयाणंतरं च णं मायाए २ पएसे परिहाणीए सब्बेस चरमंतेस दो कोमे वाहक्षेणं पण्णते सन्वजंबुणयामए अच्छे जाब पढिरुवे ॥ से णं एगाए पजमनरवेइयाए एगेण य क्णसंदेणं सम्बन्धो समंता संपरिक्खित वण्णनो दोण्हवि । तस्स णं जंबपेडस्स चउहिसिं चतारि तिसोबाणपडिस्वगा पण्णता तं चेव जाव तोरणा जाव छता ॥ तस्स णं अंबूपेडस्स उप्पि बहुसमरमणिके भूमिभागे पण्णते से जहाणामए आलिंगपुक्खरेड वा जाव मणि० ॥ तस्स णं बहसमरमणिजस्स भूमि-भागस्य बहुमजरादेसभाए एत्य णं एगा महं मणिपेहिया पण्णता अद्र जोयणाई आयामविक्खंमेणं चतारि जोयणाई बाह्रहेणं सम्बम्धिमंड अच्छा सण्हा जाव पहिल्हा ॥ तीसे णं मिषिपेद्वियाए उविर एत्थ णं महं जंबूसुदंसणा पण्णाता अह-जीयणाई उन्ने उन्नतेणं अद्वजीयणं उन्नेहेणं दो जीयणाई खंबे अह जीयणाई विक्खंभेणं छ जोयणाई विकिमा बहुमज्झदेसमाए अह जोयणाई विक्खंयेणं साइ-रेगाई अट्ट जोयणाई सञ्वागेणं पण्णता, वइरामयमूला रययसुपइद्वियविडिमा रिट्टाम-यविउलकंदा वेरुलियरहर्द्धवा सुजायवर्जायरूवपढमगविसालसाला नाणामणिरय-णविविद्साहप्पसाहवेरिक्यपत्ततवणिअपत्तर्विटा अंबूणयरत्तमस्यसङ्क्रमालपवालपह्नवंकु-रघरा विश्वित्तमणिरमणदरहिक्दमा फलभारनमियसाला सच्छाया सप्पमा सस्सिरीया सरजोया अहियं मणोनिव्युस्करा पासाईया दरिसणिजा अभिरूदा पश्चित्वा ॥ १५१ ॥ जंबूए णं सुदंसणाए नसहित बत्तारि साला पण्णता, तंजहा-पुरत्यिमेणं दक्कि-वेणं प**ब**रिवमेनं उत्तरेंमं, तत्व वं से पुरतियमिक्के साळे एत्य पं एगे महं अवसे पण्णते एवं कीसे आयामेणं अदकीसं विक्संमेणं देसणं कीसं उर्ष उष्क्रीणं स्रोण-

संभ० वण्णओ जाव भवणस्य दारे तं चेव प्रमाणं पंचध्यसयाई उच्चे उचतेणं अवाहजाडं धणस्याडं विक्कंमेणं जाव बणमालाओ भूमिमागा उह्येवा मणिपेकिया पंचवणुसङ्या देवसयणिजं भाषियव्यं ॥ तत्य णं जे से दाहिणिहे साढे एत्य णं एगे महं पासायवरेंसए पण्णते. कोसं उन्ने उन्नतेणं अद्यकोसं आयामविवनींमेणं अञ्मणयमसिय ॰ अंतो बहसम ॰ उह्रोया । तस्स ण बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहमजबहेसभाए सीहासणं सपरिवारं भाणियव्यं । तत्थ णं जे से पश्चत्थिमिक्ने सास्रे प्रत्य णं पासायवर्डेसए पण्णते तं चेव प्रमाणं सीहासणं सपरिवारं भाणियव्यं, तत्थ णं जे से उत्तरिक्ने साले एत्थ णं एगे महं पासायवर्डेसए पण्यते तं चेव पमाणं सीहासणं सपरिवारे । जेव णं सदंसणा मुळे बारसिंह परमवरवेडयाहि सञ्बक्षो समेता संपरिक्खिता. ताओ णं परमवरवेडयाओ अद्वजीयणं उन्नं उन्नतेणं पंचधणसयाई विक्लंभेणं वण्णलो ॥ जंबू णं सुदंसणा अण्णेणं अद्भूसएणं जंबूणं तयद्भूचराप्यमाणमे-नेणं सञ्बद्धो समंता संपरिक्खिता ॥ ताओ णं जंबूओ चतारि जोयणाई उन्ने उन्नेतेणं कोसं चोब्वेहेणं जोयणं खंथो कोसं विक्खंमेणं तिण्णि जोयणाइं विडिमा बहुमज्झ-देसभाए चनारि जोयणाई विक्लंभेणं साइरेगाई चनारि जोयणाई सव्वर्गेणं वह-रामयमुका सो चेव जंबुसुदंसणावण्यओ ॥ जंबूए णं सुदंसणाए अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्य णं अणाडियस्स देवस्स चडण्डं सामाणियमाहस्सीणं चतारि जंबसाहस्सीओ पण्णताओ, जंबूए णं सुदंसणाए पुरत्यिमेणं एत्य णं अणाढियस्स देवस्स चउण्डं अस्ममहिसीणं चतारि जंबओ पण्णताओ, एवं परिवारो सक्वी णायव्यो जंबृए जाव आयरक्खाणं ॥ जंबू णं सुदंसणा तिहि जोयणसएहि वणसंडेहि सम्बन्धा समेता संपरिक्खिता, तंजहा-पडमेणं दोबेणं तबेणं । जंबए णं सुदंसगाए प्रतिधमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जीयणाई ओगाहिता एत्व णं एने महं सबचे पण्णते. परस्थिमित्रे भवणसरिसे भाषियन्त्रे जाव सयणिखं, एवं दाष्ट्रिणेणं प्रवस्थिमेणं उत्तरेणं ॥ जंदूए णं सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता चतारि पंदायक्खरिणीओ पण्यताओ, तंजहा--पउमा पउमप्पमा चेत कुमया कुमयप्पमा । ताओ पं गंदाओ पुरुवरिणीओ कोसं आयामेणं अधकोसं विक्लंभेणं पंचधणस्याइं उन्वेहेणं अन्छाओ सम्हाको लम्हाको चडाको महाखो णिप्पंकाओ जीरमाओ जाव पडिस्वाओं वन्जओ भाजियको जाव तोरपति छताइ-छता ॥ तासि णं णंदापुरुखरिणीणं बहमज्झदेसमाए एत्य णं पासायवर्डेसए प्रव्यक्त कोसप्पमाणे अद्धकोसं विक्संभी सो चेव बणाओ जाव सीहासणं सपरिवारे । एवं दक्षिणपुरत्यिमेणवि पण्णासं जोयका । सत्तादि जंदापक्ष्यादिणीको उप्पत्नप्रसा

निका उप्पक्त उप्पक्तका तं चेव पमाणं तहेव पासायवर्डेसगो तप्पमाणो । एवं दक्षित्रणप्यत्यिमेणवि पन्णासं जोयणाणं नवरं-मिंगा भिंगणिमा चेव अंजणा कज-रूपमा, सेसं तं चेव । जंकुए णं सुदंसगाए उत्तरपुरियमेणं परमं बणसंडं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता एत्य णं चतारि णंदाओ पुरुवरिणीओ पण्मताओ तं०-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तह य सिरिणिलया। तं चेव पमाणं तहेव पासायवर्डिसओ ॥ जंबूए णं सुदंसणाए पुरत्यिमिलस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरत्यि-मेणं पासायवर्डेसगस्स दाहिणेणं एत्य णं एगे महं कृढे पण्यत्ते अद्भ जीयणाई उडूं उचतेणं मूछे बारस जोयणाई विक्खंमेणं मज्झे अह जोयणाई आयामविक्खंमेणं उवरि चतारि जोयणाई आयामविक्तंभेणं मुळे साइरेगाई सत्ततीसं जोयणाई परिक्लेवेणं मज्हे साइरेगाइं पणवीसं जोयणाइं परिक्लेवेणं उनरि साइरेगाइं बारम जोयणाइं परिक्खेवेणं मुळे विच्छिने मज्ज्ञे संखिते उपि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सञ्बजंबूणयामए अच्छे जाव पहिस्त्वे, से णं एगाए परमवरवेश्याए एगेणं वण-संडेणं सम्बद्धां समंता संपरिक्खिते दोण्डवि बण्णको ॥ तस्स णं कृडस्स उवरि बहसमर्मणिखे भूमिमाने पण्णते जाव आसयंति ।। जंबूए णं सुदंसणाए पुर्व्धिमस्स भवणस्य दाहिणेणं दाहिणपुरत्यिमिङस्य पामायवर्डेसगस्य उत्तरेणं एत्य णं एगे महं कृडे पण्णते तं चेव पमाणं। जंबूए णं सुदंसणाए दाहिषिक्रस्स भवणस्स पुरित्यमेणं दाहिणपुरित्यमस्य पासायवडेंसगस्य पचित्यमेणं एत्य णं एगे महं कुडे पण्णते तं चेव पसाणं, अंबूए णं सु० दाहिणस्स भवणस्स पचित्यमेणं दाहिणपचित्य-मिहस्स पासायवर्डिसगस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं एगे महं कूढे पण्णते तं चेव पमाणं, जंबुओ पचित्विमिह्नस्त भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपचित्विमहस्स पासायवर्डेसगस्स उत्तरेणं एत्य णं एगे महं कृडे प॰ तं चेव प्रमाणं, जंबूए॰ प्रचतिमसिक्तस भवणस्य उत्तरेणं उत्तरपन्नत्थिमिहस्स पासायवर्डेसगस्स दाहिणेणं एत्थ णं एगे महं कृडे पण्णते तं चेव पमाणं । जंबूए० उत्तरस्स भवणस्स प्रचरियमेणं उत्तर्पचरिधमस्स पासायवर्डेसगस्स पुरत्धिमेणं एत्यं णं एगे महं कुडे पण्णते, तं चेव पमाणं । जंबूए० उत्तरभवणस्य प्रत्यिमेणं उत्तरप्रत्यिमिकस्य पासायवर्डसगस्य प्यत्यिमेणं एत्य णं एंगे महं कूढे पञ्जते, तं चेव पमाणं । जंबू णं झुदंसणा अण्येहि बहुहि तिलएहि लडएहिं जाव रायस्वकोहिं हिंगुरुक्कोहिं जाव सन्त्रओ समंता संपरिक्सिता । जेबए णं सरंसणाए उवरिं बहुवे अद्वर्धगरुगा पण्णता. तंजहा-सोत्वयसिरिवच्छ० किण्हा नामरजाया जाव सताइष्टता ॥ जंबूए मं सुदंसणाए दुवालस णामघेजा पण्यता, तंत्रहा-- पुरंसणा कसोदा य, सुप्पबुदा जसोवरा । विदेहजंबू सोनणसा,

णियया णिचमंहिया ॥ १ ॥ सुमहा य विसाला य, सुजाया सुमणीतिया । सुर्दसणाए जंबूए, नामधेजा दुवालस ॥ २ ॥ से केणड्रेणं भंते ! एवं वृषद्---जंबूसुदंसणा २ ? गोयमा! जंबूए ण सुदंसणाए जंबूबीवाहिवई अणाहिए णाम देवे महिष्किए जाव पलिओवमद्भिहर परिवसह, से णं तत्य चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव जंबदीवस्स जंबूए सुदंसणाए अणाहियाए व रायहाणीए जाब विहरू । कहि मं संते ! अणाहि-यस्य जाव समत्ता वत्तव्वया रायहाणीए महिक्किए। अदुत्तरं च णं गोयमा! जंबुहीवे २ तत्य तत्य देसे २ तहि २ बहुवे जंबूरुक्खा जंबूवणा जंबूवणसंडा णियं क्रवामिया जाव विरीए अईव २ उवसोमेमाणा २ चिट्ठांत, से तेणहेर्ण गोयमा! एवं वचड-जंबहीवे २, अदत्तरं च णं गोयमा! जंबहीवस्स सासए णामधेजे पण्णते, जब क्याबि णासि जाव णिवे ॥ १५२ ॥ जंबहीवे णं मंते ! बीवे बह चंदा पमा-सिंसु वा पभासेंति वा पभासित्संति वा? कइ सूरिया तविंसु वा तवंति वा नवित्संति वा ? कइ नक्खना जोयं जोइंस वा ओयंति वा जोएस्संति वा ? कइ महम्महा चारं चरिस वा चरिति वा चरिस्पंति वा ? केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोहिंस वा सोहंति वा सोहेस्संति वा?, गोयमा! जंबुहीने णं दीने दो चंदा पभासिंख वा ३ दो सरिया तविंस वा ३ छप्पन्नं नक्खता जोगं जोएंस वा ३ छावत्तरं गहसयं चारं चरिस वा ३---एगं च सयसहस्यं तेतीसं खल्ल भवे सहस्याई । णव य सया पश्चासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ १ ॥ सोभिंस वा सोमित वा सोमिस्संति वा ॥ १५३ ॥ जंबदीवं णाम दीवं लवणे णामं समुद्दे वहे बलयागारसंठाणसंठिए सम्बद्धो समंता संपरिक्तिसाणं चिद्रह ॥ लक्षे णं भेते ! समुद्रे कि समचक्रवालसंठिए विसमचक्र-वालसंठिए? गोयमा! समनकवालसंठिए नो विसमनकवालसंठिए॥ लवणे णं भेते! समुद्दे केवड्यं चक्कदाळविक्संभेणं केव्ह्यं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साई चक्कवालविक्खंभेणं पन्नरस जोयणसयसहस्साई एगासीइसहस्साई सबमेगूणचत्तालीसे किचिविसेस्णं परिक्खेवेणं पण्णते । से भ एकाए पडमनरनेह्याए एगेण य वणसंडेणं सन्तओ समंता संपरिक्सिन निद्वह. दोष्ट्रवि वण्णओ । सा णं परमवर्० अद्धजीयणं उद्गृं० पंचवणसयविक्संमेणं लवणसमुद्दसमियपरिक्सेवेणं, सेसं तहेव । से णं वणसंडे देस्णाई दो जोगणाई जाव विहरह ॥ लवणस्स णं भंते ! समुहस्स कह दारा पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तंत्रहा-विजय वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहि यां अंते ! अवण-समहत्स विजए णार्म दारे पण्यते ? गोयमा ! स्वणसमुद्दस पुरत्यिमपेरंते भागइसंडरस रीवरस पुरस्थिमद्भस्स प्यस्थिमेणं सीओगाए महानईए उपि एत्य ण

स्वणस्य समुद्दस्य विजए णामं दारे पण्णते अद्व जोयणाई उन्नं उन्नतेणं चत्तारि बोयणाइं विक्संमेणं, एवं तं चेव सध्वं जहा जंबुहीवस्स विजयसरिसेवि (दारसरि-समेयंपि) रायहाणी पुरत्थिमेणं अण्णंमि लवणसमुहे ॥ कहि णं भंते ! लवणसमुहे वेजयंते नामं दारे पण्णते ? गोयमा ! ठवणसमुद्दे दाहिणपेरंते धायइसंडदीवस्स दाहिणदस्स उत्तरेणं सेसं तं चेव सम्बं। एवं जयंतेवि, णविर सीयाए महाणईए इप्पि भाषियव्वे । एवं अपराजिएवि, णवरं दिसीभागो भाषियव्वो ॥ लवणस्स पं मंते ! ममुहस्स दारस्स य २ एस णं केवहयं अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा !---'तिष्णेव सयसहस्सा पंचाणउई भवे सहस्साई । दो जोयणसय असिया कोसं दारंनरे लवणे ॥ १ ॥' जाव अबाहाए अंतरे पण्यत्ते । लवणस्स णं पएसा घायइसंडं दीवं पदा. नहेव जहा जंबदीवे धायइसंडेबि सो चेव गमो । लवणे णं भंते ! समुद्दे जीवा उद्दाइता सो चेव विही, एवं घायइसंडेवि ॥ से केणट्रेणं भंते ! एवं बुबइ--लवणमभुंद्द २ ? गोयमा ! लवणे णं ममुद्दे उदगे आविले रहले लोणे लिंदे स्तारए कहर अप्पेजे बहुणं दुपयचडप्पयमियपसुपिन्यसरीतिवाणं नण्णत्य तज्जोणियाणं सत्ताणं, सिंहिए एत्य लवणाहिवई देवे महिद्विए पिळओवमिंहिइए, से णं तस्य सामाणिय जाव लवणममुहस्स सुद्वियाए रायहाणीए अण्येसि जाव बिहरइ, से एएणट्रेणं गो॰ ! एवं बुचइ लवणे णं समुद्दे २, अदुत्तरं च णं गो०! लवणसमुद्दे सासए जाव णिचे ॥१५४॥ लवणे णं भंते ! समुद्दे कड चंदा प्रभासिंख वा प्रभासिति वा प्रभासिस्वंति वा ? एवं पंचण्हिव पुच्छा, गोयमा! लवणसमुद्दे चत्तारि चंदा पमासिंसु वा ३ चत्तारि स्रिया तर्विसु वा ३ बारसुत्तरं नक्खतसयं जोगं जोएंसु वा ३ तिष्णि बावण्णा महम्महसया चारं चरिस्र वा ३ दुण्णि सयसहस्सा सत्ति च सहस्सा नव य सया तारागणकोहाकोडीणं सोमं सोमिंसु वा ३ ॥ १५५ ॥ कम्हा णं मंते ! स्वाणसमुहे चाउहम<u>द्भवादिद्</u>रपण्णिमासिणीस अइरेगं २ वहुइ वा हायइ वा ? गोयमा ! जंबुहीबस्स णं दीवस्य चंजहिसि बाहिरिक्काओ बेडबंताओ लंबणसमुद्दं पंचाणज्य २ जोयणसह-स्साई ओगाहिता एत्य णं चत्तारि महालिंजरसंठाणसंठिया महदमहालया महापा-याला पण्णता, तंजहा-वलयामुहे केठए जुवे ईसरे. ते णं महापायाला एममेगं जोयणसमसहस्यं उच्चेहेणं मूळे दस जोयणसहस्साई विक्खंमेणं मज्हे एगपएसियाए सेढीए एममेगं जोयणसबसहरसं विक्संभेणं उवरिं मुहमूळे दस जोयणसहरसाई विक्संमेणं ॥ तेसि णं महापायालाणं कुट्टा सव्वत्य समा दसञ्जेयणसम्बाहस्रा पण्णता सम्बन्धरासया अच्छा जाव पिकस्वा ॥ तत्य णं बहवे जीवा पोग्गस्य य अवस्मिति विज्ञासित वर्षति उपवर्षति सासमा णं ते क्या दव्यद्ववाए वण्णपञ्

बेहिं असासमा ॥ तत्व णं चतारि देवा महिन्निया जाव परिओवमहिइया परिव-संति. तंजहा-काले महाकाले वेलंबे पर्मजणे ॥ तेसि णं महापाबालाणं तबो तिभागा पण्णता, तंजहा-हेडिके तिभागे मज्जिके तिभागे उनिरमे तिभागे ॥ ते णं तिमागा तेत्तीसं जोयणसङ्स्सा तिण्णि य तेत्तीसं जोयणसयं जोयणतिमागं च बाहहेणं। तस्य णं जे से हेड्रिके तिभागे एत्य णं बाउकाओ संचिद्रह, तस्य णं जे से मजितके तिमागे एत्थ णं वाउकाए य आउकाए य संविद्वह, तत्थ णं जे से उवरिक्रे तिमागे एत्थ णं आउकाए संचिद्धइ, अदुत्तरं च णं गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे "बहवे खुइालिंजरसंठाणसंठिया खुइपायालकलसा पण्णता, ते णं खुइा पायाला एगमेगं जोयणसहस्सं उब्बेहेणं मुर्ले एगमेगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्से एगपएसियाए सेढीए एगमेर्ग जोयणसहस्तं विक्न्बंभेणं उप्पि मुहमूळे एगमेर्ग जोय-णसर्यं विक्यंभेणं ॥ तेसि णं खुडागपायालाणं कुडा सब्बत्य समा दस जोयणाई बाह्रहेणं पण्णता सन्ववद्रामया अच्छा जाव परिक्वा। तत्थ णं बहवे जीवा पोगाला य जाव असासयावि, पत्तेयं २ अद्भपतिओवमट्टिइयाहि देवयाहि परिग्ग-हिया ॥ तेसि णं खुश्रागपायालाणं तओ तिभागा प०, तंजहा-हेड्डिक तिभागे मज्जिले तिभागे उबिरेले तिभागे, ते णं तिभागा तिष्णि तेत्तीसे जीयणसए जीय-णतिमार्ग च बाहक्रेणं पण्णता । तत्थ णं जे से हेड्डिक्रे तिमार्गे एत्थ णं वाउकाओ मज्जिल्ले तिभागे वाउकाए आउकाए य उवरिक्ले आउकाए, एवामंब सपुन्वावरेणं क्वणसमुद्दे सत्त पायालसहस्सा भट्ट य चुलसीया पायालसया भवंतीति मक्लाया ॥ तेसि णं महापायालाणं खुरुगगपायालाण य हेड्डिममज्झिमिक्केस तिभागेस बहवे ओराला वाया संसेयंति संमुच्छिमंति एयंति चलंति कंपंति खुन्मंति घहंति फंदंति तं तं मावं परिणमंति तया णं से उदए उण्णामिज्ञह, जया णं तेसि महापायालाणं खुरागपायालाण य हेड्डिक्रमञ्चिक्षेत्र तिभागेतु नो बहवे ओराला जाव तं तं भावं न परिणमंति तया णं से उदए नो उन्नामिज्यह अंतरावि य णं ते वायं उदीरैति अंतरावि य णं से उदगे उण्णामिजाइ अंतरावि य ते वाबा नो उदीरंति अंतरावि य णं से उदगे णो उण्णामिजह, एवं खलु गोममा! लवणसमुद्दे चाउदसङ्कमुद्दिनु-पुष्णमासिषीस सहरेसं २ वहार वा हायर वा ॥ १५६ ॥ लवजे ण मंते ! समृहे तीसाए महत्ताणं कहन्तुतो अहरेगं २ वन्नह वा हायह वा ? गोबसा ! लवणे णं समेह तीसाए महत्ताणं दुक्खतो अइरेगं २ वष्ट्रह वा हायइ वा ॥ से केमद्वेणं भेते ! एवं वुकार-समाणे णं समुद्दे तीसाए मुहुताणं वुक्खुतो अइरेगं २ वश्चद्र वा हायह वा ! गोयमा । उन्नमंतेस पायालेस बन्हर आपूरिएस पायालेस हायह, से तेषहेणं सीयमा !

सक्षे णं समुद्दे तीसाए मुहत्ताणं दुक्खुत्तो अहरेगं अहरेगं वद्धह वा हायह वा ॥ १५७ ॥ लक्णसिहा मां भंते ! केनइयं चक्कवालविक्संभेणं केनइयं अइरेगं २ बहुइ बा हायइ वा ! गोयमा ! लवणसिंहा णे दस जोगणसहस्साइं चक्रवालि-क्खंमेणं देसूणं अद्धजोयणं अइरेणं २ वश्चइ वा हायइ वा ॥ स्वणस्स णं भंते ! समहस्स कड णागसाहरसीओ अध्यितरियं वेलं धार्रति ? कड् नागसाहरसीओ बाहि-रियं वेळं घरंति ? कड नागसाहस्सीओ अग्गोदयं घरेंति ?. गोयमा ! लवणसमुहस्स बायाळीसं णागसाहस्सीओ अध्भितरियं केलं घारेंति. बावत्तरिं णागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं बारेंति. सद्विं णागसाहस्सीओ अग्गोदयं घारेंति. एवामेव सप्ववावरेणं एगा णागसबसाहरसी चोवत्तरि व णागसहरसा भवंतीति सक्खाया ॥ १५८ ॥ कड़ णं मंते ! वेलंधरा जागराया पज्जता ? गोयमा ! बतारि वेलंधरा जागराया पण्णता. तंत्रहा--गोथुमे सिवए संबे मणोसिलए ॥ एएसि णं भंते ! चडण्हं वेलं-घरणागरायाणं वह आवासपञ्चया पञ्चला ? गोयमा ! चलारि आवासपञ्चया पण्णता, तंत्रहा-गोधूमे उदगभासे संसे दगसीमए ॥ कहि णं भंते ! गोधूमस्त वेलंबरणागरायस्य गोथमे जामं आधामपन्त्रए पण्णते ? गोयमा ! जंबदीवे दीवे मंदरस्स प॰ पुरत्विमेणं स्वणं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्य णं गोधूभरस वेलंधरणागरायस्य गोधूभे णामं आवासपन्वए फणते सत्तरसएकवीसाइं जोयणसयाई उर्दू उच्चतेणं चतारि तीसे जोयणसए कोसं च उज्वेहेणं मुळे दसवावीसे जोयणसए आयामविक्खंमेणं मज्जे सत्ततेवीसे जोयणसए उवरि बत्तारि चटवीसे जोयणसए आयामविक्खंमेणं मूळे तिण्णि जोयणसहस्साई दोण्णि य बत्तीयुत्तरे जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेणं मञ्झे दो जोयणसहस्साइं दोण्णि व छलसीए जोयणसए किन्बिविसेसाहिए परिन्केवेणं उवरि एगं जोयणसहस्तं तिण्णि य ईयाके जीयणसए किंबिबिसेस्णे परिक्खेवेणं मुखे वित्यण्णे मज्हे संखिते उपि तृणए गोपुच्छसंठाणसंठिए सञ्चकणगामए अच्छे जाव पिडस्बे ॥ से णै एगाए पडमवर-वेड्याए एगेण य बणसंडेणं सम्बक्षो समंता संपरिक्सित, दोण्हवि बण्णको ॥ गोथुसस्स णं आवासपञ्चवस्स उचिरं बहुसमरमणिजे भूमिमागे पण्णते जाव आस-यंति ।। तस्स णं बहुसम्यमिजस्स भूमिमागस्स बहुमज्झवेसभाए एत्य णं एगे महं पासायवर्षेसए बावडं जोयणढं च उन्नं उन्नतेणं तं चेव प्रमाणं अदं आयाम-विक्खंभेणं कण्यको जाब सीहासणं सपरिवारं ॥ से केणद्रेणं मंते ! एवं वृषड्-गोब्रमे आवासपञ्चए २ ! ग्रीयमा ! ग्रीष्ट्रमे जं आवासपञ्चए तत्य २ देसे २ तहि २ वहनी ख्डाखडियाओ जाब गोधसवण्याई बहुई उप्पलाई तहेव जाव गोधसे तत्व देवे

महिष्किए जाब पलिओबमद्विहरू परिवसह, से ण तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीर्ण जाव गोशूमयस्य भावासपन्वयस्य गोशूमाए रायहाणीए जाव विहरृह, से तेणहेणं जाव णिचे ॥ रायहाणिपुच्छा, गोयमा! गोथ्मस्स आवासपन्वयस्स पुरित्थमेणं तिरियमसंखेजे दीवसमुद्दे वीइवइत्ता अण्णंमि लवणसमुद्दे तं चेव पमाणं तहेव सब्वं ॥ कहि णं भंते! सिवगस्त वेलंधरणागरायस्स दओभासणामे आवासपञ्चए पण्णते? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे मंदरस्म पन्वयस्स दक्षिक्षणेणं लवणसमुद्दं बायालीसं जोय-णसह्रसाई ओगाहिता एत्य णं सिवगस्स वेलंबरणागरायस्स दओभासे णामं आवास-पव्वए पण्णेने, तं चेव पमाणं जं गोधुभरम. णवरि मव्वअंकामए अच्छे जाव परिक्रवे जाव अद्वो भाणियन्वो, गोयमा ! दओमासे णं आवायपव्वए लवणसमुद्दे अद्वजोयणि-यखेते दर्ग मन्त्रओ ममंता ओभासेइ उज्जोवेइ तबड प्रभासेइ सित्रए इत्य देवे महिङ्किए जाव रायहाणी से दक्किणेणं सिविगा दओभासस्य सेसं तं चेव ॥ किंह णं भंते ! संखस्य वेलंधरणागरायस्य संखे णामं आवासपब्बए पण्णते ! गोयमा ! जंब्हींवे णं दीवे मंदरस्स पन्त्रयस्स पचित्यमेणं लवणसमुद्दं बाग्रालीसं जोयणसहस्माइं ओगाहिता एतथ णं संब्वस्स वेळंघर० संखे णामं आवासपब्बए प० तं चेत्र पमाणं णवरं मव्वरय-णामए अच्छे जाव पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेड्याए एगेण य कणसंदेणं जाव अट्टो बहुओ खुड्डाखुड्डियाओ जाव बहुई उप्पलाई संखप्पभाई संखवण्णाई संखवण्णपभाई संखे एत्य देवे महिष्टिए जाव रायहाणीए प्रचन्धियेणं संखस्स आवासपन्त्रयस्म संखा नाम रायहाणी तं चेव पमाणं ॥ कहि णं भंते ! मणोसिलगस्स वेलंबरणाग-रायस्य उदगसीमए णामं आवासपन्वए पण्णते ? गोयसा ! जंबहीवे २ मंदरस्य प० उत्तरेणं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साई ओगाहिता एत्थ णं मणोसिलगस्म वैलंधरणागरायस्स उदगसीमए णामं आवासपन्वए पण्णते तं चेव पमाणं णवरि सब्बफलिहामए अच्छे जाव पिंडरूवे अद्यो, गोयमा! दगसीमए णं आवासपव्यए सीयासीयोयगाणं महाणईणं तत्य गओ सोए पिडहम्मइ से तंणदेणं जाव णिश्च. मणोसिखए एत्य देवे महिन्निए जाव से णे तत्य चउण्हं सामाणिय॰ जाव विहर्इ ॥ किं णं मंते! मणोसिलगस्स वैलंघरणागरायस्स मणोसिला णाम रायहाणी पण्णता ? गोयमा ! दगसीमस्स आवासपञ्चयस्स उत्तरेणं तिरि० अण्णंसि लक्ष्णे एत्य णं मणोसिलिया णाम रायहाणी पण्णता तं चेव पसाणं जाव मणोसिलए देवे---क्रणगंकरा ययफालियमया य वेलंबराणमावासा । अणुवेलंबरराईण प्रव्वया होति र्यणमय-॥१॥१५९॥ वह णं मंते । अणुवेलंबरनागरायाणो पण्णता ? बीवमा ! बत्तारि अणुवेलं-धरणागरायाणी पण्णता, तंत्रहा-कक्रोडए कहमए केलासे अस्वप्यंत्रे ॥ एएसि वं

भंते ! चउण्हं अणुवेलंधरणागरायाणं कह आवासप्रव्यया पत्रता ? गोयमा ! चत्रारि आवासपञ्चया पण्णता, तंजहा-ककोडए १ वहमए २ वहलासे ३ अरुणप्पने ४ ॥ कहि णं भंते ! कहोडगस्स अणुवेलंघरणागरायस्स कहोडए णामं आवास-पञ्चए पण्णते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पञ्चयस्स उत्तरपुरच्छिमेणं लवणसमुद्दं बाबाडीसं जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्य णं कक्कोडगस्य नागरायस्य कक्कोडए णामं आवासपव्यए पण्णते सत्तरम एक्स्वीसाई जोयणसयाई तं चेव पमाणं जं गोबूमस्स णवरि सव्वर्यणामए अच्छे जाव निरवसेसं जाव सिंहासणं सपरिवारं अह्यो से बहुई उप्पलाइं० कह्योडप्पभाइं सेसं तं चेव णवरि कह्योडगपव्वयस्स उत्तर-पुरच्छिमेणं, एवं तं चेव सव्वं, ब्रह्मस्सवि सो चेव गमओ अपरिसेसिओ, णवरि दाहिणपुरच्छिमणं आवासो विज्ञुप्पमा रायहाणी दाहिणपुरत्यिमणं, कड्लासेवि एवं चेव, णवरि दाहिणपचित्यमेणं कड़लासावि रायहाणी ताए चेव दिसाए, अरुणप्पभेवि उत्तरपञ्चरिथमेणं रायहाणीवि ताए चेव दिसाए, चतारि विगप्पमाणा सव्वर्यणामया य ॥ १६० ॥ कहि णं भंते ! सुद्धियस्स लडणाहिवङस्स गोयमदीवे णामं दीवे पण्णने ? गोयमा : जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्ययस्स पश्चरियमेणं लवणसमुद्दं वारस-जोयणसहस्साइं ओगाहिता एत्थ णं सुद्वियस्म लवणाहिवइस्स गोयमवीवे० पण्णते, बारसजोयणसहस्ताइं आयामविक्खंमेणं मत्ततीसं जोयणसहस्साइं नव य अडयाले जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेणं जंब्दीवंतेणं अद्भेगूणणउए जोयणाइं चत्ता-लीसं पंचणउद्दमागे जोयणस्स ऊसिए जलंताओ लवणसमुद्देतेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ ॥ से णं एगाए परमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सन्त्रओ समंता तहेव वण्णओ दोण्हिव । गोयमदीवस्स णं दीवस्म अंतो जाव बहसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहानामए-आर्लिंग० जाव आसयंति०। तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एत्य णं सुद्वियस्य लवणाहिवइस्स एगे महं अइझीला-वासे नामं भोभेजविहारे पण्णते बावद्विं जोयणाइं अद्भजोयणं उद्गं उचतेणं एकतीसं जोयणाई कोसं च विक्खंभेणं अणेगखंभसयसित्तविद्वे सब्बो भवणवण्णओ भाणियब्बो । अइकीलाबासस्स णं भोमेजविहारस्स अंतो बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्यते जाव मणीणं फासो । तस्स णं बहुसमरमणि अस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ एगा मणिपेडिया पण्णता । सः णै मणिपेडिया दो जोयणाई आयामविक्संमेर्ण जोयणबाहलेणं सन्वमणिमया अच्छा जाब पिंडस्वा ॥ तीसे णं मणिपेडियाए उनरि एत्य णं देवसय-णिजे पण्णते बण्णको ॥ से केणहेणं भंते ! एवं वुषड्--गोयमदीवे दीचे २ ? गोयमा ! गोयमधीने णं बीने तस्थ २ वेसे २ तर्हि २ बहुई उप्पलाई जान गोयमप्पभाई से एएणहेणं

गोयमा ! जाव विश्वे । कहि णं भंते ! युद्धियस्य लवणाहिवइस्य युद्धिया णामं रायहाशी पण्णता ? गोयमा ! गोयमदीवस्स पचत्यिमेणं तिरियमसंखेजे जाव अण्णंमि लवणसमुद्दे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहिता, एवं तहेव सव्वं णेयव्वं जाव सुद्विए देवे॥ १६९॥ कहि णं भंते ! जंबुहीत्रगाणं चंदाणं चंदरीवा णामं दीवा पण्पाना ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं लवणसमुद्दं बार्स जोग्रणसहस्साई ओगाहिता एत्य णं जंबूदीबगाणं चंदाणं चंदधीवा णामं दीवा पण्णता, जंबुदीवंतेणं अद्वेगुणणउइजोयणाई चतालीसं पंचाणउई भागे जोयणस्य उत्सिया जलंताओ लवणसमुद्देतेणं दो कोसे ऊसिया जलंताओ बारस जोयणसहस्साइं आयामविक्सं-मेणं, सेसं तं चेव जहा गोयमदीवस्स परिक्खेवो पउमबरवेइया पत्तेयं २ वणसंडपरि० दोण्हावि वण्णको बहुसमरमणिजा भूमिमागा जाव जोइसिया देवा आसर्थति । तेसि णं बहुसमरमणिजे भूमिभागे पासायवर्डेसगा बावद्वि जोयणाई॰ बहुमज्झ० मणिपेहि-बाओं दो जोयणाई जाव सीहासणा सपरिवारा माणियव्या तहेव अझो. गोयमा ! बहुसु खुइासु खुड़ियासु बहुई उप्पलाई॰ चंदवण्णाभाई चंदा एत्य देवा महिश्विया जाव पलिओवमहिइया परिवसंति, ते णं तत्य प्तेयं प्तेयं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव चंदबीवाणं चंदाण य रायहाणीणं अमेसि च बहुणं जोइसियाणं देवाणं देवीण य आहेवचं जाव विहरंति, से तेणहेणं गोयमा! चंदरीवा जाव णिया। कहि णं मंते! जंबुरीवगाणं चंदाणं चंदाओ नाम रायहाणीओ पण्णताओ ? गोयमा! चंददीबाणं पुरित्यमेणं तिरियं जाव अण्णंमि जंबुद्दीवे २ बारस जोयणसहस्साई ओगाहिता तं चेत्र पमाणं जाव एमहिष्टिया चंदा देवा २ ॥ कहि णं भंते ! जंब-द्दीवगाणं सुराणं मुरदीवा णामं दीवा पण्णना ? गोधमा ! जैबुदीवे २ मंदरस्स पव्ययस्य पचित्यमेणं लवणसमुदं बारस जीयणसहस्साई क्षोगाहिता तं चेव उचतं आयामविक्खंभेणं परिक्खेनो नेइया वणसंडा भूमिभागा जाव आसर्यति० पासायवर्डे-सगाणं तं चेव पमाणं मणिपेडिया सीहासणा सपरिवारा अद्वो उप्पलाइं॰ सरप्पमाइं सूरा एत्य देवा जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं प्रवत्यिमेणं अण्णंम जंबदीवे बीवे सेसं तं चेव जाव सूरा देवा २ ॥ १६२ ॥ कहि ण मंते ! अस्मितरलावण-गाणं चंदाणं चंदरीवा जामं रीवा पण्णता ? गोयमा ! जंबरीवे २ मंदरस्य पन्ययस्य प्रतियमेणं लवणसमृद्दं बारस जोसणसहस्साइं ओगाहिता एत्य णं अव्मितरस्रावण-गाणं चंदाणं चंदरीवा णामं दीवा पण्णता, जहा जंबुरीवमा चंदा तहा माणियव्या जबरि रायहाणीओ अण्णंमि छवणे सेसं तं चेव । एवं अस्मितरकावणगाणं सूरामान क्रवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं तहेव सब्वं जाव रायहाणीओ ॥ कहि गं अंते !

बाहिरलाबणगाणं चंदाणं चेददीबा॰ पण्णता ? गोयमा ! लवणस्स समृइस्स प्रत्य-मिलाओ बेइयंताओ लवणसमुई पवत्थिमेणं बारस जीयणसहस्साई ओगाहिता एत्य णं बाहिरलावणगाणं चंदाणं चंददीया नामं दीवा पण्णता वायइसंडदीवंतेणं अदेगणणय-इजोयणाई बत्तालीसं च पंचणउइमागे जोयणस्य ऊसिया जलंताओ लवणसम्बंदेणं दो कोसे ऊसिया बार्स जोयणसहस्साई आयामविक्खंमेणं पउमवरवेइया वणसंदा बहसमरमणिजा भूमिमागा मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा सो चेव अहो राय-हाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं तिरियमसं० अण्णाम लवणसमहे तहेव सन्वं। कहि णं मंते ! बाहिरलावणगाणं सुराणं सुरदीवा णामं दीवा ज्ल्ला ? गोयमा ! लवणसमुद्दप्यत्थिमिह्नाओ वेइयंताओ लवणसमुद्दं पुरस्थिमेणं बारस जोयणसहस्साइं धायइसंडदीवंतेणं अद्धेगृणणउई जोयणाई चतालीसं च पंचनउद्दभागे जोयणस्य दो कोसे ऊसिया सेसं तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं शैवाणं प्वत्यिमेणं तिरियमसं-खेजे त्वणे चेव बारस जीयणा तहेव सर्व्व भाणियव्वं ॥ १६३ ॥ कहि णं भेते ! धायइसंडदीवगाणं चंदाणं चंददीबा० पण्णता ? गोयमा ! घायइसंडस्स दीवस्स परियमिन्नाओं वेडयंताओं काळोयं ण समुद्दं बारस जीयणसहस्साई ओगाहिता एत्य णं धायइसंडदीवाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णता, सव्वओ समंता दो कोसा ऊसिया जलंताओ बारस जोयणसहस्साइं तहेव विक्लंभपरिक्लेवो भूमिभागो पासायवर्डिसया मिणपेढिया सीहासणा सपरिवारा अद्रो तहेव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेणं अण्णंसि घायइसंडे दीवे सेसं तं चेव. एवं स्ररीवावि. नवरं धायइसंडस्य दीवस्स पद्मत्यिमिल्लाओ वेडयंताओ कालोयं णं समुद्दं बारस जोयण॰ तहेव सब्बं जाव रायहाणीओ सुराणं दीवाणं पश्चत्यिमेणं अण्णिम धायहसंडे दीवे सब्बं तहेव ॥ १६४ ॥ कहि णं भेते ! कालोयगाणं चंदाणं चंदरीवा णामं रीवा पण्णता ? गोयमा ! कालोयसमुहस्स पुरच्छिमिल्लाओ वेहसंताओ कालोयण्णं समुद्दं पन्न-त्यिमेण बार्स जोयणसहस्साई ओगाहिता एत्य णं कालोयगचंदाणं चंदरीवा०सम्बओ समंता दो कोसा करिया जलंताओ सेसं तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं दीव० पुर-च्छिमेणं अञ्जंमि कालोगगसमुद्दे बारस जोगणा तं चेव सन्तं जाव चंदा देवा २ । एवं स्राणवि, णवरं काळोअगपचित्वमिकाओ वेइयंताओ कालोयसमुद्द्यरच्छिमेणं बारस जोयणसहस्साई ओगाहिता तहेव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पवत्विमेणं अर्ज्यसि-कोलीयगसमुद्दे तहेच सब्बे । एवं पुक्खर्बर्गाणं चंदाणं पुक्खर्वररस्स दीवस्स पुरस्यि-मिहाओ वेहर्बताओ पुरुवरसमुद्दं बारस जोयवसहरूसाई ओगाहिसा चंद्रदीवा अर्ज्याम पुरुवरंतरे हीवे रावहाणीओ तहेव । एवं सुराणि वीवा पुरुवरंतरीयस्तं प्रवत्य-

मिल्राओ वेइयंताओ पुक्खरोदं समुद्दं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहिना तहेव सन्वं जाव रायहाणीओ दीविष्ठगाणं दीवे ससुरुगाणं ससुरे चेव एगाणं अध्यितरपासे एगाणं बाहिरपासे रायहाणीओ दीविद्यगाणं दीवेनु समुहगाणं समुद्देसु सरिसणामएसु ॥ १६५ ॥ इमे णामा अणुगंतव्या-जंबुद्दीवं लवणे धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे । खीर धय इक्ख्य वरो योणंदी अरुणवरे कुंडले रुयगे ॥ १ ॥ आभरणवत्थर्गंधे उप्पल-तिलए य पुढवि णिहिरयणे । बामहरदहनईओ विजया बक्खारकर्पिदा ॥ २ ॥ पुर-मंदरमावामा कृडा णक्खतचंदम्रा य । एवं भाषियव्वं ॥ १६६ ॥ ऋहि णं भेते ! देवद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णता ? गोयमा ! देवदीवस्स देवोदं समुद्दं वारस जोयणसहस्माई ओगाहिना तेणेत्र कमेण पुरन्धिमिन्नाओ वेदर्यताओ जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरिन्धमेणं देवहीवं समुद्दं असंखेजाइं जायण-सहस्माई ओगाहिता एत्य णं देवदीवयाणं चंदाणं चंदाओ णामं रायहाणीओ पण्ण-त्ताओ, सेसं तं चेव, देवदीवचंदा दीवा, एवं सुराणवि, णवरं पचित्थिमिलाओ वेडयं-ताओ पचित्यमेणं च माणियव्वा नीम चेव समुद्दे ॥ कहि णं भेते ! देवसमुद्दगाणं चंदाणं चंदरीवा णामं रीवा पण्णता ? गोयमा ! देवोदगस्स समुहस्य पुरत्यिमिलाओ वेड्यंनाओ देवोर्गं ममुद्दं पचित्रिमेणं बार्म जोयणसहस्माइं ओगाहिता नेणव कमेणं जाव रायहाणीओं सगाणं दीवाणं पचित्यमेणं देवोदगं समुद्दं असंखेजाई जोयणसहस्माई ओगाहिता एत्य णं देवोदगाणं चंदाणं चंदाओ णामं रायहाणीओ पण्णनाओ, तं चेव सन्तं, एवं सराणवि, णवरि देवोदगस्स पचरियमिकाओ वेडयंताओ देवोदगसन्हं पुरित्यमेणं बार्य जोयणसहस्साइं ओगाहिता रायहाणीओ सगाणं २ दीवाणं पुरित्यमेणं देवोदगं समुहं असंखेजाइं जोयणसहस्साई ॥ एवं णागे जक्खे भूएवि च उण्हं दीवसमुद्दाणं । कहि णं भेते ! सर्यभूरमणदीवगाणं चंदाणं चंदरीचा णामं दीवा पण्णता ? गोयमा ! सर्यभुरमणस्स दीवस्स पुरस्थिमिह्नाओ वेइयंनाओ सर्यभुरमणो-दगं समुद्दं बार्स जोयणसहस्साइं तहेच रायहाणीओ सगाणं २ दीवाणं पुरन्यिमेणं सयंभुरमणोदगं समुद्दं पुरत्यिमेणं असंखेजाइं जोयण० तं चेव, एवं सुराणवि, सर्यभरमणस्य प्रवित्यमिल्लाओं वेइयंनाओं रायहाणीओं सगाणं २ दीवाणं प्रवित्य-मिह्नाणं सर्यभुरमणोदं समुद्दं असंखेजा । सेसं तं चेत्र । कहि णं मंते ! सर्यभुरमण-समुहगाणं चंदाणं ० ? गोयमा ! सर्यभूरमणस्य समुहस्य पुरत्थिमिक्राओ वेइयेताओ सर्यभुरमणं समुद्दं पन्नत्यमेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहिसा सेसं तं चेव । एवं सराणवि. सर्यभरमणस्स प्रचारियमिकाओ सर्यभुरमणोर्द समुद्दं पुरत्यिमेणं बारस जोबणसहस्साइं ओगाहिता रायहाणीओ समाणं दीवाणं पुरत्यिमेणं सर्यभुरमणं समुदं

असंबेजाई जोयणसहस्साई ओगाहिला एत्य णं सर्यभुरमण जाव सुरा देवा २ ॥ १६७॥ अस्य णं मंते । लवणसमुहे वेलंघराइ वा णागरायाइ वा खन्नाइ वा अग्याइ वा सिंहाइ वा विजाईह वा हासवटीइ वा ? हंता अस्थि । जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे अस्थि वेलंघराड वा णागराया • अग्घा • सिंहा • विजाईड वा हासवहीड वा तहा णं बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलंघराइ वा णागरायाइ वा ० अग्घाइ वा सीहाइ वा विजाईइ वा हासवटीइ वा ? जो इजद्वे समद्वे ॥ १६८ ॥ लवजे जं भेते ! सुमहे कि कसिओ-द्रों कि पत्यडोद्रों कि खुभियजले कि अखुभियजले ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उति-ओदगे नो पत्थडोदगे खुभियजले नो अक्खुभियजले । जहा णं भंते ! लवणे समृहे ऊसिओदगे नो पत्यहोदगे खभियजले नो अक्खमियजले तहा णं बाहिरगा समुहा कि कसिओदगा पत्य होदगा खुभियजला अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगा समुहा नो उस्पिओदगा पर्यहोदगा नो खुभियजला अक्खुभियजला पुण्या पुण्यप्यमाणा बोल-हमाणा बोसहमाणा समभरघडताए चिद्वंति ॥ अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहुचे ओराला बलाहरा संसेयंति संमुच्छंति वा वासं वासंति वा ? हंना अन्य । जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहुवे ओराला बलाहुगा संसेयंति संमुच्छंति वासं वासंति वा तहा णं बाहिरएसुवि समुद्देस बहवे ओराला बलाहगा संसेयंति संमुच्छंति वासं वासंति ? णो इणडे समहे, से केणडेणं भेते! एवं वुचक् बाहिरमा णं समुद्दा पुण्या पुण्याप्यमाणा बोलहमाणा बोसहमाणा समभरघडताए चिट्ठंति ? गोयमा ! बाहिरएस णं समुद्देस बहुवे उदगजोणिया जीवा य पोगगला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति, से तेणहेणं एवं वृष्यइ-बाहिरमा समुद्दा पुण्णा पुण्ण । जाव समभरघड-त्ताए चिद्रंति ॥ १६९ ॥ रुवणे णं भंते ! समुद्दे केवहयं उव्वेहपरिवृद्धीए पण्णते ? गोयमा ! ल्यणस्स णं समहस्स उभको पासि पंचाणउइ २ पएसे गंता पएसं उञ्चेह-परिवर्षीए पण्णते. पंचाणउड २ वालमाडं गंता वालमां उन्वेहपरिवृद्वीए पण्णते. एवं पं० र छिन्खाओं गंता छिन्खं उन्वेहपरि॰ ज्या॰ जबमज्हे॰ अंगुल॰ विहृत्यि॰ रयणी० कुच्छी० घणु० उठवेहपरिवृद्धीए प०, गाउब० जोयण० जोयणसय० जोय-णसहस्साइं गंता जोयणसहस्सं उच्वेहपरिवृद्धीए पण्णते ॥ ठवणे णं भंते ! समुद्रे केवड्यं उस्सेडपरिवृद्गीए पण्णते ? गोयमा ! लवणस्य णं समुहस्स उभक्षो पासि पंचा-णडंड पएसे गंता सोलसपएसे उस्सेहपरिवृद्धीए पण्यते, एएणेव कमेणं जाव पंचाणडंड २ जोबणसङ्ख्साइं गंता सोलस जोबणसङ्ख्साइं उत्सेहपरिवृद्वीए पण्पते ॥ १७० ॥ लवणस्य णं अंते ! समहत्य केमहालय योतित्ये पण्यते ? गोयमा ! स्वणस्य णं सम्-इस्स उभक्ते पासि पंचाणउई २ जोगणसहस्साई गोतित्यं पण्णतं ॥ स्वम्भस्स णं भंते ! समुद्दस्य केमहालए गोतित्यविरहिए खेते पण्णते ? गोयमा ! खक्णस्य पं समुद्रस्य दस जोयणसहस्साइं गोतित्यविरहिए खेले पण्णते ॥ स्वणस्य णं भंते ! सुसुहस्स केमहाळए उद्यमाछे पण्पत्ते ? गोयमा ! दस जोयणसहस्साई उद्यमाछे पण्यत्ते थ १७१ ॥ रुवणे णं अंते ! समुद्दे किसंठिए पण्णते ? गोयमा ! गोतित्यसंठिए नावासंठाणसंठिए सिप्पिसंपुडसंठिए आसलंधसंठिए वक्रमिसंठिए वहे वक्ष्यागार-संठाणसंठिए पण्णते ॥ स्रवणे णं मंते । समुद्दे केवड्यं चक्कवारुविक्संमेणं ? केवड्यं परिक्खेवेणं ? केवइयं उठवेहेणं ? केवइयं उस्सेहेणं ? केवइयं सम्बरगेणं पण्णते ?, गोयमा ! लक्षे णं सुसुद्दे दो जोयणसयसहरूसाई चक्कवालविक्खंभेणं पण्णस्स जोयणसयसहरसाइं एकासीइं च सहस्साइं सयं च इगुयालं किंचिविसेस्णे परिक्खेवेणं एगं जोयणसहस्सं उन्वेहेणं सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहेणं सत्तरस जोयणसहस्साइं सञ्चरगेणं पण्णते ॥ १७२ ॥ जह मं भेते ! लवणसमुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्संभेणं पण्णरस जोयणसयसहस्साई एकासीइ च सहस्साई सयं इगुयालं किंचि विसेस्णे परिक्खेवेणं एगं जोयणसहस्यं उठवेहेणं सोलस जोयणसहस्याहं उस्सेक्षेणं सत्तरस जोयणसहस्साई सम्बग्गेणं पण्णते । कम्हा णं मंते ! लवणसमुद्दे जंबुदीवं २ नो उदीलेइ नो उप्पीलेइ नो चेव ण एकोदगं करेइ? गोयमा ! जंबुदीवे णं बीवे भरहेरबएस वासेस अरहंतचक्कबहिबलदेवा वासदेवा चारणा विज्ञाहरा समणा समणीओ सावया सावियाओ मणुया पगइभह्या पगइविणीया पगइउवसंता पगइपयमुकोइमाणमायालोमा मिउमहदसंपना अलीणा भहगा विणीया, तेसि णं पनि-हाए लवणे समुद्दे जंबद्दीवं बीवं नो उबीलेड नो उप्पीलेड नो चेब णं एगोदगं करेड. गंगासिश्वरतारत्तवहेन सिल्लास देवयाओ सिहिन्नियाओ जाव पलिओवसिहरयाओ परिवसंति, तासि ण पणिहाए लक्णसमुद्दे जाव नो चेव ण एगोदगं करेंह, चुह्नहिम-वंतसिहरेद्ध वासहरपञ्चएस देवा महिन्निया॰ तेसि णं पणिहाए॰, हेमवएरण्जवएस बासेसु मणुया पगइमहगा॰, रोहियंससुवण्णकृत्रस्पकृत्रासु सिल्लासु देवसाओ महिद्रियाओ । तासि पणि । सहावहवियडावहबह्देयद्वपञ्चएसु देवा महिद्दिया जाव पलिओवमद्भिष्या परिव॰, महाहिमवंतकपीत बासहरपञ्चएस देवा महिश्चिया जाव पिक्योवमद्भिष्या , हरिवासरम्मयवासेसु मणुया पगहभद्दमा , गैवावहमारुवंतपरिया-एसु बहवेशनुपन्नएसु देवा महिन्नियाः, शिसदगीरूपंतेसु वासहरपन्नएसु देवा महि-ब्रिया . सव्वाओ वहबेचयाओ माणियव्याओ, परमस्हतिविच्छिकेसनिदहावसाणेस देक्याओ महिश्वियाओ॰ तासि पणिहाए॰, पुञ्चविदेहाबरविदेहेह वालेस अरहंतचळ्ड-हिनळदेवनायुक्तेमा चारणा विजाहरा समन्त्रा समन्त्रीको सामगा सावियाको मण्या

पनइ० तेसिं पणिहाएं क्वण०, सीयासीओयगास सिक्कास देक्याओ महिष्टिया०, देक्कुस्तारकृत्यस मणुया पगइमह्गा०, मंदरे पञ्चए देवयाओ महिष्टिया०, जंमूए य सुदंसणाएं जंबूदीवाहिनई अणाढिए णामं देने महिष्टिए जाव पिक्रओवमिद्विदए परिकाद तस्स पणिहाएं क्वणसमुद्देश नों उवीकेंद्र नो उप्पीकेंद्र नो चेव णं एक्कोदमं करेद, अदुत्तरं न णं गोयमा! लोगद्विद्दे लोगाणुभावे जण्णं लवणसमुद्दे जंबुदीकं वीवं नो उवीकेंद्र नो उप्पीकेंद्र नो चेव णमेगोदगं करेद्र ॥ १७३ ॥ दृष्ट्र मंदरोहेसो समस्तों ॥

लवणसमुद्दं धायइसंडे नामं दीवे वहे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वको समंता संपरिक्खिताणं चिद्रह. घायडसंडे णं भंते ! चीचे कि समचक्कवालसंठिए विसमनकवालसंठिए ? गोयमा ! समनकवालसंठिए नी विसमनकवालसंठिए ॥ धायहसंडे णं भंते ! दीवे केवहमं चक्कवालविक्संमेणं केवडमं परिक्केंवेणं पण्णते ? गोयमा ! चतारि जोयणसयसहस्साइं चक्रवालविक्संभेणं एगयालीसं जोयणसय-सहस्साइं दमजोयणसहस्साइं णवएगद्धे जोयणसए किन्दिविसेसणे परिक्लेवेणं पण्णते ॥ से णं एगाए परमबरवेइयाए एगेणं वणसंदेणं सव्वक्षो समंता संपरिविक्षते दोण्डिक वण्णको दीवसमिया परिक्खेवेणं ॥ धायइसंडस्स णं भंते ! दीवस्स बद्ध दारा पण्णता ? गोयमा ! बत्तारि दारा पण्णता, तं०-विजय बेंजर्यते अवंते अपराजिए ॥ कड़ि णं भंते ! धायइसंडस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णते ? गोयमा ! धायइ-संबपुरत्यमपेरंते कालोयसमृद्रपुरत्यमद्भस पश्चत्यमेण सीयाए महाणईए उपिप एस्क णं घासह- विजए जामं दारे प्रजात तं चेव प्रमाणं. रायहाणीको स्रज्यंति भाग्रहसंडे दीवे. वीवस्स वत्तव्यया माणियव्या, एवं नतारिवि दारा माणियव्या ॥ धायहसंहत्स ण भंते ! दीवस्स दारस्स य २ एस जं केन्ड्रयं अवाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा ! दस जोयणसयसहस्साई सत्तावींसं च जोयणसहस्साई सत्तपणतींसे जीयणसए तिक्रि य कोसे दारस्य य २ अकाहाए अंतरे पण्णते ॥ धायप्रसंबस्स णं भेते ! वीवस्य पर्सा कास्त्रेयणं समुद्दं पुद्धा ? इंता पुद्धा ॥ ते णं भंते ! कि वायक् संबे दीवे कालोए समुद्दे ? ते घायहसंखे नो सन्न ते कालोबसमुद्दे । एवं कालोबन रसवि । भागव्यवद्यवि में मेते ! जीवा उदाहता २ काळोए समुद्दे प्यार्थेति ? गोयमा ! क्षरबंगड्या प्यायंति अत्येगस्या नो प्यायंति । एकं कालोएवि अस्वेव प्रव अस्येग-इया जो प्रवार्वति ॥ से केमहेर्ण अंते ! एवं वृष्णः -- वायहसंडे वीवे २ ! मोयसा ! धासकार में की तत्य तत्य वेसे र तार्ड २ वहने धानकतन्या भागवनमा भागवस्ता कियं बद्धतिया जाव समसोनेमाणा २ चित्रीते, धायक्ष्मदाधामाकक्ष्मदेश सर्वस्य-

पियदंसणा दुवे देवा महिच्चिया जाव पिलेओवमद्भिदया परिवसंति से एएणक्रेणं. अदत्तरं च णं गोयमा ! जाव णिचे ॥ धायइसंडे णं भंते ! दीवे कह चंदा प्रभासिस वा ३१ कइ स्रिया तर्विस वा ३१ कइ महम्महा चारे चरिस वा ३१ कइ णक्सना जोगं जोइंसु वा ३ ? कइ तारागणकोडाकोडीओ सोर्मेसु वा ३ ?, गोयमा ! बारस चंदा पमासिस वा ३. एवं-चडवीसं ससिरविणो णक्खन सया य तिकि छत्तीसा । एवं च गहसहस्सं छप्पनं धायईसंडे ॥ १ ॥ अद्वेव सयसहस्या तिण्णि सहस्साई सत्त य सयाई । धायइसंडे दीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥ २ ॥ सोमेंसु वा ३ ॥ १७४ ॥ धायइसंडं णं दीवं कालोदे णामं समुद्दे वहे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्यिताणं चिद्वड्, कालोदे णं समुद्दे कि समचक्रवालसंठाणसंठिए विसम ॰ ? गोयमा ! समचक्कवालः जो विसमचक्कवालसंटिए ॥ कालोदे जं भंते ! समुहे केवइयं चक्कवालविक्खंमेणं केबइयं परिक्लेवेणं पण्णते ? गोयमा ! अह जोयणसयसहस्साई चक्कवालविक्खंभेणं एकाणउइजोयणसयसहस्साइं मत्तरि सहस्साइं छच पंचततरे जोयणसए किंचिषिसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णते ॥ से णं एगाए परमवरवेड्याए एगेणं वणसंडेणं ० दोण्हवि वण्णको ॥ कालोयस्स णं भंते ! समुद्दस कह दारा पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तंजहा-विजए वेजयंते अयरा-जिए ॥ कहि णं मंते ! कालोदस्स समुहस्म विजए णामं दारे पण्णाते ? गोयमा ! कालोदे समुद्दे पुरिश्यमपेरते पुक्खरवरदीवपुरिश्यमद्भसः प्रवृत्थिमणं सीओयाए महाणईए उप्पि एत्थ णं कालोदस्स नमुद्दस्स विजए णामं दारे पण्णते, अद्वेव जोयणाई तं चेव पमाणं जाव रायहाणीओ । कहि णं भंते ! कालोयस्य समुहस्स वेजयंते णामं दारे पण्णते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस दक्खिणपेरंते पुक्खरवर-दीवस्स दक्खिणद्वस्स उत्तरेणं एत्य णं कालोयसमुद्दस वेजयंते नामं दारे पक्तो । कहि णं मंते ! काळोयसमुइस्स जयंते नामं दारे पत्रने ? गोयमा ! काळोयसमुइस्स पचित्यमपेरते पुक्खरवरदीवस्य पचित्यमद्भस पुरित्यमेणं सीयाए महाणईए उपि जयंते नामं दारे पण्णते । कहि णं मंते ! कालोयसमुद्दस अपराजिए नामं दारे पण्णते ? गोयमा ! कालोयसमुहस्स उत्तरद्वपेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्वस्स दाहिणवो एत्थ णं कालोयसमुद्दस्स अपराजिए णामं दारे०, सेसं तं चेव ॥ कालोयस्स णं भंते ! समुहस्त दारस्य य २ एस णं केवइयं २ अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा !---बावीस सयसहस्सा बाणउइ खळ भने सहस्साई । छव सया बायाला दारंतर तिज्ञि कोसा थ ॥ १ ॥ दारस्य य २ अवाहाए अंतरे पण्णते । कालोदस्स णं भंते ! समुहस्स पएसा पुक्कारकरवीक तहेक, एवं पुक्कारकरवीक्सावि जीवा उहाहता २

तहेव भाणियव्वं ॥ से केणद्वेणं भंते ! एवं वृषद्-कालोए समुद्दे २ ? गोयमा ! कालोबस्स णं समुद्दस्स उदए आसळे मामले पेसळे कालए भासरास्विष्णाभे पगईए उदगरसेणं पण्णते, कालमहाकाला एत्य दुवे देवा महिष्ट्रिया जाव पलिओवमद्विङ्या परिवसंति, से तेणड्रेणं गोयमा ! जाब जिन्ने ॥ कालोए णं भंते ! समुद्दे कड चंडा प्रभासिंसु वा ३ १ पुच्छा, गोयमा ! कालोए णं ममुद्दे वायालीसं चंदा प्रभासेंसु बा ३--वायालीसं चंदा वायालीसं च दिणयरा दिता ॥ कालोदहिम्मि एए चरंति संब-दुलेमागा ॥ १ ॥ णक्लताण सहस्सं एगं छावनरं च सयमण्णं । छच सया छण्ण-उया महागहा तिष्णि य सहस्या ॥ २ ॥ अद्वावीसं कालोदहिम्मि बारम य सयसह-स्माई । नव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ सोमेंसु वा ३ ॥ १७५ ॥ कालोयं णं गमुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वहे वलयागारसंठाणसंठिए सब्वओ समंता संपरि० नहेव जान ममजकनालसंठाणसंठिए नो विसमजकनालसंठाणसंठिए । पुक्तारवरे णं भंते ! दीवे केवइयं चक्कवार्लावक्खंमेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णते ? गोयमा ! सोलम जोयणसयसहस्साइं चक्कवार्लावन्खंमेणं-एगा जोयणकोडी वाण-उई खल भवे सयसहस्सा । अउणाणउई अद्व सया चउणउया य [परिरओ] पुक्खरवरस्स ॥ १ ॥ से णं एगाए धडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं० संपरि० दोण्हवि वण्णाओ ॥ पुक्कारवरस्य णं भंते ! दीवस्य ४इ दारा पण्णाता ? गोयमा ! चनारि दारा पण्णना, तंजहा-विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ किह णं भंते ! पुरुवरवरस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णते ? गोयमा ! पुरुवरवरदीवपुरच्छिम-पेरंते पुक्करोदसमुद्दपुरच्छिमद्धस्य पचित्यमेणं एत्थ णं पुक्खरवरदीवस्स विजए णामं दारे पण्णते तं चेव सन्त्रं, एवं चनारित दारा, सीयासीओया णत्थि भाण-यव्याओ ।। पुत्रकारवरसम् णं भंते ! चीवस्य दारस्य य २ एस णं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा !--अडयाल मयमहस्सा वावीसं खलु भवे सहस्साई। अगुण्तरा य चंडरो दारंतर पुक्खरवरस्स ॥ १ ॥ पएसा दोण्हवि पुट्टा, जीवा दोसु भाणियन्या ॥ से केणडेणं भंते ! एवं वृत्तह-पुरुखरवररीवे २ ? गो० ! पुरुखरवरे णं दीवे तत्थ २ देसे २ तहि २ बहवे पउमरम्बा परमवणसंखा णिर्च कुसुमिया जाव चिट्ठीत, परममहापरमञ्चला एत्य णं परमपुंहरीया णामं दुवे देवा सहिश्विया जाव पिक्योवमिद्रिया परिवसंति. से तेणडेणं गोयमा ! एवं वृत्तर-पुरन्सरवरदीवे २ जाव निषे ॥ पुरुखरवरे णं भंते ! धीवे केनद्रया चंदा पभासिंसु वा ३ ? एवं पुच्छा,---नोयालं चंदसयं चरयालं चेव स्रियाण सर्थ । पुरुखरवरदीवंमि चरति एए पमा-सेता ॥ १ ॥ चतारि सहस्साई बतीसं चेव होति णक्खता । छच सया नावत्तर

महग्गहा बारह सहस्सा ॥ २ ॥ छण्णउइ सबसहस्सा चत्तालीसं भने सहस्साई। चतारि सया पुरुवर[वर]तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ सोमेंसु वा ३ ॥ पुरुवर-वरदीवस्स णं बहमज्झदेसभाए एत्य णं माणुसत्तरे नामं पथ्वए पण्यते वहे बलया-गारसंठाणसंठिए जे ण पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे २ चिद्धह, तंजहा-अधिमतरपुरुवारदं च बाहिरपुरुवारदं च ॥ अधिमतरपुरुवारदे णं मंते ! केवइयं चक्कबार्छणं परिक्खेवेणं पण्णते ? गोयमा ! अद्भ जोयणसयसहस्साई वक्कबालविक्खं-भेणं—कोडी बायालीसा तीसं दोण्णि य सया अगुणवण्या । पुरुखरअद्भपरिरओ एवं च मणुस्सखेतस्य ॥ १ ॥ से केणद्वेणं भंते ! एवं वृचड्-अध्भितरपुरुखरखे २ ? गोयमा ! अध्भितरपुरुखरदे ण याणुखरारेणं पव्यएणं सव्यक्षो समंता संपरि-क्खिते, से एएणद्वेणं गोयमा । अधिमतरपुक्खरदे २, अदुनरं च णं जाव णिचे ॥ अध्भितरपुरुखरहे णं भंते! केबहया चंदा पभासिंसु वा ३ सा चेब पुच्छा जाव तारागणकोडिकोडीओ० ?, गोयमा !--बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दिला । पुक्खरवर**ीवडे चरं**ति एए पमार्सेता ॥ १ ॥ तिण्यि समा छत्तीसा छव सहस्सा महम्गहाणं तु । णक्खताणं तु भवे सोलाई दुवे सहस्साई ॥ २ ॥ अडयाल सयस-हस्सा वावीम् बद्ध भवे सहस्साइं। दोन्नि सय पुरुवरद्धे तारागणकोष्टिकोडीण ॥ ३ ॥ सोमें हु वा ३ ॥ १७६ ॥ समयखेरे णं भंते ! केवड्यं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्रवेवेण पण्णते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामवि-क्लंभेणं एगा जोयणकोडी जावव्यितरपुक्खरद्वपरिद्धो से भाषियव्यो जाव अउ-णपण्णे ॥ से केणड्रेणं भंते ! एवं बुबइ-माणुसकेते २ ? गोसमा ! माणुसकेते णं तिविहा मणुरसा परिवसंति, तंजहा-कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरवीचगा, से तेणहेणं गोयमा । एवं बुचइ-माणुसकेते माणुसकेते ॥ माणुसकेते णं भंते ! कइ चंदा प्रभारेंस वा ३ ? कह सूरा तबइंस वा ३ ?० गोयमा !---वत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चेव सरियाण सर्य । सबलं मणुस्सलोयं चरेंति एए पभार्सेता ॥ १ ॥ एकारस य सहस्या छप्पि य सोला सहस्गहाणं तु । छत्र सया छण्णाउया पानसत्ता तिण्णि य सहस्या ॥ २ ॥ अङसीइ समसहस्या चतालीस सहस्य मनुबन्तोगंग्रि । सत्त य समा अणुणा तारामणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ सोमं सोमेंछ वा ३ ॥ एसो तारापिको सन्त्रसमासेण मणुबळोगंमि । बहिया पुण ताराओ जिनेहि सणिया संबंधेना ॥१॥ एवइयं तारमं जं भणियं माणुसंमि लोगंमि । चारं कृष्टंबुयापुण्यारंदियं बोइसं चर्ह ॥ २ ॥ रविससिगहनक्सता एवड्या आह्रिया मणुस्कोए । जेसि नामागीयं न पागमा पश्चिति ॥ ३ ॥ स्वाबद्धी पिडगाई चंदाह्माण मणुमकोबंधि । दो चंदा दौ

सूरा य इति एकेकए पिडए ॥ ४ ॥ छावड्डी पिडगाई नक्खताणं तु मणुयलोगंनि । खप्पनं नक्सता य डॉति एकेकए पिडए ॥ ५ ॥ छावड्डी पिडगाई महागहाणं तु मणुयलोगंमि । झावत्तरं यहसयं च होइ एकेकए पिडए ॥ ६ ॥ चत्तारि य पंतीओ चंदाइचाण मणुबक्कोगंमि । छानद्विय छानद्विय होइ य एकेक्स्या पंती ॥ ७ ॥ छप्पकं पंतीओ नक्सताणं तु मधुयलोगंभि । छावद्वी छावद्वी हवइ य एकेक्स्या पंती ॥ ८ ॥ छावनरं गहाणं पैतिसयं होइ मणुक्लोगंमि। छावडी छावडी य होइ एकेक्स्या पैती ॥९॥ ते मेरु परियडन्ता प्रयाहिणावसमंद्रका सन्दे । अन्नवद्वियजोगेहि बंदा सरा गहगणा य ॥ १० ॥ नक्सनतारगाणं अवद्विया मंडला सुणयक्या । तेऽविय पदाहिणाव-त्तमेव मेर्ह अणुवरंति ॥ ११ ॥ रयनियरदिणयराणं उन्ने व अहे व संक्रमो नत्य । मंडलसंक्रमणं पुण अस्थितरबाहिरं तिरिए॥ १२॥ रयणियरदिणयराणं नक्ख-त्ताणं महम्महाणं च । चारविद्येसेण भवे सुहदुवन्त्वविही मणुस्साणं ॥ १३ ॥ तेसि पविसंताणं ताक्क्कोतं तु बहुए नियमा । तेणेव कमेण पुणो परिहायह निक्ख-मंताणं ॥ १४ ॥ तेसिं कल्युवापुप्पश्चंठिया होइ ताबखेतपहा । अंतो य संक्रुया बाहि वित्यक्ष चंदसूरगणा ॥ १५ ॥ केणं वच्चड चंदो परिहाणी केण होड चंदस्स । काल्पे वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चंदस्स ? ॥ १६ ॥ किण्हं राहविसाणं निषं चंदेण होइ अविरष्टियं। बजरंगुलमप्पत्तं हिद्वा चंदरस तं चरइ॥ १७॥ बावहिं बावहिं दिवसे दिवसे उ सक्कपक्कास्स । जं परिषष्कृह चंदो सर्वेह तं चेव कार्छणं ॥ १८ ॥ पन्नरसङ्भागेण य चंदं पन्नरसमेव तं वरइ । पन्नरसङ्भागेण य पुणीवि तं चेन तिक्सह ॥ १९ ॥ एवं वद्धह चंदी परिद्वाणी एव होइ चंदस्स । कालो वा जोण्डा वा तेणगुभावेण चंदरस्य ॥ २० ॥ अंतो मगुस्सकेते इवंति चारोवगा य उक्कमा । प्राप्तिहा ओइसिया चंदा सूरा गहुगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चंदाहबागहतारनवन्त्रता। नित्य गई निव चारो अवद्विया ते मुणेयव्या ॥ २२ ॥ दो चंदा इह रीवे चतारि य सायरे लवणतोए । धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सूरा य ॥ २३ ॥ दो दो जंबुद्दीवे ससिस्रा ब्युनिया मवे व्यने । व्यविका य तिगुषिया सविसरा धायहेसंहे ॥ २४ ॥ शायहसंख्यामहं उद्दिहतिगुषिया भवे चंदा । आह्मचंदसहिया कर्मतराणंतरे केते ॥ २५ ॥ रिक्कागहतारमां शेवसमूहे अहिन्छसे नाउं। तस्य सबीहिं गुक्तियं विकासाहतारमाणं तः॥ २६॥ चंदाओ स्रस्य य स्रा चंद्रस अंतरे होइ। प्रवास सहस्ताई तु जोवणाणं अवृणाई॥ २०॥ स्रत्स व स्रत्स्त व सतिको सक्तिको वः अंतरं होइ । बहिबाको स्युस्तकगस्स जोक्याणं समसासम् ॥ २० ॥ सरंतरिका नेदा चंदंतरिका म दिनपरा दिता।

चित्तंतरलेसागा सहलेसा मंदलेसा य ॥ २९ ॥ अद्वासीइं च गहा अद्वादीसं च होंति नक्सता । एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥ ३० ॥ छाबद्विसहस्साइं नव चेव सयाई पंचसयराई । एगससीपरिवारी तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३१ ॥ बहियाओ माणुसनगरस चंदसूराणऽवद्विया जोगा । चंदा अमीहजुत्ता सूरा पुण होंति पुस्सेहिं ॥ ३२ ॥ १७७ ॥ माणुसुत्तरे णं भेते ! पव्वए केवड्यं उद्गं उप-त्तेणं ? केवइयं उठवेहेणं ? केवइयं मुखे विक्खम्भेणं ? केवइयं मज्झे विक्खंमेणं ? केवइयं सिहरे विक्खंमेणं ? केवइयं अंतो गिरिपरिरएणं ? केवइयं बाहिं गिरिपरि-रएणं ? केवइयं मज्के निरिपरिरएणं ? केवइयं उचरि निरिपरिरएणं ?, गोयमा ! भाणसत्तरे णं पञ्चए सत्तरस एकवीसाई जोयणसयाई उड्डं उचतेणं चतारि तीसे जोयणसए कोसं च उब्वेहेणं मूळे दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं मज्ही मन्तिवीसे जोयणसए विक्खंभेणं उवरि चत्तारिच उवीसं जोयणसए विक्खंभेणं अंतो गिरि-परिरएणं---एगा जोयणकोडी वायालीसं च सयसहस्साई । तीसं च सहस्साई दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किचिविसेमाहिए परिक्खेवेणं, वाहिरगिरिपरिरएणं एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्माइं छत्तीसं च सहस्साई सत्तचोहमोत्तरे जोयण-सए परिक्लेबेणं, मज्झे गिरिपरिरएणं एगा जोयणकोडी वायालीसं च मयसहस्माई चोत्तीसं च सहस्सा अद्वतेवीसं जोयणसए परिक्खेवेणं, उबरि गिरिपरिरएणं एगा जोयणकोडी वायाठीसं च सयसहस्साइं बत्तीसं च सहस्साइं नव य बत्तीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, मुळे विच्छिके मज्हे संखित उपि तुण्ए अंतो मण्डे मज्हे उदग्गे बाहिं दरिसणिजे इसिं मण्णिसण्णे सीहणिसाई अबद्धजबरासिसंठाणसंठिए मञ्जान्यामए अच्छे सण्हे जाव पडिस्वे, उभञ्जो पासि दोहि पउमवरवेडयाहि दोहि य वणसंडेहिं सञ्चलो समंता संपरिकिन्तते बण्यलो दोण्हवि ॥ सं केण्डेणं भंते ! एवं बुबड्-माणुसत्तरे पव्वए २ ! गोयमा ! माणुसत्तरस णं पव्ययस्स अंतो मणुया उप्पे सुबण्णा बाहिं देवा अदुत्तरं च णं गोयमा । माणुसूत्तरपञ्चयं मणुया ण क्याइ वीइवइंसु वा वीइवयंति वा वीइवइरसंति वा णण्णत्य चार्णेहिं बा विज्ञाहरेहिं वा देवकम्मुणा वावि, से तेणडेणं गोयमा !० अदुसरं च णं जाव णिवेति ॥ जावं च णं माणुमुत्तरे पव्वए तावं च णं अस्ति लोएति प्युचह, जावं च णं वासाई वा वासहराई वा तार्व च णं अस्ति लोएति पशुचार, जार्व च णं गेहाइ वा गेहावणाइ वा तार्व च णं अस्ति छोएति प्युचाइ, जार्व च णं गामाइ वा जाव रायहाणीह वा तार्व च मं आसिं होएति प्युच्ह, जार्व च मं आहंता चक्क्वही बलदेवा वासुदेवा पिडवासुदेवा चारणा विकाहरा समणा समणीओ सावया साध-

याओं मणुया पगइमहुगा विणीया ताबं च णं अस्ति होएति प्युचह, जावं च णं समबाह वा आवितयाइ वा आणापाणूड वा थोवाड वा लवाह वा मुहुताह वा दिक्साइ वा अहोरताइ वा पक्खाइ वा मासाइ वा उदूइ वा अवणाइ वा संबच्छराइ वा जुगाइ वा वाससयाइ वा वाससहस्साइ वा वामसयसहस्साइ वा पुर्व्वगाइ वा पुम्बाइ वा तुष्टियंगाइ वा, एवं तुष्टिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पत्रमे णलिणे अच्छिणिउरे अउए णउए पउए कृतिया जाव सीसपहेलियंगेड वा सीसपहेलियाड वा पलिओवमेड वा सागरीचमेड वा उवसप्पिणीड वा ओमप्पिणीड वा नावं च णं अस्मि लोएति पत्रचइ, जावं च णं बायरे विज्ञुयारे बायरे थणियसहे तावं च णं अस्मि॰, जावं च णं यहवे ओराला बलाहगा संसेयंति संमुच्छंति वासं बासंति तावं च णं अस्मि लोए॰, जावं च णं वायरे तेउकाए तावं च णं अस्सि लोए॰, जार्व च णं आगराइ वा णिहीइ वा तावं च णं अस्मि लोएनि पतुंचइ, जावं च णं अगडाइ वा णईह वा तावं च णं अस्मि लोए॰, जावं च णं नंदोवरागाइ वा सुरोवरागाइ वा चंदपरिवेसाइ वा सुरपरिवेसाइ वा पिडचंदाइ वा पहिसराइ वा इंदचणूड वा उदगमच्छेड वा कविहसियाइ वा तावं च ण अस्ति लोएति प॰, जावं च णं चंदिमस्रियगहणक्याताराख्वाणं अभिगमणनिग्गमणवृद्धिणवृद्धि-अणवद्वियसंठाणसंठिई आघविज्ञह तावं च णं अस्मि लोएति पत्रचह ॥ १७८ ॥ अंतो णं भंतं! मणुस्सखेनस्स जे चंदिमसरियगृहगणणक्खनताराख्या ते णं भन्ते ! देवा कि उन्नोबवण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारहिइया गइरइया गइसमावण्णगा ? गोयमा ! ते णं देवा णो उन्नोक्वण्णगा णो क्रमोबवण्णगा विमाणोबवण्णगा चारोबवण्णगा नो चार्ब्बिइया गइरह्या गइसमाव-ण्णगा उन्नमुहकलंनुयपुष्पसंठाणसंठिएहि जोयणसाहस्सिएहि ताबसेतेहि साहस्सि-याहिं बाहिरियाहिं वेउन्बियाहिं परिसाहिं महया हयनष्टगीयवाइयतंतीतलतालत्रिय-घणमृहंगपद्धप्यवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाई भुंजमाणा महया २ उद्वाद्विसीहणायवी-लक्लकलरहेण विजलाई भोगमोगाई भुजमाणा अच्छ्यपन्वयरायं पयाहिणावत्तमंड-लयारं मेरं अणुपरियडंति ॥ अया णं भंते ! तेसि देवाणं इंदे चवड से कडमिदाणि पकरेंति १ गोयमा ! ताहे चतारि पंच सामाणिया तं ठाणं उवसंपजिताणं विहरंति जाब तत्य असे हुँदे उनवण्णे भवइ ॥ इंदद्वाणे णं मंते ! केवह्यं कालं विरहिए उचकाएणं पण्णते ? मोयमा ! जहण्णेणं एकं समयं उक्कोसेणं छम्मासा ॥ बहिया णं भंते । मणस्यकेतस्य के चंदिमसरियगहणक्यततारास्या ते णं भंदे । देवा कि उद्मोवकणना क्रपोवकणमा विमाणोवकणमा नारोवकणमा नारद्विहया गहरहया

गइसमावण्यमा ? गोयमा ! ते णं देवा णो उद्योववण्यमा नो कप्योववण्यमा विमा-णीववण्णमा नो चारोबवण्णमा चारक्रिइया नो गइरहया नो महसमावण्णमा पिकट-गसंठामसंठिएहिं जोवणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेतेहिं साहस्सियाहि व बाहिराहिं वेड व्याहि परिसाहि सहया हयणस्मीयवाइय० रवेणं दिन्याई भोगभोगाई भुंजमाणा जाव सहकेस्सा सीयकेस्सा मंदकेसा मंदायवकेसा वित्तंतरकेसागा कृटा इव ठाण-द्विया अण्णोण्णसमोगाढाई डेसाहि ते पएसे सव्वओ समंता ओमासेंति उजीवेंति तवंति प्रभारतेति ॥ जया णं भंते ! तेसि देवाणं इंदे चयह से कहमिदाणि पकरैंति ? गोयमा ! जाब चत्तारि पंच सामाणिया तं ठाणं उवसंपिजिताणं विहरिति जाब तस्य अण्णे इंदे उववण्णे सवइ । इंदद्वाणे णं भंते ! केवइयं कालं विरहिए उवचाएणं प० ? गोयमा ! जहण्णेणं एकं समर्य उक्कोरोणं छम्मासा ॥ १७९ ॥ प्रकलरवरण्णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वह वलयागारसंठाणसंठिए जाव संपरिक्खिताणं चिद्वह ॥ पुक्सरोदे णं भंते ! समुद्दे केवहयं चक्कवालविक्संभेणं केवहयं परिक्सेवेणं पण्णते ? गोयमा ! संसेजाई जोयणस्यसहस्साई चक्कवालविक्संमेणं संसेजाई जोयणस्यसह-स्साइं परिक्खेवेणं पण्णते ॥ पुक्खरोदस्स णं मंते ! समुद्दस्स कइ दारा पण्णता ? गोयमा ! बतारि दारा पण्णता तहेव सक्तं पुक्सरोदसमृद्दपुरिवमपेरंते वरुणवर-वीचपुरत्यिमद्भरस पचत्यिमेणं एत्य णं पुक्खरोदस्स विजए नामं दारे पण्णते, एवं सेसाणवि । दारंतरंगि संसेजाई जोयणसयसहस्साई अबाहाए अंतरे पण्णते । पएसा जीवा य तहेव । से केणद्रेणं अंते ! एवं वृषद् -- पुक्सरोदे समुदे २ ? गोयमा ! पुरुखरोदस्स णं समुद्रस्स उदने अच्छे पत्थे अबे तणुए फलिहवण्यामे पगईए उदगरसेणं सिरिधरसिरिप्पमा य० दो देवा महिश्विया जाव पिक्नोवमद्भिया परिव-संति, से एएणक्कें जाव णिके । पुरुवरोंदे णं भंते ! समुद्रे केनइया चंदा प्रभासिंछ वा ३ १० संखेळा चंवा प्रमासंस वा ३ जाव तारागणकोडिकोसीओ सोमेंस वा ३ ॥ पुरुवरोदण्यं समुद्दं वहणवरे जामं दीवे वहे वस्त्रागार जाव चिद्रह, तहेच समज्जा-बालसंदिए० केवहर्य बहाबालविक्संमेणं केवहर्य परिक्तेविकं पण्यते ? गोयसा ! संबे-जाइं जोयणसम्बसहस्साइं चक्रवास्त्रिक्यं मेणं संबेजाइं जोयणसमसहस्साइं परिक्षे-वेणं पन्णते. परमक्तवेदयावणसंख्यानां दारंतरं पएसा जीवा सहेय सन्यं ॥ से केणट्रेणं अंते ! एवं वृषाइ-वर्षणवरे धीचे २ ? गोसमा ! वरुणवरे णं धीचे तत्यः २ देसे २ तहि २ बहुओं सङ्ग्रसङ्घियाओं आव विक्रपंतियाओं अञ्झाओं । भीषं २ परमनर नेस्यापरिक वणक नासनोदगपनिस्ताको पासनसाओ ४, साझ मं सम्बन त्रियास जाव विस्तरंतियास बार्च सम्पासकायाः काव सावस्थाना सम्बन्धानिकामधाः

अच्छा सहेब ब्रुग्णवरुगप्पमा य एत्य दो देवा महिष्ट्रिया० परिवसंति, से तेणहेणं बाब निचे । जोइसं सन्वं संबोखगेणं जाव तारागणकोडिकोडीओ । वरुणवरण्णं दीवं बारमोदे पामं समुद्दे वहे क्लया॰ जाव चिद्वह, समबद्धः विसमबद्धवारुवि॰ तहेव सम्बं भाणियम्बं. विक्खंनपरिक्खेवो संखिजाई जोगणसहस्साई दारंतरं च पउमबर० वणसंडे पएसा जीवा अह्ये-गोयमा! वारुणोदस्स णं समुब्रस उदए से जहा नामए-चंदप्पमाइ वा मणिसिलागाइ वा सीहृह वा बारणीह वा पतासवेह वा पुष्फासबेह वा चोयासबेइ वा फलासबेइ वा महमेरएइ वा जंबुफलपुटुवजाइ वा जाइप्पसजाइ वा सजूरसारेइ वा मुहियासारेइ वा कापिसायणाइ वा सुपक्कबोयरसेइ वा पभयसंभार-संचिवा पोसमाससयमिसयजोगवत्तिया निरुवहयवितिद्वदिश्वकालोवयारा उद्योसम-यपता अद्यविद्वनिद्विया बण्णेणं उववेया गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया. भवे एयाहवे सिमा ?, गोयमा ! नो इणहे समहे, वारणस्स णं समहस्स उदर एसी इद्वतरे जाव आसाएगं पण्णते तत्थ यां बारुणिबारुणकंता दो देवा महिश्विया जाब परिवसंति, से एएपाट्टेपं जाव फिबे, सन्वं जोड्सं संखिजकेण नायव्यं ॥ १८० ॥ वारुणोदण्यं समुद्दं खीरवरे णामं कीवे बहे जाव चिद्रइ सञ्वं संखेजनं विक्लंभे य परिक्लेवो य जाव अद्वो॰ बहुओ खुड्डा॰ वाबीओ जाव बिलपंतियाओ खीरोदगपडिहत्याओ पासाइयाओ ४, तामु णं० खड्डियामु जाव बिलपंतियासु बहुवे उप्पायपन्त्रम्या सम्बर्यणामया जाव पहिरूता, पुंडरीगपुष्फदंता एत्य दो देवा महि-श्विया जाब परिवसंति, से एएणड्रेणं जाव निश्व जोइसं सन्वं संखेळं ॥ सीरवरण्णं दीवं खीरोए नामं समुद्दे वहे बलयागारसंठाणसंठिए जाव परिविन्खताणं चिद्रह. समनक्रवालसंठिए नो विसमनक्रवालसंठिए, संखेजाई जोयणस॰ विक्खंभपरिक्खेवो तडेब सब्बं जाब अद्भी, गोयमा ! खीरोयस्स वां समुहस्स उद्दर्ग से जहा णामए---युजसहीसारपणाञ्ज्युणतरुणसरसपत्तकोमलअत्थिमात्तणमगपाँडगवरुळ्युचारिणीणं लगं-गपत्तपुष्कपञ्चनक्कोल्यस् फलस्क्सबहुगुच्छगुम्मकलियमलद्विमहुपउरपिष्पलीफलियब-विवर्विवर्वारिणीणं अप्योदगिवरइसरमभूमिमागणिमयख्डोसियाणं सपोसियसडा-गार्ग रोग्रपरिवज्जियागं जिस्बहयसरीराणं कालप्पसविणीणं विश्वतहयसामप्पसमार्थ अंजणबर्गवळवळवळवरवर्षंजणरिद्धभसर्पभूगसमप्पभाणं गावीणं कुंडदोहणाणं इदरबीपत्ववाणं रुढाणं मधुमासकारे संगहिए होजवाउरकेव होज तासि सीरे महररसंक्षियक्कबहुद्व्वसंपडते क्तेयं संद्गियुक्तहर् आठते संवगुडसक्कंडि-ओवनेए रण्यो बाउरतचक्रवहिस्स उबहुविए आसायणिजे विस्सायणिजे पीगणिजे जाब सर्विविद्यगावपस्हामणिजे बच्चेणं उदबेए जाव फारोणं उदबेए, अवे एयास्वे

सिया ?, णो इणड्डे समद्वे, खीरोदस्स णं समुद्दस्स उदए एतो इद्वयराए चेष आव आसाएणं पण्णते, विमलविमलप्पमा एत्य दो देवा महिश्विया जाव परिवसंति, से तेणहेणं वसंखेजा चंदा जाव तारा ॥ १८१ ॥ खीरोदणां समुद्दं घयवरे णामं दीवे वहे वलयागारसंठाणसंठिए जाव परि० चिहुइ, समचक्कवाल० नो विसम० संखेजविक्खंभपरि० पएसा जाव अद्वो, गोयमा! घयवरे णं दीवे तत्थ २ "बहुओ खुडाखुडीओ वाबीओ जाव घयोदगपडिहत्याओ उप्पायपव्ययगा जाव स्रदहड० सम्त्रकंचणमया अच्छा जाव पिंडकवा, कणयकणयप्पमा एत्य दो देवा महिन्निया० चंदा संक्षेजा ।। घयवरण्णं दीवं घओदे णामं समुद्दे वहे वल्यागारसंठाणसंठिए जाव चिद्रइ. समचक्ष० तहेव दारपएमा जीवा य अहो, गोयमा ! घओदस्स णं समुद्दरस उदए से जहा सेजवरनपप्पुल्लसल्लइविमुक्लकण्णियारमरसवमुविमुद्ध-कोरंटदामगिंडियतरस्स निद्भगणतेयदीवियनिस्वह्यविसिद्धमंदरतरस्स सजायदहिम-हियतदिवसगिहियनवणीयपद्भवणावियमुक्कांब्रुयउद्दावसञ्जवीसंदियस्स अहियं पीवरसुर-हिगंधमणहरमहरपरिणामदरिसणिजस्स पत्थनिम्मलसुहोवभोगस्स सरयकालेमि होज गोघयवरस्य मंडए, भवे एयाहवे सिया १, णो इणहे समहे, गोयमा ! घओदस्त णं समहत्म एनी इद्वयराए जाब आसाएणं प० कंतसुकंता एत्थ दो देवा महिष्ट्रिया जाव परिवसंति सेसं तं चेव जाव तारागणकोडिकोडीओ ॥ घओदण्णं समुद्दं स्रोयवरे णामं दीवे बेटे बळयागार जाव चिद्वइ तहेव जाव अहो, स्रोयवरे णं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ खुद्दा० वावीओ जाव खोदोदगपडिद्दत्याओ० उप्पायपव्ययगा सव्यवे-रुलियामया जाव पडिस्वा, सुप्पभमहप्पभा य एत्थ दो देवा महिश्विया जाव परिव-संति, से एएण० सब्वं जोड़सं तं चेत्र जाव तारा० ॥ खोयवरण्णं दीवं खोदोदे नामं समुद्दे वहे बलया॰ जाव संखेआहं जोयणसयसहस्साई परिक्खेवेणं जाव अद्वो, गोयमा ! स्रोदोदस्स णं समुद्दस्स उदए से बहा० आसलमासलपसत्थवासंतनिद्ध-सुकुमालभूमिमार्गे सुच्छिके मुक्द्वलद्वविसिद्धनिद्वहृषाजीयवावीतसुकामजपयत्तनिरुण-परिकम्मअणुवालियसुत्बुबुबुबुणं सुजायाणं लवणतणदोसवज्जियाणं णयायपरित्रबियाणं निम्मायमुंदराणं रसेणं परिणयमउपीणपोरमंगुरमुजायमहुरस्सपुप्कविरइयाणं उवद्व-विविज्ञयाणं सीयपरिफासियाणं अभिणवभग्गाणं अपालियाणं तिभायणिच्छोडिय-वाडिगाणं अविषयमूलाणं गंठिपरिसोहियाणं कुसलणरकप्पियाणं उच्छ्ढाणं जाव पोंडियाणं बलवगणरजतजन्तपरिगालियमेताणं खोयरसे होजा बस्वपरिप्ए चाउ-जायगद्यवासिए अहियपत्यलहए बण्णोबबेए तहेब, सबै एयारूवे सिया ?, णो इनहे समद्वे, खोदोदस्स णं समुहस्स उदए एसो इह्नयराए चेव जाव आसाएणं प०

पुष्णभह्माणिभहा य (पुष्णपुष्णभहा) इत्य दुवे देवा जाव परिवसंति, सेसं तहेव, बोइसं संकेषं चंदा०॥ १८२॥ खोदोदण्णं समुद्दं णंदीसरवरे णामं दीवं वद्दे बलयागारसंठिए तहेब जाव परिक्खेवो । पत्रमवरः वणसंडपरि । दारा दारंतरप्यएसे जीवा तहेव ॥ से केणद्रेणं भेते ! एवं वुचड्-नंदीसरवरदीवे २ ? गोयमा ! नंदीस-रवरदीवे २ तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुओ खुड़ा० वावीओ जाव बिलपंतियाओ खोदोदगपडिहत्याओ० उप्पायपन्वयमा सन्ववडरामया अच्छा जाव पडिस्वा ॥ अदु-त्तरं च णं गोयमा ! णंबीसरवरदीवचक्कवाळविक्खंभबहुमज्झदेसभागे एत्य णं चज-हिमि चनारि अंजणगपव्यया पण्णना. ते णं अंजणगपव्यया चउरासीइजोयण-सहस्माई उन्ने उन्नतेणं एगमेगं जोयणसहस्सं उब्वेहेणं मूळे साइरेगाइं दस जोयण-सहरमाई घरणियले दस जोयणसहरसाई आयामविक्खंभेणं तओऽणंतरं च णं मायाए २ पएसपरिहाणीए परिहायमाणा २ उविरं एगमेगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं मुळे एकतीसं जोयणसहस्साइं छच तेवीसे जोयणसए किन्विविसेसाहिया परिक्खेवेणं धरणियले एकतीसं जोयणसहस्साइं छच तेवीसे जोयणसए देस्णे परिक्खेवेणं सिहरतछे तिण्णि जोयणसहस्साई एगं च बाबट्टं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं पारेक्खेवेणं पण्णता मुळे विच्छिण्णा मुज्ये संखिता उपि तणुया गोपुच्छ-संटाणसंत्रिया सञ्बंजणामया अच्छा जाव पत्तेयं २ पटमवरवेडयापरि० पत्तेयं २ वणसंडपरिक्सिता वण्णओ ॥ तेसि णं अंजणगपव्यसाणं जबरि पत्तेयं २ बहुस-मरमणिज्ञो भूमिभागो पण्णतो. से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेड वा जाव विहर्रति ॥ तत्थ णं जे से पुरच्छिमिहे अंजणगपव्यए तस्स णं चउद्दिसि चत्तारि णंदाओ पुक्ख-रिणीओ पण्णताओ, तंजहा--णंदुत्तरा य णंदा आणंदा णंदिवद्धणा । (नंदिसेणा अमोषा य गोथूमा य सुदंसणा) नाओ णं णंदापुक्सरिणीओ अच्छाओ सण्हाओ० पत्तेयं पत्तेयं पडमबरबेइबा॰ पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खिता॰ तत्य तत्य जाव सोवा-णपिकस्वमा तोरणा ॥ तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमञ्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं दहि-सहपन्त्रया चडसदि जोयणसहस्साउं उद्ये उच्चतेण एगं जोयणसहस्सं उन्त्रेहेणं सम्बत्यसमा पक्षममंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंमेणं एकतीसं जोयण-सहस्ताइं छव तेवीसे जोक्णतए परिक्खेवेणं पण्णता सन्वर्यणामया अच्छा जाव पिकन्या, तहा पत्तेयं पत्तेयं पठमवरवेश्याः वणसंडवण्याओ बहुसमः जाव आसयंति सर्यति । तस्य णं जे से दक्किलाणेहे अंजणगपन्दए तस्य णं चडिइसि चतारि णेदाओ पुरुविशोको पण्यताको, तंजहा-सहा य विसाला य कुमुया पुंडरीनिणी, (नन्द-त्तरा य नंदा य आनन्दा नन्दिवहुणा) तं चेव दहिमुद्दा पव्यया तं चेव पमाणं आव

विष्ठरंति ॥ तत्य में जे से पश्चत्यिमिक्ने अंजणगपव्यए तस्स में श्वचिद्धिसं शतारि मंदा पुक्खरिणीओ पण्यत्ताची, तंजहा--जंदिसेणा अमोहा य गोथूमा य सुदंसणा, (भहा य विसाला य कुमुया पुंडरीगिणी) तं चेत्र सन्त्रं भाणियन्त्रं ॥ तत्य णं जे से उत्तरिक्र अंजणगपव्यए तस्स णं चडिहिस चतारि णंदापुक्खरिणीओ प०, तंत्रहा-विजया वेजयंती य जयंती अपराजिया, तहेव दहिमुहगपव्यया तहेव जाव वणखंडा बहु० जाव विहरंति । अदुत्तरं च णं गोयमा ! णंबीसरवरस्स णं दीवस्स बद्धवालविक्खं-भरस बहमज्झदेसमाए चउस विदिसास चतारि रइकरगपव्यया प॰ तं०-उत्तरप्र-च्छिमेहे रहकरगपव्यए दाहिणपुरियमिहे रहकरगपव्यए दाहिणप्यत्यिमिहे रहकर-गपव्वए उत्तरप्रविधिमिहे रङ्करगप्य्वए, ते णं रङ्करगप्य्यमा दसनोग्रणसमाई उद्ग उच्चेत्रणं. दसगाउयसयाइं उञ्चेहेणं. सव्वत्थममा महरिसंठाणसंठिया. दमजोयणस-इस्माइं विक्खंमेणं, एकतीसं जोयणमहस्माइं छचतेवीसे जोयणसए परिक्लेवेणं. सव्वरयणामया अच्छा जाब पढिह्वा । तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिहे रङ्करगप-व्या तरस णं च उदिसिमीसाणस्य देविंदस्स देशरण्यो च उण्डमग्यमहिसीणं जंबदीव-प्यमाणमेत्राओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं०-णंदोत्तरा णंदा उत्तरकरा देवकूरा. कण्हाए कण्हराईए कामाए कामर्किखयाए। तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिहे ग्इकर-गपन्वए तस्स णं चडिहिसं सक्तस देविंदस्य देवरण्णो चडण्ड्मगगमिहसीणं जेवुहीब-प्पमाणाओ चतारि रायहाणीओ प० तं०-सुमणा सोमणसा अधिमाली मणोरमा, पउमाए सिवाए सईए अंजूए। तत्य णं जे से दाहिणपत्रस्थिमिक्षे रहक्रसप्य्वए तस्स णं चउदिसि सकस्स देविदस्स देवरण्णो चउण्हमस्ममहिसीणं जंबुदीवप्पमाणमेताओ चतारि रायहाणीओ प० तं०-भूया भूयवर्डिसा गोधूमा सुदंसणा, अमलाए अच्छराए नवमियाए रोहिणीए । तत्य णं जे से उत्तरपत्रत्यमिष्टे रइकरगप्य्यए तस्स णं चउदि-सिमीसाणस्य चउण्हमगगमहिसीणं जंबहीबप्पमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं --रयणा रयणोश्वया सव्वरयणा रयणसंख्या, वस्ए वसगुत्ताए बसुमित्ताए बसुघराए। कड्लासहरिवाहणा य तत्य दुवे देवा महिब्बिया जाव पलिकोवमद्विदया परिवर्शते, से एएणड्रेणं गोयमा ! जाव णिषे जोइसं संखेजं ॥ १८३ ॥ णंदीसरवरकां दीवं गंदीमरोदे गामं समुद्दे वहे वरुयागारसंठाणसंठिए जाव सब्वं तहेव अहो जो सोदोदगस्स जाव सुमणसोमणसम्हा एत्थ दो देवा महिश्विया जान परिवसंति सेसं तहेव जाव तारमां ॥ १८४ ॥ णंदीसरोहं णं समुद्दं अरुणे णामं दीवे वहे वलगागार जाव संपरिक्सिनाणं चिद्रह । अरुने णं भंते ! दीवें कि समवद्यालसंठिए विस-मचकवालसंठिए ? गोयमा ! समयहबालसंठिए तो विसमवकवालसंठिए. केवडर्य

बहवालवि॰ ? गोयमा ! संखेखाइं जोयणस्यसहस्साइं चक्कवालविक्खंमेणं संखेजाइं जोयणसयसहस्साइं परिक्ले वेणं पण्णते, पउमवर० वणसंखदारा दारंतरा य तहेव संखेजाई जोयणसयसहस्माई दारंतरं जाव अद्वो, वाबीओ० खोदोदगपडिहत्याओ उप्पायपन्वयमा सम्बवहरामया अच्छा जाव पिडेस्वा, असोमवीयसोगा य एत्य दुवे देवा महिद्भिया जाव परिवसंति, से तेण० जाव संखेळ सब्वं ॥ अरुणण्णं दीवं अरुणोदे जामं समुद्दे तस्सवि तहेव परिक्खेवो अह्नो खोदोदगे जवरं सुभद्दसुमण-भहा एत्य दो देवा महिन्निया सेसं तहेव ॥ अरुणोदगं णं ममुद्दं अरुणवरे णामं दीवे वहे बलयागारसंठाण । तहेव संखेजगं सन्त्रं जाव अद्वो । खोदोदगपिहत्याओ उप्पा-यपन्वयया सन्ववद्रामया अच्छा जाव पिहरूवा, अरुणवरभद्दअरुणवरमहाभदा एत्थ दो देवा महिन्निया । एवं अरुणवरोदेवि ममुद्दे जाव अरुणवरअरुणमहावरा य एरथ दो दंवा सेसं तहेव ॥ अरुणवरीदण्णं समुद्दं अरुणवर।वसासे णामं दीवे वहे जाव अरुणवरावभासमद्दारुणवरावभासमद्दाभद्दा एस्य दो देवा महिन्नियाः। एवं अरुणवरायभामे समुद्दे णवृदि अरुणवरावभासवरारुणवरावभासमहावरा एत्य दो देवा महिङ्किया ।। कुंडले दीचे कुंडलभद्दकुंडलमहाभद्दा एत्य दो देवा महिङ्किया ०, कुंडलोदं समुद्दे चक्खुसुमचक्खुकंता एत्थ दो देवा म० । कुंडलवरे दीवे कुंडलब-रमहकुंडलवरमहामहा एत्थ दो देवा महिष्ट्रिया०, कुंडलवरोदे समुद्दे कुंडलवर-वर् किंडलवरमहावरा एत्थ दो देवा म०॥ कुंडलवरावमासे दीवे कुंडलवराव-भासभद्दं इलबरावभासमहाभद्दा एत्य दो देवा ।। कुंडलवरोभासोदे समुद्दे कुंडल-बरोभासवरकुंडलवरोभासमहाबरा एत्य दो देवा म० जाव पलिओवमद्विहया परि-वसंति ।। कुंडलवरोभासोदं णं समुद्दं रुयगे णामं दीवे बट्टे बलया ॰ जाव चिद्रइ, किं समचक्क विसमचक्कवाल ? गोबमा! समचक्कवाल नो विसमचक्कवालसंठिए. केनइयं चक्ककाल० पण्णते ?० सव्बद्धमणोरमा एत्य दो देवा सेसं तहेव । स्यगोदे नामं समुद्दे जहा खोदोदे समुद्दे संखेजाई जोयणस्यसहस्साई बक्कवालवि० संखेजाई जोयणसयसहरूसाई परिक्कोवेणं दारा दारंतरंपि संखेळाई जोइसंपि सन्वं संखेळां भाणियव्वं, अद्वीवि प्रहेव सोदोदस्य नवरि सुमणसोमणसा एत्थ दो देवा महिन्निया तहेव रुयगाओं आहर्त्त असंखेजं विक्संभो परिक्खेशे दारा दारंतरं च जोइसं च सन्त्रं असंखेजं भाषियम्यं । रुसगोदण्णं समुद्दं रुयगवरे णं दीवे बट्टे० रुयगवरभहरूय-गवरमहाभद्दा एत्य दो देवा० रुयगवरोदे स० स्थगवरस्यगवरमहावरा एत्य दो देवा महिद्विया । स्वगवरावमासे दीवे स्वगवरावभासभद्दस्यगवरावभासमहाभद्दा एत्य दो देवा सहित्रियाः । रुवगवरावभासे समहे स्वगवरावभासवररुवगवरावभासमहावरा १५ ससा०

एत्थ ।। हारहीचे हारभद्दहारमहाभद्दा एत्थ । हारसमुद्दे हारवरहाश्वरमहाचरा एत्य दो देवा महिश्विया । हारवरोदे दीवे हारवरभद्दहारवरमहाभद्दा एत्य दो देवा महिक्किया । द्वारवरोदे समुद्दे हारवरहारवरमहावरा एत्थ । हारवरावभासे दीवे हार्-बरावभासभइहारवरावभासमहाभद्दा एत्य० । हारवरावभासोदे समुद्दे हारवरावभास-बरहारकरावभासमहावरा एत्य । एवं सब्वेबि तिपडोयारा णेयव्या जाव सरवरी-भासोदे समुद्दे, दीवेषु भइनामा वरनामा होंति उदहीमु, जाव पच्छिमभावं स्रोयवराईसु सर्यभूरमणपञ्जेतेनु वावीओ० स्रोदोदगपिडहत्थाओ पव्ययगा य सब्द-बइरामया । देवदीवे दीवे दंबभद्देवमहाभद्दा एत्य दो देवा महिश्विया , देवोदं समुद्दे देशवरदेशमहाबरा एत्थ० जाव सयंभूरमणे दीवे सयंभूरमणभद्दसंयभूरमणमहा-मदा एत्य दो देवा महिष्ट्विया० । सर्यभुरमणण्णं दीत्रं सर्यभुरमणोत्रे नामं समुद्दे बहे बलया - जाव असंखे बाई जोयणसयसहस्माई परिक्खेवेणं जाव अद्वो, गोयमा ! सर्यभुरमणोदए उदए अच्छे पत्थे जचे तणुए फलिह्मण्णाभे पगईए उदगरसेणं पण्णते, सर्यभुरमणवरसयंभुरमणमहावरा इत्थ दो देवा महिन्द्विया सेसं तहेर जाव असंखेबाओ तारागणकोडिकोडीओ मोभेंस वा ३ ॥ १८५॥ केवड्या णं भंते ! जंबुदीना दीवा णामधेजेहिं पण्णता ? गोयमा ! असंखेजा जंबु-दीवा २ नामधेजेहिं पण्णता, केवद्या णं भंते ! लवणसमुद्दा० पण्णता ? गोयमा ! असंखेजा लवणसमुद्दा नामधेजेहिं पण्णता, एवं धायइसंडावि, एवं जाव असंखेजा स्रदीवा नामधेजेहिं । एरो देवे दीवे पण्णते एरो देवोदे समुद्दे पण्णते, एवं णारो जक्खे भूए जाद एगे सर्यभूरमणे दीवे एगे सर्यभूरमणसमुद्दे णामधेजेणं पण्णेत ॥ १८६ ॥ लवणस्त णं भंते! समुद्दस उदए केरिसए आसाएणं पण्णते? गोयमा! लवणस्य ॰ उदए आविले रइले लिंदे लवणे बहुए अपेजे बहुणं दुपबचउप्पयमिग-पस्यविक्तसरीसिवाणं पण्णत्य तज्जोणियाणं सत्ताणं ॥ कालोयस्स णं भंते ! समुहस्स उदए केरियए आसाएणं पण्णते ? गोयमा ! आसले पेराले मासले कालए भासरा-सिवण्याभे पगहुँए उदगरसेणं पण्यते ॥ पुक्खरोदस्स णं भेते ! समुहस्स उदए केरियए आ० पण्णते ? गोसमा ! अच्छे जचे तणुए फालिसवण्णामे पगईए उदगरसेणं सनेड वा खज्रूत्मारेइ वा मुद्दिमासारेइ वा सुफ्कस्थोवरसेइ वा मेरएइ वा काविसाय-णेइ या चंदप्पभाइ वा मणसिलाइ वा सीहूइ वा बारुगीइ वा अद्वपिद्वपरिणिद्वियाह वा जंबूफलकालियाइ वा पसण्या उद्योसमयप्पता बण्णेणं उबवेया जाव सबै एयास्वे सिया?, णो इणड्डे समद्वे, गोयमा । बारणोदए॰ इस्ते बहुतराए चेव जाव खासाएक

प॰। खीरोदस्य णं भंते !॰ उदए केरिसए आसाएणं पण्णते ? गोयमा ! से जहा णामए--रको चाउरतचक्रवद्दिस्स चाउरके गोखीरे प्यत्तमंदिगसकिए आउत्तरसंडमच्छंडिओबवेए वण्णेणं उबचेए जाव फासेणं उववेए, भवे एयारूवे सिया १, णो इणहे समहे, गोयमा ! खीरोयस्स० एशो इह जाव आसाएणं पण्णते । घओदस्स णं० से जहा णामए-सारहयस्य गोधयवरस्स मंड सल्लहकण्णियारपुष्फ-वण्णाभे सुकन्नियउदारसज्झवीसंदिए वण्णेणं उद्यवेए जाव फासेणं उद्यवेए. भवे एसारुवे खिया !, णो इणद्वे समद्वे, इनो इट्टक्रा०, खोदोदस्स० से जहा णामए-उच्छणं जनपंडगाणं हरियालपिंडराणं मेरंडछणाण वा कालपोराणं तिभागनिव्वा-डियबाडगाणं बलवगणर्जंतपरिगालियमिनाणं जे य रसे होजा वत्थपरिपूए चाउ-जायगमुनासिए अहियपत्थे लहुए वण्णेणं उवनेए जान भनेयारूने सिया?, नो इणड्डे सम्हे, एतो इद्वयरा०, एवं सेसगाणिव यमुद्दाणं मेदो जाव सर्वभुरमणस्स, णनरि अच्छे जन्ने पत्थे जहा पुरुखरोदस्स ॥ नद्ध णं भंते ! समुद्दा पत्तेगरसा पण्णना ? गोयमा ! चत्तारि समृद्दा पत्तेगरसा पण्णता, तंजहा- व्यवणे बारुणोदे खीरोदे घओदे ॥ कड र्ण भंते ! समुद्दा पगईए उदगरसेणं प्रण्यता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं पण्णता, तंजहा-कालोदे पुक्खरोदे सर्यमुरमणे, अवसेसा समुद्दा उस्सण्णं खोयरसा प० समणाउसो ! ॥ १८७ ॥ कह णं भंते ! समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा फणता ? गोयमा ! तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णना, तंत्रहा-लवणे कालोदे सर्यभुरमणे, अवसेसा समुद्दा अप्पमच्छकच्छभाइण्णा पण्णता समणाउसो ! ॥ लक्ष्णे णं भंते ! समुद्दे कड् मच्छजाइकुलकोडिजोणीपमुद्द-सयगहरता पण्णता ? गोयमा ! सत्त मच्छजाइकुलकोबीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्या ॥ कालोदे मं मंते ! समुद्दे कड् मच्छजाइ० पण्याता ? गोयमा ! नव मच्छ-जाइकुलकोडीजोणी • ॥ सर्वभुरमणे णं भंते ! समुद्दे • १ गो ०! अद्धतेरस मच्छजाइकुल-कोडीजोणीपमृहसयसहस्सा पण्णता ॥ लवणे णं भंते ! समुद्दे मच्छाणं केमहालिया सरीरोगाहणा प्रकाला ? गो०! जहकोणं क्षंगुलस्स असंबेजहमागं उक्रोसेणं पंच-जोयणसवाई ॥ एवं कालोदे उ० सत्त जोयणसवाई ॥ सर्वभरमणे जहण्णेणं अंगुलस्स असंखे जह ० उद्योसेणं दस जोयणसयाई ॥ १८८ ॥ केवह्या णं भंते ! रीवसमुहा नामधेखेहि पण्याता ? गोयमा ! जाबह्या छोगे सुभा जामा सुमा बण्या जाब सभा फासा एवड्या दीवसमुद्दा नामधेजेहिं पण्णता ॥ केवड्या णं मंते ! दीवसमुद्दा उदारसमपूर्ण प्रणाता ! गोयमा ! जावहबा अब्वाहजाणं सागरोवमाणं उदारसमया एवह्या दीवससुद्दा उद्घारसमूएणं प्रवता ॥ १८९ ॥ दीवसमुद्दा णं भेते ! कि

पुढिवेपरिणामा आउपरिणामा जीवपरिणामा पुरगलपरिणामा ? गोयमा ! पुढिवेपरि-णामावि आउपरिणामावि जीवपरिणामावि पुरगलपरिणामावि ॥ दीवममुद्देशु शं भंते ! सन्वपाणा सन्वभूया सन्वजीवा सन्वमत्ता पुढिवेकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए जवत्वज्ञाया ! । १९० ॥ इइ दीवसमुद्दा समत्ता ॥

कड़िवहें णं भंते! इंदियविसए पोमालपरिणामे पण्णते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय-विसए पोग्गलपरिणामे पण्णते, तंजहा-सोइंदियविसए जाव फासिंदियविसए। सोइंदियविसए णं भंते ! पोरगळपरिणामे कड्विहे पण्णते ? गोयमा ! दुविहे पण्णते, तंजहा-सुब्भिसद्दपरिणामे य दुब्भिसद्दपरिणामे य, एवं चिन्स्वदियविसयाइएहिवि सुस्तपरिणामे य दुरुवपरिणामे य, एवं सुरिमगंत्रपरिणामे य दुरिमगंधपरिणामे य, एवं सुरमपरिणामे य दुरमपरिणामे य, एवं सुफासपरिणामे य दुफासपरिणामे य ॥ से नृणं भंते ! उचावएस सहपरिणामेस उचावएस स्वपरिणामेस एवं गंधपरिणामेस रसपरिणामेस फासपरिणामेम परिणममाणा पोग्गला परिणमंतीति वत्तव्यं सिया ! ईता गोयमा । उचावएसु सहपरिणामसु जाव परिणममाणा पोग्गला परिणमंतिति वत्तव्वं सिया, से पूर्ण मंते ! सुब्भिमदा पोरगला दुब्भिमहत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दा पोरगला सुब्भिसहत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! सुब्भिमहा पो० दुब्भिसहत्ताए परिणमंति दुव्भिसहा पो॰ सुव्भिसहत्ताए परिणमंति, से पूर्ण भंते ! मुहवा पुग्गला दुरुवनाए परिण-मंति दुस्त्रा पुरगला सुस्वताए० ! हंता गोयमा !०, एवं सुव्धिगंधा पोग्गला दुविभगंघताए परिणमंति दुविभगंघा पोग्गला सुविभगंघताए परिणमंति ! हंना गोयमा 🗽, एवं मुकासा दुकासत्ताए ? झरसा दुरसत्ताए० ?, हंता गोयमा 🕼 ॥ १९३॥ देवे णं भंते ! महिङ्किए जाव महाणुभागे पुन्वामेव पोगालं खिविता पम् तमेव अगुपरियद्वित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता पभू, से केणहेणं भंते ! एवं बुबह-देवे णं महिङ्किए जाव गिण्हित्तए ! गोयमा ! पोग्गळे खित्ते समाणे पुच्यामेव सिग्धगई भविता तओ पच्छा मंदगई भवइ, देवे ण महिन्दिए जाव महाणुभागे पुरुवंधि पच्छावि सीहं सीहगई नुरिए तुरियगई चेव से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृषद् जाव अणुपरियद्विताणं गेण्हित्तए ॥ देवे णं भंते ! महिश्विए० बाहिरए पोग्गळे अपरि-याइना पुन्वामेव बालं अच्छिता अभेता पभू गंठितए ? नो इणहे समहे १, देवे ण भंते ! महिहिए० बाहिरए पुगाले अपरियादना पुरुवामेव बालं छिता भिता पम् गंठितए ? नो इणड्डे समहे २, देवे णं भंते ! महिश्विए० बाहिएए पुग्गके परिवाहता पुरुवामेव बालं अच्छिता अभिता प्रभू गंठितए ? नो इण्डे समदे ३. देवें में भेते !

महिद्रिए जाव महाणुभागे बाहिरे पोग्गले परियाइता पुन्वामेव बालं छेता भेता पम् गठिताए ? हंता पम् ४, तं चेव णं गेठि छउमत्ये ण जाणइ ण पासइ एवंसुहमं च ण गहिया ३, देवे णं भंते ! महिन्निए० पुन्यामेव बालं अच्छेता अभेता पश् दीहीकरित्तए वा हस्सीकरित्तए वा ? नो इणड्डे समद्वे ४, एवं चतारिवि गया, पडमिन्डयर्भनेसु अपरियाइता एगंतरियमा अच्छेता अभेता. सेसं तहेव. तं चेब सिद्धिं छउमत्ये ण जाणइ ण पासइ एसुहमं च णं दीहीकरेज वा हस्सीकरेज वा ॥ १९२ ॥ अत्य णं भंते ! चंदिमस्रियाणं हिद्विपि नारास्वा अणुंपि तुक्रावि समंपि नारास्वा अणंपि तुल्लावि उप्पिपि तारास्वा अणंपि तुल्लावि ? हंता अत्थि. से केणद्रेणं भंते ! एवं वृश्वइ-अत्थि णं चंदिमसरियाणं जाव उप्पिपि तारास्वा अणुंपि तुक्कावि ? गोयमा ! जहा जहा णं तेसि देवाणं तवनियमवंभचेरवासाई [उकडाई] उस्सियाई भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एयं पण्णायइ अणुत्ते वा तुल्लने वा, से एएणद्रेणं गोयमा !० अत्य णं चंदिमस्रियाणं ० उपिंगपि ताराहवा अणुंपि तुल्लाच ॥ १९३ ॥ एगमेगस्स णं भंते ! चंदिमसरियस्य केवइओ जक्खनपरिवारो पण्णत्तो केवडओ महरगहपरिवारो पण्णतो केवडओ तारागणकोडाकोडीओ परिवारो प॰ ? गोयमा ! एगमेगस्स णं चंदिमस्रियस्स अद्वासीई च गहा अद्वावीसं च होउ नक्खना । एगससीपरिवारो एत्तो ताराण बोच्छामि ॥ १ ॥ छाबड्डिसहस्साइं णव चेव सयाउं पंचययराउं। एगमसीपरिवारी तारागणकोडिकोडीणं॥ २॥ १९४॥ जंबूदीवे णं भेते ! दीवे मंदरस्स पव्चयस्स पुरच्छिमिलाओ चरिमंताओ केवइयं अवाहाए जोइसं चारं चरह? गोयमा! एकारसिंह एक्ष्वीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसं चारं चरह. एवं दक्किणिहाओ पचित्थिमिछाओ उत्तरिहाओ एकारसिहें एकवीसिहं जोयण जाव चारं चरड ॥ लोगंताओ भंते ! केवइयं अबाहाए जोडसे पण्णते ? गोयमा ! एकारसिंह एकारेहि जोयणसएहि अबाहाए जोइसे पण्णते ॥ इमीसे णं अंते ! रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ केवइयं अबाहाए मुम्बहेड्कि तारारुवे बारं बरइ ? केवइयं अबाहाए स्रविमाणे चारं चरइ ? केनइयं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरह ? केवइयं अबाहाए सञ्वजवरिक्ने तारारूवे चारं चरड ?. गोयमा ! इसीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहसमरमणि सत्तिहैं णड-एहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसं सम्बहेद्विके तारास्वे चारं चरइ, अद्विहें जोयणमएहिं अबाहाए स्रविमाणे चारं चरइ, अट्टाहें असीएहिं जोयणसएहिं अबा-हाए चंदविमाणे चारं चरड. नबहि जोयणसएहि अबाहाए सव्यउनरिक्ने तारारुचे चारं चरह ॥ सब्बहेडिमिहाओं णं भंते ! तारास्वाओं केवहर्य अबाहाए सुरविमाणे

चारं चरह ? केनइयं अवाहाए चंदविमाणे चारं चरइ ? केमइयं अवाहाए सम्बद्धविक्षे तारारूवे चारं चरइ ?, गोयमा ! सव्बहेट्रिक्शओ णं० दसहिं ओयणेहिं सर्विमाणे चारं चरड णडईए जोयणेहिं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरइ दसुत्तरे जीयणसए अबाहाए सन्त्रीवरिष्ठे ताराहवे चारं चरइ ॥ सर्रावमाणाओं णं भंते ! केबइयं अबा-हाए चंदविमाणे चारं चरइ ? केवइयं० सव्यवदारिक्षे तारारूवे चारं चरइ ?. गोयमा ! सरविमाणाओ णं असीए जोयणेहिं चंदविमाणे चारं चरइ, जोयणसयअबाहाए सब्बोवरिक्के तारारूवे चारं चरइ ॥ चंदविमाणाओ णं भंते ! केवड्यं अबाहाए सन्दरवरिक्ने ताराहवे चारं चरड ? गोयमा ! चंदविमाणाओ णं वीसाए जीयणिहें अवाहाए सञ्वउविरिक्षे तारारूवं चारं चरइ, एवामेव सपुव्यावरेणं दसुनरमयजीयण-बाह्रांहे तिरियमसंखेजे जोइसविमए फणते ॥ १९५ ॥ जंबूदीवे णं भंते ! दीवे कयरे णक्खते सव्विध्मतिकं चारं चरइ ? कयरे नक्खते सव्ववाहिरिष्टं चारं चरइ ? कयरे नक्खते मञ्बद्धविद्धं चारं चर्ड ! क्यरे नक्खते सञ्बद्धिक्षं चारं चर्ड ?, गोयमा ! जंबदीवे णं दीवे अभीइनक्खते सर्व्वाध्भितिरिष्ठं चारं चरह मुळे णक्खते सव्वाहि-हिन्ने चारं चरह साई णक्खते सञ्जोवरिन्नं चारं चरह भरणी णक्खते सञ्जहेद्धिहं चारं चरड ॥ १९६ ॥ चंदविमाणे णं भंते ! किंसंठिए पण्णते ? गोयमा ! अद्रकविद्वग-संठाणसंठिए सञ्चकालियामए अञ्चरगयमूसियपहसिए वण्यओ, एवं मूरविमाणेवि नक्खनविमाणेवि ताराविमाणेवि अद्धकविद्वसंठाणसंठिए ॥ चंदविमाणे णं भंते ! केनइयं आयामविक्खंभेणं ? केनइयं परिक्खेवेणं ? केनइयं बाइह्रेणं पण्णते ?. गोगमा ! छप्पने एगमद्भिमांगे जोयणस्य आयामविक्संभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अदावीसं एगसद्विभागे जोयणस्स बाह्नेंडणं पण्णते ॥ सूर्विमाणस्पवि सम्बन् पुच्छा. गोयमा ! अडयालीसं एगसद्विमागे जोयणस्य आयामविक्खंमेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं चउवीसं एगसद्विभागे जोयणस्स बाह्रह्रेणं पक्ते ॥ एवं गहविमाणेवि अद्वजीयणं आयमविक्खंमेणं सविसेसं परि० कोसं बाहहेणं प० ॥ जक्खत्तविमाणे णं कोसं आयामनिक्संभेणं तं तिगुणं सविसेसं परि० अद्धकोसं बाहहेणं प०. ताराविमाणे णं अदकोसं आयामविक्लंभेणं तं तिगुणं सविसेसं परि० पंचधणसयाहं बाहक्केणं प्रव्यक्ते ॥ १९७ ॥ चंदविमाणे णं भंते ! वह देवसाहस्तीओ परिवहंति ? गोयमा ! चंद-विमाणस्य णं प्रचिछमेणं सेयाणं सुमगाणं सुप्यमाणं संवात्स्वविमस्वविकारम् गोखीरफेणरययणिगरप्पगासाणं (महुगुलियपिंगलक्साणं) विरलह्य[परह]पहची-बरस्रसिलिद्वविसद्वतिकखदादाविकंत्रियस्हाणं रस्यपलगत्तमस्यसङ्कमालतालुजीहानं [फ्तत्यळद्ववेरुळियभिसंतवक्रडनहाणै] विसालपीवरोक्ष्मस्तिपुष्णविदलक्षेत्राणं विद्यवि-

स्यपसत्त्वयुहुमख्यस्यणविच्छिण्णकेसरसङोवसोभियाणं वंकमियलतियपुढियधनलग-व्यियगर्रणं उस्सियसुणिम्मियसुजायअप्फोडियणंगृलाणं वहरामयणक्साणं वहरामय-दन्ताणं वयरामयदाडाणं तवणिजजीहाणं तवणिजतालुयाणं तवणिजजोत्तगसुजोइ-याणं कासगमाणं पीइयमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अभियगईणं अभिय-बलवीरियपुरिसकारपरक्रमाणं महया अप्फोडियसीहनाइयबोलकल्यलरवेणं महुरेणं अणहरेण य पूरिता अंबरं दिसाओ य सोमयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधा-रीणं देवाणं पुरच्छिमित्रं बाहं परिवहित । चंदविमाणस्स णं दिक्खणेणं सेयाणं सुमगाणं सुप्पभाणं संखतलविमलनिम्मलदहिचणगोखीरफेणर्ययणियरप्पगासाणं बद्रामश्कुंभज्ञ्यलसुद्वियपीवरवरवद्रसोंडवद्वियदित्तमुरत्तपडमप्पगासाणं अञ्सुण्णय् गुणा(महा)णं तवणिजयिमालचंचलचलंनचवलकण्णविमलुजलाणं मधुवण्णमिसंत-णिद्धिपालपत्तत्वतिवण्णमणिरयणलोयणाणं अन्भुम्गयमञ्खमित्र्याणं धवलसरिससंहि-यणिव्यणदृढकसिणफालियामयसुजायदंतमुसलीयसोभियाणं कंनणकोसीपविद्वदंनग्ग-विमलमणिर्यणरुइलपेरंतिचत्तस्वगिबराइयाणं तविणज्ञविसालतिलगप्मुहुपरिमंहि-याणं णाणामणिर्यणगुलियगेवेजबद्धगलपवरभूसणाणं वेरुलियविचित्तदंडणिम्मल-वालगंडाणं वर्रामयतिक्खलद्धअंकुसकुंभजुयलंतरोदियाणं तवणिजसुबद्धकल्ळद्रिय-बहुद्धराणं बंबूणयिमलघणमंडलवइरामयलीलालन्नियतालणामणिरयणघण्टपास-गरययामयरज्बदलंबियघंटाजुयलमहुरसरमणहराणं अहीणपमाणजुत्तवष्टियसुजाय-लम्बणपसत्थतविष्णवालगत्तपरिपुच्छणाणं उवचियपिडपुण्णकुम्मचलणलङ्गिकमाणं अंकामयणक्खाणं तवणिजातालुयाणं तवणिजानीहाणं तवणिजानीलगसुनोइयाणं कामगमाणं पीइगमाणं मणीगमाणं मणीरमाणं मणीहराणं असिकाईणं असिवबल-वीरियपुरिसकारपरकमाणं महया गंभीरगुलगुलाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेन्ता अंवरं दिमाओ य सोमयंता चनारि देवसाहस्त्रीओ गयस्वधारीणं देवाणं दिक्खिणहं बाहं परिवहंति । संद्विमाणस्स णं प्वत्थिमेणं सेमाणं सुमगाणं सुप्पभाणं संक-मियललि**ग्पुलिग्चलन्दलक्तुद्**साली**णं** सण्णयपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं मियमाइसपीषरइयपासाणं झसविह्रगयुजासकुच्छीगं पसत्यणिद्धमधुगुलियभिसंतपिय-लक्खाणं विसासपीवरोरुपदिपुष्णविउससंघाणं बद्दपदिपुष्णविउससण्णपासाणं घणणि-चियसुबद्धत्रम्यपुरणयाँ सिमाणयदसभोद्वाणं चंद्रमिक्ललियपुलिमचङ्गवालचवलमञ्जि यगईणं पीबरोहबहियससंहियकरीणं ओलंबपलंबलक्सणपमाणज्ञतपसत्यरमणिख-वालगंडाणं समञ्जूरबारुधाराणं समितिहैबतिबखमासिंगाणं तणुसुहुमसुकाविदि-लोमञ्ज्ञविधराणं उपियमंतलविद्यामपरिपुण्णसुर्पमुहसुंदराणं (संवपएससुंदराणं)

वेरुलियभिसंतकडक्समुणिरिक्खणाणं जुनापमाणप्पहाणलक्खणपसत्यरमणिजनगगर-गलसोभियाणं घरघरगद्मबद्धकण्ठपरिमंडियाणं नाणामणिकणगरयणकण्टवेयच्छगसुक-यरइयमालियाणं वरचंटागलगलियसोभंतसस्सिरीयाणं पडमुप्पलभसलसुरभिमाला-विभूतियाणं वहरखुराणं विविह्नविखुराणं फालियामयदंताणं तवणिजजीहाणं तव-णिजाताल्याणं तवणिजाजीत्तगमुजोत्तियाणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसकारपरक्रमाणं महया गंभीरगज्जियरवेणं महरेणं मणहरेण य पूरेंता अंवरं दिसाओ य सोभयंना चत्तारि देवसाहस्सीओ वसभरूवधारीणं देवाणं पद्मन्थिमिलं बाहं परिवहंति । चंदविमाणस्स णं उत्तरेणं सेयाणं मुभगाणं सुप्पभाणं जवाणं वरमित्रहायणाणं हरिमेलामद्दरमित्र्य-च्छाणं घणणिचियमुबद्धलक्त्रवणुण्णयाचंक्रमि(चंचुचि)यललियपुलियचलचवलचंचल-गईणं लेचणवरमणधावणधारणतिवद्वजङ्गसिक्खियगईणं संजयपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं मियमाइयपीणरइयपासाणं झर्मविह्नमुजायकुट्टांणं पीणपीवरवद्विय-मुसंठियक्रहीणं ओलंबप्लंबलक्खणपमाणजुत्तपमत्यरमणिज्ञवालगंडाणं तणुसूह्रममु-जायणिद्धलोमच्छवित्रराणं मिडविमयपगरथमुह्मलक्खणविकिष्णकेनरवालिधराणं ललियलासगगः (ललेनथासगल)लाडवरभूसणाणं मुहमंडगोचूलचमगथासगपरिमंहिय-कडीणं नवणिज्ञखुराणं नवणिज्ञजीहाणं नवणिज्ञनालुयाणं नवणिज्ञजोत्तगसुजोइयाणं कामनमाणं पीइनमाणं मणोनमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अभियनईणं अभिय-वलवीरियपुरिसकारपरक्रमाणं महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेणं महरेणं मणहरेण य पूरेंना अंबरं दिसाओ य सोभयंना चनारि देवसाहस्सीओ हुयस्वधारीणं उत्तरिकं बाहं परिवर्हति ॥ एवं सुरविमाणस्सवि पुच्छा, गोयमा ! सोलस देवसाहरसीओ परिवहंति पुरुवक्रमेणं ॥ एवं महविमाणस्यवि पुच्छा, गोयमा ! अद्व देवसाहस्सीओ परिवहंति पुव्यक्रमेणं, दो देवाणं साहरसीओ पुरस्थिमिहं बाहं परिवहंति दो देवाणं साहरसीओ दक्किणाई दो देवाणं साहरसीओ पचत्थिमं दो देवसाहस्सीओ हयस्ववारीणं उत्तरिष्ठं बाहं परिवहंति ॥ एवं णक्सत्त-विमाणस्मवि पुच्छा, गोयमा ! चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवर्हति, तंजहा-सीहरूव-धारीणं देवाणं एगा देवसाहस्सी पुरतियमिलं बाहं परिवहृद्द, एवं चलहिसिपि, एवं तारमाणवि णवरं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा-सीहरुवधारीणं देवाणं पंचदेव-सया पुरियमिक्नं बाहं परिवहंति, एवं चउदिसिपि ॥ १९८ ॥ एएछि णं मंते चंदिमः स्रियगहगणणक्खतताराख्याणं कथरे कमरेहितो सिम्बगई वा संदगई वा? गोयमा ! चंदेहिंतो सूरा सिग्धगई सूरेहिंतो गहा सिग्धगई गहेहिंतो णक्साता सिग्धगई णक्साते-

सुसागमे

हितो तारा सिरघगई, सम्बप्पाई चंदा सव्वसिग्यगईओ ताराह्या ॥ १९९ ॥ एएसि णं भंते! चंदिम जाव ताराहवाणं कयरे २ हिंतो अप्पिद्धिया वा महिद्धिया वा ? गोयमा! तारारू वेहिंती जक्तना महिश्चिया जक्ति हिंती गहा महिश्चिया गहेहिंती सूरा महि-ब्रिया सुरेहिंतो चंदा महिब्रिया, सव्यप्पन्निया ताराख्वा सव्यमहिब्रिया चंदा ॥२००॥ जंबूदीवे णं अंते ! दीवे नारारुवस्स २ य एस णं केबइयं अबाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा ! द्विहे अंतरे पण्णते, तंजहा-वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्य णं जे से वाघाइमें से जहण्णेणं दोष्णि य छाबद्वे जोयणसए उद्योसेणं बारस जोयणसह-स्माडं डोण्णि य बायाले जोयणमए तारारूवस्स २ य अवाहाए अंतरे पण्णते । तत्थ णं जे से णिव्वाधाइमे से जहण्णेणं पंचधणसयाई उद्योसेणं दो गाउयाई ताराहव जाव अंतरे पण्णते ॥ २०१ ॥ चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरको कइ अग्गमहिसीओ पण्णनाओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ. नंजहा-चंदप्यमा दोसिणामा अश्विमाली पमंकरा, तत्थ पं एगमेगाए देवीए चनारि चनारि देवसाहस्सीओ परिवारे य, पभू णं तओ एगमेगा देवी अण्णाई चत्तारे २ देविसहस्साइं परिवारं विजन्नित्तर्, एवामेब मपुञ्जावरेणं सोलस देवसा-हस्सीओ पण्णताओ, से नं तुडिए ॥ २०२ ॥ पभू णं भंते ! चंदे जोइसिंदे जोइ-सराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए मृहम्माए चंदंसि सीहासणंसि नुडिएण सर्दि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणहे समहे । अदुत्तरं च णं गोयमा ! पम् चंदे जोइसिंद जोइसराया चंदवर्डिसए विमाणे समाए सहस्माए चंदेखि सीहा-संगंति च उहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसिंह आयरक्खदेवाणं साहस्सीहिं अन्नेहिं बहुहिं जोइसिएहिं देवेहिं देवीहि य सदिं संपरिवृढे महया हयणहगीइवाइयतं-तीतलतालतुर्वियद्यणमुद्रगपद्रप्यवाद्यर्वणं दिव्यारं भोगभोगारं भुंजमाणे विद्यित्तए, केवलं परियारिद्वीए नो चेव णं मेहुणवित्तयं ॥ २०३ ॥ स्रस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरहो कड अगगमहिसीओ पण्णताओं ? गोयमा ! चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, तंजहा-सूरप्पमा आयवामा अविमाली पर्मकरा. एवं अवसेसं जहा चंदरस णबरं सूरवर्डिसए विमाणे सूरंसि सीहासणंसि, तहेव सव्वेसिंपि गहाईणं चनारि अगमहिसीओ० तंजहा-विजया वेजयंती जयंती अपराजिया, तेसिप तहेव ।। २०४ ।। चंदविमाणे णं अंते ! देवाणं केवहयं कालं ठिई पण्णता ? एवं जहा ठिईपए तहा भाषिमन्या जाय ताराणं ॥ २०५ ॥ एएसि णं मंते ! चंदिमस्-रिमगहणस्वत्तताराख्वाणं कवरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! संदिमसरिया एए णं दोष्णिवि तुहा सम्बत्योवा, संकेजगुणा णवसाता,

संबेजगुणा गहा, संबेजगुणाओ तारगाओ ॥ २०६ ॥ जोइसुदेसओ समस्रो ॥ कहि ण भंते ! वेमाणियाणं देवाणं विमाणा पण्यता ? कहि णं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ?, जहा ठाणपए तहा सब्वं भाणियव्वं णवरं परिसाओ भाणिय-व्याओ जाब सके अनेसि च बहुणं सोहम्मकप्पवासीणं देवाण य देवीण य जाब विहरड ॥ २०७ ॥ सकस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरको वह परिसाओ पनताओ ! गोयमा ! नओ परिसाओ पणनाओ, नंजहा---मिया चंडा जाया, अध्भितरिया समिया मजिसमिया चंडा बाहिरिया जाया ॥ सक्करस ण भंते ! देविंदस्स देवरको अब्भितरियाए परिसाए कह देवसाहस्सीओ पण्णनाओ ! मजिसमियाए परि० तहेब बाहिरियाए पुच्छा, गोयमा ! सक्कस देविंदस्स देवरन्नो अध्भिनरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पण्णनाओ मज्ज्ञिमियाए परिनाए चउदम देवसाहस्सीओ पण्णताओ बाहिरियाए परिसाए सोलस देवसाहस्सीओ पण्णताओ, नहा अस्मित-रियाए परिसाए सत्त देवीसयाणि मजिल्लामियाए० छ देवीसयाणि बाहिरियाए० पंच देवीसमाणि पन्ननाणि ॥ सक्त्स णं भेते ! देविदस्स देवरको अध्यितियाए परिमाए देवाणं केवडयं कालं ठिई पण्णना ? एवं मिल्सिमियाए बाहिरियाएवि. गोयमा ! सकस्स देविंदरस देवरको अभिनिदयाए परिसाए देवाणं पेच पिठओवमाई ठिई पण्णता. मजिल्लामियाए परिसाए॰ चनारि पळिओवमाइं ठिई पण्णना, बाहिरियाए परिसाए देवाणं तिक्षि पिलेओबमाई ठिहे पण्णता. देवीणं ठिहे-अध्मितिरियाए परिसाए देवीणं तिक्रि पिछओवमाई ठिई पण्णता, मजिसमियाए॰ दुक्ति पिछओवमाई ठिडे पण्णना, बाहिरियाए परिसाए । एगं पलिओवमं ठिइं पण्णना, अद्रो सी चेव बहा भवणवासीणं ॥ कहि णं भंते ! ईसाणगाणं देवाणं विमाणा कणता ? तहेव सर्व जाब ईमाणे एत्य देविंदे देव० जाब विहरह । ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कड परिसाओ पण्णताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णताओ, तंजहा---समिया चंडा जाया. तहेव सन्वं णवरे अब्भितरियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णनाओ. मजिझमियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ०, बाहिरियाए० चल्डस देवसाहस्तीओ०, देवीणं पुच्छा, अस्मिनरियाए० णव देवीसया पण्णता मजिन्नमियाए परिसाए अद्र देवीसया पण्णता बाहिरियाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णता, देवाणं ठिईपुच्छा, अब्भितरियाए परिसाए देवाणं सत्त प्रक्रिओवमाई ठिई पण्याता मण्डिन-मियाए० छ पछिओवमाइं० बाह्विरियाए० पंच पिठिओवमाइं ठिडं पण्यता । देवीणं पुच्छा, अब्भितरियाए० साइरेगाई पंचप लिओवमाई०, मजिल्लामियाए परिसाए चलाहि पिक्रोबमाई ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए तिष्णि पिक्रवोबमाई ठिई पण्डाता.

अद्भो तहेव भाणियन्त्रो ॥ सणंकुमाराणं पुच्छा तहेव ठाणप्यगमेणं जाव सणंकुमा-रस्स तओ परिसाओ समियाई तहेव, णवरं अब्भितरियाए परिसाए अह देवसा-हस्सीओ पण्णताओ, मिजामियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णताओ, बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पण्णताओ, अब्भितरियाए परिसाए देवाणं अद्भपंचमाई सागरोवमाई पंच पिछओवमाई ठिई पण्णता, मजिसमियाए परिसाए अद्भागनाई सागरीवमाई चतारि पिलओवमाई ठिई पण्णता, बाहिरियाए परिसाए॰ अद्धपंचमाइं सागरोक्माइं तिष्णि प्रक्रिओवमाइं ठिईं पण्णत्ता, अद्वो सो चेव ॥ एवं माहिदस्सवि तहेव तओ परिसाओ णवरं अब्भितरियाए परिमाए छहेवसाहरसीओ पण्णताओ, मज्जिमियाए परिसाए अह देवसाहस्सीओ पण्णताओ, बाहिरियाए॰ दस देवसाहस्सीओ पण्णताओ, ठिई देवाणं-अध्भितरियाए परिसाए अद्धपंचमारं सागरोबमारं सत्त व पलिओ । ठिई पण्णता, मजिसमियाए परिमाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं छच पलिओवमाई॰, बाहिरियाए परिसाए अद्धपंचमाई सागरोबमाई पंच य पिल्लोबमाई ठिई प०. तहेव सन्वेसि इंदाणं ठाणपयगमेणं विमाणा जेयव्या तओ पच्छा परिसाओ पत्तेयं २ वृषंति ॥ वंभस्सवि तओ परिसाओ पणताओं अधिमतिरयाए चतारि देवसाहस्सीओ मज्ज्ञिमियाए छ देवसाहस्सीओ बाहिरियाए अट्ट देवलाहस्सीओ, देवाणं ठिई-अधिभतरियाए परिसाए अद्धणवमाई मागरोवमाई पंच य पछिओवमाई, मिज्यमियाए परिसाए अर्द्धनवमाई चत्तारि पछि-ओवमाई, बाहिरियाए० अद्भनवमाई सागरीवमाई तिण्णि य पलिओवमाई अद्रो सो चेव ॥ संतगस्मवि जाव तस्रो परिसाओ जाव अध्मितरियाए परिसाए दो देव साहरसीओ । मजिल्लामियाए । चतारि देवसाहरसीओ पण्णताओ बाहिरियाए । छहेव-साहरसीओ पण्णताओ. ठिडे भाणियव्या-अव्भितरियाए परिसाए बारस सागरीवमाडं सत्त पलिओवसाइं ठिई पण्याता, मजिशमियाए परिसाए बारस सागरीवमाई छन पिक्रजोबमाई ठिई पण्यता, बाहिरियाए परिसाए बारस सागरोबमाई पंच पिल्रजोब-माइं ठिई पण्णामा अद्भी सो चेव ॥ महासुद्धस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए एवं देवसहस्यं मज्ज्ञिमियाए दो देवसाहस्सीओ पनताओ बाहिरियाए चतारि देवसाहस्सीक्षो. अध्यितरिकाए परिसाए अद्भरोलस सागरीवमाई पंच पिक्कोवमाई, मजिसमियाए बद्धसौलस सागरोवमाई वशारि पिक्कोवमाई, बाहिरियाए अदसीलस सागरोबमाइं तिष्यि पलिओक्साइं, अहो सो चेव ॥ सहस्सारे पुच्छा जाव अस्मितरियाए परिसाए पंच देवसवा, मजिज्ञानियाए परि० एगा देवसाहस्वी, बाहिरियाए० को वेबसाइस्पीको पनता, टिइ-अव्सितरियाए अदद्वारस सागरोत्रमाहं सत्त पिलओवमाइं ठिई पण्णता एवं मिल्झिमियाए अद्धहारस छप्पलिओवमाइं बाहिरियाए अद्धहारस सागरोवमाइं पंच पिलओवमाइं अद्धे सो चेव ॥ आणयपाणयस्सवि
पुच्छा जाव तओ पिरसाओ णविर अब्भितिरयाए अद्धाइजा देवस्था मिल्झिमियाए
पंच देवसथा बाहिरियाए एगा देवसाइस्सी, ठिई-अब्भितिरयाए एगूणवीस सागरोवमाइं पंच य पिलओवमाइं एवं मिलिस० एगूणवीस सागरोवमाइं चत्तारि य पिलओवमाइं बाहिरियाए परिसाए एगूणवीसं सागरोवमाइं तिष्णि य पिलओवमाईं ठिई
अद्धे सो चेव ॥ किह णं मंते ! आरणअखुयाणं देवाणं तहेव अखुए सपरिवारे जाव
विहरइ, अखुयस्स णं देविदस्स तओ परिसाओ पण्णताओ अब्भितरपिर० देवाणं
पणवीसं सयं मिलिस० अद्धुइजा सथा बाहिरिय० पंचसथा, अब्भितरपिर० देवाणं
पणवीसं सयं मिलिस० अद्धुइजा सथा बाहिरिय० पंचसथा, अब्भितरपिर० देवाणं
पणवीसं सागरोवमा सत्त य पिलओवमाईं मिलिस० एकवीससागरो० छप्पलि० वाहिरि० एगवीसं
सागरोवमा सत्त य पिलओवमाईं पिल्झि० एकवीससागरो० छप्पलि० वाहिरि० एगवीसं
सागरोव पंच य पिलओवमाईं टिई पण्णता ॥ किह णं मंते ! हेट्ठिमगेवेज्याणं
देवाणं विमाणा पण्णता ! किह णं मंते ! हेट्ठिमगेवेज्या देवा परिवसंति ?, जहेव
ठाणपए तहेव, एवं मिलिसमगेवेजा उविदेमगेविज्या अणुतरा य जाव अहमिदा नामं
ते देवा पण्णता समणाउसो ! ॥ २०८ ॥ पढमो वेमाणियउहेस्सो समसो ॥

मोहम्मीसाणेस णं भेते ! कप्पेसु विमाणपुढवी किंपइद्विया पण्णेता ? गोयमा ! घणोदहिपइड्रिया प०। सणंकुमारमाहिंदेस्० कप्पेस् विमाणपुरवी किंपइड्रिया पण्णता ? गोयमा! घणवायपडद्विया पण्णना । वंभलोए णं भंते! कप्पे विमाणपृहवी पुच्छा, गो॰! घणवायपइद्रिया पण्णता। लंतए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! तदुभयपइद्विया०। महासक्तमहस्मारेसुवि तद्भयपइद्रिया। आणय जाव अएख्सु णं भंते ! कप्पेसु पुच्छा. गो॰! ओवासंतरपडड्रिया॰। रेविज्वविमाणपुढवीणं पुच्छा, गोयमा! ओवासंतरपइ-द्विया । अणुनरोवबाइयपुच्छा, ओवासंतरपइद्विया ॥ २०९ ॥ सोहम्मीसाणकप्पेसु० विमाणपुरवी केवइयं बाह्रहेणं पण्णता १ गोयमा ! सत्तावीसं जोयणसयाई बाह्रहेणं पण्णमा, एवं पुच्छा, सणंकुमारमाहिंदेस छन्तीसे जोयणस्याई। बंगलंतए पंचवीसे। महामुक्रमहस्सारेसु चउवीसं । आणयपाणयारणाखुएसु तेवीसं सदाई । गेविज-विमाणपुरवी बाबीसं । अणुत्तर्विमाणपुरवी एकवीसं औयणसवाई बाहहेणं प०॥२ १०॥ सोहर्मासाणेस णं संते ! कप्पेस विमाणा केवइयं उन्ने उन्नतेणं० ? गोयमा रे पंच जोयणस्याई उन्ने उन्नेतर्ण प०। सर्णकमारमाझिंदेस छत्रोयणस्याई, बंभरुंतएस सत्त. महासुकराहस्सारेसु अहु, आणयपाणएस ४. नव गेवेंज्जविमाणा णं अंते ! केवड्यं उद् उ॰ ? गो॰! दस जोयणसयाई. अणुत्तरविमाणा णं० एकारस जोयणसयाई उन्ने उन्नतेणं प॰ ॥२११॥ सोहरूमीसाणेस णं मंते ! कप्पेस विमाणा किसंठिया पण्यता ? गोवसा !

दुविहा पण्णता, तंजहा-आवित्यपविद्वा य आवित्यबाहिरा य, तत्य णं जे ते आवलियपविद्वा ते तिथिहा पण्णता. नंजहा-वद्दा तंसा चउरंसा. तत्थ णं जे ते आवलियबाहिरा ते णं णाणासंठाणसंठिया पण्णता. एवं जाब गेविज्वविसाणा. अणूत्तरी-बबाइयविसाणा दुविहा पण्णता. तंजहा-बट्टे य तंसा य ॥ २१२ ॥ सोहम्मीसाणेस णं भंते ! कप्पेसु विमाणा केवहवं आयामविक्संमेणं केवहवं परिक्सेवेणं पण्णता ? गोयमा ! द्विहा पण्णता, तंजहा-संखेजवित्यता य असंखेजवित्यता य. जहा णरगा तहा जाव अगुत्तरोववाइया संखेजवित्थंडे य असंखेजवित्थंडा य. नत्थं णं जे से संखेळवित्यहें से जंबुद्दीवप्पमाणे असंखेळवित्यहा असंखेळाई जीयणसयाई जाब परिक्लेवेणं पण्णता॥ सोहम्मीसाणेसु णं अंते ! कप्पेसु विमाणा बहवण्णा पन्नता ? गोयमा ! पंचवण्णा पण्णता, तंजहा--किण्हा नीला लोहिया हालिहा मुक्किन्ना, सर्णकुमारमाहिदेमु चउवण्णा नीला जाव मुक्किल्ला, बंभलोगलंतएसु तिवण्णा लोहिया जाव सुकिहा, महामुकसहरसारेमु दुवण्णा--हालिहा य मुकिहा य, आण-यपाणयारणसूर्य सुक्किला, गेविज्यविमाणा सुक्किला, अणुत्तरीववाइयविमाणा परम-दुकिछा वर्णणं पण्णता ॥ सोहरूमीसाणेम् णं भंते ! कप्पेस विमाणा केरिसया पभाए पण्णना ! गोयमा ! णिचालोया णिचुजोया सर्य पभाए पण्णता जाव अणु-त्तरोवबाइयविमाणा णिबालोया णिबुजोया सबं पभाए पण्णता ॥ सोहम्मामाणेस णं भंते ! कप्पेस विमाणा केरिसया गंधेणं पण्याता ! सोयसा ! से जहा नामए-कोट्टपुडाण वा एवं जाव एतो इद्वतरागा चेव जाव गंधेणं पण्णता, जाव अणुत्तर-विभाणा ॥ सोहरूमीमाणेमु० विभाणा केरिसया फासेणं फणना ? गोयमा ! से जहा णामए-आइणेइ वा रुएइ वा सन्त्रो फासो भाणियव्यो जाव अणुत्तरोवनाडय-विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेतु णं अंते ! कप्पेतु विमाणा केमहालया पण्णना ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे २ सञ्वतीवसमुद्दाणं सो चेव गमो जाव छम्मासे वीइव-एजा जाव अस्थेगहया विमाणावासा वीइवएजा अस्थेगहया विमाणावासा नो वीइ-वएजा जाव अगुत्तरोवबाइयविमाणा अत्येगइयं विमाणं वीडवएजा अत्येगइए० नो वीइवएजा ॥ सोहम्मीमाणेस णं भंते ! विभागा किंमया पण्णता ? गोयमा ! सन्वर्यणामया पण्णता. तस्य णं बहुवे जीवा य पोरगला य वक्संति विउक्संति चर्यति उचनयंति, सासया णं ते विमाणा दम्बद्धयाए जान फासपजनेहि असासया जाव अगुसरीवबाइया विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु णं० देवा कओहिंतो उववजंति ? उवबाओ नेयन्यो जहा नर्वतीए तिरियमगुएस पंचेंदिएस संमुच्छिमनजिएस, उब-वाओ वक्तीयमेणं जाब अणुत्तरी० ॥ सोहम्मीसाणेस० देवा एगसमएणं केवङ्गा

उनवजंति ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिष्णि वा उक्कोरेणं संखेजा वा असंखेजा वा उबवर्जित, एवं जाव सहस्सारे, आणगाई गेवेजा अणुत्तरा य एको वा दो वा तिष्णि वा उद्घोसेणं संबेजा वा उववर्जति ॥ सोहम्मीसाणेस णं भंते !• देवा समए २ अवहीरमाणा २ केवइएणं काळेणं अवहिया सिया ? गोयमा ! ते णं असंखेजा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेजाहिं ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया जाव सहस्मारो, आणयाइएसु चउसुवि, गेवेजेम् अणुत्तरेषु य समए समए जाव केवहयकालेणं अवहिया सिया ? गोयमा ! ते णं असंखेजा समए २ अवहीरमाणा २ पल्जिनेनमस्य असंखेज्ज्ञागमेनेणं अवही-रैति. नो चेत्र णं अबहिया सिया ॥ सोहम्मीसाणेमु णं भंते ! कप्पेसु देवाणं केम-हालया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा सरीरा पण्णता, तंत्रहा---भवधा-रणिजा य उत्तरवेउवित्रया य तत्थ णं जे से भवधारणिजे से जहनेणं अंगुलस्म अमंखेजडमागो उक्कोरेणं सत्त र्यणीओ, तत्य णं जे से उत्तर्वेडव्विए से जहण्णेणं अंगलस्य संखेजहभागो उद्योसेणं जोयणमयसहस्यं, एवं एकेका ओसारेनाणं जाव अण्नराणं एका रयणी, गेविज्ञणत्तराणं एगे भवधारणिजे सरीरे उनरवेउब्बिया नत्य ॥२९३॥ सोहम्मीमाणेस णं० देवाणं सरीरगा किसंघयणी पण्णना ? गोयमा ! छण्डं संघयणाणं असंघयणी पण्णता, नेबद्वी नेव छिरा नवि ण्डार णेव संघयण-मन्यि, जे पोरगला इदा कंता जाव ते तेसि संघायताए परिणमंति जाव अणतरो-ववाइया ॥ सोहम्मीसाणेम् ० देवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णता ? गोयमा ! दुविहा सरीरा प० तं०--भवधारणिज्ञा य उत्तरवेडिव्या य. तत्य णं जे ते भवधारणिज्ञा ते समचउरमसंठाणसंठिया पणाना, तत्य णं जे ते उत्तरवेडिव्या ते णाणासंठाण-संठिया पण्णाता जाव अञ्चओ, अवेडिवया गेविजणुत्तरा, भवधारणिजा समचडरं-ससंठाणसंठिया उत्तरवेउव्विया णत्थि ॥ २१४ ॥ सोहम्मीसाणेयु॰ देवा केरिसया वर्णणं पन्नमा ? गोयमा ! कणगत्तयरत्तामा वर्णणं परणता । सर्णक्रमारमाहिंदेमु णं० पडमपम्हगोरा वन्त्रेणं प्रणाता । बंभलोगे णं भंते !०? गोयमा ! अन्नम्भगवण्याभा वण्णेणं पण्णता, एवं जाव गेवेजा, अणुत्तरीवबाइया परमञ्जूकिहा वण्णेणं पनता ॥ सोहम्मीसाणेस णं भंते ! कप्पेस देवाणं सरीरवा केरिसवा गंधेणं पण्यता ! गोबमा ! से जहा णामए-कोट्टपुडाण वा तहेव सम्बं जाव मणामतरगा चेव गंधणं पण्यता जाब अणुत्तरोववाइया।। सोहम्मीसाणेद्ध० देवाणं मरीरगा केरिसया फासेणं कन्नता ? गोयमा ! थिरमञ्चणिद्धसुकुमालक्कविफासेणं प्रकास, एवं जाव क्षणसरीक्वाह्या ॥ सोहम्मीसाणदेवाणं ० केरिसगा पुस्तका उत्सासत्ताएं यरिषमंति ? गोबमा ! जे प्रोस्गका

इहा कंता जाब ते तेसि उस्सासत्ताए परिणमंति जाब अणुत्तरीववाइया, एवं आहारनाएवि जाव अणुत्तरोववाइया ॥ सोहम्मीसाणंडेवाणं ० कइ छेस्साओ पण्ण-ताओ ! गोयमा ! एगा तेउलेस्सा पण्णता । मणंकुमारमाहिदेसु एगा पम्हलेस्सा, एवं वंगलोगेवि पम्हा. सेसेस एका सकलेरसा, अणुत्तरीववाइयाणं० एका परमसुक-हेस्सा ॥ सोहम्मीसाणदेवा ० कि सम्मदिही मिच्छादिही सम्मामिच्छादिही ? गोयमा ! तिर्णिन, जाव अंतिमगेवेजा देवा सम्मदिद्वीवि सिच्छादिद्वीवि सम्मामिच्छादिद्वीवि, अणुत्तरोववाड्या सम्मदिही णो मिच्छादिही णो सम्मामिच्छादिही॥ सोहम्मी-साणाः कि जाणी अज्जाजी ! गोयमा ! दोवि, तिष्णि जाणा तिष्णि अन्जाणा णियमा जाव गेवेजा, अणुत्तरोववाइया नाणी नो अण्णाणी निष्णि णाणा णियमा । तिबिहे औरो दुविहे उवओरो सब्बेसि जाव अणुत्तरीववाइया ॥ २९५ ॥ सोहम्मीसाणदेवा व ओहिणा केवड्यं खेनं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्य असंखेजडभागं उक्कोसेणं ओही जाव रयणप्यभा पुढवी उर्दू जाव साई विमाणाइं तिरियं जाव असंखेजा दीवसमुद्दा एवं सदीसाणा पटमं दोशं च सणं-कुमारमाहिदा । तर्षं च वंभरुंतग सुक्तसहस्सारग चउरशी ॥ १ ॥ आणग्रपाणय-कप्पे देवा पासंति पंचमिं पुरुषि । तं चेव आर्णबुय ओहीनाणेण पासंति ॥ २ ॥ छिं हे हिममज्ज्ञमगेवेजा सत्तमि च उवरिका । संभिष्णलोगणार्ल पासंति अपत्तरा देवा ॥ ३ ॥ २१६ ॥ सोहम्मीसाणेनु णं भंते !० देवाणं कह समुख्याया पण्णाना ? गोयमा ! पंच समुख्याया क्ष्णता, तंजहा-वियणासमुख्याए कसाय॰ मारणंतिय॰ वेडिंदिय॰ तेमासमुरघाए॰, एवं जाव अखुए। गेवेजअणुत्तराणं आइला तिष्णि ससम्बाबा प्रणाना ॥ सोहम्मीमाणदेवा • केरिसयं खुहप्पिबासं प्रवण्भवमाणा विह-रेति ? गोयमा ! णत्थ खुद्वापिवासं पचणभवमाणा विहरेति जाव अणुत्तरोवबाइया ॥ सोहर्मासाणेसु णं भंते ! कप्पेसु देवा एगतं पभू विडव्वित्तए पुहुतं पभू विडव्वित्तए ? हंता प्रभू . एगतं विख्वेमाणा एगिदियस्वं वा जाव पंचिदियस्वं वा पहत्तं विख्वे-माणा एगिदियस्वाणि वा जाव पंचिदियस्वाणि वा, ताइं संखेजाइंपि असंखेजाइंपि गरिसाइंपि असरिसाइंपि संबद्धाइंपि असंबद्धाइंपि रूवाइं विजन्वंति विजन्तिता अप्पणा अहिच्छियाई कजाई करेंति जाब अबुओ, गेवेजणुत्तरोववाइया॰ देवा कि एगतं प्रभू विज्ञविकत्तप् पुहुत्तं वभू विज्ञव्यितप् ? गोयमा ! एगतंपि पुहुतंपि, नो चेव णं संपत्तीए विद्वविद्य वा विद्ववंति वा विद्वविदसंति वा ॥ सोबुम्मीसाणदेवा • केरिसर्व सामासीक्यां पवाणुभवमाचा विष्ट्रंति ? गोयमा ! मणुष्णा सद्दा जाव मणुष्या फासा जान गेनिजा. अनुसरीवनाइया अनुसरा सहा जान फासा ॥ सीहरमीसावेसु० देवाणं केरिसगा इङ्की पण्णता ? गोयमा ! महिङ्किया महजुदया जाव महाणुभागा इङ्गीए प० जाव अञ्चुओ, गेवेजणुत्तरा य मन्वे महिङ्गिया जाव सन्वे महाणुभागा आणिंदा जाव अहमिंदा णाम ते देवगणा पण्णता समणाउसी! ॥ २१७ ॥ सोहम्मीसाणा० देवा केरिसया विभसाए पण्णता ! गोयमा! दुविहा पण्णता, नंजहा-वेडब्बियमरीरा य अवंडब्बियसरीरा य. तत्थ णं जे ते वेडब्बियसरीरा ते हारविराइयक्च्छा जाव दम दिमाओ उज्जोवेमाणा प्रभासेमाणा जाद पडिरूदा. तस्थ णं जे ते अवेउ विवयसरीरा ते णं आभरणवमणरहिया पगइत्था विभूमाए पण्णना ॥ सोहम्मीसाणेसु णं मंते ! कप्पेसु देवीओ केरिसियाओ विभसाए पण्ण-ताओ ! गोयमा ! द्विहाओ पण्णताओ, तंत्रहा--वंद्रव्वियसरीराओ य अवंद्रव्य-यमरीराओ य. तत्थ णं जाओ चंडिययसरीराओ ताओ सवण्णसहालाओ सुवण्ण-सहालाई बत्थाई पवरपरिहियाओ चंदाणणाओ चंदविलामिणीओ चंदद्वसमणिष्ठा-लाओ सिंगारागारचारवंमाओं संगय जान पामाइयाओ जान पहिरूवाओ, तत्थ णं जाओ अवेड व्वियसरीराओ ताओ णं आभरणवसणरहियाओ पगइत्थाओ विभसाए पण्णनाओ, सेसेस देवा देवीओ णारिय जाव अश्वओ, गेवेजगदेवा० केरिसया विभू-साए॰ ? गोयमा ! आभरणवसणरहिया, एवं देवी णत्थि भाषियव्वं, पगइत्था विभूसाए पण्णता, एवं अणुनरावि ॥ २१८ ॥ सोहम्मीसाणेस् ० देवा केरिसए काममोगे पचणुमनमाणा विद्दांति ? गोयमा ! इट्ठा सदा इट्ठा रूना जाँच पासा, एवं जाद गेवेजा, अणुनरोववाइयाणं अणुनरा सहा जाद अणुनरा फासा ॥ २३९ ॥ ठिई मन्वेसि भाणियव्या, देविनाएवि, अणंतरं चयंति चइता जे जाहें गन्छंति तं भाषियव्वं ॥ ५२० ॥ सोहर्म्भासाणम् णं भंते ! कप्पेस् सम्बपाणा सम्बभया जाव सत्ता पुरुविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयताए देवताए देविताए आसणसयण जाव मंडीवगरणताए उववण्णपुरुवा ? हंता गोयमा ! असई अदुवा अणंतज्ज्ञतो, सेसेस कप्पेस एवं चेव, णवरि नो चेव णं देविसाए जाव गेवेजगा, अणुनरोववा-इएसुवि एवं, णो चेव णं देविकाए । सेर्त देवा ॥ २२९ ॥ नेर्स्थाणं अंते ! केन्द्रयं कार्ल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं दस बागसहस्साई उन्होसेणं तेत्तीसं साग-रोवमाई, एवं सन्वेसि पुच्छा, तिरिक्खजोणियाणं जहन्नेणं अंतोमु० उन्नोसेणं तिन्नि परिओवसाइं, एवं मणुस्साणवि, देवाणं जहां फेर्ड्याणं ॥ देवणेर्ड्याणं जा चेव ठिई सचेव संचिद्रणा. तिरिक्खजोणियस्य जहचेणं अंतोमुहत्तं उद्योसेणं वणस्यइ-कालो, मणुरसे णं मंते ! मणुरसेति कालओ केविबरं होई ! गोगमा ! जहणीणं अंतोमुहुनं उक्षोसेणं तिकि परिओवमाई पुष्वकोदिपुहुत्तमन्महियाई ॥ जेरहबसणुरस-

देवाणं अंतरं जहन्नेणं अंतोमु॰ उन्नोसेणं वगरसङ्कालो । तिरिक्सजोणियस्स अंतरं जहनेणं अंतोमुहुनं उन्नोसेणं सागरोवमसयपुहुनं साइरेगं ॥ २२२ ॥ एएसि णं भंते ! णेरङ्याणं जाव देवाण य क्यरे॰ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा मणुस्सा णेरङ्या असं॰ देवा असं॰ देवा असं॰ तिरिया अणंतगुणा, से तं चउन्तिहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णना॥२२३॥ बीओ वे॰ देवुहेस्तो समस्तो ॥ तथा चउन्विहपहिचस्ति समस्ता ॥

तत्थ णं जे ते एवमाइंसु -- पंचिषहा संसारसमायणगा जीवा पण्पता ते एवमाइंसु, नं - एगिंदिया बेर्ड दिया तर्ड दिया चर्ड रिदिया पंचितिया। से कि तं एगिंदिया १ २ द्विहा पण्णता. तंत्रहा-पज्जत्तगा य अपज्ञत्तगा य. एवं जाव पंचिदिया द्विहा प०. तं --- पजतागा य अपजतागा य । एगिंदियस्स णं भंते ! केबइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमहत्तं उन्होसेणं बाबीसं वानसहरूसाई, बेइंदिय० जहनेणं अंतोम् ० उद्योसेणं बार्स संबन्छराणि, एवं नेइंदियस्स एगूणपण्णं राइंदियाणं, चडरिंदियस्य छम्मासा, पंचेंदियस्स जह० अंतीम् ० उद्दोसेणं तेत्रीसं सागरीवमाई. अपजनएगिदियस्य णं ॰ केवडयं कालं ठिंडे पण्णना ! गीयमा ! जहन्नेणं अंतोम ० उक्कोसेर्णाव अंतो॰ एवं सब्वेसिपि अपजनगाणं जाव पंचेदियाणं, पजनेगिदियाणं जाव पंचिन्दियाणं पुच्छा, गो॰ ! बहुनेणं अंतो० उद्यो॰ बावीसं वाससहस्माइं अंतोसहत्तु-णाई, एवं उद्योसियावि टिई अंतोमहत्तुणा मन्वेसि पजताणं कायव्या ॥ एगिदिए णं मंते ! एगिदिएति कालओं केविवरं होइ ! गोवमा ! जहबेणं अंतोम ० उद्योक वणस्सङ्कालो । बेइंदिए णं अंते ! बेइंदिएत्ति कालओं केविकरं होइ ? गोयमा ! जह अंतोम । उद्दोसेणं संखेजं कालं जाव चडिरेदिए संखेजं कालं. पंचेदिए णं भंते ! पंचिदिएति कालओ केविचरं होइ ! गोयमा ! जह० अंतोमु० उक्को० साग-रोवमसहस्यं साहरेनं ॥ अपजन्तएगिंदिए णं भंते !० कालओ केवर्ष्यरं होइ? गोयमा ! णं भंते !० कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहतं उक्तीसेणं संखिजाई वाससहस्याई । एवं बेइंदिएवि, णवरं संखेजाई वासाई । तेईदिए णं मंते !० संखेळा राइंदिया। चर्डरिक्ए णं॰ संखेळा मासा। पजनपंचिंदिए० सागरोवमसय-पुरत्तं साइरेगं ॥ एगिदियस्स णं भंते ! केवडयं कालं अंतरं होड ? गोयमा ! जह-ण्णेणं अंतोमुहत्तं उद्दोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेळवासमञ्महियाइं । बेइंदियस्स णं अंतरं कालको केविकरं होइ ? गोवमा ! जहणोणं अंतोसहतं उक्कोसेणं वणस्मइ-कालो, एवं तेइंदियस्स घडीरेदियस्स पंचेंदियस्स, अफअतगाणं एवं चेव, पजत-गाणिव एवं चेव ॥ २२४ ॥ एएसि शं अंते ! एविंदि० बेडं० तेरं० चट० पंचि-

दियाणं कवरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्त्रत्थोवा पंचेंदिया चर्डिदिया विसेसाहिया तेईदिया विसेसाहिया वेईदिया विसे-साहिया एमिंदिया अणंतगुणा । एवं अपजनगाणं सव्वत्योवा पंचेदिया अपजनगा चडिरिद्या अपजत्तगा विसेसाहिया तेइंदिया अपजत्तगा विसेसाहिया वेइंदिया अपजनगा विसेसाहिया एगिंदिया अपजनगा अणंतगुणा सइंदिया अप॰ वि॰ ॥ सम्बत्धोवा चटिरिदिया पजनगा पंचेंदिया पजनगा विसेसाहिया वेइंदियपजनगा विसेसाहिया तेइंदियपजनगा विमेसाहिया एगिंदियपजनगा अणंतगुणा महंदिया पजनगा विसेसाहिया॥ एएसि णं भंते ! सहंदियाणं पजनगञ्जपजनगाणं कयरे २ हिंनो ॰ ? गोयमा ! सत्वत्थोवा गईदिया अपजत्तगा सइंदिया पजनगा मुंखेजगुणा । एवं एगिंदियावि ॥ एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं पजनापजनगाणं क्यरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा बिसेमाहिया वा ? गोयमा ! सञ्बत्योवा बेइंदिया पञ्जागा अपजनगा असंखेजगुणा, एवं तेंदियचडरिंदियपंचंदियावि ॥ एएसि णं भंते ! एगिंदियाणं बेडंदि० तेइंदि० चउरिंदि० पंचेंदियाणं पजतगाणं अपजतगाण य कबरे २...? गोयमा ! सञ्बत्धोवा चउरिंदिया पञ्चमगा पंचेंदिया पञ्चमगा विसे-साहिया बेइंदिया पजनागा विसेसाहिया तइंदिया पजनागा विसेसाहिया पंचिदया अपजनगा असंखेजगुणा चर्रीरेदिया अपजना विसेसाहिया तेइंदियअपजना विसे-साहिया बेइंदिया अपज्ञता विसेसाहिया एगिंदियअपजना अर्णनगुणा सइंदिया अपजता विसेसाहिया एगिदियपजता संखेजगुणा सहंदियपजता विसेसाहिया सहं-दिया विसेसाहिया । सेतं पंचविहा संनारसमावण्यमा जीवा प० ॥ २२५ ॥ खडत्था पंचविता पदिवसी समसा॥

तत्य णं जे ते एवमाइंस्-छिव्वहा संसारसमायण्यमा जीवा प० ते एवमाइंस्, तंजहा—पुढिविकाइया आठकाइया तेउ० वाउ० वणस्यइकाइया तसकाइया ॥ से किं तं पुढिव० १ पुढिव० दुविहा पण्णता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, एवं वायरपुढिविकाइया दुविहा पण्णता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, एवं वायरपुढिविकाइयावि, एवं चउक्रएणं मेएणं आउतेउवाउवणस्सइकाइया णेवव्या । से किं तं तसकाइया १ २ दुविहा पण्णता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥ २२६ ॥ पुढिविकाइयस्स णं भेते । केवइयं कार्क ठिई पण्णता १ गोयमा । जद्व-णणं अंतोमुहुनं उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइं, एवं सब्वेसि ठिई नेयव्या, तसकाइयस्स जहकेणं अंतोमुहुनं उक्कोसेणं तेतीसं सायरोवमाई, अपज्जत्तगाणं सव्वेसि जहकेणि उक्कोसेणवि अंतोमुहुनं, पज्जत्वगणं सव्वेसि उक्कोसिया ठिई

अंतोमुहुतूणा कायव्या ॥ २२७ ॥ पुरुविकाइए णं भंते ! पुढविकाइएति कालओ केविषरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुतं उद्दोसेणं असंखेजं कालं जाव असं-खेजा लोगा। एवं आउ० तेउ० वाउकाइयाणं वणस्महकाइयाणं अर्णतं कालं जाव आवलियाए असंखेळाइभागो ॥ तसकाइए णं भेते !० जहनेणं अंतोमु० उद्यो-सेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेजवासमञ्महियाई । अपजन्तगाणं छण्हवि जहण्णेणवि उद्गोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पजनगाणं---'वाससहस्सा संखा पुढविदगाणिलतंहण पजता । तेऊ राइंदिसंस्वा तसमागरसयपुहुत्ताई ॥ १ ॥' पजतगाणिव सञ्चेसिं एवं ॥ पुढविकाइयस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं उद्दोसेणं वणप्फड्कास्त्रे, एवं आउतेउवाउकाइयाणं वणस्सइकास्त्रे, तसकाइयार्णाव, वणस्सइकाइयस्स पुढविकालो, एवं अपज्जनगाणिव वणस्सइकालो, वणस्मईणं पुढविकालो, पजनागाणवि एवं चेव वणस्सइकालो, पजनवणस्मईणं पुर्हाबकालो ॥ २२८ ॥ अप्पाबहुयं-मन्बत्योवा तसकाइया तेउकाइया असंखेजगुणा पुरुविकाइया विसेसाहिया आउकाइया विसेसाहिया वाउकाइया विसेसाहिया वणस्स-इकाइया अणंतगुणा एवं अपजनतगावि पजनतगावि ॥ एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं पजनगाणं अपजनगाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बद्धोवा पुढविकाइया अपजनगा पुढविकाइया पजनगा संखेजगुणा, एएसि णं अंते ! आ० सञ्बत्योवा आउक्काइया अपजनगा पजनगा संखेजगुणा जाव वणस्स-इकाइया॰ सन्वत्योवा तसकाइया पजानगा तसकाइया अपजानगा असंखेजगुणा ॥ एएसि णं मंते ! पुढविकाइयाणं जाव तसकाइयाणं पजनगमपजनगाण स कयरे २ हिनो अप्या वा ४ ? गो० ! सञ्बत्योवा तसकाइया पजतगा, तसकाइया अपजतगा असंखेजगुणा, तेउकाइया अपजना असंखेजगुणा, पुढविकाइया आठकाइया वाउ-काइया अपजलगा विसेसाहिया. तेउकाइया पजलगा संखेजगुणा, पुढविआउवाउ-पजनगा विसेसाहिया, वणस्सद्दकाह्या अपजनगा अर्थातगुणा, सकाऱ्या अपजनगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पञ्जामा संखेजगुणा, सकाइया पञ्जामा विसेसाहिया ॥ २२९ ॥ सुहुमस्स मं मंते ! केवह्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं अतोमुहुनं उद्योसेणयि अंतोमुहुनं एवं जाव सुहुमणिओयस्स, एवं अपजन्तगाणिव पजनगाणवि अहज्जेव्यवि उद्योगियवि अंतीमुहुत्तं ॥ २३० ॥ सुहुमे णं अंते ! सुहु-मेति कालओ केविवरं होइ ? मीयमा ! जहण्येणं अंतोमुदुत्तं उक्कोसेणं असंखेजकालं जाव असंखेजा क्षेत्रा, सम्बेसि पुरविकाको जाव सहुमणिओयस्स पुरविकाको, अपजानगणं सब्देसि जहुक्लेवानि उद्योसेवानि अंतोसहर्ता, एवं पजानगणि सब्देसि

जहण्णेणवि उद्योसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ २३१ ॥ सुहुमस्स णं भंते ! केवस्यं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोम् ० उद्घो॰ असंखेजं कालं कालओ असंखेजाओ उरसप्पिणीओसप्पिणीओ खेनओ अंगुलरस असंखेजहमागो, एवं मुहमवणस्सङकाइ-यस्सवि सुहुमणिओयस्सवि जाव असंखेजा लोया असंखेजहमागो । पुढविकाडयाईणं बणस्सइकाळो । एवं अपज्जनगाणं पजलगाणवि ॥२३२॥ एवं अप्पाबहर्ग, सन्तरथोवा सुहमतेजकाइया सुहमपुदविकाइया विसेसाहिया सुहमआउवाळ विसेसाहिया सुहुम-णिओया असंखेजगुणा सहमवणस्सङ्काइया अर्णतगुणा सहमा विसेसाहिया, एवं अपज्जनगणं, पज्जनगणवि एवं चेव ॥ एएसि णं भंते ! सुदूर्माणं पज्जनापज्जनाणं कसरे॰ १ गोयमा ! सव्वत्योवा सहुमा अपजनगा सहुमा पजनगा संखेजगुणा, एवं जाव सुहुमणिगोया ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं जाव सहमणिओसाण य पजनापजना० कयरे २ हिंतो०? गोयमा ! सब्बत्थोना महमते-उकाइया अपजनगा सुहमपुर्वावकाइया अपजनगा विसेसाहिया सुहमअ'उअपजना विसेसाहिया ग्रहुमवाउअपजना विसेसाहिया सुहुमतेउकाइया पजनगा संखेजगुणा सुद्दमपुढविआउवाउपजनगा विसेसाहिया मुहुमणिओया अपजनगा असंखेजगुणा सुहुमणिओया पजनगा संखेजगुणा सुहुमनणस्सङ्काङ्या अपजनगा अणंनगुणा सुद्दमअपजना विसेसाहिया मुह्मवणस्सद्पजनगा संखेजगुणा मुहुमा पजना विसे-साहिया ॥ २३३ ॥ वायरस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोम् ० उक्को ० तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णता, एवं वायरतमकाइय-स्सवि, बायरपुढवीकाइयस्स बाबीसवाससहस्साई, बायरआउस्स सत्तवाससहस्सं, बायरतेउस्म तिण्णि राइंदिया, वायरवाउस्स तिण्णि वाससहस्साई, बायरवण० दसवाससहस्साइं, एवं पत्तेयसरीरबायरस्सवि, जिओयस्स जहनेणवि उन्नोसेणवि अंतोम् , एवं बायरणिओयस्सवि, अपज्जतगाणं सन्वेसि अंतोमुहत्तं, पज्जतगाणं उक्नोसिया ठिई अंतोमुहुनूणा कायव्या सन्वेसि ॥ २३४ ॥ बायरे णं भंते ! बाय-रेशि कालओ केविधरं होइ ? गोयमा ! जह० अंतो० उक्कोसेणं असंखेजं कार्क असंखेजाओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अंग्रलस्स असंखेजइभागो; बायर्पढविकाइयआउतेउवाउ० परोयसरीरबायरवणस्सइकाइयस्स बायरनियोयस्स एएसि जहण्णेणं अंतोमु० उद्घोसेणं सत्तरि सागरोबमकोडाकोडीओ-संखाईयाओ समाओ अंगुलमागो तहा असंक्षेजा। ओहे य बायरतस्थणुनंघो सेसओ वोच्छं ॥ १ ॥ उस्तप्पिणि २ स्त अष्टाइयपोग्गळाण परियद्य । वेउयहिसहस्सा खलु साहिया होंति तसकाए ॥ २ ॥ अंतोसुहृतकाको होइ अपजतगाण सन्वेसि ॥ पजतवागरस्स

य बायरनसकाइयस्सावि ॥ ३ ॥ एएसि ठिई सागरोबमसयपुहुत्तं साइरेगं । तेउस्स संख राई[दिया] दुविहणिओए मुहुत्तमद्धं तु । सेसाणं संखेजा वाससहस्सा य सन्वेसिं ॥ ४ ॥ २३५ ॥ अंतरं बायरस्स बायरवणस्सइस्स णिओयस्स बायरणिओयस्स एएसि चउण्हिव पुढविकालो जाव असंखेजा लोया, सेसाणं वणस्सइकालो । एवं पजातगाणं अपजातगाणवि अंतरं, ओहे य बायरतरु ओचनिओए य बायरणिओए य । कालमसंखेजंतरं सेसाण वणस्सईकालो ॥ १ ॥ २३६ ॥ अप्पा॰ सन्त्रस्थोवा वायरतसकाह्या बायरतेउकाइया असंखेळगुणा पत्तेयसरीरबायरवणस्सइ० असं-खेजगुणा वायरणिओया असंखे० वायरपुढवि० असंखे० आउवाट० असंखेजगुणा बायरवणस्मङ्काङ्या अणंतगुणा बायरा विसेसाहिया १ । एवं अपजलगाणवि २ । पजनगाणं सम्बत्योवा वायरतेउकाइया बायरतसकाइया असंखेजगुणा पत्तेगसरीरवायरा असंखेजगुणा सेसा तहेव जाव बायरा विसेसाहिया ३ । एएसि **णं** भंते ! वायराणं पजनापजनाणं कयरे २ हितो० ? गो० ! सन्वत्थोवा बायरा पजना बायरा अपजनगा असंखेजगुणा, एवं सब्वे जहा वायरतसकाइया ४। एएसि णं भंते ! वायराणं वायरपुरविकाइयाणं जाव वायरतसकाइयाण य पज्जनापज्जनाणं कयरे २ हिंतो॰ ? गोयमा ! सव्यत्थोवा बायरतेउकाइया पजत्तगा बायरतमका-इया पजनगा असंखेजगुणा बायरतसकाइया अपजनगा असंखेजगुणा पत्तेयसरीरबा-यर्वणस्मइकाइया पजनागा असंखेजगुणा बायरणिओया पजनागा असंखेज० पुटविआउवाउपज्ञत्तगा असंखेजगुणा बायरतेउअपज्जतगा असंखेजगुणा पत्तेयसरी-रबायरवणस्तइ॰ अप॰ असंखे॰ बायरणिओया अपजनगा असंखे॰ बायरपुढवि-आउवाउअपजतमा असंखेळगुणा बायर्वणस्सह० पजतमा अणंत्गुणा वायर्-पजतगा विसेसाहिया बायरवणस्सइ० अपजता असंखेजगुणा बायरा अपजतगा विसेसाहिया बायरा विसेसाहिया ५ । एएसि णं भंते ! सहुमाणं सहुमपुढविकाइयाणं जाव सुहुमनिगोदाणं बायराणं बायरपढविकाइयाणं जाव बायरतसकाइयाण य कयरे २ हिंतो॰ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा बायरतसकाइया बायरतेउकाइया असंखेळ-गुणा परियसरीर्बायरवण० असंखे० तहेव जाव बायरवाउकाइया असंखेळगुणा ग्रहमतेजकाह्या असंसे॰ सहमपुढवि॰ विसेसाहिया सहमआउ॰ वि॰ सहमवाउ० विसेसा॰ सहुमनिओया असंखेळगुणा बायरक्णस्सइकाइया अणंतगुणा बायरा विसे-साहिया महमनणस्सद्काद्या असंबे॰ महुमा विसेसा॰, एवं अपजलगावि पजल-गावि, णवरि सम्बत्योवा वायरतेजकाह्या पजता वायरतसकाह्या पजता असंबे-अगुणा प्रतेयसरीर • सेसं तहेव जाव बुहुमफअता विसेसाहिया । एएसि णं अंते !

सुहुमाणं बायराण य पज्जताणं अपज्जताण य कयरे २...? गोयमा ! सव्वत्योवा बायरा पजता बायरा अपजता असंखेजगुणा सुहुमा अपजता असंखेजगुणा सुहु-मपजता संखेजगुणा, एवं सहुमपुढविबायरपुढवि जाव सुहुमनिओया बायरनिओया नवरं पत्तेयसरीरबायरवण । सव्वत्योवा पजता अपजता असंखेजगुणा, एवं बायर-तसकाइयावि ॥ सन्वेसि भंते ! पजनअपजनगाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुह्ना व। विसेसाहिया वा ? गोयमा ! मन्वत्योषा वायरतेजकाइया पज्जता वायरतस-काइया पज्जतगा असंखेजगुणा ते चेव अपज्जतगा असंखेजगुणा पत्तेयसरीरबायरव-णस्सइअपजतगा असंखे॰ बायरणिओया पजता असंखेज॰ बायरपुढवि॰ पजता असं० आउवाउपजता असंखे॰ वायरतेउकाइयअपजता असंखे॰ पत्तेय॰ अपजता असंखे व बायरनिओयअपज्ञता असं व बायरपुढिव व आउवाउकाइ व अपजनगा असंखेजनुणा सुह्मतेउकाइया अफबत्तगा असं॰ सुह्मपुढविआउवाउअपजता विसेसा॰ यहुमतेउकाङ्यपंजन्तगा संखेजगुणा यहुमपुढविआउवाउपजनगा विसेसा-हिया मुहमणिगोया अपजत्तगा असंखेजगुणा मुहमणिगोया पजत्तगा संखेजगुणा बायरवणस्सइकाइया पजना अणंतगुणा बायरा पजनगा विसेमाहिया बायरवण-स्सइ॰ अपजता असंखेजगुणा बायरा अपजता विसे॰ बायरा विसेसाहिया सुहुम-वणस्सङ्काङ्या अपजनागा असंखेजगुणा युहुमा अपजना विसेसाहिया सुहुमवण-स्सङ्काङ्या पजता संखेजगुणा सहमा पजनगा विसेसाहिया सहमा विसेसाहिया ॥ २३७ ॥ कड्विहा णं भंते ! णिओया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा णिओया पण्णता, तंजहा--णिओया य णिगोदजीवा य ॥ णिओया णं भंते ! कहविहा पण्णना १ गोयमा ! दुविहा प॰, तंजहा— चुहुमणिओया य बायरणिओया य ॥ सुहमणिओया णं भंते ! कड्विहा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता, तंजहा---पजत्तना य अपजतना थ ॥ बायरणिओयावि दुविहा पण्णता, तंजहा---पजतना य अपजनगा य ॥ णिओयजीवा णं भंते ! कड्विहा पण्णना ? गोयमा ! दुविहा पण्णता, तंजहा—सुहुमणिओयजीवा य बायरणिओयजीवा य । सुहुमणिगोदजीवा दुबिहा प॰, तं॰--पजत्तगा य अपजत्तगा य । बादरणिगोदजीवा दुविहा पन्नता, तं०--पज्जतमा य अपज्जतमा य ॥ २३८ ॥ निगोदा णं संते! दम्बद्भगए कि संखेळा असंखेळा अणंता? गोयमा! नो संखेळा असंखेळा नो अणंता, एवं पजनगावि अपजनगावि॥ ग्रहुमनिगोदा णं भंते! दञ्बहुयाए कि संखेजा अवंखेजा अर्णता शाना गोन । गो संखेजा असंखेजा गो अर्णता, एवं पजतगावि अपजतगावि, एवं बायरावि पजतगावि अपजतगावि यो संबेजा

असंखेजा गो अगंता ॥ गिगोदजीवा णं भंते ! दव्यट्टयाए कि संखेजा असंखेजा अर्णता ? गोयमा ! नो संखेजा नो असंखेजा अर्णता, एवं पजतावि अपजतावि, एवं सुहमणिओयजीवावि पजात्तगावि अपजात्तगावि. बादरणिगोदजीवावि पजातगावि अपजनगावि ॥ णिगोदा णं भंते ! पएसट्टयाए कि संखेळा० पुच्छा, गोयमा ! नो संखेजा नो असंखेजा अणंता, एवं पजतगावि अपजतगावि । एवं सहमणि-ओयावि पजनगावि अफजतगावि, पएसद्वयाए सव्वे अणंता, एवं बायरनिगोशाबि पजनयावि अप्पजनयावि, पएसहुयाए सन्वे अणंता, एवं णिगोदजीवा नवविहावि पएसड्टयाए सन्वं अणंता ॥ एएसि णं भंते । णिओयाणं सुहमाणं बायराणं पजना-गाणं अपजनगाणं दव्यद्वयाए पएसद्वयाए दव्यद्वपएसद्वयाएं क्रयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा ॰ ? गोयमा ! सव्वत्योवा बायरणिओयपज्जनगा द्व्यद्वयाए वादर-निगोदा अपजनगा दव्बद्वयाए असंखेजगुणा सुहुमणिगोदा अपजनगा दव्बद्वयाए असंखेजगुणा सुहुमणिगोदा पजनगा दव्बद्वशाए संखेजगुणा, एवं पएसद्वयाएवि ॥ दम्बद्रपएसद्वयाएं सन्वत्थोवा बायरणिओया पज्जता दम्बद्वयाए जाव सहमणि-गोदा पजता दव्बद्वयाए संखेजगुणा, तुहुमणिओएहिंतो पजतएहिंतो दव्बद्वयाए बादरणिगोदा पजता पएसद्वयाए अणंतगुणा, बायरणिओया अपजता पएसद्वयाए असंखे॰ जाव सहमणिओया पजता पएसहयाए संखेजगुणा । एवं णिओयजीवावि, णवरि संक्रमए जाव सहमणिओयजीवेहिंतो पजत्तर्णहंतो दव्वह्रयाए बायरणिओयजीवा पज॰ पएसहुयाए असंखेजगुणा, सेसं तहेव जाव सहुमणिओयजीया पजना पए-सहयाए संखेळागुणा ॥ एएसि णं भंते ! णिगोदाणं सहमाणं बायराणं पजनाणं अपजत्ताणं णिओयजीवाणं सहुमाणं वायराणं पजत्तगाणं अपजत्तगाणं दव्यहुयाए पएसड्डयाए दल्बद्दपएसद्दयाए कयरे २ हिंती॰ ? गो॰! सन्वत्थोवा बायरणिओया पजना दव्यद्वयाए बायरणिओया अपजता दव्यद्वयाए असक्केजगुणा द्वहुमणिगोदा अप० दब्बहुयाएं असंखेळगुणा सुहुमणिगोदा पज० दब्बहुयाएं संखेळगुणा सुहु-मणिओएहिंतो द्व्वद्वयाए बायरणिओयजीवा पज्जता द्व्वद्वयाए अणंतगुणा बायरणि-ओयजीवा अपज्ञता दन्त्रद्वयाए असंखेज्युणा युहुमणिओयजीवा अपज्ञता दन्त्रद्वयाए असंखेजगुणा सहमणिओयजीवा पजता दब्बहुबाए संखेजगुणा, पएसहुबाए सब्ब-रथोवा बागरणिओयजीवा पज्जता पएसद्वयाए बागरणिओया अपज्जता पएसद्वयाए असंबे॰ सहमिक्षोयजीवा अपजतागा पएसहयाए असंखेळगुणा सहमिणिगोदजीवा पजता पएसद्वयाए संखेजगुणा युदुमिषगोदनीवेहिंतो पएसद्वयाए बादरणिगोदा पज्ञता पएसद्वराए अवंत्रगुणा बायरणिओया अपज्ञतागा पएस० असंबोजगुणा जाब

सुहुमणिओया पजना पएसहुयाए संखेजगुणा, द्व्यहुपएसहुयाए सन्वत्थोवा वायरणिओया पजना द्व्यहुयाए वायरणिओया अपजना द्व्यहुयाए असंखेजगुणा जाव
सुहुमणिगोदा पजना द्व्यहुयाए संखेजगुणा मुहुमणिओयाहितो द्व्यहुयाए बायरणिओयजीवा पजना द्व्यहुयाए अणंतगुणा सेसा तहेव जाव सुहुमणिओयजीवा पजनगा द्व्यहुयाए संखेजगुणा सुहुमणिओयजीवेहितो पजनएहितो द्व्यहुयाए बायरणिओयजीवा पजना पएसहुयाए असंखेजगुणा सेसा तहेव जाव मुहुमणिओया पजना
पएमहुयाए संखेजगुणा ॥ सेनं द्व्यहा संसारसमावण्णगा जीवा प० ॥ २३९ ॥
पंचाम स्वव्यहा पहिचनी समसा॥

तत्थ णं जे ते एवमाहंमु-सनविहा संसारसमावण्णमा जीवा प० ने एवमाहंमु. तंजहा-नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ ॥ णेरहयस्म ठिई जहनेणं दमवाससहस्साई उन्होसेणं तेत्तीसं मागरीवमाई. तिरिक्खजोणियस्य ठिई जहणीणं अंतोमुहत्तं उन्होसेणं तिन्नि पलिओवमाई, एवं तिरिक्खजोणिणीएवि, मणुम्माणवि मणुम्सीणवि, देवाणं ठिई जहा णेर्डयाणं, देवीणं ० जहण्येणं दसवासमहरूमाइं उद्घोसेणं पणपण्णपित्रओवमारं ॥ नेरद्रग्रदेवदेवीणं जचेव ठिर्ड सम्बन संचिद्रणा। तिरिक्लजोणिए णं भंते ! तिरिक्लजोणिएति कालओ केविनरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहत्तं उद्घोसेणं वणस्सइकालो, तिरिक्खजोणिणीणं जहनेणं अंतोम् ॰ उक्तो॰ तिनि पिल्लोनमाई पुव्यकोडिपुहत्तमन्भहियाई । एवं मणुस्तस्य मणुस्तीएवि ॥ णेरइयस्य अंनरं जह० अंतोम् ० उक्कोसेणं वणस्तइकालो । एवं सन्दाणं तिरिक्खजोणियवजाणं, तिरिक्खजोणियाणं जहण्णेणं अंतोम् ० उन्हो० मागरोवममयपुरुत्तं माइरेगं ॥ अप्याबहुयं-सव्बत्धोवाओ मणुस्सीओ मणुस्सा असं-केजगुणा नेरइया असंक्षेजगुणा तिरिक्खजोणणीओ असंकेजगुणाओ देवा असंके-ज्ञगुणा देवीओ संखेजगुणाओ तिरिक्खजोणिया अर्णतगुणा । सेतं सत्तविहा संतारतमावण्णगा जीवा प॰ ॥ २४० ॥ छट्टी सत्तविहा पडिवत्ती समत्ता ॥ तत्थ णं जे ते एवमाहंसु-अद्भविहा संसारसमावण्यमा जीवा प० ते एवमाहंसु.

तत्थ ण ज त एनमाहसु—अद्वावहा ससारसमावण्णया जावा प० त एनमाहसु,
तं०-पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणिया पढमसमयमणुस्सा अपढमसमयमणुस्सा पढमसमयदेवा अपढमसमयदेवा ॥ पढमसमयनेरइयस्स णं भंते ! केवइयं कार्ल ठिई पण्णता ? पोयमा !
पढमसमयनेरइयस्स जह० एकं समयं उक्को० एकं समयं, अपढमसमयनेरइयस्स जह० दसवाससहस्साई समकणाई उक्कोसेणं तेत्तीसं सामरोवमाई समकणाई ।
पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जह० एकं समयं उक्को० एकं समयं, अपढमसमयतिर

रिक्त्सजोषियस्स जह० खुरागं भवग्गहणं समऊणं उद्दो० तिचि पलिओवमाइं समऊणाई, एवं मणुस्साणवि जहा तिरिक्खजोणियाणं, देवाणं जहा णेरइयाणं ठिई ॥ गेरइयदेवाणं जनेव टिई सचेव संचिद्वणा दुविहाणवि । पढमसमयतिरिक्खजीणए णं भेते ! पड० कालओ केविचरं होड्? गोयमा ! जह० एकं समयं उद्दो० एकं समयं, अपटम॰ निर्वेक्खजोणियस्स जहु॰ खुरागं भवग्गहणं समऊणं उक्कोसेणं वणस्सङ्कालो । पदमसमयमणुस्साणं जह० उ० एकं समयं, अपदम० मणुस्साणं जह० खुरुगं भवग्गहणं समऊणं उद्यो० तिन्नि परिओवमाई पुट्यकोडिपुहत्तमञ्महियाई ॥ अंतरं पडमसमयणेरइयस्म जह० दसवासमहस्साई अंतोमुहुत्तमन्भहियाई उक्को० वणस्यङ्कालो, अपटमसमय० जह० अंतोस् ० उक्को० वणस्यङ्कालो । परमसमय-निरिक्खजोणियस्य जहरू दो खुडूगमवगगहणाई समऊगाई उद्यो॰ वणस्मइकालो, अपरमममयतिरिक्खजोषियस्म जह ० खुरागं भवग्गहणं समयाहियं उद्दो० मागरोव-मसयपुरुत्तं साइरेगं । पदमरामयमणुस्यस्स जह० दो खुट्टाइं भवग्गहणाइं समऊणाइं उद्गो॰ वणस्पदकालो, अपटमसमयमणुस्तस्स जह ॰ खुद्गागं भवग्गहणं समग्राहियं उक्रो॰ वणस्मइकालो । देवाणं जहा नेरइयाणं जह॰ दसवामसहस्साइं अंतीमहत्त-मञ्महियाई उन्नो॰ वणस्सइकालो, अपडमसमय॰ जह॰ अंतो॰ उन्नो॰ वणस्सइ-कालो ॥ अप्पाबहु ० एएसि णं भंते ! पडमसमयनेरद्याणं जाव पढमसमयदेवाण य कबरे २ हितो०? गोयमा! सन्वरथोवा पटमसमयमणुस्सा पढमसमयणेरइया असंखेजगुणा पहमसमयदेवा असंखेजगुणा पहमसमयतिरिक्खजोणिया असंखेज-गुणा ॥ अपद्रमसमयनेरइयाणं जाव अपद्रमसमयदेशाणं एवं चेव अप्पबहु ० णविर अपडमनमयतिरिक्खजीषिया अर्णत्मुणा ॥ एएसि णं मंते ! पडमसमयनेरइयाणं अपदम् । जेरइयाणं कयरे २ ... ? गोयमा ! सन्वत्थोवा पढमसम्बर्णरङ्या अपदम-समयनेरङ्या असंखेजगुणा, एवं सब्वे ॥ एएसि णं भंते ! पहमसमयणेरङ्याणं जाव अपटमसम्बद्देवाण य कबरे २ ...? गोबमा ! सञ्बत्थोदा पढमसमयमणुस्सा अपहमसमयमणुरसा असंखेजगुणा पहमसमयणेरहया असंखेजगुणा पहमसमयदेवा असंसेज्ञगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंसेज्ञगुणा अपढमसमयनेरइया असंसे-जगुणा अपरामसमयदेवा असंखेजगुणा अपरामसमयतिरिक्खजोणिया अर्णतगुणा । सेनं अद्वविहा संसारसमावण्णमा जीवा पण्णता ॥ २४१ ॥ सारामा अद्वविह-पहिंवसी समसा ॥

तत्व णं जे ते एवमाहंयु-णविद्या संसारसमावण्णमा जीवा प॰ ते एवमाहंयु, तं॰-पुढविद्याह्या आउद्याह्या तेउद्याह्या वाउद्याह्या वणस्सह्याह्या वेहंदिया तेईविया चउरिदिया पंचेंदिया ॥ ठिई सन्वेसिं भाणियन्वा ॥ पुढिविक्काडयाणं संचिद्वणा पुडिविकालो जाव वाजकाइयाणं, जणस्सईणं वणस्सइकालो, वेईविया तेईदिया चउरिदिया संखेजं कालं, पंचेंदियाणं सागरोवमसहस्सं माइरेगं ॥ अंतरं मन्वेसि अणंतं कालं, वणस्सइकाइयाणं असंखेजं कालं ॥ अप्यावहुगं, सन्वत्थोवा पंचिदिया चउरिदिया विसेसाहिया तेईदिया विसेसाहिया तेईदिया विसेसाहिया तेईदिया विसेसाहिया तेईदिया विसेसाहिया वेईदिया विसेसाहिया क्षेत्रं अणंतगुणा । सेत्तं णवविद्या संगारसमावण्णा अथा पण्णामा ॥ २४२ ॥ अद्वमा णवविद्या समक्ता ॥

तत्थ णं जे ते एवमाहंस्-इसविहा संमारसमावण्णगा जीवा प० ते एवमाहंस. नं जहा--पटमयमयएगिदिया अपटमसमयएगिदिया पटमसमयेबहेदिया अपटमसमय-बेइंदिया जाव पढमसमयपांचिंदिया अपढमसमयपांचिंदिया, पढमममयएगिंदियरूम णं भंते ! केनइयं कालं ठिई पण्णना ? गोयमा ! जहण्णणं एकं समयं उक्को० एकं०, अपराम-समयएगिदियस्म जहण्णेणं खुरागं भवग्गहणं समऊणं उक्को० बावीसं वाससहस्माडं समञ्ज्ञणाई. एवं सन्वेमिं पढमसमज्यकालं जहण्येणं एको समञ्जो उक्कोसेणं एको ममओ, अपडम॰ जहण्णेणं खुद्दागं भवग्यहणं ममऊणं उद्योसेणं जा जस्स ठिडे सा समजणा जाव पंचिदियाणं तेत्तीसं सागरोवमाटं समजणाई ॥ संचिद्वणा पढमसमह-यस्स जहण्णेणं एकं समयं उक्कोसेणं एकं समयं, अपडमसमयगाणं जहण्णेणं खडागं भवग्गहणं ममऊणं उक्षोसेणं एगिदियाणं वणरसङ्कालो, बेइंदियतेइंदियचउरिदियाणं संखेजं कालं पंचंदियाणं सागरोवममहस्सं साइरेगं ॥ पडमसमयएगिंदियाणं भंते ! कालओ केवहयं अंतरं होइ? गोयमा! अहन्नेणं दो खुड्डागभवग्गहणाई ममस्रगाई उद्मो॰ वणस्सइकालो, अपदम॰एगिंदिय॰ अंतरं जहण्णेणं खुरागं भवगाहणं समग्रा-हियं उन्हो॰ दो सागरोवमसहस्ताइं संखेजवासमञ्महियाई, सेसाणं सञ्वेसिं पहम-समइयाणं अंतरं जह॰ दो खुशुई भवगगहणाई समऊणाई उक्को॰ वणस्सहकालो. अपडमसमङ्याणं सेसाणं जहण्येणं खुङ्गगं भवग्गहणं समग्राहियं उक्को॰ वणस्सङ्-कालो ॥ पढमसमझ्याणं सन्वेसिं सन्वत्थोवा पढमसमयपंचेंदिया पढम• चडरिंदिया विसेसाहिया पडम० तेईदिया विसेसाहिया प० बेईदिया विसेसाहिया प० एगिंदिया विसेमाहिया ॥ एवं अपढमसमह्यावि णवरि अपढमसमयएगिदिया अणंतगुणा । दोण्हं अप्पबहु , सञ्चत्योवा पढममममयएगिदिया अपढमसमयएगिदिया अणंतगुणा सेसाणं सञ्बत्योत्रा पदमसमझ्या अपडम० असंखेळगुणा ॥ एएसि णं भंते । व्हमसंमध-एगिदियाणं अपटमसमयएगिदियाणं जाब अपटमसमयपंचित्रियाण व कवरे १ · · · ? गोयमा ! सव्यत्थोवा पडमसम्यपंचेंदिया पडमसमयचडरिदिया विग्रेसाहिया घडम- समयतेइंदिया विसेसाहिया एवं हेट्टामुहा जाव पढमसमयएगिंदिया विसेसाहिया अप-ढमसमयपंचेंदिया असंखेखगुणा अपडमसमयचग्रिंदिया विसेसाहिया जाव अपढम-समयएगिंदिया अणंतगुणा ॥ २४३ ॥ सेत्तं दसविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णता, सेत्तं संसारसमावण्णगजीवाभिगमे ॥ नवमा दसविहा पढिवसी समता॥

से कि तं सञ्बजीवाभिगमे ? सञ्बजीवेसु णं इमाओ णव पडिवसीओ एवमाहि-जंति एगे एवमाहंसु---द्विहा सञ्बजीवा पण्णना जाव दमविद्दा सञ्बजीवा पण्णना ॥ तत्थ णं जे ते एक्साइंस-द्विहा सन्वजीवा पण्णता ते एक्साइंस, तंजहा--सिद्धा चेव असिद्धा चेव इति ॥ सिद्धे णं भंते ! सिद्धेत्ति कालओ केविचरं होड ? गोयमा ! साइए अपज्ञवितिए॥ असिद्धे णं भंते ! असिद्धेति० ? गोयमा ! असिद्धे दुविहे पण्णते. तंजहा-अणाइए वा अपज्ञवसिए अणाइए वा सपजवसिए ॥ सिद्धस्स णं भंते ! केवइकालं अंतरं होइ ? गोयमा ! साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्य अंतरं ॥ असि-द्धस्स णं भंते ! केन्द्रयं अंतरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णस्थि अंतरं. अणाइयस्स सपज्जबसियस्स णत्यि अंतरं ॥ एएसि णं भंते ! सिद्धाणं असि-द्वाण य क्यरे २ · · १ गोयमा ! सन्बत्योवा सिद्धा असिद्धा अणंतगणा ॥ २४४ ॥ अहवा दविहा सञ्बजीवा पण्णता, तंजहा-संदेदया चेव अणिदिया चेव । संदेदिए णं भंते ! कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! सहंदिए दुविहे पण्णते. तं --अणाइए वा अफजनित् अणाङ्ए वा सफजनित्, अणिदिए साइए वा अपजनित्ए, दोण्हवि अंतरं नत्थि । सव्बत्धोवा अणिदिया सहंदिया अणंतगुणा । अहवा द्वविहा सव्वर्जीवा पण्णता, तंजहा-सकाइया चेव अकाइया चेव एवं चेव, एवं सजोगी चेव अजोगी चेव तहेव. [एवं सलेस्सा चेव अलेस्सा चेव ससरीरा चेव असरीरा चेव] संचिट्टणं अंतरं अप्पाबहुयं जहा सइन्दियाणं ॥ अहवा दुविहा सम्वजीवा पण्णत्ता, तंजहा-सवेदगा चेव अवेदगा चेव ॥ सवेदए णं भंते ! सवे० ? गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णते. तंत्रहा-अणाइए अपज्ञवसिए, अणाइए सपज्जवसिए, साइए सपज्जवसिए. तत्य णं जे से साइए सपज्जवसिए से जह अंतोम् उ उद्दो अणंतं कालं जाव सेत्रओ अवर्ष पोम्मरूपरिवर्ष देसूणं ॥ अवेदए णं मंते ! अवेदएति कारूओ केव-चिरं होइ ? गोगमा ! अवेदए दुविहे पण्णते, तंजहा-साइए वा अपजवसिए साइए वा सपज्जबसिए, तत्थ णं जे से साहए सपज्जनसिए से जहण्येणं एकं समयं उद्दो अंतोमुहत्तं ।) सबैयगस्स णं मेते ! केवहकाळं अंतरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णरिष अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नारिय अंतरं, साइयस्स सपम्मवतिवरस जहण्येणं एकं समयं उन्होसेणं अंतोसहर्ता ॥ अवेमगरस पं गंते !

केनड्यं कालं अंतरं होड् ? गोयमा ! माड्यस्म अपज्जनसियस्स गरिव अंतरं, माइ-यस्स सपज्जवसियस्स जह० अंतोमु० उक्कोसेणं अर्णतं कालं जाव अवश्रं पीग्गलप-रियहं देमणं । अप्पाबहगं, मध्वत्थोवा अवेगगा गवेगगा अणंत्गुणा । एवं सकसाई चेव अक्रमाई चेव २ जहा सवयंगे तहेव भाणियन्वे ॥ अहवा दुविहा सन्वर्जावा प०. तं - मरुमा य अलेमा य जहा असिद्धा सिद्धा, सम्बत्योवा अलेसा सलेसा अणंतगुणा ॥ २४५॥ अहवा० णाणी चैव अण्णाणी चैव ॥ णाणी णं भंते ! णाणिन कालओ० ? गोयमा ! णाणी द्वविहे पन्नते, नं०-साइए वा अपज्जवसिए साइए वा अपज्जवसिए, तत्थ णं जे से माइए सपजवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उद्दोसेणं छाबद्विमागरो-वमाइं लाउरेगाइं, अण्णाणी जहा मवेदगा ॥ णाणिस्य अंतरं जहण्णेणं अंतोम्हर्नं उद्योमेणं अणंनं कालं अवद्रं पोग्गळपरियद्वं देम्णं । अण्णाणिस्य दोण्हवि आउहाणं णत्थि अंतरं, साइयस्य सपजावसियस्य जहल्लेणं अंतोम् ० उद्वासेणं छावड्रि साग-रोवमाइं माइरेगाइं । अप्पाबहुवं-सन्वत्योवा णाणी अण्णाणी अर्णतगुणा ॥ अहवा दुविहा मध्यजीवा पन्नता, तं०-मागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य, संचिद्वणा अन्तरं च जहण्णेणं उक्कोसेणवि अन्तोमुहुनं, अप्पाबहु॰ सामारो॰ संखे॰ ॥ २४६॥ अहवा दुविहा सञ्बजीवा पण्णता, तंजहा---आहार्गा चेव अणाहारगा चेव ॥ आहारए णं भंते ! जाव केविकरं होड ! गोयमा ! आहारए दुविहे पण्णते, तंजहा---छउमत्यभाहारए य केवलिआहारए य. छउमत्यआहारए णं जाब केविचरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागं भवगादणं दुसमऊणं उन्नो० असंखेळं कालं जाव कालओ. क्षेमओ अंगुलस्स असंकेबङ्भागं । केवलिआहारए मं जाव केविवरं होड ? गोयमा ! जह • अंतोम • उद्दो • देसुणा पुरुवकोडी ॥ अणाहारए णं भंते ! कहविहे • ! गोसमा ! अणाहारए दुविहे पण्णते, तंजहा-छउमत्यअणाहारए य केविकिअणाहारए य, छउमत्थअणाहारए णं जाव केविवरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एकं समयं उक्रोसेणं दो समया । केवलिअगाहारए दुविहे पण्णते, तंजहा-सिद्धकेवलिअणाहारए य भवत्यकेवलिअणाहारए य ॥ सिद्धकेवलिअणाहारए णं भंते ! कालओ केविकरं होइ ? गो॰! साइए अपजनसिए ॥ भवत्थकेविक्षणाहारए णं मंते ! सहविहे पण्यते ? गो॰! भवत्यकेवि० दुविहे पण्णते, तं॰-सजोगिभवत्यकेविरुअणाहारए य अजोगि-भवत्यकेविष्ठजणाहारए य । सजीगिभवत्यकेविष्ठजणाहारए णं भेते ! कालजी केविकारं ॰ १ गो ॰! अजहण्यम्णुकोसेणं तिष्णि समया । अजोगिभवत्यकेवित • जह० अंतो० उक्को० अंतोमुहुत्तं ॥ क्रउमत्यक्षाह्यरगस्य० केवद्वयं काळं अंतरं० १ गोयमा 1 जहण्णेणं एकं समयं उक्को॰ दो समया । केवकिआहारमस्स संतरं अजहण्णमणु-

क्रोसेणं तिष्णि समया ॥ छउमत्यअणाहारगस्स अंतरं बहन्नेणं खुरागभवग्गहणं दुसमक्रणं उद्दो० असंखेजं कालं जाव अंग्रलस्य असंखेजइभागं । सिद्धकेविटअणा-हारगस्स माइयस्य अपज्जवसियस्य णत्थि अंतरं ॥ सजोगिभवत्यकेवलिअणाहार-गस्स जह अंतो व्होसेणवि, अजोगिभवत्यकेवलिअणाहारगस्म णत्य अंतरं ॥ एएसि णं भेते ! आहारगाणं अणाहारगाण य कयरे २ हिंनो अप्पा ना बह० १ गोयमा ! सन्बत्योवा अणाहारमा आहारमा असंखेज ।। २४७॥ अहवा द्विहा सञ्वजीवा पण्णता, तंजहा-सभासगा य अभासगा य ॥ सभासए णं भंते ! सभासएति कालओ केविचर होह ? गोयमा ! जहण्णेणं एकं समयं उद्यो॰ अंतोमुहत्तं ॥ अभासए णं भंते ० ? गोयमा ! अभासए दुविहे पण्णते, तं०-साइए वा अपज्ञवसिए साइए वा सपज्जवसिए. तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जह० अंतो० उद्दो॰ अणंतं कालं अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ वणस्सङ्कालो ॥ भारागस्स णं भंते ! केवडकालं अंतरं होड ? गोयमा ! जह ० अंतो० उक्को० अणंत कालं वणस्सद्दकालो । अभासग० साइयस्य अपज्ञवसियस्स णरिय अंतरं. साइयस-पजवतियस्स जहण्णेणं एकं समयं उद्यो अंतो । अप्याबहु । मन्वत्थोवा भासगा अभासगा अर्णतगुणा ॥ अहवा दुविहा सञ्ज्ञीबा प०, तं०-संसरीरी य असरीरी य० असरीरी जहां सिद्धाः, सन्वत्थोवा असरीरी ससरीरी अर्णतगुणा ॥ २४८ ॥ अहवा दुविहा सञ्बजीबा पण्यता, तंजहा--बरिमा चेव अचरिमा चेव ॥ चरिमेणं भंते ! चरिमेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! चरिमे अणाइए सपज्जवांसए. अचरिमे दुविहे प०. तं०--अणाइए वा अपज्जवसिए साइए वा अपज्जवसिए. दोण्हंपि पान्थि अंतरं, अप्पाबहर्य-सञ्बत्धोवा अचरिमा चरिमा अर्णतगुणा । [अहवा दुविहा सब्ब-जीवा प॰, तं॰-सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य, दोण्हंपि संचिद्रणावि अंतरंपि जह० अंतो० उ० अंतो०, अप्पासह० सन्बत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता असंखेळगुणा] सेतं दुविहा सञ्जीवा पकता ॥ २४९ ॥ ० ॥ तत्य णं जे ते एवमाहं मु-तिनिहा सञ्बजीवा पण्णता ते एवमाइंस, तंजहा-सम्मदिद्री मिच्छादिद्री सम्मा-मिच्छादिही ॥ सम्मदिही णं भंते !॰ कालओ केविकरं होह ? गोयसा ! सम्मदिही दुविहे पण्णेत, तंजहा-साइए वा अपज्ञवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्य जे ते साइए सपजविष्ठ से जह अंतो उन्हों छाविहें सागरीयमाई साइरे-गाई॰ मिच्छारिद्धी तिबिहे अणाइए वा अपज्ञवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए साइए वा सपजविष्, तत्व जे ते साइए सपजविष्य से जह० अंती॰ उद्यो अर्थतं कालं जाव अवश्वं पीमालपरियहं देसचं सम्मामिच्छादिही जह० अंसो० उद्योक

अंतोमुहत्तं ॥ सम्मदिद्विस्स अंतरं साइयस्स अपजनसियस्स नत्थि अंतरं, साइ-यस्स सपज्जवसियस्स जह अंतो । उद्यो । अगंतं कालं जाव अवद्रं पोग्गलपरियष्टं देसणं. मिच्छादिद्विस्स अणाइयस्स अपज्ञवसियस्स णत्यि अंतरं, अणाइयस्य सप-जनसियस्य नत्य अंतरं, साइयस्य सपज्जनसियस्य जह० अंतो० उन्नो० छानद्रि सागरोबमाडं साडरेगाइं. सम्मामिच्छादिद्विस्स जह० अंतो० उद्यो० अणंतं कालं जाव अवहूं पोग्गलपरियहं देसूणं । अप्पाबहु । सन्वत्थोवा सम्मामिच्छादिही सम्म-दिही अणंत्गुणा मिच्छादिही अणंतगुणा ॥ २५०॥ अहवा तिविहा सन्वजीवा पण्णता, तं०-परिता अपरिता नोपरिनानोअपरिता। परिते णं भंते !० कालओ केनिकरं होइ ? गोयमा ! परिते दुविहे पण्णते, तं०-कायपरिते य संसारपरिते य । कायपरिते णं भंते !०? गोयमा ! जह० अंतोमु० उक्को० असंखेळं कालं जाद असंखेळा लोगा। संसारपरिते ण भंते! संसारपरितेति कालओ केविवरं होड? गो०! जह० अंतो० उक्को० अणंतं कालं जाव अवश्वं पोग्गलपरियष्टं देसूणं । अपरिते णं भंते !०? गो : अपरित्ते दुविहे पण्णते, तं०-कायअपरित्ते य संसारअपरित्ते य.कायअपरित्ते णं० जह० अंतो॰ उद्यो॰ अणंतं कालं, वणस्सङ्कालो, संसारापरित्ते दुविहे पण्णते, तंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए, णोपरित्तेणोअपरिते साइए अप-ज्ञवसिए । कायपरित्तस्स अंतरं जह० अंतो० उक्को० वणस्मइकालो, संसारपरित्रस्स णत्थि अंतरं, कायापरित्तस्स जह० अंतो० उद्यो० असंखेजं कालं पुढविकालो । संसारापरित्तरस अणाइयस्स अपज्जवसियस्य नृत्यि अंतरं अणाइयस्य सपज्जव-सियस्य नत्य अंतरं, णोपरित्तनोअपरित्तस्सवि णत्यि अंतरं । अप्पाबह० सव्ब-त्थोवा परिता णोपरितानोअपरिता अर्णतगुणा अपरिता अर्णतगुणा॥ २५१॥ अहवा तिविहा सम्बजीवा प०, तं०--पजत्तगा अपजत्तगा नोपजत्तगानोअपजत्तगा. पजनागे णं भंते !०? गोयमा ! जह० अंतो० उक्को० सागरोवमसयपुहत्तं साइरेगं । अपजत्तरो णं भंते !ः गोयमा ! जहः अंतो॰ उद्यो॰ अंतो॰, नोपजत्तणोअपजत्तर साइए अपजनसिए । पजनगस्स अंतरं जह० अंतो० उद्घो० अंतो०, अपजनगस्स जह अंती विकार सागरीवमसयपुरुत्तं साहरेगं, तहयस्य णात्य अंतरं । अप्पा-बह० सव्यत्योवा नोपजनगनोअपजनगा अपजनगा अर्थतगुणा पजनगा संस्थेज-गुणा ॥ २५२ ॥ अहवा तिविहा सञ्जजीवा प०, तं०-- युहुमा बागरा नोग्रहुम-नोवायरा, सहुमे णं भंते ! सहुमेति कालओ केनियरं० ? गो॰! बहुणोणं अंतोमुहुत्तं उक्रोसेणं असंसेजं कालं प्रहविकालो, बायरा जह व्यती व्यक्ती असंसेजं कालं असंखेजाओ उत्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, बेत्रओ अंग्रलस्य असंखेळाड-

भागो, नोसुहुमनोबायरे माइए अपज्जवितए, सुहुमस्स अंतरं बायरकालो, बायरस्स अंतरं सुहुमकालो, तइयस्य नोसुहुमणोबायरस्य अंतरं नत्थि । अप्पाबहु० सम्बत्थोवा नोमुहमनोबायरा बायरा अर्णतगुणा मुहमा असंखेळगुणा॥ २५३ ॥ अहवा तिबिहा सव्यजीवा पण्णसा, तंजहा—सण्णी असण्णी नोसण्णीनोअसण्णी, सभी णं भंते !० कालओ० ? गो०! जह० अंतो० उक्को० सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं, असण्णी जह अंती उद्घो वणसाइकालो. नोसण्णीनोअसण्णी साइए अपज्जवसिए । सिण्णस्स अंतरं जह० अंतो० उद्यो० वणस्सइकालो. असण्णिस्य अंतरं जह० अंतो० उक्को० सागरोवमसयपुहुतं साइरेगं, तइयस्स णत्यि अंतरं । अप्पाबहु० सव्बत्थोवा सण्णी नोसन्नीनोअसण्णी अर्णतगुणा असण्णी अणंत्गुणा ॥ २५४ ॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णता, तंजहा---भवसिद्धिया अभवसिद्धिया नोभवसिद्धियानोअभवसिद्धिया, अणाइया सपज्जवसिया भर्नासदिया, अणाज्या अपजनसिया अभनसिद्धिया, साइया अपजनसिया नोभक-सिद्धियानोअभवसिद्धिया । तिण्हंपि नत्थि अंतरं । अप्पाबहु० सव्वत्थोवा अभव-मिद्धिया णोभवसिद्धियाणोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥२५५॥ अहवा निविहा सव्ब॰ प॰, तंजहा—नसा थावरा नोनसानोयावरा, तसस्स णं भंते । ०१ गोयमा । जह ० अंतो ० उद्यो ० दो सागरोवमसहस्साइं साइरेगाइं, थावरस्स संनिद्रणा वणस्सङकालो. णोतमानोथावरा साझ्या अपज्जविमया । तसस्स अंतरं वणस्मइकालो, थावरस्स अंतरं दो सागरोवमसहस्साइं साइरेगाइं, णोतसणोयावरस्स णित्य अंतरं । अप्पाबहु । सन्वत्योवा तसा नोतसानोयावरा अणंतगुणा थावरा अणंतगुणा । से तं तिबिहा सम्बजीवा पण्णता ॥ २५६ ॥०॥ तत्य णं जे ते एवसाहंसु-चउच्चिहा सव्वजीवा पण्णता ते एवमाहंसु, तं०--मणजोगी वहुजोगी कायजोगी अजीगी। मणजीगी णं मंते [॰? गोयमा ! जह॰ एकं समयं उन्हो॰ अंतो॰, एवं बद्द ओगीवि, काय ओगी जह ० अंतो ० उद्दो ० वणस्सहकालो, अजोगी साइए अपज-वसिए । मणजोगिस्स अंतरं अहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उद्दो० वणस्सइकालो, एवं वइजोगित्सवि, कायजोगिस्स जह० एकं समयं उद्यो॰ अंदो॰, अजोगिस्स णिय अंतरं । अप्पाबहु० सम्बत्योवा मणजोगी वहजोगी असंखेळगुणा अजोगी अणंतगुणा कायओरी अणंतगुणा ॥ २५० ॥ अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णता, तंजहा-इत्थिवेयमा पुरिसवेयमा नपुंसमवेयमा अवेयमा, इत्थिवेयए पं भंते ! इत्यिवेयएति कालबो केविचरं होह ? गोयमा ! (एगेण आएसेण०) पलियसयं दशक्तरं सहारस चोइस पश्चिमपुद्वतं, समझो जहण्णो, पुरिसवेयस्स जह अंतो ।

उक्को० सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं, नपुंसगवेयस्स जह० एकं समयं उक्को० अर्णतं कालं वणस्मइकालो । अवेयए दुविहे प०, नं०-साइए वा अपज्जविमए साइए वा सपज्जवसिए से जहर एकं सर उन्नोर अंनोम्रर । इत्थिवेयस्स अन्तं जहर अंतोर उक्को॰ वणस्मइकालो, पुरिसवेयस्म॰ जह॰ एगं समयं उक्को॰ वणस्सद्दकालो, नपुंसगवेयस्स जह अंतो उद्यो सागरोवमसयपुरुनं साइरेगं, अवेयगो जहा हेट्टा । अप्पाबहु० सन्वत्थोवा पुरिसवेयगा इत्थिवयमा संखेळागुणा अवयमा अणंतगुणा नपुंसगवेयगा अणंतगुणा॥ २५८॥ अहवा चउच्विहा सव्वजीवा पण्णना, तंत्रहा-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी ॥ चक्खुदंगणी णं भंते :0? गोयमा ! जह० अंतो० उद्यो० सागरोबमसहस्सं साइरेगं. अवक्खदंमणी दुविहे पण्णते, तं>-अणाइए वा अपज्जबसिए अणाइए वा सपज्जबसिए । ओहिदंगणिस्स जह॰ इबं समयं उद्योव दो छावड़ी सागरोबमाणं माइरेगाओ, केवलदंसणी साइए अपज्जवसिए ॥ चक्खुदंगणिस्स अंतरं जद्द० अंतोमु० उन्नो० वणस्सङ्कालो । अचक्षुदंसणिस्स दुविहस्स निथ अंतरं । ओहिदंसणिस्स जह ० अंतोम् ० उद्दोसंणं वणस्सइकालो । केवलदंसणिस्स र्णात्य अंतरं । अप्पाबहुयं-पव्यत्थोवा ओहिदंसणी चक्खदंसणी असंखेजगुणा केवलदंसणी अणंतगुणा अवक्खदंसणी अणंतगुणा ॥ २५९ ॥ अहवा चडव्विहा सव्वजीवा पण्णता, तंत्रहा—संजया असंजया संजयासंजया नोसंजयानोअसंजयानोसंजयासंजया । संजए णं भंते । ०१ गोयमा ! जह० एकं समयं उक्की० देशुणा पुष्यकोडी, असंजया जहा अभ्याणी, संजयासंजए जह॰ अंतीमु॰ उद्गो॰ देस्णा पुरुष्कोडी, नीसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजर साइए अपज्जवसिए, संजयस्य संजयासंजयस्य दोण्हवि अंतरं जहु अंतोमु । उक्षा । अवर्ष पोम्गलपरियहं देस्णं. असंजयस्म आइद्वे णिथ अंतरं, साइयस्म सपजनिमयस्स जह० एकं स० उक्को॰ देसुणा पुन्वकोडी, चउत्थगस्य णित्थ अंतरं ॥ अप्पाबह॰ सन्वत्थोवा संज्ञया संज्ञयासंज्ञया असंग्वेजगुणा णोसंज्यणोअसंज्यणोसंज्ञयासंज्ञया अर्णतगुणा असंजया अर्णतगुणा ॥ सेतं चडविवहा सब्बजीया पण्णता ॥ २६० ॥ तबा सञ्बजीवच०पहिवसी समसा॥

तत्य णं जे ते एवमाहंग्र-पंचित्ता सञ्जीवा पण्णा ते एवमाहंग्र, तंत्रहा-कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई लोमकसाई अकसाई ॥ कोहकसाईमाणकसाई-मायाकमाईणं जह० अंतो० उद्दो० अंतोमु०, लोमकसाइस्स जह० एकं स० उद्दो० अंतो०, अकसाई दुविहे जहा हेट्टा ॥ कोहकसाईमाणकसाईमायाकसाईणं अंतरं जह० एकं स० उद्दो० अंतो०, लोहकसाइस्स अंतरं जह० अंतो० उद्दो० अंतो०,

अन्साई तहा जहा हेद्वा ॥ अप्पाबहुर्य-अन्साइणो सव्वत्योवा माणकमाई तहा अणंतगुणा । कोहे मायालोमे विसेतमहिया मुणेयव्या ॥ १ ॥ २६१ ॥ अहवा पंचिवहा सञ्जीवा पण्णता, तंजहा-णेर्ड्या तिरिक्कजोषिया मणुस्सा देवा सिद्धा । संचिद्धणंतराणि जह हेद्वा भणियाणि । अप्पाबहु० सव्वत्थोबा मणुस्सा णेरहवा असंखेजगुणा देवा असंखेजगुणा सिद्धा अर्णतगुणा तिरिया अर्णतगुणा । सेतं पंच-विहा सञ्बजीवा पण्णामा ॥ २६२ ॥ खडत्था स० प० समसा ॥

तत्थ णं जे ते एवमाहंतु-छिव्वहा सव्वजीवा पण्णता ते एवमाहंतु, तंजहा-आभिणिबोहियणाणी स्यणाणी ओहिणाणी मणपञ्जवणाणी केवळणाणी अण्णाणी. आभिणिबोहियणाणी णं भंतं! आभिणिबोहियणाणिति कालओ केविचरं होइ? गोयमा! जह ० अन्तोमुहत्तं उक्को ० छावहिं मागरोवमाइं साइरेगाई, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणी णं भंते ! ० ? गोयमा ! जह० एकं समयं उक्को० छानद्विं सागरोनमाइं साइरेगाई. मणपजनणाणी णं भंते !० ? गो० ! जह० एकं समयं उद्यो० देस्णा पुट्य-कोडी, केवलनाणी णं भंते !० ? गो० ! साइए अपज्जवसिए, अजाणिणो तिनिहा प०. तं - अणाइए वा अपजवसिए अणाइए वा सपजवसिए साइए वा सपजवसिए, तत्थ॰ साइए मपज्जवसिए से जह॰ अंतो॰ उन्नो॰ अणंतं कालं अवन्नं पुग्गलपरियहं देस्एं । अंतरं आभिणिबोहियणाणिस्स जह० अंतो० उन्हो० अणंतं कालं अवहुं पुरुग-लपरियष्टं देसूणं, एवं सुय० अंतरं० मणपज्जव०, केवलनाणिणो णत्थि अंतरं, अन्नाणि० साइयसपज्जनसियस्स नह० अंतो० उद्दो० छानद्वि सागरोबमाई साइरेगाई । अप्पा॰ सब्बत्थोदा मण॰ ओहि॰ असंबे॰ आभि॰ युय॰ विसेसा॰ सद्वाणे दोध तहा केवल० अणंत० अण्णाणी अणंतगुणा ॥ अहवा छव्यिहा सम्बजीवा पण्णता, तंजहा--एगिंदिया बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिदिया। संचिद्रणंतरा जहा हेट्टा । अप्पाबहयं-सम्बत्धोवा पंचेदिया चडरिंदिया विसेसा० तेईदिया विसेसा० वेंदिया विसेसा॰ अणिदिया अर्णतगुणा एगिंदिया अर्णतगुणा ॥ २६३ ॥ अहवा छव्विहा सम्बजीवा पण्णता, तंजहा-ओरास्त्रियसरीरी वेडव्वियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी ॥ ओराहियसरीरी णं मंते !० कालओ केविवरं होइ ? गीयमा ! जहण्येणं सहायं भवागहणं दुसमऊणं, उद्दोसेणं असंखेजं कार्ल जाव अंगुलस्स असंबोध्यहभागं, बेडिव्ययसरीरी वह ० एकं समयं उद्दोसेणं तेत्रीसं मागरोबमाई अंतोमुहत्तमस्महियाई, आहारमसरीरी जह अंतो उन्हो अंतो . तेयगसरीरी वृतिहे पन, तेन-अवाहए वा अपजवसिए अपाहए वा सपज्वतिए, एवं कम्मगसरीरीबि. असरीरी साइए अपजावतिए ॥ अंतरं ओराविवसरीरस्स जह० १७ सता॰

एकं समयं उको॰ तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमन्महियाइं, वेटन्त्रियसरीरस्म जह • अंतो • उन्नो • अर्णतं कालं वणस्सदकालो . आहारगमरीरस्स जह • अंतो • उक्को॰ अर्णतं कालं जाव अवद्धं पोग्गलपरियदं देस्णं, तेय॰ कम्मगमरीरस्य य दुण्हवि णत्यि अंतरं ॥ अप्पाबहु० मञ्चत्थोवा आहारगसरीरी वेउव्वियसरीरी असंखेजगुणा ओरालियसरीरी असंखेजगुणा असरीरी अर्णतगुणा तेयाकम्यगसरीरी दोवि तहा अर्णतगुणा ॥ सेत्तं छिव्वहा सव्वजीवा पण्णता ॥ २६४ ॥ ० ॥ तत्थ णं जे ते एवमाइंसु-मत्तविहा मव्वजीवा प० ते एवमाइंसु, तंजहा-पुढवि-काइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्मदकाइया तसकाइया अकाइया । संचिद्वणंतरा जहा हेट्टा । अप्पायह० सव्वत्योवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज-गुणा पुरुविकाइया विसे० आउ० विसे० वाउ० विसेमा० सिद्धा अर्णनगुणा वण-स्मडकाइया अणंतगुणा ॥ २६५ ॥ अहवा सत्तविहा मध्वजीवा पण्णता. नंजहा-कण्डलेस्या नीललेस्या काउलेस्या तेउलेस्या पम्हलेस्या मुक्केस्या अलेस्या ॥ कण्ड-लेसे णं भंते ! कण्हलेसेति कालओ केत्रबिरं होइ ! गोयमा ! ज० अंती० उद्यो० तत्तीसं सागरोत्रमाइं अंतोमुहत्तमञ्महियाइं, णीललेस्से णं॰ जह॰ अंतो॰ उन्हो॰ दस सागरोवमाइं पलिखोबमस्स असंखेजहभागमञ्भिहयाई, काउलेस्से णं भंते !०? गी०! जह ॰ अंतो ॰ उद्यो ॰ ति चि सागरीवमाइं पिल्रेओवमस्स असंखेजहभागमञ्मिहियाई. तेउलेस्से णं मंते !०? गोयमा । जह० अं० उक्को० दोण्णि सागरोवमाई पिछओवमस्स असंखेळाडमागमब्मिद्दियाइं. पम्हलेसे णं भंते !०? गोयमा ! जह० अंतो० उन्हो० दस मागरोत्रमाई अंतोमुहत्तमञ्महियाई, सुक्केसे णं भंते !०? गो०! जहनेणं अंतो० उक्कोरेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहत्तमञ्महियाइं, अलेस्से णं भंते ! साइए अपजनसिए ॥ कम्हलेसस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केविकरं होह ? गोयमा ! जह० अंतो॰ उद्यो॰ तेत्तीर्स सागरोवमाई अंतोमुहत्तम॰, एवं नील्लेसस्सवि, काउलेसस्सवि, ते उत्हेगरस णं भंते ! अंतरं का० ? गोयमा ! जह० अंतो० उक्को० वणस्सडकालो. एवं पम्हलेसस्सवि सुक्रलेसस्सवि टोण्डवि एवमंतरे. अलेसस्स मं भंते! अंतरे कालओ॰ ? गोयमा ! साइयस्स अपज्ञवसियस्स णत्य अंतरं ॥ एएसि णं मंते । जीवाणं कारहेसाणं नीललेसाणं काउले॰ तेउ॰ पग्ड॰ सक्क अहेसाण य क्यरे २...? गोयमा ! सव्वत्योवा सुक्रकेस्सा पम्हकेस्सा संक्रेक्गुणा तेटकेस्सा असंक्रेक्गुणा अलेस्सा अर्णतगुणा काउलेस्सा क्षणंतगुणा नीलकेस्सा विसेसाहिया कम्हलेस्सा निसेसाहिया । सेर्त सत्तविहा सन्वजीवा पचता ॥ २६६ ॥ ० ॥ तस्य मे जे ते एवमाहंस-अद्वविहा सन्वजीवा पण्णता दे एवमाहंस, तंजहा-आमिनिपोहिय-

नाणी सुय॰ ओहि॰ मण० केवल० मङ्अण्णाणी मुयअण्णाणी विभंगणाणी ॥ आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! आभिणिबोहियणाणिति कालओ केविषरं होइ? गोयमा ! जह • अंतो • उन्हो • छावद्विमागरोवमाई साइरेगाई, एवं सुयणाणीवि । ओहिणाणी णं भंते !०? गीयमा ! जह ० एकं समयं उक्को • छावडिसागरीवमाई साइरेगाई, मणपज्जवणाणी णं भेते !०? गोयमा ! जह० एकं स० उद्यो० देसणा पुरुवकोडी, केवन्रणाणी णं मंते !०? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए, महअण्याणी णं भंते !०१ गोयमा ! मइअण्णाणी तिबिहे पण्णते, नं०-अणाहए वा अपजनसिए अणाइए वा सपज्जवसिए माइए वा मपज्जवसिए, तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जह ॰ अंतो ॰ उक्को ॰ अणंते कालं जाव अवश्वं पोग्गलपरियष्टं देसणं, युयअण्णाणी एवं चेव, विभंगणाणी णं भंते ! विभंग ० ? गोयमा ! जह ० एकं समयं उ० तेशीसं सागरोवमाइं देन्णाए पुव्वकोडीए अञ्महियाई ॥ आभिणिबोहियणाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ॰ ? गोयमा ! जह॰ अंतो॰ उद्यो॰ अर्णतं कालं जाव अवदं पोग्गलपरियष्टं दंस्णं, एवं मुयणाणिस्मवि, ओहिणाणिस्सवि, मणपज्जवणाणिस्सवि, केवलणाणिस्म णं भंते ! अंतरं० ? गोयमा ! साइयस्स अपज्जवसियस्स णस्यि अंतरे । महअण्णाणिस्स णं भंते ! अंतरं ० ? गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णित्य अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णित्य अंतरं, साइयस्स सपज्जवसियस्स जद अंतो । उक्को । छावद्भिं सागरोवमाई साइरेगाई, एवं सुयअण्णाणिस्सवि, विभंगणाणिस्स णं भंते ! अंतरं ॰ ? गोयमा ! जह ॰ अंतो ॰ उक्को ॰ वणस्सइकालो ॥ एएसि णं भंते ! आभिणिबोहियणाणीणं स्रयणाणीणं ओहि॰ मण० केवळ० मइअण्णाणीणं सुयक्षण्याणीणं विभंगणाणीण य कवरे॰? गोयमा! सन्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असंखेजगुणा, आभिणिबोहियणाणी अयणाणी एए दोवि तुहा विसेसाहिया, विभंगणाणी असंखेजगुणा. केवलणाणी अर्णत-युणा, महअण्याणी सुयअण्याणी य दोवि तुक्का क्षणंतगुणा ॥ २६७ ॥ अह्वा अद्वयिहा सञ्वजीवा पण्णता, तंजहा--- णेरहया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणि-णीओ मणस्या मणस्यीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ णेरइए णं मंते ! णेरइएति कालओ केविकर होड़ ? गोयमा ! जहकेणं इस वाससहस्साइं उ० तेत्रीसं सागरो-वमाइं. तिरिक्सजोणिए मं भंते !०? गोयमा ! जह० अंतोस् ० उक्को० वणस्सइ-कालो, तिरिक्खजोषिणी णं भेते !०? गोयमा! जह० अंतो॰ उद्यो॰ तिचि पलिओबमाइं पुरुवकोडिपुहुत्तमन्महियाई, एवं मणूसे मणूसी, देवे जहा नेरहए; वेवी णं अंते । १ गो । जह । इस बाससहस्ताई उ० पणपत्रं परिकोवमाई, सिद्धे

णं भंते ! सिद्धेति ॰ ? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । णेरइयस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केविचरं होइ? गोयमा! जहरू अंतीर उक्कोर वणस्सहकालो, तिरिक्क-जोणियस्स णं मंते ! अंतरं कालओ० ? गोयमा ! जह० अंती० उन्हो० मागरोवममय-पहत्तं साइरेगं, तिरिक्खजोणिणी णं भंते ! अंतरं कालओ केबचिरं होइ ! गोयमा ! जह ॰ अंतोमहत्तं उद्यो ॰ वणस्सहकालो, एवं मणुस्मस्सवि मणुस्सीएवि, देवस्सवि देवीएवि, सिद्धस्स णं भंते । अंतरं ० साइयस्य अपज्जवसियस्म णात्य अंतरं ॥ गएसि णं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मण्याणं मण्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाण य कयरे० ? गोयमा ! सय्वत्थोवा मणस्सीओ मणस्सा असंग्वेजगुणा नेरइया असंखेजगुणा तिरिक्सजोणिणीओ असंखेजगुणाओ देवा संखेजगुणा देवीओ संखेजगुणाओ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । सेतं अद्भविहा सन्वजीवा पण्णता ॥ २६८ ॥०॥ तत्य णं जे ते एवमाहंस्र-णबविहा सम्बजीवा प० ते एवमाहंगु, तंजहा--एगिंदिया वेंदिया तेंदिया चउरिंदिया णेरडया पंचेंदियतिरि-क्खजोणिया स्णुसा देवा सिद्धा ॥ एगिंदिए णं भंते । एगिंदिएसि कालओ केवित्ररं होइ ? गोयमा ! जह० अंतोमु० उक्को० वणन्स०, बॅदिए णं भंते !०? गोयमा ! जह अंतो व उद्देश संखेजं कालं. एवं तेइंदिएवि, चड व. णेरहया णं भंते । व गो॰! जह॰ दस वाससहस्साइं उन्नो॰ तेत्तीसं सागरोवमाइं, पंचेंदियतिरिक्खजो-णिए णं भंते !०? गोयमा ! जह० अंतो० उक्को० तिष्णि पलिओवसाई पुरुवकोडि-पुहत्तमञ्महियाई, एवं मणूसेवि, देवा जहा जेरइया, सिद्धे णं भंते !०? गो०! साइए अपज्जवसिए ॥ एगिदियस्स णं अंते ! अंतरं कालओ केविकरं होह ? गोयसा ! जह • अंनो • उक्को • दो सागरोवमसहस्साइं संखेजवासमञ्माहयाइं. वेंदियस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केविवरं होड ? गोयमा ! जह । अंतो । उन्हो । वणस्महकालो . एवं तेंदियस्सवि चर्डिरियस्सवि णेर्डयस्सवि पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्सवि मण्स-स्सवि देवस्सवि सन्वेसिमेवं अंतरं भाणियव्यं. सिद्धस्स णं भंते ! अंतरं कालओ० १ गो ू ! साइयस्स अपज्जवसियस्स णिख अंतरं ॥ एएसि णं मंते ! एगिंदियाणं वेइंदि॰ तेइंदि॰ चर्डिरिदयाणं जेरहवाणं पंचेदियतिरिक्चजोनियाणं वणसाणं देवाणं निद्धान य कमरे २ ... ? गोयमा ! सव्यत्योदा मणस्या जेरहमा असंखेळपणा देवा असंखेळ-गुणा पंचेंदियतिरिक्सकोणिया असंखेळगुणा चरुरिदिया विसेमाहिया तेइंदिया विसेलाहिया बेइंदिया विसे० सिद्धा अणंतराणा एगिदिया अणंतराणा ॥ २६९ ॥ अह्वा णत्रविहा सन्वजीवा पण्णता, तंजहा---पढमसमयनेरह्वा अपढमसमयनेर-इया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणिया पढमसमयमणुसा

अपटमसमयमणुसा परमसमयदेवा अपरमसमयदेवा सिद्धा य ॥ परमसमयणेरहया-णं मंते ! १ गोयमा ! एकं समयं. अपडमसमयणेरइयस्स णं मंते ! १ गो०! जहन्नेणं इस वाससहस्याई समऊणाई उक्को॰ तेत्तीसं सागरीवमाई समऊणाई, पढम-समयतिरिक्खजोणियस्य णं भेते !० ? गो० ! एकं समयं, अपटमसमयतिरिक्खजोणि-यस्स णं भंते ! ? गो० ! जह ० खुडारां भवरगष्टणं समञ्जूणं उद्यो० वणस्सद्दवाली. पडमसमयमण्मे णं भंते [० ? गो० | एकं समयं, अपडमसमयमण्स्ते णं भंते [० ? गो०] जह ॰ खुइगं भवगाहणं नमऊणं उक्को ॰ तिक्षि पलिओवमाई पुन्वकोडिपहनमञ्महि-यार्ड. दंवे जहा णेरडए, सिद्धे णं भेते ! सिद्धेत्ति कालओ केविष्टरे होइ ? गोयमा ! साइए अपज्ञवसिए ॥ पडमसमयणेरडयस्स ण भंते ! अंतरं कालओ० ! गीयमा ! जह० दस बामसहस्याई अंत्रोमुहत्तमञ्मिहयाई उद्घोसेणं वणस्सद्दकालो, अपद्रमसमयणेरइ-यस्स र्ण भंते ! अंतरं० ? गोयमा ! जह० अंतो० उद्यो० वणस्सहकालो. पदमसमय-तिरिक्ख जोणियस्य णं भंते ! अंतरं कालओ० ? गोयमा ! जह० दो खुरागाइं भवमा-हणाई समजजाई उद्योक वणक, अपरमसमयतिरिक्सजोणियस्स णं भंते ! अंतर्र कालओ॰ ! गो॰ ! जह॰ खुरागं भवगाहणं समयाहियं उ॰ सागरोचमसग्रपृष्ठतं साइरेगं, पढमसमयमणुसस्स जहा पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स, अपडमसमयमणु-सस्स णं मंते ! अंतरं कालओ० ! गो० ! ज० खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उ० वण०. पदमसमयदेवस्स जहा पदमसमयणेरडयस्स. अपदमसमयदेवस्स जहा अपदम-समयणेरइयस्म, सिद्धस्स णं अते !० ? गो० ! साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्वि अंतरं ॥ एएसि णं भंते ! पडमसमयनेरडयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमयमण्-साणं पढमसमग्रहेबाण य क्यरे॰ ? गोयमा ! सञ्जल्योवा पढमसमग्रमणसा पडम-समयणेरहया असंसेजगुणा पढमसमयदेवा असं० पढमसमयतिरिक्सजो० असं०। एएसि ण भंते ! अपढमसमयनेरङ्गाणं अपढमसमयतिरिक्खजोषि० अपढमसमय-मण्याणं अपन्यसम्बद्धेकण य क्यरे॰ ? गोयमा ! सञ्जत्योवा अपन्यसमयमण्या अपडमसमयनेर्ड्या असं व अपडमसमयदेवा असं व अपडमसमयतिरि व अणंतराणा । एएसि र्ण मेते ! पढमस नेरइयाणं अपढमसमयणेरहयाण य कमरे २...? गीयमा ! सञ्बत्योवा पढमसमयणेरडवा अप्रहमसमयणेरडया असंखेजगुणा, एएसि णं भेते ! पढमसमग्रतिरिक्सबो॰ अपडमसमग्रतिरिक्सजोणि॰ कवरे॰? गोमना! सञ्च० पटनसम्बद्धिः अवस्यसम्बद्धियाज्ञोणिया अर्णतः, मणुयदैवअप्पावहुर्य जहा णेरद्याणं । एएसि चं अते ! पटमसम्बर्णरह० पटमस०तिरिक्सजो० पटमस०मण्साचं पठमत्तमग्रहेवाणं अपरामसम्बद्धारः अपरामसमग्रीतिकारोणि अपरामसमग्रम-

णुसाणं अपूडमसमयदेवाणं सिद्धाण य क्यरे॰ ? गोयमा ! सव्व॰ प्रहमस॰मण्सा अपदमसमय व्यापुर असंव पदमसमयनेरहया असंव पहमसमयदेवा असंखेव पहमस-मयतिरिक्खजो॰ असं॰ अपहमसमयनेर॰ असं॰ अपहमम ॰ देवा असंखे॰ सिद्धा अणं अपद्यस्कितिरे अणंतगुणा । सेत्तं नवविहा सञ्बजीवा पण्णता ॥२७०॥०॥ तत्थ णं जे ते एवमाहंस-दमविहा सब्बजीवा पण्णता ते एवमाहंसु, तंजहा--पुरवि-काइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्महकाइया बेइंडिया तेइंदिया चउरि० पंचें अणिदिया ॥ पुरुविकाइए णं भेते ! पुरुविकाइएकि कालओ केविचरे होई ? गोयमा ! जह० अंतो० उक्को० असंखेजं कालं असंखेजाओ उस्मण्पिणीओगप्पिणीओ कालओ, सेत्तओ असंखेळा लोया. एवं आउतेउवाउकाइए. वणस्मइकाइए णं भेते!०? गोयमा! जह अंतो • उन्हो • वणस्सइकाला, बेंदिए णं भंते ! • ! गो • ! जह • अंतो • उद्यो० संग्वेजं कालं, एवं तेइंदिएवि चउरिंदिएवि, पंचिंदिए णं भेते !० ? गोयमा ! जह० अंती० उन्नो० सागरोवमसहस्सं साइरेगं, अणिदिए णं भंते :०? गो०। साइए अपज्ञवासए ॥ पढ़िवकाइयस्स णं भंते ! अंतरं काळओ केविकरं होड ! गोयमा ! जह० अंतो० उक्को० वणस्सङ्कालो, एवं आउकाइयरम तंउ० वाउ०, वणस्सङ्का-इयस्स णं भंत ! अंतरं कालओ॰ ? जा चेव पदविकाइयस्म संचिद्रणा, वियतिय-चउरिंदियपंचेंदियाणं एएसि चउण्हंपि अंतरं जह० अंनो० उद्दो॰ वणस्मइकास्त्रो. अणिवियस्य णं भंते ! अंतरं कालओ केविषरं होड ? गोयमा ! माइयस्य अपज्जव-सियस्स णत्य अंतरं ॥ एएसि णं भंते । पढिकाइयाणं आउ० तेउ० वाउ० वण० बेंदियाणं नेइंदियाणं चउरिं० पंचेंदियाणं अणिदियाण य कयरे २ · · ? गोयसा ! सन्बत्योवा पंचेदिया चर्डारेदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसे० वेंदिया विसे० तेउ-काइया असंसेजगुणा पुरविकाइया वि॰ आउ० वि॰ वाउ० वि॰ अणिदिया अणंत-गुणा वणस्सइकाइया अर्णतगुणा ॥ २७१ ॥ अहवा दसविहा सव्यजीवा पण्णासा. तंत्रहा-पढमसमयणेरइया अपढमसमयणेरइया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढम-समयतिरिक्खजोणिया परमसमयमण्या अपढमसमयमण्सा परमसमयदेवा अपढम-समयदेवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा ॥ पढमसमयनेरडए णं भंते ! पढम-समयनेरइएति कालमो केविषरं होइ ? गोयमा ! एकं समयं. अपढमसमयनेरइए ण भंते !० ? गोयमा ! जहनेणं दम वाससहस्साइं समक्रणाई उक्रोसेणं तेत्रीसं सागरी-वसाई समऊगाई, पडमसमयतिरिक्खजोजिए णं मंते !० ? गोयमा ! एई समयं, अप-दमसमयतिरिक्स॰ जह॰ स्थागं भवनगहणं समद्भणं उद्यो॰ सणस्तहकालो. पदमस-मयमणूरो णं भंते !० १ गोयमा ! एकं समयं, अपद्रमस • मणसे णं भंते !• १ गोयमा !

जह ॰ खुडुागं मद्यगहणं समऊणं उक्को ॰ तिण्णि पलिओवमाइं पुञ्चकोडिपुहुनमञ्भ-हियाई, देवे जहा णेरइए, पढमसमयसिद्धे णं भंते '० ? गोयमा ! एकं समयं, अपढ-मसमयसिद्धे णं भंते !॰? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । पढमनमयणेर० भंते ! अंतरं कालओ॰ ? गोयमा ! ज॰ दम वामसहस्माई अंतोसहत्तमञ्महियाई उक्को॰ वण ०, अपडमसमयणेर ० अंतरं कालओ केव ० ? गोयमा ! जह ० अंतो ० उ० वण ०, पटमगमयतिरिक्ताजोणियस्य ० अंतरं ० केविषरं होइ ? गोयमा ! जह ० दो खुरूग-भवगगृहणाई समऊणाई उद्यो वण ् अपडमसमयतिरिक्खजोणियस्य णं भेते !०? गोयमा ! जह • खुडागभवग्गहणं समयाहियं उद्यो • सागरोवमसयपुहत्तं माइरेगं. पटमसमयमणुसस्स णं भेते ! अंतरं कालको॰ ? गो॰ ! जह॰ दो खुड्रागमधगाहणाइं ममऊणाई उक्को॰ वण॰, अपहमसमयमणृगस्स णं भंते ! अंतरं॰ ? गो॰ ! जह॰ खुड्टागं भव० समयाहियं उक्को० वणस्सइ०, देवस्स अंतरं जहा गेरइयस्स, पटमस-मयसिद्धस्य णं भेते ! अंतरं ० ? गो० ! णत्थि, अपहमयमयसिद्धस्य णं भेते ! अंतरं कालओ केविचर्र होड़ १ गोयमा ! माइयस्म अपज्ञवसियस्स णत्थि अंतरं ॥ एएसि णं भंते ! पदमस्व णर् पढमस्व तिरिक्त जोणियाणं पढमसमयमण्साणं पडमसमय-देवाणं पडमममयसिद्धाण य कयरे २ ... ? गोयमा ! सम्बत्थोवा पढमसमयसिद्धा पडमसमयमणुसा असंखे॰ पढमस॰णेरइया असंखेळगुणा पढमस॰देवा असं॰ पढ-मस०तिरि० असं । एएसि णं भेते ! अपढमसमयनेरइयाणं जाव अपटमसमयसि-ढाण य कबरे॰ ? गोयमा ! सव्वत्थोता अपढमस०मणूमा अपढमस०नेरइया असंखे॰ अपडमग०देवा असंखे अपहमस०सिद्धा अणंतगुणा अपहमस०तिरिक्खजो अणंत-गुणा । एएसि णं भंते ! पढमस०णेरइयाणं अपढमस०णेरइयाण य कयरे २ ... ? गोयमा ! सञ्बत्योवा पडमम०णेरहया अपढमम०णेरहया असंखे०, एएसि णं भंते ! पडमस्र । तिरिक्खजोणियाणं अपडमस्र । तिरिक्खजोणियाणं य कयरे २ · · : शोयसा ! सन्बत्योवा पढमसमयतिरिक्तजो॰ अपढमस॰तिरिक्तजोणिया अणंतगुणा, एएसि णं भंते ! पहमस् भणसाणं अपन्यसमयमणसाण य कयरे २ ... ? गोयमा ! सब्ब-त्थोता पढमसमयमणुसा अपढमस०मणुसा असंखे०, जहा मणुसा तहा देतावि, एएसि णं मंते ! पढमसमयसिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण य कवरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा अपडमसमयसिद्धा अर्णतगुणा । एएसि णं भेते ! पढमसमयणेरहयाणं अपडमसमयणेरहयाणं पढमस०-तिरिक्खजोणि अपडमस विरिक्खजो प । समयमण् अपडमस । मण् पडम-स॰ देवाणं अप॰ समयदेवाणं पढमसमयसिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण य क्यरे २ हितो अप्पा वा बहुवा वा तुहा वा विसे॰ ? गोधमा ! सव्यत्वोदा प्रध्नसं॰ दिदा प्रध्मसं॰- भव्तसं असं॰ वृत्वा वा विसे॰ ? गोधमा ! सव्यत्वोदा प्रध्नसं॰ देवा व्यदं॰ प्रध्मसं॰ देवा व्यदं॰ प्रध्मसं॰ देवा व्यदं व्यद



श्रीस्त्रागमप्रकाशकसमितिके 'स्तंम' संक्षित परिचय



श्रीमान् रतनचंद भीसमदास बांडिया

पनवेल्ड (कुलावा) नगरमं बोठिया कुटुंब अत्युत्कृष्ट प्रतिष्टित एवं प्रसिद्ध है। इसी कुलमें श्रीमान केठ भीखमदास जी के घर आप का जन्म सं० १९६६ में हुआ। आपकी दह दुति रक्षके समान आलोकित होनेके कारण आपका नाम रत्तनचंद यथा नाम तथा गुण रमझा गया। आप इस वंश और कुलके सच्चे अर्थमें 'कुलदीपक' हैं। आप स्वभावसे शात-गंभीर-सज्जन और निरिभमानी एवं महान उदार हैं। १८ वर्षकी आयुमें यशिप आप पितृमुखसे वंचित होगए थे फिर मी आप प्रत्येक कार्यमें माताजीकी आज्ञाका सर्वतोमुखी पालन करते हैं। आपने अपनी प्रतिभा और सारखती-सुमतिसे वंश और धर्मके गौरवको बढ़ाया है। यही

ानक है कि सक्ष्मी आपकी चेरी बनकर रहती है तब याचकराण आपसे मनमाना कर पाते हैं और आपके गुण और कीर्तिका सारभ फैलाते रहते हैं। कला-कांशलको अपना महयोगी बनाकर प्रामाणिकताके बलपर व्यवहारक्षेत्रमं विशाल रूपसे आपने प्रवेश किया है। आपकी गिक्किन्सराफा-जवाहरान की फर्म यहां और वंबर्डमें बड़ी ही लब्धप्रतिष्ठ गिनी जाती है। व्यापारके प्रत्येक कक्षमें आप सूर्यके ममान प्रकाशित हैं। आपके प्रत्येक व्यवहारमें जनहितको प्रधानता दी जाती है। इसीकारण आप म्यानीय जनता-समुदायमें लोकप्रिय होते जा रहे हैं । एक बार यदि आपसे किसीका व्यावहारिक प्रसंग आगया कि वस वह आपको सदाके लिए अपना प्रतिनिधि चन छेता है। यही कारण है कि आप जैन और जैनेतरीय बहुतसी संस्थाओं के प्रेसीडेंट-ट्रस्टी-ऑडीटर और कासिलर आदिके रूपसे चने जाते हैं एवं बड़ीही प्रामाणिकतासे उनको अपनी अमृत्य सेवाएं ममर्पण करते हैं । अहो-गात्रिके २४ घंटोंमें आपको अवकाश कहां? फिर भी आप समय निकालकर मर्वप्रथम सामायिक करते हैं तथा एकचित्त होकर सूत्र और सिद्धान्तक। खाध्याय करते हैं, साथ ही मनन-चिन्तन और निदिध्यायनमें भी निरन रहते हैं। गुरु-भक्तिमं आप अनन्यता प्राप्त हैं। 'रतन टाकीज़' नामक आपका मनोरंजनगृह मार्वजनिक मभा तथा अन्यान्य जनमुविधाके लिए अमृल्य दिया जाता है। पाथडीं-चींचवड्-कट्रा तथा ज्यावर आदिकी अनेक धार्मिक संस्थाओंमें प्रतिवर्ष निय-मिनरूपसे आपकी ओरसे आर्थिक सहायता दी जाती है। आप अपनी मातुश्रीके प्रीत्यर्थ सिद्धान्तशाला (पाथडां) को ५०१) दान देकर संस्थाके संरक्षक हें। 'यथा नाम तथा गुण' नामक लोकोक्ति मानो आपके जीवनसे ही आरंभ हुई है। पांच सुपुत्र और दो सुप्तियां सात तत्त्वके समान आपकी शोभाको बढा रहे हैं। दान करते समय पुष्कलावर्त मेघ भी आपकी उदारनाके सामने लजित हो जाता है । सेबाभावमें मास्तीकी उपमा अस्थानीय नहीं है । आपकी फर्मका व्यवहार श्रीरतनचंद भीखमदास बांठियाके नामसे सुप्रसिद्ध है। चींचवड़ (जिला-पूना) में आपका 'बांदिया-विद्यामंदिर' बांदिया कुलकी शोमाको सुमेरकी चूलिकाके ममान उन्नत होकर चार चाँद लगाए हुए है। यह आपके विदाप्रेमका ज्वलन्त उदाहरण ही तो है।

आप २०००) की सेवा से **श्रीस्त्रागमप्रकाशकसमितिके 'स्तंम'** पदसे निभूषित हैं आपकी यह सेवाकीर्ति 'कुतुव मीनार' के सदश अवल रहेगी।

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्य णं <mark>पण्णवणासुत्तं</mark>

वबगयजरमरणभए सिद्धे अभिवंदिकण तिविहेण। वंदामि जिणवरिंदं तेलोक-गुर्क महावीरं ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाणं जिणवरेण भवियजणनिस्वृहकरेण । उवदंशिया भगवया पश्चवणा सम्बभावाणं ॥ २ ॥ वायगवर्यसाओ तेवीसङ्मेण भीरपरिसेणं । दुद्धरघरेण मुणिणा पुष्यस्यसमिद्धवृद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागरा विणेकण जेण सुयर-यणमुत्तमं दिशं । सीसगणस्य भगवयो नस्स नमो अजसामस्य ॥ ४ ॥ अज्ञायण-मिणं चित्तं सुयर्यणं दिद्विनायणीसन्दं । जह विश्वयं भगवया अहमवि तह वजह-स्सामि ॥ ५ ॥ पश्चवणा ठाणाइं बहुवत्तव्वं ठिई विसेसा य । वहान्ती उत्सासो सना जोणी य चरिमाइं ॥ ६ ॥ भासा सरीर परिणाम कसाय इन्दिए प्रओगे य । हेसा कायिक सम्मत्ते अन्तिकिरिया य ॥ ७ ॥ ओगाहणसंठाणे किरिया कम्मे इयावरे । [कम्मस्स] बन्धए [कम्मस्स] बेद[ए]बेदस्स बन्धए बेयबेयए ॥ ८॥ आहारे उबओगे पासणया सिं सक्षमे चेव । ओही पवियारण वेयणा य तत्तो समुखाए ॥ ९ ॥ से किं तं पत्रवणा ? पत्रवणा दुविहा पत्रता । तंत्रहा-जीवपत्रवणा य अजीवपद्मवणा म ॥ १ ॥ से कि तं अजीवपद्मवणा ? अजीवपद्मवणा द्वविहा पन्नता । तंजहा-स्विद्धजीवपन्नवणा य अस्विद्धजीवपन्नवणा य ॥ २ ॥ से किं तं अरुविअजीवपनवणा ? अरुविअजीवपनवणा इसविद्वा पन्नता । तंत्रहा-धम्मत्यिकाए. धम्मत्यिकायस्य हेसे. धम्मत्यिकायस्य पएसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्य देसे, अध्यमस्थिकायस्य प्रस्ताः, आगासत्यिकार्, आगासत्यिकायस्य देसे, आगा-सत्यकायस्स पएसा. अद्धासमए । सेतं अस्विअजीवपनवणा ॥ ३ ॥ से किं तं रूपिअजीवपस्तवणाः क्षिअजीवपस्तवणाः चडव्यहाः पस्ताः। तंत्रहा-१ संधाः २ संघदेसा, ३ संघप्पएसा, ४ परमाजुपोम्मतः । ते समासओ पंचित्रहा पक्ता । तंजहा-१ वक्षपरिणया. २ गंघपरिणया. ३ रसपरिणया. ४ फासपरिणया. ५ संठाणपरिणया ॥ ४ ॥ जे बचापरिणया ते पंचितहा पचता । तंजहा-१ काल-वजपरिणया. १ जीतमापरिणया. ३ खोद्रियवजपरिणया, ४ हाव्यिवचपरिणया.

५ सुक्तिव्यवसपरिणया । जे गंधपरिणया ते दुविहा पक्षशा । तंजहा-सुव्धिगंध-परिणया य दुब्भिगंधपरिणया य । जे रसपरिणया ते पंचविहा पन्नना । तंजहा-१ तित्तरसपरिणया, २ कडुयरसपरिणया, ३ कसायरसपरिणया, ४ अंबिलरस-परिणया, ५ महररसपरिणया । जे फायपरिणया ते अद्वविहा पन्नता । तंजहा-१ कव्यवडफासपरिणया, २ मडयफासपरिणया, ३ गरुयफासपरिणया, ४ लहय-फासपरिणया, ५ सीयफासपरिणया, ६ उसिणफासपरिणया, ७ णिद्धफासपरिणया. ५ लुक्खफासपरिणया । जे संठाणपरिणया ते पंचविद्वा पन्नता । तंजहा-१ परिमंडल-संठाणपरिणया, २ वहसंटाण०, ३ तंससंटाण०, ४ च उर्रससंठाण०, ५ आयय-संठाण ।। ५ ॥ जे वण्णओ कालवण्णपरिगया ते गन्धको सब्भिगनधपरिणया वि. द्रव्भिगन्धपरिणया वि । रमओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरमपरिणया वि, कमाया रसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फामओ कक्खड-फासपरिणया वि, मडयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणय-वि. सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफा-मपरिणया वि । सण्ठाणओ परिमण्डलसण्ठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससण्डाणपरिणया वि, चउरंमसण्डाणपरिणया वि, आययसण्डाणपरिणया वि २०। जे वण्णओ नीलवण्णपरिणया ते गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुबरसपरिणया वि, कसाबरमपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि। फासओ कक्सडफासपरिणया वि, मउयकामपरिणया वि, गुरुयकासपरिणया वि, लहुयकासपरिणया वि, सीयकासपरि-णया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, हुक्खफासपरिणया वि। संठाणको परिमण्डलसण्ठाणपरिणया वि, वहसंठाणपरिणया वि, तंससण्ठाणपरिणया वि, चउरंससण्ठाणपरिणया वि, आययसण्ठाणपरिणया वि २०। जे वण्णको लोहि-यवण्णपरिणया ते गन्धको सुब्धिगन्धपरिणया वि, दुब्धिगन्धपरिणया वि । रसको तित्तरसपरिणया वि, कड्डयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरि-णया वि. महररसपरिणया वि । फायुओ क्वन्खडफासपरिणया वि. मजयफासपरि-णया वि, गुरुयफासपरिणया वि, रुहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उतिणकासपरिणया वि. निद्धकासपरिणया वि. ह्वक्खकासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वहसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चडरं-ससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २०। जे वण्णको हालिहवण्णपरिणया ते गन्धओ सुविभगन्धपरिणगावि, बुव्भिगन्धपरिणगावि । रसओ तित्तरसपरिणगा

वि, कहुबर्सपरिणया वि. कसाबरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महररस-परिणया वि । फासओ क्वन्खडफासपरिणया वि, मउयफासपरिणया वि, गुरुयफास-परिणया वि. लहयफासपरिणया वि. सीयफासपरिणया वि. उसिणफासपरिणयावि. णिद्धफासपरिणया वि. लक्खफासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि. बहसंठाणपरिणयावि, तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २० । जे बण्णओ सुक्किल्लबण्णपरिणया ते गन्धओ सुब्सिगन्धपरिणया वि. दुब्सिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कड्डयरसपरिणया वि. क्यायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, मुहुररस-परिणया वि । फासओ कन्खडफासपरिणया वि, मडयफासपरिणया वि, गुरुयफास-परिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि. लक्खफासपरिणया वि । संठाणको परिमंडलसंठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २०, १००। जे गम्घओ सुव्भिगम्भपरिणया ते बण्णओ कालबण्णपरिणया वि, जीलबण्णपरिणया वि, लोहियबण्णपरिणया वि, हालिइबण्ण-परिणया वि. सुक्किक्कवण्णपरिणया वि । रसक्षी तित्तरसपरिणया वि. ब्रह्मयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ क्रन्खडफासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गरुवफासपरिणया वि, लहुबफास-परिणया वि, सीयफासपरिणया वि, वसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि. लक्सफासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि. वृहसंठाणपरिणया वि. तंससंठामपरिणया वि. चजरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २३ । जे गन्यओ दुव्यिगन्यपरिणमा ते वणाओ कालवण्यपरिणमा वि, जीलवण्य-परिणया वि. लोडियक्कपरिणया वि. हालिहक्कपपरिणया वि. सुक्रिश्चक्क-परिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कह्वयरसपरिणया वि, कसायरस-परिणया वि, अभ्विकरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासको कव्खड-फासपरिचया वि, मडयफासपरिजया वि, गुरुयफासपरिजया वि, ब्रह्मफास-परिणयावि. सीयकासपरिणया वि, उसिणकासपरिणया वि, णिदकासपरिणया वि, क्रमचाकासपरिणया वि । संठाणको परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, बहसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि, चटरंससंठाणपरिणया वि, साययसंठाणपरिणया वि २३, ४६। जे रसको तित्तरसपरिणमा ते क्ष्यको कालक्ष्यपरिणमा वि, णीलक्ष्यपरिणमा वि, क्षेत्रियक्कापरिणया वि. इतिक्कापरिक्या हि. शक्तिक्कापरिणया वि । राज्यको

सुब्भिगन्धपरिणया वि. दुब्भिगन्धपरिणया वि । फासको कम्बङफासपरिणया वि. मजयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरि-णया वि. उसिणफासपरिणया वि. निद्धफासपरिणया वि. ख्वन्सकासपरिणया वि। संठाणको परिमण्डलसंठाणपरिणमा वि. वष्टसंठाणपरिणमा वि, तंससंठाणपरिणमा वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २०। जे रसभो कडयरसपरि-णया ते नण्यको कालकण्णपरिणया वि. भीलकण्णपरिणया वि. लोहियकणपरिणया वि, हालिद्दवण्णपरिणया वि, सुक्किलवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुब्भिगन्धपरिणया वि. दुब्सिगन्धपरिणया वि । फासओ कक्खरफासपरिणया वि. सउयफासपरिणया वि, गुरुयफासपरिणया वि, व्हरयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिण-फासपरिणया वि. णिद्धफासपरिणया वि, ह्वक्खफासपरिणया वि। संठाणओ परि-मण्डलसंठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि, चलरंस-संठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २०। जे रसओ कसायरसपरिणया ते बण्याओ कालकणपरिणया वि. नीलवज्ञणपरिणया वि. लोहियबण्जपरिणया वि. हालिहबुज्जपरिणया वि, सुक्कित्रबज्जपरिणया वि । गन्धओ सुविभगन्धपरिणया वि. दब्सिगन्थपरिणया वि । फासओ कुन्सहफासपरिणया वि, सदयफासपरिणया वि. गुरुयफासपरिणया वि. लहयफासपरिणया वि. सीयफासपरिणया वि. उसिणफास-परिणया वि. णिद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि। संठाणको परिमण्डस-संठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि, वडरंससंठाणपरि-ण्या वि. आस्यसंठाणपरिजया वि २०। जे इसको अभ्विकरसपरिजया ते वज्जको कालकणपरिणया वि. नीलकणपरिणया वि. लोहियकणपरिणया वि. डालिकण्य-परिणया वि, सक्किक्कवण्णपरिणया वि । गन्धको सुब्धिगनन्धकरिणया वि. दक्षिगनन्ध-परिणया वि । फासओ कन्यडकासपरिणया वि, मजयफासपरिणया वि, गुह्यफास-परिणया वि, लह्यकासपरिणया वि, सीयकासपरिणया वि, उत्तिणकासपरिणया वि, निजफासपरिणया वि. दक्षन्सफासपरिणया वि । संठाणको परियण्डससंठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. क्षाययपंठाणपरिणया वि २०। जे रसको महररसपरिणया ते बण्यको कालकण-परिणया वि. नीलवण्णपरिणवा वि. कोहियवण्यपरिणया वि. हास्तिवण्यपरिणया वि. सुक्तिवरणपरिणमा वि । गन्यको सुक्तिगन्यपरिणमा वि. सुक्तिगन्यपरिणमा वि । फासओ कक्बारफासपरिणया वि, करुयक्कास्वरिज्ञवा वि, गुरुवकासवरिज्ञवा वि, लहुबफासपरिजया वि, बीबकासकरिणवा वि, बिककासपरिणवा वि, निद्यमास-

परिणया वि, छुक्खफासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, वह-संठाणपरिणमा वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाण-परिणया वि २०. १००। जे फासओ क्रम्सडफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण-परिणमा त्रि, नीलवण्णपरिणया वि, लोहियवण्णपरिणया वि, हालिहवण्णपरिणया वि, सकित्रवण्णपरिणया वि । गन्धको सब्भिगन्धपरिणया वि. दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तिलरसपरिणया वि. कड्यरसपरिणया वि. कसायरसपरिणया वि. अम्बिलरस-परिणया वि. सहररसपरिणया वि। फासओ गुरुयफासपरिणया वि. लहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि. उसिणफासपरिणया वि. णिखफासपरिणया वि. छक्ख-फासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि. वहसंठाणपरिणया वि, तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २३। जे फासको मजयफासपरिषामा ते वण्णओ कालवण्णपरिणमा वि. नीलवण्णपरिणमा वि, लोहियवण्यपरिणया वि, हालिह्चण्णपरिणया वि, सुक्कित्रवण्णपरिणया वि। गन्यओ सुविमगनभपरिणया वि, दुव्मिगनभपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, कड्डयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महररस-परिणया वि । फासओ गुरुवफासपरिणया वि, लहुबफासपरिणया वि, सीयफास-परिणया वि, उसिणकासपरिणया वि. विद्यकासपरिणया वि. व्यक्खकासपरिणया वि। संठाणको परिमण्डलसंठाणपरिणयावि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरंसचंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २३। जे फासओ गुरुयफास-परिमया ते कणओ कालवण्णपरिणया वि. नीलवण्णपरिणया वि. लोहियकण्ण-परिणया वि, द्वालिहनण्णपरिणया वि, सुक्कित्रनण्णपरिणया वि । गन्धओ सुन्भि-मन्बपरिणया वि. दुब्सिगन्बपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि, ऋहयरस-परिणया वि, कसागरसपरिणया वि, अभ्विलरसपरिणमा वि, महररसपरिणमा वि । फासको क्रम्बाडफासपरिणया वि. मडयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि. उसिणकासपरिणया वि. णिद्धकासपरिणया वि. ह्वन्सकासपरिणया वि। संठाणव्ये परिमण्डलचंठाणपरिणमा बि. वहसंठाणपरिणमा वि. तंससंठाणपरिणमा वि. चउरंस-संठाजपरिणया वि, आययसंठाजपरिणया वि २३। जे फासको लहुयफासपरिणया ते बण्याको कासवण्यपरिणया वि. नीसवण्यपरिणया वि. लोहियबण्णपरिणया वि. हालिह्वण्यपरिणया वि, द्वविद्याण्यपरिणया वि । गन्यको स्थिननन्त्रपरिणया वि, बुक्तिगान्वपरिणया वि । रसाओ वित्तरसपरिणया वि, बदुवरसपरिणया वि, कसाय-

रसपरिचया मे, अभ्यक्षरसप्रियमा वि, अहुररसपरिचया नि । फासओ क्यक्रट-

फासपरिणया वि. मउयफासपरिणया वि. सीयफासपरिणया वि. उसिणफासपरिणया बि, णिद्धफासपरिणया वि, व्यवस्वफासपरिणया वि । संठाणको परिमण्डलसंठाणपरि-णया वि. वहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि, चउरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाणपरिणया वि २३ । जे फासओ सीयफासपरिणया ते बण्णको कालब-ण्णपरिणया वि. नीलवण्णपरिणया वि. लोहियवण्णपरिणया वि, हालिहवण्णपरिणया बि. सुक्किल्लवण्णपरिणया वि । गन्धको सुन्धिगन्धपरिणया वि. दुब्धिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. कडयरसपरिणया वि. कसायरसपरिणया वि. अम्बिलरसपरिणया वि. महररसपरिणया वि । फासको क्वस्बरफासपरिणया वि. मज्यकासपरिणया वि, गुरुयकासपरिणया वि. लहयकासपरिणया वि, निद्धकासपरि-णया वि. ळुक्खफासपरिणया वि । संठाणश्रो परिमण्डलसंठाणपरिणया वि, बहर्स-ठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि, आययसंठाण-परिणया वि २३ । जे फासओ उसिणफासपरिणया ते व्रण्णओ कालवण्णपरिणया वि. नीलकणपरिणया वि. लोहियवण्णपरिणया वि. हालिहबण्णपरिणया वि. सक्रि-ह्ननण्णपरिणया वि । गन्धको सुब्भिगन्धपरिणया वि, दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. कह्वयरसपरिणया वि. कसायरसपरिणया वि, अम्बिल-रसपरिणया वि. महररसपरिणया वि । फासओ कक्सडफासपरिणया वि. मजयफा-सपरिणया वि, गुरुवफासपरिणया वि, लहुवफासपरिणया वि, निद्धफासपरिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि. बहुसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २३। जे फासको निद्धफासपरिणया ते बण्यको कारुवण्यपरिणया वि. नीरुब-ण्यापरिणया वि, लोहियवण्यपरिणया वि, हालिहवण्यपरिणया वि, सक्किवण्यपरिणया वि । गन्धओ सुव्भिगन्धपरिणया वि. दुव्भिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरि-णया वि, बहुयरसपरिणया वि, बसायरसपरिणया वि, अध्यिलरसपरिणया वि, महररतपरिणया वि । फासको कक्खडफासपरिणया वि. महयफासपरिणया वि. गुरुयकासपरिणया वि, लहयकासपरिणया वि, सीत्रकासपरिणया वि, उसिणकासपरि-णया वि । संठाणओ परिमण्डरुसंठाणपरिणया वि, वर्स्सठाणपरिणया वि, तंससंठाण-परिणया वि. चडरंससंठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २३ । जे फासको लुक्सकासपरिणया ते बृष्णको कालबण्णपरिणया वि. नीलबण्यपरिणया वि. स्त्रेहि-यवण्यपरिणया वि, हासिद्वण्यपरिणया वि, हासिक्वण्यपरिणया वि । शरक्की सन्मिगन्यपरिणया वि, दुव्यिगन्यपरिणया वि । रसकी तिसासपरिणया वि, वहपरि-

सपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ क्रन्संडफासपरिणया वि. मजयफासपरिणया वि. गुरुयफासपरिणया वि, ल्ह्यफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि। संठाणओ परिमण्डलस्ंठाणपरिणया वि. वृहसंठाणपरिणया वि. तंससंठाणपरिणया वि. चडरेस-संठाणपरिणया वि. आययसंठाणपरिणया वि २३. १८४। जे संठाणको परिमण्ड-रुसंद्राणपरिणया ते वण्णको कालवण्णपरिणया वि. नीलवण्णपरिणया वि. लोहियब-ण्णपरिणया वि. हालिहबण्णपरिणया वि. सुक्किल्लवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुब्धि-गन्धपरिणया वि. दुब्भिगन्धपरिणया वि । रसस्रो तिन्तरसपरिणया वि. क्ह्रयरसप-रिणया वि. कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महररसपरिणया वि । फासओ कक्कडफासपरिणया वि. मउयफासपरिणया वि. गुरुयफासपरिणया वि. लह्यफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, निद्धफास-परिणया वि. स्वन्खपासपरिणया वि २०। जे संठाणको वृहसंठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि. नीलवण्णपरिणया वि. लोहियवण्णपरिणया वि. हालिह्वण्णपरिणया वि. सुक्किल्लवण्णपरिणया वि । गन्धओ सुब्भिगन्चपरिणया वि. दुब्भिगन्त्रपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. कहयरसपरिणया वि. कसायर-सपरिणया वि, अम्बिलर्सपरिणया वि, महुर्रसपरिणया वि। फासओ कक्खडफा-सपरिणया वि. मजयफासपरिणया वि. गुरुयफासपरिणया वि. लहयफासपरिणया वि. सीयफासपरिणया वि. उत्तिथफासपरिणया वि. निद्धफासपरिणया वि. छक्खफासप-रिणया वि २०। जे संठाणओ तंससंठामपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि. नीलकणपरिणया वि. लोहियवणपरिणया वि, हालिहबण्णपरिणया वि, सुक्किक्रवण्ण-परिणया वि । गन्धओ सुब्धिगन्धपरिणया वि , दुब्धिगन्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिषया वि. क्डयरसपरिणया वि. कसायरसपरिणया वि. अभ्विलरस-परिणया वि. महररसपरिणया वि । कासओ कक्खडफासपरिणया वि, मजयफास-परिणया वि, गुरुपफासपरिणया वि, कहुयफासपरिणया वि, सीयफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि. विद्यमासपरिणया वि. इक्खफासपरिणया वि २०। जे संठाणभी चटरंससंठाकपरिषया ते कणको कालकणपरिणया वि. नीलवण्णपरिणया वि, लोहियनकापरिषया वि, हाकिस्वकापरिणया वि, सुक्रिक्रनण्यपरिणया वि । गन्धओ सुक्रियान्वपरिषया वि. दंग्मिगंबपरिषया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. क्ड्यरसपरिजया वि. कतावरसपरिजया वि. खम्बिल्ट्सपरिजया वि, महूर्रसपरिजया वि । फासको करकारकारकारकार वि, महबकारकारिका वि, गुरुमकासपरिकार वि,

कड्यफासपरिणया वि, सीयफासपरिगया वि, उसिणकासपरिणया वि, निद्धकास-परिणया वि, लुक्खफासपरिणया वि २०। जे संठाणको आययसंठाणपरिणया ते वण्णको कालनण्णपरिणया वि, नीलनण्णपरिणया वि, लोहियनण्णपरिणया वि, हालिह्नण्ण-परिणया वि, द्विक्कवण्णपरिणया वि । गन्धओ द्विसगन्धपरिणया वि, द्विसग-न्धपरिणया वि । रसओ तित्तरसपरिणया वि. कह्यरसपरिणया वि. कसायरसपरिणया वि, अम्बिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि । फासओ ऋक्खडफासपरिणया वि, मज्यकासपरिणया वि, गुरुयकासपरिणया वि, लहयकासपरिणया वि, सीयकास-परिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि, छक्सफासपरिणया वि २०, १००। सेसं रूविअजीवपश्रवणा। सेसं अजीवपश्रवणा॥ ६॥ से कि तं जीवपनवणा ? जीवपनवणा दुविहा पनता । तंत्रहा—संसारसमावण्ण-जीवपण्यवणा य असंसारसमावण्यजीवपण्यवणा य ॥ ७ ॥ से कि तं असंसारसमाव-ण्याजीवपन्यवणाः ! असंसारसमावण्याजीवपण्यवणा दुविहा पण्यता । तंजहा-अगन्त-रसिद्धअसंसारसमावण्यजीवपण्यवणा य परम्परसिद्धअसंसारसमावण्यजीवपण्यवणा य ॥ ८ ॥ से कि तं अणन्तरसिद्धअसंसारसमाचणात्रीवपण्यवणा ? अणन्तरसिद्धअसंसाः रसमावणाजीवपण्णवणा पण्णरमविहा पण्णता । तंजहा-१ तिरबसिदा, २ अतित्य-सिदा, ३ तित्वगरसिदा, ४ अतित्वगरसिद्धा, ५ सर्वनुद्धसिद्धा, ६ पत्तेयनुद्धसिद्धा, ७ बुद्धवोहियसिद्धा, ८ इत्बीलिंगसिद्धा, ९ पुरिसलिंगसिद्धा, १० नर्पुसगर्खिंग-सिद्धा, ११ सर्किंगसिद्धा, १२ अन्नर्लिंगसिद्धा, १३ गिहिलिंगसिद्धा, १४ एगसिद्धा, १५ अनेगसिद्धा । सेतं अर्णतरसिद्ध० ॥ ९ ॥ से कि तं परम्परसिद्धअसंसारसमाव-ण्णजीवपण्णवणा १ २ अणेगविहा पण्णता, तंजहा-अपडमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिदा, चउसमयसिदा जाव सङ्ग्रिजसमयसिदा, असङ्ग्रिजसमयसिदा, अप-न्तसमयसिद्धाः। सेत्तं परम्परसिद्धक्षसंसारसमावकाजीवपन्यावमा । सेत्तं स्रसंसारसमा-बण्यजीवपण्यवया ॥ १० ॥ से कि तं संसारसमावन्यजीवपण्यवया ? संसारसमाव-णाजीवपण्यवणा पञ्चविहा पण्यता । तंजहा--- १ एगेदियसंसार्समावण्यजीवपंच्य-वणा. २ वेइन्दिगर्ससारसमानण्यात्रीवपण्यवणा, ३ तेइन्दियसंसारसमाक्ण्यतीवप-णावणा, ४ वटरिन्दिवर्यसारसमावणाजीवपण्यवणा, ५ पश्चिन्दिवर्यसारसमावण्य-जीवपरणमणा ॥ ११ ॥ से किं तं एगेन्वियसंसारसमावण्यजीवपरणवणा ! १गेन्दिव-संसारसमावन्यजीवपन्यवणा पद्मविहा पश्चता । तंजहा-पुरविकाहका, भाउकाह्या, तेवबाह्या, बाउबाह्या, बणस्तहकाह्या ॥ १२ ॥ से कि ते वुंबनिकाह्या । युद्धवि-काह्या दुविहा प्रकारा । र्रव्यहा - इहुवयुविकाह्या य बान्युविकाह्या स ॥ १३ ॥

से कि तं सहुमपुढिवकाइया ? सहुमपुढिवकाइया दुविहा पण्णता । तंबहा----पज्जत-सुहुमपुढविकाइया स अपज्यतसुहुमपुढविकाइया य । सेत्तं सुहुमपुढविकाइया ॥ १४ ॥ से कि तं बायरपुढिवकाइया ? बायरपुढिविकाइया द्विहा पन्नता । तंजहा-सण्ह्बायर-पुरुविकाइया य खरबायरपुरुविकाइया य ॥ १५ ॥ से किं नं सम्बनायरपुरुविकाइया ? सण्डबायरपढिविकाइया सत्तविहा पकता । तंत्रहा-१ किण्डमहिया, २ नीलमहिया, रे लोहियमहिया, ४ इंग्लिइमहिया, ५ सक्रिक्रमहिया, ६ पाण्डमहिया, ७ पणग-महिया । सेतं सम्हवायरपुढविकाइया ॥ १६ ॥ से किं तं खरबायरपुढविकाइया ? -अरबायरपुढविकाइया अजेगविहा पण्णता । तंजहा-१ पुढवी य २ सकरा ३ वालुया य ४ उबळे ५ रिला य ६-७ छोणूसे । ८ अय ९ तंब १० तटब ११ सीसय १२ रूप १३ सबके य १४ वडरे य ॥ १ ॥ १५ हरियाके १६ हिंगुलए १७ मणी-मिला १८-२० सासगंजणपवाछे । २१-२२ अध्यपदछन्भवाल्य बायरकाए मण-विहाणा ॥२॥ २३ गोमेजप् य २४ रुपए २५ अंके २६ फलिहें य २० लोहियक्के य। २८ मराय २५ मसारगहे ३० भुयमोयग ३१ इन्द्रनीले य ॥ ३ ॥ ३२ चंदण ३३ गेठ्य ३४ इंसगब्स ३५ पुरुष ३६ सोगन्धिए य बोद्धव्वे । ३७ चन्दप्पस ३८ वेरुकिए ३९ जलकंते ४० सरकंते य ॥४॥ जेयाको तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पन्ता । तंत्रहा-पजत्तगा य अपजत्तगा य । तत्य णं जे ते अपजत्तगा ते णं असंपत्ता । तत्य णं जे ते प्रजतमा एएसि बनावेसेणं, रसावेसेणं, गंधावेसेणं, पासा-देसेणं सहस्समासी विहाणाई, सङ्गेजाई जोणिप्यमुहसयसहस्साई । पजनागिनसाए अपज्ञत्तगा वक्क्मंति , जत्य एगो तत्व नियमा असंखेजा । सेतं सरवायरपुढविकाइया । सेर्ग मामरपुरुविकाइया । सेर्ग पुरुविकाइया ॥ १७ ॥ से कि तं आउकाइया ? आउ-काइया दुविहा पण्यता । तंत्रहा-सुहुमआउकाइया य वायरभाउकाइया य ॥ १८॥ से कि तं बहुमञाउकाइया ? सहुमाउकाइया दुविहा पकता । तंबहा-पजतसहम-आउकाइया य अपजनसूह्मआउकाइया य । सेत्तं ग्रह्मआउकाइया ॥ १९ ॥ से कि तं बाबरकाउकाइया ? बायरकाउकाइया अणेगविद्या पत्रता । तंबहा-उस्सा, हिमए, महिमा, करए, इरत्खुए, सदोदए, सीओदए, उसिगोदए, खारोदए, खडो-दए, अभ्विकोदए, क्रवणोदए, बारुणोदए, श्रीरोदए, श्लीदए, स्रोबोदए, रसोदए, जे यानचे तहप्यगादा । ते समासको दुविहा पण्याता । तंत्रहा-पजतगा य अपज-तमा म । तत्व में जे ते अवअवतमा ते मं असंपत्ता । तत्य मं जे ते पजनमा एएसि बन्नावेसेचं मन्नावेसेणं रसावेसेणं कासावेसेणं सहस्यमसो विहालाई, संचे-जाई कोविज्युकुस्यसंस्थाई, प्रजासम्बन्धाए अपजासमा वक्रमंति, जस्य एगी

तत्य नियमा असंखेळा । सेत्तं बायरआउकाइया । सेत्तं आउकाइया ॥ २० ॥ से किं तं तेळकाइया? तेळकाइया दुविहा पनता । तंजहा-सुहमतेळकाइया य बायरते-ककाइया य ॥ २१ ॥ से कि तं सहमतेककाइया ? सहमतेककाइया द्विहा पनता । तंजहा-पजनमा य अपजनमा य । सेतं ग्रहमतेककाइया ॥ २२ ॥ से कि नं बाय-रतेऊकाइया ? बायरतेऊकाइया अणेगविहा पण्णता । तंजहा-इंगाळे, जाला, सुम्मुरे, अभी, अलाए, सुद्धागणी, उक्का, बिज्ब, असणी, णिग्धाए, संघरिससमुद्विए, सूरक-न्तमणिमिस्सिए, जेयावन्ने तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पण्णता । तंजहा-पज-त्तवा य अपज्यत्तवा य । तत्थ णं जे ते अपज्यतवा ते णं असंपत्ता । तत्थ णं जे ते पजत्तगा एएसि णं वनाहेसेणं, गन्धादेसेणं, रसादेसेणं, फासादेसेणं सहस्यागसी विहाणाइं, संबेजाइं जोणिप्पमृहस्यसहस्साइं। पजनगणिस्साए अपजनगा वहसंति, जत्य एगो तत्व नियमा असंखेजा. सेत्तं बायरतेसकाइया । सेत्तं तेसकाइया ॥ २३ ॥ से किं तं वाउकाइया ? वाउकाइया दुविहा पकता । तंत्रहा-सुहमवाउकाइया य बायरवाउकाइया य ॥ २४ ॥ से कि नं सहमवाउकाइया ? सहमबाउकाइया दुविहा पण्णता । तंत्रहा-पज्जतगसुहुमवाउकाइया य अपजत्तगसुहभवाउकाह्या य । सेतं सहसवाजकाङ्या ॥ २५ ॥ से कि तं बायरवाजकाङ्या ? बायरवाजकाङ्या अणेगविद् कणता । तंजहा-पाईणवाए, पढीणवाए, दाहिणवाए, उदीणवाए, उन्नवाए, अही-बाए. तिरियनाए. विदिशिवाए, बाउच्मामे, बाउक्कलिया, बायमंडलिया, उक्कलिया-वाए. मंडलियावाए, गुंजावाए, झंझावाए, संबद्ध्वाए, क्यावाए, तुल्बाए, सुद्धवाए, जेयादणी तहप्यगारा । ते समासको दुविहा पश्चता । तंजहा-पञ्चतमा य अपज्जतमा य । तत्य णं जे ते अपज्जतमा ते णं असंपता । तत्य णं जे ते पज्जतमा एएसि णं कण्यादेतेणं, गन्धादेतेणं, रसादेतेणं, फासादेतेणं सहस्तकासो विहाणाई, संबेजाई जोणिप्यमुद्दसयसद्दसाई । पजनगनित्साए अपजनगा वक्स्यति, जत्य एसे तत्य नियमा असंखेजर । सेतं बायरवाउकाह्या । सेतं बाउकाह्या ॥ २६ ॥ से कि तं वणस्सङ्काङ्या ? वणस्सङ्काङ्मा दुविहा पण्यता । तंत्रहा-सुहुमवणस्सङ्काङ्मा म बायरवणस्त्रह्मास्या य ॥ २७ ॥ से कि तं श्रष्टुमवणस्त्रह्मास्याः श्रुहुमवणस्त्रह्मान इया दुविहा पन्नता । तंत्रहा-पत्रतागसुहमवणस्सद्द्वाद्वा व अपंत्रत्रागसुहमवंगरस-इकाहवा य । सेत्तं द्वष्टमकणस्त्रहकाह्या ॥ २८ ॥ से 🎜 तं बाजरकणस्पाइकाह्या 🕏 बायरवगस्सहकाइया दुविहा पक्ता । तंत्रहा-प्रीयसरीरकायरकप्रसाहकाइया य साहारणसरीरवायस्थणस्स्यक्षाद्वा य-॥ २९ ॥ से कि सं प्रतेवसरीस्थायस्थलस्यर कारमा ? २ तुषाकसमिद्दा पक्ता । तंत्रहा-१ क्वा १ श्रुष्मा १ श्रुष्मा 🛪 अमा

ब ५ वही ब ६ पञ्चमा चेव । ७ तण ८ वलव ९ हरिय १० ओसहि ११ जलकह १२ कहणा य बोद्धन्या ॥ ३० ॥ से कि तं स्वन्ता ? स्वन्ता दविहा पण्णता । तंजहा-एगबीया य बहुबीयमा य ॥ ३० ॥ से किं तं एमबीया ? एगबीया अनेग-विद्वा पक्ता । तंजहा--- विवंबजंबुकोसंबसालअंकुलपील सेल् य । सल्ल्समीयइमालु-मबरलपलासे करंजे य ॥ १ ॥ पुत्तंजीवयऽदिहे बिहेलए इरिटए य सिकाए । उंबे-भरियासीरिण बोदक्वे घायइपियाले ॥ २ ॥ पूर्यनिवक्रंजे सण्हा तह सीसवा य असणे य । एकागनागरुक्के सीवण्णि तहा असोने य ॥ ३ ॥ जेयावृष्णे तहप्पगारा । एएसि में मूला वि असंकेजजीविया, कंदा वि, खंघा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया, पुष्फा अणेगजीविया, फला एसबीया । सेतं एसबीया ॥ ३२ ॥ से कि तं बहबीयगा ? बहबीयमा अणेगविहा पश्चता । तंजहा-अस्वियतेंद्र-कविद्रे अंबाइगमाउलिंग बिहे व । आमस्माफणिसदाक्रिमआसोद्रे उंबरवर्षे य ॥ १ ॥ णमाहिणंदिस्त्रसे पिप्परी सबरी पिछुक्सस्त्रसे य। काउंबरि क्रस्थमिर बोद्धन्ता देव-दाली य ॥ २ ॥ तिलए लउए छताहसिरीसे सत्तवसद्धिवसे । लोद्ध्यवचंद्रणञ्जूणणीमे कुडए क्यंबे य ॥ ३ ॥ जेयावचे तहप्यगारा । एएसि णं मूला वि असंखेळजीविया, कंदा वि. संधा वि. तया वि. साळा वि. पवाळा वि । पता पत्तेयजीविया । प्रप्फा क्षणेगजीविया । फला बहुबीयगा । सेसं बहुबीयगा । सेसं स्वन्धा ॥ ३३ ॥ से कि तं गुच्छा ? गुच्छा अणेगविद्वा पकता । तंत्रहा—बाइंगणिसहरुशुष्टई व तह कव्यरी य जासमणा । रूबी आडह जीली तलसी तह माउलिंगी य ॥ १ ॥ कच्छंभरि विप्प-लिया अगसी बसी य कायमाईया। बुच् पडोलकंदिक वितव्या बत्युके बयरे ॥ २ ॥ पत्तठर सीयउरए इयह तहा अवसए व बोद्धव्ये । श्रिमगुंडिय क<u>र्</u>मांबरि अत्यई सेव तालउडा ॥ ३ ॥ सम्मयामकासमुद्दगभग्याङगसामसिंदवारे य । करमहभद्रस्यगक्री-रएरावणमहित्वे ॥ ४ ॥ जाउलगमानपरिकीगयमारिविकव्यकारिया मंदी । जावह केमह तह गंज पाढका दासिअंकोहे ॥ ५ ॥ जेमावचे तहप्पमारा । सेतं सुख्या ॥ ३४ ॥ से कि तं गुम्बा ? सुम्बा क्लेजविद्या प्रकृता । तंजहा-सेरियए लोमान्त्रिय-कोरंटवर्वस्थाकमानोजी । पिहनपावकमानरकजाय सह सिंदवारे य ॥ १ ॥ आई मोग्गर तह अधिया व तह सक्रिया व वासंती । वत्युक क्ट्युक सेवास गंठि समवं-तिया चेव श २ ॥ वंपनवाहै महाबीह्या य कंदी तहा सहावाई । एक्सबेसागारा हवंति सुम्बा अधीयका ॥ ३ ॥ क्तं समा ॥ ३५ ॥ से कि तं कवाको ! कवाको अणैगविहाको प्रवताको । संबद्धा-प्रतकका मागस्त्रक्रसोगनंपपस्त्रा स मूनस्त्रा । वणस्त्रवाहितिस्त्र सम्प्रकृतसङ्ग्रेयसाम्बद्धाः ॥ स्रोधारचे तक्षणगारा । सेतं क्यांग्रेस १६॥

से कि तं वहीओ ? वहीओ अणेगविहाओ पनताओ । तंजहा-पूसफडी कार्लिंगी तुंबी तउसी य एलबालुंकी । घोसाडइ पंडोला पंचेगुलिया य णीली य ॥ १ ॥ कंट्रया कड्ड्रया कडोडई कारियहर्इ सुभगा । स्वयंत्रय वागुलीया पा[व]वही देव-दाली य ॥ २ ॥ अप्फोया अङ्मुत्तगणागलया कण्हसूरवाही य । संघटसमणसा वि य जासुक्णकृतिंदक्ष्णी य ॥ ३ ॥ सुद्दिय अंबावह्नी छीरविराठी जयंति गोवाली । पाणीमासावही गुंजावही य बच्छाणी ॥ ४ ॥ ससबिंदुगोत्तफुसिया गिरिकण्णइ मालुया य अंजणई। दहिफोह्द कागणि मोगली य तह अहसोदी य ॥ ५ ॥ जेयावहे तह-प्पगारा । सेतं बाहीओ ॥ ३७ ॥ से किं तं पब्बगा ? पच्चगा अणेगविहा पन्नता । तंजहा-इक्ख य इक्खुवाडी वीरण तह इकडे भमासे य । सुंठे सरे य वेते तिमिरे ्र सैयपोरगणके य ॥ ९ ॥ वंसे वेल्र कणए कंकावंसे य चाववंसे य । उदए कुडए विमए कंडावेळ य कहाणे ॥ २ ॥ जेयावजे तहप्पगारा । सेतं पव्यगा ॥ ३८ ॥ से किं तं तणा ? तणा अणेगविहा पमता । तंजहा-सेडियमंतियहोतियदव्भक्ते पव्वए य पोड-इला । अजुण असाढए रोहिबंसें सुयवेयखीरमुसे ॥ १ ॥ एरंडे फुरुविंदे करकर मुट्टे तहा विभंग य । महरतपञ्चरयसिप्पिय बोद्धव्वे सुंकलितणे य ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा । सेतं तणा ॥ ३९ ॥ से किं तं वलया ? वलया अणेगविहा पश्चता । तंजहा--तालतमाळे तकलि तोयलि साली य सारकक्षाणे। सरले जावह केयह कयली तह धम्मरुक्ते य ॥ १ ॥ भूयरुक्तिहिंगुरुक्ते रुवंगरुक्ते य होइ बोद्धव्वे । पूयफरी खज्री बोद्धन्या पालिएरी य ॥ २ ॥ जेबावने तहप्पगारा । सेतं वल्या ॥ ४० ॥ से कि तं हरिया ? हरिया अणेगविहा पश्ता । तंजहा-अज्जोरहवोडाणे हरियग तह तंदुकेजनतणे य। बत्युलपोरग[अंजीर]पोइवझी य पालका ॥ १ ॥ दगपिप्पली य दव्वी सोत्थियसाए तहेव बम्ही य । मुलगसरिसव अंतिकसाएय जियंतए चेव ॥ २ ॥ तुलसी कृष्ट उराक्ने फिष्कए अजए य भ्यणए। चोरगदमणगमस्यग सयपुर्णिवीवरे य तहा ॥ ३ ॥ जेमावने तहप्पमारा । सेतं हरिया ॥ ४१ ॥ से कि तं ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णताओ । तंजहा-सालीवीहीगोहूमजवजवजवकळमसूर-तिळमुग्गमासणिप्कावकुळत्यकालिसंदसतीलपलिमंथगव्यसीकुसंमकोहवकंगुराल्याव-रा(रह)सामकोव्ससणसरिसवमूलमबीया । जेयावने तहप्पगारा । सेतं ओसहीओ ॥४२॥ से कि तं जलस्हा ? जलस्हा अणेगविहा पश्ता । तंजहा-उद्प्, अवप्, पण्ण्, सेवाले, कलंबुगा, हडे, करोस्या, कच्छ, माणी, उप्पत्ते, पश्मे, इसुए, गलिगे, सुभए, सोगंचिए, पोण्डरीयए, महापोण्डरीयए, समपत्ते, सहस्सपत्ते, कल्हारे, क्रोकणदे, भरविदे, तामरसे, मिसे, मिसमुणाके, पोक्सके, पोक्सकरवलए, जेयावहे तहप्प-

गारा । से तं जलहहा ॥ ४३-१ ॥ से कि तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पश्चता । तंजहा-आए, काए, कृहणे, कुणके, दव्वहलिया, सप्फाए, सज्झाए, छत्तोए, वंसी, णहिया, कुरए । जेयावने तहप्पगारा । सेतं कहणा । जाणाविद्वसंठाणा स्वन्ताणं एगजीविया पता । खंघा वि एगजीवा तालसरलणालिएरीणं ॥ १ ॥ जह सगलसरि-सवाणं सिळेसमिस्साण बहिया बही। पत्तेयसरीराणं तह होन्ति सरीरसंघाया ॥ २ ॥ जह वा तिलपप्पिडिया बहुएहिं तिलेहि संहया संती। पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेर्त पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया ॥ ४३-२ ॥ से कि तं साहारणमरीरबायरवणस्सइकाइया ? साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा पत्रता । तंत्रहा-अवए पणए सेवालें लोहिणी[जाणिया] थिह थिमगा । अस्सकर्ती सीहिकजी सिउंढि तत्तो मुसंदी य ॥ १ ॥ रुख्कण्डरिया जीरू छीर्रावराठी तहेव किटी य । हालिहा सिंगबेरे य आलुगा मूलए इय ॥ २ ॥ कंबूया कलुकड महुपोवलई तहेव महर्सिगी । णीरुहाँ सप्पद्मग्रंथा छिन्नरहा चेव बीयरहा ॥ ३ ॥ पाडा मियवाछंकी महुररमा चेव रायवही य । पडमा य माढरी दंती चंडी किद्विति यावरा ॥ ४ ॥ मामपण्णि मुग्गपण्णी जीवियरसहे य रेणुया चेव । काओली खीरकाओली तहा भंगी नहीं इय ॥ १५ ॥ किमिरासि महमत्था णंगलई पेलुगा इय । किण्डे पउन्ने य इदे हर-तणुया चेव लोगाणी ॥ ६ ॥ कष्टकंदे बज्जे सूरणकंदे तहेव खहुडे । एए अणंतजीवा जेयावने तहाविहा ॥ ७ ॥ तणमूलकंदमूळे वंसीमूळेति यावरे । संक्षिजमसंखिजा बोचव्वाऽणंतजीवा य ॥ ८ ॥ सिंघाडगस्स गुच्छो अणेगजीवो उ होइ नायव्वो । पता पत्तेयजीया दोचि य जीवा फळे अणिया ॥ ९ ॥ जस्स मूलस्स भगस्स समो भंगो पदीसह । अणंतजीवे उ से मृत्रे जेयावजे तहाविहा ॥ १० ॥ जस्स कंद्रस्स भगास्स समो भंगो पदीसह । अर्णतजीवे उ से कंदे जेयावने तहाविहा ॥ ११ ॥ जस्स खंधस्स भग्गस्त समो भंगो परीसइ । अर्णतजीवे उ से खंधे जेगावके तहाविहा ॥ १२ ॥ जीसे तयाए भग्गाए समी मंगो परीसए। अणंतजीवा तया सा उ जेयावना तहाविहा ॥ १३ ॥ जस्स सालस्स मनगस्स समो मंगो पदीसए । अणंतजीवे य से साळे जे-याको तहाविहा ॥ १४ ॥ जस्स प्वाळस्स मगगस्स समो भंगो पदीसए । अणंत-जीवे पवाछे से जेयावने तहाविहा ॥ १५ ॥ जस्स फ्तस्स भगस्स समो भंगो पदी-सए । अणंतजीवे उ से पत्ते जेयाको तहाविहा ॥ १६ ॥ जस्स पुप्फरस भग्गस्स समो भंगो प्रवीसए । अणंतजीवे उ से पुष्फे जेयावने तहाविहा ॥ १७ ॥ जस्स फलस्स भगस्स समी भंगो पढीसए। अणंतजीवे फले से उ जेवावजे तहाविहा ॥ १८॥ जस्स बीवस्स भगगस्य संमो भंगो पदीसए। वर्णतजीवे उ से बीए जेया-

वचे तहाविहा ॥ १९ ॥ जस्स मूलस्स भगनस्स हीरो भंगो पदीसए । परित्तजीवे उ से मुखे जेयावजे तहाविहा ॥ २०॥ जस्स कंदरस भग्गस्स हीरो भंगो पवीसए। परित्तजीवे उ से कंदे जेयावने तहाविहा ॥ २१ ॥ जस्स संघरस भगगस्स हीरो मंगो परीसए। परित्तजीवे उ से खंधे जेवावने तहाविहा ॥ २२ ॥ जीसे तथाए भग्गाए हीरो भंगो पदीसए । परित्तजीवा तया सा उ जेयावजा तहाबिहा ॥ २३ ॥ जस्स साळस्य भगगस्य हीरो भंगो पदीसए । परित्तजीवे उ से साले जेयावने तहाविहा ॥ २४॥ जस्स पबालस्स भगास्स हीरो भंगो पदीसए। परित्तजीवै पवाले उ जेयावने तहाबिहा ॥ २५ ॥ जस्स पत्तस्स भग्गस्स हीरो भंगो पदीमए । परिनर्जावे उ से पत्ते जेयावने तहाविहा ॥ २६ ॥ जस्य प्रप्फरस भम्मरस हीरो भंगो पदीसए । परित्तजीवे उ से पुष्के जैयावके तहाविहा ॥ २७॥ जस्स फलस्स भगस्स हीरो भंगो पदीसए । परिताजीवे फले से उ जेबावने तहाबिहा ॥ २८॥ जस्य बीबस्स भगगस्स हीरो भंगो पदीसए । परित्तजीवे उ से बीए जेयावने तहाविहा ॥ २९ ॥ जस्स मृलस्स बद्धाओ छही बहल्यरी भवे। अणंतजीवा उ सा छही जेयावचा तहाविहा ॥ ३०॥ जस्स कंदस्स बद्धाओं छड़ी बहलगरी भवे । अर्णतर्जाबा उ सा छड़ी जेगावजा नहाविहा ॥ ३९ ॥ जस्स खंधस्स बहाओ छही बहलगरी भवे । अणंतजीवा उ मा छही जे-यावना तहाविहा ॥ ३२ ॥ जीसे सालाए कहाओ इड़ी बहलगरी भने । अणंतजीवा उ सा छाडी जेयाबजा तहाविहा ॥ ३३ ॥ जस्स मुख्यस बद्धाओ छाडी नुपुयरी भवे । परित्रजीवा उ सा छक्री जेगावचा तहाविहा ॥ ३४ ॥ जस्स कंदस्स कदाओ छक्री तपुथरी भवे । परिताजीवा उ सा छाडी जेयावका तहाबिहा ॥ ३५ ॥ जस्स खंबस्स कहाओं छही तण्यरी भवे। परितर्जावा उ सा छही जेयावना तहाविहा ॥ ३६ ॥ जीसे सालाए कहाओ छही तण्यरी भवे। परित्रजीना उ सा छही जेयावसा तहा-विहा ॥ ३७ ॥ वकार्ग भजमाणस्य गंठी चुण्यच्यो भवे । पुडविसरिसभएण अणंत-जीवं वियाणिह ॥ ३८ ॥ गुढछिरागं पर्त सच्छीरं जं व होइ निच्छीरं । जं पि य पणद्रसंभिं अणंतजीवं वियाणाहि ॥ ३९ ॥ युष्का जलमा यलमा य बिंटवदा य नालबद्धा य । संखिजमसंखिजा बोद्धव्याऽणेतजीवा य ॥ ४० ॥ जे केंद्र नाकिया-बद्धा पुष्फा संस्क्रिजनीविया भागया । णिहुया अर्णतजीवा जेयावजे तहाविहा ॥४१॥ परमुप्पछिणीकंदे अंतरकंदे तहेव ब्रिक्की य । एए क्रणंतजीवा एगी जीवो विसम्मास ॥ ४२ ॥ पलंह ल्ह्सुणकंदे य कंदकी य कुदुंबए । एए परिताजीवा जेयावने तहाविहा ॥ ४३ ॥ परमुप्पक्रमरिकाणं समगरोगंत्रियाण य । सरविंदकोकवाणं सववत्तसङ-स्सपताणं ॥ ४४ ॥ विंटे बाहिरपता य कविका चेव एकपीवस्स । खब्जितरगा पता

पत्तेयं केसरा मिंजा ॥ ४५ ॥ वेणुनलङ्क्खुवाडियसमासङ्क्ख् य इक्कडे रंडे । करकर मुंठि विद्वंगू नणाण तह पञ्चगाणं च ॥ ४६ ॥ अच्छि पञ्चं पलिमोडओ य एगस्स होंति जीवस्स । पत्तेयं पत्ताइं पुष्फाइं अणेगजीवाइं ॥ ४७ ॥ पुस्सफळं कालिंगं तुंबं तरसेलबालबालंकं । घोसाइयं पंडालं तिंद्यं चेव तेंद्सं ॥ ४८ ॥ विंटससारतया॰ एबाई इवंति एगजीवस्स । पत्तेयं पत्ताई सकेमरमकेसरं मिंजा ॥ ४९ ॥ सप्फाए सङ्झाए उच्चेहलिया य कहणकुंदुके । एए अणंनजीवा कुंदुके होइ भयणा उ ॥५०॥ बीए जोजिन्भूए जीवो बक्स सो व असो वा। ओऽवि य मूळे जीवो सोऽवि य पत्ते पढमयाए ॥ ५१ ॥ सब्बोऽवि किसलको खळु उगगममाणो अर्णतको भणिको । सो चेव विवद्वंतो होइ परित्तो अणंतो वा ॥ ५२ ॥ समयं वक्कंताणं समयं तेसि मरीरनिव्यत्ती । समयं आणुमाहणं समयं ऊमासनीसामी ॥ ५३ ॥ इहस्स उ जं गहणं बहुण साहारणाण तं चेव । जं बहुयाणं गहणं समासभी तं पि इकस्स ॥५४॥ साहारणमाहारो साहारणमाणुपाणगढणं च । साहारणजीवाणं साहारणस्वन्वणं एयं ॥ ५५ ॥ जह अयगोलं भंतो जाओ तत्ततविषज्ञसंकासो । सन्वो अगणिपरि-णओ निगोयजीने तहा जाण ॥ ५६ ॥ एगस्स दोण्ह तिण्ह व संख्रिजाण व न पासिउं सका । दीसंति सरीराइं निगोयर्जावाणऽणंताणं ॥ ५७ ॥ लोगागासपएसे निगोयजीवं ठवेहि इकिकं। एवं मविज्यमाणा हवंति लोगा अणंता उ ॥ ५८॥ लोगागासपएसे परित्तजीवं ठवेहि इक्किं । एवं मविज्ञमाणा इवंति लोगा असंखिजा ॥ ५९॥ पत्तेया प्रवक्ता प्रयरस्य असंख्यागमिता उ । लोगाऽसंखा प्रवत्त्रयाण साहारणमणंता ॥ ६० ॥ एएहिं सरीरेहिं पत्रक्खं ते परुविया जीवा । सहमा आणागिज्ञा चक्खप्कासं न ते इंति ॥ ६१ ॥ जेयावचे तहप्पगरा । ते समा-सओ दुविहा पक्षता । तंजहा-पजतागा य अपजतगा य । तत्थ णं जे ते अपज-त्तगा ते णं असंपत्ता । तत्य णं जे ते पजनगा तेसि णं वचावेसेणं गंघावेसेणं रमादेसेणं फासादेसेणं सहस्सरगसो विहाणाई, संखिजाई जोणिप्पसहस्यसहस्साई। पज्जनगणित्साए अपज्जनगा बक्कमंति । जत्थ एगो तत्थ सिम संखिजा, सिम असं-किजा, सिथ अर्णता । एएसि णं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्याओ तंजहा-संदा य कंदमूला य, स्वस्त्रमूला इवाबरे । गुच्छा य गुम्मा वही य, वेणुवाणि तणाणि य ॥ १ ॥ पडमप्पर संबादे इदे य सेवाल किन्हए पणए । अवए य कच्छ भाजी कंदुकेगूमबीसहमे ॥ २ ॥ तबछक्कीपकाछेसु पर्तपुष्फफछेसु य । मूळमामण्डाबीएस जोणी कत्सह कितिया ॥ ३ ॥ सेर्त साहारणसरीरवायरवणस्सहकाहवा । सेर्त वायर-यणस्त्रकाह्या । सेतं वणस्त्रकाह्या । सेतं एगिदिया ॥४३-३॥ से कि तं वेदंदिया है

बेइंदिया अणेगविहा पनता । तंजहा-पुलाकिमिया, कुच्छिकिमिया, गंह्यलगा, गोलोमा, णउरा, सोमंगलगा, वंसीमुहा, मृझ्मुहा, गोजलोया, जलोया, जालाउया, सेंबा, संखणगा, बुल्ला, खुल्ला, गुलया, खंघा, वराडा, सोत्तिया, मुत्तिया, कलुया-बासा, एगओवत्ता, बुहुओवत्ता, नंदियावता, संबुद्धा, माइवाहा, सिप्पिसंपुडा, चंदणा, समुद्दलिक्खा, जेयावने तहप्पगारा । सब्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा । ते समायओ दुविहा पश्चता । तंजहा-पञ्चत्तगा य अपज्जत्तगा य । एएसि णं एवमाइ-याणं बेइंदियाणं पज्जतापज्जताणं सत्त जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयमहस्सा भवंतीति मक्खार्य । सेतं बेडंदियसंसारसमावनजीवपनवणा ॥ ४४ ॥ से कि तं तेइंदियसं-सारसमावनजीवपन्नवणा ? तेइंदियसंसारसमावनजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नता । तंजहा-ओवस्या, रोहिणिया, कुंशू, पिपीलिया, उद्दंसगा, उद्देहिया, उक्कलिया, उप्पाया, उप्पाडा, नणाहारा, क्ट्वाहारा, मालुया, पत्ताहारा, नणवेंटिया, पत्तवें टिया, पुष्फवेंटिया, फलकेंटिया, बीयबेंटिया, तेबुरणमिजिया, तओसिमिजिया, कप्पासित्थमिंजिया, हिल्लिया, झिल्लिया, झिंगिरा, किंगिरिडा, बाहुया, लहुया, मुभगा, सोत्रत्थिया, मुयबेंटा, इंदकाइया, इंदगोवया, तुरुतुंचगा, कुच्छलवाहगा, ज्या, हालाहला, पिसुया, सयबाइया, गोम्ही, हत्विसोंडा, जेयावने तहप्पगारा । सब्वे ते संगुच्छिमा नपुंसगा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तंत्रहा-पज्जतमा य अपजनगा य । एएसि णं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पजनापजनाणं अह जाईकुलको-डिजोणिप्पमुहमयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । सेतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन-वणा ॥ ४५ ॥ से किं तं चडरिंदियसंसारसमावनजीवपनवणा ? २ अणेगविहा पन्ना । तंजहा-अधियपत्तियमच्छियमसगा कीडे तहा पर्यंगे य । ढंकृणकुक्कडकुक्कड-नंदावते य सिंगिरडे ॥ किष्हपत्ता, नीलपत्ता, लोहियपत्ता, हालिहपत्ता, सुक्रिलपत्ता, चित्तपक्खा, विचित्तपक्खा, ओहंजलिया, जलचारिया, गंभीरा, णीणिया, तंतवा, अच्छिरोडा, अच्छिवेहा, सारंगा, नेउरा, दोला, भमरा, भरिली, जरुला, तोष्टा, विद्युया, पत्तविच्छुया, छाणविच्छुया, जलविच्छुया, पियंगाळा, कणगा, गोमयकीडा, जेवाक्के तहप्पगारा । सब्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तंजहा-पज्जतगा य अपजतगा य । एएसि णं एवमाइयाणं चड़रिंदियाणं पज्जताप-जनाणं नव जाइकुळकोडिजोणिप्यमुहसयसहस्साई भवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउरि-दियसंसारसमावनजीवपनवणा ॥ ४६ ॥ से किं तं पंचेन्द्रियसंसारसमावनजीवपन-वणा ? २ चडव्विहा पक्ता । तंजहा-नेरहयपंचिवियसंसारसमामकजीवपश्चवणा. तिरिक्खजीणियपंचिन्दिवसंसारसमावकजीवपक्षवणा, मणुस्सपंचिन्दियसंसारसमावक-

जीवपन्नवणा, देवपंचिन्दियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ ४७ ॥ से कि तं नेरडया? नेरइया सत्तविहा पञ्चता । तंजहा-१ रयणप्पभापुढविनेरइया, २ सक्दरप्पभापुढवि-नेरइया, ३ वालुयप्पभापुढविनेरइया, ४ पंकप्पभापुढविनेरइया, ५ घूमप्पभापुढविन नेरइया, ६ तमप्पभापुढविनेरइया, ७ तमतमप्पभापुढविनेरइया। ते समासभो दुविहा पन्नता । तंत्रहा-पज्जत्तमा य अपज्जतमा य । सेतं नेरहया ॥ ४८ ॥ से कि तं पंचेंदियतिरिक्त्तजोणिया ? पंचिंदियतिरिक्त्रजोणिया तिविहा पश्चता । तंजहा--१ जलगरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य, २ थलगरपंचिन्दिगतिरिक्खजोणिया य, ३ सहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य ॥ ४९ ॥ से कि तं जलयरपंचिन्दियतिरि-क्सजोणिया ? जलयरपंचिन्दियतिरिक्सजोणिया पंचिवहा पन्नता । तंजहा-१ मच्छा, २ कच्छभा, ३ गाहा, ४ मगरा, ५ सुंसुमारा । से कि तं मच्छा ? मच्छा अणेग-विहा पत्रता । तंजहा-सण्हमच्छा, खबह्रमच्छा, जुंगमच्छा, विज्ञाडियमच्छा, इलि-मच्छा, मगरिमच्छा, रोहियमच्छा, हलीसागरा, गागरा, वडा, वढगरा, गब्भया, उसगारा, तिमी, तिर्मिगेला, णक्का, तंदुलमच्छा, कणिकामच्छा, सासी, सस्थिया-मच्छा, लंभणमच्छा, पडागा, पडागाइपडागा, जेयावने तहप्पगारा । सेतं मच्छा । से कि नं कच्छमा ? कच्छमा दुविहा पत्रता । तंजहा-अद्विकच्छमा य मंसकच्छमा य । सेत्तं कच्छभा । से कि तं गाहा ? गाहा पंचिवहा पणता । तंजहा-- १ दिली, २ वेंडगा, ३ मुद्धया, ४ पुलवा, ५ सीमागारा । सेतं गाहा । से कि तं मगरा ? मगरा दुविहा पश्चता। तंजहा-१ सींडमगरा य, २ मञ्जमगरा य। सेत्तं मगरा १ से किं तं संसमारा ? संसमारा एगागारा पत्रता । सेत्तं संसमारा । जेयावने तहप्यगारा । ते समासओ दुविहा पनता । तंजहा—संमुच्छिमा य गञ्भवकंतिया य । तत्य गं जे ते संमुच्छिमा ते सब्बे नपुंसगा। तत्थ णं जे ते गन्भवकंतिया ते तिविहा पश्चमा । तंजहा-दृत्वी, पुरिसा, नपुंसगा । एएसि णं एवमाइयाणं जलयरपंचिदि-यतिरिक्सजोषियाणं पजनापजनाणं अद्धतेरसजाङ्कुलकोडिजोणिप्यमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्कायं । सेतं अलगरपंचिषियतिरिक्खजोणिया ॥ ५० ॥ से कि तं थल-यरपंचिदियतिरिक्खजोणिया ? थरुयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पद्मता । तंत्रहा-चउप्पयम्बर्यरपंचिन्दिगतिरिक्खजोषिया य परिसप्पयलयरपंचिन्दिगतिरि-क्सजोणिया य । से कि तं चरुप्पयथलयरपंचिन्दियतिरिक्सजोणिया ! चरुप्पयथल-यरपंचिन्दियतिरिक्सबोणिया चडव्यिहा पक्ता । तंत्रहा-एगखरा, विखरा, गंडीपया, सणप्कमा । से कि ते एगक्सा? एगक्सा अनेमविहा पत्नता । तंत्रहा-अस्सा, अस्स-तरा, घोडगा, गर्भा, गोरक्सरा, कंब्रुया, शिरिकंब्लगा, आवत्तमा, जेयाको तह-

प्पगारा । सेतं एगखुरा । से कि तं दुखुरा ? दुखुरा अणेगविहा पन्नता । तंजहा-उष्टा, गोणा, गवया, रोज्झा, पसया, महिसा, मिया, संबरा, वराहा, अया, एलगरुस्तर-भचमरकुरंगयोकन्नमाई, जेयावने तहप्पगारा । सेतं दुखुरा । से कि तं गंडीपया ? गंडीपया अणेगविहा पनता । तंजहा-हत्बी, हत्थीपूयणया, मंकुणहत्बी, सगा(ग्ना), गंडा, जेयावने तहप्पगारा। सेतं गंडीपया। से किं तं सणप्पया ? सणप्पया अणगावहा पनगा। तंत्रहा-सीहा, वग्या, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्तरा, वियाला, विडाला, सुणगा, कोलसुणगा, कोकंतिया, ससगा, चित्तगा, चिक्रलगा, जेयावजे तहप्यगारा । सेतं सणप्पया । ते समासओ दुविहा पश्चता । तंत्रवहा-संमुच्छिमा य गब्भवक्वन्तिया य । तत्य णं जे ते संमुच्छिमा ते सध्वे नपुंसगा । तत्य णं जे ते गञ्भवकंतिया ते तिविहा पन्नता । तंजहा-इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा । एएसि णं एवमाइयाणं थल्य-रपंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं प्रजन्तापजनाणं दस जाइकुलकोडिजोणिप्यमुद्दसयस-हरसा भवन्तीति मक्खायं। सेनं चउपप्रथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ॥ ५९ ॥ से कि तं परिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ? परिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरि-क्खजोणिया द्विहा पन्नता । तंजहा-उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य भुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया य ॥ ५२ ॥ से कि तं टरपरिसप्पथल-यरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिया चउ-व्विहा पश्चता । तंजहा-अही, अयगरा, आसालिया, महोरगा । से कि तं अही ? अही दिवहा पनता । तंजहा--दन्वीकरा य मठलिणो य । से किं तं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अंगगविहा पत्रता । तंजहा-आसीविमा, दिद्वीविसा, उग्गविसा, भोग-विसा, तयाविसा, लालाविसा, उस्सासविसा, नीसासविसा, कण्हसप्पा, सेयसप्पा, काओदरा, दज्जापुष्का, कोलाहा, मेलिमिंदा, सेसिंदा, जेयाको तहप्पगारा । सेत्तं दम्बीकरा । से किं तं मजलियो ! मजलियो अमेगबिहा पनता । तंत्रहा—दिम्बागा, गोणसा, कसाहीया, वइउला, चित्तलिणो, मंडलिणो, मालिणो, अही, अहिसलागा, वासपडागा, जेयावने तहप्पगारा । सेतं मठलिणो । सेतं अही । से किं तं अयगरा ? अयगरा एगागारा पनता । सेतं अयगरा ॥ ५३ ॥ से कि तं आसालिया ? किंद्र जं भंते । आसास्त्रिया संमुच्छद् १, गोयमा । अंतो मणुत्सकेते अश्वाहकोन्न दीवेन्न, निष्वा-चाएणं पनरसद्ध कम्मभूमीस, वाघागं पहुच पंचस महाविदेहेस, चक्रवहिसंबावारेस, वासुदेवसंघावारेस, बलदेवसंघावारेस, मंडलिक्संघावारेस, महामंडलिक्संघावारेस. गामनिवेसेस, णगर्निवेसेस, विवासनिवेसेस, खेडनिवेसेस, कन्बडनिवेसेस, महंबनि-वेसेस, दोणमुहनिवेसेस, परणनिवेसेस, आमरनिवेसेस, आसमनिवेसेस, संबाहनिवे- सेसु, रायहाणीनिवेसेसु, एएसि णं चेव विणासेसु एस्य णं आसालिया संमुच्छइ । जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहभागमिताए ओगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाई तय-गुरुवं च णं विक्तंभवाहक्रेणं भूमिं दालिमा णं समुद्रेड. असबी मिच्छादिद्री अण्णाणी अंतोमुहत्तऽद्धाउया चेव कार्ल करेइ। सेत्तं आसालिया ॥ ५४॥ से किं तं महोरगा? महोरगा अणेगविहा पन्नता । तंजहा-अत्येगङ्या अंगुरुं पि, अंगुरुपुहत्तिया वि, वियत्थि पि, वियत्थिपुहुत्तिया वि, रयणि पि, रयणिपुहुत्तिया वि, कुच्छि पि, कुच्छि-पुहत्तिया वि, धणुं पि, धणुपुहत्तिया वि, गाउयं पि, गाउयपुहत्तिया वि, जोयणं पि, जोयणपुरुत्तिया वि, जोयणसयं पि, जोयणसयपुरुत्तिया वि, जोयणसहस्सं पि। ते णं बळे जाया, जलेऽवि चरंति थळेऽवि चरन्ति, ते णत्थि इहं, बाहिरएस वीवेस समुद्दएसु हवन्ति, जेयावन्ने तहप्पगारा । सेनं महोरगा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तंजहा-संमुन्छिमा य गन्मवकंतिया य । तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सब्वे नपुं-सगा । तत्य णं जे ते गरूभवकंतिया ते तिविहा पनता । तंजहा-इत्थी, पुरिसा, नपंसगा । एएसि ण एवमाइयाणं पजनापजनाणं उरपरिसप्पाणं दसजाइकलकोडि-जोणिप्पसहस्यसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । सेतं उर्परिसप्पा ॥ ५५ ॥ से कि तं भयपरिसप्पा ! भूयपरिसप्पा अभैगविहा पत्रता । तंत्रहा-नउला, सेहा, सरडा, सला, सरेटा. सारा. खोरा. घरोइला, विस्तंभरा, मूसा, मंगुसा, पयलाइया, छीरविरालिया, जोहा. चरुप्पाइया, जेयावने तहप्पगारा । ते समासको दविहा पनता । तंजहा-संमच्छिमा य गब्भवकंतिया य । तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सब्बे भपुंसगा । तत्थ णं जे ते गन्भवकंतिया ते तिविहा पश्चमा । तंजहा-इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा । एएसि णं एवमाइयाणं पजनापजनाणं भुयपरिसप्पाणं नव जाइकुलकोडिजोणिप्पमुह-सयसहस्सा भवन्तीति भक्खायं । सेतं भुयपरिसप्पथलयरपंत्रिदियतिरिक्खजोणिया । सेतं परिसप्पयलयरपंचिदियतिरिक्खजोषिया ॥ ५६ ॥ से कि तं सहयरपंचिन्दिय-तिरिक्सजोषिया ! सहयरपंचिन्दियतिरिक्सजोषिया चउव्यद्धा पत्रता । तंजहा---चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुरगपक्खी, विग्रयपक्खी। से कि तं चम्मपक्खी ? चम्म-पक्की अणेगविहा पक्ता । तंजहा-वगुली, जलोया, अविहा, भारंडफ्क्की, जीवं-जीवा, समुद्दायसा, सम्जत्तिया, पविन्तविराहिया, जेयावश्चे तहप्पगारा । सेत्तं सम्म-पक्खी। से कि तं लोसपक्खी ? होसपक्खी अणेगविहा प्रका। तंत्रहा—दंका, कंका. इन्ता, वायसा, बहागा, हंसा, कल्हंसा, रायहंसा, पायहंसा, आडा, सेडी, बगा, बलागा, पारिप्पचा, कोंचा, सारसा, मेसरा, मस्रा, मकरा, सत्तहस्था, गहरा, पींडरिया, कामा, कार्मिख्या, बंजुलबा, ति तिरा, बहना, कावना, कवीबा, कविंजला,

पारेवया, चिडगा, चासा, कुक्कुडा, सुगा, बरहिणा, सराणसलागा, कोइला, सेहा, वरिल्लगमाई । सेत्तं कोमपक्खी । से कि तं समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पनता । ते णं नत्थि इहं, बाहिरएस दीवसमुद्देस भवन्ति । सेतं समुग्गपक्सी । से किं तं विययपक्की ? विययपक्की एगागारा पन्नता । ते णं नत्य इहं, बाहिरएस दीवसमुद्देस भवन्ति । सेतं विययपक्की । ते समासओ दुविहा पन्नता । तंजहा-संमुच्छिमा य गञ्भवक्षंतिया य । तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सन्वे नप्समा । तत्य णं जे ते गञ्भवकंतिया ते तिविहा पश्चता । तंजहा-हत्थी, परिसा, नपुंसगा । एएसि णं एवमाइयाणं सहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं पजनापजनाणं बारस जाइकलकोडिजोणिप्पमृहसयसहस्सा मबन्तीति मक्खायं । सत्तद्वजाइकलकोडिलक्ख नव अद्धतेरसाइं च । दस दस य होन्ति नवगा तह बारस चेव बोद्धव्या । सेलं सहयर्पचिन्दियतिरिक्सजोणिया । सेतं पंचिन्दियतिरिक्सजोणिया ॥ ५० ॥ से किं तं मणुरसा ? मणुरसा दुविहा पनता । तंजहा - संमुच्छिममणुरसा य गञ्जवक्वंतिय-मणुस्सा य ॥ ५८ ॥ से किं तं संसुच्छिममणुस्सा ? कहि णं मंते ! संसुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति ?, गोयमा ! अंतो मणुरसखेते पणयाजीसाए जोयणसयसहरसेस, अङ्गाइ-जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पनाए अंतरदी-वएस गन्भवक्षंतियमणुस्साणं चेव उचारेस वा. पासवणेस वा. खेळेस वा. सिंधाणएस वा, वंतेसु वा, पित्तेसु वा, पूर्सु वा, सोणिएसु वा, सुकेसु वा. सुकपुरगलपरिसाडेस वा, विगयजीवकलेवरेस वा, शीपुरिससंजोएस वा, णगरणिद्धमणेमु वा, सन्वेस चेव असुइह्राणेसु, एत्य णं संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति अंगुलस्स असंखेज्बर्भागमेत्राए ओगाहणाए । असनी मिच्छादिद्वी अण्णाणी सन्वाहि पजत्तीहि अपजत्तगा अंतोमुह-त्ताउया चेव कालं करेंति । सेतं संसुच्छिममणुस्सा ॥ ५९ ॥ से कि तं गब्भवद्यंति-यमणुस्मा ? गञ्मकातियमणुस्सा तिविहा पत्रता । तंत्रहा-कम्मम्मगा, अकाम-भगगा, अन्तरबीवगा ॥ ६० ॥ से किं तं अन्तरबीवगा ? अन्तरबीवगा अदाबीस-विहा पनता । तंजहा-१ एगोरुया. २ आभासिया. ३ वेसाणिया. ४ णंगोलिया. ५ हयकना, ६ गयकना, ७ गोकना, ८ सङ्खिकना, ९ आयंसमुद्दा, १० मेंडमुद्दा, ११ अयोगुहा, १२ गोमुहा, १३ आसमुहा, १४ हत्यिगुहा, १५ सीहमुहा, १६ वरवमुहा, १७ आसकला, १८ हरिकला, १९ अकला, २० कम्पपाउरणा, २१ उकामुहा, २२ मेहमुहा, २३ विजुमुहा, २४ विजुरंता, २५ घणदंता, २६ लहदंता. २७ गृढदंता. २८ सद्धंता । सेतं सन्तरबीवगा ॥ ६१ ॥ से कि तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसबिहा पश्ता । तंत्रहा-पंचाहें हेमवएहिं. पंचाहें

हेरण्णवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पंचहिं देवकुरुहिं, पंचहिं उत्तर-क्रहाँ । सेतं अकन्मभूमगा ॥ ६२ ॥ से कि नं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पनरसविहा पश्चता । तंजहा-पंचिंह भरहेहिं, पंचिंह एरवएहिं, पंचिंह महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पनता । तंजहा-आरिया य मिलक्ख य ॥ ६३ ॥ से किं तं मिलक्ख् ? मिलक्स् अणेगविहा पश्चता। तंत्रहा-सगा जवणा चिलायसवरबन्बरकायमुखंडोडभ-डगनिण्णगपक्कणियाञ्चलक्कागेंडसिंहलपारसगोधाकोंचसंबडइदमिलचिल्लपुलिंदहारो-सदोबवोक्काणगन्धाहारगपहरूपअञ्चलरोमपासपउसामलयायबंधयायस्थलिकुंकुणग-मेयपल्डबमाळवमगरआभासियाणङ्गचीणल्डसियखसाघासियणहरमोढडोंबिलगलओ-सप्योसकक्षेत्रअक्ष्वागृहणरोमगमरुमस्यचिलायविसयवासी य एवमाई। सेत्रं मिलक्ष ॥ ६४ ॥ से कि तं आरिया ? आरिया द्विहा पक्ता । तंजहा-इक्ट्रिपत्तारिया य अणिच्चिपत्तारिया य । से किं तं इच्चिपत्तारिया ? इच्चिपत्तारिया छव्विहा पजता । तंजहा-१ अरहंता, २ चक्कही, ३ बलदेवा, ४ वासुदेवा, ५ चारणा, ६ विज्ञा-हरा । सेतं इक्रिपतारिया । से किं तं अणिक्रिपतारिया ? अणिक्रिपतारिया नवविहा पश्चता । तंजहा-खेतारिया, जाइआरिया, कुलारिया, कम्मारिया, सिप्पारिया, भासारिया, नाणारिया, दंसणारिया, चरितारिया ॥ ६५ ॥ से कि तं खेतारिया ? सेतारिया अद्रक्ष्यचीसङ्गिहाणा पश्चता । तंत्रहा-रायगिह मगह चंपा. अंगा तह तामिकिति वंगा य । कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसी चेव कासी य ॥ ९ ॥ साएय कोसला गयपुरं च कुरु सोरियं कुसहा य । कंपित्रं पंचाला, अहिछता जंगला चेव ॥ २ ॥ बारवर्ड सोरडा. मिहिल विवेहा य वच्छ कोसंबी । नंदिपुरं संविद्धा, महिलपुरमेव मलया य ॥ ३ ॥ वहराड वच्छ वरणा. अच्छा तह मत्तिमावड दसण्णा । सोत्तियवई य चेवी, बीयमयं सिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महरा य सुरसेणा, पावा भंगा य मास पुरिवद्या । साबत्बी य कुनाला, कोडीवरिसं च लाढा य ॥ ५ ॥ सेयनिया वि य णयरी, केक्स्यअदं च आरियं भणियं । इत्युप्पत्तीं जिणाणं, चक्कीणं रामकण्हाणं ॥ ६॥ सेतं केतारिया ॥ ६६॥ से कि तं जाइआरिया ? जाइआरिया छन्यिहा पन्नता । तंजहा-अंबद्धा य कलिंदा विदेहा वेदमा इ य । हरिया चुंचुणा चेद छ एमा इच्याजाइओ ॥ सेरां जाइकारिया ॥ ६७ ॥ से कि तं कुलारिया ? कुलारिया छिनहा पक्ता । तंजहा-सम्मा, भोगा, राइचा, इक्सागा, णाया, कोरव्या । सेतं कुलारिया ॥ ६८ ॥ से कि तं कम्मारिया ! कम्मारिया भणेगविहा पनता । तंत्रहा-दोखिया, सोतिया, कवासिया, सुत्तवेयाकिया, भंडवेयाकिया, कोकाकिया, नरवाइ-निया, जेवावचे तहक्यारा । सेतं क्रमासिया ॥ ६६ ॥ से कि तं विष्यारिया है

ar-

सिप्पारिया अणेगविहा पत्रता । तंजहा-तुष्णागा, तंतुवाया, पद्यगारा, देयडा, वरुटा, छिनया, बहुपाउयारा, मुंजपाउयारा, छत्तारा, वज्झारा, पोत्थारा, छेप्पारा, चित्तारा, संखारा, दंतारा, भंडारा, जिज्ज्ञानारा, सेह्नारा, कोडिगारा, जेयावने तहप्पगारा । सेतं सिप्पारिया ॥ ७० ॥ से कि तं भासारिया ? भासारिया जे णं अद्भागहाए भासाए भासेति, जत्यऽवि य णं बंभी लिवी पवत्तइ। बंभीए णं लिबीए अञ्चारसविहे लेक्खविहाणे पन्नते । तंजहा-१ बंभी, २ जनणाणिया, ३ दोसापुरिया, ४ खरोटी, ५ पुरुखरसारिया, ६ भोगवइया, ७ पहराइया, ८ अंतरुखरिया, ९ अरुखरपृद्धिया, १० वेणइया, ११ निण्हह्या, १२ अंकलिबी, १३ गणियलिबी, १४ गंधव्यलिबी, १५ आयंसलिबी, १६ माहेसरी, १७ दोमिलिबी, १८ पोलिन्दी । सेतं भासारिया ॥ ७१ ॥ से कि तं नाणारिया ? नाणारिया पंचविहा पत्तना । तंजहा-आभिणिबोहि-यनाणारिया, सुयनाणारिया, ओहिनाणारिया, मणपज्जवनाणारिया, केवलनाणारिया । सेतं नाणारिया ॥ ७२ ॥ से कि तं दंसणारिया ! दंसणारिया दुविहा पश्चता । तंजहा-सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणारिया य ॥ ७३ ॥ से कि तं सरागदंसणारिया? सरागदंसणारिया क्सविहा पत्रता । तंत्रहा-निसग्गुवएसरुई आणारुई सुत्तवीयरद्भेव । अभिगर्मावत्याररुई किरियासंखेवयम्मरुई ॥ १ ॥ भूयत्येणाहिगया जीवाजीवे य पुण्ण-पावं च । सहसंमुद्याऽऽसवसंवरे य रोएड् उ निस्सम्गो ॥ २ ॥ जो जिणदिहे मावे चउव्विष्ठे सदहाइ सयमेव । एमेव नशहति य निसम्बद्धति नायव्यो ॥ ३ ॥ एए चेव उ भावे उवस्दि जो परेण सहहह । छउमत्येण जिणेण व उवएसख्रात नायको ॥ ४ ॥ जो हेउमयाणंतो आणाए रोयए प्रवयणं तु । एमेव नजहित य एसो आणारुई नाम ॥ ५ ॥ जो सुत्तमहिजन्तो सुएव ओगाइई उ सम्प्रतं । अंगेव बाहिरेण व सो सुत्तरहत्ति णायन्त्रो ॥ ६ ॥ एगेब अणेगाइं पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं । उदए व्य तेव्रविन्दू सो बीयस्हति नायव्यो ॥ ७ ॥ सो होइ अभिगमर्श्ह सुयनाणं जस्त अत्यओ दिहुं । इकारस अंगाइं पहणगा दिद्विवाओ य ॥ ८ ॥ दब्बाणं सन्वभावा सन्वपमाणेहि जस्स उवलदा । सन्वाहि नयविहाहि वित्यारह-इति नायव्यो ॥ ९ ॥ दंसणनाणनिति तवविषए सम्बसमिद्यतीद्य । जो किरिया-भावरुई सो खलु किरियारुई नाम ॥ १० ॥ अधिभगहियक्तिद्वी संखेवकारी होइ नायव्यो । अविसारको पवयणे अणभिमगहिको य सेसेस ॥ ११ ॥ जो अस्थिकाय-धम्मं युवधम्मं सञ्ज चरित्तधम्मं च । सहरह जिणामिहिर्यं सो धम्मस्हरित नायको ॥ १२ ॥ पर्मत्यसंथवो या सुरिद्वपरमत्यसेवका गावि । बावशक्दंसणवज्जभा स सम्मत्तसहरूणा ॥ १३ ॥ निरुसंकिय विश्वंसिय निव्यितिकित्वा अनुसरिकी य ।

उवबृह्यिरीकरणे वच्छक्रपमाक्णे अद्भा १४॥ सेतं सरागर्दसणारिया॥ ७४॥ से कि नं वीयरायदंसणारिया ? वीयरायदंसणारिया द्विहा पकता । तंजहा-उवसंतकसायवीयरायदंसणारिया य खीणकसायवीयरायदंसणारिया य । से किं तं उवसंतक्रमायवीयरायदंसणारिया ? उवसंतक्तायवीयरायदंसणारिया दुविहा पश्चता । तंजहा-पढमसमयउवसंतकसायवीयरायदंसणारिया य अपढमसमयउवसंतकसाय-वीयरायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयउवसंनकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायबीयरायदंसणारिया य । सेतं उवसंतकसायवीयरायदंसणा-रिया । से कि तं खीणकसायवीयरायदंसणारिया ? खीणकमायवीयरायदंसणारिया दुविहा पनता । तंजहा-छउमत्थखीणकसायबीयरायदंसणारिया य केवलिखीणकसाय-वीयरायदंसणारिया य । से किं तं छउमत्यखीणकतायवीयरायदंसणारिया ? छउ-मत्थाखीणकसायवीयरायदंसणारिया द्विहा पत्रता । तंत्रहा-सयंबुद्धछउमत्थाखीण-कसायवीयरायदंसणारिया य बद्धबोहियछउमत्यसीणकसायवीयरायदंसणारिया य । से कि नं सयंबुद्धउमत्यद्धीणकसायवीयरायदंसणारिया ? सयंबुद्धकुउमस्यद्धीण-कसायवीयरायदंसणारिया द्वविहा पनना । तंत्रहा-पढमसमयसयंबुद्धछउमस्यसीण-क्सायवीयरायदंसणारिया य अपहमसमयसयंबुद्धछन्नमत्वलीणकसायवीयरायदंसणा-रिया य । अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयसम्बद्धाः मत्यानीणकमायवीयरायदंताणारिया य । सेत्तं सर्यंबुद्धाः मत्य-खीणकसायवीयरायदंसणारिया । से किं तं बुद्धबोहियस्रउमत्यखीणकसायवीयराय-दंसणारिया ? बुद्धबोहियछउमस्यखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा प्रज्ञता । तंजहा-पढमसमयबुद्धबोहिक्सीणक्सायबीयरायदंसणारिया य अपढमसमयबुद्धबोहि-यछउमस्यसीणकसायवीयरायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयवुद्धबोहियछउमत्य-खीणकसाववीयरायदंसणारिया य अनिरमसमयवश्चनोडियछउमत्यखीणकसायवीयरा-यदंसणारिया य । सेतं इदयोडियक्टउमत्यसीणकतायवीयरायदंसणारिया । सेतं छउमत्थाखीणकसायवीयरायदंसमारिया । से कि तं केवछिचीणकसायवीयरायदंसणा-रिया ? केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया दुविहा पत्रता । तंजहा-सजीगि-केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अजोनिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणा-रिया य । से कि तं सजीनिकेवलिबीमकसाववीयरायदंसणारिया ? सजीविकेवलिबीण-क्सायवीयराबदंसवारिया द्वविद्या प्रवाता । तंबहा-पडमसम्यसजोगिकेवविव्यीणक्सा-यनीयरायदंसकारिका व अपरमसम्बद्धानिकेन्द्रिक्षीणक्साववीयरायदंसकारिया व । भहवा वर्गिमसमञ्जानिकेविकवीनकसाववीयरावदंसणारिया व अवरिगसमय-

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । सेतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीय-रायदंसणारिया । से कि तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया ? अजोगि-केवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया द्विहा पन्नता । तंत्रहा-पहमसमयअजोगि-केविल्सीणकसायवीयरायदंसणारिया य अपडमसमयअजोगिकेविल्सीणकसायवीय-रायदंसणारिया य । अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायदंसणारिया य । सेतं अजोगि-केविज्जीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेतं केविज्जीणकसायवीयरायदंमणारिया । सेतं खीणकसायवीयरायदंसणारिया । सेतं दंसणारिया ॥ ७५ ॥ से किं तं चरितारिया ? चरितारिया द्विहा पश्चता । तंजहा-सरागचरितारिया य वीयराग-चरित्तारिया य । से कि तं सरागचरित्तारिया ? सरागचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तंजहा-सुहमसंपरायसरागचरितारिया य बायरसंपरायमरागचरितारिया य । से कि नं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्ता । तंजहा-पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरितारिया य अपढमसमयसुहुम-संपरायसरागचरितारिया य । अहवा चरिमसमयसहमसंपरायसरागचरितारिया य अनिरमसमयसुहमसंपरायसरागनिरत्तारिया य । अहवा सहमसंपरायसरागनिरता-रिया दुविहा पन्नता । तंजहा-संकिलिस्समाणा य विमुज्ज्ञमाणा य । सेतं सुहमसंप-गयसरागचरित्तारिया । से किं तं बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? बायरसंपराय-सरागचरितारिया दुविहा पश्चता । नंजहा-पढमसमयवायरसंपरायसरागचरितारिया य अपटमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयबायरसंपराय-सरागचरितारिया य अचरिमसमयबाग्ररसंपरायसरागचरितारिया य । अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तंजहा---पिकाई य अपिकाई य । सेतं बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ॥ ७६ ॥ से कि तं वीयरायचरित्तारिया? वीयरायचरित्तारिया दुविहा पनता । तंजहा-उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसायवीयरायचरितारिया थ । से किं तं उवसंतकसायवीयरायचरितारिया? उवसंतकसायवीयरायचितारिया द्विहा पनता । तंत्रहा-पहमसमयउवसंतकसाय-वीयरायचरित्तारिया य अपदमसमय्यवसंतकसायबीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयउवसंतकतायवीयरायचरितारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीय-रायचरितारिया व । सेतं उवसंतकसायवीयरायचरितारिया । से कि तं खीणकसाय-नीयरायनरितारिया ? खीणकसायबीयरायनरितारिया द्वविद्या पन्नता । तंत्रहा-छउमत्यसीणकसायवीयरायचरितारिया य केविडेबीणकसायबीयरावचरितारिया य ।

से कि तं छउमत्यस्रीणकसायवीयरायचरित्तारिया ? छउमत्यस्रीणकसायवीयरायच-रिनारिया दुविहा पन्नता । तंजहा-सर्ययुद्धछउमस्थस्त्रीणकसायवीयरायचरित्तारिया य बुद्दकोहियछ उमत्यस्त्रीणकसायवीयरायचरितारिया य । से कि तं सर्यबुद्धछ उम-त्थर्खीणकसायवीयरायचरितारिया ? सर्यबुद्धछउमत्थर्खीणकसायवीयरायचरितारिया दुविहा पत्रता । तंत्रहा-पढमसमयमयंबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायचित्तारिया य अपडमसमयसर्गमृद्धछजमत्थस्त्रीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमस-मयसयंबुद्धछउमत्थर्खाणकसायवीयरायचरितारिया य अवरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थ-खीणकमायवीयरायचरित्तारिया य । से कि तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरा-यचरित्तारिया ? बुद्धबोहियछउमत्थलीणक्रमायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पक्ता । नंजहा-एटमसमग्रबद्धवोहियछउमत्यस्रीणकसायवीयरायचरितारिया य अपटमसमय-बुद्भवोहियछउमत्थर्खीणकसायवीयरायचरितारिया य। अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछ-उमत्थलीणकसायवीयरायचरिनारिया य अचरिमसमयवृद्धबोहियछउमृत्थलीणकसा-यवीयरायचरितारिया य । सेतं बुद्धबोहियछउमत्थसीणकसायवीयरायचरितारिया । सेमं छउमत्थलीणकसायवीयरायवितारिया । से कि तं केवलिखीणकसायवीयरा-यवरितारिया ? केवलिखीणकसायवीयरायचेरितारिया द्विहा पन्नता । तेजहा---सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायच-रितारिया य । से कि नं सजोगिकेविल्खीणकसायवीयरायचरितारिया ? सजोगिकेव-लिखीणक्षमायबीयराय बरितारिया द्विहा पत्रता । नंजहा---पटमसमयसजीगिकेव-लिखीणकसायवीयरायचरिसारिया य अपडमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयराय-चरितारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरितारिया य अचारेमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरितारिया य । सेतं सजोगिकेवलि खीगकसायवीयरायचरितारिया । से कि तं अजीगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरि-तारिया ? अजोनिकेनलिखीणकसायवीयरायचरितारिया दुविहा पनता । तंत्रहा---पडमसमयअजोगिकेविक्तिणकसायवीयरायचरिलारिया य अपडमसमयअजोगिकेव-निखीणकसायवीगरायचरितारिया य । अहवा चरिमसमग्रञजोगिकेवलिखीणकसाय-वीयरायचरितारिया य अचरिमसमयअवोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरितारिया य। सेतं अजोगिकेनलिकीणकसायवीयरायचरितारिया । सेतं केनलिकीणकसायवीयरायच-रितारिया । सेतं खीणकसायवीयरायचरितारिया । सेतं वीयरायचरितारिया । अहवा चरितारिया पंचविद्या पनता । तंजहा-सामाद्रयचरितारिया, छेदोबद्यावणियचरिता-रिया, परिद्वारविद्ववियचरितारिया, सहमसंपरायचरितारिया, अहवसायचरितारिया . १९ सता०

य । से कि नं सामाइयचरितारिया ! सामाइयचरितारिया दुविहा पन्नता । तंजहा---इनरियसामाइय्चरिनारिया य आवक्षहियसामाइयचरितारिया य । सेत्तं सामाइयच-रितारिया । से कि तं छेदोबद्वावणियचरितारिया ! छेदोबद्वावणियचरितारिया दुनिहा पन्नता । तंत्रहा--साइयारछेदोवद्वावणियचरितारिया य निरहयारछेदोवद्वावणियच-रितारिया य । सेनं छेदोवदावणियचरितारिया । से कि नं परिहारविस्द्वियचरिना-रिया? परिहारविमुद्धियन्त्ररिमारिया दुविहा पन्नना । तंत्रहा--निविस्तमाणपरिहारवि-सुद्धियन्त्रितारिया य निविद्वकाइयपरिहारविमुद्धियनरितारिया य । सेतं परिहारविसु-द्वियचरिनारिया । से कि नै मुहुमसंपरायचरिनारिया १ मुहुमसंपरायचरिनारिया दुविहा पन्नता । तंजहा—संकितिस्पमाणमुह्मसंपरायचरिनारिया य विमुज्समाणमु-हुमसंपरायचरित्तारिया थ । से तं मुहुमसंपरायचरित्तारिया । से कि तं अहक्सायच-रितारिया ? अहन्यायचरिनारिया दुविहा पन्नता । तंत्रहा-- छउमत्थअहक्साय-चरिनारिया य केवलिअहक्खायचरितारिया य । सेत्तं अहक्खायचरितारिया । सेत्तं चरित्रारिया । मेत्तं अणिब्रियत्तारिया । सेतं कम्मभूमगा । सेतं गब्यवक्षंतिया । सेतं मणुरमा ॥ ७७ ॥ से कि तं देवा १ देवा चडव्विहा पन्नता । तंत्रहा---भवणवासी. वाणमंतरा. जोइसिया. वेमाणिया । से कि तं भवणवासी ! भवणवासी दर्गावहा पत्रना । तंत्रहा-अमुरकुमारा, नागकुमारा, सुवन्नकुमारा, विज्ञुकुमारा, अग्निकु-मारा, दीवकमारा, उदहिकमारा, दिसाकमारा, वाउक्रमारा, थणियकमारा। ते समा-सओ दुविहा पचतः । तंजहा---पजनगा य अपजतगा य । सेतं भवणवासी । से किं तं वाणमंतरा ? बाणमंतरा अद्भविहा पश्चता । तंजहा --किश्चरा, किपुरिसा, महोरगा, गंधव्या, जन्खा, रन्खसा, भूया, पिसाया । ते समामओ दुविहा पश्चता । तंजहा-पजनगा य अपजनगा य । सेतं वाणमन्तरा । से कि तं जोटसिया? जोइसिया पंचविद्या पन्नता । तंत्रहा-चंदा, सूरा, गहा, नक्खना, नारा । ते समासओ दुविहा पनता । तंत्रहा---पजतना य अपजतना य । सेनं जोइसिया ॥ से कि नं वेमाणिया ? वेमाणिया दुविहा पत्रता । तंजहा-कप्पोवगा य कप्पाईया य । से कि तं कप्पोबगा ? कप्पोबगा बारसविद्वा पश्चता । तंत्रहा सोष्टम्मा. ईसाणा. सणंकुमारा. माहिंदा. बंगस्त्रेया, कंतया, महागुक्का, सहस्सारा, काणवा, पाणया. आरणा, अनुया । ते समासओ दुविहा पनता, तंजहा--पजतागा व अपजलगा थ । सेतं कप्पोवगा । से किं तं कप्पाईया ? कप्पाईया दविहा पक्ता । तंजहा---नेविज्ञगा य अनुतरीववाडया य । से कि तं नेविज्ञगा ? नेविज्ञगा नवविहा पषता । तंत्रहा--हिद्विमहिद्विमगेनिजगा, हिद्विमगिक्सगोनिजमा, हेब्रिसउपरि-

मगेबिजना, मज्जिमहेड्डिमगेबिजना, मज्जिममज्जिमगेबिजना, मज्जिमउनरिमगेबिजना, उनरिमहेड्डिमगेबिजना, उनरिममज्जिमगेबिजना, उनरिमहेड्डिमगेबिजना। तंजहा—पज्जतना य अपजत्तना य। सेतं गेबिनजना। में के तं अणुत्तरोवनाहया ? अणुत्तरोवनाहया पंचिद्दा पक्षता। तंजहा—विजया, वेजयन्ता, जयन्ता, अपराजिया, सव्बद्धसिद्धा। ते समासओ दुविद्दा पक्षता। तंजहा—पज्जतना य अपजत्तना य। सेतं अणुत्तरोवनाहया। सेतं कप्पा-हेया। सेतं वेमाणिया। सेतं देवा। सेतं पंविदिया। सेतं संसारसमावक्षजीवपक्ष-वणा। सेतं जीवपक्षवणा। सेतं पक्षवणा । प्रमुखणाप मग-वर्ष्ट्र पढमं पक्षवणापयं समतं।

कहि णं भेते ! वायरपुढविकाइयाणं पजत्तगाणं ठाणा पत्रता ? गोयमा ! सद्रा-णेणं अद्वतु पुरवीमु, तंजहा-रयणप्यभाए, सक्करप्यभाए, वालुयप्यभाए, पंकप्यभाए, धूमणमाए, तमप्पमाए, तमतमप्पमाए, इसिप्पन्माराए; अहोलोए पायालेस. भव-णेत, भवणपत्यडेस, निरएस, निरयावलियास, निरयपत्यडेस; उहुलोए कप्पेस, विमाणेष्ठ, विमाणात्रलियासु, विमाणपत्यडेषु; तिरियलोए टंकेसु, कूडेसु, सेलेसु, सिहरीयु, पन्भारेसु, विजएसु, वक्कारेशु, वासेनु, वासहरपव्वएसु, वेळासु, वेदयासु*,* दारेस, तोरणेयु, दीवेसु, समुद्देसु, एत्य णं बायरपुढविकाइयाणं पज्जतगाणं ठाणा पश्चना । उत्रवाएणं लोयस्स असंखेज्ञइभागे, समुग्धाएणं लोयस्य असंखेज्जइभागे, सद्वाणेणं लोयस्म असंखेजइभागे॥ ७९॥ कहि णं भंते ! बायरपुढियकाइयाणं अपज्ञत्तगाणं ठाणा पणता ? गोयमा ! अत्थेव बायरपुढविकाइयाणं पज्जतगाणं ठाणा पश्चता तत्थेव बायरपुढविकाइयाणं अपजन्तगाणं ठाणा पश्चता । उवबाएणं सन्वलोए, समुग्धाएणं सन्बलोए, सहाणेणं लोयस्स असंबेजहमागे॥ ८०॥ कहि णं भंते ! सहुमपुढविकाइयाणं पज्जतगाणं अपज्जतमाण य ठाणा पन्नता ? गोयसा ! मुहमपुढविकाइया जे पजतमा जे य अपजतमा ते सन्वे एगविहा अविसेसा अणा-णता सन्त्रकोयपरियावसमा पसता समगाउसो ! ॥ ८९ ॥ कहि णं भनते ! बायर-आउकाइयाणं पजनायां ठाणा पक्ता ? गोधमा ! सद्वाधेणं सत्तम् घणोदहीस. सत्ततः षणोदहिबलएस, अहोलोए पायाकेस, अवणेस, अवणपत्यडेस, उबूलोए कप्पेस, विमाणेष्ठ, विमाणाविष्यास, विमाणपर्यदेषु, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेछ, बाबीझ, पुक्खरिजीझ, बीहिबाझ, गुंजालिबाझ, सरेख, सर्पतिबाझ, सरसर-पंतियास, बिलेस, बिलपंतियासु, उच्चारेसु, निज्यारेसु, बिल्लएसु, पहलएसु, विविध, सीवेश, समोन्य, सन्वेस चेव जलासएस बल्डाणेस, एस्थ णं वायर-

आउकाइयाणं ठाणा पत्रता । उववाएणं लोयस्य असंखेजहमागे, ममुख्याएणं लोयस्य असंखेजहमार्गे, सहाणेणं लोयस्य असंखेजहमार्गे । कहि णं भंते । बायर-आउकाइयाणं अपजनगाणं ठाणा पन्नता ? गोयमा । जत्येव बायरआउकाइय-पजनगणं ठाणा पन्नता तत्थेव बायरआउकाऱ्याणं अपजनगणं ठाणा पन्नता। उदवाएणं सम्बलोए, समुग्घाएणं सन्बलोए, सद्वाणेणं लोयस्म असंबे-जाइमागे । कहि णं मंते ! मुहमआउकाइयाणं पज्जतगाणं अपजलगाण य ठाणा पनता ? गोयमा ! सहमञाजकाइया जे पजतगा जे य अपजतगा ने सब्बे एगविहा अविसेमा अजाणता सन्वलोयपरियावन्नगा पन्नता ममणाउसो ! ॥ ८२ ॥ कहि णं भेते ! बायरते उकाइयाणं पजतगाणं ठाणा पत्तता ? गोयमा ! सद्घाणेणं अंतोमणुस्यखेते अङ्गाङ्खेस वीवसमुद्देस, निन्वाधाएणं पत्तरससु कम्मभूमीसु, वाधायं पद्धव पंचसु महाविदेहेसु, एत्थ णं बायरतेजकाइयाणं पज्जनगाणं ठाणा पन्नना । उनवाएणं लोयस्स असंखेजहमागे, ममुख्याएणं लायस्स असंखेजहमागे, मद्राणेणं लोयस्स असंखेजइभागे ॥ ८३ ॥ किह णं भन्ते ! बायरतेउकाइयाणं अपजत्तगाणं ठाणा पनना ? गोधमा ! जत्थेव बायरतेलकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० तत्थेव बायरतेउकाइयाणं अपज्जनगाणं ठाणा पन्नता । उववाएणं लोयस्य दोसु उह्नकताडेमु तिरियलोयतहे य, समुखाएणं सञ्बलोए, सहाणेणं लोयस्स असंखेजहभागे ॥ ८४ ॥ कहि णं भंते ! मुहसतेजकाइयाणं पजनगाण य अपजनगाण य ठाणा पन्नता ? गोयमा! सहमतेरकाइया जे पजतगा जे य अपजतगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अणाणता सन्वलोयपरियावक्रमा पत्तनास मणाउसो ।। ८५ ॥ कहि णं भंने । बायरवाउकाइयाणं पाननगाणं ठाणा पकता ? गोयमा ! सद्वाणेणं सत्तसु घणवाएसु, सत्तसु घणवायवलएसु, मत्तसु तणुवाएसु, सत्तसु तणुवायवलएसु, अहोलीए पायालेसु, भवणेस. भवणपत्यडेम. भवणिष्टेस. भवणनिक्खंडेस. निरएस. निरयावितयास. निरयपत्य डेस. निरयक्टिस. निरयनिक्सुडेस. उन्नुलोए कप्पेस. विमाणेस. विमाणा-वित्यास, विभाणपत्थंडेस, विभाणिख्येस, विभाणनिक्खंडेस, तिरियलोए पाईण-पडीणदाहिणउदीण-सब्वेमु चेव लोगागासिहेसु, स्रोगनिक्खुडेसु य, एत्य णं वायर-वाउकाङ्गाणं पज्जतगाणं ठाणा पन्नता । उथवाएणं लोगस्स असंकेजेस भागेस, सम-ग्वाएणं लोयस्स असंखेळेसु भागेसु, सट्टामेणं स्प्रेयस्स असंखेळेसु भागेसु ॥ ८६ ॥ कहि णं मंते ! अपज्ञत्तवायर्वाउकाइयाणं ठाणा पचता ? गोयमा ! अरथेव कायर-वाउकाइयाणं पञ्चत्तगार्था ठाणा प० तत्येव वायरवाउकाइयाणं अपञातगार्थं ठाणा पनता । स्ववार्ण सन्त्रकोए, समुर्वार्ण सन्त्रकोए, सङ्गार्गणं कोयस्स असंबेजेयु

भागेसु ॥ ८७ ॥ कहि णं भंते ! सुहुमबाउकाइयाणं पज्जतगाणं अपजनगाण य ठाणा पत्रमा ? गोयमा ! सुहमनाउकाइया जे पत्रतमा जे य अपज्रतमा ते सन्वे एगविहा अविसेसा अणाणता सन्बलोयपरियावनगा पन्नता समणाउसो ! ॥ ८८ ॥ किं णं भंते ! वायरवणस्सङकाइयाणं पज्जनगाणं ठाणा पन्नना ? गोयमा! सङ्घाणेणं सत्तमु घणोदहीमु, मत्तमु घणोदहिवलएमु, अहोलोए पायालेमु, भवणेमु, भवण-पत्यडेसुः उन्नुलोए कप्पेसु, विसाणेसु, विसाणावित्यासु, विसाणपत्यडेसुः तिरियलोए अगडेसु, नडागेसु, नईसु, दहेसु, वाबीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेमु. सरपंतियामु, मरमरपंतियामु, बिकेषु, बिलपंतियामु, उज्झरेसु. निज्झरेसु. चित्रलेसु, पत्रलेसु, बप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सन्वेसु चंब जलासएसु जलठाणेसु; एत्य णं बायरवणस्मइकाइयाणं पजानगाणं ठाणा पन्नता । उनवाएणं सञ्बल्लोए, सम-रघाएणं सन्वलोए, सद्घाणेणं लोयस्स असंखेजदभागे ॥ ८९ ॥ कहि णं भंते ! बाय-रवणस्सङ्काङ्याणं अपजनगाणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! जत्थेव वायरवणस्सङकाङ-याणं पञ्जनगाणं ठाणा प॰ नत्थेव बायरवणस्सङ्काङ्याणं अपञ्जनगाणं ठाणा पन्नना । उववाएणं मन्त्रलोए, समुग्चाएणं सन्त्रलोए, सह्वाणेणं लोबस्स असंखेजहभागे॥ ९०॥ कहि णं भंते ! मुह्मजणस्मङ्काइयाणं पजनगाणं अवजनगाण य ठाणा पन्नना ? गोयमा ! मुहुमवणस्सङ्काइया जे पज्जनगा जे य अपज्जनगा ते सक्वे एगविहा अविसेमा अणाणना सव्वलोयपरियावनगा पनना समणाउसो ! ॥ ९१ ॥ कहि णं भंते ! बेइंवियाणं पज्जतापज्जतगाणं ठाणा पश्चता ? गोयमा ! उन्नुलोए तदेक्देसभागे. अहोलीए नदेश्वदेसभागे, तिरियलीए अगडेसु, नलाएसु, नईसु, दहेसु, बावीसु, पुक्खरिणीमु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सर्पंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियास, उज्हारेस, निज्हारेस, बिल्लेस, पललेस, विपेणेस, दीवेस, समुद्देस, सब्वेसु चेव जलासगुद्ध जलठाणेसु, एत्य णं बेइंदियाणं पज्जतापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नता । उववाएणं स्टोगस्स असंस्रोजहभागे, समुग्घाएणं लोगस्स असंस्रोजहभागे, सङ्घाणेणं लोगस्स असंखेजङभागे ॥ ९२ ॥ कहि णं भंते ! तेइंदियाणं पजता-पजनगाणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! उड्डलोए तदेकदेसमाए, अहोलोए तदेकदेस-भाए, तिरिक्लोए अपकेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, बाबीसु, पुक्खरिणीसु, रीहि-यासु, गुंजाळिबासु, सरेयु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, विकेसु, विकपंतियासु, उज्ज्ञरेयु, निज्ज्ञरेसु, चिक्रकेयु, पक्षकेसु, विष्णेमु, धीवेसु, समुदेसु, सम्वेसु चेव जळासएसु जलठाणेसु, एरच में तेईदिवाणं पजातापजातगाणं ठाणा पणता । उनवाएणं स्रोबस्त असंबेजहमाने, ससुरवाएनं सोबस्त अववेजामाने, सहायेणं

लोयस्त असंखेजहमार्गे ॥ ९३ ॥ कहि णं मंते ! चर्डारेदियाणं पजनापजनगणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! उन्नलोए तदेकदेसभागे, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरिय-लोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेमु, वावीसु, पुत्रखरिणीसु, दीहियासु, गुंजा-लियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्ज्ञरेसु, निज्यरेसु, चिद्रहेसु, पह्नलेसु, विष्णेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सन्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेस्, एत्थ णं चडरिंदियाणं पञ्चनापञ्चनाणं ठाणा पन्नता । उबवाएणं लोयस्स असंखेजइभागे, समुख्याएणं लोयस्स असंखेजइभागे, सद्वाणेणं लोयस्स असंखेजहमार्ग ॥ ९४ ॥ कहि णं भंते ! पंचिदियाणं पज्जनापजनगणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! उन्नुलोए तदेक्कदेसमाए, अहोलोए तदेक्कदेसमाए, तिरियलोए अगडेमु, तलाएमु, नईसु, दहेसु, बाबीसु, पुरुखरिणीसु, दीहियामु, गुंजालियामु, सरेमु, सरपंतियामु, सरसरपंतियामु, बिलेमु, बिलपंतियामु, उज्झरेमु, निज्झरेमु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, विपणेसु, दीवेसु, मस्देसु, सब्वेसु चेव जलासएसु जलटाणेसु, एत्थ णं पंचिदियाणं पजातापजातगाणं ठाणा पन्नता । उवदाएणं स्रोयस्स असंखे-ज्ञइमारो, समुग्घाएणं लोयस्य असंखेजहभागे, सद्वाणेणं लोयस्य असंखेजहभागे ॥ ९५ ॥ कहि णं भंते ! नेरङ्याणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! नेरइया परिवसन्ति ?, गोबमा ! सञ्चाणेणं सत्तमु पुडवीमु, तंत्रहा-रयणप्पमाए, सकरप्पभाए, बालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, भूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, एत्थ णं नेरइयाणं चउरासीइनिरयावासभयसहस्सा भवनतीति सक्खायं । ते णं नरगा अंतो वहा, बाहि च उरंसा, अहे खरप्पसंठाणसंठिया, निषंधयारतमसा,ववगयगहचंद-स्रनक्कनजोइसियप्पद्दा, मेदवसापूयपडल्कहिरमंसिकिकिकालुखेवणतला, असुई विसा], परमदुव्मिगंघा, काउअगणिकण्यामा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुमा नरगा, अमुभा नरगेषु वेयणाओ, एत्य णं नेरङ्गाणं पजतापजतगाणं ठाणा पनता । उववाएगं लोयस्स असंकेजइमागे, समुख्याएणं लोयस्स असंकेजइमागे, सद्वाणेणं लोयस्स असंखेजङ्भागे, एत्थ णं बहुवे नेर्ह्या परिवसंति । काला, कालो-भासा. गंभीरलोमहरिसा, मीमा, उत्तासणगा, परमकृष्टा क्लेणं पनता समणा-उसी । ते णं तत्य निषं भीया, निषं तत्था, निषं तसिमा, निषं उब्बिगा, निचं परममसुहसंबदं भर्गभगं पच्छामनमाना विहरन्ति ॥ ९६ ॥ कहि मं संते ! रयणप्यभापुढवीनेरद्वमाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नता ? कहि णं संदे ! रयणप्पभापुढवीनेरह्या परिवसन्ति ?. गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पु० असीउत्तर-जोयणसयसहस्सवाहताए उबरि एगं खोयणसहस्तमोगाहिला हेहा चेगं जोयण-

सहरसं वजिता मज्हे अद्भृहत्तरे जोयणसयसहरसे एत्थ ण रयणप्पशापुढवी-नेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं णरगा अंती वहा. बाहि चजरंसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निश्वेधयारतमसा, ववगयगहचंद-स्रणक्षतजोऽसप्पद्दा, मेदवसापूयपडलरुद्धिरमंसचिक्तित्वक्षलिताणुळेवगतला, अमुई [वीमा], परमद्भिगंघा, काउअगणिवण्यामा, कक्खडफासा, दुरहियामा, असुमा णर्गा, अमुभा णरगेमु वेयणाओ, एत्थ णं रयणप्पभापुडवीनेरइयाणं पजता-पजनाणं ठाणा पन्नता, उववाएणं लोयस्य असंखेजहभागे. समुग्घाएणं लोयस्य असंखेजहमार्गे, सद्वाणेणं लोयस्स असंखेजहमार्गे । तत्थ णं बहवे रयणप्पमापुरुवी-नेंग्इया परिवसन्ति । काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमिकण्हा वक्षेणं पन्नता समणाउमो !। ते णं तत्य निश्वं भीया, निश्वं तत्था, निश्वं तसिया, निश्चं उव्यिगा, निश्चं परमममुहसंबद्धं णरगभयं पञ्चणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९७ ॥ किह णं भेते ! सकरप्पभापुडवीनेरस्याणं पजनापजनाणं ठाणा प्रमा ! किं मंते ! सक्करप्पभापदवीनेरइया परिवसन्ति ?, गोयमा ! मक्करप्पभापुदवीए वनीमुनरजोयणनयसहस्मवाहस्राए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहिना हेट्टा चेगं जोवणसहरमं बजिना मज्हे तीमृत्तरे जोवणमयसहस्से एत्थ णं सङ्करप्पभापुढवी-नेरडयाणं पणवीसं निरयावाससयसहस्सा हवन्तीति मक्खायं । ते णं णर्गा अंतो वहा, बाहिं चउरंमा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निश्वंधयारतमसा, ववगयगहचंद-स्रनक्खत्तजोइसियप्यहा, मेद्बमापूयपडलरुहिरमंमचिक्खिललिताणुळेवणतला, अवुर्र्[वीसा], परमदुब्मिगैधा, काउअगणिबण्णामा, क्रम्खडफासा, दरहिवासा, अमुमा णरगा, अनुमा णरगेतु वेयणाओ, एत्य णं मक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पञ्चतापञ्चनार्ण ठाणा पनता । उद्यवाएणं०, समुख्याएणं०, सङ्घाणेणं लोगस्स असंखेजहभागे । तत्य णं बहवे सकरप्यभाषुढवीनेरह्या परिवसन्ति । काला, कालोभासा, मंसीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमिकव्हा वन्नेणं पनता सम-णाउसी ! । ते णं तस्य निष्यं भीया, निष्यं तस्या, निष्यं तसिया, निष्यं उव्यवस्था, निकं परममसुहसंबद्धं नरगभयं प्रवणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९८ ॥ कहि णं भेते ! वाल्यप्पभाषुढवीनेरइयार्ण पञ्चनापञ्चनार्णं ठाणा पनता ? कहि णं भेते ! वाल्यप्प-भापुढवीनेर्इया परिवसंति १, गोयमा ! बाद्धवप्पभापुढवीए अङ्घावीसुत्तरजोयणसय-सहस्तबाहुक्काए उनीर एमं जोबणसहस्तं ओगाहिला हेट्टा चेगं जोबणसहस्तं विजता मज्हे छ्व्यीसुत्तरजोवणस्यसङ्स्ते एत्य णं बाह्ययणमापुढवीनेरङ्याणं पश्चरसनर-यावासस्यसहस्सा अवन्तीति सक्सार्य । ते यं जरमा अंतो वहा, वाही वर्डसा.

अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, निश्चंथयारतमसा, ववगयगहचंदस्रनक्खत्तजोइसियप्पहा, मेदवसाप्यपडलरुहिरमंसन्विक्खिललाणुलेश्णतला, असुई[वीसा], परमदुच्यि-गंघा, काउअगणिवण्णामा, कम्बडफामा, दुरहियासा, असुमा नरगा, असुमा नर-रोसु वेयणाओ । एत्य णं बालुयप्पसापुरुवीन्त्र्याणं पद्धसापजनाणं ठाणा पद्धसा । उनवाएणं लोयस्स असंखेजह्मागे, समुख्याएणं लोयस्स असंखेजहमागे, सहावेणं लोयस्य असंखेजङ्गागे । तत्थ णं बहुवे वालुयप्पमापुरवीनेरङ्या परिवर्मति । काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिया, भीमा, उत्तायणगा, परमकिण्हा वनेणं पन्नता समणाउसी ! । ते णं तत्थ निश्वं भीया, निश्वं तत्था, निश्वं तसिया, निश्वं उव्जिग्गा, निचं परमस्तुहसंबद्धं णरगभयं पच्छाभवसाणा विद्वरन्ति ॥ ९९ ॥ कहि णं भनते : पंकप्यमापुरुवीनेरइयाणं पजनापजनाणं ठाणा पनना ? कहि णं भनते ! पंकप्यमा-पुढवीनेरइया परिवसंति ? गोयमा ! पंकप्पमापुढवीए वीमुत्तरजोयणसयसहस्स-बाहञ्चाए उवरिं एगं जोयणसहस्यं ओगाहिता हिट्ठा चेगं जोयणसहस्यं वजिता मज्झे अद्वारमुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं पंकप्पभापुहवीनरज्याणं दम निरया-वामसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते पं णर्गा अंनो वहा, वाहिं चउरसा, अहे खुरपसंठाणसंठिया, निश्वंधयारतमसा, ववगयगहचंदस्रनक्खनजोइसियपहा, मेदवमापूयपडलरुहिरमंसचिक्सिल्लिलाणुलेवणतला, अधुई[वीसा], परमदुब्सिगंघा, काउअगणिकणाभा, कक्कडफामा, दुर्हियासा, असुमा नरगा, असुमा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं पंकप्यभापुदवीनेरह्याणं पज्जतापजनाणं ठाणा पन्नता । उब-वाएणं लोयस्य असंखेजहभागे, समुख्याएणं लोयस्य असंखेजहभागे, सद्वाणेणं लोबस्स असंखेजङ्भागे । तत्य णं बहुवे पंकप्पभापुतवीनेरह्या परिवसंति । काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नना समणा-उमो ! । ते णं तत्थ णिश्रं भीया, णिश्रं तत्था, णिश्रं तसिया, णिश्रं उथ्यामा, णिश्रं परमसमुद्रसंबद्धं णरगभयं पचणुभवसाणा विहरन्ति ॥ १०० ॥ कहि णं सन्ते ! ध्रमप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जनापज्जनाणं ठाणा पन्नता ? कहि मं संते ! ध्रमप्पभा-पुढवीनेरह्या परिवसन्ति ?, गोयमा ! धूमप्पभापुढवीए भट्टारमुत्तरजोयणसर्यसहस्स-बाहकाए उनिर्र एगं जोयणसहस्सं भोगाहिता हेट्टा चेगं जोयणसहस्सं विजना मज्हे सोलपुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्व णं धूमप्पमापुढवीनेरइयाणं तिश्वि निर्-यात्रासस्यसहस्सा मवन्तीति मक्सायं। ते णं णर्गा अंतो वहा, बाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसंठाणसंठिया, विश्वंघयारतमसा, व्यगयगहचंदस्र्तव्यक्तवोइसियपद्धा, मेदनसापूरपण्डलहिरमंसचिक्सिक्सिलताणुकेनणतका, असुद्दे [नीसा], परमदुक्सिपंचा, काउभगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियामा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु बेयणाओ, एत्य णं भूमप्पभापुढवीनेरङ्याणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पनता । उववा-एणं लोयस्य असंखेजहमार्गे, समुरघाएणं लोयस्य असंखेजहमार्गे, सद्वाणेणं लोयस्य असंखेजहमागे । तत्थ णं बहवे धूमणमापुढणीनरह्या परिवसन्ति । काला कालो-भासा गंभीग्लोमहरिसा भीमा उत्तायणगा परमक्तण्हा बन्नेणं पनता समणाउसो !। ते णं तत्थ निश्वं मीया, निश्वं तत्था, निश्वं तसिया, निश्वं उव्विग्गा, निश्वं परस-ममुहसंबद्धं नरगभयं पत्रणुभवमाणा विहरन्ति ॥ १०१ ॥ कहि णं मंते ! तमा-पुडर्वानेरइयाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! तमापुढवीनेरइया परिवर्सति ?, गोयमा ! नमाए पुत्रवीए सोलमुत्तरजोयणसयसहस्सवाहहाए उवरि एगं जोयणमहस्सं ओगाहिना हिट्टा चेगं जोयणसहस्सं विज्ञता मज्झे चटदसुनरे जोयणमयसहस्मे एत्य णं तमप्पभापुहवीनेरइयाणं एगे पंचूणे णरगावाससयसहस्सं भवतीति मक्खार्य । ते णं णरगा अंतो वद्या, बाहि चडरंसा, अहे खरप्पसंठाण-संठिया, निश्वंश्वयारतमसा, ववगयगह्यंदस्रनक्खत्तजोइसियपहा, मेदवसाप्यपडल-रुहिरमंगचिक्खिललिताणुरुवणतला, असुई [दीसा], परमदुव्मिगंधा, क्लब्खडफासा, हुरहियामा, असुभा नरगा, असुभा नरगेषु वेयणाओ, एत्य णं तमापुढवीनेरहयाणं पजतापजताणं ठाणा पत्रता । उववाएणं स्रोयस्य असंखेजहभागे, समुग्वाएणं लोयस्य असंखेजहभागे. सद्घाणेणं लोयस्य असंखेजहभागे । तत्य णं बहवे तमप्पमा-पुरुषीनेरइया परिवसंति । काळा कालोमासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तामणगा परमिकण्हा वन्नणं पनता समणाउसो!। ते णं तत्थ निचं भीया, निचं तत्था, निचं तसिया, निषां उध्विगा, निषां परममसुदृसंबद्धं नरगभयं पश्रमुभवसाणा विहरन्ति ॥ १०२ ॥ कहि णं अंते ! तमतमापुडवीनेरइयाणं पजतापजताणं ठाणा पजता ! कहि णं भंत ! तमतमापुडवीनेरह्या परिवसंति ?, गोयमा ! तमनमाए पुढवीए अद्वोत्तर-जोयणस्यसहरसबाह्याए उवरि अस्तेवनं जोयणसहरसाई ओगाहिता हिट्टा वि अडतेवकं जोवणसहस्ताहं विकता मञ्जे तीसु जोवणसहस्तेस एस्य णं तमतमा-पुढवीनेरहयाणं पजनापुजनाणं पंचदिति पंच अणुत्तरा महदमहालया महानिर्वा पनता । नंत्रहा-काले महाकाले रोवए महारोवए अपबद्धाणे । ते णं णरगा अंतो वहा, बाहि चडरेसा, अहे खुरप्पसंक्षणसंठिया, निषंधयारतमसा, बवगवगहर्चद-स्रनक्खताओइसियप्पदा, मेदबसापूर्यपडलरहिरमंसचिविन्सहलिताणुकेवणतला, असुई [वीसा], परमहुव्भिर्मधा, कन्सदफासा, दुरहियासा, असुधा नरगा, असुधा नरगेमु वेयणाओ, एत्य वं तमलमापुडवीनेरह्याणं पज्ञतायज्ञतार्थं ठाणा पजता ।

τ

उववाएणं लोयस्स असंखेजहमागे, समुग्वाएणं लोयस्म असंखेजहमागे, सहाणेणं लोयस्स असंखेज्जङ्भागे । नत्थ णं बहुवे तमतमापुढवीनेरह्या परिवसंति । काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा बन्नेणं पन्नता समणा-उसो!। ते णं तत्य निचं भीया, निचं तत्या, निचं तसिया, निचं उव्विग्गा, निचं परममसुहसंबद्धं णरगमयं पचणुभवमाणा विहरन्ति । आसीयं बत्तीसं अद्वावीसं च हुंति वीसं च । अद्वारससोलमगं अड्डनरमेव हिट्टिमिया ॥ १ ॥ अड्डनरं च नीसं छन्वीसं चेव सयसहस्सं तु । अहार्स सोलमगं चटहसमहियं तु छद्वीए ॥ २ ॥ अद्भितवनमहस्सा उवरिमहे विजिद्धण तो भणियं। मज्ने तिसहस्सेमं होन्ति उ नरगा नमतमाए ॥ ३ ॥ नीसा य पन्नवीसा पन्नरस दसेव सयसहस्साई । तिन्नि य पंचूणेगं पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥ ४ ॥ १०३ ॥ कहि णं भंते ! पंचिंदियनिरिक्ख-जोणियाणं पजतापजतगाणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! उन्नुलोए तदेश्वटेसभाए, अहोलोए तदेकदेसमाए, तिरियलोए अगडेमु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वाबीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुंजालियासु, सरेसु, सरपंतियासु, सरसरपंतियासु, बिलेसु, बिलपंतियासु, उज्झरेसु, निज्झरेसु, चिह्नलेसु, पह्नलेसु, विप्पणेसु, धीवेसु, समुद्देसु, मञ्बेसु चेव जलासएनु जलठाणेमु, एत्य णं पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पज्रतापजनगाणं ठाणा पन्नता । उचवाएणं लोयस्स असंखेजदभागे, समुग्चाएणं सन्त्रलोयस्स असंखेजइमागे, सद्वाणेणं सन्त्रलोयस्स असंखेजइभागे ॥ १०४ ॥ कहि णं भंते ! मणुस्साणं पजतापजनाणं ठाणा पन्नता ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेते पणयालीसाए जोयणसयसहरसेस, अङ्गाइजेन दीवसमुहेसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, तीसाए अकम्मभूमीसु, छप्पनाए अंतरदीवेसु, एत्य णं मणुस्साणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नता । उनकाएणं लोयस्य असंखेजहभागे, ममुख्याएणं सन्वलोए, सङ्घाणेणं लोगस्स असंखेजइभागे ॥ १०५ ॥ कहि णं मंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जता-पजताणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ?, मोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउनरजोयणसयसहस्मबाहस्राए उवरिं एगं जोयण-सहस्यं ओगाहिता हेट्टा चेगं जोयणसहस्यं विजता मज्ये अद्वहुत्तरे जोयणसयसहस्ये एत्य णं भवणवासीणं देवाणं पज्जतापज्जताणं सत्त भवणकोडीओ बावतारे भक्णावा-ससयसहरूसा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भवणा बाहि वहा, अन्तो चउरसा, अहे पुरुखरकियासंठाणसंठिया, उक्तिशंतरविउलगंभीरखायफळिहा, पागारहालयकवाड-तोरणपिंदुवारदेसभागा. जंतसयग्विमुसलमुसंहिपरियारिया, अउज्झा, सयाजया, संयागुत्ता, अडयालकोहुगर्ह्या, अडयालकवृबणमाला, खेमा, विवा, किकरामरदंडी-

बरिक्स्या, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसर्त्तचंदणदहरदिक्षपंचंगुलितला, उबचिय-चंदणकलसा, चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसमागा, आसत्तोसत्तविउलवद्दवग्धारि-यमह्नदामकलावा, पंचवनसरससुरभिमुक्कपुष्पत्पंजीवयारकलिया, कालागुरुपवरकुंद्रह-कत्रकाध्वसधमधंतगंधुद्धयासिरासा, सुगंधवरगंधिया, गंधवद्दिभया, अच्छरगणसंघ-संविकिता, दिव्वन्डियसहसंपणइया, सव्वर्यगामया, अच्छा, मण्हा, रुष्हा, घट्टा, मद्वा, णीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, मप्पहा, मस्सिरीया, समरीइया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिरूजा, पिडकृता । एत्थ णं भवणवासिदे-बाणं पजतापजनाणं ठाणा पन्नना । उबवाएणं लोयस्य असंखेजह्मागे, समुख्याएणं लोयस्स असंखेजहमारो, सद्वाणेणं लोयस्स असंखेजहमारो । तत्व णं बहवे भवण-वासी देवा परिवसंति । तंजहा-अमुरा नाग सुवन्ना विज् अग्गी य दीव उदही य । दिसिपवणथणियनामा दसहा एए भवणवासी ॥ चूडामणिमउडर्यणाभूसणणागफड-गरुलवङ्ररपुनकलसंकि उप्फेराा, सीद्रहयवरगयंकमगरवरवद्धमाणनिज्जत्तिचिताचिधगया, सुरूवा, महिच्चिया, महुज्इया, महब्बला, महायसा, महाणुभावा, महासोक्खा, हार्रावराइयवच्छा, कडगतुडियथंभियभुया, अंगदकुंडलमहुगंडतलकन्नपीदधारी, विचित्तहत्यामर्णा, विचित्रमालामउलिमउडा, ब्रह्माणगपवर्वत्थपरिहिया, ब्रह्माण-गपवरमञ्जाणुकेवणधरा, भासुरबोंदी, पकंचवणमालभरा, दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिन्वेणं फासेणं दिन्वेणं संधरणेणं दिन्वेणं संठाणेणं दिन्वाए इङ्गीए दिन्वाए जुईए दिव्वाए प्रभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अश्वीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए छेसाए इस दिसाओ उज्जोवेमाणा प्रभासेमाणा, ते णं तत्थ साणं साणं भवणावाससयमहस्साणं. साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं. साणं साणं तायत्तीसाणं. साणं साणं लोगपालाणं. साणं साणं अगमहिसीणं, साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणियाणं, साणं साणं अणियाहिबईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहरूसीणं, अनेसि च बहणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं सामितं भट्टितं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावचं कारेमाणा, पाळेमाणा, महया हयनद्वनीयवाहयतंतितलतालतुन्धियघणसुदंगपद्वप्पवाह-यरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाई मुंजमाणा विहरति ॥ १०६ ॥ कहि णं भेते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पत्रता ? कहि णं मंते ! असुरकुमारा देवा परिवर्सते ?, गोयमा ! इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स-बाहक्काए उबरि एगं जोबणसहस्यं श्रीमाहिता हेट्ठा चेगं जीवणसहस्यं विजता मज्जे बहुहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य णं असुरकुमाराणं देवाणं चडसर्हि मचणा-वाससम्बद्धस्या भवन्तीति मक्सायं । ते णं भवणा बाहि वद्दा, अंतो चउरसा. ۷,

अहे पुक्खरकन्नियासंठाणसंठिया, उक्तिनंतरविउलगंमीरखायकलिहा, पागारहालय-कवाडतोरणपडिदुवारदेसमागा, जंतसयग्घिमुसलमुसंहिपरियारिया, अउज्झा, सया-जया, संयागुत्ता, अडयालकोद्वगर्ड्या, अडयालक्यवणमाला, खेमा, सिवा, किंकरा-मग्दंडोवरिक्स्या, लाउन्नोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदृहरदिन्नपंचेगुलितला, उविषयचंदणकलसा, चंदणघडमुकयतोरणपिडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउल-बद्दबन्धारियमञ्जदामकलावा, पंचवन्नमरमग्ररभिगुक्तपुष्फपुंजोवगारकलिया, काला-गुरुपवरकुंदुस्कनुस्कडञ्झंतवृ्वमधमर्थनगंधुसुयाभिरामा. सुगंधवरगंधिया, गंधवट्टि-भूया, अच्छरगणसंवसंविकिन्ना, दिव्वतुडियसहसंपणइया, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, णीरया, निम्मला, निप्पंका, निकंकडच्छाया, सप्पमा, सस्मिरीया, समरीइया, सउज्जोया, पासावीया, दरिसणिजा, अभिस्वा, पिहहवा; एरव णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जतायज्ञताणं ठाणा पन्नता । उवबाएणं स्रोयस्स असंखेजइभागे, समुग्याएणं लोयस्य असंखेजइभागे, सद्वाणेणं लोयस्य असंखेजइ-भागे, तत्थ णं बहवे असुरकुमारा देवा परिवसंति । काळा, लोहियक्खविंबोद्घा, धवल-पुष्फदंता, असियकेसा, वामेगकुंडलघरा, अइचंदणाणुलितगता. ईसिसिलिधपु-प्राप्यगासाई असंकिलिद्वाई सुहुमाई बत्याई पबरपरिहिया, वयं च पढमं समहक्रंता-बिइयं च वयं असंपत्ता, भेद्दे जोव्यणे वदृमाणा, तलमंगयतुष्टियपवरभूसणणिम्मल, मणिरयणमंडियसुया, दससुद्दामंडियग्गहत्था, चूडामणिविचित्तचिंधगया, सुस्वा, महिच्चिया, महजुद्या, महायसा, महञ्बला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइ-यवच्छा, कडयनुंडिययंभियभुया, अंगयकुंडलमद्दगंडयलकन्नपीडधारी, विचित्तहत्याभ-रणा, विचित्तमालामउल्मिउडा, कक्षाणगपवरवत्थपरिहिया, कक्षाणगमक्षाणुकेवणधरा, भासुरबोंरी, पलंबबणमालधरा, दिव्वेणं बन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संचयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इङ्गीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पनाए दिव्वाए छायाए दिन्त्राए अश्रीए दिन्त्रेणं तेएणं दिन्त्राए छेसाए दस विसाओ उज्जोनेमाणा पमासेसाणा, ते णं तत्य साणं माणं भवणावाससयसहस्साणं साणं सामाण-यसाहस्सीणं साणं साणं तायत्तीसाणं साणं साणं लोगपालाणं साणं साणं अगमहि-सीणं साणं २ परिसाणं साणं साणं अणियाणं साणं साणं अणियाहिबद्देणं साणं साणं आयरक्कदेवसाहस्सीणं अनेसि च बहुणं भवणवासीणं देवाणं य देवीण य आहेवचं पोरेवचं सामितं भिंहतं महत्तर्भतं आणाईसरसेणावचं कारेमाणा, पाळ-माणा, महया हयनद्रगीयवाइयतंतीतळताळतुडियचणमुद्दंगपहुप्पवाइयरवेणं दिव्वाहं भोगमोगाई भुंजमाणा विद्रांति । नमर्यकिणो दृत्य दुवे अधुरकुमारिंदा अधुरकुमार-

रायाणो परिवर्षति । काला, महानीलसरिसा, णीलगुलियगवलअयसिकुमुमप्पगासा, वियसियस्यवत्ताणिम्मलर्ड्सिसियर्त्ततंबणयणा, गरुलाययउज्जुतुंगनामा, उवचियसिल-प्पवालविवपत्रसंनिभाहरोद्वा. पंडरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोक्खीरकुंदद-गरयमुणालियाथवलदंतसेढी, हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्ञरत्ततलतालुजीहा. अंजण-घणकसिणगरुयगर्मणिजणिद्धकेसा, वामेगकुंडलथरा, अद्वंदणाणुलितगत्ता, ईसिसि-लिंधपुप्फप्पगासाई असंकिलिझाई सुहुमाई वत्याई पवर्परिहिया, वयं च पटमै समइकंता, बिइयं च असंपत्ता, मेरे जोव्बणे बहुमाणा, तलभंगयतुष्टियपवरभूसण-णिम्मलमणिर्यणमंडियभ्या, दसमुद्दामंडियग्गहत्था, चुडामणिचिनचिंघगया, मुस्वा, महिश्विया, महजुईया, महायसा, महावला, महाणुमागा, महासोक्स्वा, हारविराइयवच्छा, कष्टयतुडियथंभियभुया, अंगदकुंडलमद्वगंडतलकन्नपीदधारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाण-गपवरमञ्जाणुळेबणघरा, भासुरबोंदी, पलंबवणमालघरा, दिव्बेणं विभेणं, दिव्बेणं गंधेणं, दिन्वेणं फासेणं, दिन्वेणं संघयणेणं, दिन्वेणं संठाणेणं, दिन्वाए इस्ट्रीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अचीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए हेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते णं तत्थ साणं साणं भवणावाससयसहस्याणं. साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं माणं तायत्तीसाणं, साणं साणं स्त्रेगपालाणं, साणं साणं अगगमहिसीणं, साणं साणं परिसाणं, साणं साणं अणियाणं, साणं साणं अणियाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अशेसिं च बहुणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं सामितं भहितं महनर गत्तं आणाईसरसेणावश्वं कारेमाणा, पालेमाणा, महया हयनहगीयवाइयतंतीतलताल-तुडियचणसुइंगपद्धप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहर्तते ॥ १०७ ॥ कहि णं भंते ! दाहिणिक्षाणं असुरकुमाराणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नना ? कहि णं मंते ! दाहिणिक्वा असरकमारा देवा परिवसंति ?. गोयमा ! अंब्रुहीचे चीचे मंहरस्स पन्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्यभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयमहस्स-बाहुह्राए उविर एगं जोयणसहस्यं ओमाहिता हिट्टा चेगं जोयणसहस्यं विजता मज्झे अद्भृहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य णं दाहिणिह्याणं असुरकुमाराणं देवाणं चन्नतीसं भवणावासस्यमहस्या भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहि वहा, अंतो चउरसा सो चेव वणाओ जाव पंडिस्का। एत्य णं दाहिणिक्राणं अग्रुरकुमाराणं देवाणं पज-त्तापज्ञताणं ठाणा पन्नता । तीस्रवि स्त्रेगस्स असंकेज्ङ्भागे । तत्य णं बहुवे दाहि-गिल्ला अग्ररकमारा देना देनीओ य परिवसंति । काला, लोहियनचा तहेन जाव

भुंजमाणा विहरंति । एएसि णं तहेव नायत्तीसगलोगपाला भवन्ति । एवं सम्बर्ध भाणियव्यं । भवणवासीणं चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव प्रभासेमाणे । से णं तत्य चउतीसाए भवणावाससयसह-स्माणं, चडसद्वीए सामाणियसाहस्सीणं, तायतीमाए तायतीसगाणं, चडण्हं स्त्रोग-पालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्ड य चउसट्टीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अक्षेरिं च बहुणं दाहिणिहाणं देवाणं देवीण य आहेवचं पोरेवचं जाव विहरह ॥ १०८ ॥ कहि णं भंते ! उत्तरिक्षाणं अमुरकुमाराणं देवाणं पञ्चनापज्जताणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! उनिरक्षा अमुरकुमारा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्य पव्वयस्य उत्तरेणं इमीसे रयणप्यभाए पुडवीए असीउत्तरजोयणस्यसहस्स-बाहक्राए उवरिं एगं जोयणसहस्यं ओगाहिसा हिद्रा चेगं जोयणसहस्यं विज्ञता मज्झे अहुरूनरे जोयणसयसहस्से एत्य णं उत्तरिक्षाणं असुरकुमाराणं देवाणं तीसं भवणावाससयसहस्या भवन्तीति मक्तायं । ते णं भवणा बाहिं वहा, अंतो चर्रमा, सेसं जहा दाहिणिह्नाणं जाव विद्वरंति । बली एत्य वहरोयणिदे वहरोयण-राया परिवयड. काले महानीलसरिसे जाव प्रभासेमाणे। से ण तत्य तीसाए भवणाबासनयसहस्साणं, सद्रीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं. सत्तण्हं अणियाहिवर्डणं. चउण्ह य सद्दीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं. अनेसि च बहुणं उत्तरिह्याणं अगुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवचं पीरेक्चं कुञ्जमाणे विहरह ॥ १०९ ॥ किह णं भेते ! नागकुमाराणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नना ? कहि णं भंते ! नागकुमारा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पढवीए असीउत्तरजोयणसबसहस्सबाह्ह्याए उर्वीर एगं जोयणसहस्सं ओगाहिता हिद्रा चेगं जोयणसहस्सं विजता मज्हे अद्भहनरे जोयणसयसहस्से एत्य णं नागकुमाराणं देवाणं पजतापजनाणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खारं । ते णं भवणा बाहिं वद्या, अंतो चउरंसा जाव पढिरूवा । तस्य णं णागकुमाराणं पजतापजताणं ठाणा पश्चता । तीसु वि कोगस्स असंबेजङ्भागे । तत्थ णं बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिश्विया, महजुङ्गा, सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति । धरणभूयाणंदा एत्य णं दुवे पागकुमारिंदा पागकुमार-रायाणो परिवसंति महिश्विया सेसं जहा ओक्षियाणं जाव विहरंति ॥ ११० ॥ कक्षि णं अंते ! दाहिणिहाणं नागकुमाराणं देवाणं पजनापज्ञताणं ठाणा पहला ? कहि

णं मंते ! दाहिणिहा नागकुमारा देवा परिवसीत ?, गोयमा ! जंबुहीवे दीवे मंदरसा पव्वयस्य दाहिणेणं इमीसे रयणप्यभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहस्राए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहिना हिट्ठा चेगं जोयणसहस्सं विज्ञता मजसे अद्भहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य णं दाहिणिह्याणं नागक्रमाराणं देवाणं चडयालीसं भवणावायसयसहस्या भवन्नीनि मक्खायं । ते णं भवणा बाहि वहा जाव पिंडल्या । एत्य णं दाहिणिक्षाणं नागकुमाराणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नना, तीसु वि लोयस्य असंखेजहभागे, एत्य णं दाहिणिहा नागकुमारा देवा परिवसंति, महिब्बिया जाव विद्वरंति । धरणे इत्य नागकुमारिंदं नागकुमारराया परिवसह, महिद्रिए जाव प्रभासेमाणे। से णं तत्थ चडवालीमाए भवणावाससयसह्स्साणं, छण्हं सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं कोगपाछाणं. छण्हं अगर्माहसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहि-वईणं, नरव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अनेसि न बहुणं दाहिणिहाणं नाग-कुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं कुव्वमाणे विहरह ॥ १९९ ॥ कहि णं भेते उत्तरिहाणं णागकुमाराणं देवाणं पज्जतापज्जनाणं ठाणा पक्सा ! कहि णं भंत ! उत्तरिक्षा णागकुमारा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्य पव्वयस्य उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहस्राए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहिता हेट्टा चेगं जोयणसहस्सं वजिता मज्हे अद्वरतरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं उमरिह्याणं नागकुमाराणं देवाणं नतालीसं भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहि वहा सेसं जहा दाहिणिहाणं जाव विहरंति । भृयाणंदे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया परिक्सइ, महिष्टिए जाव पभासेमाणे । से णं तत्थ चतालीसाए भवणाबाससयसहस्साणं आहेवमां जाव विहरह ॥ ११२ ॥ कहि णं भंते ! सुवज्ञकुमाराणं देवाणं पज्जता-पजताणं ठाणा पश्चता ? कहि णं संते ! सुवश्चकारा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे र्यणप्यमाए पुढवीए जाव एत्थ णं सुवजकमाराणं देवाणं बावत्तरि भवणा-वासमयसहस्सा भवन्त्रीति सकसायं। ते णं भवणा बाहि वहा जाव परिरूषा । नत्य णं सुवक्कुमाराणं देवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पत्रता जाव तिस्र वि लोबस्स असंक्षेज्ञहमारो । तत्व णं बहवे सुवधकुमारा देवा परिवसंति महिश्चिया सेसं जहा ओहियाणं जान विहरंति । नेणुदेने नेणुदाली य इत्य दुने सनण्यकुमारिंदा सनण्य-कुमाररायाणी परिवर्सति, महिश्विया जाव निहरति ॥ ११३ ॥ कहि णं मंते ! दाहिषिकाणं सबण्यकुमाराणं पज्यसायबसाणं ठाणा पनसा ? फहि णं भंते ! दाहि-

णिह्ना नुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अट्टहनरे जोयणसयसहस्से एत्य णं दाहिणिहाणं स्वण्णकमाराणं अद्भतीसं भवणावाससयस-हरमा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा वाहिं वहा जाव पडिस्वा। एत्थ णं दाहिणिहाणं सुवण्यकुमाराणं पञ्जनापजनाणं ठाणा पन्नना । तिमु वि लोगस्म असंखेज्जङ्भागे । एत्थ णं वहवे सुवण्णकुमारा दंवा परिवसंति । बेणुदेवे य इत्थ सुवनकुमारिन्दे सुवनकुमारराया परिवमइ, सेसं जहा नागकुमाराणं॥ १९४॥ कहि णं भन्ते ! उत्तरिक्षाणं सुवनकुभाराणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पनना ! किं मंते ! उत्तरिहा मुक्ककुमारा देवा परिवर्सति ?. गोबमा ! इमीसे रयणप्प-माए जाव एत्थ णं उत्तरिक्षाणं नुवन्नकुमाराणं चडतीसं भवणावायसयसहस्या भव-न्तीति मक्खायं । ते णं भवणा जाव एत्थ णं बहवे उत्तरिक्षा सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति, महिष्ट्रिया जाव विहरंति । वेणुदाली इत्थ मुवश्वसुमारिंदे मुवश्वसूमारराया परिवसइ, सिहिष्ट्रिए सेसं जहा नागवुसाराणं । एवं जहा सुवक्षकुमाराणं वनन्वया भणिया तहा सेसाण वि चउदसण्हं इंदाणं भाणियव्या । नवरं भवणणाणतं इंदणा-णतं वन्मणाणनं परिहाणणाणतं च इमाहि गाहाहि अणुगंतव्वं-चउसर्डि अमुराणं चुलसीयं चेव होंति नागाणं । बावक्तरि मुवने बाउक्साराण छन्नउई ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्ञुकुमारिंदथणियमग्गीणं । छण्हंपि जुयलबाणं छावत्तरिमो गयसहस्सा ॥ २ ॥ चउतीसा चउयाला अट्टतीसं च सयसहस्साई । पद्मा चत्तालीमा दाहिणओ हुंति भवणाइं ॥ ३ ॥ तीसा चत्तालीमा चउतीसं चेव सयसहस्साइं । छायाला छत्तीया उत्तरओ हुंति भवणाई ॥ ४ ॥ चडमद्वी सद्वी खळु छच सहस्याई असुरवजाणं । सामाणिया उ एए चटम्गुणा आयर्क्का उ ॥ ५ ॥ चमरे घरणे तह नेणुदेनें हरिकंतअभिगसीहे य । पुन्ने जलकंते य अमियविलम्बे य घोसे य ॥ ६ ॥ बलिभूयाणंदे चेणुदालिहरिस्सहे अग्गिमाणविषसिद्धे । जलपह तहऽमि-यबाहणे पर्मजणे य महाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिक्षाणं जाव बिहरीत । काला असुरकुमारा नागा उदही य पंडरा दो वि । वरकणगनिचसगोरा हुंति सुबन्धा दिसा थणिया ॥ ८ ॥ उत्तत्तकणगत्रका विज् अग्गी य होंति दीवा य । सामा पियंगुवका वाउकुमारा मुणेयव्या ॥ ९ ॥ असुरेसु हुंति रत्ता सिलिंबपुण्फप्पभा य नागुद्ही । आसासगवसणधरा होति सुवका दिसा थिपया ॥ १० ॥ नीलागुरा-गवसणा विज् अम्मी य हुंति दीवा य । संझाणुरागवसणा वाउदुमारा मुणेयव्वा ॥ ११ ॥ ११५ ॥ कहि णं अंते ! वाणमंतराणं देवाणं पञ्चतापञ्चताणं ठाणा पकता ? कहि णं भंते ! बाजमंतरा देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए

पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोश्रणसहस्सवाहब्रस्स उवरि एगं जोश्रणसंश ओगा-हिता हिद्वा वि एगं जोयणसयं बिजना मज्जे अट्टस जोयणसएस एत्थ णं वाण-मंतराणं देवाणं तिरियमसंखेजा भोमेजनयरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भोमेजा णयरा बाहि वहा, अंतो चउरंसा, अहे पुक्खरकियासंठाणसंठिया, उक्तिश्वंतरविउलगंभीरखायफलिहा, पागारष्टालयकवाडतोरणपिडदुवारदेममागा, जंत-सयरिषमुगलमुसंहिपरिवारिया, अउन्हा, मयाजया, सयागुना, अडयालकोट्टगरइया, अडयालकवनणमाला, खेमा, सिवा, किंकरामरदंडोनरिक्खया, लाउल्लोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणदहरदिन्नपंचंगुलितला, उवचियचंदणकलसा, चंदणघडसुकय-तोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविज्ञलबद्धवम्यारियमहदामकलावा, सरमनुर्राहमुक्रपुष्फपुंजोबयारकलिया, कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरक्कपूत्रमधमधंतगंधुद्धु-यामिरामा, मृगंधवरगंधिया, गंधवद्दिभूया, अच्छरगणसंघसंविकिना, दिव्वतुडिय-सहमंपणइया, पडागमालाउलाभिरामा, सम्बरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, महा, नीरया, निम्मला, निष्पंका, निक्कंकडच्छाया, सप्पहा, सस्सिरीया, समरीइया, यउज्जोया, पासाइया, दरियणिजा, अभिरुवा, पडिरुवा। एत्थ णं वाणमन्तराणं देवाणं पज्जनापजनाणं ठाणा पन्नता । तिसु वि लोयस्स असंखेजइ-भागे। तत्थ णं बहुवे वाणमंतरा देवा परिवसंति। तंजहा-पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किनरा, किपुरिसा, भुयगवइणो महाकाया, गन्धव्वगणा य निउणगंधवनगीयरङ्गो. अणवान्त्रयपणवन्त्रियङ्खवाङ्यभ्यवाङ्यकंदियमहाकंदिया य क्रहंडपर्यगदेवा, चंत्रलचलचवलचित्तकीलणदविषया, गहिरहसियगीयणचणरई, वणमालामेलमञ्जूकंडलसुन्छंद्विङ्ग्याभरणचारभूमणधरा, सम्बोजयसुरभिकुमुम-मुरङ्यपलंबसोहंतकंनविद्दसंतचिननणमालरङ्यवच्छा, कामगमा [कामकामा], काम-रूवदेहघारी, णाणाविहवण्णरागवरवत्यविचित्तचिष्ठलगनियंसणा, विविहदेसिनेवत्थ-गहियवेसा, पमुद्दयकंदप्पऋलह्केलिकोलाहलिपया, हासबोलबहुला, असिमुग्गर्सन्-कुंतहरथा, अणेगमणिरयणविविद्यणिज्युत्तविचित्तचित्रगया, महिद्विया, महज्जुह्या, महायसा, महाबला, महाणुभागा, महासुक्खा, हारविराइयवच्छा, कडयतुष्टिय-थंमियभुवा, अंगयकुंडलमट्टगंडयलकबपीढधारी, विचित्तहत्याभरणा, विचित्तमाला-मडलिमज्डा, कहाणगपवरवत्थपरिहिया, कहाणगपवरमहाणुळेवणघरा, मासुरबोंची, पलंबनणमालधरा. दिञ्चेणं बह्मेणं, दिञ्चेणं गंधेणं, दिञ्चेणं फासेणं, दिञ्चेणं संघय-णेणं, दिव्वेणं संठांषणं, दिव्वाए इड्डीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पमाए, दिव्वाए छायाए, दिव्याए अश्रीए, दिव्वेर्ण तेएशं, दिव्याए छेस्साए दस दिसाओ उज्जोदे-

माणा, पशासेमाणा, ते णं तत्थ साणं माणं असंखेजभोमेजनयरावाससयसहस्साणं, साणं माणं सामाणियसाहरसीणं. साणं साणं अगमहिसीणं. साणं साणं परिसाणं. साणं माणं अणीयाणं, साणं साणं अणीयाहिवईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसा-हस्सीणं, अन्नेसि च बहुणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं सामिनं भिट्टतं महत्तरगतं आणाईसरसेणावशं कारेमाणा. पालेमाणा. महया हयनह-गीयवाइयतंतीतलतालन्डियघणमुद्रंगपद्भप्याइयरवेणं दिव्वादं भोगभोगाहं भुंजमाणा विहरंति ॥ ११६ ॥ कहि णं मंते ! पिसायाणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नना ? कहि णं भंते ! पिसाया देवा परिवसंति ?. गोयमा ! इमीसे रयणप्पसाए पुरुवीए रयणामयस्य कंडस्य जोयणमहस्यबाहब्रस्य उवरि एगं जोयणसयं ओगा-हिना हेट्टा चेगं जोयणसयं विज्ञना मजहे अट्टम् जोयणसएम् एत्थ गं पिमायाणं देवाणं तिरियमसंखेजा भोमेजनयरावायसयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं भोमेजनयरा बाहि वहा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहा भाणियव्यो जाव पिंड-स्वा । एत्थ णं पिसायाणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नता । तिसु वि लोगस्स असंखेजहमारी । तत्य बहुवे पिसाया देवा परिवसंति, महिश्विया जहा ओहिया जाव विहरन्ति । कालमहाकाला इत्य दुवे पिसाइंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिष्टिया महज्जुदया जाव विहरंति ॥ १९७ ॥ कहि णं भंते ! दाहिणिह्याणं पिसायाणं देवाणं ठाणा पन्नना ? कहि णं मंते ! दाहिणिक्षा पिसाया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मन्दरस्य पव्वयस्य दाहिणेणं इमीसं रयणप्यभाए पुढवीए रयणा-मयस्स कंडस्स जोयणसहस्सवाहृहस्स उविरं एवं जोयणमयं श्रोगाहिता हेट्टा चेगं जोयणसयं वजिला मज्हे अद्वसु जोयणसएसु एत्य णं दाहिणिहाणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेजा भोमेजनयरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं। ते णं भवणा जहा ओहिओ भवणवण्यको तहा भाणियन्त्रो जाव परिरूवा । एत्य णं दाहिणिह्नाणं पिसायाणं देवाणं पञ्जतापञ्चताणं ठाणा प्रवत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेजहभागे । तत्य णं वहवे दाहिणिह्ना पिसाया देवा परिवसंति, महिन्निया जहां ओहिया जाव विहरंति । काले एत्य पिसाइंदे पिसायराया परिवसह, महिन्निए जाव प्रभासेमाणे । से णं तत्व तिरियमसंखेजाणं मोमेजनयरावाससयसहस्साणं, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्ह य अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, त्रिण्हं परिसाणं, सत्तर्ण्हं अणियाणं, सत्तर्ण्हं अणियाहिवर्ष्ट्णं, सोलसर्णं आयरमखदेवसाहस्सीणं, अजेसि च बहुणं दाहिणिहाणं नाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवर्च जाव विहरह । उत्तरिहाणं पुष्छा । बीयमा । जहेब दाहिणिहाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरि-

क्षाणं पि । णवरं मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । महाकाले एत्य पिसाइंदे पिसाय-राया परिवसइ जाव विहरइ। एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणं पि जाव गंघटवाणं। नवरं इंदेस णाणतं भाषियन्त्रं इमेण विहिषा-भूगाणं सुरूवपिकस्वा, जक्साणं पुण्णभद्दमाणिभद्दा, रक्खसाणं भीममहामीमा, किन्नराणं किन्नर्किपुरिना, किपुरि-साणं सप्पुरिसमहापुरिसा, महोरगाणं अङ्कायमहाकाया, गंधव्याणं गीयरङ्गीय-जसा जाव विहरन्ति । काले य महाकाले मुख्यपिकस्वपुण्णमद्दे य । तह चेव माणि-भेद्दे मीमे य तहा महामीमे ॥ १ ॥ किन्नरिकंपुरिसे खळु सप्पुरिसे खळु तहा महा-पुरिसे । अइकायमहाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥ २ ॥ १९८ ॥ कहि णं अंते ! अणवित्रयाणं देवाणं ठाणा पचता ? कहि णं भंते ! अणवित्रया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्य कंडस्स जोयणसहस्सबाहह्नस्स उविरि हेट्टा य एगं जोयणसयं सयं बज्जेता मज्ज्ञे अट्टस जोयणसएस एत्य णं अण-विजयाणं देवाणं तिरियमसंखेजा णयरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं जाव पर्डिस्वा । एत्थ णं अणविज्ञयाणं देवाणं ठाणा पज्ञता । उववाएणं लोयस्स असंखेजइभागे, समुग्घाएणं कोयस्स असंखेजइभागे, सद्वाणेणं स्रोयस्स असंखेजङ्-भागे । तत्थ णं बहवे अणविषया देवा परिवसंति । महिष्टिया जहा पिसाया जाव विहर्रति । सिण्णिहियसामाणा इत्थ दुवे अणविज्ञेदा अणविज्ञयरायाणो परिवसंति । महिश्विया, एवं जहा कालमहाकालां दोण्हं पि दाहिणिहाणं उत्तरिहाण य भणिया तद्दा सण्णिहियसामाणाणं पि भाणियन्ता । संग्रहणीगाहा---अणविश्वयपणविश्वदस्त-वाइयभ्यवाइया चेव । कंदिस महाकंदिय कोहंड पर्यगए चेव ॥ १ ॥ इसे इंदा-संनिहिया सामाणा धायनिधाए इसी य इसिवाले । ईसरमहेसरे निय हुवइ सुबच्छे निसाले य ॥ २ ॥ हासे हासरई चेव सेए तहा भवे महासेए । पयए पयगवई विय नेयव्या आणुपुट्यीए ॥ ३ ॥ ११९ ॥ कहि णं भंते ! जोइसियाणं देवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पक्ता ? किंद्र णं भंते ! जोइसिया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसे र्यण-प्पमाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिमागाओ सत्तणउए जोयणसए उद्दूं उप्पहता दयुत्तरजोयणसम्बाहक्के तिरियमसंखेजे जोइसबिसए । एत्य णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंबेजा ओइसियविमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा अद्दक्षविद्वगसंठाणसंठिया, सम्बकालिहमया, अन्युम्पयमूसियपहसिया हव विविद्दमणिकणगर्यणभतिवित्ता, वाडब्रुयविजयवेजयंतीपडागास्त्राइस्त्रतक्रिया. द्वेगा, गगणतत्क्रमिसंचमाणसिंहरा, जालंतररयणपंजल्लीन्मलियव्य मणिकणगञ्जीन् बागा, विवसिवसवनापंडरीका, तिसवरमण्डाचंदिकता, नाणामणिमयदामासंकिया.

अंतो वहिं च सण्हा, तबणिजस्हलबाल्यापत्थडा, सुहफासा, सस्सिरीया, सुरूवा, पासाइया, दरिसणिजा, अभिस्वा, पडिस्वा। एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं पजता-पजनाणं ठाणा पन्ना । तिस वि लोगस्त असंखेजहमागे । तत्थ णं बहुवे जोइसिया देवा परिवसंति । तंजहा-बहस्सई, चंदा, स्रा, सुका, सणिच्छरा, राहू, धूमकेऊ, बुहा, अंगारगा, तत्ततवणिज्ञकणगवण्या जे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊ य गइरइया अद्वावीसइविद्वा नक्सत्तदेवयगणा, णाणासंठाणसंठियाओ पंचवनाओ तार-याओ ठियलेसाचारिणो, अविस्साममंडलगई, परायनामंकपागडियर्चिथमउडा महि-ब्रिया जाव प्रभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयमहस्साणं, माणं माणं सामाणियसाहरसीणं साणं साणं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, साणं साणं परि-साणं. साणं साणं अणियाणं. नाणं साणं अणियाहिवइंणं, साणं साणं आयरक्खदेव-साहस्सीणं, अक्षेमिं च वहणं जोडसियाणं देवाणं देवीण य आहेवचं जाव विहरेति । चंदिमस्रिया इत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति. मांडब्रिया जाव पनामे-माणा । ते णं तत्थ माणं साणं जोडसियविमाणावाससयसहस्साणं, चढण्हं सामाणि-यसाह्स्सीणं, चउण्हं अगगमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणीयाणं, सत्तण्हं अणीयाहिबईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवमाहस्सीणं, अनेसि च बहुणं जोइसियाणं देवाणं देवीण य आहेवचं जाव विहर्गत ॥ १२०॥ कहि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जनापज्जनाणं ठाणा पश्चना ? कहि णं मंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ?, गोयमा ! इमीसं रवणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ उद्गं चंदिमस्रियगहणक्खनताराख्वाणं बहुई जीयणसयाई बहुई जीयणसहस्साई बहुई जोक्णसयसहस्साइं बहुगाओं जोयणकोदीओ बहुगाओं जोवणकोडाकोडीओ उच्चं द्रं उप्पड़त्ता एत्थ णं सोहम्मीसाणसणंकमारमाहिदबंमकोयकंतगमहासक्तसहस्सारआणय-पाणयआरणज्यगेवेज्जगुत्तरेसु एत्य णं वेमाणियाणं देवाणं चटरासीहविमाणावाससय-सहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा मवन्तीति मक्कार्य ! ते णं विमाणा सम्बर्यणामया, अच्छा, सम्हा, लम्हा, घट्टा, मट्टा, मीर्या, निम्मला, निप्पंका, निकंकडच्छाया, सप्पभा, सस्तिरीया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिस्ता, परिस्ता । एत्य णं वेमानियाणं देवाणं पञ्चतापञ्चताणं ठाणा पन्नता । तिमु वि लोबस्स असंबोज्ज्ङभागे । तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति । तंत्रहा-सोहम्मीसाणसणंकमारमाहिदवंमलोगलंतगमहासुक्रसहस्सारआणयपाणय-आरण्यूयगेवेजणुत्तरोवबाइया देवा, ते णं मिगमहिसबराहसीहस्रगलदबुरहयगयवइ-भुयगसम्मदसमविकिमपायविविविधमत्वा, प्रसिद्धिकवरमञ्ज्ञितिवधारिणो, वर्कंब-

ब्रुजोइयाणणा, मउडदित्तसिर्या, रत्तामा, पउमपम्हगोरा, सेया, सहवनगंघफासा, उत्तमवेउन्त्रिणो, पवरवत्थगंधमल्लाणुळेवणधरा, महिन्निया, महज्जह्या, महायसा, महावला, महाणुभागा, महासोक्खा, हारविराइयक्छा, कहयत्रियथंभियभ्या, अंगडकंडलमझगंडतलकलपीटघारी, विचित्तहत्याभरणा, विचित्तमालागउलिमउडा, कञ्चाणगपत्रत्वत्थपरिहिया, कञ्चाणगपत्रमञ्जाणुलेवणा, भासुरबोंदी, पर्लवतणमालधरा, दिब्बेणं ब्रम्भणं, दिब्बेणं गंधेणं, दिब्बेणं फासेणं, दिब्बेणं संघयणेणं, दिब्बेणं संठा-णेणं, दिव्याए इङ्ग्रीए, दिव्याए जुईए, दिव्याए पभाए, दिव्याए छासाए, दिव्याए अचीए, दिव्येणं तेएणं, दिव्याए हेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते णं तत्व माणं साणं विमाणावाससयसहस्साणं, साणं साणं सामाणियसाहस्सीणं, साणं साणं तायत्तीसगाणं, साणं भागं स्रोगपालाणं, साणं साणं अस्मसहिसीणं सपरिवाराणं, साणं साणं परिमाणं, साणं साणं अणियाणं, साणं साणं अणियाहि-वईणं, साणं साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसि च बहुणं वैमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं जाव दिव्वाई भोगमोगाई भुंजमाणा विहरित ॥ १२१॥ कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवाणं पज्जनापज्जनाणं ठाणा पनना ! कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ?, गोयमा ! जंबुद्दांवे दीवे मंदरस्य पञ्चयस्य दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ जाव उन्नं दूरं उप्प-इता एत्थ णं सोहम्मे णामं कप्पे पन्नते । पाईणपदीणायए, उदीणदाहिणविस्थिणो, अद्भवंदसंठाणसंठिए, अभिमालिमामरासिकणामे, असंखेजाओ जोयणकोडीओ असंखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंमेण. असंखेजाओ जोयणकोडा-कोबीओ परिक्केवेणं, सन्वरयणामए, अच्छे जाव पढिसवे। तस्थ णं सोहम्मग-देवाणं वत्तीसविमाणात्रायसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा सब्बर-यणामया अच्छा जाव परिस्वा । तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसमागे पंच वर्षि-सया पन्नता, तंत्रहा-असोगवडिंसए, सत्तवण्यवडिंसए, चंपगवडिंसए, च्यवडिंसए. मजरे इत्य सोहम्मवर्डिसए । ते णं वर्डिसया सन्वरयणामया अच्छा जाव परिस्वा । एत्य णं सोष्टम्मगदेवाणं पज्रातायज्ञाणां ठाणा पत्रता । तिसु वि क्रोगस्स असंबेन जहमार्गे । तत्य णं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिश्विमा जाव पमासेमाणा । ते पं तत्थ सामे सामं विमाणावासस्यसहस्सामं, सामं सामं सामाणियसाहस्सीमं, एवं जहेब ओहियाणं तहेब एएसि पि भाषियव्यं जाव आयरक्खदेवसाइस्सीणं: अनेसि च बहणं सोहम्ममक्प्पनासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवचं जाब बिहरीते । सके इत्य देविंदे देवरावा परिवसह, बजापाणी, प्ररंदरे, संगक्त.

सहस्तक्षे, मध्वं, पागसासणे, दाहिणहूळोगाहिवई, बत्तीसविमाणावाससयसहस्ता-हिवई, एरावणवाहणे, सुरिदे, अर्थंबरवत्यधरे, आलङ्ग्यमालमञ्डे, नवहेमचारू-चित्तचंचलकुंडलबिलिहिजमाणगंडे, महिष्टिए जाव पमासेमाणे । से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं, चडरासीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीमाए तायतीसगाणं. चडण्हं लोगपालाणं, अद्रण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं. समण्हं अणीयाणं, समण्हं अणीयाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयर-क्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसि च बहुणं सोहम्मकप्पवासीणं नेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं जाव कुन्वमाणे० विहरह ॥ १२२ ॥ कहि णं मैंत ! ईसाणाणं देवाणं पञ्जतापञ्जताणं ठाणा पजता ? कहि णं भेते ! ईसाणगदेवा परिवसंति ?. गोयमा ! जंबहीवे बीवे मंदरस्य पव्वयस्य उत्तरेणं इमीसे रयणप्यमाए पढवीए बहममरमणिजाओ भूमभागाओ उद्गं चंदिमसरियगहणक्खननाराष्ट्रवाणं बहुई जोयणस्याई बहुई जोगणसहस्याई जाब उन्ने उप्पक्ता एत्थ णे ईसाणे णामं कप्पे पन्नते । पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्णे, एवं जहा सोहम्मे जाव पिंडहिन । तत्थ णं ईसाणगदेवाणं अद्वानीसं विमाणानासस्ययमहस्सा भवन्तीति मक्खार्य । ते णं विमाणा सव्वर्यणामया जाव पश्चिम्बा । तेसि णं बहमउझंड्स-भागे पंच वर्डिसया पन्नता । तंजहा-अंकवर्डिसए, फलिहवर्डिसए, रयणवर्डिसए, जायस्वविडेंसए, मज्हे इत्य ईसाणविडेंसए। ते णं विडेंसया सम्बर्यणामया जाव पडिस्वा । एत्य णं ईसाणगदेवाणं पजनापजनाणं ठाणा पश्चता । तिस्र वि लोगस्स असंखेज्ज्ञसारी । सेसं जहा सोहम्मगदेवाणं जाव विहरति । ईसाने इत्य देविदे देवराया परिवसइ, सूलपाणी, वसहवाहणे, उत्तरङ्गुलोगाहिवहे, अद्वावीसविमाणा-नाससयसहरसाहिनई, अरयंबरकत्यधरे, सेसं जहा सक्करस जान प्रभासेमाणे । से ण तस्य अद्वावीसाए विभाणावाससयमहस्सार्ण, असीईए सामाणियमाहस्सीर्ण, ताय-त्तीसाए तायत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अद्भण्डं अगगमहिसीणं सपरिवाराणं. तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं असीईणं आय-रक्खदेवसाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहुणं ईसाणकप्पवासीणं वेसाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवचं जाव विहरइं॥ १२३॥ काहि णं भेते! सणंकुमारदेवाणं पजतापजताणं ठाणा पश्चना? कहि णं भेते! सणंकुमारा देवा परिक्यंति है, गोवमा! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पि सपक्लि सपिडिदिसि बहुई जोयबाई बहुई जोयगस्याई बहुइं जोयणसहस्साई बहुईं जोयणसयसहस्साई बहुगाओ जोयणकोटीओ बहुगाओ जोयणकोटाकोडीओ उर्ब दूरं उप्पत्ना एत्य में सर्णक्रमारे मामं कृप्ये प्रति।

पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्णे जहा सोहम्मे जाव परिरूवे। तत्थ णं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्मा भवन्तीति मक्खायं। ते णं विमाणा सन्वर्यणामया जाव पिंडस्वा। तसि णं विमाणाणं बहमज्झदेसभारो पंच वर्डिसगा पन्नता । तंजहा-असोगवर्डिमए, मत्तवन्नवर्डिसए, चंपगवर्डिसए, च्यविहिसए, मज्हे एत्थ सर्णकुमारविहेसए । ते णं बहिसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिस्वा । एत्थ णं सर्णकुमार् देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नसा । तिनु वि लोगस्स असंखेजहभागे । तत्थ णं बहवे मर्णवृत्मार देवा परिवसंति . महिन्निया जाव पभासेमाणा विहरंति । नवरं अगगमिहसीओ णत्थि । सर्णकुमारे इत्थ देविहे देवराया परिवमइ । अरयंवरदत्थधरे, सेसं बहा सकस्म । से णं तत्थ बारसण्हं विभाणावःसमयमहस्साणं, बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेमं जहा सकस्म अस्गम-हिसीवजं । नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरऋखदेवसाहस्सीणं त्राव विहरह ॥ १२४॥ कहि णं भंते ! माहिददेवाणं पजतापजताणं ठाणा पनना ? कहि णं भंते ! माहिंदगदेव। परिवसंति ?, गोयमा ! ईसाणस्स कपस्स उपि सपिनेख सपिडिदिसिं बहुइं जोयणाई जाव बहुयाओ जोयणकोडाकोडीओ उन्नं दुर् उप्पदत्ता एत्थ णं माहिंदे नामं कप्पे पन्नते पाईणपढीणायए जाव एवं जहेव नणंकुमारे । नवरं अट्ट विमाणावाससयसहस्सा । वर्डिसया जहा ईसाणे । नवरं मज्हे इत्थं माहिंदवर्डिसए. एवं जहा सणंकुमाराणं देवाणं जाव विहरेति । माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परि-वसड. अरगंबरवत्यधरे, एवं जहा सर्णक्रमारे जाव विहरड । नवरं अद्रण्हं विमाणा-वासमयसहस्याणं, यत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं, चडण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेव-साहस्सीणं जाव विहरह ॥ १२५ ॥ कहि णं भंते ! बंभलोगदेवाणं पजनापजनाणं ठाणा पश्चना ? कहि णं भंते ! वंभलोगदेवा परिवसंति ?, गोयमा ! सणंकुमारमाहि-दाणं कप्पाणं उप्पि सपिन्स सपिडिदिसि बहुई जीयणाई जाव उप्पइता एत्य णं वंभलोए नामं कृप्ये पश्चने, पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्थिण्ये, पडिपुज्यचंद-संठाणसंठिए, अधिमालीमासरासिप्पम, अवसेसं जहा सर्णवृमाराणं । नवरं चतावि विमाणावासस्यसहस्सा, विदेसया जहा सोहम्मविदेसया, नवरं मज्हे इत्य वंभ-लोयवर्डिसए । एत्थ णं वंभलोगदेवाणं पजनापजनाणं ठाणा पनना सेसं तहेव जान बिहरेति । बंगे इत्य देविदे देवराया परिवसः, अरगंबरवत्यघरे, एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरह । नवरं चलण्हं विमाणावाससयसहस्साणं, सद्वीए सामा-णियसाहस्सीणं, चंडण्हं सद्वीए अन्यरक्खदेवसाहस्सीणं, अनेसि च बहुणं आह्न विहरइ ॥ १२६ ॥ सहि णं भीते ! लंतगदेवाणं पजातापजाताणं ठाणा पवाता !

कहि णं भंते ! लंनगदेवा परिवसंति ?, गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपर्विन्त सपिडिदिसिं बहुई जोयणाई जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोबीओ उर्दू दूर्र उप्पह्सा एत्थ णं लंतए नामं कप्पे पन्नते पाईणपडीणायए, जहा बंभलोए। नवरं पण्णासं विमाणावाससहस्मा भवनतीति मक्खायं। विडसगा जहा ईसाणविडसगा, नवरं मज्झे इत्य लंतगवर्डिसए, देवा नहेव जाव विहरंति । लंनए एत्य देविंदे देवराया परिवसइ, जहा सर्णंदुमारे । नवरं पण्यासाए विमाणावाससहस्साण, पण्यासाए सामाणियसाहरसीणं, चउण्ह य पण्णासाणं आयरक्खदेवसाहरूसीणं, अन्नेनि च बहुणं जाव विद्दुर ॥ १२७ ॥ कहि णं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जनापज्जनाणं ठाणा पक्ता ? वहि णं भंते ! महासुका देव। परिवसंति !, गोयमा ! लंतगरन कप्परस उप्पि सपर्विन्त सपिडिदिमिं जाच उप्पडता एत्थ णं महासुके नामं कप्पे पन्नते पाईणपढीणायण्, उदीणदाहिणवित्थिण्णं, जहा बंभलोए। नवरं चनालीसं विमाणावाससहस्मा भवन्तीति मक्खार्य । वर्डिसगा जहा सोहम्मवर्डिसए जाव विहर्रति । महासुके इत्य देविदे देवराया जहा सर्णकुमारे । नवर चनालीमाए विमाणावासमहस्याणं, बतानीसाए सामाणियसाहस्सीणं, चडण्ह य चनानीसाणं आयरक्षत्रदेवसाहरूसीणं जाव विहरः ॥ १२८ ॥ कहि णं भंते ! महस्मारदेवाणं पञ्जनापञ्जनाणं ठाणा पन्नना ? कहि णं भेते ! सहस्यारदेवा परिवसंति ?. गोयमा ! महासुक्रस्स कप्पस्स उपि मपिनेख सपिडिदिसि जाव उप्पडना एत्य णं सहस्सारे नामं ऋषे पन्ते । पाईणपदीणायए, जहा बंभलोए, नवरं छिन्त्रमाणाबायसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । देवा तहेव जाव विडिमगा जहा ईसाणस्य विडिमगा । नवरं मञ्झे इत्थ महस्सारवर्डिसए जाव विहरिति । सहस्मारे इत्य देविदे वेवराया परिवसइ जहां सर्णकुमारे । नवरं छण्डं विमाणात्राससहरसाणं, तीसाए सामाणियसाहरसीणं, चउण्ड य तीसाए आयरम्खदेवसाहस्सीणं आहेवचं जाव कारेमाणे० विहरइ॥ १२९॥ कहि णं भंते ! आणयपाणयाणं देवाणं पञ्चतापञ्चताणं ठाणा पन्नता ! कहि णं अंते ! आणयपाणया देवा परिवसंति !, गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उपि सपर्विन्त सपिडदिनि जाव उप्पद्ता एत्थ णं आण्यपाणयनामा वुवे कप्पा पन्नता । पाईण-पडीगायया, उदीणदाहिणवित्यिण्या, अद्भवंदसंठाणसंठिया, अधिमालीमासरासि प्यमा. सेसं जहा सणंकुमारे जाब पिकट्या । तत्थ णं आणयपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससमा भवन्तीति मक्त्वायं जाद पडिख्वा । वर्डिसगा जहा सोइम्मे क्ष्म्ये । नवरं मज्ये इत्य पाणयवर्डिसए । ते णं वर्डिसगा सञ्जर्यणामया अच्छा जाव पिंडस्वा । एत्य णं आण्यमाणयदेवाणं पत्रतापज्ञताणं ठाणा प्रकता । तिस वि

लोगस्स असंखेजर्मागे । तत्थ णं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महिष्ट्रिया जाव प्रभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं साणं विमाणावाससयाणं जाव विहरति । पाणए इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणंयुमारे । नवरं चटण्हं विमाणावाससयाणं, त्रीसाए सामाणियसाहस्सीणं, असीईए आयरक्लदेवसाहस्सीणं, अन्नेसि च बहुणं जाव विहरइ ॥ १३० ॥ किह णं भंते ! आरणशुराणं देवाणं पज्जनापज्जताणं ठाणा पनना ? किह् णं भंते ! आरणसुया देवा परिवसंति ?, गोयमा : आणयपाणयाणं कप्पाणं उपि सपर्विख सपडिदिसि एत्य णं आरण्युया नामं दुवे कप्पा पन्नता । पाईणपरीणायया, उदीणदाहिणवित्थिण्या, अद्भवंदसंठाणसंठिया, अविमालीभास-रासिवण्णामा, असंखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेजाओ जोयणको डाको हीओ परिक्खेवेणं. सन्बरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, महा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निकंकडच्छाया, सप्पमा, सस्सिरीया, मडज्जीया, पामादीया, दरिसणिजा, अभिस्वा, पडिस्वा । एत्य णं आरणसुयाणं देवाणं तिश्वि विभाणावाससया अवन्तीति मक्खायं। ते णं विभाणा सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, चट्ठा, मद्वा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निक्कंकडच्छाया, मप्पमा, मस्मिरीया. सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिरुवा, पडिस्वा । तेसि णं विमाणाणं कप्पाणं बहुमज्बदेसभाए पंच बडिसया पनता । तंजहा-अंकवडिसए, फलिहबर्डिसए, रयणबर्डिसए, जायस्ववर्डिसए, मजरे एत्य अश्वयवर्डिसए । ते णे वृडिसया सन्वरयणासया जाव पिडस्या । एतथ णं आरणसुयाणं देवाणं पज्जना-पजनाणं ठाणा पश्चना । तिसु वि लोगस्स असंखेजइभागे । तत्य णं बहवे आरण-श्रुया देवा परिवसंति । अश्रुए इत्य देविंदे देवराया परिवसइ, जहा पाणए जाव विहरइ । नवरं तिण्हं विमाणाबाससयाणं, दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चनालीसाए आयरक्खदेवनाहस्सीणं आहेवश्रं जाव कुव्यमाणे॰ विहरह । बत्तीस अद्ववीसा बारस अट्ट चडरो (य) सयसहस्सा । पन्ना चत्ताकीसा छत्र सहस्सा सहस्सारे ॥ १ ॥ आणय-पाणगकप्पे चतारि संगाऽऽरणशुए तिकि । सत्त विमाणसंगाई चंजसु वि एएसु कप्पेस ॥ २॥ सामाणियसंगहणीगाहा-चउरासीइ असीई बावत्तरीं सत्तरी य सद्घी य । पद्मा चत्तालीसा तीसा वीसा दस सहस्सा ॥ १ ॥ एए चेव आयरक्खा चउन्गुणा ॥ १३ १ ॥ कहि णं भंते ! हिट्टिमगेविज्याणं पज्यसापज्यसाणं ठाणा पत्रसा ? कहि णं भंते ! हिट्टिमगेबिजमा देवा परिवसंति ?, गोत्रमा ! आरणसुगाणं कप्पाणं उप्प जाव उन्हें दूरं उपाइना एत्य णं हिद्धिमंगेबिजगाणं देवाणं तको गेविजगविमाणपत्यका पणता । पाईगपडीगायया, उदीणदाहिलवित्यिन्या, विदेपुण्णचंदसंठाणसंठिया, अविमा-

लीभासरासिवण्यामा. सेसं जहा बंभलोगे जाव पिडस्वा । तत्य णं हेड्डिमगे-विज्ञगाणं देवाणं एकारमुनरे विमाणावासमए भवतीति मक्सायं। ते णं विमाणा सञ्बरयणामया जाव पिंडस्वा । एत्थ णं हेद्रिमगेविज्ञगाणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पक्तना । तिम वि लोगस्य असंखेजडभागे । तत्थ णं बहवे हेड्रिमगेविज्ञगा देवा परिवसंति । सञ्बे समिद्धिया, सञ्बे समजुङ्या, सञ्बे समजसा, सञ्बे सम-बला, सन्ने समाणुभावा, महासुक्खा, आणंदा, अपेस्सा, अपुरोहिया, अहर्मिदा नामं ते देवगणा पन्नना समणाउसो ! ॥ १३२ ॥ कहि णं भंते ! मज्जिसगाणं गेविजगाणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पन्नता ! कहि णं भंते ! मञ्जिमगेविज्ञगा देश परिवसंति ?. गोयमा ! हेद्रिमगेविज्ञगाणं उप्पि मपनिस्त सपडिदिसि जाव उप्पडता एत्थ णं मज्जिमगेबिजगदेवाणं तुओ गेबिजगिबमाणपत्थहा प्रमुत्ता । पाईणपडीणायया जहा हेद्रिमगेविज्ञगाणं । नवरं मत्तुनरे विमाणावासमए भवनीनि मक्खायं। ते णं विमाणा जाव पडिस्वा। एत्थ णं मिक्समनेविजनाणं जाव तिस वि लोगस्स असंखेजाऽभागे । तत्य णं वहवे मित्रामगेविज्यमा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पनता समणाउनो ! ॥ १३३ ॥ कहि णं भंते ! उविसमिगेविज्ञगाणं देवाणं पजनापजनाणं ठाणा पश्चता १ कहि पं भेते ! उविसम-गेविजा। देवा परिवसंति ?, गोयमा ! मज्झिमगेविजागणं उपि जाव उप्पडता एत्थ णं उवरिमगेविज्ञगाणं नुओ गेविज्ञगविमाणपत्थडा पन्नमा । पाईणप्रद्रीणायया. मेसं जहा हेद्रिमगेविज्ञगाणं । नवरं एगे विमाणावाससए भवतीति सक्खायं, सेसं तहेव भाणियव्यं जाव अहसिंदा नामं ने देवगणा पन्नता समणाउसी ! । एकार-युत्तरं हेद्रिमेन सन्तुत्तरं च मिज्जमए । स्वमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १३४ ॥ कहि णं भंते ! अणुत्तरोबबाइयाणं देवाणं पज्जतापज्जनाणं ठाणा पन्ना ! कहि णं भंते ! अणुत्तरीववाइया देवा परिवसंति !. मोयमा ! इमीसे रयण-प्पभाए पुढवीए बहसमरमणिजाओ भूमिभागाओ उन्नं चंदिमसुरियगहगणणवस्तन-तारास्वाणं बहुइं जीयणसयाई, बहुईं जीयणसहस्साई, बहुईं जीयणसबसहस्साई, बहगाओ जोयणकोडीओ, बहगाओ जोयणकोडाकोडीओ, उद्गं दरं उप्पड़ना सोहम्मीसाणसणंकुमार जाव आरणस्यक्षणा तिकि अद्वारसत्तरे गेविजगविमाणा-वाससए वीईबहत्ता तेण परं दूरं गया नीरया. निम्मला, विलिमिरा, विगुद्धा, पंचदिसि पंच अणुत्तरा महङ्महालया महाविमाणा पस्ता । तंजहा-विजए. वेजयंते. जयंते. अपराजिए, सम्बद्धसिद्धे । ते णं विमाणा सम्बर्धणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मद्दा, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निकंकडच्छाया, सप्पसा,

सस्सिरीया, सराजीया, पासाइया, दरिमणिजा, अभिरुवा, पिक्कवा। एत्थ णं अणुत्तरोवबाइयाणं देवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पन्नता । तिमु वि छोगस्स असंखे-जहमागे। तत्थ णं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवर्सति। सब्वे समिष्ट्रिया...सब्वे समनला, सन्वे समाणुभाना, महागुक्खा, अणिदा, अपेस्सा, अपुरोहिया, अह-मिंदा नामं ते देवगणा पष्णता समणाउसो ! ॥ १३५ ॥ कहि णं मंते ! सिद्धाणं ठाणा पन्नता ? कहि णं भंते ! सिद्धा परिवसंति !, गोयमा ! सव्बद्धसिद्धस्स महा-विमाणस्स उवरिक्षाओ थ्भियग्गाओ दुवालस जोयणे उन्हें अबाहाए एत्थ णं ईसि प्पन्भारा णामं पुढवी पत्तना । प्रणयालीसं जोयणस्यसहरसाइं आयामनिक्खंमेणं, एगा जोयणकोडी वायालीसं च सयसहस्याइं नीसं च सयसहस्माइं दोनि य अउणापण्ये जोयणसण् किंचि विसेताहिए परिक्खेवेणं पन्नना । ईसिप्पन्भाराण् णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अडुजोयणिए खेने अडु जोयणाई बाहक्षेणं फाते । तओ अणंतरं च णं मायाए मायाए पएनपरिहाणीए परिहायमाणी परिहायमाणी सब्वेस चरमंतेषु मच्छियपनाओ तणुययरी, अंगुलस्स असंखेबद्भागं बाहब्रेणं पन्नता । ईसिप्पन्भाराए णं पुछवीए दुवालस नामधिज्ञा पत्तता । तंत्रहा-ईसी इ वा. ईसि-य्यब्भारा इ वा, तणू इ वा, नणुतणू इ वा, सिद्धिति वा, सिद्धालए इ वा, मुतिति वा, मुनालए इ वा, लोयगोति वा, लोयग्यश्मियति वा, लोयग्यापडियुज्झणा इ वा, सञ्चपाणभूयजीवसत्तसुद्दावहा इ वा। ईसिप्पच्मारा णं पुढवी सेया संखदल-विमलसोत्थियमुणालदगरयदुसारगोक्खीरहारवण्णा, उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया, सम्ब-जुणनुवण्णमई, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मद्या, नीरया, निम्मला, निप्पंका, निकंकडच्छाया, सप्पमा, सस्सिरीया, सटज्जोया, पासाईया, दरिसणिखा, अभिस्वा, पडिस्ता । इंतिप्पन्भाराए णं पुढवीए सीआए जोयणम्मि स्रोगंतो, तस्स जे से उबरिक्के गाउए तस्स णं गाउयस्य जे से उबरिक्के छन्मागे, एत्थ णं सिद्धा भगवंती साइया अपज्जबसिया अणेगजाइजरामरणजोणिसंसारकलंकलीभावपुणन्भवगन्भवास-वसहीपनंचसमहकेता सासयमणागयद्धं कालं विद्वंति । तत्थ वि य ते अवेया अवे-यणा निम्ममा असंगा य । संसारविष्यमुका पएसनिव्यत्तसंठाका ॥ ९ ॥ कहि पडिह्या सिद्धा कहिं सिद्धा पइद्विया । कहिं बोंदिं बहता में करण मंतूम सिज्झहं ? ॥ २ ॥ अलोए पडिह्या सिद्धा स्त्रेयांगे य पहिद्वया । इहं बोंदि चहत्ता णं तस्य गंत्ण सिज्यह ॥ ३ ॥ धीहं वा हस्सं का जं चरिमभवे हविज्ञ संठाणं । तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भनिया ॥ ४ ॥ वं संठावं तु इहं भवं चयंतस्त चरिमसमयंभि । आसी य पएसधर्म तं संठाणं तहिं तस्य ॥ ५ ॥ विकि समा

तितीया धणुत्तिमागो य होइ नायव्यो । एसा खल्ल सिद्धाणं उद्योसोगाहणा मणिया ॥ ६ ॥ चत्तारि य रयणीओ रयणी तिमागृणिया य बोद्धव्या । एसा स्नलु सिद्धाणं मिडिसमओगाहणा मिणया ॥ ७॥ एगा य होड रयणी अद्भेव य अंगुलाई साहि(य)या । एसा खळ सिद्धाणं जहन्नओगाहणा भणिया ॥ ८ ॥ ओगाहणाइ सिद्धा भवतिभागेण होंति परिहीणा । संठाणमणित्यंयं जरामरणविष्यमुकाणं ॥ ९ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविभक्षा । अचोऽजनमोगाडा पुट्टा सम्बा वि स्रोगंते ॥ १० ॥ फुमइ अणंते सिद्धे सन्वपर्सेहिं नियमसो सिद्धा । तेऽवि य असंखिजनुणा देमपर्-सेहिं जे पूडा ॥ ११ ॥ असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य नाणे य । सामार्मणा-गारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ १२ ॥ केबलणाणुवउत्ता जाणंता सन्बभावगणमावे । पासंता मञ्जाओ खळ केवलदिद्दीहिऽणंताहिं॥ १३॥ निव आत्य माणुगुणं तं सक्खं नवि य सर्वदेवाणं । जं सिद्धाणं सुक्खं अध्वादाष्टं उदगयाणं ॥ १४ ॥ सुरगणसुई समत्तं सध्वद्वापिंडियं अर्णनगुणं । नवि पावइ मुत्तिसुई णंताहिं वम्ग-वगगृहिं ॥ १५ ॥ सिद्धस्य सहोरासी सम्बद्धापिंडिओ जइ हवेजा । सोऽणंतवग्ग-भड़ओं स्व्वागासे न माइजा ॥ १६ ॥ जह णाम कोड़ मिन्छो नगरगुणे बहविहे वियाणंतो । न चएड परिकहेउं उचमाए तहिं असंतीए ॥ १०॥ इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं निरंध तरस ओवम्मं । किंचि विसेसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वोच्छं ॥ १८ ॥ जह सञ्वकामगुणियं पुरिसो भोनुण भोयणं कोइ । तण्हाछहाविमुको अस्टिक जहा अभियतितो ॥ १९ ॥ इय सञ्बद्धालतिता अउलं निष्याणमुबगया सिद्धा । सासयमञ्जाबाहं चिद्धंति सही महं पत्ता ॥ २० ॥ सिद्धति य बुद्धति य पारगयत्ति व परंपरगयत्ति । उम्मुक्कम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २९ ॥ नित्थिन्तमुन्त्रदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुका । अव्याबाहं सोक्सं अणहोती सासयं सिडा ॥ २२ ॥ १३६ ॥ पद्मवणाए भगवर्डए बीयं ठाणपर्य समसं ॥

दिसिगइइंदियकाए औए वेए कसायलेसा य । सम्मत्तनाणदंसणसंजयउपजोग-आहारे ॥ १ ॥ मासगपरित्तपज्ञत्ससुद्धंमसणी भवऽत्थिए चरिमे । जीवे य स्वित्तकन्धे पुम्नलमहत्तंहए चेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएणं सञ्बरकोवा जीवा पण्डिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १२०॥ दिसाणुवाएणं सञ्बर्योवा पुढविकाइया दाहिणेणं, उत्तरेणं विसेसाहिया, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, पण्डिमेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सञ्बरकोवा आउकाइया पण्डिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेमाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सञ्बरकोवा वेउकाइया दाहिणुत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संकेक्युणं, पण्डिमेणं विसेसाहिया । विसाणु

वाएणं सव्वत्योवा बाउकाइया पुरच्छिमेणं, पश्चिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेया-हिया, दाहिणेणं निसेमाहिया । दिसाणुवाएणं सन्वत्योवा वणस्सइकाइया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १३८ ॥ दिसाणुवाएणं सन्वत्थोवा बेइंदिया पच्छिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दक्खिणेणं विसेमाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सञ्वत्थोवा तेइंदिया पचित्यमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणु-वाएणं मञ्बत्थोवा चउरिदिया पचत्थिमेणं, पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेमाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १३९ ॥ दिसाणुवाएणं सन्तरयोवा नेरइया पुरन्छिमपचित्यमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं मव्यत्योवा रयणप्यभापुढवीनेरइया पुरच्छिमपचन्यिमटत्तरेणं, दाहिणेणं दियाणुवाएणं मन्वस्थोवा मक्करप्पभापुढवीनेरङ्या पुरच्छिमपचरिथमउत्तरेणं, दाहि-णेणं असंखेजगुणा । दिसाणुनाएणं सन्तत्योवा वाळुयप्पमापुदवीनरङ्या पुरच्छिम-पचित्थमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सन्वत्थोवा पंकप्पभापुढ-वीनेरहया पुरच्छिमपचित्र्यमञ्ज्ञरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सन्य-त्योवा धूमप्पभापुत्रवीनेरह्या पुरच्छिमप्यत्थिनउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुकाएणं सन्वत्थोवा तमप्पहापुढवीनेरङ्या पुरच्छिमपचत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सन्वत्थोवा अहेसतामापुढवीनेरहया पुरच्छिमप-चित्यमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दाहिणेहितो अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिती छट्टीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरस्क्षिमपचित्यमउत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं असंबोजगुणा, दाहिणिहेहिंतो तमापुढवीनेरइएहिंतो पंचमाए धूमप्पभाए पुउवीए नेरइया पुरच्छिमपबस्थिमउत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं असंखेजगुणा, दाहि-णिलेहिंतो भूमप्पमापुढवीनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छि-मप्चित्यमउत्तरेणं असंखेळगुणा, दाहिणेणं असंखेळगुणा, दाहिणिक्रेहिंतो पंकप्यभा-पुडवीनेरइएहिंतो तइयाए वाल्ययपमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपचित्यमउत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं असंखेजगुणा, दाहिणिहोहितो वालुयप्पभापुढवीनेरइएहिती दोबाए सक्तरप्यभाए पुरुवीए नेरह्या पुरच्छिमप्यत्विमाउत्तरेणं असंखेळागुणा, दाहिणेणं असंखेजगुणा, दाहिणिहेहितो सक्तरप्पमापुडवीनेरइएहितो इमीसे रयणप्प-भाए पुढवीए नेरह्या पुरच्छिमप्यत्यमजत्तरेणं असंखेळगुणा, दाहिणेणं असंखेळ-गुणा ॥ १४० ॥ दिसाणुनाएणं सञ्चत्बोना पंचिदिया तिरिक्खजोणिया पच्छिमेणं, पुरन्छियेणं विसेसाहिया, दाहियेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥ १४१ ॥

दिसाणुवाएणं सन्वत्थोत्रा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संखेजगुणा, पश्चत्य-मेणं विसेसाहिया ॥ १४२ ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा परच्छि-मपबत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सञ्बत्थोवा वाणमंतरा देवा पुरच्छिमेणं, पचित्यमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसा-हिया, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सन्वत्थोवा जोइसिया देवा पुर्चिछ-मण्यत्थिमेणं, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्य-त्थोवा देवा मोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपचित्यमेणं, उत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सन्वत्योवा देवा ईसाणे कप्पे पुरन्छिमपश्चत्यमेणं, उत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुत्राएणं सञ्बत्थोवा देवा सणंकुमारे कप्पे पुरन्ध्छिमपचित्यमेणं, उत्तरेणं असंखेजगुणा, दाहिणेणं विसेसा-हिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्योवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमपन्नत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखे बगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया । दिसाणुत्राएणं सञ्बत्योवा देवा बंभलोए कप्पे पुरन्छिमपचत्यिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेळगुणा । दिसाणुवाएणं सन्वत्थोवा देवा लंतए कप्पे पुरच्छिमपचत्थिमउनरेणं, दाहिणेणं असंखेजगुणा । दिसाणुवाएणं सन्वतथोवा देवा महासक्के कप्पे पुर्विन्नमण्यत्थिमउत्तरंणं, दाहिणेणं असंखेळगुणा । दिसाणुवाएणं सञ्बत्थोवा देवा सहस्तारे कप्पे पुरच्छिमपबत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखे बगुणा । तेण परं बहसमोत्रवन्नगा समणाउसो ! ॥ १४३ ॥ दिसाणुबाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं, पुरच्छिमेणं संखेजगुणा, पचित्थमेणं विसेसाहिया ॥ १ दारं ॥ १४४ ॥ एएसि णं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाण य पंचगइसमासेणं कथरे कयरेहिंतो अप्या वा बहुया वा ताहा वा विसेसा-हिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा मणुरसा, नेरहया असंखेळगुणा, देवा असंखेळगुणा, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्सजोणिया अणंतगुणा ॥ १४५ ॥ एएसि णं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाण य अद्रगइसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुह्रा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवाओ मणुरसीओ, मणुरसा असंके जगुणा, नेरहया असंके जगुणा, तिरिक्सजोणिणीओ असंखेजगुणाओ, देवा असंखेजगुणा, देवीओ संखेजगुणाओ, विद्या अणंतगुणा, विविक्तकोणिया अणंतगुणा ॥ २ दारं ॥ १४६ ॥ एएवि र्ण भंते ! सहंदियाणं एगिदियाणं बेडंदियाणं तेइंदियाणं चरुरिदियाणं पंचिदियाणं अणिदियाण य कमरे कमरेहिंतो अप्या वा बहुया वा तक्का वा विश्वेसाहिया वा दे गोयमा ! सम्बत्योवा पंचिदया, चलरिदिया विक्रेसाहिया, तेईदिया विसेसाहिया,

बेहंदिया विसेसाहिया, अणिदिया अणंतगुणा, एगिदिया अणंतगुणा, सहंदिया विसेसाहिया ॥ १४७ ॥ एएसि णं भंते ! सईदियाणं एगिदियाणं वेइंदियाणं तेइंदियाणं चर्डिरिदयाणं पंचिंदियाणं अपजनगाणं कयरे कयरेहिंनो अप्पा ना बहुया वा तुक्रा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पंचिंदिया अपजनगा, चडरिंदिया अपजत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपजत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्ञत्तमा विसेसाहिया. एगिंदिया अपज्ञत्तमा अर्णत्मुणा. सईदिया अपज्ञत्तमा बिसेगाहिया ॥ १४८ ॥ एएसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चडरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जताणं कयरे क्यरेहिंनो अप्या वा बहया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! मन्बत्योवा चर्डारेदिया पजतगा, पंचिदिया पजनगा विसेमाहिया. बेइंदिया पजनगा विसेमाहिया. तेइंदिया पजनगा विसेसा-हिया, एगिंदिया पजनगा अणंतगुणा, संडंदिया पजनगा विसेसाहिया ॥ १४९ ॥ एएसि णं भंते ! सइंदियाणं पजातापजाताणं कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तहा वा विसेसाहिया वा ! गोयमा ! सम्बत्योवा सइंदिया अपज्जनगा, सइंदिया पजनगा संसेजगुणा। एएसि णं भंत ! एगिंदियाण पजनापजनाण कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थीवा एगिंदिया अपजनगा, एगिंदिया पजनगा संसेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं पजनापजनाणं कयरे कयरेहितो अप्या वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गीयमा : सन्त्रत्थोवा बेइंदिया पजनगा, बेइंदिया अपजनगा असंखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! तेइंदियाणं पत्नत्तापत्नताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहया वा तुहा वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्योवा नेइंदिया पजनगा. तेइंदिया अपजत्तमा असंखेजगुणा । एएसि णं भेते ! चर्डारेदियाणं पज्जतापज्जताणं कयरे कयरेहिंती अप्पा वा बहुया वा तुझा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सञ्चत्योवा चडरिंदिया पजनगा, चडरिंदिया अपजनगा असंखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जसापज्जसाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुन्ना वा विसेसा-हिया वा ! गोयमा ! सम्बत्योवा पंचेंदिया प्रजतगा. पंचेंदिया अपजतगा असंबे-जगुणा ॥ १५० ॥ एएसि णं अंते ! सईदियाणं एगिदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिदियाणं पंचिदियाणं पञ्जनापञ्जनाणं कयरे क्यरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुक्षा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्योवा नउरिंदिया पत्रत्या, पेनिंदिया पजनगा विसेसाहिया, वेइंदिया पजनगा विसेसाहिया, तेइंदिया पजनगा विसेसा-हिया, पंचिदिसा अफनतमा असंकेजगुणा, चर्डोरिदिया अफनतमा विसेसाहिया.

तेइंदिया अपजनगा विसेयाहिया, बेइंदिया अपजनगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपजनगा अणंतगुणा, सइंदिया अपजनगा विसेमाहिया, एगिंदिया पजनगा संखे-जगुणा, सहंदिया पजनगा विसेसाहिया, सहंदिया विसेमाहिया ॥ ३ दारं ॥ १५१ ॥ एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइ-याणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं अकाइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुह्रा वा विसेसाहिया वा? गोधमा ! सन्वत्थोवा नसकाइया, तेउकाइया असंखे-जगुणा, पुर्टावकाइया विसेसाहिया, आ उकाइया विसेसाहिया, वा उकाइया विसेमाहिया, अकाइया अर्णनगुणा, वणस्मइकाइया अर्णतगुणा, सकाइया विसेसाहिया ॥ १५२ ॥ एएसि णं भंते ! मकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाडयाणं नसकाइयाणं अपजनगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा तमकाइया अपज्जतगा, तेउकाइया अपजनगा असंखेजगुणा, पुरुविकाइया अपजनगा विसेसाहिया, आउकार्या अपज-त्तगा विसेमाहिया, वाउकाइया अपजनगा विसेमाहिया, वणस्सद्काइया अपजनगा अर्णतगुणा, मकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया ॥ १५३ ॥ एएसि णं भंते ! सकाइ-याणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं नेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्मइकाइयाणं तनकाइयाणं पजनगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुझा वा विसेमाहिया वा ? गोयमा ! मुळ्वत्थोवा तमकाइया पज्जतगा, तेउकाइया पजतगा असंखेजगुणा, पुरुविकाइया पजनगा विसेसाहिया, आउकाइया पजनगा विसेसाहिया, बाउकाइया पजनगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पजनगा अर्णतगुणा, सकाइया पजनगा विसेसाहिया ॥ १५४ ॥ एएसि णं मंते ! सकाइयाणं पजनतापजनताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुछा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा सकाइया अपजानगा, सकाइया पजानगा संखेजगुणा ॥ एएसि णं अंते ! पुढ-विकाइयाणं पज्जनापज्जनगाणं कयरे कयरेहितो अप्या वा बहुवा वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा! सञ्बत्योवा पुढविकाइया अपजनाग, पुढविकाइया पजत्तगा संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते । आउकाइयाणं पजतापजताणं कयरे कमरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा आउकाह्या अपजत्तगा, आउकाह्या पजत्तगा संखेळगुणा ॥ एएसि णं मंते ! तेजकाइयाणं पज्जतापज्जताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुमा वा तुष्टा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सञ्जत्योवा तेउकाइया अपजनगा. तेउकाइया पजनगा संकेजगुणा ॥ एएसि णं अंते । बाउकाइयाणं पजातापजाताणं कवरे कवरेहिंतो अप्या

वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्योवा वाउकाइया अपज-त्तगा, बारकाइया पञ्चतगा संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! बणस्सइकाइयाणं पञ्चता-पजताणं रुवरे कवरेहितो अप्या वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गीयमा! सम्बत्योवा वणस्सद्काह्या अपजन्तगा, वणस्सद्काह्या पजनगा संखेजगुणा ॥ एएसि णं भेते ! तसकाइयाणं पज्जतापज्जनाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गो०! सञ्बत्थोवा तसकाइया पजनगा, तसकाइया अपजनगा असंखेजगुणा ॥ १५५ ॥ एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेजकाइयाणं वाजकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण य पजनापज्यताणं कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा बहुया वा तुन्ना वा जिसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पजतागा, तसकाइया अपजनगा संखेजगुणा, तेजकाइया अपजतागा असंखेजगुणा, पुढविकाइया अपजनगा विसेसादिया, आउकाइया अपजनगा विसे-साहिया, वाउकाइया अपज्जनगा विसेसाहिया, तेउकाइया पजनगा संखेजगुणा, पुढांवकाड्या पज्जनगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जनगा विसेसाहिया, वाउकाइया पजनगा विसेमाहिया, वणस्सइकाइया अपजनगा अर्णतगुणा, सकाइया अपजनगा विसेमाहिया, वणस्सइकाइया पजलगा संखेजगुणा, सकाइया पजलगा विसेसाहिया, मकाइया विमेसाहिया ॥ १५६ ॥ एएसि णं मंते ! सहुमाणं सहुमपुरविकाइयाणं स्रहुमआउकाइयाणं स्रहुमतेउकाइयाणं स्रहुमबाउकाइयाणं स्रहुमबणस्सरकाइयाणं सुहुमनिओयाण य कयरे कयरेहिंनो अप्या वा बहुया वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा! सन्वरथोवा मुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउ-काइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असंखेजगुणा, चहुमनणस्मइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ॥ १५७ ॥ एएसि णं अंते ! रहुमअपजनगाणं मुहुमपुढविकाइयअपजनगाणं सुहुमआउकाइयअपजनगाणं सुहुम-ते उकाइयअपजलगाणं सुहुमवाउकाइयअपजलगाणं सुहुमवणस्सइकाइयअपजलगाणं मृहुमनिओयअपज्जनगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सञ्वत्योवा महुमतेजकाइया अपजत्तगा, सुहुमपुढविकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउ-काइया अपजनना विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपजनना विसेसाहिया, सुहुमनि-भीया अपजनगा असंबेजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपजनगा अर्णतगुणा, सुहुमा अपजनगा विसेसाहिया ॥ १५८ ॥ एएसि णं अंते ! मुहुमपजनगाणं सुहुमपुढवि-काइमपज्जतमाणं सुदुमसाउकाइयपज्जतमाणं सुदुमतेउकाइयपज्जतमाणं सुदुमबाउ-काश्यपज्ञत्तगार्थं सहुमवणस्तर्काश्यपज्ञत्तगार्णं सहुमनिओयपज्ञत्तगाण य स्वयरे ३९ ध्रुला०ः

कयरेहिंनो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सन्वत्थोवा मृहुमते उकाइया पजतगा, सुहुम-पुढविकाइया पजनगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पजनगा विसेसाहिया, सुहुम-वाउकाइया पजत्तगा विसेलाहिया, सहुमनिओया पजत्तगा असंखेजगुणा, सहुम-क्णस्सइकाइया पज्जतमा अर्णतगुणा, सुहुमपज्जनमा विसेसाहिया ॥ १५९ ॥ एएसि णं भंते! यहुमाणं पञ्जनापञ्जनगाणं कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा ४१ गोयमा! मन्वत्थोवा सहुमअपज्जतगा, सहुमपज्जतगा संबेजगुणा । एएसि णं भंते : सहुम-पुर्वविकाइयाणं पज्जतापज्जनाणं कयरे कयरेहिंती अप्पा वा ४? गोयमा! सन्वत्योवा पहुमपुढिविकाइया अपज्जनगा, मुहुमपुढिविकाइया पज्जनगा संखेजगुणा । एएसि णं भंते ! सहुमआउकाइयाणं पजनापजनगाणं कयरे कथरेहितो अप्पा वा ४? गोयमा ! मन्त्रत्योवा गुहुमआउकाइया अपजनगा, मृहुमआउकाइया पजनगा संखेजगुणा । एएसि णं भंते ! मृहुमतेउकाइयाणं पजनापजनाणं कयरे कयरेहिती अप्या वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहुमनेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमनेउकाइया पजनगा संखेजगुणा । एएसि णं भंते ! सहुमवाडकाइयाणं पजनापजनाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा! मन्त्रत्योवा नुहुमवाउकाइया अपजनगा, सुहुमवाउद्माइया पजनगा संखेजगुणा । एएसि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पजनापजनाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सहम-वणस्सइकाइया अपज्जनगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जनगा संखेजगुणा। एएसि णं भंत ! यहमनिओयाणं पजतापजताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सव्वत्थोवा सहुमनिओया अपज्जत्तगा, सहुमनिओया पज्जत्तगा संखेजगुणा ॥ १६०॥ एएसि णं भंते ! सहमाणं सुहुमपुडविकाइयाणं सुहुमआउकाडयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्मड्काङयाणं सुहुमनिओयाण य पजनापज्जताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा! सव्वत्योवा सुहुमतेउकाइया अपजतया, द्यहुमपुर्विकाइया अपजन्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपजन्तया विसेसा-हिया, मुहुमवाटकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, चुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज-गुणा, इहुमपुडविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, इहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसा-हिया, ग्रहुमवाउकाइया पजन्तया विसेसाहिया, ग्रहुमनिओया अपजन्तया असंबेज-गुणा, सुहुमनिओया पजनाया संखेजगुणा, सुहुमवणस्मइकाइया अपजनाया अर्णत-गुणा, सहुमअपजात्तया विसेसाहिया, सहुमवणस्सहकाह्या पजात्या संखेज्जगुणा, सहमपजत्तया विसेसाहिया, सहमा विसेसाहिया ॥ १६१ ॥ एएसि ण भेते । बायराणं बायरपुढविकाइयाणं बायरआउकाइयाणं बायरतेचकाइयाणं बायरवाउ-

काइयाणं बायरवणस्सहकाइयाणं पत्तेत्रसरीरबायरवणस्सहकाइयाणं बायरनिओयाणं बायरतसकाइयाणं क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा बायर-तसकाइया, बायरतेजकाइया असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया असं-केज्जुणा, बायरनिओया असंखेजगुणा, बायरपुरविकाइया असंखेजगुणा, बायर-आउकाइया असंखेजगुणा, बायरवाउकाइया असंखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया अर्णतगुणा, बायरा विसेसाहिया ॥ १६२ ॥ एएसि णं भंते ! बायरपुढविकाइय-अपजतनाणं वायरआउकाइयअपजतनाणं बायरतेउकाइयअपजतनाणं बायरवाउ-काइयअपज्जनगाणं वायरवणस्सइकाइयअपज्जनगाणं पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइय-अपजनगाणं वायर्निओयअपजनगाणं बायरतसकाइयअपजनगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्योवा बायरतसकाइया अपजत्तगा, बायरते उकाइया अपजत्तगा असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवर्णस्सइकाइया अपज-त्तगा असंखेजगुणा, बायर्गनओया अपजत्तगा असंखेजगुणा, बायर्पुडविकाइया अपजत्तगा असंबेजगुणा, बायरआउकाइया अपजत्तगा असंखेजगुणा, बायरबाउ-काइया अपजत्तगा असंखेजगुणा, बायरवणस्सद्दकाइया अपजत्तगा अणंतगुणा, बायरअपजतना विसेसाहिया ॥ १६३ ॥ एएसि णं मंते । बायरपजतयाणं बायर-पुढवीकाइयपजनयाणं बायर्आउकाइयपजनयाणं बायरतेउकाइयपजनयाणं बायर-बाउकाइयपज्जनयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्मइकाइयपज्जनयाणं बायरनिओयपज्जन-याणं बायरतसकाइयपज्जत्तयाण य कयरं कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सन्व-त्थोवा बायरतेजकाइया पजनाया, वायरतसकाइया पजनाया असंखेजगुणा, पत्तिय-सरीरबायरबणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेजगुणा, बायरनिओया पज्जत्तया असंखे-जगुणा, बायरपुढवीकाइया पञ्चनया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया पञ्चतया असंखेजगुणा, बायरवाउकाइया पजत्तया असंखेजगुणा, बायरवणस्सङ्काइया पज-त्तया अणंतगुणा, बायरपञ्जत्तया विसेसाहिया ॥ १६४॥ एएसि णं भंते ! बायराणं पजतापजताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वायरपज-त्तया, वायरअपज्ततया असंखेजगुणा । एएसि मं भंते । बायरपुढवीकाइयाणं पजतापजताणं कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयसा ! सव्वत्योवा नायरपुढवी-काइया पळत्तया, बायरपुढवीकाइया अपजतया असंकेजगुणा । एएसि णं मेते ! बायरआउकाइयाणं पञ्चतापज्जताणं कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सम्बत्धीवा बायरभाउकाइया पजनाया, बायरभाउकाइया अपजनाया असंखेज-गुणा । एएसि णं मंते ! बायरतेउकाह्याणं पजतापजताणं कथरे क्यरेहिंतो

अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा बायरतेलकाइया पज्जत्तया, बायरतेलकाइया अपजात्या असंखेजगुणा । एएसि णं भंते ! बायरवाउकाइयाणं पजतापजताणं क्यरे कमरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सम्बत्योवा बायरबाउकाइया पज्यस्या, वायरबाउकाइया अपज्ञत्तया असंखेजगुणा । एएसि णं भंते ! बायरबणस्सङ्काइयाणं पज्जतापजताणं कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा बायरवणस्स-इकाइया पज्जत्तया, बायरवणस्मइकाइया अपज्जत्तया असंखेजगुणा। एएसि णं भंते ! पत्तेयमरीरबायरवणस्सङ्काइयाणं पज्जतापज्जताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवायरवणस्मइकाइया पज्जत्तया, पत्तेयसरीरवायरवण-स्सइकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा । एएसि णं भंते ! बायरनिओयाणं पजत्ता-पज्जताणं क्यरे क्यरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा बायरनिओया पजता, बायरनिओया अपजता असंखेजगुणा। एएसि णं भंते ! बायरनसकाहयाणं पज्जनाणं कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतस-काइया पजता, बायरतसकाइया अपजना असंखेजगुणा॥ १६५॥ एएसि णं मेते ! बायराणं वायरपुढवीकाइयाणं बायरआउकाइयाणं बायरतेउकाइयाणं बायर-वाजकाइयाणं बायरवणस्सङकाङ्याणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सङ्काङ्याणं बायरनिओ-याणं वायरतसकाइयाणं पज्जतापज्जताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गीयमा ! मन्वत्योवा वायरतेउकाइया पजत्तया, यायरतसकाइया पजत्तया असंखेजगुणा, बायरतसकाइया अपजन्तया असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया पजनाया असंखेजगुणा, बायरनिओया पजनाया असंखेजगुणा, बायरपुढवीकाइया पजनाया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया पजत्तया असंखेजगुणा, बायरवाउकाइया पजनया असंखेजगुणा, बायरतेउकाइया अपज्जत्तमा असंखेजगुणा, फ्तेयसरीरबायरवणस्सइ-काइया अपज्जनमा असंखेजगुणा, बायरनिओया अपजनमा असंखेजगुणा, वायर-पुढवीकाइया अपजनया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया अपजनया असंखेजगुणा, नायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेजगुणा, बायरवणस्सहकाइया पजत्तया अणंत-गुणा, वायरवणस्सद्काद्या अपजन्तया असंखेजगुणा, बायरअपजन्तया विसेसाहिया, वायरः विसेसाहिया ॥ १६६ ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं यहुमञाञ्काइयाणं सहुमतेञकाइयाणं सहुमनाञकाइयाणं सुहुमनणस्सइकाइयाणं सुहुमनिओयाणं बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं वायरकाउकाइयाणं बायरतेउकाइयाणं वायरवाउकाइयाणं वायरवणस्सङ्काइयाणं पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइयाणं वायर-निओयाणं तसकाइयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ १ गोयमा ! सञ्वत्योवा

बायरतसकाइया, बायरतेठकाइया असंखेळगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सङ्काइया असंबेजगुणा, बायरनिओया असंबेजगुणा, बायरपुढवीकाइया असंबेजगुणा, बायरआउकाइया असंखेजगुणा, बायरबाउकाइया असंखेजगुणा, सहुमतेउकाइया असंखेजगुणा, सहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया, सहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाडकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असंखेजगुणा, बायरवणस्सइकाइया अर्णतगुणा, बायरा विसेसाहिया, सहुमवणस्तइकाइया अर्सखेळगुणा, सहुमा विसेसा-हिया ॥ १६७ ॥ एएसि णं मंते ! सुहुमअपजत्तयाणं सहुमपुढवीकाइयाणं अपज्यत्त-याणं मृहुमआउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं मृहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमबाउ-काइयाणे अपजत्मयाणे सुहुमवणस्सइकाइयाणे अपजत्तयाणे सुहुमनिओयाणे अप-जन्तयाणं वायरअपजनयाणं वायरपुढवीकाइयाणं अपजन्तयाणं वायरआउकाइयाणं अपजनयाणं बायरतेजकाइयाणं अपजनयाणं बायरवाजकाइयाणं अपजनयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जनयाणं पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जतयाणं बायरनिओयाणं अपजात्तयाणं बायरतसकाइयाणं अपजात्तयाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सञ्बत्थोवा बायरतसकाइया अपज्जनया, बायरतेउकाइया अपजनया असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरबणस्सहकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा, बायरनिओया अपजनया असंखेजगुणा, बायरपुरवीकाइया अपजन्तया असंखेज-गुणा, वायरआउकाइया अपजत्तया असंखेळगुणा, बायरवाउकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा, सहुमतेलकाइया अपज्जत्तया असंखेजगुणा, सहुमपुढवीकाइया अप-जत्तया विसेसाहिया, सुहुमञाउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपजनया विसेसाहिया, सुहुमनिओया अपजनया असंखेजगुणा, वायरवणसाइ-काइया अपजन्तया अर्णत्सुणा, बायरा अपजन्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सङ्काइया अपजत्तया असंखेजगुणा, सहुमा अपजत्तया विसेसाहिया॥ १६८॥ एएसि णं भंते ! सहुमपञ्चलयाणं सहुमपुढविकाइयपञ्चलयाणं सहुमआउकाइयपञ्चलयाणं सहु-मतेजकाह्यपज्जत्तयाणं सुहुमवाजकाइयपज्जत्त्याणं सुहुमवणस्त्रह्काइयपज्जत्तयाणं सुहु-मनिक्षीयपज्जतयाणं बायरपञ्जतयाणं बायरपुढिबिकास्यपञ्जतयाणं बायरजाउकाइ-यपजत्तयाणं वायरतेजकास्यपञ्जतयाणं वायरवाजकाश्यपञ्जतयाणं वायरवणस्साः काइयपजन्तयाणं पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइयपजन्तयाणं वायरनिओयपजनयाणं बाबरतसकाइयपजनसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोबमा ! सव्बत्योदा बायरतेचकार्या पजनाया, बायरतसकार्या पजनाया असंकेजगुणा, पत्तेयसरीर-बायरबणस्तरकार्या पवत्या असंबेजगुणा, बायरनियोया पवत्तया असंबेजगुणा,

वायरपुडविकाइया पज्जनया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया पजनया असंखेजगुणा, वायरवाउकाइया पजनया असंखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया पजन्तया असंखेजगुणा, सुहमपुढविकाइया पजनाया विसेसाहिया, सुहमआउकाइया पजनाया विसेसाहिया, सुहुमनाउकाइया पजनाया विसेसाहिया, सुहुमनिओया पजनाया असंखेजगुणा, बायरवणस्सइकाइया पजत्तया अणंतगुणा, बायरपजत्तया विसेसाहिया, सहुम-वणस्सङकाइया पजन्तया असंखेजगुणा, ग्रहुमपजन्तया विसेसाहिया ॥ १६९ ॥ एएसि णं भंते ! युहुमाणं वायराण य पज्जतापज्जताणं कयरे कयरेहिनो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! मव्यत्थोवा वायरा पजन्तया, वायरा अपजन्तया असंखेजगुणा, गुहुम-अपजत्तया असंखेजगुणा, मुहुमपजत्तया संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सुहुम-पुढिविकाइयाणं बायरपुढिविकाइयाण च पजनापजनाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा बागरपुढविकाइया पजनाया, वागरपुढविकाइया अपज्ञत्तगा असंखेजगुणा, मुहुमपुहविकाइया अपज्ञत्तया असंखेजगुणा, सुहुम-पुढविकाइया पजनया संखेजगुणा ॥ एएसि ण भेते ! सहुमआनकाइयाणं बायर-आउकाइयाण य पजनापजनाणं कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! सव्बत्थोवा बायरआउकाइया पजनया, बायरआउकाइया अपजनया असंखेज-गुणा, मुहुमञाउकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा, मुहुनञाउकाइया पजत्तया संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं बायरतेजकाइयाण य पजना-पजत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वायरतेउकाइया पजनया, वायरतेउकाइया अपजन्तया असंखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया अपजन्तया असंनेजगुणा, सहुमतेउकाइया पजनाया संनेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सहुमवाउ-काइयाणं बायरवाडकाइयाण य पजनापजनाणं कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सन्बत्थोवा बायरवाउकाइया पजनाया, बायरवाउकाइया अपजनाया असंखेजगुणा, महुमा तेलकाइया अपजन्तया असंखेजगुणा, महुमवालकाइया पजत्तया संखेजगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सहुमवणस्सइकाइयाणं शायरवणस्सइ-काइयाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरब-णस्मइकाइया पजत्तया, बायरवणस्सइकाइया अपजत्तया असंखेळगुणा, सहुम-वणस्महकाह्या अपजत्तया असंखेजगुणा, सुहुमवणस्सहकाह्या पजत्तया संखे-जगुणा ॥ एएसि णं भंते ! सुहुमनिओयाणं वायरनिओवाण य पजनापजन ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? योयमा! सम्बत्योवा बायरनिओया पजत्तया, बायरनिओया अपजत्तया असंबेज्युणा, द्वहुमनिओया अपजत्तया

असंखेजगुणा, सुहुमनिओया पजत्तया संखेजगुणा॥ १७०॥ एएसि णं मंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढवीकास्याणं सुहुमआउकास्याणं सुहुमतेउकास्याणं सुहुमवाउका-इयाणं सुहुमनणस्सइकाइयाणं सुहुमनिओयाणं वायराणं वायरपुढविकाइयाणं वायर-आउकाइयाणं बायरतेउकाइयाणं बायरवाउकाइयाणं बायरवणस्सइकाइयाणं पत्तेय-सरीरवायरवणस्यद्काइयाणं वायरनिओयाणं वायरतसकाइयाण य पज्जनापज्जनाणं क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! सव्वत्योवा बायरतेउकाइया पजनाया, वायरतसकाइया पज्जनया असंखेजगुणा, बायरतसकाइया अपजन्तया असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्सहकाह्या पज्जनया असंखेजगुणा, वायरनिओया पज्जनया असंखेजगुणा, वायर्पुढविकाइया पजत्तया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया पज-त्तया असंखेजगुणा, वायरवाउकाइया पजताया असंखेजगुणा, वायरतेउकाइया अपजनया असंखेजगुणा, पत्तेयसरीरबायरवणस्मइकाइया अपजत्तया असंखेज-गुणा, वायरनिओया अपज्ञत्तया असंखेजगुणा, बायरपुढवीकाइया अपज्जनया असंखेजगुणा, बायरआउकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा, बायरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेजगुणा, मुहुमतेउकाइया अपज्जनमा असंखेजगुणा, मुहुमपुढवी-काइया अपज्जनया विसेसाहिया, सहुमआउकाइया अपजनया विसेसाहिया, सहुम-वाटकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, सहुमतेउकाइया पजत्तया असंखेजगुणा, सुहुमपुढवीकाउया पजत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पजनया विसेसाहिया, सुहुमनिओया अपजनया असंखेजगुणा, सुहुमनिओया पजत्तया संखेजगुणा, बायरवणस्सद्काइया पजत्तया अणंतगुणा, नायरपजत्तया विसेसाहिया, नायरवणस्मइकाइया अपज्जत्तया असंखेजगुणा, नायर-अपजत्तया विसेसाहिया, वायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सङ्काङ्गा अपजनमा असंखेजगुणा, सुहुमअपजतया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सङ्काइया पजत्तया संखेज-गुणा, सुहुमपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ॥ ४ दारं ॥ १७९ ॥ एएसि णं भन्ते ! जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वहजोगीणं कायजोगीणं अजोगीण य कमरे कमरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा जीवा मणजोगी, वङ्जोगी असंखेळगुणा, अजोगी अर्णतगुणा, कायजोगी भणंतगुणा, सजोगी विसेसाहिया ॥ ५ दारं ॥ १७२ ॥ एएसि णं भन्ते ! जीवाणं सवेयमाणं इत्वीवेयगाणं पुरिसवेयमाणं नपुंसमवेयमाणं अवेयमाण य क्यरे क्यरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुक्का वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सञ्चत्योचा जीवा पुरिसवेयगा, इत्वीवेयगा संखेळागुणा, अवेयगा अर्णतगुणा, नपुंसगवेयगा अर्णत-

गुणा, सबेयमा विसेसाहिया॥ ६ दारं॥ १७३॥ एएसि णं भंते! सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोहकसाईणं अकसाईण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुक्का वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा अकमाई, माणकमाई अर्णत्गुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोहकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया ॥ ७ दारं ॥ १७४ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं मलेस्साणं किण्हलेस्माणं नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साणं पम्ह-लेस्माणं सक्तलेस्साणं अलेस्साण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विमेसाहिया वा १ गोयमा ! सञ्वत्योवा जीवा मुक्छेस्सा, पम्हलेस्सा संखेजगुणा, तेउछेस्मा संखेजगुणा, अलेस्सा अर्णनगुणा, काउलेस्सा अर्णनगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कम्हळेस्सा विसेमाहिया, सळेस्सा विसेसाहिया ॥ ८ दारं ॥ १ ५% ॥ एएसि णं मंत ! जीवाणं सम्महिद्वीणं मिन्छादिद्वीणं सम्मामिन्छादिद्वीण य कयरे कसरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुन्हा वा विसंसाहिया वा ? गोयमा ! सञ्बन्धोवा जीवा सम्मामिच्छादिद्री, सम्माहिद्री अणंतगुणा, मिच्छादिद्वी अणंतगुणा ॥ ९ दारं ॥ १७६ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणीणं ओहिणाणीणं भण-पजनणाणीणं केवलणाणीण य कयरे कयरेहिंनो अप्पावा बहुया वा नुहा वा विसेगाहिया वा ? गोयमा ! सन्बत्योवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असं-केजगुणा, आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवि तुख्ना विसंमाहिया, केवलणाणी अर्णनगुणा ॥ १७७ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं महअनाणीणं सुयअनाणीणं विभंगणाणीण य कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया ना ? गोयमा ! मञ्जत्थोवा जीवा विभंगणाणी, महस्रज्ञाणी सुयअसाणी दोवि तुह्रा अणंत्रगुणा ॥ १७८ ॥ एएनि णं भंते ! जीवाणं आसिणिवोह्नियनाणीणं सुयनाणीणं ओहिनाणीणं मणपञ्जवनाणीणं केवलनाणीणं मङ्खनाणीणं सुयक्षनाणीणं विभंग-नाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुझा वा विसेमाहिया वा ? गोयमा ! मन्त्रत्थोता जीवा भणपजावनाणी, ओहिनाणी असंखे अगुणा, आसिषिबोहियनाणी मुयनाणी दोवि तुक्का विसेसाहिया, विभंगनाणी असंखेजगुणा, केवलनाणी अणंत-गुणा, महअन्नाणी सुयअन्नाणी य दोवि तुह्ना अणंतगुणा ॥ १० दारं ॥ १७९ ॥ एएमि णं भंते ! जीवाणं चक्खुदंयणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिइंसणीणं केनळदंस-णीण य उत्यरे कथरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुक्का वा विसेसाहिया वा ? मीयमा ! सन्वत्थोत्रा जीवा ओहिदंसणी, चक्खुदंसणी असंखेळगुणा, केबलदंसणी अणंतगुणा, अवक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥ ११ दारं ॥ १८० ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं

संज्याणं असंज्याणं संज्यासंज्याणं नोसंज्यनोअसंज्यनोसंज्यासंज्याण य क्यरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुक्षा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा जीवा संजया, संजयासंजया असंखेजगुणा, नोसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजया अणंतगुणा, असंजया अणंतगुणा ॥ १२ दारे ॥ १८१ ॥ एएसि णं मंते ! जीवाणं सागारीवउत्ताणं अणागारीवउत्ताण य कयरे कयरेहिती अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागारीवउत्ता संखेजगुणा ॥ १३ दारं ॥ १८२ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसे-साहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा अणाहारगा, आहारगा असेखे अगुणा ॥ १४ दारं ॥ १८३ ॥ एएसि णं भेते । जीवाणं भासगाणं अभासगाण य क्यरे कयरेहिंनो अप्पा वा बहुया वा तुह्ना वा विसंमाहिया वा ? गोयमा ! सञ्बत्योवा जीवा भासगा, अभासगा अणंतगुणा ॥ १५ दारं ॥ १८४ ॥ एएसि र्ण संते ! जीवाणं परिलाणं अपरिलाणं नोपरिलनोअपरिलाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा मुक्का वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परिता, नोपरि-त्तनोअपरिता अणंतगुणा, दापरिता अणंतगुणा ॥ १६ दारं ॥ १८५ ॥ एएसि णं भंत ! जीवाणं पजाताणं अपजाताणं नोपजातानोअपजाताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुवा वा तुह्रा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा नोपजन त्तानोअपञ्चलना, अपञ्चलना अर्णतगुणा, पञ्चलना संखेजगुणा॥ १७ दारं॥ ॥ १८६ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं मुहुमाणं बायराणं नौमुहुमनोवायराण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुह्रा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा जीवा नोसुहुमनोबायरा, बायरा अणंतगुणा, सुहुमा असंखेजगुणा ॥ १८ दारं ॥ ।। १८७ ।। एएसि णं अंते ! जीवाणं सभीणं असभीणं नीसभीनीअसभीण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्यत्बोव-जीवा सभी, नोसभीनोअसभी अणंतगुणा, असभी अणंतगुणा ॥ १९ दारं ॥ ॥ १८८ ॥ एएसि णं मंते ! जीवाणं सबसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोमव-सिद्धियानीअभवसिद्धियाण य कवरे कवरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया ना ? गोवमा ! सम्बत्योवा जीवा अभवसिद्धिया, णोमवसिद्धियाणो-अभवतिद्विया अणंतराणा, भवतिद्विया अणंतराणा ॥ २० दारं ॥ १८९ ॥ पएति र्ण भंते ! धम्मरिक्काय्यवस्यरिकाय्यागासरियकायजीवरिक्कायपीम्गकरियकाया अदासमयामं रुक्त्रवाए कारे कंत्ररेहितो अप्या वा बहुवा वा तहा वा विसेसा-

हिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए णं तिजिबि तुल्ला दव्बद्वयाए मव्यत्योवा, जीवत्यिकाए दब्बद्वयाए अर्णतगुणे, पोगगलियकाए दव्यद्वयाए अणंतगुणे, अदासमए दव्यद्वयाए अणंतगुणे ॥ १९.० ॥ एएसि णं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाणं पएमह्याए कयरे क्यरेहिंनो अप्पा वा बहुया वा नुख्ना वा विसेसाहिया वा? गोयमा! धम्मन्थिकाए अधम्मन्धिकाए एए णं डोवि तुहा पएसङ्घयाए सन्वत्थोवा, जीवन्धि-काए पएसट्टयाए अणंतगुणे, पोम्गलत्थिकाए पएसट्टयाए अणंतगुणे, अदासमए पएसहुत्राए अणंतगुणे, आगामत्यिकाए पएसहुत्राए अणंनगुणे ॥ १९१ ॥ एयस्म णं भेते ! धम्मत्थिकायस्म दव्बद्वगएमद्वयाएं कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा बहुया बा तुक्रा वा विसेसाहिया वा ! गोयमा ! मन्वत्यांचे एगे धम्मत्थिकाए दव्बद्वयाए, से चेव पएसहग्राए असंखेजगुणे । एयस्य णं भंत । अघम्मत्थिकायस्य दव्बहुपएसहु-याए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा नुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! मन्त्रत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए द्व्वद्वयाए, से चेव पएमद्वयाए असंखेजगुणे। एयम्य णं भंते ! आगासत्थिकायस्स द्व्वद्वपएसद्वयाए क्यरे क्यरेहिंनो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा । सन्वत्थांचे एगे आगासित्थकाए दव्बहुयाए, से चेव पएसहुयाए अर्णतगुणे। एयस्म णं मेते ! जीवत्थिकायस्स दञ्बद्वप्रएसद्वयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेमाहिया वा ? गायमा ! मध्यत्थोषं जीवस्थिकाए द्व्यद्वयाए, से चेव पएमद्वयाए असंखेजगुणे । एयस्य णं भंते ! पोग्गलिथकायस्य दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवे पोगगलियकाए दब्बहुयाए, सं चेव पएसहयाए असंखेळगुणे । अद्धासमए न पुच्छिजङ्, पएसामाबा ॥ १९२ ॥ एएांस णं भंत ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्यिकायजीवत्थिकायपोगगलत्थ-कःयअद्धासमयाणं दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसंताहिया वा? गोयमा! धन्मत्यिकाए अधन्मत्थिकाए आगासत्यिकाए एए तिचि वि तुल्ला दव्बद्वयाए सन्बत्धोवा, धम्मत्यिकाए अधम्मत्यिकाए य एएसि णं दोषि वि तुहा पएसहुयाए असंखेजगुणा, जीवत्यिकाए द्व्यहुयाए अर्णतगुणे, से चंत्र पएमद्वयाए असंखेळगुणे, पोग्गलत्यकाए दव्यद्वयाए अणंतगुणे, से चेव पएसङ्घ-याए असंसे जगुणे, अदासमए दब्बहुपएसहुयाए अणंतगुणे, आगासत्यकाए पएसहु-याए अर्णतगुणे ॥ २१ दार ॥ १९३ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं चरिमाणं अचरि-माण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा !

सम्बत्योवा जीवा अचरिमा, चरिमा अर्णनगुणा ॥ २२ दारं ॥ १९४ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं पोम्पलाणं अद्वासमयाणं सञ्चदन्वाणं सञ्चपणसाणं सञ्चपज्जवाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सञ्बत्योवा जीवा, पोग्गला अणंतगुणा, अद्धासमया अणंतगुणा, सञ्बद्ध्वा विसेसाहिया, सञ्ब-पएसा अर्णतगुणा, सब्वपज्जवा अर्णतगुणा ॥ २३ दारं ॥ १९५ ॥ खेलाणुवाएणं सम्बत्योवा जीवा उन्नलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुके असंखेजगुणा, उन्नुलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ १९६ ॥ खेलाणवाएणं सम्बत्योवा नेरडया तेलोके. अहोलोयतिरियलोए असं-खेजगुणा, अहोलोए असंखेजगुणा ॥ १९७ ॥ खेताणवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्ख-जोणिया उन्नुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं-खेजगुणा, तेलोक् असंखेजगुणा, उन्नलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेताणुवाएणं मञ्बल्योवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असं-बेजगुणाओ, तेलोक्के संबेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संबेजगुणाओ, अहोलोए संखेजगुणाओ, तिरियलोए संखेजगुणाओ ॥ १९८ ॥ खेताणुबाएणं सव्वत्थोवा मणुस्ता तेलोके, उन्नलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेजगुणा, उन्नलोए संखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । वेशाणुवाएणं सन्वत्योवाओ मणुस्तीओ तेलोके, उडुलोयतिरियलोए संखेजगुणाओ, अहोलोयतिरि-यस्रोए संबेजगुणाओ, उन्नस्रोए संबेजगुणाओ, अहोस्रोए संबेजगुणाओ, तिरियस्रोए संखेजगुणाओ ॥ १९९ ॥ खेताणुवाएणं सन्बत्थोवा देवा उन्नलोए, उन्नलोयतिरिय-लोए असंखेजगुणा, तेलोके संखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेत्ताणुनाएणं सम्बत्योवाओ देवीओ उन्नलोए. उन्नलोगतिरियलोए असंखेजगुणाओं, तेलोके संखेजगुणाओं, अहोलोगतिरियलोए संखेजगुणाओ, अहोलोए संखेजगुणाओ, तिरियलीए संखेजगुणाओ ॥ २०० ॥ बेत्ताणवाएणं सन्वत्योवा भवणवासी देवा उन्नलोए, उन्नलोयतिरियलोए असंखेळ-गुणा, तेलोके संखेळागुणा, अहोकोयतिरिक्लोए असंखेळगुणा, तिरियलोए असंखेळ-गुणा, अहीलोए असंबेजगुणा । बेसाजबाएणं सन्तत्योवाओ भवणवासिणीओ देवीओ उद्गुलोए, उद्गुलोमतिरियळोए असंखेजगुणाओ, तेलोके संखेजगुणाओ, अहोलोय-तिरियलेए असंसेजगुणाओ, तिरियलेए असंसेजगुणाओ, अहोलोए असंसेज--गुणाओ ॥ केतापुनाएणं सम्बन्धोवा नाणमंतरा देवा उन्नळोए. उन्नळोसतिरियखोए असंबेजगुणा, तेरलेंद्र संबेजगुणा, अहोत्लेबतिरियलोए असंबेजगुणा, अहोत्लेए

असंखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेनाणुवाएणं सम्बत्योवाओ वाणमंतरीओ देवीओ उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असंखेजगुणाओ, तेलोडे संखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए असंखेजगुणाओ, अहोलोए संखेजगुणाओ, तिरियलोए संखेज-गुणाओ ॥ खेताणवाएणं सञ्चत्योवा जोइसिया देवा उन्नुलोए, उन्नुलोयतिरियलोए असंबेजगुणा, तेलोके संबेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंबेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा । खेलाणवाएणं सव्वत्थोवाओ जोहसिणीओ देवीओ उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असंखेजगुणाओ, तेलोके संखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए असंकेज्युणाओ, अहोलोए संकेज्युणाओ, तिरियलोए असं-मे जगुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएणं सन्त्रत्थोवा वेमाणिया देवा उन्नलोयतिरियलोए, तेलोके संने जगुणा, अहोलोयतिरियलोए मंखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संबंजगुणा, उद्भूलोए असंबंजगुणा । खेलाणुवाएणं सव्वत्योवाओ वेमाणिणीओ देवीओ उद्गलोयतिरियलोए, तेलोक्ने संखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए संखेज-गुणाओ, अहोलोए संखेजगुणाओ, तिरियलोए संखेजगुणाओ, उडुलोए असंखेज-गुणाओ ॥ २०१ ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्यत्योवा एगिदिया जीवा उद्गुलोयतिरियलोए, अहोलोयितिरियलोए विसेमाहिया, तिरियलोए असंखिजगुणा, तेलोके असंखिज-गुणा. उङ्गुलोए असंखिज्युणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेनाणुवाएणं सञ्चत्योवा एगिदिया जीवा अपजत्तगा उन्हुलोयितिरेयलोए, अहोलोयितिरेयलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोंके असंखेजगुणा, उन्हुलोए असंखेजगुणा, अहो-लोए विसेसाहिया । खेताणुवाएणं मन्वत्थोचा एगिदिया जीवा पज्जत्तगा उन्नुलोय-निरियलोग, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिजगुणा, तेलोके असंग्तिजगुणा, उष्टुलोए असंग्तिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०२ ॥ श्वेत्ता-णुवाएणं सन्वत्थोवा बेइंदिया उद्दुलोए, उद्दुलोयतिरियलोए असंस्क्रिक्सुणा, तेलुके असंखिजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखिजगुणा, अहोलोए संखिजगुणा, तिरि-यलोए संखिजगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपजत्तवा उन्नुलोए, उह्नलोयतिरियलोए असंबेजगुणा, तेलोक्के असंबेजगुणा, अहालोयतिरियलोए अमंबेजगुणा, अहोलोए संबेजगुणा, तिरियलोए संबेजगुणा । खेताणुबाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पजना उन्हलोए, उन्हलोयतिरियकोए असंस्थितम्युणा, तेलोके असंख्रिजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंख्रिजगुणा, अहोलोए संख्रिजगुणा, तिरि-यलोए संखिजागुणा ॥ खेतागुवाएणं सन्वत्योवा तेईदिया उनुलोए, उनुलोबितिर-यलोए असंसिज्युणा, तेलोके असंसिज्युणा, महोलोबतिरियलोए असंसिज्युणा,

अहोलोए संसिजगुणा. तिरियलोए संसिजगुणा । खेताणुदाएणं सन्वत्योवा तेइंदिमा अपजत्तया उष्टुलोए, उष्टुलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोके असं-बेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंबेजगुणा, अहोलोए संबेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेलाणुनाएणं सन्वत्योवा तेइंदिया पजलया उन्नुलोए, उन्नुलोय-विरियलोए असंखेजगुणा, तेलुके असंखेजगुणा, अहोलोगतिरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोए संबेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा ॥ खेताणुवाएणं सन्वत्थोवा चर्डारे-दिया जीवा उड्डुकोए, उड्डुकोयतिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोक्के असंखेजगुणा, अहोलोर्यातरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा। खेताणुवाएणं सव्वत्योवा चर्जरिदिया जीवा अपजन्तया उनुलोए, उनुलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुके असंखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेताणुवाएणं सन्वत्थोवा चर्रिदिया जीवा पजत्तया उद्दुलोए, उद्दुलोयितिरेयलोए असंखेजगुणा, तेलोके असंखेजगुणा, अहो-लोयतिरियलोए असंबेज्गुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा ॥२०३॥ खेताणुवाएणं सव्यत्योवा पंचिदिया तेलुके, उहुलोयतिरियलोए संखेजगुणा, अहो-लोयतिरियलोए संखेजगुणा, उहुलोए संखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा । बेत्ताणुवाएणं सव्बत्योवा पंचिदिया अपजत्तया तेलोक्षे, उन्नलोय-तिरियलोए संसेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए संसेजगुणा, उन्नलोए संसेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा। खेताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिदिया पजता उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के संखेजगुणा, अहोलोय-तिरियलोए संखेजगुणा, अहोलोए मंखेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा ॥ २०४ ॥ बेताणुवाएणं सम्बत्योवा पुढविकाइया उड्डलोयतिरियलोप्, अहोलोयतिरियलोप् विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिजगुणा, तेलोक्ने असंखिजगुणा, उन्नुलोए असंखि-जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेताणुवाएणं सव्यत्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उच्चलोयतिरियस्प्रेप्, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोके असंबेजगुणा, उन्नलोए असंबेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेलाणुबा-एणं सम्बत्योवा पुढविकाइया पजात्त्वा उद्गुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए निसेसाहिया, तिरियलोए असंखेळगुणा, तेलुके असंखेळगुणा, उष्टुलोए असंखेळ-गुणा, अहोकीए विसेसाहिया ॥ २०५ ॥ खेलाणुबाएणं सन्वत्वीवा आउकाइया उन्नलोगतिरिगलोए, अहोकोगतिरिगलोए विसेसाहिया, तिरिगलोए असंखेजगुणा, ं तेळके असंबेक्युणा, उक्कोएं असंबेक्युणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेताणु- वाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपजात्तया उन्नुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोके असंखेजगुणा, उन्नुलोए असंखेज-गुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्यत्योवा आउकाइया पजनाया उड्डुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेत्येके असंखेजगुणा, उन्हुलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०६ ॥ क्षेत्राणुवाएणं सन्वरयोवा तेउकाइया उहुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसंगाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोक्के असंखेजगुणा, उहुलोए असंखेज-गुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेनाणुबाएणं मञ्चत्योवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोक् असंखेजगुणा, उन्नुलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु-वाएणं मव्यत्थोवा तेटकाइया पजनाया उष्टुलोयतिरियलोए, अहोलोयितिरियलोए विमेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोक असंखेजगुणा, उक्कुलोए असंखेज-गुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०७ ॥ खेताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उडूलोयनिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेमाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलोके असंखेजगुणा, उद्दुलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेताणु-वाएणं सन्वत्थोवा वाउकाइया अफजत्तया उन्नुलोयतिरियलोए, अहोलोयितिरियलोए विनेमाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, नेलोके असंखेजगुणा, उन्नुलोए असंखे-जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेलाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाह्या पजल्या उड्ढुकोर्यानरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसंसाहिया, तिरियलोए असंखेज्वगुणा, तेलुके असंखेजगुणा, उहुलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०८ ॥ खेनाणुवाएणं सन्वत्थोवा वणस्सइकाइया उ**न्ह**ळोयतिरियलोष्, अहोलोयतिरियलोष् विसेमाहिया, तिरियलाए असंखेजगुणा, तेलोके असंखेजगुणा, उन्नुलोए असंखेज-गुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सहकाह्या अपज-त्तया उद्दुलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज-गुणा, तंलुके असंखेजगुणा, उन्नलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । लेनाणुवाएणं सन्वत्थोवा वणस्सइकाइया पजनया उड्डलोयतिरियलोए, अहोलोय-तिरियलोग् विसेसाहिया, तिरियलोग् असंखेजगुणा, तेलोक् असंखेजगुणा, उन्नलोग् असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ॥ २०९ ॥ खेताणुवाएणं सन्वरथोवा तस-काइया तेलोके, उन्द्रलोयतिरियलोए असंखे जगुणा, अहोलोबिरियलोए संखे जगुणा, उद्दुलोए संवेजगुणा, अहोलोए संबेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा । बेताणु-

वाएणं सम्बत्योवा तसकाइया अपजत्तया तेलोके, उन्नलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेजगुणा, उहुलोए संखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरि-यळोए असंखेजगुणा । खेत्ताणुवाएणं सम्बत्थोवा नसकाइया पजत्तया तेलोक्षे. उन्नलो-यतिरियलोए असंखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेजगुणा, उड्डलोए संखेजगुणा, अहोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए असंखेजगुणा ॥ २४ दारं ॥ २१० ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं भारयस्य कम्पस्य बंघगाणं अवंधगाणं पजनाणं अपज्ञताणं मुक्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सायावेयगाणं असायावेयगाणं इंदिओव-उत्ताणं नोइंदिओवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कवरं कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्योवा जीवा आउ-यस्य कम्परस बंधगा १, अपज्जनया संखेजगुणा २, सुत्ता संखेजगुणा ३, समो-ह्या संखेजगुणा ४, सायावेयगा संखेजगुणा ५, इंदिओवउत्ता संखेजगुणा ६, अणागारोवउत्ता संखेळगुणा ७, सागारोवउत्ता संखेळगुणा ८, नोइंदिओवउत्ता विसे-साहिया ९, असायावेयगा विसेसाहिया १०, असमोह्या विसेसाहिया ११, जागरा विसेसाहिया १२, पजनाया विसेसाहिया १३, आउयस्स कम्मस्स अवंधया विसेसा-हिया १४॥ २५ दारं ॥ २११॥ खेताणुबाएणं सञ्चत्योवा पुग्गला तेलोके, उन्नलोय-तिरियलोए अणंतगुणा, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेजगुणा, उन्नलोए असंखेजगुणा, अहीलोए विसेसाहिया । दिसाणुनाएणं सन्वत्योवा पुरगला उच्चदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपचित्यमेण उ दोवि तुला असंखेजगुणा, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपचित्यमेण य दोवि विसेसाहिया. परच्छिमेणं असंखेजगुणा. पश्चतियमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्योवाइं दव्वाइं तेलोके, उन्नलोयतिरियलोए अणंतग्रणाइं. अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं, उन्नुलोए असंखेजगुणाइं, अहोलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेजगुणाई । दिसाणुवाएणं सन्वत्योवाई दम्वाई अहोदि-साए, उन्नृदुसाए अणंतनुषाइं, उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपचित्यमेण य दोवि तुह्नाई असंखेजगुणाई, दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपत्रत्थिमेण य दोषि तुल्लाई विसेसाहियाई. पुरच्छिमेणं असंबोजगुणाइं, पचित्यमेणं विसेसाहियाइं, दाहिणेणं विसेसाहियाई, उत्तरेणं विसेसाहियाई ॥ २१२ ॥ एएसि णं भंते ! परमाणुपोम्गलाणं संखेजपएसि-याणं असंखेजपरसियाणं अणंतपरसियाण य खंधाणं दब्बद्वयार परसङ्खार रम्बद्र-पएसड्डबाए कमरे कमरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्योवा व्यवंतपएतिया संघा द्व्यद्वयाए. परमाणुपोग्नका द्व्यद्वयाए

अर्णतगुणा, संखेजपएसिया खंघा दव्यद्वयाए संखेजगुणा, असंखपएसिया संघा द्व्यद्वयाए असंसेजगुणा । पएसद्वयाए-सन्यत्थोवा अणंतपएसिया संधा पएसद्वयाए, परमाणुपोग्गला अपएसद्वयाए अणंतगुणा, संसेजपएसिया खंघा पएसद्वयाए संसेज-गुणा, असंखपएसिया संघा पएसद्वयाए असंसेखगुणा । दव्यद्वपएसद्वयाए-सव्यत्योवा अणंतपएसिया खंघा दव्बद्वयाए, ते चेव पएसद्वयाए अणंतगुणा, परमाणुपोमाला दव्बद्धअपएयडुयाए अर्णनगुणा, संखेजपएसिया खंधा दव्बद्धयाए संखेजगुणा, ते चेव पएमद्वयाए संखेजगुणा, असंखपएसिया खंधा दव्बद्वयाए असंखेजगुणा, ते चंद पएसद्वयाए असंखेजगुणा ॥२१३॥ एएसि णं भंते ! एगपएसोगाडाणं संखेजपए-सोगाहाणं असंसेजपएसोगाहाण य पोरगलाणं दव्बद्वयाए पएसङ्घयाए दव्बद्वपएसङ्घ-याए कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा वहुया वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्द-त्थोवा एगपएसोगाढा पोम्गला दव्बद्वयाए, संबेजपएसोगाढा पोम्गला दव्बद्वयाए संबेजगुणा, असंबेजपएसोगाढा पोगाला दव्बद्वयाए असंबेजगुणा, पएमद्वयाए-मञ्बत्योवा एगपएसोगाढा पोम्गला पएसहुयाए, संखेजपएसोगाढा पोम्गला पएसहुयाए 'संखेजगुणा, असंखेजपएसोगाढा पोग्गला पएसहुगाए असंखेजगुणा । द्व्बहुपए-सद्वयाए-मन्बत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला दव्बद्वपएसद्वयाए, संस्क्रियपएमोगाढा पुग्गला दव्बद्वयाए संखिज्जगुणा, ते चेव पएसद्वयाए संखिजगुणा, असंखिजपएसो-गाड। पुरगला दन्बद्वयाए असंखिजगुणा, ते चेव पएसद्वयाए असंखिजगुणा ॥२९४॥ एएसि णं भन्ते ! एगसमयठिइयाणं संखिजसमयठिइयाणं असंखिजसमयठिइयाणं पुग्गलाणं दव्वद्वयाण् पएमद्वयाण् दव्बद्वपण्सद्वयाण् कयरे कथरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुःहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयिऽइया पुग्गला दव्बद्वयाए, संस्निजममयठिङ्या पुग्गला दव्बद्वयाए संखिजगुणा, असंखिजसमय-ठिड्या पुग्गला द्व्यद्वयाए असंखिजगुणा । पएसद्वयाए-सव्यत्योवा एगसमयठिड्या पुग्गला पएसद्वयाए, संबेज्जसमयिठिङ्या पुग्गला पएसद्वयाए संबेजगुणा, असं-खेजसमयिव्हिया पुग्गला पएसहुयाए असंखेजगुणा। दन्बहुपएसहुयाए-सन्वत्योवा एगसमयटिङ्या पुग्गला दव्बद्वपएसद्वयाए, संखिजसमयटिङ्या पुग्गला दव्बद्वयाए संस्त्रिजगुणा, ते चेव पएसद्वयाए संस्त्रिजगुणा। असंस्त्रिजसमयदिस्या पुग्गला दब्बहुयाए असंखिजगुणा, ते चेब पएसहुयाए असंखिजगुणा ॥ २१५ ॥ एएसि णं भेते ! एगगुणकालमाणं संखिजगुणकालमाणं असंखिजगुणकालमाणं अर्णतगुण-कालगाण य पुग्यलाणं दव्बहुमाए पएसहमाए दव्बहुपएसहुमाए य कमरे कमरेहिती अप्पा वा बहुया वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा पुग्गला तहा

माणियव्या, एवं संख्यित्रगुणकालगाण वि । एवं सेसावि वण्या गंघा रसा फासा माणियव्या । फासाणं क्रम्सडमन्यगुरुयलह्याणं जहा एगपएसीगाढाणं मणियं तहा भाणियव्यं । अवसेमा फासा जहा वचा तहा भाणियव्या ॥ २६ दारं ॥२१६॥ अह भेते ! सञ्ज्ञीवप्पबर्ह महादण्डयं वज्रइस्सामि-सञ्बरधोवा गञ्भवकंतिया मणुस्सा १, मणुस्तीको संखिजगुणाओ २, बायरतेडकाइया पजनया असंखिज-गुणा ३, अणुत्तरीवबाइया देवा असंखिजगुणा ४, उबरिमगेविजागा देवा संखिज-गुणा ५, मजिझमगेविजया देवा संखिजगुणा ६, हिद्रिमगेविजया देवा संखिज-गुणा ७, अञ्चल कप्पे देवा संखिळगुणा ८, आरणे कप्पे देवा संखिळगुणा ९, पाणए कप्ये देवा संसिज्जगुणा १०, आणए कप्ये देवा संसिज्जगुणा ११, अहे-सत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १२, छद्वीए तमाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १३, सहस्सारे कप्पे देवा असंखिजगुणा १४, महासुक्के कप्पे देवा असंखिजगुणा १५, पंचमाए धूमप्पमाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १६. लंतए कप्पे देवा असंखिजगुणा १७, चडाबीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा १८, बंमलोए कप्पे देवा असंखिजगुणा १९, तबाए बाह्ययपमाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा २०, माहिंदे कप्पे देवा असंखिजगुणा २१, सणंक्रमारे कप्पे देवा असंखिज्यगुणा २२, दोश्वाए सकरप्पमाए पुढवीए नेरइया असंखिजगुणा २३, संमुच्छिमा मणुस्सा असंखिजगुणा २४, ईसाणे कपे देवा असंखिजागणा २५. ईसाणे कप्पे देवीओ संखिजागणाओ २६. सोहम्मे कप्पे देवा संखिज्युणा २७, सोहम्मे कप्ये देवीको संखिजगुणाओ २८, मवणवासी देवा असंखिजगुणा २९, भक्णवासिणीओ देवीओ संखिजगुणाओ ३०, इमीसे र्यणप्प-भाग पुढवीए नेरह्या असंखिजगुणा ३१, बहुयरपंचिदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखिजगुणा ३२. सहयरपंचिदियतिरिक्सकोणिणीओ संखिजगुणाओ ३३. यस्यरपंचिवियविविक्सजोषिया पुरिसा संखिजगुणा ३४, बस्यरपंचिवियविरि-क्सजोषिणीओ संस्थिजगुणामी १५, जलयरपंनिदियतिरिक्सजोणिया पुरिसा संखिजगुणा ३६, जलगरपंत्रिवियतिरिक्खजोषिणीओ संखिजगुणाओ ३७, वाणमंतरा देवा संशिजगुणा ३८. वाणमंतरीओ देवीओ संशिजगुणाओ ३९, बोइसिया देवा संख्यियाणा ४०. बोइसिजीओ देवीओ संख्यियगुणाओ ४९. सहयरपंत्रिदियतिरिक्सजोणिया नपुंसमा संक्षिज्यगुणा ४२, बल्परपंविदियतिरि-वक्कोनिया न्युंसमा संकिजगुणा ४३, जलवरपंचिदयतिरिक्खजोजिया नप्रसमा संक्षिजगुमा ४४, चडरिविया पजनमा संक्षिजगुणा ४५, पंचिदिया पजनमा २२ ग्रता•

विसेसाहिया ४६, बेइंदिया पञ्जाया विसेसाहिया ४७, तेइंदिया पञ्जाया विसेसा-हिया ४८, पंचिदिया अपज्जत्तया असंसिज्जगुणा ४९, चउरिंदिया अपज्जत्तवा विसेसाहिया ५०, तेइंदिया अपजात्तया विसेसाहिया ५१, वेइंदिया अपजात्या विसेसाहिया ५२, प्रतेयसरीरवायरवणस्सइकाइया पजत्या असंखिजगुणा ५३, बायरनिओया पज्जतया असंखिजगुणा ५४, बायरपुढवीकाइया पज्जतया असंखि-जगुणा ५५. बायरआउकाइया पजत्तया असंखिजगुणा ५६, बायरबाउकाइया पजत्तया असंखिजगुणा ५७. बायरतेउकाइया अफजत्तया असंखिजगुणा ५८, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ५९, बायरनिओया अपजत्तया असंखिजगुणा ६०, बायरपुढवीकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ६१, बायरमाउकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ६२, बायरवाउकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ६३, मुहमतेउकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ६४, मुहमपुढवी-काइया अपजत्तया विसेसाहिया ६५, सहुमआउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया ६६, सहमवाउकाइया अपजनया विसेसाहिया ६७, सहमवेउकाइया पजनया संखिजगुणा ६८, सुहमपुढवीकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया ६९, सुहमआउकाइया पजत्तया विसेसाहिया ७०, सहमवाउकाइया पजत्तया विसेसाहिया ७१, सहम-निओया अपज्जत्तया असंस्थितगुणा ७२, द्यहुमनिओया पजत्तया संस्थिजगुणा ७३, अभवसिदिया अणंतगुणा ७४, परिविद्यसम्महिट्टी अणंतगुणा ७५, सिद्धा अणंत-गुणा ७६, वायरवणस्सङ्काङ्या पजनाया अर्णतगुणा ७७, वायरपजनाया विसेसा-हिया ७८, बायरवणस्सङ्काङ्या अपजनाया असंखिजगुणा ७९, बायरअपजनाया विसेसाहिया ८०, बायरा विसेसाहिया ८१, सुहुमवणस्सइकाइमा अपज्यसमा असंखिजगुणा ८२, सुहमअपजत्तया निसेसाहिया ८३, सुहमवणस्सङ्काङ्या पजनया संस्तिज्ञगुणा ८४, ब्रहुमपजनया विसेसाहिया ८५, ब्रहुमा विसेसाहिया ८६, भनसिद्धिया विसेसाहिया ८७, निक्षोकजीवा विसेसाहिया ८८, वणस्सइजीवा विसेसाहिया ८९, एगिंदिया विसेसाहिया ९०, तिरिक्सओणिया विसेसाहिया ९१, मिच्छादिद्वी विसेसाहिया ९२, अविरया विसेसाहिया ९३, सकसाई विसेसाहिया ९४, छउमत्या विसेसाहिया ९५, सजोगी विसेसाहिया ९६, संसारत्या विसेसाहिया ९७, सन्बजीवा विसेसाहिया ९८॥ २७ दारं ॥ २९७ ॥ एकवनाए सववर्ष्ट्र तह्यं अप्पाबद्धयपयं समत्तं॥

नेरइयाणं भंते ! केनइयं कालं ठिई पश्चता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साई, उकोसेणं तेत्तीसं सागरोकमाई । अपज्जतगनेरइयाणं भंते ! केनइयं कालं ठिई पश्चता ?

गोयसा ! जहनेणं अंतोसुहत्तं उद्योसेण वि अंतोसुहत्तं । पजतगनेरह्याणं भंते ! केबहर्य कालं ठिई पत्रता ? गोयमा ! जहनेणं दसवाससहस्ताई अंतीमुहुनुणाई, उद्योसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अन्तोमुहुत्तूणाई ॥ २१८ ॥ रयणप्पभापुदविनेरह्याणं भेते । केक्ट्रयं कार्ल ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं दसवाससहस्साई, उद्योसेणं सागरोवमं । अपजनस्यणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोम्हर्तं उद्योसेण वि अंतोम्हत्तं । पज्जतर्यणप्पमापुढविनेरइ-याणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई अंतोमुहुत्तृणाई, उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तृणं । सकरप्पभापुढविनेरइबाणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पनता ? गोयसा ! जहनेणं एगं सागरोवसं, उन्नोसेणं तिनि सागरीवमाइं। अपजन्तयसकरप्पमापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नना ? गोयमा ! जहनेणं अंतोसहत्तं, उद्योसेण वि अंतोसहत्तं । पजत्त्यसङ्गरप्पभाषुटवि-नेरहयाणं भंते ! केवडयं कालं ठिडं पश्चता ? गोयमा ! जहश्चेणं सागरीवमं अंतो-मुहुतूणं, उद्योसेणं तिकि सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई । बाळ्यप्पमापुढविनेरडयाणं अंते ! केवडयं कालं ठिई पत्रसा ? गोयमा ! जहकेणं तिकि सागरोबमाइं. उक्कोसेणं सत्त सागरीवमाइं । अपजन्तयबाद्धमप्पभापदिवनेरङ्गाणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं, उद्दोरेण वि अंतोसुहत्तं । पजनयबालुयप्प-भापढविनेरहयाणं अंते ! केवइयं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जहकेणं तिकि सागरीवमाइं अंतोमुहत्तृणाइं, उक्कोर्सणं सत्त सागरीवमाइं अंतोमुहत्तृणाइं । पंकप्पमा-पुढांवेनेरहयाणं भंते ! केवहयं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं सत्त सागरोव-माई, उक्कोसेणं दस सागरीवमाई। अपज्जत्तयपंकपमापुढविनेरह्याणं मंते। केवइयं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहकेण वि अंतोसहत्तं उद्योसेण वि अंतोसहत्तं । यज्ञत्तयपंकप्पमापुढविनेरहयाणं भंते! केवहयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्त सागरोबमाइं अंतोस्हृतुणाई, उद्योसेणं दस सागरोबमाइं अंतोसुहृतूणाई। भूमप्यसापुरविनेरह्याणं अंते ! केवह्यं कालं ठिई पक्षता ? गोयमा ! जहकेणं दस सागरीवमाइं, उक्कोरीणं सत्तरस सागरीवमाइं । अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविनैरइयाणं भंते ! केवड्यं कालं ठिडं पनता ? गोयमा ! जहनेण वि अंतोम्हर्त उन्होसेण वि अंतोसुहुतं । पजात्तयभूमप्पनापुढविचेरह्याणं मंते । केन्द्रयं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! जहनेणं दस सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई, उक्कोरीणं सत्तरस सागरोवमाई अंतोसुहत्तृणाई । तमप्पमापुरुविनेरह्याणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जडकेणं सत्तरस सागरोपमार्ड. उद्योसेणं बाबीसं सागरोवमार्ड । अपजत्तयतमप्पसा-

पुरुविनेर्द्याणं भंते ! केवर्यं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेण वि अंतोमुहुत्तं उद्गोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पजन्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं मंते ! केवइमं कार्ल ठिई पक्षना ? गोयमा ! जहनेणं सत्तरस सागरोदमाई अंतोमुहृत्तृणाई, उन्नोसेणं बावीसं सागरोत्रमाई अंतोमुहुनूणाई । अहेसनमापुढविनेरइयाणं भंते । केवड्यं कालं ठिई पक्षना ? गोयमा ! जहनेणं बावीसं सागरोवमाई, उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाई । अपजनगअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जहनेण वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जतगअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवडयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीसं सागरीवमाई अंती-मुहुनूणाई, उक्कोसेणं तेनीसं मागरोवमाई अंतोमुहुनूणाई ॥ २१८ ॥ देवाणं भंते 🕽 केवहर्य काळं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्ताई, उक्रोसेणं तेर्तासं सागरीतमाई । अपज्जनयदेवाणं भंते ! केवडयं कालं ठिई पक्तता ? गोयमा ! जहकेण वि अंतोमुहुत्तं उन्नोसंण वि अंतोमुहुत्तं । पजनसदिवाणं भंते ! केवइयं कालं टिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं दस वानसहस्माई अंतोमुहृतृणाई, उद्गीसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाई । देवीणं भंते ! केवइयं कार्ल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई, उक्कोसेणं पणपमं पिठओवमाई। अपजात्तियदेवीणं भंते! केवडयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अंतोमुहुनं उन्नोसेण वि अंतोमुहुनं । पजात्तियदेवीणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जहकेणं दस वाससह-स्माई अंतोसुहुनूणाई, उद्दोसेणं पणपनं पिठओवमाई अंतोसुहुनूणाई ॥ २२०॥ भवणवासीणं देवाणं भंते ! केनड्यं कालं ठिई पकता ? गोयमा ! जहकेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं । अपजन्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पक्षता ? गोयमा ! जहनेण वि अन्तोमुहुत्तं उन्नोसेण वि अंतो-मुहत्तं । पज्जत्तयभवणवासीणं देवाणं भंते । केवहयं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहरसाइं अंतोमुहुनूणाइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अंतोमु-हुतुणं । मनणनासिणीणं मंते ! देनीणं केनइयं कालं ठिई पकता ? गीयमा ! जहमेणं दस वाससहरसाई, उद्दोरेणं अद्धपंचमाइं परिखोनमाई । अपज्वतियभवणवा-सिणीणं देवीणं भंते ! केवइयं कार्लं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेण वि अंतोमुहुतं उक्तोसेण वि अन्तोसुहुतं । पज्रतियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवद्यं कालं ठिई पत्रता ? गोयमा ! अहत्रणं दस वाससहस्साई अंतोमुहुतूणाई, उद्दोसेणं अद-पंचमाई पिक्रभोवमाई अन्तोमुहुत्तूणाई ॥२२१॥ अद्यरङ्गाराणं मेते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्ताई, उद्योरीणं साइरेगं साम-

रोवमं । अपजात्तवअग्तरकमाराणं भंते ! देवानं केवहमं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेण वि अंतोमुहुत्तं उन्होसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पजत्तयअभुरकुमाराणं भेते ! देनाणं केबड्यं काळं ठिई पक्ता ! गोयमा ! जहकेणं दस वाससहस्साई अन्तो-महन्त्रणाइं, उक्कोरोणं साइरेगं सागरोक्यं अन्तोमुहुनूणं। अग्ररकुमारीणं मंते! देवीणं केवड्यं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साइं. उक्तोसेणं अद्वपंचमाई पलिओवमाई । अपजातियाणं असरकमारीणं मंते ! देवीणं केवडयं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! बहकेण वि अन्तोमुहत्तं उद्दोसेण वि अंतोमुहत्तं । पजातियाणं असरक्यारीणं देवीणं भंते ! केवड्यं कालं ठिई पश्चता ? गीयमा ! जहनेणं दस वामसहस्साई अंतीमुहुतूणाई उद्दोसेणं अद्धपंचमाई पल्झिवमाई अंती-मुहुत्तूणाई ॥ २२२ ॥ नागकुमाराणं देवाणं मंते ! केवइयं काळं ठिई पक्ता ? गोयमा । जहनेणं दस वाससहस्साइं, उद्योसेणं दो पतिओवमाइं देस्णाईं । अपज-त्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं० केवइयं कालं टिइं पकता ? गोयमा ! जहकेण वि अंतोसुहुत्तं उद्योसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजत्तयाणं अंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्ता ! गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साइं अंतोमृहत्त्वाइं, उक्षोसेणं दो पळिओबमाइं देस्णाइं अंतोमुहुसूणाइं । नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पक्ता ! गोयमा ! बहुकेणं दस वाससहस्साई, उक्कोसेणं देसूणं पिल-ओवमं । अपजात्तियाणं संते ! नागकुमारीणं देवीणं केवहयं काळं ठिई पन्नता ? गोयमा! जहनेण वि अंतोसहत्तं उक्तोसेण वि अंतोसहत्तं । पज्जतियाणं अंते! नागकुमारीणं देवीणं केवड्यं कारूं ठिई पक्षता ? गोयमा ! अहजेणं दस वाससह-स्साइं अंतोसुहृतूणाई, उक्कोसेणं देसूणं पिठ्योवमं अंतोसुहृतूषं ॥ २२३ ॥ सुवण्ण-कुमाराणं भंते । देवाणं केबड्यं कालं ठिई पक्ता ? गोयमा ! जहकेणं दस बासस-इस्साइं उद्गोसेर्ण दो पछिओवमाइं देस्णाइं । अपजन्तयाणं पुच्छा । गोयमा : जहकेण दि अंतोसुहत्तं, उद्योरोण दि अंतोसुहत्तं । पज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहभेणं दस बास्स्यहस्साइं अंखोसुहुत्तृणाइं, उद्योसेणं दो पलिओवमाइं देस्एगाइं अंतोग्रहतृत्वाई । ध्रक्णकुमारीणं देवीणं पुच्छा । गोममा ! जहनेणं दस वाससह-स्साई, उद्दोरीणं केर्गणं पिक्योवसं : अपजातिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि अंतोस्हतं उद्देशेण वि अंतोस्हतं । पञ्चतियाणे पुच्छा । गोयमा । बहुनेणं दस वाससहस्साइं अंतोसहराणाइं, उक्कोरीयं देस्णं परिकादमं अंतोसहराणं । एवं एएणं अभिकावेणं खोडियक्षपञ्चत्तयपञ्चत्त्वस्थात्तत्त्रयं देवाण य देवीण य वेवन्यं जाव यनिमनुसाराणं जहा भागनुसाराणं ॥ २२४ ॥ पुढनिकादमाणं भेते । केंग्इयं कालं

ठिई पनता ? गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोरेणं बावीसं वाससहस्साई। अपजात्तयपुरुविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहृतं । पज्जत्तयपुढिविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतो-मुहुनं, उक्रोसेणं बावीसं वाससहस्साई अंतोमुहुनूणाई । सुहुनपुढविकाहयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोस्हुतं । अपजनससहसपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुहुनं । पजानयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्तोसेण वि अन्तोसुहुत्तं । बायरपुदविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं, उन्नोसेणं बावीसं वाससहस्साईं । अपजतः यवायरपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजनयबायरपुढविकाइयाणं पुच्छा । गीयमा ! जहनेणं अंतीसुहुत्तं, उक्तीसेणं बावीसं वाससहस्साई अंतोमुहुनूणाई ॥ २२५ ॥ आउकाइयाणं मंते ! केवहयं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साई । अपज-नयआउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहुकेण वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पजनयआउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुनं, उक्कोरेणं सत्त वासय-इस्माइं अंतोमुहुनृषाइं। सुहुमआउकाइयाणं ओहियाणं अपजनयाणं पजत्तयाण य जहा सहमपुढिनकाइयाणं तहा भाणियथ्वं । वायरआउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्नोसेणं सत्त वाससहस्साई । अपजनयबायरआउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुहुत्तं । पज्जतयाण य पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साई अंतोमुहुत्तूणाई ॥ २२६॥ तेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिनि राइंदियाई । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्तोसेण वि अंतोस्हरां । पज्रत्तयाण य पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं तिन्नि राइंदियाई अंतोमुहुत्तुणाइं । द्वहुमतेउकाइयाणं ओहियाणं अपजनयाण य पुच्छा । गोयमा ! अहुमेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । वायरतेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं अंतोमुहुतं, उक्कोसेणं तिकि राइंदियाई । अपजन्तयबायरतेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहुनेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजत्तमाणं पुच्छा । गोरमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं उक्कोसेणं तिकि राइंदियाई अंतोसुहतूणाई ॥ २२७ ॥ वाउकाइयाणं भंते ! केयह्यं कारूं ठिई पनता ? गोयमा । जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योसेणं तिनि वाससहस्साई । अपजत्तराणं पुच्छा । गोयमा । जहनेण नि उन्होसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुतं, उन्नोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवाउकाइयाणं

पुच्छा । गीयमा ! जहकेण वि उक्तोसेण वि अंतोमुहुत्तं । अपव्यक्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोसुहत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जह-क्षेण वि उक्कोसेण वि अंतोसहतं। बायरबाउकाइयाणं पुच्छा। गोगमा! जहकेणं अंतोस्हतं, उक्कोसेणं तिक्षि वाससहस्साई । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहक्षेण नि उक्रोसेण नि अंतोमुहुत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा । जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसंगं ति व वाससहस्ताहं अंतोमुहृतूणाई ॥ २२८ ॥ वणप्प्रह्काइयाणं भेते ! केयइयं कालं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्तोसेणं दस वाससह-स्साइं । अपजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्गोसेण वि अंतीसुहत्तं । पजन्तयाणं पुच्छा। गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं दस वाससहस्साई अंतोमुहुतृणाई । सुहुमबणप्यद्काइयाणं ओहियाणं अपज्यताणं पज्यताण य पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । बायरवणप्यद्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहन्नेणं अंतोमुहुतं, उद्योसेणं दसं वाससहस्साई । अपज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जतयाणं पुच्छा । गोयमा । जह-क्षेणं अंतोमुहत्तं, उक्कोरेणं दस वाससहस्याहं अंतोमुहत्तृणाई ॥ २२९ ॥ वेहंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पक्षता ? गोयमा ! जहकेणं अंतोसुहत्तं, उक्कोरीणं बारस संबच्छराइं । अपजानगाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोरोण वि अंतोसुहत्तं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उन्नोसेणं बारस संबच्छराहं अंतोमुहत्तुणाई । तेईदियाणं संते ! केवहयं कालं ठिई पजता ? गोयमा ! अहुनेणं अंतोम्हत्तं उक्कोसेणं एगूणवर्कं राहंदियाइं । अपज्जतवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेण वि उद्योरेण वि अंतोसुहुत्तं । पञ्चनयाणं पुच्छा । गीयमा ! जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणवर्षं राइंदियाई अंतोमुहुत्तृणाई । चउरिंदियाणं भेते ! केवइयं कार्ल ठिई पक्ता ? गोयमा ! अहकेणं अंतोसुहुतं, उक्कोरेणं छम्मासा । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेण वि उक्कोरेण वि अंतोसुहुतं । पज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोसुहुतं, उक्कोसेणं क्रमासा अंतोसुहुतूणा ॥ २३०॥ पंचिदस्यतिदिनख-जोणियाणं मंते ! केव्हयं कालं ठिई पत्तता ? गोयमा ! जहजेणं मंतोमुहुत्तं, उक्तें-सेणं तिकि पिछश्रोवसाई । अपज्यत्तवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कीरोण वि अंतोस्हर्त । पजन्यार्ग पुच्छा । गोयमा ! जहनेर्ण अंतोस्हर्त्त, उन्नोसेर्ण तिन्नि पिक्रमेवमाई अंतोसुहुत्तूणाई । संसुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोषियाणं पुच्छा । गोयमा 🛭 जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उद्मोसेणं पुम्बकोदी । अपजलयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उन्होरीण वि अंतीसहत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं

अंतोमुहुत्तं, उक्षोरेणं पुष्वकोडी अंतोमुहुतूणा । गञ्जवकंतिवर्पविविवितिषस्त्रजोणि-याणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्षोरेणं तिक्वि पविक्षोक्साहं । अपजत्त-बाणं पुच्छा । गोयमा । जहबेण वि उद्गोरेण वि अंतोमुहुर्त । पञ्जस्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिक्ति पलिओवसाई अंतोमुहुतूणाई ॥ २३१॥ जलगरपंचित्रमतिरिक्खजीणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पश्चता ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्यकोडी । अपज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्दोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पर्वत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुल्वकोडी अंतोमुहुतूणा । संमुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोदी । अपजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्तोसेण वि अंतोसुदुर्त । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नणं अंतोसुहुत्तं, उन्नोसेणं पुन्वकोडी अंतोसुहुतूणा । गब्सवकंतियजलयरपंचि-दियतिरिक्सजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अहलेणं अंतोमुहुत्तं, उक्रोसेणं पुव्वकोडी । अपजनयाणं पुच्छा । गोसमा ! जहन्नेण वि उक्तेसेण वि अंतोमुहुनं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं पुम्बकोबी अंतोसुहुतूणा ॥ २३२ ॥ चडप्पयश्वलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोसमा । जहसेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं तिक्षि पिळ्योवमाई । अपज्ञत्तयस्वरूपयथळ्यरपंचिवियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! बहुनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहुतं । पजत्तमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्होसेणं तिनि पर्छिओवमाइं अंतोमुहुत्तुणाइं। संमुच्छिमवउप्पयक्रयरपंचिदियतिरिक्सजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुदुत्तं, उक्कोरोणं चटरासीवाससदृस्साई। अपजत्माणं पुच्छा । गोगमा ! जहभेण वि उक्कोसेण वि अंतीमुहुतं । यज्ञतयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोरेणं चउरासीमाससहस्यादं अंतोमुहुतूणाई । गञ्मवकंतियनस्य-यथलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोममा ! अहचेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योसेणं तिचि पिळओवमाई । अपजत्तमार्गं पुच्छा । गोयमा । अहमेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुर्त । पळत्तवाणं पुच्छा । गोवसा ! अहकेणं अंतोमुहुर्तं, उक्केकेणं तिकि पलिबोदमाई मंतीसङ्कृतुणाई ॥ २३३ ॥ उरपरिसप्पवन्यरपंचिदिवतिरिक्याजीवि याणं पुच्छा । गोगमा ! बहुवेणं अंतोमुहुत्तं, डक्कोवेणं पुन्यकोकी । अपजासवाणं पुच्छा । गोयमा ! अक्क्षेण वि उद्दोरेण वि अंतोस्हर्त । पञ्चनवार्व पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुदुनं, उक्कोरेणं पुञ्जकोदी अंतोमुदुनुष्ण । संमुख्यिकाउरपरिसण्यकः यरपंचिदियतिरिक्स कोणिमाणं पुच्छा । गोसमा । बहुनेणं अंतोसहर्ता, उन्नोदीनं तेक्बं वाससङ्स्साइं । अपवासवाकं पुच्छा । गोयमा । जहकेण वि उक्तेसेण वि अंतोमुहुतं । पजतवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उद्गोसेणं तेवकं वाससहस्याई अंतोमुहुकुणाई । गन्मवकंतियउरपरिसप्पयलयरपंचिंदियतिरिक्खजो-शियाणं पुच्छा । योयमा ! जहनेणं अंतोसुहत्तं, उन्नोसेणं पुव्यकोडी । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोस्हतं । पजत्त्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहनं, उन्नोसेणं पुव्यकोडी अंतोमुहत्तणा ॥ २३४ ॥ मुक्पितिप्यवन्त्रवर्पचिदिवतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतीमुहुत्तं, उद्गोसेणं पुन्वकोडी । अपज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतीसहत्तं। पजात्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतीसहत्तं, उक्रीसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुनुणा । संमुच्छिमभुयपरिसप्पयलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा । जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उद्दोसेणं षायालीसं वाससहस्साई । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्दोसेण वि अंतोमुहत्तं । पजत्तवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योरेणं बायाळीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तृणाइं । गञ्मवद्यं-तियम्यपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोबसा! जहन्नेणं अंतोमुहत्तं, उद्योसेणं पुरुषकोडी । अपज्यत्तयाणं पुरुष्ठा । गोयसा ! जहकेण वि उक्सेसेण वि अंतीसुदुर्ग । पजस्त्याणं पुच्छा । गोसमा ! जहकेणं अंतीसुदुर्ग, उक्से-सेणं पुळाकोडी अंतोसुहुनूणा ॥ २३५ ॥ सहस्ररंपचिंदियतिरिक्सकोकीयाणं पुच्छा। गोयमा । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोर्सणं पत्तिओवमस्त असंखेजहमागं । अपज्यत्तवाणं पुच्छा । गो॰ ! अहमेण वि उक्कोरोण वि अंतोमुहुत्तं । पजनवाणं पुच्छा । गोयमा ! बहुद्रेणं अंतोस्हर्णं, उद्योसेणं पलिओवसस्स असंबोज्बहुभागं अंतोस्हरूपुणं । संसुच्छि-मबह्यरपंचिदियतिरिक्सओणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहर्त्त, उन्नोसेणं बाबतारी वाससहस्साई । अपजात्रवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमहत्तं । पजत्तमाणं पुच्छा । गोबमा ! जहनेणं अंतोमहत्तं, उद्योसेणं नावत्तरी बाससहस्साई अंतोसहत्तूणाई । गञ्भवक्षंतियसहयरपंत्रिदियतिरिक्सजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अनुवेशं अंतोस्हर्तं, उद्योसेणं पश्चियोदमस्य असंबेजहमानं । अपज्ञत्वाणं पुच्छा । गोयजा ! जहचेण वि उद्योसेण नि अंतोसुहत्तं । पज्जतयाणं पुच्छा । गोममा ! जहनेणं अंतोसुहत्तं, उद्योग्धेणं परिओवगरस अधंबेजहभागं अंतोसहरूलं ॥ २३६ ॥ मगुस्सानं भंते ! केयह्यं कालं ठिई पश्चता ! गोयमा ! जहवेनं अंतोग्रहतं, उद्योसेनं तिथि परिधोवमाई । अपजतमण्हसाणं प्रस्का । गोयसा । सहसेण वि सहसेश वि संतोसहर्त । प्रजासगरसार्य प्रस्का ।

गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिकि पलिओवमाई अंतोमुहुतूणाहं । संसुच्छिममणुस्साणं पुच्छा। गोयमा! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोसुहुतं । गञ्भवकंतियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं तिनि पलिओवमाई । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहसेण वि उद्दोरेण वि अंतो-मुहुतं । पज्जत्तथाणं पुच्छा । गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं तिन्नि पिलेओवमाई अंतोमुहुतूणाई ॥ २३७ ॥ बाणमंतराणं मंते ! देवाणं केवहर्यं कालं ठिई पनना ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई, उन्होसेणं परिओवमं । अपज-त्तयवाणमंतराणं देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेण वि उद्योसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई अंतोमुहतूणाई, उन्नोसेणं पळिओवमं अंतोमुहुतूर्णं । वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! अहकेणं दस वाससहस्साइं, उद्गोरेणं अद्भालिओवमं । अपज्यत्तियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पज्जितयाणं बाणमंतरीणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुनूणाई, उक्कोसेणं अदपिकओवमं अंतोसुहुनूणं ॥ २३८ ॥ जोइसियाणं देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पल्लिओवमद्वमागो, उन्नो-सेणं पिळओवमं बाससयसहस्समन्मिहियं । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा । गोसमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पिक-ओवमहमागो अंतोमुहत्तृणो, उक्कोसेणं पिलओवमं वाससयसहस्समस्मिहियं अंतोमुहु-तृणं । जोइसिणीणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं परिस्थोवमहमागो, उन्नोसेणं र. अद्वपत्रिओवमं पण्णासवाससहस्समञ्महियं । अपज्जत्तियजोइसियदेवीणं पुच्छा । गोयमः ! जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पञ्जत्तियजोइसियदेवीणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं पलिओवसद्वभागो अंतोमुहुतूणो, उन्नोसेणं अद्यपलिओवसं पण्णासवाससहस्समञ्महियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणे णं भंते ! वेदाणं पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं चउमागपिक्योवमं, उद्योसेणं पिल्योवमं वाससयसहस्समन्महियं। अपजनयाणं चंददेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उन्होसेण वि अंतोमुहुनं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चउमागपतिओवमं अंतोमुहुतूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समच्यहियं अंतोमुहुनूणं । चंदविमाणे णं० देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं न्वउभागपछिओवमं, उद्दोरीणं अद्भपछिओवमं पद्मासवाससहस्स-मन्महिरं । अपजात्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्दोरीण वि अंतोसुहुतं । पजानियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चडमामपिक्सोयमं अंतोसुहुतूणं, उद्गोसेणं अद्भाष्टिओवमं पन्नासवाससहस्समन्भहियं अंतोमुहुतूणं । सुरविमाणे णं अंते !

देवाणं केवड्यं कालं ठिई पक्ताः ! गोयमा ! जहकेणं चउमागपलिओवमं उक्कोसेणं परिजोवमं वाससहस्समञ्भिहयं । अपजानयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्सेसेण वि अंतोमुहुत्तं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं चडभागपिक-ओवमं अंतोसहत्तुणं, उद्योसेणं पिक्योवमं बाससहस्समन्महियं अंतोसहत्तुणं । सुरविमाणे णं भेते ! देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चडभागपलिओवर्म, उन्हो-सेणं अद्धपित्रकोवमं पंचिहं वाससएहिमन्महियं । अपजात्तवाणं पुच्छा । गोयमा ! अहमेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जितयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहमेणं चउभागपल्जिओवमं अंतोगुहुनूणं, उद्दोरेणं अद्धपल्जिवमं पंचाई वाससएहिमन्महियं अंतोमुहूनूणं । गहविमाणे णं भंते ! देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चउभाग-पिल्ञोवमं, उद्योसेणं पिल्ञोवमं । अपजनगणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहृतं । पज्जतयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चरुभागपरित्रभोवमं अंतोमुहुनूणं, उक्कोसेणं पिल्लोवमं अंतोमुहुनूणं । गहविमाणे देवीणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं चल्यागपलिखोवमं, उद्योसेणं अद्भपलिओवमं । अपजातियाणं पुच्छा । गोयमा! जहंकेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुर्तः । पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहबेणं चडभागपिछओवमं अंतोमुहुनूणं, उद्गोसेणं अद्भपिछओवमं अंतो-मुहुनूणं । नक्सत्तविमाणे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चउभागपितओवमं, उद्योसेणं अद्भपतिओवमं । अपज्जतयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपित्ओवसं अंतोमुहत्तुणं. उक्रोसेणं अद्भाष्टिओवमं अंतोमुहुतूणं। नक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहनेणं चउभागपिक्योवसं, उद्योसेणं साइरेगं चउभागपिक्योवसं। अपजातियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जितयाणं पुच्छा । गीयमा । जहनेणं चडभागपिकमोवमं अंतोसुहुतूणं, उद्दोसेणं साइरेगं चडभागपिक-ओवमं अंतोसुहुनुणं । ताराविमाणे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहचेणं अद्वमागपरि-ओवमं. उक्तोसेणं चउभागपित्योवमं । अपजायाणं पुच्छा । गोयमा ! जहक्षेण वि उद्दोसेण वि अंतोसुहुत्तं । पजनगणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पढिओवसद्द-भागं अंतोसहतूणं, उद्दोसेणं चडभागपिक्ष्योवमं अंतोसहतूणं । ताराविमाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेर्ण पिळ्ञोबमहुमार्ग, उन्होसेर्ण साहरेगं अहुमागपिळ्ञोबर्म । ताराविमाणे अपज्यतियाणं देवीणं पुरुष्ठा । गीयमा ! जहनेण वि उक्कीरेण वि अंत्रोम्हर्तः । पज्जतियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं परिजोबसद्वमार्ग अंतोसहसूर्णं, उद्योसेणं साइरेगं परिजोवसङ्गागं अंतोसहसूर्णं ॥ २३९ ॥

वेभाषियाणं देवाणं भंते ! केनह्यं कालं ठिई पचता ? गोयमा ! जहकेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्यक्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेण वि उक्को-सेण वि अंतोमुहुर्त । पजनवार्ण पुच्छा । गोयमा ! बहसेण पिठकोवमं अंतोमुहुर्नुणं, उद्गोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई । वेमावियाणं संते । देवीणं केवइर्य कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहनेणं पिल्ओवमं, उद्दोत्तेणं पणपनं पिल्ओवमाई । अपजात्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जह्रनेण वि उद्गोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पजात्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहक्षेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपकं पलिओवमाई अंतोसुहुनूणाई ॥ २४० ॥ सोहम्मे णं भेते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! अहमेणं पलिओवर्म, उक्तोसेणं दो सागरोबमाई । अपजत्तयार्ण पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जनयाणं देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहबेणं पलिओवमं अंतोसुहुनूणं, उद्घोसेणं दो सागरोबमाइं अंतोसुहुनू-णाई । सोहरमे कम्पे देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पलिओवमं, उद्दोसेणं पनासं पिल्ओवमाई । अपजात्तियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्दोसेण वि अंतोसुहुतं । पज्जतियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पित्रओवमं अंतोसुहु-मुणं, उक्कोसेणं पक्कांसं पल्जिवमाई अतोसुहुत्तूणाई । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाई । अप-जित्तियपरिग्गहियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुहुत्तं । परिगाहियाणं पञ्जित्तयाणं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पखिओवमं अंतीसुहु-त्तृणं, उक्कोसेणं सत्त पिछ्जोवमाई अंतोमुहुतूणाई । सोहम्मे रूपे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । गोग्रमा ! अहक्षेणं पिळ्योवमं, उक्कोसेणं पक्षासं पिळ्योवमाइं । अपज्यतियाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेण वि उन्नोसेण वि अंतोसुहुतं । पज्यतियाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं पलिओवमं अंतोमुहुतूणं, उक्कोरेणं पनासं पलिओवमाई अंतोसहत्तुणाई ॥ २४१ ॥ ईसाणे कृत्ये देवाणं पुष्का । गोबमा ! जहानेणं साइरेगं पलिओवमं, उद्योसेणं साइरेगाई दो सागरोवमाई । अपन्तत्तवदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्यत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं साइरेमं पळिओवमं अंतोमुहुतूर्णं, उद्योसेणं साइरेगम् दो सागरोगमाई अंतोमुहुतूर्णाई। इंसाणे कप्पे देवीणं पुच्छा । मोयमा ! जहचेणं साइरेपं पक्रियोवर्सं, उद्घोसेणं पणपकं पिक्कोबमाई । ईसाणे कप्ये देवीणं अपज्ञतियाणं पुच्छा । गोबमा ! जहकेण वि उक्कोरोण वि अंतो गुहुतं । ईसाणे कप्पे मजातिमानं पुच्छा । गोसमा ! अहुक्रेणं साइरेगं पलिओवमं अंतीमुहुनुणं, उद्दोसेणं प्रणपंतं पलिओवमाई अंतीसहनुषाहं ।

ईसाणे कप्पे परिग्रहियानं देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं साइरेगं पलिओवमं. उद्योशेणं नव पश्चित्रोवसाई। अपज्ञतियाणं पुरुष्ठा। गोयसा ! जहसेण वि उद्यो-सेण वि अंतोसहर्त । ईसाणे कप्पे पज्जतियाणं पुष्छा । गोयमा ! जहकेणं साइ-रेगं पलिओवमं अंतोसुहतूणं, उद्योसेणं नव पलिओवमाई अंतोसुहतूणाई । ईसाणे कप्ये अपरिमाहियदेवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं साइरेगं पलिओवमं, उसी-सेणं पणपन्नाइं परिओवमाइं । अपज्जतियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उन्हो-सेण वि अंतोसुहुतं । पज्जतियाणं पुच्छा । गीयमा ! जहनेणं साइरेगं पिठनोवमं अंतोमुहत्तुणं, उद्योसेणं पणपन्नं पलिओवमाई अंतोमुहत्तुणाई ॥ २४२ ॥ सर्णकुमारे कर्प देवाणं पुच्छा । गोयमा / जहनेणं दो सागरीवमाई, उन्नोसेणं सत्त साग-रोवमाइं। अपजातयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उद्योसेण वि अंतोसहर्तः । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं दो सागरीवसाई अंतोसहत्तृणाई, उद्दोसेणं सन सागरोबमाई अंतोमुहुनूणाई । माहिंदे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं साहरेगाइं दो सागरोक्साइं, उक्कोसेणं साहरेगाइं सत्त सागरोवमाइं। अपजत्तवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उन्होसेण वि अंतोसुहत्तं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दो सागरोवमाई साइरेगाई अंतोमुहुतूणाई, उद्योसेणं सत्त सागरोवमाई साइरेगाई अंतीमुहत्तृणाई । बंसलोए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सत्त सागरोबमाई, उक्रोसेणं दस सागरोबमाई । अपज्जनवार्णं पुच्छा । गोवमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोमुहुत्तं । पञ्चतवाणं पुच्छा । गोबमा । जहुनेणं सत्त सागरीव-माइं अंतोमुहृत्तृणाईं, उद्घोसेणं दस सागरीवमाइं अंतोमुहृत्तृणाईं । संतए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दस सागरोबमाइं, उद्योसेणं चउरस सागरोब-माइं । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उद्दोरेण वि अंतोसुहत्तं । सजत्तयाणं पुच्छा । गीयमा ! जहनेणं दस सागरोदमाई अंतोमुहुतूणाई, उन्होसेणं चउइस सागरीवमाई अंतोमुहुतुणाई। महासुक्के कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहकेणं चउहस सागरोबमाई, उद्योसेणं सत्तरस सागरोवमाई । अपज्यत्तयाणं पुच्छा । गीयमा ! जहमेण वि उक्कीसेण वि अंतोमुहुर्त । पज्जतवार्ण पुच्छा । गोयमा । जहमेणं यउद्देस सागरोवसाई अंतोसहत्तुणाई, उद्योसेणं सत्तरस सागरोबसाई अंतोसहत्तुणाई । सह-स्सारे कृष्ये देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहलेणं सत्तरस सागरीवमाई, उक्कोसेणं अद्वारस सागरोबमाई । अपजन्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्षीसेण वि अंतोम्हत्ते । पजत्तवाणं पुच्छा । गोयमा । जहकेणं सत्तरस सावरोषमाहं अंतोमुहुतु-णाइं, उद्योसेणं बहारस सागरोवमाइं अंतोसुहतूलाइं। आजए कम्पे देवाणं पुच्छा ।

गोयमा ! जहनेणं अद्वारस सागरोवमाहं, उद्दोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाहं । अप-जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! अह्नेण वि उन्होसेण वि अंतोसुहुतं । पज्रत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अद्वारस सागरोबमाइं अंतोमुहुत्तूणाई, उन्नोसेणं एगूणवीसं साग-रोवमाइं अंतोगुहुतूणाई । पाणए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! अहसेणं एगूणवीसं सागरोबमाई, उद्योसेणं बीसं सागरोबमाई। अपज्यत्तयाणं पुन्छा। गोयमा! जहमेण वि उक्षोसेण वि अंतोमुहुत्तं। पजनायाणं पुच्छा। गोयमा! अहक्षेणं एगूणवीसं सागरोवमाई अंतोसुहुनूणाई, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाई अंतोसुहुनूणाई। आरणे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं वीसं सागरोवमाइं, उद्दोसेणं एकवीसं सागरोबमाई । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोसुह्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तृणाइं, उक्कोसेणं एगवीसं सागरोवमाई अंतोसुहुतूणाई । अशुए कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जह-केणं एगवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं नाबीसं सागरोवमाइं । अपजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्तोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पञ्जतयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं इक्क्वीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतू-णाई ॥ २४३ ॥ हेद्विमहेद्विमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं बावीसं मागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं । अपजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुर्स । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं बाधीसं सागरोवमाई अंतोमुहुत्तूणाई, उद्घोसेणं तेवीसं सागरोवमाई अंतोमुहुत्तूणाई । हेट्टि-ममज्ज्ञिमगेविज्ञगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं तेवीसं सागरोबमाई, उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहजेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहूजेणं तेवीसं सागरोवमाहं अंतोमु-हुत्गाई, उक्तोसेणं चउवीसं सागरोवमाई अंतोमुहुत्तृणाई । हेट्टिमउवस्मगेविज्ञग-देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं चउवीसं सागरोबमाई, उन्नोसेणं पणवीसं साग-रोवमाइं । अपजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उन्नोरोण वि अंतोसुहुर्त्त । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चउवीसं सागरोदमाइं अंतोसुहुनूणाई, उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । मज्जिमहेड्डिमगेविज्वगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं पणनीसं सागरीनमाई, उन्नोसेणं छव्वीसे सागरीनमाई । अपजनवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतीसुहुतं । पजतवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं पणनीसं सागरोबमाई अंतोमुहुतूनाई, उक्कोसेणं छन्बीसं सागरोबमाइं अंतोसुहुत्तूवाइं । मज्जिसममज्जिसगोविजगदेवाणं पुच्छा । गोयसा !

जहनेणं छम्बीसं सागरोवमाइं, उक्तोसेणं सत्तावीसं सागरोबमाइं । अपजत्तयाणं पुरुषा । गोयमा ! अहबेण वि उक्षोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पजत्तवाणं पुरुषा । गोयमा ! जहनेणं छन्वीसं सागरीवमाई अंतोमुहुतूणाई उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरीवमाई अंतोम्हत्तणाई । मज्जिमउवरिमगेविज्यगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अहनेणं सत्तावीसं सागरोबमाई, उक्कोसेणं अद्भावीसं सागरोबमाई। अपजनवाणं पुच्छा। गीयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतोसहत्तं । पजत्तयाणं पुच्छा । गोयसा ! जहनेणं सत्तावीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई, उद्योसेणं अद्वावीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई। चवरिमहेद्विमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अद्रावीसं सागरोवमाइं. उक्कोसेणं एग्णतीसं सागरोवमाइं । अफजत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहमेण वि उक्कोसेण वि अंतोम्हर्तः । पजन्तवाणं प्रच्छा । गोयमा ! जष्टकेणं अद्वावीसं सागरो-वसाइं अंतोसहत्तुणाइं, उद्घोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोसहत्तुणाइं । उवरिम-मजिल्लमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं उन्होसेणं तीसं सागरोवमाई । अपजनायाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्योसेण वि अंतो-मुहत्तं । पजत्तथाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोसुहु-त्रूणाई, उद्योसेणं तीसं सागरोबमाई अंतोमुहुत्तूणाई । उपरिमउपरिमगेविज्यगहेवाणं पुच्छा । गोयसा ! जहनेणं तीसं सागरोवमाइं. उन्होसेणं एकतीसं सागरोवमाइं । अपजनयाणं पुच्छा । गोयमा ! अहलेण वि उक्कोरोण वि अंतोसहत्तं । पजनयाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोसुहुत्तूणाई, उन्नोसेणं एकतीसं सागरीवमाई अंतोमुहुनूणाई ॥ २४४ ॥ विजयवेजयंतअपराजिएसु ण भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पश्चता ? गोयमा ! जहन्नेणं एकतीसं सागरोबमाइं. उक्को-सेणं तेत्तीसं सागरोबमाइं । अपजातयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहारेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पज्यायाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एकतीसं सागरोबमाई अंतोस-हुतूणाई, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई अंतोसहत्तूणाई ॥ सम्बद्धसिद्धगदेवाणं अंते ! केवइयं कार्ल ठिई पक्षता ? गोयमा ! अजहचमणुक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिडें पक्ता । सम्बद्धसिद्धगदेवाणं अपजत्तवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उद्घोरीण वि अंतोसहर्त । सञ्ज्यक्रिस्वगदेवाणं० पद्मत्तयाणं केवड्यं कार्ल टिई पश्चता ? गोयमा ! अनहस्रमणुक्कोसं तेत्रीसं सागरोवमाई अंतोमुहुतूणाई ठिई पसता ॥ २४५॥ पद्मवणाय मगवर्रेष चउत्थं हिरुपयं समर्च ॥

कद्विहा में मंते ! प्रजना पश्चता ! गोबमा ! तुनिहा प्रजना पश्चता । तंजहा-जीवपज्ञवा य अजीवपज्ञवा य ॥ २४६ ॥ जीवपज्ञवा मं भंते ! किं चंक्रिजा,

असंखिजा, अणंता ? गीयमा ! नी संखिजा, नी असंखिजा, अणंता । से केणहेणं भंते ! एवं वुचाइ-'जीवपज्ञवा नी संखिजा, नी असंखिजा, अणंता' ? गीयमा ! असंखिजा नेरहया, असंखिजा असुरकुमारा, असंखिजा नागकुमारा, असंखिजा मुक्णानुमारा, असंसिजा विज्ञुकुमारा, असंसिजा अगणिकुमारा, असंसिजा दीव्यमारा, असंखिजा उदहिकुमारा, असंखिजा दिसीकुमारा, असंखिजा वाउकुमारा, असंखिजा धणियकुमारा, असंखिजा पुढविकाइया, असंखिजा आउकाऱ्या, असंक्षिजा तेउकाइया. असंक्षिजा वाउकाइया. अणंता वण-प्पडकाइया, असंखिजा बेइंदिया, असंखिजा तेइंदिया, असंखिजा चउरिंदिया, असंखिजा पंचिदियतिरिक्खजोणिया. असंखिजा मणुस्सा. असंखिजा वाणमंतरा असंखिजा जोइसिया. असंखिजा वेमाणिया, अर्णता सिद्धा, से एएणहेर्ण गोयमा! एवं वृच्छ--ते णं नो संखिजा, नो असंखिजा, अणंता ॥ २४७ ॥ नेरङ्याणं भंते ! केव्ह्या पद्धवा पकता ? गोयमा ! अणंता पद्धवा पक्ता । से केणद्रेणं भंते ! एवं वृज्जइ---'नेरहयाणं अणंता पज्जवा पनता' ? गोयमा ! नेरहए नेरइयस्य दञ्बद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाइणह्रयाए सिय हीणे सिय तुह्ने सिय अन्महिए । जइ हीणे असंखिजाइमागहीणे वा संखिजाइमागहीणे वा संखिज-गुणहीणे वा असंखिजगुणहीणे वा । अह अन्महिए असंखिजहमागमन्महिए वा संस्थिजङ्भागमन्महिए वा संस्थिजगुणमन्महिए वा असंस्थिजगुणमन्महिए वा। ठिइए सिय हीणे सिय तुले सिय अञ्महिए। जइ हीणे असंखिजहमागहीणे वा संखिज्यस्मागहीणे वा संखिजगुणहीणे वा असंखिजगुणहीणे वा । अह अञ्महिए असंखिजभागमन्महिए वा संखिजमागमन्महिए वा संखिजगुणमन्महिए वा असंखिजगुणमञ्महिए वा। कालवण्णपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए। जड़ हीणे अर्णतभागहीणे वा असंखेळभागहीणे वा संखेळभागहीणे वा संखेळगण-हीणे वा असंखेजगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अह अब्महिए अणंतभागमञ्सहिए वा असंखेजभागमञ्मिहए वा संखेजमागमञ्मिहए वा संखेजगुणमञ्मिहए वा असंखेजगुणमञ्महिए वा अणंतगुणमञ्महिए दा । नील्यचपज्जवेहिं स्रोहियवज्ञपज्ज-वेहिं हालिइनकपज्जवेहिं सुक्तिलवकपज्जवेहिं स्ट्वाणविष्णः। सुव्यानंबपज्जवेहिं दुव्यि-गंधपज्जवेहि य छडाणविष्ए । तित्तरसपज्जवेहि महुमरसपञ्जवेहि कसामरसपञ्जवेहि अंबिलरसपज्जवेहिं महररसपज्जवेहिं छद्वाणविष्यः। कम्बाङफासपंज्ञवेहिं मडयफास-पञ्जवेहिं गरुयफासपञ्जवेहिं छहुयफासपञ्जवेहिं सीयफासपञ्जवेहिं उसिणफासपञ्जवेहिं निद्धफासपजनिहि इक्स्सफासपजनिहि छह्वाणबिहिए । आमिणिनोहियमाणपजनिहि

सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं मङ्अन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विमंग-नाणपजनेहिं चक्खदंसणपजनेहिं अचक्खदंसणपजनेहिं ओहिदंसणपजनेहिं एड्डाण-विष्णु, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुचार-'नेरदयाणं नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता पज्जवा पत्रना ॥ २४८ ॥ असुरकुमाराणं भंते । केवड्या पज्जवा पत्रना ? गोयमा ! अणंता पजवा पनता । से केणद्वेणं भंते ! एवं वृच्यः-'असुरकुमाराणं अणंता पजना पन्नां'? गोयमा! असुरकुमारे अमुरकुमारस्य दन्बहुगाए तुहे, पएसट्टयाए नुष्टे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहर, ठिईए चउद्वाणविहर, कालवन-पजावेहिं छद्वाणनिष्ठए, एवं नीलवन्नपजावेहिं लोहियवन्नपजावेहिं हालिहननपजावेहिं मुक्तिलवन्नपञ्जवेहिं, सुव्भिगीभपञ्जवेहिं दुब्भिगीभपञ्जवेहिं, तित्तरसफ्जवेहि बहुयरम-पज्जविहिं कनायग्सपज्जविहिं अंबिलरमपज्जविहिं महर्रसपज्जविहिं, कक्खडफासपज्जविहिं मउयफामपजवेहिं गरुयफामपजावेहिं लहुयफासपजावेहिं सीयफामपजावेहिं उत्तिण-फामपजवहिं निद्धफासपजवहिं लुक्खफासपजवहिं आभिणिबोहियनाणपज्जवहिं मुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाणपज्जवहिं मङअसाणपज्जवेहिं सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभंग-नाणपज्जवेहिं चक्खदंसणपज्जवेहिं अचक्खदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छद्वाण-विष्यु, से एएणहुणं गोयसा ! एवं वृषद्य-'अभुरकुमाराणं अणंता पजना पन्नता' । एवं जहा नेरडया, जहा अनुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा ॥ २४९ ॥ पुढ़िकाइयाणं भंते ! केवडया पज्जवा पक्षता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता । से केणडेणं भंते ! एवं वुचइ-'पुडविकाइयाणं अणंता पजवा पकता' ? गोयमा ! पुरुविकाइए पुरुविकाइयस्प दम्बद्धयाए तुहे, पएसद्धयाए तुहे, ओगाइणद्वयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अन्महिए । जद्द हीणे असंखिजद्मागहीणे वा संखिजहमाग-हीणे वा संस्क्रिकार प्रणाहीणे वा असंस्क्रिकार प्रणाहीणे वा । अह अन्महिए असंस्क्रिकार-भागअन्महिए वा संखिजइमागअन्महिए वा संखिजगुणअन्महिए वा असंखिज-गुणअञ्महिए वा । ठिईए तिद्वाणविष्ठए, सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए । जड् हींण असंखिजमागढींण वा संखिजमागढींण वा संखिजगुणहींणे वा । अह अन्म-हिए असंखिजहमागअन्महिए वा संखिजहमागअन्महिए वा संखिजगुणअन्महिए वा । वजेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअजाणपज्जवेहिं सुयअजाणपज्जवेहिं अचक्ख-दंसणपज्जबेहि छद्राणविष्य ॥ २५०॥ आउकाइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पत्रता ? गोयमा ! अर्णता पज्जवा पक्ता । से केणद्वेणं भंते ! एवं वुश्वइ-'आउ-काइयाणं अणंता पञ्जवा पकता' ! गोगमा ! खाउकाइए आउकाइयस्त दव्यद्वयाए तके, पएसद्वयाए तक्षे, ओगाइणद्वयाए चउद्यापविष्ए, ठिईए तिद्यापविष्ए, वन-२३ सुत्ता०

गंबरसफासमइअज्ञाणस्यअज्ञाणअचक्खुदंसणपज्जवेहि छ्ट्टाणविहरः ॥ २५१ ॥ तेस-काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंना पज्जवा पकता । से केणहेणं अंते ! एवं वुचाइ-'तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नता'? गोयमा! तेउकाइए तेउकाइयस्स दय्बद्धयाए तुह्ने, पएसहुयाए तुह्ने, ओगाहणहुयाए चउहाणविहए, ठिईए तिहाणविहए, वक्षगंधरस-फासमङ्भनाणपुर्यअन्नाणअन्वक्खुर्दसणपज्जवेहि य छ्टाणविहरु ॥२५२॥ वाउकाङ्गाणं पुच्छा । गोयमा ! वाउकाइयाणं अणंता पजवा पन्नता । से केणद्वेणं भंते ! एवं बुचइ-'वाउकाइयाणं अणंता पजवा पन्नता' ? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्म दन्बट्ट-याए तुक्के, पएमद्वयाए तुक्के, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहए, ठिईए तिद्वाणविहए, वक्क-गंधर्सफाममङ्अन्नाणसुयअन्नाणअचन्खुदंसणपज्जवेहिं छद्वाणवडिए ॥२५३॥ वणस्सङ्-काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणहेणं भंते ! एवं वृचइ-'वणस्मइकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नता' ? गोयमा ! वणस्मइकाइए वणस्मइकाडयस्स दव्बद्वयाए तुक्के, पएमद्वयाए तुक्के, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहए, ठिईए निद्वाण-बडिए, बन्नगंघरसफासमञ्जन्नागस्यअनाणअचन्ख्यदंगणपज्जवेहि य छद्वाणविहए, से एएणद्वेणं गोयमा ! एवं बुचाइ-'बणस्साइकाइयाणं अणेता पज्जवा पन्नता' ॥ २५४ ॥ बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पक्षता । से केणहेणं भंते ! एवं वृश्वइ-'बेइंदियाणं अणंता पजवा पनता'? गोयमा! बेइंदिए बेइंदियस्स दब्बहुयाए तुहे, पएसट्टयाए तुह्ने, ओगाइणद्वयाए सिय हीणे सिय तुह्ने सिय अन्महिए। जइ हीणे असंसिजहमागहीणे वा संखिजहमागहीणे वा संखिजहगुणहीणे वा असंखिजहगुण-हीणे वा । अह अन्महिए असंखिज्ञभागअन्महिए वा संखिज्ञश्भागअन्महिए वा संखिजगुणमञ्महिए वा असंखिजदगुणमञ्महिए वा। ठिइंग तिद्वाणविष्ठए, वन-गंधरसफासभाभिणिबोहियनाणसुयनाणमद्भन्नाणसुयभन्नाणअचन्खुदंसणपज्जवेहि य छद्वाणविद्यः । एवं तेइंदिया वि । एवं चलरिंदिया वि, नवरं दो दंसणा, वक्नुदंसणं अचक्खदंसणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पजवा जहा नेरइयाणं तहा भाषि-यथ्वा ॥ २५५ ॥ मणुस्साणं मंते । केवङ्गा पज्जवा पन्नता ? गोयमा ! अणंता पजवा पवता । से केणड्रेणं भंते ! एवं वुषाइ-'मणुत्साणं अणंता पजवा पशता' ? गोयमा ! मणूसे मणूसस्स दन्वड्डबाए तुहे, पएसड्डवाए तुहे, ओगाहणड्डवाए चउड्डा-णविष्ए, ठिईए चउद्वाणविष्ए, वन्नगंघरसकासआभिणिबोहियनाणस्यनाणओहिना-णमणपञ्जवनाणपञ्जवेहि छद्वाणविष्ण, केवल्यनाणपञ्जवेहि तुक्रे, तिहि अनाणेहि तिहि दंसथेहिं छट्टाणविर, केवलदंसणपञ्जवेहिं तुहे । वाणमंतरा ओगाहणद्वयाए ठिईए चउद्याणविषया, वण्णाईहिं छद्वाणविषया । जोइसिया वेमाणिया वि एवं चेव, नवरं

ठिईए तिह्वाणषडिया ॥ २५६ ॥ जहन्नोगाहणगाणं अंते ! नेरहयाणं केवइया पजवा पकता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पक्ता । से केण्ड्रेणं भंते ! एवं वृक्कइ० ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए नेरइए जहन्नोगाहणस्य नेरइयस्य दन्बद्धयाए तन्ने, पएसद्धयाए तन्ने, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए चउद्वाणविष्ठए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अजाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छद्वाणबिंए। उद्योसोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवह्या पजवा पत्रता ? गोयमा ! अणंना पजवा पत्रता । से केणंड्रणं भंते ! एवं वुचइ- 'उद्दोसोगाहणगाणं नेर्इयाणं अणंता पज्जवा पन्नभा' शोयमा ! उद्दोमोगा-हणए नेरइए उक्कोसोगाहणस्य नेरइयस्य दञ्बद्धयाए तुह्ने, पएसद्ध्याए तुह्ने, ओगाह-णह्रयाए तक्षे । ठिईए सिय हीणे सिय तक्षे सिय अन्महिए । जड़ हीणे असंखिज-मागहीणे वा संखिजमागहीणे वा, अह अञ्महिए असंखिजमागअञ्महिए वा संखिजमागअब्महिए वा । वन्नगंधरसफासपजवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अनाणेहिं तिहिं दंगणेहिं छद्राणविष्ठ । अजहस्रमणुक्कोसोगाहणाणं भंते ! नेरहवाणं केवहवा पज्जवा पक्ता ? गोयमा ! अर्थता पज्जवा पक्ता । से केणहेणं भंते ! एवं वृच्छ-'अज्हज्ज-मणुक्कोसोगाहणाणं अणंना पज्जवा पन्नता' ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए नेरहए अजहन्नमणुक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्म दव्यद्वयाए तुन्ने, पएसद्वयाए तुन्ने, ओगाहणद्रयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए । जह हीणे असंखिजमागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा संखिजगुणहीणे वा असंखिजगुणहीणे वा। अह अन्भहिए असंखिजभागअब्महिए वा संखिजभागअब्महिए वा संखिजगुणअब्महिए बा असंखिजगुणअञ्महिए वा । ठिईए सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए । जह हीणे असंखिजमागहीणे वा संखिजमागहीणे वा संखिजगुणहीणे वा असंखिजगुणहीणे वा । अह अब्महिए असंबिज्जमागअब्महिए वा संखिजमागअब्महिए वा संखिज-गुणअञ्महिए वा असंखिजगुणअञ्महिए वा। वज्ञगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणहिं तिहिं अनामेहिं तिहिं दंसमेहिं छद्राणविष्ट, से एएणद्वेणं गोयमा ! एवं वृचह-'अजहन्मणुकोसोगाहणाणं नेरहयाणं अणंता पञ्जवा पन्नमा ॥ २५७ ॥ जहन-ठिइयाणं भंते! नेरइयाणं केवइया पजवा पक्ता? गोयमा! अणंता जपना पनता । से केणद्वेणं मंते ! एवं वृच्चइ-'जहन्निठइयाणं नेरइयाणं अणेता पज्जवा पन्नता'? गोयमा ! जहन्निटिइए नेरहए जहन्निटिइयस्स नेरहयस्स दव्बद्धयाए तुले, पएसद्वयाए तुक्के, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणबहिए. ठिइंए तुक्के, बन्नगंधरसफासपज-बेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अभाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छद्दाणबब्दि । एवं उक्कोसिटइए वि । अजहम्मणुक्कोसिटेइए वि एवं श्रेष, नवरं सद्वाणे चउड्डाणविडए ॥ २५८ ॥

जहन्नगुणकालगाणं भंते ! नेर्द्याणं केवद्या पञ्जना पन्नमा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पञ्चना । से केणहेणं भंते ! एवं वृष्णः-'जहन्नगुणकालगाणं नेग्डयाणं अणंता पज्जवा पत्तना' ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए नेरइए जहन्नगुणकालगरम नेरइयस्म दव्बद्वयाए तृष्टे, पएसद्वयाए तृष्टे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्टए, टिईए चउद्वाण-विज्ञा, कालवन्नपञ्जवेहिं तुल्ले, अवसंरोहिं वनगंधरसफासपञ्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नार्णाह तिहि दंगणेहिं छद्राणविंडए, से ग्एणट्टेणं गोयमा ! एवं वृच्चइ- जहन्न-गुणकालगाणं नेरइयाणं अणंतः पज्जवा पजना' । एवं उक्कोसगुणकारम् वि । अज-हन्नमणुकोगगुणकाळण् वि एवं चेव, नवरं कालवन्नपज्जवेहिं छ्ट्राणविंडण् । एवं अव-सेसा चनारि वन्ना दो गंधा पंच रमा अट्ट फासा भाणियव्या ॥ २५९ ॥ जहना-भिणियोहियनाणीणं भंत ! नेरडयाणं फेवडया पजवा पन्नना ! गोयमा ! जहजा-भिशियवोहियबाणीणं नर्डयाणं अणंता पज्जवा पन्नता । सं केणद्वेणं भेतं ! एवं वुश्वड-'जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं नेरहयाणं अणंता पज्जवा पन्नता' ! गोयमा ! जहन्याभिणिबोहियनाणी नेर्इए जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स नेरइयस्स द्व्बह्रयाए तुहे, पण्सद्वयाएं तुहे, ओगाहणद्वयाएं चउद्वाणविद्या, ठिईए चउद्वाणविद्या. वन्नगंधर प्रामपज्जवहिं छट्टाणविंडए. आर्मिणवोहियनाणपज्जवहिं तुहे, मुयनाण-पज्ञवेहिं ओहिनाणपज्जवेहिं छट्टाणवांडल्, तिहिं दंसणेहिं छट्टाणवडिए । एवं उक्को-माभिणिवोहिननाणी वि । अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी वि एतं चेव, नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सद्वाणे छद्वाणविहरु । एवं सुयनाणी ओहिनाणी वि, नवरं जस्म नाणा तस्स अञ्चाणा नित्थ । जहा नाणा तहा अञ्चाणा वि भाषियव्या, नवरं जस्त अञ्चाणा नस्त नाणा न भनेति । जहज्ञचक्खुर्दमणीणं भंते ! नेर्ट्याणं केबड्या पज्जवा पन्नना १ गोयमा ! अणंना पज्जवा पन्नता । से केणहेणं भंते ! एवं युच्छ-'त्रहत्रचक्खुदंसणीणं नेरहयाणं अणंता पज्जवा पत्रता' ? गोयमा ! जहन्न-चक्खुरंसणी णं नेरडए जहुक्चक्खुदंसणिस्स नेरइयस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए नुष्टे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविहरू, ठिईए चउद्वाणविहरू, वश्चगंधरसफासपज्जवेहिं निहिं नागहिं तिहिं अनाणेहिं छद्राणविहए, चक्खुदंसणपजनेहिं तुहे, अनक्ख-दंमणपजनिहिं ओहिदंमणपजनिहिं छहाणविहिए । एवं उक्कोसचक्खदंमणी वि । अज-हत्तमणुक्रोसचक्कुट्नंगणी वि एवं चेव, नवरं सङ्घाणे छद्राणविहए। एवं अचक्छुदं-सणी वि, ओहिइंसणी वि ॥ २६० ॥ जहन्नोगाहणाणं भंते ! असुरकुमाराणं केवइया पजना पनता ? गोयमा ! अणंता पजना पनता । से केणट्रेणं भंते ! एवं वुन्नइ-'जहक्तोगाहणाणं असुरकुमाराणं अणंता पद्मबा पनता' ? गोयमा ! जहस्रोगाहणए असुरकुमारे जहन्नोगाहणस्स असुरकुमारस्य दब्बहुयाए तुहे, पण्सहुयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए चउट्टाणविङण्, वन्नार्टाहें छट्टाणविङण्, आभिणिबोहिय-नाणपजनेहिं मुयनाणपजनेहिं ओहिनाणपजनेहिं निहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छद्वाणविंग । एवं उक्कोसोगाहणए वि । एवं अजहत्वनणुक्कोसोमाहणए वि, नवरं सद्वाणे चउद्वाणबिहरः। एवं जाव थणियकुमारा ॥ २६९ ॥ जहन्नोगाहणाणं भंते ! पुढ-विकादशाणं केवदया पञ्जवा पन्नता ? गोयमा ! अणंता पञ्जवा पन्नता । से केग्ह्रेणं भंते ! एवं बुच्छ-'जहन्नोगाहणाणं पुढविकाडयाणं अणंता पज्जवा पन्नना' ? गोयमा ! जहकोगाहणा, पुढविकाडए जहकोगाहणस्स पुढांवकाइयस्म द्ववहुयाए तुहे, पएगहु-याग् तुहे, ओगाहणद्वयाप् तुहे, ठिईए तिद्वाणविष्ठण्, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अञाणेहि अचक्कुटंसणपज्ञवेहि य छट्टाणविष्ठ । एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहन-मणुकोयोगाहणए वि एवं चेव, नवर सहाणे चउहाणश्रिए । जहन्नठिइयाणं पुरविका-इयाणं पुच्छा । गोयमा ' अणंता पज्जवा पनना । से केणट्रेणं भंते ! एवं बुचड्-'जह-क्रिट्याणं पुरुविकाड्याणं अणंता पज्जवा पकता' ! गोयमा ! जहक्रिटिए पुरुविका-डए जहन्निर्दियस्स पुर्टावकाइयस्स द्व्यद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए च उद्याणविहरू, ठिईए तुक्के, वन्नगंधरमफासपज्जवेहिं सङ्अन्नाणपञ्जवेहिं सुयअन्नाणप-जर्वाहं अचक्खुदंगणपज्जवेहिं छट्टाणयिखए । एवं उद्योसिटेइए वि । अजहन्नमणुद्योस-ठिइए वि एवं चेव, नवरं सहाणे तिहाणविष्ठ । जहसगुणकालयाणं भेते ! पुर्वविका-इयाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता। से केणद्वेणं संते ! एवं बुचड्-'जहक्रगुणकालयाणं पुरुविकाइयाणं अणंता पज्जवा पक्षता' ? गोयमा ! जहक्रगुणकालए पुढविकाउए जहसगुणकालयस्स पुढविकाउयस्स द्व्यहुयाए तुहे, पएसहुयाए तुहे, ओगाहणहुयाए चउडाणवडिए, ठिइए तिहाणवडिए, कालवन्नपञ्जवेहिं तुहे, अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जनेहिं छद्व।णविहए दोहिं अन्नाणेहिं अन्नक्खुदंसणपज्जनेहि य ल्रह्माणबिहिए । एवं उक्कोमगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविष्ठए। एवं पंच विषा दो गंधा पंच रसा अद्व फासा भाणियन्वा। जहन्नमङ्जन्नाणीणं भंते ! पुढविकाङ्याणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुन्दर्-'जहसमइअसाणीणं पुढविकाऱ्याणं अणंता पजना पन्नता' ? गोयमा ! जहन्नमङ्अन्नाणी पुढविकाङ्ण् जहन्नमङ्अनाणित्स पुढविकाङ्यस्स दव्बद्धयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्घाणविष्ठए, ठिईए तिद्वाण-विहए, बन्नगंत्ररसफासपज्जवेहिं छट्टाणविहए, मइअन्नाणपज्जवेहिं तुहे, ग्रुयअन्नाण-पजावेहिं अन्वसन्तुदंसणपजावेहिं छद्वाणविष्ठए । एवं उद्योगमङ्भनाणी वि । अजहम-

मणुक्कोसमङ्ख्याणी वि एवं चेत्, नवरं सद्वाणे छद्वाणविरुषः एवं सुयअनाणी वि अचनखुदंसणी वि एवं चेव जाव वणप्पद्काइया ॥ २६२॥ जहनोगाहणगाणे भेते 🕽 बेइंदियाणं पुच्छा । गोग्रमा ! अणंता पजना पन्नता । से केणहेणं भंते ! एवं युवड-'जहन्नोगाहणगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नता ? गोयमा ! जहन्नोगाहणप् वेइंदिए जहन्नोगाहणस्य बेइंदियस्य दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणह्वयाए तुहै, ठिईए तिझाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अनक्खुदंसणपजनेहि य छद्वाणवडिए। एवं उक्कोसोगाहणए वि, णवरं णाणा णत्थि। अजहन्मणुक्कोसोगाहणए जहा जहनोगाहणए, णवरं सद्वाणे ओगाहणाए चउद्वाण-वडिए । जहन्निठिडयाणं भते ! बेडंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजवा पन्नता । में केणड्डेणं मंते ! एवं बुच्ह-'जहन्नठिइयाणं बेइंदियाणं अणंता पजवा पन्नता' ! गोयमा ! जहन्निठंडए बेइंदिए जहन्निटिइयस्स बेईदियस्स दव्यद्वयाए तुले, पएस-द्रयाए तुंह, ओगाहणद्रयाए चउद्वाणविहए, ठिईए तुहे, वन्नगंधरसफासपजविहिं दोहिं अजाणेहिं अचक्खुरंसणपज्ञवेहि य छद्वाणविहए। एवं उक्कोसिटिहए वि, णवरं दो णाणा अन्महिया । अजहन्नमणुक्कोसिट्डिए जहा उक्कोमिटिङ्ग, णवरं ठिईए तिट्टाणविष्ठए । जहनगुणकालगाणं बेहंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजावा पक्षमः। से केणद्रेणं भंते ! एवं वृच्छ-'जहन्नगुणकालगाणं बेडंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नता' ? गांयमा ! जहन्नगुणकालए बेइंदिए जहन्नगुणकालगस्म बेइंदियस्स दब्बहुयाए तुहे, पएसहुयाए तुहे, ओगाहणहुयाए चउडाणबहिए, ठिईए तिहाणबहिए, कालवन्नपज्जवहिं तुन्ने, अवसेसहिं वन्नगंघरमफासपज्जविहें दोहिं नाणेहिं दोहिं अनाणेहिं अचक्खदंमणपजावेहि य छहाणविष्ठए । एव उक्कोसगुणकारूए वि । अजहन्नमणुक्को-सगुणकालए वि एवं चेव। णतरं सद्वाणे छद्वाणविडए। एवं पंच वसा दो गंध पंच रसा अद्र फासा भाषियव्या । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! बेडंदियाणं केवहया पजवा पत्रता ? गोयमा ! अणंता पजवा पत्रता । से केणद्वेणं अंते ! एवं वृचह-'जहनाभिणिबोहियनाणीणं वेड्ंदियाणं अणंता पज्जवा पश्चता'? गोयमा! जहना-मिणिबोहियनाणी बेइंदिए जहनाभिणिबोहियनाणिस्स बेइंदियस्य द्व्वद्वयाए तुहे. परसङ्याए तृष्टे, ओगाहणह्याए चउट्टाणविष्टए, ठिईए तिह्वाणविष्टए, वन्नगंधरसफा-सपजविहिं छद्राणविहर, आभिणिबोहियनाणपजविहिं तुहे, सुयनाणपजविहिं छद्रा-णविष्ठए, अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छद्वाणविष्ठए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणी वि । अजहन्तमणुक्कोसाभिणिबोहियनाची वि एवं खेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविहए। एवं स्यनाणी वि स्यअनाणी वि अचक्खदंसणी वि. नवरं जत्य नाणा तत्य अनाणा नियः.

जत्य अजाणा तत्य नाणा नत्यि, जत्य दंसणं तत्थ नाणा वि अजाणा वि । एवं तेइंदियाण वि । चउरिदियाण वि एवं चेव, णवरं चक्खुदंसणं अन्महियं ॥ २६३ ॥ जहबोगाहणगाणं भंते ! पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं केवड्या पजवा पकता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता। से केजद्वेणं भंते ! एवं वृषद्-'जहन्नोगाहणगाणं पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पजवा पश्चता' ? गोयमा ! जहकोगाहणए पंचि-दियतिरिक्खजोणिए जहक्रोगाहणयस्स पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स दव्यद्वयाए तुहे. पएसड्डयाए तुहे, ओगाहणड्डयाए तुहे, ठिईए तिट्टाणबंडिए, वन्नगंधरसफासपज्जबेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छद्राणविहए। उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छद्राणविष्ट । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्ममणुक्कोसोगाहणए वि. णवरं ओगाहणहुयाए चउड्राणविहए, ठिईए चउड्राण-विद्या । जदक्रिट्याणं भंते ! पंचिदियतिरिक्खजीणियाणं केवड्या पजवा पन्नता ? गोयमा ! अणंता पजावा पश्चता । सं केणद्रेणं अंते ! एवं वृत्तह-'जहश्विद्याणं पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पश्चनां ? गोयमा ! जहश्विठहए पंचिदयितिरिक्ख-जोणिए जहश्विद्यस्य पंचिदियतिरिक्खजोणियस्य दव्बद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविद्यम्, ठिईए तुक्के, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छद्राणविष्ठए । उक्कोसिटिइए वि एवं चेव, नवरं दो नाणा दो अञ्चाणा दो दंगणा । अजहचमणुक्कोस्टिइए वि एवं चेव. नवरं ठिईए चउद्घाणविष्ठए । तिश्वि नाणा ति नि अन्नाणा तिनि दंसणा । जहनगुणकालगाणं भंते ! पंचिदियतिरिक्ख-जोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजवा पत्रसा । से केणद्रेणं भेते ! एवं वुन्नइ॰ १ गोयमा ! जहन्नगुणकालए पंनिदियतिरिक्खजोणिए जहनगुणकालगस्स पंचिदियतिरिक्खजोणियस्य दब्बहुयाए तुहे, पएसहुयाए तुहे, ओगाहणहुयाए चउद्गाणविष्टए, ठिईए चउद्गाणविष्टए, कालवन्नपजविहें तुहे, अवसेसेहिं वन्नगंधर-सफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अञ्चाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छद्वाणविरए । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहबामणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्राणे छद्राण-विक्रि । एवं पंच वक्ता दो गंधा पंच रसा अद्व फासा । जहकासिणिबोहिसणाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवहचा पजवा पनता ? गोयमा ! अणंता पजवा पन्नता । से केणहेणं भंते ! एवं बुचइ० ? गोयमा ! बहन्नाभिणिबोहियणाणी पंचि-दियतिरिक्खजोणिए जहभाभिणिबोहियणाणिस्स पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स द्व्वट्ट-याए तुक्के, पएसहुवाए तुक्के, ओगाइणहुवाए चउड्डाणविडए, ठिईए चउड्डाणविडए वक्रगंभरसफासफ्कवेहिं छद्राणविष्ट्यः आमिणिबोहियणाणपञ्जवेहिं तुहे. स्रयणाण-

पज्रवेहिं छद्वाणविष्ठए, चक्खदंसणपञ्जवेहिं छद्वाणविष्ठए, अचक्खदंसणपञ्जवेहिं खद्धाणविहर । एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि, णवरं ठिईए तिद्वाणविहर, तिचि नाणा तिन्नि दंसणा, सद्घाणे तुन्ने, सेसेस छद्वाणविष्ठ । अजहस्त्रमणुक्कोसाभिण-बोहियनाणी जहा उक्कोमाभिणिबोहियनाणी, णवरं ठिईए चउट्टाणवडिए । सद्वाण छद्वाणविद्य । एवं सुयणाणी वि । जहसोहिनाणीणं भेते ! पंचिदियतिरिक्खजोणि-याणं पुरुष्ठा । गीयमा ! अणंना पज्जवा पत्रता । से केणहेणं भेते ! एवं वृच्छ० ? गोयमा ! जहन्नोहिनाणी वंचिंदियतिरिक्तजोांणए जहन्नोहिनाणिस्य वंचिंदयतिरि-क्लजोणियस्म दव्यद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउडाणर्वाडए, ठिईंग् तिद्वाणविष्टिंग्, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं आभिणिवोहियनाणम्यनाणपञ्जविहें छह्वाणविष्ठा, ओहिनाणपज्जवेहिं तुन्ने । अन्नाणा नित्य । चक्सुद्रंतणपज्जवीह अच-क्खुदंसणपञ्जवहिं ओहिटंमणपञ्जवहि य छट्टाणविष्ट । एवं उद्धांमाहिनाणी वि । अजहनुक्कोसोहिनाणी वि एवं चेव, णवरं सद्घाणे छद्धाणविहरः। जहा आभिणिवोहिन यनाणी तहा महअनाणी मुयअनाणी य, जहा ओहिनाणी तहा विमंगनाणी वि, चक्खुरंसणी अचक्खुरंसणी य जहा आभिणिबोहियनाणी, ओहिरंपणी जहा ओहिन।णी. जत्थ नाणा तत्थ अज्ञाणा नित्य, जत्थ अञ्चाणा तत्य नाणा नित्य, जत्य दंसणा तत्थ नाणा वि अन्नाणा वि अत्थिति भाणियव्वं ॥ २६८ ॥ जहन्नोगा-हणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइयः पजवा पत्रना ? गोयमा ! अणंता पजवा पन्नना । से केणड्रेणं अंते ! एवं बुचड-- 'जहहोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जरा पन्नना ? गोयमा! जहन्नोगाष्ट्रणए मणूसे जहन्नोगाष्ट्रणगस्स मणूसस्स दन्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए नुले, ओगाहणद्वयाए तुले, ठिईए तिट्ठाणविहए, सन्न-गंधर्सफासपञ्जवेहिं तिहिं नाणेहिं दोहिं अञ्चाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छडाणविडए । उक्कोसोगाहणए वि एउं चेव. नवरं ठिईए सिय हीणे सिय तुहे सिय अव्यहिए। जइ हींणे असंखिजइभागहींणे, अह अन्महिए असंखिजइभागअन्महिए । दो नाणा दो असाणा दो दंसणा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, णवरं ओगाहणहुवाए चउद्वाणविष्, ठिईए चउद्वाणविष्, आइहेहिं चटहिं नाणेहिं छद्वाणविष्. केवलनाणपञ्जवेहिं तुक्रे, तिहिं अनाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छद्वाणविहेए, केवलदंसण-पज्जवेहिं तुहे । जहभठिइयाणं भंते ! मणुस्ताणं केवइया पज्जवा पश्चता ? गोयमा ! अणंता पजवा पनता। से केणहेणं भंते ! एवं वृचइ० ? गोयमा ! जहचिहरू मणुस्रे जहन्निठेइयस्स मणुस्सस्स दब्बद्वयाए तुन्ने, पएसद्वयाए तुन्ने, ओगाहणद्वयाए चउद्राणविष्ण, ठिईए तुह्ने, वन्नगंधर्सफासपञ्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं

छद्वाणबिंदए । एवं उक्कोमिठिइए वि, नवरं दो नाणा दो अजाणा दो दंसणा । अजहस्त्रमणुक्कोसिटिङए वि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्टाणविडए, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणविद्य, आइहेहिं चउहिं नाणेहिं छट्टाणविद्य, केवलनाणपजवेहिं तुहे, तिहिं अञ्चाणेहिं तिहिं दंमणेहिं छद्वाणविष्ठए, केवलदंमणपज्जवेहिं तुहे । जहनगुणकालयाणं मंतं ! मणुरमाणं केवदया पजवा पकता ! गोयमा ! अणंता पजवा पक्ता । से केण्ड्रेणं भंते ! एवं वुचड़० ? गोग्रमा ! जहन्नगुणकालए मण्से जहन्नगुणकालयस्म मणुस्सस्य दन्वद्वयाए तुहे, पएमद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्ठए, टिईए चउद्गाणयिक्त, कालवन्नपज्जवेहिं तुक्षे, अवसेसेहिं वनगंधरसफासपज्जवेहिं छट्टाणविंदए, चउहिं नाणेहिं छट्टाणविंदए, केवलनाणपज्जवेहिं तुहे, तिहिं अनाणिहिं तिहिं दंसणिहिं छद्वाणबिंदिए, केवलदंसणपञ्जवेहिं तुह्न । एतं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोमगुणकालए वि एवं चेव, नवरं गृहाणं छहाणविष्टए। एवं पंच वना दो गंधा पंच रसा अद्व फासा भाणियम्बा । जहन्ताभिणिबोहियनाणीणं भंते ! मणुत्साणं केवडया पज्जवा पत्तना ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्तना । से केणहेणं भंते ! एवं वुबड० ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणूसे जहनाभिणिबोहियनाणिस्स मणु-स्मरस दव्यद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए चटहाणबंडिए, टिइंए चउट्टाणवडिए, वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्टाणवडिए, आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुहे, सुयनाणपञ्जवेहि दोहि दंसणिहि छट्टाणविटण्, एवं उद्योसामिणबोहियनाणी वि, नवरं आभिणनोहियनाणपज्जनेहिं तुहे, ठिईए तिद्वाणविष्ठए, तिहिं नाणहि तिहिं दंसणेहिं छट्टाणविष्टए । अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहिय-नाणी. नवरं ठिइंए चउड्डाणवटिए, सद्वाणे छद्वाणवडिए । एवं सुयनाणी वि । जहन्नोहिनाणीणं भंते! मणुस्साणं केवड्या पज्जवा पन्नता? गोयमा! अणंता पजना पक्षता । से केणहेणं भंते ! एवं बुचइ० ? गोयमा ! जहकोहिनाणी मणुस्से जहन्नोहिनाणिस्स मण्सस्स दव्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहणद्वयाए तिहाण-विष्णु, ठिईए तिहाणबिष्णु, वन्नगंघरसफानपञ्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छहुणविष्णु, ओहिनाणपञ्जवेहिं तुहे, मणनाणपञ्जवेहिं छट्टाणविहए, तिहिं दंसणेहिं छट्टाणविहए। एवं उक्कोसोहिनाणी वि । अजहस्त्रमणुक्कोसोहिनाणी वि एवं चेव, नवरं ओगाहणद्वुयाए चउड्डाणविडए, सद्वाणे छद्धाणविडए । जहा ओहिनाणी तहा मणपज्जवनाणी वि भाणियन्वे, नवरं ओगाहणहुवाए तिह्वाणविष्ठए । जहा आमिणिबोहियनाणी तहा मइअञ्चाणी सुयअञ्चाणी वि भाणियव्ये । जहा ओहिनाणी तहा विभंगनाणी वि भाणि-यध्वे, नम्खुदंसणी अनक्खुदंसणी य जहा आमिणिबोहियनाणी, ओहिदंसणी जहा

ओहिनाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि, जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि, जस्थ दंसणा तत्थ नाणा वि अञ्चाणा वि । केवलनाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पश्चता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पश्चता । से केणद्वेणं भंते ! एवं वुनाइ-'केवलनाणीणं मणुस्माणं अणंता पज्जवा पन्नता' ! गोयमा ! केवलनाणी मण्से केवलनाणिस्म मणूसस्स दव्बद्वयाए तुद्धे, पएसद्वयाए तुद्धे, ओगाहणद्वयाए चउद्वाण-वडिए, ठिईए तिद्वाणविहए, वश्चगंधरसफामपज्जवेहिं छद्वाणविहए, केवलनाणपज्जवेहिं केवलटंगणपज्जवेहि य नुहे । एवं केवलटंसणी वि मण्से भाणियव्वे । वाणमंतरा जहा अमुरकुमारा । एवं जोडसियवमाणिया, नवरं सद्घाणं ठिईए तिद्घाणत्रिए भाणियव्वे । सेनं जीवपज्जवा ॥ २६५ ॥ अजीवपज्जवा णं भंते ! कड्विहा पश्चता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-स्विअजीवपज्जवा य अस्विअजीवपज्जवा य ॥ २६६ ॥ अरुविअजीवपज्जवा णं भंते ! ऋविहा पन्नता ? गोयमा ! दसविहा पन्नता । नंजहा-धम्मित्यकाए, धम्मित्यकायस्म देसे, धम्मित्यकायस्स पएसा, अह-म्मन्धिकाए, अहम्मन्धिकायस्य देसे, अहम्मन्धिकायस्य पएसा, आगासन्धिकाए, आगासन्थिकायस्स देसे. आगामन्यिकायस्स पएसा, अद्वासमए ॥ २६७ ॥ स्वि-अजीवपज्जवा णं भंत ! कड्बिहा पन्नता ? गोयमा : चउव्विहा पन्नता । तंजहा-खंघा, खंघदेसा, खंघपएसा, परमाणुपुग्गला । ते णं मंते ! किं संखेजा असंखेजा अणंता ? गोयमा ! जो संखेजा. जो असंखेजा. अणंता । से केणट्टेणं मंते ! एवं वृचइ-'ना संखेजा, नो असंखेजा, अणंता' १ गोयमा ! अणंता परमाणुपुग्गला, अणंता दुपएसिया खंघा जाव अणंता दसपएसिया खंघा, अणंता संखेजपएसिया संघः, अणंना असंसेजपएसिया संघा, अणंता अणंतपएसिया संघा. से तेणद्वेणं गोयमा ' एवं वुच्छ्-'ते णं नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता' ॥ २६८ ॥ परमाणुपोरगलाणं मंते ! केवड्या पज्जवा पश्चता ? गोयमा ! परमाणुपोरगलाणं अणंता पञ्जवा पन्नता। से केणद्रेणं भंते ! एवं वृज्जइ- परमाणुपुम्नलाणं अणंता पजना पन्नमा' ? गोयमा ! परमाणुपुरगले परमाणुपोरगलस्स दब्बहुयाए तुहे, पए-सद्वयाए नुहे, ओगाइणद्वयाए नुहे, ठिईए सिय हीणे सिय नुहे सिय अन्सहिए। जड़ हीणे असंखिजाड्मागहीणे वा संखिजाड्मागहीणे वा संखिजाड्गुणहीणे वा असं-न्विजर्गुणहीणे वा । अह अन्महिए असंखिजस्भागअन्महिए वा संखिजस्भाग-अन्माहए वा संसिज्जगुणअन्महिए वा असंसिज्जगुणअन्महिए वा । कालवश्वपज्जेवेहिं सिय हीणे सिय तुहे सिय अञ्महिए। जइ हीणे अणंतमामहीणे वा असंसिजह-भागर्राणे वा संखिजइभागहीणे वा संखिजगुणहीणे वा असंखिजगुणहीणे वा

अर्णतगुणहीणे वा । अह अन्महिए अर्णतभागअन्महिए वा असंखिजहमागअन्म-हिए वा संसिज्जभागजञ्महिए वा संसिजगुणजञ्महिए वा असंसिजगुणजञ्महिए वा अर्णतगुणअन्भहिए वा । एवं अवसेसवन्नगंधरसफासपज्जवेहि छट्टाणविद्य । फासाणं सीयउसिणनिद्धलुक्खेहिं छद्वाणविष्ठए, से तेणहेणं गोयमा! एवं वुनाइ-'परमाणुपोग्नलाणं अणंता पज्जवा पष्ठना' । दुपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणहेणं अंते ! एवं बुचड॰ ! गोयमा ! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्बहुयाए तुहे, पएयहुयाए तुहे, ओगाइणट्टयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अन्भ-हिए । जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्सहिए पएसमब्सहिए । ठिईए चउड्डाणविए, वकाईहि उबरिहेहिं चउफासेहि य छद्वाणविष्ठए । एवं तिपएसिए वि, नवरं ओगा-हणहुयाण सिय हीणे सिय तुह्रे सिय अञ्महिए। जड् हीणे पएसहीणे वा दुपए-सर्नाणं वा, अह अञ्महिए पएसमञ्महिए वा दुपएसमञ्महिए वा। एवं जाव दसपण्तिए, नवरं ओगाहणाए पएसपरिवृद्धी कायन्वा जाव दसपण्सिए, नवरं नवपएराहीणति । संखेजपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अर्णता पज्जवा पनता । से केणहुणं भंते ! एवं वृषद् ॰ ? गोयमा ! संखेजपर्णसर संखेजपरसियस्स दन्वहुयार तुहै. पएसद्वयाए सिय हीणे सिय तुहै सिय अन्महिए। जइ हीणे संसेजमागहीणे वा संबेजगुणहीणे वा, अह अब्महिए एवं चेव । ओगाहणद्वयाए वि दुट्टाणविहए, ठिईए चउट्टाणविष्टए, वण्णाइउवरिक्रचउफासपञ्जवेहि य छट्टाणविष्टए । असंखिज-पएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अर्णता पज्जवा पज्जता । से केणड्डेणं भंते ! एवं बुबह० १ गोयमा ! असंखिज्जपएसिए खंघे असंखिजपएसियस्स खंघस्म दव्यहुबाए तुहे, पएसद्वयाए चउद्वाणविष्ण, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्ण, ठिईए चउद्वाण-विरा, चण्णाइउवरिक्षचउफासेहि य छह्वाणविरा । अणंनपरिस्थाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजावा पत्रता । से केणट्टेणं भंते ! एवं वुचइ० ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे अणंतपएसियस्स संभस्स दव्वद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छट्टाणविहए, ओमाइणद्वयाए चउद्वाणविष्ठेप्, ठिईए चउद्वाणविष्ठेप्, वन्नगंघरसफासपज्जवेहिं छद्वाणविष्ठेप् ॥२६९॥ एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा । सोबमा ! अणंता पज्जना पश्चता । से केणड्रेणं भंते ! एवं वुष्टइ० ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोम्गलस्स दब्बद्वयाए तुक्के, पएसद्वयाए सद्घाणबन्धिए, ओगाइणद्वयाए तुक्के, ठिईए असद्घाणबन्धिए, बण्णाइउवरिक्रचउफासेहि छद्वाणबिङ । एवं दुपएसोगाढे वि । संखिजपएसोगाडाणं पुच्छा । गोयसा ! अणंता पजना पकता । से केजद्वेणं भेते ! एवं वुष्ट ० ? गोयसा ! संख्यिजपएसोगाढे पोम्गके संखिजपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्यद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए

छ्ट्ठाणवर्डिए, ओगा**हणद्वयाए दुद्वाणवर्डिए, ठिईए चउट्टाणवर्डिए**, वण्णाइउवरिह्न-चउफारेहि य छट्ढाणविष्ठिए । असंखेजपण्सोगाढाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नना । से केगद्वेणं भंते ! एवं युष्पइ० १ गोयमा ! असंखेजपएसोगाढे पोरान्ट असं-खेजपएगोगाडस्स पोग्गलस्य दव्बद्वयाए तुक्के, पएसद्वयाए छट्टाणविङए, आंगाहणडु-वाए चउद्वाणविडए, ठिईए चउद्वाणविडए, वण्णादअहुकासेहि छट्टाणविडए ॥२७०॥ एगममयठिइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । मे केणहेणं भंत ! एवं वुचद॰ र गोयमा ! एगमभयठिइए पोग्गले एगसमयठिइयस्य पोग्गलस्य दृष्यद्वयाए ुछे, पएसद्ववाए छद्वाणविहरू, ओगाहणद्वयाए चउद्वापनिहरू. टिईए नुहे, वण्णाइ-अद्वफासेति सङ्घाणबिहिए । एवं जान दससमयिहिहए । मंखेजगमयिटिटयाणं एवं चैव, णवरं ठिईए दुष्टाणविद्य । असंस्रेजसमयटिइयाणं एवं चेव, नवरं ठिईए चउद्याण-बिंदिए।। २७९॥ एकगुणकालमाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंना पञ्जवा पद्मना। से केणहेणं भंते ! एवं बुचड० ? गोयमा ! एक्युणकालए पोस्गले एक्गुणकालगस्स पंत्रगलस्स दम्बद्धयाए तुंह, पएसद्धयाए छट्टाणवांडए, ओगाहणद्वयाए चन्नद्राणवांडए, ठिइंए चउद्वाणविष्ठए, काळवन्नपञ्जनेहिं तुह्ने, अबसेमेहिं बन्नगंधरमफासपञ्जवेहिं छहाणविंदा, अहिंदि फासेहिं छहाणविंदिए । एवं जाव दसगुणकालए । संखेजसुण-कालए वि एवं चेव, नवरं महाणे दुहाणविंदए। एवं असंखेजगुणकालए वि, नवरं म्हाणे चउद्घाणविहए। एतं अणंतगुणकालए वि, नवरं सहाणे छद्घाणविहण्। एवं जहा कालवन्नस्म वत्तव्वया भणिया तहा सेंसाण वि वन्नगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियन्त्रा जाव अणंतगुणहुक्त्वे ॥ २७२ ॥ जहस्रोगाहणगाणं भंत ! दुपएसियाणं पुच्छा । गोथमा ! अर्णना पज्जवा पकत्ता । से केणहेणं भंते ! एवं बुव्हड० ! गोयमा ! जहन्नोगाहणाः, दुपएसिए संधे जहन्नोगाहणस्य दुपएसियस्य खंधस्स दव्बहुयाए तुह्ने, पासद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिईए चउद्वाणविहए, कालवन्नपञ्जवहिं छ्ट्राणविडए, समवन्नगंधरसपज्जवेहिं छ्ट्ठाणविडए, सीयउसिणणिदछ्वन्त्रफामपज्जवेहिं छ्डाणवडिए, से तंणद्वेणं गोयमा ! एवं वुषद्-'जहस्रोगाहणगाणं वुपएसियाणं पोम्ग-ठाणं अणंना पञ्जवा पञ्चता'। उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव। अजहत्रमणुक्कोसोगाह-णओ नित्य । जहकोगाहणयाणं मंते ! तिपएसियाणं पुच्छा । गोग्रमा ! भ्रणंना पज्जवा पनता। सं केणहेणं भंते ! एवं बुन्बइ० ! गोयमा ! जहा दुपएसिए जहसोगाहणए, उक्कोसोगाहणए वि एवं चेब, एवं अजहम्मणुक्कोसोगाहणए वि । जहमोगाहणयाणं भंत ! चउपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा जहनोगाहणए दुपएसिए तहा जहनी-भाहणए चउप्पण्सिए, एवं जहा उनकोसोगाहणए दुपएसिए तहा उनकोसोगाहणए

चउप्पएसिए वि । एवं अजहबसणुक्कोसोगाहणए वि चउप्पएसिए, णवरं ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुहे सिय अब्महिए। जड़ हीणे पएसहीणे, अह अब्महिए पएस-अन्महिए । एवं जाव दसपएसिए णेयव्यं, णवरं अजहण्युक्कोसोगाहणए पएसपरियुद्धाः कायव्या जाव दसपएसियस्स सत्त पएमा परिविष्टुर्जंति । जहक्रोगाहणगाणं अंते ! संखेजपगृसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणट्रेणें भंत ! एवं वुचड० ? गोयमा ! जहकोगाहणए संखेजपएसिए जहकोगाहणगस्य संखेजपएसियस्स द्व्वहुयाए तुहे, पएसहुयाए दुहाणविद्य, ओगाहणहुयाए तुहे, ठिईए चउड्ढाणविडए, वण्णाउच उफामपञ्चर्याहे य छट्टाणवडिए । एवं उक्कोनोगाहणए वि । अजहबमणुक्को-मोगाहणए वि एवं चेव, णवरं सहाणे दुहाणविष्ठए । जहकोगाहणगाणं भंते ! असंखिजप्तियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पजवा पत्रना। से केणट्टेणं भंते ' एवं वुच्ड० १ गोयमा ! जहन्नोगाहणए असंग्विजपएसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स असंखिज-पर्गस्यस्य खंधस्य दव्बद्वयाए तुहे, पर्सद्वयाए चउद्वाणविडए, ओगाहणद्वयाए तुहे, ठिइंए च उद्घाणविहए, वण्णाइउवरिक्षफासेहि य छद्घाणविहए। एवं उक्कोसीगाहणए वि। अजहस्रमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं सद्घाणे चउद्घाणवांडए । जहजोगाहणगाणं भंते ! अणंतपर्मियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पनता । से केणहेणं भंते ! एवं बुबड॰ १ गोयमा ! जहन्नोगाहणए अगंतपएसिए खंधे जहन्नोगाहणस्य अणंतपण्-सियस्म खंधस्म दम्बद्वयाए तुल्ले, पएमद्वयाए छद्वाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, टिईए चउद्गाणवृडिए, वण्णाइउबरिल्लच उफासेहिं छद्वाणवृडिए। उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं टिइए वि तुहे। अजहन्नमणुक्तोसोगाहणगाणं भंते ! अणंनपण्सियाणं पुच्छा। गोयमा! अर्णता पज्जवा पन्नता। से केणहेण भंत! एवं बुच्ह० ? गोयमा! अजहश्वमणुक्कोसोगाहणए अणंतपएसिए खंधे अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगरस अणं-तपर्शितयस्य खंधस्य द्व्यद्वयाग् तुहे, पएसद्वयाग् छद्वाणविडए, ओगाहणद्वयाए चउद्याणविहरः, ठिईए चउद्याणविहरः, वण्णाइअद्वफासेहि छ्ट्याणविहरः ॥ २०३ ॥ जहन्नद्विड्याणं भंते ! परमाणुपुग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणद्वेणं भंते ! एवं बुचइ० ! गोयमा ! जहन्नि हिर्य परमाणुपोग्गले जहन्नि हिर्यस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्यद्वयाए तुक्के, पएसद्वयाए तुक्के, ओगाइणद्वयाए तुक्के, ठिईए दुक्के, वण्णाह्दुफासेहि य छद्वाणविहए। एवं उक्कोसिटिङ्ए वि । अजहन्नमणुक्कोसिटिङ्ए वि एथं चेव, नवरं ठिईए चउद्वाणबिए । जह्निठिइयाणं दुपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता। से केणहेणं भंते ! एवं बुबह० ? गोयमा ! जहस्रिटिहए दुपएसिए अह्ब्रिटिश्यस्स दुपएसियस्स दव्बद्वयाए तुक्के, पएसद्वयाए तुक्के, ओगाहणा

द्वयाए सिय हीणे सिय तुळे सिय अञ्महिए। जड़ हीणे पएसहीणे, अह अञ्महिए पएसअन्भहिए । ठिईए तुहे, वण्णाइचउफासेहि य छ्ट्ठाणविटए । एवं उद्दोत्म-ठिइए वि । अजहन्नमणुक्कोमिठिङए वि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्टाणविङए । एवं जाव दमपएसिए, नवरं पएसपरिवृद्धी कायव्वा । ओगाहणहुयाए तिसु वि गमएसु जाव दसपएसिए, एवं पएसा परिविद्धजाति । जहन्निटिइयाणं मंते ! संखिजापए-तियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पक्ता । से केणहेणं भंते ! एवं बुचइ० ? गोयमा ! जहन्नठिइए संस्निजपर्णासए खंधे जहन्नठिइयस्स संस्निजपर्सियस्य संधास दव्बट्टयाए तुह्रे, पएसद्वयाए दुट्टाणबिंडए, ओगाहणद्वयाए दुट्टाणबिंडए, टिइए तुह्रे, वण्णाइचउफासेहि य छद्वाणविहिए । एवं उक्कोमिटिहए वि । अजहन्नमणुक्कोसिटिहए वि एवं चेव, नवरं ठिईए चउट्टाणविडए । जहन्निठिइयाणं असंखिजपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता । से केणद्वेणं भंते ! एवं वृत्तद्द ? गोयमा ! जहन्न-ठिइए असंखिजपएसिए जहन्निठिहयस्स असंखिजपएमियस्स दव्यद्वयाए नुहे, पएस-हुयाए चउहाणविष्ठेए, ओगाहणहुयाए चउहाणविष्ठए, ठिईए तुहे, वण्णाइउर्वारहच-उफासेहि य छ्टाणविडए । एवं उक्नोसिटिइए वि । अजहक्रमणुक्कोसिटिइए वि एवं चेव, नवरं ठिईए चउद्वाणविद्य । जहन्निठिइयाणं अणंतपर्णसयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता। से केणद्वेणं अंते ! एनं वुचइ० १ गोयमा ! जहक्राठिहए अर्णनपर्शतए जहम्राठिइयस्स अर्णनपर्शतयस्स दव्बद्वयाए तुम्ने, पर्सद्वयार् छ्टाण-वडिए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्ए, ठिईए तुक्के, वण्णाइअद्वफासेहि य छट्टाण-विडए । एवं उक्कोसिटिइए वि । अजहसमणुकोसिटिइए वि एवं चेव, नवरं टिइए चउद्वाणवडिए ॥ २७४ ॥ जहनगुणकालयाणं परमाणुपुम्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजावा पत्रना। से केणहेणं भंते ! एवं वुष्वइ० ? गोयमा ! जहत्त्रगुणकालए परमाणुपुरगन्ने जहन्नगुणकालयस्य परमाणुपुरगन्तस्य दन्बद्वयाए तुह्ने, पएसद्वयाए तुह्ने, ओगाहणहुयाए तुळे, ठिईए चउट्टाणबिंडए, कालवश्वपज्जवेहिं तुळे, अवसेसा वण्णा णिथ । गंधरसदुफासपज्जवेहि य छट्टाणबिछ । एवं उक्कोसगुणकालए वि । एवमज-हत्रमणुक्कोमगुणकालए वि, णवरं सद्घाणे छद्घाणविष्ठए । जहक्रगुणकालयाणं भंते ! दुपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पजना पनता। से केणहेणं भंते! एवं बुचइ० ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए दुपएसिए जहन्नगुणकालयस्स दुपएसियस्स दय्बद्वयाए तुक्के, पएसद्वयाए तुक्के, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुक्के सिय अञ्महिए। जइ हीणे पएसहीणे, अह अञ्महिए पएसअञ्महिए । ठेईए बउट्टाणविडए, काल-नमपजनिहि तुहे, अवसेसवण्णाइउवरिह्नचउफासेहि य छद्वाणविद्य । एवं उक्कोस-

गुणकालए वि । अजहब्रमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविहए । एवं जाद दसपएसिए, नवरं पएसपरिवृद्धी ओगाहणाए तहेव। जहन्रगुणकालयाणं मंते! संखिजपएसियाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पजवा पन्नता। से केणहेणं भंते । एवं बुचइ० ? गोयमा ! जहन्युणकालए संख्यिपएसिए जहन्युणकालयस्म संखिज्जपएसियस्स दञ्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए दुद्वाणविष्ठण, ओगाहणद्वयाए दुद्वाण-विष्ण, ठिईए चउद्वाणबिहए, कालवन्नपञ्जवेहिं तुन्ने, अवसेसेहिं वण्णाइउवरिहन्यउ-फासेहि य छद्वाणविहए। एवं अञ्चष्टक्रमणुक्कोसगुणकालए वि, नवरं सद्वाणे छद्वाण-विडिए। जहबराज्यकालयाणं भंते ! असंखिज्यप्रसियाणं पुच्छा। गोयमा! अर्णता पज्जवा पन्नता। से केणहेणं भंते ! एवं वुचइ० ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए असंखि-जपएसिए जहन्नगुणकालयस्स असंखिजपएसियस्म दव्बद्वयाए तुहे, पएसहयाए चट-द्वाणविंहण्, ठिईए चउद्वाणविंहण्, कालवकपञ्जवेहिं तुष्टे, अवसेसेहिं वण्णाइउवरिष्ट-चरफासेहि य छ्ट्ठाणविंडए, ओगाहणद्वयाए चर्ड्डाणविंडए। एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहम्मणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविष्ठए । जहन-गुणकालयाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नता । से केणहेणं भंते ! एवं बुबाइ० ? गोयमा ! जहबागुणकारुए अणंतपएसिए जहबागुण-कालयस्स अणंतपएसियस्स दव्बद्धयाए तुह्ने, पएसद्वयाए छद्वाणवहिए, भोगाहणद्वयाए चउट्ठाणविडण्, ठिईेण् चउट्टाणविडण्, कालवनपञ्चवेहिं तुहे, अवसेसेहिं वनाइअट्ट-फासेहि य छट्टाणबंडिए। एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविंछ। एवं नीललोहियहालिह्सुक्किसुब्भिगंघदुव्भिगंघ-तित्तकडुकसायअंबिलमहुररसफजवेहि य क्तव्यया भाणियव्या, नवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंघस्य दुब्भिगंघो न भणाइ, दुब्भिगंघस्य सुब्भिगंघो न भणाइ, तित्तस्य अवसेसं न भण्णह्, एवं बहुयाईण वि, अवसेसं तं चेव । जहनगुणकम्बहाणं अर्णत-पएसियाणं संथाणं पुच्छा। गीयमा! अणंता पजना पनता। से केणहेणं भंते! एवं वुचड्० ? गोयमा ! जहन्नगुणकम्बढे अणंतपएसिए जहनगुणकम्बढस्स अणंत-पएसियस्स दब्बहुयाए तुह्ने, पएसहुयाए छ्टुाणवडिए, ओगाहणहुयाए चउड्डाणवडिए, ठिईए चउद्वाणविहरू, वक्षमंघरसेहिं छद्वाणविहरू, कम्खडफासपञ्जवेहिं तुहे, अवसे-सेहिं सत्तफासपञ्जवेहिं छट्टाणविष्ठए । एवं उक्कोसगुणकक्खडे वि । अजहज्ञमणुक्को-सगुणसम्बद्धे वि एवं चेव, नवरं सद्घाणे छद्वाणविष् । एवं मउयगुरुयलहुए वि आणिबब्बे । जहब्रगुणसीयाणं भंते ! पर्माणुपोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पजवा पत्रता । से केणहेणं मंते ! एवं वुन्दर् ? गोयमा ! जहजगुणसीए परमाणु-

पोमाले जहनगणसीयस्म परमाणुपुग्गलस्स दव्बद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए तुहे, ओगा-हणद्वयाए तुहे, ठिईए चउद्वाणवडिए, वन्नगंघरसेहिं छट्टाणवडिए, सीयफासपञ्जवेहि य तुहै, उसिणफासो न भण्णाः, निद्धलुक्त्यकासपञ्जवेहि य छट्टाणबङ्गि । एवं उक्को-मगुणसीए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणसीए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणत्रिहरू । जहजनुणसीयाणं दुपर्णम्याणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पक्षना । से केणहेणं भंते ! एवं तुचइ॰ ? गोयमा ! जहन्नगुणसीए दुपएसिए जहन्नगुणसीयस्य दुपएसियस्म दव्यद्वयाए नुहे, पएसद्वयाए नुहे, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय नुहे सिय अञ्महिए। जड हीणे पएमहीणे, अह अञ्महिए पएमअञ्महिए। ठिइए चउट्टाणविहए, वज-गंघरमपज्जनेहिं छद्वाणर्नाडए, सीयफानपज्जनेहिं तुक्षे, उसिणनिद्ध्वस्वफानपज्जनेहिं छट्टाणवडिए । एवं उक्कोनगुणसीए वि । अजहज्ञसणुक्कोसगुणसीए वि एवं चेव, नवरं मङ्काणं छद्वाणविद्याः। एवं जाच दसपएतिए, णवरं ओगाइणहुमाए परसपरिवृद्धाः कायव्या जाव दसपएसियस्य नव पएमा वृद्धिजेति । जहनगुणसीयाणं संन्विजपए-नियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पत्रता । से केणहेणं भेते ! एवं वृष्ट ० १ गोयमा ! जहन्नगुणसीए संखिजपएतिंग जहन्नगुणसीयस्य संखिजपएनियस्य दब्बद्धयाए तुहे पएमद्वयाण् दुद्वाणवांडण्, ओगाहणद्वयाण् दुद्वाणवांडिण्, टिडेण् चपद्वाणवांडिण्, वज्णाईहिं छद्वाणविडण्, सीयफासपज्जविहिं दुहे, उसिणनिद्धहन्स्बेहि छद्वाणविडण्। एवं उक्कोसगुणसीए वि । अजहश्रमणुक्कोलगुणसीए वि एवं चेत्र, नवरं सहाणे छद्राणवृहितः। जहन्नगुणसीयाणं असंखिजपर्णस्याणं पुच्छा। गोयमा । अणंता पज्जवा पत्रना । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्द० ? गोयमा ! जहसगुणसीए असंखिज-पर्णासम् जहन्नगणसीयस्स असंखिजपर्णासयस्य द्व्यहुयाए तुहे, पएसहुयाए चउडाण-वरिए, ओगाहणहुयाए चटहाणविडए, टिईए चडहाणविडए, वण्णाहफ्जवेहिं छट्टाणविज्, सीयफासपञ्जवेदि नुहे, उसिणनिद्धलुनखफासपञ्जवेदि छट्टाणविज्य। एवं उक्कोसगुणसीए वि। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीए वि एवं चेव, णवरं सद्धाणे छ्ट्ठाण-र्वाटण् । जहन्नगुणसीयाणं अणंतपण्सियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पनता । मं केणद्वेणं भंते ! एवं वुचद् १ गोयमा ! जहत्त्रगुणसीए अर्णतपएसिए जहत्त्रगुणसी-यस्य अणंतपर्णस्यस्त दन्बहुयाए नुहे, परसहुयार रह्वाणविहरू, ओगाहणहुयार् चउद्दाणविहरू, ठिईग् चउद्वाणविहर्, वण्णाइपजावेहिं छद्वाणविहर्, सीयफास-पजनिहिं नुष्टे. अवसेसेहिं सत्तफासपजनेहिं छद्राणबिंहए। एवं उद्घोसगुणसीए वि। अजहन्नमणुकासगुणसीए वि एवं चेव, नवरं सद्वाणे छद्वाणविष्ठम् । एवं उसिणविद्य-**इक्से जहा सीए। परमाणुपोम्गलस्स तहेव पांडवक्सो सव्वेसि व मण्यह पि**

माणियव्यं ॥ २७५ ॥ जहन्नपएसियाणं भंते ! संधाणं पुन्छा । गोयमा ! अणंता पजवा पकता । से केणद्वेणं भंते ! एवं व्यवह० ? गोयमा ! जहक्रपएसिए खंधे जहन्नपएसियस्स खंघस्स द्व्वद्वयाए तुहे, पएमद्वयाए तुहे, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुह्रे सिय अन्महिए । जह हीणे पएसहीणे, अह अन्महिए पएसअन्म-हिए । ठिईए चउद्राणविद्धए । वस्रगंधर्सउवरिक्षचरफासपञ्जवेहिं छद्राणविद्ध । उक्कोसपण्सियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ० । से केणहेणं भंते ! एवं वृत्तद् ? गोयमा ! उद्योसपएसिए खंधे उद्योसपएसियस्य संघरस द्व्यद्वयाए तुले, पएसह्याए तुले, ओगाहणद्रयाए चउहाणविष्टए, ठिइए चउहाणविष्टए, वण्णाइ-अद्वकासपज्जवेहि य छद्वाणविहरः । अजहन्नमणुद्धोसपर्गसियाणं संते ! खंघाणं केवहया पज्जवा पन्नना ? गोयमा ! अणंता । से केणद्वेणं ० ? गोयमा ! अजहस्रमणुक्कोसपए-सिए खंघे अजहनमणुक्कोसपएसियस्य खंघस्स दव्बद्वयाए तृहे, पएसद्वयाए छट्टाण-बहिए, ओगाहणहुयाए चल्ड्राणबहिए, ठिइंए चल्ड्राणबहिए, वण्णाइअहुफासपञ्ज-विहि य छद्राणबृद्धिए ॥ २७६ ॥ जहन्नोगाहणगाणं भेते ! पोगगलाणं पुच्छा । नोयमा ! अणंता । से केणद्वेणं ० ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए पोम्गले जहन्नोगाहण-गरस पोग्गलस्स दव्बहुयाए तुहे, पएसहुयाए छह्वाणबिख्य, ओगाहणहुयाए तुहे, ठिईए चउद्वाणविष्य, वण्णाइउवरिक्षफासेहि य छद्वाणविष्ठए। उद्योसीगाहणए वि एवं चेव, नवरं ठिईए तुहे । अजहन्तमणुक्तोसोगाहणगाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता० । से केणद्वेणं० ? गोयमा ! अजहत्तमणुक्कोसोगाहणए पोमाले अजहश्रमणुकोसोगाहणगरस पोगगलस्स दव्यद्वयाए तुहे, पएसद्वयाए छद्वाणविहए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणविष्ठए, ठिईए चउद्वाणविष्ठए, वण्णाइअद्वफासफजवेहि य छह्वाणबहिए ॥ २७७ ॥ जहन्निटिइयाणं भंते ! पोम्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता । से केणहेणं ० ? गोयमा ! जहक्रिट्ए पोग्गळे जहक्रिट्यस्स पोग्गळस्स दन्बहुयाए तुहे, पएसहुयाए छद्धाणविहए, ओगाहणहुयाए चउहाणविहए, ठिईए तुहे, बण्णाइअट्टमासपजावेहि य छहाणविहए । एवं उक्तोसिटइए वि । अजहनसणु-कोसठिइए वि एवं चेव, नवरं ठिईए वि चउद्वाणविष्ट ॥ २७८ ॥ जहसगुणकास्त्र्याणं मंते! पोगगलाणं केवह्या पजवा पत्रसा? गोयमा। अणंता । से केणहेणं ? गोक्सा! जहनगुणकालए पोमाले जहनगुणकालयस्स पोम्मलस्स दव्बहुवाए तहे. पएसह्याए छ्टाणविष्ट, ओगाइणद्वयाए चउट्टाणविष्टए, ठिईए चउट्टाणविष्ट्, कालबन्नप्रवनेहि तहे, अवसेसेहि वनगंधरसकासप्रवनेहि य छहाणविष्य, से तेणहेणं नोयमा । एवं व्यवह-- 'जहचगुणकालमाणं पोस्पलाणं अर्णता पञ्चा पत्रता' । एवं २४ सत्ता•

उक्कोसगुणकालए वि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेत्र, नवरं सद्वाणे छद्वाण-विलिए। एवं जहा कालवनपज्जताणं वनव्यया भणिया तहा सेसाण वि वन्नगंवरस-फासाणं वनव्यया भाणियव्या जाच अजहन्नमणुक्कोसल्क्क्के सद्वाणे छद्वाणत्रिष्ठ । संनं स्विअजीवपज्जवा । सेतं अजीतपज्जवा ॥ २७९ ॥ पन्नवणाए भगवर्ष्ट पंचमं विसेसपयं समसं ॥

बार्म चडवीसाइं गअंतरं एगसम्य कत्तो य । उच्चहण परभवियाउयं च अहेव आगरिया ॥ १ ॥ निरयगई णं भंते ! केवड्यं कालं विरहिया उचवाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं बारस सुहुता । तिरियगई णं भंते ! केव्डयं कालं विरहिया ज्ववाएणं पन्नना ! गोत्रमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोरेणं बारस मुद्रुता । मणुयगई णं मंते ! केवइयं कालं विरहिया उवबाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उन्होसेणं वारस सहना । देवगई णं मंते ! केवइयं कार्ल विरहिया उववाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस महत्ता । सिद्धिगई णं भंते ! केवहयं कालं विरहिया भिज्झणाए पन्नता ! गोयमा ! जहनेणं एगं नमयं, उक्कोसेणं स्वम्मामा ॥ २८० ॥ निरयगई णं भंते ! केवडयं कालं विर-हिया उव्बद्दणाए पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एकं समयं, उन्नोसेणं बारम सहत्ता । तिरियगई णं भेते ! केवडयं कालं विरहिया उव्बद्धणाए पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं नमयं, उक्कोसेणं बारम मुहता । मणुयगई णं भंते ! केवइयं कालं निरहिया उदग्हणाए पन्नना ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं. उद्घोर्सणं बारस मुहत्ता । देवगई णं भंत ! केवड्यं कालं विरहिया उब्बह्णाए पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुंहुना ॥ १ दारं ॥ २८१ ॥ रयणप्पभापुढिबनेरइया णं भंते : केवडयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं गउव्वीसं मुहुता । सक्तरप्यमापुटविनेरइया णं संते ! केवइयं कालं विरहिया उवचा-एणं पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोरीणं सत्तराईदियाणि । बालुयप्प-भापुटविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पनना ? गोयमा ! जहन्नणं एगं समयं, उक्कोर्सणं अद्भासं । पंकप्पमापुरुविनेरह्या णं भेते ! केवइयं कालं विरहिया उनवाएणं पनता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उन्नोसेणं मासं । व्मापभापुतविनेरह्या ण भंते ! केवइयं कालं विरहिया उचवाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहंत्रणं एगं समयं, उक्कोर्सणं दो मासा । तमापुढविनेरहमा णं भेते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उन्नोसेणं चतारि मासा । अहेसत्तमापुढविनेरइया णं मंते ! केवइयं कालं विरक्षिया उद्यवाएणं पद्मता ? गोयमा !

जहन्नेणं एगं समयं, उन्होसेणं छम्मासा ॥ २८२ ॥ अमुरकुमारा णं भंते ! केव्ह्यं कालं विर्हिया उन्नवाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उन्होसेणं चउन्नीसं मुहत्ता । नागकुमारा णं भंते । केवहयं कालं विरहिया उचवाएणं पक्ता ? गोयमा ! .. जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चरम्बीसं मुहता । एवं सुवनवुत्माराणं विज्ञुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं दीवकुमाराणं दिसिकुमाराणं उद्दिकुमाराणं वाउकुमाराणं थणिय-कुमाराण य पत्तेयं जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चरुव्वीसं मुहत्ता ॥ २८३ ॥ पुढविकाडया णं भंते ! केवड्यं कालं विरहिया उवचाएणं पकता ? गोयमा ! अणु-समयमविरहियं उववाएणं पन्नता। एवं आउकाइया वि तेउकाइया वि वाउकाइया वि वणस्यदकाइया वि अणुसमयं अविरहिया उचवाएणं पन्नता ॥ २८४ ॥ बेईदिया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नता ? गौयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंनोमुहुनं। एवं तेइंदियच उरिंदिया ॥ २८५ ॥ संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया णं भंते ! केव्हयं कालं विरहिया उववाएणं फ्लाता ! गोयमा ! जहनेणं एगं ममयं, उक्कोसंणं अंतोमुहुतं। गन्भवकंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवइयं कालं विर्हिया उचवाएणं पनता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उन्होसेणं बार्म महना।। २८६ ॥ संमुच्छिममणुस्सा णं भंते ! केवइयं कालं विरद्विया उव-वाएणं पश्चना ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उद्योसेणं चउव्यीसं मुहुता। गब्भ-वक्कंतियमणस्या णं भंते ! केव्हयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नता ? गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं वारस मुहुता॥ २८०॥ वाणमंतराणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउन्वीसं मुहुता। जोइसियाणं पुच्छा। गोयमा! जहनेणं एगं समयं, उद्घोसेणं चउव्वीसं मुहुता। सोहम्मे कप्पे देवा णं भंते! केवड्यं कालं विरहिया उबवाएणं पक्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं. उक्कोसेणं चउव्वीसं सहता। ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्यीसं मुहत्ता। समंद्रमारे कप्पे देवाणं पुच्छा। गीयमा! जहन्रेणं एगं समयं, उद्योसेणं णव राइंदियाई वीसाई सुहत्ताई । माहिंदे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एवं समयं, उक्तोरीणं बारसं राइंदियाइं दस महत्ताइं । बंगलीए देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उन्नोसेणं अद्धतेवीसं राइंदियाई। लंतगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोरेणं पणयाकीसं राहंदियाई । महासुक्देवाणं पुच्छा । गोयमा ! बहुनेणं एगं समयं, उक्कोरेणं असीई राइंदियाई । सहस्तारे देवाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं एगं समयं, उन्होसेणं राहंदियसयं । आण्यदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अहत्रेणं एगं समयं, उद्दोरीयं संबोजा मासा ।

पाणयदेवाणं पुच्छा । गोयमा : जहनेणं एगं समर्थ, उक्कोरेणं संखेजा मासा । आरमहेवाणं पुच्छा । गोयसा ! जहनेणं एगं समयं, उद्योसेणं संसिद्धा वासा । अञ्चयदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिजा वासा । हिद्रिमंगिवज्ञाणं पुच्छा । गोयमा । जहनेणं एगं समयं, उन्नोसेणं संसिज्जाई वास-मयाइं । मज्जिमगेविज्ञाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एवं समयं, उद्दोसेणं संस्थि-जाडं वाससहस्साई । उवरिमगेविजाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संख्यिकाइं वासमयमहस्साइं । विजयवेजयंतज्ञयंतअपराजियदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेखं कालं । सब्बद्दसिद्धगदेवा णं भंते ! केवडयं कालं विरहिया उववाएणं पञ्चला ! गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उद्घोरेणं पिल्लोबमस्य संखिजाइभागं ॥ २८८ ॥ सिद्धा णं भेते । केवड्यं कालं विरहिया सिज्हाणाए पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥ २८९ ॥ रयणप्यभापुढविनेर्द्या णं अंते ! केवइयं कार्ल विरहिया उव्वर्षणाए पन्नता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उन्नोसेणं-चउन्वीसं मुहुता । एवं सिद्धवजा उन्वरूणा वि भाणियव्या जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं जोइसियवेमाणिएस 'चयणं'ति अहिलाबो कायव्यो ॥ २ दारं ॥ २९० ॥ नेरइया णं मंते ! किं संतरं उदयांती. निरंतरं उववर्जित ? गोयमा ! संतरं पि उववर्जित. निरंतरं पि उववर्जित । तिरि-क्खजोणिया णं भंते । किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उनवजंति, निरंतरं पि उनवजंति । मणुस्सा णं मेते ! कि संतरं उचवजंति, निरंतरं उनवजंति ? गोयमा ! संतरं पि उनवजंति . निरंतरं पि उनवजंति । देवा णं भंते ! किं संतरं उपवजंति, निरंतरं उपवजंति ? गोयमा ! संतरं पि उपवजंति, निरंतरं पि उवनजाति ॥ २९९ ॥ रयणप्यमापुडविनेरझ्या णं भंते ! कि संतरं उवनजाति. निरंतरं उववजंति ? गोयमा ! संतरं पि उववजंति , निरंतरं पि उववजंति । एवं जाव अहेसत्तमाए संतरं पि उववजंति. निरंतरं पि उचवजंति ॥ २९२ ॥ असुरकुमारा णं देवा णं भंते । कि संतरं उबवजंति. निरंतरं उबवजंति ? गोयमा ! संतरं पि उनवजंति, निरंतरं पि उनवजंति । एवं जाव श्रीयकुमारा संतरं पि उनवजंति, निरंतरं पि उववर्जिति ॥ २९३ ॥ प्रत्विकाइया णं भेते ! किं संतरं उववर्जित. निरंतरं उववजाति ! गोयमा ! नो संतरं उवबजाति. निरंतरं उवबजाति । एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उबवजांति, निरंतरं उववजांति । बेहंदिया में भंते ! कि संतरं उनवजंति, निरंतरं उनवजंति ! गोयमा ! संतरं पि उनवजंति, निरंतरं पि उववजाति । एवं जाव पंचिदियतिरिक्खजोशिया ॥ २९४ ॥ मणुस्सा णं अंते ! कि

संतर उनवर्जात, निरंतर उनवर्जात ? गोथमा । संतरं पि उनवर्जात, निरंतरं पि उववर्षात । एवं वाणमंतरा जोइसिया सोहम्मीसाणसणंक्रमारमाहिद्वंमलीयलंतग-महासुक्सहस्सारआणयपाणयभारणसुयहिद्धिमगेविज्ञगमज्ज्ञिमगेविज्जगउनरिमगेविज्ञ-गविजयवेजयंतजयंतजयराजियसम्बद्धसिद्धदेवा य संतरं पि उववज्रांति निरंतरं पि उववर्जित ॥ २९५ ॥ सिद्धा णं भंते । कि संतरं सिज्झंति, निरंतरं सिज्झंति ? गोयमा ! संतरं पि सिज्यंति, निरंतरं पि सिज्यंति ॥ २९६ ॥ नेरहया णं भंते ! कि संतरं उव्बहंति, निरंतरं उव्बहंति ? गोयमा ! संतरं पि उव्बहंति, निरंतरं पि उव्बहंति । एवं जहा उववाओं भणिओ तहा उव्बद्धणा वि सिद्धवजा भाणियव्या जाव वेमाणिया, नवरं जोइसियवेमाणिएसु 'चयणं'ति अहिलावो कायव्यो ॥ ३ दारं ॥ २९७ ॥ नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववर्जाते ? गोयमा ! जहनेणं एक्की वा दो वा तिश्वि वा. उक्कोसेणं संखेजा वा असंखेजा वा उववर्जात. एवं जाव अहेसत-माए ॥ २९८ ॥ असुरकुमारा णं भंते ! एगसमएणं केवड्या उववर्जाते ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिकि वा. उक्कोर्सणं संखेळा वा असंखेळा वा । एवं नागक्सारा जाव थणियक्सारा वि भाणियन्ता ॥ २९९ ॥ पुढविकाइया णं भेते ! एगसमएणं केवड्या उनवज्रंति ? गोयमा ! अधसमयं अविरहियं असंखेजा उचन-जाति, एवं जाव बाउकाइया । वणस्सहकाइया णं मंते ! एगसमएणं केवहया उवव-जंति ? गोयमा ! सद्वाणुववार्य पहुच अणुसमयं अविरहिया अणंता उववर्जति. परहाणुषवायं पद्भव अणुसमयं अविरहिया असंखेजा उववजाति । वेडंदिया णं भंते ! एगसमएणं केवड्या उववजंति ? गोयमा ! जहनेणं एगो वा दो वा तिनि वा. उक्कोरोणं संखेजा वा असंखेजा वा। एवं तेइंदिया चर्डारेदिया। संमुच्छिमपंचिं-दियतिरिक्खजोणिया गन्भवश्चेतियपंचिदियतिरिक्खजोणिया संमुच्छिमम्णुरसा वाण-मंतरजोडसियसोहम्मीसाणसर्णकुमारमाहिदवंमलोयलंतगमहायुक्कसहस्सारकप्पदेवा एए जहा नेरइया । गञ्भवक्रंतियमण्सभाणयपाणयभारणस्यगेवेजगभणुत्तरो-वयाइया य एए जहनेणं इस्तो वा दो वा तिशि वा. उस्त्रोसेणं संखेजा उववजंति, न असंबिजा उपवर्जात ॥ ३००॥ सिद्धा णं मंते । एगसमएणं केवडया सिज्याति ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिकि वा, उक्षोरेणं अदूसयं ॥ ३०१ ॥ नेरह्या णं अंते ! एगसमएणं केवड्या उच्चहंति ? गोयमा ! अहनेणं एको वा दो वा तिकि वा. उद्योसेणं संखेळा वा असंखेळा वा उव्यक्ति. एवं जहा उववाओ भणियो तहा उन्बद्दणा वि सिद्धबद्धा माणियन्या जाव नगुत्तरोववाड्या. णवरं जोहसियवेमाणियाणं नयणेणं अदिकानो कायन्यो ॥ ४ दारं ॥ ३०२ ॥ नेरह्या णं भंते ! कसोहितो

उचवजंति कि नेरइएहिंतो उववजंति, तिरिक्लजोणिएहिंतो उववजंति, मणुस्से-हिंतो उववजाति, देवेहिंतो उववजाति ? गोयमा ! नो नेरहएहिंतो उववजाति, तिरि-क्खजोणिएहिंतो उववजाति. मणुरसेहिंतो उववजाति. नो देवेहिंतो उववजाति । जङ् तिरिक्ख जोणिएहिंतो उचवर्जात कि एगिदियतिरिक्ख जोणिएहिंतो उचवर्जात, बेइंदि-यतिरिक्सजोणिएहिंतो उववर्जति, तेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंनो उववर्जति, चररिंदि-यितरिक्खजोणिएहिंतो उववर्जंति, पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंनो उववर्जंति ? गोयमा ! नो एगिदिय०, नो बेइंदिय०, नो तेइंदिय०, नो चर्रिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवजंति, पंचिदियतिरिक्ख जोणिएहिंनो उनवजीत । जड पंचिदियतिरिक्ख जोणिए-हिंतो उववर्जात कि जलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववर्जात, थलयरपंचिदि-यतिरिक्सजोणिएहिंतो उनवजंति, सहयरपंचिंदियतिरिक्सजोणिएहिंनो उनवजीति ? गोयमा! जलयरपंचिदियतिरिक्सजोणिएहिंतो उवदर्जति, थलयरपंचिदियतिरिक्ख-जोणिएहिंनो उववजंति, सहयरपंचिंदियतिरिक्सजोणिएहिंनो उववजंति ॥ ३०३ ॥ जइ जलयरपंचिदियतिरिक्जनजोणिएहिंतो उचवज्रंति कि संमुच्छिमजलयरपंचिंदिय-तिरिक्सजोणिएहिंतो उववर्जात, गन्भवक्रंतियजलयरपंचिदियतिरिक्च जोणिएहिंतो उववर्जाते ? गोयमा ! संमुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंनो उववर्जाते. गञ्मवकंतियज्ञलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवजाति । जइ संमुच्छिमजल यरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवज्जन्ति किं पज्जत्त्यसंमुच्छिमजलयरपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति, अपजत्त्रसंमुच्छिमजलसरपंचिदियतिरिक्खजोणि-एहिंनो उववजंति ! गोयमा ! पज्जनयसंमुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवजान्ति, नो अपजत्तयसंमुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववर्जति । जइ गब्भवकंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववजीति कि पज्जत्तयग्रम-वकंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उषवजंति, अपजन्तयगञ्भवकंतियजल-यरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववजाति ? गोयमा ! पजात्तयगब्भवक्रंतियजलसर-पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववजीति, नो अपज्ञत्तयगब्भवक्षतियजलयर्पचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववजांति ॥ ३०४॥ जद्द थलगरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवर्जात कि नउप्पयश्लयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनक्जांति, परिसप्पथल-यरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्रंति १ गोयमा ! चरुप्यययस्यरपंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उनवजांति, परिसप्पथलयरपैनिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उनवैजाति । जर् नउप्पवधलयरपंनिदियतिरिक्सजोणिएहिंतो उनवजाति कि संसु-च्छिमेहिंतो उववजंति, गञ्मवकंतिएहिंतो उववजंति ? गोयमा ! संमुच्छिमचरुप्य- थलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जेति, गञ्भवक्क्वंतियचउप्पयथलयरपंचि-दियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उनवज्जंति । जइ संमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उपवजंति कि पजनगसंमुच्छिमचउपपयकवर्षविदियतिरि-क्खजोणिएहिंतो उवनजाति, अपजनगसंमुच्छिनचउप्पमथलयरपंचिदियतिरिक्ख जोणिएहिंतो उववजंति ? गोयमा ! पज्जनगसंसुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्रंति. नो अपजत्तगसंमुच्छिमचउप्पय्यलयरपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो उनवजांति । जड गञ्भवक्ंतियचउप्पययन्यरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उनवज्रन्ति कि संबेजनासाउयगञ्मवकंतियचउप्पयश्लयर्पविदियतिरिक्खजोणिए-हिना उववज्रन्ति. असंखेजवासाउयगब्भवक्रंतियच्चटप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंनो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेजवासाउएहिंतो उववज्जन्ति, नो असंखेज-वासाउएहितो उववज्रन्ति । जह संबेजवासाउयगब्भवक्वंतियचउप्पयथलयरपंचिदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्रन्ति कि पज्रतगरांखेजवासाउयगर्भवकंतियचउप्य-थलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववजन्ति, अपज्जतगसंखेजवासाउयग्ब्सवक्षं-तियचउप्पयकयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जेतिहेतो उवरजन्ति. नो अपजनसंखेजवास।उएहिंगो उवदजन्ति । जइ परिसप्पथलयर-पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उक्कजन्ति कि उर्परिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्ख-जोणिएहिन्तो उववज्बन्ति. भ्यपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उब-वजन्ति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जन्ति । जइ उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दिय-तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि संमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्ख-जोणिएहिन्तो उनवज्नन्ति. गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलगरपंचिन्दियतिरिक्न्वजोणिए-हिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संमुच्छिमेहितो उववजन्ति, गब्भवकंतिएहितो वि उवदब्बन्ति । जइ संमुच्छिमउर्परिसप्यथलयर्पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि पजनएहिन्तो उववज्रन्ति, अपजनएहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! प्रमात्रसंस् च्छिमोहिन्तो उववज्रन्ति. नो अपजन्त्रसंस् च्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचि-न्दियतिरिक्खजोगिएहिंतो उनवज्जन्ति । जइ गब्सवद्यंतियउरपरिसप्पथलगरपंचिन्दि-यतिरिक्सजोणिएहिन्तो उपवजन्ति कि पजत्तएहिन्तो उपवजन्ति, अपजत्तएहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! पंजसयगञ्भवद्यंतिएहिन्तो उववज्रन्ति, नो अपज्रतयगञ्भ-वकंतियउरपरिसप्पयस्वयरपंचिन्दिमतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति । जद्द भुयपरि-सप्पश्रलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोषिएहिन्तो उववजन्ति हि संसुच्छिमस्यपरिसप्प-थलगर्पंचि न्दियतिरिक्खकोषिएहिन्तो उपवज्नन्ति, यन्भवकंतियभुवपरिसप्पण- लयरपंचिन्दियतिरिक्लजोणिएहिन्तो उववजन्ति ? गोयमा ! दोंहिन्तो वि उवव-जन्ति । जः संग्र च्छिमभूयपरिसप्पथलयर्पचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववजन्ति कि पजन्यसंम् च्छिमभूयपरिमप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति. अपज्ञत्त्रयसंग्र च्छिमभूयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्तजोणिएहिंतो उववज्रन्ति ? गोयमा ! पज्जनएहिन्तो उनवज्जन्ति, नो अपजनएहिन्तो उनवज्जन्ति । जइ गव्भ-वक्रंतियभयपरिसप्पयलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि पजत्ताः हिन्तो उनवजन्त, अपजनएहिन्तो उनवजन्ति ? गोयमा ! पजनएहिन्तो उनव-जन्ति, नो अपजनाएहिन्तो उववजन्ति ॥ ३०५ ॥ जङ सहयरपंचिदियतिरिक्खजो-णिएहिंनो उनवजंति कि संमुच्छिमसहयरपंचिंदियतिरिक्तजोणिएहिंनो उनवजंति. गञ्भनक्रंतियसहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्रंति ? गोयमा ! दोहिन्तो वि उदवजन्त । जड् संमुच्छिमखह्यरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उदवजाति कि पजनएहिन्तो उववजन्ति, अपजनएहिन्तो उववजंति ? गोयमा ! पजनएहिन्तो उववर्जात. नो अपजनएहिंतो उववर्जात । जद पजनयगब्भवक्रंतियखहग्ररपंचिन्दि-यांतरिक्ख जोणिएहिन्तो उववज्रंति कि संखेजनाया उएहिन्तो उववज्रंति. असंखेज-वाभाउएहिन्तो उववर्जात ? गोशमा ! संखेजवामाउएहिन्तो उववर्जात, नो असं-खेजगसाउएहिन्तो उववर्जति । जड् संखेजवासाउयगब्भवक्षंतियसह्यरपंचिन्दिय-तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववजंति कि पज्जत्तएहिन्तो उववज्रन्ति, अपजनएहिन्तो उवहज्जन्ति ? गोयमा ! पजन्तिहन्तो उववज्जन्ति नो अपजन्तिहन्तो उवबज्जन्ति ॥ २०६ ॥ जः मणुरसेहिन्तो उववजन्ति कि संमुच्छिममणुरसेहिन्तो उववजन्ति, गञ्भवक्रन्तियमणुरसेहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! नो संमुच्छिममणुरसेहिन्तो उव-वजन्ति. गञ्भवद्यंतियमणुस्संहिन्तो उववजन्ति । जइ गञ्भवद्यंतियमणुस्सेहिन्तो उपवज्रनित किं कम्मभूमिगगञ्भवक्षंतियमणुरसेहिन्तो उववज्रन्ति, अकम्मभूमिगगञ्भ-वकंति प्रमणुरसेहिन्तो उपवजान्ति, अंतरदीवगगब्भवकंतियमणुरसेहिन्तो उपवजान्ति ? नोयमा ! कम्मभूमिगगब्भवकंतियमणुरसेष्टिन्तो उववज्रन्ति, नो अकम्मभूमिगगब्भ-वकंतियमणुस्सेहिन्तो उववजान्ति. नो अंतरदीवगगब्मवकंतियमणुस्सेहिन्तो उवव-जन्ति । जह कम्भभृमिगगब्भवकंतियमणुरसेहिन्तो उववज्रन्ति कि संबोजवासाउए-हिन्तो उववज्रन्ति, असंखेजवासाउएहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! संखेजवासाउ-यकम्मभूमिगगन्भवक्तियमण्सेहिन्तो उववजन्ति, नो असंखेळवासाउयकम्मभू-मिगगब्भवद्यतियमणुस्सेहिन्तो उववज्रन्ति । जद्य संखेखवासाउयकम्मभूमिगगब्भवद्यं-तियमणुस्सेहिन्तो उववज्वन्ति कि पज्नतेहिन्तो उवधज्जन्ति, अपजनहिन्तो उवद-

जन्ति ? गोयमा ! पजत्तपहिन्तो उत्तवजन्ति, नो अपजत्तप्हिन्तो उववजन्ति । एवं जहा ओहिया उनवाइया तहा रयणप्पभापुढविनेरइया वि उथवाएयम्बा ॥ ३०७ ॥ सकरप्पभापुढविनेरहयाणं पुच्छा । गोयमा ! एए वि जहा ओहिया तहेवोषवाएयव्या, नवरं संमुच्छिमेहिन्तो पडिसेहो कायव्यो । वालुयप्पभापुढविनेर-इया णं भंते ! क्योहिन्तो उद्यवज्ञन्ति ? गोयमा ! जहा सक्करप्पमापुरुविनेरह्या, नवरं भुयपरिसप्पेहिन्तो पिडसेहो कायक्वो । पंकप्पसापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा वालुयप्पभापुरुविनेर्हया, नवरं खह्यरेहिन्तो पडिसेहो कायग्वो । ध्मप्पभापुढविनेरइयाणं पुरुद्धा । गोयमा ! जहा पंकप्पभापुढविनेरइया, नवरं चउप्पएहिन्तो वि पडिसंहो कायको। तमापुदविनेरइया ण मंते ! कओहिन्तो उपवज्ञान्ति ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढविनेरङ्या, नवरं थलयरेहिन्तो वि पडिसेहो कायन्यो । इमेणं अभिकावेणं जइ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति, कि जलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्रन्ति, यलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्रन्ति, खहयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! जलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्रन्ति, नो थलयरेहिन्तो॰, नो सहयरेहिन्तो उववज्रन्ति ॥ ३०८ ॥ जङ् मणुरसेहिन्तो उववज्जन्ति कि कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अकम्मभूमिएहिन्तो उनवज्जन्ति, अंतरहीनएहिन्तो उनवज्बन्ति ? गोयमा ! कम्मभूमएहिन्तो उनव जन्ति, नो अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्रन्ति, नो अंतरदीवएहिन्तो उववज्रन्ति जड़ वम्मभ्मिएहिन्तो उववजानित किं संखेजवासाउएहिन्तो उववजानित, असंखेज-वासाउएहिन्तो उववजन्ति ? गोयमा ! संखेजवासाउएहिन्तो उववजन्ति, नो असंखेजवासाउएहिन्तो उववजन्ति । जइ संखेजवासाउएहिन्तो उववजन्ति कि पजनएहिन्तो उववज्रन्ति, अपजनएहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! पजनएहिन्तो उवदद्धन्ति, नो अपजनएहिन्तो उवदद्धन्ति । जर् पजत्तयसंखेजवासाउयकम्म-भूमिएहिन्तो उववज्रन्ति कि इत्बीहिन्तो उववज्रन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्रन्ति, नपुंसएहिन्तो उववजान्ति ? गोयमा ! इत्थीहिन्तो उववजान्ति, पुरिसेहिन्तो उव-वज्रन्ति, न्युंसएहिन्ती यि उक्वज्रन्ति । अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! कञी-हिन्तो उववजन्ति । शोसमा ! एवं सेव, नवरं इत्थीहिन्तो पिसहो कायच्यो । "अस्सभी खलु पढमं दोषं पि सिरीसवा तह्य पक्खी। सीहा जन्ति चर्जीं रुरमा पुण पंचमि पुढिन ॥ छिट्ठे च इत्वियाओ मच्छा मणुया य सत्तमि पुढिन । एसी परमोवाओ बोद्धकी नरगपुढवीणं" ॥ ३०९ ॥ असुरकुमारा ण भंते ! क्योहिंतो उक्कजन्ति । शे गोयमा ! नो नेरह्म्प्रहिंतो उक्कजन्ति, तिरिक्खजोष्मिएहिंतो उनवजान्ति, मणुरसेहिंतो उनवजान्ति, नो देवेहिंतो उनवजान्ति । एवं जेहिंतो नेरइयाणं उनवाओं तेहिंतो अमुरकुमाराण वि भाणियव्यो, नवरं असंखेळनासाउय-अकम्मभूमगअंतरदीवगमणुस्सतिरिक्खजोणिएहिन्तो वि उनवज्रन्ति, सेसं तं चेव । एवं जाव थणियकुमारा भाणियम्बा ॥ ३१० ॥ पुर्वावकाइया णं भंते ! कओहिन्तो उववज्रन्ति कि नेरइएहिन्तो उ॰ जाव देवेहिन्तो उववज्रन्ति ? गोयमा ! नो नरइए-हिन्तो उववज्रन्ति, तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति, मणुस्सेहिन्तो उववज्रन्ति, देवेहिन्नो वि उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति कि एगिन्दियति-रिक्खजोणिएहिन्तो उववज्ञन्ति जाव पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्नो उववज्ञन्ति ? गोपमा ! एगिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो वि उ० जाय पंचिन्दियतिरिक्खजोणिए-हिन्तो वि उववज्रन्ति । जइ एगिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि पुर्वाय-काइएहिन्तो उ० जाव वणस्पदकाइएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पुढांबकाइएहिन्तो वि उ० जाव वणस्सङ्काइएहिन्नो वि उववज्जन्ति । जइ पुडविकाइएहिन्तो उवव-जन्ति कि मृहुमपुदविकाइएहिन्तो उववजन्ति, बायरपुदविकाइएहिन्तो उववजन्ति? गोयमा! दोहिन्तो वि उववज्ञन्ति । जर् सुहुमपुढविकाइएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्ज-त्तमुहुमपुदविकाइएहिन्तो उनवजन्ति, अपजनसुहुमपुर्ढावकाइएहिन्तो उनवजन्ति ? गोयमा । दोहिन्तो वि उवबज्जन्ति । जइ बायरपुरविकाइएहिन्नो उपवजन्ति कि पजनाएहिन्नी उववजनित, अपजनाएहिन्ती उववजनित ? गीयमा ! दोहिन्ती वि उववज्ञन्ति, एवं जाव वणस्मद्रकाइया चउक्रएणं सेएणं उववाएयव्या ॥ ३११ ॥ जइ बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्रन्ति कि पजत्तबेइंदिएहिन्तो उववज्रन्ति, अपजतनेइंदिएहिन्नो उववर्जान्त ? गोयमा ! दोहिन्तो वि उववज्जन्ति । एवं तइंदियचर्डार्रान्दर्शहन्तो वि उववर्जन्ति । जइ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उवनजानि कि जलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उवनजानित, एवं जेहिन्तो नेरइयाणं उववाओं भणिओं तेहिन्तो एएसिं पि भाणियन्त्रो. नवरं पजनगअपजन-गेहिन्तो वि उववजनित, सेसं तं चेव ॥ ३१२ ॥ जद्द मणुस्सेहिन्तो उववजंति किं संमुच्छिममणुरसेहिन्तो उववजंति, गञ्भवदंतियमणुरसेहिन्तो उववजंति ? गोयमा ! दोहिन्तो वि उववजीत । जइ गब्भवकातियमणस्रोहिन्तो उववजीत कि कम्मभूम-गगञ्भवकंतियमणुरसेहिन्तो उववजाति. अकम्मभूमगगञ्मवकंतियमणुरसेहिन्तो उनवजाति ? सेसं जहा नेरइयाणं नवरं अपजात्तराहितो वि उनवजाति ॥ ३१३ ॥ जइ देवेहिन्तो उववजंति कि भवणवासि॰वाणमंतर॰जोइस॰वेमाणिएहिन्तो उवव-जंति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिन्तो वि उववर्जति जाव वेमाणियदेवेहिन्तो वि उनबजंति । जइ भवणवासिदेवेहिन्तो उनवजंति कि असुरकुमारदेवेहितो उ० जाव थणियकमारदेवेहिंनो उववजाति ? गोयमा ! असरकमारदेवेहिंतो वि उववजाति जाव थणियकुमारदेवेहिंतो वि उबवजंति । जड् वाणमंतरदेवेहिन्तो उबवजंति किं पिना-एहिंतो उ० जाव गंधव्वेहिंतो उवबज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतो वि उ० जाव गंध-व्वेटितो वि उववज्ञीत । जड ओडसियदेवेटितो उववज्ञीत कि चंदविमाणेटितो उनवर्जात जाव ताराविमाणेहिंतो उनवर्जात ? गोयमा ! चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतो वि उ० जाव नाराविमाणओऽसियदेवेहिंनो वि उद्यवज्वंति । जर वेमाणियदेवेहिंतो उववज्रंति कि कप्पोबगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्रंति. कप्पातीनवेमाणियदेवेहिन्तो उनवजंति ? गोयमा ! कप्पोबगवेमाणियदेवहिंतो उववजंति. नो कप्पातीतवेमाणि-यदेवेहिंतो उववजंति । जह कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववजंति कि मोहम्मेहिंतो उ॰ जान अक्रएहिन्तो उननजंति ? गोयमा ! सोहम्भीसाणेहिंतो उननजंति, नो सणंकुमार जान अखुएहिंतो उनवर्जाति । एवं आउकाइया वि । एवं तेटवाउ-काइया वि, नवरं देववजेहितो उववज्वति । वणस्सइकाइया जहा पुर्वावकाइया । वेइंदिया तेइंदिया वउरिंदिया एए जहा तेउवाऊ देवबजेहिंतो भाषायव्या ॥३१४॥ पंचिंदियतिरिक्ख जोणिया णं भंते ! क्ओहिंतो उववजीत कि नेरहएहिंतो उवव-जंति जाव देवेहिंतो उववज्रन्ति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि०, तिरिक्खजोणिएहिंतो वि०, मणुस्सेहितो वि०, देवेहितो वि उववज्रान्ति । जइ नेरउएहितो उववज्रांति कि रय-गप्पमापुढविनेरइएहिंतो उ० जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उचक्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुरुविनेरएहिंतो वि उववजंति जाव अहेसत्तमापुरुविनेरइएहिंतो वि उवव-जांति । जइ तिरिक्खजीणिएहिन्तो उववजांति कि एगिदिएहिंतो उववजांति जाव पंचिदिएहिंतो उववजीत ? गोयमा ! एगिदिएहिंतो वि उववजीत जाव पंचिदिए-हितो वि उववर्जात । जह एगिदिएहिंतो उववर्जात कि पुढविकाइएहिंतो उववर्जान्त-एवं जहा पुढिषकाइयाणं उबवाओ मणिओ तहेब एएसि पि भाणियन्त्रो, नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सारकपोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववजंति. नो भाणयकप्यो-वगवेमाणिबदेवेहिंतो जाव अञ्चएहिंतो उनवजाति ॥ ३१५ ॥ मणुस्सा णं भंते ! क्ओहिंतो उनवजंति कि नेरहएहिंतो उनवजंति जान देनेहिंतो उनवजंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उववजाति जाव देवेहिंतो वि उववजाति । जड् नेरइएहिंतो उनवजंति कि रयणप्पमापुरुनिनेरइएहिंती उनवजंति, सक्करप्पमापुरुनिनेरइएहिंती उद्यक्षंति, वाल्ल्यप्यमापुढविवेरइएहिंतो , पंकप्यभा नेरहएहिंतो , भूमप्यमा --नेरइएहिंतो . तमप्पमा नेरइएहिंतो . अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववजीत ? गोयमा ! रयणप्पभापुउविनेरइएहिंतो वि उ॰ जाव तमापुढविनेरइएहिंतो वि उचव-**जां**ति, नो अहेसनमापुढविनेरइएहिंतो उववर्जाति । अइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उवबजाति कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उवकर्जनि-एवं जेहितो पंचिदियति-रिक्वजोणियाणं उक्काओ भणिओ तेहिंतो मणुस्साण वि निरवसेसी भाणियब्बी. णवरं अहेसनमापुढिवेनेरइएहिंनो तेउवाउकाइएहिंतो ण उवदर्जित । सव्वदेवेहिंतो य उदबाओ कायन्त्रो जाव कप्पातीतवेमाणियसन्बद्धसिद्धदेवेहितो वि उपवजावेयन्त्रा ॥ ३१६ ॥ बाणमंतर्देवा णं भंते ! कओहिंतो उबवजंति कि नेरइएहिंतो०, निरिक्वजोणिएहिंतो०, मणुरसेहिंतो०, देवेहिंतो उबवजीत ? गोयमा! जेहिन्तो असरकमारा उचवजनित तेहिन्तो वाणमन्तरा उववजावेयव्या ॥ ३१७ ॥ जोइसिया देवा णं भंते ! कओहिंनी उववज्ञन्ति ? गोयमा ! एवं चेव , नवरं संमुच्छिमअसंबि-जवासाउयखहयरपंचिंदियितिरिक्खजोणियवजेहिंतो अंतरदीवमणुस्सवजेहिंतो उवव-जावेयन्त्रा ॥ ३१८ ॥ वेमाणिया णं भेते ! कओहिंतो उववजाति कि णेरइएहिंतो०. तिरिक्खजोणिएहिंतो , मणुस्सेहिंतो , देवेहिंतो उववज्रन्त ? गोयमा ! णो पर-इएहिंनी उनवजाति, पांचिदियनिरिक्खजोणिएहिती उनवजाति, मणुस्सेहिंनी उव-वर्जात; णो देवेहिंतो उवबर्जित । एवं सोहम्भीमाणगदेवा वि भाणियव्वा । एवं मणंकुमारदेवा वि भाणियव्वा, नवरं असंखेजवासाउयअक्रम्मभूमगवजेहितो उवव-जंति । एवं जाव महस्सारकःयोवगवेमाणियदेवा भाणियव्वा । आणयदेवा णं भंते ! क्ओहिंतो उनवर्जात कि णेरइएहिंतो . पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो . मणस्ये-हिंनो , देवेहिंनो उवत्रजंति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उक्कजंति, णो तिरिक्खजो-णिएहिंतो उववजंति, मणुस्रोहिंतो उववजंति, णो देवेहिंतो उववजंति । जरु मणुस्रो-हिंनो उववर्जात कि संमुच्छिममणुरसेहिंतो , गब्भवकंतियमणुरसेहिंतो उववर्जात ? गोयमा ! गन्भनकं तियमणुरसेहिंतो , नो संसुच्छिममणुरसेहिंतो उनवजंति । जड गब्भवकंतियमणुस्सेहितो उववजाति किं कम्मभूमिगेहितो॰, अकम्मभूमिगेहितो॰, अंतरदीवगहिंतो उववर्जात ? गोयमा । णो अकम्मभूमिगेहिंतो , णो अंतरवीवगेहिंतो उवव जंति, कम्मभूमिगगब्भवकंतियमणुस्सेहितो उववजंति । अइ कम्मभूमगगब्म-वकंतियमण्सेहितो उचन्रजंति कि संबेजनासाउएहितो॰, असंबेजनासाउएहितो उनव जाति ? गोयमा ! संखेजवासाउएहिंगो॰, नो असंखेजनासाउएहिंतो उववजीत । जह संखे जनासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमण्सेहितो उववजाति कि पजनाएहितो उवनजांति, अपज्जनएहिंतो उववजांति ? गोयमा ! पज्जनएहिंतो उववज्जन्ति, नो अपजत्तएहिन्तो उववर्जति । जड् पज्तसंखेजवासाउयकम्पाभूमगगब्सवेक्कतिय-

मणुरसेहिंतो उनवजन्ति किं सम्मारिद्वीपज्यतगसंकेजनासाउयकम्मभूसगेहिन्तो उन-वजन्ति, मिच्छहिद्रीपजनगिहितो उववजन्ति, सम्मामिच्छहिद्रिपजनगिहितो उवव-ज्यन्ति ? गोयमा ! सम्महिद्रीपज्यतगसंखेजवासाउयकम्मभूमगग्रन्भवकंतिसम्पर्स-हिंतो उनवजन्ति, मिच्छहिद्रीपजनगेहिन्तो उनवजन्ति, णो सम्मामिच्छहिद्रिपज-त्तपहिन्तो उववज्रन्ति । जह सम्महिद्वीपज्रतागसंखेजवासाउयकम्मभूमगग्वभवकंतिय-मणुसेहिन्तो उनवज्जेति कि संजयसम्महिदीहिन्तो . असंजयसम्महिदीपजत्तएहिन्तो . संजयासंजयसम्महिद्वीपजन्तसंखेजवामाउएहिन्तो उववर्जात ? गोयमा ! तीहिनो वि उपवर्जिति । एवं जाव असुओ कप्पो । एवं चेव गैविजगदेवा वि. नवरं असंजय-संजयासंजया एए पडिसेहेयव्या । एवं जहेव गेविजगदेवा तहेव अणुनरोववाइया वि, णवरं इमं णाणतं संजया चेव । जइ सम्महिद्वीसंजयपजत्तसंखेजवासाउयकम्म-भगगग्रभवकंतियमण्सेहिन्तो उववजंति कि पमत्तसंजयसम्महिद्दीपज्यत्तणहिन्तो . अपमत्तसंजयसम्महिद्रीपजत्तराहिन्तो उववज्रान्ति ? गोयमा ! अपमत्तसंजयपज्रनाए-हिन्तो उबदर्जात, नो पमत्तसंजयपञ्चतएहिंतो उबदर्जात । जइ अपमत्तसंजएहिन्तो उववज्ञन्ति किं इक्किपनअपमत्तसंत्रएहिन्तो०, अणिक्किपत्तअपमत्तसंत्रएहिन्तो०? गोयसा । दोहिन्तो वि उववज्रन्ति ॥ ५ दारं ॥ ३१९ ॥ नेरइया णं भंते । अणंतरं उम्बद्धिता कहिं गच्छन्ति, कहिं उबबजाति ? कि नेरइएस उबबजान्ति, तिरिक्ख-जोणिएस उपबज्जन्ति, मणुस्सेस उपबज्जन्ति, देवेस उपबज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएस उवबजन्त, तिरिक्खजोणिएस उववजन्त, मणुरसेस उववजन्त, नो देवेस उववज्रन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएस उववज्रंति कि एगिंदिएस उववज्रन्ति जाब पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्रन्ति ! गोयमा ! णो एगिंदिएसु उ० जाव नो चउरिंदिएस उवदजान्ति, एवं जेष्टिन्तो उदबाओ मणिओ तेस उव्बद्दणा वि भाषि-सम्बा. नवरं संमुच्छिमेसु न उषरजान्ति । एवं सम्बपुटवीसु भाणियम्बं, नवरं अहेसत्तमाओ मण्रस्येस न उववज्जन्ति ॥ ३२० ॥ असुरकुमारा णं मंते ! अणंतरं उम्बद्धिता कार्ह गच्छन्ति, कार्ह उवबज्जन्ति ? कि नेरहएस उ० जाव देवेस उबब-जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएस उववजन्ति, तिरिक्खजोणिएस उववजन्ति. मुप्तसेषु उक्कजन्ति, नो देवेषु उक्कजन्ति । जइ तिरिक्सजोणिएसु उक-बजनित कि एमिन्दिएस उवश्र्वति जान पंचिन्दियतिरिक्सजोणिएस उवन जन्ति ? गोयमा । एगिन्दियतिरिक्सजोजिएस उवदजन्ति, नो वेइंदिएस उ० जाव नो चर्रोदिएस उपवजन्त, पंचिदिगतिरिक्खजोनिएस उपवजन्त । जह एगिन्दि-एस स्वयक्रान्ति कि प्रविकादसएनिन्दिएस ए० जाव वणस्सद्धादसएनिन्दिएस स्वय-

ज्जन्ति ? गोयमा ! पुरविकाइयएगिन्दिएसु वि०, आउकाइयएगिन्दिएसु वि उवबज्जन्ति, नो तेउकाहएस्.. नो वाउकाइएस् उववज्रन्ति, वणस्सङ्काइएम् उववज्रन्ति । जह पुढ्विकाइएस उववज्रनित कि सुहम्पुढ्विकाइएस उववज्रन्ति, बायरपुढ्विकाइएस उववर्जात ? गोयमा ! बायरपुढविकाइएसु उववर्जात, नो सहमपुढविकाइएसु प्रवयक्ति। जड बायरपुढ्विकाइएस प्रवयक्तिति कि प्रजतग्रवायरपुढ्विकाइएस उदवजंति, अपज्ञक्ताबायरपृद्धविकाइएसु उदवजंति ? गोथमा ! पज्जक्तएसु उदवजंति. नो अपज्ञनएमु उवदर्जनि । एवं आउवणस्सद्सु वि भाषियन्वं । पंचिन्दियनिरिक्ख-जोणियमणूसेम् य जहा नेरइयाणं उन्बदृणा संमुच्छिमवज्ञा तहा भाणियन्ता । एवं जाव थणियकुमारा ॥ ३२९ ॥ पुरुविकाइया णं भंते! अणंतरं उव्वष्टिना कर्हि गच्छंति, किं उववज्रंति ? किं नेर्डएस् उ० जाव देवेसु० ? गोयमा ! नो नेरड-एम. तिरिक्खजोणियमणूसेम् उववर्जात. नो देवेम् उववर्जाते. एवं जहा एएसिं चेव उनवाओ तहा उन्वरूणा वि देववजा माणियन्त्रा । एवं आउवणस्सइवेईदिय-तेइंदियचउरिन्दिया वि । एवं तेउ० वाउ०, नवरं मणुस्मवज्जेमु उववज्जन्ति । पंचि-न्द्रियतिरिक्क जोणिया णं भंते ! अणंतरं उच्च हिता कहिं गच्छंति, कहिं दववज्जन्ति! गोयमा ! तेरहएस उ॰ जाब देवेस उवबज्जन्ति । जह नेरहएम उवबज्जन्ति कि रयणप्य मापुरुविनेरइएस उववज्रन्ति जाव अहेसत्तमापुर्ववनेरइएस उववज्रन्ति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरहएस उववज्ञन्ति जाव अहेमत्तमापुढविनेरहएस उव-धर्जान्त । जर् तिरिक्सओणिएमु उवबज्जन्ति कि एगिन्दिएमु उ० जाव पंचिन्दिएसु उववज्रन्ति ? गोयमा ! एगिन्दिएस उ॰ जाव पंचिन्दिएस उववज्रन्ति । एवं जहा एएसिं चेव उत्रवाओ उन्बद्धणा वि तहेव भाणियव्या. नवरं असंखेजवासाउएस वि एए उववजाति । जइ मणुस्सेसु उववजान्ति किं संसुच्छिममणुरसेसु उन्नवजन्ति, गच्भवक्रंतियमणूसेसु उनवज्जन्ति ? गोयमा ! दोसु वि । एवं जहा उन्नाओ तहेव उव्बद्धा वि भाषियव्या, नवरं अकम्मभूमगअंतरदीवगगन्भवक्वंतियमणुसेसु असं-खेजनामाउएसु नि एए उनदर्जतीति भाणियन्तं । जड् देवेसु उनवज्रन्ति कि भव-णवईम् उववजनिन जाव वेमाणिएस उववजनित ? गोयमा ! सम्वेसु चेव उव-वर्जान । जरु मवणवर्द्धसु॰ कि असुरकुमारेसु उववज्रान्ति जाव श्राणयकुमारेसु उनवज्जन्ति ? गोयमा ! सब्वेसु चेन उनवज्जन्ति । एवं नाणमंतरजोइसियवेमा-णिएनु निरंतरं उचवज्रन्ति जाव सहस्सारो कप्पोत्ति ॥ ३१२ ॥ मणुस्सा णं भंते ! अणंतरं उच्यहिता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जन्ति ? किं नेरइएमु उव-वज्ञन्ति जाव देवंस उववजाति ? गोयमा ! नेरइएस वि उववज्रन्ति जाव देवेस वि

उनवर्जात । एवं निरंतरं सन्वेसु ठाणेसु पुच्छा । गोयमा ! सन्वेसु ठाणेसु उववज्जन्ति, न कहिं च पडिसेहो कायव्वो जाव सन्बद्धसिद्धदेवेस वि उद्यक्जिन्ति, अत्थेगइया सिज्झंति, बुज्झंति, सुचंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति । वाणमंतर-जोडसियवेमाणियमोहम्मीसाणा य जहा असरकमारा, नवरं जोडसियाण य वेमाणि-याण य चयंतीति अभिलाबो कायव्यो । सर्णकुमारदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा असुरकुमारा, णत्ररं एगिदिएसु ण उववजीति । एवं जाव सहस्सारगदेवा । आणय जाब अणुत्तरीववाइया देवा एवं चेव, नवरं नो तिरिक्खजोणिएस उववज्रान्ति, मण्स्सेस् पजनसंखेजवासाउयकम्मभमगग्ब्भवकंतियमण्सेस् उववजन्ति ॥ ६ दारं ॥ ।। ३२३ ॥ नेरह्या णं भंते ! कडभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरित ? गोयमा ! नियमः छम्मासावसेमाउया परभवियाउयं । एवं असुरकुमारा वि, एवं जाव श्रणिय-कुमारा । प्रहेबिकाङ्या णं भंते ! कह्मागावसेमाउया प्रभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पुरुविकाइया द्विहा पन्नता । तंजहा-सोवक्साउया य निरुवक्साउया य । तत्य णं जे ते निरुवक्रमाज्या ने नियमा तिभागावसेसाज्या परमवियाज्यं पकरेंति । तत्थ णं जे ते सोवक्रमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति. सिय तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरैति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसा-उया परमवियाउगं पक्रेंति । आउतेउवाउवणप्पद्दकाइयाणं वेइंदिगतेइंदियचउ-रिन्दियाण वि एवं चेव ॥ ३२४॥ पेचिन्दियतिरिक्खजोषिया णं अंते । कइभागाव-सेसाउया पर्भवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया द्विहा पनता । तंजहा-संखेजवासाउया य असंखेजवासाउया य । तत्थ णं जे ते असं-खेळवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउवं पकरेति । तस्य णं जे ते संखेजवामाउया ते दुविहा पत्रता । तंजहा-सोवक्साउया य निस्वक्साउया य । तत्थ णं जे ते निरुवास्माउया ते नियमा तिमागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति । तत्थ णं जे ते सोबक्क्साउया ते णं सिय तिभागे परभवियाउयं पकरेंति. सिय तिभाग-तिभागे परभवियाउयं पक्रेंति. सिय तिभागतिमागतिमागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । एवं मणसा वि । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरहया ॥ ७ दारं ॥ ॥ ३२५॥ कडविहे ण भंते ! आउयबंधे एकते ? गोयमा ! छव्यिहे आउयबंधे पश्ते। तंजहा-- १ जाइनामनिष्टताउए. २ गइनामनिष्टताउए, ३ ठिईनामनिष्टताउए. ४ ओगाहणनामनिहत्ताउए, ५ पएसनामनिहत्ताउए, ६ अणुमाननामनिहत्ताउए। नेरइ-याणं भंते ! कहविहे आउयबंधे पकते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पकते । तंजहा-जाइनामनिहत्ताउए, नइनामनिहत्ताउए, ठिईनामनिहत्ताउए, ओगाहणनामनिहत्ता- उए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभावनामनिहत्ताउए, एवं जाव वैमाणियाणं ॥ ३२६ ॥ जीवा णं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं व्हिंहं आगरिसेहिं पगरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं अहिंहं । नेरहया णं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं व्हिंहं आगरिसेहिं पगरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं अहिंहं । एवं जाव वेमाणिया । एवं गइनामनिहत्ताउए वि, ठिईनामनिहत्ताउए वि, ओगाहणनामनिहत्ताउए वि, पएसनामनिहत्ताउए वि, अणुभावनामनिहत्ताउए वि, ओगाहणनामनिहत्ताउए वि, पएसनामनिहत्ताउए वि, अणुभावनामनिहत्ताउए वि ॥ ३२० ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं जाइनामनिहत्ताउयं जहनेणं एकेण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं अहिंहं आगरिसेहिं पकरेमाणाणं कयरे कयरेहिन्तो अप्या वा बहुया वा तुछा वा विसेमाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जाइनामनिहत्ताउयं अहिंहं आगरिसेहिं पकरेमाणा, सनिहं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिजगुणा, छहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखिजगुणा, एवं पंचिहं संखिजगुणा, चउहिं संखिजगुणा, तीहिं संखिजगुणा, दोहिं संखिजगुणा, एगेणं आगरिसेणं पकरेमाणा संखिजगुणा, तीहिं संखिजगुणा, वोहं संखिजगुणा, एगेणं आगरिसेणं पकरेमाणा संखिजगुणा, एगेणं आगरिसेणं पकरेमाणा संखिजगुणा, एगेणं आगरिसेणं पकरेमाणा संखिजगुणा, तीहिं संखिजगुणा, वोहं संखिजगुणा, एगेणं आगरिसेणं पकरेमाणा संखिजगुणा। एवं एएणं अभिकावेणं जाव अणुभागनामनिहत्ताउयं, एवं एए छप्पिय अप्पाबहुदंडगा जीवाइया भाणियन्ता॥ ८ दारे॥ ३२८॥ पद्मव-णाप भगवईप छटं वक्कतीपयं सम्यतं॥

नेरइया णं भेते! केचइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीस-संति वा? गोयमा! सययं संत्यामेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।। ३२९॥ अग्ररकुमारा णं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा पाणमंति वा अससंति वा गोयमा! जहकेणं सत्तण्हं थोवाणं, उद्दोसेणं साइरेगस्स पक्खरम आणमंति वा जाव नीससंति वा।। नागकुमारा णं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा जाव नीससंति वा शाणमंति वा शाणमंति वा नीससंति वा शाणमंति वा नीससंति वा शाणमंति वा नीससंति वा शाणमंति वा वाव नीससंति वा शाणमंति वा पाणमंति वा जाव नीससंति वा। एवं जाव मणस्या। वाणमंतरा जहा नागकुमारा॥ ३३९॥ जोइसियाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा। एवं जाव मणसा। वाणमंतरा जहा नागकुमारा॥ ३३९॥ जोइसियाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा। ३३२॥ वेमाणियाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा।। ३३२॥ वेमाणियाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा! गोयमा! जहकेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उद्दोसेणं तित्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा!। ३३२॥ वोमाणियाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३२॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३२॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहम्मदेवाणं मंते! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहमपंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहमपंति वा शाव नीससंति वा!। वाणमंति वा जाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहमपंति वा शाव नीससंति वा!। ३३३॥ सोहमपंति वा शाव नीससंति वा!। वाणमंति वा जाव नीससंति वा!। वाणमंति वा जाव नीससंति वा!। वाणमंति वाणमंति वा जाव नीससंति वा!। वाणमंति वाणमंति वा जाव नीससंति वा!। वाणमंति वाणमंत

वा । ईसाणगदेवा णं भंते ! केवडकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोगमा ! जहनेणं साइरेगस्य महत्तपहत्तस्य. उद्योसेणं साइरेगाणं दोण्हं पक्साणं जाव नीससंति वा । सणेकुमारदेवा णं भंते ! केवडकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोग्रमा ! जहनेणं दोण्हं पक्खाणं, उद्योसेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंनि वा । माहिंदगदेवा णं भंते ! केवडकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहनेणं साइरेगं दोण्हं पक्खाणं. उन्होसेणं साइरेगं सत्तर्ण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । बंभलोगदेवा णं भंते ! केबडकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहनेणं सत्तण्हं पक्खाणं. उद्दोसेणं दसण्हं पक्खाणं जाव नीमसंति वा । लंतगदेवा णं भंते ! केमहकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोरामा ! जहनेणं दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं चउदसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । महासुक्षदेवा णं मंते ! केवहकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहकेणं चलदसण्हं पक्खाणं, उद्योसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव नीससंनि वा । सहस्सारगदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरसण्हं पक्साणं, उक्कोसेणं अद्वारसण्हं पक्साणं जाव नीससंति वा । आणयदेवा णं भंते ! केबडकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहनेणं अद्वारसण्हं पक्खाणं, उद्वोसेणं एगुणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । पाणयदेवा णं भंते ! केवहकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहकेणं एगूण-वीसाए पक्खाणं, उद्घोसेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । आरणदेवा णं भंते ! केवडकालस्य जाव नीससंति वा १ गोयमा ! जहनेणं वीसाए पक्खाणं. उद्योसेणं एयवीसाए पक्साणं जाव नीससंति वा । असूयदेवा णं भंते ! केवड-कालरस जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहनेणं एगवीसाए पक्खाणं, उहासेणं बाबीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ॥ ३३४॥ हिट्टिमहिट्टिमगेविजगदेवा शं भंते ! केवडकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! अहक्षेणं बावीसाए पक्साणं. उक्कोसेणं तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । हिट्टिममज्ज्ञिमगैविज्ञगदेवा णं भंते ! केवइकालस्य जाव नीससंति वा ! गोयमा ! जहकेणं तेवीसाए पक्साणं. उक्कोसेणं चउनीसाए पक्काणं जाव नीससंति वा । हिद्दिमउवरिमगेविज्ञगदेवा ण भंते ! केवहकालस्य जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहनेणं चलवीसाए पक्खाणं, उक्कोरेणं पणवीसाए पक्खाणं जान नीससंति वा । मज्ज्ञिमहिद्धिमगेविज्ञगहेवा णं मंते ! केन्द्रकालस्स जाव नीससंति वा ? गोगमा ! जहकेणं पणवीसाए पक्साणं. उक्कोरेणं छव्यीसाए पक्साणं जाव नीससंति वा । मज्जिममज्जिमगेविज्ञगदेवा वं २५ सत्ता•

कइ णं मंते ! सकाओ पक्षताओ ? गोयमा ! दस सकाओ पक्षताओ । तंजहा—आहारसका, भयसका, मेहुणसका, परिग्गहसका, कोहसका, माणसका, मायसका, लोहसका, लोगसका, ओघसका ॥ ३३० ॥ नेरइयाणं मंते ! कइ सकाओ पक्षताओ ? गोयमा ! दस सकाओ पक्षताओ ! नंजहा—आहारसका जाव ओघसका । असुरकुमाराणं भंते ! कइ सकाओ पक्षताओ ! गोयमा ! दस सकाओ पक्षताओ ! गोयमा ! दस सकाओ पक्षताओ ! लंजहा—आहारसका जाव ओघसका, एवं जाव यणियकुमाराणं । एवं पुढविकाइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं नेयव्वं ॥ ३३८ ॥ नेरइया णं भंते ! कि आहारसकोवउत्ता, मयसकोवउत्ता, मेहुणसकोवउत्ता, परिग्गहसकोवउत्ता ? गोयमा ! ओसक्षं कारणं पहुच भयसकोवउत्ता, संतइभावं पहुच आहारसकोवउत्ता वि जाव परिग्गहसकोवउत्ता वि । एएसि णं भंते ! नेरइयाणं आहारसकोवउत्ताणं मयसकोवउत्ताणं परिग्गहसकोवउत्ताणं य कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुष्ठा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा नेरइया मेहुणसकोवउत्ता, आहारसकोवउत्ता संखिळागुणा, परिग्गहसकोवउत्ता संखिळागुणा, भयसकोवउत्ता संखिळागुणा, परिग्गहसकोवउत्ता संखिळागुणा, भयसकोवउत्ता संखिळागुणा, परिग्गहसकोवउत्ता संखिळागुणा, भयसकोवउत्ता संखिळागुणा। ३३९ ॥ तिरिक्खजोणिया णं मंते ! कि आहारसकोवउत्ता अतहशावं पहुच सक्षीवउत्ता ? गोयमा ! ओसकं कारणं पदुच आहारसकोवउत्ता, संतहआवं पहुच

आहारसभोवउत्ता वि जाव परिगाहसभोवउत्ता वि। एएसि णं मंते ! तिरिक्खजो-णियाणं आहारसन्नोवलताणं जाव परिगाहसन्नोवलताणं य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा बहुया वा तुह्ना वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसन्नोवउत्ता. मेहणसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, भयसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, आहारसभोवल्या संिवज्रगणा ॥ ३४०॥ मणस्सा णं भंते ! कि आहारमभोवल्या जाब परिगद्दसन्नोवटत्ता ? गोयमा ! ओसनं कारणं पहुन्न मेहणसन्नोवटत्ता, संतइभावं पहुच आहारसञ्चोवउता वि जाव परिमाहमञ्जोबउता वि । एएसि णं भंते ! मणुस्साणं आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्रहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुझा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सध्वत्योवा मणूसा भयमन्नोवउत्ता, आहारसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, परिग्गहसन्नोवउत्ता संखिजगुणा, मेहणसन्नोवउत्ता संखिजनुणा ॥ ३४१ ॥ देवा णं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता जाव परिग्गहमन्नोवउत्ता ? गोयमा! श्रोसन्नं कारणं पहुच परिग्गहसन्नोवउत्ता. संतडभावं पड़च आहारसन्नोबटता वि जाव परिग्गहसन्नोबटता वि । एएसि णं भंते । देवाणं आहारमजीबङ्क्ताणं जाव परिसाहस्त्रीवङ्क्ताण य कयरे कयरेहिंती अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा देवा आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता संखेजगुणा, मेहणसन्नोवउत्ता संखेजगुणा. परिग्गहसभोवउत्ता संबेजगुणा ॥ ३४२ ॥ पदावणाय भगवर्षय अटमं सम्रापयं समत्तं ॥

कड्विहा णं भंते! जोणी पन्नता? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नता। तंजहा-सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी ॥ ३४३ ॥ नेरइयाणं भंते! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी? गोयमा! सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, णो सीओसिणा जोणी। असुरकुमाराणं भंते! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी? गोयमा! नो सीया जोणी, नो उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं भंते! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी, गोयमा! सीया वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीओसिणा वे जोणी। एवं आउवाउवणस्सइवेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण वि पत्तयं भाणियव्यं। तेउकाइयाणं णो सीया, उसिणा, णो सीओसिणा। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं भंते! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं भंते! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा वि जोणी। संसुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख-तिरिक्ख-जोणियाणं भंते! किं सीया जोणी, सीओसिणा वि जोणी। संसुच्छिमपंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं वि एवं चेव। गञ्चमवक्वंतिवर्णचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं भंते!

कि सीया जोणी, उसिणा जोणी. सीओसिणा जोणी ? गोयमा! णो सीया जोणी, णो उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी। मणुस्साणं मंते ! कि सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी ? गोयमा ! सीया वि जोणी. उसिणा वि जोणी. सीओ-सिणा वि जोणी । संमुन्छिममणुस्साणं मंते ! कि सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीओसिणा जोणी ? गोयमा ! तिविहा जोणी । गब्भवक्रंतियमणुस्साणं भेते ! किं सीया जोणी, उसिणा जोणी. सीओसिणा जोणी? गोयमा! णो सीया. णो उसिणा, सीओसिणा जोणी। वाणमंतरहेवाणं भंते ! किं सीया जोणी. उत्तिणा जोणी, सीओसिणा जोणी ? गोयमा ! णो सीया, णो उसिणा, सीओतिणा जोणी । जोइसियवेमाणियाण वि एवं चेव ॥ ३४४ ॥ एएसि णं भंते ! सीयजीणियाणं उसिणजीणियाणं सीओ-सिणजोणियाणं अजोणियाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा, वहया वा, तुला वा, विसेमाद्विया वा ? गोयमा ! सध्वत्थोवा जीवा सीओसिणजोणिया, उसिणजोणिया असंखेजगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीयजोणिया अणंतगुणा ॥ ३४५ ॥ बद्ध-विहा णं भंते ! जोणी पन्नता ! गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नता । तंजहा-सचित्रा. अचिना, मीसिया ॥ ३४६ ॥ नेरडयाणं भंते ! किं सचिना जोणी. अचिना जोणी. मीसिया जोणी ! गोयमा ! नो सन्विता जोणी, अचिता जोणी, नो मीसिया जोणी । असुरकुमाराणं मंते ! कि सचित्ता जोणी. अचित्ता जोणी. मीसिया जोणी ! गोयमा ! नां सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी. एवं जाव थणियकमाराणं । पुरुवीकाइयाणं भंत : कि सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी ? गोयमा ! सचिना ओणी, अचिना जोणी. मीसिया वि जोणी. एवं जाव चडरिंदियाणं। संमु-न्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य एवं चेव । गञ्भवकंतिय-पंचिदियानिरिक्खजोणियाणं गञ्भवकंतियमण्स्साण य नो सचिता. नो अचिना. मीसिया जोणी । वाणमंतरजोडसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ३४० ॥ एएमि णं भंत ! जीवाणं सचित्तजोणीणं अचित्तजोणीणं मीसजोणीणं अजोणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तृह्वा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्यो-वा जीवा मासजोणिया, अचित्तजोणिया असंखेजगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचि-भजोणिया अर्णतगुणा ॥ ३४८ ॥ महबिहा णं मंते ! जोणी पनता ? गीयमा ! निविद्या जोणी पनता । तंत्रहा—संवुडा जोणी, वियदा जोणी, संबुद्धवियदा जोणी ॥ ३४९ ॥ नेरइयाणं भंते ! कि संबुद्धा जोणी, वियदा जोणी, संबुद्धवियदा जोणी ? गोयमा! संबुद्धजोणी, नो वियद्धजोणी, नो संबुद्धवियद्धजोणी। एवं जाव वणस्सद्द-काइयाणं । बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! नो संबुद्धजोणी, विग्रहजोणी, नो संबुद्ध- वियहजोणी । एवं आव चवरिदियाणं । संमुच्छिमपंचिदियतिरिक्खओणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य एवं चेव । गञ्भवक्षंतियपंचिदियतिरिक्खओणियाणं गञ्भवक्षंतियमणुस्साण य नो संबुद्धा जोणी, नो वियद्धा जोणी, संबुद्धवियद्धा जोणी । वाणमंतरजोद्दसियवेमाणियाणं जहा नेरहयाणं ॥ ३५० ॥ एएसि णं मंते ! जीवाणं संबुद्ध-जोणियाणं वियदजोणियाणं संबुद्धवियदजोणियाणं अजोणियाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्या वा बहुया वा तुल्ला वा विसेमाहिया वा १ गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संबुद्ध-वियदजोणिया, वियदजोणिया असंखिजगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, संबुद्धजोणिया अणंतगुणा ॥ ३५९ ॥ कहविद्धा णं भंते ! जोणी पनता १ गोयमा ! तिविद्धा जोणी पनता । नंजहा—कृम्मुण्णया, संखावता, वंसीपता । कृम्मुण्णया णं जोणी उत्तमपुरिसमाद्धणं । कुम्मुण्णयाए णं जोणीए उत्तमपुरिसा गञ्भे वक्कमंति, तंजहा—अरहंता, चक्कवद्दी, बलदेवा, वाद्धदेवा । संखावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए जोणीए बद्दवे जीवा य पोम्गला य वक्कमंति विदक्कमंति चयंति उवचयंति, नो चेव णं णिष्फजंति। वंसीपता णं जोणी पिद्धजणस्स, वंसीपताए णं जोणीए पिद्धजणा गन्भे वक्कमंति ॥ ३५२ ॥ प्रश्वक्षणाण् सग्वद्धण नवमं जोणीएपं समसं॥

कड़ णं भंते! पुढवीओ पन्नताओ ? गोयमा! अह पुढवीओ पन्नताओ। तंत्रहा-रयणप्पमा, सङ्करप्पमा, वालुयप्पमा, पंकप्पमा, धूमप्पमा, नमप्पमा, नमतमप्पमा, इसिप्पन्नारा ॥ ३५३ ॥ इमा र्ण मंते ! रयणप्पमा पुढवी कि चरमा, अचरमा, चरमाई, अचरमाई, चरमंतपएसा, अचरमंतपएसा ? गोयमा ! इमा णं रयणप्पमा पुढवी नो चरमा, नो अचरमा, नो चरमाइं, नो अचरमाइं, नो चरमंतपएसा, नो अचरमंतपएसा, नियमाऽचरमं चरमाणि य, चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य, एवं जाव अहेसत्तमा पुढवी, सोहम्माई जाव अणुत्तरविमाणाणं एवं चेव, ईसिप्पब्सारा वि एवं चेव, छोगे वि एवं चेव, एवं अलोगे वि ॥ ३५४ ॥ इमीसे णं भंते ! रवणप्पभाए पुढवीए अचरमस्स य चरमाण य चरमंतपएसाण व अचरमंतपएसाण य दब्बद्वयाए पएसष्ट्रमाए दब्बद्वपएसद्वयाए क्रमरे क्यरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा? गौयमा! सध्यत्योवे इमीसे रमणप्पमाए पुढवीए दम्बहुगाए एने अचरमे, चरमाई असंखेजगुणाई, अचरमं च चरमाणि य दो वि विसेसाहिया, पएसद्वयाए सम्बत्योवा इमीसे रयणप्यसाए पुढवीए चरमन्तपएसा, अचरमंतपएसा असंखेजगुणा, चरमंतपएसा य अचरमंत-पएसा य दो दि विसेसाहिया, दब्बहुपएसहुयाए सब्बत्योवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दब्बह्माए एने अचरमे, चरमाई असंबेजगुणाई, अचरमं चरमानि व दो वि विसेमाहियाई, पएसद्वयाए चरमंतपएमा असंखेजगुणा, अचरमंतपएसा असंखेजगुणा, चरमंतपएमा य अचरमंतपएसा य दो वि विसेमाहिया । एवं जाव अहेसत्तमाए, सोहम्मस्स जाव लोगस्स एवं चेव ॥ ३५५ ॥ अलोगस्स णं भंते । अचरमस्स य चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्बहुयाए पएसहुयाए दब्बहुपएसहुयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्या दा बहुया वा तुःहा वा विसेमाहिया वा? गोयमा! सन्वत्योवे अलोगस्स दन्बहुयाए एगे अचरमं, चरमाइं असंखेजगुणाइं, अचरमं चरमाणि य दो वि विसंसाहियाई; पएस-द्वयाए सन्बन्धोवा अलोगस्स चरमन्तपएसा, अचरमन्तपएमा अणनतगुणा, चरम-न्तपण्सा य अचरमन्तपण्मा य दो वि विसेमाहियाः दश्वष्टपण्मद्वयाए मध्वतथावे अलोगस्त एगे अचरमे, चरमाइं असंखेजगुणाइं, अचरमं च चरमाणि य दो वि विसंगाहियाई, चरमन्तपएसा असंखेजगुणा, अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, चरम-न्तपर्मा य अचरमन्तपरसा य दी वि विसेमाहिया ॥ ३५६ ॥ लोगालोगस्स णं भेते ! अचरमस्य य चरमाण य चरमन्तपएमाण य अचरमन्तपएसाण य दब्बट्ट-याए पण्सद्वयाए द्व्यद्वपएसद्वयाए कयरे क्यरेहितो अप्पा या बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवे लोगालोगस्य दन्बहुयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्म चरमाइं असंखेजगुणाइं, अलोगस्स चरमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्म य अलोगस्न य अचरमं चरमाणि य दो वि विसंसाहियाई, पएमद्वयाए सन्वत्थोवा लोगस्स चरमन्तपएसा, अलोगस्य चरमन्तपएसा विसेसाहिया, लोगस्स अचरमन्त-पएगा असंबेजगुणा, अलोगस्स अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, लोगस्स य अलो-गरम य चरमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दो वि विसेसाहिया । दव्बद्वपएसहुयाए सन्त्रत्थोवे लोगालोगस्स दव्बद्वयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्स चरमाई असंखेजगुणाई, अलोगस्य चरमाइं विसेशाहियाई, लोगस्त य अलोगस्स य अचरमं चरमाणि य दो वि विसेमाहियाई, लोगस्स चरमन्तपएसा असंखेजगुणा, अलोगस्स य चरमन्त-पएसा विसेमाहिया, लोगस्स अचरमन्तपएसा असंखेजगुणा, अलोगस्स अचरमं-नपएसा अर्णतगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दो वि विसेसाहिया, सञ्चदव्या विसेसाहिया, सञ्चपएसा अर्णतगुणा, सञ्चपज्जवा अणंतगुणा ॥ ३५७ ॥ परमाणुपोम्गळे णं अंते ! कि चरमे १, अचरमे २, अव-त्तव्वए ३, चरमाइं ४, अचरमाइं ५, अवत्तव्ययाइं ६, उदाहु चरमे य अचरमे य ७, उदाहु चरमे य अचरमाई ८, उदाहु चरमाई अचरमे य ९, उदाहु चरमाई च अचरमाइं च १०, पढमा चडमंगी । उदाहु चरमे य अवशब्वए य ११, उदाहु चरमे य अवत्तव्वयाई च १२, उदाहु चरमाई व अवत्तव्वए य १३, उदाहु चरमाई च अवसव्ययाई च १४, बीया यटमंगी । उदाहु अचरमे य अवसव्यए य १५, उदाहु अचरमे य अवताब्मगाई च १६, उदाहु अचरमाई च अनतव्यए य १७, उदाह अन्नरमाइं च अवतव्ययाइं च १८, नइया चउमंगी। उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाई च २०, उदाह चरमे य अचरमाई च अवसच्चए य २१, उदाह चरमे य अचरमाई च अवनव्ययाई च २२, उदाह चरमाई च अचरमे य अवतव्या य २३, उदाह चरमाउं च अचरमे य अन्तव्वयाइं च २४, उदाहु चरमाइं च अनरमाइं च अवत्तव्यए य २५, उदाह चरमाई च अचरमाई च अवत्तव्ययाई च २६। एए छन्वीसं भंगा । गोयमा ! परमाणुपोग्गले नो चरमे, नो अवरमे, नियमा अवसव्वए, मेसा भंगा पिडसेहेबव्या ॥ ३५८ ॥ दुपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय चरमे, नो अचरमे, सिय अवलव्यए । सेसा मंगा पिडसेहे-यव्या ॥ ३५९ ॥ तिपएसिए णं मंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अक्तव्वए ३, नो चरमाई ४, नो अचरमाई ५. नो अवनब्बयाई ६. नो चरमे य अचरमे य ७. नो चरमे य अचरमाई ८, सिय चरमाइं च अचरमे य ९, नो चरमाइं च अचरमाइं च १०. सिय चरमे य अव-त्तव्वए य ११. सेसा भंगा पिडसेहेथव्या ॥ ३६० ॥ चडपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! चउपएसिए णं खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवनन्वए ३, नो चरमाई ४, नो अवरमाई ५, नो अवनव्ययाई ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाई च ८, सिय चरमाई अचरमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०. सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्यमाई च १२. नी चरमाई च अवत्तव्यए य १३, नी चरमाई च अवत्तव्य-याई च १४, नो अन्तरमे य अवलब्बए य १५, नो अन्तरमे य अवलब्बयाई च १६, नो अनरमाइं च अवतव्यए य १७, नो अनरमाइं च अवतव्ययाइं च १८, नो चरमे य अचरमे य अवसञ्चए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवसञ्चयाई व २०, तो वरमे य अवरमाइं च अवलव्यए य २१, तो वरमे य अवरमाइं च अवतब्बयाई च २२, सिय चरमाई च अचरमे य अवतब्बए य २३ । सेसा भंगा पिंदिसेहेयव्या ॥ ३६१ ॥ पंचपएसिए णं संते ! संघे पुच्छा । गोयमा ! पंचपएसिए संधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवतव्यए ३, नो चरमाई ४, नो अवरमाई ५. तो अवतव्यवाई ६. सिव चरमे य अचरमे य ७. तो चरमे ब

अचरमाई च ८, सिय चरमाई न अचरमे य ९, सिय चरमाई च अचरमाई च १०, सिय बरमे य अवसव्वए य ११, सिय वरमे य अवसव्वयाई च १२, सिय चरमाई च अवसव्वए य १३, नो चरमाई च अवसव्वयाई च १४, नो अचरमे य अवनव्या य १५, नो अचरमे य अवतव्ययाई च १६, नो अचरमाई च अवत्तव्यए य १७, नो अचरमाइं च अवत्तव्ययाइं च १८. नो चरमे य अचरमे य अवनव्याए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवनव्ययाई च २०, नो चरमे य अचरमाइं च अवनव्वए य २१. नो चरमे य अचरमाइं च अवनव्वयाइं च २२, तिय चरमाइं च अचरमे य अवतव्वए य २३, तिय चरमाइं च अचरमे य च २४. सिय चरमाई च अचरमाई च अवसव्वए अवनव्ययाडं य २५, नो चरमाई च अचरमाइं च अवतव्ययाई च २६ ॥ ३६२ ॥ छप्पएसिए णं मंते ! पुच्छा । गोयमा ! छप्पएसिए णं खंधे सिय चरमे १. नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५. नो अवनव्ययाडं ६. सिय चरमे य अचरमे य ७. सिय चरमे य अचरमाई च ८. सिय चरमाई च अचरमे य ९. सिय चरमाई च अवरमाई च १०. सिय चरमे य अवत्तव्यए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्ययाई च १२, सिय चरमाई च अवनव्वए य १३, सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५. नो अचरमे य अवत्तव्यमाई च १६, नो अचरमाई च अवत्तव्यए य १७, नो अचर-माई च अवनत्वयाई च १८. सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९. नो चरमे य अचरमे य अवत्तम्बयाई च २०, नो चरमे य अचरमाई च अवतम्बर य २१, नो चरमे य अचरमाइं च अवसव्ययाइं च २२. सिय चरमाइं च अचरमे ब अवतव्वए य २३, सिय चरमाइं च अचरमे य अवतव्वयाइं च २४, सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५. सिय चरमाई च अचरमाइं च अवत्तव्ययाई च २६ ॥ ३६३ ॥ सत्तपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गीयमा ! सत्तपएसिए णं खेंचे सिय चरमे १, णो अचरमे २, सिय अवसञ्बए ३, णो चरमाई ४, णो अनरमाइं ५, णो अवत्तव्ययाइं ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अचरमाइं च ८. सिय चरमाइं च अचरमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिंग चरमे य अवसव्यए य ११, सिय चरमे य अवसव्ययाई च १२, सिय चरमाई च अवनव्वए य १३, सिय चरमाई च अवनव्ययाई च १४, णो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरमे य अवत्तव्वयाई च १६, णो अचरमाई व अवराज्यए य १७, वो अचरमाई च अवराज्यभाई च १८, सिय चर्मे य अचरमे

य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाई च २०, सिय चरमे व अचरमाई च अवतव्यए य २१, णो चरमे य अचरमाई च अवत्तव्ययाई च २२, सिय चरमाई च अचरमे य अवसम्बए य २३, सिय चरमाई च अचरमे य अवस्व्वयाई च २४, सिय चरमाई च अचरमाई च अवस्व्वए य २५, सिय चरमाई च अचरमाई च अवनव्ययाई च २६॥ ३६४॥ अद्रप्रांसिए णं भंते ! संधे पुच्छा। गोयमा । अद्वपएसिए संधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाई ४, नो अचरमाई ५, नो अवत्तव्वयाई ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अचरमाई च ८, सिय चरमाई च अचरमे य ९, सिय चरमाई च अचरमाई च १०, सिम चरमे य अवसव्वए य ११, सिय चरमे य अवनव्यवाई च १२, सिय चरमाई च अवत्तव्यए य १३, सिय चरमाई च अवसव्ययाइं च १४. णो अचरमे य अवसव्यए य १५. णो अचरमं य अवत्तन्वयाई च १६, णो अचरमाई च अवत्तन्वए य १७, णो अचरमाई च अवसञ्जयाई च १८, सिय चरमे य अवस्ये य अवसञ्जए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्रव्ययाइं च २०. सिय चरमे य अचरमाइं च अवत्रव्यए य २१. सिय चरमे य अचरमाई च अवत्तव्ययाई च २२. सिय चरमाई च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाई च अचरमे य अवनव्ययाई च २४. सिय चरमाई च अचरमाई च अवसम्बए य २५. सिय चरमाई च अचरमाइं च अवत्तव्ययाइं च २६, संखेजपएसिए असंखेजपएसिए अणंतपएसिए संधि जहेव अद्वपर्शिए तहेव पत्तेयं भाणियव्वं । परमाणुम्मि य तङ्ओ पढमो तइओ य होंति दुपएसे। पढमो तइओ नवमो एकारसमो य तिपएसे॥ १॥ पढमो तझ्यो नबसो दसमो एकारसो य बारसमो । मंगा चउप्पएसे तेवीसइमो य बोद्धव्यो ॥ २ ॥ पदमो तह्यो सत्तमनबदसहकारबारतेरसमो । तेवीसचख्यीसो पणवीसङ्मो य पंचमए ॥ ३ ॥ बिचउत्यपंचछद्वं पनरस सोलं च सत्तरद्वारं । वीसेकवीसवाबीसमं च वजेज छट्टांम ॥ ४ ॥ विचडत्थपंचछट्टं पण्णर सोलं च सत्तरद्वारं । नावीसहमनिहुणा सत्तपएसंमि खंबम्मि ॥ ५॥ निचउत्यपंचछद्वं पण्णर सोलं च सत्तरद्वारं । एए विषय मंगा सेसा सेसेस संघेस ॥ ६ ॥ ३६५ ॥ कह मं भेते ! संठाणा पकता ? गोयमा ! पंच संठाणा पकता । तंजहा-परिमंडछे, बहे, तंसे, बर्टरेसे, आयए य ॥ ३६६ ॥ परिमंडला ण मंते । संठाणा कि संकेखा, असंबेजा, अणंता ? गोयमा ! नी संबेजा, नो असंबेजा, अणंता । एवं जाव वायया। परिमंदके णं भंते! संठाये कि संकेजपएसिए, असंकेजपएसिए, अणंतपए-

सिए ? गोयमा ! सिय संखेजपएसिए. सिय असंखेजपएसिए. सिय अणंतपएसिए । एवं जाब आयए । परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेजपएसिए कि संखेजपएसीगाहे. असं-खेजपएसोगाहे, अणंतपएसोगाहे ? गोयमा ! संखेजपएसोगाहे, नो असंखेजपएसोगाहे. नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयए । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेजपएसिए कि मंखेजपएसोगाढे, असंखेजपएमोगाढे, अर्गतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज-पएसोगाढे, सिय असंखेजपएसोगाढे, नो अर्णतपएसोगाढे । एवं जाव आयए । परिमंडले णं मंते ! संठाणं अणंतपएसिए कि संखेजपएसोगाहे. असंखेजपएसोगाहे. अणंनपएसोगांड ? गोयमा ! सिय संखेजपएसोगांढे, सिय असंखेजपएसोगांढे, नो अर्णनपएसोगाढे । एवं जाव आयए । परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेजपएसिए संखेजपएनोगाढे कि चरमे, अचरमे, चरमाई, अचरमाई, चरमंतपएसा, अचरमंत-पएसा ? गोयमा ! परिमंह हे णं संठाणे संबेजपएसिए संबेजपएसोगाई नो चरमे, नो अवरमे. नो चरमाइं, नो अचरमाइं, नो चरमंतपएसा, नियमं अचरमं चरमाणि व चरमंतपएमा य अचरमंतपएमा य । एवं जाव आयए । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेजपएसिए संखेजपएसोगाढे किं चरमे॰ पुच्छा । गोयमा ! असंखेजपएसिए संखेजपएसोगाडे जहा संखेजपएसिए। एवं जाव आयए। परिसंहरे णं भंते! संठाणे असंखेजपएसिए असंखेजपएसोगाढे कि चरमे॰ पुच्छा । गोयमा ! असंखेजपएसिए असंवेजपएमोगाढे नो चरमे, जहा संवेजपएसोगाढे, एवं जाव भायए। परिमंडले णं मंते ! संठाणे अणंतपएसिए संखेजपएसोगाढे कि चरमे० पुच्छा । गोयमा ! तहेब जाव आगए । अर्णतपर्णमण् असंखेजपरसोगाहं जहां संखेजपरसोगाहे, एवं जाब आयए ॥ ३६७ ॥ परिमंडलस्स णं भंते ! संटाणस्स संकेज्जपण्सियस्त संकेज्जपण्-मोगाहस्म अन्तरमस्स य नरमाण य नरमंतपएसाण य अन्तरमंतपएसाण य दन्बद्वयाए पएसद्वयाए दम्बद्वपएसद्वयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुह्रा वा विसेमाहिया वा १ गोयमा । सन्वत्योवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेजपएसियस्स संखेजपएगोगाहस्स दन्बद्वयाए एगे अचरमे. चरमाई संखेजगुणाई, अचरमं चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाई, पएसद्वयाए सन्वत्योवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखेजपएसियस्स संखेजपएसोगाढस्स चरमंतपएसा, अचरमन्तपएसा संखेजगुणा, चरमन्त्रपासा य अचरमन्त्रपासा य दोऽवि विसेसाहिया. दथ्बद्वपासह्याए सम्ब-त्योवे परिमण्डलस्स संठाणस्स संखेजपएसियस्स संखेजपएसोगाडस्स दम्बद्धयाष् एगे अचरमे, चरमाई संक्षेज्जगुणाई, अचरमं च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहिबाई, चरमन्तपएसा संबेज्जगुणा, अचरमन्तपएसा संबेज्जगुणा, बरमन्तपएसा स

अचरमन्तपएसा य दोऽवि विसेसाहिया। एवं वहनंसचउरंसायएसु वि जोएयव्वं ॥ ३६८ ॥ परिमण्डलस्स णं भंते ! संठाणस्स असंखेजपएसियस्स संखेजपएसोगा-**दस्त अचरमस्य चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्यट्टगाए** पएसड्याए दव्यडप्रएसड्र्याए क्यरे क्यरेहिंनो अप्पा वा ४१ गोयमा ! सव्यत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्य असंखेजपएसियस्स संखेजपएसोगाडस्स दव्बद्वयाए एगे अचरमे. चरमाई संखेजगुणाई, अचरमं च चरमाणि य दोऽवि विसेमाहियाई. पएसद्वयाए सव्वत्थोवा परिमंडलसंठाणस्स असंखेजपएसियस्स संखेजपएसीगाटस्स चरमंतपएसा. अचरमंतपएसा संखेजगुणा. चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया, दव्बद्वपएसद्वयाए-सव्बत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्य असंखेज-पर्णतग्रस्म संखेजपर्मोगादस्म द्व्वद्वयार एगे अचरमे, चरमाई संखेजगुणाई, अचरमं च चरमाणि य दोऽवि विसेनाहियाई, चरमंतपएसा संखेजगुणा, अचरमंत-पएसा संखेळगुणा, चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया। एवं जाव आयए । परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्य असंखेजपएसियस्स असंखेजपए-मोगाहरस अचरमस्स य चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दब्बद्द-बाए पएसहयाए दव्बद्वपएसहुवाए कयरे कपरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा रयणप्पनाए अप्पाबहयं तहेव निर्वसेसं भाणियव्वं, एवं जाव आयए ॥ ३६९ ॥ परिमंडलस्य णं भंते ! संठाणस्य अर्णनपएसियस्य संखेजपएसोगावस्य अन्वरमस्य य चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दब्बहुयाए पएसहुद्याए दव्बद्वप्रसद्वयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा ! जहा संखेजपरित-यस्स संखेजपएसोगाढस्स. नवरं संक्रमेणं अर्णतगुणा, एवं जाव आयए । परिमंड-लस्स णं भेते ! संठाणस्स अणंतपएसियस्स असंखेजपएसोगाढस्स अचरमस्स य ४ जहा रयणप्पमाए, नवरं संक्रमे अणंतगुणा, एवं जाव आग्रए ॥ ३७० ॥ जीवे णं भंते ! गइचरमेणं कि चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरहए णं मंते ! गङ्चरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेसाणिए। नेरइया णं भंते! गइचरमेणं कि चरमा अचरमा? गोयसा ! चरमा वि अचरमा वि, एवं निरंतरं जाव वैमाणिया । नेरइए णं मंते ! ठिडेचरमेणं कि चरमे अचरमे ? गोयमा । छित्र चरमे. सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरहया णं मंते ! ठिई चरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अवरमा वि, एवं निरंतरं जाव वैभाणिया । नेरइए णं भंते ! भवचरमेणं कि चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे. सिम अचरमे. एवं निरंतरं जाव वेमा- णिए। नेरइया णं भंते! भवचरमेणं कि चरमा अचरमा? गोयमा! चरमा वि अचरमा वि. एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! भासाचरमेणं कि चरमे अचरमे १ गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरहया णं भेते ! भासाचरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि. एवं जाव एगिंदियबजा निरंतरं जाव वैमाणिया । नेरहए णं मंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे. सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरडया णं भंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि । एवं निरंतरं जाव बेमाणियां । नेरइए णं भंते ! आहारचर-मेणं कि चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाब वेमाणिए । नेरहया णं भंते ! आहारचरमेणं दि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि. एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरहए णं भंते ! भावचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! भावचर्मणं कि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! वण्णचर्मेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे. सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरह्या णं भंते ! वण्णचरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा व । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं अंते ! गंधचरमेणं कि चरमे अचरमे १ गोयमा ! सिय चरमे. सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! गंधचरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! रसचरमेणं किं चरमे अचरमें १ गोयमा ! सिय चरमे. सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरहया णं भंते ! रमचरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोगमा ! चरमा वि अचरमा वि । एवं निरंतरं जाब बेमाणिया । नेरइए णं भंते ! फासचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरझ्या णं भंते ! फासचरमेणं कि चरमा अचरमा ? गोग्रमा ! चरमा वि अचरमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। संगहणीगाहा---"गडिठइभवे य भासा आणापाणुन्वरसे य योद्धम्या । आहारमावचरमे वण्णरसे गंधफासे य' ॥ ३७१ ॥ पद्मसणाप भगवर्रेष दसमं चरमप्यं समत्तं॥

से गूर्ण अंते ! मण्णामीति ओहारिणी आसा, चिंतेमीति ओहारिणी आसा, अह चिंतेमीति ओहारिणी आसा, अह चिंतेमीति ओहारिणी आसा, तह मण्णा-

मीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा? हंता गोबमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चितेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ ३७२ ॥ ओहारिणी णं भंते ! भासा किं सञ्चा, मोमा, सञ्चामोसा, असञ्चामोसा ? गोयमा ! सिय सञ्चा, सिय मोसा, सिय सवामोसा, सिय असवामोसा । से केणद्वेणं भंते ! एवं बुवड्-'ओहारिणी णं भारा सिय सचा, सिय मोसा, सिय सचामोसा, सिय असचामोसा' १ गोयमा ! आराहिणी सचा, निराहिणी मोसा, आराहणविराहिणी सचामोसा, जा णेव आराहणी णैव विराहिणी णेवाराहणविराहिणी सा असवामोसा णामं चउरबी भासा, से तेणहेणं गोयमा! एवं वृच्छ--'ओहारिणी णं भामा सिय सचा, सिय मोसा, सिय सन्तामोसा, सिय असन्तामोसा'॥ ३७३ ॥ अह मंते ! गाओ मिया पस पक्की पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य गाओं मिया पस् पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७४॥ अह भंते! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भामा. ण एसा भासा मोसा ! इंता गोयमा ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुंसगवऊ पण्णवणी णं एया भासा, ण एसा भासा भोसा ॥ ३७५॥ अह अंते ! जा य इत्यिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुंसगआणवणी पण्णवणी णं एमा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हुंना गोयमा ! जा य इत्थिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुंसगआणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७६ ॥ अह भंते ! जा य इत्यिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुरापण्णवणी, जा य नपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३०० ॥ अह भंते ! जा जाईइ इत्यवक, जाईइ पुमनक, जाईइ णपुंसगवक पण्णवणी णं एसा भासा, ण एस भासा मोसा? हंता ! गोयमा ! जाईइ इत्थिनक, जाईइ पुसरक, जाईइ णपुंसगरक पण्णवणी णं एसा मासा, ण एसा मासा मोसा ॥ ३७८ ॥ अह भंते ! जा जाईइ इत्यिआ-जनणी, जाईइ पुमझाजनणी, जाईइ णपुंसगाजनणी पज्जनणी जं एसा भासा, ण एसा मासा मोसा? हता गीयमा! जाईइ इत्यिआणवणी, जाईइ पुमआणवणी, जाईइ णपंसगाणवणी पण्णवणी जं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ २७९ ॥ अह मंते ! जाईइ इत्यिपण्णवणी, जाईइ पुमपण्णवणी, जाईइ ण्युंसगपण्णवणी

पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ! हंता गोयमा ! जाईइ इत्य-पण्णवणी, जाईइ पुमपण्णवणी, जाईइ णपुंसगपण्णवणी पण्णवणी ण एसा मामा, ण एसा भासा मोसा॥ ३८०॥ अह भंते! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ बुयमाणे-अहमेसे बुयामीति ? गोयमा ! जो इजड्डे समद्वे, जन्मत्थ सन्मिणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ आहारं आहारेमाण-अहमेसे आहारमाहारेमिति ! गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे, णण्णत्थ सण्णिणो । अह भति ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणह-अयं मे अम्मापियरो है गोयमा ' णो इणहे समहे, णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते । मंदञ्जमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ-अर्थ मे अइराउलो, अर्थ मे अइराउलेनि ? गोयमा ! णो डणहे समहे, णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ-अयं मे भहिदारए, अयं मे भहिदारएति ? गोयमा ! णो इणहे समहे, पण्णत्य सण्णिणो ॥ ३८१ ॥ अह मंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणइ व्ययमाणे-अहमेसे व्यामि ? गोयमा ! जो इजद्वे समद्वे, जज्जस्य सज्जिजो । अह भंते ! उहे जाव एलए जाणइ आहार आहारेमाणे-अहमेसे आहारेमि ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्रे. णण्णत्य सण्णिणो । अह संते ! उद्दे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणड्-अयं मे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इषड्ढे समद्धे, णण्णत्य सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणड-अयं मे अहराउलेत्ति ? गोयमा ! णो इणड्रे मसड्रे. णण्णत्य सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणइ-अयं मे महिदारए २ ? गोयमा ! जो इजड्डे समड्डे, जण्मत्थ साज्जिजो ॥ ३८२ ॥ अह भंते ! मणुस्से महिसे आसे हत्थी सीहे वग्ये विगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराखे ग्रुणए कोलग्रुणए कोकंतिए ससए चित्तए चिल्ललए जेगावने तहप्पगारा सव्या सा एगवऊ ? इंता गोयमा ! मणुस्से जाव चिल्ल्लए जेयावजे तहप्पगारा सच्या सा एगवऊ । अह मंते ! मणुरसा जाव चिक्करमा जेयावने तहप्पमारा सक्वा सा वहुक्ऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सा जाव चिह्नळगा • सन्वा सा बहुक्ऊ ॥ ३८३ ॥ अह मंते ! मणुस्सी महिसी वलवा हत्थिणिया सीही कघी विगी दीविया अच्छी तरच्छी परस्सरा रासमी सियाली विराली सुणिया कोलसुणिया कोकंतिया सांसया चित्तिया चित्रलिया जेयावजे तह्प्पगारा सब्बा मा इत्थिवक ? हंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिक्रलिंगा जेयावने तहप्पगारा सन्वा सा इत्थिवऊ। अह भंते ! मणुस्से जान चिह्नलए जेयानके तहप्पगरा सन्त्रा सा पुमवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्ते महिसे जाव चित्रलए जेयावने तहप्पगारा सच्या सा पुमक्त । अह भंते !

कंसं कंसीयं परिमंडलं सेलं जालं बालं तारं रूवं अच्छिपव्यं कुंडं पर्स दुदं रहिं गवणीयं असणं सयणं भवणं विसाणं छत्तं चामरं सिंगारं अंगणं णिरंगणं आभरणं रमणं जेयावजे तहप्पगारा सन्तं तं णपंसगवऊ ? हंता गोयमा ! कंसं जाव रयणं जेयावजे तहप्यगारा सब्वं तं णपुंसगवऊ ॥ ३८४ ॥ अह मंते ! पुढवी इत्थिवक आउत्ति पुमबक घण्णेति नपुंसगवक पन्नवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिवक आउत्ति पुमवक धण्णेनि नपुंसगवद पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भंते ! पुढविति इत्यिआणवणी, आउति पुमआणवणी, घण्णेति न्पुंसगाणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गीयमा ! पुढवित्त इत्यिआणवणी, आउति पुमआणवणी, घण्णेति नपुंसगाणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भंते ! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, घण्णेति णपुंसगपण्णवणी आराहणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता गोयमा! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, घण्णेत्ति णपुंसगपण्णवणी आरा-हणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । इश्वेवं भंते । इत्थिवयणं वा पुमनयणं वा णपंसमवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गीयमा ! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा णपुंसगवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३८५ ॥ भासा णं भंते ! कियाइया, किंपबहा, किसंठिया, किपजनसिया? गोयमा! भासा णं जीवाइया, सरीरप्पभवा, वजसंठिया, स्रोगंतपज्जबसिया पण्णता । भासा कनो य पभवइ १ कहिंह व समएहि भासई मार्स ?। भासा कड्प्पगारा ? कड् वा भासा अगुमया उ ? ॥ सरीरप्पभवा भासा, दोहि य समएहिं भासई भासं। भासा चलप्पगारा, दोण्णि य भासा अणुमया ल ॥ ३८६ ॥ कड़विहा णं भंते ! भासा पक्ता ! गोयमा ! द्वविहा भासा पक्ता । तंत्रहा-पजातिया य अपजातिया य । पजातिया णं भंते ! भासा कहविहा पजाता ? गोयसा ! दुबिहा पनता । तंजहा--सचा मोसा य ॥ ३८७ ॥ सचा णं भंते ! भासा पज्यतिया बद्धविहा पन्नता ? गोयमा ! उसविहा पन्नता । तंजहा-जणवय-संबा १, सम्मयसंबा २, ठवणसंबा ३, नामसंबा ४, स्वसंबा ५, पहुंबसंबा ६, ववहारसमा ७, भावसमा ८, जोगसमा ९, ओवम्मसमा १०। "जणवय १ संमय २ ठवणा ३ नामे ४ रूवे ५ पहुचसचे ६ य । वबहार ७ भाव ८ जोगे ९ इसमें ओवम्मसंबे य १०" ॥ ३८८ ॥ मोसा णं भंते ! मासा पजातिया बहविहा पक्षता ? गोयमा ! दसविद्वा पक्ता । तंजहा-कोहिनिस्स्या १. माणणिस्स्या २.

मायाणिस्सिया ३, लोहणिस्सिया ४, पेजणिस्सिया ५, दोसणिस्सिया ६, हासणि-स्सिया ७. भयणिस्सिया ८, अक्साइयाणिस्सिया ९, उवघाइयणिस्सिया १०। ''कोहे माणे माया लोमे पिजे तहेव दोसे य । हास भए अक्खाइयउवघाइयणि-स्मिया दसमा' ॥ ३८९ ॥ अपजातिया णं भंते ! कडविहा भागा पक्षता ! गोयमा ! दुविहा पन्नता। तंत्रहा-सन्नामोसा असन्नामोसा य। सन्नामोसा णं भेते ! भासा अपज्जिनया कडविहा पन्नता ! गोयमा ! दमविहा पन्नता । तंजहा-उप्पणमिस्सिया १, विगयमिस्सिया २, उप्पण्णविगयमिस्सिया ३, जीवमिस्सिया ४, अजीर्वामस्सिया ५. जीवाजीवमिस्सिया ६. अणंतमिस्सिया ७. परित्तमिस्सिया ८. अङामिस्सिया ९, अद्भद्धामिरिसया १०॥३९०॥ अमज्ञामोसा णं भंते ! भासा अपज्ञितया बङ्गिहा पन्नता ? गोयमा ! दुवालसविद्वा पन्नता । तंजहा-आमंतणि १, आणमणी २, जायणि ३. तह पुच्छणी य ४. पण्णवणी ५ । पन्नवन्खाणी ६. भासा भासा इच्छा-णलोमा ७ य ॥ अणभिग्गहिया भामा ८, भासा य अभिग्गहंमि बोद्धव्या ९ । संमयकरणी भासा १०. वोगड ११. अञ्बोगडा चेब १२'' ॥ ३९१ ॥ जीवा णं भंते ! कि भासगा, अभासगा ? गोयमा ! जीवा भासगा वि. अभासगा वि । से केण्ड्रेणं भंते ! एवं बुच्ह-'जीवा भासगा वि, अभासगा वि' ! गोयमा ! जीवा दुविहा पन्ना । तंजहा-संसारसमावष्णगा य असंसारसमावष्णगा य । तत्य णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अभासगा । तत्थ णं जे ते संसारसमा-वण्णमा तं दुविहा पत्रता । तंजहा-सेलेसीपडिवण्णमा य असेलेसीपडिवण्णमा य । तत्थ णं जे ते सेलेसीपडिवण्णमा ते णं अभासमा । तत्थ णं जे ते असेलेसीपडि-वण्णमा ते दुविहा पन्नता । तं जहा-एगिदिया य अणेगिदिया य । तत्व णं जे ते एगिंदिया ते णं अमामगा। तत्य णं जे ते अणेगेंदिया ते दुविहा पश्चता। तंजहा-पजनगा य अपजनगा य । तत्थ णं जे ते अपजनगा ते णं अभासगा, तत्थ णं जे ते पजत्तना ते मं भासना, से एएणहेणं गोयमा ! एवं वुषह-'जीवा भासना वि, अभारतमा वि' ॥ ३९२ ॥ नेरडया णं भंते ! कि भारतमा, अभारतमा ? गोयमा ! नेरहया भामगा वि, अभासगा वि । से केणहेणं भंते ! एवं वुषह-'नेरह्या भासगा वि.अमा-सगा वि'? गोयमा ! नेरहया दुविहा पत्रना । तंजहा-पजनगा य अपजनगा य । तत्थ णं जे ते अपजनगा ते णं अभासगा, तत्य णं जे ते पजनगा ते णं भासगा, से एएणहेणं गोयमा ! एवं वुबद्-'नेरह्या भासगा वि. अभासगा वि'। एवं एपि-दियवजाणं निरंतरं भाणियव्वं ॥ ३९३ ॥ कइ णं भंते ! भासजाया पत्रता ! गोयमा ! चतारि भासजाया पत्रता । तंजहा-सबमेगं भासजायं, बिह्यं मोसं, तह्यं

समामोसं, चडत्वं असमामोसं। जीवा णं भंते ! कि सम्बं भासं भासंति, मोसं भासं मासंति, सन्दामोसं भासं भासंति, असन्दामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! जीवा सन्द पि मार्च मासंति, मोसं पि भार्च भारंति, सवामोसं पि भारं मासंति, असवामोसं पि मार्च भार्यति । नेरहया णं भंते ! कि सर्च भार्च भार्यति जाव असचामीसं भार्य भारंति ? गोयमा ! नेरह्या णं सत्रं पि भारं भारंति जाव असत्रामोरं पि भारं भासंति । एवं असुरक्रमारा जाव धणियक्रमारा । वेइंदियतेइंदियचउरिंदिया य नो सर्व . नो मोसं . नो सवामोसं भासं भासंति. असवामोसं भासं भासंति । पंचि-दियतिरिक्सजोणिया णं भेते ! विं सर्च भासं भासंति जाव असन्तामोसं भासं भासंति ? गोयमा! पंचिदियतिरिक्खजोणिया णो सर्च भासं भासंति, णो मोसं भासं भासंति, णो सन्नामोसं भासं भासंति, एगं असन्नामोसं भासं भासंति, जण्णत्य सिक्खापुरुवगं उत्तरगुणलिंद् वा पड्ड सर्च पि भासं भासंति, मोसं पि॰, सवामोसं पि॰, असवा-मोसं पि भासं भासंति । मणुस्सा जाव वेमाणिया एए जहा जीवा तहा भाणियव्या ॥ ३९४ ॥ जीवे णं भंते ! जाइं दब्बाइं भासत्ताए निष्टइ ताइं कि ठियाई गिष्टइ. अठियाई गिण्हड ? गोयमा ! ठियाई गिण्हड, नो अठियाई गिण्हड । जाई भंते ! टियाई गिण्हइ ताई किं दव्वओ गिण्हइ, खेताओ गिण्हइ, कालओ गिण्हइ, भावओ गिण्हइ ? गोयमा ! दन्त्रओ वि गिष्डइ, खेताओ वि०, कालओ वि०, भावको वि गिष्डइ । जाई मंते ! दव्यओ गिण्हइ ताई कि एगपएसियाई गिण्हइ, दुपएसियाई जाव अणंतपएसियाई गिण्डड ? गोयमा ! नो एगपएसियाई गिण्डड जाव नो असंखेजपएसियाई गिण्डड. अणंतपएसियाइं गिण्हइ । जाइं खेताओं गेण्हइ ताइं कि एगपएसोगाढाइं गेण्हइ. तुपएसोगाहाइं गेण्हड् जाव असंखेजपएसोगाहाइं गेण्हड् ? गोयमा ! नो एगपएसोगा-ढांडं नेण्डड जाद नो संखेजपएसोगाढाई नेण्डड, असंखेजपएसोगाढाई नेण्डड । जाई कालको गेण्डा तार्ड कि एगसमयठिइयार्ड गेण्डा, दुसमयठिइयार्ड गेण्डा जाव असंखेजसमयादिहयाई गेण्हह ? गोयमा । एगसमयदिहयाई पि गेण्हह, दुसमयदिह--याइं पि गेण्डड जाव असंखेजसमयिऽयाउं पि गेण्डड । जाडं भावको गेण्डड ताइं किं वण्यमंताई गेण्हर, गंघमंताई॰, रसमंताई॰, फासमंताई गेण्हर ? गोयमा ! वण्य-मंताई पि गे॰ जान फासमंताई पि गेण्डर । जाई भावओ वण्णमंताई गेण्डर ताई कि एगक्फाई गेण्डह जाव पंचक्फाई मेण्डह ? गोयमा ! गहणदञ्जाई पहुज एगवण्णाई पि गेण्डह जाब पंचवण्याई पि गेण्डह, सम्बग्गहणं पहच शियमा पंचवण्याई गेण्डह. तंजहा-कालाई नीलाई स्रोहियाई द्यालिहाई सुकिहाई । जाई वणाओ कालाई नेष्ट्रड तार्ड कि एगगुणकालाई गेष्ट्रड जाव अर्थातगुणकालाई गेष्ट्रड ? गोयमा ! २६ स्रशा॰

एमगुणकालाई पि गेण्हर जाव अणंतगुणकालाई पि गेण्हर । एवं जाव सिक्काई पि । जाई भावओ गंधमंताई गिण्हइ ताई कि एगमंधाई गिण्हइ, दुगंधाई गिण्हइ ? गोयमा ! गहणद्वाइं पहुच एगगंधाइं पि० दुगंधाइं पि गिण्हइ, सव्वग्गहणं पडुच नियमा दुगंघाइं निण्हइ । जाइं गंघओ सुब्भिगंघाइं निण्हइ ताई किं एग-गुणमृब्सिगंघाइं निण्हद् जात्र अणंतगुणसुब्सिगंघाइं निण्हद् ? गोयमा ! एगगुणसुब्सि-गंधाइं पि गि० जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं पि गिण्हइ। एवं दुब्भिगंधाई पि गेण्हइ। जाई भावओ रसमंताई गेण्हइ ताई किं एगरसाई गेण्हइ जाव पंचरमाई गेण्हड ? गोयमा! ग्रहणद्व्वाइं पहुच एगरसाइं पि गेण्हइ जाव पंचरमाइं पि गिण्हइ, सन्वगाहणं पद्ध नियमा पंचरसाई गेण्हड । जाई रसओ तित्तरसाई गेण्हड ताइं कि एगगुणतित्तरसाइं गिण्हइ जाब अणंतगुणतित्तरसाई गिण्हइ ? गोधमा ! एगगुणितत्ताई पि गिण्हइ जाव अणंतगुणितताई पि गिण्हइ, एवं जाव महुररसो । जाई भावओ फासमंताई गेण्हइ ताई कि एमफासाई गेण्हड जाव अहफासाई गेण्हड है गोयमा ! गहणदव्याइं पदुच णो एगफासाइं गेण्हइ, दुफासाइं गेण्हइ जाव चउ-फासाई गेण्हड, णो पंचफासाई गेण्हड् जाव णो अद्वफासाई गेण्हड्, सन्वग्गहणं पहुच नियमा च उफासाई गेण्हइ, तंजहा-सीयफासाई गेण्हइ, उसिणफामाई०. निद्धफासाई०, लुक्खफासाई गेण्हड । जाई फामओ सीयाई गेण्हड ताई कि एगगुणसीयाई गेण्हड जाव अणंतगुणसीयाइं गेण्हद् ? गोयमा ! एगगुणसीयाइं पि गेण्हद् जाव अणंत-गुणसीयाई पि गेण्हड, एवं उसिणणिदल्यन्याई जाव अर्णतगुणाई पि गेण्हड ॥ ३९% ॥ जाई भंते ! जाव अणंतमुणलुक्खाई गेण्डड ताई कि पुद्राई गेण्डड. अपुद्वाई गेण्हइ ? गोयमा ! पुद्वाई गेण्हइ, नो अपुद्वाई गेण्हइ । जाई मंते ! पुट्वाई गेण्हइ ताई कि ओगाढाई गेण्हइ, अणोगाढाई गेण्हइ ? गोयमा ! ओगाढाई मेण्हइ, नो अणोगाढाइं गेण्हइ । जाइं भंते ! ओगाढाइं गेण्हइ ताइं कि अणंतरोगाढाई गेण्हइ, परंपरोगाढाई गेण्हइ ? गोयमा ! अणंतरोगाढाई मेण्हइ, नो परंपरोगाढाई गेण्हड । आइं भंते ! अणंतरोगाढाई गेण्हइ ताई कि अणूई गेण्हइ. बायराई गेण्हइ ? गोयमा ! अण्ड्रं पि गेण्हड् बायराइं पि गेण्हड् । जाइं भंते ! अण्ड्रं गेण्डड् ताइं कि उन्हें गेण्हइ, अहे गेण्हइ, तिरियं गेण्हइ ? गोयमा ! उन्हें पि गेण्हह, अहे वि गेण्हड, तिरियं पि गेण्हड् । जाई भंते ! उन्नं पि गेण्हड् अहे वि गेण्हड् तिरियं पि गेण्हड् ताई कि आई गेण्हड, मज्हे गेण्हड, पजनसाणे गेण्हड ? गोयमा ! आई पि गेण्हड, मजरे वि गेण्हर, पजनसाणे वि गेण्हर । जाई भंते ! आई पि गेण्हर, मजरे वि गेण्हइ, पञ्जवसाणे वि गेण्हइ ताई किं सनिसए गेण्हइ, अविसए गेण्हह ? गीयमा !

सबिसए गेण्हर, नो अविसए गेण्हर । जाई भंते ! सबिसए गेण्हर ताई किं आणुप्रिंव रोण्हर, अषाणुपुर्वि रोण्हर ? गोयमा ! आणुपुर्वि रोण्हर, नो अणाणुपुर्वि रोण्हर । जारं मंते ! आणुपुर्विय गेण्हड् ताई कि तिदिसि गेण्हड् जाव छहिसि गेण्हड् ? गोयमा ! नियमा छिद्दिसं गेण्हइ । "पुद्योगाढअणंतर अणू य तह बायरे य उद्गमहे । आइवि-सयाणुपुन्वि णियमा तह छिद्दिसि चेब" ॥ ३९६ ॥ जीवे णं भंते ! जाई दव्वाई भास-त्ताए गेण्हइ ताई कि संतरं गेण्हइ, निरंतरं गेण्हइ? गोयमा! संतरं पि गेण्हइ, निरंतरं पि गेण्डइ । संतरं नेण्डमाणे जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेजसमए अंतरं कह गेण्डइ. निरंतरं गेण्डमाणे जहण्येणं दो समए, उद्दोसेणं असंखेजसमए अणुममर्ये अविरहियं निरंतरं गेण्हद । जीवे णं भंते । जाई द्व्याई मासत्ताए गहियाई निमिरह ताई कि संतरं निसिरह, निरंतरं निसिरह ? गोयमा ! संतरं निसिरह, नो निरंतरं निसिरइ। संतरं निस्मिरमाणे एगेणं समएणं गेण्डइ, एगेणं समएणं निसिरइ, एएणं गहुणनिसिरणोवाएणं जहुनेणं दुसमयं, उद्घोरेणं असंखेजसमयं अंतोसुह तिगं गहणनिसिरणोवायं करेइ ॥ ३९७ ॥ जीवे णं भंते ! जाइं दब्बाई भासत्ताए गहियाई णिसिरइ ताई कि मिण्णाई णिसिरइ, अभिण्णाई णिसिरइ? गोयमा ! भिनाइं पि णिस्सिरइ. अभिनाइं पि णिस्सिरइ । जाई भिन्नाइं णिसिरइ ताइं अणंतगुजपरिवृद्वीए णं परिवृद्धमाणाइं लोयंतं फुसन्ति, जाइं अभिज्जाइं जिसिरइ ताइं असंकेजाओं ओगाष्ट्रणवग्गणाओं गंता भेयमाक्जंति, संकेजाईं जोयणाई गंता विदंसमागच्छंति ॥ ३९८ ॥ तेसि णं भंते ! दव्वाणं बद्धविहे भेए पण्णते ? गोयमा ! पश्चविष्ठे भेए पश्चे । तंजहा-संडाभेए, पगराभेए, चुण्णियासेए, अणु-तिबयामेए, उक्करियामेए । से कि तं खंडामेए ? २ जण्णं अथखंडाण वा तउथखंडाण वा तंबसंडाण वा सीसगसंडाण वा रययखंडाण वा जायस्वसंडाण वा संडएणं भेए भवइ, से तं खंडामेए १। से कि तं पयराभेए ? २ जण्णं वंसाण वा वेताण वा नळाण वा कयलीयंभाण वा अञ्मपडलाण वा पयरेणं मेए भवड्, से तं पयराभेए २। से कि तं अधिपायासेए? २ जन्मं तिलचुन्नाम वा मुरगचुन्नाम वा मासचुन्नाम का पित्पळीचुण्णाण वा मिरीयचुण्णाण वा सिंगबेरचुण्णाण वा चुण्णियाए भेए भवड, से तं चुण्णियामेए ३। से कि तं अणुतिबियामेए ? २ जण्णं अगडाण वा तडागाण वा दहाण वा नर्गण वा वाबीण वा पुक्खरिणीण वा वीहियाण वा गुंजालियाण वा सराण वा सरसराण वा सरपंतियाण वा सरसरपंतियाण वा अणुतिख्यामेए भवइ, से तं अगतिक्यामेए ४। से कि तं उक्करियामेए ? २ जण्णं मुसाण वा मंद्रसाण बा तिलसिंगाण वा भुकासिंगाण वा माससिंगाण वा एरंडवीयाण वा प्रक्रिया

उक्करियाए भेए भवह, से तं उक्करियाभए ५ ॥ ३९९ ॥ एएति णं भंते ! दव्याणं संडामेएणं पयरामेएणं चुण्णियामेएणं अणुनडियामेएणं उक्तरियामेएण य मिजमाणाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया ना तुका वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवाइं दब्बाइं उक्करियामेएणं भिजमाणाइं, अणुतहि-यामेएणं मिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, चुण्णियामेएणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, पयरामेएणं मिज्ञमाणाई अणंतगुणाई, खंडामेएणं भिज्ञमाणाई अणंतगुणाई ॥ ४०० ॥ नेरइए णं मंते । जाई दन्बाई भासत्ताए गेण्हड ताई कि ठियाई गेण्हड, अठियाई गेण्हइ ? गोयमा ! एवं चेव, जहा जीवे वत्तव्वया भणिया तहा बेरइयस्त वि जाव अप्पाबहुर्य । एवं एर्गिदियवज्ञो दंडओ जाव वेसाणिया । जीवा णं भंते ! जाई दम्बाइं भासत्ताए गेण्हंति ताइं कि ठियाइं गेण्हंति, अठियाइं गेण्हंति ? गोयमा ! एवं चेव, पुहुत्तेण वि णेयव्वं जाव वेमाणिया । जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाई सचभासत्ताए गेण्हइ ताई कि ठियाई गेण्हइ, अठियाई गेण्हइ? गोयमा ! जहा ओहियदंडओ तहा एसोऽवि, णवरं विगलिंदिया ण पुरिष्ठजंति । एवं मोमाभासाए वि, सवामोसाभासाएं वि, असबामोसाभासाएं वि एवं चेव, नवरं असबामोसामा-साए विगलिंदिया पुच्छिजंति इमेणं अभिलावेणं-विगलिंदिए णं भंते । जाइं दच्वाई असमामोसाभासत्ताए गेण्हइ ताई कि ठियाई गेण्हड, अठियाई गेण्हड ? गोयमा ! जहा ओहियदंडओ, एवं एए एगत्तपुहुत्तेणं दस दंडगा भाणियम्बा ॥ ४०९ ॥ जीवे णं भंते ! जाइं दव्बाइं सबमासत्ताए गिण्हड् ताई कि सबभासत्ताए निसिरड्, मोसभासत्ताए निसिरइ, समामोसभासत्ताए निसिरइ, असमामोसभासत्ताए निसिरइ ? गोयमा ! सम्बभासत्ताए निसिरइ, नो मोसमासत्ताए निसिरइ, नो समामोसभासत्ताए निसिरङ्, नो असबामोसभासत्ताए निसिरङ् । एवं एगिदिग्रविगर्छिदियवज्रो दंडको जाव वेमाणिया । एवं पुहुत्तेण वि । जीवे णं भंते । जाई दम्बाई मोसमासत्ताए गिण्हुइ ताई किं सचमासत्ताए निसिरइ, मोसभासत्ताए॰, सचामोसभासत्ताए॰, असचामो-समायताए निधिरह ? गोयमा ! णो सम्बमासत्ताए निधिरह, मोसभासताए निसिरह, णो सचामोसमासत्ताए॰, णो असचामोसमासत्ताए निसिरइ। एवं सचामोसभासताए वि, असबामोसभासत्ताए वि एवं चेब, नवरं असबामोसभासत्ताए विगलिदिया तहेव पुच्छिजंति, जाए चेव निण्हइ ताए चेव निसिरह । एवं एए एगलपुहुत्तिया अह दंडमा भाणियन्ता ॥ ४०२ ॥ कहविहे णं संते ! वयणे पकते ? गोयमा ! सोलसविहे वयणे पन्नते । तंजहा-एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे, इत्यिवयणे, पुमनयणे, णपुंसगनयणे, अज्जात्यच्यणे, उवणीयवयणे, अवणीयचयणे, उवणीया-

वर्गीयवयणे, अवनीओवणीयवयणे, तीतवयणे, पहुष्पत्तवयणे, अणागयवयणे, प्रवस्तवयणे, परोक्तवयणे । इचेइयं भंते ! एगवयणं वा जाव परोक्तवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा आसा, ण एसा आसा मोसा ! हंता गोयमा ! इचेइयं एगवयणं वा जाव परोक्तवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा आसा, ण एसा आसा मोसा ॥ ४०३ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं सच्यासगाणं मोसआसगाणं सच्यासासगाणं असचामोसआसगाणं असचामोसआसगाणं असासगाणं असचामोसआसगाणं असचामोसआसगा असंवेज्ज्याणा, असचामोसआसगा असंवेज्ज्याणा, असासगा अणंतगुणा ॥ ४०४ ॥ पद्मादणाप्य सगवाईप पद्मादसमं मासगप्यं समर्सं ॥

छिए, वेडब्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । नेरइयाणं भंते ! कह सरीरया पक्ता? गोयमा ! तको सरीरया पनता । तंजहा-वेउव्विए, तेयए, कम्मए । एवं असुर-कुमाराण वि जाव थणियकुमाराणं । पुरुविकाइयाणं भंते ! कह सरीरया पक्षता ? गोयमा ! तओ सरीरया पनता । तंजहा-भोरालिए, तेयए, कम्मए । एवं बाउ-काडयवज्ञं जाव चर्डारेवियाणं । वार्डकाइयाणं भेते ! कड सरीस्या पश्चता ? गोयमा! चतारि सरीरया पन्नता। तंजहा-ओरालिए, वेडब्विए. तेयए. कम्मए । एवं पंचिदियतिरिक्खजोणियाण वि । मणुरसाणं भंते ! कह सरीरया पन्नता ? गोयमा । पंच सरीरया पन्नता । तंजहा---ओरालिए, वेउन्विए, आहा-रए, तेयए, कम्मए । बाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नारगाणं ॥ ४०५-६ ॥ केवड्या णं भंते ! ओरालियसरीरया पनता ? गोयमा ! दुविहा पनता । तंजहा-बदेह्या य मुक्केस्या य । तत्य णं जे ते बदेह्या ते णं असंखेजा, असंखेजाहिं उस्सिप्पिणनोसिप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेताओ असंखेजा लोगा । तस्य णं जे ते मुक्किया ते णं अणंता, अणंताहिं उस्तिपिणिओसिपिणीहिं अवहीरंति कालओ, केत्रुओ अणंता स्त्रेगा, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणंतभागो । केव्ह्या णं संते ! वेडव्वियसरीरया पणता ? गोवमा ! दुविहा पणता । तंत्रहा-बदेक्षणा य महोहगा य । तत्य णं जे ते बढेह्मगा ते णं असंखेजा. असंखेजाहिं उत्सप्पिण-बोसपिणीहिं अवहीरित कालबो, खेत्तको असंखेजाओ सेढीको प्यरस्स असंखेजह-भागी। तस्य णं जे ते मुक्केक्षमा ते णं अणंता, अणंताहि उत्सप्पिणओसप्पिणीहि अवहीरीत कासओ, जहा सोराकियस्य मुद्रोद्धगा तहेव वेउव्वियस्य वि भागियव्या

केवड्या णं भंते ! आहारगसरीरया पत्रता ? गोयमा ! दुविहा पत्रता । तंजहा-बदेख्या य मुक्केलया य । तत्य णं जे ते बदेखया ते णं सिय अत्य, सिय नत्य । जड अत्य जहण्येणं एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहरसपुहत्तं । तत्थ णं जे ते मुक्केक्ष्या ते णं अणंता. जहा ओराल्यिस्स मुक्केक्ष्या तहेव माणियव्या । केवड्या णं भंते ! तेयगसरीरया पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-बह्रे-लगा य मक्केलगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेलगा ते णं अणंना, अणंताहिं उस्सप्पिष-ओसिपणीहिं अवहीरित कालओ, मेत्तओ अणंता लोगा, दव्यओ सिद्धेहिंतो अणंत-गुणा सन्वजीवाणंतभागूणा । तस्य णं जे ते सुक्केद्रगा ते णं अणंता, अणंताहि उस्मिपिणिओसिप्पणीहिं अवहीरंति कालओ, खेनओ अणंता लोगा, दव्वओ सव्व-जीवेहिंतो अणंनगुणा जीववस्मस्साणंतभागो । एवं क्रम्मगमरीराणि वि भाणियव्वाणि ॥ ४०७ ॥ नेरइयाणं भंतं ! केवइया ओरालियसरीरा पक्षता ? गोबमा ! दुविहा पनता । तंजहा-बदेखगा य मुक्केलगा य । तत्थ णं जे ते बदेखगा ते णं णिय । तत्य णं जे ते सकेलगा ते णं अणंता जहा ओरालियसकेलगा तहा भाणियव्या । नेरडयाणं भंते ! केवइया वेउ व्वियसरीरा पनता ? गोयमा ! दुविहा पन्नना । तंजहा-बढेकगा य मुक्केलगा य । तत्थ णं जे ते बढेलगा ते णं असंखेजा. असंखेजाहि उस्सिप्पिणओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ. खेत्तओ असंखेजाओ सेढीओ प्रापस्स असंखेजरभागो. तासि णं सेढीणं विक्संभस्ह्रं अंगुलपढमवग्गमूलं विश्यवगामूल-पड्रप्रणां, अहव णं अंगुलविद्यवरगम्लघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ । तत्य णं जे ते मुकेलगा न णं जहा ओरालियस्स मुकेलगा तहा भाणियम्बा । नेरहयाणं भंते ! केवइया आहारगसरीरा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-मदेखमा स मुक्केलगा य, एवं जहा ओरालिए बदेलगा मुक्केलगा य मणिया तहेव आहारगा वि भाणियव्या । तेयाकम्मगाई जहा एएसिं चेष वेडव्यियाई ॥ ४०८ ॥ अग्ररकुमाराणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पश्चना ? गीयमा ! जहा नेरहयाणं ओरालियसरीरा भणिया तहेव एएसि भाणियव्या । असुरकुमाराणं भंते ! केवहया वेउ व्वियसरीरा पत्रता ? गोयमा ! दुविहा पत्रता । तंत्रहा-बद्देह्नगा य मुक्केलगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेक्षमा ते णं असंबेखा, असंबेखाहि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहि अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेजाओ सेढीओ प्यरस्स असंखेजाश्मागी, तासि णं सेटीणं विक्संभस्ट् अंगुलपढमवग्गम्बस्स संखेजङ्गामो । तत्व णं से ते मुकेङगा ते णं जहा ओरालियस्स मुकेङगा तहा माणियव्या । आहारगसरीरगा जहा एएसि चेव ओरालिया तहेव दुविहा माणियच्या, तेयाकम्पगसरीरा दुविहा वि

जहा एएसि चेव वेडिक्या. एवं जाव अणियकमारा ॥ ४०९ ॥ प्रहविकाइयाणं अंते ! केवडमा ओरालियसरीरगा पकता ? गोयमा ! दुविहा पकता । तंजहा-बद्धेलगा य मुक्केलगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेलगा ते णं असंखेजा, असंखेजाहिं उत्स्विणि-ओसिपणीहिं अवहीरंति कालओ, खेताओ असंखेजा लोगा । तत्य णं जे ते मुक्केह्रगा ते णं अणंता. अणंताहि उस्सप्पिणिओसप्पिणीहि अवहीरंति कालओ. स्तेत्तओ अणंता लोगा. अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागो । पुढवि-काइयाणं भंत ! केवड्या वेउव्वियसरीरगा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंत्रहा-बद्धेक्षमा य सुद्देक्षमा य । तत्य णं जे ते बद्धेक्षमा ते णं णत्य । तत्य णं जे ते मुक्केलगा ते णं जहा एएसि चैव ओगलिया तहेव भाणियव्या। एवं आहार-गसरीरा वि । तेयाकम्मगा जहा एएसि चेव ओर लिया । एवं आउकाइयतेउकाइया वि ॥ ४१० ॥ वाउकाइयाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-बद्धेल्लगा य मुक्केलगा य । दुविहा वि जहा पुढविकाडयाणं ओराढिया । वेज विवयाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-बद्धेक्ष्मा य मकेलगा य । तत्य णं जे ते बदेलगा ते णं असंखेजा, समए समए अवहीरमाणा २ पिलओवमस्म असंसेजङ्भागमेरोणं कारुणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया। मुक्केकुगा जहा पुढविकाइयाणं । आहारयतेयाकम्मा जहा पुढविकाइयाणं, वणप्फइ-काइयाणं जहा पुरुविकाइयाणं, णवरं तैयाकम्मगा जहा ओहिया तैयाकम्मगा ॥४९९॥ बेइंदियाणं भंते ! केवड्या ओरालिया सरीरगा पनता ? गोयमा ! व्वविद्या पनता । तंजहा-बदेखगा य मुद्देखगा य. तत्य णं जे ते बदेखगा ते णं असंखेखा. असंखे-जाहिं उत्सिप्पिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ. खेत्रओ असंखेजाओ सेढीओ पयरस्स असंखेजडभागो. तासि णं सेढीणं विक्खंभसङ्के असंखेजाओ जोयणकोडा-कोडीओ असंखेखाई सेहिवम्गमलाई । बेइंदियाणं ओरालियसरीरेहिं बढेह्रगेहिं पयरो अवहीरइ. असंबोद्धाहि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालओ, खेताओ अंगुलपयरस्स आवलियाए य असंबोजहमागपलिमागेणं । तत्य णं जे ते मुकेक्षमा ते जहा ओहिया ओरालियमुकेलगा । वेज्ञिया आहारगा य बदेलगा पत्यि । मुकेलगा जहां ओहिया ओरालियमुकेलगा । तैयाकम्मगा जहां एएसि चेव ओहिया ओरालिया, एवं जान चटरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एवं चेन. नवरं वेड व्यासरीरएस इमो विसेसो-पंचित्रयतिरिक्खकोणियाणं भेते ! केवइया वेडिन्त्रय-सरीरया प्रकता ? गोयसा ! दुविहा प्रचता । तं०-वदेख्या य अकेल्या य । तत्व मं जे ते बदेहमा ते मं असंबोजा, जहा अग्ररकुमारामं, गवरं तासि मं सेढीमं

विक्संभस्ई अंगुरुपढमवरवम्बरस्स असंखेजइभागे । मुक्केलमा तहेव ॥ ४९२ ॥ मणुस्साणं मंते ! केवइया ओरालियसरीरगा पन्नता ! गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-बदेखमा य मुक्केलमा य, तत्थ णं जे ते बदेखमा ते णं सिय संखेजा. सिय असंखेजा, जहण्णपए संखेजा. संखेजाओ कोडाकोडीओ. तिजमलपगस्स उर्वीर चउजमलपगरस हिद्वा, अहव णं पंचमवरगपद्धपात्री छट्टो वस्गी, अहव णं छण्ण-वर्डक्रेयणगदाइरासी, उक्कोसपए असंखेजा. असंखेजाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेतओ स्वपन्खितीहिं मणुस्सेहिं सेटी अवहीरइ, तीसे सेटीए आगामखेतेहिं अवहारो मन्गिजइ-असंखेजा, असंखेजाहिं उस्मिपिणिओसप्पिणीहिं कालओ, खेत्तओ अंगुलपटमवग्गमूलं तइयबग्गमूलपटुप्पण्णं । तत्य णं जे ते मुक्केलगा ने जहा औरान्त्रिया ओहिया मुक्केल्लगा । वेउव्वियाणं मंते ! पुच्छा । गोयमा ! दुनिहा पनता । तंजहा-बद्धेलगा य मुक्केलगा य, तत्य णं जे ते बद्धेलगा ते णं संखेजा, समए २ अवहीरमाणा २ संखेजेणं कालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अव हीरिया सिया। तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालिया ओहिया। आहार-गसरीरा जहा ओहिया । तेयाकम्मगा जहा एएसि चेव ओरालिया वाणसंतराणं जहा नेग्इयाणं ओगल्विया आहारगा य । वेउव्वियसरीरगा जहा नेग्इयाणं, नवरं तानि णं सेढीणं विक्रतंभस्ई, संखेजजोयणसयवगगपित्रभागो प्यरस्य । मुकेलया जहा ओरालिया, आहारगसरीरा जहा अग्ररकुमाराणं, तेयाकम्मया जहा एएसि णं चेव वेडिव्वया । जोइसियाणं एवं चेव, नवरं नामि णं सेढीणं विक्खंभसुई, विकृप्पनंगुलसयवमगपिलभागो पयरस्स । वैसाणियाणं एवं चेव. नवरं तासि णं सेदीणं विक्खंभस्ई, अंगुलबिङ्यवग्गमृलं तङ्यवग्गमृलपङ्गपर्द्यं, अहव णं अंगुलतङ्य-वम्गम्लघणप्यमाणमेनाओं मेढीओ, सेसं तं चेव ॥ ४१३ ॥ पद्मवणाप् सगवर्ष् बारसमं सरीरपयं समत्तं ॥

कहियहे णं भंते! परिणामे पजते? गोयमा! दुविहे परिणामे पजते। तंजहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य । जीवपरिणामे णं भंते! कहिवहे पजते? गोयमा! दसविहे पजते। तंजहा-गइपरिणामे १, इंदियपरिणामे २, कसायपरिणामे ३, क्रेसापरिणामे ४, जोगपरिणामे ५, उवओगपरिणामे ६, णाणपरिणामे ७, दंसणपरिणामे ८, चरित्तपरिणामे ९, वेयपरिणामे १०॥ ४१४॥ गइपरिणामे णं भंते! कहिवहे पजते? गोयमा! चउितहे पजते। तंजहा-नर्यगइपरिणामे, तिरिय-गइपरिणामे, मणुयगउपरिणामे, देवगइपरिणामे १। इंदियपरिणामे णं भंते! कह-विहे पजते? गोयमा! पंचविहे पजते। तंजहा-सोइंदियपरिणामे, चित्वदियपरि-

णामे, पाणिवियपरिणामे, जिब्धिदियपरिणामे, फासिंदियपरिणामे २ । कसायपरि-णामे णं भेते ! कदविहे पश्चते ? गोयमा ! चढव्यिहे पश्चते । तंजहा-कोहकसायपरि-णामे, माणकतायपरिणामे, मायाकतायपरिणामे, लोमकतायपरिणामे ३ । लेस्ता-परिणामें णं भंते ! कहविहे पश्चते ? गोयमा ! छव्विहे पश्चते । तंजहा-कण्हलेसापरि-णामे, नीललेसापरिणामे, काललेसापरिणामे, तेजलेसापरिणामे, पम्हलेसापरिणामे, सक्छेमापरिणामे ४ । जोगपरिणामे णं भंते ! बहविहे पक्ते ? गोयमा ! तिबिहे पन्नते । तंजहा-मणजोगपरिणामे , वहजोगपरिणामे , कायजोगपरिणामे ५ । उवधोग-परिणामे ण भंते ! कहविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तंजहा-सागारोवश्रोग-परिणामे. अणागारोत्रओगपरिणामे य ६ । णाणपरिणामे णं भंते ! कड्विहे पश्चते ? गोयमा ! पंचविद्वे पन्ने । तंजहा-आभिणिबोहियणाणपरिणामे, सुयणाणपरिणामे, ओहिणाणपरिणासे, सणपजनणाणपरिणासे, केनलगाणपरिणासे । अण्याणपरिणासे णं भंतं ! ऋबिष्ठे पत्तते ? गोयमा ! तिबिहे पत्तते । तंजहा-महअण्णाणपरिणामे, सुयक्षण्णाणपरिणामे. विभंगणाणपरिणामे ७ । दंसणपरिणामे णं भंते ! ब्हाविहे पन्नते ? गोयना ! तिबिहे पन्नते । तंजहा-सम्महंसणपरिणामे. मिच्छादंसणपरिणामे. सम्मामिन्छादंसणपरिणामे ८। चरित्तपरिणामे णं भंते ! कडबिहे पक्षते ! गोयमा ! पंचिवहे पक्ते । तंजहा-सामाइयचरितपरिणामे, छेदोबद्वावशिवचरित्तपरिणामे, परि-हार्रावनुद्धियचरित्तपरिणामे. सहमसंपरायचरित्तपरिणामे. अहक्खायचरित्तपरिणामे ९। वेयपरिणामे णं अंते ! कडविहे पकते ? गोयमा ! तिविहे पकते । तंजहा-इत्थिवेयपरिणामे, प्रिसबेयपरिणामे, णपुंसगवेबपरिणामे १०॥ ४१५॥ नेरहया गडपरिणामेणं निरमगड्या, इंदियपरिणामेणं पंचिदिया, कसामपरिणामेणं कोहकसाई वि जाँव लोभकमाई वि. लेसापरिणामेणं कष्टलेसा वि नीललेसा वि काउलेसा वि. जोगपरिणामेणं मणजोगी वि वहजोगी वि कायजोगी वि. उवओगपरिणामेणं सागारो-वउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि. पाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणी वि सयणाणी वि ओहिणाणी वि. अण्णानपरिणामेणं महस्रण्याणी वि सुयसण्याणी वि विसंगणाणी वि. इंसणपरिणामेणं सम्मादिद्वी वि मिच्छादिद्वी वि सम्मामिच्छादिद्वी वि. चरित्तपरिणामेणं नो चरित्ती, नो चरिताचरित्ती, अचरित्ती. वेयपरिवामेणं नो इत्यवेयगा. नो परि-संवियना, नर्पुसमनेश्रमा । असुरकुमारा वि एवं चेव, नवरं देवगड्या, कण्डलेसा वि जाव तेउडेसा वि, वेयपरिणामेणं इत्यिक्यमा वि, प्रसिवयमा वि, नो नपुंसमक्यमा, सेसं तं चेव । एवं जाव विजयकमारा । प्रहमिकाइया गहपरिणामेणं तिरियगहया. इंदियपरिणामेणं एगिदिया, सेसं जहा नेरहवाणं, नवरं छेसापरिणामेणं तेउछेसा वि.

जोगपरिणामेणं कायजोगी, णाणपरिणामो णत्थ, अण्णाणपरिणामेणं महअण्णाणी, सुयअण्णाणी, दंसणपरिणामेणं मिच्छादिद्वी, सेसं तं चेव । एवं आउवणस्सङ्काइया वि । तेउवाऊ एवं चेत्र. नवरं लेसापरिणामेणं जहा नेरह्या । बेइंदिया गडपरि-णामेणं तिरियगइया, इंदियपरिणामेणं बेइंदिया, सेसं जहा नेरइयाणं । नवरं जोग-परिणामेणं बड्डोगी, कायजोगी, णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणी वि, सुयणाणी वि, अण्णाणपरिणामेणं महअण्णाणी वि, सुयअण्णाणी वि, नो विभंगणाणी, दंसण-परिणामेणं सम्मदिद्री वि. मिच्छादिद्री वि, नो सम्मामिच्छादिद्री, सेसं तं चेव। एवं जाव च इरिदिया, नवरं इंदियपरिवृद्धी कायव्वा । पंचिदियतिरिक्खजोणिया गङ्गरि-णामेणं तिरियगड्या, सेसं जहा नेरइयाणं, नवरं लेसापरिणामेणं जाव सुक्रलेसा वि । चरित्तपरिणामेणं नो चरिती. अचरिती वि. चरित्ताचरित्ती वि. वेयपरिणःमेणं इत्यि-वेयगा वि, पुरिसवेयगा वि, नपुंसगवेयगा वि । मणुस्सा गइपरिणामेणं मणुस्सगइया. इंदियपरिणामेणं पंचिदिया, अणिदिया वि, कसायपरिणामेणं कोहकसाई वि जाव अकमाई वि. छेसापरिणामेणं कष्डलेसा वि जाव अलेसा वि. जोगपरिणामेणं मण-जोगी वि जाव अजोगी वि. उवओगपरिणामेणं जहा नेरइया, णाणपरिणामेणं आभि-णिबोहियणाणी वि जाव केवलणाणी वि. अण्याणपरिणासेणं तिण्यि वि अण्याणा. दंसणपरिणामेणं तिण्णि वि दंसणा, यरित्तपरिणामेणं चरित्ती वि अचरित्ती वि चरित्ता-चरित्ती वि. वेयपरिणामेणं इत्यिवेयगा वि पुरिसवेयगा वि नपुंसगवेयगा वि अवेयगा वि । वाणमंतरा गइपरिणामेणं देवगइथा, जहा असुरकुमारा एवं जोइसिया वि. नवरं लेसापरिणामेणं तेउछेस्सा । वेमाणिया वि एवं चेव नवरं छेसापरि-णामेणं तेउलेमा वि पम्हलेसा वि सुक्रलेसा वि, सेतं जीवपरिणामे ॥ ४१६॥ अजीवपरिणामे णं भंते ! कड़विहे पश्ते ! गोयमा ! दसविहे पश्ते । तंजहा-बंधण-परिणामे १, गइपरिणामे २, संठाणपरिणामे ३. भेयपरिणामे ४. वण्यपरिणामे ५. गंधपरिणामे ६, रसपरिणामे ७, फासपरिणामे ८, अगुरूलहयपरिणामे ९, सह-परिणामे १०॥ ४१७॥ बंघणपरिणामे णं मंते ! क्डविहे पश्चेत ? गोयमा ! दुविहे पत्रते । तंजहा-णिद्धबंबणपरिणामे, छन्खबंधणपरिणामे य । समणिद्धयाए बंधो ण होइ समछुक्खयाए वि ण होइ । वेमायणिद्वलक्खत्तणेण बंघी उ खंघाणं ॥ १ ॥ णिह्नस्स णिह्नेण दुवाहिए णं छक्खरस छक्खेण दुवाहिए णं । निह्नस्स छक्खेण उनेइ बंघो जहण्णवज्जो विसमो समो वा ॥ २ ॥ गहपरिणामे ण भंते ! कड्विहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तंत्रहा-फुसमाणगङ्परिणामे य अपुसमाणगङ्-परिणामे य अहवा दीहगइपरिणामे य हस्सगइपरिणामे य २ । संठाणपरिणामे णं

भंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! पंचविहे पक्ते । तंजहा-परिमंडळलंठाणपरिणामे जाव आययसंठाणपरिणामे ३ । मेयपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! पंचिहि पक्ते । तंजहा-संडाभेयपरिणामे जाव उक्करियामेयपरिणामे ४ । वण्णपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! पंचिहे पक्ते । तंजहा-काळवण्णपरिणामे जाव सक्किलवण्णपरिणामे ५ । गंधपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! दुविहे पक्ते । तंजहा-सुन्भगंघपरिणामे य दुव्भगंघपरिणामे य ६ । रसपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! पंचिहि पक्ते । तंजहा-तित्तरसपरिणामे जाव महुररसपरिणामे ७ । फासपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! अद्विहे पक्ते ? गोयमा ! स्वावहे पक्ते ९ । सहपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! दुविहे पक्ते । तंजहा-सुन्भसहपरिणामे य ८ । अगुरुळहुयपरिणामे णं मंते ! कड्बिहे पक्ते ? गोयमा ! दुविहे पक्ते । तंजहा-सुन्भसहपरिणामे य दुव्भिसहपरिणामे य उव्यवहेष्ट पक्ते ? गोयमा ! दुविहे पक्ते । तंजहा-सुन्भसहपरिणामे य दुव्भिसहपरिणामे य परिणामपर्थं समस्यं ॥

कड ण भंते ! कसाया पन्नता ! गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नता । तंजहा-कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। नेरइयाणं भंते ! बह कसाया पनता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पनता । तंजहा-कोहकसाए जाव लोभकसाए । एवं जाब वेसाणियाणं ॥ ४३९ ॥ व्हपइद्विए णं भेते ! कोहे पश्चते ? गोयसा ! चलपइद्विए कोहे पत्रते । तंजहा-आयपइद्विए, परपइद्विए, तदुभयपइद्विए, अप्पइद्विए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं टंडओ । एवं माणेणं टंडओ. मायाए टंडओ. लोभेणं दंडको ॥ ४२० ॥ क्झिंह णं भंते ! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती मबद ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहप्पत्ती भवड़, तंजहा-केतं पड़क, वत्यं पड़क, सरीरं पड़क, उचिह पड़न । एवं नेरहयाणं जान बेमाणियाणं । एवं माणेण वि मायाए वि स्रोभेण वि, एवं एए वि चतारि दंहमा ॥ ४२९ ॥ कहविंहे ण भंते । कोहे पक्ते १ गोयमा ! चर-व्यिहे कोहे पत्रते। तंजहा-अणंताणबंधी कोहे. अपबक्खाणे कोहे. पत्रक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे। एवं नेरहयाणं जाव वेमाणियाणं। एवं माणेणं मायाए लोनेणं, एए वि चतारि दंडगा ॥ ४२२ ॥ कड़विडे णं मंते ! कोडे पक्ते ? गोयमा ! चटव्यिहे कोहे पत्रते । तंत्रहा-आभोगनिव्यत्तिए, अगाभोगनिव्यत्तिए, उपसंते. अण्यवरंते । एवं नेरस्याणं जाव वेमाणियाणं । एवं माणेण वि, मायाए वि, लोमेण बि चलारि दंडगा ॥ ४२३ ॥ जीवा णं अंते । बडहिं ठाणेडिं अड कम्मण्यादीकी विषित ! गोबमा ! चर्राहें राषेहिं सह कम्मप्राहीओ विषित्र, शंजहा-क्रोहेणं.

माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जीवा णं भेते ! कहिं ठाणेहिं अद्व कम्मपगढीओ चिणंति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं , तंजहा-कोहेर्ण, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइया जाव वेमाणिया । जीवा णं मंते ! श्रहिं ठाणेहिं अद्भ कम्मपगडीओ चिणिस्संति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अद्भ कम्मपगडीओ चिणिस्संति, तंजहा-कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं नेरइया जाव वेमाणिया। जीवा णं मंते ! कइहिं ठाणेहिं अद्र कम्मपगडीओ उवन्तिणिमु ? गोयमा ! चउहिं हाणेहिं अद्भ कम्मपगडीओ उविचिणिसु, तंजहा-कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइया जाव वेमाणिया । जीवा णं भेते !० पुच्छा । गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति जाव होभेणं, एवं नेरइया जाव वेसाणिया । एवं उवचिणिस्संति । जीवा णं भंते ! क्इहिं ठाणेहिं अद्र कम्मपगडीओ बंधिस ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अह कम्मपगडीओ वंधिसु, तंजहा-कोहेणं, माणेणं जाव लोभेणं, एवं नेरइया जाव वेमाणिया, बंधिस, वंधंति, वंधिरसंति, उदीरेंस, उदीरेंति, उदीरिस्संति, वेदिस, वेंदंति. वेदइस्एंति. निर्जारस्. निर्जारेति. निर्जारिस्एंति. एवं एए जीवाइया वेसा-णियपजनमाणा अद्वारस दंखगा जाव वेमाणिया निजरिसु निजरिति निजिरसंति । आयपर्राद्वेय खेत्तं पद्धन णंताणुनंधि आभोगे । निण उवनिण वंध उदीर वेय तह निजरा चेन ॥ १ ॥ ४२४ ॥ पञ्चवणाए भगवईए चोइसमं कसायपयं समसं ॥

संठाणं बाह्रहं पोहतं कह्मएस ओगाहे । अप्पाबहु पुट्ट पविट्ट विसय अणगार आहारे ॥ १ ॥ अहाय असी य मणी हुद्ध पाणिय तेह्र फाणिय तहा य । कंबरु थूणा थिम्गल दीवोदहि लोगऽलोगे य ॥ २ ॥ कह णं मंते ! इंदिया पनता ? गोयमा ! पंच इंदिया पनता । तंजहा—सोइंदिए, चिस्सिदिए, धाणिदिए, जिल्मिदिए, फासिदिए ॥ ४६५ ॥ सोइंदिए णं मंते ! किसंठिए पनते ? गोयमा ! कलंबुया-पुप्फसंठाणसंठिए पनते । चिस्सिदए णं मंते ! किसंठिए पनते ? गोयमा ! मस्र्वंदरंठाणसंठिए पनते । घाणिदिए णं मंते ! पुच्छा । गोयमा ! अहमुत्तगचंद-चंठाणसंठिए पनते । घाणिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! खरप्पसंठाणसंठिए पनते । फासिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पनते १ ॥ ४२६ ॥ सोइंदिए णं मंते ! केवइयं चाह्रहेणं पनते । एवं जाव फासिदिए २ । सोइंदिए णं मंते ! केवइयं पोहतेणं पनते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेजहभागे वाह्रहेणं पनते । अंगुलस्स असंखेजहभागे पाहेलेणं पनि । अंगुलस्स असंखेजहभागे पोहतेणं पनते । एवं चिस्सिद्ध णं पुच्छा । गोयमा ! अंगुलस्स असंखेजहभागे पोहतेणं पनते । एवं चिस्सिद्ध णं पुच्छा । गोयमा ! अंगुलस्स असंखेजहभागे पोहतेणं पनते । एवं चिस्सिद्ध णं पुच्छा । गोयमा ! अंगुलपु पुच्छा । गोयमा ! अंगुलपु पाहेले । फासिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! अंगुलपु पाहेलेणं पनते । पाहेलेणं पाहेलेणं पाहेलेणं पनते । पाहेलेणं पनते । पाहेलेणं पाहेलेणं पाहेलेणं पाहेलेणं पहेलेणं पहेलेणं पाहेलेणं पाह

गोयमा । अणंतपएसिए पनते । एवं जाव फासिंदिए ४ ॥ ४२८ ॥ सोइंदिए णं भेते ! कद्रपर्सोगाडे पकते ? गोयमा ! असंबेजपर्सोगाडे पकते । एवं जाव फासिंदिए ५ ॥ ४२९ ॥ एएसि णं भंते ! सोइंदियचिन्सिदियघाणिदियजिन्सिदियफासिदियाणं ओसाहणद्वयाए पएसद्वयाए ओसाहणपएसद्वयाए कयरे क्यरेहितो अप्पा वा बहुया वा तहा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सम्बत्योवे चिन्सिदए ओगाहणद्वयाए, सोइंदिए ओगाहणह्याए संखेळगुणे, धाणिंदिए ओगाहणह्याए संखेळगुणे, जिन्नि-विए ओगाहणद्वयाए असंखेजगुणे, फासिंदिए ओगाहणद्वयाए संखेजगुणे, पएमडू-याए-सन्यत्योवे चिक्सिदिए पएसद्वयाए, सोइंदिए पएसद्वयाए संसेजगुणे, घाणिदिए पएसह्याए संक्षेजगुणे, जिन्मिदए पएसह्याए असंक्षेजगुणे, फासिंदिए पएसह्याए संखेजगुणे, ओगाहणपएसद्वयाए-सब्बत्योवे चक्निबदिए ओगाहणद्वयाए, सोइंदिए ओगाहणद्रयाए संखेळागुणे, घाणिदिए ओगाहणद्रयाए संखेळागुणे, जिन्भिदिए ओगाहणद्वयाए असंखेजगुणे, फासिंदिए ओगाहणद्वयाए संखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणद्रयाहितो चिन्सिदिए पएसद्रयाए अणंतगुणे, सोइंदिए पएसद्रयाए संखेज-गुणे, घाणिविए पएसद्वयाए संखेजगुणे, जिब्बिविए पएसद्वयाए असंखेजगुणे, फासिंबिए पएसट्टयाए संखेळागुणे ॥ ४३० ॥ सोइंदियस्स णं भंते ! केबइया कम्बाहगुरुवगुणा पन्नता? गोयमा! अणंता कम्बाहगुरुवगुणा पन्नता, एवं जाव फासिंदियस्स । सोइंदियस्स णं भंते ! केबइया मख्यलहुयगुणा पन्नता ? गोयमा ! अणंता मजयलह्रयगुणा पक्ता, एवं जाब फासिंदियस्स ॥ ४३१ ॥ एएसि पं मंते! सोइंदियचिक्किदियचाणिदियजिक्किदियफासिदियाणं कक्काड-गह्यमुणाणं मत्रयलहुयगुणाण च कयरे कयरेहिंदो अप्पा वा ४१ गोयमा! सन्त्रत्योवा चर्निखदियस्स क्रमखडगरुयगुणाः सोइंदियस्स सम्खडगरुयगुणा अर्णत-गुणा, घाणिदियस्त कन्सडगरुयगुणा अर्णतगुणा, जिन्धिदियस्त कव्यडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिदियस्स कक्कडगह्यगुणा अणंतगुणा । अउयलहुयगुणाणं-सब्ब-रबोबा फासिंदिबस्स मजबलहुबगुणा, जिब्बिदिबस्स मजबलहुबगुणा अर्णतगुणा, चाणिदियस्य मजयसङ्ग्रयुणा अर्णतगुणा, सोइंदियस्य मजयसङ्ग्रयुणा अर्णतमुणा, चिन्सदियस्स मञ्जलहृयगुणा अर्णतगुणा । कक्जाहगरुगगुणाणं सञ्चलहृयगुणाण य-सञ्दरयोगा वर्षिकदियस्स क्ष्यक्षडगरुवपुष्मा, सोइंदियस्स क्ष्यखडगरुवपुष्मा अणंतगुणा, वाणिदिवस्स कक्खडगरुवगुणा अणंतगुणा, जिन्धिदिवस्स कक्खडगरु-यगुणा अर्णतगुणा, फासिवियस्स क्रम्बदगद्वयगुणा अर्णतगुणा, फासिदियस्स कन्य-बगस्यपुर्वेष्टितो तस्स चेव मण्डयसहस्रमुका अनंतपुर्वा, जिक्किदियस्स मृत्यसहय-

गुणा अणंतगुणा, घाणिदियस्स मजयलह्यगुणा अणंतगुणा, सोइंदियस्स मजयलह्-यगुणा अर्णतगुणा, चर्निसदियस्स मजयलहुयगुणा अर्णतगुणा ॥ ४३२ ॥ नेरइयाणं भंत ! कड इंदिया पन्नमा ? गीयमा ! पंच. तंजहा-सोइन्दिए जाव फासिन्दिए । नेरइयाणं भंते ! सोइन्दिए किसंठिए पन्नते ? गोयमा ! कलंब्रुयासंठाणसंठिए पन्नते । एवं जहा ओहियाणं वत्तव्वया भणिया तहेव नेरडयाणं पि जाव अप्पावहयाणि दोष्णि । नवरं नेरडयाणं भंते ! फासिन्दिए किसैठिए पन्ते ? गोयमा ! द्विहे पुनते । तंजहा-भवधारणिके य उत्तरवेडिविए य । तत्य णं जे से भवधारणिके से णं हुंडसंठाणसंठिए पन्नते, तत्थ णं जे से उत्तरवेउन्तिए से वि तहेव, सेसं तं चेव ॥ ४३३ ॥ असुरकुमाराणं अंते ! कड डन्दिया फ्लना ? गोयमा ! पंच. एवं जहा ओहियाणि जाव अप्पाबहगाणि दोण्णि वि । नवरं फासिन्दिए दुविहे पन्ते । तंजहा-भवधारणिजे य उत्तरवैजन्तिए य । तत्थ णं जे से भवधारणिजे से णं समन्तरं-ससंठाणसंठिए पन्नते. तत्थ णं जे से उत्तरवेडिकए से णं णाणासंठाणसंठिए. सेसं तं चेव । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ४३४ ॥ पुडविकाइयाणं भेते ! कह इन्दिया पन्नता ? गोयमा ! एगे फासिन्दिए पन्नते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिए किसेठाणसंठिए पश्चते ? गोयमा ! मस्रचंदसंठाणसंठिए पश्चते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिए केवडयं बाहारेणं पकते ? गोयमा ! अंग्रलस्स असंखेजहमागं बाहह्रेणं पनते । पुढविकाइयाणं भंते ! फालिन्दिए केवर्यं पोहत्तेणं पनते ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेते पोहत्तेणं । पुडविकाइयाणं अते ! फासिन्दिए कडपएसिए पनते ? गोयमा ! अणंतपएसिए पन्नते । पुढविकाडयाणं भंते ! फासिन्दिए कद्वपएसीगाढे पन्नते ? गोयमा ! असंखेजपएसोगाढे पन्नते । एएसि णं भंते ! पढिकाइयाणं फासिन्दियस ओगाहणद्वयाए पएसद्वयाए ओगाहणपएसद्वयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सञ्बत्योवे पुढविकाइयाणं फासिन्दिए ओगाइणद्वयाए, से चेव पएसद्वयाए अणंतगुणे । पढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दियस्स केवइया कक्खड-गरुयगुणा पत्रना ? गोयमा ! अणंता, एवं मखयलहुयगुणा वि । एएसि णं भंते ! पुडविकाइयाणं फासिन्दियस्स कन्खडगरुयगुणाणं मजयलहुयगुणाण व कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ १ गोयमा । सव्बत्योवा पृढविकाइबार्ण फासिवियस्स फन्य-डगस्यगुणा, तस्त चेत्र मतयलहुयगुणा अर्णतगुणा । एवं आतकाह्याण वि जाव वणप्यस्काइयाणं, णवरं संठाणे इसो विसेसो सङ्ख्वो-आउकाइयाणं विव्यविद्संठा-णसंठिए पनते । तेउकाइयाणं सहकतावसंठाणसंठिए पनते । वाउकाइयाणं पडा-गासंठाणसंठिए पन्नते । दणप्तहकाइयाणं जाणासंठाणसंठिए पन्नते ॥ ४३५ ॥

बेइंदियाणं भंते ! कह इंदिया पनता ? गोयमा ! दो इंदिया पनता । तंजहा-जिध्निदिए य फासिंदिए य । दोण्हं पि इंदियाणं संठाणं नाहतं पोहत्तं पएसा जोगा-हणा य जहा ओहियाणं भणिया तहा भाणियव्या, णवरं फासिंदिए हुंडसंठाणसंठिए पण्णतेति इसो विसेसो । एएसि णं संते ! बेइंदियाणं जिब्सिदियणसिंदियाणं ओगाहणद्वयाए पएसद्वयाए ओगाहणपएसद्वयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्सिदिए ओगाहणद्वयाए, फार्मिदिए ओगाहणद्वयाए संसेज्युणे । पएसद्वयाए-सञ्चरथोवे बेइंदियाणं जिब्सिदिए पएसद्वयाए, फासिन्दिए संखेजगुणे । ओगाहणपएसहुयाए-सन्वत्थोने बेइंदियस्स जिब्सिदिए ओगाहणहुयाए, फामिन्दिए ओगाहणहुयाए संखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणहुयाएहिंतो जिन्मिदिए पएमद्वयाए अणंतगुणे, फासिन्दिए पएसद्वयाए संखेजगुणे । बेहन्दियाणं भंते ! जिब्सिन्दियस्स केबह्या कनखडगरुयगुणा पक्ता ? गोयमा ! अणंता । एवं फासि-न्दियस्स बि, एवं मजयलहुयगुणा वि। एएसि ण भंते ! बेहन्दियाणं जिव्मिदिय-फासिन्दियाणं कम्बङगरुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाणं, कम्बङगरुयगुणाणं, मउयलहु-यगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा चेडन्दियाणं जिव्सिदियस्स कक्खडगरुयगुणा, फासिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगणा. फासिंदियरम कक्खडगरुमगुणेहिंतो तस्स चेव मजयरुहुमगुणा अर्णतगुणा, जिर्दिभ-दियस्स मजबलहबगुणा कर्णतगुणा । एवं जाव चलरिन्दियति, नवरं इंदियपरिनुष्टी कायव्या । तेइंदियाणं घाणिन्दिए थोवे, चउरिन्दियाणं चिवस्विदिए थोवे. सेसं तं चेव । पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं मण्साण य जहा नेरइयाणं, नवरं फासिन्दिए छव्यिहसंठाणसंठिए पन्नते । तंजहा-समचडरंसे निम्गोहपरिमंडले साई खुजे वामणे हंडे । वाणमंतरबोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ४३६ ॥ प्रहाइं संते ! सहाई सुणेह, अपुद्वाइं सहाई सुणेह ? गोयमा ! पुट्ठाइं सहाई सुणेह, नी अपुद्वाई सहाई सुणेर । पुद्वाई भेते । स्वाई पासङ, अपुद्धाई० पासङ ! गोयमा ! नो पुद्वाई स्वाई पासइ, अपुद्धाई स्वाई पासइ । पुद्धाई मंते ! गंधाई अग्धाइ, अपुद्धाई गंधाई अस्थाइ १ गोबमा । पुद्राइं गंधाई अस्थाइ, नो अपुद्राइं॰ अस्थाइ । एवं रसाण वि फासाण वि, नवरं रसाइं अस्साएइ, फासाइं पिंडसंवेदेइ ति अभिलावो बायक्वो । पविद्वादं अंते । सहाइं सुगोइ, अपविद्वाइं सहाइं सुगोइ ? गोयमा । पविद्वाइं सहाइं सुगोइ, नो अपनिद्वाहं सहाइं सुणेड्, एवं अहा पुट्टाणि तहा पनिद्वाणि वि ॥ ४३० ॥ सोइन्दियस्स मं भंते ! केवइए विसए पक्ति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुरुस्स असंखेजहमागो, उद्दोसेणं बारसहिं जोबणेहिन्तो अच्छिणे पोनग्छे पुद्रे पविद्वारं

सहाई सुनेह । चिन्सन्दियस्स णं मंते ! केवइए विसए पक्ते ? गोयमा ! बहुण्येश्वं अंगुलस्स संखेजहमागो, उद्योसेणं साइरेगाओ जोयणसयसहस्साओ अच्छिणी पोम्गले अपुद्रे अपनिद्वाइं स्वाइं पासइ । घाणिन्दियस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्येणं अंगुलअसंखेजडमागो. उद्दोसेणं नवहिं जोयणेहिन्तो अच्छिणो पोग्गले पुढे पविद्वाइं गंभाइं अग्नाइ, एवं जिब्भिन्दियस्स वि फासिंदियस्स वि ॥ ४३८ ॥ अण-गारस्स णं भंते ! भावियप्पणो मारणंतियसमुखाएणं समोइयस्स जे चरमा णिजरापोम्गला, सहमा णं ते पोम्गला पण्णता समणाउसो !, सव्यं लोगं पि य णं ते ओगाहिसा णं चिद्वति ? हंता गीयमा ! अणगारस्य भावियप्पणी मारणंतिय-समुख्याएणं समोहयस्य जे चरमा णिजरापोग्गला. सहमा णं तं पोग्गला पण्यता समणाउसो !. सब्बं लोगं पि य णं ओगाहिता णं चिहंति । छउमत्थे णं भंते ! मणूसे नेसि णिजरापोमालाणं कि आणतं वा णाणतं वा ओमतं वा तुच्छतं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे । से केणद्वेणं मंते ! एवं व्याह-'छटमत्ये णं मण्से तेसि जिजरापोग्गलाणं णो किंचि आणतं वा णाणतं वा ओमतं वा मुच्छतं वा गरुयतं वा लहयतं वा जाणड पासइ'? गोयमा ! देवे वि य णं अत्थेगइए जे णं तेसिं णिजरापीम्गळाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणतं वा ओमतं वा तुच्छतं वा गरुवतं वा लहयतं वा जाणइ पासइ, से तेणहेणं गोयमा ! एवं युष्यह-छउमत्थे णं मणूसे तेसि णिखरापोगनलाणं णो किंचि आणतं वा जाव जाणइ पासइ, एवंसुहुमा णं ते पोरगळा पण्णता समणाउसो !, सन्त्रलोगं पि य णं ते ओगाहिना णं चिद्वंति ॥ ४३९ ॥ नेरङ्या णं भंते ! ते णिजरापोग्गला के जाणंति पासंति आहारेंति, उदाह न जाणंति न पासंति आहारेंति ! गोयमा ! नेरइया जिजरापोगगळे न जाजंति न पासंति आहारेंति. एवं जाव पंचिन्दियतिरिक्खजोषियाणं ॥ ४४० ॥ मणुसा णं भंते ! ते णिजरा-पोग्गले कि जाणंति पासंति आहारेंति, उदाह न जाणंति न पासंति आहारेंति? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारैति. अत्येगइया न जाणंति न पासंति आहारेंति । से केणड्रेणं मंते ! एवं वुषद्-'अत्येगद्या जाणंति पासंति आहारेंति, अत्येगड्या न जाणंति न पासंति आहारेंति' ? गोत्रमा ! मण्सा दविहा पश्चता । तंजहा-सिष्णभूया य असिष्णभूया य । तस्य णं जे ते असिष्णभूया ते णं न जाणंति न पासंति आहारेति । तत्य णं जे ते सम्बन्धा ते दुविहा पश्चता । तंजहा-उवउत्ता य अणुवउत्ता य । तस्य णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न आणंति न पासंति आहारेंति । तत्थ णं जे ते उक्उता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति. से एएणदेणं

गोयमा ! एवं बुचइ-'अत्येगइया न जाणंति न पासंति आहारेंति, अत्येगइया जाणंति पासंति आहारेंति'। वाणमंतरजोडसिया जहा नेरहया ॥ ४४१ ॥ वेमा-षिया णं मंते ! ते पिजरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति ? जहा मणूसा । नवरं वेमाणिया द्विहा पन्नता । तंजहा-माइमिच्छहिडीउववण्णगा य अमाइसम्म-हिद्रीउववण्णगा य । तत्य णं जे ते माइमिच्छहिद्रीउववण्णगा ते णं न जाणंति न पासंति आहारैति. तत्थ णं जे ते अमाइसम्महिद्रीउववण्णगा ते द्विहा पनता। तंजहा-अणंतरोववण्णमा य परंपरोववण्णमा य । तत्य णं जे ते अणंतरोववण्णमा ते णं न जाणंति न पासंति आहारित । तत्थ णं जे ते परंपरोबवण्णा ते दुविहा पनता । तंजहा-पजतगा य अपजतगा य । तत्थ णं जे ते अपजतगा ते णं न जाणंति न पासंति आहारेंति । तत्य णं जे ते पजनगा ते दुविहा पनता । तंजहा-उवडता थ अणवस्ता य । तत्य पं जे ते अणवस्ता ते णं न जाणंति न पासंति आहारेंति. तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति. से एएणहेणं गोयमा । एवं वृत्तह-'अत्येगह्या जाणंति जाव अत्येगह्या आहारेंति ॥ ४४२ ॥ अहायं भंते ! पेहमाणे मण्से अहायं पेहड़, अताणं पेहड़, पिलभागं पेहड़ ? गोयमा ! अहार्य पेष्ठइ, नो अप्पाणं पेढइ, पिलमागं पेष्ठइ। एवं एएणं अभिलावेणं असि मणि दुई पाणियं तेहं फाणियं ॥ ४४३ ॥ कंबलसाडए णं संते ! आवेदियपरिवेदिए समाणे जावड्यं उनासंतरं फुसिना णं चिद्धड विरक्षिए वि समाणे तावह्यं चेव उवासंतर फिल्ता मं चिद्रह ? हंता गोयमा! कंबलसाडए मं आवेहियपरिवेहिए समाणे जावहरं तं चेव । भूणा णं भंते ! उन्नं कविया समाणी जावहरं खेतं ओगाहड्ता मं चिद्रह, तिरियं पि य णं आयया समाणी तावइयं चेव खेतं ओगाह-इसा णं खिद्रह ? हंता गोयमा ! थूपा णं उन्हें करिया तं चेव जाव खिद्रह ॥ ४४४ ॥ आगासचिगाले णं भंते ! किणा फुडे, बहुद्दि वा काएहि फुडे ? कि धम्मत्विकाएणं फ़र्डे. घम्मत्विकायस्य देसेणं फुर्डे. धम्मत्विकायस्य प्राप्तीहें फुर्डे ? एवं अधम्मत्वि-काएणं, आगासत्यकाएणं एएणं भएणं जाव पुढविकाएणं फुडे जाव तसकाएणं. अद्वासमएणं फुडे ?, गोयमा ! धम्मत्यिकाएणं फुडे, नो धम्मत्यिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्यकायस्य पएसेहिं फुडे, एवं अधम्यत्यिकाएण वि, नो आगासत्यिकाएणं फुडे, आगासत्यकायस्य देसेणं फुडे, बागासत्यकायस्य पएसेष्टिं जाव वणस्सइ-काएणं फुढे, तसकाएणं सिय फुढे, सिय नो फुढे, अद्वासमएणं देसे फुढे, देसे नो फुडे। जंबरीये में मंदी शिवे किया फुडे ! कहाई या काएडी फुडे ! कि सम्मारियका-एमं जान कागासत्यकाएमं फ्रो॰ १, गीमसा ! वो बस्मत्यकाएमं फ्रेडे, बस्मत्यि-२७ स्ताक

कायस्स देसेणं फुढे, चम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि आगासत्थिकायस्स वि, पुढविकाएणं फुढे जाव वणस्सइकाएणं फुढे, तसकाएणं सिय फुडे सिय णो फुडे, अदासमएणं फुडे। एवं रूवणसमुद्दे, धायहसंडे दीवे, कालोए समुद्दे, अस्मितरपुक्खरदे । बाहिरपुक्खरदे एवं चेव, नवरं अद्धासमण्णं णो फुडे । एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे । एसा परिवाडी इमाहि गाहाहि अणुगैनव्या, तंत्रहा--''जंबुहीबे लनणे घायइ कालोय पुक्लरे चरुणे । खीरघयसोयणंदि य अरुगवरे कुण्डले स्थए ॥ १ ॥ आभरणवत्थगंधे उप्पलतिलए य पडमनिहिरयणे । बासहरदहनईओ विजया वक्खारकिपदा ॥ २ ॥ कुरु मंदर आनासा कूडा नक्खत-चंदसूरा य । देवे णागे अक्खे भूए य सर्यभुरमणे य ॥ ३ ॥ एवं जहा बाहिर-पुक्खरदे मणिए तहा जाव सयंभूरमणसमुद्दे जाव अद्धासमएणं नो फुडे ॥ ४४५ ॥ लोगे णं मंते ! किंणा फुडे ? क्झिंह वा काएहि॰ ? जहा आगासिबगाले । अलोए णं मंते ! किंगा फुडे, कड़िं वा काएहिं पुच्छा । गोयमा ! नो धम्मत्यिकाएणं फुडे जाव नो आगासस्थिकाएणं फुडे, आगासस्थिकायस्स देसेणं फुडे, नो पुटवि-काएणं फुडे जाव नो अद्धासमएणं फुडे । एगे अजीवदव्यदेसे अगुरूठहुए अणंतेहिं अगुरुरुद्वगुणेहिं संजुत्ते सन्वागासअणंतभागूणे ॥ ४४६ ॥ पश्चवणाप भगवईप पन्नरसमस्य इंदियपयस्य पदमो उद्देशो समचो ॥

इंदियउवचय १ णिव्यसणा २ य समया भवे असंखेजा ३ । लदी ४ उचओगद्धं ५ अप्पाबहुए विसेसिंहिया ६ ॥ ओगाहणा ७ अवाए ८ ईहा ९ तह वंजणोगाहे १० चेव । दिविदिय ११ भाविदिय १२ तीया बद्धा पुरक्खिड्या ॥ क्हिविहें
ण भेते ! इंदियउवचए पन्नते १ गोयमा ! पंचिवहें इंदियउवचए पन्नते । नंजहा—
सोइंदियउवचए, चिक्किदियउवचए, घाणिदियउवचए, जिब्मिन्दियउवचए, फासिन्दियउवचए । नेरह्याणं भंते ! कहिवहें इन्दिखोवचए पन्नते १ गोयमा ! पंचिवहें
इन्दिकोवचए पन्नते । तंजहा—सोइंदियउवचए जाव फासिन्दियउवचण, एवं जाव
वेमाणियाणं । जस्स जह इन्दिया तस्स तहिवहों चेव इन्दियउवचलों भाणियच्यो
१ । कहिवहां णं भंते ! इन्दियनिव्यसणा पन्नता १ गोयमा ! पंचिवहां इन्दियनिव्यसणा
ण पन्नता । तंजहा—सोइन्दियनिव्यसणा जाव फासिन्दियनिव्यसणा । एवं नेरहयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जह इन्दिया अत्यि० २ । सोइन्दियनिव्यसणा
ण भंते कहत्मसऱ्या पन्नता १ गोयमा ! असंखिज्यइसमझ्या अंतोमुहुत्तिया पन्नता,
एवं जाव फासिन्दियनिव्यसणा । एवं नेरह्याणं जाव वेमाणियाणं ३ । कहविहां णं
भंते कहत्मसऱ्या पन्नता १ गोयमा ! असंखिज्यइसमझ्या अंतोमुहुत्तिया पन्नता,
एवं जाव फासिन्दियनिव्यत्तणा । एवं नेरह्याणं जाव वेमाणियाणं ३ । कहविहां णं
भाते ! इन्दियस्वित्यत्वत्ता । एवं नेरह्याणं जाव वेमाणियाणं ३ । कहविहां णं

न्दिंगलदी जाव फासिन्दियलदी। एवं नेरङ्याणं जाव वेमाणियाणं, भवरं अस्स जह इन्दिया अत्थि तस्स तावहया भाषियथ्वा ४ । कहविहा णं भंते ! इन्दियजव-कोगदा पत्रता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियउवओगदा पत्रता । तंत्रहा-सोइन्दिय-उपओगदा जाव पासिन्दियउवओगदा । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जह इन्दिया अत्थि० ५॥ ४४०॥ एएसि णं भंते ! सोइन्दियचिक्सन्दियघाणि-न्दियजिद्धिभदियफासिन्दियाणं जहण्णयाए उवओगद्धाए उक्कोसियाए उवओगद्धाए जहण्यक्रोसियाए उवओगद्धाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! सव्वत्योवा चिक्सिन्दियस्य जहण्णिया उवओगद्धा, सोइन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसे-साहिया, घाणिन्दियस्य जहाँण्णया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्बान्दियस्य जह-रिणया उवओगदा विसेमाहिया, फार्सिन्दियस्य जहुण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, उद्योसियाए उवओगद्धाए-सञ्बत्योवा चिन्तिन्दियस्य उद्योसिया उवओगद्धा, मोइ-न्दियस्स उद्योतिया उवभोगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्दियस्स उद्योतिया उवओगद्धा विसेसाहिया. जिब्बान्दियस्म उक्कोसिया उक्कोगद्धा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जहण्णउक्कोसियाए उवओगद्धाए-सव्वत्थोवा चिविर्वान्दयस्य जहाँण्णया उवओगद्धा, सोहन्दियस्य जहाँण्णया उवओगद्धा विसेसा-**उहिया, घाणिन्दियस्स जहाण्यया उवशोगदा विसेसाहिया, जिन्मिन्दियस्स जहाण्याया** उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिदि-यस्स जहणियाहिंतो उवओगद्धाहिंतो चर्निसदियस्स उद्योसिया उवओगद्धा विसे-साहिया. सोइंदियस्स उक्कोसिया उवस्रोगदा विसेसाहिया, घाणिदियस्स उक्कोसिया उवओगदा विसेसाहिया, जिब्बिदियस्स उक्कोसिया उवओगदा विसेसाहिया. फार्सि-दियस्स उद्योसिया उवन्त्रोगदा विसेसाहिया ॥ ४४८ ॥ कड्विहा णं भंते ! इंदिय-ओगाष्ट्रणा पनता ? गोयमा ! पंचिवहा इंदियओगाहणा पनता । तंजहा-सोइंदिय-ओगाहणा जाब फासिंदियओगाहणा, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अतिष ० ६ ॥ ४४९ ॥ कड़ियहे ण मंते ! इंदियअवाए पकते ? गीयमा ! पंचिष्ठे इंदियअवाए पश्चते । तंजहा-सोइंदियअवाए जाव फासिंदियअवाए । एवं नेरहगाणं जाव वेसाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि० ७। व्हविहा मं भंते ! इंहा पक्ता ? गोयमा ! पंचित्रा ईहा पक्ता । तंजहा-सोइंदियईहा जाव फार्नि-दिस्बेहा । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया० ८ । कहविहे णं भंते ! उमाहे पक्ते ! गोयमा ! दुविहे उम्महे पक्ते । तंत्रहा-अत्योग्महे य वंत्रणोमाहे य । चंत्रफोसाडे जं संते ! कहबिडे पक्ते ? गोयमा ! चडव्यिहे पक्ते । तंत्रहा- सोइंदियनंजणोग्गहे, चाणिदियनंजणोग्गहे, जिथ्मिदियनंजणोग्गहे, फासिदियनंजणो-माहे । अत्योगाहे णं भंते । कडबिहे पश्चते ? गोयमा ! छन्विहे पश्चते । तंजहा-सोइंदियअत्योगाहे, चर्निसदियअत्योगाहे, घाणिदियअत्योगाहे, जिब्मिदियअत्यो-माहे. फासिंदियअत्योग्गहे. नोइंदियअत्योग्गहे ॥ ४५० ॥ नेरइयाणं भंते ! न्हिविहे उमाहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे उमाहे पन्नते । तंजहा-अत्योगाहे य वंजणोगाहे य । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कहविहे उगाहे पन्नते ? गोगमा ! दुविहे उगाहे पन्नते । तं०-अत्योगाहे य वंजणोगाहे य । पुर्वावकाड्याणं भंते ! वंजणोरगहे कडविहे पश्चते ? गोयमा ! एगे फार्मिदियवंज-णोग्गहे पसते । पढिविदाडयाणं भंते ! कडविहे अत्थोग्गहे पसते ? गोयमा ! एगे फान्पिदियअत्योगाहे पन्ते । एवं जाव वणस्सहकाइयाणं । एवं वेइंदियाण वि नवरं बेहंदियाणं वंजणोग्गहे दुविहे पश्चते, अत्थोग्महे दुविहे पश्चते, एवं तेइंदियच-उरिदियाण वि, नवरं इंदियपरिवृद्धी कायव्या । चउरिदियाणं वंजणीमाहे तिविहे पन्नते, अत्योगगहे चडव्विहे पन्नते, सेसाणं जहा नेरझ्याणं जाव वेसाणियाणं ९-१०॥ ४५१ ॥ बहविहा णं भेते ! इंदिया पन्नता ! गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-दिनिदिया य भाविदिया य । बद्ध णं भेते ! दिनिदिया पश्चमा ? गोयमा ! अद्र दर्विदिया पन्नना । तंजहा-दो मोत्ता, दो णेता, दो घाणा, जीहा, फासे । नेरहयाणं भंते ! वह दब्बिंदिया पन्नता ? गोयमा ! अद्व एए चेव. एवं असरक्रमाराणं जाव थणियकुमाराण वि । पुढविकाइयाणं भेते ! कह दब्बिदिया पक्षला ? गोयमा ! एगे फासिदिए पन्नते । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं भंते ! कुड दब्वि-दिया पन्नता ? गोयमा ! दो दर्बिदिया पन्नता । तंजहा-फासिंदिए य जिब्सिंदिए य । तेईदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चतारि दक्षिदिया पश्चता । तंजहा-दो घाणा. र्जाहा, फासे । चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! छ दब्बिंदिया पद्मता । तंजहा-द्रो णेता, दो घाणा, जीहा, फासे। सेसाणं जहा नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं ॥ ४५२ ॥ एगमेगस्स णं भंते ! नेरडयस्स केषड्या दक्षिंदिया अतीता ? गोयसा ! अणंता । केवऱ्या बदेखमा ? गोयमा ! अह । केवड्या प्रेक्खडा ? गोयमा ! अह वा सोलस वः मत्तरम वा संखेजा वा असंखेजा वा अगंता वा । एगमेगस्स णं मंते ! अग्रर-कुमारस्स केवइया दब्बिदिया अतीता ? गोयमा ! अर्णता । केवइया बद्धेह्नगा ? गो० ! अह । केवहया पुरेक्साडा ? मो० ! अह वा नव वा सत्तरस वा संखेजा वा असं-खेळा वा अणंता वा। एवं जाव थणियकमाराणं ताव भाणियक्वं। एवं प्रविकादया आउकाइया वणस्सङ्काइया वि, नवरं केवइया बद्धावनत्ति पुच्छाए उत्तरं एके फासिन

दियहव्विदिए । एवं तेउकाइयवाउकाइयस्स वि, नवरं पुरेक्खडा नव वा दस वा । एवं बेईदियाण वि, णवरं बद्धेश्चगुच्छाए दोण्णि । एवं तेईदियस्स वि, नवरं बद्धे-क्रमा चतारि । एवं चउरिदियस्य वि, नवरं बद्धेक्षमा छ । पंचिदियतिरिक्खजोणिय-मणुसवाणमंतर जोइसियसोहरूमीसाणगदेवस्स जहा अयुरकुमारस्स, नवरं मणुसस्स पुरेक्खडा कत्सइ अत्थि करसइ णत्थि, जस्सत्थि अद्भवा नव वा संखेजा वा असं-खेळा वा अणंता वा । सणंकुमारमाहिंदबंभलंतगद्यक्षसहस्सारआणयपाणयआरणअ-च्यगेवेजगदेवस्स य जहः नेरइयस्स । एगमेगस्स णं भंते ! विजयवेजयंतजयंतजय-राजियदेवस्त केवड्या दब्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवड्या बद्धेक्रगा ? गां० ! अट्ट, केवडया पुरेक्खडा ? गो० ! अट्ट वा सोलस वा चउचीसा वा संखेजा वा, सव्बद्धसिद्धगदेवस्य अतीता अणंता, बद्धेत्वगा अहु, पुरेक्खडा अहु । नेरइयाणं भंते ! केवहया दव्विदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवहया बदेखा ? गोयमा! असंखेजा, केवहया प्ररेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाब गेवेजगदेवाणं, नवरं मणुमाणं बद्धेन्नगा सिय संखेजा, सिय असंखेजा । विजयवेजयंतजयंतअपराजियदे-वाणं पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणंता, बद्धेक्षमा असंखेजा, पुरेक्खडा असंखेजा । सन्बद्धसिद्धगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणंता, बद्धेहगा संकेजा, पुरेक्सडा संखेजा ॥ ४५३ ॥ एगमेगस्स णं अंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया दन्तिदिया अतीता ? गोयमा ! अर्णता, केन्द्रया बद्धेलगा ? गोयमा ! अट्ट, केन्द्रया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कसाइ अस्यि कसाइ नत्यि, अस्तत्यि अद्व वा सोलस वा चउवीसा वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा। एगमेगस्स णं भेते! 'नेरइयस्स अगुरकुमारते केवइया दर्विदिया अतीता ? गोयमा ! अर्णता, केवइया बद्धेह्नमा ? गोयमा ! णरिय, केवहवा पुरेक्खडा ? गोयमा ! करसङ् अस्यि करसङ् नरिय, जस्सत्य अद्भ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा। एवं जाव थणियकुमारति । एगमेगस्स णं भंते ! नेरहयस्स पुढविकाइयत्ते केवडया दिविदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बढेलगा ? गोयमा ! जिल्ल, केवह्या प्रेक्सडा ? गोयमा ! करसइ अत्य करसइ नत्य, जरसत्य एको वा दो वा तिष्णि वा सेवेजा वा असंकेजा वा अर्थता वा. एवं जाव वणस्सइकाइ अते । एगमेगस्स णं मंते ! नेर्इयस्स बेइन्दियत्ते केवह्या दक्षिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवहया बदेहमा ? गोयमा ! षत्य, केवहया पुरेक्खडा ? गोयमा ! करसड अस्यि करसइ नत्यि, जस्सत्यि हो ना चतारि वा संखेजा वा असंखेजा वा अगंता वा । एवं तेइन्दिक्ते वि. नवरं प्ररेक्खडा चतारि वा शह वा वारस वा

संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एवं चडरिंदियते वि, नवरं पुरेक्खडा छ वा बारस वा अद्वारस वा संबेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । पंचिदिगतिरिक्ख-जोणियत्तं जहा अभुग्कुमारते । मणूसने वि एवं चेव नवरं केवह्या पुरेक्खडा ? गो० ! अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा। सन्वेसिं मणूसवजाणं पुरेबन्बडा मणूनमें कस्सइ अस्यि कस्सइ नित्य एवं न बुष्टह । वाण-मंतरजोइसियसोहरूमग जाव गेवेजगदेवते अतीता अणंता, बढेळगा निध, पुरे-क्खडा करसङ् अस्थि करमड नित्थ, जस्म अस्थि अद्व वा सोलय वा चउनीसा वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्म विजयवेजयं-तज्ञयंत्रअपराजियदेवते केवड्या दिव्विदिया अतीता ! गो॰! णित्थ, केवड्या पुरे-क्खटा ! गो॰! करमइ अत्थि करमइ निध, जस्स अत्थि अह वा सोलम वा, सन्बद्धसिद्धगदेवने अनीना णात्य, बद्धेक्ष्मा णात्य, पुरेक्खडा कस्सइ अत्य कस्सइ णित्य. जस्म अस्य अद्र । एवं जहा नरडयदंडओ नीओ तहा असुरक्रमारेण वि नेयव्यो जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिएणं, नवरं जरूम सद्धाणे जड् बद्धेष्टमा तस्म तड् भाषियव्या ॥ ४५४ ॥ एगमेगस्य णं भंते ! मण्यस्य नेरइयने केवइया दर्व्विदयः अतीता ! गोयमा । अणंता, केवस्या बद्धास्मा ! गो॰ ! णत्यि, केवस्या पुरेक्खडा ! गो॰! करसइ अस्यि कस्मइ नस्थि, जस्मत्थि अद्भुवा मोलस वा चउवीसा वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एवं जाव पंचित्रियतिरिक्खजोणियते, नवरं एगिदियविगरिंदिएम् जस्रा जर्इ पुरैक्खडा तस्रा तत्तिया भाणियव्या । एगमेगस्य णं भंते ! मणूसस्य मणूसत्ते केवहया दिर्धिदया अतीता ? गोयमा ! अणंता. केवड्या बद्धेहमा ? गोत्रमा ! अद्र. केवड्या पुरेक्खडा ? गो॰ ! कस्सइ अस्थि करनइ नित्थ, जस्मित्थ अहु वा सोलस वा चउवीसा दा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । वाणमंतरजोइसिय जाव गेवेज्बगदेवते जहा नेरइयते । एगमेगस्स णं भंते ! मणसस्स विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवते केवहया दब्बिदिया अतीता ? गोयमा ! करसङ् अत्थि करसङ नत्थि. जस्स अत्थि अद्भ वा सोलस वा । केवहया बदेख्या १ गो०! नश्यि केवड्या परेक्खडा १ गो०! कस्सइ अत्य कस्सइ नत्य, जरमर्रात्य अद्भवा सोलय वा । एगमेगस्स णं भेते ! मणूसस्य सम्बद्धसिद्धगवेवते केवइया दार्विदिया अतीता ! गोयमा ! करसङ अत्थ करसङ नत्थि, जस्सित्थ अट्ट. केवइया बद्धेलगा? गो०! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा? गो०! कस्सइ आंध्य कस्पद्ध नृत्यि, जस्य अत्य अद्ध । वाणमंतरजोडसिए जहा नेरहए । सोहम्मगदेवे वि जहा नंरहए, नवरं सोहम्मगदैवस्स विजयवेजयंतज्ञयंतापराजियत्ते केवहया अवीता ?

गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नित्य, जस्स अत्थि अद्व, केवइया बद्रेह्वगा ? गो० ! णत्थि. केवइया प्ररेक्खडा ? गोयमा ! करसइ अत्थि करसइ नत्थि, जस्स अत्थि अह वा मोलस वा। सञ्बद्धसिद्धगदेवते जहा नेरइयस्स, एवं जाव गेवेजगदेवस्स सञ्बद्ध-सिद्धगदेवते ताव णेयव्वं ॥ ४५५ ॥ एगमेगस्स णं मंते ! विजयवेजयंतजयंतापराजि-यदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दब्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बदेखगा ? मो॰! णत्थि. केवइया पुरेक्खडा ? गो॰! णत्थि। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ते। मगृसत्ते अतीता अणंता, बदेहमा गरिथ, पुरेक्खडा अद्र वा सोलस वा चउबीसा वा संखेजा वा । वाणमंतरजोडमियते जहा नेरइयते । सोहम्मगदेवतेऽतीता अणंता. बदेखमा णित्थ, परेक्खडा ऋसड अत्थि कस्सड नित्य, जस्स अत्थि खद वा सोलम वा चडवीसा वा संखेजा वा। एवं जाव गेवेजगदेवते। विजयवेजयंतजयंत-अपराजियदेवते अतीता करमङ अत्य करसङ नत्थि. जस्स अत्य अड. केवडया बहे-हमा १ मो०! अद्भ, केवद्या पुरेक्खडा १ मो०! कस्सइ अत्थि करसइ नत्यि, जस्स अत्थि अद्र । एगमेगस्स णं भंते ! विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवस्स सव्यद्वसिद्धगदेवते केवडया दर्जि दिया अतीता ! गीयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेलगा ? गो०! नत्थि, केवइया पुरेक्कडा १ गो०! करसङ अत्थि करसङ णत्थि, जस्स अत्थि अह । एगमेगस्स णं अंते ! मञ्बद्धमिद्धगदेवस्स नेरहयत्ते केवड्या दर्जिदिया अतीता ? गोयमा । अर्णता केवड्या बदेहागा ! गो० ! पत्थि. केन्ड्या पुरेक्खडा ? गो० ! पत्थि । एवं मणसवजं जाव गेवेजगदेवते, नवरं मणूसते अतीता अणंता, केवड्या बढेळगा ! गो० ! णत्यि, केवड्या प्रांक्खडा १० अद्र । विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवने अतीता कस्सइ अत्य कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थ अद्भ, केवड्या बद्धेल्लगा ? गो०! णत्थि, केवड्या परेक्खडा ? गो०! णत्थि । एगमेगस्स मं भेते ! सब्बद्धसिद्धगदेवस्स सब्बद्धसिद्धगदेवते केवड्या दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! णित्य, केवड्या बदेह्मगा ? गो०! अहू, केवड्या पुरेक्खडा ? गो०! णित्थ ॥ ४५६॥ नेरइयाणं मंते ! नेरइयत्ते केवइया दर्व्विदिया अतीता ? गीयमा ! अर्णताः, केवहया बदेहरगा? गो० | असंखेजाः, केवहया प्ररेक्खडा ? गो० | अर्णताः। नेरड-याणं भेते ! असरकमारते केवड्या दक्षिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवड्या बदे-ह्मगा ? मो । पत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गो ० ! अणंता, एवं जाव गेवेख्वगदेवते । नेर-इयाणं भंते । विजयवेजयंतज्ञयंतअपराजिजदेवने केवड्या दक्षिदिया अतीता १० नत्यि. केवड्या बद्धेत्वना १० वात्या, केवड्या प्ररेक्खडा १० असंखेळा. एवं सव्बद्धसिद्धगरेकते वि. एवं जाव पंचिदियतिरिक्सजोनिया सम्बद्धसिद्धगदेवते माणियव्यं. नवरं वण-स्सडकाड्याणं विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवते सम्बद्धसिद्धगदेवते य प्ररेक्सडा

अगंता. सञ्बेसि मणूससव्बद्धसिद्धगवजाणं सद्वाणे बदेखगा असंखेजा, परद्वाणे बढेलगा णत्य । वणस्सइकाइयाणं बढेलगा अणंता । मणूसाणं नेरहयत्ते अतीता अणंता, बद्धेक्रमा णस्थि, पुरेक्खडा अणंता । एवं जाव गेवेजगदेवते, नवरं सद्वाणे अतीता अणंता, बद्धेश्वना सिय संखेजा सिय असंखेजा, प्रेक्सडा अणंता । मणसाणं भंते । विजयवेजगंतअपंतअपराजियदेवने केवड्या दर्विदिया अतीता ?० संखेजा. केवइया बढेळगा १० णत्थि, केवइया परेक्खडा १० सिय संखेजा सिय असंखेजा । एवं सम्बद्धसिद्धगढेवते अतीता णत्थि, बद्धेक्ष्मा णत्थि, प्रोक्खडा असंखेजा, एवं जाव गेवेजगढेवाणं । विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवाणं भंते ! नेरइयने केवइया द्वि-दिया अतीता १ गोयमा ! अणंता. केवड्या बढेलगा १० णत्यि. केवड्या प्रदेक्खडा १० णत्य । एवं जाव जोइसियत्ते वि. णवरं मणूसत्ते अतीता अणंता. केवड्या बदेखना १० णत्थि. प्रेक्खडा असंखेजा । एवं जाव गेवेजगदेवते सद्वाणे अतीता असंखेजा. केवड्या बदेख्या १० असंबेजा, केवड्या पुरेक्खडा १० असंबेजा। सध्वद्रसिद्धगदेवते अतीता नत्थि. बद्धेक्ष्मा नत्थि, पुरेक्खडा असंखेजा । सम्बद्धसिद्धगदेवाणं भेते ! नेरडयत्ते केवड्या दक्षिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता. केवड्या बद्धेख्या ?० नित्य. केवड्या परेक्खडा १० णत्य । एवं मणुसवजं ताव गेवेजगदेवते । मणुस्सते अतीता अणंता. बद्धेक्षमा नत्य. प्रेक्खटा संसेजा। विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवते केवइया द्विंदिया अतीता १० संखेजा, केवइया बद्धेलगा १० णत्य, केवइया परे-क्खडा १० णात्य । सम्बद्धसिद्धगदेवाणं भंते । सम्बद्धसिद्धगदेवले केवड्या दर्ब्बिटिया अतीता १० णत्थि, केवस्या बढेळगा १० संखेजा, केवस्या प्रोक्खडा १ गो० ! णत्थि ११॥ ४५०॥ कड णं भंते ! मानिंदिया पक्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पन्नता । तंजहा-सोइंदिए जाव फासिदिए । नेरझ्याणं भंते ! कह भाविदिया पन्नता ? गोयमा! पंच भाविंदिया पषता । तंजहा-सोइंदिए जाब फासिंदिए । एवं जस्स जड इंदिया तस्स तह भाषियव्या जाव वेमाणियाणं । एगमेगस्स णं भंते ! नेरहयस्स केवड्या भाविदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केबड्या बद्धेक्षमा ?॰ पंच, केवड्या पुरेक्खडा १० पंच वा दस वा एकारस वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एवं असुरकुमारस्स वि, नवरं पुरेक्सडा पंच वा छ वा संखेळा वा असंखेळा वा अणंता वा । एवं जाव यणियकुमारस्स वि । एवं पुढविकाइयुक्तानुकाइयुक्तास्सङ्काइयुक् स्स वि. बेइंदियतेइंदियवर्डोर्दियस्स वि । तेउकाइयवाउकाइयस्स वि एवं चेव, नवरं परेक्खडा छ वा सत्त वा संखेजा वा असंखेजा वा असंता वा । पंचिदियतिस्थल-जोणियस्य जाव ईसाणस्य जहा अग्रुरकुमारस्य, नवरं मण्सस्य पुरेक्षाहा कर्साह

अत्य कसाइ निवित्ति भाषियव्यं । सर्णकुमार जाव गेबैजनस्स जहा नेरहयस्स । विजयवेजयंतजयंतजपराजियदेवस्स अतीना अणंता. बदेख्ना पंच, पुरेक्सहा पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेळा वा। सन्बद्धसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेश्लगा पंच, केवहया प्रेक्खडा १० पंच । नेरहयाणं भंते ! केवहया भाविदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केन्द्रया बद्धेक्रमा १० असंखेजा, केन्द्रया पुरेक्सडा १० अणंता । एवं जहा दिविदिएस पोहतीणं दंडओ भणिओ तहा भाविदिएस वि पोहतीणं दंडओ भाणियव्यो. नवरं वणस्सङ्काङ्याणं बदेख्या अणंता ॥ ४५८ ॥ एगमेगस्स णं मंते ! नेरइयस्त नेरइयत्ते केवडया भाविदिया अतीता ? गोयमा ! अर्णता, के॰ बद्धे-हुगा १० पंच, परेक्खडा इस्सड अत्य कत्सड नत्यि, जस्स अत्यि पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एवं असुरकुमाराणं जाव यणियकुमाराणं, नवरं बढेळगा नत्य । पुरुविकाइयते जाव वेइंदियते जहा दिव-दिया । तेइंदियते तहेव, णवरं पुरेक्सडा तिण्णि वा छ वा णव वा संसेजा वा असंबेजा वा अणंता वा। एवं चउरिंदियते वि, नवरं पुरेक्खडा चतारि वा अडू वा बारस वा संखेजा वा असंखेजा वा अगंता वा । एवं एए चेव गमा चतारि जागे-यव्या जे चेव दक्विदिएस. णवरं तहयगमे जाणियव्या जस्स जह इंदिया ते पुरेक्खडेसु मुणेयव्या । चटत्यगमे जहेव द्विविदया जाव सम्बद्धसिद्धगदेवाणं सञ्बद्धसिद्धगढेवते केवहया भाविदिया अतीता ?० नत्थि, के० बढेलगा ?० संखेळा के॰ पुरेक्खडा ?॰ णत्य ॥ ४५९ ॥ समसो बीओ उद्देसो ॥ पश्चमणाप भगवर्ष्य पद्मरसमं इन्दियपयं समसं ॥

 पन्नते । तंजहा-ओरालियसरीरकायप्यक्षोगे, ओरालियमीससरीरकायप्यक्षोगे, कम्मामरीरकायपक्षोगे य । एवं जाव वणस्सङकाडयाणं. नवरं वाउकाइयाणं पश्च-बिहे पओगे पक्तो। तंजहा-ओरालिय॰ कायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्प-ओंगे, वेडव्विए दुविहे, कम्मासरीरकायप्रओंगे य । बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चडिवहे पओगे पन्नते । तंजहा-अमबामोसवइप्पओगे, ओरालियसरीरकायप-ओगे. आरालियमिस्ससरीरकायप्पओगे. कम्मासरीरकायप्पओगे। एवं जाव चडरिं-दियाणं । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! तेरसविहे पश्रोगे पश्चते । तंजहा—सम्मणप्यओगे. मोसमणप्यओगे. सम्मामोसमणप्यओगे. असम्मामोसमण-प्यओगे. एवं वर्ष्पओगे वि. ओराहियमरीरकायप्पओगे. ओराहियमीससरीरकाय-प्यञ्जाने, वेडवित्रयमरीरकायप्रओने, वेडव्यियमीसमरीरकायप्रओने, कम्मासरीर-कायप्यओगे । मणुसाणं पुच्छा । गोयमा ! पण्णरस्विष्ठे प्रओगे पन्नते । तंजहा---सम्मागप्पकारे जाव कम्मासरीरकायप्पञ्जारे । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरड्याणं ॥ ४६१ ॥ जीवा णं भेते ! कि सञ्चमणप्पओगी जाव कम्मा-मरीरकायपाओगी ? गोयमा ! जीवा सब्वं वि ताव होज सन्त्रमणपाओगी वि जाव वंडिव्यमीमसरीरकायप्पओगी वि कम्मामरीरकायप्यओगी वि १३ । अहवेगे य आहारगमगरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २. अहवेगे य आहारगमीससगरकायपश्चोगी य ३. अहवेगे य आहार-गर्मामसरीरकायप्यक्षोगिणी य ४ चउभन्नो । अहवेगे य आहारगसरीरकायप्य-ओगी य आहारगमीयसरीरकायप्यओगी य १. अहवेगे य आहारगसरीरकायप्य-ओगी य आहार गर्मा मासरीरकायप्पओगिणो य २. अहवेगे य आहार गसरीरकायप्प-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य ३. अहवेगे य आहारगसरीरकायप्य-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यक्रोगिणो य ४. एए जीवाणं अह १ ॥ ४६२ ॥ नेरडया णं भंते ! किं सम्मणप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्यओगी ११ ? गोयमा ! नेरइया सक्वे वि ताव होजा सन्त्रमणप्रक्षोगी वि जाह बेउविवयमीसासरीरकायप्रक्षोगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगी य-१. अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य २, एवं अमुरकुमारा वि जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाड्या णं भेते । कि ओरा-लियसरीरकायप्पञ्जोगी ओरालियमीसासरीरकायप्पञ्जोगी कम्मासरीरकायप्पञ्जोगी? गोयमा ! पढविकाइया औरालियसरीरकः यप्पक्षोती वि ओरालियमीससरीरकायप्र-ओगी वि कम्मासरीरकायप्यओगी वि, एवं जान वणप्पद्यकाइयाणं। णवरं शाउ-काइया वेडव्शियस्रीरकायप्पकोगी कि वेडव्शियमीसासरीरकायप्पकोगी वि । बेईवि-

क्षा णं भंते ! किं भौराळियसरीरकायप्यक्षोगी जाव कम्मासरीरकायप्यक्षोगी ? गोयमा ! बेहन्दिया सम्बे वि ताब होजा असवामोसुबडप्पओगी वि ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीससरीरकायप्यओगी वि. अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओणिणो य. एवं जाव चउरिंदिया वि । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहां नेरइया. नवरं ओरालियसरीरकायप्पओगी वि. ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी वि. अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगी य अहवेगे य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य ॥ ४६३ ॥ मणुसा णं भंते ! कि सन्तमणप्यओगी जाव कम्मासरीरकायप्यओगी ? गोयमा ! मणसा सब्दे वि ताव होजा सन्तमणपश्चोगी वि जाव ओरालियसरीर-कायप्पओगी वि. वेउन्वियमरीरकायप्यओगी वि. वेउन्वियमीससरीरकायप्यओगी वि, अहंबेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगी य, अहंबेंगे य ओरालियमीसासरीर-कायपओगिणो य २. अहवेगे य आहारगसरीरकायप्यओगी य, अहवेगे य आहारग-सरीरकायप्पञ्जोगिणा य २. अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पञ्जोगी य, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायणओगिणो य २. अहवेगे य कम्मगमरीरकायण्योगी य. अहवेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २. एए अह भंगा पत्तयं । अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायंपओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य १. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २. अहंबेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्रओगिणो य आहारममीसासरीरकायप्रश्लोगी य ३. अहवेगे य ओरालियमासासरीरकायप्पञ्जोनिणो य आहारमसरीरकायप्पञ्जोनिणो य ४ एवं एए वतारि भंगा, अडवेंगे य औरालियमी सासरीरकायप्यओगी य खाहारगर्मासा-सरीरकायप्पञ्जीमी य १, अहवेमे य ओरालियमीसासरीरकायप्पञ्जेमी य आहार-गर्मासासरीरकायप्यओगिणो य २. अहवेगे य ओराल्यिमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यक्षोगी य ३. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओ-गिणो य आहारगर्मासासरीरकायप्यओगिणो य ४ चतारि भंगा. अहवेगे य ओरालि-यमासासरीरकायप्रकोशी य कम्मासरीरकायप्रकोशी य १, अहवेगे य ओराहियमी-सासरीरकामपद्मोगी य कम्मासरीरकायपञ्जीमणो य २. अहवेगे ओरालियमीसा-सरीरकायप्पन्नोगिणो य कम्मासरीरकायप्पन्नोगी य ३, अहवेंगे ओराक्रियमीसा-सरीरकायप्यक्रोनिणो य कम्यासरीरकायप्यश्लोगिणो य ४ एए चतारि भंगा. अहवेसे य आहारगस्रीरकायण्यकोगी य आहारगमांसासरीरकायण्यकोगी य १. अहवेगे य आहारगसरीरकायपञ्जोगी य आहारगमीसासरीरकायपञ्जोनिणी य २. अहवेरी य आहारमसरीरकायपाओगिणो य आहारगमीसासरीरकायपाओगी य ३. अहबेगे य आहारगसरीरकायप्यभोगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यभोगिणो य ४ चतारि मंगा, अहवेगे य आहार गसरीरकायप्यजोगी य कम्मगसरीरकायप्यजोगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २. अहवेगे य आहार गसरीरकायप्यओगिणो य कम्मासरीरकायप्यओगी य ३. अहवेगे य आहारगसरीरकायप्यभोगिणो य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य ४ चटरो भक्ता. अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पकोगी य १. अहवेगे य आहारमभीसासरीरकायप्यओगी य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य र, अहवेरो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३. अहवेगे य आहारगर्मासासरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ४ चररो मझा, एवं चरव्वीसं भझा। अहवेरो य ओरालियमीनगसरीरकायपश्रोगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमामरीरकायप्यओगी य १. अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्यक्षोगी य आहारगसरीरकायप्यक्षोगी य आहारगर्मासा-सरीरकायप्यओगिणो य २. अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्यओगी य आहार-गमरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३. अहवेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पञोगी य आहारगमरीरकायप्पञ्जोगिणो य आहारगमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमीसांसरीरकायप्यओगी य ५. अहवेगे य ओरालियमीयासरीरकायप्यओगिणां य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमी-सासरीरकायप्यओगिणो य ६, अहवेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य ७. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओमिणो य आहारगसरीरकायप्यओगिणो य आहार-गमीनामरीरकायप्पओगिणो य ८ एए भद्र भंगा. अहवेगे य ओरालियमीसास-रीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १. अहवेगे य ओरालियमीसंासरीरकायप्यक्षोगी य आहारगसरीरकायप्यक्षोगी य कम्म-गसरीरकायप्यजोगिणो य २. अहवेंगे य सोराष्ट्रियमीसासरीरकायप्यजोगी य आहारगसरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगी य ३. अहवेगे य ओरा-लियमीसासरीरकायप्पक्षोगी य आहारगसरीरकायप्पक्षोगिको य कम्प्रायसरीरकाय-प्पओगिणो य ४. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पजोनिणो य आहारग-सरीरकायप्पओगी य कम्ममसरीरकायप्पओगी य ५, अहवेंगे व ओरालियमीसा-सरीरकायप्पक्षोगिणो य आहारगसरीरकायप्पक्षोगी व कम्मगसरीरकायप्पक्षोगिणो

य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायपओगिणो य आहारगसरीरकायप-ओमिणो य कम्मगसरीरकायप्योगी य ७, अहवेगे य ओराख्यिमीसासरीर-कायप्रभोगिणो य आहारगसरीरकायप्पत्नोगिणो य कम्मगसरीरकायप्पत्नोगिणो स ८, अहबेगे य ओरास्त्रियमीसासरीरकायण्यओगी य आहारगमीसासरीरकायण-ओगी य कम्मगसरीरकायप्पञ्जोगी य १, अहवेगे य ओराल्यिमीसासरीरकाय-प्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य २, अहवेरो य ओराल्यिमीसासरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्य-ओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगी य ३, अहंकी य ओरालियमीसासरीरकाय-प्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगर्मासासरीरकायप्य-ओगी य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ५, अहुवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्प-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायण्योगी य कम्मगसरीरकायप्योगी य ६. अहंवरे य ओरालियमीसासरीरकायपञ्जीगिणो य आहारगमीसासरीरकायपञ्जीगिणो य कम्मगसरीरकायपञ्जोगी य ७, अहवेंगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पञ्जोगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मामरीर-कायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीर-कायप्पक्षोगी य कम्मासरीरकायप्पञ्जोगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्प-ओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३. अहंदेंगे य आहारगसरीरकायप्पक्षोगी य आहारगमीसासरीरकायप्पक्षोगिणो य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य ४, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्यओविणो य आहारगमीसासरीरकायप्रकोगी य कम्मासरीरकायप्प्रकोगी य ५, अहूनेगे य आहारगसरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मगसरीर-कायप्पनोगिणो य ६, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पनोगिणो य आहारममीसा-सरीरकायप्रजीविको य कम्मासरीरकायप्रश्लोगी य ७, अहवेगे य आहारगसरीर-कायप्रभोगिणो स आहारगमीसासरीरकायप्प्रभोगिणो य कम्मासरीरकायप्प्रभोगिणो य ८। एवं एए तियसंजोएणं चत्तारि अह भंगा, सन्वे वि मिलिया बत्तीसं भंगा जामियव्या ३२। बहुवेरो य ओराक्रियमिस्सासरीरकायप्रकोगी य आहारगसरीर-कायप्यओशी य आहारगमीसासरीर्कायप्पक्षेगी य कम्मासरीर्कायप्पक्षोगी स १, अहवेगे व बोराव्यियीसासरीरकायप्पकोनी य आहारगसरीरकायप्पकोगी व

आहारगमीमासरीरकायप्यओगी य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य २, अहवेगे य औरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमीमा-मरीरकायपञ्जीमिणो य कम्मासरीरकायपञ्जोगी य ३. अहवेगे य ओरान्त्रिय-मीसासरीरकायपश्लोगी य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकाय-प्यओगिणो य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य ४. अहवेगे य ओरालियमीमास-रीरकायपओगी य आहारगसरीरकायपओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्प-ओगी य कम्मासरीरकायप्यओगी य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकाय-प्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य ६, अहवेगे य ओरालियमीमासरीरकायप्यओगी य अहारगसरीरकायप्यक्रोगिणो य आहारगर्मामासरीरकायप्यक्रोगिणो य कम्माम-रीरकायपञोगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीयासरीरकायपञोगी य आहारग-सरीरकायप्पञ्जीगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पञ्जीनिणो य कम्मासरीरकायप्प-ओगिणो य ८, अहवेगे य ओरालियमीसामरीरकायप्यओगिणो य आहारगसरीर-कायप्पओगी य आहारगमीसामरीरकायप्यओगी य कम्मासरीरकायप्यओगी य ९. अहवेगे य ओरान्त्रियमीसासरीरकायप्रकारिणो य आहारगसरीरकायप्रकारी य आहारगमीसामरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्यओगिणो य १०. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यकोगिणो य आहारगसरीरकायप्यकोगी य आहारगमी-सासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ११, अहवेगे य ओरालिय-मीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगसरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरका-यप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १२, अहवेगे य ओरालियमासास-रीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्प-ओगी य करमामरीरकायप्यओगी य १३. अहवेगे य ओराल्यिमीसासरीरकायप्प-ओनिणो य आहारगसरीरकायप्यओनिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मासरीरकायप्पओनिणो य १४. अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओनिणो य आहारगसरीरकायप्रश्लोगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्रश्लोगिणो य कम्मासरी-रकायप्यओगी य १५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारग-सरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य कम्मासरीरकायप्य-ओगिणो य १६ एवं एए चडसंजोएणं सोलस मंगा मवंति. सब्वेऽवि य णं संपि-हिया असीइ भंगा भवंति । वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा अयुरकुमारा ॥ ४५४ ॥ कड्विहे णं मंते ! गड्प्पबाए पक्षते ? गोयमा ! पंचविहे गड्प्पबाए पक्षते । तंजहा-

पओगगई १, ततगई २, बंधणक्रेयणगई ३, उववायगई ४, विहायगई ५ । से कि तं पञ्जोगगई ! पञ्जोगगई पण्णरसविहा पत्रता । तंजहा-सचमणपञ्जोगगई, एवं जहा पक्षोगो मणिको तहा एसा वि भाणियन्त्रा जाव कम्मगसरीरकायप्यओगगई । जीवार्ण भेते ! ब्हिबिहा प्रभोगगई प्रमुशा ? गोयमा ! प्रण्यसिवहा प्रमुशा ! तंजहा-सञ्चम-णप्पश्रीगगई जाव कम्मगसरीरकायप्पश्रोगगई। नेरहयाणं भंते ! कडविहा पश्रो-गगई पन्नता ? गोयमा ! एकारसविहा पन्नता । तंजहा-सम्मणप्पओगगई, एवं उवउज्जिन्म जस्स जडविद्या तस्स तडविद्या भाणियव्या जाव वेमाणियाणं । जीवा णं भेते ! सञ्चमणप्पओनगई जाव कम्मगसरीरकायप्पओनगई ? गोयमा ! जीवा सन्वं वि ताव होज सचमण पञ्जोगगई वि, एवं तं चेव पुन्ववण्णियं भाणियव्वं, भंगा तहेव जाव बेमाणियाणं. से तं पञ्जीगगई १॥ ४६५ ॥ से किं तं ततगई? ततगई जे णं जं गामं वा जाव सिण्यवेसं वा संपद्विए असंपत्ते अंतरापहे वहुइ, सेतं ततगई २ ॥ ४६६ ॥ से किं तं बंधणछेयणगई ? बंधणछेयणगई जीवी वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ. सेत्तं बंघणछेयणगई ३ ॥ ४६० ॥ से किं तं उबवा-यगई ? उथवायगई तिविहा फाता । तंत्रहा-खेतीववायगई, भवोववायगई, नोभवो-बवायगई । से किं तं खेलीबवायगई ? खेलीबवायगई पंचिवहा पश्चला । तंजहा-नेरहयखेतीववायगई १, तिरिक्खजोषियखेतीववायगई २, मणूसखेतीववायगई ३, देवखेत्तीववासगई ४, सिद्धखेतीववायगई ५ । से कि र्त नेरइयखेतीववायगई ? नेरइयसेत्रोववायगई सत्तविहा पक्ता । तंत्रहा-रयणप्पमापुढविनेरइयसेत्रोववायगई जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयखेत्रीववायगई। सेत्तं नेरइयखेत्रीववायगई १। से कि तं तिरिक्सजोणियसेत्तोववायगई ? तिरिक्सजोणियखेतीववायगई पंचविहा पश्चता। तंजहा-एगिदियतिरिक्खजोणियकेत्तोववायगं जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियकेतो-ववायगर्ड । सेसं तिरिक्सजोणियखेसोववायगर्ड २ । से कि तं मण्सखेसोक्वाय-गई ? मणूसखेत्तोववायगई द्विहा पश्ता। तंजहा-संमुच्छिममणूसखेत्तोववायगई, गञ्भवकंतियमणूसखेतोववायगई । सेर्त मणूसखेतोववायगई ३ । से कि तं देवखेतो-वबायमंद्रं ? देवखेलोवबायगंद्रे चटव्यिहा प्रकृता । तंजहा-अवणवर्द्र ० जाव वेमाणिय-देवलेशोबबाजगई । सेतं देवलेशोबबाजगई ४ ॥ ४६८ ॥ से कि तं सिद्धलेशोब-वायगई ? सिद्धकेलोक्याक्याई अणेगविहा पश्चता । तंजहा-जंबुहीवे कीवे भरहेरक्य-वासे सपिनित सपिटिदिसि सिद्धकेतीववायगई, जंबुहीवे बीवे चुझहिमवंतसिहरिवास-हरपव्यवसपर्विस सपिडिदिसि सिडिसेक्तोववायगई, अंबुद्दीवे दीवे हेमवगहरण्यवास-सप्रिंख सप्रकितिसि तिक्कोतोवनायगई, बंबुरीवे दीवे सद्दावद्वियङावद्वद्वेयद्व-

सपिन्स सपिडिदिसि सिद्धकेत्रोववानगई, जंब्हीवे चीवे महाहिमवंतदप्पिवासहर-प्रवयसपन्ति सपिडिदिसिं सिद्धेतीववायगई, अंबुहीवे दीवे हरिवासरम्मगवास-सपिक्स सपिडिदिसिं सिद्धक्केतीववायगई, जंब्हीवे दीवे गंधाबाइमालवंतपव्यय-वहवेयहसपर्वित सपडिविसि सिद्धलेगोवषायगई, जंबहीवे वीवे णिसहणीलवंतवासह-रपव्ययसपिक्त सपिडिदिसिं सिद्धकेत्तोनवायगई, जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहावरविदेहस-पर्वित्व सपिडिहिसि सिद्धेनोववायगई, जंबुहीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुसपर्विस सपिड-हिसिं सिङ्खेनोववायगई, जंब्हीवे बीचे मंदरपव्ययस्य सपविस्त सपिदिसिं सिद्ध-खेनोवयायगई, लवणे समुद्दे सपविंख सपिडिदिसिं सिद्धखेनोववायगई, धायइसंडे बीवे प्रारमद्भाषास्माद्भादरपञ्चयसपिनंदा सपिडिदिसि सिद्धकेत्रोववायगर्ड. कालो-यसमुद्दसपर्विन्त सपिडिदिसिं सिद्धक्षेत्रोववायगई, पुक्करवरवीवद्धपुरित्थमद्धभरहेर-वयवाससपिक्स सपिडिदिसिं सिद्धकेनोववाशगई, एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपिन्छमद-मंदरपञ्चयसपिक्स सपिडिदिसिं सिद्धकेतीबवायगई, से तं सिद्धकेतीववायगई ५... ॥ ४६९ ॥ से कि तं भवोववायगई ? भवोववायगई चउ व्विहा पश्चता । तंजहा-नेरहय-भवोवचायगई जाव देवभवोववायगई। से कि नं नेरहयभवोववायगई? नेरहयभवोववा-यगंड सत्तविहा पन्नता। तंजहा-एवं सिद्धबन्नो मेदो भाणियव्यो जो चेव खेतीव्यायगंडए सो चेव, से तं देवभवीववायगई। से तं भवीववायगई॥ ४७०॥ से कि तं नोभवीव-वायगई ? नोमबोववायगई दुविहा पञ्चता । तंत्रहा-पोमालनोमबोववायगई. सिद्धनो-भनोत्रवायगई । से कि नं पोग्गलनोभवोवबायगई ? पोग्गलनोभवोबवायगई जण्णं परमाणुपोग्गरे लोगस्स प्रतियमिहाक्षो चरमंताक्षो प्रचल्यिमिहं चरमंतं एगसमएणं गच्छह, पश्चिमिल्लाओ वा चरमंताओ पुरित्थिमिल्लं चरमंतं एगसमएणं गच्छह. दाहिणिहाओ वा चरमंताओ उत्तरिहं चर्मंतं एगसमएणं गच्छह्, एवं उत्तरिहाओ दाहिणिलं, उविरिहाओं हेड्रिकं. हिद्रिहाओं उविरितं, से तं पोग्गलनोभवीववायगर्ड ॥ ४७९ ॥ से कि तं सिद्धणोभवोववायग्रहं ? सिद्धणोभवोववायगर्ह दुविहा पत्रता । तंत्रहा-अणंतरसिद्धणोमवीववायगई परंपरसिद्धणोमबोववायगई य । से कि तं अणंतरसिद्धणोभवोबवाबगई ? २ पण्णरसिवहा पक्षता । तंत्रहा-तित्वसिद्धवणंतर-सिदणोभवोववायगई य जाव अजेगसिद्धः धोभवोववायगई य । से कि तं परंपर-सिद्दणोमबोववायगई १ २ अजेगविहा पसता। तंत्रहा-अपद्मासम्बसिद्दणोमबोववाय-गई, एवं दुसमयिद्धणोमयोववायगई जाव अर्णतसमयदिक्रणोमवोवदावगई, सेर्स सिद्धणोसवीववायगई, से तं मोमवीववायगई, से तं सबवासगई ४ ॥ ४७९ ॥ से कि तं विद्यायगई? विद्यायगई सत्तरसविद्या प्रवत्ता । तंजहा-क्रससायगई १,

अकुसमानगई २, उबसंपद्धमाणगई ३, अणुबसंपद्धमाणगई ४, पोग्गलगई ५, मंझ्यगई ६, णावागई ७, नयगई ८, छायागई ९, छायाणुवायगई १०, केसागई ११, केसाणुकायगई १२, उहिस्सपविभक्तगई १३, चउपुरिसपविभक्तगई १४, वंकगई १५, पंकगई १६, बंघणविमोयणगई १७॥ ४७३॥ से किं तं पुसमाणगई ? पुसमाणगई जण्णं परमाणुपोगगले(ल)दुपएसिय जाव अणंतपए-सियाणं खंबाणं अण्यामण्यं फुसिता णं गई पवत्तह, सेतं फुसमाणगई १ । से कि तं अकुसमाणगई? अफुसमाणगई जण्णं एएसि चेव अफुसिना णं गई पवत्तइ, से तं अफ़ुसमाणगई २। से किं तं उवसंपज्जमाणगई ? २ जण्णं रायं वा जुनरायं वा ईसरे वा तलवरं वा मार्डनियं वा कोइंनियं वा इन्मं वा सेहिं वा सेणावइं वा सत्यवाहं वा उवसंपज्जिता णं गच्छइ, से तं उवसंपज्जमाणगई ३। से कि तं अणुवसंप्रजमाणगई ? २ जण्णं एएसिं चेव अण्णमण्णं अणुवसंप्रजिता णं गच्छइ. से तं अणुबसंपज्जमाणगई ४। से किं तं पोग्गलगई १२ जं णं परमाण-पोग्गलाणं जाव अणंतपएसियाणं खंघाणं गई पवताइ, से तं पोग्गलगई ५। से किं तं मंडयगर्ड ? २ जण्णं मंडुओ फिक्टिता गच्छइ, से तं मंडूयगई ६। से किं तं णावा-गई ? जण्णं णाबा पुट्यवेयालीओ दाहिणवेयालिं जलपहेणं गच्छइ, दाहिणवेयालीओ वा अवरवेयारिं जलपहेणं गच्छा. से तं णावागई ७। से कि तं णयगई ? २ जण्णं जेगमसंगहवनहारउज्युस्यसहसमिस्टएवंभ्याणं नयाणं जा गई. अहवा सव्यणया वि जं इच्छंति, से तं नयगई ८। से किं तं छायागई ? २ जं णं हयछायं वा गयछायं वा नरछायं वा किण्णरछायं वा महोरगच्छायं वा गंभन्वच्छायं वा उसहछायं वा रहुआयं वा क्रतकायं वा उवसंपिकताणं गच्छई. से तं छासागई ९। से कि तं छायाणुवायगई ? २ जेणं पुरिसं छाया अणुगच्छइ, नो पुरिसं छायं अणुगच्छइ, से तं छायाणुबायगई १०। से किं तं लेस्सागई ? २ जण्णं किण्डलेसा नील्लेसं पप्प तास्वताए तावण्णताए तागंधनाए तारसत्ताए ताफासत्ताए मुजो मुजो परिणमइ. एवं नीळळेसा काउळेसं पप्प तारुक्ताए जाव ताफासत्ताए परिणमइ, एवं काउळे-सा वि तेउछेसं तेउछेसा वि पम्हछेसं पम्हछेसा वि सुक्छेसं पप्प तारुवताए जाव परिणम्ह, से तं छेरलागई १९। से कि लं छेसाणुवायगई ? २ जलेसाई दब्बाई परिवाहशा कार्छ करेड तांत्रोस उववजाड, तंजहा-किम्हळेसेस वा जाव सकळेसेस वा, से तं केसाणुवायगई १२। से कि तं रहिस्सपविभक्तगई ? २ जण्णं आयरियं वा उवज्यानं वा वेरं या पवति वा गणि वा गणहरं वा गणावक्कें वा उहिलिय २ गच्छा, से तं उद्वित्सियपविभक्तवई १३। से कि तं चवपुरिसपविभक्तवई ? से २८ सत्ता०

बहानामए चतारि पुरिसा समगं पज्यविद्धया समगं पिद्धया १, समगं पज्यविद्धया विसमगं पिद्धया २, विसमं पज्जविद्धया विसमं पिद्धया २, विसमं पज्जविद्धया विसमं पिद्धया २, विसमं पज्जविद्धया समगं पिद्धया ४, से तं वर्डप्रिसपिवमत्तगई १४। से किं तं वंकगई १ २ चडिव्वहा पजता। तंजहा-बहण्या, यंभण्या, छेसण्या, पवडण्या, से तं वंकगई १५। से किं तं पंकगई १ २ से जहाणामए केइ पुरिसे पंकंसि वा उदयंसि वा कार्य उच्चिहिया २ गच्छ , से तं पंकगई १६। से किं तं बंधणविमोयणगई १ २ जण्णं अंबाण वा अंबाङगाण वा माउर्छुगाण वा बिल्लाण वा कविद्धाण वा भचाण वा फणसाण वा दाखिमाण वा अवस्थीलाण वा वाराण वा बोराण वा तिंदुयाण वा पकाणं परियाग-याणं बंधणाओ विष्यमुक्काणं निञ्चाचाएणं आहे वीससाए गई पवत्तइ, से तं बंधण-विमोयणगई १७। से तं विहायोगई ५॥ ४०४॥ पद्मवणाप भगवाईप स्थोराणयं स्थान ॥

आहार समसरीरा उस्सासे कम्मवन्नलेसाम् । समवेयण समकिरिया समाउया चेव बोद्धव्या ॥ १ ॥ नेरइया णं भंते ! सन्वे समाहारा, सन्वे समसरीरा, सन्वे समस्तासनिस्सासा ? गोयमा ! जो इजडे समद्रे । से केजडेर्ज भंते ! एवं व्याड--'नेरइया णो सन्वे समाहारा जाव णो सन्वे समुस्मारानिस्सासा' ? गोयमा ! णेरहया दुविहा पन्नमा । तंजहा-महासरीरा य अप्यसरीरा य । तत्थ णं जे ते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले आहारैति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्तसंति, बहुतराए पोग्गछे नीससंति, अभिश्खणं आहारैति, अभिश्खणं परिणा-मेंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं नीससंति । तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणार्मेति. अप्पतराए पोग्गले ऊससंति. अप्यतराए पोम्गले नीससंति, आहच आहारेंति, आहच परिणार्मेति. आहब उत्तसंति, आहब नीससंति, से एएणहेणं गोयमा ! एवं बुबइ-'नेरहया णो सब्वे समाहारा, जो सब्बे समसरीरा, जो सब्वे समस्सासनिस्सासा' ॥ ४७५ ॥ नेरड्या णं भंते ! सब्वे समकम्मा ? गीयमा ! नो इणहे समद्वे । से केणहेणं भंते ! एवं वृष्ड-'नेरह्या नो सब्वे समक्रमा'? गोयमा ! नेरह्या दुविहा प्रात्ता । तंजहा-पुर्वाववनगा य पच्छोववनगा य । तत्य णं जे ते पुर्वाववनगा ते णं अप्यक्रम-तराया, तत्थ मं जे ते पच्छोवयन्या ते मं महाकम्मतरागा, से तेणक्रेणं गोयमा ! एवं वृषद्-'नेरहया नो सन्ने समकन्मा'॥ ४७६॥ नेरहया णं भंते! सन्दे समवना ? गोयमा ! नो इषड्रे समद्रे । से केणद्रेषं भंते ! एवं व्याह-'नेरहवा नो सब्वे समवन्ता' ? गोममा ! नेरह्या दुविहा पन्नता । तंजहा-पुञ्चोवननगा स पच्छो-

बबक्ता य । तत्य वां जे ते पुब्दोबबक्ता ते वां विश्वह्रवस्तरागा, तत्य वां जे ते पच्छोबवबागा ते णं अविद्युद्धवजतरागा. से एएणड्रेणं गोयमा ! एवं वुषाइ-'नेरहमा नो सब्बे समबना'। एवं जहेव बनेण भणिया तहेव छेसास विसद्धछेसतरागा अविसुद्धकेसतरागा य भाषियम्बा ॥ ४७७ ॥ नेरहया णं अंते ! सन्दे समवेयणा ? गोयमा ! नो इणद्रे समहे । से केणद्रेणं अंते ! एवं तुष्दर-'नेरइया नो सब्वे सम-वेयणा' ? गोयमा । नेरहया द्विहा पन्नता। तंजहा-सन्त्रिभ्या य असन्त्रिभ्या य । तत्व णं जे ते सिवस्या ते णं महावेयणतरागा, तत्य णं जे ते असिवस्या ते णं अप्प-वेयणतरागा, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृच्छ-'नेर्ड्या नो सब्बे समवेयणा' ॥ ४७८॥ नेरइया णं भंते ! सब्वे समकिरिया ? गोयमा ! नो डणड्रे समद्रे । से केणड्रेणं भंते ! एवं बुचड-'नेरहया नो सब्वे समकिरिया' ? गोयमा ! नेरहया तिविहा पनता । तंजहा-सम्महिद्री, मिच्छहिद्री, सम्मामिळहिद्री । तत्थ णं जे ते सम्महिद्री तेसि णं चत्तारि किरियाओ कअंति, तंजहा-आरंभिया, परिमाहिया, मायावतिया, अपनक्साणकिरिया। तत्य णं जे ते मिच्छिद्दि। जे सम्मामिच्छिद्दि। तेसि णं निययाओ पद्म किरियाओ कर्जात, तंजहा-आरंभिया, परिमाहिया, मायावतिया, अपनन्साणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया, से तेणद्रेणं गोयमा । एवं वृत्तह-'नेरइया नो सब्दे समकिरिया' ॥ ४७९ ॥ नेरह्या णं भंते ! सब्दे समाउया. सब्दे समोद-वक्तगा ? गोयमा ! नो इणद्रे समद्रे । से केणद्रेणं भंते ! एवं वृष्टः ? गोयमा ! नेरडया चरुविवहा पश्चता । तंजहा-अत्येगहया समाउया समोववश्वगा, अत्येगहया समाज्या विसमोववन्ता, कत्येगह्या विसमाज्या समोववन्ता. अत्येगह्या विसमा-उया विसमोक्वनना, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृत्वह-'नेरह्या नो सब्वे समाउया. नो सन्वे समोवनकागा' ॥ ४८० ॥ अग्ररकुमारा णं भंते ! सन्वे समाहारा ? एवं सब्वे वि पुच्छा । गोयमा ! नो इणहे समुद्रे । से केणहेणं मंते ! एवं सुबह० ? जहा नेरहया । अग्ररकमारा णं मंते ! सन्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इपाई समझे । से केणद्रेणं संते ! एवं व्यवह • ? गोयमा ! असुरक्तमारा दुविहा पक्ता । तंजहा-पुरुवीव-वक्षमा य पच्छोववक्षमा य । तत्व णं जे ते प्रव्योववक्षमा ते णं महाकम्मतरा. तत्व णं जे ते पच्छोववक्षमा ते णं अप्पक्रमतरा. से तेणहेणं गोयमा! एवं वृषद्-'असरकमारा यो सब्बे समकम्मा'। एवं बन्नकेस्साए पुच्छा। तत्व णं जे ते पुरनोबनम्या ते णं अविद्धदनसतरामा, तत्य णं जे ते पच्छोवनमाः ते णं विद्युद्धवन्नतरागा, से तेनहेनं गोयमा । एवं वृत्तन-'असरकुमारा नं सन्वे मो समकता'। एवं ढेरसाए वि. वेबणाए जहां नेरहवा. अवसेसं जहां नेरहवाणं। एवं

जाव थाणियकुमारा ॥ ४८९ ॥ पुढविकाइया आहारकम्मवस्रकेरसाहि जहा नेरहवा । पुरुषिकाइया णं भंते ! सब्वे समवेयणा प्रकृता ? हंता गोयमा ! सब्वे समवेयणा । से केणहेणं • ? गोबमा ! पुढविकाइया सन्वे असत्ती असत्तिभूयं अणिययं वेयणं वेयन्ति, से तेणहेणं गोयमा ! पुढविकाइया सब्वे समदेयणा । पुढविकाइया णं भंते ! सब्वे समकि-रिया ? हंता गोयमा ! पुढविकाइया सब्वे समकिरिया । से केणहेणं ० ? गोयमा ! पुढ-विकाइया सव्वे माइमिच्छादिद्वी, तेसि णियडयाओ पंच किरियाओ कजन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिग्पहिया, मायावित्या, अप्यवक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवित्या य. से तेणहेणं गोयमा ! । एवं जाव चडरिंदिया । पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेर-इया, नवरं किरियाहिं सम्मारिडी मिच्छिहिद्री सम्मामिच्छिहिदी। तत्थ णं जे ते सम्म-हिद्दी ते दुविहा पनता । तंजहा-असंजया य संजयासंजया य । तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसि णं तिकि किरियाओं कजन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया । तस्य णं जे असंजया तेसि णं चत्तारि किरियाओ क्षजन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिगाहिया, मायावतिया, अपवन्साणकिरिया। तत्थ णं जे ते मिच्छा-दिही जे य सम्मामिच्छिरिही तेसि णं णियइयाओ पंच किरियाओ कजन्ति, नंजहा-आरंभिया, परिग्वहिया, मायावत्तिया, अपचक्लाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया, सेसं तं चेव ॥ ४८२ ॥ मणुस्सा णं भंते ! सब्वे समाहारा ? गोयमा ! णो इण्हे समहे । से केणहेणं ॰ १ गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पनता । तंत्रहा-महासरीरा य अप्पसरीरा य । तत्थ णं जे ते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गळे आहारेति जाब बहुतराए पोग्गले नीससंति, आहब आहारेंति, आहब नीससंति । तत्य णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गछे आहारेंति जाव अप्पतराए पोग्गछे नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति जान अभिक्सणं नीससंति, से तेणहेणं गोयमा ! एवं बुचड्-'मणुस्सा सन्वे णो समाहारा'। सेसं जहा नेरह्य।णं. नवरं किरियार्ष्टि मणुसा तिविहा पक्ता। तंजहा-सम्माहिद्वी, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छाविद्वी । तत्व णं जे ते सम्माहिद्री ते तिविद्दा पनता । तंब्रहा-संजया, असंबया, संजयासंजया । तत्य णं जे ते संजया ते दुविहा पनता । तंजहा-सरागसंजया य बीयरागसंजया य । तत्य णं जे ते वीयरागसंजया ते णं आकिरिया, तस्य णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा पणता । तंत्रहा-पमत्तसंजया य अपमत्तसंजया य । तत्य णं जे ते अपमत्तसंजया तेसि एगा मायावित्या किरिया कमा । तत्य णं जे ते प्रमत्तरंज्या तेसि दो किरियाओ कवंति-आरंभिया मायावतिमा य । तत्य णं जे ते संजवासंजया तेसिं तिकि किरियाओं कर्जति, तंजहा-आरंभिया परिव्यक्षिया मायावतिया। तत्व णं जे ते

असंजया तेसि क्तारि किरियाओं कजंति, तंजहा-आरंभिया परिग्नहिया माया-वत्तिया अपवक्ताणकिरिया । तत्व णं जे ते मिच्छादिही जे सम्मामिच्छादिही तेसि नियइयाओ पंच किरियाओ कर्जति, तंजहा-आरंभिया परिमाष्टिया मायावत्तिया अपनक्ताणकिरिया मिन्छादंसणवत्तिया. सेसं जहा नेरहयाणं ॥ ४८३ ॥ वाण-मंतराणं जहा असरक्रमाराणं। एवं ओइतियवेमाणियाण वि, नवरं ते वेयणाए दुविहा पन्नता । तंजहा-माइमिच्छदिद्दीउववन्नगा य अमाहसम्मादिद्दीउववनगा स । तत्य ग्रं जे ते माइमिच्छदिद्वीउववन्नगा ते णं अप्यवेगणतरागा. तत्य णं जे ते अमाइसम्म-विद्रीजनवन्ता ते णं महानेयणतरागा, से तेणहेणं गोयमा । एवं वुचइ० । सेसं तहेव ॥ ४८४ ॥ सळेसा णं भंते ! नेरहया सब्वे समाहारा, समसरीरा, समस्या-सनिस्सासा-सन्वे वि पुच्छा । गोयमा ! एवं जहां ओडिओ गमओ तहा सलेसाग-मओ वि निरवसेसो भाणियव्यो जाव बेमाणिया । कष्टकेसा णं भंते ! नेरहया सच्ये समाहारा-पुच्छा । गोयमा ! जहा ओहिया, नवरं नेरइया वेयणाए माइमिच्छिदिद्री-उववक्तगा य अमाइसम्मदिद्रीउववक्तगा य भाषियन्या, सेसं तहेव जहा ओहियाणं। असुरकुमारा जाव बाणमंतरा एए जहा ओहिया. नवरं मणुस्साणं किरियाहि विसेसो-जाव तत्थ ण जे ते सम्मदिही ते तिविहा पनता। तंजहा-संजया असंजया संजयासंजया य. जहा ओहियाणं । जोइसियवेमाणिया आइहियास तिसु छैसासु ण पुच्छिजंति । एवं जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नीललेसा वि विचारेयक्वा । काउछेसा नेरइएहिंतो आरब्भ जाव बाणमंतरा. नवरं काउछेसा नेरइया वेबणाए जहा ओहिया । तेउलेसाणं मंते ! असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छाओ । गोयमा ! जहेद ओहिया तहेव, नवरं वेयणाए जहा जोइसिया । पुढविसाउवणस्सइपंचेंदिय-तिरिक्समणस्या जहा ओहिया तहेव भाणियम्बा, नवरं मणूसा किरियाहि जे संजया ते पमता य अपमत्ता य भाणियन्या, सरागा बीयरागा नत्य । वाणमंतरा तेउन्हे-साए जहा असुरकुमारा, एवं जोइसियवेमाणिया वि. सेसं तं चेव । एवं पम्डलेसा वि भाणियक्वा. नवरं जेसिं अत्य । सक्छेस्सा वि तहेव जेसिं अत्य. सव्वं तहेच जहा ओहियाणं गमओ, नवरं पम्हकेस्सद्धककेस्साओ पंचेंदियतिरिक्खजोणियमण्यावेमा-वियाणं चैव. न सेसाणं ति ॥ ४८५ ॥ एक्सब्यापः भगवर्षेप सत्तरसमे हेस्सापप पहमो उहेसओ समचो ॥

कड णं भंते । केसाओं पनताओं ? गीयमा । छत्नेसाओं पनताओं । तंजहा-कृष्ट्रहेसा, मीलकेसा, काउकेंसा, तेउकेसा, पम्ह्रकेसा, ग्रह्रहेसा, ग्रह्रहेसा ॥ ४८६ ॥ बेरडसणे मंत्रे ! वह देसाओ पश्ताको ! मोयमा ! तिशि॰ तंजहा-किणकेसा.

नीसकेसा. काउलेसा । तिरिक्खजोणियाणं भंते ! क्द छेस्साओ पनताओ ? गोगमा ! क्रोस्साओ पन्नताओ । तंजहा-कृष्टकेसा जाव सक्रकेसा । एगिंदियाणे भेते । क्ड हेसाओ पन्नताको ? गोयमा ! चतारि हेसाओ पन्नताओ । तंजहा-कृष्टहेसा जाव तेउळेसा । पुरुविकाइयाणं भंते ! कह लेसाओ पन्नताओ ? गोयमा ! एवं चेव । आउवणस्सडकाड्याण वि एवं चेव । तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं जहा नेरइयाणं । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! छहेसा-कण्हलेसा जाव सक्केसा । संग्रन्किमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा नैरइयाणं । गञ्भवकंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा । छहेसा-कण्हलेसा जाव सुकलेसा । तिरिक्सजोणिणीणं पुच्छा । गोयमा ! छहेसा एयाओ चेव । मणसाणं पुच्छा । गोयमा ! छक्केसा एयाओ चेन । संमुच्छिममणस्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहा नेरड्याणं । गब्भवक्रंतियमणस्याणं पुच्छा । गीयमा ! छक्केसाओ० तंजहा-कण्डलेसा जाब सुक्कलेसा । मणुरसीणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव । देवाणं पुच्छा । गोयमा ! छ एयाओ चेव । देवीणं पुच्छा । गोयमा ! चतारि-कण्डलेसा जाव तेउलेमा । भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, एवं भवणवासिणीण वि । वाणमंतरहेवाणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव. एवं वाणमंतरीण वि । जोइसियाणं पुच्छा । गीयमा ! एगा तेउल्लेसा. एवं जोइसिणीण वि । वेमाणियाणं पुच्छा । गोयसा । तिक्वि व तंजहा-तेउलेसा, पम्हलेसा, सक्केसा । वेमाणिणीणं पुच्छा । गोयमा ! एगा तेउलेसा ॥ ४८७ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं सलेस्साणं कण्ड-केरसाणं जाव सुक्रकेरसाणं अकेरसाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा १ गोयमा ! सन्वत्थोवा जीवा सक्रकेस्सा. पम्हलेस्सा संखेजगुणा. तेउळेस्सा संखेजगुणा, अळेस्सा अणंतगुणा, काउळेस्सा अणंतगुणा, नीळळेस्सा विसेसाहिया. कृष्टलेस्सा विसेसाहिया, सकेस्सा विसेसाहिया ॥ ४८८ ॥ एएसि णं भंते! नेरइयाणं कष्टलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्योवा नेरइया कण्डलेसा, नीललेसा असंखेळागुणा, काउलेसा असंखेजगुणा । एएसि णं भेते । तिरिक्सजोणियाणं कण्डलेसाणं जाव सक्रलेसाण व कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्योवा तिरिक्खजोणिया सब्बल्या, एवं जहा ओहिया, नवरं अलेसवजा । एएसि मंते ! एगिंदियाणं कन्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साण व कयरे कयरेहितो खप्पा वा ४१ गोयमा ! सम्बरधोवा एगिंदिया तेउडेरसा, काउडेरसा अणंतगुणा, मीडडेस्सा विसेसाहिया, काउडेरसा विसेसाहिया । एएसि यां भेते ! पहिकाइयामं क्रम्हकेस्सामं जाव तेउछेस्साण व

कबरे कबरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहिया एगिदिया, नवरं काउछेस्सा असंबेज्युणा । एवं आउकाइयाण वि । एएसि णं भंते ! तेउकाइयाणं कम्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्योवा तेजकाइया काजळेत्सा, नीलळेत्सा विसेसाहिया, कष्टळेत्सा विसेसाहिया, एवं बाउकाइयाण वि । एएसि णं भंते ! वणस्सइकाइयाणं क्रम्हकेस्साणं जाब तेउकेस्साण य जहा एगिंदियओहियाणं । बेइंदियाणं तेइंदियाणं चर्डीरेदियाणं जहा तेउकाइयाणं ॥ ४८९ ॥ एएसि णं भंते । पंचिदियतिरिक्त्वजोणियाणं कष्टकेसाणं एवं जाव सक्-खेताण य कपरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहियाणं तिरिक्खओण-याणं, नवरं काउलेसा असंखेळगुणा । संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेउकाइयाणं । गब्भवकंतियपंचंदियतिरिक्सजोणियाणं जहा ओहियाणं तिरिक्स-जोणियाणं, नवरं काउलेसा संखेळागुणा. एवं तिरिक्खजोणिणीण वि । एएसि णं भंते ! संमुच्छिमपंनेंदियतिरिक्खजोषियाणं गब्भवक्रंतियपंनेंदियतिरिक्खजोषियाण य काहरूसाणं जाव सुक्रकेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्या वा ४? गोयमा ! सञ्बत्योवा गन्भनक्षंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्रहेस्सा एम्हहेस्सा संखेजगुणा, तेउ-केंस्सा संबेजगुणा, काउळेस्सा संबेजगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्डलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्मा संग्रु च्लिमपंचेंदियतिहिक्खजोणिया असंखेजगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कम्हलेस्सा विसेसाहिया । एएसि णं भंते । संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्ख-जोणियाणं तिरिक्सजोणिणीण य कण्हलेसाणं जाव सक्रलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेव पंचमं तहा इमं छद्रं भाणियव्वं । एएसि णं संते ! गञ्भवकंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्डलेसाणं जाव सक्केसाण य क्यरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा गब्सवकंतिय-पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सक्छेसा. यक्छेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेजगणाओ. पम्हलेसा गब्भवकंतियपंचेंदियतिरिक्सजोणिया संखेळगुणा. पम्हलेसाओ तिरिक्स-जोणिणीओ संबेजगुणाओ, तेउछेसा विरिक्खजोणिया संबेजगुणा, तेउछेसाबो तिरिक्खजोणिणीको संबेज्याणाको. काउछेसा संखेज्याणा, नीतछेसा विसेसाहिया, कम्हकेसा विसेसाहिया. काउकेसाओ संबेजनुगाओ, नीलकेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हछेसाओ विसेसाष्ट्रियाओ । एएसि णं संते ! संसुच्छिमपंनेंदियतिरिक्खजोणियाणं गन्भवकंतियपंचेंदियतिरिक्सजोणिणीण य कल्डलेसाणं जाव सक्रवेसाण य क्यरे कवरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्योवा गञ्मवकंतिया विरिक्सजोगिया युक्तकेसा, युक्तकेसाओ तिरि॰ संखेजगुणाओ, पस्तकेसा गम्भवकंतिमा तिरिक्स-

जोषिया संक्षेत्रगुणा, पम्हळेसामो तिरिक्सजोषिणीओ संक्षेत्रगुणाओ, रीटकेसा गब्भवद्यंतिया तिरिक्खजोणिया संखेजगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेजगुणाओ, काउलेसाओ संखेजगुणाओ, नीललेसा विसेसाहिया, कष्हलेसा विसे-साहिया, काउलेसा संखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कन्हलेसाओ विसेसा-हियाओ. काउछेसा संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया असंखेजगुणा. नीललेसा विसेसाहिया. कम्हलेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाणं जाव सक्केसाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सन्बत्योवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्लेसा. सुक्लेसाओ संखेजगुणाओ, पम्हलेसा संखेजगुणा, पम्हलेसाओ संखेजगुणाओ, तेटलेसा संखेजगुणा, तेटले-साओ संवेजगुणाओ, काउलेसा संबेजगुणा, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्ड-लेसा विसेसाहिया, काउलेसा असंखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्डलेमाओ विसेसाहियाओ । एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्डले-सार्ण जाब मुक्छेसाण य कयरे कयरेहिंती अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेब नवमं अप्पाबहुगं तहा इमं पि, नवरं काउल्मा तिरिक्खजोणिया अर्णतगुणा । एवं एए दस अप्पाबहुगा तिरिक्खजोणियाणं ॥ ४९० ॥ एएसि णं भंत ! देवाणं कण्हलेसाणं जाव सक्छेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सन्बत्थोवा देवा सुक्रुलेमा, पम्हुलेसा असंखेजगुणा, काउलेसा असंखेजगुणा, नीललेसा विसेसा-हिया. ऋष्टलेसा विसेसाहिया. तेउलेसा संखेज्जुणा । एएसि णं भंते ! देवीणं कण्हलेगाणं जाव तेउलेसाण य कमरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! सम्बन्धो-वाओं देवीओ काउळेसाओ. नीलकेसाओ विसेसाहियाओ, कम्हकेसाओ विसेसा-हियाओ. तेउलेसाओ संक्षेजगुणाओ । एएसि णं भंते ! देवाणं देवीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्रलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा सव्वत्थोवा देवा सुक्रलेसा, पम्हलेसा असंखेजगुणा, काउलेसा असंखेजगुणा, नीललेमा विसेसाहिया, कम्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ देवीओ संखेजगुणाओ. नील्लेसाओ विसेसाहियाओ, कम्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा देवा संखेजन गुणा. तेउलेसाओ देवीओ संकेजगुणाओ ॥ ४९९ ॥ एएसि णं मंते ! मदण-वासीणं देवाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कबरे कयरेहिंतो क्षप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्यत्योवा भवणवासी देवा तेउछेसा, काउछेसा असंसेजगुणा. नीलछेसा विसेसाहिया. कण्हळेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं कण्डलेसाणं जाव तेटलेसाण य कयरे क्यरेहिंती खप्पा वा ४१ गोयमा [

एवं चेव । एएसि णं मंते ! भवणवासीणं देवाणं देवीण य कम्हरूसाणं जाव तेउलेमाण य क्यरे क्यरेहिंतों अप्पा वा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवण-वासी देवा तेरुकेसा. भवणवासिणीओ । तेरुकेसाओ संबेज्यूणाओ. कारुकेसा भवणवासी देवा असंखेजगणा. नील्लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया. काटलेमाओ भवणवासिणीओ देवीओ संखेजगुणाओ, नीललेमाओ विसेसाहियाओ. कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, एवं वाणमंतराणं, तिषेव अप्पाबहया जहेव भवण-बासीणं नहेव माणियव्या ॥ ४९२ ॥ एएसि णं मंते ! जोइसियाणं देवाणं देवीण य तेजलेस्साणं कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा जोइसिया देवा तंउलेस्सा, ओइसिणीओ देवीओ तेउलेस्साओ संखेजगुणाओ ॥ ४९३ ॥ एएसि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्योबा वेमाणिया देवा सक्केसा. पम्हळेसा असंखेजगुणा, तेउलेसा असंखेजगुणा । एएसि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं देवीण य तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं सुकलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्यत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्रकेरसा, पम्हकेरसा असंखेळगुणा, तेउ-केस्सा असंखेळ्यणा. तेउकेस्साओ वेमाणिणीओ देवीओ संखेळ्यणाओ ॥ ४९४ ॥ एएसि णं भंते ! भवणवासीदेवाणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाण य देवाण य कण्डलेसाणं जाव सक्केसाण य कयरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्बत्योवा वेमाणिया देवा सक्कलेसा. पम्हलेसा असंखेळगुणा, तेउलेसा असंखे-जराणा. तेउकेसा भवणवासी देवा असंखेजगुणा, काउकेसा असंखेजगुणा, नीळ-हेसा विसेसाहिया, कष्हहेसा विसेसाहिया, तेउहेसा वाणमंतरा देवा असंखेळागुणा, काउलेसा असंखेळगुणा. नीललेसा विसेसाहिया. कण्डलेसा विसेसाहिया. तेउलेसा जोइसिया देवा संखेजगुणा । एएसि णं मंते ! भवणवासिणीणं बाणमंतरीणं जोड-सिणीणं वेसाणिणीण य कण्डलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्योवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउछेसाओ, भवणवासिणीओ० तेउछेसाओ असंबेजगणाओ. काउछेसाओ असंखेजगणाओ. नीरुछेसाओ विसेसा-हियाओ. कष्ट्रकेसाओं विसेसाहियाओं, तेउलेसाओं वाणमंतरीओ देवीओ अर्धकेख-गुणाओ, काउकेसाओं असंखेजगुणाओ, नीलकेसाओ विसेसाहियाओ, कम्हकेसाओ विसेसाहियामो, तेउकेसामो जोइसिजीको देवीओ संकेनग्रणाओ ॥ ४९५ ॥ एएसि णं मंते ! भवणवासीणं जाव नेमाणियाणं देशाण य देवीण य सम्हरूसाणे जाव सक्छेसाण य क्यरे क्यरेडिती अप्यां वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योक्त वेमाणिया देवा

द्रकलेसा. पम्हलेसा असंकेजगुणा. तेउलेसा असंकेजगुणा, तेउलेसाओ वेमाणिय-देवीओ संखेजगुणाओ, तेउलेसा भवणवासी देवा असंखेजगुणा, तेउलेसाओ भवणवासिणीओ देवीओ संखेजराणाओ, काउछेसा भवणवासी० असंखेजराणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ भवणवासणीओ॰ संखेजगुणाओ, नील्लेसाओ विसेसाहियाओ, कष्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा वाणमंतरा॰ संखेजगुणा, तेउलेसाओ वाणमंतरीओ॰ संखेजगुणाओ, काउलेसा वाण-मंतरा० असंखेजगुणा, नील्लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ वाणमंतरीओ॰ संखेजगुणाओ. नीललेसाओ विसेसाहियाओ. कष्टलेमाओ विसेसा-हियाओ, तेउलेसा जोइसिया॰ संखेजगुणा, तेउलेमाओ जोइसिणीओ॰ संखेज-गुणाओ ॥ ४९६ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्रलेमाण य कबरे कबरेहिंतो अप्पश्चिया वा महिश्चया वा ? गोयमा ! कण्हळसेहिंतो नीललेसा महिर्या, नीललेसेहिंतो काउलेसा महिर्या, एवं काउलेसेहिंतो तेउलेसा महिर्या, तेउलेसेहिंतो पम्हलेसा महिष्ट्रया, पम्हलेसेहिंतो सुक्रलेसा महिष्ट्रया, सव्यप्पिष्ट्रया जीवा कम्हलेसा. सम्बमहिष्ट्रया सुकलेसा ॥ ४९७ ॥ एएसि णं भेते ! नेरहयाणं कण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पन्निया वा महन्निया वा ? गोयमा ! कण्डलेसेहिंतो नीललेसा महिंदूया, नीललेसेहिंतो काउलेसा महिंद्रया, सञ्बप्पन्निया नेरहया कम्हलेसा, सञ्बमहिन्निया नेरहया काउलेसा ॥ ४९८ ॥ एएिस णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्डलेसाणं जाव सक्कलेसाण य कयरे क्यरेहिंती अप्पिश्वया वा महिश्वया वा ? गोयमा ! जहा जीवाणं । एएसि णं भंते ! एगिंदिय-तिरिक्सओणियाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कबरेहितो अप्पश्चिया वा महिद्या वा? गोयमा! कण्हलेसेहिंतो एगिंदियतिरिक्खओणिएहिंतो नीललेसा महिष्या, नीलखेसेहितो तिरिक्सओणिएहिंतो काउछेसा महिष्या, काउछेसेहितो तेउलेसा महिद्या. सम्बप्पिद्या एगेंदियतिरिक्खजोणिया कम्हलेसा. सन्वमहिद्या ते उलेसा । एवं पुढविकाइयाण वि । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावि-याओ तहेव नेयव्वं जाव चर्डिरिट्या । पंचेंद्रियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणि-णीणं संगुच्छिमाणं गन्मवद्यंतियाण य सन्वेसि भाषियन्वं जाव अप्पत्तिया वेसा-णिया देवा तेउछेसा, सम्बमहिश्वया वेमाणिया मुक्केसा । केई मणंति-वउवीसं दंडएणं इड्डी भाषियव्या ॥ ४९९ ॥ पश्चयणाप अगर्यर्डप सत्तरसमे छेल्सा-पए बीओ उद्देसओ समत्तो ॥

नेरइए णं भंते ! नेरइएछ उपवज्यह, अनेरइए नेरइएछ उपवज्यह ? गोयमा !

नेरहए नेरहएस उववज्जह, नो अनेरहए नेरहएस उववज्जह, एवं जाव वेमाणियाणं । नेरइए णं मंते ! नेरइएहिंतो उववद्य, अनेरइए नेरइएहिंतो उववद्य ? गोयमा ! अनेरइए नेरइएहिंतो उबबहुर, नो नेरइए नेरइएहिंतो उबबहुर । एवं जाव वेमाणिए, नवरं ओइसियवेमाणिएस 'चयणं'ति अभिलावो कायव्यो ॥ ५०० ॥ से नूणं भंते ! कम्हलेसे नेरहए कम्हलेसेस नेरहएस उववजाह, कम्हलेसे उववटह, जहेसे उववजाह ताहेसे उवबद्ध ? हंता गोयमा! कम्हलेसे नेरइए कम्हलेसेसु नेरइएसु उबवजाइ, कम्हलेसे उवबद्धः, जहेसे उबबजाइ तहेसे उबबद्धः, एवं नीललेसे वि. एवं काउले-से वि । एवं असुरकुमाराण वि जाव धणियकुमारा, नवरं लेसा अन्महिया । से न्णं मंते ! कम्हलेसे पुढिबिकाइए कम्हलेसेसु पुढिबिकाइएसु उचवजाइ, कम्हलेसे उम्बद्धः, अक्षेसे उबवजाइ तक्षेसे उबवद्धः हंता गोयमा ! कण्हलेसे पढिनेकाडए कण्हलेसेस पुढविकाइएस उववजाइ, सिय कण्हलेसे उववष्टइ, सिय नीललेसे उववद्ध, सिय काउलेसे उवबद्ध, सिय जाहेसे उवबज्ध ताहेसे उवबद्ध । एवं नीलकाउ-केसासु वि। से नूणं भंते ! तेजलेसेसु पुढविकाइएसु जववज्रह पुच्छा । हंता गोयमा ! तेउलेसे पुढविकाइए तेउलेसेस पुढविकाइएस उवकज्जह, सिय कण्हलेसे उववद्वह, सिय नीललेसे उपबद्ध, सिय काउलेसे उपबद्ध, तेउलेसे उपबज्ध, नो चेव णं तेउलेसे उपवद्ध । एवं आउकाइया वणस्सइकाइया वि । तेउवाळ एवं चेव, नवरं एएसि तेउलेसा नत्थि । बितियचरुरिंदिया एवं चेव तिस्र लेसास । पंचेंदियतिरि-क्खजोणिया मणुस्सा य जहा पुरविकाह्या आइह्रिया तिस छेसास भणिया तहा इस वि देसास भाणियव्या. नवरं छप्पि देसाओ चारेयव्याओ । वाणसंतरा जहा असरकुमारा । से नूणं भंते ! तेउलेस्से जोहसिए तेउलेस्सेस जोहसिएस उववजाह ? अहेव असुरकुमारा । एवं वेमाणिया वि, नवरं वोण्हं पि वयंतीति अमिलावो ॥५०१॥ से तृणं भंते ! कष्टुक्से नीळकेसे काउकेसे नेरइए कष्टुक्रेसेसु नीळकेसेसु काउकेसेसु नेरहएस उववजाह, कम्हलेसे नीळलेसे काउलेसे उववहूह, जहिसे उववजाह तहिसे उववद्धः ! हंता गोयमा ! कम्हनीलकाउलेसे उववज्रहः अक्षेसे उववज्रह तालेसे उव-बद्ध । से नूणं भंदे ! कण्डलेसे जाब तेउलेसे अग्ररकमारे कण्डलेसेस जाब तेउलेसेस असरकुमारेसु उनवज्जद ? एवं जहेब नेरहए तहा असरकुमारा वि जाव यणियकुमारा वि । से नूर्ण भंते ! कम्हळेसे जाव तेउळेसे पुढविकाइए कम्हळेसेस जाव तेउळेसेस पुढिनकाइएस उनकाइ १ एवं पुच्छा जहा असरकमाराणं । हंता गोयमा ! कम्डलेसे जान तेउछेरे पुरुषिकाहए कम्ब्छेरोस जान तेउछेरोस पुरुषिकाहएस उननजह, सिय कार छेरे उनवहर, रिय नीकछेरें॰, रिय काउ छेरे उनवहर, रिय कोंसे उनवज्ञा

ताक्रेसे उनवष्टर, तेउलेसे उनवजर, नो चेव णं तेउलेसे उनवरर । एवं भाउकारया षणस्सङकाङ्या वि भाणियव्या । से नणं भंते ! कन्छलेसे नीललेसे काउलेसे तेउकाडण कण्हलेसेस नीललेसेस काउलेसेस तेउकाइएस उववजङ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववहड़, जहेसे उववजाड तहेसे उववहड़ ? हंता गोयमा ! कण्डलेसे नीललेसे काउ-लेसे तेटकाइए कष्टलेसेस नीललेसेस काललेसेस तेलकाइएस उववजाइ. सिय कष्ट-लेसे उम्बहर, सिय नीललेसे उवबहर, सिय काउलेसे उवबहर, सिय जोसे उवबजर तक्रेसे उववद्ध । एवं वाउकाइयवेइंदियतेइंदियचर्डारेदिया वि भाणियम्बा । से सूर्ण भंते! कम्हरूसे जाव सुक्करेसे पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कम्हरुसेस जाव सुक्करेसेस पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उक्वजाइ पुच्छा। हंता गोयमा! कण्हलेसे जाव सुझलेसे पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कण्डलेसेसु जाव सक्कलेसेसु पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उव-वज्जह, सिय कम्हलेसे उववहूइ जाव सिय सक्कलेसे उववहूह, सिय जोहेसे उववज्ज तहिसे उववह्ड । एवं मण्से वि । वाणमंतरा जहा असरकमारा । जोडसियवेमाणिया वि एवं चेव. नवरं जस्स जहेसा। दोण्ह वि 'चयणं'ति भाषियव्वं ॥ ५०२॥ कण्हलेसे णं भेते ! नेरइए कष्हलेसं नेरइयं पणिहाए ओहिणा सञ्चलो समंता समभिलोएमाणे २ केवइयं खेतं जाणह, केनइयं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! णो बहुयं खेत्तं जाणह, णो बहुयं खेतं पासइ, णो दूरं खेतं जाणइ, णो दूरं खेतं पासइ, इत्तरियमेव खेतं जाणइ, इत्तरियमेव खेतं पासइ । से केणहेणं मंते ! एवं वुच्छ-'कष्हलेसे णं नेरहए तं चेव जाव इत्तरियमेव खेतं पासइ' ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरमणि अंसि भूमिमागंसि ठिचा सम्बजा समीता समभिलोएजा, तए णं से पुरिसे धरणितलगयं पुरिसं पणिहाए सम्बन्धो समंता समिलोएमाणे २ णो बहुयं खेतं जाव पासइ जाव इत्तरियमेव खेतं पासइ, से नेणडेणं गोयमा ! एवं वृषाइ-'क्रम्हळेसे णं नेरइए जाव इत्तरियमेव खेतं पासह'। नीललेसे णं भंते ! नेरइए कम्हलेसं नेरइयं पणिहाय ओहिणा सन्यओ समंता समभिलोएमाणे २ केवइयं खेत्रं जाणड्, केवइयं खेत्रं पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेतं जाणइ, बहतरागं खेतं पासइ, इरतरं खेतं जाणइ, इरतरं खेतं पासइ, बिति-मिरतरागं खेतं जाणइ, वितिमिरतरागं खेतं पासइ, विद्यद्वतरागं खेतं जाणइ, विमुद्धतरागं खेतं पासइ । से फेजट्रेणं अंते ! एवं वृषद्-'नीलक्षेसे णं नेर्इए कब्हरेसं नेरइयं पणिहाय जाव विद्युद्धतरागं खेतं जाणह. विद्युद्धतरागं खेतं पासइ'? गोयमा ! से जहानामए केंद्र पुरिसे बहुसमर्मिजाओ भूमिमायाओ पन्त्रयं दुरूहिता सम्बन्धो समंता समभिकोएजा, तए णं से पुरिसे घरणितकगर्य पुरिसं पणिहाय सम्बद्धो समंता सममिलोएमाचे २ बहुतरायं क्षेत्रं जाणइ जाव विग्रहतरायं

बेतं पासह, से तेणहेणं मोयमा । एवं वुषह---'नील्लेसे नेरहए कम्हलेसं जाव मिसुद्धतरायं खेरां पासइ'। काउलेस्से णं भंते ! नेरइए नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय ओडिणा सम्बन्धो समंता समभिकोएमाणे २ केवड्यं खेर्त जाणह० पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेलं जाणह० पासइ जाव विद्युद्धतरागं खेलं पासह । से केणद्वेणं भंते ! एवं क्ष्मइ-- 'काउछेरसे णं नेरहए जाव विश्वद्वतरागं खेलं पासह' ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिजाओ भूमिमायाओ पव्वयं दुरुहु दुरुहिना दो वि पाए उचाविया (वहता) सन्वको समंता समभिकोएजा, तए णं से पुरिसे पञ्चयगरं घरणितलगरं च परिसं पणिहास सञ्चलो समंता समिरिलोएमाणे २ बहुतरागं खेतं जाणइ, बहुतरागं खेतं पासइ जाव वितिमिरतरागं खेतं पासइ, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृषद्ध---'काउलेस्से णं नेरइए नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय तं चेव जाव वितिमिरतरागं खेतं पासइ'॥ ५०३॥ कण्डलेसे णं भंते! जीवे कइस नाणेसु होजा ? गोयमा ! दोस्र वा तिसु वा चरसु वा नाणेसु होजा, दोस होमाणे आमिणिबोहियसुयनाणे होजा, तिस होमाणे आमिणिबोहियसुयनाणओहि-नाणेस होजा. अहवा तिस होमाणे आभिणिबोहियसम्बनाणमणपज्जवनाणेस होजा. चउत्त होमाणे आमिणिबोहियसुब्बोहिमणपज्जवनाणेसु होजा, एवं जाब पम्हलेसे । सक्रेंब्से णं मंते ! जीवे कहस नाणेस होजा ? गोयमा ! एगंसि वा दोस वा तिस वा चउस वा होजा. दोस होमणे आभिणिबोहियनाण एवं जहेव कम्हलेसाणं तहेव भाणि-यव्वं जाव चर्राहे । एगंमि नाणे होमाणे एगंमि केवलनाणे होजा ॥ ५०४॥ **एकावणाए** भगवर्ष्य सत्तरसमे लेस्साप्य तहनो उद्देसमो समत्तो ॥

परिणामकारसगंधद्यद्रअपसत्थसंकिल्डिकृष्टा । गइपरिणामपएसोगाउवनगणठाणाणमप्पबहुं ॥ १ ॥ क्द्र णं मंते ! केसाओ पनताओ ? गोयमा ! कहेसाओ पनताओ ।
तंब्रहा—कष्ट्रकेसा जाव द्यक्रकेसा । से नूणं मंते ! कष्ट्रकेसा नीक्केरसं पप्प तारक्ष्माए तानक्षताए तानक्षताए तानक्षताए मुक्को २ परिणमइ ? इंता गोयमा ! कष्ट्रकेस्सा नीक्केरसं पप्प तारक्षताए जान मुक्को २ परिणमइ । से केषद्वेणं मंते ! एवं वुष्यद् — 'क्ष्यकेरसा नीक्केरसं पप्प तारक्षताए जान मुक्को २ परिणमइ' ? गोयमा ! से जहा नामए सीरे द्सि पप्प द्वारे वा वत्ये रागं पप्प तारक्षताए जान ताफासताए क्ष्यो २ परिणमइ, से तेषद्वेणं गोयमा ! एवं वुष्यद् — 'कष्ट्रकेसा नीक्केरसं पप्प तारक्षताए जान भुको २ परिणमइ, से तेषद्वेणं गोयमा ! एवं वुष्यद् — 'कष्ट्रकेसा नीक्केरसं पप्प तारक्षताए जान भुको २ परिणमइ । एवं एएणं असिकाविणं तीककेरसं पप्प तारक्षताए जान भुको २ परिणमइ ॥ ५०५ ॥ से नृणं मंते ! कष्ट्रकेसा नीक्केरसं प्रमुकेरं पप्प जान भुको २ परिणमइ ॥ ५०५ ॥ से नृणं मंते ! कष्ट्रकेसा नीक्केरसं

काउछेसं तेउछेसं पम्हछेसं सुक्कछेसं पप्प तास्त्रतात् तावण्यतात् तागंधतात् तार-सत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा 1 कण्डकेसा नीलकेसं पप्प जाव सक्केसं पप्प तास्वताए तागंधताए ताफासत्ताए सुजो २ परिणमइ। से केणहेणं संते ! एवं वुन्वइ-'कम्हरूसा नीललेसं जान सक्करेसं पप्प तास्वनाए जान भुजो २ परिणमइ' ? गोयमा ! से जहानामए वैरुलियमणी सिया कण्ह्युत्तए बा नीलसुत्तए वा लोहियसुत्तए वा हालिस्सुत्तए वा सक्किलसुत्तए वा आइए समाणे तास्वताए जाव भुजो २ परिणमइ, से तेणहेणं गो० ! एवं वुचइ-'कम्हलेसा नीललेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारूवताए जाव सुज्जो २ परिणमइ ॥ ५०६ ॥ से नूणं भंते ! नीललेसा किण्हलेसं जाव सुक्रलेसं पप्प तास्वताए जाव मुख्नो २ परिणमइ? हुंना गोयमा ! एवं चेव, काउलेसा किण्हलेसं नीललेसं तेउलेसं एम्हलेसं सक्किसं, एवं तेउलेमा किण्हकेसं नीलकेसं काउकेसं पम्हकेसं सुक्केसं, एवं पम्हलेसा किण्ह-हेसं नीलहेसं काउहेसं तेउहेसं शुक्कहेसं पप्प जाव भुजो २ परिणमइ ? हन्ता गोयमा ! तं चेव । से तूणं भंते ! सुक्किसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेसं तेउलेसं पम्हलेसं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा ! तं चेव ॥ ५०७ ॥ कण्हलेस्सा णं भंते ! वजेणं केरिसिया पनना ! गोबमा ! से जहानामए जीमूए इ वा अंजिंग इ वा संजिंग इ वा कव्यले इ वा गवले इ वा गवलवलए इ वा जंबूफले इ वा अहारिहुपुष्फे इ वा परपुद्धे इ वा भमरे इ वा भमरावली इ वा गयकलमे इ वा किण्हकेमरे इ वा आगासियमाले इ वा किण्हासीए इ वा कण्हकणवीरए इ वा कण्हबंधुजीवए इ वा, भवे एयास्वे ? गोयमा ! णो इणह्वे समद्वे, कण्हलेस्सा णं इत्तो अणिद्रतरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुझतरिया चेव अम-णामनरिया चेव वक्षेणं पक्षणा ॥ ५०८ ॥ नीलळेस्सा णं भंते ! केरिसिया क्षेणं पन्नता ? गोयमा ! से जहानामए भिंगए इ वा मिंगफ्ते इ वा चासे इ वा चास-पिच्छए इ वा मुए इ वा सुयपिच्छे इ वा सामा इ वा वणराई इ वा उर्वतए इ वा पारेवयगीवा इ वा मोरगीवा इ वा हलहरवसणे इ वा अयसिवुखमे इ वा वणकुसमे इ वा अंजणकेसियाकुसुने इ वा नीखप्पले इ वा नीलासोए इ वा नीलकणवीरए इ वा नीलबंधजीवे इ वा. अवेबारूवे ! गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे० एतो जाव अम-णागगरिया चेव वक्षेणं पक्ता ॥ ५०९ ॥ काउकेस्सा णं भंते ! केरिसिया वक्षेणं पनता ? गोयमा ! से जहानामए खहरसारए इ वा स्ट्रसारए इ वा धमाससारे इ वा तंने इ वा तंनकरोडे इ वा तंनच्छिवाडियाए इ वा वाइंगिक्छुमे इ वा कोइल-च्छदकुसमे इ वा जवासाकुसुमे इ वा. मवेबास्वे ? गोबसा ! भो इणद्वे समद्वे ।

काउलेस्सा णं एनो अणिद्वयरिया जाव अमणामयरिया चेव वन्नेणं पनता ॥५१०॥ तेउछेस्सा णै भंते ! केरिसिया बन्नेणं पनता ? गोयमा ! से जहानामए ससरुहिरे इ वा उरम्भरुहिरे इ वा वराहरुहिरे इ वा संबरुरहिरे इ वा मणुस्सरुहिरे इ वा इंदगोने इ वा बालंदगोने इ वा बालदिवायरे इ वा संझारागे इ वा गुंजदरागे इ वा जाइहिंगुले इ वा पवालंकुरे इ वा लक्खारसे इ वा लोहियक्खमणी इ वा किमिरा-गकंगले इ वा गयतालुए इ वा चीणपिट्टरासी इ वा पारिजायकुत्रमे इ वा जासुमण-कुछमे इ वा किंक्ष्रयपुष्फरासी इ वा रत्तृष्पले इ वा रत्तासोगे इ वा रत्तकणवीरए इ वा रत्तवंधजीवए इ वा. भवेयास्वा? गोयमा! जो इजड़े समझे । तेउटेस्सा ज एती इड्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव बन्नेणं पन्नता ॥ ५११ ॥ पम्हलेस्सा णं भंते । केरिसिया वक्षेणं पक्ता ? गोयसा । से जहानामए चंपे इ वा चंपयत्रकी इ वा चंपयमेए इ वा हालिहा इ वा हालिहगुलिया इ वा हालिहमेए इ वा हरियाले इ वा हरियालगुलिया इ वा हरियालमेए इ वा चिउरे इ वा चिउरागे इ वा सुवन्नसिप्पी इ वा वरकणगणिहसे इ वा वरपरिसवसणे इ वा अल्लाइक्समे इ वा चंपयकुसुमे इ वा किष्णियारकुसुमे इ वा कुहंहयकुसुमे इ वा सुवण्णजुहिया इ वा सुहिरिष्णयाकुरुमे इ वा कोरिंटमह्मदामे इ वा पीयासोगे इ वा पीयकणवीरे इ वा पीयबंधुजीवए इ वा. भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इणहे समहे । पम्हल्क्सा णं एतो इद्वनरिया जाब मणामतरिया चेव वसेणं पश्ता ॥ ५१२ ॥ सुक्लेस्सा णं मंते ! केरिसिया वक्रेणं पक्तता ? गोयमा ! से जहानामए अंके इ वा संखे इ वा चंदे इ वा कुंदे इ वा दगे इ वा दगरए इ वा दही इ वा दहिषणे इ वा खीरे इ वा सीरपुरए इ वा सक्किन्छिनाडिया इ वा पेहणसिंजिया इ वा धंतधोयरुपपट्टे इ वा सारयवलाहर इ वा कुमुयदले इ वा पोंडरीयदले इ वा सालिपिट्टरासी इ वा कटमपुष्फरासी इ वा सिंदुवारमह्मदामे इ वा सेयासीए इ वा सेयकणवीरे इ वा सेयबंधुजीवए इ बा. भवेयारूचे ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । युक्केस्सा णं एतो इद्वतिया चेब जाव मणामतिरया चेव क्लेणं प्रमत्ता ॥ ५१३ ॥ एयाओ णं भंते 1 इतेस्साओ कइछ वजेस साहिजांत ? गोयमा ! पंचस वजेस साहिजांति. तंजहा-कण्डलेस्सा कालएणं वश्रेणं साहिजाइ, नीललेस्सा नीलवश्रेणं साहिजाइ, काउलेस्सा कालकोहिएणं वनेणं साहिजाइ, दोडकेस्सा कोहिएणं वनेणं साहिजाइ, पन्छकेस्सा हालिहरूणं वनेणं साहिजह, सक्लेस्सा सक्षिक्रएणं वनेणं साहिजह ॥ ५१४ ॥ कष्टकेसा र्ण मेते ! केरिसिया आसाएणं पनता ? गोममा ! से बहानामए निंबे इ वा निक्सारे इ वा निक्छकी इ वा निक्फानिए इ वा कुटए इ वा कुटगफलए इ वा

कुडगळही इ वा कुडगफालिए इ वा कडुगतुंबीइ वा कडुगतुंबिफले इ वा खारतउसी इ वा सारतउसीफले इ वा देवदाली इ वा देवदालीपुष्फे इ वा मियवालंकी इ वा मियवालुंकीफले इ वा घोसाडए इ वा घोसाडईफले इ वा कम्हकंदए इ वा वजनंदए इ वा, भनेयारूवे ? गोयमा ! णो इजहे समहे, कम्हलेस्सा जं एत्तो अणिहतरिया चेव जाव अमणामतरिया चेव आसाएणं पनता ॥ ५१५ ॥ नील्डेस्साए पुच्छा । गोयमा ! से जहानामए भंगी इ वा भंगीरए इ वा पाढा इ वा चिवया इ वा चिना-मूलए इ वा पिप्पली इ वा पिप्पलीमूलए इ वा पिप्पलीचुण्णे इ वा मिरिए इ वा मिरियचुण्णए इ वा सिंगबेरे इ वा सिंगबेरचुण्णे इ वा, भवेयाहवे ? गोयमा ! णो इणहे समहे, नीलकेरसा णं एत्तो जाव अमणामतरिया चेव आसाएणं पनता ॥५१६॥ काउलेस्साए पुच्छा । गोयमा ! से जहानामए अंगण वा अंबाडगाण वा माउलुंगाण वा बिल्लाण वा कविद्वाण वा भवाण वा फाणसाण वा दाखिमाण वा अक्लोडयाण वा चाराण वा बोराण वा निंदुगाण वा अपकाणं अपरिवागाणं वन्नेणं अणुववेयाणं गंधेणं अणुववेयाणं फासेणं अणुववेयाणं, भवेयाहवे ? गोयमा ! णो इण्डे समहे जाव एतो अमणामतरिया चेष अस्साएणं पत्रता ॥ ५१७ ॥ तेउलेस्सा णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! से जहानामए अंबाण वा जाव पकाणं परियावनाणं वन्नेणं उबवेयाणं पसत्येणं जाब फासेणं जाब एत्तो मणामयरिया चेव तेउत्स्सा आसा-एणं पन्नता ॥ ५१८ ॥ पम्हलेस्साए पुच्छा । गोबमा ! से जहानामए चंदप्यभा इ वा मणसिला इ वा सीहू इ वा वारुणी इ वा पत्तासवे इ वा पुप्फासवे इ वा फलासवे इ वा चोयासवे इ वा आसवे इ वा महू इ वा मेरए इ वा काविसायणे इ वा सजूरसारए इ वा मुद्दियासारए इ वा सुपक्तकोयरसे इ वा अद्वपिद्वणिद्विया इ वा जंबुफलकोलिया इ वा पसचा इ वा उक्कोसमयपत्ता वचेणं उववेदा जाव फासेणं उव-वेया दप्पणिजा मयणिजा, मवेबारूवा ? गोयमा ! णी इणहे समहे, पम्हलेस्सा णं एतो इट्रतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव आसाएणं पत्रता ॥ ५१९ ॥ छक्छेस्सा णं अंते ! केरिसिया अस्साएणं पश्चता ? गोयमा ! से जहानामए गुले इ वा खंडे इ वा सकरा इ वा मच्छंडिया इ वा पप्पडमोयए इ वा भिसकंदए इ वा पुप्फुतरा इ वा पउ-मुत्तरा इ वा आदंतिया इ वा विद्वत्थिया इ वा आगासफाकिओवमा इ वा उवमा इ वा अणोवमा इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! जो इजड़े समद्वे, ग्रुक्तलेस्सा जं एतो इद्वत-रिया चेव० पियतरिया चेव० सणामतरिया चेव आसाएणं पनता ॥५२०॥ वह णं भंते । देत्साओ दुव्मिगंघाओ पत्रताओ ! गोयमा ! तओ देत्साओ दुव्मिगंघाओ पनताओ । तंत्रहा-कम्डकेस्सा, नीळकेस्सा, क्राउकेस्सा । वह मं भंदी । केस्साओ

सुब्मिगंबाओ पक्ताओं ? गोयमा ! तओ छेर्माओ सुब्मिगंबाओ पक्ताओ । तंजहा---तेउछेस्सा, पम्हटेस्सा, सुक्रवेस्सा, एवं तबो अविसुद्धाओ, तओ विसुद्धाओ, तओ अप्पमत्थाओ, तओ पसत्थाओ, तओ संकिलिद्वाओ, तओ असंकिलिद्वाओ, तओ सीयलुक्जाओ, तओ निद्धण्हाओ, तओ दुरगइगामियाओ, तओ मुगइगामियाओ ॥ ५२९ ॥ कण्हलेस्सा णं मंते ! ऋइविहं परिणामं परिणमइ ? गोयमा ! तिबिहं वा नविष्टं वा रामावीसिवहं वा एक्ससीइविहं वा बेतेयालीसनविहं वा बहुयं वा बहुविहं वा परिणामं परिणमइ, एवं जाव सुक्छेस्सा ॥ ५२२ ॥ कम्हछेस्मा णं भंते ! कइ-पएसिया पनता ? गोयमा ! अणंतपएसिया पनता, एवं जाव सक्छेस्सा । कण्हलेस्सा णं भंते ! सद्दपएसोगाटा पन्नता ? गोयमा ! असंखेजपएसोगाटा पन्नता, एवं जाव युक्तलेस्या । कष्ट्लेस्साए णं भंते ! केवइयाओ चगगणाओ पक्ताओ ? गोयमा ! अणं-ताओ वरमणाओं ०, एवं जाव सुक्रलेस्साए ॥ ५२३ ॥ केवहया णं भंते ! कष्हलेस्साठाणा पन्नता ? गोयमा ! असंखेजा कण्हलेस्साठाणा पन्नता । एवं जाव सक्कंस्सा ॥ ५.२४ ॥ एएसि णं भेते ! कष्हलेस्साठाणाणं जाव सुक्रलेस्साठाणाण य जहज्ञगाणं दन्बहुयाए पएसहयाए दव्वह्वपएसहयाए ऋगरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जहज्ञगा काउल्लेसाठाणा दव्यद्वयाए, जहज्ञगा नीललेस्साठाणा दव्यद्वयाए असंखेज-गुणा, जहन्नगा कष्हळेस्साठाणा दव्यक्टयाए असंखेळागुणा, जहन्नगा तेउळेस्साठाणा दन्बहुयाए असंखेजगुणा, जहसगा पम्हलेस्साठाणा दन्बहुयाए असंखेजगुणा, जह-नगा सक्केस्साठाणा दव्यद्वयाए असंखेजगुणा, पएसद्वयाए-सव्यत्योवा जहनगा काउलेस्साठाणा पएसद्वयाए, जहबागा नीललेस्साठाणा पएसद्वयाए असंखेजगुणा, जहस्या कन्हलेस्साठाणा पएसद्वयाए असंखेळगुणा, जहस्या तेललेस्साए ठाणा पएसहुयाए असंखेजगुणा, जहन्नगा पम्हरेन्साठाणा पएसहुयाए असंखेजगुणा, जह-नगा सक्रकेस्साटाणा पएसद्वयाए असंखेजगुणा, दव्बद्वपएसट्टयाए-सब्बत्योवा जह-श्वगा काउलेत्साठाणा दव्बहुयाए, जह्वगा नीललेत्साठाणा दव्बहुयाए असंखेजगुणा, एवं कण्हलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, जहनमा सक्रलेस्साठाणा दव्बद्वगाए असंखेज-गुणा, जहमएहितो सुक्रलेसाठाणेहितो दम्बद्धयाए जहभकाउलेस्साठाणा पएसद्वयाए असंबेजगुणा, जहमया नील्वेस्साठाणा पएसद्वयाए असंखेजगुणा, एवं जाव सक्के-स्साठाचा ॥ ५२५ ॥ एएसि णं भंते ! कष्ह्वेस्साठाणाणं जाव मुक्केस्साठाणाण य उद्योसगाणं दब्बहुवाए पएसहुवाए दब्बहुपएसहुवाए कवरे कवरेहिंतो अप्पा वा ४ ! गोयमा । सम्बत्धोषा उद्योसगा काउरेस्साठाणा दब्बद्ध्याए, उद्योसगा नीरुकेस्साठाणा दम्बद्धयाए असंखेजगुणा, एवं जहेव जहक्या तहेव उद्योसगा वि, नवरं उद्योसिता ় ৭৭ দ্রন্তা•

अभिलावो ॥ ५२६ ॥ एएसि णं भेते ! कण्हरुंसठाणाणं जाव शुक्करेसठाणाण य जहजडक्कोसगाणं दव्बद्वयाए पएसद्वयाए दव्बद्वपएसद्वयाए कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्यत्योवा जहन्नगा काउछेमठाणा दव्यद्वयाए, जहन्नगा नील-रेसठाणा दव्बहुयाए असंखेळगुणा, एवं कम्हतंउपम्हरुसठाणा, जहस्राा सुक्करे-सठाणा दव्यद्वयाए असंखेजगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्छेतठाणेहिंतो दव्यद्वयाए उक्कोसा काउलेसठाणा दव्बद्वयाए असंखेखगुणा, उक्कोसा नील्लेसठाणा दव्बद्वयाए असं-लेजगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसद्वाणा, उक्कोमा सुक्कलेसठाणा दव्बद्वयाए असंखेज-गुणा । पएसहुयाए-सन्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसठाणा पएसहुयाए, जहन्नगा नीललेसठाणा पएसहुयाए असंखेजगुणा, एवं जहेव दव्वहुयाए तहेव पएसहुयाए वि भाणियव्वं, नवरं पएसद्वयाएति अभिलावविसंगो । दव्वद्वपएसद्वयाए-सम्बरयोवा जहन्नना काउलेसठाणा दब्बट्टयाए, जहन्नना नीललेसठाणा दव्बट्टयाए असंखेज-गुणा, एवं कम्हतेउपम्हलेसद्वाणा, जहन्नया सुक्लेपठाणा दन्त्रद्वयाए असंखेजगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्रलेमठाणेहिंतो दव्यद्वयाए उक्कोसा काउलेसठाणा दव्यद्वयाए असंखे-जगुणा, उद्योसा नीललेमठाणा दन्बद्वयाए असंखेजगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसद्वाणा, उक्कोमना मुक्कलेसठाणा दव्यद्वयाए असंखेजगुणा, उक्कोसएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो दव्यद्वयाए जहच्या काउलेसठाणा परसद्वयार अर्णतगुणा, जहच्या नीललेसठाणा पएम द्वयाए असंखेजगुणा,एवं कण्हते उपम्हलेसद्वाणा, जहज्ञगा मुझलेसठाणा पएसद्वयाए असंखेजगुणा, जहनएहिंतो सुक्लेसठाणेहिंतो पएसहुयाए उक्कोसा काउलेसठाणा पए-सद्भ्याए असंखेजगुणा, उक्कोसया नीललेसठाणा पएसद्भ्याए असंखेजगुणा, एवं कण्हते उ-पम्हलेसद्वागा ,उक्कोसया सुक्रलेसठाणा पएसद्वयाए असंखेजायुगा ॥५२७॥ पद्मवणाए भगवर्षप सत्तरसमस्य लेस्सापयस्य चउत्थो उद्देसको समत्तो ॥

कह णं भंते ! लेसाओ पनताओ ? गोयमा ! खलेसाओ पनताओ । तंजहा-कम्हलेसा जाव सुकलेसा । से नूणं भंते ! कम्हलेसा नीललेसं पप्प तास्वताए तावजनाए नागंधताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुजो भुजो परिणमइ ? इतो आढतं जहा चउत्यओ उद्देसओ तहा भाणियव्वं जाव वेहलियमणिदिष्ठंतोत्ति ॥५२८॥ से नूणं भंते ! कम्हलेसा नीललेसं पप्प णो तास्वत्ताए जाव णो ताफासत्ताए भुजो भुजो परि-णमड ? हंता गोयमा ! कम्हलेसा नीललेसं पप्प णो तास्वत्ताए, णो तावचत्ताए, णो नागंधताए, णो तारसत्ताए, णो ताफासत्ताए भुजो २ परिणमइ । से केणहेणं भंते ! एवं युष्ट ० ? गोयमा ! आगारभावमाथाए वा से सिया, पिलमागमावमायाए वा से सिया। कम्हलेसा ण सा, णो खलु नीललेसा, तत्य गया आसक्यह उस्सक्यह का, से तेणहुणं गोयमा! एवं वुषद्-'कण्हलेसा नीललेसं पप्प णो तारुवताए जाव भुजो २ परिणमइ' । से नूणं भंते ! नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारुवताए जाव भुजो २ परिणमइ ! हंना गोयमा! नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारुवताए जाव भुजो २ परिमणइ । से केणहुणं भंते ! एवं वुषद्- 'नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारुवताए जाव भुजो २ परिणमइ' ! गोयमा! आगारभावमायाए वा सिया, पिलमागभावमायाए वा सिया । नीललेमा णं सा, णो खलु सा काउलेसा, तत्थपया ओसकड़ उत्सकड़ वा, से एएणहुणं गोयमा! एवं वुषद्- 'नीललेसा काउलेसं पप्प णो नारुवताए जाव भुजो २ परिणमइ' । एवं काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प, पोलस्वताए जाव भुजो २ परिणमइ' । एवं काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प गो नारुवताए जाव भुजो २ परिणमइ' । एवं काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प, पोलस्वताए जाव परिणमइ ! हंता गोयमा! सुक्रलेसा नं चेव । से केणहुणं भंते ! एवं वुषद्- 'सुक्रलेसा जाव णो परिणमइ' ! गोयमा! आगारभावमायाए वा जाव सुक्रलेसा णं सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ यया ओसकड़, से तेणहुणं गोयमा! एवं वुषद्- 'जाव णो परिणमइ' ॥ ५२९ ॥ पश्चकाए अगवईए सन्तर- समे लेक्सापए पंचमो उहेसको समको ॥

कड़ णं अंते ! केसा पत्रमा ? गोयमा ! छ केसा पत्रता । तंजहा-कम्हलेसा जाव मुक्केसा । मणस्याणं भंते ! कह केसाओ पश्चनाओ ? गोयमा ! छ केसाओ पश्च-त्राओ । तंजहा-कण्हलेसा जाव मुक्कलेसा । मणुस्सीणं भंते ! पुरुष्ठा । गोयमा ! छक्केस्साओ पन्नताओ । तंजहा-कण्हा जाव सका । कम्मभूमयमण्स्साणं भंते ! कड़ केसाओ पन्नताओ ? गोयसा ! छ केसाओ पन्नताओ । तंजहा-कण्हा जाब सन्ना । एवं कम्मभूमसम्भूरसीण वि । भरहेरवयमण्हसाणं भंते ! कह छेसाओ प्रकृताओ ? गोयमा ! छहेसाओ पत्तताओ । तंजहा-कष्हा जाव सुका । एवं मणुरसीण वि । पुरुवविदेष्ठे अवरविदेष्ठे कम्मभूमयुम्णुस्साणं षड् छेस्साओ० ? गो० ! छहेस्साओ० । तंजहा-कष्टा जाव सका । एवं मणुरसीण वि । अकम्मभूसयमणुरसाणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि केसाओ पनताओ । तंजहा-कम्ह० जाव तंउलेसा. एवं सक्रम-भूमगमणुरसीण वि. एवं अंतरदीवगमणुरसाणं. मणुरसीण वि । एवं हेमवयएरजवय-अकम्मभूमयमणुत्साणं मणुरुसीण य बह छेसाओ पश्चताओ ? गोयमा ! चतारि. तंत्रहा-कण्हळेसा जान तेउळेसा । हरिवासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा ! चतारि, तंजहा-कम्ह० बाव तेउलेसा । देवकुठउत्तरकुर-अकम्मभूमयमणुस्सा एवं चेव, एएसिं चेव मणुस्सीणं एवं चेव, घायइसंबपुरिमद्धे वि एवं चेन, पन्छिमद्धे ति, एवं पुनन्तरबीचे वि माणियन्वं ॥ ५२० ॥ कम्हलेसे णं भंते! मणुस्से कम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा। कम्हलेसे॰ मणुस्से नीललेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा जाव सुक्रलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, एवं नीललेसे मणुस्से कम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, एवं नीललेसे मणुस्से जाव सुक्रलेसं गब्भं जणेखा, एवं काउलेसेणं छप्प आलावगा भाणियव्या। तेउलेसाण वि पम्हलेसाण वि सुक्रलेसाण वि, एवं छनीसं आलावगा भाणियव्या। कम्हलेसा॰ हत्थिया कम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा। एवं एए वि छत्तीसं आलावगा भाणियव्या। कम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, एवं एए छनीसं आलावगा। कम्मभूमगकम्हलेसं णं भंते! मणुस्से कम्हलेसाए इत्थियाए कम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, एवं एए छत्तीसं आलावगा। अकम्मभूमयकम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, एवं एए छत्तीसं आलावगा। अकम्मभूमयकम्हलेसं गब्भं जणेखा? हंता गोयमा! जणेखा, नवरं चवसु लेसासु सोलस आलावगा, एवं अंतरदीवगाण वि।। ५३१॥ छहो उद्देसओ समस्तो। पद्मयणाए भगवईए सत्तरसमं लेस्साएयं समस्तं॥

जीव गइंदिय काए जोए वेए कसायलेसा य । सम्मत्तणाणदंसण संजय उवओग आहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्त पज्जत्त सुहुम सन्नी भवऽत्थि चरिमे य । एएसिं तु पयाणं कायिऽई होइ णायव्या ॥ २ ॥ जीवे णं भंते ! जीवेति कालओ केविचरं होइ ? गोथमा ! सब्बद्धं ॥ दारं १ ॥ ५३२ ॥ नेरहए णं भंते ! नेरहएति कालओ केन चिरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई, उन्नोसेणं तेन्तीसं सागरोव-माई। तिरिक्सजोणिए णं भंते! तिरिक्खजोणिएति कालओ केविषरं होइ? गोयमा! जहनेणं अंतोमुहनं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उरसप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्रओं अर्णता लोगा, असंखेजा पोम्गलपरियद्दा, ते णं पुम्गलपरियद्दा आवलियाए असंखेखइभागे। तिरिक्खजोणिणी णं भंते! तिरिक्खजोणिणित्ति कालखो केवचिरं होइ? गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुतं, उन्नोसेणं तिन्नि पल्जिवमाई पुन्यको-डिपुहुत्तमञ्महियाई । एवं मणुस्से वि, मणुस्सी वि एवं चेव । देवे णं मंते ! देवेति कालओ केविचर होइ ? गोयमा ! जहेव नेरइए । देवी णं भंते ! देविति कालओ केविकरं होइ ? गोयमा ! जहबीणं दस बाससहस्साई, उक्कोसेणं पणपर्व पिछओ-वमाई। सिद्धे णं भंते ! सिद्धेत्ति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! साइए अपज्यव-सिए। नेरइयअपजासए णं मंते! नेरइयअपजास्पत्ति कालओ केवियरं होइ? गोयसा! जहरोण वि उक्कोसेण वि अंतोसहर्ता, एवं जाव देवी अपजातिया । नेरहरापजताए णं भेते ! नेरइयपजनएति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहबोणं दस वाससहस्साई अंतोमुहुनूणाई, उन्होसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई अंतोमुहुनूणाई । तिरिक्खजोणियपज-त्तए णं भंते! तिरिक्खजोणियपज्जतएति कालओ केविचरं होइ? गोयमा! जहसेणं अंतोमुहुतं, उद्दोसेणं तिक्षि पिष्णोवसाई अंतोमुहुतृणाई । एवं तिरिक्खजोणिणिपज-त्तिया वि, एवं मणुरसे वि, मणुरसी वि एवं चेव। देवपजत्तए जहा नेरइयपजत्तए। देवी-पजित्या णं भंते! देवीपजित्यिति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहनुणाइं, उन्नोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अंतोसुहनुणाइं ॥ दारं २॥ ५३३॥ सइंदिए णं भंते ! सइंदिएति कालओ केविचरं होइ ? गोयमा ! सईंदिए द्विहे पश्चने । तंजहा-अणाइए वा अपज्जवितए, अणाइए वा सपज्जवितए । एगिंदिए णं भंते ! एगिंदिएति कालओ केविबरं होइ ? गोयमा । जहनेणं अंतोसुहुतं, उक्कोसेणं अणंनं कालं वणस्सदकालो । बेइंदिए णं भंते ! बेइंदिएत्ति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमहत्तं, उद्योसेणं संखेजं कालं । एवं तेइंदियचउरिदिए वि । पंचिदिए णं भंते ! पंचिदिएति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतो-मुहुत्तं, उद्दोसेणं सागरोबमसहस्सं साइरेगं । अणिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । सद्देदियअपज्जनएं णे पुच्छा । गोयमा ! अहस्रेण वि उद्दोरेण वि अंतो-मुहुतं । एवं जाव पंचिदियअपज्जतत् । सईदियपज्जतत् णं मंते ! सईदियपज्जतत्ति कालओ केविषरं होइ ? गोयमा ! जहलेणं अंतीमुहुतं, उक्कोसेणं सागरोवमसय-पहत्तं साइरेगं । एगिदियपजनए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उक्तोसेणं संसेजाई वाससहस्साई । बेइंदियपजाराए णं पुरुष्ठा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोरेणं संखेजवासाइं । तेईदियपजत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुतं, उक्कोसेणं संसेजाई राइंदियाई। चउरिंदियपजत्तए णं भंते ! पुच्छा। क्षेयमा ! जहकेषं अंतोसहतं, उक्कोरेणं संखेजा मासा । पंचिंदियपजताए णं अंते ! पंचिंदियपजनएति कालओं केविवरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहतं, उक्कोरेणं सागरोवमसबपुहुतं ॥ दारं ३ ॥ ५३४ ॥ सकाइए णं मंते ! सकाइएति कालओ केनिकरं होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पक्ते । तंत्रहा-अणाइए वा अपज्यव-सिए, अणाइए वा सपञ्चवारीए, तत्य णं जे से अ० स० से जहारेणं अंतोमहर्त. उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साई संकेजवासमञ्महियाई। अकाइए णं अंते ! पुच्छा। गोयमा । अकाइए साइए अपजबसिए । सकाइयअपजनाए णं पुच्छा । गोयमा ! जह-क्षेण वि उद्योसेण वि अंतोगुहुतं, एवं आव तसकाइयलपजत्तए पुच्छा । गोममा 1 जहचेर्ण अंतोसहत्रं, उद्योसेणं सायरोवमसम्पद्धतं साहरेगं। प्रवनिकाह्यु गं प्रच्छा ।

गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उद्गोरीणं असंखेळं कालं, असंखेजाओ उस्सप्पिणिओ-सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेजा लोगा । एवं भाउतेउचाउकाइया वि । वण-स्सइकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उन्होसेणं अणंतं कालं, अणं-ताओ उस्सिप्पिणओसप्पिणीओ कालओ, खेताओ अणंता लोगा, असंखेबा पुग्गल-परियद्दा, ते णं पुग्गलपरियद्दा आवलियाए असंखेळदभागो । पुढविकाद्दए पजत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुनं, उक्कोसेणं संनेजाई वामयहस्सारं, एवं आऊ वि । तेउकाइए पजनए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुनं, उक्कोसेणं संखेजाई राइंदियाई । वाउकाइमपज्जताए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संबेजाई वाससहस्साई । वणस्सइकाइयपजनए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमु-हुत्तं, उक्कोसेणं संखेजाइं वाससहस्साइं । तसकाइयपज्यत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उद्घोसेणं सागरोदमसयपुहुत्तं माइरेगं ॥ ५३५ ॥ सुहुमे णं अंते ! सुहुमेत्ति कालओं केविचरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंसेजं कालं, असंखेजाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओं असंखेजा लोगा। ग्रहुम-पुढविकाइए, सुहुमआउकाइए, सुहुमतेउकाइए, सुहुमवाउकाइए, सुहुमवणप्पद्काइए मुहुमनियोदे वि जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं, असंखेजाओ उत्स-प्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेजा लोगा । मुहुमे णं भंते ! अपजत-एति पुच्छा । गोयमा ! अहनेणं अंतोमुहुत्तं उद्गोसेण वि अंतोमुहुत्तं । पुढविकाइय-आडकाड्यनेउकाइयवाउकाइयवणप्फइकाइयाण य एवं चेव, पज्जनयाण वि एवं चेव। बायरे णं भंते ! बायरेत्ति कालओ केविंदरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहत्तं, उक्कोरेणं असंखेजं कालं. असंखेजाओ उत्सप्पिणओसप्पिणीओ कालओ. खेतेओ अंगुलस्स असंखेजह्मार्गं । बायरपुढविकाह्ए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोस्हत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ । एवं बायरभाउकाइए वि बायरतेजकाइए वि, वायरवाजकाइए वि । बायरवणप्फड्काइए णं॰ वायर॰ पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, टक्कोसेणं असंखेजं कालं जाव खेतओ अंगुलस्स असंखे जहमागं । परेयसरीरबायरवणम्पद्रबाइए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जह-क्षणं अंतोमुहुतं, उद्योसेणं सत्तरि सागरोवसकोडाकोडीओ । निगोए णं भंते ! निगोएति कालभो केविचरं होइ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं, उद्दोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्तिप्पिणीओसिप्पिणीओ कालओ, खेत्तओं अष्टुाङ्बा पोग्गळ-परियद्य । बादरनिगोदे णं भंते ! बादरनिगोदेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोम्हतं, उक्कोरेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ । बायरतसकाइए णं मंते !

बायरतसकाइएति कालओ केबचिरं होइ ? गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोत्रममहस्साई संखेजवासमञ्महियाई। एएसि चेव अपजत्तगा सन्वे वि जहन्नेण वि उन्नोसेण वि अंतोमुहुतं । बायरपज्जतए णं भंते ! बायरपज्जतएति पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं । बायरपुढविकाडयपज्जत्तए णं भेते ! बायर० पुच्छा । गोयमा ! जहबीणं अंतोसुहत्तं, उद्गोसेणं मंगेजाइं बाससहस्साइं। एवं आउकाइए वि। तेउकाइयपज्जतर णं भंते ! तेउकाइयपजनएति पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहुनं, उन्नोसेणं संबे-ज्ञाइं राइंदियार्ड । वाउकाइयवणस्सङ्काइयपरायसरीरबायरवणप्पडकाइए पुच्छा । गोयमा! जहन्नेणं अंतोमृहत्तं, उद्घोरेणं संखेजाई वागसहस्साई। निओयपज्जत्तए बायरनिओयपज्रताए पुच्छा । गोयमा ! दोण्ह वि जहन्नेणं अन्तोमुहुनं, उद्दासेणं अंतोमुहुतं । बायरतस्काइयपज्जनए णं भेते ! बायरतस्काइयपजनएति कालओ केविचरं होइ १ गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उन्नोसेणं सागरीवमनयपुहुतं साइ-रेगं ॥ दारं ४ ॥ ५३६ ॥ सजीगी गं भंते ! सजीगिति कालओ केविवरं होड ? गोयमा ! सजोगी दुविहे पश्ते । तंजहा-अणाइए वा अपजवसिए, अणाइए वा सपञ्जवसिए । मणजोगी णं भंते ! मणजोगित्ति कालओ केविश्वरं होड ? गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं वहजोगी वि । कायजोगी णं भंते ! कायजोगि॰ ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उन्नोसंणं वणप्पहकालो । अञोगी णं मंते ! अजोगिति कालओ केविंबरं होइ ? गोयमा ! साइए अपजवित् ॥ दारं ५ ॥ ॥ ५३७ ॥ सबेदए णं भंते ! सबेदएति कालओ केवियर होड ? गोयमा ! सचेटए तिबिहे पन्ने । तंत्रहा-अणाइए वा अपजवसिए, अणाइए वा सपजवसिए. साइए वा सपज्जवसिए। तस्य णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहनेणं अंतोसुहत्तं, उद्दोसेणं अर्णतं कालं, अर्णताओं उस्सिप्पणीओसप्पणीओ कालओ, खेताओ अवदं पोग्गल-परियहं देसणं। इत्यिवेदए णं भंते ! इत्थिवेदएति कालओ केविषरं होइ ? गोयसा ! एगेणं आएसेणं जहन्नेणं एकं मसयं, उन्नोसेणं दस्तरं पलिओवमसयं पुक्वकोडिपह-त्तमन्महियं १, एगेणं आएसेणं जहनेणं एगं समयं, उन्नोसेणं अद्वारसपलिओवमाई पुरुवकोडिपुहत्तमञ्मिद्देयाई २, एगेणं आएसेणं जहकेणं एगं समयं, उक्तोसेणं चउ-दस परिक्षीवमाहं पुव्यकोडिपुहुत्तमञ्महियाहं ३, एगेणं आएसेणं जहनेणं एगं समग्रं. उक्रोसेणं पाँढओक्ममयं पुरुषकोडिपुहुत्तमस्माहियं ४, एगेणं आएसेणं जहन्नेणं एवं समयं, उद्घोरेणं परिकोवनपुहतं पुन्वकोविपुहत्तमञ्महिनं ५। पुरिसवेदए णं भंते । प्ररिसवेदएति० १ गोयमा ! जहकेणं अंतोम्रहत्तं, उक्कोरेणं सागरीवमस्यपृष्ठतं साइ- रेगं । नपुंसगवेदए णं भंते ! नपुंसगवेदएति पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एवं समयं, उक्कोसेणं वणस्तद्दकालो । अवेयए णं भंते ! अवेयएति पुच्छा । गोयमा ! अवेयए दुविहे पन्नते । तंजहा-साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्य णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहण्णेणं एगं यमयं, उन्होसेणं अंतोमुहत्तं ॥ दारं ६ ॥ ५३८ ॥ सकसाई णं भंते ! सकसाइनि कालओ केविबरं होड ? गोयमा ! सकमाई तिबिहे पन्ने । नंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, माइए वा सपज्जवसिए जाव अवद्रं पोग्गलपरियष्टं देसणं। कोहकसाई णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहनेण वि उद्योरेण वि अंतोमुहत्तं, एवं जाव माणमायाकसाई । लोमक-साई णं भंते ! लोभकसाइति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं. उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अकसाई णं भंते ! अकसाइति कालओ केविकरं होइ ? गोयमा ! अक्साई दुविहे पन्नते । तंजहा-साइए वा अपज्ञवसिए साइए वा मपज्जवसिए । तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहनेणं एगं समयं, उद्दोसेणं अंतोमहत्तं ॥ दारं ७ ॥ ५३९ ॥ सलेसे णं भंते ! सलेसेति पुच्छा । गोबमा ! सलेसे दुविहे पन्ते । तंजहा-अणाइए वा अपज्जवनिए, अणाइए वा सपज्जवनिए । कण्हलेने र्ण भंते ! कम्हंटरेति कालओं केविंचरं होइ ! गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं, उद्दोसेणं तेनीसं सागरोवमाइं अंतोसुहुनमञ्महियाइं। नील्लेसे णं भंते ! नील्लेसेति पुच्छा। गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तं, उद्दोसेणं दस सागरोबमाइं पिल्ओवमासंखिजइ-भागमन्भहियाई । काउलेसे णं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाई पलिओवमासंखिजइभागमञ्महियाई। तेउलेसे णं पुच्छा। गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उद्द्रोसेणं दो सागरोवमाई पलिओवमासंखिजईभाग-मञ्भिहियाई । पम्हलेसे पं पुच्छा । गीयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहत्तमञ्महियाइं । सुक्रलेसे णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतो-मुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवसाई अंतोसुहत्तमन्महियाई । अलेसे ण पुच्छा । गोयमा! साइए अपज्जवसिए ॥ दारं ८ ॥ ५४० ॥ सम्महिद्री णं मंते! सम्महि-द्विति कालओ केविवरं होइ ? गोयमा ! सम्महिद्वी दुविहे प्रवत्ते । तंजहा—साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहनेणं अंतोमहत्तं, उक्कोसेणं छावद्विं सागरोवमाई साइरेगाई । मिच्छादिही णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! मिच्छादिद्वी तिबिहे पक्षते । तंत्रहा-अणाइए वा अपज्यवसिए. अणाइए वा सपजवसिए, साइए वा सपजवसिए। तत्व णं के से साइए सपजव-सिए से जहनेणं अंतो<u>मह</u>त्तं, उद्गोसेणं अणंतं काळं, अणंताओ उस्सण्पिणओसप्पि-

णीओ कालओ, खेताओ अवश्वं पोरगलपरियष्टं देसणं । सम्मामिच्छादिद्री णं पुच्छा । गोयमा ! जहबेणं अंतोमुहत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहत्तं ॥ दारं ९ ॥ ५४१ ॥ णाणी णं भंते ! गाणिति कालओ केविचरं होड ? गोयमा ! गाणी द्विहे पन्ने । तंजहा---साइए वा अपज्जबसिए, साइए वा सपज्जबसिए। तत्थ णं जे सं साइए सपज्ज-वसिए से जहण्णेणं अंतोमुहनं, उद्घोसेणं छावड्रि सागरोवमाई साइरेगाई । आभिणि-बोहियणाणी णं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव. एवं सुयणाणी वि. ओहिणाणी वि एवं चंव, णवरं जहण्येणं एगं समयं । मणपञ्जवणाणी णं मंते ! मणपञ्जवणाणिति कालओ केनिकरं होइ ? गीयमा ! जहनेणं एगं समयं. उन्नोसेणं देसणा प्रव्यकोडी । केवलणाणी णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । अण्णाणी मङ्अण्णाणी मुयअण्णाणी पुच्छा । गोयमा ! अण्णाणी, सुरुअण्णाणी, सुयअण्णाणी तिविहे पन्ते । तंजहा-अणाहए वा अपजवसिए, अणाहए वा सपजवसिए, साहए वा सपजवसिए। तस्य णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमहत्तं. उक्कोसेणं अणंतं कालं. अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेताओं अवश्रुपोग्गलपरियष्टं देमूणं । विभंगणाणी णं भंते ! पुच्छा । गोग्रमा ! जहण्णेणं एवं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई देस्णाए पुन्वकोडीए अञ्महियाई ॥ दार १०॥ ५४२॥ चनखुदंसणी णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमहत्तं, उन्होसेणं सागरोवस-सहस्यं साइरेगं । अचक्खुदंसणी णं भंते ! अचक्खुदंसणिति कालओ० ? गोयमा ! अनक्खदंनणी द्विहे पन्ते । तंजहा-अणाइए वा अपजवसिए, अणाइए वा सपज-वसिए । ओहिदंसणी णं पुच्छा । गोयसा ! जहन्नेणं एगं ममयं, उक्कोसेणं दो छाव-द्रीओ सागरोबमाणं साहरेगाओ । केवलदंसणी णं प्रच्छा । गोयमा ! साहए अपज-वसिए ॥ दारे ११ ॥ ५४३ ॥ संजए णं भंते ! संजएति पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगं समयं, उक्कोरेणं देसणं पुष्टकोहिं। असंजए णं भंते! असंजएति पुच्छा। गोयमा ! असंजए तिविहे पश्चते । तंजहा-अणाइए वा अपज्जबसिए, अणाइए वा सपजनसिए, साइए वा सपजनसिए। तत्थ णं जे से साइए सपजनसिए से जहनेणं अंतोमहत्तं, उक्कोरेणं अणंतं कालं. अणंताओ उत्सप्पिणओसप्पिणीओ कालओ, क्षेत्रओं अवद्रं पोग्गरूपरियष्टं देसूणं । संजयासंजए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोम्हर्नं, उद्योरेणं देस्णं पुम्बकोडि । नोसंजए-नोअसंजए-नोसंजयासंजए णं पुच्छा । गोबमा ! साइए अपन्नबसिए ॥ दारं १२ ॥ ५४४ ॥ सागारोवस्रोगोवउत्ते णं मंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहसेण वि उद्योसेण वि अंतोस्हर्तः । अणागारीवडरी वि एवं चेंब ॥ इतं १३ ॥ ५४५ ॥ आहारए णं अंते ! पुच्छा । गोयमा ! आहारए दुविहे पन्नते । तंत्रहा-छउमत्थआहारए य केवलिआहारए य । छउमस्याहारए णं मंते! छ्डमत्थाहारएति कालओं केविचरं होइ? गोयमा! जहनेणं खुड्गामनम्गहणं दुसमयऊणं, उद्योसेणं असंखेजं कालं, असंखेजाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओं अंगुलस्स असंखेज्जइमार्ग । केवलिश्राहारए णं भंते ! केवलिश्राहारएत्ति कालओ केविषरं होइ ? गोयमा । जहचेणं अंतोमुहुनं, उक्कोर्सणं देस्णं पुट्यकोर्डि । अणाहारए णं भंते ! अणाहारएति कालओ केविचरं होड़ ? गोयमा ! अणाहारए दुविहे पत्नते । नंजहा-छउमत्थअणाहारए य केवलिअणाहारए य । छउमत्यअणा-हारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उद्दोसेणं दो समया । केवलिअणाहारए ण भंते ! केवलि० ? गोयमा ! केवलिअणाहारए दुविहे पत्रसे । नंजहा-सिद्धकेवन्त्रिअणाहारए य भवत्यकेवित्रअणाहारए य । सिद्धकेवित्रअणाहारए णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । भवत्यकेवलिअणाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! मनत्यकेवलिञ्जणाहारए दुविहे पन्नने । तंजहा-सजोगिमवत्यकेवलिञ्जणा-हारए य अजीगिभवत्थकेवलिअणाहारए य । सजीगिभवत्थकेवलिअणाहारए ण भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेण तिण्णि समया । अजोगिभवत्थकेविः-अणाहारए णं पुच्छा । गोयमा ! जहचेण वि उक्तोसेण वि अंतोसुहुनं ॥ दारं १४॥ ॥ ५४६॥ भासए णं पुच्छा । गोयमा! जहनेणं एगं समयं, उन्नोसेणं अंतोसुहुत्तं । अभासए णं पुच्छा । गोग्रमा ! अभासए तिविहे पत्रते । तंजहा-अणाइए वा अपज-वसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से साइए वा सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उद्दोसेणं वणप्पहकालो ॥ दारं १५ ॥ ५४०॥ परित्ते णं पुच्छा । गीयमा ! परित्ते दुविहे पन्नते । तंजहा--कायपरिते य संसार-परित्ते य । कायपरिते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उद्दोसेणं पुढवि-कालो, असंखेजाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ । संसारपरिते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उन्नोसेणं अणंतं कालं जाव अवन्तं पोग्गलपरियष्टं देस्णं। अपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! अपरित्ते दुविहे पश्चते । तंत्रहा-कायअपरित्ते य संसार-अपरितं य । कायअपरिते णं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोसुहत्तं, उक्कोसेणं वणस्सङ्कालो । संसारअपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! संसारअपरित्ते दुविहे पक्तते । तंजहा-अणाइए वा अपजावसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए । नोपरिते-नोअपरिते णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अफजवसिए ॥ दारं १६ ॥ ५४८ ॥ पजनए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहुत्तं, उद्गोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं । अपजातप् णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेण वि उद्गोसेण वि अंतीमुहुत्तं । नोपजत्तए-नोअपजत्तए यं

पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए॥ दारं १०॥ ५४९॥ युहुमे णं भंते! मुहुमेति पुच्छा। गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं पुउविकालो। नायरे णं पुच्छा। गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं असंखेजं कालं जाव खेत्रभो अंगुल्स्स असंखेज्जहभागं। नोसुहुमनोबायरे णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए॥ दारं १८॥ ५५०॥ सण्णी णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं सागरोवमसमपुहुत्तं साइरेगं। अमण्णी णं पुच्छा। गोयमा! जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं वणस्सहकालो। नोमण्णीनोअमण्णी णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए॥ दारं १९॥ ५८९॥ भवसिद्धिए णं पुच्छा। गोयमा! अणाइए अपज्जवसिए। नोभवसिद्धिए-नोअमवसिद्धिए णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए।। दारं २०॥ ॥ ५८२॥ धम्मत्विकाए णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए।। दारं २०॥ ॥ ५८२॥ धम्मत्विकाए णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए।। दारं २०॥ ॥ ५८२॥ धम्मत्विकाए णं पुच्छा। गोयमा! साइए अपज्जवसिए।। दारं २०॥ ॥ ५८२॥ चम्मत्विकाए णं पुच्छा। गोयमा! अणाइए सपज्जवसिए। अचरिमेणं पुच्छा। गोयमा! अणाइए सपज्जवसिए। अचरिमेणं पुच्छा। गोयमा! अणाइए सपज्जवसिए। अचरिमेणं पुच्छा। गोयमा! अचरिमे द्विहे पक्षते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, साइए वा अपज्जवसिए।। दारं २२॥ ५५४॥ पद्मवणाए भगवाईए अट्ठार-समं कायद्विह्वनामपर्थ समनं॥

जीवा णं मेते ! किं सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी ! गोयमा ! जीवा सम्मदिद्वी वि, मिच्छादिद्वी वि, सम्मामिच्छादिद्वी वि। एवं नेरइया वि। असुरकुमारा वि एवं चेव जाव यणियनुमारा । पुढवीकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! पुढवीकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! पुढवीकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! वेईदिया सम्मामिच्छादिद्वी, एवं जाव वणस्सदकाइया । वेईदिया पं पुच्छा । गोयमा ! वेईदिया सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी । एवं जाव च उरिंदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा वाणमंतरजोइसि-यनेमाणिया य सम्मदिद्वी वि मिच्छादिद्वी वि सम्मामिच्छादिद्वी वि । सिद्धा णं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा सम्मदिद्वी, णो मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी ॥ ५५५॥ पञ्चक्षणाय भगवईय एगूणवीसइमं सम्मत्तपयं समर्त्त ॥

नेरइय अंतिकिरिया अणन्तरं एगसमय उन्वद्य । तित्थगरचिक्षचलवासुदेव-मंडलियरयणा य ॥ द्वारमाष्ट्रा ॥ जीवे णं भंते ! अंतिकिरियं करेजा ? गोयमा ! अल्येगइए करेजा, अल्येगइए णो करेजा । एवं नेरइए जाव वेमाणिए । नेरइए णं भंते ! नेरइएस अंतिकिरियं करेजा ? गोयमा ! णो इणहे समहे । नेरइया णं भंते ! अस्रकुमारेस अंतिकिरियं करेजा ? गोयमा ! णो इणहे समहे । एवं जाव वेमाणिएस । नवरं मण्सेस अंतिकिरियं करेजाति पुच्छा । गोयमा ! अत्येगइए करेजा, अत्थेगइए णो करेजा। एवं असुरकुमारा जाव वेमाग्पिए। एवमेव चउ-वीसं २ दण्डमा भवन्ति ॥ ५५६ ॥ नेरहमा णं मंते ! किं अर्णतरागया अंतिकिरियं पकरेंति, परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति ! गोयमा ! अणंतरागया वि अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागया वि अंतिकिरियं पकरेंति । एवं रयणप्पसापुरुविनेरहया वि जाव पंकप्पमा-पुढवीनेरङ्या । धूमप्पभापुढवीनेरङ्या णं पुच्छा । गोयमा ! णो अणंतरागया अंत्रिकिरियं पकरेंति, परंपरागया अंत्रिकिरियं पकरेंति, एवं जाद अहेसत्तमापुढवी-नेरदया । असुरकुमारा जाव थणियकुमारा पुढवीआउवणस्सइकाइया य अणन्तरा-गया वि अंतिकिरियं पकरेंति, परंपरागया वि अंतिकिरियं पकरेंति । तेउवाउवेइंदिय-तंडीदयचडरिंदिया णो अणंतरागया अंतिकरियं पकरेति, परंपरागया अंतिकरियं पकरैंति । सेमा अर्णतरागया वि अंतिकारियं पकरैति, परंपरागया वि अंतिकारियं पकरेंति ॥ ५५७ ॥ अणंतरागया० नेरहया एगसमए केवहया अंतिकरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एगो वा दो वा तिनि वा. उन्नोसेणं दस । रयणप्रभापुढवीनरइया वि एवं चेव जाव वालुयप्पभापुढवीनेर्इया । अणंतरागया णं भेते ! पंकप्पभापुढवी-नेरइया एगसमएणं केवइया अंतिकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिश्वि वा. उक्कोसेणं चतारि । अणन्तरागया णं अंते ! असरकुमारा एगसमए केवइया अंतिकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्को-सेणं इस । अणंतरागयाओं णं भंते ! असरकमारीओ एगसमए केवडया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिनि बा, उक्कोसेणं पंच । एवं जहा असुरकुमारा सदेवीया तहा जाव यणियकुमारा। अणंतरागया ण भंते! पुडविकाइया एगसमए केवड्या अंतिकरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहनेणं एको वा दो वा तिनि वा, उद्योसेणं चतारि । एवं आउकाइया वि चतारि. वणस्सइकाइया छव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया दस. तिरिक्खजोणिणीओ दस. मणुस्सा दस, मणुस्सीओ वीसं, वाणमंतरा दस, वाणमंतरीओ पंच, जोइसिया दस, जोइसियीओ वीसं, वेमाणिया अहसयं, वेसाणिणीओ वीसं ॥ ५५८॥ नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उब्बहिता नेरइएमु उनवज्जेजा ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । नेरइए णं मंते ! नेरइएहिंतो अणं-तरं उव्विटिया असरकुमारेसु उवबजेजा ! गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । एवं निरंतरं जाव चउरिदिएस पुच्छा । गोयमा ! नो इणदे समदे । नेरहए णं अंते ! नेरहएहिंतो अणंतरं उव्यक्तिता पंचिदियतिरिक्सजोणिएस उक्केजा ? गोयमा ! अत्येगहए उनवजेजा, अत्थेगइए जो उनवजेजा। जे जं भेते ! नेरइएहिंतो अर्णतर उ॰ पंचि-दियतिरिक्सजोणिएस उत्तरजेजा से यं भंते ! केवलिकार्त धर्म लसेजा सवगयाए ?

गीयमा ! अत्येगहए लमेजा. अत्येगहए णो लमेजा । जे णं भंते ! केवलिपन्तर्त धम्मं लमेजा सबणगए से णं केवलि बोहि वुज्येजा १ गोयमा ! अत्येगइए वुज्येजा. अत्येगइए जो बुज्झेजा। जे जं भंते! केविंठ बोहिं बुज्झेजा से जं सदहेजा पत्तिएजा रोएजा ? गोयमा ! सहहेजा, पत्तिएजा, रोएजा । जे णं भंते ! सहहेजा पत्तिएजा रोएजा से णं आभिणिबोहियनाणस्यनाणाई उप्पाडेजा ? हंता गोयमा ! उप्पाडेजा । जे णं भंते ! आभिणिबोहियनाणस्यनाणाई उप्पाडेजा से णं संचा-एजा सीलं वा वयं वा गणं वा बेरमणं वा पचक्काणं वा पोसहोबबासं वा पढिच-जिलए ? गोयमा ! अत्येगहए संचाएजा. अत्येगहए णो संचाएजा । जे णं भंते ! संचाएजा सीलंबा जाव पोसहोबवासं वा पडिवाजनाए से ण ओहिनाणं उप्पाडेजा? गोयमा ! अत्थेगइए उप्पाडेजा, अत्थेगइए णो उप्पाडेजा । जे णं भंते ! ओहिनाणं उप्पाडेजा से ण संचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्यवस्तए? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे ॥ ५५९ ॥ नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उच्च-हिता मणुरसेसु उववजेजा ? गोयमा ! अत्येगइए उववजेजा, अत्येगइए णी उबरजेजा। जे णं भंते ! उबबजेजा से णं केवलिएकतं धम्मं लमेजा मदण्याए ? गोयमा ! जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएस जाव जे णं भंते ! ओहिनाणं उप्पाडेजा से णं संचाएजा मुण्डे भविता आगाराओ अजगारियं पन्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थे-गइए संचाएजा, अत्थेगइए को संचाएजा । जे कं संते ! संचाएजा मुंडे मविशा आगाराओ अणगारियं पव्यक्तमा से णं सणपज्यवनाणं उप्पाढेजा ? गोयमा अत्ये-गइए उप्पाढेजा, अत्येगइए णो उप्पाडेजा । जे णं भंते ! मणपज्जवनाणं उप्पा-हेजा से णं केवलनाणं उप्पाहेजा? गोयमा! अत्येगहए उप्पाहेजा. अत्येगहए णो उपाडेजा । जे णं भेते ! केवलनाणं उप्पाडेजा से णं सिज्होजा बुज्होजा मुखेजा सम्बद्दक्साणं अंतं करेजा ? गोयमा ! सिज्सेजा जाव सम्बद्दक्साणमंतं करेजा । नेरइए णं मंते । नेरइएहिंतो अणंतरं उव्वष्टिता वाणमंतरजोइसियवेमाणिएस उपव-जेजा ? गोयमा ! नो इणद्रे समद्रे ॥ ५६० ॥ असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उष्यष्टिता नेरइएस उनवजेखा ! गोयमा ! नो इणद्रे समद्वे । असरकुमारे णं भंते ! अधुरकुमारेहिंतो अर्णतरं उच्चिहता अधुरकुमारेख उववजेजा ? गोयमा ! नो इण्ड्रे समुद्रे । एवं जाव वाणियकुमारेस । असुरकुमारे णं भेते ! असुरकुमारेहिंतो अणं-तरं उव्यक्तिता पुढविकाइएस उववजेजा ? हन्ता गोयमा ! अत्येगइए उपवजेजा. अस्थेगहर जो डबबजेजा । जे जं भंते ! उवबजेजा से जं केवलिपनर्स धरमं क्रमेखा सर्वणयार ? गोयमा ! जो इण्डे समद्रे । एवं आउरणस्सइस्र वि । असूर-

कुमारे णं भंते । असरकुमारेहितो अर्णतरं उन्बहिता तेउवाउवेइंदियतेइंदियचउरिं-दिएसु उववजेजा ? गोयमा ! नो इणहे समहे । अनसेसेसु पंचसु पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाइसु असुरकुमारेसु जहा नेरइओ, एवं जाव यणियकुमारा ॥ ५६१ ॥ पुढवीकाइए णं मंते ! पुढवीकाइएहिंतो अर्णतरं उन्बहिता नेरइएस उनवजेजा ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । एवं असुरक्तमारेसु वि जाव थणियकुमारेसु वि । पुढवी-काइए णं भंते ! पढवीकाइएहिंतो अणंतरं उन्बहिता पढवीकाइएस उववजेजा ? गोयमा ! अत्येगहए उववजेजा, अत्येगहए णो उववजेजा । जे णं भंते ! उववजेजा से णं केवलिपन्नतं धम्मं लभेजा सवणयाए ? गोयमा ! नो इणहे समहे । एवं आउकाइयाइम् निरंतरं भाणियव्वं जाव चर्डारंदिएस् । पंचिदियतिरिक्खजोणियमण्-स्तेम जहा नेरदर । वाणमंतरजोडसियवेमाणिएस परिसेहो । एवं जहा प्रव्यीकारओ भणिओ तहेव आउक्काइओ वि जाव वणस्सइकाइओ वि भाणियव्यो ॥ ५६२ ॥ तेउ-काइए णं भंते ! ते उक्काइएहिंतो अणंतरं उव्यक्ति। नेरइएस उववजेजा ? गोयमा ! नो इण्डे समद्रे । एवं असुरकुमारेमु वि जाव थणियकुमारेमु । पुढवीकाइयआउ-ते उवा उवण बेडंदिय ते इंदियच जरिदिएस् अत्थेगहरः जववजेजाः अत्थेगहरः णो जवव-जेजा। जे णं भंते! उववजेजा से णं केवलिपन्नतं धम्मं लभेजा सवणयाए ? गोयमा ! नो इणड्ढे समद्धे । तेउकाइए णं भंते ! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्बद्धिता पंचिदियतिरिक्खजोणिएस उववजेजा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववजेजा, अत्थेगइए णो उचवजेजा। जे · · से णं केवलिपन्नतं धम्मं लभेजा सवणयाए १ गोयमा ! अत्थेगडए लभेजा. अत्थेगडए णो लभेजा । जे णं भंते ! केवलिपन्नतं धम्मं लभेजा सवणयाए से णं केविंल वोहिं बुज्केजा? गोयमा! णो इणद्वे समेंद्वे । मणुस्सवाणमंतरजोइ-सियवेमाणिएस पुच्छा । गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे । एवं जहेव तेउकाइए निरंतरं एवं वाउकाइए वि ॥ ५६३ ॥ बेइंदिए णं अंते ! बेइंदिएहिंतो अणंतरं उठ्बहिता नेरहएस उनवजेन्दा ? गोयमा ! जहा पढवीकाइया नवरं मणुस्सेस जाव मणपजन-नाणं उप्पाहेजा । एवं तेडंदिया चउरिंदिया वि जाव मणपजवनाणं उप्पाहेजा । जे णं मणपजननाणं उप्पाडेज्या से णं केनलनाणं उप्पाडेज्या ? गोयसा ! नो इणहे समहे । पंचिदियतिरिक्खजोषिए णं भंते । पंचिदियतिरिक्खजोषिएहितो अर्णतरं उम्बहिना नेरहएस उनवजेजा ? गोयमा ! अत्येगहए उनवजेजा. अत्येगहए फो उपवजेजा । जे … से णं केवलिएकतं धानां लमेजा सवणयाए ? गोयमा । अत्येगहए लभेजा, अत्येगइए णो लभेजा । जे णं केवलिपसर्त धम्मं लभेजा सबणगाए से णं केविंठ बोहिं बुज्हेजां ? गोयमा ! अत्येगहए बुज्हेजा, आत्येगहए णो बुज्हेजा ।

जे णं भेते ! केविंह बोहिं बुज्हेजा से णं सद्देजा पत्तिएजा रोएजा? हंता गोयमा! जाव रोएजा । जे णं भंते ! सद्देजा ३ से णं आभिणिकोहियनाणसुयनाणओहि-नाणाइं उप्पाडेजा? हंता गोयमा! जाब उप्पाडेजा। जे णं मंते! आभिणिबोहिय-नाणमुयनाणओहिनाणाई उप्पाडेजा से णं संचाएजा सीलं वा जाव पिटविजनाए ? गोयमा ! नो डणट्टे समद्धे । एवं असुरकुमारेस वि जान थणियकुमारेस । एगिंदिय-विगलिंदिएमु जहा पुढवीकाइए । पंचिंदियतिरिक्सजोणिएमु मणुस्सेसु य जहा नेरइए । वाणमंतरजोइसियवेमाणिएस जहा नेरइएस उववजेजा पुच्छा भणिया एवं मणुरसे वि । वागर्मतर्जोइसियवेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ ५६४ ॥ रयणप्यमा-पुढवीनेरइए णं भंते ! रयणप्यभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतरं उच्चहिता तित्थगरत्तं लमजा ? गोयमा ! अत्थेगइए लमजा, अत्थेगइए जो लमजा । से केणद्रेणं मंते ! एवं वृच्छ-- 'अत्थेगइए लभेजा, अत्थेगइए णो लभेजा' ? गोयमा ! जस्स णं रयण-पमापुढवीनेरइयस्य तित्थगरनामगोयाइं कम्माइं बद्धाई पृद्धाईं निधनाइं कहाई पद्मवियाइं निविद्याइं अभिनिविद्याइं अभिसमन्नागयाइं उदिन्नाई, णो उवसंताई हवंति. से णं रयणप्पमापुढवीनेरइए रयणप्पमापुढवीनेरइएहिंनो अणंतरं उव्वष्टिता तित्थ-गरतं लभेजा, जस्स णं रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्थगरनामगोयाइं० णो बद्धाइं जाव णो उदिशाई, उवसंताई हवंति, से णं रयणप्यभापुढवीनेरहए रयणप्यभापुढवी-नेरइएहिंतो अर्णतरं उव्वष्टिता तिरथगरतं यो लभेजा. से तेणद्रेणं गोयमा ! एवं बुचइ-'अत्थेगइए लभेजा, अस्थेगइए णो लभेजा'। एवं सकरप्पमा जाव वाल्ययप्प-भापुरवीनरइएहिंतो तित्थगर्तं लमेजा । पंकप्पभापुरवीनरइए णं भंते ! पंकप्पमा०-नेरइएहिंतो अणंतरं उव्बद्दिता तित्थगरतं लमेजा ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे. अंतिकिरियं पुण करेजा । घूमप्पभापुढवीनेरइए पुच्छा । गोयमा ! नो इणहे समहे, सम्बविरइं पुण लमेजा । तमप्पभापुढवी-पुच्छा । नी ः विरयाविरइं पुण लमेजा । अहेसत्तमपुढवी-पुच्छा । गोयमा ! नो इणहे समहे, सम्मत्तं पुण लभेजा । असुर-कुमारस्स पुच्छा । गोयमा ! नो इणहे समहे, अंतिकिरियं पुण करेखा । एवं निरं-तरं जाव आउकाइए । तेउकाइए णं भंते ! तंउकाइएहिंतो अणंतरं उन्बहिता तित्यगर्तं लभेजा ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे, केवलिपन्तं धम्मं लभेजा सवण-याए । एवं वाउकाइए वि । क्लस्सइकाइए णं पुच्छा । गोयमा ! नो इलट्टे समहे. अंतकिरियं पुण करेजा । बेइंवियतंइंदियचर्डारंदिए णं पुरुष्ठा । गोयमा ! नो इणहे समद्गे, मणपञ्चवनाणं उप्पाढेजा । पंत्रिदियतिरिक्सजोभियमणुसवाणमंतरजोइसिए णं पुच्छा । गोयमा ! नो श्णद्वे समद्वे, अंतकिरियं पुण करेजा । सोहम्मगदेवे धं

भेते ! अणंतरं चर्य चहता तित्थगरतं लमेजा ? गोयमा ! अत्येगहए लमेजा, अत्थेगहए णो लभेजा, एवं जहा रयणप्पभापुढविनेरहए, एवं जाव सव्बह्ससद्भगदेवे ॥ ५६५ ॥ रयणप्पभापुढविनेर्हए णं भंते ! अर्णतरं उच्चिहता चक्क्षिष्टितं लमेखा ? गोयमा ! अत्थेगइए लमेजा, अत्थेगइए नो लमेजा । से केणड्रेणं भंते ! एवं व्यचड० ? गोयमा ! जहा र्यणप्पभापुढविनेरइयस्स तित्थगरत्तं । सक्करप्पभा० नेरइए० अणंतरं उन्बहिता चक्क्वहितं लमेजा ? गोयमा ! नो इणहे समहे । एवं जाव अहेसत्तमा-पुढविनेरइए । तिरियमणुएहिंतो पुच्छा । गोयमा ! नो इण्डे समद्रे । भवणवडवाण-मंतरजोइसियवेमाणिएहिंतो पुच्छा । गोयमा ! अत्येगइए लभेजा, अत्येगइए णो लमेजा। एवं बलदेवतं पि, नवरं सक्करप्पमापुढविनेरइए वि लमेजा। एवं वासुदेवतं दोहिंतो पुढवीहिंतो वेमाणिएहिंतो य अणुत्तरोववाइयवज्रेहिंतो, सेंसेयु नो इणहे समङ्घे । मंडलियनं अहेसत्तमातेजवाजवज्ञेहितो । सेणावइरयणतं गाहावहरयणतं वहूइरयणतं पुरोहियरयणतं इत्थिरयणतं च एवं चेव, णवरं अणुत्तरोववाइयवजे-हिंतो। आसरयणतं हत्थिरयणतं रयणप्पभाओ णिरंतरं जाव सहस्तारो अन्थे-गइए लभेजा, अत्थेगइए णो लभेजा। वक्तर्यणतं छत्तर्यणतं चम्मरयणतं दंडरयणतं असिरयणतं मणिरयणतं कागिणिरयणतं एएसि णं असुरकुमारेहितो आरद्ध निरंतरं जाव इंसाणाओ उववाओ, सेसेहिंतो नो इण्ड्रे समद्वे॥ ५६६॥ अह मंते ! असंजयमवियदव्यंदेवाणं, अविराहियसंजमाणं, विराहियसंजमाणं, अवि-राहियसंजमासंजमाणं, विराहियसंजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदण्पि-याणं, चरगपरिव्वायगाणं, किव्विसियाणं, तिरिच्छियाणं, आर्जीवयाणं, आभि-ओगियाणं, सिलंगीणं दंसणवावण्यनाणं दंवलोगेस उववज्जमाणाणं करस कहिं उववाओ पण्णतो ? गोयमाः! असंजयमवियदन्वदेवाणं जहणोणं भवणवासीस्. उक्कोसेणं उनिसगवेजएस: अविराहियसंजमाणं जहनेणं सोहम्मे कप्पे. उक्कोसेणं सन्बह्नसिद्धः; विराहियसंजमाणं जहनेणं भवणवासीसु, उद्योसेणं सोहम्मे कप्पेः अवि-राहियसंजमासंजमाणं जहनेणं सोहम्मे कप्पे, उन्नोसेणं अनुए कप्पे; विराहियसंज-मासंजमाणं जहनेणं भवणवासीस. उक्कोसेणं जोइतिएसः, व्यसनीणं जहनेणं भवण-वासीस्, उक्कोरेणं वाणमंतरेसः तावराणं जहन्नेणं भवणवासीस्, उक्कोरेणं जोहसिएसः कंदिप्याणं जहनेणं भवणवासीसु, उद्दोसेणं सोहस्मे कप्पे; चरगपरिव्वायगाणं जहनेणं भवणवासीय. उक्कोसेणं वंभलोए कप्पे: किल्बिसियाणं जहनेणं सोहम्मे कप्पे. उद्दोसेणं लंतए कप्पे; विरिच्छियाणं जहनेणं भवणवासीस, उद्दोसेणं सहस्सारे कप्पे; आजीवियाणं जहनेणं सवणवासीतु, उद्गोसेणं अच्चुए कप्पे; एवं आमिओ-

गाण वि, सिल्गीणं दंसणवावण्णगाणं जहनेणं भवणवासीस्त, उद्योसेणं उन्तरमगेवेज-एस ॥ ५६० ॥ कहविहे णं मंते ! असण्णियाउए पन्नते ! गोयमा ! चउन्निहे असण्णियाउए पन्नते ! गंजहा—नेरह्यअमण्णियाउए जान देवअसण्णियाउए । असण्णी णं मंते ! जीवे कि नेरह्याउयं पकरेह जान देवाउयं पकरेह ? गोयमा ! नेरह्याउयं पकरेह जान देवाउयं पकरेह ! तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहनेणं दस नास-सहस्साइं, उद्योसेणं पिलओनमस्स असंखेजहमागं पकरेह ! तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योसेणं पिलओनमस्स असंखेजहमागं पकरेह ! एवं मणुस्ताउयं पि । देवाउयं जहा नेरह्याउयं । एयस्स णं मंते ! नेरह्यअसण्ण-आउयस्स जान देवअसण्णिआउयस्स क्यरे कयरेहितो अप्पा ना ४ ! गोयमा ! सन्तरथोने देवअसण्णिआउए, मणुस्यसण्णिआउए असंखेजगुणे, तिरिक्खजोणिय-असण्णिआउए असंखेजगुणे, तिरिक्खजोणिय-असण्णिआउए असंखेजगुणे ॥ ५६८ ॥ एक-नणाए भगवर्षय वीसहमं अंतिकिरियापयं समस्ते ॥

विहिसंठाणपमाणे पोग्गलिकणणा सरीरसंजोगो । दब्बपएसऽप्पबहुं सरीरोगा-हणडप्पबहुं ॥ कह णं भंते ! सरीरया पन्नता ! गोयमा ! पंच सरीरया पन्नता । तंजहा-ओरालिए १, वेउम्बिए २, आहारए ३, तेयए ४, कम्मए ५।ओरालिय-सरीरे णं भंते ! कडविहे पन्नते ? गीयमा ! पंचिबहे पन्नते । तंजहा-एगिदियओरा-लियसरीरे जाव पंचिदियओरालियसरीरे । एगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कइ-विहे पन्नते ? गोयमा ! पंचविद्दे पन्नते । तंजहा--पुढविकाइयएगिदियसोरालिय-सरीरे जाव वणप्पतकाइयएगिदियओरालियसरीरे । पुढविकाइयएगिदियओरालिय-सरीरे णं भंते ! कड्विहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तंत्रहा -- सहमपुटविका-इयएगिदियओरालियसरीरे य बायरपुढविकाइयएगिदियओरालियसरीरे य । सुहस-पुढविकाइयएगिदियओरालियसरीरे णं भंते ! कडावेहे पन्नते ? गोयमा ! तुविहे पक्ते । तंत्रहा-पज्तनगद्धहुमपुढविकाइयएगिदियओरालियसरीरे य अपजनगस्हम-पुढिविकाइयएगिदियओरालियसरीरे य । बायरपुढिविकाइया वि एवं चेव, एवं जाव नगरसङ्काङ्यएगिदियओराल्यियसरीरेति । बेइंदियओराल्यिसरीरे णं भेते ! कडविहे वकते ? गोयमा । दुविहे पक्ते । तंजहा---पजनगवेइंदियओरालियसरीरे य अपजन त्तगबेइंदियओराबियसरीरे य । एवं तेइंदिया चलरिदिया वि । पंचिदियओराबिय-सरीरे णं भंते ! कहविहे पक्ते ? गोगमा ! तुविहे पक्ते । तंजहा-तिविक्स-जोणियपंचिदियओरालियसरीरे य मणुरसपंचिदियओरालियसरीरे व । तिरिक्स-जोषियपंचिदियकोरािकयस्परीरे णं मंते ! कडविहे पश्चते ! गोयसा ! तिविहे

छद्य वि । मण्सपंचिदियओरालियसरीरे णं भंते ! किसंठाणसंठिए पचते ? गोयमा ! छिविहसंठाणसंटिए पन्नते । तंजहा-समचउरंसे जाद हुंडे, पळतापळताण वि एवं चेव. गब्भवक्रंतियाण वि एवं चेव. पजनापजनाण वि एवं चेव । संमुच्छिमाणं पुच्छा । गोयमा ! हंडसंठाणसंठिया पण्णना ॥ ५०० ॥ ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखे-ज्ञहमार्ग, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं । एगिंदियओरालियस्स वि एवं चेव जहा ओहियस्स । पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरस्स णं भंते । केमहालिया सरीरो-गाहणा पन्नता ? गोयमा ! जहनेण वि उन्नोसेण वि अंगुलस्स असंखेजहभागं, एवं अपज्जत्तयाण वि पज्जत्त्याण वि । एवं सुहमाणं पज्जतापज्जताणं, वायराणं पज्जता-पजताण वि । एवं एसो णवओ मेओ जहा पुढिविकाइयाणं तहा आउकाइयाण वि तेउक्काइयाण वि वाउक्काइयाण वि । वणस्सङ्काइयओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पनता ? गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं. उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं । अपजनगाणं जहनेण वि उक्कोसेण वि अंग्रलस्स असंखेजडभागं. पजतागाणं जहनेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं, उन्नोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं । वायराणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजहमार्ग, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणमहस्सं. पजनाण वि एवं चेव । अपजनाणं जहसेण वि उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखेजहमागं । सहमाणं पजनापजनाण य तिण्ह वि जहनेण वि उक्को-सेण वि अंगुलस्स असंखेजहमागं । बेइंदियओरालियसरीरस्स णं अंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पत्रता ? गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं. उद्योसेणं बार्स जोयणाई । एवं सम्बत्य वि अपजनगाणं अंगुलस्स असंसेजङ्भागं जहण्णेण वि उद्योसेण वि । पंजनगणं जहेव औरालियस्स ओहियस्स । एवं तेइंदियाणं तिष्णि गाउयाई, चउरिंदियाणं चत्तारि गाउयाई, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उद्यो-सेणं जोयणसहस्सं ३. एवं संमुच्छिमाणं ३, गब्भवकंतियाण वि ३, एवं चेव णवओ मेखो भाणियव्वो । एवं जरुयराण वि जोयणसहस्यं णवश्रो मेखो. शरुय-राण वि णव मेया ९. उक्कोरेणं छ गाउयाई. एजनगाण वि एवं चेव. संमुच्छि-माणं पज्रत्तगाण य उक्कोसेणं गाउयपुर्तं ३, गब्मवकंतियाणं उक्कोसेणं छ गाउयाई पजताण य २, सोहियचडप्पयपजतगगवभवकंतियपजतयाण वि उक्कोसेणं छ गाउयाई । संमुच्छिमाणं पज्जताण य गाउयपुहुत्तं उद्दोसेणं, एवं उर्परिसप्पाण वि । ओहियगन्मवद्वंतियपञ्चलगाणं जोयणसहस्यं, संमुख्छिमाणं पञ्चलाण य जीयणपुरुतं, भुयपरिसप्पाणं ओहियगन्मवद्गतियाण य उद्गोरीणं गाउयपुरुतं.

संमुच्छिमाणं वणुपृहत्तं, सहयराणं ओहियगब्भवकंतियाणं संमुच्छिमाण य तिण्ह वि उक्कोरेणं भणुपृहतं । इसाओ संग्रहणीगाहाओ—जोयणसहस्यं छन्गाउयाई तत्तो य जोयणसहस्यं । गाउयपुहत्त भुयए धणुहपुहत्तं च पक्खीनु ॥ ९ ॥ जोयणमहत्सं गाउयपुहत्त तत्तो य जोयणपुहत्तं । दोण्हं तु धणुपुहुत्तं समुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥ २ ॥ मणुसोरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता? गोयमा! जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं, उद्गोसेणं तिण्णि गाउयाइं । एवं अपज्जताणं जहनेण वि उद्दोसेण वि अंग्रलस्स असंखेजाइमागं । संमुच्छिमाणं जहन्नेण वि उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखे-ज्यद्रभागं, गब्भवद्यंतियाणं पजताण य जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजद्रभागं, उद्दोसेणं तिष्णि गाउयाई ॥ ५७१ ॥ वेउन्त्रियसरीरे णं भंते ! कहविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्ते । तंजहा-एगिदियवेउव्वियसरीरे य पंचिदियवेउव्वियसरीरे य । जड एगिंदियवैउव्वियसरीरे कि वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे. अवाउका-इयएगिंदियवेडिव्यसरीरे ? गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदियवेडिव्यसरीरे, नो अवा-उक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे । जइ बाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं सुहम-वाउद्गाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, बायरवाउद्गाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे १ गोयमा ! नो सुहुमनाउक्काइयएगिंदियनेउब्नियसरीरे, बायरवाउक्काइयएगिंदियनेउब्नियसरीरे । जड बायरवाउकाडयएगिदियवेउन्वियसरीरे कि पजनबायरवाउकाइयएगिदियवेउ-व्वियसरीरे. अपज्जनवायरबाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे १ गोयमा । पजन-बायरवाउद्याड्यएगिंदियवेउव्ययसरीरे. नो अपज्यत्तवायरवाउद्याड्यएगिंदियवेउ-व्वियसरीरे । जइ पंचिदियवेडव्वियसरीरे कि नेरइयपंचिदियवेडव्वियसरीरे जाव देवपंचिदियवेविवयसरीरे ? गोयमा ! नेरडयपंचिदियवेविवयसरीरे वि जाव देवपंचिदियवेउव्वियसरीरे वि । जइ नेरइयपंचिदियवेउव्वियसरीरे किं रयणप्प-मापुढविनेरङ्यपंचिदियवेउव्ययसरीरे जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपंचिदियवे-उव्वियसरीरे ? गोयमा ! रयणप्यभापुहविनेरइयपंचिदियवेउव्वियसरीरे वि जाव अहेसत्तमापुढविनेर्इयपंचिंदियवैउव्वियसरीरे वि । जइ रयणप्यमापुढविनेर्इय-पंचिदियनेडिव्यमसरीरे कि पजानगरयणप्यमापुढविनेरहयपंचिदियनेडिव्यमसरीरे. अपजानगर्यणप्यमापुडविनेरइयपंचिवियवेडिवयसरीरे ? गोयमा ! पजानगर्यणप्य-भापुढविनेरहयपंचित्रियवेजव्वियसरीरे. अपजनगर्यणप्पभापुढविनेरहयपंचितियवेज-व्वियसरीरे. एवं जान महेसलमाए दुगको मेको माणियव्यो । जइ तिरिक्स-जोणियपंचिदियवेद विवस्तीरे कि संमुख्डिमतिरिक्सजोणियपंचिदियवेर विवस्तीरे.

गन्भवद्धंतियतिरिक्तजोणियपंचिदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! नो संसच्छिम-तिरिक्ख जोणियपंचिदियवेउ व्वियसरीरे. गब्भवक्षंतियतिरिक्ख जोणियपंचिदियवे-उव्ययसरीरे । जड गब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेडव्यियसरीरे कि संखेज-वासाउयगब्भवक्रंतिय॰पंचिदियवेउव्वियमरीरे. असंखेजवासाउयगब्भवक्रंतियतिरि-क्खजोणियपंचिदियवेडिव्वयसरीरे १ गोयमा ! संखेजवासाउयग्ब्भवक्षंतियतिरिक्ख-जोषियपंचिदियवेउव्वियसरीरं नो असंखेजवासाउयगब्भवकंतियतिरिक्खजो-णियपंचिदियवेउ व्विगसरीरे । जइ संखेजनासाउयगन्भवक्रंतियतिरिक्खजोणिय-पंचिदियवेउव्वियसरीरे कि पजत्तगसंखेजवासाउयगब्भवद्वतियतिरिक्यजोणियपंचि-दियवेडिव्वयस्रीरे. अपजात्तगसंखेजवासाउयगब्सवद्यंतियतिरिक्खजोणियपंचिदिय-वेडव्यियमगरे ? गोयमा ! पज्जनगसंखेजवासाउयगब्भवद्वंतियतिरिक्खजोणिय-पंचिदियवेट व्वियसरीरे. नो अपजनगसंखेजवासाउयगन्भवद्वंतियतिरिक्खजोणिय-पंचिदियवेउव्वियसरीरे । जड संखेजवासाज्यगब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदिय-वेउ वित्रयसरीरे. किं जलयरसंखेजवा माउयगञ्भवक्रेतियतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-वेउव्वयसरीरे, थलयरसंखेजवासाउयगब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेउव्वि-यमरीरे. खहयरसंखेजवासाउयगब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! जलयरसंबेजवासाउयगब्भवदंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेडव्दियसरीरे वि. थलयरसंखेजवासाउयगब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरे वि. खहयरसंखेजनासाउयगञ्जनकातियतिरिक्खजोणियपंचिदियनेउध्नियसरीरे वि । जड जलगरसंखेजवासारायग्रन्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेद्यविद्यासरीरे किं प्रज-त्तगजलयरसंखे जवासाउयगच्भवक्रंतियतिरिक्ख जोणियपंचिदियवे उविवयसरीरे, अप-जातगजलयरसंखेजवासाउयगन्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेउव्जियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तमजलयरसंखेजवासाउयगन्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिदियवेउ-व्ययसरीरे. नो अपज्जतगजलयरसंखेजवासाउयगब्भवकंतियतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-वेउव्वियसरीरे । जइ थलयरतिरिक्खजोणियपंचिदिय जाव सरीरे कि चडप्पय जाब सरीरे. परिसप्प जाव सरीरे ? गोयमा ! चडप्पय जाव सरीरे वि. परिसप्प जाव सरीरे वि । एवं सव्वेसिं णेयव्वं जाव खहयराणं पजताणं. नो अवजताणं । जह मणूसपंचिदियवेउव्वियसरीरे कि संमुच्छिममणूसपंचिदियवेउव्वियसरीरे, गब्भवर्क्न-तियमणूसपंचिदियवेड व्वियसरीरे ? गोयमा ! णो संमुच्छिममणुसपंचिदियवेड व्वि-यसरीरे, गब्भवकंतियमणूसपंश्विदिववेडिव्ययसरीरे । अह गब्भवकंतियमणूसपंश्वि-दियवेउव्वियसरीरे किं कम्मभूमगगन्भवकंतियमणूसपंचिदियचेउव्वियसरीरे. अक-

अतर्रीवगगब्भवकंतियमण्सपंचिदियवे उव्वियसपिरे. अंतर्रीवगगब्भवकंतियमण्स-पंचिदियवेडव्वियसरीरे ? गौयमा ! कम्मभूमगग्ब्भवक्वंतियमणूसपंचिदियकेडव्विय-सरीरे. णो अकम्मभूमगगञ्भवकंतियमणूसपंचिदियवेउव्वियसरीरे, णो अंतरदीव-गगब्भवकंतियमणुसपंचिन्दियवेउव्वियसरीरे । जर् कम्मभूमगगब्भवक्रतियमणुस-पैचिदियचे र्राव्वयमरीरे कि सेखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवकंतियमण्सपंचिदिय-वेउव्वियमरीरे, असंखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्षंतियमणुसपंत्रिदियवेउव्विय-सरीरे ? गोयमा ! संखेळवासाउयकम्मभूमगगञ्भवकंतियमणुलपंचिदियवेडव्यिय-सरीरे. नो असंखेजनामाउरकम्मभूमगग०भवद्यंतियमणसपंचिदियवैउव्ययसरीरे। जड संखेजनामाउयकम्मभूमगगज्भवद्यंतियमण्सपंचिंदियवेद्यव्वियसरीरे कि पजन-यसंखेजवासाउयकम्मम्मगमण्यपंचिदियवेडव्हियसरीरे. अपजन्तयसंखेजवासाउय-क्रमभूमगगवभवक्रंतियमण्सपंचिदियवेड व्वियसरीरे १ गोयमा । पजन्तयसंखेजवासा-ट्यकम्मभूमगग्बभवद्यंतियमणुमपंचिदियवेउव्वियसरीरे. नो अपजन्यसंखेजवामा-उयक्रमभूमगगब्भवकंतियमण्सपंचिदियवेडव्वियसरीरे । जइ देवपंचिदियवेडव्वि-यसरीरे कि भवणवासिदेवपंचिदियवेउ व्वियसरीरे जाब वैमाणियदेवपंचिदियवेउ व्वि-यसरीरे १ गोयमा । भवणवामिदेवपंचिंदियवेड व्वियसरीरे वि जाव वेमाणियदेवपं-चिंदियवेउ व्यियसरीरे वि । जइ भवणवासिदेवपंचिंदियवेउ व्यियसरीरे कि असुरक-मारभवणवासिदेवपंचिदियवेउव्वियमरीरे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचिदियवे-उव्वियसरीरे १ गोयमा ! अपुरक्तमार० वि जाव थणियकुमारदेवपंचिन्दियवेउव्विय-सरीरे वि । जड असरकमारमवणवासिदेवपंचिदियवेडव्यियसरीरे कि पज्जसग्रस-रकुमारभवणवासिदेवपंचिदियवेउ व्वियसरीरे, अपज्जनगञ्जसुरकुमारभवणवासिदेवपं-चिंदियवेउव्जियसरीरे ? गोयमा ! पजत्तगअसरक्रमारमनणवासिदेवपंचिंदियवेउव्य-यसरीरे वि. अपज्जनगअसुरकमारभवणशासिदेवपांचिदियवेउ व्वियसरीरे वि. एवं जाव थणियकुमाराणं दुगको मेस्रो । एवं बाणमंत्रराणं सद्भविद्याणं, जोइसियाणं पंचविहाणं । वेसाणिया दुविहा-कप्पोवगा कप्पातीता य । कप्पोवगा बारसविहा, तेसि पि एवं चेत्र इहस्रो मेओ । कप्पातीता इविहाए-गेवेजगा य अणुत्तरोववाइया य, गैबेजमा णवविहा, अणुत्तरीबबाइया पंचविहा. एएसि पजतापजताभिलावेणं द्रगभो मेबो भाणियम्बो ॥ ५७२ ॥ वेडिव्ययसरीरे णं मंते ! किसंठिए पनते ? गोयमा ! जाणासंठाणसंठिए पनते । वाटकाइयएगिदियवेडिययसरीरे णं मेते ! किसंठिए पन्नते ? नोयमा ! पडागार्सहामसंहिए पन्नते । नेर्ड्यपंचिंदियवेड व्यापन रीरे या अंते ! किसंजाणसंदिए पक्ते ! गोयमा ! नेरहथपंचिदियनेउन्नियसरीरे

द्वविद्वे एक्तो । तंजहा-भवभारणिजे य उत्तरवेडब्बिए य । तत्थ णं जे से-भवधा-रिफिजे से णं हंडसंठाणसंठिए पत्रते । तत्थ णं जे से उत्तरवेउव्विए से वि हंडसंठा-णसंठिए पन्नते । रयणप्पमापुढविनेरइयपंचिदियवेटिक्यसरीरे णं मेते ! किसंठाण-संठिए पन्नते ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइयाणं दुविहे सरीरे पनते । तंत्रहा-भवधारणिजे य उत्तरवेटिव्वए य । तत्थ णं जे से भवधारणिजे से णं हुंहे,० जे से उत्तरवेडिव्वए से वि हंडे । एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरङयवेडिव्ययमशीरे । तिरि-क्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किसंठाणसंठिए पन्नेत ? गोयमा! णाणासंठाणसंठिए पन्नते । एवं जाव जलयरचलयरखहयराण वि । थलयराण वि चडप्पयपरिसप्पाण वि, परिसप्पाण वि उरपरिसप्पभुयगरिसप्पाण वि । एवं मणुस्मपं-चिंदियवेडव्वियसरीरे वि । असुरक्रमारभवणवासिद्वपंचिंदियवेडव्वियसरीरे णं भंते ! किसंठाणसंठिए पन्नते ? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं दुविहे नरीरे पन्नते । तंजहा-भवधारणिजे य उत्तरवेउन्त्रिए य। तत्थ णं जे से भवधारणिजे से णं समच उरंमसंठाणसंठिए पन्नते. तत्थ णं जे से उत्तरवेडिव्वए से णं णाणासंठाण-संठिए पन्नेत, एवं जाव थणियकुमारदेवपंचिदियवेउव्ययसरीरे, एवं वाणमंतराण वि. णवरं ओहिया वाणमंतरा पुच्छिजंति, एवं जोइसियाण वि ओहियाणं. एवं सोहम्मे जाव अखुयदेवसरीरे । गेवेजगकप्पानीनवेमाणियदेवपंचिदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किसंठिए पन्ने ? गोयमा! गेर्वेज्जगदेवाणं एगे भवधारणिजे सरीरे. से णं समचाउरससंठाणसंठिए पक्तो. एवं अणुत्तरीववाइयाण वि ॥ ५७३ ॥ वेडिव्वयसरीरस्स णं भंते । केमहालिया सरीरोगाहणा पनता १ गोयमा । जहनेणं अंगुलस्य असंखेजइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसयसहस्सं । वाउक्काइयएगिंदि-यवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा प्रमुता ? गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्स असंबेजइभागं, उद्योसेण वि अंगुलस्स असंबेजइभागं । नेरइयपंचिदिय-वेउव्वियसरीरस्स णं मंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पनता ! गोयमा ! डुविहा पमता । तंजहा-भवधारणिजा य उत्तरवेडिवया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिजा सा जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहमार्ग, उन्नोसेणं पंचधणुसयाई। तत्थ णं जा सा उत्तरवेटिनया सा जहनेणं अंगुलस्स संखेजहभागं, उद्योसेणं धणुसहस्सं । रयणप्प-मापुडविनेर्ड्याणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पश्चता ! गोयमा ! दुविहा पनता । तंजहा-भवधारणिका य उत्तरवेडव्यिका य । तत्थ ण जा सा भवधारणिका मा जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं. उद्योसेणं सत्त चण्हं तिण्णि स्वणीओ स्व अंगुलाई । तत्य णं जा सा उत्तरबेउव्विया सा जहनेणं संयुक्तस्य संबोजहमागं.

उद्योसेणं पण्णरस धणुइं अद्याइजाओ रयणीओ । सक्करप्पभाए पुच्छा । गोयमा ! जाव तत्थ णं जा सा भवधारणिजा सा जहनेणं अंग्रलस्स असंखेजहमागं. उद्दोरीणं पण्णरस धणुई अब्बाइजाओ रयणीओ । तत्य णं जा सा उत्तरवेडिव्या सा जहबेणं अंग्रलस्स संखेजहभागं. उद्योसेणं एकतीसं धणुडं एका य स्थणी । वाद्ययपमाए भवधारणिज्ञा एकतीसं धणुई एका रयणी. उत्तरवटिवया बासिद्धे धणुई दो रय-णीओ । पंकप्पसाए सवधारणिजा बासिंद्व धणुई दो रयणीओ, उत्तरवेउन्विया पणवीसं धणुसयं । धूमप्पमाए भवधारणिजा पणवीसं धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अन्नाडजाई थणुसयाई । तमाए भवधारणिजा अन्नाइजाई धणुसयाई, उत्तरवेउव्विया पंच धणुसयाई । अहेसत्तमाए भवधारणिजा पंच धणुसयाई. उत्तरवेउव्विया धणु-सहस्सं एवं उक्कोसेणं । जहन्नेणं भवधारणिजा अंगुरुस्स असंखेजहमागं, उत्तर-वेट व्या अंग्रलस्स संखेजङभागं । तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेड व्ययसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पत्रमा ! गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेजह-भागं, उद्योसेणं जोयणसयपुरुत्तं । मणुरुसपंचिदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केम-हालिया सरीरोगाहणा पश्चता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स संखेजइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसयसहस्सं । असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पत्तता ? गोयमा ! अग्ररकुमाराणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पन्नता । तंजहा-भवधारणिजा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिजा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ । तत्य णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहनेणं अंगुलस्स संखेजङभागं. उद्दोरेणं जोयणसयसहस्सं । एवं जाव थणियकुमाराणं, एवं ओहियाणं वाणमंतराणं एवं जोइसियाण वि. सोहम्मीसा-णदेवाणं एवं चेव, उत्तरवेउव्विया जाव अनुको कप्पी, णवरं सणंकुमारे भवधार-णिजा जहनेणं अंगुलस्स असंबेजहमागं, उद्गोरेणं छ रयणीओ । एवं माहिंदे वि, वंभलीयलंतगेस पंच रयणीओ, महासुक्सहस्सारेस चतारि रयणीओ, आणगपाणय-आरण्ड्युएमु तिण्णि रयणीओ । गेबिज्जगकप्पातीत्रवेमाणियदेवपंचिदियवेउव्वियसरी-रस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पश्चला ? गोयमा ! गेवेज्वगदेवाणं एगा भवधारणिजा सरीरोगाहणा पनता । सा जहनेणं अंगुलस्य असंखेजहभागं, उद्योसेणं दो रयणी । एवं अणुत्तरीवबाइयदेवाण वि, जबरं एका रयणी ॥ ५०४ ॥ आहारमसरीरे णं भंते ! बहबिहे पश्चेत ! गोयसा ! एगायारे पश्चेत । जह एगायारे प॰ कि मणूसभाहारगसरीरे, अमणूसभाहारगसरीरे ? गोयमा ! मणूसभहारगसरीरे, नो अमण्सकाहारगसरीरे । जड् मण्सकाहारगसरीरे कि संस्वित्वममण्सवाहारग-

सरीरे, गञ्मवकंतियमणूसआहारगसरीरे १ गोयमा ! नो संमुच्छिममणूसआहारय-सरीरे, गञ्भवकंतियमणूसआहारगसरीरे । जद्द गञ्भवकंतियमणूसआहारगसरीरे कि कम्मभूमगगञ्भवक्कंतियमणुसञ्जाहारगसरीरे, अकम्भभूमगगञ्भवक्कंतियमणुगञाहारगः सरीरे, अंतरदीवगगज्मवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! कम्मभूमगगज्भवक्कं-तिय०, नो अकम्मभूमगगब्मवक्रंतिय०, नो अंतरदीवगगब्भवक्रंतियमगूसआहारग-सरीरे । जइ कम्मभूमगगब्भवकंतियमणूसआहारगसरीरे कि संखेजवासाउगकम्म-भूमगगब्भवक्कंतियमण्समाहारगसरीरे, असंखेजवासाउयक्रमभूमगगब्भवकंतियमण्-सआहारगसरीरे ? गोयमा ! संखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमण्सआहारग-मरीरे, नो असंखेजवामाउयकम्मभूमगगन्भवक्कृतियमणूसआहारगसरीरे । संखेजनामाज्यकम्मभूमगगन्भवकंतियमणूसआहारगसरीरे कि पजनसंखेजनासा-उयकम्मभूमगग्दमक्कंतियमणुसभाहारगसरीरे, अपज्ञतसंखेजवासाउयकम्मभूमग-गब्भवक्रंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा !- पजलसंखेजवासाउयक्रमभूमगगब्भ-वक्षंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अपज्जनसंखेजनासाज्यकम्मभूमगगब्भन्वद्धंतिय-मणुमआहारगस्रीरे । जड पज्यतसंखेजवासाउयकम्मभूमगगव्भवक्षंतियमणुमआहार-गसरीरे कि सम्महिद्रीपजत्तसंखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवकृतियमणृस्वाहारग-सरीरे, मिच्छिहिट्टीपज्जत्तसंखेजवासाउयक्रमभूमगगन्भवकंतियमण्सआहारगसरीरे. सम्मामिच्छांदृद्वीपज्ञत्तसंखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवकंतियमणृसआहारगसरीरे गोयमा ! सम्महिद्रीपज्जनसंखेजवासाउयकम्मभूमगगन्भवद्गतियमणृसआहारगसरीरे. नो मिन्छहिद्वीपजत्तः, नो सम्मामिन्छहिद्वीपजतसंखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भव-क्वंतियमण्यसञ्जाहार्गसरीरे । जड् सम्महिद्वीपजातसंखेजवासाउयवम्मभूमगगञ्भवक्वं-तियमण्सआहारगसरीरे कि संजयसम्महिद्रीपज्यत्तसंखेजनासाउयकम्मथ्रम्यगच्यव-कृतियमण्मआहारगसरीरे, असंजयसम्माहिद्वीपज्जतसंखेजवासाउयकम्मम्मगगञ्ज-वक्वंतियमणूसस्राह।रगसरीरे, संजयासंजयसम्माहेद्वीपज्जनसंखेजवासाउयकम्मभूमग-गञ्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! संजयसम्महिद्वीपज्यत्तसंखेजवासाउय-कम्मभूमगगञ्जवक्वंतियमणूसआहारगसरीरे, नो असंजयसम्महिद्वीपज्जतसंखेजवा-साडयकम्मभूमगगन्भवकंतियमणूसआहारगसरीरे, नो संजयासंजयसम्महिद्वीपज्रत्त ०-आहारगसरीरे । जर् संजयसम्महिद्वीपजनसंखेजनासाउयकम्मम्मगगव्मवकंतियम-ण्सआहारगसरीरे कि पमत्तसंजयसम्महिट्टी०संखेळवासाउयकम्मभूमगगन्भवकेति-यमण्सआहारगसरीरे, अपमत्तसंजयसम्महिद्दी०संखेजवासाउयकम्मभूमगगर्भावकं-तियमण्सआहारगसरीरे ? गोयमा ! पमत्तसंजयसम्महिद्वीपज्यत्तसंखेळावासारयकम्य-

सुमगगच्मवकंतियमणुसभाद्वारगसरीरे. नो अपमत्तसंजयसम्मद्द्वी व्यवसम्भूमगगच्म-वकंतियमणूसआहारगसरीरे । जह पमत्तसंजयसम्महिद्री ०संखेजवासाउयकम्मभूमग०-मणूसआहारगसरीरे किं इष्ट्रिपत्तपमत्तसंजयसम्महिद्वी •कम्मभूमगसंखेजवासाख्यग-व्भवक्रंतियमण्सआहारगसरीरे, अणिब्रिफ्तपमत्तसंजय व्क्रमभूमगसंखेजवासाउय-गन्मवर्कतिय० आहारगसरीरे ? गोयमा ! इङ्गिपतपमत्तसंजयसम्महिद्री०संखेजनासा-उयकम्मभूमगगब्भवक्षंतियमणूसआहार्गमरीरे नो अणिक्रिपनपमत्तसंजयसम्महिद्वी ०-संबेजनासाउयकम्मभूमगगञ्भवकृतियमणूमआहारगमरीरे । आहारगसरीरे णं मंते ! किसंठिए पश्चते ? गोयमा ! समचउरंगसंठाणसंठिए पश्चते । आहारगसरीरस्स णं भेते ! केमहालिया सरीगेगाहणा पत्रता ? गोयमा ! जहनेणं देमणा रयणी. उद्योसेणं पहिष्णणा रयणी ॥५०५॥ तेयगसरीरे णं भंते ! कडविहे पसते ? गोयमा ! पंचिवहे पन्नते । तंजहा-एगिदियतेयगसरीरे जाव पंचिदियतेयगसरीरे । एगिदिय-तेयगसरीरे णं भंते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नते । तंजहा-पुढवि-काइय॰ जाव वणस्सइकाइयएगिंदियतेयगसरीरे । एवं जहा ओरालियसरीरस्स मेओ भणिओ तहा तेयगरस वि जाव चउरिंदियाणं । पांचिदियतेयगसरीरे णं भंते ! कहविहे पन्ते ? गोयमा ! चडव्विष्ठे पन्नेत । तंजहा-नेरइयतेयगसरीरे जाव देवतेयगसरीरे. नेरइयाणं दुगओ भेओ भाषियव्यो जहा वेटव्यियसरीरे । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुसाण य जहा ओरालियसरीरे भेओ भणिओ तहा भाणियव्यो । देवाणं जहा वेउव्वियसरीरमेओ भणिओ तहा भाणियव्यो जाव सव्बद्धिखढेवति । तस्यसरीरे णं मंते ! किंसंठिए पन्नते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पन्नते । एगिदियतेयग-सरीरे णं भंते ! किसंठिए पन्नते ? गोयमा णाणासंठाणसंठिए पन्नते । पुटविकाइय-एगिदियतेयगसरीरे णं भेते ! किसंठिए पश्चे ? गोयमा ! मसरचंदसंठाणसंठिए पन्नते, एवं ओराल्यिसंठाणाणसारेण भाणियव्यं जाद चउरिंदियाण वि । नेरइयाणं मंते ! तेयगसरीरे किसंठिए पन्ने ? गोयमा ! जहा वेड व्यवसरीरे । पंचिंदियति-रिक्खजोणियाणं मण्साणं जहा एएसि चेव ओरालियति । देवाणं भंते ! तेयगसरीरे किसंठिए पनते ? गोगमा ! जहा बेलवियस्स जाव अणक्तरोववाडयति ॥ ५७६ ॥ जीवस्य णं भंते ! मार्णंतियससुरुघाएणं समोहयस्य तेवासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पकता ? गोबमा ! सरीरप्यमाणमेता विक्खंभवाहक्केणं, आयामेणं जहनेणं अंगुरुस्स असंखेजहभागं, उद्योसेणं लोगंताओ लोगंते । एगिदियस्स णं भंते ! भारवंतियसम्बद्धाएणं समोहयस्य देवासरीरस्य केमहालिया सरीरोगाहणा पकता ? गोयमा । एवं चेव जाव पुरुवि० अह्नउ० तेउ० बाउ० वणप्पह्नकाइयस्स । वेइंदियस्स

णं भंते ! मारणंतियसम्ब्याएणं समोहयस्य तैयासरीरस्य केमहालिया सरीरोगाइणाः पन्ता ? गोयमा ! सरीरप्यमाणमेता विक्खंभबाहहेणं. आयामेणं जहनेणं अंग्-लस्स असंखेजहसागं, उक्कोसेणं तिरियलोगाओ लोगंते । एवं जाव चडरिंदियस्स । नेरडयस्य णं भंते ! मारणंतियसमुख्याएणं समोहयस्य तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! सरीरप्यमाणमेत्ता विक्खंभबाहहेणं. आयामेणं जहनेणं साइरेगं जोयणसहस्सं अहे. उद्योसेणं जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव संयंभुरमणे समुद्दे. उन्नं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीओ । पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स णं भंत ! मार्रणतियसमुग्धाएणं समोहयस्य तेयासरीरस्य केमहालिया मरीरोगा-हणा ः रे गोयमा ! जहा बेइंदियसरीरस्स । मणुस्सस्य णं भंते ! मारणंतियसमुग्धा-एणं समोहयस्य तेयासरीरस्य केमहालिया सरीरोगाहणा० ? गोयमा ! समयखेताओ लोगंनो । अमुरकुमारस्य णं भंते ! मारणंतियसमुग्धाएणं समोहयस्य तेयासरीरस्य केमहालिया सरीरोगाहणा० ? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्रा विक्खंभवाहक्षेणं, आयामेणं जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं. उद्योसेणं अहे जाव तबाह पुरवीए हिद्रिक्षे चरमंते, तिरियं जाव सर्यभुरमणसम्बद्धस बाहिरिक्के वेहयंते, उन्नं जाव ईसिप्पब्सारा पढ़वी. एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणगा य एवं चेव । सणंकुमारदेवस्य णं भंते ! मारणंतियसमुग्धाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा ० १ गोयमा ! सरीरप्यमाणमेत्ता विक्खंभबाहक्केणं. आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं. उद्योसेणं अहे जाव महापायालाणं दोचे तिभागे. तिरियं जाद सर्यभुरमणे समुद्दे, उद्गं जाद अबुओ कप्पो। एवं जाद सहस्सारदेवस्स। आणयदेवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुखाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया मरीरोगाहणा ० १ गोयमा ! सरीरप्पमाणमेता विक्खंभवाहहेणं. आयामेणं जहचेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं, उक्कोसेणं जाव अहोलोइयगामा. तिरियं जाव मणूसखेतं, उन्हें जाव अनुओ कप्पो, एवं जाव आरणदेवस्स । अनुपदेवस्स एवं चेव, णवरं उन्नं जाव सयाई विमाणाई । गेविजगदेवस्स णं मंते ! मारणंतियसमुग्याएणं समोहयस्स तेयग-सरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा० ? गोयमा! सरीरप्पमाणमेता विक्खंभवाहक्षेणं. आयामेणं जहनेणं विज्ञाहरसेढीओ, उन्नोसेणं जाव अहोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसन्वेत्ते, उद्गं जाव सगाइं विमाणाइं, अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव। कम्मगसरीरे णं भंते ! बह्रविहे पक्षते ? गोयमा ! पंचविहे पक्षते । तंजहा एगिंदिगकम्मगसरीरे जाव पंचिदियकम्मगसरीरे य । एवं जहेव तेयगसरीरस्स मेखो संठाणं खोगाडणा य भणिया तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अणुत्तरीववाह्यति ॥ ५७७ ॥

कोरालियसरीरस्स णं भंते ! कइदिसिं पोग्गला चिजंति ? गोयमा ! निव्वाघाएणं छहिसिं, वाघायं पहुच सिय तिदिसिं. सिय चउहिसिं. सिय पंचदिसिं। वेउन्विय-सरीरस्स णं भंते ! कइदिसिं पोग्गला चिजंति ? गोयमा ! णियमा छहिसिं । एवं आहारगसरीरस्स वि. तेयाकम्मगाणं जहा ओराल्यिसरीरस्स । ओराल्यिसरीरस्स णं भंते ! कडदिसिं पोग्गला उवनिजांति ? गोयमा ! एवं चेव जाव कम्मगसरीरस्स एवं उवनिज्वंति, अवन्विज्वंति ॥ ५७८ ॥ जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स वेउ विवयसरीरं, जस्स वेउ विवयसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अस्यि सिय नस्यि, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्म ओरालियसरीरं सिय अत्थ सिय नित्य । जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सिय अत्य सिय नत्यि, जस्स पुण आहारग-सरीरं तस्त ओरालियसरीरं णियमा अत्य । जस्त णं भेते ! ओरालियमरीरं तस्स तेयगसरीरं, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालिय-सरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमा अत्य, जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालिय-सरीरं सिय अत्य सिय णत्थि, एवं कम्मगसरीरं पि । जस्स णं भंते ! वेडव्विय-सरीरं तस्य आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्य वेडव्वियसरीरं ? गोयमा ! जस्स वेडव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्यि. जस्स वि आहारगसरीरं तस्स वि वेडिव्यसरीरं णित्य । तेयाकम्माइं जहा ओरालिएण समं तहेव आहारगसरीरेण वि समं तेयाकामगाउं चारेयव्याणि । जस्स णं भंते ! तेयगसरीरं तस्स कामगा-सरीरं, जस्त कम्मगसरीरं तस्त तेयगसरीरं ? गीयमा ! जस्त तेयगसरीरं तस्त कमगसरीरं णियमा अत्य, जस्स वि कम्मगसरीरं तस्स वि तेयगसरीरं णियमा अतिष ॥ ५७९ ॥ एएसि णं मंते ! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगकन्यगसरीराणं दब्बहुयाए पएसहुयाए दब्बहुपएसहुयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ! गोयमा ! सम्बत्योवा भाहारगसरीरा दम्बद्धयाए. वेउच्नियसरीरा दम्बद्धयाए असंखेजगुणा. ओरालियसरीरा द्व्वद्वयाए असंखेजगुणा, तेयाकमगसरीरा दोवि तुला द्व्वद्वयाए अर्णतगुणा । पएसद्वयाए-सब्बत्बोबा आहारगसरीरा पएसद्वयाए. वेडव्वियसरीरा पएसह्याए असंखेळगुणा, ओरालियसरीरा पएसह्याए असंखेळगुणा, तेयगसरीरा पएसङ्घ्याए अनंतगुणा, बम्ममसरीरा पएसड्टयाए अणंतगुणा । दव्यङ्वपएसड्टयाए-सम्बत्योवा बाहारगसरीरा दव्यद्वयाए, वेडव्यियसरीरा दव्यद्वयाए असंखेजगुणा, ओराहियसरीरा दव्यद्वयाए असंखेजगुणा, ओराहियसरीरेहिंतो दम्बद्वयाएहिंतो आहा-

रगसरीरा पएसद्वयाए अणंतगुणा, वेजव्वियसगैरा पएसद्वयाए असंबेजगुणा, औरा-लियसरीरा पएसड्डयाए असंखेजगुणा, तेयाकम्मा दोनि तुला दव्बड्डयाए अणंतगुणा, तेयगसरीरा पएसड्डयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पएसड्डयाए अणंतगुणा ॥५८०॥ एएसि णं भंते ! ओरालियवेडव्वियआहारगतेयगकम्मगसरीराणं जहण्णियाए ओगा-हणाए उद्गोसियाए ओगाहणाए जहण्णुक्गोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरेहिती अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा ओरालियमरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा, तेया-कम्मगाणं टोण्ह वि तुला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेडिव्वयसरीरस्स जह-ण्णिया ओगाहणा असंखेजगुणा. आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज-गुणा । उक्नोसियाए ओगाहणाए-सम्बत्योवा आहारगसरीरस्म उक्नोसिया ओगाहणा. ओराहियसरीरस्य उद्योसिया ओगाहणा संखेजगुणा. वेउव्वियमरीरस्य उद्योसिया ओगाहणा संखेजगुणा, तुयाकम्मगाणं होण्ह वि तुला उद्योसिया ओगाहणा असंखेज-गुणा । जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए-सन्वत्योवा ओराडियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा, तेयाकम्माणं दोण्ह वि तुह्रा जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेउव्निय-सरीरस्य जहण्यिया ओगाहणा असंखेळागुणा, आहारगसरीरस्य जहण्यिया ओगा-हणा असंखेजगणा, आहारगसरीरस्भ जहण्णियाहितो ओगाहणाहितो तस्स चेव उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया, ओरालियमरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज-गुणा, वेडव्वियमरीरस्य उक्कोसिया ओगाहणा संबेज्जगुणा, तेयाकम्मगाणं दोण्ह वि तुला उद्योसिया ओगाहणा असंखेजगुणा ॥ ५८१ ॥ पञ्चवणाप भगवईप एगवीसइमं ओगाहणासंठाणपयं समसं॥

कह् णं भंते ! किरियाओ पण्णताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णताओ । तंजहा—काइया १, अहिंगरणिया २, पाओसिया ३, पारियावणिया ४, पाणाइवाय-किरिया ५ । काइया णं भंते ! किरिया कहविद्दा पण्णता ? गोयमा ! दुविद्दा पण्णता । तंजहा—अणुक्रयकाइया य दुप्पउत्तकाइया य । अहिंगरणिया णं भंते ! किरिया कहविद्दा पण्णता ? गोयमा ! दुविद्दा पण्णता । तंजहा—खंजोयणाहिंगरणिया य निव्वत्त-णाहिंगरणिया य । पाओसिया णं भंते ! किरिया कहविद्दा पण्णता ? गोयमा ! तिविद्दा पण्णता । तंजहा—जेणं अप्यणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुमं मणं संपाया ! तिविद्दा पण्णता । तंजहा—जेणं अप्यणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अस्यमं गोयमा ! तिविद्दा पण्णता । तंजहा—जेणं अप्यणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अस्यमं वेयणं चर्चरेड, सेत्तं पारियावणिया किरिया । पाणाइवायकिरिया णं भंते ! कहविद्दा पण्णता ? गोयमा ! तिविद्दा पण्णता । तंजहा—जेणं अप्यणो वा परस्य वा तदुभयस्य वा अस्यमं वेयणं चर्चरेड, सेत्तं पारियावणिया किरिया । पाणाइवायकिरिया णं भंते ! कहविद्दा पण्णता ? गोयमा ! तिविद्दा पण्णता । तंजहा—जेणं अप्याणं वा परं वा तदुभयं वा जीवियाओ

क्वरोवेइ, सेत्तं पाणाइवायकिरिया ॥ ५८२ ॥ जीवा णं भेते ! किं सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि । से केणद्रेणं मंते ! एवं वृच्छ-'जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि' ? गोयमा ! जीवा द्विहा पन्नता । तंत्रहा-संमारस-मावण्णगा य असंसारसमावण्णगा य । तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं रिखा. सिद्धा णं अकिरिया । तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णणा ते दुविहा पनना । तंजहा-संकेतिपृष्टिवण्णमा य असेकेतिपृष्टिवण्णमा य । तत्य णं जे ते सेकेतिपृष्टिवण्णमा ते णं आंकरिया, तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिकणगा ते णं सकिरिया, से तेणड्रेणं गोयमा ! एवं व्यक्त-'जीवा सफिरिया वि अकिरिया वि' ॥ ५८३ ॥ अत्थि ण भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कजाइ ? हंता गोयमा ! अत्थि । किंह णं अंते ! जीवाणं पाणा-इवाएणं किरिया कजाइ ? गोयमा ! छस जीवनिकाएस । अत्य णं भंते ! नेरइयाणं पाणाइवाएणं किरिया कजाइ ? गोयमा ! एवं चेव । एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुनावाएणं किरिया कजड १ हंता ! अत्थि । कर्मिंह णं मंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जद ? गोयमा ! सम्बद्ध्वेस, एवं निरंतरं नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं अदिशादाणेणं किरिया कजाइ ? हंता ! अत्थ । कस्टि णं भंते ! जीवाणं अदिबादाणेणं किरिया कजाइ ? गोयमा ! गहणधारणिजेस दब्बेस, एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं। अत्थि णं भंते ! जीवाणं मेहणेणं किरिया कबाइ ? हंता! अत्थि । कर्मेंह णं भंते ! जीवाणं मेहणेणं किरिया कजइ? गोयमा! स्वेस वा स्वसहगएस वा दव्वेस. एवं नेरहयाणं निरंतरं जाव वेसाणियाणं । अत्थि णं भंते ! जीवाणं परिसाहेणं किरिया कज़इ १ हंता ! अस्थि । किर्मेंह णे भेते ! जीवाणे परिन्यहेणे किरिया कज़ड १ गोवमा ! सन्बद्ध्वेस एवं नेरहयाणं जाव बेमाणियाणं। एवं कोहेणं माणेणं मायाए लोमेणं पेजेणं दोसेणं कलहेणं अब्सक्खाणेणं पेसुक्षेणं परपरिवाएणं अरहरईए मायामोसेणं मिच्छादंसणसङ्गेणं । सन्वेसु जीवनेरइयमेएणं भाषियव्या निरंतरं जाब बेमाणियाणं ति, एवं श्रद्धारस एए दंडगा १८॥ ५८४॥ जीवे णं भंते ! पाणाइवाएणं कड कम्मपगडीओ बंधह ? गोयमा ! सत्तविष्ठबंधए वा अद्भविष्ठबंधए वा । एवं नेरइए जाब निरंतरं वेमाणिए । जीवा णं भंते ! पाणाइबाएणं कह कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहवंधगा वि अद्वविहवंधगा वि । नेरहया णं भेते ! पाणाइवरएणं कह कम्मपगडीओ बंधंति ! गोयमा ! सब्वे वि ताव होजा सत्तविह्यंथगा, अहवा सत्तविह्यंथगा य अञ्चविह्यंथए य. अहवा सत्तविष्ठबंधना य श्रद्धविष्ठबंधना य । एवं असुरक्तमारा वि जाव श्रविमक्तमारा पुढवि-

आउतेउवाउवणप्पद्काइया य एए सच्ये वि जहा ओहिया जीवा, अवसेसा जहा नेरइया । एवं ते जीवेगिंदियवजा तिष्णि तिष्णि भंगा सम्बत्ध भाषियम्बत्ति जाव मिच्छादंसणसहे, एवं एगत्तपोहत्तिया छत्तीसं दंडगा होति ॥ ५८५ ॥ जीवे णं भंते ! णाणावरणिजं कम्मं वंधमाणे कहिकरिए ? गोयमा ! मिय तिकिरिए, सिय चनकिरिए, सिय पंचकिरिए, एवं नरइए जाव वेमाणिए। जीवा णं भंते ! णाणावर णिजं कम्मं बंधमाणा कड़किरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया, सिय चउ-किरिया, सिय पंचिकरिया वि, एवं नेरह्या निरंतरं जाव वेमाणिया। एवं दरिमणा-वरणिजं वेयणिजं मोहणिजं आउयं नामं गोत्तं अंतराइयं च अद्भविहकम्मपगढीओ माणियव्याओ, एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा भवन्ति ॥ ५८६ ॥ जीवे णं भंते ! जीवाओ कड़किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए । जीवे णं भंते ! नेरइयाओ कहिकरिए ? गोयमा ! निय तिकिरिए, सिय चडकिरिए, सिय अकिरिए, एवं जाव थणियकुमाराओ । पुढविकाइयाओ आउक्काइयाओ तेउक्काइयाओ वाउक्काइयवणप्फड्काइयवेड्दियतेर्ड्कादयचर्डार्गदियपंचि-दियतिरिक्खजोणियमणुरसाओ जहा जीवाओ, वाणमंनरजोडसियवेमाणियाओ जहा नेरइयाओ । जीवे णं भंते ! जीवेहिंनो कड़िकरिए ! गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चडिकरिए, सिय पंचिकरिए, सिय अकिरिए । जीवे णं भंते ! नेरइएहिंतो कहकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिए अकिरिए, एवं जहेव पढमो दंडओ तहा एसी विडओ माणियव्यो । जीवा णं मंते ! जीवाओ वहकिरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया वि. सिय चउकिरिया वि. सिय पंचकिरिया वि. सिय अकिरिया वि। जीवा णं मंते ! नेरइयाओं कड़किरिया ? गोयमा ! जहेव आइह्नदंडओ तहेव भाषियव्यो जाव वेमाणियति । जीवा णं मंते ! जीवेहिंतो कड़किरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि. चडकिरिया वि. पंचकिरिया वि. अकिरिया वि। जीवा णं भंते! नेरइएहिंती कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि, चलकिरिया वि, अकिरिया वि । असुरकुमारे-हिंतो नि एवं चेन आब नेमाणिएहिंतो, ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो । नेरइए णं मंते ! जीवाओ कहकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चनकिरिए, सिय पंचिकरिए । नेरहए णं भंते ! नेरहयाखो कहिकरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चडिकरिए । एवं जाव वेमाणिएहिंतो, नवरं नेरइयस्स नेरइएहिंतो देवेहिंतो य पंचमा किरिया नित्य । नेरह्या णं भंते ! जीवाओ कड़किरिया ? गोथमा ! सिय तिकि-रिया, सिय चउकिरिया, सिय पंचकिरिया, एवं जाव बेमाणिवाओ, नवरं नेरहयाओ देवाओं य पंचमा किरिया नत्य। नेरहया णं भंते! जीवेहिंसो कर्किरिया?

मोयमा! तिकिरिया वि. चडकिरिया वि. पंचकिरिया वि। नेरइया णं मंते! नेरइएहिंतो कड़िकरिया ? गोबमा ! तिकिरिया वि चलकिरिया वि । एवं जाव वैमा-णिएहिंती, नवरं ओरालियसरीरेहिंती जहा जीवेहिंती । असुरकुमारे णं अंते ! जीवाओ कड़िकरिए ? गोयमा ! जहेव नेरइए चलारि दंडगा तहेव असुरकुमारे बि चतारि दंढगा भाणियव्या. एवं च उवउज्जिकणं भावेयव्यं ति । जीवे मणूसे य अकिरिए बुचइ, सेसा अकिरिया न बुचंति । सन्वजीवा ओरालियसरीरेहिंतो पंच-किरिया । नेरइयदेवेहिंतो पंचकिरिया ण वृत्रंति । एवं एकेकजीवपए चतारि चतारि दंडगा भाणियव्या एवं एयं दंडगसयं सव्ये वि य जीवाइया दंडगा ॥ ५८७ ॥ कह णं भंते! किरियाओ पण्णताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णताओ । तंजहा---काइया जान पाणाइनायकिरिया। नेरइयाणं भंते ! कह किरियाओ पण्णाताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णताओ । तंजहा-काइया जाव पाणाइवायकिरिया. एवं जाव नेमाणियाणं । जस्स णं भंते ! जीवरस काइया किरिया कजाइ तस्स अहिगर-णिया किरिया कजह, जस्स अहिगर्णिया किरिया कजह तस्स काइया किरिया कज़ड़ ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कज़ड़ तस्स अहिगरणिया किरिया नियमा कजाइ. जस्स अहिगरणिया किरिया कजाइ तस्स वि काइया किरिया नियमा कबड़। जस्स णे भंते ! जीबस्स काइया किरिया कजह तस्स पाओसिया किरिया कजाइ, जस्स पाओसिया किरिया कजाइ तस्स काइया किरिया कजाइ ? गोयमा ! एवं चेव । जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जड तस्स पारियाविषया किरिया कजह, जस्स पारियावणिया किरिया कजह तस्स काह्या किरिया कजह ? गोयमा । जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया० सिय कजाइ. सिय नो कजह, जस्स पुण पारियावणिया किरिया कजह तस्स काइबा॰ नियमा कजाइ, एवं पाणाइवायकिरिया वि । एवं आइल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कर्जंति । जस्स आइल्लाओ तिण्यि कवंति तस्स उविदेशको दोषि सिय कवंति, सिय नो कवंति. जस्स जबरिह्नाओं दोष्णि कर्जाति तस्स आइह्नाओ नियमा तिष्णि कर्जाति । जस्स गाँ भंते ! जीवस्स पारियाबणिया किरिया कजड तस्स पाणाइवायकिरिया कजड, जस्स पाणाइवायकिरिया कज्जड तस्स पारियावणिया किरिया कज्जड ? गोयमा ! जस्स वं जीवरस पारियावणिया किरिया कुन्नड तस्स पाणाडवायकिरिया सिय कुन्नड. सिय नो कज़ड़, जस्स पुण पाणाइबायकिरिया कज़ड़ तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कजइ। जस्स णं भंते! नेरइयस्स काइया किरिया कजाइ तस्स अहिगरियस किरिया कबाइ ? मोयमा ! जहेव जीवस्य तहेव नेरहयस्य वि. एवं निरंतरं जाव बेमाणिबस्स ॥ ५८८ ॥ जं समयं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कवाइ तं समर्थ अहिगरणिया किरिया कजाइ. जं समयं अहिगरणिया ० कजाइ तं समयं काइया किरिया कजह ? एवं जहेव आइछओ दंडओ तहेव भाषियव्यो जाव वेमाणियस्स । जं देसं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया तं देसं णं अहिगरणिया किरिया तहेव जाव वेमाणियस्य । जं पएसं णं भंते ! जीवस्य काइया किरिया तं पएसं णं अहिगरणिया किरिया एवं तहेव जाव वेमाणियस्स । एवं एए जस्स जं समयं जं देसं जं पएसं णं चत्तारि दंडगा होति ॥ ५८९ ॥ वह णं भंते ! आओजियाओ किरियाओ पण्ण-त्ताओं ? गोयमा ! पंच आओजियाओं किरियाओं पण्णताओं । तंजहा-काइया जाब पाणाइवायकिरिया, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया आओजिया किरिया अत्यि तस्स अहिगरिषया आओजिया किरिया अत्यि. जस्स अहिगरणिया आओजिया किरिया अत्य तस्स काइया आओजिया किरिया अत्य ? एवं एएणं अभिलावेणं ते चेष चतारि दंडगा भाषियन्ता, जस्स जं समयं जं देसं जं जाव वेमाणियाणं ॥ ५९० ॥ जीवे णं भंते ! जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्टे तं समयं पारियावणियाए पुट्टे, पाणाइ-वायकिरियाए पुद्धे ? गोयमा ! अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइ-याए अहिगरणियाए पान्नोसियाए किरियाए पुट्टे तं समयं पारियाचणियाए किरियाए पुद्धे, पाणाइवायकिरियाए पुद्धे १, अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइ-याए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्टे तं समयं पारियादणियाए किरियाए पुद्वे, पाणाइवायकिरियाए अपुद्वे २, अत्येगहए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए० पुट्टे तं समयं पारियावणियाए किरियाए अपुद्धे, पाणाइवायकिरियाए अपुद्धे ३ ॥ ५९९ ॥ कह णं मंते ! किरियाओ पण्णताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णताओ । तंत्रहा---आरंभिया, परिस्महिया, मायावृत्तिया, अपन्यक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवृत्तिया । आरंभिया णं भंते ! किरिया करस कजह? गोयमा! अण्णयरस्य वि पमत्तसंजयस्य । परिश्गिहया र्ण भंते ! किरिया कस्स कव्यड ? गोयमा ! अण्णयरस्स वि संजया-संजयस्य । मायावत्तिया णं भेते ! किरिया कस्य कज्जड ? गोयमा ! अण्णयरस्य अपमत्तसंजयस्य । अपबन्खाणकिरिया ण संते ! कस्स गोयमा ! अन्नायरस्य वि अपन्यस्ताणिस्स । भिच्छाटंसणवत्तिया णं भेते ! किरिया करस कजह ? गोयमा ! अण्ययरस्य वि मिच्छादंसणिस्य ॥ ५९२ ॥ नेरहयाणं भंते ! बद्ध किरियाओ एकताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ प्रवताओ ।

तंजहा-आरंभिया जाव मिच्छादंसणवित्या। एवं जाव वेमाणियाणं। जस्स णं र्मते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कजाइ तस्म परिम्महिया कजाइ जस्स यरिग्गहिया किरिया कजह तस्म आरंभिया किरिया कजह ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कजाइ तस्स परिमाहिया । सिय कजाइ, सिय नो कजाइ, जस्स पुण परिमाहिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जइ । जस्स णै मंते! जीवस्य आरंभिया किरिया कजाइ तस्स मायावतिया किरिया कजाइ पुच्छा । गोयमा ! जस्य णं जीवस्य आरंभिया किरिया फजह तस्य मायावृत्तिया किरिया नियमा कजड़, जस्य पुण मायावतिया किरिया कजड़ तस्य आरंभिया किरिया सिय कजड़. सिय नो कजड़। जस्स णं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया क जंद तस्स अपचन्याणिकरिया पुच्छा । गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कजइ तस्स अपचक्खाणकिरिया सिय कजइ, सिय नो कजइ, जस्स पुण अपनक्काणकिरिया कजह तस्य आरंभिया किरिया णियमा कजह । एवं मिच्छा-दंसणवत्तियाए वि समं । एवं परिग्गहिया वि तिहिं उवरिक्वाहिं समं संवारेयव्या । जस्स मायावित्रया किरिया कजड तस्स उवरिकाओ दो वि सिय कर्जात सिय नो कवंति, जस्स उवरिहाओ दो कवंति तस्स मायावतिया॰ णियमा कवाइ । जस्स अपचक्खाणिकरिया कजाइ तस्स मिच्छादंसणवित्तया किरिया सिय कजाइ, सिय नो कजह, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया तस्स अपन्तक्खाणकिरियां। णियमा कजाइ । नेरइयस्स आइक्षियाओ चतारि परोप्परं नियमा कजन्ति, जस्स एयाओ चत्तारि कर्जात तस्स मिच्छादंसणवित्तया किरिया भइजाइ, जस्स पुण मिच्छादंसणवित्रया किरिया कजइ तस्स एयाओ चतारि नियमा कजेति. एवं जाव यणियकुमारस्स । पुढवीकाइयस्स जाव चर्डारेदियस्स पंच वि परोप्परं नियमा कर्जात । पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स आइहिसाओ तिण्णि वि परोप्परं नियमा कजंति, जस्स एयाओ कजंति तस्स उन्नरिक्रिया दोण्णि मङ्जंति, जस्स उनरिहाओ दोण्णि कर्जात तस्स एयाओ तिण्णि वि णियमा कर्जात । जस्स अपनक्षाणिकरिया । तस्स मिच्छादंसणवित्या । सिय कजह , सिय नो रूजह , जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कजइ तस्स अपचन्छाणकिरिया नियमा कजइ, मण्सस्स जहा जीवस्स, वाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स जहा नेरइयस्स । जं सम-यण्णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कजाइ तं समयं परिगाहिया किरिया कज़ह ? एवं एए जस्स जं समयं जं देश जं पएसेण य चतारि दंखमा वेयच्या. यहा नेरह्याणं तहा सम्बदेवाणं नेयव्यं जाद वेमाणियाणं ॥ ५९३ ॥ अत्य

णं भंते ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे कज्जड ? हंता ! अत्थ । कम्हि पं भंते ! जीवाणं पाणाडवायवेरमणे कजाइ ? गोयमा ! छमु जीवनिकाएस । अत्थि णं भेते ! नेरइयाणं पाणाइवायवेरमणे कजाइ ? गोयमा ! नो इणद्वे समद्वे । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं मणूसाणं जहा जीवाणं। एवं मुसाबाएणं जाव मायामोसेणं जीवरुस य मणुसुरुस य सेसाणं नो इणद्रे समद्रे । णवरं अदिशादाणे गहणघार-णिजेस दब्वेस. मेहणे रूवेस वा रूवमहगएस वा दब्वेस, सेमाणं मब्वेस दब्वेस । अस्य णं भंते ! जीवाणं मिच्छादंसणसङ्घवेरमणे कजड ! हंना ! अस्य । कस्टि णं भंते ! जीवाणं मिच्छादंसणसञ्ज्वेरमणे कज्जइ ? गोयमा ! सव्वद्व्वेसु, एवं नेरद्याणं जाव वेमाणियाणं, णवरं एगिंदियविगर्लेदियाणं नो इणद्वे समट्टे ॥ ५९४ ॥ पाणाइवायविरए णं भंते ! जीवे कह कम्मपगरीओ वंघड ? गोयमा ! सत्तविहवंधए वा अद्वविहबंधए वा छव्विहंबंधए वा एगविहवंधए वा अबंधए वा । एवं मणूसे वि भाणियन्वे । पाणाइवायविरया णं भंते ! जीवा कह कम्मपग-डीओ वंधंति ? गोयमा ! सन्वे वि ताव होजा सत्तविहवंधगा य एगविहवंधगा य १. अहवा सन्तविष्टवंघगा य एगविष्टवंघगा य अट्टविहवंघगे य २, अहवा सत्तविहर्वधगा य एगविहर्वधगा य अद्भविहर्वधगा य ३. अहवा सत्तविहर्वधगा य एगविहबंधगा य छिव्बहवंधगे य ४, अहबा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छिन्द्रवंघमा य ५, अहवा सत्तिवृह्वंधमा य एनविह्वंधमा य अवंधए य ६. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अबंधगा य ७. अहवा सत्तविहबंधगा य एमविहबंधमा य अद्भविहबंधमे य छन्मिहबंधए य १, अहबा सत्तविहबंधमा य एगविहबंधगा य अद्वविहबंधए य छव्विहबंधगा य २, अहवा सत्तविहबंधगा य एर्जावहबंधगा य अद्भविहबंधगा य छव्यिहबंधए य ३, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अद्वविहबंधगा य छन्दिहबंधगा य ४, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविह्रबंधमा य अद्भविह्रबंधए य अबंधए य १, अहवा सत्तविह्रबंधमा थ एगविहबंधमा य अद्भविहबंधए य अबंधमा य २, अहवा सत्तविहबंधमा य एगविहबंधना य अद्भविहबंधना य अवंधए य ३. अहवा सत्तविहबंधना य एगविहवंधगा य अद्भविहवंधगा य अवंधगा य ४ । अहवा सत्तविहवंधगा य एगविहबंधगा य छव्चिहबंधगे य अवंधए य १, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहवंधमा य छव्विहवंधए य अवंधमा य २, अहवा सत्तविहवंधमा य एगविहबंधना य छन्त्रिहवंधना य अवंधए य ३, अहवा समविह्बंधना य एगविह्वंथमा य छव्चिह्वंथमा य अवंधमा य ४ । अह्वा सत्तविह्वंथमा य एग-

विद्वबंधना य अद्भविहबंधने य छव्विहबंधए य अबंधए य १. अहवा सत्तविह-बंधगा य एगविहबंधगा य अद्भविहबंधए य छव्चिहबंधए य अबंधगा य २. अहवा सत्तर्विहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्वविहबन्धए य छिन्निहबन्धगा य अवन्धए य ३. अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्वविहबन्धए य छिन्दिहबन्धगा य अबन्धगा य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्वविहबन्धगा य छिब्बहबन्धगे य अबन्धए य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहवन्त्रगा य अद्भविहवन्धगा य छव्चिहवन्धगे य अवन्धगा य ६. अहवा मत्तविह्यन्थगा य एगविह्यन्थगा य अद्भविह्यन्थगा य छव्विह्यन्थगा य अवन्धर य ७. अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अट्टविहबन्धमा य छविह-बन्धगा य अबन्धगा य ८, एवं एए अद्ध भंगा, सब्वे वि मिलिया सत्तावीसं भंगा भवंति । एवं मणुसाण वि एए चेव मत्तावीसं भंगा भाषियव्वा, एवं मुसावार्यावर-यस्य जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स य मणूसस्स य । मिच्छादंसणसङ्गविरए णं भंते ! जीवे कड कम्मपगडीओ बन्धह ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अद्भविहबन्धए वा छव्विहवन्यए वा एगविहवन्थए वा अवन्थए वा । मिच्छादंसणसञ्जविरए णं मंते ! नेरहए कह कम्मपगढीओ बन्धह ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अट्टविह-बन्घए वा जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिए। मणुसे जहा जीवे। वाणसंतरजोडसिय-वेमाणिए जहा नेरइए । मिन्छादंसणसह्नविरया णं भंते ! जीवा कह कम्मपगडीओ बन्धन्ति ? गोयमा ! ते चेव सत्तावीसं भंगा भाणियन्वा । मिच्छादंसणसङ्खारया णं भंते ! नेरहया कह कम्मपगढीओ बन्धन्ति ! गोयमा ! सब्वे वि ताव होजा सत्तविहबन्धगा, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगे य. अहवा सत्तविह-बन्धगा य अद्भविहबन्धगा य एवं जाव वेसाणिया, णवरं सणुसाणं जहा जीवाणं ।। ५९५ ।। पाणाइवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स कि आरंभिया किरिया कजाइ जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जड ? गोयमा ! पाणाइवायविरयस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कजह, सिय नो कजह । पाणाइबायविरयस्सं णं अंते ! जीवस्स परिगाहिया किरिया कजड़ ? गोयमा ! णो इणहे समहे । पाणाइवायवि-रयस्स णं मेते ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कजह ? गोयमा ! सिय कजह. सिय नो कजाइ । पाणाइवायविरयस्स णं भेरो ! जीवस्स अपनवन्साणवित्तया किरिया कजह ? गोयमा ! णो इणहे समहे । मिच्छादंसणवत्तियाए प्रच्छा । गोयमा ! णो इषड्ठे समड्डे । एवं पाणाइबामविर्यस्त मणूसस्स वि, एवं जाब माया-मोसनिरयस्स जीवस्स मणुसस्स य । मिच्छादंसणसह्नविरयस्स णं भंते ! जीवस्स कि आरंभिया किरिया कडाई जाव मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई! गोयमा! मिच्छादंसणसक्षविरयस्स जीवस्स णं आरंभिया किरिया सिय कडाई, सिय नो कडाई, एवं जाव अपबक्खाणकिरिया। मिच्छादंसणविष्या किरिया न कडाई। मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई। मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई जाव मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई जाव मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई जाव अपबक्खाणकिरिया वि कडाई, मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई जाव अणियकुमारस्स। मिच्छादंसणसक्षविरयस्स णं भंते। पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स एवमेव पुच्छा। गोयमा! आरंभिया किरिया कडाई जाव मायाविष्या किरिया कडाई, अपबक्खाणकिरिया सिय कडाई, सिय नो कडाई, मिच्छादंसणविष्या किरिया कडाई, अपबक्खाणकिरिया सिय कडाई, सिय नो कडाई, मिच्छादंसणविष्या किरिया नो कडाई। मण्सस्स जहा जीवस्स। वाणमंतरजोईसियवेमाणियाणं जहा नेरइयस्स॥ ५९६॥ एयासि णं भंते! आरंभियाणं जाव मिच्छादंसणविष्याओ किरियाओ, अपबक्खाणकिरियाओ विसेमाहियाओ, परिगहियाओ किसिसाहियाओ, आरंभियाओ किरियाओ किरियाओ विसेमाहियाओ, मायाविष्याओ विसेसाहियाओ। ५९७॥ पञ्चचणाण भगवईए बावीस्सइमं किरियाएथं समर्ता॥

कड़ पगडी कह बन्धइ कडि वि ठाणेहिं बन्धए जीवो । कड़ वेएइ य पयडी अणुमावो कड्विहो करम ॥ कड णं मंते ! कम्मपगडीओ पण्णताओ ? गोयमा ! अड कम्मपगडीओ पण्णताओ । तंजहा—णाणावरणिजं १, इंसणावरणिजं २, वेराणिजं १, मोहणिजं ४, आउयं ५, नामं ६, गोयं ७, अंतराइयं ८ । नेरइयाणं मंते ! कइ कम्मपगडीओ पणताओ ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं १ ॥ ५९८ ॥ कहं णं मंते ! जीवे अड कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! नाणावरणिजस्स कम्मस्स उदएणं दिसणावरणिजं कम्मं जियच्छड, दंसणावरणिजस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिजं कम्मं जियच्छड, दंसणमोहणिजं कम्मरस उदएणं सिच्छत्तं जियच्छड, मच्छत्तेणं उदिएणं गोयमा ! एवं खलु अवि अड कम्मपगडीओ बन्धइ । कहं णं मंते ! नेरइए अड कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए । कहण्णं मंते ! जीवा अड कम्मपगडीओ बन्धह ? गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिया ॥ ५९९ ॥ जीवे णं मंते ! णाणावरणिजं कम्मं क्हिंहें ठाणेहिं वंधइ ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं, तंजहा—रागेण य दोसेण य । रागे बुविहे पणते । तंजहा—कोहे य माणे य, इवे-एहिं चविहें ठाणेहिं विदिओवगगहिएहिं एवं बाह जीवे णाणावरणिजं कम्मं बन्धइ,

एवं नेरइए जाव वेमाणिए। जीवा गं भंते ! णाणावरणिजं कम्मं कहिं ठाणेहिं बन्धन्ति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एवं चेव, एवं नेरइया जाव नेमामिया । एवं दंसणाबरणिजं जाव अंतराइयं, एवं एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा ॥ ६०० ॥ जीवे णं मंते ! णाणावर्षिजं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! अत्येगइए वेएइ, अत्येगइए नो बेएइ । नेरइए णं भंते ! णाणावरणिखं कर्म वेएइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ, एवं जान नेमाणिए, णवरं मणूसे जहा जीवे । जीवा ण भेते । जाणावरणिजं कम्मं वेदेंति १ गोयमा ! एवं चेव, एवं जाव वेमाणिया । एवं जहा णाणावरणिज्यं तहा दंसणावरणिजं मोहणिजं अंतराइयं च. वेयणिजाउनामगोयाई एवं चेव. नवरं मणूसे वि नियमा वेएइ, एवं एए एगत्तपोइत्तिया सोलस दंडगा ॥ ६०१ ॥ णाणा-वरणिजस्स गं भंतं ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुहुत्स बद्धफासपुहुस्स संन्वियस्स चियरस उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कयस्य जीवेणं निव्वत्तियस्य जीवेणं परिणामियस्य सर्यं वा उदिण्णस्य परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्ञमाणस्स गई पप्प ठिई पप्प भवं पप्प पोमाल-परिणामं पप्प बहुविहे अणुभावे पन्नते ? गोयमा ! जाजाबर्णिखस्स णं बम्मस्स जीवेणं बद्धस्य जाव पोम्गलपरिणामं पप्प दसविहे अणुभावे पक्ते । तंजहा-सौया-बर्णे, सीयविष्णाणावर्णे, णेशावर्णे, णेशविष्णाणावर्णे, घाणावर्णे, घाणाविष्णाणा-वरणे. रसावरणे. रसविष्णाणावरणे. फासावरणे. फासविष्णाणावरणे. जं बेण्ड पोम्गलं वा पोम्गले वा पोम्गलपरिणामं वा बीससा वा पोम्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं जाणियव्यं ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण जाणइ, जाणिला वि ण जाणइ. उच्छनणाणी याबि भवइ णाणावरणिजस्स कम्मस्स उद्रवृणं, एस णं गोयमा ! णाणावरणिजे कम्मे. एस णं गोयमा ! णाणावरणिजस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प दसविहे अणुभावे पष्टते ॥ ६०२ ॥ दरिसणावरणिजस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोगालपरिणागं पप्प कडविडे अणुमाबे पक्षने ^१ गोयसा ! दरिसणावरणिजन्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोम्गलपरिणामं पप्प गविष्ठे अणुभावे पश्ते। तंजहा-शिहा, शिहाशिहा, प्यला, प्यलाप्यला, षीणदी, चक्खुरंसणावरणे, अचक्खुरंसणावरणे, ओहिरंसणावरणे, केवलदंसणावरणे, जं बेएइ पोग्नलं वा पोग्नलं वा पोग्नलपरिणामं वा बीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसि वा उदएणं पासियव्यं ण पासइ, पासिउकामे वि ण पासइ, पासिता वि ण पासइ, उच्छनदंसनी यावि मवइ दरिसणावरणिजस्स कम्मस्स उदएणं, एस णं गोयसा ! दरिसणावर्षिज्ये करने, एस णं गोयसा ! दरिसणावर्णिज्यस्य करमस्स

जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प णवविष्ठे अणुभावे पन्ते ॥ ६०३ ॥ सायावेगणिजस्स णं मंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प कड़विहे अणुमावे पन्नते ? गोयमा ! सायावेयणिजस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव अद्वविष्ठे अण्यावे पक्षते । तंजहा---मणुज्या सद्दा १, मणुज्या रूवा २, मणुज्या गंधा ३, मणुण्णा रसा ४, मणुण्णा फामा ५, मणोसुहया ६. वयसुहया ७, काय-सुहया ८, जं वेएइ पोरगलं वा पोरगले वा पोरगलपरिणामं वा वीससा वा पोरग-लाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं सायावेयणिजं कम्मं वेएइ. एस णं गोयमा ! सायावेयणिजे कम्मे, एस णं गोयमा ! सायावेयणिजस्स जाव अट्टविहे अणुभावे पन्नते । असायावेयणिजस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं नहेव पुच्छा उत्तरं च, णवरं अमणुण्णा मद्दा जाव कायदुह्या, एस णं गोयमा ! असायावेयणिजे कम्मे, एम णं गोयमा ! असायावेयणिजस्स जाव अद्वविष्ठे अणुभावे पन्नते ॥ ६०४ ॥ मोहणिजस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं वद्धस्स जाव कड्विष्टे अणुभावे पन्नते ! गोयमा ! मोह-णिजस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पंचविद्दे अणुभावे पत्तने । तंजहा-सम्मत्त-वेयणिजे, मिच्छत्तवेयणिजे, सम्मामिच्छत्तवेयणिजे, कसायवेयणिजे, नोकमाथ-वेयणिजे । जं वेएइ पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं मोहणिजं कम्मं वेएइ. एस णं गोयमा! मोहणिजस्स कम्मस्य जाव पंचविहे अणुमावे पन्नते ॥ ६०५ ॥ आउयस्य णं मंते ! कम्मस्य जीवेणं तहेव पुच्छा । गोयमा ! आउयस्स णं कम्पास्स जीवेणं बद्धस्स जाव चउव्विहे अणुमावे पक्षते । तंजहा-नेरइयाउए, तिरियाउए, मणुयाउए, देवाउए, जं वेएइ पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं आउयं कम्मं वेएइ, एस णं गोयमा ! आउए कम्मे, एस णं गोयमा ! आउयकम्मस्स जाव चडव्विडे अणुमावे पक्ति ॥ ६०६ ॥ सुहणामस्स णं भेते ! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा । गोयमा ! सुदृणामस्स णं कम्मस्स जीवेणं "चउइसविहे अणुभावे पश्चते । तंजहा---इड्डा सद्दा १, इड्डा रूवा २, इड्डा गंधा ३, इड्डा रसा ४, इद्वा फासा ५, इद्वा गई ६, इद्वा ठिई ७, इद्वे लावण्णे ८, इद्वा जसोकिती ९, इद्रे उद्याणकम्मवलवीरियपुरिसकारपरक्कमे १०, इद्वरसरमा ११, कंतस्सरमा १२, पियस्सरया १३, मणुष्णस्सरया १४, जं वेएइ पोम्गळं वा पोग्गळ-परिणामं वा वीससा वा पोग्नलाणं परिणामं तेसि वा उदएणं सहपामं कम्मं वेएइ, एस णं गोयमा ! सहणामकम्मे, एस णं गोयमा ! सहणामरस कम्मरस बाब चउद्दसिवहे अणुभावे पक्ते । बुहनामस्स णं भंते ! पुष्का । गोवमा ! एवं चेव.

णवरं अणिद्वा सहा जाव हीणस्सरया, दीणस्सरया, अकंतस्सरया, जं वेएइ सेसं तं चेव जाव चउहसविहे अणुमावे पश्चो ॥ ६०७ ॥ उचागोयस्स णं मंते ! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा । गोयमा ! उचागोयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव अट्टबिहे अणुभावे पन्नते । तंजहा-जाइविसिद्धया १, कुलविसिद्धया २, बलविसिद्धया ३, रूवविसिद्रया ४. तवविसिद्रया ५. सुयविसिद्रया ६. लाभविसिद्रया ७, इस्सरिय-विसिद्ध्या ८, जं वेएइ पोग्गरुं वा पोग्गरुं वा पोग्गरुपरिणामं वा वीससा वा पोम्मलाणं परिणामं तेसि वा उदएणं जाव सहविहे अणुमावे पश्ते । णीयागोयस्य णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, णवरं जाइविहीणया जाव इस्सरियदिहीणया, जं वेएड पुरगलं वा पोरगले वा पोरगलपरिणामं वा बीससा वा पोरगलाणं परिणामं तेसि वा उदएणं जाव अद्भविहे अणुमावे पन्नते ॥ ६०८ ॥ अंतराइयस्य णं भंते ! कम्मस्य जीवेणं पच्छा । गोयमा ! अंतराइयस्य णं कम्मस्य जीवेणं बद्धस्य जाव पंचविहे अणुमावे पक्षते । तंजहा-दाणंतराए लामंतराए भोगंतराए उवभोगंतराए वीरियंतराए, जं वेएइ पोम्गलं वा जाव वीससा वा पोम्गलाणं परिणामं तेसि वा उदएणं अंतराइयं कम्मं वेएइ, एस णं गोयमा ! अंतराइए कम्मे, एस णं गोयमा ! जाव पंचिवहे अग्रभावे प्राते ॥ ६०९ ॥ एक्सक्णाए अगवर्डए तेबीसड-मस्स पयस्स पढमो उद्देसो समत्तो॥

कह णं अंते! कम्मपगढीओ पक्ताओ ? गोयमा! अह कम्मपगढीओ पक्ताओं। तंजहा—णाणावरणिजं जाव अंतराइयं। णाणावरणिजं णं अंते! कम्म क्रविहे पक्ते ? गोयमा! पंचिवहे पक्ते। तंजहा—आमिणिबोहियनाणावरणिजे जाव केवलनाणावरणिजे ॥ ६१०॥ दंसणावरणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते ? गोयमा! दुविहे पक्ते। तंजहा—निद्दापंचए य दंसणचउक्कए य। निद्दापंचए णं अंते! कर्मे क्रविहे पक्ते ? गोयमा! पंचिवहे पक्ते। तंजहा—निद्दा जाव शीणद्धी। दंसणचउक्कए णं पुच्छा। गोयमा! चउिवहे पक्ते। तंजहा—चक्खुदंमणावरणिजे जाव केवलदंसणावरणिजे ॥ ६१९॥ वेयणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते ? बोयमा! दुविहे पक्ते। तंजहा—सायावेयणिजे य असायावेयणिजे य। सायावेयणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते? गोयमा! अहिवहे पक्ते। तंजहा—मणुण्णा सद्दा जाव कायसुह्या। क्सायावेयणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते? गोयमा! अहिवहे पक्ते। तंजहा—अमणुण्णा सद्दा जाव कायसुह्या। ६१२॥ मोइणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते? गोयमा! दुविहे पक्ते। तंजहा—अमणुण्णा सद्दा जाव कायदुह्या॥ ६१२॥ मोइणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते? गोयमा! दुविहे पक्ते। तंजहा—अमणुण्णा सद्दा जाव कायदुह्या॥ ६१२॥ मोइणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे पक्ते ? गोयमा! दुविहे पक्ते। तंजहा—दंसणमोहणिजे णं अंते! कम्मे क्रविहे

पन्नते ? गोयमा ! तिविहे पन्नते । तंत्रहा-सम्मत्तवेयणिजे, मिच्छत्तवेयणिजे, सम्सामिच्छत्तवेयणिजे । चरित्तमोहणिजे णं भंते ! कम्मे कइविहे पत्रते ! गोयमा ! द्विहे पश्चते । तंजहा-कसायवैयणिजे. नोकसायवैयणिजे । कसायवैयणिजे णं भंते ! कम्मे कडविहे पक्ते ? गोयमा ! सोलसविहे पक्ते । तंजहा-अणंताणबंधी कोहे. अणंताणुबंधी माणे. अणन्ताणुबंधी माया. अणन्ताणुबंधी लोमे. अपच-क्खाणे कोहे, एवं माणे, माया, लोमे, एकक्खाणावरणे कोहे, एवं माणे, माया. लोमे, संजलणकोहे, एवं माणे, माया, लोमे । नोकसायवेयणिजे णं मंते ! कम्मे कड़विहे पन्नते ? गोयमा ! णत्रविहे पन्नने । तंजहा-इत्थावियवेयणिजे, पुरिसवेय-वेयणिजे, नपुंसगवेयवेयणिजे, हासे, रई, अरई, भए, सोगे, दुर्गुछा ॥ ६१३ ॥ आउए णं भंते ! कम्मे कड़विहे पन्नते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नते । तंजहा-नेरइयाउए जाव देवाउए ॥ ६१४॥ णामे णं भंते ! कम्मे कडविहे पश्चते ! गोयमा ! बायालामइविद्वे पक्षते । तंत्रहा-गडणामे १, जाडणामे २, सरीरणामे ३. सरीरोबंगणामे ४, सरीरवंधणणामे ५, सरीरसंघयणणामे ६, संघायणणामे ७, संठाणणामे ८, वष्णणामे ९, गंघणामे १०, रसणामे ११, फासणामे १२, अगुरुलघुणामे १३, उवधायणामे १४, पराघायणामे १५, आणुपुव्यिणामे १६. उस्तायणामे १७. आयवणामे १८. उज्जोयणामे १९. विद्वायगङ्गामे २०, तसणामे २१, थावरणामे २२, ब्रहुमणामे २३, बायरणामे २४, एजत्तणामे २५, अपजत्तणामे २६, साहारणसरीरणामे २७, पत्तेयसरीरणामे २८, बिरणामे २९. अधिरणामे ३०, सुभणामे ३१, असुभणामे ३२, सुभगणामे ३३, दुभग-णामे ३४, समरणामे ३५, दूसरणामे ३६, आदेखाणामे ३७, अणादेखाणामे ३८, जसीकित्तिणामे ३९, अजसीकित्तिणामे ४०, णिम्माणणामे ४१, तित्य-गरणामं ४२ । गइनामे णं भंते ! कम्मे कहविहे पश्चते ? गीयमा ! चउब्विहे पन्ते । तंजहा-निर्यगहनामे, तिरियगइनामे, मणुयगइनामे, देवगइनामे । जाइणामे णं भंते ! कम्मे पुच्छा । गोयमा ! पंचित्रहे पश्चते । तंजहा-एगिंदियजाइणामे जाव पंचिदियजाइणामे । सरीरनामे णं भेते ! कम्मे क्हविहे पश्चते ? गोममा ! पंचिद्धे पन्नते । तंजहा-ओरालियसरीरनामे जाव कम्मगसरीरनामे । सरीरोवंगनामे णं भेते !० कड्विहे पन्नते ? गोयमा ! तिविहे पन्नते । तंजहा-ओरालियसरीरोवंगनामे, वेड-व्वियमरीरोवंगनामे. आहारगसरीरोवंगनासे । सरीरबंधणनामे वं भंते ! • इहविहे पन्नते ? गोयया ! पंचविष्ठे पन्नते । तंजहा-ओरालियसरीरवंघणनामे जाव कम्मग-सरीरबंधणनामे । सरीरसंघायनामे णं मंते ! बडविडे पक्ते ? खेसमा ! पंचविडे

पक्कते । तंजहा-ओरालियसरीरसंघायनामे जाव कम्मगसरीरसंघायनामे । संघयण-नामे णं भेते !० कइविहे पश्चते ? गोयमा ! छिव्विहे पश्चते । तंजहा-वहरोस-भनारायसंघयणनामे, उसहनारायसंघयणनामे, नारायसंघयणनामे, अंद्धनाराय-संघयणनामे, कीलियासंघयणनामे, छेत्रद्वसंघयणनामे । संठाणनामे णं संते !० बहविहे पन्ने ? गोयमा ! छव्विहे पन्ने । तंजहा-समन्वउरससंठाणनामे, निम्गोहपरिमंडल-संठाणनामे, साइसंठाणनामे, वामणसंठाणनामे, खुजसंठाणनामे, हुंडसंठाणनामे । वण्णनाम णं अंते ! कम्मे कइविहे पश्चते ? गोयमा ! पंचविहे पश्चते । तंजहा-कालवण्णनामे जाव सक्रिछवण्णनामे । गंधनामे णं भंते ! कम्मे पुच्छा । गोयमा ! द्विहे पन्नते । तंजहा-सुरमिगंधनामे, दुरमिगंधनामे । रसनामे णं पुच्छा । गोयमा र पंचिवहे पक्षते । तंजहा-तिनरसनामे जाव महररसनामे । फासनामे णं पुच्छा । गोयमा ! अट्टविहे पन्नते । तंजहा-क्ष्मखडफासनामे जाव लहयफासनामे । अग्रर-लहयनाम एगागारे पक्षते। उवधायनामे एगागारे पक्षते. पराधायनामे एगागारे पस्ते । आणुप्रवीणामे चटविहे पस्ते । तंत्रहा-नेरइयआणुप्रवीणामे जाव देवाणपुरवीणामे । उस्सासनामे एगागारे पन्नते. सेसाणि सव्वाणि एगागाराई पण्ण-त्ताई जाव तित्थगरणामे । नवरं विहायगइनामे द्वविहे पनते । तंजहा---पसत्यविहा-यगइनामे. अपसत्थविहायगइनामे य ॥ ६१५ ॥ गोए णं भंते ! कम्मे कइविहे पन्ते ! गोयमा ! दुविहे पनते । तंजहा-उत्रागोए य नीयागोए य । उत्रागोए णं भंते ! कडविंहे पचते ? गीयमा ! अद्भविंहे पचते । तंजहा---जाडविसिद्ध्या जाव इस्सरियविसिद्वया, एवं नीयागोए वि, णवरं जाइविहीणया जाव इस्सरियवि-हीणया ॥ ६१६ ॥ अंतराइए णं भंते ! कम्मे कड़बिहे पश्चते ! गोयमा ! पंचविहे पन्नते । तंजहा-दाणंतराइए जाव वीरियंतराइए ॥ ६१७ ॥ णाणावरणिकस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहण्येणं अंतोसहत्तं, उद्योसेणं तीसं नागरीवमकोडाकोडीओ. तिष्णि य वाससहस्साई अवाहा. अवाहणिया कम्म-ठिई कम्मनिसेगो ॥ ६१८ ॥ निद्दार्पचगस्स णं भंते ! कम्मस्स केवइयं काछं ठिई पनता ? गोयमा ! जहनेणं सागरोबमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखे-जहमागेणं कणिया, उक्कोरेणं तीसं सागरोवसकोडाकोडीओ. तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा. अबाहणिया कम्मद्विई कम्मनिसेगो । इंसणचलकस्स णं भंते ! कम्मस्स केव-इयं कालं ठिई पनता १ गोयमा ! बहन्नेणं अंतोसहत्तं, उन्नोसेणं तीसं सागरीयम-कोडाकोडीओ, तिष्णि य वाससहस्ताहं अवाहा ॥ ६१९ ॥ सायावेयणिजनस इरिया-वहियं वंघगं पद्ध अजहण्यमणुक्कोसेणं दो समजा. संपराइवर्षघरं पद्ध जहनेथं

बारस मुहुत्ता, उद्योसेणं पण्णरस सागरीवमकोडाकोडीओ, पण्णरस वाससयाई अबाहा । असायावेयणिज्ञस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पिल्ञोवमस्स असंखेजहमागेणं ऊणया, उद्योसेणं तीसं सागरीवमकोडाकोदीओ, तिण्णि य वास-सहस्साई अवाहा ॥ ६२० ॥ सम्मत्तवेयणिजस्स पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतो-मुहत्तं, उक्कोसेणं छावद्विं सागरोवमाई साइरेगाई। मिच्छत्तवेयणिजस्स जहनेणं सागरोबमं पलिओवमस्स असंखेजहमागेण ऊणगं, उक्कोसेणं सत्तरि कोडाकोडीओ, सत्त य वायसहस्याई अबाहा, अबाहूणिया० । सम्मामिच्छत्तवेयणिजस्य जहनेणं अंतोमुहत्तं, उन्नोसेणं अंतोमुहुत्तं । कसायबारसगस्स जहन्नेणं मागरीवमस्स चनारि सत्तमागा पिल्ञोवसस्स असंखेजइभागेणं ऊणया. उद्घोसेणं चतालीसं मागरोवस-कोडाकोडीओ, चतालीसं वाससयाई अबाहा जाव निसेगो । कोहसंजलणे पुच्छा । गोयमा! जहनेणं दो मासा, उक्कोसेणं चत्ताठीसं सागरोवसकोडाकोडीओ, चताठीसं वाससयाई अबाहा जाव निसेगो । माणसंजलणाए पुच्छा । गोयमा! जहनेणं मासं. उद्योसेणं जहा कोहस्स । मायासंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अद्धं मासं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स । लोहसंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं अंतोसहत्तं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स । इत्थिवेयस्स पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं सागरोवमस्य दिवन्नं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेजहमागेण ऊणयं, उक्तोमेणं पण्णरस सागरोवमकोडा-कोडीओ, पण्णरस बाससयाई अबाहा । पुरिसवेयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अह संबच्छराइं, उक्कोसेणं दल सागरोवमकोडाकोडीओ, दस बाससयाई अबाहा जाव निसेगो । णपुंसगवेयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सामरोवमस्स दोण्णि सत्तमागा पिलओवमस्न असंखेजाइमागेणं कणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडा-कोडीओ, वीसङ् वाससयाई अवाहा । हासरईणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोव-मस्स एकं सत्तमागं पिल्ञोवमस्स असंखेजङ्भागेणं ऊणं, उद्दोसेणं दस सागरोवम-कोडाकोडीओ, दस वाससमाई अवाहा । अरहमयसोगदुगुंछाणं पुच्छा । गोयमा ! जहकेणं सागरीवमस्य दोष्णि सत्तभागा पित्रश्रीवमस्य असंखेखह्भागेणं कणया. उक्रोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसं वाससयाई अबाहा ॥ ६२१ ॥ नेरहयाजयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दस वाससहस्साई अंतीमुहत्तमञ्मिह-याइं, उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाइं पुरुवकोडीतिमागमञ्महियाइं । तिरिक्खजोणि-याउयस्स पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुतं, उद्दोसेणं तिण्णि पल्छिनोवमाई पुट्यकोडीतिमागमन्महियाई, एवं मणूसाउयस्स वि । देवाउयस्स वहा नेर्ड्याउयस्य ठिइति ॥ ६२२ ॥ निरचगइनामए णं पुच्छा । गोयमा ! बहुनेणं सागरोवमसहरू

स्सस्य दो सत्तमागा पलिओवमस्स असंखेजङ्गागेणं ऊणया. उद्योसेणं वीसं साग-रोवमकोडाकोडीको, वीसं वाससयाई अवाहा । तिरियगइनामए जहा नपुंसगवेयस्स । मण्यगइनामए पुच्छा । गो॰ ! जहन्नेणं सागरोवमस्य दिषन्नं सत्तमार्ग प्रकिओवमस्स असंखेजहभागेणं ऊणगं. उद्योसेणं पण्णरम सागरोवमकोडाकोडीओ, पण्णरसवास-सयाई अबाहा । देवगइनामए णं पुच्छा । गोयमा ! अहन्नेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सन्तभागं पतिओवमस्त असंखेजहभागेणं कणयं. उद्योसेणं जहा पुरिसवेयस्त । एगिदियजाइनामए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पिलओवमस्स असंखेजहमागेणं ऊणया, उद्योसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वामसयाइं अबाहा । बेइंदियजाइनामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोवमस्य नव पणतीसइभागा पिल्नोवमस्य असंखेजइभागेणं ऊणया, उद्घोसेणं अद्वारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अद्वारम य वाससयाई अवाहा । तेइंदियजाइ-नामए णं जहण्येणं एवं चेव, उक्कोसेणं अद्वारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अद्वारस वाससयाई अबाहा । चलरिंदियजाइनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोवमस्य णव पणतीराइभागा पलिओवमस्स असंखेजहभागेणं द्धणया, उद्घोरेणं भद्वारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अद्वारस वाससयाई अबाहा । ऐचिहियजाइनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोवमस्स दोष्णि सत्तभागा पिछञोवमस्स असंखेज्जद्दभागेणं कणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाई अबाहा । ओरा-लियसरीरनामाए वि एवं चेव । वेडव्वियसरीरनामाए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पल्लिबोवमस्स असंखेजहभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वाससयाई अवाहा । आहारगसरीर-नामाए जहकेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ। तेयाकम्मसरीरनामाए अहण्णेणं दोण्णि सत्तमागा पलिओवमस्स असंखेजह्मागेणं कणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य बाससयाई अवाहा। ओराहियवेड व्वियआहारगसरीरोवंगनामाए तिण्णि वि एवं चेव, मरीरवंधणनामाए वि पंचण्ह वि एवं चेब, सरीरसंघायनामाए पंचण्ह वि जहा सरीरनामाए कम्मस्स ठिइति, वहरोसभनारायसंघयणनामाए जहा रहनामाए । उसमनारायसंघयणनामाए पुच्छा । गोयमा ! ज॰ सागरोदयस्स छ पणतीसङ्भागा पिललोदयस्स असंखेखङ्भागेणं समया, उक्कोसेणं बारस सागरोवमकोडाकोडीओ, बारस वाससयाई अवाहा । नारायसंघ-यणनामस्य अङ्केणं सागरोवमस्य सत्त पणतीसङ्गागा पलिन्नोवमस्य असंखेजङ्-भागेणं कणया, उद्गोसेणं चोह्स सागरोवयदोडाकोडीको चउहस वाससयाई थवाहा ।

अद्भवारायसंघयणनामस्य जहन्नेणं सागरोदमस्य अद्व पणतीमङ्भागा पिछश्रोवमस्य असंखेजहमागेणं ऊणया. उद्योरोणं सोलम सागरीवमकोडाकोडीओ. सोलम बास-सयाई अबाहा । खीलियासंघयणे णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स नव पणतीसङ्भागा पलिओवमस्स असंखेजङ्भागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अद्वारस मागरोव-मकोडाकोडीओ, अद्वारस वाससयाई अवाहा । छेत्रद्वसंघयणनामस्स पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पिलओवमस्स असंखेजहभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाई आबाहा, एवं जहा संघयणनामाए लब्सणिया एवं संठाणा वि लब्साणियव्या । सुक्तिलवण्णामए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स एगं सत्तमागं पत्तिओवमस्स असंखेजहभागेणं कणगं, उद्योसेणं दस सागरोतमकोडाकोडीओ, दस वाससयाई अवाहा । हालिइ-वण्णणामए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सागरोवमस्स पंच अहावीमइसागा पल्जि-ओवमस्स असंखेजइमागेणं उज्या, उक्कोसेणं अद्भतेरससागरोवमकोडाकोडी, अद-तेरस वाससयाई अवाहा । लोहियवण्णणामए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं माग-रोवमस्स छ अद्वावीमङ्भागा पिलओवमस्स असंखेजङ्भागेहिं खणया, उद्योसेणं पण्णरस सागरोत्रमकोडाकोडीओ, पण्णरस वाससयाई अवाहा । नीळवण्णनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोनमस्स सत्त अद्वावीसहभागा पिठञीवमस्स असं-खेजहभागेणं ऊणया, उद्योसेणं अदुद्वारस मागरोवमकोडाकोडीओ, अदुद्वारस वास-सयाई अवाहा । कालवण्णनामाए जहा छेवद्वसंघयणनामस्य । मुक्सिगंधणामए पुच्छा । गोयमा ! जह सुक्रिल्लवण्णणामस्स, दुब्भिगंबणामाए जहा छेनद्वसंघयणस्स, रसाणं महराईणं जहा वण्णाणं भणियं तहेच परिवाडीए भाणियव्वं, फासा जे अपसत्था तेसि जहा क्षेत्रद्वस्स, जे पसत्था तेसि जहा सुक्किक्रवण्णनामस्स, अगुरुलहु-नामाए जहा छेवहुस्स, एवं उवधायनामाए वि, पराधायनामाए वि एवं चेव । निरयाणु-पुरुवीनामाए पुच्छा । गोयमा ! जद्दनेणं सागरोबमसहस्यस्स दो सत्तभागा पलिओव-मस्य असंखेजहभागेणं उरणया, उद्दोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीखो, वीसं वामस-याई अबाहा । तिरियाणुपुव्वीए पुच्छा । गोयमा । जहनेणं सागरीवमस्स दो सनभागा पिलओवमस्स असंबेजहमार्गणं जणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वाससयाई अबाहा । मणुयाणुपुरुवीनामाए णं पुच्छा । गोयमा ! अहकेणं सागरोवमस्स दिवश्वं सत्तभागं पलिओवमस्य असंखेळाडमागेणं कणमं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोढीओ, कृणरस वाससयाई अवाहा । देवाणुपुरुवीनामाए पुच्छा । गोयमा ! अङ्कोणं सागरोषमसङ्स्सस्स एगं सत्तयागं पिलओवमस्स असं-

केज्ञइसागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं दस सागरोवसकोडाकोडीओ, दस य वासमयाई क्षबाहा । ऊसासनामाए पुच्छा । गोयमा । जहा तिरियाणुपुव्वीए, आयवनामाए वि एवं चेव । उज्जोयनामाए वि पस्त्यविहायोगइनामाए वि पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगं सागरोवमस्त मत्तमागं, उक्कोरोणं दस सागरोवमको डाकोडीओ, दस वाससयाई अबाहा । अपसत्थविहायोगइनामस्स पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमस्स दोष्णि सत्तभागा पिळवोवसस्स असंखेज्वइभागेणं कणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवस-कोडाकोडीओ. वीस य वाससमाई अबाहा । तसनामाए थावरनामाए य एवं चेव । सहमनामाए पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं सागरोवमस्स णव पणतीमङ्भागा पलिओव-मस्म असंखेजङ्भागेणं कणया, उक्कोसेणं अद्वारस सागरोवमकोडाकोडीओ. अद्वारस य वाससयाई अबाहा । बायरनामाए जहा अपसत्थिविद्वायोगइनामस्स । एवं पज्जत्त-नामाए वि, अपजत्तनामाए जहा सहमनामस्स । पत्तेयसरीरनामाए वि दो सत्तमाया, साहारणसरीरनामाए जहा सुहुमस्स, थिरनामाए एगं सन्तमागं, अथिरनामाए दो, सुमनामाए एगो, असुभनामाए दो, सुभगनामाए एगो, दूभगनामाए दो, सुसरनामाए एगो, दूसरनामाए दो, आदिजनामाए एगो, अणादिजनामाए दो, जसोकितिनामाए जहनेणं अहु मुहुत्ता, उद्योसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाई अवाहा। अजसोकित्तिनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा अपसत्यविहायोगइनामस्स, एवं निम्मा-णनासाए वि । तित्थगरणामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसागरोवमकोडा-कोडीओ. उक्कोसेण वि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ । एवं जत्य एगो सत्तभागो तत्य उक्रोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाई अबाह्य, जत्य दो सत्तभागा तत्थ उद्योसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ वीस य वाससयाई अवाहा ।। ६२३॥ उचागोयस्त णं पुरुष्ठा । गोयमा ! जहनेणं अष्ट्र मुहुत्ता, उक्कोरेणं इस सागरीवम-कोडाकोडीओ, दस य वाससयाई अबाहा । नीयागोत्तस्स पुच्छा । गोयमा ! जहा अपसत्यविद्वायोगइनामस्स ॥ ६२४ ॥ अंतराइए ण पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अंतोसुहत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरीवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साई अबाहा. अबाहृणिया कम्मद्रिक्षं कम्मनिसेगो ॥ ६२५ ॥ एगिदिया णं भंते ! जीवा पाणाव-रणिजस्स कम्मस्स कि बंधंति ? गोबमा ! जहन्नेणं सागरोक्सस्स तिण्णि सन्त्रभागा पिलेओबमस्य असंखेजाइमागेणं उज्जया, उद्योसेणं ते चेव परिपुणी वंचंति । एवं निहापंचगरस वि. दंसणचठकस्स वि । एगिरिया णं भेते !॰ सायावेयणिजस्स कम्मस्स कि बंबंति ? गोयमा । जहबेणं सागरोबमस्स दिव्हं सत्तमागं परिस्रोवमस्स असंखेजहमार्गणं कणयं, उद्योसेणं तं चेव परिपूर्णं बंधंति । असायावेयणिकस्य

जहा णाणावरणिजस्स । एगिदिया णं मंते ! जीवा सम्मत्तवेयणिजस्स किं बंधीते ? गोयमा । णत्थ किंचि बंधंति । एगिदिया णं भंते ! जीवा मिच्छत्तवेयणिजन्स कम्मस्त कि बंधंति ? गोयमा ! जहनेणं सागरोवमं पलिओवमस्स असंकेजङ्गागेणं कणं, उन्नोसेणं तं चेत्र पिड्युण्णं बंधंति । एगिदिया णं भंते ! जीवा सम्मामिच्छ-त्तवेयणिजस्स० किं बंघंति ? गोयमा ! र्णात्थ किंचि बन्धन्ति । एगिंदिया र्ण संते ! जीवा कसायबारसगरम कि बंधंति? गोयमा! जहनेणं सागरोवमरस चतारि सत्तमागे पित्रओवमस्स असंखेजङ्भागेणं कणए, उक्कोरेणं ते चेत्र पिंडपुण्णे बंधंति, एवं जाव कोइसंजलणाए वि जाव लोभसंजलणाए वि । इत्थिवेयस्स जहा सायावे-यणिज्ञस्म । एगिंदिया पुरिसवेयस्स कम्मस्म जहन्नेणं सागरोवमस्स एगं सत्तमागं पिलओवमस्य असंखेजहमागेणं ऊणयं. उद्दोसेणं नं चेव पिरुपणं वंधिति । एगिंदिया नपुंसगवेयस्स कम्मस्स जहन्नेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागे पलिओवमस्स असंबेजाइभागेणं ऊणए, उन्होसेणं ते चेव पिडपुण्णे वंधंति । हासरईए जहा पुरिसवेयम्स, अरङ्भयसोगदुगुंछाए जहा नपुंसगवेयस्स । नेरङ्याउत्रदेवाउयनिर-यगइनामदेवगइनामवे उब्बियसरीरनामआहारगसरीरनामनेरइयाणुपुव्विनामदेवाणुपु-विनामतित्थगरनाम-एयाणि णव पयाणि ण बंधंति । तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेणं अंतोमुहत्तं, उन्नोसेणं पुव्यकोडी सत्तर्हि वाससहस्सेहि वाससहस्सारभागेण य अहियं वंधंति । एवं मणुस्साउयस्स वि । तिरियगइनामाए जहा नपुंमगवेयस्स । मणुयगडनामाए जहा सायावेयणिजस्स । एगिदियनामाए पंचिदियजाडनामाए य जहा नपुंसगवेयस्य । बेइंदियतेईदियजाइनामाए पुच्छा । ० जहन्नेणं सागरीबमस्स नव पणतीसहभागे पिल्झोबमस्स असंखेजहमागेणं ऊणए, उद्योसेणं ते चेव पिडपुणी बंधित । चडरिंदियनामाए वि जहन्नेणं सागरोवमस्स णव पणतीसङ्मागे पलिओव-मस्स असंखेजहमागेणं सगए. उद्योसेणं ते चेव पश्चिप्रणो बंधंति । एवं जस्य जह-णगं दो सत्तभागा तिकि वा चत्तारि वा सत्तभागा अद्वावीसहभागा भवंति, तत्म णं जहण्येणं ते चेव परिओवमस्स असंखेजङ्गागेणं फणमा भाषियन्या, उक्षोसेणं ते चेव पिडपुण्णे बंधंति । जत्य णं जहण्णेणं एमी वा दिवश्ली वा सत्तमायी तत्त्र जहन्नेणं तं चेव भाषियव्यं उक्तोर्सणं तं चेव पिडपुण्णं बंधंति । जसोकित्तिउचागोयाणं जहण्णेणं सागरीवमस्स एगं सत्तभागं पिक्नोवमस्स असंखेजहमागेणं दणं, उद्घोसेणं तं चेव परिपुष्णं बंधंति । खंतराइयस्य णं भेते ! पुच्छा । गोयमः ! बहा जाणा-वरणिजस्स जाव उक्कोसेमं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति ॥ ६२६ ॥ बेहंदिया णं अंते ! जीवा णाणावरणिजस्स कम्मस्स कि बंबंति ? गोयमा जहनेणं सामरोक्सपणनीसाए

तिष्णि सत्तभागा परिओवमस्स असंखेजहमागेणं उज्जया, उद्योसेणं ते चेव परिपुष्णे कंघंति. एवं निहाएंचगस्स वि । एवं जहा एगिंदियाणं भणियं तहा बेईदियाण वि भाणियव्यं, नवरं सागरोवमपणवीसाए सह भाणियव्या पळिओवमस्स असंखेजहभागेणं ऊणा. सेसं तं चेव पिंडपुण्ण बंधंति । जत्थ एगिंदिया न बंधंति तत्य एए वि न बंधंति । बेइंदिया णं भेते ! जीवा मिच्छत्तवेयणिजस्त० कि बंधंति ? गोयमा ! जहनेणं सागरोवसपणवीसं पलिओवमस्स असंखेजइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पहिपुष्णं वंशंति । तिरिक्खजोणियाउयस्म जहचेणं अंतोसहत्तं, उद्योसेणं पुन्वकोडिं चउहिं वासेहिं अहियं वंधित । एवं मणुयाउयस्म वि, सेसं जहा एगिदियाणं जाब अंतरा-इयस्स ॥६२७॥ तेइंदिया णं भेते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स० किं बंधंति ? गोयसा ! जहनेणं यागरोवसपण्णासाए तिण्णि सत्तभागा पिळओवमस्य असंखेज्जइभागेणं ऊणया. उक्कोसेणं ते चेव पिडपुण्णे बंधंति. एवं जस्स जइ भागा तं तस्स सागरोवमपण्णासाए सह भाणियव्वा । तेइंदिया णं भंते !० सिच्छत्तवेयणिखस्स कस्मस्स किं वंधंति ? गोयमा ! जहन्नेणं सागरोवमपण्णासं पलिओवमस्यासंखेजहभागेणं कणयं. उन्नोसेणं तं चेव पढिपुण्णं बंघंति । तिरिक्नवजोणियाउयस्य जहनेणं अंतोसहत्तं. उद्दोसेणं पुरुवकोर्डि सोलसेहिं राइंदिएहिं राइंदियतिमागेण य अहियं बंधंति, एवं मणस्साउयस्य वि. सेसं जहा बेइंदियाणं जाव अंतराइयस्य ॥ ६२८॥ चर्डोदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्ञस्स० कि बंधति ? गोयमा ! जहनेणं सागरोवमसयस्य तिष्णि सत्तमागे पिलञोवमस्य असंखेजदभागेणं ऊपए, उद्दोसेणं ते चेव पहिपुण्णे बंधंति. एवं जस्त जङ्ग भागा तस्त सागरीवमसएण सह भाषा-यव्या । तिरिक्खजोणियाउयस्य कम्मस्य जहन्नेणं अंतोसुहत्तं, उद्दोसेणं पुव्यकोडिं दोहिं मासेहिं अहियं । एवं मणुस्साउयस्स वि, सेसं जहा बेइंदियाणं, णवरं मिच्छत्त-वेयणिज्ञस्स जहन्नेणं सागरोवमसयं पळिओवमस्स असंखेज्जडभाग्रेणं ऊणयं. उद्घोसेणं तं चेव पडिपुण्णं वंथंति, सेसं जहा वेइंदियाणं जाव अंतराइयस्स ॥ ६२९ ॥ असण्णी णं मंते! जीवा पंचिदिया णाणावरणिजस्स कम्मस्स कि बंधंति? गोयमा ! जहनेणं सागरीवमसहस्यस्य तिष्णि सत्तमागे पलिओवमस्यासंखेजहसागेणं कणए, उक्कोसेणं ते चेव परिपुण्णे बंधंति, एवं सो चेव गमो जहा बेइंदियाणं, णवरं सागरोवससहस्सेण समं माणियव्यं जस्स जइ भागति । मिच्छत्तवेयणिकास्य जहनेणं सागरीवमसहस्सं पलिओवमस्सासंखेजहमागेणं ऊणयं, उद्योसेणं तं चेव पिंडपुण्णं । नेरङ्गाउयस्य जहनेणं दस पाससहस्साई अंतोमुहत्तमञ्महिगाई, उद्दो-सेणं परिजोदमस्य असंबेजहमागं पृथ्वकोवितिमाग्रसियं वर्षति । एवं तिरिवयः

जोणियाउयस्य वि, णवरं जहण्णेणं अंतोयुहुर्त्तं, एवं मणुयाउयस्य वि, देवाउयस्य जहा नेरइयाउयस्य । असण्णी णं भंते ! जीवा पंचिदिया निरयगइनामाए कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा । जहनेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तमागे पठिओवमस्स भसंखेजहमार्गणं कणए. उद्योसेणं ते चेव परिपुण्णे०, एवं तिरियगइनामाए वि । मणुयगइनामाए वि एवं चेव, नवरं जहनेणं सागरोवमसहस्सस्स दिवन्नं सत्तभागं पलि-ओवसस्सासंखेजइमारोणं ऊणं, उक्कोसेणं तं चेव पिडएणां बंधंति । एवं देवगइना-माए वि. नवरं जहुन्नेणं सागरोबमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पिल्जोबमस्सासंखेज्वइ-भागेणं ऊणं. उद्योसेणं तं चेत्र पिष्ठपुण्णं बंधंति । वेडव्वियसरीरनामाए पुच्छा । गोयमा । जहनेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तमागे पलिओवमस्सासंखेजङ्भागेणं ऊणे, उन्होसेणं दो पडिपुण्णे बंधंति । सम्मत्तसम्मामिच्छत्तआहारगसरीरनामाए तित्थगरनामाए न किंचि वि बंधंति । अवसिद्धं जहा बेइंदियाणं, णवरं जस्स जितया भागा तस्स ते सागरोवमसहस्सेण सह भाणियन्या सन्वेसि आणुपुच्वीए जाब अंत-राइयस्स ॥ ६३० ॥ राण्णी णं भंते ! जीवा पंचिदिया णाणावरणिकस्स कम्मस्स कि वंधंति ? गोयमा ! जहनेणं अंतोम्हतं, उद्दोसंणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ. तिर्णिण वाससहस्साई अबाहा । सण्णी णं भंते !० पंचिदिया णिहापंचगस्स कि बंधंति ! गोयमा ! जहनेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसंणं तीसं सागरोवमकोडा-कोडीओ, तिष्णि य वाससहरूसाई अबाहा । दंसणचउक्करस जहा णाणावर्षिजरूस । सायावेयणिजन्स जहा ओहिया ठिई भणिया तहेव भाणियव्या, इरियावहियवंघयं पद्धच संपराइयर्बथयं च । असायावेयणिजन्स जहा णिद्दापंचगस्स । सम्मत्तवेयणि-जस्स सम्मामिच्छत्तवेयणिजस्स जा ओहिया ठिई भणिया तं बैघंति । मिच्छत्तवेयणि-जस्स जहनेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ, सत्तरि य वाससहस्साई अबाहा । कसायबारसगस्स जहनेणं एवं चेव, उद्घोरेणं चता-लीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, चत्तालीस य वाससगाई अवाहा । कोहमाणमायालीभ-संजलगाए य दो मासा, मासो, अद्भासो, अंतोसुहुत्तो, एवं जहुन्नगं; उद्दोसगं पुण जहा कसायबारसगस्स । चउण्ह वि आउयाणं जा ओहिया ठिई मणिया तं बंधंति । आहारगसरीरस्य तित्यगरनामाए य जहण्येणं अंतोसागरोवमकोडाकोबीओ, उक्को-सेणं अंतोसायरोवमकोडाकोडीओ । पुरिसवेयणिकास्स जहनेणं भट्ट संबच्छराई, उक्को-सेणं दस सागरीवमकोडाकोडीओ, दस व वाससवाई अवाहा । जसीकित्रिणामाए उचागोत्तस्स एवं चेव, नवरं जहनेणं अद्व मुहत्ता । अंतराइयस्य जहा णाणावर्षि-जरम, सेसएस सन्वेस ठाणेस संचयणेस संठाणेस वन्नेस गंधेस य जहनेणं अंतोसा-

A Aug 1824 Com

गरोवमकोडाकोडीओ, उक्रोसेणं जा जस्स ओहिया ठिई सणिया तं वंघीत, जबरं इसं णाणत्तं-अबाहा अवाहणिया ण बुबह । एवं आणुएव्वीए सब्वेसिं जाव अंतराइयस्स ताय भाषियक्वं ॥ ६३९ ॥ णाणावरणिजस्स णं भंते ! कम्मस्स जहण्णिठेईबंधए के ? गोयमा । अण्णयरे सुहमसंपराए उबसामए वा खवगए वा, एस णं गोयमा । णाणावरणिजस्य कम्मस्स जहण्णिठईबंधए, तम्बइरित्ते अजहण्णे, एवं एएणं अभिला-वेणं मोहाउयवजाणं सेसकम्माणं भाषियम्बं । मोहणिजस्स णं भंते ! ऋमस्स जह-ण्णिठिईबंधए के ? गोयमा ! अन्नयरे नायरसंपराए उवसामए वा खबए बा, एस णं गोयमा ! मोहणिजस्स कम्मस्स जहण्णिठिईबंधए, तन्बद्दिने अजहण्णे । आउयस्स णं भंते ! कम्मस्स जहण्णिठईबंधए के ? गोयमा ! जे णं जीवे असंखेप्पद्धापविट्ठे, सन्वनिरुद्धे से आउए, सेसे सन्वमहंतीए आउयवंघद्वाए, तीसे णं आउयवंघद्वाए चरिमकालसमयंसि सन्वजहण्णियं ठिइं पजत्तापज्जत्तियं निव्वतेष्ठ, एस णं गोयमा ! आउयकम्मस्स जहण्णिठेईबंघए, तम्बइरित्ते अजहण्णे ॥ ६३२ ॥ उद्द्योसकालद्विइयं णं भंते ! णाणावरणिजं ० किं नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोषिओ बंधइ, तिरिक्खजो-णिणी बंधइ, मणुस्सो बंधइ, मणुस्सिणी बंधइ, देवी बंधइ, देवी बंधइ ? गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ जाव देवी वि बंधइ। केरिसए णं भंते ! नेरइए उक्कोसकालिह-इयं णाणावरणिजं कर्म्सं बंधइ ? गोयमा ! सण्णी पंचिदिए सव्वाहि फजतीहिं पजते सागारे जागरे सत्तो(ओ)वउत्ते मिच्छाविद्वी कष्टलेसे य उक्कोससंकिलिद्वपरि-णामे ईसिमजिसमपरिणामे बा. एरिसए णं गोयमा ! नेरइए उद्दोसकालद्विद्दयं णाणा-वरणिजं कम्मं वंघइ । केरिसए णं भंते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालद्विष्टयं णाणा-बरणिजं करमं वंधइ ? गोयमा ! करमभूमए वा करमभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचिदिए सब्बाहिं पजनीहिं पजनए सेसं तं चेव जहा नेरहयस्त । एवं तिरिक्ख-जोणिणी वि मणूसे वि मणूसी वि. देवदेवी जहा नेरइए, एवं आउसवजाण सत्तण्हं कम्माणं । उक्कोसकालद्विष्ठयं मं भेते । आउगं कम्मं कि नेरहओ बंधह जाव देवी वंधइ ? गोयमा । नो नेरइक्षो वंधइ. तिरिक्खजोणिओ वंधइ, नो तिरिक्खजोणिणी वंधइ, मणुरसे वि वंधइ, मणुरसी वि वंधइ, नो देवी वंधइ, नो देवी वंधइ। केरिसए णं मंते ! तिरिक्सजोमिए उद्योसकाळद्विहर्य आउयं करनं बंबह ? गोयमा ! करमभूमए वा कर्मभूसगपिक्रमांनी वा सण्यी पंचिदिए सब्बाहि पजतीहिं पजतए सागारे जागरे मुत्तोवलते मिच्छहिद्री परमकन्द्रकेसे उद्योससंक्रिक्ट्रिपरिणामे, एरिसए णं गोममा ! तिरिक्खजीनिए उद्योसकालद्विष्यं जाउयं कम्मं बंधइ । केरिसए णं संते ! मण्डे उद्योसकालविडयं जाटवं कर्यं वंबड ? गोयमा ! करमभूमण् वा करमभूमण-

पिक्सिगी वा जाव सुत्तो(तो)वजत्ते सम्मदिद्वी वा मिच्छिद्दिवी वा कष्टलेसे वा सुक्केसे वा णाणी वा अण्णाणी वा उक्कोससंकिलिहुपरिणामे वा असंकिलिहुपरिणामे वा तप्पा-उग्गविसुज्ज्ञमाणपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा ! मणूसे उक्कोसकालिहुइ्यं आउयं कम्मं वन्धइ । केरिसिया णं मंते ! मणुरसी उक्कोसकालिहुइ्यं आउयं कम्मं बन्धइ ? गोयमा ! कम्मभूमिया वा कम्मभूमगपलिभागी वा जाव मुत्तोवउत्ता सम्मादिद्वी सुक्केसा तप्पाउग्गविसुज्ज्ञमाणपरिणामा, एरिसिया णं गोयमा ! मणूसी उक्कोसकालिहुइ्यं आउयं कम्मं बन्धइ, अंतराइयं जहा णाणावरणिजं ॥ ६३३ ॥ बीओ उद्देसो समस्तो ॥ पश्चवणाय मगवईप तेवीसइमं कम्मपगडीपयं समत्तं ॥

कड णं मंते! कम्मपगडीओ पण्णताओ ? गोयमा! अद्र कम्मपगडीओ पण्ण-त्ताओ । तंजहा-णाणावरणिजं जाव अंतराइयं । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जीवे णं भेते ! णाणावरणिजं कम्मं बन्धमाणे वह कम्मपगढीओ बन्बह ? गोयमा ! सत्तविहवनभए वा अद्वविहवनभए वा छिन्वहबनभए वा । नेरइए णं भंते ! णाणा-वरणिजं कम्मं वन्धमाणे कह कम्मपगढीओ बन्धह १ गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अद्वविहबन्धए वा, एवं जाव वेमाणिए, णवरं मणुरसे जहा जीवे । जीवा णं मंते ! णाणावरणिजं कम्मं बन्धमाणा कह कम्मपगडीओ बन्धन्ति ? गोयमा ! सब्वे वि ताव होज सत्तविहबन्धगा य अट्रविहबन्धगा य. अहवा सत्तविहबन्धगा य अट्र-विहबन्धगा य छिव्हबन्धगे य, अहवा सत्तिबहबन्धगा य अद्वविहबन्धगा य छिब्दिहबन्धगा य । णेरइया णं भंते ! णाणावरणिजं कम्मं बन्धमाणा कड कम्म-पगडीओ बन्धन्ति? गोयमा ! सञ्चे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा, अहवा सत्तविह-बन्धगा य अद्भविष्ठबन्धगे य. अष्टवा सत्तविष्ठबन्धगा य अद्भविष्ठबन्धगा य तिण्णि भंगा, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! सत्तविहबन्धगा वि अट्टविहबन्धगा वि, एवं जाद वणस्सहकाह्या । विगलाणं पंचिदियतिरिक्ख-जोणियाणं तियमंगो-सब्वे वि ताब होजा सत्तविहबन्धगा, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगे य, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य । मणूसा णं भंते ! गाणावरणिजस्स पुच्छा । गोयमा ! सब्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबन्धगा १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्वविहबन्धगे य २, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्वविहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य ४, अहवा सत्तविहबन्धगा य ् छिन्दिहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा व अद्वविहबन्धगे व छिन्दिबन्धगे य ६, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगे य छन्दिबन्धगा ग ७, अहवा सत्त-विद्वन्यमा य अद्भविद्वबन्धमा य छव्यिद्वन्यमे य ८, अद्द्वा सत्तविद्वन्थमा य

अद्भविह्नबंधना य छव्विह्बन्धना य ९, एवं एए नव भंगा । सेसा वाणमंतराइया जाब बेमाणिया जहा नेरइया सत्तविहाइबन्धगा मणिया तहा भाणियव्या । एवं जहा णाणावरणं बन्धमाणा जहिं मणिया दंसणावरणं पि बन्धमाणा तहिं जीवाइया एगत्तपोहत्तएहिं भाणियव्वा ॥ ६३४ ॥ वेयणिजां० बंधमाणे जीवे कह कम्मपगढीओ बन्धइ ! गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अद्वविहबन्धए वा छव्विहबन्धए वा एगविह-बन्धए वा. एवं मणुसे वि । सेसा नारगाइया सत्तविहबन्धगा वा अद्वविहबन्धगा वा जाव वेमाणिए । जीवा णं भंते ! वेयणिजं कम्मं पुच्छा । गोयमा ! सब्वे वि ताव होजा सुनविष्टबन्यगा य अद्रविष्टबन्यगा य एगविष्टबन्यगा य छिव्विष्टबन्यए य. अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगा य. अवसेगा नारगाइया जाव वेसाणिया जाओ णाणावरणं बंघसाणा बंघन्ति ताहिं भाणियव्या । नवरं मणुसा णं भंते ! वेयणिजं कम्मं बन्धमाणा कइ कम्मपगडीओ वंधंति ? गोयमा ! सन्वे वि ताव होजा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य १. अहवा मत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगे य २. अहवा सत्तविह-बन्धगा य एगविहवन्धगा य अद्भविहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य ४, अहवा सनविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्त्रिहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अड्रविहबन्धए य छव्विहबन्धए य ६. अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्भविहबन्धए य छाँव्यहबन्धगा य ७. अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छव्विहबन्धगे य ८. अहवा सत्तविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छिव्दहबन्धमा य ९, एवं एए नव भंगा भाणियव्वा ॥ ६३५ ॥ भोहणिखं० बन्धमाणे जीवे कह कम्मपगडीओ बन्ध्द ? गोयमा ! जीवेगिदियवजो तियभंगो । जीवेगिंदिया सत्तविद्ववन्थगा वि अद्वविद्ववन्थगा वि । जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं बन्धमाणे कड कम्मपगरीओ बन्धइ ? गोयमा ! नियमा अट्ट. एवं नेरइए जाव बैमा-णिए, एवं पुहत्तेण वि । णामगोमंतराइयं । बन्धमाणे जीवे कड् कम्मपगढीओ बन्धइ ? गोयमा । जाओ जाणावरणिखं कम्मं बन्धमाणे बन्धइ ताहिं भाणियव्यो. एवं नेरहए वि जाव बेमाणिए, एवं पुहुत्तेण वि भाषियव्वं ॥ ६३६ ॥ प्रश्नवणाय भगवर्डेय चउचीसहमं कम्मबन्धपर्यं समसं॥

कह णं भंते ! कम्मपगदीओ पकताओ ? गोयमा ! अह कम्मपगदीओ पकताओ । तंजहा—जाणावरणिखं जाव अंतराइयं, एवं नेरह्याणं जाव वेसाणियाणं । जीवे णं भंते ! णाजावरणिखं कम्मं बन्वमाणे कह कम्मपगदीओ नेएह ? गोयमा ! नियमा अह कम्मपगरीओ नेएइ। एवं नेरइए जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेण वि। एवं वेयणिजवजं जाव अंतराइयं। जीवे णं मंते! वेयणिजं कम्मं बन्धमाणे कह कम्म-पगरीओ नेदेइ? गोयमा! सत्तिह्वेदए वा अहिविह्वेदए वा चडिव्वह्वेदए वा, एवं मणूसे वि। सेसा नेरइयाई एगत्तेणं पुहुत्तेण वि नियमा अह कम्मपगरीओ वेदंति जाव वेमाणिया। जीवा णं मंते! वेयणिजं कम्मं बन्धमाणा कह कम्म-पगरीओ वेदंति? गोयमा! सन्वे वि ताव होज्ञा अहिवह्वेदगा य चडिव्वह्वेदगा य १, अहवा अहिवहवेदगा य चडिव्वह्वेदगा य सत्तिवह्वेदगे य २, अहवा अहिवह-वेदगा य चडिव्वह्वेदगा य सत्तिवहवेदगा य ३, एवं मणूसा वि माणियव्वा ॥६३७॥ पद्मवणाप मगवर्षेष कम्मवेयणामं पणवीसदमं पर्य समस्ते॥

कह णं भंते । कम्मपगडीओ पश्चताओ ? गोयमा । अद्र कम्मपगडीओ पश्चताओ । तंजहा---णाणावरणिजं जाव अंतराइयं । एवं नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं । जीवे णं भेते ! णाणावरणिज्ञं कम्मं वेयमाणे कइ कम्मपगडीओ बन्धइ ? गीयमा ! सत्तांबहबन्धए वा अट्टविहबन्धए वा छिन्बहबन्धए वा एगविहबन्धए वा । नेरइए णं भंते ! णाणावरणिजं कम्मं वेयमाणे कइ कम्मपादीओ बन्धह ? गोयमा ! सत्तविहबन्धए वा अद्वविहबन्धए वा, एवं जाव वेमाणिए, एवं मणूसे जहा जीवे। जीवा णं भंते ! णाणावरणिजं कम्मं वेएमाणा कइ कम्मपगडीओ बन्धन्ति ? गोयमा ! सब्वे वि ताव होजा सत्तविहबन्धगा य अद्वविहबंधगा य १. अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छिव्वहबन्धगे य २. अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छिन्बहबन्धगा य ३, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य एगविहयन्थए य ४. अष्टवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छिम्बहबन्धए य एगविहबन्धए य ६. अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छव्विहबन्धए य एगविहबन्धगा य ७. अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य छुव्यिहबन्धगा य एगविहबन्धए य ८, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्वविहबन्धगा य छिव्वहबन्धगा य एगविहबन्धगा य ९. एवं एए नव मंगा । अवसेसाणं एगिदियमणूसवज्वाणं तिवसंगो जाव वेसा-णियाणं । एगिरिया णं सत्तविहबन्धगा य अड्डविहबन्धगा य । मणुसाणं पुच्छा । गोयमा ! सब्वे वि ताव होज्ब सत्तविहबन्धगा १, अहबा सत्तविहबन्धगा य अड्डबिन हमन्थरो य २, अहवा सत्तविहबन्धरा य अद्वविहबन्धरा य ३, अहवा सत्तविहबन न्यमा य छन्त्रिहरूपए य ४, एवं छन्त्रिहरूपएण वि समं दो मंगा ५, एगबिहरू-न्थएण वि समें दो संगा ६-७, अहबा सत्तविहबन्धमा व अद्वविहबन्धए व छविन

हमन्यए य चडमंगो १, अहवा सत्तविहवन्धगा य अद्वविहवन्धए य एगविहवन्धगे य चउमंगी २, अहबा सत्तविहबन्धगा य छिव्बहवन्धए य एगविहबन्धए य चउमंगी ३, अह्वा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धए य छव्विहबन्धए य एगविहबन्धए य मंगा अद्व, एवं एए सत्तावीसं मंगा। एवं जहा णाणावरणिजं तहा दंसणावरणिजं पि अंतराइयं पि ॥ ६३८ ॥ जीवे णं भंते ! वेयणिजं कम्मं वेएमाणे कह कम्मपगडीओ चन्धइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा छन्विहबन्धए वा एगविहबन्धए वा अबंधए वा, एवं मणूसे वि । अवसेसा णार्याइया सत्तविहबन्धमा अद्भविहबन्धमा य. एवं जाव वेमाणिया । जीवा णं भंते ! वेयणिजं कम्मं वेएमाणा कह कम्मपगढीओ बन्धन्ति ? गोगमा! सब्वे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा य अहुविहुवन्धगा य एगविहुबन्धगा य १, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भविहबन्धगा य एगविहबन्धगा य छन्त्रिहबंधगे य २, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहबन्धगा य छव्विहवन्धगा य ३, अबंघगेण वि समं दो मंगा भाषियव्या ५, अहवा सत्तविहबन्धगा य अद्भ-विहबन्धगा य एगविह्वन्धगा य छिन्वहवन्धगे य अबंधगे य चउभंगो. एवं एए नव भंगा। एगिदियाणं अभंगयं नारगाईणं तियभंगा जाव वेमाणियाणं। नवरं मणुसाणं पुच्छा । सब्बे वि ताव होजा सत्तविहुबंधगा य एगविहुबन्धगा य, अहुवा सत्तविहु-बन्धगा य एगविहबंधगा य छित्रहबंधए य अट्टविहबंधए य अबंधए य, एवं एए सत्तावीसं भंगा भाणियव्या, एवं जहा वेयणिजं तहा आउयं नामं गोयं च भाणि-यन्तं । मोहणिजं नेएमाणे जहा णाणावरणिजं तहा भाणियन्तं ॥ ६३९ ॥ एकाव-णाए भगवर्षेप छव्वीसरमं कम्मवेयबन्धपयं समत्तं ॥

कह णं मंते ! कम्मप्राबीओ पक्ताओ ? गोयमा ! अह कम्मप्राबीओ पक्ताओ । तंजहा-णाणावरणं जाव अंतराइयं, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । जीवे णं मंते ! णाणावरणिजं कम्मं वेएमाणे कह कम्मप्राबीओ वेएह ? गोयमा ! सत्तविहवेयए वा अहविहवेयए वा, एवं मण्से वि । अवसेसा एगतेण वि पुहुत्तेण वि णियमा अह कम्मप्राबीओ वेर्देति जाव वेमाणिया । जीवा णं मंते ! णाणावरणिजं वेएमाणां कह कम्मप्राबीओ वेर्देति जाव वेमाणिया । जीवा णं मंते ! णाणावरणिजं वेएमाणां कह कम्मप्राबीओ वेर्देति जाव वेमाणिया । जीवा णं मंते ! णाणावरणिजं वेएमाणां कह कम्मप्राबीओ वेर्देति जाव वेमाणिया । स्वीव वि ताव होजा अहविहवेयगा २, अहवा अहविहवेयगा य सत्तविहवेयगा य २, अहवा अहविहवेयगा य सत्तविहवेयगा य २, एवं मण्सा वि । दिसणावरणिजं अंतराइयं च एवं चेव माणियव्यं । वेयणिजं आवर्यनामगोत्ताहं वेएमाणे कह कम्मप्राबीओ वेर्ह ? गोयमा ! जहा वंधवेयमस्य वेयणिजं तहा साणियव्याणि । जीवे णं मंते ! मोहणिजं कम्मं वेएमाणे कह कम्मप्राबीओ वेर्ह , एवं वेरहए जाव

वेमाणिए, एवं पुहुत्तेण वि ॥ ६४० ॥ **पञ्चलणाए भगवर्षेण सत्तावीसहमं** कम्मवेयवेयपयं समत्तं ॥

सिंचताहारद्वी केवइ कि बाबि सन्वओं चेव । कइभागं सन्वे खलु परिणामे चेव बोद्धब्वे ॥१॥ एगिदियसरीराई लोमाहारो तहेव मणमक्खी। एएसि तु पयाणं विभा-वणा होइ कायव्या ॥२॥ नेरडया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसा-हारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीमाहारा, एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिया । ओरालियसरीरा जाव मणूसा सचिनाहारा वि अचिताहारा वि मीसाहारा वि । नेरइया णं भंते ! आहारद्री ! हन्ता ! आहारद्री । नेरइया णं भंते ! केवहकालस्स आहारद्वे समुप्पजाइ? गोयमा! नेरहयाणं दुविहे आहारे पत्तरे। तंजहा-आभोगनिर्व्वात्तए य अणाभोगनिव्वत्तिए य । तत्य णं जे से अणाभोगनिव्य-तिए से णं अणुसमयमविरहिए आहारद्वे समुप्पजइ । तत्थ णं जे से आभोगनिब्द-त्तिए से णं असंखिज्जसमइए अंतोमुहत्तिए आहारहे समुप्पजइ ॥ ६४१ ॥ नेरइया णं भंते ! किमाहारमाहारेति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाई. खेनओ असंखेज-पएसोगाढाई, कालओ अण्ययरद्विद्याई, भावओ वण्णमंताई गंधमंताई रसमंताई फासमंताई। जाई भंते ! भावओ वण्णमंताई आहारेंति ताई कि एगवण्णाई आहारेंति जाव पंचवण्णाइं आहारैति ? गोयमा ! ठाणमगगणं पहुच एगवण्णाइं पि आहारैति जाव पंचवण्णाइं पि आहारेंति, विहाणमग्गणं पहुच कालवण्णाइं पि आहारेंति जाव सक्रिल्लाई पि आहारेंति । जाई॰ वण्णओ कालवण्णाई आहारेंति ताई कि एग-गुणकालाई आहारेंति जाव दसगुणकालाई आहारेंति, संखिजगुणकालाई, असं-खिज्युणकालाई, अणंतगुणकालाई आहारेति ? गोयमा ! एगगुणकालाई पि आहा-रेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति, एवं जाव सुक्किलाइं पि, एवं गंघओ वि रसओ वि । जाई मानओ फासमंताई आहारेंति ताई नो एगफासाई आहारेंति, नो दुफासाई आहारेंति, नो तिफासाई आहारेन्ति, चउफासाई पि आहारेन्ति जाव अद्र-फासाइं पि आहारेन्ति, विहाणमग्गणं पहच कक्खडाई पि आहारेन्ति जाव व्रक्खाई। जाइं॰ फासओ क्वस्वडाई आहारेन्ति ताई कि एगगुणक्क्खडाई आहारेन्ति जाव अणंतगुणक्रक्खडाई आहारेन्ति ? गोयमा ! एगगुणक्रक्खडाई पि आहारेन्ति जाद अणंतगुणकक्खडाइं पि आहारेन्ति, एवं अट्ट वि फासा भाणियव्या जान अणंत-गुणलुक्खाइं पि आहारेन्ति । जाइं मंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेन्ति ताइं किं पुद्राई आहारेन्ति अपुद्राई आहारेन्ति १ गोयमा ! पुद्राई आहारेन्ति, नो अपुद्राई आहारेन्ति, जहा भास्रहेसए जाब जियमा छहिसि माहारेन्ति, ओसण्यं कारणं

पहुच वण्णओ कालनीलाई, गंघओ दुव्भिगंधाई, रसओ तित्तकडयाई. फासओ कनसङ्गुरुयसीयल्लक्साइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विपरि-णामहत्ता परिपीलहत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसङ्ता अण्णे अपुन्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फानगुणे उप्पाइना आयसरीरक्रेनोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहार्र आहारेन्ति । नेरइया णं भते ! सम्बजो आहारेन्ति, सन्बजो परिणामेति, सन्बजो कससंति, सब्बओ नीससंति, अभिक्लणं आहारेन्ति अभिक्लणं परिणार्मेति. अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं नीससंति, आहच आहारेन्ति, आहच परिणा-मेंति, आहम ऊससेति, आहम नीससेति ? हंता गोयमा ! नेरइया सन्बस्रो आहारेन्ति एवं तं चेव जाव आहब नीससंति ॥ ६४२ ॥ नेरहया णं भंते ! जे पोमगड़े आहारनाए गिण्हंति ते णं तेसिं पोमगलाणं सेयालंसि कहमागं आहा-रेन्ति, कहभागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेजहभागं आहारेन्ति, अणंतभागं अस्साएंति । नेरइया णं मंते ! जे पोग्गले आहारताए गिण्हंति ते किं सब्वे आद्यारेन्ति, नो सन्वे आहारेंति ? गोयमा ! ते सन्वे अपरिसेसए आहारेन्ति । नेरइया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं पोग्गला तेसिं कीसत्ताए भुजो भुजो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए जाद फासिदियताए अणिद्रताए अकंतत्ताए अप्पियताए असुभत्ताए अमणुण्णताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अ(ण)भिज्यियत्ताए अहताए नो उहुताए दुक्खताए नो सहताए तेसि भुज्यो भुजो परिणमंति ॥ ६४३ ॥ अयुरकुमारा णं भंते ! आहारद्वी ? हंता ! आहारद्वी । एवं जहा नेरइयाणं तहा असुरकुमाराण वि भाषियव्यं जाव तेसि भुज्जो भुज्जो परिणमंति । तत्थ णं जे से आभोगनिव्यक्तिए से णं जहण्णेणं चउत्थभक्तस्त. उद्दोसेणं साइरेगवाससहस्सस्स आहारहे समुप्पजइ। ओसण्णं कारणं पहुच वण्यओ हालिह्सुक्किक्काई, गंघओ सुब्भिगंघाई, रसओ अंबिलमहुराई, फासओ मजयलहुय-निद्भुष्हाई, तेसि पोराणे वण्णगुणे जाव फासिंदियताए जाव मणामत्ताए इच्छियताए भिजिश्यक्ताए उद्भुताए नो अहत्ताए ग्रह्ताए नो दुहताए तेसि भुज्जो भुज्जो परिणर्मति, सेसं जहा नेरइयाणं, एवं जाव श्रणियकुमाराणं, नवरं आभोगनिव्वतिष्ट उक्रोसेणं दिवसपुहुतस्स आहारहे समुप्पजाइ ॥ ६४४ ॥ पुढविकाइया णं भंते ! आहारही ? हंता ! आहारही । पुढिनकाइया णं भंते ! केनहकालस्स आहारहे समुप्पज्ञइ ? गोयमा ! अणुसमयमविरहिए आहारट्टे समुप्पज्ञइ । पुढविकाइया णं मंते ! किमाहारमाहारेन्ति ? एवं जहा नेरश्याणं जाव ताई कहदिसिं आहारेन्ति ? गोयसा ! निज्याघाएणं छहिसिं, बाधायं पहुच्च सिय तिहिसिं सिय चउदिसिं सिय

पंचदिसि, नवरं ओसन्नकारणं न भण्णह । वण्णओ कालनीलखोडियहालिस्सिक्काहं. गंधओ सुब्भिगंधदुब्भिगंधाई, रसओ तिशरसक्द्वयरसक्तायरसअंबिलमहराई, फासओ कन्खडफासमञ्यगुरुयलहुयसीयसण्हणिदलुक्खाई, तेसि पोराणे वण्णग्रणे सेसं जहा नेरइयाणं जाव आहच नीससंति । पुढविकाइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारताए गिण्हंति तेसि भंते ! पोग्गलाणं सेयालंसि कहमागं आहारेन्ति. ऋमागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेजहभागं आहारेन्ति, अर्णतभागं आसाएंति । प्रहाव-काइया णं भंते ! जे पोम्गले आहारताए गिण्हंति ते कि सब्वे शाहारेन्ति, नो सब्बे आहारेन्ति ? जहेव नेरइया तहेव । पुढिवकाइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारताए गिण्डंति ते णं पुग्गला तेसिं कीसताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति? गोयमा ! फासिंदियवेमायताए तेलि भुजो भुजो परिणमंति, एवं जाव वणस्सङ्काङया ॥ ६४५ ॥ बेडंदिया णं भंते ! आहारदी ? हन्ता ! आहारदी । बेडंदिया णं भंते ! केवइकालस्य आहारहे समुप्पजाः ? जहा नेरइयाणं, नवरं तत्थ णं जे से आभोग-निव्यक्तिए से णं असंखिजसमइए अंतोसुहत्तिए वेसायाए आहारद्वे समुप्पजह, सेसं जहा पुढविकाइयाणं जाव आह्य नीममंति, नवरं नियमा छहिसं। वेइंदियाणं मंते ! जे पोग्गळे आहारताए गिण्हांत ते णं तेमिं पुग्गलाणं सेयालंसि कड-भागं आहारेन्ति कइमागं आमाएंति ? एवं जहा नेरइयाणं । बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारताए गिण्हंति ते किं सब्वे आहारेन्ति, णो सब्वे आहारेन्ति? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पक्ते । तंजहा-लोमाहारे य पक्लेवाहारे य. जे पोम्गळे लोमाहारताए गिण्हन्ति ते सब्वे अपरिसेसे आहारेन्ति. जे पोगाळे पक्खेवाहारताए गेण्हंति तेसिमसंखेजहमागमाहारेन्ति. अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अफासाइज्जमाणाई अणासाइज्जमाणाई विद्धंसमागच्छंति । एएसि णं भंते ! पोग्ग-लाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्त्रत्योवा पोग्गला अणासाइजमाणा, अफासाइजमाणा अणंतगुणा । बेइंदिया णं मंते ! जे पोग्गला आहारताए-पुच्छा । गोयमा ! जिन्मिदयफासिदिय-वेमायत्ताए तेसि भूजो भूजो परिणमंति । एवं जाव चर्डरिदिया, णवरं णेगाइं च णं भागसहस्साई अणाघाइज्जमाणाई अणासाइज्जमाणाई अफासाइज्जमाणाई विदंसमा-गच्छति । एएसि णं भंते ! पोगगलाणं अणाचाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं अफा-साइजमाणाण य कवरे कवरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोवमा। सव्वत्योवा पोग्गला अणा-षाइजमाणा, अणासाइजमाणा अणंतगुणा, अफासाइजमाणा अणंतगुणा ॥ ६४६ ॥ तेईदिया णं मंते ! जे पोग्गला-पुच्छा । गोयमा ! ते थं पोग्गला भाणिवियाजिकि- दियफासिंदिगनेमायताए तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति । चउरिंदियाणं चर्निखदिग-घाणिदियाजिन्मिदयकासिदियवेमायताए तेसि भुजो भुजो परिणमंति, सेसं जहा तेइंदियाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेइंदियाणं, णवरं तत्थ णं जे से आभोगनिव्यत्तिए से जहण्णेणं अंतोसहत्तस्स, उक्कोरोणं छद्वमत्तस्स आहारहे समुप्प-जाइ। पंचिदियतिरिक्खजोणिया णं भेते ! जे पोगगला आहारनाए-पुच्छा। गोयमा ! सोईदियचिक्कंबिदयवाणिदियजिब्भिदियफासिदियवेमायताए तेसि भुज्जो परि-णमंति । मण्सा एवं चेव. नवरं आभोगनिव्वतिए जहन्नेणं अंतोमुहत्तस्स, उक्कोसेणं अद्वमभत्तस्य आहारद्दे समुप्पज्जइ । वाणमंतरा जहा नागकुमारा, एवं जोइसिया वि, नवरं आभोगनिव्यक्तिए जहुनेणं दिवसपुहुत्तस्स, उन्नोसेणं दिवसपुहुत्तस्स आहारहे समुप्पजइ, एवं वेमाणिया वि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहनेणं दिवसपुहरास्स, उद्यो-सेणं तेत्रीसाए वाससहस्साणं आहारहे ममुप्पजङ, सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव तेसिं भुज्जो भुज्जो परिणमंति । सोहम्मे आभागनिञ्चतिए जहन्नेणं दिवसपुहत्तस्स, उद्दोसेणं दोण्हं वाससहस्साणं आहारट्टे समुप्पजइ । इंसाणे पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दिवस-पुहत्तस्य साइरेगस्स, उक्कोसेणं साइरेग दोण्हं वाससहस्साणं । सणंकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दोण्हं वासमहस्साणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं। माहिंदे पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं दोण्हं वाससहस्साणं साइरेगाणं, उक्कोसेणं मत्तण्हं वाससहरसाणं साइरेगाणं । बंभलोए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं सत्तण्हं वाससह-स्सार्ण, उक्कोसेणं दसण्हं वाससहस्साणं । संतए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं दसण्हं वाससङ्स्साणं, उद्घोसेणं चउदसण्हं वाससङ्स्साणं । महासुद्धे णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं चउदसम्हं वाससहस्साणं. उन्होसेणं सत्तरसम्हं वाससहस्साणं । सहस्सारे पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं, उन्नोसेणं अद्वारसण्हं वाससह-स्साणं । आणए णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अद्वारसण्हं वाससहस्साणं, उद्दोसेणं एगूणवीसाए वाससहस्सार्ण । पाणए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीसाए बाससहस्साणं, उन्नोसेणं वीसाए वाससहस्साणं । आरणे णं पुच्छा । गोयमा ! जह-क्षेणं वीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एकवीसाए वाससहस्साणं । अक्कुए णं पुच्छा । गोयमा ! जहक्रेणं एक्क्वीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं वावीसाए वाससहस्साणं । हिट्टिमहिट्टिमगेविज्यगाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं वावीसाए वाससहस्साणं, उद्योसेणं तेवीसाए वाससहरसाणं, एवं सञ्चत्य सहस्साणि भाणियव्याणि जाव सव्बद्धं। हिद्रिममजिल्लमगार्थं पुच्छा । गोत्रमा ! जहनेणं तेवीसाए, उद्योसेणं चउनीसाए । हिक्किमरवरिमाणं पुरस्का । गोयमा ! जहनेणं चरवीसाए. उन्नोरेणं पणवीसाए ।

मज्जिमहेद्रिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं पणवीसाए, उन्नोसेणं छव्यीसाए । मज्जिममज्जिमार्णं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं छव्यीसाए, उद्दोसेणं सत्ताबीसाए । मज्झिमउवरिमाणं पुच्छा । गोयमा ! अहसेणं रात्तावीसाए, उद्घोरेणं अझावीसाए । उवरिमहेट्टिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं अद्वावीमाए, उन्नोसेणं एगूणतीसाए । उवरिममज्ज्ञिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं एगूणतीसाए, उज्जोसेणं तीसाए । उचरिमडवरिमाणं पुच्छा । गोयमा ! जहनेणं तीमाए, उन्नोसेणं एगतीसाए । विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं पुन्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगतीमाए, उक्कोसेणं तेत्तीसाए । सव्बद्धसिद्धगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोरेणं तेत्तीयाए वाससहस्माणं आहारहे समुष्यज्ञ ॥ ६४७ ॥ नेरइया णं भंते । कि एगिदियसरीराई आहारेन्ति जाव पंचिदियसरीराई आहारेन्ति? गोयमा! पुन्वभावपण्णवणं पहुच एगिंदियसरीराइं पि आहारेन्ति जाव पंचिंदियः, पद्धप्पणानावपण्णवणं पद्धव नियमा पंचिदियसरीराइं आहारेन्ति, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! पुन्वभावपण्णवणं पहुच एवं चेव, पहुष्पण्णभावपण्णवणं पहुच नियमा एगिदियसरीराई आहारेन्ति । बेईदिया पुट्यमावपण्णवणं पहुच एवं चेव, पहुप्पण्ण-भावपण्णवणं पहुच नियमा बेइंदियाणं सरीराई आहारेन्ति, एवं जाव चउरिंदिया जाव पुरुवभावपण्णवणं पहुच, एवं पहुप्पण्णभावपण्णवणं पहुच नियमा जस्स जइ इंदियाई तइइंदियाई सरीराई आहारेन्ति, सेसा जहा नेरइया, जाब वेमाणिया। नेरइया णं भंते ! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा ? गोयमा ! लोमाहारा, नी पक्खेवा-हारा, एवं एर्गिदिया सन्वे देवा य भाषियन्त्रा जाव वेमाणिया । बेईदिया जाव मणूसा लोमाहारा वि पक्खेवाहारा वि ॥ ६४८ ॥ नेरहया णं भंते ! कि ओयाहारा मणभक्खी ? गोयमा । ओयाहारा, जो मणमक्खी, एवं सन्वे ओरालियसरीरा वि । देवा सन्वे वि जाव वेमाणिया ओयाहारा वि मणभक्की वि । तत्थ णं जे ते मण-भक्खी देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पजइ 'इच्छामो णं मणभक्खणं करिताए', तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव जे पोग्गला इहा कंता जाव मणामा ते तेसिं मणमक्खताए परिणमंति, से अहानामए सीया पोग्गळा सीयं पप्प सीयं चेव अह-बहत्ताणं चिद्वंति, उतिणा वा पोग्गला उतिणं पप्प उतिणं चेव अइवहताणं चिद्वंति. एवामेव तेष्ठिं देवेहिं मणभक्खीकए समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेइ ॥ ६४९ ॥ पञ्चवणाप भगवईप अहावीसइमे आहारपप पढमो उद्देसो समस्तो ॥ आहार मविय सण्णी छेसा दिही य संजय कसाए । जाणे जोगुबबोगे देए य सरीर पजती। जीवे णं भंते! कि आहारए अणाहारए ? गोयमा! सिय आहारए, सिम

अणाहारए, एवं नेरइए जाब असुरकुमारे जाव वेमाणिए । सिद्धे णं भंते ! किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! नो आहारए. अणाहारए । जीवा णं भंते ! कि आहारया अणाहारया ? गोयमा ! आहारया वि अणाहारया वि । नेरहयाणं पुच्छा । गोयमा ! सन्त्रे नि ताव होजा आहारया १, अहवा आहारगा य अणाहारए य २, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ३, एवं जाव वेमाणिया. णवरं एगिंदिया जहा जीवा । सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १ ॥ भवसिद्धिए णं भंते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए. सिय अणा-हारए. एवं जाव वेमाणिए। भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवोगेंदियवज्जो तियभंगो. अभवसिद्धिए वि एवं चेव । नोभवसिद्धिए-नोअभवसिद्धिए णं भंते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए. एवं सिद्धे वि । नीभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा कि आहारमा अणाहारमा ? गोयमा ! नो आहारमा, अणाहारमा, एवं सिद्धा वि ॥ दारं २ ॥ सण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए. सिय अणाहारए, एवं जाब वेमाणिए, नवरं एगिदियविगलिदिया नो पुच्छिजंति । सण्णी णं भंते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवाइओ तियभंगो जाव वैमाणिया । असण्णी णं भंते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए. एवं णेरइए जाव वाणमंतरे । जोइसियवेमाणिया ण प्रिच्छजंति । असण्णी णं भंते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! आहारगा वि अणाहारगा वि एगो भंगो । असण्णी णं भंते ! णेरइया कि आहारया अणाहारया ? गोयमा ! आहारगा वा १. अणाहारगा वा २. अहवा आहारए य अणाहारए य १, अहवा आहारए य अणाहारया य ४, अहवा आहारगा य अणाहारए य ५. अहवा आहारमा य अणाहारमा य ६. एवं एए छन्भंगा, एवं जाव थणियकुमारा । एगिंदिएस अभंगयं, बेइंदिय जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएस तियभंगो, मणूसवाणमंतरेषु छन्भंगा। नोसण्णीनोअसण्णी णं भंते! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए. सिय अणाहारए य. एवं मणूसे वि । सिद्धे अणाहारए. पहलेणं नोसण्णीनोअसण्णी जीवा आहारगा वि अणाहारगा वि, मणूसेस तियभंगो. सिद्धा अणाहारगा ॥ दारं ३ ॥ ६५० ॥ सल्से ण भंते । जीवे किं आहारए अणाहारए ? गीयमा ! सिय आहारए. सिय अणाहारए, एवं जाब वेमाणिए । सकेसा णं भंते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेपि-दिक्वजो तियमंगो, एवं कम्हलेसा वि नील्लेसा वि काउलेसा वि जीवेगिदियकको

तियभंगो । तेउल्साए पुढविभाउवणस्सङ्काइयाणं छन्मंगा, सेसाणं जीवाइओ तियभंगो जेर्सि अत्य तेउलेसा, पम्हलेसाए ग्रुक्केसाए य जीवाइओ तियभंगो, अलेमा जीवा मणुस्सा सिद्धा य एगतेण वि पुहुत्तेण वि नो आहारगा अणाहारगा ॥ दारं ४॥ ६५१ ॥ सम्महिद्वी णं मंते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! सिय आहारगा, सिय अणाहारगा । वेइंदिया नेइंदिया चउरिंदिया छन्मंगा. सिद्धा अणाहारगा, अवसेसाणं तियभंगो, मिच्छादिद्वीस जीवेर्गिदियवज्रो तियभंगो। मम्मा-मिच्छादिद्वी णं भंते ! • कि आहारए अणाहारए ! गोयमा ! आहारए, नो अणाहारए, एवं एगिंदियविगलिंदियवज्ञं जाव वेमाणिए, एवं पुहुत्तेण वि ॥ दारं ५ ॥ ६५२ ॥ संजए णं मंते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एवं मणूसे वि, पुहुनोणं तियमंगो । असंजए पुच्छा । सिय आहारए, सिय अणाहारए, पहत्तेणं जीवेगिंदियवजो तियभंगो. संजयासंजए णं जीवे पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए मणूसे य ३ एए एगलेण वि पुहुत्तेण वि आहारगा नो अणाहारगा, नोसंजए-नोअसंजए-नोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एए एगत्तेण पोइतेण वि नो आहा-रमा अणाहारमा ॥ दारं ६ ॥ ६५३ ॥ सकताई ण मंते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एवं जाव वेमाणिया, पुहुत्तेणं जीवेगिंदियवजी तियमंगी, कोहकसाईस जीवाईस एवं चेव, नवर देवेस छन्मंगा. माणकसाईनु मायाकमाईसु य देवनेरहएसु छन्मंगा, अवसेसाणं जीवेगिदियकको तियभंगो, छोहकसाईस नेरइएस छब्भंगा, अवसेसेस जीवेगिंदियवजो तियभंगो. अकसाई जहा जोसन्जीजोअसन्जी ॥ दारं ७ ॥ ६५४ ॥ जाजी जहा सम्महिद्वी । आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य वेइंदियतेइंदियवउरिंदिएसु छन्मंगा, अवसंसेसु जीवाइओ नियमंगो जेसि अत्य । ओहिणाणी पंचिदियतिरिक्खजोणिया आहारगा. णो अणाहारमा, अवसेसेस जीवाइओ तियभंगो जेसि अत्थि ओहिनाणं, मणपजवनाणी जीवा मणूसा य एगरोण वि पुहुरोण वि आहारगा, णो अणाहारगा। केवलनाणी जहा नोसम्मीनोअसम्मी ॥ दार ८-१ ॥ अम्मामी महअम्मामी सुराजम्मामी जीवे-गिंदियश्जो तियमंगो । विमंगणाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुसा य आहारगा. णो अणाहारगा, अवसेसेस जीवाइओ तियभंगो ॥ दार ८-२ ॥ ६५५ ॥ सजोगीस जीविर्गिदियवजो तियमंगो । मणजोगी वहजोगी जहा सम्मामिन्छहिद्वी, नवरं वह-जोगरे विगलिंदियाण वि । कायजोगीस जीवेगिंदियवजो तियमंगरे. अजोगी जीव-मण्सिसद्धा अणाहारमा ॥ दारं ९ ॥ सागाराणागारोवस्त्रेस अविगिदियवच्चो तियमंगो, सिद्धा अणाहारमा ॥ दारं १०॥ सचेयए अनिर्मिदियक्यो दियमंगी, इत्विवेययपुरिस-

बेयएस जीवाइओ तियमंगो, न्पुंसगवेयए य जीवेगिदियकको तियमंगो, अवेयए जहा केंबलणाणी ॥ दारं ११ ॥ ६५६ ॥ ससरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियमंगो. ओरालिय-सरीरीजीवमणूसेस तियभंगो. अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा जेसि अत्थ ओरालियसरीरं. वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी य आहारगा. नो अणाहारगा जेसिं अत्थि, तेयकम्मसरीरी जीवेगिंदियवजो तियमंगो, असरीरी जीवा सिद्धा य नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १२ ॥ आहारपज्तीए पज्तत्तए सरीरपज्तीए पज्जत्तर इंदियपजत्तीए पजत्तए आणापाणुपजतीए पजताए भासामणपजतीए पजताए एयास पंचयु वि पजतीसु जीवेसु मणूरोसु य तियभंगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा, भामामणपजती पंचिदियाणं, अवसेमाणं नत्थि । आहारपजतीअपजत्तए णो आहारए, अणाहारए एगत्तेण वि पुरुत्तेण वि. सरीरपज्जतीअपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए, उबरिव्रियाम चरस अपज्ञतीस नेरइयदेवमण्सेस छन्भंगा, अवसेसाणं जीवेगिंदियत्रजो नियभंगो, मासामणपजनएस जीवेस पंचिदियतिरिक्खजोणिएस य तियभंगो. नेरहयदेवमणुएस छब्भंगा । सम्बपएस एगत्तपोहत्तेणं जीवाइया दंडगा पुच्छाए भाषियन्वा जस्म जं अध्य तस्स तं पुच्छिज्जइ, जस्स जं पश्चि तस्स तं ण पुच्छिजइ जाव भासामणपजनीअपजन्तएस नेरहयदेवमणुण्स छन्भंगा, सेसेसु तियभंगो ॥ ६५७ ॥ दारं १३ ॥ विद्वयो उद्देसो समत्तो ॥ पन्नवणाप भगवर्रेष अद्वावीसरमं आहारपयं समसं॥

कड्विहे ण भंते ! उवजीगे पनते ? गोयमा ! दुविहे उवजीगे पनते । तंजहा—सागारोवजोगे य अणागारोवजोगे य । मागारोवजोगे ण भंते ! कड्विहे पनते ? गोयमा ! अट्ठविहे पनते ! तंजहा—आभिणिबोहियणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, केवळणाणसागारोवजोगे, केवळणाणसागारोवजोगे, केवळणाणसागारोवजोगे, निमंगणाणसागारोवजोगे, महजण्णाणसागारोवजोगे, प्रथमजणाणसागारोवजोगे, विमंगणाणसागारोवजोगे । अणागारोवजोगे ण मंते ! कड्विहे पनते ? गोयमा ! चउव्विहे पनते । तंजहा—चक्खदंसणजणागारोवजोगे, अचक्खदंसणजणागारोवजोगे, ओहिदंसणजणागारोवजोगे य । एवं जीवाणं ॥ ६५८॥ मेरह्याणं भंते ! कड्विहे उवजोगे पनते ! तंजहा—सागारोवजोगे य अणागारोवजोगे पनते ! गोयमा ! दुविहे उवजोगे पनते । तंजहा—सागारोवजोगे य अणागारोवजोगे य । नेरह्याणं भंते ! सागारोवजोगे कड्विहे पनते ? गोयमा ! इव्विहे पनते ! सागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे कड्विहे पनते ! योगमा ! अध्वा पनते ! सागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे, स्वणाणसागारोवजोगे । नेरह्याणं भंते ! आणागारोवजोगे कड्विहे पनते ? गोयमा !

तिविहे पन्ते । तंजहा-चक्खदंसणअणागारोवओगे, अचक्खदंसणअणागारोवओगे, ओहिदंसणअणागारोवओगे, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहे उबओगे पत्रते । तंजहा-सागारोबओगे अणागारोवओगे य । पृढवि-काइयाणं • सागारीवओं गे कहविहे पन्ते ? गोयमा ! दुविहे पनते । तंत्रहा-मङ्कणाण-सागारीवओगे, सुयअण्णाणसागारीवओगे य । पुढविकाइयाणं ० अणागारावओगे कह-विहे पन्नते ? गोयमा ! एगे अचक्ल्दंसणअणागारोवओगे पन्नते. एवं जाव वणस्मइ-काइयाणं । वेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहे उवओगे पन्नते । तंजहा-मागारोव-ओगे अणागारोवओगे य । बेडंदियाणं भंते ! सागारोवओगे कइविहे पन्नेते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्ते । तंजहा-आभिणिवोहियणाण०, मुखणाण०, महअण्णाण०, सुय-अण्णाणसामारीवओगे । बेडंदियाणं भंते ! अणागारीवओगे कडविहे पश्चते ? गोयमा ! एगे अचक्खदंसणअणागारोवओगे. एवं तेइंदियाण वि । चर्डारेदियाण वि एवं चेव. नवरं अणागारोवओगे द्विहे पनते । तंजहा-चक्खदंसणअणागारोवओगे. अन्यक्ख-दंसणअणागारीवओगे । पांचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा नेरइयाणं । मणुस्माणं जहा ओहिए उवओगे भणियं तहेव भाणियव्वं । वाणमंतरजोडसियवेमाणियाणं जहा णेरड्याणं ॥ ६५९ ॥ जीवा णं मंते ! कि सागारोक्टला अणागारोक्टला ! गोयमा ! सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि । से केणद्वेणं भंते ! एवं वृच्छ-'जीवा सागा-रोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि' ? गोयमा ! जेणं जीवा आमिणिबोहियणाणसुयणाण-ओहिणाणमणपञ्चवणाणकेवलणाणमङ्अण्णाणसुयअण्णाणविसंगणाणोवडना तेणं जीवा सागारोवउत्ता, जेणं जीवा चक्खुदंसणअचक्खुदंसणओहिदंसणकेवलदंसणी-वउत्ता तेणं जीवा अणागारोवउत्ता, से तेणद्वेणं गोयमा ! एवं वृषद्--- जीवा सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि' । नेरइया णं भंते ! किं सागारोवउत्ता अणा-गारीबडता ? गोयमा ! नेरइया सागारीवडता वि अणागारीवडता वि । से केणद्वेणं मंते ! एवं वृच्चइ० ? गोयमा ! जेणं नेरहया आभिणियोहियनाणसुयनाणओहिनाण-मइअनाणसुर्यअनाणविभंगनाणोवउत्ता तेणं नेरइया सागारीवउत्ता, जेणं नेरइया चक्खदंसणअचक्खदंसणओहिदंसणोवउत्ता तेणं नेर्ड्या अणागारोवउत्ता. से तेण-ट्रेणं गोयमा ! एवं वुष्वइ-जाव 'सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि'. एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! तहेव जाव जेणं पुढविकाइया महअण्णाणसुरअण्णाणोवउत्ता तेणं पुढविकाइसा सागारोवउत्ता. जेणं पुढविकाइसा अचक्छदंसणीवउत्ता तेणं पुढविकाइया अणागारीवउत्ता, से तेणहेणं गोयसा! एवं वुषद जाव वजप्पह्नाह्या । वेहंबियाणं भंते ! अद्वसहिया तहेव पुष्छा ।

गोवमा ! जाव जेणं वेइंदिया आमिणिबोहियणाणस्यणाणमस्अण्णाणस्यणाणीवउत्ता तेणं बेइंदिया सागारीवउत्ता. जेणं बेइंदिया अचक्खुदंसणीवउत्ता तेणं अणा-गारोबउत्ता, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृषद् ०, एवं जाव चर्डिरदिया, णवरं चक्खु-दंसणं अब्महियं चर्डिदियाणं ति । पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, मणूसा जहा जीवा, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरहया ॥ ६६० ॥ पञ्चवणाप भगवर्षेप प्राणतीस्रहमं उवओगपयं समत्तं॥

कइविहा णं अंते ! पासणया पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पासणया पन्नता । तंत्रहा-सागारपासणया. अणागारपासणया । सागारपासणया णं भंते ! ऋइविहा पन्नता ? गोयमा ! छव्विहा पन्नता । तंजहा-मुयणाण ॰ पामणया, ओहिणाण ॰ पास-णया, मणपज्जवणाण व्यासणया, केवलणाण व्यासणया, सुयअण्णाणसागारपासणया, विभगणाणमागारपासणया । अणागारपासणया णं भंते ! बङ्गिहा पन्नता ? गोयमा ! तिविहा पश्चमा । तंजहा-चक्खुदंसणअणागारपासणया, ओहिदंसणअणागारपासणया, केनलदंसणअणागारपासणया, एवं जीवाणं पि । नेरइयाणं भेते ! कडविहा पासणया पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-सागारपासणया, अणागारपासणया । नेरइयाणं भेते ! सागारपासणया कड़बिहा पन्नता ? गोयमा ! चडव्विहा पन्नता । तंजहा-सुयणाण ०पासणया, ओहिणाण ०पासणया, सुयअण्णाण ०पासणया, विभेगणा-ण॰पासणया। नेरङ्याणं भंते ! अणागारपासणया बद्धविहा पन्नता ? गोयमा ! द्विहा पनता । तंजहा-चक्खुदंसण० ओहिदंसण०, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणे भंते ! कइविहा पासणया पन्नता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया प० । पुढविकाइयाणं भंते ! सागारपासणया कइविहा पन्नना ? गोयमा ! एगा सुयअनाणसागारपासणया पनता, एवं जाद वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं भंते ! सहविहा पासणया पनता १ गोयमा ! एगः सागारपासणया पन्नता । बेइंदियाणं भंते ! सागारपासणया कहविहा पनता ? गोयमा ! दुविहा पनता । तंजहा-सुवणाणसागारपासणया, सुवअण्णाण-मागारपासणया. एवं तेइंदियाण वि । चउरिंदियाणं पुन्छा । गोयमा ! दुविहा पनता । तंजहा-सागारपासणया य अणागारपासणया य । सागारपासणया जहा बेइंदियाणं । चडरिंदियाणं भेते ! अणागारपासणया कडविहा पचता ? गोयमा ! एगा चक्खदंसणअणागारपासणया पश्चता । मणूसार्ण जहा जीवाणं, सेसा जहा नेर-इया जाद बेमाजियाणं ॥ ६६९ ॥ जीवा णं भेते ! कि सागारपस्ती. अणागार-परसी ? गोयमा ! जीवा सागारपरसी वि अणागारपरसी वि । से केणडेणं भंते ! एवं अषड-'जीवा सागारपासी वि अजागारपासी वि'? गीयमा ! जेजं जीवा ्राम्छ ६६

सुयणाणी ओहिणाणी सणपञ्चवणाणी केवलणाणी सुयञ्चणाणी विभंगणाणी तेणं जीवा सागारपस्ती, जेणं जीवा चक्खदंसणी ओहिरंसणी केवलदंसणी तेणं जीवा अणागारपस्ती, से एएणद्रेणं गोयमा ! एवं वृब्द- जीवा सागारपस्ती वि अणागार-पस्सी वि'। नेरइया णं भंते ! किं सागारपस्सी, अणागारपस्सी ! गोयमा ! एवं चेव. नवरं सागारपासणयाए मणपज्जवनाणी केवलनाणी न वुच्चइ, अणागारपासण-याए केवलदंसणं नित्य, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गीयमा ! पुढविकाइया सागारपस्ती, णो अणागारपस्ती । से केणड्रेणं भंते ! एवं व्रश्वड० ? गोयमा ! पुढविकाइयाणं एगा सुयअण्णाणसागारपासणया पन्नता, से तेणहेणं गोयमा ! एवं बुचइ, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! सागार्पस्सी, णो अणागारपस्सी। से केणद्रेणं अंते ! एवं वृत्तह० ? गोयमा ! वेइंदियाणं द्विहा सागारपासणया पन्नता । तंत्रहा-स्यणाणसागारपासणया, स्र्यअण्णाणसागार-पासणया, से एएणड्रेणं गोयमा ! एवं वृक्कड़ ० । एवं तेइंडियाण वि । चटरिंडियाणं पुच्छा । गोयमा ! वर्डारेदिया सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि । से केणडेणं० ? गोयमा ! जेणं चडरिंदिया सुयणाणी सुयअण्णाणी तेणं चडरिंदिया सागारपरसी, जेणं चडरिंदिया चक्खुइंसणी तेणं चडिंदिया अणागारपस्ती, से एएणड्रेणं गोयमा [एवं वृच्छ० । मणुसा जहा जीवा, अवसेया जहा नेरइया जाव वेमाणिया ॥ ६६२ ॥ केवली णं भंते ! इसं रयणप्पमं पढिवें आगारेहिं हेकहिं उवसाहिं दिइतेहिं वण्णेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ? गायमा ! नो इणहे समहे । से केणहेणं भंते ! एवं वुचड़-'केवली णं इमं रयणप्पमं पुढविं आगारेहिं जं समयं जाणह नो तं समयं पासह. जं ममयं पामइ नो तं समयं जाणइ ? गोयमा ! सागारे से गाणे भवड़, अणागारे से दंसणे भवइ, से तेणद्रेणं जाव नो तं समयं जाणइ, एवं जाव अहेसत्तमं । एवं सोहम्मकप्पं जाव अख्यं. गेविज्जगविमाणा अणुत्तरविमाणा, ईसिप्पन्मारं पुढिनिं, परमाणुपोम्गलं दुपएसियं संधं जाव अर्णतपएसियं खंधं। केवली णं मंदी ! इसं रयणप्पमं पुढवि अणागारेहि अहे कहि अणुवमाहि अदिवंतिहि अवण्णेहि असंठाणेहि अपमाणिहिं अपडोयारेहिं पासह न जाणह ! हंता गोयमा ! केवली णं इसं रयणप्पसं पुढ़िनें अजागारेहिं जान पासड़ न जाणइ । से केणहेणं अंते ! एवं सुचाई-'केवली णं इमं रयणप्पमं पुढवि अणागारेहि जाव पासइ न जाणइ' ? गोबमा ! अणागारे से दंसणे भवड़, सागारे से नाणे भवड़, से तेणडेणं गोयमा ! एवं वुषड़-केवळी णं इमं रयणप्पमं पुढविं अणागारेहिं जाव पासइ न जाणह'. एवं जाव ईसिप्पन्यारं

पुढविं परमाणुपोग्गलं अणंतपएसियं खंघं पासइ, न जाणइ॥ ६६३॥ **पद्मवणाप** भग**वर्डप तीसहमं पासणयापयं समत्तं**॥

जीना णं मंते ! कि सण्णी, असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी ! गोयमा ! जीना सण्णी वि असण्णी वि नोसण्णीनोअसण्णी वि । नेरह्याणं पुच्छा । गोयमा ! नेरह्या सण्णी वि असण्णी वि नो नोसण्णीनोअसण्णी । एवं असरक्रमारा जाव यणियक्रमारा । पुढनिकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । एवं वेइंदियतेइंदियचर्डिया वि, मणूसा जहा जीना, पंविदियतिस्वजोणिया वाणमंतरा य जहा नेरह्या, जोइसियवेमाणिया सण्णी, नो अमण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, नो असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । नेरह्मतिरयमणुया य वणयरगद्धराइ सण्णीऽसण्णी य । विगलिंदिया असण्णी जोइसवेमाणिया सण्णी ॥ ६६४॥ प्रभवणाप्य मगवर्ष्य इगतीसइमं सण्णीपयं समत्तं ॥

जीवा णं भंते ! कि संजया, असंजया, संजयासंजया, नोसंजयनोअसंजया वि ने असंजया वि २, असंजया वि २, असंजया वि २, असंजया वि २, असंजया वि ३, नोसंजयनोअसंजयनोसंजया वि ४ । नेरइया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! नेरइया नो संजया, असंजया, नो संजयासंजया, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजया । एवं जाब चडरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोषियाणं पुच्छा । गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोषियाणं पुच्छा । गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोषिया नो संजया, असंजया वि, संजयासंजया वि, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजया वि, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजया वि, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजया वि, नो नोसंजयनोअसंजयनोसंजया । साम्यानित्र विद्यानित्र क्षेत्र । सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा नो संजया १, नो असंजया २, नो संजयासंजया ३, नोसंजयनोअसंजयनोसंजयासंजया ४ । गाष्टा—"संजयअसंजयमीसगा य जीवा तहेव मणुया य । संजयरहिया तिरिया सेसा अस्यंजया होति" ॥ ६६५ ॥ प्रम्वणाप भगवर्ष स्वर्था स्वर्था समसं ॥

मेयविस्तयसंठाणे अन्मित्रवाहिरं य देसोही । ओहित्स य स्वयनुष्टी पिडवाई चेव अपिडवाई ॥ कड्विहा णं अंते ! ओही प्रकृता ? गोयमा ! दुविहा ओही प्रकृता । तंत्रहा— भवपण्यह्या य स्वयोवसनिया य, दोण्डं भवपण्यह्या, तंत्रहा—देवाण य वेरह्याण य, दोण्डं स्वयोवसनिया, तंत्रहा—मण्याणं पंचिदिपतिरिक्तकोणियाण य ॥ ६६६ ॥ वेरह्या णं भंते ! केव्ह्यं क्षेत्रं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं सद्ध- याउनं, उद्योसेणं चतारि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति । रयणप्पभापुरुषि-नेरइया णं मंते ! केवइयं खेलं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं अनु-द्वाइं गाउबाइं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउवाई ओहिणा जाणंति पासंति । सकरप्पमा-पुढविनेरइया जहनेणं तिष्णि गाउयाई. उक्कोरेणं अद्भुद्धाई गाउयाई ओहिणा जाणंति पासंति । वाल्यस्पभापुदविनेरङ्या जहन्नेणं अन्नाङ्जाई गाउयाई, उक्रोसेणं तिण्णि गाउयाई ओहिणा जाणंति पासंति । पंकप्यभापुढविनेरह्या जहनेणं दोण्णि गाउयाहं, उक्कोरेणं अन्नाइजाहं गाउयाहं ओहिणा जाणंति पासंति । धूमप्पमापुडवि-नेरइया जहनेणं दिवन्नं गाउयाई, उक्कोसेणं दो गाउयाई ओहिणा जाणंति पासंति । तमापुढविनेरइया जहनेणं गाउयं, उक्कोसेणं दिवनं गाउयं ओहिणा जाणंति पासंति । अहेसत्तमाए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अदं गाउयं, उन्नोसेणं गाउयं ओहिणा जाणंति पासंति ॥ ६६७ ॥ असुरकुमारा णं भंते ! ओहिणा केवड्यं खेतं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं पणवीसं जोयणाई, उद्दोसेणं असंखेजे वीक्समेहे ओहिणा जाणंति पासंति । नागकुमारा णं जहनेणं पणवीसं जोयणाई, उन्होसेणं संखेजे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति, एवं जाव थणियकुमारा । पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिया णं भंते ! केवइयं खेतं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजङ्गागं. उक्रोसेणं असंखेजे दीवसम्हे॰। मणुसा गं भंते ! ओहिणा केवडयं खेरां जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्य असंखेजडमागं, उद्योसेणं असंखेळाई अलोए लोयप्यमाणमेत्ताई खंडाई ओहिणा जाणंति पासंति । वाणमंतरा जहा नागकुमारा ॥ ६६८ ॥ जोइसिया णं मंते ! केवइयं खेतं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं संखेजे दीवसम्हे, उन्नोसेण वि संखेजे दीवसम्हे॰ । सोहम्मगदेवा णं मंते ! केवड्यं खेलं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्स असंखेजङभागं. उद्घोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पमाए हिद्दिले वरमंते. तिरियं जाव असंबोजे बीवसमुद्दे, उन्नं जाव सगाई विमाणाई ओहिणा जाणंति पासंति, एवं ईसाणगढेवा वि । सणंकुमारदेवा वि एवं चेव, नवरं जाव अहे दोचाए सकरप्पमाए पुढवीए हिद्धिके चरमंते. एवं माहिंददेवा वि । बंमलोयलंतगदेवा • तबाए पढ़बीए हिद्रिहे चरमंते. महासुक्रसहस्सारगढेबा॰ चलुबीए पंकप्पभाए पुडवीए हेट्टिक्ने चरमंते, आजयपाणयसारणसूयदेवा अहे जाव पंचमाए ध्रमप्य-भाए॰ हेड्डिले चरमंते, हेड्डिसमज्जिसमोबेजगदेवा अहे जाव छठ्ठाए तमाए पुढवीए हेड्डिले चरमंते । उनिसमोविज्यगहेवा णं भंते ! केवडयं खेतं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा । जहनेणं अंगुलस्य असंखेजहमार्गं, उद्योरेणं अहेसत्तमाए॰

हेक्क्रिक्षे चरमंते. तिरियं जाव असंखेजे दीवसमुद्दे. उद्दं जाव सयाई विमाणाई ओहिणा जाणंति पासंति । अणुत्तरोवबाइयदेवा णं मंते ! केवडयं केतं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! संभिन्नं लोगनालिं ओहिणा जाणंति पासंति ॥ ६६९ ॥ नेरइयाणं भंते ! ओही किसंठिए पत्तते ? गोयमा ! तप्पागारसंठिए पत्तते । असूर-कुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! पह्नगसंठिए, एवं जाव यणियकुमाराणं । पंचिदिय-तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए, एवं मणूसाण वि । वाणसंतराणं पुच्छा । गोयमा ! पडहगसंठाणसंठिए । जोडसियाणं पुच्छा । गोयमा ! क्षह्मरिसंठाणसंठिए पक्षते । सोहम्मगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! उद्गुमुयंगागारसंठिए पन्नने, एवं जाव अनुबदेवाणं । गेवेजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! पुष्फचंगेरिसंटिए पन्नते । अणुत्तरोवबाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जवनालियासंठिए ओही पन्नते ॥ ६७० ॥ नेरइया णं भंते ! ओहिस्स कि अंतो, बाहिं १ गोयमा ! अंतो, नो बाहिं, एवं जाव थाण्यकुमारा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! नो अंतो. बाहिं। मणसाणं पुच्छा। गोयमा! अंतो वि बाहिं पि। बाणमंतरजोडसिय-वेमाणियाणं जहा नेरझ्याणं ॥ ६७१ ॥ नेरझ्याणं भंते ! कि देसोही, सब्बोही ? गोयमा । देसोही, नो सब्बोही, एवं जाव थणियकमारा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोही, नो सब्बोही । मणुसाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोही वि सम्बोही वि । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥ ६७२ ॥ नेरइयाणं भंते ! ओही कि आणुगामिए. अणाणुगामिए. वहुमाणए, हीयमाणए, पडिवाई. अप्यक्तिवाई. अबद्विए. अणवद्विए ? गोयमा ! आणुगामिए, नो अणाणुगामिए, नो बहुमाणए, नो हीयमाणए, नो पडिवाई, अप्पडिवाई, अबद्रिए, नो अणब्दिए. एवं जाव थणियकमाराणं । पंचिंदियतिरिक्सजोणियाणं पुच्छा । गोयसा ! आणुगा-मिए वि जाव अणबद्विए वि, एवं मण्साण वि । वाणमंतरजोइसियवेसाणियाणं जहा नेरह्याणं ॥ ६७३ ॥ प्रवावणाप भगवर्षप तेचीसर्म ओहिपयं समर्च ॥

अणंतरागवाहारे १ आहारे मोयणाइ य २ । पोम्गला नेव आणंति ३ अञ्चय-साणा ४ य आहिया ॥१॥ सम्मत्तसाहिगमे ५ तत्तो परियारणा ६ य बोद्धन्या । काए पासे रुवे सहे य मणे य अप्पबहुं ७ ॥१॥ नेरह्या णं मंते ! अणंतराहारा, तओ निव्यत्तणया, तभो परियाहणया, तभो परिणामया, तभो परियारणया, तभो परिवाहणया ! हैता गोयमा ! नेरह्या णं अणंतराहारा, तभो निव्यत्तणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परिवाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहण्या, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहण्या, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहणया, तभो परियाहण्या, तभो परियाहणया, तथो परियाहण्या, तभो परियाहण्या, तभो परियाहण्या, तथो परियाहण्या परियाह

मया, तओ विजन्नणया, तओ पच्छा परियारणया ? हंता गीयमा ! असुरकुमारा अणं-तराहारा. तब्बो निव्यत्तणया जाव तब्बो पच्छा परियारणया. एवं जाव थणियकुमारा । पढिनिकाइया णं भेते! अणंतराहारा, तओ निव्यत्तणया, तओ परियाइणया, तओ परिणासया, तस्रो परियारणया. तओ विउव्यणया? हंता गोयमा! तं चेव जाव परियारणया. नो चेव णं विख्ववणया । एवं जाव चडरिंदिया, नवरं वाडकाइया पंचिदियतिरिक्खजोणिया मण्सा य जहा नेरइया, नाणमंतरजोइसियनेमाणिया जहा असरकमारा ॥ ६७४ ॥ नेरइयाणं भंते ! आहारे कि आभोगनिष्वतिए. अणा-भोगनिव्वतिए ? गोयमा ! आभोगनिव्यत्तिए वि अणाभोगनिव्यत्तिए वि । एवं असरक्रमाराणं जाव वेमाणियाणं. णवरं एगिंदियाणं नो आभोगनिव्वनिए, अणा-भोगनिव्यक्तिए । नेरड्या णं भंते ! जे पोगाले आहारक्ताए गिण्डंति ते किं जाणीत पासीत आहारेति, उदाह न जाणंति न पासीत आहारेति ? गोयमा ! न जाणंति न पासंति आहारेंति, एवं जाव तेइंदिया । चडरिंदियाणं प्रच्छा । गोयमा ! अत्येग-इया न जाणंति पासंति आहारेंति. अत्येगइया न जाणंति न पासंति आहारेंति । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्येगइया जाणंति पासंति आहारैति १. अत्थेगइया जाणंति न पासंति आहारेंति २, अत्थेगइया न जाणंति पासंति आहारेंति ३. अत्थेगहया न जाणंति न पासंति आहारेंति ४. एवं जाव मणस्याण वि । वाणसंतरजोडसिया जहा नेरडया । वेसाणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अत्येगडया जाणंति पासंति आहारेन्ति, अत्येगड्या न जाणंति न पासंति आहारेन्ति । से केणद्रेणं भंते । एवं बुचड-विमाणिया अत्येगड्या जाणंति पासंति आहारेन्ति. अत्येगइया न जाणंति न पासंति आहारेन्ति' ? गोयमा ! वेमाणिया दविहा पश्चना । तंजहा-माइमिच्छिहिष्ठववकागा य अमाइसम्महिष्ठिववकागा य, एवं जहा इंदिय-उद्देसए पढमे भणियं तहा भाणियव्वं जाव से एएणद्रेणं गोयमा ! एवं सुबह् ।। ६७५॥ नेरहयाणं भंते ! केवहया अज्ञावसाणा पत्तता ? गोयमा ! असंखेळा अज्ञावसाणा पनता । ते णं मंते ! किं पसत्था अपसत्था ? गोयमा ! पसत्था वि अपसत्या वि. एवं जाव वेसाणियाणं । नेरहया णं भंते ! कि सम्मतामिगमी. मिच्छतामिगमी. सम्मामिन्छताभिगमी ? गोयमा ! सम्मत्ताभिगमी वि मिन्छताभिगमी वि सम्मा-मिच्छताभिगर्मी वि. एवं जाव वैमाणियाण वि । नवरं एगिंदियविगलिंदिया गो सम्मत्ताभिगमी, मिच्छतामिगमी, नो सम्मामिच्छताभिगमी ॥ ६७६ ॥ देवा णं भंते ! कि सदेवीया सपरियारा, सदेवीया अपरियारा, अदेवीया सपरियारा, अदेवीया अपरियारा १ गोयमा । अत्येगद्या देवा सदेवीया सपरियारा, अत्येगद्या देवा

अदेवीया सपरियारा, अत्येगङ्या देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा । से केणद्रेणं अंते ! एवं वृच्चड-'अत्थेगइया देवा सदेवीया संपरियारा. तं चेव जाव नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा ? गोयमा ! भवण-वडवाणमंतरजोडससोहम्मीसाणेस कप्पेस देवा सदेवीया सपरियारा. सणंकुमार-माहिदबंभलोगलंनगमहासुद्धमहस्सारआणयपाणसभारणकृतमु कप्पेसु देवा अदेवीसा सपरियारा, गेत्रेजअणुत्तरोवनाइया देवा अंदवीया अपरियारा, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा, से तेणड्रेणं गोयमा ! एवं वुचड्-'अत्थेगड्या देवा सदेवीया सपरियारा, तं चेव, नो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा'॥ ६७७॥ ऋ-विहा णं भंत ! परियारणा पश्चता ? गोयमा ! पंचविहा परियारणा पश्चता । तंजहा-कायपरियारणा, फासपरियारणा, स्वपरियारणा, सहपरियारणा, मणपरि-यारणा । से केणद्वेणं भंते ! एवं युच्चद्-पंचिवहा परियारणा पन्नना । तंजहा-कायपरियारणा जाव मणपरियारणा ? गोयमा ! भवणवहबाणमंतरजोइससोहम्मी-साणेस कप्पेस देवा कायपरियारगा. सणंक्रमारमाहिंदेस कप्पेस देवा फायपरियारगा. बंगलोयलंतगेषु देवा स्वपरियारगा. महासुक्कमहरूसारेषु देवा सद्दपरियारगा, आणयपाणयआरणक्राएम कप्पेस देवा मणपरियारगा. गेवेजअणुत्तरोवबाइया देवा अपरियारगा, से तेणद्वेणं गोयमा ! तं चेव जाव मणपरियारगा । तत्य णं जे ते कायपरियारमा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जड-'इच्छामो णं अच्छराहि सर्दि कायपरियारं करेताए'. तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ ओरालाइं सिंगाराइं मणुण्णाइं मणोहराइं मणोरमाइं उत्तरवेउव्वियस्वाइं विडव्वंति पिउव्याना तेसि देवाणं अंतियं पाउच्भवंति. तए णं ते देवा ताहि अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणं करेंति । से जहाणामए सीया पोग्गला सीयं पप्प सीयं चेव अड्यइताणं चिद्वंति, उसिणा वा पोम्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अडवडताणं चिडंति. एवमेव तेहिं देवेहिं ताहिं अच्छराहिं सिद्धं कायपरियारणे कए समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेड ॥ ६७८ ॥ अत्य णं भंते ! तेसिं देवाणं सक्तपोस्गला ? इंता! अत्य । ते णं मंते ! तासि अच्छराणं कीमत्ताए मुखो भुखो परिणमंति ? गोयमा । सोइंदियत्ताए चक्ख्रईदियत्ताए घाणिदियत्ताए रसिंदियताए प्रासिंदियत्ताए इहताए कंतताए मणुकताए मणामताए सभगताए सोहग्गस्यजोव्यवगुणलायन्नताए ते तासि भुजी भुजी परिणमंति ॥ ६७६ ॥ तत्थ णं जे ते फासपरियारमा देवा तेसि पं इच्छामणे समुप्पजड, एवं जहेव कायपरियारणा तहेव निरवसेसं आणि-अर्घ । तत्य णं जे ते स्वपरिवारमा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्ञह---

'इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं रूबपरियारणं करेत्तए'. तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे तहेव जाब उत्तरबैउव्वियांड स्वाडं विउव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छीत उवागच्छिता तेसि देव।णं अदरसामेते ठिवा ताई उरालाई जाव मणोरमाई उत्तरवेडिवयाई रूबाई उबदंसेमाणीओ २ चिद्रति, तए णं ते देवा नाहिं अच्छराहि सदि रूवपरियारणं करेंति, सेसं तं चेव जाव भुजो भुजो परिणमन्ति । तत्य णं जे ते सद्दपरियारमा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पजड--'इन्छामो णं अच्छराहिं सिद्धं सहपरियारणं करेनए'. तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीक्षा समाणे तहेब जाव उत्तरवेउव्वियाई स्वाई विजव्वंति विजव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छेति उवागच्छिता तेसि देवाणं अदरसामंते ठिचा अणुनराई उचावयाई सहाई समुदीरेमाणीओ २ चिट्ठांति, तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धि सहपरियारणं करेन्नि, सेसं तं चेव जाव भूजो भूजो परिण-मंति । तत्य णं जे ते मणपरियारगा देवा तेसिं इच्छामण समुप्पज्जड्-'इच्छामो णं अच्छराहिं सिद्धं मणपरियारणं करेताएं, तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ तत्थ-गयाओ चेत्र समाणीओ अणुनराई उचावयाई मणाई संपहारेमाणीओ २ चिद्रंति, तए णं ते देवा ताहि अच्छराहि सदि मणपरियारणं करेंति. सेसं णिरवसेसं नं चेव जाव भज्जो भज्जो परिणसंति ॥ ६८० ॥ एएसि णं भंते ! देवाणं कायपश्यिारगाणं जाव मणपरियारगाणं, अपरियारगाण य कबरे कबरेहिंनो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सञ्बत्योवा देवा अपरियारगा, सणपरि-यारमा संखेजमुणा, सहपरियारमा असंखेजमुणा, स्वपरियारमा असंखेजमुणा, फामपरियारमा असंबेजगुणा, कायपरियारमा असंबेजगुणा॥ ६८१॥ पद्मव-णाए भगवर्षेप चउत्तीसहमं परियारणापयं समसं॥

सीया य द्वन सरीरा साया तह नेयणा भवइ दुक्खा। अन्भुवनमोवक्रमिया निदा य अणिदा य नायव्या ॥ १ ॥ सायमसायं सन्ने सहं च दुक्खं अदुक्खमसुहं च । माणसरहियं विगालिदिया उ सेसा दुविहमेव ॥ २ ॥ बद्धविहा णं भंते ! वेयणा पक्ता ! गोयमा ! तिविहा वेयणा पक्ता । नंजहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा । नेरइया णं भंते ! कि सीयं नेयणं वेदेंति, उसिणं वेयणं वेदेंति, सीओसिणं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! सीयं पि वेयणं वेदेंति, उसिणं पि वेयणं वेदेंति, नो सीओसिणं वेयणं वेदेंति । केई एकेकपुढवीए वेयणाओ भणिति । रमणप्रभापुढविनेरइया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! नो सीयं वेयणं वेदेंति, उसिणं वेयणं वेदेंति, नो सीओसिणं वेयणं वेदेंति, एवं जाव बाळ्यण्यभापुढविनेरइया । पंकप्यभापुढविनेरइयाणं पुच्छा ।

गोयमा! सीयं पि वेयणं बेदेंति. उत्तिणं पि वेयणं वेदेंति. नो सीओसिणं वेयणं वेदेंति । ते बहयतरागा जे उत्तिणं वेयणं वेदेंति, ते बोबतरागा जे सीयं वेयणं देदेंति । धूमप्पभाए एवं चेव दुविहा, नवरं ते बहुतरागा जे सीयं वेयणं वेदेंति, ते भोवतरागा जे उसिणं वेयणं वेदेंति । तमाए य तमतमाए य सीयं वेयणं वेंदेंति, नो उत्तिणं वेयणं वेंदेंति. नो सीओसिणं वेयणं वेंदेंति । अग्ररकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! सीयं पि वेयणं वेदेंति. उसिणं पि वेयणं वेदेंति. सीओसिणं पि वेगणं वेदेंति. एवं जाव वेमाणिया ॥ ६८२ ॥ कडविहा णं भंत ! वेगणा पश्चता ? गोयमा ! चउब्बिहा वेयणा पन्नता । तंजहा-दब्बओ वेत्तओ कालको भावको । नेरइया णं भंते! किं दब्बओ वेयणं वेदेंति जाव भावओ वेयणं वेदेंति ? गोयमा ' दन्वओ वि वेयणं वेदेंति जाव भावओ वि वेयणं वेदेंति, एवं जाव वेमाणिया । कडविहा णं भंते ! वेयणा पन्नता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्नता । तंजहा-सारीरा, माणसा, सारीरमाणसा । नेरइया णं भंते ! कि सारीरं नेयणं वेदेंति, माणसं वेयणं वेदेंति, सारीरमाणसं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! सारीरं पि वेयणं वेदेंति. माणसं पि वेयणं वेदेंति. सारीरमाणसं पि वेयणं वेदेंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं एगिंदियविगलिंदिया सारीरं वेयणं वेदेंति, नो माणसं वेयणं वेदेंति. नो सारीरसाणसं वेयणं वेदेंति । कइविहा णं भंते ! वयणा पन्नता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्नता । तंजहा-साया, असाया, सायासाया । नेरहया णं भंते ! कि सायं वेयणं वेदेंति. असायं वेयणं वेदेंति. सायासायं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! तिबिहं पि वेयणं वेदेंति, एवं सव्वजीवा जाव वेमाणिया । वहविहा णं भंते ! वेयणा पन्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्ता । तंजहा-दक्सा, सहा. अदुक्खममुद्दा । नेरइया णं भंते ! किं दुक्लं वेयणं वेदेंति पुच्छा । गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति. सहं पि वेयणं वेदेंति. अदुक्खमसहं पि वेयणं वेदेंति. एवं जाव वेमाणिया ॥ ६८३ ॥ कहविहा णं मंते ! वेयणा पत्रता ? गोयमा ! द्विहा वेयणा पनता । तंजहा-अब्भोवगमिया य उवक्रमिया य । नेरहया णं भंते ! अञ्मोवगमियं वेयणं वेदेंति. उवक्रमियं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! नो अञ्मोवग-मियं वेयणं वेदेंति. उवकामियं वेयणं वेदेंति, एवं जाव चडरिंदिया । पंचिदियति-रिक्खजोषिया मणुसा य दुविहं पि वैयणं वेदेंति, बाणमंतरजोइसियबेमाणिया जहा नेरहया ॥ ६८४ ॥ बहविहा णं भंते ! वेयणा पनता ? गोयमा ! दुविहा वैयणा पस्ता । तंजहा-निटा य अणिटा य । नेरहवा णं भंते ! कि निदायं वेयणं वेदेंति, अभिनायं वेपणं वेदेंति ? गोगमा ! निहायं पि वेपणं वेदेंति, अभिनायं पि

वैयणं वेर्देति । से केणद्रेणं भंते ! एवं मुच्ह-'नेरइया निदायं पि॰ अणिदायं पि वेयणं चेरेंति' ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नता । तंजहा-सण्णीभया य असण्णीभया य । तत्थ णं जे ते मण्णीभया ते णं निदायं वेयणं वेदेंति. तत्य णं जे ते असण्णीभ्या ते णं अणिदायं वेयणं वेदेंति, से तेणद्वेणं गोयमा ! एवं · · नेरइया निदायं पि वेयणं वेदेंति अणिदायं पि वेयणं वेदेंति. एवं जाव थणियकुमारा । पुढ-विकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नो निदायं वेयणं वेदेंति, अणिदायं वेयणं वेदेंति । से केणहेणं भंते ! एवं वुन्दर-'पुडविकाइया नो निदायं वेयणं वेदेंति. अणिदायं वेयणं वेदेंति' ? गोयमा ! पुढविकाइया सन्वे अमण्णी अमण्णिभयं अणिदार्थ वैयणं वेदेंति, से तेणद्वेणं गोयमा एवं वुचइ-पुडविकाइया नो निदायं वैयणं वेदेंति. अणिदायं वेयणं वेदेंति. एवं जाव चडरिंदिया । पंचिदियतिरिक्सजोणिया मणूसा वाणमंतरा जहा नेरइया । जोइसियाणं पुच्छा । गोयमा ! निदायं पि वैयणं वेदेंति, अणिदायं पि वेयणं वेदेंति । से केणड्रेणं भंते । एवं वुच्छ-'जोडसिया निदा-यं पि वेयणं वेदेंति, अणिदायं पि वेयणं वेदेंति'? गोयमा! जोडसिया दुविहा पन्नता । तंजहा-माइमिन्छिद्दिउववण्णगा य असाइसम्महिद्भिउववण्णगा य । तत्थ णं जे ते माइमिच्छिहिद्विववण्णगा ते णं अणिदायं वेयणं वेदेंति, तस्य णं जे ते अमाइसम्महिद्धित्ववण्णगा ते णं निदायं वयणं वेदेंति, से एएणद्रेणं गोयमा ! एवं वुचर, 'जोइसिया दुविहं पि वेयणं वेदेंति', एवं वेमाणिया वि ॥ ६८५ ॥ पश्चय-णाए सगवर्डेए पणतीसहमं वेयणापयं समसं॥

वेयणकसायमरणे वेडिव्यतेयए य आहारे । केविलए चेव भवे जीवमणुस्साण सत्तेत्र ॥ कह णं भंते ! समुख्याया पन्नता ! गोयमा ! सत्त समुख्याया पन्नता ! नंजहा-वेयणासमुख्याए ९, कसायसमुख्याए २, मारणंतियसमुख्याए ३, वेडिव्ययसमुख्याए ४, तेयासमुख्याए ५, काहारगसमुख्याए ६, केविल्समुख्याए ७ । वेयणा-समुख्याए णं भंते ! कहसमइए पन्नते ? गोयमा ! असंखेजसमइए अंतोमुहुतिए पन्नते, एवं जाव आहारगममुख्याए । केविल्समुख्याए णं भंते ! कहसमइए पन्नते ? गोयमा ! अहसमइए पन्नते ? गोयमा ! अहसमइए पन्नते ! वेरइयाणं भंते ! कह समुख्याया पन्नता ? गोयमा ! चत्तिर समुख्याया पन्नता ! तंजहा-वेयणासमुख्याए, कसायसमुख्याए, मारणंतिय-समुख्याए, वेडिव्ययसमुख्याए । असरकुमाराणं भंते ! कह समुख्याया पन्नता ? गोयमा ! गंच समुख्याया पन्नता । तंजहा-वेयणासमुख्याए, कसायसमुख्याए, मारणंतियममुख्याए, वेडिव्ययसमुख्याए, तेयासमुख्याए, एवं जाव श्रवियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कह समुख्याया पन्नता ! तेयासमुख्याए, एवं जाव श्रवियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कह समुख्याया पन्नता ! तोयमा ! तिष्णि समुख्याया पन्नता ।

तंजहा-वेबणासमुग्चाए, कसायसमुग्चाए, मार्गतियसमुग्चाए, एवं जाव चउरिंदि-याणं । नवरं वाउकाइयाणं चतारि समुख्याया पन्नता । तंजहा-वेयणानमुख्याए, क्तायसमुखाए, मारणंतियसमुखाए, वेडव्यियसमुखाए । पंचिदियतिरिक्खजो-णियाणं जाव वेमाणियाणं मंते ! कह समुख्याया पन्नता ! गोयमा ! पंच समुख्याया पन्नता । तंजहा-वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउन्विय-समुख्याए, तेयासमुख्याए । नवरं मण्याणं सत्तविहे समुख्याए पश्ची । तंजहा-वेय-णासमुख्याए, क्यायसमुख्याए, मार्गतियसमुख्याए, वेडिव्यसमुख्याए, तेयासम्-व्याप्, आहारमसमुख्याप्, केवलिसमुख्याए॥ ६८६॥ एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवड्या वेयणासमुख्याया अतीता? गोयमा! अणंता. केवड्या प्रेक्खडा? गोयमा । कस्सइ अत्य कस्मइ नित्य, जस्सत्य तस्स जहण्णेणं एको वा दो वा तिष्णि वा. उक्कोरेणं संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा । एवमग्ररकमारस्स वि निरंतरं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव तयगसमुख्याए, एवमेए पंच चउवीसा दंडगा । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया आहारगसमुख्याया अतीता ?० करसङ अस्यि करसङ नत्यि, जस्स अस्यि तस्स जहन्नेणं एको वा दो बा, उक्कोसेणं तिर्णिण । केवह्या प्रेक्साडा १० कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एको वा दो वा तिष्णि वा, उक्कोसेणं चतारि, एवं निरंतरं जाव वेमाणियस्स, नवरं मणुसस्स अतीता वि प्ररेक्खडा वि जहा नेरहयस्स प्ररेक्खडा । एगमेगस्स श्रं भंते ! नेरइयस्त केवड्या केवलिसमुख्याया अतीता ! गोयमा ! नत्य । केवड्या परिक्खडा ? गोयमा ! करसड अत्थि करसड नत्थि, जस्सत्थि एको, एवं जाव वेमा-णियस्स, नवरं मणुसस्स अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एको, एवं परेक्सका वि॥६८७॥ नेरहयाणं भेते ! केवहया वेयणासमुख्याया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवड्या प्रेक्खडा ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव तेयगसमुखाए, एवं एए वि पंच चउचीसदंढगा । नेरहयाणं मंते ! केवडया आहारगसमुग्याया अतीता ? गोयमा ! असंखेजा । केवच्या पुरेक्सडा ? गोयमा ! असंखेखा. एवं जाव वेमाणियाणं । नवरं वणस्सङकाइयाणं मणुसाण य इसं गाणतं-वणस्सक्ष्मात्र्याणं भेते ! केव्ह्या आहार्गसमुग्धाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । मणुसाणं भंते ! केवड्या आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! सिय संकेखा. सिय अर्सकेजा. एवं परेक्सडा वि । नेरडगाणं भंते ! केवडया केवलिसमग्यामा अतीता ? गोयमा ! पत्य । केवहया प्रेक्खडा ? गोयमा ! असंखेखा, एवं जाव वैज्ञाणियाणं । नवरं वणस्सद्रमणसेस इसं नाणसं-वणस्सद्दकाद्रयाणं मंते ! केवद्रया केवलियमुख्याया अतीना ? गोयमा ! णत्य । केवड्या पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंना । मण्याणं भंते ! केवहया केवलिसमुख्याया अतीता ? गोयमा ! सिय अत्थि सिय नत्थि. जह अत्थि जहण्येणं एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपहलं । केवह्या पुरेक्खडा १० सिय संखेजा, सिय असंखेजा ॥ ६८८ ॥ एगमेगस्य णं अंते ! नेरहयस्स नेरहयसे केवहया वेयणाससुरधाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ! गोयमा ! कत्सड अत्वि करसड नत्यि. जस्म अत्थि जहन्नेणं एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेजा वा असंखेजा का अणंता वा । एवं अद्युरकुमारते जाव वेमाणियते । एगमेगस्स णं भंते ! असुर कुमारस्म नेरइयत्ते केवइया वेयणानमुख्याया अतीना १ गोयमा ! अर्णता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! करमइ अत्थि करसइ नित्य, जन्सत्थि तस्स सिय संखेजा वा सिय असंखेजा वा सिय अणंता वा । एगमेगस्स णं मंते ! असुरकुमारस्स अमुरकुमारने केवइया वेयणासमुखाया अतीता ? गीयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्मइ नत्थि, जस्सत्थि जहन्नेणं एको वा दो वा तिण्णि वा. उक्कोसेणं संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा, एवं नागकुमारते वि जाव वेमाणियसे, एवं जहा वेयणासमुख्याएणं असुरकुमारे नेरङ्याइवेमाणियप-जनगणिम् भणिओ तहा नागञ्जमाराइया अवसेसेसु सद्राणेसु परद्राणेसु भाणियव्या जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। एवमेए चडव्वीसं चडव्वीसा इंडगा भवंति ॥ ६८९॥ एगमगरम णं भंते ! नेरङ्यस्स नेरङ्यते केष्ड्या कसायसमुख्याया अतीता ? गोयमा! अणंता । केवइया पुरंक्खडा ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्य. जस्सन्धि एगुनारियाए जाव अणंता । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारने केनइया कसायसमुग्धाया अतीता? गोयमा! अर्थता, केनइया पुरेक्खडा? गोयमा! वस्मड अध्य करसइ निध, जस्मत्य सिय संखेजा, सिय असंखेजा, सिय अणंता, एवं जान नेग्इयस्स थणियकुमारते । पुढिविकाइयते एगुत्तरियाए नेयव्वं, एवं जाव मण्यने, वाणमंतरते जहा अग्ररकमारते । बोडसियते अतीता अणंता, प्रदेशका करसह अन्धि करसइ नित्य, जन्सत्यि सिय असंखेजा, सिय अणंता, एवं वेमाणियत्ते वि सिय असंखेखा, सिय अणंता । अग्ररकुमारस्य नेरहयते अतीता अणंता, प्ररे-क्लडा करसइ अस्यि करसइ नत्थि, जरसत्यि सिय संबोजा, सिय असंबोजा, सिय अर्णता । अग्ररकुमारस्स अग्ररकुमारते अतीता अर्णता, पुरेक्खडा एगुत्तरिया, एवं नागकुमारते जाव निरंतरं वेमाणियने जहा नेरहयस्स मणियं तहेव माणियक्वं, एवं जाव यणियकुमारस्स वि वेमाणियते, नवरं सब्वेसि सद्याणे एगुत्तरियाए, परद्वाणे

जहेन असुरकुमारस्स । पुढविकाइयस्स नेरइयत्ते जान यणियकुमारते अतीता अणंता. पुरेक्खडा करसङ् अत्थि करसङ् नित्य, जस्पत्थि सिय संखेजा, सिय असंखेजा, सिय अणंता । पुढविकाइयस्स पुढविकाइयत्ते जाव मणूसत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि. जस्स अत्थि एगुत्तरिया । बाणमंतरते जहा गेरइयते । जोइसियवेमाणियते अतीता अणंता, प्रेक्खडा करसइ अस्यि करसइ नित्य, जस्स अत्य सिय असंखेखा, सिय अणंता, एवं जाव मण्से वि नेयन्वं । वाणमंतरजोइ-सियवेमाणिया जहा असुरकुमारा, णवरं सङ्घाणे एगुत्तरियाए भाणियव्वे जाव वेमाणियस्स वेमाणियते । एवं एए चउन्दीसं चउन्दीसा दंडगा ॥६९०॥ मारणंति-यसमुख्याओं सङ्घाणे वि पर्ह्याणे वि एगुत्तरियाए नेयब्बो जाब बेमाणियस्स बेमाणियने, एवमेए चउवीसं चउवीसदंहगा भाणियव्या । वेउव्यियसस्याओ जहा कसायसस्-ग्धाओं तहा निरवसेसी भाणियन्त्रो. नवरं जस्य नित्य तस्स न वृच्छ, एत्य वि चउ-वीसं चडवीसा दंडगा भाणियव्या । तेयगस्मुग्याओ जहा मारणंतियसमुग्याओ, णवरं जस्सऽत्यि, एवं एए वि चउच्चीसं चउच्चीसा दंढगा भाणियव्या ॥ ६९१ ॥ एगमेगस्स णं मंते ! नेरइयस्स नेरइयते केवइया आहारगसमुख्याया अतीता ? गोयसा ! णत्य । केवहया परेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि, एवं जाव वैमाणियते, नवरं मणूसते अतीता करसह अत्थ करसह नत्थि, जस्सत्थि जहनेणं एको वा दो वा, उन्नोसेणं तिन्नि । केनइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्य जहनेणं एको वा दो वा तिण्णि वा. उक्षोसेणं चतारि, एवं सञ्वजीवाणं मणुरसाणं भाणियव्वं । मणुसस्स मणुसन्ते अतीता कस्सइ अत्य करसइ नत्य, जस्सित्य जहनेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उन्नोसेणं चतारि, एवं पुरेक्खडा वि । एवमेए चडवीसं चडवीसा दंडगा जाव वेमाणियते ॥ ६९२ ॥ एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्य नेरइयमे केनह्या केनलिसमुग्धाया अतीता ? गोयमा ! णत्य । केवइया प्रेक्स हा ? गोयमा ! नत्यि, एवं जाव वेमाणियते, नवरं मणुसत्ते अतीता नत्य, परेक्खडा कस्सइ खत्य करसइ नत्य, जत्सत्य इक्को, मणुसस्स मणुसत्ते अतीता कस्सइ अत्य कस्सइ नत्य. अस्तत्य एको, एवं पुरेक्खडा वि । एवमेए चढव्यसि चउव्यसा दंढगा ॥ ६९३ ॥ नेरहयाणं भेते ! नेरहयत्ते केवहया वेयणा-समुख्याया असीता ? गोयमा ! अणंता । केवहया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता, एवं जाव बेमाणियते, एवं सञ्बजीवाणं भाणियव्यं जाव वेमाणियाणं वेमाणियते, एवं जाव तैयगसमुग्धाया, णवरं उवर जिलाग गेवव्वं जस्सत्य वैरुव्वियतेयमा ॥ ६९४ ॥ नेरङ्गाणं संते ! नेरङ्गते केवङ्गा माङारगसम्बन्धाया अतीता ? गोयसा ! नत्य 1

केबइया पुरेक्खडा ? गोयमा । जित्य, एवं जाव वेमाणियते । जवरं मणूसते अतीता असंखेजा, पुरेक्खडा असंखेजा, एवं जाव बेमाणियाणं । णवरे वणस्सइकाइयाणं मण्सने अतीता अणंता, पुरेक्खडा अणंता । मण्साणं मण्सने अतीता सिय संकेजा. सिय असंखेजा, एवं पुरेक्खडा वि । सेसा सन्वे जहा नेरइया, एवं एए चउवीसं चउवीसा दंडगा ॥ ६९५ ॥ नेरहयाणं भंते ! नेरहयत्ते केनइया केवलिससुग्नाया अतीता ? गोयमा ! नत्थि । केनइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! नत्थि, एनं जान वेमाणियते । णवरं मणूसते अतीता णत्यि, पुरेक्खडा असंखेळा, एवं जाव वेमा-णिया, नवरं वणस्सङ्काइयाणं मणूसत्ते अतीता नत्यि, पुरेक्खडा अणंता । मणूसाणं मण्सत्ते अतीता सिय अत्य सिय णत्यि, जइ अत्य जहनेणं एको वा दो वा तिष्णि वा, उद्योसेणं सयपृहृतं । केवड्या पुरेक्खडा ? गोयमा ! सिय संखेजा, सिय असंखेजा, एवं एए चडन्वीसं चडन्वीसा दंडगा सन्वे पुच्छाए भाणियन्वा जाव बेमाणियाणं वेमाणियते ॥ ६९६ ॥ एएसि णं भेते ! जीवाणं वेयणासमुखाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउ व्वियसमुग्धाएणं तेयगसमुग्धाएणं आहा-रगममुग्घाएणं केवलिसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा । सञ्बत्योवा जीवा आहारग-समुख्याएणं समोह्या, केवलिसमुखाएणं समोह्या संखेळागुणा, तेयगसमुख्याएणं समोहया असंखेजगुणा, वेउ व्वियसमुग्याएणं समोहया असंखेजगुणा, मारणंतिय-ममुखाएणं समोहया अणंतगुणा, कसायसमुखाएणं समोहया असंखेळगुणा, वयणासमुख्याएणं ममोहया विसेसाहिया, असमोहया असंबेजगुणा ॥ ६९७ ॥ एएसि णं मंते । नेरहयाणं वेयणासमुग्याएणं कसायसमुग्याएणं मार्णंतियसमुग्याएणं वेउ विजयममुखाएणं समोहयाणं असमोहयाण य क्यरे कयरेहितो अप्या वा ४ १ गोयमा ! सव्वत्थावा नेरइया मारणंतियसमुग्वाएणं समोहया, वेडव्वियसमुग्वाएणं समोह्या असंबेज्जगुणा, क्सायसमुग्घाएणं समोह्या संबेज्जगुणा, वेयणासमुग्घाएणं समोहया संकेजगुणा, असमोहया संकेजगुणा। एएसि णं मंते! असुरकुमाराणं वयणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेडव्वियसमुग्घाएणं तेयगसमुग्घाएणं समोह्याणं असमोह्याण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा . सन्वत्योवा अग्रुरकुमारा तेयगसमुग्वाएणं समोह्या, मारणंतियसमुग्वाएणं समोहया असंखेजगुणा, वेयणाससुग्वाएणं समोहया असंखेजगुणा, कसायससु-वघाएणं समोह्या संकेळगुणा, वेउव्वियसमुख्याएणं समोह्या संकेळगुणा, असमो-हया असंखेळागुणा, एवं आव श्रामिशकुमारा । एएसि णं मंते ! पुरुविकाइयाणं

वेयणाः कसायः मारणंतियसमुखाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सम्बत्योचा पुढविकाइया मार्णंतियसमुग्नाएणं समोहया, कसायसमुग्चाएणं समोह्या संखेजगुणा, वेयणासमुग्चाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेजगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइया, णवरं सञ्वत्थोवा बाउकाइया वेउव्यियममुखाएणं समोह्या, मार्णतियसमुखाएणं समोह्या असंखेजगुणा, कसायसमुग्नाएणं समोहया संखेजगुणा, वेयणासमुग्नाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोह्या असंखेजगुणा । बेइंदियाणं भंते ! वेयणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुख्याएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा बेईदिया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया, वेयणासमुग्घाएणं समोह्या असंखेळगुणा, कसायसमुरघाएणं समोह्या असंखेळगुणा, असमोहया संखेजगुणा, एवं जाव चर्जरिदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! वेयणास्म-ग्वाएणं कसायसमुग्वाएणं मार्णतियसमुग्वाएणं वेडिव्वयसमुग्वाएणं तेथानमुग्वा-एणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्व-त्थोवा पंचिदियतिरिक्खजोषिया तेयासमुग्घाएणं समोहया, वेउन्वियसमुग्घाएणं समोहया असंबेजगुणा, मारणंतियसमुग्चाएणं समोहया असंबेजगुणा, वेयणा-समुरघाएणं समोह्या असंखेजगुणा, कसायसमुरघाएणं समोहया संखेजगुणा, असमोहया संस्रे अगुणा । मणुस्साणं भंते ! वेयणासमुग्धाएणं कसायसमुग्धाएणं मार्णंतियसमुग्धाएणं वेउव्वियसमुग्धाएणं तेयगसमुग्धाएणं आहारगसमुग्धाएणं केवितसमुखाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सम्बत्योवा मणुस्सा आहारगसमुरुषाएणं समोहया, केवलिसमुरुषाएणं समोह्या संखेजगुणा, तेयमसमुग्घाएणं समोह्या संखेजगुणा, वेडव्यियसमुग्घाएणं समोह्या संखेळगुणा, मारणंतियसमुग्धाएणं समोह्या असंखेळगुणा, वेयणासमु-रघाएणं समोह्या असंखेळगुणा, कसायसमुरवाएणं समोहया संखेळगुणा, असमोहया असंखेळगुणा । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥ ६९८ ॥ कह णं भंते ! क्सायसमुख्याया पक्ता ? गोयमा ! चतारि कसायसमुख्याया पक्ता । तंजहा-कोहसमुग्वाए, माणसमुग्वाए, मायासमुग्वाए, लोहसमुग्वाए । नेरइयाणं मंते ! वह कसायसमुख्याया पत्रता ! गोयमा ! चतारि कसायसमुख्याया पत्रता० एवं जाव विमाणियाणं । एगमेगस्त णं भंते ! नेरहयस्स केवहया कोहससुग्वाया अतीता ? गोयमा ! अर्णता । केव्ह्या पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सङ् अत्थि कस्सङ् नत्य, बस्तत्य बहण्णेणं एको वा दो वा तिर्णित वा, उक्कोरेणं संबोजा वा असं- केजा वा अणंता वा, एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव लोहसमुख्याए, एए चत्तारि दंडगा । नेरह्याणं भंते ! केवह्या कोहसमुग्याया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्सडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव लोहससु-क्षाए, एवं एए वि चत्तारि दंढगा । एगमेगस्स णं भंते ! नेरहयस्स नेरहयते केवहया कोहसमुग्चाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । एवं जहा वेयणासमुग्घाओ भणिओ नहा कोहससुग्धाओं वि निरवसेसं जाव वेमाणियते । माणससुग्धाएं मायाससुग्धाएं वि निरवसेसं जहा मारणंतियसमुग्घाए, लोहसमुग्घाओ जहा कसायसमुग्घाओ, नवरं सञ्बजीवा असुराइनेरइएस स्रोहकसाएणं एगुत्तरियाए नेयव्वा । नेरइवाणं भंत ! नेरइयत्ते केत्रइया कोइसमुग्धाया अतीता ? गीयमा ! अणंता । केवइया पुरेक्श्वडा ? गोयमा! अणंता, एवं जाव वेमाणियते, एवं सद्घाणपरद्वाणेसु सब्बत्य भाणियव्या, सन्वजीवाणं चत्तारि वि समुरघाया जाव लोहसमुरघाओं जाब वेमाणियाणं वेमाणियते ॥ ६९९ ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं कोहसमुग्धाएणं माणसमुग्धाएणं मायासमुग्धाएणं लोमसमुग्वाएण य समोहयाणं अकसायममुग्वाएणं समोहयाणं असमोहयाणं य कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४१ गोयमा! सम्बत्थोवा जीवा अकसायसमुग्धाएणं समोहया, माणसमुख्याएणं समोहया अणंतगुणा, कोहसमुख्याएणं समोहया विसेसाहिया, मायानमुख्याएणं समोह्या विसेसाहिया, लोभसमुख्याएणं समोह्या विसेसाहिया, असमोह्या संखेजनुणा। एएसि णं भंते! नेरह्याणं कोहसमुग्घाएणं माणसमुग्घाएणं मायासमुख्याएणं स्त्रेससमुख्याएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्या वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा नेरइया क्षेत्रसमुग्याएणं समोह्या, माथा-समुख्याएणं समोह्या संखेजगुणा, माणसमुख्याएणं समोह्या संखेजगुणा, कोहससु-ग्घाएणं समोहया संखेजगुणा, असमोहया संखेजगुणा। असरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा ! सन्वत्योवा अक्षरकुमारा कोहसमुग्याएणं समोहया, माणसमुग्याएणं समो ह्या संसे जगुणा, मायासमुग्चाएणं समोह्या संसे जगुणा, स्रोभसमुग्चाएणं समो-हया संखेजगुणा, असमोहया संखेजगुणा, एवं सम्बदेवा जाव वेमाणिया। पुटवि-काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! सव्वत्योवा पुढविकाइया माणसमुग्धाएणं समोहवा, कोहसमुग्धाएणं समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्धाएणं समोहया विसेसाहिया, लोभसम्बद्धारणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया संक्षेत्रगुणा । एवं जाव पंचिन दियनिरिक्सजोणिया, मणुस्सा जहा जीवा, णवरं माणसमुखाएणं समोहया अपंचे-जगुणा ॥ ७०० ॥ वह णं मंते । छाउमत्थिया समुखाया पचता ? गोयमा ! छ छाउ-मत्यिया समुख्याया प्रात्ता । तंजहा-वैयणासमुख्याए, कसायसमुख्याए, मार्णतिय-

समुन्वाए, वेडन्त्रियसमुन्धाए, तेयासमुन्वाए, आहार्गसमुन्वाए । नेरह्याणं भंते ! कड छाउमत्थिया समुख्याया पक्ता ? गोयमा ! चत्तारि छाउमत्थिया समुख्याया पनता । तंजहा-वेयणासमुखाए, कसायसमुखाए, मारणंतियसमुखाए, वेडव्यिय-समुरुषाए । अमुरकुमाराणं पुरुष्ठा । गोयमा । पंच छाउमस्थिया समुरुषाया पत्रता । तंजहा-वेयणासमुख्याए, कसायसमुख्याए, मारणंतियसमुख्याए, वेटव्यियसमुख्याए, तेयासमुग्धाए । एगिदियविगलिदियाणं पुच्छा । गोयमा ! तिण्णि छाउमत्यिया समु-रत्राया पत्रता । तंजहा-वेयणासमुखाए, कसायममुखाए, मारणंतियसमुखाए, णवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुख्याया पनता । तं०-वे० क० मा० वेउ० । पं० पुच्छा । गो॰ ! पंत्र म॰ प॰। तंत्रहा-त्रेयणासमुख्याए, कसायसमुख्याए, मारणंतियसमुख्याए, वेडिवयसमुखाए, तेयगसमुखाए । मण्साणं भंते! ऋ छाउमिथया समुखाया पन्ता ! गोयमा ! छ छ।उमित्थया समुख्याया पन्नता । तंत्रहा-वेयणासमुख्याए, कसाय-समुग्चाए, मार्णंतियसमुग्चाए, वेटव्यियसमुग्चाए, तेयगसमुग्चाए, आहारगसमु-नवाए ॥ ७०१ ॥ जीवे णं भंते ! वेयणासमुखाएणं समोहए समोहणिसा जे पोरगरू निच्छुभइ तेहि णं मंते ! पोरगलेहिं केवइए खेते अप्फूल्णे, केवइए खेते फुंड ? गोयमा ! सरीरप्यमाणमेरी विक्लंभवाहकेणं नियमा छहिसि एवइए खेरी अप्पुण्णे, एवइए खेरी फुडे । से णं अंते ! खेले केवडकालस्स अएफुण्णे, केवडकालस्स फुडे ? गोयमा ! एग-समइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विगाहेणं एवड्यकालस्स अप्फुल्ले, एवड्य-कालस्स फुड़े । ते णं भंते ! पोरगले केवइकालस्स निच्छ भइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहत्तस्स, उद्घोरोण वि अंतोमुहत्तस्य । ते णं भंते ! पोम्पला निच्छुढा समाणा जाड़ तत्व पाणाड़ भयाड़ जीवाड़ सत्ताड़ अभिष्ठणंति वर्तेति लेसेंति संघाएंति संघडेंति परियावेंति किलामेंति उद्देंति तेहिंतो णं भंते ! से जीवे कहिकरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चडकिरिए, सिय पंचकिरिए । ते णं मंते ! जीवा ताओ जीवाओ कड़किरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया. सिय चड़किरिया. सिय पंचकिरिया । से णं भंते ! जीवे ते य जीवा अण्णेसि जीवाणं परंपराचाएणं कहकिरिया ? गीयमा ! तिकिरिया वि चलकिरिया वि पंचकिरिया वि ॥ ७०२ ॥ नेरहए णं संते ! वेयणासमुख्याएणं समोहए एवं जहेद जीवे, नवरं नेरह्याभिळावो, एवं निरवसेसं जाब वेमाणिए । एवं कसायसमुख्याओ वि माणियव्यो । जीवे णं मृते ! मारणंतियसमुख्याएणं समोहणइ समोहणिता जे पीरगले जिच्छुमइ तेहि णं भंते ! पीरगलेहिं केवइए खेते अप्फुल्पे, केवडा खेते फुढे ? गोयमा ! सरीरप्यमाणमेते विक्खंभवाहक्षेणं, आयामेणं जह-ण्णेणं संगुलस्य असंखेजहमार्गः उद्योक्षेणं असंखेजाडं जोयणाडं एगविसि एकडए

बेते अप्फुणो, एवइए खेते फुडे। से णं भंते ! बेते केवइकालस्स अप्फुणो, केवइ-कालस्स फुढे ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइ-एण वा विग्गहेणं एवइकालस्य अप्फुण्णे, एवइकालस्य फुडे, सेसं तं चेव जाव पंचिकरिया वि । एवं नेरहए वि. जवरं आयामेणं जहण्णेणं साइरेगं जीयणसहस्तं, उक्रोसेणं असंखेजाइं जोयणाइं एगदिसिं एवइए खेते अप्फुण्णे, एवइए खेते फुडे, विमाहेणं एगसमङ्ख्या वा दुसमङ्ख्या वा तिसमङ्ख्या वा, नवरं चडममङ्ख्या वा न भन्नइ. सेसं तं चेव जाव पंचिकरिया वि। असुरक्रमारस्य जहा जीव-पए, णवरं विग्गहो तिसमइओ जहा नेरइयस्स, सेसं तं चेव जहा असुर-कुमारे, एवं जाव वेमाणिए, नवरं एगिंदिए जहा जीवे निर्वसेसं ॥ ७०३ ॥ जीवे णं भंते ! वेडव्वियसमुग्धाएणं समोहए समोहणिता जे पुग्गले निच्छमद तेहि णं भंते ! पोमालेहिं केवइए खेते अप्पुण्णे, केवइए खेते फुडे ! गोयमा ! सरीरप्यमाणमेते विक्खंभबाहहेणं, आयामेणं जहनेणं अंगुलस्स संखेजहभागं, उक्कोरोणं संखेजाई जोयणाई एगदिसि विदिसि वा एवइए खेते अप्पूरणी, एवइए क्षेत्र फडे । से णं भंते ! केबनुकालस्स अप्फण्णे, केबइकालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमङ्ग्ण वा दुसमङ्ग्ण वा तिममङ्ग्ण वा विग्गहेणं एवइकालस्स अप्पूर्ण्णे, एवडकालस्स फुडे, सेसं तं चेव जाव पंचकिरिया वि, एवं नेरइए वि. नवरं आया-मेणं जहन्नेणं अंगुलस्य असंखेजहभागं, उन्होसेणं संखेजाई जोयणाई एगदिसिं। एवडए खेते केवडकालस्स ? तं चंच जहा जीवपए, एवं जहा नेरहयस्स तहा असुरकमारस्त, नवरं एगदिसिं विदिसिं वा. एवं जाव यणियकमारस्त । वाउका-इयस्स जहा जीवपए, णवरं एगदिसिं । पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स निरवसेसं जहा नेरइयस्स । मण्सवाणमंतरजोइसियवेमाणियस्स निरवसेसं जहा असरकुमा-रस्म ॥ ७०४ ॥ जीवे णं भंते ! तेयमसमुख्याएणं समोहए समोहणिता जे पोगाल निच्छमइ तेहि मं भंते ! पोगालेहिं केवइए खेते अप्पूरणे, केवइए खेते फुडे १ एवं जहेव वेउ विवए समुखाए तहेब, नवरं आयामेणं .जहनेणं अंगुलस्स असंखेजहमार्ग, सेसं तं चेव, एवं जाव वेमाणियस्स, णवरं पंचिदियतिरिक्खजोणि-यस्स एगदिसिं एवइए खेते अप्फूल्ले, एवइए खेते फुडे ॥ ७०५ ॥ जीवे लं भंते ! आहारगसमुख्याएणं समोहए समोहणिता जे पोग्गळे निच्छमइ तेहि णं मंते ! पोम्पलेहिं केवइए खेते अप्पूरणे, केवइए खेते फुडे ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेते विक्रतंमबाहरूणं, आयामेणं जदृण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहसागं, उद्योसेणं संखेजाई जोयणाई एगदिसिं, एवइए खेरे एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा

विगाहेणं एवड्कालस्य अप्प्रण्णे. एवड्कालस्य फुडे । ते णं भंते ! पोम्पला केवड्-कालस्स निच्छु न्मंति ? गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहत्तस्स, उक्कोसेण वि अंतोमुह-त्तरस ॥ ७०६ ॥ ते णं भंते ! पोगाला निच्छ्हा समाणा जाई तत्व पाणाई भ्याई जीवाई सत्ताई अभिहणंति जाव उहवेंति. ते(हि)णं भंते! जीवे कह-किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चनकिरिए, सिय पंनकिरिए । ते णं भंते !० जीवाओ कड़किरिया ? गोयमा ! एवं चेव । से णं भंते ! जीवे ते य जीवा अण्णेसिं जीवाणं परंपराघाएणं कहकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चलकिरिया वि पंचकिरिया वि. एवं मणसे वि ॥ ७०७ ॥ अणगारस्य णं भेते ! भावियप्पणो केविलिसमुग्वाएणं समोहयस्य जे चरमा णिजरापोग्गला सहमा णं ते पोग्गला पन्नता समणाउमो ! सञ्बलोगं पि य णं ते फुसिलाणं चिद्रंति ? इंता गोयमा ! अणगारस्स भावियपणो केविलसमुग्चाएणं समोहयस्स जे चरमा णिजरायोगाला सहसा णं ते पोग्गला पत्तता समणाउसो ! सन्वलोगं पि य णं ते फ़िसताणं चिद्रति ॥ ७०८ ॥ छउमत्थे णं भंते ! मण्से तेसि जिजरापीरगलाणं किंचि बण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधे रसेणं रसं फासेण वा फासं जाणड पासड ? गोयमा ! णो डलडे समद्वे । से केणद्वेणं भंते ! एवं वृच्छ-'छउमत्थे णं मणूसे तेसि णिज्यरापोगालाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं गंघेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणड पासड'? गोयमा ! अयण्णं जंबहीवे दीवे सञ्बदीवसमुहाणं सञ्बद्धांतराए सञ्बद्धाए बहे तेक्षाप्यसंठाणसंठिए वह रहचकवालसंठाणसंठिए वह प्रकल्पायासंठाणसंठिए बडे परिपूज्य चंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्यं आयामविक्संमेणं ति जिप जोय-णसयसहस्साई सोलस सहस्साई दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि व कोसे अद्भावीसं च घणुसयं तेरस य अंगुलाई अद्भेगुलं च किचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पश्चेत । देवे णं महिश्चिए जाव महासोक्खे एगं महं सविकेवणं गंधसमुक्गयं गहाय तं अवदालेइ, तं महं एगं सविलेवणं गंघसम्बन्धं अबदालङ्का डणामेव कहु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिसत्तखत्तो अणुपरियष्टिताणं हरवमागच्छेजा. से नूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबहीवे दीवे तेहिं घाणपोगगलेहिं फ़रें ? हंता ! फ़रें , छउमत्ये णं गोयमा ! मण्से तेसि घाणपुरगलाणं किंचि बज्जेणं बज्जं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं कासं जाणड पासड ? भगवं ! नो इणद्वे समद्वे, से एएणद्वेर्ण गोयमा । एवं वृष्ट्र-'छउमत्थे णं मण्से तेसि णिज-रायोगरालाणं यो किंग्वि वण्णेणं बण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणड पासइ, एसुहमा णं ते पोम्पला पनता समणानसी ! सम्बलोगं पि च णं फ्रसिता- णं चिट्ठंति'॥ ७०९ ॥ कम्हा णं भंते ! केवली समुखायं गच्छक् ! गोयमा ! केव-लिस्स चतारि कम्पंसा अक्खीणा अवेडया अणिजिल्ला भवंति, तंजहा-वेयणिजे, आउए, नामे, गोए, सब्बबहुप्पएसे से वेयणिजे करने हुवइ, सन्वत्योवे आउए करने हबइ, विसमं समं करेइ वंघणेहिं ठिईहि य, विसमसमीकरणयाए बंघणेहिं ठिईहि य एवं खळु केवली समोहणइ, एवं खळु ० समुग्धायं गच्छइ । सब्वे वि णं भंते ! केवली समोहणंति, सब्बे वि णे भंते ! केवली समुखारं गच्छंति ? गीयमा ! णो इणहे समद्वे । जस्माउएण तुल्लाई, बंघणेहिं ठिईहि य । भवीवग्गहकम्माई, ममुघायं से ण गच्छइ ॥ १ ॥ अगंतूणं समुग्धायं, अणंता केवली जिणा । जरमरणविष्यमका. सिद्धिं वरगई गया ॥ २ ॥ ७१० ॥ कइसमङ्ग् णं भंते ! आउजीकरणे पनते ? गोयमा ! असंखेजनमङ्ग अंतोमुहुत्तिए आउजीकरणे पत्नते । कहसमङ्ग् णं भंते ! केवलिममुग्नाए पन्नते ? गोयमा ! अद्वसमङ्ग् ० पन्नते । तंजहा-पडमे समग् दंडं करेड़, बीए समए कवाडं करेड़, तड़ए समए मंद्रं करेड़, चउत्ये समए लोगं पूरेइ, पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ, छहे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमए समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्टमे समए दंडं पडिसाहरइ, दंडं पडिसाहरेता नओ पच्छा सरीरत्थे मबइ ॥ ७११ ॥ से णं भंते ! तहा समुख्यायगए कि मणजोगं जुंजइ, वइजोगं जुंजइ, कायजांगं जुंजइ ? गोयमा ! नो मणजोगं जुंजइ, नो वहजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ। कायजोगं णं भंते ! जुंजमाणे कि औरालियसरीरकायजोगं जुंजइ. ओरालियमीसासरीरकायजोगं जुंजइ. वेखव्यवसरीरकायजोगं जुंजइ. वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जंबह. आहारगसरीरकायजोगं०. आहारगमीसा-सरीरकायजोगं जुंबह, कम्मगसरीरकायजोगं जुंबह ? बोयमा ! ओरालियसरी-रकाय जोगं पि जंजह, ओरालियनीसासरीरकायजोगं पि जंजह, नो वेदव्ययसरीर-कायजोगं . नो वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं . नो आहारगसरीरकायजोगं . नो आहारगमीसासरीरकायजोगं , कम्मगसरीरकायजोगं पि जुंजह, पढमहुमेसु समएस ओरालियसरीरकायजोगं जंजह, बिडयलद्वसत्तमेस समपद्ध ओरालियमीसासरीर-कायजोगं जंजह, तहयचलत्यपंचमेस समाएस कम्मागसरीरकायजोगं जंजह ॥ ७१२ ॥ से णं मंते ! तहा सुमुखायगए सिज्झह कुज्झह मुच्चह परिनिव्याह सव्वदुक्खाणं अंतं करेड ? गोयमा ! नो इणहे समहे । से णं तम्रो पडिनियत्तइ पिंडिनियत्तइता तओ पच्छा मणजोगं पि जुंजइ, वहजोगं पि जुंजइ, कायजोगं पि कुंजह । मणजोगं जुंजमाणे कि सवमणजोगं जुंजह, मोसमणजोगं जुंजह, सवामी-समणजोगं जुंजह. असवामोसमणजोगं जुंजह ? मोयमा ! सबसणजोगं •, नी मोसम-

णजोगं॰, नो सवामोसमणजोगं जुंजइ, असवामोसमणजोगं जुंजइ, वहजोगं जुंजमाणे कि सञ्चवहजोगं जुंजह, मोसवहजोगं जुंजह, सञ्चामोसवहजोगं . असबामोसवहजोगं जुंजह ? गोयमा ! सम्बद्धजोगं०, नो मोसव्हजोगं०, नो सम्बामोसव्हजोगं०, असमामो-सबइजोगं पि जुंजइ, कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज वा गच्छेज वा चिट्रेज वा निसीएज वा तुयहेन वा उन्नंधेज वा परुंधेज वा, पाहिहारियं पीटफरुगसेना-संयारगं पर्वापणेजा ॥ ७१३ ॥ से णं भंते ! तहा सजीगी सिज्यह जाब संतं करेइ १ गोयमा ! नो इणद्रे समद्रे । से णं पुन्वामेव सण्णिस्स पंचिदियपजनायस्स जदण्णजोगिस्स हेट्टा असंखेजगुणपरिहीणं पडमं मणजोगं निरुंभइ. तओ अणंतरं बेइंदियपज्ञत्तगस्स जहण्णजोगिस्स हेट्रा असंखेजगणपरिहीणं दोशं वहजोगं निहंमइ, तओ अणंतरं च णं सुहमस्स पणगजीवस्य अपज्जनयस्य जहण्यजीगिस्य हेट्टा असंखेळागुणपरिहीणं तर्च कायजीगं निहंमइ. से णं एएण उदाएणं-पढमं मणजोगं निरुंभह, मणजोगं निरुंभत्ता वहजोगं निरुंभह, वहजोगं निरुंभित्ता कामजोगं निसंगढ, कायजोगं निसंभित्ता जोगनिरोहं करेड, जोगनिरोहं करेता अजोगत्तं पाउणइ. अजोगत्तं पाउणिता ईसि हस्सपंचक्खरुचारणद्वाए असंखेजसमध्यं अंतोम-हुत्तियं सेटेसिं पिडवजह, पुव्यरहयगुणसेढीयं च णं कम्मं. तीसे सेटेसिमद्वाए असंखेजाहिं गुणसेढीहिं असंखेजे कम्मसंधे खबयह, खबइता वेयणिजाउणामगोते इचेए चतारि कमंसे जुगवं खवेड, जुगवं खवेता ओरालियतेयाकमागाइं सञ्चाहि विप्पजहणाहिं विप्पजहर, विप्पजहिता उज्ज्ञसेढीपडिवण्णी अफुसमाणगईए एगस-मएणं अविमाहेणं उन्नं गंता सागारोवउत्ते सिज्झाइ बुज्झाइ०, तत्य सिद्धी भवइ । ते णं तत्थ सिद्धा भवंति असरीरा जीवचणा दंसणणाणोवउत्ता णिद्धिगद्धा णीरमा जिरेयणा वितिमिरा विद्वद्वा सासम्मणागयदं कालं चिहंति । से केण्डेणं मंते ! एवं वृच्छ-'ते णं तत्व सिद्धा भवंति असरोरा जीववणा दंसणणाणीवउत्ता णिडियद्वा णीरया णिरेग्रणा वितिमिरा विसदा सासयमणागयदं कालं चिटंति' ? गोयमा ! से जहाणामए बीयाणं अस्मिदद्वाणं पुणर्वि अंकुरुप्सी ण भवड, एवामेव सिद्धाण वि कम्मबीएस दबेस पुणरवि जम्मुप्पती ण भवड, से तेणद्रेणं गोयमा । एवं वुन्दर-'ते णं तत्थ सिद्धा अवंति असरीरा जीवधणा दंसणणाणीवउत्ता णिडियडा णीरया णिरयणा वितिमिरा विद्वहा सासयमणागयदं कालं चिद्वंति' ति । निच्छि-श्णसञ्चद्वनसा जाडजरामरणबन्धणविभुक्ता । सासयमञ्जाबाहं विद्रंति सही सहं पता ॥ १ ॥ ७१४ ॥ पद्मवणाय मगवर्डय छत्तीसहमं समृग्धायपर्य समर्वे ॥ पण्णवणासर्वे समर्वे ॥



र्श्रामृत्रागम प्रकासक समितिक हिनीय-संरक्षक,



श्रीमान मोहनळाल धनरात कर्णावर, भवानी पेठ प्रना नै. २.



जमोऽत्यु जं समजस्य भगवओ जायपुरामहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

जंबुद्दीवपण्णत्ती

णमो अर्रिहेनाणं णमो निद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्यायाणं णमो लोए मन्त्रराहुणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था, रिडित्थिमिय-ममिद्रा वण्णओ । तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपूर्राच्छमे दिसीमाए एत्य णं माणिमहे णामं उजाणे होत्या. वण्णओ । जियमन् राया, धारिणी देवी, बण्णओ । तेणं कालेणं तेणं ममएणं सामी ममोमदे. परिया णिरगया, धम्मी र्काहुओ, परिमा पांडगया ॥ १ ॥ तेणं कारुणं नेणं ममएणं समणस्स भगवओ महावीरस्य जेट्टे अंतवासी इंटमूर्ड णामं अणगारे गोयमगोरोणं मनुस्सेहे समच उ-रंगसंठाणे जाव । तिक्खुनो आयाहिणं पयाहिणं करेड २ ना वंदइ णर्ममइ वंदिता णर्मानना] एवं वयासी-कहि णं भंते ! जंबुहीवे २ ? केमहालए णं भंते ! तंबुहीवं २ ? किसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवं २ ? किमायारभावपडोयारे णं भंते ! जंबुद्दीवे २ पण्णते ! गोयमा ' अयण्णं जंब्रहीवे २ मध्वदीवनमुहाणं सव्वब्संतराए मञ्जलक्काए वहे तेल्लापुयसंठाणसंठिए वहे रहचक्कवालसंठाणसंठिए वहे पुक्खरकण्णि-यासंठाणसंठिए वहे पिंदुण्णचंदर्सठाणसंठिए एगं जोयणस्यसहस्सं आयामवि-क्खंमेणं निष्णि जोयणसयसहस्साइं सोलम सहस्साइं दोष्णि य सत्तावीसे जोयणमए तिष्णि य कोसे अद्वावीसं च धणुसमं तेरस य अंगुराई अदंगुरुं च किनिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णने ॥ २-३ ॥ से णं एगाए वहरामईए जगईए सव्वओ समंता संपरिनिखरी, सा र्ण जगई अद्व जीयणाई उद्वं उत्ररेणं मूळे बारस जीयणाई विक्संमेणं मज्ये अह जोयणाहं विक्संमेणं उवरि चतारि त्रोयणाहं विक्संमेणं मुखे विच्छिता मज्हे संखिता उबरिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया मञ्जवहरामई अच्छा सन्दा लम्हा यहा महा जीरया जिम्मला जिप्पेका निदंबहरुखाया सप्पमा समिरीया सरजोया पानावीया दरिमिजा अभिस्या परिस्ता, मा णं जगई एगेणं महंतग-वक्सकडएणं सब्बओ सर्गता संपरिक्सिता. से णं गक्क्सकडए अद्योगणं उन्ने उन्नेतेणं पंच घणसमाई विक्सीमेणं सम्बर्धणामक अच्छे जाव पविस्ते. तीसे यं जगईए उप्प बहुमञ्ज्ञदेसमाए एत्य णं महुई एगा प्रज्ञम्बर्वेद्या पण्णता, अद्वजीयणं उर्चु उच-नेणं पंच धणुनयाटं विक्खंमेणं जगईमिया परिक्खेवेणं गञ्बरयणामई अच्छा जाव पिंडहवा । तीसे णं पडमवर्वंडयाए अयमेयास्वे बण्णावासे पण्णेते, तंत्रहा-वडरामया णेमा एवं जहा जीवाभिगमे जाव अद्वो जाव ध्रुवा णियया साराया जाव णिचा ॥ ४ ॥ तीसे णं जगईए उपि बाहि पउमबर्वेझ्याए एत्थ णं महं एगे वणसंडे पण्णेन, देसणाई दो जोयणाई विक्लंभेणं जगर्रसम्ए परिश्नवेवणं वणसंटवण्णओ णगव्यी ॥ ५॥ नरम णं पणसंडस्य अंतो बहुमसरमणिके भूमिमाग पण्णते, से जहाणामए-आहिंगपुक्चरेट वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवमाभिए, नंजहा-किण्डेहि एवं वण्णो गंधो रमी फामो मही पुरुवरिणीओ पव्वथमा धरमा संटम्मा पुढिबिानलावत्र्या य णेयव्वा, तत्थ णं बहुवं वाणमंतरा देवा य देवीओ य आमयंति मर्यात चिद्वंति जिसीयंति त्यट्ंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति प्रा-पोराणाणं मुपरकंताणं मुभाणं कळाणाणं कटाणं कम्माणं कळाणफर्जावां नांवमंमं पचणुभवमाणा विहरित । नीसे णं जगईए उपि अंतो पउमवर्येटयाए एत्य णं एगे महं वणसंडे पण्णेन, देसणाउं दो जोयणाटं विक्खंनेणं वेश्यासमएण परिक्खेन वैणं किण्हे जाव नणविहुणं णेयव्वे ॥ ६ ॥ जंबुईनिस्स णं भेते 'दीवस्स कड दारा प्रणमा ? गो॰! चमारि दारा प० तं०-विजए १ वेजयंन २ जयंते ३ अपराजिए ४॥ ७॥ कहि णं भंते ! जंबुहीवस्स दीवस्स थिजए णामं दारे पण्णें ! गो॰ ' जंबुईवि दीवे मंदरस्य पञ्चयस्य पुरत्त्थमेणं पणयालीसं जोयणसहम्याः वीडग्रना जंबहीवडीवप्रान्थमपेरंन लवणगम्हपुरन्थिमदस्य पश्चन्थिमणं सीगाए महाणंडेए उपि एत्थ णं जंबुद्दीवस्त । विजए णामं दारे पण्यते, अह जोयणाई उद्दे उचतेणं चत्तार जोयणाई विक्संमेणं तावड्यं चेव पंतमणं, सेए वरकणगयूमियाए जाव दारस्य यण्णओ जाव रायहाणी। एवं बसारि वि दारा सरायहाणिया भाणियन्त्रा ॥ ८ ॥ जंबुद्दीवस्य णं भंते ! वीवस्य दारस्स य दारस्स य केवउए अवाहाए अंतरे पण्णते ! गो० ! अरुणासीई जोयणगहस्साई बावणां स जोयणाइं देस्णं च अद्धजोयणं ठारस्य य २ अबाहाए अंतरे पण्णते, जाहा-अडणामीट सहस्सा बावण्णं चेव जोयणा हंति । ऊणं च अद्धजोयण दारंतर अंबुद्दीवस्म ॥ १ ॥ ९ ॥ कहि णं भंते ! अंबुद्दीवे दीवे भरहे जामं वासे पण्णते ? गो॰! चन्नहिमवंतस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेणं दाहिणलवणसमुद्दस उत्तरेणं पुरित्थमल्यणममुद्दस्य प्रवत्थिमेणं प्रचार्यमस्वणसमुद्दस्य पुरित्यमेणं एत्य णं जंबुद्दीने रीवे भरहे णामं बासे पण्णते, खाणुबहके कंटगबहके विसमबहके द्रागबहके

पञ्चयबहुले पदायबहुले उज्झरबहुले णिज्ञरबहुले खड्डाबहुले दरिबहुले गर्डबहुले दहबहुलं मनखबहुले गुन्छबहुले गुम्मबहुलं लयावहुले वहीबहुले अडवीबहुले माव-यबहुन्हें तणबहुन्हें तक्करबहुने डिम्बबहुन्हें डमरबहुन्हें दुन्मिक्सवहुन्हें दुक्कान्यहुन्हें पार्संडवहुल किवणबहुळे वणीयगबहुळे डेतिबहुल मारिबहुळे कुवुद्विबहुळे अणात्रुद्धि-बहुरु रायबहुरु रोगबहुरु मंकिरुसबहुरु अभिक्लणं अभिक्लणं संसोहबहुरु पाईण-पढीणायण रहीणदाहिणार्वाच्छणं उत्तरओ पिटयंकसंठाणसंठिए दाहिणओ धणपिद्र-संठिए निहा लक्षणसमुद्दं पुट्टे गंगासिषृहिं मद्दाणडेहि वयष्ट्रेण य पव्यएण छन्मागपविभन्ते जंबुहीबबीबणउयसयभागे पंचल्लवांसे जायणगए छन एगूणवीमइभाए जोयणस्स विक्रवंभेणं। भरहस्स णं वागस्य बहसज्झहेगभाए गृत्थ णं वेगहू जासं पञ्चए पण्णेस, जे णं भरहं वासं वृहा विभयमाणं २ चिट्ठड, तं०-दाहिणहुभरहं च उत्तरहुभरहं च ॥ ५० ॥ कर ए मंत : जंबुरीय बीचे दाहिणके भरहे जाम वासे पण्णति ? गो० ! वैयक्सम पव्यगम्ग दाहिणेणं दाहिणलवणसमुद्दस्य उत्तरेणं पुरिव्यमलवणसमुद्दस्य पश्चित्यमेणं पचित्रभारतवणसमुद्दस्य पुरित्थमेणं एत्थ णं जंब्रुहीवं बीवे दाहिणहूमरहे णामं वामे पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणांवन्छिणे अद्भुचंदसंठाणसंठिए तिहा त्वणसमुहं पुट्टे गंगासिधृहिं महाणईहिं तिभागपविभक्ते दोण्णि अद्भुतीसं जोयणमए तिण्णि य एगुणवीगडभागे जोयणस्य विक्खंभेणं, नस्य जीवा उत्तरेणं पाईणपदीणायया दुहा लवणगमुद्दं पृद्वा पुरन्थिमिछाए कोडीए पुरन्थिमिहं लवणसमुद्दं पुद्वा पचन्थिमिछाए कोडीए पचन्धिमित्नं लवणरामुद्दं पुद्वा णव जोयणमहस्माइं सत्त य अडयाले जोयणसए दुबालर य एगूणबीसइभाए जोयणस्य आयामेणं, तीसे धणुपुट्टे दाहिणेणं पत्र जोयण-राहरमार्ड मन्तछाबद्वे जोयणसए इक्कं च एगूणवीसइमागे जोयणस्म किचिविसेमाहियं परिक्खेंवर्ण पण्णते, दाहिणक्रभरहरून णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णांत ! गो० । बहुसमर्मणिजे भूमिमागे पण्णाते, से जहाणामए-जालिंगपुनम्बरेश वा जाव णाणाविहप्रवक्षेणि मणीहिं तणेहिं उवसोनिए, तंजहा-कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहि चेव, दाहिणबूभरहे णं मंते ! बासे मणुयाणं केरिमए आयारमावपडी-यारे पञ्जते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंचयणा बहुसंठाणा बहुउचतपजना बहुआउपज्जवा बहुई वासाई आउं पालंति पालिना अप्पेगह्या णिर्यगामी अप्पेगह्या तिरियगामी अप्येगइया मणुयगामी अप्येगइया देवगामी अप्येगइया सिज्झंति बुज्झंति मुनंति परिणिव्यायंति सव्यदुवन्याणमंतं करेंति ॥ ११ ॥ कहि णं मंते ! जंबुरीचे २ भरहे वासे वेयक्के जामं पञ्चए पञ्जते ? गो० ! उत्तरबुभरहवासस्स दाहिणेणं दाहिणकु-अरहवासस्स उत्तरेणं पुरत्विमलवणसमुद्दस प्रवत्थिमेणं प्रवत्थिमलवणसमुद्दस्स पुर-

त्थिमेणं एत्य णं जंबुद्दीवे २ भरहे वासे वेयद्वे णामं प्रव्वए पण्णते, पाईणपडीणायए उद्यीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लक्ष्णसमुद्दं पुट्टे पुरित्यमिक्राएं कोडीए पुरित्यमिक्रं लक्षण-समृद्दं पुद्धे प्रवात्यमिलाए कोडीए प्रवात्यमिलं लवणसमुद्दं पुद्धे, पणवीसं जोयणाई उद्दे उच्नोणं छस्तकोसाई जोयणाई उज्वेहेणं पण्णासं जोयणाई विक्खंभेणं, तस्स बाहा पुरत्विमप्यत्यिमेणं चत्तारि अद्वासीए जोयणसए सोलस य एगूणवीसइमागे जोयणस्स अदमार्गं च आयामेणं पन्नता, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपदीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्टा पुरित्यमिल्लाए कोडीए पुरित्यमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्टा पचित्यमिल्लाए कोडीए पच-त्यिमिहं लवणसमुद्दं पुद्वा दस जोयणसहस्साइं सत्त य वीसे जोयणमए द्वालस य एगूणवीसङ्भागे जोयणस्स आयामेणं, तीसे घणुपट्टे दाहिणेणं दस जोयणसहस्साई मत्त य तेयाले जोयणसए पण्णरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं ह्यगसंठाण-संठिए सव्यारययामए अच्छे सण्हे लड्डे घड्डे महे णीरए णिम्मले णिप्पंके णिकंकड-च्छाए सप्पने समिरीए पासाईए दरिसणिज्ञे अभिरूवे परिरूवे । उभओ पासि दोहिं पजमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं सञ्दओ समेता संपरिक्खिते। ताओ ण पउमबरवेइयाओ अद्धजीयणं उन्हें उन्नतेणं पंचधणुनयाई विक्खंमेणं पन्वयसमियाओ आयामेणं कण्णको भाणियको । ते णं कणसंडा देसूणाई दो जोयणाई विक्संभेणं पउमनरवेइयासमगा आयामेणं किण्हा किण्होभासा वण्णओ । वेयश्वस्स णं पव्ययस्य पुर्व्छिमक्बच्छिमेणं दो गुहाओ फणताओ, उत्तरदाहिणाययाओ पाईणपडीणवित्त्रिणाओ पण्णासं जोयणाई आयामेणं दुवालस जोयणाई विक्संभेणं अद्व जोयणाई उन्नुं उन्नतेणं वहरामयकबाडोहाडियाओं जमकजुयलकवाडघणदुप्प-वेमाओ णिषंधयारतिमिस्साओ वषगयगहचंदस्रणनखत्तजोइसपहाओ जाव परि-रूवाओ, तंजहा-तमिसगुहा चेव संडप्पवायगुहा चेव, तत्थ ण दो देवा महिष्टिया महजुइया महाबला महायसा महासुक्खा महाणुमागा पलिओवमद्भिइया परिवसंति. तंत्रहा-क्यमालए चंव णष्टमालए चेव । तेसि णं वणसंडाणं बहसमरमणि आओ भूमिमागाओं वेगक्स्स पव्वयस्स उमओ पासि दस दस जोयणाई उन्नं उप्पद्ता एत्य णं दुवे विजाहरसेढीओ पञ्चताओ, पाईणपडीणाययाओ उदीणदाहिणविच्छि-**ज्याओं दस दसे जोयणाई विक्लंभेणं पञ्चयसमित्राओं आयामेणं उसको पासि** दोहिं परमवरवेइयाहिं दोहिं वणसंबेहिं संपरिनिसत्ताओ, ताओ णं परमवरवेइयाओ अदजीयणं उन्ने उन्नोणं पंच धणुसयाई विक्खंमेणं पञ्चयसमियाओ आयामेणं वण्णओ णेयव्यो, वणसंडा वि परमवरवेड्यासमगा आयामेणं वण्णको । विज्ञाहर-सेढीणं अंते ! भूमीणं केरिसए आयारभाषपढोसारे पण्णते ? गोगमा ! बहुसमर- .

मणिजे भूमिमागे पण्णते, से जहाणामए-आल्जिपुक्सरेड वा जाव णाणाविह-पंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोमिए, तंजहा-कित्तिमेहिं चेव अकितिमेहिं चेव, तत्य णं दाहिणिहाए विजाहरसेढीए गगणवह्नभपामोक्खा पण्णासं विजाहरण-गरावासा पण्णता, उत्तरिक्षाए विज्ञाहरसेढीए रहनेउरवक्कवाळपामोक्खा सर्द्वि विज्ञाहरणगरावासा पण्णता, एवामेव सपुन्यावरेणं दाहिणिहाए उत्तरिहाए विज्ञा-हरसेढीए एगं दसुत्तरं विज्ञाहरणगरावाससर्य भवतीतिमक्खायं. ते विज्ञाहरणगरा रिद्धत्थिमियसमिद्धा प्सुइयजणजाणवया जाव परिस्ता, तेसु णं विज्ञाहरणगरेसु विजाहररायाणो परिवसंति महयाहिमवंतमलयमंदरमहिंदसारा रायवण्णको भाणि-यव्यो । विजाहरसेढीणं भंते ! मणुयाणं केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहुउबत्तपज्जवा बहुआउप-जवा जाव सञ्बद्धक्खाणमंतं करेंति, तासि णं विजाहरसेढीणं वहसमरमणि-जाओ भूमिमागाओ वेयहुस्स पन्वयस्स उमओ पासि दस दस जोयणाई उहु उप्पद्दता एत्य णं दुवे आभिओगसेढीओ पण्णताओ, पाईणपढीणाययाओ उदीण-दाहिणविच्छिण्णाओं दस दस जोयणाई विक्लंभेणं पव्वयसमियाओ आयामेणं उमओ पासि दोहि पउमवरवैङ्गाहि दोहि य वणसंडेहि संपरिक्खिताओ वण्णको दोष्ट वि पव्ययसमियाओ आयामेणं, आमिओगसेढीणं भंते ! केरिसए आयारभाव-पड़ोबारे पण्णते ? गोबमा ! बहुसमर्मणिजे भूमिमांगे पण्णते जाव तणेहि उब-सोमिए बण्णाई जाव तणाणं सहोत्ति, तासि णं आभिओगसेढीणं तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तहिं जान नाणमंतरा देवा य देवीओ य आसर्यति संगति जान फलवित्ति-विसेसं प्रवास्थामा विहरंति, तास णं आभिओगसेडीस सक्स्स देविंदस्स देवरण्णो सोमजमबरुगवेसमणकाङ्याणं आमिश्रोगाणं देवाणं बहुवे भवणा पण्याता. ते णं भवणा बाहिं वहा अंतो चउरेसा वण्यको जाव अच्छरघणसंघसंविकिण्या जाव परि-रूवा. तत्थ णं सक्तरस देविंदस्स देवरण्णो सोमजमवरुणवेसमणकाइया वहचे आभि-ओमा देवा महिष्ट्रिया महजुह्या जाव महापुक्खा पिछओवमद्विह्या परिवर्धति । तासि णं आभिजोगसेढीणं बहुसमरमणिजाको भूमिमागाओ नेयपुरस पञ्चयस्य उमको पासि पंच २ जोयणाई उन्नं उप्पन्ना एत्य णं नेयन्नस्स पव्चयस्स सिहरतहे पण्णते. पाइणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिको दस जीवनाई विक्संभेणं पञ्चमसमगे आजामेणं, से णं इकाए पडमवरवेइयाए हकेशं वणसंडेणं सम्बंभो समंता संपरि-विकारी, प्रमाणं बण्णशो दोण्हंपि, वेश्वहस्स णं भंते । पव्यवस्स सिहरतळस्स केरि-सपु जागारमावपडोवारे प्रकाते ! गोबमा ! बहुसमरमिक्के भूमिमागे प्रकात, से

जहाणामए-आल्प्रिंगपुक्सरेह वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहि मणीहिं उनमोमिए जाब बावीओ पुरुखरिणीओ जाव बाणमंतरा देया य देवीओ य आसर्यति जाब भंजमाणा विहरंति, जंबुहीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे वेयहपञ्चए कड् कुड़ा प॰ ? गो॰! णव कुड़ा प॰, तं॰-सिद्धकुड़े १ दाहिणहुमरहकुड़े २ संउप्पवायगुहाकृडे ३ माणिशह्कृहे ४ वेयहुकूडे ५ पुण्णभह्कृडे ६ तिमिल-गुहानुःडं ७ उत्तरकुभरहकुःडं ८ वेसमणकुःडे ५ ॥ १२ ॥ बहि णं भंते ! जंबहींव २ भारहे बासे धेयद्वपव्यए सिद्धकृते णाभं कडे पण्णेन / गो॰ । पुरन्छि-मलवणसमहस्म पश्चिम्छमेणं ढाहिणहुसरहकृटस्स पुरच्छिभेण एत्य णं जंबहीये दीव भागह वारी वेयने पञ्चाए शिद्धकृष्टे गाम कृड पण्णते, छ मकांशाई जोयणादं उन्नं उन्नेतं मुल छ सङोमादं जोयणादं निक्कंभेणं मुज्हे उसणाउ पंच जीयणाई विक्लंमेणं उबरि माटरेगाई निष्णि जीयणाई विक्लंमेणं मले देस-णाई बावीमं जोयणाटं परिक्खेवणं अन्हो देमणाटं पष्णरम जोयणाटं परिक्खेवेणं उवरि माइरेगार्ड णय जोयणार्ड परिक्येवेणं, मृत्रं विच्छिणो मजसे संस्थित उपिप तणुर् गोतुन्छसंठाणस्ठिएः सञ्बरयणासए अन्छे सण्हे जाव परिस्व । से णं एगाए पडमबरबेटयाए एगेण य यणसंडणं मञ्बक्षां समेता संपरिक्यिते, पमाणं बण्णओ दोण्डीप. सिद्धकृतस्य णं उप्पि बहुसमरमाणजे भूमिमागे पण्णेते, से बहुाणासए-आलिगपक्सरेड ना जाव बाणसंनरा देवा य जाव विहरंति ॥ १३ ॥ काँह णं भंते ! व्यक्के पञ्चए ताहिणक्रमरहकुडे णामं कुडे पण्णते ? गो० ! खंडप्पवायकुडम्स पुर्निन्द्रमणं सिद्धकृतस्य प्रश्निम्छमेणं एत्थ णं वेयन्नप्रवए दाहिणन्नभरहकृते णासं वृ ड पण्णेन निद्धकृडप्पमाणसरिमं जाव तस्स णं बहुसमग्मणिजस्स भूमिभागस्स वहमञ्ज्ञदेमभाए एत्य णं सहं एगे पासायवडिंसए पण्णते, कोसं उन्नं उन्नेतणं अहंकोस विक्खंभेणं अञ्चलसम्बन्धसम् जाव पानाईए ४. तस्म णं पासाययडिनगस्य बहुमज्मदेसभाए एत्थ णं महं एगा मिणपेढिया पण्णता, पंच धणुमयारं आयामविक्संमेणं अद्वाहजाई धणुमयाई बाहारेणं सम्बमणिमई०. तीसे ण र्माणपेडियाए अपि मिहासणं पण्णतं, सपरिवारं आणियव्यं, से केणद्रेणं भंते ! एवं वृच्य-दाहिणक्रभरहकृढे २ ? गी॰ ! दाहिणक्रभरहकृढे णं दाहिणक्रभरहे णामं उन महिच्चिए जाव पिल्ओवमद्भिडए परिवसङ, से ण तत्य खडण्डं सामाणियसाह-स्मीणं चडण्टं अगमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्डं परिसाणं सत्ताण्डं अणियाणं सत्ताणं अणियाहिवईणं सोलसण्डं आयर्कन्वदेवसाहस्सीणं दाहिणसमरहकृतस्य दाहिणसार रायहाणीए अण्णिमं च बहुणं देवाण य देवीण य आव विहरह ॥ कहि णं संते !

सुत्तागमे

दाहिणबुसरहकुडस्य देवस्य दाहिणबा णामं रायहाणी प्रण्णता ? गो० ! मंदरस्य पव्ययस्य दक्षित्रणेणं तिरियमसंखेजारीवसमुद्दं वीईवहना अण्णंमि जंबुद्दीचे रीवे दिक्लणेणं वारम जोयणसहस्माइं ओगाहिता एत्थ णं दाहिणहुभरहकूडस्स देत्रस्म दाहिणद्वभरहा णामं रायद्वाणी भाणियव्या जहा विजयस्य देवस्य, एवं मध्यसूडा णयन्या जाव वेममणकूढे परोप्परं पुरस्छिमपचित्रमणं, **इमेर्सि वण्णावासे** गाहा-मज्झे वेयहुस्स उ कणयमया तिष्णि होति वृ.हा उ । सेसा पञ्चयकृष्टा नथ्वे रयणामया होति ॥ १ ॥ माणिमद्दुः १ वेयब्दुः ३ २ पुष्णमद्दूः ३ एए तिष्णि कुडा कणगामया सेसा ऋषिः रयणामया, दोण्हं विगरिसणामया देवा क्रयमालाः चेव णष्टमालए चेत्र, सेमाणं छण्हं सरिमणामया-जण्णामया य बृहा नण्णामा खलु इवंति ने देवा । परिओवमद्भिद्देया हुर्यति पत्तेयपत्तेयं ॥ १ ॥ रायहाणीओ जंबुदीय दीवे मंदरमप पव्यवस्स टाहिणेणं तिरियं असंखे बदीवसमुद्दे वीईवहत्ता अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारम जायणगहस्साई ओगाहिता एत्य ण रायहाणीओ भाणियव्याओ विजयरायहाणीसारेसयाओ ॥ १४ ॥ से केणद्वेणं अंते ! एवं वृत्तद-वेयद्वे पव्वए वेशक्षे पञ्चए ! गोयमा ! वेशक्षे णं पञ्चए भरहं वासं दुहा विभयमाणे २ चिद्धह, तंजहा-दाहिणहुभरहं च उत्तरहुभरहं च, वयहुगिरिफुमारे य "महिहिए जाव पिछओ-वसद्विद्रए परिक्सइ, मे तेणद्वेणं गोयमा ! एनं बुखइ-वेयहे पन्वए २, अदुत्तरं च णं गोयमा ! वेयहुस्म पव्वयस्य मासए णामधेजे पण्णते जं ण क्रयाइ ण आनि ण क्याइ ण अस्थि ण क्याइ ण मनिस्सइ भुनि च भवड य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्यए अवद्विए णिचे ॥ १५ ॥ कहि णं भेते ! त्रंयुद्दीवे दीवे उत्तरक्रमरहे णामं वासे पण्णते ? गोयमा ! चुन्नहिमवंतस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेणं वेयबूरस पञ्चयस्स उत्तरेणं पुरच्छिमलवणसमुद्दस्स पश्चच्छिमणं पश्च-च्छिमल्यणसम्प्रहस्त पुर्राच्छमेणं एत्थ णं जंबुद्दीवं बीवे उत्तरह्वभरहे णामं वासे पणाते, पाईणपडीणायण् उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठाणसंठिए दुहा लवणनसुई प्रदे प्रक्षिमिक्षाए कोडीए प्रक्लिमिलं लवणसमुदं पुट्टे प्रविक्लिमिलाए जाव पुट्टे गंगासिंध्रहें महाणईहिं निभागपविभत्ते दोष्णि अद्वतीसे जोयणसए तिष्णि ब एगूणबीसहभागे जोयणस्म विक्संभेणं, तस्स बाहा पुरच्छिमपचच्छिमेणं अद्वारस बाजउए जीयगसए मत्त य एगूणवीसइमागे जीयगस्त अद्युमागं च आयामेणं, तस्त जीवा उत्तरेणं पाईणपदीणायया दुहा व्यवणसमुद्दं पुद्वा तहेव जाव चोद्दस जीयणस-इस्साइं चतारि य एकहत्तरे जीयणसए छच एगूणवीसङ्भाए जोमणस्स किंचिविसेस्ने क्षाबामेणं पण्णता. तीसे धणुपट्टे दाहिषेणं चोद्दस जोयणसहस्ताइं पंच अद्वाबीसे

जोबणसए एकारस य एगूणवीसइभाए जोबणस्स परिक्खेवेणं । उत्तरक्रमरहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमि-भागे पण्णत्ते, से जहाणामए-आर्टिंगपुक्खरेड वा जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, उत्तरक्रभरहे णं भंते ! वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडीयारे पण्णते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंघयणा जाव अप्येगइया सिज्झेति जाब सव्वद्वस्खाणमंतं केरेंति ॥ १६ ॥ कहि णं भंते । जंबहीवे दीवे उत्तरह्रभरहे वासे उसमकूढे णामं पव्वए पण्णते ? गोग्रमा ! गंगाकुंडस्स पश्चत्थिमेणं सिंधुकुंडस्स पुरच्छिमेणं चुल्लहि-मवंतस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणिक्षे णियंबे एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तरश्चमरहे वासे उसहकूडे णामं पञ्चए पण्णेते, अहु जोयणाई उन्हुं उन्हतेणं, दो जोयणाई उच्वेहेणं, मूळे अहु जोयणाई विक्खंमेणं मज्हो छ जोयणाई विक्खंमेणं उवरिं चत्तारि जोयणाई विक्खंमेणं, मूळे साइरेगाई पणवीसं जोयणाई परिक्खेवेणं मज्हे साइरेगाइं अद्वारस जोयणाइं परिक्खेवेणं उवरिं साइरेगाइं द्वालस जोयणाइं परि-क्खेवेणं, (पाढंतरं-मूळे बारस जोयणाई विक्खंमेणं मज्झे अडु जोयणाई विक्खंमेणं उपिंप चतारि जोयणाई विक्खंमेणं, मूळे साइरेगाई सत्ततीसं जोयणाई परिक्खेवेणं मज्हे साइरेगाई पणवीसं जोयणाई परिक्खेवेणं उप्पि साइरेगाई बारम जोयणाई परिक्सेवेणं) मुले विच्छिणो मज्झे संखित उपि तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सञ्जजंबुणयामए अच्छे सण्हे जाव पिड्हें ते, से णं एगाए पजमवरवेदयाए तहेव जाव सवणं कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्संमेणं देसऊणं कोसं उन्ने उन्नेतेणं. अद्भो तहेव, उप्पक्ताणि परमाणि जाव उसमे य एत्थ देवे महिष्किए जाव दाहिणेणं रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं ॥ १७ ॥ पढमो वक्खारो समसो ॥

जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे कड़िवहे काले पण्णते ? गो० ! दुविहे काले पण्णते, तें जहा-ओसप्पिणिकाले य उस्सप्पिणिकाले य, ओसप्पिणिकाले णं भंते ! कहिवहे पण्णते, तं०-सुसमसुसमकाले १ सुसमाकाले २ सुसमदुस्समकाले ३ दुस्समसुसमाकाले ४ दुस्समकाले ५ दुस्समसुस्समकाले

१ विजाहरसमणदंसणओ, कम्माणं खओक्समविचित्तवाए आइसरणेणं, चक्कविक्षित्र अणुग्वाडियगुहाजुयलावद्वाणेणं (संग्रं गमणा), चिक्कक्षेटे य तत्थुववण्णा वि इह तित्थयराइपासे धम्मसवणाइणा लद्धबोही अणुक्रमेणं पत्तकेवला तत्थ वि सिज्हांति अहवा तव्वासवासिणो इहमागंतूण तहाविह्थम्ममायरितु सिज्हांति अदुवा साहरणं पद्धब तत्थ सिद्धी संभवेद्दि ।

६, उस्मप्पिणिकाले णं भंते ! कह्विहे प० ? गो० ! छव्विहे पण्णते, तं०-दुस्सम-दुस्पमाकाले १ जाव सुसमनुसमाकाले ६ । एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्य केवह्या उस्मामदा विवाहिया ? गोयमा ! असंखिजाणं समयाणं समुद्यसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियति वुषद् संसिजाओ आवलियाओ कमारो। संसिजाओ आवलि-याओं नीमामी, गाहा-हद्वस्स अणवगह्नस्य, णिक्तकिद्वस्स जंतुणी । एगे ऊसास-नीसासं, एस पाणुति बुचई ॥ १ ॥ सत्त पाणुई सं थोवे, सत्त थोवाई से खवे । लवाणं मनइत्तरीए, एस मुहुत्तेत्ति आहिए ॥ २ ॥ तिण्णि सहस्सा सन य सयाई तेवनरिं च उत्सामा । एम मुहुत्तो भाषाओ सन्बेहि अर्णतनाणीहि ॥ ३ ॥ एएणं मुहुनप्पमाणेणं तीसं मुहुना अहोरतो पण्णरम अहोरना पक्को दो पक्का मासो दो मागा उक तिष्णि उक अयणे दो अयणा मंबन्छरे पंचसंबच्छरिए जुगे बीसं जुगाई वामराए दम वाससयाई वामसहस्से मयं वामसहस्साणं वामसयसहस्से चउरासीडं वाससयसहस्साइं से एगे पुट्यंगे चउरासीइं पुट्यंगसयसहस्साइं से एगे पुरुवे एवं बिगुणं बिगुणं णेयव्वं तुडियंगे २ अडडंगे २ अववंगे २ हहयंगे २ उपप-लंगे २ पडमंगे २ णिलणंगे २ अच्छिणिउरंगे २ अउयंगे २ नडयंगे २ पडयंगे २ चृत्तियंगे २ जाव चउरासीइं सीसपहेलियंगसयसहस्साइं सा एगा सीगपहेलिया एताय ताव गणिए एताव ताय गणियस्य विसए नेण परं ओविमिए ॥ १८ ॥ से कि नं ओविंगए ? २ दुविहं पण्पते, तंजहा-पिलओवमे य सागरीनमे य, से कि तं पांलओबमं ? पालओवमस्स पहवणं करिस्सामि, परमाण् दुविहे पण्णते, तंजहा-मृहुमे य वाबहारिए य, अणंताणं सुहुमपरमाणुपुग्गलाणं मसुद्यसमिइसमागमेणं वाबहारिए परमाणू णिप्फजड तत्थ जो सत्थं कमइ-सत्थेण सुतिक्खेजवि छेतुं भिन्तं च जं ण किर सका । नं परमाणुं सिद्धा वयंति आई पमाणाणं ॥ १॥ वाव-हारियपरमाणूणं समुदयममिइसभागमेणं मा एगा उस्तण्हमण्हियाइ वा सण्हसण्हि-याइ वा उद्दरेणुह वा तसरेणुह वा रहरेणुह वा वालमंगेह वा लिक्खाइ वा ज्याइ वा जवमञ्जेर वा उस्सेहंगुलेइ वा, अहु उस्सण्हसिष्हयाओ मा एगा सण्हसिष्हया मह सण्हमण्डियाओ सा एगा उड्डरेणू अह उड्डरेणूओ सा एगा तसरेणू अह तसरेणुओ सा एगा रहरेणू अट्ट रहरेणुओ से एगे देवकुरूतरकुराण मणुस्साणं बालको अह देवकुरूतर्कराण मणुस्साण बालका से एगे हरिवासरम्मयवासाण मणुस्साणं बालमो एवं हेमबयहेरण्णवयाण मणुस्साणं पुरुवविदेहअवर्विदेहाणं मणुस्साण बालमा सा एगा लिक्सा अड लिक्साओ सा एगा ज्या अड ज्याओं से एने जबसज़ी अह जवसज्झा से एने अंगुळे एएणं अंगुरूपमाणेणं

छ अंगुलाई पाओ बारस अंगुलाई विहरबी चउबीसं अंगुलाई रवणी अडवालीसं अंगुलाई कुच्छी छण्णाउइ अंगुलाई से एगे अक्सोइ वा दंडेइ वा भणूह वा जुगेह बा मुसलेइ बा णालियाइ वा, एएणं धणुप्यमाणेणं दो धणुसहस्साई गाउयं चनारि गाउयाई जोयणं, एएणं जोयणप्पमाणेणं जे पहे जोयणं भायामविक्खंमेणं जोयणं उन्नं उन्नत्तणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पहे एगाहियवेहियतेहिय उद्योसेणं सत्तरत्तपरूढाणं संमद्वे सण्णिचिए भरिए वालग्यकेडीणं । ते णं वालग्या णो कुरथेजा णो परिविद्धंसेजा, णो अम्मी डहेंजा, णो वाए हरेजा, णो पृहनाए हव्यमागच्छेजा. तओ णं वाससए २ एगमेगं वालमं अवद्वाय जावहएणं कालेणं से पहे लीणे णीरए जिहेने णिड्डिए भवइ से तं पिठिओवमे । एएसि पहाणं को डाकोडी हवेज दसगुणिया । नं सागरोवमस्स उ एगस्म भवे परीमाणं ॥ १ ॥ एएणं सागरीवमप्पमाणेणं चतारि सागरीवमकोडाकोडीओ कालो सममसुसमा १ निष्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो मुसम-दुरसमा ३ एगा सागरोबमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दुस्तममुसमा ४ एक्वीसं वाससहस्साई कालो दुस्समा ५ एक्कीसं वायसहस्साई कालो दुरममदुस्समा ६, प्रणरवि उस्सप्पिणीए एकवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्स-मदुरममा १ एवं पिंडलोमं णेयव्वं जाव चत्तारि सागरोवमकोडाकोडींआं काली नुसममुममा ६. दससागरोबमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी दमसागरोबमकोडा-कोडीओ कालो उस्सप्पणी वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पणीउस्म-पिणी ॥ १९ ॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहे बासे इसीसे उस्सप्पिणीए मुसम-द्यमाए समाए उत्तमक्ट्रपताए भरहस्य बासस्य केरिसए आयारभावपडोबारे होत्या ? गो॰ ! बहसमरमणिजे भूमिमागे होत्या से जहाणामए-आर्टिंगपुक्खरेड वा जात्र णाणाविहपंचवण्णेहिं तणेहि य सणीहि य उवसोमिए, तंजहा-किण्हेहिं जाव सुक्तिहोहें, एवं वण्णी गंधी फासी सही य तणाण य मणीण य भाणियव्यी जाव तत्थ णं बहवे मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिद्रंति णिसीयंति तुयहंति हसंति रमंति ललंति, तीसे णं ममाए भरहे वासे बहुवे उद्दाला बुहाला मुद्दाला क्यमाला णहुमाला देतमाला नागमाला सिंगमाला संख्याला सेयमाला णामं दुमगणा पण्णता, कुसविकुसविद्युद्ध स्वरतमुला मूलमंतो कंदमंतो जाव बीयमंती पतिहि य पुष्फेहि य फलेहि य उच्छण्णपिक्छण्णा सिरीए अईब २ उबसोमेमाणा २ चिद्रंति. तीसे णं समाए मरहे वासे तत्थ तत्थ पत्थ मेरतास्वणाई हेस्तालवणाई मेरतालवणाई प्रभयालवणाई सालवणाई सरस्वणाई सत्तिवण्णवणाई प्रथमलिबणाई

-खजूरीवणाई णाळिएरीवणाइं कुसविकुसविद्यद्यन्त्वमृलाई जाव चिह्नंति, तीसे णं समाएं भरहें वासे तत्व तत्व प्यान्वहवे सेरियागुम्मा णोमालियागुम्मा कीरेटयगुम्मा बंधुजीवगगुम्मा मणोजगुम्मा बीयगुम्मा बाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुजायगुम्मा सिंदुवारगुम्मा मोम्गरगुम्मा जुहियागुम्मा महियागुम्मा वासंतियागुम्मा बत्धुलगुम्मा कत्युलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा मगदंतियागुम्मा चंपगगुम्मा जाईगुम्मा णवणीद्यागुम्मा कुंदगुम्मा महाजाइगुम्मा रम्मा महामेहणिउरंबभुया दसद्धवण्णं कुलुमं कुलुमेंति जे णं भरहे वासे बहुसमरमणिजं भूमिभागं वायविध्यग्गमाला मुक्तपुप्पयुंजीवयारकाल्यं करेंति, तीसे णं समाए भरहे बासे तत्थ २ ... ताहें ताहें बहुईओ पउमलयाओ जाब सामलयाओ णिचं कुसुमियाओ जाब लयावण्णओ, तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ २ ... तहिं २ बहुईओ वणराईओ पण्णनाओ, किण्हाओ किण्होभासाओ जात्र मणोहराओ रयमत्तमञ्जूपयकोरगर्भिगारगकोंडलगजीनंजीवग-नंदीमुहकविलिपंगलक्खगकारंडवचकवायगकलहंसहंससारसअणेगसउणगणमिहुणप-वियरियाओ सहुण्णइयमहुरसरणाइयाओ संपिंडिय॰ णाणाविहगुच्छ॰ बावीपुक्ख-रिणीदीहियास अ सुणि० विचित्तः अध्यितः माउ० जिरोगकः सब्वोउय-पुष्फफलसमिदाओ पिंडिम जाव पासाइयाओ ४। तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ तत्थ तहिं तहिं मत्तंगा णामं हुमगणा पण्णता, से जहा ॰ चंदप्पमा जाव छण्णपिंडच्छण्णा चिद्वंति, एवं जाव अणिनणा णामं दुमनणा पण्णता ॥ २०॥ तीसे णं मंते ! रामाए भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडीयारे पण्णते ? गो०। ते णं मणुया सपइहियकुम्मचारुचलणा जाव लक्खणवंजणगु-णोववेसा मुजायस्विभक्तसंगरंगा पासादीया जाव पिरुखा । तीसे ण भंते ! समाए भरहे वासे मणुईणं केरिसए आयारमावपडीयारे पण्णते ? गो०! ताओ णं मणुईओ मुजायसव्यंगसुंदरीओ पहाणमहिकागुणेहि जुताओ अइकंतविसप्पमाणमउ-याओ धकुमालकुम्मसंठियविसिद्धचलणाओ उज्जुमउयपीवरसुसाहयंगुलीओ अच्युण्णय-रइयत्तिण्यतंबसुद्दणिद्धणक्षाओ रोमरहियक्ट्रसंद्वियअब्दण्णपस्यलक्षणअको-प्पर्वघज्यसाओ सुणिम्मियसुगृहसुजण्युमंहलसुबद्धसंथीओ कयलीखंमाइरेगसंठियणि-व्यषमुकुमाळम्चयमंसळअविरळसमसंहियसुकायवृष्ट्पीवरम्पिरंतरोरू अहावयवीद्यपहु-संठिमपसत्यविच्छिणपिहुलसोणीओ वयणायामप्पमाषहुगुणियविसालमंसलसुबद्धज-हणबरचारिणीओ वज्जविराइयपसत्यलक्खणनिरोदरतिवलियवलियत्युणसमज्जिमाओ उजुगसमसहिवजनतञ्जसिणणिद्धभाइज्जल्डहृतुजायत्त्वविमत्तकंतसोभंतरुइलरमणिज-रोमराईको गंगावनापवाहिणावनातरंगमंगुरर्विकरणसक्ण बोहियव्यकोसार्यतप्रस्थं-३५ स्ता॰

भीरविग्रहणामीओ अणुब्भडपसत्यपीणकुच्छीओ सण्णयपासाओ संगयपासाओ मुजायपासाओ मियमाइयपीणर्डयपासाओ अकरंड्यकणगढ्यगणिम्मलमुजायणिहन-ह्यगायलद्भीओ कंचणकलसप्पमाणसमसहियलद्वचुस्यामेलगजमलजुयलबहियअब्सु-ण्णयपीणरइयपीवरपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवृहसंहियणमियआहज्जल-लियबाहाओ तंबणहाओ मंसलम्गहत्याओ पीवरकोमलवरंगुलियाओ णिद्धपाणिरेहाओ रविस सिसंखचकसोत्थियस्विभन्तम्बिरइयपाणिलेहाओः पीण्ण्यकरकक्खवत्थिप्पए-साओ पिंदुण्णगलक्ष्वोलाओ चउरंगुलसुप्पमाणकंबुबरसरिसगीवाओ मंसलसंठियप-सत्यहणुगाओ दाडिमपुप्कप्पगासपीवरपलंबकुंचियवराधराओ सुंदरुतरोद्वाओ दहि-दगरयचंदकंदवासंतिमञ्जधवलअच्छिद्दविमलदमणाओ रत्तुप्पलपत्तमञ्जसञ्जमालता-लुजीह।ओ कणवीरमञलकुडिलअब्सुगगयउज्ज्ञतुंगणासाओ सारयणवत्रमलकुसुयकुवल-यविमलदल्लीयरसरिमलक्खणपगत्थअजिम्हकंनणयणाओ पनलधवलाययआनंबली-यणाओ आणामियचावरुइलकिण्डन्मराइसंगयसजायभुमगाओ अहीणपमाणजुत्तसव-णाओ मुसन्नणाओ पीणमञ्ज्ञगंडलेहाओ चउरसपसत्यसमणिडालाओ कोमुईरयणिय-रविमलपिडपुण्णसोमवयणाओ छत्तुण्णयउत्तमंगाओ अकविलसुतिणिदसुगंधदीहितर-याओ छन १ ज्ञाय २ जूय ३ दामणि ४ क्रमंडलु ५ कलस ६ वावि ७ सोस्थिय ८ पडाग ९ जब १० मच्छ ११ कुम्म १२ रहवर १३ मगरज्ञ्चय १४ अंक १५ युय १६ थाल १७ अंकुस १८ अद्वावय १९ सुपइट्टग २० मकर २१ सिरिअमि-सेय २२ तोरण २३ मेडणि २४ उद्धि २५ बरभवण २६ गिरि २७ बरआयंस २८ सलीलगय २९ उसभ ३० सीह ३९ चामर ३२ उत्तमपमत्यवत्तीसलक्खणधरीओ हंससारेसगईओ कोइलमहरगिरपुरसराओ कंताओ सव्वस्स अणुमयाओ ववगयवलि-पलियवंगदुव्वण्णवाहिदोहुम्मसोगमुक्काओ उच्चतेण य णराण थोवूणमुस्सियाओ सभा-वसिंगारचारवेसाओ संगयगयहतियभणियचिद्रियविलाससंलावणिउणज्सोवयारक्स-लाओ सुंदर्यणजहणवयणकरचलणणयणलावण्णस्वजोव्यणविलासकलियाओ णंदण-वणविवरचारिणीउम्ब अच्छरास्रो भरहबासमाणसच्छराओ अच्छेरगयेच्छणिजाओ पासाइयाओ जाव पिडेह्बाओ, ते णं मणुया ओहस्सरा हंसस्सरा कींचस्सरा णंदि-स्तरा गंदिघोसा सीहरसरा सीहघोसा सस्तरा स्सरणिन्घोसा छायायबोज्येवियंगर्मगा वज्रितिहनारायसंघयणा समन्व उर्रससंठाणसंठिया छविणिरायंका अण्रलोमवास्वेगा कंकरगहणी कवोयपरिणामा सङ्गिपोसपिद्धंतरोठपरिणया छद्धणसहस्समसिया. तेसि णं मणुयाणं बे छप्पण्णा पिद्वकरंडगसया पण्णता समजाउसो !, पञ्जप्पलगन्धसरि-सणीसाससुरभिवयणा, ते णं मणुया पगईउवसंता पगईपवणुकोहमाणमायासीमा

मिउमहबसंपन्ना अहीणा भद्गा विणीया अप्पिन्छ। अयाण्यिहसंबया विडिमंतरपरि-वसणा जहिव्छियकामकामिणो ॥ २१ ॥ तसि णं मंते ! मणुयाणं केवडकालस्स माहारहे समुप्पन्न : गोयमा ! अहमभत्तस्म आहारहे समुप्पन्न , पुढवीपुप्पप्रका-हारा णं ते मणुया पण्णना समणाउमो !, तीसे णं भंते !० पुढवीण केरिमए आसाए पण्णते ! गो०! से जहाणामए-गुलेड वा खंडेड वा सकराइ वा मच्छंडियाइ वा पप्पडमोयएइ वा भिसेट वा पुष्फ्रतराड ना पउमुत्तराइ वा विजयाइ वा महावि-जयार वा आगासियार वा आदंसियाड वा आगामफालिओवमाड वा उग्गाड वा अणी-वसाड वा रमेए अज्ङोववणाए, भवे एयाव्वे?, जो इणहे समहे, सा णं पुरुवी इत्तो इद्वर्गाया चेव जाव मणामनविया चेव आसाएणं पण्णता । तेसि णं मंते ! पुष्पफ-ळाणं केरिसए आसाए पण्णांत ! गोयमा ! मे जहाणामए-रण्णो चाउरेतचक्कवद्रिस ककाण भोपणजाए सगसहस्सनिष्फले वर्णणुबवेए जाव फामेणं उपवेए आसामणिज विस्मायणिजे दिप्पणिजे उप्पणिजे मयणिजे | विरयणिजे | विंहणिजे मर्जिदियगाय-पन्हायणिजे, भवं एयारवे ?, णो इणहे समहे, तेलि णं पुरफ्फलाणं एत्ती इह्वतराए चेव जाव अस्ताए प्रणाते ॥ २२ ॥ ते णं मंते ! मणुया तमाहारमाहारेत्रा कहिं वसहिं उवेंति ? गोयमा ! स्वस्तगेहालया णं ते मणुया पण्णना समणाउसो !, तेसि णं भंत ! रुक्लाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णेत ? गोयमा ! कुडागारसंठिया पेच्छाछम् उद्ययनोरणगोयरवैश्याचोप्फालगञ्जहालगपासायहन्मियगवक्खवालमगपोइ-यावलभीघरसंठिया अत्यर्ण इन्य बहवे बरभवणविसिद्धसंठाणसंठिया दुमगणा सह-सीयलच्छाया पण्णता समणाउगो ।।। २३ ॥ अस्य णं भंते ! तीसे समाए भरहे बासे गेहाड वा गेहावणाइ वा ! गोगमा ! णो इणड्डे समद्धे, स्वन्छगेहालया णं ते मण्या पण्णना समणाउसो !. अन्यि णं भेते ! तीसे समाए भरहे वासे गामाइ वा जाव संणिवेसाइ वा ? गोयसा ! जो इजद्वे समद्रे. जिहन्छियकामगामिणी णं ते मणुया पण्णाना , अत्थि णं भंते !० असीइ वा मसीइ वा किसीइ वा विणएति वा पिष्णि व। बाधिजेड् वा ? गो० ! णो इणहे समहे, वबगयअसिमसिकिसिवणियपणिय-वाणिज्ञा नं ते मणुवा पम्नाना समनाउसी!, अस्थि मं मंते!० हिरण्णेइ वा सबण्णेइ वा कंसेड वा दूमें वा मणिमोत्तिमसंवित्तरपवालरत्तरयणसाबहत्वेड वा ? हंता ! सिंख, जो चेव जं तेसिं मणुयाजं परिमोगताए हञ्चमागच्छव । अत्य जं अंते !० भरहे० रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरतळवरमाडंनियकोई वियहक्मसे द्विसेणावइस-त्थवाहाइ वा ? गोममा ! णो इण्डे समद्वे, व्यग्यइन्तिकारा णं ते मणुया , अत्य णं भंते । भरहे वासे दासेइ वा पेसेइ वा सिस्सेइ वा भयगेइ वा भाइकएइ वा कम्मयरएइ वा ?॰ णो इणड्डे समड्डे, ववगयआभिओगा ण ते मणुया पण्णता सम-णाउसो !, अत्य र्ण भंते ! तीसे समाए भरहे वासे मायाइ वा पियाइ वा भाया॰ भगिणी॰ भजा॰ पुत्त॰ घूया॰ सुण्हाइ वा ? हंता ! अत्य, णो चेव णं तिच्वे पेम्स-बंधणे समुप्पजाइ, अत्य णं भंते !० भरहे वासे अरीइ वा वेरिएइ वा घायएइ वा वहएइ वा पिंडणीयएइ वा प्रवासितेइ वा ? गो० ! जो इजड़े समहे, ववगयवेराणुसया र्ण ते मणुया पण्णता समणाउसो !. अत्थि णं भंते !० भरहे वासे मिताइ चा वयंसाइ वा णायएइ वा संघाडिएइ वा सहाइ वा सुहीइ वा संगइएड वा १ हंता! अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिव्वे रागबंधणे समुप्पज्जइ, अत्थ णं भंते !० भरहे वासे आवा-हाइ वा वीवाहाइ वा जण्णाउ वा सद्धाइ वा थालीपागाइ वा मियपिंडनिवेयणाइ वा ? णो इणद्रे समद्रे, वयगयआवाहबीवाहजण्णसद्ध्यालीपागमियपिंडनिवेयणा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसी!, अत्थि णं भंते!० भरहे वासे इंदमहाड वा खंद० णाग० जक्ल० भूय० अगड० तडाग० दह० णइ० रुक्ख० पञ्चयमहाइ वा ? गो० ! णो इणहे समद्रे. ववगयमहिमा णं ते मणुया प० स०. अत्थ णं भंते !० भरहे वासे णड-पेच्छाइ वा णष्ट्र अल्ला मह्नय मुद्रिय वेलंबग कहरा पवरा वासरपेच्छाइ वा ? गो॰ । णो इषद्वे समद्वे, ववगयकोउहहा णं ते मणुया पण्णता समणाउसो !. अत्थि णं भंते !० भरहे वासे सगडाइ वा रहाइ वा जाणाइ वा जुगगा० गिली० थिही ॰ सीया ॰ संदमाणियाड वा १० णो इणड्रे समद्रे. पायनारविहारा णं ते मणया प॰ समणाउसो !, अत्थि णं भंते !॰ भरहे बासे गावीइ वा महिसीइ वा अयाइ वा एलगाइ वा ? हंता ! अत्थि. जो चेव जं तेसि मणुयाजं परिभोगताए हव्यमागच्छति. अत्थि णं अते । भरहे वासे आसाइ वा हत्थी । उद्या गोणा । गवया । अया । एलगा० पसया० मिया० वराहा० रु६० सरमा० चमरा० क्ररंगगोकणमाइया ? हंता ! अत्थि, णो चेंब णं तेसिं परिभोगताए हव्यमागच्छीत. अत्थि णं भेते !• भरहे वासे सीहाइ वा वनचाइ वा विगवीविगअच्छत्रच्छसियालविदालप्रणगकोकं-तियकोलसुणगाइ वा ? हंता ! अतिय. णो चेव णं तेसि मणुराणं आवाहं वा बाबाहं वा छविच्छेयं वा उप्पाएंति, पगइभद्दवा णं ते सावयगणा प॰ समणाउसो !. अस्वि णं भंते !- भरहे वासे साठीइ वा वीहिगोहमजबजबजवाइ वा कळममसूरमुख्यमा-सतिल्कुल्त्याणिप्कावआिल्संदगअयसिकुर्धुमकोहवकंगुवरगराळगसणसरिसवमूळगबी-याइ वा ? हंता ! अत्व. जो चेव जं तेलिं मण्याजं परिमोगताए इन्बमागच्छेति. अत्थि णं भंते ! अरहे बासे महाइ वा दरीओवायपवायविसमविज्ञलाइ वा १० णो इण्डे समडे, भरहे वासे बहसमरमणिजे भूमिभागे पुण्यते. से जहाबामए-आर्किंग-

पुक्खरेइ वा॰, अत्य णं मेते । अरहे वासे खाणूइ वा संटगतणकमधराइ वा पत्तकयवराइ वा १० जो इजहे समहे, वचगयसाणुकंटगतजकयवरपत्तकयवरा णं सा समा पण्णता॰, अत्थ णं भंते !॰ भरहे बासे इंसाइ वा मसगाइ वा जूयाइ वा लिक्खाइ वा विंकुणाइ वा पिश्चयाइ वा ?० णो इणड्डे समड्डे, ववगयडंसमसगजूय-लिक्खिंदुणपिसुया उनहब्बिरिष्टिया णं सा समा प्रणाता , अत्थि णं मंते !० भरहे • अहीइ वा अयगराइ वा ? हंता ! अत्य, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं आबाहं वा जाव पगइभद्दया णं ते वालगगणा पण्णता०. अत्थि णं भेते !० सरहे० डिंबाइ वा डमराइ वा कलहबोलखारबद्दरमहाजुद्धाइ वा महासंगामाइ वा महासत्यपडणाइ वा महापरिमपडणाइ वा ? गोयमा ! जो इजट्टे समद्दे, ववगयवेराणुवंधा जं ते मणुगा पण्णता स॰ !, अत्थि णं भंते !० भरहे वासे दुब्भूयाणि वा कुलरोगाइ वा गामरो-गाइ वा मंडलरोगाइ वा पोट्टवे॰ सीसवेयणाइ वा कण्णोद्धअच्छिणहदंतवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा दाहाइ वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा दओदराइ वा पंडुरोगाइ वा भगंदराइ वा एगाहियाइ वा बेयाहियाइ वा तेयाहियाइ वा चउ-त्थाहियाइ वा इंदरगहाइ वा धणुम्महाइ वा संदग्गहाइ वा कुमारम्महाइ वा जक्स-म्महाइ वा भूमम्महाइ वा मच्छस्लाइ वा हिमयस्लाइ वा पोट० कुच्छि० जोणिस्-लाइ वा गाममारीइ वा जाव सम्मिवेसमारीइ वा पाणिक्खया जणक्खया कुलक्ख्या बसणब्भयमणारिया ? गोयमा ! णो इजहे समहे. ववगयरोगार्यका णं ते मणुवा पण्णता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसे णं भंते ! समाए भारहे बासे मणुयाणं केवहवं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं देसूणाई तिण्णि पिलओवमाई उद्योसेणं देस-णाइं तिन्नि पिछ्छोबमाई, तीसे जं मंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं सरीरा केवइयं उचतेणं पण्णता ? गोगमा ! जहनेणं तिष्णि गाउयाई उन्होसेणं तिष्णि गाउयाई. ते जं अंते ! मण्या विसंघयणी पण्णता ? गोयमा ! वहरोसमणारायसंघयणी पण्णता. तेसि णं भेते ! मणुयाणं सरीरा किसंठिया पण्यता ? गोयमा ! समन्वरंससंठाण-संक्रिया. तेसि णं मणुवाणं बेख्यपण्या पिट्रकांडयसया पण्यास समणाउसी !, ते र्ष भंते ! मणुया कालमासे कालं किया कहिं गच्छंति कहिं उववजंति ? गो० ! छम्मा-साबसेसाउगा जुगलगं पसवंति, एगूर्णपण्णं राहंदियाइं सारक्खंति संगोर्वेति सा॰ २ ताः कारिता छीइता जंगाइता अक्ट्रिया अवस्थित अपरिवाविया कालमासे कार्ल किया देवळोएस उववजाति, देवलोयपरिमाहा मं ते मुख्या पण्यता , तीसे मं भंते ! समाए भारहे वासे बहविहा मणुरसा अणुसकित्या ? गो० ! छव्विहा प०, तं०-पम्हर्गधा ? मिम्पांचा २ अमसा ३ देवतकी ४ सहा ५ समिचारी ६ ॥ ३५ ॥ दीसे वं समाह्

बर्सी सागरोबमकोडाकोडीहिं काले नीइकंते अर्णतेहिं वण्णपञ्चनेहिं अर्णतेहिं गंघप्रज्ञवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतिहिं फासपज्जवेहिं अणंतिहिं संगरणपञ्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उन्नत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतिहिं गुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं अगुरुलहुपज्जवेहिं अणंतेहिं उद्वाणकम्मवलवीरियपुरिसकार-परक्रमपज्जवेहि अणंतगुणपरिहाणीए परिहायमाणे २ एत्य णं सुसमा णामं समाकारे पिंडविज्ञें समणाउसो !, जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमाए समाए उत्तमकद्वपत्ताए भरहस्स वायस्स केरिसए आयारमावपडोयारे होत्या? गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमिमागे होत्या, से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा तं चेव जं उसममुसमाए पुन्वविषयं, णवरं णाणतं-चडधणुसहस्सम्सिया, एगे अद्वावीसे पिट्टकरंडयसए, छ्ट्टमत्तस्स आहारहे, चउसहिं राइंदियाइं सारक्खंति. दो पिल्लोबमाई आऊ, सेसं तं चेव, तीसे णं ममाए चउन्त्रिहा मणुस्ता अणुसजित्था, तंजहा-एगा १ पडरजंघा २ कुसुमा ३ सम्मणा ४ ॥ २६ ॥ तीसे णं समाए तिहिं सागरीवमकोडाकोडीहिं काले बीडकंते अणंतिहिं वण्णपज्जवहिं जाव अणंतगुणपरि-हाणीए परिहायमाणी २ एत्य णं सुसमदुस्समा णामं समा पडिवर्जिस समणाउमो । सा णं समा तिहा विभज्जइ-पढमे तिभाए १ मिज्झमे तिभाए २ पच्छिमे तिभाए ३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदुस्समाए समाए पढममज्जिमेस तिभाएस भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पुच्छा, गोयमा ! बहुसम-रमणिजे भूमिभागे होत्या, सो चेव गमो णेयन्त्रो णाणनं दो धणुसहस्साई उन्न उच्नेणं, तेसि च मणुगाणं चउसद्विपिडुकरंडगा चउत्यमत्तस्य आहारहे समुप्पजह ठिई पलिओवमं एगूणासीई राइंदियाई सारक्खंति संगोवेति जाव देवलोगपरि-माहिया णं ते मणुया पण्यता समणाउसो !, तीसे णं भंते ! समाए पश्छिमे विभाए भरहस्स वासस्य केरिसए आयारमावपडीयारे होत्या ? गोयमा ! बहसमरमणिखे भूमिमागे होत्या, से बहाणामए-आर्किंगपुक्खरेड वा जाव मणीहिं उपसोमिए, तंजहा-कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, तीसे मं भंते ! समाए पच्छिमे तिभाग मरहे नासे मणुयाणं केरिसए आयारभानपडीबारे होत्या ? गोयमा ! तेसि मणुयाणं छिन्दि संघयणे छिन्दि संठाणे बहुणि धणुसयाणि उद्गं उत्तरीणं जहुण्येणं संखिजाणि वासाणि उद्दोरेणं असंख्याणि बासाणि आउयं पालंति पालिता अप्येगह्या जिरय-गामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुस्तवामी अप्पेगइया देवगामी अप्पे गइया सिजाति जाव सव्बदुक्जाणमंतं करेंति ॥२०॥ तीसे वं समाए पश्छिमे तिभाष पळिमोबसहमातावसेसे एत्य र्थं इमे प्रवारस कुम्मरा समुप्यवित्या, तंजहा-समई १

पिंडस्पुई २ सीमंकरे ३ सीमंघरे ४ क्षेमंकरे ५ खेमंघरे ६ विमल्बाहणे ७ चक्खुमं ८ जसमं ९ अभिचंदे १० चंदासे ११ पसेणई १२ सहदेवे १३ णासी १४ उससे १५ ति ॥ २८ ॥ तत्व णं समङ्घितसङ्ग्रीमंकरसीमंधरखेमंकराणं एएसि पंचण्हं कुलगराणं हकारे णामं दण्डणीई होत्या. ते णं मणुया हकारेणं दंडेणं हया समाणा लिजया विलिजया वेद्वा भीया तसिणीया विणयोणया चिद्रंति. तत्थ ण खेमेघर-विमलवाहणचक्खमजसम्भाभचंदाणं एएसि णं पंचण्हं कलगराणं मकारे णामं दंडणीई होत्था. ते णं मणुया महारेणं दंढेणं हया समाणा जाव चिद्रंति, तस्य णं चंदाभपसेणइमरुदेवणाभिजसभाणं एएसि णं पंचण्हं कुलगराणं धिकारे णामं दंढणीई होतथा, ते ण मणुया थिकारेणं दंडेणं हया समाणा जाव चिद्रंति ॥ २९ ॥ णाभिस्स णं कुलगरस्म महदेवाए भारियाए कुर्च्छिस एत्य णं उसहे णामं अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थयरे पढमधम्मवरचक्रवडी समुप्पजित्था, तए णं उसमे अरहा कोसलिए वीसं पुन्वसयमहस्साइं कुमारवास-मज्हे वसइ वसइता तेवद्वि प्रव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्हे वसइ, तेवद्वि पुव्व-समसहस्साइं महारायवासमञ्ज्ञी वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणस्य-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ चोसद्विं महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिण्णिव पयाहियाए उवदिसङ उवदिसिता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिन्ड अभिसिन्डिता तेसीई पुरुवसयसहरसाई महारायवासमज्झे वसइ वसित्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुछे तस्स णं चित्तबहुछस्स णवमीपक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे भागे चइता हिरण्णं चइता सुवण्णं चइता कोसं कोद्वागारं चइता बलं चइता बाहणं चइता पुरं चइता अंतेजरं चइता विजलघणकणगरयणमणिमोत्तियसंखिलप्पवाल-रत्तरयणसंतसारसावडजी विच्छडङता विगोवडत्ता दायं दाइयाणं परिभाएता सुदंस-णाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमागे संखिदचिक्क्षयणंगिक-यम्हमंगळियपुरामाणवनद्भाणगवाइक्खगरुंखमंखघंटियगणेहिं ताहिं इह्याहिं कंताहिं पियाहि मणुक्णाहि मणामाहि उरालाहि क्लाणाहि सिवाहि भन्नाहि मंगलाहि सस्सि-रीयाहि हिस्सामणिजाहि हिस्सपल्हासणिजाहि कण्णमणणिव्युङ्कराहि अपुणरुताहि अप्रसहयाहि क्याहि अणवरयं अभिणंदंता य अभियुणंता य एवं वयासी-जय जय नंदा ! अय जय महा ! धम्मेणं क्षभीए परीसहोवसम्माणं संतिसमे भयभेरवाणं धरमे ते अविग्नं मनउत्तिकह् अभिणंदंति य अभिशुणंति य । तए णं उसमे अरहा कोसलिए नवणमालासहस्त्रेहि विच्छिकमाणे २ एवं जाव जिमाच्छाइ जहा उनवाइए जाव आउलबोलबहुलं जर्म करते विजीयाए रायहाँजीए मर्जामञ्झेणं जिमाच्छ

आसियसंग जियसित्तसुङ्कपुण्फोवयारकियं सिद्धत्यवणविजलरायममः करेमाणे ह्य-गगरहपहकरेण पाइक्रचडकरेण य मंदं २ उद्धतरेणयं करेमाणे २ जेणेव सिद्धस्थ-वणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छा २ ता असोगवरपायवस्य अहे धीयं ठावेड २ ता सीयाओ क्योरुहड २ ता सयमेवामरणालंकारं ओमयड २ ता सयमेव चडहिं सुद्वीहिं लोयं करेड़ २ ता छहेणं मत्तेणं अपाणएणं आसाडाहिं णक्खतेणं जोगमुबागएणं उग्गाणं भोगाणं राइबाणं खतियाणं चउहि सहस्सेहिं साद्धे एगं देवद्समादाय मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं प्रव्वडए ॥ ३० ॥ उसमे णं अरहा कोसलिए संबच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था. तेण परं अचेलए । जप्पभिद्यं च णं उसमे अरहा कोसलिए मुंडे मिनता अगाराओ अणगारियं पन्नइए तप्पभिद्रं च ण उसमे अरहा कोसलिए णिचं वीसहकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसम्मा उप्पर्जित नं०-दिव्या वा जाव पिंडेकोमा वा अणकोमा वा. तत्थ पिंडेकोमा वैत्रेण वा जाव क्सेण वा काए आउंट्रेजा अणुलोमा बंदेज वा नमंसेज वा जाव पज्जवा-सेज वा ते (उप्पन्न) सब्वे सम्मं सहइ जाव अहियासेइ, तए णं से भगवं समणे जाए इरियासमिए जाव पारिहाबणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगूरो जाब गुराबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्यदे छिण्णसोए निरुवछेवे संखमिव निरंजणे जन्नकणगं व जायस्वे आदरिसपिडभागे इव पागडमाने कुम्मो इन गुलिंदिए पुक्खरपत्तामिन निरुवलेने गगणमिन निरालंको अणिल इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सरो इव तैयंसी विहग इव अपिडवर्ड-गामी सागरी इय गंभीरे मंदरी इय अकंपे पढ़नी विव सम्बक्तासविसहे जीवी विव अप्पिंडहयगइति । णत्थि णं तस्य भगवंतस्य कृत्यद्व पिंडवंधे, से पिंडवंधे चाउ-व्विहे भवड, तंजह।-दव्वओ सित्तओ काल्ओ भावओ, दव्वओ इह खुळ माया से पिया में भाया में भगिणी में जाव संगंथसंध्या में हिरण्णं से सुब्र्णं में जाव उवगरणं मे अहवा समासभो सचिते वा भचिते वा मीसए वा दव्यजाए सेवं तस्स य भवड . खिताओ गामे वा णयरे वा अरण्णे वा खेरी वा खळे वा गेडे वा अंगणे दा एवं तस्स ण मदइ, कालओ योचे वा खंदे वा मुहुते वा अहोर्ते वा पक्ले वा मासे वा उक्कए वा अयणे वा संबच्छरे वा अण्णयरे वा बीहकालपिडवंधे एवं तस्स ण भवड़, भावओं कोहे वा जाव सोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवड, से णं भगवं वासावासवजं हेमंतिगम्हास गामे एनराइए जनरे पंजराइए ववगयहाससोगअरइभयपरितासे णिम्ममे णिरहंकारे छहुभूए आरंथ बासीतकाले तुअहे चंदणाणुकेवणे अरते केंद्रीन कंचणंनि य समे इह कीए अपनिवद्धे जीनिय-

मरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्यायणद्वाए अब्सुद्विए विहरइ । तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्य एगे वाससहस्से विहक्षंते समाणे प्रिम-तालस्स णयरस्स बहिया सगडमुहंसि उजाणंति गम्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरि-याए बहुमाणस्स फरगुणबहुलस्स इकारसीए पुरुवण्हुकालसमर्यस अङ्गमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्यतेणं जोगमवागएणं अण्तरेणं नाणेणं जाव चरितेणं अणुक्तरेणं तवेणं बल्लेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुर्द्वीए अज्जवेणं सहवेणं लाघवेणं सुचरियसोबचियफलनिव्वाणसमोणं अप्पाणं भावे-माणस्स अणंतं अणुत्तरे जिञ्जाचाए जिरावरणे कसिणे पश्चिपको केवलवरनाणदंसके ससुप्पणो जिणे जाए केवली सञ्चणा सन्वदरिसी सणेरहयतिरियणरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासह, तंजहा-आगडुं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कहं पिहसेवियं आवीकस्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणबयकाए जोगे एवमाई जीवाणवि सव्वमावे अजीवाणवि सन्बभावे मोन्खमगरस विसदतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खद्ध मोन्खमग्रे मम अण्णेसि च जीवाणं हियसुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सह । तुए णं से भगवं समणाणं जिन्नंबाण य जिन्नंबीण य पंच महत्व्वयाई सभावणगाई छन् जीवणिकाए धम्मं देसमाणे विहरइ, तंजहा-पुढविकाइए भावणा-गमेणं पंच महत्वयाई सभावणगाई भाषियव्याई । उसभस्य णं अरहको कोसल्यिस्स चउरासी गणा गणहरा होत्या, उसमस्स णं अरहओ कोसल्यिस्स उसमसेणपायो-क्साओ चलसीडं समणसाहरसीओ उद्योसिया समणसंपया होत्या. उसमस्स णं० बंभी-संदरीपामोक्साओ विष्णि अजियासयसाहरसीओ उद्योखिया अजियासंपया होत्था. उसमस्य पं • सेजंसपामोक्खाओं तिष्णि समणोबासगसयसाहस्सीओ पंच य साह-स्सीओ उद्योक्तिया समणोवासगर्वपया होत्या. उसमस्स णं॰ ग्रमहापामोक्काओ पंच समणोवातियासग्रसाहस्तीओ चउपणां च सहस्सा उक्कोतिया समणोवातियासंपग्रा होत्या, उसमस्स णं अरहव्यो कोसलियस्स अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरस-किन्ताईणं जिणो निव अवितहं बागरमाणाणं बतारि चउहसपुर्वीसहस्सा अद्धुमा य समा उद्योसिया ऋउदसपुन्नीसंपया होत्या, उसमस्स णं॰ णव ओहिणाणि-सहस्सा उद्योसिया . उसमस्स षं । वीसं जिणसहस्सा । वीसं वेउव्वियसहस्सा छव सवा उद्योखिया । बारस विकलमईसहस्सा छव सवा पण्णासा । बारस वाईसहस्सा क्षत्र स्वा प्रकासाः, उससस्य पं व सहक्राणाणं ठिहक्ताणाणं आगमेसिअहाणं बाबीसं अनुत्तरोबबाइयाणं सहस्ता जब य स्वा॰, उसमस्य मं॰ वीसं समजसहस्ता " विदा, यत्तालीसं वाकियासहस्या तिदा, सद्वि अंतेवासीसहस्सा सिदा, उसमस्य भी

अरहओ० बहुवे अंतेवासी अणगारा भगवंती अप्पेयइया मासपरियाया बहा उप-वाइए सञ्बन्धो अणगारवण्णाओ जाव उन्नंजाणू अहोसिरा झाणकोद्घोवगया संजमेणं नवसा अप्पार्ण भावेमाणा विहर्रति, उसमस्स णं अरहुओ॰ दुविहा अंतकरभूमी होत्या, तंजहा-जुगंतकरभूमी य परियायंतकरभूमी य, जुगंतकरभूमी जाव असंखे-जाडं परिसज्याइं, परियायंतकरभमी अंतोमहत्तपरियाए अंतमकासी ॥ ३१ ॥ उसमे णं अरहा ॰ पंचलतरासाढे अभीइछद्वे होत्या, तंजहा-उत्तरासाढाहिं चुए चइता गर्न वकंते उत्तरामाढाहि जाए उत्तरासाढाहि रायाभिसेयं पत्ते उत्तरासाढाहि संदे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइए उत्तरासाढाहिं अणंते जात्र समुप्पण्णे, अमी-इणा परिषिव्यूए ॥ ३२ ॥ उसमे णं अरहा कोसलिए वजरिसहनागयसंघयणे समचउरंमसंठाणसंठिए पंच धणसयाई उन्हें उन्नतेणं होत्या । उसमे णं अरहा० वीसं पुञ्चसयसहस्माइं कुमारवासमज्झे वसिता तेवद्रिं पुञ्चसयमहस्साइं महारज-बासमज्झे वसिता तेसीई पुव्वसयसहस्साई अगारवासमज्झे वसिना मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्यइए, उसमे णं अरहा० एगं वाससहस्यं छउमत्थपरियायं पाउणिता एगं पुव्यसयसहस्यं वासमहस्युणं केवलिपरियायं पाउणिता एगं पुव्यस-यसहस्सं बहपिंडपुण्णं नामण्णपरियायं पाउणिता चउरासीई पुन्वसयसहस्साई सञ्जाउयं पालइता जे से हेमंताणं तचे मासे पंचमे पक्की माहबहुछे तस्स ण माहबहलस्य तेरसीपक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवडे अद्भावयसेल-सिहरंसि चोहसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपत्तियंकणिसण्णे पुरुवण्डकालसमयंसि अभी-इणा णक्सतेणं जोगमुबागएणं सुसमदूसमाए समाए एगूणणवउईहि पक्सेहिं सेसेहिं कालगए वीइक्रंते जाव सम्बद्धक्यपहींगे। जं समयं च णं उसमे अरहा कोसलिए कालगए वीइकंते समुजाए छिण्णजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सम्बद्धनस्वप्पहीणे तं समयं च णं सक्षरस देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए. तए णं से सक्के देविंदे देवराया आसणं चिक्रयं पासह पासिता ओहि पर्वजड २ ता भयवं तित्थवरं ओहिणा आमोएइ २ ता एवं वयासी-परिणिव्यूए खल्ल जंबरीवे दीने भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए, तं जीयमेर्य तीयपसूप्पणमगागयाणं सकाणं देनिंदाणं देवराईणं तित्यगराणं परिनिव्याणमहिमं करेताए, तं गरुछामि णं अहंपि मगवओ तित्यगरस्य परिनिव्याणमित्रुमं करेमितिकृद् वंदर् णर्मसङ् वं० २ ता चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं तायतीसाए तायतीसहर्हिं चउहिं लोगपालेहिं जाव चउहिं चउरासीईहिं आयरक्सदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि व बहुर्हिं सोहस्मकपवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सर्दि संपरिवृदे साए उक्किद्वाए जाम तिरियमसंबोजानं

चैनसमुद्दाणं मञ्ज्ञंमञ्ज्ञेणं जेणेव अद्वावयपव्यए जेणेव भगवञ्ची तित्यगरस्स सरीरए तेणेन उदागच्छह उदागच्छिता विमणे णिराणंदे निद्रह । तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरबूलोगाहिवई अद्भावीसविमाणसयसहस्साहिवई सुलपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अरयंवरबत्यघरे जाव विजलाई भोगभोगाई भंजमाणे विहरह, तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदस्म देवरण्णो आसणं चुलड, तए णं से ईसाणे जाव देवराया आसणं चलियं पासइ २ ता ओहि पउंजइ २ ता भगवं तिस्थगरं ओहिणा आभोएड २ ता जहा सक्के नियगपरिवारेणं भाणेयव्यो जाब चिद्धइ, एवं सब्वे देविंदा जाव अखुए णियगपरिवारेणं आणेयव्या. एवं जाव भवण-वासीणं वीस इंदा वाणर्मतराणं सोलस जोइसियाणं दोष्णि जियगपरिवारा णेयञ्दा । तए णं सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणबडवाणमंतरजोइसवेमाणिए देवे एवं वयासी-स्त्रिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! णंदणवणाओ सरसाई गोसीसवरचंदणकद्वाई साहरह २ ता तओ चिइगाओ रएह-एगं भगवओ तित्यगरस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं अणगाराणं । तए णं ते० भवणवइ जाव वेमाणिया देवा णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकदाइं साहरंति २ ता तओ चित्रगाओ रएति. एगं भगवओ तित्थगरस्य एमं गणहराणं एनं अवसेसाणं अणगाराणं. तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरह, तए णं ते आभिओगा देवा खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरंति. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तित्यगरसरीरगं खीरोदगेणं **ण्हाणेइ** २ त्ता सरसेणं गोसीस**वरचंदणेणं अणुलिंप**ङ् २ त्ता हंसलक्खणं पडसाडयं जियंसेड २ ता सव्वालंकारविभृतियं करेड्, तए णं ते० भवणवड् जाव वेमाजिया० गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइंपि खीरोदगेणं ण्हावेति २ ता सरसेणं गोसीसवर-चंदणेणं अणुलिपंति २ ता अहयाइं दिव्याइं देवद्सजुयलाइं णियंसेंति २ ता सम्या-लंकारविभूसियाई करेंति, तए मं से सक्के देनिंदे देवराया ते नहवे भवणवह जाव वेमाषिए देवे एवं वयासी-सिप्पामेव भी देवाणुप्पिया ! ईहामिगउसमतुरम जाव वणलयभतिवित्ताओ तओ सिवियाओ विज्ञव्वह, एगं भगवओ तित्यगरस्य एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं अणगाराणं, तए णं ते बहवे सवणवर जाव वेमाणिया॰ तथो सिवियाओ विजन्नंति, एगं भगवभो तित्यगरस्स एगं गणहराणं एगं अव-सेसाणं अपागाराणं, तए णं से सक्ते देविंदे देवराया विमणे जिराजंदे भगवओ तित्वगरस्य विषद्भवन्मवरामरणस्य सरीरगं सीयं भारहेर २ ता विद्याए ठवेर. तर वं ते बढ़वे भवजवह बाव बेमाणिया देवा गणहराजं अवगाराण य विषडु-

जम्मजरामरणाणं सरीरगाई सीर्य आरुहेंति २ ता चिङ्गाए ठवेंति, तए णं से सबे देविंदे देवराया ते बहवे भवणवह जाव वेमाणिए देवे एवं वयासी-विष्यामेव भो देवाणुप्पिया ! तिस्थगरचिङ्गाए जाव अणगारचिङ्गाए अगुरुत्रक्रवयं च क्रंमग्गसो य भारमासो य साहरह. तए ण ते० भवणवड जाव वेमाणिया देवा तित्यगरविङ्गाए जाव अणगारचिङ्गाए जाव भारमासो य साहरेति. तए णं से सक्के देविंदे देवराया अग्गिक्रमारे देवे सहाबेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणप्पिया ! तित्य-गरनिइगाए जाव अणगारनिइगाए अगणिकायं विख्वह २ सा एयमाणत्तियं पचिपणह, तए णं ते अभिगक्तमारा देवा विमणा णिराणंदा तित्थगरचिङ्गाए जाव अणगारचिइगाए अगणिकायं विडव्वंति, तए णं से सक्के देविंदे देवराया वाउकुमारे देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-स्थिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! तित्थ-गरिवडगाए जाव अणगारिवडगाए वाउद्यायं विउठ्वह २ ना अगणिकायं उजाळेह तित्थगरसरीरगं गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइं च झामेह, तए णं ते वाउक्रमारा देवा विमणा णिराणंदा तित्थगरचित्रगाए जाव विउन्वंति अगणिकायं उजालेति तित्थगरसरीरगं जाव अणगारसरीरगाणि य झामेंति. तए णं ते बहवे भवणवड जाव वैमाणिया देवा तित्थगरस्य परिणिव्वाणमहिमं करेंति २ ता जेणेव माइं साइं विमाणाइं जेणेव साइं २ भवणाइं जेणेव साओ २ समाओ सहस्माओ तेणेव उवागच्छंति २ ता विउलाई भोगभोगाई भुंजमाणा विहरति ॥ ३३ ॥ तीसे णं समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइकंते अर्णतेहिं वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उद्राणकम्म जाव परिहायमाणे २ एत्य णं दूसमसुसमा णामं समा-काले पडिवर्जिस समणाउसो !. तीसे णं मंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आर्टिंगपुक्खरेइ वा जाव मणीहिं उक्सोशिए, तंजहा-किश्तिमेहिं चेव०. र्तासे णं भंते ! समाए भरहे॰ मण्याणं केरिसए आयारमानपढोयारे प० ? गोयमा ! तेसिं मणुयाणं छव्यिहे संघयणे छव्यिहे संठाणे यहइं धण्डं उच्चे उच्चेत्रणं अहण्णेणं अंतोमहत्तं उक्कोसेणं पुव्यक्कोबीआउयं पाठेंति २ ता अप्येगह्या णिर्यगामी जाव देवगामी अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति जाव सम्बद्धक्साणमंदां करेति, तीसे णं समाए तओ वंसा समुप्पिकत्वा, तंजहा-अरहंतवंसे चक्कवद्विवंसे दसारवंसे, तीसे र्ण समाए तेवीसं तित्वयरा इक्कारस चक्कवट्टी गव बळदेवा गव बासदेवा समप्पाजित्वा ॥ ३४ ॥ तीसे णं समाए एकाए सागरोवमकोडाकोकीए वाबाकीसाए वाससहरसेहिं कणियाए काले वीरकंते अणंतिहिं बण्णपजनेहिं तहेव जान परिहामीए परिहायमाणे २

एरथ णं दूसमा णामं समाकाळे पडिवजित्सइ समणाउसो !, तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारमावपडोयारे मविस्सइ? गोयमा! बहुसम-रमणिजे भूमिमागे भविस्तइ से जहाणामए-आर्लिंगपुक्खरेइ वा सुइंगपुक्खरेइ वा जाव णाणार्माणपंचवण्णेहिं कितिमेहिं चेव अकितिमेहिं चेव. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स बासस्स मणुयाणं केरिसए आयारभावपढोयारे पण्णते ? गो०! तेसिं मणुयाणं छिन्बहे संघयणे छिन्बहे संठाणे बहुईस्रो रयणीओ उड्डं उचतेणं जहण्णेणं अंतोमुहुनं उद्योसेणं साइरेगं वाससयं आउयं पाळंति २ ता अप्येगइया मिर्यगामी जाव सञ्बद्धक्खाणमंतं करेंति. तीसे णं समाए पच्छिमे तिभागे गणधम्मे पासंड-थम्मे रायथम्मे जायतेए धम्मचरणे य बोच्छिजिस्सइ ॥ ३५ ॥ तीसे णं समाए एकवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्तंते अणंतिहिं वण्णपज्जवेहिं गंभ० रस० फासपज्जवेहिं जाव परिद्वायमाणे २ एत्थ णं दूसमदूसमा णामं समाकाले पडिव-जिस्सइ समणाउसो !. तीसे णं भंते ! समाए उत्तमकद्वपत्ताए भरहरस वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए मंमाभूए कोलाहरूभूए समाणुभावेण य खर्फरुसधूलिमइला दुव्यिसहा वाउला भयंकरा य वाया संवद्गा य वाइंति, इह अभिक्खणं २ ध्रमाहिति य दिसाओ समंता रउत्सका रेणुक्छुसतमपडलिंगालोया समयछुक्खयाए णं अहियं चंदा सीयं मोच्छिहित अहियं स्रिया तिवस्यंति, अदुत्तरं च णं गोयमा ! अभिक्खणं २ अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खनमेहा अग्गिमहा विज्ञमेहा विसमेहा अजवणि-जोदगा वाहिरोगवेयणोदीरणपरिणामसल्लिः अमणुण्णपाणियगा चंढाणिलपहयति-क्खघाराणिवायपउरं वासं वासिहिंति, जेर्णं भरहे वासे गामागर्णगरखेडकञ्बडम-डंबदोणमुहपट्टणासमगयं जणवयं चउप्पयगवेलए खहयरे पिक्खसंघे गामार्ज्यप-यारणिरए तसे य पाणे बहुप्ययारे इक्खगुच्छगुम्मलयवक्षिपवालंकुरस।इए तणवण-स्सइकाइए ओसहीओ य विद्धेसेहिति पन्वयमिरिडोंगस्त्यलमहिमाइए य वेयन्नगिरि-क्जे विरावेहित, सिक्छिबलविसमगत्ताणिक्युक्ययाणि य गंगासिध्वजाई समीकरे-हिति, तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूसीए केरिसए आगारमावपड्रोयारे अविस्सइ ? गोयमा ! भूमी अविस्सइ इंगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकतेलु-यभूया तत्तसमजोहभूया धूलिबहुका रेणुबहुका पंकबहुका पणयबहुका चलणिबहुका बहुणं घरणियोयराणं सत्ताणं दुविकमा यावि मविस्सइ । तीसे णं मेते । समाए मरहे वासे मणुयाणं केरिसण् आयारभावपडोयारे भविस्सह ? गोयमा ! मणुया मविस्पंति दुरुवा दुवण्या दुर्गथा दुरसा दुषासा अभिद्रा अकेता अप्यिमा अद्यमा

अमणुण्णा अमणामा हीणस्तरा दीणस्तरा अणिद्वस्तरा अकंतस्तरा अप्ययस्तरा अमणामस्तरा अमणुण्णस्तरा अणादेजवयणपद्यायाया थिल्लजा कृडकवडकलहर्वय-वेरणिरया मजायाइक्सप्पहाणा अकजणिचुज्या गुरुणिओगविणयरहिया य विक-लस्या पस्टणहकेसमंतुरोमा काला खरफरुससमावण्णा फुरुसिरा कविलपलियकेसा बहण्हारुणिसंपिणद्धदृहंसणिज्जरूवा संकुडियबलीतरंगपरिवेहियंगर्मगा जरापरिणयव्य येरगणरा पविरलपरिसिडियदंतसेढी उच्मडघडमुहा विसमणयणवंकणासा वंकवली विगयभेसणमुद्दा द्दुविकिटिभसि॰भफुडियफरसच्छ्वी चित्तरंगमंगा कच्छ्खसरामि॰ भूया खरतिक्खणक्खकंडुइयविकयतण् टोलगइविसमसंधिवंधणा उकड्यद्वियविमत्त-दुब्बलकुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरुवा कुद्वाणासणकुसेजकुभोइणो असुइणो अणे-गवाहिपीलियंगमंगा खलंतयिब्मलगई णिरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिया विगयचेट्टा नट्ट-तेया अभिक्लणं २ सीउण्ह्यारफरतवायविज्झिडियमलिणपंट्रओगुंडियंगमंगा बह-कोहमाणमायालोभा वहुमोहा असुभदुक्खभागी ओसण्णं धम्मसण्णसम्मनपरिभट्ट। उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेता सोळसवीसइवासपरमाउसो बहुपुत्तणत्तुपरियालपणयबहुला गंगासिधओ महाणईओ वेयनं च पन्वयं णीसाए बावत्तरिं णिगोयवीयं यीयमेता बिलवासिणो मण्या भविस्संति. ते णं भंते! मण्या किमाहारिस्संति ? गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिध्ओ महाणईओ रहपहमित्तवित्थराओ अक्खसो-यप्पमाणमेत्तं जलं वोज्झिहिति, सेविय णं जले बहुमच्छकच्छमाइण्णे, णो चेव णं आउबहुडे भावस्तइ, तए णं ते मणुया स्रुग्गमणमुहुत्तंति य स्रुत्थमणमुहुतंति य बिलेहिंतो पिद्धाइरसंति बिले॰ २ ता मच्छकच्छमे यलाइं गाहेहिंति मच्छकच्छमे थलाई गाहेचा सीयायवतत्तेहि मच्छकच्छमेहि इक्कवीसे वाससहस्साई विर्ति कम्पे-माणा विहरिस्तंति । ते णं भंते ! मण्या णिस्सीला जिन्वया जिल्या जिल्या णिप्यचन्त्राणपोसहोववासा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा खुडाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किया कहिं गन्छिहिति कहिं उपविज्ञहिति ? गो॰! ओसण्णं पर-गतिरिक्खजोणिएसं उवविज्ञिहिति । तीसे णं भंते ! समाए सीहा वन्या विगा सैविया अच्छा तरच्छा परसारा सरमसियालबिरालसुणगा कोलसुणगा ससगा चित्तगा चित्रलगा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा सोहाहारा क्रिणमाहारा कालमासे कालं किया कहिं गरिछहिंति कहिं उवबज्जिहिंति ? गी० ! ओसण्णं गरगतिरिक्खजोण-एसं टबवजिहिंत, ते णं मंते ! ढंका कंका पीलमा मग्रुमा सिही ओसण्णं मंसाहारा जाव कर्हि गच्छिहिति कर्हि उवविष्विहिति ? गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसं उवविकाहिति ॥ ३६ ॥ तीसे णं समाए स्कवीसाए

बारासहरसेहिं काळे बीहकते आगमिरसाए उस्सप्पिणीए सावणबहुरूपिदवए बालवकरणंसि अमीइणक्खते बोइसपढमसमए अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवृद्वीए परिवृद्धेमाणे २ एत्य णं दूसमद्समा णामं समाकाले परिव-जित्सइ समणाउसो ! । तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स बासस्स केरिसए आगार-भावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भंभाभूए एवं सो चेव इसमदुसमावेदओ जेयव्यो. तीसे णं समाए एकवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्ते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवृष्ट्वीए परिवृष्ट्वेमाणे २ एत्य णं दसमा णामं समाकाले पश्चित्रजित्सह समणाउसो !॥ ३७॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुक्खलसंबद्दए णामं महामेहे पाउब्मविस्सइ भरहप्पमाणमिते आयामेणं तमणुम्बं च णं विक्खंमबाहक्षेणं. तए णं से पुक्खलसंबद्दए महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्मइ खिप्पामेब पतणतणाइसा खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ खिप्पामेव पविज्जुयाहता खिप्पामेव जुगमुसलम् द्विप्पमाणमित्ताहि भाराहि ओघमेषं सत्तरतं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमिभागं इंगालभूयं सुम्मुरभूयं छारियभूयं तत्तकवेक्रगभूयं तत्तसमजोइभूयं णिव्याविस्सइ, तंसि च णं पुरुखलसंबद्दगंसि महा-मेहंसि सत्तरतं णिबङ्गयंसि समाणंसि एत्य णं खीरमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सङ भरहप्पमाणमेते आयामेणं तयणुर्वं च णं विक्खंभबाहक्षेणं, तए णं से खीरमेहे णामं महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेब जुगमुसलमुद्धि जाव सत्त-रतं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहवासस्स भूमीए वण्णं गंधं रसं फासं च जणइस्सइ. तंसि च णं खीरमेहंसि सत्तरतं णिवहयंसि समाणंसि इत्य णं घयमेहे णामं महामेहे पाउच्मविस्सइ, भरहप्पमाणमेत्रे आयामेणं, तयण्ड्वं च णं विक्खंभवाहक्षेणं, तए णं सं घयमेहे॰ महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव वासं वासिस्सइ, जेणं भर-इस्स वासरस भूमीए सिणेहभावं जणहरसइ, तंसि च णं घयमेहंसि सत्तरतं णिवइबंसि समाणंति एत्य णं अमयमेहे णामं महामेहे पाउब्मविस्सइ भरहप्पमाणमित्रं आयामेणं जाव बासं वासिस्सइ, जेणं भरहे बासे इन्खगुच्छगुम्मरूयवहितणपव्वगहरियग-बोसिह्मवालंकुरमाइए तणवणस्मइकाइए जणइस्सइ, तंसि च णं अमयमेद्देसि सत्त-रतं शिवइयंति समाणीत एत्य णं रसमेहे णामं महामेहे पाउच्मविस्सइ भरहप्पमान णमित्ते आयामेणं जाव वासं वासिस्सइ, जेणं तेसि बहुणं स्वस्तुग्च्स्पुम्मलयविद्याप-पञ्चयगहरियगओसहिपवालंकरसाईणं तिसबद्धयकसायअंबिलमहरे पंचविहे रसिवेसेसे जमहत्सङ्, तए णं भरहे वासे भविस्सङ् परूउद्दश्खगुच्छगुम्मळमदक्षितणपष्वयगहरिय-ग्रभोसहिए, उनन्वियत्यपत्तप्रवालंकरपुष्फफलस्युइए सहोवमोगे यावि भविरसङ् ॥३ ८॥

तए णं ते मणुया भरहं वासं पस्टक्तसमुच्छपुम्मख्यवक्रितणपञ्चयगहरियगओसहियं उम्बियतयपत्तपदालपक्षवंकुरपुष्फफलससुद्दयं स्द्रहोवमोगं जावं २ बावि पासिहिति पासिता विकेहितो णिद्धाइरसंति णिद्धाइता हद्भतद्वा अण्णमण्णं सहावित्संति २ त्ता एवं वहस्संति-जाए णं देवाण्पिया ! भरहे वासे परूडरनस्त्रगुच्छगुम्मलयबह्रितण-पव्ययगहरियग जाव सहोवभोगे. तं जे णं देवाणुप्पिया ! अम्हं केइ अजप्पिमेड असुभं कृषिमं आहारं आहारिस्सइ से णं अणेगाहिं छायाहिं वजाणिजेत्तिकह संठिइं ठवेस्संति २ ता भरहे वासे सुहंसुहेणं अभिरममाणा २ विहरिस्संति ॥ ३९ ॥ तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्य केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सड ? गो॰ ! बहसमरमणिजे भूमिमागे भविस्सइ जाव कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेत्र, तीसे णं भंते ! समाए मणुवाणं केरिसए आयारभावपडीयारे भविस्सइ ? गीयमा ! तेसि णं मणुयाणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे बहुईओ रयणीओ उन्नं उन्नतेणं जहण्णेणं अंतोसुहत्तं उक्कोसेणं साइरेगं वाससयं आउयं पालेहिति २ ता अप्पेगड्या णिरयगामी जाव अप्पेगइया देवगामी, ण सिज्झेति । तीसे ण समाए एझबीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते अणंतिहैं वण्णपज्जवेहिं जाव परिवर्द्धमाणे २ एत्थ णं इसमसुसमा णामं समाकाले पिडविजिस्सइ समणाउसी!, तीसे णं भंते! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपढोयारे भनिस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे जाव अकित्तिमेहि चेव, तेसि णं भंते ! मणुयाणं केरिसए आयारभावपडीयारे भवि-स्सइ १ गो० । तेसि णं मणुयाणं छिन्वहे संघयणे छिन्वहे संठाणे बहुई धणूई उहुं उन्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उन्नोसेणं पुञ्चकोडीआउयं पालिहिति २ ता अप्येग-इया णिरयगामी जाव अंतं करेहिंति, तीसे णं नमाए तओ वंसा समुप्पजिस्संति. तं --तित्थगरवंसे चक्कवद्विवंसे दसारवंसे, तीसे ण समाए तेवीसं तित्थगरा एकारस चक्कवडी णव बलदेवा णव वासुदेवा समुप्पजिस्संति, तीसे णं समाए सागरीवम-कोडाकोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणियाए कारे वीइकांते अणंतिहिं वण्ण-पज्जवेहिं जाव अणंतगुणपरिवृद्धीए परिवृद्धमाणे २ एत्य णं गुसमदूसमा णामं समा-काले पडिवाजिस्सइ समणाउसो !. सा णं समा तिहा विभाजित्सह, पढमे तिमामे मज्झिमे तिमार्गे परिछमे तिमार्गे, तीसे णं मंते ! समाए पढमें तिमाए भरहस्स वागस्स केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिजे जाव मविस्सइ, मणुयाणं जा चेद ओसप्पिणीए पश्चिमे तिभागे बसव्यया सा माजि-यन्त्रा, कुलगरनजा उसभसामिनजा, अण्णे पढंति-तीसे णं समाए पढमे तिभाए इमे पण्णरस कुरुगरा समुप्पजिस्संति, तंजहा-समई जाब उसमे, सेसं तं चेव, इंड-

णीईको पहिलोमाओ णेयव्याओ, तीसे णं समाए पढमे तिमाए रायधमी जाव धममचरणे य वोच्छिजिस्सइ, तीसे णं समाए मिज्यमपिष्ठमेसु तिमागेसु जा पढममिज्यमेसु वत्तव्यमा ओसप्पिणीए सा भाणियव्या, सुसमा तहेव सुसमासुसमा-वि तहेव जाव छव्विहा मणुस्सा अणुसजिस्सेति जाव सिणवारी ॥ ४० ॥ बीमो वक्तारो समसो ॥

से केणदेणं मंते । एवं बुच्ह-भरहे वासे २ ? गोयमा । भरहे णं वासे वेयहुत्स पन्त्रयस्स दाहिणेणं चोइसुत्तरं जोयणसयं एगारस य एगूणवीसइमाए जोयणस्स अबाहाए दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेणं चोद्दमुत्तरं जोयणसयं एकारस य एगूण-वीसङ्भाए जोयणस्स अवाहाए गंगाए महाणईए पन्नत्यिमेणं सिंधूए महाणईए पुरस्थिमेणं दाहिणहुमरहमजिसल्लतिमागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं विणीया णामं रायहाणी पण्णता, पाईणपढीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा दुवालसञीयणायामा णवजीयणविच्छिण्णा धणवइमङ्गिम्माया चामीयर्पायारा णाणामणिपञ्चवण्ण-कविसीसगपरिमंडियामिरामा अल्कापुरीसंकासा पमुद्दयपक्षीलिया पचक्खं देव-लोगभूया रिद्धित्यिमियसमिद्धा पमुद्दयजणजाणवया जाव परिक्ता ॥ ४९ ॥ तस्य णं विणीयाए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्रवही समुप्पजित्या, महयाहिमवैतमहंतमलयमंदर जाव रजं पसासेमाणे विहरह । विह्ञो गमो राय-वण्णगस्स इमो-तत्य असंखेजकालवासंतरेण उप्पज्जए जसंसी उत्तने अभिजाए सत्तवीरियपरक्रमगुणे पसत्यवण्णसरसारसंघयणतणुगबुद्धिधारणमेहासंठाणसीळप्यगई पहाणगारवच्छायागहए अणेगवयणप्यहाणे तेयआउनलवीरियजुत्ते अझसिर्घणाण-वियलोहसंकलणारायवद्दरजसहसंघयणदेहधारी अस १ जुग २ मिगार ३ वद्धमाणग ४ महमाणग ५ संस्त ६ छत ७ वीयणि ८ पडाग ९ चक्क १० णंगल ११ मुसल १२ रह १२ सोत्थिय १४ अंकुस १५ चंदाइच १६-१७ अगि। १८ ज्य १९ सागर २० इंदण्झम २१ पुद्धवि २२ पछम २३ कुंजर २४ सीहासण २५ दंड २६ फुम्म २७ गिरिवर २८ द्वरगवर २९ वरमञ्ज ३० कुंडल ३१ गंदावत ३२ षणु १२ कॉत २४ गागंद ३५ भवणविमाण ३६-अणेगलक्खणपसुत्वसुवि-भत्तितकर्वरणवेसभारः उष्टाग्रहलोमवालग्रकमालणदम्उनावतपसत्यलोमविरङ्-यसिरिवच्छच्छम्णविदछक्चछे देसकेतसुविभन्तदेहचारी तस्वार्विरस्सिवोहियवरकमछ-विद्यस्य व्यवस्थाने ह्यपोसणकोसराणिकमपसस्यपिद्धंतविद्यक्षेत्रे परमुप्पळकुंदजाइजुह्नि-यबर नेपगणागपुरफसारंगलुक्रगंधी छत्तीसाहित्यपसत्यपत्विवगुणेहिं जुत्ते अञ्चोक्छि-ज्यामको प्रभावतमस्योजी बिद्धद्वजिनम्डरूपम्पपुरुपनंदे नंदे इव सोसमार जयन-

मणणिब्बुइकरे अक्खोमे सागरो व थिमिए धणवइव्व मोगसमुद्यसहव्वयाए समरे अपराइए परमविक्रमगुणे अमरवद्शमाणसरिसहवे मणुयवई भरहचक्रवटी भरहं भुंजइ पण्णद्वसन् ॥ ४२ ॥ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया क्याड् आउह्चरसालाए दिव्वे चक्कर्यणे समुप्पजित्था, तए णं से आउहघरिए भरहस्स रण्णो आउहघरसालाए दिव्यं चक्करयणं समुप्पण्णं पासइ पासिता हट्टाट्टिचित्तमाणंदिए णेदिए पीइमणे परमसोम-णस्सिए हरिमवसविसप्पमाणहियए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ ता जेणामेव बाहिरिया उनद्राणसाला जेणामेव भरहे राया तेणामेव उनागच्छड २ ना कायल जाव जएणं विजएणं वद्धावेइ २ ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं आउह-घरसालाए दिव्वे चक्कर्यणे समुप्पण्णे तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियहुयाए पियं णिवेएमि पियं मे भवड, तए णं से भरहे राया तस्म आउह्यरियस्म अंतिए एयमट्टं सोन्वा णिसम्म हृद्र जाब सोमणस्सिए वियसियवरक्रमलणयणवयणे नस्स आउह्मिरयस्स अहामालियं मउडवजं ओमोयं दलयइ २ ता विटलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयह २ ता सकारेइ सम्माणेइ स॰ २ ता पर्डिवसजेड । नए णं मे भरहे राया कोडुंबियपुरिसे सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयं रायहाणि साञ्चितरवाहिरियं आसियसंमज्जियांसनसङ्गरत्थंतरवीहियं मंचाइ-मंचकलियं णाणाविहरागवसणकसियझयपदागाइपडागमंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसी-सरारसरत्तर्यदणकल्सं चंदणघडसुक्य जाव गंधुद्ध्याभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवद्दिभ्यं करेह कारवेह करेला कारवेला य एयमाणितयं पश्चिपणह । तए णं ते कोइंबिय-पुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हद्धः करयल जाव एवं सामिति आणाए विणएणं वयणं पिंडसुणंति २ ता मरहस्स० अंतियाओ पिंडणिक्खमंति २ ता विणीयं रायहाणि जाव करेता कारवेता य तमाणतियं पचप्पिणंति । तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेब उवागच्छइ २ ता मज्जणघरे अणुपियसइ २ ता समुत्तजा-लाकुलाभिरामे विश्वित्तमणिरयणकृष्टिमतले रमणिजे व्हाणमंहवंसि णाणामणिरयणभ-त्तिचित्तंसि व्हाणपीढंसि ग्रुहणिसण्णे युहोदएहि गंघोदएहिं पुष्फोदएहिं सुद्धोदएहि य पुण्णे कञ्चाणगपवरमञ्जणविहीए मजिए तत्य को उयसएहिं बहुविहेहिं कञ्चाणगपवर-मज्जणावसाणे पम्हल्सुकुमालगंधकासाइयल्राहियंगे सरससुरहिगोसीसचंदणाण्लित्तगत्ते अह्यसुमह्म्धद्सर्यणसुस्वृद्धे सुद्भालाबण्णगविकेवणे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहा-रद्धहारतिसरियपालंबपलंबमाणकडिसुत्तसुक्यसोहे पिणद्धरेविजगअंगुलिजगलक्यिग-यललियकयाभरणे णाणामणिकडगतुडियशंभियभुए अहियसस्सिरीए कुंडलउजोइ-याणणे मन्डदितसिरए हारोस्थ्यमुक्यरह्यवच्छे पालंबपलंबमाणसुक्रमपडनत्त्रीको

मुहियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणगविमलमहरिहणिउणोवियमिसिमिसितविर्इयसु-सिलिट्टविसिट्टलट्टसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए, किं बहुणा?, कप्परक्कए चेव अलं-कियविभृतिए गरिंदे सकोरंट जाव चउचामरवाळवीइयंगे मंगलजयजयसहकयालोए अणेगगणणायगदंडणायग जाव द्यसंधिवालसद्धि संपरिवृष्ठे धवलमहामेहणिमाए इष जाव मसिव्य पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पिडणिक्समह २ सा जेणेव आउद्देषरसाला जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्य गमणाए । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहुवे ईसरपभिइओ भरहं रायाणं पिद्वओ २ अणुगच्छंति । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहुईओ-जुजा चिलाइ वामणिवडमीओ बन्बरी बर्जनयाओ । जोणियपल्डवियाओ इंसिणियथारुगिणियाओ ॥ १ ॥ लासियलउसियद्मिली निहलि तह आरबी पुलिंदी य । पक्कणि वहलि मुरुंडी सबरीओ पारसीओ य ॥ २ ॥ भरहं रायाणं पिट्टओ २ अणुगच्छंति, तए णं से भरहे राया सव्विद्वीए सव्वज्ञंडए मञ्जबंदणं सञ्जयमुद्रुणं सञ्जायरेणं सञ्जविभूईए सञ्जालंकार्विभूसाए सञ्ज-नुडियसहस्रिणणाएणं महया इङ्गीए जाव महया वरनुडियजमगसमगप्पत्राइएणं संखपणवपडहमेर्रज्ञहरिखरमुहिमुरयमुइंग्ट्रंदहिणिग्घोसणाइएणं जेणेव आउहघर-साला तेणेव उदागच्छा उदागच्छिमा चहरयणं पासह २ सा आउद्दघरसालाओ पडिणिक्खमह २ ता जेणेव बाहिरिया उबद्राणसाला जेणेव सीहासणे तेणेब उबा-गच्छ २ ता सीहासणवरगए प्रत्थाभिमृहे सण्णिसीयड २ ता अहारस सेणिप्पसे-णीओ सहावेइ २ ता एवं वयामी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उस्सुक्टं उद्धरं उक्किद्रं अदिजं अमिजं अमडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडडज-कित्यं अणेगतालायराण्चरियं अणुद्धयमुद्दंगं अमिलायमह्नदामं प्रमुद्धयपक्षीलियमप्र-रजणजाणवयं विजयवेजइयं चक्करयणस्य अद्वाहियं महामहिमं करेह २ ता ममेय-माणितयं खिप्पामेव पचिपणह, तए णं ताओ अट्ठार्स सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रजा एवं वृत्ताओ समाणीओ हुद्र जाद विणएणं वयणं पडिमुर्णेति २ त्ता भरहस्स रण्णो अंति-याओ पडिणिक्खमेन्ति २ ता उस्सक्तं उक्तरं जाव करेंति य कारवेंति य क॰ २ ता जेणेव भरहे राथा तेणेव उवागच्छंति २ ता तमाणतियं पचप्पणंति ॥ ४३॥ तए णं से दिव्वे बक्करयणे अद्वाहियाए महामहिमाए जिव्यत्ताए समाणीए आउह-घरसालाओ पिडणिक्खमइ २ ता अंतलिक्खपिडकणे जक्खसहस्ससंपरिवृडे दिव्व-तुडियसहस्रिणणाएणं आपूरेंते चेव अंबरतलं विणीयाए रायहायीए मर्ज्झमञ्झेणं णिमाच्छड़ २ ता गंगाए महाणईए दाहिणिक्षेणं कुछेणं पुरस्थिमं दिसि मागहतित्था-भिमते प्याए यावि होत्था. तए णं से भरहे रामा तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए

महाणईए दाहिणिक्षेणं कूलेणं पुरिश्यमं दिसिं मागहितत्थाभिमुहं पयायं पासइ २ ता हट्टतुद्व जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणप्पिया ! आमिसेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह इयगयरहपवरजोहकलियं चाउरेगिणि सेण्णं सण्णाहेह, एयमाणत्त्रयं पश्चप्पिणह, नए णं ते कोडंबिय जात्र पश्चप्पिणंति, तए णं से भरहे राया जेणेव मजाणघरे तेणेव उवागच्छइ २ ता मजाणघरं अणुपविसइ २ ता समुत्तजालाकुलाभिरामे तहेव जाव धवलमहामेहणिग्गए इव जाव ससिव्व पियदंसणे णरवर्द्द मज्जणघराओ पिडिणिक्सम्बद्ध २ ना ह्यगयरहृपवरवाह्णभडचडगरपहगर-संकुलाए संणाए पहिमिकत्ती जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव आभिसेके हित्थरयणे तेणव उदागच्छइ २ ता अंजणिगिरकूडमण्णिभं गयवई णरवई दुरूढे । तए णं से भरहाहिने णरिदे हारोत्ययसुक्रयर्ड्यवच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मजडदिन-सिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवमहे महयरायवसमकप्पे अन्महियरायतेयलच्छीए दिप्पमाण पसत्यमंगलसएहि संयुव्यमाण जय२सहक्रयालोए हत्थिसंघवरगए सकोरंटम-हदामेणं छत्तेणं धरिज्ञमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्भव्यमाणीहिं २ जनखसहस्ससं-परिवृडं वेसमण चेव धणवर्ड अमरवड्सिणमाइ इङ्गीए पहियकित्ती गंगाए महाणईए दाहिणिहेणं कृतेणं गामागर्णगर्लेडकञ्बडमटंबदोणमुहपृष्णासमसंबाहमहस्समंहियं थिमियमेइणीयं वसुद्धं अभिजिणमाणे २ अग्गाइं त्राइं रयणाइं पडिच्छमाणे २ तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे २ जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे २ जेणेव माग-हतित्थे नेणेव उवागच्छा २ का मागहतित्थस्य अदरसामंते दुवालसजीयणायामं णवजीयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंबावारणिवेसं करेइ २ ता वन्नहरयणं सद्दावंड सद्दावड्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया! ममं आवासं पोसह-सौलं च करेहि करेला समेयमाणतियं पचप्पिणाहि, तए णं से वहुइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वृत्ते समाणे हहतुद्वचित्तमाणंदिए पीइमणं जाव अंजलिं कट्ट एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पिडसुणेइ २ ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसारुं च करेड़ २ ना एयमाणत्तियं खिप्पामेव पश्चप्पिणइ, तए ण से मरहे राया आमि-सेकाओ हत्थिरयणाओ क्वोरुहइ २ ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता पोसहसालं अणुपविसङ् २ ता पोसहसालं पमज्जङ २ ता दब्भसंथार्गं संथरङ २ ता दञ्मसंथारगं दुरुहद् २ ता मागइतित्थकुमारस्स देवस्स अद्वमभतं पिण्हद् २ ता पोसहय।लाए पोसहिए इैव बंभयारी उम्मुझमणियुवण्णे ववग्यमालावण्णगविलेवणे

१ रूहिसद्दोऽयं । २ णो पोसहिएत्ति अद्वो पोसहे तद्दार्वहदेवचिंतणवज्जणि-जत्तणओ ।

णिक्सित्तसत्यमुसछे द्व्यसंघारोवगए एगे अबीए अद्वमभत्तं पडिजागरमाणे २ विहरइ । तए णं से भरहे राया अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पिडणि-क्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेत्र उवागच्छह २ ता कोडुंबिय-पुरिसे सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया! हयगथरहपवरजो-हकलियं नाटरंगिणि सेणं सण्णाहेह चाउग्धंटं आसरहं पडिकप्पेहत्तिकर् मञ्जणधरं अणुपविमाइ २ त्ता ममुत्त तहेव जाव धवलमहामेहणिगगए जाव मज्जणघराओ पर्डिणि-क्खमइ २ ना हयगयरहपबरबाहण जाव पहियकिती जेणेव बाहिरिया उबद्वाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आमरहे तेणेव उवागच्छा २ ना चाउग्घंटं आसरहं दुहरी ॥ ४४ ॥ तए णं से भरहे राया चाउरघंटं आमरहं दुरूढे ममाणे ह्यगयरहपवरजोहकलियाए सद्धिं संपरिवडे महयामडचडगरपहगरवंदपरिक्सिते चक्करयणदेखियममे अणेगराय-वरसहस्साणुयायसमे महया उक्तिद्विसीहणायबोलकलकत्वेणं पक्खिभयमहासमुहर-वसूर्यं पिव करेमाणे पुर्रात्थमदिसासिस्हे मागहतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहर जाव से रहबरस्स कुप्परा उल्ला, तए णं से भरहे राया तुरगे निमिण्हड़ २ ना रहं ठवेड़ २ ता थणुं परामुसइ, तए णं तं अङ्ग्रगयबालवंदइंदथणुसंकासं वरमहिसदरियदप्पि-यदत्वधणरिंगरइयसारं उरगवरपवरगवलपवरपरहुयभमरकुलणीलिणद्वधंतधोयपर्हं णिउणोवियमिसिमिसिनमणिरयणघंटियाजालपरिक्खितं तडितरुणकिरणतवणिज्यबद्ध-चिथं दहरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालद्वचंदविधं कालहरियरनापीयमुक्किबहरूहा-रुणिसंपिणद्भजीवं जीवियंतकरणं चलजीवं धणुं गहिस्रण से णरवई उसुं च वरवइर-कोडियं वहरसारतोंडं कंचणमणिकणगरयणघोरद्वसुकयपुंचं अणेगमणिरयणविविहसु-विरहयणामनिषं वहसाई ठाइकण ठाणं आययकणाययं च काळण उसमुदारं हमाई वयणाई तत्थ भाणीअ से णरवई-इंदि सुणंतु भवंतो बाहिरओ खळु सरस्स जे देवा । णागासरा सवण्णा तेसिं ख पमो पणिवयामि ॥ १ ॥ हंदि सुणंतु भवंतो अध्भित-रओ सरस्स जे देवा । णागासुरा सुबण्णा सब्बे मे ते विसयवासी ॥ २ ॥ इतिकष्ट उसं णिसिरइत्ति-परिगरणिगरियमञ्ज्ञो वाउद्भयसोभमाणकोसेज्ञो । चित्तेण सोभए धणुषरेण इंदोव्य पश्चक्यं ॥ ३ ॥ तं चंचलायमाणं पंचमिनंदीयमं महाचावं । क्रजाइ बामे हत्ये जरवहजो तंमि विजयंमि ॥ ४॥ तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसद्वे समाणे खिप्पामेव द्वारुस जोयणाई भंता मागहतित्याहिक्डस्स देवस्स भव-र्णसि निषद्य, तए णं से मागहतित्याहिवई देवे भवणंसि सरं णिबड्मं पासइ २ ता आसर्ते रहे चंडिक्स कुविए मिसिमिसेमाने तिवलियं भिउडि निडाले साहरह २ ता एवं बयासी-केस णं भी ! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपैतलक्खणे हीणपुण्णहसेलका.

हिरिसिरिपरिविजाए जे णं मम इमाए एयाणुरुवाए दिव्वाए देविश्वीए दिव्वाए देव-जुईए दिन्वेणं दिन्वाणुभावेणं छदाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पि अप्पुस्मुए भव-र्णास सरं णिसिरइत्तिकतृ सीहासणाओ अब्सुद्धेइ २ ता जेणेव से णामाहयंके सरे तेणेव उवागच्छइ २ ना तं णामाहयंकं सरं गेण्हइ णामंकं अणुप्पवाएइ णामंकं अणुप्पवाएमाणस्य इमे एमारुवे अब्भत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकृपे समु-प्पजित्था-उप्पणे खलु भो ! जंबुद्दीव दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरत-चक्कवटी तं जीयमेयं तीयपद्भुप्पण्णमणागयाणं मागहतित्यकुमाराणं देवाणं राईण-मुवस्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्म रण्णो उवस्थाणियं करेमित्ति-कड़ एवं संपेहेड संपेहेसा हारं मउडं कुंडलाणि य कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहर्यकं मागहतित्थोदगं च गेण्हद् गिण्हिना नाए उद्मिद्वाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए सीहाए सिम्घाए उद्भुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाण २ जेणेव भरहे राया तंणेव उवागच्छह २ ता अंतलिक्ख-पिंडवण्णे सिर्विखिणियाई पंचवण्णाई वत्थाई पवरपरिहिए कर्यरूपरिमाहियं दसणहं सिर जाव अंजिल करू भरहं रायं जएणं विजएणं वदावेड २ ता एवं वयासी-अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे पुरन्त्रिमेणं मागहतित्थमेराए तं अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्तीकिकरे अहण्णं देवाणुप्पियाणं पुरच्छिमिक्षे अंतवासे तं पिक्टछंतु णं देवाणुप्पिया ! ममं इमेयास्वं पीइदाणंतिकद् हारं मजडं कुंडलाणि य कडगाणि य जाव मागहतित्थोदगं च उवणेइ, तए णं से भरहे राया मागहतित्यकुमारस्स देवस्स इमेयास्वं पीइदाणं पिडच्छइ २ ना मागद्वतित्यकुमारं देवं सकारेड् सम्माणेड् स॰ २ ता पिडविसजेड्, तए णं से भरहे राया रहं परावत्तेह २ ता मागहतित्थेणं छवणसमुदाओ पश्चत्तरह २ ता जेणव विजयसंधावारणियेसे जेणेव बाहिरिया उबद्वाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ सा नरए णिनिण्डड २ सा रहं ठवंड २ सा रहाओ पश्चोरहड २ सा जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ ता मजाणघरं अगुपविसङ् २ ता जाव संसिव्य पियदंसणे णरवर्ड मजणघराओ पिडणिक्समइ २ ता जेणेव मोयणमंडवे तेणेव उदागच्छह २ ता भोय-णमंडवंसि सहासणवरगए अद्वमभत्तं पारेइ २ ता भोयणमंडवाओ पिडणिक्समइ २ ता जेणेन बाहिरिया उबद्वाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेन उन्नामच्छ्य २ ता सीहा-सणवरगए पुरत्थामिमुहे जिसीयइ २ ता अद्वारस सेविप्परीजीओ सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया ! उस्सुकं उक्करं जाव मागइतिस्वकुमारस्स देवस्स .अडाहियं महामहिमं करेह २ शा मम एयमाण शियं पश्चिपणह्, तए णं ताओ अँद्वारस

सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वृत्ताओ समाणीओ हट्ट जाव करेंति २ ता एयमा-णत्तियं पत्रप्पिणंति, तए णं से दिव्ये नकर्यणे वहरामयतुंचे लोहियक्खामयारए जंबू-णयणेर्माए णाणामणिखुरप्पथालपरिगए मणिमुत्ताजालमृतिए सर्णदिघोसे सर्विखिणीए दिन्वे तरुणरविमंडलणिमे णाणामणिरयणघंटियाजालपरिक्खिते सन्वोडयसरमिक्समः आसत्तमहृदामे अंतलिक्खपिडकणे जक्खसहृस्ससंपरितृडे दिव्बतुहियसह्सण्णिणाएणं प्रेंतं चेव अंवरतलं णामेण य सुदंसणे णरवड्स्स पढमे चक्करयणे मागहतित्यक्रमा-रस्म देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह्रघर्यालाओ पिटिण-क्खमड २ ता दाहिणपचित्थमं दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥ ४५ ॥ तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणपचित्यमं दिसि वरदामतित्याभि-मुहं पयायं चावि पासइ २ ता हहतुहु • कोडं बियपुरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिपामेव भो देवाणुप्पिया ! इयगयरहपवर वाउरेगिणि सेण्णं सण्णाहेह आभि-सेकं हत्थिर्यणं पिककप्पेहिनिकट् मज्जणवरं अणुपविसह २ ता तेणेव कमेणं जाव घवलमहामेहणिग्गए जाव सेयवरचामराहि उद्भुव्वमाणीहि २ माइयवरफलयपवर-परिगरने इयवरवम्मकवयमा द्वासहस्सक्रिल । उक्कडवरम उहतिरी इपडागक्षय वेजयंति -चामरचलंतछत्तंषयारकलिए असिक्षेवणिखग्गचावणारायकणयकप्पणिसललउडभिडि-मालधणुहृतोणसरपहरणेहि य कालणीलरुहिरपीयसुक्किल्र्यणेगर्चिधस्यसण्णिबेहे अप्पोडियसीहणायछेलियहयहेसियहत्थिगुलुगुलाइयअणेगरहसयसहस्सघणघर्णेतणी-हम्ममाणसहसहिएण जमगसमगर्मभाहोरंभिकाणितखरमुहिमुगुंदसंखियपरिलिवचगप-रिबाइणिवंसवेणुविपंचिमहृइकच्छमिरिगिसिगियकलतालकंसतालकरभ्राणुत्यिएण महया सहस्राण्णणाएण सयलमवि जीवलोगं पूर्यते बलवाहणसमुद्रपूर्ण एवं जक्खसहस्स-परिवृद्धे वेसमणे चेव धणवई अमरवहसण्णिभाइ इड्डीए पहियकिती गामागरणगर-खेरकन्यह तहेव सेसं जाव विजयसंघावारणिवेसं करेड् २ ला वहुद्रयणं सहावेड् २ ला एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मम आवसहं पोसहसालं च करेहि. ममेयमाणक्तियं पश्चिपणाहि ॥ ४६ ॥ तए णं से आसमदोणमुहगामपद्दणपुरवर-खंबाबार्गिहावणविभागकुसले एगासीइपएस सब्वेस चेव वत्थूस णेगगुणजाणए पंडिए विहिण्यू पणयालीसाए देवयाणं बख्यपरिच्छाए पोमिपासेस अत्तसालास कोइ-णीस य वासघरेस य विभागकुसळे क्रेजे वेउक्ते य दाणकरमे पहाण**वृद्धी** अलयाणं भूमियाण व भावणे जलवलगुहासु जंतेसु परिहासु व कालमाने तहेव सहे बत्यूप्य-एसे पहाणे गटिमणिकण्णक्तसावक्रिवेहियगुणदोस्रवियाणए गुगन्ने सोरूसपासायकरूण-कुसके न्दरसद्भिवकप्यवित्ययमई र्णदावर्ते य बद्धमाणे सोतिययस्यग तह सव्वंओ-

मइसण्णिवेसे य बहुविसेसे उदंडियदेवकोहुदारुगिरिखायवाइणविभागकुसळे-इय तस्स बहुगुजहु थवई रयणे णरिंदचंदस्स । तबसंजमणिन्बिष्टे कि करवाणीतुबद्धाई ॥ १ ॥ सो देवकम्मविद्विणा खंघावारं परिंदवयणेणं । आवसहभवणकल्यिं करेइ सन्वं मुहु-तेणं ॥ २ ॥ करेता पवरपोसहघरं करेड २ ता जेणेव भरहे राया जाव एयमाण-त्तियं खिप्पामेव पश्चिप्पणइ, सेसं तहेव जाव मज्जणघराओ पिडणिक्खमइ २ ता जेणेव बाहिरिया उद्गष्टाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उदागच्छइ ॥ ४७ ॥ तए णं तं धरणितलगमणलहुं तओ बहुलक्खणपसत्थं हिमनंतकंदरंतरणिवायसंबिह्न-यचित्ततिणिसद्क्रियं जंबूणयमुक्तयकूबरं कणयदंडियारं पुलयवरिंदणीलसासगपवाल-फलिह्बररयणलेड्ड्मणिविद्दुमविभृसियं अडयालीसाररइयनवणिजपट्संगहियजुत्ततुंवं पचिसयपिसयणिम्सियणवपद्रपृद्वपरिणिद्वियं विसिद्धलद्वणवलोहबद्धकम्मं हरिपहरणर-यणसरिसचक्कं क्रह्मेयणइंदणीलमालगसुसमाहियबद्धजालकडगं पसत्यांवच्छिण्णसम्युरं पुरवरं च गुत्तं सुकिरणतवणिजजुत्तकलियं कंकटयणिजुत्तकपणं पहरणाणुजायं खेड-गकणगधणुमंडलम्यवर्सत्तिकोततोमरसर्सयवत्तीसतोणपरिमंडियं जत्तं हलीमहबलागगयदंतचंदमोत्तियतणसोक्षियकुंदकुडयदरसिंदुवारऋंदलवरफेणणि-गरहारकासप्पगासधवलेहिं अमरमणपवणजङ्गचवलसिम्बगामीहिं चउहिं चामराकण-गविभूसियंगेहिं तुरगेहिं सच्छत्तं सज्झयं मघंटं सपडागं सुक्यसंधिकम्मं सुसमाहि-यसमरकणगर्गमीरतुक्रघोसं वरकुप्परं सुचक्कं वरणेगीमंडलं वरधारानोंडं वरवहरबद्ध-तुंबं वरकंचणभूसियं वरायरियणिम्मियं वरतुरगसंपउत्तं वरसारहियुसंपरगहियं वर-पुरिसे वरमहारहं दुरूढे आरूढे पवर्रयणपरिमंडियं कणयसिंखिणीजालसीभियं अरज्झं सोयामणिकणगतवियपंकयजासुयणजलणजलियसुयनोडरामं गुंजद्धवंधुजी-वगरत्तार्हगुलगणिगरसिंदरुरुइलकुंकुसपारेवयचलणणयणकोइलदसणाबरणरइयाइरेगर-त्तासोगकणगकेसयगयताळसुरिंदगोवगसमप्पमप्पमसं विवफलसिलप्पबालउद्विनस्र-सरिसं सब्बोजयद्यरहिकुसुमञासत्तमह्नदामं क्रसियसेयञ्ज्ञयं महामेहरसियगंमीरणिद्ध-घोसं सनुहिययकंपणं पमाए य सस्सिरीयं णामेणं पुहिवविजयलंभंति विस्कुयं स्रोग-विस्युयजसोऽह्यं चाउग्घंटं आसरहं णरबई हुस्ढे, तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आमरहं दुस्टे समाणे सेसं तहेव दाहिणामिसुहे वरदामतित्येणं लवणससुई ओगा-हड जान से रहनरस्स कुप्परा उल्ला जान पीइदाणं से, गवरं चूडामणि च दिव्यं उर-त्थगेविजां सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य जाव दाहिणिक्ने अंतवाके जाव अद्वाहियं महामहिमं करेंति २ ता एयमाणतियं प्रयप्पिणंति, तए णं से दिव्ये नकर-यणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए विव्वताए समाणीए

आउहघरसालाओ पिडणिक्खमइ २ ता अंतिलिक्खपिडवणी जाव पूर्रते चेव अंधर-तळं उत्तरपश्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिसुहे पयाए यावि होत्था, तए णं से भरहे रागा तं दिव्यं चक्करयणं जाव उत्तरपचित्यमं दिसं तहेव जाव पचित्यमदिसामिसुहे पभासतित्येणं लवणसमुद्दं ओगाहेइ २ ता जाव से रहचरस्स कुप्परा उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य आम-रणाणि य सरं च णामाहयंकं पमासतित्थोदगं च गिण्हइ २ ता जाव पश्चत्थिमेणं पभासतित्यभेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी जाव पश्चत्यिमिक्षे अंतवाले. सेसं तहेव जाव अद्राहिया णिव्यना ॥४८-४९॥ तए णं से दिव्ये चक्करयणे पभासतित्य-कुमारस्त देवस्य अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्यत्ताए ममाणीए आउहचरसालाओ पिडणिक्खमइ २ ता जाब पूरेंते चेव अंबरतंत्र सिंधूए मह णईए दाहिणिहेणं वृत्रेणं पुरिच्छमं दिनिं सिंधुरेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था । तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं सिंधूए महाणईए दाहिणिक्रेणं क्लेणं पुरस्थिमं दिसिं सिंधुदेवी-भवणाभिमुहं प्यायं पासह २ ता हहुनुहुन्तित तहेव जाव जेणेव सिंधूए देवीए भवणं तेणेव उवागच्छइ २ ता निध्ए देवीए भवणस्य अदृरसामंते दुवालसजीय-णायामं णवजोयणविच्छिणं वरणगरसारिच्छं विजयसंघावारणियसं करेड जाव सिंधुदेवीए अट्टमभनं पगिण्हर २ ता पोसहसालाए पोसहिए इत्र बंभवारी जाव दब्ससंयारीवगए अद्रमभक्तिए सिंधुदेविं सणसि करेसाणे २ चिद्रह । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तंसि परिणममाणंसि सिंधूए देवीए आसणं चलइ, तए णं सा सिंधुदेवी आसणं चलियं पासइ २ ता ओहि पर्वजड़ २ ता भरहं राय ओहिणा आभोएइ २ ता इमे एयारूवे अञ्मतिथए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-जित्था-उप्पण्णे खळु मो ! जंबुहीने दीने भरहे वासे मरहे णामं राया चाउरंत-चक्कवही, तं जीयमेयं तीयप्रसूप्पणमणागयाणं सिंधूणं देवीणं भरहाणं राईणं उब-त्याणियं करेताए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्यो उदायाणियं करेमित्तिकह् कुंभद्रसहस्सं रयणिततं णाणामणिकणगरयणभतितिताणि य दुवे कणगभद्दासणाणि य कडगाणि य तुर्डियाणि य जाव आभरणाणि य गेण्डइ २ ता ताए उक्किट्राए जाव एवं क्यासी-अमिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहणां देवाणु-प्पियाणं विसयवासिणी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणतिकिकरी तं पडिरकेंत् णं देवाणुष्पिया ! सम इसं एयारूवं पीइदाणंतिकष्ट् कुंभद्वसहस्सं रयणचित्तं गाणामणिकगमकडगाणि य जाब सो चेब गमो जाव पडिविसजेड, तए णं से भरहे रावा पोसहसालाओं पडिणिक्समइ २ ता नेणेव मजायघरे तेणेव

बहुसमरमणिजे य भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे, ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे य तहिं सामिया पभूया आगरवई य मंडलवई य पट्टणवई य सन्वे घेतूण पाहुडाई आभरणाणि य भूसणाणि य रयणाणि य वत्थाणि य महरिद्दाणि अण्णं च जं विरेट्ठं रायारिहं जं च इच्छियव्यं एयं सेणावइस्स उवर्णेति मत्थयक्यंजलिपुडा, पुणरवि काळण अंजलि मत्थर्याम पणया तृब्से अम्हेऽत्थ सामिया देवयं व सरणा-गया मो तुन्मं विसयवासिणोनि विजयं जंपमाणा सेणानइणा जहारिहं ठविय सकारिय विसज्जिया णियत्ता सगाणि णगराणि पद्रणाणि अणुपविद्वा, नाहे सेणावई सविणओ घेतृण पाहुडाई आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य पुणरवि ने सिंधुणा-मधेर्जं उत्तिष्णे अणहसासणवले, तहेर भरहस्स रण्णो णिवेएइ णिवेइना य अप्पि-णिना य पातुडाई सकारियमम्माणिए सहरिसे विमज्जिए सर्ग पडमंडवमङ्गए, तए णं सुसेणं सेणावई ण्हाए जिमियभुनुतरागए समाणे जाव सरसगोसीसचंदणुक्सि-नगायसरीरे उपि पासायवरगए फुहमाणेहिं मुइंगमत्थएहि बनीसहबद्धेहिं णाडएहिं बरतरुणीसंपडतेहिं उवणिक्रजमाणे २ उवगिजमाणे २ उवलाखि(लिभ)जमाणे २ महया हयण्डणीयबाह्यतंतीनलतालत् डियचणम् ईगपद्धप्पबाह्यरवेणं इद्वे सहफरि-सरसम्बगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरइ ॥ ५२ ॥ तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ मुसेणं सेणायई सहावेइ २ ता एवं नयासी-गच्छ णं खिप्पामेव भो देवाण्पिया! तिमिसगुद्दाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्य क्लाडे विहाडेहि २ ता मम एयमाणतियं पत्रिपणाहिति, तए णं से मुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वृत्ते समाणे हद्वतुद्वचित्तमाणंदिए जाव करयळपरिग्गहियं॰ सिरसावत्तं मत्थए अंजिर्लि करु जाव पडिसुणेइ २ ना भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव सए आवासे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छा २ ता दन्मसंथारमं संथ-रइ जाव कयमालस्स देवस्स अद्वमभत्तं पनिण्हइ पोसहसालाए पोसहिए इव बंभ-यारी जाब अद्रममत्तेसि परिणममार्णास पोसहसालाओ पडिणिक्समइं २ ता जेणेव मजाणघरे तेणेव उवायच्छा २ ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाई मंगलाई बत्थाई पवरप-रिहिए अप्पमहर्ग्यामरणालंकियसरीरे मज्जणघराओ पडिणिक्खमह २ 📆 जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिह्नस्स दुवारस्स कवाडा तेजेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावहस्स बहुचे राईसरतलबरमाडंबिय जाव सत्थवाहप्पभिनमो ग्रसेणं सेणावइं पिट्टओ २ अणुगच्छंति, तए णं तस्स ग्रसेणस्स सेणावइस्स बहुईओ खुजाओ चिलाइयाओ जाव इंगियचितियमस्थियवियाणियाओ णिडणकुसलाओं विणीयाओ जाव अणुगच्छांत । तए णं से सुसेणे सेणावई सन्विद्वीए सम्बज्धेर

जाब णिग्बोसणाइएणं जेणेव तिमिसगृष्टाए दाहिणिश्चस्स दुवारस्स कवाटा तेणेव उवागच्छइ २ ता दंडरयणं परामुसइ, तए णं तं दंडरयणं पंचलइयं वहरसारमझ्यं विषासणं सव्वयभुसेण्णाणं खंधावारे णरवहस्स गहुदरिविसमपब्भारगिरिवरपवायाणं समीकरणं संतिकरं सुमकरं हियकरं रण्णो हियड्च्छियमणोर्हपूरगं दिव्वमप्पडिह्यं दंडरयणं गहाय सत्तद्व पयाइं पचोसकःइ पचोसिक्कना तिमिरसगुहाए दाहिणिक्रस्स दुवारस्य कवाडे दंडरयणेणं महया २ सहेणं तिक्खुतो आउटेइ, तए णं तिमिसगु-हाए दाहिणिह्नस्स दुवारस्स क्वाडा ग्रुसेणसेणावर्णा दंहरयणेणं मह्या २ सहेणं तिखुत्तो आउडिया समाणा महया २ सहेणं कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाई २ ठाणाइं पचोसिकत्या, तए णं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिश्रस्स दुवारस्य कवांड विहाडेइ २ ना जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छड़ २ ता जाव भरहं रायं करयलपरिगाहियं जएणं विजएणं वद्धावेड २ ता एवं वयासी-विहाडिया णं देवाणुष्यिया ! तिमिसगृहाए दाहिणिऋस तुवारस्य कवाडा एयण्णं देवाणुष्पियाणं पियं णिवेशमि पियं मे भवड. तए णं से भरहे राया मुसेशस्स सेणावइस्स अंतिए एयमहं सोचा निसम्म हहतुद्वचित्तमाणंदिए जाव हियए मुसेणं सेणावइं सक्तरेइ सम्मा-णेइ सकारिता सम्माणिता कोडंबियपुरिसे सद्दावेड २ ना एवं वयासी-खिप्पामेव भो वेवाणुष्पिया ! आभिसेकं हत्थिर्यणं पिडकप्पेह हयगयरहपवर तहेव जाव अंजण-गिरिकृडसण्णिभं गयवरं णरवई दुरूढे ॥ ५३ ॥ तए णं से भरहे राया मणिरयणं परा-मसङ तोतं चउरेगृलप्पमाणमित्तं च अणग्घं तंसियं छलंसं अणोवमजुद्दं दिव्वं मणिरयण-पइसमं वेरुक्रियं सम्बभूयकंतं जेण य मुद्धागएणं दुक्खं ण किंचि जाव हवड् आरोग्गे य सब्बकालं तेरिच्छिपदेवमाणुसक्या य उवसम्या सब्वे ण करेति तस्य दुक्खं, संगा-मेऽवि असत्थवज्यो होड् णरो मणिवरं धरेंतो ठियजोव्वणकेसअनद्वियणहो हवड् य सञ्बागर्यावेप्पमुको, तं मणिरयणं गहाय से णरवर्ड इत्थिरयणस्य दाहिणिहाए कंमीए णिक्खिवइ, तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्ययसक्यरइयवच्छे जाव अभरवइ-सण्णिभाए इङ्कीए पहिंचिकती मणिर्यणकरुखोए चक्कर्यणदेसियमस्ये अणेगरायसह-स्साणुयायमगो मह्या उक्किद्विसीहणायबोलकलकल्दोणं समुहरवभूवं पिव करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिक्षे दुवारे तेणेव उवागच्छइ २ ता तिमिसगुई दाहि-णिक्षेणं द्वारेषं अईइ ससिन्य मेहंभयारणियहं । तए णं से भरहे राया छत्तलं दुवा-जसंसियं अहुकण्णियं अहिगरणिसंदियं अहुसोवण्णियं कागणिरयणं परामुसह । तए णं तं चउरंगुरूप्यमाणमित्तं अद्वसुक्ष्णं च विसहरणं अउलं चउरंससंठाणसंठियं समतलं माण्यमाणजोगा जन्हो लोगे चरंति सन्वज्ञणपण्यवगा, ण इव चंदी ण इव

नत्य सूरे ण इव अग्गी ण डव तत्थ मणिणो तिमिरं णासैति अंधयारे जत्य तयं दिव्वं भावजुर्न दुवालसजोयणाई तस्स छेसाउ विवद्धंति तिमिरणिगरपडिसंहियाओ, रत्ति च सव्यकालं संधावारे करेड आलोयं दिवसभूयं जस्स प्रभावेण चक्कवट्टी, तिमिसगृहं अईड सेण्णसिंहए अभिजेत्तं, विड्यमद्भग्हं रायवरे कागणि गहाय तिमिसगुहाए पुरच्छिमिङ्गम्बत्थिमिक्षेमुं कडिएमुं जीयणंनरियाई एंचधणुसयविक्संभाई जीयणुजीय-कराई चक्कणेमीसंठियाई चंदमंडरूपडिणिगासाई एगूणपण्णं मंडळाई आलिहमाणे २ अणुप्पविसड, तए णं सा तिमिनगुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोवणंतरिएहिं जाव जोयणु-जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलिहिजामाणेहिं २ खिप्पामेव आलोगम्या उजो-यभूया दिवसभूया जाया यानि होत्था ॥ ५४ ॥ तीसे णं तिमिनगुहाएं बहुमज्झंदसभाए एत्य णं उम्मरगणिमरगजलाओ णामं दुवे महाणईओ पण्णत्ताओ, जाओ णं निमिय-गुहाए पुरच्छिमिष्ठाओं भित्तिकडगाओं पनृहाओं ममाणीओं पन्नस्थिमेणं निर्धुं महा-णइं समप्पेति, से केणद्वेणं भंते ! एवं वुचर्-उम्मरगणिमरगजलाओ महाणइंओ ? गोयमा ! जण्णं उम्मरगजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कहं वा सक्तरं वा आसे वा हत्थी वा रहे वा जोहे वा मणुस्से वा पक्लिप्पड़ तण्णं उम्मग्गजला महाणंड तिक्खतो आहुणिय २ एगंते थलंसि एडेइ, जण्णं णिसगाजलाए सहाणईए तणं वा पतं का कहुं वा सकरं वा जाव मणुस्सं वा पिक्किपाइ तथ्यं शिमनगजना महाणई तिक्खुत्तो आह-णिय २ अंतो जलांस णिमजावेइ, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुचाइ-उम्मग्गणिममा-जलाओ महाणईओ, तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे अणेगराय० सहया उक्तिद्विसीहणाय जाब करेमाणे सिंधूए महाणईए पुरच्छिमिल्लेणं कुलेणं जेणेव उम्म-ग्गजला महाणई तेणेव उवागच्छइ ? शा वहुइग्यणं सहावेइ २ शा एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उम्मरगणिमरगजलासु महाणईमु अणेगखंभसयसण्णि-विहे अयलमकंपे अभेजकवए सालंबणबाहाए सञ्वरयणामए ग्रहसंक्रमे करेहि करेता मम एयमाणत्त्रयं खिप्पामेव पचप्पिणाहि, तए णं से वहूइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हहुनुहुन्तित्तमाणंदिए जान विषाएणं० पहिसुणेइ २ ता खिप्पामेव उम्मरग-णिमग्गजलासु महाणईसु अणेगखंभसयसण्णिविद्वे जाव सुहसंक्रमे करेह २ ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छह २ ता जाव एयमाणतियं पचपिपणइ, तए णं से भरहे राया सखंघावारबले उम्मग्गणिमग्गजलाओ महाणईओ तेहिं अणेगखंभगयसिणवि-डेहिं जाव सहसंक्रमेहिं उत्तरह, तए णं तीसे तिमित्सगुहाए उत्तरिक्रस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया २ कोंचारवं करेमाणा सरमरस्म सगाई २ ठाणाई पचोसकित्या ॥५५॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरङ्गभरहे वासे यहवे आवाडा णामं चिलाया परि-

वसंति अङ्गा दिता विता विच्छिण्णविज्ञलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायस्वर्यया आओगपओगसंपज्ञा विच्छाद्रियपउरभत्तपाणा बहुदासीदासगी-महिसगवेलगप्पभूयां बहुजणस्य अपरिभूया स्रा वीरा विकंता विच्छिण्णविउलबल-बाहणा बहस समरसंपराएस लढलक्खा बाबि होत्या. तए णं तेसिमावाडचिलायाणं भण्णया क्याई विसयंसि वहुई उप्पाइयसयाई पाउन्भवित्था, तंजहा — अकाले गज्जियं अकाले विज्ञया अकाले पायवा पुष्फंति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णचंति, तए णं ते आवाडचिलाया विसर्वसि वहुई उप्पाइयसयाई पाउब्भूयाई पासंति पासिता अण्णमण्णं सहार्वेति २ ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विसर्वसि बहुई उप्पाइयसयाई पाउब्भूयाई तंजहा-अकाले गज्जियं अकाले विज्ञया अकाले पायबा पुष्फंति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णचंति, तं ण णजाइ णं देवाणु-प्पिया ! अम्हं विसयस्स के मन्ने उवहवे भविस्सइत्तिकह् ओहयमणसंकृप्पा चिंतासोग-मागरं पविद्वा करयलपल्हत्थमुहा अदृज्झाणोवगया भूमिगयदिद्विया झियायति, तए णं से भरहे राया चकरयणदेशियमभी जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणं तिमिस-गुहाओ उत्तरिक्षेणं दारेणं णीइ ससिव्व मेहंधबारणिवहा, तए णं ते आवाडचिलाया भरहरस रण्णो अग्गाणीयं एजामाणं पासंति २ ता आग्रुकता रुद्रा चंडिकिया कुविया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णं सद्दार्वेति २ ता एवं वयासी-एस णं देवाणुध्यया : केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्यचाउद्देशे हिरिसिरिपरिवज्ञिए जे णं अम्हं विसयस्स उवरि विरिएणं हरुवमागच्छह तं तहा णं चतामो देवाणुण्पिया ! जहा णं एस अन्हं विसयस्य उवरिं विरिएणं णो हव्बमागच्छइत्तिकट्ट अण्णमण्णस्स अंतिए एयमद्वं पिडसुणिति २ ता सण्णद्भवद्भाम्मयकन्या उप्पीलियसरासणपिट्या पिणद्धगे-विजा बद्धआविद्धविमलबरचिंघपटा गहियाउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गा-णीयं तंणेव उवागच्छंति २ ता भरहस्स रण्णो अम्माणीएण सर्द्धि संपलम्मा यावि होत्या, तए णं ते आवाङचिलाया भरहस्स रण्णो अगगणीयं हयमहियपवरवीर-घाइयविविद्यिचिषद्यपद्यागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पिडसेहिंति ॥ ५६॥ तए णं से सेणाबलस्स णेया वेडो जाव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं आवाडचिन्हाएहिं इयमहियपनरवीर जान दिसोदिसिं पिडसेहियं पासइ २ ता आसुरुते रहे चंडिकिए कुविए मिलिमिसेमाणे कमलामेखं आसर्यणं दुस्हद्द २ ता तए णं तं असीइमंगुल-मृत्तियं णवणउइमंगुलपरिणाहं अद्वतयमंगुलमाययं बत्तीसमंगुलमृतियतिरं चउरगुल-कम्णागं वीसइअंगुलबाहागं चउरंगुलजाणूकं सोलसअंगुलजंघागं चउरंगुलमृसियखुरं सत्तोलीसंबत्तवत्वियमञ्ज्ञं हेसि अंगुलपणयपदं संजयपदं संगयपदं सजायपदं पसत्य-

पहुं विसिद्धपट्टं एणीजागुण्णयवित्ययगद्भपट्टं वित्तलयग्रसणिवायग्रेकेकणपद्दारपरिवाजि-यंगं तबणिज्ञथासगाहिलाणं वरकणगद्भफुह्रथासगविचित्तरयणरज्जुपासं कंचणमणिकण-गपयरगणाणानिहुषंटियाजालमुत्तियाजालएहिं परिसंडिएणं पट्टेण सोममाणेण सोममाणं क्क्रेयणइंदणीलम्रगयमसारगङ्गमुह्मंडणरइयं आविद्यमाणिक्सुत्तगविभूसियं कणगाम-यपरामसुक्रयतिलयं देवसङ्विगप्पियं सुरवरिंदवाहणजोग्गावयं सुरूवं दृहुज्जमाणपंचचा-रचामरामेलगं घरेतं अणन्भवादं अमेलणयणं कोकासियबहलपत्तलच्छं सयावरणणव-कणगतवियतवणिजतालुजीहासयं सिरिआभिसेयघोणं पोक्खरपत्तमिव सिललविंदुजुयं अर्चनलं चंचलसरीरं चोक्खनरगपरिव्यायगो विष हिलीयमाणं २ खुरचलणननपु-डेहिं धरणियलं अभिद्वणमाणं २ दोवि य चलणे जमगसमगं मुद्दाओ विणिग्गमंतं व सिम्घयाए मुणालतंतुउदगमवि णिस्साए पक्कमंतं जाहकुलस्वपचयपसत्थबारसा-वत्तगविसुद्धलक्खणं सुकुलप्पस्यं मेहाविभइयविणीयं अणुयतणुयसुकुमाललोमणिदः च्छवि युजायअमर्मणपवणगरुलजङ्गचवलसिरघगामि इसिमिव खंतिखमए सुसीस-मिव पचक्खयाविणीयं उदगहुयवहृपासाणपंमुक्ह्मसस्वरसवालुइञ्चतङ ऋडगविसमप-ब्भारगिरिदरीसुलंघणपिक्षणणित्थारणासमत्यं अचंडपाडियं दंडयाइं अणंसुपाइं अका-लतालुं च कालहेसिं जियणिइंगवेसगं जियपरिसहं जनजाईयं मिल्रहाणिं सुगपत्तसुव-ण्णकोमलं मणाभिरामं कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावई कमेण समभिरूढे कुवल-यदलसामलं च र्यागयरमंडलिंगं सनुजयविणासणं क्यगरयणदंडं णवसालियपुप्य-सुरहिगंधि णाणामणिलयभतिचित्तं च पहोयमिसिमिसिततिक्खघारं विव्वं सम्गर्यणं छोए अणोबमाणं तं च पुणो वंसरम्खसिंगद्विदंतकालायसविउललोहदंढयवरवहरमेयगं जाब सब्बत्यअपहिह्यं कि पुण देहेसु जंगमाणं गाहा-पण्णासंगुलदीहो सोलस से अंगुलाइं विच्छिण्यो । अद्वंगुलसोणीको जेह्नपमाणो असी भिष्मको ॥ १ ॥ असिर-यणं णरवहस्स हत्थाओं तं गहिकण जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छह २ ता आवाडचिलाएहिं सदिं, संपत्काने यावि होत्या । तए णं से सुरोणे सेणानई ते आवाडचिलाए इयमहियपवरवीरघाइय जाब दिसोदिसि पहिसेहेड ॥ ५७ ॥ तए णं ते आवाडचिकाया ससेणसेणावरूणा ह्यमहिय जाव परिसेष्टिया समाणा भीया तत्था वहिया उम्बन्धा संजायभया अत्यामा अवला अवीरिया अपुरिसकार्परक्रमा अधारणिजमितिकह् अणेगाई जोयणाई अवक्रमंति २ ता एगयओ मिळागंति २ ता जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छंति २ ता वाह्यवासंवारए संयरिति २ ता वालुयासंथारए दुस्हेति २ ता अद्भागताई पिगण्डीत २ ता बाह्मवासंथारी-वनया उत्ताणना अवसणा अद्भगमित्तया वे देसि इन्हदेवया भेहमुहा णामं णामकु-

मारा देवा ते मणसीकरेमाणा २ चिडंति । तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अहम-भत्तंति परिषममाणंति मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं आसणाई चलंति, तए णं ते मेहसहा णागकुमारा देवा आसणाई चलियाई पासंति २ ता ओहि परंजंति २ ता आवाडचिकाए ओहिणा आभोएंति २ ता अण्णमण्णं सहावेति २ ता एवं क्यासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुहीचे दीवे उत्तरब्रुमरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए महाणइए वालुयासंघारोवगया उत्ताणगा अवसणा अद्रमभत्तिया अम्हे कुरूदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिद्वंति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं आवाङचिलायाणं अंतिए पाउच्मविनएतिक हु अण्यमण्णस्य अंतिए एयमद्वं पिंडसुणेति पिंसुणेता ताए उक्किट्राए तुरियाए जाव वीइवयमाणा २ जेणेव जंबुद्दीवे दीवे उत्तर-हुमरहे वासे जेणेव सिंघू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति २ ता अंतलिक्खपडिवण्णा सिंबिखिणियाई पंचवण्णाई वत्थाई पवरपरिहिया ते आवाह-विलाए एवं वयासी-हं भी आवाडचिलाया! जण्णं तुन्भे देवाणुप्पिया! वालुया-संधारोवगया उत्ताणगा अक्सणा अद्भमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णाग-कुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिट्टह तए णं अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुब्भं कुलदेवया तुम्हं अंतियण्णं पाउन्भूया, तं वदह णं देवाणुप्पिया! किं करेमी के व मे मणसाइए ?. तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुद्दाणं णागकुमाराणं देवाणं अंतिए एयमट्टं सोचा जिसम्म हद्वतद्वित्तमाणंदिया जाव हियया उद्घाए उद्वेति २ ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति २ ता करयलपरिगाहियं जाव मत्थए अंत्रिक्ति करू मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं बद्धावेति २ ता एवं चयासी-एस णं देवाणुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरिपरिवज्ञिए जे णं अम्हं विसयस्स उबरिं विरिएणं हुव्यमागच्छइ, तं तहा णं घतेह देवाणुप्पिया ! जहा णं एस अम्हं विसयस्य उवरिं विरिएणं णो हव्यमागच्छइ, तए णं ते मेह्सुहा णागकुमारा देवा ते आवाहचिलाए एवं वयासी-एस णं भी देवाणुष्पिया! भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी महिच्चिए महज्जुइए जाव महासोक्के, णो खछ एसं सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा किल्परेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंध-क्वेण वा सत्यप्पक्षांगेण वा अभिगप्पक्षांगेण वा संतप्पक्षांगेण वा उद्दवित्तए पिंडसेहि-त्तए बा, तहाविय णं तुन्भं पियद्वयाए भरहस्स रण्णो उवस्तरां करेमोत्तिकह तेसिं आवाडनिलायाणं अतियाओ अवक्संति २ ता वेडव्वियससुरघाएणं समीहणंति २ ता मेहाणीयं विजन्यंति २ ता जेनेव भरहस्स रण्नो विजयनखंघाचारणिवेसे तेनेव उवागच्छंति २ ता उप्पि विजयनसंभासारणिवेसस्य सिप्पामेव पराणतमागंति २ ता रेज सताः -

खिप्पामेन विजुवार्गति २ ता खिप्पामेन जुगमुसलमुट्टिप्पमाणमेताहि धाराहि ओघमेघं सत्तरत्तं वासं बासिनं पक्ता यावि होत्था ॥ ५८ ॥ तए णं से भरहे राया उप्पि विजयक्लंधाबारस्स जुगमुसलमुट्टिप्यमाणमेताहि घाराहि ओधमेषं सत्तरतं वासं वासमाणं पासइ २ ता चम्मरयणं परामुसङ्, तए णं तं सिरिवच्छ-सरिसरूवं वेढो माणियम्यो जाव दुवालसजोयणाई तिरियं पवित्थरइ तत्थ साहि-बाई, तए णं से भरहे राया सर्वधावारबळे चम्भरयणं दुस्हइ २ ता दिव्वं छनरयणं परामुस्द्र, तए णं णवणउहसहस्यकंचणसलागपरिमंडियं महरिहं अउउसं णिव्यणसुपसत्थविसिङ्कलृहकंचणसुपुट्टदंडं मिउराययवहलट्टअरविंदकाण्णगसमाणरूवं वित्थिपएसे य पंजरविराइयं विविद्यात्तिन्तं मणिमुत्तपवाळतनतवणिज्ञपंचवण्णिय-घोयरयणस्वरइयं रयणमरीईसमोप्पणाकप्पकारमणुरंजिएब्रियं रायलच्छिचियं अजु-णस्रवण्यपंडुरपन्नत्थुयपद्घदेसभागं तहेव तवणिज्ञपष्टभम्मंतपरिगयं अहियसस्सिरीयं सारयरयणियरविमलपिदपुण्णचंदमंडलसमाणस्यं णरिंदवामप्पमाणपगडवित्यहं कुमुय-संडथकां रण्णो संचारिमं विमाणं म्रायववायबुद्धितोसाण य खयकरं तवगुणेहिं लखं-अहयं बहुगुणदाणं उद्धण विवरीयसहक्रयच्छायं । छत्तरयणं पहाणं सुदुह्नहं अप्प-पुण्णाणं ॥ १ ॥ पमाणराईण नवगुणाण फलेगदेयमागं विमाणवासेवि दुक्रहतरं वग्घारियमञ्जदामकलानं सारयधनलन्भरययणिगरप्पगःसं दिव्नं छत्तरयणं महि-वहस्स धर्णियलपुण्णइंदो । तए णं से दिव्वे छत्तरयणे भरहेणं रण्णा परासुद्रे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाई पवित्थरह साहियाई तिरियं ॥ ५९॥ तए णं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्तुवरिं ठवेइ २ ता मणिरयणं परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्य वित्थमार्गस ठवेइ, तस्य य अणड्वरं चारुह्वं सिलणिहि-अत्यमंतमेत्तसाळिजवगोह्ममुमगमासतिळकुळत्थसद्विगनिप्पावचणगकोह्वकोत्थुं भरिकं-गुवरगरालगअपेगधण्णावरणहारियगअल्लगम्लग्रहलिङ्काउयतउसतुंबकालिंगकविट्टअं-बअंबिटियसव्यणिप्पायए सुकुसके गाहायहर्यणेति सव्यज्जनीसुयगुणे । तए णं से गाहावहरराणे भरहस्स रण्णो तहिवसप्पद्रण्णणिष्फाइयपूर्याणं सव्वधण्णाणं अणेगाई कुंभसहस्साई उबद्ववेह, तए णं से भरहे राया चम्मरयणसमारूदे छत्तरयणसमीच्छण्णे मणिरयणकउजोए समुग्गयमूएणं सुहंसुहेणं सत्तरत्तं परिवसङ्---णवि से खुहा ण विलियं णेव भयं णेव विज्ञए दुक्खं । भरहाहिवस्स रण्णो खंधावारस्सवि तहेव ॥ १ ॥ ६० ॥ तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरतंति परिणममाणंसि इमेबाह्वे अन्भत्यिए चितिए परिथए मणोगए संकप्पे समुप्पिकारथा-केस णं भी । अपित्भय-पत्थए दुरंतपंतळक्सणे जाव परिविज्ञए जे ण ममं इमाए एयाणुरुवाए जाव

अभिसमण्णागयाए उपि विजयसंघावारस्स जुगमुसलमृद्धि जाव वासं वासह । तए णं तस्त मरहस्स रण्णो इमेग्रारूवं अञ्मत्थियं चितियं पत्थियं मणोगवं संकप्पं समुप्पणं जाणिता सोलस देवसहस्सा सण्णज्जाउं पवता यावि होत्या. तए णं ते देवा सण्णद्वबद्धवम्मियकवया जाव गहियाउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमहा णाग-कुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति २ ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी-हं भो मेहमुहा णागकुमारा देवा! अपत्यियपत्थगा जाव परिवजिया किणां तुन्मे ण जाणह भरहं रायं चाउरंतचक्रविंटं महिक्टियं जाव उद्दिवत्तए का पिंडसेहितए वा तहा वि णं तुरुमे भरहस्स रण्णो विजयसंघावारस्स उप्पि जुरामसस्माद्विप्य-माणमिताहिं धाराहिं ओधमेधं सत्तरत्तं वासं वासह. तं एवमवि गए इत्तो सिप्पा-मेव अवक्रमह अहब णं अज पासह चित्तं जीवलोगं, तए णं ते मेहमुद्धा णाग-कुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वृत्ता समाणा भीया तत्था वहिया उध्विग्गा संजाय-भया मेहाणीयं पहिसाहरंति २ ता जेणेव आवादनिकाया तेणेव उदागच्छंति २ ता आवाडिकाए एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! भरहे राया महिश्विए जाव णो खळ एस सक्को केणइ देवेण वा जाव अग्गिप्पओगेण वा जाव उद्दवित्तए वा पढि-सेहितए वा तहावि य णं अम्बेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्भं पियहुयाए भरहस्स रण्णो उवसमी कए, तं गच्छह णं तुन्ने देवाण्पिया ! ण्हाया उत्तपडसाहगा ओच्छगणि-यच्छा अम्गाई वराई रयणाई गहाय पंजलिउडा पायबिडया भरहे रायाणं सरणं उनेह, पणिवह्यवच्छका खलु उत्तमपुरिसा णत्यि मे भरहस्स रण्णो अंतियाओ भय-मितिकदु एवं वहता जामेव दिसिं पाउच्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तए णं ते आबाडचिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहिं एवं वत्ता समाणा उद्याग उद्देति २ ता ण्हाया उद्धपदसादगा ओचूलगणियच्छा अग्गाई वराई रयणाई गहाय जेणेव भरहे राया तेणीव उवागच्छेति २ ता करमलपरिगाहियं जाव मत्यए अंजलि कह . भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धाविति २ ता अग्गाई वराई रयणाई उवणेति २ ता एवं वयासी-वसुद्दर गुणहर जयहर, हिरिसिरिधीकितिधारगणरिंद । लक्स्सणसह-स्सवारग रायमिदं णे निरं धारे ॥ १ ॥ हयवइ गयवइ णरवइ णवणिहिवइ भरह-वासपढमवर्द । बत्तीसजणबयसहस्सराय सामी चिरं जीव ॥ २ ॥ पढमणरीसर इसर हिगईसर महिलिमासहस्साणं । देवसमसाहसीसर चोहसरयणीसर असंसी ॥ ३ ॥ सागरनिरिमेरागं उत्तरवाईणमभिजियं त्रमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परि-वसामो ॥ ४ ॥ अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्डी जुई असे बले वीरिए पुरिसकारपर-कमे दिव्या देवजुई दिव्ये देवाणुभावे सद्दे पते अभिसमण्णागए, तं दिह्या वं देवा-

णुप्पियाणं इच्ची एवं चेव जाव अभिसमण्यागए, तं खामेमु णं देवाणुप्पिया ! खमेंद्र णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरहंति णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्ञो २ एवंकरणयाएतिकह पंजलिउडा पायबडिया भरहं रायं सरणं उविति । तए णं से भरहे राया तेसिं आवाडिवलायाणं अग्गाई वराई रयणाई पडिच्छइ २ ता ते आवाडिवलाए एवं वयासी-गच्छह णं भो तुब्भे ममं बाहुच्छायापरिम्गहिया णिब्भया णिरुव्यिग्गा सुहंसुहेणं परिवसह, णत्थि ने कत्तोवि मयमत्यित्तिकहु सक्कारेह सम्माणेइ सक्कारेता सम्माणेता पडिविसखेइ। तए णं से भरहे राया सुसेणं सेणावइं सहावेइ २ ता एवं वयासी-गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया! दोचंपि सिंधूए महाणईए पन्नत्थिमं णिक्खुडं सर्सिधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य खोअवेहि २ ता अग्गाइं बराई रवणाई पडिच्छाहि २ ना सस एयमाणत्तियं खिप्पासेव पचप्पिणाहि जहा दाहिणिहस्स ओअवणं तहा सब्वं भाषियन्वं जाव पश्चणुभवमाणे विहरह ॥ ६१ ॥ तए णं दिव्ये चक्करयणे अण्णया कयाइ आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ २ ना अंतलिक्खपडिवण्णे जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसिं चुक्कहिमवंतपन्ययाभिमुहे पयाए यावि होत्या, तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं जाव चुछहिमवंतवामहरप-व्वयस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं जाव बुल्लहिमबंनगिरिकुमारस्स देवस्स अद्वमभत्तं पिगण्हर, तहेव जहा मागहतित्यस्य जाव समुद्दवभूयं पिव करेमाने उत्तरिसामिमुहे जेणेव चुक्रहिमवंतवासहरपव्वए तेणेव उचागच्छइ २ ता चुल्रहि-मवंतवासहरपव्वयं तिक्खतो रहसिरेणं फुसइ फुसिता तुरए णिगिण्हड णिनिण्हिता तहेव जाव आययकण्णाययं च काउरण उसुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भाणीअ से णरवई जाव सब्वे में ते विसयवासित्तिकह उन्नं वेहासं उद्धं णिसिरह परिगरिणगरियमञ्ज्ञे जाव तए णं से सरे भरहेणं रण्णा उच्चं बेहासं जिसडे समाजे खिप्पामेव बावत्तरिं जीयणाइं गंता चुक्रहिमवंतिगिरकुमारस्त देवस्स मेराए णिव-इए, तए णं से चुछहिमवंतगिरिकुमारे देवे मेराए सरं शिवइयं पासइ २ ता आयु-रते रहे जाव पीइदाणं सन्वोसिह मार्छ गोसीसचंदणं च कडगाणि जाव दहोदगं च गेण्हइ २ ता ताए उक्किद्वाए जाव उत्तरेणं चुक्रहिमवंतिगरिमेराए अहण्णं देवागु-प्पियाणं विसयवासी जाव अहण्यं देवाणुप्पियाणं उत्तरिक्षे अंतवाळे जाव परिविस-जेह ॥ ६२ ॥ तए णंसे भरहे राया तुरए णिनिण्हह २ सा रहं परावरीह २ सा जेणेव उसहकृडे तेणेव उवागच्छा २ ता उसहकृडं प्रव्ययं तिक्शातो रहसिरेणे फुसइ २ ता तुरए निगिण्हइ २ ता रहं ठवेइ २ ता छत्तकं दुवाळसंसियं अहुक-ण्णियं महिनरणिसंठियं सोवण्णियं कागणिरयणं परामुसह र ता उसमकृहस्स

ξ

वन्ययस्त प्रतिविधिक्षंति कडगंति वासगं आउडेइ-ओसप्पिणीइमीसे तइयाएँ समाइ पच्छिमे भाए। श्वहमंति चक्कबट्टी भरहो इय नामधिजेणं॥ १ ॥ अहमंति पढमराया अह्यं मरहाहिबो णरवरिंदो । णत्यि महं पिडसत् जियं मए मारहं वासं ॥ २ ॥ तिकृष्ट णामगं आउदेइ णामगं आउदिता रहं पर्वतिइ २ ता जेपेव विजयसंघावा-रिपर्वेसे जेणेव बाहिरिया उषद्वाणसाला तेणेव उवागच्छह २ ता जाव चुह्रहिम-वंतिगिरिकुमारस्त देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्यताए समाणीए आउह्य-रसालाओ पिडणिक्समइ २ ता जाव दाहिणदिसि वेयइपव्ययाभिमहे प्रयाए यावि होत्या ॥ ६३ ॥ तए णं से भरहे राया तं दिव्यं चक्करयणं जाव वेयच्चस्स पव्य-यस्य उत्तरिक्के णियंबे तेणेव उवागच्छद २ ता वेयब्रस्स पञ्चयस्स उत्तरिक्के णियंबे द्वालसजोयणायामं जाव पोसहसालं अणुपिनसङ् जाव णिमविणमीणं विजाहरराईणं अद्भगभत्तं पगिण्हुइ २ ता पोसहसालाए जाव णमिविणमिविज्ञाहुर्रायाणो मणसी-करेमाणे २ चिद्रइ. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अद्रमभत्तंसि परिणममाणंसि णमि-विणमीविजाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अंतियं पाउच्म-वंति २ ता एवं वयासी-उप्पण्णे खलु भो देवाण्यिया! जंबहीने दीने भरहे वासे भरहे राया चाउरंतचकवट्टी तं जीयमेयं तीयफ्लुप्पण्पसणागयाणं विजाहरराईणं चक्कवद्वीणं उवस्थाणियं करेताए, तं गच्छामो णं देवाण्यिया। अम्ब्रेवि भरहस्स रण्णो उबस्थाणियं करेमोत्तिकडू विणमी णाऊणं चक्कवट्टिं दिव्वाए मईए चोइयमई माण्-म्माणप्पमाणजुत्तं तेयस्सि रूपलक्खणजुत्तं ठियज्ञव्यणकेसवद्वियणहं इच्छियसील-ण्हफासज़तं-तिस तण्यं तिस तंबं तिवलीगइरुण्णयं तियंगीरं । तिस कालं तिस सेयं तियाययं तिस्र य विच्छिण्णं ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वासंमि सन्वमहिलपहाणं संद-रयणजहणवरकरचलणणयणसिरसिजदसणजणहियगरमणमणहरि सिंगारागार जाव जुत्तीवयारकुसलं अमरबहुणं सुरूवं रूवेणं अणुहरंति सुभदं भईमि जोव्यणे वृह्माणि इत्बीरयणं जमी य रयजाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेण्डह २ ता ताए उक्किद्वाए तुरियाए जाव उद्ध्याए विजाहरगईए जेणेव भस्हे राया तेणेव उवागच्छंति २ ता अंतिलिक्सपिडिक्णा सिकेसिकिमियाई जाब जएणं विजएणं वद्धावेंति २ ता एवं वयासी-अमिजिए णं देवाणुप्पिया ! जान अन्ते देवाणुप्पियाणं आणतिकिक्ता इतिक्रह तं पडिच्छंत णं देवाण्पिया! अम्हं इमं जाव विषमी इत्वीर्यणं गमी स्यणाणि • समप्पेड । तए णं से भरहे रामा जाव पहिनिसजेड २ ता पोसहसालाको पहिणिक्छ-मइ २ ता मज्ज्ञणघरं अणुपविसह २ ता अमेयणग्रंडवे जाव णमिविणमीणं विजाहर-राईणं अद्वाहियमहासहिमा, तए णं से दिन्ये चहरवणे जाउहचरसाळाओ परिकि-

क्समइ जाव उत्तरपुरत्यमं दिसि गंगादेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्या, सचेव सव्या सिंधवत्तव्यया जाव णवरं कुंभद्रसहस्यं रयणियां णाणामणिकणग-रयणमतिविक्ताणि य दुवे कणगसीहासणाई सेसं तं चेव जाव महिमति ॥ ६४ ॥ तए णं से दिव्ये चक्करयणे गंगाए देवीए अद्वाहियाए महामहिमाए जिन्नताए समाणीए आउहचरसाळाओ पडिणिक्खमइ २ ता जाव गंगाए महाणईए पचित्य-भिक्षेणं कृष्टेणं दाहिणदिसि खंडप्पवायगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्या, तए णं से अरहे राजा जार जेणेद खंडप्पवायगुडा तेणेव उदागच्छइ २ ता सव्वा क्यमारम-वक्तव्या णेयव्या णवरं णष्टमालगे देवे पीइदाणं से आलंकारियमंडं कडगाणि य सेसं सब्बं तहेव जाव अद्वाहिया महाम॰। तए णं से भरहे राया णहमालगरस देवस्स अझाहियाए म० जिव्यक्ताए समाणीए सुसेणं सेणावडं सहावेड २ क्ता जाव सिंधगमी णेयव्यो जाव गंगाए महाणईए प्रतियमिल्लं णिक्खुंड सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओअवेइ २ ता अग्गाणि वराणि रयणाणि पहिच्छइ २ ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उनागच्छ २ शा दोश्रंपि सक्लंधावारवले गंगा-महाणई विमलजलतुंगवीई णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरह २ ता जेणेव भरहस्स रण्गो विजयसंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवाग-न्छड २ ता आभिसेकाओ हत्थिरयणाओ पचोरुहह २ ता अम्गाइं वराइं रयणाई गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ ता करयलपरिग्गहियं जाव अंजिल कट भरहं रायं जएणं विजएणं वदावेड २ ता अगाई वराई रयणाई उवणेइ। तए णं से भरहे राया मुसेणस्स सेणावहस्स अग्गाई बराई रयणाई पहिच्छह २ सा स्रसेणं सेणावडं सकारेड सम्माणेड स० २ ला पडिविसजेड. तए णं से ससेणे सेणावडं भरहस्स रण्यो सेसंपि तहेव जाब विहरह, तए णं से भरहे राया अण्याया क्याड स्रसेणं सेणावहरयणं सहावेइ २ ता एवं वयासी-गच्छ णं भो देवाणुप्पिया ! खंडग-प्यवायगुहाए उत्तरिक्षस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि २ ता जहा तिमिसगुहाए तहा भाणियव्यं जाव पियं मे भवल सेसं तहेव जाव भरहो उत्तरिक्षेणं द्वारेणं अहेद ससिव्य मेहंच्यारणिवहं तहेव पविसंतो मंडलाई आलिस्टर, तीसे णं संदगपवाय-गुहाए बहुमज्यादेसमाए जाव उम्ममगणिममगजलाओ णामं दुवे महाणईओ तहेव णवरं प्रवत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवडाओ समाणीओ प्रतिथमेणं गेर्ग महाणडं समप्पेंति, सेसं तहेव णवरं पचत्विमिक्नेणं कृतेणं गंगाए संकावताव्वया तहेवति. तए णं खंडयप्पवायगुहाए दाहिणिहस्स दुवारस्स कवाहा सममेव महया २ कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाई २ ठाणाई प्रवीसिकस्था, तए णं से भरहे रावा

चक्रस्यणदेसियमस्गे जाव खंडगप्पचायगुहाओ दिनकाणिकेणं दारेणं णीणेइ ससिव्य मेहंचयार जिवहाओ ॥ ६५ ॥ तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए फ्यात्यिमिहे कुछ दुवालसञ्जायणायामं णवजायणाविच्छण्णं जाव विजयक्खंवावारणिवेसं करेइ, अवसिद्धं तं चेव जाव जिहिरयणाणं अद्भमभत्तं पिण्हइ, तए णं से भरहे राया पोसहसालाए जाव णिहिरयणे मणिं करेमाणे करेमाणे चिट्टइ, तस्स य अपरि-मियरत्तरयणा ध्रयमक्ख्यमध्वया सदेवा लोकोपचयंकरा उवगया णव णिहुओ लोगविस्सुयजसा, तंजहा-जेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलए ३ सञ्बरयण ४ मह-पउमे ५। काले ६ य महाकाले ७ माणवगे महाणिही ८ संखे ९ ॥ १ ॥ णेस-प्पंसि णिवेसा गामागरणगरपदृषाणं च। दोणमुह्मसंबाणं संधावारावणगिहाणं ॥ १ ॥ गणियस्स य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं प्रमाणं च । धण्णस्स य बीयाण य उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥ २ ॥ सन्बा आभरणविही पुरिसाणं जा य होड़ महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥ ३ ॥ रयणाई सब्बरयणे चजदसवि वराई चक्कवहिस्स । उप्पजनते एगिंदियाई पाँचिंदियाई च ॥ ४ ॥ बत्थाण य उप्पत्ती णिप्पत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य घोटवाण य सञ्चाएसा महापुरमे ॥ ५ ॥ काले कालण्याणं सञ्चपुराणं च तिसूवि वंसेसु । सिप्पसर्यं कम्माणि य तिष्णि प्याए हियकराणि ॥ ६ ॥ लोहस्स य उप्पत्ती होड महाकालि आगराणं च । रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणिसुत्तसिलप्पवालाणं ॥ ७ ॥ जोहाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च । सन्वा य जुद्धणीई माणवरो दंडणीई य ॥ ८ ॥ णड्डविही गाडगविही कव्वस्स य चडव्विहस्स उप्पत्ती । संखे महाणिहिंमि तुडियंगाणं च सम्बेसिं॥ ९॥ चक्कद्वपद्वाणा अहस्सेहा य णव य विक्खंभा । बार्सदीहा मंजूससंठिया जण्हवीइ सुहे ॥ १० ॥ वेरुलियमणिकवाडा क्रणगम्या विविद्दर्यणपिंडपुण्णा । ससिस्र्रचक्रलक्षण अणुसमवयणोववसी या ।। ११ ॥ पलिओनमद्रिईया णिहिसरिणामा य तत्य खळ देवा । जेसिं ते आनासा अक्तिजा आहितका य ॥ १२ ॥ एए णव णिहिरयणा प्रस्वघणस्यणसंच्यसिद्धा । जे वससुवगच्छंति सरहाहिकचक्कदृष्टीणं ॥ १३ ॥ तए णं से भरहे राया अट्टमभत्तंति परिणममाणंसि पोसहसाराओ पडिणिक्समइ, एवं मजाणचरपवेसी जाव सेणि-प्पसेणिसहावणया जाव जिहिरयणाणं अद्वाहियं महामहिमं क॰, तए णं से मरहे राया जिहिरयणाणं अद्वाहियाए सहामहिमाए जिव्यक्ताए समाजीए स्रसेणं सेणा-वहरमधं सहावेह २ ता एवं बमासी-गच्छ णं भी देवाणुप्पिया ! गंगासहाणईए प्रत्थिमितं णिक्सारं दुषंवि सगंगासागरकिरिमेरागं समविसमणिक्साराणि स

ओअवेहि २ ता एममाणत्त्रवं पचप्पिणाहिति । तए णं से मुसेणे तं चैव पुन्य-षणियं भाणियन्वं जाव ओअविता तमाणितयं पश्चिप्पणइ · · पिडिविसजेइ जाव भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरह । तए णं से दिव्ये चक्करयणे अन्नया कयाह आउह-घरसालाओ पडिणिक्समइ २ ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरियुडे दिव्य-तुडिय जाव आप्रेंते चेव॰ विजयक्खंघावारणिवेसं मञ्ज्ञंमञ्ज्ञेणं णिमाच्छा० दाहिण-पचित्थमं दिसिं विणीयं रायहाणि अभिमुद्दे पयाए यावि होत्था । तए णं से भरहे राया जाव पासइ २ ता हहतुह जाव कोईवियपुरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-स्किप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेकं जाव पन्वप्पणंति ॥ ६६ ॥ . तए णं से भरहे राया अजियरजो जिजियसत्तू उप्पण्णसमत्तरयणे चक्ररयणप्पहाणे णवणिहिवई समिद्धकोसे बत्तीसरायवरसहस्साणुयायमग्गे सद्वीए वरिससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहं वासं ओअवेड् ओअवेता कोडुंबियपुरिसे सहावेड् २ ता एवं वयासी-- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्षं हत्यिरयणं हयगयरह तहेव जाव अंजणिरिकूडसिणामं गयवई णर्वाई दुरुढे । तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभि-सेकं हत्यरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्टहमंगलगा पुरक्षो अहाणुपुन्वीए संपद्मिया, तंजहा-सोत्थियसिरिक्च्छ जाव दप्पणे, तयणंतरं च णं पुण्णकलस-भिंगार दिव्वा य छत्तपडागा जाब संपद्विया, तयणंतरं च णं वेरुलियमिसंतविमलदंडं जाव अहाणुपुन्त्रीए संपद्धियं, तयणंतरं च णं सत्त एगिंदियरयणा पुरखो अहाणु-पुरुवीए संपद्विया, तं०- चक्करयणे १ छत्तरयणे २ चम्मरयणे ३ दंडरयणे ४ असि-र्यणे ५ मणिरयणे ६ कागणिरयणे ७, तयणेतरं च णं णव महाणिहुओ पुरश्रो अहाणुप्न्वीए संपद्विया, तंत्रहा--णेसप्पे पंड्रयए जाव संखे, तयणंतरं च णं सोलस देवसहस्सा पुरक्षो अहाणुपुन्वीए संपद्विया, तयणंतरं च णं बत्तीसं रायवर-सहस्सा पुरओ अहाणुपुन्नीए संपद्विया, तयणंतरं च णं सेणावहरयणे पुरओ अहा-णुपुन्वीए संपद्विए, एवं गाहावइरयणे वहुद्दयणे पुरोहियरयणे, तयणंतरं च णं इत्थिरयणे पुरलो अहाणुपुन्वीए॰, तयणंतरं च णं बत्तीसं उहुकक्काणियासहस्सा पुरको अहाणुपुरुवीए॰, तयणंतरं च णं बत्तीसं जणवयकहाणियासहस्सा पुरको अहाणुप्व्वीए॰, तयणंतरं च णं बत्तीसं बत्तीसङ्बद्धा गाडगसहस्सा पुरुषो अहाणु-पुन्वीए॰, तयणंतरे च णं तिष्णि सद्घा स्वसया पुरक्षो अहाणुपुन्वीए॰, तयणंतरं च णं अद्वारस सेणिप्पसेणीओ पुरबो॰, तवणंतरं च णं चउरासीइं आससयस-हस्सा पुरओ॰, तवर्णतरं च पं चडरासीई हत्यसयसहस्सा पुरओ अहाणुप्वीए॰, तयणंतरं च णं चडरासीइं रहसमसहस्सा पुरक्षो श्रहाणुप्रवीए०, तमणंतरं च

णं छण्णउई मणुस्तकोडीओ पुरओ अहाणुपुर्वीए संपट्टिया, तयणंतरं च णं बहवे राईसरतल्बर जाव सत्यवाहप्पमिइओ पुरको अहाणुपुव्वीए संपिट्टया, तथणंतरं च णं बहवे असिनगाहा छद्विगाहा कुंतरगाहा चावमगहा चामरगगहा पासमगहा फलमम्माहा पर्युग्माहा पोत्यवग्माहा वीणग्माहा कृयग्माहा इडप्फम्माहा दीविय-ग्गाहा सएहिं सएहिं स्वेहिं, एवं वेसेहिं चिंधोहें निओएहिं सएहिं २ वत्येहिं पुरओ अहाणुपुन्त्रीए संपद्विया, तयणंतरं च णं बहवे दंखिणो मुंडिणो सिहंडिणो जिंडणो पिच्छिणो हासकारमा खेडुकारमा दवकारमा चाहुकारमा कंद्रिपया कुक्कह्या मोहरिया गायंता य दीवंता य (वायंता) नवंता य हसंता य रमंता य कीलंता य सासेना य सार्वेता य जावेंना य रावेंता य सोमेंता य सोमार्वेता य आलोयंता य जयजयसहं च पउंजमाणा पुरलो अहाणुपुरवीए संपष्टिमा, एवं उववाइयममेणं जाव तस्स रण्यो पुरस्रो महुआसा आसधरा उमओ पासि णागा णागधरा पिट्रओ रहा रहसंगेली अहाणुप्ववीए संपट्टिया । तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्ययसुक-यरइयवच्छे जाव अमरवर्सण्णिमाए इड्डीए पहिचकित्ती चक्करयणदेसियमग्गे अणे-गरायवरसहस्साणुयायमागे जाव समुहरवभूयं पिव करेमाणे सव्विङ्गीए सव्वज्ञहेए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं गामागरणगरखेडकञ्बडमडंब जाव जोयणंतरियाहि वस-हीहिं बसमाणे २ जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छह उवागच्छिता विणी-याए रायहाणीए अदूरसामंते दुवालसजीयणायामं णवजीयणविच्छिण्णं जाव खंघा-वारणिवेसं करेइ २ ता वहुइरयणं सहावेइ २ ता जाव पोसहसालं अणुपविसह २ ता विणीयाए रायहाणीए अद्वसमत्तं पिगण्हइ २ ता जाव अद्वसमत्तं पिरायागे २ विहरइ । तए णं से भरहे राया अड्डमभत्तंति परिणममाणंति पोसहसालाओ पिडिण-क्खमइ २ ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ ता तहेव जाव अंजणगिरिकूडसण्णिमं गय-वहं णरवई दुरूढे तं चेय सम्बं जहा हेद्वा णवरं णव महाणिहको चतारि सेणाओ ण पविसंति सेसो सो चेव गमो जाव णिग्घोसणाइएणं विणीयाए रायहाणीए मज्झं-मज्झेणं जेणेव सए गिह्ने जेणेव मवणवरवर्डिसगपडिद्ववारे तेणेव पहारेत्य गमणाए. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणि मञ्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स अप्ये-गड्या देवा विणीयं रायहाणि सब्धंतरबाहिरियं आसियसम्मजिओविलत्तं करेंति. अप्पेगइया॰ मैचाइमंचकलियं करेंति, एवं सेसेसुवि पएसु, अप्पेगइया॰ णाणाविहरागक-सणुरिसयध्यपडागामंडियभूमियं ०, अप्येगह्या ७ लाजह्रोह्यमहियं करेंति, अप्येगह्या जाव गंधवहिभूयं करेंति, अप्येगह्या । हिरण्णवासं वासिति । सुषण्णरयणवहरवाभरण-बासं बासेति. तए णं तस्स भरहस्स रुष्को विषीयं रायहाणि मञ्ज्ञंयञ्जेणं अणुपवि-

Sec

समाणस्स सिंघाडग जाव महापहपहेस वहवे अत्यत्यिया कामत्यिया मोगत्यिया लाम-त्यिया इद्धितिया किन्नितिया कारोडिया कारवाहिया संसिया निक्रया गंगलिया मुहर्म-गलिया पुसमाणया वद्धमाणया लंखमंखमाइया ताहि ओरालाहि इद्वाहि कंताहि पियाहि मणुज्जाहि मणामाहि सिवाहि धण्जाहि मंगल्लाहि सस्सिरीयाहि हिययगमणिजाहि हिययपल्हायणिजाहि वम्मृहि अणवर्यं अभिणंदंता य अभिशुणंता य एवं वयासी-जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! भद्दं ते अजियं जिणाहि जियं पालगाहि जियमज्झे बसाहि इंदो बिन देवाणं चंदो बिन नाराणंचम रो बिन असुराणं घरणो बिन नागाणं बहुई पुब्बसयसहस्साई बहुईओ पुन्वकोडीओ बहुईओ पुन्वकोडाकोडीओ विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स गामाग-रणगरखेडकव्यडमडंवदोणमुद्दपष्टणासमसण्णिवेसेसु मम्मं प्रयापालणोवज्ञियलद्धजसे महया जाव आहेवचं पोरेवचं जाव विहराहित्तिकडु जयजयसदं परंजंति, तए णं से भरहे राया णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिजमाणे २ वयणमालासहस्सेहिं अभिशुव्वमाणे २ हिययमालासहस्सेहिं उष्णंदिज्ञमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे २ कंति-स्वसोहग्गगुणेहिं पिच्छिजमाणे २ अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइजमाणे २ दाहिणहत्थेणं बहुणं णरणारीसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पिडच्छेमाणे २ भवणपंतीसहस्साई समइच्छमाणे २ तंतीतलजुडियगीयबाइयरवेणं महरेणं मणहरेणं मंजुमंजुणा घोसेणं पडिबुज्ज्ञमाणे २ जेणेव सए गिहे जेणेव सए मवणवरवडिसबदुवारे तेणेव उवा-गच्छइ २ ता आभिसेकं हरियरयणं ठवेइ २ ता आभिसेकाओ हरियरयणाओ पन्नोरुहर २ ता सोलस देवसहस्से सकारेर सम्माणेर सं० २ ता बत्तीसं रायसहस्से सङ्गारेइ सम्माणेइ स॰ २ ता सेणावइरयणं सङ्गारेइ सम्माणेइ स॰ २ ता एवं गाहानइरयणं नबूड्रयणं पुरोहियरयणं सकारेइ सम्माणेइ स० २ ता तिण्णि सहे स्यसए सकारेड सम्माणेड स॰ २ ता अद्वारस सेणिप्परोणीओ सकारेड सम्माणेड स॰ २ ता अण्णेवि बहुवे राईसर जाव सत्थवाहुप्पमिइओ सकारेह सम्माणेह स॰ २ ता पिंडविसजेड, इरबीरयणेणं नत्तीसाए उद्धकहाणियासहस्सेहि वत्तीसाए जण-वयकताणियासहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडयसहस्सेहिं सदिं संपरिवृद्धे भवणवरवर्डिसगं अईइ जहा कुबेरोव्य देवराया केलाससिइरिसिंगभूयंति, तए णं से भरहे राया मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं प्रमुवेक्साइ २ ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छड् २ ता जाव सज्जणघराओ पिडणिक्समध् २ ता वेणेव भोयणसंडवे तेणेव उनागच्छद २ ता भोयणमंडवंसि सहासणवरगए अहुमभत्तं पारेड २ ता स्टिप पासायवरमए प्रदमाणेहिं मुइंगमत्यएक्टिं बत्तीसइवदेहिं नाडएहिं उवलाकिसमाणे २

उवणिजमाणे २ उविगिजमाणे २ महया जाव भुंजमाणे विहरह ॥ ६७ ॥ तए णं तस्य अरहस्य रण्णो अण्णया कयाइ रज्जुधरं चितेमाणस्य इमेयारूवे जाव समुप्पजित्या-अमिजिए णं मए णियगबलवीरियपुरिसकारपरक्रमेण चुह्रहिमबंत-गिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे तं सेयं खळ मे अप्पाणं महया २ रायाभि-सेएणं अभिसेएणं अभिसिंचावित्तएत्तिकृष्ट् एवं संपेहेड २ ता कहं पाउप्पमायाए जाव जलंते जेणेव मञ्जणघरे जाव पहिणिक्समा २ ता जेणेव बाहिरिया उन्हाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छड २ ता सीहासणवरगए प्रत्थाभिमुहे णिसीयइ णिसीइता सोलस देवसहस्से वत्तीसं रायवरसहस्सं सेणावहरयणे जाव परोहियरयणे तिण्णि सद्दे सयसए अद्वारस सेनिप्पसेणीओ अण्णे य बहवे राईसरतल्वर जाब सत्यवाहप्पभियओ सहावेह २ ता एवं वयासी-अभिजिए णं देवाण्पिया ! मए णियगबलवीरिय जाव केवलकप्पे भरहे वासे तं तुन्मे णं देवाणुप्पिया ! ममं महयारायाभिसेयं वियरह, तए णं ते सोलस देवसहस्सा जाद पिमइओ भरहेणं रण्णा एवं बत्ता समाणा इद्भुतद्व० करयल० मत्यए अंजिल कह भरहस्स रण्णो एयमह्रं सम्मं विणएणं पडिसुणेंति, तए णं से भरहे रामा जेणेव पोसहसाला तेणेव उदागच्छद २ ता जाव अद्भमित्तिए पहिजागरमाणे २ विहरइ, तए णं से भरहे राया अद्रमभत्तंसि परिणममाणंसि आभिओगिए देवे सहावेह २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव मो देवाणुप्पया ! विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीमाए एवं महं अभिसेयमण्डवं विउठ्वेह २ ता मम एयमाणत्तियं पश्चिपणह. तए णं ते आभिओगा देवा भरहेणं रूणा एवं वृत्ता समाणा हद्वतुद्व जाव एवं सामिति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति पडिसुणिना विणीयाए रायहाणीए उत्तरपरित्थमं दिसीमागं अवद्यमंति २ ता वेजव्ययसम्बाएणं समोहणंति २ ता संक्षिजाई जोय-गाइं दंहं गिसिरंति . तंत्रहा-रयणाणं जाव रिद्वाणं अहाबायरे पुरुवछे परिसार्डेति २ ता अहासहमे पुरुषके परियादियंति २ ता दुर्श्वपि वेउव्वियससुरवाएणं समोहणंति २ ता बहुसमरमणिजं भूमिभागं विउव्वंति से जहाणामए-आलिंगपु-क्खरेइ बा॰, तस्स णं बहुसम्रत्मणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं महं एगं अभिसेयमण्डवं विख्वंति अणेगखंगसयसण्णिविद्वं जाव गंधविट्टभूयं पेच्छाघ-रमंडक्षणणगोत्ति, तस्त णं अभिसेषमंडबस्त बहमज्यदेसभाए एत्य णं सहं एवं अभिसेयपेढं विउच्चंति अच्छं सर्वः तस्स णं अभिसेयपेढस्स तिदिसिं तओ तिसोबा-गपहिरुवा विख्यंति. तेसि णं तिसोबाणपहिरुवगाणं अयमेयास्य बण्णावासे पण्णते जाब तोरणा. तस्त णं असिसेयपेडस्स बहसमरम्थिजे भूमिभागे पण्डते, तस्त णं

बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदैसभाए एत्य णं महं एगं सीहासणं विउ-व्वंति, तस्स णं सीहासणस्स अयमेयास्वे वण्णावासे पण्णते जाव दामवण्णगं सम-गंति। तए णं ते देवा अभिसेयमंडवं विउव्वंति २ ना जेणेव भरहे राया जाव पश्च-प्पिणंति, तए णं से भरहे राया आभिओगाणं देवाणं अंतिए एयमट्टं सोबा णिसम्म हट्टतुद्र जाव पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ ता कोडुंबियपुरिसे सहावेह २ ना एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेकं हत्यिरयणं पडिकप्पेह २ ता इयगय जाव सण्णाहेता एयमाणतियं पञ्चप्पिणह जाव पञ्चप्पिणति, तए णं से भरहे राया मजणघरं अणुपविसङ जाव अंजणगिरिकृडसण्णिमं गयवई णरवई दुरूढे, तए णं नस्स भरहस्स रण्णो आभिसेकं हन्थिरयणं दुरुढस्य समाणस्स इमें अद्भद्रमंगलमा जो चेव गमो विणीयं पविसमाणस्य सो चेव णिक्सममाणस्यवि जाव पडिवुज्समाणे २ विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिमाच्छइ २ ना जेणेव विणी-याए रायहाणीए उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए अभिसेयमंडवे तेणव उवागच्छइ २ ता अभिसेयमंडवर्वारे आभिसेकं हत्थिरयणं ठावेह २ ता आभिसेकाओ हत्थिरयणाओ फ्बोम्हड २ ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए उडुकढ़ाणियासहस्सेहिं वत्तीसाए जणवयक-क्राणियामहस्सेहिं बत्तीसाए बत्तीसडबद्धेहिं णाडगसहस्सेहिं मर्द्धि संपरिवुडे अभिसेय-मंडवं अगपविसड २ ता जेणेय अभिसेयपेटं तेणेय उवागच्छइ २ ता अभिसेयपेटं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुरन्थिमिह्रेणं तिसोवाणपडिस्वएणं दुस्दृह २ ना जेणेव सीहासणे तेणव उवागच्छइ २ ता पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे । तए णं तस्म भर-इस्स रण्णो बर्त्तासं रायसहस्ता जेणेव अभिसेयमण्डवे तेणेव उवायच्छंति २ ता अभिसेयमंडवं अणुपविसंति २ ता अभिसेयपैढं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा २ उत्तरिहेणं तिसोवाणपडिस्वएणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ ता करयल जाव अंजिल कडू भरहं रायाणं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ ता भरहस्स रण्णो णवासण्णे णाइद्रे सुत्स्समाणा जाव पजुवासंति, तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावहरयणे जाव सत्थवाहप्पभिद्यो तेऽवि तह चेव णवरं दाहिणिहेणं तिसोवाणपिहस्वएणं जाव पज़ुबासंति, तए णं से भरहे राया आभिओगे देवे सहावेह २ ता एवं बयासी-खिप्पामेव भो देवाणप्पिया! ममं महत्यं महार्थं महरिहं महारायामिसेयं उबद्व-वेह, तए णं ते आभिओइया देवा भरहेणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हद्वद्ववित जाव उत्तरपुरित्यमं दिसीमागं अवक्रमंति अवक्रमिता वैडिव्ययसमुग्घाएणं समोह-णंति, एवं जहा विजयस्स तहा इत्यंपि जाव पंडगवणे एगओ मिळायंति एगओ मिलाइता जेणेव दाहिणक्रभरहे बासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति २ ता

विजीयं रायहाणि अणुप्पत्राहिणीकरेमाणा २ जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति २ ता तं महत्थं महम्बं महरिहं महारायाभिसेयं उव-ड्रवेंति, तए णं तं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोभणंसि तिहिकरणदिवसण-क्खतमुहत्तंसि उत्तरपोद्ववयाविजयंसि तेहिं सामाविएहि य उत्तरवेउव्विएहि य वर-कमलपइद्वाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया महया रायाभिसंएणं अभि-सिंचति, अभिसेओ जहा विजयस्म, अभिसिंचिता पत्तेयं २ जाव अंजिंठ वहु ताहिं इह्वाहि जहा पविसंतस्स॰ भाणिया जाव विहराहित्तिकृष्ट जयजयसद्दं पर्छजेति । तए णे तं भरहं रायाणं सेणावहरयणे जाव पुरोहियरयणे तिण्णि य सद्घा सूयसया अद्वारस सेणिप्पसेणीओ अण्णे य बहवे जाव सत्थवाहप्पभिइओ एवं चेव अभिसिचंति तेहिं वरकमलपइट्टाणेहिं तहेव जाव अभिध्रणंति य सोलस देवसहस्सा एवं चेव णवरं पम्हलमुकुमालाए जाव मुखं पिणद्वेति, तयणंतरं च णं दहरमलयमुगंधिएहि गंधेहि गायाई अन्धुक्खेंति दिन्यं च सुमणोदामं पिणदेंति, किं वहुणा १, गंठिमवेहिम जाव विभृतियं करेंति, तए णं से मरहे राया महया २ रायाभिसेएणं अभिसिचिए समाणे कोडुंबियपुरिसं सहावेइ २ ना एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थि-संधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाङगतिगचउक्कचचर जाव महापहपहेस महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उस्युकं उक्तरं उक्तिद्वं अदिजं अमिजं अभरूपवेंमं अदंड-कोदंडिमं जाव सपुरजणजाणवयं दुवालगसंवच्छरियं पमोयं घोसेह २ ता ममेयमाण-त्तियं पञ्चिपणहत्ति, तए णं ते कोडंबियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हट्टाट्ट-चित्तमाणंदिया पीइमणा व हरिसबसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं पित्रशोति २ ता खिप्पामेव हत्थिखंघवरगया जाव बोसेंति २ ता एयमाणत्तियं पश्चिप्पणंति, तए णं से भरहे राया महया २ रायाभिसेएणं अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अञ्सद्वेड २ ना इत्यिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवृडे अभिसेयपेडाओ पुरित्यमि-क्रेणं तिसोनाणपिहरूवएणं क्योरहृइ २ सा आभसेयमंडवाओ पिडणिक्खमइ २ सा जेणेव आभिसेके हत्यिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अंजणगिरिकृडसण्णिमं गयवइं जाव दुस्ढे, तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा अभिसेयपेढाओ उत्तरिक्षेणं तिसोवाणपिकस्वएणं पश्चोरुद्धंति, तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइर-यणे जाव सत्यवाहप्पमिइओ अभिसेयपेढाओ दाहिणिक्षेणं तिसोबाणपडिस्वएणं पचोरुहंति. तए ण तस्स मरहस्स रण्णो आभिसेकं हत्थिरयणं दुरूढस्स समाणस्स इमे अह्द्र्रमंगलगा पुरओ जाव संपद्विया, जोऽविय अइगच्छमाणस्स गमो पढमो कुवेरावसाणो सो चेव इहांपि कमो सकारजडो णेयन्त्रो आव कुवेरोन्त्र देवराया

केलासं सिहरिसिंगभूयंति । तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसद् २ ता जाव भोयणमंडवंसि ग्रहासणवरगए अद्भग्नतं पारेइ २ ता भोयणमंडवाक्षो पर्दिणिक्ख-मइ २ ता उपि पासायवरगए पुरुमाणेहिं मुइंगमत्यएहिं जाव मुंजमाणे विहरह, तए गं से भरहे राया दुवालससंवच्छरियंसि परोयंसि जिब्बत्तंसि समाणंसि जेणेव मज-णघरे तेणेव उदागच्छइ २ ता जाव मज्जणघराओ परिणिक्खमड २ ता जेणेव बाहि-रिया उवद्वाणसाला जाव सीहामणवरगए पुरत्याभिमुहे णिसीयइ २ ता सोलस देव-सहस्से सकारेइ सम्माणेइ स॰ २ ता पिंडाविस जेइ २ ता बत्तीसं रायवरसहस्सा सकारेइ सम्माणेइ स० २ ता॰ सेणावडरयणं सङ्कारेड् सम्माणेड् स० २ ता जाव पुरोहियरयणं सकारेइ सम्माणेइ म० २ ता० एवं तिण्णि सहे स्यारसए अद्वारस सेणिप्पसंणीओ सका-रेइ सम्माणेइ म० २ ता० अण्णे य बहुवे राईमरनलवर जाव सत्यवाहप्पभिइओ सङ्घारेइ सम्माणेइ स॰ २ ता पडिविमजेंड २ ता उपिंप पासायवरगए जाव विहरइ ॥ ६८--१ ॥ भरहस्स रण्णो चक्करयणे १ इंडर्यणे २ असिरयणं ३ छत्तरयणं ४ एए णं चत्तारि एगिंदियरयणा आउहघरसालाए समुप्पण्णा, चम्मरयण १ मणिरयण २ कागणि-रयणे ३ णव थ महाणिहओ एए णं सिरिघरंसि समुप्पण्या, सेणावइरयणे १ गाहा-वइरयण २ वसूहरयणे ३ पुरोहियरयणे ४ एए णं चत्तारि मणुयरयणा विजीयाए रायहाणीए समुप्पण्णा, आसरयणे १ इत्थिरयणे २ एए णं दुवे पंचिंदयरयणा वेयद्विगिरिपायमूळे समुप्पणा, सुभद्दा इत्बीरयणे उत्तरिकाए विजाहरसेढीए सम्-प्पण्णे ॥ ६८-२ ॥ तए णं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसाहरसीणं वत्तीसाए रायसहरसाणं वत्तीसाए उडुकल्लाणियासहरसाणं यत्तीमाए जणवयकहाणियासहस्याणं वर्त्तामाए बत्तीसइबद्धाणं णाडगसहस्साणं तिण्हं सद्वीणं स्यारसयाणं अद्वारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउरासीईए आससयसहस्साणं चउरासीईए दंनिमयसहस्साणं च उरासीईए रहसयसहस्साणं छण्णडईए मणुस्स-कोडीणं बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं बत्तीसाए जणवयसहरूसाणं छण्णउईए गाम-कोडीणं णवणउईए दोणमुहसहरूसाणं अख्यालीसाए पष्टणसहरूसाणं चउव्वीसाए कञ्बडसहरसाणं चउव्यीसाए महंबमहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसण्हं खेडसहस्साणं चउदमण्हं संबाहसहस्माणं छन्पण्णाए अंतरोदगाणं एगूणपण्णाए कुरज्ञाणं विणीयाए रायद्वाणीए चुक्रहिमवंतिगिरिसागरमेरागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अण्णेसि च बहूणं राईसरतलबर जाव सत्थवाहुप्पिमईणं आहेवचं पोरेवचं महितं सामितं महत्तर्गतं आणाईसरसेणावचं कारेमाणे पाळेमाणे ओहब-णिहएस कंटएस उद्धियमलिएस सम्बस्तुस णिजिएस भरहाहिवे णरिंदे वरचंदण-

विश्वयंगे वरहाररइयवच्छे वरमजडविसिद्धए वरवत्यभूसणधरे सन्त्रोजयसुरहिकुसुम-बर्मक्रसोमियसिरे वरणाडगणाडइज्जबरइत्थिगुम्मसिंद्धं संपरिवृद्धे सव्वोसिहसव्वरय-णसञ्चलमिङ्गमगरो संपुष्णमणोरहे ह्यामिलमाणमहणे पुरुवक्रयतवप्पमावणिविद्व-संचियफळे भुंजइ माणुस्सए सुहे भरहे णामधेजेति ॥ ६९ ॥ तए णं से भरहे राया अण्णया क्याइ जेणेन मज्जणघरे तेणेन उनागच्छइ २ ता जान ससिन्न पियदंगणे णरवई मज्जणचराओ पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव आर्यसघरे जेणेव सीहानणे तेणेव उवागच्छद् २ ता सीहासणवरगए पुरस्थाभिमुहे णिसीयइ २ ता आयंसघर्रात अत्ताणं देहमाणे २ चिट्टई, तए णं तस्म भरहस्य रण्णो सुमेणं परिणामेर्णं पमत्येहि अज्झवसाणेहि लेमाहि विमुज्झमाणीहि २ ईहापोहमग्गणगर्व-मणं करेमाणस्य तथावरणिजाणं कम्माणं खएणं कम्मर्यविकिरणकरं अपुव्वकरणं पविद्वस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाचाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे, तए णं से भरहे केवला सयमेवाभरणालंकारं कोर्मेयइ २ ता सयमेव पंचमुद्धियं लोयं करेड् २ ना आयंसघराओ पिडणिक्खमह २ ता अंतेउरमज्झंमज्झेणं णिगच्छर २ ता दसिंह रायवरसहस्मेहि सिद्ध संपरिचुडे विणीयं रायहाणि मज्झेमज्झेणं णिमाच्छ्य २ ता मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरइ २ ता जेणेव अद्वावए पब्बए तेणेव उवागच्छह २ ता अद्वावयं पब्बयं सणियं २ दुरुहुइ २ ता मेघपण-सण्णिगासं देवसण्णिवायं पुढिविसिळावष्टयं पिंडलेहेड २ ता संलेहणाझूनणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ. तए णं से भरहे केवली सत्तत्तरिं पुरुवसयसहस्साईं कुमारवासमज्झे वसिना एगं वाससहस्यं मंडलियरायमज्झे वसित्ता छ पुव्वसयसहस्साई वाससहस्स्णगाई महारायमज्झे वसित्ता तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्ज्ञे वसिना एगं पुव्वमयसहस्सं देसणगं केवलिपरियायं पाउणित्ता तमेव बहुपिडपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता चउरासीइपुन्वसयसहरूसाई सन्वाउयं पाउणिता मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सव-णेणं णक्कतेणं जोगमुवागएणं खीणं वेदणिजे आउए णामे गोए कालगए वीड्कंते समुजाए छिण्णजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्युंड अंतगडे सव्बद्धक्ख-प्पर्हीणे ॥ ७० ॥ इइ भरहचक्किचरियं समसं ॥

तिहमप्पाणमवलीयंतस्य तस्तेगंगुलीए गलियमंगुलिज्ज्यं, सो य तै पढंतं ण जाणइ, अणुक्तमेण वुंदिं पेहमाणे तमंगुलिमसोहंतियमवलीएइ ताहे हारक्षडगाइसव्व-माभरणमञ्जेइ । २ गत्तअसारत्तभावणाख्वजीवपरिणईए । ३ सयमेवाभरणभूयम-लंकारं वत्थमहल्वमोमुगइति अहो ।

भरहे य इत्थ देवे महिष्कुए मह्जुइए जाब पिल्ओवमिष्ठइए परिवसइ, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-भरहे वासे २ इति । अदुत्तरं च णं गो० ! भरहस्स वासस्स सासए णामधेजे पण्णते जं ण कयाइ ण आसि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्मइ य धुवे णियए सासए अञ्चए अव्वए अविष्ठए णिचे भरहे वासे ॥ ७९ ॥ तहुओ ववस्वारो समसो ॥

कहि णं भंते ! जम्बुद्दीवं २ चुछहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णते ? गोयमा ! हेमनयस्स वासस्म दाहिणेणं भरहस्य वासस्य उत्तरेणं पुरत्थिमलगणसमुदस्स पचित्थमेणं पचित्थमलवणसमुद्दस्स पुर्रात्थमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे बुर्ह्राह्मवंते णामं वासहरपव्वए पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवण-समुदं पुट्टे पुरित्यमिक्षाए कोडीए पुरित्यमिक्षं लवणसमुद्दं पुट्टे प्रज्ञात्यमिक्षाए कोडीए पर्वात्थांमहं लवणसमुद्दं पुट्टे एगं जोयणमयं उद्दूं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणाई उन्बेहेणं एगं जोयणमहस्सं यावण्णं च जोयणाई दुवालस य एगूणवीनइभाए जोयणस्स विक्खंभेणंति, तस्म वाहा पुरत्थिमपचित्थमेणं पंच जोयणगहस्माई तिष्णि य पण्णासं जोयणगए पण्णरस य एगुणवीसङ्भाए जोयणस्स अद्भागं च आयामेणं. तस्म जीवा उत्तरेणं पाईणपढीणायया जाव पत्रक्तियमिह्नाए कोडीए पर्चाःथिमिष्ठं त्रवणसम्बद्धं पुद्धा चडव्वीसं जोयणसहस्साई णव य वत्तीसं जोयणसए अद्भागं च किंचिविसेम्णा आयामेणं पण्णता, तीसे घणुपद्रे दाहिणेणं पणवीसं जोयणसहस्साइं दोिक्णि य तीसे जोयणसए चत्तारि य एगृणवीसङ्भाए जोयणस्म परिक्खेवेणं पण्णते, रुयगसंठाणसंठिए सन्दक्षणगामए अच्छे सण्हे तहेव जाव पांडिक्वे. उमओ पासि दोहि परमवरवेइयाहि दोहि य बणसंडेहि संपरिक्किसे दुण्हवि पमाणं वण्णगोत्ति । चुल्लहिमवन्तरस वासहरपव्वयस्स उवरि बहुसमर-मणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिगपुक्खरेड वा जाब बहुवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसर्यति जाव विहरंति ॥ ७२ ॥ तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिमागस्स बहुमज्झदेसमाए इत्थ णं इक्के महं पउमद्दहे णामं दहे पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिणो इक्कं जोयणसहस्सं आयामेणं पंच जोयणसयाई विक्खंभेणं दस जोयणाई उन्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूछे जाव पासाईए जाव पढिरूवेति, से णं एगाए पउमवरवेश्याए एगेण य वणसंहेणं सञ्बक्षो समंता संपरिक्खित वेडबावणसंडवण्णओ भाषियव्वीति. तस्स णं पउमह-इस्स चउद्दिसि चतारि तिसोवाणपडिस्त्रगा पण्णता, वण्णावासी भाणियञ्चोति । तेसि णं तिसोबाणपहिरूबमाणं पुरओ पत्तियं २ तोरणा पष्णता, ते णं तोरणा

णाणामणिमया॰, तस्म णं पडमहहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्यं महं एगे पडमे पण्णत्ते, जोयणं आयामविक्संमेणं अद्धजोयणं वाहहेणं दस जोयणाई उन्वेहेणं दो कोसे करिए जलंताओ साहरेगाई दमजोयणाई सञ्चरगेणं पण्णते. से णं एगाए जगईए सव्बजो नर्मता संपरिक्शित जम्बुद्दीवजगहप्पमाणा गवक्खकडण्वि तह खेव पमाणे-र्णात, तस्स णं पउमस्स अयमेयास्य वण्णावासे प॰, तं०-वइरामया मूळा रिद्वामए कंदे वेबलियामए णाले वेबलियाप्रया बाहिरपना अम्बूणयामया अस्मित्रपत्ता नवणिजमया केसरा णाणामणिमया पोक्सरवीयभाया कणगामई कण्णिया, सा णं० अद्धजोयणं आयामधिक्खंभेणं कोसं बाहत्वेणं सञ्चक्षणगामई अच्छा०. तीसे णं कृष्णियाए उपि बहुसम्रमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आर्तिग॰, नस्म णं बहुसमरमणिज्ञस्स भूसिभागस्य बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भवणे प० कोसं आयामेणं अदकोसं विक्संमेणं देसूणगं कोसं उहुं उचनेणं अणगसंमसय-साण्णिविद्वे पासाईए दरिसाणिजे , तस्स णं भवणस्य तिदिसिं तओ दारा प०, ते णं दारा पञ्चघणुसयाई उन्ने उन्नतेणं अन्नाइजाई घणुसयाई विक्खंमेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणनथूभियागा जाव वणमालाओ णेयव्वाओ, तस्स णं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिंग०, तस्स णं बहुमज्झदेगभाए एत्थ णं मर्ह्इ एगा मिणपेहिया प०, सा णं मिणपेहिया पंचधणुसयाहं आयाम-विक्संभेणे अञ्चार्जादं धणुसयाइं बाहुहेणं सञ्चमणिमई अच्छा 🗸 तीसे णं मणिपेडियाए उपि एत्य णं महं एगे सयणिजे पण्णते, सयणिजवण्णको भाषियव्वो । से णं पउसे अण्णेणं अष्टुसएणं पटमाणं तदबुबत्तप्पमाणमिताणं सव्वओ समंता संपरिक्यिते. ते णं पडमा अद्वजीयणं आयामविक्संभेणं क्रीसं बाह्रहेणं दसओयणाई उट्वेहेणं क्रीसं कमिया जलंताओ साइरेगाइं दसजोयणाइं उच्चतेणं, तसि णं पडमाणं अयमेयाहवे वण्णावासे पण्णते, तंजहा-वहरामया मूला जाव कणगामई कण्णिया, सा णं कण्णिया कॉसं आयामेणं अदकोसं वाहक्रेणं सम्वकणगामई अच्छा इति, तीसे णं कण्णियाए उप्पि बहुसमरमणिजे जाव मणीहिं उवसोभिए, तस्स णं पउमस्स अवस्तरेणं उनरेणं उत्तरपुरित्यमेणं एत्य णं चिरीए देवीए चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चतारि पउम-साहस्सीओ पण्णताओ, तस्स णं पडमस्स पुरित्थिमेणं एत्थ णं सिरीए देवीए चडण्हं महत्तरियाणं चत्तारि पडमा प॰, तस्स णं पडमस्स दाहिणपुरत्थिमेणं सिरीए देवीए अब्मितरियाए परिसाए अद्वर्ण्हं देवसाहस्सीणं अद्व परमसाहस्सीओ पण्णताओ, दाहिणेणं मज्ज्ञिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस परमसाहस्सीओ पण्णताओ, वाहिणमबत्यिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस पउमसाह-३८ समा०

स्सीओ पण्णताओ, पश्चित्यमेणं सन्गहं अणियाहिवईणं सन् पउमा पण्णता, तस्स णं पडमस्स चडिहिस सम्बओ समंत। इत्य णं सिरीए देवीए मोलसण्हं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं सोलस परमसाहस्सीओ पण्णताओ, मे णं तीहिं परमपरिक्खेवेहिं सञ्जक्षो समंता संपरिक्तिते. नं०-अब्धितरएणं मज्झिमएण बाहिरएणं, अब्भितरए पडमगरिक्खेवं बत्तीसं पडमसयसाहस्सीओ पण्णताओ मज्झिमए पडमपरिक्खेवं चनाठीसं परमसयसाहरूसीओ पण्णनाओ बाहिरए परमपरिक्खेवे अडवाठीसं परम-स्यमाहस्सीओ पण्णताओ, एवामेव सपुरुवावरेणं तिहि पउमपरिक्खेवेहिं एगा परमकोडी वीसं च पउपमयसाहरसीओ भवंतीति मक्खायं । से केणद्रेणं भंते ! एवं बुचड-पडमहहे २ १ गोयमा ! पडमहहे णं० तत्य २ देसे २ तहि २ वहवे उपालाई जाव सयसहस्मपत्ताई पटमहहप्पमाई पडमहहवण्णाभाई सिरी य दृख्य देवी महिन्निया जाय परिख्योवमहिस्या परिवसङ्, से एएणहेलं जाव अट्नरं च णं गोयमा ! पउमदृहस्स मासए णामधेजे पण्णेत ण क्रयाद णासि ण० ॥ ७३ ॥ नम्स णं पटमहहस्स पुरस्थिमिह्नणं तोर्णेणं गंगा महाणई पनुदा समाणी पुरस्था-भिमुही पर जीयणस्याई पञ्चएणं गंना गंगावनणकुड आवता समाणी पन तेवीसे जोयणमए तिण्णि य एगूणवीसडमाए जोयणस्य दाहिणःमिस्रही पव्यएणं गंता महया घडमुह्पवित्तिएणं मुताबिलहारसंहिएणं माइरेगजोयणगङ्गणं पवाएणं पवड्ट, गंगा महाणई जओ पवडद इतथ णं महं एगा जिब्भिया पण्णना, मा णं जिब्भिया अद्धजोयणं आयामेणं छ मुकोमाइं जोयणाडं विक्संमेणं अद्धकोसं बाहक्षेणं मगर-महावउद्भरंगणसंठिया सञ्जवइरामई अच्छा सण्हा, गंगा महाणई जत्य पवड३ एत्थ णं महं एगे गंगप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णते सिद्धे जोयणाई आयामविक्खंमेणं णउयं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं दस जोयणाई उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकले समतीरे वहरामयपासाणे वहरतले सुवण्णसुन्भरययामयवालुयाए वेस्-लियमणिफालियपडलपचोयडे सहोयारे सहोत्तारे णाणामणितित्यसुबद्धे बट्टे अणुपुव्य-सुजायवप्पगंभीरसीयलुख्छे संख्यापत्तभिसमुणाले बहु उपलक्षम् यण्लिणसभग-सोगंधियपोंडरीयमहापोंडरीयसयपत्तमहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपप्कङ्केसरोबचिए छप्प-यमहयरपरिभुज्जमाणकम्ले अच्छविमलप्रथस्तिले पुण्णे परिहृत्यभमन्तमच्छक्न्छ-भभ्रणेगसउणगणमिहुणपवियरियसहुष्णस्यमहुरसरणाइए पासाईए० । से णं एगाए परमवरवेड्याए एगेण य वणसण्हेणं सन्वओ समंता संपरिक्खित वेड्याबणसंहगाणं परमाणं वण्णओ भाणियव्यो, तस्स णं गंगप्यवायकुंडस्स तिदिसिं तओ तिसोंबाण-पडिस्वगा प०, तंजहा-पुरस्थिमेणं दाहिणेणं प्वस्थिमेणं, तेसि णं तिसोवाणपडि-

रूप्तगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते, तंजहा-वहरामया णेम्मा रिद्वामया पहहाणा वैरुलियामया खंभा सुवण्णरूपमया फलया लोहियक्खमईखो सुईओ वयरामया संघी णाणामणिमया आलंबणा आलंबणबाहाओति, तेसि णं तिसोवाणपटिस्वगाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं नीरणा पण्णना, ते णं तीरणा णाणामणिमया जाणामणिमएमु खंमेड उविशिवद्रसंणिविद्रा विविद्रमुत्तंतरोवचिया विविद्वताराख्वोवचिया ईहामियउसहतुर-गणग्मगर्विद्दगवालगकिण्णरुरुसर्भचमर्कुजरबणल्यपउमलयभतिचिता संभुरगय-बइरबंडयापरिगयाभिरामा विजाहरजमलजुयलजंतजुताविव अश्वीसहरसमालणीया स्बगसहस्मकलिया भिरामाणा भिविभममाणा चक्नुहोयणलेमा सहफासा सस्सिरी-यसवा घंटाविज्विवियमहुरमणहुरसरा पासाईया॰, तेसि णं तोरणाणं उवरिं बहवे अद्भद्रमंगला पर, तं०-सोत्थिए सिरिवच्छे जाव पडिख्वा, तेसि णं तोरणाणं उवरिं बहुवे किण्हचामरज्झया जाव मुक्किलचामरज्झया अन्त्र्हा सण्हा रूपपट्टा वहरामयदण्डा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासाइया ४. तेसि णं तोरणाणं उप्पि वहवे छताइच्छता पहागाइपहागा घंटाजुयला चामर्जुयला उप्पमहत्थगा परमहत्थगा जाव सय-सहस्तपत्तहत्यगा सञ्बरयणामया अच्छा जाव पडिस्वा, तस्स णे गंगप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे गंगादीवे णामं दीवे पण्णते अद्व जोयणाडं आयामविक्तंमेणं साइरेगाइं पणवीसं जोबणाइं परिक्लेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ मञ्चवयरामए अच्छे सण्हे०, से णं एगाए परमवरवेड्याए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्यिने वणाओ भाणियव्यो, गंगादीवस्य गं दीवस्स उपि बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्य णं महं गंगाए देवीए एने भवणे पण्णते कोसं आयामेणं अद्यकोसं विक्संमेणं देस्णगं च कोसं उड्डं उच्चतेणं अणेगखंभसयसण्णिविद्वे जाव यहमज्झदेसभाए मणिपेहियाए सयणिजे. से केणड्रेणं जाव सासए णामधेजे पण्णते, तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स दिन्सणिक्षेणं तोरणेणं गंगामहाणई पवृदा समाणी उत्तरहुमरहवासं एजेमाणी २ सत्तर्हि सलिलासहस्सेहि आछरेमाणी २ अहे खण्डप्पवायगुहाए वेयह्रपञ्चयं दालङ्क्ता दाहिणहुभरहवासं एजेमाणी २ दाहिणहुभरहवासस्स बहुभज्झ-देसभागं गंता पुरत्थाभिमुही आवता समाणी चोइसहिं सळिळासहस्सेहिं समग्गा अहे जगई दालइसा पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, गंगा णं महाणई पवहे छ सकोसाई जोयणाई विक्संमेणं अदकोसं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवर्षमाणी २ मुहे बासिंहें जीयणाई अद्धजीयणं च विक्खंभेणं सकोसं जोयणं उन्वेहेणं उमओ पासि दोहि परमवर्वेह्याहि दोहि वणसंहेहि

संपरिक्लिता वेदयानणसंडवण्णको भाणियन्वो, एवं सिंधूएवि णेयन्वं जाव् तस्स णं पउमद्दस्स पञ्चत्थिमिक्षेणं तोरणेणं सिधुआवत्तणकृष्टे दाहिणाभिमुही सिंधुप्पवा-यकुंडं सिंधुहीबो अद्वो मो चेव जाव अहेतिमिसगृहाए वेयहुपव्ययं दालहत्ता पचित्यमाभिम्ही आवत्ता समाणा चोहसमलिला अहे जगई पचित्यमेणं लवणसमृहं जाव समप्पेड, सेसं तं चेव । तस्स णं पउमदृहस्स उत्तरिक्षेणं तोरणणं रोहियंमा महाणई पनुदा समाणी दोण्णि छावत्तरं जोयणसए छच एगूणवीसहभाए जोयणस्म उत्तराभिसही पव्चएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं सुताबिल्हारसंठिएणं माइरेग-जीयणसइएणं पवाएणं पवडद्, रोहियंगा णामं महाणई जओ पवडड् एत्य णं महं एगा जिब्भिया पण्णता. सा णं जिब्भिया जोयणं आयामेणं अद्भेतरमजोयणाई विक्ननंभेणं कोसं वाहश्रेणं मगरमहविउद्रसंठाणसंठिया सन्ववहरामंड अन्छा ः रोहि-यंमा महाणडे जिहे पवडर एन्थ णं महं एगे रोहियंसापवायकुण्डे णासं कुण्ड पण्णते मवीसं जोयणसयं आयामविक्संनेणं तिष्णि असीए जोयणसए विःचित्रिसेस्णे परिक्खेवेणं दराजीयणाइं उच्वेहेणं अच्छे कुंडवण्णओ जाव तीरणा, नस्स णं रोहियंसापवायकुंडस्स बहमज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे रोहिगंसा णामं दीवे पण्णेन सोलस जोयणाई आयामविक्खंमेणं साइरेगाई पण्णासं जोयणाई परिक्षेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सव्वरयणामए अच्छे सण्हे सेसं तं चेव जाब भवणं अद्रो य भाणियव्यो, तस्य णं रोहियंसप्पवायकुंडस्स उत्तरिक्षेणं तोरणेणं रोहियंसा महाणई पत्रुढा समाणी हेमवयं वासं एजेमाणी २ चउइसिंह सलिलामहस्सेहिं आपूरेमाणी २ सहावडवहवेग्रह्मपञ्चयं अद्धजोयणेणं असंपत्ता समाणी पचत्थाभिमही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी २ अद्वावीसाए सलिलासहस्सेहिं नमग्गा अहे जगई दालइता पचिश्यमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, रोहियंसा णं॰ पवहे अद्धतेर-सजोयणाइं विक्खंमेणं कोसं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिवद्गमाणी २ मुह्मूले पणवीसं जोयणसर्य विक्खंमेणं अन्नाइजाई जोयणाई उच्वेहेणं उमओ पासि दोहिं पउमवरवेड्याहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खिता ॥ ७४ ॥ चुह्रहिमवन्ते णं भन्ते ! वासहरपन्वए कइ कूडा प॰ ? गोयमा ! इकारस कूडा प॰, तं०-सिद्धकृष्टे १ चुछहिमबन्तकृष्टे २ भरहकृष्टे ३ इलाईबीकृष्टे ४ गंगाईबीकृष्टे ५ सिरिक्टे ६ रोहियंसक्डे ७ सिन्ध्देवीक्डे ८ सुरदेवीक्डे ९ हेमवयक्डे १० वेसमणकृष्टे ११। कहि णं भन्ते ! चुह्नहिमवन्ते वासहरपञ्चए सिद्धकृष्टे णामं कृष्टे प॰ ? गोयमा ! पुरच्छिमलवणसमुद्दस्य पश्चतिबमेणं जुल्लीहमवन्तकृतस्य परित्यमेणं एत्थ णं सिद्धकृष्ठे णामं कृष्ठे पण्णते पंच जोयणसयाई उर्द्ग उचतेणं मूळे पंच जोय-

धसयाई विक्खंभेणं मज्हा तिष्णि य पण्णातरे जीयणसए विक्खंमेणं उप्पि अहाइजे जोयणसए विक्खंभेणं मृहे एगं जोयणसहस्सं पंच य एगासीए जोयणसए किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेणं मज्झे एगं जोयणसहरूसं एगं च छलसीयं जोयणसयं किंचि-विसेस्णं परिक्खेवेणं उपि सत्तइकाणउए जोयणसए किचिविसेस्णे परिक्खेवेणं, मूळे बिच्छिणं मज्झे संखिते उप्पि नणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे॰, से णं एगाए परमवरवेडयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्लिते, सिद्धस्स कूडस्स णं उप्पि बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव विहरित । कहि णं भनते ! चुल्लहिमवन्ते वासहरपव्यए चुल्लहिमवन्तकृडे णामं कृडे पण्णते ? गो॰ ! भरहकूडस्स पुर्विथमेणं सिद्धकृडस्स पञ्चतिथमेणं एत्थ णं चुक्कहिमवनते वासहरपव्वए चुक्कहिमवनत-कुडे णामं कुडे पण्णते, एवं जो चेव सिद्धकृडस्स उच्चर्नावक्खंमपरिक्खेवो जाब ब० भू० प॰ वणाओ, तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदैसभाए एत्य णं महं एंग पामायवर्डेमए एण्पने बासिट्ट जोयणाई अद्बजीयणं च उचतेणं इहतीसं जोयणाई कोसं च विक्खंभेणं अञ्चुरगयमृसियपहाँछए विव विविद्यमणिरयणभत्तिचित्ते वाउद्भय-विजयवेजयंतीपडागच्छताइच्छत्तकलिए दुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतररय-णपंजरूम्मीलिएवव मणिरयणथ्भियाए वियसियसयवत्तपुंडरीयतिलयरयणद्भचंदिचते णाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे वहरतवणिजरहलवाद्धयापत्यहे सहफासे सस्सिरीयस्वे पासाईए जाव पश्चिस्वे, तस्स णं पासायवर्डेसगस्स अंतो बहुसमर्मणिजे भूमिमारो प॰ जाव सीहासणं सपरिवारं, से केणद्वेणं भन्तं ! एवं वुचाः-चुह्नहिमवन्त-कृष्टे २ ? गो॰ !... चुह्रहिमदन्ते णामं देवे महिश्विए जाव परिवसङ्, कहि णं भनते ! चुह्रहिमवन्तगिरिकुमारस्य देवस्य चुह्रहिमवन्ता णामं रायहाणी प० ? गो० ! चुह्र-हिमवन्तकृष्टस्स दक्खिणेणं तिरियमसंखेखे दीवसमुद्दे वीईवइता अग्रण्णं जम्बुद्दीवं २ दक्तिजणेणं बारस जोयणसहस्साई ओगाहिता इत्य णं चुल्लहिमवन्तस्स गिरिकुमारस्स देवस्स चुह्नहिमवन्ता णामं रागद्वाणी प॰ बारस जोग्रणसहस्साइं आयामविक्खं-भेणं, एवं विजयरायद्वाणीसरिसा भाणियन्या,...एवं अवसेसाणवि कूडाणं वत्तन्वया णेयव्या, भायामविक्संभपरिक्सेवपासायदेवयाओ सीहासणपरिवारो अह्रो य देवाण य देवीण य रायहाणीओ गेयव्याओ, चउसु देवा चुह्नहिमवन्त १ भरह २ हेमवय ३ वेसमणकृष्टेम ४, सेसेम्र देवयाखो, से केणद्रेणं भन्ते । एवं युष्ट-चुह्नहिमवन्ते वासहरपञ्चए २ १ गो० ! महाहिमवन्तवासहरपञ्चयं पणिहाय आयामुचतुञ्चे-हिवक्खंभपरिक्खेर्व पदुष ईसि खडुतराए चेव हस्सतराए चेव णीयतराए चेव, चुझहिमबन्ते य इत्य देवे महिश्विए आब पिछ्छोवमद्विहए परिवसह. से एएणद्वेणं

गो । एवं वुच्च - चुह्न हिमवन्ते वासहरपव्वए २, अदुत्तरं च णं गो । चुह्न हि-मवन्तस्म॰ सांसए णामधेजे पण्णते जं ण कयाइ णासि॰॥ ७५॥ कहि णं भन्ते ! जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे प॰ ? गो॰! महाहिमवन्तस्स वामहरपव्वयस्स दिक्खणेणं चुक्रहिमवन्तरस बासहरपव्वयरस उत्तरेणं पुरित्थमळवणसमृद्दस्य पन त्थिमेणं पचत्थिमलवणमम् इस्म पुरत्थिमेणं एत्थ णं जंबुईवि दीवे हेमवए णामं बासे पण्णने, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पित्यंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्टे पुरस्थिमिक्राए कोडीए पुरस्थिमिक्रं लवणसमुद्दं पुट्टे पञ्चित्थ-मिल्लाए कोडीए पचित्थिमिहं लवणसमुदं पुट्टे दोण्णि जोयणसहस्माउं एगं च पंचुत्तरं जोयणसयं पंच य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्य विक्लंमेणं, तस्स बाहा पुरत्थिमपर्श्वान्थमेणं छज्जोयणसहस्साइं सत्त य पणपणां जोयणसए तिण्णि य एगुणवीसङ्गाए जोयणस्स आयामेणं, तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपढीणाय्या दहओ लवणसमुद्दं पुद्धा पुरस्थिमिल्लाए कोडीए पुरस्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुद्धा पर्वात्थिमिल्लाए जाव पुद्रा सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच चउवत्तरे जोयणसए सोलस य एगुणवीस-इभाए जोयणस्स किचिविसेस्ण आयामेणं, तस्त धणं दाहिणेणं अद्भतीसं जोयण-सहस्साई सत्त य चनाळे जोयणसए दम य एगूणवीसइभाए जोयणस्म परिक्खेवेणं. हेमवयस्स णं भन्ते ! वासस्स केरिसण् आयारभावपडोयारे पण्णेत्तं ! गो० ! वहसमर मणिजे भूमिमारी पणाते, एवं तह्यसमाणुभावी णेयव्वीति ॥ ७६ ॥ कहि णं भन्ते । हेमवए वासे सद्दावई णामे बढ़वेयन्नप्रव्वए पण्णते ! गोयमा ! रोहियाए महाणईए पचच्छिमणं गोहियसाए महाणईए पुरित्थमेणं हेमवयवासस्स बहमज्झदेसमाए एत्थ णं सहावई णामं वहवंयन्नपृथ्वए पण्णते एगं जोयणसहस्सं उन्हं उन्नतेणं अन्नाइजाइं जोयणसयाइं उन्बेहेणं सम्बत्यसमे पह्नासंठाणसंठिए एगं जोयणसहस्यं आयामविक्खंमेणं तिर्णिण जोयणसहस्साइं एगं च बावद्रं जोयणसयं किंचिविसेसा-हियं परिक्खेंनेणं पण्णते, सन्वर्यणामए अच्छे॰, से णं एगाए पडमवरनेइयाए एगेण य वणसंडेणं सन्वओ समंता संपरिक्खित, वेड्यावणसंडवणाओ भाषियन्त्रों. सहावहस्स णं वहवेयन्प्रपञ्चयस्स उविरं बहसमरमणिको भूमिमागे पण्णते. तस्स णं बहुसमर्मणिजस्स भूमिमागस्स बहुम ज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे पासायवर्डेसए पण्णते वावद्विं जोयणाई अद्यजोयणं च उन्नं उन्नतेणं इक्षतीसं जोयणाई कोसं च आयामविक्खंमेणं जाव सीहासणं सपरिवारं, से केणड्डेणं अंते! एवं वुच्ह-सहाक्डें वहवेयहुपव्यए २ १ गोयमा ! सहावहबह्रवेयहुपव्यए ण खुक्काखुद्वियासु वाबीस जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पळाइं पडमाइं सहावहप्पभाइं सहावहवण्णाई सहावहवण्णाभाइं

सहावई य इत्य देवे महिष्टिए जाव महाणुमावे पलिओवमद्विइए परिवसइ, से णं तत्व चउण्हं सामाणियमाहरूसीणं जाव रायहाणी मंदरस्य पन्वयस्य दाहिणेणं अण्णंमि जम्बुहींने दीने॰ ॥ ७७ ॥ से केण्ड्रेणं भन्ते ! एवं तुच्छ-हेमबए वासे २ ? गोयमा ! : : चुक्रहिमवन्तमहाहिमवन्तेहिं वासहरपव्वएहिं दुहओ समवगूढे णिचं हेमं दलड़ शिचं हेमं दलड़ता णिचं हेमं पगासड़ हेमवए य इत्थ देवे महिन्निए० पलिओव-महिद्रुए परिवसद्, से तेणद्वेणं गोयमा । एवं वुचद्-हेमयए वासे हेमवए वासे ॥ ५८॥ कहि णं भन्ते ! जम्ब्रुहीवे २ महाहिमवन्ते णामं बासहरपव्वए प० ? गो० ! हरि-वासस्स टाहिणेणं हेमवयस्स वासस्स उत्तरेणं पुरस्थिमलवणसमुद्दसः पश्चित्थिमेणं पचित्यमलवणसमुद्दस्य पुरिक्षमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे दीवे महाहिमनंते णामं बागहरपव्या पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिर्णाविच्छण्णे पिक्टबंकसंटाणसंठिए दुहा लवणनमुद्दं पुट्टे पुरस्थिमिल्लाए कोडीए जाव पुट्टे पचस्थिमिल्लाए कोडीए पचित्रमित्रं स्वणसमुद्दं पुट्टे दो जोयणसयाइं उन्हें उन्नेनेणं पण्णासं जोयणाइं उन्नेन हेणं चतारि जोयणसहस्साइं दोण्णि य दस्तारे जोयणसए दस य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्य विक्खंभेणं, तस्य बाहा पुरित्यमपचित्यमेणं णव जोयणसहस्साइं दोण्णि य छावत्तरे जीयणक्षए णव य एमूणवीसङ्भाए जीयणस्स अद्धभागं च आयामेणं. तस्म जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दहा लवणसमुद्दं पुद्वा पुरित्थिमिलाए कोडीए प्रित्थिमिहं ठवणसमुद्दं पुद्रा पश्चित्थिमिङ्काए जाव पुद्र। तेवण्णं जीवणसहस्माइं णव य एगतीसे जोयणसए छच एगूणनीसङ्भाए जोयणस्स किचिविसेसाहिए आयामेणं. तस्य धणुं दाहिणेणं मत्तावण्णं जोयणसहस्माइं दोण्णि य तेणउए जोयणमए दस य एगुणवीसइसाए जोयणस्य परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे० उभओ पासि दोहिं पडमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित । महाहिमव-न्तस्त णं वासहरप्रवयस्य उपि वहसमरमणिजे भूमिभागे प्रणते जाव णाणावि-इपजनण्णेहिं मणीहि य नणेहि य उनसोभिए जान आसयंति सर्यति य ॥ ७९ ॥ महाहिमनंतस्स णंडै बहुमज्झदेसभाए एत्य णं एगे महापउमदहे णामं दहे पण्णते दो जोयणसहस्साइं आयामेणं एगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उठवेहेणं अच्छे० रययामयकूळे एवं आयामविक्संभविहूणा जा चेव पजमइहस्स वत्तव्वया सा चेव णेयन्वा, पडमप्पमाणं दो जोयणाइं अहो जाव महापडमहहवण्णामाइं हिरी य इत्य देवी जान पिलेओनमिद्विहया परिवसङ्, से एएणहेणं गोयमा ! एवं वुष्वह॰, अदुत्तरं च णं गोयमा ! महापउमदृहस्स सासए णामधेजो प्रकृ जं ण क्रमाइ णासी ३ *** तस्स णं महापउमहहस्स दक्षिलाक्षेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवृद्धा समाणी सोलस

पंचुत्तरे जीयणसए पंच य एगूणवीसङ्भाए जीयणस्स दाहिणामिमुही पव्यएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं मुताबिहारसेठिएणं साइरेगदो जोयणसङ्गणं पवाएणं पवडड रोहिया णं महाणई जओ पवड़इ एत्य णं महं एगा जिन्भिया प०. सा णं जिन्भिया जोयणं आयामेणं अद्धतेरसजोयणाई विक्खंभेणं कोसं वाहक्रेणं मगरमहविउद्दसंठा-णसंठिया सव्ववहरामई अच्छा ०, रोहिया णं महाणई जहिं पत्रडड एत्थ णं महं एगे रोहियप्पवायकुं है णामं कुंहे प० गवीसं जोयणसयं आयामविक्खं मेणं पण्णतं ति णिण असीए जोयणसए किंचिविसेस्ण परिक्खेवेणं दय जोयणाई उब्वेहेणं अच्छे सण्हे सो चेब वणाओ बहरताळे बहे समतीरे जाव तोरणा, तस्म णं रोहियप्पवायकुण्डस्स बहुमज्ज्ञदेमभाए एन्थ णं महं एगे रोहियदीवे णामं दीवे पण्णते मोलम जोयणाई आयामविक्खंसेणं साइरेगाइं पण्णासं जोयणाइं परिक्खेवणं दो कांसे ऊसिए जलं-ताओ सव्यवदरामए अच्छे०, से णं एगाए परमवर्रवद्याए एगेण य वणसंडेणं सम्बओ समंता संपरिक्लिने, रोहिंगदीवस्स णं दीवस्य उप्पि बहुरुमरमणिजे भूमि-भागे पण्णते, तस्त णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्य बहुमज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे मवणे पण्णने कोसं आयामेणं संसं तं चेव पमाणं च अद्वो य माणियन्त्रो । तस्य णं रोहियप्पत्रायकुण्डस्य दक्खिणिहेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवृदा समाणी हेमबर्य वासं एजेमाणी ५ सहावई वृद्धेयहुपव्वयं अद्धजोयणणं असंपत्ता परत्थाभ-मही आवना समाणी हेमवयं वासं दहा विभयमाणी २ अद्वावीसाए मलिलामहस्सेहिं समग्ना अहे जगड़ं दालड़त्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेड, रोहिया णं॰ जहा रोहियंसा नहा पवाहे य मुद्दे य भाणियव्वा जाव संपरिक्तितना । तस्स णं महापउमदृहस्स उत्तरिक्षेणं तोरणेणं हरिकंना भट्टाणंइ पबृढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपविभिष्णं मुताबिल्हारसंठिएणं साइरेगदुओयणसङ्ग्णं पवाएणं पवडड़, हरिकंता णं महाणई जओ पवडड़ एत्थ णं महं एगा जिब्सिया प॰ दो जोयणाई आयामेणं पणवीसं जोयणाई विक्संमेणं अदं जोयणं बाह्रहेणं मगर्मह-विउद्वसंठाणसंठिया सन्वरयणामई अच्छा , इरिकंना णं महाणई अहि पवढइ एत्थ णं महं एगे हरिकंतप्पवायकंडे णामं कंडे पण्णते दोष्णि य चताले जोयणसए आया-मधिक्लंभेणं सत्तअरणद्वे जोयणसए परिक्लेबेणं अच्छे एवं कुण्डवतव्यया सव्वा णेयव्वा जाव तोरणा. तस्स णं इरिकंतप्पवायकुण्डस्स बहमज्झदेसभाए एत्य णं मई एने हरिकंतदीवे णामं दीवे प॰ वक्कीसं जोसणाई आयामविक्खंमेणं एगुत्तरं जोयण-सर्य परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सम्बर्यणामए अच्छे॰, से ण एगाए पड-

मवरवेडयाए एगेण य वणसंहेणं जाव संपरिक्षित वण्णओ भाणियव्वेति, पमाणं च सयणिजं च अद्वो य साणियन्यो । तस्स णं हरिकंतप्पवायकुण्डस्स उत्तरिक्षेणं तोरणेणं जाव परृटा समाणी हरिवस्सं वासं एजेमाणी २ वियडावई वहवेयहूं जोयणेणं असं-पत्ता पचत्थाभिमुही आदत्ता समाणी हरिवासं दुहा विभयमाणी २ छप्पण्णाए सलि-लासहस्सेहिं समगा अहे जगई दालइत्ता पचन्धिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेड, हरिकंता णं महाणङ् पत्रहे पणवीसं जोयणाङ् विक्लम्मेणं अद्वजोयणं उन्बेहेणं तयणंतरं च णं माथाए २ परिवर्ष्टमाणी २ मुहमूले अह्वाइजाइं जोयणसयाइं विक्खम्मेणं पन्न जोय-णाइं उन्बहेणं, उभओ पासि दोहिं पर्यमनरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्लिता ॥ ८०॥ महाहिमवन्ते णं भन्ते ! वासहरपव्वए कड कूडा प० ? गो० ! अब्रु कूडा प०, तं --सिद्धकृडे १ महाहिमवन्तकृडे २ हेमवयकृडे २ रोहियकूडे ४ हिरिकृडे ५ हिरि कंतफुड़े ५ हरिवासकुड़े ७ वेरुलियकुड़े ८, एवं चुल्लहिमवंतकुडाणं जा चेव वनव्यया सचेव णयव्वा, से केणट्टेणं भन्ते ! एवं वुचइ-महाहिमवंते वासहरपव्वए २ ? गोयमा ! महाहिमवंते णं वासहरपव्वए चुछ्रहिमवंतं वासहरपव्वयं पणिहाय आया-मुचत्तुव्येहविक्यत्रम्भपरिक्खेवेणं महंततगए चेव दीहतराए चेव, महाहिमवंते य इत्थ देवे महिष्ट्रिए जाव पिलञोवगद्विहरू परिषसइ '''।। ८१ ।। कहि णै भन्ते ! जम्बुद्दीवं दीवे हरिवासे णामं वासे प० ? गो० ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दिक्सणेणं महाहिमवन्तवासहरपव्वयस्स उत्तरेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस पञ्चत्थिमेणं पर्चात्थमत्त्रवणसमुद्दस्त पुरित्थमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे २ हरिवासे णामं वासे पण्णते एवं जाय पश्चत्थिमिछाए कोडीए पश्चत्थिमिछं लवणसमुदं पुट्टे अड जोयण-सहस्साई चनारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइमागं जोयणस्स विक्खम्भेणं, तस्स बाहा पुरिव्यमपर्यात्यमेणं तेरस जोयणमहस्साइं तिण्णि य एग-संहे जोयणसए छन्न एगूणवीसङ्भाए जोयणस्य अद्भागं च आयामेणंति, तस्त जीवा उत्तरेणं पाईणपदीणायया दुहा स्रवणसमुद्दं पुट्टा पुरत्थिमिल्लाए कोबीए पुरत्थिमिल्लं जाब लवणसमुदं पुद्वा तेक्तरिं जोग्रणसहस्साइं णव य एगुत्तरे जोग्रणसए सत्तरस य एगूणवीसहमाए जोयणस्स अद्भागं च आयामेणं, तस्स घणुं दाहिणेणं चउरासीइं जोयणसहस्साई सोलस जोयणाई चतारि एगृणवीसइसाए जोयणस्स परिक्खेवेणं । हरिवासस्य णं भनते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे प॰ १ गोयमा ! बहुसमर-मणिखे भूमिमाने पण्णते जाव मणीहिं तणेहि य उवसोमिए एवं मणीणं तणाण य कणो गन्धो फासो सहो भाणियन्त्रो, हमिवासे णं० तत्थ २ देसे २ तर्हि २ वहवे खुड़ा-खुड्डियाओ एवं जो सत्तमाए अणुभावो सो चेंब अपरिसेसो वत्तको । कहि णं भन्ते !

हरिवासे वासे विग्रडावई णामं वहवेगडुपव्वए पण्णने ? गो॰ ! हरीए महाणहेए पश्चत्थि• मेणं हरिकंताए महाणईए पुरस्थिमेणं हरिवासस्य २ बहुमज्झदेसमाए एरथ णं वियडावई णामं वहवेयश्रुपञ्चए पण्णते, एवं जो चेव सहावइस्स विक्लंभुचतुन्वेह-परिक्खेवसंठाण वण्णावासी य सो चेव वियडावइस्सवि भाणियम्बो, णवरं अरुणो देवो पउमाइं जाव वियङावद्वण्णाभाइं अरुणे य उत्थ देवे महिन्निए एवं जाव दाहि-णेणं रायहाणी णेयव्वा. से केणट्रेणं भन्ते ! एवं वृच्छ-हरिवासे हरिवासे ! गोयमा ! हरिवासे णं वासे मणुया अरुणा अरुणोमासा संया णं मंखदलसण्णिगासा हरिवासे य इत्थ देवे महिष्कृए जाव पलिओवर्माद्भरुए परिवमङ्, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुचडः ॥ ८२ ॥ कहि णं मन्ते ! जम्बुहीवे २ णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णते ! गोयमा ! महाबिटेहस्स बामस्य दक्खिणेणं हरिवासस्य उत्तरेणं पुरिधमलवणममुहस्य पन्न-त्थिमेणं पचित्यमरुवणसमुहस्स प्रतियमेणं एत्थ णं जम्बुहीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविन्छण्णे दुहा लवणसमुई पुट्ठे पुरिन्थमिछाए जाव पुट्टे पचित्थमिछाए जाव पुट्टे चत्तारि जोयणसयाई उड्हे उच्च-त्तेणं नत्तारि गाउयसयाई उब्वेहेणं सोलस जायणसहस्ताई श्रद्ध य वायालं जोयण-सए दोण्णि य एगुणवीसङ्भाए जोयणस्य विक्खम्मेणं, तस्य बाहा पुरित्थमपचित्थ-मेणं वीसं जोयणसहस्साई एगं च पणद्रं जोयणसयं दुष्णि य गगुणवीयडभाग् जोय-णम्म अद्भागं च आयामेणं. तस्स जीवा उत्तरेणं जाव चउणवडं जोयणमहस्साइं एगं च छप्पणं जोयणमयं दुष्णि य एगूणवीसङभाए जोयणस्स आयामेणंति, तस्स धणुं दाहिणेणं एगं जोवणसयसहस्सं चउवीसं च जोवणमहस्साई तिण्णि य छ।वाले जोयणमए णत्र य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ह्यगसंठाणसंठिए गव्वतव-णिजमए अच्छे॰, उमओ पासि दोहिं पउमबरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं जाव संप-रिक्सित, णिसहस्स णं वामहर्पञ्चयस्य उप्पि बहुसमर्मणिजे भूमिमागे पण्णते जाव आसयंति सयंति ..., तस्स णं वहसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुभज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे तिगिछिद्दहे जामं दहे पण्णसे, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिणो चतारि जोयणसहस्साइं आयामेणं दो जोयणसहस्साइं विक्खंमेणं दस जोयणाइं उच्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकृष्ठे०, तस्स णं तिगिच्छिद्दहस्स चउ हिसि चत्तारे तिसोवाणपिकवगा प॰ एवं जाव आयामविक्खम्मविद्वणा जा चेव महापडमद्द्वस्स बत्तव्वया सा चेव तिगिं-छिद्दरसर्वि वत्तव्वया तं चेव पउमद्दृष्पमाणं अद्वो जाव तिगिछिवण्णाई, बिई य इत्य देवी पलिओवमद्विह्या परिवसङ्, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-तिगिछिद्दहे तिगिछिद्दहे ॥८३॥ तस्स णं तिर्गिछिद्दहस्स दिक्खिणिक्षेणं तोरणेणं हरिमहाणई पवृद्धा समाणी सत्त

जोबणसहस्साई बतारि य एक्कवीसे जोबणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोबणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवित्तिएणं जाव साइरेगचरजोयण-सङ्ग्णं प्रवाएणं पवडइ, एवं जा चेव हरिकन्ताए क्तव्वया सा चेव हरीएवि णेयव्या, जिद्भियाए कुंडस्स दीवस्स भवणस्य तं चेव पमाणं अद्वोऽवि भाणियव्वो जाव अहे जगइं दाळहत्ता छप्पण्णाए सिळलामहस्सेहिं समग्गा पुरित्थमं लवणसमुद्दं समप्पेइ, तं चेव पवहे य मुहम्ले य प्रमाणं उब्बेही य जो हरिकन्ताए जाव वण-संदर्भपरिक्सिता. तस्य णं तिगिछिद्दरम उत्तरिलेणं तोरणेणं सीओया महाणई पवृद्धा समाणी सत्त जोयणसहस्भाइं चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगण-वीमइभागं जोवणस्य उत्तराभिमुही पव्यएणं गंता महया घडमुहपवितिएणं जाव साइरेगन उजीयणसङ्ग्णं पवाएणं पवटङ्, सीओया णं महाणई जओ पवडङ् एत्थ णं सहं एगा जिब्सिया पण्णता चनारि जोयणाई आयामेणं पण्णासं जोयणाई विक्लंभेणं जोयणं बाह्हेणं मगरमुह्विउद्वसंठाणसंठिया सञ्बवइरामई अच्छा०, सीओया ण महाणई जिंह पत्रडइ एत्थ ण महं एगे सीओयप्यवायकुण्डे णामं कुन्डे पण्णते चतारि असीए जोयणसए आयामविक्खंमेणं पण्णरसअद्वारे जोयणसए किचिविसेस्णे परिक्खेवेणं अच्छे एवं कुंडवत्तव्वया णेयव्वा जाव तोरणा । तस्य णं सीओयप्पवायकुण्डस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थ णं महं एगे सीओयदीवे णामं दीवे पण्णने चउमद्विं जोयणाहं आयामविक्खंत्रेणं दोण्णि बिउत्तरे जोयणसर् परिक्खेवेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सब्बनइरामए अच्छे सेसं तहेव वेइयानणसंडभूमिमाग-भवणसयणिज्ञअद्वो भाणियव्वो. तस्य णं सीओयप्पवायकुण्डस्स उत्तरिलेणं तोरणेणं सीओया महाणई पबूठा समाणी देवकुर्र एजेमाणी २ चित्तविचित्तकूढे पव्वए निसद-दवकुम्म्र्रपुरुस्तिज्जुप्पभदहे य दुहा विभयमाणी २ चउरासीए सलिलामहस्सिहिं आपूरेमाणी २ भह्सालवणं एजेमाणी २ मंदरं पव्वयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पचित्यमाभिमुही आवत्ता समाणी अहे विज्जुप्पभं वस्खारपन्त्रयं दारङ्गा मन्दरस्स पन्वयस्स पन्नश्यिमेणं अवर्विदेहं वासं दृहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कवष्टि-विजयाओ अद्वावीसाए २ सिळलासहरसेहिं आपूरेमाणी २ पञ्चिहें सिळलासयसहरसेहिं दुतीसाए य सिळलासहस्सेहिं समग्गा अहे जयंतस्स दारस्स जगई दाळङ्ना पचित्यमेणं स्वणसमुदं समप्पेइ, सीओया णं महाणई पनहे पण्णासं जोयणाई विक्रतं मेणं जोयणं उच्वेहेणं, तयणंतरं च णं मात्राए । परिवह्नमाणी २ मुहमूले पञ्च जोयणसयाइं विक्खम्मेणं दस जोयणाइं उच्वेहेणं उमभो पासि दोहिं पउमदर-वेड्याहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खिता। णिसढे णं अन्ते ! वासहरपन्वए कह कूडा पण्णता ? गोयमा ! यद कूडा पण्णत्ता, तंजहा-सिद्धकृढे १ णिसडकृढे २ हरिवासकृढे ३ पुरुषविदेहकुडे ४ हरिकृडे ५ धिईकूडे ६ सीओयाकूडे ७ अवर-विदेहकृडे ८ रूपगकृडे ९ जो चेव नृह्महिमवंतकृडाणं उच्चत्तविक्सम्भपरिक्खेवो पुरुववण्णिओ रायहाणी य सचेव इहंपि णेयव्या. से केणड्रेणं भनते ! एवं वृचह-णिमहे वासहरपञ्चए २ ? गोयमा ! णिसहे णं वागहरपञ्चए बहुवं कृडा णिमह-संठाणसंठिया उसमसंठाणसंठिया, णिसहे य इत्थ देवे महिद्विए जाव पलिओवम-द्विहरू परिवसट, से नेणद्वेणं गोयमा ! एवं वुचड्-णिसहे त्रासहरपव्दर् २…॥ ८४॥ कहि णं भन्ते ! जम्ब्रहींवे दीवे महाविदेष्ठे णामं वासे पण्णते ? गोयसा ! णील-वन्तस्म वामहरपव्वयस्य दक्खिणेणं णिमहस्स वासहरपव्वयस्य उत्तरेणं पुरत्य-मलदणसमुद्दस्य पचित्यमेणं पचित्यमलवणसमृद्दस्य पुरत्यिमेणं एत्थ णं जम्बुईवि २ महाविद्हे णामं वासे पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंक-संटाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्टे पुरस्थिम जाव पुट्टे प्रचरिश्रमिक्काए कोडीए पन-त्थिमिल्लं जाव पुट्टे वंतीसं जोयणसहस्साइं छच चुलसीए जोयणसए चतारि य एगृणवीसङ्भाए जोयणस्य विक्नुम्मेणंति, तस्य बाह्य पुरित्यमपचित्थमेणं नेत्तीमं जीयणसहस्साइं सन य सत्तसट्टे जीयणसए सत्त य एगूणवीसहभाए जीयणस्स आयामेणंति, तस्स जीवा बहुमज्झदेसभाए पाईणपडीणायया दुहा स्वणसमुद्दं पुट्टा पुरत्थिमिहाए कोवीए पुरत्थिमिहं जाव पुद्रा एवं पुत्रस्थिमिहाए जाव पुद्रा एगं जोयणसयसहरूसं आयामेणंति. तस्स धणुं उमको पारिं उत्तरदाहिणेणं एगं जोय-णमयसहस्सं अद्वावण्णं जोयणसहस्साइं एगं च तेरस्तरं जोयणसयं सोलस य एगूण-वीसइभाग जोयणस्स किंचिविसेसाहिए परिन्खेवेणंति, महाविदेहे णं वासे चडिन्नहे चउप्पडोयारे पण्णते, तंजहा-पृथ्वविदेहे । अवरविदेहे २ देवकूरा ३ उत्तरकुरा ४. महाविदेहरस णं भनते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते १ गोयमा ! बहसमरमणिजे भूमिनाने पण्णते जाव कित्तिमेहि चेव अकित्तिमेहि चेव । महाविदेहे णं भन्ते ! वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते १० तेसि णं मणुयाणं छिन्दिहे संघयणे छिन्दिहे संठाणे पश्चध्णसमाई उन्नं उन्नतेणं जहण्णेणं अंतोमहत्तं उन्नो-सेणं पुरुवकोडीआउयं पाछेन्ति पाछेता अप्पेगइया णिर्यगामी जाव अप्पेगइया सिज्झंति जाव अंतं करेन्ति । से केणहेणं भन्ते ! एवं बुचड्-महाविदेहे वासे २ ? गोयमा! महाबिदेहे णं वासे भरहेरवयहेमवयहेरण्णवयहरिवासरम्मगवासेहिंतो आयामविक्सम्भसंठाणपरिणाहेणं विच्छिण्णतराए चेव विपुलतराए चेव महंततराए चेव सप्पमाणतराए चेव महाविदेहा य इत्य मणूसा परिवसंति, महाविदेहे य इत्य देवे

महिह्निए जाद पिलओवमिद्विहरू परिवयह, से तेणद्वेणं गोयमा ! एवं बुच्चह-महा-विदेहे वासे २, अदुत्तरं च णं गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेजे यण्णते जं ण क्यार् णासि ३ · · ।। ८५ ।। कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे गन्ध-मायणे णामं वक्खारपञ्चए पण्णते ? गोयमा ! णीलवन्तस्स बासहरपञ्चयस्स दाहिणेणं मंदरस्त पव्ययस्य उत्तरपचित्थमेणं गंधिलावहस्स विजयस्स पुरन्छिमेणं उत्तरकुराए पञ्चत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे गन्धमायणे णामं वक्खारपव्यए पण्णते, उत्तरदाहिणायए पाईणपढीणविच्छिण्णे तीसं जोयणसहस्साई दुण्णि य णउत्तरे जोयणसए छन्व य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्य आयामेणं णीळवंतवासहर-पव्ययंतेणं चतारि जोयणभयाई उद्गं उच्चतेणं चत्तारि गाउचसयाई उव्वेहेणं पञ्च जोयणसयाई विक्लम्भेणं तयशंतरं च णं मायाए २ उस्सेहुव्येह्परिवद्वीए परिक्ट्च माणे २ विक्खम्भपरिहाणीए परिहायभाणे २ संदरपव्ययंतर्णं पत्र जोयणसयाई उद्गं उभ्रतेणं पन्न गाउयस्याइं उब्बेहेणं अंगुलस्स असीखजहमागं विक्खम्मेणं पणाते गयदन्तसंठाणसंठिए सन्वरयणामए अच्छे०, उभओ पासि दोहि परमवरवेटयाहि दोहि य वणसंडिहि सव्बओ समन्ता संपरिक्खिने, गन्धमायणस्य णं वक्खारपव्व-यस्त उप्पि बहुसमर्मणिजे भूमिमार्गे जाव आसयन्तिः। गन्धमायणे णं वक्सार-पव्वए कइ कृडा पण्णता ? गो० ! सत्त कृडा प०, तंजहा-सिद्धकृडे १ गन्ध्रमायणकृडे २ गंधिलावईकृडे ३ उत्तरकुरुकृडे ४ फल्हिकूडे ५ लोहियक्सकृडे ६ आणंदकूडे ७। कहि णं भन्ते ! गंधमायणे वक्खारपव्यए सिद्धकृढे णामं कूडे पण्यते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपश्चित्यमेणं गंधमायणकृडस्स दाहिणपुरन्थिमेणं एत्थ णं गंधमायणे वक्सारपञ्चए सिद्धकुडे णामं कूडं पण्णते, जं चेव बुह्हहिमवन्ते सिद्धकृडस्स प्रमाणं तं चेव एएसि सब्बंसि भाणियव्यं. एवं चेव विदिसाहि तिण्णि कूडा भाणियव्या, चउत्थे तद्दयस्स उत्तरपञ्चत्थिमेणं पञ्चमस्स दाहिणेणं, गेमा उ उत्तरदाहिणेणं, फलिहलोहियक्खेसु भोगंकरभोगवईक्षो देवयाओ सेसेस सारसणा-मया देवा, इसुवि पासायवर्डेंसगा रायहाणीओ विदिसास. सं केणहेणं भन्ते! एवं वृत्तह-गंधमायणे वक्खारपञ्चए २ १ गो० ! गंधमायणस्स णं वक्खारपञ्चयस्स गंधे से जहाणामए-कोद्वपुडाण वा जाव पीसिजमाणाण वा उक्किरिजमाणाण वा विकिरिज्ञमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला सणुण्णा जाव गंधा अभि-णिस्सवन्ति, भवे एग्रारूवे ?, जो इजड्डे समड्डे. गंधमायणस्य णं इत्तो इड्डतराए चेव जाद शंधे पण्णेते. से एएणट्रेणं गोयसा ! एवं वुचाइ-गंधसायणे वक्खारपञ्चए २, गंबमायणे य इत्य देवे महिब्रिए ... परिवसइ, अदुत्तरं च पं० सासए णामधेजे

···।। ८६ ॥ किं णं भन्ते ! महाविदेहे वासे उत्तरकुरा णामं कुरा प० ? गो॰ ! मंदरस्म प्व्वयस्म उत्तरेणं णीलवन्तस्स वासहरप्व्वयस्स दक्खिणेणं गन्धमायणस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरस्थिमेणं मालवन्तस्स वक्खारपञ्चयस्स पचरिथमेणं एत्य णं उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णता. पाईणप्रहीणायया उदीणदाहिणविन्छिण्णा अद्भन्तंद-संठाणसंठिया इक्कारस जोयणसहस्ताई अद्व य वायाले जोयणमए दोण्णि य एगृण-वीमइभाए जोयणस्य विक्खम्मेणंति, तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपढीणायया दुहा बक्कारपञ्चयं पुट्टा, तंजहा-पुरन्थिमिहाए कोडीए पुरन्थिमिहं वक्खारपञ्चयं पूट्टा एवं पचित्र्यमिल्लाए जाव पचित्र्यमिलं वक्स्तारपञ्चयं पुद्धा तेवण्णं जोयणसहस्साई आयामेर्णात. तीसे णं धणुं दाहिणेणं सिंह जोयणसहस्साई चनारि य अद्वारसे जोयणसए दुवालम य एगुणवीसद्भाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, उत्तरकुराए णं भन्त ! कुराए केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ! गोयमा ! बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते. एतं पुत्रवण्णिया असेव मुगममुसमायत्तव्वया ससेव णेयव्या जाव परमर्गमा १ मियर्गमा २ अममा ३ सहा ४ तेयतली ५ सर्णिचारी ६॥ ८७॥ व्हि णं भनते ! उत्तरकुराए २ जमगा णामं दुवे पञ्चया पण्णना ? गोयमा ! जीलवंतस्स वागहरपव्ययस्य दक्क्लिणिलाओ चरिमन्ताओ अद्वजीयणमए चोत्तीमे चत्तारि य सनभाए जोयणस्य अवाहाए सीयाए महाणईए उभओ कुछे एर्य णं जमगा णामं दुचे पव्यया पण्णता जोयणसहस्सं ट्रह्नं टब्बेतेणं अहाइजाइं जोयणसयाइं टव्वेहेणं मुळे एवं जोयणसहस्तं आयामविक्लम्मेणं मज्हे अद्भुद्रमाई जोयणसयाई आयाम-विक्सममेणं उन्हेरं पंच जोयणस्याइं आयाम्यिक्समोणं मुले तिण्णि जोयणसह-स्साइं एरं च बाबद्वं जोयणसयं किंचिविसेमाहियं परिक्खेवेणं मज्हे दो जोयणसह-स्साइं तिष्णि बावत्तरे जीयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्येवेणं उबरि एगं जीयण-महत्सं पञ्च य एकासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं मृत्रे विच्छिण्णा मज्झे संखिना उप्पि तुण्या जमगसंठाणसंठिया सव्वक्रणगामया अच्छा सण्हा० पत्तेयं २ पटमवरवेझ्यापरिक्सिता पत्तेयं २ वणसंडपरिक्खिता, ताओ णं पडम-वरवेइयाओ दो गाउयाइं उन्हें उन्नतेणं पश्च धणुसयाहं विक्सम्मेणं, वेह्यावण-सण्डवण्णजो भाणियव्यो, तेसि णं जमगपव्ययाणं उप्पि बहुसमरमणिजे भृमिमागे पण्णते जाव तस्स णं बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्य णं दुने पासायवडेंसना प०, ते णं पासायवडेंसना बाबद्विं जोयणाई अद्यजीयणं न उद्दं उच्चतेणं इक्षतीसं जोयणाई कोसं च आयामविक्खंभेणं पासायवण्णको भाणियव्यो, सीहासणा सपरिवारा जाव एत्थ णं जमगाणं देवाणं सीलसण्हं

आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भहासणसाहस्सीओ पण्णताओ, से केणहेणं मंते 🕽 एवं ब्चइ-जमगा पव्वया २ ? गोयमा ! जमगपव्यएसु णं तत्य २ देसे २ तहिं २ बहुवे लुडुखिरियास वावीस जाव बिलपंतियास बहुवे उप्पलाई जाव जमगवण्णा-भाई जमगा य इत्थ दुवे देवा महिह्निया०, ते णं तत्थ चउण्हं मामाणियसाह-स्सीणं जाव भुजमाणा विहरंति, से तेणद्रेणं गो०! एवं वुचड्-जमगपव्वया २, अटुनरं च णं सासए णामधेजे जाव जमगपब्बया २। ऋहि णं भन्ते ! जमगाणं देवाणं र्जामगाओं रायद्वाणीओ पण्णताओं ? गोयमा ! जम्बद्दीव दीवे मन्दरस्य पन्वयस्य उत्तरेणं अण्णंमि जम्बुद्दीवे २ बारस जीयणसदृरसाई ओगाहिता एत्थ णं जमगाणं देशणं जीमगाओ रायहाणीओ पण्णताओ बारम जोयणसहरूसाई आयामविक्खम्भेणं सत्ततीसं जोयणसहरूमाइं णत्र य अडयाले जोयणसए किंन्वियसेसाहिए परिकृतेवेणं. पत्तेयं २ पायारपरिक्खिता. ते णं पागारा सत्ततीसं जोयणाडं अद्वजीयणं च उन्हें उन्नेणं मुळे अस्तरसजीयणाइं विक्खम्भेणं मज्हे छ सकोसाइं जोयणाई विक्खम्भेणं टवरि तिण्णि सअद्भवोसाइं जोयणाइं विक्खम्भेणं मुखे विच्छिणा मुज्झे संखिता उपि तगुया वाहि बहा अंतो चडरंसा सन्त्ररयणामया अच्छा . ते णं पागारा णाणामणि-पञ्चवण्णेहि कविसीमएहि उवसोहिया, तंजहा-किण्हेहि जाव सुद्धिहेहि, ते ण कवि-सीमगा अदकोसं आयामेणं देसणं अदकोसं उन्हें उन्नतेणं पन्न घणसयाई बाहहेणं सन्वसणिमया अच्छा॰, जमिगाणं रायहाणीणं एगमेगाए बाहाए पणवीसं पणवीसं दारसयं पण्णतं, ते णं दारा बावट्टिं जीयणाई अद्धजीयणं च टब्हं उचतेणं इक्षतीसं जीयणाई कोसं च विक्खम्मेणं तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगध्भियागा एवं रायप्पसेण्डज्जविमाणवत्तव्वयाए दारवण्णओ जाव अद्भद्धमंगलगाइति. जमियाणं रायहाणीणं चउद्दिसं पद्म पञ्च जोयणसए अवाहाए चतारि वणसण्डा पण्णना, तंजहा-असोगवणे १ सत्तिवण्णवणे २ चंपगवणे ३ चूयवणे ४, ते णं वणसंडा साइरेगाडं बारसजोयणसहस्साइं आयामेणं पञ्च जोयणसयाहं विक्लम्सेणं पत्तेयं २ पागारपरिक्लिसा किण्हा वणसण्डवण्णओ भूमीओ पासायवर्डेसगा य माणियच्या, जमिगाणं रायहाणीणं अंतो बहसमरमणिजे भूमिमागे पण्यते वण्यगोत्ति, तेसि णं वहुसमरमणिजाणं भूमिभागाणं वहुमज्झदेसभाए एत्य णं दुवे उवयारियालयणा पण्णता वारस जीयणसयाइं आयामविक्खम्भेणं तिण्णि जीयणसहस्साइं सत्त य पश्चाणउए जोयणसए परिक्खेवेणं अद्धकोसं च बाह्रहेणं सञ्चजंबूणयामया अच्छा०. पत्तेयं पत्तेयं पडमबरवेइयापरिविस्तता. पत्तेयं पत्तेयं वणसंख्यण्यओ भाषियव्यो. तिसोनाणपडिरूवगा तोरणचउद्दिसं भूमिभागा य भाणियन्वति, तस्स णं बहमज्झ-

देसभाए एत्थ णं एरे पासायवडेंसए पण्णते वावद्वि जोयणाई अढजोयणं च उन्ने उच्चतेणं इकतीसं जोयणाइं कोसं च आयामविक्खम्मेणं वण्णओ उल्लोया भूमिमागा सीहामणा सपरिवारा, एवं पासायपंतीओ एत्थ पढमा पंती ते णं पासायवर्डिमगा एकतीसं जोयणाई कोसं न उड्डं उबतेणं माइरेगाई अद्भोलसजीयणाई आयाम-विक्लम्मेणं बिडयपासायपंती ने णं पासायवर्डेसया साहरेगाई अद्भरोलपजोदणाई उद्गं उन्हें ने साइरेगाई अद्भानं जीयणाई आयामविक्सम्मेणं तहस्यानायपंती ते णं पासायवर्डेसया साइरेगाई अद्भुसाई जोयणाई उद्गे टबरोणं नाइरेगाई अद्भुत-जोयणाइं आयामविक्खम्मेणं वण्यक्षो सीहासणा सर्पारवारा, तेर्गस णं मूलपामाय-वर्डिमयाणं उत्तरपुरच्छिमे दिसीमाए एत्थ णं जमगाणं देवाणं सहाओ मुहम्माओ पण्णताओ अद्भृतेरसजीयणाई आयामेणं छस्मकोसाई जोयणाई विक्लम्भेणं णव जोयणाई उद्भं उच्चनेणं अणेगसम्भसयमण्णिविद्रा समावणाओ तासि णं समाणं सहस्माणं तिदिसि नओ दारा पण्णता, ते णं दारा दो जीयणाई उद्दे उचनेणं जोयणं विक्खम्भेणं तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वण्णको जाव वणमाला, तेसि णं दाराणं पुरक्षो पत्तेयं २ तओ महमंडवा पण्णता, ते णं महमंडवा अद्धानरसजीयणाई आयामेणं छस्सकोसाई जोयणाई विक्खम्मेणं माइरेगाई दो जोयणाहं उन्ने उन्नतेणं जाव दारा भूमिभागा य ति. पैन्छाघरमंडवाणं तं चेव पमाणं भृमिभागो सणिपेडियाओत्ति, ताओ णं मणिपेडियाओ जोयणं आयामवि-क्खम्भेणं अद्वजोयणं बाहर्रेणं सव्वमणिम्हया सीहासणा भाणियव्वा. तसि ण पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ तक्षे मणिपेहियाओ पण्णताओ, ताओ णं मणिपेहियाओ जोवणं आयामविक्खम्भेणं अद्धजोवणं बाह्रहेणं, नासि णं उपि पत्तेयं २ महिदज्क्षया पण्णता, ते णं अद्भुद्धमाई जीयणाई उन्ने उन्नतेणं अद्कासं उन्वेहेणं अद्भोसं बाह्रहेणं वहरामयवद् वण्णओ वेहयावणसंडतिसोवाणतोरणा य भाणियव्वा, नासि णं समाणं सुहम्माणं छचमणोगुलियासाहस्तीओ पण्णसाओ, तंत्रहा-पुरित्यमेणं दो साहरसीओ पण्णताओ पश्चित्थमेणं दो साहरसीओ दिनखणेणं एगा साहरसी उत्तरेणं एगा जाव दामा चिद्वेतिति, एवं गोमाणसियाओ, णवरं ध्वचडियाओति, नासि णं सुहम्माणं सभाणं अंतो बहुसमरमणि भूमिभागे पण्णेत, मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा विदिसाए सयणिजवणाओ, सर्याणजाणं उत्तरपुरिवमे दिसीमाए खुका-महिंदज्ज्ञया मणिपेडियाविहूणा महिंदज्ज्ञयप्पमाणा, तेसि अवरेणं चोप्फाला पहर-णकोसा, तत्य णं बहवे फलिहरयणपासुक्खा जाव चिह्नंति, सहस्माणं • डप्पि अहुहु-मंगलगा, एवं अवसेसाणवि सभाणं जाव उक्वायसभाए सयिकजं हर्जो य,

अभिसेयसभाए बहु आभिसेक्दे भंडे, अलंकारियसभाए बहु अलंकारियमंडे चिट्टर, ववसायसभास पुत्ययस्यणा, णंदा पुक्खिरणीओत्ति, उववाओ अमगाणं अभिसे-यविहूसणा य वबसाओ । अवरं च मुहम्मगमो जहा य परिवारणाइ ही ॥ १॥ जावडर्याम पमाणंमि हुंति जमगाओं णीलवंताओ । नावइयमन्नरं सलु जमगदहाणं " दहाणं च ॥ २ ॥ ८८ ॥ कहि णं भनते ! उत्तरकुराए २ णीलवन्तइहे णामं दहे पण्णते ? गोयमा ! जमगाणं० दिक्तिणिहाओ वरिमन्ताओ अद्वसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीयाए महाणईए बहुमञ्झदेसभाए एत्थ णं णीलवन्तद्दे णामं दहे पण्यत्ते, दाहिणउत्तरायए पाईणपदीणविच्छिण्णे जहेव पडमद्दे नहेव वण्णओ णेथव्यो, णाणतं दोहिं पउमवरवेश्याहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरि-विखते, णीलवन्ते णामं पागकुमारे देवं सेसं तं चेव णेयव्वं, णीलवन्तरहरूस पुव्यावरे पासे दम २ जोयणाई अवाहाए एत्थ णं वीसं कंचणगपव्यया पण्णता, एगं जोयणसयं उहूं उच्चत्तर्ण-मूलंमि जोयणमयं पण्णत्तरि जोयणाई मज्झंमि । उवरितले कंचणगा पण्णासं जोयणा हुंति ॥१॥ मलंमि तिष्णि सोखे सनतीसाई दुष्णि मज्झंमि । अद्वावण्णं च ययं उविस्तिके परिरओ होइ ॥ २ ॥ पढमिन्थ नीलवन्तो १ विद्ओ उत्तरकुर २ मुणयन्त्रो । चंदरहोत्य तङ्भो ३ एरावय ४ मालवन्तो य ५ ॥ ३ ॥ एवं वन्णओ अद्वो प्रमाणं पलिओवमद्विद्या देवा ॥ ८९ ॥ कहि णं भन्ते ! उत्तरकुराए २ जम्बूपेढे गामं पेढं पण्यते ! गोयमा ! णीलयन्तस्स वासहरपन्त्रयस्स दक्खिणेणं मन्दरस्य ॰ उत्तरेणं मालवन्तस्स वक्खारपन्वयस्स पश्चित्यमेणं सीयाए महाणईए परिथमित्रे कुळे एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए जम्बूपेडे णामं पेडं पण्णते पञ्च जीयण-सयाई आथार्यावक्खम्मेणं पण्णरस एकासीयाई जांगणसयाई किंचिविसेसाहियाई परिक्खेवेणं बहुमज्झदेसभाए बारस जोयणाई बाहक्षेणं तयणन्तरं च णं मायाए २ पएसपरिहाणीए परिहायमाणे २ सब्बेस णं चरिमपेरंतेस दो दो गाउयाई बाह्रेलं सन्वजम्बूणयामए अच्छे०, से षं एगाए परामवरवेड्याए एगेण य वणसंदेणं सन्वओ समन्ता संपरिक्खित दुण्हंपि वण्णको, तस्स णं जम्बूपेडस्स चउद्दिसि एए चनारि तिराोबाणपडिस्वगा पण्णता वण्णओ जाव तोरणाई, तस्म णं जम्बूपेटस्स बहुमज्झ-देसभाए एत्थ णं मणिपेढिया पण्णता अहुजीयणाई आयामविक्सम्मेणं चतारि जोय-णाइं बाहत्रेणं, तीसे णं मणिपेदियाए उप्पि एत्थ णं जम्बूसुदंसणा पण्णता अद्व जोय-गाई उद्ये उद्यतिणं अद्वजीयणं उठवेहेणं, तीसे णं संघी दो जीयणाई उद्वे उचतेणं अदजीयणं बाइहेणं, तीसे णं साला छ जीयणाई टबुं उचलेणं बहुमज्झदेसभाए अह जोयणाई आयासविक्खंमेणं साहरेणाई अह जोयणाई सव्वरगेणं, तीसे णं अय-

मेयारूवे वण्णावामे प०,तं०—वइरामया मृला रययमुपइहियविडिमा जाव अहियमण-णिव्बुइक्री पासाईया दरिमणिजाः, जंबूए णं सुदंसणाए च उद्दिमं चत्तारि साला प॰, तत्थ णं जे से पुरित्यिमिले साछे एत्य णं भवणे पण्णते कोसं आयामेणं एवमेव ंणवरमित्य सम्रणिजं सेसेसु पासायवर्डेसया सीहानणा य सपरिवारा इति । जम्बू णं० बारसिंह परमवरवंडयाहि सब्बओ समन्ता संपरिक्यिता, वेडगणं वण्णयो, जम्य णं॰ अण्येणं अद्वसएणं जम्बूणं तद्बुचत्ताणं सव्वओ समन्ता संपरिविखना, तामि णं वण्णओ, ताओ णं जम्बूओ छहिं पउमवरवेइयाहि संपरिक्तिना, जम्बुए णं सुदंसणाए उत्तरपुरिवमेणं उत्तरेणं उत्तरपञ्चित्यमेणं एत्य णं अणाहियस्य देवस्य चटण्हं सामाणियसाहस्सीणं चलारि जम्बसाहस्सीओ पण्णानाओ, तीसे णं पुरित्यमेणं चडण्हं अगमहिसीणं चत्तारि जम्बूओ पण्णताओ.-दाहिणपुर्वियमे दक्किणेण तह अवरदिक्लिणेणं च । अह दस वारसेव य मवन्ति जम्ब्रसहस्साइं॥ १॥ अणियाहिवाण पचित्यमेण सनेव हाति जम्बूओ । सोलस साहरसीओ चउदिनि आयरक्खाणं ॥ २ ॥ जम्बू णं॰ तिहिं नइएहिं वणसंडिहिं सव्वओ समन्ता संप-रिक्तिता, जम्बूए णं ० पुरित्यमेणं पण्णासं जीयणाई पढमं वणसंडं ओगाहिता एत्य णं भवणे पण्णने कोसं आयामेणं सो चंव वण्णको सयणिकं व, एवं सेसासुवि दिसानु भवणा, जम्बूए णं॰ उत्तरपुरत्थिमेणं पद्धमं वणयण्डं पण्णासं जोयणाई ओगाहिता एत्य णं चतारि पुक्खरिणीओ पण्यनाओ, तंजहा-पडमा १ पडमप्पमा २ कुमया ३ कुमुयप्पमा ४, ताओ णं कोसं आयामेणं अद्वकोसं विक्खम्भेणं पद्मथणस्याई उन्बेहेणं वण्णओ, नासि णं मज्झे पासायवर्डेसगा कोसं आयामणं अद्भक्तीसं विक्खरमेणं देसूणं कोसं उड्ड उक्तीणं वणाओ सीहासणा सपरिवारा, एवं संनाम विदिसास, गाहा-पडमा पडमप्पभा चेव, कुमुया कुमुयप्पहा । उपपल-गुम्मा णलिणा, उप्पला उप्पलुजला ॥ १ ॥ भिंगा भिंगप्पमा चेव, अंजणा कजालप्पमा । सिरिकंना सिरिमहिया, सिरिचंदा चेव सिरिणिलया ॥ २ ॥ जम्बूए णं॰ पुरस्थिमित्रस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरिथमित्रस्य पासायवर्डेसगस्स दिक्ख-णेणं एत्थ जं कृष्टे पण्णाने अह जीयणाइं उन्हें उन्नानेणं दो जीयणाई उच्वेहेणं मूले अह जीयणाई आयामविक्खम्भेणं बहुमज्झर्दसभाए छ जीयणाई आयामविक्खम्भेणं उवरिं चतारि जोयणाई आयामविक्खम्भेणं-पणवीमद्वारस बारसेव मुळे य मज्झि उविरं च । सर्विसेसाइं परिरओ कुडस्स इमस्स बोद्धको ॥ १ ॥ मूळे विच्छिको मज्से संखिन उनिरं तणुए सन्वकणगामण् अच्छे० वेदयावणसंडवणाओ, एवं सेसावि कूडा इति । जम्बूए णं सुदंसणाए दुवालस णामधेजा प॰, तं०-सुदंसणा १ अमोहा

२ य, सुप्पबुद्धा ३ जसोहरा ४ । विदेहजम्यू ५ सोमणसा ६, णियया ७ णिय-मंडिया ८ ॥ १ ॥ सुभद्दा य ९ विमाला य १०, सुजाया ११ सुमणा १२ विया । सुद्ंमणाए जम्बूए, णामधेजा दुवालस ॥ २ ॥ जम्बूए णं० अहुदुर्मगलगा०, से केणहेणं भन्ते ! एवं वृच्चइ-जम्बू सुदंसणा २ ? गोयमा ! जम्बूए णं सुदंसणाए अणाहिए णामं देवे जम्बुहीवाहिवई परिवसइ महिन्द्रिए॰, से णं तत्य चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं जात्र आयरक्खदेवमाहस्सीणं जम्ब्रहीवस्स णं दीवस्म जम्ब्रूए सुदंसणाए अणाहियाए रायहाणीए अण्णेमिं च बहुणं देवाण य देवीण य जाव विहरू, से तेण्डेणं गो : एवं वुचइ : अदुत्तरं च ण गोयमा ! जम्यूसुदंसणा जाव भुवि च ३ धुवा णियया सामया अवन्वया जाव अवद्विया । कहि ण भनते ! अणाद्वियस्स देवस्य अणाहिया णामं रायहाणी पण्णता ? गोयमा ! जम्ब्रहीवे २ मन्दरस्य पञ्चयस्म उत्तरेणं जं चेव पुञ्चविणग्यं जिमगापमाणं तं चेव णेयव्वं जाव उवदाओ अभिसेओ य निरवसेसोत्ति ॥ ९० ॥ से केणहेणं भन्ते ! एवं बुचइ-उत्तरकृरा २ ? गोयमा ! उत्तरकराए० उत्तरकर णामं देवे परिवमइ महिन्निए जाव पलिओ-वमद्विइए, से तेणद्वेणं गोयमा एवं वुचइ-उत्तरक्करा २, अदुत्तरं च णं जाव सासए ... । कहि णं भनते ! महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्कारपञ्चए पण्णते ? गोयमा ! मंदरस्य पञ्चयस्य उत्तरपुरित्थमेणं णीलवंतस्य वासहरपञ्चयस्य दाहिणेणं उत्तरकुराए॰ पुरस्थिमेणं वच्छस्स चक्कवद्दिविजयस्य पचस्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे बासे मालवंत णामं वक्स्तारपव्वए पण्णते उत्तरदाहिणायए पाईणपदीणविच्छिणो जं चेव गंघमायणस्य पमाणं विकसम्भी य जवरमिमं जाजनं सन्ववेरुलियामए अवसिद्धं तं चेव जाव गोयमा ! नव कृडा पण्णता, तंजहा-सिद्धकृढे०, सिद्धे य मालवन्ते उत्तरकुरु कच्छमागरे रयए। सीओय पुण्णभद्दे हरिस्सहे चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ कहि णं भन्ते ! मालवन्ते वक्खारपव्यए सिद्धकृष्टे णामं कृष्टे पण्णते ? गोयमा ! मन्दरस्स पन्वयस्स उत्तरपुरियमेणं मालवंतस्य कुडस्स दाहिणपचित्यमेणं एत्य णं सिद्धकृडे णामं कृडे पण्णते पंच जोयणसयाई उन्ने उन्नतेणं अवसिद्धं तं चेव जाव रायहाणी, एवं माल-बन्तस्य कुडस्स उत्तरकुरकृतस्य कच्छकृतस्य, एए चतारि कृता दिसाहि पमाणेहि णेयव्या,कृडसरिसणामया देवा.कहि णं भन्ते । मालवन्ते • सागरकृडे णामं कृडे पण्णते ? गोयमा ! कन्छकृत्रस्य उत्तरप्रत्यमेणं रययकृत्रस्य दक्षित्रणेणं एत्य णं सागरकृते णामं कृडे पण्णते पंच जोयणसयाई उन्नं उन्नतेणं क्षवसिद्धं तं चेव सुभोगा देवी रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं रययक्डे भोगमालिणी देवी रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं, अवसिद्धा कहा उत्तरदाहिणेणं गेयञ्चा एकेणं प्रमाणेणं ॥ ९१ ॥ कहि णं सन्ते । मालवन्ते हरिस्सहकुडे णामं कुडे पण्णते ? गोयमा ! पुण्णभइस्स उत्तरेणं णीलबन्तस्स दक्खिणेणं एत्थ णं हरिस्सहकुडे णामं कुडे पण्णते एगं जोयणसहस्सं उन्ने उन्नतेणं जमगप्पमाणेणं षेयव्यं, रायदाणी उत्तरेणं असंखे जे दीवे अण्णंमि जम्ब्रहीवे दीवे उत्तरेणं बारमजोयणमहस्साई ओगाहिता एत्थ णं हरिस्सहस्स देवस्स हरिस्सहा णामं रायहाणी पण्णता चडरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खम्मेणं बे जोयणमयमहस्साई पणार्द्धे च सहस्साइं छच छत्तीसे जोयणसए परिक्लेवेणं, सेसं जहा चमरचञ्चाए राय-हाणीए तहा पमाणं भाणियव्वं, महिड्डिए महज्जुइए, से केणड्रेणं भन्ते ! एवं वृज्जः-मालवन्ते बक्खारपञ्चए २ १ गोयमा । मालवन्ते णं बक्खारपञ्चए तत्थ तत्थ देसे २ ताहें २ वहवे सेरियागुम्मा णोमालियागुम्मा जाव मगदन्तियागुम्मा, ते णं गुम्मा दसद्भवण्णं कुमुमं कुमुमेति, जे णं तं मालवन्तरस बक्खारपञ्चयसा बहुसमरमणिजी भूमिभागं नायविध्यगगसालामुक्षपुष्फपुंजोबयारकलियं करेन्ति, माठवंते य इत्य देवे महिष्किए जाव पलिओवमिट्टिइए परिवसइ, से तेणहेणं गोयमा! एवं वुचड०, अदुत्तरं च णं जाव णिचे ॥ ९२ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णते ! गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीलवंतस्य वासहरपव्ययस्य दक्खिणेणं चिनकृष्टस्म वक्तारपव्वयस्स पञ्चत्थिमणं मालवंतस्स बक्तारपव्वयस्म पुरित्थमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीचे २ महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णने, उत्तर-दाहिणायए पाईणपडीणविन्छिण्णे पलियंकसंठाणसंठिए गंगासिधृहिं महाणईहिं वेय-द्रेण य पव्यएणं छन्मागपविभत्ते मोलस जोयणसहस्साइं पंच य बाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य तर्नुतरे जोयणसए किंन्चिविसेसणे विक्खंमेणंति । कच्छस्स णं विजयस्स बहुमज्झदेसमाए एत्य णं वेसक्के णामं पञ्चए पञ्जते जे णं कच्छं विजयं दुहा विभयमाणे २ चिद्रह. तंत्रहा-दाहिणद्वक्टछं च उत्तरद्वक्टछं चेति. कहि ण भन्ते ! जम्ब्रहीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणद्वकच्छे णामं विजए प॰ ? गोयमा ! वैयहस्स पव्ययस्स दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं चित्तकृडस्स वक्खारपव्ययस्य पन्नत्थिमेणं मालवंतस्स वक्खारपञ्चयस्स पुर्तिश्रमेणं एत्य णं जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणद्धकच्छे णामं विज्ञाए प०, उत्तरदाहिणायए पाईणपरीणविच्छिण्णे अह जोयण-सहस्साई दोष्णि य एगसत्तरे जोयणसए एकं च एगुणवीसङ्मागं जोयणस्य आयामेणं दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेरसन्तरे जोयणसए किंचिविसेस्णे विक्खम्भेणं पिलयंकसंठाणसंठिए, दाहिणद्धकच्छस्स णं भन्ते ! विजयस्स केरिसए आयारभावप-डोयारे पण्णते ? गोयमा ! बहसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, तंजहा--जाव कित्ति-

मेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणद्धकच्छे णं मन्ते ! विजए मणुयाणं केरिसए आयारमावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! तेसि णं मणुयाणं छन्विहे संघयणे जाव सम्बद्धन्याणमंतं करेंति । कहि णं मन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कन्छे विजए वेयद्वे णामं पव्वए प॰ ? गोयमा ! दाहिणद्वकच्छविजयस्य उत्तरेणं उत्तरद्व-कच्छत्म दाहिणेणं चिनकडस्स० क्वित्थिमेणं मालवन्तस्स वक्वारपव्वयस्य प्रस्थि-मेणं एत्य णं कच्छे विजए वेयद्रे णामं पव्यए पण्णते. पाईणपडीणायए उचीणदाहि-णविच्छिणे दृहा वक्लारपव्यए पुट्टे पुरत्थिमिहाए कोडीए जाव दोहि वि पुट्टे भर-हवेयहुसरिमए णवरं दो बाहाओ जीवा धणुपट्टं च ण कायव्वं, विजयविक्खम्भसरिसे आयामेणं, विक्खम्भो उन्नतं उन्वेहो तहेव य विज्ञाहरआभिओगसेहीओ तहेव, णवरं पणपण्णं २ विज्ञाहरणगरावासा प०. आभिओगसेढीए उत्तरिहाओ सेढीओ सीयाए इंसाणस्य सेसाओ सकस्यति, कूडा-सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयद्व ' पुण्ण ६ तिमिसगृहा ७ । कच्छे ८ वेसमणे वा ९ वेयद्वे होंति कहाई ॥ १ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्बुहीवे २ महाविदेहे वासे उत्तरद्धकच्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! वेयद्वरस पव्वयस्स उत्तरेणं णीळवन्तस्स वासहरपव्वयस्य दाहिणेणं माल-वन्तरस वक्खारपञ्चयस्य पुरत्यिमेणं चिनकृडस्स वक्खारपञ्चयस्य पचित्यमेणं एत्य णं जम्बुहीवे दीवे जाव सिज्झन्ति तहेव णेयव्वं सव्वं, किह णं भनते ! जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्वकच्छे विजए सिंधुकंडे णामं कुंडे पण्णते ? गोयमा ! मालवन्त्रसः वक्खारपव्ययसः पुरिवमेणं उसभक्रडस्स० पश्चित्यमेणं णीलवन्तस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणिक्ने णियंबे एत्य णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरद्धकुछ-विजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पण्णते सिंद्धं जोयणाई आयामविक्खम्मेणं जाव अवणं अद्रो रायहाणी य णेयम्बा. भरहसिंधकंडसरिसं सञ्चं णेयन्वं जाव तस्स णं सिंधकण्डस्स दाहिणिक्षेणं नोरणेणं सिधुमहाणई पवृद्धा समाणी उत्तरद्धकच्छविजयं एजेमाणी २ सत्तर्हि सलिलासहरसेहिं आपूरेमाणी २ अहे तिमिसगुहाए वेगन्नप्रवयं दालहत्ता दाहिणकच्छविजयं एजेमाणी २ चोइसिंह सिल्लासहस्सेहिं समग्गा दाहिणेणं सीयं महाणइं समप्पेइ, सिंधुमहाणईं पवहे व मूळे य भरहसिंधुसरिसा पसाणेणं जाव दोहि वणसंदेहिं संपरिक्खिता । कहि णं भन्ते ! उत्तरद्धकच्छविजए उसमकृष्टे णामं पञ्चए पण्णते ? गोयमा ! सिंधुकुंडस्स पुरत्यिमेणं गंगाकुण्डस्स प्यत्थिमेणं णीलवन्तस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणिक्षे णियंबे एत्थ णं उत्तरद्वकच्छविजए उसह-कृढे णामं पव्यप् पण्णते अह जोमणाई उन्नं उचलेणं तं चेष पमाणं जाव राग-हाजी से जबरं उत्तरेणं भाजियव्या । कहि जं भन्ते ! उत्तरहकुके विजय गंगा-

कुण्डे णामं कुण्डे पण्णते ? गोयमा ! चित्तकृडस्स वक्सारपन्त्रयस्स पञ्चत्यमेणं उसहकृहस्स पन्वयस्स परित्यमेणं णीलवन्तस्स वासहरपन्वयस्स दाहिणिक्षे णियंबे एत्थ णं उत्तरद्वकच्छे॰ गंगावुण्डे णामं वृण्डे पण्णते सिट्टे जोयणाई आयार्मावक्ख-म्मेणं तहेव जहा सिंधू जाव वणसंडेण य संपरिक्लिता । से केणद्रेणं भनते ! एवं वुचड्-कच्छे विजए कच्छे विजए ? गोयमा ! कच्छे विजए वेय**बू**रस पव्नयस्स दाहि-णेणं सीयाए महाणंडेए उत्तरेणं गंगाए महाणंडेए पचित्यमेणं सिंधूए महाणंडेए पुरित्यमेणं दाहिणद्रकच्छविजयस्य बहुमज्झदेगभाए एत्य णं खेमा णामं रायहाणी प॰ विणीयारायहाणीसरिसा भाणियञ्चा, तस्य णं खेमाए रायहाणीए कन्छे णामं राया समुप्पजार, महयाहिमवन्त जाव सच्यं भरहोअवणं भाणियव्यं णिक्ख-मणवजं सेसं सन्वं भाणियव्यं जाव भुंजए माणुस्सए सुहे, कच्छणामधेजे य कच्छे इत्थ देवे महिश्विए जाव पलिओवमद्भिहए परिवसइ, से एएणड्रेणं गोयमा ! एवं बुचइ-मच्छे विजए कच्छे विजए जाव णिश्वे ॥ ९३ ॥ कहि णं सन्ते ! जम्बुद्दीये वीने महाविदेहे वासे चित्तकृडे णामं बक्खारपञ्चए पण्णते ? गोयमा! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीलवन्तस्य वासहरपव्वयस्य दाहिणेणं कच्छविजयस्य पुरन्थिमेणं सुकत्छविजयस्स पश्चित्यमेणं एत्य णं जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकृडे णांमं बक्खारपव्वए पण्णते. उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिणे सोलसजीयण-सहस्साइं पद्ध य बाणउए जोयणसए दुण्णि य एगूणवीसङ्भाए जोयणस्स आयामेणं पद्म जोयणसयाई विक्लम्भेणं णीलवन्तवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोयणसयाई उन्न उचतेणं चतारि गाउयसयाई उञ्बेहेणं तयणंतरं च णं मायाए २ उस्सेहु व्वेहपरि-वृद्गीए परिवृद्धमाणे २ सीयामहाणईअंतेणं पञ्च जीयणमयाई उन्नं उन्नतेणं पञ्च गाउय-सयाई उन्देहेणं अस्सखन्धसंठाणसंठिए सन्वरयणामए अच्छे मण्हे जाव पडिरूवे उमओ पासि दोहिं परमवरवेहमाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिकिसते, वण्यको दुण्हवि, चित्तकृहस्स णं वक्खारपव्ययस्स उप्पं बहुसमर्मणिजे भूमिभागे पण्णते जाव आस-यन्ति . चित्तकृष्टे णं भन्ते ! वक्खारपव्यए कड़ कुडा पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि कृडा पण्णना, तंजहा-सिद्धकृढे चिनकृष्टे कच्छकृढे सुकच्छकृढे, समा उत्तरदाहि-णेणं परुप्परेति, पढमं सीयाए उत्तरेणं च**उत्थए नीलवन्तस्स वासहरप**ट्ययस्स दाहिणेणं एत्य णं चित्तकृष्ठे णामं देवे महिश्विए जाव रायहाणी सेति ॥ ९४ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्मुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुक्तन्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं णीळवन्तस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेणं गाहा-वईए महाणईए पचरियमेणं चित्तकृहस्स बक्खारपञ्चयस्स पुरत्यिमेणं एत्य णं

जम्बरीने दीवे महाबिदेहे वासे मुक्टि णामं विजए एण्णेत, उत्तरदाहिणायए जहेब कच्छे वि अए तहेव सकच्छे विजए, णवरं सेमपुरा रायहाणी सुकच्छे राया ससुप्पजइ तहेव सब्वं। कहि णं भनते ! जम्बुदीवे २ महाविदेहे वासे गाहावडकुंडे • पण्णते ? गो०! सुरुच्छविजयस्स पुरुत्थिमेणं महाबच्छस्स विजयस्स पर्चान्यमेणं णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्य दाहिणिल्ले णियम्बे एत्य णं जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहाबड्-कुंडे णामं कुण्डे पण्णते, जहेव गोहियंसाकुण्डे तहेव जाव गाहावइदीवे भवणे, तस्स णं गाहावइस्म कुण्डस्म दाहिणिह्रेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवृटा समाणी मुक्तन्छमहाकन्छविजए दुहा विभयमाणी ? दाहिणेणं सीयं महाणड्ं समप्पेड, गाहावई णं महाणई पवहे य सुद्दे य राव्यत्य समा पणवीसं जोयणसयं विक्न्वम्मेणं अहु।इजाई जोयणाई उच्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमबरवेड्याहिं दोहि य वण-सण्डेहिं जाव दुण्हिव वण्णओ, कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजए पण्गने ? गोयमा ! णीलवन्तस्य वासहरपञ्चयस्य दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्त-रेणं पम्हकृडस्म वक्खारपञ्चयस्य पचित्यमेणं गाहावईए महाणईए पुरन्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वामें महाकच्छे णामं विजए पण्णते, सेसं जहा कच्छविजयस्स (णवरं अरिट्टा रायहाणी) जाव महाकच्छे इतथ देवे महिष्टिए...अट्टो य भाणियव्यो । कहि -णं भन्ते ! महाविद्हे बासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णते ! गोथमा ! जील-वन्तरूप॰ दक्किणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरत्यिमेणं कच्छावईए पश्चित्रिमेणं एत्थ णं महाविदेहे शासे पम्हकृष्टे णामं वक्खारपव्वए पण्णते, उत्तर-दाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सेसं जहा चित्तकृहस्स जाव आसयन्ति . पम्हकृडे चतारि कृडा प०, तं०-सिद्धकृष्टे पमहकृडे महाकच्छकृडे कच्छावडकृडे एवं जाब अदो. पम्हकृष्टे य इत्थ देवे महिश्विए॰ पिठओवमद्विइए परिवसइ, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुचइ०। कहि णे भन्ते ! महाविदेहे वासे कच्छगावई णामं विज्ञण प० ? गो० ! णीलवन्तरस० दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं दहावईए महाणईए प्रचित्यमेणं पम्हकूडस्स । पुरत्थिमेणं एत्थ णं महाविदेहे वासे कच्छगावई णामं विजए पः, उत्तर-दाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छगावई य इत्य देवे॰, कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे दहावईकुण्डे जामं कुण्डे पण्णते ? गोयमा ! आवत्तस्स विजयस्स पचित्यमेणं कच्छगावईए विजयस्स पुरस्थिमेणं णील-वन्तस्त० दाहिणिहे णियंबे एत्य णं महाविदेहे वासे दहावईकुण्डे णामं कुण्डे प० सेसं जहा गाहावईकुण्डस्स जाव अह्यो, तस्स णं दहावईकुण्डस्स दाहिणेणं तोरणेणं दहावई महाणई पवढा समाणी कच्छावईआवरे विजए दहा विभयमाणी २ दाहिणेणं

सीयं महाणई समप्पेड, सेसं जहा गाहाबईए । कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे आवते णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! जीलबन्तस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं णालिणकु इस्स बक्खारपन्त्रयस्य पश्चरिथमेणं दहावर्डए महाणईए पुरत्थिमेणं एत्य णं महाविदेहे वासे आवते णामं विजए पण्णते. सेसंजहा कच्छन्स विजयस्स इति । किंह णं भन्ते ! महाविदेहे वासे णलिणकृडे णामं वक्खारपञ्चए पण्णते ! गो० ! णीलवनतस्म दाहिणेणं सीयाए उत्तरेणं संगलावइस्स यिजयस्स पचित्रमेणं आवत्तस्स विजयस्स पुरिधमेणं एत्य णं महाविदेहे वासे णिलणकृडे णामं वक्कारपव्वए पण्णेत, उत्तरदाहिणायम् पाईणपडीणविच्छिणो सेसं जहा चित्तकृहरून जाब आसयन्ति॰, णांलणकुडे णं भन्ते !॰ बद्द कृता प॰ ? गोयमा ! चत्तारि कृता पण्णनाः, नंजहा-सिद्धकृडे पलिणकृडे आवनकृष्टे मंगलावनकृडे, एए कृडा पञ्चसह्या रायहाणीओ उनरेणं । कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे मंगल।वत्ते णामं विजए पण्णतं ? गोयमा ! णीलवन्तस्स दिक्खणणं सीयाए उत्तरेणं णलिणकृडस्स पुरित्थमणं पंकाबईए पचरिथमेणं एत्य णं मंगलावते णामं विजए पण्णते. जहा कच्छस्म विजए तहा एसो भाषियव्यो जभ्य मंगलायने य इत्थ देवे० परिवसह, से एएणट्रेणं०। कहि णं ननते ! महाविदेहे वासे पंकावईकंडे णामं कुण्डे पण्णते ? गोयमा ! मंगलावत्तरस् पुर्रात्थमेणं पुक्खलविजयस्य पश्चित्थमेणं णीलवन्तस्य दाहिणे णियंबे एत्य णं पंका-वर्ड जात्र कुम्हे पण्णते तं चैव गाहाबङ्कुम्डप्पमाणं जाव मंगलावत्तपुक्खलावत्त-विजए दुहा विभयमाणी २ अवसेसं तं चेव जं चेव गाहावईए। किह णं भनते! महाविदंहे वासे प्रक्खलावते णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! जीलवन्तस्स दाहि-णेणं सीयाए उत्तरेणं पंकावईए पुरन्थिमेणं एगसेलस्स वक्खारपव्वयस्य पन्नत्थि-मेणं एत्य णं पुक्खलावने णामं विजए पण्णते जहा कच्छविजए तहा भाणियम्बं जाव पुक्खले य इत्य देवे महिद्विए० पिछओवमद्भिष्ठए परिक्सइ, से एएणद्वेणं०, कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे एगसेले णामं वक्खारपव्वए प० ? गो० ! पुक्ख-लावनचक्रवद्विविजयस्स पुरस्थिमेणं पोक्खलावर्डचक्कवद्विवजयस्य प्रचरियमेणं णील-वन्तस्य दक्षिखणेणं सीयाए उत्तरेणं एत्य णं एगसेले णामं वस्खारपञ्चए पण्णते चिनकृडगमेणं षेयव्यो जाब देवा आसयन्ति . चनारि कृहा, तं --सिद्धकृढे एग-सेलकृडे पुरस्कलावत्तकृडे पुरस्कलावईकृडे, कृडाणं तं चेव पश्चसङ्गं परिमाणं जाव एगसेले य० देवे महिश्विए०। कहि णं भन्ते । महाविदेहे वासे पुक्खलावई णामं चक्कवित्रण पण्णते ? गोयमा । णीलवन्तरस दक्खिणेणं सीयाए उत्तरेणं उत्तरि-ह्रस्स सीयामुद्दवणस्स पचित्थिमेणं एगसेलस्स वक्खारपव्ययस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं

महाबिहेहे वासे पुक्खलावई णामं विजए पण्णेने, उत्तरदाहिणायए एवं जहा कच्छ-विजयस्य जाव पुरुखकावई य इत्थ देवे० परिवसइ, से एएणद्वेणं ०। कहि णं भन्ते ! महाधिदेहे वासे सीयाए महाणईए उत्तरिहे सीयामुहवर्ण णामं वर्ण प॰ ? गोयमा ! णीलवन्तस्य दक्षिणेणं सीयाए उत्तरेणं पुरित्यमलवणसमुद्दस्य पन्नत्थिमेणं पुरुख-लाक्डचक्दविडिविजयस्स पुरित्यमणं एत्य णं सीयामृहवणे णामं वणे पण्णते, उत्तर-दाहिणायए पाईणपडीणविच्छिणो सोलसजोयणगहरसाई पश्च य बाणउए जोयणसए दोष्णि य एगुणवीसइभाए जोयणस्य आयामेणं सीयाए महाणईए अन्तेणं दो जोयण-सहस्याडं णव य बावीसं जोयणसए विक्खम्मेणं तयणंतरं च णं मायाए २ परिहासमाणे २ णीलवन्तवासहरपञ्चयंतेणं एगं प्राणवीसहसागं जीयणस्स विक्खंनेणंति, से णं एगाए पउनवरवंद्याए एगेण य वणसण्डेणं संपरिक्छिते वण्णको सीयामुह्वणस्स जाव देवा आमयन्ति , एवं उत्तरिह्नं पासं समत्तं । विजया भणिया । रायहाणीओ इमाओ--खेमा १ खेमपुरा २ चेव. रिहा ३ रिहपुरा र तहा । खग्गी ५ मंजूसा ६ अविय. ओसही ७ पंडरींगिणी ८ ॥ १ ॥ सोलस विजाहरसेढीओ तावइयाओ आमिओगसेढीओ सन्वाओ इमाओ इंसाणस्स, सन्वेसु विजएमु कृत्छवत्तव्यया जाव अद्वो रायाणो सरिसणामगा विजएस मोलसण्हं वक्सारपञ्चयाणं चित्तकृडवनञ्चया जाव कूडा चत्तारि २ बार्सप्हं णइंणं गाहावड्व-त्रव्या जाव उभनो पार्सि दोहि परमवरवेड्याहि वणसण्डेहि य० वण्णनो ॥ ९५ ॥ कहि णं भनते ! जम्ब्रहीवे दीवे महाविदेहे बासे सीयाए महाणहेए दाहिणिहे सीयामुहवर्ण णामं वर्णे पण्णते ? एवं जह चेव उत्तरिष्ठं सीयामुहवर्ण तह चेव दाहिणंपि भाषियन्वं, णवरं णिसहस्स वासहरपन्वयस्स उत्तरेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं पुरत्थिमलवणसमुद्दस पचित्थिमेणं वच्छस विजयस पुरिश्यमेणं एत्थ णं जम्ब्रहीने दीने महाविदेहे बासे सीयाए महाणईए दाहिणिले सीयामुहवणे णासं वर्णे प०. उत्तरदाहिणाबए तहेव सव्वं णवरं णिसहवासहरपव्वयंतेणं एगमेगुणवीस-इमागं जोयणस्य विक्खम्मेणं किण्हे किण्होभासे जात्र मह्या गन्यदाणि मुयंते जाव आसयन्ति॰ उमको पासि दोहिं पउमवरवेइयाहि॰ वजवणाओ इति । कहि णं भनते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे बच्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयाए महाणङ्गेए दाहिणेणं दाहिणिहस्स सीया-महबणस्स प्रवत्थिमेणं तिउडस्स बक्सारपञ्चास्स पुरत्थिमेणं एत्य णं जम्बुहीवे दीवे महाविदेहे वासे क्छे जामं निजए प्रणते तं चेव पमाणं सुसीमा रायहाणी १. विडडे वक्सारपन्नए सुबच्छे विवार कुण्डला रावहाणी २, तत्तजला गई महा-

वच्छे विजए अपराजिया रायहाणी ३, वेसमणकृडे वक्खारफवए वच्छावई विजए पमंत्ररा रायहाणी ४, मत्तजला णहे रम्मे विजए अंकावई रायहाणी ५, अंजणे वक्खारपञ्चए रम्मगे विजए पम्हावई रायहाणी ६, उम्मत्तजला महाणई रमणिजे विजए सुमा रायद्वाणी ७. मायंजणे वक्खारपव्यए मंगलावई विजए रयणसंचया रायहाणीति ८. एवं जह चेव सीयाए महाणईए उत्तरं पासं तह चेव दक्किजिलहं भाणियव्यं, दाहिणिलसीयामुहवणाड, इमे वक्खारकृडा, नं०-तिउडे १ वेसमणवृहे २ अंजणे ३ मार्यंजणे ४, [णईउ तत्तजला १ मत्तजला २ उम्मनजला ३,] विजया. तं०-वन्छे सुबन्छे महाबन्छे. चउत्थे वन्छगावई । रम्मे रम्मा चेव, रम-णिज मंगलावडे ॥ १ ॥ रायहाणीओ, नंजहा-सुमीमा कुण्डला चेव, अवराज्य पहंकरा । अंकावई पम्हावई, मुभा रयणसंचया ॥ २ ॥ वन्छस्स विजयस्स णिसहे दाहिणणं सीया उत्तरेणं दाहिणिल्लसीयामुहवणे पुरत्थिमेणं तिउडे पचन्थिमेणं सुसीमा रायहाणी प्रमाणं तं चेवेति. वच्छाणंतरं तिउडे तक्षो गुवच्छे विजए एएणं क्रमेणं तत्तजला णई महावच्छे विजए वेसमणकुडे वक्खारपञ्चए वच्छावई विजए मनजला णई रम्मे विजए अंजणे वक्खारपव्वए रम्मए विजए उम्मनजला णई रमणिजे विजए मार्यजण वक्खारपव्वए मंगलावर्ड विजए ॥ ९६ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वक्त्वारपञ्चए पण्णते १ गो : णिसहस्स बासहरपव्वयस्य उत्तरेणं मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणपुरित्य-मेणं मंगलावईविजयस्य पश्चित्यमेणं देवकुराए० पुरस्थिमेणं एत्थ णं जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वस्खारपव्यए पण्णते. उत्तरदाहिणायए पाईणपडीण-विच्छिण्णे जहा मालवन्ते वक्खारपव्वए तहा णवरं सम्बर्ययामए अच्छे जाव पहिरुवे, जिसहवासहरपव्वयंतेणं चतारि जोयणस्याई उद्गं उच्चतेणं चतारि गाउय-सयाई उन्वेहेणं सेसं तहेव सन्वं णवरं श्रद्धों से गोयमा ! सोमणसे णं वक्खारपन्वए बहवे देवा य देवीओ य सोमा समणा सोमणसे य इत्थ देवे महिन्निए जाव परि-बमइ, से एएणट्रेणं गोयमा ! जाव णिचे । सोमणसे णं भंते ! वक्खारपव्यए कड कुढा प॰ ! गो॰ ! सत्त कृडा प॰, तं॰-सिद्धे १ सोमणसे २ विय बोद्धव्वे मंगलावईकृडे ३ । वेतकुर ४ विमल ५ केवण ६ वसिद्वकुडे ७ य बोद्धव्वे ॥ १ ॥ एवं सव्वे पद्मसङ्ग्रा कृडा, एएसि पुच्छा दिसिविदिसाए भाषियम्बा जहा गन्यमायणस्स, विमलक्क्सण-कृडेसु णवरं देवयाओ सुवच्छा वच्छमित्ता य अवसिद्धेस कृडेसु सरिसणामया देवा रायहाणीओ दक्खिणेणंति । कहि णं भन्ते ! महाविदेहे वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णता ? गोयमा ! मन्दरस्स पव्ययस्स दाहिणेणं णिसहस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरेणं

विज्जुप्पहस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरन्थिमेणं मोमणसवक्खारपञ्चयस्स पञ्चत्थिमेणं एत्य णं महाविदेहे वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णता, पाईणपनीणायया उदीण-दाहिणविच्छिण्णा इक्कारस जोयणसहस्साइं अट्ट य बायाले जोयणसए दुण्णि य एगुणवीसदभाए जोयणस्स विक्लम्मेणं जहा उत्तरकुराए वत्तव्वया जाव अणुसज्ज-माणा पम्हगन्धा मियगन्धा असमा महा तयतली सणिचारीति ६॥ ९७॥ कहि णं भन्ते ! देवकुराए २ चित्तविचित्तवृटा णामं दुवे पव्वया प० १ गो० ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्य उत्तरिक्षाओ चरिमंताओ अद्ववोत्तीसं जोयणसए चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीओयाए महाणईए पुरित्यमपन्नत्थिमेणं उभओकूळे एत्थ णं वित्तविचित्तकृडा णामं दुवे पव्यया प०, एवं जचेव जमगपव्ययाणं० सचेव०, एएसि रायहाणीओ दक्किणेणीति ॥ ९८ ॥ कहि णं भन्ते ! देवदराए २ जिसदहहे णामं दहे पण्णने ? गो॰ । तेसिं चित्तविचित्तकृडाणं पव्वयाणं उत्तरिक्षाओ चरिमन्ताओ अट्टचोत्तीसे जोयणसए चतारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीओयाए महाण-ईए वहुमज्झदेसभाए एत्य णं णिसहरहे णामं दहे पण्णते, एवं जन्नेय णीलवंत-उत्तरकुरुवनदेरावयमालवंताणं वत्तव्यया सचेव णिसहदेवकुरुस्रसुलसविज्जुप्पभाणं णेयच्या, रायहाणीओ दिन्छणेणीति ॥ ९९ ॥ बहि णं भन्ते ! देवकुराए २ कूड-सामलिपेढे णामं पेढे पण्णते ? गोयमा ! मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणपचित्यिमेणं णिसहस्स वासहरपञ्चयस्म उत्तरेणं विज्जुप्पभस्म वश्खारपञ्चयस्स पुरत्थिमेणं सीओयाए महाणंइए पचित्यमेणं देवकुरुपचित्यमद्भस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थ णं देवकुराए कुराए कूडसामलीपेढे णामं पेढे प०, एवं जेचेव जम्बूए सुदंसणाए वत्तव्वया सम्बद सामलीएवि भाणियन्वा णामविहूणा गरुलदेवे रायहाणी दक्खि-णेणं अवसिद्धं तं चेव जाव देवकुरू य इत्थ देवे० पिछओवमट्टिइए परिवसइ, से तेणहेणं गो०! एवं बुबइ-देवकुरा २, अदुत्तरं च णं॰ देवकुराए०॥ १००॥ कहि णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्पमे णामं वक्खारपव्वए पण्णते ? गो॰ ! णिसहस्स वासहरपञ्चयस्स उत्तरेणं मन्दरस्स पव्चयस्स दाहिण-पचित्यमेणं देवकुराए० पचित्यमेणं पम्हस्स विजयस्स प्रतिथमेणं एत्य णं जम्बु-हीवे २ महाविदेहे वासे विज्जुप्यमे॰ वक्खारपञ्चए प॰, उत्तरदाहिणायए एवं जहा मालबन्ते णवरि सञ्चतविश्वासए अच्छे जाव देवा आसयन्ति । विज्जुप्पमे ण भन्ते! वक्खारपव्यए कड कुडा प० १ गो०! णव कुडा प०, तं०-सिद्धकृडे विज्जुप्पभवृहे देवकुरुवृहे पम्हकृहे कणगकृहे सोवत्थियकृहे सीओयाकृहे सयजल-कृढे हरिकृढे । सिद्धे य विज्जुणामे देवकुरू पम्हकृणगसोवत्वी । सीओया य समजन ळहरिकृडे चेव वोद्धव्वे ॥ १ ॥ एए इरिकृडवजा पश्चसह्या णेयव्या, एएसिं कूडाणं पुच्छा दिसिविदिसाओ णेयन्वाओ जहा मालवन्तस्य हरिस्सहकूढे तह चेव हरिकृडे रायहाणी जह चेव दाहिणेणं चमरचंना रायहाणी तह णेयव्वा, कणग-सोवित्ययकूडेसु वारिसेणवलाहयाओ दो देवयाओ अवसिद्वेसु कूडेस कूडसरिसणा-मया देवा रायहाणीओ दाहिणेणं, से केणद्वेणं भन्ते ! एवं बुचइ-विज्जुप्पमे वक्खार-पव्वए २ ? गोयमा ! विज्ञुप्पमे णं वक्कारप्रवर विज्जुमिव सव्वओ समन्ता ओभासेर उज्जेविह प्रभामह विज्जुप्पमे य इत्य देवे जाव पिल्ओवमद्विहरू परिवराह, से एएणहेणं गोयमा! एवं वुच्य-विज्जुप्पमे० २, अदुत्तरं च णं जाव णिचे ॥ १०१॥ एवं पम्हे विजए अस्सपुरा रायहाणी अंकावई वक्खारपव्वए १, भुपम्हे विजए सीहपुरा रायहाणी खीरोया महाणई २, महापम्हे विजए महापुरा रायहाणी पम्हावर्ड वक्खारपव्यए ३, पम्हगावई विज्ञए विजयपुरा रायहाणी सीयमोया महाणई ४, संखे विजए अवराइया रायहाणी आसीविसे वक्खारपव्वए ४, ऋमुए विजए अरया रायदाणी अंतोबाहिणी महाणई ६, णलिणे विजए असोगा रायहाणी मुहाबहे वक्खारपटवए ७, णलिणावई विजए वीयसोगा रायहाणी ८ दाहिणिक्रे सीओयामुहवणसंडे, उत्तरिक्षेवि एमेव भाणियन्ये जहा सीयाए, वप्पे विजए विजया रायहाणी चन्दे वक्खारपव्वए १, सुबप्पे विजए जयन्ती रायहाणी टम्मिमालिणी णई २, महावप्पे विजए जग्रन्ती रायहाणी मृरे वक्सारपञ्चए ३, वप्पावई विजए अपराइया रायहाणी फेणमालिणी णई ४, वस्मू विजए चक्पुरा रायहाणी णागे वक्खारपव्वए ५, सुवग्गृ विजए खग्गपुरा रायहाणी गंभीरमालिणी अंतरणई ६, गन्धिले विजए अवज्झा रायहाणी देवे वक्खारपव्वए ७, गंधिलावई विजए अओज्जा रायहाणी ८, एवं मन्दरस्स पव्वयस्स पचित्थिमित्रं पासं भाण-यव्यं तत्य ताव सीओयाए णहेए दक्सिणिक्षे णं कूछे इमे विजया, तं०-पम्हे न्पम्हे महापम्हे, चउत्थे पम्हगावई । संखे सुमुए णलिणे, अट्टमे णलिणावई ॥ १ ॥ इमाओ रायहाणीओ, तं०-आसपुरा सीहपुरा महापुरा चेन इनइ निजय-परा । अवराइया य अरया असोग तह वीयसोगा य ॥ २ ॥ इमे वक्खारा, तंजहा-अंके पम्हे आसीविसे सहावहे, एवं इत्य परिवादीए दो दो विजया कृडसारे-सणामया माणियव्या दिसा विदिसाओ य भागियव्याओ, सीओयामुहवणं च भाणियव्वं सीओयाए दाहिणिहं उत्तरिहं च, सीओयाए उत्तरिहे पासे इमें विजया, तंजहा-वप्पे सुवप्पे महावप्पे, चउत्ये वप्पयावई । वम्मू य सुवस्मू य, गंधिछे गंधिकावई ॥ १ ॥ रायहाणीओ इसाओ. तंजहा-विजया वेजयन्ती जयन्ती अपरा-

जिया । चक्कपुरा खग्गपुरा हवइ अवज्ज्ञा अउज्ज्ञा य ॥ २ ॥ इमे वक्सारा, तैजहा-चन्दपन्वए १ सूरपन्वए २ णागपन्वए ३ देवपन्वए ४, इमाओ णईओ सीओयाए महाणईए दाहिणिले कुछे-खीरोया सीहसोया अंतरवाहिणीओ णईओ ३, उम्मिमालिणी १ फेणमालिणी २ गंभीरमालिणी ३ उत्तरिक्षविजयाणन्तराउत्ति, इत्थ परिवाडीए दो दो कुडा विजयसरिसणामया भाणियन्वा, इमे दो दो कुडा अवद्विया, तंजहा-सिद्धकृडे पव्वयसरिमणामकृढे ॥ १०२ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्ब्रहीवे २ महाविदेहे वासे मन्दरे णामं पञ्चए पण्णते ? गोयसा ! उत्तरकुराए दिन्तर्णणं देववुराए उत्तरेणं पुष्वविवेहस्स वामस्स पश्चत्थिमेणं अवर्रविदेहस्स वासस्य पुर्रान्थमेणं जम्बुद्दीवस्य २ बहुमज्झदेयभाए एतथ णं जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरे णामं पव्वए पण्णते जवजडङ्जीयणसहस्साई उर्द्र उन्नेनेणं एगं जीयणसहस्सं उब्बंहेणं मृत्रे दराजीयणसहस्माई णवई च जीयणाई दस य एगारसमाए जीयणस्स विक्लम्मेणं धरणियहे दस जोयणसहस्साइं विक्लम्मेशं तयणन्तरं च णं मायाए २ परिहासमाणे परिहासमाणे उवरिनले एगं जोयणसहस्तं विक्खंभेणं मूले एकतीसं जोयणसहस्साइं णव य दयुत्तरे जोयणमए तिष्णि य एगारसभाए जोयणस्स परि-क्खेवेणं धरणियले एकतीसं जोयणसहरूमाइं छच तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं उचरितळे तिष्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावडं जोयणसयं किचिविसेसाहियं परिच्खे-वेणं मृहे विच्छिणं मज्झे संखिते उन्नरिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए नव्यरयणामए अच्छे सण्हेति । से णं एगाए पजमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समन्ता संपरिक्खित बण्णओति, मन्दरे णं भनते ! पब्बए कड़ बणा प० ? गो० ! चतारि वणा प॰, तं०-भद्सालवणे ९ णन्दणवणे २ सोमणसवणे ३ पंडगवणे ४, कहि णं भन्ते ! मन्दरे पव्वए भइसालवणे णामं वणे प० १ गोयमा । घरणियले एत्य णं मन्दरे पव्वए भइसालवणे णामं वणे पण्णते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे सोमण-सविज्जुप्पहगंधमायणमाल्वंतेहिं वक्खारपव्वएहिं सीयासीओयाहि य महाणईहिं अद्वमागपविभत्ते मन्दरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपचरियमेणं बावीसं बावीसं जोयणसह-स्साई आगामेणं उत्तरदाहिणेणं अब्हाइजाई अब्हाइजाई जोगणसयाई विक्लम्भेणंति, से णं एगाए पउमचरवेहबाए एगेण य वणसंडेणं सम्बजी समन्ता संपरिक्सिते दुण्हवि वण्णओ भाणियन्त्री किण्हें किण्होभासे जाव देवा आसयन्ति सबन्ति , मन्दरस्स णं पन्ययस्य उत्तरपुरिधमेणं भद्दवालवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहिता एत्य णं चतारि णन्दापुक्खरिणीओ पण्णताओ, तं०-पउमा १ पउमप्पमा २ चेव, कुमुया ३ कुमु-यपमा ४. ताओ ण पुरुखरिणीओ पण्णासं जीयणाई आयामेणं पणवीसं जीयणाई

विक्खम्सेणं दसजोयणाई उन्वेहेणं वण्णओ वेइयावणसंडाणं भाषियन्वो, चउहिसँ तोरणा जाव तासि णं पक्खरिणीणं वहमज्झदेसभाए एत्य णं महं एगे ईसाणस्म देविंदस्स देवरण्णो पासायवर्डिसए पण्णते पञ्चजोयणगयाई उन्ने उन्नतेणं अन्नाइजाई जोयणभयाई विक्खंभेणं अञ्चलगयम्सिय एवं सपरिवारी पामायवित्सओ भाषि-यव्वो. मंदरस्स णं एवं दाहिणपुरन्थिमेणं पुत्रविरणीओ उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पृत्वज्ञला तुं चेव प्रमाणं मुज्झे पामायवडिसओ महस्म सपरिवारी तुणं चेव प्रमाणेणं दाहिणप्चित्थिमेणवि पुरुखरिणीओ-सिंगा सिंगणिभा चेव, अंजणा अंजणप्मा । पासायबर्डिसओ मदस्म सीहासणं सपरिवारं । उत्तरपुरन्थिमेणं पुक्खरिणीओ-सिनि-कंता ९ सिरिचन्दा २ सिरिमिटिया ३ चेव सिरिणिलया ४ । पामायवर्डिमओ ईसा-णस्य सीहामणं सपिवारिति । मन्दरे णं भन्ते ! पव्वए भटमालवणे कः दिनाहित्य-कड़ा प॰ १ गो॰ ! अद्भ दिसाहत्थिकड़ा पण्णाना, तंजहा-पउमनरे १ णीलवन्ते २. सुहत्थी ३ अंजणागिरी ४ । कुमूत् य ५ पठासे य ६, वहिंसे ७ रोयणागिरी ८ ॥ १ ॥ कहि णं भन्ते ! मन्दरे पव्वए भद्दमालवणे परमुत्तरे णामं दिसाहित्य-कुडे प० १ गोयमा ! सन्दरस्स पव्ययस्स उत्तरपूर्यत्थर्मणं पुरत्थिमिछाए मीयाए उत्त-रेणं एत्थ णं परमुत्तरं णामं दियाहत्थिकृडे पण्णते पञ्चजोश्णतयारं उद्ग उच्चतेणं पञ्चगाउयमयादं उठवेहेणं एवं विकलम्भपरिक्खेवो भाणियव्यो च्छहिमवन्तमरिसो. पासायाण य तं चेव पउनक्तो देवो रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं १. एवं णीलवन्त-दिसाहन्यिकृडे मन्दरस्स दाहिणपुरस्थिमेणं पुरन्थिमिद्धाए सीयाए दक्किणेणं एय-स्सवि णीलवन्तो देवो रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं २, एवं सहत्यिदिमाहत्यिक्डे मंदरस्त दाहिणपुरिवयमेणं दिक्खणिकाए सीओयाए पुरिवयमेणं एयस्सवि सहत्थी देवो रायहाणी दाहिणपुरस्थिमेणं ३. एवं चेव अंजणागिरिदिसाहस्थिक्डे मन्दरस्य दाहिणपचित्यमेणं दिक्खणिहाए सीओयाए पचित्यमेणं एयस्सवि अंजणागिरी देवी रायहाणी दाहिणपचित्थमेणं ४, एवं कुमुए विदिसाहत्थिवृद्धे मन्दरस्स दाहिणपचित्य-मेणं पर्चान्थमिह्नाए सीओयाए दक्खिणेणं एयरमधि कुमुओ देवो रायहाणी दाहिण-पर्चात्थमेणं '४, एवं पलासे विदिसाहत्थिकुडै मन्दरस्स उत्तरपश्चत्थिमेणं पश्चत्थिमिल्लाए सीओयाए उत्तरेणं एयस्सवि पलासो देवो रायहाणी उत्तरपत्रात्यमेणं ६, एवं वडेंसे विदिमाहरियकुडे मन्दरस्स० उत्तरपञ्चन्थिमेणं उत्तरिक्षए सीवाए महाणईए पञ्चन्थिमेणं एयस्मवि वडेंसो देवो रायहाणी उत्तरपचित्यमेणं ७, एवं रोयणागिरी दिसाहत्यिकृडे मंदरस्स उत्तरपुरित्थमेणं उत्तरिक्षाए सीयाए पुरित्थमेणं एयस्सवि रोयणागिरी देवो रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं ८ ॥ १०३ ॥ कहि णं भन्ते ! मन्दरे पम्बए णंदणवणे णामं

वणे पण्णते १ गो॰ ! भहसालवणस्य वहसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ पश्चजीयणस्याई उन्ने उप्पदत्ता एत्य णं मन्दरे पव्यए जन्दणवणे जामं वणे पण्णते पञ्चजीयणसमाई चकवालविक्खम्मेणं वृद्दे बलयागार्सठाणसंठिए जे णं मन्दरं पव्वयं सव्वओ समन्ता संपरिक्लिताणं चिट्टइत्ति णवजोबणसहस्साइं णव य चडप्पणे जोयणसए छव्रगारसभाए जोयगस्स बाहि गिरिविक्खम्भो एगतीसं जोयणसहस्साई चत्तारि य अउणासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए बाहिं गिरिपरिरएणं अह जोयणमहस्साइं णव य चउप्पणी जोयणमए छन्नेगारसभाए जोयणस्य अंतो गिरिविक्खम्भो अद्भावीसं जोयणसहस्साई तिर्णिण य सोलसुत्तरे जोयणमए अट्ट य इक्कारसभाए जोयणस्य अंतो गिरिपरिरएणं, से णं एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं भव्वओ समन्ता संपरिक्खिते बण्णओं जाव देवा आसयन्ति . मंदरस्य णं पञ्चयस्त विदिसासु पुक्रारिणीओ तं चेव पमाणं पुक्खरिणीणं पामायवर्डिसगा तह चेव सक्केमाणाणं तेणं चेव पमाणेणं. णंदणवर्णे णं भन्ते ! कइ कृटा प० ? गोयमा ! णव कृटा पण्णता, तंत्रहा-णन्दण-वणकृष्टं १ मन्दरकृढे २ णिसहकृढं ३ हिमबयकृढे ४ रययकृढे ५ रययकृढे ६ सागरचिनकृडे ७ वहरकृडे ८ बलकृडे ९। कहि णं भन्ते ! णन्दणवणे णंदणवणकृडे णामं कृडे प॰ ? गोयमा ! मन्दरस्य पव्ययस्य उत्तरपुरित्थिमिङस्य पासायवडेंसयस्य दिन्सणेणं एत्य णं जन्दजवणे जंदजवणं जामं कुढे पण्जते । पञ्चसङ्या कुडा पुरुव-विषया भाषियन्या. देवी मेहंकरा रायहाणी विदिसाएनि १ एयाहि चेव प्रन्वाभ-ळावेणं णयव्या इमे कुडा इमाहि दिमाहि दाहिणपुर त्थिमिलस्स पामायवर्डेसगस्स उत्तरेणं मन्दरे कृडे मेहबई देवी रायहाणी पुच्वेणं २ दाहिणपुरत्थिमिल्रस्स पासायबडेंसगस्य पसन्धिमेणं णिसहे कूढे सुमेहा देवी रायहाणी दक्खिणंणं ३ दक्खिणवसन्धिमिहस्स पासायवर्डेसगस्स पुरिथमेणं हेमवए कृढे हेममालिणी देवी गुयहाणी दक्खिणेणं ४ दाहिणप्यत्थिमिष्ठस्य पासायवर्डेसगस्य उत्तरेणं रयएक्डे सुक्च्छा देवी रायहाणी पय-त्थिमेणं ५ उत्तरपञ्चत्थिमिलस्स पासायवर्डेसगस्य दक्किक्णेणं स्यगे कृढे वच्छिम्ति देवी रायहाणी प्रविधिमेणं ६ उत्तरप्रचित्थिमिह्नस्य पासायवर्डेसगस्स पुरित्थिमेणं सागरिवते कृडे वहरसेणा देवी रायहाणी उत्तरेणं ७ उत्तरपुरन्थिमिहस्स पासायवर्डेसगस्स पचित्रमेणं वहरकूडे बलाइया देवी रायहाणी उत्तरेणंति ८, कहि णं भन्ते ! णन्दणवणे बलकृढे णामं कृढे पण्णते ? गोयमा ! मन्दरस्य पन्वयस्य उत्तरपुरस्थिमेणं एत्य णं णन्दणवणे बलकूढे णासं कूडे प०, एवं जं चेव हरिस्सहकुडस्स पमाणं रायहाणी य तं चेव बळकुडस्सवि, णवरं बलो देवो रायहाणी उत्तरपुरस्थिमेणंति ॥ १०४ ॥ कहि णं मंते । मन्दरए पव्वए सोमणसवणे णामं वणे प० ? गोयमा । णन्दणवणस्स

बहुसमरमणिजाओ भूमिमागाओ अदतेवद्धि जोयणसहस्साइं उष्ट्रं उप्पइता एत्थ णं मन्दरे पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पष्णते पञ्चजोयणसयाई चङ्कवालविक्खम्भेणं वहे बलयागारसैठाणसंठिए जे ण मन्दरं पञ्चयं सञ्चओ समन्ता संपरिक्षिनाणं चिद्वर चतारि जोयणसहस्साई दुष्णि य बाबत्तरे जोयणसए अद्व य उक्कारमभाए जोयणस्य बाहिं गिरिविक्खम्भेणं तेरस जोयणमहम्माइं पञ्च य एकारे जोयणसए छच इकारराभाए जोयणस्य बाहिं गिरिपरिरएणं तिष्णि जोयणमहस्साई दृष्णि य बावत्तरे जोयणभए अड्ड य इकारमभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्सम्भणं दम जोयणसहरूराई तिष्णि य अउणापण्णे जोयणसए तिष्णि य इद्वारसभाए जोयणस्म अंनो गिरिपरिरण्णंति । से ण एगाए पडमबरवेडयाए एगेण य वणसंडेणं राव्वओ समन्ता संपरिक्सित वण्णओ किण्हे किण्होभासे जाव आसयन्ति एवं कृडवजा सचेव णन्दणवणवत्तव्वया भाणियव्वा, तं चेव ओगाहिऊण जाव पामायवंडसगा सक्कीसाणाणंति ॥ २०५ ॥ कहि णं अंते ! मन्दरपञ्चए पंडगवणे णामं वणे प० ? गो० ! सोमणसवणस्य वहुसमरमणिजाओ भूमिमागाओ छत्तीसं जोगणसहस्माइं उद्गं उप्पद्ता एत्य णं मन्दरे पञ्चए सिहरतले पंडगवण आमं वर्ण पण्णने चनारि चडणडए जोयणमए चक्रवालविक्खंभेणं वहे वलयागार्संठाणसंठिए, जे णं मंदर-चूलियं मन्त्रओ समन्ता संपरिक्यिताणं चिद्वइ तिष्णि जोयणसहस्साई एगं च वाबई जोयणसयं किचिविसेसाहियं परिकृष्टेवेणं. से णं एगाए परमवरवेहयाए एगेण य वण-संडेणं जाव किण्हे॰ देवा आसयन्ति०, पंडगवणस्म बहुमज्झदेसमाए एत्थ णं मंदर-चूलिया णामं चृलिया पण्णता चत्तालीसं जोयणाई उर्दू उचतेणं मृहे बारस जोयणाई विक्खंमेणं मज्हे अह जोयणाइं निक्खंमेणं उपि चत्तारि जोयणाइं विक्खंमेणं मूळे साइरेगाई सत्ततीसं जोयणाई परिक्खेवेणं मज्हे साइरेगाई पणवीसं जोयणाई परि-क्खेवेणं उपि साइरेगाइं बारस जोयणाइं परिक्खेवेणं मूळे विच्छिण्णा मञ्झे संखिता उप्पि तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सञ्चवेरुलियामई अच्छा॰, सा णं एगाए परमवर-वेइयाए जाव संपरिनिखता इति उप्पि बहुसमरमणिजे भूमिभागे जाव विहरंति, एवं जन्नेव सोमणसे पुन्वत्रण्णिओ गमो पुन्खरिणीण पासायवर्डेसगाण य सा चेव णेयव्त्रो जाव सक्कीसाणवर्डेसगा तेणं चेव परिमाणेणं ॥ १०६॥ पण्डगवणे णं भनते ! वणे कइ अभिसेयिखिलाओ पण्णताओ ? गोयमा ! वत्तारि अभिसेयिखिलाओ प०, तं०-पंडुसिला १ पण्डुकंबलसिला २ रत्तसिला ३ रत्तकम्बलसिलेति ४। कहि णं भनते ! पण्डगवणे पण्डुसिला णामं सिला पण्णता र गोयमा ! मन्दरचूलियाए पुरित्थमेणं पंडगवणपुरित्यमपैरंते एत्य णं पंडगवणे पंडुसिला णामं सिला पण्णता,

उत्तरदाहिणायया पाईणपढीणविच्छिण्णा अद्भचन्दसंठाणसंठिया पंचजोयणमयाई आयामेणं अन्नाइजाई जीयणस्याई विक्लम्मेणं चत्तारि जीयणाई बाह्रक्षेणं सव्वकः णगामई अच्छा वेदयावणसंहेणं सव्यक्षो समन्ता संपरिक्यिता वण्णको. तीसे णं पण्डुमिलाए चउद्दिसि चत्तारि तिसोवाणपिडस्वगा पण्णत्ता जाव नोरणा वण्णओ. तीसे णं पण्डमिलाए उपिप बहसमरमणिजे भूमिमारो पण्णने जाव देवा आसयन्ति , तस्स णं बहसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं दुने सीहानणा पण्णता पञ्च ध्णुसयाई आयामविक्खम्मेणं अङ्गाइजाई ध्णुसयाई बाहहेणं सीहासणवण्णओ भाषियव्यो विजयवसम्बज्जोति । तत्य णं जे से उत्तरिहे सीहासणं नन्य णं वहाहं भवणवड्वाणमन्तरजोड्सियवैमाणिएहि देवेहि देवीहि य करछाइया तित्थयरा अभिमिचन्ति, तत्य णं जे से दाहिणिहे सीहासणे तत्य णं बहुहिं भवण जाब वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य वच्छाइया तित्थयरा अभि-सिचन्ति । कहि णं भन्ते ! पण्डगवणे पण्डकंबलसिला पामं सिला पण्णता ! गोयमा ! मन्दरचलियाए दिक्खणेणं पण्डगवणदाहिणपेरंते एत्थ णं पंडगवणे पंडुकंबलसिला णामं सिला पण्णता. पाईणपडीणायया उत्तरदाहिणविन्छिण्णा एवं तं चेब पमाणं वत्तव्वया य भाणियव्वा जाव तस्य णं बहसमरमणिजस्स भूमिभागस्य बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे सीहासणे प॰ तं चेव सीहासणप्पमाणं तत्थ णं वहहिं भवणवड जाव भारहगा तित्थयरा अहिसिचन्ति, कहि णं भन्ते ! पण्डगवणे रत्तांसला णामं सिला प॰ ! गो॰ ! मन्दरचुलियाए पञ्चात्थमेणं पण्डगवणपञ्चान्थम-पेरंते एत्थ णं पण्डमवणे रमसिला णामं सिला पण्णता, उत्तरदाहिणायया पाईण-पडीणविच्छिण्णा जाव तं चेव पमाणं राव्यतवणिजमई अच्छा ० उत्तरदाहिणेणं एत्थ णं द्वे सीहासणा पण्णला, तत्त्र णं जे से दाहिणिक्रे सीहासणे तस्थ णं बहुहिं भवण ॰ पम्हाइया तित्थयरा अहिसिबन्ति, तत्थ णं जे से उत्तरिक्वे सीहासणे तत्थ णं बहुहिं भवण जाव वप्पाइया तित्ययरा अहिसिचंति, कहि णं भन्ते ! पण्डगवणे रत्तकंवलसिला णामं सिला पण्णता ? गोयमा ! मंदरच्लियाए उत्तरेणं पंडगवण-उत्तरचरिमंते एत्थ णं पंडगवणे रत्तकंबलसिला णामं सिला पण्णता, पाईणपडीणा-यया उदीणदाहिणविच्छिण्णा सन्वतविणजमई अच्छा जाव मज्झदेसमाए सीहासणं, तत्थ णं बहुद्दि भवणवर जाब देनेहिं देनीहि य एरावयगा तित्ययरा अहिसिचन्ति ॥ १०७ ॥ मन्दरस्य णं भनते । पञ्चयस्य कइ कण्डा पण्याता ? गोयमा । तओ कंडा यण्णा, तंजहा-हिद्रिक्षे कंडे मजिल्लो कण्डे उविक्रिकण्डे. मन्दरस्य णं भनते । पव्ययस्य हिद्रिक्षे कार्ड कहविहे पणाते ? गोयसा ! चडिवहे पणाते, तंजहा-मुख्वी १ उवके २ ४० सत्ताः

बहरे ३ सकरा ४, मजिझमिले णं भन्ते ! कण्डे कहविहे प० ? गोयमा ! चउ व्यिहे पण्णाने, तंजहा-अंके १ फलिहे २ जायस्वे ३ रयए ४, उवस्ति कण्डे कहिनेहे पण्णेते ? गोयमा ! एगागारे पण्णेते सञ्बजम्बूणयामए, मन्दरस्य णं भन्ते ! पञ्चयस्य हेद्विले कण्डे केवइयं बाहिलेणं ५० ? गोयमा ! एगं जोयणसहस्सं बाहिलेणं पण्णाने, मज्झिमिहे॰ कण्डे पुच्छा, गोयमा ! तेवद्वि जोयणमहस्याई बाह्रहेणं प॰, उवस्ति पुच्छा, गोयमा ! छत्तीसं जोयणसहरूमाई बाह्रहेणं प०, एवामेत्र सपुट्यावरेणं सन्दरे पव्वए एगं जोयणस्यमहम्सं मन्दरगेणं पण्णते ॥ १०८॥ सन्दरस्य णं भन्ते ! पव्ययस्य कट् णामधेजा पण्णता ! गोयमा ! मोलम णामधेजा पण्णता, तंजहा-मन्दर १ भेरु २ मणोरम ३ सुइंसण ४ समंप्रमे य ५ गिरिराया ६। रयणोस्य ७ सिलोस्य ८ मज्झे लोगस्त ९ णाशी य १०॥ १॥ अच्छे य ११ स्रियावते १२, स्रियावरणं १३ तिया । उत्तमे १४ च दिसादी य १५, वडेंसंति १६ य सोलंसे ॥ २ ॥ से केणंद्रणं अन्ते ! एवं वृत्तह-मन्दरे पव्वए २ ! गोयमा ! मन्दरे पव्यए मन्दरे णामं देवे परिवयइ महिष्कृए जाव पिल्ओवमिट्टिउए, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वृच्छ-मन्दरे पव्वए २, अदृत्तरं नं चेवति ॥ १०९ ॥ कहि णं भनते ! जम्बुद्दीवे दीवे णीलवन्ते णामं वासहरपव्वए पण्णने ! गोयमा ! महाबिदेहस्त वारास्स उत्तरेणं रम्मगवासस्स दक्तिवणेणं पुरिथमिद्वलवणसमृद्वस्स पन्नत्थिमेणं पन्नत्थिमत्व्वणसम्बद्धस्स पुरत्थिमेणं एत्य णं जम्बुद्दीवे २ णीलवन्ते णामं वासहरपञ्चए पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिणे णिसहवत्तव्यया णीलवन्तस्स भाणियव्वा, णवरं जीवा दाहिणेणं धणुं उत्तरेणं एत्थ णं केसीरहहो, दाहिणेणं सीया महाणई पवढा समाणी उत्तरकुरुं एजेमाणी २ जमगपव्या णील-वन्नउत्तरकुरुवन्देरावयमालयन्तदृहे य दुहा विभयमाणी २ चउरासीए सलिला-सहरसिंहिं आप्रेमाणी २ भरसालवर्ण एजिमाणी २ मन्दरं पव्ययं दोहिं जोयणेहिं अमंपत्ता पुरत्याभिमही आवता समाणी अहे मालवनतवस्त्रारपञ्चयं दालहत्ता मन्दरस्य पन्वयस्य पुरित्यमेणं पुञ्चिविदेहवासं दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्क-विविजयाओ अद्वावीसाए २ सलिलासहस्सेहिं आपूरेगाणी २ पञ्चाहें सलिलासयसह-स्रोहिं वनीसाए य सिळलासहस्सेहिं समन्गा अहे विजयस्स दाएस्स जगई दालहत्ता पुरियमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, अवसिद्धं तं चेवति । एवं णारिकंतावि उत्तराभिमुही णेयज्या, णवरमिमं णाणतं गन्धानद्यदृवेयन्यपन्वयं जोयणेणं असंपत्ता पद्यत्यामिम्ही आवत्ता समाणी अत्रसिद्धं तं चेव पवहे य मुहे य जहा हरिकन्तासलिका इति । णीलवन्ते णं भन्ते ! वासहरपञ्चए कह कूडा पण्णता ? गोबमा ! णव कूडा प॰,

तंजहा-सिद्धकृहे॰, सिद्धे १ णीले २ पुन्वविदेहे ३ सीया य ४ किशा ५ णारी य ६। अवर्रविदेहे ७ रम्मगकुडे ८ उचर्दसणे चेव ९॥ १॥ सब्वे एए कूडा पश्च-सइया रायहाणील उत्तरेणं । से केणद्वेणं भन्ते । एवं वृषद्-णीलवन्ते वासहरपव्वए २ ? गोयमा ! णीछे णीलोमासे णीलवन्ते य इत्थ देवे महिष्टिए जाब परिवसड मञ्जवंगिलयामए णीलवन्ते जाव णिचेनि ॥ ११० ॥ कहि णं भन्ते ! जम्ब्रहीवे २ रम्मण णामं वासे पण्णते ? गो० ! णीलवन्तस्स उत्तरेणं रुप्पिस्स दिक्खणेणं पुरन्यिमलवणसमुद्दस्स पञ्चत्थिमेणं पर्चात्यमळवणसमुद्दस्य पुरत्थिमेणं एवं जह चेव हारवासं तह चेव रम्मयं वासं भाणियम्बं. णवरं दक्सिणेणं जीवा उत्तरेणं षणुं अवसेसं तं चेव । कहि णं भन्ते ! रम्मए वासे गन्धावई गामं वहवेयहू-पव्वए पण्णते ? गोयमा ! णरकन्ताए पश्चत्थिमेणं णारीकन्ताए परिश्वमेणं रम्म-गवामस्य बहुमज्झदेसभाए एत्य णं गन्वावई णामं वट्टवेयह्रपञ्चर पण्णेते, जं चेव विग्रहावहस्स तं चेत्र गन्यावहस्मवि वन्तव्दं, अद्गो बहवे उप्पलाई जाव गंधा-वइंकण्णाई गन्धावइप्पभाई पउमे य इत्य देवे महिष्किए जाव पल्झिवमद्विउए परिवसइ. रायहाणी उत्तरंगंति । से केणद्रेणं भन्ते ! एवं वृच्चइ-रम्मए वासे २ ? गोयमा ! रम्मगवासे णं रम्मे रम्मए रमणिजे रम्मए य इत्थ देवे जाव परिवसइ, से तेणद्वेणं । कहि णे भन्ते ! जम्बुहीचे २ रूप्पी णामं वासहरपञ्चए पण्णते ? गोयमा ' रम्मग-वासस्य उत्तरेणं हेरण्णवयवासस्य दिन्त्वंगणं पुरित्यमलवणसमृहस्य पचित्यमेणं पचित्थमलवणसमुहस्स पुरित्थमेणं एत्थ णं जम्ब्रुहीचे दीचे रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिणो, एवं जा चेव महाहिमबन्तवनव्वया सा चेव रुप्पिस्सवि, णवरं दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं घणुं अवसेसं तं चेव महापुण्टरीए दहे णरकन्ता णई दिक्खणेणं णेयव्या जहा रोहिया पुरत्थिमेणं गच्छइ, रूप्पकूला उत्तरेणं णेयञ्चा जहा हरिकृता पश्चत्यिमेणं गच्छह, अवसेसं तं चेवति । रुप्पिमि णं भन्ते । वासहरपञ्चए कह कृहा प॰ ? गो॰ ! अह कृहा प॰, तं०~सिद्धे १ रुप्पी २ रम्मग ३ णरकन्ता ४ बुद्धि ५ रूपकृता य ६ । हेरण्यवय ७ मणिकंचण ८ अट्ट य रुणिमि कृडाई ॥ १ ॥ सब्वेवि एए पंचसइया रायहाणीओ उत्तरेणं । से केणहेणं भन्ते ! एवं वृत्तह-रूपी वासहरपञ्चए २ ? गोयमा ! रूपीणामवासहरपञ्चरू रूपी रूपपट्टे रूपोभासे सञ्चरूपामए रूपी य इत्य देवे...पिक्शवसद्विहए परिवसह, से एएणड्रेणं गोयमा ! एवं वुचइत्ति । कहि णं भन्ते ! जम्बुरीवे २ हेरण्णवए णामं वासे पण्णते ? गो० ! रुप्पिस्स उत्तरेणं सिहरिस्स दिवस्रिणेणं पुरत्थियस्त्रवणसमुहस्स प्रवास्थिमणं प्रवास्थिमलवणसम्बद्धस्य प्रतियमेणं एत्य णं जम्ब्रहीवे दीवे हेरण्यावर णासं

वासे पण्णते. एवं जह चेव हैमवयं तह चेव हेरण्णवयपि माणियव्वं. णवरं जीवा दाहि-णेणं उत्तरेणं घणुं अवसिद्धं तं चेवति । कहि णं भन्ते ! हेरण्णवए वासे मालवन्तपरियाए णामं वहवेयञ्चपञ्चए प० ? गो० ! सुबण्णकृत्वाए पञ्चत्थिमेणं रूपकृत्वाए पुरस्थिमेणं एत्थ णं हेरण्णवयस्स वासस्स बहुमज्झदेसभाए मालवन्तपरियाए णामं वद्दवेयन्नुपव्वए प० जह चेव सहावह० तह चेव मालवंतपरियाएवि, अट्टो उप्पलाई पउमाई मालवन्त-पभाइं मालवन्तवण्णाई मालवन्तवण्णामाइं पमासे य इत्य देवे महिहिए...पिलओव-मिट्टिइए परिवसइ, से एएणद्वेणं॰, रायहाणी उत्तरेणंति । से केणद्वेणं भन्ते ! एवं बुचड-हेरण्णवए वासे २ ? गोयमा ! हेरण्णवए णं वासे रुप्पीसहरीहिं तामहर-पव्वएहिं दुहुओ समवगृढे णिचं हिरण्णं दल: णिचं हिरण्णं मुंचइ णिचं हिरण्णं पगा-सइ हेरण्णवए य इत्थ देवे परिवसद्, से एएण्ड्रेणंति । कहि णं भन्तं ! जम्बुईवि दीवे सिहरी णामं वासहरपञ्चए पण्णने ? गोयमा ! हेरण्णवयस्य उन्तरेणं एरावयस्य दाहि-णेणं पुरित्थमलवणसमुहस्स० पचित्यमलवणसमुहस्स पुरित्थमेणं, एवं जह चेव चर्छाह-सवन्तो तह चेव सिहरीवि णवरं जीवा दाहिणेणं धणुं उत्तरेणं अवसिद्धं तं चेव पुण्डरीए दहे सुवण्णकला महाणई दाहिणेणं णेयव्या जहा रोहियंसा पुरस्थिमेणं गच्छइ, एवं जह चैव गंगासिन्ध्ओ तह चेव रत्तारत्तवईओ णेयव्वाओ पुरस्थिमेणं रत्ता पश्चित्थिमेणं रत्तवई अवसिद्धं तं चेव [अवसेसं भाणियव्यंति] । सिहारेम्मि णं भन्ते ! वासह-रपव्वए कइ कृडा पण्णता? गो०! इक्कारस कृडा प०, तं०-सिद्धकृडे १ मिहरिकृडे २ हेरण्णवयकृष्टे ३ सुबण्णकृलाकृष्टे ४ सुरादंवीकृष्टे ५ रत्ताकृष्टे ६ लम्छीकृष्टे ७ रत्तवईकृढे ८ इलादेवीकृढे ९ एरवयकृढे १० तिगिच्छकृढे ११, एवं मञ्बेधि कुढा पंचसहया रायहाणीओ उन्तरेणं । से केणद्रेणं भनते ! एवसच्चइ-सिहरिवासह-रपव्वए २ ? गोयमा ! सिहरिंमि बामहरपव्वए बहुवे कूडा सिहरिसंठाणमंठिया सञ्चरयणामया सिहरी य इत्य दंवे जाव परिवसइ, से तेणद्वेणं , कहि णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्णते ? गोयमा ! सिद्दिरस० उत्तरेणं उत्तरलव-णसमुद्दस्य दिक्खणेणं पुर्विथमलवणसमुद्दस्य पश्चितथमेणं पश्चितथमलवणसमुद्दस्य पुरत्थिमेणं एत्य णं जम्बुहीचे दीवे एरावए णामं वासे पण्णते, खाणुबहु कंटग-बहुले एवं जन्नेव भरहस्स वत्तव्यया सन्नेव सव्वा जिरबसेसा जेयव्या सओअवजा सणिक्खमणा सपरिनिव्याणा णवरं एरावओ चक्कवट्टी एरावओ देवो. से तेणद्रेणं ० एरावए वासे २ ॥ १११ ॥ चडत्थो वक्तारो समसो ॥

जया णं एकसेके चक्कविविजए भगवन्तो तित्थयरा समुप्पजन्ति तेणं कालेणं तेणं समएणं अहोलोगवत्थव्याओ अह दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ सएहिं २ सूटेहिं

सएहिं २ भवणिहिं सएहिं २ पासायवर्डेसएहिं पत्तेर्य २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चर्चाहं महत्त्रियाहिं सपरिवाराहिं सत्तिहं अणिएहिं सत्तिहें अणियाहिवईहिं सोलगएहिं आयरक्तवंत्रसाहरसीहिं अण्णेहि य बहहिं भवणनइवाणमन्तरेहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवृद्धाओ महया हयणद्वनीयवादय जाव भोगभोगाई भुंजमाणीओ विद्वरंति. तंजहा-भोगंकरा १ भोगवर्ट २. सभोगा ३ मोगमालिणी ४। तोयधारा ५ विचित्ता य ६, पुष्प्रमाळा ७ अणिदिया ८ ॥ १ ॥ तए णं तासि अहेलोगवत्थव्याणं अद्वर्णः दिसाकमारीणं मयहरियाणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलंति, तए णं ताओ अहेलोग-वत्यव्वाओ अद्र दिमाक्रमारीओ महत्तरियाओं फ्तेयं २ आमणाई बलियाई पासन्ति २ ता ओहिं परंजंति परंजिना भगवं तित्ययरं ओहिणा आमोएंति २ ता अण्ण-मण्णं तहानिति २ ना एवं वयासी-उपपण्णे खलु मो! जम्बुहीवे दीवे भयवं नित्ययरे तं जीयमयं तीयपञ्चप्पणमणागयाणं अहेलोगवत्थव्वाणं अद्ग्रण्हं दिसाकुन मारीमहत्तारेयाणं भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हे-वि भगवओ जम्मणमहिमं करेमोत्तिकृष्ट एवं वयंति २ ता पत्तयं २ आमिओगिए देवे महावेति २ ता एवं वयासी-सिप्पामेव भो देवाणप्पया! अणेगखम्भस्यस-णिर्पायद्वे सीलद्वियः एवं विमाणवणाओं भाणियन्त्रो जाव जोयणविस्छिण्णे दिन्वे जाणविमाणे विज्ञित्वता एयमाणतियं पचप्पिणहत्ति, तए णं ते आभिओगा देवा अणेगसम्भसय जाव पश्चिप्पणंति. तए णं ताओ अहेलोगवत्थव्वाओ अद्घ दिसायः-मारीमहर्त्तारयाओ हड्काइ० पत्तेयं २ चडहिं सामाणियसाहस्सीहिं चडिहं महत्तार-याहिं जान अण्णेहिं बहुहिं देवेहिं देवीहि य सर्बि संपरिवृहाओं ते दिव्वे जाणविमाणे दुरूहंति दुरूहिता सव्बिद्धीए सव्बजुईए चणमुईंगपणवपवाइयरवेणं ताए उक्किद्धाए जाव देवगईए जेणेव भगवस्रो तित्यगरस्त जम्मणणगरं जेणेव॰ तित्ययरस्त जम्मणभवणे तेणेव उद्यागच्छन्ति २ ता भगवको तित्थयरस्य जम्मणभवणस्य उत्तरपरित्थमे दिसीभाए हेसि चडरंगुलमसंपत्ते घरणियले ते दिन्ने जाणविमाणे ठविति ठविता पत्तेयं २ चडहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाब सद्धिं संपरिवृहाओ दिव्वेहिंतो जाणिमा-णेहिंतो पचोक्हंति २ ता सब्बिद्धीए जान णाइएणं जेणेन भगनं तित्थयरे तित्थय-रमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगवं तित्ययरं तित्ययरमायरं च तिख्यो आयाद्विणपयाद्विणं करेंति २ ता पत्तेयं २ कर्यलपरिमाद्वियं सिरसावत्तं मत्यए अंबलिं कह एवं बयासी-णमोऽत्यु ते रयणकुच्छियारिए जगप्पईबदाईए सव्यजग-मंगलस्य चक्खुणो य मुत्तस्य सञ्बद्धगजीववच्छलस्य हिमकारगमगगदेखियवागि-दिविभुषभस्य जिषस्य णाणिस्य णायगस्य बुहस्य बोहगस्य सन्बलोगणाहस्य णिम्ममस्स पत्रग्कुलसमुब्भवस्स आईए खत्तियस्स जंसि लोगुनमस्स जणणी घण्णासि तं पुण्णासि क्यरवासि अम्हे णं देवाणुप्पिए ! अहेलोगन्त्थन्वाओ अह दिसाकुमा-रीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्मामो तण्णं तुन्भाहिं ण भाइयव्वंतिकड्, उत्तरपुरित्यमं दिसीभागं अवक्रमन्ति २ ना वेउव्वियससुग्धाएणं समोहणंति २ ता संखिजाई जोयणाई दंडं णिसिरंति, तंजहा-रयणाणं जाव संबद्ध-गवाए विउव्वंति २ ता तेणं सिवेणं मउएणं मारुएणं अगुद्धएणं भूमितलविमलकर-णेणं मणहरेणं सव्वाउयस्रहिकुमुमगन्धाणुवासिएणं पिण्डिमणीहारिमेणं गन्युद्धएणं तिरियं पत्राइएणं भगवओ तित्थयरस्त जम्मणभवणस्य सञ्बओ रामन्ता जोयणपरि-मण्डलं से जहाणामए-कम्मगरदारए सिया जाव तहेव जं तत्थ नणं वा पत्तं वा कहं वा कयवरं वा असुइमचोक्खं पूर्वं दुव्भिगन्धं तं सन्वं आहणिय २ एगन्ते एडेंति २ ता जेणेव भगवं तित्ययरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगवओ नित्य-यरसः तित्थयरमायाए य अदुःसामन्ते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ निहंति ॥ ११२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उडूलोगवत्थव्वाओ अद्व दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सपहिं २ कुडेहिं सपहिं २ भवणेहिं सपहिं २ पासायवर्डेसएहिं पत्तेर्य २ चडहिं सामा-णियसाहस्सीहिं एवं तं चेव पुञ्चवण्णियं जाव विहरति, तंजहा-मेहंकरा १ मेहवई २. समेहा ३ मेहमालिणी ४ । सुबच्छा ५ बच्छमिना य ६, वारिसेणा ७ बला-हगा ८॥ १॥ तए णं तासि उड्डलोगवत्थव्वाणं अट्टल्हं दिसाकुमारीमहत्तारियाणं वत्तेयं २ आसणाई चलन्ति, एवं तं चेव पुव्ववण्णियं भाणियव्यं जाव अम्हे णं देवाण्टिप्ए ! उद्गलोगवत्यव्वाओ अद्ग दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जेणं भगवओ तित्थगरस्य जम्मणमहिमं करिस्सामो तेणं तुन्माहि ण भाइयव्वंतिकहु उत्तरपुरस्थिमं दिसीभागं अवक्रमन्ति २ ता जाव अञ्मबद्दलए विजन्मन्ति २ ता जाव तं णिह-यरयं णहरयं भद्रायं पसंतरयं उनसंतरयं करेंति २ ता खिप्पामेन पशुवसमन्ति, एवं पुष्फवहलंसि पुष्फवासं वासंति वासिना जाव कालागुरुपवर जाव सुरवराभिगम-णजोगं करें ति २ ता जेणेव भयवं तित्ययरे तित्ययरमाया य तेणेव उवाग-च्छन्ति २ ता जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्रति ॥ ११३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरत्थिमस्यगवत्थव्याओ अड्ड दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं २ कुडेटिं नहेव जाव विदरंति, तंजहा-णंदुसरा य १ णन्दा २ आणन्दा ३ णंदि-वदणा ४ । विजया य ५ वेजयन्ती ६, जयन्ती ७ अपराजिया ८ ॥ ९ ॥ सेसं तं चेव जाव तुन्साहिं ण भाइयव्वंतिकहु भगवओ तित्ययरस्स तित्ययरमायाए य पुरत्यमेणं आयंसहत्थायाओं आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति । तेणं

कारेर्ण तेणं समएणं दाहिणस्यगवत्थव्याओ अट्ट दिसाकुमारीमहत्त्ररियाओ नहेव जाव विहरेति, तंत्रहा-समाहारा १ सुप्पइण्णा २, सुप्पबुद्धा ३ जसोहरा ४। खन्छि-मई ५ सेमवई ६, चित्तगुता ७ व्यंधरा ८ ॥ १ ॥ वहेच जाव तुब्सार्हि ण भाइ-यव्वंतिकद्व भगवओ तित्थयरस्य तित्थयरमाऊए य दाहिणेणं भिंगारहृत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्धन्ति । तेणं कालेणं तेणं समएणं पष्टित्य-मस्यगनत्थव्वाओ अद्र दिसाकमारीमहत्तारियाओ सर्गाहं २ जाव विहरेति, तं०-इलादेवी १ सुरादेवी २, पहवी ३ पडमावई ४ । एगणामा ५ णवसिया ६, महा ७ सीया य ८ अद्रमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तुष्माहिं ण भाइयव्वंतिकह जाव भग-वओ तित्ययरस्य निन्थयरमाऊए य पचित्यमेणं नालियंटहत्थगयाओं आगायमा-णीओ परिगायमाणीओ चिट्रन्ति । तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिश्रहयगवत्य-व्वाओ जाव विहरेति, तंत्रहा-अलंबुसा १ मिस्सकेसी २, पुण्डरीया य ३ वारुणी ४। हामा ५ सव्यप्पमा ६ चेव, सिरि ७ हिरि ८ चेव उत्तरओ ॥ १॥ तहेव जाव वन्दिना भगवओ तित्थयरस्य तित्थयरमाऊए य उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्धन्ति । तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसि-रयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाक्रमारीमहत्तरियाओ जाव विहरंति, तंजहा-चित्ता य १ चित्तकणगा २. सतेरा ३ य सोदामिणी ४। तहेव जाव ण भाइयव्वंतिकह भगक्ओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य चटमु विदिसास दीवियाहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्रन्तिति । तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्ज्ञ-मरुयगवत्थव्वाओ चतारि दिमाकुमारीमहन्तरियाओ सएहिं २ ऋडेहिं तहेव जाब विहरीत, तंजहा-स्या स्यासिया चेव, सुस्या स्यगावई । तहेव जाव तुव्माहि ण भाइयव्वंतिकट्ट भगवओ तित्थयरस्स चडरंगुलवर्जं णाभिणालं कप्पन्ति कप्पेता विय-रगं खणन्ति खणिता वियरंगे णाभिं णिहणंति णिहणिता रयणाण य वहराण य प्रेंति २ ता हरियालियाए पेडं बन्धंति २ ता तिदिसिं तओ क्यलीहरए विउन्त्रंति. तए णं तेसि क्यलीहरगाणं बहमज्यादेसभाए तओ चाउरसालए विउव्वन्ति, तए णं तेसि चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभाए तथो सीहासणे विउव्यन्ति, तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णते सन्वो वण्णागे भाणियन्वो । तए णं ताओ स्यगमञ्ज्ञवत्थव्वाओ चतारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेणेव भववं तित्ययरे तित्ययरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगवं तित्ययरं करयल-संपृहेणं गिष्डन्ति तित्थयरमायरं व बाहाई गिष्डन्ति २ ना जेणेव वाहिषिक्षे कबलीहरए जेणेव चाउरसालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति २ ता अगवं

तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयार्वेति २ ता सयपागसहस्सपागेहिं तिहेहिं अर्ब्सगेति २ ता भर्भिणा गन्धवदृष्णं उच्बेहेति २ ता भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहासु गिण्हन्ति २ ता जेणेव पुरित्थिमिहे कयली-हरए जेंणेव चाउरसालए जेंणेव सीहासणे तेंणेव उवागच्छन्ति उवागच्छिता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहामणे णिसीयावैति २ ना तिहि उदएहिं मजावैति, तंजहा-गन्धोदएणं १ पुप्फोदएणं २ मृद्धोदएणं ३, मजाविता सन्बालंकारविभस्तियं करेंति २ ता भगवं तित्थयरं करयलसंपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हन्ति २ ता जेंगंब उत्तरिक्षे क्यलीहरए जेंगेव चाउस्सालए जेंगेय सीहासणे तेंगंद उवा-गच्छन्ति २ ता भगवं तिर्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयाविति २ तः आमिओगे देवे सहाविन्ति २ ता एवं वयासी-खिपामेव भी देवाणुप्पया ! चक्र-हिमवन्ताओ वासहरपञ्चयाओ गोसीमचंदणकहाई साहरह, तए णं ते आभिओगा देवा ताहि स्यगमज्झवत्थव्वाहि चडहि दिमाकुमारीमहत्तरियाहि एवं वृत्ता समाणा हद्भुद्ध जाब विणएणं वयणं पडिच्छन्ति २ ता खिप्पामेव चुह्नहिमवन्ताओ वास-हरपव्वयाओ सरसाई गोसीसचन्द्रणकद्वाई साहरन्नि, नए णं ताओ मज्जिमस्यग-वत्थव्वाओ चनारि दिसाकुमारीमहन्तरियाओ सरगं करेन्ति २ ता अरणि धडेति अर्णि घडिता सरएणं अर्णि महिति २ ता अगि पाडेति २ ता अगि संघु-क्खांत २ ता गोसीसचन्दणकड्ढे पश्चिवनित २ ता अभि उजालंति २ ता भृहकर्रमं करेंति २ ता रैक्खापोइलियं बंधन्ति बन्धेता णाणामणिर्यणभित्तिते दुविहे पाहाणबहुगे गहाय भगवओ तित्थयरस्स कण्णमलंमि टिहियाविन्ति भवउ भयवं पव्वयाउए २ । तए णं ताओ स्यगमज्झवत्थव्याओ चनारि दिसाक्रमारीमहत्तरि-याओ भयवं तित्ययरं करयलसंपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हन्ति गिण्हिना जेणेव भगवओ तित्थयरस्य जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छन्ति २ ता तित्थयरमायरं सयणिजंसि णिसीयाविति णिसीयाविता भयवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेंति ठवित्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिद्रन्तीति ॥ ११४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णामं देविंदे देवराया वजापाणी प्रदेदरे सयकेळ सहस्सक्खे मधवं पागसासणे दाहिणकूलोगाहिवई वत्तीसविमाणावाससयसहरूसाहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयं-बरवत्यघरे आल्ड्यमालमञ्डे णबहेमचारुचित्तचंचलकुण्डलविलिहिज्जमाणगंडे भासुर-बोंदी पलम्बक्णमाले महिन्निए मह्जूश्ए महावले महायसे महाणुभागे महा-

९ जेण कम्मेण कहाइं भस्सस्वाइं भवंति तं तारिसं । २ भस्सेति वा भप्पेति वा भुईति वा रक्खाति वा एगहा । ३ जीयंति काऊण बंधिजंती भस्सपोष्टलिया तं ।

सोक्खें सोहम्मे कप्पे सोहम्मवर्डिसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्रंमि सीहा-सर्णास से णं तत्य बत्तीसाए विमाणावाससयसाहरूसीणं चडरासीए सामाण-यसाहरूमीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगणं चउण्हं लोगपालाणं अद्रण्हं अग्गमहि-सीणं मपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चडरासीणं आयरक्खदेवसाहरूसीणं अण्णेसि च बहणं सोहम्मकप्पवासीणं वेसाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवचं पोरेवचं नामित्तं भट्टितं महत्तरगतं आणाईसरसेणावचं कारेमाण पालेमाण महया ह्यणट्रगीयवाड्यतंतीतलतालतृडियघणमुझंगप्डपडह्वाडय-रवेणं दिव्बाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरइ। तए णं तस्म सकस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलह, तए णं से मक्के जान आसणं चलियं पासह २ ना ओहिं परंजा परंजिसा भगवं तिन्थयरं ओहिणा आभोएड २ सा हट्टनद्विसे आणंदिए पीडमणं परमसोमणस्मिए हिस्तदर्सावसप्पमाणहियए श्वाराहयक्यंबदुसुमचंचुमालइय-उत्पन्नियरोमक्वे वियसियवरक्मलणयणवयणे पयलियवरक्डगत्डियकेऊरमउडे क्रण्डलहारविरायंतवच्छे पालम्बपलम्बमाणघोलंतभूसणघरे ससंभमं तुरियं चदलं सुरिंदं सीहासणाओ अन्मुद्वेद २ ता पायपीटाओ पचोस्हद २ ता वेरुलियवरिद्वरिद्वअंजणणि-उणोवियांमसिमिसितमणिरयणमंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ २ ता एगसाडियं उत्तरा-संगं ऋरंड २ ता अंजलिमजलियग्गहत्थे तित्थयराभिसुंह सत्तद्व पयाई अणुगच्छइ २ ता वामं जाणुं अंचेइ २ ता दाहिणं जाणुं धरणीयलंसि साहट्ट तिक्खुती मुद्धाणं धरणियलंसि णिवेसेइ २ ता ईसि पन्नण्णमइ २ ता कढगत्रियथंभियाओ भयाओ साहरः २ ता करयलपरिगाहियं ० सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कह एवं वयासी---णमोऽत्थ णं अरहंताणं भगवन्ताणं, आइगराणं तित्ययराणं सर्यसंबद्धाणं, परिश्वत्तमाणं पुरिस-सीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं पुरिसवरगन्धहत्र्श्राणं, लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोग-हियाणं लोगपईवाणं लोगपजोयगराणं. अभयदयाणं चक्खदयाणं समादयाणं सरणदयाणं जीबदयाणं बोहिदयाणं. बम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरवाउरन्तचकवद्दीणं. दीवो ताणं सरणं गई पहुद्वा अप्पिटहरू-बरनाणदंसणधराणं वियद्वछउसाणं, जिणाणं जावयाणं तिष्णाणं तारयाणं वृद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं, सञ्बर्ण्णां सञ्बद्धितीणं सिवमयलमस्यमणन्तमक्खय-मब्बाबाहमपुणराबित्तिसिद्धिगङ्गामधेयं ठाणं संप्ताणं गमो जिणाणं जियसयाणं. णमोऽत्यु ण भगवओ तित्यगरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवन्तं तत्थगर्य इहगए, पासउ मे भगवं ! तत्थगए इहगयंतिकह वन्दइ णमंसङ बं० २ ता सीहासणवरंसि पुरस्थाभिमहे सण्णिसण्यो. तए पं तस्स सहस्स देविंदस्स

देवरण्णो अयमेयास्वे जाव संकष्पे ममुप्पजित्था-उप्पण्णे खलु मो ! जम्बुद्दीवे दीवे भगवं तित्थयरे तं जीयभेयं तीयपशुप्पणमणागयाणं सकाणं देविदाणं देवराईणं तितथयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामि णं अद्दंपि भगवओ तितथगरस्य जम्मणमहिमं करेमितिक्दु एवं संपेहेइ २ ता हरिणेगमेसिं पायताणीयाहिवई देवं सद्दावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुणिया ! सभाए सहस्माए मेघोघर-सियगंभीरमहुर्यरसद्दं जोयणपरिमण्डलं सुघोसं सुमरं घंटं तिक्खुनो उल्लास्टेमाणं २ महया महया सहेणं उन्होंनमाणे २ एवं वयाहि-आणवेह णं भी ' सके देविदे देवराया गच्छइ णं भो ! मके देविंदे देवराया जम्बुद्दीवे २ भगवओ तिन्धयरम्म जम्मणसहिमं करित्तए, तं तुब्भेवि णं देवाणुणिया ! मव्विद्वीए मव्वजुईए मव्वयतेणं मव्वमसुदग्णं मञ्जायरेणं मञ्जविभद्गेए मञ्जवसंभमेणं मञ्ज्ञणाडएहिं सञ्जोजगोहहिं सन्त्रालंकार्विभूमाए सन्वदिन्वतृिख्यमहर्साण्णणाएणं महया इङ्गीए जात्र रवेणं णिययपरिवालसंपरिवृद्या स्याइं २ जाणविमाणवाहणाईं दुल्डा समाणा अकाल-परिहीणं चेव महत्म जाव अंतियं पाउच्यवह, नए णं से हरिणेगमेसी देवे पाय-त्ताणीयाहिवई सक्केणं ३ जाव एवं वृत्ते समाण इद्घनुष्ट जाव एवं देवीति आणाए विणएणं वयणं पडिनुणेइ २ ना सकस्म ३ आंत्याओ पडिणिक्समइ २ ता जेणेव यभाए मुहम्माए मेघोघरतियगम्भीरमहुरयरसहा जोयणपरिमण्डला मुघोसा घण्टा तंणेव उवागच्छइ २ ना तं मेत्रोघरसियगम्भीरमहुरयरसद्दं जायणपरिमण्डलं नुघोसं घण्टं तिक्खुनो उष्ठाळेइ, तण् णं तीसे मेघोघर्सियगम्भीरमहर्यरसद्दाए जोयणपरि-मण्डलाए मुघोसाए घण्टाए तिक्खुत्तो उछालियाए समाणीए सोहम्से कप्पे अण्णेहिं एगूणेहिं वत्तीर्मावेमाणावाससयसहस्सेहिं अण्णाडं एगूणाई बत्तीसं घण्टासयसहस्साइं जमगसमगं कणकणारावं काउं पयनाइं चावि हत्था, तए णं मोहम्मे कप्पे पासाय-विमाणणिक्खुड।वृडियसहममुद्वियघण्टापंडसुयास्यमहस्मसंकुळे जाए यावि होत्था. नए णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहुणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगन्तरङ्गसत्ताणित्रप्पमत्तविसयसुहसुच्छियाणं स्सरघण्टारसियविङलबोलपृरियचवल-पिंडबोहणे कए समाणे घोमणकोऊहलदिष्णकण्णाग्याचित्तउवउत्तमाणसाणं से पाय-नाणीयाहिनई देवे तंसि घण्टारवंसि णिसंतपिंडसंतंसि समाणंसि तस्य तस्य देसे २ तहिं २ महया महया सहेणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी-हन्त ! सुणंतु भवंतो वहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणियदेवा देवीओ य सोहम्मकप्पवहणो इणमो बयणं हियसहरथं-आणवेह णं भो । सक्के तं चेव जाव अंतियं पाउच्यवहत्ति, तए णं ते देवा देवीओ य एयमई सोचा हद्भुतद्व जाव हियया अप्येगइया बन्दणवित्यं एवं णसंस-

णवित्रयं सङ्घारवित्तयं सम्माणवित्तयं दंसणवित्तयं जिणभित्तरागेणं अप्पेगइया तं जीयमेयं एवमाइतिकष्ट् जाव पाउच्मवंतिति । तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते वेमाणिए देवे देवीओ व अकालपरिहीणं चेव अंतियं पारब्भवमाणे पासइ २ ता हद्र॰ पालयं णामं आभिओगियं देवं सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया ! अणेगखम्भसयसण्णिविद्वं लीलद्वियसालभंजियावल्यं ईहामियउसभ-तरगणरमगरविहगबालगदिण्यररुसरभचमरकंजरवणलयपउमलयभिनितं संभूगा-यवइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्ञाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अश्रीसहस्समालिणीयं रुवगराहस्तक्तियं भिममाणं भिन्भिसमाणं चक्खुहोयण्ठेसं सहफासं सस्सिरीयरुवं घण्टाचलियमहूरमणहरूमरं सुहं कृतं दरिमणिजं णिउणोवियमिसिसिसितमणिरयण-घंटियाजालपरिक्सितं जोयणसहस्मविच्छिणं पश्चजोयणसयमुख्यदं सिग्धं तुरियं जङ्गणिव्वाहि-दिव्वं जाणविभाणं विउव्याहि २ ता एयमाणत्तियं पचप्पिणाहि॥११५॥ तए णं से पालयदेवे सक्केणं देविदेणं देवरूण्या एवं वृत्ते समाणे हट्टनुहु जाव वेउन्त्रियसमुख्याएणं समोद्वणिता नहेव करेइ इति, नस्त णं दिव्वस्म जाणविमाणस्स तिदिनिं तओ तिसोवाणपिडिस्वगा वण्णओ, तेसि णं पिडिस्वगाणं पुरओ पत्तेयं २ तोरणा वण्णओ जाव पिहरवा, तस्स णं जार्णावर्माणस्य अंतो वहसमरमणिजे भूमि-भागे . से जहाणामए-आलिंगपुरुखरेड वा जाव दीवियचम्मेड वा अणेगसंक्रकीलग-सहस्मवियए आवडपचावडसेढिप्पसेढिस्रित्ययमोवित्ययबद्धमाणपूर्ममाणवमच्छंडगम-गरंडगजारमारफुळाविलपडमपत्तसागरतरंगवसंतलयपडमलयभित्तिहिं सच्छाएहिं सप्पमेहिं समरीहएहिं सउजोएिं णाणाविहपञ्चवण्णेहिं मणीिं उबमोमिए. तेसि णं मणीणं वण्णे गन्धे फासे य भाणियव्वे जहा रायप्यसेणहुक्के. तस्स णं भूमिमागस्स बहुमज्झदेसभाए पेच्छाघरमण्डवे अणेगखम्भसयसण्णिविद्वे वण्णओ जाव परिह्वे, तस्य उन्होए पउमलयभत्तिचित्ते जाव सन्वतवणिज्ञमए जाव पडिहवे, तस्स णं मण्डवस्स बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागंसि महं एगा मणिपेहिया० अद्व जोयणाई आयामविक्खम्मेणं चतारि जोयणाई बाह्रहेणं सव्वमणिमई वण्णजो. तीए उबरिं महं एगे सीहासणे वण्णको, तस्सुवरिं महं एगे विजयदृसे सन्वर्यणामए वण्णओ, तस्स मज्झदेसभाए एगे वहरामए अंकुसे, एत्य णं महं एगे कुम्भिक्के मुत्तादामे, से णं अण्णेहिं तद्बुचताणमाणमितिहिं चडिं अद्दुशिमकेहिं मुतादामेहिं सन्त्रओ समन्ता संपरिनिखते, ते णं दामा तवणिजलंबूसगा सुवण्णपयरगमण्डिया णाणामणिरयणविविद्दहारद्वहार् वसोमियसमुदया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुन्नाइ-एहिं बाहिंहें मन्दं २ एहजमाणा जाब निव्युहकरेणं सहेणं ते पएसे आपूरेमाणा २

सत्तागमे

जाब अईव २ उवसोमेमाणा २ चिद्वंति, तस्स णं सीहासणस्स अवस्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपरिवमेणं एत्य णं सक्करम० च उरासीए सामाणियसाहरूसीणं च उरासीहमहा-सणमाहरूसीओ पुर्तिथमेणं अट्टण्हं अगगमहिसीणं एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भितर-परिसाए द्वालसर्थं देवसाहरूसीणं दाहिणेणं मज्जिमाए० चउदमर्थं देवसाहरूसीणं दाहिणपचित्थिमेणं बाहिरपरिसाए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं पचरिथमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणंति, तए णं तस्म सीहासणस्स च उहिसि चउण्हं च उरासीणं आयरक्तः-देवमाहरुसीणं एवमाई विभासियव्वं सरियाभगमेणं जाव पश्चिष्पणन्तिति ॥ ११६ ॥ तए णं से सक्के हृद्व जाव हियए दिव्वं जिणेंदाभिगमणजुरगं सव्वालंकारविभृसियं उत्तरवेडिवयं हवं विउव्वड २ ता अद्वहिं अग्गमहिसीहिं सपरियाराहिं णहाणीएणं गन्थव्याणीएण य सिद्धं तं विमाणं अणुप्पयाहिणीकरेमाण २ पुव्विवेक्षेणं तिसोवाणणं दुरुदृष्ट २ न। जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिमुह्ने मण्णिसण्णेति, एवं चेव सामाणिया-वि उत्तरेणं तिसोवाणेणं दुष्टिहत्ता पनेयं २ पुठवण्णत्थेस भद्दासणेनु णिसीयंति, अवसेसा दंवा य देवीओ य दाहिणिल्लेणं तिसोवाणेणं दुरुहिता तहेव जाव णिसीयंति, तए णं तस्य मकस्स तंसि॰ दुरूढस्स॰ इमे अट्टहुमंगलमा पुरओ अहाणुपन्त्रीए संपट्टिया॰, तयणंतरं व णं पुष्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसणरहय-आलोयदरिसणिजा वाउद्भयविजयवेजयन्ती य समृतिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणप्रव्वीए संपद्मिया, तयणन्तरं अञ्चलिंगारं . तयणंतरं च णं वहरामयवहलद्ध-संठियसुसिलिट्टपरिचट्टमहुमुपइहिए विसिद्धे अणेगवरपञ्चवण्णकृडमीमहस्मपरिमण्डि-याभिरामे वाउद्भयविजयवेजयन्तीपद्यागालनाइच्छतक्रिलए तुंगे गयणयलमण्लिहंत-सिंहरे जोयणसहस्समृतिए महदमहालए महिंदज्झए पुरश्रो अहाणुपुन्वीए संपद्भिए. तयणन्तरं च णं सहवणेवत्थपरियच्छियससजा सञ्तालंकारविभूसिया पश्च अणिया पश्च अणियाहिवडणो जाव संपद्मिया, तयणन्तरं च णं बहुचे आभिओणिया देवा य देवीओ य सर्राहें सर्राहें रूवेहिं जाव णिओगेहिं सक्षं देविंदं देवरायं पुरक्षो य मगाओ य अहा , तयणन्तरं च णं बहवे सोहम्मकप्पनासी देवा य देवीओ य सब्बिद्वीए जाव दुस्छ। समाणा । सम्मञो य जाव संपद्विया, तए णं से सक्के तेणं प्रवाणियपरिकिल्तेणं जाव महिंदज्झएणं पुरक्षो पक्किजमाणेणं चउरासीए सामाणिय जाव परिवृद्धे मध्यिष्ट्रीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झेमज्हेणं तं दिव्वं देविष्ट्रं जाव उनदंसेमाणे २ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिहे निजाणमग्गे तेणेव उवागच्छा उवागच्छिता जोयणसयसाहस्सिएहिं विस्महेहिं ओवयसाणे २ ताए उक्किहाए जाव देवगईए वीईवयमाण २ तिरियमसंखिजाणं वीवसमुद्दाणं मुजामज्हेणं जेणेड

णन्दीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरिश्वमिले रइकरगपव्वए तेणेव उवागच्छइ २ ता एवं जा चेव स्रियामस्स वसव्वया णवरं सङ्गाहिगारो घनव्वी जाव तं दिव्वं देविहिं जाव दिव्वं जाणविमाणं पिंडसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवओ तित्थयरस्म जम्मणणगरे जेणेव भगवओ तित्थग्ररस जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छः २ ना भगवओ तित्ययरस्य जम्मणभवणस्य उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे चउरंगुलमसंपत्तं धरणियले तं दिव्वं जाणियाणं ठवेइ २ ना अद्वर्हि अग्गमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं गन्धव्याणीएण य णहाणीएण य मर्द्धि ताओ दिव्याओ जाणविमाणाओ पुरस्थिमिक्षेणं तिसोवाणपिकस्वएणं पश्चोध्हर, नए णं सकस्य देविंदस्य दंवरण्णो चटरासीइ-सामाणियसाहस्सीओ दिव्याओ जार्णावमाणाओ उत्तरिहेणं तिसोवाणपडिस्वएणं पचोरुहंति, अवसेगा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिक्षेण तिसोवाणपडिस्तएणं पच्चोरुहंतिति । तए णं से सक्के देविन्दं देवराया चउरासीए सामाणियसाहस्सिएहिं जाव सिद्धं संपर्विदे सिव्वङ्कीए जाव दुंदुहिणिग्घोसणाङय-रवेणं जेणेव भगवं तिन्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उदागच्छा २ ता आलोए चेव पणामं करेइ २ ता मगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खतो आयाहिण-पयाहिणं करेड २ ता करयल जाव एवं वयासी-णमोऽत्य ते रयणकुच्छियारिए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव भण्णासि पुण्णासि तं कयत्थासि, अहण्णं देवाणुप्पिए! सके णामं देविन्दे देवराया भगवओ तित्थयरस्म जम्मणमहिमं करिस्सामि, नं णं तुब्माहिं ण भाइयव्वंतिकट्ट ओसोवणिं दलयइ २ ता तित्थयरपडिरूवगं विउन्वद २ ता तित्थयरमाउयाए पासे उवेइ २ ता पन्न सक्के विउव्वड विउव्वित्ता एगे मके भगवं तित्थयरं कर्यलसंपुढेणं गिण्हड एगे सक्के पिट्टओ आयवत्तं धरेइ दुवे सक्का उभओ पासि चामरून खेवं करेन्ति एगे सके पुरओ वज्जपाणी पकहाइति, तए णं से सके देविनदे देवराया अण्णेहिं बहहिं भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सिद्धं संपरिवृडे सिव्वद्वीए जाव णाइयरवेणं ताए उक्किट्टाए जाव वीईवयमाणे २ जेणेव मन्दरे पव्चए जेणेब पंडगवणे जेणेव अभिसेयसिका जेणेव अभिसेयसीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवर्षए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णेति ॥ ११७ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं ईसाणे देविन्दे देवराया सृलपाणी वसभवाहणे सुरिन्दे उत्तरक्रुलोगाहिवई अद्वावीसविमाणवाससयसहस्साहिवई अर्यंबरवत्थवरे एवं जहा सक्षे इमं णाणतं-महाघोसा घण्टा लहपरक्रमो पायत्ताणियाहिवई पुष्फओ विमाण-कारी दक्किसणे निजाणमभी उत्तरपुरिक्षमिह्नो रहकरगपव्यक्षो मन्दरे समीसिस्ओ जाव पजवासहरित, एवं अवसिद्धावि हंदा भाषियव्या जाव अञ्चलोत्ति, इमं णाणतं-

च उरासीइ असीई बाबनारे सत्तरी य सङ्घी य । पण्णा चत्तालीसा तीसा वीसा दस सहस्मा ॥ १ ॥ एए सामाणियाणं, वत्तीसद्वावीसा बारमद्व चडरो सयसहस्सा । पण्णा चत्ताळीसा छच सहस्सा सहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चतारि सया-SSरणचुए तिण्णि । एए विमाणाणं, इमे जाणविमाणकारी देवा, तंजहा--पालय १ पुष्फे य २ सोमणसं ३ सिरिवच्छे य ४ णंदियावते ५ । कामगमे ६ पीइगमे ७ मणोरमे ८ विमल ९ सन्वओमेह १०॥ १॥ सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं वंभ-लोगगाणं महामुक्तयाणं पाणयगाणं इंदाणं सुधोसा चण्टा हरिणगमेमी पायत्ताणीया-हिवई उत्तरिक्षा णिजाणभूमी दाहिणपुरिव्यमिक्षे रहकरगपन्वत्, ईगाणगाणं माहिंद-ळंनगसहस्सारअसुयगाण य इंदाण महाघोसा घण्टा लहुपरक्रमो पायनाणीयाहिवई द किञ्जणिक्षे णिज्जाणमग्गे उत्तरपुर्रात्थमिक्षे रङ्करगपन्वए, परिशा णं जहा जीवाभि-गमे आयत्त्रका सामाणियचडग्गुणा मध्वेसि जार्णावमाणा सब्बेरि जोयणगयसहस्म-विच्छिण्या उच्चेतेणं सविमाणप्यमाणा महिंदउझया सन्वेमि जोयणसाहस्यिया, सक्ष-बजा मन्दरे ममोयरंति जाव पज़ुवासंतित्ति ॥ ११८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिन्दे अमुरराया चमरचञ्चाए रायहाणीए समाए मुहम्माए चमरंसि सीह।सणींस चउमझीए साम।णियसाष्ट्रसीहिं तायतीमाए तायतीसेहिं चउहिं लोग-पालेहिं पञ्चहिं अम्ममहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सनिहं अणिएहिं सत्तिहं अणियाहिवईहि चउहिं चउसट्टीहिं अ।यरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य जहा सक्के णवरं इमं णाणतं-दमो पायत्ताणीयाहिवई ओघरसरा घण्टा विमाणं पण्णासं जोयणसह-रसाइं महिन्दज्झओ पद्धजोयणस्याइं विमाणकारी आभिओगिओ देवो अवसिद्धं तं चंव जाव मन्दरे समोसरइ पजुदासइति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिन्दे अमुरराया एवमेव णवरं सद्दी सामाणियसाहस्सीओ च उगुणा आयरक्खा महादुमी पायताणीयाहिवई महाओहस्सरा घण्टा सेसं तं चेव परिसाओ जहा जीवाभिगमे । तेणं काळेणं तेणं समएणं घरणे तहेव णाणतं-छ सामाणियसाहस्सीओ छ अग्गमहि-सीओ चरुगणा आयरक्ला मेघस्तरा घण्टा भहसेणी पायत्ताणीयाहिवई विमाणं पण-वीसं जीयणसहस्माइं महिंदज्झओ अहाइजाइं जीयणसयाइं एवमसारेन्दवजियाणं भव-णवासिंह्दाणं, णवरं अमुराणं ओवस्मरा घण्टा णागाणं मेघस्सरा सुचण्णाणं हंसस्सरा विज्ञणं कोंचस्सरा अग्गीणं मंजुस्सरा दिसाणं मंजुघोसा उदहीणं धुस्तरा दीवाणं महरस्मरा बाऊण णंदिस्सरा थणियाणं णंदिघोसा, चडसड्डी सद्वी खळु छच सहस्सा उ असुरवजाणं । सामामिया उ एए चउन्गुणा आमरम्खा उ ॥ १ ॥ दाहिणिकाणं पायताणीयाहिवई सहसेणो उत्तरिह्णाणं दक्खोति । वाणमन्तरजोहसिया णेयन्या, एवं

चेव, णवरं चतारि सामाणियमाहरुसीओ चतारि अगगमहिसीओ मोलय आयरक्य-सहस्सा विमाणा सहस्सं महिन्दज्ज्ञया पणवीसं जोयणसयं घण्टा दाहिणाणं मंजुस्सरा उत्तराणं मंजुत्रोसा पायताणीयाहिवई विमाणकारी य आभिओगा देवा जोइसियाणं हरमरा हम्सरणिग्घोसाओ घण्टाओ मन्दरे समोसरणं जाव पजुवासंतिति ॥ ९१९ ॥ तए णं से अञ्चए देविनदे देवराया महं देवाहिये आभिओगे देवे सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! महत्यं महाघं महारहं विउलं तित्थयराभिसेयं उचडुवेह, नए णं ते अभिआंगः देवा हडुनुहु जाव पिंडमुणिता उत्तरपुरन्थिमं दिसीमागं अवक्रमन्ति २ ता वैउव्वियरामुख्याएणं जाव समोहणिना अद्वसहरूसं मोवण्णियकल-साणं एवं रूपमयाणं भणिमयाणं सुद्द्यारूपमयाणं सुद्द्यामणिमयाणं रूपमणिमयाणं सुवण्णरूपमणिमयाणं अद्भाहस्सं भोमिजाणं अद्भाहस्सं चन्दणकलसाणं एवं भिगाराणं आयंगाणं थाळाणं पाईणं सुपद्दुनाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं वायः करगाणं धिडव्वंति २ ना सीहासणछत्तचामरतेष्ट्रसमुग्ग जाव मरिसवसमुग्गा तालियंटा जाव वीयणा विउठवंति विउन्बित्ता साहाविए वेउन्बिए य कलसे जाव वीयणे य गिष्हिना जेणेत्र खीरोदए समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिष्हन्ति २ ना जाउं तत्थ उप्पलाइं परमाइं जाव सहस्सपत्ताई ताइं गिण्हंति. एवं पुक्खरोदाओ जाव भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उदगं महियं च गिण्हन्ति २ ता एवं गंगाईणं महाणर्ड्णं जाव चूह्रहिमवन्ताओ सञ्बतुबरे सञ्बपुष्फे सञ्बगन्धे सञ्बमहे जाव सन्वीमहीओ सिद्धत्थए य गिण्हन्ति २ ता पडमहहाओ दहोदगं उप्पलाईणि य०, एवं सञ्बक्तपञ्चएस बहुबेरच्चेस सञ्बमहृद्दहेन सञ्बवासेन सञ्बचक्रवृद्धिजएन वक्खार-पव्यएमु अंतरणईमु विभासिजा जात्र उत्तरकुरुषु जाव मुदंसणभहसालको सव्वतुवरे जाव सिद्धत्यए य गिष्हन्ति, एवं णन्दणवणाओ सञ्जतुवरे जाव सिद्धत्यए य सरसं च गोसीमचन्दणं दिव्वं च सुमगदामं गेण्हन्ति, एवं सोमणसपंडगवणाओ य सव्व-तुनरे जान ग्रमणदामं दहरमलयञ्चगन्धे य गिष्टन्ति २ ता एगओ मिलंति २ ना जेणेव सामी तेणेव उवागच्छन्ति २ ता महत्यं जाव तित्वयराभिसेयं उवहवेंतिति ॥ १२० ॥ तए णं से अच्चए देविन्दे दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं च उहिं छोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणिया-हिवईहिं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सदिं संपरिचुडे तेहिं साभाविएहिं वेउ व्यापित य वरकमलपइद्वाणेहिं सुरिभवरवारिपिटिपुण्णेहिं चन्दणकयचन्नाएहिं आविद्धकण्ठेगुणेहिं परमुप्पलपिहाणेहिं कर्यलपुकुमालपरिग्गहिएहिं अहसहस्सेणं सोबण्णियाणं कलसाणं जाव अदसहस्सेणं भोमेजाणं जाव सव्वोदएहिं सव्वमहि-

याहिं सन्दतुवरेहिं जाव सब्बोसहिसिद्धत्थएहिं मिब्बद्धीए जाव रवेणं महया २ तित्थ-बराभिसेएणं अभिसिंचइ, नए णं सामिस्स मह्या २ अभिसेयंसि वद्भगणंसि इंगइया देवा छत्तचामरकन्महत्थगया हद्वतुद्व जाव वजास्लपाणी पुरओ चिद्वंति पंजलिउडा इति, एवं विजयाणुसारेण जाव अप्पेगइया देवा आसियसंमज्जिओव-वित्तिसनमुद्दसम्मद्वरत्यंतरात्रणवीहियं करेन्ति जाव गन्धवहिभूयंति, हिरण्णवासं वासिति एवं सुवण्णरयणवङ्रआभरणपनपुष्फफलवीयमाङ्गन्धवण्ण जाव चण्णवासं वासंति. अप्पेगऱ्या हिरण्णविहिं भाइति एवं जात्र चुण्णविहिं भाइति, अप्पेगद्या चउन्त्रिहं वर्ज याएनिन, तंजहा-नतं १ वितनं २ घणं ३ झुसिरं ८, अप्पेड्या च उविवहं गेयं गायन्ति, तंजहा-उक्सितं १ पायत्तं २ मन्दाइयं ३ रोइयावसाणं ८. अप्पेगइया चडिवहं णहं णचन्ति, तं०-अंचियं १ दयं २ आरमडं ३ ममोलं ४, अप्पेगइया चउविवहं अभिणयं अभिणएति. नं०-दिद्वंतियं पाडिस्सुइयं सामण्णोवणिवाइयं लोगमज्झावसाणियं, अप्पेगइया वत्तीसडविहं दिव्यं णदृविहिं उवदंसेन्ति, अप्पेगइया उप्पयनिवयं निवयउप्पयं संकृचियपमारिनं जाव भन्तसंभन्तणामं दिव्यं णद्दविहिं उत्रदंसन्तीति, अप्रेगझ्या तंडवेंति अप्पेगझ्या लासेन्ति, अप्पेगङ्या पीणेन्ति, एवं बुकारेन्ति अप्फोर्डोन्त वस्मन्ति मीहणायं णदन्ति अप्पे॰ सन्त्राई करेन्ति, अप्पे॰ हयहेसियं एवं हत्यगुलुगुलाइयं ग्हचण-घणाइयं अप्पे॰ तिष्णिवि, अप्पे॰ उच्छोलन्ति अप्पे॰ पच्छोलन्ति अप्पे॰ तिरहं छिदन्ति पायदहर्यं करेन्ति भूमिचवेडे दलयन्ति अप्पे॰ महया २ सहेणं रावेति एवं संजोगा विभागियव्या, अप्पे॰ हक्कारेन्ति, एवं पुक्कारेन्ति थक्कारेन्ति ओवर्यात उप्पर्यति परिवर्यति जलन्ति तवैति पतवैति गर्जाति विज्ञयायेति वासिति अप्पेगइया देवुक्कियं करेंति एवं देवकहकहगं करेंति अप्पे॰ दुहुदुहगं करेंति अप्पे॰ विकियभुयाई रुवाई विष्ठविवत्ता पणचंति एवमाइ विभासेजा जहा विजयस्य जाव सक्वओ समन्ता आधार्वेति परिधार्वेतित्ति ॥ १२१ ॥ तए णं से अनुदंद सपरिवारे सामिं तेणं महया महया अभिसेएणं अभिसिंचइ २ ता करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए अंजलिं बहु जएणं विजएणं बद्धाबेड २ ता नाहिं इद्वाहिं जाव जयजयसद्दं परंजइ परंजिता जाव पम्हलसुकुमालाए सुरमीए गन्धकासाईए गायाई छहेड २ ता एवं जाव कप्यक्क्सगंपिव अलंकियविभित्सयं करेड़ २ ता जाव णद्रविहिं उपदंसेड़ २ ता दसंगुलियं अंजलिं करिय सस्थयंभि पयओ अद्वसयविसुद्धगन्यजुत्तेहिं महावितेहिं अपुणस्तेहिं अत्यजुत्तेहिं संयुणइ २ ता वामं जाणुं अंचेह २ ना जाव करवलपरिसाहियं० मत्थए अंजलि कह एवं वयासी-

णमीऽत्यु ते सिद्धवृद्धणीरयसमणसमाहियसमत्त्रसमजोगिसळगत्तणणिब्सयणीरागदो-मणिम्ममणिस्संगणीसङ्गाणमृरणगुणरयणसीळसागरयणंतमप्पमेयभवियधम्मवग्चा-उरंतचक्रवटी णमोऽत्यु ते अरहओतिकद्र एवं वन्दइ णमंसइ बं॰ २ ता णचासण्णे णाडद्रे सुस्स्यभाणे जाव पज्ञासइ, एवं जहा अनुयस्म तहा जाव ईसाणस्स भाणियव्वं, एवं भवणवहवाणमन्तर जोडसिया य स्रपञ्चयाणा सएणं परिवारेणं पत्तेयं २ अमिमिचंति, नए णं से ईमाणे देविन्दे देवराया पञ्च ईसाणे विउन्दइ २ ता एगे ईसाण भगवं तित्ययरं करयलसंप्रडेणं गिण्हर २ ना सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे राण्णिमण्णे एगे ईसाणे पिहुओ आयवनं धरेइ दुवे इंगाणा उमओ पानि चामक्क्खेवं करेन्ति एगे ईमाणे पुरक्षो स्लपाणी चिद्रह, नए णं से सक्के देविन्दे देवराया आमिओंगे देवे गहावेड २ ता एगोवि तह चेव अभिसेयाणति देड तेऽवि तत् चेव डवणेन्ति. तए णं से सक्के देविन्दं देवराया भगवओ तित्थ-शररप चर्राहिन चतारि धवलवसमे विउच्चेड सेए संखदलविमलणिम्मलद्रधिष्ठण-गोखीरफेणरययणिगरप्पमासे पाराईए द्रिसणिजे अभित्वे पडिह्वे, नए णं तसि भउण्हं ववलवसभाणं अद्वाहं सिंगेहिंनो अद्व तोयधाराओ णिसगच्छन्नि, तए णं नाओं अद्व तीयधाराओं उन्ने वेहासं उपयम्ति २ ना एगओं मिलायन्ति २ ता भगवओ तित्ययरस्य मुद्धार्णात णिवयंति । तए णं सं राष्ट्रे देविन्दे देवराया चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं एयस्पवि तहेव अभिसेओ भाणियव्यो जाव णमोऽत्यु ते अरहओत्तिवहु बन्दइ णमंसइ जाव पज्जवासइ ॥ १२२ ॥ तए णं से सके देविंद देवराया पंच सके विजन्बद २ ना एगे सके भयवं तित्थयरं कर्यल-संपुडेणं गिण्हर एगे सक्ने पिठ्ठओ आयवत्तं धरेड हुवे सक्ता उमओ पासि चामस्वन्धेवं करेंति एगे सके वज्जपाणी पुरओ पकहुइ, तए णं से सके चडरासीईए सामाणिय-साहस्सीहिं जाव अण्णेहि य॰ मवणवद्वाणमंतरजोइसवेपाणिएहिं देवीहि देवीहि य मर्बि संपरिवृद्धे सिव्बद्धीए जाव णाइयरवेणं ताए उक्तिद्वाए ... जेणेव भगवओ तित्थ-यरस्स जन्मणणयरे जेणेव० जन्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छः २ ता भगवं तिरथयरं माऊए पासे ठवेंइ २ ता तित्थयरपिंडस्वगं पिंडसाहरइ २ ता ओसोनाण परिसाहरह २ ता एगं महं खोमजुमलं कुंडलजुमलं च मगनओ तित्य-यरस्य उस्सीसगमुळे ठवे६ २ ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्वलंबूसगं सुवण्णपय-रगमंडियं णाणामणिरयणविविदृहारद्धहारउवसोहियसमुद्यं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोयंसि णिविस्तवइ तण्णं मगवं तित्ययरे अणिमिसाए दिहीए देहमाणे २ सुइंसुहेणं अभिरममाणे २ चिद्वइ, तए णं से सक्के देविंदे देवराया वेसमणं देवं सहावेइ २ ता

एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वर्तासं हिरण्णकोडीओ बत्तीसं सुवण्णको-डीओ बत्तीसं णंदाइं बत्तीसं भद्दाइं सुभगे सुभगस्बज्जव्यणलावण्णे य भगवओ तित्य-यरस्म जम्मणसवणंसि साहराहि २ ना एयमाणत्त्रयं पञ्चिष्पणाहि, तए णं से वैसमणे देवे सक्केणं जाव विणएणं वयणं पिडमुणेइ २ ता जंभए देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरह साहरित्ता एथमाणतियं पचिपणह, तए णं ते जैमगा देवा वेसमणेणं टेवेणं एवं बुना समाणा हृद्वाद्व जाव खिप्पामेव बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव भगवओ तित्थगरस्य जम्मणभवर्णाम याहरंति २ ना जेणेव वेसमण देवे तेणव जात्र पचिपिणंति, तए णं से वेसमणे देवे जेणव सके देविंदे देवराया जाब पचिष्पणइ। तए णं से सके देविंद देवराया ३ आभिओगे देवे सहावेड २ ता एवं चयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भगवओ तित्ययरस्म जम्मणगयरंसि सिंघाडग जाव महापद्दपहेनु महया २ सहेणं उग्घोसेमाणा २ एवं बदह-हंदि छणंतु भवंतो बहवे भवणबदवाणमंत्ररजोडसवेमाणिया देवा य देवीओ य जं णं देवाणुप्पिया !० तित्थयरस्य तित्थयरमाऊए वा अनुभं मणं पधारेड तस्य णं अजगमंत्रिया इव सयहा मुद्धाणं फुट्टरितक हु धोसेह २ ता एयमाणितयं पचिणणहत्ति, नए णं ते आभिओगा देवा जाव एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पहिन्गांति २ ता सङ्क्स देविंदस्म देवरण्णो अंतियाओ परिणिक्समांत २ ता लिप्पामेव मगवओ तिरथगरस्य जम्मणणगरीस सिघाडग जाव एवं वयासी-हंदि मुणंतु भवंतो बहवे भवणवर जाव जे णं देवाणुप्पिया !० तिन्ययरस्य जाव फुडिही-तिक ह घोसणगं घोसेंति २ ता एवसाणत्तियं पन्याप्पणित. तए णं ते वहवे भवणवडवा-णमंतरजोड्सवेमाणिया देवा भगवओ तिन्थगरस्य जम्मणमहिमं करैति २ शा जामेव दिनि पाउन्मृया तामेव दिसि पिंडगया ॥ १२३ ॥ पंचमो सक्लारो समस्रो ॥ जंबुईाबस्म णं मेते ! दीवस्म पएसा लवणसमुद्दं पुट्टा ? हंता ! पुट्टा, ते णं भेते !

जबुद्दाक्स ण मत ! दावस्य पएसा लवणसमुद्द पुद्वा ! हता ! पुद्वा, त ण मत ! किं जंबुद्दांवे दीवे लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबुद्दांवे णं दीवे णो खल लवणसमुद्दे , एवं लवणसमुद्द्रस्यावे पएसा जंबुद्दांवे २ पुद्वा भाणियव्या । जंबुद्दांवे णं भंते !० जीवा उद्दा-इना २ लवणसमुद्द्रस्यावेत ? गो० ! अत्थेगद्या पत्रायंति अत्थेगद्या नो पत्रायंति , एवं लवणसमुद्द्रस्यावे जंबुद्दांवे चीवे णेयव्यमिति ॥ १२४ ॥ खंडा १ जोयण २ वासा ३ पव्यय ४ कूडा ५ य तित्थ ६ सेढीओ ७ । विजय ८ द्व ९ सलिलाओ १० पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥ जंबुद्दांवे णं भंते ! दीवे भरहप्यमाणमेत्तिहिं खंडिहिं केवद्यं खंडगणिएणं प० ? गो० ! णउयं खंडस्यं खंडगणिएणं पण्णते । जंबुद्दीवे

णं भंत ! दीने केनइयं जोयणगणिएणं पण्णते ! गोयमा !-सत्तेन य कोडिसया णउया छप्पणाः सयसहस्साइं। चउणव्हं च सहस्सा सयं दिवहूं च गणियपयं॥ १॥ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कड वासा पण्णता ? गोयमा ! सत्त वासा प०. नंजहा-भरहे एरवए हेमवए हेरण्णवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे, जंबुद्दीवे णं मंते ! दीवे केवड्या वासहरा पण्णता केवड्या मंदरा पव्वया पण्णता केवड्या चित्तकृता केवड्या विचित्तकृडा केवदया जमगपञ्चया केवदया कंचणगपञ्चया केवदया वक्खारा केवदया दीहवेयद्वा केनश्या वहवेयद्वा पण्णता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ छ वासहरपव्वया एगे मंदरे पव्यए एगे चित्तकृष्ठे एगे विचित्तकृष्ठे दो जमगपव्यया दो कंचणगपव्ययसया वीसं वक्लारपव्यया चोत्तीसं दीह्रवेयद्वा चनारि वृह्वेयद्वा , एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुहीये दीवे दुष्णि अरणतरा पव्ययसया भवंतीतिमक्खायं। जंबुहीये णं भंते ! दीवे केवइया वासहरकूडा केवइया वक्खारकूडा केवइया वेयबूकूडा केवइया मंदरकूडा प॰ ? गो॰ । . . . इप्पण्णं बासहरकृडा छुणाउडं बक्खारकृडा तिण्णि छलुनरा वेसक्रुकृड-सया णव मंदरकृडा पण्णता, एवामेव सपुन्वावरेणं जंबुद्दीवे २ चतारि मत्तद्वा कृड-सया भवन्तीतिमक्खायं । जंबद्दीचे णं भंते ! दीचे भरहे वासे ऋ तित्था प० ? गो॰! तओ तित्था प॰, तं॰-मागहे वरदामे पभासे, जंबुद्दीवे॰ एरवए वासे कड़ तितथा प॰ ? गो॰ ! तओ तितथा प॰, तं०-मागहे वरदामे पमासे. जंबुहीवे णं भंते ! दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए कह तित्या प॰ १ गो॰ ! तओ तित्था प॰, तं॰-मागहे वरदामे पभासे, एदामेव सपुन्वावरेणं जंब्रुहीवे २ एगे बिउत्तरे तित्यसए भवतीतिमक्खायं । अंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवड्याओ विज्ञा-हरसेंडीओ केवइयाओ आमिओगसेढीओ प० ? गो० ! जंब्रुहीवे दीवे अदसद्वी विज्ञा-हरसेटीओ अद्वसद्वी आभिओगसेटीओ पण्णताओ, एवामेव सपुव्यावरेणं जंबुहीवे दीवे छत्तीसे सेढीसए मवतीतिमक्सायं, जंबहीवे णं अंते ! दीवे केवहया चक्रवद्विवजया केनइयाओ रायहाणीओ केनइयाओ तिमिसगुहाओ केनइयाओ खंडप्पनायगुहाओ केवहया क्यमालया देवा केवहया णहुमालया देवा केवहया उसमकृहा० प० ? गी० ! जंबहीवे बीवे चोत्तीसं चक्कबहिविजया चोत्तीसं रायहाणीओ चोत्तीसं तिमिमग्रहाओ चोत्तीसं खंडप्पवाश्यद्वाओ चोत्तीसं कयमालया देवा चोत्तीसं णहमालया देवा चोत्तीसं उसमकूडा पञ्चया प॰, अंबुहीने णं भंते ! दीने केनद्रया महरहा प॰ ? गो॰ ! सोलस महरहा पण्णता, जंबहीवे णं भंते ! दीवे केवड्याओ महाणईओ वासहरपवहाओ केव-इयाओ महाणहें को केंद्र प्यवहाओ पण्णताओ ? गोयमा ! जंबहीवे २ चोहंस महाणहें ओ वासहरपबहाओ छावत्तरिं महाणईओ झंडप्पबहाओ॰. एवामेव सप्व्यावरेणं जंबहीवे

दीवे णउरं महाणईओ भवंतीतिमक्लायं। जंबुदीवे ... भरहेरवएमु वासेसु कड महा-णईओ प॰ ? गोयमा ! चतारि महाणईओ पण्णताओ, तं०-गंगा सिंधू रता रनवई, तत्थ णं एगमेगा महाणई च उहसहिं सन्तिलामहस्सेहिं समरगा पुरस्थिमण्डस्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, एवामेव सपुन्वावरेणं जंबुद्दीवं दीवं भरहेरवएस वासेन लप्पण्णं सिललासहस्सा भवंतीतिमक्खायं, जंबहीवे णं भंते ! दीवे हेमनयहेरण्णवएस् वासेस कइ महाणईओ पण्णताओं ? गो० ! चनारि महाणईओ पण्णताओं, तंजहा--रोहिया रोहियंसा सुवण्णकृता रूप्पकृता, नत्थ णं एगमेगा महाणई अद्वावीयाए अद्वावीयाए मिललासहरसेहिं समगा पुरित्थमपचित्थमेणं लक्षणसमुद्दं नमप्पेइ, एवामेव गपुव्वा-वरेणं जंबुद्दीवं २ हेमवयहेरण्यवएसु वासेसु वारसुत्तरे मलिलासगसहस्से भवतीनि-मक्यायं । जंब्रहीये णं भंते ! दीवे हरिवासरम्मगनासेस कड महाणडेओ पण्णनाओ ? गोयमा! चत्तारि महाणईओ पण्णताओ. तंजहा-हरी हरिकंता णरकंता णारिकंता. तस्थ णं एगमेगा महाणई छप्पण्णाए २ रालिलागहस्संहि समस्या प्रस्थिमपचिन्ध-मेणं लवणसमृद्दं समप्पेद, एवामेव सुपृथ्वावरेणं जंबुद्दीव २ हरिवासरम्मगवासेसु दी चउबीसा सलिलासयसहस्सा भवंतीतिमक्खायं, जंब्हीत्रे णं भंते ! दीवे महा-विदेहें वासे कड महाणईओ पण्णनाओ ? गोयमा ! दो महाणईओ पण्णनाओ, तंजहा-सीया य सीओया य. तत्थ णं एगमेगा महाणई पंचांहं २ राविकासय-महस्सेहिं बत्तीमाए य सलिलामहस्सेहिं समग्गा पुरिश्यमपत्रियमेणं लवणसमुद्दं ममप्पेइ, एवामेव सपुञ्चावरेणं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दस मिळ्ळामयसहरसा चडसड्डिं च सल्लिमहस्सा भवन्तीतिमक्खायं । जंबहीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्ययस्य दिक्लणेणं केवऱ्या सिळलासयमहरूसा पुरस्थिमपचरिथमाभिमुदा लवण-समुद्दं समप्पति ? गो॰ ! एगे छ्ण्यउए सिल्लासयसहस्से पुरत्थिमप्चात्थमाशिमुद्दे लवणममुद्दं समप्पेइ, जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं केवइया सिललासयसहस्सा पुरत्थिमपचित्यमाभिमुहा लवणसमुद्दं समर्प्येति ? गो०! एगे छण्णउए सिक्कासयसहस्से पुरित्यमपश्चित्थमाभिसुहै जाव समप्पेइ, जंबुहीवे गं भंते ! दीवे केवइया सिकलासयसहस्सा पुरत्याभिमृहा लवणसमुद्दं समप्पेति ? गोयमा ! सत्त सिललासयसहरूमा अद्वावीसं च सहरूसा जाव समप्पेंति, जंबुहीवे णं भंत ! दीवे केवड्या सिळ्लासयसहस्सा पचित्यमाभिमुहा लवणसमुद्दं समप्पेति ? गोयमा! सत्त सलिलासयसहस्सा अद्वावीसं च सहस्सा जाव समप्पेति, एवामेव सपुन्वावरेणं जेंबुद्दीवे दीवे चोद्दम सलिलासयसहस्सा छप्पणां च सहस्सा मवंतीति-मक्खायं ॥ १२५ ॥ छद्रो वक्खारो समस्रो ॥

जंबुद्दीवे गं भंते ! दीवे कह चंदा प्रभासिंसु प्रभासित प्रभासित्संति कह स्रिया तवर्डम् तबंति तबिस्संति केव्हया णक्खता जोगं जोडंग् जोयंति जोडस्संति केव्हया महम्महा चारं चरिंग्र चरेति चरिस्संति केवश्याओ तारागणकोडाकोबीओ सोमिंग्र सोमंति सोभिस्संति ? गोयमा ! दो चंदा प्रशामिमु ३ दो स्रिया तबइंसु ३ छप्पण्णं णक्खता जोगं ओइंगु ३ छावत्तरं महम्महसयं चारं चरिंसु ३-एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खळ भवं सहस्गाई। णव य सया पण्णामा तारागणकोडिकोडीणं ॥ १ ॥ ति ॥ १२६ ॥ ऋ णं भंते ! स्रमंडला पण्णता ? गोयमा ! एगे चडरासीए मंडलसए पण्णते । जंबरीवे णं भंने ! दीवे केवइयं ओगाहिसा केवइया स्रमंडला पण्णता ? गोयमा ! जंबुहीवे २ असीयं जोयणस्यं ओगाहिता एत्य णं पण्णद्वी स्रमंडला पण्णताः, लवणे णं भंते ! समुद्दे केवडयं ओगाहित्ता केवड्या स्रमंडला पण्णता १ गोयमा ! लवण समुद्दे तिष्णि तीसे जोयणसए ओगाहिता एत्थ णं एगुणवीसे सर-मंडलमग् पण्णते, एवामेव सप्यावरेणं जंबहीवे दीवे ठवणे य समुद्दे एगे चुलसीए सुरमंडलमए भवतीतिमक्खायं १ ॥ १२७ ॥ मन्बन्मंतराओ णं भंते ! सुरमंडलाओ केवड्याए अवाहाए सम्बदाहिरए स्रमंडले प॰ १ गोयमा ! पंचदसुत्तरे जोयणसए अबाह्यए मञ्जूबाहिरए सूरमंडले पण्णते २॥ १२८॥ सूरमंडलस्स णं भंते ! सूर-मंडलस्स य केवड्यं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणाइं अबाहाए अंतरे पण्णतं ३ ॥ १२९ ॥ सूरमंडले णं भंते ! केवइयं आयामविक्खंमेणं केवइयं परिक्खे-वेणं केवड्यं बाहहेणं पण्णते ? गोयमा ! अडयालीसं एगसद्विभाए जोयणस्स आयाम-विक्संभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्सेवेणं चडवीसं एगसद्विभाए जोयणस्स बाहहेणं पण्णते इति ४ ॥ १३० ॥ अंबुद्दीवे णं अंते ! दीवे मंदरस्य पव्वयस्य केवइयाए अबाहाए सम्बन्धतरे सुरमंडले पण्णते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अह य वीसे जोयणसए अबाहाए सम्बन्धंतरे स्रमंडले पण्णते, जंबुद्दीवे णं भंते ! धीवे मंदरस्य पञ्चयस्स केवइअबाहाए सञ्चन्मंतराणंतरे स्रमंडले पण्णते ? गो० ! चोया-लीसं जोयणसहस्साई अद्व य बावीसे जोयणसए अडयाछीसं व एगसद्विभागे जोय-णस्स अबाहाए अब्मंतराणंतरे स्रमंडछे प०, जंबुद्दीवे णं भेते ! बीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवड्याए अबाहाए अब्भंतरतचे स्रमंडके पण्णते ? गो० ! चोयालीसं जोयणसहस्साई अहु य पणवीसे जोयणसए पणतीसं च एगसहिमागे जोयणस्स अबाहाए अब्संतरतचे स्रमंडले पण्णतं, एवं खहु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे स्रिए तयर्णतराओ मंडलाओ तयर्णतरं मंडलं संकामाणे २ दो दो जोमणाई अडयालीसं त्र एगसद्विमाए जोवणस्स एगमेगे मंडले अवाहालुट्टि अभिवद्वेमाणे २ संव्यवाहिरे

मंडलं उवसंक्रमत्ता चारं चरइति, जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्ययस्य केवइ-याए अबाहाए सव्ववाहिरे स्रमंडले प०? गो०! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिष्णि य तीसे जोयणसए अबाहाए सञ्ववाहिरे मुरमंडले प॰. जंबहीबे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पञ्चयस्स केवइयाए अवाहाए सञ्बनाहिराणंतरे स्रमंडले पण्णते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिष्णि य मनावीसे जोयणसए तेरस य एग-सद्विमाए जोयणस्स अवाहाए बाहिराणंतरे स्रमंडले पण्णते, जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्ययस्स केवइयाए अबाहाए बाहिरनचे स्रमंदले पण्णते ? गो॰ ! पणया-हीसं जोयणसहस्साई तिष्णि य चउवीसे जोयणसए छव्वीसं च एगसद्विभाए जोय-णस्स अबाहाए बाहिरतचे सरमंडले पण्णते. एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे स्रिए तयाणंतराओं मंडलाओं तयाणंतरं मंडलं संक्रममाणे संक्रममाणे दो दो जोयणाई अडयालीसं च एगसद्विभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले अचाहावर्षि णिवुद्रेमाणे २ सम्बन्धंतरं मंडलं उवसंकिमित्ता चारं चरह ५॥ १३१॥ जंब-हीवे दीवे सञ्वन्भंतरे णं भंते ! सरमंडले केवडयं आयामविक्लंभेणं केवडयं परिक्खेवेणं पण्णते ? गो॰! णवणउइं जोयणमहस्माइं छन्न चताले जोयणसए भागामविक्खंभेणं तिष्णि य जोयणसयसहस्साइं पष्णरस य जोयणसहस्साइं एगूण-णउइं च जोयणाई किंचिविसेमाहियाई परिक्खेवेणं०, अञ्मंतराणंनरे णं भंते ! सरमंडले केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णते? गोयमा ! णवणउद्दं जोयणसहस्साइं छच पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगसङ्ग्रिभाए जोयणस्स आया-मविक्खंभेणं तिष्णि जोयणसयसहस्ताई पण्णरस य जोयणसहस्साई एगं सत्तत्तरं जीयणसयं परिक्खेवेणं पण्णते. अञ्मंतरत्ये णं भंते ! सरमंडहे केवड्यं आयाम-विक्खंभेणं केवडयं परिक्खेवेणं प० ? गो० ! णवणउडं जोयणसहस्साडं छच एकावण्ये जोयणसए णव य एगसद्विभाए जोयणस्य आयामविक्खंभेणं तिष्णि य जोयणसय-सहस्साई पण्णरस ओयणसहस्साई एगं च पणवीसं जोयणसयं धरिक्खेनेणं . एवं खुद्ध एएणं उचाएणं णिक्खममाणे स्रिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं उव-संकामाणे २ पंच २ ओयणाई पणतीसं च एगसङ्खिमाए ओयणस्स एगमेगे संबक्त विक्लंभवुद्धि अभिवद्देमाणे २ अद्वारस २ जोयणाइं परिरयवृद्धि अभिवद्देमाणे २ सन्वयाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, सव्ववाहिरए ण मंते ! स्रमंडले केव-इयं आयामविक्लंमेणं केवहयं परिक्खेवेणं पण्णते ? गोयमा । एगं जोब्रणसयसहस्यं उस सहे जोयणसए आयामविक्संभेणं तिष्णि य जीयणसयसहस्साइं अद्वारंस य सहस्साइं तिष्णि य पण्णरञ्जलरे जीयणसए परिक्केवेणं , बाहिराणंतरे णं भंते !

स्रमंडले केवइयं आयामनिक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णते ? गोयमा ! एगं जीवणसयसहस्यं छच नउप्पण्णे जीवणसए छव्वीसं च एगसहिमागे जीवणस्स आयामविक्खंभेणं तिष्णि य जोयणसयसहस्साइं अद्वारस य सहस्साइं दोष्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणंति, बाहिरतचे णं भंते ! सुरसंडले केबहर्य आया-मविक्संभेणं केवइयं परिक्सेवेणं पण्णते ? गो०! एगं जोयणमयमहस्यं छन अड-याले जोयणसए बावण्णं च एगसहिभाए जोयणस्म आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अद्वारस य सहस्साइं दोर्ण्ण य अउणासीए जोयणसए परिक्खे-वेणं ०, एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे स्रिए नयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे २ पंच पंच जायणाई पणतीसं च एगसद्विभाए जायणस्स एगमेगे मंडले विक्लंभवृद्धिं णिवुद्वेमाणे २ अद्वारस २ जोयणाई परिरयवृद्धिं णिवुद्वेमाणे २ गव्वव्मंतरं मंडलं उबसंकमिता चारं चरइ ६॥ १३२॥ जया णं भंते! स्रिए सञ्चल्भंतरं मंहलं उवसंकमिता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहत्तेणं केवहयं खेतं गच्छा ? गोयमा । पंच पंच जोयणसहस्साई दोण्णि य एगावण्ये जोयणसए एगूण-तीसं च सिद्धमाए जोयणस्स एगमेगेणं सुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इह्वयस्स मणूसस्स सीयाठीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेबहेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य जोयणस्स सद्विभाएहिं स्रिए चक्कुप्पासं हव्बमागच्छइ, से णिक्सममाणे स्रिए णवं संवच्छरं अयमाणे पडमंसि अहोरत्तंसि सन्बन्मंतराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ. जया णं भंते ! सुरिए अञ्भंतराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहत्तेणं केवइयं खेतं गच्छइ ? गोयमा ! पंच पंच जोयणसहस्साइं दोष्णि य एगाकण्ये जोयणसए सीयार्छासं च सद्विमागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहि एगूणासीए जोयणसए सत्तावण्णाए य सद्विभाएहिं जोयणस्य सद्विभागं च एगसद्विहा छेता एगूणबीसाए चुण्यियाभागेहिं सुरिए चक्खुप्फासं इव्बमागच्छइ, से जिक्खममाणे स्रीए दोबंसि अहोरतंसि अर्ध्मत्तत्तवं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरह, जया णं भंते! सरिए अव्यांतरतर्व मंडलं उवसंकिमता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मह-तेणं केवड्यं खेतं गच्छड् ? गोयमा ! पंच पंच जोयगसहस्साई दोष्णि य बाक्की जीयणसए पंच य सद्विमाए जीयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छा, तथा णं इह्पयस्स मणुरसस्स सीबालीसाए जोबणसङ्स्सेहि छण्णउईए जोबणेहि तेत्रीसाए सहिभागेहि जोयणस्स सद्विमामं च एगसद्विहा क्षेत्रा दोहि चुण्णियाभागेहि स्विए चक्कुप्कासं इन्वमागच्छा, एवं बहु एएषं उवाएणं विक्ससमाणे स्रिए तयाणंतराओ मंह-

ळाओ तयाणंतरं मंडलं मंकममाणे संकममाणे अद्वारस २ सद्विभागे जोयणस्म एगमेरो मंटले मुह्तराई अभिनुहुमाणे अभिनुहुमाणे चुलसीई २ मयाई जोबणाई पुरियन्छार्य जिल्लुहुमाणे २ सब्वबाहिरं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरह । जया जै भंते! सरिए सञ्चाहिरमंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तया णं एगमेगेणं सुहतेणं केवइयं खेतं गच्छइ ? गोयमा ! पंच पंच जोयणमहस्साइं तिण्णि य पंचुत्तरे जोयण-मए पण्णरम य महिमाए जीयणस्य एगमेगेणं सुहुत्तेणं गच्छड, तथा णं इहगयस्य मणुस्सस्य एगतीयाए जोवणयहस्सेहिं अद्वृहि व एगतीसेहिं जोवणयएहिं तीसाए व र्साद्रभाएहिं जोयणस्य सुरिए चक्खुप्फासं हव्यमागन्छह, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पडमस्य छम्मासस्स पजन्साणं, से पविसमाणे मृरिए दोचे छम्मासे अवमाणे पढमंसि अहोरनंसि वाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमिना चारं चरह, जया णं मंने ! सुरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरः तथा णं एगमेगेणं मुहत्तेणं केवश्यं क्षेत्रं गच्छइ ? गोयमा ! पंच पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउठतरे जोयणसण सत्तावण्णं च सद्विभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणुस्तस्य एगत्तीसाए जोयणयहस्तंहि णवहि य सोळनुत्तरेहि जोयणतएहि इगुणा-लीसाए य सद्विभाएहिं जीयणस्य सद्विभागं च एगसद्विहा छेता राष्ट्रीए चुण्णियाभागहिं स्रीतः चक्खुण्यासं हव्बमागच्छइ, से पविममाणे स्रीरः दोर्चसि अहोरत्तंसि बाहिरतचं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ, जया णे भंते ! स्रिए वाहिरतचं मंडलं उवसंकमिता चारं चरड तया णं एगमेगेणं मुहुतेणं केवड्यं खेतं गच्छइ ? गोयमा ! पंच पंच जोयणसहस्साइं तिष्णि य नउरुनरे जोयणसए इगुणालीसं च सिद्धभाए जोयणस्म एगमेनेणं मुहत्तेणं गच्छइ, तया णं इष्टगयस्य मणुयस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोयण-सहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सिट्टभाएहिं जोयणस्स सिट्टभागं च एगमद्रिहा हेता तेवीसाए चुण्णियाभाएहिं सुरिए चक्खुप्फासं हृव्वमागच्छद, एवं खळ एएणं उवाएणं पविसमाणे स्रिए तयाणंतराओं मंडलाओं तयाणंतरं मंडलं संसममाणे २ अहारस २ सिंहुभाए जोयणस्य एगसेंगे मंडले मुहत्तगडं निवन्नेमाणे २ साइरेगाइं पंचासीइं २ जोयणाई पुरिसच्छायं अभिवद्वमाणे २ सव्वन्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, एस णं दोचे छम्मासे, एस णं दोचस्स छम्मासस्स पजवसाणे, एस णं आइचे संबच्छरे, एस णं आइबस्स संबच्छरस्स पञ्जबसाणे पण्णते ७ ॥ १३३ ॥ जया णं भंते ! सुरिए सव्यन्भंतरं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया णं उत्तमकट्वपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया द्वालसमुहत्ता राई भवइ, से णिक्सम्माणे सूरिए णवं

संबच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरनंसि अब्मंतराणंतरं मंडलं उदसंकमिता चारं चरइ. जया ण भंते ! सारेए अन्भंतराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया णं अद्वारसमृहते दिवसे भवइ दोहिं एगद्रिभागमुहत्तेहिं उणे दुबालसमुहत्ता राई भवइ दोहि य एगद्विभा-गमुहुत्तेहिं अहियत्ति, से जिक्क्सममाणे मृरिए दोर्चाम अहोरर्नास जाव चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवः ? गोयमा ! तया णं अद्वारसमुहते दिवसे भवइ वर्डाहें एगडिभागमुहत्तेहिं ऊणे द्वालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विसागमहनेहिं अहियति, एवं खल एएणं उवाएणं णिक्सममाणे स्रिए तया-णंतराओं मंडलाओं तयागंतरं मंडलं संक्रममाणं २ दो दो एगड्रिमागमुहत्तिहिं मंडले दिवसखेनस्म निव्हेमाणे २ रयणिखेनस्स अभिवहेमाणे २ सञ्बवाहिरं मंडलं उवसंक्रांमना चारं चरइनि, जया णं सरिए सन्वन्मंतराओ मंडलाओ सन्वनाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तथा णं मव्वब्संतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदिययएणं तिष्णि छात्रद्वे एगद्विभागमुहुत्तराए दिवसखेतस्स निवुद्वेता स्यणि-खेतस्य अभिवृद्धेता चारं चरडति, जया णं भंते ! मृरिए सव्ववाहिरं मंडलं उत्रसंकिमता चारं चरठ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवड ? गोयमा ! तया णं उत्तमकद्वपत्ता उद्योसिया अद्वारसमुहत्ता राई भवइ जहण्णए द्वालसमहत्ते दिवसं भवइत्ति. एस णं पढमे छम्मासे, एन णं पढमस्स छम्मानस्स पज्जवसाणे । मे पविस्माणे सरिए दोचं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंति बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, जया णं मंते ! सुरिए बाहिराणंतरं मंडलं उदसंक्रमिता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवड ? गोयमा ! अट्टा-रसमहत्ता राई भवइ दोहिं एगहिभागमुहत्तेहिं कणा द्वालसमहत्ते दिवसे भवद दोहिं एग द्विभागमुह नेहिं अहिए, से पविसमाणे स्विए दोचंसि अहोरतंसि बाहिरतचं मंडलं उवसंकिमता वारं चरह. जया णं भंते ! सरिए बाहिरतर्च मंडलं उवसंकिमता चारं चरइ तथा णें केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवड़ ? गोयमा ! तथा णं अद्वारसमृहत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विमागमुहत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहते दिवसे भवइ चर्डाहें एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिए इति, एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे स्रीरण त्याणंत्राओं मंझलाओं तयाणंत्रं मंडलं संकममाणे संकममाणे दो दो एगड्टिमागमुहुतेहिं एगमेंगे मंडले रयणिखेतस्स निवृद्देमाणे २ दिवमखेतस्स अभिवद्वेमाणे २ सञ्चन्नंतरं मंडलं उवसंक्रमत्ता चारं चरइति, जया णं स्रिए सन्बन्नाहिराओं मंडलाओं सन्बन्धंतरं मंडलं उवसंक्रमिसा चारं चरइ तथा पं

सन्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णि छात्रहे एगहि-भागमुहत्तराष् रयणिखेत्तस्य णिवृद्वेता दिवसखेतस्य अभिवद्वेता चारं चरह. एम ण दोने छम्मासे, एस णं दुन्नस्स छम्मानस्स पज्जवसाणे, एस णं आहेन संबच्छरे, एस णं आइबस्य संबच्छर्स्स पजन्याणे पण्णते ८॥ १३४॥ जया णं भंते ! सप्रेए सव्बब्धंतरं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तया णं किसंठिया तावखेतसंठिई पण्णता ? गोयमा ! उन्नीमुहक्लेख्यापुप्तसंठाणसंठिया तावखेत-संठिई पण्णता, अंतो संक्रया बाहिं वित्यहा अंतो वहा बाहिं पिहला अंतो अंक्सह-संठिया बाहिं सगडद्वीमृहसंठिया, उत्तरपासे णं तीसे दो बाहाओं अवद्वियाओं हवंति पणयालीसं २ जोयणसहरसाई आयामेणं, द्वे य णं तीसे बाहाओ अण-वद्भियाओ हवंति. तंजहा-सञ्बद्भंगरिया चेव बाहा सञ्वबाहिरिया चेव बाहा. तीसे णं सन्तर्भतिरया बाहा मंदरपन्वयंतेणं जवजोयणसहस्साइं चतारि छलसीए जोयणसए णव य दमभाए जोयणस्स परिक्खेवंणं, एस णं मंते ! परिक्खेवंबिसेसे कओ आहिएति वएजा ? गोयमा ! जे णं मंदरर स० परिक्खेंवे तं परिक्खेंवं निर्हि गुणेला दसहिं छेता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएजा. तींसे ण सन्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्देतेण चलणवर्ड जीयणसहस्साइं अदसद्दे जोयणसए चतारि य दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं. से णं भंते ! परिक्खेविवसंसे कओ आहिएति वएजा ? गोयमा ! जे णं जंबुरीवरस २ परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणेता दसहिं छेता दसमागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएजा । तया णं मंत ! तावखेते केवहयं आयामेणं प० ? गोयमा ! अद्रहत्तरिं जोयण-सहस्साइं तिष्णि य तेत्तीसे जोयणमए जोयणस्स तिमागं च आयामेणं पण्णते. मेरुस मज्ज्ञयारे जाव य लवणस्य रुंदछन्भागी । तावायामी एसी सगडद्वीसंठिओ णियमा ॥ १ ॥ तया णं भेते ! किसंठिया अंध्यारसंठिई पण्णता ? गोयमा ! उन्नीमहकलेवयापुप्पसंठाणसंठिया अंधवारसंठिई पण्णता. अंतो संक्रवा बाहिं वित्थहा तं चेव जाव तीसे णं सव्वर्भतिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साई तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणंति, से णं भंते ! परिक्खेवविसेसे कुओ आहिएति वएजा ? गोयमा ! जे णं संदरस्स पन्त्रयस्स परिक्खेवे तं परिनखेवं दोहिं गुणेता दसहिं छेता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिनखेवविसेसे आहिएति वएजा, तीसे णं सञ्जवाहिरिया बाहा स्वणसमुद्रतेणं तेसदी जोयणसह-स्साइं दोण्णि य पणयाले जोयणसए छत्र दसभाए जोयणस्य परिक्खेवेणं. से णं भंते ! परिक्खेवविषेषे क्लो आहिएति वएजा ? गोयमा ! जे णं जेबुहोबस्स २ परि- क्कोंबे तं परिक्लेवं दोहिं गुणेता जाव तं चेव तया णं भंते! अंधयारे केवइए आयामेणं प॰ ? गोयमा ! अद्रहत्तरिं जोयणसहस्माई तिष्णि य तेत्तीसे जोयणसए तिमागं च आयामेणं प०। जया णं भंते ! स्रिए सम्बबाहिरमंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तथा णं किसंठिया तावखेलसंठिई प० १ गो० । उन्नीमहकलंब्यापुष्फ-संठाणसंठिया - पण्णता, तं चेव सव्वं णेयव्वं णवरं णाणतं त्रं अंधयारसंठिईए पुरुवविष्णयं प्रमाणं तं तावखेतसंटिईए णेयव्वं, जं तावखेतसंटिईए पुव्वविष्णयं पमाणं तं अंधयारसंठिईए णेयव्वंति ९ ॥ १३५ ॥ जंबहीवे णं मंते ! दीवे स्रिया उम्ममणमुहुत्तंति दूरे य मूळे य दीसंति मज्झंतियमुहुत्तंति मूळे य दूरे य दीसंति अत्थमणमुहुत्तंति दूरे य मूळे य दीसंति ? हंता गोयमा ! तं चेव जाव दीसंति, जम्बुद्दीवे णं भन्ते !० स्रिया उग्गमणमुहुत्तंसि य मज्ज्ञंतियमुहुत्तंसि य अत्यमण-महत्तांसि य सव्वत्थ समा उचतेणं १ हंता तं चेव जाव उचतेणं. जड णं भन्ते ! जम्बुदीवे दीवे सूरिया उगामणमुहुत्तंसि य मज्झं अत्य व सब्बत्य समा उच्नतेणं करहा णं भन्ते ! जन्ब्रहीवे दीवे सुरिया समामणमुहत्तेसि द्रे य मुळे य दीसंति । ? गोयमा ! लेसापडिचाएणं उग्गमणमुहुनंसि दूरे य मूले य दीसंति लेसाहितावेणं मज्ज्ञंतियमुहुत्तंसि मूळे य दृरे य दीसंति छेसापडिघाएणं अत्यमणमुहुत्तंसि दृरे य मुळे य बीसंति, एवं खळु गोयमा ! तं चेव जाब दीसंति १०॥ १३६॥ जम्ब्रुटीवे णं भन्ते ! दीवे सुरिया कि तीयं खेतं गच्छन्ति पहुप्पण्णं खेतं गच्छन्ति अणागयं खेतं गच्छन्ति ? गोयमा ! णो तीयं खेतं गच्छन्ति पहुप्पणं खेतं गच्छन्ति णो क्षणागर्य खेतं गच्छन्तिति, तं भन्ते ! कि पुट्टं गच्छन्ति जाव नियमा छहिसिति, एवं ओभासेति, तं भन्ते ! कि पहं ओभासेति ० १ एवं आहारपयाई णेयव्दाई पुद्वोगाढमणंतरअणुमहस्राइविसयाणुपुव्वी य जाव णियमा छिहिसं, एवं उज्जोर्वेति तर्वेति प्रभासेति १९ ॥ १३७ ॥ जम्ब्रुहीवं णं भन्ते ! दीवे सूरियाणं कि तीए खेते किरिया कच्च पहुप्पण्णे॰ अणागए॰ ? गो॰ ! णो तीए खेते किरिया कज्जइ पहुप्पणी॰ कज्जह जो अधागए॰, सा अन्ते ! कि पुद्रा कज्जइ॰ ? गोयमा ! पुद्रा॰ णो अणापुद्रा कज्जह जाच णियमा छहिसि १२॥ १३८॥ जम्बुहीने णं भन्ते ! दीवे स्रिया केवहमं खेतं उड्ड तवयन्ति सह तिरियं च ? गोयमा ! एगं जोयणसमं उड्ड तवसन्ति अद्वारससयजीयणाई अहे तषयन्ति सीयालीसं जीयणसहस्साइं दोष्णि य तेबडे जोयणसए एगबीसंच सद्विमाए जोयणस्य तिरियं तबयन्तिति १३॥१३९॥ अंतो ण अन्ते ! माणुसुनारस्य पञ्चवस्य जे चंदिमस्रियगहगणणवस्वनताराख्या ते णं भन्ते ! देवा कि उद्शोवबण्यमा कप्पोवबण्यमा विमाणीवबण्यमा चारोवबण्यमा

चारद्विह्या गहरह्या गहसमावण्णगा ? गोयमा ! अंतो णं माणसत्तरस्य पञ्चयस्य जे चन्दिमस्रिय जाव ताराख्वा ते णं देवा जो उन्नोववण्णमा जो कप्पोववण्णमा विमाणीववण्णगा चारीववण्णगा णो चारद्भित्या गइरइया गइसमावण्णगा उद्गीमह-कलंबुयापुण्यसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावखेनेहिं माहस्मियाहिं वेउव्वियाहि बाहिराहिं परिसाहिं महया हयणद्वनीयवाइयतंतीतलनालतुडियचणमुइंगपद्वप्याइयर-वेणं दिव्वाइं भोगमोगाइं भुंजमाणा महया उक्तिद्विमीहणायबोलकलकलरवेणं अच्छं पन्वयरायं पयाहिणावत्तमण्डलचारं मेहं अणुपरियद्वंति १४॥१४०॥ तेसि णं भन्ते ! देवाणं जाहे ईदे चुए भवइ से कहमियाणि पकरेंति ? गोयमा ! ताहे चतारि पंच वा सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपिकताणं विहरित जाव तत्थ अण्णे इंट उववण्णे भवइ । इंदद्वाणे णं भंते ! केवइयं काळं उचवाएणं विरहिए ! गोयमा ! अहण्णेणं एगं समयं उक्रोसेणं छम्मासे उबवाएणं विरहिए । बहिया णं भन्ते ! माणुमुत्तरस्य पव्वयस्स जे चंदिम जाव तारारूवा तं चेव णेयव्वं णाणतं विमाणीववण्णमा णो चारोववण्णमा चार्द्विइया णो गइरइया णो गइसमावण्णमा पिकट्टगसंठाणसंठिएहिं जोयणसयसाहरिसएहिं तावखेनेहिं सयसाहरिसयाहिं वेउ व्वि-याहिं वाहिराहिं परिसाहिं महया हयणर जाव मुंजमाणा मुहलेमा मन्दलेसा मन्दा-यवळेला चित्तंतरलेमा अण्णोण्णसमोगाडाहि लेलाहि कूडाविव ठाणठिया सन्वओ समन्ता ते पएसे ओभासंति उज्जोवेंति प्रभासेन्तिति । तेसि णं भन्ते ! देवाणं जाहे इंदे खुए भवइ से कहमियाणि पकरेन्ति जाव जहण्णेणं एकं समयं उक्कोसेणं छम्मासा इति १५॥ १४१॥ बह णं भन्ते ! चंदमण्डला प०१ गो० ! पण्णस्स चंदमण्डला पण्णना । जम्बुद्दीवे णं भनते ! दीवे केबड्यं ओगाहिता केवड्या चन्द-मण्डला प॰ ? गो॰ ! जम्बुद्दीवे २ असीयं जोयणसयं ओगाहिता पंच चंदमण्डला पण्णता, लवणे णं भनते ! पुच्छा, गोयमा ! छवणे णं समुद्दे तिण्णि तीसे जोयण-सए ओगाहिता एत्य णं दस चंदमण्डला पण्णता, एवामेव सपुञ्जावरेणं जम्बुहीवे वीने लक्षणे य समुद्दे पण्णरस चंदमण्डला भवन्तीतिमक्स्यायं ॥ १४२ ॥ सम्बन् च्मंतराओ ण भनते । चंदमंडलाओ केनइयाए अबाहाए सम्बबाहिरए चंदमंडले प॰ ? गोयमा ! पंचदशुत्तरे जोयणसए अबाहाए सञ्चवाहिरए चंदमंडळे पण्णते ॥ १४३ ॥ चंद्रमंडलस्स णं भन्ते ! चंद्रमंडलस्स य एस णं केवश्याए अवाहाए अंतरे प॰ ? गोयमा ! पणतीसं २ जोयणाई तीसं च एगसद्विमाए जोयणस्स एगसद्विभागं च सत्तहा छेत्ता चतारि चुण्णियाभाए चंदमंडळरस चंदमंडळरस अबाहाए अंतरे पण्णते ॥ १४४ ॥ चंदमंडके णं मन्ते ! केवइयं आसामविक्यंमेणं केवइयं परि-

क्खेवेणं केषद्यं बाह्हेणं पण्णते ? गोयमा ! छप्पण्णं एगसद्विभाए जोयणस्म आयामविक्त्यम्भेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अहावीसं च एगसिट्टेमाए जोयणस्स बाहक्षेणं ।। १४५॥ जम्बुद्दीवे णं भेते ! दीवे मन्दरस्स पन्वयस्य केव-इयाए अबाहाए सन्बन्भंतरए चन्दमंडळे पण्णते ? गोयमा ! चोयाळीसं जोयण-सहस्साइं अट्ट य वीसे जोयणसए अबाहाए राज्यव्मन्तरे चन्दर्मडले पण्णेते, जम्बुहीबे ... सन्दरस्य पव्यवस्य केवइयाए अबाहाए अब्भंतराणन्तरे चन्दमंडले पण्णेते १ गोयमा ! चोयालोसं जोयणसहस्याइं अद्भ य छप्पण्णे जोयणसए पणवीसं च एगसाड्रेभाए जोयणस्य एगसद्विभागं च सत्तहा छेता चनारि चुण्णियाभाए अवाहाए अब्भंतराणन्तरे चन्द्रमंडलं पण्णते, जस्वृहीवं॰ दीवे मन्दरम्य पव्व-यस्म केवडयाए अवाहाए अञ्मंतरत्वे चंदमंडले प० ! गोयमा ! चोयालीसं जोयणगहस्साई अद्व य याणउए जोयणसए एगावण्णं च एगसिद्रमाए जोयणस्न एगसद्भिमागं च मत्तहा छेला एगं चुण्णियाभागं अबाहाए अब्संनरतचे चंदसंडले पण्णते, एवं खलु एएणं उबाएणं णिक्सममाणे चंदे तयाणन्तराओ मंडलाओ तयाणन्तरं मंडलं संक्रममाणे २ छत्तीसं छत्तीसं जोगणाई पणवीसं च एगमद्विभाए जोयणस्स एगसद्विमागं च सत्तहा छेना चतारि चुण्णियामाए एगमेगे मंडले अबा-हाए वृद्धि अभिवद्वेमाणे २ सञ्बद्धाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरह । जम्ब्रहीवे० वीचे सन्दरस्स पञ्चयस्य केवइयाए अवाहाए सञ्चबाहिरे चंदमंडले प॰ ? गो॰ ! पणयानीसं जोयणसहस्साइं तिष्णि य तीसे जोयणसए अवाहाए सन्वबाहिरए चंदमंडले प॰, जम्ब्रहीवे॰ दीवे सन्दरस्य पन्वयस्य केवडयाए अवाहाए वाहिरा-णन्तरे चंदमंडले पण्णते १ गो० ! पणचालीसं जोयणमहस्याइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए पणतीसं च एगसद्विभाए जोयणस्य एगसद्विभागं च सत्तहा छेता तिण्णि वुण्णियाभाए अबाहाए बाहिराणन्तरे चंदमंडले प्रणत्ते, जम्बुहीवे॰ दीवे मन्द-रस्स पन्नयस्स केवड्याए अबाहाए बाहिरतचे चंदमंडले प॰ ! गो॰ ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि य सत्तावण्णे जोयणसए णव य एगसद्विभाए जोयणस्स एगसङ्गिमागं च सत्तहा छेता छ चूणियामाए अवाहाए बाहिरतचे चंदमंडले प॰ । एवं खलु एएणं उचाएणं पविसमाणे चंदे तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संक्रममाणे २ छत्तीसं २ जोयणाइं पणवीसं च एगसद्विमाए जोयणस्स एगसिद्वमागं च सत्तहा छेता चतारि चुण्णियाभाए एगमेगे मंडले अवाहाए बुह्नि णिवुह्नेमाणे २ सम्बब्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ ॥ १४६ ॥ सञ्बद्भंतरे णं भन्ते ! चंदमंडले केव्हवं आयामविक्खम्भेणं केव्हरं परिक्खेवेणं

पण्णते ? गोयमा ! णवण उई जोयणसहस्साई छन्नचनाले जोयणसए आयामविक्स-म्भेणं तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं अखणाणखंइ च जोय-णाइं किन्विविसेसाहिए परिक्खेवेणं प॰, अब्भन्तराणंत्रे सा चेव पुच्छा, योयमा ! णवणउइं जीयणसहस्साइं सत्त य बारसूत्तरे जीयणमए एगावण्यं च एगद्रिभागे जोयणस्य एगद्विभागं च सत्तहा छेता एगं च्रिणयाभागं आयामविक्खम्भेणं तिणिण य जोयणसयसहस्माइं पण्णरस सहस्साइं तिण्णि य एगूणवीसे जोयणराए किंचिविसे-साहिए परिक्खेवेणं. अञ्भन्तरतचे णं जाव प० १ गो० ! णवणटहं जोयणसहस्साइं मत्त य पञ्चासीए जोयणसए इगतालीसं च एगद्विमाए जोयणस्य एगद्विभागं च सत्तहा छेना दोष्णि य चुन्णियाभाए आयामविक्खम्भेणं तिष्णि य जोयणसयसहस्माइं पण्णरस जोयणसहरूमाई पंच य इगुणापण्णे जोयणसए किचिविमेसाहिए परिक्खे-वेणंति, एवं खळ एएणं उदाएणं णिक्खममाणे चंदे जाव संक्रममाणे २ बावत्तरि २ जोयणाई एगावण्णं च एगड्रिभाए जोयणस्य एगड्रिभागं च मनहा छेना एगं च चुण्णियाभागं एगमेंगे मंडले विक्खम्भवृद्धि अभिवद्वेमाण २ दो दा तीमाई जोयण-सयाइं परिरयवृद्धिं अभिवद्देमाणे २ सञ्ववाहिरं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरइ । मव्यवाहिरए णं भन्ते ! चन्द्रमंडले केवडयं आयामविक्खम्मेणं केवडयं परिक्खेवेणं पण्णते ? गो० । एगं जोयणसयसहस्सं छन्नसङ्के जोयणसए आयामविक्खम्भेणं तिणिण य जोयणसयमहस्साई अद्वारस महस्याई तिष्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खे-वेणं ॰ , बाहिराणन्तरे णं पुच्छा , गो ॰ ! एगं जोयणसयसहस्सं पञ्च सत्तासीए जोयण-सए णव य एगड्डिभाए जोयणस्म एगड्डिभागं च सत्तहा छेता छ चुण्णियाभाए आयाम्बिक्खम्भेणं तिष्णि य जोश्णसयसहस्माइं अद्वारस सहस्माइं पंचासीहं च जोयणाई परिक्खेवेणं , बाहिरतचे णं भन्ते ! चन्दमण्डले ० प० ? गो० ! एगं जोय-णसयसहस्सं पंच य चउदसुत्तरे जीयणसए एगूणवीसं च एगद्विमाए जीयणस्स एगद्विभागं च सत्तहा हेता पंच चुण्णियाभाए आयामियक्सम्मेणं तिण्णि य जीयण-मयसहस्साइं सत्तरस सहस्साइं अद्र य पणपण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं०. एवं खल्ल एएणं उवाएणं पविसमाणे चन्दे जाव संक्रममाणे २ बावशरिं २ जोयणाइं एगावण्णं च एगद्विभाए जोयणस्स एगद्विभागं च सत्तहा छेता एगं चुण्णियाभागं एगमेगे मण्डलं विक्खम्भवृद्धिं णिवृद्धेमाणे २ दो दो तीसाई जोयणस्याइं परिर्यवृद्धिं णिलुक्केमाणे २ सव्वन्मंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरह ॥ १४७ ॥ जया णं भन्ते ! चन्दे सञ्बब्धनत्तरमण्डलं उवसंक्रमिता चारं चरह तथा णं एममेरोणं महत्तेणं केन्द्रयं खेतं गच्छद् ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं तेक्तरिं च जोयणाइं सत्तर्तरिं

च चोयाले भागसए गच्छाइ मण्डलं तेरसिंहं सहस्सीहं मत्तिह य पणवीसीहं सएहिं हेता इति, तया णं इह्रगयस्य मण्सस्य सीयालीसाए जोयणसहस्सीहं दोहि य तेबद्वेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य सद्विभाएहिं जोयणस्य चन्दे चक्खुप्फासं इन्व-मागच्छड् । जया णं भन्ते ! चन्द्रे अब्मन्तराणन्तरं मण्डलं उवसंकमित्ता चारं नरह जाव केबइयं खेलं गच्छाइ? गो०! पंच जोयणसहस्साइं सनत्तरिं च जोयणाइं छत्तीसं च चोवत्तरे भागमए गच्छड् मण्डलं तेरसिंहं सहस्सेहिं जाव छेता, जया णं भन्ते! चन्द्रे अब्भंतरतम्बं मण्डलं उवसंकमिता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहत्तेणं केव-इयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा! पंच जोयणमहस्साडं असीइं च जोयणाई तरम य भागमहस्याई तिष्णि य एग्णवीसे भागमए गन्छड मण्डलं तेरसिंह जाव छेता इति । एवं खु एएणं उवाएणं णिक्सम्माणे चन्दे तयाणन्तराओ जाव संक्रममाणे २ तिष्णि २ जीयणाई छण्णाउई च पंचावण्णे भागमण् एगमेंगे मण्डले मुहुत्तगई अभिवह्रेमाणे २ सम्बन्नाहिरं मण्डलं उन्संकिमत्ता चारं चरइ, जया णं भन्ते ! चन्दे सव्ववाहिरं मण्डलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं एगमेगेणं महत्तेणं केवइयं खेतं गच्छड ? गोयमा ! पंच जोयणसहरुसाइं एगं च पणवीसं जोयणसयं अउणसरिं च णडा भागसए गच्छड मण्डलं तेरसिंह भागगहरसेहिं सत्तिहि य जाव छेना इति, त्या णं इद्दर्गयस्य मण्यस्य एक्तीयाए जोयणमहस्सेहि अद्वहि य एगत्तीसेहि जोयणसएहिं चन्दे चक्खुप्फासं हव्यमागच्छइ, जया णं भनते ! बाहिराणन्तरं पुच्छा, गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं एक्सं च एक्स्वीसं जोयणसयं एकारस य सर्हे भागगहस्से गच्छड् मण्डलं तेरसहिं जाव छेता, जया णं भंते ! बाहिरतचं पुच्छा, गोयमा ! पंच जोयणसहस्साई एगं च अद्वारसन्तरं जोयणसयं चोहस य पंचुत्तरे भागसए गच्छइ मंडलं तेरसिंहं सहस्सेहिं सत्तिहं पणवीसेहिं सएहिं छेता, एवं खलु एएणं उवा-एणं जाव संक्रममाणे २ तिष्णि २ जोयणाई छण्णउई च पंचावण्णे भागमए एगमेगे मण्डले मुहुत्तगई णिवुद्वेमाणे २ सव्बब्भंतरं मण्डलं उत्रसंकमिता चारं चरह ॥ १४८ ॥ कड् णं भंते । जन्खत्तमण्डला प॰ ? गोयमा । अड्ड जनखत्तमण्डला पण्णता । जम्यु-हीने णं भंते ! दीने केनइये ओगाहिसा केनइया णऋखसमंडला पण्णना ? गोयमा ! जम्बुरीवे दीवें असीयं जोयणसयं ओगाहेता एत्य णं दो णक्खत्तमंडला पण्णता, स्त्रणे णं भेते ! समुद्दे केवड्यं ओगाहेता केवड्या णक्खतमंडला पण्णता ? गीयमा ! लवणे णं समुद्दे तिष्णि तीसे जोयणसए ओगाहिता एत्य णं छ णक्खतमंडला पण्णता, एवामेव सपुब्बावरेणं जम्बुद्दीवे दीवे लवणसमुद्दे अह णक्खतमंडला भवंतीतिमक्खार्थ। सञ्बद्धांतराओं णं अते ! जक्खतमंडलाओं केवहयाए अवाहाए सञ्जवाहिरए

णक्खतमंडले पण्णते ? गोयमा ! पंचदनुत्तरे जोयणसए अबाहाए सन्बबाहिरए णक्यतमंडले पण्णते, णक्यतमंडलस्य णं भन्ते! णक्यतमंडलस्य य एस णं केवड्याए अबाहाए अंतरे पण्णेत ? गोयमा ! दो जोयणाई णक्खत्तमंडलस्स य गक्सतमंडलस्स य अबाहाए अंतरे पण्णते । णक्सतमंडले णं मंते ! केबह्यं आयामविक्खम्भेणं केवहरां परिक्खेवेणं केवहरां वाहक्षेणं पण्णते ? गोयमा ! गाउयं आयामविक्सम्मेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं अदुगाउयं बाहहेणं पण्णनं । जम्बुरीय में भनते ! दीवे भंदरस्य पव्वयस्य केवह्याए अबाहाए मञ्ज्ञ्भंतरे णक्खत्तमंडले पण्णते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्माई अट्ट य वीसे जोयगमए अबाहाए सञ्बदभंतरे णक्खत्तमंडले पण्णते, जम्ब्रहीय णं भंते ' दीवे मंदरस्य पत्र-यस्त केनइयाए अबाहाए सध्वबाहिरए भक्खतमंडले पण्णते ? गोयमा ! पणया-ठीसं जीयणसहस्याइं तिष्णि य तीसे जायणसए अबाहाए सब्बवाहिरए एक्खन-मंडले पण्णते । सञ्चन्मंतरे णं भंत ! णक्खतमंडले केवडयं आयामविक्लंभेणं केवडयं परिचलेवेणं प॰ ? गोयमा ! णवणवर्ड जोयणगहम्साटं छवचनाले जीवणमए आयामविक्खंनेणं तिष्णि य जोयणसयमहस्साउं पण्णरस जोयणसहस्माउं एराणणव्हं च जोयणाइं किचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते, सन्यवाहिरए णं भंते ! णक्खत्त-मंडले केश्डयं आयामविक्न्बंमेणं केन्द्रयं परिक्लेचेणं पण्णते ? गोयमा ! एगं जीयण-सयसहस्सं छच अड्रे जोयणसए आयामविक्खंमेणं तिष्णि य जोयणसयसहस्माइं अद्वारस य जोयणसहस्साई तिष्णि रा पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवणं प०, जया णं भंते । णक्खते मध्वच्मंतरमंडलं उवसंक्रमिता वारं चरइ तया णं एचमेगेणं मुहुत्तेणं केवड्यं खेत्तं गच्छड् ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्माइं होण्णि य पण्णद्रे जीवणसण अद्वारस य भागसहस्से दोणिंग य तेवदे भागसए गच्छउ मंडलं एकवी-साए भागसहस्सेहिं जबहि य सद्वेहिं सएहिं छेता । जया जं भंते ! जबस्तेन स्व्व-वाहिरं मंडलं उबसंक्रमिला चारं चरइ तया णं एगमेगेणं मुहुतेणं केवहयं खेतं गच्छद्र ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं तिष्णि य एगूणवीसे जोयणसए सौलस य भागसहस्तेहिं तिष्णि य पणद्वे मागसए गच्छइ मंडलं एगवीसाए भागसहस्सेहिं णवहि य संदेहिं सएहिं छेना. एए णं भंते ! अड णक्खनमंडला कड़िं चंदमंडलेहिं समोयरंति ? गोयमा ! अद्वृहिं चंदमंडलेहिं समोयरंति, तंजहा--पढमे चंदमंडले तइए • छहे • सत्तमे • अद्भो • दसमे • इद्वारसमे • पण्णरसमे चंदमंडले, एगमेगेणं भन्ते ! सहुत्तेणं केवइयाइं भागसयाइं गच्छाइ ? गोयमा ! जं जं मंहलं उबसंकमिता चारं चरड तस्स २ मंडलपरिक्खेक्स्स सत्तरस अद्वे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं

अद्वाणउईए य सएहिं छेता इति । एगमेगेणं भन्ते ! मुहत्तेणं स्रिए केवइयाइं भाग-सबाई गच्छड ? गोयमा ! जं जं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तस्स २ मंडलपरि-क्खेंबस्स अद्वारसतीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेहि अद्वाणउईए य सएहिं छता, एगमेगेणं मंते ! मुहत्तेणं णक्खते केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? गोयमा ! जं जं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अद्वारस पणनीसे भागसए गच्छद संडलं सयसहस्सेणं सद्वाणचड्रेए य सएहिं छेता ॥१४९॥ जम्ब्रहीवे णं भंते ! दीवे सुरिया उदीणपाईणसुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छेति १ पाईणदाहिणसुम्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छित २ दाहिणपडीणसुमाच्छ पढीणउदीण-मागच्छंति ३ पढीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छंति ४ १ हुंता गोयमा ! जहा पैचमसए पढ़मे उद्देसे जाव गेवत्थि ॰उस्सप्पिणी अवद्विए गं तत्थ काले प॰ समणा-उसो !, इन्नेसा जम्बुद्दीवपण्णेती सूँरपण्णाती वस्थुसमै।सेणं सम्मता भवद् । जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे चंदिमा उदीणपाईणमुख्यन्छ पाईणदाहिणमागच्छंति जहा सर्वत-व्वया जहा पंचमसयस्स दसमे उद्देसे जाव अबद्विए णं तत्थ काले पण्णते समणा-उसो !. इन्नेसा जम्ब्रहीवपणात्ती चंदपण्णेती वत्युसमीसेणं सम्मत्ता भवइ ॥ १५० ॥ वड़ में भन्ते ! संबच्छरा पण्णता ? गोयमा ! पंच संबच्छरा प०, तं०-णक्समसंब-च्छरे जुगसंबच्छरे प्रमाणसंबच्छरे लक्खणसंबच्छरे सणिच्छरसंबच्छरे । णक्खत्त-संवच्छरे णं भन्ते ! कहविहे पण्णते ? गोयमा ! दुवालसविहे प०. तं०-सावणे भद्दवए आसीए जाव आसाढे, जं वा विहम्फई महम्महे दुवालसेहिं संबच्छरेहिं सम्बणक्खतमंडलं समाणेड सेत्तं णक्खत्तसंबच्छरे । जुगसंबच्छरे णं भन्ते ! कड्विष्ठे पण्णे ? गोयमा ! पंचिवहै प०, तंजहा-चंदे चंदे अभिवन्निए चंदे अभिवन्निए चेवेति, पढमस्य णं भन्ते ! चन्दसंबच्छरस्य बह पव्वा पण्णना ? गोयमा ! चउव्वीसं पव्वा पण्णता, विड्यस्स णं भन्ते ! चन्दसंदच्छरस्स कड् पव्वा पण्णता ! गोयमा ! चउव्यक्तिं पव्या पण्णता, एवं पुच्छा तइयस्य, गोयमा! अभिवश्वियसंवच्छरस्स छव्वीसं पन्या प०, चडत्यस्स० चन्दसंबच्छरस्स० चोव्वीसं पव्या०, पंचमस्स गं० अभिवृद्धियस्त • छ्व्वीसं पव्दा पण्णता, एवामेव सपुरवावरेणं पंचसंबच्छरिए जुए एगे चउन्बीसे पन्नसए पण्णते,सत्तं जुगसंबच्छरे । प्रमाणसंबच्छरे णं भन्ते ! बङ्बिहे पण्णते ! गोयमा । पंचविहे पण्णते, तंजहा--- णवस्त्रते चन्दे उक्त आइवे अभिवश्चिए. सेतं

१ आइह्नदीवस्स जहाबद्वियसस्विणस्विमा गंवपद्धर्-तीए । १ स्रियाहिगारप-डिबद्धापमपद्धर्ष । ३ मंडलसंखाईणं स्रियपण्यतीआइमहागंथावेक्खाए संसेवो तेष । ४ चंदाहिगार ० । ५ मंडलसंखाईणं चंदपण्यतीआइ० ।

पमाणसंबन्छरे । लक्खणसंबन्छरे णं भन्ते ! कडविडे पण्णते ? गोयमा ! पंचित्रेडे पण्णते, तंजहा--''समयं णक्तता जोगं जोयंति समयं उठ परिणमंति । णकुष्ह णाइसीओ बहुद्ओ होइ णक्खते ॥ १ ॥ ससि समगपुण्णमासि जोएन्ति विसम-चारिणक्खना । बहुओ बहुदुओ य तमाहु संवच्छरं चन्दं ॥ २ ॥ विसमं पवाछिणो परिणमन्ति अणुक्कसु दिति पुष्पपक्लं । वासं न सम्म वासइ तमाह संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणं च रसं पुप्फफलाणं च देइ आइची । अप्पेणवि वासेणं सम्मं निष्फञ्जए सस्सं ॥ ४ ॥ आङ्ग्बतेयतविया खणलविवसा उक परिणमन्ति । पूरेइ य णिण्णथले तमाहु अभिविद्धयं जाण ॥ ५ ॥" सणिच्छरसंबच्छरे णं भन्ते ! कहिंबहे पण्णते ? गोयमा ! अद्वावीमइबिहे पण्णते. तंजहा-अभिई सवणे धणिहा सर्याभनया दो य होंति भद्दवया । रेवइ अस्मिण भरणी कत्तिय तह रोहिणी चंद ॥ १ ॥ जाव उत्तराओ आसाढाओ जं वा सणिचरे महनगढे तीसाए संक्च्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमण्डलं समाणेइ सेनं सणिबरसंवच्छरे ॥ १५१ ॥ एगमेगस्स णं भन्ते ! संबच्छरस्य कइ मासा पण्णता ? गोयमा ! दुवालस मासा पण्णता, तेखि णं द्विहा णामधेजा प०, तं०-लोइया लोउत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा इमे, तं०-सावणे भद्दवए जाव आसाढे, लोउत्तरिया णामा इमे, तंजहा-अभिणंदिए पहुद्धे य. विजए पीइवद्धणे । सेयंसे य सिवे चेव, सिसिरे य सहेमवं ॥ १ ॥ णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे । एकारसे निदाहे य, वणविरोहे य वारसे ॥ २ ॥ एगमेगस्स णं भन्ते ! मासस्स कड पक्वा पण्णता ? गोयमा ! दो पक्वा पण्णता. तं ०-वहलपक्खे य सुक्रपक्खे य । एगमेगस्य णं मन्ते ! पश्चसस्य बद्ध दिवसा पण्णता ? गोयमा ! पण्णरस दिवसा पण्णता, तं -पिडियादिवसे बिड्यादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, एएसि णं भंते ! पण्णरसण्हं दिवसाणं कह णामधेखा पण्णता ? गोयमा ! पण्णरस णामधेजा पण्णता, तं े पुर्वंगे सिद्धमणीरमे य तत्तो मणोरहे चेव । जसमहे य जसघरे छहे सञ्वकामसमिद्धे ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभिसित्ते य सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे । अत्यसिद्धे अभिजाए अवसणे सर्यंजए चेव ॥ २ ॥ अभिविसे उक्समें दिवसाणं होंति णामाइं। एएसि णं अंते! पण्णरसण्हं दिवसाणं कह तिही पण्णता ? गोयमा ! पण्णरस तिही पण्णता, तै०-णंद भारे जए तुन्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी, पुणरवि गंदे भेरे जए तुन्छे पुण्णे पक्खस्स इसमी, पुणरवि गंदे में जए तुच्छे पुण्णे पक्सस्स पण्णरसी, एवं ते तिगुणाओ तिहीओ सन्वेसि दिवसा-णंति । एगमेगस्स णं भेते ! पक्खस्स कह राईओ पक्जनाओ ? गोयमा ! पक्जरस राईओ पण्णनाओ, तं०-पिडवाराई जाव पण्णरसीराई, एशास णं अंते ! पण्णरसण्डं

राईणं कड णामघेजा पण्णता ? गोयमा ! पण्णरस णामघेजा पण्णता, तंजहा---उत्तमा य सुणक्खता, एलावचा जसोहरा । सोमणसा चेव तहा, सिरिसंभूया य बोद्धव्या ॥ १ ॥ विजया य वेजयन्ति जयंति अपराजिया य इच्छा य । समाहारा चेव तहा तेया य तहा अईतेया ॥ २ ॥ देवाणंदा जिरई रयणीणं जामधिजाई । एयासि णं भंते ! पण्णरसण्हं राईणं ऋ तिही प० ? गोयमा ! पण्णरस तिही प०. तं॰-उम्मवई भोगवई जसबई सम्वसिद्धा सुदृणामा, पुणरवि उम्मवई भोगवई जसवई सन्वतिद्धा सहणामा, पुणरवि उम्मवई भोगवई जनवई सम्बसिद्धा सहणामा. एवं तिगुणा एए तिहीओ सन्वेसि राईणं, एगमेगस्स णं भंते । अहोरत्तस्स कइ मुहत्ता पण्णना १ गोयमा ! तीसं मुहुता प०, तं०-रुद्दे सेए मित्ते वाउ सुवीए तहेव अभिवंदे । माहिंद वलव बेंने बहुसके चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तद्वे य मावियप्पा वेसमणे वारुणे य आणंदे । विजए य वीससेणे पायावचे उवसमे य ॥ २ ॥ गंधव्य अभिगवेसे सय-बसहे आयवे य अममे य । अणवं भोमे वसहे मञ्बद्धे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ १५२ ॥ कह णं भनते ! करणा पण्णता ? गोयमा ! एकारस करणा पण्णता. तंजहा-ववं बालवं कोलवं श्रीविकोयणं गराइ विणिजं विद्वी सराणी चरुपयं णागं किंधुवधं, एएसि णं भन्ते ! एकारसण्हं करणाणं कड करणा चरा कड करणा थिरा पण्णता ? गोगमा! सत्त करणा चरा चतारि करणा थिरा पण्णता. तंजहा-ववं बालवं कोलवं बीविलोयणं गराइ वणिजं विद्वी. एए णं सत्त करणा चरा. चतारि करणा बिरा प॰, तं॰-सउणी चउप्पयं णागं किंशुरषं, एए णं चत्तारि करणा थिरा पण्णता. एए णं अन्ते ! चरा थिरा वा कया मत्रन्ति ? गोयमा ! सुक्रपक्खरस पडिवाए राष्ट्रो बने करणे मबह, बिह्याए दिना बालने करणे भवड़, राओ कोलने करणे भवड़, तहयाए दिवा शीविलोयणं करणं भवड़, राओ गराइकरणं भवड़, चउत्श्रीए दिवा बणिजं राओ विद्री पंचमीए दिवा बवं राओ बालवं छद्रीए दिवा कोलबं राओ बीविस्रोयणं सत्तामीए दिवा गराइ राओ विषकं अड्रमीए दिवा विद्वी राओ वर्ष णवमीए दिवा बालवं राओ कोलवं दसमीए दिवा बीविलोगणं राओ गराइ एकारसीए दिवा विभन्ने राओ विद्वी बारसीए दिवा बर्व राओ बालवं तेरसीए दिवा कोलवं राओ बीविलोयणं चउर्सीए दिवा गराइकरणं राओ विणजं पुण्णिमाए दिवा विद्वीकरणं राओ वर्षं करणं भवह, बहुलपक्कस्स परिवाए दिवा बाळवं राओ कोलवं बिङ्याए दिवा बीवित्प्रेयणं राख्ये गराइ तह्याए दिवा वणिजं राओ विद्वी चतत्वीए दिवा ववं राओ बालवं पंचमीए दिवा कोलवं राओ बीविलोगणं छद्रीए दिवा गराइ राओ वणिजं सत्तमीए दिवा बिद्धी राओ ववं सद्भीए दिवा बालवं राओ कोससं

णवमीए दिवा थीविलोयणं राओ गराइ दसमीए दिवा वणिजं राओ विट्ठी एकारसीए दिवा बवं राओ बालवं बारसीए दिवा कोलवं राओ श्रीविलोयणं तेरसीए दिवा गराइ राओ वणिजं चउहसीए दिवा विद्री राओ सउणी अमावासाए दिवा चउप्पयं राओ णागं सुक्रपक्सस्स पाडिवए दिवा किंथुरघं करणं भवइ ॥ १५३ ॥ किमाइया णं भन्ते ! संबच्छरा किमाइया अयणा किमाइया उक्त किमाइया मासा किमाइया पक्खा किमाइया अहोरता किमाइया मुद्रता किमाइया करणा किमाइया जक्खना पण्णना ? गोयमा ! चंदाइया संबच्छरा दक्त्विणाइया अयणा पाउसाइया उऊ सावणाइया मासा बहुलाइया पक्ता दिवसाइया अहोरता रोहाइया मुहुत्ता वालवाइया करणा अभिजि-याइया णक्खता पण्णता समणाउसो ! इति । पंचसंवच्छरिए णं भनते ! जुरो केवइया अयणा केवइया उऊ एवं मासा पक्खा अहोरत्ता केवइया मुहुत्ता पण्णता ? गोयमा ! पंचसंबच्छरिए णं जुगे दस अयणा तीसं उऊ सही मासा एगे वीसुत्तरे पक्खस्ए अद्वारसतीसा अहोरत्तसया चरुप्पणं महत्तसहस्सा णव सथा पण्णता॥१५४॥ गाहा-जोगा १ देवय २ तारम्ग ३ गोत्त ४ संठाण ५ चंदर्यिजोगा ६ । कुछ ७ पुष्णिम अमदस्सा य ८ सण्णिवाए ९ य णेया य १०॥ १॥ ऋइ ण भन्ते ! णक्खता प॰ ? गोयमा ! अद्भावीसं णक्खता प॰, तं॰-अभिई १ सवणो २ धणिद्रा ३ सयभिसया ४ पुन्वभद्द्या ५ उत्तरभद्द्या ६ रेवई ७ अस्सिणी ८ भरणी ६ कत्तिया १० रोहिणी ११ मियसिर १२ अहा १३ पुणव्वस् १४ पूसो १५ अस्सेना १६ मघा १७ पुरुवफागुणी १८ उत्तरफागुणी १९ हत्यो २० चित्ता २१ साई २२ विसाहा २३ अणुराहा २४ जेट्टा २५ मूलं २६ पुन्वासाढा २७ उत्तरासाढा २८ इति ॥ १५५ ॥ एएसि णं भन्ते ! अद्वावीसाए णक्खनाणं कयरे णक्बता जे णं सया चन्दस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति, कयरे णक्बता जे णं सवा चंदरस उत्तरेणं जोयं जोएंति, कयरे णक्खता जे णं चंदरस दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्वंपि जोगं जोएंति, कयरे णक्खला जे णं चंदस्स दाहिणेणंपि पमद्वंपि जोयं जोएंति. क्यरे जनखत्ता जे णं सया चन्दस्स पमइं जोयं जोएंति ? गोयमा ! एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं तत्थ णं जे ते णक्खता जे णं सया चंदरस दाहि-र्णणं जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा-संठाण १ अह २ पुस्तो ३ ऽतिरुस ४ हत्यो ५ तहेव मूलो य ६ । बाहिरको बाहिरमंडलस्स छन्पेत णक्सत्ता ॥ १ ॥ तत्य णं जे ते णक्खता जे णं सया चन्दस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ते णं बार्स, तं०-अभिङ्गं सवणो घणिद्वा सयमिसया पृथ्वभदवया उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी भरणी पुरुवा-फरगुणी उत्तराफरगुणी साई. तत्य णं जे ते जक्खता जे णं सया चन्दरस दाहिण-

ओवि उत्तरओवि पमद्देपि जोगं जोएंति ते णं सत्त, नंजहा-कत्तिया रोहिणी पुणव्वस् मधा चिना विसाहा अणुराहा, नत्य णं जे ते णक्खना जे णं सया चन्दस्स दाहिणओवि पमदंपि जोर्ग जोएंति ताओ णं दुवे आसाढाओ सव्वबाहिरए मंडले जोगं जोइंसु वा ३. तत्थ णं जे से णक्खते जे णं सया चन्दस्स पमदं० जोएइ सा णं एगा जेंद्रा इति ॥ १५६ ॥ एएसि णं भन्ते ! अद्वावीसाए णक्खताणं अभिष्ठं णक्खते किंदेवयाए पण्णते ? गोयमा ! बम्हदंबयाए पण्णते, सवणे णक्खते विण्ह-देवयाए पण्णते, भणिद्रा० वसुदेवयाए पण्णते, एएणं क्रमेणं णेयन्वा अणुपरिवादी इमाओ देवयाओ-बम्हा विष्हु वस् वरुणे अए अभिवद्वी पूरे आसे जमे अग्गी पया-वई सोमे रहे अदिई वहस्सई सप्पे पिऊ भगे अजम सविया तद्वा बाढ इंदग्गी मित्तो इंड जिरई आऊ विस्मा य, एवं जक्खताणं एसा परिवादी जेयव्या जाव उत्तरासाहा किंदेवया पण्णता ? गीयमा ! विस्मदेवया पण्णता ॥ १५७ ॥ एएसि णं भन्ते ! अद्वावीसाए णक्खताणं अभिईणक्खते कहतारे पण्णते ? गोयमा ! तितारे प॰, एवं णेयव्या जस्स जइयाओ ताराओ, इसं च तं तारमां-तिगतिगर्पच-गसयदुग द्गवत्तीसगतिगं तह तिगं च । छप्पंचगतिगएक्षगपंचगतिग छक्षां चंव ॥ १ ॥ सत्तगतुगतुग पंचग एक्क्सग पंच चउतिगं चेव । एक्सरसग चउक् चउक्गं चेब तारमं ॥ २ ॥ ति ॥ १५८ ॥ एएसि णं भन्ते ! अङ्गावीसाए णक्खनाणं अभिई णक्खते किंगोत्ते प० ? गोयमा ! मोम्गलायणसगोत्ते . गाहा-मोग्गलायण १ संखायणे २ य तह अग्गभाव ३ कण्णिक्षे ४ । तत्तो य जाउकण्णे ५ धणंजए ६ चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ पुरसायणे ७ य अस्सायणे य ८ मग्गवेसे ९ य अग्गिवेसे १० य । गोयम ११ भारहाए १२ लोहिचे १३ चेव वासिट्टे १४॥ २॥ ओम-जायण १५ मंडव्वायणे १६ य पिंगायणे १७ य गोवहे १८। कासव १९ कोसिय २० दब्सा २१ य चामरच्छाय २२ सुंगा य २३ ॥ ३ ॥ गोवहायण २४ तेनि-च्छायणे २५ य कवायणे २६ हवइ मूळे। तत्तो य विवसयायण २७ वग्यावचे य गोत्ताहं २८ ॥ ४॥ एएसि णं भन्ते ! अड्डावीसाए णक्खताणं अभिईणक्खते किसंठिए पण्णते ? गोयमा ! गोसीसावलिसंठिए प॰, गाहा-गोसीसावलि १ काहार २ सउणि ३ पुष्फोवयार ४ बावी य ५-६। णावा ७ आसक्खंघग ८ भग ९ खुरघरए १० य सगड्रद्धी ११ ॥ १ ॥ मिगसीसाबलि १२ रहिरबिंदु १३ तुह्न १४ वदमाणग १५ पडामा १६। पामारे १७ पल्डियंके १८-१९ हत्ये २० महफूकए २१ चेव ॥ २ ॥ खीळग २२ दामणि २३ एगावली २४ य गयदंत २५ निच्छुअयके ब २६। गयविक्रमे २७ य तत्ती सीडिणसीही य २८ संठाणा ॥ ३ ॥ १५९ ॥

एएसि णं भन्ते ! अड्डावीसाए णक्खताणं अभिईणक्खते कड्सुहुते चन्देण सर्वि जोगं जोएड ? गोयमा ! णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तिष्टुमाए मुहुत्तस्स चन्देण सिंद्ध जोगं जोएइ, एवं इमाहिं गाहाहिं अणुगन्तव्वं-अभिइस्स चन्दजोगो सत्तद्विंखंडिओ अहोरत्तो । ते हुंति णव मुहुत्ता सत्तावीसं करुगओ य ॥ १ ॥ सयभिसया भरणीओ अहा अस्सेस साइ जेट्टा य । एए छण्णक्सता पण्णरसमुहत्तसंजोगा ॥ २ ॥ तिण्णेव उत्तराई पुगव्वसू रोहिणी विसाहा य । एए छण्णक्सत्ता पणयालसुहुत्तसंजोगा ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खता पण्णरसवि हुंति तीसइमुहुत्ता । चन्दंमि एस जोगो णक्तताणं मुणेयव्वो ॥ ४ ॥ एएि णं भन्ते । अङ्घावीसाए णक्तताणं अभिईण-क्खते कह अहोरते स्रेण सिंह जोगं जोएइ ? गोयमा ! जनारि अहोरते छन मुहुते सूरेण सिंद जोगं जोएइ, एवं इमाहिं गाहाहिं णेयव्वं-अभिई छच मुहुते बतारि य केवले अहोरते । सूरेण समं गच्छाइ एनो सेसाण वोच्छामि ॥ १ ॥ सय-मिसया भरणीओ अहा अस्सेस साइ जेड्डा य । वसंति सुहुत्ते इक्रवीस छन्नेवऽहोरते ॥ २ ॥ तिण्णेव उत्तराई पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य । वर्षात सहते तिण्णि चेव वीसं अहोरते ॥ ३ ॥ अवसेसा णक्खता फणरसवि स्रसहगया जंति । बारस चेव मुहुते तेरस य समे अहोरते ॥ ४ ॥ १६० ॥ वह णं मन्ते ! कुला कइ उवकुला कइ कुलोवकुला पण्णता ? गोयमा ! बारस कुला बारम उवकुला चतारि कुलोबकुला पण्णता, बारस कुला, तंजहा-धणिद्वाकुलं १ उत्तरभद-वयाकुलं ६ अस्सिणीकुलं ३ कत्तियाकुलं ४ मिगसिर्कुलं ५ पुस्सी कुलं ६ मघा-कुळं ७ उत्तरफगुणीकुळं ८ चिताकुळं ९ विसाहाकुळं १० मूळो कुळं ११ उत्तरा-साढाकुर्ल १२ । मासाणं परिणामा होति कुला उवकुला उ हेब्रिमगा । होति पुण कुलोबकुला अमीइसय अह अणुराहा ॥ १ ॥ बारस उवकुला, तं०-सवणी उद-कुलं १ पुम्यभद्दया जवकुलं २ रेवई उवकुलं ३ भरणी उवकुलं ४ रोहिणी उवकुलं ५ पुणव्यस् उवकुलं ६ अस्सेसा उवकुलं ७ पुव्यपप्रगुणी उवकुलं ८ इत्यो उवकुलं ९ साई उबकुळं १० जेट्टा उबकुळं ११ पुरुवासाढा उबकुळं १२ । चतारि कुलोब-कुला, तंजहा-अभिद्दे कुलोबकुला १ सयभिसया कुलोबकुला २ अहा कुलोबकुला ३ अणुराहा कुलोबकुला ४ । बद्ध णं भनते । पुण्णिमाओ बद्ध अमावासाओ पण्ण-त्ताओं ? गोयमा ! बारस पुण्णिमाओ बारस व्यमावासाओं प॰, तं०-साविद्धी पोष्टवई आसोई कत्तिनी मन्मसिरी पोसी माही कम्गुणी चेत्ती वहसाही जेड्डामूखी आसाडी, साविष्टिणं मन्ते । प्रिणमासि वह णक्सता जोगं जोएंति ? गोयमा । तिष्णि णक्सता जोगं जोएंति, तं०-अभिष्ठं सक्यो धणिहा । पोडवङ्गणं मंते !

पुण्णमं कः णक्सता जोगं जोएंति ! गोयमा ! तिण्णि णक्सता॰ जोएंति, तं०-सयभिसया पुष्वमद्वया उत्तरभद्दया, अस्सोइण्णं भंते ! पुण्णिमं कइ णक्खता जोगं जोएंति ? गोयमा ! दो ... जोएंति, तं०-रेवई अस्सिणी य, कत्तिइण्णं दो-भरणी कत्तिया य, मग्गसिरिणां दो-रोहिणी मग्गसिरं च, पोसिं णं तिण्णि-अद्दा पुणव्यस् पुस्सो, माधिण्णं दो-अस्सेसा मघा य, फागुणिं णं दो-पुट्वाफागुणी य उत्तरा-फरगुणी य, चेतिष्णं दो-इत्थो चिता य, विसाहिष्णं दो-साई विसाहा य, जेड्डा-मृलिण्णं तिण्णि-अणुराहा जेट्टा मृलो, आसाहिण्णं दो-पुव्वासाहा उत्तरासाहा । साविद्विणां भन्ते ! पुण्णिमं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ? गोयमा ! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे धणिद्वा णक्कते जोएइ उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्कते जोएइ कुलोवकुलं जोए-माणे अभिई णक्खते जोएइ, साविद्विणां पुष्णिमासि कुलं वा जोएइ जाव कुली-बकुलं वा जोएइ, कुळेण वा जुता उवकुलेण वा जुता कुलीवकुलेण वा जुता साविद्वी पुण्णिमा जुत्तनि वत्तव्वं सिया, पोट्टवइण्णं मंते ! पुण्णिमं कि कुलं जोएइ ३ पुच्छा, गोयमा ! कुलं वा॰ उवकुलं वा॰ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाणे उत्तरमह्वया णक्खते जोएइ उ० पुरुवमह्वया० कुलोव० सयमिसया णक्खते जोएइ, पोष्टवहण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुलं वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोड्डवई पुण्णमासी जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया, अस्सोइण्णं भन्ते ! पुच्छा, गो॰ ! कुलं वा जोएइ उबकुलं वा जोएइ णो लब्सइ कुळोबकुलं, कुलं जोएमाणे अस्सिणीणनखते जोएइ उबकुल जोएमाणे रेब्रणनखते जीएइ, अस्मोइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जीएइ उवकुलं वा जीएइ कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुता अस्सोई पुण्णिमा जुत्तति वत्तव्वं सिया, कतिक्णां भंते ! पुण्णिमं किं कुलं "पुच्छा, गोबमा! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ णो कुलोक्कुलं जोएइ, कुलं जोएमाणे कत्तियाणक्खते जोएइ उव० मरणी०, कत्तिहण्णे आब बत्तव्वं॰, ममासिरिणां भंते ! पुष्णिमं किं कुलं तं चेव दो जोएइ की मवइ कुलोबकुलं, कुलं जोएमाणे मस्मसिरणक्खते जोएइ उ० रोहिणी०, समासिरिण्णं पुण्णिमं जाव बत्तव्यं सिया इति । एवं सेसियाओऽवि जाव आसार्डि, पोसिं जेट्टा-मूर्कि च कुलं वा उ॰ कुलोवकुलं वा, सेसियाणं कुलं वा उनकुलं वा कुलोवकुलं ज मण्णइ । साविद्विण्णं भेते ! अमावासं कह णक्खता जोएंति ! गोयमा ! दो णक्सता जीएंति, तं - अस्सेसा व महा व, पोड्डवइण्णं भंते ! अमावासं कह णक्सता जोएंति १ गोवमा । दो "पुन्वाफागुजी उत्तराफागुजी म, अस्तोइज्जं संते ।"

दो-हत्थे चिता य, कत्तिइण्णं दो-साई विसाहा य, मग्गसिरिण्णं तिण्णि-अणुराहा जेट्टा मूलो य, पोसिण्णं दो-पुग्वासाढा उत्तरासाढा, माहिण्णं तिण्णि-अभिई मवणो धणिहा, फरगुणिं णं तिष्णि-सयभिसया पुट्यभद्दवया उत्तरभद्दवया, चेत्तिष्णं दो-रेवई अस्सिणी य, वइसाहिण्णं दो-भरणी कत्तिया य, जेट्रामृहिण्णं दो-रोहिणी मग्गसिरं च, आसाहिण्णं तिण्णि-अहा पुणव्यम् पुस्सो इति । साविष्टिण्णं भंते ! अमावासं कि कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकलं जोएट ? गोयमा ! कुलं वा जोए३ उपकुलं वा जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महाणक्सने जोएइ उवकुलं जोएमाणे अस्सेसाणक्खते जोएइ, साविद्विण्णं अमावासं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ, कुळेण वा जुत्ता उवकुळेण वा जुत्ता साविद्वी अमावामा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया, पोद्रवद्रण्णं भंते ! अभावासं तं चेव दो जोएड कुलं वा जोएड उवकुलं०, कुछं जोएमाणे उत्तराफरगुणी णक्खते जोएइ उब० पुरुवाफरगुणी०, पोट्टबङ्ण्णं असा-वासं जान वनव्वं सिया, मग्गसिरिण्णं तं चेव कुळं मूछे णक्खने जोएइ उ० जेट्टा० कुलोबकुलं अणुराहा जाव जुत्तत्ति बत्तव्वं सिया, एवं माहीए फरगुणीए आसाढीए कुलं वा उबकुलं वा कुलोवकुलं वा, अवसेसियाणं कुलं वा उबकुलं वा जोएइ॥ जया णं भन्ते ! साविद्वी पुण्णिमा भवह तया णं माही अमावामा भवह जया णं माही पुण्णिमा भवड तया णं साविद्वी अमावामा भवइ १ हंता गोयमा ! जया णं साविद्वी तं चेव वत्तव्वं, जया णं भनते ! पोट्टवई पुण्णिमा भवद तया णं फरगुणी अमावासा भवड जया णं फरगुणी पुण्णिमा भवड तया णं पोद्धवई अमा-वासा भवइ ? हंता गोयमा । तं चेव, एवं एएणं अभिलावेणं इमाओ पुण्णिमाओ अमात्रासाओं णेयव्वाओ-अस्सिणी पुण्णिमा चेत्ती अमावासा कत्तिगी पुण्णिमा वह-साही अमावासा मगगतिरी पुण्णिमा जेद्वामुली अमावासा पोसी पुण्णिमा आसाढी अमावासा ॥ १६१ ॥ वासाणं मंते ! पडमं मासं कड णक्खला गेंति ? गोयमा ! चतारि णक्खता णेति, तं०-उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिहा, उत्तरासाढा चउद्दस अहोरते णेड्, अभिई सत्त अहोरते णेड्, सत्रणो अह्नुडहोरते णेड्, घणिद्वा एगं अहोरत्तं **षेइ, तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए स्**रिए अणुपरिय**ट्टर,** तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे दो पया चनारि य अंगुला पोरिसी भवइ । वासाणं भन्ते ! दोचं मासं वह णक्खता जैति ? गोयमा ! चतारि •, तं • - धणिट्टा सयभिसया पुन्नाभद्दया उत्तरामद्वया, भणिद्वा णं चलद्दस अहोरते णेइ, सयभिसया सत्त अहोरते णेइ, पुट्या-भर्वया अडु अहोरते णेइ, उत्तराभरवया एगं०, तंसि च णं मासंसि अडुंगुरूपोरिसीए छायाए सुरिए अणुपरियद्द, तस्स णं मासस्स चरिसे दिवसे दो पया अह य अंगुला

पोरिसी भवड । वासाणं भनते ! तइयं मासं वह णक्खना णेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खना णेति, तं०-उत्तरभद्दवया रेवई अस्तिणी, उत्तरभद्दवया चउद्दस राइंदिए णेइ, रेवई फणरम० अस्सिणी एगं०, तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सरिए अणुपरियट्ड, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे छेहह्नाइं तिण्णि पयाई पोरिसी भवड़ । वामाणं भनते ! चउन्यं मासं कड णक्खता णेति ? गोयमा ! तिण्णि॰, तं०-अस्मिणी भरणी कत्तिया, अस्मिणी चउहस० भरणी पृष्णरस० कत्तिया एगं०, तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सरिए अणुपरियद्ध, तस्स णं मासस्य चरिमे दिवसे ति गिण पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ । हेमन्ताणं भनते । पहमं मासं बद्ध णक्खना गिति ? गोयमा ! तिण्णि ०, तं ०-ऋतिया रोहिणी मिगसिरं, कितया चडहस ० रोहिणी पण्णरस॰ मिगसिरं एगं अहोरतं णेइ, तंति च णं मासंसि वीसंगुळपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्दइ, तस्य णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसींस तिण्णि पयाई अह य अंगुलाई पोरिसी भवड़, हेमंताणं भनते ! दोचं मासं कड णक्स्वता जैति ? गोयमा ! चतारि णक्खता जैति, तंजहा-मिगसिरं अहा पुणव्यस् पुरसो. मिगसिरं चउद्दस राइंदियाई गेइ, अद्दा अट्ठ० गेइ, पुणव्यस् सत्त राइंदियाइं॰, पुस्सो एगं राइंदियं णेड, तया णं चडव्वीसंगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृह, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहद्वाई चतारि पयाई पोरिसी भवइ, हेमन्नाणं भंते ! तचं मासं कह णक्खता णेति ! गोयमा! तिण्णि॰, तं०-पुस्सो असिलेसा महा, पुस्सो चोह्स राईदियाई णेइ, असिलेसा पण्णरस॰ महा एकं॰, तया णं वीसंगुरुपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वइ, तस्स णं मासरस जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिष्णि पयाई अङ्ग्रेलाई पोरिसी भवड़ । हेमंताणं भनते ! चउरथं मासं कड पक्खता पेंति ? गोयमा ! तिण्णि ण०. तं०-महा पुञ्चाफागुणी उत्तराफागुणी, महा चउइस राइंदियाइं णेइ, पुञ्चाफागुणी पण्णरस राइंदियाइं णेइ, उत्तराफागुणी एगं राइंदियं णेइ, तया णं सोलसंगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियदृद्, तस्त णं मासस्त जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिष्णि पयाई चत्तारि अंगुलाई पोरिसी भवड । गिम्हाणं भनते ! पढमं मासं कइ णक्खता जैति ? गोयमा ! तिष्णि णक्खता जैति, तं०-उत्तराफग्गुणी हत्यो चित्ता. उत्तराफगुणी चउद्दस राइंदियाई णेइ, हत्यो पण्णरस राइंदियाई णेइ, चित्ता एगं राइंदियं णेइ, तया णं दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्वइ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि छेहहाई तिष्णि प्याई पोरिसी भवइ, निम्हाणं भन्ते ! दोचं मासं कड णक्खता णेति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खता

णेति. तं०-चित्ता साई विसाहा, चित्ता चउइस राईदियाई णेइ, साई पण्णरस राइंदि-याई णेइ. विसाहा एगं राइंदियं णेइ. तथा णं अहंगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणु-परियद्ध, तस्स णं मासस्स जे से चिरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि दो पयाई अद्भेगुलाई पोरिसी भवड । गिम्हाणं भन्ते । तत्रं मासं कह णक्खता गेंति ? गोयमा ! चतारि णक्सता गेंति. तंजहा-विसाहाऽणुराहा जेट्टा मूलो, विसाहा चउइस राइंदियाई णेइ. अणुराहा अट्ट राईदियाई णेइ, जेट्टा सत्त राईदियाई णेइ, मूलो एकं राइंदियं . तया णं चटरंगुरुपोरिसीए छायाए स्तिए अणुपरियद्भ, तस्स णं मासस्स जे से चरिमे दिवसे तंसि च ण दिवसंसि दो पयाई चतारि य अंगुलाई पोरिसी भवइ । गिम्हाणं भनते ! चउत्थं सासं कड् णक्सत्ता गेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खता गेंति, तं - मूलो पुन्वासाहा उत्तरासाहा, मूलो चउद्दस राइंदियाइं णेइ. पुन्वा-साढा पण्णरस राइंदियाइं णेड, उत्तरासाढा एगं राइंदियं णेइ, तमा णं बद्दाए समचउर-ससंठाणसंठियाए णम्गोहपरिमण्डलाए सकायमण्रंगियाए छायाए सरिए अण्परियहङ् . तस्स णं मायस्य जे से चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि छेडड्राई दो पयाई पोरिसी भवइ । एएसि णं पुञ्चवण्णियाणं प्रयाणं इमा संगहणी, तं०-जोगो देवयतारग्ग-गोत्तसंठाण चन्दरविज्ञोगो। कुलपुण्णिमअमवस्सा णेया छाया य वोद्धव्या ॥१॥१६२॥ गाहा-हिद्रं ससिपरिवारो मन्दर्आहा तहेव लोगंते । धर्णितलाओं अबाहा अंतो बाहिं च उडूमहे ॥ १ ॥ संठाणं च पमाणं वहंति सीहगई इड्रिमन्ता य । तारंतरञ्जनमहिसी तुडिय पहु ठिई य अप्पबहु ॥ २ ॥ अत्थि णं भन्ते ! चंदिमसरियाणं हिद्विपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समेवि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि उप्पिपि ताराख्वा अणुंपि तुह्रावि ? हंता गोयमा ! तं चेव उचारेयव्वं, से केणहेणं भन्ते ! एवं वुचड्--अत्य णं॰ जहा जहा णं तेसि देवाणं तवणिय-मबंगचेराई ऊसियाई मबन्ति तहा तहा णं तेसि णं देवाणं एवं पण्णायए. तंत्रहा-अणुत्ते वा तुल्ले वा, जहा जहा णं तेसि देवाणं तवणियमबंभचेराइं णो कसियाई भवंति तहा तहा णं तेमि देवाणं एवं णो पण्णायए. तं०-अण्ते वा तक्को वा ॥ १६३ ॥ एगमेगस्स णं भन्ते ! चन्दस्स केवस्या महन्गहा परिवारी केवस्या णक्खता परिवारो केबह्याओ तारागणकोडाकोबीओ पण्णताओ ? गोममा ! अद्वासीड-महग्गहा परिवारो अद्वाबीसं जक्खता परिवारो छावद्विसहस्साई जब सया पज्जतरा तारागणकोडाकोडीओ पण्णताओ ॥ १६४॥ सन्दरस्य णं मन्ते । पञ्चयस्य केवड-याए अबाहाए जोइसं चारं चरड ? गोयमा ! इकारसहिं इक्वीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसं चारं चरह. लोगंताओ थं मन्ते ! केवडवाए अबाहाए जोडसे

पण्णते ? गोयमा ! एकारस एकारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णते । धरणितलाओ णं मनते ! • सत्तिहैं णउएहिं जोयणसएहिं जोइसे चारं चरइति, एवं स्रविमाणे अट्टाई सएहिं, चंदविमाणे अट्टाई असीएहिं, उवरिक्षे तारारूवे णवहिं जोग्रणसएहिं चारं चरइ। जोइसस्स णं भन्ते ! हेट्ठिक्राओ तलाओ केवइयाए अबाहाए स्रविमाणे चारं चर्ड ? गोयमा ! इसिंह जोयणेहि अबाहाए चारं चरड़, एवं चन्दविमाणे णउईए जोयणेहिं चारं चरइ, उबिरिक्षे ताराख्वे दश्चत्तरे जोयणसए चारं चरह, सुरविमाणाओ चन्दविमाणे असीईए जोयणेहि चारं चरह, सुरविमा-णाओ जोयणसए उनरिष्टे नाराह्वे चारं चरइ, चन्दविमाणाओ वीसाए जोयणेहिं उबरिक्षे णं ताराक्ष्वे चारं चरइ ॥ १६५ ॥ जम्ब्रहीवे णं मंते ! धीवे अट्टावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खते सव्वब्भंतरिक्षं चारं चरइ ? कयरे णक्खते सव्वबाहिरं चारं चरइ ? कयरे० सव्वहिद्धितं चारं चरइ ? कथरे० सव्वउविदेशं चारं चरइ ?, गोयमा ! अभिई णक्खते सव्बब्धंतरं चारं चर्ड, मुलो सव्बबाहिरं चारं चर्ड, भरणी सन्वहिद्विद्धगं । साई सञ्ज्ञबरिद्धगं चारं चरइ । चन्दविमाणे णं मंते ! किसंठिए पण्णते ? गोयमा! अद्भावद्वसंठाणसंठिए सन्वकालियामए अञ्चरगयम्सिए एवं सन्वाई णेयव्याई, चन्दविमाणे णं भन्ते ! केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं वाहहेलं ? गो॰ !-छप्पणं खलु भाए विच्छिणं चन्दमंडलं होइ । अद्वावीसं भाए बाहुहं तस्स बोद्धब्वं ॥ १ ॥ अष्टयालीसं माए विच्छिण्णं सूरमण्डलं होइ । चउवीसं खलु भाए बाह्हं तस्स बोद्धव्यं ॥ २ ॥ दो कोसे य गहाणं णक्खताणं त हवड तस्सद्धं । तस्सद्धं ताराणं तस्सद्धं चेव बाह्रष्टं ॥ ३ ॥ १६६ ॥ चन्दविमाणं णं भन्ते ! कइ देवसाइस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! सोलस देवसाइस्सीओ परिवहंति । चन्दविमाणस्स णं पुरत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पमाणं संखतलविमलणिम्मल-दहिषणगोसीरफेणरययणिगरप्पगासाणं चिरलद्वपउद्ववद्वपीवरस्रसिल्द्वविसिद्वतिकस्व-दाढाविष्ठंनियमुहाण रत्तुप्पलपत्तमस्यस्मालतास्त्रजीद्दाणं महुगुल्यिपिगलक्काणं पीवरवरोरुपष्डिपुण्णविजल्खांभाणं मिलविसयग्रहमलक्खणपसत्यवरवण्णकेसरसङोव-सोहियाणं असियद्यणमियसुजायभाषाक्रियक्षेमूलाणं वहरामयणक्साणं वहरामय-दाढाणं वहरामयदन्ताणं तवधिष्वजीहाणं तवधिष्वतालुयाणं तवधिष्वजीत्तगसु-जोइयाणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगईणं अमिय-बलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं मह्या अप्पोडियसीहणायबोलकलकलरवेणं महरेणं मणहरेणं पूरेता अंबरं दिसाओं य सोमयंता चत्तारे देवसाहस्सीओ सीहरूव-धारीणं प्रतिविभक्तं बाहं परिवहंति । चंहविमाणस्स णं दाहिणेणं सेवाणं समाणं

सुप्पभाणं संखतलविमलणिम्मलदिह्यणगोखीरफेणर्ययणिगरप्पगासाणं वहराम-यकुंभज्यलमुद्रियपीवरवरवहरसोंडवट्टियदितसुरत्तपरमप्पगासाणं अन्भुण्णयमुहाणं तवणिज्ञविसालकण्णचंचलचलंतविमलुज्जलाणं महुवण्णभिसंतणिद्धपत्तलनिम्मलतिव-ण्णमणिर्यणलोयणाणं अञ्भुरगयमञ्जमिक्रयाधवलसरिससंठियणिव्यणदृहकसिणपा-लियामयसुजायदन्तमुसलोवसोभियाणं कंचणकोसीपविद्वदन्तभगविमलमणिरयणरुइल-पेरंतिचनस्वगविराह्याणं तवणिज्जविमालतिलगप्पमुहपरिमण्डियाणं नाणामणिर्यण-मुद्धगेविज्ञवद्धगलयवरभूसणाणं वेरुलियविचित्तदण्डणिम्मलवइरामयनिक्खलद्वअंदुस-कुंभजुयलयंतरोडियाणं तदाणिज्ञसुवद्धकच्छद्प्पियबलुद्धराणं विमलघणमण्डलवडराम-यलालालियतालणाणं णाणामणिग्यणघण्टपासगर्ययामयबद्धलज्जुलंबियघंटाजुय-लमहर्यरमणहराणं अल्लीणपमाणजुनवद्दियसुजायलक्खणपसत्थरमणिज्जवालगनपरि-पुंछणाणं उविचयपिदपुण्णकुम्मचलणलह् विक्रमाणं अंकमयणक्लाणं नवणिजजीहाणं तवणिजतालुयाणं तवणिजजोत्तगसुजोङ्याणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसकारपरद्माणं महया गंभीरगुलुगुलाइय-रवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिनाओं य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरुवयारीणं देवाणं दक्क्तिणळं वाहं परिवहंति । चन्दविमाणस्स णं पश्चित्यमेणं सेयाणं मुभगाणं मुप्पभाणं चलचवलक्कृहसालीणं घणणिचियसुबद्धलक्खणुण्ययद्दे-सियाणयवसभोद्वाणं चंकमियलिक्यपुलियचलचवत्माव्वियगईणं सण्णयपासाणं संगय-पासाणं सुजायपासाणं पीनरवृद्धियसुसंठियक्कीणं ओलंत्रपलंबलक्खणपमाणजुत्तर-मणिजनालगण्डाणं समखुरवालिघाणाणं सर्मालहियसिंगतिक्खरगसंगयाणं तणुपुह्म-सुजायणिद्धलोमच्छविघराणं उवन्वियमंसलविसालप<mark>डिपुण्णसंघपएससुंदराणं वेरलिय</mark>-भिसंतकडक्समुणिरिक्सणाणं जुत्तपमाणपहाणस्रक्सणपसत्थरमणिजगगगरगह्नसोभि-याणं घरघरगमुसह्बद्धकंठपरिमण्डियाणं जाजामणिकजगर्यणविष्टयावेगच्छिमसुक्य-मारियाणं वरवण्टागलयमालुज्जलसिरिधराणं पउमुप्पलसगलसुरभिमालाविभृसियाणं वइरखुराणं विविद्द्विक्खुराणं फालियामयदन्ताणं तवणिजजीहाणं तवणिजतालुयाणं तवणिज्ञजोत्तगयुजोह्याणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगईणं अमियबलवीरिश्पुरिसक्कारपरक्रमाणं महया गजिबगंभीररवेणं महुरेणं मणहरेणं पूर्रेता अंबरं दिमाओ य सोमयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीणं देवाणं पचित्य-मिल्लं बाह्रं परिवर्हति । चन्दविमाणस्स णं उत्तरेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पमाणं तरमङ्कि-हायणाणं हरिमेलमउलमक्षियच्छाणं चंचुवियलिखयुलियचलचवलचंचलमङ्गणं लंध-णवम्गणधावणघोरणतिवहजङ्गसिविखयगर्षणं लर्ळतलामगलकायवर्म्सणाणं सण्य-

यपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं पीवरवहियससंठियकडीणं ओलंबपलंबलक्ख-णपम।णजुत्तरमणिज्ञवालपुच्छाणं तणुसुहुमसुजायणिद्धलोमच्छविहराणं मिउविसयसुहु-मलक्खणपसत्यविच्छिण्णकेसर्वालिहराणं ललंतथासगललाडवरभूसणाणं मुहमण्डग-ओचूलगचामरयासगपरिमण्डियकडीणं तवणिजलुराणं तवणिजजीहाणं नवणिजतालु-याणं तवणिज्जजोत्तगमुजोड्याणं कामगमाणं जाव मणोरमाणं अमियगईणं अमिय-बलवीरियपुरिसक्कारपरक्रमाणं महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ य मोभयंना चनारि देवनाहस्सीओ हयस्वधारीणं देवाणं उनिरहं बाहं परिवहंति । गाहा-सोलसदेवमहस्सा हवंति चंदेसु चेव स्रेप्त । अट्रेव सह-स्साई एकेवं:मी गहविमाणे ॥ १ ॥ चतारि सहस्साई णक्खतांमि य हवंति इकिके । दो चेव सहस्ताई तारा स्वेक्समेकंमि ॥ २ ॥ एवं सुरविमाणाणं आव तारा स्वविमा-णाणं, णवरं एस देवसंघाएति ॥ १६७ ॥ एएसि णं भन्ते ! चंदिमसृरियगहगण-णक्खत्तनाराख्वाणं कयरे सव्वसिग्धगई कयरे सव्वसिग्धनराए चेय ! गोयमा ! चन्देहिंतो सूरा सिग्धगई, स्रेहिंतो गहा सिग्धगई, गहेहिंतो णक्खता सिग्धगई, णक्खतेहिंतो ताराख्वा सिग्धगई, सञ्चप्पगई चंदा, सञ्चसिग्धगई ताराख्वा इति ॥१६८॥ एएसि णं भनते ! चंदिमस्रियगहगणणक्सत्तताराख्वाणं कयरे सव्वमहिद्धिया कयरे सन्वप्पिष्ट्या ? गो० ! ताराहवेहितो णक्खता महिष्ट्रिया, णक्खतेहितो गहा महिब्बिया, गहेहितो स्रिया महिब्बिया, स्रेहितो चन्दा महिब्बिया, सव्विपिब्बिया ताराख्वा, सव्वमहिश्विया चन्दा ॥ १६९ ॥ जम्बुद्दीवे णं भनते । दीवे ताराख्वस्य य तारारुक्त्स य केवइए अवाहाए अंतरे पण्णते ? गोयमा ! दुविहे प०, तं०-वाघाइए य निव्वाघाइए य. निव्वाघाइए जहण्णेणं पंचधणुसयाई उद्योसेणं दो गाउयाई. बाघाइए जहण्णेणं दोण्णि छावट्टे जोयणसए उद्योसेणं बारस जोयणसहस्साई दोष्णि य बाबाछे जोवणसए ताराह्रवस्स य २ अबाह्यए अंतरे पण्णते ॥ १७० ॥ चन्दस्स णं मंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अगगमिहसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चतारि अगमहिसीओ पणताओ, तं०-बन्दप्पमा दोसिणामा अधिमाली पर्भकरा. तओ णं एगमेगाए देवीए चतारि २ देवीसहस्साई परिवारो पण्णतो, पमू णं ताओ एगमेगा देवी क्षत्रं देवीसहस्सं विउव्यक्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा, सेतं तुष्डिए। पह णं अंते ! चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडेंसए विमाणे चन्दाए रायहाणीए सभाए छहम्माए तुडिएणं सदि महया हयणप्टगीय-वाइय जाव दिव्वाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे. पभू र्ण चंदे…सभाए सहस्माए चवहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं जाव दिव्वाइं भोग-

भोगाई भुंजमाणे विहिरित्तए फेवलं परियारिष्ट्रीए, णो चेव णं मेहुणवित्तयं । विजया १ वेजयंती २ जयंती ३ अपराजिया ४ सन्वेसि गहाईणं एयाओ अग्गमहिसीओ. छावत्तरस्तिव गहसयस्य एयाओ अगगमिहसीओ बत्तव्वाओ, इमाहि गाहाहिति-इंगालए १ वियालए २ लोहियंके ३ सणिच्छरे चेव ४ । आहणिए ५ पाहणिए ६ कणगसणामा य पंचेव १९॥ १॥ सोमे १२ महिए १३ आसासणे य १४ कजी-वए १५ य कब्बुरए १६। अयकरए १७ दुंदुभए संखराणामेवि तिण्णेव २०॥ २॥ एवं भाणियव्यं जाव भावकेउस्स अगगमहिसीओति ॥ १०१ ॥ गाहा-बम्हा विष्ह् य वम् वरुणे अय वुष्ट्री पुस आस जमे । अभिग पयावइ सोमे रुद्दे अदिई वहस्सई सप्पे ॥ १ ॥ पिउ भगअजमसर्विया तद्वा बाऊ तहेव इंदरगी । मिने इंदे णिएई आऊ विस्सा य वोद्धव्वे ॥ २ ॥ १७२ ॥ चंदविमाणे णं भंते ! देत्राणं केवडयं कालं ठिई पण्णता ? गो०! जहण्णेणं चउमागपितओवमं उक्कोसेणं पितओवमं बाससयसहस्समब्भिहियं, चंदविमाणे णं० देवीणं · · जहण्णेणं चडभागपिलओवमं उ० अद्भुपतिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिमन्महियं, सुर्विमाणे देवाणं ज० चड-ब्भागपरिओवमं उद्योसेणं परिओवमं वासमहस्समन्भहियं, स्र्विमाणे देवीणं जहण्णेणं चरञ्भागपलिओवमं राष्ट्रोसेणं अद्भपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अन्महियं, गहविसाणे देवाणं जहण्णेणं चउन्भागपितओवमं उद्घोरेणं पित्रओ-बमं, गहविमाण देवीणं जहण्णेणं चडव्भागपलिसोवमं उक्कांसेणं अद्भपलिओ-वमं, णक्खत्तविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउन्भागपित्ओवमं उद्योसेणं श्रद्धपित्ञो-वसं, णक्खत्तविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउन्मागपिकश्रोवसं उद्योसेणं साहियं च उन्भागपिल ओवमं, ताराविमाणे देवाणं जहण्णेणं अहुभागपिल ओवमं उन्नोसेणं चउच्मागपितओवमं, ताराविमाणदेवीणं जहण्णेणं अद्भागपितओवमं उद्दोसेणं साइरेगं अद्वभागपितओवमं ॥ १७३ ॥ एएसि णं भंते ! चंदिमस्रियगहगणणक्खल-तारास्वाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गो॰! चंदिमस्रिया द्वे तुल्ला सञ्बत्योवा, णक्खता संखेखगुणा, गद्दा संखेखगुणा, तारा-रूवा संखेजगुणा इति ॥ १७४ ॥ जम्ब्रुहीचे णं भन्ते ! दीवे जहुण्णपए वा उद्योसपए वा केवड्या तित्थयरा सव्वागेणं प० ? गो० ! जहण्णपए चतारि उद्यो-सपए चोत्तीसं तित्यगरा सञ्चरगेणं पण्णता । जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहण्णपए वा उक्कोसपए वा केवड्या चक्कवटी सञ्चर्मणं ५० ? गो० ! जहण्णपए चतारि उकोसपए तीसं चक्कबद्दी सञ्चमोणं पण्णता इति. बलदेवा तत्तिया चेव जत्तिया चक्रवटी, वासुदेवावि तत्तिया चेवति । जम्ब्रहीवे णं भेते ! शीवे केवह्या णिहिरयणा

सब्बर्गणं प॰ ? गो॰ ! तिष्णि छल्लारा णिहिर्यणस्या सब्बर्गणं प०. जम्ब्रहीवे णं मंते ! दीवे केवड्या णिहिरयणसया परिमोगताए हव्यमागच्छेति ? गो० ! जहण्णपए छत्तीसं उद्घोसपए दोण्णि सत्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्यमा-गच्छंति, जम्बुद्दीवे० कंबद्या पंचिदियर्यणसया सव्यक्तेणं पण्णाता ? गो० ! दो दमुत्तरा पंचिदियरयणमया सव्वागेणं पणाता, जम्बुद्दीवे० जद्दण्णपए वा उक्कोस-पए वा केवह्या पंचिदियरयणसया परिभोगनाए हव्वमागच्छंति ? गो॰ ! जहण्णपए अद्वावीसं उक्कोमपए दोष्णि दसुत्तरा पंचिदियरयणसया परिभोगत्ताए ह्व्वमा-गच्छंति, जम्बुद्दीवे णं भन्ते ! दीवे केवइया एगिदियरयणस्या सन्वरगेणं प॰ ? गो॰ ! दो दस्तरा एगिदियरयणसया सन्वरगेणं प०, जम्बुद्दीवे णं भन्ते ! दीवे केवडया एगिदियरयणसया परिभोगत्ताए हृव्यमागच्छन्ति ? गो॰ ! जहण्णपए अद्वा-वीसं उद्दोसेणं दोण्णि दसुत्तरा एगिदियरयणस्या परिसोगताए हव्दमागच्छंति ॥ १८५ ॥ जम्बुद्दीवे णं भनते ! दीवे केवह्यं आयामविक्खंमेणं केवह्यं परिक्खे-वेणं केवड्यं उव्वेहेणं केवड्यं उन्हें उन्होत्तेणं केवड्यं सव्वमीणं ५०१ मी० | जम्बू-हीने > एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणसयसहस्साई सोलस य महस्साई दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अद्वावीसं च धणसयं तेरम य अंगुलाई अद्धंगुलं च किचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं प०. एगं जोयणसहस्सं उच्वेहेणं णवणउडं जोयणसहस्साइं साहरेगाइं उद्गं उच्चतेणं साइरेगं जोयणसय-सहस्यं सव्वरगेणं पण्णते ॥ १७६ ॥ जम्मुहीवे णं भनते ! दीवे कि सासए असा-सए ? गोयमा ! सिय सासए सिय असासए, से केण्ड्रेणं भन्ते ! एवं वुन्बइ-सिय सासए सिय असासए ? गो॰! दव्यड्डयाए सासए वण्णपज्जवेहिं गंध० रस० फास-पज्जवेहिं असासए. से तेणड्रेणं गो०! एवं बुन्बइ-सिय सासए सिय असासए। जम्ब्रहीवे णं भनते ! दीवे कालओ केविकारं होड़ ? गोयमा ! ण कयावि णासि ण क्यावि णित्य ण क्यावि ण भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णिइए सासए अञ्बए अबद्विए णिचे जम्बुईवि दीवे पण्णते इति ॥ १७७॥ जम्बुईवि णं सन्ते ! दीवे कि पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोम्गळपरिणामे ? गोयमा । पुरुविपरिणामेवि आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पुग्गलपरिणामेवि । जम्ब्रहीवे ण भनते ! बीवे सञ्चपाणा सञ्चजीवा सञ्चभूया सञ्चसत्ता पुढविकाइ-यत्ताएं आलकाइयताएं तेलकाइयताएं वालकाइयताएं वणस्सङ्काइयताएं जनवण्ण-पञ्चा ? हंता गो० ! असई अदवा अणंतस्त्रतो ॥ १७८ ॥ से केणहेणं मन्ते ! एवं शुष्पइ-अम्ब्रुहीवे २१ गो० ! अम्ब्रुहीवे यां दीवे तत्य २ देसे २ तहिं २ बहुवे जम्बूरुक्ता जम्बूवणा जम्बूवणसंडा णिचं कुमुमिया जाव पिंडिममंजरिवडेंमगधर सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा २ चिहुंति, जम्बूए० सुदंसणाए अणाहिए णामं ठेवे महिद्धिए जाव पिंठिजोवमिद्धिहए परिवमह, से तेणहेणं गोयमा ! एयं वुच्चड-जम्बु-हाँवे दीवे इति ॥ १७९ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे मिहिलाए णयरीए माणिमहे उजाणे बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं वहूणं सावयाणं बहुणं सावयाणं बहुणं स्वांवयाणं बहुणं देवाणं मज्झगए एवमाइक्खइ एवं भासह एवं पण्णवंड एवं पस्वेइ जम्बूदीवपण्णत्ती णामित अजो ' अज्झयणे अहं च हेउं च पिनणं च कारणं च वागरणं च भुजो २ उवदंसेइन्तिवेमि ॥ १८० ॥ सन्तमो वक्सवारो समत्तो ॥ जंबुहीवपण्णित्ससुतं समत्तं ॥



श्रीयुत्रागमप्रकाशकममितिके 'संरक्षक'



श्रीमान् श्रीधृ रचंदजी महता व्यावर. (राजस्थान)

परिचय—अप मुधार के विचार के गुवक है. आपकी गुरुमित अगाध है। सब कार्य छोड़कर पहले आप सामायिक करते हैं। आप उसनके व्यापारी हैं। कीड़ीसे हाथी वनना ोई आपसे सीखरें। आपने अपनी पामाणिकताके वरुपर गृहस्थीय साहिबीमें उन्नति प्राप्त की हैं। अंश्रावश्वासमें आप सदैव दूर रहे हैं। 'वसुधैव कुटुंब' का मंत्र आपके आदर्श जीवनमें सीखा जा सकता है। साम्प्रदायिकताका विकार हराकर आप 'मना मो मेरा' के आदर्शक अनुगामी हैं।

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं

चंद्पण्णत्ती

जयइ णवणतिणक्रवलयवियास्यम्यवत्तपत्तलदलच्छो । वीरो गयंदमयगलस्रतले-यगयविक्रमो भयवं ॥ १ ॥ नमिऊण सुरअमुरगरूलभुयगपरिवंदिए गयकिलेसे । अरिहे मिद्धायरिए उवज्झाय सन्वसाहृ य ॥ २ ॥ फुडवियडपागडत्थं वुच्छं पुन्त-मुयमारणीसंदं । मुहमगणिणोवडट्टं जोडमगणरायपण्णि ॥ ३ ॥ णामेण इंदभुइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं । पुच्छउ जिणवरवमहं जोइसगणरायपण्णति ॥ ४ ॥ बङ् मंडलाइ यचड १, तिरिच्छा किंच गच्छइ २। ओभासइ केवइयं ३, सेयाई किंते संठिई ४॥ ५॥ किं पिडेह्या छेमा ५, किं ते ओयसंठिई ६। के सुरियं वर-यए ७, कहं ते उदयसंठिई ८ ॥ ६ ॥ कहं कहा पोरिसिच्छाया ९, जोगे कि ते व आहिए १०। किं ते संबच्छरेणाई ११, कइ संबच्छराइ य १२॥ ७॥ कहं चंद-मसो बुद्धी १३, कया ते दोसिणा बहु १४। केंद्र सिग्धगई बुत्ते १५, कहं दोसिण-लक्सणं १६॥ ८॥ चयणोववाय १७ उन्नते १८, स्रिया कइ आहिया १९। अणुभावे के व संवृत्ते २०, एवमेयाई वीसई ॥ ९ ॥ वद्योवद्वी मुहुत्ताणं १, अद्ध-मंडलसंठिई २ । के ते चिग्णं परियर्ड ३, अंतरं कि चरंति य ४ ॥ १० ॥ उग्गा-हड् केवइयं ५. केवइयं च विकंपइ ६। मंडलाण य संठाणे ७, विक्संभो ८ अह पाहुडा ॥ ११ ॥ छप्पंच य-सत्तेव य अट्ट तिष्णि य ह्वंति पिडवत्ती । पढमस्स पाहुंडस्स हवंति एयाउ पिंडवत्ती ॥ १२ ॥ पिंडवत्तीओ उदए, तहा अत्थमणेमु य । मियवाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥ णिक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य । चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवतीँओ ॥ १४ ॥ उदयम्मि अद्व भणिया भेयग्वाए दुवे य पडिवत्ती । चतारि मुहुतगईए हुंति तह्यम्मि पश्चित्ती ॥ १५ ॥ आवल्यि १ सुहृत्तरगे २, एवंभागा य ३ जोगस्सा ४ । कुलाई ५ पुण्णमासी ६ य, सिण्णवाए ७ य संदिई ८ ॥ १६ ॥ तार(य)मां च ९ णेया य १०, चंदसग्गत्ति ११ यावरे । देवयाण य अज्झयणे १२, मुहुत्ताणं णामया इय १३॥ १७॥ दिवसा राइ बुत्ता च १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १७ य । ४३ सता०

आङ्बवार १८ मासा १९ य, पंच संबच्छरा इय २० ॥ १८॥ जोउसस्स य दाराई २१, णक्सत्तविजए विय २२। दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥ १९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समाएणं मिहिला णामं णयरी होत्या रिद्धत्थिमियसमिदा पमुद्य-जणजाणत्रया ... पासादीया ४ ॥ १ ॥ तीमे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तर-पुरच्छिमे दिसीभाए माणिमहे णामं उजाणे होत्था वण्णओ ॥ २ ॥ तीसे णं मिहिलाए णयरीए जियसन् णामं राया होत्या वण्णओ ॥ ३ ॥ नस्रा णं जियमन्तुस्य रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था वण्णओ ॥ ४॥ तेणं कालेणं तेणं समाणं नाम्म उजाणे सामी समोमढे, परिसा किंग्गया, धम्मो कहिओ, परिमा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउच्यूए तामेव दिनिं पहिनए ॥ ५ ॥ तेणं कादेणं तेणं समएणं समणस्य भगवओ महावीरस्त जेट्ठे अंतेवासी इंदभृई णामं अणगारे गोयम गोतेणं सनुस्तेहे समवटरंससंठाणसंठिए वजारितहणारायसंघयणे जाब एवं वयासी-ता कहं ते वहावही महनाणं आहितेति वएजा ? ता अहएगुणवीसे महनसए सत्तावीसं व सिद्धभागे मुहनस्य आहितेति वएजा ॥ ६ ॥ ना जया णं स्रिए सव्वव्भंतराओ मंडलाओ सन्वबाहिरं मंडलं उवसंक्रीमणः। चारं चरइ सन्ववाहिराओ मंडलाओ सञ्बद्भंतरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरड एस णं अद्धा केवड्यं राइंदियगोणं आहितेति वएजा ? ता तिण्णि छावड्डे राइंदियराए राइंदियरगेणं आहितेति वएजा ॥ ७ ॥ ता एयाए अद्धाए स्रिए कड मंडलाई चरड, कड मंडलाई दुक्खुत्तो चरइ, कड़ मंडलाइं एगक्खुत्तो चरइ ? ता चुळसीयं मंडलसयं चरइ, बासीइ मंडलप्यं दुक्खुत्तो चरइ, तंजहा-णिक्खममाणे चेव पविनमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाई सई चरइ, तंजहा-सम्बद्भांतरं चेव मंडलं सम्ववाहिरं चेव मंडलं ॥ ८ ॥ जइ खलु तस्सेव आइचस्स संवच्छरस्स सर्य अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ सई अट्ठारसमुहुना राई भवह सयं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवह मई दुवालस-मुदुना राई भवड, पढमे छम्मासे अत्य अद्वारसमुदुत्ता राई, णित्य अद्वारसमुदुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुते दिवसे, णिथ दुवालसमुहुता राई भवइ, दोचे छम्मासे अत्थि अद्वारसमुहुने दिवसे, णत्थि अद्वारसमुहुना राई, अत्थि दुवालसमुहुना राई, णित्य दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवह, पढमे वा छम्मासे दोचे वा छम्मासे णित्य पण्णरसमुहुते दिवसे भवइ, णित्य पण्णरसमुहुता राई भवइ, तत्य णं कं हेउं वएजा ? ता अयण्णं जंबृदीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वन्भंतराए जाव विसेसा-हिए परिक्खेवेणं पण्णते, ता जया णं सूरिए सम्बन्भंतरमंडलं उवसंक्रिता चारं चरइ तया णं उत्तमकद्वपत्ते उद्योसए अद्वारसमृहत्ते दिवसे भवइ, जहण्यिया

दुवाळसमुहत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे स्रिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढ-मंसि अहोरत्तेसि अध्यितराणंतरं मंडलं उवसंकितता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए अब्भितराणंतरे मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरइ तया णं अट्टारसमुहत्ते दिवसे भवद दोहिं एगड्रिभागमुहत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहत्ता राई भवद दोहिं एगड्रिभाग-मुहत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सुरिए दोचंनि अहोरतीस अब्भिनरं तचं मंडलं उवसंक्रिक्ता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंक्रिक्ता चारं चरइ तया णं अद्वारसमृहत्ते दिवसे भवइ चर्जाहें एगद्विभागमुहत्तेहिं ऊणे, दुबाल-समुहुना गई भवइ चजहिं एगद्विभागमुहुनेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्समाणे सुरिए तथाणंतराओ॰ मंडलाओ मंडलं संक्रममाणे २ दो २ एगद्विभागमुहुत्ते एगमेंगे मंडलं दिवसखेनस्स णिवुह्वेमाणे २ रयणिखेनस्य अभिवुह्वेमाणे २ सव्यवाहिर-मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए सव्वब्मंतराओ मंडलाओ सव्व-बाहिरं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वक्यंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णिछावद्वएगद्विभागमुहत्ते सए दिवसखेतस्स णिवृद्धिता रयणिक्खेनस्स अभिवृद्धिता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्टपता उक्कोसिया अट्टार-समुहत्ता राई भवइ, जहण्णए बारममुहते दिवसे भवड, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पडमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे । से पविसमाणे सुरिए दोचं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरनंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए बाहिराणंतरं मंढलं उक्संकमिता चारं चरइ तथा णं अद्वारसमुह्ता राई भवड दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सुरिए दोश्रंसि अहोरतंसि बाहिरं तत्रं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए बाहिरं तत्रं मंडलं उबसंकमिता चारं चरइ तया णं अद्वारसमुहता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुते दिवसे मबइ चउहिं एगड्डिमागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खल्ल एएणुवाएणं पविसमाणे स्विए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ दो दो एगद्विभागसुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स णिवुद्वेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवद्वेमाणे २ सव्यब्भंतरं मंडलं उवसंक्रमत्ता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए सम्बनाहिराओ मंडलाओ सम्बन्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं सब्बबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिष्णिछावड्डे एगड्डिभागमुहुत्तसए रयणिखेतस्स निवृद्धिता दिवसखेत्तस्स अभिविश्वता चारं चरइ, तया णं उत्तमबद्धपत्ते उद्योसए अद्वारसमुहुते दिवसे मवइ, अहण्णिया दुवालसमुद्रुता राई भवह, एस णं दोचे छम्मासे, एस णं दुचस्स छम्मा-

सस्स पज्जवसाणे, एस णं आइचे संबच्छरे, एस णं आइचस्स संबच्छरस्म पज्जवमाणे, इह खलु तस्सेवं आइचस्स संबच्छरस्स सई अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सई अद्वारममुहुत्ता राई भवइ, सयं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सयं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, पख्मे छम्मासे अत्यि अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ, णिय अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, अत्यि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णिय दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोचे छम्मासे अत्यि अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णिय अद्वारसमुहुत्ता राई, अत्यि दुवालममुहुत्ता राई, णिय दुवालममुहुत्ता राई, णिय दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णिय अद्वारसमुहुत्ता राई, अत्यि दुवालममुहुत्ता राई, णिय दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पटमे वा छम्मासे दोचे वा छम्मासे णिथ पण्णरममुहुत्ते दिवसे भवइ, णियरसमुहुत्ता राई भवइ, णण्णत्य राईदिमाणं वह्नोवह्नीए मुहुत्ताण वा चओवचएणं, णण्णत्य वा अणुवायगईए० गाहाओ भाणियव्वाओ ॥ ९ ॥ पढमस्स पाइडस्स पढमे पाइडपाइडे समन्ते ॥ १-१ ॥

ता कहं ते अद्धमंडलसंठिई आहिताति वएजा ? तत्य खलु इमा दुविहा अद-मंडलसंठिई पण्णना, तंजहा-दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिई उत्तरा चेव अद्धमंडलसं-ठिई। ता कहं ते दाहिणअद्धमंडलसंठिई आहिताति वएजा ? ता अयण्णं जंबृदीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं », ता जया णं सृरिए मञ्जेनरं दाहिणं अद्ध-मंडलसंठिइं उवसंक्रमिता चारं चरड् तया णं उत्तमकट्टपनं उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवड़, से णिक्खममाणे स्रिए णवं संबच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरतंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भिनराणंतरे उत्तरद्धमंडलं संठिइं उत्रसंकमिता चारे चरइ, जया णं मृरिए अब्भिन तराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमिता चारं चरइ तथा णं अद्वारसमुहुते(हिं) दिवसे भवइ दोहिं एगडिभागमुहुत्तेहिं कणे, दुवालसमुहुत्ता राई॰ दोहिं एगडिभाग-मुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्सममाणे स्रिए दोशंसि अहोरतंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अविभतरं तत्रं दाहिणं अदमंडलं संठिइं उवसंक्रिता चारं चरइ । ता जया णं सुरिए अध्यातरं तचं दाहिणं अद्भगंडलं संठिइं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं अद्वारसमुहुते दिवसे भवड़ चउहिं एगद्विभागमुहुतेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चटहिँ एगड्डिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खेलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयणंतराओऽणंतरेसि तंसि २ देसंसि तं तं अद-मंडलर्संठिइं संक्रममाणे २ दाहिणाए २ अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सन्व-बाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंटिइं उवसंक्रमिता चारं चरह, ता जया णं सृरिए सव्व-बाहिरं उत्तरं अद्भांडलसंटिइं उवसंक्रमिता चारं चरइ तथा णं उत्तमकट्वपता उक्को-सिया अद्वारसमुहुत्ता राई भवड़, जहुण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवड़ । एस णं

पढमे छम्मासे, एस णं पढमछम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे स्रिए दोशं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतरभागाए तस्साइपएसाए बाहि-राणंतरं दाहिणं अदमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरड, ता जया णं स्रिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्भमंडलसंठिइं उवसंक्रमिता चारं चरड तया णं अद्वारसमु-हुना गई भवड़ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं कणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुद्रनेहिं अहिए, से पविसमाणे सुरिए दोचंसि अहोरतंसि दाहिणाए अंत-गए भागाएँ तस्माडपएसाए बाहिरंतरं तसं उत्तरं अद्भमंडलसंटिइं उवसंक्रमिता चारं चग्ड, ता जया णं स्रिए बाहिरं तचं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तथा णं अट्ठारसमुहुना राई भवद चडहिं एगद्विभागमुहुनेहिं अहिया, एवं खन्उ एएणं उवाएणं पावसमाणे स्रिए तयाणंनराओ तयाणंतरं तिस २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंटिई संक्रममाणे २ उत्तराए अंतराभागाए तस्साइपएसाए सव्वब्मं-तरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमिता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए सव्यब्धं-तरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमिता चारं चरइ तथा णं उत्तमकद्वपत्ते उद्योसए अद्वारसमुहत्तं दिवसे भवइ, जहण्यिया दुवालसमुहत्ता राई भवइ, एस णं दोचे छम्मासं, एस णं दोबस्स छम्मासस्स पजनसाणे, एस णं आइबे संबच्छरे, एस णं आइचसंवन्छरस्य पञ्चवसाणे ॥ १० ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिई आहि-ताति वएजा ? ता अयं णं जंबूदीवे दीवे सव्वदीव जाव परिक्सेवेणं, ता जया णं स्रिए सन्बन्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंटिइं उवसंकमिता चारं चरइ तथा णं उत्तम-क्ट्रपते उक्कोसए अद्वारसमुद्दते दिवसे भवह, जहाणिया दुवालसमुहना राई भवड़, जहा दाहिणा तहा चेव णवरं उत्तरिष्ठओ अन्भिनराणंतरं दाहिणं उब-संकमइ, दाहिणाओ अभिनतरं तम्बं उत्तरं उवसंकमइ, एवं खलु एएणं उवाएणं जाव सब्बबाहिरं दाहिणं उवसंकमइ सब्बबाहिरं दाहिणं उवसंकमिना दाहिणाओ वाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमइ, उत्तराओ बाहिरं तत्रं दाहिणं तत्राओ दाहिणाओ संक्रममाणे २ जाव सञ्चन्मंतरं उवसंक्रमह, तहेव । एस णं दोचे छम्मासे, एस णं दोबस्स छम्मासस्स पजवसाणे, एस णं आङ्को संबच्छरे, एस णं आङ्कस्स संबच्छरस्स पजवसाणे, गाहाओ ॥ ११ ॥ पढमस्स पाहुडस्स बीयं पाहुड-पाइडं समसं ॥ १-२ ॥

ता के ते चिष्णं पिंडचरइ आहितेति वएजा? तत्थ खळ इमे दुवे सूरिया पक्ता, तंजहा-भारहे चेव स्रिए एरवए चेव स्रिए, ता एए णं दुवे स्रिया पत्तेमं २ तीसाए २ मुहुतेहिं एयमेणं अद्धमंडलं चरेति, सङ्घीए २ मुहुतेहिं एगमेणं मंडलं संघायंति, ता णिक्खममाणा खलु एए दुवे सुरिया णो अण्णमण्णस्य विण्णं पिंडचरंति, पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स विण्णं पिंडचरंति, तं सयमेगं चोयालं, तत्य के हेऊ ० ति बए जा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ जाव परिक्खे-वेणं०, तत्थ णं अयं भारहए चेव स्रिए अंबृदीवस्स २ पाईणपनीणायगउदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चरवीसएणं सएणं छेना दाहिणपुरत्थिमिश्रंसि चर-भागमंडलंसि बाणउइयस्रियमयाहं जाहं अप्पणा नेत्र चिण्णाइं पडिनरइ. उत्तरपञ्च-त्थिमिकंसि चउभागमंडलंसि एकाणउइं मृरियमयाई जाई मृरिए अध्यणी चंब चिण्णं पडिचरइ, तस्थ णं अयं भारहे सुरिए एरवयस्य सुरियस्य जंदृदीवस्स २ पाईण-पढीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चडवीसएणं मएणं छेता उत्तर-पुरत्थिमिछंसि चउमागमंडलंसि वाणउडं सरियमयाई जाव स्रिए परस्स चिण्णं पिंडचरइ, दाहिणप्रचित्यिमिल्लंसि चल्यागमंडलंसि एगूणणलई स्वियमयाई जाई सूरिए परस्स चेव चिण्णं पडिचरह, तत्थ णं अयं एरवए स्रिए जंबूदीवस्य २ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीयाएणं मएणं छेता उत्तरपुरिव्यमिश्रंति चउन्भागमंडलंसि वाणउई सृरियमयाई जाव मृरिए अप्पणो चेव चिण्णं पडिचरइ, दाहिणपुरित्थिमित्रंसि चउभागमेटलंसि एकाणउई स्रियमयाई जाव सुरिए अप्पणी चेव चिण्णं पिडचरइ, तत्य णं अयं एरवइए सुरिए भारहरून स्रियस्स जंब्दीवस्स २ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेता दाहिणपचित्यमिहंसि चउभागमंडलंसि वाणउई सरियमयाई स्रिए परस्य चिण्णं पडिचरह, उत्तरपुरस्थिमिहंसि चउभागमंडलंसि एकाणउई स्रियमयाई जाई स्रिरेए परस्स चेव चिण्णं पडिचरइ, ता णिक्सममाणा खलु एए दुवे सरिया जो अज्जमज्जस्स चिन्नं पडिचरति, पविसमाना खलु एए दुवे स्रिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरित, सयमेगं चोयार्छ । गाहाश्रो ॥ १२ ॥ पढमस्स पाद्रहस्स तह्यं पाद्रहपाद्रुहं समसं॥ १-३॥

ता केवइयं एए दुने स्रिया अण्णमण्णस्य अंतरं कड्डू चारं चरंति आहिताति वएजा ? तत्य खलु इमाओ छ पिडवत्तीओ पण्णताओ, तंजहा-तत्य एगे एवमा-हंग्र-ता एगं जोयणसहरसं एगं च तेत्तीसं ओयणसयं अण्णमण्णस्य अंतरं कड्ड एरिया चारं चरंति आहिताति वएजा एगे एवमाहंग्र-ता एगं जोयणसहरसं एगं च चउतीसं ओयणसयं अण्णमण्णस्य अंतरं कड्ड स्रिया चारं चरंति आहिताति वएजा एगे एवमाहंग्र-ता एगं जोयणसहरसं एगं च चउतीसं ओयणसयं अण्णमण्णस्य अंतरं कड्ड स्रिया चारं चरंति आहिताति वएजा एगे एवमाहंग्र-ता एगं जोयण-सहस्यं एगं च पणतीसं ओयणसयं अण्णमण्णस्य अंतरं कड्ड स्रिया चारं चरंति

आहिताति वएजा एगे एवमाहंसु ३, एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्य अंतरं कड़ ४, एगे ... दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कड़ु स्रिया चारं चरंति आहिनाति वएजा एगे एवमाहंसु ५, एगे ... तिर्ण्ण दीवे तिर्ण्ण समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं करु स्रिया चारं चरंति आहिताति वएजा एगे एवमाहंस ६, वयं पुण एवं वयामो-ना पंच पंच जोयणाई पणतीसं च एगहिमारी जोयणस्म एगमेरी मंडले अण्णमण्णस्य अंतरं अभिवद्वेमाणा वा निवद्वेमाणा वा स्रिया चारं चरंति०। तस्थ णं को हेऊ आहिएति वएजा ? ता अयण्णं जंबूदीवे २ जाव परिक्खेवेणं पण्णते, ता जया णं एए दुवे सुरिया सब्बब्धंतरमंडलं उवसंक्रमिता चारं चरंति तया णं णवणउडजोयणसहस्साइं छचचत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्ट चारं वरंति आहिताति वएजा, तया णं उत्तमबद्धपत्ते उक्कोमए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालम्मुहुना राई भवइ, ने णिन्खममाणा सूरिया पर्व संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरतंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उनसंकमिता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे मुरिया अव्भिनराणंतरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरंति तया णं णवणवर् जोयणसहस्साइं छच पणयाळे जोयणसए पणवीसं च एर्गाहुभागे जोयणस्य अण्णमण्णस्य अंतरं कर् चारं चरंति आहिताति वएजा, तया णं अट्टार-समृहने दिवसे भवइ दोहिं एगद्विमागमृहत्तेहिं उत्पो, दुवालसमुहुता राई भवइ दोहिं एगड्टिभागमुहुनेहिं अहिया, ते णिक्खममाणा स्रिया दोखंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तचं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे स्रिया अस्मितरं तचं मंडलं उवसंक्रमिता चारं वरंति तया णं वणणवहं जोयणसहस्साइं छचहकावण्णे जोयणसए णव य एगद्विभागे जोयणस्स अण्यसण्णस्स अंतरं क्टु चारं चरंति आहिताति वएजा, तया णं अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ वउहिं एगिड्डिमागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खछ एएणु-वाएणं णिक्सममाणा एए दुवे स्रिया तओऽणंतराओ तयाणंतरे मंडलाओ मंडलं संक्रममाणा २ पंच २ जोसणाई पणतीसं च एगद्विमाने जोयणस्स एगमेने मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवर्षुमाणा २ सम्बसिहरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरंति, ता जया मं एए दुवे स्रिया सन्वबाहिरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरंति तया मं एगं जोयणसयसहस्सं स्टब सहे जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कहु चारं चरेति. तया णं उत्तमकद्वपत्ता उक्कोसिया अद्वारसमुहुता राई भवइ, जहण्णए हुवालसमुहुते दिवसे अबह, एस र्थं पहजे लम्मासे, एस र्थं पढमस्स लम्मासस्स पजावसाचे, ते पविसमाणा सूरिया दोचं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरतंसि

बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक्रांमेता चारं चरंति, ता जया णं एए दुवे स्रिया बाहि-राणंतरं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच चर-प्पण्णे जोयणसए छत्तीसं च एगद्विभागे जोयणस्य अण्णसण्णस्य अंतरं कर् चारं चर्रात आहिताति वएजा, तया णं अद्वारसमुहुना राई भवइ दोहिं एगद्विभागमुहु-त्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहत्ते दिवसे भवड दोहिं एगड्डिभागमुहत्तेहिं अहिए, ते पविस-माणा सूरिया दोचंसि अहोरनंसि वाहिरं तचं मंडलं उवसंक्रीमता चारं चर्रात, ता जया णं एए दुवे सुरिया बाहिरं तचं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरेति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच अडयाले जोयणसए वावण्णं च एगद्विभागे जोयणस्स अण्ण-मण्णस्य अंतरं कर् चारं चरंति, तया णं अट्ठारममुहत्ता राई भवड चडिहे एगिड्ड-भागमुहुनेहिं छणा, दुबालसमुहुने दिवसे भवइ चटहिं एगद्विभागमुहुनेहिं अहिए । एवं खळु एएणुवाएणं पविसमाणा एए दुवे स्रिया तकोऽर्णतराओ तयाणेतरं मंड-लाओ मंडलं उबसंकममाणा २ पंच २ जोयणाइं पणतीसे एगद्विमागे जोयणस्म एगमेंगे मंडले अण्णमण्णस्संतरं णिवुङ्केमाणा २ सन्बन्धंतरमंडलं उबसंकमिता चारं चर्रात, ता जया णं एए दुवे सूरिया सन्वन्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरंति तया णं णवणउइजोयणसहस्साई छच चलाले जोयणसए अण्यमण्णस्य अंतरं कह चारं चर्रति, तया णं उनमक्दुपने उद्योसए अद्वारसमृहत्ते दिवसं भवद, जहण्णिया दुवालसमुहत्ता राई भवड, एस णं दोचे छम्मासे, एस णं दोचस्स छम्मामस्स पज्जवमाणे. एस णं आइचे संवच्छरे, एस णं आइचसंवन्छरस्स पज्जवसाणे॥१३॥ पढमस्स पाहुडस्स चउत्थं पाहुडपाहुई समसं ॥ १-४ ॥

ता केवइयं ने दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ आहिताति वएजा? तत्य खलु इमाओ पंच पिटवत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्य एगे एवमाहंसु—ना एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसरं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ...१, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु—ता अवश्वं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु—ता अवश्वं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता णो किचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं स्रिए सव्यवभंतरं मंद्रळं जवसंकिता चारं चर्द तथा

णं जंयूदीवं २ एगं जोयणसहस्तं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहिता स्रिए चाएं चरइ, तया णं उत्तमकद्वपत्ते उद्योसए अद्वारममुहुते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवा-लसमुहुना राई भवड, ना जया णं स्रिए सन्वबाहिरं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चरड तथा णं लवणमभुद्दं एगं जोयणसदृस्तं एगं च तेतीसं जोयणसयं ओगाहिता चारं चरह, तया णं उत्तमकहुपना उद्गासिया अहारसमुहत्ता राई भवह, जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवह । एवं चोत्तीसं जोयणसयं । एवं पणतीसं जोयणसयं । तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता अवहुं दीवं वा समुदं वा ओगाहिता सूरिए चार चरड्, ते एवमाहंसु-ता जया णं स्रिए सम्बद्भांतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं अवहुं जंबरीवं २ ओगाहिता चारं चरइ, तया णं उत्तमबद्धपत्ते उन्नोसए अद्वारसमु-हुते दिवसे भवद, जहण्णिया दुवालसमुहुता राई भवद, एतं सञ्चवाहिरएवि, णवरं अवर्ष्ट्वं स्वणसमुद्दं, तथा णं राइंदियं तहेव, तत्थ जे ते एवमाइंस-ता णो किचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ, ते एवमाहंस-ता जया णं स्रिए सव्यब्भंतरं संडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तथा णं णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहिता स्रिए चारं चरइ, तया णं उत्तमबद्धपने उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड़ तहेव एवं सञ्चवाहिरए मंडले णवरं णो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहिसा चारं चरइ, राइंदियं तहेव, एगे एवमाइंसु ७ ॥ १४ ॥ वयं पुण एवं बयामो-ता जया णं स्रिए सन्बन्धंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं जंबूदीवं २ असीयं जोयण-सर्यं श्रोगाहिना चारं चरइ तया णं उनमक्द्वुपते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवड, जहाण्णिया दुवालसमुहुता राई भवइ, एवं सम्बवाहिरेवि, णवर लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणमए ओगाहिसा चारं चरड, तया णं उत्तमक्ट्रपता उद्घोसिया अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणिय-व्याओ ॥ १५ ॥ पढमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥१-५॥ ता केयइयं (ते) एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइता २ स्रिए चारं चरइ आहितेति वएजा ? तत्थ खल्ल इमाओ सत्त पडिवनीओ पण्णताओ, तं॰—तत्थेगे एवमाइंस-ता दो जीयणाई अद्भुवतालीसं तेसीयसयभागे जीयणस्य एगमेगेणं राईदिएणं विकंपहत्ता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाइंछ १, एगे पुण एवमाइंछ-ता अवाई-जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपहणा २ स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंद्र २, एने पुण एक्साइंस-ता तिभागूणाई तिष्णि जोयणाई एगमेगेण राइंदिएणं विकंप-इता २ स्रिए चारं चरइ॰ एगे एवमाइंड ३, एगे पुण एवमाइंड-ता तिण्णि जोयणाई अद्भवीयाळीचं च तेचीहसयमागे खोयणस्य एगमेगेणं राइंबिएणं विकंप-

इसा २ स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु-ता अबुद्धाई जोयणाइं एमसेनेणं राइंदिएणं विकंपइता २ स्रिए चारं चरइ० एने एवमाहंस ५, एगे पुण एवमाहंसु-ता चउन्भागूणाई चत्तारि जोयणाई एगमेगेणं राईदिएणं विकंपड्ना २ स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु-ता चत्तारि जोयणाई अद्भावण्णं च तेसीइसयमागे जोयणस्स एगमेगेणं राईदिएणं विकंपइता २ स्रिए चारं चरइ० एगे एवमाइंसु ७ । वयं पुण एवं वयामो-ता दो जोशणाई अडयालीसं च एगद्विभागे जीयणस्स एगमेर्ग मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइता २ स्रिए चारं चरइ०, तत्थ णं को हेऊ०ति बएजा ? ता अयण्णं जंबृदीवे २ जाब परिक्षेत्रेणं पण्णते, ता जया णं स्रिए सम्बन्धेनरं मंडलं उबसंक्रमिता चारं चरड् तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उन्नोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवड, जहण्णिया दुवालममुहुत्ता राई भवड, से णिक्खममाणे सुरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अस्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए अस्भितराणंतरं मंडलं उचसंक्रमिता चारं चरड तथा णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगड्विभागे जोयणस्य एगेणं राइंदिएणं विकंपज्ञता चारं चरइ, तया णं अद्वारसमुद्देशे दिवसे भवइ दाहि एगड्डिमागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगड्डिमाग-सुहुत्तेहिं अहिया । से णिक्खममाणे स्रांत्ए दोबंसि अहोरत्तंसि अध्भितरं तचं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ, ना जया णं स्रिए अव्भितरं तथं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तथा णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगद्विभागे जोयणस्स दोहिं गइंदिएहिं विकंपइता २ चारं चरड, तया णं अद्वारममुहुत्ते दिवसे भवइ चटहिं एगद्विभागम्-हुत्तेहिं ऊणे, दुवाळसमुहृता राई अवड चउहिं एगद्विभागमुहृत्तेहिं अहिया, एवं खळ एएणं उवाएणं णिक्खममाणे स्रिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संक-समाणे २ दो २ जोयणाई अडयाठीसं च एगद्विमागे जोयणस्स एगमेणं संडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सन्वबाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए सन्बन्धंतराक्षो मंडलाओ सन्बगाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं सव्बब्धंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राईदियसएणं पंचदसुत्तर-जोयणसए विकंपहता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकद्वपत्ता उद्योखिया अद्वारसमुहुता राई भवड, जहण्यए दुवालससुहृते दिवसे भवड, एस णं पढमछम्मासे, एस णं पडमछम्मासस्स पज्जबसाणे, से य पनिसमाणे स्रिए दोचं छम्मासं अथमाणे पढमंसि अहोरतंसि बाहिराणेतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरह, ता जवा णं सुरिए बाहिराणंतरं मंडलं उबसंकामिता बारं चरइ तया णं दो दो ओयणाई अडयाठीसं

च एगड्डिमागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपहत्ता २ चारं चरट्, तया णं अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगड्डिमागमुहुत्तांहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवड दोहिं एगड्डिमागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे स्रीए दोचंसि अहोरतंसि वाहिरतंखिं मेहलंसि उवसंक्रमित्ता चारं चरइ, ता जया णं स्रीए बाहिरतंखं मेहलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगड्डिमागे जोयणस्य दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता २ चारं चरइ, राइंदिए तहेव, एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे मृरिए तओऽणंतराओ तयाणंतरं च णं मंहलं संकममाणे २ दो २ जोयणाइं अख्यालीसं च एगड्डिमागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपनाणे २ सव्ववभंतरं मंहलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ, ता जया णं मृरिए गव्ववाहिराओं मंहलाओं सव्ववभंतरं मंहलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ, ता जया णं स्ववाहिर मंहलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसएणं पंचदमुत्तरे जोयणसए विकंपन्ता २ चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठिपते उद्देशसासे, एस णं दोचस्स छम्मासस्स पजवन्ताणे, एस णं आइच्च संवच्छरे, एस णं आइचस्स संवच्छरस्स पजवसाणे॥ १६॥ पटमस्स पाइसस्स छाई पाइडिपाइडं समस्तं॥ १-६॥

ता कहं ते मंडलसंिठई आहिताति वएजा ! तत्थ खलु इमाओ अट्ट पिट-वर्ताओ पण्णताओ, तं०-तरवेगे एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया समन्वउरंस-संठाणसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया विसमन्वउरंससठाणसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया समन्वउन्नोणसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया विसमन्वउन्नोणसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया समन्वक्रवालसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया विसमन्वक्रवालसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया विसमन्वक्रवालसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया विसमन्वक्रवालसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वत्वक्रवालसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ०, एगे पुण एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलबया स्वतावारसंिठया पण्णता एगे एवमाहंसु ८, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सन्वावि णं मंडलवया स्वत्ववालयो। १० ॥ पढमाहस्त पासुक्यस्त सन्तावी ॥ १० ॥

ता मुन्यावि णं मंडलक्या केवड्यं बाहहेणं केवड्यं आयामविक्खंमेणं केवड्यं

परिक्खेवेणं आहिताति वएजा ? तस्य खलु इमाओ तिण्णि परिवर्तीओ पण्णनाओ, तंजहा-तत्थेगे एवमाहंसु-ता सञ्वावि णं मंडलवया जोयणं बाह्रहेणं एगं जोयण-सहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणसहस्साइं तिष्णि य णवणउए जोयणसए परिक्खेबेणं पण्णता एगे एवसाहंस १. एगे पुण एवसा-हंसू-ता सन्वावि णं मंडलवया जीयणं वाहकेणं एगं जीयणसहस्सं एगं च चड-तीसं जोयणसर्य आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणसहस्माइं चतारि बिउत्तरे जोयण-सए परिक्खेवेणं पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ना० जोयणं बाह-हुणं एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणमयं आयामविक्संभेणं तिष्णि जोयण-सहस्ताहं चतारि य पंचतरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णता एगे एवमाहंसु ३. वयं पुण एनं वयामो-ता सञ्जावि णं मंडलबया अडयालीसं च एगद्विभागे जोयणस्म बाहहेणं अणियया आयामविक्खंभेणं परिक्खेवेणं आहिताति बएजा. तस्य णं को हेऊ वि वएजा ? ता अयण्णं जंबूदीचे २ जाव परिक्खेवेणं ०, ता जया णं मृरिए सञ्बद्भंतरं मंडलं उबसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगद्विभागे जोयणस्स बाहहेणं जवणउई जोयणसहस्साई छच चताले जोयणसए आयामवित्रन्तंमेणं तिण्णि जोयणमयसहस्साइं पण्णरसजोयणसहस्ताइं एगूणणजई जोयणाई किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं , तया णं उत्तमकद्वपत्ते उद्दोसए अद्वारस-मुहत्ते दिवसे भवड, जहण्णिया दुवालसमुहता राई भवड, से णिक्खममाणे स्रिए णवं संबच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्धितराणंतरं मंडलं उबसंकमिता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए अध्भितराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिशा चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगद्विभागे जोयणस्स बाहहेणं णवणउइ-जोयणसहरसाइं छच पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगद्विभागे जोयणस्स आयामविक्संमेणं तिष्णि जोयणसयसहस्साई पन्नरस य सहस्साई एगं चडत्तरं जोग्रणसर्यं किंचिविसेस्णं परिक्खेवेणं . तया णं दिवसराइप्पमाणं तहेव। से णिक्खममाणे स्रिए दोचंसि अहोरतंसि अध्भितरं तचं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरह, ता जया णं सरिए अब्भितरं तचं मंडलं उवसंक्रिमता चारं चरह तया णं सा मंडलक्या अडगालीसं च एगद्विभागे जोयणस्य बाहक्षेणं णवणउइजोयण-सहस्साइं छन्न एकावण्णे जोयणसए जव य एगद्विमागा जोयणस्य आयामविक्खं-मेणं तिष्णि जोयणसयसङ्क्साइं पण्णरस य सहस्साइं एवं च पणवीसं जोयणसवं परिक्खेवेणं पण्णता, तया णं दिवसराई तहेव, एवं खखु एएणं णएणं जिक्सामसाचे स्रोरेए तमाणंतरास्रो तयाणंतरं मंडलाखो मंडलं उबसंस्थमाणे २ पंच श्रोयणाई.

पणतीसं च एगद्विभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवृद्धि अभिवद्वेमाणे र अद्वारस २ जोयणाई परिरयवृद्धि अभिवद्देमाणे २ सव्ववाहिरं मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए सन्ववाहिरमंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगांद्वभागा जोयणस्स बाह्रहेणं एगं जोयण-सयसहरसं छन्न सद्दे जोयणसए आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणसयसहरसाई अहारस सहस्साई तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं , तया णं उक्कोसिया अद्वा-रसमुहुना राई भवड, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवड, एस णं पढमे छम्मासे, एस णे पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे. से पविसमाणे सरिए दोशं छम्मासं अय-माणे पढमंसि अहोरतंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, ता जया णं मरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकामता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अटया-लीसं च एगद्विमागं जोयणस्स बाइह्रेणं एगं जोयणसयसहस्यं छच चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगद्विमागे जोयणस्य आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणस्य-सहस्ताई अद्वारससहस्साई दोण्णि य सत्ताणउए जोग्रणसए परिक्खेंबेणं पण्णता, तया णं राइंदियं तहेव, से पविसमाणे सुरिए दोश्वंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तश्चं मंडलं उवसंक्रमिना चारं चर्ह, ता जया णं सारिए बाहिरं तबं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगद्विभागे जोयणस्य बाह्रहेणं एगं जोयणसयसहस्सं छन्न अडयाले जोयणमए वावण्णं च एगड्डिमागे जोयणस्स आया-मविक्संमेणं तिष्णि जोयणसयसहस्साइं अद्वारससहस्साइं दोष्णि य अखयणातीसे जोयणसए परिक्खेनेणं पण्णता, दिवसराई तहेव, एवं खळ एएणुवाएणं से पवि-समाणे सुरिए तयाणंतराओं तयाणंतरं मंडलाओं मंडलं संक्रममाणे २ पंच २ जोयणाई पणतीसं च एगद्विभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्लंभवृद्धि णिवृद्धे-माणे २ अद्वारस जोयणाई परिरयवुद्धिं णिवुहुमाणे २ सव्वन्मंतरं मंडलं उब-संक्रमत्ता चारं चरइ, ता जया णं सुरिए सव्यव्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं सा मंडलवया अडयालीसं च एगद्विभागे जोयणस्स बाहक्रेणं णवणउई जोयणसहस्साई छ्य चताळे जोयणसए आयामविक्खंमेणं तिष्णि जोयणसयसहस्साई पण्णरस य सहस्साइं अउणाउइं च जोयणाइं किचिविसेसाहियाई परिक्खेवेणं पण्णता. तया णं उत्तमक्टुपते उद्योसए अट्टारसमुहुते दिवसे भवह, जहण्णिया बुवालसमुहुता राई भवह, एस णं दोने छम्मासे, एस णं दोन्नस्य छम्मासस्य पजवसाणे, एस णं आइबे संबच्छरे, एस णं आइबस्स संबच्छरस्स पजवसाणे, ता सन्वावि णं मंडरू-वया अडवाडीसं च एगद्विमांगे जोवणस्स बाहहेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो

जोयणाई विक्खंमेणं, एस णं अद्धा तेसीयसयपहुप्पण्णो पंचदमुत्तरे जोयणसए आहिताति वएजा, ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिर मंडलवयं बाहिराओ वा॰ अब्भितर मंडलवयं एस णं अद्धा केवहयं आहिताति वएजा ? ता पंचदमुत्तरजोयण-सए आहिताति वएजा, ता अब्भितराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ अब्भितरा मंडलवया एस णं अद्धा केवहयं आहिताति वएजा ? ता पंचदमुत्तरे जोयणसए अद्ध्यालीसं च एगद्धिभागे जोयणस्य आहिताति वएजा ? ता अब्भितराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ० अब्भितरमंडलवया एस णं अद्धा केवहयं आहिताति वएजा ? ता पंचणवृत्तरे जोयणसए तेग्स य एगद्धिभागे जोयणस्य आहिताति वएजा ? ता पंचणवृत्तरे जोयणसए तेग्स य एगद्धिभागे जोयणस्य आहिताति वएजा , ता अब्भितराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया बाहिराए मंडलवयाए अब्भितरमंडलवया एस णं अद्धा केवहयं आहिताति वएजा ? ता पंचदमुत्तरे जोयणमए आहिताति वएजा ॥ १८॥ पदमस्य पाहुडस्स अटुमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-८॥ पदमस्य पाहुडस्स अटुमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-८॥ पदमं पाहुडं समत्तं ॥ १॥

ना कहं तेरिच्छगई आहिताति वएजा ? तत्य खलु इमाओ अद्भ पिवत्तीओ पण्णताओ, तं --तत्थेगे एवमाइंग्र-ना पुरन्छिमाओ लोयंनाओ पाओ मरीई आगा-संसि उत्तिहरू, से णंडमं तिरियं लोयं तिरियं करेड तिरियं करेना पचित्यमंसि लोयंतीस सायाम रायं आगासंति विदंसइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरच्छि-माओं लोयंताओं पाओं सरिए आगासंसि उनिद्वह, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेड करिता पचित्यमंसि लोयंतंसि स्रिए आगासंसि विद्धंसङ् एगे एवमाहंस २, एगे पुण एवमाइंस-ता पुरस्थिमाओं लोयंताओं पाओ सुरिए आगासींस उत्तिद्वह. से णं इसं तिरियं लोयं तिरियं करेड़ करिता पन्नत्थिमंत्र लोयंसि सार्य सरिए आगासं अणुपविसङ २ ता अहे पिंडियागच्छा अहे पिंडियागच्छेता पुणरवि अवरअपुरिय-माओ लोयंताओ पाओ सरिए आगासीस उत्तिद्वह एगे एवमाहंस ३. एगे पुण एवमाइंस-ता पुरन्धिमाओ लोगंताओ पाओ सुरिए पुडविकार्यंस उत्तिद्वड. से णं इसं तिरियं लोयं तिरियं करेड करेता प्रबत्धिमिलंस लोयंतीस सायं सरिए प्रविकायंसि विदंसइ एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरस्थिमाओ खोयंताओ पाओ सुरिए पुढविकायंसि उत्तिद्वड, से णं इमं विरियं कोयं तिरियं करेड करेता प्रवित्यमंति लोर्यतंसि सार्य सुरिए पुढविकार्यसे अणुपविसद् अणुपविसित्ता अहे परियागच्छद् २ ता पुणरिव अवरभुपरिवमाओ लोयंताओ पाओ सुरिए पुढविकायंसि उतिहुइ एगे एकमाईंड ५, एंगे पुण एकमाईंड-ता पुरत्विमिक्काओं लोबंताओं पाओ स्रिए आउ-कार्यसि उत्तिहर, से मं इमं तिरियं कोयं विरियं करेड करेता प्रवास्त्रमंसि सोर्यतिस

पाओ स्विए आउकार्यसि विद्धंसङ् एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु-ता पुरस्थि-माओं लोगंताओं पाओं सुरिए आउकायंसि उत्तिद्वह, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेड़ करेता पचित्यमंसि लोयंतंसि सार्य सुरिए आउकायंसि अणुपविसङ् २ ता अहे पिंडियागच्छद २ त्ता पुणर्राव अवरभुपुरित्यमाओ लोयंताओ पाओ स्रिए आउ-कार्यसि उत्तिद्वह एगे एवसाहंसु ७. एगे पुण एवसाहंसु-ता पुरस्थिमाओ लोयंताओ बहुई जोयणाई बहुई जोयणसयाई बहुई जोयणसहस्साई उन्ने दूर उप्पह्सा एत्य णं पाओ स्रिए आगासंसि उत्तिद्धड, से णं इसं दाहिणहूं लोगं तिरियं करेड करेता उत्तरहूलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरहूलोयं तिरियं करेड २ ता दाहिणहूलोयं तमेव राओ, मे णं इमाई दाहिणुत्तरबुळोयाई तिरियं करेड करेता पुरस्थिमाओ लोयंताओ बहुई जीयणाई बहुई जोयणस्याई बहुई जोयणसहस्साई उन्हें दूरं उप्प-इत्ता एन्य णं पाओ सुरिए आगासंसि उत्तिहुउ एगे एवमाहंसु ८ । वयं पुण एवं वयामो-ता जंबूदीवस्स २ पाईणपदीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चड-व्वीसंगं सएगं छेना दाहिणपुरच्छिमंसि उत्तरप्रचित्थमंसि य चडव्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमर्माणजाओ भूमिभागाओ अह जोयणस्याई उन्हें उप्प-इता एत्थ णं पाओ दुवे सुरिया ॰ उत्तिद्वंति, ते णं इमाई दाहिणुत्तराई जंबूदीव-भागाई तिरियं करेंति २ ता पुरत्थिमण्यत्थिमाई जंबूदीवभागाई नामेव राओ, ते णं इमाइं पुरच्छिमपचित्थिमाई जंबृहीवभागाई तिरियं करेंति २ ता द्वाहिणुनराई जंबू-वीवभागाइं तामेव राखो, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरच्छिमपचित्यमाइं च जंवू-दीवभागाइं तिरियं करेंति २ ता जंबूदीवस्म २ पाईणपडीणाययज्दीणदाहिणाययाएं जीवाए मंडलं चटव्वीसेणं सएणं छेता दाहिणपुरच्छिमिश्रंस उत्तरपचित्यमिश्रंसि य चउमागमंडलंसि इमीसे रयणप्यमाए पुडवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिमागाओ अट्ट जीयणसयाइं उर्ष्ट्रं उप्पद्वता एत्य णं पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिद्वंति ॥ १९ ॥ विदयस्स पाइडस्स पढमं पाइडपाइडं समसं॥ २-१॥

ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरइ आहिताति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ दुवे पिडवसीओ पण्णसाओ, तं०-तत्थेगे एवमाइंग्र-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए मेयघाएणं संकमइ० एगे एवमाइंग्र-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए कण्णकलं णिव्वेडेइ ... २, तत्थ (णं) जे ते एवमाइंग्र-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए मेयघाएणं संकमइ, इतेति णं अयं दोसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए मेयघाएणं संकमइ एवह्यं च णं सदं पुरको ण गच्छाइ, पुरको स्नाच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ, तेसि

णं अयं दोसे, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ स्रिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ स्रिए कण्णकलं णिव्वेढेइ एवड्यं च णं अदं पुरओ गच्छह, पुरओ गच्छहाणे मंडलकालं ण परिह्वेइ, तेसि णं अयं विसेसे, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ स्रिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, एएणं णएणं णेयव्वं, णो चेव णं इयरेणं॥ २०॥ विइयस्स पाहुडस्स विइयं पाहुडपाहुडं समसं॥ २-२॥

ता केवइयं ते खेतं स्रिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ आहिताति बएजा र तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णताओं, तं०-तत्थ एगे एवमादंस-ता छ छ जीयणमहस्साइं स्रिए एगमेगेणं मुहन्तेणं गच्छइ॰ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सृरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छड ० एगे एवमाहंसु २, एने पुण एवमाहंसु-ता चत्तारि २ जोयणसहस्साई स्रिए एगमेनेणं मुहुत्तेणं गच्छइ० एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता र्छाव पंचिव चत्तारिव जोयणसहस्माई स्रिए एगभेगेणं सुहुत्तंणं गच्छड्॰ एगे एवसाहंसु ४, तत्थ खलु जे ते एवमाहंस-ता छ छ जोयणसहस्साइं स्रिए एगमेगेणं मुहुनेणं गच्छइ, ते एव-माहंसु-ता जया णं सुरिए सव्वब्सेतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं उत्तमक्ट्रपत्ते उद्दोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवड्, जहण्णिया दुवालसमुहुता राई भवड़, तंसि च णं दिवसंसि एगं जीयणसयमहस्सं अट्ट य जीयणसहस्साई तावक्खेते पण्णते, ता जया णं स्रिए सञ्बदाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं उत्तमकड्रपत्ता उक्नोसिया अद्वारसमुहत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहत्ते दिवसे भनइ. तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साई तावक्खेते पण्णते, तया णं छ छ जोधणसहस्साइं स्रिए एगमेगेणं मुहुतेणं गच्छड्, तत्य जे ते एत्रमाहंश्व-ता पंच पंच जोयणसहस्साइं स्रिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एबमाहंस-ता जया णं स्रिए सन्बन्धंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, तहेव दिवसराइप्पमाणं, तंसि च णं दिवसंसि तावक्केतं णउइजोयणसहस्साई, ता जया णं स्रिए सव्ववाहिरं मंडलं उवसंक्रीमता चारं चरइ तया णं तं चेव राइंदियप्पमाणं, तंसि च णं दिवसंसि सिंह जोयणसहस्साइं तावक्षेते पण्णते, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं स्रिए एगमेगेणं मुहत्तेणं गच्छद्, तत्थ जे ते एक्माहंसु-ता चतारि २ जोवणसहस्ताइं स्रिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छा, ते एवमाहंध-ता जवा णं स्रिए सम्बन्धंतरं मंडलं उषसंक्रमत्ता चारं चरइ तथा मं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि वावसीरे

जोयणसहस्साई तावक्खेते पण्णते, ता जया णं स्रिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ तया णं राइंदियं तहेव, तंसि च णं दिवसंसि अडयाछीसं जोयणसह-स्साइं ताबक्खेरो पण्णते. तथा णं चतारि २ जोयणसहस्साइं सुरिए एगमेगेणं सुहुतेणं गच्छह, तत्थ जे ते एवमाहंमु-ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सुरिए एगमेगेणं मुहत्तेणं गच्छड्, ते एवमाइंसु-ता सुरिए णं उम्ममणमुहत्तंस य अत्यमणमुहत्तं-सि य सिम्धगई भवड, तया णं छ छ जोयणसहस्साई एगमेगेणं मुहत्तेणं गच्छह, मजिस्मतावक्खेतं समासाएमाणे २ स्रिए मजिझमगई भवइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साई एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छह, मज्ज्ञिम २ तावक्षेतं संपत्ते स्रिए मंदगई भवड़, तया णं चतारि जोयणसहस्साइं एगमेनेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्य को हेऊ बति वएजा ! ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं , ता जया णं स्रिए सञ्बन्भंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तथा णं दिबसराई तहेव. तंसि च णं दिवसंसि एकाणउई जोयणसहस्साई तावक्खेरी पण्णते, ता जया णं सुरिए सञ्चलाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चार चरइ तथा णं राइंदियं तहेव. तस्सि च णं दिवसंसि एग-द्विजोयणसहस्साई तावक्खेते पण्णते, तया णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साई सुरिए एगमेगेणं मुहुनेणं गच्छइ एगे एवमाहंसु । वयं पुण एवं वयामो-ता साइरेगाई पंच पंच जोयणसहस्साई सूरिए एगमेंगेणं मुहत्तेणं गच्छइ॰, तत्थ की हेऊ०ति बएजा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ ... परिक्खेवेणं , ता जया णं सरिए सव्ववसंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साई दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सद्विमागे जोयणस्य एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छह, तया णं इहगयस्स मणुस्तस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवहेहिं जोयणसएहिं एकवीसाए य सिद्धभागेहिं जोयणस्य सुरिए चक्कुप्फासं हव्यमागच्छः, तया णं दिवसे राई तहेव, से णिक्सममाणे सुरिए णवं संबुच्छरं अग्रमाणे पढमंसि अहोरनंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उबसंकमिता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तथा णं पंच पंच जोयणसहस्साई दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए सीयालीसं च सद्विमाने जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहि अउणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सद्विभागेहिं जोयणस्य सद्विभागं च एगद्विहा छेता अउणाबीसाए चुष्णियामागेहिं सुरिए चक्खुप्फासं हुव्बमागच्छद्, तथा णं दिवसराई तहेव, से णिक्समगाणे सुरिए दोबंसि अहोरतंसि अधिभतरतत्रं मंडलं उवसंकनिता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अञ्चितरतम् संढलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं RR SALO

पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सिट्टमार्गे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तया णं इह्रगयस्य मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जीयणेहि तंत्तीसाए य सद्विमागेहि जीयणस्स सद्विमागं च एगद्विहा क्केता दोहिं सुण्णियाभागेहिं सुरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छ, तया णं दिवसराई तहेव, एवं खळ एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सिरए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंड-लाओ मंडलं संकममाणे २ अद्वारस २ सद्विभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले महत्तगई अभिवृद्देमाणे २ चुलसीई साइरेगाइं जोयणाइं पुरिसच्छायं णिवृद्देमाणे २ मन्त्र-बाहिरं मंडलं उवसंकामिना चारं चरइ, ना जया णं सारिए सव्ववाहिरमंडलं उवसंक-मिता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसहस्साइं निष्णि य पंचुत्तरे जोयणसए पण्णरग य सिद्धभागे जीयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तथा णं इहगयस्य मणू-सस्य एकतीसाए जोयणसहस्सेहि अट्टाहि एकतीमेहि जोयणसएहि तीसाए य सिट्ट-भागेहिं जोयणस्य स्रिए चक्खुप्फासं हुव्यमागच्छइ, तया णं उत्तमक्ट्रपता उद्दो-सिया अद्वारसमुहत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्य छम्मासस्य पज्जबसाणे । से पविसमाणे सरिए दोषं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरनंसि बाहिराणंतरं मंडलं उबसंकीमना चारं चरइ, ता जया णं सुरिए बाहिराणंतरं मंडलं उबसंक्रमिता चारं चरइ तया णं पंच २ जोयणसह-स्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसर् सत्तावण्णं च सिद्धमाए जोयणस्स एगमेरोणं मुहनेणं गच्छइ, तया णं इहगयस्स मणूनस्स एक्सीसाए जोयणसहस्सेहिं णवहि य सोळेहि जोयणसएहिं एगूणयालीसाए सद्विभागेहिं जोयणस्य सद्विभागं च एगद्विहा छत्ता सट्टिए चुण्णियाभागे स्रिए चक्खुप्पासं ह्य्बमागच्छइ, तया णं राइंदियं तहेब. से पविसमाणे स्रिए दोचंति अहोरतंति बाहिरं तथं मंडलं उवसंक्रीमना चारं चरइ. ता जया णं सुरिए बाहिरतक्षं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साई तिण्णि य चउत्तरे जोयणसए ऊयाठीसं च सद्विमागे जोगणस्स एग-मेरोणं मुहत्तेणं गच्छइ, तथा णं इहगयस्स मणूसस्स एगाहिगेहिं बत्तीसाए जोयण-सहस्सेहिं एकावण्णाए य सद्विमागेहिं जोयणस्य सद्विमागं च एगद्विहा छेता तेबी-साए चुण्णियाभागेहिं सरिए चक्खुप्तासं हव्बमागच्छड, राइंदियं तहेव. एवं खळ एएणुवाएणं पविसमाणे सुद्रिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ अद्वारस २ सद्विभागे जोबणस्स एगमेगे मंडले मुहत्तगई जिल्लेड्डेमाणे २ साइरेपाई पंचासीई २ जोयणाई पुरिसच्छायं अभिलुह्वेमाणे २ सम्बन्धंतरं मंडलं उवसंक्रीमता चारं चरह, ता ज़या मं सुरिए सम्बन्धंतरं मंडलं उबसंकमिता चारं चरह तया मं

पंच २ जोयणमहस्साइं दोष्णि य एकावण्णे जोयणसए अष्टतीसं च सिट्टमागे जोयणसए एगमेगणं मुहुत्तेणं गच्छद् तया णं इहगयस्य मण्सस्स सीयालीसाए जोयणसहरसेहें दोहि य दोबद्वेहिं जोयणसएहिं एकवीमाए य सिट्टमागोहिं जोयणस्य सिर्ए चक्खण्यासं हव्यमागच्छद्द, तया णं उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवद्द, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवद्द, एस णं दोचे छम्मासे, एस णं दोचस्स छम्मास्सम् पज्जवसाणे, एस णं आइचे संवच्छरे, एस णं आइचस्स संवच्छरस्य पज्जवसाणे। २२॥ विद्यस्स पादुङस्त तद्द्यं पादुङस्य साहुङ समसं॥ २-३॥ विद्यस्स पादुङस्त तद्दयं पादुङस्य पादुङस्य साहुङ समसं॥ २-३॥

ता केवइयं खेलं चंदिमस्रिया ओभासंति उज्जोवेति तवैति पगासंति आहिताति बएजा ? तत्थ खलु इमाओ बारस पिडवत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाइंस-ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमस्रिया ओमासंति उज्जोवंति तर्वेति पगासंति ... १, एगे पुण एवमाइंग्र-ना तिष्णि दीवे तिष्णि समुद्दे बंदिमस्रिया ओभासंति ... एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता अद्भचउत्थे दीवसमुद्दे चंदिमस्रिया ओमा-संति ... एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमस्-रिया ओमासंति ... एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंस-ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमस्रिया ओमासंति ...एगे एवमाहंस ५, एगे पुण एवमाहंस-ता बारस बीवे बारस समुद्दे चंदिमस्रिया ओभासंति ... ६, एगे पुण एवमाहंस-ता बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमस्रिया ओमासंति ... एगे एवमाहंस ७, एगे पुण एवमाहंस-ता बावतारिं दीवे बावतारिं समुद्दे चंदिमस्रिया ओमासंति ... एगे एवमाहंसु ८, एगे पुण एवमाहंस्र-ता वायाठीसं वीवसयं वायाठीसं समुद्दसयं चंदिमस्रिया ओभासंति ···एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु-ता बावत्तरि दीवसयं बावत्तरि समुद्दसयं चंदिमसरिया बोमासंति ... एगे एवमाइंस १०. एगे पुण एवमाइंस-ता बायालीसं दीवसहत्सं बायाळं समुद्दसहत्सं चंदिमस्रिया ओमासंति ... एगे एवमाहंस ११, एगे पुण एवमाहंग्र-ता बाबतारि दीवसहस्यं बाबतारि समुद्दसहस्यं वंदिमस्रिया ओमा-संति ...एगे एवमाहंस १२, वयं पुण एवं वयामो-ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ सन्वरी-वसमुद्दाणं जाव परिवस्त्रिवेणं पण्णते, से णं एगाए जगईए सन्वस्त्रो समंता संपरि-क्खिते, सा णं अगई तहेव जहा जंबूदीवपण्णतीए जाव एवामेव सपुञ्चावरेणं जंबुद्दीवे २ चोद्दससक्रिलासयसहस्सा कृप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति मक्खाया, जंबुद्दीवे णं बीवे पंचनकमागसंठिए आहिएति वएजा, ता कहं जंबुदीवे २ पंचनकः भागसंकिए आहिएति वएजा ? ता जया णं एए दुवे स्रिया सम्बन्भंतरं मंडलं उनसंक्रमिता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स २ तिष्णि पंचनक्रमागे ओभासंति ..., तंजहा-एगेवि एगं दिवहूं पंचनक्रमागं ओमासइ ..., एगेवि एगं दिवहूं पंचनक्रमागं ओमासइ ..., एगेवि एगं दिवहूं पंचनक्रमागं ओमासइ ..., तया णं उत्तमकट्टपते उक्कोमए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवड, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं एए दुवे सूरिया सन्ववाहिरं मंडलं उनसं-क्रमिता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स २ दोष्णि नक्षमागे ओमासंति ... ता एगेवि सूरिए एगं पंचनक्रवालमागं ओमासड उज्जोवेइ तवेइ पमासेइ, एगेवि एगं पंचनक्रवालमागं ओमासड ..., तया णं उत्तमकट्टपता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ २२ ॥ तह्यं पाहुं समन्तं ॥ ३ ॥

ता वहं ते सेयाए संठिई आहिताति वएजा? तत्थ खलु इमा दुविहा संठिई पण्णता, तंजहा-चंदिमस्रियसंठिई य तावक्खेत्तसंठिई य, ता कहं ते चंदिमस्रिय-चंठिई आहिताति वएजा ! तत्य खलु इमाओ सोलस पाँडवत्तीओ पण्णानाओ. तं - तत्येगे एवमाहं सु-ता समच उरेससंठिया णं चंदिमस्रियसंठिई ० एगे एत्रमाहं सु १, एगे पुण एवमाइंसु-ता विसमचउरंससंठिया णं चंदिमस्रियसंठिई पण्णना० २, एवं एएणं अभिलावेणं समचडकोणसंठिया ३, विसमचडकोणसंठिया ४, समचक-बालसंठिया ५, विसमचक्रवालसंठिया ६,…ता चक्रद्भचक्रवालसंठिया …पण्णता एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु-ता छत्तागारसंठिया णं चंदिमस्रियसंठिई पण्णता० ८, एवं गेइसंठिया ९, गेहावणसंठिया १०. पासायसंठिया ११. गोपुर-संठिया १२, पेच्छाघरसंठिया १३, वलभीसंठिया १४, हम्मियतलसंठिया १५, एणे पुण एवमाहंसु-ता वालम्मपोडयासंठिया णं चंदिमस्रियसंठिई पण्णता० १६. तत्य जे ते एवमाइंग्र-ता समचलरंससंठिया णं चंदिमसरियसंठिडं पण्णता . एवं एएणं गएणं णेयव्वं भो चेव णं इयरेहिं। ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिई आहिताति वएजा? तत्य खळ इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णताओ, तं ०-तत्य णं एरो एवमाहंसु-ता गेह-संठिया णं तावक्खेतसंठिई पण्णता एवं जाव बालमापोइयासंठिया णं तावक्खेत-संठिई ॰, एने पुण एवमाहं धु-ता जस्संठिए णं जंबुदी वे २ तस्संठिया णं तावक्खेत्तसंठिई पण्णता एगे एवमाइंस ९, एगे पुण एवमाइंस-ता जस्संठिए णं भारहे वासे तस्संठिया॰ पण्णत्ता॰ १०, एवं उज्जाणसंठिया निजाणसंठिया एगओ णिसहसंठिया दृहुओ णिसइसंठिया सेयणगसंठियाः एगे एवमाइंस १५, एगे पुण एवमाइंस-ता सेणग-पहुसंठिया णं तावक्खेतसंठिई पण्णता एगे एवमाहंसु १६, वयं पुण एवं वयामी-ता उद्दीमुहकलंबुयापुष्फसंठिया णं तावक्खेतसंठिई पण्णता, अंतो संकुडा बाहि वित्यहा अंतो वहा बाहि पिहला अंतो अंबस्टरंटिया बाहि सत्यस्टबंटिया, उसओ पासेणं

तीसे दुवे बाहाओ अवहियाओ भवंति पणयालीसं २ जोयणसहस्साइं आयामेणं. तीसे दवे बाहाओ अणवद्रियाओ भवंति, तंजहा-सन्वर्धनिरया चेव बाहा सन्व-बाहिरिया चेव बाहा, तत्य को हेऊ०ित वएजा ? ता अयण्णं जंबुहीवे २ जाव परिक्खेवेणं . ता जया णं सरिए सम्बब्धंनरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तया णं रद्वीमहकलंब्यापण्यसंठिया णं नावक्षेत्रसंठिडे आहिनाति वएजा. अंतो संकटा बाहिं बितयडा अंतो वटा बाहिं पिहला अंनो अंकसहसंठिया वाहिं सत्यमृहसंठिया. दुहुओ पासेणं तीसे तहेव जाव सञ्चवाहिरिया चेव वाहा, तीसे णं सञ्चव्यंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं एव जोयणसहस्साई चनारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्य परिक्खेवेणं आहिताति बएजा, नासे णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएजा ? ता जे णं मंदरस्य पव्ययस्य परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणिता दमहिं हेता दमहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्लेवविसेसे आहिएति वएजा, तीसे णं सञ्बवाहिरिया बाहा लवणसमुद्देतेणं चडणउद्दं जोयणसहस्साडं अद्र य अदसद्रे जोयणसए चनारि य दसमागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वएजा, तासे णं परिक्खेनविसेसे कुओ आहिएति वएजा ! ता जे णं जंबुहीबस्य २ परिक्खेवे ... तिहिं गुणित्ता दसहिं छेता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएजा. तीसे णं तावक्खेत्ते केवइयं आयामेणं आहिएति वएजा ? ता अद्वत्तरि जोयणसहस्साइं ति जिंव य तत्तीसे जोयणसए जोयणतिमारे य आयामेणं आहिएति वएजा. तया णं कैसंठिया अंत्रयारसंठिई आहिताति वएजा ? ता उन्नीसहकलंबुयापुण्फसंठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सन्वर्भतरिया बाहा मंदरपन्वयंतेणं छजोयणसहस्साइं तिष्णि य चउवीसे जोयणसए छन्न दसभागे जोयणस्स परिक्खे-वेणं आहिताति वएजा. तीसे णं परिक्खेवविसेसे कलो आहिएति वएजा ? ता जे णं मंदरस्स पव्ययस्य परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता सेसं तहेव. नीसे णं सञ्बनाहिरिया बाहा लवणसम्हंतेणं तेवद्विजीयणसहस्साइं दोष्णि य पणयाछे जोयणसए छच दसभागे जोयणस्य परिक्खेवेणं आहिताति वएजा. तासे णं परि-क्खेवविसेसे कमो आहिएति बएजा? ता जे णं जंबुहीवस्स २ परिक्खेवे तं परि-क्खेवं दोहिं गुणिता इसहिं छेता दसहिं मागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहि-एति बएजा, ता से णं अंघयारे केवस्यं आयामेणं आहिएति वएजा? ता अड्रत्तरिं जोयणसहस्साइं तिष्णि य तेत्रीसे जोयणसए जोयणतिमागं न आयामेणं आहिएति वएजा, तया णं उत्तमकद्वपत्ते अद्वारसमूहते दिवसे भवह, जहण्यिया दुवालसमृहत्ता राई भवड़, ता जया णं सुरिए सन्ववाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरड तथा णं

किसंठिया तावक्खेतसंठिई आहिताति वएजा ? ता उन्नीमृहक्लंबुयापुष्पसंठिया तावक्खेतसंठिई आहिताति वएजा, एवं जं अब्मितरमंडले अंधयारसंठिईए पमाणं तं बाहिरमंडले नावक्खेनसंठिईए जं तिहं तावक्खेनसंठिईए तं याहिरमंडले अंधयारसंठिईए माणियब्वं जाव नया णं उत्तमकहुपता उक्कोसिया अहारममुहुत्ता राई भवड़, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवड़, ता जंबुद्दीवे २ स्रिया केव्हयं खेतं उन्हें तवंति केव्हयं खेतं तिरियं नवंति ? ता जंबुद्दीवे णं वीचे स्रिया एगं जोयणस्यं उन्हें नवंति अहारस जोयणस्याइं अहे तवंति सीयालीसं जोयणसहस्साइं दुण्णि य तेवहे जोयणसए एगवीसं च सिद्धभागे जोयणस्य तिरियं नवंति ॥ २३ ॥ चडन्थं पाइडं समसं ॥ ४ ॥

ता कस्सि णं सरियरस लेस्सा पिडहया आहिताति वएजा ? तत्थ खळ इमाओ वीसं पडिवनीओ पण्णताओ. तं०-नत्थेंगे एवमाइंसु-ता मंदरंसि णं पव्वयंसि स्री-यस्त लेस्सा पडिहया आहिनाति वएजा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता मेर्हात णं पन्वयंति सूरियस्स छेस्सा पडिहया आहिताति वएजा एगे एवमाइंयु २, एवं एएणं अभिलावेणं भाषियञ्चं-ता मणोरमंति णं पञ्चयंसि, ना मुदंसणंसि णं पव्वयंति. ता सर्यपर्मेस णं पव्वयंति, ता गिरिरायंति णं पव्वयंति. ता रयणुक्यंति णं पन्वयंसि, ता सिलुचयंसि णं पन्त्रयंसि, ता लोयमज्झंसि णं पञ्चयंसि, ना लोयणाभिति णं पञ्चयंसि, ता अच्छंति णं पञ्चयंसि, ता स्रियावत्तंसि णं पञ्चयंसि, ता सरियावरणंसि णं प्रव्ययंसि. ता उत्तमंसि णं प्रव्ययंसि. ता दिसाइंसि णं प्रव्य-यंसि, ता अवर्यसंसि णं पव्ययंसि, ता धरणिखीलंसि णं पव्ययंसि, ता धरणिसिंगंसि णं पञ्चयंसि, ना पञ्चइंदंसि णं पञ्चयंसि, ता पञ्चयरायंसि णं पञ्चयंसि सुरियस्स लेक्सा पडिह्या आहिताति वएजा, एगे एवमाहंसु २०। वयं पुण एवं वयामी-ता मंदरेवि पवृच्चइ जाव पव्वयराया ॰ पवृच्चइ, ता जे णं पुग्गला सुरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पुग्गला स्रियस्स केस्सं पडिद्दणीत, अदिद्वावि णं पोग्गला स्रियस्स केस्सं पिंडहणंति, चिरमलेस्संतरगयावि णं पोग्गला सुरियस्स लेस्सं पिंडहणंति ।। २४॥ पंचमं पाइडं समसं ॥ ५॥

ता कहं ते ओयसंठिई आहिताति वएजा ? तत्थ खल्ल इमाओ पणबीसं पिटवत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्थेंगे एवमाहंसु-ता अणुसमयमेव स्रियसस ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता अणुमुहुत्तमेव स्रियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ०२, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्या-ता अणुराइंदियमेव, ता अणुपक्कमेव, ता अणुमासमेव, ता अणुउडुमेव, ता अणु-

अयणमेव, ता अणुसंबच्छरमेव, ता अणुजुगमेव, ता अणुवाससयमेव, ता अणुवास-सहस्समेव, ता अणुवाससयसहस्समेव, ता अणुपुव्यमेव, ता अणुपुव्यसयमेव, ता अणुपुञ्चसहस्समेव, ता अणुपुञ्चसयसहस्समेव, ता अणुपलिओवममेव, ता अणुपलि-ओवमसयमेव, ता अणुपिलओवमगहस्ममेव, ता अणुपिलओवमसयसहस्समेव, ता अणुसागरीवममेष. ता अणुसागरीवमसयमेव, ता अणुमागरीवमसहस्समेव, ता अणुसागरोवमसयसहस्ममेव, एगे पुण एवमाइंध-ता अणुटस्सप्पिणकोसप्पिणिमेव स्रियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवंड, एगे एवमाहंसु २५। वयं पुण एवं वयामी-ता तीसं २ मुहुत्ते स्रियस्स ओया अवद्विया भवड्, तेण परं स्रियस्स ओया अणवद्विया भवह, छम्मासे स्रिए ओयं णिनुहुई छम्मासे स्रिए ओयं अभित्रहुई, णिक्सममाणे मृरिए देसं णियुक्केंद्र पविसमाणे स्रिए देसं अभियुक्केंद्र, तत्थ को हेऊ०ति वएजा है ना अयण्णं जंबुद्दीवे २ सव्यदीवसमु ॰ जाव परिक्लेबेणं ॰, ता जया णं सुरिए सव्बब्धेतरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ तथा णं उत्तमकद्ववते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालयमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सुरिए णवं संबच्छरं अयमाणे पढमांन अहीरत्तेसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरद, ता जया णं सुरिए अधिमतराणंतरं मंडलं उवसंक्रमत्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखेतस्स णितुह्विता रयणिखेत्तस्स अभि-बिहुना चारं चरइ मंडलं अद्वारसिंह तीसेहिं मएहिं छेना, तथा णं अद्वारससुहत्ते दिवसे भवड़ दोहिं एगडिभागमुहतेहिं ऊणे, दुवालसमुहता राई भवड़ दोहिं एगड्विभागमुहुतेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोचंसि अहोरतंसि अब्भितरतर्चं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए अन्भितरतचं मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेतस्स णिवुक्किता रयणिखेत्तस्स अभिवहेता चारं चरइ मंडलं अद्वारसतीसेहिं सएहिं छेता, तया णं अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवड चउहिं एमद्विमागमुहुनेहिं अहिया, एवं खलु एएणुवाएणं णिक्खममाणे स्रिए तबार्णतराओं तबार्णतरं मंडलाओं मंडलं संक्रममाणे २ एगमेगे मंडले एग-मेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए दिवसखेतस्स णिवुह्रेमाणे २ रयभिखे-त्तरस अभिवन्नेमाणे २ सध्वनाहिरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ, ता जया प सरिए सम्बन्धंतराओं मंडलाओं सम्बनाहिरं मंडलं उवसंकमिता चारं चरइ तथा णं सन्दर्भतरं मंडलं पणिद्वाय एगेणं तेसीएणं राइदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए दिवसकेतस्स भिवदेता स्यमिकेतस्स अभिवदेता चारं चरह मंडळं अठा-

रसिंह तीसेहिं छेना, तया णं उत्तमकद्वपत्ता उद्योसिया अद्वारसमुहत्ता राई भवड, जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ, एस णं पढमछम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मा-सस्य पज्जवसाणे, से पवित्ममाण स्रिए दोचं छम्मासं अथमाणे पढमंति अहोरत्तिस बाहिराणंतरं मंडलं उबसंकमिता चारं चरइ, ता जया णं स्रिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एमं भागं ओयाए रयणिक्खेतस्स णिवृद्देता दिवसखेतस्स अभिवद्देता चारं चरइ मंडलं अद्वारसिंहं तीसेहिं० छेता, तया णं अद्वारममुहत्ता राई भवर दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुते दिवसे भवर दोहि एगद्विभागमुहुत्तेहि अहिए, से पविसमाणे स्रिए दोचंसि अहो-रतंसि बाहिरं तर्च मंडलं उवसंक्रांभत्ता चारं चरः, ता जया णं स्रिए बाहिरतर्च मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणि-खेतस्स णितुङ्गेता दिवसखेत्तस्य अभिवुङ्गेता चारं चरइ मंडलं अद्वारसाहें तीसेहिं॰ छेता, तया णं अद्वारममुहुना राई भवर चउहिं एगद्विभागमुहुनेहिं ऊणा, दुवा-लसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिए, एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संक्रममाणे २ एग-मेरोणं राइंदिएणं एगमेर्गं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिवृद्धेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवद्रेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंक्रामना चारं चरह. ता जया णं सरिए सन्वबाहिराओं मंडलाओं सन्बन्धंतरं मंडलं उवसंक्रिमा। चारं चरइ तया णं सन्ब-षाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ओयाए रयणिखेनस्स णिवुहुता दिवसखेतस्स अभिवहुता चारं चरइ मंडलं अद्वारसतीसेहिं सएहिं छेता, तथा णं उत्तमकद्वपत्ते उद्दोसए अद्वारसमृहत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहत्ता राई भवड़, एस णं दोश्चे छम्मासे, एस णं दोश्वस्त छम्मासस्य पञ्जव-साणे, एस ण आइमे संबच्छरे, एस णं आइमस्स संबच्छरस्स पज्जवसाणे ॥ २५॥ छद्रं पाइडं समसं॥६॥

ता के ते स्रियं वरंति आहिताति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पिंड-वत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहंसु-ता मंदरे णं पव्वए स्रियं वरसइ आहितेति वएजा एगे एवमाइंसु १, एगे पुण एवमाइंसु-ता मेरू ण पव्यप स्रियं बरइ आहितेति वएजा० २, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव पव्य-यराए णं पव्यए स्रियं वरयइ आहितेति वएजा एगे एवमाइंसु २०, वसं पुण एवं वयामी-ता मंदरेवि पबुचाइ तहेव जाव पव्यवसराएवि पबुचाइ, ता जे णं पोग्गला स्रियस्स देसे फ़संति ते जं पोग्गला स्रियं बरयंति, अदिहावि जं पोग्गला

सूरियं वरयंति, चरमलेसंतरगयावि णं पोग्गला स्रियं वरयंति ।। २६ ॥ सत्तमं पाहुर्ड समत्तं ॥ ७ ॥

ना ऋहं ते उदयसंिटई आहिनेति बएजा ? तत्थ खलु इमाओ तिष्णि पिड-वत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहंसु-ता जया णं जंबुईवि २ दाहिणहे अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवड नया ण उत्तरहुवि अट्टारसमुहुते दिवसे भवड, जया णं उत्तरहे अद्वारसमुहते दिवसे भवइ तया णं दाहिणहेवि अद्वारसमुहते दिवसे भवर, जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणहें सत्तरममुहुने दिवसे भवद तया णं उत्तरहेवि सत्तरममुहुते दिवसे भवड़, जया णं उत्तरहे सत्तरसमुहुते दिवसे भवइ तया णं दाहिणहेचि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एवं (एएणं अभिळावेणं) परिहावेयव्वं, सोल-समुहुन दिवसे पण्णरममुहुते दिवसे चउइसमुहुते दिवसे तेरसमुहुते दिवसे जाव जया णं जंबुद्दीने २ दाहिणहे बारममुहुत्ते दिवसे० तया णं उत्तरहेवि बारसमुहुते दिवसं भवइ, जया णं उत्तरहे बारसमुहुते दिवसे भवइ तया णं दाहिणहेवि वारस-मुहुने दिवसे भवइ, जया णं दाहिणहे बारसमुहुते दिवसे भवइ नया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्य पन्वयस्स पुरिच्छमपचित्यमेणं सया पण्णरसमुहुने दिवसे भवह, सया पण्णरसमुहुता राई भवड, अवद्विया णं तत्य राइंदिया पण्णता समणाउसी ! एगे एवसाहंस १, एरो पुण एवसाहंसु-ना जया णं जंतुहीये २ दाहिणहे अद्वारसमुहुता-णंतरे दिवसे भवइ तथा णं उत्तरहेवि अद्वारसमुहुत्तार्णंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहे अद्वारसमुहत्ताणंतरे दिवसे भवड़ तथा णं दाहिणहेवि अद्वारसमुहत्ताणंतरे दिवसे भन्द, एवं परिहामेयव्वं, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ सोलसमुहुत्ता-णंतरे॰, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिश्से भवइ बोइसमुहुत्ताणंतरे॰, तरसमुहुत्ता-णंतरे , जया ण जंबुद्दीवे २ दाहिणहे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवह तया णं उत्तरह्वेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे॰, जया णं उत्तरह्वे बारस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया ण दाहिणहेचि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवई, तया ण जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पन्वयस्स पुरित्थमपन्वित्थमेणं णो सया पण्णरसमुद्धते दिवसे भवड, जो सया पण्णरसमुहुता राई भवड, अणबद्विया ण तत्य राइंदिया प॰ समणा-उसो ! एगे एवमाइंस २, एगे पुण एवमाइंस-ता जया णं जंबुहीचे २ दाहिणहे अद्वारसमुद्धते दिवसे भवइ तया णं उत्तरहे दुवालसमुद्धता राई भवइ, जया णं उत्तरहे अद्वारसमुहुते दिवसे भवह तथा वा दाहिणके बारसमुहुता राई भवह, जया वा दाहि-णहे अद्वारसमुद्रुत्ताणंतरे दिवसे भवद तया णं उत्तरहे बारसमुद्रुत्ता राई भवद, जया णं उत्तरहे अद्वारसमुहत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणहे बारसमहत्ता राई

भवइ, एवं णेयव्वं सगलेहि य अणंतरेहि य एक्के दो दो आलावगा सव्वेहिं दुवाल-समुहुत्ता राई भवद जाव ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणहे बारममुहुत्ताणंतरे दिवसे भवड़ तया णं उत्तरहे दुवालसमुहुता राई भवड़, जया णं उत्तरहे दुवासलमुहुताणंतरे दिवसे भवड़ तया णं दाहिणहे दुवालसमुहता राई भवड़, तया णं जंबुद्दीवे २ मंद-रस्स पञ्चयस्य पुरस्थिमपचित्यमेणं णेवत्यि पण्णरममुहुते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुता राई भवइ, वोच्छिण्णा णं तत्य राइंदिया प० समणाउसो! एगे एवमा-हंसु ३ । वयं पुण एवं वयामो-ता जंबुद्दीवे २ मृरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति पाईण-दाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छंति दाहिणपश्चीणमागच्छंति दाहिणपश्चीणमुग्ग-न्छंति पढीणउदीणमागन्छंति पडीणउदीणमुग्गन्छंति उदीणपाईणमागन्छंति, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणके दिवसे भवड तया णं उत्तरके दिवसे भवड, जया णं उत्तरहें त्या णं जंबुद्दीवे २ संदरस्य प्रवयस्य पुरिच्छमपचिच्छमेणं गई भवह, ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पन्त्रयस्स पुरित्थमेणं दिवसे भवइ तया णं पच-च्छिमेणवि दिवसे भवइ, जया णं पचित्थिमेणं दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दींचे २ संद-रस्स पन्त्रयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भन्नइ, ता जया णं॰ दाहिणद्वे उद्योसए अट्टार-ममुहुत्ते दिवसे भवइ तथा णं उत्तरहेवि उक्कोसए अद्वारसमुहुने दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहे तया णं जंबुईवि २ मंदरस्य पन्ययस्य पुरित्यमपन्नित्यमेणं जहण्णिया दुबालसमुहुता रादे भवड, ता जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स फ्वयस्म पुरच्छिमेणं उद्दोसए अद्वारसमुहुने दिवसे भवद तथा णं पत्रत्थिमेणवि उद्घोसए अद्वारसमुहुने दिवसे भवड, जया णं पचित्यमेणं उद्योसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ तथा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पब्वयस्स उत्तरदाहिणेणं जद्दण्णिया दुवालसमुहुता राई भवड, एवं एएणं गमेणं णेयन्वं, अद्वारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे अबइ, साइरेगदुवालनमुहुत्ता राई भवड़, सत्तरसमुहुते दिवसे तेरसमुहुता राई, सत्तरसमुहुतार्णतरे दिवसे भवड़, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई भवह, सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चोइसमुहुत्ता राई भवइ, सोलसमुहुत्तार्णतरे दिवसे भवइ, साइरेगचोइसमुहुत्ता राई भवइ, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहत्ता राई, पण्णरसमुहत्ताणंतरे दिवसे साइरेगपण्णरसमुहत्ता राई भवइ, चउइसमुहुते दिवसे सोलसमुहुता राई, चोइसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगसोलसमु-हुता राई, तेरसमुहुते दिवसे सन्तरसमुहुता राई, तेरसमुहुताणंतरे दिवसे साहरेग-सत्तरसमुहुता राई, ता अया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणहे बहण्णए दुवास्त्रसमुहुत्तए दिवसे मबइ तया ण उत्तरहु॰ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे मबइ, ता जया ण उत्तरहे जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ तया णं अंदुद्दीवे २ मेदरस्स पव्ययस्स

पुरत्थिमपचित्यमेणं उक्कोसिया अद्वारसमुहुता राई भवइ, ता जया णं जंबुईांवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरिवयोणं जहण्णए दुवाल्प्रसमुहुने दिवसे भवइ नया णं पञ्चित्थ-मेणिव जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवड, जया णं पचित्यमेणं जहण्णए दुवाल-समुहुते दिवसे भवइ तथा णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स० उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्टार-समुहुना राई भवड, ता जया णं जंबुद्दीवे २ दाहिणक्के वासाणं पढमे समए पडिवज्जड तया णं उत्तरहेव वासाणं पढमे समए पहिवजह, जया णं उत्तरहे वासाणं पढमे समए पडिवजह तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपचित्यमेणं अंणनरपुरक्खडकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, ना जया णं जंबुद्दीवे २ मंदरस्य पव्वयस्स पुरच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्बइ तथा णं पच्चित्थि-मेणवि वासाणं पडमे ममए पडिवज्बह, जया णं पचित्थिमेणं वासाणं पडमे समए पिंडवज्जर तया णं जंबुद्दीवे २ मंदरउत्तरदाहिणेणं अणंतरपरछाकडकाळसमयंति वासाण पढमे रामए पडिवण्णे भवह, जहा समओ एवं आवल्या आणापाण् थोवे ठवे मुहुत्ते अहोरते पक्खे मासे ऊऊ, एवं दस आलावगा जहा वासाणं एवं हेमंताणं गिम्हाणं च भाणियव्या, ता जया णं जंबुद्दीचे २ दाहिणहे पत्मे अयणे पडिवजइ तया ण उत्तरहुवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया ण उत्तरहु पढमे अयणे पडिवज्जइ तया णं दाहिणहेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया णं उत्तरहे पहमे अयणे पडि-वजाइ तया णं जंबुदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपचित्थिमेणं अणंतरपुर-क्खडकालसमर्यान पढमे अयणे पडिवज्जह, ना जया णं जंबुद्दीचे २ मंदरस्स पन्च-यस्स पुरत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवजइ तथा णं पचित्यमेणवि पढमे अयणे पडि-वजह, जया णं पचित्थिमेणं पढमे अयणे पिडवज्जइ तया णं अंबुद्दीचे २ मंद्रस्स पव्ययस्स उत्तरदाहिणेणं अर्णतरपञ्छाकडकालसमर्यस पढमे अयणे पडिनण्णे भवद्, जहा अयणे तहा संवच्छरे जुगे वाससए, एवं वाससहस्से वाससयसहस्से पुन्वंगे पुञ्चे एवं जाव सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे, ता जया णं जंबुदीवे २ दाहिणहे उस्सप्पिणी पिडवज्बह तया णं उत्तरहेवि उस्सप्पिणी पिडवज्बह, जया णं उत्तरहे उस्सप्पिणी पहिबज्जह तथा णं जंबुहीबे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरित्थम-पक्तियमेणं णैवत्य उस्सप्पिणी णेव अत्य ओसप्पिणी अवद्विए णं तत्य काले पण्णले समणाउसो !॰ एवं ओस्सप्पिणीवि । ता जया णं स्त्रपे समुद्दे दाहिणके दिवसे भवइ तया णं लगणसमुद्दे उत्तरहुं विवसे भवइ, जया णं उत्तरहे दिवसे भवइ तया णं स्वणसमुद्दे पुरिच्छमप्यत्थिमेणं राई भवड, जहा जंबूबीवे २ तहेव जाव उस्सप्पिणी , तहा धायर्संडे णं बीवे सूरिया उदीण व तहेव, ता जया णं धायर्संडे दीचे दाहिणहे दिवसे भवइ तथा णं उत्तरहेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहे दिवसे भवइ तथा णं धायइसंडे दीचे मंदराणं पव्ययाणं पुरत्थिमपचित्यमेणं राई भवइ, एवं जबुद्दीचे २ जहा तहेच जाव उस्सप्पिणी०, कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेच, ता अव्मंतरपुक्त्वरद्धे णं सृदिया उदीणपाईणमुग्गच्छ तहेच, ता जया णं अव्भंतरपुक्त्वरद्धे णं सृदिया उदीणपाईणमुग्गच्छ तहेच, ता जया णं अव्भंतरपुक्त्वरद्धे णं दाहिणहे दिवसे भवइ तथा णं उत्तरहेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरहेवि दिवसे भवइ तथा णं अविभतरपुक्त्वरद्धं मंदराणं पव्ययाणं पुरत्थिमपञ्जिष्टेमेणं राई भवइ, सेसं जहा जंबुद्दीचे २ तहेच जाव उस्मिष्पणीओसप्पिणीओ ॥ २०॥ अहमं पाइडं समन्तं ॥ ८॥

ना कटकड़ं ते सरिए पोरिसिच्छायं णिव्यत्तेड आहितेति वएजा ? तत्य खहु इमाओ तिष्णि पडिवत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्येगे एवमाहंसु-ता जे णं पोग्गला स्रियस्त छेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तयर्ण-तराई बाहिराई पोग्गलाई संतावेंतीति एस णं से समिए तावक्खेते एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाइंसु-ता जे णं पोग्गला स्रियस्स देसं फसंति ते णं पोग्गला णो संतप्पंति. ते णं पोम्गला असंतप्पमाणा तयणंतराई बाहिगई पोम्गलई णो संता-वैंतीति एस णं से समिए तावक्खेते एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ना जे णं पोग्गला सरियस्स केसं फ़संति ते णं पोग्गला अत्येगङ्या संतप्पंति अत्येगङ्या णो संतप्पंति. नत्थ अत्थेगइया संतप्पमाणा तयणंतराई बाहिराई पोग्गलाई संतावेंति अस्थेगइया असंतप्पमाणा तयणंतराई बाहिराई पोग्गलाई णो संतार्वेति, एस णं से समिए तावक्खेंसे एगे एवमाहंसु ३ । वर्थ पुण एवं वयामी-ता जाओ इमाओ चंदिमसरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहिया [उच्छढा] अभिणिसद्वाओ पनावेति, एयासि णं लेसाणं अंतरेस अण्ययीओ छिण्णलेसाओ संमच्छेति, तए णं ताओं छिण्णलेसाओ संमुच्छियाओ समाणीओ तयणंतराई बाहिराई पोग्गलाई संनार्वेति इइ एस णं से समिए तावक्खेते ॥ २८ ॥ ता कड़कड़े ते स्रिए पोरिसि-च्छायं णिव्यत्तेइ आहितेति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णताओ, तं ०-तत्थेगे एवमाहंसु-ता अणुसमयमेव सुरिए पोरिसिच्छायं णिव्यतेह आहितेति वएजा एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता अणुसहत्तमेव स्विए पोगिसिच्छायं जिन्बतेह आहितेति वएजा० २. एवं एएणं अमिलावेणं जेयव्यं, ता जाओ चेव भोयसंठिईए पणवीसं पहिवत्तीओ ताओ चेव णेयव्वाओ जाव अणु-उत्सप्पिणी॰मेव स्रिए पोरिसिच्छायं जिथ्वतेइ आहिताति वएजा, एने एवमाइंड २५ । वयं पुण एवं दयामो-ता सुरियस्स णं उत्रतं च केसं च पहुत्र छाउदेशे

उन्नतं च छायं च पहुन्न लेसुहेसे लेसं च छायं च पहुन्न उन्नतुहेसे, तत्थ खलु इमाओ दुने पिडवत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहंद्य-ना अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं णिव्वतेह, अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि स्रिए दुपोरिसिच्छायं णिव्बत्तेइ० एगं एवमाहंसु १, एगे पुण एवमा-हंस-ता अत्थि णं से दिवसे जंसि व णं दिवसंसि स्रिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वतेइ, अत्थि णं से दिवसे जंमि॰ दिवसंसि सुरिए णो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्यतेष्ठ० २. तत्थ जे ते एवमाहंसु—ता अन्थि णं से दिवसे जंति च णं दिवसंसि स्रिए चडपोरिसियं छायं णिव्यत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि स्रिए दोपोरिसियं छायं णिव्वेभेइ, ते एवमाहंसु-ता जया णं सुरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकांमता चारं चरड् तया णं उत्तमक्छपत्ते उद्दोसए अद्घारसमुहुत्ते दिवसे भवह, जहण्णिया दुवा-लसमुहुता राई भवइ, तंसि च णं दिवसंसि सुरिए चडपोरिसियं छायं णिव्यतेह, तं - उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्यमणमुहुत्तंसि य, लेसं अभिवहुत्राणे णो चेव णं णिवुहुमाणे, ता जया णं स्रिए सव्वबाहिर मंडलं उवसंक्रमिता चारं चरइ तया णं उत्तमक्द्वपत्ता उन्होसिया अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-सहते दिवसे भवड, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्यतेह, तं॰-उग्गमणमुहुतंसि य अत्यमणमुहुतंसि य, छेसं अभिनुहुमाणे णो चेव णं णिनुहु-माणे॰ १, तत्थ णं जे ते एवमाहंग्र-ता अत्थि णं से दिवसे जीसे च णं दिव-संसि स्विए दुपोरिसियं छायं णिव्यत्तेड, अत्थि णं से दिवसे जंसि च णं दिवसंसि स्रिए णो किनि पोरिसियं छायं जिन्नतेइ, ते एवमाइंस्-ता जया णं स्रिए सन्ब-ब्मंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमक्द्वपते उक्कोसए अद्वारसमुहत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुना राई भवड़, तंसि च णं दिवसंसि सुरिए दुपोरिसियं छायं णिव्यतेह, तं०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्यमणमुहुत्तंसि य, हेसं अभिवद्देमाणे जो चेव जं जिल्लेष्ट्रमाणे , "ता जवा जं स्रिए सध्ववाहिरं मंडलं उवसंक्रमिता वारं वरइ तथा णं उत्तमऋष्यता उक्कोसिया अहारसमुहता राई अवइ. जहण्णए दुवालसमुहते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि स्रिए णो किचि पोरि-सिच्छायं णिक्वतेइ, तं०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, जो चेव णं छेसं अभिनुक्रुमाणे वा णिवुक्रुमाणे वा॰ २, ता कहकहुं ते स्रिए पोरिसिच्छायं णिव्यतेह आहिताति वएजा ? तत्व सळ इमाओ स्थ्याउई पहिवत्तीओ प्रणाताओ, तं ॰ -तस्येगे एवमाइंग्र-ता अत्य णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छात्रं णिव्य-तेह॰ एगे एक्साहंस. एगे पुण एक्साहंस-ता श्वात्थ णं से देसे अंसि च णं देसंसि

स्रिए दुपोरिसियं छायं णिव्वतेह०, एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव छण्णखं पोरिसिच्छायं णिब्बत्तेइ, तत्थ जे ते एवमाइंस-ता अत्थ णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्यत्तेइ. ते एवमाहंस-ता सुरियस्स णं सुव्यहेद्विमाओ सूरप्पडिहीओ बहिया अभिणिसद्वाहिं लेसाहिं नाडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए बहसमरमणिजाओ भूमिभागाओ जावइयं सुरिए उद्गं उचनेणं एवइयाए एगाए अद्धार एगेणं छायाग्रमाणप्यमाणेणं उमाए तत्व से सरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वतेह, तत्य जे ते एवमाहंसु-ता अत्य णं से देसे जीत य णं देसंसि सुरिए दुपोरिसियं छायं णिव्यतेह, ते एवमाहंसु-ता सरियस्स णं सव्यहेद्विमाओ सूरियपिडिहीओ बहिया अभिणिसद्वियाहिं लेसाहि ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्प भाए पढ़वीए बहसमरमणिजाओ भूमिभागाओ जावइयं सुरिए उन्नं उन्ननेणं एवइ-याहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सरिए द्पोरिसियं छायं जिव्बतेइ. एवं जेयव्वं जाव नत्य जे ते एवमाहंमु-ता अन्यि जं से देसं जंसि च णं देसंसि सुरिए छण्णउई पोरिसियं छायं णिव्वतेइ, ते एवमाहंसु-ता सुरियस्स णं सम्बहिद्रिमाओं सुरप्पिहीओ बहिया अभिणिसद्वाहि लेखाहि ताहिजमाणीहि इमीसे रयणप्पमाए पढवीए बहससरमणिजाओ भूमिमागाओ जावइयं सरिए उन्नं उन्नेनणं एवइयाहिं छण्णवईए छायाणुमाणप्पमाणाहिं उमाए एत्थ णं से सरिए छण्णउडं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेह एगे एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो-ता साहरेगअउणिह-पोरिसीणं सुरिए पोरिसिच्छायं णिव्यतेइ०, ता अवद्वपोरिसी णं छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ? ता तिभागे गए वा सेसे वा, ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता चउन्भागे गए वा सेसे वा. ता दिवहूपोरिसी णं छाया दिवसरस कि गए वा सेसे ना ? ता पंचमभागे गए ना सेसे ना. एवं अद्भोदिसि छोढ़ं पुच्छा दिवसस्स भागं छोढ़ं बागरणं जाव ता अदअउणासद्विपोरिसीछाया दिवसस्स किं गए वा सेसे बा ? ता एगूणवीससयभागे गए वा सेसे बा, ता अउणा-सिंद्विपोरिसी र्थं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ? ता वावीससहस्समागे गए वा सेसे वा. ता साइरेगअउणासद्विपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा? ता णित्य किंचि गए वा सेसे वा तत्य खलु इमा पणवीसणिविद्वा छाया प०, तं०-संभच्छाया रज्ज्च्छाया पागारच्छाया पासायच्छाया उद्यगच्छाया उद्यगच्छाया अणुलोमच्छाया आहमिया समा पिड्डिया खीलच्छाया पक्खच्छाया प्रत्योउदया पुरिमकंठभाउवगया पच्छिमकंठमाउवगया छायाणुवाइणी किद्वाणुवाइणीछाया छाय-छाया १७ गोलकाया, तत्य णं गोलकाया अद्यविहा फणता तंजहा-गोलकाया अवड-

गोलच्छाया गाढलगोलच्छाया अवहुगाढलगोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवहुगोला-वलिच्छाया गोलपुंजच्छाया अवहुगोलपुंजच्छाया २५॥२९॥ **णवमं पाहुईं** समर्ता ॥९॥

ना जोगेति वत्थुस्स आविष्याणिवाए आहितेति वएजा, ता वहं ते जोगेति वत्थुस्स आविष्याणिवाए आहितेति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पिडवर्ताओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता कित्रयाहया भरणिपज्ञव-साणा प० एगे एवमाहंचु १, एगे पुण एवमाहंचु-ना सन्वेवि णं णक्खता महाइया अस्सेसपज्ञवसाणा पण्णता एगे एवमाहंचु २, एगे पुण एवमाहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता भराविष्याहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता भराविष्याहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता भराविष्याहंचु ३, एगे पुण एवमाहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता अस्तिणीआइया रेवइपज्जवसाणा प० एगे एवमाहंचु-ता सन्वेवि णं णक्खता अस्तिणीआइया अत्तिणीपज्जवसाणा० एगे एवमाहंचु-ना सन्वेवि णं णक्खता भराविष्याहच्या अस्तिणीपज्जवसाणा० एगे एवमाहंचु ५, वयं पुण एवं वयामो-ना सन्वेवि णं णक्खता अभिईआइया उत्तरासादापज्जवमाणा पण्णता, तंजहा-अभिई सवणो जाव उत्तरासादा॥ ३०॥ दसमस्स पाइडस्स पढमे पाइडस्पाइडं समत्तं॥ १०-१॥

ना कहं ते मुहुत्ता आहितेति वएजा ? ता एएसि णं अहावीमाए णक्खताणं अत्थि णक्खने जे णं णव मुहुने सत्तावीसं च मत्तद्विभागे मुहुत्तस्य चंदेण सिद्ध जोयं जोएइ, अस्थि णक्खना जे णं पण्णरस सुहुत्ते चंदेण सर्दि जोयं जोएंति. अत्य णक्खता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्यि णक्खता जे णं पणयालीसे मुहुते चंदेण सार्दि जोयं जोएंति, ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्ख-त्ताणं कयरे णक्कते जे णं णवमुहुते सत्तावीसं च सत्ताहिभाए मुहुतस्स चंदेण सिंद जोगं जीएइ, कथरे णक्खता जे णं पण्णरसमुहुते चंदेण सिंद जोगं जोएंति, कयरे जनकत्ता जे णं तीसं मुहुते चंदेण सिद्धं जोयं जोएंति, कयरे जनकत्ता जे णं पणयालीसं मुहुते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं तत्य जे से णक्सते ने णं णव मुहुते सत्तावीसं च सत्तिहिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सिंह जोयं जोएइ से णं एगे अभीई, तत्य जे ते णक्खता जे णं पण्णरसमुहते चंदेण सदि जोयं जोएंति ते णं छ, तं०-सयभिसया भरणी अहा अस्सेसा साई जेहा, तत्य जे ते पक्खता जे णं तीसं मुहुतं चंदेण सिंद्धं जोयं जोएंति ते णं पण्णरस्, तं - सक्णे धणिद्वा पुल्वाभद्वया रेवई अस्सिणी कत्तिया मिगसिरपुस्सा महा पुरुवापरमुणी हत्यो चिता अगुराहा मूलो पुरुवासाहा, तत्य जे ते गक्खशा जे णं पणयालीसं मुहुते चंदेण सिद्धे जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा-उत्तरामहवया रोहिणी

पुणव्यस् उत्तराफगुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥ ३१ ॥ ता एएसि णं अड्डावीसाए णक्खताणं अस्थि जक्खते जे णं चनारि अहोरते छच मुहते सुरिएण सर्खे जीयं जोएइ, अन्य णक्खता जे णं छ अहोरने एक्स्तीसं च मुहते स्रिएण सर्दि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खता जे णं तेरस अहोरते बारस य मुहुते मृरेण सर्दि जोयं जोएंति, अत्थ णक्तना जे णं वीसं अहोरते तिण्णि य मुहते स्रेण मदि जीयं जोएंति, ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं क्यरे णक्खते जे णं चनारि अहोरने छच मुहते सुरेण सिद्धें जोयं जोएड, कयरे णक्खता जे णं छ अहोरते एक्सवीस-मुहत्ते स्रेण सद्धिं जोयं जोएंति, कयरे णक्खता जे णं तेरस अहोरने वारस मुहत्ते मुरेण सिंद्धं जोयं जोएंति, कयरे णक्खता जे णं वीसं अहोरते तिण्णि य मुहते सरेण सद्धि जोयं जोएंति. ना एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं तत्थ जे से णक्खने जे णं चतारि अहोरते छच सहते स्रेण सिंद्धं जोयं जोएइ से णं एगे अमीई, तत्थ जे ते णक्खता जे णं छ अहोरते एकवीसं च सहते सरिएण सिंद जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा-सथभिसया भरणी अहा अस्सेसा साई जेट्टा, तत्थ जे ते ... नेरस अहोरते दुवालस य मुहने स्रिएण मिद्धं जोयं जोएंति ते णं पण्णरम, तंजहा-सवणो धणिहा पुन्वाभहवया रेवई अस्सिणी कतिया भिगसिरं पूसो महा पुन्वाफ-ग्गुणी हत्यो चित्ता अणुराहा मूलो पुरुवासाहा, तत्य जे ते णक्खता जे णं वीसं अहोरते तिष्णि य मुहत्ते सूरेण मद्धि जोयं जोएंति ते णं छ, तंजहा-उत्तराभदृतया रोहिणी पुणव्यस् उत्तराफागुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥ ३२ ॥ उसमस्स पाइडस्स विरयं पाइडपाइडं समत्तं ॥ १०-२ ॥

ता कहं ते एवंभागा आहिनाति वएजा ? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खत्ताणं अत्य णक्खता पुन्वंभागा समक्खेता तीसइमुहुत्ता प०, अत्य णक्खता पच्छंभागा समक्खेता तीसइमुहुत्ता प०, अत्य णक्खता प्रतंभागा अवहुक्खेता पण्णरसमुहुत्ता प०, अत्य णक्खता प्रतंभागा अवहुक्खेता पण्णरसमुहुत्ता प०, अत्य णक्खता उभयंभागा दिवहुक्खेता पण्याठीसं मुहुत्ता प०, ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं कयरे णक्खता० पुन्वंभागा समक्खेता तीसइमहुत्ता प० जाव कयरे णक्खताणं कर्यरे णक्खता पण्याठीसइमुहुत्ता प०? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं तत्य जे ते णक्खता पुन्वंभागा समक्खेता तीसइमुहुत्ता प० ते णं स्व, तंजहा—पुन्वापोद्वयमा कत्तिया महा पुन्वापमगुणी मूलो पुन्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खता० पच्छंभागा समक्खेता तीसइमुहुत्ता प० ते णं दस, तंजहा—अभिई सवणो घणिद्वा रेवई अस्सिणी मिगसिरं पूसो हत्यो किता अणुराहा, तत्थ जे ते णक्खता० णत्तामागा अवहुक्खेता पण्णरसमुहुता प० ते णं छ, तंजहा—

सयभिसया भरणी अहा अस्सेसा साई जेट्टा, तत्य जे ते णक्सता॰ उभयंभागा दिवहुक्खेता पणयालीसं मुहुत्ता प॰ ते णं छ, तंजहा-उत्तरापोष्ट्रवया रोहिणी पुणव्वस् उत्तराफगुणी विसाहा उत्तरासाठा ॥ ३३ ॥ दसमस्स पाहुडस्स तड्यं पाहुडपाहुङं समसं ॥ १०-३ ॥

ता वहं ते जोगस्य आई आहिताति वएजा ? ता अभीईमवणा खल दुवे णक्यता पच्छामागा समक्खेता साइरेगऊयालीसङ्महत्ता तप्पडमयाए सायं चंदेण सिंद जोयं जोएंति, तओ पच्छा अवरं साइरेयं दिवसं, एवं खलु अमिईसवणा दुवे णक्लना एगराई एगं च माइरेगं दिवसं चंदण मद्धि जीयं जोएंति जीयं जीएता जोयं अणुपरियहंति जोयं अणुपरियहिता सायं चंदं धणिह्वाणं समप्पेंति, ता धणिह्वा खलु जक्कारे पच्छंभागे समक्खेरे तीसइमुहरी तप्पडमगए सायं बंदेज सिद्धं जोयं जोएट २ ता तओ पन्छा राई अवरं च दिवसें, एवं खढ़ धणिट्टा णक्खते एगं च राई एगं च दिवसं चंदेण सिद्धं जोयं जोएइ जोएता जोयं अणुपरियद्वइ जोयं अणुपरि-यहिता सार्य चंदं सयमिसयाणं समप्पेइ. ता सयमिसया खळ णक्खते णत्तंभागे अवब्रुक्खेत्ते पण्णरसमुद्वते तप्पटमयाए सायं चंदण सर्दि जोयं जोएइ णो लभइ अवरं दिवसं, एवं खुळु सयभिसया णक्खते एगं राइं चंदेण सिंद्ध जोयं जोएइ जोयं जोएसा जोयं अणपरियद्वड जोयं अणपरियद्विना पाओ चंदं पुन्वाणं पोद्रवयाणं सम-प्पेइ, ता पुब्यापोट्टक्या खलु णक्खते पुरुवंभागे समक्खेन तीसङ्मुहत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सदि जोयं जोएइ, तुओ पच्छा अवरराइं, एवं खल्ल पुग्वापोट्टवया णक्यते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सिद्धं जोयं ओएइ २ ता जोयं अणुपरि-यध्इ २ ता पाओ चंदं उत्तरापोद्ववयाणं समप्पेइ, ता उत्तरापोद्ववया खलु णक्खते उमयंभागे दिवद्भक्केते पणयालीसङ्मुहत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धि जोयं जोएइ अवरं च राई तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं साल उत्तरापोद्ववया णक्साने दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सिंद्धं जोयं जोएइ अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु उत्तरापोद्ववया णक्खने दो दिवसे एगं च राई चंदेण सिद्ध जोयं जोएइ जोड़ता जीयं अणुपरियद्द १ ता साथं चंदं रेवईणं समप्पेइ, ता रेवई खलु णक्खते पच्छंमागे समक्खेते तीसइमहत्ते तप्पढमबाए सार्य चंदेण सर्दि जोयं जोएइ, तश्रो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खळु रेवहें णक्खते एगं राहं एगं च दिवसं चंदेण सिद्धें जोयं जोएइ २ शा जोयं अगुपरियद्ध २ शा सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेइ, ता अस्सिणी खलु णक्खते पच्छंभागे समक्खेते तीसइसहते तप्पढमयाए साथं चंदेण सर्दि जोर्थ जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवसं, एवं खळ अस्सिणी णक्खते एगं च

राई एगं च दिवसं चंदेण सिंद जोयं जोएड २ ता जोयं अणुपरियद्वइ २ ता सायं चंदं भरणीणं समप्पेड, ना भरणी खल्ल णक्सते णतंमागे अबहुत्केते पण्णरसमुहुते तप्पदमयाए सायं चंदेण सिंद जोयं जोएड, णो लभइ अबरं दिवसं, एवं खल्ल भरणी णक्सते एगं राइं चंदेण सिंद जोयं जोएड २ ता जोयं अणुपरियद्वइ २ ता पाओ चंदं कित्तयाणं समप्पेड, ता कित्तया खल्ल णक्सते पुन्वंभागे समक्सेते तीसइ-मुहुने तप्पटमयाए पाओ चंदेण सिंद जोयं जोएड, तओ पच्छा राइं, एवं खल्ल कित्तया णक्सते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदण सिंद जोयं जोएड २ ता जोयं अणुपरियद्वइ २ ता पाओ चंदं रोहिणीणं समप्पेड, रोहिणी जहा उत्तरभह्वया मिर्गानरं जहा घणिद्वा अहा जहा स्यभिसया पुण्व्वस्, जहा उत्तरभह्वया पुरसो जहा घणिद्वा अस्तेसा जहा स्वभिसया महा जहा पुञ्चाफरगुणी पुट्याफरगुणी जहा पुञ्चाभह्वया उत्तराफरगुणी जहा उत्तराभह्वया हत्थे विना य जहा घणिद्वा साई जहा स्वभिसया विसाहा जहा उत्तराभह्वया इत्थे विना य जहा घणिद्वा स्वभिसया मूला पुञ्चासादा य जहा पुञ्चाभह्वया । ३४॥ दस्समस्स पाइएस्स चल्लाभह्वया उत्तरामह्वया उत्तरामह्वया ॥ ३४॥ दस्समस्स पाइएस्स चल्लाभह्वया उत्तरामह्वया उत्तरामह्वया ॥ १४॥

ता वहं ते कुला उवकुला कुलोवकुला आहिताति वण्जा ! तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला बतारि कुलोवकुला प०, बारस कुला०, तंजहा-धणिद्वाकुलं उत्तरामद्दवयाकुलं अस्सिणीकुलं कित्तयाधुलं संठाणाकुलं पुस्साकुलं महाकुलं उत्तरा-फरणुणीकुलं चिनाकुलं विसाहाकुलं मृत्यकुलं उत्तरासाहाकुलं, बारस उवकुला०, तंजहा-मवणो उवकुलं पुन्वापुट्टवयाउवकुलं रेवई उवकुलं भरणीउवकुलं रोहिणीउवकुलं पुण्व्यस् उवकुलं अस्सेसाउवकुलं पुन्वाफरणुणीउवकुलं हत्याउवकुलं साईउवकुलं लेट्टा-उवकुलं पुन्वासाडाउवकुलं, चतारि कुलोवकुलं हत्याउवकुलं साईउवकुलं सयमि-सयाकुलोवकुलं अहाकुलोवकुलं अणुराहाकुलोवकुलं ॥ ३५ ॥ दसमस्स पादुङस्स पंचमं पादुङपादुङं समन्तं ॥ १०-५॥

ता कहं ते पुण्णिमासिणी आहितेति वएजा ? तत्थ खल इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ पण्णताओ, तंजहा—साविद्वी पोडवई आसीया कित्त्या मग्गसिरी पोसी माही फ्रगुणी चेत्ती वेसाही जेड्डामूळी आसाढी, ता साविद्विण्णं पुण्णिमासि वह णक्खता जोएंति ? ता तिष्णि णक्खता जोएंति , तंजहा—सयभिसया पुन्नापोड्डनया उत्तरापोड्डनया, ता आसोइण्णं पुष्णिमं वह णक्खता जोएंति ? ता दोष्णि णक्खता जोएंति, तंजहा—

रेवई य अस्सिणी य, ता कत्तियण्णं पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खता जोएंति, तंजहा-भरणी कत्तिया य, ता मग्गसिरीपुण्णिमं बद्ध णक्खता जोएंति ? ता दोष्णि णक्खता जोएंति, तंजहा-रोहिणी मिगसिरो य, ता पोसिण्णं पुण्णिमं कइ णक्खना जोएंति ? ता तिण्णि णक्खना जोएंति, तंत्रहा-अहा पुण-व्यस् पुरसो, ता माहिण्णं पुण्णिमं वह णवन्त्रता जोएंति ? ना दोण्णि णवन्त्रता जोएंति, तं०-अस्सेसा महा य, ता फम्गुणिकां पुष्णिमं कइ णक्खता जोएंति ? ता दुष्यि णक्सता जोएंति, तं०-पुब्बाफगुणी उत्तराफगुणी य, ता चेतिण्णं पुण्णिमं कइ णक्सता जोएंति ? ता दोण्णि , तं - हत्यो चिता य, ता वेसाहिण्णं पुण्णिमं कड् णक्सता जोएंति ? ता दोण्णि णक्सता जोएंति, तं०-साई विसाहा य, ता जेट्ठाम्ळिणां पुण्णिमासिणि वह णक्खता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खता जोएंति, तं०-अणुराहा जेट्ठा मूलो, ता आसादिण्णं पुण्णिमं वह णक्खना जोएंति ? ता दो णक्खता जोएंति, तंजहा-पुक्वासाहा उत्तरासाहा ॥ ३६ ॥ [णाउमिह अमावासं जइ इच्छिति कम्मि होइ रिक्खम्मि । अवहारं ठाविज्जा तत्तियरूवेहि संगुणए ॥ १ ॥ छावडी य मुहुता विसद्विभागा य पंच पिंडपुण्णा । बासहिभाग-सत्तिष्टिगो य इक्को इवइ भागो ॥ २ ॥ एयमबहाररासिं इच्छअमावाससंगुणं कुन्ना । णक्खताणं एतो सोहणगविहिं णिसामेह ॥ ३ ॥ बावीसं च मुहुत्ता छायालीसं विसद्विभागा य । एयं पुणव्यसुस्स य सोहयव्यं इवड् वुच्छं ॥ ४ ॥ बावत्तरं सयं फरगुणीणं बाणउद्दय वे विसाहासु । चतारि य बायाला सोजन्ना उ उत्तरासाढा ॥ ५ ॥ एवं पुणव्यप्रस्स य विसद्विभागसहियं तु सोहणगं । इनो अभिईआई बिद्यं बुच्छामि सोहणगं ॥ ६ ॥ अभिद्रस्य णव मुहुत्ता बिसद्विभागा य हुंति चउनीसं । छावट्टी असमत्ता भागा सत्तद्विक्षेयक्या ॥ ७ ॥ उगुणहुं पोह्नवयाइसु चेव णवोत्तरं च रोहिषिया । तिद्ध णवणवएद्ध भवे पुणव्वस् फरगुणीओ य ॥ ८ ॥ पंचेव उगुणपण्णं सयाइ उगुणुत्तराई स्वेव । सोजन्नाणि विसाहासुं मूळे सत्तेव चोयाला ॥ ९ ॥ अद्वसय उगुणवीसा सोहणगं उत्तराण साढाणं । चडवीसं खलु भागा छावड्डी चुण्णियाओ य ॥ १० ॥ एयाइ सोहइता जं सेसं तं हवेइ णक्खतं । इत्यं करेइ उडुनइ स्रेण समं अमानासं ॥ ११ ॥ इच्छापुण्णिमगुणिओ अनहारो सोत्य होइ कायव्यो । तं चेव य सोहणगं अभिईआई तु कायव्यं ॥ १२ ॥ सुद्धीम य सोहणगे जे सेसं तं भविज्य णक्खतां। तस्य य करेड् उडुवह पश्चिपुण्णो पुण्णिमं विडलं ॥ १३ ॥] ता साविद्विण्णं पुण्णिमासिणि कि कुलं जोएइ उचकुलं जोएइ इस्तोषकुर्ल जोएइ ? ता इस्ते वा जोएइ उबकुरुं वा जोएइ कुर्लोबकुरं वा

जोएइ, कुलं जोएमाणे धणिद्वा णक्खने , उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खते जोएइ, कुलोबकुलं जोएमाणे अभिई णक्सत्ते जोएइ, ता साबिद्वि॰ पुण्णिमं कुलं वा जोएइ उवकुलं वा ओएइ कुलोवकुलं वा जोएइ, कुलेण वा जुना उवकुलेण वा जुता कुलोव-कुळेण वा जुत्ता साबिट्टी पुण्णिमा जुताति वत्तव्वं सिया, ता पोद्वबद्ण्णं पुण्णिमं किं कुछं जीएइ उवकुरूं जीएइ कुलोनकुरुं वा बोएइ ! ता कुलं वा जीएइ उवकुरुं वा जोएइ कुलोक्कुलं वा जोएइ, कुलं जोएमाण उत्तरापोद्ववया णक्खने जोएइ, उब-कुलं जोएमाणे पुन्वापुद्ववया णक्खते जोएइ, कुलोवफुकं जोएमाणे मयभिसया णक्खने जोएइ, पोट्टवरण्णं पुण्णमासिणि कुलं वा जोएइ उनकुलं वा जोएइ कुलोब-बुळं वा जोएड, कुळेण वा जुत्ता ३ पुट्टवया पुण्णिमा जुत्ताति बत्तव्वं सिया, ता आसोइं णं पुण्णिमासिणि किं कुळं जोएइ उवकुळं जोएइ कुळोबकुळं जोएइ ? ता कुलंपि जोएइ उषकुलंपि जोएइ णो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे अस्मिणी णक्खते जोएइ, टब्कुलं जोएमाणे रेवई णक्खते जोएइ, आसीई णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ उवदुळं वा जोएइ, कुळेण वा जुत्ता उवदुळेण वा जुता अस्मोई णं पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, एवं णयव्वाउ, पोसं पुण्णिमं जेहामूलं पुण्णिमं च कुलोवकुर्लिप जोएइ, अबसेमासु णित्य कुलोवकुर्ल जाव आसाढी पुण्णिमा जुताति बनव्दं सिया । ता साविद्धि णं अमावासं ऋ णक्खना जोएंति १ ता दुण्णि णक्लना जोएंति, तंजहा-अस्सेसा य महा य, एवं एएणं अभिलावेणं णयव्वं, पोट्टवयं दो णक्खता जोएंति, तंजहा-पुच्चाफगुणी उत्तराफगुणी, अस्सोइं दो॰ हत्थो चित्ता य, कत्तियं॰ साई विसाहा य, मग्गसिरं॰ अणुराहा जेट्टा मूलो, पोसिं॰ पुन्वासाढा उत्तरासाढा, माहि॰ अमीई सवणो धणिडा, फगुणि॰ सयभिसया पुरुवापोह्नवया उत्तरापोह्नवया, चेतिं ० रेवई अस्सिणी य, विसाहि ० भरणी कत्तिया य, जेद्वामूलं॰ रोहिणी मिगसिरं च, ना आसार्वि णं अमावासि कद णक्खता जोएंति ? ता तिष्णि णक्सता जोएंति, तं --अझ पुणव्यस् पुस्सो, ता साविहिं णं अमावासं कि कुलं जोएइ उबकुलं जोएइ कुलोबकुलं जोएइ ? ता कुलं वा जोएइ उवकुळं वा जोएड णो लब्सइ कुळोबकुळं, कुळं जोएमाणे महा णक्खते जोएइ, उब-कुळं जोएमाणे असिल्लेसा॰ जोएर, कुलेण वा जुत्ता उनकुलेण वा जुत्ता साविद्वी अमावासा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, एवं णेयव्वं, णवरं मग्गसिराए माहीए फम्गुणीए आसाढीए य अमावासाए कुलोवकुलंपि जोएइ, सेसेड णत्म जान आसाढी अमावासा जुताति वत्तव्वं सिया ॥ ३० ॥ दसमरुस पाइडस्स छट्टं पाइड-पाइडं समर्त्तं ॥ १०-६ ॥

ता कहं ते सण्णिवाए आहिएति वएजा ? ता जया णं साविद्वी पुण्णिमा भवइ तया णं माही अमावासा भवइ, जया णं माही पुण्णिमा भवइ तया णं माविद्वी अमावासा भवइ, जया णं प्रमुणी अमावासा भवइ, जया णं फरगुणी अमावासा भवइ, जया णं फरगुणी पुण्णिमा भवइ तया णं पुटुवई अमावासा भवइ, जया णं आसीई पुण्णिमा भवइ तया णं चेत्ती अमावासा भवइ, जया णं चेती पुण्णिमा भवइ तया णं आसोई अमावासा भवइ, जया णं कित्तई पुण्णिमा भवइ तया णं वेसाही अमावासा भवइ, जया णं कित्तिई पुण्णिमा भवइ तया णं वेसाही अमावासा भवइ, जया णं केत्तिया अमावासा भवइ, जया णं प्रमासिरी पुण्णिमा भवइ तया णं जेट्टामूळी अमावासा भवइ, जया णं जेट्टामूळी पुण्णिमा भवइ तया णं मरगिसरी अमावासा भवइ, जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ तया णं वेसाही अमावासा भवइ, जया णं आसावी पुण्णिमा भवइ तया णं पोसी पुण्णिमा भवइ तया णं भरगिसरी अमावासा भवइ, जया णं आसावी पुण्णिमा भवइ तया णं पोसी अमावासा भवइ तया णं स्मावासा भवइ तया णं सावासी पुण्णिमा भवइ तया णं सावासी अमावासा भवइ तया णं सावासी पुण्णिमा भवइ तया णं सावासी भवइ तया णं सावासी पुण्णिमा भवइ तया णं सावासी भवइ तया णं सावासी पुण्णिमा भवइ तया णं सावासी भवइ तया णं सावासी पुण्णिमा भव सावासी भव सावासी पुण्णिमा भव सावासी पुण्ण

ता कहं ते णक्खनसंठिई आहितेति वएजा? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खनाणं अभीईणक्खते किसंठिए पण्णने? ता गोसीसाविक्संठिए पण्णने, ता सवणं णक्खने किसंठिए पण्णने? ता काहारसंठिए प॰, धिमद्वाणक्खते सङ्गिप्लंणगसंठिए, सयमिसग्राणक्खने पुण्फोवयारसंठिए, पुन्वापोट्टवयाणक्खते अवहुन्वाविसंठिए, एवं उत्तरावि, रेवईणक्खने णावासंठिए, अस्सणीणक्खने आसक्खंय-संठिए, भरणीणक्खने भगसंठिए, कित्रगणक्खने छुरघरगसंठिए, रोहिणीणक्खने सगद्धिसंठिए, भरणीणक्खने भगसंठिए, किम्मसीसाविक्संठिए, अह्मणक्खने रिहर्षिदु-संठिए, पुण्व्वस्णक्खने तुळासंठिए, पुण्पे णक्खने वद्धमाणसंठिए, अस्सेसाणक्खने पडागसंठिए, पुण्वापत्रगणक्खने तुळासंठिए, पुण्वापत्रगणीणक्खने अद्यप्लियंकसंठिए, एवं उत्तरावि, हत्ये णक्खने हत्यसंठिए, चित्राणक्खने मुद्दकुलसंठिए, साईणक्खने साम्यसंठिए, वित्ताणक्खने एगाविकसंठिए, जेट्टाणक्खने गयदंतसंठिए, मूळे णक्खने विच्छुयलंगोलसंठिए, पुज्वासाढाणक्खने गयदंतसंठिए, उत्तरासाढाणक्खने साइयसंठिए प०॥ ३९॥ इस्समस्य पादु-इस्स अट्टमं पादुक्षपादुकं समतं॥ १००८॥

ता कहं ते तारको आहिएति वएजा ? ता एएसि णं अद्वाबीसाए णक्सताणं अमीईणक्खते कहतारे प॰ ? ता तितारे पण्णते, सवणे णक्खते तितारे, धणिद्वाणक्खते पणतारे, सयिमस्याणक्खते सयतारे, पुञ्चापोद्ववयाणक्खते दुतारे, एवं उत्तरावि, रेवई॰ वत्तीसहतारे, अस्मिणीणक्खते तितारे, भरणी तितारे, कतिया, छतारे,

रोहिणी पंचतारे, मिगसिरे तितारे, अहा एगतारे, पुणव्यस् पंचतारे, पुस्से तिनारे, अस्सेमा इतारे, महा सत्ततारे, पुव्याफ्रगुणी दुतारे, एवं उत्तरावि, इत्थे पंचतारे, वित्ता एगतारे, साई एगतारे, विसाहा पंचतारे, अणुराहा चउतारे, जेट्ठा तितारे, मूळे एगतारे. पुव्यासादा चउतारे, उत्तरासादा चउतारे ॥ ४० ॥ दसमस्स पाइडस्स णवमं पाइडसाइडं समत्तं ॥ १०-९ ॥

ता कहं ते णेया आहितेति वएजा? ता वासाणं पडमं मासं कद णक्सता णंति ? ता चत्तारि णक्खता णेति, तंत्रहा-उत्तरासाटा अभिई सवणो धणिहा, उत्तरासःहा चोइस अहोरते णेइ, अभिई सत्त अहोरते णेइ, सवणे अट्ट अहोरते णेइ, धणिद्वा एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि चउरगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्वर, तस्स णं मानस्स चरिमे दिवसे दो पायाई चनारि य अंगुलाई पोरिसी भवइ, ता वासाणं दोचं मासं कड णक्खना गेंति? ता चत्तारि णक्खना णेति, तंत्रहा-धणिट्ठा सयभिसया पुव्वापोट्ठतया उत्तरापोट्ठतया, धणिट्ठा चोहस अहोरत्ते णेइ, सयभिसया सत्त अहोरत्ते णेड, पुन्वापोद्ववया अह अहोरत्ते णेइ, उत्तरापोद्वयम एगं अहोरतं णेइ, तसि च णं मासंसि अट्टंगुलपोरिसीए छायाए स्तिए अणपरियदृद्द, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाई अह य अंगुलाई पोरिसी भवड़, ता बासाणं तद्यं मासं कड़ णक्खता गेंति ? ता तिण्णि णक्खता गेंति, तं - उत्तरापोठ्ठवया रेवई अस्तिणी, उत्तरापोठ्ठवया चोइस अहारते णेइ, रेवई पण्णरस अहोरते णेइ, अस्सिणी एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुबालसं-गुलाए पोरिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्दं, तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे छेहद्वाई तिण्णि पथाई पोरिसी भवइ, ता बासाणं चउत्थं सासं कड णक्खता जैति ? ता तिण्णि णक्सता पेंति, तं०-अस्सिणी भरणी कतिया, अस्सिणी चउदस अहोरते णेइ, भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ, कत्तिया एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिसिच्छायाए स्रिए अणुपरियद्वर, तस्स णं मासस्स बरिमे दिवसे तिण्णि पयाई चत्तारिय अंगुलाई पोरिसी भवइ । ता हेमंताणं पढमं मासं कइ णक्खता गेंति ? ता तिण्णि णक्सता गेंति, तं०-कत्तिया रोहिणी संठाणा, कत्तिया चोइस अहोरते णेइ, रोहिणी पण्णरस अहोरते णेइ, संठाणा एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णे मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए स्हिए अणुपरियद्द, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिष्णि पयाई अद्व य अंगुलाई पोरिसी भवह, ता हेमंताणं दोषं मासं कह णक्खता गेंति ? ता चत्तारि णक्खता गेंति, तं --संठाणा अहा पुणव्यस् पुस्सो, संठाणा चोह्स अहोरते णेड, अहा सत्त अहोरते णेड, प्रणब्बस अह अहोरते णेड,

पुस्से एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि चडवीसंगुलपोरिसीए छायाए स्रिए अणपरियदृइ. नस्स णं मासस्य चरिमे दिवसे लेहद्वाइं चतारि पयाइं पोरिसी भवड, ता हेमंताणं तहयं मासं कह णक्खता णेति ? ता तिण्णि णक्खना णेति, तं०-पुस्से असीमा महा, पुरसे चोहम अहोरते णेड, असीसा पंचदस अहोरते णेड, महा एगं अहोरतं णेड, तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए स्रीए अणुपरियदृह, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे द्विणिण पयाउं अद्वंगुलाइं पंरिसी भवइ, ता हेमंताणं चउत्थं मासं कइ णक्सता जैति ? ता तिर्णिण णक्सता जैति, तं०-महा पुठवा-फरगुणी उत्तराफरगुणी, महा चोद्दस अहोरते णेड, पुव्वाफरगुणी पण्णरस अहोरते णेड, उत्तराफ्रमुणी एगं अहोरतं णेड, तंसि च णं मासंसि सोलसअंगुळाए पोरिसीए छायाए सुरिए अणुपरियद्धः, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाई चनारि य अंगुलाई पोरिसी भवड़ । ता गिम्हाणं पढमं मासं कड़ णक्खता गेंति १ ता तिणिण णक्खता जेंति, नं०-उत्तराफागुणी हत्यो चित्ता, उत्तराफागुणी चोहस अहोरते णेड. हत्थी पण्णरस अहोरते णेइ, चित्ता एमं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि दुवाळ-संग्रुलपोरिसीए छात्राए सुरिए अणुपरियहृइ, नस्म णं मासस्म चरिमे दिवसे छेहहाइं तिष्णि पयाई पोरिसी मवइ, ता गिम्हाणं बिइयं मासं ऋ णक्खता पेंति ? ता तिष्णि णक्खता गेंति, तं --चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोहस अहोरते णेइ, साई पण्णरम अहोरत्ते णेइ, विसाहा एगं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि अट्टंगुलाए पोरिसीए झायाए सुरिए अणुपरियद्ध. तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाई अद्भय अंगुलाई पोरिसी भवड, ता गिम्हाणं तह्यं मासं कड णक्खता गेंति ? ता तिणक्खता गेंति, तं -- विसाहा अणुराहा जेद्रामुली, विसाहा चोहस अहोरत्ते णेड. अगराहा पण्णरस॰, जेड्डामूलो एमं अहोरतं णेइ, तंसि च णं मासंसि च उरंगुलपो-रिसीए छायाए स्रिए अणुपरियद्व. तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो प्याणि य चतारि अंगुलाणि पोरिसी भवड, ता गिम्हाणं चल्खं मासं कड णक्खता जेति ? ता तिण्णि णक्खता णेति, तं०-मूलो पुन्वासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोइस अहोरते णेड्, युक्बासाहा पण्णरस अहोरते णेइ. उत्तरासाहा एगं अहोरतं णेइ. तंसि च णं मासंसि वद्याए समच उरंससंदियाए णम्गोहपरिमंडलाए सकायमण्रंगिणीए छायाए स्रिए अणुपरियद्वड, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेडह्नाई दो पयाई पोरिसी भवड ॥४९॥ वसमस्त पाइडस्स दसमं पाइडपाइडं समत्तं ॥ १०-१० ॥

ता कहं ते चंदमग्गा आहितेति वएँआ ? ता एएसि णं अड्ठावीसाए णक्खताणं अत्यि णक्खता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं ओएंति, अत्यि णक्खता जे णं

सया चंदरस उत्तरेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खता जे णं चंदरस दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमदृपि जोयं जोएंति, अस्थि णक्खता जे णं चंदरस दाहिणेणवि पमदृपि जोयं जोएंति. अत्थि णक्खते जे णं सया चंदरस पमद्दं जोयं जोएइ, ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं कयरे णक्खता जे णं सया चंदस्य दाहिणेणं जोयं जोगंति तहेव जाव कयरे णक्खते जे णं सया चंदरम पमइं जोयं जोएइ ? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्खताणं जे णं णक्खता सया चंदरस दाहिणेणं जोयं जोएंति ते णं छ, नं॰-संठाणा अद्दा प्रस्तो अस्सेता हत्थो मुलो, तत्थ जं ने णक्सना जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा-अभिई सवणो धणिद्वा सर्याभगया पुरुवाभद्दवया उत्तरापोद्ववया रेवई अस्सिणी भरणी पुन्वापरगुणी उत्तराफगुणी माई १२, तत्थ जे ते णक्सता जे णै चंदस्स दाहिणेर्णाव उत्तरेणवि प्रमद्देपि जोयं जोएंति ते णं सत्त, तंजहा-कत्तिया रोहिणी पुणव्वस् महा चित्ता विसाहा अणुराहा. तत्थ जे तं णक्खना जे णं चंदरस दाहिणणांव पमद्यंप जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाडाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंस वा जोएंति वा जोए-स्संति वा. तत्थ जे से णक्खने जे णं सया चंदरम पमदं जोयं जोएइ सा णं एगा जेद्रा ॥ ४२ ॥ ता कह ते चंदमंडला पण्णता १ ता पण्णरस चंदमंडला पण्णता. ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं नया णक्खतेहिं र्भावरहिया • . अत्यि चंदमंडला जे णं रविमसिणक्खनाणं सामण्या भवंति . अत्य चंदमंडला जे णं सया आइबेहिं विरहिया, ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदर्मंडला जे णं सया णक्सतेहिं अधिरहिया जाव कयरे चंदर्मंडला जे णं सया आइचिर्हिया? ता एएसि ण पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया णक्खताह अविरहिया ते णं अह, तंजहा-पढ़मे चंदमंडले तहए चंदमंडले छहे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडके अहमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले एकारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले. तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सया पक्खतेहिं विरहिया ते णं सत्त. तंजहा-बिइए चंदमंडले चउत्य चंदमंडले पंचमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले वारसमें चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउइसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं रविससिणक्खताणं सामण्णा भवंति ते णं वत्तारि, तंजहा-पढमे चंदमंहछे वीए चंदमंडछे इकारसमे चंदमंडछे पण्णरसमे चंदमंडछे, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सवा आइचिवरहिया ते णं पंच, तंजहा-छट्टे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अद्वमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले॥ ४३॥ तसमस्य पाहुडस्स पकारसमं पाइडपाइडं समसं ॥ १०-११ ॥

ता कहं ते देवयाणं अज्ञ्ञयणा आहिनाति वएजा ? ना एएसि णं अद्वावीसाए णक्यनाणं अभिष्टं णक्यने किंदेवयाए पण्णते ? ना बंभदेवयाए पण्णते, सवणे विण्हु , घणिहाणक्यते वसुदेवयाए , सयभिसयाणक्यते वस्ण . पुन्वापोठ्ठ अयदे , उत्तरापोठ्ठवयाणक्यते अभिविष्टु , एवं सन्ववि पुच्छिजंति, रेवई पुस्सदेवया , अस्मिणी अस्सदेवया , भरणी जमदेवया , कित्तया अग्यदेवया , रोहिणी पया-वइदेवया , संठाणा सोमदेवयाए , अहा रुद्देवयाए , पुण्व्वम् अदिति , पुस्सो बह्दस्य , अस्सेसा सप्प , महा पिइ , पुव्वाफ्यगुणी भग , उत्तराफ्यगुणी अज्ञम , हत्ये सविया , चित्ता तह , साई वाउ , विसाहा इंदग्गी , अणुराहा सिन , जेट्टा इंद , मुळे णिरइ , पुव्वासाढा आउ , उत्तरामाढा विस्सदेवयाए पण्णते ॥ ४४॥ दस्ममस्स पाह्यस्य यारसमं पाहु उपाहु इंस्ममं ॥ १०-१२॥

ना कहं ते भुहुत्ताणं नामधेजा आहिनाति वएजा ? ना एगमेगस्स णं अहोरतस्य तीसं मुहुत्ता प०, तंजहा—रुद्दे सेए मित्ते वाउ सुणी(पी)ए तहेव अभिचंदे । माहिंद बलव बंभे बहुमचे चेव ईसाणे ॥ ९ ॥ तहे य मावियप्पा वेसमणे बारणे य आणंदे । विजए य वीससेणे पयावई चेव उवसामे ॥ २ ॥ गंधव्य अगिवेसे सयिरसहे आयवं च अममे य । अणवं भोमे रिसहे सव्वहे रक्त्वसे चेव ॥ ३ ॥ ४५ ॥ दसमस्स पाइडस्स नेरसमं पाइडपाइडं समत्तं ॥ १०-१३ ॥

ता कहं ते दिवसा आहिताति वएजा ? ता एगमेगस्स णं पक्सस्य पण्णरस दिवसा पण्णना, तं०-पिटवादिवसे बिह्यादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, ता एएसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेजा प०, तं०-पुटवंगे सिद्धमणोरसे य तत्तो मणोरहे(हरे) चेव । जसमदे य जसोधर य सव्वकामसिमिद्धे ॥ १ ॥ इंद्मुद्धाभिसिते य सोमणस धणंजए य वोद्धव्वे । अत्यसिद्धे अभिजाए अचसणे सयंजए चेव ॥ २ ॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाणं णामधेजाई । ता कहं ते राईओ आहिताति वएजा ? ता एगमेगस्स णं पक्सस्य पण्णरस राईओ पण्णताओ, तंजहा-पिटवाराई बिह्याराई जाव पण्णरसीराई, ता एयासि णं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेजा पण्णता, तं०-उत्तमा य सुणक्सत्ता, एळावचा जसोधरा । सोमणसा चेव तहा सिरिसंभूया य वोद्धव्या ॥ १ ॥ बिजया य वेजयंति अपराजिया य इच्छा य । समाहारा चेव तहा तेया य तहा य अहतेया ॥ १ ॥ देवाणंदा पिरई रय-णीणं णामधेजाई ॥ ४६ ॥ दस्तमस्स पाहुदस्स चउह्समें पाहुडपाहुई समसं ॥ १०-१४ ॥

ता कहं ते तिही आहितेति वएजा? तत्थ खळु इमा दुविहा तिही पण्णाता,

तंजहा-दिवसतिही य राईतिही य, ता कहं ते दिवसतिही आहितेति वएजा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस २ दिवसतिही पण्णता, तं०-णंदे मेहे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी पुणरिव णंदे मेहे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी पुणरिव णंदे मेहे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी पुणरिव णंदे मेहे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पण्णरित, एवं ते तिगुणा तिहीओ सञ्वेसि दिव-साणं, ता कहं ते राईतिही आहितेति वएजा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरिस राईतिही प०, तं०-उग्गवई भोगवई जसवई सञ्विसदा सहणामा पुणरिव उग्गवई भोगवई जसवई सञ्विसदा सहणामा पुणरिव उग्गवई भोगवई जसवई सञ्विसदा सहणामा, एए तिगुणा तिहीओ सञ्वामि राईणं ॥ ४७ ॥ दसमस्स पाहुडस्स पण्णरसमं पाहुडपाहुढं समसं ॥ १०-१५॥

ता कहं ते गोना आहिताति वएजा ? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्लताणं अभिंश्यक्ति किंगोते प० ? ता मोग्गळायणसगोने पण्णते, सवणे० संखायण०, धाणद्वा० अग्गितावम०. सयभिसया० काण्णलायणसगोने, पुन्वापोद्ववया० जोडक-ण्णियसगोने, उत्तरापोद्ववया० धणंजयसगोने. रेवईणक्लते पुरम्पायणसगोने, अभ्यि-णीणक्लते अस्सायणसगोने, भरणीणक्लते भग्गित्रेसगोने, किंगिणक्लते अस्यायणसगोने, भरणीणक्लते माग्रहायसगोने, अहाणक्लते लेहिबायणसगोने, पुणव्वम्णक्लते वासिष्ठसगोने, पुरसे० उमजायणसगोने, अहाणक्लते लेहिबायणसगोने, पुणव्वम्णक्लते वासिष्ठसगोने, पुरसे० उमजायणसगोने, अस्पे-साणक्लते मंडव्वायणसगोने, महाणक्लते पिंगायणसगोने, पुन्वापम्याणिकलते गोवहायणसगोने, उत्तरापमगुणीणक्लते कासव०, हरथे० केसिय०, विनाणक्लते विभावणस्मगोने, साईणक्लते वामरच्छायणसगोने, विमाहाणक्लते संगायणमगोने, अगुराहाणक्लते गोलव्लायणसगोने, जेहाणक्लते तिगिच्छायणसगोने, मृले णक्लते कचायणसगोने, पुव्वासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने, उत्तरासाहाणक्लते विज्ञायणसगोने। ४८॥ वसमस्स पाद्ववस्स सोलसमं पाद्ववपादुवं समसं॥ १०-१६॥

ता कहं ते भोयणा आहिताति वएजा? ता एएसि णं अद्वावीसाए णक्सत्ताणं कित्ताहिं दहिणा भोचा कर्ज सार्धेति, रोहिणीहिं मुग्गं मोचा कर्ज सार्धेति, संठा-णाहिं कत्थिति भोचा कर्ज सार्धेति, अदाहिं णवणीएण भोचा कर्ज सार्धेति, पुण्वव-गुणा घएण भोचा कर्ज सार्धेति, पुस्सेणं खीरेण भोचा कर्ज सार्धेति, अस्सेसाए णालिएरं भोचा कर्ज सार्थेति, महाहिं कसीति भोचा कर्ज सार्धेति, पुञ्चाहिं फरगु-णीहिं एठाफर्ल भोचा कर्ज सार्थेति, उत्तराफरगुणीहिं हुदेणं भोचा कर्ज सार्थेति,

९ पके हुए मूंग, २ नारियछकी गिरी, ३ खाद्यविद्येष, ४ मानजोध इलायची।

हत्येणं वत्याणीएणे भोचा कर्जं साधेंति, चित्ताहिं सुग्गस्वेणं भोचा कर्जं साधेंति, साइणा फर्लौइं भोचा कर्जं साधेंति, विसाहाहिं आसित्तियाओ भोचा कर्जं साधेंति, अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोचा कर्जं साधेंति, जेट्ठाहिं लिहिएणं भोचा कर्जं साधेंति, मूलेणं मृंलगेणं भोचा कर्जं साधेंति, पृथ्वाहिं आसादाहिं आमलगं भोचा कर्जं साधेंति, उत्तराहिं आसादाहिं चिह्नफरेलेहिं [णिम्मयं] भोचा कर्जं साधेंति, अभीइणा पुँप्फेहिं [निम्मयं] भोचा कर्जं साधेंति, अभीइणा पुँप्फेहिं विम्मयं] भोचा कर्जं साधेंति, अणिद्वाहिं ज्लेणं भोचा कर्जं साधेंति, सर्वाभस्याण् तुवराट भोचा कर्जं साधेंति, पृथ्वाहिं ज्लेणं कारियंह्नएहिं भोचा कर्जं साधेंति, उत्तरापुट्टवयाहिं वेसैरोयणं भोचा कर्जं साधेंति, रवांदिंहिं सिंधांडगं भोचा कर्जं साधेंति, अस्सिणीहिं तित्तेष्ठं भोचा कर्जं साधेंति, भरणीहिं तिलतंदुलयं भोचा कर्जं साधेंति, भरणीहिं तिलतंदुलयं भोचा कर्जं साधेंति, भरणीहिं तिलतंदुलयं भोचा कर्जं साधेंति ॥ ४९ ॥ व्समस्स पादुडस्स सत्तरसमं पादुडपाइन्डं समसं ॥ १०-१७॥

ता कहं ते चारा आहिताति वएजा ? तत्थ खलु इमे दुविहा चारा पण्णना, तं०-आइचचारा य चंदचारा य, ता कहं ते चंदचारा आहिताति वएजा ? ता पंच संवच्छिरिए णं जुगे अभीइणक्खते सत्तसिद्धचारे चंदेण सिद्धं जोयं गोएइ, सवणे णक्खते सत्तसिद्धचारे चंदेण सिद्धं जोयं जोएइ, एवं जाय उत्तरासाढा-णक्खते सत्तसिद्धचारे चंदेण सिद्धं जोयं जोएइ। ता कहं ते आइचचारा आहितिति वएजा ? ता पंच संवच्छिरिए णं जुगे अभीईणक्खते पंचचारे स्रेण सिद्धं जोयं जोएइ, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खते पंचचारे स्रेण सिद्धं जोयं जोएइ॥ ५०॥ वसमस्स पाइडस्स अहारसमं पाइडपाइडं समत्तं॥ १०-१८॥

ता कहं ते मासा आहिताति वएजा? ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस् मासा पण्णता, तेसि च दुविहा णामधेजा पण्णत्ता, तं०-लोइया य लोजत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा०, तं०-सावणे भइवए आसोए जाव आसाहे, लोजत्तरिया णामा०, तं०-अभिणंदे परहे य, विजए पीइवस्णे । सेजंसे य सिवे यावि, सिसिरेवि य हेमवं ॥ १ ॥ णवमे वसंतमासे, दसमे कुमुमसंभवे । एकारसमे णिदाहो, वणविरोही य बारसे ॥ २ ॥ ५९ ॥ द्समस्स पाहुदस्स पगुणवीसदमं पाहुद्ध-पाहुदं समसं ॥ १०-१९॥

ता कहं ते संबच्छरा आहिताति बएजा? ता पंच संबच्छरा आहिताति बएजा,

१ खायविशेष, २ त्रिफला, ३ खायविशेष, ४ खायविशेष, ५ शाकविशेष, ६ बेलफलका गुरब्बा, ७ गुलकंद, ८ करेळे का शाक, ९ वंशलोचन, १० सूखा सिंघाडा, ११ त्रिकुटा सोंठ-काली मिर्च-पीएल।

तं -- णक्खत्तसंवन्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छरसंव-च्छरे ॥ ५२॥ ता णक्खतसंबच्छरे णं बहबिहे प० १ ता णक्खतसंबच्छरे णं दुवालसविहे पण्णते, तं०-सावणे भद्दवए जाव आसाढे, जं वा बहस्सडमहम्गहे दुवालमहिं संवच्छरेहिं सन्वं णक्खतमंडलं समाणेइ ॥ ५३ ॥० ता जुगसंबच्छरे णं . पंचिविहे पण्णेने, तंजहा-चंदं चंदे अभिविद्गुए चंदे अभिविद्गिए चेव, ता पढमस्स णं चंदसंबच्छरस्स चउवीसं पव्या प०. टोचस्स णं चंदसंबच्छरस्म चउवीसं पव्या प०, तस्वस्स णं अभिविश्वयःंवच्छरस्स छव्वीसं पव्या प०, चउत्थस्स णं चंदसंबन्छरस्स चडबीसं पव्या प०. पंचमस्स णं अभिविष्ट्रयसंबच्छरस्य छव्वीसं पव्दा पण्णता, एवामेव सपुन्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवतीति मक्खार्य ॥ ५४ ॥० ना पमाणसंदन्छरे णं पंचविहे प०. तंजहा-णक्खतं चंदे उट्ट आहेचे अभिवृद्धिए॥ ५५ ॥० ता लक्खणसंत्रच्छरे ण पंचिविहे प०, तं०-समगं णक्खता जोयं जोएंति समगं उक परिणमंति । णक्कृ णाइसीए वह-उदए होइ णक्खते ॥ १ ॥ सति समग पुण्णिमासि जोइंता विसमचारिणक्खना । कडुओ बहूदओ य तमाहु संवच्छरं चंदं ॥ २ ॥ विसमं पनालिणो परिणमंति अणु-उस दिंति पुष्फफलं । वामं न सम्म वासइ तमाह संवच्छरं कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविद-गाणं च रमं पुष्फफलाणं च देइ आइचे । अप्पेणिव वासेणं सम्मं निष्फजाए सस्मं ॥ ४॥ आइचतेयत्विया खणलबदिवसा उक्त परिणमंति । पूरेइ णिण्णथलए तसातु अभिविद्वयं जाण ॥ ५ ॥० ता सणिच्छरसंबच्छरे णं अद्वावीसइविष्टे प०, तं - अभीई सवणे जाव उत्तरासाटा, जं वा सणिच्छरे महम्महे तीमाए संवच्छरेहिं सन्वं णक्खतमंडलं समाणेइ ॥ ५६ ॥ दसमस्स पाइडस्स वीसहमं पाइड-पाइडं समत्तं ॥ १०-२०॥

ता कहं ते जोइसस्स दारा आहिताति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ पंच पिडवनीओ पण्णत्ताओ, तं०-तत्थेंगे एवमाहंसु-ता कित्तयाइया णं सत्त णक्खता पुव्वदारिया पण्णता एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता महाइया णं सत्त णक्खता
पुव्वटारिया पण्णता एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता भिण्डाइया णं सत्त
णक्खता पुव्वदारिया पण्णता एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता अस्सिणीआइया णं सत्त णक्खता पुव्वदारिया पण्णता एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु-ता भरणीआइया णं सत्त णक्खता पुव्वदारिया पण्णता, ते एवमाहंसु-तं०कत्तिया रोहिणी संठाणा अहा पुणव्वस् पुस्सो अस्सेसा, महाइया णं सत्त णक्खता

दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुन्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चिना साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खता पच्छिमदारिया पण्णता, तंजहा-अणुराहा जेट्टा मूलो पुञ्चासाढा उत्तरासाढा अभिई सबणो, घणिद्वाइया णं सत्त णक्खला उत्तरदारिया पण्णता, तंजहा-धणिद्वा सर्याभसया पुट्यापोद्ववया उत्तरा-पोट्टवया रेवई अस्सिणी भरणी। तत्थ जे ते एवमाहंमु-ता महाइया णं सत्त णक्खना पुव्वदारिया पण्णना, ते एवमाइंग्र-तंजहा-महा पुव्वाफम्युणी हत्थो चित्ता साई विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खना दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-अणुराहा जेट्टा मूले पुन्वासाटा उत्तरासाटा अभिई सवणे, धणिट्टाइया णं सत्त णक्कता पांच्छमदारिया पण्णता, तंजहा-धणिष्ठा सयभिसया पुन्वापोहनया उत्तरापोद्ववया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता, तंजहा-कत्तिया रोहिणी संठाणा अहा पुणव्यस् पुस्सो अस्सेसा । तत्थ जे ते एवमाइंग्र-ता धणिद्वाइया णं सत णक्खना पुञ्चदारिया पण्णता, ते एवमाइंग्र-तंजहा-धणिद्वा सयभिसया पुरुवाभद्दया उत्तराभद्दया रेवई अस्मिणी भरणी, कत्तियाइया णं सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-किनया रोहिणी संठाणा अहा पुणव्यसः पुरस्तो अस्सेसा, महाइया णं सत्त णक्खता पच्छिमदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुव्वाफरगुणी उत्तराफरगुणी इत्यो चित्ता साई विसाहा. अणुराहाइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता, तंजहा-अणुराहा जेट्टा मूळो पुर्व्वासाहा उत्तरासाहा अमीई सवणो । तत्य जे ते एवमाहंसु-ता अस्सिणी-आइयाणं सत्त णक्खना पुरुवदारिया पण्णता ते एवमाहंसु-तंत्रहा-अस्मिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अहा पुणव्यस्, पुस्साइया णं सन णक्लता दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-पुस्सा अस्सेसा महा पुन्नाफगुणी उत्तराफगुणी हत्यो वित्ता, साईआइया णं सत्त णक्खता पच्छिमदारिया पण्णता, तंजहा-साई विसाहा अगुराहा जेट्टा मूलो पुन्वासाटा उत्तरासाटा, अमीईआइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता, तंजहा-अभिई सवणो धणिड्डा सयभिसया पुन्वा-भद्दवया उत्तराभद्दवया रेवई । तत्थ जे ते एवमाहंद्ध-ता भरणीआइया णं सत्त णक्खता पुन्वदारिया पण्णता, ते एवमाहंग्र-तंजहा-भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अहा पुणन्तस् पुस्सो, अस्सेसाइया णं सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-अस्सेसा महा पुन्वाफागुणी उत्तराफागुणी हत्थो चित्ता साई, विसाहाइया र्णं सत्त णक्खता पच्छिमदारिया पण्णता, तं०-विसाहा अणुराहा जेट्टा मूली पुन्वासाहा उत्तरासाहा अभिई, सबणाइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता,

तं०-सवणो घणिद्वा सयभिसया पुञ्चापोह्वया उत्तरापोह्वया रेवई अस्सिणी, एए एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो-ता अभिईआइया णं सत्त णक्खता पुञ्चदारिया प०, तंजहा-अभिई सवणो घणिद्वा सयभिसया पुञ्चापोह्वया उत्तरापोह्वया रेवई, अस्सिणीआइया णं सत्त णक्खता दाहिणदारिया पण्णता, तं०-अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अहा पुण्य्वम् , पुस्साइया णं सत्त णक्कता पिष्ठम-दारिया पण्णता, तं०-पुस्तो अस्सेसा महा पुञ्चाफरगुणी उत्तराफरगुणी हत्थो चित्ता, साईआइया णं सत्त णक्खता उत्तरदारिया पण्णता, तं०-साई विसाहा अणुराहा जेद्वा मूळे पुञ्चासावा उत्तरासावा॥ ५०॥ दसमस्स पाहुडस्स पक्कवीसइमं पाहुडपाहुडं समन्तं॥ १०-२१॥

ना कहं ते णक्समविजए आहिएति वएजा ! ता अयण्णं जंबुद्दीये २ जाव परिक्खेवेणं , ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पमासेंसु वा पमासेंति वा पमासिस्संति वा, दो सुरिया तर्विस वा तर्वेति वा तविस्संति वा छप्पण्णं णक्सत्ता जोयं जोएंस वा ३, तंजहा-दो अमीई दो सवणा दो धणिहा दो सयभिसया दो पुन्वा-पोट्टवया दो उत्तरापोट्टवया दो रेवई दो अस्मिणी दो भरणी दो कत्तिया दो रोहिणी दो संठाणा दो अहा दो पुणव्यस् दो पुरसा दो अस्सेसाओ दो महा दो पुन्या-फगुणी दो उत्तराफगुणी दो हत्था दो चित्ता दो साई दो विसाहा दो अणुराहा दो जेट्टा दो मूला दो पुन्वासाढा दो उत्तरासाढा, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्ख-नाणं अत्थि णक्खना जे णं णव मुहुते सत्तावीसं च सत्तद्विभागे मुहुतस्स चंदेण सिंद जोयं जोएंति, अत्थि जक्खता जे णं पण्णरस मुहुते चंदेण सिंद जोयं जोएंति, अत्थि णक्खता जे णं तीसमुहुत्ते चंदेण सर्दि जोयं जोएंति, अस्थि णक्खना ज ण पणयालीसं मुहुते बंदेण सद्धि जोयं जोएंति, ता एएसि ण छप्प-ण्णाए णक्सताणं कयरे णक्सता जे णं णव मुहुते सतावीसं च सत्तिहुसागे मुहुत्तस्स चंदेण सर्दि जोयं जोएंति, कयरे णक्खता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सर्दि जोयं जोएंति, कमरे णक्खता जे णं तीसं मुहते चंदेण सर्दि जोयं जोएंति, कथरे णक्खता जे णं पणयालीसं सहते चंदेण सद्धि जोयं ओएंति? ता एएसि णं छपण्णाए णक्सताणं तत्य जे ते णक्सता जे णं णव मुहुते सत्तावीसं च सत्तिहु-भागे मुहुत्तस्य चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति ते णं दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खता जे णं पण्णरस सुहुत्ते चंदेण सिंद्धं जोयं जोएंति ते णं बार्स, तंजहा-दो सयिभ-सया दो भरणी दो अहा दो अस्सेसा दो साई दो जेहा, तत्व जे ते णक्सत्ता वे णं तीसं महत्ते चंदेण सिंद जोयं ओएंति ते णं तीसं, तंजहा-दो सवणा दो

धणिद्वा दो प्रव्वाभद्वया दो रेवई दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो प्रस्सा दो महा दो पुरुवाफरगुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो पुरुवा-साहा. तत्थ जे ते णक्खता जे णं पणयाठीसं महत्ते चंदेण सिद्धं जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा-दो उत्तरापोद्भवया दो रोहिणी दो प्रणव्यस दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासादा, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खताणं अत्थि णक्खता जे णं चतारि अहोरते छच महत्ते स्रिएण सिद्धं जोयं जोएंति, अतिश णक्खता जे णं छ अहोरते एकवीसं च महत्ते सरेण सद्धिं जोयं जोएंति. अत्य णक्खता जे णं तेरस अहोरते बारसमुहते स्रेण सिंद जोयं जोएंति. अत्य णक्खता जे णं धीसं अहोरने तिष्णि य महत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति. ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं. ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्सताणं तत्थ जे ते णक्सता जे णं चनारि अहोरते छन मुहते स्रेण सिद्ध जोयं जोएंति ते णं दो अमीई, तत्थ जे ते णक्खता जे णं छ अहोरते एक्सवीसं च महत्ते सरेण सिंद्धं जोयं जोएंति ते णं वाग्स, तंजहा-दो सयभिसया दो अहा दो अस्सेमा दो साई दो विसाहा दो जेड्डा, तत्थ जे ते णक्खता जे णं तेरस अहीरते वारसमहत्ते सरेण सिद्धं जीयं जीएंति ते णं तीसं. तंजहा-दो सवणा जाव दो पुरुवासाहा, तत्थ जे ते णक्खता जे णं वीसं अहोरते तिष्णि य सहते सूरेण सार्द्ध जोयं जोएंति ते णं बारस, तंजहा-दो उत्तरापोद्भवया जाव दो उत्तरा-साहा ॥ ५८ ॥ ता कहं ते सीमाविक्खंमे आहिएति वएजा ? ना एएसि णं छप्पण्णाए णक्खनाणं अत्थि णक्खना जेसि णं छ सया तीसा सत्तद्विभागती-सइभागाणं सीमाविक्खंभो. अत्थि णक्खना जेसि णं सहस्यं पंचोत्तरं सत्तिह-भागतीसङ्भागाणं सीमाविक्खंभो. अत्थि णक्खता जेसि णं दो सहस्सा दसत्तरा सत्तद्रिभागतीसहभागाणं सीमानिक्खंमो. अत्य णक्खता जेसि णं तिसहस्सं पंच-दस्तरं सत्तद्भिमागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो, ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्ख-राणं कयरे पक्सता जेसि णं छ सया तीसा तं चेव उचारेयव्वं जाव कयरे णक्खता जेति णं तिसहस्यं पंचदस्तारं सत्तिहिभागतीसहभागाणं सीमाविक्खंभी? ता एएसि ण छन्पण्याए प्रक्यसाणं तत्य जे ते प्रक्यता जेसि पं छ सया तीसा सत्तद्विमागतीसङ्गागाणं सीमाविक्यांमो ते णं हो अभीई. तत्थ जे ते णक्खता जेसि जं सहस्यं पंचतरं सत्तद्विमागतीसहमागाणं सीमाविक्खंमो ते जं बारस. तंजहा-दो सयमिसया जाव दो जेहा, तत्य जे ते णक्खता जेसि णं दो सहस्सा दशक्तरा सत्तद्भिमानतीसहभागाणं सीमाविक्संभो ते णं तीसं, तंजहा-दो सक्का

जाव दो पुरुवासाडा, तत्थ जे ते णक्खता जेसि गं तिष्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तद्विभागतीमङ्भागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं०-दो उत्तरापोट्टवया जाव दो उत्तरासाडा ॥ ५९ ॥ ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्सताणं कि सया पाओ चंदेण सिंद जोयं जोएंति, कि सया सार्य चंदेण सिंद जोयं जोएंति, कि मया दुहुओ पविसिय २ चंदेण सिंद्ध जीयं जीएंति ! ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्ख-त्ताणं ण किमवि तं जं सया पाओ चंदेण सद्धि जोयं जोएंति. णो सया सायं चंदेण सदि जोयं जोएंति, णो सया दहुओ पविभिक्ता २ चंदेण सदि जोयं जोएंति, णत्थि राइंदियाणं बुद्बोवृद्धीए महत्ताणं च चओवचएणं णण्णत्य दोहिं अमीईहिं, ता एएणं दो अभीई पायंचिय पायंचिय चोनालीसं २ अमावासं जोएंति, णो चेव णं पुण्णिमासिणि ॥ ६० ॥ नत्थ खलु इमाओ वावर्ड्डि पुण्णिमासिणीओ बावर्ड्डि अमावासाओ पण्णनाओ, ता एएमि णं पंचण्हं संबच्छराणं पढमं पुष्णिमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ? ता जॉम णं देसंसि चंदे चरिमं वावद्विं पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओ मंडलं नउन्वीसेणं मएणं छेना दवनीसं भागे उवाइणावेचा एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणि जीएइ, ता एएसि णं पंनण्हं संबच्छराणं दोचं पुण्णिमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पडमं पृष्णिमासिणि जोएइ ताओं पुण्णिमासिणिह्राणाओं मंडलं चउवीसेणं सएणं केता द्ववत्तीसं भागे उवाइणावेता एत्थ णं से चंदे दोचं पुष्णिमानिणि जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं तत्त्वं पुण्णिमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं दंसंसि चंदो दोश्वं पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओ मंडलं चउ-व्वीमेणं सएणं छेता दुवतीसं भागे उवाइणावेता एत्य णं से चंदे तत्रं पुष्णिमा-सिणि जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं दुबालसमं पुण्णिमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जीस णं देसंसि चंदे तत्रं पुष्णिमासिणि जोएइ ताओ पुष्णिमा-सिणिद्वाणाओं मंडलं चउव्वीसेणं सएणं क्वेता दोष्णि अद्वासीए भागसए उवाइणा-वेता एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुण्णिमासिणि जोएइ, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ २ पुण्णिमासिणिद्वाणाओं मंडलं चउन्वीसेणं सएणं छेता दुवतीसं भागे उनाइणावेता र्तीस २ देसंसि तं तं पुष्णिमासिणिं चंदे जोएड. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चारेमं बावद्वि पुण्णिमासिणि चंदे कंसि देसंसि जोएइ ! ता अंबुद्दीवस्स णं॰ पाईण-पडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउव्यसिणं सएणं छेता दाहिणि ह्रंसि चउच्मागमंडलंसि सत्तावीसं चउमागे उवाइणावेता अद्वावीसइमागे वीसहा छेता अद्वारसभागे उवाइणावेता तिहिं भागेहिं दोहि स कलाहिं प्रवत्यिमक्तं चर-

क्सागमंडलं असंपत्ते एत्य णं से चंदे चरिमं बाबद्वि पुण्णिमासिणि जोएइ ॥ ६९ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पडमं पुण्णिमासिणि सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्टिं पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिहाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेता चउणवइं भागे उवाइणावेत्ता एत्य णं से सुरिए पढमं पुण्णिमासिणि जोएइ. ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोचं पुण्णिमासिणि सरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सरे पढमं प्रिणमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओं मंडलं चउवीसेणं सएणं छेता दो चउणवङ्मारो उवाङ्णावेत्ता एत्थ णं मे सरे दोचं पुण्णिमासिणि जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं तथं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे दोचं पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिद्वाणाओं मंडलं चउन्वीसंगं सएगं छेता चउणउइमागे उवाडणावेता एत्य णं से सूरे तर्च पुष्णिमासिणि जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणि सुरे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि सूरे तचं पुण्णिमासिणि जोएइ ताओ पुण्णिमासिणिङ्वाणाओ मंडलं चडन्त्रीसेणं सएणं छेता अट्टछताले भागसए उवाइणावेता एत्य णं से सूरे दुवालसमं पुण्णि-मासिणि जोएइ, एवं खळु एएणुवाएणं ताओ २ पुण्णिमासिणिङ्वाणाओ मंडलं बडव्वीसेणं सएणं छेता चडणउइ २ भागे उवाइणावेता तीम २ देसंसि तं तं प्रिण्णमासिणि स्रे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं चरिमं बावट्टि पुण्णिमासिणि स्रे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स णं॰ पाईणपडीणाययाए उदीणदाहिणाययाए जीवाए मंडलं चरव्वीसेणं सएणं क्वेता पुरच्छिमिह्नंसि चरभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेता अद्वावीसइमं भागं वीसहा क्रेता अद्वारसभागे उवाइणावेता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिकं चडभागमंडलं असंपत्ते एत्य णं सूरे चरिमं बाबद्वि पुण्णिमं जोएइ ॥ ६२ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमवावद्वि अमावासं जोएइ ताओ अमावासद्वाणाओं मंडलं चतव्वीसेणं सएणं छेता द्वनीसं भागे उवाइणावेता एत्थ णं से चंद्रे पढमं अमावासं जोएइ. एवं जेणेव अभिलावेणं चंद्रस पुण्णि-मासिणीओ० तेणेव अमिलावेणं अमावासाओवि भाणियन्वाओ-बिइया तह्या दुवालसमी, एवं खळ एएणुवाएणं ताओ २ अमावासद्वाणाओ मंडलं चउन्वीसेणं सएएं क्रेता दुवतीसं २ भागे उवाइणावेता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं० चंदि जोएइ, ता एएसि णं पंचष्टं संबच्छराणं चरिमं बावद्वि अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएड ? ता जंसि मं देसंसि चंदे चरिमं बाबद्धि प्रिणमासिणि जोएइ ताओ

पुण्णिमासिणिद्वाणाओ मङलं चउञ्जीसेणं सएणं छेता सोलसभागे उद्घोवइता एत्थ णं से चंदे चरिमं बावर्डि अमावासं जोएड ॥ ६३ ॥ ता एएमि णं पंचण्हं संवच्छ-राणं पढमं अमावासं सुरे कंसि देसंसि जाएइ ? ता जंसि णं देसंसि सुरे चरिमं बाबद्वि अमावासं ओएइ ताओ अमावामद्राणाओ मंडलं चडव्वीसेणं मएणं छेना चउणउइमागे उबाइणावेता एत्य णं से मृरे पढमं अमावामं जोएइ, एवं जेणेव अभि-लावेणं स्रियस्स पुण्णिमासिणीओ० तेणेव अमावासाओवि०, तंजहा-विदया तह्या दुवालसमी, एवं खलु एएणुवाएणं ताओ अमावासद्वाणाओ मंडलं चडव्वीसेणं सएणं छेता चटणउई २ भागे उवाइणावेता तंसि २ देसंसि तं २ अमावासं० मरे जोएइ, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बाविहें अमावासं पुच्छा, ता जेंसि णं देसंसि सूरे चरिमं वावद्विं पुण्णिमासिणि जोएड ताओ पुण्णिमामिणिहाणाओ मंडलं चडव्वीसेणं सएणं छेता मनालीसं भागे उद्योवइत्ता एत्थ णं से स्रे चित्रं बावद्वि अमावासं जोएइ॥ ६४॥ ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छनाणं पढमं पुण्यमासिणि चंदे केणं णक्खत्तेणं (जोयं) जोएइ ? ता धाणिद्वाहिं, धाणिद्वाणं तिष्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च वाबद्विभागा मुहत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विदा छेता पण्णाहि चुण्णिथाभागा सेमा, तं समयं च णं स्रिए केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता पुट्यापम्युणीहिं, पुट्यापम्युणीणं अट्टाबीसं मुहुत्ता अट्टतीसं च बाबद्विमागा मुहुत्तस्म बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेना दुवत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोचं पुण्णिमासिणि चंदे केणं णक्खनेणं जोएइ ? ता उत्तराहि पोट्टवयाहि, उत्तराणं पोट्टवयाणं सत्तावीसं मुहत्ता चोह्म य वावद्विभागे मुहत्तस्य बावद्विभागं च भनद्विहा छेता बावद्विं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहि प्रम्युणीहि, उत्तरा-फग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावद्विमागा मुहुत्तस्स बावद्विमागं च सत्तद्विहा छेता एक्रवीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं तथं पुण्णिमासिणि चंद केणं णक्खतेणं ओएइ ? ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एकवीसं मुहुत्ता णव य एगहि-भागा मुहुत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेता तेबद्वि चुण्णियामागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता चिताहिं, चिताणं एको मुहत्तो अहावीसं च बावड्रिमागा मुहुत्तस्य बावड्रिभागं च सत्तद्विहा छेता तीसं चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हें संबच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणि चंदे केणं णकखतेणं जोएह ? ता उत्तराहि आसाढाहि, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बाविह-भागा मुहुत्तस्स बावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता चउप्पण्णं चुण्णियामागा सेसा, तं समयं च णं स्रे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता प्रणव्यसुणा, प्रणव्यसस्स सोलसम्-

हुता अह य बाबद्विभागा मुहुत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेता वीसं चुण्णिया-भागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावहिं पुण्णिमासिणि चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए, तं समयं च णं स्रे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता पुस्सेणं, पुरसस्स एगूणवीसं सुद्वता तेयालीसं च बार्वाट्टभागा मुहुत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेता तेत्तीसं चुण्णिया-भागा सेसा ॥ ६५ ॥ ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता अस्सेमाहिं, अस्सेसाणं एके मुहुत्ते चत्तालीसं च बाविड्ड-भागा मुहुनस्स बावडिभागं च सत्तद्विहा छेना बावर्डि चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं स्रे केणं णक्खनेणं जोएइ? ता अस्सेसाहि चेव, अस्सेसाणं एको मुहुत्तो चत्तालीसं च वावद्विभागा मुहुनस्स वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता बावद्वि चुण्णियाभागा सेसा, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोचं अमावासं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं फरगुणीहिं, उत्तराणं फरगुणीणं चतालीसं मुहुता पणतीसं बावड्रिभागा सुहुत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेता पण्णिहें चुण्णियाभागा सेमा, नं समयं च णं स्रे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहि चेव फगुणीहिं, उत्तराणं प्रमुणीणं जहेव चंदस्स । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तत्रं अमावासं चंदे केणं णक्खतेणं ओएइ ? ता हत्येणं, हत्यस्य चतारि मुहुता तीसं च नावडि-भागा सहत्तस्य बाबद्विभागं च मत्तद्विहा छेता वावद्वि चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता इत्येणं चेद, इत्यत्स जहा चंदस्स, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ? ता अदाहि, अदाणं चत्तारि मुहुत्ता दस य वार्वाह्यमागा मुहुत्तस्स बावद्विमागं च सत्त-हिहा छेता चडप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ? ता अहाहिं चेत्र, अहाणं जहा चंदरस । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बाबहिं अमानासं चंदे केणं णक्सतेणं जोएइ ? ता पुणव्यसुणा, पुणव्यसुस्स बावीसं मुहुता बायाळीसं च बासद्विभागा सुदुत्तस्स सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्सतेंणं जोएइ ? ता पुणव्यसुणा चेव, पुणव्यसुस्स णं जहा चंदस्स ॥ ६६ ॥ ता जेणं अजगक्खतेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं अह एगृणवीसाई सुहत्त-सयाई चउवीसं च बावद्विभागे मुहुत्तरस बाबद्विमागं च सत्तद्विहा छेता वाषद्वि चुण्णियाभागे उवाइणावेता पुणरवि से चंदे अण्णेणं सरिसएणं चेव णक्खतेणं जीयं जोएड् अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अजणक्सतेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इमाइं सोलस अद्वतीसे मुहुत्तसयाइं अउपापणां च बाबद्विभागे मुहुतस्स बाबद्विभागं

च सत्तिहिहा हेता पण्णिट्टं चुण्णियामागे उवाइणावेता पुणरवि से णं चेंदे तेणं चेव णक्सत्तेणं जोयं जोएइ अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अजणक्सतेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसेसि से णं इमाई चडप्पण्णमुहत्तसहस्साई णव य मुहत्तसयाई उवाइणावेला पुण-रवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव • जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अजाणक्खतेणं चंदे जोयं जोएइ जंसि देसंसि से णं इसाई एगं लक्खं णव य सहस्से अह य मुहुत्तसए उवाइणावेता पुणरवि से चंद तेणं चेव णक्खतेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अजणवन्सत्तेणं सुरे जोयं जोएइ जीस देसंसि से णं इसाई तिण्णि छावड्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से स्रिए अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खतेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ञणक्खतेणं सुरे जोयं जोएइ तंसि देसंसि से णं इमाइं सत्तद्वीसं राइंदियसयाइं उवाइणावेता पुणरिव से सुरे तेणं चेव णक्सत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अजणक्सत्तेणं सूरे जोयं जोएइ जंसि देसंति से णं इमाइं अद्वारस वीसाई राइंदियसयाई उवाइणावेना पुणरिव से सूरे अण्णेणं चेव णक्खतेणं जीयं जीएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अजणक्खतेणं मरे जीयं जोएइ जंसि देसंसि तेणं इमाइं छत्तीसं सङ्घाई राईदियसयाई उवाडणावेना पुणर्वि से स्रे तेणं चेव णक्खतेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि ॥ ६७ ॥ ता जया णं इसे चंदे गइसमावण्णए भवड तया णं इयरैवि चंदे गइसमावण्णए भवड जया णं इयरे चंदे गइसमावण्णए भवइ तया णं इमेवि चंदे गइसमावण्णए भवइ, ता जया णं डमे स्रिए गइसमावण्णे भवइ तया णं इयरेवि स्रिए गइसमावण्णे भवइ. जया णं इयरे सृरिए गइसमावण्णे भवइ तया णं इमेवि सृरिए गइसमावण्णे भवइ, एवं गहेबि णक्सतेबि, ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इयरेबि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ, जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इमेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवड़, एवं सुरेवि गहेवि णवन्खतिवि, सयावि णं चंदा जुता जोगेहिं सयावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं णक्सता जुत्ता जोगेहिं दुहुओवि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं दुहुओवि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं दुहओवि णं गहा जुत्ता जोगेहिं दुहुओवि णं णक्खता जुत्ता जोगेहिं, मंडलं सय-सहस्रोणं अञ्चाणउदाए सएहिं छेता । इत्रेस पक्खते खेलपरिमागे णक्खतविजए पाहुडेति आहिएति-वेमि ॥ ६८ ॥ दसमस्य पाहुडस्य बाबीसहमं पाहुड-पाइडं समर्त ॥ १०-२२ ॥ दसमं पाइडं समर्त ॥ १० ॥

ता कहं ते संबच्छराणाई आहिएति बएजा ? तत्थ सल इमे पंच संबच्छरा पण्णता, तंजहा-चंदे २ अभिविद्विए चंदे अभिविद्विए, ता एएसि णं पंचण्डं संबच्छ-

राणं पटमस्स चंदसंबच्छरस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे णं पंचमस्स अभिविश्वयसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आई अणंतर-पुरक्खडे समए, ता से णं किं पज्जवसिए आहिएति वएजा ? ता जे णं दीचस्स चंदसंबच्छरस्य आई से णं पढमस्य चंदसंबच्छरस्य पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, नं समयं च णं चंदे केणं णक्खतेणं (ओगं) जोएइ ? ता उत्तराहिं आसा-ढाहि, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं व बावद्विमागा मुहुत्तस्स बाव-द्विभागं च सत्तद्विहा छेता चडप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा. तं समयं च णं सरे केणं णक्कतेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ट य वाव-द्विभागा मुहुत्तस्य बावद्विभागं च सत्तिहृहा छेता बीसं चुण्णियाभागा सेसा । ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोबस्स चंदसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा? ता जे णं पटमस्स चंदसंबच्छरस्स पजवसाणे से णं दोबस्स चंदसंबच्छरस्म आई अर्णतरपुरक्खडे समए, ता से णं कि पजनसिए आहिएति वएजा ? ता जे णं तचस्य अभिविष्ट्रियसंबच्छरस्स आई से णं दोचस्स चंदसंबच्छरस्स पजनसाणे अणंतरफ्डाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ! ता पुरुवाहि आसाटाहि, पुल्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुता तेवण्णं च बावद्विभागा मुहुत्तस्स बावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता इगताठीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं स्रे केणं णक्खत्तेणं [जोयं] जोएइ ? ता पुणव्यसुणा, पुणव्यसुस्य णं बायालीसं सुहुत्ता पणतीसं च बावद्विमागा मुहुत्तस्स बावद्विमागं च सत्तद्विहा छेता सत्त चुण्णिया-भागा सेसा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तन्त्रस्स अभिविश्वयसंवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा? ता जे णं दोचस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं तचस्स अभिविष्ट्रियसंबच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खंडे समए, ता से णं कि पज्जवसिए आहिएति वएजा ? ता जे णं चवत्यस्स चंदसंबच्छरस्स आई से णं तबस्स अभि-विश्वयंत्रच्छरस्य पज्जवसाणे अर्णतरपच्छाकडे सम्रूए. तं समयं च णं चंदे केणं णक्सतेणं ओएइ ? ता उत्तराहि आसाहाहि, उत्तराणं आसाहाणं तेरस सुहुता तेरस य बावद्विमागा मुहुत्तस्स बावद्विभागं च सत्तद्विहा क्रेना सत्तावीसं च चुण्णि-याभागा सेसा, तं समयं च णं स्रे केणं णक्करोणं जोएइ ? ता पुणव्यसुणा, पुण-व्यस्त दो मुहुत्ता छप्पण्णं च बावड्विभागा मुहुत्तस्त बावड्विभागं च सत्तद्विहा छेता सद्वी चुण्णियाभागा सेसा । ता एएसि वं पंचण्हं संवच्छराणं चढत्यस्स चंदसंवच्छ-रस्स के आई आहिएति वएका है ता जें ण तबस्स अभिविश्वयसंबच्छरस्स प्रवन-साणे से णं चजत्वस्य चंदसंबच्छरस्य आई अणंतरपुरक्खडे समय्, ता से णं कि

पजनसिए आहिएति वएजा ? ता जे णं चरिमस्स अभिवश्वियसंबच्छरस्स आई से णं चउत्थरस चंदसंबच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाडाहिं, उत्तराणं आसाडाणं चता-ठीसं मुहुना चताठीसं च बामड्डिमागा मुहुत्तस्स बाबड्डिमागं च सत्तद्विहा छेता चउसड्डी चुण्णियामागा सेसा, तं समयं च ण सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ? ता पुणव्यसुणा, पुणव्यसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्क्वीसं बावद्विभागा मुहुत्तस्स बावद्वि-भागं च सत्तद्विहा छेता सीयाठीसं चुण्णियाभागा सेसा। ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिविष्ट्रमसंवच्छरस्य के आई आहिएति वएजा ? ता जे णं चउत्थस्स चंद्रसंबच्छरस्स पज्जबसाणे से णं पंचमस्स अभिवन्न्रियसंबच्छरस्स आई अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किं पजनिसए आहिएति वएजा? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आई से णं पंचमस्स अभिविद्वयसंवच्छरस्य पज्जवमाणे अर्णतरपच्छाकढे समए, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं॰ चरमसमए, तं समयं च णं सूरे केणं णक्कतेणं जोएड ? ता पुरसेणं, पुरसस्स णं एकवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावहिमागे मुहुनस्स बाविह-भागं च सत्ति द्विहा छेता तेनीसं चुण्णियाभागा सेसा ॥ ६९ ॥ एक्कारसमं पाइडं समर्च ॥ ११ ॥

ता वह णं संवच्छरा आहिताति वएजा? तत्थ खळु इमे पंच संवच्छर। पण्णता, तंजहा-णक्खते चंदे उद्द आह्बे अभिविष्टिए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्य णक्खत्तसंवच्छरस्य णक्खत्मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं मिजमाणे केवइए राइंदियम्गेणं आहिएति वएजा? ता सत्तावीसं राईदियाई एकवीसं च सत्त-हिमागा राइंदियस्य राइंदियम्गेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तम्गेणं आहिएति वएजा? ता अष्टुसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं सत्तावीसं च सत्तिहिमाने मुहुत्तस्य मुहुत्तमेणं आहिएति वएजा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खत्तकडा णक्खते संवच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियम्गेणं आहिएति वएजा? ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसए एकावण्णं च सत्तिहिमागे राइंदियस्य राइंदियम्गेणं आहिएति वएजा, ता एव णं केवइए मुहुत्तम्गेणं आहिएति वएजा? ता णव मुहुत्तसहस्या अष्ट य वत्तीसे मुहुत्तसए छप्पण्णं च सत्तिहिमागे मुहुत्तस्य मुहुत्तमेणं आहिएति वएजा। ता एएसि णं पंचण्डं संवच्छराणं दोवस्स चंदसंवच्छरस्य चंदे मासे वीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिजमाणे केवइए राइंदियमोणं आहिएति वएजा? ता एगूणदीसं राइंदियहं वत्तीसं वाविहमागा राइंदियस्य राइंदियमोणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्त-

गोणं आहिएति वएजा ? ता अद्वपंचासए मुहुत्ते तेत्तीसं च छावद्विमागे मुहुत्तगोणं आहिएति बएजा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्बुत्तकडा चेंद्र संबच्छरे, ता से णं केन-इए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता तिण्णि चउप्पणे राइंदियसए दुवालस य बावद्विमागा राइंदियमीणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तमीणं आहिएति वएजा ? ता दस मुहुत्तसहरूमाई छच पणवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बावद्विभागे मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा। ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं तचस्स उ**हुसंब**च्छरस्स उडुमासे तीसइमुहुत्तेणं ॰ गणिज्ञमाणे केवइए राइंदियमोणं आहिएति वएजा ? ता तीसं राईदियाणं राइंदियमोणं आहिएति वएजा, ना से णं केवइए मुहुत्तमोणं आहि-एति वएजा ? ता णव मुहनसयाई मुहनगोणं आहिएति वएजा, ता एस णं अद्धा दुवालमक्खुत्तकटा उह संबच्छरे, ता से णं केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता तिण्णि सहे राइंदियमए राइंदियम्गेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तम्गेणं आहिएति वएजा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ट य सयाई मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा । ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं चउत्थरस आइचसंबच्छरस्स आइचे मासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिजमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ना तीसं राइंदियाई अवहूमार्ग च राइंदियस्स राइंदियरगेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तमोणं आहिएति वएजा? ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्त-गोणं आहिएति वएजा, ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा आइचे संवच्छरे, ता से णं केनइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता तिण्णि छावहे राईंदियमए राई-दियम्गेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तम्गेणं आहिएति बएजा ? ता दम मुहुत्तस्य सहस्साई णत्र असीए मुहुत्तसए मुहुत्तस्मेणं आहिएति वएजा । ता एएसि णे पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवश्वियसंवच्छरस्स अभिवश्विए मासे तीसइमुहुत्तेणं गणिजमाणे केवइए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता एकतीसं राइंदियाई एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बावद्विभागे मुहुत्तरस राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवड्ए सुदुत्तरोणं आहिएति वएजा ? ता णव एगूणसट्टे सुदुत्तसए सत्तरस बाबद्विभागे मुहुत्तस्य मुहुत्तन्गेणं आहिएति वएजा, ता एस णं अदा दुवाल-सक्खुतकडा अभिविश्वयसंबच्छरे, ता से णं केवहए राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता तिष्णि तेसीए राइंदियसए एक्क्वीसं च मुहुता अद्वारस बावद्विमागे मुहुत्तस्स राइंदियगोणं आहिएति कएजा, ता से मं केवइए मुहुत्तगोणं आहिएति वएजा ? ता एकारस मुहुत्तसहस्साई पेच य एकारस मुहुत्तसए अद्वारस बावद्विभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तरोणं भाहिएति वएजा ॥ ७० ॥ ता केवहयं ते नोजुगे राहंदियरोणं भाहिएति

वएजा ? ता सत्तरस एकाणउए राईदियसए एग्णवीसं च मुहुनं सत्तावण्णे वावद्वि-भागे मुहुत्तस्य वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता पणपण्णं चुण्णियाभागे राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुनग्गेणं आहिएति वएजा ? ना नेपण्णमुहुत्त-सहस्साइं सत्त य अउणापण्णे मुहुनसए सत्तावण्णं बावद्विभागे मुहुनस्स बावद्वि-भागं च सत्तिहिहा छेला पणपण्णं चुण्णियाभागा मुहुनभोणं आहिएति वएजा, ता केबहर णं ते जुगप्पने राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा ? ता श्रद्धतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावद्विभागे मुहुत्त्रस बावद्विभागं च सत्तिद्वहा हेता दुवालस चुण्णि-यामागे राइंदियग्गेणं आहिएति वएजा, ना से णं केवइए मुहुत्तग्गेणं आहिएति वएजा ? ता एकारस पण्णासे मुहुत्तमए चत्तारि य बावद्विभागे वावद्विभागं च सत्तद्विहा क्रेना दुबालम चुण्णियाभागे मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा, ता केवड्यं जुगे राईदिय-मोणं आहिएति वएजा ? ता अद्वारमनीसे राइंदियसए राइंदियमोणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए मुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा ? ता चउप्पण्णं मुहुत्तरहस्माई णव य मुहुनसयादं मुहुन्तरगेणं आहिएति वएजा, ता से णं केवइए बार्वाद्वभागमुहुन्तरगेणं आहिएति वएजा १ ता चउनीसं सयसहस्साई अद्वतीसं च वाबद्विमागमुहुनसए वावद्विभागमुहुत्तरगेणं आहिएति वएजा ॥ ७१ ॥ ता कया णं एए आइचचंद-संबच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएजा ? ता सिंहे एए आडचमाया वाबिद्वं एए चंदमासा, एस णं अदा छक्खुत्तकडा दुवालसभइया तीसं एए आइच-संवन्छरा एक्स्तीसं एए चंदसंवच्छरा, तया णं एए आइक्चचंदसंवन्छरा समाइया समपञ्जविसया आहिताति वएजा । ता कया णं एए आइचउडुचंदणऋखता संबच्छरा समाइया समपज्जबसिया आहितेति वएजा? ता सिंह एए आइचमामा एगर्डि एए उड्डमासा बाबर्डि एए चंदमासा सत्तर्डि एए णक्खतमासा, एस णं अद्धा दुवालसक्खनकडा दुवालसभइया सिंह एए आइचा संवच्छरा एगर्डि एए उद्धसंवच्छरा वाबहिं एए चंदा संबच्छरा सत्तिहिं एए णक्खना संबच्छरा, तया णं एए आइच-उडुचंदणक्खता संबच्छरा समाइया समपजनसिया आहितेति वएजा।ता कया णं एए अभिविद्वयभाइचउडुचंदणक्खना संबच्छरा समाइया समपज्जवसिया आहितेति वएजा? ता सत्तावण्णं मासा सत्त य अहोरना एकारस य मुहुत्ता तेवीसं बावद्विभागा मुहुत्तस्स एए अभिविद्वया मासा सिंहे एए आइचमासा एगहि एए उडुमासा वावडी एए चंदमासा सत्तर्हि एए णक्खतमासा, एस णं अदा छप्पण्णसयक्खतकडा दुवालसभइया सत्त सया चोत्ताला एए णं अभिनिष्ट्रिया संवच्छरा, सत्त सया असीया एए णं आइचा संबच्छरा, सत्त सया तेणउया एए णं उहुसंबच्छरा अहुसया छलतरा

एए णं चंदा संवच्छरा, एकसत्तरी अहसया एए णं णक्खता संवच्छरा, तया णं एए अभिविद्वया आइचाउडुचंदणक्खता संवन्छरा समाइया समपज्ञवसिया आहितेति वएजा, ता णयद्वयाए णं चंदे संबच्छरे तिष्णि चउप्पण्णे राइंदियसए दुवालस य बावद्विभागे राइंदियस्स आहिएति वएजा, ना अहातचेणं चंद संवच्छरे तिण्णि चरपण्णे राइंदियसए पंच य मुहुते पण्णासं च बावद्विभागे मुहुत्तस्स आहिएति वएजा ॥ ७२ ॥ तत्य खलु इमे छ उड्ड पण्णता, तंजहा-पाउसं वरिसारते सरए हेमंत बसंते गिम्हे. ता सब्वेवि णं एए चंदउड़ दुवे २ मासाइ चडप्पण्णेणं २ आयाणेणं गणिजमाणा साइरेगाइं एगूणसद्धि २ राइंदियाई राइंदियग्गेणं आहितेति वएजा, तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णना, तंजहा-तहए पब्वे सत्तमे पब्वे एकार-समे पन्ने पण्णरममे पन्ने एगूणवीसइमे पन्ने तेत्रीसइमे पन्ने, तत्थ खल्ल इमे छ अइरता प०, तं०-वडत्थे पच्चे अद्वमे पच्चे बारसमे पच्चे सोलसमे पच्चे बीसइमे पव्वे नउवीसइमे पव्ये । छन्नेव य अइरता आइनाओ हवंति माणाई । छन्नेव ओम-रत्ता चंदाहि हवंति माणाहि ॥ १ ॥ ७३ ॥ तत्थ खळु इमाओ पंच वासिकीओ पंच हेमंताओ आउट्टीओ पण्णताओ, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं पढमं वासिक्सि आर्डाई चंदे केणं णक्सत्तेणं जोएइ ? ता अमीइणा, अमीइस्स पटमसमएणं, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं सुहता तेत्तालीसं च बावद्विमागा मुद्दत्तस्स बावद्विमागं च सत्तद्विद्दा छेता तेत्तीसं चुण्णिया-भागा सेसा, ना एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोन्बं वासिक्तिं आउट्टि चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता संठाणाहि, संठाणाणं एकारसमुहुत्ते स्वयालीसं च बावद्विमागा मुहुतस्य बावहिभागं च सत्तहिहा हेता तेपण्णं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमाए, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं तत्रं बासिकिं आउहिं चंदे केणं णक्खतेणं जोएह ? ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरस मुहता वरुपण्णं च बावद्विभागा मुहत्तस्स बावद्विमागं च सत्तिद्वहा केता चतालीसं चुण्णियामागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्ख-त्रेणं जोएइ ? ता पूरोणं, पूसस्स तं चेव, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं चउत्थं वासिकि आउटि नेदे केणं णक्सनेणं जोएइ ! ता रेवहींहें, रेवहेणं पणवीसं मुहुत्ता बासद्विमागा मुहत्तस्स बाबद्विभागं च सत्तद्विहा छेता बत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ है ता पूसेणं, पूसरस तं चेव, ता एएसि णं पंत्रण्हं संबच्छराणं पंत्रमं बासिक्षि आउर्हि चंद्रे केणं णक्सातेणं जीएइ ? ता पुरुवाहिं फागुणीहिं, पुरुवाफागुणीणं बारस मुहुता सत्तालीसं च बाबद्विभागाः 920

मुहत्तस्य बावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता तेरस चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं स्रे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ना पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥ ७४ ॥ ना एएसि ण पंचण्हं संबच्छराणं पडमं हेमंति आउट्टि चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता हत्थेणं. हत्थस्स णं पंच मुहत्ता पण्णासं च बावद्विभागा मुहत्तस्स बावद्विभागं च मनद्विहा छेता सिंह चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च णं सरे केणं णक्कतेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छ-राणं दोचं हेमंति आउड्डि चंदे केणं णक्खतेणं जोएड ? ता सयभिसयाहिं, सयभि-सयाणं दृष्णि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावद्विभागा मुहुत्तस्य बावद्विभागं च सर्त्ताद्वहा छेता छत्तालीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं समयं च ण सुरे केणं णक्खनेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उनराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छमाणं तच्चं हेमंति आउद्दि चंदे केणं णक्खतेणं जोएड ? ता पूसेणं, पूसरस एगणवीसं महत्ता तेयालीसं च वावडिभागा महत्तस्स वावडिभागं च सत्तिहहा छेता तेत्तीसं चुण्णियाभागा सेसा, तं ममयं च णं मरे केणं णक्खतेणं जोएड ? ता उत्तराहि आसाढाहि, उत्तराणं आमाढाणं चरिमममए, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छ-राणं चडित्य हेमंति आउहि चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता मृतेणं, मृतस्स छ मुहुत्ता अद्वावण्णं च बावद्विभागा मुहुत्तस्स बावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता वीसं चुण्णियामागा सेसा, तं समयं च णं सूरे केणं णक्लत्तेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहि, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं हेमंति आउद्दि चंदे केणं णक्खराणं जोएइ ? ता कत्तियाहि, कत्तियाणं अद्वारस मुहुता छत्तीसं च वावद्विभागा मुहुत्तस्म बावद्विभागं च सत्तद्विहा छेता छ चुण्णियाभागा सेसा. तं समयं च णं सूरे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आमाढाणं चरिमसमए ॥ ७५ ॥ तत्थ खलु इमे दसविहे जोए पण्णते, तंजहा-वस-भाणुजीए वेणुयाणुजीए मंचे मंचाइमंचे छत्ते छताइछते जुयणदे घणसंमदे पीणिए मंडगप्पुत्ते णामं दसमे, ता एएसि णं पंचण्हं संबच्छराणं छत्ताइच्छतं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएइ ? ता जंबुद्दीवस्स २ पाईणपडीणायसाए उदीणदाहिणायसाए जीवाए मंडलं चउन्नीसेणं सएणं छेता दाहिणपुरच्छिमिलंसि चउभागमंडलंसि सत्तानीसं भागे उना-इणावेता अद्वावीसइमागं वीसद्दा छेना अद्वारसभागे उवाइणावेता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहि दाहिणपुरच्छिमिहं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्य णं से चंदे छत्ताइच्छतं जोयं जोएइ, उपि चंदी मज़्ज़े णक्खते हेट्टा आइबे, तं समयं च णं चंदे केणं णक्खतेणं जोएइ ? ता चित्ताहिं • चरमसमए ॥ ७६ ॥ बारसमं वाइडं समर्च ॥१२॥

ता कई ते चंदमसो वृद्वोवश्वी आहितेति वएजा ? ता अह पंचासीए मुहुत्तसए तीसं च बावद्विभागे मुहुत्तरसं, ता दोसिणापनखाओ अंधयारपक्खमयमाणे चंदे चत्तारि बायालसए छनालीसं च बावट्टिभागे मुहत्तस्स जाइं चंदे रजइ, तंजहा-पढमाए पढमं भागं बिइयाए बिइयं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिम-समए चंदे रत्ते भवड़, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवड़, इयण्णं अमा-वासा, एत्थ णं पढमे पन्ने अमावासा, ता अंधयारपन्खो, तो णं दोसिणापन्खं अयमाणे चंदे बतारे बायाले मुहुत्तमए छायालीसं च बावहिमागा मुहुत्तस्य जाई चंदे विरज्जह, तं -परमाए पढमं भागं विद्याए विद्यं भागं जाव पण्णारसीए पण्णरममं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवइ, अवसेससमए चंदे रते य विरत्ते य भवइ, इयण्णं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोश्चे पन्वे पुण्णिमासिणी ॥ ७० ॥ तत्थ बन्दु इमाओ बावहिं पुण्णिमासिणीओ बाविंद्धं अमावासाओ पण्णत्ताओ, बाविंद्धं एए कसिणा रागा, बावड्डिं एए कसिणा विरागा, एए चडव्वीसे पव्यसए, एए चडव्वीसे कांसणरागविरागसए, जावइया णं पंचण्हं संबच्छराणं समया एगेणं चउन्वीसेणं समयसएणूणगा एवइया परिता असंखेजा देसरागविरागसया भवंतीति मक्खाया. ता अमावायाओ णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बायांछे मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावड्वि-भागे मुहुत्तस्य आहितेति वएजा, ता पुण्णिमासणीओ णं अमावासा चत्तारि बायाचे मुहत्तसए छत्तालीसं च बावद्विभागे मुहत्तस्स आहितेति वएजा, ता अमा-वासाओं णं अमावासा अहुपंचासीए मुहुत्तसए तीसं च बावहिभागे मुहुत्तस्य आहितेति वएजा, ता पुण्णिमासिणीओ णं पुण्णिमासिणी अट्टपंचासीए सुहुत्तसए तीसं च बावद्विभागे महत्तस्य आहितेति वएजा, एस णं एवइए चंदे मासे एस णं एबइए सगळे जुगे ॥ ५८ ॥ ता चंदेणं अद्भासेणं चंदे कह मंडलाई चरह ? ता चोइस चउन्भागमंडलाई चरइ, एगं च चउन्वीससयभागं मंडलस्स, ता आह्बेणं अद्भासेणं चंदे भड़ मंडलाइं चरइ ! ता १४ ६६० मंडलाइं चरइ, ता णक्खतेणं अदमासेणं चंदे कह मंडलाई चरह? ता तेरस मंडलाई चरह, तेरस सत्तिष्टिमागं मंडलस्स, तया अवराइं खलु दुवे अद्वयाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाई सममेव पविद्विता २ चारं चरड, कयराई खल ताई दुवे अद्भगई जाई चंदे केणइ असा-सम्प्रवाई सबसेव पविद्विता २ जारं चरइ ? ता इसाई खळ ते वे अङ्घनाई जाई चेंद्रे केणइ असामण्यगाई सयमेव पविद्विता २ चारं चरह, तंजहा-णिक्खममाणे चेंब अमाबासंतेणं पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेणं, एयाई खल्ल दुवे अहुनाई जाई चंदे केणड असामण्यामाई सयमेव पविद्विता २ चारं चरह, ता पढमायणगए चंदे

दाहिणाए भागाए पविसमाणे सन अद्भमंडलाई जाई चंदे दाहिणाए भागाए पविममाणे चारं चरइ, कयराई खळु ताई सत्त अद्धमंडलाई जाई चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरह ? इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाई चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरड. तंजहा-बिइए अद्भमंडले चउत्थे अद-मंडले छट्टे अद्धमंडल अट्टमे अद्धमंडले दसमे अद्धमंडले बारसमे अद्धमंडले चउदसमे अद्भंडले. एयाई खल ताई मत्त अद्भंडलाई जाई चंदे दाहिणाए भागाए पवि-समाणे चारं चरइ, ता पढमायणगए चंदे उत्तराए भागाए पविनमाणे छ अद-मंडलाइं तेरस य सत्तद्विमागाइं अद्धमंडलस्त जाइं चंदे उत्तराए भागाए पवि-समाणे चारं चरइ, ऋयराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तद्विभागाई अद्धमं-डलस्स जाई चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ? इमाई खलु ताई छ अद-मंडलाई तेरम य सत्तद्विमागाई अद्धमंडलस्य जाई चंदे उत्तराए मागाए पविसमाणे चारं चरइ. तंजहा-तइए अद्धमंडले पंचमे अद्धमंडले सत्तमे अद्धमंडले णवमे अद्धमं-डले एकारसमे अद्धमंडले तेरसमे अद्धमंडले पण्णरसमस्स अद्धमंडलस्स तेरस सन-द्विभागाइं, एयाई खलु नाई छ अद्भांडलाइं तर्स य मनद्विभागाई अद्धमंडलस्स जाई चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरह, एतावता य पढमे चंदायणे समते भवइ, ता णक्खते अद्भासे नो चंदे अद्भासे नो चंदे अद्भासे णक्खते अद्मासे, ता णक्खताओ अद्मासाओ से चंदे चंदेणं अद्मासेणं किमहियं चरड ? ना एगं अद्धमंडलं चरइ चतारि य सद्धिभागाई अद्धमंडलस्स सत्तद्विभागं एगतीसाए छेता णव भागाइं. ता दोनायणगए चंदे पुरच्छिमाए भागाए जिक्ख-ममाणे सचउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिष्णं पिडचरइ, सत्त तेरमगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पिडचरड. ता दोबायणगए चंदे पबल्धिमाए भागाए णिक्खम-माणे चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पिडचरइ, छ तेरसगाईं ॰ चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरइ, अवरगाइं खल्ल दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाईं सयमेव पविद्विता २ चारं चरह, कयराइं खलु ताई दुवे तेरसगाई जाई चंदे केणड असामण्णगाई सबमेव पविद्विता २ चारं चरइ ? इमाई खळु ताई दुवे तेरसगाई जारं चंदो केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविद्विता २ चारं चरह, तं०-सव्य-ब्भंतरे चेव मंडले सञ्बबाहिरे चेव मंडले, एयाई खल ताई दुवे तैरसगाई जाई चंदे केणइ जाव चारं चरह, एतावता दोचे चंदायणे समते भवह, ता णक्खते मासे जो चंदे मासे चंदे मासे जो जक्खते मासे. ता जक्खते मासे चंदेजं मासेजं कि अहियं चरइ ? ता दो अद्धमंद्रलाई चरड अद्ध य सत्ताद्रिमागाई अद्धमंद्रलस्स

सत्तद्विभागं च एकतीसहा छेता अट्टारस भागाई, ना तचायणगए चंदे पचित्यमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पचरियमिह्नस्य अद्धमंडलस्स ईबालीसं मत्तद्वि-भागाई जाई चंदे अप्पणी परस्स य चिण्णं पिडचरह, तेरस सत्तद्विमागाई जाई चंदे परस्स चिण्णं पडिचरइ, तेरस सत्तद्विभागाइं चंदे अप्पणी परस्स चिण्णं पडि-चरइ. एतावता बाहिराणंतरे पचित्यमिक्षे अद्धमंडले समते भवइ, ता तचाग्रणगए चंदे पुरच्छिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरतबस्स पुरच्छिमिष्टस्स अद्धमंडलस्स ईयालीसं सत्ताद्विमागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिम्णं पडिचरइ, तेरस सत्त-डिभागाई जाई चंदे परस्स चिण्णं पिडचरइ, तेरस सत्तिद्विमागाई जाई चंदे अप्पणो परस्म चिण्णं पिडचरइ, एनावताव बाहिरतचे पुरच्छिमिहे अद्धमंडछे समत्ते भवइ, ता तचायणगए चंदे पचित्थमाए भागाए पविसमाणे बाहिर्चउत्थस्स पचित्थिमित्रस्स अदमंडलस्स अदसत्तिद्वभागाई च एकतीसहा छेता अद्वारस मागाई जाई चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ. एनाक्ताव बाहिरचउत्थपचरियमिक्षे अद्भंडले समत्ते भवड़ । एवं ख़लु चंदेणं मासेणं चंदे तेरम चउप्पण्णगाई दुवे तेरसगाई जाई चंदे परस्स चिष्णं पिडचरइ, तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणी चिष्णं पिडचरइ, दुवे इंयालीसगाइं अद्व सत्तद्विभागाइं सत्तद्विभागं च एक्सीसहा छेता अद्वारसभागाईं जाइं चंदे अप्पणी परस्स य चिष्णं पिन्नदह, अवराइं खलु दुवे तेरसगाई जाई चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेत्र पविद्विता २ चारं चरइ, इचेसी चंदमासोऽभि-गमणणिक्समणवृद्धिणवृद्धिअणवद्वियसंठाणसंठिईविउव्दणगिष्टिपते ह्वी चंदे देवे २ आहिएति वएजा ॥ ७९ ॥ तेरसमं पाहुडं समत्तं ॥ १३ ॥

ता कया ते दोसिणा बहू आहितेति वएजा ? ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहु आहितेति वएजा ? ता अंध्यारपक्खाओ णं॰ दोसिणा बहु आहिताति वएजा , ता कहं ते अंध्यारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा बहु आहिताति वएजा , ता कहं ते अंध्यारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा बहु आहिताति वएजा ? ता अंध्यारपक्खाओ णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहु आहिताति वएजा ? ता अंध्यारपक्खाओ णं दोसिणापक्खे अयमाणे चंदे चतारि वायाछे मुहुत्तसए छतालीसं च बावद्विभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जइ, तं०-पहमाए पहमं मागं बिद्याए बिद्यं मागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, एवं खछु अंध्यारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा बहु आहिताति वएजा ? ता परिता असंखेजा भागा । ता क्या ते अंध्यारे बहु आहिएति वएजा ? ता अंध्यारपक्खे णं अंध्यारे बहु आहिएति वएजा, ता कहं ते अंध्यारपक्खे बहु आहिएति वएजा । ता दोसिणापक्खां णं अंध्यारपक्खे अंध्यारे बहु आहिएति वएजा । ता दोसिणापक्खां णं अंध्यारपक्खे अंध्यारे बहु आहिएति वएजा,

[चंद्रपण्णसी

ता कहं ते दोसिणापक्लाओ अधयारपक्ले अधयारे वहू आहिएति वएजा ? ता दोसिणापक्खाओ णं अंधयारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहत्तराए बायालीसं च बावद्विभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जइ, तं०-पढमाए पढमं भागं बिझ्याए बिझ्यं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, एवं खलु दोसिणापक्खाओ अंधयारपक्खे अंधयारे बहु आहिएति वएजा, ता केवइए णं अंधयारपक्खे अंधयारे बहु आहिएति वएजा ? ता परिता असंखेजा भागा ॥ ८० ॥ चोहसमं पाइडं समतं ॥१४॥ ता कहं ते सिग्वगई वत्यू आहितेति वएजा? ना एएसि णं चंदिमस्रियगह-गणणक्खततारारुवाणं चंदिहिंतो स्रा सिग्धगई स्रेहिंतो गहा सिग्धगई गहेहिंतो णक्लमा सिरवगई णक्लमेहितो तारा । सिरवगई, मन्वप्पगई चंदा मन्वसिरवगई तारा॰, ता एगमेरोणं मृहत्तेणं चंदे केन्द्रयाई भागसयाई गच्छइ ! ता जं जं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चरइ तस्म २ मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरम अडसद्विं भागसए गच्छइ मंहलं सयसहस्सेणं अट्टाणउड़ेसएहिं छेता, ता एगमेगेणं मुहतेणं सुरिए केवडयाई भागसयाई गन्छड् ? ता जं जं मंडलं उवसंक्रमित्ता चारं चर्ड तस्य २ मंडल-परिक्खेवस्स अद्वारस तीसे भागसए गण्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अद्वाणउईसएहिं छेता, ता एगमेगेणं मुहत्तेणं णक्खते केवड्याई भागसयाई गच्छाई ! ता जं जं मंडलं उब-संकर्मित्ता चारं चरइ तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अद्वारस पणतीसे भागसए गच्छइ मंडलं गयसहस्सेणं अद्वाणउईसएहिं छेता ॥ ८९ ॥ ता जया णं चंदं गइसमावण्णं सुरे गङ्गमावण्णे भवइ से णं गङ्मायाए केवइयं विसेसेइ ? ता बाबाद्वेभागं विसेसेइ, ता जया णं चंदं गइमसावण्णं जनस्वते गइसमावण्णे भवड से णं गडमायाए केवडयं विसेसेर १ ता सन्ति भागे विसेसेर, ता जया णं सूरं गइसमावण्णं णक्खते गइ-समावण्णे भवइ से णं गइमायाए केवइयं विसेसेइ ? ता पंचभागे विसेसेइ, ता जया णं चंदं गइसमाबण्णं अमीईणक्खते गडसमावण्णे पुरिच्छमाए मागाए समासादेह पुरच्छिमाए भागाए समासादिता णव मुहुने सत्तावीसं च सत्तद्विभागे मुहुत्तस्स चंद्रेण सर्दि जोयं जोएइ जोयं जोएता जोयं अणुपरियष्टइ जोयं अणुपरियष्टिता विप्प-जहइ २ ता विगयजोई यावि भवइ, ता जया णं चंदं गहसमावण्णं सवणे णक्खते गइसमावणी पुरच्छिमाए भागाए समासादेइ पुरच्छिमाए भागाए समासादेता तीसं मुहुते चंदेण सर्दि जोयं जोएइ २ ता जोयं अणुपरियष्टइ जो० २ ता विष्पजहड्ड० विगयजोई यावि भवइ, एवं एएणं अभिलावेणं णेथन्वं, पष्णरसमुहताइं तीसइसुहुताई पणयालीसमुहत्ताई माणियञ्चाई जाव उत्तरासाढा । ता जया णं चंदं गइसमावण्णं गहे गइसमावन्णे पुरच्छिमाए भागाए समासादेइ पुर २ ता चंदेणं सिंह जोगं

जुंजइ २ त्ता जोगं अणुपरियदृद् २ ता विप्पजहुद् ० विगयजोई यावि भवड् । ता जया र्णं स्रं गइसमावण्णं अभीईणक्खते गइसमावण्णे पुरिच्छमाए भागाए समासांदर पुर॰ २ ता चत्तारि अहोरने छच मुहुने स्रेण सिद्धं जोयं जोएइ २ ता जोयं अणुपरियदृह २ ता विप्पजहद० विगयजोई यावि भवह, एवं अहोरता छ एकवीसं मुहुत्ता य तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य वीसं अहोरता तिण्णि मुहुता य सन्वे भाणियव्या जाव जया णं स्रं गइसमावण्णं उत्तरासाढाणक्खने गइसमावण्णे पुरच्छि-माए भागाए समासादेइ पु॰ २ ता वीसं अहोरते तिष्णि य मुहुते सुरेण सर्दि जीयं जोएड जो० २ त्ता जोयं अणुपरियष्ट्रड जो०२ ता विप्पजहड्ड० विगयजोई यावि भवड्, ता जया णं सूरं गइसमावण्णं णक्खते गइसमावण्णे पुरच्छिमाए भागाए समासादेइ पु० २ ता मृरेण सिद्धं जोयं जुंजह २ ता जोयं अणुपरियद्वह २ ता जाव विगय-जोई थावि भवड ॥ ८२ ॥ ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कड मंडलाइं चरइ? ता तरस मंडलाई चरइ तेरस य मत्तद्विभागे मंडलस्य, ता णक्खतेणं मासेणं स्रे कह मंडलाई चरह ? ता तेरस मंडलाई चरड़ चोत्तालीसं च सत्तिद्विभागे मंडलस्स, ता णक्खनेणं मासेणं णक्खने कइ मंडलाई चरइ ? ता तेरस मंडलाई चरइ अद्द-सीयाठीसं च सनद्विभागे मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं चंदे कइ मंडलाइं चरह ? ता चोद्दस चउभागाई मंडलाई चरइ एगं च चउम्बीससयभागं मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं सरे कह मंडलाई चरह ? ता पण्णरस चलमागूणाई मंडलाई चरड एगं च चउवीसमयभागं मंडलस्म, ता चंदेणं मासेणं णक्खते कइ मंडलाइं चरइ ! ता पण्णरस चउभागूणाई मंडलाई चरइ छच चउवीससयमागे मंडलस्स, ता उद्धणा मासेणं चंदे कइ मंडलाई चरइ ? ता चोह्स मंडलाई चरइ तीसं च एगद्विमागे मंडलस्स, ता उहुणा मासेणं स्रे ऋ मंडलाई चर्ह? ता पण्णरस मंडलाई चरइ, ता उड़णा मासेणं णक्खने कह मंडलाई चरइ? ता पण्णरस मंडलाई चरइ पंच य वावीमसयभागे मंडलस्य, ता आइन्द्रेणं मासेणं चंदे नद्ध मंडलाइं चरइ ? ता चोइस मंडलाई चरइ एकारसभागे मंडलस्स, ता आइचेणं मासेणं सूरे कड़ मंडलाई चरह १ ता पण्णरस चलमागाहियाइं मंडलाई चरड, ता आइचेणं मासेणं णक्सते कइ मंडलाई बरइ ? ता पण्णरस चडभागाहियाई मंडलाई बरइ पंचतीसं च चड-वीससयभागमंडलाई चरह, ता अभिवश्विएणं मासेणं चंदे वह मंडलाई चरह ! ता पण्गरस मंडलाई॰ तेसीई छलसीयसयभागे मंडलस्स, ता अभिवृद्धिएणं मासेणं सुरे पड़ मंडलाई चरह ? ता सोलस मंडलाई चरइ तिहिं भागेहिं द्रणगाई दोहिं अडया-केहिं सएहिं मंडलं छेता, ता अभिवद्धिएणं मासेणं णक्खते कह मंडलाई चरह ? ता

सोलस मंडलाई चरइ सीयालीसएहिं भागेहिं अहियाई चोइसिंह अद्वासीएहिं मंडलं छेता ॥ ८३ ॥ ता एगमेगेणं अहोरतेणं चंदे कह मंडलाई चरइ ? ता एगं अद-मंडलं चरइ एक्स्तीसाए भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं अद्धमंडलं छेता, ता एगमेंगेणं अहोरत्तेणं स्रिए कह मंडलाइं चरइ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ, ता एगमेगेणं अहो-रतेणं णक्खते कह मंडलाई चरड़ ? ता एगं अद्धमंडलं चरइ दोहिं मागेहिं अहियं सत्ताहिं बत्तीसीहें सएहिं अद्भांडलं क्षेता, ना एगमेगं मंडलं चंदे कर्ड़ाह अहोरतेहिं चरइ १ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ एकतीसाए भागेहिं अहिएहिं चउहिं चोयालेहिं मएहिं राइंदिएहिं छेता, ता एगमेगं मंडलं स्रे कड़िहं अहोरतेहिं चरइ? ता दोहिं अदोरत्तेहिं चरइ, ता एगमेगं मंडलं णक्खते कड़िंहं अहोरतेहिं चरइ? ता दोहिं अहोरतेहिं चरइ दोहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसद्वेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेता, ता जुगेणं चंदे कह मंडलाई चरद ! ता अह चूलसीए मंडलसए चरह, ता जुगेणं भरे कह मंडलाई चरइ १ ता णवपण्णरममंडलसए चरइ, ता जुगेणं णक्सते कड मंडलाई चरइ ? ता अद्वारस पणतीसे दुभागमंडलसए चरइ । इचेसा मुहुत्तगई रिक्लाइमा-सराइंदियजुगमंडलपविभना सिग्चगई वत्यू आहितेति (वएजा) वेमि ॥ ८४ ॥ पण्णरसमं पाहुडं समसं ॥ १५॥

ना ऋं ते दोसिणालक्खणे आहिएति वएजा ? ता चंदछेसाइ य दोसिणाड य दोसिणाइ य चंदलेसाइ य के अडे किं लक्खणे ?, ता एगडे एगलक्खणे, ना कहं ते स्रलक्खणे आहिएति वएजा ? ता स्रलेस्साइ य आयवेइ य आयवेइ य स्रलेस्साइ य के अड़े कि लक्खणे ?, ता एगड़े एगलक्खणे, ता कहं ते छायालक्खणे आहिएति वएजा ? ता अंधयारेड् य छायाइ य छायाइ य अंधयारेड् य के अद्वे कि लक्खणे !. ता एगड्डे एगळक्समे ॥ ८५ ॥ सोळसमं पाहुडं समत्तं ॥ १६॥

ता कहं ते चयणोववाया आहितेति वएजा? तत्य खलु इसाओ पणवीसं पिड-वत्तीओ पण्णताओ, तं०-तत्त्र एगे एवमाहंसु-ता अणुसमयमेव चंदिमस्रिया अण्णे चयंति अण्णे उववजंति॰ एगे एवमाइंस १, एगे पुण एवमाइंस-ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमस्रिया अण्णे चयंति अण्णे उववजाति ... २, एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव ता एगे पुण एवमाइंस-ता अणुउस्सप्पिणिओसप्पिणिमेव चंदिमस्रिया अण्णे चयंति अण्णे उनकर्जिति । एने एक्साहंसु २५, वर्ग पुण एवं वयामी-ता चंदिमस्रिया णं जोइसिया देवा महिष्ट्रिया महजूदया महाबला महाजसा महासोक्सा महाणुनावा वरवत्थवरा वरमञ्ज्वा वरगंधधरा बराभरणघरा अवोच्छित्तिणयद्वयाए काले अण्णे चर्यति अण्णे उववजंति ।। ८६ ॥ सत्तरसमं पाइडं समत्तं ॥ १७ ॥

ता कहं ते उचने आहितेति वएजा ! तत्य खलु इमाओ पणवीसं पडिवक्तीओ प॰, तं॰-तत्थेगे एवमाहंसु-ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उन्ने उन्नतेणं दिवन्नं चंदे एगे एवमाइंस १, एगे पुण एवमाइंस-ता दो जीयणसहस्साइं मृरे उन्ने उन्नतेणं अहु।इजाइं चंदं एगे एवमाहंसु २, एगे पुण एवमाहंसु-ता तिष्णि जोयणसहस्साइं सूरे उद्दं उचतेणं अबुद्धाइं चंदे एगे एवमाहंसु ३, एगे पुण एवमाहंसु-ता चत्तारि जायणसहस्ताई सूरे उन्हें उन्हों अद्भंचमाई चंदे एगे एवमाहंसु ४, एगे पुण एवमाहंसु-ता पंच जोशणसहस्साई सुरे उन्नं उचतेणं अदछद्वाई चंदे एगे एवमाहंसु ५, एगे पुण एवमाहुंसु-ता छ जोयणसहरूसाइं सूरे उन्हें उन्हतेणं अद्भूतमाइं चंद एगे एवमाहंसु ६, एगे पुण एवमाहंसु-ता सत्त जोयणसहस्साई सुरे उड्ड उच्चतेणं अद्धद्वमाई चंदे एगे एवमाहंसु ७, एगे पुण एवमाहंसु-ता अहु जोयणसहस्साइं सूरे उन्ने उन्नेतणं अद्भणवमाई वंद एगे एवमाहंसु ८. एगे पुण एवमाहंसु-ता जवजोयजसहस्साई सुरे टक्क उचनेणं अद्वदसमाइं चंदे एगे एवमाहंसु ९, एगे पुण एवमाहंसु-ता दस जोयणसहस्साइं स्रे उन्नं उन्नेतेणं अद्धएकारस चंदे एगे एवमाहंसु १०, एगे पुण एवमाहंसु-ता एकारस जीयणसहस्साई सुरे उन्हें उन्नेतृणं अद्भारस चंदे ... ११, एएणं अभिलावेणं णेयव्वं बार्स सुरे अद्धतेरस चंदे १२. तेरस सुरे अद्धचोह्स चंदे १३, चोह्स सुरे अद्धपण्णरस चंदे १४. पण्णरस स्रे अद्भगोलस चंदे १५, सोलस स्रे अदसत्तरस चंदे १६, सत्तरस सूरे अद्रअद्वारस चंदे १७, अद्वारम सूरे अद्रएगूणवीसं चंदे १८, एगूण-वीसं सृरे अद्भवीसं चंदे १९., वीसं स्रे अद्धएकवीसं चंदे २०, एकवीसं स्रे अद-यावीसं चंदे २१, बावीसं सूरे अद्धतेवीसं चंदे २२, तेवीसं सूरे अद्धच उवीसं चंदे २३, चउवीसं मूरे अद्भागवीसं चंदे एगे एक्माहंस २४, एगे पुण एक्माहंस-ता पणवीसं जोयणसहस्साई सूरे उन्नं उन्नतेणं अद्यक्तवीसं चंदे एगे एवमाहंगु २५। वयं पुण एवं वयामी-ता इनीसे रचणपमाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ सत्तणजङ्जीयणसए उन्नं उप्पहत्ता हेड्डिक्ने ताराविमाणे चारं चरइ अद्वजीयणसए उन्नं उपहत्ता सुरविमाणे चारं चरइ अद्वअसीए जोयणसए उन्नं उप्पहता चंदविमाणे चारं चरइ णव जोयणसयाई उद्घं उप्पदत्ता उबिर ताराविमाणे चारं चरइ. हेब्रिहाओ ताराविमाणाओ दसजोयणाई उन्नं उप्पद्ता सुरविमाणे चारं चरइ णउई जोयणाई उन्नं उप्पद्वता चंदविमाणे चारं चर्ड दसोत्तरं जोयणसयं उन्नं उप्पद्वता उविहि तारारूवे चार चरह, स्रविमाणाओ असीई जोयणाई उन्नं उप्पहता चंदविमाणे चारं चरइ जोबणसबं उर्दू उप्पद्ता उवस्ति तारास्वे चारं चर्ड, बंदविमाणाओं णं वीसं जीवणाई उन्नं उप्पहता उवरिक्षे तारारूचे चारं चरह, एवामेव सपुष्वावरेणं दसुत्तर-

जोयणसयं बाह्रहे तिरियमसंखेळे जोइसविसए जोइसं चारं चरइ आहितेति वएजा ॥ ८७ ॥ ता अत्य णं चंदिमस्रियाणं देवाणं हिद्वंपि तारास्त्रा अणुंपि तज्ञावि समंपि ताराह्वा अणंपि तुहावि उप्पिपि ताराह्वा अणंपि तुहावि ? ता अत्थि. ता कहं ते चंदिमस्रियाणं देवाणं हिद्धंपि ताराख्या अणुंपि तुझावि समंपि ताराख्या अणंपि तहाबि उप्पिप तारास्वा अणंपि तहाबि ? ता जहा जहा णं तेसि णं देवाणं तबिणयमबंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा तहा णं तेसि देवाणं एवं भवड्, तंजहा-अणुत्ते वा तुल्लते वा, ता एवं खलु चंदिमस्रियाणं देवाणं हिद्वंपि नारास्वा अणुंपि तुलावि तहेव जाव उप्पिपि तारास्वा अणुंपि तुलावि ॥ ८८ ॥ ना एगमेगस्य णं चंदस्स देवस्स केवङ्या गहा परिवारो प॰, केवड्या णक्कता परिवारो पण्णत्तो. केबड्या तारा परिवारो पण्णतो? ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवरस अद्वासीइगहा परिवारी पण्णत्तो, अद्वावीसं णक्खता परिवारो पण्णत्तो, छावड्रि-सहस्साई णव चेव सयाई पंचुकराई [पंचसयराई] । एगससीपरिवारो नारागण-कोडिकोडीणं ॥ १ ॥ परिवारो प० ॥ ८९ ॥ ता मंदरस्स णं पव्ययस्स केवड्यं अवाहाए जोइसे चारं चरइ ? ता एकारस एकवीसे जोयणसए अवाहाए जोइसे चारं चरइ. ता लोयंताओ णं केवइयं अबाहाए जोइसं प० ? ता एकारस एकारे जायण-सए अबाहाए जोइसे प॰ ॥ ९० ॥ ता जंबुद्दीवे णं बीवे कयरे प्रक्यते सव्वक्यंतरिष्ठं चारं चरड, कमरे णक्खने सञ्बबाहिरिष्टं चारं चरट, कमरे णक्खने सञ्जवरिलं चारं चरइ, क्यरे णक्खते सव्वहिद्विष्टं चारं चरइ? ता अभीई णक्सते सव्य-बिंगतरिक्षं चारं चरह, मुखे णक्खते सव्यवाहिरिक्षं चारं चरह, साई णक्खते सव्य-वरिष्ठं चारं चरइ. भरणी णक्खते मञ्बहेद्रिष्ठं चारं चरइ ॥ ९१ ॥ ता चंदविमाणे णं किसेठिए प॰ ? ता अद्धकविष्ट्रगसंठाणसंठिए सव्वफालियामए अन्युग्ययमृसिय-पहसिए विविद्दमणिर्यणभत्तिचित्ते जाव पिडस्बे, एवं सूर्विमाणे गहविमाणे णक्खता-विमाणे ताराविमाणे । ता चंदविमाणे णं केवइयं आयामविक्खंमेणं केवइयं परि-क्खेनेणं केषड्यं बाहहेलं प० ? ता छप्पण्णं एगद्विमागे जोयणस्य आयामनिक्खंमेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं अद्वावीसं एगद्विमागे जोयणस्य बाह्रहेणं पण्णते, ता स्रविमाणे णं केवह्यं आयामविक्खंभेणं पुच्छा, ता अडवालीसं एगड्डिमागे जोय-णस्स आयामविक्संभेणं तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं चडव्वीसं एगद्रिभागे जोयणस्स बाहृक्षेणं प॰, ता णक्सत्तविमाणे णं केवइयं पुच्छा, ता कोसं आयामविक्संमेणं तं तिराणं सविसेसं परिरएणं अद्यक्षेसं बाहक्षेणं प॰, ता ताराविमाणे णं केवहमं पुच्छा, ता अदकोसं आयामविक्यांनेणं तं तिगुणं सविसेसं परिराणं पंचानतस्याई बाहतेणं

प॰ । ता चंदविमाणं णं कह देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं०-परिच्छमेणं सीहरूवधारीणं वत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहि-णेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति. पश्चत्थिमेणं वसहरूवधारीणं चतारि देवसाहस्सीओ परिवर्हति, उत्तरेणं तुरगन्वधारीणं चतारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं स्रविमाणंपि, ता गहविमाणे णं वह देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता अह देवसाहरसीओ परिवहंति. तं०-परच्छिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं दी देवसाह-स्सीओ परिवर्हति, एवं जाब उत्तरेणं तुरगस्वधारीणं०, ता णक्खत्तविमाणे णं कड देवसाहरसीओ परिवर्हति ? ता चत्तारि देवसाहरसीओ परिवर्हति. तं०-परच्छिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एका देवसाहस्सी परिवहर, एवं जाव उनरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं॰, ता ताराविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवर्हति ? ता दो देवसाहस्सीओ परिवर्हति, तं -पुरस्क्रिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंच देवसया परिवर्हति. एवं जावृत्तरेणं तुरगरूववारीणं ।। ९२ ॥ ता एएसि णं चंदिमसरियगहगणणवस्वत्तता-रास्वाणं कयरे २ हिंतो सिग्धगई वा मंदगई वा? ता चंदेहिंतो सरा सिग्धगई, स्रेहितो गहा सिग्धगई, गहेहितो णक्खता सिग्धगई, णक्खतेहितो तारा० सिग्ध-गई, सञ्चणगई चंदा, सञ्चिस्वगई तारा॰। ता एएसि णं चंदिमस्रियगहगण-णक्खतताराम्बाणं क्यरे २ हिंतो अपिडिया वा महिडिया वा ? ता तारा ० हिंती णक्खता महिश्विया, णक्खतिहिंतो गहा महिश्विया, गहेहिंतो सुरा महिश्विया, सूरे-हिंतो चंदा महिक्किया, सम्बप्पक्किया तारा॰, सन्वमहिक्किया चंदा ॥ ९३ ॥ ता जंबदीये णं दीवे तारारूबस्स य २ एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पण्णते ? ता दुविहे अंतरे प॰, तं॰-बाघाइमे य निक्वाचाइमे य, तत्थ णं जे से बाघाइमे से णं जहण्णेणं दोण्णि बावहे जोयणसए उद्योसेणं बारस जोयणसहस्साई दोण्णि बायाछे जोसणसए तारास्वस्स य २ अवाहाए अंतरे पण्णते, तत्थ णं जे से निव्वाधाइमे से णं जहकोणं पंच घणसमाई उद्योसेणं सद्धजोयणं तारास्वरस म २ अवाहाए संतरे प० ॥ ९४ ॥ ता चंदस्स णं बोहसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अगगमहिसीओ पण्ण-त्ताओ ? ता चतारि अगमहिसीओ पण्णताओ, तं०-चंदप्पमा दोसिणामा अचिमाछी पमंकरा, तत्व णं एनमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहरसी परिवारी पण्णतो, पस् णं ताओं एममेगा देवी अण्णाई चतारि २ देवीसहरूसाई परिवार विजन्दितए, एवामेव सपुञ्चाबरेणं सोलस देवीसहस्सा, सेतं तुडिए, ता पमू णं चंदे ओइसिंदे ओइसराया चंदबर्डिसए विमाणे समाए सहस्माए तुन्डिएणं सद्धि दिव्याई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरित्रए ? जो इज्हे समद्वे, पर् णं मंदे ओइसिंदे बोइसराया चंदवर्डिशए विसाध

सभाए ब्रहम्माए नंदंखि सीहामणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहि-सीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तिं अणिएहिं सत्ति अणियाहिवईहिं सोलमिंह आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अणोहि य बहाहिं जोट्रसिएहिं देवेहिं देवीहि य सर्दि महया हयणद्रगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपदुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोग-भोगाई भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परियारणिश्रीए णो चेव णं मेहुणवित्तयाए । ता सरस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कह अगगमहिसीओ प॰ ? ता चनारि अगग-महिसीओ प॰, तंजहा-सरप्पमा आयवा अश्विमाला पर्मकरा, सेसं जहा चंदस्स णवरं सरवडेंसए विमाणे जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियाए ॥ ९५ ॥ ता जोइतिया-णं देवाणं केवइयं कालं किंद्रे पण्णता ? ता जहण्णेणं अहमागपलिओवमं उक्कोसेणं पिल्जोवमं वाससयसहस्समञ्महियं, ता जोइनिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई प॰ ? ता जहण्णेणं अद्वमागपिल्ओवमं उक्कोसेणं अद्भपित्ओवमं पण्णासाए वास-सहस्सेहिं अन्महियं, ता चंदविमाणे णं देवाणं केवड्यं कालं ठिई पण्णता ? ता जहण्णेणं चउच्मागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं दाससयसहस्समन्महियं, ता चंदविमाणे णं देवीणं केवड्यं कालं ठिई प० ? ता जहण्येणं चउन्भागपलिओवमं उद्गोसेणं अद्धपित्रशोवमं पण्णामाए वाससहस्सेहिं अन्महियं, ना सरविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णाता ? ता जहण्णेणं चउन्मागपिलओवमं उद्योसेणं पिल्जोबर्म वामसहस्समञ्भृहियं, ता सुरविमाण णं देवाणं केनइयं कालं ठिई प० ? ता जहण्णेणं चउच्मागपित्ओवमं उद्योसेणं अद्भपित्ओवमं पंचिहं वाममएहिं अन्महियं, ता गहविमाणे णं देवाणं केवइयं कारुं ठिई प॰ ? ता जहण्णेणं चउ-ब्भागपिलक्षोवमं उद्योसेणं पलिओवमं, ता गहविमाणे णं देवीणं केवइयं कालं टिई प॰ ? ता 'जहण्णेणं चरब्मागपिलओवमं उक्कोरेणं अद्भप्तिओवमं, ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवइयं कालं ठिई प॰ ? ता जहण्येणं चउच्मागपलि-ओवमं उक्कोसेणं अद्भपतिओवमं, ता णक्खनविमाणे णं देवीणं केवहर्यं कालं ठिई प॰ ? ता जहण्णेणं अद्भागपित्रजोत्रमं उक्कोसेणं चउन्मागपित्रजोत्रमं, ता तारा-विमाणे णं देवाणं पुच्छा, ता जहण्णेणं अद्वभागपितस्थोवमं उद्योसेणं चउन्भाग-पलिओवमं, ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा, ता जहण्णेणं अद्वमागपलिओवमं उद्योसेणं साइरेगअद्भागपिक्योवमं ॥ ९६ ॥ ता एएसि णं चंदिमस्रियगहगण-णक्खत्तताराख्वाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुक्रा वा विसेसाहिया वा ? ता चंदा य सुरा य एए णं दो वि तुह्ण सन्वत्योवा, णक्सता संक्षिजगुणा, गहा संखिजगुणा, तारा॰ संखिजगुणा ॥ ९० ॥ **अट्टारसमं पाइडं समर्तः ॥ १८** ॥

ता ऋ णं चंदिमसरिया सन्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति नवेंति पमासंति आहि-तेति वएजा ? तत्थ खळ इमाओ दुवालस पडिवर्ताओ पण्णताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहंमु-ता एगे चंदे एगे सूरे सञ्वलोयं ओमासङ उज्जोएइ तवंइ पभासेइ० एगे एवमाहंसु १, एगे पुण एवमाहंसु-ता तिष्णि चंदा तिष्णि सुरा सव्वलोयं ओभासेंति ४…एंग एवमाहंसु २, एंगे पुण एवमाहंसु-ता आउट्टि चंदा आउट्टि सूरा सञ्बलीयं ओभासिनि ४...एगे एवसाइंसु ३. एगे पुण एवसाइंस-एएणं अभिलावेणं णेयन्वं सत्त चंदा मन सुरा दस चंदा दम सुरा बारस चंदा वारस सुरा बायालीसं चंदा २ बारानिरि चंदा २ बायालीसं चंदसयं २ बावत्तरं चंदसयं बावतरं स्रसयं वायालीसं चंदसहरूसं बायालीसं सूरसहरूमं बावत्तरं चंदसहरूसं बावत्तरं सूरसहरूसं सन्वलोयं ओभासेंति ४ ... एगे एवमाहंसु १२, वयं पण एवं वयामी-ता अयण्णं जंबुद्दीये ? जाव परिक्खेवेणं ?, ता जंबुद्दीये २ केवइया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिरसंति वा ? केवइया सूरा तविसु वा तवैति वा तविस्संति वा ? केवइया णक्खना जोयं जोइंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ? केवइया गहा चारं चरिंसु वा चरेति वा चरिस्संति वा ? केवड्याओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोमेंति वा सोभिरसंति वा ? ता जंबहीवे २ दो चंदा पभासंस् वा ३, दो स्रिया तबइंतु वा ३, छप्पणं णक्खला जोयं जोएंतु वा ३, छावलारे गहुमयं चारं चरिंतु वा ३. एगं सयसहस्यं तेशीसं च सहस्या णव य समा पण्णासा तारागणकोडिको-डीणं सोमं सोमेंसु वा ३, ''दो चंदा दो सरा णक्खना खळ हवंति छप्पण्णा । छावत्तरं गहसयं जंबुद्दीवे विचारीणं ॥ १ ॥ एगं च सयसहस्यं तेत्तीसं खद्ध भवे सहस्साइं। णव य सया पण्णामा तारागणकोडिकोडीणं ॥ २ ॥" ता जंबुदीवं णं दीवं लवणे णामं समुद्दे बट्टे बलबागारसंठाणसंठिए सब्बओ समंता संपरिक्सिताणं चिट्टइ, ता लवणे णं समुद्दे कि समचक्क्वालसंहिए विसमचक्क्वालसंहिए है ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिए णो विसमचक्कवालसंठिए. ता लवणसमुद्दे केवड्यं चक्कवाल-विक्खंभेणं केव्ह्यं परिक्खेवेणं आहिएति वएजा ? ता दो जोयणसयसहस्साई चक्कवालिक्संमेणं पण्णरस जोयणसयसहस्साई एकासीयं च सहस्साई सयं च ऊयालं किंचिविसेसणं परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ता लवणसमुहे केनइयं चंदा पमासेंसु वा ३ १ एवं पुच्छा आब केषद्याउ तारागणकोहिकोडीओ० सोर्मिसु वा ३ १. ता लवणे णं समुद्दे चलारि चंदा पमासेंच वा ३, चलारि स्रिया तबश्च वा ३, बारस जक्खलसयं जोयं जोएंस वा ३. तिष्णि बावण्णा महम्महसया चारं चरिस वा ३. दो सयसहस्सा सत्तर्द्धि च सहस्सा धव य सया तारागणकोडिकोडीणं० सोभिंसु

वा ३ । पण्णरस सयसहस्ता एकासीयं सयं च ऊयालं । किचिनिसेरेणूणो लवणो-दक्षिणो परिक्खेवो ॥ १ ॥ चत्तारि चेव चंदा चत्तारि य सरिया छवणतीए । बारस णक्यतत्तसयं गहाण तिण्णेव बावण्णा ॥ २ ॥ दो चेव सयसहस्सा सत्तद्विं खलु भवे सहस्ताइं। णव य सया लवणजले तारागणकोडिकोडीणं॥ ३॥ ता लवणसमुद्दं० धायईसंडे णामं दीवे वहे वलयागारसंठाणसंठिए तहेव जाव णो विसमचकवालसंठिए. धायईसंडे णं दीवे फेक्ड्यं चक्कवालविक्खंमेणं फेक्ड्यं परिक्खेवेणं आहिएति वएजा? ता चत्तारि जोयणसयसहस्साई चक्कवालविक्खंभेणं ईयाछीसं जोयणगयसहस्साई दस य सहस्साई णव य एगड्रे जोयणसए किंचिविसेस्णे परिक्खेवेणं आहिएति वएजा. भागईसंडे॰ दीवे केवहया चंदा प्रभामेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता भागईसंडे णं दीने बार्स चंदा पभार्मेस वा ३, बारस सूरिया तर्वेस वा ३, तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जीयं जीएंस बा ३ एगं छत्पन्यं महग्गहसहस्यं चारं चरिसु वा ३, अद्वेव समसहस्या विष्णि सहस्याई सत्त य सयाई। एगससीपरिवारी तारागण-कोडिकोडीओ ॥ १ ॥ सोमं सोमेंस वा ३-पायईसंडपरिरओ ईयाल दस्तरा सय-सहस्सा । णव सया य एगड्डा किंचिविसेसपरिहीणा ॥ १ ॥ चउवीसं ससिर्विणो णक्खनसया य तिष्णि छत्तीसा । एगं च गहमहस्सं छप्पणं धार्यहंसंहे ॥ २ ॥ अद्भेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साई सत्त य सयाई । धायईसंडे दीवे तारागणकोडि-कोडीणं ॥ ३ ॥ ता धायईसंडं णं दीवं कालोए णामं समुद्दे वह वलयागारसंठाण-संठिए जाव णो विसमचक्रवालसंठाणसंठिए, ता कालोए णं समुद्दे केवडयं चक्र-बालविक्खंभेणं केवइयं परिक्षेवेणं आहिएति वएजा ? ना कालोए णं समुद्दे अड्ड जोवणसयसहस्साई नक्कवालविक्खंभेणं पण्णते एकाणउई जोवणसयसहस्साई सत्तरि च सहस्साई छव पंचारे जोगणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं आहिएति वएजा. ता कालोए जं समुद्दे केवड्या चंदा पभासेंद्र वा ३ प्रच्छा, ता कालोए समुद्दे बागालीसं चंदा पमासिंह वा ३, बागालीसं सरिया तर्वेह वा ३, एकारस बाबनारा णक्खत्तसया जोर्य जोईस वा ३, तिष्णि सहस्सा छच छण्णाउया महग्गहसया खार्र चरित्र वा ३. बारस सबसहस्साइं अद्वाबीसं च सहस्ताई णव य सबाई पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सीर्म सोर्मेस वा सोर्मित वा सोमिर-संवि वा, "एकाणउई सयराई सहस्साई परिरक्षी तस्स । अहिसाई छन्न पंचुत्तराई काळीयहिकरस्स ॥ १ ॥ बाबालीसं चंदा बाबालीसं च दिणगरा दिला। कालीबहिमि एए चरंति संबद्धकेसागा ॥ २ ॥ जक्खरासहस्यं एगमेव काबरारं व सयमण्यं : कब सया क्रणां या मह-माहा विक्रिय व सहस्सा ॥ ३ ॥ अद्भावीचे कास्त्रेयहिँकि बारत व सहस्साई । जब

य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं॥ ४॥" ता कालोयं णं समुद्दं पुक्लरवरे णामं दीवे वट्टे बलयागारसंठाणसंठिए सब्बओ समंता संपरिक्खिताणं चिह्नइ, ता पुरुवारवरे णं रीवे कि समचक्रवालसंठिए विसमचक्रवालसंठिए ? ता समचक्रवाल-संठिए णो विसमचक्रवालसंठिए, ता पुक्लरवरे णं वीवे केवइयं समचक्रवालविक्खं-भेणं केवड्यं परिक्खेवेणं ० ? ता सोलस जीयणसयसहस्साइं चक्कवार्लाबक्खंमेणं एगा जोयणकोडी बाणउई च सयसहस्साई अउणावण्णं च सहस्साई अहुचउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ना पुरुखरवरे णं दीवे केनइया चंदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता चोयालचंदसयं पभासेंसु वा ३, चोतासं स्वियाणं सर्य तनइंसु वा ३, चतारि सहस्साइं बतीसं च णक्खता जोवं जोएंसु वा ३, बारस सहस्साई छच बावतारा महम्गहसया चारं चरिंसु वा ३, छण्णउइसयसहस्माई चोयालीसं सहस्साइं चतारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा ३, ''कोडी बागउई खलु अउणाणउई भन्ने सहस्साई । अद्भाया चउणउया य परिरक्षो पोक्खरवरसा ॥ १ ॥ चोत्तालं चंदसयं चत्तालं चेव सूरियाण सयं । पोक्खरवर-दीवम्मि चरेति एए पमासंता ॥ २ ॥ चतारि सहस्याई छतीसं चेव हुंति णक्खता । छन सया बावनर महरगहा बारह सहस्सा ॥ ३ ॥ छण्णाउइ सयसहस्सा चोत्तालीसं खळु भवे सहस्साइं। चत्तारि य सया खळु तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४ ॥'' ता पुक्खरवरस्स णं वीवस्स० बहमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णामं पव्यए वलयागार-संठाणसंठिए जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे २ चिद्वइ, तंजहा-अध्मितर-पुक्खरदं च बाहिरपुक्खरदं च, ता अब्भितरपुक्खरदे णं कि समचक्रवालसंठिए विसमचक्रवालसंठिए ? ता समचक्रवालसंठिए णो विसमचक्रवालसंठिए, ता अध्य-तरपुरुखरहे णं केवड्यं चक्कवालविक्खंभेणं केवड्यं परिवखेवेणं आहिएति वएआ ! ता बद्ध जीयणसमसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं एका जीयणकोदी कायाछीसं च सयसहस्ताई तीसं च सहस्साई दो अउगापण्ये जोयणसए परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ता अध्मितरपुक्तरद्धे णं केषद्या चंदा पमासंख वा ३ केवऱ्या सूरा तविश्व वा ३ पुच्छा, ता बाबत्तरि चंदा प्रभासिंख वा ३, बाबत्तरि सूरिया तवइंसु वा ३. दोष्णि सोला जक्खत्तसहस्सा खोयं जोएंस वा रे. छ महम्महसहस्सा विष्णि य वत्तीसा चारं चरेंसु वा ३. अष्ट्रयाळीससयसहस्सा बाबीसं च सहस्सा दोण्णि व सवा तारागणकोडिकोडीणं सोमं सोमिस्र वा ३। ता समजनकेते णं केवहयं कायाध-विक्रवंत्रिणं केवड्यं चरिक्रवेदेणं आहिएति वहःजा ! ता पणसातीसं जीयवस्यसङ् स्वाइं बाह्यब्रिक्वंसेणं एमा क्रीयणकोडी क्रामालीसं व समसहस्साई दोणिय व

अउणापण्णे जोयणसए परिकलेवेणं आहिएति वएजा, ता समयक्सेते णं केवहरा चंदा पभार्सेस वा ३ पुच्छा तहेव, ता बत्तीसं चंदसयं पभार्सेस वा ३, बत्तीसं सृरि-याण सर्य तबइंद्य वा ३, तिण्णि सहस्सा छच छण्णउया णक्खत्तसया जोयं जोएंसु बा २, एकारस सहस्सा छच सोलस महम्गहमया चारे चरिस वा ३. अद्रा-सीइं सयसहस्साई चतालीसं च महस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीणं सोमं मोभिष्य वा ३, अट्टेव सयसहरमा अधिभतरपुक्तरस्स विक्लंभो । पणयाल-सयसहस्सा माणुसखेत्तस्स विक्खंमो ॥ १ ॥ कोडी वायालीसं सहस्म दुमया य अउणपण्णासा । माणुसखेतपरिरओ एमेव य पुक्खरद्धस्स ॥ २ ॥ बावत्तरि च चेंदा बावत्तारिमेव दिणयरा दिता । पुक्खरवरदीवहुं चरंति एए पभासेना ॥ ३ ॥ तिण्णि मया छत्तीसा छच महस्ता महग्गहाणं तु । णक्सताणं तु भवे मोलाई दुवे सहस्साइं ॥ ४ ॥ अटयालसयसहस्सा बात्रीसं खल भवे सहस्माइं । दो य सय पुक्खरहे तारागणकोडिकोडीणं ॥ ५ ॥ वत्तीसं चंदसयं वत्तीसं चेव मृरि-याण सर्व । मयलं माणुसलोयं चरेति एए प्रभासेता ॥ ६ ॥ एकारस य सहस्मा छप्पि य सोला महम्महाणं तु । छच सया छण्णउया णक्कता तिण्णि य महस्सा ॥ ७ ॥ अद्वासीइ चमाइं सयसहरूमाइं मणुयलोगंमि । सत्त य सया अणूणा तारा-गणकोडिकोडीणं ॥ ८ ॥ एसो तारापिंडो सन्वसमामेण मणुयलोयंमि । बहिया पुण ताराओ जिणेहिं भणिया असंखेजा ॥ ९ ॥ एवइयं नारमं जं भणियं माणुमंसि लोगंमि । चारं कलंबुयापुप्फसंठियं जोइसं चरइ ॥ १० ॥ रविमसिगहणक्खता एवइया आहिया मणुयलोए। जेसि णामागोत्तं ण पागया पण्णवेहिति॥ १९॥ छाविट्ट पिडगाई चंदाइकाण मणुयलीयम्म । दो चंदा दो सूरा य हुंति एकेकए पिडए ॥ १२ ॥ छावद्विं पिडगाई णक्खताणं तु मणुयलोयम्मि । छप्पण्णं णक्खता हुंति एकेकए पिडए ॥ १३ ॥ छाषद्विं पिडगाई महरगहाणं तु मणुबलोबंमि । छावसारं गहसयं होइ एकेकए पिडए ॥ १४ ॥ चतारि य पंतीओ चंदाइचाण मणुय-लोयम्मि । छावर्डि २ च होइ एकिक्सिया पंती ॥ १५ ॥ छप्पण्णं पंतीओ णक्खताणं तु मणुयलोयंमि । छावट्ठिं २ हवंति एकेकिया पंती ॥ १६॥ छावत्तरं गहाणं पंतिसयं हवह मणुयलोयंभि । छाषद्विं २ हवह य एकेकिया पंती ॥ १७ ॥ ते मेरुमणुचरंता प्याहिणावत्तमंडला सन्वे । अणवड्वियजोगेहि चंदा सूरा गहगणा य ॥ १८ ॥ णक्खरातारगाणं अबद्विया मंडला सुणेयन्या । तेवि य प्याहिणा-वतमेव मेर्ड अणुचरंति ॥ १९ ॥ रसमियरदिणसराणं उन्नं च अहे व संक्रमे णत्य । मंडलसंक्रमणं पुण सब्भितरबाहिरं तिरिए ॥ २० ॥ रखणियरदिणयराणं

णक्खतः!णं महस्गहाणं च । चारविसेसेण भवे सहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ २९ ॥ तेसिं पविसंताणं तावक्लेत्तं त बहुए णिययं । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ णिक्ल-मंताणं ॥ २२ ॥ तेसि कळंब्रयापुण्यसंठिया होति तावखेत्तपहा । अंतो य संक्रहा वाहि वित्थडा चंद्म्राणं ॥ २३ ॥ केणं वहुइ चंदो? परिहाणी केण होइ चंद्स्स? । कालो वा जोण्हो वा केणऽणुभावेण चंदरस ॥ २४ ॥ किण्हं राहृविमाणं णिखं चंदेण होइ अविरहियं । चउरंगुलमसंपत्तं हिचा चंदस्स तं चरइ ॥ २५ ॥ बाबिहें २ दिवसे २ उ सक्कपक्रसस्य । जं परिवद्धद्द चंदो खवेद् तं चंव कालेणं ॥ २६ ॥ पण्णरसङ्भागेण य चंदं पण्णरममेव तं वरह । पण्णरसद्भागेण य पुणोवि तं चेव वक्कमइ ॥ २७ ॥ एवं वहुइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदरस । कालो वा जुण्हो वा एवऽणुमावेण चंदस्य ॥ २८ ॥ अंतो मणुस्सक्षेत्रे हवंति चारोवगा उ उववण्णा । पंचयिहा जोड-सिया चंदा सरा गहगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चंदाइव्यगहतारणक्खला । णित्य गई पवि चारो अवद्विया ते मुणेयन्या ॥ ३० ॥ एवं जंबुद्दीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति । लावणगा य तिगुणिया ससिस्रा धायईसंडे ॥ ३९ ॥ दो चंदा इह दीवे चनारि य सायरे लवणतोए । धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सुरा य ॥ ३२ ॥ धायइसंडप्पभिइसु उद्दिद्धा तिगुणिया भवे चंदा । आइह्रचंदसहिया अणंतराणंतरे खेते ॥ ३३ ॥ रिक्खगाहतारगं दीवसमुद्दे जहिच्छसी णाउं । तस्ससीहिं तग्गुणियं रिक्खरगहनारगम्गं तु ॥ ३४ ॥ बहिया उ माणुसणगस्स चंदसूराणऽबद्विया जोण्हा । चंदा अभीइजुता सुरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ३५ ॥ चंदाओ सुरस्स य सुरा चंदस्स अंतरं होइ । पण्णाससहस्साई तु जोयणाणं अणूणाई ॥ ३६ ॥ सुरस्स य २ ससिणो २ य अंतरं होइ । बाहिं तु माणुसणगस्स जोयणाणं सयसहस्सं ॥ ३७ ॥ स्रेतिरया चंदा चंदंतिरया य दिणयरा दिना । नित्तंतरलेसामा सहलेसा मंदलेसा य ॥ ३८ ॥ अड्रासीइं च गहा अड्ठावीसं च हुंति णक्खता । एगससीपरिवारो एसो लाराण बोच्छामि ॥ ३९ ॥ छाषद्रिसहस्साई णव चेव सयाई पंचसयराई। एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं ॥ ४०॥ ता अंतो मणुस्सखेते जे चंदिमसरिया गहगणणवस्वततारास्वा ते णं देवा कि उद्गोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणीव-वण्णा चारोबवण्णमा चारद्विह्या गहरह्या गहसमावण्णमा ? ता ते णं देवा भी उष्मोववण्णमा णो कप्पोववण्णमा विमाणीववण्णमा चारोववण्णमा णो चारद्विइया गहरह्या गहसमावण्णगा उद्गामुहक्रतंत्रुयापुष्फसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्कोनेहिं साहरिसएहिं बाहिराहि य बेउव्वियाहिं परिसाहिं मह्या ह्यणह-गीयवाइयतंतीतस्त्रतास्त्रत्वियघणसुदंगपुडुप्पवाइयरवेणं महया उक्तिद्विसीहणायकस्त

कलरवेणं अच्छं पव्वयरायं पयाहिणावत्तमंडलचारं मेहं अणुपरियष्टति, ता तेसि मं देवाणं आहे इंदे चयह से कहमियाणि पहरेंति ? ता चत्तारि पंच सामाणिय-देवा तं ठाणं उवसंपज्जिताणं विहरति जाव अण्णे इत्य इंदे उववण्णे भवड . ता इंदद्वाणे णं केवइएणं कालेणं विरहिए पण्णते ? ता जहण्येणं इकं मनयं उद्घोतेणं छम्मासे. ता बहिया णं माणुस्सक्खेनस्स जे चंदिमसरियगह जाव ताराख्वा ते णं देवा कि उद्योववण्णमा कप्पोववण्णमा विमाणोववण्णमा चारद्रिङया गहरहया गइसमावणागा ? ता ते णं देवा णो उन्होबवण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोव-वण्णमा णो चारोववण्णमा चारद्भिह्या णो महरहया णो महसमावण्णमा पिकृष्ट्रग-संठाणसंठिएहिं जोयणसयसाह स्सिएहिं नावक्खेत्तेहिं सयसाह स्सियाहिं बाहिराहिं वेडव्बियाहि परिसाहि महया हयणह्गीयवाइय जाव रवेणं विव्वाइं भोगभोगाइं मंजमाणा बिहरंति. सहस्रेसा मंदलेसा मंदायवस्त्रेसा विशंतरहेसा अण्णोण्णसमो-गाढाहिं देसाहिं कुडा इव ठाणिट्या ते पएसे सम्बन्धो समेता ओमासंति उज्जोवेति तबेंति पभारंति. ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयइ से बहमियाणि पकरेंति ? ता बतारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं तहेव जाव छम्मासे ॥ ९८ ॥ ता पुक्खरवरं णं बीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे बहु बलयागारसंठाणसंठिए सब्ब जाद चिद्रह ता प्रकलरोदे णं समेह कि समचक्रवालसंठिए जाव णो विसमचक्रवाल-संठिए, ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केब्ड्यं चक्कवालविक्खंमेणं केव्ह्यं परिक्खेवेणं आहिएति बएजा? ता संखेजाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंमेणं संखेजाई जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ता प्रक्खरबरोदे णं समहे केवड्या चंदा प्रभारते वा ३ पुच्छा तहेव. ता पुक्खरोदे णं समहे संखेजा चंदा प्रभारते वा ३ जाव संखेजाओ तारागणकोडिकोडीओ सोमं सोमेंस् वा ३ । एएणं अभिकाचेणं बरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे ४ खीरबरे चीवे खीरवरे समुद्दे ५ व्यवहरे दीवे चओढे समुहे ६ खोयवरे दीवे खोओदे समुहे ७ मंदिस्सरे दीवे मंदिस्सरवरे समुहे ८ अरू-णोदं दीवे अरुणोदे समुद्दे ९ अरुणवरे दीवे अरुणवरे समुद्दे १० अरुणवरोसासे दीवे अरुगवरोमासे समेहे ११ कुंडले दीवे कुंडलोदे समुद्दे १२ कुंडलवरे दीवे कंडलबरोदे समहे १३ कुंडलबरोआसे दीवे कुंडलबरोआसे समुद्दे १४ सब्बेसिं विक्खंभपरिक्खेवो जोइसाइं पुरूखरोदसागरसरिसाई । ता क्रंडकवरोभासम्बं सुबुरं रयए चीवे बहे बक्तयागारसंठाणसंठिए सम्बद्धों जाब चिद्धह, ता स्थए में सीवे 🎏 समन्दर्भार आव पो विसमनद्भारतारुष्ठिए, ता स्मार मं धीने केन्द्रयं समन्दर्भान विक्खंभेणं केवहमं परिक्षवेदेणं आहिएति बएखा ! ता असंखेजाई कोन्मसह-

स्साइं चक्कालविक्खंमेणं असंबेजाई जोयणसहस्साई परिक्खेवेणं आहिएति वएजा, ता रुयगे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंस वा ३ प्रच्छा, ता रुयगे णं दीवे असं-केजा चंदा प्रभारेंस वा ३ जाव असंखेजाओ तारागणकोडिकोडीओ सोमं सोमेंस वा ३, एवं रुपगे समुद्दे रुपगवरे दीवे रुपगवरोद्दे समुद्दे रुपगवरोभासे दीवे रुपग-वरोमासं समुद्दे, एवं तिपडोयारा णेयव्या जाव सूरे दीचे सरोदं समुद्दे सरवरे दीवे सरवरे समुद्दे सरवरोभासे दीवे सरवरोभासे समुद्दे, सन्वेसिं विक्खंभपरिक्खेवजोइ-साइं रुवगबरदीवसरिसाइं, ता सुरवरोमासोदणां समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वरुया-गारसंठाणसंठिए सञ्बक्षो सर्मता संपरिक्षिताणं बिद्धः जाव गो विममचक्क्याल-संठिए, ता देवे णं दीवे केवड्यं चक्कवालविक्संभेणं केवड्यं परिक्सेवेणं आहिएति बएजा ? ता असंखेजाई जोयणसहस्साई चक्कवारुविक्खंमेणं असंखेजाई जोयण-सहस्साइं परिक्सेवेणं आहिएति वएजा, ता देवे णं दीवे केवइया चंदा पभासेंसु वा ३ पच्छा तहेव, ता देवे णं दीवे असंखेजा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव असं-खेळानो तारागणकोडिकोडीओ । सोमेंसु वा ३ । एवं देनोदे समुद्दे जागे दीवे जागोदे समुद्दे जक्के बीवे जक्कोदे समुद्दे भूए दीवे भूओदे समुद्दे सर्यभुरमणे दीवे सर्यभुर-मणे समुद्दे सब्वे देवदीवसरिसा ॥ ९९-१००-१०१ ॥ एगुणवीसद्वमं पाइडं समर्चं ॥ १९॥

ता कहं ते अणुआवे आहिएति वएजा ! तत्थ खळ इमाओं दो पडिवत्ताओं पण्णत्ताओं, तं०-तत्थेंगे एवमाइंग्र-ता चंदिमस्रिया णं णो जीवा अजीवा णो घणा ग्रस्ति गो वादरवेंदिधरा कळेवरा णिव णं तेसि उद्घाणेइ वा कम्मेइ वा बळेइ वा वीरिएइ वा पुरिसकारपरक्रमेइ धा ते णो विज्ञुं छवंति णो असणि छवंति णो थियं छवंति, अहे य णं वायरे वाउकाए संमुच्छइ अहे य णं वायरे वाउकाए संमुच्छिता विज्ञुंपि छवंति असणिपि छवंति थिणयंपि छवंति एगे एवमाइंग्र १, एगे पुण एवमाइंग्र-ता चंदिमस्रिया णं जीवा णो अजीवा घणा णो ग्रसिरा वादर-वुंदिधरा कछवरा अस्थि णं तेसि उद्घाणेइ वा॰ ते विज्ञुंपि छवंति ३ एगे एवमाइंग्र २, वयं पुण एवं वयामो-ता चंदिमस्रिया णं वेदा महिष्टिया जाव महाणुआणा वरवत्थवरा वरमक्षवरा० वराभरणवारी अवोच्छित्तिणयहु- आस् अपणे चयंति अण्णे उववज्ञंति० ॥ १०२ ॥ ता कहं ते राहुकम्मे आहि- एति वएजा ! तत्थ खळ इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इमाओ दो पडिवतीओ पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इमाओ दो पडिवतीओ पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इमाओ दो पडिवतीओं पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इमाओ दो पडिवतीओं पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इमाओ दो पडिवतीओं पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इसाओ दो पडिवतीओं पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इसाओं दो पडिवतीओं पण्णताओं, तं०-तत्सेंगे एवमाइंग्र-ता अस्य खळ इसाओं दो दो वो वरं वा स्रं वा निक्ट्र एमे एवमाइंग्र-ता अस्य खेते हो हो वे ले णं चंदं वा स्रं वा निक्ट्र एमे एवमाइंग्र-ता शर्म हो से हो हो वे ले णं चंदं वा स्रं वा निक्ट्र एमे एवमाइंग्र-ता शर्म हो से हो हो वे ले णं चंदं वा स्रं वा निक्ट्र एमे एवमाइंग्र-ता शर्म हो से हो हो वे ले णं चंदं वा स्रं वा निक्ट्र एमें एवमाइंग्र-ता शर्म हो से हा हो वे ले णं चंदा वा स्रं वा स्रं वा निक्ट्र एमें एवमाइंग्र-ता शर्म हो से हा हो वे ले णं चंदा वा स्रं वा स्रं वा निक्ट्र हो स्रं वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा स्रं वा निक्ट्र वा नि

तत्य जे ते एवमाहं मु-ता अत्यि णं से राहू देवे जे णं चंदं वा सूरं वा गिण्हड, ते एवमाइंसु-ता राह णं देवे चंदं वा स्रे वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हिता बुद्धं-तेणं मुयइ बुद्धंतेणं गिण्हिता मुद्धंतेणं मुयइ मुद्धंनेणं गिण्हिता मुद्धंतेणं मुयइ, वामभुयंतेणं गिण्हिता वामभुयंतेणं मुयइ वामभुयंतेणं गिण्हिता दाहिणभुयंतेणं मुयइ दाहिणभुयंतेणं गिण्हिता वामभुयंतेणं मुयइ दाहिणभुयंतेणं गिण्हिता दाहिण-भुयंतेणं मुयह, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता णित्थ णं से राह देवे जे णं चंदं वा स्रं वा गेण्हइ, ते एवमाहंसु-तत्थ णं इमे पण्णरस करियापोग्गला प॰, तं०-सिंघाणए जिंदलए खरए खयए अंजणे खंजणे सीयले हिमसीयले केलासे अरुपामे परिजाए णभसूरए कविलए पिंगलए राह्न, ना जया णं एए पण्णरस कसिणा पोग्गला सया चंदरस ना सुरस्स वा लेमाणुबद्धचारिणो भनंति तया ण माणुसलोगंसि माणुसा एवं वयंति—एवं खलु राहू चंदं वा मृरं वा गेण्हड २, ता जया णं एए पण्णरस कसिणा पोगगला णो सया चंदरस वा स्रस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तथा णं माणुस-लोयम्मि मणुस्सा एवं वयंति-एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हड०, एए एवसाहंसु, वयं पुण एवं वयामो-ता राहु णं देवे महिङ्किए० महाणुभावे वरवत्थधरे जाव बराभरणधारी, राहस्स णं देवस्म णव णामधेजा प०, तं०-सिंघाडए जडिलए खरए क्षेत्रए दृद्धरे मगरे मच्छे कच्छमे किण्हसप्पे, ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंच-बण्णा प०, तं -- किण्हा णीला लोहिया हालिहा सुक्तिला, अस्य कालए राहुविमाणे खंजणवण्णामे प०, अत्य णीलए राहुविमाणे लाउयवण्णामे पण्णते, अत्य लोहिए राहुविमाणे मंजिद्धावण्णामे पण्णते, अत्थि हालिह्ए राहुविमाणे हालिह्ावण्णाभे प०, अत्थि सिक्कार राहुविमाणे भासरासिकणाभे प०, ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विजन्नेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सुरस्स वा हेरसं पुरच्छि-मेणं आवरिता पचित्यमेणं वीईवयड् तया णं पुरच्छिमेणं चंदे वा सूरे वा उबदंसेइ पचित्रमेणं राहु, जया णं राहुदेवे आगच्छेमाणे वा गच्छेमाणे वा विउच्वेमाणे वा परियारेमाणे वा चंदरस वा स्रस्स वा लेसं दाहिणेणं आविरता उत्तरेणं वीईवयइ तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उबदंसेइ उत्तरेणं राष्ट्र, एएणं अभिलावेणं पचित्यमेणं आविता पुरच्छिमेणं वीईवयइ उत्तरेणं आविता दाहिणेणं वीईवयइ, जया णं राहु देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउन्वेमाणे वा परियोरिमाणे वा चंदरम वा स्रस्य वा छेउं दाहिणपुरच्छिमेणं आवरिता उत्तरपचित्यमेणं वीईवयह तया णं दाहिणपुरच्छिमेणं चंदे ना सुरे वा उबदंसेइ उत्तरप्रवश्यिमेणं राह् , जया णं राहु देवे आगच्छमाणे वा मच्छमाणे वा विसम्बमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स

वा सुरस्स वा छेसं दाहिणपचित्थिमेणं आवित्ता उत्तरपुरच्छिमेणं वीईवयइ तया णं दाहिणपचित्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपुरच्छिमेणं राह्, एएणं अभि-ळावेणं उत्तरफ्वत्थिमेणं आवरेता दाहिणपुरच्छिमेणं वीईवयइ, उत्तरपुरच्छिमेणं आवरेता दाहिणपचित्थिमेणं वीईवयइ, ता जया णं राह देवे आगच्छमाणे वा॰ चंदरस वा स्रस्य वा लेसं आवरेमाण चिद्रइ [आवरेता वीईवयइ], तया णं मणुस्स-लोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहणा चंदे वा सूरे वा गहिए॰, ता जया णं राह् देवे आगच्छमाणे वा॰ चंदस्म वा सरस्स वा लेसं आवरेता पासेणं वीईवयइ तया णं मणुस्सलोयंमि मणुस्सा वयंति-एवं खलु चंदेण वा स्रेण वा राहुम्स कुन्छी भिण्णा०, ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा चंदस्स वा सूरस्य वा छेसं आवरेता पचोसक्द तथा णं मणुस्पलोए मणुस्सा वयंति-एवं खलु राहुणा चंदे वा सुरे वा वंते॰ राहुणा॰ २, ना जया णं राहु देवे आगच्छमाणे वा॰ चंदरस वा स्रस्स वा देसं आवरेता मञ्झंमज्झेणं वौईवयइ तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वयंति० राहणा चंदे वा स्रे वा वीइयरिए॰ राहुणा॰ २, ता जया णं राहु देवे आगच्छमाणे॰ चंदस्स वा सरस्स वा लेसं आवरेताणं अहे सपिनसं सपिडिदिसि चिद्रह तया णं मणुस्सलोयंति मणुस्सा वयंति । राहुणा चंदे वा । धत्थे । राहुणा । २ । ता कड़िवहें णं राह प॰ १ ता दुविहें प॰, तं॰-धुवराहू य पव्यराहू य, तत्थ णं जे से धुबराह से णंबहलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसङ्भागेणं भागं चंदस्स लेसं आवरे-माणे चिद्रह. तं - पढमाए पढमं भागं जान पण्णरसमं भागं. चरमे समए चंदे न रत्ते भवड़, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवड़, तमेव सुक्षपक्के उवदंसेमाणे २ चिद्रइ, तं०-पढमाए पढमं भागं जात्र चंदे विरत्ते भवड़, अवसेसे समए चंदे रते य विरत्ते य भवह, तत्य णं जे से पव्चराह से जहण्णेणं छण्हं मासाणं, उक्तोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स अडयालीसाए संबच्छराणं सरस्स ॥ १०३ ॥ ता कहं ते चंदे ससी २ आहिएति वएजा ? ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताई आसणसयणखंभमंडमत्तोवगरणाई अप्प-णावि य णं चंदे देवे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभगे पियर्दसणे सुरूवे ता एवं खल्ल चंदे ससी चंदे ससी आहिएति वएजा । ता फहं ते सुरिए आइचे सुरे २ आहिएति वएजा ? ता सुराइया णं समयाइ वा आवितयाइ वा आणापाणुइ वा श्रोबेड वा जाव उस्सप्पिणिओसप्पिणीह बा, एवं खळु सूरे आइबे २ आहिएति वएजा ॥ १०४ ॥ ता चंदस्स मं जोइसिंदस्स ओइसरण्णो कइ अगमहिसीओ वणात्ताओं ? ता चंदरस० चत्तारि अगमहिसीओ पण्णताओ. तं०-चंदप्पमा

दोसिणामा अश्विमाली पमंकरा, जहा हेट्टा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवित्तयं, एवं स्रस्सवि णेयव्वं, ता चंदिमस्रिया णं जोइसिंदा णं जोइसरायाणो केरिसए कामभोग पचणुभवमाणा विहरंति ! ता से जहाणामए-केइ पुरिसे पढमजोव्वणुद्धाणबलसमत्थे पडमजोव्यणुद्वाणबलसमत्याए मारियाए सर्दि अचिरवत्तविवाहे अत्यस्यी अत्थगवे-सणयाए सोलसवासविष्पवसिए से णं तुओं लढ़ाई क्यकजे अणहसमागे पुणरवि णियघरं हुक्तमागए ण्हाए सुद्धप्पावेसाई मंगलाई वत्याई पवरपरिहिए अप्पमहन्यामरणालंकिय-सरीरे मणुष्णं वालीपागसुद्धं अद्वारमवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो बाहिरओ दुमियघट्टमहे विचित्तउल्लोयचिल्लियनले बहुसमस्विभत्तभू-मिभाए मणिरयणपणासियंश्यारे कालागरुपवरकुंदुरकतुरकधूवमध्यमंतरांधुद्ध्याभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवद्विभए तंसि तारिसगंसि सयणिजंसि दृहस्रो उण्णए मन्त्रो-णयगंभीरे सालिंगणबद्धिए पण्णक्तगंडविञ्बोयणे सुरम्मे गंगापुलिणबालुयाउद्दालसालि-सए सुविर्इयरगत्ताणे ओयवियखोमियखोमदुगूलपष्टपिक्छ।यणे ग्तांसुयसंबुढे सुरम्मे आईणगरूयबूरणवणीयतृलफासे मुगंधवरकुमुमुचण्णस्यणोवयारकलिए ताए तारिसाए भारियाए सद्धि सिंगारागारमारुवेसाए संगयगयहासयभणियमिद्रियसेळावविळासणि-उणजुत्तीवयारकुसलाए अणुरत्ताविरताए मणाणुकूलाए एगंतरइपसत्ते अण्णत्य बच्छइ मणं अकुव्वमाणे इद्वे सहफरिसरसह्त्वगंधे पंचविद्वे माणुस्सए काममोगे पञ्चणुभव-माणे बिहरिजा, ना से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसर्य सायासोक्खं पश्चण्-भवमाणे बिहरड ? उरालं समणाउसो !, ता तस्म णं प्ररिसस्स कामभोगेहिंतो एनो अणंतगुणविसिद्धतरा चेव वाणसंतराणं देवाणं कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं काम-भोगाहितो अर्णतगुणविसिद्धतरा चेव असुरिंदव जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा. असुरिंदवज्जियाणं • देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिद्वतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा, असुरकुमाराणं० देवाणं कामभोगेहिती० गहगणण-क्खतताराख्याणं कामभीगा. गहगणणक्खतताराख्याणं कामभीगेहितो अणंतगुण-निसिद्धतरा चेव चंदिमस्रियाणं देवाणं काममोगा, ता एरिसए णं चंदिमस्रिया जोइसिंदा ओइसरायाणो काममोगे प्रवणभवमाणा विष्ठरंति ॥ १०५ ॥ तत्य खळ इमे अद्वासीई महनगहा पण्याना, तं ०-इंगालए बियालए लोहियंके सणिच्छरे आह-णिए पाहणिए क्यें क्याए कमक्याए क्यावियाणए १० क्यागसंताणे सोने सहिए आसाराणे कजीवए कव्यरए अयकरए दंदभए संखे संख्णामे २० संखवण्यामे केसे कंसणामे कंसवण्णामे णीळे जीलोमासे रूप्ये रूप्योमासे मासे मासरासी ३० तिके तिलपुप्फवण्णे दगे दगवण्णे काए बंबे इंदरगी धूमकेस हरी पिंगलए ४० हुहे

छके बहस्सई राहू अगत्वी माणवए कामफासे घुरे पमुहे वियदे ५० विसंघी कप्रेछए पड्ले जिंद्यालए अरुणे अग्निछए काले महाकाले सोत्विए सोवत्विए ६० वदमाणगे पलंबे णिखालोए णिखुजोए सर्यपमे ओमासे सेयंकरे खेमंकरे आमंकरे
पमंकरे ५० अरए विरए असोगे विसोगे विमले विवसे विवसे विसाले साले
सुन्वए ८० अणियटी अणाविए एगजही दुजडी करकरिए रायग्गले पुष्फकेक
मावकंड ८८ ॥ १०६ ॥ वीसइमं पाइडं समर्थं॥ २०॥

इह एस पाहुडत्था अभव्यजणिह्ययदुह्नहा इणमें। उक्कित्तिया भगवया जोइसरायस्स पण्णनी ॥ १ ॥ एस गहियावि संता धद्धे गारवियमाणिपिष्ठणीए । अबहुस्सुए
ण देवा तिव्यवरीए भवे देया ॥ २ ॥ सद्धाधिइउद्वाणुच्छाहकम्मवलवीरियपुरिसकारेहिं । जो सिक्खिओवि संतो अभायणे परिकहेजाहि ॥ ३ ॥—सो पवयणकुल्मणसंघवाहिरो णाणविणयपरिहीणो । अरहंतथेरगणहरमेरं किर होइ बोलीणो ॥ ४ ॥
तम्हा धिइउद्वाणुच्छाहकम्मवलवीरियसिक्खियं णाणं । धारेयव्यं णियमा ण य
अविणीएस दायव्यं ॥ ५ ॥ वीरवरस्स भगवभो जरमरणिक्छेसदोसरिह्यस्स ।
वंदामि विणयपणओ सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६॥ १०७॥ चंदपण्णसी समसा॥





णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

1000

सुत्तागमे

तत्थ णं

सूरियपण्णत्ती

णमो अहिहंनाणं णमो सिद्धाणं णमो आर्यारयाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सञ्ज्ञपाहुणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्या रिडित्थ-मियसमिद्धा पमुद्दयजणजाणवया "पासादीया ४। तीसे णं सिहिलाए णयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए माणिमहे णामं उजाणे होत्या वण्णओ । तीसे णं मिहिलाए जयरीए जियमत् जामं राया होत्या वण्णओ । तस्स णं जिय-सत्तरस रग्णो धारिणी णामं देवी होत्था वण्णओ । नेणं कारुणं तेणं समएणं तम्मि उजाणे सामी समीसढे, परिया णिगाया, धम्मो कहिओ, परिसा पिडगया जाव राया जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पिडगए ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं नमएणं नमणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभ्ई णामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं रातुस्सेहे समचउरससंठाणसंठिए वजरियहणारायसंघयणे जाव एवं वयासी-कड़ मंडलाइ वचड़ १, तिरिच्छा कि च गच्छा २। ओमासट केवड्यं ३. सेयाई कि ते संठिई ४ ॥ १ ॥ किह पडिह्या लेसा ५, किह ते ओयसंठिई ६ । के स्रियं वरयए ७, कहं ते उदयसंठिई ८ ॥ २ ॥ कहं कहा पोरिसिच्छाया ९. जोगे कि ते व आहिए १०। कि ते संबच्छराणाई ११, कह संबच्छराह य १२॥३॥ कहं चंदमसो बुद्धी १३, कया ते दोसिणा बहु १४ । केइ सिग्धगई बुत्ते १५, कहं दांसिणलक्खणं १६॥ ४॥ चयणोववाय १७ उच्चते १८, स्रिया कइ आहिया १९। अणुभावे के व संवृत्ते २०, एवमेयाई वीसई ॥ ५ ॥ २ ॥ वड्डोवड्डी सहत्ताणं १. अद्दर्भंडलसंठिई २ । के ते चिण्णं परियरइ ३. अंतर्र कि चर्रति य ४ ॥ ६ ॥ उम्माहह केवहयं ५, केवहयं च विकंपह ६। मंडलाण य संठाणे ७, विक्खंमी ८ अट्ट पाहुडा ॥ ७ ॥ छ पंच य मत्तेव य अट्ट तिष्णि य हवंति पडिवत्ती । पडमस्स पाहुडस्स हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥ ८ ॥ ३ ॥ पडिवत्तीओ उदए, तहा अत्यमणेस य । भियवाए कृष्णकला, मुहनाण गईइ य ॥ ९ ॥ णिक्लममाणे सिरधगई, पविसंते मंदगईइ य । चलसीइसयं प्रतिसाणं, तेसिं च पडिवर्तीओ ॥ १०॥ उदयम्मि अद्व ४८ सत्ता०

भिष्या भेयवाए हुने य पहिनती । नतारि सुहुत्तगर्हेए हुंति तहनम्म पहिनती ॥ ११ ॥ भा भावलिय १ सुहुत्तग्वे २, एवंभागा य ३ जोगस्सा ४ । कुलाई ५ पुण्णमारी ६ य, सिष्णनाए ७ य रिटेहं ८ ॥ १२ ॥ तार(य)ग्वं च ९ णेमा य १०, चंदमग्वित ११ यावरे । देवयाण य अज्ञायणे १२, सुहुत्ताणं णामया ह्य १३ ॥ १३ ॥, दिवसा राह तुत्ता य १४, तिहि १५ गोता १६ भोयणाणि १० य । भाइण्यार १८ मासा १९ य, पंच संवच्छरा २० इय ॥ १४ ॥ जोइमस्य दाराहं २१, व्यवस्तित्वण् विय २२। दसमे पाहुहे एए बावीसं पाहुडपाहुडा ॥ १५॥ ५॥ एसो ध्रमे कमिकसेसो तास सुरियपण्णत्तीए अवसेसो अपरिसेसो आवियव्यो जहा चंद्रपण्णतीए जाव अंतिमा गाहित ॥ स्रिय-पण्णती समसा ॥



श्रीस्त्रागमप्रकाशकसमितिके 'संरक्षक'

श्रीमान् शेठ श्रीचुनीलाल जसहप जी सा० मुणोत पनवेल (कुलावा) वास्तव्य हैं, आपकी फर्म यहां सर्व प्रतिष्ठित गिनी जाती है, आपकी राईसमिल, पोहा फेक्टरी, बैंकिंग फॅर्म भी हें। साथ ही आप बहुत बड़े लेंडलॉर्ड (भूमिपित) भी हैं। आपने अब तक धार्मिक संस्था-ओंमें हजारों रुपया दान किया है और कर रहे हैं। धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाथडींक संरक्षक हैं। जैन विद्या प्रमारक मंडल चींचवहके बांठिया-प्राथमिक-



विद्यामंदिरमें देणगी देकर आपने एक भन्य "मुणोत हॉल" बनवाया है। आपने अपनी ६१ वें वर्षकी वर्षगांठ के उपलक्षमें चींचवड़में "मुणोत सॅनेटोरियम" बनवाया है। प्रतिवार्षिक वर्षकी प्रतिपदाके मंगठ अवसर पर आपकी फॅर्म की ओरसे ग्रीबोंको अज-बल्लादिका पुष्कल दान दिया जाता है। यहाँ की स्थानीय शिक्षण संस्थाएँ और गोशाला आदि मार्वजनिक संस्थाओं में आपका काफी सहयोग है। यहां के वर्षमान श्रावक संघके आप अध्यक्ष हैं। चंद्रमा और स्यंके समान चि. हर्षचंद और माणकवंद दो विनीत सपुत्र हैं। चेंद्रमा और स्यंके समान चि. हर्षचंद और माणकवंद दो विनीत सपुत्र हैं। चि. हर्षचंद्रका विवाह धूलियामें उदयपुर वास्तव्य महता घरानेमें हुआ है। चि. माणकवंद १० वें वर्षमें मेट्रिक परीक्षोत्तीर्ण हैं। अधिक क्या लिखा जाय आप द्रव्य और भावसे अनिवेचनीय सुखी और धर्मनिष्ठ महानुभाव हैं। १००० ६० की सेवा प्रदान करने से आप श्रीस्त्रागम प्रकाशक समितिके संरक्षक हैं। आपकी उदारभावनासे ममाजको बढ़े २ लाभ होते रहते हैं।

णमोऽत्यु णं समणस्य भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्य णं निरयावलियाओ [कप्पिया]

तेणं कारुणं तेणं समाएणं रायगिष्टे नामं नयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे । ... गुर्णासलए नामं उजाणे · · वण्णओ । असागवरपायवे । पुरुविसिलापदृए बण्णओ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्य भगवओ महावीस्स्य अन्तेवासी अज्जमुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपन्ने जहा केसी जाव पद्महिं अणगारसएहिं सिद्धं संपरिवृद्धे पुट्याणुपुट्टिं चरमाणे · · जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहापिडस्वं समाहं ओगि-ण्हिना संजमेणं जाव विहरइ । परिमा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिमा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अजसुहम्मस्स अणगारस्स अन्तेवासी जम्बू नामं अणगारं समन्वउरंससंठाणसंठिए जाव संख्तिविउलतेउलेस्से अज्ञसहम्मस्स अणगारस्य अदूरसामन्ते उन्हेंजाणू जाव विहरइ । तए णं से जम्बू जायसङ्घे जाव पज्जवासमाणे एवं वयासी-उवजाणं भनते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अहे पन्नते ? एवं ध्वलु जम्बू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं एवं उवक्राणं पञ्च वन्ना पक्षता. तंजहा-निरयाविलयाओ, कप्पविसियाओ, पुष्फियाओ, पुष्फचूलियाओ, विष्हु, दमाओ ॥ ३ ॥ जइ णं भनते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवक्काणं पञ्च वनमा पञ्चता. तंजहा-निरयाविष्याओ जाव विष्हृदसाओ, पटमस्स णं भनते ! वम्पस्स उवक्राणं निरयाविष्याणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कड अज्ज्ञयणा पन्नता ? एवं खळु जम्बू ! समणेणं जाब संपत्तेणं उवङ्गाणं पढमस्म वग्गस्म निर्यावलियाणं दस अज्झयणा पत्रसा, तंजहा--काले मुकाले महाकाले करहे सुकरहे तहा महा-कण्हे । वीरकण्डे य बोद्धच्ये रामकण्डे तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्डे नवमे दसमे महासेणकण्डे उ । जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं उवक्राणं पढमस्स वगास्स निरयाविरुयाणं दस अञ्झयणा पन्नता, पढमस्स णं भन्ते ! अञ्झयणस्स निर-याविलयाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अद्वे पक्षते ? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्ब्रहीवे दीवे भारहे वासे चम्पा नामं नयरी होत्या.

रिद्धः । पुष्णभद्दे उज्जाणे । तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रश्नो पुने चेह्न-णाए देवीए अत्तए कृणिए नामं राया होत्या, महया । तस्स णं कृणियस्य रज्ञी पडमावई नामं देवी होत्या, सोमालपाष्ट्रिपाया जाव विहरह ॥ ४ ॥ तत्य णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रहो भजा कृणियस्स रहो चूलमाउया काला नामं देवी होत्या, मोमाल० जाव सुरुवा। तीसे णं कालीए उंबीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था, सोमाल॰ जान मुरूचे ॥ ५ ॥ तए णं से काले कुमारे अन्नया कयाइ तिहिं दिनसहस्सिहि तिहि रहसहस्सिहि तिहि आसमहस्सिहि तिहि मणुयकोडीिह गरुलहुहे एकारममेणं खण्डेणं कृषिएणं रक्षा सिद्धं रहसुमलं संगामं ओयाए ॥ ६ ॥ तए णं तीसे कालीए देवीए अन्नया कयाइ कुदुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमयास्चे अन्दात्थिए जाव समुप्पजित्था--एवं खल मर्म पुत्ते कालकुमारे तिहिं दान्नसह-स्सेहिं जाव ओयाए, से मन्ने किं जहस्मइ ? नो जहस्सइ ? जीविस्सह ? नो जीविस्सइ १ पराजिणिस्सइ १ नो पराजिणिस्सइ १ काळे णं कुमारे अहं जीवमाणं पारिजा ! ओहयमण० जाव झियाइ ॥ ७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समीमरिए । परिसा निरमया । तए णं तीसं कार्लाए देवीए इमीसे कहाए रुइट्टाए समाणीए अयमेयाभ्वे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था—एवं खलु समणे भगवं • पुट्वाणपृथ्वि जाव विदरह. ते महाफलं खल तहारुवाणं जाव विदलस्स अट्टस्य गृहणयाए, तं गुन्छामि णं समणं जाव पज्जुवासामि, इमं च णं एयाच्यं वागरणं पुच्छिस्सामितिक दृ एवं संपेहेड २ ता कोह्नस्वियपुरिसे सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाण्पिया । धम्मियं जाणप्पवरं जत्तामेव उवद्रवेह उयद्रवित्ता जाव पचिपणन्ति ॥ ८ ॥ तए णं सा काली देवी ण्हाया अप्पमहरघाभरणालंकिय-सरीरा बहाह खुजाहि जाव महत्तरर्गावेन्दपरिविखना अन्तेटराओ निमाच्छ २ ता जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्यवरे तेणेव उनागच्छ २ ता थम्मियं जाणप्पवरं दुरुद्द २ ता नियगपरियालसंपरिवडा चम्पं नयरिं मज्झमज्झेणं निमाच्छइ २ ता जेणव पुण्णमहे उजाणे तेणव उवागच्छइ २ ता छताईए जाव धम्मियं जाणप्पवरं ठवेड २ ता घम्मियाओ जाणप्पवराओ क्बोरहड २ ता बहुहिं खुजाहिं जाव ०विन्दपरिक्खिता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव जनागच्छड़ २ ता समणं भगतं महावीरं तिक्खतो वन्दइ २ ता ठिया चेव सपरि-वारा सुरुष्समाणी नमंसमाणी अभिमुद्दा विषएणं पञ्जलिउडा पज्जुवासइ॥ ९॥ तए णं समणे मगवं जाव कालीए देवीए तीसे य महस्महालियाए धम्मकहा भाण-यन्त्रा जाव समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमांगे आणाए आराहए भवह ॥ १०॥ तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मं सोचा निसम्म हद्र जाव हियया समणं भगवं तिक्खत्तो जाव एवं वयासी--एवं सलु भन्ते ! मम पुत्ते काळे कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं संगामं ओयाए. से णं भन्ते ! कि जहस्मड ? नो जहस्सड जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाणं पासिजा ? कालीड समणे भगवं० कालिं देविं एवं वयासी-एवं खल काली ! तब पुत्ते काले क्रमारे निहिं दन्तिसहरसेहिं जाव कृषिएणं रज्ञा सद्धि रहमसल संगामं संगामेमाणे हयमहियपवरवीरघाइयनिविद्यचिन्धज्सयपडागे निरालीयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगरम रन्नो सपक्खं सपिडिदिसिं रहेणं पिडरहं हव्बमागए, तए णं से चेडए राया कालं क्रमारं एजमाणं पासह २ ता आग्ररते जाव मिसिमिसेमाणे घणं परामसङ २ ता उसं पराम्सड २ ता वइसाहं ठाणं ठाइ २ ता आययकण्णाययं उसं करेड २ ता कालं दुमारं एगाइचं कूडाइचं जीवियाओं ववरोवेड, तं कालगए णं काली | काले कुमारे. नो चैव णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि ॥ ९९ ॥ तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं एयसट्टं सोचा निसम्स महया पुत्तसोएणं अप्पुत्ना समाणी परद्धनियना विव चम्पगलया धसत्ति घरणीयलंसि सम्बङ्गीहें संनिवडिया। तए णं मा काली देवी सुहत्तन्तरेणं आसत्या समाणी उद्घाए उद्वेड २ ता समणं भगवं० वन्दइ नमंसइ वं० २ ता एवं वयाशी-एवमेर्य भनते ! नहमेरं भन्ते ! अविनहमेरं भन्ते ! असंदिद्धमेरं भन्ते ! मधे णं भन्ते ! एसमेंड्रे अहेयं तुब्से वशहतिकह् समणं भगवं० वन्दर् नमंसर् वं० २ ता तमेव धम्मियं जाणप्यवरं दुरुहद्द २ ता जामेव दिसिं पाउच्भया तामेव दिसिं परिगया ॥ १२ ॥ भन्ते ! ति भगवं गोबमे जाव वन्दइ नमंसइ वं० २ ता एवं बयासी-काले णं भन्ते ! कुमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रक्षा एगाहचं कुडाहचं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किया कहिं गए कहिं उववज्ञे ? गोयमाइ समणे भगवं • गोयमं एवं वयासी-एवं खळु गोयमा ! काले कमारे तिहिं दन्तिसहस्रेहिं जाव जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किचा चउत्बीए पद्मप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमहिहएस नेरइएस नेरडयत्ताए उवक्के ॥ १३ ॥ काले णं भन्ते ! कुमारे केरिसएहि आरम्भेहिं केरिसएहिं समारम्मेहिं केरिसएहिं आरम्भसमारम्मेहिं केरिसएहिं मोगेहिं केरिसएहिं संमोगेहिं केरिसएहिं भोगसंभोगेहिं केरिसेण वा अग्रुमकडकम्मपन्मारेणं कालमासे कालं किया चउत्पीए पहुप्पमाए पढवीए जाव नेरहयत्ताए उवक्से ? एवं खळ गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिष्ठं नामं नयरे होत्या, रिख्रत्यिमियसिद्धे० ।

तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया॰ । तस्स णं सेणियस्स रको नन्दा नामं देवी होत्था, सोमाल॰ जाव विहरइ। तस्स णं संणियस्स रत्नो पुत्ते नन्दाए देवीए अनए असए नामं कुमारे होत्या, सोमाल॰ जाव सुम्बे, साम-दाणभेयदण्ड० जहा चित्तो जाव रजाधुराए चिन्तए यावि होत्या । तस्म णं सेषि-बरस रक्तो चेळणा नामं देवी होत्या. सोमाल० जाव विहरड ॥ १४ ॥ तए णं सा चेक्षणा देवी अन्नया क्याउ नंसि तारियगंसि वायश्रंसि जाव सीहं समिणे पासित्ताणं पिंडबुद्धा. जहा प्रभावहं जाव सुमिणपाटगा पिंडवियांजिय। जाव चेहणा से वयणं पहिच्छिता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविद्वा ॥ १५ ॥ तए णं तीने चेछणाए देवीए अज्ञया क्याई तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारुवं दोहुछे पाउ०मए-धनाओं मं ताओं अस्मयाओं जाव जम्मजीवियफ्टे जाओं मं मेणियस्य रहा उयर-वलीमंसेहिं सोब्रेहि य नलिएहि य भजिएहि य मुरं च जाव पसन्नं च आसाएमा-णीओ जाव परिभाएमाणीओ दोहरूं पविषान्ति । तए णं सा त्रेष्ठणा देवी नंसि दोहलंखि अविणिजमाणंसि सुका भक्का निम्मंना ओल्स्मा अंतुस्मसरीरा निसेया दीणविमणवयणा पण्डुइयमुही ओमन्थियनयणवयणकमला जहोचियं पुष्फवत्यगन्ध-मलालंकारं अपरिभन्नमाणी करचलमलियव्य कमलमाला ओहचमणसंकृप्पा जाव क्रियाइ ॥ १६ ॥ तए णं तीसे चेहलाए देवीए अक्रपंडियारियाओ चेहणं देविं सुद्धेः भुक्खं जाव ब्रियायमाणि पासन्ति २ ना जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छन्ति २ ना करयलपरिगाहियं सिरसावतं मत्यए अञ्जलिं कह सेणियं रायं एवं वयासी-एवं खळ सामी! चेळणा देवी न याणामो केणड कारणेणं सका भक्खा जाच जियाह ॥ १७ ॥ तए णं से सेणिए राया तासि अङ्गपडियारियाणं अन्तिए एयमदं सोचा निसम्म तहेव संभन्ते समाणे जेणेव चेह्रणा देवी तेणेव उदागच्छह २ ता चेह्रणं देविं सक्कं अक्कं जाव झियायमाणि पासिता एवं वयासी-कि णं तमं देवाणप्पिए ! सुका भुक्ता जाव झियासि ? ॥ १८ ॥ तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रही एयमहं नो आढाइ नो परिजाणाइ, तुसिणीया संचिद्धः । तए णं से सेणिए राया चेह्रणं देविं दोशंपि तशंपि एवं वयासी-किं णं अहं देवाण्णिए। एयमद्रस्य नो अरिडे सवणगए जं णं तुमं एयमइं रहस्तीकरेसि ? ॥ १९ ॥ तए णं सा चेह्रणा देवी सेणिएणं रक्षा दोश्वंपि तश्वंपि एवं बुना समाणी सेणियं रायं एवं वयासी-निर्ध णं मासी ! से केड अद्रे जस्स णं तुब्भे अणरिहा सवणवाए, नो चेव णं इमस्स अहस्स सवणयाए, एवं खळु सामी ! ममं तस्स ओरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं वहपडिपुण्णाणं अयमेयास्वे दोहळे पाउच्यूप-धनाओ णं ताओ

अम्मयाओ जाओ णं तुन्मं उयर्वितमंसीहं सोख़एहि य जाव दोहलं विणेन्ति, तए णं अहं सामी ! तंस दोहलंस अविणिजमाणंस सुद्धा भुक्खा जाव क्षियामि ॥ २० ॥ तए णं से सेणिए राया चेळणं देविं एवं वयासी-मा णं नुमं देवाणुप्पिए! ओहय० जाव क्षियाहि, अहं णं तहा जितहामि जहा णं तव दोहलस्य संपत्ती भविस्यइति-कड़ चेक्षणं देवि ताहि इहाहि कन्ताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि ओरालाहि ऋडाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मङ्गळाहिं मियमहुरमस्सिरीयाहिं वग्गृहिं समासासेड २ त्ता चेहणाए देवीए अन्तियाओ पांडनिक्खमइ २ ना जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहारणे तेणेव उत्रागच्छइ २ ता सीहासणवरंसि पुरत्थासिमुहे निसीयइ २ ता तस्य दोहलस्य संपनिनिमित्तं बहुहिं आएहिं उवाएहि य उप्पत्तियाए य वेणइ-वाए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे २ तरुस दोहलस्स आर्य वा उवायं वा ठिइं वा अविन्दमाणं ओहयमणसकप्पे जाव झियाइ ॥ २१ ॥ इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए अप्पमहरूपामरुणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पिंडिनिक्समइ २ ता जेणेव बाह्मिया उवद्वाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उत्रागच्छाइ २ ता सेणियं रायं ओह्य० जाव क्षियायमाणं पासह २ ता एवं वयामी-अञ्चया णं नाओ! तुन्मे ममं पानिता हुद्व जाव हिमया भवह कि णं ताओ ! अज तुब्से ओहय॰ जात्र झियाह ? तं जड णं अहं ताओ ! एयमहस्स अरिहे सवणयाए तो णं तुब्से सम एयमद्रं जहाभूयमवितहं असंदिदं परिकहेह, जा णं अहं तस्म अहुस्स अन्तगमणं करेमि ॥ २२ ॥ तए णं से सेणिए राया अभयं दुमारं एवं वयासी-नन्धि णं पुत्ता! से केइ अहे जरूस णं तुमं अणरिहं मवणयाए, एवं खलु पुता ! तव चुल्लमाउयाए चेल्रणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महामुमिणस्स तिण्हं मास।णं बहुपिडपुण्णाणं जाव जाओ णं मम उयरवली-मंसेहिं सोहिहि य जाव दोहुलं विणेन्ति, तए णं सा चेहणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिजमाणंति सुका जाव झियाइ, तए णं अहं पुता ! तस्स दोहलस्स संपत्ति-निसित्तं बहुहिं आएहि य जाव ठिइं वा अविन्दमाणे ओहय० जाव क्षियामि ॥ २३ ॥ तए णं से अभए क्रमारे सेणियं रायं एवं वयासी-मा णं ताओ । तुन्मे ओहय॰ जाव झियाह, अहं णं तहा जितहामि जहा णं मम चुलमाउयाए चेलणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइतिकृष्ट् सेणियं रायं ताहि इद्वाहि जाव वम्मूहि समासासेइ २ ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छा २ ता अब्भिन्तरए रहस्सियए ठाणिजे पुरिसे सद्दावेइ २ ता एवं वयासी-गच्छद णं तुब्मे देवाणुप्पिया ! सृणाओ अहं मंसं कृद्विरं बत्यपुडगं च गिण्हह ॥ २४॥ तए यं ते ठाणिजा पुरिसा

अभएणं कुमारेणं एवं वृत्ता समाणा हद्भवद्भः जाव पिंडमणेना अभयस्स कुमारस्य अन्तियाओ पांडिनिक्खमन्ति २ ता जेणेव मुणा तेणेव उवागच्छन्ति २ ता अहं मंसं रुहिरं वित्यपुडगं च गिण्हन्ति २ ता जेणेत्र अभए कुमारे तेणेत उवागच्छन्ति २ ता करयल तं अह मंसं रुहिरं बन्धिपुडगं च उवणेन्ति ॥ २५॥ नए णं से अभए कुमारे तं अहं मंसं रुहिरं कप्पणी अप्प किष्पियं करेड २ ना जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ २ ना सेणियं रायं ग्हास्मिगयं स्यणिजांस उत्ताणगं निवजावेइ २ ता सेणियस्म उयरवलीमु तं अहं मंसं रुहिरं विरवंड २ ता बत्थि-पुडएणं वेढेड २ ना सवन्तीकरणेणं करेड २ ता चेल्लणं देविं उपिय पासाए अव-लोयणवरगयं ठवावेड २ ता चेळणाए देवीए अहे सपक्खं सपिडदिसि सेणियं रायं सर्याणजांस उत्ताणगं निवजावेद, संवियस्य रक्षो उत्परविद्रमंसाई कप्पीणीणी-कप्पियाई करेइ २ ता से य भायणंति पिन्खवड । तए णं से मेणिए राया अलिय-मुच्छियं करेड २ ता महत्तन्तरेणं अन्नमञ्जेण सद्धि संख्यमाणं चिद्वह । तए णं से अभयक्रमारे सेणियस्स रह्यो उयरविजमंसाई भिण्हेड २ ना जेणव चेछणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ ता चेळणाए देवीए उवणेइ । तए णं सा चेळणा देवी सेणि-यस्म रको तेहिं उयरबलिमंमेहिं सोडेहिं जाव दोहलं विणेड । तए णं मा चेछणा देवी संपुण्णदोहला एवं संमाणियदोहला विच्छिनदोहला तं गर्भ मुहंमुहेणं परि-वहइ॥ २६॥ तए णं तीसे चेळगाए देवीए अन्नया कयाइ प्रव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि अयमेयारुवे जाव समुष्पजित्या-जह ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चंव पिउणो उयरवलिमंसाणि खाइयाणि, तं सेयं खढु मए एयं गब्मं साडित्तए वा पाडितए वा गालितए वा विदंतितए वा. एवं संपेष्टेड २ सा तं गब्मं बहहिं गन्भसाडणेहि य गन्भपाडणेहि य गन्भगालणेहि य गन्भविदंसणेहि य इच्छइ तं गब्मं साहितए वा पाडितए वा गालितए वा विद्वंतितए वा, नो चेव णं से गब्मे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा । तए णं सा चेत्रणा देवी तं गर्ब्स आहे नो संचाएइ बहाई गब्भसाडणेहि य जाव गब्भविदंसणेहि य साहित्तए वा जाव विद्धंसित्तए वा ताहे सन्ता तन्ता परितन्ता निव्विष्णा समाणी अकामिया अव-सबसा अष्टवसङ्दह्हा तं गब्भं परिवहह ॥ २७ ॥ तए णं सा चेक्रणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सोमालं मुख्यं दारगं प्याया । तए णं तीसे चेह्रणाए देवीए इमे एयास्ये जाव समुप्पजित्था-जड ताव इमेणं दारएणं गञ्मगएणं चेव पिउणा उयरबिट्मंसाई साझ्य ई, तं न नजह णं एस दारए संबद्धमाणे अन्हं कुलस्स अन्तकरे मविस्सइ, तं सेयं खद्ध अम्हं एयं दार्गं एयन्ते उद्दर्शियाए

उज्ज्ञाविनए. एवं संपेद्देइ २ ता दासचेडिं सद्दावेइ २ ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए! एयं दारगं एगंते उक्करिडेयाए उज्झाहि॥ २८॥ तए णं मा दासचेडी चेहणाए देवीए एवं बुना समाणी करयळ० जाव कह चेहणाए देवीए एयमद्रं विणएणं पिंडमुणेइ २ ता तं दार्गं करवलपुढेणं गिण्हंइ २ ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छा २ ता तं दारगं एगन्ते उक्कुरुडियाए उज्झाइ। तए णं तेणं दारगेणं एगन्ते उक्कराडियाए उजिक्काएणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्या ॥ २९ ॥ तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लख्डे समाण जेणव असोगवणिया तेणेव उवागच्छा २ ता तं दारगं एगन्ते उक्कु-रुडियाए उज्झियं पासेंद २ ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तं दारगं करयन्त्रपुडेगं गिण्हट २ ता जेणेत्र चेल्लणा देवी तेणेव उदागच्छइ २ ता चेल्लणं देविं उचावयाहिं आओमणाहिं आओसइ २ ता उचावयाहिं निव्यच्छणाहिं निव्यच्छेड् एवं उद्धे-सणाहि उदंसेइ २ ता एवं वयासी-किस्स णं तुमं मम पुत्रं एगन्ते उक्करहियाए उज्झाविति ? तिकट्ट चेहलं देवि उचावयसनद्दरावियं करेड २ ता एवं वयासी-तुमं णं देवाणुप्पिए! एयं दारगं अणुप्रवेणं सारक्वमाणी संगोवेमाणी संवेहहि ॥ ३० ॥ तए णं सा चेह्नणा देवी सेणिएणं रज्ञा एवं बुत्ता समाणी लजिया विलिया विद्रा कर्यलपरिगाहियं० सेणियस्स रची विजएणं एयम्द्रं पहिस्पोह २ ता तं दारगं अणुपुर्व्वणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संबह्नेड ॥ ३१ ॥ तए णं तस्स दारगस्स एगेते उक्किरियाए उज्सिजमाणस्स अग्गङ्क्रिया कुक्क्डपिच्छएणं द्रिया यांवि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं पूर्वं च सोणियं च अभिनिस्सवइ । तए णं से दारए वयणाभिभूए समाणे महया महया महेणं आरसह । तए णं सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसहं सोचा निसम्म जेणव से दारए तेणव उवागचछह २ त्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हड् २ सा तं अग्गङ्कालियं आसयंसि पिक्खबड् २ सा पूरं च सोणियं च आसएणं आसुमइ । तए णं से दारए निव्वूए निव्वेयणे तुसिणीए संचिद्वर । जाहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सहेणं आरसइ ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छद २ ता तं दारगं करबळपुडेणं गिण्हइ तं चेव जाव निव्वेयणे तुसिणीए संचिद्धइ ॥ ३२ ॥ तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो तइए दिवसे चन्दसरदरिसणियं करेन्ति जाव संपत्ते बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गुणनिष्पन्नं नामधेजं करेन्ति-जम्हा णं अम्हं इमस्य दारमस्य एगन्ते उद्यवस्थियाए उजिल्लाबमाणस्य अङ्गलिया कुक्कुडिपच्छएणं वृमिया तं होत णं अर्म्ह इमस्स दारगस्स नामधेखं कृषिए २ । तए णं तस्स दार-

गस्स अम्म।पियरो नामधेजं करेन्नि 'कृणिय' ति । तए णं तस्स कृणियस्स आणु-पुण्वेणं टिट्वडियं च जहा मेहस्स जाव उपिंप पासाथवरगए विहरह, अट्टुओ दाओ ॥ ३३ ॥ तए णं तस्स कृणियस्य कुमारस्स अन्या० पुरुवर्ता० जाव समुप्पजित्था-एतं खल अहं सेणियस्स रक्तो वाघाएणं नो मंचाएसि रायमेव रजसिरिं करेमाणे पालेमाणे विद्वारित्तए, तं सेयं खुळ मम सेणियं रायं नियलबन्धणं करेताः अप्पाणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिद्धाविनर्णात्तकः एवं संपेहेट २ ता सेणियस्य रही अन्त-राणि य हिद्वाणि य विरहाणि य पश्चिजागरमाणे २ विहरह ॥ ३४ ॥ तए णं से कृणिए कुमारे सेणियस्स रज्ञो अन्तरं वा जाव मम्मं वा अलममाणे अन्नया कयाइ कालाईए दस कमारे नियघरे सहावेड २ ता एवं वयासी-एवं खलु देवापुष्पिया ! अन्हे सेणियस्स रस्रो वाघाएणं ना संचाएमा सर्यमेव रजासिरि करेसाणा पाछेमाणा विहरित्तए, तं सेयं खत्य देवाणपिया ' अम्हं सेणियं रायं नियलवन्धणं करेना रजं च रहं च बलं च वाहणं च कोसं च कोहागारं च जणवयं च एकारमभाए विरि-बित्ता सबसेव रज्जसिरि करेमाणाणं पाळेमाणाणं जाव विद्वितिता ॥ ३५ ॥ तए णं ते कालाईया दस कुमारा कृणियन्य कुमारस्स एयमद्वं विणएणं पिडसुणन्ति । तए णं से कृणिए कुमारे अश्वया कयाइ संणियस्स रह्नो अन्तरं जाणइ २ ता सेणियं रायं नियलबन्धणं करेइ २ ता अप्पाणं महया महया रायामिसेएणं अभिसिञ्चावेट । तए णं से कृषिए कुमारे राया जाए महया ।। ३६ ॥ तए णं से कृषिए राया अनुया कयाइ ण्हाए सन्बालंकार्रावमसिए चेहणाए देवीए पायवन्दए हन्वमागच्छ । तए णं से कृष्णिए राया चेक्रणं देविं ओहय० जाव झियायमाणिं पासइ २ ता चेत्रणाए देवीए पायस्गहणं करेड २ ता चेहणं देविं एवं वयासी-किं णं अम्सो ! तुम्हं न तदी वा न ऊसए वा न हरिसे वा न आणन्दे वा. जं णं अहं सयमेव रजिसिरिं जाव विहरामि १॥ ३७ ॥ तए णं मा चेळणा देवी कृणियं रायं एवं वयासी-कहं णं पुत्ता ! समं तुद्धी वा उत्पए वा हरिसे वा आणन्दे वा भविरसङ् जं णं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अचन्तनेहाणरागरतं नियलबन्धणं करिता अप्पाणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिञ्जावैसि ? ॥ ३८ ॥ तए णं से कृणिए राया चेक्रणं देविं एवं वयासी--- घाएउकामे णं अम्मो ! मम सेणिए राया. एवं मारेउ० बन्धिउ० निच्छ-भिड़कामे णं अस्मो ! मसं सेणिए राया, तं कहं णं अस्मो ! मसं सेणिए राया अचन्तनेहाणुरागरत्ते ? ॥ ३९ ॥ तए णं सा चेन्नणा देवी कृषियं कुमारं एवं वयासी-एवं खलु पुता ! तुर्मास ससं गर्भे आभए समाणे तिण्हं सासाणं बहपिडपुण्याणं ममं अयमेयास्वे दोहरे पाउच्मए-धनाओ णं ताओ सम्मयाओ जाव अंगपिकवारि-

याओं निर्दर्सेसं भाषियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए महया जाव तुसिणीए संचिद्रसि. एवं खळु तब पत्ता ! सेणिए राया अचन्तनेहाणुरागरते ॥४०॥ तए णं से कृणिए राया चेह्रणाए देवीए अन्तिए एयमद्वं सोचा नियम्म चेह्रणं देविं एवं नयासी--दुट्ट णं अम्मो ! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच-न्तनेहाणुरागर्नं नियलवन्धणं करन्तेणं, तं गच्छामि णं सेणियस्स रक्षो सयमेव नियलाणि छिन्दामित्तिकहु परमुहत्यगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्य गमणाए ॥ ४२ ॥ नए णं सेणिए राया कृणियं कुमारं परमुद्दृत्थगयं एज्जमाणं पासइ २ सा एवं वयासी-एम णं कृषिए कुमारे अपत्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए पर-मुहत्थगए इह हव्बमागच्छड्, तं न नजाइ णं ममं केणड कुमारेणं मारिस्सइत्तिकट भीए जाय मंजायभए तालपुडगं विसं आसर्गांत पिक्खवइ । नए णं से सेणिए राया नालपुडगविसींस आसर्गास पक्लिने समाणे महत्तन्तरेणं परिणममाणंसि निष्पाणे निचेंद्वे जीवविष्पजढे ओइण्णे ॥ ४२ ॥ तए णं में कृणिए कुमारे जेणेव चारगसाला तेणेव उवागए, सेणियं रायं निष्पाणं निषेद्धं जीवविष्पजढं ओइण्णं पासइ २ ना महया पिइसोएणं अप्फुल्ले समाले परसुनियते विव चम्पगवरपायवे प्रसत्ति धर्णी-यलंसि सव्वक्केहिं संनिवडिए। तए णं से कृणिए कुमारे मुहुतन्तरेण आसत्ये समाणे रोयमाणे कन्द्रमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी-अही णं मए अवसेणं अपुण्णेणं अकयपुण्णेणं दुद्वकयं सेणियं रायं पियं देवयं अचन्तनेहाणुरागरतं नियलबन्धणं करन्तेणं, मममूलागं चेव णं सेणिए रावा कालगएत्तिकडू ईसरतलवर जाव संधि-बालसिंह संपरिवृद्धे रोयमाणे ३ महया इङ्कीसकारममुदएणं सेणियस्स रज्ञो नीहरणं करेड २ ता बहुई लोइयाई मयकिनाई करेड । तए णं से कृणिए कुमारे एएणं महया मणी-माणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अन्नया क्याइ अन्तेउरपरियालसंपरिवृडे सभ-ण्डमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पिडनिक्खमइ २ ता जेणेव चम्पा-नयरी तेणेव उषा-गच्छइ. तरथवि णं विजलमीगसमिइसमञ्जागए कालेणं अप्पसीए जाए यावि होत्या ॥ ४३ ॥ तए णं से कृणिए राया अश्वया कयाइ कालाईए दम कुमारे सहावेड २ ता रखं च जाव जणवर्यं च एकारसभाए विरिवाह २ ता स्वयमेव रजासिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥ ४४ ॥ तत्य णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रहो पत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कृणियस्य रह्नो सहोयरे कणीयसे भाया वेहहे नामं कुमारे होत्या, सोमाले जाव सुरूवे। तए णं तस्स वेहहस्स कुमारस्स सेणिएणं रक्षा जीवंतएणं चेव सेथणए गन्धहत्थी अड्डार-सर्वके य हारे पुम्बदिने । तए णं से वेहक्षे कुमारे सेयणएणं गन्धहृत्यिणा अन्तेजर-परियालसंपरिवाहे चर्म नयरिं मज्हांमज्हेणं निमाच्छा २ सा अभिक्खणं २ गष्टं

महाणंड मजाणयं ओयरह । तए णं सेयणए गन्धहत्वी देवीओ सोण्डाए गिण्हड २ ता अप्पेगहयाओ पुट्टे ठवेड, अप्पेगइयाओ खन्धे ठवेड, एवं कुम्भे ठवेड, सीसे ठवेइ, दन्तमुसले ठवेइ, अप्पेगडयाओ सोंडाए गहाय उहूं वेहासं उव्विहइ, अप्पे-गइयाओ सोण्डागयाओ अन्दोलावेइ, अप्पेगइयाओ दन्नन्तरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ सीभरेणं ण्हाणेड, अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेड । तए णं चम्पाए नयरीए मिंघाडगतिगचउक्रवचरमहापरपहेमु बहुजणो अस्रमन्नस्य एवमाइक्खइ जाव परुवेद-एवं खळ देवाणुप्पिया ! वेहले कुमारे सेयणएणं गन्धहत्यिणा अन्तेउर० तं चेव जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेड, तं एस णं नेहहे कुमारे रजसिरफले पचणुभवसाणे विहरह, नो कृषिए राया ॥ ४५ ॥ तए णं तीसे पडमावईए देवीए इमीने कहाए लद्धद्वाए समाणीए अयमेयाभवे जाव समुप्पजित्था-एवं खलु वेहहे क्रमारे सेयणएणं गन्धदृश्यिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेड तं एस णं वेहाँहे कुमारे रज्ञिसिफलं एक्ष्युभवमाणे विहरड, नो कृणिए राया, तं कि णं अम्हं रकेण ना जाव जणवएण वा जह णं अम्हं सेयणगे गन्धहन्त्री नित्य ? तं सेयं खल ममं कृणियं रायं एयमट्टं विज्ञवित्तएत्तिकट एवं संपेहेर - ता जेणेव कृणिए राया तेणेव उवागच्छद २ ता करयल० जाव एवं वयासी-एवं खल सामी! वेहहे कमारे संयणएणं गन्धहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं कि णं अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा जइ णं अम्हं सेयणए गन्भहत्थी नित्थ ? ॥ ४६ ॥ तए णं से कृषिए राया पउसावईए० एसमहं नो आडाइ नो परिजाणाइ. तुसिणीए संचिद्रह । तए णं सा परामावई देवी अभिक्खणं २ कृणियं रायं एयमद्रं विश्ववेद । तए णं से कृणिए राया पडमावईए देवीए अभिक्खणं २ एयमद्रं विश्व-विज्ञमाणे अन्नया क्याइ बेहल्लं कुमारं सहावेद २ ता सेयणगं गन्धहरिंग श्रद्धारसवंकं च हारं जायह ॥ ४७ ॥ तए णं से वेह्छे कुमारे कृणियं रायं एवं क्यासी-एवं खख सामी ! सेणिएणं रज्ञा जीवनतेणं चेव सेयणए गन्धहत्थी अद्वारसवंके य हारे दिने. ते जड़ णं सामा ! तुब्भे ममं रजस्य य जाव जणवयस्य य अदं दलयह तो णं अहं तुब्भं सेयणगं गन्धहर्त्यि अद्वार्भवंकं च हारं दलयामि । तए णं से कृणिए राया वेहह्नस्य कुमारस्स एयमट्टं नो आढाइ नो परिजाणइं. अभिक्खणं २ सेयणगं गन्धहरिय अद्वारसर्वकं च हारं जायइ ॥ ४८ ॥ तए णं तस्स वेहक्रस्स कुमारस्स कृणिएणं रज्ञा अभिक्खणं २ सेयणगं गन्धहत्थि अद्वारसवंकं च हारं ... एवं खल् अक्लिविउकामे ण गिण्हिउकामे ण उहालेउकामे ण ममं कृणिए राया सेमणगं गन्ध-हरिय अद्वारसवंकं च हारं, तं जाब न उदालेड ममं कृषिए राया ताब (सेयं मे)

सेयणगं गन्धहर्त्थि अद्वार्सवंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभण्डम-त्तोवगरणमायाए चम्पाओ नयरीओ पिडिनिक्समित्ता वेमालीए नयरीए अज्जर्ग चेडयं रायं उवसंपज्जिताणं विहारिताए, एवं संपेद्देइ २ ता कृणियस्य रन्नो अन्तराणि जाव पिंडजागरमाणे २ विहरइ । तए णं से वेहले कुमारे अन्नया कयाइ कृणियस्स रस्रो अन्तरं जाणइ २ ना सेयणगं गन्धहरिय अद्वारसवंदं च हारं गहाय अन्तेउरपरियाल-संपरिवृद्धे नभण्डमत्तोवगरणमायाए-चम्पाओ नयरीओ पिडनिक्स्तमः २ सा जेणेव वेसाली नयरी तेणेव उवागच्छड २ ता वेसालीए नयरीए अज्ञगं चेडयं रायं उवसंपजिताणं विहरइ ॥ ४९ ॥ तए णं से कृषिए राया इमीसे कहाए छद्धद्वे समाणे-एवं खळ वेहले कुमारे ममं असंविदिएणं संयणगं गन्धहर्त्य अद्वारसत्रंकं च हारं गहाय अन्तेउरपरियालसंपरिवृडे जाव अन्तरं चेडयं रायं उवसंपिनताणं विहरइ. तं सेयं खल ममं सेयणगं गन्धहरिंथ अद्वारमवंकं च हारं आणेउं द्यं पेसित्तए, एवं संपेहेड २ ता दूर्य सहावेड २ ना एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वसालि नयरिं, तत्थ णं तुमं ममं अजं चेडगं रायं करयल० वदावेता एवं वयाहि-एवं खळ सामी! कृणिए राया विश्ववेह-एस णं वेहके कुमारे कृणि-यस्स रक्तो असंविदिएणं सेयणगं॰ अद्वारसवंकं च हारं गहाय इह हब्वमागए, तए णं तुब्से सामी । कृषियं रायं अणुगिष्हमाणा सेयणगं व अद्वारसवंकं च हारं कृषियस्स रक्षो पञ्चिपपाह वेहछं क्रमारं च पेसेह ॥ ५० ॥ तए णं से दए कृषिएणं० करयल० जाव पिंडसणिता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छड २ ता जहा चित्तो जाव वद्धावेता एवं वयासी-एवं खलु सामी! कृणिए राया विश्ववेद-एम णं वेहहे कमारे तहेब भाणियन्वं जाव वेहलं कुमारं च पैसेह ॥ ५९ ॥ तए णं से चेडए राया तं दुरं एवं वयासी-जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कृषिए राया सेणियस्स रक्षो पुत्ते चेक्रणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए तहेव णं वेहहेवि कुमारे सेणियस्स रक्तो पुत्ते चेहणाए देवीए अत्तर मम नत्तर, सेणिएणं रहा जीवन्तेणं चेव वेहह्रस्स कुमारस्स सेवणगे गन्धहरथी अद्वारसर्वके य हारे पुर्व्वावदण्णे, तं जड णं कृणिए राया बेहह्रस्स रजस्स य॰ जणवयस्य य अदं दलयइ तो णं अहं सेयणगं॰ अहारसवंकं च हार कृणियस्स रक्षो पचप्पिणामि वेहक्कं च कुमारं पेसेमि। तं दूर्य सकारेइ संमाणेइ पिडविसुजेड ॥ ५२ ॥ तए णं से दूए चेडएणं रहा पिडविसजिए समाणे जेणेव चाउग्घण्टे आसरहे तेणेव उनागच्छद् २ ता चाउग्घण्टं आसरहं दुस्ह्इ २ ता वेसालि नयरि मज्हांमज्ह्रोणं निमाच्छह २ शा सुमेहि वसहीहि पायरासेहि जाव बद्धावेता एवं वयासी-एवं खलु सामी! चेडए राया आणवेड-जह चेव णं

कृणिए राया सेणियस्य रस्रो पुते चेत्रणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए, तं चेव भाणि-यव्वं जाव वेहलं च कुमारं पेसेमि, तं न देइ णं सामी ! चेडए राया सेयणगं॰ अट्टारसर्वर्क च हारं वेहहं च नो पेसेइ ॥ ५३ ॥ नए णं से कृणिए राया दोश्वंपि द्यं मद्दावेता एवं वयासी-गच्छद् णं तुमं देवाणुष्पिया ! वेसालि नगरिं, तत्थ णं तुमं मम अज्ञगं चेडगं रायं जाव एवं क्याहि—एवं खलु सामां ! कूणिए राया विश्ववेह--- जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्वन्ति सब्बाणि नाणि रायकुलगामीणि, सेणियस्स रन्नो रजासिरिं करेमाणस्य पाछेमाणस्स दुवे ग्यणा समुप्पना, नंजहा-सेयणए गन्यहत्थी अद्वारसवंके हारे. तं णं तुब्से सामी ! रायकुलपरंपरागयं ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गन्धहरिय अद्वारसवंदं च हारं कृणियस्स रज्ञो पञ्चप्पिणह. वेहरूं कुमारं पेसेह ॥ ५४ ॥ तए णं से दूए कृणियस्स रक्षो तहेव जाव वदावेचा एवं वयासी--एवं सन्तु मामी ! कूणिए राथा विश्ववेद-जाणि काणि जाव वेहहं कुमारं पेसेह। तए णं मे चेडए राया नं दूर्य एवं वयासी--जह चेव णं देवाणु-प्पिया ! कृषिए राया सेणियस्स रक्षो पुत्ते चेहलाए देवीए अनए जहा पढमं जाव वेहलं च कुमारं पेसेमि । तं दूर्य सकारेइ संमाणेइ पिडिशिराजेड ॥ ५५ ॥ तए णं से दृए जाव कृषियस्स रहो वदावेता एवं वयासी-चंडए राया आणवेड-जह चंच णं देवाणाप्पया ! काणिए राया सेणियस्स रच्चो पत्ते चेळणाए देवीए अत्तए जाव वेहलं कुमारं पेसेमि, तं न देह णं सामी ! चेडए राया सेयणगं गन्धहरिंथ अद्वार-सबंकं च हारं. बेहक्कं कुमारं नो पेसेट्॥ ५६॥ तए णं से कृषिए राया तस्म द्यस्स अन्तिए एयमहं सोशा निसम्म आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे तथं दूयं सद्दायंड २ ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाण्पिया ! वेसालीए नगरीए चेडगस्स रक्षो वामेणं पाएणं पाय[वी]पीढं अकस्माहि २ ता कुन्तरगेणं लेहं पणावेहि २ ता आसुरुन जाम मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहरू चेडगं रायं एवं वयाहि-हं भो चेडगराया ! अपत्थियपत्थिया ! दुरन्त० जान ०परिवज्जिया ! एस णं कणिए राया आणवेइ-पश्चप्पिणाहि णं कणियस्स रक्तो सेयणगं० अद्वारसर्वकं च हारं बेहहं च कुमारं पेसेहि अहवा जुद्धसज्जो चिद्वाहि, एस णं कृणिए राया सबले सवाहणे सखन्धावारे णं जुद्धसखे इह हव्यमागच्छइ ॥ ५७ ॥ तए णं से दूए करयल तहेव जाव जेणेव चेडए० तेणेव उवागच्छा २ सा करयल जाव वद्धावेत्रा एवं वयासी-एस णं सामी ! ममं विणयपिकत्ती, इयाणि कृणियस्स रक्षे आणति चेडगस्त रहा वामेणं पाएणं पायपीढं अक्सइ २ ता आयुर्वे कुन्तरगेण छेहं पणावेड तं चेव सबलखन्धावारे णं इह हुव्यमागच्छह ॥ ५८ ॥ तए णं से

चेडए राया तस्स द्यस्स अंतिए एयमट्टं सोचा निसम्म आधुरुते जाव साहहू एव वयासी-न अप्पिणामि णं कृषियस्य रक्तो सेयणगं अहारसर्वकं हारं वेहळं च कुमारं नो पेसेमि, एस णं जुद्धसके चिद्वामि । तं वृयं असकारियं असंमाणियं अवहारेणं निच्छहावेड ॥ ५९ ॥ तए णं से कृणिए राया तस्त द्यस्त अन्तिए ए[अ]यमहुं सोबा निसम्म आग्रुरेन कालाईए दस कुमारे सहावेइ २ ता एवं वयासी-एवं खळु ंडवाणुणिया ! वेहले कुमारे ममं असंविदिएणं सेयणगं गन्धहत्य अद्वारसर्वकं हारे अन्तेउरं नभण्डं च गहाय चम्पाओ पिडनिक्खमह २ ता वेसािलं अखगं जाव उवसंपिजनाणं विहरह, तए णं मए सेयणगस्स गन्धहत्थिस्स अद्वारसर्वेकस्स॰ अद्वार द्या पेरिया, ते य चेडएण रन्ना इमेणं कारणेणं परिसेहिया, अट्नरं च णं ममं तके दए असकारिए असंमाणिए अवहारेणं निच्छहावेइ, तं सेयं खल देवाणुष्पिया ! अम्हं चेडगम्स रह्मो जुन्तं गिण्हिनए । तए णं कालाईया दस कुमारा कृणियस्स रह्मो एयम्ड्रं विणएणं पिंडेसुणेन्ति ॥ ६० ॥ तए णं से कृषिए राया कालाईए दस कुमारे एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रखेसु पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया हत्थिसान्धवरगया पत्तेयं पत्तेयं तिहिं दन्तिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आसमहस्मेहिं तिहिं मणुरसकोडीहिं सिद्धें संपिद्वड। सिव्बद्धीए जाव रवेणं मएहिन्तो २ नयरेहिन्तो पिंडनिक्खमह २ ता ममं अन्तियं पाउटभवह ॥ ६१ ॥ तए णं ते कालाईया दम कमारा कृषियस्स रही एयमद्रं सोचा सएस सएस रजेस पत्तेयं २ ण्हाया हत्थि जाव तिहिं मणुस्सकोडीहिं सिद्धं संपरिवृडा सिव्बङ्कीए जाव रवेणं सएहिन्तो २ नयरेहिन्तो पिडनिक्खमन्ति २ ता जेणेव अङ्गा जणवए जेणेव चम्पा नयरी जेंगेव कृणिए राया तेंगेव उवागया करयल० जाव वद्धावेन्ति ॥ ६२ ॥ तए णं से कृषिए राया कोडम्बियपरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगयरहजोहचाउरक्रिणि संणं संनाहेह, ममं एयमाणतियं पषाप्पणह जाव पष्टिपणन्ति । तए णं से कृषिए राया जेणेव मजणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पहिनिग्गच्छिता जेणेव बाहिरिया उवद्रा-णसाला जाव नरवई दुरुढे ॥ ६३ ॥ तए णं से कृषिए राया तिहिं दन्तिमहस्सेहिं जाव रवेणं चम्पं नयरिं मञ्जांमञ्ज्ञेणं निग्गच्छ २ ता जेणेव कालाईया दस कुमारा तेणेव जवागच्छ्य २ ता कालाइएहिं दसिंह कुमारेहिं सिंद एगओ मेला-यन्ति । तए णं से कृषिए राया तेत्तीसाए दन्तिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोबीहिं सदि संपरिवृडे सव्विद्वीए जाव रवेणं सुसेहिं वसहीहिं सुसेहिं पायरासेहिं नाइविगिड्रेहिं अन्तराबासेहिं वसमाणे २

अङ्गजणनयस्य मञ्ज्ञंमञ्ज्ञेणं जेणेव विदेहे जणवए जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ६४ ॥ तए णं से चेडए राया इमीसे कहाए लड्डे समाणे नव मार्ह्ड नव लेच्छई कासीकांगलगा अद्वारसवि गणरायाणो सहावेड २ ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहले कुमारे कृणियस्स रन्नो असंविदिएणं सेयणगं॰ अद्वारमवंकं च हारं गहाय इहं हम्बसागए, तए णं कृष्णिएणं सेवणगरम अद्वारसवंकस्स य अद्वाए तओ दूया पेतिया, ते य मए इमेणं कारणेणं पिंडसेहिया, तए णं से कृषिए ममं एयमद्रं अपिडसुणमाणे चाउरक्रिणीए सेणाए सिद्धं संपरिवृढे जुज्झ-मजं इहं हव्यमागच्छइ, तं किं णं देवाणुप्पिया ! सेयणगं अद्वारसवंकं (च) क्रांगयस्स रक्षा पश्चिष्पणामा ? वेहछं कुमारं पेसेमो ? उदाह जुज्झित्था ॥ ६५ ॥ तए ण नव मर्र्ड्ड नव छेच्छई कामीकोसलगा अद्वारसचि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी-न एयं साभी! जुनं वा पत्तं वा रायसरिसं वा जं णं सेयणगं अद्वार-रावंकं कृणियस्य रत्नो पचिप्पिणिजङ् वेहहे य कुमारे सरणागरः पेसिजङ्, तं जङ् णं कृषिए राया चाउरक्विणीए सेणाए सदि संपरिवृडे जुज्झमजे इहं हव्यमागच्छा. तए णं अम्हे कृषिएणं रक्षा सिद्धं जुज्जामी ॥ ६६ ॥ तए णं से चेटए राया ते नव महाई नव लेच्छई कासीकोसलमा अद्वारर्साव गणरायाणो एवं वयासी-जड णं देवाणुप्पिया ! तुर्क्से कृणिएणं रज्ञा सिद्धं जुज्झह तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएस २ रखेस ण्हाया जहा कालाईया जाव जएणं विजएणं बद्धावेन्ति । तए णं से चेडए राया को दुम्बियपुरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-आभिसेकं जहा कृणिए जाव दुरुढे ॥ ६७ ॥ तए णं से चेडए राया तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जहा कृणिए जाव वैसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निगण्चछः २ ता जेणेव ते नव मळंडं नव लेच्छई कासीकोसलगा अद्वारसवि गणरायाणो तेणेव उचामच्छइ । तए णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दन्तिसहस्सेहिं सत्तावनाए आससहस्सेहिं सत्तावनाए रहसहस्सेहिं सत्तावकाए मणुस्सकोडीहिं सिद्धं संपरिवृद्धे सिविक्वीए जाव रवेणं सुमेहिं वसहीहिं पायरासेहिं नाइविगिद्रेहिं अन्तरेहिं बसमाणे २ विदेहं जणवयं मज्ज्ञंमज्ज्ञेणं जेणेव देसपन्ते तेणेव उदागच्छा २ ता खन्धाबारनिवेसणं करेड २ ता कंणियं रायं पंडिवालेमाणे जुज्झसजे चिद्रह ॥ ६८ ॥ तए णं से कृषिए रामा सविद्रीए जाव रवेणं जेणेव देसपन्ते तेणेव उवागच्छा २ ता चेडयस्स रक्षो जोयणन्तरियं खन्धावारनिवेसं करेंड् ॥ ६९ ॥ तए णं ते दोशिव रायाणो रणभूमि सजाबेन्ति २ सा रणभूमिं जयन्ति । तए णं से कृषिए राया तेत्तीसाए दन्तिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहि गरूलवृहं रएड २ ता गरूलवृहेणं रहमसलं संगमं उदायाए । तए

णं से चेडगे राया सत्तावजाए दन्तिसहस्सेहिं जाव सत्तावजाए मणुस्सकोडीहिं सगडवृहं रएइ २ ता सगडवृहुणं रह्मुसलं संगामं उवायाए । तए णं ते दोण्हवि राईणं अणीया संनद्ध॰ जाव गहियाउहपहरणा मंगइएहिं फलएहिं निकहाहिं असीहिं अंसागएहिं तोणेहिं सर्जावेहिं धणृहिं समुक्तिकोहिं सरेहिं समुक्रालियाहिं डावाहिं ओसारियाहिं ऊरुषण्टाहिं छिप्पत्रेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्टसीहनाय-वोलकलकलरवेणं समुहरवभ्यं पिव करेमाणा सब्बिद्धीए जाव रवेणं ह्यगया हय-गएहिं गयगयः गयगएहिं रहुगया रहुगएहिं पायतिया पायतिएहिं अन्नमनेहिं सिंद्धं संपल्जगा यावि होत्या । तए णं ते दोण्हवि रायाणं अणीया नियगसामी-सासणाणुरता मह[या]न्तं जणकखयं जणवहं जणप्यमदं जणसंवहकृप्यं नवन्तकबन्ध-वारमीमं रुहिरक्दमं करेमाणा अञ्चमन्त्रणं सद्धि जुज्ज्ञन्ति ॥ ७० ॥ तए णं से काले कमारे तिहिं दन्तिसहस्सेहिं जाव मणुसकोडीहिं गरूलवृहेणं एकार्समेणं सन्धेणं कृणिएणं रक्षा गद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय० जहा भग-वया कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ वबरोविए ॥ ७१ ॥ तं एयं खलु गोयमा ! कालं कुमारे एरिसएहिं आरम्मेहिं जाव एरिसएणं असुमकडकम्मपञ्मा-रेणं कालमासे कालं किया चउत्थीए पहुणभाए पुढवीए हेमामे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ७२ ॥ काळे णं मन्ते । कुमारे चउत्त्रीए पुढवीए...अणन्तरं उव्न-हिता क्षि गच्छिहिइ किं उवविजिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाई कुलाई भवन्ति अद्वाइं जहा दढपइषो जाव सिजिझहिइ बुजिझहिइ जाव अन्तं काहिइ ॥ ७३ ॥ तं एवं स्वलु जम्बू । समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं निरयाविष्याणं पढमस्म अज्झयणस्य अयमद्रे पश्चते-तिबेमि ॥ ७४ ॥ प्रहमं अज्झयणं समसं॥१।१॥

जह णं भन्ते ! समणेणं जाव संपर्तणं निरयाविष्ठयाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमहे पन्ते, दोचस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स निरयाविष्ठयाणं समणेणं भगवया जाव संपर्तणं के अहे पन्ते ? एवं खल्ल जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समणणं चम्पा नामं नयरी होत्या । पुण्णभद्दे उज्जाणे । कृणिए राया । पडमावई देवी । तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेलियस्स रनो भज्जा कृणियस्स रनो सुक्रमाडया सकाली नामं देवी होत्या, सुकुमाल० । तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्या, सुकुमाल० । तए णं से सुकाले कुमारे अन्या कथाइ तिहिं दन्तिसहस्सिहं जहा कालो कुमारो निरवसेसं तं चेय भाणियव्यं जाव महाविदेहे वासे...अन्तं काहिइ । निक्केतो ॥ ७५ ॥ बीयं अज्झखणं समर्तं ॥ १ । २ ॥

एवं सेसावि अह अज्ज्ञयणा नेयव्वा पढमसरिसा, नवरं मायाओ सरिसनामाओ। निक्लेत्रो सब्वेसिं भाणियव्वो नहा ॥ ७६ ॥ १ । १० ॥ निरयाविक्याओ समसाओ ॥ पढमो चग्गो समसो ॥ १ ॥



णमोऽत्यु णं समणस्य भगवयो णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं कप्पवहिंसियाओ

जड णं भन्ते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवज्ञाणं पढमस्स वग्गस्स निर्याव-लियाणं अयसद्रे पन्नते, दोन्नस्य णं भनते ! वस्मस्स कप्पविसियाणं समणेणं जाव संपत्तिणं कड अज्झयणा पश्चता ? एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तिणं कप्पवर्डिसियाणं दस अज्झयणा पन्नना, तंजहा-पडमे १, महापडमे २, भंदे ३, सुभंदे ४, पडमभेद्दे ५, पडमसेणे ६, पडमगुम्मे ७, नलिणिगुम्मे ८, आणन्दे ९, नन्दणे १० ॥५७॥ जङ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पविहित्याणं दस अज्झयणा पश्चता. पहमस्य णं भन्ते ! अज्ञायणस्य कप्पविधियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अद्वे पन्नने ? एवं खळु जम्यू ! तेणं काळेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था । पुष्णभद्दे उज्जाणे । कृषिए राया । परमावई देवी । तत्थ णं चम्पाए नयरीए सेणियस्स रन्नो मज्जा कृणियस्स रन्नो चुह्नमाउया काली नामं देवी होत्या, सुउमालः । तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्या, सुउमालः । तस्स णं कालस्स कुमारस्स पडमावई नामं देवी होत्था. सोमाळ० जाव विहरइ ॥ ७८ ॥ तए णं सा पउमानई देवी अनया कयाई तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अञ्मिन्तरश्रो सन्वित्तकम्मे जाव सीहं सुमिणे पासिनाणं पडिबुद्धा । एवं जम्मणं जहा महाबलस्स जाव नामधेजं -- जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पडमार्च्हर देवीए अक्तर तं होड णं अम्हं इमस्य दारगस्स नामथेजं पडमे पडमें, सेसं जहा महाबलस्स, अड्डओ दाओ जाव उप्पि पासायबरगए विहरइ। सामी समोसरिए । परिसा निरगया । कृषिए निरगए । पर्सिव जहा महाबले निरगए तहेव अम्मापिइआएच्छणा जाव पव्वहए अणगारे जाए जाव गुत्तबम्भयारी ॥ ७९ ॥ तए णं से पडमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहाहवाणं थेराणं अन्तिए सामाहयमाहयाई एकारस अङ्गाई अहिजह २ ता बहुई चउत्यखदुद्वम० जाव विह-रइ ॥ ८० ॥ तए णं से पडमे अणगारे तेणं ओराकेणं जहा मेही तहेव धम्मजाग-रिया चिन्ता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं० आपुच्छिता विउले जाव पाओ-

वगए समाणे तहास्वाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाई एकारम अक्नाई बहुपिटपुण्णाई पश्च वासाई सामण्णपिराए, मासियाए संलेहणाए सिंह भत्ताई आणुपृत्वीए
कालगए। थेरा ओइण्णा। भगवं गोयमे पुच्छद, सामी कहेइ जाब मिंह भत्ताई
अणसणाए छेइता आलोइयपिडकन्ते उन्हें चिन्दम सोहम्मे कप्पे देवताए उववके।
दो मागराई॥ ८१॥ से णं भन्ते! पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्सएणं
पुच्छा। गोयमा! महाविदेहे वासे जहा दढपइसो जाव अन्तं काहिर्। तं एवं खलु
जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पविंतियाणं प्रमस्स अञ्जयणस्य अयमहे पन्नेनतिविमि॥ ८२॥ पटमं अञ्चयणं समन्तं॥ २ । १॥

उद्द णं भन्ते! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पविद्याणं पटमस्स अज्झ-यणस्य अयमहे पत्रते, दोचस्स णं भन्ते! अज्झयणस्य के अहे पत्रते! एवं खळु जम्बू! तेणं काळेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्या। पुष्णमंद्द उजाणे। कूणिए राया। पउमावई देवी। तत्थ णं चम्पाण नयरीए सेणियस्य रत्नो भजा कूणियस्स रत्नो चुळमाउया सुकाळी नामं देवी होत्था। तिसे णं सुकाळीए पुत्ते सुकाळे नामं कुमारे। तस्स णं सुकाळस्य कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था, सुउमाळ। ॥ ८३॥ तए णं सा महापउमा देवी अन्या कयाई तीस तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारए जाव सिज्झिहिइ, नवरं ईमाणे कप्पे उववाओ उक्कोसिहुइओ। निक्लेवो॥ ८४॥ बीर्य अज्झयणं समसं॥ २।२॥

एवं सेसावि अद्व नेयव्वा । मायाओ सरिसनामाओ । कालाईणं दसण्हं पुत्ताणं अणुपुव्वीए—दोण्हं च पन्न चत्तारि तिण्हं तिण्हं च होन्ति तिण्णेव । दोण्हं च दोणि वासा सेणियनतूण परियाओ ॥ १ ॥ उववाओ आणुपुर्व्वीए-पढमो सोहम्मे, बिइओ ईसाणे, नइओ मणंकुमारे, चउत्थो माहिन्दे, पन्नमो वम्मन्तेए, छद्वो लन्तए, सत्तमो महासुके, अद्वमो सहस्सारे, नवमो पाणए, दसमो अनुए । स्वत्थ उक्को-सिद्वाई भाणियव्वा । महाविदेहे सिजिन्नाहिति ॥ ८५ ॥ २ । १० ॥ कण्पवार्डि-सियाओ समत्ताओ ॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥ २ ॥



णमोऽत्थु णं समणस्स भगवको णायपुरामहाबीरस्स

सुत्तागमे

पुष्फियाओ

जइ गं भंते ! समणेगं भगवया जाव संपत्तेणं उवक्काणं दोचस्स० कप्पवर्डिसियाणं अयमद्वे पन्नते, तचस्स णं भन्ते ! वग्गस्स उवज्ञाणं पुष्पियाणं के अद्वे पन्नते ? एवं खळु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं स्वङ्गाणं तचस्स वग्गस्स पुष्पियाणं दस अज्झयणा पन्नता, तंजहा-चंदे स्रे सुके बहुपुत्तिय पुण्ण माणिभद्दे य । दत्ते सिवे बले या अणाहिए चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जड्ड णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पुष्फियाणं दस अज्झयणा पन्नता, पहमस्स णं भन्ते ! ... समणेणं जाव संपनेणं के अहे पन्नते ? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं ममएणं रायगिष्टे नामं नयरे । गुणसिळए उज्जाणे । सेणिए राया । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया । तेणं बालेणं तेणं समएणं चन्दे जोइसिन्दे जोइसराया चन्द-वर्डिसए विमाणे सभाए सहस्माए चन्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहरूसीहिं जाव विहरह। इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीत्रं दीवं विउल्लेणं ओहिणा आभोएमाणे २ पासइ २ ता समर्ण मगवं महावीरं जहा स्रियामे आमिओगे देवे सहावेता जाव द्वरिन्दाभिगमणजोगं करेता तमाणत्तियं पचप्पिणन्ति । ससरा चण्टा जाव विउठवणा. नवरं जाणविमाणं जोयणसहस्यवित्थिणं अद्भतेवद्विजोयणसम्सिर्य. महिन्दज्सओ पणुवीसं जोयणमृसिओ, सेसं जहा स्रियामस्स जाव आगओ, नदृविही तहेव पिंडगओ ॥ ८६ ॥ भन्ते ! ति भगवं गोयमे समर्णं मगवं० पुच्छा । कुडागारसाला । सरीरं अगुपविद्वा । पुब्बमचो । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्या । कोट्टए उज्जाणे । तत्थ णं सावत्थीए० अक्षई नामं गाहावई होत्या, अक्के जाव अपरिभूए। तए णं से अक्षई गाहावई साव-स्थीए नयरीए बहुणं नगरनिगम० जहा आणन्दो ॥ ८० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे णं अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोळसेहिं समणसाहस्सीहिं सहतीसाए अजिमासहस्सेहिं जाव कोहुए समोसढे । परिसा निरगया ॥ ८८ ॥ तए णं से अन्नई गाहावई इमीसे कहाए लढ्डे समाणे हहे जहा

कत्तिओ सेट्टी तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ, घम्मं मोचा निसम्म॰ जं नवरं देवाणुष्पिया ! जेट्टपुत्तं वृद्धम्बे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुष्पियाणं जाव पव्वयामि, जहा गज्जदत्ते तहा पव्वइए जाव गुलबम्भयारी ॥ ८९॥ तए णं से अज़ई अणगारे पामस्म अरहओ तहाह्वाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाइं एकारस अज़ाई अहिज्जड २ ता वहुिंह चउत्य जाव भावेमाणे बहुई वासाई सामण्णपियागं पाउणइ २ ता अद्ध-मासियाए संकेहणाए तीसं भत्ताई अणसणाए छेडता विगिह्यसामण्णे कालमासे कालं किचा चन्दवर्डिमए विमाणे उचवा(य)इयाए सभाए देवसयणिजंसि देवदृम्नतिए चन्दे जोइसिन्दत्ताए उचवशे ॥ ९०॥ तए णं से चन्दे जोइसिन्दे जोइ[ित]सराया अहुणोववशे समाणे पद्मविहाए पज्जतीए पज्ततीमावं गच्छड, तंजहा—आहारपज्जतीए सरिरपज्जतीए इन्दियपज्जतीए मासोसासपज्जतीए भामामणपज्जतीए ॥ ९०॥ चन्दस्म णं भन्ते ! जोइसिन्दस्स जोइमरघो केवइयं कालं ठिई पचता ? गोयमा ! पिल्ओवमं वामन्ययमहस्समञ्जहियं। एवं खलु गोयमा ! चन्दस्स जाव जोइसरघो सा दिव्या देविद्वी०। चन्दे णं भन्ते ! जोइसिन्दे जोइमराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ चइता किंह गच्छिहेइ २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिहिइ ५ । निक्खेवओ ॥ ९२ ॥ पढमं अज्ज्वयणं समस्तं ॥ ३ । १ ॥

जइ णं भन्ते! समणेणं भगवया जाव पुष्फियाणं पढमस्य अजझयणस्स अयमहे पन्नते तोचस्स णं भन्ते! अजझयणस्स पुष्पियाणं समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं के अहे पन्नते? एवं खल्ल जम्मू ' तेणं कालेणं तेणं समणणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसलिए उजाणे। सेणिए राया। समोसरणं। जहा चन्दो तहा सृरोवि आगओ जाव नहिविहें उवदंसिता पिंडगओ। पुञ्चभवपुच्छा। सावत्थी नयरी। युपरहे नामं गाहावई होत्था, अहे जहेव अनई जाव विहरइ। पासो समोसहो, जहा अनई तहेव पव्यइए, तहेव विराहियसामण्णे जाव महाविदेहे वासे सिजिहाहिइ जाव अन्तं करेहिइ। निक्खेवओ॥ ९३॥ विद्यं अज्झयणं समणं॥ ३।२॥ जइ णं मंते! जाव संपत्तेणं उक्खेवओ माणियन्वो। रायगिहे नयरे। गुणसिलए उज्जाणे। सेणिए राया। सामी समोसहे। परिसा निग्गया। तेणं कालेणं तेणं समण्णं युक्के महग्गहें धुक्कविंसए विमाणे युक्केंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहरसीहिं जहेव चन्दो तहेव आगओ, नहविहिं उवदंसित्ता पिंडगओ। भन्ते! ति। कृहागारसाला। पुष्यभवपुच्छा। एवं खल्ल गोयमा! तेणं कालेणं सेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले वामं माहणे परिवसइ, अक्टे जाव

अपरिभए, रिउब्वेय जाव सुपरिनिद्विए । पासे समोसडे । परिसा पञ्जुवासह ॥ ९४ ॥

तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए रुद्धद्वस्स समाणस्स इमे एयाङ्बे अज्झतिथए०-एवं खलु पासे अरहा पुरिसादाणीए पुन्याणुपुटिंव जाव अम्बसालवणे बिहरइ, तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अन्तिए पाउच्भवामि, इमाई च णं एयास्वाई अद्वाई हेर्ज्य जहा पण्णासीप । सोमिलो निग्गओ खण्डियविहूणो जाव एवं वयासी-जता ते भनते ! जबणिष्यं च ते ? पुच्छा । सरिसवया मासा कुलस्या एगे भवं जाब संबुद्धे मानगधममं पडिवजिता पडिगए॥ ९५॥ तए णं पासे णं अरहा असया कयाइ वाणार्सीओ नयरीओ अम्बसालवणाओ उज्जाणाओ पिडनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ । तए णं से सोमिले माहणे अन्नया क्याइ असाहुदंसणेण य अपञ्जुदासणगाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्डमाणेहिं २ सम्मत्तपज्जवेहिं परिहास-माणेहिं २ मिच्छतं च पडिवने ॥ ९६ ॥ तए णं तस्त सोमिलस्म माहणस्स अनया क्याइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारुवे अज्ज-त्थिए जाव समुप्पजित्था-एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अचन्तमाहणकुलप्पसूर्, तर् णं मर् बयाई चिष्णाई, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इङ्कीओ समाणीयाओ, पसुब[वन]धा कया, जन्ना जेट्टा, दक्खिणा दिना, अतिही पूर्या, अग्गी ह्या, जुवा निक्खिता, तं सेयं खल्ज मम इयाणि कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अम्बारामा रोवावित्तए, एवं माउलिङ्गा बिह्ना कविद्वा चित्रा पुष्फारामा रोबाबित्तए, एवं संपेहेड २ ता कहं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए बहिया अम्बारामे य जाव पुष्फारामे य रोवावेइ । तए णं बहवे अम्बारामा य जाव पुष्फारामा य अणुपुन्येणं सार्विन्यज्ञमाणा संगोविज्यमाणा संबद्धिज्ञमाणा क्षारामा जाया किण्हा किण्होभासा जाव रम्मा महामेहनिकरम्बभया पत्तिया पुष्पिया फल्रिया इरियगरेरिजमाणसिरीया अईव २ उवसोमेमाणा २ चिट्ठन्ति ॥ ९७ ॥ तए णं तस्स मोमिलस्स माहणस्स अन्नया क्याइ पुरुवरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्बजाग-रियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्हारियए जाव समुप्पजित्था--एवं बहु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिछे नामं माइणे अचन्तमाइणकुरूप्पस्ए, तए णं मए वयाई चिण्णाई जाव जूबा निविखत्ता, तए वं मए बाणारसीए नयरीए बहिया बहुवे अम्बा-रामा जाब पुष्फारामा य रोवाविया, तं सेवं खल्ल मसं इयाणि कहं जाव जलन्ते सुबहुं लोहकहाहकहुच्छुयं तम्बयं तावसमण्डं घडावेता विरुलं असणं पाणं खाइमं साइमं · · सित्तनाइ · · अपनितेता तं मितनाइनियग ० विज्ञक्षेणं असण ० संमाणेता तस्सेव मित्त० जाव जेट्टपुत्तं बुद्धम्बे ठवेता तं मित्तनाइ जाव आपुच्छिता सुबहुं लोहकटाहकदुच्छुयं तम्बयं तावसभण्डमं गष्टाय जे इसे गङ्गाकुला वाणपत्था

तावसा भवन्ति, तंजहा-होतिया पोत्तिया कोत्तिया जन्नई सबूई थालई हुम्बउहा दन्तुक्वलिया उम्मजना संमजना निमजना संपक्कालमा दक्किणकूला उत्तरकूला संखधमा कूळधमा मियलुद्धया हत्थितावमा उद्दण्डा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो विलवासिणो जलवासिणो रुनखमृलिया अम्बुमिक्सणो वाउभिक्सणो सेवालभिक्सणो नूलाहारा कन्दाहारा नयाहारा पत्ताहारा प्रप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिमखिय-कन्दम्लत्यपत्तपुष्कफलाहारा जलाभिमेयकढिणगायभूया आयावणाहि पञ्चिगतावेहि इङ्गालसोक्षियं कन्द्रसोक्षियं पिव अप्पाणं करैमाणा विहरन्ति, तत्थ णं जे ते दिसा-पोक्सिया तावसा तेसि अन्तिए दिसापोक्सियताए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे इसं एयारूवं अभिग्गद्दं अभिगिण्हिस्सामि-कप्पइ मे जावजीयाए छद्वंछद्वेणं अणिक्खिनेणं दिसानकवारुणं नवोक्रम्मेणं उन्नं वाहाओ पगिज्ञिय २ सराभिमहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरिक्तर्गात्तकह एवं संपेहेइ २ ता कहं जाव जलन्ते सुबहुं लोह॰ जाव दिसापोक्नित्रयतावसत्ताए पव्चइए । पव्चइए वि य णं समाणे इमें एयास्त्रं अभिरगहं जाव अभिगिष्टिता पहमें छद्रक्खमणं उवसंपिकताणं विहरह ॥ ९८ ॥ तए णं सोमिले माहणे रिसी पटमछद्वन्खमणपारणंसि आयावणभूमीए पन्नोरुह्इ २ ता वागलवत्थिनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ २ ता किट्ठिणसंकाइयं गेण्हर २ ता पुरत्यिमं दिसिं पुक्खेर २ ता पुरत्थिमाए दिसाए मोमे महाराया पत्थाणे परिथयं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसि, जाणि य तत्थ कन्दाणि य मूलाणि य तबाणि य पत्ताणि य पुष्पाणि य फलाणि य बीयाणि व हरियाणि य ताणि अणुजाणउत्तिकह पुरत्थिमं दिसं पसरड २ ता जाणि य तत्थ कन्दाणि य जाव हरियाणि य ताइँ गेण्डइ २ ता किहिणसंकाइयगं भरेइ २ ता दब्से य कसे य पत्तामोर्ड च समिहाकद्वाणि य गेण्हइ २ सा जेणेव सए उद्धए तेणेव उवागचळह २ सा किढिणसंकाइयगं ठवेइ २ ता वेइं व्हेइ २ ता उवलेवणसंमज्जणं करेड् २ ता दब्सकलसहत्यगए जेणेव गङ्गा महाणई तेणेव स्वागस्छइ २ ता गङ्गं महाणई ओणा-हृद्द २ ता जलमञ्जर्ण करेड् २ ता जलकिई करेड् २ ता जलाभिसेयं करेड् २ ता आयन्ते चोक्के परमसुद्दभूए देवपिउक्सकज्ञे दब्सकलसहत्थगए गङ्गाओ महाणईको पन्नतरह २ ता जेणेव सए उडए तेणेव उवायच्छह २ ता दब्सेहि य कुसेहि य वालु-याए य वेहं रएइ २ ता सरयं करेड २ ता अर्णि करेड २ ता सरएणं अर्णि महेड २ ता अग्गि पाडेइ २ ता अग्गि संधुक्खेइ २ ता समिहाकद्वाई पक्सिवइ २ ता अग्गि उजा-छेर २ ता अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तक्षाइं समादहे । तंबहा-सकरवं वक्तं ठाणं, सेख-मण्डं कमण्डले । दण्डदारे तहप्पाणं, अह ताई समादहे ॥ १ ॥ महुणा य घएण य तन्द्र-

लेहि य अगिंग हणइ, चहुं साहेड २ ता बलिवइस्सदेवं करेड २ ता अतिहिपूर्य करेड २ ता तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेह ॥ ९९ ॥ तए णं से सोमिले माहणारेसी दोचंसि छद्रक्खमणपारणगंसि तं चेव सन्वं भाषियन्वं जाव आहारं आहारेइ, नवरं इमं नाणतं—दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खर सोमिलं माहणरिमिं, जाणि य तत्थ कन्दाणि य जाव अणुजाणउत्तिकटु दाहिणं दिसिं पम-रह । एवं पन्नत्थिमेणं वरुणे महाराया जाव पन्नत्थिमं दिसिं पनरह । उत्तरेणं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरह । प्रव्वदिसागमेणं चत्तारि विदिसाओ भाणिय-व्वाओ जाव आहारं आहारेइ ॥ १०० ॥ तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अनया क्याइ पुन्बरमावरत्तकालसमयंसि अणिबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयास्वे अज्झ-त्थिए जाव समुप्पजित्या-एवं खळु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माह-णरिसी अञ्चन्तमाहणपुरूप्पसूर, तर णं भर वयाई चिण्णाई जाव जुवा निक्तिना. तए णं मए वाणारसीए जाव पुष्फारामा य जाव रोबिया, तए णं मए छुबहुं लोह० जाब घडावेता जाव जेद्रपुनं कुढुंबे ठवेता जाव जेद्रपुत्तं आपुच्छिता सुबहुं लोह० जाब गहाय मुण्डे जाब पव्बहए, पव्यहए वि य णं समाणे छहंछहेणं जाब विहरामि, तं सेयं खल ममं इयाणि कहं जाव जलन्ते वहवे तावसे दिद्वाभट्टे य पुक्वसंगहए य परियायसंगइए य आपुच्छिता आसमसंवियाणि य बहुई सत्तसयाई अणुमाणहत्ता वागलवत्यनियत्यस्य किंढिणसंकाइयगहियसभण्डोवगरणस्य कट्टमुद्दाए मुद्दं बन्धिता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाणं पत्थावेत्तए; एवं संपेहेइ २ ता कहं जाव जलन्ते बहुवे तावसे य दिद्वाभट्टे य पुम्बसंगइए य तं चेव जाव स्टूमुहाए सुहं यन्थइ २ ता अयमेयारूवं अभिगाहं अभिगिण्हइ-जत्येव णं अहं जलंसि वा एवं थलंसि वा दुग्गंसि वा निष्कंसि वा पव्ययंसि वा विसमंसि वा गङ्गाए वा दरीए वा पक्रवालिज वा पविष्ठिज वा. नो खळ मे कपड प्रमृद्धितएतिकह अयमेगास्वं अभिगाहं अभिगिण्हइ २ ता उत्तराए दिसाए उत्तरामिसहपत्थाणं पत्थिए से सोमिके माहणरिसी पृथ्वावरण्डकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए. असोगवरपायवस्स अहे किल्विणसंकाइयं ठवेइ २ ता वेइं वहुद २ ता उवछेवण-संमज्जणं करेड २ ता दब्भकलसहत्वगए जेणेव गङ्गा महाणई जहा सिनो जाव गङ्गाओं महाणईओ प्रवृत्तरह २ ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ २ ता दन्मेहि य कुसेहि य बाह्ययाए य बेई रएइ २ ता सर्ग करेइ २ ता जाव बिल-वइत्सदेवं करेइ २ ता बह्मसुद्दाए सहं बन्धइ २ ता त्रसिणीए संचिद्वइ ॥ १०१ ॥ तए मं तस्य सोमिलमाष्ट्रणरिसिस्स पुरुवरत्तावरत्तकालसमयंशि एगे देवे अन्तिवं

पाउच्मूए । तए णं से देवे सोमिलमाहणं एवं वयासी-हं भो सोमिलमाहणा ! पव्यवस्या ! दुप्पव्यवस्यं ते । तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोश्वंपि तश्वंपि एय-महं नो आढाइ नो परिजाणइ जाव तुसिणीए संचिद्धड । तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे जामेव दिसि पाउच्मए नामेव दिसि पडिगए। तए णं से सोमिले कहं जाव जलन्ते वागलवत्थिनियत्थे किहिणसंकाइयं गहाय गहियभण्डोवगरणे बहुमुहाए मुद्दं बन्धः २ ता उत्तराभिमुद्दे संपत्थिए ॥ १०२ ॥ तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पुन्दावरण्डकालसमर्यास जेणेव सत्तवण्णे तेणेव उवागए, सनवण्णस्स अहे किढिणसंकाइयं ठवंइ २ ता वेइं वहूंड जहा असोग-वरपायवे जाव अग्गि हुणह, कट्टमुद्दाए मुद्दं बन्धइ, तुसिणीए संचिट्टइ । तए णं तस्य मोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउच्यए । तए णं से देवे अन्तरिक्खपहिवक्षे जहा असोगवरपायवे जाव पाँडगए । तए णं से सोमिले कहं जाव जलन्ते वागलवत्यनियत्ये किटिणसंकाइयं गेण्हड २ ता कट्टसुहाए सुहं बन्यड २ ता उत्तरदिसाए उनराभिसुहे संपतिथए ॥ १०३ ॥ तए णं से सोमिले तइयदिवसम्मि पुन्वा(पच्छा)वरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायत्रे तेणेव उवागच्छइ २ ता असोगवरपायवस्स अहे किंडिणसंकाइयं ठवेइ २ ता वेहं वहूह जाव गङ्गं महाणई पशुत्तरह २ ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ २ ता असोगवरपायवस्स अहे किविम्मसंकाइयं ठवेड २ ता वेडं रएड २ ता कहमहाए मुद्दं वन्धइ २ ता तुसिणीए संचिद्धइ । तए णं तस्स सोमिलस्स पुन्वरत्तावरत्तकाळे एगे देवे अन्तियं पाउच्मवित्था, तं चेव भणइ जाव पडिगए। तए णं से सोमिले जाव जलन्ते वागलवत्थनियस्थे किडिणसंकाइयं जाव कद्वसद्दाए सहं बन्धइ २ सा उत्तराए दिसाए उत्तराभिसहे संपत्थिए ॥ १०४ ॥ तए णं से सोमिले चउत्थ-दिवसपुन्वावरण्हकालसमयंति जेणेव वडपायवे तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किटिण॰ ठवेइ २ ता वेइं वहेट, उवलेवणसंमज्जणं करेड जाव क्ट्रमहाए मुहं बन्धड. द्वसिणीए संचिद्वह । तए णं तस्स सोमिलस्स पुन्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउच्भवित्था, तं चेव भणइ जाब पहिनए । तए णं से सोमिले जाव जलन्ते वाग-ल्बत्थनियत्थे किरिणसंकाइयं जाव कद्वमुद्दाए मुद्दं बन्धइ ... उत्तराए० उत्तरामिमुहे संपत्थिए ॥ १०५ ॥ तए णं से सोमिले पश्चमदिवसम्मि प्रव्यावरण्डकालसमयंसि जेणेव उम्बरपायने तेणेन जनागच्छह, उम्बरपायनस्स अहे किढिणसंकाइयं ठनेड. वेइं वहुइ जाव कट्टमुद्दाए सुद्दं बन्धइ जाव तुसिणीए संचिद्ध । तए णं तस्स सोमिलमाइणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे जाव एवं वयावी-हं भी सोमिला!

पव्यक्या! दुप्पव्यक्यं ते, पढमं भणइ नहेव तुसिणीए संचिद्वह । देवो दोसंपि तर्चिप वयइ-सोमिला ! पञ्चत्रया ! दुप्पञ्चड्यं ते । तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोचंपि तश्चंपि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी-कहं णं देवाणुप्पिया! मस दुप्प-ब्बड्यं ? । तुए णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अन्तियं पञ्चाणुम्बए सनसिक्खावए दुबालसविहे सावयधम्मे पडिवन्ने, तए णं तव अन्नया क्याइ असाहृदंसणेण । पृथ्वरत्तावरत्तकाल-समर्थांन कुदुम्बजागरियं जाव पुरुवचिन्तियं देवी उचारेइ जाव जेणेव असी-गवरपायचे तेणेव उवागच्छित २ ता किहिणसंकाइयं जाव तुसिणीए संचिद्वसि, तए णं पुञ्चरत्तावरनकाले तब अन्तियं पाउच्भवामि, हं भो सोमिला ! पृञ्चहया ! दुप्पञ्चहयं तं, तह चेव देवो नियवयणं भणइ जाद पञ्चमदिवसम्मि पुग्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव उम्बरपायवे तेणेव उचागए किहिणसंकाइयं ठवेसि, वेइं बहुसि, उबलेवणं • करेसि २ ता बहुमुद्दाए मुहं बन्धेसि २ ता तुरिमणीए संचिद्वसि, तं एवं खल देवा-शुप्पिया ! तब दुप्पम्बङ्ग्यं ॥ १०६ ॥ तए णं से मोमिले तं देवं एवं वयासी-कहं णं देवाणुण्यया ! मम सुपव्वड्यं ? । तए णं से देवे सोमिलं एवं वयासी—जड णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणि पुञ्चपिडवन्नाइं पञ्च अणुञ्चयाइं॰ सयमेव उवसंपज्जिताणं बिह-रसि तो णं तुज्झ इयाणि सुपन्वइयं भवेजा । तए णं से देवे सोमिलं वन्दइ नमं-सह वं॰ २ ता जामेब दिसिं पाउच्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तए णं सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एवं अने समाणे पुन्वपहिवन्नाइं पञ्च अणुव्वयाइं० सयमेव उषसंपजिताणं विहरइ ॥ १०७ ॥ तए णं से सोमिले बहुहिं चउत्यलह्रद्वम जाव मासद्भाससमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुई वासाइं समणो-बासगपरियागं पाउषह २ ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेड् २ ता तीसं भत्ताई अणसणाए छेएइ २ ता तस्स ठाणस्स अणाखोइयपिडकन्ते विराहियसम्मत्ते कालमासं कालं किचा सुक्रवर्डिसए विमाणे उवबायसमाए देवसयणिजीस जाव ओगाहणाए सुक्रमहरगहत्ताए उनवने ॥ १०८ ॥ तए णं से सुक्के महरगहे अहुणीव-वजे समाणे जाव भासामणपजनीए । एवं खलु गोयमा ! सुक्केणं । सः दिव्वा जाव अभिसमसागया । एगं पलिओवमं ठिई । सुक्के णं भन्ते ! महम्गहे तओ देवलोगाओ आउक्सएणं० कर्हि गच्छिहिइ २ ? गोयमा ! महाविडेहे वासे सिज्झि-हिइ ५। तिक्खेवओ ॥ १०९ ॥ तह्यं अज्ञायणं समसं ॥ ३ । ३ ॥

जह णं भंते ! उक्खेषको । एवं खद्ध जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायिष्टि नामं नयरे । गुणसिलए उजाणे । सेणिए राया । सामी समोसढे । परिसा निमाया

॥ १९० ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए मुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहामणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चढिहें महत्तरियाहि जहां सुरियामे जाव भुजमाणी विहरइ, इमं च णं केवलकर्पं जम्ब्रहीवं दीवं विउल्लेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ २ ता समणं भगवं महा-वीरं जहा सुरियाभी जाय नमंसिता सीहासणवरंसि पुरत्याभिमुहा संनिमण्णा । आभि-ओगा जहा सरियाभस्स. ससरा घण्टा, आभिओगियं देवं सहावेड, जाणांवेमाणं जोयणसहस्सवित्यण्णं जाणविमाणवण्णओ जाव उत्तरिक्षेणं निजाणमगोणं जोयणसाहस्मिएहिं विकाहेहिं आगया जहा स्रियामे । धम्मऋहा सम्मत्ता । तए णं सा बहुप्रतिया देवी दाहिणं भुयं पसारेड देवकुमाराणं अहुमयं, देवकुमारियाण य वामाओं भुयाओं अद्भागं, तयाणन्तरं च णं बहवे दारगा य दारियाओं य डिम्भए य डिम्भियाओ य विउच्वइ, नद्दविहिं जहा स्रियाभो उषदंसिता पिंडगया ॥ १९९ ॥ भनते ! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ । कुडागारसाला । बहुपुत्तियाए णं भन्ते ! देवीए सा दिव्या दिव्या दिव्या पुच्छा जाव अभिसमजागया ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, अम्बनालवणे उजाणे । तत्य णं वाणारसीए नयरीए महे नामं सत्थवाहे होत्या, अहे जाव अपरिभए। तस्स णं भहस्स सुभहा नामं भारिया सुउमाल॰ बञ्झा अवियाउरी जाणुको-प्परमाया वावि होत्या ॥ ११२ ॥ तए णं तीसे सुभहाए सत्थवाहीए अन्नया कयाई पुरुवरत्तावरत्तकाले कुद्धम्बजागरियं जागरमाणीए इमेयास्वे जाव संकप्पे समुप्प-जित्था--एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धि विजलाई भोगभोगाई भुजमाणी बिहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयाया, तं धवाओ णं ताओ अम्म-याओ जाव मुलद्धे णं तासि अम्मयाणं मणुयजम्मजीवियफले, जामि मन्ने नियक्तिक संभूयगाई वणदुद्वलुद्धगाई महुरसमुह्णावगाणि मम्मण(मंजुल)प्पर्जाम्पयाणि वणमृल-क्रक्खदेसभागं अभिसरमाणगाणि पण्हयन्ति, पुणो य कोमलक्रमलोवमेहिं हत्येहिं गिण्हिकणं उच्छङ्गनिवेसियाणि देन्ति, समुह्लावए सुमहुरे पुणो पुणो सम्मणप्रभाषिए. अहं णं अधना अपुण्णा अक्यपुण्णा एतो एगमवि न पता, ओह्य० जाव क्षियाह ॥ ११३ ॥ तेणं कारेणं २ सुव्ययाओ णं अजाओ इरियासमियाओ भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाणभण्डमत्तनिक्खेवणासमियाओ उचारपासवणखेलजङ्गसिंघाण-पारिद्वावणासमियाओ मणगुत्तीओ क्यगुत्तीओ क्यगुत्तीओ गुत्तिन्दियाओ गुत्तबन्म-यारिणीओ बहस्युयाओ बहुपरिवाराओ पुट्याणुप्टिंव चरमाणीओ गामाणुगामं दृहज-माणीओ जेणेव बाणारसी नयरी तेणेब उबागया उबागच्छिता अहापहिस्त्रं उसाई

ओगिण्हिता संजमेणं तवसा० विहरन्ति ॥ ११४ ॥ तए णं तासि मुख्ययाणं अजाणं एगे संघाडए वाणारसीनयरीए उचनीयमिज्जमाई कुलाई घरममुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडमाणे महस्य सत्थवाहस्य गिहं अणुपविद्वे । तए णं सुमहा सत्थवाही ताओ अजाओ एजमाणीओ पासइ २ ता हट्ट० खिप्पामेव आमणाओ अब्स-हेड २ ना सत्तद्वपयाई अणुगच्छइ २ ता वन्दड नमंगइ वं० २ ता विरुष्ठेणं असणपाणलाइमसाइमेणं पडिलाभेता एवं वयासी—एवं खलु अहं अजाओ ! भहेणं सन्धवाहेणं सिद्धं विजलाई भोगभोगाई भुजमाणी विहरामि, नो चेत्र णं अहं दारगं वा दारियं वा प्यायामि, तं धन्नाओं णं ताओं अम्मयाओं जाव एत्तो एगमिव न पता, तं तुन्मे अजाओ ! बहुणायाओ यहुपढियाओ वहूणि गामागरनगर जाब संनिवेसाई आहिण्डह, बहुणं राईमरतलवर जाव सत्यवाहप्पभिईणं गिहाई अणु-पविसह, अत्थि से केंद्र किहीचे विज्ञापक्षोए वा मन्तप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा बत्थिवम्मं वा ओसहे वा मेसजे वा उवलडे, जेणं शहं दारगं वा दारियं वा पयाएजा ! ॥ ११५ ॥ तए णं ताओ अजाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुष्पिए ! समणीओ निस्मन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुन्तवस्भया-रिणीओ, नो खळ कप्पइ अम्हं एयनहं कण्णेहिनि निसामेत्तए किमक पुण उदिसित्तए वा समायरित्तए वा, अम्हे णं देवाणुष्यिए! नवरं तव विचित्तं केवलिपन्नतं धम्मं परिकहेमो ॥ १९६ ॥ तए णं सा ग्रुमहा सत्थवाही तासि अजाणं अन्तिए धम्मं सोचा निसम्म हद्वतद्वा ताओ अजाओ तिक्खुतो वन्दड नमंसइ वं० २ ता एवं वयारी-- तहहामि णं अजाओ ! निम्मन्यं पावयणं, पत्तियामि णं रोएमि णं अजाओ ! निरगन्यं पावयणं, एवमेयं तहमेयं अवितहमेयं जाव सावगधम्मं पहिवज्जए. अहासहं देवाणुप्पए! मा पडिबन्धं करेह, तए णं सा समहा सत्थवाही तासि अजाणं अन्तिए जाव परिवज्जइ २ ता ताओ अज्जाओ वन्दइ नमंसङ वं० २ ता पिडिविस बाइ । तए णं सा सुमहा सत्यवाही समणीवासिया जाया जाव विहरह ॥ ११७ ॥ तए णं तीसे सुभद्दाए समणीवातियाए अनया कयाइ पुट्यरतावरता-कालसमर्यांस कुद्धम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयारुवे अज्झित्यए जाव समुप्प जित्था-- एवं खळु अहं भद्देणं सत्यवाहुणं विजलाई भोगभोगाई जाय बिहरामि, नो चेव णं अहं दारां वा... तं सेयं खद्ध ममं कहं जाय जलन्ते भइस्स आपुच्छिता सुब्वयाणं अजाणं अनितए अजा भवित्ता आगाराओ जाव पव्वइत्तए, एवं संपेहेड २ ता कक्के ... जेणेव मोई सत्यवाहे तेणेव उवागया करयल जाव एवं वयासी-एवं खल अहं देवाणुप्पिया! तुन्भेहिं सदि बहुइं वासाइं विज्ञाई

भोगभोगाइं जाव विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयायामि, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! नुन्मेहिं अन्मणुनाया समाणी सुव्वयाणं अजाणं जाव पव्यक्तए ॥ ११८ ॥ तए णं से भंह सत्थवाहे मुभहं सत्थवाहि एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पए! इयाणि मुण्डा जाव पव्ययाहि, भुजाहि ताव देवाणुप्पए! मए सर्दि विटलाई भोगभागाई, तओ पच्छा मुत्तभोई सुव्वयाणं अजाणं जाव पव्वयाहि ! तए णं सुभद्द। सत्थवाही भद्दस्य ० एयमह्नं नो ० परियाणइ । दोश्रंपि नश्रंपि नुभद्दा सत्थवाही भद्दं सत्थवाहं एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पया ! तुटमेहिं अञ्भणु-न्नाया समाणी जाव पञ्चइत्तए । तए णं से भद्दे सत्थवाहे जाहे नो संचाएड वहूई आघवणाहि य एवं पन्नवणाहि य समवणाहि य विश्ववणाहि य आघवित्तए वा जाव विन्नवित्तए वा ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमन्नित्था ॥ ११९ ॥ तए णं से भद्दे सत्यवाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेड, मित्तनाइ० ... तओ पच्छ। मीयण-वेलाए जाव मित्तनाइ…सकारेइ संमाणेइ, सुभद्दं सत्थवार्हि ण्हायं सव्वालंकारविभू-सियं पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहेइ । तओ सा सुभद्दा सत्थवाही मित्तनाड जाव संबन्धिसंपरिवृडा सन्त्रिङ्कीए जाव रवेणं वाणारसीनयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव मुठ्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ २ ना पुरिससहस्सवाहिणि सीयं ठवेइ, समहं सत्थवाहिं सीयाओ पचोरहेइ ॥ १२० ॥ तए णं महे सत्यवाहे युमहं सत्थवाहिं पुरओ कार्ड जेणेव सुख्यमा अजा तेणेव उवागच्छइ २ ता सुख्यमाओ अजाओ बन्दइ नमंसड़ वं॰ २ ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मुभद्दा सत्थवाही मम भारिया इद्वा करता जाव मा णं वाइया पित्तिया सिम्भिया संनि-वाइया विविहा रोगायञ्चा फुसन्तु, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभडव्यिग्गा भीया जम्म(ण)मरणाणं देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा भवित्ता जाव पञ्चयाइ, तं एयं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणीभिक्खं दलयामि, पडिच्छन्त णं देवाणुप्पिया ! सीसिणी-मिक्खं । अहासहं देवाणुप्पिया । मा पढिबन्धं करेह ॥ १२१ ॥ तए णं सा सुभहा सत्थवाही सञ्जयाहि अजाहि एवं वृत्ता समाणी हृद्द । सयमेष आभरणमहालंकारं ओमुयइ २ ता सयमेव पद्ममुद्धियं लोयं करेइ २ ता जेणेव सुख्वयाओ अजाओ तेणेव उनागच्छइ २ ता मुन्वयाओ अजाओ तिक्खतो आयाहिणपयाहिणेणं बन्दइ नर्मसङ् वं० २ ता एवं वयासी-आलिते णं भन्ते ... जहा देवाणन्दा तहा पव्वस्या जाव अजा जाया जाव गुत्तबम्भयारिणी ॥ १२२ ॥ तए णं सा समद्दा अजा असया क्याइ बहुजणस्स चेडरूवे संगुच्छिया जाव अज्ह्रोक्वला अञ्महणं च उव्बद्दणं च फानुबपाणं च अलतगं च कहुणाणि य अक्षणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेळणगाणि

य खजलगाणि य खीरं च पुष्फाणि य गवेसइ गवेसिता बहुजणस्स दारए बा दारिया वा कुमारे य कुमारियाओं य डिम्मए य डिम्मियाओं य अप्पेगइयाओं अन्महेह. अप्पेगइयाओ उन्बहेद, एवं फासुयपाणएणं ण्हावेद, अप्पेगइयाणं पाए रयइ,० ओद्धे रयइ,० अच्छीणि अजेइ,० उसुए करेइ,० तिलए करेट, अप्पेगइयाओ दिगिंदलए करेइ, अप्पेगइयाणं पन्तियाओं करेइ, अप्पेगगाई क्रिजाई करेड, अप्पेगइया बण्णएणं समालभइ,० चुण्णएणं समालभइ, अप्पेगइयाणं खेळ्लगाइं दलयइ,० खजलगाई दलयइ, अप्पेगइयाओ खीरभोयणं भुजावेइ, अप्पेगइयाणं पुष्फाइं ओमुयइ, अप्पे-गइयाओ पाएसु ठवेइ, जंघासु करेइ, एवं ऊरुसु उच्छन्ने कडीए पिट्रे उरसि खन्धे सीसे य करयलपुडेणं गहाय हलउद्रेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ प्रतिपद्मासं च ध्यपिवासं च नत्त्रयपिवासं च निर्मापिवासं च पचणुभवमाणी विहर् ॥ १२३ ॥ तए णं ताओ सुन्त्रयाओ अजाओ सुभद्दं अजं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पए ! समणीओ निरगन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवस्भयारिणीओ, नो खढ़ अस्त्रं कप्पइ जातककम्मं करेनए, तुमं च णं देवाणुपिए ! बहुजणस्स चेडरुवेसु मुच्छिया जाव अज्ञोववना अञ्मक्षणं जाव नित्तिपिवासं वा पचणुभवमाणी विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पाय[प]च्छितं परिवजाहि ॥ १२४ ॥ तए णं सा सुभद्दा अजा सुव्ययाणं अजाणं एयमद्वं नो आढाइ नो परिजाणड अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरह । तए णं ताओ समणीओ निम्मन्थीओ ग्रमहं अजं हीछेन्ति निन्दन्ति खिसन्ति गरहन्ति अभिक्खणं २ एयमद्रं निवारेन्ति ॥ १२५ ॥ तए णं ती[ए]से सुभद्दाए अजाए समणीहिं निमान्थीहिं हीलिजमाणीए जाव अभिनन्तणं २ एयमद्रं निवारिजमाणीए अयमेयास्वे अज्यात्थिए जाव सम-प्यक्रित्या-जया णं अहं अगारवासं वसामि तया णं अहं अप्यवसा, जप्यभिडं च णं अहं मुण्डा भवित्ता भागाराओ अणगारियं पव्यडया तप्पिमंड च णं अहं परवसा. पुर्वित च समणीओ निग्गरंथीओ आहेन्ति परिजाणेन्ति इयाणि नो आहाएन्ति नो परिजाणन्ति. तं सेयं खळ मे कहं जाव जलन्ते सुव्वमाणं अजाणं अन्तियाओ पिंडिनिक्खमिता पाडिएकं उबस्सयं उवसंपिजाताणं विहरितए, एवं संपेहेर २ ता कहं जाब अलन्ते सुम्वयाणं अजाणं अन्तियाओ पहिनिक्खमह २ ता पाडिएकं उवस्सर्य उवसंपिकताणं विहरइ। तए णं सा सुभहा अजा अजाहिं अणोहिंटया अणि-वारिया सच्छन्दमई बहुजणस्स चेडरुवेसु मुच्छिया जाव अञ्मन्नणं च जाव निश-पिवासं च पचणुमवमाणी विहर्इ ॥ १२६ ॥ तए णं सा सुमद्दा पासत्था पासत्थाविहा-रिणी एवं ओसचा ओसमबिहारिणी क्रसीला क्रसीलविहारिणी संसत्ता संसत्तविहारिणी

अहाछन्दा अहाछन्दविहारिणी बहुई वासाई सामण्णपरियागं पाउणइ २ ता अद्यमान सियाए संखेहणाए अत्ताणं ...तीसं भत्ताडं अणसणाए छेड़ता तस्स ठाणस्स अणा-लोइयर्पाडकन्ता कालमासे कालं किया सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसमाए देवसयणिर्ज्ञांस देवद्सन्तरिया अङ्गलस्य असंखेजभागमेत्ताए ओगाहणाए बहुपुत्तिय-देविताए उववना ॥ १२७ ॥ तए णं सा बहुप्रतिया देवी अहुणोववन्नमेता समाणी पश्चविद्दाए पजन्तीए जाय भागामणपजनीए, एवं खलु गोयमा ! बहुपुनियाए देवीए सा दिव्या देविश्वी जाव अभियमशागया॥ १२८॥ से केणद्वेणं सन्ते! एवं वृच्छ-बहुपत्तिया देवी २ ? गोयमा ! बहुपुत्तिया णं देवी जाहे जाहे सक्स्स देविन्दस्स देवरन्नो उवत्थाणियणं करेइ ताहे २ बहुवे दारए य दारियाओ य डिम्भए य डिम्भियाओ य विजव्बड २ ना जंगेव सक्के देविन्दे देवराया तेगेव उवागच्छट २ ता सक्तम्स देविन्दस्य देवरन्नो दिव्यं देविहि दिव्यं देवजुई दिव्यं देवाणुभावं उपदंसेइ, से तेणहेणं गोयना ! एवं वृध्य-बहुपृत्तिया देवी २।बहुपृत्तियाए णं भन्ते ! देवीए केवडयं कार्छ ठिई पत्रता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाई ठिई पत्रता । बहुपुत्तिया णं मन्ते ! देवी ताओ देवलोगाओ आउनन्तएणं ठिइन्खएणं भवनखएणं अणन्तरं चयं चडना कहिं गच्छिहिड कहिं उवविज्ञिहिड ? गोयमा ! इहेव जम्बुहीवे दीवे भारहे दासे विञ्ज्ञगिरिपायमुळे विमेलसंनिवेसे माहण्युलंसि दारियनाए पश्चायाहिड ॥ १२९॥ तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एकारसमे दिवसे वीइक्टनं जाव वारसेहिं दिवसेहिं वीउक्दनतेहिं अयमेयारुवं नामधेजं करेन्ति—होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेजं सोमा ॥ ९३० ॥ तए णं सोमा उम्मुक्कबालभावा विजयपरिणयमेता जोव्वणगमणप्पत्ता रवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्टसरीरा जाव भविस्सइ । तए णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालमात्रं विजयपरिणयमेत्रं जोव्यणगमणुष्पत्तं पडिकृतिएणं सुकेणं पडिक्वएणं नियगस्स भाइणेज्यस्स रहुकृडस्स भारियताए दलइस्मइ । सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इद्रा कन्ता जाव भण्डकरण्डगसमाणा तेष्ठकेला इव सुसंगोविया चेलपे(ला)डा इव सुसंपरिग्गहिया रयणकरण्डगो विव ससारिक्स्या ससंगोविया मा णं सीयं जाव विविद्या रोगायङ्का फुसन्द्र ॥ १३१ ॥ तए णं सा सोमा माहणी रहकुडेणं सद्धि विजलाई भागमोगाई भुजमाणी संबच्छरे २ जुयलगं प्यायमाणी सोलमेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे प्यायह । तए णं सा सोमा माहणी तेहिं बहाहें दारगेहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य डिम्भएहि य डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेजाएहि य अप्पेगइएहिं यणिया-एहि य अप्पेगएहिं पीइगपाएहिं अप्पेगइएहिं परंगगएहिं अप्पेगइएहिं परक्रममाणेहिं

अप्पेगर्एहिं पक्सोलणएहिं अप्पेगर्एहिं थणं मरगमाणेहिं अप्पेगरएहिं खीरं मरग-माणेहिं अप्पेगइएहिं खेळणयं मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खज्जगं मग्गमाणेहिं अप्पेगइ-एहिं करं मम्ममाणेहिं पाणियं मम्ममाणेहिं हसमाणेहिं रूसमाणेहिं अक्रोसमाणेहिं अक्कुस्समाणेहिं हणमाणेहिं विप्यठायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोवमाणेहिं कन्दमाणेहिं विलवमाणेहिं कृत्रमाणेहिं उक्कृतमाणेहिं निद्दायमाणेहिं पलंबमाणेहिं दह्माणेहिं दंगमाणेहिं वममाणेहिं छरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीसविभयसुलित्तोवलिता महल-वसणपुचला जाव असुङबीभन्छ। परमङ्ग्गन्धा नो संचाएइ रह्नकृडेणं सार्द्धे विउलाई भोगमोगाइं भुत्रमाणी विद्दरित्तए ॥ १३२ ॥ तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया क्याइ पुरुवरत्तावरत्तकालसमयंनि कुदुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयास्ये जाव समुप्पजित्था-एवं खळु अहं इमेहिं बहुहिं दारगेहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेग-इएहिं उत्ताणसेज्जएहि य जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुजाएहिं दुजाममएहिं हर्यावप्पह्रयमग्गेहिं एगप्पहारपिंडएहिं जेणं मुत्तपुरीमविमयसुलितोविलता जाव परम-दुक्सिगन्धा नो संचाएमि रद्रकृडेणं सद्धि जाव भुजमाणी विहरित्तए, तं धनाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीवियपले जाओ णं वञ्झाओ अवियाउरीओ जाणुकोप्पर-मायाओ सुर्मिसुगन्धगृनिषयाओ विउठाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुजमाणीओ विहरन्ति, अहं णं अधना अपणा अक्यपुण्णा नो संचाएमि रहकुडेणं सर्दि विडलाई जाव विहरित्तए ॥१३३॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अजाओ इरियासमियाओ जाव बहुपरिवाराओ पुरुवाणुपुर्वियः जेणेव विमेले संनिवेसे ... अहापिडिरुवं उग्गहं जाव विहर्गन्त । नए णं तासि सुव्वयाणं अजाणं एगे संघाडए विभेले संनिवेसे उचनीय॰ जाव अडमाणे रहुकूडस्स गिहं अणुपविद्रे । तए णं सा सोमा माहणी ताओ अजाओ एजमाणीओ पासइ २ ता हद्व2 खिप्पामेव आसणाओ अब्सुद्रेड २ ता सत्तद्वपयाई अणुगच्छड़ २ ता बन्दइ नमंसइ वं० २ ता विउल्लेण असण ४ पडिलामेइ २ ता एवं वयासी-एवं खळु अहं अजाओ ! रहकूडेणं सिद्धं विडलाई जाव संबच्छरे २ जुगलं पयामि, सोलसिंह संबच्छरेहिं बत्तीसं दारगढ़वे पयाया, तए णं अहं तेहिं बहाहें दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेजएहिं जाव सुत्तमाणेहिं दुजाएहिं जाव नो संचाएमि "विहरित्तए, तं इच्छामि णं अहं अजाओ ! तुम्हं अन्तिए धम्मं निसामेत्तए । तए णं ताओ अजाओ सोसाए साहणीए विचित्तं फेबलिपन्तं धम्मं परिकहेन्ति ॥ १३४ ॥ तए णं सा सोमा माहणी तासि अजाणं अन्तिए धम्मं सोचा निसम्म हद्र जाव हियया ताओ अजाओ वन्दइ नमंसइ बं॰ २ ता एवं क्यासी-सहहामि णं अजाओ ! ५० सत्ता०

निग्गन्थं पानयणं जाव अब्सद्वेसि णं अजाओ ! निम्मन्थं पानयणं, एवसेयं अजाओ ! जाव से जहेयं तुब्से वयह, जं नवरं अजाओ ! रहुकूडं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्टा जाव पन्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पष्टि-बन्धं ...। तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्ञाओ वन्दइ नमंसद वं॰ २ ता पडिविसजेड ॥ १३५ ॥ तए णं सा सोमा माहणी जेणेव रहकडे तेणेव उचागया करयलः ... एवं वयासी-एवं खलु मए देवाणुप्पिया ! अजाणं अन्तिए धम्मे निसन्ते, से वि य णं धम्मे इच्छिए जाव अभिरुद्धए. तए णं अहं देवाणुप्पिया ! तुन्मेहिं अञ्मणसाया सुब्बयाणं अज्ञाणं जाव पव्यइत्तए ॥ ५३६ ॥ तए णं से रहकृडे सोमं माहणि एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुष्पिए ! इयाणि मुण्डा भविता जाव पव्वयाहि, भुङाहि ताव देवाणुप्पए ! मए मद्भि विजलाई भोगमोगाई, तओ पच्छा भुनमोई <u> सुव्ययाणं अज्ञाणं अन्तिए मुण्डा जाव पव्ययाहि ॥ १३७ ॥ त**ए णं** सा सोमा</u> माहणी प्हःया अप्पमहाचाभरणालंकियमरीरा चेडियाचक्रनालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पहिनिक्खमड २ ता विभेलं संनियेसं मञ्झमञ्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अजाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ २ ता सुव्वयाओ अजाओ वन्दइ नमंसङ् पजवासइ। तए णं ताओ सुन्वयाओ अजाओ सोमाए माहणीए विचिनं केर्बलपन्नतं धम्मं परिकट्टेन्ति जहा जीवा यज्ज्ञन्ति । तए णं ता सोमा माहणी सुव्वश्राणं अजाणं अन्तिए जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्रह २ ता मुख्ययाओ अजाओ बन्डइ नमंसइ वं० २ ता जामेव दिसिं पाउच्याया तामेव दिसिं पाडिगया । तए णं सा मोमा माहणी समणोवासिया जाया अभिगय० जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तए णं ताओ सुक्वयाओ अजाओ अनया कयाह विभेलाओ संनिवेसाओ परिनिक्ख-मन्ति २ ता बहिया जणवयविहारं विहरन्ति ॥ १३८ ॥ तए णं ताओ मुन्त्रयाओ अजाओ अनया क्याइ पुरुषाणुपूर्वि ... जाव बिहर्नित । तए णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धहा समाणी हट्ट० प्हाया तहेव निग्गया जाव वन्दइ नर्मसइ वं०२ ता धम्मं सोना जाव नवरं रहुकूढं आपुच्छामि, तए णं पव्वयामि। अहासुहं ...। तए णं सा सोमा माहणी सुक्वयं अजं वन्दइ नमंसइ वं॰ २ ता सुध्वयाणं अन्तियाओ पिडिनिक्खम३ २ ता जेणेव सए गिहे जेणेव रहकूडे तेणेव उवाग-च्छह २ ता करग्रल॰ तहेव आपुच्छइ जाव पव्यक्ष्मए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबन्धं ...। तए णं से रहकुडे विउलं असणं तहेव जाव पुन्यमंवे धुभद्दा जाव अज्जा जाया इरियासमिया जाव गुत्तबम्भयारिणी ॥ १३९॥ तए णं सा सोमा अजा मुन्ययाणं अजाणं अन्तिए सामाइयमाइयाई एकारस अन्नहं अहिज्जह २ ता बहुहिं छहुद्वमदसमदुवालस जाव भावेमाणी बहूई वासाई सामण्णपरियागं पाउणह २ ता मासियाए उंटेहणाए सिंहुं भत्ताई अणसणाए छेइता आलोइयपिटकन्ता समाहिएता कालमासे कालं किया सक्कस्स देविन्दस्स देवरको सामाणियदेवताए उवविज्ञिहिइ। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दो सागरोवमाइं ठिई पक्तता, तत्थ णं सोमस्सवि देवस्म दो सागरोवमाइं ठिई पक्तता॥ १३९॥ से णं भन्ते! सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएंणं जाव चयं चहता किहं गन्छिहड किहं उवविज्ञिहिइ! गोयमा! महाविदेहे वासे जाव अन्तं काहिइ। निक्लेवओ॥ १४०॥ चलुत्थं अज्ञयणं समसं॥ ३। ४॥

जइ णं भेते ! समणेणं० उक्खेवओ । एवं खुळु जम्दू ! तेणं काटेणं तेणं समएणं रायगिष्ठे नामं नयरे । गुणिस्टए उज्जाणे । सेणिए राया । सामी समीसरिए । परिसा निग्गया ॥ १४१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पुण्णभहे देने सोहम्मे कप्पे पुण्णभहे विमाणे सभाए सहस्माए पुण्णभहंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाह-स्सीहिं जहा सुरियाओ जाव बत्तीसडविहं नद्दविहिं उवदंसित्ता जामेव दिसिं पाउच्भए तामेव दिसि पडिगए। कृडागारसाला। पुन्वभवपुच्छा। एवं खळु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवहया नामं नयरी होत्या, रिद्धः । चन्दो राया । ताराङ्ग्णे उजाणे । तत्थ णं मणिवङ्याए नयरीए पुण्णमहे नामं गाहाबई परिवसह, अंड्रें । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवन्तो जाइ-संपन्ना जाव जीवियासमरणभयविष्यमङ्गा बहस्यया बहपरिवारा प्रव्वाणप्रविव जाव समीयहा । परिमा निरम्या । तए णं से पुण्णभहे गाहावई इमीसे कहाए लद्धें इह- जान जहा पण्णासीय गङ्गदत्ते तहेन निगाच्छइ जान निक्खन्तो जान गुत्त-बम्भयारी ॥ १४२ ॥ तए णं से पुष्णमहे अणगारे भगवन्ताणं अन्तिए सामाइय-माइयाई एकारस अक्ताई अहिजाड २ ता बद्रहिं चउत्थलद्भद्रम जाव भाविता बहुई वासाइं सामण्णपरियागं पाराणः २ ता मासियाए संलेहणाए सिद्धं मताई अणसणाए छेइता आलोइयपिडकन्ते समाहिपते कालमासे कालं किया सोहम्मे कप्पे पुण्णभहे विमाणे उववायसभाए देवसयणिजंसि जाव भासामणपजनौए ॥ १४२ ॥ एवं खल् गोयमा । पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्या देविह्नी जाव अभिसमन्नागया । पुण्णभद्दस्स णं भन्ते ! देवस्स केवड्यं कालं टिई पनता ? गोयमा ! दो सागरोवमाई टिई पन्ता । पुण्णसहे णं भन्ते ! देवे ताओ देवलोयाओ जाय कहिं गच्छिहिइ किंह उवनिजिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे नासे सिज्जिहिइ जान अन्तं काहिइ । निक्सेवओ ॥ १४३ ॥ पंचार्य अज्ञायणं सार्यं ॥ ३ । ५ ॥

जह णं मंते! समणेणं० उक्खेवओ। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायिनेहे नयरे। गुणसिलए उजाणे। सेणिए राया। सामी समोसिए॥ १४४॥ तणं कालेणं तेणं समएणं माणिमहे देवे समाए सहम्माए माणिमहंसि सीहासणंसि चर्टीहं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णमहो तहेव आगमणं, नहविही, पुञ्चभव-पुच्छा। मणिवई नयरी, माणिमहे गाहावई, थेराणं अन्तिए पव्यजा, एकारम अक्षाई अहिज्जह, बहुई वासाई परियाओ, मासिया संलेहणा, सिंहें मत्ताई०, माणिमहे विमाणे उववाओ, दो सागरोबसाई ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खे-वओ॥ १४५॥ **छहं अज्झयणं समर्ता॥ ३। ६॥**

एवं दत्ते ७, सिवे ८, बळे ९, अणाहिए १०, सब्वे जहा पुण्णभद्दे देवे । सब्वेसिं दो सागरोवमाइं ठिई । विमाणा देवसिरमनामा । पुञ्चभवे दत्ते चन्दणानामाए, सिवे मिहिलाए, बळे हत्थिणपुरे नयरे, अणाहिए काकन्दीए । उज्जाणाइं जहा संगह-णीए ॥ १४६ ॥ ३ । १० ॥ पुण्फियाओ समसाओ ॥ तइओ वग्गो समस्तो ॥ ३ ॥



णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहाबीरस्स

सुत्तागमे

_{तत्थ} णं पुप्फचूलियाओ

जड़ णं भन्ते ! समणेणं भगवया "उक्लेक्ओ जाव दस अज्झयणा पन्नता, तंजहा--सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होइ बोद्धव्वा । इलादेवी भुरादेवी रसदेवी गन्थदेवी थ ॥ १ ॥ जह गं भन्ते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवद्गाणं चउत्यस्स वग्गस्स पुप्फचूलियाणं दस अज्ज्ञयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भन्ते ! उक्खेवओ । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए उजाणे, सेणिए राया । मामी समोसढे, परिसा निग्गया । वेणं कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवर्डिसए विमाणे समाए सहस्माए सिरिसि सीहासणांस चर्डाहे सामाणियसाहस्सीहि चर्डाहे महत्तारेयाहि॰ जहा बहुपुत्तिया जाव नदृविहिं उवदंसिता पिंडिगया। नवरं [दार्य]दारियाओ नत्थि। पुव्वभवपुच्छा। एवं खलु गोयमा ! तेणं काळेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए उज्जाणे, जिय-सन् राया । तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणे नामं गाहादई परिवसइ, अहे ० । तस्स णं मुदंसणस्य गाहावदृस्स पिया नामं भारिया होत्था, सोमालः । तस्स णं सुदंसणस्स गाहाबहस्स धूया पियाए गाहाबहणीए अत्तिया भूया नामं दारिया होत्या बु[बु]हुा वुष्टुकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडिज्ञपुयत्थणी वरगपरिविज्ञया यावि होत्था ॥१४७॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणिए वण्णओ सो चेव, समोसरणं । परिसा निम्मया ॥ १४८ ॥ तए णं सा भूबा दारिया इमीसे कहाए लद्द्या समाणी हट्टतद्व॰ जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ ता एवं वयासी-एवं खलु अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुब्वाणुपुर्विव चरमाणे जाव गणपरिवृडे विहर्ड, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुन्मेहिं अन्मणुनाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवन्दिया गमित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा परिवन्धं ः।। १४९ ॥ तए णं सा भूया दारिया ण्हाया अप्पमह्म्याभरणालेकिय-सरीरा चेडीचकवालपरिकिण्णा साम्रो गिहाओ पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव बाहिरिया उबद्वाणसाला तेणेव उवागच्छ६ २ ता धम्मियं जाणप्यवरं दुस्डा । तए णं सा

भूया दारिया निययपरिवारपरिवृदा रायगिर्ह नयरं मज्जंमज्झेणं निम्गच्छ६ २ ता जेणेव गुणसिलए उजाणे तेणेव उवागच्छइ २ ता छताईए तित्ययराइसए पासह २ ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पचोर्घ भिोहइ २ ता चेढीचक्रवालपरिकिण्गा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ २ ता तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ ॥ १५० ॥ तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए महइ० धम्मकहा, धम्मं सोचा निसम्म हद्भ० वन्दइ नमंसइ वं० २ ना एवं वयासी-सद्द्वामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पादयणं जाव अब्भद्रेमि णं भन्ते । निग्गन्थं पावयणं, से जहेर्य नुब्से वयह, जं नवरं भन्ते ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं जाव पव्यक्तए । अहासुई देवाणप्पिए !० ॥ १५१ ॥ तए णं सा भया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्यवरं जाव दुरूहइ २ त्ता जेणेव रायगिष्टे नयरे तेणेव उवागया, रायगिष्टं नयरं मज्झेमज्झेणं जेणेव सए गिष्टे तेणेव उदागया, रहाओ फ्बोरुहिता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया, करवल० जहा जमाली आपुच्छइ। अहा-मुहं देवाणुप्पिए ! ॥ १५२ ॥ तए णं से सुदंगणे गाहावई विउलं असणं ४ उव-क्खडावेड मित्तनाड० आमन्तेइ २ त्ता जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खम-णमाणेला कोडम्बियपुरिसे सहावेइ २ ला एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवहुबेह २ ता जाव पचण्यिणह । तए णं ते जाव पचिष्णिन्त ॥ १५३ ॥ तए णं से सुदंसणे गाहावडे भ्रयं दारियं ण्हायं म • विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेइ २ ता मित्तनाइ • जाव रवेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गुणसिलए उज्जाणे तेणेव उवागए छताईए तित्थयराइसए पासइ २ ता सीयं ठावेइ २ ता भूयं दारियं सीयाओ पचोरहेड ॥ १५४ ॥ तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा प्रिसादाणीए तेणेव उवागया तिक्खतो वन्दन्ति नर्मसन्ति वं॰ २ ता एवं वयासी-एवं खळ देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इहा -, एस णं देवाणुप्पिया! संसारमजन्त्रिया भीया जान देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा जाव पन्त्र[या]यह, तं एयं णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामो, पडिच्छन्त णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्सं । अहायहं देवाणुप्पिया ! ।। १५५ ॥ तए णं सा भया दारिया पासेणं अरह्या ... एवं वुत्ता समाणी हट्ट० उत्तरपुरत्विमं सयमेव आभरणमहालंकारं ओ[उम]मुयइ जहा देवाणन्दा पुष्फचूळाणं अन्तिए जाव गुत्तवम्मयारिणी ॥ १५६॥ तए णं सा भ्या अजा अजया कयाइ सरीरवाओसिया जाया बावि होत्या. अभिक्सणं २ हत्ये धोवह, पाए घोवइ, एवं सीसं धोवइ, मुहं घोवइ, बनगन्तराई

सज वा निसाह्य वा चएइ, ततथ तत्य व य ण पुव्यामव पाणएण अब्भुक्खाइ, तत्थ पच्छा प्रणं वा सेजं वा निसीह्यं वा चेएइ ॥ १५७ ॥ तए णं ताओ पुष्फच्लाओ अजाओ भूयं अजं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निम्मन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुन्तवम्भयारिणीओ, नो खल्ल कप्पइ अम्हं मरीरवाओसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए! सरीरवाओसिया अभिक्खणं २ हत्थे घोवसि जाव निसीहियं चेएसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिए! एयसस ठाणस्म आलोएहित्ति, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडिएकं उवस्सयं उवसंपिजनाणं विहरइ! तए णं मा भूया अजा अणोहित्या अणिवारिया सच्छन्दमई अभिक्खणं २ हत्थे घोवइ जाव चेएड ॥ १५८ ॥ तए णं सा भूया अजा बहूहं चात्यछ्ठ० वहूइं वामाइं सामण्यपरियागं पाउणिता तस्स ठाणस्स अणालोइयपिडकन्ता कालमासे कालं किचा सोहम्मं कप्पे सिरिवर्डिसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिजंसि जाव ओगाहणाए सिरिवेरिवर्ताए उववचा पश्चविहाए पजनीए जाव भासामणपजनीए पजना। एवं खल्ल गोयमा! सिरीए देवीए एसा दिव्हा देविष्ट्वी लद्धा पत्ता। एगं पिछणीवमं ठिई। सिरी णं भन्ते! देवी जाव किंहं गच्छिहिइ०?***महाविदेहे वासे

एवं सेसाणिव नवण्हं भाणियव्वं । सरियनामा विमाणा । सोहम्मे कप्पे । पुव्वभवे नयरउज्जाणियमाईणं अप्पणो य नामाई जहा संगहणीए । सव्वा पासस्स अन्तिए निक्खन्ता । ताओ पुण्यनूलाणं सिस्मिणियाओ सरीरवाओसियाओ सव्वाओ अणन्तरं चरता महाविदेहे वासे सिज्झिहिन्ति ।। १६०॥ ४। १०॥ पुण्यन्तसूर्ण्याओ समत्ताओ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ ४॥

सिजिहाहिइ । निक्खेवओ ॥ १५९ ॥ पढमं अज्झयणं समर्त्त ॥ ४ । १ ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवश्रो णायपुत्तमहावीरस्स

युत्तागमे तत्थ णं

वण्हिद्साओ

जइ णं भन्ते ! उक्खेवओ जाव द्वालम अज्ज्ञयणा पन्नना, नंजहा---निमटं मायणि-बह-बहे पगया जुत्ती दमरहे दहरहे य । महाधण सत्त्रधण दसधण नामे सयधणू य ॥ ९ ॥ जड्र णं भन्ते ! समणेणं जाव द्वालस अज्झयणा पञ्चता, पडमस्त णं भन्ते ! · · : उक्सेवओ । एवं खुळु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था, द्वालसजीयणायामा जाव पश्चक्खं देवलोयभूया पासा-बीया दरिसणिज्ञा अभिरूवा पश्चित्वा ॥ १६१ ॥ तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरियमे दिसीभाए एत्थ णं रेवए नामं पव्वए होत्था, तुङ्गे गयणयलमणु-लिहन्तसिहरे नाणाविहरुक्वगुच्छगुम्मलयावहीपरिगयाभिरामे हंसमियमयुरकोश्वसार-सचक्रवागमयणसालाकोइलकुलोववेए तडकडगवियरओज्झरपवायपन्भारसिंहरपजरे अच्छरगणदेवसंवचारणविज्ञाहरमिहणसंनिचिण्णे निचच्छणए दसारवरवीरपुरिस-तेल्लोकवळवगाणं सोमे सुभए पियदंसणे मुरूवे पासाईए जाव पिडरूवे ॥ १६२ ॥ तस्स णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामन्ते एत्थ णं नन्दणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सक्वोडयपुष्फ॰ जाव दरिमणिजे ॥ १६३ ॥ तत्य णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुंद्वे राया होत्या जाव पसासेमाणे विहरइ । से णं तत्य समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पञ्चण्हं महावीराणं, उगगसेणपामोक्खाणं सील-सण्हं राईसाहस्सीणं, पञ्जूष्णपामोक्खाणं अबुद्धाणं कुमारकोढीणं, सम्बपामोक्खाणं सद्वीए दुइन्तसाहरूसीणं, धीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरमाहरूसीणं, महासेण-पामोक्खाणं क्रपन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाह-स्सीणं, अक्षेसिं च बहुणं राईसर जाव सत्थवाहप्पिभंइणं वेयह्नगिरिसागरमेरागस्स दाहिणद्वभरहस्स आहेवचं जाव विहरइ॥ १६४॥ तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्या, महया जाव रजं पसासेमाणे विहरह । तस्स णं बलदेवस्स रस्रो रेवई नामं देवी होत्था, सोमाल॰ जान निहरह। तए णं सा रेवई देवी असया क्याइ तंसि तारिसगंसि सयणिबंसि जाव सीहं समिणे पासिताणं एवं समिणदंसण-

परिकर्ण, कलाओ जहा महाबलस्म, पन्नामओ दाओ, पनासरायकनगाणं एगदिव-सेणं पाणिग्गहणं ..., नवरं निसढे नामं जाव उप्पि पासाए विहरह ॥ १६५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिद्रनेमी आइगरे ... दम घणुडं वणाओ जाब समोम्परिए । परिसा निरमया ॥ १६६ ॥ तए णं से करहे वासुदेवे इमीसे कहाए छद्धे समाण हहुनुद्वे॰ कोडुस्वियपुरिसं महावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! सभाग मुहम्माए मामुदाणियं मेरि तालेह। तए णं से कोइम्बियपुरिसे जाब पिडसुणिता जेणेव नभाए सुहम्माए मामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छः २ ता सामुदाणियं भेरि मह्या २ सहेणं तालेड ॥ १६७ ॥ तए णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया २ सहेणं तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा ... देवीओ(उण) माणियव्याओ, अन्ने य बहवे राईसर जाव मत्थवाहप्यभिङ्ओ ज्हाया सन्वालंकारविभृतिया जहाविभव-इङ्गीसकारसमुदएणं अप्येगइया हयगया जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खिना जेणेव कण्हे वामुदेवे तेणेव उवागच्छन्ति २ ता करयल० कृष्टं वासुदेवं अएणं विजएणं वद्धावेन्ति । तए णं से कण्हे बासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी-सिप्पामेव भी देवाणुप्पिया! आभिमंकहत्थिरयणं पडिकप्पेह हथगथरहपदर जाव पचप्पिणन्ति । तए णं से कण्हे वासुदेवे सज्जणघरे जाव दुरुहे, अद्वृद्ध सङ्गलमा, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं उद्भव्यमाणेहिं २ समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पिमिईहिं साद्धिं संपरिवृद्धे सिव्विद्वीए जाव रवेणं बारावई नयरि मज्झंमज्झेणं ...सेसं जहा कृणिओ जाव पज्जवासइ ॥ १६८ ॥ तए णं तस्स निसदस्स कुमारस्स उपि पासा-यदरगयस्य तं मह्या जणसहं च ... जहा ,जमाली जाव धम्मं सोचा निसम्म वन्दः नमंसइ वं॰ २ ता एवं वयासी-सदद्दामि णं भन्ते ! निगान्थं पावयणं जहा चित्तो जाव सावगधम्मं पडिवजाइ २ ता पडिगए ॥ १६९ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहुओ अरिद्वनेमिस्स अन्तेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव विहरह । तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं कुमारं पासद २ ता जायसङ्के जाव पजुवासमाणे एवं वयासी-अहो णं भनते! निसढे कुमारे इहे इहरूवे कनते कन्तरूवे. एवं पिए॰ मणुनए॰ भणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे, निसढेणं भनते ! कुमारेणं अयमेयास्या माणुयहसू िकेण्णा लढा किण्णा पत्ता १ पुच्छा जहा स्रियामस्स । एवं खळु वरदत्ता ! तेणं काळेणं तेणं समएणं इहेव जम्बुदीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए नामं नयरे होत्था, रिद्धः । मेहवणी उज्जाणे । तत्थ णं रोहीडए नयरे महच्बले नामं राया, पलमावई नामं देवी, अश्वया क्रयाइ तील तारिसगंसि सयणिजंसि सीहं सुमिणे.... एवं जन्मणं भाणियव्यं जहा महाबलस्स,

नवरं वीरक्षओ नामं बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकलगाणं पाणि जाव उब-गिजमाणे २ पाउसवरिसारत्तसरबहेमनतवसन्तगिम्हपजनते छप्पि एक जहाविभवेणं भंजमाणे २ कालं गालेमाणे इद्रे सह जाव विहरह ॥ १७० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपन्ना जहा केसी, नवरं बहुस्सुया बहुपरिवारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहवण्णे उज्जाणे तेणेव उवागया अहापिडरूनं जाव विहरन्ति । परिसा निरगया ॥ १७१ ॥ तए णं तस्स वीरङ्गयस्स वृत्मारस्य उपि पासायवरगयस्स तुं महया जणसहं ...जहा जमाली निगमओ धम्मं सोचा ...जं नवरं देवाण्पिया ! अम्मापियरो आपुक्छामि जहा जमाली तहेव निक्खन्तो जाद अणगारे जाए जाव गुत्तवस्थारी ॥ १७२ ॥ तए णं से वीरक्रए अणगारे सिद्धत्याणं आयरियाणं अन्तिए भामादयमादयाइं एकारम अक्नाइं अहिजाद २ ता बहाहिं चउत्थ जाव अप्पार्ण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाई पणयालीसवासाई सामण्णपरियागं पाउणिता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झसिता सधीसं भत्तसयं अणसणाए छेडता आलोडयपडिकन्ते समाहिपते कालमासे कालं किया बम्भलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवताए उववने । तत्थ णं अत्येगइयाणं देवाणं दसमागरोवमाइं ठिइं पन्नता ॥ १७३ ॥ से णं वीरङ्गए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्काएणं जाव अणन्तरं चयं चइना इहेव वारवईए नयरीए वलदेवस्स रन्नो रेवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तताए उचनने । तए णं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिजंसि समिणदंसणं जाव उपि पास।यबरगए विहरड । तं एवं खल वरदत्ता ! निसंदेणं कुमा-रेणं अयमेयाम्बा उराला मणुयद्यश्वी लद्धा ३ ॥ १७४ ॥ पभू णं भन्ते ! निसंदे कुमारे देवाणुप्पियाणं अन्तिए जाव पव्यक्तए ? हन्ता ! प्रभू । से एवं मन्ते ! २ इय वरदत्ते अणगारे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरह । तए णं अरहा अरिद्र-नेमी अन्नया कयाइ बारबईओ नयरीओ जाब बहिया जणवयविहारं विहरइ। निसंदे कुमारे समणीवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरह ॥ १७५॥ तए णं से निसढे कुमारे अचया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता जाब दब्भसंचारोवगए विहरइ । तए णं तस्स निसदस्स क्रमारस्स प्रव्वरत्तावरत्त-कालसमयंति घम्मजागरियं जागरमाणस्य इमेयास्ये अज्यत्थिए जाव समुप्प-जित्या-धना णं ते गामागर जाव संनिवंसा जत्य णं अरहा अरिहनेमी विहरह. धना णं ते राईसर जान सत्यवाहप्पभिइओ जे णं अस्डिनेमिं वन्दन्ति नमंसन्ति जाव पञ्जुवासन्ति, जह णं अरहा अरिट्रनेमी पुञ्चाणपूर्वि...नन्दणक्ये विहरेजा तो णं अहं अरहं अरिद्रनेमिं वन्दिजा जाव पञ्जुबासिजा ॥ १७६॥ तर णं अरहा

अरिद्वनेमी निसदस्स कुमारस्स अयमेयास्वमञ्ज्ञत्थियं जाव वियाणिता अद्वारमहि समणसहस्सेहिं जाब नन्दणवणे उजाणे समोमढे। परिसा निसाया। तए णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धद्वे समाणे हट्ट० चाउग्घण्टेणं आसरहेणं नियाए जहा जमाली जाव अम्मापियरो आपुच्छिता पव्यइए अणगारे जाए जाव गुत्तबम्भयारी ॥१७७॥ तए णं से निसढे अणगारे अरहओ अरिङ्केमिस्स तहारूवाणं येराणं अन्तिए सामाइयमाइयाई एकारस अङ्गाइं अहिज्जइ २ ता बहाहिं चउत्थछद्र जाव विचित्तेहिं तवीत्रम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपिंडपुण्णाई नव वासाई सामण्णपरियागं पाउणः २ ता बायालीसं मत्ताई अणसणाए छेएइ, आलोडयपडिकन्तं समाहिपते आणुप्रव्यीए कालगए ॥ १ ५८ ॥ तए णं से वरदत्ते अणगारे निसहं अणगारं कालगरं जाणिता जेणेव अरहा अरिद्वनेमी तेणव उवागच्छइ २ ता जाव एवं वयासी-एवं खळु देवाणु-प्पियाणं अन्तेवासी निसदे नामं अणगारे पगइमहए जाव विणीए, से णं भन्ते ! निसढे अणगारे कालमासं कालं किया कहिं गए कहिं उववन्ने ?॥ १७५ ॥ वरदत्ताइ अरहा अरिट्टनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी-एवं खल वरदत्ता ! मसं अन्ते-वासी निसढे नामं अणगारे पगइमहे जाव विणीए ममं तहास्वाणं थेराणं अन्तिए सामाइयमाइयाई एकारस अङ्गाई अहिजिला बहुपिंडपुण्णाई नव वासाई सामण्णपरि-यागं पाउणिता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेइता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपते कालमासे कालं किया उद्दे वन्दिमस्रियगहगणणक्खतताराध्वाणं सोहर्म्मामाणं जाव असुए तिण्णि य अद्वारसत्तरे गैविजविमाणावाससए वीइवइत्ता मव्वद्वसिद्धविमाणे वेबत्ताए उबवने, तत्य णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नता, तत्य णं निसढस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं टिईं पण्णत्ता ॥ १८० ॥ से णं भन्ते ! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिड्कखएणं अणन्तरं चयं चड्ना कर्हि गच्छिहिड, कर्हि उवनजिहिड ? वरदत्ता ! इहेव जम्बुहींने दीने महाविदेहे वासे उन्नाए नयरे विद्वद्वपिश्वंसे रायकुळे पुत्तनाए फ्वायाहिइ । तए णं से उम्मुक्तवाळ-भावे विषयपरिणयमेते जोव्यणगमणुप्पते तहास्वाणं येराणं अन्तिए केवलबोहिं बुज्झिहिइ २ ता अगाराओ अणगारियं पञ्चजिहिइ । से णं तत्य अणगारे मविस्सइ इरियासमिए जाव गुत्तबम्भयारी । से णं तत्थ वहूहिं वउत्थळहुहुमद्समदुवाळसेहिं मासद्भासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहदं वासाइं सामण्य-परियागं पात्रणिस्सइ २ ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसिहिइ २ ता सिंड्रे भत्ताई अणसणाए छेड्डिइ, जस्सद्वाए कीरइ थेरकप्पभावे जिणकप्पभावे मुण्डभावे अण्डाणए जाव अदन्तवणए अच्छत्तए अणोवाहणए फलहसेजा कहसेजा केसलोए बम्भचेर-

वासे परघरपवेसे पिण्डवाओ लढावलडे उचावया य गामकण्टगा अहियासिजन्ति तमद्वं आराहेड् २ ता चरिमेहिं उस्मासनिस्सासेहिं सिज्झिहिड् बुज्झिहिड् जाव सम्ब-दुक्खाणं अन्तं काहिड् । निक्खेवओ ॥ १८९ ॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥५।१॥

एवं सेसावि एकारस अज्ज्ञयणा नेयव्वा संग्रहणीअणुसारेण अहीणमइरित्तं एकारसमृवि तिवेमि॥ १८२॥ ५। १२॥ वण्हिद्साओ समत्ताओ ॥ पञ्चमो वग्गो समत्तो॥ ५॥ निरयावित्याइसुयक्ववच्यो समत्तो॥ समत्ताणि उवङ्गाणि॥

निरियाविष्याइउवङ्गाणं एगो सुयक्खन्धो, पञ्च वग्गा, पञ्चसु दिवसेमु उद्दि-रस्मिन्त, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पञ्चमवग्गे बारम उद्देसगा ।।

> ॥ निरयावलियाइसत्ताई समत्ताई ॥ तेसिं समत्तीए

बारस उवंगाइं समत्ताइं

॥ सन्वसिन्नोगसंखा २५००० ॥



श्रीसृत्रागमप्रकाञकर्मामितके 'सटम्य'



परिचय-अप समितिक मंत्री भी हा। आपकी जैनधम पर अटल थड़ा है। सम्मान ायक किए विसा सोजन सहां करते । भणने 🕫 वपकी अवस्था व सम्बंद बदाबर बन यावजांव के लिए वार ग किया है। आप सभ् भागराजाक पण भन हे संबंदितम् स्वः-लास लेते हो। आप इस समा आपकारों के लामाप बन्द पर पर नियुक्त है और वर्डी प्रामाणिकताने काय-पराथण होकर नरीब काप्याराकी संवाकर न

मंत्री रामलाल जैन. तहसीलदार, अकुनर इदातिमाल अराजी (कृषिभूमिविभाजन कर्ता) 🖯 🗗

ह । आप प्रकृतिक विनात तथा स्वामाध्य उठक ह । आपमे कौदीवक बान्यत्यता कृटकृट कर मर्ग हुह है । अपकी गृहपर्सीका सममग्व उदेखनाय है । आपकी पुत्री प्रमुवनी वाभिक संस्कारीम समृद्ध है ।

आपके सुपुत जीजुगमंदरांमह M \ मिलटंमें लेश्हीनटक केंचे पटार् नियुक्त है। आप तम २५ वर्षकी भरी जवानीमें इतने सदाचारी है कि मिलट्रिके सब लोग आपको साधु अक्तर बहने लग गए हैं। पिता पुत्र राजकीय आधकारी होते हुए भी बट्टी प्रामाणिकता एवं घमेपरायणतामें कार्य करते है। ऐसे जैनोकी रामाजमें खास जरूरते हैं। वासे परघरपंक्ते पिण्डवाओ लढावलडे उचावया य गामकण्टगा अहियासिजन्ति तमहं आराहेइ २ ता विरमेहिं उत्सासनिस्सासेहिं सिज्जिहिइ बुज्जिहिइ जाव सब्ब-दुक्खाणं अन्तं काहिइ। निक्खेवओ ॥ १८१॥ पढमं अज्ज्ञयणं समसं॥५।१॥

एवं सेसावि एकारस अज्ञायणा नेयव्या संगहणीअणुसारेण अहीणमहिरतं एकारसमुवि त्तिवेमि ॥ १८२ ॥ ५ । १२ ॥ विण्डहस्सायो समत्ताओ ॥ पश्चमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥ निरयाविखयाइसुयक्खन्यो समत्तो ॥ समत्ताण उवक्राण ॥

निरियावलियाइउवङ्गाणं एगो स्थयन्वन्धो, पश्च वग्गा, पश्चस दिवसेस उद्दि-स्सन्नि, तस्य वउस वग्गेस दम दस उद्देमगा, पश्चमवग्गे बारम उद्देमगा ॥

> ।। निरयावलियाइसुत्ताइं समत्ताइं ।। तेसिं समत्तीए

बारस उवंगाइं समत्ताइं

॥ सम्बसिङोगसंखा २५००० ॥



श्रीस्त्रागमप्रकाञकसमिनिक 'मटस्य'



परिचय-अप र्मातिक मंत्री मी हैं। आपकी जैनधमे पर अटल थड़ा है, मामा-यिक किए विना भोजन नहीं करने । आपने ४० वर्षकी अवस्था व सजीते ब्रह्मच्ये बन यावर्जाव के लिए भारण किया है। आप साध मुनिराजीके पुण सक्त हैं, मन्ने दिलसे मेगा-लाम लेते हैं। आप उस समय क्रांपकारों के लामार्थ बहे पद पर् नियक्त हैं और वडी प्रामाणिकताम कार्य-परायण होकर गरीब क्रांपक्षारीकी संवाकरने

मंत्री रामलाल जैन. तहसीखदार. अकृत्वर इश्वतिमाल अरार्ज़ा (कृषिभृमिषिभाजन कर्ना) 🖹 🗎

है । आप प्रकृतिक विनीत तथा म्बाभाविक उदार हैं । आपमे कीर्देविक बान्मन्यता कृटकट कर भरी हुई है । आपकी गृहपत्नीका समभाव उद्येखनीय है । आपकी पुत्री प्रमवती श्रामिक संस्कारोंसे समृद्ध है ।

आपके सुपुत्र श्रीजुगर्भटरसिंह M. A सिन्द्रीमे केष्ट्रिटीनेटके ऊँचे पद्पर् नियुक्त हैं। आप हम २५ वर्षकी भरी जवानीमें इनने मटाचारी हैं कि सिल्द्रीके सब लोग आपको साधु अफ़सर कहने लग गए हैं। पिना पुत्र राजकीय अधिकारी होते हुए भी बड़ी प्रामाणिकता एवं धर्मपरायणनामें कार्य करने हैं। ऐसे जैनोकी समाजमें खास जुरुरत हैं।

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

स्रतागमे चउछेयसुत्ताइं तत्थ णं ववहारो

पहमो उद्देसओ

जे भिक्ख मासियं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोए-माणस्स मासियं, पळिउंचिय आलोएमाणस्य दोमासियं ॥ १ ॥ जे भिक्य दोमासियं परिहारद्वाणं पडिसेवित्ता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं. पिलंचिय आलोएसाणस्य तेमासियं ॥ २ ॥ जे भिक्ख तेमासियं परिहारद्राणं पडिसेविता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं, पलिउंचिय आलोए-माणस्य चाउम्मासियं ॥ ३ ॥ जे भिक्ख चाउम्मासियं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं, पनिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं ॥ ४ ॥ जे मिक्ख पंचमासियं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्य पंचमानियं, पलिउंचिय आलोएमाणस्य छम्मासियं ॥ ५ ॥ तेण परं प्रक्रिडंचिए वा अप्रक्रिडंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ ६ ॥ जे भिक्ख बहुसो वि मासियं परिहारद्वाणं पिडसेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोए-माणस्स मासियं, पिळउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ॥ ७ ॥ जे भिक्ल बहसो वि दोमासियं परिहारद्वाणं पहिसेविना आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं. पिछउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं ॥ ८ ॥ जे भिक्खू बहुसो वि तेमासियं परिडारद्वाणं पडिसेवित्ता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्म तेमा-सियं, पलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं ॥ ९ ॥ जे भिक्ख बहसो वि चाउम्मासियं परिहारद्वाणं पिडसेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं, पलिउंचिय आलोएमाणस्रा पंचमासियं ॥ १० ॥ जे भिक्ख बहुसो वि पंचमासियं परिहारद्वाणं पिडसेविता आस्रोएजा, अपलिउंचिय आस्रोएमाणरस पंचमासियं. प्रिटंचिय वालोएमाणस्स छम्मासियं ॥ ११ ॥ तेण परं प्रिटंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १२ ॥ जे भिक्ख मासियं वा दोमासियं वा तमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा एएसि परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पडिसेवित्ता आलोएजा, अपिछडंचिय आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा नेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा, पिठंचिय आलोए-माणस्म दोमामियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पिलडेचिए वा अपलिडेचिए वा ने चेव छम्मामा ॥ १३ ॥ जे भिक्क वहसो वि मासियं वा वहमो वि दोमासियं वा बहसो वि तेमासियं वा बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहसो वि पंचमासियं वा एएसि परिहारहाणाणं अण्णयरं परिहारहाणं पडिमेविना आलोएजा. अपलिएंचिय आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा, पिछडंचिय आलोएमाणस्य दोमासियं वा तेमासियं वा चारम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पिलडंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मामा ॥ १४ ॥ जे भिक्ख चाउम्मासियं वा साइरे-गनाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसि परिहारहाणाणं अण्णवरं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा. अपिलउंचिय आलोएमाणस्स चाउ-म्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा, पलि-उंचिय आलोएमाणस्स पंचमार्मियं वा साइरेगपंचमासियं वा छम्मासियं वा. तेण परं पिंठउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेत्र छम्मासा ॥ १५ ॥ जे भिक्खू बहुसी वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासियं वा बहुसो वि पंचमासियं वा बहुसो वि साइरेगपंचमासियं वा एएमिं परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पडि-सेविता आलोएजा, अपिटडंचिय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मा-सियं वा पंचमासियं वा माइरेगपंचमासियं वा. पिछडंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं वा माइरेगपंचमासियं वा छम्मासियं वा. तेण परं पिलडंचिए वा अपलिडंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १६ ॥ जे भिक्न चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पिंडसेविता आलोएजा, अपिंडरंचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवहत्ता करणिजं वेयावडियं, ठविए वि पडिसेविता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयन्वे सिया, पुर्वि पिंडेसेवियं पुर्व्यि आलोइयं, पुर्व्यि पिंडेसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पिंडेसेवियं पुर्वित आलोइयं, पच्छा प**डि**सेवियं पच्छा आलोइयं, अपलिउं**चिए अपलिउंचियं**, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, अपलि-उंचिए अपलिउंचियं आलोएमाणस्य सन्त्रमेयं सक्यं साहणिय जे एयाए पद्रवणाए

पद्भविए निन्विसमाणे पश्चिमेवेड से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १७ ॥ जे भिक्ख चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं व। एएसि परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा, पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवडना करणिजं वेयाविडयं, ठांवए वि पिडसेविता से वि कमिणे तत्थेव आरहेयव्ये सिया, पुर्व्वि पहिसेवियं पुन्ति आलोइयं, पुर्व्वि पहिसेवियं पन्छा आलोइयं, पन्छा पहिसेवियं पुन्ति आलोइयं, पन्छा पहिसेवियं पन्छा आलोइयं, अपलिउंचिए अपलिउंचियं. अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं. पलिउंचिए पलिउंचियं. पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सन्बमेयं सक्यं साहणिय जे एयाए पट्टबणाए पट्टबिए निव्यिगमाणे पडिसेवेड से वि कसिणे तत्थेव आरुद्देयव्यं सिया ॥ १८ ॥ जे भिक्ख् बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासियं वा बहसो वि पंचमासियं वा बहसो वि साइरेगपंचमासियं वा एएभि परिहारहाणाणं अण्णयरं परिहारहाणं पिडसेविता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवडना करणिजं वेयावडियं. ठविए वि पडिसेविना से वि कसिणे तत्थेद आम्ह्रेयच्वे सिगा. पुब्ति पश्चिसेवियं पुब्ति आलोइयं. पुब्ति पश्चिसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पिंसिवियं पुन्धि आलोइयं, पच्छा पिंसिवियं पच्छा आलोइयं. अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पहिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पहिलंबिए पिल्वंबियं आलोएमाणस्स सम्बमेयं सक्यं साहणिय जे एयाए पद्भवणाए पद्मविए निन्धिसमाणे पष्टिसेवेड से वि कसिणे तत्थेव आरहेयव्वे सिया ॥ १९ ॥ जे मिक्ख बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुमो वि साइरेगचाउम्मासियं वा बहुमो वि पंचमासियं वा बहुसो वि साइरेगपंचमासियं वा एएसि परिहारह्वाणाणं अण्ययरं परिहारद्वाणं पिडसेविता आलोएजा, पिलउंचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवइता करणिजं वेयावडियं, ठविए वि पडिसेबिता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयन्वे सिया. पुन्ति पिडसेवियं पुन्ति आलोइयं, पुन्ति पिडसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पहिसेवियं पुर्वित्र आलोइयं, पच्छा पहिसेवियं पच्छा आलोइयं, अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं. पलिउंचिए पिंठं चियं आलोएमाणस्स सम्बमेयं सक्यं साहणिय जे एयाए पद्भवणाए पद्भविए निन्दिसमाणे पहिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेबन्चे सिया ॥ २०॥ बहुवे पारिहारिया बहुवे अपारिहारिया इच्छेजा एगयओ अभिनिसेजं वा अभिनि-सीहियं वा चेएत्तए, नो व्हं कप्पइ थेरे अणापुच्छिता एगयओ अमिनिसेखं वा अभिनिसीहियं वा चेएत्तए, कप्पइ ण्हं थेरे आपुच्छिता एययओ अभिनिसेजं दा

बन्मागमं, तस्पंतियं आलोएजा जाव पिडवजेजा ॥ ३५ ॥ नो चेव णं संभोइयं साहिम्मयं प्रात्तेयं अक्षसंभोइयं माहिम्मयं प्राप्तेजा बहुस्युयं बन्मागमं, तस्पंतियं आलोएजा जाव पिडवजेजा ॥ ३६ ॥ नो चेव णं अक्षसंभोइयं प्रात्तेवं साहिवयं प्राप्तेजा बहुस्युयं बन्भागमं, तस्पंतियं आलोएजा जाव पिडवजेजा ॥ ३०-१ ॥ नो चेव णं साहिवयं प्राप्तेजा बहुस्युयं बन्भागमं, जत्थेव समयोवासगं पच्छाकडं प्राप्तेजा बहुस्युयं बन्भागमं, कप्पइ से तस्पंतिए आलोएनए वा पिडकमेन्नए वा जाव पायच्छिनं पिडवजेन्नए वा ॥ ३०-२ ॥ नो चेव णं समणोवासगं पच्छाकडं प्राप्तेजा बहुस्युयं बन्भागमं, जत्थेव समभावियं णाणि प्राप्तेजा, कप्पइ से तस्पंतिए आलोएनए वा पिडकमेन्नए वा जाव पायच्छिनं पिडवजेन्नए वा ॥ ३८ ॥ नो चेव समभावियं णाणि प्राप्तेजा, बहुस्युयं बन्भागमं, जत्थेव समभावियं णाणि प्राप्तेजा, कप्पइ से तस्पंतिए आलोएनए वा पिडकमेन्नए वा जाव पायच्छिनं पिडवजेन्नए वा ॥ ३८ ॥ नो चेव समभावियं णाणि प्राप्तेजा, बहिया गामस्य वा नगरस्य वा निगमस्य वा रायहाणीए वा खेडम्स वा कन्बहस्य वा महंबस्य वा पष्टणस्य वा दोणमुहुस्य वा आसमस्य वा संवाहस्य वा संनिवेत्रस्य वा पाइंणाभिमुहे वा उदीणाभिमुहे वा करयळपरिगगिहियं सिरसावनं मत्थए अंजलिं कर्ड एवं वएजा—एवडया मे अवराहा, एवइक्खुत्तो अहं अवरद्धो । अरहंताणं सिद्धाणं अंतिए आलोएजा जाव पिडवजेजासि ॥ ३९ ॥ नि-नेमि ॥ ववहारस्य पढमो उद्देशको समन्तो ॥ १ ॥

ववहारस्स बिइओ उद्देसओ

दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अण्णयरं अकिश्वद्वाणं पिरसिवेत्ता आलोएजा, ठविणजं ठवइता करणिजं वेयाविडयं ॥ ४० ॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, दो वि ते अण्णयरं अकिश्वद्वाणं पिरसेवेत्ता आलोएजा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइता एगे निव्यसेजा, अह पच्छा से वि निव्यसेजा ॥ ४१ ॥ बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अण्णयरं अकिश्वद्वाणं पिरसेवेत्ता आलोएजा, ठविणजं ठवइता करणिजं वेयाविडयं ॥ ४२ ॥ बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, सक्वे वि ते अण्णयरं अकिश्वद्वाणं पिरसेवेत्ता आलोएजा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइता अवसेसा निव्यसेजा, अह पच्छा से वि निव्यसेजा ॥ ४३ ॥ परिहार-कप्पद्विए मिक्श्व् गिलायमाणे अण्णयरं अकिश्वद्वाणं पिरसेवेत्ता आलोएजा, से य संयरजा ठविणजं ठवइता करणिजं वेयाविडयं ॥ ४४ ॥ से य नो संबरेजा अण्परिहारिएणं करणिजं वेयाविडयं साइ-जेजा, से वि कसिणे तत्थेव आरहेयक्वे सिया ॥ ४५ ॥ परिहारकप्पद्वियं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेदयस्स निज्विहत्तए, अगिलाए तस्स

१ गिहत्यं अदुवा देवं पुञ्चपास्त्रियसंजमाणुभावा जाणिवपायच्छित्तविहिं ।

करणिजं वेयावडियं जाव तबो रोगायंकाओ विप्पमुको, तओ पच्छा तस्स अहा-लहुसए नामं ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ ४६ ॥ अणवट्टप्पं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेश्यस्स निजृहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावडियं जाब तक्षी रोगायंकाओ विष्पमुक्तो, तक्षी पच्छा तस्स अहाळहुसए नामं ववहारे पद्ववियव्वं सिया ॥ ४७ ॥ पारंचियं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणा-वच्छेइयस्स निज्बृहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावहियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पमुद्दो, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्टवियन्वे सिया ॥ ४८ ॥ सित्ताचर्तं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहितए, अगि-छाए तस्स करणिष्यं वेयाविडयं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पसुको, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं वबहारे पद्मवियन्वे सिया ॥ ४९ ॥ दिस्तवित्तं भिक्सं गिलायमाणं नो ऋप्यइ तस्स गणावच्छेदयस्स निज्नृहित्तप्, अगिलाए तस्स करणिजं वैयावडियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पमुद्धो, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ ५० ॥ जक्बाइट्टं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पड तस्स गणावच्छेड्यस्स निज्जहिताए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावडियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पसुको, तओ पच्छा नस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्टवियब्वे सिया ॥ ५९ ॥ उम्मायपत्तं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निजाहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वैयावडियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्यमुक्तो, तभो पच्छा तस्य अहालहसए नामं ववहारे पद्भवियध्वे सिया ॥ ५२ ॥ उवसमापत्तं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्नूहित्तप्, अगिलाए तस्स करणिजं वेयाबिडयं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहु-सए नामं ववहारे पहुवियव्वे तिया ॥ ५३ ॥ शाहिगरणं भिक्खं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेड्यस्स निजृहिनए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयाविष्यं जाव तस्रो रोगायंकाओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्टवियव्ये सिया ॥ ५४ ॥ सपायच्छित्तं भिक्खुं गिलायमाणं नो कपड् तस्स मणावच्छेडयस्स निब्बृहितए, अगिळाए तस्स करणिजं वेयावडियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्पसुको, तओ पच्छा तस्स अहालहसए नामं ववहारे पद्मवियव्वे सिया ॥ ५५ ॥ भत्त-पाणपिडयाइक्सितं भिक्सं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्ञू-हिताए, अगिलाए तस्स करणिखं वैयाविडयं जाव तओ रोगायंकाओ विप्पसुको, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं क्वहारे पद्ववियव्ये सिया ॥ ५६ ॥ अहुजायं मिक्खं गिलायमाणं नो कप्पह तस्य गणावच्छेदयस्य निजृहित्तए, अगिलाए तस्स

करणिजं वेयावडियं जाव तओ रोगायंकाओ विष्यमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहा-लहुसए नामं ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ ५० ॥ अणबद्धप्पं भिक्खं अगिहिभ्यं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवद्वावेत्तए ॥ ५८ ॥ अणवद्वप्पं भिक्खुं गिहिभ्यं कप्पइ तस्स गणावच्छेडयस्स उवदावेनए ॥ ५९ ॥ पारंचियं भिक्खं अगिहिभयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेद्वयस्स उवद्वावेत्तए ॥ ६० ॥ पारंचियं भिक्कुं गिहिभ्यं कप्पइ तस्स गणावच्छेदयस्स उवद्वावेत्तए॥ ६९॥ अणवद्वप्पं भिक्खुं अगिहिभग्रं वा गिहिभ्यं वा कप्पड तस्स गणावच्छेड्यस्स उवद्वावेनए, जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥ ६२ ॥ पारेचियं भिक्खुं अगिहिभ्यं वा गिहिभ्यं वा कप्पइ तस्स गणावच्छे-इयस्स उबद्रावेत्तए, जहा तस्स गणस्य पत्तियं सिया ॥ ६३ ॥ दो साहम्मिया एगओ विहरंति, एगे तत्य अण्णयरं अकिचद्राणं पडिसेविता आलोएजा-अहं णं भंते ! अमुगेणं साहणा सद्धिं इमिम्म कारणिम्म पृडिसेवी. से य पुच्छियव्ये. कि पृडिसेवी? से य वएजा-पडिसेवी, परिहारपत्ते, से य वएजा-नो पडिसेवी, नो परिहारपत्ते, जं से पमाणं वयइ से पमाणाओं घेयन्वे, से किमाहु अंते (!) १ मचपइना ववहारा ॥६४॥ भिक्ख य गणाओ अवक्रम्म ओहाणुप्पे(हिए)ही वजे(गच्छे)जा, से य (आह्ब) अणोहाइए इच्छेजा दोचं पि तमेव गणं उवसंपिजनाणं विहरित्तए, तत्य णं थेराणं इमेयास्वे विवाए समुप्पिकत्था-इमं भो ! जाणह किं पिंडसेवी ? से य पुन्छियन्वे, किं पहिसेवी ? से य वएजा-पहिसेवी, परिहारपत्ते, से य वएजा-नो पांडसेवी, नो परिहारपते. जं से पमाणं वयइ से पमाणाओ घेयव्वे, से किमाह भंते ? सच-पद्भा ववहारा ॥ ६५ ॥ एगपिन्खयस्स भिक्खस्स कप्पद् आयरियउवज्झायाणं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिश्तितए वा धारेनए वा, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥ ६६ ॥ बहवे परिहारिया बहवे अपरिहारिया इच्छेजा एगयओ एगमासं वा दुमासं वा तिमासं वा चडमासं वा पंचमासं वा छम्मासं वा वत्थए. ते अण्णमण्णं संमुंजंति अण्णमण्णं नो संभुंजंति (एग) मार्स(... मार्सते), तओ पच्छा सब्वे वि एगयओ संसंजिति ॥ ६७ ॥ परिहारकप्यद्वियस्स भिक्खस्स नो कप्पइ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अगुप्पदाउं वा. थेरा य णं वएजा-इमं ता अजो ! तुमं एएसिं देहि वा अणुप्पएहि वा, एवं से कप्पइ दाउं वा अणुष्पदाउं वा, कप्पद्द से लेवं अणुजाणावेताए, अणुजाणह तं छेवाए ? एवं से कम्पइ छेवं अणुजाणावेताए ॥ ६८ ॥ परिहारकम्पद्भिए सिक्स् सएणं पडिमाहेणं बहिया थेराणं वेबावडियाए गच्छेजा. थेरा य णं वएजा-पहिन्गाहै(हि) अजो ! अहं पि भोक्खामि वा पाहामि वा. एवं से कप्पड पिडम्गाहेतए, तत्थ नो कप्पड अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सर्वसि वा पडिग्गहंसि पाणिसि वा उद्धहु उद्धहु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पो अपरिहारियस्स परिहारियाओ ॥ ६९ ॥ परिहार-कप्पिष्ठिए मिक्ख् थेराणं पडिग्गहएणं बहिया थेराणं वेयाविष्ठ्याए गच्छेजा, थेरा य णं वएजा-पडिग्गाहे अजो ! तुमं पि पच्छा भोक्खिस वा पाहिसि वा, एवं से कप्पइ पडिग्गाहित्तए, तत्थ नो कप्पइ परिहारिएणं अपरिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सर्वसि वा पडिग्गहंसि पाणिसि वा उद्धहु उद्धहु भोत्तए वा पायए वा, एस्छिस] कप्पो परिहारियस्स अपरिहारियाओ ॥ ७० ॥ ति-वेमि ॥ स्वस्हारस्स विद्वो उद्देश्यो समसो ॥ २ ॥

ववहारस्स तहओ उद्देसओ

भिक्लू य इच्छेजा गणं धारेनए, भगवं च से अपलिच्छ(क्षे)ए. एवं नो से कप्पड गणं धारेनए, भगवं च से पलिच्छको, एवं से कप्पइ गणं धारेतए ॥ ७१ ॥ भिक्खा य इच्छेजा गणं धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छिता गणं धारेत्तए, कप्पइ से बेरे आपुच्छिता गणं धारेतए, बेरा य से वियरेजा, एवं से कप्पड़ गणं धारेतए, थेरा य से नो वियरेजा, एवं से नो कप्पइ गणं धारेतए, जण्णं थेरेहिं अविङ्ण्णं गणं धारेजा. से संतरा छेओ वा परिहारो वा ("साहम्मिया उद्घाए विहरंति नित्य णं तेसि केड् छेए वा परिहारे वा) ॥ ७२ ॥ तिवासपरियाए समणे णिगांचे आयार-कुसले संजमकुसले प्रवाणकुसले प्रणातिकुसले संगहकुमले उन्ग्गहकुसले अक्ख्यायारे अभिकायारे असबलायारे असंकिलिद्वायारचि (चरि)ते बहुस्सुए बच्मागमे जहण्णेणं आयारपकप्पारे कप्पइ उवज्झायताए उद्दिसित्तए ॥ ०३ ॥ सञ्चेव णं से तिवास-परियाए समणे जित्रांथे नो आयारकुसके नो संजमकुसके नो पवयणकुसके नो पण्णातिकुसके तो संगहकुसके नो उवमाहकुसके खयायारे भिनायारे सबलायारे संकिलिद्रायारचित्ते अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ उनज्झायताए उदिसित्तए॥ ७४॥ पंचवासपरियाए समणे णिगांये आयारकुसळे संजमकुसळे पवयणकुसळे पण्णातिकुसळे संगहकुसछे उवगगहकुसछे अक्खयायारे अभिन्नायारे असवलायारे असंकिलिहायार-चित्ते बहुस्सुए बन्भागमे जहण्णेणं द्[स]साकप्यववहारधरे कप्पड़ आयरियउवज्ज्ञाय-त्ताए उद्दितित्तए ॥ ७५ ॥ सबैद णं से पंचवासपरियाए समणे णिग्गंथे नो आयारकुसळे नो संजमकुसके नो पवयणकुसके नो पण्णतिकुसके नो संगहकुसके नो उवग्गहकुसके खगागारे मिनागारे सबलागारे संकिलिद्रागारचित्ते अप्पत्तए अप्पागमे नो कप्पड

आयरियउवज्झायत्ताए उद्दितित्तए ॥ ७६ ॥ अहुवासपरियाए समणे णिमांबे आयार-कुसले संजमकुसले प्रयणकुसले प्रणातिकुसले संगहकुसले उदग्गहकुसले अन्ख्यायारे अभिनायारे असबलायारे असंकिलिद्वायारिचते बहुस्सुए बब्भागमे जहण्णेणं ठाण-समवायघरे कप्पड आयरियत्ताए जाव गणावच्छेड्यताए उहिसित्तए ॥ ७७ ॥ सम्बव णं से अद्भवासपरियाए समणे णिखंथे नो आयारकुसले नो संजमकुसले नो पवयण-कुसले नो पण्णतिकुसले नो संगहकुसले नो उवग्गहकुसले खयायारे मिन्नायारे सब-लायारे संकिलिहायारचित्ते अप्पस्त अप्पागमे नो कप्पइ आयरियत्ताए जाव गणाव-च्छेड्यनाए उहिसित्तए ॥ ७८ ॥ निरुद्धपरियाए समणे विमाये कप्पड नहिवसं आय-रियउवज्झायताए उद्दिसित्तए, से किमाहु भंते १ अत्थि णं थेराणं तहास्वाणि कुलाणि कडाणि पत्तियाणि येजाणि वेसासियाणि संमयाणि सम्मुइकराणि अणुमयाणि बह-मयाणि भवंति, तेहिं कंडेहिं तेहिं पत्तिएहिं तेहिं थेजेहिं तेहिं वेसानिएहिं तेहिं संमएहिं तेहिं सम्मुइकरोहिं तेहिं अणुमएहिं तेहिं बहुमएहिं जं से निरुद्धपरियाए समणे णिग्गंथे कप्पइ आयरियउवज्झायनाए उद्दिस्ताए तद्दिवसं ॥ ७९ ॥ निरुद्ध-वासपरियाए समणे णिग्गंथे ऋषड् आयरियलवज्झायताए उद्दिसित्तए समुच्छेय-कपंति, तस्स णं आयारपकप्पस्स देसे अवद्विए, से य अहिज्जिस्सामित्ति अहिज्जेजा. एवं से कप्पइ आयरियउवज्झायताए उद्दिसित्तए, से य अहिजिस्सामिति नो अहिजेजा. एवं से नो कप्पइ आयरियजवज्ज्ञायताए उद्दितितए ॥ ८० ॥ णिग्गंथस्स णं नवड-हरतरुगस्स आयरियउवज्झाए वी(सुं)संनेजा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झायस्स होत्तए, कप्पइ से पुन्नं आयरियं उद्दिसानेता तओ पच्छा उन्द्रज्ञायं, से किमाह भंते ? दुसंगहिए समणे णिगांथे, तंजहा-आयरिएणं उवज्झाएण य ॥ ८९ ॥ णिगांधीए णं नवडहरतरुणीए आयरियउवज्झाए प(वि)वत्तिणी य वीसंमेजा, नो से कप्पइ अणा-यरियडवज्झाइयाए अपर्वात्तणीए होत्तए, कप्पड़ से पुरुवं आयरियं उहिसाबेता तस्रो उवज्झायं तओ पच्छा पवत्तिणि, से किमाहु भंते ? तिसंगहिया समणी णिगंबी, तंजहा-आयरिएणं उवज्झाएणं पवत्तिणीए य ॥ ८२ ॥ भिक्ख गणाओ अणिकिख-वित्ता मेहणधम्मं पिंडसेविजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो से कप्पइ आयरियत्तं वा उवज्ङ्मायतं वा पविततं वा थेरतं वा गणितं वा गणावच्छेद्यतं वा उहिसित्तए वा धारित्तए वा ॥ ८३ ॥ भिक्खू य गणांश्री अवकस्म मेहुणघम्मं पिरसेवेजा, तिण्णि संबच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दित्तिए वा धारेतए वा, तिहिं संवच्छरेहिं बीइकंतेहिं चउत्वगंति संवच्छरेति प(उव)द्वियंसि ठियस्स उवसंतस्स उवर्यस्स पिडविरयस्स (गिव्विकारस्स) एवं से

कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयतं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८४ ॥ ्षणाबच्छेदए गणावच्छेदयत्तं अणिविखविना मेहणधम्मं पश्चिसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पतियं नो कप्पड आयरियलं वा जाव गणावच्छेड्यत्तं वा उद्दिसित्तए वा घारेनए वा 11 ८५ ॥ गणावच्छेहए गणावच्छेहयमं णिक्निवित्ता मेहणधम्मं पिंडसेकेजा, तिण्णि संबच्छराणि तस्य तप्यत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा, तिहिं संवच्छरेहिं वीइकंतेहिं चउत्थगंसि संवच्छरेसि पट्टियंसि ठियस्स उवसंतस्स उवरयस्स पिडविरयस्स एवं से कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८६ ॥ आयरियउवज्झाए आयरियडवज्झायत्तं अणिक्खिवता मेहणधम्मं पिडसेवेजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पः आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेड्यत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८७ ॥ आयरियजवज्झाए आयरियजवज्झायतं णिक्खिवता मेहणधम्मं पिक-सेवेजा, तिष्णि संवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं संवच्छरेहिं वीइकंतेहिं चउत्यगंसि संवच्छरंसि पद्भियंसि ठियस्स उवसंतरस उवस्यस्स पडिविरयस्स एवं से कप्पड आयरियतं वा जाव गणावच्छेदयतं वा उद्दिशित्ताए वा धारेताए वा ॥ ८८ ॥ भिक्खू य गणाओं अवकस्म ओहायइ, तिष्णि संबच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तिहिं संवच्छरेहिं वीडकंतेहिं चउत्यगंसि संवच्छारंसि पट्टियंसि ठियस्स उवसंतस्स उवरयस्स पडिविरयस्स एवं से कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ८९॥ गणावच्छेडए गणावच्छेडयत्तं अणिक्खिवता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेडयत्तं वा उदिसित्तए वा घारेत्तए वा ॥ ९०॥ गणावच्छेडए गणावच्छेड्यतं जिनिखनिता ओहाएजा, तिण्णि संवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कपड आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिलत्तिए वा धारेत्तए वा. तिहिं संबच्छरेहिं बीडकंतेहिं चउत्थगंसि संबच्छरेसि पट्टियंसि ठियस्म उवसंतस्स उबरयस्स पडिविरयस्स एवं से कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावरछेड्यतं वा उहि-सित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९१ ॥ आयरियउवज्झाए आयरियउवज्झायत्तं अणिक्खि-बिता ओहाएजा, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नी कप्पइ आयरियतं वा जाव गणावच्छेदयत्तं वा उद्विसित्तए वा धारेत्रए वा ॥ ९२ ॥ आयरियउवज्याए आय-रियडवज्ज्ञायतं मिक्सिविता ओहाएजा. तिण्णि संबच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पड आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिस्तिए वा धारेतए वा, तिहिं

संबच्छरेहिं वीइकंतेहिं चउत्थगंसि संबच्छरंसि पद्वियंसि ठियस्स उवसंतस्स उवर-यस्स पडिविग्यस्स एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तर वा धारेत्तए वा ॥ ९३ ॥ भिक्ख् य बहुस्छए बच्भागमे बहुसी बहुआगाडागाडेसु कारणेसु माई मुसावाई असुई पावजीवी, जावजीवाए तस्म तप्पत्तियं नो कप्पड आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेद्यत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा॥ ९४॥ गणावच्छेइए बहुस्सए बट्मागमे बहुसी बहुआगाहागादेस कारणेस माई मुसादाई अग्रई पावजीवी, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणा-बच्छेइयत्तं वा उद्दिसत्तए वा धारेत्तए वा॥ ९५॥ आयरियजबज्झाए बहुस्सुए वन्भागमे बहुसो बहुआगाढागाढेशु कारणेसु माई मुसावाई असुई पावर्जावी, जावजीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पड़ आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिसित्तए वा धारेनए वा ॥ ९६ ॥ बहवे भिक्खुणो बहुस्युया बच्भागमा बहुसो बहुआगाडागाहेसु कारणेसु माई मुसाबाई अमुई पावजीवी, जावजीवाए तेनि तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावरछेड्यतं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९७ ॥ बहुवे गणावच्छेह्या बहुस्तुया बन्भागमा बहुसो बहुआगाढागाढेसु कारणेसु माई मुसावाई असुई पावजीवी, जावजीवाए तेसि तप्यत्तियं नो कप्पड आयरियनं वा जाव गणावच्छेड्यनं वा उद्दिस्तिए वा धारेतए वा ॥ ९८ ॥ बहुवे आयरियउवज्ज्ञाया बहस्सुया बब्भागमा बहुसो बहुआगाढागाढेसु कारणेसु माई मुसावाई असुई पावजीवी, जाबजीवाए तेसिं तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियतं वा ञाव गणावच्छेदयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ ९९ ॥ बहुवे भिक्खुणो बहुवे गणावच्छेद्रया बहुवे आयरियउवज्ङ्याया बहुस्सुया बञ्भागमा बहुसी बहु-आगाहागाहेसु कारणेसु माई मुसाबाई असुई पावजीवी, जावजीवाए तेसि तप्प-तियं नो कप्पड़ आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उद्दिसितए वा धारेतए वा ॥ १०० ॥ ति-वेमि ॥ वयहारस्त तर्यो उद्देसओ समसी ॥ ३ ॥

ववहारस्स चडत्थो उद्देसओ

नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स एगाणियस्स हेमन्तगिम्हास चरि(त)ए॥ १०१॥ कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पिब्रिश्यस्स हेमंतगिम्हास चरि(चार)ए॥ १०२॥ नो कप्पइ गणावच्छेद्रयस्स अप्पिब्रिश्यस्स हेमंतगिम्हास चरिए॥ १०४॥ ने कप्पइ गणावच्छेद्रयस्स अप्पतद्रयस्य हेमंतगिम्हास चरिए॥ १०४॥ नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पिब्रिश्यस्स वासाधासं वत्थए॥ १०५॥ कप्पइ आयरियउवज्ञायस्स अप्पतद्रयस्य वासाधासं वत्थए॥ १०५॥ नो कप्पइ गणावच्छेद्रयस्य

व्यप्पतइयस्स वासावासं वत्थए॥ १०७॥ ऋपइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्य बासावासं करवए ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए बा खेडंसि वा कव्बडंसि वा मडंबंसि वा पष्टणंसि वा दोणमहंसि वा आसमंसि वा संवाहंति वा संनिवेसंसि वा वहूणं आयरियउवज्ञायाणं अप्पविद्याणं बहूणं गणावच्छेड्याणं अप्पतइयाणं कप्पड हेमंत्रगिम्हास चरिए अण्णमण्णं निस्साए ॥ १०९ ॥ से गामंति वा नगरंसि वा निगमंति वा रायहाणीए वा खेडंति वा कव्यर्डास वा मर्जबंसि वा पष्टणंमि वा दोणमुहंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा संणिवेसंसि वा बहुणं आयरियजवज्ज्ञायाणं अप्पतइयाणं बहुणं गणावच्छेइयाणं अप्पन्न उत्थाणं कप्पड वासावासं बत्थए अण्णमण्णं निस्साए ॥ ११० ॥ गामाण-गामं दृहज्जमा(णे)णो भिक्स य जं पुरओ कट्ट विह्र(रेजा से य)रइ आहम वीसंमेजा. अत्य याई ध अण्णे केड् उवसंपज्जणारिहे कप्पइ से(०) उवसंपिज(नाणं विहरित्तए)यथ्वे, नित्थ याइं य अण्णे केइ उवसंप्रज्ञणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पद्द से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दि(सिं)सं अण्णे साहम्मिया बिहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पड तन्थ विहारवित्तग्रं बत्यए. कप्पइ से तत्थ कारणवित्तर्थ वत्थए, तंसि च णं कारणंसि निद्वियंसि परो वएजा-वसाहि अजो । एगरायं वा दुरायं वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए. नो से कप्पड़ परं एगरायाओं वा दुरायाओं वा चत्थए, जं तत्थ परं एगरायाओं वा दरायाओं वा वसह, से संतरा छेए वा परिहार वा ॥ १११ ॥ वासावासं पजी-सवि(ए)ओ भिक्ख य जं पुरओ कह विहरइ आहच बीसंमेजा, अख्य यार्ड थ क्षणों केंद्र उवसंपज्जणारिहें से उवसंपज्ज्जियन्त्रे, नित्य याई य अण्णे केंद्र उवसंपज्ज्णा-रिहे. तस्य अप्पणी कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अण्णे साहम्मिया विद्वरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए. नो से कप्पड तत्थ विहारवितर्यं वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवित्तयं वत्थए, तंसि व णं कारणंसि निद्धि-मंसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगरायं वा दुरायं वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगराबाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, जं तत्थ परं एगरायाओ वा दरायाओ वा बसह, से संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२॥ आयरिय-उवज्ञाए गिलायमाणे अण्णयरं वर्जा-अजो ! ममंसि णं कालगरंसि समाणंसि अयं समुक्तांसयव्ये, से य समुक्तसणारिहे समुक्रांसियव्ये से य नो समुक्तसणारिहे नो समक्रासियव्वे, अत्थि याई थ अण्णे केइ समक्रसणारिष्ठे से समक्रासियव्वे, नत्थि याई थ अण्णे केइ समुक्तरणारिष्टे से चेव समुक्तरियम्बे, तंसि व णं समुक्तिहासि परी

वएजा-दुस्सम् किहं ते अजो ! निक्खिवाहि, तस्स णं निक्खिवमाणस्स नत्य केह छेए वा परिहारे वा, जे (तं) साहम्मिया अहाकप्पेणं नो उद्घाए विहरं(अञ्चूहें)-ति (तेसिं) सन्वेमि तेसि तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ॥ ११३ ॥ आयरिय-उवज्झाए ओहायमाणे अण्णयरं वएजा-अजो ! ममंसि णं ओहानियंसि ममाणंसि अयं समुक्रसियव्वे, से य समुक्रसणारिहे समुक्रसियव्वे, से य नो समुक्रसणारिहे नो समक्कासियव्वे. अत्थि याडं थ अण्णे केड समक्कारणारिहे समक्कासियव्वे. निष्ध याई थ अण्णे केइ समुक्तसणारिहे से चेव समुक्तसयन्वे, तंति च णं समुक्तिद्वंति परो वएजा-दुस्समुक्किंद्रं ते अजो ! निक्खिवाहि, तस्स णं निक्खियमाणस्स नित्य केड छेए वा परिहारे वा, जे साहम्मिया अहाकप्पेणं नो उद्घाए विहरति सन्वेसिं तेमिं नप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ॥ ११४ ॥ आयरियडवज्झाए सरमाणे (परं) जाव चडरायपंचरायाओं कप्पागं भिक्क्षुं नो उबद्वावेइ, कप्पाए अन्यि याई थ से केंद्र माणणिजे कप्पाए, निष्य से केंद्र छेए वा परिहारे वा, नित्य याई य से केंद्र माणणिजे कप्पए, से मंतरा छए वा परिहारे वा॥ ११५॥ आयरियउवज्झाए असरमाणे परं चड(पंच)रायाओं कप्पागं भिक्खं नो उबद्वावेद, कप्पाए अस्थि याइं थ से केड माणणिजे कप्पाए, नित्थ से केड छेए वा परिहारं वा, नित्थ याई थ से केंद्र माणणिजे कप्पाए, से संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११६ ॥ आयरिय-उवज्ञाए सरमाणे वा असरमाणे वा परं दसरायकप्पाओ कप्पार्ग भिक्खं नो उनद्वावंड. कप्पाए अत्य याइं थ से केड् माणणिजे कप्पाए, नत्थि से केड् छेए वा परिहारे वा. नत्थि याइं थ से केड माणणिजे कप्पाए. संवच्छरं तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियमं (जाव) उद्दिसित्तए (०)॥ ११७॥ भिक्ख् य गणाओ अवकस्म अण्णं गैणं उवसंपज्जिताणं विहरेजा, तं च केइ साहम्मिए पासिता वएजा-कं अजो ! उवसंपिजनाणं विद्यसि ? जे तत्थ सन्वराइणिए तं वएजा, राइणिए तं वएजा । अह भंत ! कस्स कप्पाए ? जे तत्य सन्त्रबहुस्मुए तं वएजा, जं वा से भगवं वक्खड़ तस्स आणाउववायवयणणिहेसे चिद्रिस्सामि ॥ १९८ ॥ बहवे साहम्मिया इच्छेजा एगयओ अभिणिचारियं चारए, कप्पइ नो ण्हं थेरे अणापुच्छिता एगयओ अभिणि-चारियं चारए, कप्पड़ ण्हं थेरे आपुच्छिता एगयओ अमिणिचारियं चारए, थेरा य से वियरेजा ए(वं)वर्ण्ड कप्पड़ एगयओ अभिणिचारियं चारए, बेरा य से नी वियरेजा एव ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिणिचारियं चारए, जं तत्य धेरेहिं अवि-इण्णे अभिणिचारियं चरंति. से संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १९९ ॥ चरियापविदे

१ णाणाइयणिमित्तं ।

मिनस् जाव चररायपंचरायाओ येरे पासेजा. सचेव आलोयणा सचेव परिवमणा सचैव ओम्महस्स पुन्वाणुण्यवणा चिद्रह अहालंदमवि ओम्महे ॥ १२० ॥ चरियापविद्रे ं भिक्ख परं चउरायपंचरायाओं थेरे पासेजा. पुणी आलोएजा पुणी पहिक्सेजा पुणो क्षेयपरिहारस्स उवद्वाएजा, भिक्खुभावस्स अद्वाए दोश्रं पि ओगाहे अणुण्ण-वेयहवे सिया. अणुजाणह मंते ! मिओगगहं अहालंदं धुवं नि(च्छद्र)तियं वेउ हियं, तओ पच्छा कायसंफासं ॥ १२१ ॥ चरियानियहे भिक्ख जाव चउरायपंचरायाओ थेरे पासेजा, सचेव आलोयणा सचेव पडिवामणा सचेव ओगाहस्स पुरुवाणुण्णवणा चिद्रइ अहालंदमवि ओग्गहे ॥ १२२ ॥ चरियानियहे भिक्ख परं चउरायपंचरायाओ थेरे पासेजा, पुणो आलोएजा, पुणो पहिन्दमेजा, पुणो छेयपरिहारस्स उवहाएजा, भिक्छुभावस्स अद्वाए दोचं पि बोमाहे अणुण्णवेयव्वे सिया । अणुजाणह मंते ! मिओगाहं अहालंदं ध्रवं निर्तियं वेउट्टियं. तओ पच्छा कायसंफासं ॥ १२३ ॥ दो साइम्मिया एगयओ विहरंति, तंजहा-सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पलि-च्छणो, राइणिए अपलिच्छणो, सेहतराएणं राइणिए उदसंपाज्यव्वे, भिक्सोववायं च दलयइ कप्पागं ॥ १२४ ॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरति, तंजहा-सेंहे य राइणिए य. तत्थ राइणिए पलिष्छण्णे. सेहतराए अपलिच्छण्णे. इच्छा राहणिए सेहतरामं उवसंपज्जइ इच्छा नो उवसंपज्जइ, इच्छा भिक्खोववायं दरुयइ कप्पामं इच्छा नो दलयड कप्पागं ॥ १२५ ॥ दो भिक्खणो एगयओ विहरंति, नो ण्डं कप्पइ अण्णसण्णं उवसंपिजित्ताणं विदृरिनए, कप्पइ ण्हं अहाराइणियाए अण्ण-मणां उचसंपाजनाणं विहरित्तए ॥ १२६ ॥ दो गणावच्छेड्या एगयओ विहरंति, नो ण्हं कप्पइ अण्णमण्णं उवसंपज्जिताणं विहरित्तए, कप्पइ ण्हं अहाराइणियाए अण्णमण्णं उवसंपिजनाणं विहरित्तए ॥ १२७ ॥ दो आयरियउवज्झाया एगयओ विहरंति. नो ण्हं कृपइ अण्णमण्णं उवसंपज्जिताणं विहरित्तए, कृपाइ ण्हं अहाराइ-णियाए अण्णमण्णं उनसंपितन्तिमाणं विद्वरिप्तए ॥ १२८ ॥ बहुने मिक्खुणो एगयओ बिहरंति. नो ण्हं कप्पड़ अण्णमण्णं उवसंपजिताणं बिहरितए, कप्पड़ ण्हं अहाराइ-णियाए अण्णमण्णं उचसंपजिताणं विहरिताए ॥ १२९ ॥ बहुवे गणावच्छेद्या एगयओ विहरति, नो ण्हं कप्पह अण्णमण्णं उचसंपजित्ताणं विहरित्तए, कप्पह ण्हं अहाराइणियाए अण्णमण्णं उवसंपिबताणं विहरित्तए ॥ १३० ॥ बहवे आय-रियउवज्ञामा एगयओ विहरंति, नो ण्हं कप्पइ अण्णमण्णं उवसंपजिताणं बिहरि-त्तए. कप्पद्द ण्हं अहाराद्द्रणियाए अण्णमण्णं उवसंपिकताणं विहरित्तए ॥ १३१ ॥ वहते भिक्खणो बहने गणाक्छेह्या बहने आयरियउक्जाया एगयओ बिहरति. नो ण्हं कप्पइ अण्णमण्णं उवसंपिकताणं विहरित्तए (वासावासं वत्यए कप्पइ प॰), कप्पइ ण्हं अहाराइणियाए अण्णमण्णं उवसंपिकित्ताणं विहरित्तए (हेमंतिगम्हास्र) ॥ १३२ ॥ ति-बेमि ॥ ववहारस्स चउत्थो उहेसओ समसो ॥ ४॥

ववहारस्स पंचमो उद्देसओ

नो कप्पइ पविताणीए अप्पिबिइयाए हेमंतिगिम्हास् चारए ॥ १३३ ॥ कप्पइ पवित्रणीए अप्पतइयाए हेमंतिगम्हासु चारए॥ १३४॥ नो ऋपाइ गणावच्छेइणीए अप्पतइयाए हेमंतिगम्हासु चारए ॥ १३५ ॥ कप्पइ गणावन्हेइणीए अप्पचउत्थाए हेमंनगिम्हासु चारए ॥ १३६ ॥ नो कप्पइ पवित्रणीए अप्पतइयाए वासावासं बत्यए ॥ १३७ ॥ कप्पइ पवित्तणीए अप्पचन्नत्थाए वासावासं वत्थए ॥ १३८ ॥ नो कप्पड गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थाए वासावासं वत्थए ॥ १३९ ॥ कप्पड् गणावच्छेड्णीए अप्पर्यचमाए वासावासं बत्थए॥ १४०॥ से गामंसि वा नगरंसि वा निगमंति वा रायहाणिसि वा वहणं पवत्तिणीणं अप्पतद्याणं वहणं गणावच्छेद-णीणं अप्पचडत्थाणं कप्पड् हेमंतिगम्हासु चारए अण्णमण्णं नी(निस्)साए ॥ १४१ ॥ से गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणिमि वा वहुणं पवत्तिणीणं अप्प-चउत्थाणं बहुणं गणावच्छेइणीणं अप्पपंचमाणं कप्पइ वागावासं वत्थए अण्णमण्णं नीसाए ॥ १४२ ॥ गामाणुगामं दृहज्जमाणी णिमांशी य जं पुरक्षो (कह्) काउं विह(रेजा)रइ सा आहच वीसंगंजा, अत्यि याई थ काइ अण्णा उवसंपर्जणारिहा सा उवसंपज्जियका. नित्य याई थ काइ अण्णा उवसंपज्जणारिहा तीसे य अप्पणो कप्पाए असमते (एवं) कप्पइ सा एगराइयाए पिडमाए जण्णं जण्णं दिसं अण्णाओ साहम्मिणीओ विहरति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए. नो सा कप्पह तत्थ विहार-वत्तियं वत्थए, कप्पइ सा तत्थ कारणवत्तियं वत्थए, तंसि च णं कारणंसि निट्टियंसि परो वएजा-वसाहि अजो! एगरायं वा दुरायं वा, एवं सा कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वस्थए. नो सा कप्पड़ परं एगरायाओं वा दुरायाओं वा बत्थए. जं तत्थ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसह, सा संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १४३ ॥ वासावासं पज्जोसविया जिम्मंत्री य जं पुरक्षो काउं विहरइ सा आहन्न वीसंभेजा, अत्य याउं य काइ अण्णा उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्या, नत्य याई थ काइ अण्णा उवसंपजणारिहा तीसे य अप्पणी कप्पाए असमने कप्पह सा एगराइ-याए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अण्णाओ साहम्मिणीओ विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलितए, नो सा कप्पइ तत्य बिहारवित्तयं बस्थए, कप्पइ सा तस्य कारणवित्तयं बत्यए. तंसि च णं कारणंसि निद्धियंसि परो वराजा-वसाहि अजी! एगरायं वर

दुरायं वा, एवं सा कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो सा कप्पइ परं एग-रायाओं वा दुरायाओं वा वत्यए, जं तत्य परं एगरायाओं वा दुरायाओं वा वसइ, सा संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १४४ ॥ पवित्तणी य गिलायमाणी अण्णयरं वएजा-मए णं अजो । कालगयाए समाणीए अयं समुक्रसियन्वा, सा य समुक्र-सणारिहा समुक्कमियन्त्रा, सा य नो समुक्कसणारिहा नो समुक्कसियन्दा, अत्थि याई थ अण्णा काइ समुक्रमणारिहा सा समुक्रासियन्त्रा, नत्थि याई थ अण्णा काइ समुक्तसणारिहा सा चेव समुक्तस्यव्वा. ताए व णं समुक्तिद्वाए परो वएजा-दुस्स-मुक्तिद्वं ते अजे । निक्सिवाहि ताए णं निक्सिवमाणाए नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, जाओ साहम्मिणीओ अहाकप्पं नो उद्वाए बिहरंति सञ्जासिं तासिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ॥ १४५॥ पवित्तणी य ओहायमाणी अण्णयरं वएजा-मए णं अजो ! ओहावियाए समाणीए अयं समुक्तसियव्या, सा य समुक्तसणारिहा समुक्त-सियव्वा, सा य नो समुक्तराणारिहा नो समुक्तसियव्वा, अत्थि याई थ अण्णा काइ समुक्रसणारिहा सा ममुक्रसियव्वा, निर्ध याई थ अण्णा काइ समुक्रसणारिहा सा चेव समुक्कासियच्या, ताए व णं समुक्किद्वाए परो वएजा-दुस्समुक्किद्वं ते अजे ! निक्खिबाहि, ताए णं निक्खिबमाणाए नत्थि केइ हेए वा परिहारे वा, जाओ साहम्मिणीओ अहाकर्य नो उद्वाए विहरेति सन्वासि तार्नि तप्पत्तिये छेए वा परिहारे वा ॥ १४६ ॥ निर्माथस्स (णं) नवडहरतरुण(ग)स्स आयारपक्रपे नामं अज्सयणे परिच्महे सिया, से य पुच्छियव्व, केण ते अजी! कारणेणं आयार-पक्रपे नामं अञ्चयणे परिकादे, कि आबाहेणं प्रमाएणं ! से य वएजा-नो आबा-हेणं पमाएणं, जाश्जी(वाए)वं तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियतं वा जाव गणावच्छेदयतं वा उद्दिसत्तएवा घारेसए वा, से य वएजा-आबाहेणं नो पमाएणं, से य संठवेस्सामीति संठवेजा, एवं से कप्पइ आयरियतं वा जाव गणावच्छेद्यतं वा उद्दिसितए वा धारेतए वा, से य संठवेस्सामीति नो संठवेजा, एवं से नो कप्पद **आयरियतं वा जाव गणावच्छेड्यतं वा उ**हिसित्तए वा धारेसए वा ॥ १४० ॥ निम्मंत्रीए (णं) नवडहरत्तरु(णिया)णाए आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिन्महे सिया, सा य पुरिक्तमध्या, केण मे कारणेणं (अजा!) आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिव्महे, कि आबाहेणं प्रमाएणं ! सा य वएजा-नो आबाहेणं प्रमाएणं, जावजीवं तीसे तष्पत्तियं नो कप्पइ पवित्राणितं वा गणावच्छेडणितं वा उद्दिलित्तए वा धारेतए बा. सा व बएजा-आबाहेणं नो पसाएणं, सा य संठवेस्सामीति संठवेजा, एवं से कप्पइ पवित्रणितं वा गणावच्छेड्णितं वा उद्दिसित्तए वा घारेत्तए वा, सा व संठवेस्सा- मीति नो संठवेजा, एवं से नो कप्पइ पवित्तिणतं वा गणावच्छेडणितं वा उहिसिसए वा धारेत्तए वा ॥ १४८ ॥ थेराणं थेरभमिपत्ताणं आयारपकृष्ये नामं अज्झयणे परिव्सक्के सिया. कप्पर तेसि संठवेताण वा असंठवेताण वा आयरियतं वा जाव गणावच्छेहयतं वा उद्दिस्तिए वा धारेताए वा ॥ १४९ ॥ थेराणं थेरभूमिपताणं आयारपकप्पे नामं अज्ज्ञयणे परिन्भद्रे सिया. कप्पड तेसि संनिसण्णाण वा संत्यहाण वा उत्ताणयाण वा पासिक्रयाण वा आयारपकरपं नामं अज्झयणं दोखं पि तत्त्वं पि पिडपुच्छित्तए वा पिड-सारेत्तए वा ॥ १५० ॥ जे णिगंथा य णिगंथीओ य संभोड्या सिया, नो ण्हं कप्पड अण्णमण्णस्य अंतिए आलोएसए, अस्य याई (य) ण्हं केड् आलोयणारिहे, कप्पड् ण्हं तस्य अंतिए आलोडतए. नत्यि याइं ण्हं केइ आलोचणारिष्टे, एव ण्हं कप्पइ अण्ण-मण्णस्य अंतिए आलोएत्तए ॥ ५५१ ॥ जे णिरगंथा य णिरगंथीओ य संमोइया सिया. नो ण्हं कप्पइ अण्णम(ण्णस्य अंतिए)ण्णेणं वेयावधं कारवेत्तए, अत्थि याइं ण्हं केइ वेयावचकरे कप्पर ण्हं वेयावचं कारवेत्तए. नित्य याडं ण्हं केड वेयावचकरे एव ण्हं कप्पड़ अण्णमण्णेणं वैयावचं कारवेत्तर ॥ १५२ ॥ णिमांथं च णं राओ वा वियाले वा वीहपद्रो हसेजा, इत्थी वा पुरिसस्य ओमानेजा पुरिसो वा इत्थीए ओमावेजा, एवं से कप्पड़, एवं से चिद्रड़, परिहारं च से न(णो) पाउणड़-एस कप(पो)पे शेरकप्पियाणं. एवं से नो कप्पइ, एवं से नो चिद्धइ, परिहारं च नो पाउणइ-एस कप्पे जिणकप्पि-याणं ॥ १५३ ॥ ति-बेमि ॥ ववहारस्स पंचमो उद्देसको समसो ॥ ५ ॥

ववहारस्स छट्टो उद्देसओ

भिक्ख् य इच्छेजा नायविहं एतए, नो (से) कप्पइ थेरे अणापुच्छिता नायविहं एतए, कप्पइ (से) थेरे आपुच्छिता नायविहं एतए, थेरा य से वियरेजा, एवं से कप्पइ नायविहं एतए, थेरा य से नो वियरेजा, एवं से नो कप्पइ नायविहं एतए, जं (जे) तत्य थेरेहिं अविइण्णे नायविहं एइ, से संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १५४॥ नो से कप्पइ अप्पस्थस्स अप्पागमस्स एगाणियस्स नायविहं एतए॥ १५५॥ कप्पइ से जे तत्य बहुस्छए बन्भागमे तेण सिंद नायविहं एतए॥ १५६॥ तत्य से पुन्वागमणेणं पुन्वाजते चाउलोहणे पच्छाउत्ते भिलिंगस्वे, कप्पइ से चाउलोहणे पित्रगा(हि)हेतए, नो से कप्पइ भिलिंगस्वे पित्रगाहेत्तए॥ १५७॥ तत्य से पुन्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगस्वे पच्छाउत्ते चाउलोहणे पश्चाउत्ते सिलंगस्वे प्रवागमणेणं दे वे कप्पइ चाउलोहणे पिर्डगाहेत्तए॥ १५८॥ तत्य से पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते कप्पइ से दो वि पिर्डगाहेत्तए॥ १५८॥ तत्य से पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते कप्पइ से दो वि पिर्डगाहेत्तए॥ १५८॥ तत्य से पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पिर्डगाहेत्तए॥ १५८॥ तत्य से पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पिर्डगाहेत्तए॥ १५८॥ तत्य से पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पर्डिगाहेत्तए॥ १५८॥ जे से तत्य पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पर्डिगाहेत्तए॥ १५८॥ जे से तत्य पुन्वागमणेणं दो वि पुव्वाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पर्डिगाहेत्त्त्व ॥ १५८॥ जे से तत्य पुन्वागमणेणं दो वि पर्छाउत्ते नो से कप्पइ दो वि पर्डिगाहेत्त्व ॥ १५८॥ जे से तत्य पुन्वागमणेणं से वि पर्डिगाहेत्त्व ॥ १५८॥ जे से तत्य पुन्वागमणेणं स्थ

गमणेणं पुन्त्राउत्ते से कप्पइ पिडम्माहेताए । १६१ ॥ जे से तत्थ पुन्ताममणेणं प्रच्छाउत्ते नो से कप्पइ पढिग्गाहेत्तए ॥ १६२ ॥ आयरियउवउझायस्स गणंसि पंच अइसेसा पण्णता, तंजह:-(१) आयरियउवज्ज्ञाए अंतो उवस्सयस्य पाए निगिज्झिय २ पप्कोडेमाणे वा पमज्जमाणे वा नो अ(णा)इक्षमइ ॥ १६३ ॥ (२) आयरिय उवज्झाए अंतो उवस्मयस्स उचारपासवणं विगिचमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्सइ॥ १६४॥ (३) आयरियउवज्झाए पभू वेयावडियं इच्छा करेजा इच्छा नो करेजा ॥ १६५ ॥ (४) आयरियडवज्झाए अंतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं या बसमाणे नो अइक्रमङ् ॥ १६६ ॥ (५) आयरियज्वज्हाए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अङ्क्रमङ् ॥ १६७॥ गणावच्छेङ्यस्स णं गर्णास दो अइसेसा प०, तं०-(१) गणावच्छेहण् अंतो उवस्मयस्य एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अहक्समइ॥ १६८॥ (२) गणावच्छेहए बाह्रि उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अइक्समइ॥ १६९॥ से गामंसि वा जाव रायहाणि-(सिण्येसं)सि वा एगवगडाए एगदुबाराए एगणिक्खमणपवेसाए णो कप्पइ बहुणं अगडमुयाणं एगयओ बत्यए, अत्थि यांडं ण्हं केंद्र आयारपकपघरे णत्थि यांडं ण्हं केड छेए वा परिहारे वा, णत्थि याई ण्हं केड आयारपकप्पधरे से (सब्वेसिं तेसिं) संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १७० ॥ से गामंति वा जाव रायहाणिंसि वा अभि-णिव्यगहाए अभिणिद्वाराए अभिणिक्समणपवेसणाए णो कप्पइ बहुण वि अगड-सुयाणं एगयओ बत्थए, अन्धि याई ण्हं केइ आयारपकप्पधरे जे तक्तियं रयणि संवसइ णित्य यार्ड व्हें केड छेए वा परिहारे वा, णित्थ यार्ड व्हें केड आयारफ्कप्पधरे जे तत्तियं रयणि संबस्द सब्बेसि तसि तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ॥ १७१ ॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिसि वा अभिणिव्वगडाए अभिणिद्वाराए अभिणिक्ख-मणपनेमणाए णो कप्पइ बहुसुयस्स बब्नागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स नत्थए, किमंग-पुण अप्यागमस्स अप्पस्तुवस्स ?॥ १७२॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुसुयस्स बञ्जागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वृत्यए दुइ(उम)ओ कालं भिक्खुभावं पडिजागरमाणस्स ॥ १७३ ॥ ज(जे त)स्थ एए बहुने इरबीओ य पुरिसा य पण्हानेंति तत्थ से समणे णिग्गंथे अष्णयरंसि अनिशंसि सोयंसि सक्षपोग्गळे णिग्घाएमाणे हत्यकम्मपिक-सेबणपत्ते आवज्जइ मासियं परिहारह्राणं अगुरघाइयं ॥ १७४ ॥ जस्य एए बहुवं इत्बीओ य पुरिसा य पण्हावेंति तत्य से समणे जिम्मंबे अण्णयरेसि अचित्तंसि सोयंसि सक्क्योम्मके णिग्वाएमाणे मेहणपिकसेवणपते आवजह चाउम्मासियं परि- हारद्वाणं अणुरवाइयं ॥ १७५ ॥ णो कप्पइ णिरगंथाण वा णिरगंथीण वा णिरगंथीं (अण्णगणाओ आगयं) खुयायारं मकलायारं मिकायारं संकिलिद्वायारित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेता अपिडकमावेता अनिंदावेता अगरहावेता अविउद्यवेता अवि-सोहावेता अकरणाए अणब्सुद्वावेता अहारिहं पायच्छितं अपिडकजावेता (पुण्छितए वा वाइतए वा) उवद्वावेतए वा संसुंजितए वा संवसितए वा तेसिं (तीसे) इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १०६ ॥ कप्पइ णिरगंथाण वा णिरगंथीण वा णिरगंथीं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सवलायारं मिकायारं संकिलिद्वायारित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेता पण्डिमावेता निंदावेता गरहावेता विउद्यवेता अकरणाए अच्युद्वावेता अहारिहं पायच्छितं पडिवजावेता उवद्वावेतए वा संभुंजितए वा संवसित्तए वा तेसिं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा संभुंजितए वा संवसित्तए वा तेसिं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वं। ॥ १७० ॥ वि-वेमि ॥ अवहारस्स छद्वो उद्दस्तओ समस्तो ॥ ६॥

ववहारस्स सत्तमो उद्देसओ

जे णिगंधा य णिगंधीओ य संभोइया सिया, नो कत्पइ णिगंधीणं णिगंधे अणापुच्छिता णिगंधें अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सवलायारं भिलायारं संकिलिहायारिवित्तं तस्य ठाणस्स अणाळोयावेना जाव पायच्छितं अपिडवजावेता पुच्छित्तए वा वाएत्तए वा उबहावेतए वा संभुंजित्तए वा संबंसितए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेतए वा ॥ १५८ ॥ जे णिगंधा य णिगंधीओ य संभोइया सिया, कत्पइ णिगंधीणं णिगंधे आपुच्छिता णिगंधीं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिहायारिवित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेता जाव पायच्छितं पिडवजावेता पुच्छितए वा वाएतए वा उवहावेत्तए वा संभुंजितए वा संवित्तिए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा चारेत्तए वा॥ १५९ ॥ जे णिगंधा य णिगंधीओ य संभोइया सिया, कप्पइ णिगंथाणं णिगंधीओ आपुच्छिता वा अणापुच्छिता वा णिगंधि अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिण्णायारं संकिलिहायारिवित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता जाव पायच्छितं पिडवजावेत्ता पुच्छितए वा वाएतए वा उवहावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवित्तरण् वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उवहावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवित्तरण् वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उवहावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवित्तरण् वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उवहावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवित्तरण् वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा सार्त्तए वा, तं च णिगंधीओ नो इच्छिजा, सेव(स्प)मेब नियं ठाणं

१ अण्णे आयरिसे द्वतदुगमहिगमुक्कन्भइ १७६-१७७ सरिसं, णवरं ''णिमांबिं'' ठाणे ''णिमांबं'' ति ।

॥ १८० ॥ जे णिरगंथा य णिरगंथीओ य संभोइया सिया, नो ण्हं कप्यह (णिरगंथे) भारोक्खं पाडिएकं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पड व्हं पचक्खं पाडिएकं संभोड्यं विसंभोगं करेताए, जत्येव अण्णमण्णं पासेजा तत्थेव एवं वएजा-अह णं अजो ! तु(म)माए सर्दि इम्मिम कारणम्म पचक्खं संभोगं विसंमोगं करेमि, सं य पहित्रप्येजा एवं से नो कप्पड पचक्खं पाडिएकं संभोड्यं विसंभोगं करेनए. से य नो पडित-प्पेजा एवं से कप्पड़ पश्चक्खं पाडिएकं संभोड्यं विसंभोगं करेत्तए ॥ १८१ ॥ जाओ णिगंथीओ वा णिगंथा वा संभोदया सिया, नो व्हं कप्पड (णिगंथीओ) प्यक्खं पाडिएकं संभोइयं विसंभोगं करेलए, कप्पड़ ण्हं पारोक्खं पाडिएकं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, जत्येव ताओ अप्पणो आयरियटवज्झाए पासेजा, तत्येव एवं वएजा-अह णं भंते ! अमुगीए अजाए सर्द्धि इमस्मि कारणस्मि पारीऋवं पाडिएकं संभोगं विसंभोगं करेमि, सा य से पांडनप्पेजा एवं से नो कप्पड़ पारोक्खं पांडिएकं संभोड़यं विसंभोगं करेत्तए, मा य से नो पांडतप्पेजा एवं से कप्पइ पारोक्खं पांडिएकं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए ॥ १८२ ॥ नो कप्पड़ णिमांद्याणं णिमांदिं अप्पणो अद्वाए पव्वावेत्तए वा भंडावेत्तए वा (सिक्खावेत्तए वा) सेहावेत्तए वा उबद्वावेत्तए वा संविस्तिए वा संभंजितए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अण्यदिसं वा उहिस्तिए वा धारेत्तए वा ॥ १८३ ॥ कप्पड णिगांथाणं णिगांथि अण्णेसि अद्राए पव्वावेत्तए वा जाब संभंजितए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिलितए वा धारेतए वा ।। १८४ ।। नो कप्पर णिरगंशीणं णिरगंथं अप्पणी अद्वाए पञ्चावेत्तए वा मंडावेत्तए वा जाव उद्दिस्तिए वा धारेसए वा ॥ १८५ ॥ कप्पड़ णिगंशीणं णिगंशं णिमांथाणं अद्वाए पव्यावेत्तए वा मुंडावेत्तए वा जाव उहिसित्तए वा घारेत्तए वा ॥ १८६॥ नो कप्पइ णिगांबीणं विइकिद्वियं दिसं वा अणुदिसं वा उहिसित्तए वा धारे-त्तए वा ॥ १८७॥ कप्पइ णिग्गंथाणं विइकिद्रियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसत्तए वा भारेत्तर वा ॥ १८८ ॥ नो कृप्पइ णिरगंथाणं विइकिद्वाइं पाहुडाइं विओसवेत्तर् ॥ १८९॥ कप्पड़ णिसांशीणं विडिकिद्वाई पाइडाई विओसवेतए ॥ १९० ॥ नो कप्पड़ णिसांशा-(ण वा णिम्मंथीण वा)णं विइकिट्टए काले सज्झायं (उद्दिसित्तए वा) करेत्तए (वा) ॥ १९१ ॥ कप्पड़ णिगांशीणं विड्किद्वर काले सज्झायं करेत्तर णिगांथणिस्सार ॥ १९२ ॥ नो कप्पड णिक्रांयाण वा जिक्नांथीण वा असज्झाइए सज्झायं करेत्रए ॥ १९३ ॥ कपड जिसंबाज वा जिसंबीज का सजझाइए सज्झायं करेलए ॥ १९४ ॥ नो कपड़ जिरांबाण वा जिरांबीण वा अप्पणो असञ्झाइए सज्झावं करेताए. कप्पड ण्डं क्षणमण्यस्य वायणं वलदत्तर् ॥ १९५ ॥ तिवासपरियार् समणे णिमांये ५३ समा

तीसं वासपरियाए समणीए णिग्गंबीए कप्पइ उबज्ज्ञायत्ताए उद्दिसित्तए ॥ १९६ 🏕 पंचनासपरियाए समणे णिगांथे सद्भिनासपरियाए समणीए णिगांथीए कप्पइ आय-रिय(ताए) उवज्झायताए उहिसित्तए ॥ १९७ ॥ गामाणुगामं दूरज्ञमाणे भिक्ख् य आह्य वीसंभेजा तं च सरीरगं फेड साहम्मिए पासेजा, कपइ से तं सरीरगं से न (मा) सागारियमिति कट्टू (…एगंते अचित्ते॰) थंडिहे बहुफाग्रए पटिलेहिता पमजिता परिद्ववेत्तए, अत्थि याइं य केइ साहम्मियसंतिए उवगरणजाए परि-हरणारिहे, कप्पड से सागारकढं गहाय दोशं पि ओगाहं अणुण्णवेता परिहारे परि-हारेत्तए ॥ १९८ ॥ सागारिए उवस्सयं वक्कएणं पर्वजेजा, से य वक्कर्यं वएजा-इमं(मिह)मि य इमंमि य ओवासे समणा णिगंथा परिवसंति, से मागारिए पारिहा-रिए, से य नो (एवं) वएजा, वक्कइए वएजा(०), से सागारिए पारिहारिए, दो वि ते (एवं) वएजा (जाव), दो वि सागारिया पारिहारिया ॥ १९९ ॥ सागारिए उव-स्सयं विकिणेजा, से य कह्यं वएजा-इमंमि य इमंमि य ओबासे समणा णिगंथा परिवसंति, से सागारिए पारिहारिए, से य नो वएजा, कहए वएजा, से सागारिए पारिहारिए, दो वि ते बएजा, दो वि सागारिया पारिहारिया ॥ २०० ॥ धिहवध्या ना(नि)यक्लवासिणी. सा वि यावि ओमाई अणुण्णवेयव्या, किमंग-पुण पिया वा भाया वा पुत्ते वा, से (य) वि या(दो)वि ओ(उ)ग्ग(इं)हे ओगेण्हिय(ब्वा)ब्वे ॥ २०९ ॥ पहिए वि ओमाई अणुकावेयव्वं ॥ २०२ ॥ से रज(राय)परियट्टेस संधडेस अव्योगडेस अव्योच्छिणोस अपरपरिगाहिएस सचेव ओगग्रहस्स प्रव्याणणा-वणा चिद्रह अहालंदमवि ओग्गहे ॥ २०३ ॥ से रखपरियहेस असंबंहेस वोगहेस वोच्छिणोसु परपरिगाहिएसु भिक्तबुभावस्स अद्वाए दोशं पि ओग्गहे अणुण्णवेयव्वे सिया ॥ २०४ ॥ ति-बेमि ॥ वचहारस्य सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥ ७ ॥

ववहारस्स अहमो उद्देसओ

गाहा(गिह)उ(डु)दूपजोसविए, नाए गाहाए ताए पएसाए ताए उवासंतराए जिसणं २ सेजासंयारगं लगेजा तिमणं तिमणं ममेव सिया, थेरा य से अणुजाणेजा, तस्सेव सिया, थेरा य से नो अणुजाणेजा, (णो तस्सेव सिया) एवं से कप्पइ आहाराइणियाए सेजासंथारगं पिडग्गाहेत्तए ॥ २०५ ॥ से अहालहुसगं सेजा-संथारगं गवेसेजा, जं चिक्क्या एगेणं हत्थेणं ओगि(जिझय २)ज्ञा जाब एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा (अद्धाणं) परिवहित्तए, एस मे हेमंतिगम्हाझ भविस्सइ ॥ २०६ ॥ से य अहालहुसगं सेजासंथारगं मवेसेजा, जं चिक्क्या एगेणं हत्थेणं ओगिज्ञ जाब एगाहं (०) अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे वासावासाझ भविस्सइ

॥ २०७ ॥ से अहालहुसगं सेजासंथारगं जाए(गवेसे)जा जं चिह्नया एगेणं इत्येणं ओगिज्झ जाव एगाइं वा दुयाहं वा तियाहं वा चउयाहं वा पं(चाहं वा ब्र्सिव)चगाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे बुद्धावासासु भविस्सइ॥ २०८॥ बेराणं बेरभूमिपताणं कप्पइ दंडए वा भंडए वा मत्तए वा चेले वा चेलचिलमिली वा अविरहिए ओवासे ठवेता गाहावडकुलं पिंडवायपिंडया(भत्ताए वा पाणा)ए (वा) पविसित्तए वा णिक्खमितए वा, कप्पड़ ण्हं संभियहचारीणं दोशं पि ओम्गहं अणुण्णवेता (परिहारं) परिहरित्तए ॥ २०९ ॥ नो कप्पड णिसायाण वा णिसांथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेजासंधारगं टोकं पि ओसाहं अण्णण्ण-वेता बहिया नीहरित्तए ॥ २९०॥ कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पाडि-हारियं वा सागारियसंतियं वा सेजासंधारगं दोखं पि ओगाईं अणुण्यवेता बहिया नीहरित्तए ॥ २१९ ॥ नो कप्पड़ णिखांयाण वा णिखांशीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं सन्वप्पणा अ(पत्र)प्पिणिता दोषं पि (तमेव) ओगाहं अण्णुण्णवेता अहिद्वित्तए, कप्पइ (०) अणुष्णवेता (०)॥ २९२॥ नी कप्पइ णिमांथाण वा णिमांथीण वा पुन्वामेव ओमाहं ओगिण्हिता तओ पच्छा अणुष्णवेत्तए ॥ २१३ ॥ कप्पड णिस्रायाण वा णिस्रायीण वा प्रव्वासेव ओस्गहं अणुण्यवेना तओ पच्छा ओगिण्हित्तए ॥ २१४ ॥ अह पुण एवं जाणेजा, इह सत्तु णिगंथाण वा णिगंथीण वा नो मुलमे पाडिहारिए संज्ञासंथारए ति कडू एव ण्हं कप्पइ पुन्वामेव ओग्गहं ओगिण्हिता तओ पच्छा अणुण्णवेत्तए, मा व(दु)ह्(ओ)उ अज्ञो॰ व(त्तियं)इ अणुलोमेणं अणुलोमेयन्वे सिया ॥ २१५॥ णिकांथस्स णं गाहावहकुलं पिडवायपिटयाए अणुपविद्वस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिन्मद्वे सिया, तं च केइ साहम्मिए पासेजा, कप्पइ से सागारकडं गहाय जत्थेव (ते) अण्णमण्णं पासेजा नत्येव एवं वएजा-इ(मं ते)मे मे अजो ! किं परिण्णाए ? से य वएजा-परिष्णाए, तस्सेव पिंडणिजाएयववे सिया, से य वएजा-नो परिष्णाए, तं नो अप्पणा परिमुं(जए)जेजा नो अ(ज्येसिं)ज्यमणस्स दावए, एगंते बहुफासुए (पएसे पडिलेहिता) थंडिहे परिद्ववेयव्वे सिया ॥ २१६॥ गिरगंथस्स णं बहिया वियारभूमिं वा बिहारभूमिं वा णिक्खंतस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिब्मद्वे सिया, तं च फेड् साहम्मिए पासेजा, कप्पड से सागारकंड गहाय जत्येव अण्णमण्णं पासेजा तत्येव एवं वएजा-इमे (ते) मे अजो ! कि परिण्णाए ? से य वएजा-परिण्णाए, तस्सेव पिडिमिजाएयन्वे सिया, से य वएजा-नो परिण्णाए, तं नो अप्पणा परिभुंजेजा नो अष्णमण्णस्य दावए, एगंते बहुफाछुए यंदिके परिद्रवेयम्बे सिया ॥ २१७ ॥

णिगंधस्स णं गामाणुगामं दृह्ज्जमाणस्स अष्णवरे उदगरणजाए परिव्यद्वे सिया, तं च केइ साहम्मिए पासेच्या, कप्पइ से सागारकडं गहाय दूर(मिव)मेक्यद्धाणं परि-वितार, जत्थेव अण्णमण्णं पासेज्ञा तत्थेव एवं वएजा-इमे भे अजी! कि परि-ण्णाए ? से य बएजा-परिण्णाए. तस्सेव पश्चिणिजाएयव्वे सिया. से य वएजा-नो परिण्णाए, तं नो अप्पणा परिभुंजेजा नो अण्णमण्णस्स दावए, एगंते वहुपासुए थंडिहे परिद्वेयक्वें सिया ॥ २१८ ॥ कप्पड जिस्मंथाण वा जिस्मंथीण वा अइरेग-पिंडिगाहं अण्णमण्णस्स अद्वाए (दूरमवि अद्धाणं परिवृहित्तए) घारेत्तए वा परिग्गहित्तए वा सो वा णं धारेस्सइ अहं वा णं धारेस्साम अण्णो वा णं धारेस्सइ, नो से कपड़ ते अणापच्छिय अणामंतिय अण्णमण्णेसि दाउं वा अणुप्पयाउं वा, कप्पह से ते आपुच्छिय आसंतिय अण्णमण्णेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा ॥ २१९ ॥ अद्व कवलप्पमाणमेत्रे आहारं आहारेमाणे (समणे) णिग्गंथे अप्पाहारे, बार(दुवाल)स कवलप्पमाणमेत्रे आहारं आहारेमाणे णिगांथे अवद्गोमोयरिया, सोलस कवलप्पमाण-मेरी आहारं आहारंसाणे णिकांथे दुसागपते, चंडवीसं क्वलप्यमाणमेरी आहारं आहारेमाणे णिग्गंथे ओ(पत्तो)मोयरिया, एगतीसं कवलप्पमाणमेते आहारं आहारे-माणे फिमांथे किच्णोमोयरिया, बत्तीसं कवळप्यमाणमेते आहारं आहारेमाणे णिगांथे पमाणपत्ते, एतो एगेण वि कउले(घासे)णं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे णिगांथे णो पकामरसमोइ-ति वत्तव्वं सिया ॥ २२० ॥ ति-बेमि ॥ ववहारस्य अद्रमो उद्देखयो समसो॥८॥

ववहारस्स णवमो उद्देसओ

सागारियस्स आएसे अंतो वगडाए भुंजइ निट्ठिए नि(सि)महे पाडिहारिए, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२१ ॥ सागारियस्स आएसे अंतो वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसहे अपाडिहारिए, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२२ ॥ सागारियस्स आएसे वाहिं वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसहे पाडिहारिए, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२३ ॥ सागारियस्स आएसे वाहिं वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसहे आपि हारिए, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२४ ॥ सागारियस्स दासे वा बेसे वा भयए वा महण्णए वा अंतो वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसहे पाडिहारिए, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२५ ॥ सागारियस्स दासे (इ) वा बेसे वा भयए वा महण्णए (पेसे) वा अंतो वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसहे अपाडिहारिए, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पिडणाहेत्तए ॥ २२५ ॥ सागारियस्स दासे (इ) वा बेसे वा भयए वा महण्णए वा बाहिं वगडाए

भुंजइ निष्टिए निसट्टे पाडिहारिए, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेतए ॥ २२०॥ सागारियस्स दासे वा वेसे वा भयए वा भइण्णए वा बाहि वगडाए भुंजह निद्विए निसद्वे अपाडिहारिए, तम्हा दावए, एवं से कप्पड पडिगाहेनए ॥ २२८॥ सागारिय(स्स)णायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अंतो (सागारियस्स) एगपयाए सागारियं चो(च उ)वजीवइ. तम्हा दावए. णो से कप्पड पिंगाहेत्तए ॥ २२९ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अंतो अभिणिपयाए सागारियं चोव-जीवइ. तम्हा दावए. णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३० ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए बाहिं एगपयाए सागारियं चोवजीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पट्र पर्डिगाहेत्तए ॥ २३१ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए बाहिं अभिणिपयाए सागारियं चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३२ ॥ सागारियणायण् सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एगदुवाराए एग-णिक्समणपनेसाए अंतो एगपयाए सागारियं चोवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पटिगाहेत्तए ॥ २३३ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्वगडाए एग-दुवाराए एगणिक्खमणपवेसाए अंतो अभिणिपयाए सागारियं चोवजीवइ, तम्हा दावए. णो से कप्पड पहिंगाहेत्तए ॥ २३४ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्यगढाए एगद्वाराए एगणिक्खमणपवेसाए बाहि एगपयाए सागारियं चोव-जीवड. तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडियाहेत्तए ॥ २३५ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्यग्डाए एगदुवाराए एगणिक्समणपवेसाए बाहि अभिणिपयाए सागारियं चोवजावडः, तम्हा दावए, णो से कप्पड पडिगाहेत्तए ॥ २३६ ॥ सागा-रियस्त चिक्रयासाला साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, णो से कृप्यइ पिंडगाहेत्तए ॥ २३७ ॥ सागारियस्स चिक्रयासाला णिस्साहारणवक्रयपञ्जा, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३८ ॥ सागारियस्स गोलियसाला साहारणवक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, गो से कप्पइ पिंडगाहेत्तए ॥ २३९ ॥ सागारियस्स गोलियसाला णिस्साहारणबक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेनए॥ २४०॥ सागारियस्य वो(बो)धियसाला साहारणत्रक्रयपउत्ता, तम्हा दावए, को से कप्पइ पिंडगाहेत्तए ॥ २४१ ॥ सागारियस्स बोधियसाला णिस्साहारणवक्रयपन्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पड़ पडिगाहेतए ॥ २४२ ॥ सागारियस्स दोसियसाला साहारण-वक्कयपन्नता, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४३ ॥ सागारियस्स दोसियसाला णिस्साहारणनकस्पाउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पड़ पडिगाहेत्तए ॥ २४४ ॥ सागारियस्य सोत्तियसाळा साहारणवक्ष्यपउत्ता, तम्हा दावए, णो से

कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४५ ॥ सागारियस्स सोत्तियसाला णिस्साहारणवक्रयपउत्ता. तम्हा दावए, एवं से कप्पड़ पिंडगाहेत्तए ॥ २४६ ॥ सागारियस्स बोडियसाला साहारणवक्तयपुरता, तम्हा दावए, णो से कृष्पइ पहिगाहेलए ॥ २४७ ॥ सागा-रियस्स बोडियसाला णिस्माहारणवक्तयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडि-गाहेताए ॥ २४८ ॥ सामारियस्स गंधियसाला साहारणवक्रयपनता, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेक्क ॥ २४९ ॥ सागारियस्स गंधियसाला णिस्माहारणवक्रय-पउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २५० ॥ सागारियस्स सोडिय-साला साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, णो से ऋषड़ पडिगाहेत्तए॥ २५१॥ सागारियस्स सोडियसाला णिस्साहारणवक्कयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २५२ ॥ मागारियस्य ओसहीओ संथडाओ, तम्हा दावए, णो से कप्पड पडिगाहेनए ॥ २५३ ॥ सागारियस्स ओसहिओ असंथडाओ, तम्हा दावए, एवं से कप्पड़ पडिगाहेत्तए ॥ २५.४ ॥ सागारियस्स अंबफला संथडा, तम्हा दावए, णो से कप्पड़ पहिनाहेत्तए ॥ २५.५ ॥ सागारियस्य अंवफला असंथडा. तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेनए ॥ २५६ ॥ मागारियणायए सिया मागारियस्स एगवगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेमाए नागारियस्स एगवय सागारियं च उवजीवइ, तम्हा दावए, णो से कप्पइ पिडिगाहेत्तए ॥ २५७ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए एगदुवाराए एगणिक्खमणपवेमाए सागारियस्स अभिणिवय सागारियं च उवजीवड, तम्हा दावए, णो से कप्पट्ट पडिगाहेताए॥ २५८॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिव्यगडाए अभिणिद्वाराए अभिणिक्ख-मणपवेसाए सागारियस्स एगवयू सागारियं च उवजीवइ, तम्हा दावए जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २५९ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्त अभिणिव्वगडाए अभिणिदुवाराए अभिणिक्खमणपवेसाए सागारियस्स अभिणिवयु सागारियं च उवजीवइ. तम्हा दावए, णो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २६० ॥ सत्तसत्तमिया णं भिक्खपडिमा (णं) एगूणपण्णाए राइंदिएहि एगेण छण्णडएणं भिक्खासएणं अहासूत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातचं अहासम्(मकाएणं)मं फासि(ता)या पालिया (साहिता) तीरिया किष्टिया (आणाए) अणुपालिया भवइ ॥ २६१ ॥ अहुअहुसिया णं भिक्खु-पिंडमा चउसद्रीए राइंदिएहिं दोहि य अद्वासीएहिं भिक्खासएहिं अहासत्तं अहाकपं अहामगं अहातचं अहासम्मं फासिया पालिया तीरिया किहिया अणुपालिया भवड ॥ २६२ ॥ णवणविमया णं भिक्खपडिमा एगासीए राइंदिएहिं चउहि य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुतं अहाकपं अहामगं अहातचं अहासमं फासिया पालिया

त्तीरिया किट्टिया अणुपालिया भवड ॥ २६३ ॥ इसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसएणं अद्दूछदेहि य मिक्खासएहि अहासूत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातचं अहा-सम्मं फासिया पालिया तीरिया किट्टिया अणुपालिया भवड़ ॥ २६४ ॥ दो पडिमाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-खुड्डिया वा (चेव) मोयपिडमा सहस्रिया वा मोयपिडमा. खिड्डयण्णं मोयपिंडमं पाँडवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ पढ(मेसरद)मणिदाहकालसमयंसि वा चरिमणिदाहकालसमयंसि वा बहिया गामस्म वा जाव हायहाणीए (संणिवेसंसि) वा वर्णास वा वणदुर्गास वा पव्वयंसि वा पव्वयदुर्गास वा, भोना आरमइ चोहसमेणं पारेड. अभोषा आस्मड सोलसमेणं पारेड, एवं खलु एसा खुड्डिया मोयपडिमा अहा-सुनं जाव अणुपालिता भन्नइ॥ २६५॥ महस्रियण्णं मोयपिंडमं पडिकणस्य अणगारस्स कप्पइ से पढमणिदाहकालममयंसि वा चरिमणिदाहकालसमयंसि वा वहिया गामस्स या जाव रायहाणीए वा वर्णास वा वणदुर्गास वा पव्ययंति वा पव्ययदुर्गासे वा, भीचा आरुभड़, सोलसमेणं पारेड़, अभोचा आरुभड़, अद्वारसमेणं पारेड़, एवं खळ एसा मह-हिया मोयपिंडमा अहामुत्तं जाव अणुपालिता भवइ ॥ २६६ ॥ संखादित्यस्स णं (भिक्नुस्स पहिम्महधारिस्स गाहावइकुलं पिंडवायपिडयाए अणुप्पविद्रस्स) जाबइयं केइ अंतो परिग्गहोंस उ(विता) बङ्ग दलएजा ताबहयाओ (ताओ) दत्तीओ वनव्वं सिया, तत्थ से केइ छ प्यवित्रएण वा दू (दुर)सएण वा वालएण वा अंतो पिंडिग्यहंसि उवित्ता दलएजा, सा (सन्वा) वि णं सा एगा दत्ती वत्तन्वं सिया, तत्य से बहवे भंज-माणा सन्वे ते सयं (२) पिं(डसाहणियं)डं अंतो पडिम्गहंसि उविता दलएजा, सन्वा वि णं सा एगा दत्ती वनव्वं सिया ॥ २६७॥ (संखादत्तियस्स णं भिक्खस्स) पाण-पिंडरगहियस्स णं (गा॰) जावइयं केइ अंतो पाणिमि उवडत् दलएजा तावइयाओ दत्तीओ बत्तव्वं सिया, तत्थ से केड छव्चएण वा दूसएण वा बालएण वा अंतो पाणिसि उविता दलएजा, सा वि णं सा एगा दत्ती वृत्तव्वं सिया, तत्य से बहुवे भुंजमाणा सब्वे ते सरं (· · एगं) पिं(ड)डं अंतो पाणिसि उविता दलएजा, सब्बा वि णं सा एगा दत्ती वत्तव्यं सिया ॥ २६८ ॥ तिविष्ठे उयह डे पण्णते, तंत्रहा-सुदोवह डे फलिओवह डे संसद्भोवहडे ॥ २६९ ॥ तिबिहे ओम्गहिए पण्णते, तंजहा-जं च ओगिण्हड, जं च साहरइ, जं च आसगंसि पिन्खवइ, एगे एवमाहंसु ॥ २००॥ (एगे पुण एव माहंसु) दुविहे ओग्गहिए पण्णते, तंत्रहा-जं च ओगिण्हड, जं च आसगंसि पक्सिवड ॥२०१॥ ति-वेमि ॥ ववहारस्स णवमो उद्देसको समसो ॥ ९॥

ववहारस्स दसमो उदेसओ

दो पिदमाओ पण्णताओ, तंजहा-जवमज्ज्ञा य चंदपिदमा वहरमज्ज्ञा य

चंदपिडमा, जयमञ्झण्णं चंदपिडमं पिडवण्णस्स अणगारस्स निर्च (मासं) बोसद्रकाए चियनदेहे जे केइ परीसहो(उ)वसम्मा समु(उ)प्पर्खित दिव्या वा माणुरूनमा वा तिरिक्खजोणिया वा(अणुलोमा वा…), ते (सब्वे) उपपण्णे सम्मं स(हेजा)हइ समइ तितिक्खेइ अहियासंड् ॥ २७२ ॥ जबमज्झणां चंदपिंडमं पिडवण्णस्स अणगारस्स सुक्रपक्तस्स से पाडिवए कप्पड़ एगा दत्ती भोग्रणस्य पडिगाहेत्तए एगा पाणस्य, (सन्वेहिं दुपयचउप्पयाइएहिं आहारकंखीहिं सत्तेहिं पिडणियत्तेर्हि) अण्णायउंछे सुद्धोवहडं णिज्नहिता बहुवे समणमाहणअइहिकिवणवणीमगा, कप्पइ से एगस्स भुंजमाणस्स पडिगाहेनाए, णो दोण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं णो पंचण्हं, णो गुन्वि-णीए जो बालबत्थाए जो दार्गं पेजमाजीए, जो (से कप्पड़) अंतो एलुयस्स दो वि पाए साहर दळमाणीए. (पडिगाहित्तए अह पुण एवं जाणिजा) णो वाहिं एळयस्स दो वि पाए माहह दळमाणीए, एगं पायं अंतो किचा एगं पायं बाहिं किचा एल्यें विक्खंभइता (एयाए एसणाए एसमाणे लब्भेजा आहारे॰ एयाए एसणाए एस-माणे णो लब्सेजा णो आहारेजा) एवं दलयड, एवं सं कप्पड पडिगाहेतए, एवं णो दलयइ, एवं से णो कप्पइ पडिगाहेनए, बिइजाए से कप्पइ दोण्णि दर्ताओ भोयणस्स पडिगाहेसए दोण्यि पाणस्म (सन्वेहिं ...), तइयाए से कप्पड़ तिण्यि दनीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए तिण्णि पाणस्स, चउत्थीए से कप्पड चउदत्तीओ भोयणस्य पडिगाहेत्तए चउपाणस्य, पंचमीए से कप्पइ पंचदनीओ भोयणस्य पडिगाहेत्तए पंचपाणस्स, छट्टीए से कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेताए छ पाणस्स, सत्तमीए से कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेनए सत्त पाणस्स, अद्वमीए से कप्पइ अद्व दत्तीओ भोयणस्य पिंडगाहेत्तए अद्भ पाणस्य, णवमीए से कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्य पडिगाहेत्तए णव पाणस्स, दसमीए से कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए दस पाणस्स, एगार(सी)समीए से कप्पइ एगार्स दत्तीओ भोयणस्स पर्डिगाहेत्तए एगारस पाणस्य, बारसमीए से कप्पह बारस दत्तीओ भोयणस्य पडिगाहेत्तए बारस पाणस्स, तेरसमीए से कप्पइ तेरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए तेरस पाणस्स, चोइसमीए से कप्पइ चोइस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए चोइस पाणस्स, पण्णरसमी(पुण्णिमा)ए से कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोगणस्य पहिनाहेत्तए पण्णरस पाणस्स, बहुलपक्लस्स से पाडिवए कप्पंति चोइस (दशीओ भोयणस्स पिंडगाहेतए चोहम पाणस्स सम्बेहिं दुप्पय जाव जो आहारेजा), बिइयाए कप्पइ तेरस इत्तीओ भोयणस्स पिंडगाहेत्तए तेरस पाणस्स जाव णो आहारेजा. तझ्याए कप्पड बारस दत्तीओ मोयणस्स पडिगाहेत्तए बारस पाणस्स जाव णो आहारेजा. चउत्बीए

फप्पइ एकारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, पंचमीए कप्पइ दस दत्तीओ मीयणस्स जाब णो आहारेजा, छट्टीए कप्पइ णव दर्ताओ भोयणस्स जाब णो भाहारेजा, मत्तमीए कप्पइ अट्ट दशीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा, अट्टमीए कप्पड़ सत्त दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, णवमीए कप्पड़ छ दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, दसमीए कप्पड् पंच दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, एकारसीए कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, बारसीए कप्पइ तिदत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा, तेरसीए कप्पइ दो दत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा नउइसीए कप्पड़ एगा दत्ती भोयणस्य जाव णो आहारेजा, अमावासाए से य अमत्तद्वे भवइ, एवं सालु एसा जवमज्झचंदपिरमा अहामुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिता भवइ ॥ २०३ ॥ वहरमज्झण्णं चंदपिंडमं पडिवण्णस्स अणगारस्स मासं वोसङ्गकाए चियतंदेहे जे फेड परिसहोवसम्गा समु-प्पर्जिति, तंजहा-दिव्या वा माणुरसगा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पिंडलोमा वा, तत्य अणुलोमा वा ताव वंदेजा वा नमंसेजा वा सकारेजा वा सम्माणेजा वा कलाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जवासेजा, तत्य पहिलोमा वा अण्णयरेणं दंडेण वा लड़ीण वा मुद्दीण वा जोरेण वा वेरेण वा करेण वा काए आउड़ेजा, ते सब्वे उप्पण्णे सम्मं सहेजा खमेजा तिइक्खेजा अहियासेजा ॥ २७४ ॥ वहरमञ्चाणां चंदपिसमं पडिवण्णस्म अणगारस्य बहुलपन्खस्स पाडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पहिगाहेत्तए पण्णरस पाणगस्स सम्बेहिं दुप्पयचउप्पयाइएहिं आहारकंखेहिं जाव णो आहारेजा, बिड्याए से कप्पड़ चउद्दस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए जाव णो भाहारेजा, तइयाए कप्पइ तेरस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, चजरूबीए कप्पड़ बारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, पंचमीए कप्पड़ एगारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, छट्टीए कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, सत्तमीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, अट्टमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, णवमीए कप्पइ सत्त दत्तीओ मोयणस्स जाव णो आहारेजा, दसमीए कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्त जाव णो आहारेजा, एगारसीए कप्पइ पंच दत्तीओ भोयणस्त जाव णो आहारेजा, बारसीए कप्पइ चलदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, तेरसीए कप्पइ तिष्णि दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, चउदसीए कप्पइ दो दत्तीओ मोयणस्स जाव णो आहारेज्या, अमावासाए कप्पइ एगा दत्ती भीयणस्य पडिगाहेसए जाव णो आहारेज्या, सुक्रपनखस्य पाडिवए से कप्पह दो

दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, बिइयाए से कप्पइ तिण्णि दत्तीओ भोय-णस्स जाव णो आहारेजा, तइयाए से कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, चउत्थीए से कप्पड पंचदत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा. पंचमीए कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा. छद्रीए कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा, मत्तमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओ मोय-णस्स जाव णो आहारेजा, अद्भगीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्म जाव णो आहारेजा, णवमीए कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, दममीए कप्पट एगारम दत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा, एगारसीए कप्पट बारस दत्तीओ भोयणस्य जाव णो आहारेजा, वारसीए कप्पइ तेरस दत्तीओ भोय-णस्स जाव णो आहारेजा, तेरसीए कप्पड चउद्दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेजा, चउद्द्सीए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पिंडगाहेत्तए, पण्णरस पाणगस्स पिंडेगाहेता, सन्वंहिं दुप्पयन्वउप्पय जाव णो लमेजा णो आहारेजा. पुण्णिमाए अभत्तद्वे भवड्, एवं खळु एसा वड्रमज्ज्ञा चंदपिडमा अहासुत्तं अहारूप्पं जाव अणुपालिता भवड ॥ २७५ ॥ पंचिवहे ववहारे पण्णते, तंजहा-आगमे सुए आणा धारणा जीए । जत्थेव तत्थ आगमे सिया, आगमेणं वयहारं पद्धवेजा, णो से तत्थ आगमे सिया, जहां से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्टवेजा, णो से तत्थ सुए सिया. जहा से नत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्टवेजा, णो से नत्थ आणा सिया, जहां से तत्थ धारणा सिया, धारणाए नवहारं पहुबेजा, णो से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पहनेजा, एएहि पंचिंह ववहारेहिं ववहारं पट्टवेजा, तंजहा-आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं, जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारे पट्टवेजा, से किमाह मंते ? आगमबलिया समणा निग्गंथा, इचेयं पंचिवहं बवहारं जया जया जिंह जिंह तहा तहा तहिं तहि अणिसिओवस्सियं ववहारं बवहारेमाणे समणे णिग्पंथे आणाए आराहए भवइ ॥ २७६ ॥ चत्तारि पुरिस[जा]जाया पण्णता, तंजहा-अड्डकरे णा(ममे)मं एगे णो माणकरे, माणकरे णामं एगे णो अडुकरे, एगे अडुकरे वि माण-करे वि, एगे जो अहुकरे जो माजकरे ॥ २७७ ॥ चतारि पुरिसजाया प्रज्जता, तंजहा-गणहकरे णामं एगे णो माणकरे, माणकरे णामं एगे णो गणहकरे, एगे गणहकरे वि माणकरे वि, एगे णो गणहकरे णो माणकरे ॥ २७८ ॥ चतारि पुरिसजाया पण्णता, तं०-गणसंगहकरे णामं एगे णो माणकरे, माणकरे णामं एगे को गणसंगहकरे. एने गणसंगहकरे वि माणकरे वि, एने को गणसंगहकरे को

माणकरे ॥ २७९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तंजहा-गणसो(भ)हकरे णामं एगे णो माणकरे, माणकरे णामं एगे णो गणसोहकरे, एगे गणसोहकरे वि माणकरे वि. एगे णो गणसोहकरे णो माणकरे ॥ २८० ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता. तं०-गणसोहिकरे णासं एगे जो माणकरे. माणकरे जामं एगे जो गणसोहिकरे. एगे गण-मोहिकरे वि माणकरे वि. एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे ॥ २८९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता. तंजहा-रूवं णामेगे जहइ णो धम्मं, धम्मं णामेगे जहइ नो हवं, एगे स्वं पि जहइ धम्मं पि जहइ, एगे णो रुवं जहइ णो धम्मं जहुइ ॥ २८२ ॥ चनारि पुरिसजाया पण्णता, तंजहा-धम्मं णामेगे जहह जो गणसंठिई. गणसंठिई णामेंगे जहड़ जो घरमं. एगे गणसंटिइं पि जहड़ धरमं पि जहड़, एगे जो गणसंटिइं जहइ णो धम्मं जहइ ॥ २८३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तंजहा-पियधम्मे णामेंगे जो दहधम्मे, दहधम्मे जामेंगे जो पियधम्मे, एगे पियधम्मे वि दहधम्मे वि. एगे जो पियधम्मे जो दहधम्मे ॥ २८४ ॥ बतारि आयरिया पण्णता, तंजहा-पव्यावणायरिए णामेरो णो उवद्वावणायरिए, उबद्वावणायरिए णामेरो णो पव्यावणा-यरिए, एगे पव्यावणायरिए वि उनद्वावणायरिए वि, एगे णो पव्यावणायरिए णो उबहाबणायरिए ॥ २८५ ॥ चत्तारि आयरिया पण्णता, नंजहा-उद्देसणायरिए णामेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णामेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिए वि वायणायरिए वि, एने जो उद्देसणायरिए जो वायणायरिए ॥ २८६ ॥ घम्मायरियस्स चतारि अंतेवासी पण्णता, तंजहा-पञ्चावणंतेवासी णामेगे णो उवट्टावणंतेवासी, उच्छावणंतवासी णामेगे णो पव्यावणंतेवासी, एगे पव्यावणंतेवासी वि उव-द्रावणंतेवासी वि. एगे णो पव्यावणंतेवासी णो उबद्रावणंतेवासी ॥ २८७ ॥ चत्तारि अंतेषासी पण्णता, तं -- उद्देसणंतेवासी णामेंगे णो वायणंतेवासी, वायणंतेवासी णामेगे णो उहेसणंतेवासी, एगे उहेसणंतेवासी वि वायणंतेवासी वि, एगे णो उहे-सणंतेवासी णो वायणंतेवासी ॥ २८८ ॥ चतारि धम्मायरिया पण्णता. तंजहा-पन्वावणधन्मायरिए णामेगे णो उबद्वावणधन्मायरिए, उबद्वावणधन्मायरिए णामेगे णो पव्यावणधम्मायरिए, एरो पव्यावणधम्मायरिए वि उवद्वावणधम्मायरिए वि, एरो णो पन्वावणधम्मायरिए भो उबद्वावणधम्मायरिए ॥ २८९ ॥ चतारि धम्मायरिया पण्णता, तं०-उद्देसणयम्मायरिए णामेगे णो वायणयम्मायरिए. वायणयम्मायरिए णामेरो भो उहेरामधम्मायरिए, एगे उहेरामधम्मायरिए वि बायमधम्मायरिए वि. एगे णो उहेराणधम्मायरिए णो वायणधम्मायरिए ॥ २९० ॥ चतारि धम्मंतेवासी पण्णता. तंजहा-पञ्चावणधम्मंतेवासी जामेगे जो उबदावणधम्मंतेवासी उबदावण-

धम्मंतेवासी णामेगे णो पन्वावणधम्मंतेवासी, एगे पन्वावणधम्मंतेवासी वि उवद्वा-वणधम्मंतेवासी वि, एगे गो पव्वावणधम्मंतेवासी गो उवद्वावणधम्मंतेवासी ॥ २९१ ॥ चतारि धम्मंतेवासी पण्णता, तंजहा-उद्देसणधम्मंतेवासी णामेगे णो वायणधम्मंतेवासी, वायणधम्मंतेवासी णामेगे णो उद्देसणधम्मंतेवासी, एगे उद्दे-सणघम्मंतेवासी वि वायणघम्मंतेवासी वि, एगे णो उद्देसणघम्मंतेवासी णो वायण-धम्मंतवासी ॥ २९२ ॥ तओ थेरभूमीओ पण्णताओ, तंजहा-जाइथेरे सुयथेरे प(वजा)रियायथेरे । सद्धिवा(वरि)मजाए (समणे णिग्गंथे) जाइथेरे, (ठाण)समवा-यंगं जाव सुयधारए सुयथेरे. वीनवासपरियाए परियायथेरे ॥ २९३ ॥ तओ सेह-भूमीओ पण्णताओ, तं०-मत्तराइंदिया चाउम्मासिया छम्मासिया, छम्मासिया उद्योसिया, चाउम्मासिया मज्झिमया, सत्तराइणो जर्हाण्यया ॥ २९४ ॥ णो कप्पइ णिरगंधाण वा णिरगंथीण वा खुद्भगं वा खुद्वियं वा ऊणद्रवासजायं उबद्वावेशए वा संभंजित्तए वा ॥ २९५ ॥ कप्पड णिगंथाण वा णिगंशीण वा खुरूगं वा खुरूयं वा माइरेगद्ववासजायं उबद्वावेत्तए वा संभुंजिनए वा ॥ २९६ ॥ णो कप्पइ णिम्गंथाण वा णिगांशीण वा खुडुगस्स वा खुडुयाए वा अव्वंजणजायस्स आयारपकाये णामं अञ्झरणे उद्दिसित्तए ॥ २९७ ॥ कप्पइ जिर्माथाण वा जिर्माथीण वा खुट्टगस्स वा खुड्डियाए वा वंजणजायस्स आयारपकप्पे णामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥ २९८ ॥ तिवासपरियायस्स समणस्स णिगंगयस्स कप्पइ आयारपकप्पे णामं अज्झवणे उद्दि-सित्तए ॥ २९९ ॥ चउवासपरिया(यस्स…)ए कप्पइ स्यगडे णामं अंगे उद्दिसित्तए ॥ २००॥ पंचवासपरियाए कप्पइ दसाकप्पववहारे (णाममञ्झयणे) उद्दिसित्तए ॥ ३०१ ॥ अड्डवासपरियाए कप्पइ ठाणसमवाए (णामं अंगे) उद्दिसित्तए ॥ ३०२ ॥ दसवासपरियाए कप्पइ वि(वाहे)याहे णामं अंगे उद्दिलितए ॥ ३०३ ॥ एकारस-वासपरियाए कप्पइ खुड्डिया विमाणपविभनी महक्षिया विमाणपविभन्ती अंगचुलिया वर्सवं)गच्छिया वियाहच्छिया णामं अज्झयणे उहिसित्तए॥ ३०४॥ बारसवास-परियाए कप्पड् गरुलोबवाए धरणोववाए वेसमणोबवाए बेलंधरोववाए णामं अज्ञ-यणे उद्दितित्तए ॥ ३०५ ॥ तेरसवासपरियाए कप्पइ उद्घाण(ग्र)परियावणिए ससु-द्वाणसुए देनिंदोबवाए णागपरियावणिए णामं अञ्झयणे उद्दिसित्तए ॥ ३०६ ॥ चोइ(चउद)सवासपरियाए कप्पइ सि(सु)मिणभावणा णामं अञ्चयणे उद्दिसत्तए ॥ ३०० ॥ पण्णरसवासपरियाए कप्पइ चार्(णा)णभावणा णामं अञ्चलणे उहि-सिताए ॥ ३०८ ॥ सोलसवासपरियाए कप्पड् तेयणीसंगे णामं अज्ज्ञयणे उद्दिसित्तए ॥ ३०९ ॥ सत्तरसवासपरियाए कप्पइ आसीविसमावणा मार्स अञ्झयणे उद्दिसित्तए

॥ ३१० ॥ अद्वारसवामपरियागस्स समणस्स णिकांथस्स कप्पइ दिईाविसमावणा णामं अज्ञायणे उद्दितिनए॥ ३११॥ एगूणवीसवासपरियाए कप्पइ दिद्धिवाए णामं अंगे उद्दिश्ताए ॥ ३१२ ॥ वीसवासपरियाए समणे णिगांथे सञ्बसुयाणुवाई भवड् ॥ ३९३ ॥ दसविहे वैयावचे पण्णते. तंजहा-आयरियवयावचे उवज्ञायवेयावचे थेरवेयावचे सेहवेयावचे गिलाणवेयावचे तवस्सिवेयावचे साहम्मियवेयावचे कुल-वेयावचे गणवेयावचे संघवेयावचे ॥ ३१४॥ आयरियवेयावचं करेमाणे समणे णिगंथे महाणिजरे महापजनसाणे भवड ॥ ३१५ ॥ उवज्झायवेयावर्च करेमाणे समणे णिगांथे महाणिजारे महापज्जवसाणे भवइ ॥ ३१६ ॥ धेरवेयावचं करेमाणे समणे णिरमंथे महाणिजरे महापज्जवसाणे भवड ॥ ३१७ ॥ तवस्सिवयावचं करेमाणे समणे जिमांथे महाजिखरे महापज्जवसाणे भवड ॥ ३९८ ॥ सेहवेयावर्ष करंमाणे समणे णिरगंथे महाणिजरे महापजवसाणे भवड ॥ ३१९ ॥ गिळाणवेयावचं करेमाणे समणे णिगांथे महाणिजारे महापजावसाणे भवइ ॥ ३२०॥ साहम्मियवेयावर्च करेमाणे समणे णिरगंधे महाणिजरे महापजनमाणे भवड ॥ ३२१ ॥ कुरुवेयावचं करेमाण समणे णिरगंथे महाणिजरे महापजनसाणे भवइ ॥ ३२२ ॥ गणवेयावर्ष करेमाणे समणे णिगांथे महाणिजारे महापजावसाणे भवह ॥ ३२३ ॥ संघवेयावश्व करेमाणे समणे णिरगंथे महाणिज्ञरे महापज्जवसाणे भवड़ ॥ ३२४ ॥ ति-ब्रेमि ॥ ववहारस्य दसमो उद्देसथो समत्तो ॥ १० ॥ ववहारसत्तं समत्तं ॥





श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमितिके 'सदस्य'



पश्चिय-आप मोरबी (मौराष्ट्र) के मूलवनना हैं और मंबई संघक सेकेटरी हैं। आपके पिताश्री मुख-लाल मोनजी खब ही धर्मके त्रमी थे, मोरवीमें अग्रगण्य कार्य-कर्ता एवं मुनिराज नथा महामानयोकी संबाका अलांन ਲਾਮ ਲੇਂਗ थे। पिना-थीक समान आपमें सी उननी ही धर्मभावनाकी जाप्रती है । आप जिनशा-मनक अपूर्व भक्त हैं, संघ-सेवा दिलकी लगनमें करते हैं। दादर संघको जब उपा-श्रयकी कमी खटकी तब ६ महानुभावों के याथ उपा-

श्रीमान् शेठ रविचंद सुखलाल शाह. प्रकाश स्टोर, डॉ॰ डीसील्या गेड, दादर, मुंबई २८

थय न वनं वहां तक घी खाना छोड़ दिया, निदान १२ महीन के बाद संघको जगह मिलने पर आपने भी २००२) दान दे कर घी खाना आरंभ किया है। आपकी प्रामाणिकता भरी सेवाकी कृदर कांदावाड़ी संघने खूब की है, आप वहांके संघके मंत्री हैं। आपकी मुखाकृति मीम्य और वाणी इतनी मोहकता-पूर्ण है कि सामने वाले व्यक्ति मोहित होकर आपको अपना प्रतिनिधि चुन लेते हैं। आप सामायिकादि धर्मिकियाके पश्चात् ही संसारके कार्यमें लगते हैं। आपका कुटुंब मम्पममृद्ध और आजाकारी है। आपके कार्य व्यवहारसे सबको महान् संतोष है। आप धावकके गुणोंकी वृद्धि करनेमें अनुरक्त हैं। आप जैसे गुणक कृतज्ञ धर्मज्ञ गुणवान् और संपित्रय धावकों की संघको आवस्यकता है। सचमूच आप धर्मप्राण हैं।

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं विहक्कप्पसुत्तं पढमो उद्देसओ

नो करपड निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा आमे नालपलेम्बे अभिन्ने पिट(गाहि)-गाहेत्तए ॥ १ ॥ कप्पइ निमान्थाण वा निमान्थीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पिंडिग्गाहेत्तए ॥ २ ॥ कप्पड़ निग्गन्थाणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पडिग्गाहेनए ॥ ३ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए ॥ ४ ॥ कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेनए. से वि य विहिभिन्ने. नो (चेव-णं) अविहिभिन्ने ॥ ५ ॥ से गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कव्वडंसि वा सडम्बंसि वा पट्टणंसि वा आगरेसि वा दोणमुहंसि वा निगमंसि वा रायहाणिसि वा आसमंति वा संनिवेसंसि वा संवाहंसि वा घोसंसि वा अंसियंसि वा पुडमेयणंसि वा सपरिक्खेर्नास अबाहिरियंसि कप्पइ निम्मन्थाणं हेमन्त्रगिम्हासु एगं मासं वत्थए ॥ ६ ॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तिगिम्हासु दो मासे बत्थए, अन्तो एगं मासं बाहिं एगं मासं; अन्तो दसमाणाणं अन्तोभिक्खायरिया बाह्रं वसमाणाणं बाह्रिभिक्खायरिया ॥ ७ ॥ से गामंति वा जाव रायहाणिसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निगन्थीणं हेमन्नगिम्हास दो मासे वत्थए ॥ ८ ॥ से गामंत्रि वा जाव रायहाणिसि वा सप-रिक्खेवंसि सवाहिरियंसि कप्पड निगान्धीणं हेमन्तिगम्हास चनारि मासे वत्थए. अन्तो दो मासे, बाहिं दो मासे; अन्तो वस(न्ती)माणीणं अन्तोभिक्खायरिया बाहिं वसमाणीणं बाहिंमिक्खायरिया ॥ ९ ॥ से गार्मात वा जाव रायहाणिसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगयओ वत्थए ॥ १० ॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिद्ववाराए अभिनिक्समणपबेसाए कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगयओ

वत्थए ॥ ११ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थीणं आवणगिहंसि वा र(त्था)च्छामुहंसि वा सिङ्घाडगंसि वा तियंसि वा चउकंसि वा चचरंसि वा अन्तरावर्णसि वा वतथए॥१२॥ कप्पद्र निग्गन्थाणं आवणगिहंसि वा जाव अन्तरावणंसि वा वत्थए ॥ १३ ॥ नो कप्पइ निग्गनशीणं अवङ्गयद्वारिए उवसाए वत्थए, एगं पत्थारं अन्तो किया एगं पत्थारे वाहिं किया ओहाडिय(चेल)चिलिमिलियागंसि ए(वं णं)व ण्हं कप्पद वत्थए ॥ १४ ॥ कप्पन्न निमानथाणं अवङ्गयद्वारिए उवस्पए वस्थए ॥ ३५ ॥ कप्पन्न निग्ग-थीणं अन्तोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्रए वा परिहरित्तए वा ॥ १६ ॥ नो ऋष्ट निगन्थाणं अन्तोलिनयं घडिमत्तयं धारेनए वा परिहरित्तए वा ॥ १७ ॥ कपड निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा चेलचिलिमि(लि)णियं धारेनए वा परिहरितए वा ॥ १८ ॥ नो कप्पट्ट निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दगतीरंसि चिद्धितए वा निसी-इत्तए वा नुसहिनए वा निदाइत्तए वा पयळाइनए वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमै वा आहारमाहा(रि)रेलए(वा), उचारे वा पासवणं वा खेलं वा मिछाणं वा परिद्व(वि)वेत्तए, सज्झायं वा करेत्तए, (भम्मजागरियं वा जाग(रे)रिनए) आणं वा झाइत्तए, काउस्मम्गं वा ठाणं वा ठाइत्तए॥ १९॥ नो कप्पड निम्गन्थाण वा निम्मन्थीण वा सचित्तकम्मे उब्स्सए वत्थए॥ २०॥ कपइ निम्मन्थाण वा निम्गन्थीण वा अचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए॥ २५॥ नो कप्पइ निमान्श्रीणं मागारियअनिस्साए बत्थए॥ २२॥ कप्पड निग्गन्थीणं सागारियनिस्याए वत्थए ॥ २३ ॥ कप्पड्र निम्गन्थाणं सागारियनिस्माए वा अनिस्साए वा वत्थए ॥ २४ ॥ नो कप्पद्द निमान्थाण वा निमान्थीण वा सामारिए उवस्सए वस्थए॥ २५॥ कप्पड निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अप्पसागारिए उवस्सए वत्थए॥ २६॥ नो कःपदः निग्गन्थाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए॥ २७॥ कप्पइ निग्गन्थाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ॥ २८ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ॥ २९ ॥ कप्पइ निमान्श्रीणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ॥ ३० ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं पडिब(६)द्वाए सेजाए वत्थए ॥ ३१ ॥ कप्पइ निग्गन्थीणं पडिबद्धाए सेजाए वत्थए ॥ ३२ ॥ नो कप्पड निग्गन्थाणं गाहावहकुलस्स मज्जं-मज्हेगं गन्तुं वत्थए ॥ ३३ ॥ कप्पड निग्गन्थीगं गाहावडकुलस्स मज्हांमज्हेगं गन्तुं वत्थए ॥ ३४ ॥ भिक्खु य अहिगरणं कट्ट तं अहिगरणं अविओसवेता अवि-ओसवियपाहुडे-इच्छाए परो आढाएजा, इच्छाए परो नो आढाएजा; इच्छाए परो अञ्मुद्देजा, इच्छाए परो नो अञ्मुद्देजा; इच्छाए परो वन्देजा, इच्छाए परो नो वन्देजा; इच्छाए परो संमुक्तेजा, इच्छाए परो नो संमुक्तेजा; इच्छाए परो संवसेजा,

इच्छाए परो नो संबसेजाः इच्छाए परो उवसमेजा, इच्छाए परो नो उवसमेजाः जे (जो) उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जे न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा; तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं, से किमाह भन्ते (!) ? उवसमसारं सामण्णं ॥ ३५॥ नो कपड़ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा बासावासासु चार(चरित्र)ए॥ ३६॥ कप्पइ निगान्थाण वा निगान्थीण वा हेमन्त्रगिम्हासु चारए॥ ३०॥ नो कप्पइ निगान्थाण वा निगान्थीण वा वरजाविरुद्धरजीत सर्ज गमणं सर्ज आगमणं सर्ज गमणागमणं क्(रि)रेत्तए जे (जो) खलु निग्गन(थां)थे वा निग्गन्थी वा वेरजविरुद्ध-रजंसि सर्जं गमणं सर्जं आगमणं सर्जं गमणागमणं करेड क(रं-रिं)रेन्तं वा साइजड्, से दुहुओ(वि) वीइक्सममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरुघाइयं ॥ ३८॥ निरगन्थं च णं गात्।वडकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्वं केंद्र वत्थेण वा पिडरगहेण वा कम्बलेण वा पायपुष्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकई गहाय आयरि-यपायमुळे ठवंता दोवं पि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ ३९ ॥ निग्गन्यं च णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खन्तं समाणं केइ बत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा. कप्पइ से सागारकडं गहाय आयरियपायमुले ठवेता दोशं पि ओगाहं अणुनवेता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४० ॥ निमान्यि च णं गाहायङक्लं पिण्डवायपडियाए अण्प्यविद्वं केड वत्थेण वा पहिम्महेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उननिमन्तेजा, कप्पड से सागारकडं गहाय प(वि)वित्त(णि)णीपायमूळे ठवेता दोचं पि ओग्गहं अणुक्रवेता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४९ ॥ निम्मन्थि च णं बहिया वियारसमि वा विहारसूमि वा निक्खन्तं समाणि केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पड से सागारकडं गहाय पवत्तिणीपायमुळे ठवेता दोचं पि ओम्गहं अणुज्ञवेत्ता परिहारं परिहरितए ॥ ४२ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा राओ वा वियाछे वा असणं वा ४ पडिम्माहेत्तए नन्नर(थे)थ एगेणं पुरुवपडिलेहिएणं सेजासंथारएणं ॥ ४३ ॥ नो कप्पड निस्पन्थाण वा निस्पन्थीण वा राओ वा वियाले वा वत्यं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिग्गाहेत्तए, नश्रत्थ एगाए हरियाह(रि)-डियाए, सा वि (य) याई परिभुत्ता वा घोया वा रत्ता वा घट्टा वा मद्रा वा संपध्मिया वा ॥ ४४ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा राओ वा विवाले वा अहा-णगम(णाए)णं एतए, (नो...) संखर्डि संखडिपडियाए एतए ॥ ४५ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थस्स एगाणियस्स राओ वा वियाके वा बहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा निक्खमित्तए वा पबिसित्तए वा. कप्पड़ से अप्पिबिडयस्स वा अप्पतइयस्स वा राओ ५३ स्ता०

वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्सिमण् वा पविसित्तण् वा ॥ ४६ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा निक्सिमण् वा पविसित्तण् वा, कप्पइ से अप्पिबद्धगए वा अप्पन्वउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विद्याले वा अप्पन्वउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्सिमण् वा पविसित्तण् वा ॥ ४७ ॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुरित्यमेणं जाव अक्समग्रहाओ एनए, दिक्लिणेणं जाव कोसम्बीओ एतए, पश्चित्यमेणं जाव थूणाविस्याओ एतए, उत्तरेणं जाव कुणालिय्याओ एतए, एयावयाव कप्पड, एयावयाव आरिए खेते; नो से कप्पइ एतो वाहिं, तेण परं जत्य नाणदंशणचिरताइं उस्सणन्ति ॥ ४८ ॥ ति-बेमि ॥ विहक्तप्पे पढमो उद्देसओ समत्तो ॥ १ ॥

विइओ उदेसओ

उवस्सयस्य अन्तो वगडाए सालीणि वा नीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कुलत्थाणि वा गोहुमाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा ओखि(ता)-ण्णाणि वा वि(कि)क्सिण्णाणि वा विद्गिण्णाणि वा विष्पद्ग्णाणि वा, भो कष्पद निगान्थाण वा निगगन्थीण वा अहालन्दमवि वस्थए ॥ ४९ ॥ अह पुण एवं जाणेजा-नो ओखिण्णाइं नो विक्खिण्णाइं नो विद्गिण्णाइं नो विप्पदृण्णाइं, रासिकडाणि वा पुत्रकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लिन्छयाणि वा मुहियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पद् निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु वस्थए॥ ५०॥ अह पुण एवं जाणेजा-नो रासिकडाई नो पुजकडाई नो भित्तिकडाई नो कुलिय-कडाई, कोद्वाउत्ताणि वा पहाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा ओहि-त्ताणि वा विलित्ताणि वा लिन्छयाणि वा मुहियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पइ निम्गन्थाण वा निम्गन्थीण वा वासावासं वत्थए ॥ ५२ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सुरावियडकुम्भे वा सोवीर्यवियडकुम्भे वा उवनिक्लिते सिया, नी कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उदस्सयं पिडेलेइ-माणे नो लमेजा, एवं से कप्पड़ एगरायं वा दुरायं वा वस्थए, नो से कप्पड़ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्यए, जे तत्य एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं व(सड्)सेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५२ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सीओदगवियडकुम्भे वा उसिणोदगवियडकुम्भे वा उवनिक्खिते सिया, नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि बत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेह-माणे नो लभेजा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ परं

एगरायाओं वा दुरायाओं वा वत्थए, जे तत्थ एगरायाओं वा दुरायाओं वा परं बसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५३ ॥ उवस्तयस्स अन्तो वगडाए सन्वरा(ई)इए जोई क्षियाएजा, नो कप्पइ निग्गन्याण वा निग्गन्थीण वा अहा-लन्दमवि वतथए, हरत्था य उवस्सयं पिंडलेहमाणे नो लभेजा, एवं से कप्पइ एग-रायं वा द्ररायं वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगरायाओं वा द्ररायाओं वा वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओं वा परं वसेजा. से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५४ ॥ उनस्मयस्स अन्तो वगडाए सम्बराइए पईवं दिप्पेजा, नो कप्पइ निम्म-न्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालम्दमवि वत्थए, हरत्था य उनस्सयं पिडलेहमाणे नो लभेजा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एग-रायाओं वा दुरायाओं वा वत्थए, जे तत्थ एगरायाओं वा दुरायाओं वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५५ ॥ उवस्सयस्य अन्तो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खी(रे)रं वा दिहं वा सिप्प वा नवणीए वा तेहे वा फाणि(ए)यं वा पूर्व वा सक्छी वा सिहरिणी वा ओखिल्णाणि वा विविचल्लाणि वा विडगिल्लाणि वा विष्पइण्णाणि वा, नो कप्पइ निरगन्याण वा निरगन्थीण वा अहालन्द्रमवि वृत्थए ॥ ५६ ॥ अह पुण एवं जाणेजा-नो भोखिण्णाई ४, रासिकडाणि वा पुत्रकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुल्डियकडाणि वा लिब्छयाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा. कप्पड़ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु बत्थए॥ ५०॥ अह पुण एवं जाणेजा-नो रासिफडाई ४, कोट्टाउत्ताणि वा पहाउत्ताणि वा मञ्जाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा क्रम्भिउत्ताणि वा करभिउत्ताणि वा ओलिताणि वा विलिताणि वा लिक्टियाणि वा मुहियाणि वा पिहियाणि वा, ऋष्ट निरगन्थाण वा निरगन्थीण वा वासावासं वत्थए ॥ ५८ ॥ नो कप्पड़ निमान्थीणं अहे आगमणगिईसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रक्खमूलंसि वा अन्मावगासियंसि वा वत्यए॥ ५९॥ कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रक्खमूलंसि वा अब्भा-क्गासियंसि वा वत्थए ॥ ६० ॥ एगे सागारिए पारिहारिए, दो(क्रि) तिष्णि जतारि पश्च सागारिया पारिहारियाः एगं तत्य कप्पागं ठवहत्ता अवसेसे निव्विसेजा ॥ ६९॥ नो कप्पर निगन्याण वा निगन्बीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीहडं (असंसहं वा) संसद्वं-पडिग्गाहेतए ॥ ६२ ॥ सो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीष्ट्ढं असंसद्धं पडिग्गाहेलए ॥ ६३ ॥ नो कप्पइ निग्ग-न्याण वा निम्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसद्घं पढिम्माहेत्तए ॥ ६४ ॥ कप्पइ निगन्याण वा निग्यन्त्रीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं संसहं

पिंडम्गाहेत्रए ॥ ६५ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसद्वं संसद्वं करेताए, जे खल्ल निग्गन्ये वा निग्गन्थी वा सागा-रियपिण्डं बहिया नीहडं असंसहं संसहं करेड़ करेन्तं वा साइजड़, से दुहओ वीड्क-ममाणे आवज्जइ चाउम्मानियं परिहारद्वाणं अणुग्चाइयं ॥ ६६ ॥ सागारियस्स आहडिया सागारिए(ण)णं पडिग्गाहि(या)ता, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिग्गाहे-त्तए ॥ ६७ ॥ सागारियस्स आहडिया सागारिएणं अपडिग्गाहिता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ॥ ६८ ॥ मागारियस्स नीर्हाडया परेण अपडिग्गाहिना, तम्हा दावए, नो से कप्पड़ पडिम्माहेलए ॥ ६९ ॥ सामारियस्म नीहडिया परेण पडिग्गाहिमा, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ॥ ७० ॥ सागारियस्स अंसियाओ अविभत्ताओ अव्वोच्छिनाओ अव्वोगडाओ अनिज्ञुहाओ, (एवं से) तम्हा दावए, नो से कप्पड़ पडिम्गाहेत्तए॥ ७५॥ सागारियस्स अंसियाओ विमनाओ बोच्छिनाओ बोगडाओ निज्हाओ, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पर्डिग्गाहेतए ॥ ७२ ॥ रागिरियस्य पूँराभते उद्देखिए चेडँए पाहुडियाए, मागारियस्म उद्यगरण-जाए निट्टिए निसंडे प(पा) बिहारिए, नं सागारिओं दे(जा)ह, सागारियस्स परिजणी देइ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिम्माहेत्तए ॥ ७३ ॥ सामारियस्स पूयाभत्ते उद्देशिए चेइए पाहु डियाए, सागारियस्य उवगरणजाए निट्टिए नि(सि)सट्टे पिंडहारिए, तं नो सागारिओ देइ, नो सागारियस्स परिजणो देइ, सागारियस्स पूया देइ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ॥ ७४ ॥ सागारियस्स प्रयाभेत उहेसिए चेइए पाहुडियाए, सागारियस्स उवगरणजाए निट्टिए निसड्डे अपिडहारिए, तं सागारिओ देह, सागारियस्स परिजणो देह, तम्हा दावए, नो से कप्पह पश्चिमाहेत्तए॥ ७५॥ सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देशिए चेइए पाहुडियाए, सागारियस्स उकारणजाए निष्टिए निसद्वे अपिहहारिए, तं नो सागारिओ देइ, नो सागारियस्स परिजणो देइ, मागा-रियस्स पूथा देइ, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पिडम्गाहेत्तए॥ ७६॥ कप्पइ निग्ग-थाण या निग्ग-श्रीण वा (पश्चिमाणि) इमाई पश्च बत्था(णि)ई धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तंजहा---जिल्ल खोमिए साणए पोत्तए तिरीटपट्टे ना(मं)म पश्चमे ॥ ७७॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं प(श्वेव)स रयहरणाई धारेताए वा परिहरित्तए वा, तंजहा-ओण्णिए ओद्वि(उष्टि)ए साणए बन्नामिषि(वचा-विष्प)ए मुजपिबिए नाम पद्ममे ॥ ७८ ॥ ति-बेमि ॥ विष्ठकण्पे विद्वयो उद्देसको समस्रो ॥ २ ॥

१ पूरा-सामिकळायरियाइणो तयहा भत्ते पूराभत्ते । २ कए ।

तइओ उदेसओ

नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीणं उनस्स(यंसि)ए आसइत्तए वा चिहित्तए वा निसीइनए वा तुयदिनाए वा निहाइनए वा पयलाइनए वा, असणं वा ४ आहार-माहारेत्तए, उचारं वा पासवर्णं वा खेलं वा सिङ्घाणं वा परिट्ववेत्तए, सज्झायं वा करेतात, झाणं वा झाइताए, काउस्सम्भं वा ठाणं वा ठाइताए॥ ७९ ॥ नो कप्पइ निगन्थीणं निगन्(थ)याणं उनस्पए आसङ्क्षए जान ठाइक्कए ॥ ८० ॥ नो कप्पड निगान्याण वा निगान्यीण वा कसिणाई वत्थाई धारेनाए वा परिष्ठरिनाए वा ॥ ८९॥ कप्पइ निगगन्याण वा निगगन्यीण वा अकिमणाई बत्थाई घारेक्कए वा परिहरिक्कए वा ॥ ८२ ॥ नो कप्पड् निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा अभिन्नाइं वत्याइं घारेत्तए वा परिहरिनए वा ॥ ८३ ॥ कप्पद निम्मन्याण वा निमान्याण वा भिनाई बत्याई धारेक्तए वा परिहरिक्तए वा ॥ ८४ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाणं ओ(उ)म्महणन्तमं वा ओस्पहणपृष्ट्यं वा धारेत्रए वा परिहरित्तए वा ॥ ८५ ॥ कप्पइ निस्मन्थीणं ओस्प-हणन्तगं वा ओग्गहणपट्टगं वा धारेनए वा परिहरित्तए वा ॥ ८६ ॥ निम्मन्थीए य गाहावरकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्वाए चेलहे समुप्पजेजा, नो से कप्पड अप्पणी नीसाए चेलं पडिरगाहेत्तए; कप्पड़ से पदिताणीनीसाए चेलं पडिरगाहेत्तए ॥ ८७ ॥ नो (य से) ज(त)त्थ पवतिणी समा(णा)णी सिया, जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्याए वा प(वि)वसी वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा (जं चडबं पुरओ कहु विहरइ), कप्पइ से तं(तेसिं)नं।(निस्)साए चेलं पडि-गाहेत्तए ॥ ८८ ॥ निग्गन्थस्स (य) णं तप्पढमयाए संपन्वयमाणस्स कप्पइ रय-हरणपडिम्गहगोच्छगमायाए ति(हिं)हि य कसिणेहिं वत्येहिं आयाए संपव्यइत्तए, से य पुव्वोबद्वविए सिया, एवं से नो कप्पइ रयहरणपडिम्गहगोच्छ्यामायाए तिहि य किसणिहिं वरथेहिं आयाए संपव्वइत्तए; कप्पइ से अद्वापरिमाहियाई वत्याई गहाय आयाए संपन्वइत्तए ॥ ८९ ॥ निस्नन्थीए णं तप्पढमयाए संपन्वयमाणीए कप्पह रयहरणपश्चिगहगोच्छ्गमायाए चउहि य कसिणेहिं बत्येहिं आयाए संपन्वइत्तए, सा य पुन्वोबद्वविया सिया. एवं से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए चडिह य किसणेहिं नत्येहिं आयाए संपथ्यइत्तए; कप्पइ से अहापरिग्गहियाई नत्याई गद्वाय आयाए संपव्यक्तए॥ ९०॥ नो कप्पइ निम्गन्थाण वा निम्गन्थीण वा पढमसमो-सरणुद्देसपत्ताई चेला(चीवरा)ई पडिक्गाहेत्तए ॥ ९१ ॥ कप्पइ निक्गन्थाण वा निका-न्यीण वा दोवसमोसर्णुद्देसपताइं चेलाइं पडिम्माहेत्तए ॥ ९२ ॥ कप्पइ निमान्याण वा निरमन्थीण वा आ(अ)हाराइणियाए चेळाइं पढिरमाहेत्तए॥ ९३॥ कप्पइ निरम-

न्थाण वा निग्गन्थीण वा आहाराइणियाए सेजासंथारयं पडिग्गाहेतए॥ ९४॥ कप्पइ निमान्थाण वा निमान्थीण वा आहाराइणियाए किइकम्मं करेनए ॥ ९५ ॥ नो कपड़ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा अन्त(रा)रगिहंसि आसइत्तए वा चिट्ठितए वा निसीइतए वा तुयहितए वा निहाइनए वा पयलाइतए वा, अमर्ण वा ४ आहार-माहारेताए, उनारं वा ४ परिट्टवेनए, सज्झायं वा करेताए, झाणं वा झाइताए. काउरसम्मं वा ठाणं वा ठाइत्तए, अह पुण एवं जाणेजा-जराजुण्णे वाहिए (थेरे) तवस्सी दुव्बले किलन्ते (... जजारिए) मुच्छेज वा पवडेज वा, एवं से कप्पड़ अन्तरगिहंसि आसङ्क्तए वा जाव ठाणं वा ठाड्काए ॥ ९६ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निगानधीण वा अन्तरगिर्हसि जाव चउगाई वा पञ्चगाई वा आइक्खिनए वा विभावेतए वा किष्टित्तए वा पवेइत्तए वा, नन्नत्थ एगनाएण वा एगवागरणेण वा एगगाहाए वा एगसिलोएण वा, से वि य ठिचा, नो चेत्र णं अहिचा ॥ ९ ୬ ॥ नो कप्पइ निरगन्थाण वा निरगन्थीण वा अन्तरगिहंसि इमाइं (च णं) पद्म महव्वयाई सभावणाई आइक्रिकत्तए वा जाच पवेहत्तए वा, नन्नस्य एगनाएण वा जाव एगिसळोएण वा, से वि य ठिचा, नो चेव णं अ(ठि)हिन्दा ॥ ९८ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पिंडहारियं (वा सागारियसंतियं) सेज्ञासंथारयं आयाए अपहिद्दु संपन्नइत्तए॥ ९९॥ नो ऋपद निगन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियसन्तियं सेजासंथारयं आयाए अहिगरणं कृहु संपन्वइत्तए ॥ १०० ॥ कप्पद्य निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पिडहारियं वा सागारियसन्तियं वा सेजा-संयारयं आयाए विगरणं कडू संपन्वइत्तए ॥ १०१ ॥ इह खलु निरगन्थाण वा निग्गन्थीण वा पिंडहारिए वा सागारियसन्तिए वा सेजासंथारए (विप्पण(से)सिजा) परिन्महे सिया, से य अणुगवेसियव्वे सिया; से य अणुगवेसमाणे लमेजा, तस्सेव अणुप्प(पिंड)दायव्ये सिया; से य अणुगवेसमाणे नो लमेजा. एवं से कप्पड़ दोशं पि ओग्गहं ओगिण्ह(अणुन(1)वि)ता परिहारं परिहरित्तए ॥ १०२ ॥ जहि(जं दि)वसं च णं समणा निम्मन्था सेजासंथारयं विष्पजहन्ति, तहि(तं दि)वसं च णं अवरे समणा निग्गन्था इन्वमागन्छेज; स्थेव ओग्गहस्स पुञ्चाणु(ना-व)नवणा चिहुर अहालन्दमवि ओग्गहे ॥ १०३ ॥ अत्यि याई थ केइ उक्सवपरिवाव(नाए)के अचित्ते परिहरणारिहे, सबेव ओगगहस्स पुम्बाणुब्रवणा चिट्ठइ अहालन्द्रमवि ओगगहे ॥१०४॥ से वरधूषु अञ्चावडेषु अञ्चोगडेषु अपरपरिमाहिएषु अमरपरिमाहिएषु सञ्चेव ओग्गहस्स पुन्वाणुजवणा चिद्धइ अहालन्दमबि ओग्गहे ॥ १०५ ॥ से बत्युस वावडेस बोगडेस परपरिग्गहिएस शिक्खुआवस्सद्वाए दोशं पि ओग्गहे अखुक्रदेयन्वे

सिया (अहालंदमिव उगाहे) ॥ १०६ ॥ से अणुकुहेसु वा अणुभित्तीसु वा अणुचिर-यासु वा अणुफरिहासु वा अणुपन्थेसु वा अणुमेरासु वा सबेव ओग्गहस्स पुट्वाणु-बवणा चिद्वह अहालन्दमिव ओग्गहे ॥ १०७ ॥ से गा(मस्स)मंसि वा जाव (रायहाणीए) संनिवेसंसि वा बहिया सेणं संनिविद्धं पेहाए कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तिह्वसं भिक्षायरियाए गन्तूणं पिड(ए)नियनए, नो से कप्पइ (सा रयणी) तं रयणि तत्थेव उवा(य)हणा(वि)वेत्तए, जे खलु निग्गन्थे वा निम्मन्थी वा तं रयणि तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेन्तं वा साइज्जइ, से दुहुओ वीइक्समाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्धाइयं ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सव्यओ समन्ता सकोसं जोयणं ओग्गहं ओगिण्हिताणं परिहारं परिहरि(चिद्धि)त्तए ॥ १०९ ॥ ति–वेमि ॥ विहक्कप्पे तहस्थो उद्देसस्यो समन्तो ॥ ३ ॥

चउत्थो उदेसओ

तओ अणुग्चाइ(मा)या पत्रता, तंजहा-हत्यकम्मं करेमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, राइंभोयणं मुझमाणे॥ ११०॥ तओ पारश्चिया पत्रता, तंजहा-दुद्वे पारश्चिए, पमते पारिष्ठ अन्ममं करेमाणे पारिष्ठ ॥ १११ ॥ तओ अणबद्वपा पनता. तंजहा-साहम्मि(य)याणं ते(णियं)नं करेमाणे, अन्नध(पर-ह)म्मि(य)याणं तेनं करेमाणे, हत्(थता)धायालं दलमाणे ॥ ११२ ॥ तथो नो कप्पन्ति पन्वावेत्तए, तंजहा-पण्डए कीवे वा(हि) इए, एवं मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए उबद्वावेत्तए संभुक्षित्तए सं(वा)वसित्तए ॥ ११३ ॥ तओ नो कप्पन्ति वा(इ)एतए, तंजहा-अविणीए विगई-पडिबद्धे अविओसवियपाहुडे ॥ ११४ ॥ तओ कप्पन्ति वाएतए, तंजहा-विणीए नो विगईपिंडबद्धे विओसवियपाहुँ ॥ १९५ ॥ तओ दुस्सन्या पनता, तंजहा-दुहे मुद्दे बुग्गाहिए ॥११६-१॥ तथो सुस्सन्या पनता, तंजहा-अदुहे अमृहे अवस्मा-हिए ॥११६-२॥ निम्मर्निय च णं निलायमाणि माया वा भगिणी वा ध्या (पिया वा भाया वा पुत्ते) वा पलिस्सएजा, तं च निग्ग-(थी)थे साइज(जइ)जेजा, मेहुणपडि-सेवणप(ता)ते आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरघाइयं।। ११७ ॥ निमान्यं च णं निलायमाणं पिया वा भावा वा पुत्ते वा (माया वा भनिणी वा धूया वा) पिलस्स-एजा, तंच निग्गन(थे)थी साइजेजा, मेहुणपंडिसेवणप(ते)ता आवज्द चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरुषाइयं ॥ ११८ ॥ नो कप्पइ निरगन्थाण वा निरगन्थीण वा असणं वा ४ पढमाए पो(रि-र)रुसीए पडिग्गाहेता (चउ-रथं-स्थि) पश्छिमं पोरुसिं उवाइणावेतए, से य आहम उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा अकेवा नो अकेसि

अणु-पदेखाः एग(न्तम)न्ते बहुफान्नए (पएसे) थण्डिले पडिलेहिता पर्माजता परिट्व-वेयव्वे सियाः तं अप्पणा भुजमाणे अन्नेसि वा अणुप्पदेमाणे आवजद चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उ(अणु)म्घाइयं ॥ ११९ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा ४ परं अद्भजोयणमे(र)राए उवाङ्णावेनए, से य आहच उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुक्केजा नो अन्नेमि अणुप्पदेजा, एगन्ते वहफासए यण्डिले पिंडलेहिता पमिजिता परिद्ववेयव्वे सिया; तं अप्पणा भुजमाण अक्रेगि वा अणुप्प-देमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उग्घाडयं ॥ १२० ॥ निग्गन्थेण य गाहावहकुलं पिण्डवायपिडयाए अणुप्पविद्वेणं अन्नयरे अन्वित्ते अणेसणिजे पाणमीयणे पडिनगाहिए सिया, अत्थि याई थ केइ मेह(न)नराए अणुवहावियए, कप्पइ से तस्स दाउं वा अणुष्पदाउं वा: नित्य याइं थ केड सेहनराए अणुबद्घावियए (मिया), तं नो अप्पणा भुजेजा नो अवसि अणुप्पदेजा; एगन्ते बहुफासुए थण्डिले पडिलेहिता पमजिता परिद्ववेयव्वे सिया ॥ १२१ ॥ जे कडे कपद्वियाणं नो से कप्पइ कप्पद्वि-याणं जे कडे कप्पद्वियाणं कप्पइ से अकप्पद्वियाणं; जे कडे अकप्पद्वियाणं नो से कप्पइ कप्पद्वियाणं, जे कडे अकप्पद्वियाणं कपड से अकपद्वियाणं; कप्पद्विया विकापे ठिया कप्पद्विया, अकप्पे ठिया अकप्पद्विया॥ १२२ ॥ भिक्ख् य गणा(ओ अ)य-वक्रम्म इच्छेजा अ(भ)नं गणं उवसंपजिताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणा-पुच्छिता(णं) आयरियं वा जवज्झायं वा पवर्ति वा थेरं वा गणि वा गणहरे वा गणावच्छेड्यं वा असं गणं उवसंपिकताणं विहरित्तएः कप्पइ से आपुच्छिता आय-रियं वा जाव गणावच्छेड्यं वा अर्च गणं उवसंपिक्षिताणं विहारितए, ते य से विय(रेजा)रन्ति, एवं से कप्पइ अक्षं गणं उवसंपज्जिनाणं विद्वरित्तएः ते य से नी वियरन्ति, एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥ १२३ ॥ गणा-वच्छेड्ए यं गणायवक्रम्म इच्छेजा अर्ज गणं उवसंपिजताणं विहरित्तए, नो कप्पइ गणावच्छेडयस्य गणायच्छेडयतं अनिक्खिवता असं गणं उवसंपजिताणं विहरितए; कप्पड गणावच्छेड्यस्स गणावच्छेड्यतं निक्खिवतत्ता अत्रं गणं उवसंपिजसाणं विहरित्तए, नो से कप्पड अणापच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेड्यं वा अनं गणं उनसंपजिताणं निहरित्तए; कप्पड़ से आपुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेड्यं वा अर्ज गणं जबसंपजिताणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एवं से कप्पह अर्ज गणं उवसंपाजिताणं विहरित्तणः ते य से नो वियरन्ति. एवं से नो कप्पइ अर्क गणं उवसंपज्जिताणं बिहरित्तए ॥ १२४ ॥ आयरियउबज्ज्ञाए य गणायवकम्म इच्छेजा अद्यं वर्णं उवसंपिजित्ताणं विहरित्तए. नो कप्पइ आयरियउवज्जायस्य आयरिय-

उवज्ञायतं अनिक्खिवता अन्नं गणं उवसंपिजताणं विहरित्ताः कपाइ आयरिय-उवज्ज्ञायस्स आयरियउवज्ज्ञायतं निक्खिवता अनं गणं उवसंपिजिताणं विहरितए. नो से कप्पइ अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंप-जिताणं विहारेत्तए; कगइ से आपुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अर्ज गणं उवसंपिकताणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एवं से कपड अर्ध गणं उव-संपिजिताणं विद्वितिए: तं य से नो वियरन्ति. एवं से नो कपड अर्थ गणं उव-संपजिलाणं विहरिताए ॥ १२५ ॥ भिक्ख य गणायवकस्य इस्केडा असं गणं संभोगपिद्धयाए उवसंपिजनाणं विहरितए, नो से कप्पड अणापुच्छिता आयरियं वा उनज्ञारं वा पनित वा थेरं वा गणि वा गणहरं वा गणावच्छेडयं वा अर्ज गणं संभोगपिडयाए उवमंपिजित्ताणं विहरित्तए: कप्पड से आपुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेद्रयं वा अर्ज गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजनाणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति. एवं से कप्पड अन्नं गणं संभोगपिडियाए उवसंपिजित्ताणं विहरित्तए; ते य से नो वियरन्ति. एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपिटयाए उवसंपिकताणं विहरिताए: जत्थुन्तरियं धर्म्मावणयं लमेजा. एवं से कप्पड अनं गणं संभोगपिडयाए उवसंप्रजिताणं विहरित्तए; जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लमेजा, एवं से नो कप्पइ अनं गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजनाणं विहरितए ॥ १२६ ॥ गणावन्छेडए य गणायवक्रम इच्छेजा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपिजताणं विहरित्तए, नो कपड़ गणावरहेडयस्य गणावरहेड्यत्तं अनिक्तिविना अन्नं गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजताणं विद्वितिए: कप्पड गणावच्छेडयस्स गणावच्छेडयतं निक्खिवित्ता अर्ज गणं संमोगपडियाए उवसंपिबताणं विहरितए, नो से कपड अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेद्वं वा अनं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जिताणं विहरित्तए: क्रयह से आपुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजताणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपिड-याए उवसंपजिताणं विद्वरित्तए; ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपिंदयाए जवसंपिजनाणं विष्टरित्तएः जत्युत्तरियं धम्मविणयं रुमेजा. एवं से कप्पड अनं गणं संभोगपिडियाए उवसंपिजताणं विहरित्तए: जत्युत्तरियं घम्मविणयं नो लमेजा. एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपिजताणं विद्वितर ॥ १२७ ॥ आयरि(ओ)यउवज्झाए य गणायवद्यम्म इच्छेजा अन्नं गणं संमोगपृहि-याए उवसंपजिताणं विदृरित्तए. नो कप्पद्र आयरियउवज्ज्ञायस्य आयरियउवज्ज्ञायत्तं अनिक्सिविता असं गणं संभोगपडियाए उवसंपिजत्ताणं विष्टरिताए: कप्पट आयरि-

यउवज्ञायस्य आयरियउवज्ञायतं निक्सिवेता अन्नं गणं संभोगपडियाए उव-संपज्जिताणं विद्वितिष्, नो से कप्पइ अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइये वा अत्रं गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजनाणं विद्वरित्तए: कप्पद्व से आपिन्छता आयरियं वा जाव गणावच्छेड्यं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपजिताणं विहरिनए, ते य से वियरन्ति, एवं से कप्पड अन्नं गणं संभोगपिडयाए उवसंपिजनाणं विहरित्तए: ते य से नो वियरन्ति. एवं से नो कप्पड अन्नं गणं संमोगर्पाडयाए उवसंपिजताणं विहरित्तएः जत्युत्तरियं धम्मविणयं लभेजा, एवं से कप्पड़ अन्नं गणं संमोगपडियाए उचसंपिजनाणं विहरित्तए: जत्यत्तरियं धम्मविणयं नो रुमेजा. एवं से नो कप्पड अनं गणं संसोगपिडयाए उवसंपिजताणं विद्विततः ॥ १२८ ॥ भिक्ख य इन्हें जा अन्नं आयरियउवज्ह्यायं उद्दिसावेनए. नो से कप्पट अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेद्वयं वा अनं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए; कप्पइ से आपु रिछना आयरियं वा जाव गणावन्छेड्यं वा अनं आयरियउवज्जायं उहिसावेत्तए. ते य से वियर्नित, एवं से ऋपइ अशं आयरियजनज्जायं उद्दिसवित्तए; ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पड अन्नं आयरियजवज्ज्ञायं उहिसावेत्तए: नो से कप्पड तेमिं कारणं अविवेता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावताए, कपद सं तेसिं कारणं वीवेता अनं आयरियउवज्झायं उद्दिसावता ॥ १२९ ॥ गणावच्छेदए य इच्छेजा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, (· · ·) नो से कप्पद्द अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणाबच्छेड्यं वा अनं आयरियउवज्ज्ञायं उद्दिसावेत्तए; कप्पड् से आपुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेड्यं वा अनं आयरियउवज्झायं उहिसावेनाए, ते य से वियरन्ति. एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवजन्नायं उद्दिसावेलए; ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पड अन्नं आयरियउवज्ज्ञायं उद्दिसार्वेनए: नो से कप्पड तेसि कारणं अदीवेता अनं आयरियउवज्ज्ञायं उहिसावेताए. कप्पड से तेसिं कारणं रीवेता अनं आयरियटवज्झायं उद्दिसावेताए ॥ १३० ॥ आयरियउवज्झाए य इच्छेजा अर्घ आयरियडवज्झायं उहिसावेशए, (…) नो से कप्पड अणापुच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेदयं वा असं आयरियटवज्हायं उहिसावेत्तए: कप्पड से आप्रच्छिता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अनं आयरियउवज्ज्ञायं उद्दिसावेत्तए, ते य से विगरन्ति. एवं से कपड़ असं आगरियजवज्झायं उद्दिसावेत्तए; ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पइ अर्थ आयरियउवज्झायं उहिसाबेत्तएः नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेता अनं भागरियउवज्यायं उहिसावेतार्, कप्पद् से बेसिं कारणं वीवेता अनं आयरियउवज्ञायं उहिसावेताए ॥ १३१ ॥ अन्य य राजी वा वियाके

बा आहच बीसुम्(भि)मेजा, तं च सरीरगं (केइ) वेयावचक(रा-रे भिवन्व्)रा इ(च्छि)च्छेजा एगन्ते बहुफासुए (पएसे) थण्डिके परिद्ववेत्तए, अत्य याइं थ केइ सागारियसन्तिए उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे, कप्पइ से सागा(रि)रकडं गहाय तं सरीरगं एगन्ते बहुफासुए थण्डिले परिद्ववेता तत्थेव उवनिक्खेवियन्वे सिया ॥ १३२ ॥ भिक्स् य अहिगरणं कहु तं अहिगरणं अविओसवेता-नो से कप्पइ गाहावद्दुल्लं (पिण्डवायपिडयाए) असाए वा पाणाए वा निक्स्तमित्तए वा पविस्तिए वा, नो में कप्पइ वहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा निक्खमित्तए वा पितिसित्तए वा, नो से कप्पड गामाणुगामं (वा) दृहुज्जित्तए, (गणाओ वा गणं संकमित्तए वासावासं वा वत्थए) जत्थेव अप्पणो आयरि(ओ)यउवज्ज्ञायं पासेजा बहुस्युयं बब्भागमं, कप्पइ से तस्स(अ)न्ति(यं)ए आलो(इजा)एनए पडिक्सिन्तए निन्दित्तए गरहित्तए विजिष्टिनए विसोहित्तए अकरणाए अब्सुद्धित्तए अहारिहं पायिच्छतं (तवो-कम्मं) पडिवज्जित्तए; से य सुएणं पहुविए आइयव्वे सिया, से य सुएणं नो पहुविए नो आइयव्वे सिया; से य सुएणं पद्वविजमाणे नो आइयइ, से निजृहियव्वे सिया ॥ १३३ ॥ परिहारकप्पद्वियस्स णं भिक्खुस्स कप्पइ (आयरियडवज्झा(या)एणं) तिह्वसं ए(गंसि)-गगिहंसि पिण्डवायं द्वावे(पिडिग्गाहे) नए, तेण परं नो से कप्पइ असमं वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा. कपाइ से अन्नयरं वेयाविडयं करेत्तए, तंजहा-उद्घावणं वा अणुद्वावणं वा निसीयावणं वा तुयद्वावणं वा, उचा(र)रपासवणखेळजळलिङ्वाणविगि-इणं वा विसोहणं वा करेत्तए, अह पुण एवं जाणेजा-छिन्नावाएस पन्थेस (आउरे जजारे(शिक्षि)ए पिवासिए) तवस्सी दुक्यले किलन्ते मु(च्छि)च्छेज वा पव(डि)डेज वा. एवं से कप्पइ असणं वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा ॥ १३४ ॥ नो कप्पइ निगान्याण वा निगान्यीण वा इमाओ पत्र (महण्णवाओ) महानईओ उद्दिष्ठाओ गणियाओ विश्वयाओ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरि-त्तए वा, तंजहा-मझा जउणा सरयू (एरावई) कोसिया मही, अह पुण एवं जाणेजा-ए(रा)रवई कुणालाए-जत्थ चिक्कया एगं पायं जले किचा एगं पायं थले किचा, एवं से कप्पइ अन्तो मासस्स दुक्खतो वा तिक्खतो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा: जत्य नो एवं चकिया. एवं से मो कप्पइ अन्तो मासस्स दुक्खतो वा तिक्खतो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा ॥ १३५ ॥ से तणेस वा तणपुंजेस वा पलाकेस वा पलालपुजेस वा अप्पण्डेस अप्पपाणेस अप्पणीएस अप्पहरिएस अप्पोस्सेस अप्पुत्तिक-पणयद्गमहि(य)यामक्(दग)हासंताणएसु अहेसवणमायाए नो कपह निगन्धाण वा निम्मन्यीण वा तहप्पनारे उबस्सए हेमन्तगिन्हास वत्यए ॥ १३६ ॥ से तणेस

वा जाव ०संताणएमु: उप्पिसवणमायाए कप्पइ निगग्याण वा निगग्यीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तिगम्हामु बत्यए ॥ १३७ ॥ से तणेमु वा जाव ०संताण-एमु अहेरयणिमुक्सउदे(मु) नो कापइ निगग्याण वा निगग्यीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्यए ॥ १३८ ॥ से तणेमु वा जाव ०संताणएमु उप्पिरयणि-मुक्सउदे कप्पइ निगग्याण वा निगग्यीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्यए ॥ १३९ ॥ विहक्करणे चउत्थो उद्देसओ समस्तो ॥ ४ ॥

पश्रमो उद्देसओ

देवे य इत्थिरनं विजित्वता निम्मन्यं पिडिम्माहे(गेण्हे)जा, तं च निम्मन्ये साइज(जइ)जेजा, मेहुणपडिसेवणपत्ते आवजद चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्घाइयं ॥ १४० ॥ देवे य पुरिसस्यं विउव्यत्ता निग्गन्यि पहिग्गाहेजा, तं च निग्गन्थी साइजेजा, मेहुणपिडसेनणपत्ता आवजइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्वाइयं ॥ १४१ ॥ देवी य इत्थिरूनं विजिवना निग्गन्धं पिडिगाहेजा, तं च निग्गन्धे साइजेजा. मेहणपिंडसेवणपत्ते आवजइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्घाइयं ॥ १४२ ॥ देवी स परिसहवं विरुध्विता निग्गन्धि पिडागाहेजा, तं च निग्गन्धी साइजेजा, मेहुणपिंसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्घाइयं ॥ १४३ ॥ भिक्कृ य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता इच्छेजा अ(क्र)कं गणं उवसंपजिताणं विद्वरितए, कप्पइ तस्स पत्र राइन्दि(यं)याई छेयं कट्ट परि-णि(व्वा)व्यविय २ तामेव गणं पिंडनिजाएयव्वे सिया, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥ १४४ ॥ भिक्क य उग्गयवित्तीए अणत्यमियसंकप्पे संयडिए निव्विइ-(गिंछा-गिच्छा-समावने)गिच्छे असणं वा ४ पडिग्गाहेसा आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेजा-अणुम्गए स्रिए अत्यसिए वा, से जं च (आसर्यस) मुहे जं च पाणिसि जं च पडिस्ग(हयंसि)हे तं विगिश्चमाणे (वा) विसोहेमाणे ना(नो अ)इक्समइ; तं अप्पणा भुज्जमाणे अनेसि वा (दलमाणे) अणुप्पदेमाणे (राइमोयणपहिसेणपवते) आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्धाइयं ॥ १४५ ॥ भिक्ख् य उमायवित्तीए अणत्यमियसंकप्पे संघडिए विद्यगिच्छासमावने असणं वा ४ पडिम्माहेता आहार-माहारेमाणे अह पच्छा जाणेजा-अणुग्गए सुरिए अत्थमिए वा, से जे च मुहे जे च पाणिसि जं च पडिग्गहे तं विगिन्नमाणे विसोहेमाणे नाइक्समहः तं अप्पणा भुजमाणे अनेसि वा अणुप्पदेमाणे आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्घाइयं ॥ १४६ ॥ भिक्लू यं उमायवित्तीए अणत्यमियसंकप्पे असंबंहिए निन्निइगिच्छे असणं वा ४ पडिस्गाहेता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेजा-अणुमाए सुरिए

अत्यमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिसि जं च पडिम्गहे तं विगिन्नमाणे विसोहे-माणे नाइकमइ; तं अप्पणा भुजमाणे अनेसि वा अणुप्पदेमाणे आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरघाइयं ॥ १४७ ॥ भिक्ख् य उमायवित्तीए अणत्यमियसंकप्पे असंयडिए विझ्निच्छासमावने असणं वा ४ पडिग्गाहेता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेजा-अणुम्गए स्रिए अत्थिमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिसि जं च पडिब्गहे तं विभिन्नमाणे विसोहेमाणे नाइक्षमइः तं अप्पणा भुजमाणे अन्त्रिसं वा अणुष्पदेमाणे आवज्ञइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरघाइयं ॥ १४८ ॥ इह खळु निमान्थस्स वा निम्मन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे समीयणे उम्माले आग-च्छेजा, तं विगिन्नमाणं विसोहेमाणे नाइक्समः तं उभिगलिता पन्नोगिलमाणे राइ-भोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्धाइयं ॥ १४९ ॥ निम्मन्थस्स य गाहायङकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्वस्स अन्तो (०) पडिम्महंसि पा(णाणि)णे वा बी(याणि)ए वा रए वा परियावजेजा, तं च संचाएइ विभिधित्तए वा विसोहेत्तए वा, (तं पुव्वामेव आलो॰ विसोहि-य-या-तं) तथो संजयामेव भुंग्रज वा पिएज वा; तं च नो संचाएइ विगिश्वित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं नो अप्पणा भुषेजा (तं) नो अषेसि अणुप्पदेजा; एगन्ते बहुकामुए यण्डिले पडिलेहिता पमजित्ता परिद्ववेयव्वे सिया ॥ १'९० ॥ निम्गन्थस्स य गाहावदृक्लं पिण्डवाय-पिडियाए अणुप्पिबिद्वस्य अन्तो पिडिमा(हगं)हंसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियाबजेजा, से य उसि(णे)णभोयणजाए, परिभोत्तव्वे सिया; से य (नो उसिणे) सीयभोयणजाए, तं नो अप्पणा भुक्षेजा नो अन्नेसि अणुप्पदेजा; एगन्ते बहुफासुए थण्डिले पिंडलेहिता पमजिता परिट्ववेयव्वे सिया ॥ १५१ ॥ निरगन्थीए य राओं वा वियाले वा उचारं वा पासवणं वा विगिन्नमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पद्यजाईए वा पक्खिजाईए वा अन्नयरइन्दियजाए तं परामुसेजा, तं च निग्गन्थी साइजेजा. हत्थकम्मपिडसेवणपता आवजङ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्चाइयं ॥ १५२ ॥ निग्गन्थीए य राओ वा वियाछे वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिन्नमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्यरे पसुजाईए वा पविखजाईए वा अन्यरंसि सोयंसि ओगाहेजा, तं च निमान्धा साइज(जइ)जेजा, मेहुणपिटसेवणपता आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुरुवाह्यं ॥ १५३ ॥ नो कप्पह्न निरगन्थीए एगाणियाए होत्तए ॥ १५४ ॥ नो कप्पइ निस्मन्थीए एगाणियाए गाहावड्कुळं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १५५ ॥ नो कम्पइ निम्गन्थीए एगाणियाए बहिया नियारभूमिं वा निहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविश्वित्तए वा ॥ १५६ ॥

नो कप्पइ निगगन्थीए एगाणियाए गामाणुगामं दृहज्जित्तए (वासावासं (वा) वत्थए) ॥ १५७ ॥ नो कपड निग्गन्थीए अचेलियाए होत्त(हंत)ए ॥ १५८ ॥ नो कपड निरगन्थीए अपाइयाए होत्तए ॥ १५९ ॥ नो कप्पइ निरगन्थीए बोसहकाइयाए होत्तए ॥ १६० ॥ नो कप्पर निम्मन्थीए बहिया गामस्म वा जाव (रायहाणीए) संनिवेयस्य वा उन्नं बाहाओ पगिज्ञिय २ स्राभिम्(ही)हाए एगपाइयाए ठिचा आयावणाए आयावेत्तए ॥ १६१ ॥ कप्पइ से उवस्सयस्य वगडाए संघाडिपडिवडाए समतलपाइयाए ठिचा आयावणाए आयावेत्तए ॥ १६२ ॥ नो कप्पइ निगान्थीए ठाणाइयाए होत्तए ॥ १६३ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए पडिमद्रावियाए होत्तए॥ १६४॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए ठाणुक्कडि-यामणियाए होत्तए॥ १६५॥ नो कपइ निम्मन्थीए ने(सि)मजियाए होत्तए ॥ १६६ ॥ नो कप्पड् निम्मन्थीए वीरासमियाए होताए ॥ १६७ ॥ नो कप्पड् निम्गर्न्थाए दण्डा(ई)सणियाए (पलम्बियबाहाए) होनए ॥ १६८ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए लगण्डसाइयाए होत्तए ॥ १६९ ॥ नो कपड निग्गन्थीए ओमंथि-याए होत्तए ॥ १७० ॥ नो कप्पइ निम्मन्थीए जना(णसाइ)णियाए होत्तए ॥ १७१ ॥ नो कप्पइ निगन्थीए अम्बबुज्जियाए होत्तए ॥ १७२ ॥ नो कप्पइ निगन्थीए एगपासियाए होत्तए ॥ १७३ ॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं आउञ्चणपद्गं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १७४ ॥ कप्पड़ निग्गन्याणं आउम्राणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरि(बहि)त्तए वा ॥ १७५ ॥ नो कप्पः निग्गन्थीणं सा(वा)वस्सगंसि आस(णयं)णंसि आसइ(चिद्वि)त्तए वा तुयद्वि(निसिइ)त्तए वा ॥ १७६ ॥ कप्पइ निग्गन्थाणं सावस्त्रयंसि आसणंसि आसइनए वा तुयदिनए वा ॥ १७७ ॥ नो क्रापइ निग्गर्स्थाणं सविसा(णयं)णंसि फलगंसि वा पी(ढगं)ढंसि वा चिद्रितए वा निसीइतए वा (आसइतए वा तुयद्वितए वा) ॥ १७८ ॥ कप्पइ निग्गन्थाणं जाव निसीइत्तए वा ॥ १७९ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थीणं (सना(ला)लयाई पायाई अहिहित्तए) सवेण्टयं लाउयं घारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८० ॥ कम्पइ निमा-न्थाणं संवेण्टयं छाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८९ ॥ नो कप्पड निमान्धीणं स(विह)वे(ढिया-ओ)ण्टैयं पायकेसरि(याओ)यं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८२ ॥ कपड़ निमान्याणं संवेष्ट्यं पायकेसरियं घारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८३ ॥ नी

१ जत्थाभिणवसंकडमुद्दे अळाउए हत्यो ण माइ तस्स अळाउणो जमुचतं तप्पमाणो दंडो किज्जइ, तस्सम्मभागे बद्धा जा प्रश्नुवेक्खणिया सा पायकेसरिया सर्विटया भण्णह।

कप्पइ निग्गन्थीणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८४ ॥ कप्पइ निग्गन्थाणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८५ ॥ नो कप्पइ निम्मन्थाण वा निम्मन्थीण वा पारियासि(ए भोगणजाए)यस्स आहारस्स जाव त(इ)अप्पमाणमेत्तमवि भृङ्प्पमाणमेत्तमवि बिन्दुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारे-त्तए, नन्नत्य आ(गाढा)गाढे(मु)हिं रोगायद्वेहिं ॥ १८६ ॥ नो ऋपइ निम्मन्याण वा निरगन्थीण वा पारियासिएणं आस्त्रेवणजाएणं गा(यं)याउं आस्त्रिक्पसए वा विलिम्पिनए दा, नम्बत्य आगादेहिं रोगायक्केहिं ॥ १८७ ॥ नो कपड निमान्याण वा निरगन्थीण वा पारियासिएणं तेहिण वा घएण वा गायाडं अब्भेक्षेत्रए वा म(क्कि)क्खेत्तए वा, नन्नत्य आगाहेहिं रोगायद्वेहिं ॥ १८८ ॥ नो कप्पइ निम्म-न्थाण वा निरगन्थीण वा कक्केण वा स्त्रेद्धेण वा अन्नयरेण वा आस्त्रेवणजाएणं गायाइं उन्बलेतए वा उर्व्वाष्ट्रतए वा, नन्नत्य आगादेहिं रोगायहेहिं॥ १८९ ॥ परिहारकप्पट्रिए णं भिक्न बहिया थेराणं वेयाविडयाए गच्छेजा. से य आहन अइक्सेजा, तं च थेरा जाणेज अप्पणी आगमेणं अनेसि वा अन्तिए सोचा. तओ पच्छा तस्म अहालहुसए नाम ववहारे पद्भवियव्वे सिया ॥ १९० ॥ निगगन्थीए य गाहावडकुलं पिण्डवायपिडयाए अणुप्पविद्वाए अन्नयरे पुरेलागभत्ते पिडम्गाहिए सिया, सा य संयरेजा, एवं से कप्पइ (तं दिवसं) तेणेव भक्तद्वेणं पज्जोसवेक्तए: सा य नो संथरे. एवं से कप्पड दोचं पि गाहावहकुलं (पिण्टवायपडियाए अ०) भक्ताए वा पाणाए वा निक्खिमिक्तए वा पविसिक्तए वा ॥ १९१ ॥ ति-वेमि ॥ विहक्रपे पञ्चमो उद्देसओ समत्तो ॥ ५॥

छट्टो उद्देसओ

नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं छ अव(यणा)त्तव्वाइं वहत्तए, तंजहा—अलियवयणे हीलियवयणे खिसियवयणे फरुसवयणे गारत्ययवयणे, बि(उ)-ओसिवयं वा पुणो उदी(रि)रेत्तए ॥ १९२ ॥ छ कप्पस्स पत्थारा पन्नता, तंजहा—पाणाइवायस्स वायं वयमाणे, मुमावायस्स वायं वयमाणे, अदिनादाणस्स वायं वयमाणे, अविरद(य)यावायं वयमाणे, अपुरिसवायं वयमाणे, दासवायं वयमाणे, इचेए कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अप्पिष्ण्रेमाणे तष्टाणपत्ते सिया ॥ १९३ ॥ निग्गन्थस्स य अहे पायंसि खा(ण्)णुए वा क(ण्)ण्यए वा ही(सक)रे वा परियावज्ञेजा, तं च निग्गन्थे नो संवाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं (च) निग्गन्थी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्समइ ॥ १९४ ॥ निग्गन्थस्स य

१ नीरसे भोयणे।

अच्छिति पाणे वा बीए वा रए वा परियावजेजा, तं च निम्मन्(बो)थे नो संचाए-(जा)ह नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गन्थी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्समइ ॥ १९५ ॥ निग्गन्थीए य अहे पायंसि खाणूए वा कण्टए वा ही(रए)रे वा (सक्करे वा) परियावजेजा, तं च निमान्यी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निमान्ये नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्सइ ॥ १९६ ॥ निमान्यीए य अच्छिस पाणे वा बीए वा रए वा परियावजेजा. तं च निमान्धी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा. तं निग्गन्थे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइकमइ ॥ १९७ ॥ निगन्थे निगन्थि दुग्गंसि वा विसमंसि वा पव्वयंसि वा पक्(खु)खल-माणि वा प्रवडमाणि वा गेण्डमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्सइ ॥ १९८ ॥ निग्गन्थे निग्गन्थि सेयंसि वा पद्वंसि वा पणगंसि वा उदयंसि वा ओक(उक्क)समाणि वा ओव्(ज्झ)व्ममाणि वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्समइ ॥ १९९ ॥ निस्गन्ये निस्गन्धि नावं आ(रोह)स्ममाणि वा ओ(उ-रोह)स्ममाणि वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्समइ॥ २००॥ खित्तचित्तं निगान्यि निगान्ये गे(गि)ण्ह-माणे वा अवस्त्रम्बमाणे वा नाइक्समइ ॥ २०९ ॥ दित्तचित्तं निमान्यि निमान्ये गेण्हमाणे वा अवस्थनमाणे वा नाइकमइ ॥ २०२ ॥ जनखाइट्टं (०) उम्मायपत्तं (०) उवसम्मपत्तं (०) साहिगरणं (०) सपायच्छितं (०) भत्तपाणपश्चियाइक्खियं (०) अटुजा(यम्मि)यं निरगन्यि निरगन्ये गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्सइ ॥ २०३॥ छ कप्पस्स पिलमन्यू पनता, तंजहा-कोक्ड्र संजमस्स पिलमन्यू, मोहरिए सबवयणस्स परिमन्यू, तिन्ति(णी)पिए एसणागोयरस्स परिमन्यू, चक्खुलोछए इरियावहियाए पिलमन्थू, इच्छालो(भ-रु-ए)मे मुत्तिमग्गस्स पिलमन्थू, (भिजा) भुजो भुजो नियाणकरणे सिद्धि(मोक्ख)मग्गस्स पळिमन्थू, सव्बत्य भगवया अनि-याणया पसत्था ॥ २०४॥ छिन्दहा कप्पद्विई पंचता, तंजहा-सामाइयसंजयकप्पद्विई, क्रेओवद्वावणियसंजयकप्पद्विई, निव्निसमाणकप्पद्विई, निव्विद्वकाइयकप्पद्विई, जिण-कप्पडिई, बेरकपडिई ॥ २०५ ॥ ति-नेमि ॥ विद्यक्तपे छुट्टो उद्देसओ समसो॥६॥ विष्ठक्रयसुर्व समसं॥



श्रीस्त्रागमप्रकाशकसमितिके 'सदस्य'



श्रीमान् गेठ धनराज पगारिया मु० हिंगोना. ना० एरंडोल. पूर्व-खानदेश (धरणगांव)

परिचय-अप राहुरी (अहमदनगर) में हिंगोना में दत्तक आए हैं। आप एक होनहार युवक है। प्रमंभावमें ओतप्रोत रहते हैं। आप अपना मातुष्रीक परम भक्त हैं। उनकी आज्ञाका सब प्रकारसे पालन करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। आप महाप्रती-वर्षा गुरुओंक पूर्ण भक्त हैं, मुनिओंके उपदेश सनकर आप अपनेको कृतकृत्य समझते हैं। आपकी व्यावहारिक सत्यता-प्रामाणिकता बस्तान करने योग्य हं। आप सामायिकादि धार्मिक कियाओंकी साधनाओंमें अति अनुरक्त रहते हं। आप कैसे आदर्श युवकोंकी समाजको परम आवश्यकता है।

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुरुमहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं णिसीहसुत्तं पढमो उद्देसो

जे भिक्ख हत्यक्रमं करेड करेंतं वा साइजाइ ॥ १ ॥ जे भिक्ख अंगादाणं कद्वेण वा किलिचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेड संचालेते वा साइजड ॥ २॥ जे भिक्क अंगादाणं संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेंनं वा पलिमहेतं वा साइजड ॥ ३॥ जे भिक्त अंगादाणं तेष्ठेण वा घएण वा णवणीएण वा अव्भेगेज वा सक्खेज वा भिलिंगेज वा अन्मंगेंनं वा मक्बेंतं वा भिलिंगेंनं वा माइजइ ॥ ४ ॥ जे भिक्ख अंगादार्ण रुक्केण वा लोद्धेण वा परमचुण्णेण वा ष्टाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उन्बेटेड वा परिबेटेड वा उन्बेहेतं वा परिबेहेनं वा साइजाइ ॥ ५ ॥ जे भिक्ख अंगादाणं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेख वा पधी-वेज वा उच्छोटेतं वा पथोवेंतं वा साइजइ ॥ ६॥ जे मिक्स अंगादाणं णिच्छोड णिन्छक्तिं वा साइजाइ ॥ ७॥ जे भिक्ख अंगादाणं जि(जिर)घह जिंघंतं वा साइजाइ ॥ ८॥ जे भिक्ख अंगादाणं अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुप्यवेसेत्ता सक्रपोग्गळे णिग्चाएइ णिग्चायंतं वा साइजाइ ॥ ९ ॥ जे भिक्लू सिच(तं)तपहट्टियं गंधं जिंघइ जिंघंतं वा साइजाइ ॥ १० ॥ जे भिक्क्ष् पयममां वा संकर्म वा अवलंबणं वा अण्णजित्यएण वा गारित्यएण वा कारेइ कार्रेतं वा साइजाइ॥ ११॥ जे सिक्ख दगवीणियं अण्णजित्थएहिं वा गारिक्षएहिं वा कारेड कारेंनं वा साइजाइ ॥ १२ ॥ जे भिक्ख सिक्स्गं वा सिक्स्गणंतगं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कारेइ कारेंतं वा साइज्ञह ॥ १३ ॥ जे भिक्क् सोतियं वा रज्ज्यं वा चिलिमिलि वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कारेड कारेंतं वा साइजाइ ॥ १४॥ जे भिक्ख सुईए उत्तरकरणं अण्णलिक्ष्एण वा गारिक्षएण वा कारेइ कारेंते वा साइज्जइ ॥ १५ ॥ जे भिक्क् पिप्पलगस्स उत्तरकरणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कारेइ कारेंतं वा साइ-जाइ ॥ १६ ॥ जै निक्ख पखच्छेयणगस्प्रतरकरणं अण्यउत्थिएण वा गारत्थिएण ५४ स्ता॰

वा कारेड कारेंतं वा माइजाइ ॥ १७ ॥ जे भिक्क कण्णसोहणगस्यत्तरकरणं अण्ण-उत्थिएण वा गारस्थिएण वा कारेड कारेंतं वा माइज्जइ॥ १८॥ जे भिक्ख अणहाए सुइं जायइ जागंतं वा साइजाइ ॥ १९ ॥ जे मिक्बू अणद्वाए पिप्पलगं जायइ जायंतं वा साइजङ् ॥ २०॥ जे भित्रख् अणद्वाए कम्मसोहणगं जायह जायंतं वा साइजङ ॥ २९॥ जे भिक्क अणद्वाए णखच्छेयणगं जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥ २२ ॥ जे भिक्क अधिहीए सुहं जायइ जायंतं वा साडजद ॥ २३ ॥ जे भिक्लू आंवहीए पिप्पलगं जायद जायंतं वा साइजाइ ॥ २४ ॥ जे भिक्क अविहीए णहच्छेयणमं जायद जायंतं वा साइज्जह ॥ २५ ॥ जे भिक्स् अविहीए कण्णमोहणयं जायह जायंतं वा साइजड ॥ २६ ॥ जे भिक्क पाडिहारियं सई जाइना वत्यं सिव्यिस्सामित्ति पायं सिव्वड सिव्वंतं वा साइज्जह ॥ २७ ॥ जे भिक्स पाहिहारियं पिप्पलयं जाइला दर्श्य छिंदिस्सामित्ति पायं छिंदइ छिंदंनं वा साइजाइ ॥ २८ ॥ जे मिक्खू पाडिहारियं णहुन्छेयणयं जाइता णहं छिदिस्यामिति सहद्धरणं करेद करेतं वा साइजाइ॥ २९॥ जे भिक्क पाडिहारियं कण्णसोहणगं जाइसा कण्णमलं णीहरिस्सामित्ति दंतमलं वा णसमलं वा णीहरेड णीहरेतं वा साइजाइ॥ ३०॥ जे भिक्ख अप्रणो एइस्स अद्वाए सुई जाइता अण्णमण्णस्य अणुष्पदेइ अणुष्पदेतं वा साइजाइ ॥ ३९ ॥ ज भिक्ष अप्पणो एक्स्स अद्वाए पिप्पलयं जाइला अण्णमण्णस्य अणुप्पदेइ अणुप्पदेतं वा साइजाइ ॥ ३२ ॥ जे भिक्ख अप्पणो एकस्स अद्वाए णहच्छेयणयं जाइना अण्णमण्णस्स अणुप्पदेइ अणुप्पदेतं वा साइजाइ ॥ ३३ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो एकस्स अद्वार कण्णसोहणयं जाइता अण्णमण्णस्स अगुप्पदेइ अगुप्पदेनं वा साइज्वह ॥ ३४॥ जे भिक्ख सहं अविहीए पचिष्पणइ पचिष्पणंतं वा साइज्जः ॥ ३५ ॥ जे भिक्ख अविहीए पिप्पलगं पञ्चपिणंड पञ्चपिणंतं वा साइजड ॥ ३६ ॥ जे भिक्ख अविहीए णहरुक्षेयणगं पचिष्णह पचिष्णंतं वा साइजाइ ॥ ३० ॥ जे भिक्ख् अविहीए कण्णसोह-णयं पञ्चप्पिणइ पञ्चप्पिणंतं वा साइजइ ॥ ३८ ॥ जे भिक्ख् लाउयपायं वा दारुपायं वा महियापायं वा अण्णउत्थिएण वा गारिथएण वा परिचद्दावेड वा संठवेड वा जमावेइ वा अलमप्पणो कारणयाए सुहममवि णो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्ण-मण्णरस वियरह वियरतं वा साइजइ ॥ ३९ ॥ जे मिक्कू दंढेयं वा अवलेहणियं वा वेणुस्ड्यं वा अण्णलिक्ष्यएण वा गारिक्षएण वा परिचट्टावेड वा संठवेड वा जयावेइ वा अलमप्पणो कारणयाए सुहममबि णो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अण्ण-मण्णस्स वियरह वियर्त वा साइजाइ ॥ ४० ॥ जे भिक्ख पायस्स एकं तुंहियं

१ थेरावेक्साए, तेसिं कप्पइ ति ।

ताहेड ताहेंनं वा साइजाइ॥ ४९॥ जे भिक्ख् पायस्स परं तिण्हं तुहियाणं ताहेड ताहेनं बा साइज्जड ॥ ४२ ॥ जे भिनन्तु पायं अविहीए बंधड बंधतं वा साइज्जड ॥ ४३ ॥ जे भिक्ख पायं एगेण बंघेण बंधइ बंधंतं वा साइजाइ ॥ ४४ ॥ जे भिक्खू पायं पर तिण्ड यंघाणं वंधइ बंधतं वा साइजड ॥ ४५ ॥ जे भिक्ख अइरेगबंधणं पायं दिवहाओ मासाओ परेण धरेइ घरेंतं वा साइजइ॥ ४६॥ जे भिक्ख् वत्यस्स एगं पिंदगाणियं देह देंतं वा साइजाइ ॥ ४७ ॥ जे भिक्ष्क वत्यस्स परं तिण्हं पिंड-याणियाणं देइ देंतं वा साइजाइ ॥ ४८ ॥ जे भिक्ख् अविहीए वर्त्यं सिञ्बह सिन्दंतं वा साइजाइ॥ ४९॥ जे भिक्ख् वत्थरसेगं फालियगंठियं करेइ करेंतं वा माइज्जइ ॥ ५० ॥ जे भिक्ख वत्यस्स परं तिण्हं भालियगंठियाणं करेड करेंतं वा साहजह ॥ ५१ ॥ (ः वि० दे० साइजह ः परं तिण्हं ः) जे भिक्ख वत्यं अविहीए गंठेइ गंठेतं वा साइजइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्ख अतजाएणं गहेड गहेतं वा साइज्जड ॥ ५३ ॥ जे भिक्ख अइरेगगहियं वत्यं परं दिवद्वाओ मासाओ धरेड घरेंनं वा साइजड़ ॥ ५४ ॥ जे भिक्ख गिहधूमं अण्णउत्यएण वा गारस्थिएण वा परिसाडावेइ परिसाडावेंतं वा साइजइ ॥ ५५ ॥ जे भिक्ख प्रक्रममं भंजइ भंजंतं वा साइजाइ । तं सेवमाणे आवजाइ सासियं परिहारद्वाणं अणुरघाइयं ॥ ५६ ॥ णिसीहऽज्ययणे पढमो उद्देशो समचो ॥१॥

विइओ उदेसो

जे भिक्ख दाहर्दंडयं पायपुंछणयं करेइ करेंतं वा साइजाइ ॥ ५० ॥ जे भिक्ख दारुदंडयं पायपुंछणं गेण्हड् गेण्हंतं वा साइज्जड् ॥ ५८ ॥ जे भिक्ख् दीरुदंडयं पायपंछणं धरेइ धरेतं वा साइजाइ॥ ५९॥ जे भिक्ख् दारुदंडयं पायपंछणं वियरङ वियरंतं वा साइज्जह ॥ ६० ॥ जे भिक्खू दारुदंडयं पायपुंछणं परिभाएइ परिभाएंतं वा साइज्जइ ॥ ६१ ॥ जे भिम्ब्यू दारुदंडयं पायपुंछणं परिभंजइ परि-भुंजंतं वा साइजह ॥ ६२ ॥ जे भिक्ख दारुदंडयं पार्येपंछणं परं दिवड्ढाओं मासाओ धरेइ धरेंतं वा साइजाइ ॥ ६३ ॥ जे भिक्ख दारुदंडयं पायपंछणयं विश्वयावेइ विद्ययांवेंतं वा साइजाइ ॥ ६४ ॥ जे सिक्क अचित्तपइद्वियं गंधं जिघइ जिघंतं वा

१ णणु बिहक्रप्पे 'कप्पइ णिकांयाणं दाहदंडयं पायपुंछणयं धारिताए' ति एतथ धारगस्स पायच्छितं ति विरोहामासो, णेवं, तत्य 'दारुदंडयं पायपुंछणयं' इचेयस्स सदंडियं रयहरणि ति अहो, जा साहुणं कप्पइ णो साहुणीणं, 'पूंजणी' ति भासाए. इत्य दाठदंडएण पायपंछणेण वत्यावेदणरहियस्य रयहरणस्य महणं ति । २ सकारणं कप्पद्व दिवन्नमासदास्तंडयपायपंड्यगयधारणं ति ।

साइजाइ ॥ ६५ ॥ जे सिक्ख प्रयमर्ग वा संक्रम वा आलंबणं वा सयमेव करेड्र करैंने वा साइजाइ ॥ ६६ ॥ जे भिक्ख दगवीणियं सयमेव करेड करेंसे वा साइजाइ ॥ ६७ ॥ जे जिक्स सिक्टमं वा सिक्टमणंतमं वा सबसेव करेड करेंने वा साउजड ॥ ६८ ॥ जे भिक्स सोतियं वा राज्यं वा चिलिमिलिं वा सयमेव करेड़ करेंतं वा साइज्जइ ॥ ६९ ॥ जे भिक्ख सईए उत्तर्करणं सम्मेव करेड करेंतं वा माइज्जइ ॥ ७० ॥ जे भिक्क पिपलयस्य उत्तरकरणं सुयमेव करेड करेतं वा साइजङ् ॥ ७९ ॥ जे मिक्स णहच्छेयणगरम उत्तरकरणं सबमेव करेड करेंतं वा माइजाइ ॥ ५२ ॥ जे भिक्त कण्णसोहणयस्य उत्तरकरणं सयमेव करेड करेंतं वा साइजाइ ॥ ७३ ॥ जे भिक्ख लहसर्ग फर्स वयइ वर्यंतं वा साहजाइ ॥ ७४॥ जे भिक्ख लहसर्ग मुसं वयड वयंतं वा साइज्जइ ॥ ७५ ॥ जे मिक्ख् लहसगं अदत्तं आदियइ आदियंतं वा माइज्रह ॥ ७६ ॥ जे मिक्स लहसएण सीबोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा कण्णाणि वा अच्छीणि वा दंताणि वा णहाणि वी (मुहं वा) उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेतं वा पधोवेतं वा साइजाइ ॥ ३७ ॥ जे भिक्स कसिणाई बत्थाई धरेइ घरेतं वा साइजइ ॥ ७८ ॥ जे मिक्ख् अभिग्णाई बत्थाई धरेड धरेतं वा साइजड ॥ ७९ ॥ जे भिक्ख लाजयपायं वा दारुयपायं वा मट्टिया-पायं वा सबमेवे परिघट्टेड वा संठवेड वा जमावेड वा परिघट्टेंतं वा संठवेंतं वा जमार्वेतं वा साइजाइ ॥ ८० ॥ जे मिक्ख दंडगं वा अवलेहणं वा वेणसङ्गं वा सम्मेव परियद्रेड वा संठवेड वा जमावेड वा परियद्रेतं वा संठवेंतं वा जमावेतं वा साइजड ॥ ८१ ॥ जे भिक्वें णियगवैसियगं पिरमाहगं घरेड घरेंतं वा साइजड ॥ ८२ ॥ जे भिक्ख् प्रगवेसियगं पडिग्गहुगं धरेड घरेंतं वा साइजड ॥ ८३ ॥ जे भिक्ख परगवेसियगं पडिमाइगं घरेड धरेतं वा साइजड ॥ ८४ ॥ जे भिक्ख बलगवेसियगं पडिस्महमं धरेड धरेतं वा साइजड ॥ ८५ ॥ जे भिक्ख लवंगवेसियगं पडिम्महुगं भरेड धरेंतं वा साइजाइ ॥ ८६ ॥ जे मिक्ख नितियं अम्मपिंडं अंजाड भंजतं वा साइजड ॥ ८७ ॥ जे भिक्ख नितियं पिंडं भुंजड भूंजतं वा साइजड ॥ ८८ ॥ जे मिक्स नितियं अवस्थार्ग भुंजह भुंजतं वा साइजह ॥ ८९ ॥ जे मिक्स नितियं भागं भुंजह भुंजतं वा साइजह ॥ ९० ॥ जे मिक्ख नितियं उवहुभागं भुंजइ भुंजतं या साइजइ ॥ ९९ ॥ जे मिक्खू नितियावासं वसइ वसंतं वा साइजह ॥ ९२ ॥ जे भिक्खू पुरेसंथवं वा पच्छासंथवं वा करेड करेंतं वा साइजह ॥ ९३ ॥ जे भिक्स समाणे वा बसमाणे वा गामाणुनामं वा दहजमाणे प्ररेसंध-

१ विभूसाए । २ सोहाए । ३ गुरुभाणाइ विणा ।

याणि वा पच्छासंश्रयाणि वा कुलाइं पुन्वामेव भिक्खायरियाए अणुपनिसइ अणुप-विसंतं वा साइजाइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्न्यू अण्णलियएण वा गारत्यिएण वा अपरि-हारिए वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावङ्कुलं पिंडवायपिंडयाए णिक्स्बसई वा अगुप-विसइ वा णिक्खमंतं वा अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥ ९५ ॥ जे मिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गार त्थिएण वा परिद्वारिओ वा अपरिद्वारिएण सर्दि बहिया बिहारभूमि वा वियारसूमि वा णिक्खमइ वा पविमइ वा णिक्खमंतं वा पविसंतं वा साइजाइ॥ ९६ ॥ जे भिक्ख अण्य इत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सर्क्षि गामाणुगामे दुइजाइ दुइजांतं त्रा साइजाइ ॥ ९७ ॥ जे मिक्ख अन्गयरं पाणगजायं पहिगाहिता पुष्फां पुष्फां आइयइ कसायं २ परिद्रवेड परिद्रवेतं वा साइजड ॥ ९८ ॥ जे मिक्ख अण्णयरं भोयणजायं पडिगाहिता सुब्सि २ भुंजह दुब्सि २ परिद्रवेड परिद्रवेतं वा साइजङ ॥ ९९ ॥ जे भिक्ख मणुण्णं भोयणजायं पहिनाहेत्ता बहपरियावण्णं सिया अदूरे तत्य साहम्मिया संभोइया समणुण्या अपरिहारिया संता परिवसंति ते अणाप-च्छि(य)या अणिमंतिया परिद्ववेद परिद्ववेतं वा साइजाइ ॥१ ००॥ जे मिक्खू सागारियं पिंडे गिण्हड गिण्हंतं वा साइजाइ ॥ १०१ ॥ जे भिक्ख सागारियं पिंडं भंजइ भंजंतं वा साइजाइ ॥ १०२ ॥ जे भिक्ख सागारियं कुलं अजाणिय अप्रक्षिय अगवेसिय पुरुवामेव पिंडवायपिंडयाए अणुप्पविसह अणुप्पविसेतं वा साइजाह ॥ १०३॥ जे भिक्ख सामारियनीसाए अमणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय २ जायइ जायंती वा साइजाइ ॥ १०४॥ जे भिक्ख उद्घवद्धियं सेजासंचारयं परं पज्जोमवणाओ उवाइणाइ उवाइणंतं वा साइजाइ ॥ १०५ ॥ जे भिक्क बासा-वासियं सेजासंथारयं परं दसरायकप्पाओं उवाइणाइ उवाइणीतं वा साइजङ ॥ १०६॥ जे मिक्स उड़विद्यं वा वासावासियं वा सेजासंयारगं उबरि सिज-माणं पेहाए न ओसारेइ न ओसारेतं वा साइजड ॥ १०७ ॥ जे भिक्ख पाडि-हारियं सेजासंयारयं अणगुज्जवेता बाहि जीजेड जीजेतं वा साइजड ॥ १०८ ॥ जे भिक्ख सागारियसंतियं सेजासंघारयं अण्युष्णवेता बाहिं णीणेह णीणेतं वा साइजड् ॥ १०९ ॥ जे मिक्स पाडिहारियं सागारियसंतियं चा सेजासंथारवं दोबंपि अणगुष्णवेता बाहिं जीजेह जीजेतं वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे भिक्ख् वाहिहारियं सेजासंयारयं भादाय अप्पहिहृह संपन्नयइ संपन्नयंतं वा साइज्जइ ॥ १११ ॥ जे भिक्ख सागारियसेतियं सेजासंबारयं आदाय अहिगरणं कडू अण-यिगेता संपञ्चयह संपञ्चयंतं वा साहज्ञह ॥ ११२ ॥ जे मिक्ख् पाहिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेजासंधारयं विष्णणंडं ग गवेसह ण गवेसंतं वा सहज्जह

॥ ११३ ॥ जे भिक्ख इत्तरियंपि उवहिं ण पिडकेहेर ण पिडकेहेर्त वा साइजइ। तं सेवमाणे आवजार मासियं परिहारद्वाणं उग्धाइयं ॥ ११४ ॥ णिसीहऽज्ञ-यणे बीओ उद्देसी समसो ॥ २ ॥

तइओ उदेसी

जे भिक्ख आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावङकुलेमु वा परियावसहेसु बा अण्णसन्त्रियं वा गारन्थियं वा असणं वा ४ ओसासिय २ जायड जायंतं वा साइजाइ ॥ १९५ ॥ एवं अण्णउतिथया वा गारत्थिया वा. अण्णउतिथणी वा गारियणी वा. अण्णउत्थिणीओ वा गारियणीओ वा असणं वा ४ आंभासिय २ जायह जायंतं वा साइजइ ॥ ११६-११७-११८ ॥ जे भिक्ख् आगंतारेस वा आरामागारेस वा गाहावडकुळेस वा परियावसहेस वा कोउहहरपितयाए पहियागयं समाणं अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा, अण्णउत्थिया वा गारत्थिया वा. अण्ण-उत्यिणी वा गारत्यिणी वा. अण्णउत्थिणीओ वा गारत्यिणीओ वा असणं वा ४ ओमासिय २ जायइ जायंतं वा साइजाइ ॥ ११९-१२०-१२१-१२२ ॥ जे जे भिक्ख आगंतारेस वा आरामागारेस वा गाहाबङ्क्लेस वा परियावसहेस वा अण्णजित्यएण वा गार्रिथएण वा, अण्णजित्यएहि वा गार्रियएहि वा, अण्ण-उत्पाणीए वा गारत्यिणीए वा. अण्णउत्यिणीहि वा गारत्यिणीहि वा असणं वा ४ अभिद्रडं आहु दिजामाणं पडिसेहेता तमेव अणुवत्तिय २ परिवेद्धिय २ परि-जविय २ ओभासिय २ जायह जायंतं वा साइज्जइ ॥ १२३-१२४-१२५-१२६ ॥ जे भिक्ख गाहावहकुलं पिंडवायपिंडयाए पविद्वे पिंडयाहिक्खए समाणे दोखं(पि) तमेव कुलं अणुप्पविसइ अणुप्पविसंतं वा साइजइ ॥ १२७ ॥ जे मिक्खू संस-डिपलोयणाए असर्ण वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइज्जड ॥ १२८ ॥ जे मिक्ख गाहावहकुलं पिंडवायपिंडयाए अणुपविद्रे समाणे परं तिघरंतराम्रो असणं वा ४ अभिद्रडं आहर्ष्ट दिज्जमाणं पहिम्गाहेद पहिम्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२९ ॥ जे भिक्क अप्पणी पाएँ आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ १३० ॥ जे मिक्स अप्पणो पाए संबाहेज वा पिक्रमहेज वा संबाहेंतं वा पलिमहेंतं वा साइजाइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्ख अप्पणी पाए तेक्केण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा अञ्मेरीज वा मक्खेंतं वा अञ्मेरीतं वा साहजाह ॥ १३२ ॥ जे भिक्ख अध्यणो पाए लोद्रेण वा कोर्क्य वा (०) उहाैलेख वा रुव्वहेम वा उत्त्रोलेतं वा रुव्वहेतं वा साइम्बद् ॥ १३३ ॥ जे भिक्क् अप्पणी

१ सोमाए।

८५५

पाए सीओदगवियहेण वा उतिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधीवेज वा उच्छोर्लेतं वा पघोवेंतं वा साइजाइ ॥ १३४ ॥ जे भिक्ख् अप्पणो पाए फुमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजह ॥ १३५॥ जे मिक्ख अप्यणो कार्य आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा गाइजइ ॥ १३६ ॥ जे भिक्ख अप्पणी कार्य संवाहेज वा पित्रमेंहज वा संवाहेतं वा पित्रमेंहतं वा साइजाड ॥ १२७ ॥ जे भिक्ख अप्पणी कार्य तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेतं वा मिलिंगेंतं वा साइजइ ॥ १३८॥ जै भिक्त अपणो कारं होद्वेण वा क्क्रेण वा उहालेज वा उव्वहेज वा उन्नोर्टेतं वा उव्वहेंने वा साइजह ॥ १३९ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कार्य सीओदग-विगडेण वा उसिणोदगवियंडण वा उच्छोलेज वा पधोनेज वा उच्छोलेंतं वा पधोवेंतं वा साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे मिक्ख अप्पणो कायं फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा माइजइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्ख् अप्पणी कायंसि वणं आमजेज वा पमजेज वा आमजेतं वा पमजेतं वा साइजाइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्स अप्यणो कार्यसे वर्ण संवाहेज वा पित्रमहेज वा संवाहेतं वा पित्रमहेतं वा माइजाइ ॥ १४३ ॥ जे भिक्ख अपणो कार्यस वर्ण तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा सक्खेंते वा भिलिंगेतं वा साइजड़ ॥ १४४ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कायंति वर्ण लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लेलेज वा उन्बेहेज वा उह्नोरेंतं वा उन्बेहेतं वा साइजाइ ॥ १४५ ॥ जे मिक्स् अप्पणी कार्यसि वर्ण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पर्यावेज वा उच्छोलंतं वा पघोवेंतं वा साइजाइ ॥ १४६ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कार्यसे वर्ण फ्रमेज वा रएज वा फ़र्मेंनं वा रएंतं वा साइजाइ ॥ १४७ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कार्यसि गंडं वा पिलयं वा अरहयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अस्छिदेज दा विच्छिदेज वा अस्छिदंतं वा विच्छिदंतं वा साइजइ ॥ १४८ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कार्यसि गंडं वा पिलयं वा अरहयं वा अंसियं वा अगंदलं वा क्षणायरेणं तिक्केणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता प्रयं वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा जीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइजइ ॥ १४९ ॥ जे भिक्ख अप्पजी कार्यसि गंडं वा पळियं वा अरङ्गं वा अंसिगं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यबाएगं अन्छिदिता विच्छिदिता (प्०) गीहरिता विसोहेता सीओदगर्वियडेण वा उसिगोटगविग्रहेण वा उच्छोक्टेस वा प्रधोवेस वा उच्छोठेतं वा प्रधोवेतं वा साइसइ ।। १५०॥ जे मिक्स अप्पणे कार्यसि गंडं का पिलयं वा आरझ्यं वा असियं वा

भगंदलं हा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेला पधोडला अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपेतं वा विलिपंतं वा साङ्काई ॥ १५१ ॥ जे भिक्ख अप्पणो कार्यास गंडं वा पलियं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेना पघोडता विलिपिता तेहेण वा घएण ना गवणीएण वा अञ्मीज वा मक्खेज वा अञ्मीतं वा मक्खेतं वा माइजह ॥ १५२ ॥ जे भिक्षक अप्पणी कार्यसि गंडं वा पलियं वा अरहयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेना पधोइता विलिपिता मक्बेता अण्णयरेणं ध्वणजाएणं ध्वेज वा पध्वेज वा ध्वेतं वा पश्चेंतं वा साइज्जइ ॥ १५३ ॥ जे भिक्ख अप्पणो पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अंग्रुडीए णिवेसिय २ णीहरड णीहरंतं वा साइज्जह ॥ १५४ ॥ जे भिक्ख अण्यणो दीहाओ णहिसहीओ कप्पेज वा संठवेज वा क्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजह ॥ १५५॥ जे भिक्ल अप्पणो दीहाई जंधरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंत वा संठवेंतं वा साइज्जइ ॥ १५६ ॥ जे भिक्ख अपणो दाहाइं कक्खरोमाइं कपेज वा संठवेज बा कर्पेन वा संठवेंतं वा साइज्जइ ॥ १५७ ॥ जे भिक्ख अपणो दीहाइं मंसरोमाइं कप्पेज वा संठवेज वा कपेंत वा संठवेंत वा साइजड ॥ १५८ ॥ जे भिक्ख अप्पणी दीहाडं णासारोमाडं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ १५९॥ जे भिक्ख अप्पणी दीहाइं चक्खरोमाइं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेनं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ १६० ॥ जे भिक्ख अप्पणो बीहाइं कृष्णरोमाइं कृपोज वा संठवेज वा कप्पेंनं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ १६१ ॥ जे भिक्ख अप्पणी दंते आधंसेज वा पर्वरोज वा आर्यसंतं वा पर्वसंतं वा साइजइ ॥ १६२ ॥ जे भिक्ष् अप्पणी दंतें सीओदगवियदेण वा उसिणोदगवियदेण वा उच्छोळेज वा प्रधोचेळ वा उच्छोळेतं वा पनोवेंतं वा साइजइ ॥ १६३ ॥ जे मिक्ख अप्पणी दंते फुमेज वा रएज वा फुमेंते वा रएंतं वा साइजइ॥ १६४॥ जे भिक्ख अप्पणो उद्वे आमजेज वा पराजेज वा आराजंतं वा पराजंतं वा साहज्जह ॥ १६५ ॥ जे शिक्ख अप्पणो उद्गे संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साहजह ॥ १६६ ॥ जे भिक्स, अप्यणो उद्वे तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्सेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिगेंतं वा साइजइ ॥ १६७ ॥ जे मिक्ख अप्यणो उड्ने लेखेण

१ गंडाइक्ट्रेयणे क्याइ वाओ, असज्ज्ञाइवं, रोगवित्थाराइदोस ति पायच्छित्तठाणं । २ सोहाणिमितं । ३ विहुसाए ।

का मक्केण वा उन्नोकेज वा उन्नोकेज वा उन्नोकेतं वा उच्चेट्रेतं वा साइजइ ॥ १६८ ॥ जे भिक्य अपणो उद्वे सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पर्भोवेज वा उच्छोलेंतं वा पर्धोवेंतं वा साइजड ॥ १६९ ॥ जे मिक्ख अप्पणो उद्दे फ्रमेज वा रएज वा फ्रमेंतं वा राग्तं वा साइजड् ॥ १७० ॥ जे भिक्ख् अप्पणो दीहाई उत्तरोद्वरोमाई कप्पेज वा संठवंज वा कप्पेनं वा संठवेंतं वा साइजड ॥ ५७९ ॥ जे भिक्ख अप्पणो दीहाई अच्छिपताई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ १७२ ॥ जे भिक्ख अप्पणी अच्छीणि सामजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ १७३ ॥ जे मिक्ख अप्पणी अच्छीणि संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजाइ ॥ १७४ ॥ जे भिक्क अप्पणी अच्छीणि तेष्ठेण वा घएण वा णवणीएण वा भक्लेज वा भिक्तिंज वा मक्खेंतं वा भिक्तिंतं वा साइजइ ॥ १७५ ॥ जे भिक्ख् अप्पणी अच्छीणि लोदोण वा कक्षेण वा उल्लोकेन वा उन्बहेन वा उल्लोकेतं वा उन्बहेतं वा साइजह ॥ १७६ ॥ जे भिक्ख अप्पणी अच्छीणि सीओदगवियदेण वा उमिणोदग-वियहेण वा उच्छोलेज वा प्रधोवेज वा उच्छोलेंत वा प्रधोवेंत वा साइजड ॥ १७७॥ जे भिक्ख अप्पणी अच्छीणि फ्रमेज या रएज वा फ्रमेंतं वा रएंतं वा साइजड ॥ १७८ ॥ जे भिक्स अपणो दीहाइं भुमगरीमाइं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संद्रवेंतं वा साइजइ ॥ १७९ ॥ जे मिक्ख अप्पणी दीहाई पासरोमाई कप्पेज वा संटवेज वा कप्पेंतं वा संटवेंतं वा साइजइ ॥ १८० ॥ जे भिक्ष अप्पणो रीहाई केसरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ १८१ ॥ जे भिक्य अप्पणी कायाओं सेयं वा जहां वा पंकं वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज बा णीहरेंतं वा विसोहेंनं वा साइजाइ ॥ १८२ ॥ जे भिक्स अप्पणो अच्छिमलं बा कम्णमरुं वा दंतमरुं वा णहमरुं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइज्जर् ॥ १८३ ॥ जे भिक्क् गामाणुगामं दृहुज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेड् करेंतं वा साइज्जड् ॥ १८४॥ जे भिक्ल् सणकप्पा(सा)सओ वा उण्णकप्पासओ वा पोण्डकप्पासओ वा अमिलकप्पासओ वा वसीकरणसोतियं करेइ करेंते वा साइजाइ ॥ १८५ ॥ जे मिक्स गिहंस वा गिहमुहंसि वा गिहदुवारियंसि वा गिहपडि-द्वारियंसि वा गिहेळ्यंसि वा गिहंगणंसि वा गिहवचंसि वा उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेड परिद्ववेंतं वा साइजाह ॥ १८६ ॥ जे मिक्ख महगगिहंसि वा महगछारियेसि वा महराथिमयंसि वा महरासयंसि वा महराहेणंसि वा महराबंहिलंसि वा महरावर्षंसि वा उचारे वा पासवर्ण वा परिद्ववेड परिद्ववेंतं वा साइजाड ॥ १८७ ॥ जे सिक्ख इंगालदाहंसि वा खारदाहंसि वा गायदाहंसि वा तुसदाहंसि वा उसदाहंसि वा उसार वा पासवर्ण वा परिद्रवेह परिद्रवेतं वा साइजार ॥ १८८ ॥ जे मिक्ख अभिणवियास वा गोलेहणियास अभिणवियास वा महियास्त्राणीस वा परिभुजमाणियास वा अपरि-भुजमाणियास वा उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेह परिद्ववेतं वा साइज्जइ ॥ १८९ ॥ जे भिक्ख सेयायणंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उचारं वा पासवणं वा परिद्रवेड परिट्रवेतं वा साइजड ॥ १९० ॥ जे भिक्ख उंबरवर्षास वा णम्गोहक्बंसि वा अस्सत्थवचंमि वा उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेह परिद्ववेंतं वा साटजह ॥ १९१॥ जे भिक्ख डागवश्रंसि वा सागवश्रंसि वा मूल्यवश्रंसि वा कोत्थ्रं(धरी)भरिवश्रंसि वा सारवर्षास वा जीरयवर्षास वा दमण(ग)वर्षास वा मरुगवर्षास वा उनार वा पासवणं वा परिद्वंबह परिद्वंतं वा साइजाई ॥ १९२ ॥ जे भिवन्तु इकनुवणंसि वा सालिवणंसि वा कुर्सुभवणंसि वा कप्पासवणंसि वा उचारं वा पासवणं वा परिद्रवेड परिद्ववेंतं वा साइज्जइ ॥ १९३ ॥ जे भिक्क असोगवणंसि वा सत्तिवण्णवणंसि वा चंपगवणंसि वा च्यवणंसि वा अण्णयरेस वा तहप्पगारंस वा पत्तोवएस पुष्फोवएस फलोबएसु बी(छाओ) योबएस उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेइ परिद्ववेतं वा साङ्ब्वङ् ॥ १९४॥ जे भिक्ख सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उच्या-हिजामाणे सुपायं गहाय परपायं जाइता वा उचारं पासवणं वा परिद्ववेता अणुरगए सुरिए एडेइ एडेंतं वा साइजाइ । तं सेवमाणे आवजाइ मासियं परिहारद्वाणं उग्वाइयं ॥ १९५ ॥ णिसीहऽज्ययणे तह्नो उदेसो समचो ॥ ३ ॥

चउत्थो उद्देसो

जे भिक्ख् रायं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ १९६॥ जे भिक्ख् राया-रिक्सयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ १९०॥ जे भिक्ख् णगरारिक्सयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ १९८॥ जे भिक्ख् णिगमारिक्सयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ १९९॥ जे भिक्ख् देसारिक्सयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ १००॥ जे भिक्ख् सम्बारिक्सयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ २००॥ जे भिक्ख् सम्बारिक्सयं अत्तीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०२॥ जे भिक्ख् रायं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०२॥ जे भिक्ख् रायारिक्सयं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०४॥ जे भिक्ख् णगरारिक्सयं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०४॥ जे भिक्ख् प्रमारिक्सयं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०५॥ जे भिक्ख् स्तारिक्सयं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥ २०६॥ जे भिक्ख् सम्बारिक्सयं अवीकरेइ अवीकरेंतं वा साइजाइ॥

१ पसंसेइ।

॥ २०७॥ जे भिक्ख् रायं अत्वीकरेड् अत्वीकरेतं वा साइजड् ॥ २०८ ॥ जे मिक्ख रायारिक्संग अत्योकरेड अत्योकरेंतं वा साइज्ड ॥ २०९ ॥ जे भिक्ख णगरारिक्खयं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइजइ ॥ २१० ॥ जे भिक्ख् णिगमा-रिक्खर्य अत्यीकरेड अत्यीकरेंतं वा साइज्जड् ॥ २११ ॥ जे निक्ख् देसारिक्खयं अत्थीकरेड अत्थीकरेंतं वा साइजाड ॥ २१२ ॥ जे मिक्ख सव्वारिक्खयं अत्थीकरेड अत्थीकरेंनं वा साइजड़ ॥ २१३ ॥ जे भिक्ख करिणाओ ओसहीओ आहारेड आहारेतं वा साइब्बर् ॥ २१४ ॥ जे भिक्ब् आयरिएहि अदिण्णं आहारेड आहारेतं वा साइज्जड् ॥ २१५ ॥ जे मिक्ख् आयरियोवज्झाएहि अविदिण्णं विगई आहारेड आहारेंनं वा साइजाइ ॥ २१६ ॥ जं भिक्ख ठवणाकुलाइं अजाणिय अप्रिक्टिय अग-वेसिय प्रव्वामेव पिंडवायपिंडयाए अणुप्पविसइ अणुप्पविसंतं वा साइज्जइ ॥ २९७ ॥ जे भिक्क णिरगंथीणं उवस्सर्यसि अविहीए अणुप्पविसंह अणुप्पविसंतं वा साइजह ॥ २१८ ॥ जे भिक्ख णिगंथीणं आगमणपहंसि दंडगं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अण्णयरं वा उवगरणजायं ठवेइ ठवेंतं वा साइजाइ ॥ २१९ ॥ जे भिक्ख णवाई अणुप्पण्णाइं अहिगरणाई उप्पाएह उप्पाएंतं वा साइजाइ ॥ २२० ॥ जे भिक्ख पोराणाई अहिगरणाई खामिय विओसवियाई पुणो उदीरेइ उदीरेंनं वा साइजाइ ॥ २२१ ॥ जे भिक्ख सहं विष्फालिय हसइ हसंतं वा माइजाइ ॥ २२२॥ जे भिक्ख पासत्थस्स संघाडयं देइ देंतं वा साइजाइ ॥ २२३ ॥ जे भिक्खू पास-त्यस्स संघाडयं प**डि**च्छइ प**डिच्छं**तं वा साइजइ ॥ २२४ ॥ जे मिक्ख् ओराण्णस्स संघाडयं देइ देंनं वा साइज्जइ ॥ २२५ ॥ जे भिक्ख ओसण्णस्स संघाडयं पिडच्छ पिंडच्छेतं वा साइजाइ ॥ २२६ ॥ जे भिक्ख कुसीलस्स संघाडयं देइ देंतं वा साइज्रह ॥ २२७ ॥ जे भिक्ख क्रसीलस्स संघाडयं पिडच्छह पिडच्छंतं वा साइज्रह ॥ २२८ ॥ जे भिक्ख नितियस्स संघाडयं देइ देंतं वा साइजाइ ॥ २२९ ॥ जे भिक्स नितिग्रस्स संघाड्यं पहिच्छड पहिच्छंतं वा साइजड ॥ २३० ॥ जे भिक्स संसत्तस्य संघाडयं देइ देंतं वा साइज्जड ॥ २३१ ॥ जे भिक्ख संसत्तस्य संघाडयं पिडच्छाइ पिडच्छातं वा साइजाइ ॥ २३२ ॥ जे भिक्ख उदओक्षेण वा सिस्पिद्धेण वा इत्येण वा दव्कीए वा मायणेण वा असणं वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइजड् ॥ २३३ ॥ जे मिक्ख् ससरक्खेण वा महियासंसद्वेण वा उसासंसद्वेण वा लोषियसंसद्देण वा इरियालसंसद्देण वा मणोसिलसंसद्देण वा लोदसंसद्देण वा गेरुय-संसद्रेण वा सेडियसंसद्रेण वा हिंगुलसंसद्रेण वा अंजणसंसद्रेण वा कुक्ससंसद्रेण वा पिद्वसंसद्वेण वा कंतवसंसद्वेण वा कंदमूलसंसद्वेण वा सिंगवेरसंसद्वेण वा प्रप्तसंसद्वेण

वा उक्टुसंसट्टेण वा असंसट्टेण वा इत्थेण वा दब्बीए वा आयणेण वा असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइजाइ ॥ २३४ ॥ जे भिष्म् गामारिक्समं असी-करेड अत्तीकरेंतं वा साइजाइ ॥ २३५ ॥ जे भिक्ख गामारिक्खयं अचीकरेड अचीकरेंतं वा साइजाइ ॥ २३६ ॥ जे भिक्ख् गामार्क्खियं अत्यीकरेंइ अत्यीकरेंतं वा माइजइ॥ २३७॥ जे भिक्ख सीमारिक्खयं अत्तीकरेइ अत्तीकरेतं वा साइजइ ॥ २३८ ॥ जे भिक्ख सीमारिक्खयं अधीकरेड अधीकरेतं वा साइजड् ॥ २३९ ॥ जे मिक्ख् सीमारिक्खयं अत्थीकरेड अत्थीकरेतं वा साइजड ॥ २४० ॥ जे भिक्ख रण्णारिक्सयं अत्तीकरेड अत्तीकरेंतं वा साइज्जइ ॥ २४९ ॥ जे भिक्ख रण्णारिक्खयं अधीकरेड अधीकरेंनं वा साइजड़ ॥ २४२ ॥ जे भिक्ख रण्णारिक्तयं अत्थीकरेड अत्थीकरेतं वा साइज्जड् ॥ २४३ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स पाए आमुजेज वा पमजेज वा आमुजेतं वा पमजेतं वा साइजाइ ॥ २४४ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्य पाए संबाहेज वा पिलमहेज वा संवाहेतं वा पिक्रमहेंतं वा साइजाइ ॥ २४५ ॥ जे भिक्ष् अण्णमण्णस्स पाए तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेतं वा साइज्रह ॥ २४६ ॥ जे मिक्ख् अण्णमण्णस्स पाए लोढेण वा कक्षेण वा उल्लोखेज वा उम्बद्देज वा उल्लोहेतं वा उम्बद्देतं वा साइजाइ 🏿 २४७ ॥ जे भिक्तू अण्णमण्णस्स पाए सीओदगवियद्येण वा उसिणोदगवियद्वेण वा उच्छोलेज वा पर्धाएज वा उच्छोर्छतं वा पधोएंतं वा साइजाइ ॥ २४८ ॥ जे भिक्ख् अण्णसण्णस्स पाए फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजइ ॥ २४९ ॥ जे भिक्ख् अण्ण-मण्णस्स कार्य आमञ्जेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजइ ॥ २५०॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्य कार्य संवाहेज वा पिक्सिकेज वा संवाहेतं वा पिक्सेकेतं वा साइजइ ॥ २५१ ॥ जे मिक्स अन्नमण्यस्स कार्य तेष्ठेण वा घएण वा नवजीएण बा मक्खेज वा मिलिंगेज बा मक्खेंतं वा मिलिंगेतं वा साइजाइ ॥ २५२ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स कायं लोद्रेण वा कक्षेण वा उल्लेख्य वा उल्लेख्य वा उल्लेखेत वा उम्बहेतं वा साइजङ् ॥ २५३ ॥ जे भिक्ख् अण्यमण्यस्स कार्यं सीबोदगविमडेण वा उसिणोइगवियदेण वा उच्छोलंज वा पधोएज वा उच्छोकेंतं वा पदोएंतं वा साइजड़ ॥ २५४ ॥ जे मिक्स अण्णमण्यस्य कार्य फर्मेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइजाइ ॥ २५५ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्यस्य कार्यस्य कर्ण भागजेख वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साहजह ॥ २५६ ॥ के भिक्स अण्णमणाह्स कार्यसि वर्ण संबाहेज वा पिक्सहेज वा संबाहेतं वा पिक्सहेतं वा साहजह ॥ २५७ ॥

के मिक्न अण्णमण्णस्स कार्यस वंणं तेव्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्नेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेतं वा साइजङ ॥ २५८॥ जै भिक्ख अण्णमणस्स कार्यसि वर्ण लोकेण वा सक्केण वा उम्रोलेज वा उच्चहेज वा उछ्छोलेंतं वा उच्चहेतं वा साइजड ॥ २५९ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्य कार्यस वर्ण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियंडेण वा उच्छोळेज वा पंचीएज वा उच्छोळेतं वा पंघीएतं वा साइ-जह ॥ २६० ॥ जे भिक्ख अण्यसण्णस्य कार्यस वर्ण फ्रमेज वा रएज वा फ्रमेंतं वा रएतं वा साइजाइ ॥ २६१ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्य कार्यस गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अस्तिहेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदैतं वा विच्छिदेतं वा साइजाइ ॥ २६२ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्य कार्यस्य गंडं वा पिलयं वा अरहयं वा अंसियं वा मगंदलं वा अण्ण-यरेणं निक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता पूर्यं वा सोणियं वा जीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेतं वा विसोहेतं वा साइजाइ ॥ २६३ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स कार्यसि गंडं वा पिलयं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्ययरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहिता सीओदर्गावयडेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा साइजंड ॥ २६४ ॥ जे भिक्ख अण्यमण्णस्स कार्यस गंडं वा पिछयं वा अरहयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिवित्ता विच्छिदिता णीहरिना विसोहेता उच्छोलेता पधीएता अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज वा विकिंपेज वा आर्लिपेतं वा विलिंपेतं वा साइजाइ ॥ २६५ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अर्इयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदिता विाच्छिंदिता जीहरिता विसोहेता उन्छोडेता प्रधोएता आलिपिता विलिपिता तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा अवसंगेज वा सक्खेज वा अवसंगेतं वा मक्बेंतं वा साइजाइ ।। २६६ ।। जे भिक्ख अण्णमण्णस्स कार्यस गंडं वा पिल्मं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता जीहरिता विसोहेता उच्छोलेता पथीएता आर्लिपिता विलिपिता अन्भेगेता मक्खेता अण्णगरेणं ध्रवणजाएणं ध्रवेज वा पध्रवेज वा धर्वतं वा पध्वतं वा साङ्बाइ ॥ २६७ ॥ जे भिक्ख खण्णमण्णस्स पाछ्नकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अंगुडीए णिवेसिय २ णीहरइ णीहरंतं वा साइजह ॥ २६८ ॥ के भिक्ष अण्यमण्यस्य बीहाओं गहसिहाओं कप्पेज वा संठवेज वा कर्पेतं वा संठवेंतं वा साहजह ॥ २६९ ॥ जे निक्ख् अण्णमण्णस्स दीहाई जंध-

रोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेतं वा साइजङ ॥ २७० ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्य दीहाँइं कक्खरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ २७९ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दीहाइं मंसुरोमाई -कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेनं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ २७२ ॥ जे मिक्सू अण्णमण्णस्य बीहाई णासारोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ २७३ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दीहाई चक्खुरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ २०४-१ ॥ जे मिक्स् अण्णमण्णस्स दीहाई कण्णरोमाइं कप्पेज वा संठवेज वा कपेंतं वा संठवेतं वा साइजङ् ॥ २७४-२॥ जे भिक्क अण्णमण्णसा दंते आधंसेज वा पधंसेज वा आर्घसंतं वा पर्घसंतं वा साइजाड ॥ २ ३५ ॥ जे भिक्ष्य अण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज वा पर्धोएज वा उच्छोलेंतं वा पर्धोएंतं वा साइजाड ॥ २०६ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दंते फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजइ ॥ २७७॥ जे मिक्स अण्णमण्णस्स उद्वे आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ २७८ ॥ जे भिक्स, अण्णमण्णस्य उद्वे संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेंनं वा पलिमहेंतं वा साइजइ ॥ २७९ ॥ जे भिक्ख क्षण-मण्णस्त उद्वे तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेतं वा साङ्जइ ॥ २८०॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स उद्दे लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेख वा उब्बेहुज वा उल्लोलेतं वा उब्बेहुतं वा साइजह ॥ २८२ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स उद्वे सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेख वा पधोमेख वा उच्छोलेतं वा पधोवेतं वा साइखड ॥ २८२ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स रहे फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइज्ड ॥ २८३ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स दीहाई उत्तरीहरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजङ ॥ २८४ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दीहाई अच्छि-पत्ताइं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेतं वा साइजाइ ॥ २८५ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्यस्य अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा भागजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ २८६ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स अच्छीणि संवाहेज वा पलि-महेजा वा संबाहेतं वा पलिमेंहतं वा साइजाइ ॥ २८७ ॥ जे मिक्स अण्णमण्णस्स अरछीणि तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेतं वा साइजाइ ॥ २८८ ॥ जे भिक्ख अण्यमण्यास्य अच्छीणि लोद्धेण वा बक्रेण वा उल्लेख वा उल्लेख वा उल्लेख वा उल्लेख वा उल्लेख वा साइजाइ

॥ २८९ ॥ जे सिक्ख् अण्णमण्णस्य अच्छीणि सीओदगवियहेण वा उत्तिणोदग-नियहेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंतं वा पधोएतं वा साइजइ ॥ २९०॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्त अच्छीणि फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइज्जइ ॥ २९१ ॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स दीहाई भूमगरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंनं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ २९२ ॥ जे भिक्ख् अण्णमण्णस्स दीहाई पासरोमाइं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजड ॥ २९३-१॥ ***केसरोमाइं•••॥ २९३-२॥ जे भिक्ख अण्णमण्णस्स अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमरुं वा णहमरुं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेनं वा साइज्जड ॥ २९४ ॥ जे भिक्क अण्णभुष्णस्स कायाओ सेयं वा जहं वा पंके वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइज्जइ ॥ २९५ ॥ जे भिक्ख गामाणुगा-[मियं]मं दूरुजमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारियं करेड करेतं वा साइजड ॥ २९६ ॥ जे भिक्स साणुप्पए उच्चारपासवणभूमि साणुप्पए ण पडिलेहइ ण पडिलेहतं वा साइजइ ।। २९७ ॥ जे भिक्क् तओ उचारपासवणभूमीओ ण पडिलेहेड ण पडिलेहंतं वा साइजङ ॥ २९८॥ जे भिक्ख खुरागंसि थंडिलीस उचारपासवणं परिद्ववेड परिद्ववेतं व। साइजड ॥ २९९ ॥ जे भिक्ख उच्चारपासवर्ण अविहीए परिद्ववेड परिद्ववेंतं वा साइज्जड ॥ ३०० ॥ जे भिक्ख उचारपासवणं परिद्ववेत्ता ण पुंछइ ण पुंछतं वा साइजइ ॥ ३०१ ॥ जे भिक्ख उद्यारपासवर्ण परिद्ववेत्ता कट्टेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा पुंछड पंछंतं वा साइज्जइ ॥ ३०२ ॥ जे भिक्ख् उचारपासवणं परिद्ववेत्ता णायमइ णायमंतं वा साइजइ ॥ ३०३ ॥ जे भिक्ख उचारपासवर्ण परिद्ववेना तत्येव आयमङ आय-मंतं वा साइजाइ ॥ ३०४ ॥ जं भिक्क उचारपासवर्णं पिछवेता दूरे आयमड आय-मंतं वा साइजाइ ॥ ३०५ ॥ जे मिक्ख् उचारपासवणं परिद्ववेता णावापूराणं आय-मइ आयमेर्त या साइजइ ॥ ३०६ ॥ जे भिक्ख अपरिहारिएण परिहारिये वएजा-एहि अजो! तुमं च अहं च एगओ असणं वा ४ पडिम्माहेता तओ पच्छा पत्तेयं २ मोक्सामो वा पाहामो वा, जे तं एवं वयड वयंतं वा साइजाइ। तं सेवमाणे आवज्ञ मासियं परिहारद्वाणं उन्हाइयं ॥ ३०० ॥ णिसीहऽज्ययणे चडरथो उद्देखो समस्तो ॥ ४ ॥

पंचमी उदेसी

जे भिक्ख सन्तित्त्व्वस्थानूर्वस ठिवा आलोएज वा पलोएज वा आलोएनं वा १ क्याइ एगद्वाणे केण वि कारणेण पारिद्वावणाऽवसरो ण होज तो दोश्चं तत्त्वं ठाणं उवजोगी होउ ति तिण्णि ठाणाई बुताई ति । पकोएंनं वा साइजइ ॥ ३०८ ॥ जे भिक्ख सवित्तत्वसमूलंसि ठिवा ठाणं वा सेजं वा निसीहियं वा तुम्रष्टणं वा चेएइ चेएंतं वा साइजाइ ॥ ३०९ ॥ जे भिक्ख् सचित्तरुक्य-मुलंसि ठिचा असणं वा ४ आहारेड आहारेतं वा साइज्जड ॥ ३१० ॥ जे भिक्ख सचित्त-क्क्समूर्लस ठिबा उचारपासवणं परिद्ववेद्द परिद्ववेतं वा साइज्जद्द ॥ ३११ ॥ जे भिक्क् सचित्तरुक्खमूलंसि ठिचा सज्झारं करेड़ करेतं वा साइज्जड़ ॥ ३१२ ॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमुले ठिका सज्झायं उद्दिमुह रहिसेतं वा माइज्जर ॥ ३१३ ॥ जे मिक्ख सचित्रहरूक्त्रे ठिचा सज्झायं समुद्दिसह समुद्रिसंतं वा साइजइ ॥ ३१४ ॥ जे भिक्ख सचित्रस्यम्लंसि ठिचा मज्झायं अणुजाणद् अणुजाणंतं वा माहज्जद् ॥ ३ १५ ॥ जे भिक्ख सन्वित्तरकसमूलंसि ठिचा सज्झायं वाएइ बाएंतं वा माइजङ ॥ ३१६ ॥ जे भिक्क सचिनक्क्यमुलंसि ठिका सञ्ज्ञायं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइजाइ ॥ ३१७ ॥ जे भिक्स सचित्तरुक्तमलंसि ठिचा सञ्झायं परियद्देश परियदेश वा साइज्जद्द ॥ ३१८ ॥ जे भिक्क अप्यणो संघाडि अण्णउत्थिएण वा गार्रात्थएण वा सागारिएण वा सिव्वावेंड सिव्वावेंनं वा साइजड ॥ ३१९ ॥ जे भिक्ख अप्पणी संघाडिए वीहसुत्ताई करेंद्र करेंतं वा माइजइ ॥ ३२०॥ जे भिक्खू पिउमंदपलासयं वा पडोलपलासर्य वा बिलपलासर्य वा सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा संफाणिय २ आहारेह आहारेंतं वा साइज्जइ ॥ ३२१ ॥ जे भिक्ख पाडिहारियं पायपंछणं जाइता तमेव रयणिं पञ्चप्पिणस्सामिति सुए पञ्चप्पिणड पञ्चप्पिणंतं वा साइज्जड ॥ ३२२ ॥ जे भिक्ख पाडिहारियं पायपंछणं जाइसा सुए पचिपणिस्सामिति तमेद रयणि प्रविप्यणंड पश्चिप्पणंतं वा साइजाइ ॥ ३२३ ॥ जे भिक्ष्य सागारिय-संतियं पायपंद्यणं जाइना तमेव रयणि पत्रपिणस्सामिति सुए पत्रपिणइ पत्रपि-णंतं वा साइजाइ ॥ ३२४ ॥ जे भिक्का सागारियसंतियं पायपंत्रणं जाइता सुए पचिपाणिस्सामिति तमेव रयणि पचिपाड पचिपानंतं वा साइज्यह ॥ ३२५ ॥ जे भिक्क पाडिहारियं दंडयं वा अवलेहणियं वा केलसई वा जाइता तमेव स्यणि पद्मिणिस्सामिति सुए पद्मिणाइ पद्मिणातं वा साइजाइ ॥ ३२६ ॥ जे निक्ख पाडिहारियं दंडयं वा अवलेहणियं वा वेलस्इं वा जाइता सुए पचिप्पणिस्सामिति तमेव रयणि पचप्पिणइ पचप्पिणंतं वा साइजइ ॥ ३२७ ॥ जे भिक्क् सागारिय-संतियं दंडयं वा अवछेहणियं वा वेद्धसुई वा जाइसा तमेव रवणि प्रवाणिणस्सामिति सुए पश्चप्पिणइ पश्चप्पिणंतं दा साहज्जइ ॥ ३२८ ॥ जे भिक्ष् सागारियसंतियं दंडयं वा अवलेहणियं वा बेलुस्इं वा जाइसा सुए पबप्पिणिस्सामिति तमेव रयणि

१ संझं ।

पर्याप्यणइ पर्याप्यणंतं वा साइजह ॥ ३२९ ॥ जे भित्रख् पाहिहारियं वा मागा-रियसंतियं वा सेजासंयारयं पन्निपिषिता दोश्रंपि अण्णूणाविय अहिटेड अहिटेतं वा साइजइ ॥ ३३०॥ जे भिक्ख सणकप्पासको वा उण्णकप्पासको बा पोण्डकप्पासको वा अमिलकप्पासओ वा दीहसूताई करेड़ करेंने वा साइजड़ ॥ ३३१ ॥ जे सिकंख सचिताइं दारुदंडाणि वा वेलुदंडाणि वा वेत्तदंडाणि वा करेड करेंतं वा साइज्जा ॥ ३३२॥ जे भिक्ख सचिताई दारुदंडाणि वा वेळदंडाणि वा वेतदंडाणि वा घरेड धरैतं वा साइजाइ ॥ २२२ ॥ जे भिक्ख चित्ताहं दारुदंहाणि वा बेळुदंहाणि वा वेत्तरंडाणि वा करेड करेंतं वा साडजड ॥ ३३४ ॥ जे भिक्ख चित्ताई दाहर्दंडाणि वा वेलुदंडाणि वा वेत्तदंडाणि वा घरेड घरेंतं वा साइज्जड ॥ ३३५ ॥ जे भिक्ख विचित्ताइं दारुदंडाणि वा वेलुदंडाणि वा वेनदंडाणि वा करेइ करेंतं वा साइजड ॥ ३३६ ॥ जे भिक्ख विचित्ताई दारुदंहाणि वा वेखदंहाणि वा वेतादंहाणि वा धरेड घरेंनं वा साइजड़ ॥ ३३७॥ जे भिक्खू सन्तिताई दारुदंडाणि वा वेह्नुदंडाणि वा वेतादंडाणि वा परिभंजइ परिभंजंतं वा साइजड ॥ ३३८ ॥ जे भिक्ख चित्ताई दारुदंडाणि वा वेळदंडाणि वा वेत्तदंडाणि वा परिभंजइ परिभंजंतं वा साइजइ ॥ ३३९ ॥ जे भिक्स विक्ति।ई दारुदंहाणि वा वेलदंडाणि वा वेत्तदंडाणि वा परिभंजड परिभंजंतं वा साइजड ॥ ३४० ॥ जे भिक्ख णवगणिवेसंसि वा गामंसि वा जाव सिष्णवेसंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा ४ पहिम्माहेड पहिम्माहेतं वा माइजाइ ॥ ३४९ ॥ जे भिक्ख णवगणिवेसंसि वा अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तज्यागरीस वा सीसागरेस वा हिरण्णागरेस वा सुवण्णागरेस वा (रयणागरेस वा) बडरागरंसि वा अणुप्पविसित्ता असण वा ४ पहिम्गाहेड पहिम्गाहेतं वा साइज्जड म ३४२ ॥ जे मिक्स महवीणियं करेंड करेंतं वा साइज्जड ॥ ३४३ ॥ जे मिक्स नंतवीणियं करेड करेंतं वा साइजाइ ॥ ३४४ ॥ जे भिक्ख उड्डवीणियं करेड करेंतं वा साइजाइ ॥ ३४५ ॥ जे भिक्ख णासावीणियं करेइ करेंतं वा साइजाइ ॥ ३४६ ॥ जे मिक्ख कमखवीणियं करेह करेंतं वा साइजइ ॥ २४७ ॥ जे मिक्ख हत्य-वीणियं करेड करेंते वा साइजड ॥ ३४८ ॥ जे मिक्ख णहवीणियं करेड करेंते वा साइजड़ ॥ ३४९ ॥ जे भिक्ख पत्तवीणियं करेड़ करेंतं वा साइजड़ ॥ ३५० ॥ जे भिक्स प्रपत्नीणियं करेड करेंतं वा साइजाइ ॥ ३५१ ॥ जे भिक्स फल-वीणियं करेड करेंतं वा साइजड ॥ ३५२ ॥ जे मिक्स बीयवीणियं करेड करेंतं का साइज्जह ॥ ३५३॥ जे भिक्का हरियमीणियं करेड करेंतं वा साइज्जड या ३५४ ॥ जे मिक्स महबीणियं नाएइ नाएंतं ना साइजाइ ॥ ३५५ ॥ जे ५५ सत्ता॰

भिक्ख दंतवीणियं वाएइ वाएंतं वा माइजइ ॥ ३५६ ॥ जे भिक्ख उद्भवीणियं बाएइ वाएंतं वा साइजाइ ॥ ३५७ ॥ जे भिक्ख णासावीणियं वाएइ बाएंतं वा साइजाइ ॥ ३५८ ॥ जे भिक्ख कम्सर्वाणियं बाएड बाएंतं वा साइजाइ ॥ ३५९ ॥ जे भिक्त्य हत्यवीणियं वाएड वाएंतं वा साइजाड ॥ ३६० ॥ जे भिक्त्य पहवीणियं बाएइ वाएतं वा साडजाइ ॥ ३६१ ॥ जं भिक्ख परावीणियं वाएड वाएंनं वा साइजह ॥ ३६२ ॥ जे भिक्क पुष्पवीणियं बाएइ बाएंतं वा साइजाइ ॥ ३६३ ॥ जे भिक्क फलवीणियं वाएइ बाएंनं वा साइज्जड ॥ ३६४ ॥ जे भिक्क बीयत्रीणियं वाएइ वाएंतं वा साइजद ॥ ३६५ ॥ जे निभन्त हारयवीणियं वाएड वाएंतं वा साइजाइ (एवं अण्णायराणि वा तहप्पगाराणि वा अणुदिण्णाइं सहाई उदीरेंद्र उदीरेंतं वा साइजाड) ॥ ३६६ ॥ जे भिक्क् उद्देसियं संजं अणुपविसह अणुपविसंतं वा साइजाइ ॥ ३६७ ॥ जे भिक्खू सपाहिंडियं सेजं अणुपविसह अणुपविसंतं वा साइजाइ ॥ ३६८ ॥ जे भिक्ष्य सपिकामां सेजं अणुप्यसिङ अणुप्यिसंनं वा साइजड ॥ ३६९ ॥ ते भिक्ख णत्थि संभोगवत्तिया किरियत्ति वयड वयंतं वा साइज्जइ ॥ ३७० ॥ जे भिक्स लाउरापायं वा दारुपायं वा महिरापायं वा अलं विरं धुवं भारणिजं परिभिदिय परिछिदिय परिद्ववेइ परिद्ववेतं वा माइज्जर ॥ ३ ०९ ॥ जे भिक्ल वर्त्यं वा पिडिम्महं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा अले थिरं ध्वं धारणिजं पलिछिदिय परिद्ववेइ परिद्ववेंतं वा साइजड ॥ ३७५ ॥ जे भिक्ख दंडगं वा अवले-हणियं बा वेलुसड़ं वा पलिभंजिय २ परिद्ववेइ परिद्ववेंतं वा साइज्जइ ॥ ३७३ ॥ जे भिक्ख अहरेयपमाणं रयहरणं धरेड धरेतं वा साइज्जड ॥ ३७४ ॥ जे भिक्ख ब्रहमाइं रयहरणसीसाइं करेइ करेंतं वा साइजाइ ॥ ३७५ ॥ जे भिक्सू रयहरणस्स एकं बंधं देह देंतं वा साइजाइ ॥ ३७६ ॥ जे भिक्ख रमहरणं कंहसगबंधेणं बंधइ बंधंतं था साइज्जइ ॥ ३७७ ॥ जे भिक्ख रयहरणं अविहीए बंधइ बंधंतं वा साइजड ॥ ३७८ ॥ जे भिक्ख रयहरणं एगेण बंधेण बंधेइ बंधेतं वा साइजड ॥ ३७९ ॥ जे भिक्स रयहरणस्य परं तिण्हं बंधाणं देह देतं वा साइजाइ ॥ ३८० ॥ जे भिक्ख रयहरणं अणिसहं घरेड घरेतं वा माइजाइ ॥ ३८९ ॥ जे भिक्ख रयहरणं बोसद्रं धरेड धरेंतं वा साइज्ह ॥ ३८२ ॥ जे मिक्ख रग्रहरणं अभिक्खणं २ अहिट्रेड अहिट्रेंतं वा साइजाइ ॥ ३८३ ॥ जे भिक्ख रबहर्ण उस्सीसमूले ठवेड ठवेंतं वा साइजाइ ॥ ३८४ ॥ जे मिक्खू रयहरणं तुबहेद तुबहेतं वा साइजाइ । तं सेवमाणे आवज्रह मासियं परिहारद्वाणं उच्चाइयं ॥ ३८५ ॥ जिसीह ऽज्ययजे पंचमो उद्देखो समसो ॥ ५ ॥

छट्टो उदेसो

जे भिक्स माउग्गामं मेहणपिडयाए विष्णवेइ विष्णवेनं वा साइजइ ॥ ३८६ ॥ ने भिक्न माजग्गामस्य मेहणपिडयाए हत्यकरमं करेइ करेंतं वा साइजइ॥३८०॥ जे भित्रम् माउग्गामस्य मेहणपिंडयाए अंगादाणं बहुण वा किलिंचेण वा अंगुलि-बाए वा सलागाए वा संचालेड संचालेतं वा साइजह ॥ ३८८ ॥ जे भिक्स माउम्मामस्य मेहणपडियाए संगादाणं संवाहेज वा पितमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेंनं वा साइजाइ ॥ ३८९ ॥ जे भिक्न्यू माउग्गामस्य मेहणवंडियाए खंगादाणं तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्मेंगेज वा मक्खेज वा अब्भेंगेतं वा मक्खेतं वा साइजड ॥ ३९० ॥ जे भिक्ख माजग्गामस्य मेहणवृहियाए अंगादाणं केहेण वा लोहेण वा परमञ्जूष्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा जुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उम्बद्देट वा परिचट्टेड वा उम्बद्देनं वा परिवट्टेतं वा साइजड ॥ ३९९॥ जे भिक्स्ब माउम्मामस्स मेहणविष्याए अंगादाणं सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पंघोएज वा उच्छोठेंतं वा पंघोएंतं वा साइजङ् ॥ ३९२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्य मेहुणविडयाए अंगादाणं णिच्छक्तेई णिच्छकेंतं वा साइज्रह् ॥ ३९३ ॥ जे भिनुष्व माउग्गामस्स मेहणविष्याए अंगादाणं जिम्घइ जिम्घेतं वा साइजइ ॥ ३९४ ॥ जे मिक्स माउग्गामस्स मेहणविहयाए अंगादाणं अण्णयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अगुपवेसेता सुक्षपोगगळे णिग्यायह णिग्धायंतं वा साहजह ॥ ३९५ ॥ जे मिक्स माउग्गामं मेहणविडयाए (अवाउडिं) सर्य कुजा सर्य बूया करेतं वा (बूएंतं वा) माइज्जइ ॥ ३९६ ॥ जे मिक्लू माउम्गामस्स मेहुणविडयाए कलई कुज्जा कलई बूया कलहबिडियाए गच्छाइ गच्छेतं वा साइजाइ ॥ ३९०॥ जे भिक्ख माउम्गामस्स मेहुणबडियाए छेहं लिह्ड छेहं छिहावेड् छेहबडियाए वा गच्छड् गच्छेतं वा साइजड् ॥ ३९८ ॥ जे मिक्सू माउम्गामस्स मेहुणविडयाए पिहुतं वा सोर्य(तं) वा पोसंतं वा म(हि)हायएण उप्पाएइ उप्पाएंतं वा साइजाइ ॥ ३९९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणविडियाए पिट्टंतं वा सोयं वा पोसंतं वा मक्कायएण उप्पाएता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियदेण वा उच्छोलेख वा पधोएख वा उच्छोलेतं वा पधोएंतं वा साइजह ॥ ४०० ॥ जे मिक्स माउग्गासस्स मेहुणवडियाए पिट्टंतं वा सीर्यं वा पोसंतं वा उच्छोलेता पर्धोएता अण्यायरेण आखेवणजाएणं आलिंपेज वा विलिपेज वा आर्लिपेंतं वा बिर्लिपेतं वा साइजाइ ॥ ४०१ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहण-बढियाए पिट्रंत वा सीयं वा पीसंतं वा उच्छोलेता पर्धोएता आर्किपेता विलिपेता तेहेण वा चएण वा गवणीएण वा अञ्मेरेज वा मक्बेज वा अञ्मेरेत वा

मक्खेंतं वा साइजइ ॥ ४०२ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविद्याए पिहेंतं बा सोयं वा पोसंतं वा उच्छोलेता पधोएता आर्लिपेता विलिपेता अवसंगेता मक्खेता अण्णयरेणं धूनणजाएणं धूनेज वा पधूनेज वा धूनेंतं वा पधूनेंतं वा साइज्जइ ॥ ४०३ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविद्याए कतिणाई वत्थाई धरेइ धरेंतं वा साइजइ ॥ ४०४ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहुणविखयाए अहयाई वत्याई घरेह घरेंतं वा साइजह ॥ ४०५ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणवंडियाए घोवरताई वत्याई घरेइ घरेंतं वा साइजइ ॥ ४०६ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविष्याए चित्ताइं वत्याइं घरेइ घरेतं वा साइजइ ॥ ४०७ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविध्याए विचित्ताई वत्याई घरेइ घरेंतं वा साइज्डर ॥ ४०८ ॥ जे भिक्ख् माउनगामस्य मेहुणविद्याए अप्पणो पाए आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजइ ॥ ४०९ ॥ जे मिक्स माउग्गान मस्स मेहुणविषयाए अप्पणो पाए संवाहेज वा पिल्रमहेज वा संवाहेतं वा पिल्र-महेतं वा साइज्ञइ ॥ ४१० ॥ जे भिक्न्यू माउम्गामस्स मेहुणविद्याए अप्पणी पाए तेक्ष्णि वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिक्तिगेज वा मक्खेंतं वा भिळिंगेंतं वा साइज्जइ ॥ ४९९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहणविदयाए अप्यणो पाए लोद्रेण वा कक्षेण वा उल्लोकेन वा उल्लेहेन वा उल्लोकेंत वा उल्लेहेन वा साइजाइ ॥ ४१२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविद्याए अप्पणो पाए सीओदगवियदेण वा उत्तिणोदगवियदेण वा उच्छोलेख वा पघोएख वा उच्छोलेंत वा पर्धाएंतं वा साइज्जइ ॥ ४९३ ॥ जे मिक्ख् माउम्गामस्स मेहणविद्याए अप्पणो पाए फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएतं वा साइजइ ॥ ४१४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्य मेहुणविध्याए अप्पणो कार्य आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साहजह ॥ ४१५ ॥ जे मिक्स माउम्गामस्स मेहण-विद्याए अप्पणो कार्य संवाहेज्य वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजह ॥ ४१६ ॥ जे मिक्स माउग्गामस्स मेहणबिडियाए अप्पणो कार्य तेक्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा शिलिंगेर्ज वा साहजाह ।। ४१७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्य मेहुणविद्याए अप्पणी कार्य छोद्वेण वा ककेण वा उल्लेकेज वा उन्बेहेज वा उल्लेकेंत्र वा उब्बेहेतं वा साइजाइ ॥ ४९८ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्य मेहणबिष्याए अप्पणो कायं सीओदगवियदेण वा उति-णोदगवियहेण वा उच्छोळेज वा पश्चीएज वा उच्छोळेतं वा पश्चीएतं वा साइजङ ॥ ४१९ ॥ जे भिक्स मारम्यासस्य मेहणविद्याए अपणो कार्य प्रमेख वा राज्य

का फुर्मेतं वा रएंतं वा साहजह ॥ ४२० ॥ जे मिक्ख् मालग्गामस्स मेहुणवडियाए भ्रपणो कार्यसि वर्ण आमजेज वा पमजेज वा आमजेतं वा पमजेतं वा साइजह ॥ ४२१ ॥ जे भिक्स माउग्गामस्स मेहणविद्याए अप्पणी कार्यस वर्ण संवाहेज वा पलिमोहज्ज वा संवाहेंतं वा पलिमोहेतं वा साइज्जइ ॥ ४२२ ॥ जे शिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविष्याए अप्पणी कार्यसि वर्ण तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा मिलिंगेज वा सक्खेंतं वा मिलिंगेंतं वा साइजाइ ॥ ४२३ ॥ जे भिक्य माउग्गामस्य मेहणविह्याए अप्पणो कार्यस वर्ण लोद्धेण वा कहेण वा उहालेज वा उव्बंद्रेज वा उहालेंत्रं वा उब्बंद्रेतं वा साइजह ॥ ४२४ ॥ जे भिक्क माउग्गामस्स मेहणविडयाए अप्पणो कार्यसि वर्ण सीओदगवियडेण वा उसिणो-दगवियडेण वा उच्छोळेज वा पधीएज वा उच्छोळेतं वा पधीएतं वा साइजङ ॥ ४२५ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहणवडियाए अप्पणो कार्यसि वर्ण फुमेज वा रएज वा फ्रमेंतं वा रएंतं वा साइजह ॥ ४२६ ॥ जे भिक्स माउम्मामस्स मेहणविद्याए अप्पणी कार्यसि गंहं वा पिलगं वा अरहर्यं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्सेणं सत्यजाएणं अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदेतं वा विच्छिदेंतं वा साइब्बइ ॥ ४२७ ॥ जे भिक्ख माउरगामस्स मेहणविद्याए अप्पणो कार्यसि गंडं वा पिलां वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्यायरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अस्डिदिता विच्छिदिता पूर्व वा सोणियं वा णीहरेज्य वा बिसोहेज वा णीहरेंतं वा विधोहेंतं वा साइजइ ॥ ४२८ ॥ जे भिक्ख माउम्गा-मस्स मेहणविद्याए अप्पणो कार्यस गेर्ड वा पिरुगं वा अरहरं वा अंसियं वा मगंदलं वा अन्मगरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अध्छिदिता विजिन्निता णीहरिता विसोहेता सीओदगविगदेण वा उसिणोदगविगदेण वा उच्छोळेज वा पघोएज वा उच्छोठेंनं वा पबोएंतं वा साइजइ ॥ ४२९ ॥ जे मिक्स् माउम्मा-मस्स मेहणविद्याए अप्पणो कार्यसि गंडं वा पित्रगं वा अरहर्यं वा अंसियं वा मगं-वर्कं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अध्कितिता विकिटिता णीहरिता विसोहेता पनीएसा अञ्चयरेणं आकेवणजाएणं आकिपेज वा बिलिपेज वा आलिपेतं वा बिक्निंतं वा साइज्जइ ॥ ४३० ॥ जे मिक्क माउम्मामस्स मेहणविज्ञाए अप्पणी कार्यसि गंदं वा पिलगं वा अरहमं वा अंसियं या सगंदलं वा अरणगरीणं तिक्लोणं सत्यजाएणं अध्विदिता विकिदिता बीहरिता विसोहेता उच्छोकेता प्रधोएता कार्कियेता विकियेता रोक्रेण या प्रएण या पवजीएण वा अन्मंगेळ वा मक्खेळा वा अव्योगेर्त वा सक्वोरं वा साइका ॥ ४३१ ॥ वे भिक्ष माउगामस्स मेहण-

बिद्यार अप्पणी कार्यसि गंडं वा पिलनं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छितिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छे-लेता पर्याएता आलिपेता विलिपेता अध्यिगेता मक्खेता अण्णयरेणं ध्वणजाएणं ध्वेज वा पध्वेज वा ध्वेतं वा पध्वेतं वा साइजइ॥ ४३२॥ जे भिक्सू माउग्गा-मस्स मेहणवडियाए अप्यणो पाछ्रिकिसियं वा कुच्छिकिसियं वा अंगुलीए णिवेसिय २ णीहरेइ णीहरेंतं वा साइजाइ॥ ४३३॥ जे भिक्स माउग्गामस्स मेहणवडि-याए अप्पणी बीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइज्जर् ॥ ४२४ ॥ जे मिक्क् माउग्गामस्स मेहणविडयाए अप्पणी दीहाई जंध-रोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंत वा संठवेंत वा साइजइ॥ ४३५॥ जे भिक्क माजगामस्स मेहणबहियाए अप्पणी॰ कक्खरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ ४३६ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अप्पणो॰ मेसुरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कमेंते वा संठवेंते वा साइजह ॥ ४३७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविडयाए अप्पणो॰ णासारोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ ४३८ ॥ जे भिक्ख साउम्गासस्स मेहण-वहिजाए अप्यणो॰ चक्खरोसाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजड ॥ ४३५-१ ॥ जे भिक्ख माउम्मायस्य मेहणविडयाए अप्पणी० कण्णरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेतं वा साइजाइ ॥ ४३९-२ ॥ जे भिक्ख मालग्गा-मस्स मेहणबिडगए अप्पणो दंते आधंसेज वा पधंसेज वा आधंसंतं वा पधंसतं वा साइजाइ ॥ ४४० ॥ जे भिक्स मालग्गामस्स मेहणविद्याए अप्पणो दंते उच्छोकेज वा पद्मेएज वा उच्छोकेंतं वा पद्मेएतं वा साइजाइ ॥ ४४१ ॥ जे मिक्स माउग्गामस्स मेहणविद्याए अप्पणो दंते फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइज्जर् ॥ ४४२ ॥ जे मिक्क् माउम्मामस्स मेहुगविडयाए अप्पणो उद्वे आमजेज वा पमजेज वा आमर्जतं वा पमजंतं वा साइजइ ॥ ४४३ ॥ जे मिक्स् मालगा-मरस मेहुणविष्याए अप्पणी उद्वे संवाहेज वा पिल्महेज वा संवाहेतं वा पिल्महेंसं वा साइजह ॥ ४४४ ॥ जे मिक्स माउग्गासस्य मेहुणवृद्धिवाए अप्पणी उहे तेक्षेण वा थएण वा पवणीएण वा मक्केज वा भिल्लिनेज वा मक्केंद्र वा भिल्लिनेंद्र वा साइजइ ॥ ४४५ ॥ वे मिनस् माउग्यामस्स मेहुकविवाए अपको उद्वे लोदेण वा क्षेत्रण वा उन्नोकेज वा उन्नोहेज का उन्नोहेतं वा उन्नोहेतं वा साहजह ॥ ४४६ ॥ जे मिनस् माउरगामस्य मेहबब्दियाए अजनो उद्रे सीबोदगविवदेश वा उतिभोदगमिवदेण वा उच्छोदेख वा प्रवेदक वा उच्छोटेतं वा प्रवेएतं वा

साहज्जह ॥ ४४७ ॥ जे मिक्स माउग्गामस्य मेहुणविषयाए अप्पणो उद्वे फूमेज चा रएजवा फूमेंते वा रएंने वा साइजइ ॥ ४४८॥ जे भित्रव् माउग्गामस्स मेहण-वडियाए अप्पणो दीहाई उत्तरोहरोमाई कप्पेज ना संठवेज ना कप्पेंतं ना संठवेंतं ना साइजइ ॥ ४४९ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणवडिबाए अप्पणो दीहाई अच्छि-पत्ताई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ ४५० ॥ जे भिक्ख् माउरगामस्स मेहुणविडयाए अप्पणी अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजङ् ॥ ४५.१ ॥ जे भिक्ख् माउरगामस्स मेहुणविद्याए अप्पणी अच्छीणि संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजह ॥ ४५२ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविष्याए अप्पणो अच्छीणि तेक्केण वा घएण वा णवणी-एण वा सक्खेज वा भिल्मिज वा मक्खेंतं वा भिल्मितं वा साइज्जइ ॥ ४५३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहृणबहियाए अप्पणी अच्छीणि लोद्धेण वा क्ह्रेण वा उल्लोलेज वा उन्बहेज वा उन्नोरेतं वा उन्बहेतं वा साइजइ ॥ ४५४ ॥ जे भिक्स माउ-ग्गामस्स मेहुणबहियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियदेण वा उसिणोदगवियदेण वा उच्छोरेज वा पघोएज वा उच्छोरेंतं वा पघोएंतं वा साइजइ ॥ ४५५ ॥ जे भिक्ख् माउनगामस्स मेहणबिडयाए अप्पणो अच्छीणि फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइज्जइ ॥ ४५६ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणबहियाए अप्पणी बीहाई भुमगरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ ४५०॥ जे भिक्क माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अध्यणो दीह इं पासरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कर्पोतं वा संठवेतं वा साङ्ज्य ॥ ४५८-१ ॥ "केसरामाई"॥ ४५८-२ ॥ जे भिक्क माउरगामस्स मेहुणविदयाए अप्पणी अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा णहमलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइजइ ॥ ४५९ ॥ जे भिक्त माउग्गामस्स मेहनबहिबाए अप्पणी काबाओ सेवं वा कहं वा पंकं वा मछं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइजइ ॥ ४६० ॥ जे भिक्स माउग्गामस्स मेहुणविवाए गामाणुकामं वृङ्कमाणे सीसदुवारिवं करेइ करेंतं वा साइ-**जर ॥ ४६९ ॥ जे मिक्स् माउरगामस्त मेहणविद्याए सीरं वा दिहें वा जवणीयं** वा सप्पि वा गुरूं वा खंदं वा सक्दं वा मच्छंडियं वा अण्यगरं वा पणीयं आहारं आहारेड् आहारेतं वा साइज्जर् । तं सेवमाणे आवज्जर् चारुम्मासियं परिहारद्वार्षं अगुरमाइवं ॥ ४६२ ॥ जिसीहऽज्यायजे सहो उदेशो समस्तो ॥ ६ ॥ सत्तमो उरेसो

वे मिक्स मारम्यानस्त सेहुणवृष्टिमाए तणमालिमं वा ग्रुंबमावियं वा वेत-

मालियं वा मयणमालियं वा पिंछमालियं वा पेंडियदंतमालियं वा सिंगमालियं वा संख्यालियं वा हड़मालियं वा भिंडमालियं वा बद्धमालियं वा पत्तमालियं वा पुष्प-मालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा करेड़ करेंतं वा साइजड़ ॥ ४६३ ॥ जे मिक्ब माउम्गामस्स मेहुणविद्याए तणमालियं वा मुंबमालियं वा वेत्तमालियं वा मञ्ज्ञमालियं वा पिंक्रमालियं वा पोंडियदंतमालियं वा सिंगमालियं वा संख्यालियं वा हरूमालियं वा भिंडमालियं वा कद्रमालियं वा पत्तमालियं वा पुष्पमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा धरेइ घरेतं वा साइज्जर् ॥ ४६४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए तणमालियं वा मुंज-मालियं वा वेत्तमालियं वा मयणमालियं वा पिंछमालियं वा पोंडियदंतमालियं वा सिंगमालियं वा संख्यालियं वा इड्डमालियं वा भिंडमालियं वा कह्नमालियं वा पत्त-मालियं वा पुष्फमालियं वा फलमालियं वा वीयमालियं वा हरियमालियं वा पिण[कृ]द्धर पिणदंनं वा साइजाइ॥ ४६५॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउसलोहाणि वा सीसगलोहाणि वा रूपलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा करेह करेंतं वा साइजह ॥ ४६६ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा सीसगलोहाणि वा रूपलोहाणि वा स्वण्णलोहाणि वा भरेइ थरेंतं वा साइजइ ॥ ४६७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणबिडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा सीसगलोहाणि वा रूपलोहाणि वा स्वण्णलोहाणि वा परिभुंजह परिभुंजंतं वा माइज्जइ ॥ ४६८॥ जे भि**क्ज्** माउम्गामस्स मेहुणबंडियाए हाराणि वा अदहाराणि वा एगावली वा मुत्तावली वा क्ष्मगावली वा श्रयणावली वा कहगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कंडलाणि वा पद्मणि वा मउडाणि वा पकंबसुत्ताणि वा सुबण्ण-मुत्ताणि वा करेइ करेंतं वा साइज्यह् ॥ ४६९ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहण-विडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावली वा मुतावली वा कणगावली वा रयणावली वा कडमाणि वा तिडिमाणि वा फेकराणि वा कुंडलाणि वा पहाणि वा मउडाणि वा पर्कबद्धताणि वा सुबज्जद्वताणि वा घरेड घरेतं वा साइजड ॥ ४७० ॥ जे भिक्ख मारुग्गामस्स मेहुणविड्याए हाराणि वा अबहाराणि वा एगावरी वा मुत्तावली वा कणमावली वा रयणावली वा कहमाणि वा कुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पद्यपि वा अस्टहाणि वा प्रसंबद्धसाणि वा सवण्यद्धसाणि वा परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ४७१ ॥ के किन्नस् माउग्गामस्स मेहुणविदयाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबळाणि वा कंबळपाबराणि वा कोयरा(वा)णि

क्षा कोयर(व)पावराणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मि(मा)हा-सामाणि वा उद्योग वा उद्रहेस्साणि वा वरघाणि वा विवरघाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणककाणि वा खोमाणि वा दुगुक्काणि वा (तिरीडपद्वाणि वा) पतु-[क्रा]ण्णाणि वा आवरंताणि वा वी(ची)णाणि वा अंधुयाणि वा कणककंताणि वा कणग-खचियाणि वा कणगिवताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेड् करेंतं वा साइजइ ॥ ४७२ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहुणविडयाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपाव-राणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्दाणि वा उद्देश्साणि वा वरघाणि वा विवरघाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणक-हाणि वा खोमाणि वा दुगुह्णाणि वा पतुष्णाणि वा (पणलाणि वा) आवरंताणि वा वीणाणि वा अंधुयाणि वा कणककंताणि वा कणगचित्राणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा धरेइ धरेंतं वा साइजइ ॥ ४७३ ॥ जे भिक्ख् माउग्गा-मस्स मेहणविद्याए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा पीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्दाणि वा उद्दुळेन्साणि वा वरघाणि वा विवरघाणि वा पर-वंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणककाणि वा खोमाणि वा दुगुह्राणि वा पतुष्णाणि वा आवरंताणि वा वीणाणि वा अंग्रुयाणि वा कणकंताणि वा कणगचिताणि वा कगगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिशुंजइ परिशुंजतं वा साइजइ ॥ ४७४ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहुणविद्याए अ(विंख)क्खंसि वा करिस वा उयरंसि वा थणंसि वा गहाय संचालेई संचालेंतं वा साईजह ॥ ४७५॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणवंडियाए अण्णमण्णस्स पाए आमञ्जेज वा पसञ्जेज वा आमर्जतं वा पमर्जतं वा साइजइ ॥ ४७६ ॥ जे मिक्ख् माउम्गामस्स मेहुण-विडियाए अण्णमण्णस्स पाए संवाहेज वा पिछमहेज वा संवाहेतं वा पिछमहेतं वा साइज्जर् ॥ ४७७ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविडयाए अण्णमण्णस्स पाए तेक्रेय वा घएण वा णवणीएण वा मक्केज वा भिलिंगेज वा मक्सेंतं वा भिल्गितं वा साइजाइ ॥ ४७८ ॥ जे भिक्षा माउम्गामस्स मेहणवडिवाए अव्यमन्यस्य पाए कोद्वेण दा बन्नेण वा उन्नोकेन वा उन्नहेन वा उन्नोकेतं वा उम्बर्टेतं वा साइज्जर् ॥ ४७९ ॥ जे मिक्ख् माजन्मामस्स मेहुणविषयाए अण्ण-मण्णस्य पाष्ट् सीक्रोदणवियदेण वा उक्तिजोदसवियदेण वा उच्छोकेन वा पर्धाएकः वा उच्छोरेंतं वा प्रशेएंतं वा साइजह ॥ ४८० ॥ जे भिक्यू माठमामस्स मेहण-

जिसीहसु चं

विद्याए अण्णमण्णस्स पाए फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएतं वा साइजाइ ॥ ४८१ ॥ जे भिक्न् माउग्गामस्स मेहुणविद्याए अण्णमण्णस्स कार्य आमजेख वा पर्यजेज वा आरजंतं वा पर्यजंतं वा साइजइ ॥ ४८२ ॥ जे भिक्ख् माउग्मा-मस्स मेहणविडयाए अण्णमण्णस्स कार्य संवाहेज वा पिलमहेज वा संवाहेते वा पिक्रमहेंतं वा साइज्जह ॥ ४८३ ॥ जे भिक्ष्य् माउग्गामस्स मेहणविष्टयाए अण्ण-मण्णस्स कार्य तेह्रेण वा घएण वा जवजीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिल्मिंतं वा साइजइ ॥ ४८४ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहणविङ-याए अण्णमण्णस्य कार्य लोद्धेण वा क्लेण वा उल्लेखेज वा उल्लेखेज वा उल्लेखेत वा उन्वहेंतं वा साइजाइ ॥ ४८५ ॥ जं भिक्क माउग्गामस्स मेहणबंडियाए अण्णमण्णस्य कायं सीओदगवियडेण वा उत्तिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधी-एज वा उच्छोलेंतं वा पथोएंतं वा साइजाइ ॥ ४८६ ॥ जे मिक्खू माटग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कार्य फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजह ॥ ४८७॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंति वर्ण आम-जेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजइ॥ ४८८॥ ने भिक्ख् माउग्गा-मस्स मेहुणविषयाए अण्णमण्णस्स कायंसि वर्ण संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइज्जइ ॥ ४८९ ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविखयाए अण्ण-मण्णस्स कार्यस वर्ण तेक्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिर्छिगेज वा मक्खेंतं वा भिल्मितं वा साइज्जइ॥४९०॥जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहणवडियाए अण्णमण्णस्स कार्यसि वर्ण लोहेण वा कक्कण वा उन्नेहेज वा उन्नेहेज वा उन्नेहेज वा उम्बर्टेतं वा साइज्जइ ॥ ४९१ ॥ जे भिक्क् माउग्गासस्स मेहुणबहियाए अण्ण-मण्णस्स कार्यसि वणं सीओदगविश्रदेण वा उसिणोदगविश्रदेण वा उच्छोकेज वा पघोएज वा उच्छोरेंतं वा पघोएतं वा साइजइ ॥ ४९२ ॥ जे भिवन्त् माउग्गामस्स मेहणबडियाए अण्णमण्णस्स कार्यस वर्ण फूमेज वा रएज वा क्रुमेंतं वा रएंतं वा साइजह ॥ ४९३ ॥ जे मिक्क् माउग्गामस्स मेहुणबहियाए ध्रम्णमण्णस्स कार्यक्ष गंडं वा पिलमं वा अरहमं वा अंसियं वा अर्गदलं वा अण्ययरेणं तिक्केणं सत्यज्ञाएणं अञ्चिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदैतं वा विच्छिदैतं वा साइजइ ॥ ४९४ ॥ जे भिक्ख माजग्यामस्य मेहणविद्याए अण्णमण्यस्य कार्यस गढं वा पिलवं वा अरहवं वा अंसियं वा अवंदलं वा अव्यवदेशं तिक्षोणं सत्वजाएणं अव्यक्तिता विच्छिदिता पूर्व वा सोनियं वा जीहरेज वा विसोहेज वा जीहरेतं वा निसोहेतं वा साइजह ॥ ४९५ ॥ जे शिक्स माउमामस्स मेहणक्षियाए अन्यासन्तरः कार्यस्य संदं ता पिलगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण बा उच्छोळेळ वा पघोएज वा उच्छोळेंतं वा पघोएंतं वा साइजइ ॥ ४९६ ॥ जे भिक्त माउग्गामस्स मेहुणविष्याए अण्णमण्णस्स कार्यस गंडं वा पिरुगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोडेता पधोएता अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज वा विलिपेज वा आलिपंतं वा विलिपंतं वा साइज्जर् ॥ ४९७ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहुणविद्याए अण्णमण्णस्स कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरह्यं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोलेता पघोएता आलिपिता विलिपिता तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा अञ्भंगेज वा मक्खेज वा अञ्भंगेतं वा मक्खेंतं वा साइजइ ॥ ४९८॥ जे भिक्ख माउग्गामसा मेहणविद्याए अण्णमण्णस्स कार्यसि गंडं वा पिल्रगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदित्ता विच्छिदिता णीहरेता विसोहेना उच्छोटेता पथोएता आलिंपेता अञ्भंगेता अण्णयरेणं ध्रवणजाएणं ध्रवेज वा पध्वेज वा धूवेंतं वा पध्वेंतं वा साहजह ॥ ४९९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहण-विडियाए अण्यसण्णस्स पाद्यकिसियं वा कुच्छिकिसियं वा अंग्रुलीए णिवेसिय २ णीहरह णीहरंतं वा साइज्जह ॥ ५००॥ जे भिक्ख् माजग्यामस्स मेहणविडवाए अण्यामण्यास्स दीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजह ॥ ५०९ ॥ जे भिक्क माउरगामस्स मेहणविष्याए अण्यमण्यस वीहाई जंघरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजाइ॥ ५०२ ॥ जे मिक्स माउम्मामस्स मेहुण-बहियाए अण्णमण्णस्स बीहाई कक्सरोमाई कप्येज वा संठवेज वा कप्पेतं वा सेठवेंतं वा साइज्जइ ॥ ५०३ ॥ जे मिक्जू माउम्गामस्य मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स चीहाई मंग्ररोमाई क्रमेळ वा संटवेज वा कर्मेतं वा संटवेंतं वा साइजह ॥ ५०४॥ जे भिवन्त् माउग्गामस्स मेहुणविद्याए भण्णमण्णस्स दीहाई णासारोमाई क्योज वा संठवेज बा कप्पेंतं वा संटवेंतं वा साइजाइ ॥ ५०५ ॥ जे मिक्सू माउग्मामस्स मेहुणवि-बाए क्षम्प्रकारस बीहाई चक्खरोसाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साहज्जह् ॥ ५०६-१ ॥ जे मिक्स् माउम्मामस्स मेहणविद्याए अण्णमण्णस्स बीहाई कम्मरोसाई कप्पेक वा चंठवेज वा कपोंतं वा चंठवेतं वा साहकार ॥ ५०६-२ ॥ हो मिन्न् माउगामस्य मेहुजविद्याध् अन्जमज्जस्य दंते आर्थरेज वा पर्मरेज वा बावंबंतं का ववंबंतं का साहजह ॥ ५०० ॥ जे निमन्त्र माउम्मानस्य मेहजबिवार

भण्णमण्णस्स दंते उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएंतं वा साइज्ड ॥ ५०८ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविषयाए अण्णमण्णस्स देवे फूमेज वा रएज वा फूर्मेंतं वा रएंतं वा साइजाइ ॥ ५०९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुण-विडयाए अण्णमण्णस्स उद्वे आमजेज वा पमजेज वा आमजेतं वा पमजेतं वा साइजाइ ॥ ५१० ॥ जे भिक्ख् माउरगामस्स मेहणबिडयाए अण्णमण्णस्स उद्वे संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजाइ ॥ ५११ ॥ जे भिक्सू माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स उद्वे तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंतं वा मिलिंगेतं वा साइज्जइ ॥ ५१२॥ जे मिक्सू माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स उद्वे लोदेण वा क्क्रेण वा उद्वेलेख वा उञ्बद्धेन वा उन्नेलेंतं वा उञ्बद्धेतं वा साइजइ ॥ ५१३ ॥ जे मिक्स् माउम्गामस्स मेहणविद्याए अण्णमण्णस्स उद्रे सीओदगवियहेण वा उत्तिणोदगवियहेण वा उच्छो-**रुज** वा पघोएज वा उच्छोर्टेतं वा पघोएंतं वा साइज**इ** ॥ ५९४ ॥ जे भिक्सू माउग्गामस्स मेहणविडयाए अण्णमण्णस्स उद्वे फुमेज्य वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइज्जइ ॥ ५१५॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविषयाए अण्णमण्णस्स दीहाई उत्तरोद्वरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कपोंतं वा संठवेंतं वा साइज्जर ॥ ५१६॥ जे भिक्ख माउग्यामस्य मेहणविडयाए अण्णमण्णर्स दीहाई अच्छिपताई कप्पेज वा संठवेज वा कर्गेतं वा संठवेतं वा साइजइ ॥ ५१७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहु-णविडियाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि सामजेज वा पमजेज वा सामजंतं वा पमजंतं वा साइज्जइ ॥ ५१८ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजइ ॥ ५१९ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्य मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स अच्छीणि तेहेण वा वएण वा पवणीएण वा सक्खेज वा भिलिंगेज वा सक्खेंतं वा मिलिंगेंतं वा साइजाइ ॥ ५२० ॥ जे भिक्स माउग्गामस्स मेहणवडियाए अन्यसण्यस्य अच्छीणि लोद्धेण वा ब्रेक्केण वा उन्नोकेज वा उन्नोकेज वा उन्नोकेतं वा उन्नोकेतं वा साइजाइ ॥ ५२१ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहणविदयाए अण्णमण्यस्स अच्छीपि सीओदगविवदेण वा उसिणोदगवियदेण वा उच्छोंकेज वा पथीएज वा उच्छोंकेंतं वा पथीएंतं वा साइ-जह ॥ ५२२ ॥ जे मिक्ख माउम्मामस्स मेहणविष्याए अष्णमण्यस्स अच्छील फुमेज वा रएज वा फुमेंतं वा रएंतं वा साइजाई ॥ ५२३ ॥ जे मिक्स माउग्गा-मस्स मेहुणविद्याए अण्णमण्णस्स शिहाइं भुमगरीयाई ऋग्रेज वा संठवेज वा कर्पेतं वा संठवेतं वा साइजाइ ॥ ५२४ ॥ जे भिक्तक् मारामामस्य मेहणविद्याए

अण्णमण्णस्स दीहाई पासरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेतं वा साइजइ ॥ ५२५-१॥ म्बेसरोमाई मा ५२५-२॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णमण्णस्स अच्छिमलं वा फण्णमलं वा दंतमलं वा णहमलं वा णीहरेज वा विसोहेज **वा जीहरें**तं वा विसो**हें**तं वा साइजइ ॥ ५२६ ॥ जे भिक्ख् माउरगामस्स मे<u>ह</u>णवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेयं वा जहां वा पंकं वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेंतं वा साइज्जइ ॥ ५२०॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणविडयाए अण्णम-ण्णस्स गामाणुगामं दृहुजमाणे सीसदुवारियं करेह करेंतं वा साहजह ॥ ५२८ ॥ जे भिक्न माजग्गामस्स मेहणवंडियाए अणंतरहियाए पुढवीए णिसीयानेज वा तुयहानेज वा णिसीयावेंतं वा तुयद्ववेंतं वा साइव्बइ ॥ ५२९ ॥ जे भिक्ख् माजग्गामस्स मेहुण-बिडयाए ससिणिद्धाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयहावेंतं वा साइज्जइ ॥ ५३० ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहुणवृहियाए ससरक्खाए पुढ-वीए णिसीयावेज वा त्यद्वावेज वा णिसीयावेंतं वा तुर्यद्वावेंतं वा साइजह ॥ ५३१ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्स मेहुणविडयाए म[ह]द्वियाकडाए पुढवीए णिसीयावेज वा द्धयद्वावेज वा जिसीयार्वेतं वा तुयद्वविंतं वा साइजइ ॥ ५३२ ॥ जे मिन्स् माउग्गा-मस्स मेहुणविडयाए चित्तमंताए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीया-वेतं वा तुमदावेतं वा सांइजह ॥ ५३३ ॥ जे भिक्ख् माउम्गामस्य मेहुणविडयाए चित्तमंताए सिलाए णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयहावेंतं वा साइजह ॥ ५३४ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहुणविषयाए चित्तमंताए छेळ्ए णिसीयावेज वा तुयद्यवेज वा णिसीयावेंतं वा तुयद्यवेंतं वा साइजाइ॥ ५३५ ॥ जे भिक्ष माउग्गामस्स मेहुणविडयाए कोळावासंसि वा दारुए जीवपइड्रिए सअंडे सपाणे सवीए सहरिए सओसे सउदए सङ्गिगपणगदगमहियमक्कासंताणगंसि णिसी-यानेज वा तुयहानेज वा णिसीयांनेंतं वा तुयहांनेंतं वा साइजइ ॥ ५३६ ॥ जे मिक्स् माउग्गामस्य मेहणविद्याए अंकंति वा पित्रयंकंति वा णिसीयावेज वा तुयहावेज वा णिसीयार्वेतं वा तुम्रहार्वेतं वा साइजाइ ॥ ५३७ ॥ जे भिक्ख् माउग्गामस्स मेहण-विख्याए अंकंति वा पिल्यंकंति वा णिसीयावेत्ता वा तुमहावेता वा असणं वा ४ अणुरचासेच्य या अणुराएज वा अणुरघासेतं वा अणुराएंतं वा साहजह ॥ ५३८ ॥ जे मिन्स् माउग्गामस्स मेहुणविष्याए आगंतागारेस वा आरामा-गारेसु वा गाहावरकुकेसु वा परियानसहेसु वा विसीयावेज वा तुयहाकेज वा **विसीयांवेंतं वा तुयद्वांवेंतं वा साइअइ ॥ ५३९ ॥ जे भिक्य** माउम्मामस्य मेहण-विद्याए आगंतागारेषु वा आशामागारेषु वा गाहावर्क्कच वा परियावसहैन

वा गिसीयावेता वा तुयदावेता वा असणं वा ४ अणुग्वासेज वा अणुपाएज वा अणुरघामेंतं वा अणुपाएंतं वा साइजाइ ॥ ५४० ॥ जे मिक्ख् माउग्गामस्स मेहण-वडियाए अण्णयरं तेइच्छं आउद्द आउद्दंतं वा साइजइ ॥ ५४९ ॥ जे भिनन माउग्गामस्य मेहुणबिडियाए अम्णुण्णाइं पोग्गलाइं अवणीहरइ णीहरंतं वा साइजइ ॥ ५४२ ॥ जे भिक्क् माउग्गामस्स मेहुणविद्याए मणुण्णाई पोग्गलाई उविकरह उवकिरंतं वा साइजड ॥ ५४३ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्य मेहणविडयाए अण्णयरं पतुजाई वा पिक्खजाई वा पायंसि वा पक्खांसि वा पुंछंसि वा सीसंसि वा गहाय (उजिहरू वा पव्यिद्वर वा) संचालेर (उजिहेंतं वा पव्यिहेतं वा) संचालेतं वा साइजाइ ॥ ५४४ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्य मेहणवाडियाए अण्णयरं पराजायं वा पक्तिजायं वा सोयंसि कहं वा कलिंचं वा अंगुलियं वा सलागं वा अणुप्पवेसिता। संचालेइ संचालेतं वा माइजइ ॥ ५४५ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहणविडयाए अण्णयरं पमुजायं वा पविन्यजायं वा अयमित्यित्तिकह आलिंगेज वा परिस्सएज वा परिचुंबेज वा विच्छेदेज वा आलिंगतं वा परिस्मयंतं वा परिचुंबंतं वा विच्छेदंतं वा साइज्जइ ॥ ५४६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहणविडयाए असणं वा ४ देइ देंतं वा साइजइ ॥ ५४७ ॥ जे भिक्क माउग्गामस्य मेहणवडियाए असणं वा ४ पडिच्छड पडिच्छंतं वा साइजड ॥ ५४८ ॥ जे भिक्ख मार्डेगामस्स मेहणवडियाए वत्थं वा पांडमगहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ देंतं वा साइजाइ ॥ ५४९ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहणबिडयाए वत्यं वा ४ पडिच्छइ पिडच्छंतं वा साइजइ ॥ ५५० ॥ जे भिक्नु माउग्नामस्स मेहणवडियाए सज्ज्ञायं वाएइ वाएंतं वा साइजड ॥ ५५१ ॥ जे मिक्स् मारुग्गामस्स मेहणवडियाए सज्जायं पडिच्छड पहिच्छेतं वा साइजह ॥ ५५२ ॥ जे भिक्ख माउग्गामस्स मेहणबहियाए अण्णयरेणं इंदिएणं आकारं करेड करेंतं वा साइजाड । तं सेवमाणे आवजाड चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अणुग्वाह्यं ॥ ५५३ ॥ णिसीहऽज्ययणे सत्तमो उदेसो समसो ॥ ७ ॥

अद्यमो उद्देसी

जे भिक्ख आगंतारेस वा आरामागारेस वा गाहावहकुलेस वा परियावसहैस वा एगो एगाए इत्थीए सिर्दे विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ असणं वा ४ आहारेद उचाएं वा पासवणं वा परिद्वेद अण्णयरं वा अणारियं णिहुरं (पिहुणं) अस्सव(म)णपाखोगं कहं कहेद कहेंतं वा साइजाइ ॥ ५५४॥ जे भिक्ख उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणगिहंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणंगिहंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणंगिहंसि

एगाए इत्थीए सर्दि विहारं वा करेइ सज्ज्ञायं वा करेइ असणं वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेइ अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाओगं कहं कहेड कहेंते वा साइजाइ ॥ ५५५ ॥ जे भिक्ख अर्टस वा अहालगंसि वा चारियंति वा पागारंति वा दारंति वा गोपुरंति वा एगो० इत्थीए सर्द्धि विहारं वा करेड़ मज्झायं वा करेड़ असणं वा ४ आहारेड़ उच्चारं वा पासवणं वा परिद्ववेड़ अण्णयरं वा अणारियं पिहणं अस्समणपाउगं कहं कहेह कहेंतं वा साइज्जड् ॥ ५५६ ॥ जे भिक्ख दर्गेस वा दगमगंमि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दगठाणंसि वा एगो॰ इत्थीए सिद्धे विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ असणं वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवणं वा परिष्ठवेइ अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समण-पाउग्गं कहं कहेइ कहेंनं वा साइजइ ॥ ५५७ ॥ जे भिक्ख सुन्पगिहंसि वा मुण्णसार्राम वा भिष्णगिहंसि वा भिष्णसार्रास वा कृहागारंसि वा कोद्रागारंसि वा एगो॰ इत्थीए सिंद विष्ठारं वा करेड सज्झायं वा करेड असणं वा ४ आहारेड उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेइ अण्णयरं वा अणारियं पिहणं अस्समणपाउन्नं कहं कहेड कहेतं वा साइजाइ ॥ ५५८ ॥ जे भिक्ख् तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तुसगि-हंसि वा तुससालंसि वा भुसगिहंसि वा भुससालंसि वा एगो॰ इत्थीए सद्धि विहारं वा करेड़ सज्झायं वा करेड़ असणं वा ४ आहारेड़ उचारं वा पासवणं वा परिद्र-वेड अण्णयरं वा अणारियं पिहणं अस्समणपाउग्गं कहं बहेदं कहेतं वा साङ्ख्यह ॥ ५५९ ॥ जे भिक्ख् जाणसालंसि वा जाणगिर्हसि वा जुम्मसालंसि वा जुम्मगिर्हसि वा एगो० इत्थीए सर्दि विहारं वा करेड़ सज्झायं वा करेड़ असणं वा ४ आहारेड उचारे वा पासवणं वा परिद्ववेह अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाउग्गं कहं कहेर कहेंतं वा सारज्जर ॥ ५६० ॥ जे भिक्ख पणियसार्लीस वा पणियगिहंसि वा परियासालंसि वा परियागिहंसि वा कम्मियसालंसि वा कम्मियगिहंसि वा एगो० इत्बीए सिद्धे विहारं वा करेड़ सजझायं वा करेड़ असणं वा ४ आहारेड़ उन्नारं वा पासवणं वा परिद्ववेद अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाउग्गं कहं कहेद कहेतं वा साइजाइ ॥ ५६१ ॥ जे भिक्ख गोणसालंसि वा गोणगिहंसि वा महाकुलंसि वा महागिहंसि वा एगो॰ हरबीए सिद्धं विहारं वा करेड सज्झार्य वा करेड असणं वा ४ आहारेइ उचारं वा पासवर्ण वा परिद्ववेइ अञ्गयरं वा अगारियं पिहुणं अस्स-मणपाउगं कहं कहेंद्र कहेंतं वा साइजाइ ॥ ५६२ ॥ जे मिक्ख राओ वा वियाले वा इत्थिमज्ञागए इत्थिसंसत्ते इत्थिपरिवृद्धे कहं कहेर कहेंते वा साइज्जइ ॥ ५६३ ॥ जे मिनस सगणिषियाए वा परगणिषियाए वा णिमंबीए सर्दि

नामाणुग्नामं द्रुजमाणे पुरक्षो गच्छमाणे पिद्वको रीयमाणे ओह्यमणसंकप्ये चिंता-सोयसागरसंपविद्वे कर्यलपल्हरथमुहे अहज्झाणोवगए विहारं वा करेड सज्झायं वा करेड़ असणं वा ४ आहारेड़ उचारं वा पासवणं वा परिद्ववेड अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाउरगं कहं कहेड कहेतं वा साइज्जइ ॥ ५६४ ॥ जे भिक्ख् णायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुदामयं वा अंतो उवस्सयस्य अदं वा राइं कसिणं वा राई संवसावेइ (तं न पिडियाइक्सइ तं पहुन्न निक्समइ वा पविसद वा) संव-सार्वेतं वा साइजइ ॥ ५६५ ॥ जे भिक्ख णायगं वा भणायगं वा उवामयं वा अणुवासयं वा अंतो उवस्सयस्स धार्दं वा राइं कसिणं वा राइं संवसावेइ तें पहुच निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइजड ॥ ५६६ ॥ जे भिक्क् रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं संवायमहेसु वा पिंडमहेसु वा जान असणं वा ४ पिटरगाहेइ पिटरगाहेतं वा साइजइ ॥ ५६७ ॥ जे मिक्खू रण्णो खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं उत्तरसालंति वा उत्तरगिर्द्धति वा रीयमाणं असणं वा ४ पडिम्माहेह पडिम्माहेतं वा साइजह ॥ ५६८ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं हयसालागयाण वा गयसालागयाण वा मंतसालागयाण वा गुज्यसालागयाण वा रहस्ससालागयाण वा मेहणसालागयाण वा असणं वा ४ पडिम्गाहेर पडिम्गाहेतं वा साइज्जर ॥ ५६९ ॥ जे भिक्खू रण्णो स्रतियाणं मुदियाणं मुद्धाभितिताणं सिबहिसंनिचयाओ खीरं वा दिहें वा णवणीयं वा सिप्प वा गुले वा खंडं वा सक्तरं वा मच्छंडियं वा अण्णयरं वा मोगणजाणं पडिमगाहेड् पडिम्गाहेतं वा साइजइ ॥ ५,७० ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुदाभि-सित्ताणं उस्सङ्गपिंहं वा संसङ्गपिंहं वा अणाङ्गपिंहं वा किविषापिंहं वा वणीमगपिंहं वा पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइजाइ। तं सेवमाणे आवजाइ चाउम्मासियं परिहार-द्वाणं अगुरवाइयं ॥ ५०१ ॥ णिसीहऽज्झयणे अद्वमो उद्देसो समत्तो ॥ ८॥

णवमो उदेसी

जे भिक्ख् रायपिंडं गेण्ह्ह गेण्हंतं वा साइजाइ ॥ ५०२ ॥ जे भिक्ख् रायपिंडं भुंजह भुंजंतं वा साइजाइ ॥ ५०३ ॥ जे भिक्ख् रायंतेचरं पविसह पविसंतं बा साइजाइ ॥ ५०४ ॥ जे भिक्ख् रायंतेचरं पविसह पविसंतं बा साइजाइ ॥ ५०४ ॥ जे भिक्ख् रायंतेपुरियं वदेजा—'आउसो ! रायंतेपुरिए णो खाल अम्हं कप्पह रायंतेपुरं णिक्खमित्तए बा पविसित्तए वा, इसम्हं तुमं पडिग्गहंगं गहाय रायंतेपुराओ असणं वा ४ अभिष्ठढं आह् हु व्लयाहि' जो तं एवं वयह वयंतं वा साइजाइ ॥ ५०५ ॥ जे भिक्ख् णो वएजा, रायंतेपुरिया वएजा—'आउसंतो ! समणा णो खाल तुजां कप्पह रायंतेपुरं णिक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, आहरेयं

पिंडिमाहुगं जाए अम्हं रायंतेपुराओ असणं वा ४ अभिहर्ड आहट्ट दलगामि' जो तं एवं वयंतं पडिसुणेइ पडिसुणेतं वा साइज्जइ ॥ ५७६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं सुदियाणं सुद्धामितिताणं दुवारियभत्तं वा पसुभत्तं वा भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगमतं वा हयभतं वा गयभतं वा कंतारभनं वा दुव्भिक्खभतं वा दमगभनं वा गिलाणभन्तं वा वद्वियाभन्तं वा पाहुणमत्तं वा पडिग्गाहेदः पडिग्गाहेतं वा साइज्जह ॥ ५७७ ॥ जे मिक्खू रण्णो खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छहोसाय-यणाई अजाणि(य)ता अपुच्छिय अगवेसिय परं चउरायपंचरायाओ गाहावर्क्क पिंड-वायपडियाए णिक्खमइ वा पविसह वा णिक्खमंतं वा पविसंतं वा साहज्जह, तंजहा-कोद्रागारसालाणि वा भंडागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसालाणि वा गंज-सालाणि वा महाणससालाणि वा ॥ ५७८ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मदाभित्तित्ताणं अइगच्छमाणाण वा जिग्गच्छमाणाण वा पयमवि चक्खदंसणपडि-याए अभिसंघारेइ अभिसंघारेंतं वा साइजइ ॥ ५७९ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं इत्थीओ सन्वालंकार्विभूसियाओ पयमवि चक्खुदंसण-पडियाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ ५८० ॥ जे भिक्न्यू रण्णो खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभित्तिताणं मंस(क)खाया[णं]ण वा मच्छखायाण वा छवि-खायाण वा वहिया जिम्मयाणं असणं वा ४ पडिम्माहेड पडिम्माहेतं वा माइज्जर ॥ ५८९ ॥ जे भिक्ख रण्णो खतियाणं सुदियाणं सुद्धाभिसित्ताणं अण्णयरं उववृहणियं समीहियं पेहाए तीसे परिमाए अणुद्वियाए अभिण्णाए अञ्बोच्छण्णाए जो तमण्णं पडिम्माहेइ पश्चिमाहेंतं वा साइजइ ॥ ५८२ ॥ अह पुण एवं जाणेख 'इहब्ब रायखत्तिए परिवृत्तिए' जे भिक्ख ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासंतराए विहारं वा करेड़ सज्झायं वा करेड असणं वा ४ आहारेड उच्चारं वा पासवणं वा परिद्ववेड अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाउगं कहं कहेइ कहेंतं वा साइज़इ ॥ ५८३ ॥ जे भिक्ख रण्णो सतियाणं मुदियाणं मुद्धाभितिताणं बहिया जत्तासं(पट्टि)ठियाणं असर्णं वा ४ पंडिग्गाहेइ पंडिग्गाहेतं वा साइजाइ ॥ ५८४ ॥ जे मिन्खू रण्यो खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं बह्निया जत्तापिडिणियत्ताणं असणं वा ४ पिड-नगाहेइ पडिनगाहेतं वा साइजाइ ॥ ५८५ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं णइजता(सं)पद्वियाणं असणं वा ४ पडिग्गाहेर् पडिग्गाहेतं वा साइ-जह ॥ ५८६॥ जे भिक्ख रण्यो खतियाणं मुदियाणं मुद्दाभिसिताणं णइजतापडि-णियत्ताणं असणं वा ४ पडिग्गाहेड् पडिग्गाहेंनं वा साइजह ॥ ५८७ ॥ जे शिक्ख् रण्णो सत्तियाणं मदियाणं मद्भाभितिताणं चिरिजतापद्वियाणं असणं वा ४ पढिमा-५६ सता॰

हेइ पिंडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥ ५८८ ॥ जे मिक्ख् रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धा-मिसित्ताणं गिरिजतापिडिणियत्ताणं असणं वा ४ पिडिस्गाहेद पिडिस्गाहेतं वा साइ-ज़र् ॥ ५८९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुदाभिसित्ताणं महाभिसेयंसि वष्टमाणंसि णिक्समइ वा पविसइ वा णिक्समंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ ॥ ५९० ॥ जे भिक्ख रण्णे खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभितिनाणं इमाओ दस अभिसेयाओ रायहाणीओ उद्दिष्टाओ गणियाओ विजयाओ अंतो मासस्म दुक्खनो वा निक्खनो वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमंतं वा पविसंतं वा साइजइ, तंजहा-चंपा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिछं कोसंबी मिहिला हत्थि(णा)णपुरं रायगिहं॥५९१॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अमणं वा ४ परस्स णीहर्ड पडिम्गाहेइ पहिम्गाहेंतं वा साइज्जइ, तंजहा-खतियाण वा राईण वा कुराईण वा रायसंसियाण वा रायपेसियाण वा ॥ ५९२ ॥ जे भिक्ख रण्णो खत्तियाणं मुद्दियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा ४ परस्स णीहडं पडिश्गाहेड पडिश्माहेंतं वा साइजाइ, तंजहा-गडाण वा णद्याण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मालाण वा मुद्रियाण वा केंबगाण वा कहराण वा पवगाण वा लासगाण वा दोखलयाण वा छत्ताणुयाण वा ॥ ५९३ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाणं मुद्दियाणं मुद्धाभिसित्ताणं अमणं वा ४ परस्स णीहडं पडिस्माहेइ पडिस्माहेंतं वा साइजाइ, तंजहा-आसपोसयाण वा हत्य-पोसयाण वा महिसपोसयाण वा वसहपोसयाण वा सीहपोसयाण वा वम्धपोसयाण वा अयपोसयाण वा पोयपोसयाण वा मिनपोसयाण वा सुण्ह्रपोसयाण वा स्यरपोस-याण वा मेंढपोसयाण वा कुकुडपोसयाण वा तित्तिरपोसयाण वा वस्यपोसयाण वा लावयपोसयाण वा चीर्[ह्र]ह्मपोसयाण वा हंसपोसयाण वा मऊरपोसयाण वा सुय-पोसयाण वा ॥ ५९४ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसिताणं असणं वा ४ परस्स णीहडं पडिस्माहेइ पडिस्माहेतं वा साइजह, तंजहा-आस(महा)दम-गाण वा हत्थिदमगाण वा ॥ ५९५ ॥ जे भिक्ख् रण्णो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धा-भितिताणं असणं वा ४ परस्य णीहडं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ, तंजहा-आसर्मिठाण वा हत्थिर्मिठाण वा ॥ ५९६ ॥ जे भिक्ख् रण्यो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा ४ परस्स णीहडं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ. तंजहा-आसरोहाण वा हत्यिरोहाण वा ॥ ५९७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खतियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं असणं वा ४ परस्स णीहढं पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइज्ञइ, तंजहा-सत्यबाहाण वा संबाहावयाण वा अन्मंगावयाण वा उच्वहावयाण वा मज्जादयाण वा मंडावयाण वा इत्तरमहाण वा चसरस्महाण वा इडप्पम्महाण

बा परियह्यग्यहाण वा दीवियग्यहाण वा असिम्यहाण वा घणुग्यहाण वा सिरागहाण वा कोंत्रगहाण वा ॥ ५९८॥ जे मिक्ख् रण्णो खिरायणं मुद्दामिसिराणं असणं वा ४ परस्स णीहढं पिडग्याहेड् पिडग्याहेंतं वा साइज्जइ, तंजहा-विरिधराण वा केंचुइज्ञाण वा दोवारियाण वा दें[डं]डारिक्खियाण वा ॥ ५९९॥ जे मिक्ख् रण्णो खिरायाणं मुद्दियाणं मुद्धाभिसिराणं असणं वा ४ परस्स णीहढं पिडग्याहेड् पिडग्याहेंद्र पिडग्याणं वा साइज्जइ, तंजहा-खुज्ञाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा बदमीण वा बार्ग्यणण वा वामणीण वा बार्ग्यणण वा वामणीण वा बार्ग्यणणण वा लउसीण वा जासीण वा दमिलीण वा सिंहलीण वा आलवीण वा पुलिशिण वा सार्ग्यणणणायाह्य वा पारसी[परिसिणी]ण वा। तं सेवमाणे आवज्जइ चालम्यासियं परिहारहाणं अणुग्याह्यं॥ ६००॥ णिसीहऽज्ययणे णासमी उद्देसो समस्तो॥ ९॥

दसमो उद्देसो

जे भिक्ख भदंतं आगाढं वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ ६०१ ॥ जे भिक्ख भदंतं फरसं वयह वयंतं वा साइजइ ॥ ६०२ ॥ जे भिक्ख भदंतं आगाढं फर्स्स वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ ६०३ ॥ जे भिक्ख भवंतं अण्णयरीए अश्वासायणाए अचामाएइ अचासाएंतं वा साइजइ ॥ ६०४ ॥ जे भिक्ख अणंतकायसंज्ञतं आहारं आहारेड आहारेतं वा साइजाइ ॥ ६०५ ॥ जे भिक्ख आहाकम्मं भुंजाइ भुंजतं वा साइजइ ॥ ६०६ ॥ (· · · लामातित्तं नि॰ कहेइ कहंतं वा सा॰) जे भिक्ख पहुप्पणां निमित्तं वागरेह बागरेतं वा साइजह ॥ ६०७ ॥ जे भिक्ख अणागयं निमित्तं वागरेइ वागरेतं वा साइजइ ॥ ६०८ ॥ जे भिक्ख सेहं अवहरद अवहरतं वा साइजङ ॥ ६०९ ॥ जे भिक्ख सेहं विप्परिणामेइ विप्परिणामेंतं वा साइज्जइ ॥ ६१० ॥ जे मिक्ख दिसं अवहरइ अवहरंतं वा साइज्जह ॥ ६१९ ॥ जे भिक्ख दिसं विपरिणा-मेइ विप्परिणार्मेतं वा साइज्जड ॥ ६१२ ॥ जे भिक्ख बहियावासियं आएसं परं तिरायाओ अविफालेता संबसावेड संबसावेंतं वा साइजह ॥ ६१३ ॥ जे भिक्ख साहिगरणं अविओसवियपाहरं अकडपायच्छितं परं तिरायाओ विष्फालिय अविष्का-लिय संभंजइ संभंजतं वा साइजाइ ॥ ६१४ ॥ जे भिक्ख उग्वाइयं अणुग्वाइयं वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ ६१५ ॥ जे भिक्क अध्यक्षाइयं उम्घाइयं वयइ वयंतं वा साङ्ख्य ॥ ६१६ ॥ जे भिक्षा राषाइयं अणुग्याइयं देइ देतं वा साङ्ख्य ॥ ६१७॥ जे सिक्ख अणुरचाइयं उस्थाइयं देइ देतं वा साइजाइ ॥ ६१८॥ जे भिक्ख उम्बाहर्य सोचा जवा संसंजह संसंजंतं वा साहव्यह ॥ ६१९ ॥ जे भिक्ख उग्वाहगहेलं सीचा णचा संगंजह संगंजीतं वा साहजह ॥ ६२०॥ जे मिक्स

उरघाइयसंकप्पं सोचा णचा संभुंजइ संभुंजतं वा माइजइ ॥ ६२१ ॥ जे भिक्ख उग्धाइयं उग्धाइयहेउं वा उग्धाइयसंकर्पं वा सीचा णचा संभुंजइ संभंजंतं वा साइजाइ ॥ ६२२ ॥ जे भिक्तू अणुरघाइयं सोचा णचा संभंजह संभुंजंतं वा साइजाइ ॥ ६२३ ॥ जे भिक्ख् अणुग्वाइयहेउं सोव्या णचा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६२४ ॥ जे मिक्स अणुग्धाइयसंकर्पं सोमा णमा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइजइ ॥ ६२५ ॥ जे भिक्क् अणुग्याइयं अणुग्याइयहेउं वा अणुग्याइयसंकप्पं वा सोचा णचा संभुंजइ संभुंजतं वा साइज्जइ ॥ ६२६ ॥ जे भिक्ख उरपाइयं या अणुरघाइयं वा सोचा णना संभुंजइ संभुंजंतं वा साइजइ ॥ ६२७ ॥ जे भिक्ख उरघाइयहेउं वा अणुरघाइयहेउं वा सोचा णचा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ ॥ ६२८ ॥ जे भिक्क्षु उग्घाइयसंकर्पं वा अणुम्घाइयसंकर्पं वा सोचा णचा संभुंजइ संभुंजनं वा साइजइ ॥ ६२९ ॥ जे भिक्ख् उग्धाइयं वा अणुरवाह्यं वा उरघाहयहेउं वा अणुरवाइयहेउं वा उरघाइयसंकर्णं वा अणुरघाहय-संकर्प वा सोचा णचा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइजाइ ॥ ६३० ॥ जे भिक्ख् उगगयवित्तीए अणस्यमियमणसंकृष्ये संथिहए णिव्वितिगिन्छासमावण्णेणं अप्याणेणं असणं वा ४ पडिस्माहेता संभुंजइ संभुंजंनं वा साइजइ । अह पुण एवं जाणेजा ''अणुम्गए स्रिए अत्यमिए वा'' से जं च (आसयंसि) मुद्दे जं च पाणिसि जं च पिडमाहे तं विमित्विय विसोहिय तं परिद्ववेमाणे (धम्मं) णाइक्स्मइ । जो तं भुंजइ भुंजनं वा साइजाइ ॥ ६३१ ॥ जे भिक्ख उम्मयवित्तीए अणस्य-मियसंक्ष्पे संथडिए वितिगिच्छाए समावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा ४ पिडिग्गाहेना संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ । अह पुण एवं जाणेज्जा "अणुग्गए स्रिए अत्थ-मिए वा" से जं च मुद्दे जं च पाणिस जं च पडिम्महे तं विगिनिय विसोहिय तं परिद्ववेगाणे णाइक्षमइ । जो तं भुंजइ भुंजतं वा साइज्जद्द ॥ ६३२ ॥ जे भिक्ष्य् उग्गयित्तीए अणस्यमियसंक्ष्ये असंयहिए णिव्यितिनिच्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा ४ पडिग्गाहेता संभुंजह संभुंजंतं वा साहजाइ । अह पुण एवं जाणेजा "अणुग्गए सुरेए अत्यक्षिए वा" से जं च सुद्धे जं च पाणिसि जं च पडिमाहे तं विमिश्विय विसोहिय तं परिद्वेमाणे णाइक्समइ । जो तं भुंखइ भुंजर्त वा साइजङ् ॥ ६३३ ॥ जे मिक्ख् उम्गयवित्तीए अणत्यमिमसंकृष्पे असंबंहिए विदि-गिच्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा ४ पंडिनगहिता संभुंजह संभुंजंतं वा साइ-जर । अह पुण एवं जाणेजा "अणुम्मए सुरिए अत्यमिए वा" से जं च मुहे जं च पाणिसि जं च पांडिमाहे तं विगिनिय विसोहिय तं परिवर्वमाणे जाहसमा । (तं

अप्पणा भूंजमा • अष्णेसि वा दलमाणे राइमोयणपहिसेवणपते) जो तं भूंजइ भूंजंतं वा साइजाइ ॥ ६३४ ॥ जे भिष्ट्य राखो वा वियाले वा सपाणं सभोगणं उग्गालं उगिगलिना पद्मोगिलंड पद्मोगिलंतं वा साइज्य ॥ ६३५ ॥ जे भिक्स गिलाणं सोबा ण गवेसइ ण गवेसंतं वा साइज्जइ ॥ ६३६ ॥ जे भिक्ख निलाणं सोबा उम्मग्गं वा पहिपहुं वा गच्छह गच्छंतं वा साइज्बइ ॥ ६३७ ॥ जे मिक्ख गिला-णवेयावचे अञ्मुद्वियस्स सएण लामेण असंधरमाणस्स जो तस्स न पहितप्पइ न पितत्पंतं वा साइजाइ ॥ ६३८ ॥ जे भिक्ख गिळाणवेयावचे अन्सुद्विए गिळाण-पाउम्मे दव्यजाए अलब्समाणे जो तं न पढियाइक्खइ न पढियाइक्खंतं वा साइजङ् ॥ ६३९ ॥ जे भिक्ख पढमपाउसम्मि गामाणुम्यामं दृहज्जह दृहकंतं वा साहज्जह ॥ ६४० ॥ जे भिक्ख वासावासं पज्जोसवियंसि दृइजाइ दृहर्जंतं वा साइजाइ ॥ ६४१ ॥ जे भिक्ख अपजोसक्पाए पज्जोसकेड पज्जोसकेंतं वा साइजड ॥ ६४२ ॥ जे भिक्ख पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेड ण पज्जोसवेतं वा साइजाड ॥ ६४३ ॥ जे भिक्ख पज्जोसवणाए गोलोमाइं-पि वा(बा)लाइं उवाइणाइ उवाइणंतं वा साइज्जह ॥ ६४४ ॥ जे भिक्ख पज्जोसवणाए इतिरियं पा(पि-आ)हारं आहारेंड आहारेंतं वा साइजाइ ॥ ६४५ ॥ जे भिक्क गारित्ययं पज्जोसवेई पज्जोसवेंतं वा साइजाइ ॥ ६४६ ॥ जे भिक्ख पढमसमोसरणुहेसे पत्ताई चीवराई पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साङ्जह । तं सेवमाणे आवज्जह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं अपुरुघाइयं ॥ ६४७ ॥ णिसीहऽज्ययणे दसमो उहेसो समत्तो ॥ १०॥

एकारसमो उदेसो

जे भिक्ख अयपायाणि वा तंबपायाणि वा तज्यपायाणि वा कंसपायाणि वा रूप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायस्वपायाणि वा मिणपायाणि वा कंसपायाणि वा वंतपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि वा चेरूपायाणि वा संखपायाणि वा वहर्पायाणि वा करेइ करेंतं वा साइजाइ॥ ६४८॥ जे भिक्ख अयपायाणि वा तंबपायाणि वा तज्यपायाणि वा कंसपायाणि वा क्यपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायस्वपायाणि वा मिणपायाणि वा क्यपायाणि वा दंतपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि वा चेरूपायाणि वा वहर्पायाणि वा वहर्पायाणि वा वरेइ घरेंतं वा साइजाइ॥ ६४६॥ जे मिक्ख अयपायाणि वा तंबपायाणि वा तंवपायाणि वा तंवपायाणि वा तंवपायाणि वा तंवपायाणि वा वर्मपायाणि वा वर्यपायाणि वा वर्यपायाणि वा वर्मपायाणि वा वर्मपायाणि वा वर्मपायाणि वा वर्यपायाणि वा वर

१ प्रबोशक्षाए (शंबच्छक्केप्) परिवासणं करावेद करावेतं ...।

वा चेलपायाणि वा संखपायाणि वा वहरपायाणि वा परिभेजह परिभुंजंतं वा साह-जह II ६५० II जे मिक्ख् अयबंधणाणि वा तंबबंधणाणि वा तउयबंधणाणि वा कंसर्वधणाणि वा रूप्पवंधणाणि वा सुवज्जवंधणाणि वा जायस्ववंधणाणि वा मणि-बंधणाणि वा कायबंधणाणि वा दंतबंधणाणि वा सिंगबंधणाणि वा चम्मबंधणाणि वा चेलवंघणाणि वा संखबंघणाणि वा वइरवंघणाणि वा करेइ करेंतं वा साइजड् ॥ ६५९ ॥ जे भिक्ख अयबंघणाणि वा तंबबंघणाणि वा तउयबंघणाणि वा कंस-बंधणाणि वा रुप्पबंधणाणि वा सुवण्णबंधणाणि वा जायस्ववंधणाणि वा मणिबंध-णाणि वा कायबंघणाणि वा दंतबंघणाणि वा सिंगबंधणाणि वा चम्मबंघणाणि वा चेलबंधणाणि वा संखबंधणाणि वा वहरबंधणाणि वा घरेड घरेतं वा साडजड ॥ ६५२ ॥ जे भिक्ख अयबंधणाणि वा तंबबंधणाणि वा तउगबंबणाणि वा कंस-बंघणाणि वा रूप्पबंघणाणि वा सुवण्णबंधणाणि वा जायस्वबंधणाणि वा मणिबंधणाणि वा कायबंधणाणि वा दंतवंधणाणि वा सिंगबंधणाणि वा चम्मबंधणाणि वा चेल-बंधणाणि वा संखबंधणाणि वा वहर्रवंधणाणि वा परिभुंजई परिभुंजंतं वा साइज्जह ॥ ६५३॥ जे भिक्ख परं अद्भायणमेराओ पायपडियाए गच्छह गच्छंनं वा साइजाइ ॥ ६५४ ॥ जे भिक्ख परमद्धजोयणमेराओ सम्बवायंसि पायं अभिदृहं आहृष्ट् दिज्जमाणं पविम्गाहेर् पडिम्गाहेतं वा साइज्जर् ॥ ६५५ ॥ जे भिक्ख् धम्मस्स अवर्णं वयइ वयंतं वा साइजइ ॥ ६५६ ॥ जे भिक्ख् अधम्मस्स वर्णं वयह वयंतं वा साइजइ ॥ ६५७ ॥ जं भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए आमजेज वा पमजेज वा आमजेतं वा पमजेतं वा साइजह ॥ ६५८॥ जे भिक्ख अण्णर्जात्ययस्स वा गारित्ययस्स वा पाए संवाहेज वा पिक्रमहेज वा संवाहेतं वा पलिमेंहतं वा साइज्जइ ॥ ६५९ ॥ जे मिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिर्किनेज वा मक्बेंतं वा भिल्मितं वा साइजइ ॥ ६६० ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्यियस्स वा पाए लोड्रेण वा ककेण वा उल्लोकेन वा उल्लेहेन वा उल्लोकेतं वा उन्बर्देतं वा साइन्द्र ॥ ६६१ ॥ जे भिक्त अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए सीओदगविगडेण दा उसिणोदगविगडेण वा उच्छोळेळ दा पंचीएज दा उच्छोर्लेतं वा पर्वाएंतं वा साइजइ ॥ ६६२ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्यियस्स वा पाए फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएतं वा साइजह ॥ ६६३ ॥ जे भिक्क अण्णविषयस्य वा गारत्यियस्य वा कार्य भागजेज वा पमजेज वा मामजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ ६६४ ॥ जे मिक्स अञ्चलस्य वा

गारित्ययस्स वा कार्य संवाहेज वा पिलमेहेज वा संवाहेतं वा पिलमेहेनं वा साइज्जह ॥ ६६५ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्ययस्स वा गारत्ययस्स वा कायं तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंत वा भिलिंगेतं वा साइजङ ॥ ६६६ ॥ जे भिक्क अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्य लोदेण वा ककेण वा उन्नोलेज वा उन्नोहज वा उन्नोलेंतं वा उन्नोहेतं वा साइजाइ ॥ ६६० ॥ जे भिक्ख अण्णडत्ययस्य वा गारत्यियस्य वा कार्य सीओदगवियहेण वा उसिणी-दगवियरेण वा उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएंतं वा साइजइ ।। ६६८ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्य फुमेज वा रएज वा फुमेंनं वा रएंनं वा साइजह ॥ ६६९ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यास वर्ण आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइजाइ ॥ ६७० ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यसि वर्ण संबाहेज वा पलिमहेज वा संबाहेंतं वा पलिमहेतं वा साइज्ज ॥ ६७१॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यस वर्ण तेक्केण वा चएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंतं वा मिलिंगेतं वा साइज्जड ।) ६७२ ॥ जे भित्रस् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यस वर्ण लोडेण वा कक्केण वा उन्नोकेज वा उन्नोहेज वा उन्नोकेंतं वा उन्नोहेतं वा साइजड ॥ ६७३ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्य वा गारत्थियस्य वा कार्यसे वर्णं सीओदगवियदेण वा उसि-गोदगवियहैण वा उच्छोलेज वा पघोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएंतं वा साइजड ॥ ६७४॥ जे मिक्ख अष्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यस वर्ण फ्रमेज वा रएज वा फ़र्मेतं वा रएंतं वा साइजाइ ॥ ६७५॥ जे भिक्ख अण्णजिययस्य वा गारिययस्य वा कार्यस गंडं वा पिलगं वा अरहरं वा अंसियं वा अगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्य-जाएणं अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदेतं वा विच्छिदेतं वा साइजइ ॥ ६०६॥ जे भिक्स अण्णरुत्थियस्य वा गारत्थियस्य वा कार्यसे गंडं वा पिलगं वा अरद्वं वा अंसियं वा मनंदलं वा अण्णयरेणं तिक्केणं सत्यवाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता पूर्य वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेतं वा विसोहेतं वा साइजह ॥ ६००॥ जे भिक्स अण्णउत्प्रियस्स वा गारत्थियस्स वा कार्यसि यंडं वा पिरुगं वा अर्ड्यं वा अंसियं वा अगंदलं वा अण्यारेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता पूर्व वा सीणिवं वा जीहरेता निसोहेता सीओदगनियदेण वा उसिणोदगनियदेण वा उच्छोलेज वा प्रयोग्ज वा उच्छोलेंतं वा प्रयोगंतं वा साइज्यह ॥ ६७८ ॥ जे मिक्स क्षाणार त्यायन्य वा गारत्यिकस्य वा कार्यसे गंडं वा पितगं वा अरहयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदित्रा विच्छिदित्ता पूर्वं वा सोणियं वा णीहरेता विसोहेमा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छो-लेता प्रधोएता अण्णयरेणं आलेत्रणजाएणं आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपंतं वा बिलिंपंतं वा साइजाइ ॥ ६७९ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारिश्यस्स वा कार्यंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता पूर्व वा सोणियं वा णीहरेता विमोहेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेता प्रशेएका अण्णयरेणं आले-बणजाएणं आलिंपिता विलिंपिता तेष्ट्रेण वा घएण वा णवणीएण वा अव्भंगेज वा मक्खेज वा अञ्मंगेतं वा मक्खेतं वा माइजङ् ॥ ६८० ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थि-यस वा गारत्थियस्स वा कार्यास गंडं बा पिलगं वा अरइयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदिता विच्छिदिता पूर्व वा सोगियं वा णीहरेता विसोहेता सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोलेता पंघीएता अण्ययरेणं आलेवणजाएणं आलिपिता बिलिपिता तेक्क्रेण वा घएण वा जवणीएण वा अव्मंगेता मक्खेता अण्णयरेणं घूवणजाएणं धूवेज वा पधूवेज वा धूवेंतं वा पधर्वेतं वा साइजइ ॥ ६८९ ॥ जे भिक्ख अण्णजित्ययस्य वा गारत्थियस्य वा पाळकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अंगुलीए णिवेसिय २ णीहरेइ णीहरेतं वा साइजङ ॥ ६८२ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा बीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ ६८३ ॥ जे भिक्स अण्ण-उत्थियस्स वा गारत्थियस्य वा दीहाइं जंघरोमाइं कम्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ ६८४ ॥ जे भिक्स अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा बीहाई कम्बरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेतं वा साइजाइ ॥ ६८५ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा श्रीहाइं मंसरोमाई कप्पेज वा संठवेज षा कपोतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ ६८६ ॥ जे भिक्ख अण्णलस्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाई णासारोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेतं वा साइज्जइ ॥ ६८७ ॥ जे भिक्क अण्णउत्ययस्य वा गारत्ययस्य वा बीहाई चक्छ-रोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजह ॥ ६८८-१ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइं क्रणरोमाईं कप्पेज वा संठवेज बा कप्पेंते वा संख्येतं वा साइजइ ॥ ६८८-२ ॥ जे मिक्ख भण्णखरिययस वा गारिक्षयस्य वा दंते आधंसेज वा पर्यसेज वा आधंसेतं वा पर्यसंतं वा साइजड १। ६८९ ॥ जे मिक्स अण्यरत्यियस्स वा शारत्वियस्स वा शंते सख्डीकेन वा

पधोएज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा साइज्जइ ॥ ६९० ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थि-यस्स वा गारित्ययस्स वा दंते फूमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइज्डर ॥ ६९१ ॥ जे भिक्ख अण्णडित्ययस्य वा गारत्थियस्य वा उट्टे आमजेज वा पमजेज वा आमर्जतं वा पमजंतं वा साइजइ ॥ ६९२ ॥ जे मिक्बू अण्णउरिथ-यस्स वा गारत्थियस्स वा उद्वे संबाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेतं वा पलिमहेतं वा साइजइ ॥ ६९३ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उद्वे तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिगेंनं वा साइज्जर् ॥ ६९४॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्य वा गारत्थियस्य वा उद्वे लोडेण वा ककेण वा उल्लोडेज वा उन्वहेज वा उल्लोडेंतं वा उन्वहेंतं वा साइजइ ॥ ६९५ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उट्टे सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंतं वा पघोएंतं वा साइज्जइ ॥ ६९६ ॥ जे भिष्यस् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उद्वे फूमेज्य वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजाइ॥ ६९७॥ जे भिक्क् अण्णउत्येयस्स वा गारित्ययस्य वा दीहाइं उत्तरोद्वरोमाइं कप्पेख वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइजइ ॥ ६९८ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा धीहाई अच्छिपताइं कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेतं वा संठवेंतं वा साइजाइ ॥ ६९९ ॥ जे भिक्खू अण्ण इत्थियस्स वा गारस्थियस्स वा अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं वा पमजंतं वा साइज्जइ ॥ ७००॥ जे भिक्सू अष्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि संवाहेज वा पलिमहेज वा संवाहेंतं वा पलिमहेंतं वा साइजइ॥ ७०१॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि तेहेण वा घरण वा णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेतं वा साइजाइ॥ ७०२॥ जे मिक्ख अण्णरिययस्य वा गारिययस्य वा अच्छीणि लोद्धेण वा क्क्रेण वा रक्षोलेज वा उम्बद्धेन वा उम्रोलेतं वा उम्बद्धेतं वा साइजाइ ॥ ७०३ ॥ जे भिक्स् अण्णउत्थि-यस्य वा गार्तिययस्य वा अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा प्रधोएज वा उच्छोलेंतं वा प्रधोएंतं वा साइजह ॥ ७०४ ॥ जे मिनस् अण्ण उत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि क्रुमेज वा रएज वा फूमेंतं वा रएंतं वा साइजाइ ॥ ७०५ ॥ जे मिक्स् अण्णविध्यस्स वा गारत्थियस्स वा बीहाइं भुमगरोमाई कप्पेज वा संठवेज वा कप्पेंतं वा संठवेंतं वा साइज्जर ॥ ७०६ ॥ जे मिक्स अञ्चलत्थयस्य वा गारत्थियस्य वा बीहाई पासरोमाई क्ष्मेज वा संठवेज वा कर्पतं वा संठवेंतं वा सहस्वह ॥ ७०७-१ ॥ "केसरोबाई"॥ ७०७-२ ॥

जे भिक्ख अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छिमलं वा कण्णमलं वा इंतमलं वा णहमलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेंतं वा विसोहेतं वा साइजाइ ॥ ७०८ ॥ जे भिक्स अण्णतिययस्य वा गारिययस्य वा कायाओ सेयं वा जहं वा पंकं वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेतं वा विसोहेतं वा साइजाइ ॥ ५०९ ॥ जे भिक्ख गामाणुगामं दूइजमाणे अण्णउत्थियस्स दा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेड़ करेंते वा साइजाइ ॥ ७१० ॥ जे भिक्ख अप्पाणं बीभावेड बीमावेंते वा साइजाइ ॥ ७११ ॥ जे भिक्ख परं बीमावेइ बीमावेंतं वा साइजाइ ॥ ७१२ ॥ जे भिक्षक अप्पाणं विम्हावेड विम्हावेंतं वा साइजड ॥ ७१३ ॥ जे भिक्षक् परं विम्हावेड विम्हावेंते वा साइज्जड ॥ ७१४ ॥ जे भिक्ख अप्पाणं विप्परियासेड विप्परियासेत वा साइजाइ ॥ ७१५ ॥ जे भिक्लू परं विप्परियासेंह विष्परियासेंतं वा साइजाइ ॥ ७१६ ॥ जे मिक्ख मुहवण्णं करेइ करेंने वा साइजाइ ॥ ७१७ ॥ जे मिक्ख बेरजविरुद्धरजंसि सजं गमणं सजं आगमणं सजं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइजाइ ॥ ७१८ ॥ जे भिक्ख दियामीयणस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ ७१९ ॥ जे भिक्ख राइमोयणस्स वर्णं वयद् वयंतं वा साइजाइ ॥ ७२० ॥ जे भिक्ख दिया असणं वा ४ पढिस्माहेला दिया भुंजंड भुजंतं वा साइजंड ॥ ७२१॥ जे भिक्क दिया असणं वा ४ पडिस्माहेता रति भुंजइ भुजंतं वा साइजड ॥ ७२२॥ जे भिक्ख रितं असणं वा ४ पढिग्गाहेता दिया भंजइ भुजंतं वा साइजइ॥ ७२३॥ जे भिक्ख रति असणं वा ४ पढिरगाहेता रति भुंजह :::।। ७२४ ।। जे भिक्ख असणं वा ४ परिवासेड परिवासेंतं वा साइजङ ॥ ७२५॥ जे भिक्ख परिवासियस्सै असणस्स बा ४ तयप्पमाणं वा भडप्पमाणं वा बिंदप्पमाणं वा आहारं आहारेह आहारेतं वा साइजाइ ॥ ७२६ ॥ जे भिक्ख आहेणं वा पहेणं वा संगेलं वा हिंगोलं वा अण्णयरं वा तहप्पनारं विस्वस्वं हीरमाणं पेहाए ताए आसाए ताए पिवासाए तं रयणि अण्णत्य उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइजाइ ॥ ७२७ ॥ जे भिक्ख णिवेयणपिंडं भुंजइ भुंजतं वा साइजाइ ॥ ७२८ ॥ जे मिक्ख् अहाछंदं पर्संसइ पर्संतं वा साइजाइ ॥ ७२९ ॥ जे भिक्स अहार्छदं वंदइ वंदंतं वा साइजइ ॥ ७३० ॥ जे भिक्स णायमं वा अणायमं वा उवासमं वा अणवासमं वा अणरुं पञ्चावेद पञ्चावेतं वा साइजंड ॥ ७३९ ॥ जे मिक्स णायमं वा अणायमं वा उवासमं वा अणुवासमं वा धगरुं उक्द्वविद उक्द्ववितं वा साइजह ॥ ७३२ ॥ जे भिक्स् अपरुणं वेयावर्ष

१ दिया घेतुं निर्सि संवासेतुं तं विहयदिणे शुंजमाणस्य पढममंगो भवइ । १ अकारणं-'''णण्यस्य आगादेहिं रोगायंकेहिं ति विहस्त्रप्ये ।

बारसमी उद्देशी

जे भिक्ख अण्णयरि तसपाणजाई तणपासएण वा मुंजपासएण वा कहुपासएण वा चम्मपासएण वा वेतर बंधंतं वा साइज्जइ ॥ ७४०-१ ॥ जे भिक्ख् अण्णयरि तसपाणजाई तणपासएण वा मुंजपासएण वा स्कुपासएण वा कुपासएण वा साइज्जइ ॥ ७४० ॥ जे भिक्ख् परित्तकाय-संजुतं वा काहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ ॥ ७४२ ॥ जे भिक्ख् तणपीढगं वा परास्त्रक्षण वा किवा कुपापपीढगं वा कहुपीढगं वा परास्त्रक्षण वा किवा कुपापपीढगं वा कुपाहणे साइज्जइ ॥ ७४२ ॥ जे भिक्ख् पुटवीकायस्य वा साइज्जइ ॥ ७४४ ॥ जे भिक्ख् पुटवीकायस्य वा काउकायस्य वा काउकायस्

९ संजर्रेणं । २ जिणकप्पीणं । ३ बेरकपीणं । ४ जिणकप्पिणो कस्स वि -साहेजं जेच्छंति अस्रो एगम्रा विहरंति ति । ५ 'गिहत्य' ।

साइजाइ ॥ ७४७ ॥ जे भिक्ख् मिहिचत्यं परिहेइ परिहेंतं वा साइजाइ ॥ ७४८ ॥ जे भिक्ख गिहिणिसेजं वाहेइ बाहेंतं वा साइजइ ॥ ७४९ ॥ जे भिक्ख गिहिते-इच्छं करेड़ करेंतं वा साइजाइ ॥ ७५० ॥ जे मिक्खू पुराकम्मकढेण हत्थेण वा भत्तेण वा द[व्वि]व्वीएण वा भायणेण वा असणं वा ४ पिडम्गाहेइ पिडम्गाहेतं वा साइजइ ॥ ७५१ ॥ जे भिनन्त् गिहत्थाण वा अष्ण(उ)तित्थियाण वा सीओदगपरि-भोगेण हत्येण वा मत्तेण वा दव्वीएण वा भायणेण वा असणं वा ४ पहिस्गाहेड पर्डिमगाहेंतं वा सार्ज्ज ॥ ७५२ ॥ जे भिक्ख वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्पलाणि वा पहलाणि वा उज्झराणि वा णिज्झराणि वा वाबीणि वा पोक्खराणि वा दीहि-याणि वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंधारेह अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ ७५३ ॥ जं भिक्ख कच्छाणि वा महणाणि वा णूमाणि वा वणाणि वा वणविद्रमाणि वा पञ्चयाणि वा पञ्चयविद्-ग्गाणि वा चक्कुदंसणपिखयाए अभिसंधारेड अभिसंधारेतं वा साइजह ॥ ७५४ ॥ जे भिक्ख गामाणि वा णगराणि वा खेडाणि वा कव्यडाणि वा महंबाणि वा दोणमुहाणि वा पर्रणाणि वा आगराणि वा संवाहाणि वा संव्यवसाधि वा चक्छ[हं]-दंसणपिड्याए अभिसंघारेइ अभिसंघारेंतं वा साइज्जर ॥ ७५५ ॥ जे भिक्ख गाममहाणि वा णगरमहाणि वा खेडमहाणि वा कब्बडमहाणि वा मडंबमहाणि वा दोणमहमहाणि वा पर्यमहाणि वा आगरमहाणि वा संवाहमहाणि वा सम्मिवंस-महाणि वा चक्खुदंसणपडिमाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइजाइ ॥ ७५६ ॥ जे भिक्ष गामबहाणि वा णगरबहाणि वा खेडबहाणि वा कन्बडवहाणि वा मसंबवहाणि वा दोणमुद्धवहाणि वा पर्यणवहाणि वा आगरवहाणि वा संवाहबहाणि वा संणिवेसवहाणि वा चक्खदंसणपिडयाए अभिसंघारेह अभिसंघारेतं वा साइजङ् ॥ ७५० ॥ जे भिक्ख गामपहाणि वा णगरपहाणि वा खेडपहाणि वा कव्यडपहाणि वा मडंबपहाणि वा दोणमुहपहाणि वा पष्टणपहाणि वा आगरपहाणि वा संवाहपहाणि वा सिणवेसपहाणि वा चक्छदंसणपिडयाए अभिसंधारेड अभिसंघारेतं वा साइजड ॥ ७५८ ॥ जे मिक्स गामदाहाणि वा जाव सण्णिवेसदाहाणि वा चक्ख्यदंसणपिड-याए अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा साइजाइ ॥ ७५९ ॥ जे भिक्क आसकरणाणि वा इत्यिकरणाणि वा उट्टकरणाणि वा गोणकरणाणि वा महिसकरणाणि वा स्यरक-रणाणि वा चक्खर्रसणपिंदगए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइजइ ॥ ५६० ॥ जे भिक्ख आसज्जदाणि वा हत्यिज्जदाणि वा उद्देशकोण वा गोणजुद्धाणि वा महिसज्ज्ञाणि वा स्यरज्ज्ञाणि वा चक्छदंसणपरियाए अभिसंशारेड अभिसंधारेतं

वा साइज्जइ ॥ ७६१ ॥ जे भिक्क्ष् उज्जृहिय[ह्या]ठाणाणि वा हयजूहियठाणाणि वा गयज्ञहियठाणाणि वा चक्खदंसणपडियाए अभिसंधारेड अभिसंधारेतं वा साहजाड ॥ ७६२ ॥ जे भिक्न अ(भिसे)म्घायठाणाणि वा अक्खाइयठाणाणि वा माणुम्मा-णियठाणाणि वा महया हयणद्वगीयवाइयतंतीतलतालनुडियपदुप्पवाइयठाणाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ ७६३ ॥ जे भिक्ख् बहुकम्माणि वा चित्तकम्माणि वा (लेवकम्माणि वा) पोत्थकम्माणि वा दंतकम्माणि वा मणिकम्माणि वा सेलकम्माणि वा गंठिमाणि वा वेढिमाणि वा प्रिमाणि वा संघाइमाणि चा पत्तच्छेजाणि वा वाहीणि वा वेहिमाणि वा चक्खदंसण-पिडियाए अभिसंघारेंड अभिसंघारेंतं वा साइजड ॥ ७६४ ॥ जे भिक्क डिम्बाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगा-माणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा चक्खुदंसणपडियाए अभिसंघारेड अभि-संघारेतं वा साइजाइ ॥ ७६५ ॥ जे भिक्ख विस्वकृतेसु महस्सवेसु इत्बीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मिष्मिमाणि वा उहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकि-याणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा णचंताणि वा इसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विउलं असणं वा ४ परिभायंताणि वा परिभंजंताणि वा चक्खुदंसण-पिंडियाए अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा साइजाइ ॥ ७६६ ॥ जे भिक्ख इहलोइएस बा रुवेन परलोइएस वा रुवेस दिदेस वा रुवेस अदिदेस वा रुवेस सएस वा रुवेस असुएसु वा रूबेसु विण्णाएसु वा रूबेसु अविण्णाएसु वा रूबेसु सजाइ रजाइ गिजनाई अज्होवबज्जइ सर्जतं रर्जतं गिज्हांतं अज्होबवउ(जमाणं)जंतं वा साइज्जइ ॥ ७६७ ॥ जे भिक्ख पढमाए पोरिसीए असणं वा ४ पडिस्माहेत्रा पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेड उबाइणावेंतं वा साइज्ड ॥ ७६८ ॥ जे भिक्ख परं अद्धजीयणमेराओ असर्ण वा ४ उबाइणावेड उबाइणावेंतं वा साइजाड ॥ ७६९ ॥ जे भिक्ख दिया गोमयं पहिम्मा-हेता दिया कार्येर वर्ण आलिंपेज वा विलिंपेज वा आलिंपंत वा विलिंपंत वा साइनाइ ॥ ७७० ॥ जे भिक्स दिया गोमयं पडिग्गाहेता रति कार्यस वर्ण आलिंपेज वा विलिंपेज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइजह ॥ ७७१ ॥ जे भिक्ख रित गोमयं पडिस्माडेता दिया कार्यसि वर्ण आलिपेज वा विलिपेज वा आर्लिपंतं वा विकिपंतं वा साइजाइ ॥ ७७२ ॥ जे मिक्ख् रतिं गोमयं पडिग्गाहेता रति कार्यस वर्ण आलियेज वा बिलियेज वा आलियंत वा विलियंत वा साइ-जह ॥ ७७३ ॥ जे मिक्स दिया आलेक्णजायं पिकन्नाहेता दिया कामंसि वर्ण आलिपेज का बिलिपेज वा आलिपंत वा बिलिपंत वा साइजार ॥ ५५४ ॥

जे मिक्ख दिया आलेक्णजायं पिडागाहेता रित कायंसि वणं आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपंतं वा विलिपंतं वा साइजइ ॥ ७०५ ॥ जे मिक्ख रित आलेक्णजायं पिडागाहेता दिया कायंसि वणं आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपंतं वा विलिपंतं वा साइजइ ॥ ७०६ ॥ जे भिक्ख रित आलेक्णजायं पिडागायं वा विलिपंतं वा साइजाइ ॥ ७०० ॥ जे भिक्ख अण्याविष्ठण वा गारित्यण्य वा उपिडागायं वा साइजाइ ॥ ७०० ॥ जे भिक्ख इमाओ पंच महण्णवाओ महाणाईओ उिद्दाओं गणियाओ विज्याओं अंतो मासस्स दुक्खतों वा तिक्खतों वा उत्तरह वा संतरह

उज्झयणे बारसमो उद्देसो समसो ॥ १२ ॥ तरहमो उद्देसो

वा उत्तरंतं वा संतरंतं वा साइज्जइ, तंजहा-गंगा जडणा सरक एरावई मही। तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उ[अणु]ग्वाइयं॥ ७८०॥ णिसीह-

जे भिक्ख अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेजं वा अणिसेजं वा णिसीहियं वा चेएड चेएंतं वा साइज्रह ॥ ७८१ ॥ जे भिक्क सिमिन्दाए पढवीए ठाणं वा … साइजइ ॥ ७८२ ॥ जे भिक्खु महियाकडाए पुढवीए ठाणं वा ''साइजड् ॥ ७८३ ॥ जे भिक्ख् ससरक्खाए पुढवीए ठाणे वा ...साइज्जइ ॥ ७८४ ॥ जे भिक्ख चित्तमंताए पुरुवीए ठाणं वा ...साइजाइ ॥ ७८५ ॥ जे भिक्ख चित्तमंताए सिलाए ठाणं वा '''साइजइ ॥ ७८६ ॥ जे भिक्खू वित्तमंताए लेखए ठाणं वा ''' साइजाइ ॥ ७८७ ॥ जे भिक्ख कोलावासंसि वा दास्य जीवपइद्विए सअंडे सपाणे सबीए सहिरए सओस्से सउदए सउत्तिगपणगदगम[ही]हियमक्दासंताणगीस ठाणी वा ''साइजाइ ॥ ७८८ ॥ जे भिक्ख थूणेसि वा गिहेलुर्यसि वा उसु[का] यालंसि वा काम-जलंसि वा दुम्बद्धे दुष्णिक्सिते अणिकंपे चलाचले ठाणं वा ''साइजाइ ॥ ७८९ ॥ जे भिक्स कुलियंसि वा भितिसि वा सिलंसि वा लेळारि वा अंतरिक्खजायंसि वा दुन्बद्धे दुण्णिक्सिते अणिकंपे चलाबले ठाणं दा '''साइजाइ ॥ ७९० ॥ जे मिक्स खंघंसि वा फलिहांसे वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्म-तलंभि वा दुब्बद्धे दुण्णिक्खते अणिकंपे चलाचले ठाणं वा ...साइजद ॥ ७९१ ॥ जे भिक्ख अण्याउत्थियं वा गारत्थियं वा सिप्पं वा सिलोगं वा अद्वावयं वा सक्टरगं वा हुर्गगोगहंसि वा सलाहत्ययंसि वा सिक्खावेइ सिक्खावेंतं वा साइज्ड ॥ ७९२ ॥ जे भिक्स अण्यतिवर्ध वा गारिस्थयं वा आगार्ड वयह वर्मतं वा साइज्जड

॥ ७९३ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा फरुसं वयह वयंतं वा माइजङ् ॥ ७९४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा आगाढं फरुसं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥ ७९५ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा अण्णयरीए असा-सायणाए अचासाएइ अचासाएंतं वा साइजद् ॥ ७९६ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्य-याण वा गारित्ययाण वा कोउगकम्मं करेड करेंतं वा साइजड ॥ ७९७॥ जे भिक्ख अण्ण उत्थयाण वा गारत्थियाण वा भूइकम्मं करेइ करेंतं वा साइजइ ॥ ७९८ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा परिणं करेड करेंते वा साइज्जइ ॥ ७९९ ॥ जे मिक्ख् अकाउत्थियाण वा गार्रात्थयाण वा परिणा-पर्सिणं करेंड् करेंतं वा साइजाइ॥ ८००॥ (जे ...पसिणं कहेंड् कहेंतं ...पसि-णापसिणं ...) जे भिक्ख अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा तीयं निर्मित्तं क(हे)रेड करेंतं वा साइजइ ॥ ८०९ ॥ (...पद्भप्पणं ... आगमिस्सं ...) जे भिक्ख अण्णजित्ययाण वा गारित्ययाण वा लक्खणं करेड करेंतं वा साइज्जड ॥ ८०२ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारिश्याण वा वंजणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥ ८०३ ॥ जे भिक्ख अण्णजित्ययाण वा गारत्थियाण वा सुमिणं करेड़ करेंतं वा साङ्ब्रह् ॥ ८०४ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण बा विजं परंजइ परंजंतं वा साइजड ॥ ८०५ ॥ जे भिक्ख अष्णउतिथयाण वा गारित्ययाण वा मंतं परंजह परंजंतं वा साइजह ॥ ८०६ ॥ जे मिक्स भण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा जोगं परंजइ परंजंतं वा साइजइ ॥ ८०७ ॥ जे मिक्स अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा मर्गा वा पवेएइ संधि वा पवेएइ (मग्गाओ वा संधि पवेएइ) संधीओ वा मग्गं पवेएैंड पवेएंतं वा साइज्जइ ॥ ८०८ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा घाउं प्रवेएइ पवेएंतं वा साइजाइ ॥ ८०९ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थियाण वा गारत्यियाण वा णिहिं पवेएइ पवेएंतं वा साइखाइ ॥ ८९० ॥ जे भिक्ख मत्तर अ(प्पा)ताणं देहइ देहंतं वा (फ्लोएइ फ्लोएंतं वा) साइज्जइ ॥ ८११ ॥ जे मिक्ख् अहाए अप्पाणं देहइ देहंतं वा साहजाह ॥ ८१२ ॥ जे भिक्ख असीए अप्पाणं देहइ देहंतं वा साइजइ ॥ ८१३ ॥ जे मिक्स मणीए अप्पाणं देहड देहंतं वा साइजइ ॥ ८१४ ॥ जे भिक्ख् कुंडपाणिए अप्पाणं देहह देहंतं वा साइजह ॥ ८१५ ॥ जे भिक्ख् तेहे अप्पाणं देहुइ देहंतं वा साहज्जइ ॥ ८१६ ॥ जे भिक्ख सप्पिए अप्पाणं देहह देहंतं वा साइजाइ ॥ ८१७ ॥ जी मिक्ख फाणिए अप्पाणं देहह देहंतं वा

९ फुडीकरणमेगस्सायारविद्वयस्यकः विरियञ्जायणास्रो णायन्वं ।

साइज्जइ ॥ ८१८ ॥ जे भिक्ख वसणं करेड करेतं वा साइज्जइ ॥ ८१९ ॥ जे भिक्ख विरेयणं करेड करेंतं वा साइजाइ॥ ८२०॥ जे भिक्ख वमणविरेयणं करेइ करेंते वा साइजाइ ॥ ८२१ ॥ जे भिक्ख अरोगियपडिकम्मं करेइ करेंते वा साइज्जइ ॥ ८२२ ॥ जे भिन्नव् पासत्यं वंदह वंदंतं वा साइज्जइ ॥ ८२३ ॥ जे मिक्ख पासत्यं पसंसइ पसंसंतं वा साइजाइ ॥ ८२४ ॥ जे भिक्ख कुरीलं वंदइ वंदंतं वा साइजाइ ॥ ८२५ ॥ जे भिक्षा कसीलं पसंसद पसंसंतं वा माइजाइ ॥ ८२६ ॥ जे भिक्ख ओयण्णं वंदइ वंदंतं वा साइजाइ ॥ ८२७ ॥ जे भिक्ख् ओसण्णं पसंसद पसंसंतं वा साइजाइ ॥ ८२८ ॥ जे भिक्ख संसत्तं वंदह वंदंतं वा साइजङ् ॥ ८२९ ॥ जे भिक्तु संसत्तं पसंसड पसंसंतं वा साइजङ् ॥ ८३० ॥ जे भिक्क नितियं वंदइ वंदंतं वा साइजड़ ॥ ८३१ ॥ जे भिक्क नितियं पसंसइ पर्संतं वा साइजइ ॥ ८३२ ॥ जे भित्रख् काहियं वंदइ वंदंतं वा माइजइ ।। ८३३ ॥ जे भिक्ख काहियं पसंसड पसंसंतं वा साइजड ॥ ८३४ ॥ जे भिक्ख पामणियं वंदइ वंदंतं वा साइजद् ॥ ८३५ ॥ जे भिक्ख पासणियं पसंमद पसंसंतं वा माइजइ ॥ ८३६ ॥ जे भिक्खू मामगं वंदह वंदंनं वा साइजइ ॥ ८३७ ॥ जे भिक्ख सामगं पसंसइ पसंसंनं वा साइजड ॥ ८३८ ॥ जे भिक्ख संपयारियं वंदइ वंदंतं वा साइजाइ ॥ ८३९.॥ जे मिक्खू संपसारियं पसंसइ पसंसंतं वा साइजाइ ॥ ८४० ॥ जे भिक्क घा(इ)ईपिंड भंजद भंजतं वा साइजाइ ॥ ८८१ ॥ जे भिक्क दूईपिंड भुंजइ भुंजतं वा साइजड़ ॥ ८४२ ॥ जे भिक्क णिमित्तपिंड मुंजइ भुंजतं वा साइजइ ॥ ८४३ ॥ जे भिक्ख आजीवियपिंड भुंजइ भुंजतं वा साइजाइ ॥ ८४४ ॥ जे भिक्क वर्णामगर्पिडं भुंजह भुंजतं वा साइजाइ ॥ ८४५ ॥ जे भिक्क तिगिच्छापिंडं भुंजइ भुंजतं वा साइजाइ ॥ ८४६ ॥ जे भिक्क को(ह)षपिंह भुंजह भुंजतं वा साइजह ॥ ८४७ ॥ जे भिक्ख माणपिंहं भुंजह भुंजतं वा साइजइ ॥ ८४८ ॥ जे भिक्ख मायापिंड भुंजइ भुंजतं वा साइजड ॥ ८४९ ॥ जे भिक्ख लोमपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइजइ ॥ ८५० ॥ जे भिक्ख विज्ञापिंडं भुंजह भुंजतं वा साइजह ॥ ८५१ ॥ जे भिक्क मंतर्पिंडं भुंजह भुंजतं वा साइजाइ ॥ ८५२ ॥ जे भिक्ख चुण्णयपिंड मुंजह मुंजतं वा साइजाइ ॥ ८५३ ॥ जे भिक्स अंतदाणपिंडं अंजह अंजंतं वा साइजाइ ॥ ८५४ ॥ जे भिक्ख जोगपिंड भुंजइ भुंजतं वा साइजइ। तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारहाणं उन्धाइवं ॥ ८५५ ॥ णिसीहऽज्ययणे तेरहमो उद्देसो समसो ॥ १३ ॥

चउइसमो उद्देसी

जे भिक्ख् पडिम्गहं किणइ किणावेइ कीयमाहहु दिज्जमाणं पडिम्माहेह पष्टि-म्गाहेतं वा साइजड ॥ ८५६॥ जे भिक्ख् पडिम्गहं पामिचेइ पामिचावेइ पामित्रमाहरू दिजमाणं परिग्गाहेर परिग्गाहेतं वा साइजइ ॥ ८५७॥ जे भिक्ख् पडिम्महं परियद्देइ परियद्वावेइ परियद्वियमाहृ दिज्जमाणं पडिम्माहेइ पडिम्माहेतं वा साइजाइ ॥ ८५८ ॥ जे भिक्ख पडिम्गहं अ(च्छि)च्छेजं अणिसिद्धं अभिहड-माहट दिष्टि जमाणं पटिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइजइ ॥ ८५९ ॥ जे मिक्स् अइरेगपडियगहं गणि र्राइसिय गणि समुहिसिय तं गणि अणापच्छिय अणामंतिय अण्णमण्णस्स वियर्इ वियर्तं वा साइजाइ ॥ ८६० ॥ जे भिक्ख् अइरेगं पहिम्गहं खुइगम्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्यच्छिण्णस्स अपायच्छि-णास्स अणामाञ्चिष्णस्म अकृष्णच्छिण्णस्स अणोद्रच्छिण्णस्य सत्तस्स देइ देंतं वा साइजाड ॥ ८६१ ॥ जे भिक्क अडरेगं पहिन्गहं खुडुगस्स वा खुडियाए वा थेर-गस्स वा थेरियाए वा [अ]हत्थच्छिण्णस्स [अ]पायच्छिण्णस्स [अ]णासाछिण्णस्स [अ]कृष्णि च्छिष्णस्स [अण]ोद्वच्छिष्णस्य असकस्स न देइ न देंतं वा साइजङ ॥ ८६२ ॥ जे भिक्ख पष्टिमाहं अणलं अधिरं अधुवं अधारणिजं धरेड धरेंतं वा साइजाइ ॥ ८६३ ॥ जे भिक्क्षु पडिमाहं अलं थिरं ध्रवं धारणिजं न धरेड न धरेंतं बा साइजाइ ॥ ८६४ ॥ जे भिक्ख वण्णमंतं पहिम्महं विवण्णं करेइ करेंतं वा साइ-जाइ ॥ ८६५ ॥ जे भिक्ल विवण्णं पहिरगैहं वण्णमंनं करेड़ करेंतं वा साइजाइ ॥ ८६६ ॥ ने भिक्ख णो णवए मे परिग्गहे लद्धेनिकटु तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा सक्सेंतं वा भिलिंगेतं वा साइजइ ॥ ८६७ ॥ जे भिक्ख् णो णवए में पडिस्महे लद्धेत्तिकृष्ट् लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उच्छोलेख वा उव्वलेख वा उच्छोलेतं वा उव्वलेतं वा साइखइ ॥ ८६८ ॥ जे भिक्ख् णो णवए मे पिडम्महे लहेतिकह सीओद्गवियडेण वा उसिमोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पंघोएज वा उच्छोलें वा पंघोएंतं वा साइजंड ॥ ८६९ ॥ जे भिक्ल णो जनए मे पहिमाहे उद्धेतिकह बहु(दि)देवसिएण [वा] तेहेण वा घएण बा णवणीएण वा मक्खेज वा भिल्पिक वा मक्खेतं वा मिल्पितं वा साइजह ॥ ८७० ॥ जे भिक्ख णो णवए मे पहिमाहे ट्येतिकट्ट बहुदेवसिए(णं)ण टोद्रेण वा काकेण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लेखेन वा उन्बलेन वा उल्लेखेन वा उन्बलेन वा साइजाइ ॥ ८७१ ॥ जे भिक्ष्यू गो णवए मे पहिन्गहे लद्धेतिकह बहदेवसिएण

१ सोभाणिभित्तं ।

५७ मुत्ता०

सीओदगिवयडेण वा उसिणोदगिवयडेण वा उच्छोलेज वा प्रधोएज वा उच्छोलेतं वा पथोएंतं वा साइज्जइ ॥ ८७२ ॥ जे भित्रखु दुब्भिगंधे मे पडिम्गहे लडे तिकृद् तेहिण वा घएण वा णवणीएण वा सक्खेज वा भिल्पिज वा सक्खेंने वा भिल्पित बा साइजह ॥ ४०३ ॥ जे भिक्ख दुब्भिगंधे में पढिगाहे लहे तिकह लोहेण बा ककेण वा पुष्णेण वा वष्णेण वा उल्लेखेज वा उब्बलेज वा उल्लेखें वा उब्बलेंत वा साइज्जरु ॥ ८५४ ॥ जे मिक्ख् दुब्भिगंधे मे पडिग्गहे लढेशिकट सीओदगवियक्षेण वा उसिगोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा प्रधोएज वा उच्छोलेंतं वा प्रधोएंतं वा साइजाइ ॥ ८७५ ॥ जे भिक्न्यू दुब्भिगंधे में पडिग्गहे लद्वेत्तिकृ बहुदेवसिएण तेंह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेंतं वा भिलिगेंते वा माइजाइ ॥ ८७६ ॥ जे भिक्ख् दुब्भिगंधे में पीडगाहे रुद्धेत्तिकहु बहु-देवसिएण लोद्रेण वा काकेण वा चण्णेण वा वण्णेण वा उल्लेखन वा उल्बलेखन वा उल्लोरेंनं वा उच्चरेंतं वा साउजह ॥ ८७० ॥ जे भिक्खू दुद्भिगंघे मे पहिसाहे लद्धेतिकह बहदेवसिएण सीओदगवियहेण वा उसिणोटगवियहेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोटेंतं वा पधोएंतं वा माइजइ ॥ ८०८ ॥ जे सिक्ख अणंत-रहियाए पढ़बीए दुब्बद्धे दुष्णिकिस्ते अणिकंपे चलाचले पहिस्महं आयावेज वा पयावेज वा आयार्वेतं वा पयार्वेतं वा साइजइ ॥ ८७९ ॥ जे भिक्क ससिणिद्वाए पुष्ठवीए द्व्यदे दुण्णिक्सिते अणिकंपे चलाचले पिडिगाई आयावेज वा प्यावेज वा आयार्वेतं वा पयार्वेतं वा साइज्जड ॥ ८८० ॥ जे भिक्ख समुरक्खाए पुढवीए दुष्वदे दुष्णिक्सित अणिकंपे चलाचले पिरागहं आयावेज वा पयावेज वा आयावेतं वा पयावेंतं वा साइजाइ ॥ ८८१ ॥ जे भिक्ख महियाकडाए पुटवीए वुञ्बद्धे दिष्णिक्सिते आणिकंपे चलाचले पहिमाहं आयावेज वा प्यावेज वा आयावेतं वा पयार्वेनं वा साइजाइ ॥ ८८२ ॥ जे मिक्खू चित्तमंताए पुरवीए दुर्बिंधे दुण्णिक्सिते अणिकंपे चलाचले परिमाहं आयावेज वा परावेज वा आयावेतं वा परावेतं वा साइजाइ ॥ ८८३ ॥ जे भिक्ख चित्तमंताए सिलाए दुव्बंचे दुण्णिक्सिते अणिकंपे चलाचले पहिरगई आयावेज वा प्यावेज वा आयावेंते वा प्यावेते वा साइजड ॥ ८८४ ॥ जे मिक्स चित्तमंताए लेलूए दुन्बंधे दुष्णिक्खिते अणिकंपे चलाचले पहिन्गहं आयावेज वा प्यावेज वा आयावेंतं वा प्यावेतं वा साइजइ ॥ ८८५ ॥ जे भिक्ख कोळावासंसि वा दारुए जीवपइद्विए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओरसे सउदए सउतिगमणगदगमहियमहासंताण(ए)मंसि दुब्बंधे दुण्णिकिसते अणिकंपे चलानले पृष्टिमाइं आगावेज वा प्यावेज वा आगावेतं वा प्यावेतं वा

साइजइ ॥ ८८६ ॥ जे मिक्स थूर्णांस वा गिहेळुयंसि वा उत्तुयालंसि वा का [झा]म[व]-जलंसि वा दुव्बद्धे दुण्णिविस्वते अणिकंपे चलाचले परिमाहं आयावेज वा प्रयावेज वा आयार्वेतं वा पयार्वेतं वा साइजइ ॥ ८८७॥ जे भिक्ख कलियंसि वा भितिसि वा सिलंसि वा टेटुंसि वा अंत(रि)छिक्खजायंसि वा दुब्बद्धे दुण्णिक्सिसे अणिकंपे चलाचले पहिन्महं आयावेज वा प्यायेज वा आयार्वेतं वा प्यावेतं वा साइजाइ ॥ ८८८ ॥ जे भिक्ख् खंधंसि वा फलहंसि वा मंत्रंसि वा मंद्रवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा दुम्बद्धे दुण्णिक्सिसे अणिकंपे चलाचले परिमाहं आयावेख वा पयावेख वा आयार्वेतं वा पयार्वेतं वा साइजइ ॥ ८८९ ॥ जे भिक्क पडिग्गहाओ पुढवी-कायं णीहरइ णीहरावेइ णीहरियं आह्र्य देजमाणं पिडम्गाहेइ पिडम्गाहेतं वा साइजह ॥ ८९० ॥ जे भिक्ख् पिडम्गहाओ आउकार्य णीहर्द णीहराके णीहरियं आहर देजमाणं पडिस्माहेर पडिस्माहेनं वा साङ्जइ ॥ ८९१ ॥ जे भिक्ख् पडिस्महाओ तेउकार्य णीहरइ णीहरावेड णीहरियं आहृष्ट देजमाणं परिकाहिइ परिकाहितं वा साइजाइ ॥ ८९२ ॥ जे भिक्ख पहिमाहाओं कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्फाणि वा फलाणि वा णीहरइ जीहरावेड जीहरियं आहर देजमार्ण पडिस्साहेड पंडिरगाहेंतं वा साइज्जइ ॥ ८९३ ॥ जे भिक्ख पंडिरगहाओ ओसहिबीयाणि णीहरह णीहरावेइ जीहरियं आहर् देखमाणं पिरमाहेइ पिरमाहेंतं वा साइजाइ ॥ ८९४॥ जे भिक्क पडिग्गहाओ तसपाणजाई जीहरइ जीहरावेइ जीहरियं आहरू देजमाणं पडिम्गाहेइ पडिम्गाहेंतं था साइजइ॥ ८९५॥ जे भिक्ख पडिम्गह्मं कोरेइ कोरानेइ कोरियं आहट्ट देप्जमाणं पांडग्गाहेइ पांडग्गाहेतं वा साइज्य ॥ ८९६ ॥ जे भिक्ख णायमं वा अणायमं वा उवासमं वा अणुवासमं वा गामंतरंसि वा गाम-पहुंतरंसि वा पहिग्गहं ओभासिय २ जायह जायंतं वा साइजाइ ॥ ८९७ ॥ जे भिक्ख णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा परिसामज्ज्ञाओ उद्भवेता पडिस्पहं भोभासिय २ जायह जायतं वा साइजह ॥ ८९८॥ जे भिक्क परिग्गहणीसाए उडुक्डं वसइ वसंतं वा साइजार ॥ ८९९ ॥ जे भिक्ख पहिग्गहणीसाए वासावासं वसइ वसंतं वा साइजइ। तं सेवमाणे आवजइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उग्याइयं ॥ ९०० ॥ णिसीहऽज्ययणे चउइसमो उद्देसो समरो ॥ १४॥

पण्णरसमो उदेसो

जे भिक्ख् भिक्ख्णं आगाउं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥ ९०१ ॥ जे भिक्ख् फरसं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥ ९०२ ॥ जे भिक्ख् भिक्ख्णं आगाउं फरसं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥ ९०३ ॥ जे भिक्ख् भिक्ख्णं अण्ययरीए अणासायणाए

अबासाएइ अबासाएंतं वा साइज्जइ ॥ ९०४ ॥ जे भिक्खू सचित्तं अंबं भुंजइ भुंजंतं वा साइजाइ॥ ९०५॥ जे भिक्खू सचित्तं अंधं वि(इं)इसइ विडसंतं वा साइजाइ ॥ ९०६ ॥ जे भिक्स् सचित्तपइद्वियं अवं भुंजइ भुंजतं वा साइज्जइ ॥ ९०७ ॥ जे भिक्ख् सचित्तपहट्टियं अंबं विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥ ९०८ ॥ जे भिक्ख् सचित्तं अंबं वा अंबपे(सियं)सि वा अंबभि(निं)तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंवचोयगं वा भंजइ भंजतं वा साइजड ॥ ९०९ ॥ जे मिक्ख सचितं अयं वा अंव-पेसि वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचोयगं वा विडसइ विडसंतं वा साइजड़ ॥ ९१० ॥ जे भिक्क सचित्तपइड्रियं अंबं वा अंवपेसिं वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंबडालगं वा अंबचीयगं वा भुंजइ भुंजतं वा साइजाइ ॥ ९११ ॥ जे भिक्ख सचित्तपदृद्धियं अंबं वा अंबपेसि वा अंबभित्तं वा अंबसालगं वा अंब-डालगं वा अंबचोयगं वा विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥ ९१२ ॥ जे भिक्ख् अण्ण अस्थिएण वा गारिश्वाएण वा अपपो पाए आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेंतं वा पमजावेंतं वा गाइजइ ॥ ९१३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारित्थएण वा अप्पणी पाए संवाहावेज वा पिलमहावेज वा संवाहावेतं वा पिल-महावैतं वा साइजाइ ॥ ९१४ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी पाए तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खावेज वा शिलिंगावेज वा मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंनं वा साइजह ॥ ९१५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारिष्यएण वा अप्पणी पाए लोद्धेण वा ककेण त्रा उल्लोलावेज वा उम्बद्धावेज वा उल्लोकार्वेतं वा उव्बद्धार्वेतं वा साइजइ ॥ ९१६ ॥ जे मिक्स अण्णउत्थिएण वा गार्तियएण वा अप्पणो पाए सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण वा उच्छोला-वेज वा पर्धावावेज वा उच्छोलावेतं वा पर्धावावेतं वा साइजइ ॥ ९१७ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी पाए फुमावेज वा रयावेज वा फुमार्वेतं वा रयार्वेनं वा साइजाइ ॥ ९१८ ॥ जे मिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थ-एण वा अप्पणी कार्य आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेतं वा पमजावेतं वा साइज्जइ ॥ ९१९ ॥ जे मियन्तु अण्णजित्यएण दा गारित्यएण दा अप्पणो कार्य संबाहावेज वा पलिमहावेज वा संवाहावेंतं वा पलिमहावेंतं वा साइजाइ ॥ ९२० ॥ जे भिक्ख अण्णडित्यएण वा गारित्यएण वा अप्पणी कार्य तेक्केण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खावेज वा भिलिंगावेज वा मक्खावेतं वा मिलिंगावेतं वा साइ-जह ॥ ९२१ ॥ जे भिक्ख अण्णजित्यएण वा गारत्यिएण वा अप्पणी कार्य लोदेण वा क्क्रेण वा उन्नेलविज वा उन्नहाबेज वा उन्नेलवित वा उन्नहावेतं वा साइजह

॥ ९२२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारित्थएण वा अप्पणी कार्य सीओदग-विगडेण वा उसिणोदगविगडेण वा उच्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोलावेतं वा पधीवार्वेतं वा साइजाइ ॥ ९२३ ॥ जे भिक्खू अण्णडित्थएण वा गारित्यएण वा अप्पणी कार्य फुमावेज वा रयावेज वा फुमावेतं वा स्यावेतं वा साइज्जड ॥ ९२४ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारिक्षएण वा अप्पणो कार्यसि वर्ण आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेतं वा पमजावेतं वा साइजइ ॥ ९२५ ॥ जे भिक्स अण्णरुत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कार्यस वर्ण संवाहावैज्य वा पिलमहावेज वा संवाहावेंतं वा पिलमहावेंतं वा साइजाइ ॥ ९२६ ॥ जे भिक्ख अण्ण उत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कार्यसि वर्ण तेह्रेण वा घएण वा णवणी-एण वा मक्कावेज वा मिलिंगावेज वा मक्कावेंतं वा मिलिंगावेंतं वा साहजैह ॥ ९२ > ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी कार्यसि वणं लोदेण वा कक्केण वा उल्लेलावेज वा उच्चहावेज वा उल्लेलावेतं वा उच्चहावेतं वा साइजड ॥ ९२८ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कार्यस वर्ण सीओदर्गावयदेण वा उसिणोदगवियडेण वा उन्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोळावेंतं वा पधोवावेंतं वा साइजाइ ॥ ९२९ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारित्थएण वा अप्पणो कार्यसि वर्ण फ्रमावेज वा रयावेज वा फ्रमावेंतं वा रयावेंतं वा साइजाइ ॥ ९३० ॥ जे मिक्ख अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कार्यस गंडं वा पिलगं वा अरड्यं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदावेज वा विच्छिदावेज वा अच्छिदावेतं वा विच्छिदावेतं वा साइजंड ॥ ९३१ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्यिएण वा गारियएण वा अप्पणो कार्यस गंडं वा पिलगं वा अरहयं वा अंसियं वा भगंदलं वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्यजाएणं अच्छिदाविता विच्छिदाविता एयं वा सीणियं वा णीहरावेज वा विसोहावेज वा णीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा साइज्य ॥ ९३२ ॥ जे भिक्स अण्णउत्यिएण वा गारत्थिएण वा अप्यणो कार्यसि गंडं वा पिलमं वा अरझ्यं वा अंसियं वा मगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्सेणं सत्यनाएणं अच्छिदावेता विच्छिदावेता पूर्यं वा सोमियं वा णीहरावेता विसोहावेता सीओदगविगडेण वा उसिगोदगविगडेण वा उच्छोलावेज वा पंचीयावेज वा उच्छोलावेंतं वा पंचीयावेंतं वा साइजह ॥ ९३३ ॥ जे मिक्स् अण्णसिक्षण वा गारिक्षण वा अप्पणी कार्यसि गंडं वा पिछमं वा अरहमं वा अंतियं वा मर्गदर्लं वा अण्णयरेणं तिक्सेणं सस्यजाएणं अध्विदावेता विच्छित्।वेता प्तं ना सोमिरं वा जीहरावेता विसोहावेता सीओदगवियदेण वा उसिजोदगवियदेण

वेज वा उच्छोलावेंतं वा पश्चोबावेंतं वा साहजाह ॥ ९४५ ॥ जे मिक्सू अण्णतिकाण

वा गारत्यिएण वा अप्पणी दंते फुमावेज वा रयावेज वा फुमावेंतं वा रयावेंनं वा साइजइ ॥ ९४६ ॥ जे भिक्ख अण्णउत्थिएण वा गार्थिएण वा अप्पणो उट्टे आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेंनं वा पमजावेंनं वा साइजइ ॥ ९४७॥ जे भिक्ख अण्णरियएण वा गारियएंण वा अप्पणी रहे संवाहावेज वा पिल्महा-वेज वा संवाहावेंतं वा पलिमहावेंतं वा साइजाइ ॥ ९४८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारित्थएण वा अप्पणी उट्टे तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खावेज वा भिलिंगावेज वा मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा साइजइ ॥ ९४९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी उद्रे होद्रेण वा वक्केण वा उल्लोहावेख वा उन्बद्धावेज वा उल्लोलांबेतं वा उन्बद्धावेतं वा साइज्जर् ॥ ९५० ॥ जे भिक्सू अण्णरिक्षण्ण वा गारिक्षण्ण वा अप्पणो उद्वे सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज वा पंघोयावेज वा उच्छोलावेतं वा पंघोयावेनं वा साइजंड ॥ ९५९ ॥ जे भिक्त अण्णउत्यिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी उद्रे फुमावेज वा रयावेज वा फुमार्वेतं वा रयार्वेतं वा साइजइ ॥ ९५२ ॥ जे भिक्ख् अण्णडित्यएण वा गार-त्थिएण वा अप्पणो दीहाई उत्तरोद्धरोमाई कप्पावेज वा संठवायेज वा कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा साइज्जइ ॥ ९५३ ॥ जे मिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारिथएण वा अप्पणो दीहाई अच्छिपताई कप्पावेज वा संठवावेज वा क्रमावेंतं वा संठवावेतं वा माइजाइ ॥ ९५४ ॥ जे भिक्स् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेतं वा पमजावेतं वा साइजइ ॥ ९५५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो अच्छीणि संवाहावेज वा पलिमहावेज वा संवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा साइजइ ॥ ९५६ ॥ जे भिक्ख् अण्णरात्थिएण वा गार् त्थिएण वा अप्पणी अच्छीणि तेह्रेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खावेज वा मिलिंगावेज वा मक्खावेंतं वा मिलिंगावेंतं वा साइजइ ॥ ९५७॥ जे भिक्क अण्यतिवरण वा गारतिवरण वा अप्पणी अच्छीणि लोद्रेण वा क्क्रेण बा उल्लेखका वा उम्बद्दावेज वा उल्लेखकां वा उन्बद्दावेंतं वा साइजद्द ॥ ९५८ ॥ जे भिक्स अण्णाउत्याएण वा गारत्याएण वा अप्पणो अच्छीणि सीओदगबियहेण वा उसिणोदगबियहेण वा उच्छोलावेज वा प्योयावेज वा उच्छोलावेंतं वा पघोयावेंतं वा साइजइ ॥ ९५९ ॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्यिएण वा अप्पणी अच्छीणि फूमावेज वा रयावेज वा फूमावेंतं वा रमावेंतं वा साइज्ज ॥ ९६० ॥ जे भिश्रख अण्याउत्याएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी वीहाई भगगरीमाई कप्पावेज वा संठवावेज वा कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा साहजह

॥ ९६१ ॥ जे भिक्ष अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो दीहाई पासरोमाई कप्पावेज वा संठवावेज वा कप्पावेंने वा संठवावेंते वा साइजड् ॥ ९६२-१॥ ** केसरो-माइं …॥ ९६२-२॥ जे भिक्ख् अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणी अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा णहमलं वा णीहरावेज वा विसोहावेज वा णीहरावेंतं वा विसोहार्वेतं वा साइजाइ॥ ९६३॥ जे भिक्ख् अण्णटिक्षएण वा गारिक्षएण वा अप्पणो कायाओं सेयं वा जाहं वा पंकं दा मलं वा णीहरावेज वा विसोहावेज वा णीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा साइज्जइ ।। ९६४ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा गामाणु-गामं दहजमाणे अप्पणो सीसद्वारियं कारवेइ कारवेंतं वा साइज्जइ ॥ ९६५ ॥ जे भिक्ख आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावहकुलेसु वा परियावसहेसु वा उच्चारपास-वणं परिष्टुवेह परिद्ववेंतं वा साइजाइ ॥ ९६६ ॥ जे भित्रस्तृ उज्जाणंसि वा उज्जाण-गिहंसि वा उज्जाणमालंसि वा णिजाणंसि वा णिजाणगिहंसि वा णिजाणसालंसि वा उच्चारपासवर्ण परिद्ववेइ परिद्ववेंतं वा साइजाइ॥ ९६७॥ जे भिक्क् अर्रेसि वा अञ्चलयंसि वा चरियंसि वा पागार्रांस वा दारेसि वा गोप्रेसि वा उच्चारपासवणं परिद्ववेइ परिद्ववेंनं वा साइज्जइ॥ ९६८॥ जे भिक्क दगंसि वा दगमगंसि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दग[इा]ठाणंसि वा उचारपासवणं परिद्ववेह परिद्ववेंनं वा साइजाइ ॥ ९६९ ॥ जै भिश्रख् सुण्णगिहंसि वा सुण्णसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिष्णसालंसि वा कुडागारीस वा कोह्वागारीस वा उचारपासवणं परिद्ववेड परिट्ववेंनं वा साइजड ॥ ९७० ॥ जे मिक्ख तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तसगिहंसि वा तस-सालंसि या छ्(भ्)सगिहंसि वा छुससालंसि वा उचारपासवणं परिद्ववेड परिद्ववेतं वा साइजड़ ॥ ९७१ ॥ जे भिक्क जाणगिहंसि वा जाणसालंसि वा जुग्गगिहंसि वा जुम्मसालंसि वा जन्वारपासवणं परिद्ववेह परिद्ववेतं वा साइजाइ ॥ ९७२ ॥ जे भिक्ख् पणियसार्केस वा पणियगिष्टंसि वा परियासार्केस वा परियागिष्टंसि वा कुवियसार्केस वा कृषियगिष्टंसि वा उचारपासवणं परिद्रवेड परिद्रवेंतं वा साइजाइ ॥ ९७३ ॥ जे भिक्ख् गोणसाळंसि वा गोणगिहंसि वा महाकु(लसा)ळंसि वा महागिहंसि वा उचार-पासवणं परिद्ववेइ परिद्ववेंतं वा साइजाइ ॥ ९७४ ॥ जे भिक्ख् अण्णरुत्थियस्स वा गारित्थयस्स वा असर्णं वा ४ देइ देंतं वा साहज्जह ॥ ९७५ ॥ जे भिक्ख् पास-त्थस्स अस्। णस्सोणं वा ४ देइ देंतं वा साइजाइ ॥ ९७६ ॥ जे भिक्ख पासत्थस्स असणं वा ४ पिक्छिइ पिक्छितं वा साइज्जइ ॥ ९७७ ॥ जे मिक्क् ओसण्णस्स असणं वा ४ देइ देंते वा साहजाइ ॥ ९७८ ॥ जे शिक्ख ओसण्णस्स असणं वा ४ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइबाइ ॥ ९७९ ॥ जे भिक्ख इसीलस्स असणं वा ४ देइ देंतं वा साइजाइ ॥ ९८० ॥ जे भिक्ख् कुसीलस्स असणं वा ४ पडिच्छइ पिंडेच्छंतं वा साइजाइ ॥ ९८९ ॥ जे भिक्ख णितियस्स असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्ञइ ॥ ९८२ ॥ जे भिक्खू णितियस्स असणं वा ४ पडिच्छड पडिच्छतं वा साइजइ ॥ ९८३ ॥ जे भिक्ख संसत्तस्स असणं वा ४ देइ देंतं वा साइजड ॥ ९८४ ॥ जे भिक्स संसन्तरम् अमर्णं वा ४ पष्टिच्छह पष्टिच्छंतं वा साइजङ ॥ ९८७ ॥ जे भिक्ख अण्णजित्ययस्स वा गारतिययस्स वा वत्यं वा पिडमाहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ देंतं वा साइजाइ॥ ९८६॥ जे सिक्ख पासन्यस्स बत्थं वा ४ देइ देंतं वा साइजइ ॥ ९८७ ॥ जे भिक्ख पासत्थस्स बत्यं वा ४ पिंडच्छड़ पिंडच्छतं वा साइजाइ ॥ ९८८ ॥ जे भिक्ख ओसण्णस्स वत्थं वा ४ देइ देंनं वा साइज्जह ॥ ९८९ ॥ जे भिक्क ओसण्णस्य वत्यं वा ४ पडिच्छह पडिच्छंतं वा साइजाइ ॥ ९९० ॥ जे मिक्ख क़सीलस्म वत्यं वा ४ देड देतं वा साइजाड ॥ ९९१ ॥ जे भिक्ख, ब्रुसीलस्स वत्यं वा ४ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइजइ ॥ ९९२ ॥ जे भिक्ख नितियस्स बत्थं वा ४ देइ देतं वा साइजाइ ॥ ९९३ ॥ जे भिक्ख नितियस्स ब्रायं वा ४ पहिच्छा पहिच्छातं वा साइजाइ ॥ ९९४ ॥ जे भिक्खा संसत्तस्य वत्थं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ ॥ ९९५ ॥ जे भिक्ख् संसत्तस्स वत्थं वा ४ पडिच्छड पडिच्छंतं वा साइजङ् ॥ ९९६ ॥ जे भिक्ख् जायणवर्षं वा णिमं-तणावत्यं वा अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पडिग्गाहेड पडिग्गाहेंनं वा साइजड से य बत्ये चउण्हं अण्णयरे सिया, तंत्रहा-णिचणियंसणिए म्जिलिह जिलिए छण्सविए रायदुवारिए ॥ ९९७ ॥ जे भिक्ख विभसापश्चियाए अप्पणी पाए आमजेज वा पमजोज वा आमर्जतं वा पमजेतं वा साइजह ॥ ९९८ ॥ एवं जाव सीसद्वारियं करेड करेंते वा साइजाड ॥ १०५१ ॥ जे भिक्ख विभसापिडयाए बत्यं वा ४ क्षण्णयरं वा उदगरणजायं घरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥ १०५२ ॥ जे भिक्ख् विभूसा-पिडयाए वर्ष्यं वा ४ अण्ययां वा उवगरणजायं भोवेड भोवेंतं वा साइजाइ । तं सेवमाणे आवज्ञह चाउम्मासियं परिहारहाणं उग्घाइयं ॥ १०५३ ॥ णिसीहऽज्य-यणे पण्णरसमो उद्देसो समस्रो ॥ १५॥

सोलसमो उद्देसो

जे भिक्क् सागारियसेजं अणुपविसह अणुपविसंतं वा साइज्जह ॥ १०५४ ॥ जे भिक्क् स(सी)उदगं सेजं उवागच्छह उवागच्छतं वा साइज्जह ॥ १०५५ ॥ जे भिक्क् सञ्गणिसेजं अणुपविसह अणुपविसंतं वा साइज्जह ॥ १०५६ ॥ जे भिक्क् संचित्तं उच्छुं भुंजह भुंजतं वा साइज्जह ॥ १०५७ ॥ जे भिक्क् संचित्तं

उच्छं विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥ १०५८ ॥ जे भिक्क्स् सचित्तपइड्डियं उच्छुं मुंजह भुंजनं वा साइज्जइ ॥ १०५९ ॥ जे भिक्ख सचितपइद्वियं उच्छं विडसइ विडसंतं वा साइजइ ॥ १०६० ॥ जे भिक्ख् सचित्तं अंतरुच्छ्यं वा उच्छुखंडियं वा उच्छचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ भुंजंतं वा साइजइ ॥ १०६१ ॥ जे भिक्क सचित्तं अंतरुटछुयं वा उच्छुडालगं वा विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥ १०६२ ॥ जे भिक्ख् सचित्तपइद्वियं अंतरुच्छुयं वा ''उच्छु डालगं बा भुंजइ भुंजंतं वा साइजाइ॥ १०६३॥ जे भिक्ख् सन्वित्तपइह्वियं अंतरुच्छुयं वा · · ः उच्छु-डालगं वा विडसइ विडसंतं वा साइजइ ॥ १०६४ ॥ जे भिक्न् आरण्णाणं वण्णंघाणं अठवीजत्तासंप[इ]द्वियाणं असणं वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइजङ ॥ १०६५ ॥ जे भित्रस् आ(अ)रण्ण(य)ाणं वण्णंघाणं अडवीजत्ताओ पडिणियनाणं असणं वा ४ पडिग्गाहेड पढिग्गाहेंतं वा साइजाइ ॥ १०६६ ॥ जे भिक्ख वसु-(बुसि)राइयं अ(बुसि)वसुराइयं वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ १०६७॥ जे भिक्ख अवुसिराइयं वुसिराइयं वयइ वयंतं वा साइजाइ ॥ १०६८ ॥ जे भिक्ख् वुसिराइ-यगणाओ अनुसिराइयं गणं संकमइ संक्रमंतं वा साइजाइ ॥ १०६९ ॥ जे मिक्ख वुगगहवक्कंताणं असणं वा ४ देइ देंतं वा साहजह ॥ १०७० ॥ जे भिक्क् वुगगहव-कंताणं असणं वा ४ पडिच्छइ प**डि**च्छंतं वा माइजइ ॥ १०७१ ॥ जे भिश्ख् वुगाहवक्कंताणं वत्यं वा ४ देइ देंतं वा साइजाइ ॥ १०७२ ॥ जे भित्रस्तू वृगगहव-कंताणं वत्यं वा ४ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइजङ् ॥ १०७३ ॥ जे भिक्स् वुग्गहबक्कंताणं वसहिं देइ देंतं वा साइजइ ॥ १०७४ ॥ जे भिक्ख् वुग्गहबक्कंताणं . बसहिं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्बइ ॥ १०७५ ॥ जे भिक्क् बुमाहक्कंताणं वसिंहें अणुपविसाइ अणुपविसंतं वा साइजाइ ॥ १०७६ ॥ जे भिक्खू वुसाहवर्षाताणं सज्झायं देइ देंतं वा साइजइ ॥ १०७७ ॥ जे भिक्क् वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं पिक्छिह पिक्कितं वा साइजाइ ॥ १०७८ ॥ जे भिक्ख विहं अणेगाहरामणिजं सइ लाढे विहाराए संघरमाणेसु जणवएसु विहारपिडयाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइजङ् ॥ १०७९ ॥ जे मिक्ख् विस्वस्याई दस्यायणाई अणारियाई मिल-क्खूई पर्श्वतियाई सइ लाढे विहाराए संधरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसं-घारेड अभिसंघारेतं वा साइजह ॥ १०८० ॥ जे भिक्ख दुर्गक्कियकुळेड असणं वा ४ पहिरगाहेद परिस्माहेतं वा साइज्यह ॥ १०८१ ॥ जे सिक्ख् दुर्गुछियनुत्वेस वत्यं वा ४ पहिम्गाहेइ पहिम्गाहेतं वा साइजाइ ॥ १०८२ ॥ जे भिक्ख दुगुंछि-यक्लेस बसहि परिमगाहेद परिमगाहेतं हा साइजह ॥ १०८३ ॥ जे सिक्स

दुर्गुष्ठियकुछेपु सज्झायं करेड् करेंतं वा साइज्जइ ॥ १०८४ ॥ जे भिक्ख दुर्गुक्रिय-कुलेस सज्झायं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा साइजड ॥ १०८५ ॥ (…समुद्दिसइ… अणुजाणइ…) जे भिक्ख दुगुंछियकुलेमु सज्झायं वाएड वाएंनं वा साइजड ॥ १०८६ ॥ जे मिक्स् तुगुंक्वियकुलेस सज्झायं पढिच्छड् पहिच्छतं वा साइजड् ॥ १०८७ ॥ (...परियद्धः ..) जे मिक्ख् असणं वा ४ पुढवीए णिक्खिवइ णिक्सिवंतं वा साइज्जड ॥ १०८८ ॥ जे भिक्स् असणं वा ४ संथारए णिक्सिवड णिक्सिवंतं वा साइजाइ ॥ १०८९ ॥ जे भिक्स असणं वा ४ वेहासे णिक्सिवड णिक्सिनंतं वा साइजह ॥ १०९० ॥ जे भिक्सू अण्ण(उत्थिएण)तित्थीहिं वा गार(त्थिएण)त्थीहिं वा सिंदें भुंजह भुंजतं वा साइजड ॥ १०९१ ॥ जे भिक्खू अष्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सदिं आवेढिय परिवेढिय मुंजइ मुंजंतं वा साइजङ ॥ १०९२ ॥ जे भिक्ख् आयरियउवज्झायाणं सेजासंथारगं पाएणं संघट्टेता हत्थेणं अणणुण्णवेता धा(रे)रयमा(णे)णो गच्छइ गच्छंतं वा साइजाइ॥ १०९३ ॥ जे मिक्न पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेह धरेंतं वा साइजाइ ॥ १०९४ ॥ जे भिक्क अणंतरहियाए पुडवीए जीवपङ्द्विए सअंडे सपाणे सबीए सहिरए सओस्से सउदए सउर्तिगपणगदगर्माद्व्यमङ्गडासंताणगंसि चलाचले उचार-पासवर्ण परिद्ववेह परिद्ववेतं वा साइज्जइ ॥ १०९५ ॥ जे भिक्ष्यू ससिणिद्धाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९६ ॥ जे भिक्ख संसरक्खाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९७ ॥ जे भिक्ख महियाकडाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९८ ॥ जे भिक्ख चित्तमंताए पुढवीए जाव साइजाइ ॥ १०९९ ॥ जे भिक्ख चित्रामंताए सिलाए जाव साइजाइ ॥ १९०० ॥ जे मिक्स चित्तमंताए लेखए जाव साइजइ ॥ १९०१ ॥ जे भिक्स कोलावासंसि वा दारुए जाव साइजाइ ॥ ११०२ ॥ जे भिक्ख थूणंसि वा गिरेट्टयंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा चलाचले उचारपासवणं परिद्ववेंड परिद्ववेंतं वा साइजाइ ॥ ११०३ ॥ जे भिक्ख कुलियंसि वा मितिसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अन्तिकिक्खजायंसि वा चलाचले उच्चारपासक्णं परिद्ववेड परिद्ववेतं वा साइजइ ॥ १९०४ ॥ जे मिक्स संघंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा (अण्णयरंसि वा अंतरिक्खकार्यसि) उचारपासवणं परिष्ठवेइ परिष्ठवेतं वा साङ्जइ । तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उम्बाइयं ॥ ११०५॥ णिसीइऽज्ययणे सोळसमो उद्देसी समत्तो ॥ १६ ॥

सत्तरसमी उदेसी

जे भिक्स् कोउइलपियाए अण्णयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण

वा कट्टपांसएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा इत्तपासएण वा बंधइ बंधंतं वा साइजाइ ॥ ११०६ ॥ जे मिक्खू कोउहलपरियाए अण्णयरं तमपाणजायं नणपासएण वा जाव सुत्तपासएण वा बंधेल्लां मुयइ मुयंतं वा साइजइ ॥ ११०७ ॥ जे मिक्ख् कोउद्दुल्लपियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भिंड-मालियं वा मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा संस-मालियं वा हरूमालियं वा बहुमालियं वा पणमालियं वा पुप्पमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा करेड् करेंतं वा साइजाइ॥ १९०८॥ जे भिक्क कोउइझपडियाए सणमालियं वा जाव हरियमालियं वा धरेइ धरेंतं वा साइजइ ॥ ११०९ ॥ जे भिक्ख कोउइल्लपिडियाए तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा पिणखद्द पिणदंतं वा साइजइ ॥ १९१० ॥ (…परिभुंजइ…) जे भिक्ख् कोउ-इह्नपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तजयलोहाणि वा सीसलोहाणि वा रुप्पलोहाणि वा सुबण्णलोहाणि वा करेड् करेंतं वा साइज्जड् ॥ १९११ ॥ जे भिक्ख् कोउहस्रपडियाए भयलोहाणि वा जाव सुवण्णलोहाणि वा धरेड धरेंतं वा साइजङ् ॥ १९१२ ॥ जे भिक्क कोउद्दल्लपिडयाए अयलोहाणि वा जाव मुघण्णलोहाणि वा परिभुंज[पिणद्र]इ परिभुंजंतं वा साइजइ ॥ १११३ ॥ जे भिक्ख् कोउइल्लपिड-याए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगाविल वा मुत्ताविल वा कणगाविल वा रयणावर्लि वा कहगाणि वा तुहियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पद्दाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुक्ष्णमुत्ताणि वा करेड् करेंतं वा साइज्जइ ॥ १११४ ॥ जे भिक्ख कोउद्देशपिडयाए हाराणि वा जाव मुक्ल्यमुताणि वा घरेइ घरेंतं वा साइजइ ॥ १११५॥ जे भिक्ख् कोउहह्नपडियाए हाराणि वा जाव सुवण्णसुत्ताणि वा पिणढइ पिणढंतं वा साइज्जइ ॥ १११६ ॥ जे भिक्ख् कोउह्ह्रपिंडयाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा जीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्दाणि वा उद्द-छेर्साणि वा वरषाणि वा विवरघाणि वा पर्वंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकक्काणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पतुष्णाणि वा आवरंताणि वा वीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगर्कताणि वा कणगखिषाणि वा कणगिवताणि वा० आभरणविविताणि वा करेड़ करेंतं वा साइज्ज्ङ् ॥ १९१७ ॥ जे भिक्ख् कोउह्ह्रपढियाए आईणाणि वा जाव आभरणविचित्ताणि वा घरेड घरेंतं वा साइज्जइ ॥ १९१८ ॥ जे भिक्स् कोउहलपिटयाए आईणाणि वा जाव आभरणविचिताणि वा परिभुंजइ परिभुंजतं वा साहजाइ ॥ १११९ ॥ जा (जे मिक्स्) मि(नि)मां(बे)बी निनर्गंबस्स पाए क्राण-

उत्थिएण वा गारियएण वा आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेतं वा पमजावेतं वा साइजाइ ॥ ११२० ॥ जाव जा णिगांथी : सीसदुवारियं कारवेड कारवेंतं वा साइज्जइ ॥ ११७२ ॥ जे णिगांथे णिगांथीए पाए अण्णेड त्थिएण वा गारित्थएण वा जाव सीसदुवारियं कारवेड कारवेंतं वा साइजड़ ॥ १२२५ ॥ जे णिगांथे णिगांथत्स सरिसगस्स संते ओवासे अंते ओवासे ण दंड ण देंनं वा साइजाड ॥ १२२६ ॥ जा णिगंथी णिगंथीए सरिसियाए संते ओवासे अंते ओवासे ण देइ ण देंतं वा साइजाइ ॥ १२२७॥ जे भिक्क मालोहडं असणं वा ४ उब्मिदिय देजमाणं पडिग्गाहेड् पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥ १२२८॥ जे भिक्ख कोट्रियाउत्तं असणं वा ४ उक्कजिय निकुजिय उहरिय देजमाणं पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइजड ॥ १२२९ ॥ जे भिक्ख महिओलितं असणं वा ४ उब्भिदिय णिब्भिदिय देखमाणं पश्चिमाहेड पहिन्गाहेंतं वा साइजह ॥ १२३० ॥ जे निक्ख (असणं वा…) पुडविपहद्वियं पिंडम्माहेइ पिंडम्माहेतं वा साइजाइ॥ १२३१॥ जे भिवन्तू आउपइद्वियं पिंडम्माहेइ पडिम्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२३२ ॥ जे भिक्ख् तेउपइद्वियं पंडिम्माहेड् पडिम्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२३३ ॥ जे भित्रस् वणस्सइकायपइद्वियं पडिस्माहेइ पडिस्माहेतं वा साइजड ॥ १२३४ ॥ जे भिक्ख असूमिणं असणं वा ४ सुप्पेण वा विद्वयणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहणहत्येण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्येण वा मुहेण वा फ्रामिता वीइता आहर् देजमाणं पडिग्गाहेड पडिग्गाहेंतं वा साइजाइ ॥ १२३५ ॥ जे मिक्ख असणं वा ४ उसिणुसिणं पढिगगाहेइ पहिमाहितं वा साइज्जइ ॥ १२३६ ॥ जे भिक्सू उरसेइमं वा संसेइमं वा चाउलोदगं वा वालोदगं वा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अंबकंजियं वा सुद्धवियहं वा अहणाधीयं अणंबिलं अपरिणयं अवक्रंतजीवं अविद्धत्यं पहिल्लाहेड पहिल्लाहेतं वा साउजड ॥ १२३७॥ जे मिक्ख अप्पणो आयरियनाए लक्खणाई वागरेइ वागरेतं वा साइज्जइ ॥ १२३८ ॥ जे मिक्ख् गाएज वा (हसेज वा) वाएज वा णवेज वा अभिणवेज वा हमहेसियं वा हत्यगुलगुलाइयं वा उ कि कि ह कि हिमोहणायं वा करेइ करेंतं वा साइ-जाइ ॥ १२३९ ॥ जे भिक्ष मेरिसहाणि वा पडह्सहाणि वा मुरवसहाणि वा सुइंगसहाणि वा जंदिसहाणि वा झल्लरिसहाणि वा वल्लरिसहाणि वा डमरु(य)गसहाणि या मङ्गयसहाणि वा सद्वयसहाणि वा पएससहाणि वा मोलुइसहाणि वा अण्णयराणि वा तहप्पनाराणि विलयाणि सहाणि कम्मसीयपिडयाए अभिसंभारेह अभिसंभारेतं वा साइजह ॥ १२४० ॥ जे मिनस् बीणासहाणि वा विवंत्रिसहाणि वा तुणसहाणि

सुक्तागमे

वा वब्वीसगसहाणि वा वीणाइयसहाणि वा तुंबवीणासहाणि वा झोडयसहाणि वा ढंकुणसद्दाणि वा अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि तयाणि सद्दाणि कण्णसीयपिडयाए अभिसंधारेड् अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥ १२४१ ॥ जे भिक्ख् तालसहाणि वा कंसतालसहाणि वा लिनियसहाणि वा गोहियसहाणि वा मकरियसहाणि वा कच्छभिसद्दाणि वा महद्दमद्दाणि वा सणालियासद्दाणि वा वालियासद्दाणि वा अण्ण-यराणि वा तहप्पगाराणि घणाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभि-संघारेंतं वा साइजइ ॥ १२४२ ॥ जे भिक्ख् संखसदाणि वा वंससदाणि वा वेणु-सदाणि वा खरमुहिसदाणि वा परिलिसद्दाणि वा नेवासद्दाणि वा अण्णयराणि वा तहप्यगाराणि झुसिराणि महाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा साइजार् ॥ १२४२ ॥ जे भिक्ख् वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्पलाणि वा पञ्च-लाणि वा उज्झराणि वा णिज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा मराणि वा मर्पंतियाणि वा सरमरपंतियाणि वा कण्णसीयपिडयाए अभिसंघा-रेइ अभिसंघारेंतं वा साइजाइ ॥ १२४४ ॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा गहणाणि वा णूमाणि वा वणाणि वा वणविदुम्माणि वा पञ्चयाणि वा पञ्चयविदुस्माणि वा कम्णमोयपिडयाए अभिसंघारेड अभिसंघारेतं वा साइजह ॥ १२४५ ॥ जे भिक्खू गामाणि वा जगराणि वा खेडाणि वा कञ्चडाणि वा महंवाणि वा दोणमुहाणि वा पष्टणाणि वा आगराणि वा संबाहाणि वा संणिवेसाणि वा कण्णसोयपडियाए अभि-संघारेड् अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ १२४६ ॥ जे भिक्ख् गाममहाणि वा जाव मण्णिवेसमहाणि वा कण्णमोयपिडयाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ १२४७ ॥ जे भिक्ख् गामवहाणि वा णगरवहाणि वा खेडवहाणि वा कब्बड-बहाणि वा जाव सण्णिवेसवहाणि वा कण्णसोयपिडयाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥ १२४८ ॥ जे भिक्ख् गामपहाणि वा जाव सण्णिवेसपहाणि वा कण्णसोयपहियाए अभिसंघारेड् अभिसंघारेतं वा साइज्जइ ॥ १२४९-१ ॥ … गामदाहाणि वा जाव सिण्णवेसदाहाणि वा ।।।।१२४९-२ ॥ जे भिक्सू आसकर-णाणि वा हत्थिकरणाणि वा उद्दकरणाणि वा गोणकरणाणि वा महिसकरणाणि वा मर्ज (स्य)रकरणाणि वा कण्णसीयपडियाए अभिसेत्रारेइ अभिसंघारैतं वा साइज्जर ॥ १२५० ॥ जे भिक्क आसजुद्धाणि वा हत्यिजुद्धाणि वा उष्टजुद्धाणि वा गोणजुद्धाणि वा महिसजुद्धाणि वा० कण्णसोयपिंडयाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेतं वा साइजह ॥ १२५.१ ॥ जे भिक्स उज्रुहियद्वाणाणि वा हयजूहियद्वाणाणि वा गयज्हिरहाणाणि वा कण्मसोयपिटयाए अभिसंचारेइ अभिसंचारेतं वा साइजाइ

॥ १२५२ ॥ जे भिक्ख् अभिसेय(ठा)हाणाणि वा अक्खाइयहाणाणि वा माणुम्माण्डाणाणि वा महया हयणहगियवाइयतंतीतलनालनुडियपडुप्पवाइयहाणाणि वा कण्णसोयपिट्टियाए अभिसंघारेइ अभिसंघारेंतं वा साइज्जइ ॥ १२५३ ॥ जे भिक्ख् डिंबाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वंराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कल्टाणि वा बोलाणि वा कण्णसोयपिट्टियाए अभिसंघारेंड अभिसंघारेंतं वा साइज्जइ ॥ १२५४ ॥ जे भिक्ख् विरूवस्वेय महुस्सवेय इरथीणि वा पुरिसाणि वा वेराणि वा माजिक्समाणि वा छहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायं-ताणि वा वायंताणि वा णवंताणि वा व्हराणि वा अणलंकियाणि वा स्मंताणि वा मोहंताणि वा विरलं असणं वा ४ परिभायंताणि वा परिभुंजंताणि वा कण्णसोयपिट्याए अभिसंघारेइ अभिसंघारेंतं या साइज्जइ ॥ १२५५॥ जे भिक्ख् इहलोइएस वा सहेस परलोइएस वा सहेस विष्ठस वा सहेस विद्वेस वा सहेस अदिद्वेस वा सहेस अप्रसोववज्जइ सजंतं रजंतं गिज्झंतं अज्झोववज्जंतं वा साइज्जइ । तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उग्चाइयं ॥ १२५६॥ णिसीहऽज्झयणे सत्तरसमो उद्देसो समसो ॥ १७॥

अद्वारसमो उद्देसो

जे भिक्ख् अणद्वाए णावं दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२५० ॥ जे भिक्ख् णावं किणइ किणावेइ कीयं आहृहु देजमाणं दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२५८ ॥ जे भिक्ख् णावं परियद्वेद्ध परियद्वेद्ध परियद्वेद्ध आहृहु देजमाणं दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२५९ ॥ जे भिक्ख् णावं परियद्वेद्ध परियद्वेद्ध परियद्वेद्ध आहृहु देजमाणं दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२५९ ॥ जे भिक्ख् णावं अच्छेजं अणिसिद्धं अभिहृद्धं आहृहु देजमाणं दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्ख् थळाओ णावं अछे अकसावेद ओकसावेतं वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्ख् अलाओ णावं यछे उक्सावेद उक्सावेतं वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्ख् प्रणां णावं उत्सिक्द दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्ख् प्रणां णावं उत्सिक्द दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्ख् प्रणां णावं उत्सिक्तं वा साइज्जइ ॥ १२६४ ॥ जे भिक्ख् राणां उत्तिगं वा उद्दंगं वा आसिक्माणि वा उवस्विर वा कज्जावेमाणि पेहाए हृत्थेण वा पाएण वा असिप्तेण वा कुसपत्तेण वा महियाए वा चेलेण वा परिपिहेद परिपिहेतं वा साइज्जइ ॥ १२६६ ॥ जे भिक्ख् परिणावियं कृष्टु णावाए दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२६५ ॥ जे भिक्ख् परिणावियं कृष्टु णावाए दुस्हृइ दुस्हृंतं वा साइज्जइ ॥ १२६५ ॥ जे भिक्ख् उन्हृगामिणि वा णावं अहोगामिणि वा णावं दुस्हृइ दुस्हृंतं

वा साइज्जइ ॥ १२६८ ॥ जे भिक्खू जोयणवेलागामिणि वा अद्वजोयणवेलागामिणि षा णावं दुरुहृइ दुरुहंतं वा साइज्यइ ॥ १२६९ ॥ जे भिक्ख् णावं आकसङ आक-सावेड् आकसावेंतं वा साइज्जइ ॥ १२७० ॥ जे भिक्खू णावं खेवावेड् खेवावेंतं वा साइजह ॥ १२७१ ॥ जे भिक्ख णावं रज्ञुणा वा कह्नेण वा कह्नुह कहूंतं वा साइजह ॥ १२७२ ॥ जे मिक्ख णावं अलिक्तएण दा पिएइएण वा वंसेण वा बलेण वा बाहेड वाहेंतं वा साइज्जड ॥ १२७३ ॥ जे भिक्ख णावाओ उदगं भायणेण वा पहिमाहणेण वा मत्तेण वा णावाउस्सिचणेण वा उस्सिचंड उस्सिचंतं वा माइजङ ॥ १२७४ ॥ जे भिक्ख णावं उत्तिगेण उद्दर्ग आसवमाणं उदहवरिं कज्जलायेमाणं (पेहाए) पलोय हत्थेण वा पाएण वा आमत्थ(असि)परोण वा कुसपरोण वा महियाए वा चेलक्रणोण वा पडिपिहेड पडिपिहेतं वा साइजाइ ॥ १२७५ ॥ जे भिक्खू णावाओ **गावागयम्म असमं वा ४ पडिम्माहेड पडिम्माहेतं वा साइज्रह ॥ १२७६ ॥ जे** भिक्ख णावाओ जलगयस्स अमणं वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइज्जड ॥ १२७७ ॥ जे भिक्ख णावाओ पंकगयस्स असणं वा ४ पडिक्गाहेड पडिक्गाहेतं वा साइजाइ ॥ १२७८ ॥ जे भिक्ख णावाओ थलगयस्य असर्ण वा ४ पडिस्माहेइ पिडमाहितं वा साइजाई ॥ १२७९ ॥ जे भिक्लू वत्यं किणर किणावेइ कीयं आहर देजमाणं पहिम्माहेइ पडिम्माहेंतं वा साइजइ ॥ १२८० ॥ (इओ आरब्भ चउइस-मुहेसरस सयलाणिवि सुत्ताणि पिडिग्गहठाणे वत्थमुवर्जुजिय वनन्वाणि जाव) जे भिक्ख बत्यणीसाए बासाबासं वसङ वसंतं वा साइज्ञइ । तं सेवमाणे आवज्जङ चाउ-म्मासियं परिहारहाणं उग्घाइयं ॥ १३२४ ॥ णिसीहऽज्हायणे अद्वारसमो उद्देशो समसो॥ १८॥

एगूणवीसइमो उदेसो

जे भिक्ख चर्डाहें संझाहिं सज्झायं करेड करेंते वा साइजाइ, तंजहा-पुश्वाए संझाए पच्छिमाए संझाए अवरण्हे अष्टुरते ॥ १३२५ ॥ जे भिक्खू कालियमुयस्स परं तिण्हं पुँच्छाणं पुच्छइ पुच्छंतं वा साइजाइ ॥ १३२६ ॥ जे भिक्खू दिद्विवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पुच्छंतं वा साइजाइ ॥ १३२० ॥ जे भिक्खू चर्छ महापाडिवएस सज्झायं करेड करेंतं वा साइजाइ तंजहा-सुगिम्ह्य(चेत्तपुण्णिमा-ओ-वहसाहिकण्ड्)पाडिवए, आसाढी(पुण्णिमाओ-सावणकिण्ड्)पाडिवए, (भइवय-

९ अण्णे आयरिसे सोलसभंगा । २ पुच्छा-अपुणस्तं जावस्यं किंदुउं पुच्छंति सा एगा पुच्छा । अहवा जत्तियं आयरिएण तरइ उच्चारियं वेतुं सा एगा पुच्छा । अहवा जत्य पगयं समप्पइ थोवं वा बहुं वा सा एगा पुच्छा ।

पुण्णिमाओ-)आसोय(किण्ह)पाडिवए, कत्तिय(पुण्णिमाओ-गगनिर्किण्ह)पाडिवए वारे ॥ १३२८ ॥ जे भिक्ख पोरिसि सज्झायं उवाइणावेंड उवाइणावेंतं वा साइजड् ॥ १३२९ ॥ जे भिक्ख चउकालं सजझायं न करेड़ न करेतं वा साइजाइ ॥ १३३० ॥ जे मिक्ख असज्झाइए सज्झायं करेड करेंनं वा साइजड़ ॥ १३३१ ॥ जे सिक्ख् अप्पणो अगज्याइए मज्झायं करेड़ करेंतं वा साडजड़ ॥ १३३२ ॥ जे भिक्सू हेद्विलाइं समोसरणाई अवाएता उवरिलाई समोमरणाई वाएइ वाएंतं वा साइजड र। १३३३ ॥ जे भिनन्व णव बंभचेराडं अवाएता उवरिं सुयं वाएइ बाएंतं वा माइजाइ ॥ १३३४ ॥ जे भिक्ख अपनं वाएड बाएंतं वा साइजाइ ॥ १३३५ ॥ जे भिक्ख पर्न ण बाएड वाएंतं वा साइजाड ॥ १३३६ ॥ जे भिक्ख अञ्चलं बाएड वाएंने वा साइजाइ ॥ १३३७ ॥ जे भिक्ख वर्त्तं ण वाएइ ण वाएंते वा साइजाइ ॥ १३३८॥ जे भिक्ख दोण्हं सरिसगाणं एकं सं(सि)चिक्खावेइ एकं ण संचिक्खावेइ एकं वाएड एकं ण वाएड तं करंतं वा साडजड ॥ १३३९ ॥ जे भिक्षा आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिण्णं गिरं आइयइ आइयंनं वा साइजाइ ॥ १३४० ॥ जे भिक्क अण्णउत्थियगारत्थियं बाएइ वाएंतं वा साइजई ॥ १३४१ ॥ जे भिक्ख अण्णडित्ययगारित्ययं (बायणं) पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइजाई ॥ १३४२ ॥ जे भिक्ख पासत्थं वाएइ वाएंतं वा साइजाइ॥ १३४३॥ जे भिक्ख पासत्यं पिडच्छा पिंडच्छेतं वा साइजाइ ॥ १३४४॥ जे भिक्ख ओसण्णं वाएइ वाएंतं वा साइजाइ ॥ १३४५॥ जे भिक्ख ओसण्णं पहिच्छइ पडिच्छंतं वा माइजाइ॥ १३४६॥ जे भिक्ख् कुसीलं नाएइ नाएंनं ना साइजइ ॥ १३४०॥ जे भिक्क कुसीलं पडिच्छइ पीडच्छंतं वा साइज्जइ॥ १२४८॥ जे भिक्क जितियं वाएइ वाएंतं वा साइज्जइ ॥ १२४९ ॥ जे भिक्ख णितियं पढिच्छइ पहिच्छंतं वा साइजइ ॥ १३५० ॥ जे भिक्ख् संस्तं वाएइ वाएंतं वा साइजह ॥ १३५१ ॥ जे भिक्ख संमत्तं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइजह । तं सेवमाणे आवजह चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उग्धाइयं ॥ १३५२ ॥ णिसीहऽज्झयणे पगुणवीसहमो उद्देसो समत्तो ॥ १९ ॥

वीसइमो उद्देसो

जे भिक्ख् मासियं परिहारद्वाणं पिक्सेबित्ता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमा-णस्स मासियं, पिछउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ॥ १३५३ ॥ जे भिक्ख्

१ अण्णविभागो वाइजंतो वायणाए दुहवनोगं करेजित्त पायच्छितठाणं । ३ आगमद्वो दुरहिशमो परहिमानो आगमाणमणिहनमणिजा अद्विवजासं कुणे-ज्यत्ति पायच्छितं ।

५८ युत्ता ०

दोमासियं परिहारद्वाणं पश्चिसेवित्ता आळोएजा, अपिछरंचिय आलोएमाणस्स दोमा-सियं, पलिउंचिय आलोएमाणस्स ते(ति)मासियं ॥ १३५४ ॥ जे भिक्स तेमासियं परिहारद्वाणं पिडसेविना आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्य तेमासियं पिट-उंचिय आलोएमाणस्य चउमासियं ॥ १३५५ ॥ जे भिक्ख चाउम्मासियं परिहार-द्वाणं पडिसेवित्ता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चंडमासियं, पलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं ॥ १३५६ ॥ जे मिक्ख पंचमासियं परिहारद्वाणं पिड-सेविता आलोएजा. अपलिडंचिय आलोएमाणस्य पंचमासियं, पलिडंचिय आलोए-माणस्य छम्मासियं ॥ १३५७ ॥ तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते (तं) चेव छर्म(मासियं)मासा ॥ १३५८ ॥ जे भिक्ख बहुसोवि मासियं परिहारद्वाणं पिंडेमेविना आलोएजा. अपिंडेनिय आलोएमाणस्स मासियं, पिंडेनिय आलोए-माणम्स दोमासियं ॥ १३५९ ॥ जे भिक्ख बहुसोवि दोमासियं परिहारद्वाणं पिंड-सेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्य दोमासियं, पलिउंचिय आलोए-माणस्स तमासियं ॥ १३६० ॥ जे भिक्ख् बहुसोबि तेमासियं परिहारद्वाणं पिड-सेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्म तेमासियं, पलिउंचिय आलोए-माणस्स चउमासियं ॥ १३६१ ॥ जे मिक्ख् बहुसोवि चाउम्मासियं परिहारद्वाणं पिंडसेवित्ता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणस्य चउमासियं, पिलउंचिय आलोए-माणस्स पंचमासियं ॥ १३६२ ॥ जे मिक्ख् बहुसोबि पंचमासियं परिहारद्वाणं पडि-सेविता आलोएजा. अपलिडंनिय आलोएमाणस्म पंचमासियं, पलिडंनिय आलोए-माणस्स छम्मासियं ॥ १३६३ ॥ तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६४ ॥ जे भिक्ख मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मा-सियं वा पंचमासियं वा एएसिं परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पहिसेविता आलोएजा, अपिटंजिय आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चउमासियं वा पंचमासियं वा. पिठउंचिय आलोएमाणस्य दोमासियं वा तेमासियं वा चडमासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा ॥ १३६५-१॥ तेण परं पळिउंचिए दा अपिलउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६५-२ ॥ जे भिक्ख बहुसोवि मासियं वा बहुसोबि दोमासियं वा बहुसोबि तेमासियं वा बहुसोबि चाउम्मासियं वा बहुसोबि पंचमासियं वा एएसिं परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पडिसेविता आस्त्रीएजा, अपलिउंचिय (बहुसोबि) आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चउ-मासियं ना पंचमासियं ना, पिछ्डंचिय (बहुसोनि) आलोएमाणस्स दोमासियं ना तेमा-सियं वा चउमासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा ॥ १३६६ ॥ जै भिक्ख चाउम्मा-

सियं वा साइरेगचा उम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहार-द्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पडिसेविता आलोएजा, अपलिउंचिय आलोएमाणस्य चाउम्मासियं वा साइरेगं वा पंचमासियं वा साइरेगं वा. पिछउंचिय आळोएमाणस्स पंचमासियं वा साइरेगं वा छम्मासियं वा ॥ १३६७-१ ॥ तेण परं पिछउंचिए वा अपलिजंबिए वा ते चेव छम्मासा ॥ ९२६७-२ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहसोवि साइरेगचाउम्मासियं वा बहसोवि पंचमासियं वा बहसोवि साइरेगपंचमा-सियं वा एएसि परिहारद्वाणाणं अण्णयरं परिहारद्वाणं पहिसेवित्ता आलोएजा. अपिछं-चिय आलोएमाणस्स बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेगं वा बहुसोवि पंचमा-सियं वा बहसोबि साइरेगं वा, पलिउंचिय आलोएमाणस्स बहसोबि पंचमासियं वा बहुसोवि साइरेगं वा बहुमोबि छम्मासियं वा ॥ १३६८-१ ॥ तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६८-२ ॥ जे भिक्ख चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसि परिहारद्वाणाणं भण्णवरं परिहारद्वाणं पश्चिमेविता आलोएजा. अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिजं ठवइत्ता करणिजं वैयाविदयं. ठविएवि पिडसेविता सेवि कसिणे तत्थेव आरहेयच्चे सिया, पुट्चि पश्चिमेवियं पुट्चि आलोइयं, पुट्चि पश्चिमेवियं पच्छा आलोइयं. पच्छा पहिसेवियं पुष्टि आलोड्यं, पच्छा पहिसेवियं पच्छा आलोड्यं, अपलिउंचिए अपलि-उंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं. पलिउंचिए पलिउंचियं क्षास्त्रोपमाणस्य सन्वमेयं सक्यं साहणिय जे एयाए पहुचणाए पहुचिए णिव्विसमाणे पढिसेवेड् सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १३६९ ॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेगचाउम्मासियं वा (जहा हेद्वा जवरं बहुसोवि) जाब आरहेयव्वे सिया एवं पिलडंबिए ॥ १३७० ॥ जे भिक्ख बाउम्मासियं बा : : आलोएजा, पळिउंचिय आलोएमाणे (जहा हेट्टा) जाव पळिउंचिए पळिउंचियं, पिलंडिया पिलंडियां आलोएमाणस्स '''आरहेयन्वे सिया ॥ १३७१ ॥ जे भिन्छ बहुसोवि चाउम्मासियं वा (जहा हेट्टा णवरं बहुसोवि) जाव आरुहेग्ये सिया ॥ १३७२ ॥ छम्मासियं परिहारकाणं पहित्य अणगारे अंतरा दोमासियं परिहार-द्वाणं परिसेविता आलोएजा. अहावरा वीसहराइया आरोवणा आह्मज्यावसाणे संअदं सहेर्ड सकारणं अहीणमहिरतं. तेण परं सवीसहराइया दो मासा ॥ १२७३ ॥ पंचमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेड्डा) जान दो मासा ॥ १३७४ ॥ चाउम्मासियं परिहारहाणं (जहा हेड्डा) आब दो मासा ॥ १३७५ ॥ तेमासियं परिहारहाणं (बहा हेड्डा) जाब दो मासा ॥ १३७६ ॥ दोमासियं परिहारक्काणं (जहा हेड्डा) जाव दो मासा ॥ १२७७ ॥ मासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव दो मासा ॥ १३७८ ॥ सवीमहराइयं दोमासियं परिहारद्वाणं पद्वविए अणगारे (जहा हेड्डा) जाव अहीणमहरित्तं, तेण परं मदसराया तिष्णि मासा ॥ १३७९ ॥ सदमराय-तेमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव तेण परं चत्तारि मासा ॥ १३८० ॥ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव तेण परं सवीसङ्राया चतारि मासा ॥ १३८१ ॥ सवीसहरायनाउम्मासियं परिहारहाणं (जहा हेट्टा) जान तेण परं सदसराया पंच मासा ॥ १३८२ ॥ सदसरायपंचमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेद्वा) जाब तेण परं छम्मासा ॥ १३८३ ॥ छम्मासियं परिहारद्वाणं पहुविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वाणं पिरसिवित्ता आलोएजा, अहावरा पिनस्या आरोवणा आइमञ्ज्ञावसाणे सम्रहुं सहेउं सकारणं अहीणमङ्गितं, तेण परं दिवड्डो मामो ॥ १३८४ ॥ पंचमासियं परिहारहाणं (जहा हेट्टा) जाव दिवही मासो ॥ १३८५ ॥ चाउम्मासियं परिहारहाणं (जहा हेहा) जाव दिवहो मासो ॥ १३८६ ॥ तेमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव विवद्धो मासो ॥ १३८७ ॥ दोमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव दिवश्वो मासो ॥ १३८८ ॥ मासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) जाव दिवस्त्री मामो ॥ १३८९ ॥ दिवसूमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वाणं पिडसेवित्ता आलोएजा, अहावरा पक्लिया आरोवणा आडमज्ज्ञावसाणे सखद्रं सहेजं सकारणं अहीणमहरितं. तेण परं दो मासा ॥ १३९० ॥ दोमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) णवरं अन्नाइज्जा मासा ॥ १३९१ ॥ अच्चाइज्जमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेद्वा) णवरं तिष्णि मासा ॥ १३९२ ॥ तेमा-सियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) णवरं अबुद्धा मासा ॥ १३९३ ॥ अबुद्धमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेट्टा) णवरं चत्तारि मासा ॥ १३९४ ॥ चाउम्मासियं परिहार-हाणं (जहा हेट्टा) णवरं अन्तर्पचमा मासा ॥ १३९५ ॥ अन्तर्पचमासियं परि-हारद्वाणं (जहा हेट्टा) णवरं पंच मासा ॥ १३९६ ॥ पंचमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेड्डा) णवरं अद्रख्ट्या मासा ॥ १३९७ ॥ अद्रख्ट्यमासियं परिहारद्वाणं (जहा हेड्डा) णवरं छम्मासा ॥ १३९८ ॥ दोमासियं परिहारद्वाणं पद्मविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वाणं पिरसिविसा आलोएजा, अहावरा पविन्तया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअद्भं सहेउं सकारणं अहीणमहरितं, तेण परं अन्नाहजा मासा ॥ १३९९ ॥ अन्ना-इजामासियं ... अंतरा दोमासियं ... अहावरा वीसिया आरोवणा (जहा हेहा), तेण परं सपंचराइया तिण्णि मासा ॥ १४००॥ सपंचरायतेमासियं अंतरा मासियं ***अहावरा पिन्स्वया भारोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं सवीसहराइया तिण्णि मासा

॥ १४०१॥ सवीसङ्गयतेमासियं अंतरा दोमासियं अहावरा वीसङ्गद्या अरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं सदसराया चतारि मासा ॥ १४०२ ॥ सदसरायाचाउम्मासियं अंतरा मासियं अहावरा पिक्खया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं पंचृणां पंच मासा ॥ १४०३ ॥ पंचृणां चमासियं अंतरा मासियं अहावरा पंक्खिया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं अद्ध्वद्धा मासा ॥ १४०४ ॥ अद्ध्वद्धमासियं अंतरा मासियं अहावरा पिक्खया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं अद्ध्वद्धा मासा ॥ १४०४ ॥ अद्ध्वद्धमासियं अंतरा मासियं अहावरा पिक्खया आरोवणा (जहा हेट्टा), तेण परं अम्मामा ॥ १४०५ ॥ णिसीहऽज्ञयणे वीसङ्मो उद्देशो समसो ॥ २०॥ णिसीहसुत्तं समसं ॥



श्रीयुत्रागमप्रकाशकसमितिके 'सदस्य'



श्रीमान् शेठ कैसरचंद वाठिया अपने पांचारमें ५० वर्षीय स्थितर श्रावक-पद पर हैं। बच्चनसे लगा-कर अब तक की घटनाओं द्वारा पारिणामिक बुद्धिके विकाससे आपको कर्म-सिद्धान्त पर अट र विधास है। मक्खन जैसा आपका हदय दुःखितको देखकर पियले यिना नहीं मानता।

श्रीमान् शेठ केसरचंद शानंदरामजी वांठिया पनवेल (कोलावा)

अ।पिक गुरुमिक अनन्या एवं अन्यभिनारिणी है। साधुमुनिराज आपके केसर-बाग वाले प्रासाद-भवनमें ठहर कर धर्मीपदेशका लाभ जनताको प्रदान करते हैं। आपके भतीजा श्रीवृद्धिचंदजी साहेब आपकी खूब सेदा करते हैं। आपने इनको बचपनसे ही अपने हाथों पाला है। आपमें पारिवारिक वात्सल्यता भरपूर है। श्रीपत्तालाल, श्रीहीरालाल, श्रीमोतीलाल, राज्ञत्रयके समान तीनों पुत्र आपकी सेवामें सदेब तत्पर रहते हैं। आपने विनय-नम्नता-दूरदर्शिता आदि साधनोंसे यह कुबेरपद प्राप्त किया है।

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवको णायपुनमहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं द्सासुयक्खंधो पढमा दसा

सुरं मे आउसं! तेणं भगवया एक्सक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतिहैं वी[थी]सं असमाहि[ठा]द्वाणा पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहैं वीसं असमाहिद्वाणा पण्णता? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहैं वीसं असमाहिद्वाणा पण्णता? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहैं वीसं असमाहिद्वाणा पण्णता। तंजहा-दवदवचारी यावि भवइ॥ १॥ अ(६)पमिष्वयचारी यावि भवइ॥ १॥ आहित्तसेजासणिए॥ ४॥ राहणि-यपिरमासी॥ ५॥ थेरोवघाइए॥ ६॥ भूओवघाइए॥ ७॥ संजलणे॥ ८॥ कोहणे॥ ९॥ पिद्विमंसिए॥ १०॥ अभिक्खणं अभिक्खणं ओहा(रि)रहता भवइ॥ १॥ ॥ पाराणाणं अहिगरणाणं अणुष्पण्णाणं उप्पाइला भवइ॥ १२॥ पोराणाणं अहिगरणाणं आहिगरणाणं अणुष्पण्णाणं उप्पाइला भवइ॥ १२॥ पोराणाणं अहिगरणाणं सामिय विउसवियाणं पुणो(उ)दी(रि)रेत्ता भवइ॥ १३॥ अकालसञ्जायकारए यावि भवइ॥ १४॥ ससरक्ष्याणिपाए॥ १५॥ सहकरे (मेयकरे)॥ १६॥ इंझकरे॥ १०॥ कल्हकरे॥ १८॥ स्र्प्यमाणभोई॥ १९॥ एए खलु ते थेरेहिं भगवंतिहैं वीसं असमाहिद्वाणा पण्णता॥ २९॥ ति-वेमि॥ पदमा दसा समसा॥१॥

विइया दसा

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एगवीसं सबला पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं एगवीसं सबला पण्णता ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं एगवीसं सबला पण्णता ! तंजहा-हत्यकम्मं करेमाणे सबले ॥ २२ ॥ मेहुणं पिंस्तेवमाणे सबले ॥ २३ ॥ राइमोयणं भुंजमाणे सबले ॥ २४ ॥ साहाकम्मं भुंजमाणे सबले ॥ २५ ॥ रायपिंडं भुंजमाणे सबले ॥ २६ ॥ (उद्देखियं) कीयं वा पामिन्दं वा अच्छिजं वा अणिसिद्धं वा आहर्ष्ट्र दिजमाणं वा भुंजमाणे सबले ॥ २० ॥ अभिवस्त्रणं अभिवस्त्रणं पिंदियाइक्सेताणं भुंजमाणे सबले ॥ २० ॥ अभिवस्त्रणं अभिवस्त्रणं पिंदियाइक्सेताणं भुंजमाणे सबले ॥ २० ॥

१ अन्ने आयरिसे पार्रमे पंच पमोद्वारोऽहिगो लन्भइ।

अंतो छण्डं मासाणं गणाओ गणं संक्रममाणे सबले ॥ २९ ॥ अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले ॥ ३० ॥ अंतो मासस्य तुओ माडिठा ट्रिट्राणे करे(सेव)माणे सबले ॥ ३९ ॥ सा[ग]गारियपिंडं भुंजमाणे सबले ॥ ३२ ॥ आउद्दियाए पाणा-इवायं करेमाणे सबले ॥ ३३ ॥ आउद्दियाए मुसावायं वयमाणे सबले ॥ ३४ ॥ आर्टाइयाए अदिण्णानाणं गिण्हमाणे सबले ॥ ३५ ॥ आरट्टियाए अर्णनग्हियाए पुढवीए ठाणं वा सेजं वा निसीहियं वा चं[त]एमाणे मवले ॥ ३६ ॥ एवं गसिणि-द्धाए पुरुवीए एवं ससरक्ष्याए पुरुवीए ॥ ३७ ॥ एवं आउद्दियाए चित्तमंताए तिलाए चित्तमंताए ढेलए कोलावासंनि वा दाहए जीवपर्दाद्रए सअंडे सपाणे सवीए सहरिए सउस्से सउद्गे सउत्तिंगे पणगदगम(हिय)टीए महाडासंताणए ततप्पगारं ठाणं वा निज्ञं वा निसीहियं वा चेएमाणे सबले॥ ३८॥ आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा खंधभोयणं वा तयःभोयणं वा पवालभोयणं वा पत्तभोयणं वा प्रप्फ-भोयणं वा फलमोयणं वा बीयभोयणं वा हरियमोयणं वा भंजमाणं सबले ॥ ३९ ॥ अंतो संवच्छरस्स दम दगळंबे करेमाणे सबलं ॥ ४० ॥ अंतो संवच्छरस्स दस माइद्राणाई करेमाणे सबले ॥ ४१ ॥ आउट्टियाए सीओदयवियङवरवारिय(पाणिणा)-हत्थेण वा मत्तेण वा द्विणा विवीए वा भायणेण वा असर्ण वा पाण ना खाइमं वा साइमं वा पडिगाहिता भंजमाणे सबले ॥ ४२ ॥ एए खत्रु ते थेरेहिं भगवंतेहिं एगवीसं मवला पण्णता ॥ ४३ ॥ ति-बेमि ॥ बिष्या दसा समसा ॥ २ ॥

नइया दसा

पुर्य मे आउसं! तेणं भगवया एयमक्खायं, इह खळु थेरेहिं भगवंतिहिं ते[ती]त्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ, कयर। खळ ताओ थेरेहिं भगवंतिहिं तेत्तीसं असायणाओ पण्णत्ताओ? इमाओ खळ ताओ थेरेहिं भगवंतिहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ? इमाओ खळ ताओ थेरेहिं भगवंतिहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ। तंत्रहा—सेहे रा[य]इणियस्स पुरओ गंता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ४४-४५ ॥ सेहे राइणियस्स सपक्खं गंता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ४० ॥ सेहे राइणियस्स पुरओ चिद्वित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ४० ॥ सेहे राइणियस्स सपक्खं चिद्विता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ४९ ॥ सेहे राइणियस्स आसकं (ठिचा) चिद्वित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५० ॥ सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५० ॥ सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५० ॥ सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५२ ॥ सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५२ ॥ सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५३ ॥ सेहे राइणिएणं सर्दि बहिया वियारमूर्मि [वा] निक्खंते समाणे तस्य सेहे

पुन्वतरागं आयमड् पच्छा राइणिए भवड आसायणा सेहस्स ॥ ५४ ॥ सेहे राइ-णिएणं मद्धि वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ सेहे पुञ्चत-रागं आलोएइ पच्छा राइणिए भवड आसावणा सेहस्स ॥ ५% ॥ केइ राइणियस्स पुरुवसंलवित्तए सिया, तं सेहे पुरुवतरागं आलवइ पच्छा राइणिए भवइ आसायणा सेहस्य ॥ ५६ ॥ सेहे राइणियस्य राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्य अजो ! के सु(ते)ता के जाग(रे)रा ? तत्थ मेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिस्रणेता भवड अग्यायणा सेहरून ॥ ५.७ ॥ यहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा माइमं वा पिड-गाहिता तं पु[व्व]व्वामेव मेहतरागस्य आलोएड पच्छा राइणियस्स भवड आसा-यणा सेहस्स ॥ '५८ ॥ सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहिता तं पुन्वामेव सेहतरागस्स उवदंसेइ पच्छा राइणियस्स भवद् आयायणा सेहस्स ॥ ५९ ॥ सेहे अनणं वा ... पिंडिगाहिना तं पुट्यामेव सेहतरागं उविणमंतेह पच्छा राइणि[ए]यं भवड आसायणा सेहस्स ॥ ६० ॥ सेह्रे राइणिएण सद्धि असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहिता तं राइणियं अणापुच्छिता जस्स जस्य इन्छइ तस्य तस्य खद्धं [खंधं] २ नं दलयइ आसायणा सेहस्य ॥ ६१ ॥ सेहे असणं वा ४ पडिगाहिला राइणिएणं सर्दि भुंजमाणे तत्य सेहे खदं २ डागं डागं उसदं उसदं रसियं रिपयं मणुनं मणुनं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्लं लुक्लं आहारिता भवइ आसायणा सेहस्त ॥ ६२ ॥ सेहे राहणियस्स बाहर(आलब)माणस्स अपडिसुणिता भवड आसायणा सेहस्स ॥ ६३ ॥ सेहे राह-णियस्स वाहरमाणस्स तत्य गए चेव पिहसुणिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६४॥ सेटे गइणियस्स किंति-वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६५॥ सेहे राइणियं तुमंति-वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६६ ॥ सेहे राइणियं खदं खदं वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६७ ॥ सेहे राइणियं तजाएणं [२] पडिहणिता भवइ आसा-यणा सेहरूस ॥ ६८ ॥ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवड् आसायणा सेहस्स ॥ ६९ ॥ सेहे राष्ट्रणियस्स कहं कहेमाणस्य णो सुमरसीति वता भवड़ आमायणा सेहस्स ॥ ७० ॥ सेहे राइनियस्स कहं कहेमाणस्स गो समणसे भवड़ आसायणा सेहस्स ॥ ७९ ॥ सेहे राहणियस्स कई कहेमाणस्स परिसं मेशा भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७२ ॥ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अधिक-दिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७३ ॥ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुद्धियाए अभिनाए अवुच्छिनाए अवोगवाए दो(दु)नंपि तनंपि तमेव कहं कहिला अवह आसायणा सेहस्स ॥ ७४ ॥ सेहे राहणियस्स सिजासंथारगं पाएणं संघटिता हृत्येण अणणुताविता (अणणु(ण्णवे)वित्ता) गच्छइ भवइ आसा-यणा सेहस्स ॥ ७५ ॥ सेहे राइणियस्स सिजासंयारए विद्विता वा निसीइता वा तुर्यादिता वा भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७५ ॥ सेहे राइणियस्म उच्चासणंसि वा समासणंसि वा विद्विता वा निसीइता वा तुर्यदिता वा भवइ आयायणा सेहस्स ॥ ७७ ॥ एयाओ खळु ताओ येरेहिं भगवंतिहिं तेतीसं आसायणाओ पण्णताओ ॥ ७८ ॥ ति-वेमि ॥ तह्या दसा समसा ॥ ३ ॥

चउत्था दसा

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्सायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्टविहा गणिसंपया पण्णता, कयरा खळ अद्भविहा गणिसंपया पण्णता? इसा खळ अद्भविहा गणिसंपया वण्णता । तंजहा-आयारसंपया १, सुयसंपया २, सरीरसंपया ३, वयणसंपया ४, वायणासंपया ५, मइसंपया ६, पक्षोगसंपया ७, संगहपारचा(नाम) अद्रमा ८। से किंतं आयारसंपया ? आयारसंपया चढव्विहा पण्णता । तंजहा-संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवद्, असंपगहियभप्पा, अणिययवित्ती, वृहसीले यावि भवद् । से तं आयारसंपया ॥ ७९ ॥ से किं तं सुयसंपया ? सुयसंपया चडिवहा पण्णाना । तंजहा-बहुसु(ते)ह बावि भवइ, परिनियसुए यावि भवइ, विनित्तसुए यावि भवइ, घोसविसुद्धिकारए यावि भवड़ । से तं सुथसंपया ॥ ८० ॥ से कि तं सरीरसंपया ? सरीरसंपया चरुव्विहा पण्णता। तंत्रहा-आरोहपरिणाहसंपन्ने यावि भवह, अणोतप्प-सरीरे, थिरसंघयणे. बहुपडिपुण्णिदिए यानि भवइ । से तं सरीरसंपया ॥ ८९ ॥ से किं तं वयणसंपद्या ? वयणसंपद्या चडिवहा पण्णता। तंजहा-आदेखवयणे यावि भवर, महर्वयणे यावि भवर, अणिरिसयवयणे यावि भवर, असंदिद्धवयणे यावि भवइ । से तं वयणसंपया ॥ ८२ ॥ से कि तं वायणासंपया ? वायणासंपया चडिव्यहा पण्णता । तंजहा-विजयं उद्दिसङ्, विजयं वाएइ, परिनिव्यावियं शाएइ, अत्थनिजा-वए यावि मवह । से तं वायणासंपया ॥ ८३ ॥ से कि तं मइसंपया ? मइसंपया चढिनहा पण्णता । तंजहा-उग्गहमङ्संपया, ईहामङ्संपया, अवायमङ्संपया, धारणामश्संपया । से कि तं उग्गहमश्संपया ? उग्गहमश्संपया खन्निहा पण्णता । तंजहा-सिप्पं उनिष्हेह, बहु उनिष्हेइ, बहुविहं उनिष्हेइ, धुवं उनिष्हेइ, अगिरिसयं उगिण्हेड, असंदिद्धं उगिण्हेड । से तं उग्गहमइसंपना । एवं. ईहासइवि । एवं अवान-महिव । से कि तं धारणामध्संपदा ? धारणामद्रसंपदा छन्निहा पण्णशा । तंजहा-बहु घरेड, बहुविहं धरेड, पोरामं धरेड, दुखरं धरेड, अणिस्सियं धरेड, असंदिदं धरेइ। से तं धारणामङ्संपया ॥ ८४ ॥ से कि तं प्रजोगमङ्संपया ! मकोगमङ्संपया

चउम्बिहा पण्पता । तंजहा-आयं विदाय वायं पउंजिता भवह, परिसं विदाय वायं परंजित्ता भवड़, खेतं विदाय वायं परंजित्ता भवड़, बत्य विदाय वायं परंजित्ता भवइ । से तं पञ्जोगमङ्संपया ॥ ८५ ॥ से किं तं संगहपरिन्ना नामं संपया ? संगह-परिशा नामं संपया चउव्विहा पण्णता । तंजहा-वासावासेसु खेतं पाँडेलेहिता भवड् बहुजणपाउरगयाए, बहुजणपाउरगयाए पाडिहारियपीढफलगसेजासंयारयं उगिण्हिता भवइ, कालेणं कार्ल समाणइता भवइ, श्रहागुरु संपूर्ता भवइ। से तं संगहपरिना नामं संपया ॥ ८६ ॥ आयरिओ अंतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता भवः निरणतं गच्छः । तंजहा-आयारविणएणं, सुयविणएणं, विक्खेवणाविणएणं, दोसनिन्धायणविणएणं १। ८७ ॥ से किं तं आयार्विणए ? आयारविणए चडिवहे पण्णते। तंजहा-संजमसा(स)मायारी यावि भवइ, तवसामायारी यावि भवइ, गणसा-मायारी यावि भवड एगळविष्ठारसामायारी यावि भवड । से तं आयारविषए ॥ ८८ ॥ से किं तं सुयविणए ? सुयविणए चउच्चिहे पण्णते । तंजहा-सुतं वाएइ, अत्यं बाएइ. हियं बाएइ, निस्सेसं वाएइ। से तं सुयविणए ॥ ८९ ॥ से कि तं विक्वे-वणाविणए ? विक्खेवणाविणए चउव्विहे पण्णते । तंजहा-अदिद्वधम्मं दिद्वपुव्य-गत्ताए विणएइता भवइ, दिद्रपृथ्वगं साहम्मियताए विणएइता भवइ, चुय-धम्माओ धम्मे ठावइता भवइ, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेमाए अणुगामिय-त्ताए अञ्चाहेता अवइ । से तं विक्खेबणाविणए ॥ ९० ॥ से कि तं दोसनिग्घायणा-विणए ? दोसनिम्बायणाविणए चडिवहे पण्णते । तंजहा-कुदस्स कोहविणएता भवइ, दुद्वस्त दोसं णिगिण्हिता भवइ, कंखियस्त कंखं छिंदिता भवइ, आयासुप्प-निहिए याबि भवड । से तं दोसनिग्घायणाविषए ॥ ९१ ॥ तस्सेवं गुणजाइयस्स अंतेबासिस्स इमा चडव्विहा विणयपिडवत्ती भवड । तंजहा-उवगरणउप्पायणया, साहिल्या, वण्णसंजलणया, भारपचोव्हणया ॥ ९२ ॥ से कि तं उवगरणउप्पाय-णया ? उथगरणउप्पायणया चलव्यिहा पण्णता । तंत्रहा-अणुप्पण्णाणं उवगरणाणं उप्पाइता भवइ, पोराणाणं उवगरणाणं सारकिखता संगोविता भवइ. परितं जाणिता प्रबुद्धिता भवह, अहाविहि संविमहत्ता भवह । से तं उवगरणउप्पायणया ॥ ९३ ॥ से कि तं साहित्स्या ? साहित्स्या चलव्यहा पण्णता । तंत्रहा-अणुलोमवद्रसहिए यावि सम्बद्, अणुळोमकायकिरियता, पडिस्तकायसंग्रासणया, सन्वत्येषु अपडि-होस्या । से तं साहित्वा ॥ ९४ ॥ से किं तं वण्णसंबलपया ? वण्णसंबलणया चडिवहा पण्णता । तंत्रहा—सहातवार्ण वण्णवाई भवद, अवण्णवाई पढिहमिता भवड्, बण्णवाई अधुबृहिता भवड्, आयमुब्रुसेवी याचि भवड् । से तं बण्णसंजलणवा

॥९५॥ से कि तं भारपचीरुहणया ? भारपचीरुहणया चउव्विहा पण्णता । तंजहा-असंगहियपरिजणसंगहिना भवइ. सेहं आयारगोयर-संगाहिना भवड, साहम्मियस्स गिलायमाणस्य अहाथामं वेयावचे अञ्मुद्धिना भवड्, साहम्मियाणं अहिगरणंसि उप्प-ण्णंसि तत्थ अणिस्सिओवस्सिए [वसित्तो] अपनत्वर्गगहिय]गाही मञ्झत्थभावभूए सम्मं ववहरमाणं तस्स अहिगरणस्स खमावणाए विजसमणयाए सयासमियं अब्भृद्विता भवड. कहं न साहम्मिया अप्पसहा अप्पसंत्रा अप्पकलहा अप्पकलाया अप्पतुमंतुमा संजमबद्दुला संवरबद्दुला समाहिबद्दुला अप्पमत्ता संजमेणं नवसा अप्पाणं भावेमाणाणं एवं च णं विहरेजा। से तं भारपचीरुहणया ॥ ९६ ॥ एसा खळु थेरेहिं भगवंतिहिं अद्वविहा गणिसंपया पण्णता ॥ ९०॥ ति-त्रेमि ॥ चउत्था दसा समसा ॥ ४॥

पंचमा दसा

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु बेरेहिं भगवंतिहें दस चित्तसमाहिठाणा पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहिं दस चित्तसमाहिठाणा पण्णता ? इमे खल ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्तसमाहिठाणा पण्णता। तंजहा-तेणं काटेणं तेणं समएणं वाणियगामे णयरे होत्या, एत्यं णयरवण्णको माणियन्यो। तस्स णं वाणियगामस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरन्छिमे दिसीभाए दृइपलासए णामं उजाणे होत्था, वण्णको । जियसन् राया, तस्स धारणी नामं देवी, एवं सब्वं समोसरणं भाषियव्यं जाव पुढवीसिलापदृए सामी समोसहै, परिसा निग्गया. धम्मो कहिओ. परिसा परिवाया ॥ ९८ ॥ अजो ! [इ]ति समणे भगवं महावीरे समणा निग्गंथा निग्गंथीओ य आसंतिता एवं वयासी-''इह खल्ल अजी ! निग्गं-बाण वा निगांबीण वा इरियासमियाणं भासासमियाणं एसणासमियाणं आयाण-भंडमत्त्रांनक्खेवणासमियाणं उचारपासवणखेलजळसिंघाणपारिठावणियासमियाणं मण-समियाणं व[वा]यसमियाणं कायसमियाणं मणग्रतीणं वायग्रतीणं कायग्रतीणं ग्रतिदि-याणं गुप्तबंभयारीणं आयद्वीणं आयहियाणं आयजोईणं आयपरक्रमाणं ससमाहि-पत्ताणं झियायमाणाणं इमाइं दस चित्तसमाहिठाणाई असमुप्पणपुष्टवाई समुप्प-जेजा। तंजहा-धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुक्वा समुप्पकेजा सक्वं धम्मं जाणिताए ॥ ९९ ॥ स्रुमिणदंसणे वा से असमुप्पणपुरुवे समुप्पजेखा अहातणं द्धमिणं पासित्तए ॥ १०० ॥ सण्जिजाइसरणेणं सण्जिणा(गे)णं वा से असमुप्पण्जपुढवे समुप्पजेजा (पुन्वमने) अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए ॥ १०१ ॥ देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुर्वे समुप्पजेजा दिवं देविच्चं देवजुई दिव्वं देवाणुमार्व पासित्तर ॥ १०२ ॥ ओहिजाणे वा से असमप्पनपुरुवे समुप्यनेजा खोहिजा होगं जानित्तर

॥ १०३ ॥ ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपृथ्वे समुप्पजेजा ओहिणा लोयं पास-भए ॥ १०४ ॥ मणपजनगाणे वा में असमुप्पण्णपृष्टवे समुप्पजेजा अंतो मणुस्स-क्लितेसु अष्ट्राइजेसु दीयसमुद्देसु सण्णीणं पंचिदियाणं पजनगाणं सणीगए भावे जाणितए ॥ १०५ ॥ फेबलणाणे वा से अससुप्पणापुच्ये समुप्पञ्जेजा केब(लं)लकप्पं लो(गं)यालोयं जाणिताए ॥ १०६ ॥ केवलदंगणे वा से असमुप्पण्णपुर्वे समुप्पजेजा केवलकप्पं लोयालोयं पासिनए ॥ १०७॥ केव(लि)लमर(णं)णे वा से असमुप्पण्णपुरुवे समुप्पजे(मरि)जा सव्बद्धक्खपही[हा]णाए ॥ १०८॥ ओयं चित्तं समादाय, झाणं स-मुप्पज्ञइ। धम्मे ठिओ अविमणो. निब्वाणमभिगच्छह ॥ १०९॥ ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयंसि जायइ । अप्पणो उत्तमं ठाणं, स्पिणणाणेण जाणइ॥ ११०॥ अहानचं तु मुमिणं, खिप्पं पासेड संबुद्धे । सन्तं वा ओहं तरह, दुक्खदोय विमुखह ॥ १११ ॥ पंताई भयमाणस्स, विवित्तं सयणासणं । अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेति ताइणो ॥ ११२ ॥ सञ्बकामविरत्तस्स, खमणो भयमेरवं । तओ से ओही भवइ, संजयस्स तबस्तिणो ॥ ११३ ॥ तबसा अबह इछेस्सस्स, वंसणं परिसुज्झइ । उड्डं अहे तिरियं च, सन्त्रं समणुपस्सइ॥ १९४॥ दुसमाहियळेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खणो। सन्त्रओ विप्पमुक्कस्स. आया जाणाइ पज्जवे ॥ ११५ ॥ जया से णाणावरणं, सन्त्रं होड खरं गयं। तुओ लोगमलोगं च. जिणो जाणइ केवली ॥ ११६ ॥ जया से दरिसणावरणं, सब्बं होइ खर्य गर्य। तश्रो लोगमलोगं च, जिणो पासइ केवली ।। १९७ ।। पडिमाए विद्युद्धाए, मोहणिजं सर्य ग[यं]ए । असेसं लोगमलोगं च पासेइ सुसमाहिए ॥ ११८ ॥ जहा मत्थय-सुईए, हंताए हम्मइ तले। एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिजे खर्म गए ॥ ११९ ॥ सेणावइंसि निहए, जहा सेणा पणस्यर । एवं कम्माणि णस्तंति, मोहणिजे खर्य गए ॥ १२० ॥ धूमहीणो जहा अग्गी, खीयइ से निरिंघणे । एवं कम्माणि खीयंति . मोहणिजे खर्य गए ॥ १२१ ॥ सुक्रमूळे जहां स्वच्छे, सिंचमाणे ण रोहह। एवं कम्मा ण रोहंति, मोहणिजे खयं गए ॥ १२२ ॥ जहा दङ्काणं बीयाणं, न जायंति पुणंकुरा। कम्मवीएस दङ्केस, न जायंति भवंकुरा ॥ १२३ ॥ चिका ओरालियं थोंदिं. नामगो(तं)यं च केवली । आउर्य वैगणिजं च, छित्ता भवइ नीरए ॥ १२४॥ एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो । सेणिसुद्भिवागम्म, आया सुद्धि(सोहि)सुवागइ ॥ १२५ ॥ ति-बेमि ॥ पंचमा दसा समसा ॥ ५॥

ण्डा दसा

ध्यं मे आउसे! तेणं मगवया महावीरेणं एक्नक्खायं, इह खळ बेरेहि मगवंतेहि

ए(इ)कारस उवासगपिडमाओ पण्णताओ, कयरा खळू ताओ थेरेहिं भगवंतिहिं एकारस उपासगपिडमाओ पण्णताओ ? इमाओ खल ताओ येरेहिं भगवंतेहिं एकारस उवास-गपडिमाओ पण्णताओ। तंजही-अकिरियवाई यावि भवड, नाहियवाई, नाहियपण्णे, नाहियदिद्वी, जो सम्मावार्ड, जो जितियावार्ड, ज संति परलोगवार्ड, जिल्ला इहलोए, णत्यि परस्त्रेए, णत्यि माया, णत्य पिया, णत्य अरिहंता, णत्य चक्कवटी, णत्य बलदेवा. णत्य वासुदेदा. णत्यि णिरया. णत्यि णेरइया, णत्यि सुकडदुकडाणं फर्लाव-तिविसेसो. जो सुचिज्जा कम्मा धुचिज्जा फला भवंति. जो दुचिज्जा कम्मा दुचिज्जा फला भवंति, अफले कहाणपावए, जो फ्बायंति जीवा, जात्थ जिरए, जात्थ सिद्धी, से एवंबाई एवंपण्णे एवंविद्री एवंछंदरागमङ्गिविद्रे यावि भवड् ॥ १२६ ॥ से भवड् महिन्छे महारं में महापरिगाहे अहम्मिए अहम्माणुए अहम्मसेवी अहम्मिद्रे अहम्मन् रागी अहम्मपलोई अहम्मजीवी अहम्मपलजाणे अहम्मसीलसमदायारे अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे विरहुइ ॥ १२७॥ "हण छिंद भिंद" विकत्तए लोहियपाणी चंडे रहे खुदे असमिक्लियकारी साहस्सिए उक्कंचणबंचणमाइनियदिकृद०साइस्पञ्जागबहुले दुस्सीले दुप्परिचए दुचरिए दुरणुणेए दुव्वए दुप्पडियाणंदे निस्सीले निव्वए निस्गुणे निम्मेरं निप्पन्नक्खाणपोसहोववासे असाह ॥ १२८ ॥ सञ्जाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावजीवाए जाव सव्वाओ परिग्गहाओ, एवं जाव सव्याओ कोहाओ सन्वाओं माणाओं सन्वाओं मायाओं सन्वाओं लोभाओं पेजाओं टोसाओं कलहाओं अञ्चवखाणाओ पेसण्णपरपरिवायाओ अरहरइमायामोसाओ मिच्छार्दसणसङ्खाओ अप्पडिविर्या जावजीवाए ॥ १२९ ॥ सब्वाओ कसायदंतकद्वण्हाणमहणविछेवण-सहफरिसरसस्वगंधमहाऽलंकाराओ अप्पडिविरया जावजीवाए, सन्वाओ सग-डरह जाणज्ञगनिक्षिषिक्रिसीयासंदमाणियासयणासणजाणवाहणभोयणपवित्यरविहीओ अप्पडिविरया जावजीवाए ॥ १३० ॥ असमिक्खियकारी सम्बाखो आसहत्विगोग-हिसाओ गवेलगदासदासीकम्मकरपोरुस्साओ अप्पडिविरया जावजीवाए. सव्वाओ कयविक्तयमासद्धमासस्वगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावजीवाए, सव्वाओ हिरणा-सवणाधणधन्तमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पृष्टिविरया जावजीवाए, सन्वाको कृडतुलकुडमाणाओ अप्पडिविरया जावजीवाए, सम्बाओ आरंभसमारंभाओ अप्प-डिविरया जानजीनाए. सञ्चाखो पर्यणपरानणाओ अप्पडिविरमा जानजीनाए, सञ्जाओ करणकरावणाओं अप्पडिविरया जावजीबाए, सम्बाको कुरुणपिरुणाओ

९ पासह एकारसमं समवायं । २ विसेसो सूयगडविद्यस्यवकांभविद्यऽज्याग-पडमिकरियष्ट्राणऽहम्मपक्ताओ णायव्यो ।

तजणतालणाओ वहवंघपरिकिलेमाओ अप्पडिविर्या जावजीवाए, जेयावण्णे तहप्प-गारा सावजा अबोहिया कम्मा कर्जित परपाणपरियावणक[डा]रा कर्जित तओवि य अप्पिडिविरया जाबजीवाए ॥ १३१ ॥ से जहानामए-केइ पुरिसे कलममस्रतिल-मुग्गमासनिष्फाववुक्तत्वभालिसंदगजवजवा एवमाइएहि अयते कृरे मिच्छादंडं पर्ड-जह एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवहगलावयक्वोयकविजलियमहिसबराह-गाहगोहकुम्मसरिसवाइएहिं अयत्ते कृरे मिच्छादंडं परंजइ ॥ १३२ ॥ जावि य से बाहिरिया परिसा भवड, तंजहा-दासेड वा पेसेड वा भिताएइ वा भाइक्षेड वा कम्म-करेड़ वा मोगपुरिसेइ वा तेसिंपि य णं अण्णयरगंसि अहालहुयंसि अवराहंसि सय-मेव गरुयं दंडं वरोड़, तंजहा-इमं दंडेह, इमं मुंडेह, इमं तजेह. इमं तालेह, इमं अंदुयबंघणं करेह, इमं नियलबंघणं करेह, इमं हडिबंघणं करेह, इमं चारगबंघणं करेह, इमं नियलजुयलसंकोडियमोडियं करेह, इमं हत्यछिन्नयं करेह, इमं पायछि-न्नयं करेह, इमं कन्नछिन्नयं करेह, इमं नक्तछिन्नयं करेह, इमं उद्वछिन्नयं करेह, इमं सीसछित्रयं करेह, इसं महछित्रयं करेह, इसं वेयछित्रयं करेह, इसं हियउप्पाडियं करेह, एवं नयण-वसण-दंसण-वयण-जिब्(भु)भ-उप्पाडियं करेह, इमं उल्लंबियं करेह, इमं घासियं॰, इमं घोलियं॰, इमं स्ला[का(पो)यत]इयं॰, इमं स्लामिशं॰, इमं सारवित्यं करेह, इमं दब्भवित्यं करेह, इमं सीहपुच्छ्यं करेह, इमं वसभपुच्छ्यं करेह, इसं दवग्गिद्हुयं करेह, इसं काक(णि)णीमंसखावियं करेह, इसं मत्तपाण-निरुद्धयं करेह, जावजीवबंधणं करेह, इमं अन्नयरेणं अस्रभकुमारेणं मारेह ॥ १३३ ॥ जावि य से अध्भितरिया परिसा भवइ, तंजहा-मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा भगिणीइ वा भजाइ वा धूयाइ वा सुण्हाइ वा तेसिपि य णं अण्णयरंसि अहाल-हुयंति अवराहंति सयमेव गरुयं दंई वतेइ, तंजहा-सीओदगवियहंति कायं बोलिता भवड, उत्तिणोदगवियडेण कार्य सिवित्ता भवड, अगणिकाएण कार्य उड्डहिना भवड, जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण वा कसेण वा छिवाडीए वा लयाए वा पासाई उद्दालिता भवड, दंखेण वा अद्वीण वा सुद्वीण वा केन्द्रएण वा कवालेण वा कार्य आउदिता मन्द्र, तहप्पगारे पुरिसञाए संवसमाणे दुम्मणा भवंति, तहप्पगारे पुरिसजाए विष्यवसमाणे सुमणा भवंति ॥ १३४ ॥ तहप्यगारे पुरिसजाए दंडमासी दंडगरुए दंडपुरेक्खडे अहिए अस्ति लोयंसि अहिए परेसि लोयंसि । ते दुक्खेंति सोयंसि एवं इस्तेति तिप्पंति पिट्टेंति परितप्पंति, ते दुक्खणसीमणझ्र्णतिप्पणपिष्टणपरितप्पण-बहुवंघपरिकिळेसाओ अप्पिडिविरया भवंति ॥ १३५ ॥ एवामेव ते इत्यिकामभोगेहिं मुख्यिया गिद्धा गढिया अञ्जोनवसा जान नासाई चउपच[मा]छदसमाणि ना

अप्पतरो वा भुज्जनरो वा कालं भुंजिता कामभोगाइं पसेवित्तावे राययणाई संचिणित्ता बहुयं पावाई कम्माई उसन्नं संभारकडेण कम्मुणा से जहानामए-अयगोलेड वा सेल-गोलेइ वा उदर्यसि पिक्सित समाण उदगतलमञ्चहता अहे धर(णि)णीयल पडद्वाणे भवड़ एवामेब तहप्पगारे पुरिसजाए वज्जबहुछ धुत्तबहुछ पंकबहुछ वेरवहुरे दंभ-नियडिसाइबहुळे आसायणाबहुळे अयसबहुले अप्पत्तियबहुळे उस्सर्णं तरापाणघाई कालमारी कार्ल किचा धरणीयलमइवडना अहे नरगधरणीयले पइद्वाणे भवड ॥ १३६ ॥ ते णं नरगा अंतो वहा वाहिं चर्डसा अहं खुरप्पसंठाणसंठिया निर्मध-यारतमसा ववगयगहुर्वदस्रणक्वतजोइसप्पहा मेदवसामंसरहिरपृयपङ्गलिक्वकः लित्ताणुलेवणतला असु(ई)ह विविदीसा परमदुव्भिगंवा काउयअगणिवण्णामा कक्खड-फामा दुरहियासा अनुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणा, नो चेव णं नरए नेरइया निद्दार्थित वा पयलायंति वा सुई वा रहे वा थिई वा मई वा उवलमंति, ते णं तस्य उजलं विउलं पगाढं कक्सं कडुयं चंडं दुक्सं दुगां तिक्खं तिच्यं दुक्ति।रहियासं नरएस नेरह्या नरववेयणं प्रमुख्यानमाणा विहरंति ॥ १३७ ॥ से जहानागए-स्वन्दो सिया पन्ययमे जाए मूलछिन्ने अमी गरुए जओ निन्नं जओ हुमां जओ विसमं तओ पवड़इ एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं अम्माओ जम्मं माराओ मारं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिनेरइए कण्हपिक्खए आगमे-स्साणं दुःहमबोहिए यावि भवइ । से तं अकिरियावाई [यावि भवइ] ॥ १३८ ॥ से कि तं किरियावाई [यावि भवद]? तंजहा-आहियावाई, आहियपण्णे, आहिय-दिही, सम्मावाई, नियावाई, संनि परलोगबाई, आंत्य इहलोगे, अत्य परलोगे, अत्य माया. अत्य पिया, अत्य अरिहंता, अत्य चक्कदरी, अत्य बलंदवा, अत्य वासुदेवा, अत्य सुकडदुकडाणं कम्माणं फलवित्तिविसेसे. सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला भवंति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला भवंति, सफले कलाणपावए, पचार्यति जीवा, अत्थ नेरइया जाव अत्थि देवा, अत्थि सिद्धी, से एवंबाई एवं-पक्षे एवंदिद्वीछंदरागमइनिविद्वे यावि भवड़ । से भवड़ महिच्छे जाव उत्तरगामिए नेरइए मुक्क्पक्खिए आगमेस्साणं मुलमबोहिए यावि भवड । से तं किरियाबाई ॥ १३९ ॥ सव्वधम्मर्के यावि भवड, तस्स णं बहुई सीलवस्त्रणवेरमणपचन्साण-पोसहोववासाई नो सम्मं पद्मविद्युव्वाई भवंति, एवं द्रवासगस्स पदारा दंसण-पडिमा ॥ १४० ॥ अहावरा दोखा उदासगपडिमा सम्बंधमारहं यावि मवह, तस्स णं बहुई सीलवयगुणवेरमणपचक्खाणपोसहोवबासाई सम्मं पहुवियाई भवंति, से णं सामाइयं देसावगासियं नी सम्मं अणुपालिता भवड , दोखा उवासग-

परिमा ॥ १४२-१ ॥ अहावरा तथा उवासगपडिमा-सन्वधम्मरुई यावि भवड्, तस्स णं बहुइं सीलवयगुणवेरमणपचक्काणपोमहोववासाइं सम्मं पर्हावयाइं मवंति, से णं सामाइयं देसावगासियं सम्मं अणुपालिता भवड़. मे णं चउ(इ)दसि-अद्वमित्र हिद्दपुण्णमासिणीसु परिपुण्णं पोसहोववासं नो सम्मं अणुपालिता भवह, तचा उवासगपडिमा ॥१४२-२॥ अहावरा चउर्दाश्ची]था उवासगपडिमा-सन्बधम्मरुई यात्रि भव्ड, तस्स णं बहुई सीलवयगुणवरमणपञ्चकसाणपोसहोववा-माई मम्मं पहुवियाई भवंति, से णं मामाइयं देसावगासियं सम्मं अणुपालिना भवड, से णं चउर्सिअद्वसिउद्दिद्रपुण्णमासिणीसु पिटपुण्णं पोमहं सम्मं अणुपालिला भवर, से णं एगराइयं उनासगपिंदमं नो सम्मं अणुपालिता भवइ, खउत्था उवासग-पिडमा ॥ १४३ ॥ अहावरा पंचमा उचासगपिडमा-सञ्चथम्मरई यावि भवड्, तस्य णं बहूर्ड् सीलवय ...जाव सम्मे अणुपालिता भवड्, से णं मामाइयं ... तहेन, से णं चउइसि तहेन, से णं एगराइयं उवासगपिकमं सम्मं अणुपालिता भवइ, से णं असिणाणए वियडभोई मउलिकडे दिया बंभगारी रितापरिमाणकडे, से ण एसाम्बे[ण]णं बिहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मा[सं]से विहरह, पंचमा उवासगपडिमा ॥ १४४॥ अहावरा छ ही द्रा उवासगपडिमा-सन्वथममर्र्ड् यावि भवड जाव से णं एगराइयं उवा-सगपडिमं ॰ अणुपालिसा भवड, से णं असिणाणए वियडमोई मडलिकडे दिया वा राओं वा वंसथारी, सचित्ताहारे से अपरिण्णाए भवड़, से णं एयास्वेणं विहारेणं विहर-माणे जहन्नेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा [जाब] उक्कोसेणं छमासे विहरेजा, छट्टा उवासगपडिमा ॥ १४५ ॥ भहावरा सत्तमा उवासगपडिमा-सन्वधमा-रुई यानि भवइ जान राओवरार्य वा यंगयारी, सन्तिताहारे से परिष्णाए भवइ, से र्ण एयास्वेणं विहारेणं विहरमाणे जहनेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्रोसेणं सत्त मासे विहरेजा, से तं सत्तमा उवासगपडिमा ॥ १४६॥ अहावरा अट्टमा उवास्तगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि मक्द जाव राओवरावं बंभयारी, सचित्ताहारे से परिष्णाए भवड़, आरंभे से परिष्णाए भवड़, पेसारेभे से अपरिण्णाए भवड, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे [जाव] जहचेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोरोणं अह मासे विहरेजा, से तं अदुमा उवासगपिटमा ॥ १४७ ॥ अहावरा नयमा उवासगपहिमा-सव्वधनमर्वः यावि भवः जाव राओवरार्य वंभयारी, सचिताहारे से परिष्णाए भवड़, आरंभे से परिष्णाए भवड़, चेसारेमे से परिण्णाए सचइ, उद्दिक्षमत्ता से अपरिण्णाए समझ, से ण एसारुनेणं WE STATE

विहारेणं विहरमाणे जहनेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्तोरेणं नव मासे विहरेजा, से तं नवमा उवासगपडिमा ॥ १४८ ॥ अहावरा द्समा उवा-सगपडिमा-सन्वधम्मरुई यावि भवइ जान उद्दिष्टभत्ते से परिण्णाए भवइ, से णं खुरमुंडए वा सिद्धाधारए वा, तस्य णं आमद्भरम समाभद्भस्य वा कर्णति दुवे भासाओ भासित्तए, जहा-जाणं वा जाणं अजाणं वा भो जाणं, से णं एयास्वेणं विहारेणं विहरमाणे जहनेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं दस माने विहरेजा, से तं दसमा उवासगपडिमा ॥ १४८ ॥ अहावरा प[काद]कारसमा उवा-स्वगपढिमा-मञ्बद्धमारुई यावि भवइ जाव उद्दिवन्ते मे परिण्णाए भवइ, से णं खुरमुंडए वा छत्तसिरए वा गहियायारभंडगनेवत्थे, जारिसे समणाणं निग्गंधाणं धम्मे एणाते । तंत्रहा-यम्मं काएण फासंमाणे पालेमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दहूण तसे पाणे उद्धरु पाए री(रि)एजा, साहरू पाए रीएजा, तिरिच्छं वा पायं करू रीएजा, सड परक्स जा,] संजयामेव परक्सेजा. नो उज्जयं गरक्केजा, केवलं से भायार पेजवंधणे अवोच्छिने भवड्, एवं से करपड नायविहिं वड्सए॥ १५०॥ तत्थ से पुरुवागमणेणं पुरुवाउने चानलोदणे पच्छाउने भिलिंगसुचे, कणाइ से चानलोदणे पहिंच गोगाहिताए, नो से कपड भिलिंगमुबे पांडेगगहिताए । नत्य [णं] से पुन्वागम-णेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूचे पच्छाउत्ते चाटलोदणे, कपद से भिलिंगसूचे पिड्रगाहि-त्तए, नो से कप्पद चाउछोदण पडिग्गाहित्तए। तत्थ से पुट्यागमणेणं दोवि पुक्वाउत्ताई कर्प्यंत दोवि पिडमगाहिनए । तत्थ से पच्छागमणेणं दोबि पच्छा-उत्ताई णो से कप्पंति दोवि पडिमगाहिनए । जे से तत्थ पुन्वागमणेणं पुन्वाउत्ते से कप्पइ पडिस्गाहिताए । जे से तत्व पुरुवागमणेणं पच्छाउते से नो कप्पइ पडि-गगहिनए ॥ १५१ ॥ तस्स णं गाहाबङ्कुलं पिंडबायपडियाए अणुप्पविद्वस्स कप्पड एवं वडनए ''समणोवासगस्स पिडमापिडवन्नस्स भिक्खं दलयह'' तं चेव एयारुवेणं विहारेणं विहरमाणे णं केंद्र पासिता वडजा-"केंद्र आउसी! तुमं बत्तव्वं सिया" "समणोवासए पडिमापडिवनए अहमंसीति" वत्तव्वं सिया, से णं एयास्वेणं विहा-रेणं विहरमाणे जहनेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं एकारस मासे विहरेजा, प्(गा)कारसमा उवासगपडिमा ॥ १५२ ॥ एयाओ खलु ताओ बेरेहिं भगवंतिहिं एकारस उवासगपडिमाओ पण्णताओ ॥ १५३ ॥ ति-वेमि ॥ छ(ड्री)ड्रा दसा समता॥६॥

सत्त[मी]मा दसा

मुयं में आउसे! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु धेरेहिं भगवंतेहिं बारसः

भिक्खुपिडमाओ पण्णताओ, कयरा खलु ताओ धेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खु-पिंडमाओ पण्णताओ ? इमाओ खळ नाओ येरेहिं भगवंतिहिं बारम भिक्खपिंडमाओ पण्णताओ । तंजहा-मासिया मिक्खुपडिमा १, दोमासिया भिक्खुपडिमा २, तिमासिया भिक्खपिंडमा ३, व(१)उ(म्)मासिया भिक्खपिंडमा ४, पंचमासिया भिक्खुपडिमा ५, छ(म्)मासिया भिक्खुपडिमा ६, सत्तमासिया भिक्खुपडिमा ७, पढमा सत्तराइंदिया भिक्खपडिमा ८, दोचा सत्तराइंदिया भिक्खपडिमा ९, तचा सत्तराई-दिया भिक्खपिडमा १०, अहोरा(इ)इंदिया भिक्खपिडमा ११, एगराइया भिक्ख-परिमा १२॥ १५४॥ मासियं णं भिक्खपरिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निर्व वोसहकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसम्मा उवयजंति, तंजहा-दिव्या वा, माणुमा वा, तिरिक्स जोणिया वा. ते उप्पण्णे सम्मं (काएणं) सहइ खमइ तितिक्सइ अहियासेइ ॥ १५५ ॥ मासियं णं भिक्सप्रिकं पडिवनस्स अणगारस्स कप्पट एगा दत्ती भोयणस्य पडिगाहिताए एगा पाणगस्य, अण्णायउष्कं सुद्धोवहडं निज्जृहित्ता बहवे दु[र]पयच उप्पयसमणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा, कप्पइ से एगस्स भूजमाणस्स पडिगाहितए, जो दुण्हं जो तिण्हं जो चउण्हं जो पंचण्हं, जो गुब्बिजीए, जो बालवच्छाए, णो दारगं पेजमाणीए, णो अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहद्व दलमाणीए, णो बाबिहि एलुयस्य दोवि पाए साइट्ट दलमाणीए, एगं पायं अंतो किचा एगं पायं बाहिं किया एलुगं विक्खंभइता एवं दलगड एवं से कप्पड पडिगाहिताए. एवं से नो दलबइ एवं से नो कप्पइ पडिगाहित्तए ॥ १५६ ॥ मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवनस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पचताः । तंजहा-आ[दि]हमे म[ज्ह्ने]ज्ज्ञिमे वरिमे, आइमे वरेजा, नो मज्हे वरेजा, नो वरिमे वरेजा १, मज्हे वरेजा, नो आइमे नरेजा. नो नरिमे चरेजा २, चरिमे चरेजा, नो आइमे चरेजा, नो मज्जिमे चरेजा ३ ॥ १५७ ॥ मासियं णं भिक्खपढिमं पहिवनस्य अणगारस्य छिबहा गो-यर-बरिया पन्नता । तंजहा-पेला अद्भपेला, गोम्नतिया, पतंगवीहिया, संबुकावटा, गन्तु(गंतु)पत्रागया ॥ १५८ ॥ मासियं णं भिक्खपहिमं पहिवनस्य अणगारस्स जत्थ णं केइ जाणइ कप्पइ से तत्थ एगरा(इं)इयं वसिनाए, जत्थ णं केइ न जाणह कप्पद्द से तत्थ एगरायं वा दुरायं वा वसित्तए, नो से कप्पद्द एग-रायाओं वा दुरायाओं वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओं वा दुरायाओं वा परं वसइ से संतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १५९ ॥ मासियं णं भिक्खपिडमं पडि-वशस्ति कपाइ चतारि भाराओं भारिताए, तंजहा-जायणी, पुच्छणी, अगुण्यवणी,

१ वण्णणविसेसमेगासि अणतच्याणमगवर्षमंतमबाईहिंतो जाणियव्यं ।

पुद्रस्य वागरणी ॥ १६० ॥ मासियं णं भिक्खपिडमं पिडवसस्य • कप्पइ तजो उवस्पया पडिलेहिनाए. तंजहा-अहे आरामगिहंसि वा. अहे वियडगिहंसि वा. अहे रुक्खमूलगिहंसि वा । मासियं णं भिक्खपिडमं पडिवन्नस्स० कप्पइ तओ उबत्सया अणुण्णवेत्तए, तं०-अहे आरामगिहं, अहे वियहगिहं, अहे रत्नखमूलगिहं। मासिबं णं भिक्खुपिडमं पिडविन्नस्य॰ कप्पइ तक्षो उवस्सया उवाइ(णावि)ांणसए, तं चेव ॥ १६१ ॥ मासियं णं मिक्खुपिडमं पहिवन्नरम० कप्पइ तओ संधारगा पिडलेहि-त्तर, तंजहा-पृद्वीसिलं वा. कद्वसिलं वा. अहासंथडमेव । मासियं णं भिक्खपिडमं पहिबन्नस्य कप्पइ तओ संबारगा अणुण्णवेनए, नं चेव । मासियं णं भिक्खपिडमं पडिवनस्त कम्पड तओ संयारगा उवाइणित्तए, तं चेव ॥ १६२ ॥ मासियं णं भिक्खपुरिमं पडिवन्नस्म॰ इत्थी वा पुरिसे वा उवस्सयं उवागच्छेजा. से इतथी वा पुरिसे वा नो से कपड़ नं पड़च निक्लमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १६३ ॥ मासियं णं भिक्खुपहिमं पहिकारस० केंद्र उवस्मयं अगणिकाएणं झामेजा नो से कप्पइ तं पहुच निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ बाहाए गहा[ए]य आगसेजा नो से कप्पइ तं अवलंबित्तए वा पलंबित्तए वा, कप्पइ से अहारियं रीइ[रिय]तए॥ १६४॥ मासियं णं भिक्नुपडिमं पडिकास्स॰ पायंसि खाणु वा कंटए वा हीरए वा सक्ररए वा अणुर्पावसेजा नो से कप्पड़ नीहरिनए वा विसोहिनए वा, कप्पड़ से अहारियं रीइता ॥ १६५ ॥ मासियं णं भिक्खपहिमं पहिवजस्स जाब अच्छिसि पाणा-णिणे वा बी याणिए वा रए वा परियावजेजा, नो से कप्पइ नीहरित्तए वा विसोहि-त्तए वा. कपड से अहारियं रीइतए ॥ १६६॥ मासियं णं भिक्खपढिमं पडिकास्स० जत्येव स्रिए अत्यमंजा तत्य एव जलं(मुक्कालासयं)सि वा थलंसि वा दुर्गासे वा निश्नंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गङ्गाए वा दरीए वा कप्पइ से तं रयणी तत्थेव उवायणाविताए नो से कप्पड प्रथमिव गमिताए, कप्पड़ से कई पाउप्पमाए र्यणीए जाव जलते पाईणामिमहस्स वा दाहिणामिमहस्स वा पढीणामिमहस्स वा उत्तराभिमहस्स वा अहारियं रीइत्तए ॥ १६७ ॥ मासियं णं भिन्छपडिमं पडिकणस्स णो से ऋपइ अणंतरिहयाए पुढवीए निद्वाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, केवली वृया आयाण-मेर्य, से तत्थ निहायमाणे वा पगलायमाणे वा हत्थेहिं भूमिं परामसेजा. अहाविहि-मेव ठाणं ठाइताए णिक्समिताए बा. उबारपासवर्णणं उप्पा व्वाहिजा नो से सम्पद् उगिण्हित्तए [वा], कप्पइ से पुन्वपिडकेहिए यंडिके उन्नारपासवणं परिठितत्तर, तमेव उबस्सयं आगम्म अहाविहि ठाणं ठाइसए ॥ १६८ ॥ मासियं णं भिक्ख-पडिमें पडिवजस्स॰ नो कृष्ट ससरक्खेणं काएणं माहाक्ष्यकं भताए वा पाणाए

बा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, अह पुण एवं जाणेजा ससरक्खे से अत्ताए वा जलताए वा मलताए वा पंकताए वा विद्धत्ये से कृपड़ गाहावडकुलं भताए वा पाणाए वा निक्खिमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १६९ ॥ मासियं णं भिक्खुपिडमं पडिवभस्स॰ नो कपड सीओदगवियदेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलिनए वा प्रयोहत्तए वा, णण्णत्य केवालेवेण वा सत्तमासेण वा ॥ १७० ॥ मासियं णं भिक्खपडिमं पहिवसस्स० नो कप्पड़ आसस्य वा इत्यिस्य वा गोणस्य वा महिमस्य वा कोलद्वणगस्य वा मुणस्म वा वग्यस्स वा दुदस्स वा आवयमाणस्म प्यमवि पन्नोसक्तित्तए, अदुद्वस्स आवयमाणस्य कप्पड ज्यमित्तं पश्चोसिक्कत्तरः ॥ १७१ ॥ मासियं णं भिक्खपिडिमं पडिवशस्म नो कप्पइ छायाओ सीयंति उण्हं इयत्तए, उण्हाओ उण्हंति छायं इयनए । जं जरथ जया सिया तं तत्थ तथा अहियासए ॥ १७२ ॥ एवं सहस् मासियं भिक्खपडिमं अहासतं अहाकपं अहामगं अहातचं सम्मं काएणं पासिता पालिना मोहिता वीरिता किट्टिता आराहड्ता आणाए अणुपा(छ)लिता भवड् ॥ १ ॥ १७३ ॥ दोमासियं णं भिक्खपहिमं पिडवसस्स० निर्च वोसद्रकाए जाव दो दर्ताओ ॥ २ ॥ १७४ ॥ तिमासियं तिष्णि दत्तीओ ॥ ३ ॥ १७५ ॥ चउमासियं वतारि दत्तीओ ॥ ४ ॥ १७६ ॥ पंचमासियं पंच दत्तीओ ॥ ५ ॥ १७७ ॥ छमासियं छ दत्तीओ ॥ ६ ॥ १७८ ॥ मत्तमासियं सत्त दत्तीओ ॥ ७ ॥ जेतिया मासिया तेतिया दत्तीओ ॥ १७९ ॥ पढमं सत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडिवजन्स अणगारस्स निम्नं वोसङ्काए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासिक्षगस्स वा नेसजियस्य वा ठाणं ठाइतार, तत्य दिव्या वा माणुसा वा तिरिक्खओणिया वा उवसम्गा समुप्पजेजा तेणं उवसम्मा पयलिका वा पवडेजा वा णो से कप्पइ पयलितए वा पवडिताए वा. तस्य णं उत्पारपासवणं उच्चाहिजा णो से कप्पइ उत्पारपासवणं उनिण्हित्तए, कम्यह से पुन्धपिकछेहिबंसि शंक्रिकंसि उच्चारपासवणं परिठविनए, अहाविहिमेव ठाणं ठाइतए, एवं खळु एसा पढमा सत्तराइंदिया मिक्खपडिमा अहाद्य[यीतं जाव आणाए अगुपालिशा भवइ ॥ ८ ॥ १८० ॥ एवं दोबा सत्तराईदिया गिवि सवरं दंडा गिइयस्स वा का[डसाइ]डाइयस्स वा उक्कायस्स वा ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता मबइ ॥ ९ ॥ १८१ ॥ एवं तका सत्तराईदियावि, नवरं गोदोहियाए वा वीरासणियस्स वा अंबसुअस्स वा ठार्ण ठाइतर दे चेव जाव क्युपालिता अवह ॥ १० ॥ १८२ ॥ एवं महोराइंदियानि, नवरं खोर्ण अलेलं अपानएनं बहिया गामस्य वा जाव रायहाजीह

वा इसि दोवि पाए साह्र वन्वारियपाणिस्स ठाणं ठाइनए, सेसं तं चेव जाव अणु-पालिता भवइ॥ १९॥ १८३॥ एगराइयं णं भिक्खुपडिमं पडिकास्स अणगारस्स निश्वं वोसद्वकाए णं जाव अहियासेइ, कप्पइ से [णं] अहुमेणं भत्तेणं अपाणएणं वहिया गामस्त वा जाव रायहाणीए वा ईसि पञ्भारगएणं काएणं एगपोग्गलं ठिती गयाए दिद्रीए अणिमिसनयणे अहापणिहिएहिं गाएहिं सर्विदिएहिं गुत्तेहिं दोवि पाए साहदु बग्धारियपाणिस्त ठाणं ठाइत्तए. तत्थ से दिव्वा माणुस्सा निरिक्त्यजोणिया जाव अहियासेड, से णं तस्य उचारपासवणं उब्बाहिजा नो से कपड़ उचारपासवणं उनिण्हिताए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियंसि थंडिलंसि उचारपासवणं परिठिवत्ताए, अहाविहिमेव ठाणं ठाइत्तए ॥ १८४ ॥ एगराइयं पं भिक्खुपिडमं अणणुपान्स्माणस्स अणगारस्य इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अक्लमाए अणिस्सेमाए अणाणु-गामियत्ताए भवंति, तंजहा-उम्मायं वा ल[•]भेजा, दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेजा, केविंडपण्णताओ धम्माओ मं[सि]सेजा ॥१८५ ॥ एगराइयं णं भिक्खु-पंडिसं सम्मं अणुपाळेमाणस्य अणगारस्य इमे तओ ठाणा हियाए सुद्दाए स्वमाए निस्सेनाए अणुगामियत्ताए भवंति, तंजहा-ओहिनाणे वा मे समुप्पजेजा, मणपजव-नाणे वा से समुप्पजेजा, केवलनाणं वा सं असमुप्पनपुर्वे समुप्पजेजा, एवं खलु एसा एगराइया भिक्खपंडिमा अहासुत्तं अहाकपं अहाममा अहात्वं सम्मं काएण फारिता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिना आराहिता आणाए अणुपालिना [यावि] भवइ ॥ १८६ ॥ एयाओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खपर्छिमाओ पण्णताओ ॥ १८७ ॥ ति-बेमि ॥ इति मिक्खुपडिमा णामं सत्तमा दसा समता॥ ७॥

अट्टमा दसा

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि होत्या, तंजहा—हत्थुत्तराहिं चुए चहता गर्न्भं वकंते १ हत्थुत्तराहिं गर्न्भाओं गर्न्भं साहरिए २ हत्थुत्तराहिं जाए ३ हत्थुत्तराहिं मुंचे भविता। आगाराओं अणगारियं पन्त्रहए ४ हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे नि(अ)व्याधाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पण्णे ५ साहणा परिणिव्युए भगवं जाव भुद्धो २ उवदंसेह ॥ १८८ ॥ ति—नेमि ॥ इति पद्धोस(णं)णा णामं अद्वमा दसा समन्ता ॥ ८ ॥

नवमा दसा

तेणं कारेणं तेणं समएणं नंपा ना[म]मं नयरी होत्या, वण्णसो । पुण्णसहे नामं उज्जाणे, वण्णसो । कोणियराया, चारिणी देवी, सामी समोसंहे, परिसा निकाया, घरमो

कहिओ, परिसा पडिगया॥ १८९॥ अजो । ति समणे मगवं महावीरे बहुवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आसंतेता एवं वयासी-"एवं खलु अजो ! तीसं मोहणिज्जटाणाइं जाइं इमाइं इत्थीं ओे वा पुरिसो वा अभिक्खणं अभिक्खणं आयिरीयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिजनाए कम्मं पकरेट, तंजहा-जे (यावि) केइ तसे पाणे, वारि-मज्झे विगाहिया । उदएणक्रम्म मारे(ई)इ. महामोहं पकुन्वइ ॥ १९० ॥ पाणिणा संपितिसाणं, सायमावरिय पाणिणं । अनीनदंनं मारेड, महामोहं पकुव्वड् ॥ १९१ ॥ जायतेयं समारब्म, बहुं ओरंभिया जणं । अंतो धूमेण मारे(जा)इ, महामोहं पकु-व्वद्र ॥ १९२ ॥ सीसम्मि जो (जे) पहणड्, उ(त्ति)त्तमंगम्मि चेयना । विभज मत्थयं पाले, महामोहं पकुटन्ड ॥ १९३ ॥ सीसं वैढेण जे केड, आवेढेइ अभिक्खणं । तिन्वामुभसमायारं, यहामोहं पकुन्वइ ॥ १९४ ॥ पुणी पुणी पणिहिए, हणिता उवहर्से जर्ण । फलेणं अद्व दंडेणं, महामोहं पकुन्वह ॥ १९५ ॥ गृहायारी निग्-हिजा, मार्य मायाए छायए । असम्बनाई णिण्हाड, महामोहं पकुन्वड ॥ १९६ ॥ धंसेड जो अमूएणं, अकम्मं अनकम्मुणा । अद्वा तुमकानित्ति, महामोहं पकुञ्बद ॥ १९७॥ जाणमाणी परिसिओोसाए, सचामोसाणि भामड । अक्लीणझंहे पुरिसे, महामोहं पक्ववड ॥ १९८ ॥ अणायगस्स नयवं, दारे तस्सेव धंसिया । विउलं विक्लोभइत्ताणं, किका णं पहिबाहिरं ॥ १९९ ॥ उदगसंतंपि शंपिता, पडिलोमाहिं बरगुर्हि । भोगभोगे वियारेड, महामोहं प्रकृत्वड् ॥ २०० ॥ अकुमारभूए जे केड, कुमारभूएति हं वए । इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुव्वइ ॥ २०१ ॥ अबंभयारी जे केंद्र, बंभयारिक्ति हं वए । गद्दहेव गवां मज्जे, विस्सरं नयई नदं ॥ २०२॥ अप्पणो अहिए बाले, मायामीसं बहुं भसे । इत्थीविसयगेहीए, महामोहं प्रकृत्वइ ॥ २०३ ॥ जं निस्सिए उञ्चहरू, जससाहिंगमेण वा । तस्स छून्भर विशंमि, महा-मोडं पक्रव्यइ ॥ २०४ ॥ ईसरेण अदुवा गामेणं, अणि(र)सरे ईसरीकए । तस्स संपयहीणस्स, सिरी अतुलमागया ॥ २०५ ॥ ई(इर)सादोसेण आविद्रे, कद्धसाविल-चेयसे । जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ ॥ २०६ ॥ सप्पी जहा अंडउडं, भत्तारं जो विहिंसह । सेणावहं पसत्थारं, महामोहं पकुम्बह ॥ २०० ॥ जे नायगं च रहुत्स, नेयारं निगमस्स वा । सेहिं बहुरवं हंता, महामोहं पकुव्वइ ॥ २०८ ॥ बहुजणस्स णेयारं, दी(वं)वताणं च पाणिणं । एयारिसं नरं हंता, महामोहं पकुव्वइ ॥ २०९ ॥ उन्हियं पडिविरमं, संजयं द्धतन्तिसयं । विच(वु)क्रम्म चम्माओ भंसेइ, महामोर्ह पकुम्बइ ॥ २१० ॥ तहेवार्णतणाणीणं, जिमार्णं वरदंसिणं । तेसिं अवज्जर्वं बाके, महामोहं पकुव्वइ ॥ २११ ॥ नेया(इ) उयस्य मम्मस्य, बुद्धे अवयर्द्धे बहुं ।

तं तिप्पर्यतो भावेइ, महामोहं पकुन्वइ ॥ २९२ ॥ आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विषयं च गाहिए। ते चेव खिंसड बाले, महामोहं पकुटवड् ॥ २१३ ॥ आयरियउवज्झा-याणं, सम्मं नो पडितप्पइ । अप्पडिपूयए थद्धे, महामोहं पकुन्वइ ॥ २१४ ॥ अबहु-स्डए य जे केंद्र, सुएण पविकत्थद्द । सज्झायवायं वयद्द, महामोहं पक्वव्यद्व ॥ २१५ ॥ अनवस्सी[ए] य जे केइ, नवंण पविकत्थह । सव्वलोयपरे तेणे, महामोहं पकुव्वह ॥ २१६ ॥ साहारणङ्का जे केंद्र, गिलाणिम्म उर्वाहर । पम् न कुणङ् किन्नं, मज्क्षेपि से न कुन्बह ॥ २१७ ॥ सहै नियडीपण्णाणे, कुनुसाउलचेयसे । अप्पणी य अबो-ही(य)ए, महामोहं पकुन्वइ॥ २१८॥ जे कहाहिगरणाइं, संपर्वजे पुणो पुणो। सन्वतित्थाण मेयाणं, महामोहं पकुरुवइ ॥ २९९ ॥ जे य आहम्मिए जोए, संप-(ओ)उंजे पुणो पुणो । महाहेउं सहीहेउं, महामोहं पकुन्यर् ॥ २२०॥ ज य माणु-स्सए भोए, अदुवा पारलोडए । नेऽतिप्पयंतो आमयइ, महामोहं पङ्गव्यड ॥ २२२ ॥ इड्डी जुई जसी वण्णी, देवाणं बलवीरियं । तसि अवण्णवं बाले, महामोहं पकुव्वद ॥ २२२ ॥ अपस्समाणो पस्सामि, दे(वे)वजक्खे य गुज्झने । अण्णाणी जिणप्यद्वी महामोहं पकुठाइ ॥ २२३ ॥ एए मोहगुणा बुत्ता, कम्मंता चित्तवद्वणा । जे उ भिक्क विवजेजा, चरिज्ञतगवेसए ॥ २२४ ॥ जंपि जाणे इओ पुन्दं, किचाकिसं बह जहं। तं नंता ताणि सेविजा, जेहिं आयारवं सिया ॥ २२५ ॥ आयारगुसी सुद्धापा, घम्म ठिचा अणुत्तरे । तओ वमे सए दोसे, विसमासीविसो जहा ॥ २२६॥ गुचनदोसे सुद्धप्पा, धम्मद्वी विदितापरे। इहेव ल(०)भए किनि, पेका य सुगई वरं ॥ २२७ ॥ एवं अभिसमागम्म, सूरा दढपरक्षमा । मञ्जमोहविषिम्मुका, जाइमर-णमइच्छिया ॥ २२८ ॥ ति-बेमि ॥ मोष्टणिज्ञठाणणामं नवमा दसाः समत्ता ॥ ९ ॥

दसमा दसा

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्या, वणाओ । गुणितलए उजाणे स्तिण् राया होत्या, रायवणाओ जहा उवनाइए जान चेलणाए स्विहर । नए णं से सेणिए राया क्षण्णया क्याइ ष्हाए कंठे मालकडे आविद्धमणिसुवण्णे किप्पहारद्वहारतिसरयपालंबपलंबमाणकि द्वित्तायसक्यसोमे पिणद्वगेवे अशंगुलेखम जाव कप्पह्वव्यए चेव अलंकियविभृतिए परिदे सकोरंदमह्नदामेणं छत्तेणं घरिजन्माणेणं जाव ससिव्य पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवहाणसाला जेणेव सिहासणे तेणेव उवाणक्यह र ता सि(बी)हासणवरिस पुरत्यामिमुहे निसीयइ र ता कोडंबियपुरिसे सहावेद २ ता एवं वयासी-यस्वह धं तु० देवाणुण्यमा। बाई

इसाई राम्रगिहस्स णयरस्स बहिया तंजहा-आरामाणि य टज्जाणाणि य आएस-माणि य समाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियसालाओ य छहाक-म्मंताणि य वाणियकमांताणि य बहुकम्मंताणि य इंगालकमांताणि य वणकमां-ताणि य दब्भक्रमंताणि य जे तिथिवोत्य महत्तरमा अण्णया चिहंति ते एवं वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया! सेणिए राया भंभसारे आणवेइ-जया णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्ययरे जाव संपाविओकामे पुम्बाणपूर्वि चरिरमाणे गामाणुगा[मे]मं दू(दु)इज्जमाणे मुहं मुहेणं विहरमाणे संजमेणं तवमा अप्पाणं भावमाण विहार(इह आगन्छेजा इह समोसरे)जा तथा ण तुम्हे भगवओ महा-वीरस्म अहापडिरूवं उगाई अणुजाणह अहापडिरूवं उगाई अणुजाणेता सेणि-यस्म रक्तो भंभसारस्स एयमद्रं पियं णिवएह ॥ २२९ ॥ तातो।ए णं ते कोई-बियपुरिसा सेणिएणं रका भंभासारेणं एवं बुत्ता समाणा हट्टनुद्व जाव हियया जाद एवं सामि(तह)ति आणाए विणएणं पडिमुणेंति २ ता [एवं-ते] सेणियस्स रको अंतियाओ पडिनिक्समंति २ ता रायगिहं नयरं मज्यंमज्येणं निगगच्छंति २ ता जाइं [इमाइं-मवंति] रायगिहरस बहिया आरामाणि वा जाव जे तत्थ महत्तरगा अण्णया चिद्रंति ते एवं वयंति जाव सेणियस्य रच्चो एयमद्रं पियं निवेएजा पियं भे भवत दोश्वंपि नश्वंपि एवं वयंति २ ता जावी जामेव दि[सं]सिं पाउब्भूया तामेव दिमि पडिगया ॥ २३० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महाबीरे आइगरे तित्थयरे जाव गामाणुगामं दृहज्जमाणे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरह । तए णं रायगिष्ठे णयरे सिंघाडगतियवउक्कचचर एवं जाव परिसा निरगया जाव पज़ुवा(से)सह ॥ २३१ ॥ तए णं ते महत्तरमा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ ता समणं भगवं महाबीरं तिक्खतो वंदंति नमंसंति वंदिता नमंसिता नामगोयं पुच्छंति नामगोयं पुच्छिता नामगोयं पधारेति० पधारिता एगओ मिलंति एगओ मिलिता एगंतमवक्कमंति एगंतमवक्किता एवं वयासी-अस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया र्ममसारे दंसणं कंखह जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दंसणं पीहेइ जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेशिए राया दंसणं पत्येइ ... अभिलसइ अस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया नामगोत्तरसवि सवणयाए हद्भुद्ध जाव भवह से गं समणे मगवं महाबीरे आहगरे तित्वयरे जाव सव्यष्ण् सम्बदंसी पुरवाणुप्रिंव चरमाणे गामाणुगामं वृह्ववसाचे सहंसहेणं विहरमाणे इह आगए इह समोसडे इह संपत्ते जाब अप्पाणं भावेमाणे [सम्मं] बिहरह, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया [रेषिकस्स रज्जो एवमइं निवेएमो पियं भे भवस्तिकद् अञ्जयज्ञस्स प्रयणं

पिन पुणंति २ ता रायगिहं नगरं मञ्जंमञ्झेणं जेणेव सेणियस्स रस्रो गिष्टे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ ता सेणियं रायं करयळपरिग्गहियं जाव जएणं विजएणं वद्घावेंति वद्धाविता एवं वयासी-"जरूस णं मार्मा! दंगणं कंखइ जान से णं रामणे भगवं महावीरे गुणसिलिकिल उजाणे जान विहरइ, एयं [तस्स] णं देवाणिपयाणं पियं निवेएमो पियं मे भवट''॥ २३२ ॥ तए णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्टं सोचा निसम्म इट्टुट्ट जाव हियए सीहासणाओ अञ्भद्रेह २ ना जहा कोणिओ जाव बंदह नमंसह वंदिता नमंसिता ते प्रारेसे सकारेड सम्माणेड सकारिता सम्माणिता विदर्ल जीविया-रिष्टं पीइदाणं दलयह २ ता पढिविसजेह यिडिविसजिता नगर्गुतियं सहावेह २ ता एवं बयासी-खिप्पामेव भो देवाण्यिया। राजगिहं नगरं सब्भितरबाहिरयं आसियसंमिजिओविलितं जाव करिता० पश्चिपणंति ॥ २३३ ॥ तए णं ने सेणिए राया बलवालयं सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणप्पिया ! हयगयरह-जोहकलियं चाउरियणि सेणं सण्णाहेह जाव से वि पचित्रणह ॥ २३४ ॥ तए णं से सेणिए राया जाणसालियं सहावेइ २ ता एवं वयासी-"भो देवाणुष्पिया! स्तिप्पा-मेन थम्मियं जाणप्यतरं जत्तामेव उबद्भवेह उबद्भविना नम एयमाणतियं पश्चिप-णह"। तए णं से जाणसालिए सेणिएणं रज्ञा एवं यूने समाणे हद्वतुद्ध जाव हिस्स जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छड २ ता जाणमालं अणुप्पविसड २ ता जाणगं पञ्चवेक्खइ २ ता जाणं पञ्चोरभइ २ ता दूसं पवी[पीह]णेइ २ ता जाणगं संप्रम-ज्जड संपमजिता जाणगं णीणेड २ ता जाणां समलंकरेड २ ता जाणांड बरमंडि-यांड करेड़ २ मा जाणाई संवेदेड २ ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छड २ ता वाहणसालं अणुप्पविसङ् २ ना बाहणाई पशुविक्लाइ २ ता बाहणाई संपमजाइ २ ता वाहणाई अप्पालेड २ ता वाहणाई णीणेड २ ता दूस प्रवीणेड २ ना वाहणाई नमलंकरेड २ ता वरभंडगमंडियाई करेड २ ता वाहणाई जाणगं जोएइ २ ता बहुममां गाहेड २ ता प्रओयलिंद्र प्रओयघरे य समें आरोहड २ ता अंतरासमपर्यक्षि जेंणेव सेणिए राया तेंणेव उवागच्छा २ ता करयल जाव एवं वयासी-ज़ते ते सामी। धम्मिए आषप्पवरे आइद्रे महंत वनगृहिं माहिता ॥ २३५ ॥ तए णं सेणिए राया मंगमारे जाणसाख्यिस्स अंतिए एयमद्वं संक्षि निसम्म हद्वतद्व जाव मजण-घरं अणुप्पविसङ् २ ता जाब कप्परुक्ते चेत्र अलंकियविभूसिए गरिंदे जाब मजण-घराओ पिडिनिक्खमइ २ ता जेगेव चे(चि)क्षणादेवी तेणेव उवागच्छइ २ ता चेछ(णं)णादेवि एवं बयासी-एवं खळ देवाणपिए ! समणे मगवं महाबीरे आहगरे

तित्ययरे जाव पुष्वाणुपुष्टिं चरमाणे जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं म(हा)हप्फर्ल॰ देवाणुप्पिए! तहास्वाणं अ[र]रिहंताणं जाव तं गच्छामो णं देवाण्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदामी नमंसामी सकारेमी सम्माणेमी कहाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जवासामी, एयं णे इहमवे य परभवे य हियाए सहाए खमाए निस्से(य)साए जाव अणुगामियताए भविस्मइ । तए णं सा चेळ्णादेवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमड्रं सोचा निसम्म हहुतुहु जाव पहिसुणेड् २ ता जेणेव मज्जण-घरे तेणेव उवागच्छइ २ ता ण्हाया किं ते वरपायफ्तनेउरा मणिमेहलाहाररङ्य-उषचिया कडगस्त हुगएगावलिकंठसुत्तमरगवतिसरयवरवलयहेमसुत्तयकुंडलङजोविया-णणा रयणविभृतियंगी चीणंसुयदत्यपरिहिया दुगुहसुकुमालकंतरमणिजाउत्तरिजा सञ्बोडयमुरभिकुसुममुंदररङ्गपलंबसोहणकृतविकसंतिवत्तमाला वरचंदणचिवया वराभरणविभूसियंगी कालागुरुभृवधृविया सिरिसमाणवेसा बहुहिं खुजाहिं ॰ चिलाइ-याहिं जाव महनरगर्विद्परिक्षिमा जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव संणि[य]ए राया तेणेव उदागच्छइ। तए णं से सेणिए राया चेल्लणादेवीए सद्धि धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहर २ ता सकोरिंटमह्नदामेणं छत्तेणं धरिजमाणेणं उववाह(य)गमेणं णेयव्वं जाव पज्जवासङ, एवं चेह्रणादेवी जाव महत्तरगपरिक्खिता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छद २ ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसद सेणियं रायं पुरको काउं ठिइया चेव जाव पज्जवासइ ॥ २३६ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रबो भंगसारस्स चेळ्ळणादेवीए तीसे य महइमहालियाए परिसाए इसिपरिसाए मुणिपरि-साए मणु(य)स्सपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए जाव धम्मो वहिबो, परिसा पडि-गया, सेणि[य]ओ राया पहिंगओ ॥ २३०॥ तत्थेगइयाणं निग्गंथाणं निग्गंथीण य सेणियं रायं चेक्कणं च देविं पासित्ताणं इमे एयारूवे अज्झतिशए जाव संकप्पे समु-प्पजित्या-अहो णं सेणिए राया महिष्किए जाव महासुनखे जे णं ण्हाए सन्वालं-कारविभूसिए चेल्लणादेवीए सर्दि उरालाई माणुस्सगाई मोगमोगाई भुंजमाणे विहरह, जड् इमस्स सुचरियस्स तबनियमसंजयबंभचेरगृत्तिफलवित्तिविसेसे अस्थि तथा वय-मवि आगमेस्साणं इमाई ताई उरालाई एयास्वाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणा विहरामो, से तं साह ॥ २३८ ॥ अहो णं चेळणादेवी महिन्द्रिया जाव महासुक्खा जा णं ण्हाया सञ्चालंकार्ययभूतिया सेणिएणं रण्णा सर्दि उरालाई माणुरसगाई भोपभोगाई भुंजमाणी विहरह, जह इमस्स सुचरियस्स तवनियमसंजमवंभचेरवासस्स कक्षणे फलवित्तिविसेसे अत्य वयमवि आगमिस्साणं इमाइं एयास्वाइं उरालाइं जाव विहरासो, से तं साह जी] ॥ २३९॥ अजो ! ति समणे मगर्व महावीरे ते बहुवे निग्यं-

था (य) निगंधीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी-''सेणियं रायं चेह्नणादेविं पातिता इमेयारूवे अज्ञतिथए जाव समुप्पजित्या-अहो णं सेणिए राया महिश्विए जाव सेतं साहु, अहो णं चेक्रणादेवी महिड्डिया संदरा जाव साहु, से णुणं अजो ! अहे समहे ?" हता ! अत्य ॥ २४० ॥ एवं खळ समणाउसो ! मए धम्मे पण्णते . इ जा जिमेत्र निमांथे पावयणे मन्ने अणुत्तरे पहिपुष्णे केव[ले]लिए संसुद्धे णेयाउए सह्नगत्तणे सिद्धिसमी मुत्तिमरगे निजाणमरगे निज्वाणमरगे अवितह्वमविसंदिद्धे सब्बदुक्खप्पहीणमरगे इत्थं ठिया जीवा मिज्झंति बुज्झंति मुर्चति परिनिव्यायंति सव्बद्धक्वाणमंतं क(रं)रेति ॥ २४१ ॥ जस्स णं धम्मस्स निर्माये सिक्खाए उवद्विए विहरमाणे पुरा-दिगिछाए पुरा-पिवासाए पुरा-वायाऽयवेहिं पुरा-पुट्टे विरूवहवेहिं परिसहोवसगोहिं उदिण्ण-कामजाए विहरिजा, से य परक्रमेजा, से य परक्रममाणे पासेजा-जे इमे उम्मपुत्ता महामात्रया भोगपुना महामात्रया. तेनि अण्णयरस्य अङ्जायमाणस्य निजायमाणस्य पुरओ महं दासीदासिककरकम्मकरपुरिसाणं अं(तो)ते परिक्खितं छत्तं भिंगारं गहाय निगन्छंति॥ २४२॥ तयाणंतरं च णं पुरओ म(ई)हाआसा आस(घ)वरा उमलो तं(पा)मिं नागा नाग-वरा पिट्टओ र(इ)हा रहवरा संगेकि से तं उ(च्छि)द्धरियसेय (२)छत्ते अञ्भुरगय्भियारे परगहियतालियंटे प(बीइय)वियस सेयचामरा बालवीयणीए अभिक्वणं अभिक्खणं अङ्जाङ् य निजाइ य, सप्पमा सपुरुवादरं च णं ण्हाए सर्वेदा-लंकारविभासए महहमहालियाए कृष्टागारसालाए महहमहालयंसि सिंहासणेसि जाव युव्दरा[त्तिणी]इ(णि)एणं जोइणा क्षियायमाणेणं इत्यिगुम्मपरिवृद्धे महारवे हयनहगी-यवाहयतंत्तांतलनालत्तियचणम्(यं)इंगमहलपदुप्पवाइयरवेणं उरालाइं माणुरसगाइं कामभोगाई भुंजमाणे विहर् ॥ २४३ ॥ तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पंच अवृत्ता चेव अन्भुद्वेति-भण देवाणुप्पिया ! किं करेमो ! किं उवणेमो ! किं आहरेमो ? कि आविद्धामो ? कि मे हियइच्छियं ? कि ते बासगस्य सयह ? जंपािसा णिगंथे णियाणं करेड-जह इमस्स तवनियमसंज्ञमबंभन्नेरवासस्स तं चेव जाव साह । एवं खळ समणाउसो ! णियांचे णियाणं किया तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्परिकारी कालमासे कार्ल किया अण्णयरे देवलोएस देवलाए उवनतारो भवड महिन्निएस जाव निरङ्किएस, से णं तत्थ देवे मनइ म[ह]हिद्दिए जाव निरक्षिए, तनो देवलोगाओ आउक्खएणं मवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं अयं चडना खे हमे उमापुता महा माटया भोगपुता महामाउया एएसि णं अवयरित उकंति पुत्तताए प्यायाह ॥ २४४ ॥ से णं तत्व दारए भवड धुकुमालपाणिपाए जाव धुरूवे. तए णं से दारए

९ विसेसहा देवसह स्यमस्दोबसम्बद्धंबहुर्यज्ञायणं ।

खम्मुक्कवालभावे विष्णायपरिणय्मि मित्ते जोव्वणगमणुप्पते सयमेव पेइयं पडिवजह, सस्स णं अङ्जायमाणस्स वा॰ पुरको महं दासीदास जान कि ते आसगस्स सबइ है ॥ २४५ ॥ तस्स णं तहप्पगारस्य पुरिमजायस्य नहारुवे गमणे वा भीहणे वा उभओ कालं केवलिपन्नतं धम्ममाइक्खेजा ? हंना ! आइक्खेजा, से णं पिंड-सुणेजा ? णो इणहे समहे, अभविए णं से तस्स धम्मस्स सव[णा]णयाए, से य भवड् महिन्छे महारंमे महापरिगाहे अहम्मिए जाव दाहिणगामी नेरहए आग(मे)मिस्साणं दुह्नद्रबोहिए यावि भवइ, तं एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे ॰फलविवागे जं णो संचाएइ केवलिपन्नतं धम्मं पहिसुणित्तए ॥ २४६ ॥ एवं खलु समणाउमो ! मए धम्मे पण्णते, इणमेव णिमांथे पावयणे जाव सन्वद्क्याणमंतं करेंति, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवद्विया विहरमाणी पुग-दिगिंछाए... उदिण्णकामजाया विहरेजा, सा य परक्कमेजा, सा य परक्कममाणी पासेजा-से जा इसा इत्यिया भवइ एमा एगजाया एगाभरणपिहिणा तेल्लपेला इव सुसंगोविया चेलपेला इव युसंपरिग्गहिया रयणकरंडगतमा[णी]णा, तीसे णं अङ्जायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ महं दाबीदास तं चेव जाव कि मे आसगरम सगइ ? जं पासिना णिमगंथी णियाणं करेइ-जइ इसस्स सुचरियस्स तवनियससंजमबंभचेर जाव भंजमाणी विहरामि. से(तं) तं साहु । एवं खळु समणाउसो ! णियांशी णियाणं किया तस्स ठाणस्स अणा-लोइय अप्यिक्किता कालमासे कालं किया अण्णयरेस देवलोएन देवनाए उनवनारो भवड़ महिड्डिएस जाव सा णं तत्थ देवे भवड़ जाव मुंजमाणी विहरह, सा णं ताओ देवलोगाओं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिडक्खएणं अणंतरं नयं चहता जे इमे भवंति उम्मपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एएसि णं अण्ययरंसि कुलंसि दारियत्ताए पचायाइ. सा णं तत्य दारिया भवइ सुकुमाला जाव सुरुवा ॥ २४०॥ तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम् अा सिक्क लिमानं निष्णायपरिणयमेतं जोव्नण-गमणुप्पत्तं पडिरूवेण सक्केण पडिरूबस्स भतारस्स भारियताए दलयंति सा णं तस्स भारिया भवड एगा एमजाया इहा कंता जाव रयणकरंडगसमाणा. तीसे णं अङ्जायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरक्षो महं दासीदास जाव किं ते आस-गस्स सबह ? ॥ २४८ ॥ तीसे णं तहप्यगाराए इत्यियाए तहारूवे समणे वा साहणे वा उभयकालं केवलिपकत्तं धम्मं भाइक्सेजा ? हंता । आइक्सेजा, सा णं भंते । पिंद्रियोज्जा ? णो इषद्वे समद्वे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवइ महिच्छा महारेमा महापरिग्गहा सहम्मिया जाव दाहिणगामि० गेरह० आगमि-

१ सावपु ति अहो ।

स्माए दृह्णभनोहिया यावि भवइ, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयाहवे पावकम्मफलविवागे जं णो संचाएइ केबलिपण्णतं धम्मं परिस्रणिताए ॥ २४९ ॥ एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पण्णते, इणमेव निगांथे पावयणे जाव अंतं करेंति, जस्स णं धम्मस्य सिक्खाए निग्गंथे उबद्विए विहरमाणे परा-दिगिछाए जाव से य परक्कममाणे पासिजा- : इसा इत्थिया भवइ एगा एगजाया जाव किं ते आसगरस सयह ! जं पासित्ता निमांथे नियाणं करेइ-दुक्खं खन्दु पुमत्ताए, जे हुमे उगापता महामाउया भोगपता महामाउया एएसि णं अण्ययरेस उद्यावएस महा-समरमंगामेमु उचावयाई सत्थाई उ(रं)रिंस चेव पडिसंबेंदेनि, तं दुक्खं खलु पुमत्ताए, इत्थि[तणयं]नं माहु, जइ इमस्य तवनियमसंजमबंभचेरवामस्य फलवित्तिविसेसे अन्य वयमवि आगमेरसाणं इमेयारुवाइं उरालाइं उत्थिभोगाई भुंजिस्सामो, से तं साह । एवं खलु समणाउसी ! णिग्गंथे णियाणं किचा तस्म ठाणस्म अणालोड्य अप्पिडक्षेत जाव अपिडविजिता कालमामे कालं किया अण्णयरेस देवलोएस देवताए उववनारो भवड..., से णं तत्य देवे भवइ महिद्विए जाव विहरइ, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं जाव अणंतरं चयं चइना अण्णयरंसि कुलंसि दारियत्ताए पनायाड जाव तेणं नं दारियं जाव भारियत्ताए दलयंति, सा णं तस्स भारिया भवः एगा एगजाया जाव तहेव सव्वं भाषियव्वं. तीसे णं अङ्गायमाणीए वा निजायमाणीए वा जाव कि ते आसगस्स मयइ १॥ २५०॥ तीसे णं तहप्पगाराए इत्यियाए तहारूवे समणे वा माहणे वा ० धम्मं आइक्खेजा? हंता! आइक्खेजा. सा णं पडिसुणेजा ? णो इणद्रे समद्रे. अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए. सा य भन्द महिच्छा जाव दाहिणगामि० णेरड० आगमेस्साणं दुब्रमबोहिया यावि भवद्द, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्य इमेयारूवे पादए फलविदागे जं णो संचाएइ केवलिपण्यतं धरमं पडिसुणित्तए ॥ २५१ ॥ एवं खुळ समणाउसो ! मए धरमे पण्णते. इणमेव णिग्गंथे पावयणे सबे सेसं तं चेव जाव अंतं करेंति, जस्स णं घम्मस्स णिग्गंथी सिक्खाए उदद्विया विहरमाणी पुरा-दिगिद्धाए पुरा जाव उदिष्णकामजाया विहरेजा, सा य परक्रमेजा, सा य परक्रममाणी पासेजा-जे इसे उम्मपुत्ता महा-माउबा भोगपता महामाउबा, तेति णं अण्णयरस्य अइजायमाणस्य वा जाव कि ते आसगस्स सयह १ जं पासिता विमांशी विद्याणं करेइ-दुक्खं खळु इत्यिति(त्त)-णए। तं, दुस्संचराइं गामंतराइं जाब सिन्नवेसंतराइं, से जहानामए-अंबपेसियाइ बा माउलुंगपेसियाइ वा अंबाहगपेसियाइ वा उच्छ लंडियाइ वा संबलि फा फिल्याइ वा बहुजणस्य भासायणिजा पत्यणिजा पीहणिजा समिलसणिजा एवामेव इत्थियावि

बहुजणस्स आमायणिजा जाव अभिन्सणिजा, तं दुक्खं खलु इत्थितं, पुम[नाए णं]-क्षणयं साह, जइ इमस्स तवनियम जाव अत्थि वयमवि आगमेरसाणं इमेयारुवाई ओरालाई पुरिसभोगाई भुंजमाणा विहरिस्सामो, से तं साह । एवं खलु समणाउसो ! णिगांशी णियाणं किसा तस्स ठाणस्स अणालोहय अप्पडिकंता जाव अपटिवज्जिता कालमासे कालं किया अण्णयरेस देवलोएस देवताए उववतारो भवड, मा णं तत्य देव भवड महिक्रिए जाव महामुक्खे. मा णं ताक्षो देवलोगाओ आउक्खएणं '''अणंतरं चर्य चड़ना जे इमे भवंति उग्गपता तहेव दारए जाव कि ते आसगस्स समझ ? ॥ २५२ ॥ तस्स णं तहप्पगारस्स प्ररिसजाग्रस्स जाव अभविए णं से तस्स धम्मस्य सवणयाए, से य भवड़ महिच्छे जाव दाहिणगामिए जाव दुछमबोहिए यावि भवड़, एवं खलु जाव पडिसुणितए॥ २५३॥ एवं खलु समणाउसो ! मण् धम्मे पण्णते, इणमेव निर्गाये पावराणे तहेव, जस्म णं धम्मस्स निर्गाथे वा निर्गाशी वा सिक्खाए उवद्रिए विहरमाणे पुरा-दिगिछाए जान उदिण्णकामभीगे विहरेजा. से य परक्रमेजा, से य परक्रमसाणे साशुरुसेहिं कासभोगेहिं निव्वेयं गच्छेजा, माशुरुसगा खलु कामभोगा अधवा अणितिया असासया सङ्गपङ्गविद्धंसणधम्मा उच्चारपागवणखेलजङ्ग-सिंघाणगर्वतिपत्तमुक्त्मोणियसम्बन्धवा दुरूवउस्यासनिस्सासा दुरंतम्तपुरीरापुण्णा वंतानवा पितासवा खेळानवा (जला॰) पच्छा पुरं च णं अवस्यं विप्पजहणिजा, संति उद्गं देवा देवलोगीस ते णं तत्य अण्णेसि देवाणं देवीओ अभिज़ंजिय २ परियारेति, अप्पणो चंब अप्पाणं विडिव्यय २ परियारैति, अप्पषिज्ञियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारैंति, [संति] जड् इमस्स तवनियम जाव तं चेत्र मन्त्रं भाणियन्त्रं जाव वयमवि आगमेस्साणं इमाइं एचारूवाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भंजमाणा विहरामी, से तं साह । एवं सछ समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा नियाणं किया तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्पडिकांते कालमासे कालं किया अण्णयरेमु देवलोएसु देवलाए उवव-तारो भवइ, तंजहा-महिक्किएस महज्जूइएस जाब पसासमाणे अण्णेसि देवाणं अण्णे देविं तं चेव जाव परियारेइ से गं ताओ देवलोगाओ आउक्खएगं तं चेव जाव पुमनाए पंचायाइ जाव किं ते आसगस्स संग्रह ? ॥ २५४ ॥ तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा जाव पडिसुपिजा ? हंता ! पडिसुपिजा, से पं सर्हेजा पित्रएजा रोएजा ? जो इजद्वे समद्वे, अमविए जं से तस्स॰ सहहजगाए॰, से य भवड़ महिन्छे जाद दाहिणगामी णेरहए आगमेरसाणं दहनबोहिए यावि मबह, एवं खळ समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयाख्वे पावए फळविद्यागे जं णो संचाएह केवलिपण्णां भन्मं सहिताए वा पति। बोहताए वा रोहताए वा ॥ २५५ ॥ एवं खलु समणाउसी ! मए धम्मे पण्णते तं चेव. से य परक्रमेजा, ...परक्रममाणे माणस्यापस् कामभोगेस निव्वेयं गच्छेचा. माणुस्यमा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया तहेव जाव संति उद्गं देवा देवलोगंसि ते णं तत्थ णो अण्णेसि देवाणं अण्णं देविं अभिजुंजिय २ परियारैति, अप्पणो चेव अप्पाणं विउन्विका परियारैति, अप्पणिजियाओवि देवीओ अमिनुंजिय २ परियारैति. जह उमस्स नवनियन तं चेव सन्वं जाव से णं सहहेजा पनिएजा रोएजा ? णो इणद्रे समद्रे ॥ २५६ ॥ अण्णरुई रुइमादाए से य भवड़, से जे इमें आर्राण्या आवसहिया गामंतिया कण्हुड़ ग्हस्सिया णो बहुसंजया णो बहुविरया मव्वपाणभूयजीवसनेतु अप्पणो सम्बामीगाई एवं विपष्टिवदंति-अहं ण हंतव्यो अण्णे हंतव्या अहं ण अजावेयव्यो अण्णे अजावे-यव्या अहं ण परियावेयव्यो अण्णे परियावेयव्या अहं ण परियेतव्यो अण्णे परियेतव्या अहं ण उ[व]हवेयव्त्रो अण्णे उद्देयव्ता, एवामेत्र इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अञ्सोववद्या जान कालमासे कालं किया अण्णयराहं असराहं किव्यिसियाहं ठाणाइं उववतारो भवंति, तओ वि(प्प)मुचमाणा भुजो २ एलमूयनाए पन्नायंति, एवं खलु समणावसी ! तस्स णियाणस्य जाव णो संचाएइ केवलिपण्णतं धम्मं सहिताए वा०॥ २५७॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्पते जाव माणुस्मगा सङ् कामभोगा अधुवा तहेव, संति उद्दं देवा देवलोर्गांस॰ णो अण्णेसि देवार्ण [अण्णे देवे] अण्णं देवि अभिजुंजिय २ परियारेंति, णो अप्पणो चेव अप्पाणं विज्वन्त्रिय परियारैति, अप्पणिजियाओ॰ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारैति, जइ इमस्म तव-नियम ''तं चेव सब्बं जाद एवं खलु समणाउसो ! णिरगंथी वा णिरगंथी वा णियाणं किचा तस्स ठाणस्स अणाळोइय अप्पिडकंते तं चेव जाव निहरइ, से णं तत्थ जो अज्जेसि देवाणं अज्जं देविं अभिजुंजिय २ परियारेइ, जो अप्पणा चेव अप्याणं विरुध्तिय परियारेइ, अप्यणिजाओ देवीओ अभिज्ञंजिम २ परियारेइ, से णं तुओ आउक्खएणं भवक्खएणं टिइक्खएणं तहेव बत्तव्यं, जवरं हंना ! सह-हेजा परिग्जा रोएजा, से णं सीलव्ययगुणवेरमणपचक्खाणपोसहोववासाई परि-वजेजा ? णो इणहे समहे, से णं दंसणसावए भवइ-अभिगयजीवाजीवे जाव अद्विमिजपेम्माणुरावरत्ते अयमाउसो ! निर्माथे पावयणे अद्वे एस (अयं) परमद्वे सेसे अणहे, से णं एयास्वेणं विहारेणं विहरमाणे बहुई वासाई समणीवासगपरियागं पाउणइ २ ता कालमासे कालं किया अष्णयरेस देवलोगेस देवताए उदवतारी भवइ, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावए फलवियागे ज

१ विसेसाय स्वागडे २ सु० अ० २ बारसमं किरियहाणं दहुव्यं ।

.को संचाएड् सीलञ्चयगुण[ब्वय]वेरमणपचक्खाणपोसहोबवासाई पखिवज्ञित्तए ॥ २५८ ॥ एवं खळ समणाउसो ! मए धम्मे पण्णते तं चेव सब्वं जाव से य परक्रममाणे दिव्यमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेजा, माणुस्सगा खलु कामभोगा भयुवा जाव विष्पजहणिजा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुता अणितिया असासया चलाचल[ण]धम्मा पुणरागमणिजा पच्छा पुर्वं च णं अवस्सं विष्पजहणिजा, जह इमस्स तबनियम जाब आगमेस्साणं जे इमे भवंति उग्गपता महामाउया जाब पुम-नाए पद्मार्वति तत्थ णं समणोवासए भविस्सामि-अभिगयजीवाजीवे उवलद्भपुण्णपावे फासुयएसणिजं असणपाणखाइमसाइमं पडिलामेमाणे विहरिस्सामि. से तं माह । एवं खल समणाउसो ! निरगंथो वा निरगंथी वा नियाणं किया तस्स ठाणस्स अणालोहय जाव देवलोएस देवशाए उवबजाड जाव कि ते आसगस्स सयड ? ॥ २५९ ॥ तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव परिसुणिज्जा १ हंता ! परिसुणिज्जा, से णं सहहेजा जाव रोएजा ? हंता ! सदृहेजा , से णं सीलव्वय जाव पोसदृोववासाई पिडवजेजा ? हंता । पडिवजेजा, से णं मुंडे भवित्ता जी आ गाराओ अगगारियं पव्यएजा ? णो इण्डे समट्टे ॥ २६० ॥ से णं समणोवासए भवइ-अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहर्इ. से णं एयाम्बेणं विहारेणं विहरमाणे बहणि वासाणि समणोवासगपरियागं पाउणइ २ ता बहुई भताई पचक्खाइ ? हेता ! पचक्खाइ २ ता आबाईसि उप्पर्शस बा अणुप्पकासि वा बहर्ड भत्ताई अणसणाई छेएड २ ता आलोड्यपिडकंते समाहिपते कालमासे कालं किचा अण्णयरेख देवलोएस देवताए उवबतारो भवइ, एवं खल समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयाहवे पावफलविवागे जेणं णो संचाएड सञ्बजी मन्वताए मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पन्वइत्तए ॥ २६१ ॥ एवं खल समणाउसो ! मए धम्मे पण्णते जाव से य परक्रममाणे दिव्यमाणुरसएहिं काममोगेहिं निन्वेयं गच्छेजा, माण्स्सगा खळ कामभोगा अधुवा० असासया जाव विष्पजह-णिजा, दिव्यावि खलु काममोगा अधुवा जाव पुणरागमणिजा, जह इमस्स तवनियम जाव वयमि आगमेस्साणं जाई इमाई (कुलाई) भवंति (तं०)-अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिहकुलाणि वा किवणकुलाणि वा मिक्खागकुलाणि वा, एति णं अण्णयरंति कुलंति पुमताए एस मे आया परिमाए सुणीहुडे भविस्सह, से तं साह । एवं खल्ल समणाउसो ! निग्गेथो वा निर्गाथी वा नियाणं किया तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्पडिइंते सन्वं तं चेव, से णं मुंडे भविता अगाराओ अ[णा]ण-गारियं पव्यद्रजा? हंता ! पव्यद्रजा, से णं तेणेव सवग्गहणेणं सिज्होजा जात सम्ब-दुक्खाणं अंतं करेजा ! णो इणद्रे समद्रे ॥ २६२ ॥ से णं भवड से जे अपगारा भगवंतो इरियासमिया भासासमिया जाव बंभयारी तेणं विहारेणं विहरमाणे बहुई वासाई परियागं पाउणइ २ ता आबाहंसि उप्पन्नंसि वा जाव भनाइं पचक्काएजा? हंता ! पचनकाएजा, बहुई भत्ताइं अणसणाइं छेड्जा ? हंता ! छेडजा, आलोइयपडिकंते समाहिपते कालमासे कालं किचा अण्णयरेसु देवलोएस देवताए उववतारो भवड, एवं खद्ध समणाउसो ! तस्स णियाणस्य इमेयाहवे पावफर्लावतागे जं णो संचाएड तेणेव भवगाहणेणं सिज्ज्ञित्तए जाव सन्बदुक्खाणमंतं ऋरित्तए॥ २६३॥ एवं खळु समणा उसी ! मए धम्मे पण्णते, इणमेव णिगांधे पावयणे जाव से य परक्रमेजा, सन्त्रकामविरते सन्वरागविरते सन्वसंगातीते मन्वहा सन्वर्मणेहाङकंते सन्व-चरित्तपरिवृद्धि है ॥ २६४ ॥ तस्म णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं परिनिव्वाणमारोणं अप्पाणं भावेमाणस्य अणंते अणुत्तरे निव्वाचाए निरा-वर्णे कसिणे पहिपूर्णे केवलवरनाणदंसणे समुष्यजेखा ॥ २६५ ॥ तए णं से भगवं अरहा भवद जिणे केवली मव्वण्णू सन्व(दरि)दंसी, सदेवमणुयासुराए जाय बहदं वामाई केवलिपरियागं पाउणइ २ ता अप्पणी आउसेसं आभोएइ २ ता भनं पचक्खाए३ २ ता बहुई भताई अणसणाई छेए३ २ ता तओ पच्छा चरमेहिं ऊसास-नीसासेहिं सिज्झड़ जाव सन्बदुक्खाणमंतं करेह, एवं खलु समणाउसो ! तस्स अणि-याणस्स इमेयाम्बे कल्लाणफलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेण सिज्झाइ जाव सन्बदुक्खाः णमंतं करेड ॥ २६६ ॥ तए णं बहुवे निर्माथा य निर्माथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमद्रं सोचा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति वंदित्ता नर्मानता तस्य ठाणस्य आलोयंति पहिद्यमंति जाव अहारिहं पायच्छित्तं तदोकम्मं पहिवर्जित ॥ २६७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए उजाणे बहुणं समणाणं बहुणं समणीणं बहुणं सावयाणं बहुणं सावियाणं बहुणं देवाणं बहुणं देवीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए मञ्झगए एवसाइक्खइ एवं भासइ एवं परुवेइ आयइठाणं णामं अजी! अजशयणं सअहं सहेउं सकारणं सुत्तं च अत्यं च तदुशयं च भुज्जो भुज्जो उनदंसेइ ॥ २६८॥ ति-वेमि ॥ आयर्ठाणं णामं दसमा दसा समता ॥ १० ॥

> ।। दसासुयक्खंधसुत्तं समत्तं ।। तस्समत्तीए

चउछेयसुत्ताइं समत्ताइं

॥ सञ्वसिक्रोगसंखा ४५०० ॥

श्रीसत्रागमप्रकाशकसमितिके 'स्तंभ'



श्रीमान् विजयक्कमार चुनिलाल फूळपगर, भवानी पेट, पूना 🕂 २.

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवजो जायपुरुमहाबीरस्स

सुत्तागमे

चत्तारि मूलसुत्ताइं तत्य णं दसवेयालियसत्तं

दुमपुष्क्रिया णामं पहममज्झयणं

धम्मो मंगळमुकिहं, अहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १॥ जहा दुमस्स पुप्फेड, भमरो आवियइ रसं। न य पुप्फं किळामेह, सो य पीणेइ अप्पयं॥ २॥ एमेए समणा मुत्ता, जे ळोए संति साहुणो। विहंगमा व पुप्फेड, दाणभत्तेसणे रया॥ ३॥ वयं च वित्ति ळ्ञामो, न य कोइ उवहम्माइ। अहागडेछ रीयंते, पुष्फेड भमरा जहा॥ ४॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणि-स्मिया। नाणापिंडरबा दंता, तेण बुचंति साहुणो॥ ५॥ ति-बेमि॥ इति दुम-पुण्फिया णामं पढममज्झयणं समसं॥ १॥

अह सामण्णपुरुवयं णामं बुह्यमज्झयणं

कहं तु कुजा सामण्णं, जो कामे न निवारए। पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ। १ ॥ वत्यगंघमलंकारं, इत्थाओ सग्रणाणि य। अच्छंदा जे न भुंजंति, न से बाइति जुषह ॥ २ ॥ जे य कंते पिए भोए, छद्धे विपिट्टि-कुल्वह । साहीणे चयह भोए, से हु चाइति जुषह ॥ ३ ॥ समाह पेहाह परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरहें बहिद्धा। "न सा महं नो वि अहं पि तीसे", इचेन ताओ विणएज रागं ॥ ४ ॥ आवावयाही चय सोगमळं, कामे कमाही कमियं ख तुन्खं। छिंदाहि दोसं विणएज रागं, एवं छुही होहिसि संपराए॥ ५ ॥ पन्धंदे अल्पं बोहं, धूमकेउं दुरासर्य। नेच्छंति वंतर्य सोतं, कुळे आया अगंघणे॥ ६ ॥ चिरखु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा । वंतं इच्छिति आवेउं, सेथं ते सरणं भवे ॥ ७ ॥ अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंघणा होमो, संजर्म निहुओ चर् ॥ ८ ॥ जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छिति नारिओ । वामाविद्धोत्त्र हडो, अद्विअप्पा भविस्सित ॥ ९ ॥ तीसे सो वयणं सोचा, संजयाइ सुभातियं । अंदुलेण जहा नागो, धम्मे संपिडवाइओ ॥ १० ॥ एवं करैंति संबुद्धा, पंढिया पवियक्खणा । विणियहंति भोगेन्न, जहा से पुरिश्चसमो ॥ ११ ॥ ति-बेमि ॥ इति सामण्णपु-व्ययं णामं दुर्यमज्ययणं समसं ॥ २ ॥

अह खुद्धियायारकहा णामं तहयमञ्झयणं

संजमे सुद्धिअपाणं, विष्यमुकाण ताइणं। तेलिमेयमणाइण्णं, निम्गंथाणं महेसिणं ।। १ ॥ उद्देसियं कीयगैंडं, नियानं अभिहर्डीणि य । राइभेंसे सिर्णाणे य, गंधे भिहे य वीर्यणे ॥ २ ॥ सनिहीं गिहिमते य, रायपिंड किमिन्छए । संवाहर्णी दंतपहोयणी य, संपुच्छणी देहपलोयणी य ॥ ३ ॥ अड्डावैर्ध य नीलीए, छत्तस्वै य भारणद्वाए । ्रे देशे देशे देशे हैं है जिस्सी के जो हुए । से से अपने प्रेपिण्डं च्रासंदीपिल-यंकें ए । गिहंतरिनेसेर्जी य, गायर्युव्बहेणाणि य ॥ ५ ॥ गिहिणो वंयैर्विडियं, जा य आजीवबृत्तियाँ । तत्तानिव्हुँडमोइतं, आउरस्मरणैणि य ॥ ६ ॥ मूळए सिंगबेरे य, उच्छुबंड अनिय्युडे । कंद मूले य सिंबत्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥ मोब-चलैं सिंधवें लोणे, रोमालोणे य आमए । सीमुद्दे पंछर्कीरे य, कार्लीलोणे य आमए ा ८ ॥ धूवणेति वसणे य, वस्थीकम्म विरेयणे । अंजणे दंतवणे य, गायब्र्मग विभूसर्वे ॥ ९ ॥ सञ्बसेयमणाइणां, निगांथाण महेसिणं । संजमस्मि य जुत्ताणं, छहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥ पंचासवपरिण्णाया, तिगुना छसु संजया । पंचनिम्महूणा धीरा, निर्मया उज़्दंसिणो ॥ ११ ॥ आयावयंति गिम्हेस, हेमंतेस अवाउडा । वासास पिंडसंलीणा, संजया ग्रसमाहिया॥ १२॥ परीसहरिखदंता, धूयमोहा जिई-दिया । सम्बदुक्खप्पहीणद्वा, पक्संति महेसिणो ॥ १३ ॥ दुकराई करिनाणं, दुस्स-हाई सहितु य । केइटत्य देवलोएस, केइ सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥ खविना पुट्य-कम्माइं, संजमेण तर्नेण य । सिद्धिमरगमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्युडा ॥ १५ ॥ ति-विमि ॥ इति खडियायारकहा णामं तहयमज्ययणं समर्च ॥ ३ ॥

अह छजीवणिया णामं चउत्यमज्ज्ञयणं

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खळू छजीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेदया सुअवस्वाया सुपन्नता सेयं मे अहिजिलं अज्ययणं धम्मपण्णती ॥ १ ॥ कयरा खळु सा छजीवणिया नामज्ययणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया युअक्खाया सुपनता सेयं मे अहि जिउं अज्झयणं ध्रम्मपण्णशी ॥ २ ॥ इमा खल्ल सा छजीवणिया नामज्ज्ञयणं सम्रोणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेड्या चुअक्खाया सुपन्नता सेयं मे अहिजिउं अज्ञा-यणं धम्मपण्णसी । तंजहा---पुढविकाइया १, आडकाइया २, तेउकाइया ३, वाउ-काइया ४, वणस्सदकाइया ५, तसकाइया ६ । पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्तरथ सत्थपरिणएणं १ । आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनत्य सत्यपरिणएणं २ । तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनस्य सत्थपरिणएणं ३ । वाऊ चित्तमंनमक्बाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्य सत्य-परिणएणं ४ । वणस्सई चित्तमंतमबन्द्राया अणेगजीवा पढोमत्ता अन्नत्य सत्थपरि-णएणं । तंजहा-अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंघबीया, बीयरुहा, सम्मु-च्छिमा, तणल्या वणस्सइकाइया, सबीया, चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा प्रहोसत्ता अन्नत्य सत्यपरिणएणं ५। से जे पुण इमे अणेगे बहुवे तसा पाणा तंजहा-अंख्या. पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, संसुच्छिमा, टब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाणं, अभिकंतं, पडिकंतं, संकुचियं, पसारियं, रुयं, भंतं, तसियं, पलाइयं, आगहगहविश्वाया. जे य कीडपर्यंगा जा य कुंश्रिपितिलया. सन्वे बेहंदिया, सन्वे तेहं-दिया, सन्वे चर्रिदिया सन्वे पंचिदिया, सन्वे तिरिक्खजोणिया, सन्वे नेरइया. सन्वे मणुया, सन्वे देवा, सन्वे पाणा परमाहम्मिया, एसो खल्ल छट्टो जीवनिकाओ तसकाउत्ति पशुन्बह ६ ॥ ३ ॥ इबेसिं छण्डं जीवनिकायाणं नेव सर्य दंडं समारंभिकाः नेवकेटि दंडं समारंभाविजा, दंढं समारंभंते वि अने न सम्पुजाणिजा। जानजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाय काएणं न करेमि न कारनेमि करंतं पि असं न सम-णुजाणासि । तस्स भंते ! पिकक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ ४ ॥ पहमे भंते! महत्वर पाणाइवायाओ बेरमणं। सन्वं भंते! पाणाइवायं एक-क्यामि । से ग्रहमं वा, वायरं वा. तसं वा, वावरं वा, नेव सर्य पाणे अहवाहजा। नेबडनेहिं पाणे अद्वासाविका, पाणे अद्वासंते वि असे न सम्युजाविका । जाद-जीवाए तिविहं तिविहेणं संगेणं बाबाए काएणं न करेशि न कारवेशि करंतं पि

असं न समगुजागामि । तस्स भंते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे भंते ! महन्वए उबद्रिओमि सन्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥ ५ ॥ अहाबरे दुखे मंते ! महत्वए मुसावायाओ वेरमणं । सब्बं मंते ! मुसावार्यं पनक्लामि । से कोहा वा, लोहा वा, मया वा, हामा वा, नेव सर्य सुसं बहजा, नेवडबेहिं मुसं वायाविजा. मुसं वयंते वि अने न समणुजाणिजा। जाव-जीवाए तिबिहं तिबिहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अनं न समणजाणामि । तस्स भंते ! पिडकमामि निदासि गरिहासि अप्पाणं बोसिरासि । दुचे भंते ! महन्वए उवद्विओमि सन्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥ ६ ॥ अहावरे तने भंते! महन्वए अदिशादाणाओ वेरमणं । सन्वं भंते! आंदशा-दाणं पचक्खामि । से गामे वा. नगरे वा. रण्णे वा. अप्पं वा. बहं वा. अणुं वा. थुलं वा. चित्तमंतं वा. अचित्तमंतं वा. नेव सयं अदिसं गिष्टिजा, नेवऽन्नेहिं अदिशं गिण्हाविजा. अदिशं गिण्हंने वि अंशे न सम्युजाणिजा । जावर्जात्राए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवैसि करंतं पि अनं न समण्जाणामि । तस्स भंते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिष्टामि अप्पाणं वोसिरामि । तुचे भंते । महत्वए उवदिओमि सन्वाओ अदिबादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥ ७ ॥ अहावरे चउत्ये भंते ! महम्बए मेहणाओ वेरमणं । सन्त्रं भंते ! मेहणं पचक्खामि । से दिव्यं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहणं सेविजा. नेवडनेहिं मेहणं सेवाविजा, मेहणं सेवंते वि अने न समगुजाणिजा । जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाएं काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अर्क न समग्रजाणामि । तस्स भंते ! पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसि-रामि । चउत्ये मंते ! महष्वए उवद्विओमि सब्वाओ मेहणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥ ८ ॥ अहावरे पंचमे भेते । महत्वए परिग्गहाओ वेरमणं । सन्वं भंते ! परिग्गहं पचक्खामि । से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, शूलं वा, वित्तमंतं वा, अवित्तमंतं वा, नेव सर्थ परिवाई परिविष्हिजा, नेवडबेहिं परिवाहं परिविष्हाविज्ञा, परिवाहं परिगिण्हंते वि अने न समगुजाणिजा। जाबजीबाए तिथिहं तिविष्टेणं मणेणं बायाए काएंग न करेमि न कारनेमि करेतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भेते ! पिडक्रमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पंचमे भेते ! सहव्यए उविद्योगि सम्बाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥ ५ ॥ अहावरे छहे अंते ! वए राइमीयणाओं चेरमणं । सन्वं मंते ! राइमीयणं प्रवश्वामि । से असणं वा. पार्च वा, खाइमं वा, साइमं वा, नेव सर्व राई शंजिजा, नेवडवेहें राई शंजाविजा, राई

मुंजते वि अपे न सम्युजाणिजा । जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अर्च न समण्जाणामि । तस्स मंते ! पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि । छट्टे भंते ' वर् उबद्धिओमि सम्बाओ राइमोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ १० ॥ दृष्ट्येयाई पंच महत्वयाई राइमोयण-वेरमणछद्वाइं अत्तिहियद्वयाए उवसंपिजताणं विहरामि ॥ ११ ॥ से मिक्स वा. भिक्लणी वा. संजयविरयपिंडहरूपश्चक्खायपावकर्म, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिर्ल वा, छेछं वा. ससरक्खं वा कार्य, ससरक्खं वा वन्धं, हत्येण वा, पाएण वा, कट्टेण वा. किलिंचेण वा, अंगुलियाए वा, सलागाए वा, सलागहरथेण वा, न आलिहिजा, न विलिहिजा, न घडिजा, न सिंदिजा, असं न आलिहाविजा, न विलिहाविजा, न घटाविजा, न भिराविजा, असं आलिहेनं वा, विलिहेतं वा, घट्टनं वा, मिदंतं वा, न समगुजाणिजा । जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवैभि करंतं पि अर्च न समणजाणामि । तस्स भेते ! पहिष्यामि निंदामि गरिहासि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ १२ ॥ से मिक्ख् वा, भिक्खुणी वा, संजयविर्यपिडहयपचक्कायपाककरमे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसामओ वा, सुते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महियं वा, करगं वा. हरिन्छुगं वा. सुद्धोदगं वा. उदछहं वा कार्य, उदछहं वा बत्यं, ससिणिद्धं वा कार्य, संसिणिद्धं वा वर्त्यं, न आमुसिजा, न संफ्रांसिजा, न आवीलिजा, न पवीलिजा, न अक्सोडिजा, न पक्सोडिजा, न आयाविजा, न पयाविजा, असं न आमुसाविजा, न संफुसाविजा, न आवीलाविजा, न पवीलाविजा, न अक्खो-डाविजा, न पक्कोडाविजा, न आयाविजा, न पयाविजा, असं आमुसंतं वा, संपुत्तंतं वा, आवीळंतं वा, पवीळंतं वा, अवस्वोर्डतं वा, पक्स्वोर्डतं वा, आयावंतं वा. प्यार्वतं वा. न समणुजाणिजा । जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवैसि करंतं पि अनं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्रमामि निवामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ २ ॥ १३ ॥ से मिक्खू वा, भिक्खुणी वा. संजयविरवपिंडहयपचक्कायपावकम्मे, दिखा वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा-गओ बा. मते बा. जागरमाणे वा. से अगणि वा. इंगालं वा. सम्मरं वा. अचि बा, जालं वा, अलायं बा, सुद्धागणि बा, उक्तं वा, न उंजिजा, न घटिखा, न मिदिजा, न उजालिका, न प्रकालिका, न निव्वाविजा, अर्थ न उंजाविजा, न धराविजा, न मिराविजा, न रजालाविजा, न पजालाविजा, न निन्नाविजा,

असं उज्जंतं वा, घट्टंतं वा, भिंदंतं वा, उजालंतं वा, पजालंतं वा, निव्वावंतं वा, न समणुजाणिजा। जावजीवाए तिविद्धं तिविद्देणं मणेणं वायाए काएणं न करेनि न कारवेमि करंतं पि अनं न समणुत्राणामि । तस्स भंते ! परिक्रमामि निंदामि गरिहासि अप्पाणं वोसिरामि॥ ३॥ १४॥ से भिक्क् वा, भिक्क्णी वा, संजयविरयपडिद्वयपचक्कायपाक्कम्मे, दिशा वा, राओ वा, एगओ वा, परिमागओ बा, बुत्ते बा, जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुचणण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण बा, पत्तसंगेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण या, पिहुणहरेबेण वा, श्रेकेण वा, चेलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणी वा कार्य, बाहिरं वावि पुग्गलं, न फूमिजा, न वीइजा, अने न फूमाविजा, न वीयाविजा, अने फूमेंनं वा, वीयंतं वा, न समणुजाणिज्या । जाबजीवाए तिबिहं तिविहेणं मणेणं वायाए क एपं न करेमि न कारवैमि करंते पि अर्च न समगुषाणामि । तस्य भेते ' पडिक्सामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि॥ ४॥ १५॥ से भिक्ख या, शिक्खणी वा, संजयविरयपडिहयपचयकायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओं वा, परिसागओं वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से बीएसु वा, बीवपडहेस वा. म्हेनु वा, स्टप्स्ट्रेस बा, जाएस बा, जायपह्टेस बा, इरिएस बा, हरियार्ड्डेस त्रा, लिन्नेस या, जिन्नपर्देस वा, सचित्तेस वा, सचित्तकोलपडिर्गिएस वा, न गरिस्त्रज्ञा, न चिहिजा, न निसीइजा, न तुयहिजा, असं न गरस्यविज्ञा, न चिट्ठाविजा, न निसीयाधिजा, न तुयद्याविजा, असं गम्छनं वा, चिट्ठतं वा, निसीयतं वा, नुयहतं वा, न समणुजाणिजा । जावर्जीवाए तिविहं निविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेने पि असं न समगुजाणामि । तस्स भंते ! पिडक्समामि निर्दाम गरिहामि अप्याणं बोसिरामि ॥ ५ ॥ १६ ॥ से भिक्क दा, सिक्कुणी वा, मंजयविरयपडिह्यपचक्कायपावकम्मे, दिशा वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, श्रुने वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पर्यंगं वा, कुंशुं वा, पिपील्जियं वा, हरबंधि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उद्देशि वा, स्वयंसि वा, स्थांसि वा, पडिग्गहंसि वा, फेबलंसि वा, पायपुरक्रणंसि वा, रबहरणंसि वा, गुरखगंसि वा, उड़गंसि बा, दंढेगंसि बा, पीडगंसि बा, फलगंसि बा, सेअंसि बा, संवारगंसि बा, अध्ययसि वा तहप्पगारे उकारणजाए तओ संज्यामेन पिडेलेहिन पिडेलेहिन पमित्रिय प्रमंतिमविष्या, नो णं संघायसाविष्या ॥ ६॥ १७ ॥ अत्रयं बरमाणो (य) उ, पाणभ्याई हिंसह । बंधह पावयं कर्म, ते से होंह बहुयं फ्लं

१ फुबीकरणमेयस्त निवीहऽज्ञायणाची बायन्तं।

॥ १ ॥ अत्रयं चिद्वमाणी उ. पाणभ्याइं हिंसह । बंबड पादयं कम्मं, तं से होइ कड्यं फलं ॥ २ ॥ अजयं आसमाणो उ, पाणभूयाई हिंगइ । बंधइ पावयं कम्मं, तं से होट कड्यं फर्ल ॥ ३ ॥ अजयं मयमाणो उ. पाणभयाई हिंसइ । बंधइ पावयं कम्मं. तं से होइ बहुयं पर्ल ॥ ४ ॥ अजयं भुंजमाणो उ. पाणभूयाइं हिसइ । बंधड पावयं करमं, तं से होइ ऋहयं फलं ॥ ५ ॥ अजयं माममाणो उ. पाणभयाडं हिंसड़ । बंधड़ पावर्य कम्मं, नं से होड कहुर्य फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे ? कहं चिट्ठे ?, कहमास ? कहं सए ?। कहं भुंजंती भासंती, पावकम्मं न बंधइ ?॥ ७॥ जयं चरे जयं चिट्टे, जयमासे जयं सए। जयं भंजंती भासंती, पावकम्मं न बंधइ॥ ८॥ मध्वभूवपभयस्य, सम्मं भयाइ प्राप्तको । पिहियासवस्स दंतस्स, पावकमं न बंधड ॥ १ ॥ पढमं नाणं तओ दया, एवं चिद्धइ सन्वसंजए । अञ्चाणी कि काही?, किं वा नाहिइ सेयपादगं ?॥ १०॥ सोचा जाणइ कलाणं, सोचा जाणइ पादगं। उसरं पि जाणह सोचा, जं सेरं तं समायरे ॥ १९ ॥ जो जीवे वि न याणेह, अजीवे वि न याणह । जीवाजीवै अयाणंती, कहं सी नाहिइ संजर्म ? ॥ १५ ॥ जो जीवे वि वियाणह, अजीवे वि वियाणह । जीवाजीवे वियाणती, सी हु नाहिइ संजर्भ ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे या दो वि एए वियाणइ । तया गई बहुविहं, सब्द-जीवाण जाणह ॥ १४ ॥ जया गई बहुविहं, सध्वजीवाण जाणह । तया पुण्णं च पार्व च, बंधं मुक्लं च जाणह ॥ १५ ॥ जया पुष्णं च पार्व च, बंधं मुक्लं च जाणह । तथा निस्वितए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥ जया निन्वितए भोए. जे दिन्ये जे य माणसे । तथा चयड संजोगं, सन्मितरबाहिरं ॥ १७ ॥ जया चयड संजोगं, सर्विभारबाहिरं। तथा मंडे भवित्तार्णं, पव्यक्का अणगारियं ॥ १८ ॥ जया मुंडे मिनताणं, पव्यक्त् अणमारियं । तथा संवरमुक्किट्टं, धम्मं कासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥ जया संबरमुकिद्वं, धन्मं फासे अणुत्तरं । तया धुणइ सम्मर्यं, अबोहि-क्र्युसं कहं ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्मर्यं, अबोहिक्ळुसं कहं । तया सब्बतार्ग नाणं, देसणं चासियच्छद्र ॥ २९ ॥ जया सम्बन्तर्य नाणं, दंसणं चासियच्छद् । तमा लेगमलंगं च. जिजो जाजह केवळा ॥ २२ ॥ जया होगमहोमं च. जिजो जावह केवली । तथा जोगे निर्देशिया, सेकेसि पडिबजाइ ॥ २३ ॥ जया जोगे निरंभिता, ग्रेकेसि पविकार । तथा सन्तं सवितायं, सिद्धं वच्छा नीरको ॥ २४ ॥ जवा करमं सवितार्थ, सिद्धिं सरक्षड् नीरको । तदा लोगमत्यवस्थी, सिद्धी इवड् सासको ॥ २५ ॥ ध्रहसायमस्य सम्बन्स, सामारक्रयस्य निगानसाइस्त । उच्छोकनाम्बोबस्य, दक्षहा समाइ तारिसमस्य ॥ १६ ॥ तमोन्नमनहानस्यः उपन मइ-संतिसंजमरयस्य । परीसहे जिणंतस्य, इलहा मुगइ तारिसगस्य ॥ २० ॥ पच्छा वि ने पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाई । जेर्नि पिओ तवो संजमो य, संती य बंभचेरं च ॥ २८ ॥ इचेर्च छजीवणियं, सम्माहेद्वी मया जए । दृष्टहं लहिसु मामण्यं, कम्मुणा न विराहिजासि ॥ २९ ॥ ति-विमि ॥ इति छजी-विणया णामं चडन्थमज्यस्यणं समसं ॥ ४ ॥

अह पिंडेसणा णामं पंचममज्झयणं

पढमो उद्देशो

संपने भित्रसकालम्म, असंभंतो अगुच्छिओ । इमेण कमजोगेण, भन्तपाणं गर्व-सए ॥ १ ॥ से गामे वा नगरे वा, गोयरागगओ मुणी । चरे मंदमणुव्विग्गां. अव-क्खिंतण चेयसा ॥ २ ॥ पुरको जुगमायाण, पेहमाणो महिं चरे । वर्जनो त्रीयहरिः यार्ड, पाणे य दगमहियं ॥ ३ ॥ ओवार्य विसमं खाणं, विज्ञलं परिवज्ञए । सेरुमेण न गच्छिजा, विज्ञमाणे परक्रमे ॥ ४ ॥ प्रवर्डते व मे तत्थ, प्रक्खलंते व संजग् । हिंसेज पाणभृयाई, तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥ तम्हा तेण न गच्छिजा, संजए सुस-माहिए। यह अन्नेण मर्गेण, जयमेव पर्यामे ॥ ६॥ इंगालं छारियं रासि, तुसरासि च गोमयं। ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नहकूमे ॥ ७॥ न चरेज बासे वामंते, महियाए व पहांतिए । महावाए व बायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥ न चरेज वेससामंत, नंभचेरवयाणुए । वंभवारिस्स दंतस्स, होजा तस्य विसोत्तिया ॥ ९ ॥ अणायणे चरेतस्य. संसम्गीए अभिक्खणं । होज वयाणं पीला. सामण्याम्य ब संसओं ॥ १० ॥ तम्हा एवं विद्याविता. होसं दग्गइवद्भगं । दज्जए विमसामंतं, सुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥ सार्ण सूह्यं मावि, दिशे गोणं हयं गयं । सेहिक्सं कलहं जुई, दुरओ परिवजाए ॥ १२ ॥ अणुन्नए भावणए, अप्पहिद्वे अणाउ**ले । इंदियाइं जहा**-भागं. दमइता मुणी चरे ॥ १३ ॥ दबदबस्य न गच्छेजा, भासमाणो य गोयरे । हमंतो नाभिगच्छेजा, कुरुं उचावयं सवा ॥ १४ ॥ आलोयं चिराहं दोरं, संधि दगभवणाणि य । बरंतों न विणिज्साए, संबद्धाणं विवजाए ॥ १५ ॥ रह्नो णिहबर्देणं च, रहस्मारविखयाणि व । संकिलेसकरं ठाणं, बरुओ परिवजाए ॥ १६ ॥ पछि-इहकुरुं न पविसे, मामर्ग परिवज्यए । अधिमासकुरुं न पविसे, विवसं पविसे कुरुं ॥ ९७ ॥ सामीपादारपितियं, अप्पणा नावपंत्ररे । कवारं नी क्युक्रिया, उस्पहेंसि

अजाइया ॥ १८ ॥ गोयरम्पर्वाद्वो य, वचमुत्तं न धारए । ओगासं फासुयं नचा, अणुष्तविय बोसिरे ॥ १९ ॥ नीयं दुवारं तससं, कुट्टगं परिवजाए । अच्चक्खुविसको जत्य. पाणा दुप्पष्टिलेहमा ॥ २० ॥ जत्य पुप्फाइं बीयाई, विष्पद्ग्णाईं कोहुए । अहणोविलमं उर्व, दहणं परिवजाए ॥ २९ ॥ एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कोष्टण् । उद्यंधिया न पविसे, विउद्विमाण व संजए ॥ २२ ॥ असंसमं पलोइजा, नाइद्राव-लोयए । उप्पुतं न विभिजनाए, नियद्विज अयंपिरो ॥ २३ ॥ अइभूमिं न गच्छेजा. गोयरमगमओ मणी। कुलस्स भूमि जाणिना, मियं भूमि परहामे ॥ २४॥ तत्थेव पटिलेहिजा, भूमिमागं वियञ्खणो । सिणाणस्य य वश्वस्स, संलोगं परिवज्रए ॥ २५ ॥ दगमदिवआयाणे, बीयाणि हरियाणि य । परिवर्जतो चिद्धिजा, सिन्निदियसमाहिए ॥ २६ ॥ तथ्य मे चिद्रमाणस्म, आहरे पाणभोयणं । अक्षियं न मिण्डिजा, पडि-गाहिज करिपयं ॥ २७ ॥ आहरंती सिया तत्थ, परिसाहिज भोयणं । दितियं पांड-याइक्खे, ''न में कप्पइ नारिसं'' ॥ २८ ॥ संमहमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य । असंजमकरिं नका, नारिमिं परिवजाए ॥ २९ ॥ साहडू निकिसवित्ताणं, मिचनं घष्टियाणि य । तहेन समणहाए, उदर्ग संपण्डिया ॥ ३० ॥ ओगाहङ्ता चलङ्गा, आहरे पाणमोयणं । दितियं परिवाइक्खे, "न मे कप्पर तारिसं" ॥ ३१ ॥ पुरेक-म्मेण हत्येण, दब्बीए भारणेण या । दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पड़ तारिसं" ॥ ३९ ॥ एवं उदउद्वे ससिभिद्धे, समर्क्ले महिया उसे । हरियाले हिंगुलए, मणो-सिला अंजणे कोणे ॥ ३३ ॥ गेरुय विष्णय सेहिय, सोरङ्किय पिट्ठ कुरूस कए य । उक्तिज्ञमसंसद्वे. संसद्वे चेव बोद्धव्ये ॥ ३४ ॥ असंसद्वेण हत्येण, दव्यीए भारणेण वा । दिज्ञमाणं न इच्छिजा, परुद्याकरमं अहिं भवे ॥ ३५ ॥ संसद्वेण य हत्येण. दम्बीए भायणेण वा । दिज्ञसाणं पडिच्छिजा, जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३६ ॥ हुण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तस्य निमंतए । दिजमाणं न इच्छिजा, छंदं से पडिलेहए ॥ ३० ॥ दुर्ण्हं तु भुंजमाणाणं, हो वि तस्य निर्मतए । दिजमाणं पडिच्छिजा. जं तत्थेसणियं सबे ॥ ३८ ॥ गुन्बिणीए खवजत्थं, निविद्दं पाणभोयणं । भुंजमाणं विद-जिजा, मुससेसं पहिच्छए ॥ ३९ ॥ सिया य समणद्वाए, गुन्त्रिणी कालमासिणी । उद्विया वा निर्वीहजा. निसवा वा पुण्डूए ॥ ४० ॥ तं भवे भत्तपार्थ तु, संजवाण अकृष्पियं । दितियं पडियादक्को, "न मे कपद तारिसं" ॥ ४१ ॥ भणमं पिज-माणी, बारवं वा कुमारियं। तं निक्सवितु रीअंतं, आहरे पाणमोवर्णं ॥ ४२ ॥ तं मने अत्तरामं तु, संज्ञवाम अक्षियं। दिंतियं पडियाहक्के, "न ये कप्पह तारिसं" ॥ ४३ ॥ वं अवे अस्पार्थ हा. कप्पारक्षिम संकितं । दितियं परिवाद्यके, "न मे

कप्पड़ नारिसं" ॥ ४४ ॥ दगबारेण पिहियं, नीसाए पीढएण वा । स्रोडेण वावि खेंचेण. सिकेसेण व केणड ॥ ४५ ॥ तं च उहिंभदिया दिजा, समणद्वाए व दावए । दितियं पडियाइक्छे. "न मे कप्पइ तारिसं" ॥ ४६ ॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं माइमं तहा । जं जाणिज मुणिजा वा, "दाणद्वा पगडं इमं" ॥ ४७ ॥ तं भवे भत्त-पाणं तु. संजयाण अकप्पियं । दितियं पष्टियाइक्खे, ''न में कपड् तारिसं''॥ ४८॥ असणं पाणगं वावि, खाइमं साहमं तहा । जं जाणिज सुणिजा वा. ''पुण्णद्वा पगर्ह इमं" ॥ ४९ ॥ तं भवे भनपाणं तु, संजयाण अकप्पियं । दितियं पडियाइक्डे. "न में कप्पड तारिसं" ॥ ५० ॥ असणं पाणगं वावि. खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज मुणिजा वा, "विणिमद्रा पगरं इमं" ॥ ५१ ॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अक-प्पियं । दितियं परियादक्के, "न मे कप्पड तार्थसं" ॥ ५२ ॥ असणं पाणगं वा-वि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणिज्ञ सुणिज्ञा वा, "समणद्वा पगर्ड इमं" ॥ ५३ ॥ तं भवं भत्तपाणं तः, संजयाण अकृष्ययं । दितियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिमं'' ॥ ५४ ॥ उद्देशियं कीयगडं, पृडकम्मं च आहुई । अज्झोयर पामिर्च, मीम-जायं विवास ॥ ५५ ॥ उगामं से स पुच्छिजा, कस्सद्वा केण वा कहं १ । सुका निस्मिकियं सुद्धं, पिडिगाहिज संजए ॥ ५६ ॥ असर्ग पाणर्ग वावि, खाइमं साइसं तहा । पुष्फेस हुज उम्मीसं, बीएस हरिएस वा ॥ ५० ॥ तं भवे भत्तपाणं तू, सजयाण अकप्पियं । दिनियं पिडयाइक्ले, "न मे कप्पड् नारिसं" ॥ ५८ ॥ असणं पाणमं वावि, खाइमं माइमं तहा । उदगंगि हुज निविखत्तं, उत्तिगपणगेस वा ॥ ५९ ॥ तं भने भत्तपार्थं तु. संख्याण अविध्ययं । दितियं पहिसाइक्के. "न मे कप्पड तारिसं" ॥ ६०॥ असणं पाणगं वावि, साइमं साइमं तहा । अगणिम्म होज निक्सित्तं, तं च संबहिया दए ॥ ६९ ॥ तं भवे भनपाणं तु, संजयाण अकप्पयं । दितियं पिंड-याइक्ले, "न में कप्पइ तारिसं"॥ ६२॥ एवं उस्सक्तिया ओसक्रिया, उजारिया पजालिया निव्वाविया । उस्तिविया निस्तिविया, उन्नतिया भोयारिया दए ॥ ६३ ॥ तं भन्ने अलपाणं तु, संज्ञवाण अकप्पियं । दितियं पश्चियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं"।। ६४ ॥ हुज कई सिलं वावि, इहालं वावि एगया । ठवियं संकमहाए, तं च हुज चलाचलं ॥ ६५ ॥ न तेम शिक्स् गच्छिना, दिश्वो तत्व असंबन्धे । गंभीरं झुसिरं चेव, सञ्चिदिवसमाहिए ॥ ६६ ॥ निस्सेणि फक्कां पीर्ट, उस्सविता-णमारहे । मंत्रं कीलं च पासायं, समजद्वाप व दावए ॥ ६० ॥ दुरुद्वमानी पनिहेंका, इत्यं पार्य व द्वसए । पुडियजीये वि श्विसेया, जे य तं निस्सिया वाणे ॥ ६८ ॥ एयारिसे महादोसे, आणिकम महेसिमो । तम्हा मालोहर्ड शिक्सं, स परिनिर्ण्डी

संज्ञ्या ॥ ६९ ॥ कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिनं च सिन्धरं । तुंबागं सिंगबेरं च, आमगं परिवञ्जए ॥ ५० ॥ तहेव सत्तुनुष्णाइं, कोलनुष्णाइं आवणे । सङ्खिं फाणियं पूर्व, अनं वावि तहाविहं ॥ ७९ ॥ विकायमाणं पसदं, रएण परिफासियं । दितियं पढियाडक्खे, ''न मे कप्पड़ नारिसं" ॥ ७२ ॥ बहुअद्विअं पुग्गरें, अणसिसं वा बहुकंटर्यं । अत्थियं तिंदुयं बिहं, उन्ह्युसंडं व सिंबलिं ॥ ७३ ॥ अप्पे सिया भोय-णजाए, बहुउजिझयधम्मिए । दिंतियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पइ तारिसं" ॥ ७४ ॥ तहेवुचावर्यं पाणं, अदुवा वारधीयणं । संसेडमं चाउलोदगं. अहुणाधीयं विवज्रए ॥ ७५ ॥ जं जाणेज चिराधीयं, मर्डए दंगणेण वा । पडिपुच्छिकण सुचा वा, जं च निरसंकियं भवे ॥ ७६ ॥ अजीवं परिणयं नचा, पिंडगाहिज संजए । अह संकियं भविजा, आगाइताण रोयए ॥ ७० ॥ "थोबमासायणद्वाए, हत्थगम्मि दलाहि मे । मा मे अर्चाबिलं पूर्व, नालं तिण्हं विणित्तए" ॥ ७८ ॥ तं च अर्चाबिलं पूर्व, नालं तिण्हं विणित्तष् । दिंतियं पिंडयाइक्खे, "न में कप्पइ तारिसं" ॥ ७९ ॥ तं च हुज अकामेणं. विमणेण पडिच्छियं। तं अप्पणा न पिने, नो वि अनस्म टानए॥ ८०॥ ग्गंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिया। जयं परिद्वविज्ञा, परिद्वप्प परिकरंग ॥ ८९ ॥ िया य गोयरम्गओ, इच्छिजा परिमुत्तुयं । कुट्टगं भित्तमूलं वा, पश्चिलंहिताण फानुयं ॥ ८२ ॥ अणुनवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे । हत्थगं संपमजिता, तत्व भुंजिज संजए॥ ८३॥ तत्य से भुंजमाणस्स, अद्विजं कंटओ सिया। तणक-द्वसद्वरं वाबि, अनं वाबि नहाविहं ॥ ८४ ॥ नं उक्सिविन्न न निक्लिवे, आस-एण न छहुए । इत्येण तं गहेऊण, एगंतमवक्षमे ॥ ८५ ॥ एगंतमवक्षमिता, अन्वित्तं पहिलेहिया । जयं परिद्वविजा, परिद्वप्य पडिक्रमे ॥ ८६ ॥ तिया य भिक्ख इच्छिजा. सिजमागम्म भुतुर्य । मर्पिडपायमागम्म, उंदुर्य पिडलेहिया ॥ ८० ॥ विगएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी । इरियावहियमायाय, आगओ य पढिकसे ॥ ८८ ॥ काभोइताण नीरोसं, अङ्यारं जहहर्म । गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व संजए ॥ ८९ ॥ उज्जुष्पन्नो अणुव्चिम्गो, अव्यक्षितीय चेयसा । आसीए गुरुसगासे, जं जहा गहियं

१ बहुअद्विअं=बहुगद्वियं-गद्विया 'गुठली' ति सासाए, बहुईओ गद्वियाओ ठियाओ जम्म तं ब०,गकारयकारलोवो, एवं बहु अद्विअस्स निष्फत्ती। बहुजीयगं ति अद्वो। अहवा बहुअद्विशं=बहुज्य-द्विशं-बहुयाई बीयाई ठियाई जंसि तं तारिसं फलं। २ पुन्गलं=प्र-सम्गलं-पगरिसेण उम्मलणारिहं-पबसेवणसुम्यं विज्ञए जंसि तं तारिसं फलविसेसं। १ अणमिसं ति वा अज्ञण्यासं तिथा एगद्वा। ४ प्रणसफलाइवं। ५ अग्रत्थियलवस्तरं, अग्रत्थियस्सऽज्ञाहारो अस्थियं। ६ सिदी जहा हेद्वा, जवरं लिंगमेखो पाइयरावां। । भवे॥ ९०॥ न सम्ममालोइयं हुजा, पुल्वि पच्छा व जं कहं। पुणो पिडक्कमे तस्स, वोमहो चिंतए इमं॥ ९१॥ अहो जिणेहिऽमावजा, वित्ती साहूण देसिया। मुक्कस्ताहणहेउस्स, साहुँदेइस्स धारणा॥ ९२॥ नमुक्कारेण पारिता, करिता जिणसंयवं। सज्झायं पहुविताणं, वीममंज खणं मुणी॥ ९३॥ वीममंनो इमं चिंते, हियमहं लाममहिओ। जइ मे अणुम्महं कुजा, साहु हुजामि तारिओ॥ ९४॥ साहवो तो वियत्तेणं, निमंतिज जहकमं। जइ तत्थ केइ इच्छिजा, तेहिं गर्दि तु मुंजए॥ ९५॥ अह कोइ न इच्छिजा, तक्षो मुंजिज एगओ। आलोए भायणे साहू, जयं अपरिमाडियं॥ ९६॥ तित्तगं व कहुयं व कमायं, अविलं व महुरं लवणं वा। एयलद्व-महत्थपउत्तं. महुधयं व मुंजिज संजए॥ ९७॥ अरसं विरसं वावि, सङ्गं वा अप्युट्टां। उहं वा जड् वा चुकं, मंथकुम्मासभोयणं॥ ९८॥ उप्पनं नाइहालिजा, अप्पं वा बहु फासुयं। मुहालदं मुहाजीवी, भुंजिजा दोमवजियं॥ ९९॥ दुहहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुहहा। मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गई। १००॥ तिन्वेमि॥ इति पिंडेसणाए पढमो उहेसो समसो॥ ५०१॥

अह पिंडेसणाए बीओ उद्देसी

पडिम्महं मंलिहिताणं, छेबमायाइ संजए । दुर्गधं वा सुगंधं वा, सब्बं भुंजे न छहुए ॥ १ ॥ सेजा निसीहियाए, समावको य गोयरे । अयावयद्वा भुषाणं, जह तेणं न संधरे ॥ २ ॥ तओ कारणममुप्पकं, भनपाणं गनेसए । विहिषा पुन्वडत्तेणं, हमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥ कालेण निक्समे भिक्स्, कालेण य परिक्रमे । अकाले व विविज्ञाना, काले कालं समायरे ॥ ४ ॥ "अकाले वरसि भिक्स्, कर्तं न पांडलेहिस । अप्पाणं च किलामेसि, सिक्सवेसं च गरिहिस" ॥ ५ ॥ सइ काले वरि भिक्स्, कुजा पुरिमकारियं । "अलामो" ति न सोहजा, "तवो" ति अहियासए ॥ ६ ॥ तहेनुस्वावया पाणा, भतद्वाए समागया । तं उज्ज्ञयं न गच्छिजा, असमेन परक्रमे ॥ ५ ॥ गोयरगपविद्वो य, न निसीहजा कत्यह । कहं च न प्रविज्ञा, विद्वित्ताण व संजए ॥ ८ ॥ अगले पिछहं दारे, कवाडं वावि संजए । अवलंबिया न चिद्विज्ञा, गोयरगपनो मुणी ॥ ९ ॥ समणं माहणं वावि, किलिणं वा वजीनयं । उवसंकर्मतं भनदा, पाणद्वाए व संजए ॥ ९० ॥ तं अइक्रिस्तु न पविदे, न विद्वे चक्रवृगोयरे । एगंतमवक्रमिता, तत्थ विद्विज्ञा संज्ञण् ॥ १९ ॥ वजीमगस्स वा तस्त, दायगस्सुभयस्स वा । अप्पत्तियं सिया हुका, स्रहृतं प्रवव्यवस्स वा ॥ १ ३ ॥

पिंडसेहिए व दिने वा, तुओ तम्म नियशिए। उवसंक्रमिज भनद्वा, पाणहाए व संजए ॥ १३ ॥ उप्पलं पर्डमं वावि, कुमुयं वा मगदंतियं । अनं वा पुप्फसिन्तं, तं च संलंचिया दए ॥ १४ ॥ नं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं । दिंतियं पडियाइक्खे, "न मे कप्पड तारिसं"॥ १५॥ उप्पर्छ पउमे वानि, कुमुयं ना मगदंतियं । अर्ज वा पुष्फसचितं, तं च संमद्दिया दए ॥ १६ ॥ तं भवे भत्तपाणं. तु, संजयाण अकृष्पियं । दितियं पिंडयाइक्खें, "न में कप्पड़ नारिसं"॥ १०॥ सालुयं वा विरालियं, कुसुयं उपकलालियं । मुणालियं सासवनालियं, उच्छुखंडं अनिञ्च डं ॥ १८ ॥ तरुणमं वा पवालं. स्वन्त्रस्स नणगस्स वा । अनस्स वावि हरियरम, आमगं परिवज्ञण् ॥ १९ ॥ नरुणियं वा छिवाडि, आमियं मजियं सई । दितियं पडियाहक्खे, "न मे कप्पर नारिसं"॥ २०॥ नहा कोलमणुस्किं, वेद्धयं कामवनालियं । तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्ञए ॥ २१ ॥ तहेव चाउलं पिद्वं, वियर्त वा तननिब्बुडं । तिलपिट्टपृद्दपिण्णागं, आमगं परिवज्रए ॥ २२ ॥ कविद्वं माउलियं च, मूल्यां मूल्यात्तियं । आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥ तहेव फलमंध्णि, बीयमंध्णि जाणिया । विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्ञए ॥ २४ ॥ समुग्राणं चरे भिक्ख्, कुलं उचावयं समा । नीयं कुलमाइ-कम्म, उतरं नामिधारए ॥ २५ ॥ अदीणो नितिमेसिजा, न निसीएज पंडिए । अमुन्छिओ भोयणम्मि, मायने एसणारए॥ २६॥ बहुं परचरे अस्थि, विविद्दं साइमसाइमं । न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ञ परो न वा ॥ २७ ॥ सम्पण-सणवत्यं वा, भर्तं पाणं च संजए । अदिनस्स न कुप्पिजा, पवक्से वि य दीसओ ॥ २८ ॥ इत्थियं पुरिसं वावि, उहरं वा महत्वां । वंदमाणं न जाइजा, नो य णं फर्स वए ॥ २९ ॥ जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्तरे । एवसकेसमाणस्स, सामण्णमणुचिद्वद् ॥ ३० ॥ तिया एगइओ लाई, लोभेण विषिगृहद् । "सामेयं दाइयं संतं, दहुणं सयमायए" ॥ ३१ ॥ असद्घा गुरुओ छुद्दो, बहुं पावं पकुव्वइ । दुत्तीसओ य से होइ, निव्वाणं य न गच्छइ ॥ ३२ ॥ सिया एगइओ लहुं, विविहं पाणभोयणं । भइगं भइगं भोजा, विवल्लं बिरसमाहरे ॥ ३३ ॥ जाणंतु ता इमे समणा, "आवगद्दी अयं मुणी । संतुद्धी सेवए पंतं, लह्मित्ती खतीसओ" ॥ ३४ ॥ प्रजाहा क्लोकामी, माणसंमाणकामए। बहुं पसवई पार्व, मायासहं च कुम्बइ ॥ १५ ॥ सुरं वा मेर्ग वावि, अने वा मञ्जूगं रूसे । सरावन्तं न पित्रे मिक्न्यू जसं सारक्समप्पणी ॥ ३६ ॥ पिमए एगओं तेणी, "'न मे कोइ विमाणइ" । तस्य परसह दोसाई, नियकि च छपेह में ॥ ३० ॥ बहुद संविधा तस्य, सायामोध

च भिक्खुणो । अयसो य अनिव्वाणं, मध्यं च असाहुया ॥ ३८ ॥ निष्कुवित्रस्तो जहा तेणो, अत्तकम्मेहि दुम्मई । तारिमो मरणंते वि. नाराहेह संवरं ॥ ३९ ॥ आयरिए नाराहेड, नमणे यावि नारिसो । गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥ एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विश्वत । तारिसी मरणंते वि. नाराहेइ संबरं ॥ ४२ ॥ तबं कुल्बइ मेहाबी, पणीयं ब्रजाए रसं । मजापमाय-विरओ, तबस्सी अडउक्सो ॥ ४२ ॥ तस्स पस्मह कहाणं, अणेगमाहुपुट्यं । विउर्ल अस्थसंतुत्तं, कितहस्सं सुणेह मे ॥ ४३ ॥ एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्ञए । नारिमो मर्णंते वि, आराहेइ संवरं ॥ ४४ ॥ आयरिए आराहेट्, नमण याध तारिसो । गिहृत्था वि णं पूर्वनि, जेण जाणेति तारिसं ॥ ४५ ॥ तवतेण वयनेणे, रवतेणे य जे नरे । आयारभावनेणे य, कुट्वड देवकिट्यिसं ॥ ४६ ॥ टढ्ण वि देवसं, उवत्रको देवकि व्यसे । नत्थावि से न याणाइ, "कि मे किसा इसं फलं ?" ॥ ४७ ॥ तनो वि से चड्नाणं, छन्भड एलमूबगं । नर्गं तिस्किसजीणि वा, योही जस्य सदुब्रहा ॥ ४८ ॥ एर्ग च दोनं दहुणं, नायपुत्तेण भास्तर्य । अणुमार्ग पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥ ४९ ॥ मिक्सिजण विक्खेसणसेहिं, संजयाण बद्धाण सगासे । तत्थ भिक्क् सुप्पणिहिंदिए, तिव्यलज्ञगुणः विहरिजासि ॥ ५० ॥ नि-बेमि ॥ इति पिंडेसणाय वीभी उद्देसी समत्तो ॥ ५-२ ॥ इति पिङ्केसणा जामं पंचममञ्जयणं समसं ॥ ५॥

09.9.30

अह महिह्यायारकहा(घम्मत्थकाम)णामं छट्टमन्झयणं

नाणदंसणसंपन्नं, मंत्रमे य तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं, उज्ञाणिम्म समोसढं ॥ १ ॥ गयाणो रायमचा य, माहणा अदुव खतिया। पुच्छंति निहुयणाणां, कहं मे आयारगोयगे ? ॥ २ ॥ तेमि मो निहुओ दंतो, सब्वभ्यमुहाबहो। सिक्खाए एसमाउत्तो, आयक्खह वियक्खणो ॥ ३ ॥ हंदि अम्मत्यकामाणं, निगंधाणं छणेह मे । आयारगोयरं भीमं, नयलं दुरहिद्धियं ॥ ४ ॥ नन्नत्य एरिसं धुनं, जं लोए परमदुवरं। विउल्हाणसाहरूस, न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥ सब्हुश्ववियक्ताणं, ताहियाणं च ते गुणा। असंदयुद्धिया कायक्वा, तं गुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥ दम अद्व य ठाणारं, बाई बालोऽवरणहाइ। तत्य अण्ययरे ठाणे, विशंधताणो मस्तर ॥ ५ ॥ वर्षकं कार्यकं, बेक्टपो विद्विभागं। पिहिसेंवणं। पिहिसेंवणं। पिहिसेंवणं। पिहिसेंवणं। विद्विका म,

सिणाणं सोहवजाणं ॥ ८ ॥ (१) तस्थिमं पडमं ठाणं, महावीरेण देसियं । अहिंसा निउणा दिहा, सम्बभूएस संजमो ॥ ९ ॥ जावंति लोए पाणा, तम्म अदुव थावरा । ते जाणमजाणं वा. न हणे नो वि घायए॥ १०॥ सब्वे जीवा वि इच्छंति, जीविंड न मरिजिंड । तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १९ ॥ (२) अप्पणट्टा परद्वाया, कोहा वा जड़ वा भया। हिंमर्ग न मुसं बृया, नो वि अवं वयात्रए ॥ ३२ ॥ मुसावाओ य लोगीम, सव्वसाहाँहं गरिहिओ । अविस्सासो य भुयाणं, तम्हा मोसं वित्रज्जण् ॥ १२ ॥ (३) चित्तमंतमचित्तं वा, अप्यं वा जङ् या बहुं। दंतमोहणमित्तं पि. उगाहंनि अजाड्या ॥ १४ ॥ नं अप्पणा न गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं । असं वा गिण्हमाणं पि. नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥ (८) अर्बभन्तरियं घोरं, पमार्व दुरहिद्धियं । नायरंति मुणी लोए, मेखायवणविज्ञणो ॥ १६ ॥ मूछमेयमहस्मस्य, महादोयसमुस्सर्व । तम्हा मेहणसंसर्ग, निसंधा वजयंति णं ॥ १०॥ (५) विडमुब्सेईमं लांणं, तिहं सपि च फाणियं। न ते सिन्निहिमिन्छीत, नायपुरविभारया ॥ १८ ॥ न्होहस्सेन अगुप्कासे, मने अनय-रामवि । जे सिया सिक्तिकामें, मिही पव्यक्त न सं ॥ १९ ॥ जं पि वत्यं व पायं वा. कंबलं पायपंछणं । नं पि संजमकजदः, धारंति परिहरंति य ॥ २० ॥ न सो परिगहो बुनो, नायपुनेण ताइणा । "मुच्छा परिग्गहो बुत्ती", इह बुत्तं महेसिणा ।। २९ ॥ सम्बत्युवहिणा युद्धा, संरक्त्वणपरिग्गहे । अवि अप्पणी वि देहंसि, नाय्रैति समाह्यं ॥ २२ ॥ (६) अहो निश्वं तवीकस्मं, सव्वयुद्धेहि विण्ययं । जा य लब्बासमा विसी, एगभत्तं च भोयणं ॥ २३ ॥ संतिमं सुहुमा पाणा, तमा अदुव थायरा । जाई राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥ २४ ॥ उदछक्षं बीयसंसर्न, पाणा निव्यक्रिया महिं। दिया ताइं विविज्ञिजा, राओ तत्य वहं खरे ॥ २५॥ एयं च दोसं दहणं. नायपुत्तेण भासियं । सञ्जाहारं न शुंजंति, निर्माथा राइमोयणं ।। २६ ॥ (१) प्रदक्षिकार्यं न हिंसति, मणसा वयसा कायमा । तिविहेण करणजी-एण, संज्ञया सुसमाहिया॥ २७॥ पुडिबकार्य विहिसंतो, हिंसई उ तयस्मिए। तसे य विविष्ठे पाणे, चक्कुसे व अचक्कुसे ॥ २८ ॥ तम्हा एवं वियाणिता, टोसं दुम्गइवष्टुणं । पुरुविकायसमार्रमं, आयजीवाए वजाए ॥ २९ ॥ (२) आउकार्यं न हिसंति, मणसा वयसा कायसा । तिविहेण करणजीएण, संजया सुसमाहिया ॥ ३० ॥ आउकार्य विहिंसती, विंगई इ तयस्यिए । तसे य विविहे पाणे, चक्चसी य अनकसूरी ॥ ३१ ॥ तम्हा एवं विद्यापिता, दोसं दुम्महनकुषं । आउकायसमा-

९ फास्चर्य ।

^{€9} **द्वरहा**•

रंभं, जावजीवाए वजर ॥ ३२ ॥ (३) जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तर १ तिकलमन्त्रयरं सत्थं, सब्बओ वि दुरासयं ॥ ३३ ॥ पाईणं पिंडणं वावि, उन्हें अणुदिसामांव । अहे दाहिणओ नावि, दहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥ भ्याण-मेसमाघाओं, हब्बवाहों न संगओं । नं पर्ववप्यावद्रा, संनया हिन्ति नारमे ॥ ३५ ॥ तम्हा एवं वियाणिता, दोसं दुरगडवहुणं । तेउकायसमारंभं, जावजीवाए वजए ॥ ३६ ॥ (४) अणिलस्स समार्थने, बुद्धा मन्नेति नारिमं । सावजवहरूं येथं, नेयं ताईहि मेवियं ॥ ३०॥ तालियंटेण पत्तेण, माहाविहयांगण वा । न ते वीइउमिच्छंति, बीयावेऋण वा परं ॥ ३८ ॥ अंपि वत्यं व पायं वा. बंबलं पायपुंडणं । न ते वायमुङंस्ति, जयं परिहर्सति य ॥ ३९ ॥ तम्हा एयं वियाणिनाः दोसं द्रागटवन्नणं। वाउकायममारंभं, जावजीवाए बजाए ॥ ४० ॥ (५) वणस्यहं न हिसंति, मणमा वयसा कायसा । तिबिहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥ ४९ ॥ वगस्सई बिहिंसंनी, हिंसई उ तयम्पिए । तसे य विविहे पाणे, चक्खुमे य अन्यक्तुसं ॥ ४२ ॥ तम्हा एयं वियाणिनः, दोसं दुग्गइवहुणं। वणस्पद्द-समारंभं, जावजीवाए बजाए ॥ ४३ ॥ (६-१२) तसकायं न हिसति, मणसा वयमा कायमा । तिविहेण करणजोएण, संजया मुममाहिया ॥ ४४ ॥ तसकायं विहिंसंतो, हिंसई उ तयस्सिए। तसे य विविहे पाणे, चक्लुसे य अनक्युसे ॥ ४५ ॥ तम्हा एवं वियाणिना, दीसं दुरगइवहुणं । नमकायसमारेमं, आवजीवाए पजए ॥ ४६ ॥ (१२) जाउं चनारिऽभुमाउं, इसिणाहारमाइणि । ताई नु विश्वजंतो, संजयं अणुपालए ॥ ४७ ॥ पिंड सिजां च बत्यं च, चडम्यं पायमव य । अकप्पियं न इच्छिजा, पडिगाहिज किप्यं ॥ ४८ ॥ जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देशियाहडं । वहं ते समगुत्राणंति, इह बुत्तं महेनिणा ॥ ४९. ॥ तम्हा असणपाणाई, कीयमुहे नियाहडं । बज्जयंति द्वियपाणी, निर्माश धम्मजीविणी ॥ ५० ॥ (१४) कंतेस् कंनपाएसु, कुंडमोएस वा पुणो । मुंब्रंतो असणपाणाई, आबारा परिभस्सह ॥ ५१ ॥ सीओदगमगारंभे, मत्तधोयणखरूणे । जाई छंनेति भयाई, दिह्ये तत्व असंज्ञमो ॥ ५२ ॥ परक्षाकरमे पुरेकरमें, सिया तत्य न कपड़ । एयमद्वं न भुंजंति, निर्माण गिहिमायणे ॥ ५३ ॥ (१५) आसंदीपिक्रमंकेष्ठ, मंचमासालएस वा । अधायरि-यमजाणे, आसहसु महसु वा ॥ ५४ ॥ नासंदीपछियंबेख, न निस्तिजा न पीटए । निगंधाऽपडिलेहाए, बुद्धवृत्तमिहद्भगा ॥ ५५ ॥ गंभीरविजवा एए, पाणा बुप्पडि-लेहना । आसंदी-पलियंको य, एयमट्टं विविज्ञामा ५६ ॥ (१६) पोत्ररमापविद्वस्त, निसिज्ञा जस्म कप्पइ। इमेरिसमणाबारं, आवजह अवोहिनं ॥ ५० ॥ विवर्ताः

बंभचेर्स्स, पाणाणं च वहे वहो। वणीमगपडिरघाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥ अगुत्ती बंभचेरस्म, इतथीओ वावि संकणं । कुसीलवद्दूणं ठाणं, दूरओ परिवजए ॥ ५९ ॥ तिष्हमस्यरागस्स निसिजा जस्म कप्पड । जराए अभिभूयस्सै, बाहियैस्स तवभ्तिणो ॥ ६०॥ (१५) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उपस्थए। वुकंतो होइ आयारी, जही हुन्डू संजमी ॥ ६१ ॥ संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगामु य । जे य भिक्क सिणायंती, वियडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥ तम्हा ते न निजार्यति, सीएण उत्तिषेण वा । जावजीवं वयं घोरं, अनिजाजमहिद्वना ॥ ६३ ॥ तिणाणं अदवा कर्कः. लोद्धं परमगाणि य । गायस्तव्यष्टणद्वाए, नायरेति कयाइ वि ॥ ६४ ॥ (१८) निगरस वावि मुंडस्म, बीहरोमनहंमिणी । मेहुणा उवसंतस्स कि विभुसाए कारियं ॥ ६५ ॥ विभुमावत्तियं भिक्षा, कम्मं बंधइ चिक्कणं । संसारसायरे घोरे, जेणं पडड दुस्तरे ॥ ६६ ॥ विभूतावत्तियं श्रेयं, बुढा मश्रीत तारिमं । सावज्ञवहलं चेयं, नेयं नाईहिं सेवियं ॥ ६० ॥ खर्वेति अप्पाणममोह-दंसिणो, तने रया संजमअजने गुणे । धुणंति पानाई पुरेकडाई, ननाई पानाई न ते करेति ॥ ६८ ॥ सञ्जावसेता अममा अधिचणाः मविज्ञविज्ञाणुगया जसंसिष्णे । उउप्पतंत्रे विमले व चंदिमा, तिर्द्धि विमाणाई उर्वेति ताइणो ॥ ६९ ॥ ति-वैमि ॥ इति महङ्कियायारकहा णामं छट्टमञ्ज्ञयणं समर्त ॥ ६ ॥

دهلاها کی

अइ सुवक्सुद्धी णामं सत्तममज्झयणं

- in the state of the state of

चउण्हं सन्तु भासाणं, परिसंखाय पश्चवं । दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज सम्बन्ते ॥ १ ॥ जा य स्वा अवस्तव्या, सवामीसा य जा मुसा । जा य बुद्धेहि-ऽणाहण्या, न ते मासिज पत्रवं ॥ २ ॥ असमभोसं सर्वं च, अणव्जमकद्भरं । समप्पेडमसंविदं. गिरं भासिज पक्षवं ॥ ३ ॥ एयं च अद्वमकं वा, जं तु नाबेड सासर्व । स भासं सम्मोसं च. तं पि धीरो विवजाए ॥ ४ ॥ वितहं पि तहामुत्ति, जं निरं भासए नरों। तम्हा सो पुद्धो पावेणं, कि पुण को मुसं वए ॥ ५॥ तम्हा "गच्छामो बन्सामो, असुगं वा णे अविस्सइ । अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ" ॥ ६ ॥ एकमाइ उ का माला, एसकालम्म संकिया । संप्राहेयमद्वे वा. तं पि घीरो निवज्ञए ॥ ७ ॥ अङ्बन्धि य कारुम्मि, प्रमुप्पनामपासर । जसहं त न जागिजा, "एक्मेये" ति नो वए ॥ ८ ॥ अर्थयम्म च कासन्म, स्कूप्पद्माणा-गए। जत्य संका भवे ते हा. "एवमेर्व" ति नो वए ॥ ९ ॥ अईयम्मि व कालिमा.

पशुष्पक्रमणागए । निस्संकियं भवे जं तु, "एत्रमेयं" ति निहिसे ॥ १० ॥ तहेव फल्या भासा, गुरुभुओवचाइणी । सन्ना वि सा न वत्तव्या, जओ पावस्स आगमो म ११ म तहेव काण "काणे" मि, पंडमं "पंडमे" सि वा । वाहियं वावि "रोगि" ति, तेणं "चोरे" ति नो वए ॥ १२ ॥ एएणनेण अद्वेण, परी जेणुबहम्मट । आया-रभावदोसम्, न तं भातिज्ञ पन्नवं ॥ ५३ ॥ तहेव "होले" "गोलि" ति. "नाणे" वा "वसुके" ति य । "दमए" "दृह्ण्" वायि, न तं भागिज पत्तवं ॥ १४॥ अजिए पंजिए वावि, अम्मो माउसियत्ति य । पिउनिए भाइणिजति, धूए नत्तु-णियत्ति य ॥ १५ ॥ हते हते ति अझे ति, भेट्टे मामिणि गोमिणि । होते गोले वस्ते ति, इन्धियं नेवमालवे ॥ १६ ॥ नामधिजेण णं व्या, इत्थीगुरोण वा पुणी । जहा-रिहमभिनिज्ञ, आरुविज लविज वा ॥ १७ ॥ अजए पजए वार्व, वापी नुलपित-ति य । माउली भाइणिजति, पुत्ते नतुणियति य ॥ १८ ॥ हे हो हलिति अधि-नि, भद्रा सामिय गोमिय । होल गोल बमुलिति, पुरिसं नेतमालवे ॥ १९ ॥ नःम-धिजेण णं नृया, पुरिमगुत्तेण वा पुणो । जदारिहममिनिज्य, आर्कावज लविज वा ॥ २० ॥ पंचिदियाण पाणाणं, "एस इत्थी अयं पुमं"। जाव णं न विजाणिजा, ताव जाइति आलवे ॥ २१ ॥ तहेव माणुसं पमं, पर्किव वावि सरीमितं । 'श्रुले पमेड्टे वज्हो, पार्याम" नि य नो वए ॥ २२ ॥ परिवृहति णं वृषा, वृया उवन्तिए नि या संजाए पीणिए वावि, महाकायिन आलवे ॥ २३॥ नहेव गाओं दुःआओं, दम्मा गोरहगति य । बाहिमा रहजोगाति, नेवं भासिज पन्नवं ॥ २४॥ जुवं गयि-ति णं वया, भेणुं रसटयति य । रहस्से महस्रए वावि, वए संबद्धणिति य ॥ २५ ॥ नहेव गंतुमुजाणं, पञ्चयाणि वणाणि य । रुक्खा महन्द्र पेहाए, नेवं भासिज पन्नवं ॥ २६ ॥ अलं पासायखंभाणं, होरणाणि गिहाणि य । फलिह्रगलनावाणं, अलं उद-गदोणिणं ॥ २७ ॥ पीडए चंगबेरे य, नंगले महयं सिया । जंतलड्डी व नामी बा. गंडिया व अलं सिया ॥ २८ ॥ आसणं नयणं जाणं, हुजा वा किंनुवस्सए । भूओ-वघाइणि भार्स, नेवं भारिज्य पक्षवं ॥ २९ ॥ तहेव गंतुमुज्याणं, पञ्चयाणि वणाणि यः रक्का महत्र पेहाए, एवं भासिज पनवं ॥ ३०॥ जाइमंता इमे स्वस्ता, बीह्वश महालया । प्रवायसाला विडिमा, वए दरिसणिति य ॥ ३१ ॥ तहा फुलाई पहाई. पायसजाई नो वए। वेलोइयाई टालाई, वेहिमाई ति नो वए॥ ३२॥ अर्सपंडा इस अंगा, बहुनिव्यक्तिमा फला । बहुज बहुसंभूया, भूयक्वति वा पुणी ॥ ३३ ॥ तहेवी-महीओ पकाओ, नीलियाओं छवी इ व । लाइमा मजिमाउत्ति, पिइसाजति मी वए ॥ २४ ॥ स्टा बहुसंभूमा, बिरा कसहा वि य । गब्भिवाओ पस्तुको, संसाराउ-

ति आरुवे ॥ ३५ ॥ तहेव संखर्डि नका, कियं कक्षं ति नो वए । नेणगं वावि विज्यिति, मृतिस्थिति य आवगा ॥ ३६ ॥ संखर्डि संखर्डि वृया, पणियद्वति तेणगं । बहममाणि तित्याणि, आबगाणं वियागरे ॥ ३०॥ तहा नडेशो पुण्णाओ, कायतिजनि नो वण् । नावाहि तारिमार्जात, पाणिपिज्ञाति नो वण् ॥ ३८ ॥ बहुवाहडा अगाहा, बहुमिलिलुपिलीदगा । बहुवित्यडोदगा यावि, एवं भातिज्ञ पन्नवं ॥ ३९ ॥ तहेव सावजं जोगं, परस्सद्वाए निद्धियं । कीरमाणं ति वा नवा, मावजं नालवे मुणी ॥ ४० ॥ नुकर्डिति सुपक्किति, सुन्छिने सहडे गर्ड । नुनिद्विए सुरुद्विति, सावजं वजाए मुणी ॥ ४९ ॥ पयनपद्धति व पद्धमालवे, पयनाछित्रानि व छित्रमालवे । पयन-र्लाट्रनि व कम्महेउयं, पहारगाडति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥ स्व्यक्तसं परायं वा. अद्यं नित्थ एरिसं । अधिक्रियमवत्तव्वं, अचियतं चेव नो वए ॥ ४३ ॥ "सव्वमेर्यं बदस्यामि, गव्वमेयं'' ति नो वए । अणुवीइ सव्वं सब्बत्य, एवं भासिक पश्चवं ॥ ४४ ॥ मुक्कीयं व। सुविक्कीयं, अकि क्रं कि क्रमेव वा । "इमं निण्ह इमं मुंच, प्रक्रियं" नो वियागरे ॥ ४५ ॥ अप्परंधे वा महर्थे वा, कए वा विकए वि वा । पणियद्वे समु-पक्षे, अणवज्रं वियागरे ॥ ४६ ॥ तहेवासंजयं धीरो, "आस एहि करेहि वा। सयं चिट्ठ बयाहि" ति, नेवं भारिज पत्तवं ॥ ४७ ॥ बहवे इमे असाह, लोए बुबंति साहुणो । न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥ नाणदंसणसंपनं, संजम य तवे रथं। एवं गुणसमाउनं, संजयं साहुमाळवे ॥ ४९ ॥ देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च चुम्गद्दे । अमुगाणं जओ द्दोउ, मा वा होउ ति नो वए ॥ ५०॥ वाओ बुहं व सीउण्हें, खेमं भागं सिवं ति वा । क्या णु हुज एयाणि, मा वा होड ति नो वए ॥ ५९ ॥ नहेब मेहं व णहं व माणवं. न देव देवति गिरं वहः । संमु-च्छिए उनए वा फ्लोए, वहज वा बुद्ध बलाहयति ॥ ५२ ॥ अंतलिक्खति णं वया. गुज्झाणुचरियति य । रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५३ ॥ तहेव साव-जापुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवधाइणी । से कोहलोहभयहासमाणओ, न हासमाणो वि गिरं वहजा ॥ ५४ ॥ सुबक्षसुद्धिं समुपेहिया मुणी, गिरं च दुहुं परि-बजए सया । मिर्थ अबुद्धं अधुनीइ भासए, संयाण मजने लहुई पर्वसणे ॥ ५५ ॥ मासाइ दोसे य गुणे व जानिया, तीसे व दुहै परिवज्जए सया। छद्ध संजए सामणिए समा जए, वहळ बुद्धे हियमाणुकोमियं ॥ ५६॥ परिक्समासी यसमाहिईदिए, चटक-सायावगर् अभिरिसर् । स निकुणे पुत्रमळं पुरेक्ळं, आराहर् लोगमिणं तहा परे ॥ ५० ॥ ति-नेमि ॥ इति सुवक्तसुदी जामं सत्त्रममञ्जूवर्ण समर्चे ॥ ७ ॥

अह आयारपणिही णामं अद्वममञ्ज्ञयणं

आयारपणिहिं लर्खुं, जहा कायव्य भिक्लुणा । नं भे उदाहरिस्मामि, आणुपुर्वि सुणेह में ॥ १ ॥ पुरुषिदगञगणिमारुय, नणरुम्बमवीयगा । तमा य परणा जीव-ति, इइ बुत्तं महेनिणा ॥ २ ॥ तेनि अच्छणजोएण, निष्टं होगव्यमं सिया । मणमा काय बहेपा, एवं हषद संजए ॥ ३ ॥ पुनर्ति भिन्नि सिलं छेलं, नेव भिटे न संलिष्टे । निबिद्देण करणजोएण, संज्ञए सम्माहिए ॥ ४ ॥ नृद्धपुत्रवि न निसीए, यमस्यस्पन्ति य आगणे । पर्माजन् निसीरजा, जाइना जस्य उग्गद्दं ॥ ५ ॥ मीओदगं न सेविजा, सिलाबुद्धं हिमाणि य । उत्तिषोदगं नत्तफासुयं, पिनगहिज संजार् ॥ ६ ॥ उद्दुखं क्षपणो कार्यः नेव पुंछे न मंलिहे । समुप्पेह तहाभूगं, नो णं संघटण मुणी ॥ ४ ॥ इंगालं अगर्ण असि, अलायं वा सजोदयं । न उंजिजा न घटिजा, नी णं निष्यादर मुणी ॥ ८ ॥ तान्त्रियंटेण पत्तेण, साहाए बिहुयणेण वा । न बीडज अप्पणी कार्य, बाहिरं वावि पुग्मलं ॥ ९ ॥ तणस्वस्यं न छिंदिजा, फलं मूलं च करमह । आमगं विविद्वं बीर्य. मणसा वि न पत्थए ॥ १० ॥ गहणेमु न बिद्धिका, बीगमु हरिएमु वा । उदगंगि नहा निषं, उत्तिगपणगेनु वा ॥ १९ ॥ तमे पाणे न हिनिजा, वाया अत्व कम्मुणा । उबरओ मध्वभूएस, पासेन विविद्वं जर्ग ॥ १२ ॥ अहु सहुनाई पेहाए, जाई जाणित संजर । दयाहिगारी भूएन आम चिद्व सरहि वा ॥ १३ ॥ कयराई अट्ट चुहुमाई !, जाई पुच्छिज संगए। इमाइं ताई मेहाबी, आइविसाल वियवस्थणो ॥ १४ ॥ सिणेहे पुष्फसुहुमें च, पाणुनिमें तहेव य । पणमें बीर्य हिर्देश च, अंडर्नुहुमं च अद्भमं ॥ १५ ॥ एवसैयाणि जाणिता, सव्यभावेण संज्ञए । अप्यमत्तो जए निषं, सन्त्रिदियसमाहिए ॥ १६ ॥ धुवं च पिककेहिजा, जोगमा पायकंवलं । सिजमुकारभूमि न, संधार अदुवासणं ॥ १७ ॥ उषार पामवणं, केलं सिंघाण-जिक्कर्य । शासुर्य पिककेहिना, परिद्वानिक संबंध ॥ १८ ॥ पविसित्तु परागारं, पाणहा भोयणस्य वा । जयं चिट्ठे मिथं भारे, व य स्वेस पर्णं करे ॥ १९ ॥ बहुं सुण्ड काणेहि, बहुं अरखीहि पिच्छइ । न य दिई सुवं सन्वं, भिष्म् अकसाउमरिहर ॥ २० ॥ सुर्व वा जह वा दिहुं, म लक्ष्मिवपहर्य । न व क्ष्म स्वाएमं, मिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥ निहाणं रसनिज्नुरं, भहगं पाष्मं ति वा । पुड्डो कावि अपुड्डो वा, लाभालामं व विदिसे ॥ २२ ॥ न य भोयणान्मि मिह्नो, चरे अंकं अर्थपिरी । अफासुयं न श्रुंकिञा, कीवसुदेशियाहर्वं ॥ २३ ॥ सबिद्धं च न कुविक्या, अखुमार्य पि संजए । मुद्दाजीवी असंबद्धे, इविज बगनिस्तिए ॥ २४ ॥ सुद्धविती प्रसंद्रहे,

अधिक्छे महरे सिया। आनुरसं न गच्छिजा, सुना गं जिणमामणं ॥ २५ ॥ काममुक्खेहिं महेहिं, पेसं नाभिनिवेसए । दारणं कहमं फासं, काएण अहियासए ॥ २६ ॥ खुटं पिवासं द्वांस्यजं, सीटण्टं अग्डं भयं । अहियासे अव्वहिओ, देहदुक्तं महाफलं ॥ २७ ॥ अन्धंगर्यमि आइचे, परत्वा व अगुरगत् । आहारमाइयं सर्व्यं, मणमा व न पत्यार् ॥ २८ ॥ अनिनिण अचवले, अध्यक्षांसी मियासणे । हविज इयरे इंते. थोवं लड्डं न खिसए ॥ २९ ॥ न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्ते । मुयलामे न माजिजा, जन्मा तबस्सिबुद्धिए ॥ ३० ॥ से जाणमजाणं वा. कह आह-म्मियं प्रयं । संबरे खिप्पमप्पणं, बीयं तं न समायरं ॥ ३९ ॥ अणासारं प्रकृत्मं, नेव गहे न निष्हेंचे। नर्ड सया विश्वडभावे, असंसने जिडंदिए ॥ ३२ ॥ असीहं वयणं कजा, आयारियस्य महप्पणी । तं पारिविज्ञ वायाए, कम्मणा उववायए । ३३ ।। अध्वं जीवियं नका, मिद्धिसरां वियाणिया । विकियहिन भोगेस, आउं परिमियमपूर्णा ॥ ३४ ॥ वर्ल थामं च पेहाए. मदामारुगमपूर्णा । खेत्तं कालं च विकास, तहप्पाणं निजंजा। ३५॥ जरा अन्य न पीडेड, वाही जाच न दहुड । जाविदिया न हार्यति, ताव चम्मे समायरे ॥ ३६ ॥ कोहं मार्ण च मार्य च. होसं च पाववद्वणं । वमे चतारि दोने उ. इच्छंतो हियमपणो ॥ ३०॥ कोहो पीई पुणामेंड, माणो विजयनासणो । साथा सिनाणि नासेड, छोशो सुव्वविजासणो ॥ ३८ ॥ उबसमेण हणे कोहं, माणं मह्त्या जिणे । मार्य चज्जनभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥ कोहो य माणो य अणिम्महीया, माया य छोभो य पबडुमाणा । चनारि एए कतिणा कसामा, निर्चति मृलाई पुणञ्चनस्त ॥ ४० ॥ राष्ट्रीयसु विषयं परंजे. ध्वसीलयं समयं न हावइजा। कुम्सुव्व अर्क्षणपलीणगुत्तो, परकमिजा तवसंज्ञमन्मि ॥ ४९ ॥ निर्दं च न बहु मिलजा, सपहासं विवज्जा । मिहो कहाहिं न रमे, मज्झार्बाम्म रक्षो सवा ॥ ४२ ॥ जोगं च समणधम्मिम्म, जुंजे अणलसो धुवं । जुलो य समणधम्माम्म, अद्वं छहुइ अणुलरं ॥ ४३ ॥ इहुलोगपारलहियं. जेणं गण्छह् सुमगई । बहुसुरं पञ्चबासिजाः, पुण्छिजत्यविणिच्छ्यं ॥ ४४ ॥ हत्यं पायं च कायं च, पणिहास जिहंदिए। अहीणगुशी निसिए, समासे गुरुणी सुणी ॥ ४५ ॥ न पक्काओं न पुरवों, नेन कियाण पिद्रशों । न य ऊर्क समासिजा, चिद्विजा गुरुगंतिए ॥ ४६ ॥ अपुच्छिको न मातिजा, मासमाणस्य अंतरा । पिदिसंसे न साहजा, मायामोसं विवजाए ॥ ४७ ॥ अप्यतियं जेण सिया, आसु कृष्पिज वा परो । सम्बसी तं न शासिजा, भार्च अक्रियगामिक ॥ ४८ ॥ विद्रं मियं असंदिदं, परिपूर्ण वियं जिलं । असंधिरमक्षियमं, आसं जितिर आसं

॥ ४९ ॥ आयारपञ्चनिषरं, दिद्वियायमहिज्यां । वायविक्वलियं नषाः न तं उनहरूँ मुणी ॥ ५०॥ नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंत्रभेसजं । गिहिणो तं न आहुक्खे, भ्याहिगरणं पर्य ॥ ५२ ॥ अन्नहं पगढं लगुणं, भइज स्थणासणं । उत्तारभूमि-संपनं, इत्थीपमुविविज्ञां ॥ ५२ ॥ विविन्, म भवे सिजा, नारीणं न कवे कहं । गिहिसंथवं न कुळा, कुळा माहुहिं संथवं ॥ ११३ ॥ जहा कुक्रुट्योयस्म, निम्नं कुळळओ भयं । एवं ख बंभगारिस्स, इत्बाविम्गहक्षो भयं ॥ ५४ ॥ वित्तानित न निज्ञाए. नारि वा मुअलंकिये । भक्त्वरं पिव दहूणं, तिहिं पडिममाहरे ॥ ५५ ॥ हत्थपाव-पंडिाच्छनं, कृष्णनास्विग्णियं । अवि वाससयं नारिं, वेनयारी विवजाए ॥ ५६ ॥ विभया इत्थिसंगर्गाः पणीयरमभोग्रणं। नरस्यनगर्वसिस्स, विसं मालउदं जदः। ॥ ५०॥ अंगपश्चेगमंठाणं, चारुव्वियपेहियं । इत्थीणं ते न निज्ञाए, कामरायः-विवद्भुणं ॥ ५८ ॥ विसप्त मणुकेम्, पेमं नाभिनिवेगए । अणिशं तेमि विश्वाय, परिणामं पोरगलाण य ॥ ५९ ॥ पोरगलाणं परिणामं, तेमि नशा जहा तहा । विणीयतण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६०॥ जार सद्धाउ निक्खंतो, पारयाय-डाणमत्तमं । तमेव अगुपालिजा, गुण आयरियसम्मए ॥ ५१ ॥ ततं चिमं संज्ञम-जोगयं च, सञ्झायजोगं च मया अहिद्वार् । मृरे व सेणाह समनमाउद्दे, अलमपणो होह अलं परेमि ॥ ६२ ॥ मञ्जायसञ्जाषस्यस्म नाहणी, अपावभावस्य तये रयस्म । विसुज्यहं मं सि मलं पुरेकडं, समीरियं रूपमलं व जोडणा ॥ ६३ ॥ सं नारिनं दुक्तमहे जिहंदिए, सुएण जुरे अममे अस्तियणे । विरागदे कम्मचणम्म अवगर्, कमिणव्भपृहावगम व चंदिमे ॥ ६४॥ ति-वेमि ॥ इति आयारपश्चिती णामं अद्रममञ्ज्ञयणं समन्ते ॥ ८ ॥

अह विणयसमाही णामं णवममज्झयणं

पढमो उदेसो

थंमा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विषयं न संबन्धे । सो चेन उ तस्म अभूद्भावो, फर्ल व कीयस्स बहाय होद ॥ १ ॥ जे यावि मंदिति गुरुं विद्या, उहरे इमे आपपुर् ति नचा । हीलंति मिच्छं पविवासगाया, करेति आसावणं ते गुरुणं ॥ १ ॥ पगईए मंदा वि भवंति एगे, उहरा वि य जे प्रस्कृदोषवेसा । आसारमंता गुजराद्वियपा, जे हीकिया सिहिरिय भास कुआता ३ ॥ जे वावि

नागं इहरं ति नचा, आसायए से अहियाय होर । एवायरियं पि हु हीलयंती, नियच्छई जाइपहं सु मंदो ॥ ४ ॥ आसीविमी वावि परं सुरुद्रो, कि जीननासाउ परं न् कृजाः। आयरियपाया पुण अप्पसनाः अवोहिआसायण नन्धि मुक्खो ॥ 🖰 ॥ जो पावर्ग जल्डियमदहमिजा, आसीविसं वावि ह कोवहजा। जो वा विमं खायह र्जावियद्वी, एसोवमाऽऽसायणया गुरुणं ॥ ६ ॥ सिया हु से पावय नो डहिजा, आसी-विमो या कृषिओं न मक्खे । सिया विसं हालहलं न मारे, न यावि मुक्खो गुरही-लणाए ॥ ७ ॥ जो पन्वयं सिरमा भिन्तुमिन्छे, मृनं व सीहं पश्चिबोह्ह्जा । जो वा इए मत्तिअगो पहारं, एसोबमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ८ ॥ सिया हु सीसेण गिरिं पि भिट सिया ह सीहो दुविओ न भक्ते। सिया न भिद्धि व सत्तिअगां, न यावि मुक्त्रो गुरहीलणाए ॥ ९ ॥ आयरियपाया पुण अप्यमना, अबोहिआसायण नस्थि मुक्बी । तम्हा अणाबाहमुहाभिकंखी, गुरूपमायाभिमुही रमिजा ॥ १० ॥ जहा-हिअगी जलणं नमंसे, नाणाहुईमंतपयामितिनं । एवायस्यं उवचिद्धरजा, अणंत-नागोयमओ वि संतो ॥ १९ ॥ जस्संतिए धम्मपगाई सिक्खे तस्संतिए वेणड्यं पडंजे । सकारए निरमा पंत्रलीओ, कायगिरा भी मणमा य निर्च ॥ १२ ॥ लजादयासंज-मबंभचेरं, बढ़ाणभागिस्म विसोहिठाणं । जे मे गुरू सबयमणुसासयंति, ते ई गुरू सबयं प्रयामि ॥ १३ ॥ जहा निसंते तवणित्रमाली, प्रभासई केवलभारहं हा। एवायरिओ भुयसीलबुद्धिए, जिरायई स्रमज्हे व इंदी ॥ १४ ॥ जहा ससी कोसुइ-जोगजुत्तो, नक्खनतारागणपरित्रुडप्पा । खे सोहई विसले अञ्चसुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमञ्झे ॥ १५ ॥ महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुयसीलबुक्षिए । संपाविष्ठकामे अणुतराहं आराहए तोसङ् धम्मकामी ॥ १६ ॥ सुन्वाण मेहावि सुभा-सियाई, मुस्स्सए आयरियडप्पमत्तो । आराहद्वभाण गुणे अणेगे, सो पावई सिदिम-णुतरं ॥ १७ ॥ ति-नेमि ॥ इति विजयसमाहिजामज्यमञ्जयणे पढमो उदेसी समत्तो ॥ ९-१ ॥

अह णवमन्त्रायणे बीओ उदेसी

मृताउ संषप्पभवो दुसस्य, संबाद पच्छा समुविति साहा। साहप्पसाहा विरु हित पता, तथो सि पुष्कं च फलं रसो य ॥ १ ॥ एवं घम्मस्स विषयो, मूलं परमो से मुक्सो । जेण किति सुर्व सिम्बं, निस्तेसं वामिणच्छर् ॥ २ ॥ जे य चंदे मिए बसे, दुक्ताई नियदी सहै। दुजाइ से अधिजीयप्पा, कई सोयगर्व जहा

॥ ३ ॥ विणयं पि जो उनाएणं, नोइओ कृष्पई नरो । दिथ्वं सो निरिमिअंनि, दंडेण पिंडसेहए ॥ ४ ॥ तहेव अविणीयप्पा, उनवज्झा हवा यया । दीमंति दुहर्महंता, आभिओगमुबद्धिया ॥ > ॥ तहेव गुविणीयपा, उवनज्सा हया गया । दीसंति मुहमेहंना इक्कि पना सहायसा ॥ ६ ॥ नहेब अविणीयण्या, लोगंनि नर-नारिओ । दीसंति दहमेहंता, छाया ते विगिर्दिया ॥ ७ ॥ दंडमत्थपनि जण्णा, असन्भवयणेहि च । बल्लुणा विवक्तछंदा, खुण्पिनासाटपरिगया ॥ ८ ॥ तहेव मुविणीयप्पा, लोगींस नरनारिओ । दीसंनि महमेहंना, इन्ह्रि पण महायमा ॥ ९ ॥ नहेव अधिणीयप्पा, देवा जक्का य गुज्यगा । दीसीत रहमेहेना, आमिओग-सर्वाद्रया ॥ ३० ॥ तहेय पृत्रिणीयपा, देवा जक्या य गुन्सगा । श्रीमंति यहमेहंना, इष्ट्रि पना महायगा ॥ १२ ॥ जे आयरियउनजसायाणं, सम्ममा-वयणंकरः । नेपि सिक्म्बा पवद्वति, जलसिसा इव पायवा ॥ १२ ॥ आपणहा परद्वा वा, सिप्पा नेडणियाणि य । गिहिणो उनमोगद्वा, उहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥ जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं । सिक्समाणा निवन्छोति, जुना ते लल्डिंदिया ॥ १४ ॥ ते वि ने गुई पुर्यात, तस्म मिप्पस्म कारणा । स्कारंति णमंसीत, तुद्धा निहेसवत्तिणी ॥ १५ ॥ कि पुण जे मुख्यगाही, अर्णनिहयकामए । आयरिया जं वर भिवन्तु. तम्हा तं नाइवत्तर ॥ १६ ॥ नीयं सिखं गई ठाणं. नीर्यं च आसणाणि य। नीयं च पाए वेदिजा, नीर्यं कुजा य अंगर्लि ॥ १०॥ संबद्धता काएणं, तहा उवहिणामवि । "समेह अवराहं मे", बडज "न पुणु" ति य ॥ १८ ॥ दृश्यओ वा प्रओएणं, चोइओ वहह रहं । एवं दुबुद्धि किकाणं, बुत्तो बुना प्रकृत्वह ॥ १९ ॥ आलवंते स्वतंते वा, न निसंज्ञाए पहिस्तृणे । सुनूण आसर्ग धीरो, नुस्युसाए पडिस्तुमें ॥ २० ॥ कालं छंदोबयारं च, पहिलेहिनाम हे उहिं। तेहिं नेहिं उवाएहिं, तं सं संपंडिबायए।। २९।। विवृत्ती अविणीयस्य, संपत्ती विभियस्स य । बस्सेयं दृहुओं नायं, सिक्तं से अभिगन्छह् ॥ ६६ ॥ जे यावि चंडे महहद्विगारवे. पिसुने नरे साहमहीनपेसने। अविद्वधम्मे विणए अहोबिए, असंविभागी न हु तस्य सुक्को ॥ २३ ॥ णिहुसब्सी पुण जे गुरुणं, गुयत्यथम्मा विणयंमि कोविया । तरितु ते ओहमिणं दुरुतरं, खवितु कम्मं गद् मुत्तमं गया ॥ २४ ॥ ति-वेमि ॥ इति विषयसमाहिजामवयमञ्जयजे र्वायो उद्देशो समत्तो ॥ ९-२ ॥

अह णवमञ्झयणे तहओ उदेसो

आयरियम्मिवाहिअस्मी, नुस्तृम्माणां पिंडजार्गारजा । आलोडयं इंगियमेव नचा, जो छंदमाराहयई स पुजो ॥ १ ॥ आयारमङ्का विषयं परंजे, सुरस्यनाणी परिगिज्य नकं । जहोन्द्रहं अभिनंत्वमाणो, गुरु तु नासाययं स पुजी ॥ २ ॥ राहणिएमु विणयं परंजे, डहरा वि य जे परियायजिहा । नीयनणे बद्ध सच्चराई, ओवायवं वक्कारे स पुजो ॥ ३ ॥ अन्नायउंछं चर्ड विसुद्धं, जनगहुया समुयाणं च निषं। अलङ्क्यं नो परिदृश्यका, लड्डं न विकत्थयई स पुजो ॥ ४ ॥ संधारसिजाऽऽसण-मनपाण, अपिच्छया अङ्लामे वि संत । जो एयमपाणभितासङ्जा, सेतोसपाहण-रए स पुजो ॥ ५ ॥ सका सहेदं आसाइ बंटया. अओमया उच्छह्या नरेणं । अणामए जो उ महिज कंटए, वहंमए कम्णसरे म पुज्जो ॥ ६ ॥ मृहुनतुक्सा उ हवंति कंटय!, अओमया ते वि नओ नुउद्धरा । वायादुरुताणि द्रहदराणि, वराणु-वंशीणि महस्मयाणि ॥ ७ ॥ समात्रयंता वयणाभिषाया, कण्णं गया दुम्मणियं जणंति । थम्मुनि किसा परमगरारे. जिइंदिए जो सहदं स पुजो ॥ ८ ॥ अवण्णवायं च परमहस्त, पचक्खओ पिंडणीयं च भासं । ओहारिणि अप्पियकारिणि च, भासं न भारिज स्था स पुजो ॥ ९ ॥ अलोलुए अकृहए अमाई, अपिसुणे यानि अहीण-बिसी। मी भाषए नी वि य भाषियण्या, अकोउहाँहे य सवा स पूजी ॥ ९०॥ गुणेहि साह अगुणेहिऽसाह, गिण्हाहि साह गुण मुंचऽसाह। वियाणिया अपरा-मप्पएणं, जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥ ११ ॥ तहेव डहरं च महक्षगं का, इत्बी पूर्म पञ्चहरं गिहिं वा। नो हीलए नो विय खिसइजा, शंभे व कोहं च चए स पुजो ॥ १२ ॥ जे माणिया नययं माणयंति, जनेण कवं व निवेसयंति । ते माणए माणरिष्टे तबस्वी, जिद्देवए सचरए स पुजो ॥ १३ ॥ तेसि गुरूमं गुणसायराणं, सुवाण मेहाबि सुभावियाई। चरे मुणी पैचरए तिगुत्तो, चडकसायावगए म पुज्लो ॥ १४ ॥ गुरुनिह स्वयं पिड्यरिय मुगी, जिणक्यनित्ये अभिगमकुसले । धुणिय रयमलं पुरेवकं, माधुरमङ्गं गहं वय ॥ १५ ॥ शि-वेमि ॥ इति विणयसमाहि-णामणयमञ्ज्ञायणे तह्यो उदेसो समस्तो ॥ ९-३ ॥

भह जनमञ्ज्ञायने चडत्यो उदेसो

इंग में आरमं ! रोणं मगम्मा एक्समानं, इह साह वेरेहिं अगवंतीहें जताते

विणयगमाहिद्वाणा पन्नता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतिहें चतारि विणयसमाहिद्वाणा पन्नता १ इमे सल ते थेरेहिं भगवंतिहिं चतारि विणयसमाहिद्वाणा पनता. तंजहा-विणयमनाही १, सुयमनाही २, तवनमाही ३, आयारसमाही ४। विणए सए य तवे, आयारे निश्व पंडिया। अभिरामयंति अप्पाणं, जे मर्वति जिहंदिया॥ १॥ चडाँव्यहा खळ विषयसमाही सवइ, तंजहा-अणुसामिजंतो सस्प्सइ ५, सम्मं संपरिवज्ञाह २. वेबसाराहयह ३. न य भवर अत्तसंप्रगहिए ४ चत्रत्थं पयं भवः। भवड य उत्य सिलोगो-पेहेड हियाणुगामणं, नस्मृगड रं च पुणी अहिष्टिए । न य माणमएण मजाः, विणयसमाही आययहिए॥ २॥ चडव्विहा सन् स्यसमाही भवड, तंजहा-मृदं में भविस्सइ नि अज्झाड्यब्वं भवः १, एसम्मिनो भविस्सामि नि अन्त्राह्यन्त्रं भारह २, अप्पाणं ठावदस्सामि नि अन्साहयन्त्रं भवद ३, ठिओ परं ठावट्रमामि नि अज्ञाडयन्वं भवड ४ चडस्यं पर्यं भवड । भवड् य इत्य सिलोगो-नाणमेगम्याचिनो य, ठिओ य ठावर परे । सुयाणि य अहि अना, रओ स्यसमा-हिए ॥ ३ ॥ चटव्वहा खल नवगमाही भवइ. तंजहा-नो डहलोगहुयाए नवमहि-द्रिजा १. नो परलोगद्वयाए तबमहिद्विजा २, नो किनिवनमर्गसलोगद्वयाए तब-महिद्रिजा २, नमस्य निजरहुयाए तवमहिद्रिजा ४ चउर्खं पर्यं मनइ । भनद य इन्य मिलोगो-विविष्टुगुणनदीरण निकं, अवड निरासए निजरद्विए। नवसा भुणह पुराणपावगं, जुनो सया नवसमाहिए ॥ ४ ॥ चउन्विहा छन् आबारममाही भवह, तंजहा-नो इहलोगद्वयाए आयारमहिद्विजा १, नो परलोगद्वयाए आयारमहिद्विजा २, नो कित्तिवन्नसहिमलोगहयाए भाषारमहिद्विजा ३. नन्नत्य भारहंतेहिं हेस्सर्ह आयाग्महिद्विज्ञा ४ च उत्थं पर्य भवइ । भवइ य इत्य सिलोगो-जिणवयणरए अतितिणं, परिपुण्णाययमाययद्विए । आयारममाहिसंबुढे, भवह य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥ अभिगम चउरो समाहिओ, सुविद्वद्धो सुसमाहियपाओ । विउव्हियं सहावहं पुणी, कुटबह सी पम्बोममप्पणी ॥ ६ ॥ जाइमरणाओ सुचह, इरयत्यं च चएड सन्वसी। सिद्धे वा हवह सासए, देवे वा अप्परए महिन्द्रिए॥ ७॥ ति-वेमि ॥ इति विजयसमाहिषामणवमञ्ज्ञयणे चडत्यो उदेसो समसो॥ ९-४॥ णवममज्ययणं समर्च ॥ ९ ॥

-भृंञ्स=ं| अह सभिक्स् णामं दसममञ्जायणं

निवसारमामाणाइ य बुद्धवर्गात, निर्व विश्वसमाहिओ हिनेआ । इस्मीम वर्ष म

यावि गच्छे, वंतं नो पडिआयड जे म भिक्ख ॥ १ ॥ पुढविं न खणे न खणावए, सीओइगं न पिए न पियावए । अगणिमत्यं जहा सुनिसियं, तं न जले न जलावए जे य भिक्छ ॥ २ ॥ अनिलेण न वीए न वीयावए, हरियाणि न छिंदे न छिंदावए । बीयाणि गया विवज्जयंती, सनित्तं नाहारए जे स भिक्खा ॥ ३ ॥ वहणं तसथायराण होइ, पुरुवीतणब्द्वनिस्मियाणं । तम्हा उद्देलियं न भुंजे, नो वि पए न प्यावए जे स भिक्ख ॥ ४ ॥ गेइयनायपुत्तवयणे, अप्पसमे मान्नज छप्पि काए । पंच य कासे महत्वयाई, पंचायवसंवरे जे स भिक्ख ॥ ५ ॥ चनारि वमे यथा कसाए, ध्वजोगी व टविज बुद्धवयणे । अहणे निजायम्बरयए, बिहिजोगं परिवज्रए जे स निक्ख् ॥ ६ ॥ सम्मदिही सया अमृहे, ''अत्थि हु नाणे तये संजमे य''। तवसा भुणइ प्राणपावर्ग, भणवयकायमुसंबंदे जे म भिक्खा । ।। तहेव अमणं पाणगं वा, विविद् अक्ष्मसाइमं लिभना। "होती अहो नए परे वा," तं न निहे न निहावए जे स भिक्क ॥ ८ ॥ तहेच असणं पाणगं या. विविहं खाइमसाइमं लिभता । छंदिब साहम्मियाण भुंजे, भोबा सज्जायरए जे स भिक्क् ॥९॥ न य बुग्गहियं कहं कहिजा, न य कृष्पे निहुइंदिए पसंते । संजमधुवजोराजुते, उदसंते अविहंडए जे य भिक्कद् ॥ १० ॥ जो सहुइ हु गामबंटए, अद्दोमपहारतज्जणाओ व । मयमेरव-सहनप्पद्दामे, समग्रहदुक्खसहै य जे स भिक्ख ॥ १९ ॥ पाँडमं पाँडवजिया मराणे, नो भीयए भवमेरवाई दिस्स । विविद्युणतवीरए य निष्तं, न सरीरं चाभिकंष्वए जे स भिक्खु ॥ १२ ॥ असइं बोसद्वचत्तदेहे, अङ्कुट्टे व हए व ह्सिए वा । पुढ़िंचसमे मुणी इविजा, अनियाणे अको उद्देश जे स भिक्ख् ॥ १३ ॥ अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं । विद्रतु जाईमरणं महन्मयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्ख् ॥ १४ ॥ हत्यसंजए पायसंजए, वायसंजए संजर्शदिए । अज्ज्ञपारए सुसमाहियप्पा, सतत्वं च विवाणह् जे स भिक्ख् ॥ १५ ॥ उबहिन्मि असुच्छिए अगिद्धे, असायदच्छं पुलनिप्पुलाए । कयनिक्रयमितिहों विरए, सम्वसंगावगए य जैस मिक्स ॥ १६॥ अलोक मिक्स न रसेस गिज्हे, उंछ चरे जीविय गाभिकंसे। इर्ष्ट्रिच सकारणपुरार्थ च, चए ठियप्पा अमिट्टे जे स भिक्ख् ॥ १७ ॥ न परं बद्दजासि "अयं क्रसीके", जेणं च कुप्पिज न तं बद्दजा । जाणिय परीयं पुरुषपावं, अतार्ण न समुद्दसे जे स भिक्क ॥ १८ ॥ न जाइमते न य रूपमते, न लाममते न सुएम मत्ते। संसामि सम्बानि निव्यादता, धन्मानद्राणरए से स निक्स् ॥ १९॥ पर्वेगए अज्ञप्यं महामुखी, धन्मे ठिओ ठावयई पर पि। निक्सम्म बज्जिज इसीलकिंग, न यानि हासे इहर जे स भिक्ष ॥ २० ॥ तं देहवासं अग्रहं असासग्रं, सया चए निषहियद्वियप्पा । छिदितु जाईमरणस्य बंघणं, उनेइ भिक्स् अपुणायमे गई॥ २१॥ ति-नेमि॥ इति सभिक्स् णामं दसममज्झयणं समसं॥ १०॥

अह रइवका णामा पढमा चूलिया

इह खलु भी ! पव्यइएणं उप्पनदृक्खेणं संजमे अरइसमावनित्रेणं ओहाणुष्पे-हिणा अणोहाइएणं चेव हयरस्सिगयंकुमपोयपडामाभ्याई डमाई अद्वारस ठाणांड सम्मं नंपडिलेहियव्वाइं भवंति, तंजहा-हं भी ! दुरममाए दुप्पजीवी १, लहस्मगा इत्तरिया गिर्हाणं कामभोगा २, भुजो य माइबहुला मणुस्या ३, इमे य मे दुक्खे न निरक्तालोबहाई भविस्मड ४, ओमजणपुरकारे ५, बंतस्स य पदिकायणं ६. अहरगइ-वासीवर्चपमा ७, दृहहे खलु भी ! गिहीणं धम्मे निहिवासमञ्हे वर्तताणं ८, आयंके से वहाय होइ ९, संकप्पे से बहाय होइ १०, सोबकेसे गिहिवासे निरुवकेसे परियाए ११, बंधे गिहिबासे सुक्खे परियाए १२, सावजे गिहिबासे अणवजे परियाए १२, बहुसाहारणा गिर्हाणं कामभोगा १४, परीयं पुण्णपानं १५, अणिबे खलु भो ! मणुयाण जीबिए कुमसाजलबिंदुवंबके १६, बहुं च खलु भो ! पार्व कम्मं पगढं १७, पात्राणं य खलु भी ! कहाणं कम्माणं पुथ्यि दुव्विष्णाणं दुप्पडिकंताणं वेइता मुक्खो नत्थि अवेइना तक्सा वा सोसङ्गा १८ अद्वारसमं पर्य अवड । अबड् य इत्व सिलोगो-जया य चयह धम्मं, अवजो भोगकारणा । से तत्थ मुच्छिए बारु, आयई नावबुज्झई ॥ १ ॥ त्रया ओहाविओ होइ, ईवी वा पडिओ छमं । सञ्बधन्मपरिक्सद्वी, स पन्छा परितप्पडे ॥ २ ॥ जया व बंदिमी होइ, पच्छा होइ अवंदिमो । देवया व तुया ठाणा, स पच्छा परिनर्पाई ॥ ३ ॥ जया थ पूहमो होइ, पच्छा होइ अपूरमो । राया व राजपन्मद्वी, स पच्छा परितप्पई ॥ ४ ॥ जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो । सेद्विष्य दश्यदे छुडी, म परका परितप्पर्दे ॥ ५ ॥ जया च बेरओ होड्, समझ्केतजुरुवणो । अध्यक्त्र गर्रु गिलिसा, स पच्छा परितप्पई ॥ ६ ॥ जया व कुकुरंबस्स, कुत्सीहि विहस्सई । हत्थी व बंधण बद्धो, स पच्छा परितायई ॥ ७॥ युत्तदारपरिकण्यो, मोइसंसाण-संनको । पंकोसको जहा नागो, स पच्छा परितप्पई ॥ ८ ॥ "आज आई गणी हुतो. भावियप्पा बहुस्सुओ । बहु हूं रसंतो परिवाद, सामज्ये जियवेसिक्" ॥ 🖘 🕸 देवलोगसमाणी य, परियाओ म**देशियं। रवायं अरवायं च, सहानर्वसारियों**॥ 👣 🗷 अमरोबमं जाविव सक्तामुत्तमं, रवात परिवाद तहारवार्गः । विस्तीवर्वं अधिक

दुक्समुत्तमं, रिमंज तम्हा परियाए पंडिए॥ ११॥ धम्माउ भट्टं सिरिओववेयं, क्यांगि विज्ञायमिक्पतेयं। हीलंति णं दुन्तिहियं कुसीला, दाद्वृद्धिं धोरिविसं व नागं॥ १२॥ इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामिकं च पिहुज्जणिमा। चुयसस धम्माउ अहम्मसेविको, सिम्नवित्तस्स म हिष्टुओ गई॥ १३॥ भुंजिनु मोगाइं पसज्ञः चेयसा, तहांवहं कहु असंजमं वहुं। गरं च गच्छे अणहिज्ञ्ययं दुईं, बोही य से नो मुलहा पुणो पुणो ॥ १४॥ "इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवित्तणो। पिलेओवमं झिज्ञाइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्ञा इसं मणोतुहं? ॥ ५%॥ न मे चिरं दुक्जिमणं मविस्मड, असामया मोगिवास जंतुणो। न चे मरीरेण हमेणऽविस्मइ, अविरसाई जीवियपज्ञवेण मे"॥ १६॥ जस्सेन्नमपा उ हविज्ञ निक्छिओ, चइज्ञ देहं न हु धम्मसामणं। तं तारिसं नो पहलिति इंदिया, दिनिवाया व सदंसणं गिरि॥ १०॥ इब्रेब संपरिसय बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं वियाणिया। काएण वाया अदु माणमेणं, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्धिजारि॥ १८॥ ति—वेमि॥ ह्य रह्बका णामा पढमा चूलिया समसा ॥ १॥

अह विवित्तवरिया णामा बीया चूलिया ——○Ж○——

वृद्धियं तु पवक्षामि, सुयं केविद्धिमासियं। जं सुणितु सुपुण्णाणं, धम्मे उप्पजए मई॥ १॥ अणुनोयपद्विए बहुजणिम्म, पिंडसोयल्युङ्क्लेणं। पिंडसोयनेव
अप्पा, दायव्वो होड कामेणं॥ २॥ अणुनोयसहो छोओ, पिंडसोओ आसवो
सिविह्याणं। अणुसोओ संसारो, पिंडसोओ तस्स उत्तारो॥ ३॥ तम्हा आयारपरक्रमेण, संवरसमाहिबहुलेणं। वरिया गुणा य नियमा य, हुंति साहुण दहुक्वा
॥ ४॥ अणिएयवासो समुयाणवरिया, अन्नायर्छं पहरिक्रया य। अप्पोवही
कल्ह्विवज्ञणा य, विहारवरिया इसिणं प्रत्या ॥ ५॥ आह्ण्योमाणविवज्ञणा
य, ओसक्दिह्याइडमत्तपाणे। संसहुकप्पेण चरिज भिक्च, तज्ञायसंसह अई
जह्जा॥ ६॥ अमज्ञमंसासि अमञ्ज्ञपीया, अभिक्चणं निव्वगदं गया य।
अभिक्षणं काउत्सम्मकारी, सज्ज्ञायओंगे पयओ हिक्जा॥ ७॥ न परिक्रिज्ञा
सम्णानणाइं, सिजं निसिजं तह अत्रपाणे। गामे कुछे वा नगरे व देसे, समत्तमावं न कहिं पि कुजा॥ ८॥ विहिणो नेयावदियं न कुजा, अभिवायणं वंदणपूर्यणं वा। अस्किलिहोहें समं विद्या, मुणा चरितस्स ज्ञां न हाणी ॥ ९॥
ल या अमेका निर्णं सहार्य, गुणाहियं वा गुणाओं समं वा। इक्को वि पाताई

विवज्ञयंतो, विहरिज कामेस असज्जमाणो ॥ १०॥ संबच्छरं वावि परं पमाणं, वीयं च वासं न तहिं विस्जा । सत्तस्य मग्गेण चरिज भिक्ख, सत्तस्य अत्यो जह आणवेइ ॥ ११॥ जो पुन्वरत्तावरत्तकाले, संपेहए अप्पगमप्पएणं । "कि मे कर्ड ? कि च मे किचसेसं ?, कि सक्किजं न ममायरामि ? ॥ १२॥ कि मे परो पासइ कि च अप्पा, कि वाहं खिल्यं न विवज्जयामि ?" । इचेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पिडवंघ कुजा ॥ १३॥ जत्येव पासे वह दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं । तत्येव घीरो पिडसाहरिजा, आइण्णओ खिप्पमिव क्चलीणं ॥ १४॥ जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स, धिइंमओ सप्परिसस्म निचं । तमाहु लोए "पिडबुद्धजीवी", सो जीवइ संजमजीविएणं ॥ १५॥ अप्पा खलु सययं रिक्य-यव्वो, सिव्विदिएहिं सुसमाहिएहिं । अरिक्खओ जाइपहं उवेइ, सुरिक्खओ सव्व-दुहाण सुचइ ॥ १६॥ ति-बेमि ॥ इय विवित्तन्त्ररिया णामा वीया स्वृत्तिया समन्ता॥ २॥

॥ दसवेयालियसुत्तं समत्तं ॥



श्रीयुत्रागमप्रकाशकममितिके 'मदस्य'



श्रीनरभेगम मांगरजी महेता

परिचय-आप मोरवी (मोराष्ट्र) के बतनी हैं और हालमें अंबरनाथ 'दी वेस्टर्न इंडिया मेच कं • लिमिटेड' में SERVICE करने हैं । धार्मिक लगन अन्छी है, मेबासाव परिपूर्ण है।

سىسەمىيىنىدىس



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुरामहावीरस्स

:

सुत्तागमे

^{तत्य णं} उत्तरज्झयणसुत्तं

~C\$

अह विणयसुयं णामं पढममज्झयणं

संजोगा विष्पमुक्षस्त, अणगारस्त भिक्खुणो । विणयं पासकरिस्सामि, आणुपुर्व्य सुणेह मे ॥ १ ॥ आणानिहेसकरे, गुरूणमुववायकारए । ईंगियागारसंपन्ने, से विणीए ति वृद्धई ॥ २ ॥ आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए । पडिणीए असंबुद्धे, अविणीए ति वुचाई ॥ ३ ॥ जहा छणी पृष्टकण्णी, निकसिजाई सम्बसी । एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निकासिजाई ॥ ४ ॥ कणकुण्डगं चइताणं, विद्धं भुंजह स्यरे । एवं सीलं चइनाणं, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥ ग्रुणिया भावं साणस्स. सय-रस्स नरस्स य । विणए ठवेज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय-मेसिजा, सीलं पहिलमेजओ । बुद्धपुत्त नियागद्वी, न निकसिजह कण्हुई ॥ ७ ॥ नित्संते सियाऽसहरी, बुद्धाणं अंतिए सया । अड्डजुताणि सिक्खिजा, निरद्वाणि उ वजए ॥ ८ ॥ अणुसासिओ न कुप्पिजा, खंतिं सेविज पंडिए । खुद्रेहिं सह संसर्गि, हासं कीहं च वजए॥ ९॥ मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य आलवे। कालेण य अहिजिता, तओ झाइज एगगी ॥ १०॥ आहम चंडालियं कट्ट, न निष्हिवज क्याइ वि । कडं कडे ति भासेजा, अकडं नो कडे ति य ॥ ११ ॥ मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो। कसं व दहुमाइण्णे, पावगं परिवजाए॥ १२॥ अणासना भूकवया कुसीला, मिछं पि चंडं पकरंति सीसा। चित्ताणुया लहु दक्खोव-वेया, पसायए ते हु दुरासर्य पि ॥ १३ ॥ नापुद्धो वायरे किंचि, पुद्धो वा नालियं वए । कोई असम्बं कुठवेजा, पारेजा पिसमप्पियं ॥ १४ ॥ अप्पा चेव दमेयन्यो. अप्पा हु खळु दुश्मो । अप्पा दंतो छही होइ, अस्ति स्त्रेष् परत्य य ॥ १५ ॥ वरं में अप्या दंतो, संअमेण तवेण स। मार्ड परेहि दरमंतो, बंधणेहिं बहेहि य ॥ १६॥ पविणीयं च बुद्धाणं. वाया अदुव कम्मुणा । भावी वा जह वा रहस्से. नेव कुजा ६२ स्ता•

कयाइ वि ॥ १७ ॥ न पक्सओ न पुरक्षो, नेद किमाण पिट्टओ । न जुंजे ऊरुण: ऊर्ह, सबणे नो पहिस्सुणे ॥ १८ ॥ नेव पल्हित्ययं कुजा, पक्खपिंडं च संजर । पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणंतिए ॥ १९ ॥ आयरिएहिं वाहिनी, तुसिणीओ न कयाइ वि । प्रमायपेही नियागद्वी, उवन्तिह्वे गुरुं सया ॥ २० ॥ आलवंते लवंते वा. न निसीएज क्याइ वि । चइजणमासणं धीरो, जओ जुत्तं पहिस्सुणे ॥ २१ ॥ आसणगओ न पुच्छेजा, नेव सेजागओ क्याइ वि । आगम्मुकुडुओ संतो, पुच्छिजा पंजलीउडो ॥ २२ ॥ एवं विणयजुत्तस्स, सुत्तं आयं च तदुभयं । पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज जहासुयं ॥ २३ ॥ सुसं परिहरे भिक्क, न य ओहारिणि वए । भासादोसं परिहरे, मायं च वजाए सया ॥ २४ ॥ न लवेज पुट्टो सावजं, न निरहं न मम्मयं । अप्पणद्वा परद्वा वा, उभयस्यंतरेण वा ॥ २५ ॥ समरेसु अगारेसु, संघीतु य महापहे । एगो एगित्यिए सद्धिं, नेष चिह्ने न संजवे ॥ २६ ॥ जं में बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरसेण वा । मम लाभो ति पेहाए, पयओ नं पिंड-स्तुणे ॥ २७ ॥ अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं । हियं तं मण्णाई पण्णो, वेसं होइ असाहणो ॥ २८ ॥ हियं विगयभया बुद्धा, फरुसं पि अणुसासणं । वेसं तं होह मुदाणं, संतिसोहिकरं पयं ॥ २९ ॥ आमणे उविचिद्वेजा, अणुचे अकुए थिरे । अप्पुद्वाई निरुद्वाई, निसीएजप्यकुकुए ॥ ३० ॥ कालेण निक्लमे भिक्ल् कालेण य पडिकमे । अकालं च विविज्ञिता, काले कालं समायरे ॥ ३१ ॥ परिवादीए न चिट्ठेजा, भिक्ख दत्तेसणं चरे । पंडिस्बेण एसिता, भियं कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥ नाइव्र्मणासने, नऽनेसिं चक्खफासओ । एगो चिट्ठेज मतद्वा, लंबिता तं नऽइक्तमे ॥ ३३ ॥ नाइउचे व नीए वा, नासके नाइदूरओ । फासुयं परकडं पिंडं, पिंडगाहेज संजए ॥ ३४ ॥ अप्पपाणेऽप्पवीयम्मि, पिंडच्छन्नम्मि संबुद्धे । समर्थ संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥ ३५ ॥ मुकडिति सुपिक्रिति, मुच्छिने मुद्दे महे । सुणिद्विए सुलद्वित्ति, सावजं वज्जए मुणी ॥ ३६ ॥ रमए पेंडिए सासं, ह्यं भद्दं व वाहए । वालं सम्मइ सासंतो, गलियस्यं व बाहए ॥ ३७ ॥ सङ्ग्रा मे चवेडा मे, अक्होसाय वहायमे । कक्षाणसणुसासंतो, पावदिद्वित्ति मर्जई ॥ ३८ ॥ पुत्तो मे भाय नाइति, साहू कल्लाण मक्षई । पावदिद्वि उ अप्पाणं, सार्ध दासिति मनई ॥ ३९ ॥ न कोवए आयरियं, अप्पाणं पि न कोवए । बुद्धोवधाई न सिया, न सिया तोत्तरावेसए ॥ ४० ॥ आयरियं कृवियं नचा, पतिएम पसायए । विज्यावेज पंजलीउडो, वएज न पुणो ति य ॥ ४९ ॥ धम्माजियं च ववहारं, बुदेहायरियं सया । तमायरंतो ववहारं, यर्ह नामिगच्छ्यं ॥ ४९ ॥ मनीवयं

वक्षगर्थ, जाणितायरियस्स उ । तं परिगिज्झ बायाए, कम्मुणा उन्नवायए ॥ ४३ ॥ वित्ते अचोइए निकं, खिप्पं इवइ सुनोइए । जहोवइहं सुन्ध्यं, किचाई कुन्बई सया ॥ ४४ ॥ नचा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए । हवई किचाणं सरणं, भूयाणं जगई जहा ॥ ४५ ॥ पुजा अस्स पसीयंति, संबुद्धा पुन्वसंशुया । पसचा लामइस्पंति, विद्यलं अद्वियं सुर्यं ॥ ४६ ॥ स पुजसत्ये सुविणीयसंसए, मणोरुई चिद्धइ कम्म-संपया । तवोसमायारिसमाहिसंबुडे, महजुई पंच वयाई पालिया ॥ ४७ ॥ स देव-गंभव्यमणुस्सपूइए, चइतु देहं मलपंकपुन्वयं । सिद्धे वा हवह सासए, देवे वा अप्परए महिष्टिए ॥ ४८ ॥ ति—वेमि ॥ इति विणयसुयं णामं पढममजस्यणं समस्यं ॥ १ ॥

अह परिसहणामं दुइयमज्झयणं

सुवं मे आउसं । तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खळु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महानीरेणं कासवेणं पवेड्या जे भिनन्तु सोचा नवा जिचा अमिभूय भिक्जायरियाए परिव्वयंतो पुट्टो नो विनिहन्नेजा, कयरे खलु ते वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं प्रवेह्या जे मिक्ख सोचा नचा जिन्दा अभि-भूय भिक्कायरियाए परिव्वयंती पुट्टो नो विनिष्ट्रफेजा ? इसे खळु ते बाबीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेद्या जे भिक्ख सोचा नचा जिया अभिभूय भिक्जायरियाए परिव्ययंती पुद्धे नो विनिह्येजा, तंजहा-दिगिंछा-परीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीवपरीसहे ३, उतिवपरीसहे ४, दंसमसवपरी-सहे ५, अचेळपरीसहे ६, अरइपरीसहे ७, इरबीपरीसहे ८, बरियापरीसहे ६, निसीहियापरीसहे १०, सेज्ञापरीसहे ११, अक्रोसपरीसहे १२, बहपरीसहे १३, जायणापरीसहे १४, अलामपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६, तणफासपरीसहे १७, वक्रपरीसहे १८, सकारपुरकारपरीसहे १९, पद्मापरीसहे २०, अज्ञाणपरीसहे २१, दंसणपरीसद्दे २२ । परीसद्दाणं पविभक्ती, कासवेणं पवेदया । तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुर्वि सुनेह मे ॥ १ ॥ (१) दिनिक्षपरिचए देहे, तबस्ती भिक्स थामनं । न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥ २ ॥ काजीपन्यंगसंकासे, किसे धमान-संतए। मार्यके असलपायस्स, असीलमणसो चरे ॥ ३ ॥ (२) तओ पुद्धे पिया-साए. दोर्पुडी रूजर्पनए । सीओदणं न सेविजा, वियवस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥ किना-नाएस पंदेस, बातरे सपिवासिए। परिसक्तसहाडरीणे, तं वितिकके परीसहं स ५ स

(३) चरंतं विरयं लहं, सीयं फुसइ एगया । नाइबेलं मुणी गच्छे, सोबाणं जिज-सासणं ॥ ६ ॥ न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विजाई । अहं तु अस्मि सेवामि, इइ भिक्क् न चिंतए ॥ ७ ॥ (४) उसिणै परिवावेणं, परिवाहेण तिज्ञए । चिंतु वा परियावेणं, सायं नो परिदेवए ॥ ८ ॥ उन्हाहितत्तो मेहाची, सिणाणं नी वि पत्थए। गार्व नो परिसिंधेजा, न वीएजा य अप्पर्य ॥ ९ ॥ (५) पुद्धो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी। नागो संगामसीसे वा, सूरो अमिहणे पर ॥ १०॥ न संतरे न वारेजा, मणं पि न पओसए । उबेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंससोणियं ॥ १९ ॥ (६) परिजुण्णेहिं वत्थेहिं, होक्खामि ति अचेलए । अदुवा सचेले होक्खामि, इहं भिक्ख् न चिंतए॥ १२॥ एगयाऽचेलए होइ, सचेळे आबि एगया। एयं धम्मं हियं नचा, नाणी नो परिदेवए॥ १३॥ (७) गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिनणं । अरई अणुप्पवेसेजा, तं तितिक्खे परीसहं॥ १४॥ अरइं पिट्टओ किया, विरए आयर्किलए । श्रम्सारामे निरारम्मे, उवसंते मुणी चरे 41 94 11 (c) संगो एस मणूसाणं, जाओ कोगम्मि इत्यिओ । जस्स एया परि-**जाया, मुकर्ड** तस्स सामण्यं ॥ १६ ॥ एवमादाय मेहाबी, पंकभूया उ इत्थिओ । नो ताहिं विणिहत्रेजा, चरेज्यडलगवेसए॥ १७॥ (९) एग एव चरे लाहे, अभिभूय परीसहे । गामे वा नगरे वावि. निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥ असमाणे चरे भिक्ख, नेव कुजा परिग्गहं । असंसत्तो गिहत्येहि, अभिएओ परिव्वए ॥ १९ ॥ (१०) सुसाणे धुनगारे वा, रुक्समूळे व एगओ। अङ्ग्रह्मो निसीएजा, न य वितासए परं ॥ २० ॥ तस्य से चिट्टमाणस्य, उवसम्माभिधारए । संकाभीओ न गच्छेजा, उद्विता अञ्चमासणं ॥ २१ ॥ (११) उनावयाहि सेजाहि, तक्सी भिक्स थामवं । नाइवेलं विद्वक्षित्वा, पाविद्वी विद्वहं ॥ २२ ॥ पहरिक्षवस्सयं लर्ड्स, कलाणमदुव पावयं । किमेचराई करिस्सइ, एवं तत्यऽहियासएँ॥ २३ ॥ (१२) अक्रोसेजा परे भिक्खं, न तेसि पडिसंजडे । सरिसो होह बाळाणं, तम्हा भिक्ख् न संबर्छ ॥ २४ ॥ सोबाणं फरसा भासा, दारुणा गामकंद्रगा । द्वसिणीको उदेहेजा, न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥ (१३) हुओ न संजरू भिक्ख, मणं पि न प्रशेसए। तितिक्कं परमं क्या, मिक्क् धम्मं विचितए ॥ २६ ॥ समर्थं संजर्भ इंतं, हणिजा कोइ कत्यई । नरिय जीवस्स माम्रति, एवं पेहेज संजए ॥-२७ ॥ (१४) दुकरं खलु मो निषं, अनगारस्स भिक्खनो । सन्तं से बाइवं श्रीइ, वरिष किन्ति अजाइवं ॥ २८ ॥ गोयरमापविद्वस्स, पाणी नो सुप्पसारए । सेको क्यारवासुति, इइ सिक्स न चिंतए ॥ २९ ॥ (१५) परेश्वं वासमेसेका, ओवने परिनिद्विष् । करे पिंडे बसकी

बा, नाणुतप्पेज पंडिए ॥ ३० ॥ अजेवाहं न तन्मामि, अवि सामो छए विया । को एवं पिक्सिविक्के, अलाभो तं न तजए ॥ ३१ ॥ (१६) नचा उप्पद्दयं दुक्कं, बेयणाए दुइद्विए । खदीणो बावए पत्नं, पुद्वो तत्यऽहियासए ॥ ३२ ॥ तेइच्छं नामिनंदेजा, संविक्कडतगवेसए। एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुजा न कारवे ॥ ३३ ॥ (१७) अचेल्यास्स छहस्स, संजयस्स नवस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स, हुजा गायबिराहणा ।। ३४ ॥ आयवस्स निवाएण, अउसा ह्वह वेगणा । एवं नचा न सेवंति, तंतुजं तणतिज्ञया ॥ ३५ ॥ (१८) किल्जिगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा । विसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥ वेएज निजारापेही, आरियं घम्मऽशुसरं । जाव सरीरमेउत्ति, बहं काएण घारए ॥ ३०॥ (१९) अभिवायण-मन्भुद्वाणं, सामी कुजा निमंतणं। जे ताइं पिक्सेवंति, न तेसि पीइए मुणी॥ ३८॥ अणुक्ताई अप्पिच्छे, अनाएसी अलोङ्कए । रसेसु नाणुगिज्हेजा, नाणुतप्पेज पन्नवं ॥ ३९ ॥ (२०) से नूणं मए पुरुषं, कम्माऽणाणफला कहा । जेणाहं नामिजाणामि, पुट्टो केणड् कन्दुई ॥ ४० ॥ अह परछा उद्दर्जति, कम्माऽणाणफला कडा । एव-मस्यासि अप्पाणं, नवा कम्मविवागयं ॥ ४९ ॥ (२१) निरङ्काम्मि विरक्षो, मेहुणाओ ष्ठसंवुडो । जो सक्खं नाभिजाणामि, घम्मं कक्काणपावगं ॥ ४२ ॥ तवीवहाणमादाय, पढिमं पढिवजाओ । एवं पि विहरको में, छउमं न नियहई ॥ ४३ ॥ (२२) नस्थि नूणं परे लोए, इड्डी वाचि तबस्सिणो । अदुवा वैचिओमित्ति, इह मिक्ख् न चिंतए ॥ ४४ ॥ अभू जिणा अत्य जिणा, अदुवा वि भविस्सइ । मुसं ते एक्साइंस, इह भिक्ख न चिंतए ॥ ४५ ॥ एए परीसहा सन्वे, कासवेण पवेड्या । जे भिक्ख न विद्वनेजा, पुद्धो केणइ कण्डुई ॥ ४६ ॥ ति-बेमि ॥ इति परिसद्द्वणामं दुइय-मञ्चयणं समर्स ॥ २ ॥

अह चाउरंगिजं णाम तहयमज्झयणं

चतारि परमंपाणि, दुष्ट्राणीह जंतुणो । साणुसतं पुर्वे सदी, संजमिम व वीरिर्वे ॥ १ ॥ समावद्याण संसारे, नाणागोत्तास बाह्स । कम्मा नाणाविद्य कहु, पुढो विरसंगया पया ॥ २ ॥ एगया देवलोएस, नरपुष्ट वि एगया । एगया बाखुरे कार्य, अहाकानोही गच्छद् ॥ ३ ॥ एगया सतिको होह, तको चंडाल्युक्सो । तको कीटपर्यमो य, तको इंस्पियोकिया ॥ ४ ॥ एनमायहकोचीस, पानिणो क्राक् किविस्था । व निविकंति संसारे, सम्बद्धेस व स्वित्या ॥ ५ ॥ कमायंगीई संबाह्य,

दुक्लिया बहुवेयणा । अमाणुसास जोणीस, विणिहम्मंति पाणिणो ॥ ६ ॥ कम्माणै तु पहाणाए, आणुप्रव्वी क्याइ उ । जीवा सोहिमणुप्पत्ता, नागयंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥ माणुस्तं विगाहं लक्षुं, सुई धम्मस्स दुक्कहा । जं सोचा पढिवर्जाते, तवं स्रोतिमहिंसयं ॥ ८ ॥ आहच सवणं लखुं, सद्धा परमदुक्कहा । सोचा नेयाउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई ॥ ९ ॥ छुई च लुद्धं सद्धं च, बीरियं पुण दुह्नहं । बहवे रोयमाणा वि. नो य मं पहिवजाए ॥ १० ॥ माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सोच सहहे । तवस्ती वीरियं लड्डं, संवुडे निडुणे रयं ॥ ११ ॥ सोही उज्जय-भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई । निव्वाणं परमं जाइ, घयसिनिव्य पात्रए ॥ २२ ॥ विगिच कम्मुणो हेउं, असं संचिणु खंतिए। सरीरं पाढवं हिचा, उन्नं पक्रमई दिसं ॥ १३ ॥ विसालिसेहिं सीकेहिं, जक्का उत्तरउत्तरा । महासुका व दिप्पंता, मकंता अपुणवर्ष ॥ १४ ॥ अप्पिया देवकामाणं, कामस्यविउन्दिणो । उद्दं कप्पेस चिद्वंति, पुन्वा वाससया बहु ॥ १५ ॥ तत्य ठिचा जहाठाणं, जक्खा आउक्खए चुया । उर्वेति माणुसं जोणि, से दसंगेऽभिजायए ॥ १६ ॥ खेतं वत्युं हिरण्णं च, पसवो दासपोरुसँ । चतारि कामखंघाणि, तत्य से खबबजहे ॥ १७ ॥ मितर्व नायवें होइ, उम्बागोएँ य वण्णवे । अप्पार्यके महापके, अभिजाएँ जसो बले ॥ १८॥ भवा माणुस्सए भोए, अप्पडिस्बे बहाउयं । पुन्नं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहि बुज्झिया ॥ १९ ॥ चउरंगं दुह्नहं नवा, संजर्म पडिवजिया । तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवड सासए ॥ २०॥ ति-वेमि ॥ इति चाउरंगिकां णाम तहय-मज्ययणं समर्त्तं ॥ ३ ॥

अह असंखयं णाम चडत्यमज्ज्ञयणं

असंखर्य जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्य हु नत्य ताणं। एवं वियाणाहि जणे पमते, कि नु विहिंसा अजया गहिति ॥ १ ॥ जे पावकम्मेहि चणं मण्सा, समाययंती अमहं महाय। पहाय ते पासपयिहए नरे, वैराणुक्दा नरवं उर्वेति ॥ २ ॥ तेणे जहा संचिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्छ पावकारी। एवं पया पेच इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्स अत्य ॥ ३ ॥ संसारमावन परस्स अद्धा, साहारणं जं न करेड कम्मं। कम्मस्स ते तस्स छ वेयकार्छे, न बंधवा वंधवर्य छवेति ॥ ४ ॥ विशेण ताणं न लगे पमते, इमंगि लोए अद्धा परस्या । धीयण्य-णंडेय अर्णतमोहे, नेयालयं रहुमदहुमेष ॥ ५ ॥ स्रतेष्ठ वाची पविद्वस्वीती, न

मीससे पंडिएँ आसुपणे। घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, आरंडपक्खीव चरेऽप्पमते। १ ॥ चरे पवाई परिसंकमाणो, जं किंकि पासं इह मलमाणो। लामंतरे जीविय बृहइत्ता, पच्छा परिलाय मलावधंसी ॥ ७ ॥ छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खियवम्मधारी। पुन्वाई वासाई चरेऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुनेइ मोक्खं ॥ ८ ॥ स पुन्वमेवं न लमेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं। विसीवई सिडिले आलयम्म, कालोवणीए सरीरस्स मेए ॥ ९ ॥ किप्पं न राकेइ विवेगमेउं, तम्हा समुद्वाय पहाय कामे। सिमच लोयं समया महेसी, आयाणुरक्खी चरे-ऽप्पमत्तो॥ १० ॥ मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं, अणेगस्वा समणं चरंतं। फासा फुसंति असमंजसं च, न तेसि मिक्ख् मणसा पउस्से॥ ११ ॥ मंदा य फासा वहुलोहणिजा, तहप्पारोग्ध मणं न कुजा। रिक्खिज कोहं विणएज माणं, मायं न सेकेज पहेज लोहं॥ १२ ॥ जेऽसंखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिजदोसाणुगया परण्या। एए अहम्मे ति दुगुंछमाणो, कंखे गुणे जाव सरीरमेउ॥ १३ ॥ ति-वेमि ॥ इति अस्थंखयं णाम खडस्थमज्ञायणं समसं॥ ४ ॥

अह अकाममरणिखं णामं पंचममञ्ज्ञयणं

अण्णवंति महोहंति, एगे तिण्णे दुरुतरे। तत्य एगे महापणे, इमं पण्डमुदाहरे।। १॥ संतिमे य दुवे ठाणा, अवस्वाया मरणंतिया। अकाममरेणं चेष, सकाममरेणं तहा॥ २॥ बालाणं अकामं तु, मरणं असई मवे। पंडियाणं सकामं तु, उक्कोरेण सई मवे॥ ३॥ तत्थमं पढमं ठाणं, महावीरेण देखियं। कामणिद्धे जहा बाले, भिर्स कुराई कुन्वई॥ ४॥ जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कुडाय गच्छई। न मे विद्वे परे लोए, सक्खिदिहा इमा रई॥ ५॥ हत्यागया इमे कामा, कालिया जे अणागया। को जाणह परे लोए, सत्थि बा नत्थि वा पुणो॥ ६॥ जणेण सिद्धं होक्सामि, इह बाले पगच्मई। काममोगाणुराएणं, केसं संपित्वजाई॥ ७॥ तक्षो से दंहं समारमई, तसेसु बावरेसु य। बह्याए य अण्डाए, भूवगामं विहिसई॥ ८॥ हिंसे बाले मुसावाई, माइने पिछणे सहे। भुंजमाणे सरं मंसं, सेयमेयं ति मचई॥ ९॥ कामसा वयसा मते, वित्ते गिद्धे व इत्थित । दुहक्षो मले संविणह, सिद्धणागुक्व महिनं॥ १०॥ तको सुद्धों आवोकणं, निकाणो परितप्पई। अमिण र त्रामस्य, कम्माणुपेहि स्रापणो ॥ १९॥ सुया में नरए ठाणां, सदीस्थणं न जा महे। बालाणं कुरुक्रमाणं, पगडा जत्व वेग्या।॥ १२॥ तत्वीववाहनं ठाणं, वहा

मेत्रमणुरसुयं । अहाकम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥ जहा सागविकी जाणं, समं हिचा महापहं । विसमं मम्ममोहण्यो, अक्से भमाम्मि सोयई ॥ १४ ॥ एवं धम्मं विज्ञासम्, अहम्मं पडिविजिया । बाले मञ्जूमृहं पत्ते, अक्खे भागे व सोयई ॥ १५ ॥ तलो से मरणंतम्म, बाले संतर्स्ड भया । अकाममरणं मरइ, धुत्ते ब कलिणा जिए ॥ १६ ॥ एयं अकाममरणं, बालाणं तु पवैद्यं। इसी सकाममरणं, पंडियाणं सुणेह में ॥ १७ ॥ भरणं पि सपुण्णाणं, जहां सेयमणुस्सुयं । विष्पसण्ण-मणाघार्य, संजयाण वृसीमको ॥ १८ ॥ न इमं सब्वेसु भिक्तसुर, न इमं सब्वे-युडगारिस । नाणासीला अगारत्या, विसमसीला य भिक्खुणो ॥ १९ ॥ संति एगेहिं भिक्खहिं, गारत्या संजमुत्तरा । गारत्येहि य सम्बेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥ चीराजिणं निगणिणं, जडी संचाडि मुंडिणं। एयाणि वि न तायंति, दुस्सीळं परिया-गयं ॥ २९ ॥ पिंडोलएव्य दुरुसीले. नरगाश्री न मुचई । भिक्खाए वा गिहत्ये वा. सुव्वए कम्मई दिवं ॥ २२ ॥ अगारि सामाइयंगाणि, सन्नी काएण फासए । पोसहं दुहुओ पक्खं. एगरायं न हावए ॥ २३ ॥ एवं सिक्खासमावने, गिहिवासे वि सुव्वए । मुर्चाई छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगमं ॥ २४ ॥ अह जे संबुद्धे भिक्ख्, दोण्हं अवयरे सिया । सम्बद्धक्खपहींणे वा, देवे बावि महिश्रिए ॥ २५ ॥ उत्तराई विमोहाई. जुईमंताऽणुप्व्वसो । समाइण्णाई जक्खेहि, आवासाई जसंसिणो ॥ २६ ॥ वीहाउया इन्निमंता. समिद्धा कामरूविणो । अहणोववनसंकासा. भुजी अचिमालिपमा ॥ २७ ॥ ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्सिता संजमं तवं । सिक्साए वा गिहत्ये वा, जे संति परिनिन्युडा ॥ २८ ॥ तेसि सोचा सपुजाणं, संजयाण बुसीमओ । न संतसंति मरणंते, सीळवंता बहुरसुया ॥ २९ ॥ तुळिया विसेसमादाय, दयावम्मस्स खंतिए। विप्पसीएज मेहात्री, तहाभूएण अप्पणा ॥ ३०॥ तस्रो काले अभिप्पेए, सङ्गी तालिसमंतिए। विषएजा लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंबाए ॥ ३१॥ अह कालम्मि संपत्ते, आधायाय समुरसयं । सकाममरणं मरई, तिष्हमक्षयरं मुणी ॥ ३२ ॥ ति-वेमि ॥ इति अकासमर्णिखं णासं पंचसमञ्जयणं समसं ॥ ५ ॥

अह खुडु।गणियंटिकं णामं छहुमन्त्रायणं

जावंतऽनिजापुरिसा, सन्वे ते दुक्खसंभवा । ह्यपंति बहुसो मूडा, संसार्मि अणंतए ॥ १ ॥ समिवक पंडिए तम्हा, पासकाइपहे बहु । अप्पणा सक्तेसेखा, नेति भूएसु कप्पए ॥ २ ॥ साथा पिया खुसा मागा, मजा सुद्धा य ओरसा । नालं ते मम ताजाए, ख्रुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एयमद्वं सपेहाए, पासे समिय-दंसणे । छिंदे निद्धिं सिणेहं च, न कंखे पुष्वसंधवं ॥ ४ ॥ गवासं मणिकुंडलं, पसवी दासपोहसं । सञ्चमेयं बङ्ताणं, कामस्वी भविस्ससि ॥ ५ ॥ (थावरं जंगमं चेव, धणं धणं उवक्कारं । पचमाणस्स कम्मेहि, नालं दुक्खाओ मोयणे ॥) अज्यत्यं सम्बक्षो सन्दं, दिस्स पाणे पियायए । न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उबरए ॥ ६ ॥ आयाणं नरयं दिस्स, नायएज तणामवि । दोगुंछी अप्पणी पाए, दिनं भुंजेज भोयणं ॥ ७ ॥ इहमेगे उ मन्नति, अप्पन्नक्खाय पानगं । आयरियं विदित्ताणं, सम्बद्धक्या विमुन्धई ॥ ८ ॥ मणंता अकरेता य, बंधमोक्खपहण्णिणो । वायाविरियमेत्रेण, समासासेंति अप्पयं ॥ ९ ॥ न वित्ता तायए भासा, कुओ विजाणुसासणं । विसन्ता पावकस्मेहि, बाला पंडियमाणिणो ॥ १०॥ जे केंद्र सरीरै सत्ता, बण्णे रूवं य सञ्वसी । मणसा कायवक्रेणं, सञ्चे ते दुक्खसंभवा ॥ १९ ॥ आवजा रीहमदाणं, संसारंमि अणंतए । तम्हा सम्बद्धि पस्तं, अप्पमत्तो परिन्वए ॥ १२ ॥ बहिया उन्नुमादाय, नावकंखे क्याइ वि । पुन्वकम्मक्खयद्वाए, इमं देहं समुद्धरे ॥ १३ ॥ विनिच कम्मुणी हेटं, कालकंखी परिव्यए । मार्थ पिंडस्स पाणस्स, कहं सद्भूण भक्तए ॥ १४ ॥ समिद्धिं च न कुन्वेजा, स्वेदमायाए संजए । पक्कीपतं समादाय, निरवेक्को परिवर ॥ १५ ॥ एसणासमिको छजू, गामे अणियओ चरे । अप्पमत्तो पमतेहिं, पिंडवार्य गवेसए ॥ १६ ॥ एवं से उदाह अगुत्तरनाणी, अगुत्तरदंसी अगुत्तरनागदंसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगवं, वेसालिए विगाहिए ॥ १७ ॥ ति-वेमि ॥ इति खुरुागणियंतिकं णामं स्टूमज्झयणं समसं ॥ ६ ॥

अइ एलइज्रणामं सत्तममञ्ज्ञयणं

जहाएसं समृहिस्स, कोइ पोसेजा एलयं । कोयणं जनसं देजा, पोसेजा वि सर्वयणे ॥ ९ ॥ तको से पुट्ठे परिवृद्धे, जायमेए महोदरे । पीणिए विउठे देखे, आएसं परिकंखए ॥ २ ॥ जाव न एइ आएसे, ताव जीवद से दुही । अह पत्तम्य आएसे, सीसं छेतून मुर्जाई ॥ ३ ॥ जहां से बाह्य उरक्ते, आएसाए समीहिए । एवं बाह्य आहम्मिट्ठे, ईहई नरवास्थ्ये ॥ ४ ॥ हिंसे बाह्य मुखावाई, अद्वार्णीय विकोषए । अवादतहरे तेणे, माई कं नु हरे सदे ॥ ५ ॥ इरबाविसविद्धे व, यहारंअपरिवादे । मुंजमाणे सुरं मंसं, परिवृद्धे परंदने ॥ ६ ॥ अवस्थारमोई व, तुंदिहे विवकोहिए ।

आउयं नरए कंखे, जहाएसं व एलए ॥ ७ ॥ आसणं सयणं जाणं, वित्तं कामाणि भुंजिया। दुस्साहदं धणं हिश्वा, बहुं संचिणिया रयं ॥ ८ ॥ तओ कम्मगुरू जंतू, पद्मप्पन्नपरायणे । अयव्व आगयाएसे, मर्णनिम्म सोयई ॥ ९ ॥ तस्रो आउप-रिक्खीणे, जुयदेहा विहिंसगा। आसुरीयं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं॥ १०॥ जहा कागिणिए हेर्ज, सहस्सं हारए नरो । अपत्यं अंबगं भोषा, राया रज्जं त हारए ॥ ११ ॥ एवं माणस्या कामा. देवकामाण अंतिए । सहस्यगुणिया भुजो. आर्ड कामा य दिन्विया ॥ १२ ॥ अणेगवामान्डया, जा सा प्रवासी टिई । जाणि जीयंति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥ जहा य तिकि वाणिया, मुळं घेनुण निस्मया । एगोऽत्य लहुई लाभं, एगो मुळेण आगओ ॥ १४ ॥ एगो मुळं पि हारिता, आगओ तत्थ वाणिओ। ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥ माणुसत्तं भवे मूलं, लामो देवगई भवे । मूलच्छेएण जीवाणं, नरगतिरि-क्खनणं धुवं ॥ १६ ॥ दुहओ गई बालस्स, आवई वहमृत्रिया । देवतं माणुमतं च, जं जिए लोलबासढे ॥ १० ॥ तओ जिए सई होइ, दुविहं दुग्गई गए । दुऋहा तस्स उम्मागा, अद्वाए सुनिरादिव ॥ १८ ॥ एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं । मूलियं ते पवेसंति, माणुसि जोणिमेंति जे ॥ १९ ॥ वेमायाहि सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुब्वया। उर्वेति माणुसं जोणि, कम्मसञ्चा हु पाणिणो ॥ २०॥ जेसि तु विउला सिक्सा, मुलियं ते अइच्छिया। सीलवंता सविसेसा, आदीणा जंति देवयं ॥ २१ ॥ एवमदीणवं भिक्ख, अगारिं च वियाणिया । कहण्णु जिस्रमे-लिक्सं, जिल्लमाणे न संविदे ॥ २२ ॥ जहा कूसागे उद्दर्ग, समुद्देण समं मिणे । एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥ २३ ॥ कुसम्गमेला इमे कामा, सन्धि-रुद्धिमा आउए । करस हेर्ड पुराकार्ड, जोयक्सेमं न संविदे ॥ २४ ॥ इह कामा-णियहस्स, अराहे अवरज्झाई । सोचा नेयाज्यं मर्गा, जं भुजो परिमस्सई ॥ २५ ॥ इह कामाणियहरस, अराद्धे नावरज्याई । पूहदेहनिरोहेणं, भवे देवे ति मे सुयं ॥ २६ ॥ इड्डी जुई जसी कण्णो, आउं सुहमणुत्तरं । मुख्बो जत्म मणुस्सेस्र, तत्म से उवसजाई ॥ २७ ॥ बालस्स पस्स बालतं, अहम्मं परिवाजिया । विश्वा धम्मं अहम्मिहे, नरएस्ववज्रई ॥ २८ ॥ धीरस्स परस घीरतं, सव्ववम्माणुवतिणो । विचा अधम्मं धम्मिहे, देवेद्व उवक्जई ॥ २९ ॥ तुलियाम बालसावं, सवालं चेद पंडिए । नइसम बालमार्व, अबालं सेवए मुनि ॥ ३०॥ ति-बेमि ॥ इति एलडक-णामं सत्त्रमज्ञयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अह काविलियं णामं अहममज्झयणं ——ः

अधुवे असासवस्मि, संसारंमि दुक्खपउराए । कि नाम होज तं कम्मयं, जेणाहं दुरगई न गच्छेजा ? ॥ १ ॥ विजहिनु पुव्वसंजोर्य, न सिणेहं कहिनि कुव्वेजा । असि-णेहिसिणेहकरेहि, दोसपओसेहि मुचए भिक्ख ॥ २ ॥ तो नाषदंसणसमगो, हियनि-स्सेसाए सञ्चजीवाणं । तेसि विमोक्खणद्वाए, भासइ मुणिवरो विगयमोही ॥ ३ ॥-सब्वे गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खा सब्वेस कामजाएस, पासमाणी न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥ भोगाभिसदोसविसके, हियनिस्सैयसबुद्धिबोक्त्ये । बाटे य मंदिए मृढ़े, बज्जाइ मच्छिया व खेलिम्म ॥ ५ ॥ दुप्परिचया इमे कामा, नो सजहा अधी-रपुरिसेहिं। अह संति छव्वया साहू, जे तरेति अतरं विषया वा ॥ ६॥ समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणेता । मंदा निर्यं गच्छंति, बाला पावियाहि दिद्वीहिं ॥ ७ ॥ न हु पाणवर्हं अणुजाणे, मुचेज कयाइ सव्बद्धक्खाणं । एवमायरिएहिं अक्खायं, जेहिं इसी साहुजम्मी पश्चती ॥ ८ ॥ पाणी य नाइवाएजा, से समीइति बुचई ताई। तभो से पावयं कम्मं, निजाइ उदगं व बलाओ ॥ ९ ॥ जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च । नो तेसिमारमे दंर्ड, मणसा वयसा कायसा चेव ॥ ९० ॥ सुद्धेसणाओ नवाणं, तत्य ठवेज भिक्क् अप्पाणं । जायाए घासमेसेजा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥ पंताणि चेव सेवेजा, सीयपिंड पुराणकुम्मासं। अदु बुक्सं पुलानं वा, जवणहाए निसेवए मंथुं ॥ १२ ॥ जे लक्खणं च सुविणं च, अंगविजं च जे पर्वजंति । न हु ते समणा वुचंति, एवं आयरिएहि अक्खायं ॥ १३ ॥ इद् जीवियं अणियमेता, पञ्मद्वा समाहिजोएहिं । ते कामभोगरसगिद्धा, उववजीत आसरे काए ॥ १४ ॥ वत्तो वि य उव्यक्तिता, संसारं बहु अणुपरियडंति । बहुकम्म-क्विलिताणं, बोही होइ सुदुब्रहा तेसि ॥ १५ ॥ कसिणं पि ओ इमं छोयं, पि पुण्णं दकेब इहस्स । रीणावि से न संतुस्से, इह हुप्पूर्ए इमे आया ॥ १६ ॥ जहां लाही तहा कोही, काहा लोहो प्यक्ट्र । दोमासक्यं कर्ज, कोबीए वि न निट्टियं ॥ १० ॥ नो रक्ससीयु किञ्केखा, गंडवच्छाग्रऽणेगवितायु । जाओ पुरिसं पलोभिता, बेहंति वहा व वासेहिं ॥ १८ ॥ नारीस नोवगिज्येखा, इस्वी विप्पत्नहे अणागारे । धम्से च पेसलं नका, तत्य उवेज शिक्क अप्पार्ण ॥ १९ ॥ इह एस भम्मे अक्लाए, कवि-केनं च विद्युद्धकोणं। तरिहिति जे उ काहिति, वेहि आराहिया दुवे लोग ॥ २०॥ ति-नेति ॥ इति काब्रिकियं यामं अद्भूममञ्जूयणं समर्थः ॥ ८ ॥

ि उत्तर्शक्षणण£कं

अह नमिपञ्चला नामं नवसमज्झयणं

चइकण देवलोगाओ, उववज्ञी माणुसंभि लोगंभि । उवसंतमोहणिज्ञो, सरई पोराणियं जाई ॥ १ ॥ जाई सिरनु भयवं, सर्यसंबुद्धो अणुनरे धम्मे । पुत्तं ठवेतु रजे. अभिणिक्खमई, नमी राया ॥ २ ॥ मो देवलोगसरिसे, अंतलरवरगओ वरे भोए । भुंजिलु नमी राया, बुद्धो भोगे परिचयई ॥ ३ ॥ मिहिलं सपुरजणवयं, बलमारोष्टं च परियणं सब्बं। चिचा अभिनिक्खंतो, एगंतमहिद्विओ भयवं॥ ४॥ कोलाहलगभूयं, आसी मिहिलाए पव्ययंतीम । तहया रायरिसिमि, नर्मिमि अभिणिक्खमेर्तिम ॥ ५ ॥ अन्भृहियं रायग्मिं, पवब्बाठाणमुनमं । सञ्जो माहण-स्वेण, इमं वयणमञ्जवी ॥ ६ ॥ कि न भो ! अज मिहिलाए, कोलाहरूगसंकुरू। सुरुवंति दारुणा गहा, पामाएस गिहेस य ॥ ७ ॥ एयमझं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्जवी ॥ ८ ॥ मिहिलाए चेईए बच्छे, सीयच्छाए मणोरमे । पत्तपुष्फफलोबेए, बहुणं बहुगुणे सया ॥ ९ ॥ बाएण हीर-माणिम्म. चेहैयिम्म मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति मो! खगा ॥ १० ॥ एयमह्रं निसामित्ता, हेऊकारणचोदशो । तथो नमि रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चर्वा ॥ ११ ॥ एम अग्गी य वास्त्र यू. एयं इज्झइ मंहिरे । भयवं संतेखरे तेणं. कीस णं नावपेक्खह ॥ १२॥ एयमद्वं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी. देविंदं इणमञ्जनी ॥ १३ ॥ सहं बसामी जीवामी, जेसि मी नित्य किंचणं । मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचणं ॥ १४ ॥ चन-पुत्तकलत्तरमः, निव्वावारस्य भिक्खुणो । पियं न विज्ञई किंचि, अप्पियं पि न निजाई ॥ १५ ॥ बहुं सु मुणिणो महं, अणगारस्स मिक्खुणो । सञ्चको विप्य-मुक्त्स, एगंतमणुपरमञ्जो ॥ १६ ॥ एयमद्वं निसामित्ता. हेऊकारणयोहञो । तयो निमं रायरिसं. देविंदो इणयञ्चवी ॥ १७ ॥ पागारं कारहत्ताणं. गोपुरहालगामि य । उत्सरकासयग्यीओ, तओ गच्छिस स्वतिया ! ॥ १८ ॥ एयमई विसामित्ता. हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्चवी ॥ १९ ॥ सदं नगरं किया, तक्संबरमग्गलं । खंतिं निउजपागारं, तिगुत्तं दुप्पर्थसयं ॥ २० ॥ वर्णु परक्रमं किया. जीवं च इरियं सया। विदं च केयणं किया, सचेणं पित्रमंथए ॥ २१ ॥ तबनारायञ्जलेण, भित्तूणं कम्मकंतुयं । गुणी विगयसंगामी, भवासी परिमुख्य ॥ २२ ॥ एयमद्वं निसामिता, हेजकारणनोष्ट्रको । तभो नमि रायरिसिं,

९ उजाणे। २ 'स्वस्त्र'।

दैविदी इणमञ्चवी ॥ २३ ॥ पासाए कारहत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य । वालमग-पोइयाओ य. तंत्रो गच्छिति खत्तिया ! ॥ २४ ॥ एयमद्रं निसामित्ता. हेळकारण-चोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्जवी ॥ २५ ॥ संसर्य सहद सी कुगई. जो मग्ने कुणई घरं । जस्येव गंतुमिच्छेजा, तस्य कुम्वेज सासयं ॥ २६॥ एयमद्रं निसामित्ता. हेळकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमञ्जवी ॥ २०॥ आमोसे छोमहारे य, गंठिमेए य तक्करे । नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खतिया ! ॥ २८ ॥ एयमई निसामिता, हेळकारणचोइओ । तथो नमी रायरिसी. देविंदं इणमञ्जवी ॥ २९ ॥ असइं तु मणुस्सेहि, मिच्छा दंडो पजुज्जई । अकारिणोऽत्य बर्ज्सति, मुचई कारको जणो ॥ ३० ॥ एयमट्टं निसामिता, हेऊ-कारणचोइओ । तओ निम रायरिसिं, देविंदी इणमञ्चवी ॥ ३१ ॥ जे केइ पत्थिवा तुज्ञां, नानमंति नराहिवा । वसे ते ठाषइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥ ३२ ॥ एयमद्रं निसामित्ता. हेऊकारणचोइओ । नओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्चवी ॥ ३३ ॥ जो सहस्तं सहस्साणं, संगामे दुजाए जिणे । एगं जिणेज अप्पाणं. एस से परमो अभो ॥ ३४ ॥ अप्पाणमेव जुज्ज्ञाहि, कि ते जुज्ह्रेण बज्ज्ञओ। अप्पाजमेव अप्पाजं, जड़ता सुहसेहए ॥ ३५ ॥ पंचिदियाणि कोहं, माणं मायं तहेब लोहं च । दुज्जर्य चेव अप्पाणं, सन्वमप्पे जिए-जियं ॥ ३६ ॥ एयमद्रं निसामिता, हेककारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमञ्जवी ॥ ३७ ॥ जहता विस्त जहें, भोड़ता समणमाहणे । दबा मोबा य जिहा य. तओ गच्छति खत्तिया ! ॥ ३८ ॥ एयमद्रं निसामित्ता. हेऊकारणचोहओ । तओ नमी रायरिसी. देविंदं इणमञ्जवी ॥ ३९ ॥ जो सहस्यं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए । तस्स वि संजमो सेओ. अदिंतस्स वि किंचणं॥ ४०॥ एयमद्रं निसामित्ता, हेऊकारण-चोइओ । तथो नमें रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चवी ॥ ४९ ॥ घोरासमं चइताणं, अर्घ परवेति आसमं । इहेव पोसहरको. भवाहि मणुयाहिवा ! ॥ ४२ ॥ एयमई निसामित्ता. हेसकारणबोहको । तको नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्जवी ॥ ४३ ॥ मासे मासे तु जो बाह्ये. कुसब्येणं तु भुंजए । न सो सुअवन्यायधम्मस्स. बह्नं अववह सोलर्सि ॥ ४४ ॥ एयमहं निसामिता, हेळकारणखोड्खो । तथो नमिं रायरिसिं. देविंदो इणमञ्चवी ॥ ४५ ॥ हिरुष्णं सुबर्ण मिन्नुसं, संसं दूर्व च बाहणं । कीसं बच्चावहसाणं, तको बच्छति सतिया । ॥ ४६ ॥ एवमई निसामिता, हैककारणवीइओ । तको नमी राषरिकी, देनिंदं इणमञ्जनी ॥ ४० ॥ सुनम्मरूपस्स उ पन्नया भवे. सिया ह केंद्रासंस्था अर्थख्या : नरस्स ह्यहत्स न तेहि किनि, इच्छा ह आगाससमा

अणंतिया ॥ ४८ ॥ पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पद्मभिरसह । पहिपूर्णं नालमेगस्स, इइ विजा तवं चरे ॥ ४९ ॥ एयमद्वं निसामिता, हेजकारणचोहमो । तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमञ्चवी ॥ ५० ॥ अच्छेरयमञ्सदए, ओए चयसि पत्थिवा । असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विद्यम्मसि ॥ ५१ ॥ एयमट्टं निसामिता. हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमञ्जवी ॥ ५२ ॥ सहं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा । कामे पत्येमाणा, अकामा जंति दोग्गई ॥ ५३ ॥ अहे वयइ कोहेणं. साणेणं अहसा गई । सामा गईपडिग्घाओ. लोमाओ दुहुओ भयं ॥ ५४ ॥ अवस्जित्रकण माहणस्वं, विस्विक्कण इंदर्त । वंदइ अभि-त्युणंतो इमाहि महराहि वम्मूहि ॥ ५५ ॥ अहो ते निजिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ । अहो ते निरक्षिया माया. अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६॥ अहो ते अजवं साहु, अहो ते साहु महुवं । अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५० ॥ इहं सि उत्तमो मंते !, पच्छा होहिसि उत्तमो । लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धि गच्छित नीरओ ॥ ५८ ॥ एवं अभित्युणंतो, राबरिसि उत्तमाए सद्धाए । प्याहिणं करेंती, पुणी पुणी बंदई सक्की ॥ ५९ ॥ तो बंदिकण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स । आगासेणुप्पइक्षो, लिव्यचवलकुंडलितिरीडी ॥ ६०॥ नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चडकण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जबद्विओ ॥ ६१ ॥ एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा । विणियद्दंति भोगेछ. जहां से नमी रायरिति ॥ ६२ ॥ ति-बेमि ॥ इति नमिपव्यक्ता नामं नयममञ्जयणं समसं॥ ९॥

अह दुमपत्तयं णामं दसममञ्ज्ञयणं

दुमपत्तए पंडुबए बहा, निवडह राह्यणाण अवए । एवं मणुसण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १ ॥ कुसरने वह ओसविद्धए, थोवं विद्धह कंबमाणए । एवं मणुसण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २ ॥ इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपचवायए । विहुणाहि रवं पुरे कई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥ दुळहे बळ माणुसे मवे, विरकालेण वि सम्बपाणिणं । गाहा व विवाग कम्मुणो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥ पुढविकायमहनको, उक्कोणं जीवो उ संबसे । कालं संवाह्यं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ५ ॥ बाहकायमहनको, उक्कोणं जीवो उ संबसे । कालं संवाह्यं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६ ॥ सेदकायमहनको,

उद्योसं जीवो उ संबसे। कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥ ७॥ बाउकायमङ्ग्रभो, उक्कोसं जीवो उ संबसे । कालं संखाईयं. समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ८ ॥ वणस्सङ्कायमङ्गक्षो, उद्योसं जीवो उ संबसे । कालमणंतद्वरंतयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥ बेइंदियकायमझ्गओ. उक्कोसं जीवो उ संवसे । कार्ल संखिजसिन्नयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १०॥ तेइंदियकायमङ्गजो, उकोसं जीवो उ संबसे। कालं संखिजसिवयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ११ ॥ चटरिंदियकायमङ्गको, उक्कोसं जीवो उ संबसे । कालं संखिजसिनयं, समयं गोयम ! मा प्रमायए ॥ १२ ॥ पंचिदियकायमङ्गक्षो, उद्घोसं जीवो उ संबसे । सत्तद्वभवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥ देवे नेरहए य अइगको, उद्योसं जीवो उ संबसे । इक्केक्सवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १४ ॥ एवं भवसंसारे, संसरड सहासडेहिं कम्मेहिं। जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १५ ॥ छद्भण वि माणुसत्तणं, आरियत्तं पुणरवि दुह्नहं । बहुचे दुसुया मिलक्खुया, समयं गोयम ! मा पंमायए ॥ १६ ॥ लडूण वि आरियत्तणं, अहीणपंचेदियया हु दुह्महा । विगलिंदियमा ह वीसई, समर्थ गोयम ! मा प्रमायए ॥ १७ ॥ अहीणपंचेंदियसं पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुह्रहा। कुतित्थिनिसेनए जणे, समयं गोयम! मा पमायए ॥ १८ ॥ रुद्धण वि उत्तमं सुद्धं, सद्दृष्णा पुणरावि दुह्नहा । मिच्छत्तनिसेवए अणे. समयं गोयम े मा पमायए ॥ १९ ॥ धम्मं पि ह सहहंतया, द्राष्ट्रहया काएण फासया । इहकामगुणेहि मुच्छिया, समयं गोयम । मा पमायए ॥ २०॥ परिजरह ते सरीरयं, केसा पंडरया हवंति ते । से सोयबळे य हायई, समयं गोयम! मा प्रमायए ॥ २१ ॥ परिजुरह ते सरीरयं, केसा पंडरया हवंति ते । से चवन्छवछे य हायई, समयं गोयम । मा पमायए ॥ २२ ॥ परिजूरइ ते सरीरयं, केंसा पंहरवा इवंति ते । से घाणबळे य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २३ ॥ परिजूरह ते सरीरयं. फेसा पंडरमा हवंति ते । से जिञ्मबळे य हायई, समयं गोयम ! मा पमागए ॥ २४ ॥ परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडरया इवंति ते । से फासबले य हार्यके. समयं गोयम । मा पमायर ॥ २५ ॥ परिजरह ते सरीरयं. केसा पंहरया हवंति ते । से सब्बब्धे य हायहं, समयं गीयम ! मा पमायए ॥ २६ ॥ अरई गंडं विस्कृता, आयंका विविद्या पुरवंति ते । विद्युद्द विद्यंसद ते सरीरयं, समयं गोयम ! मा प्रमायए ॥ २० ॥ बोस्डिद सिमेहमध्यणो. इसमं सारहमं च पाणियं । से सम्बक्तिण्डविक्षए, समग्रं मोनम । मा प्रमायए ॥ २८ ॥ विकाण घणं च भारिनं, प्रव्यक्रको हि सि अपनारियं। मा बंदे प्रणो वि आविए, समयं गोयम ! मा प्रमास्त ॥ २९ ॥ अवउजिहाय मित्तर्वधवं, विडलं चेन भणोहसंचवं । मा तै निह्मं गमेसए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३० ॥ न हु जिणे अज दिस्सहं, बहुमए दिस्सहं मगगदेसिए । संपद् नेयाउए पहे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३९ ॥ अवसोहिय कंटगापहं, ओइण्णो सि पहं महालयं । गच्छिस मगगं विसोहिया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३२ ॥ अवले जह भारवाहए, मा मग्गे विसमेऽनगाहिया । पच्छा पच्छाणुतावए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३३ ॥ तिण्णो हु सि अण्णवं महं, किं पुण चिद्वसि तीरमागओ । अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३४ ॥ अवलेखरसेणि उस्सिया, सिद्धं गोयम ! लोयं गच्छिसे । खेमं च सिवं अणुत्तरं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३५ ॥ बुद्धे परिनिव्धुखे चरे, गामगए नगरे व संजए । संतीमगं च बृह्ए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३६ ॥ बुद्धे परिनिव्धुखे चरे, गामगए नगरे व संजए । संतीमगं च बृह्ए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३६ ॥ बुद्धेस्स विसम्म भासियं, ग्रुकहियमहुपओवसोहियं । रागं दोसं च छिदिया, सिद्धिगई गए गोयमे ॥ ३० ॥ नि-बेमि ॥ इति दुमपत्तयं णामं दसममज्झयणं समर्थं ॥ १० ॥

अह बहुस्सुयपुजं णामं एगारसममन्झयणं

संजोगा विष्यमुक्तस्स, अणगारस्स भिक्खुणो। आयारं पाउक्करिस्सामि, आणुपुलि सुणेह मे ॥ १॥ जे यावि होइ निक्कि, यद्धे छुद्धे अणिगगहे। अभिक्खणं
उक्षवई, अविणीए अवहुस्सुए॥ २॥ अह पंचाँहं ठाणेहिं, जेहिं तिक्खा न लक्काई।
यम्भी कोहा पमाएँणं, रोगेणाऽल्लसएणे य॥ ३॥ अह अहुिंह ठाणेहिं, तिक्खासीले
ति जुक्कई। अहस्पिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे॥ ४॥ नासीले न विसीले,
न सिया अहलोहुएँ। अकोहणे सक्तर्एं, सिक्खासीले ति चुक्कई॥ ५॥ अह चोहसिहं ठाणेहिं, बहमाणे उ संजए। अविणीए चुक्कई सो उ, निक्वाणं च न गच्छई
॥ ६॥ अभिक्खणं कोही इवई, पवंचं च पक्त्वई। मेतिक्रमाणो वर्मई, सुवं
लद्धण मर्जेई॥ ७॥ अवि पावपरिकेखी, अवि मित्तस्य कुर्पेई। सुप्पियस्सावि
मित्तस्स, रहे भासइ पावयं॥ ८॥ पहण्णवाई दुहिले, यद्धे छुद्धे अधिकाह। असंविभागी अवियतें, अविणीए ति मुक्कई॥ ९॥ अह प्यरसिंह ठाणेहिं, सुविणीए ति
कुर्का। नीगोलिती अववैले, असीई अकुर्वाहेंछे॥ ९०॥ अप्यं च अहिक्खिरेई,
एवंचं च न कुर्वाहं। मेतिक्रमाणो भवेहे, सुवं कर्बुं न सर्वाहं ॥ ९९॥ न व पांवपरिकेखी, न व भितेस कुर्पेई। अप्पियस्सावि कितस्त, रहे कक्षण भारीहे ॥ १९॥

1000 1000 1000

क्षत्रहरूमरविजय, बुढे अभिजाइए । हिरिमें पडिसंकीणे, सुविणीए ति वुषाई ॥ १३ ॥ वसे गुरुकुले निषं, जोगवं उवहाणवं । पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लहुमरिहई ॥ १४ ॥ जहा संखंमि पर्यं, निहियं दुइओ वि विरायइ । एवं बहस्सुए मिक्स, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥ १५ ॥ जहां से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया । आसे जवेण पवरे, एवं इवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥ जहाइण्णसमास्टे, स्रे दढपरक्रमे । उमओ नंदिचोसेणं, एवं हमइ बहुत्सुए ॥ १७ ॥ जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सिंद्रहामणे । बलवंते अप्पिंद्रहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १८ ॥ जहा से तिक्ख-सिंगे, जायसंघे विरायई । वसहे जृहाहिबई, एवं इवइ बहुस्छए ॥ १९ ॥ जहा से तिक्खदाढ़े, उद्दर्गे दुप्पहंसए । सीहे मियाण पवरे, एवं इवइ बहुस्छए ।। २० ॥ जहां से वासुदेवे, संसचकगमाधरे । अप्पिहरमब्हे जोहे, एवं हवह बहु-स्मुए ॥ २१ ॥ जहां से चाउरते, चक्कवटी महिद्दिए । चोइसरयणाहिवई, एवं हवई बहुस्छए ॥ २२ ॥ जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे । सक्के देवाहिबई, एवं हबड़ बहस्सए ॥ २३ ॥ जहां से तिमिरविदंसे, उन्बिद्धेते दिवायरे । जलंते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए॥ २४॥ जहा से उडुवई चंदे, नक्खतपरिवारिए। पिंडपुण्णो पुण्णमासीए, एवं हवइ बहुत्सुए ॥ २५ ॥ जहा से सामाइयाणं, कोद्वा-गारे सुरक्खिए । नाणाधनपङ्गिणो, एवं हवह बहस्सए ॥ २६ ॥ जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा । अणाहियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥ बहा सा नईण पनरा, सलिला सागरंगमा। सीया नीलर्गतप्यहा, एवं हवह बहस्खए ॥ २८ ॥ जहां से नगाण पबरे, समहं मंदरे गिरी । नागोसहिपजलिए, एवं हवह बहु-स्हुए ॥ २९ ॥ जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए । नाणारयणपश्चिपुण्णे, एवं हबह बहुस्सुए ॥ ३० ॥ समुहगंमीरसमा दुरासमा, अचिक्रिमा केणह दुप्पहंसमा । ग्रयस्य पुष्णा विउलस्य ताइणो, स्ववितु कम्मं गहमुत्तमं गया ॥ ३९ ॥ तम्हा ग्रयमहिक्किना, उत्तमङ्कावेसए । जेनप्पाणं परं चेन, सिद्धि संपाउणेजासि ॥ ३२ ॥ ति-वेमि ॥ इति बहुस्सुयपुद्धं जामं पनारसममज्ज्ञयणं समर्चं ॥ ११ ॥

अह इरिएसिजं णामं दुवालसममञ्ज्ञयणं

सीमागकुळसंभूओ, गुणुत्तरघरो मुणी । हरिएसवली नाम, जासि भिक्ष जिई-दिश्री ॥ १ ॥ इरिएसणमासाय, उचारसमिईस म । जओ आगाणनिक्सेने, संजओ ससमाहियो ॥ २ ॥ समगुत्तो वयपुत्तो, कायगुत्तो जिईदिओ । भिक्सद्धा वंश-६३ श्रदा। इजिम्म, जनवाडे उवद्विओ ॥ ३ ॥ तं पासिक्रणमेजतं, तवेण परिसोसियं । पंतोवहि-उनगरणं, उन्हसंति अणारिया ॥ ४ ॥ जाइमयपिटयदा, हिंसगा अजिहंदिया । अवंभचारिणो बाला, इमं वयणमञ्जवी ॥ ५ ॥ कयरे आगच्छइ दितस्वे, काले विकरा है फोक्कनासे । ओमचेलए पंसुपिसायभए, संकरदूसं परिहरिय कंठे ॥ ६॥ कयरे तुमं इय अदंसणिजे ?, काए व आसा इहमागओ ति ? । ओमचेलया पंसुपिसाय-भ्या, गच्छक्खलाहि किसिई ठिओ सि १॥ ७॥ जक्खे तर्हि तिंदुयरुक्खवासी, अणु-कंपसो तस्स महासुणिस्स । पच्छायहता नियगं सरीरं, इसाहं वयणाइसुदाहरित्था ॥ ८ ॥ समणो अहं संजभो बंभयारी, विरस्रो घणपयणपरिग्गहास्रो । परप्पवित्तस्स उ भिक्सकाले, अश्वस्त अद्वा इहमागुओमि ॥ ९ ॥ वियरिज्ञः सज्ज्ञः भुज्जः य, अन्नं पभूयं भवयाणमेयं । जाणाहि मे जायणजीविण्ति, सेसावसेसं लगक तवस्सी ॥ १०॥ उवक्लडं भोयण माहणाणं, अत्तिद्वियं सिद्धमिहेगपन्सं । न ऊ वयं एरिस-समपाणं, दाहासु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥ १९ ॥ थळेमु बीयाइ वबंति कासगा, तहेव निश्नेत य आससाए। एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णामणं खु खितं ॥ १२ ॥ खेताणि अम्हं विझ्याणि होए, जहिं पिकण्णा विरुहंति पुण्णा । जे माहणा जाइविज्ञोबवेया, ताइं तु खेलाइं सुपेसलाइं ॥ १३ ॥ कोहो य माणो य वहो य जेसि. मोसं अदर्श च परिग्गहं च । ते माहणा जाइनिजानिहूणा, ताई तु खेताई सुपावयाई ॥ १४ ॥ तुब्मेत्य भो । भारघरा गिराणं, अहं न जाणेह अहिज वेए। उचावयाइं मुणिणो चरंति, ताइं तु खेलाइं सुपेसलाई ॥ १५ ॥ अञ्झावयाणं पिंडकूलभासी, पभाससे कि नु सगासि अम्हं ?। अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं, न य णं बाहास तुमं नियंठा ॥ १६ ॥ समिइंहि मज्ज्ञं द्वसमाहियस्य, गुत्तीहि गुतस्स जिहंदियस्स । जह मे न दाहित्य अहेसिंगजं, किमज जनाण छहित्य छाई ॥ १७ ॥ के इत्य खता उवजोइया ना, अजहानया ना सह संबिएहिं। एयं खु दंडेण फलेण हैता, कंटीम घेतूण खलेज जो णं ॥ १८॥ अजहाबसार्ण वयर्ण सुणेता, उदाइया तत्य बहु कुमारा । दंडीई वितेहिं क्सेहिं चेद, समागया तं इपि तालयंति ॥ १९ ॥ रक्षो तहि कोसल्यिस्स धूमा, मइति नामेण अधिवियंगी । तं पासिया संजय हम्ममाणं, कुद्दे कुमारे परिनिव्ववेद् ॥ २०॥ देवासिओगेण निओहएणं, विश्वास रक्षा सणसा न झाया । नरिंदहेविंदिमिवंदिएणं, जेजामि वंता इसिणा स एसो ॥ २९ ॥ एसो हु सो सम्मतस्यो महप्पा, जिइंदिओ संज्ञा बंगमारी। जो मे तया नेच्छद दिवामाणि, पिछणा सर्व कोसलिएण रहा ॥ २२ ॥ महाजसो एस महाणुमान्त्रे, शोरव्यको श्रीरपरक्रमी व । मा एवं हिक्ट

- अहीलिणिजं, मा सन्वे तेएण मे निद्देखा ॥ २३ ॥ एयाई तीसे वयणाई सीचा, पत्तीइ भहाइ सुमासियाई । इसिस्स वेयाविडयहुयाए, जक्सा कुमारे विणिनारयंति ॥ २४ ॥ ते घोरस्वा ठिंग अंतलिक्खे.ऽद्वरा तहिं तं जण तालगंति । ते भिष्नदेहे रुहिरं वर्मते, पावितु भद्दा इणमाह भुज्जो ॥ २५ ॥ गिरिं नहेहिं खणह, अर्थ दंतेहिं स्नायह । जायतेयं पाएहि इणह. जे मिक्खं अनमन्नह ॥ २६ ॥ आसीनिसी उम्म-तवो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्रमो य । अगणि व पक्खंद पर्यगरीणा, जे मिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥ २० ॥ सीसेण एयं सरणं उवेह, समागया सव्वज्ञणेण तुन्मे । जह इच्छह जीवियं वा धर्ण वा, लोगं पि एसो कुविओ डहेजा ॥ २८ ॥ अवहेडिय-पिद्विगउत्तमंगे, क्सारिया बाह अकम्मनिद्वे । निक्मेरियक्के रुहिरं वसंते, उद्वेसहे निगयजीहनेते ॥ २९ ॥ ते पासिया संडिय क्टुभूए, विमणी विसण्णी अह माहणी सो । इसि पसाएइ समारियाओ, हीलं च निंदं च सामाह भंते ! ॥ ३०॥ बालेहिं मुद्रोहिं अयाणएहिं, जं हीकिया तस्स खमाह भंते ! । महप्पसाया इतिणो हवंति, न हु मुणी कोक्परा हवंति ॥ ३१ ॥ पुब्बि च इण्हि च अणागर्थ व, मणप्यओसो न मे अस्यि कोइ। जक्सा हु वेयाविष्यं करेंति, तम्हा हु एए निष्ट्या कुमारा ॥ ३२ ॥ अत्यं च धर्म च वियाणमाणा, तुब्से न वि कुप्पह भूड्पना । तुब्भं हु पाए सरणं उनेमो, समागया सन्वज्ञणेण अम्हे ॥ ३३ ॥ अबेसु ते महाभाग!, न ते किंन्वि न अविमो । मुंजाहि साहिमं कूरं, नाणा-वंजणसंज्यं ॥ ३४ ॥ इमं च मे अत्थि पमूयमनं, तं भुंजस् अम्ह अणुग्ग-हद्वा । बाढं ति पबिच्छह मत्तपाणं, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥ तहियं गंघोदयपुप्पत्वासं, दिव्या तर्हि बसहारा य बुद्धा । पह्याओ दुंबुहीओ सुरेहि, आगासे अहो दाणं च चुट्टं ॥ ३६ ॥ सक्सं ख वीसह तबोबिसेसो, न दीसई जाइविसेस कोई। सोबागपुर्त हरिएससाहुं, जस्सेरिसा हिंहु महाणुमागा॥ ३७॥ किं माहणा! जोइसमारमंता, उदएण सोहिं बहिया विमयहा !। जं मग्नहा बाहि-दियं विसोहीं, न तं पुरहं इसका वयंति ॥ ३८ ॥ इसं च जूवं तजक्द्वमस्मि, सामं च पायं उदमं फुसंता । याणाइ भूगाइ विहेडवंता, भुजी वि मंदा ! पकरेह पावं ॥ ३९ ॥ कहं चरै मिक्स । वयं जयामो, पावाइ कम्माइ पणुक्रयामी । अक्साहि में संजय ! उपसापूर्या, कहं सबहुं कुसला वर्यति ॥ ४० ॥ छजीवकाए असमारमंता, ओसं अदर्त च असेनमाणा । यरिमाई इत्यिको माणमार्ग, एवं परिचाय चरंति दंता ॥ ४१ ॥ प्रसंबुटा पंचाई संबरेहि, इह जीवियं अणवकंत्रमाणा । वीसङ्घ-कामा सहमानेहा, सहाजने बसा सक्रसितं॥ ४२ ॥ के ते जोई के व ते जोहराचे है

का ते सुया कि च ते कारिसंगं?। एहा य ते कयरा संति भिक्ख्?, क्यरेण होमेण हुणासि जोई? ॥ ४३ ॥ तवो जोई जीवो जोहठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं । कम्मेहा संजमजोगसंती, होमं हुणामि इसिणं पसत्यं ॥ ४४ ॥ के ते हरए के य ते संतितित्थं ?, कार्ह सिणाओ व रयं जहासि ?। आइक्ख णे संजय! जक्खपूर्या, इच्छासो नाउं भवलो सगासे ॥ ४५ ॥ धम्मे हरए बंभे संतितित्थे, अणाबिले अत्तपस्त्रलेसे । जिंह सिणाओ विमलो विमुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ ॥ एयं सिणाणं कुसलेहि दिई, महासिणाणं इसिणं पसत्यं। जिंह सिणाया विमला विमुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥ ४० ॥ ति-वेमि ॥ इति हरिएसिखं णामं दुवालसममज्झयणं समसं ॥ १२ ॥

अह चित्तसं मृहज्जणामं तेरहममञ्झयणं

जाइंपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हस्थिणपुरम्मि । चुलणीए बंभदत्तो, उव-वक्षो पडमगुम्माओ ॥ १ ॥ कंपिष्ठे संभूओ, विशो पुण जाओ पुरिमतालम्म । सेड्रिकलम्म विसाले, धम्मं सोकण पव्यद्भो ॥ २ ॥ कंपित्रम्म य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभ्या । सहदक्खफलविवागं, कहेंति ते एक्सेक्स्स ॥ ३ ॥ चक्कवडी महिद्वीओ, वंभवतो महायसो । भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमञ्चवी ॥ ४ ॥ आसिमो मायरा दो वि, अन्यव्यवसाणुगा । अन्यवस्यपूरता, अन्यवहरूसिणो ॥ ५ ॥ दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे। हंसा मयंगतीरे, सोवागा कासिम्मिए ॥ ६॥ देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिष्टिया। इसा गो छद्विया जाई, अजमजेण जा विणा ॥ ७ ॥ कम्मा नियाणपगडा. तुमे राय ! विवितिया । तेसि फलविवारीण. विप्यक्षोगमुबागया ॥ ८ ॥ सबसोयप्यमङा, कम्मा मए पुरा कहा । ते अज परि-भुंजामी, कि तु चित्ते वि से तहा ? ॥ ९ ॥ सब्बं सुचिण्णं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्स अत्थ । अत्थेहि कामेहि व उत्तमेहि, आया ममं पुण्णपक्षोक्षेप् ॥ १०॥ जाणासि संभूय ! महाणुमार्ग, महिश्रियं पुण्णपालोवदेयं । चित्तं पि जाणाहि तहेव राये!. इसी जुड़े तस्स वि य प्पथ्या ॥ ११ ॥ यहत्वस्या वयणंऽ-प्यभूया, गाहाणुजीया नरसंघमज्हो । जं सिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह जर्मते समणो-मि जाओ ॥ १२ ॥ उच्चोबए मह कहे व वंगे, पवेड्या आवसहा य रम्मा । इमें गिहं चित्त ! अगप्पसूर्य, पसाहि पंचालगुणोववेवं ॥ १३ ॥ बहेहि नीएहि च बाहएहिं, नारीजणाई परिवारवंती । श्रेजाहि भोगाइ इमाइ मिन्स् ।, सम रोवई अञ्चला हु

दुक्खं ॥ १४ ॥ तं पुन्वनेहेण कवाणुरागं, नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं । घम्मिस्सओ तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्या ॥ १५ ॥ सव्वं बिलवियं गीयं. सच्वं नट्टं विडंबियं। सच्वे आभरणा भारा, सच्वे कामा दुहाबहा॥ १६॥ बालाभिरामेस दुहाबहेस, न तं सुद्दं कामगुणेस रायं!। विरक्तकामाण तबोघणाणं, जं भिक्खणं सीलगुणे रयाणं ॥ १७ ॥ नरिंद । जाई अहमा नराणं, सोवागजाई दृहओ गयाणं । जिंहं वयं सम्बजणस्स वेस्सा. वसीअ सोबागनिवेसणेस ॥ १८ ॥ तीसे य जाईइ उ पानियाए, बुच्छामु सोबागनिवेसणेसु । सम्बस्स लोगस्स दुगंछ-णिजा, इहं तु कम्माइं पुरे कहाई ॥ १९ ॥ सो दाणिसि राय! महाणुमागी. महिङ्किओ पुण्णफलोववेओ । चइतु भोगाई असासयाई, आदाणहेउं अभिणिक्समाहि ॥ २० ॥ इह जीविए राय ! असासयम्मि, घणियं तु पुष्णाई अकुव्यमाणो । से सोयई मझुमुहोवणीए, धम्मं अकाररण परेमि लोए ॥ २१ ॥ जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्च नरं नेइ हु अंतकाछ । न तस्स माया व पिया व भाषा, कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥ २२ ॥ न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्या न स्या न बंधवा । एको सयं पचणुहोइ तुन्खं, कतारमेव अणुजाइ कम्मं ॥ २३ ॥ विका दुप्यं व बटप्पयं व, खेतं गिहं धणवर्षं व सन्वं। सकम्मवीओ अवसी पयाइ. परं भवं सुंदर पावर्णं वा ॥ २४ ॥ तं एक्स्न तुच्छसरीरणं से, चिईणयं दहिय उ पावगेणं। भज्जा य पुत्तो वि य नायओ वा, दायारमञ् अणुसंकमंति॥ २५॥ उविजिज्जे जीवियमप्पमार्थ, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ! । पंचालराया ! वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥ २६ ॥ अहं पि जाणामि जहेह साह, जं में तमं साहिंस वहानेयं। भोगा इमें संगकरा हवंति, जे दुख्या अख ! अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥ इत्यापपुरम्मि चिता !, दहूणं नरवहं महि द्वियं । कामभोगेसु निदेशं, नियाणमसहं कहं ॥ २८ ॥ तस्स मे अप्पेडिकंतस्स, इसं एयारिसं फलं। जाणमाणो वि जं धम्मं, काममोरोसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥ नागो जहा पंकजलावसको, दई थर्ल नाभिसमेह तीरं। एवं वयं कामगुणेसु विद्धा, न भिक्खुणी मरगमणुक्ववामी॥ ३०॥ अबेड काळो तरंति राइको. न यावि भोगा प्रतिसाण निका। उविक मोगा प्रतिसं चयंति, दुमं बहा खीवफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥ जह तंसि भोगे वहुउं असत्तो. अखाई कम्माई करेहि रागं । धम्मे ठिखो सन्वपनाणुकंपी, तो होहिस देवो इको विउन्हीं ॥ ३२ ॥ न तुष्का भोगे चड़कण बुद्धी, गिद्धों सि आरंभपरिगाहेसु । मीहं क्यों एतित विप्यलानी, गच्छामि रायं । आमंतियों सि ॥ ३३ ॥ पंचालराया वि य बंभद्द्यो, साहुस्स तस्स वयणं अकाउं । अखतरे भुंखिय काममोगे, अखतरे

सो नरए पविद्वो ॥ ३४ ॥ वित्तो वि कामेहि विरत्तकामो, उदग्गचारित्ततवो महेसी । अणुत्तरं संबम पालदत्ता, अणुत्तरं सिद्धिगई गखो ॥ ३५ ॥ ति-बेमि ॥ इति चित्तसंभूइज्जणामं तेरहममज्झयणं समर्त्त ॥ १३ ॥

अइ उसुयारिक्षं णामं चउदसममञ्झयणं

देवा भविताण पुरे भवम्मि, केई खुया एगविमाणवासी । पुरे पुराणे उसुयार-नामे, खाए समिद्धे सुरळोगरम्मे ॥ १ ॥ सकम्मसेसेण पुराकर्णं, कुळेसु ह्रगेसु य ते पस्या । निव्निष्णसंसारभया जहाय, जिणिदमग्गं सरणं पनना ॥ २ ॥ पुमत्त-मागम्म कुमार दो वी, पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती। विसालकित्ती य तहे-सुयारो, रायत्य देवी कमलावई य ॥ ३ ॥ जाईजरामचुभयाभिभृया, बहिं विहा-राभिनिविद्वचित्ता । संसारनकस्स निमोक्खणहा, रहूण ने कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥ पियपुत्तगा दोशि वि माहणस्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स । सिर्तु पोराणिय तस्य जाई, तहा द्विषणं तवसंजमं च ॥ ५ ॥ ते काममोगेष्ठ असजमाणा, माणुस्स-एसुं जे बावि दिन्दा । मोक्खाभिकंसी अभिवायसङ्घा, तायं उदागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥ असासयं दहु इमं विहारं, बहुअंतरायं न य रीहमार्छ । तम्हा निहंसि न रई लमामो. आमतयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥ अह तायगो तत्य मुणीण तेसि, तवस्स वाघायकरं वयासी । इसं वयं वेयविओ वयंति, जहा न होई अद्भयाण लोगो ॥ ८ ॥ अहिज नेए परिनिस्स विष्पे, पुत्ते परिद्वप्य गिहंसि जाया । भोषाण मोए सद्द इत्थियाहि, आरणणा होह मुणी पसत्या ॥ ९ ॥ सोयग्निणा आयगुणिवणेणं, मोहाणिला पजलगाहिएणं । संतत्तभावं परितप्पमाणं, कालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥ पुरोहियं तं कमसोऽखुणंतं, निमंतयंतं च छए धणेणं । जहकर्मं कामगुणेहिं चेव, इमारगा ते परामिक्स वर्ष ॥ ११॥ वेवा बहीया न मवंति ताणं, भूता दिवा निति तमं तमेणं । जाया य पुता न हवंति ताणं, को णाम ते अणुमकेष एवं ॥ १२॥ खणमित्तद्वक्या बहुकालदुक्या, कामदुक्या अविगामदुक्या । संसारमोक्यस्स विपक्सामूबा, साणी अणरबाण उ काममीगा ॥ १३ ॥ परिव्ययंते अणिवत्तकामे, अहो य राओ परितप्पमाणे । अकप्पमते धयमेसमाणे, पप्पोदी मह्नं चुरिसे वरं च ॥ १४ ॥ इमंच मे अत्य इमंच नत्य, इमंच मे किया इमं अकियं। तं एकमेर्च कालप्पमाणं, हरा इरंति ति कहं पमाओ ॥ १५ ॥ धर्ण प्रभूयं सह इत्थियाहि, संगणा तहा कामगुषा पंगामा । तबं कर् तप्पद जस्स खोगो, तें सम्बन्

साहीणमिहेव तुन्मं ॥ १६ ॥ धणेण कि घम्मधुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहिं चेव । समणा मविस्साम् गुणोद्दधारी, बहिंबिहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७॥ जहा य अग्गी अरणी असंतो, खीरे घयं तेल्लमहातिलेख । एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संमुच्छई नासइ नाविष्टे ॥ १८ ॥ नो इंदियम्गेज्झ अमृत्तभावा. अमृत्तभावा वि य होड निश्वो । अज्ञात्यहेउं निययस्य वंघो. संसारहेउं च वयंति वंघं १। १९ ॥ जहा वर्य धम्ममजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा । ओरुब्ममाणा परिरक्खयंता, तं नेव भुजो वि समायरामो ॥ २०॥ अञ्माहयम्मि लोगम्मि, सम्बक्षो परिवारिए । अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं छमे ॥ २१ ॥ केण अन्भाहओं लोगो ?, केण वा परिवारिओ ? । का वा अमोहा वत्ता ?, जाया चिंतावरो हुमे ॥ २२ ॥ मञ्जूणाऽब्भाहको लोगो, जराए परिवारिको । असोहा रयणी बुत्ता. एवं ताय विजाणह ॥ २३ ॥ जा जा वश्वइ रयणी, न सा पिडनि-यसई । अहम्मं कुणमाणस्स. अफला जीत राइओ ॥ २४ ॥ जा जा क्वड रयणी. न सा पहिनियर्त्तई । धम्मं च क्रुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥ २५ ॥ एगओ संवित्ताणं, दृहक्षो सम्मत्तसंज्ञ्या । पच्छा जाया । गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुछे कुछे ॥ २६ ॥ जस्सित्य मञ्जूणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं । जो जाणे न महिस्सामि, सो हु कंखे द्वए सिया ॥ २० ॥ अजेव धम्मं परिवजयामो. जिंह पवका न पुणन्भवामो । अणागयं नेव य अत्थि किंची, सदाखमं णे विणइतु रागं ॥ २८ ॥ पहीणपुत्तस्स ह वत्यि वासी, वासिद्धि ! भिक्खायरियाइ कालो । साहाडि रुक्सो लहर्इ समाहिं, ष्टिकाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥ २९ ॥ पंखाविद्वणोध्य जहेव पक्खी, भिन्नविवहणोव्य रणे नरिंदो । विवनसरारो वणिओव्य पोए, पहीणपुरोमि तहा अहं पि ॥ ३० ॥ सुसंभिया कामगुणा इमे ते. संपिंडिया अग्गरसप्पमया । भंजाम ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहाणमर्ग ॥ ३१ ॥ भूता रसा भोड़ ! जहाड़ में वस्रो, न जीविसद्वा पजहामि सीए । लामं अलामं च ग्रहं च दुक्खं. संविक्खमाणी चरित्सामि मोणं॥ ३२ ॥ मा हु तुमं सीयरियाण संभरे, जुण्णो व हंसी पिसोत्तगामी। भुंजाहि भोगाइ मए समाणं, दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो॥ ३३॥ जहा य भोई तणुर्व भुवंगो, निम्मोयणि हिच पछेर मुत्तो । एमेए जाया पयहंति भोए. ते हं कहं नाणुगमिस्समेको ? ॥ ३४ ॥ छिदित् जालं अवलं व रोहिगा, मच्छा जहां कामगुणे पहाल । घोरेमसीका तक्सा उदारा, घीरा ह मिक्सामरियं वरित ॥ ३५ ॥ नहेब कुंचा समस्करंता, त्याणि जालाणि दलितु हंसा । पलिति पुता व पई य मज्जां, ते हं वहं नामुगमिस्समेका ? ॥ ३६ ॥ प्ररोहियं तं सद्ययं सदारं,

सोबाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए । कुढुंबसारं विउद्धत्तमं च, रायं अभिक्छं समुवाय देवी ॥ ३७ ॥ वंतासी पुरिसो रायं !, न सो होइ पर्वसिक्षो । माहणेण परिचतं, घणं आदाउमिन्छसि ॥ ३८ ॥ सन्त्रं जगं जह तुहं, सन्त्रं बावि घणं भवे । सन्त्रं पि ते अपज्यतं, नेव ताणाय तं तव ॥ ३९ ॥ मरिहिस्ति रायं! जया तया वा, मणोरमे कामगुण पहाय। एको हु धम्मो नरदेव! ताणं, न विचाई अन्नामिहेह किंचि ॥ ४० ॥ नाहं रमे पक्खिण पंजरे वा. संताणछिका चरिस्साम मोणं। अकिंचणा उज्ज्ञकडा निरामिसा. परिगहारंभनियत्तदोसा ॥ ४१ ॥ दवन्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु । अने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया ॥ ४२ ॥ एवमेव वयं मृहा, कामभोगेसु मुच्छिया। डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसम्गिणा जगं ॥ ४३ ॥ भोगे भोचा बमिता य. लहभ्यविहारिणो । आमोयमाणा गच्छंति. दिया कामकमा इव ॥ ४४ ॥ इमे य बद्धा फंटंति, मम हत्यऽजमागया । वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामी जहा इमे ॥ ४५ ॥ सामिसं कुळलं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं। आमिसं सब्बमुज्जिता. बिहरिस्सामि निरामिसा ॥ ४६ ॥ गिद्धोवमा उ नचाणं. कामे संसारवन्नणे । उरगो सुबण्णपासेव्य, संक्रमाणो तणुं चरे ॥ ४० ॥ नागोव्य वंधणं छिता. अप्पणो वसहिं वए । एयं पत्यं महारायं. उत्स्वयारिति में सुयं ॥ ४८॥ चइता विउलं रजं. कामभोगे य दुचए । निव्निसया निरामिसा, निबेहा निप्परिगडा ॥ ४९ ॥ सम्मं धम्मं वियाणिता, निचा कामगुणे वरे । तवं पनिज्झहक्वायं, घोरं घोरपरक्रमा ॥ ५०॥ एवं ते कमसो बुद्धा, सन्वे धम्मपरायणा । जम्ममक्रमउध्विग्गा. दुक्खरसंतगवेसिणो ॥ ५१ ॥ सासणे विगयमोहाणं, पुर्विव भावणभाविया । अचिरेणेव कालेण, दुक्खरसंतमुवागया ॥ ५२ ॥ राया सह देवीए, माष्ट्रणी य पुरोहिओ । माहणी दारना चेब, सब्वे ते परिनिब्बुडा ॥ ५३ ॥ ति-वेमि ॥ इति उसुयारिकं णामं खउइसममज्ययणं समर्स ॥ १४ ॥

अह सभिक्ख् णामं पण्णरसममञ्ज्ञयणं

मोणं चरिस्सामि समिष वस्मं, सहिए उजुक्ते नियाणशिषे। संयवं जहिज अकामकामे, अजायएसी परिव्यए स भिक्ष ॥ १ ॥ राओवरयं चरेज हाढे, विरए वैयवियायरिक्सए। पके अभिभूय सम्बदंसी, जे कम्हि वि न सुन्धिए स भिक्ष ॥ २ ॥ अकोसवहं विह्नु धीरे, सुणी चरे काढे निषमास्युते। अञ्चमामणे असं-

१ वेथं-णेयं (हेयं) जाणइ सो । २ समपासी ।

पहिद्वे, जे ऋतिणं अहियासए स भिक्ख् ॥ ३ ॥ यंतं सवणासणं भइता, सीउण्हं विविहं च दंसमसगं। अञ्चलममणे असंपहिद्वे, जे कसिणं अहियासए स भिक्ख ॥ ४ ॥ नो सङ्ग्रहमिच्छई न पूर्य, नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं । से संजए सुव्कए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्ख ।। ५ ॥ जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिणं नियच्छई । नर्नारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोऊहरूं उवेइ स मिक्स् ॥ ६ ॥ छित्रं सरं मोमं अंतिलक्लं, सुमिणं लक्खणदंडवत्थुविजं । अंगवियारं सरस्स विजयं, जे विजाहिं न जीवइ स भित्रख् ॥ ७ ॥ मंतं मूळं विविद्वं वेजनिंसं, वमणविरेयणध्मणेत्तसिणाणं । आउरे सरणं तिगिच्छियं च. तं परिचाय परिव्वए स भिक्नू ॥ ८ ॥ सत्तियगणउग्गरायपुत्ता, माहण मोह्य विविद्दा य सिप्पिणी । नो तेसि वयह सिलोगपूर्य, तं परिषाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥ निहिणो जे पव्यक्ष्मण दिद्वा, अप्पव्यक्ष्मण व संधुया हिकजा । तेसि इहलोइयफलद्वा, जो संधर्य न करेड स शिक्खा। १०॥ सयणासणपाणभोयणं, विविहं खाइमं साइमं परेसिं। अदए पिसिहिए नियंठे, जे तत्थ न पउस्तई स मिक्सू ॥ ११ ॥ जं किंचि आहारपाणगं, विविद्वं खाइमं साइमं परेसिं छद्धं । ओ तं तिविद्देण नाणुकंपे, मण-वयकायसुर्सवुडे स भिक्खु ॥ १२ ॥ आयामगं चेव जवोदणं च. सीयं सोवीरजनोदगं च । नो हीलए पिंडं नीरसं तु, पंतकुलाई परिव्वए स भिक्ख ॥ १३ ॥ सहा विविहा भवंति लोए. दिन्दा माणुस्सगा तिरिच्छा । मीमा भयभेरदा उराला. जो सोचा न विहिजाई स भिनन्तु ॥ १४ ॥ वार्य विविहं समिश्व छोए, सहिए खेयाणुगए य कोनियप्पा। पन्ने अभिभूय सम्बदंसी, उवसंते अविद्वेदए स भिक्ख्॥ १५॥ असिप्पजीवी अगिहे अमिते, जिइंदिए सञ्बक्षो विष्पमुद्धे । अणुद्धराई स्नहुअप्प-भक्खी, विचा गिहं एगचरे स भिक्खु ॥ १६ ॥ ति-वेमि ॥ इति समिक्खु जामं पण्णरसममञ्ज्ञयणं समर्त्तं ॥ १५ ॥

अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्झयणं

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं । इह सळ बेरेहिं भगवंतिहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पवता, जे भिक्यू सोचा निसम्म संजमबहुके संवरबहुके

१ न स भिक्खिति सेसी, अहवा नाणुकंपे⇒ना+अणुकंपे "ना" साहुपुरिसी विहत्यितिहुवक्कद्वविद्यदाहाराङ्णा यालवुद्वितिलाणसंजयाणसृवित्यणुकंपं काळण वेया-वर्ष करेडू ति । २ मितसत्तुविजिए रामदोसरहिए ति अहो ।

समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमते विहरेजा । कयरे खळ ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्ख सोचा निसम्म संजम-बहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभगारी सया अप्पमते विद्देजा? इमें खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं इस वंभचेरसमाहिठाणा पनता, जे भिक्ख सोचा निसम्म संजमबहुके संवरबहुके समाहिबहुके गुत्ते गुतिदिए गुत्तवंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेजा । तंजहा-विवित्तार्डं सयणासणार्डं ग्रेवित्ता हवड से निरगंथे । नी इत्बीपसुपंडगसंसत्ताई सयणासणाई सेविता हवइ से निरगंथे। तं ऋसिति चे। आयरियाह् । निर्माथस्स खलु इत्थीपसुपंडगसंसत्ताई स्वणासणाई सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पजिजा. भेदं वा लभेजा. उम्मायं वा पारणिजा, वीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा, केवलिपन्नताओं [वा] धम्माओ मंसेजा । तम्हा नो इत्बीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविता इवइ से निरगंथे ॥ १ ॥ नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निरगंथे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निर्मायस्स खलु इत्बीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स वंभचेरे संका वा कंखा वा विद्यानका वा समुप्याज्ञजा. भेदं वा लमेजा. उम्मायं वा पार्टाणजा. दीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा. केवलिपन्नताओ धम्माओ संसेजा। तम्हा [खन्न] नो इत्थीणं कहं कहेजा ॥ २ ॥ नो इत्थीणं सर्वि सश्चिसेजागए विहरिता हवड से निम्मंथे। तं कहमिति चे । आगरियाह । निम्मंथस्स खळ इत्थीहिं सर्दि सिक्सेजागयस्य बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विडियन्छ। वा समुप्पाजजा, मेदं वा लमेजा. उम्मायं वा पाउणिजा. दीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा. केवलिपश्वताओ धम्माओ भंसेजा । तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सर्वि सिन्नसेजागए विहरेजा ॥ ३ ॥ नो इत्यीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइना निज्झाइना इवइ से निर्मये । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गंयस्स खब्ध इत्थीणं इंदियाई मणोहराई मणोरमाई आक्रोएमाणस्स निज्हाय-माणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विद्गिष्ट्य वा समुप्पजिजा, मेदं वा लमेजा, उम्मायं वा पाउणिजा, वीहकालियं वा रोयायंकं हवेजा, केवलि-पनताओ धम्माओ मंसेजा । तम्हा खल्ल नो निग्मंचे इत्थीणं इंदियाई मणोहराई मणोरमाइं आलोएजा निजसाएजा ॥ ४ ॥ नो इत्बीणं इत्वंतरंसि वा द्संतरंसि वा मित्तंतरंसि वा कृह्यसहं वा दह्यसहं वा गीयसहं वा हसियसहं वा विकासहं वा कंवियसहं वा विस्ववियसहं वा सुणेता इवह से निर्माये । तं कहमिति ये । आयरियाह । निर्मायस्य सञ्च इत्यीणं कृत्तरंति या द्यंतरंति वा निर्मातरंति वा

कृह्यसदं वा रह्यसदं वा गीयसदं वा इसियसदं वा धणियसदं वा कंदियमदं वा विलवियसई वा मुणेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे संका वा कंखा वा विश्विच्छा वा समुप्पजिजा, मेदं वा लमेजा, उम्मायं वा पाउणिजा, वीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा. केवलिपनताओ धम्माओ भंसेजा । तम्हा खलु नो निमांघे इत्थीणं कुई-तरेसि वा दूर्छतरेसि वा भित्तंतरेसि वा कृड्यसहं वा कृड्यसहं वा गीयसहं वा हसियसहं वा यणियसहं वा कंदियसहं वा विलवियसहं वा स्रणेमाणे विहरेजा ॥ ५॥ नो इत्बीणं पुरुषस्यं पुरुषकीलियं अणुसरिता हवड से निरगंथे। तं कहमिति चे । आयरियाह । निर्मायस्स खल्ल इत्थीणं पुन्तरयं पुष्त्रकीलियं अणुसरमाणस्स वंभया-रिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विद्गिच्छा वा समुप्पजिजा, मेदं वा लमेजा. उम्मायं वा पाउणिजा, दीइकालियं वा रोगायंकं हवेजा, केवलिपचताओ धम्माओ भंसेजा । तम्हा खलु नो निर्माये इत्थीणं पुन्यरमं पुरवकीलियं अणुसरेजा ॥ ६ ॥ नो पणीयं आहारं आहारिता हवड़ से निग्गंथे। तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गं-थस्स खळ पणीर्यं आहारं आहारेमाणस्स चंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा विड-यिच्छा वा समुप्पजिजा, मेदं वा लमेजा, उम्मायं वा पारणिजा, बीहकालियं वा रोगायंकं इवेजा. केवलियसताओ धम्माओ भंसेजा । तम्हा खळु नो निगाये पणीयं आहारं आहारेजा ॥ ७ ॥ नो अडमायाए पाणमोयणं आहारेला हवड से निमंगे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निमांथस्स खल्ल अहमायाए पाणमीयणं आहारेमाणस्स वंभयारिस्स वंभवेरे संका वा कंखा वा विडगिच्छा वा समप्पजिजा. मेदं वा लमेखा, उम्मायं वा पाउणिजा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा. केवलि-पन्नाओ धम्माओ मंसेजा । तम्हा सद्ध नो निर्मिय अझ्मायाए पाणभीयणं आहारेजा ॥ ८ ॥ नो विभूसाणुवाई हवइ से निमाये । तं कहमिति चे । आयरियाह । बिभुसाविराए विभूसियसरीरे इत्यिजणस्स अभिलसणिजे हवइ । तओ णं इत्यिजणेणं क्षभिक्षिज्ञमाणस्य वंभगादिस्य वंभचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समप्प-जिजा. मेहं वा लगेजा. उम्मायं वा पाउणिजा. बीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा. केविकपनताओं पम्माओं अंसेजा । तम्हा सद्ध नी निगांधे विभूताणुवाई हवेजा ॥ ९ ॥ नो सहस्वरसगंबफासाणुवाई हवइ से निमांथे । सं कहमिति चे । आयरियाह । निमांबस्स खळ सहस्वरसगंबपासाववाइस्स बंभवादिस्स बंभवेरे संका वा कंखा वा विद्यापका वा समुप्रकिका, मेरं वा लमेका, उम्मार्य वा पारकिका, शैह-काहियं वा रोगायंकं हवेजा, केवरियवताओं वस्माओं संसेजा । तस्हा सद्ध नो सह-स्वरसगंबकासाखवाई भवेजा से निर्माये । इसमे वंगचेत्रसमाहिठाणे इवह ॥ १० ॥

हवंति इत्य सिलोगा। तंजहा---जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्यिजणेण य । वंभचेरस्स रक्खड़ा, आस्त्रयं तु निसेवए ॥ १॥ मणपल्हायजणणी, कामरागविवसूणी । वंभचेररओ भिक्ख, शीकहं तु विवज्जए॥ २॥ समं व संयवं शीहें, संकहं व अमिक्खणं । बंभचेररओ भिक्खु , निश्वसो परिवज्ञए ॥ ३ ॥ अंगपचंगसंठाणं , चारुक्षवियपेहियं। बंभचेररओ बीणं, चक्खुगिज्झं विवज्ञए॥ ४॥ सूह्यं रह्यं गीयं, इसियं थणियकंदियं । बंभचेररओ बीणं, सीयगिज्यं विवजए ॥ ५ ॥ हासं किइं रई दप्पं. सहसावितासियाणि य । बंभचेररओ श्रीणं, नाणुचिते कयाइ वि ॥ ६ ॥ पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवद्भुणं । बंभचेररक्षो भिक्ख्, निचसी परिवज्रए ॥ ७ ॥ धम्मलहं मियं काछे, जत्तत्वं पणिहाणवं । नाउमतं तु भंजेज्जा, वंभचेर्रश्रो समा ॥ ८ ॥ विभूसं परिवजेजा, सरीरपरिमंडणं । वंभचेररको भिक्ख. सिंगारत्थं न धारए॥ ९॥ संदे स्वे य गंघे य, रसे फासे तहेव य। पंचितिहे कामगुणे, निवसो परिकजए ॥ १० ॥ आलओ बीजणाइण्णे, बीकहा य मणोरमै। संथवी चेव नैरीणं, तासि इंदियदरिसँणं ॥ ११ ॥ कूड्यं रुइयं गीर्यं, हासभुताऽऽ-सिर्याणि य । पणीयं भत्तपाणं च. अडमायं पाणभोर्यणं ॥ १२ ॥ गत्तमसर्णमिद्धं च. कामभोगा य दुज्ज्यी । नरस्सत्तगवैतिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥ दुज्जए कामभोगे य, निष्यसो परिवजाए। संबद्धाणाणि सञ्चाणि, वजेजा पणिहाणवं॥ १४॥ धम्मारामे चरे भिक्ख, घिइमं धम्मसारही । धम्मारामे रए दंते, बंभचेरसमाहिए ॥ १५ ॥ देवदाणवर्गधव्या, जक्खरक्खसकिजरा । चंभयारि नमंसंति, दुझरे जे करंति तं ॥ १६ ॥ एस धम्मे धुवे निषे, सासए जिणवेसिए । सिद्धां सिज्यंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे॥ १७॥ ति-वेमि॥ इति वंमचेरसमाहिडाणा णामं सोळसममज्ज्यणं समर्त्तं ॥ १६ ॥

अह पावसमणिजं णाम सत्तरसममज्ज्ञयणं

जे केंद्र उ पन्यहए नियंठे, घरमं शिक्ता विणओववर्षे । शुद्धहं लहिउं बोहिलामं, विहरेज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥ सेजा दढा पाउरणंसि स्वरिष, उप्पजाई
मोतु तहेव पाउं । जाणामि जं बहुद आउग्रसि, कि नाम काहामि श्रुएण मंते ।
॥ २ ॥ जे केंद्रे उ पन्यहए, निहासीछे पनामसो । मुका पिका शहं धवरे, पावसमणे
ति शुक्दे ॥ ३ ॥ आयरियजवज्याएहिं, सुयं विणयं च नोहिए । ते चेव सिसई
बाले, पावसमणे ति शुक्दे ॥ ४ ॥ आयरियजवज्यायाणं, सम्मं न पहिलामहि ।

अप्यिष्यप् यद्धे, पानसमणे ति वुचई ॥ ५ ॥ सम्महमाणे पाणाजि, बीमाणि हरियाणि य । असंबर् संजयमन्त्रमाणे, पावसमणे ति अबई ॥ ६ ॥ संयारं फलगं पीढं, निसेजं पायकंबलं। अपमज्जियमारुहुई, पावसमणे ति शुचई ॥ ७ ॥ दवदवस्स चरई, पमते य अभिक्खणं । उक्लंघणे य चंडे य. पावसमणे ति वृचई ॥ ८ ॥ पिछलेहेइ पमते, अवउज्झइ पायकंबलं । पिछलेहा अणाउते, पावसमणे ति वृष्टे ॥ ९ ॥ पिछेडेहेर पमते, से किंचि हु निसामिया । गुरुपरिभावए निष्यं, पावसमधे त्ति वुचई ॥ १० ॥ बहुमाई पसुहरी, थदे छुदे अणिग्गहे । असंविभागी अवियत्ते, पावसमणे ति वुचाई॥ १९॥ विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रते, पावसमणे ति वृच्हें ॥ १२ ॥ अधिरासणे कुकुइए, जत्य तस्य निसीयई। आसणम्म अणाउत्ते, पावसमणे ति बुचई ॥ १३ ॥ संसरक्खपाए सुवई, सेखं न पिछछेहई । संथारए अणाउत्ते, पानसमणे ति बुचई ॥ १४ ॥ दुद्धदही निगईओ, आहारेइ अभिक्खणं । अरए य तबोक्स्मे, पावसमणे ति मुंबई ॥ १५ ॥ अत्यंतिम्म य स्रम्म, आहारेइ अभिक्सणं। चोइओ पिडचोएइ, पावसमणे ति बुचई ॥ १६॥ आयरियपरिचाई, परपासंडसेवए। गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणे ति वुचई ॥ १०॥ सयं गेहं परिश्वज, परगेहंसि वावरे । निमित्तेण य ववहरई, पावसमणे ति अश्वई ॥ १८ ॥ सम्राइपिंडं जेमेइ, नेच्छइ सामुदामियं । गिहिनिसेखं च वाहेइ, पाव-समणे ति वुचई ॥ १९ ॥ एयारिसे पंचकुसीलसंबुडे, स्वंधरे मुणिपवराण हेड्डिमे । अयंति लोए निसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्य लोए ॥ २० ॥ जे वजए एए सया उ दोसे, से मुळाए होइ मुणीण मज्हो । अयंसि लोए अमये व पूरए, आरा-हुए छोगमिणं तहा परं॥ २१॥ ति-बेमि॥ इति पायसमणिकं णाम सत्तरसममञ्जयणं समसं ॥ १७ ॥

अह संजर्जणामं अहारसममन्त्रयणं

कंपिहे नगरे रागा, उदिष्णयलवाह्ये । नामेणं संजप् नामं, मिगम्बं उविषयसप् ॥ १ ॥ ह्याणीप् गमाणीप्, रहाणीप् तहेव य । पायत्ताणीप् मह्या, मन्त्रमो परिवारिष् ॥ २ ॥ मिए छुद्धिता ह्यगमो, कंपिहुजाणकेसरे । मीप् संते मिए तत्व, बहेद रत्तमुच्छिप् ॥ ३ ॥ शह केसरिम उजाणे, अणगारे तवोषणे । सज्झाय-जनामसंज्ञेत, चम्मज्झाणं हियायद ॥ ४ ॥ अप्योवमंडवंधि, शायद क्खवियासमे । तस्तागम् मिने पार्च, बहेद से नराहिने ॥ ५ ॥ अह आसमओ रागा, खिप्पमानम्य :

सो तिहैं। हए मिए उ पासिता, अणगारं तत्थ पासहें ॥ ६ ॥ अह राया तत्व संगंती, अजगारी मणाहुओ । मए उ मंदपुष्णेणं, रसिन्द्रिण घतुणा ॥ ७ ॥ आसं विसज्जइताणं, अणगारस्स सो निवो । विषएण बंदए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥ अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए । रायाणं न पिडमंतेइ, तओ राया भयदुओ ॥ ९ ॥ संज्ञको अहमम्मीति, भगवं । बाहराहि मे । कुदे तेएण अणगारे, डहेज नरकोडिओ ॥ १०॥ अमओ परिथवा ! तब्मं, अमयदाया मवाहि य । अणिचे जीवलोगंमि, कि हिंसाए पसजसी ? ॥ ११ ॥ जया सब्वं परिचज. गंतव्यमवसस्य ते । अणिषे जीवलोगंमि, किं रजंमि पसजसी १ ॥ १२ ॥ जीवियं चेव रूवं च, विज्ञसंपायचंवलं । जत्य तं मुज्ज्ञसी रायं !, पेचत्थं नावबुज्ज्ञसे ॥ १३ ॥ दारामि य सुया चेव. मिता य तह बंघवा । जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्ययंति य ॥ १४ ॥ नीहरति मयं पुत्ता, पियरं परमहुक्खिया । पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं! तवं चरे ॥ १५ ॥ तओ तेणजिए देवे, दारे य परि-रिक्खए । कीलंतिऽने नरा रायं ।, हहुतुहुमलंकिया ॥ १६ ॥ तेणावि अं कयं कम्मं, सहं वा जह वा दुहं। कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥ १०॥ सोळण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए । महया संवेगनिञ्चेयं, समावको नराहियो ॥ १८ ॥ संज्ञा चङ्ठं रजं, निक्संतो जिणसासणे । गहुआहिस्स भग-वओ, अणगारस्स अंतिए ॥ १९ ॥ चिचा रहं पश्वइए, खत्तिए परिभासई । जहा ते दीसई रूवं. पसकं ते तहा मणो ॥ २०॥ कि नामे कि गोत्ते, करसद्वाए व भाहणे। कहं पडियर्सी बुद्धे, कहं विणीए ति वृत्रसी ? ॥ २१ ॥ संजन्नो नाम नामेणं, तहा गोरोण गोयमो । गहमाछी समायरिया, विज्ञाचरणपारगा ॥ २२ ॥ किरियं अकिरियं विणयं, अज्ञाणं च महामुणी । एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयने कि प्रभासई ॥ २३ ॥ इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिब्बूए । विज्ञान्वरणसंपन्ने, सन्ने सम्बक्तक्रमे ॥ २४ ॥ पहांति नर्ए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्यं च गई गच्छेति, चरिता धम्ममारियं ॥ २५ ॥ मायाबुइयमेयं त्र. मुसा भासा निरत्यिया । संजममाणो वि अहं, क्सामि इरियामि य ॥ २६ ॥ सब्वेए विड्या मर्जा, मिच्छा-विद्वी अणारिया । विज्ञमाण परे लोए. सम्मं जाणामि अपमं ॥ २०॥ बहुमासि महापाणे, जुर्मं बरिसस्बोदमे । जा सा पाळिमहापाली, दिन्दा दरिसस्बोदमा ॥ २८ ॥ से चुए बंसलोगाओ, माणुसं मबमागए । अप्पनी व परेसि च. आर्ड जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥ नाणारुई व इंदं व, परिवजेख संजर । अणदा वे य सन्वत्था, इह विज्ञामणुर्वचरे ॥ ३० ॥ पविक्रमाणि परिणाणं, परमंदेहि वा पुणो ।

अहो उद्विए अहोरायं, इइ विजा तबं चरे ॥ ३१ ॥ जं च मे पुच्छसी कार्छे, सम्मं सुद्धेण चेयसा । ताई पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥ किरियं च रोयई घीरे, अकिरियं परिवज्जए । दिहीए दिहिसंपन्ने, धम्मं चर सुदुवरं ॥ ३३ ॥ एयं पुण्णपयं सोचा, अत्यधम्मोवसोहियं। भरहो वि भारहं वासं, विचा कामाइ पव्यए ॥ ३४ ॥ सगरो वि सागरेतं, भरहवासं नराहियो । इस्सरियं केवलं हिचा, दयाइ परिनिव्युडे ॥ ३५ ॥ चइता भारहं वासं, चदवट्टी महिब्रुओ । पञ्चज-मन्सुवराओ, मधवं नाम महाजसो ॥ ३६ ॥ सर्णकुमारो मणुस्सिदो, चक्कवट्टी महिहिओ। पुत्तं रखे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥ ३७ ॥ चइता भारहं वासं, वक्तवद्दी महिष्टिओ । संती संतिकरे छोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥ इक्खा-गराययसभो, कुंधू नाम नरीसरो । विक्खायकिसी भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥ सागरंतं चइत्ताणं, मरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गड्मणुत्तरं ॥ ४० ॥ चहता भारहं वासं, चहता बळवाहणं । चहता उत्तमे भोए, महापडमे तवं चरे ॥ ४१ ॥ एगच्छतं पसाहिता, महिं माणनिसरणो । हरिसेणो मणुस्सिदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥ अन्निओ रायसहरसेहिं. सुपरिचाई दमं वरे। जयनामो जिणक्सायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥ दस्त्रणर्जं मुदियं, चहत्ताणं मुणी चरे । इसण्णभहो निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥ नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्तेण चोइओ । चइऊण गेहं बहदेही, सामण्णे पज्जुवद्विओ ॥ ४५ ॥ करकंड्र कलिंगेषु, पंचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य नमाई ॥ ४६ ॥ एए नरिंद्वसभा, निक्संता जिणसासणे । पुत्ते रखे ठवेऊणं, सामण्णे पज्नुवद्विया ॥ ४७ ॥ सोवीररायवसमो, चइलाणं मुणी चरे । उदायणो पव्यइओ, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥ ४८ ॥ तहेव कासिराया वि, सेको सम्बपरक्षमे । काममोगे परिश्वज, पहणे कम्ममहावर्ण ॥ ४९ ॥ तहेव विजओ राया, अणद्वाकिति प्रथए । रजं तु गुणसमिद्धं, पयहितुं महाजसी ॥ ५० ॥ तहेनुमं तवं किया, अव्यक्तिलेण षेवसा । महन्नलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥ कहं धीरो अहेकहिं, उम्मक्ती व महिं चरे ?। एए विसेसमादाय, सूरा दढ्यरकमा ॥ ५२ ॥ अर्थत-नियाणखमा, सचा मे भासिया वह । अतरिंख तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥ ५३ ॥ कर्डि धीरे अहेकर्डि, अतार्ण परियावसे । सध्वसंगिवनिम्मके, सिद्धे मबह नीरए ॥ ५४ ॥ ति-वेमि ॥ इति संजहक्रणामं अद्वारसममजस्यणं समर्च ॥ १८ ॥

अह मियापुत्तीयं णामं एग्णबीसहमं अञ्चयणं

धुरगीवे नयरे रम्मे, काण्युजाणसोहिए । राया बलभिहत्ति, मिया तस्सग्गमा-हिसी ॥ १ ॥ तेसि पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते ति विस्सुए । अम्मापिकण दहए. जुबराया दमीसरे ॥ २ ॥ नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्यिहिं । देवे दोगुंदगे चेव, निर्व सुइयमाणसो ॥ ३ ॥ मणिर्यणकोष्टिमतले, पासायालोयणाड्टिओ । ुआलोएइ नगरस्स, चलकत्तियनकरे ॥ ४ ॥ अह तत्य अइच्छंतं, पासङ्ग समणसंजयं । तवनियमसंजमधरं, सीलन्नं गुणआगरं ॥ ५ ॥ तं देहई मियापुत्ते, दिद्वीए अणि-मिसाए उ । किंह मजेरिसं स्वं. दिह्नपुरुवं नए पुरा ॥ ६ ॥ साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥ [देव-स्त्रेगचुओ संतो. माणुसं भवमागको। सिन्नाणे समुप्पने, जाई सर्ह पुराणियं ॥ } जाईसरणे समुप्पने, मियापुत्ते महिन्निए । सरई पोराणियं जाई, सामण्णं च पुरा क्यं ॥ ८ ॥ विसएहि अरजंतो. रजंतो संजर्समें य । अम्मापियरम् वागम्म. इमं वयणमञ्जवी ॥ ९ ॥ सुयाणि में पंच महत्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोषिस् । निव्विष्णकासोसि सहकंपवाओ, अणुजाणह पव्वहस्सामि अस्सो । ॥ १० ॥ अम्मताय ! मए भोगा, भुता विसफलोबमा । पच्छा कहुयविद्यागा, अणुबंधवृहावहा ॥ ११ ॥ इमं सरीरं अणिचं. असुई असुइसंभवं । असासयाबासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १२ ॥ असासए सरीरंमि, रहं नोबलमामहं । पच्छा परा व चडयब्बे. फेणबुब्बयसंबिभे ॥ १३ ॥ माणुसत्ते असारंमि, बाहीरोगाण आलए । जरामरण-घत्थंमि. खणं पि न रमामहं ॥ १४ ॥ जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा व मरणाणि य । अहो दुक्लो हु संसारो, जत्य कीसंति जंतुणो ॥ १५ ॥ खेतं बत्यं हिरण्णं च. पत्तदारं च बंधवा । चइताणं इसं देहं, गंतव्यसवसस्स मे ॥ १६ ॥ जहा किंपाग-फलाणं, परिणामो न सुंदरी । एवं भुताण भौगाणं, परिणामो न सुंदरी ॥ १७ ॥ अद्वाणं जो महंतं तु. अप्पाहेओ पवजह । गरछंतो सो हुही होइ. छहातण्हाए पीडिओ ॥ १८ ॥ एवं घम्मं अकाऊणं, जो मच्छइ परं भवं । यच्छंतो सो दुही होह, वाहीरोगेहिं पीक्कियो ॥ १९ ॥ अद्धार्ण जो महंतं तु, सपाहेको पक्कई । गच्छंतो सो सही होइ, ब्रहातण्डाविवजियो ॥ २०॥ एवं धन्यं पि काळणं, जो गच्छाइ परं मर्व । गच्छांतो सो सही होइ, अप्पक्रमे सन्नेयने ॥ २९ ॥ जहा मेडे पितिम्म, तस्स गेहस्स जो पहु । सारमंडाणि नीजेह, असारं अवउजहारु ॥ २२ ॥ एवं लोए पश्चित्तिम, कराए सर्पण यू । अप्पार्ण सारहस्सामि, तुल्मेति अक्सकियो

॥ २३ ॥ तं चितम्मापियरो, सामण्णं पुत्त ! तुचरं । गुणाणं तु सहस्ताई, धारेय-व्याई भिक्खुणा ॥ २४ ॥ समया सब्बभूएसु, सनुभित्तेसु वा जगे। पाणाइवायविरई, जावजीवाए दुक्ररं ॥ २५ ॥ निमकालऽप्यमत्तेणं, मुसावायविवज्रणं । भासियव्वं हियं समं, निमाउत्तेण दुकरं ॥ २६ ॥ दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं । अणवज्जेसणिजस्स, मिण्हणा अवि दुक्तरं ॥ २७ ॥ विरई अवंभचेरस्स, कामभोगर-सञ्जूणा । उर्ग महत्वयं बंभं, घारेयव्यं सुदुक्तरं ॥ २८ ॥ धणधन्नपेसवरगेसु, परि-ग्गह्विवज्जणं। सञ्जारंभपरिचाओ, निम्ममत्तं सुदुक्तरं॥ २९॥ चउव्विहे वि आहारे, राईमीयणवज्जणा। सिन्नहीसंचओ चेव, बजेयन्वी सुदुक्तरं ॥ ३० ॥ छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंसमसगवेयणा । अक्कोसा दुक्खसेखा य, तणफासा जक्कमेव य ॥ ३९ ॥ तालणा तजणा चेव, वहबंघपरीसहा । दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलामया ॥ ३२ ॥ काबोया जा इमा वित्ती, केसलोबो य दारुणो । दुक्खं वंभव्वयं घोरं, धारेलं च महप्पणो ॥ ३३ ॥ सहोइओ तुमं पुत्ता !, सुकुमालो समज्जिओ । न हु सि प्रभू तुमं पुत्ता !, सामण्णमणुपाळिया ॥ २४ ॥ जावजीवसविस्सामो, गुणाणं तु महन्मरो । गुरुओ लोहभारुव्य, जो पुता होइ दुव्बहो ॥ ३५ ॥ भागासे गंगसीउम्ब, पश्चिसोउन्य दुत्तरो । बाहाहिं सागरी चेव, तरियन्यो गुणोदही ॥ ३६ ॥ वालुया क्वले चेव, निरस्साए उ संजमें। असिवारागमणं चेव, दुक्ररं चरिउं तवी ॥ ३०॥ अहीवेगंतदिद्वीए, चरित्ते पुत्त ! दुक्तरे । जवा लोहमया चेव, चावेयव्या छड्करं ॥ ३८ ॥ जहा अग्निसिहा दिता, पाउं होइ सुदुक्तरा । तहा दुक्तरं करेउं जे, तारुणे सम्मानाषं ॥ ३९ ॥ जहा दुक्खं भरेजं जे, होइ वायस्स कोत्थलो । तहा दुक्खं करेलं जे, की[व]बेणं समणत्तणं ॥ ४० ॥ जहा तुलाए तोलेलं, दुकरो मंदरो गिरी । सहा निहुयं नीसंकं, दुक्करं समजत्तणं ॥ ४१ ॥ जहा भुयाहिं तरितं, दुक्करं रयणायरो । तहा अणुक्संतेणं, दुक्तं दमसागरो ॥ ४२ ॥ मुंज माणुस्तए भोए, पंचलक्कणए तुमं । अत्तमोगी तमो जागा !, पच्छा धम्मं वरिस्सित ॥ ४३ ॥ सो बेइ अम्मा--पियरो, एवमेर्व जहा कुड़े। इह लोए निप्पियासस्स, नत्थि किंचिनि दुइरं ॥ ४४॥ सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणंतसो । मए सोढाओ मीमाओ, असई दुक्सभयाणि यं मु ४५ ॥ बरामस्णकंतारे, चाउरंते भयागरे । मया सोढाणि मीमाणि, अम्माणि अर्गाचि व ॥ ४६ ॥ बहा इहं अगणी उन्हों, एक्तेंडर्णत्युको तर्हि । नरम्स नेयणा उच्हा, श्रसाया बेड्या संयू ॥ ४७ ॥ जहा हर्द इमे श्रीयं, एत्तोऽमंत्रमुणी तहि । नरएषु क्षेत्रमा सीवा, भसाया वेदवा गए ॥ ४८ ॥ करेती केंदुकुंगीस, उद्वयाची अबोतिरो । बुवासणे अंबेतिना, पक्षपुन्नो अर्थतसो ॥ ४९ ॥ महादवनिगर्सकारी, A Halle

महंमि वहरवालुए। कलंबवालुयाए य, दहूपुच्चो अणंतसो॥ ५० ॥ रसंतो बंहुकुंमीछ, उड्ढं बद्धो अवंचवो । करवत्तकरकयाईहिं, क्रिजपुञ्चो अणंतसो ॥ ५९ ॥ अइतिक्ख-कंटगाङ्को, तुंगे सिंबलिपायने । खेबियं पासबद्धेणं, कड्रोकड्राहिं दुइरं ॥ ५२ ॥ महाजंतेस उच्छू बा, आरसंतो सुमेरवं। पीलिओमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसी ॥ ५३ ॥ कुवंती कोलपुणगृहिं, सामेहिं सबलेहि य । पाडिओ फालिओ छिन्नो, विष्फुरंतो अपेगसो ॥ ५४ ॥ असीहि अयसिवण्णाहिं, भेलेहिं पर्हिसेहि य । छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य. ओडण्णो पावकम्मुणा ॥ ५५ ॥ अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्हो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥ हुयासणे जलंतम्मि, चियास महिसो विव। दच्चो पक्षो य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ॥ ५७॥ बला संडासतुंडेहि, लोहतुंडेहि पनिखहि । विलुत्तां विलवंतो हं, टंकगिदेहिंऽणंतसो ॥ ५८ ॥ तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणि नई । जलं पाहिं ति चितंतो, खर-धाराहिं विवाइओ ॥ ५९ ॥ उण्हाभितत्तो संपत्तो. असिपनं महावणं । असिपतेहिं पडंतेहिं, छित्रपुरुषो अणेगसो ॥ ६० ॥ सुगगरेहिं सुसंढीहिं, स्टेहिं सुसटेहि य । गयासंभग्गानेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसी ॥ ६९ ॥ खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छरियाहिं कप्पणीहि य । किपश्रो फालिओ छिनो, उन्निती य अणेगसी ॥ ६२ ॥ पासेहिं कृडजाछेहिं, मिओ वा अवसी अहं। वाहिओ बदरुद्धो वा, बहुसी चेव विवाहओ ॥ ६३ ॥ गरूहिं मगरजारोहिं, मच्छो वा अवसो अहं । उक्रिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसी ॥ ६४ ॥ बीदंसपृहिं जालेहिं, छेप्पाहिं सरुणो विव । गहिओ लम्गो बढो य. मारिओ य अणंतसो ॥ ६५ ॥ कुहाडफरसुमाईहिं, बहुईहिं दुमो विव । कुट्टिओ फालिओ छिषो, तच्छिओ य अणंतसो ॥ ६६ ॥ चवेंडसुद्धि-माईहि, कुमारेहि अयं पिव। ताढिओ कुट्टिओ मिलो, चुण्पिओ य अणंतसो॥ ६७॥ तनाइं तंबछोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य । पाइओ कळकळंताइं, आरसंतो सुमेरवं ।। ६८ ॥ तुई पियाई मंसाई, खंडाई सोक्षगाणि य । खाविमीमि समंसाई, अम्पिव-ण्णाइंडणेगसो ॥ ६९ ॥ तुई पिया ग्रुरा सीहू, मेरओ य महूणि य । पाइओमि जलं-तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥ ७० ॥ निषं भीएण तस्येण, दुहिएण बहिएण ज । परमा दुहसंबद्धा, वेवणा वेइया मए ॥ ७१ ॥ तिम्बबंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदु-स्तहा । महन्मयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥ ७२ ॥ नारिसा माणुसे ळोए. ताया ! दीसंति वेयणा । एशो अषंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥ सन्ब-भवेषु अस्ताया. वेयणा वेद्या मए। निमेसंतरनितं पि, अं साया निस्य वेयणा ॥ ७४ ॥ तं बिंतम्मापियरो. छंदेणं युत्त ! पन्यया । नवरं पुण सामण्णे. इक्खं

निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥ सो बेइ अम्मापियरो !, एवमेयं जहा फुडं । पडिकम्मं को कुणई, अरण्णे मियपविखणं ॥ ७६ ॥ एगच्यूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिरो । एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥ जहा मिगस्स आयंको, महार-ण्णंमि जायई। अच्छंतं इक्खमूलंमि, को णं ताहे तिगिच्छई॥ ५८॥ को वा से ओसहं देइ ?, को वा से पुच्छई सुहं ?। को से भत्तं च पाणं वा, आहरित पणामए ? ॥ ७९ ॥ जया य से सुद्दी होइ, तया गच्छह गोयरं । भत्तपाणस्स अद्वारं, बह्नराणि सराणि य ॥ ८० ॥ खाइता पाणियं पाउं, बह्नरेहिं सरेहि य । सिगवारियं चरिताणं, गच्छई मिगचारियं ॥ ८९ ॥ एवं समुद्विओ भिक्खु, एवमेव अणेगए । मिगचारियं चरिलाणं, उन्नं पक्रमई दिसं ॥ ८२ ॥ जहां मिए एग अमेगचारी, अणेगवासे धुवगो-बरे य । एवं मुणी गोयरियं पविद्वे, नो हीलए नो वि य खिंसएजा ॥ ८३ ॥ मिग-चारियं चरिस्सामि, एवं पुता ! जहासुहं । अम्मापिऊहिंऽणुद्धाओ, जहाइ उवहिं तहा ॥ ८४ ॥ मिमनारियं चरिस्सामि, सन्बदुक्खविमोक्खणि । तुन्मेहि अन्मणुनाओ, गच्छ पुत्त । जहासुहं ॥ ८५ ॥ एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणिताण बहुविहं । समत्तं छिंदई ताहे, महानागोव्य कंचुयं ॥ ८६ ॥ इड्डी बित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ । रेणुयं व पडे लमां, निद्धणिताण निमाओ ॥ ८७ ॥ पंचमहव्ययज्ञतो, पंचसमिओ तिग्रत्तिगुत्तो य । सर्व्मितरबाहिरए, तबोकम्मंमि उज्जुओ ॥ ८८ ॥ निम्ममो निरहं-कारी, निस्तंगी चत्तगारवी। समी य सन्वभूएस, तसेस थावरेस य॥ ८९॥ लामा-लाभे सुष्टे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समरे निंदापसंसासु, तहा माणावमाणको ॥ ९०॥ गारवेसु कसाएस, दंडसक्रमएस य। नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अवंधणो ॥ ९१॥ अणिस्सिओ इहं छोए, परछोए अणिस्सिओ । नासीचंदणकमो य, असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥ अप्पसत्येहिं दारेहिं, सन्बओ पिद्दियासवे । अज्ञाप्पज्ञाणजोगेहिं, पसत्यदमसासगे ॥ ९३ ॥ एवं नाणेण चरणेण, इंसणेण तवेण य । भावणाहि य युदाहि, सम्मं भावितु अप्पर्य ॥ ९४ ॥ बहुयाणि उ वासाणि, सामण्यमणुपालिया । मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९५ ॥ एवं करंति संबद्धा, पंडिया पविय-क्खणा । विभियदंति श्रोगेसु, मियापुत्ते जहा रिसी ॥ ९६ ॥ महायमावस्स महाज-सस्स, मियाइपुत्तस्स निसम्म भाषियं । तबय्यहाणं चरियं च उत्तमं, गइप्यद्वाणं च तिलोगविस्तुयं ॥ ९७ ॥ विवाणिया दुक्खविबद्धणं वर्ण, ममत्तवंधं च महाभयावहं । ह्यावर्ह धम्मध्रं क्षणुत्तरं, घारेज निव्वाणगुणावरं महं ॥ ९८ ॥ ति-वेमि ॥ इति मियाप्चीयं णामं प्रमुणवीसङ्मं अज्ञयणं समर्त ॥ १९ ॥

अह महानियंठिज्ञनामं बीसहमं अज्झयणं

सिद्धाणं नमो किया, संजयाणं च भावलो । अत्यधममगई तथं, अणुसिद्धं मुणेह मे ॥ १ ॥ प्रभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिबो । विहारवर्त निज्ञाओ, मंडि-कुच्छिसि चेईए ॥ २ ॥ नाणादुमलयाइण्णं, नाणापिक्सनिसेवियं । नाणाकुमुमनंछ्यं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥ तत्थ सो पासई साहुं, संजयं असमाहियं । निसर्ण रुक्खमूलम्मि, मुकुमालं मुहोइयं ॥ ४ ॥ तस्स रूवं त पासिता, राइणो तम्मि संजए । अञ्चतपरमो आसी. अउलो रूवविम्हस्रो ॥ ५ ॥ अहो ! वण्णो अहो ! हवं, अहो! अज्बस्स सोमया । अहो! बंती अहो ! मुत्ती, अहो! भोगे असंगया ॥ ६ ॥ तस्स पाए उ वंदिता, काऊण य पयाहिणं । नाइद्रमणासभे, पंजली पिंडपुच्छई ॥ ७ ॥ तरुणो सि अजो ! पव्चइओ, भोगकारुम्य संजया । उबद्विको सि सामण्ये, एयमुद्रं. सुणेमि ता ॥ ८ ॥ अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्ञई । अणुकंपगं सुर्हि बावि, कंचि नामिसमैमहं ॥ ९ ॥ नओ सो पहांसओ राया, सेणिओ मगहा-हिबो। एवं ते इक्टिमंतस्स, कहं नाहो न विज्वई ॥ १० ॥ होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया ! । मित्तनाईपरिबुढो, माणुस्सं खु सुदुक्कं ॥ ११ ॥ अप्पणा वि अणाही ति. सेणिया! मगहाहिषा! । अप्पणा अणाही संतो, कहं नाही मवि-स्सिति। ॥ १२ ॥ एवं बुत्तो नरिंदो सो, झुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं अस्सुयपुर्व्यः साहुणा विम्हयभिक्षो ॥ १३ ॥ अस्सा हृत्यी मणुस्सा मे, पुरं अंतेखरं च मे । भुंजामि माणुसे भोए. आणा इस्सरियं च मे ॥ १४ ॥ एरिसे संपक्षगम्मि, सब्ब-कामसमप्पिए। कहं अणाहो मवई, मा हु भंते! मुखं वए॥ १५॥ न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्यं पोत्यं च पत्थिवा!। जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा! ॥ १६ ॥ सुणेह मे महाराय!, अव्यक्तिण चेयसा । जहा अणाहो भवई, जहा मेरं पवत्तियं ॥ १७ ॥ कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरमेयणी । तत्व आसी पिया मज्य. प्रस्थापसंच्यो ॥ १८ ॥ पढमे वए महाराय!. भरला मे अच्छिवेयणा । अहोत्या विउलो दाहो, सञ्चगतेस पत्थिवा ! ॥ १९ ॥ सत्यं जहा परमतिक्लं, सरीरविवरं-तरे । आवीलिज अरी कुढो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥ तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तर्मनं च पीडई। इंदासणिसमा घोरा, चेयणा परमदारुमा ॥ २१ ॥ जबद्विया मे आयरिया, विजामंततिगिच्छमा । अवीया सत्यकुसला, संतम्हनिसाद्या ॥ २२ ॥ ते में तिमिच्छं कुर्वित, बालप्पायं जहाहियं। न य दुक्खा बिमोयंति, एसा मज्जा

९ उजाणे ।

अणाह्या ॥ २३ ॥ पिया मे सब्बसारं पि. दिजाहि सम कारणा । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाह्या ॥ २४ ॥ माया वि मे महाराय !, पुत्तसोगदुहृहिया । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥ भागरा मे महाराय!, सगा जेहुकणिद्रुगा । न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाह्या ॥ २६ ॥ भहणीओ में महाराय!, सगा जेड्डकणिड्डगा । न य दुक्खा विमीयंति, एसा मज्ज्ञ अणाह्या ॥ २७ ॥ भारिया मे महाराय !. अण्रता अणुव्वया । अंसुपूर्णिहें नयणेहिं. उर्र में परिसिंचई ॥ २८ ॥ अर्ज पाणं च ण्हाणं च. गंधमछविलेवणं । मए नायमनायं बा. सा बाला नेव अंजई ॥ २९ ॥ खणं पि मे महाराय !. पासाओ वि न फिर्ट्ड । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्ज अणाहया ॥ ३० ॥ तओ हं एवमाहंस्र. हुक्खमा हु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥ ३१ ॥ सई च जह मुखेजा. वेयणा विरुक्ता इस्रो । खंतो दंतो निरारंसो, पञ्चए सणगारियं ॥ ३२ ॥ एवं च चितइताणं, पद्धत्तोमि नराहिवा ! । परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥ तओ कक्के पभायंमि, आपुच्छिताण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो. पव्य-इक्षोऽणगारियं ॥ ३४ ॥ तो हं नाहो जाओ, अप्पणी य परस्स य । सन्वेसि चेव भूयाणं, तसाणं थावराण य ॥ ३५ ॥ अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा घेणू, अप्पा में नंदर्ण वर्ण ॥ ३६ ॥ अप्पा कता विकता य, दुहाण य सहाण य । अप्पा मित्तसमितं च, दुप्पद्विय सुपद्विओ ॥ ३७ ॥ इमा ह अशा वि अणाहया निवा!, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि । नियंठधम्मं लहियाण वी जहा, सीयंति एगे बहकायरा नरा॥ ३८॥ जो पव्यहत्ताण सहव्ययाई, सम्मं च नो फासयर्ड प्रमाया । अतिस्पहप्पा य रसेस्र विद्धे, न मूलओ क्रिकड बंघणं से ॥ ३९ ॥ आउत्तया जस्स न अत्य काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए । आयाणनिक्खेव-हुगुंछणाए, न बीरजायं अणुजाइ मग्यं ॥ ४०॥ चिरं पि से मुंडरुई भविता. अधिरव्वए तवनिवमेहिं महे। चिरं पि अप्पाण किलेसहत्ता, न पारए होह ह संपराए ॥ ४१ ॥ प्रोहे व मुद्री जह से असारे, अयंतिए कृडकहावणे वा । राडामणी वेरुलियप्पगासे, अमहरचए होइ हु जाणएस ॥ ४२ ॥ कुसीलिकेंगं इह धारहत्ता, इसिज्झयं जीविय बृहङ्ता । असंजए संजयरूपमाणे, विणिधायमागच्छह से चिरं पि ॥ ४३ ॥ बिसं तु पीयं जह कालकृष्टं, हणाइ सत्यं जह कुम्महीयं । एसो वि घम्मो विसश्चोबवची. इणाइ वेंबाल इवाविबची ॥ ४४ ॥ जे लक्सणं सुविण पर्वजमाणे, निमित्तकोत्तहरूसंप्यादे । इत्हेडविज्यासवदारजीयी, न गच्छई सरणं तम्सि काले म ४५ म तसंतमेणेव उ से असीले. समा दृष्टी विप्परिमामुचेइ । संभावई नर्गति-

रिक्सजोणि, मोणं विराहेतु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥ उद्देखियं कीयमडं नियागं, न मंचई किंचि अणेसणिजं। अग्गी विवा सञ्चमक्खी भविता, इत्ती चुए गच्छा कह पावं ॥ ४७ ॥ न तं अरी कंठछेना करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पया । से नाहिई मन्तमुहं तु पत्ते, पञ्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥ निरद्विया नगगर्हं उँ तस्स, जे उत्तमद्रे विवजासमेइ। इमे वि से नत्यि परे वि लोए, दुहुओ वि से झिज्झड़ तत्य खोए ॥ ४९ ॥ एमेवऽहाछंदकुसीलस्ये, मग्गं विराहितु जिलुत्तमाणं । कुर्री विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरद्वसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥ सोखाण मेहावि! सुभासियं इमं, अणुसासणं नापगुणोववेयं । मन्गं कुसीलाण जहाय सन्वं. महानियंठाण वरा पहेणं ॥ ५१ ॥ चरित्तमाबारगुणिक्य तओ, अणुत्तरं संजम पालियाणं । निरासवे संखिवयाण कम्मं, उनेइ ठाणं विउल्लक्तमं धुवं ॥ ५२ ॥ एबुरगदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापहने महायसे । महानियंठिज्ञामणं महासुयं, से कहेई महया वित्थ-रेणं॥ ५३ ॥ तुद्धो य सेणिओ राया, इणमुदाहु क्यंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुद्ध में उनदंशियं ॥ ५४ ॥ तुःज्यं सुलद्धं ख मणुस्राजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेरी । तुब्से सणाहा य सर्वथवा य, जं मे ठिया मर्गे जिलुसमाणं ॥ ५५ ॥ तं सि नाहो अणाहाणं, सन्वभूयाण संजया । खामेमि ते महाभाग !, इच्छामि अणु-सासिउं ॥ ५६ ॥ पुच्छिकण मए तुन्मं, साणविष्यो उ जो कस्रो । निमंतिया य भोगेहि, तं सब्वं मरिसेहि मे ॥ ५० ॥ एवं धुणिताण स रायसीहों, अणगारसीहं परमाड भक्ति । सक्षोरोहो सपरियणो सबंघवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा॥ ५८॥ कसियरोमक्वो, काळण य पयाहिणं । अभिनंदिळण खिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥ इयरो वि गुणसमिद्धो, विगुत्तिगुत्तो तिदंडनिरओ य। बिह्रग इव विष्पमुक्को, विहरह वसुहं विगयमोहो ॥ ६०॥ ति-वेमि ॥ इति महानियंतिः सनामं बीसर्मं अज्ञायणं समसं ॥ २०॥

अह समुद्रपालीयं णामं एगबीसहमं अन्स्रयणं

चंपाए पालिए नाम, सावए आसि चाणिए। महाबीरस्स भगवओ, सीसे सी उ महप्पणो ॥ १ ॥ निम्मंथे पावयणे, सावए से नि कोनिए। पोएण ववहरंते, पिहुंढं नगरमागए॥ २ ॥ पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं। तं ससत्तं पहनिज्ञा, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥ अह पालियस्स घरणी, समुहन्मि पसवई। अह वालए

१ निर्द्वमे जिनकपो वि ।

तर्हि जाए, समुद्दपालिति नामए॥ ४॥ खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं। संबद्धई तस्स घरे, दारए से सुहोहए ॥ ५ ॥ बावत्तरी कलाओ य, सिक्खई नीइ-कोविए । जोव्वणेण य संपन्ने, युस्वे पियदंसणे ॥ ६ ॥ तस्स स्ववहं भजं, पिया आणेइ स्विणि । पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदओ जहा ॥ ७ ॥ अह असया कयाई, पासायालोयणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥ तं पासिकण संविग्गो. समुद्दपालो इणमञ्जवी । अहोऽसुभाण कम्माणं, निजाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥ संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमर्खवेगमागओ । आपुच्छऽम्मा-पियरो, पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥ जहिनु समांथ महाकिलेसं, महंतमीहं किसणं भयावहं । परियायधम्मं चऽभिरोयएजा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥ अहिंससचं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च । पिटविजिया पंचमह्व-याणि, चरिज धम्मं जिणदेसियं विद् ॥ १२ ॥ सन्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, स्रंति-क्लमं संजयबंगयारी । सावज्जोगं परिवज्जयंतो, चरिज भिक्ख् ससमाहिइंदिए ॥ १३ ॥ काळेण कालं विहरेज रहे, बलाबलं जाणिय अप्पणो य । सीहो व सहेण न संतरेजा, नयजोग सुचा न अभन्ममाहु ॥ १४ ॥ उनेहमाणो उ परिवर्णजा, पियमप्पियं सन्व तितिक्खएजा । न सन्व सन्वत्थऽभिरोयएजा, न यावि पूर्य गरहं च संजए ॥ १५ ॥ अणेगछंदा इह माणवेहिं, जे भावओ संपमरेह भिक्ख । भगभेरवा तत्य उड़ित मीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥ परीसहा दुव्यसहा अणेगे, सीयंति जल्था बहुकायरा नरा । से तत्थ पत्ते न बहिज भिक्ख, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७॥ सीओसिणा दंसमसा य फासा, आयंका बिविहा फुसंति देहं। अकुकुओ तत्थऽहियासएचा, रयाइं खेवेज पुराक्याइं॥ १८॥ पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्क सबयं वियक्कणो। मेरव्य वाएण अकंपमाणो, परीसहे आयगुरो सहेजा ॥ १९ ॥ अणुजए नावणए महेसी, न शांवि पूर्व गरहं च संजप् । स उज्जुमानं पडिचज्ज संजप्, निव्वाणमार्गं विरप् उवेह ॥ २०॥ अरह-रइसहे पहीणसंबंदे, बिरए आमहिए पहाणवं । परमद्वपएहि चिद्वई, छिन्नसीए अममे अकिचणे ॥ २१ ॥ विवित्तस्वयणाङ् अएज ताई, निरोवस्थ्वाइ असंधडाई । इसीहिं विष्णाई महावसेहिं, काएण फासेज परीसहाई ॥ २२ ॥ समाणनाणीवगए महेसी, अणुत्तरं वरितं धम्मसंवयं । अणुत्तरे नाणधरे वर्तसी, ओभासई स्रिए वंतस्थिको श २३ ॥ दुविहं खकेळण य पुण्णपार्थ, निरंगणे सन्तओ विष्पमुद्धे । तरिता समुद् व सहासवीर्ष, ससुक्पाके अपुनागमं गए ॥ २४ ॥ ति-वेसि ॥ इति ससुद्व-पाछीयं णामं दगवीसहमं अञ्चयमं समसं ॥ २१ ॥

अह रहनेमिजनामं बाबीसहमं अज्झयणं

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिङ्किए । वस्रदेवुत्ति नामेणं, रायस्वस्त्वण-संजुए ॥ १ ॥ तस्स भजा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा । तासि दोण्हं दुवे पुत्ता, इद्वा रामकेसवा ॥ २ ॥ सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिश्रिए । समुद्दविजए नामं, रायळक्लणसंजुए ॥ ३ ॥ तस्त भजा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो । भगवं अरिद्रनेमित्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥ सोटरिद्रनेमिनामो उ. स्वन्सणस्सर-संजुओ । अद्वसहस्सलम्बणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥ वजारिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोयरो । तस्स रायमईकनं, भजं जायर केमवो ॥ ६ ॥ अह सा रायवरकन्ना, मुसीला चारुपेहणी । सव्यलक्खणसंपन्ना, विजसोयामणिप्पमा॥ ७॥ अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्रियं । इहागच्छउ कमारो, जा से कनं ददामि हं ॥ ८ ॥ सन्वोसहीहिं ण्हनिओ, कयकोउयमंगरी । दिन्यज्यलपरिहिओ, आभरणेहिं विभृतिको ॥ ९ ॥ मत्तं च गंधहर्त्य च, वासुदेवस्स जेट्टगं । आरुढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥ अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ । दसार-चक्केण य सो, सन्दओ परिवारिओ ॥ ११ ॥ चउरंगिणीए सेणाए, रङ्गाए जहकमं । तुरियाण सिन्ननाएणं, दिञ्चेणं गगणं फुसे ॥ १२ ॥ एयारिसीए इङ्गीए, जुत्तीए उत्त-माइ य । नियगाओ भवणाओ, निजाओ विष्हर्पुगवो ॥ १३ ॥ अह सो तत्य निज्जेतो, दिस्स पाणे भयहुए । वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥ जीवियंतं तु संवत्ते, मंसद्वा भिक्कयव्वए । पासिता से महापन्ने, सार्हि इणमञ्जवी ॥ १५ ॥ करस अहा इमे पाणा, एए सब्वे सुहेसिणो। वाडेहिं पंजरेहिं च, सिबस्दा य अच्छिहिं॥ १६॥ अह सारही तभी मणइ, एए भरा उ पाणिणो । तुज्हां विवाहकज्जम्म, भोयावेउं बहुं जणं ॥ १७ ॥ सोकण तस्स वयणं, बहुपाणिविणासणं । चितेइ से महापन्ने, साणुकोसे जिएहि का। १८॥ जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सबह जिया। न मे एवं त निस्सेसं. परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥ सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो । आभरणाणि य सम्बाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥ मणपरिणामो य क्लो, देवा य जहोहयं समोइण्णा । सव्विद्शीइ सपरिसा, निक्समणं तस्स काउं जे ॥ २१ ॥ देवमणुस्स-परिवडी, सीयारयणं तथो समारूढो । निक्समिय बारगाओ, रेक्ययम्म ठिओ भगवं ॥ २२ ॥ उजाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ । साहस्सीइ परिवृत्तो,

१ कोडवं-मुसलाइणा जिलाडफासो, मंगलं-दृष्ट्विश्वक्षसङ्ख्याचंदणाइणा किर्जतं विहाणं, तस्समयपचलियवेवाहियरीहकुलमेराजुसारकविको ति अञ्जो ।

अह निक्खमई उ विताहि ॥ २३ ॥ अह से सुगंघगंधीए, तुरियं मत्यकुंचिए । सयमेव छुंचई केसे, पंचमुद्वीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥ वासुदेवो य णं भणइ, छत्तकेसं जिइंदियं । इच्छियमणीरहं तुरियं, पावस तं दमीसरा ! ॥ २५ ॥ नाणेणं दंसणेणं च, चरितेण तहेव य ! खंतीए मुत्तीए, वहुमाणी भवाहि य ॥ २६ ॥ एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहु जणा । अस्ट्रिणेमिं वंदित्ता, अइगया वारगापुरि ॥ २७ ॥ सोऊण रायकना, पव्यजं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा. सोगेण उ सम-च्छिया ॥ ६८ ॥ राईमई विचितेइ, घिरत्य मम जीवियं । जाऽहं तेण परिचता. सेयं पञ्जइउं मम ॥ २९ ॥ अह सा भमरसिन्नमे, कुन्दफणगसाहिए । सयमेव ह्यंनई केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥ ३०॥ वासुवेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं । संसारमागरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥ ३१ ॥ सा पव्यक्या संती, पव्यावेसी र्ताहं वहं । सयणं परियणं चेव, सीलवंता वहस्त्रया ॥ ३२ ॥ गिरिं रेषययं जंती. वासेणुळा उ अंतरा । वासंते अंघयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥ ३३ ॥ चीवराइं विसारती, जहाजायति पासिया। रहनेमी भगगचित्तो, पच्छा दिह्रो य तीइ वि ॥ ३४ ॥ भीया य सा तहिं दड्डं, एगंते संजयं तयं । वाहाहिं काउं संगोप्कं, वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥ अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ । भीयं पवेर्वियं दहं, इमं वक्सुदाहरे ॥ ३६ ॥ रहनेमी अहं भदे !, सुरुवे ! चारुभासिणी ! । मसं भयाहि न्ययु !, न ते पीला भविस्सई ॥ ३० ॥ एहि ता भुंजिमो मोए, माणुस्सं बु मुदुछहं । भुत्तमोगी तक्षो पच्छा, जिणमग्गं चरिस्समो ॥ ३८ ॥ दहण रहनेसिं तं. भगुजोयपराजियं । राइमाई असंभंता, अप्पाणं संबरे तहिं ॥ ३९ ॥ अह सा रायवरकहा, सुद्विया नियमञ्बए। जाई कुलं च सीलं च, रक्समाणी तयं वए ॥ ४०॥ जइऽसि रूबेण वेसमणो, ललिएण नलकूयरो । तहा वि ते न इच्छामि, जहऽसि सक्खं पुरंदरी ॥ ४१ ॥ पक्खंदे जलियं जोहं, धूमकेलं दुरासयं । नेच्छंति बंतरं मोतं. कुळे जाया अगंधणे ॥ ४२ ॥ थिरत्यु तेऽजसोकामी, जो नं जीविय-कारणा। वंतं इच्छिति आवेउं, सेगं ते मरणं भवे ॥ ४३ ॥ अहं च भोगरायस्स. तं च सि अंधगवण्डिणो । मा कुछै गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ४४ ॥ जह तं काहिति भावं, जा जा दिच्छति नारिको । वायाविद्धोव्य इतो, अद्विअप्पा भवि-स्पति ॥ ४५ ॥ गोवाको भंडवाको बा, बहुा तहव्याणिस्सरो । एवं अणिस्सरो तं पि. सामण्यस्य भविस्तास ॥ ४६ ॥ कोहं माणं निगिण्हिला, मार्थ स्त्रेमं व सञ्चसो । इंटियाई बसे काउं, बापाणं उनसंहरें ॥ ४७ ॥ तीसे सो वयणं सोचा, संजयाए द्यसासियं । अंक्रसेण जहा नागी, धम्मे संपिद्यबङ्खी ॥ ४८ ॥ मणगुक्ती वयगुक्ती,

कायगुत्तो जिइंदिओ । सामण्णं निचलं फासे, जावजीवं दढव्यओ ॥ ४९ ॥ उग्गं सवं वित्ताणं, जाया दोष्णि वि केवली । सन्वं क्रमं सवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणु-तरं ॥ ५० ॥ एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा । विष्यदंति मोगेस्र. जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ५९ ॥ ति÷बेमि ॥ इति रहनेमिजनामं बावीसङ्मं अज्ययणं समन्तं ॥ २२ ॥

अह केसिगोयमिज्ञणामं तेवीसइमं अज्झयणं

जिणे पासित्ति नामेणं, अरहा लोगपूर्वो । संबुद्धप्पा य सव्वज्नु, घम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥ तस्स कोगपइंबस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विजाचरणपार्गे ॥ २ ॥ ओहिनाणसुए वृद्धे, सीससंघसमाउछे । गामाणुगामं रीयंते, सावर्त्थि पुरमागए ॥ ३ ॥ तिंद्यं नाम उज्जाणं, तम्मी नगरमंडले । फासुए सिज-संयारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥ अह तेणेव कालेणं, धम्मतित्थयरे जिणे । भगवं वद्धमाणिति, सञ्बलोगंमि विस्तुए ॥ ५ ॥ तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे । भगवं गोयमे नामं, विज्ञानरणपारए ॥ ६ ॥ बारसंगविक बुद्धे, सीस-संघसमाउढे । गामाणगामं रीयंते. सो वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥ कोइगं नाम उज्जाणं, तम्मी नगरमंडले । फासुए सिजासंबारे, तत्य वासमुवागए ॥ ८ ॥ केसी कुमारसमणे. गोयमे य महायसे । उभको वि तत्य विहरिस, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥ उमओ सीससंघाणं, संजयाणं तबस्सिणं । तत्व चिंता समुप्पना, गुण-बंताण ताइणं ॥ १० ॥ केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो । आयार-धम्मपणिही. इसा वा सा व केरिबी? ॥ ११ ॥ चाउजामी य जो धम्मो. जो इसो पंचितिक्को । देतिको बद्धमाणेण, पासेण व महामुणी ॥ १२ ॥ अचेलको य जो घरमो, जो इसो संतरतारो । एग कजपवनाणं, विसेसे कि नू कारणं? ॥ १३ ॥ अह ते तत्थ सीसाणं, विज्ञाय पवितक्षियं । समागमे क्यमई, उमधो केसिगोयमा ॥ १४॥ गोयमे पिकस्वस् , सीससंघसमाउछे। जेड्रं कुरुमवेक्संतो, लिंद्र्यं वणमागळो ।। १५॥ केसी क्रमारसम्मे, गोयमं दिस्समाग्यं। परिकर्व परिवर्ति, सम्बं संपंडियकाई ॥ १६ ॥ पळालं फासुयं तस्य, पेचमं कुसराणाणि य । गोयमस्य निसेजाए, खिप्पं संपंपाकए ॥ १७ ॥ केसी कुमारसम्बंध, गोवसे य महायसे । उनको निसण्या सोहंति, चंदस्रसमप्पमा ॥ १८ ॥ समागया बहु तत्व, पाउंडा कोउना मिया ।

९ संताणीयसिस्से शि अङ्को । २ अण्णामिको ।

निहत्याणं अणेगाओ, साहरुसीओ समागया ॥ १९॥ देवदाणवर्गधव्या, जक्ख-रक्सतकिसरा । अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥ पुच्छामि ते महाभाग!, केसी गोयममञ्जवी। तक्षो केसि वुवंतं तु. गोयमो इणमञ्जवी ॥ २१ ॥ पुच्छ भंते ! जहिन्छं ते, केसिं गोयममञ्जवी । तओ केसी अणुनाए, गोयमं इणमञ्चवी ॥ २२ ॥ चाउजामो य जो धम्मो, जो इमो पंचिरिक्तिको । देसिको वद्धमाणेण, पासेण स महासुणी ॥ २३ ॥ एगकजपवन्नाणं, विसेसे किं तु कारणं ? । धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विष्यश्वओं न ते ? ॥ २४ ॥ तओ केसि खुवंतं तु, गोयमो इणमञ्चवी । पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छमं ॥ २५ ॥ पुरिमा उज्जाहा उ. वंकजहा य पच्छिमा। मज्ज्ञिमा उज्जापना उ. तेण धम्मे वुहा कए ॥ २६ ॥ पुरिमाणं दुन्त्रिसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपाळको । कप्पो मजिसमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥ साहु गोयम! पद्मा ते, छिस्रो में संसओ इसो । अजो वि संसवो मज्ज्ञं, तं में बहुसु गोयमा ! ॥ २८ ॥ अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । देसिओ बद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥ २९ ॥ एगकअपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं। लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्यचओ न ते? ॥ ३० ॥ केसिमेवं बुवाणं त. गोयमो इणमञ्जवी । विज्ञाणेण समागम्म, धम्म-साहणमिन्छियं ॥ ३९ ॥ पद्मयत्थं च छोगस्स, नाणाविहनिगप्पणं । जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥ ३२ ॥ अह मवे पहचा उ. मोक्खेंसब्स्यसाहणा । नाणं च दंसणं चेव, चरितं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥ साहु गोयम! पन्ना ते. छिन्नो मे संसको इसो । असो वि संसको मज्झं, तं मे कहस्र गोयमा ! ॥ ३४ ॥ अणेगाणं सहस्ताणं, मज्झे चिद्वति गोयमा!! ते य ते अहिगच्छंति, कहं ते निजिया तुमें? ॥ ३५ ॥ एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस। दसहा उ जिणित्ताणं, सम्बस्तत् जिणामहं ॥ ३६ ॥ सत् य इह के बुत्ते ?, केसी गोयममञ्बदी । तओ केसिं बुवंतं तू, गोयमो इणमञ्चवी ॥ ३७ ॥ एगप्पा अजिए सत्तु , कसाया इंदियाणि य । ते जिनित जहानायं, विष्ठरामि अहं सूजी ॥ ३८ ॥ साह गोयम ! पना ते, किको में संसक्षो इमे । अको मि संसक्षो मज्झं, तं में कहुछ गोयमा! ॥ ३९ ॥ दीचंति बहुवे लोए, पासबद्धा सरीरियो । मुक्रपासो लहुक्सूओ, वहं तं विहरसी मुजी ? ॥ ४० ॥ से पासे सब्बसी क्रिता, निहंतूण उवायको । मुक्यासी लहुन्यूओं, विहरामि वहं सुवी! ॥ ४९ ॥ पासा व इह के मुता?, केसी गोयममञ्जवी। केसिनेवं बुवंतं हु, गोममो इपमन्यवी ॥ ४२ ॥ रागहोसादको तिव्या, नेहपासा मर्गकरा । ते सिरित् जहानार्य, बिहरामि जहहर्म ॥ ४३ ॥ साह गीयम ! पका

ते. छित्रों में संसओ इसो । अत्रों वि संसको मज्झं, तं में कहसु गोयमा ! ॥ ४४ ॥ अंतोहिययसंभूया, लया चिद्वइ गोयमा!। फलेइ विसमक्खीणि, सा उ उद्धारिया कहं? ॥ ४५ ॥ तं लयं सम्बसो छित्ता, उद्धरिता समृत्वियं । विद्वरामि जहानायं. मुक्कोमि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥ लया य इइ का वृत्ता ?, केसी गोयममञ्जवी । केसिमेवं बुवंतं तु. गोयमो इणमञ्जवी ॥ ४७ ॥ भवनण्डा लया वृत्ता, भीमा सीमफलोदया । तमस्कित जहानायं, विहरामि जहामुहं ॥ ४८ ॥ साह गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अजो वि संसओ मज्झं, तं मे कहुसु गोयमा ! ॥ ४९ ॥ संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिद्वह गोयमा ! । जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्ञाविया तुमे ? ॥ ५० ॥ महामेहप्पस्याओ, गिज्झ बारि जलुत्तमं । सिंचामि सययं देहं, सित्ता नो डहंति मे ॥ ५१ ॥ अग्गी य इइ के बुत्ता?, केसी गोयममञ्बदी । फेलिमेव बुवंतं तु, गोयमो इण-मन्ववी ॥ ५२ ॥ कसाया अभिगणो वृत्ता, सुयसीलतवो जलं । सुयधाराभिद्वया संता. भिना हु न उहंति मे ॥ ५३ ॥ साहु गोयम ! पना ते, छिनो मे संसक्षो इमो । अनो वि संस्को मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ५४ ॥ अयं साहसिओ भीमो. दुझस्सो परि-धावई। जंस गोयम! आरूढो, कहं तेण न हीरसि?॥ ५५॥ पधावंतं निर्गणहामि. सुयरस्रीसमाहियं। न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पष्टिवर्जाई॥५६॥ आसे य इंड के बुत्ते !, केसी गोयममञ्जवी । केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमञ्जवी ॥ ५० ॥ मणो साहिसओ मीमो, वुदुस्सो परिधावई । तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥ ५.८ ॥ साह गोयम ! पना ते, छिनो मे संमध्ये इसी । अन्नो वि संसखो सज्झे, तं मे कहमु गोयमा ! ॥ ५९ ॥ कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो । अद्धाणे कह बहुतो, तं न नासिस गोयमा ? ॥ ६० ॥ जे य मरगेण गच्छंति, जे य उम्मग्ग-पाँद्रया । ते सब्दे देहया मज्झं, तो न नत्सामहं मुणी ! ॥ ६९ ॥ मग्गे य इइ के बुत्ते ?, केसी गोयमसञ्जयी । केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणसञ्जयी ॥ ६२ ॥ कृप्पवयणपासंही, सब्वे उम्मरगपद्विया । सम्मरगं तु जिलक्खायं, एस मस्ते हि उत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, किनो में संसक्षो हमो । अनो वि संसक्षो मज्यं. तं मे कहस्र गोयमा ! ॥ ६४ ॥ महाउदगवेगेण, युज्यसाणाण पाणिणं, सरणं गई पहड़ा य. दीवं कं मकसी मुणी ? ॥ ६५ ॥ अत्य एगो महादीवो. कारिमज्हे महाल्लो । महाउदगवेगस्स, गई तत्थ न विजाई ॥ ६६ ॥ धीवे व इइ के बुत्ते ?, केसी गोयममञ्जवी । केसिमेवं जुवंतं तु, गोयमो इणमञ्जवी ॥ ६७ ॥ जरा-मरणवेगेणं. व्यवसमाणाण पाणिणं । घम्मो बीवो पह्या य, यह सरणसुत्तमं ॥ ६८ ॥ साह गोयम ! पता ते, कियो में संसथो इसो । अधी नि संसथो मज्यं, तं ने कहद

गोयमा ! ॥ ६९ ॥ अण्णवंसि महोहंसि, नावा विपरिधावई । जंसि गोयम ! आरुडो, कहं पारं गमिस्सिस ? ॥ ७० ॥ जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी । जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥ नावा य इइ का युत्ता ? । केसी गोयममञ्जवी । केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमञ्जवी ॥ ७२ ॥ सरीरमाहु नावति, जीवो वृच्छ नाविओ। संसारो अण्णवो वृत्तो, जं तरंति महेसिणो॥ ७३॥ साहु गोयम ! पना ते, छिन्नों में संसओ इसो। अन्नो वि संसओ मज्नं, तं में कहसु गोयमा ! ॥ ७४ ॥ अंधयारे तमे घोरे, चिद्वंति पाणिणो वहू । को करिस्सइ उज्जोयं १, सञ्बलोयम्मि पाणिणं ॥ ७५ ॥ उगगओ विमलो भाणू , सञ्जलोयपमंकरो । सो करिस्सइ उज्जोयं, सञ्चलोयंमि पाणिणं ॥ ७६ ॥ भाणू य इइ के बुत्ते ?, केसी गोयममञ्जवी । केसिमेवं ब्रुवंतं तु. गोयमो इणमञ्जवी ॥ ७७ ॥ उगाओ खीणसंसारी. सव्वन् जिणभक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोयं, सञ्वलोयंमि पाणिणं ॥ ७८ ॥ साह गोयम ! पजा ते, छिन्नो में संसक्षी इसो । अन्नो वि संसक्षी मण्झं, तं में कहुनु गोयमा ! ॥ ७९ ॥ सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं । खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं कि मचसी मुणी ? ॥ ८० ॥ अत्थि एगं ध्वं ठाणं. लोगगांमि दुरारहं । जत्थ नित्य जरा सन्त्र, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥ ठाणे य इइ के बुत्ते ?, केसी गोयममञ्चवी । केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमञ्चवी ॥ ८२ ॥ निक्वाणं ति अवार्त ति. सिद्धी लोगरममेव य । खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥ तं ठाणं सासयं वासं. लोयगंमि दुरारहं । जं संपत्ता न सोयंति. भनोहंतकरा मुणी ! ॥ ८४ ॥ साहु गोयम ! पना ते, क्विनो मे संसओ इसो । नमो ते संस्थातीत !. सव्वयुत्तमहोयही ॥ ८५ ॥ एवं द्व संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्रमे । अभिवंदिता सिरसा, गोयमं तु महायसं ॥ ८६ ॥ पंचमहव्ययधम्मं, पिडवजह भावओ । पुरिमस्स पच्छिमंत्रि, मरगे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥ केसीगोयमध्यो निषं, तंत्रि आसि समागमे। सुम्बीक्समुद्धरिसो, सहत्यत्यविणिच्छ्यो ॥ ८८ ॥ तोसिया परिसा सन्ना, सम्मगं समुबद्दिया । संधुया ते पसीयंत्र, भयवं केसिगोयमे ॥ ८९ ॥ ति-बेमि ॥ इति केसिगोयमिखणामं तेवीसङ्गं अज्ञयणं समत्तं ॥ २३ ॥

अह समिईओ णामं चउवीसहमं अन्हायणं

अह प्रयणमानाओ, समित्रं गुत्ती तहेव या पंचिव य समित्रंओ, तओ गुत्तीउ आहिया॥ १॥ इरियामीसेसणीर्दाणे, उचारे समित्रे इया मणगुत्ती वयगुत्ती, कामगुत्ती

य अहमा ॥ २ ॥ एयाओ अह समिईयो, समारोण विवाहिया । दुवालसंगं जिणक्सामं, मार्य जस्य उ पवयणं ॥ ३॥ (१) आलंबणेणे कारेणे, मस्तेणे जयणाई य । चडका-रणपरिष्ठद्वं, संजप् इरियं रिए ॥ 🗸 ॥ तत्य आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा । काळे य दिवसे बुत्ते, मग्गे उप्पहनजिए॥ ५॥ दथ्नकी खेतकी चेव, कालकी भानकी तहा। जमणा वउम्बिहा बुत्ता, तं में कित्तयओं सुण ॥ ६ ॥ दब्दओ चक्खुमा पेहे, जुगमित्तं च सेताओ । कालओ जाव रीइजा, उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥ इंदियत्ये विविज्ञत्ता, सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरहारे, उवडते रियं रिए ॥ ८॥ (२) कोई माणे य मायाएँ, लोभे य उवउत्तया। होसे मएँ मोहरिएँ, विकहार्स्र तहेव य ॥ ९ ॥ एयाई अद्वटाणाई, परिवर्षिक्तु संजए । असावव्यं मिर्च काले, भासे भासिज पश्चवं ॥ ९० ॥ (३) गवेसगाएँ गहेंगे य. परिभोगेसणा य जा। आहीरोवेहिसेजाएँ, एए तिचि विसोहए ॥ ११ ॥ उग्गमुप्पायणं पडमे, बीए सोहेज एसणं । परिभोयम्मि चटक्कं, विसोहेज जयं जई ॥ १२ ॥ (४) ओहोवैहोवमीहियं, भंडगं दुविहं मुणी । गिण्हंतो निक्खिवंती य, परंजेज इमं विहिं॥ १३॥ चक्खुसा पिडलेहिता, पमकेज जयं जई। भाहए निक्सिवेजा वा, दुहस्रोऽवि समिए सया ॥ १४ ॥ (५) उचारं पासवर्ण, खेलं सिंघाणजिह्नयं । आहारं उचिंहं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥ अणावायमसंकोर्ए, अणावाए चेव होइ संलोएँ । आवायमसंलोएँ, आवाए चेत्र संलोएँ ॥ १६ ॥ अणावाय-मसंलोए, परस्सऽणुवधाइए । समे अज्झुतिरे वावि, अनिरकालकथम्मि य ॥ १७ ॥ वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने विरुविजय । तसपाणनीयरहिए, उन्नाराईणि वोसिरै ॥ १८ ॥ एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया। एतो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्यसो ॥ १९ ॥ (६) सची तहेव मोसा य, सबामोसी तहेव व । चउत्वी अस-चमोर्सा य. मणगूती चटव्यिहा ॥ २० ॥ संरंभसमारंभे, आरंभस्मि तहेव य । मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज जयं जई ॥ २१ ॥ (७) सन्धी तहेव मोसी म, सन्दामोसी तहेव य । चउत्थी असबमोर्सा य, बङ्गुत्ती चउव्विहा ॥ २९ ॥ संरंभसमारंभे, आरं-मम्मि तहेव य । वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज जयं जई ॥ २३॥ (८) ठाणे निसीयणे चेव, तहेब य तुयहणे । उक्षेत्रणपक्षंत्रणे, इंदियाण य जुंजणे ॥ २४ ॥ संरमसमारंभे, आरंमिम तहेव य । कार्य पवसमाणं तु, नियसेज जर्य जई ॥ २५ ॥ एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवसणे । गुत्ती नियसणे वृता, अग्रमत्वेग्र सन्वसी ॥ २६ ॥ एया पवयणमाया, जे सन्मं आयरे मुणी। सी खिप्पं सन्वसंसारा, विप्यमुख्ड पंडिए॥ २०॥ किनेमि ॥ इति समिईथो णामं चउवीसहमं अञ्चयनं समसं ॥ २४ ॥

अह जन्नइज्जनामं पंचवीसहमं अञ्चयणं

माहणकुळसंभूओ, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजन्नीम, जयघोसित्ति नामओ ॥ १ ॥ इंदियस्यामनिस्याही, मस्ययामी महामुखी । गामाण्यामं रीयंते, पत्तो वाणारसि पुरि ॥ २ ॥ वाणारसीए बहिया, उज्जाणंमि मणोरमे । फासुए सेजसंथारे, तत्थ वासमुबागए।। ३ ॥ अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे । विजयघोसिति नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥ अह से तत्थ अणगारे, मासक्ख-मणपारणे । विजयघोसस्स जर्भमि, भिक्खमद्वा उवद्विए ॥ ५ ॥ समुवद्वियं तर्हि संतं. जायगो पिंसेहए। न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्ख्! जायाहि अन्नओ॥ ६॥ जे य वेयविक विष्पा, जन्नद्वा य जे दिया । जोइसंगविक जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥ जे समत्या समुद्धतुं, परमप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खु! सन्वकामियं ॥ ८ ॥ सो तत्थ एवं पिडिसिद्धो, जायगेण महामुणी । नवि रहो नवि तुद्रो. उत्तमद्रगवेसओ ॥ ९ ॥ नन्द्रं पाणहेउं वा. नवि निम्बाहणाय वा । तेसि विमोक्खणद्वाए, इमं वयणमञ्चवी ॥ १०॥ नवि जाणासि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं। नक्खताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं॥ ११ ॥ जे समत्या समृद्धनं, परमप्पाणमेव य । न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण॥ १२ ॥ तस्तक्खेवपमोक्खं तु. अचयंतो तहिं दिओ। सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणि ॥ १३ ॥ वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं । नक्खलाण मुहं बृहि, बृहि घम्माण वा सुद्धं ॥ १४ ॥ जे समत्या समुद्धनुं, परमप्पाणमेव य । एयं में संसर्य सब्बं, साह ! कहत प्रच्छियो ॥ १५ ॥ अग्गिहत्तमुहा वेगा, जबद्री वेयसा मुहं । नक्खताण मुहं चेदो, धम्माणं कासवी मुहं॥ १६॥ जहा चंदं गहाईया. चिद्रंति पंजर्रीउडा । वंदमाणा नर्मसंता. उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥ अजाणगा जनवाई, विज्ञामाहणसंपया । गृहा सज्झायतवसा, भासच्छना इवनिगणो ॥ १८ ॥ जो लोए बंगणो वृत्तो, अग्गी व महिलो जहा । सया वृत्सलसंदिह्नं, तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥ जो न सजह आगंतुं, पव्वयंतो न सौयह । रमइ अज-बयणंमि, तं वयं वस साहणं ॥ २० ॥ जायस्वं जहासद्वं, निदंतमलपावगं । राग-दोसभयाईये, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥ तवस्सियं किसं दंतं, अवन्वियमंससोणियं । सुब्वयं पत्तनिव्वाणं, ते वर्व बूम माहणं ॥ २२ ॥ तसपाणे वियाणेता, संगहेण य थावरे। जो न हिंसइ तिबिहेण, तं वयं बूम माहणं॥ २३॥ कोहा वा जह वा हासा. लोहा वा जह वा मना। मुसं न वसह जो उ. तं वयं वस माहणं॥ २४॥

चिनमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जह वा बहुं। न गिण्हड अदत्तं जे, तं वयं वूम माहणं ॥ २५ ॥ दिव्वमाणुरसतेरिच्छं, जो न सेनइ मेहुणं । मणमा कायवकेणं, तं वयं वूस माहणं ॥ २६ ॥ जहा पोसं जले जायं, नोवलिप्पड बारिणा । एवं अलितं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥ अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिचणं । असंसत्तं गिहत्येमु, तं वयं वूम माहणं ॥ २८ ॥ जहिना पुरुवसंजोगं, नाइसंगे य बंघवे । जो न सज्बह् भोगेन्न, तं वयं यूम माहणं ॥ २९ ॥ पमुबंधा सव्ववेया, जद्रं च पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंति हि ॥ ३० ॥ न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न नाउसो ॥ ३१ ॥ समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंसणो । नाणेण य मुणी होइ, तनेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥ कम्मणा बंभणो होइ. कम्मणा होइ खत्तिओ । वहस्मो कम्मुणा होइ, सुद्दो द्वद कम्मुणा ॥ २३ ॥ एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ। सञ्बदम्मविणिम्सुई, तं वर्ग वूम माहणं ॥ ३४ ॥ एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा । ते समस्था समुद्धतुं, परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥ एवं तु संसए जिने, विजयघोसे य माहणे । समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणि ॥ ३६ ॥ तुद्धे य विजयघोसे, इणमुदाह कयंजली। माहणतं जहाभूयं, सुद्ध में उन्दंसियं॥ ३०॥ तुच्ने जड्या जन्नाणं, तुच्ने वेयविक विका जोड्संगविक तुच्ने, तुब्ने धम्माण पारमा ॥ ३८ ॥ तुन्मे समत्था रुद्धतुं, परमप्पाणमेव य । तमणुगगहं करेह्ऽम्हं, शिक्खेणं शिक्खुउत्तमा !।। ३९ ॥ न कर्ज मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमस दिया !। मा ममिहिसि भयावटे, घोरे एंसारसागरे ॥ ४० ॥ उवलेवो होइ मोगेस, अभोगी नोवलिप्पई । मोगी ममइ संसारे, अमोगी विष्पसुचई ॥ ४१ ॥ उल्लो सुक्खो य दो छडा, गोलया महियामया। दो वि आवडिया कुर्हे, जो उल्लो सोऽत्य कमाई॥ ४२॥ एवं लगंति दम्मेहा, जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लगंति, जहा से सक्यो-लए ॥ ४३ ॥ एवं से विजयघोसे. जयघोसस्स अंतिए । भणमारस्स निक्संतो, धम्म सोचा अणुतरं ॥ ४४ ॥ खनिता पुरुवकम्माइं, संजमेण तवेण य । जयधोसनिजय-भोसा, सिद्धिं पता अणुतरं ॥ ४५ ॥ ति-बेमि ॥ इति जन्नहज्जनामं पंचवी-सडमं अज्ञयणं समसं॥ २५॥

अह सामायारी णामं छन्बीसइमं अज्झयणं

सामायारि पवक्सामि, सन्बदुक्सविमोक्सणि । जं चरित्ताण विमाया, तिष्णा

संसारसागरं ॥ १ ॥ पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया । आपुच्छणा थ तह्या, चउरथी पिडपुच्छणा ॥ २ ॥ पंचमी छंदणा नाम, इच्छाकारी य छहुओ । सत्तमो मिच्छाकारो य, तहकारो य अद्भमो ॥ ३ ॥ अब्भुद्वाणं च नवमं, दसमी उवसंपया । एसा दसंगा साहणं, सामायारी पवेड्या ॥ ४ ॥ गमणे आवस्सियं कुजा, ठाणे कुजा निसीहियं । आपुच्छणं सर्यकरणे, परकरणे पश्चिपुच्छणं ॥ ५ ॥ छंदणा दव्यजाएणं, इच्छाकारो य सारणे । मिच्छाकारो य निंदाए, तहकारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥ अब्सुद्धाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपया । एवं दुपंचसंजुत्ता, सामा-यारी पवेड्या ॥ ७ ॥ पुर्विहंमि चउच्माए, आइचंमि समृद्विए । भंडयं पिछलेहिता, घंदिता य तओ गुर्ह ॥ ८ ॥ पुच्छिज पंजछीउडो, कि कायव्वं मए इह । इच्छे निओइडं भंते !, वेयावचे य सज्झाए ॥ ९ ॥ वेयावचे निउत्तेण, कायव्वं अगि-लायओ । सज्झाए वा निउनेण, सव्बद्धक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥ दिवसस्स चउरो भागे. भिक्ख कुजा वियक्तणो । तओ उत्तरगुणे कुजा, दिणभागेसु चउनु वि ॥ ११ ॥ पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई । तहयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥ १२ ॥ असाढे मासे दुपया, पोसे मासे चडप्पया । चित्तामोएस मासेख, तिप्पया हबइ पोरिसी ॥ १३ ॥ अंगुलं सत्तरतेणं, पक्खेणं च दुअंगुलं । वहूए हायए वावि, मासेणं चलरंगुलं ॥ १४ ॥ आसादबहल-पक्ते, भद्दवए कतिए य पोसे य । फरगुणवहसाहेसु य, बोद्धव्या ओमरनाओ ॥ १५ ॥ जेट्टामूळे आसादसावणे, छहि अंगुलेहि पडिलेहा । अट्टाई बीयतयंभि, तइए इस अड्राह चारचे ॥ १६ ॥ र्रात पि चारो भागे, मिक्ख कुजा विय-क्सणो । तओ उत्तरगुणे कुजा, राइभाएस चनस वि ॥ १७ ॥ पढमं पोरिसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई । तह्याए निह्मोक्सं तु, चउत्थी भुज्जो बि सज्झार्य ॥ १८ ॥ अं नेइ जया रित्त, नक्खत्तं तंमि नहचउच्माए । संपत्ते विरमेजा, सञ्चायं पश्रोसकालंमि ॥ १९ ॥ तम्मेव य नक्खते, गयणचष्टक्साम-सावसेसंमि । वेरतियं पि कार्ल, पिक्छेहिता मुणी कुजा ॥ २० ॥ पुब्बिहंमि चउन्भाए, पिकेहिताण भंडयं। गुरुं वंदितु सज्झायं, कुळा दुक्खविमोक्सणं २१ ॥ पोरिसीए चडक्साए. बंदिलाण तुओ गुरुं । अपविक्रमिता काळस्य. भावणं पडिकेहए ॥ २२ ॥ मुहपोत्तिं पडिकेहिता, पडिकेहिज गोच्छगं । गोच्छग-रुह्यंगुलिखो, बत्याइं पष्टिलेहर ॥ २३ ॥ उद्गं यिरं अतुरियं, पुरुवं ता बत्यमेद पिंडकेहे। तो निहर्य पप्छोडे, तह्यं च पुणी पमजिज्ञा ॥ २४॥ अणवावियं

१ सज्यागकालाको अविवित्तो होसण ।

अवलियं, अणाणुनंधिममोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव् खोडा, पाणीपाणिविसोह्णं ॥ २५ ॥ आरभडा सम्मद्दा, वजेयव्या य मोसली तह्या । पप्कोडणा चउत्थी, विक्लिता वेइया छद्वी ॥ २६ ॥ परिविज्यलंबलोला, एगामोसा अणेगस्बधुणा । कुणइ पमाणप्रमायं, संकिय गणणोवगं कुजा ॥ २० ॥ अणूणाइरित्तपडिछेहा, अविक्वासा तहेव य । पढमं पर्य पसत्यं, सेसाणि उ अप्पसत्याई ॥ २८ ॥ पिंडलेहणं कुणंतो, सिही कहं कुणइ जणवयकहं वा । देइ व पत्रकलाणं, बाएइ सयं पहिच्छइ वा ॥ २९ ॥ पुढवीआउद्गाए, तेऊवाऊवणस्सइतसाणं । पडिलेहणापमस्तो. छण्हं पि विराह्मभो होइ ॥ ३० ॥ पुढवीमाउद्याए, तैऊवाऊवणस्यइतमाणं । पिंडलेहणाभाउत्तो, छण्हं संरक्खभो होइ ॥ ३१ ॥ तद्याए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए । छण्हं अन्नयरागंमि, कारणंमि समुद्रिए ॥ ३२ ॥ वेयण वेयावने, इरियद्वाए य संजमहाए । तह पाणवित्याए, छहुं पुण घरमचिताए ॥ ३३ ॥ निगांथी धिइमंतो, निमांथी वि न करेज छहिं चेव । ठाणेहिं उ इमेहिं, अणहक्रमणाइ से होइ ॥ ३४ ॥ आयंके उबसमी, तितिकखया बंभचेरगुतीस । पाणिक्या तबहेउं, सरीरवोच्छेयणद्वाए ॥ ३५ ॥ अवसेसं भंडगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए । परम-द्धजोयणाओ, विद्वारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥ चउत्थीए पोरिसीए, निक्सिवताण भायणं । सज्ज्ञायं तक्षो कुळा, सन्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥ पोरिसीए चडन्भाए. वंदिसाण तओ गुर्ह । पश्चिक्तमित्ता कालस्स, सेज्वं तु पश्चित्रहरू ॥ ३८ ॥ पासवणु-बारभूमि च. पहिलेहिज जयं जई। काउस्सरगं तथो कुजा, सन्ववुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥ देवसियं च अइयारं, चिंतिजा अणुपुरुवसी । नाणे य दंसणे चेव, करित्तामि तहेव य ॥ ४० ॥ पारियकाउस्सरगो, वंदिताण तओ गुरुं । देवसियं द्व अइयारं, आलोएज जहकमं ॥ ४१ ॥ पडिकमितु निस्सल्लो, वंदिताण तओ गुरुं। काउस्समां तओ कुजा, सन्बदुक्खविमोक्खणं॥ ४२॥ पारियकाउस्समगो, वंदिताण तभो गुरुं । थुड्मंगलं च काऊण, कालं संपिक्केहरू ॥ ४३ ॥ पढमं पोरिसि सज्झायं, बिद्दयं झाणं झियायई । तहयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चडत्थिए ॥ ४४ ॥ पोरिसीए चउरबीए, कालं तु पडिकेहिया । सज्झार्यं तु तओ कुज्जा, अबोहंती असंजर ॥ ४५ ॥ पोरिसीए चउच्मार, वंदिक्रण तथी ग्रुहं । पडिक्रमित् काळस्स, कालं तु पिडळेहए ॥ ४६ ॥ आगए कायबोस्समो, सम्बद्धक्यविमोक्खणे । काउरसम्मं तओ कुजा, सव्बदुक्खविसीक्खणं ॥ ४० ॥ राह्यं च अहेगारं, चितिज अणुपुन्वसी । मार्णाम दंसर्णाम य, चरित्ताम तवंमि य ॥ ४८ ॥ पारियकाउस्सन्गो, वंदिताण तक्षो गृहं । राइयं त जईबारं, आयोपन वहन्त्रं ॥ ४९ ॥ पविक्रित

निस्सन्नो, बंदिताण तस्नो गुर्छ । काउरसम्मं तस्नो कुमा, सम्बद्धमस्विमोकसणं ॥ ५० ॥ कि तदं पहिवजामि, एवं तस्य विचितए । काउरसम्मं तु पारित्ता, करिजा जिणसंथवं ॥ ५१ ॥ पारियकाउरसम्मो, वंदिताण तस्नो गुर्छ । तवं संपहिवजेता, कुमा सिद्धाण संथवं ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी, समासेण विग्राहिया । जं चरिता बहू जीवा, तिण्या संसारसागरं ॥ ५३ ॥ ति-वेमि ॥ इति सामायारी णामं स्वय्वीसहमं अज्ययणं समसं ॥ २६ ॥

अह खलुंकिज्जणामं सत्तवीसहमं अज्झयणं

थेरे गणहरे गर्गे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावंसि, समाहिं पढिसंधए ॥ १ ॥ वहणे बहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स, संसारो थइनराई ॥ २ ॥ खळुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सई । असमाहिं च नेएइ, तोत्तको से य मजाई ॥ ३ ॥ एगं डसइ पुच्छंमि, एगं विधइऽभिक्खणं । एगो भंजइ समिछं, एगो उप्पद्दपद्विको ॥ ४ ॥ एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवजई । उद्घर्द उप्फिडई, सढे बालगबी वए ॥ ५ ॥ माई मुद्रेण पडई, कुढे गच्छइ परि-पाई । मयलक्खेण चिह्नई, बेगेण य पहाबई ॥ ६ ॥ छित्राले छिदई सेहिं, दुईती मंजए जुर्ग । से वि य सुरसुबाइता, उज्जहिता प्रशायए ॥ ७ ॥ खलुंका जारिसा जोजा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोड्या धम्मजाणंमि, भजंती घिड्दुव्यला ॥ ८ ॥ इङ्गीगारविष् एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविष् एगे, एगे सुनिरकोहणे ॥ ९ ॥ भिक्खालसए एगे, एगे ओमाणमीरुए। यदे एगेऽणुसासंमि, हेर्फीं कारणेहि य ॥ १० ॥ सो वि अंतरसासिक्षो, दोसभेव पकुव्वई । आयरियाणं तु वयणं, पर्ड-कुळेहऽभिक्खणं ॥ ११ ॥ व सा ममं विद्याणाइ, न वि सा मज्जा दाहिई । निस्मया होहिई मने, साहु अबोऽत्थ व[ज]बर ॥ १२ ॥ पेतिया पिटरंबंति, ते परियंति समेतओ । रागविद्धिं च मर्णता, करेंति मिउडिं मुद्दे॥ १३॥ बाइया संगहिया चेव, मत्तपामेण पोसिया । जायपक्सा जहा हंसा, पक्संति दिसी दिसि ॥ १४ ॥ कह सारही विचितेह, सबकेहिं समागको । कि मज्ज दहसीसेहिं, अप्या से अव-बीयहे ॥ १५ ॥ जारिसा सम बीसा उ, सारिसा गळिगहहा । गळिगहहे जहिसाणं, बुढं पनिष्डई तवं ॥ १६ ॥ मिन्न्यहवसंपद्मी, गंसीरी शुसमाहिन्दी । विहरह सिंह महप्पा. चीक्सएण अप्पणा ॥ १७ ॥ हि-नेमि ॥ इति खलंकिकाणामं सन्त-क्षित्रमं अञ्चयमं समसं ॥ २७ ॥

अह मोक्खमग्गगई णामं अहाबीसइमं अञ्चयणं

मोक्खमगगई तसं, सुणेह जिणभासियं। चउकारणसंजुतं, नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चिरतं च तवी तहा । एस सम्युत्ति पक्षती. जिणेहिं ब्रदंसिहिं॥ २॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा। एवं मरगमणुप्पत्ता. जीवा गच्छंति सोम्गई ॥ ३ ॥ तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं आमिनिवोहियं । ओहि-नाणं तु तह्यं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥ एयं पंचविहं नाणं, दव्याण य गुणाण य । पज्जवाणं च सन्वेसिं, नाणं नाणीहि देसियं ॥ ५ ॥ गुणाणमामओ दब्वं, एगद्व्वस्सिया गुणा । लक्खणं पजवाणं तु, उसओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥ धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गलजंतवो । एस लोगो ति पकतो, जिणेहिं वरदंखिहिं ॥ ७ ॥ धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्माहियं । अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजंतनो ॥ ८ ॥ गइलक्खणो उ घम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायणं सम्बद्ध्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं ॥ ९ ॥ वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओग-लक्खणो । नाणेणं दंसणेणं च, सुद्देण य दुहेण य ॥ १०॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स छक्खणं ॥ ११ ॥ सई-धयारङजोओ, पहा छायाऽऽतवो इ वा । वण्णरसगंधफासा, पुग्गलाणं तु छवन्सणं ॥ १२ ॥ एगतं च पहत्तं च. संखा संठाणमेव य । संजोगा य विभागा य. पज-वाणं तु लक्खणं ॥ १३ ॥ जीवाजीवा य बंघो य, पुण्णं पावाऽऽसवी तहा । संबरो निजरा मोक्सो, संतेए तहिया नव ॥ १४ ॥ तहियाणं तु भावाणं, सञ्भावे उवएसणं । भावेणं सहहेतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ १५ ॥ निस्सम्युवएसरुई, आणरुई मुत्तबीयस्ड्मेव । अभिगम-वित्थारुई, किरिया-संसेव-धम्मरुई ॥ १६ ॥ भूयत्येणाहिगया, जीवाजीया य पुण्णपावं च । सहसम्भइयासवसेवरो य, रोएइ उ निस्सम्मो ॥ १७ ॥ जो जिणदिहे माने, चउन्तिहे सहहाइ सयमेव । एमेन नक्षहति य, स निसम्मरुइति नायव्यो ॥ १८ ॥ एए चैव उ मावे, उवर्द्धे जो परेण सर्हाई । छउमत्येण जिणेण व, उवएसव्हत्ति नायव्यो ॥ १९ ॥ रागी दोसो मोहो, अभाणं जस्स अवगर्य होइ । आणाए रोयंतो, सो खळ आणारुई नामं ॥ २० ॥ जो सत्त-महिजंतो. स्रएण ओगाहर्ड उ सम्मत्तं । अंगेण बाहिरेण व, सो सत्तरहत्ति नामब्बो ॥ २९ ॥ एगेण अणेगाई, पयाई जो पसरई उ सन्मत्तं । उदएव्य तेल्लविंदू, सी बीयस्हित नायव्यो ॥ २२ ॥ सो होइ अभिगमस्है, सुयनाणं जेण अत्यक्षी विद्धं । एकारस अंगाई. पहण्यमं विद्विवाक्षी य श २३ ॥ दव्याण सम्बन्धावा, सम्बन्धाणेहिं

जस्स उवलद्धा । सव्वाहि नयविहीहिं, वित्याररुहत्ति नायव्वो ॥ २४ ॥ दंसणनाण-चरिने, तवविणए सचसमिइग्रुतीस । जो किरियामावरुई, सो खुल किरियारुई नाम ॥ २५ ॥ अणिसम्महियकुदिद्वी, संखेवस्हति होइ नायव्वो । अविसारओ प्वयणे, अणिमग्गहिओ य सेसेष्ट्र ॥ २६ ॥ जो अत्यिकायघरमं, सुराधरमं खळु चरित्तधरमं च । सहहरू जिणाभिहियं, सो धम्मरुहत्ति नायव्यो ॥ २७ ॥ परमत्यसंयवो वा. सुविद्वपरमत्थसेवणं वावि । वावसकदंसणवज्जणाः, य सम्मत्तसहहणा ॥ २८॥ नत्थि चरित्तं सम्मत्तविद्वणं, दंसणे उ भड्यव्यं । सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुर्व्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥ नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा । अगुणिस्स नत्यि मोक्खो. नत्थ अमोक्खरस निव्वाणं ॥ ३० ॥ निरसंकिय निकंखिय. निव्वित-गिच्छा अमृत्रदिद्वी य । उवबृह थिरीकरणे, वच्छह्न प्रभावणे अट्ट ॥ ३१ ॥ सामा-इयत्थ पढमं, छेओवद्वावणं भवे बीयं । परिहारविसुद्धीयं, सुहमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥ अकसायमहक्खायं, छउमत्यस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारितं होइ आहियं ॥ ३३ ॥ तवो य दुविहो बुसो, वाहिरव्भंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमर्ब्भतरो तवो ॥ ३४ ॥ नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दे । चरि-त्तेण निर्मिण्हाइ, तबेण परिसुउझाई ॥ ३५॥ खवेता पुन्वकम्माइं, संजमेण तबेण य । सव्वदुक्खपद्दीणद्वा, पक्कमंति महेसिणो ॥ ३६ ॥ ति-वेमि ॥ इति मोक्ख-मनागई णामं अद्रावीसइमं अज्ञायणं समत्तं ॥ २८ ॥

अह सम्मत्तपरक्रमणामं एग्णतीसइमं अञ्झयणं

मुयं मे आउसं । तेणं भगवया एवमक्खायं । इह साल सम्मतपरक्षमे नाम अज्ज्ञयणे समणेणं भगवया महाविरेणं कासवेणं पवेहए जं सम्मं सहिहता पतिहता रोयहता फासिता पाळहता तीरिता कितहता सोहहता आराहिता आणाए अणुपाळहता बहवे जीवा सिज्हांति बुज्हांति मुचंति परिनिव्वायंति सञ्बदुक्खाणमंतं करेंति । तस्स णं अभमें हे एवमाहिज्बह । तंजहा—संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहिम्मयमुस्स्सणया ४ आळोगणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चळ्ळीसत्यवे ९ वंदणे १० पिडक्समणे ११ काउस्सग्ने १२ पचक्खाणे १३ खब्युहमंगळे १४ काळपडिळेहण्या १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्ज्ञाए १८ बायणया १९ पुच्छणया २० परिग्रहणया २१ खणुप्येहा २२ खम्मकहा २३ स्वयस्स आराहण्या २४ एगम्ममणसंनिवेसण्या २५ संजमे २६

तवे २७ वोदाणे २८ सहसाए २९ अप्पडिबद्ध्या ३० विवित्तस्यणासणसेवणया ३१ विणियहणया ३२ संभोगपचक्साणे ३३ उबहिपचक्साणे ३४ आहारपच-क्लाणे ३५ कसायपवक्लाणे ३६ जोगपचक्लाणे ३७ सरीरपचक्लाणे ३८ सहायपनक्साणे ३९ भतपनक्साणे ४० सब्भावपनक्साणे ४९ पश्चिरुवणया ४२ वेयावचे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वीयरायया ४५ खंती ४६ मुनी ४७ महवे ४८ **अजवे ४९ भावसंखे ५० करणसंखे ५१ जोगसंखे ५२ मणगुत्तया ५३** बर्ग्यत्त्वा ५४ कायगुत्त्वा ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपद्मया ५९ दंसणसंपद्मया ६० चरित्तसंपद्मया ६१ सोईवियनिग्गहे ६२ चर्निखदियनिग्गहे ६३ घाणिदियनिग्गहे ६४ जिल्मिदय-निग्गहे ६५ फासिंदियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहनिजए ७० पेजदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेछसी ७२ अकम्मया ७३॥ सेवेगेणं मंते ! जीवे कि जणयह ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयह । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्यमागच्छइ । अर्णताणुबंधिकोहमाणमायालोम खवेह । नवं च कम्मं न बंघइ । तप्पचस्यं च णं मिन्छत्तविसोहि काऊण दंसणाराहए भवह । दंसणविमोहीए य णं विसुद्धाए अत्येगइए तेणेव मवग्गहणेणं सिज्झइ । विसोहीए य णं निसुद्धाए तकं पुणो भवग्गहणं नाइक्रमइ ॥ १ ॥ निव्वेएणं भंते ! जींव कि जणयह ? निव्वेएणं दिव्यमाणुसतेरिच्छिएस काममोगेस निव्वेयं ह्व्यमागच्छा । सन्वविसएस विरज्ज । सन्वविसएस विरज्जमाणे आरंभपरिश्वायं करेइ। आरंभ-परिचार्य करेमाणे संसारमग्यं वोच्छिदह, सिद्धिमग्यं पडिवन्ने य हवह ॥ २॥ धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? धम्मसद्धाए णं सायासीक्खेस रज्जमाणे विरज्जह । आगारधम्मं च णं चयह । अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणसेयणसंजीगाईणं नोच्छेयं करेइ । अञ्चाबाहं च सहं निञ्चतेह ॥ ३॥ गुरुसाहम्मिथसस्स्रामाए णं मंते ! जीवे कि जनवह ? गुरुसाहम्मियसस्स्रामाए णं विणयपिकार्ता जणयह । विणयपिकक्षि य णं जीवे अणकासायणसीके नेरहय-तिरिक्खजोणिवमणुरसदेवदुरगईको निरुंभइ । कणसंज्ञलणमत्तिबहुमाणयाए मणुरस-देवसुगईंओ निर्वथह । सिद्धि सोमाइं च विसोहेह । पसत्याई च णं विणयमूखाई सम्बक्तजोई साहेइ । अभे य बहुवे जीवा विभिन्ना भवह ॥ ४ ॥ आलोचणाए मं भंते । जीवे कि जणयह ! आठीयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसङ्घाणं मोक्स-मंगावित्याणं अणंतसंसारवंपणाणं उद्धरणं करेह । उजुलावं च बणवह । उजुला-नपटियके व ण विवे अमाई इंस्थिवियम्पुंसर्यवेयं च व बंधइ । पुरुषवदं व व

निजरेह ॥ ५ ॥ निंदणवाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? निंदणवाए णं पच्छाणुतावं जणवरः । पच्छाणुतावेणं विराजमाणे करणगुणसेढि पडिवजहः । करणगुणसेढीपडिवजे य णं भणगारे मोहणिजं कम्मं उग्घाएइ ॥ ६ ॥ गरहणयाए णं भंते ! जीवे कि जणयइ ? गरहणयाए णं अपरकारं जणयइ । अपरकारगए णं जीवे अप्पसत्येहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेह, पसत्थे य पिडवज्बह । पसत्थजोगपडिवक्षे य णं अणगारे अणंतधा-इपज्जवे खवेड ॥ ७ ॥ सामाइएणं भंते ! जीवे किं जणयड रे सामाइएणं सावजजोगिवरडं जणयह ॥ ८ ॥ चल्वीसत्यएणं भंते । जीवे कि जणयह ? चल्वीसत्यएणं दंसणविसोहि जणगृह ॥ ९ ॥ वंदणएणं भेते ! जीवे कि जणगृह ? वंदणएणं नीयागीयं कम्मं स्ववेइ । उन्नागीयं कम्मं निबंधह । सोहरगं च णं अपडिहयं आणाफलं निव्वतेष्ठ । दाहिणमावं च णं जणयइ ॥ १० ॥ पडिक्सणेणं अंते ! जीवे कि जणयह ? पडिक्रमणेणं वयछिद्दाणि पिहेइ । पिहियवयछिदे पुण जीवे निरद्धासवे असबलचिति अद्यय पवयणमायास उवउत्ते अपहत्ते सुप्पणिहिए विहर्ह ॥ ११ ॥ काउस्सरगेणं भंते ! जीवे कि जगयह ? काउस्सरगेणं तीयपहुप्पनं पायच्छितं विसोहेइ । विसुद्ध-पायन्छिते य जीवे निव्वयहियए ओइरियमरूव भारवहे फ्सत्थझाणोवगए सुई-सहेणं बिहरह ॥ १२ ॥ पद्मक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? पचक्खाणेणं आसवदाराहं निरुभइ । पश्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ । इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सन्वदच्वेस विणीयतण्हे सीइभूए विहरह ॥ १३ ॥ थव्युइमंगरेणं भंते ! जीवे किं जणगड ? धवशुर्मगरेणं नाणवंसणचरित्तवोहिलाभं जणगड । नाणवंसणचरि-त्रबोहिलामसंपने य णं जीवे अंतिकरियं कप्पविमाणीववत्तियं आराहणं आराहेइ ॥ १४ ॥ कालपहिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयह ? कालपिहलेहणयाए णं नाणावरणिजं कम्मं खवेड ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेणं मंते ! जीवे कि जणग्रह ? प्रायच्छितकरणेणं पावकस्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पामिस्त्रतं पहित्रक्षमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ. आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥ १६ ॥ समावणयाए णं मंते ! जीवे कि जणयड ? समा-बणबाए णै पत्दावणभावं जणबह । पत्हाबणभावसुवगए व सन्वपाणभूवजीव-सरीतु मित्तीभावसुप्पाएइ । मित्तीभावसुवगए य जीवे भावविसोहिं काळण निव्मए अबद् ॥ १७ ॥ सज्ज्ञाएणं भंते ! जीवे किं जणयह ? सज्ज्ञाएणं नाणावरणिजं कम्मं खनेतु ॥ १८ ॥ बायणाए णं भेते । जीने कि जणयह ? बायणाए णं निजरं बागवह । सुगस्स व अणुसळागांए क्षणासामणाए वहए । सुवस्स अणुसळागार अधासातनाए बहुमाने जित्यधन्मे अवलंबह । तित्यधन्मं अवलंबमाणे महानिज्यरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ पिडपुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयह ? पिंडपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतद्भयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिजं कम्मं बोच्छिदइ ॥ २०॥ परियद्दणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयह ? परियद्दणयाए णं वंजणाई जणयड. वंजणलक्षे च उप्पाएड ॥ २९ ॥ अणुप्पेष्ठाए णं भंते ! जीवे कि जणयड ? अणुप्पेहाए णं आउयबजाओ सत्तकम्मप्पनहीओ धणियबंधणबद्धाओ सिहिलबंधण-बद्धाओ पकरेड । दीष्टकालद्विडयाओ हस्तकालद्विडयाओ पकरेड । तिव्वाणुमावाओ मंदाणमावाओ पकरेइ । बहपएसम्माओ अप्पप्रसम्माओ पकरेह । आउयं च णं कम्मं सिया बंधह, सिया नो बंधह। असायावैयणिजं च णं करमं नो भूजो भूजो उबचिणाड। अणाइयं च णं अणनदर्गं दीहमदं चाउरंतं संसारकंतारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥ २२ ॥ धम्सक्हाए णं मंते ! जीवे कि जणयह ? धम्मकहाए णं निज्ञरं जणयह । धम्म-कहाए णं पवयणं प्रभावेड । पवयणप्रभावेणं जीवे आगमेसस्स भवताए कम्मं निबंधह ॥ २३ ॥ सयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? सयस्स आराहणयाए णं अज्ञाणं खवेड. न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ एगगगमणसंनिवेसणयाए णं मंत् ! जीवे कि जणगड ? एगरगमणसंनिवेसणगाए णं चित्तनिरोहं करेड ॥ २५ ॥ संजमेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? संजमेणं अणण्हयमं जणयह ॥ २६ ॥ तवेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? तवेणं वोदाणं जणयह ॥ २७ ॥ वोदाणेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? बोटाणेणं अकिरियं जणयह । अकिरियाए भविता तक्षो पच्छा सिज्बार बुज्बार सुच्छ परिनिव्वायह सव्बद्धक्लाणमंतं करेइ ॥ २८ ॥ श्रुहसाएणं मंते ! जीवे कि जणगड् १ सहसाएणं अण्रस्ययनं जणयह । अण्रस्ययाए णं जीवे अण्रकंपए अण्व्यहे विगयसोगे चित्तमोहणिजं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ अप्पिडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? अप्पृत्तिबद्ध्याए णं जीवे निस्संगत्तं जणयह । निस्संगत्तेणं जीवे एगरग्निते दिया र राओ य असजामाणे अप्पडिनद्धे याचि निहरइ ॥ ३० ॥ निनित्तस्यणासणगाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? विवित्तसयणासणयाए णं जीवे चरित्तगृतिं जणयह । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दहचरिते एगंतरए मोक्खभावपिकवसे अद्भविह-कम्मगंटिं विज्ञदेह ॥ ३१ ॥ विणियष्टणयाए णं मंते ! जीवे कि जणयह ? विणियष्टण-याए णं जीवे पावकम्माणं अकरणयाए अन्मुद्धेह । पुत्रबद्धाण य निजरणयाए पावं नियक्तेह । तओ पच्छा चाउरंतं संसारकंतारं वीइवयह ॥ ३२ ॥ संभोगपवस्खायेणं भंत ! जीवे कि जणयह ? संभोगपचन्खाणेणं जीवे आलंगणाडं खवेह । निरालंगणस्स य आययद्विया योगा भवंति । सएणं कामेणं संतुर-सङ्, परकामं नो आसाएइ नो तकेह नो पीडेह नो पत्थेह नो अभिकसह। परकार्म अणस्ताएमाणे अत्रक्षेमाणे

अपीहेमाणे अपत्येमाणे अणमिलसमाणे दुखं सहसेजं उबसंपाजिताणं विहर्ह ॥ ३३॥ उवहिपचक्खाणेणं मंते ! जीवे किं जणधर ? उवहिपचक्खाणेणं जीवे अपलिमंशं जणगइ । निरुविहए णं जीवे निकंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥ ३४ ॥ आहारपचक्खाणेणं मंते! जीवे कि जणग्रह ? आहारपचक्खाणेणं जीवे जीविया-संसप्पओगं बोच्छिदइ । जीवियासंसप्यओगं बोच्छिदिसा जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कमायपचक्काणेणं भंते ! जीवे किं जणयह ? कसायपच-क्लाणेणं जीवे वीयरागमावं जणयइ । वीयरागमावपहिवन्ने वि य णं जीवे समसह-दुक्खे भवर ॥ ३६ ॥ जोगपचक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? जोगपचक्खाणेणं र्जावे अजोगत्तं जणग्रह । अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधह, पुव्वबद्धं निज्जरेष्ठ ॥ ३० ॥ सरीरपञ्चक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणगर ? सरीरपञ्चक्खाणेणं जीवे सिद्धाइसयगुणिकत्तर्णं निव्यत्तेइ । सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्रामवगए परमसही भवड़ ॥ ३८ ॥ सहायपचक्खाणेणं भेते ! जीवे किं जणयह ? सहायपच-क्लाणेणं जीवे एगीभावं जणयह । एगीभावभूए वि य णं जीवे एगतं भावेमाणे अप्पतंदे अप्पतंदे अप्पकलंद्र अप्पक्साए अप्पत्नमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समा-हिए यानि भवड ॥ ३९ ॥ भत्तपचक्खाणेणं भंते ! जीने कि जणयह ? भत्तपचक्खा-णेणं जीवे अणेगाइं भवसयाई निरुंभइ ॥ ४० ॥ सब्भावपचक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयह ? सब्भावपत्रक्राणेणं जीवं अनियिष्टिं जणयह । अनियिष्टिपहिवसे य अणगारे चतारि केवलिकमंसे खवेड । तंजहा-चेयणिजं आउयं नामं गोयं । तस्रो पच्छा सिज्ञाड बुज्ज्ञाड सुच्छ परिनिच्चायड सव्बद्धक्ताणसंतं करेड ॥ ४९ ॥ पिंडहिवयाए णं अंते ! जीवे किं जणयह ? पिंडहिवयाए णं जीवे लाधवियं जणयह । लवभए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्यलिंगे विद्युद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सम्बपाणभूयजीवसत्तेषु वीससणिजस्वे अप्पिडिलेहे जिहंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवड ॥ ४२ ॥ वेयावचेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? वेयावचेणं जीवे तित्ययर-नामगोत्तं कम्मं निबंधह ॥ ४३॥ सञ्ज्याणसंपद्मयाए णं भंते ! जीवे कि जणगड ? सञ्ज्ञाणसंपन्नयाए णं जीवे अपुणरावति जणयह । अपुणरावति पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवड ॥ ईँ४॥ वीयरागयाए णं भंते ! जीवे किं जगरह ? वीयरामयाए णं जीवे नेहाणुबंधणाण तण्हाणुबंधणाण य वीच्छिदह. मणुज्ञामणुजेसु सङ्फरिसल्बरसगंबेसु (सन्बित्तान्वित्तमीसएसु) चेव विरजह ॥ ४५॥ संसीए जं मंते ! जीवे कि जणबड़ ? संतीए जं जीवे परीसहे जिणह ॥ ४६ ॥ मुत्तीए णं मंते । जीवे कि जणयह ? मुसीए णं जीवे अकिचणं जणयह । अकिचणे य जीवे

अस्थलोलाणं पुरिसाणं अपस्थणि(खे)जो भवइ ॥ ४७ ॥ अजबयाए णं भेते ! जीवे कि जणयह १ अज्ञवयाए णं जीवे काउज्ज्ययं माधुज्ययं भासुज्ययं अविसंवायणं जण-यइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ४८ ॥ महवयाए णं भंते ! जीवे कि जणयह ? महब्याए णं जीवे अणुस्सियत्तं जणयह । अणुस्सियत्तेष जीवे मिडमहबसंपन्ने अट्टमयद्वाणाई निद्वावेड ॥ ४९ ॥ शावसचेणं भंते ! जीवे कि जणयइ ? भावसन्त्रेणं जीवे भावविसोहिं जणयइ । भावविसो[ही]हिए बद्ध्याणे जीवे अरहंतपन्नत्तस्य थम्मस्स आराहणयाण् अञ्चेद्वेहः । अरहंतपन्नत्तस्य थम्मस्य आरा-हणयाए अब्भुद्रिता परलोगधम्मस्य आराहए भवइ ॥ ५० ॥ ऋणसम्बेणं भंते ! जीवे कि जणगड ? करणसचेणं जीवे करणसिं जणगड़ । करणसचे वहमाणे जीवे जहाबाई नहाकारी यावि भवह ॥ ५१ ॥ जोगसचैणं भंते ! जीवे कि जणयह ! जोगसचेणं जीवे जोगं विसोहेड ॥ ५२ ॥ मणगुत्तयाए णं भंते । जीवे कि जणयड ? मणगुत्तयाए णं जीवे एगरगं जामयह । एगरगिनते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवड़ ॥ ५३ ॥ वयगुत्तयाए णं भेते ! जीवे कि जणयह ! वयगुत्तयाए णं जीवे निव्वियारतं जणबङ् । निव्वियारे णं जीवे बङ्गुते अज्झापजोगसाहणजुते यावि भवड ॥ ५४ ॥ कायगुत्तयाए णं भंते । जीवे किं जणयड ? कायगुत्तयाए णं जीवे संवरं जणयह । संवरेणं कायगुरी पणी पावासवनिरोहं करेड ॥ ५५ ॥ मणसमा-हारणयाए णं भंते ! जीवे कि जणवड ? मणसमाहारणयाए णं अवि एगमां जणवड । एगमां जणहता नाणपज्जवे जणयह । नाणपज्जवे जणहत्ता सम्मत्तं विसोहेह, सिन्छतं च निजारेड ॥ ५६ ॥ वयसमाहारणयाए णं भंते । जीवे कि जणयह १ वयसमा-हारणयाए णं जीवे चयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहिता सलहबोहियतं निव्वतेंह. दुष्कहबोहियतं निज्यरेह ॥ ५७ ॥ कायसमा-हारणयाए णं मंते! जीवे कि जणयह ? कायसमाहारणयाए णं जीवे विश्तपञ्जवे विसोहेड । चरित्तपजावे विसोहिता अहक्सायचरित्तं विसोहेड । अहक्सायचरित्तं विसोहेता चतारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्जाइ कुजाइ मुचइ परि-निक्वायह सम्बद्धक्खाणमंतं करेह ॥ ५८ ॥ नाणसंपद्मशाए णं मंते ! जीवे कि जणयह ? नाणसंपन्तयाए मं जीवे सैव्यभावाहियमं जणयह । नामसंपन्ने णं जीवे चाउरते संसारकंतारे न विणस्सइ । गाहा-अहा सुई ससुता, पंडिया न विणस्सइ । तहा जीवे सम्रोत, संसारे न विगरसा ॥ १ ॥ नामविणवतवचरिताजोंगे संपाउंगह, ससमयपरसमयविसारए य असंचायणिको भवड् ॥ ५९ ॥ दंसणसंपन्नयाए र्ण संते ! जीवे कि जगबड़ ? दंसमसंपन्नवास यं जीवे शबमिकारहिनमं करेड़, यरं न विज्ञाबह।

परं अविज्ञाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरह ॥ ६० ॥ वरित्तसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयह ? वरित्तसंपन्नयाए णं जीवे सेलेसीभावं जणयह । सेकैसि पिडवको य अणगारे चतारि केवलिकस्मंसे खवेड । तमो पच्छा सिज्झह बुज्झह मुच्चइ परिनिब्नायह राव्यदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ६९ ॥ सोइंदियनिम्गहेणं अंते ! जीवे कि जणयह ? सोइंदियनिम्गहेणं जीवे मणुझामणुझेस सहेसु रागदोसनिगाहं जणग्रह । तप्पश्चह्यं च णं करमं न बंधह. प्रव्ववदं च निजारेह ।। ६२ ॥ चर्क्सिदियनिसाहेणं भंते ! जीवे कि जणगड़ ? चर्क्सिदियनिसाहेणं जीवे मणुनामणुतेषु रुवेषु रागदीसनिमाहं जणयह। तप्पचह्यं च णं कम्मं न बंघह. पुञ्चबद्धं च निज्ञरेइ ॥ ६३ ॥ घाणिदियनिश्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयह ? घाणिदियनिकाहेणं जीवे मणुनामण्डेस गंधेस रागदोसनिकाहं जणयह। तप्पन्नइयं च णं कम्मं न बंघइ, पुरुवबद्धं च निजरेड़ ॥ ६४ ॥ जिल्मिदियनिमाहेणं अंते ! जीवे कि जणयह ! जिब्बिसदियनिस्गहेणं जीवे मणुनामण्येषु रसेसु रागदोसनिस्गहं जणयह । तप्पचड्यं च णं कम्मं न बंधह. पुव्यबद्धं च निजारेड ॥ ६५ ॥ फासिं-दियनिग्गहेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? फासिंदियनिग्गहेणं जीवे मणुनामणुनेसु फासेस रागदोसनिगाई जणग्रह । तप्पचड्यं च णं कम्मं न बंधइ, पुञ्चबद्धं च निजरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएणं भंते ! जीवे कि जणयह ? कोहविजएणं जीवे खंति जणयह । कोहवेयणिजं कम्मं न बंघइ, पुरुवबद्धं च निजरेइ ॥ ६० ॥ माणविज-एणं भंते ! जीवे कि जणयह ? माणविजएणं जीवे महवं जणयह । माणवेयणिजं कम्मं न बंधइ, पुव्यबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ सायायिजएणं भंते ! जीवे कि जणयड ? मायाविजएणं जीवे अजवं जणयह। मायावेयणिजं कम्मं न बंधड, पुव्यबद्धं च निजन रेड ॥ ६९ ॥ लोमविजएणं भंते ! जीवे कि जणयड ? लोमविजएणं जीवे संतोसं जण-यह । लोभवेयणिजं कम्मं न बंघइ, पुरुवबद्धं च निजरेइ ॥ ७०॥ पिजदोसमिच्छा-दंसणविजएणं भंते ! जीवे कि जमयह ? पिजदोसमिच्छादंसणविजएणं जीवे नाणदंसण-चरित्ताराहणबाए अब्स्ट्रेड । अद्भविहस्स कम्मस्स कम्भगंठिविमोयणयाए तप्पटमयाए जहाणुपुरुवीए अहावीसङ्बिहं मोहणिजं करमं उरवाएड, पंचविहं नाणावरणिजं, नव-बिहं दंसणावरणिकं, पंचविहं अंतराइयं, एए तिकि वि करमंसे जुगवं खवेड । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पिडपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विद्युद्धं खोगालोगप्यभावं केवलवरनाणदंसमं समुष्यादेह । जाव सजोगी भवह ताब इरियायद्वियं कम्मं निबंधह शहफरिसं दुसमगढिदंगे, तं पढमसम्। वर्दं विश्वसमार वेद्वं तद्वसमा निजिल्लं तं वर्ध प्रद्रं उदीरियं वेदयं विकिल्यं रीयाते य अक्रमां चावि भवद् ॥ ७९ ॥

सह आउयं पालहत्ता अंतोमुहुत्तदावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमिकिरियं अप्पिटिवाइं सुकज्झाणं झायमाणे तप्पटमयाए मणजोगं निरुंभइ, वह्रजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ, आणपाणिनरोहं करेड़ । इसि-पंचरहस्सवस्वरूपारणद्धाए य णं अणगारे समुच्छिकितियं अनियद्विसुक्रज्झाणं झियायमाणे वेयणिजं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ०२ ॥ तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता टजुसेटिपते अपुरसमाणगई उद्धं एगसमएणं अविम्मष्टणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्यायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ०२ ॥ एस खल्ल सम्मत्तपरक्षमस्त अज्झयणस्त अद्धे समणेणं भगवया महावीरेणं आधिवए पन्नविए पहित् दंसिए निर्देसिए उवदंसिए ॥ ति-वेमि ॥ इति सममत्तपरक्षमणामं पगुणतीसइमं अज्झयणं समन्तं ॥ २९ ॥

अह तबमग्गणामं तीसइमं अज्झयणं

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं । खवेड तवसा भिक्ख, तमेगगमणो तुण ॥ १ ॥ पाणिवहसुमावाया, अदत्तमेहुणपरिम्महा विरओ । राईभोयणविरओ. जीवो भवड अणासवो ॥ २॥ पंचसिमओ तिग्रतो, अकसाओ जिडंदिओ । अगारवो य निस्सल्ले. जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥ एएसि तु विवश्वासे. रागदोस-समजियं । खवेद उ जहा भिक्ख , तमेगम्गमणो सुण ॥ ४ ॥ जहा महातलायस्स , संनिरुद्धे जलागमे । उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥ एवं त संजयस्यावि, पाक्कम्मनिरासवै । भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निजरिजाड ॥ ६ ॥ सो नवो द्विहो युत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा । बाहिरो छन्विहो जुत्तो, एवमब्भंतरो त्तवो ॥ ७ ॥ अणसणैमणोयरियौ, भिक्खायरियौ य रसपरिचौंओ । कार्येक्छेसो संजीणयाँ, य बज्हों तवो होइ ॥ ८ ॥ (१) इत्तरिये मरणकालौ य, अणसणा दुविहा भने । इत्तरिय सावकंखा, निरवकंखा उ बिहज्जिया ॥ ९ ॥ जो सो इत्तरि-यत्तवो, सो समासेण छव्विहो । सेहितीबो पयरतेवो, वैणो य तह होइ बर्रेंसो य ॥ १० ॥ तत्तो य वनगवर्मेंगो. यंचमो छट्टओ परण्यत्वो । मणइच्छियचित्तत्यो. नायको होड इत्तरिको ॥ १९ ॥ जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा विग्राहिया । सवियारेमधियारी, कायिबहुं पई भन्ने ॥ १२ ॥ अहवा सपरिकामी, अपरिकामी य आहिया । नीहारियनीहारी, आहारच्छेओ दोस नि ॥ १३ ॥ (२) ओसोबरणं पंचहा, समासेण वियाहियं । दब्बेंओ केलेंकाकेंग, भाँवेणं प्रजीवहि य ॥ १४ ॥

जो जस्स उ आहारो, तसी क्षोमं तु जो करे । जहक्रेणेगसित्याई, एवं दण्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥ गामे नगरे तह रायहाणि, निगमे य आगरे पत्नी । खेडे कव्यवदी-णमुह-, पष्टणमडंबसंबाहे ॥ १६॥ आसमपए विहारे, सिववेसे समायघोसे य। थलिसेणाखंबारे, सत्ये संपद्दकोट्टे य ॥ १७ ॥ वाहेस व रत्थास व, घरेम वा एबमित्तियं खेतं। कप्पड उ एवमाई. एवं खेतेण क भवे ॥ १८ ॥ पेडी य अद्धपेडी, गोमैसिपरंगवीहियाँ चेव । संबद्धावद्वीयय-, गंतुं पचागर्या छद्धा ॥ १९ ॥ दिवसस्स पोरुसीणं, चडण्हं पि उ जित्तको भवे कालो । एवं चरमाणो खाउ. कालोमाणं मुणेयव्वं ॥ २०॥ अहवा तहयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसंतो। चउभागणाएं बा. एवं कालेण ऊ भने ॥ २१ ॥ इत्थी ता पुरिसी बा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि । अन्नयरचयरथी वा. अन्नयरेणं व वरथेणं ॥ २२ ॥ अन्नेण विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुसुयंते उ । एवं चरमाणी खलु, भावोमाणं सुणेयव्वं ॥ २३ ॥ दब्बे खेते काले, भावंमि य आहिया उ जे भावा । एएहि ओमचरओ, पज्जवचरको भने भिक्क ॥ २४॥ (३) अद्वविहगोयरग्गं तु. तहा सत्तेन एसणा । अभिनगहा य जे अने, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥ (४) खीरदहि-सिंपामाई, पणीयं पाणभोयणं । परिवजणं रसाणं तु, भणियं रसविवजणं ॥ २६ ॥ (५) ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ ग्रहावहा । उग्गा जहा धरिजंति, कायकिलेसं तमाहियं ॥ २७ ॥ (६) एगंतमणावाए, इत्वीपसुविवज्जिए । सयणा-सणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥ २८ ॥ एसो बाहिरगं तवो, समासेण वियाहिओ । अस्मितरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्यसो ॥ २९ ॥ पायच्छितं विणैओ, वेया-वैश्वं तहेव सज्झोंओ । झाणं च विउस्सर्ग्यो, एसो अस्थितरो तवो ॥ ३०॥ (१) आस्त्रेयणारिहाईयं, पायच्छितं तु दसविहं । जे भिक्ख् बहर्ई सम्मं, पायच्छितं तमाहियं ॥ ३१ ॥ (२) अञ्जुद्वाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं । गुरुमत्ति-मानग्रस्स्सा, निणमो एसं नियाहिमो ॥ ३२ ॥ (३) आयरियमाईए, वेयानचीम दसविहे । आसेवणं जहाथामं, वेयावचं तमाहियं ॥ ३३ ॥ (४) वायणी पुच्छणी चेव, तहेच परियष्टणा । अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पंचहा भवे ॥ ३४॥ (५) अर्ट्टरहाणि विजता, झाएजा ग्रसमाहिए। धन्मैश्रकाई झाणाई, झाणं तं तु बुद्धा वए ॥ ३५ ॥ (६) सयणासमठाणे वा, जे उ भिक्ख् न बाबरे । कायस्स विस्तानगो, छ्द्रो सो परिकित्तिको ॥ ३६ ॥ एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे शुणी । सो खिप्पं सव्यवंसारा, विष्यमुख्य पंडिओ ॥ ३७ ॥ ति-विम ॥ इति तचमम्गणामं तीसरमं अजायणं समर्च ॥ ३० ॥

अह चरणविहिणामं एगतीसइमं अञ्चयणं

चरणिविहिं पदक्खामि, जीवस्स उ घुहावहं। जं चरिता बहू जीवा, तिष्णा संसारसागरं ॥ १ ॥ एगओ विरइं कुळा, एगओ य पत्रत्तणं । असंजमे नियत्ति च, संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥ रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपनत्तणे । जे भिक्ख् संगई निचं, से न अच्छइ मंडले ॥ ३ ॥ दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं । जे भिक्क चयई निर्च, से न अच्छह मंडले॥ ४॥ दिव्वे य जे उषसमी, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्ख् सहुई निचं, से न अच्छड् मंडछे ॥ ५ ॥ विगहाकसाय-सकाणं, साणाणं च दुयं तहा । जे सिक्ख् वज्जई निर्धा, से न अच्छाइ मंडले ॥ ६ ॥ वएस इंदियत्थेस, समिईस किरियास य । जे मिक्स जगई निर्दा, से न अच्छद मंडले ॥ ७ ॥ लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्क् जयई निर्घ, से न अच्छड् मंडले ॥ ८ ॥ पिंडोम्गहपडिमामु, भयद्वाणेसु सत्तस्र । जे भिक्क् जयहै निषं, से न अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥ मएसु बंभगुनीसु, भिक्खुधम्मभ्मि दसविहे । जे भिक्त् जयई निषं, से न अच्छइ मंडले ॥ १० ॥ उदासगाणं पृष्टिमास, भिक्त्यूणं पिंडमासुय । जे भिक्ख् जयई निश्वं, से न अच्छद मंडछे ॥ ११ ॥ किरियासु भूयगामेश्च, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्ख् जगई निषं, से न अच्छा मंदले ॥ १२ ॥ गाहासोलसएहिं, तहा असंजर्मासे य । जे मिक्स् अयह निश्वं, से न अच्छद मंडले ॥ १३ ॥ वंभंमि नायज्ययणेसु, ठाणेसु असमाहिए । जे निक्खू जयई निषं, से न अच्छह मंडले ॥ १४ ॥ एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे । जे भिष्क् जगई निषं, से न अच्छद् मंडके ॥ १५ ॥ तेवीसाइ स्यगढे, रूबाहिएस सुरेस य । जे मिक्ख् जयई निषं, से न अच्छइ मंडले ॥ १६ ॥ पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं । जे भिक्ख् जयई निषं, से न अच्छइ मंडले ॥ १५ ॥ अणगाराजीह च, पगप्पंसि तहेव य । जे भिक्क् जयई निर्च, से न अच्छर मंडके ॥ १८ ॥ पावसुयपसंगेसु, सोहळाणेसु चेव य । जे भिक्ख् जग्रई निषं, से न अच्छ्य मंडके ॥ १९ ॥ सिद्धाहगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य । जे मिक्सू जयहूँ निषं, से न अच्छड़ मंडले ॥ २० ॥ इस एएसु ठाणेसु, जे निक्ख् जराई सदा । कियां सो सव्वसंतारा, विष्यमुख्द पंडिको ॥ २१ ॥ ति-वेसि ॥ इति खरणविद्विणार्ध यगतीसदमं अज्ञयणं समर्श ॥ ३१ ॥



अह पमायहाणणामं बत्तीसहमं अञ्झयणं

अर्चतकालस्स समृत्नास्स, सम्बस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो । तं भासओ मे पिंदुण्णिकता, सुणेह एगंतहियं हियत्यं ॥ १ ॥ नाणस्स सम्बस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए । रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेह मोक्सं ॥ २ ॥ तस्रेस मरगो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्य दूरा । सज्ज्ञाय-एगंतनिसेवणा य, धनत्थसंचितणया विई य ॥ ३ ॥ आहारमिच्छे मियमेसणिजं. सहायमिच्छे निउणत्यबुद्धि । निकेयमिच्छेज विवृगजोगं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥ न वा लभेजा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा । एगो वि पावाइं विवज्जर्यतो, विहरेज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥ जहा य अंडप्पभवा बलागा, अंडं बलागप्पभवं जहा य। एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाय-यणं वयंति ॥ ६ ॥ रागो य दोसो वि य कम्मचीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति । कम्मं च नाईमरणस्स मूर्ल, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ७॥ दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हुओ जस्स न होड़ तण्हा । तण्हा हुया जरस न होड़ ळोहो, ळोहो हुओ अस्स न किंचणाई ॥ ८ ॥ रागं च दोसं च तहेव मोहं, उदसुकामेण समूलवारं। जे जे उवाया पडिवज्जियन्त्रा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुन्ति ॥ ९ ॥ रसा पगामं न निसेवि-थवा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं । दित्तं च कामा समिश्वंति, दुमं जहा साउपलं व पक्की ॥ १० ॥ जहा दवम्गी पर्श्तिभणे वणे, समारुओ नोवसमं उनेह । एविंदियमगी वि पगामभोइणो, न वंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥ विक्तिसेजासणजंतियाणं, ओमासणाणं दमिइंदियाणं । न रागसत् धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ।। १२ ॥ जहा बिरालावसहस्स मृछे, न मूसँगाणं वसही पसत्या । एमेव इस्थीनिळयस्स मज्हे, न बंभयारिस्स खमो निवासी ॥ १३ ॥ न रुवळावण्णविकासहासं, न जंपियं इंगियपेहियं वा । इत्थीण चित्तंसि निवेसइता, दहुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥ अहंसणं चेव अपत्यणं च, अचितणं चेव अकित्तणं च । इत्बीजणस्सारियझाणजुरगं, हियं सया बंभवए रयाणं॥ १५॥ कामं तु देवीहिं विभूसियाहिं, न बाह्या खोम-इंड तिगुत्ता । तहा वि इनंतहियं ति नवा, विवित्तवासो मुणियं पसत्यो ॥ १६ ॥ मोक्सानिकंकित्त उ माणवर्स, संसारनीक्त्स ठियस्स धम्मे । नेवारिसं दुत्तरमरिव कोए. बहित्यको बालमणोहराको ॥ १७ ॥ एए च संगे समहकामता, छदुतरा चेव भवंति सेसा । जहा सहासागरश्चत्तरिता, नई भवे अवि गंगासमाणा ॥ १८ ॥ कामाणुनिकिप्पश्चं का दुवसी, सम्बन्ध खोगस्स सदेवगस्स । अं काइयं भाणियं

च किंचि, तस्तंतगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥ जहा य किंपागफल मणोरमा, रसेण वर्णण य भुजनाणा । तं खुरूए जीविय पचमाणा, एओवमा कामगुणा विवारो ॥ २० ॥ जे इंदियाणं विसया मणुना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ। न यामणुषेसु मणं पि कुजा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥ (१) चक्खुस्स स्यं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुक्तमाह । तं दोसहेउं अमणुक्तमाह, समी य जो तेषु स वीयरागो ॥ २२ ॥ स्वस्य चक्खुं गहणं वयंति, चक्खुस्स सर्व गहणं वर्यति । रागस्स हेउं समणुक्तमाह्, दोसस्स हेउं अमणुक्तमाह् ॥ २३ ॥ स्वेगु जो गिद्धिमुवेड तिन्वं, अकालियं पावह से विणासं । रागाउरे से जह वा परंगे, आलो-यलोले समुवेइ मचुं॥ २४॥ जे यावि दोसं समुवेइ तिच्चं, तंति क्सणे से उ उनेइ दुक्खं । दुरंतदोसेण सएण जंतु, न किंचि एवं अवरज्ज्ञहं से ॥ २५ ॥ एगंतरते रुइरेसि रूवे, अनालिसे से कुणई पओसं। दुक्खरस संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥ स्वाणुगासाणुगए य अवि. चराचरे हिंस-इऽणेगरुवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तद्रगुरु किलिट्टे ॥ २०॥ रूवाणु-वाएण परिगहेण, उप्पायणे रक्क्शणसिक्तओरे । ३ए विओरे य कहं सहं से, संभोगकाले य अतित्तलामे ॥ २८ ॥ हवं अतिते य परिगार्हमि. सत्तोवसत्तो न उचेइ तुट्टिं। अतुट्विदीसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥ तण्हाभिभूयस्य अदत्तहारिणो, स्वं अतित्तस्य परिगाहे य । मायामुसं वहुर लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुखई से ॥ ३० ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यओ य, पओगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंती, रूवे अतिती दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥ रुवाणुरत्तस्य नरस्स एवं, कत्तो सहं होज कयाइ किन्ति । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निष्वतई जस्स कएण दुक्खं ॥ ३२ ॥ एमेव रूवंमि गओं पओसं, उवेइ दुक्सोहपरंपराओं । पदुह्वचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुईं विवागे ॥ ३३ ॥ रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पए भवमज्हो वि संतो, जरुंग वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥ (२) सीयस्स सई गहणं वयंति, तं रागहेडं तु मणुजमाहु । तं दोसहेउं अमणुजमाहु, समी य जो तेष्ठ स नीयरागो ॥ ३५ ॥ सहस्स सोयं गहणं वर्गति, सोयस्स सहं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुषमाहु, दोसस्स हेउं अमणुष्ममाहु ॥ ३६ ॥ सहेन जो निद्धिमुवेद तिन्वं, अकालियं पावद से विणासं । रागाउरे हरिणमिंगे व मुद्रे, सद्दे अतिते समुवेद मधुं ॥ ३७ ॥ जे यावि दोसं समुवेद तिव्यं, तंसि क्सणे से उ उनेइ दुक्खं । दुईतदोसेण सएण जंतू, न किंचि सहं अवरूजाई से ॥ ३८ ॥

एगंतरते कर्रसि सहे, अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलस्वैड बाले. न लिप्पई तेण मुणी विरागी ॥ ३९ ॥ सद्दाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणे-गरूने । चित्तेहि ते परितानेइ वाले, पीलेड अत्तद्भगुरू किलिद्रे ॥ ४० ॥ सहाणुनाएण परिगाहेण. उप्पायणे रक्खणसन्निओंगे। वए विओगे य कहं मुहं से, संगोगकाले य अतिनलामे ॥ ४९ ॥ सद्दे अतिते य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेड् तुर्द्धि । अतुद्धि-दोसेण दही परस्स, लोमाविले आययई अदर्ता ॥ ४२ ॥ तण्हाभिभयस्य अदत्तहारिणो सहे अतित्तस्य परिगाहे य । मायामुसं वहुह लोभदोसा, तत्थावि हुक्खा न विमुखहे से ॥ ४३ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पञ्जोगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो, सद्दे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥ सद्दाणुरतस्स नरस्स एवं, कत्तो मुहं होज कयाइ किंचि। नत्योवसोगे वि किल्प्सदुक्खं, निव्यक्तई जस्स कर्ण दुक्लं ॥ ४५ ॥ एमेव सहंमि गओ पओसं, उवेइ दुक्लोहपरंपराओ । पदुट्टिक्तो य निणाइ बस्मं, जं से पुणो होइ दृहं विवागे ॥ ४६ ॥ संहे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पए भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपळासं ॥ ४७॥ (३) घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुजमाह । तं दोसहेउं अमणजमाह. समो य जो तेस स वीयरागो ॥ ४८ ॥ गंधस्स घाणं ग्रहणं वयंति. घाणस्स गंधं ग्रहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुष्रमाह. दोसस्स हेउं अमणुनमाहु ॥ ४९ ॥ गंधेसु जो गिद्धिमुवेद तिम्बं, अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे ओसहगंधिगद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्समंते ॥ ५० ॥ जे यावि दोसं समुबेइ तिव्वं. तंसि क्खणे से उ उनेइ दुक्खं । दुईतदोसेण सएण जंतू, न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥ ५९ ॥ एगंतरते रुइरंसि गंधे, अतालिसे से कुणई प्रजोसं । दुक्खस्स संपीलसुबेइ बाले, न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥ ५२ ॥ गंबाणुगासाणुगए य जीवे, चरावरे हिंसइऽणेगरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेड अत्तरगुरू किलिद्रे ॥ ५३ ॥ गंधाणुबाएण परिमाहेण, उप्पायणे रक्खण-सिक्रिओंने । वए विओंने य कहं ग्रहं से, संभोगकाले य अतितलामे ॥ ५४ ॥ गंघे अतिरे य परिगाइंमि, सत्तोकसत्तो न उवेइ तुर्द्धि । अतुद्विदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आयगई अदर्त ॥ ५५ ॥ तण्हाभिभूयस्त अदत्तहारिणो, गंधे अतित्तस्स परिगाहे य । सायाम्सं बहुइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुचई से ॥ ५६ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यको य, प्रकोगकाळे य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाय-यतो, गंधे अतिसो दुहिओ अगिस्सो ॥ ५७ ॥ गंधाणुरतस्स नरस्स एवं, कसो सहं होज कमाइ किंचि। तत्वीयभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्यत्तई जस्स कएण €६ संसा∘

दुक्खं ॥ ५८ ॥ एमेव गंधंमि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ । पदुद्वचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होड़ दुहं विदागे ॥ ५९ ॥ गंधे विरस्तो मणुओ विसोगो. एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जल्लेण वा पोक्ख-रिणीपलासं ॥ ६० ॥ (४) जिल्माए रसं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुलमाहु । तं दोसहेउं अमणुभमाह, समो य जो तेम्र स वीयरागो ॥ ६१ ॥ रसस्स जिञ्मं गहणं वयंति, जिन्भाए रसं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुक्रमाहु, दोसस्य हेउं अमणुक्तमाहु ॥ ६२ ॥ रसेसु जो निद्धिमुबेइ तिब्बं, अकालियं पावई से विणासं । रागाउरे विकसिविभिन्नकाए, मच्छे जहां आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥ जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्लणे से उ उवेइ दुक्लं । दुईतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रसं अवर ऋई से ॥ ६४ ॥ एगंतरते रहरंसि रसे, अतालिसे से कुणई पओसं। दुक्खरस संपीलमुवेइ बाले, न लिपाई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥ रसाणुगासा-णुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगस्वे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेड अत्तद्वगुरू किलिट्टे ॥ ६६ ॥ रसाणुवाएण परिग्रहेण, उप्पायणे रक्खणसिकांगे । वर्ण विओगे य कहं सहं से. संयोगकाले य अतिसलाये ॥ ६७ ॥ रसे अतिसे य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेड तुद्धि । अतुद्धिरोसेण दुही परस्स, लोभाविले आयर्वं अदत्तं ॥ ६८ ॥ तण्हाभिभ्यस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्य परिग्गहे य । माबामुसं बहुद लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुन्तई से ॥ ६९ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरस्थको य. पओगका है य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो. रसे अतित्तो दृढिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥ रसाणुरत्तरस नरस्स एवं, कत्तो सहं होज क्याइ किंचि। तत्थोवमोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ७१ ॥ एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ । पदुक्वित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुई विनागे ॥ ५२ ॥ रसे विरत्तो मणुक्षो विसोगो, एएण दुक्लोहपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वि संतो, जलेण वा पोक्स्तरिणी-पलासं ॥ ७३ ॥ (५) कायस्स फासं गहणं वयंति, तं रागहेर्नं तु मणुक्रमाहु । तं दोसहेडं अमणुज्याह, समो य जो तेषु स बीयरागो ॥ ७४ ॥ फासत्स कार्य गहणं वयंति, कायस्स कासं गहणं वयंति । रागस्स हेर्ड सम्प्रकागात्त. दोसस्स हेउं अमणुक्तमाहु ॥ ७५ ॥ फासेद्ध जो निद्धिमुवेह तिन्वं, अकार्क्ष्यं पावइ से विणास । रागाउरे सीयजळावसके, माहरगहीए महिसे विवक्ते ॥ ७६ ॥ जे यावि दोसं समुबेह तिन्वं, तंसि क्खणे से उ उवेह हुम्सं । दुरंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फार्स अवरज्जार्र से ॥ ७७ ॥ एगंतरशे कारीर फारी, अताकिसे से

कुणई पक्षोसं । दुक्खस्य संपीलमुवेद बाळे, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥ फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइऽषेगरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाछे, पीलेंड अत्तहुगुरू किलिहे ॥ ७९ ॥ फामाणुवाएण परिस्महेण, उप्पायणे रक्खणसन्नि-ओरो । वए विओरो य कहं सहं से, संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥ ८० ॥ फासे अतिते य परिगाहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्द्धि । अतुद्विदोसेण दुही परस्स, लोमा-विले आययई अदर्न ॥ ८१ ॥ तण्हाभिभृयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परि-गाहे य । मायामुसं वहुह लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुश्चई से ॥ ८२ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, प्रोगकाळे य दही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाय-यंतो. फासे अतित्तो दृहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥ फासाणुरतस्स नरस्स एवं, कत्तो सुद्दं होज क्याइ किंचि । तत्थोवमोगे वि किल्सिइक्सं, निव्यक्तई जस्स करण दुक्सं ॥ ८४ ॥ एमेन फासंसि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ । पदुहुचित्तो य चिणाइ कर्म, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥ फासे विरनो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्हे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥ (६) मणस्स भावं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुनमाह । तं दोसहेउं अमणुनमाह, समी य जो तेस स वीयरागो ॥ ८७ ॥ भावस्स मणं गहणं वयंति, मणस्स भावं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुत्रमाह्, दोसस्स हेउं अमणुत्रमाहु ॥ ८८ ॥ भावेमु जो गिद्धिमुवेइ तिथ्वं, अकालियं पावर से विणासं । रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणमगगावहिए गजे वा ॥ ८९ ॥ जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं । दुईतदोसेण सएण जंतू, न किन्ति मानं अवरज्झई से ॥ ९० ॥ एगंतरते स्इरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलसुवेइ वाले, न क्रिप्यं तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥ भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंस-इऽणेगस्वे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तहगुरू किलिहे ॥ ९२॥ भाषाणु-बाएण परिमाहेण, उप्पायणे रक्खणसिकाओंगे । वए विओगे य कहं ग्रहं से, संभोग-काले य अतित्रलामे ॥ ९३ ॥ भावे अतिते य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उपेइ तुर्हि । अतुहिदोसेण दुही परस्स, ह्योमाविले आययई अदर्त ॥ ९४ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदतहारिको, भावे अतितस्स परिगाहे य । माग्रामुसं वहूर लोभदोसा, तत्यावि हुक्का न विमुचई से ॥ ९५ ॥ मोसस्स पच्छा व पुरत्यओ व, फ्लोगकाले व हुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समागर्गतो, माने अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥ माना-पुरत्तस्स नरस्य एवं, कतो धुदं होज कवाइ किंचि । तत्थोवमोगे वि किळेसदुक्खं, निव्यक्त इ कस्य क्रम्ण दुक्बं ॥ ९७ ॥ एमेव भावंमि गओ पओसं, उनेइ दुक्खोहर

परंपराओ । पदुट्टिक्तो य निणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुई विवागे ॥ ९८ ॥ भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण। न लिप्पई भवमज्झे वि संतो. जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ९९ ॥ एविदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खरम हेउं मणु-यस्स राणिणो। ते चेव थोवं पि कयाइ तुक्खं, न वीयरागस्स करेंति किंचि॥ १००॥ न काममोगा समयं उवेंति. न यावि भोगा विगई उवेंति । जे तप्पक्षोसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगई उवेइ ॥ १०९ ॥ कोई च माणं च तहेव मायं, लोई दुगुंछं अरइं रइं च । हासं भयं सोगपुमित्थिवेगं, नपुंसवेगं विविहे य भावे ॥ १०२ ॥ आवजाई एवमणेगरूवे, एवंबिट्टे कामगुणेस सत्तो । अन्ने य एयप्पभवे विसेसे, कारुण्णवीणे हिरिमे वहस्से ॥ १०३ ॥ कप्पं न इच्छिज सहायलिच्छ, पच्छाणुतावे न नवप्पभावं । एवं वियारे अमियप्पयारे, आवजई इंदियचोरवस्से ॥ १०४ ॥ तक्षो से जायंति पत्रोयणाई, निमजिन्नं मोहमहण्णवंसि । सुहेसिणो व्यन्खविणोयणहाः तप्पचर्य उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥ विरुक्तमाणस्स य इंदियत्था, सहाऱ्या नाव-इयपगारा । न तस्स सन्वे वि मणुष्तयं वा, निम्बत्तयंती अमणुष्तयं वा ॥ १०६ ॥ एवं सर्चकप्पविकप्पणासुं, संजायई समयमुवद्वियस्स । अत्ये य संकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेस तुण्हा ॥ १०७ ॥ स वीयरागो कयसव्वकिचो. खवेइ नाणावरणं खणेणं । तहेव जं दंसणमावरेइ, जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥ १०८ ॥ मध्वं तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरंतराए । अणामवे झाणसमाहिजुत्ते, आउन्खए मोक्समुबेह हुद्धे ॥ १०९ ॥ सो तस्स सव्वस्स तुहस्स मुक्को, जंबाहुई सबयं जंतुमेर्यं। रीहामयं विप्पमुक्को पसत्यो, तो होइ अर्थतसुही कयत्यो ॥ १९० ॥ अणाइकालप्पमवस्स एसो, सन्वस्स द्वन्तस्स प्रमोक्सममो। वियाहिओ जं समुविध सत्ता, कमेण अवंतसुही भवंति ॥ १११ ॥ ति-वेमि ॥ इति पमायद्वाणणामं वचीसहमं अज्ञयणं समत्तं ॥ ३२ ॥

अद्व-कम्माइं बोच्छामि, आणुपुर्वि जहक्कमं । जेहिं बदो अयं जीवो, संसारे परि-वहर्षे ॥ १ ॥ नाणस्सावरणिजं, दंसणावरणं तहा । वेयणिजं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य ॥ २ ॥ नामकम्मं च गोयं च, अंतरायं तहेव य । एवमेयाइ कम्माइं, अहेव उ समासओ ॥ २ ॥ (१) माणावरणं पंचविद्दं, सुँगं कामिष्यवोहियं । ओहि-नौणं च तह्यं, मणनॉणं च केवेलं ॥ ४ ॥ (२) निहा तहेव पमळी, निहानिही पय- रूपयलाँ य । तत्तो य शीणगिद्धी उ. पंचमा होइ नायव्या ॥ ५ ॥ वक्खुमचक्खुँ-सोहिस्सै, दंसणे केवेंले व आवरणे । एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥ ६ ॥ (३) वेगणीयं पि य दुविहं, सारीमसीयं च आहियं। सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥ (४) मोहणिजं पि दुनिहं, दंसैणे चरैणे तहा । दंसणे तिनिहं वतं. चरणे द्विहं भवे ॥ ८ ॥ सम्मैतं चेव मिच्छैतं, सम्मामिच्छतमेवे य । एयाओ तिकि पयडीओ, मोहणिजस्स दंसणे॥ ९॥ चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं। कमायमोहणिकं तू. नोकसार्य तहेव य ॥ १० ॥ सोलसविहमेएणं, कम्मं तु कसा-यजं । मनविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥ ११ ॥ (५) नेरह्यैतिरिक्खाउं, मणुक्सींटं तहेव य । देवाउँयं चउत्थं तु, आउकम्मं चउन्विहं ॥ १२ ॥ (६) नाम-कम्मं तु दुविहं, सुईमसुँहं च आहियं । सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असहस्स वि ॥ १३॥ (७) गोयं कम्मं दुविहं, उंधं नीयं च आहियं। उधं अडविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥ १४ ॥ (८) दीण लाभे य भौगे य, उर्वेभोगे बीरिए तहा । पंचविहमंतरायं. समासेण वियाहियं ॥ १५ ॥ एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया। पएसरगं खेतकाळे य, मावं च उत्तरं सुण ॥ १६॥ सन्वेसिं चेव कम्माणं, पर्सरगमणंतगं । गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥ १७ ॥ सव्यजीवाण करमं तू. संगहे छहिसागयं । सन्त्रेसु वि पएसेसु, सन्वं सन्वेण बद्धगं ॥ १८ ॥ उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उद्गोसिया टिई होइ, अंतोसहर्त जह ितया ॥ १९ ॥ आवरणिजाण दुण्हं पि, वेयणिजे तहेव य । अंतराए य कम्मिम, ठिई एसा वियाहिया ॥ २०॥ उद्हींसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिको-डिओ । मोहणिजस्स उक्षोसा, अंतोमुहुत्तं जहिकया ॥ २१ ॥ वेत्तीससागरोवमा, उद्योसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुतं जहिसया ॥ २२ ॥ उद्हीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ । नामगोत्ताणं उक्कोसा, अद्वमुहुत्ता जह, भिया ॥ २३ ॥ सिद्धाणणंतमागो य, अणुमागा हवंति उ । सन्वेसु वि पएसस्यं सन्बजीवे अइच्छियं ॥ २४ ॥ तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागा वियाणिया । एएसि संबरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ २५ ॥ ति-बेमि ॥ इसि कम्मण्यवडी णामं तेसीसइमं अज्ययणं समत्तं ॥ ३३ ॥

अह छेसज्झयणणामं चोत्तीसइमं अज्झयणं

केसज्ययणं पवक्खामि, आणुपुर्वित जहक्सं । छण्हं पि कम्सकेसाणं, अणुभावे

सुणेह मे ॥ १ ॥ नामाइं वण्णरसगंध-, फासपरिणामलक्खणं । ठाणं ठिहं गईं चाउं, रेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥ किल्ही नीठा य कार्ड य, तेर्ड पम्ही तहेव य । सुकरेर्सा य छ्ट्ठा य, नामाई तु जहक्कमं ॥ २ ॥ (१) जीमृयनिद्धसंकासा, गवलरिद्धगसिनमा। खंजंजणनयणनिमा, किण्डलेसा उ वण्णओ ॥ ४॥ (२) नीलासीगसंकासा, चासपिच्छसमप्पमा । वेहिंछयनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥ (३) अयसीपप्फसंकासा, कोइलच्छदसिक्षमा। पारेवयगीवनिमा, काउलेमा उ वण्णओ ॥ ६॥ (४) हिंगुलस्याउसंकासा, तरुणाइश्वसिन्नमा । सुयतुंडपईवनिमा, तेऊ-हेसा उ वण्णओ ॥ ७॥ (५) हरियालमेयसंकासा, हालेहाभेयसमप्पमा । सणासणकुसुमनिमा, पम्हलेसा उ बण्णको ॥ ८॥ (६) संखंककुंद्संकासा, स्तीरपूरसमप्पमा । रययहारसंकासा, मुक्कलेसा उ बण्णको ॥ ९॥ (१) जह कहुयतंबगरसो, निवरसो कहुयरोहिणिरमो वा। एतो वि अणंतगुणो, रसो य किण्हाए नायव्यो ॥ १० ॥ (२) जह तिगडुयस्स य रसो, तिक्खो जह हर्त्थि-पिप्पलीए वा । एसी वि अर्णनगुणी, रसी उ नीलाए नायब्वी ॥ ११ ॥ (३) जह तरुणखंबगरसो, तुवरकविट्टस्स वाबि जारिमओ । एसो वि अर्णतगुणो, रसो उ काऊए नायव्यो ॥ १२ ॥ (४) जह परिणयंवगरसो, पक्कविद्वस्स वावि जारिसओ। एतो वि अर्णतगुणो, रसो उ तेऊए नायब्वो ॥ १३॥ (५.) जह वारुणीए व रसो, यिविहाण व आसवाण जारिसओ । महमेरयस्स व रसो, एतो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥ (६) खजूरमुह्यरसो, खीररसो खंडसकररसो वा। एतो वि अर्णतगुणी, रसो उ सुकाए नायव्यो ॥ १५ ॥ जह गोमडस्स गंघो, सुणगमङस्स व जहा अहि-महस्स । एसो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पस्त्याणं ॥ १६ ॥ जह सुरहिकुमुमगंधो, गंधवासाण पिरसमाणाणं । एतो वि अणंतगुणो, पसत्यलेसाण तिण्हं पि ॥ १७ ॥ जह करगयस्स फासो, गोजिब्साए य सागपताणं । एतो वि अर्णतगुणो, छेसाणं अप्पतत्थाणं ॥ १८ ॥ जह ब्रस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुमुमाणं । एत्ती वि अणंतगुणो, पसत्यस्टेसाण तिण्हं पि ॥ १९ ॥ तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइ-बिहेक्सीओ वा। दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥ २०॥ (१) पंचासवप्प-वत्तो, तीहिं अगुत्तो छसं अविरक्षो य । तिन्वारंभपरिणओ, सहो साहसिक्षो नरो ॥ २९ ॥ निद्धंधसपरिणामो, निरनंसो अजिइंदिओ । एयजोगसमाउत्तो, किण्हळेसं त परिणमे ।। २२ ॥ (२) इस्सा अमरिस अतवो, अविज्ञमाना अहीरिया । गिद्धी पद्योसे य सढे, पमत्ते रसलोद्धए ॥ २३ ॥ सायगनेसए ये । आरंभाको अविरक्षो, खरो

१ 'गजपीपल' इति भासाए । २ गाहाहिगपममिणं ।

साहस्सिओ नरो । एयजोगममाउत्तो, नील्छेसं तु परिणमे ॥ २४ ॥ (३) वंके वंकसमायारे, नियिष्ठित्रे अणुजुए । पत्निउंचगओवहिए, मिच्छादिद्वी अणारिए ॥ २५॥ उप्फालगदुद्ववाई य, तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउनो, काउलेसं त परिणमे ॥२६॥ (४) नीयावित्ती अचवले, अमाई अङ्गलहले । विणीयविणए दंते, जोगवं उवद्दाणवं ॥ २० ॥ पियधम्मे दढधम्मे, ऽवज्जमीक हिएसए । एयजोगसमाउत्तो, तंजलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥ (५) पयणुकोहमाणे य, मायालोमे य पयणुए । पसंतिचित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥ तहा पराणुवाई य. उवसंते जिई-दिए । एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३०॥ (६) अदृरहाणि विजता, धम्मसुकाणि झायए । पसंतिचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३९ ॥ सरागे वीयरागे वा, उवसंते ब्रिहंदिए। एयजोगसमाउत्तो, सुक्रुटेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥ असंखिजाणोमिपणीण, उस्सप्पिणीण जे समया । संखाईया लोगा. लेमाण इवंनि ठाणाई ॥ ३३ ॥ मुहुत्तदं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोमा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥ २४ ॥ भुहत्तदं तु जहन्ना, दम उदही पिलयमसंवभागमञ्महिया । उक्तोमा होइ ठिई, नायव्या नीललेसाए ॥ ३५ ॥ मुहत्तद्धं तु अह्चा, तिष्णुदही पलियमसंखभागमञ्महिया । उद्योसा होइ ठिई. नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥ मुहुत्तदं तु जहना, दोण्णुदही पलियमसंखभाग-मन्महिया । उद्योसा होइ ठिई, नायन्या तेउलेसाए ॥ ३७ ॥ मुहत्तर्स तु जहना, दम होति य सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होड् ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥ मुहत्तर्द तु जहना, तेत्तीसं सागरा मुहत्तिहिया । उक्कोसा होइ ठिई. नायव्या सुक्रलेसाए ॥ ३९ ॥ एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होड़ । चउसु वि गईसु एतो, छेसाण ठिई तु वोच्छामि॥ ४०॥ दस वाससहस्साई, काऊए ठिई जहिमया होइ । तिष्णुदही पिल्ञोनम-, असंखभागं च उद्योसा ॥ ४९ ॥ तिण्णुदही पिल्ञोवम-, असंसभागो जहनेण नीलिटई । दस उदही पिल्ओवम-, असंखभागं च उद्योसा ॥ ४२ ॥ दसउदही पिल्ओवम-,असंखभागं जहिंदिया होह । तेत्तीससागराई उद्योसा, होह किण्हाए छेसाए ॥ ४३ ॥ एसा नेरडयाणं, लेसाण ठिई उ विष्णिया होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥ अंतोमुहुत्तमखं, छेसाण टिई जहिं जहिं जा उ। तिरियाण नराणं वा, विज्ञता केवलं छेसं ॥ ४५ ॥ मुहुतस्तं तु बहुता, उन्होसा होइ पुच्च-कोडीओ । नवहि वरिरोहि काषा, नायम्बा सक्केसाए ॥ ४६ ॥ एसा तिरिय-नराणं, लेसाण ठिई उ विष्णया होड । तेण परं वोच्छामा, लेसाण ठिई उ देवाणं

॥ ४७ ॥ दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिईं जहिनया होइ । पिलयमसंखिजडमो. उक्कोसी होड़ किण्हाए ॥ ४८ ॥ जा किण्हाए ठिई खल्ल, उक्कोसा सा उ समयम-ब्महिया । जहनेणं नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ४९ ॥ जा नीलाए ठिई खल, उक्कोसा सा उ समयमन्मिद्दिया । जहनेणं काऊए, पिन्यमसंखं च उक्कोसा ॥ ५०॥ तेण परं वोच्छामि, तेकळेसा जहा सरगणाणं । भवणवद्याणमंतर-. जोइसवेमाणियाणं च ॥ ५९ ॥ पिल्लोबमं जहना, उक्कोसा सागरा उ दन्नहिया । पलियमसंखेजेणं, होइ भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥ दसवानसहस्साई, तेऊए ठिई जहिनया होड़ । दुखुदही पिलओवम-,असंखमागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥ जा तेऊए ठिई खल, उक्कोसा सा उ समयमञ्महिया । जहनेणं पम्हाए, दस उ सहत्ताहियाई उक्कोसा ॥ ५४ ॥ जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमञ्जाहिया। जहनेणं सकाए, तेत्तीसमुहत्तमध्महिया ॥ ५५ ॥ किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ । एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गई उववजाई ॥ ५६ ॥ नेऊ पम्हा सुका, तिश्वि वि एयाओ धम्मलेसाओ । एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गई उबबजाई ॥ ५७ ॥ लेपाहिं सन्वाहिं, परमे समर्थमा परिणयाहिं तु । न ह करसइ उववाओ. परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥ लेसाहिं सन्त्राहिं, चरिमें समयंमि परिणयाहिं तु । न हु कस्सइ उवनाओ, परे भने होइ जीवस्स ॥ ५९ ॥ अंतमुहत्तंमि गए, अंतमहत्तंमि सेसए चेव । लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोयं ॥ ६० ॥ तम्हा एयासि लेसाणं, आणुभावे वियाणिया । अप्पसःबाओ वजिता, पसत्याओऽहिद्रिए सुणि ॥ ६९ ॥ ति-वेमि ॥ इति लेसज्ययणणामं बोत्तीसहमं अज्ह्ययणं समतं ॥ ३४ ॥

.अइ अणगारज्झयणं णाम पंचतीसइमं अज्झयणं

सुणेह में एगग्गमणा, मार्ग सुद्धेहि देखियं। जमायरंतो भिक्ख, दुक्खाणंतकरे भवे ॥ १ ॥ गिहवासं परिश्वज, पवजामिस्सए मुणी। इमे संगे वियाणिजा, जेहिं सर्ज्ति माणवा ॥ २ ॥ तहेव हिंसं अलियं, चोर्ज अवंभसेवेंणं। इच्छाकामं च लोगं च, संजओ परिवजाए ॥ ३ ॥ मणोहरं चित्तघरं, महाधूवेण वासियं। सक्याडं पंडुरुकोयं, मणसा वि न पत्थए ॥ ४ ॥ इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसंमि उवस्सए । दुक्कराई निवारेजं, कामरागविबश्चणे ॥ ५ ॥ सुसाणे सुकागरे वा, रूक्खान्ले व एगओं। पहरिक्षे परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥ ६ ॥ कामुवंमि

अणाबाहे, इत्बीहिं अणभिहुए। तत्थ संकप्पए वासं, भिक्ख् परमसंजए ॥ ७॥ न सर्यं गिहाइं कुव्विज्जा, णेव अनेहिं कारए । गिहकम्मसमारं मे, भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥ तसाणं थावराणं च, सहुमाणं बादराण य । तम्हा गिहसमारंमं, संजओ परिवजए ॥ ९ ॥ तहेव भत्तपाणेसु, प्रयणे प्यावणेसु य । पाणभ्यद्यद्वाए, न पए न पयावए ॥ १० ॥ जलवन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीश्रद्धनिस्सिया । हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिवस्तू न प्यावए ॥ ११ ॥ विसप्पे सव्वक्षो धारे, बहुपाणि-विणासणे । नत्थि जोइसमे सत्ये, तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥ हिरण्णं जायरूवं च. मणसा वि न पत्थए । समलेहुकंचणे भिक्ख्, विरए कर्यावेकए ॥ १३॥ किणंतो सहस्रो होइ, विक्किणंतो य वाणिओ । क्यविक्यंमि वहंतो, भिक्ख न भवड तारिसो ॥ १४ ॥ मिनिखयव्वं न केयव्वं. भिक्त्वणा भिक्तवत्तिणा । कयविक्रओ महादोमो, भिक्न्याविनी सुहावहा ॥ १५ ॥ समुयाणं उछमेसिजा, जहासुत्तम-णिदियं। लाभालाभंगि संतुद्धे, पिंडवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥ अलोले न रसे गिद्धे, जिन्मादंते अमुच्छिए । न रसद्वाए भुंजिजा, जवणद्वाए महामुणी ॥ १७॥ अचर्ण रयणं चेव, वंदणं पूराणं तहा । इङ्गीसकारसम्माणं, मणसा वि न पत्यए ॥ १८ ॥ सुक्रज्झाणं झियाएजा. अणियाणे अकिंचणे । वीसद्रकाए विहरेजा. जाव कालस्स पज्जो ॥ १९ ॥ निज्वहिकण आहारं, कालधम्मे उवद्विए । जहिकण माणुसं बोंदिं, पहू दुक्खा विमुचई ॥ २०॥ निम्ममे निरहंकारे, बीयरागो अणामनो । संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्हाए ॥ २१ ॥ ति-वेमि ॥ इति अणगारज्ञ्चयणं णाम पंचतीसङ्गं अज्ञ्चयणं समसं ॥ ३५ ॥

अह जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीविभित्ति से, सुणेहेगसणा इओ। जं जाणिकण भिक्ख, सम्मं जयह संज्ञमे॥ १॥ जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए। अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए॥ २॥ द्व्यओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा। परूवणा तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य॥ ३॥ रुविणो चेवऽस्वी य, अजीवा दुविहा भवे। अह्यी दसहा बुत्ता, रूविणो य चडिव्यहा॥ ४॥ धम्मित्यकाए तहेसे, तप्पएसे य, आहिए। अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए॥ ५॥ आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए। अद्धासमए चेव, अस्वी दसहा भवे॥ ६॥ धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमिता वियाहिया। लोगालोगे य आगासे, समए समयखेतिए॥ ७॥

धम्माधम्मागासा, तिन्नि वि एए अणाइया । अपज्जवसिया चेव, सम्बद्धं तु वियाहिया ॥ ८ ॥ समए वि संतई पप्प. एवमेव वियाहिए । आएसं पप्प साईए, सपज्ज-वसिए वि य ॥ ९ ॥ स्त्रंघा य खंधदेमा य, तप्पएमा तहेन य । परमाणुणो य बोधव्या, रूबिणो य चरुव्विहा ॥ १० ॥ एगतेण पुहुतेण, खंबा य परमाणु य । लोगेगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥ ११ ॥ मुहमा सञ्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चडव्यिहं ॥ १२ ॥ संतई पप्प तेऽणाई, अपज्जवसिया वि य । ठिडं पहन्न माईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १३ ॥ असंखकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं । अजीवाण य स्वीणं, ठिई एसा वियाहिया ॥ १४ ॥ अणंतकालमुक्कोसं, एक्को समक्षो जहस्तयं । अजीवाण य स्वीणं. अंतरेयं वियाहियं ॥ १५॥ वर्णओ गंधओ चेव. रसओ फासओ तहा । संठाणओ य विजेओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥ १६ ॥ वण्णञ्जो परिणया जे उ. पंचहा ते पकितिया । किण्हा नीला य लोहिया, इलिहा सुकिला तहा ॥ १७ ॥ गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया । सुन्भिगंघपरिणामा, दुन्भिगंधा तहेव य ॥ १८ ॥ रमओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया। तित्तरद्वयकसाया अंविला महुरा तहा ॥ १९ ॥ फासओ परिणया जे उ. अद्भहा ते पिकत्तिया । कक्खडा मडया चेव, गरुया लहुया तहा ॥ २० ॥ सीया उच्हा य निद्धा य. तहा हुक्सा य आहिया । इय फासपरिणया एए, पुरगला समुदाहिया ॥ २१ ॥ संठाणओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया । परिमंडला य बहा य. तंसा चर्जरसमायया ॥ २२ ॥ वण्णको जे भवे किण्हे. भइए से उ गंघओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ २३ ॥ वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंपनो । रसभी फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ २४ ॥ वण्णओं लोहिए जे उ. भइए से उ गंघओं । रसओं फासओं चेंब. भइए संठाणओं वि य ॥ २५ ॥ वण्णओ पीयए जे उ. भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ सेव. भइए संठाणओं वि य ॥ २६ ॥ वण्णों सुद्धिले जे उ. भइए से उ गंधको । रसओ फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥ २७ ॥ गंधको जे भवे सुब्सी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ २८ ॥ गंधओ जे भवे दुब्मी, भइए से उ वण्णको । रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥ २९ ॥ रसओ तित्तए जे उ. भइए से उ बण्णको । गंघको फासको चेव. भइए संठाणको विय ॥ ३० ॥ रसओ क्दुए जे उ. महए से उ वण्णको । गंधको फासओ चेव. मइए संठाणको वि य ॥ ३१ ॥ रसको कसाए जे उ, मइए से उ क्ळाओ । गंधको फासओ चेव, मझ्ए संठाणओ वि य ॥ ३२ ॥ रसओ अंबिके के ड, मझ्ए से ड

बण्णको । गंधको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥ ३३ ॥ रसको महुरए जे उ. महए से उ वण्णको । गंधको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥ ३४ ॥ फासको कन्खडे जे उ. भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ ३५ ॥ फामओ मउए जे उ. भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेब. भइए संठाणओं वि य ॥ ३६ ॥ फासओ गुरुए जे उ. भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेब. भइए संठाणओ वि य ॥ ३७ ॥ फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंघओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ ३८ ॥ फासओ सीयए जे उ, मइए से उ वण्णओ । गंघओ ग्सओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ ३९ ॥ फामओ उण्हए जे उ. भइए से उ वण्णओ । गंवओ रसओ चेव. भइए संठाणओ वि य ॥ ४० ॥ फासओ निद्धए जे ट, भइए से उ वण्यओ । गंथओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥ ४९ ॥ फासओ हक्खए जे उ. भइए से उ वण्णओ । गंघओ रसओ चेव. भइए संठाणओ वि य ॥ ४२ ॥ परिमंडलसंठाणे. भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४३ ॥ संठाणओ भवे वहे. भड़ए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव. भइए फासओ वि य ॥ ४४ ॥ संज्ञणओ भवे तंसे. भइए से च बण्णओ । गंधओ रसओ चेव. भइए फासओ वि य ॥ ४५ ॥ संठाणको जे चलरंसे. भद्रए से ल बण्णको । गंधको रसओ चेव, भद्रए फासओ वि य ॥ ४६ ॥ जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४७ ॥ एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । इत्तो जीववि-भत्ति, वुच्छामि अणुपुञ्चसो ॥ ४८ ॥ संसारत्या य सिद्धा य, दुविहा जीवा विया-हिया । सिद्धा णेगविहा बुत्ता, तं मे कित्तयओ मुण ॥ ४९ ॥ इत्थी-पुरिमसिद्धा य, तहेव य नपुंसगा । सिंठेंगे अन्निंठिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥ उक्कोसोगाह-णाए य, जहन्नमजिसमाइ य । उन्नं अहे य तिरियं च, समुदंगि जलंगि य ॥ ५९ ॥ इस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य । पुरिसेसु य अट्टसयं, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥ चतारि य निहलिंगे, अवस्थिंगे दसेव य । स्थिंगेण अद्भर्य, समएणेगेण सिज्झई ॥ ५३ ॥ उद्योसोगाहणाए य, सिउसंते जुगवं दुवे । चतारि जहबाए, मज्ये अहुत्तरं सर्य ॥ ५४ ॥ चउल्कुलोए य दुने समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य। सर्य च अड्डतरं तिरियकोए, समएणेगेण सिज्झई धुर्व ॥ ५५ ॥ कहि पिंडह्या सिदा १, किह सिदा पद्मिया ? । कहिं बोंदिं चहत्ताणं ?, कत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥ ५६॥ अलोए परिहरा सिद्धा, लोबरने य पड्डिया । इहं बॉदिं चड्लाणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ ५० ॥ बारसाँहें जोयणेहिं, सञ्बद्धस्यवरिं भवे । ईसिपन्भारनामा उ. प्रवदी छत्तसंठिया

॥ ५८ ॥ पणयालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया । तावइयं चेव वित्यण्णा, तिगुणो साहियपरिरओ ॥ ५९ ॥ अड्डजोयणबाहक्षा, सा मज्झंमि वियाहिया । परिहायंती चरिमंते, मच्छिपताउ तणुयरी ॥ ६० ॥ अज्ञुणस्वण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण । उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य. भणिया जिणवरेहिं ॥ ६९ ॥ संसंक्कंदसंकासा, पंडरा निम्मला यहा । सीयाए जोयणे तनो, लोयंतो उ वियाहिओ ॥ ६२ ॥ जोयणस्य उ जो तत्थ. कोसो उवरिमो भवे । तस्य कोसस्य छन्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६३ ॥ तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगगंमि पङ्घ्रिया । भव-पर्वचओ मुक्का, सिद्धिं वरगई गया ॥ ६४ ॥ उस्सेहो जस्स जो होइ, भवंमि चरिमंमि उ । तिभागहीणी तत्ती य, सिद्धाणीगाहणा भवे ॥ ६५ ॥ एगतेण साईया, अपज-वसिया वि य । पुहत्तेण अणाईया, अपज्ञवसिया वि य ॥ ६६ ॥ अरूविणो जीव-घणा, नाणदंसणसिषया। अउलं सुद्दं संपत्ता, उत्तमा जस्स नित्य उ ॥ ६० ॥ स्रोगेगदेसे ते सन्वे, नाणदंसणसिन्नया । संसार्पारनित्थिण्णा, सिद्धें वरगई गया ॥ ६८ ॥ संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया । तसा य यावरा चेव. थावरा तिविहा तिहं ॥ ६९ ॥ पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई । इच्चेए थावरा तिविहा, तेसि भेए सुणेह में ॥ ७० ॥ दुविहा य पुढवीजीवा, सहमा बायरा तहा । पज्जतमपज्जता, एवमेव दुहा पुणो ॥ ७१ ॥ बायरा जे उ पज्जता, दुविहा ते वियाहिया। सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहि ॥ ७२ ॥ किण्हा नीला य रुहिरा य, हालिहा सुक्किला तहा । पंडुपणगमहिया, खरा छत्तीसईविहा ॥ ७३ ॥ पुढवी य सकरा वालुया य, उवले सिला य लोणूसे । भयतंत्रतजयसीसग-, रुप्पतुवण्णे य बहरे य ॥ ७४ ॥ हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजणपवाले । अञ्मपडलञ्भवालुय, बायरकाए मणिविहाणे ॥ ७५ ॥ गोमेजए य ह्यगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य । मरगयमसारगहे, भुयमोयगइंदनीळे य ॥ ७६॥ चंदणगेहयहंसगब्से, पुलए सोगंधिए य बोधब्वे । चंदप्यह्वेहलिए, जलकंते स्रकंते य ॥ ७७ ॥ एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया । एगविहमणाणता, सहुमा तत्थ वियाहिया ॥ ७८ ॥ सहुमा सञ्चलोगंमि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्चिहं ॥ ७९ ॥ संतइं पण्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिइं पहुच साईया, सपजनसिया वि य ॥ ८० ॥ बावीससहस्साई, वासाणुकोसिया भवे । आउठिई पुढवीणं, अंतोसुहुतं जहिक्या ॥ ८९ ॥ असंख-कालमुक्तोसा, अंतोमुहुत्तं जहिकया । कायिष्टं पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचको ॥ ८२ ॥ अर्णतकालमुक्तीसं, अंतोमुहुतं अहस्यं । विजर्दमि सए काए, पुढविजीवाण

अंतरं ॥ ८३ ॥ एएसि बण्णओ चेव, गंधओ रसफामओ । संठाणादेसओ वावि, बिहाणाई सहस्सरो ॥ ८४ ॥ दुविहा आउर्जावा उ, सहुमा बायरा नहा । पजन-मपजना, एवमेए दुहा पुणो ॥ ८५ ॥ वायरा जे उ पजना, पंचहा ते पकित्तिया । सुद्धोद्ए य उस्से य, हरतणू महिया हिमे ॥ ८६ ॥ एगविह्मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया । सुहुमा सन्वलोगंमि, लोगदेसे य वायरा ॥ ८७ ॥ संतई पप्पंडणाईया, अफजनसिया वि य । ठिइं पहुच साईया, सपजनसिया वि य ॥ ८८ ॥ सत्तेव सहस्साई, वासाणुकोसिया भवे । आउठिई आऊणं, अंतोमुहुत्तं जहिनया ॥ ८९ ॥ असंख-कालमुक्कोसा, अंतोमुहुर्स जहिबया। कायिटिई आऊर्ण, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ९०॥ अणंनकालमुक्कोसं, अंतोमुहुनं जहन्नयं। विजर्डमि सए काए, आऊजीवाण अंतरं ॥ ९ १ ॥ एएसिं वण्णओ चेव. गंधओ रसफायओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्तमो ॥ ९२ ॥ दुविहा वणस्सईजीवा, सहसा बायरा तहा । पजतमपजता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ९३ ॥ बायरा जे उ पज्बत्ता, दुनिहा ते वियाहिया । साहा-रणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥ पत्तेगसरीराओ, ऽणेगहा ते पिकत्तिया । रुक्ता गुच्छा स गुम्मा स. लया वली तणा तहा ॥ ९५ ॥ वलसा पव्यगा कुहुणा, जलरुहा ओमही तहा । हरियकाया बोडन्बा, पत्तेगाइ वियाहिया ॥ ९६ ॥ साहा-रणसरीराओ, ऽणेगहा ते पिकत्तिया। आलुए मूलए चेन, सिंगबेरे तहेन य॥ ९७॥ हरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई फेयकंदली। पलंडुलसणकंदे य, कंदली य कुहुन्बए ॥ ५८ ॥ लोहिणी हूयशी हूय, कुहगा य तहेच य । कण्हे य बज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ॥ ९९ ॥ अस्सकण्णी य बोधन्त्रा, सीहकण्णी तहेव य । मुसुंढी य हिल्हा य,ऽणेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥ एगविहमणाणत्ता, सहुमा तत्य वियाहिया । सुहुमा सम्बलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ॥ १०१ ॥ संतई पप्पऽणाईया, अपज्जव-सिया वि य । ठिइं पडुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १०२ ॥ इस चेव सहस्साई, वासाणुकोसिया भवे । वणप्फईण आउं तु, अंतोमुहुत्तं जहिषया ॥ १०३ ॥ अर्णतकालमुक्कोसा, अंतोमुहुतं जहिक्या । कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०४॥ अर्सबकाळमुक्कोसं, अंतोमुहुतं जहस्यं । विजर्हमि सए काए, पणग-जीवाण अंतरं ॥ १०५ ॥ एएसिं वण्णको चेव, गंघको रसफासको । संठाणादेसको बावि, विहाणाई सहस्ससो ॥ १०६ ॥ इबेए यावरा तिनिहा, समासेण वियाहिया । इत्तो उ तसे तिबिहे, बुच्छामि अणुपुव्यसो ॥ १०७॥ तेऊ वाऊ य बोधम्या, उराला य तसा तहा। इबेए तसा तिबिहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०८ ॥ दुविहा तेक्जीवा उ, श्रहुमा बागरा तहा । पजतमपजता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥

बायरा जे उ पजता,ऽणेगहा ते वियाहिया । इंगाले मुम्मुरे अगणी, अवि जाला तहेन य ॥ १९० ॥ उका विज् य बोधव्वा, ऽणेगहा एवमायओ । एग-विद्यमणाणता, सुहुमा ते वियाहिया ॥ १९१ ॥ सुहुमा सन्बलोगंमि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविमागं तु, तेसिं बुच्छं चउव्यिहं ॥ ११२ ॥ संतइं पप्पऽणा-**इं**या, अपजनसिया वि य । ठिहं पहुन साईया, सपजनसिया नि य ॥ ११३ ॥ तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई तेऊणं, अंनोमुहुतं जहिनया ॥ ११४॥ असंस्कालमुक्कोसा, अंतोमहुत्तं जहिनया । कायिहि तेउणं, तं कायं तु असुंचओ ॥ ११५ ॥ अणंतकालसुद्रोसं, अंतोसुहत्तं जहन्नयं । विजर्डमि सए काए, तेऊजीवाण अंतरं ॥ ११६ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि. विहाणाई सहस्ससो ॥ ११७ ॥ दुविहा वाउजीवा उ, सहमा बायरा तहा । पजत्तमपजना, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११८ ॥ बायरा जे उ पजता, पंचद्दा ते पिकतिया। उक्कलिया मंडिलया, घणगुंजा सुद्धनाया य ॥ ११९ ॥ संबद्दगवामा य, इणेगहा एकमायको । एगविह्मणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ १२० ॥ सहुमा सन्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं बुच्छं चडिन्नहें ॥ १२१ ॥ संनइं पप्पडणाईया, अपजनसिया वि य । ठिइं पहुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १२२ ॥ तिष्णेव सहस्साई, वासाणुकोसिया भवे । आउठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहिनया ॥ १२३ ॥ असंख्यालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहिमया । कायिठेई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १२४॥ अणंतकाल-मुक्कोसं. अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजडंमि सए काए, वाळजीवाण अंतरं ॥ १२५ ॥ एएसि वणाओ चंत्र, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥ १२६ ॥ उराला तसा जे ट, चउहा ते पिकतिया । बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया तहा ॥ १२७ ॥ वेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया । पजत-मपजता, तेसि भेए सुणेह मे ॥ १२८ ॥ किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइ-बाह्या। वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा ॥ १२९ ॥ पह्णोयाणुक्रया चेव, तहेव य वराडगा । जलुगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य ॥ १३० ॥ इइ बेहंदिया एए,ऽणेगहा एवमायस्रो । छोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्य वियाहिया ॥ १३१ ॥ संतर्इ पप्पप्रणाईया, अपज्ञवसिया वि य । ठिइं पद्धव साईवा, सपज्ज-बसिया वि य ॥ १३२ ॥ वासाइं बारसा चेव, उक्कासेण वियाहिया । वेइंदियआउ-ठिई, अंतोमुहुत्तं जहिबया ॥ १२३ ॥ संविजकालमुक्तोसा, अंतोमुहुत्तं जहिबया। बेइंदियकायित्हें, तं कायं तु अमुंचको ॥ १३४ ॥ अर्णतकालमुक्तेसं, अंतोमुहुत्तं

अहमयं । वेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥ १३५ ॥ एएसिं वण्णाओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससी ॥ १३६ ॥ तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया। पजनसपज्जता, तेसि भेए मुणेह मे ॥ १३०॥ कुंश्रपिवीलिज्हंसा, उक्कल्रेहेहिया तहा । तणहारकद्रहारा य. मालूगा फ्तहारगा ॥ १३८ ॥ कप्पासित्थिमिजा य. तिंदुगा तउसमिजगा । सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इंदगाइया ॥ १३९ ॥ इंदगोवगमाईया ८णेगहा एवमायओ । लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्थ वियाहिया ॥ १४० ॥ संतई पप्पऽणाईया, अपज्जबसिया वि य । टिडं पहुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १४१ ॥ एगुणपण्णहोरता, उद्यो-सेण वियाहिया । तेइंदियअ।उठिई, अंतोम्हतं जहन्तिया ॥ १४२ ॥ संखिजकाल-मुक्कोमा, अंतोमुहुत्तं जहनिया। तेइंदियकायिहर्द, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १४३ ॥ अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुतं जहन्नयं । तेइंदियजीवाणं, अंतरं तु वियाहियं ॥ १४४॥ एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ बावि, विहाणाई सहस्तसो ॥ १४५ ॥ चर्डारेदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया । पजत्तम-पजता. तेसि मेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥ अधिया पोत्तिया चेव. मच्छिया मसगा तहा । समरे कीडपयंगे य, हिंकुणे कंकणे तहा ॥ १४७ ॥ क़काडे सिंगिरीदी य. नंदावने य विच्छए । डोले भिंगिरीडी य, विरली अच्छिवेहए ॥ १४८ ॥ अच्छिले माहए अच्छि(रोडए), विचित्ते चित्तपत्तए । उहिंजलिया जलकारी य. नीयया तंबगाइया ॥ १४९ ॥ इय चउरिंदिया एए. ऽणेगहा एवमायओ । लोगेगदेसे ते सब्दे. न सब्दस्य वियाहिया ॥ १५० ॥ संतर्ड पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिई पहुच साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १५१ ॥ इन्चेन य मासाऊ, उक्कोरीण वियाहिया । चउरिंदियभाउठिई, अंतोसुहुत्तं जहिष्मया ॥ १५२ ॥ संख्रिजकाल-मुक्कोसा, अंतोमुहत्तं जहिन्या । चउरिंदियकायिठई, तं कार्यं तु अमुंचओ ॥ १५३ ॥ अर्णतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । चउरिदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥ १५४ ॥ एएसिं वण्णओ चेव. गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ बाबि. विहाणाई सहस्त्रसो ॥ १५५ ॥ पंचिंदिया उ जे जीवा. चउविहा ते वियाहिया। नेरइया तिरिक्खा य. मणुया देवा य आहिया ॥ १५६ ॥ नेरइया सत्तविहा. प्रविश्व सत्तम् भवे । र्यणाभसक्रामा, बालुयामा य आहिया ॥ १५७ ॥ पंकामा भूमामा, तमा तमतमा तहा । इइ नेरहया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥ लोगस्स एगदेसंमि, ते सब्बे उ वियाहिया । एतो काल-

पाढंतरं-१ स्रोगस्स एगदेसंमि, ते सन्वे परिकित्तिमा । २ विजडिम्म सपु काए ।

विमागं तु, बोच्छं तेसि चउव्विहं ॥ १५९ ॥ संतर्इ पप्पडणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिइं पहुच साईया. सपजवसिया वि य ॥ १६० ॥ सागरोवसमेगं तू. उद्योसेण वियाहिया । पडमाए जहन्नेणं, दसवासमहस्सिया ॥ १६१ ॥ तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । दोचाए जहनेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६२ ॥ सत्तेव सागरा ऊ. उद्योसेण वियाहिया । तद्दयाग् जहन्नेणं. तिण्णेव मागरोवमा ॥ १६३ ॥ दससागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । चउत्थीए जहन्नेणं, यत्तेत्र सागरीवमा ॥ १६४ ॥ सत्तरससागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया । पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥ १६५ ॥ बाबीससागरा ऊ. उन्नोसेण वियाहिया । छद्रीए जहनेणं, सत्तरसनागरोवमा ॥ १६६ ॥ तेत्तीसमागरा ऊ. उक्कोसेण वियाहिया। सत्तमाए जहनेणं, वावीसं सागरोवमा ॥ १६७ ॥ जा चेव य आउठिई. नेरहयाणं वियाहिया । सा तेसिं कायिहं, जहसुक्कोसिया मने ॥ १६८ ॥ अणंनकालमुक्कोसं, अंनोमहत्तं जहन्नयं । विजरंमि सए काए, नेरइयाणं त अंतरं ॥ १६९ ॥ एएसिं वण्णओं चेव, गंधओं रसफामओं । संठाणादेसओं वावि, विहाणाई सहस्ससी ॥ १७० ॥ पंचिदियतिरिक्खाओ, द्विहा ते वियाहिया । संमुच्छिमतिरिक्खाओ, गब्भवकंतिया नहा ॥ १७१ ॥ दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा नहा । नहयरा य बोधव्या. तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १७२ ॥ मच्छा य कच्छमा य. गाहा य मगरा तहा । मुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥ १७३ ॥ लोएगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्य वियाहिया। इतो कालविभागं तु, वोच्छं तेसि चउन्विहं ॥ १७४ ॥ संतई पप्पडणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिई पहुच साईया, सपज-वसिया वि य ॥ १७५ ॥ एगा य पुन्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्तिया ॥ १७६ ॥ पुरुवकोन्डिपुहृतं तु. उक्कोसेण विया-हिया । कायिर्वे जलयराणं, अंतोस्हुनं जहिषया ॥ १७७॥ अणंतकालसुक्कोसं, अंतोम्हर्तं जहन्त्रं । विजर्डमि सए काए, जलयराणं तु अंतरं ॥ १७८ ॥ एएसिं वण्णाओं चेव, गंघओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, बिहाणाइं सहस्ससो ॥ १७९ ॥ चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे । चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयओ सुण ॥ १८०॥ एगखुरा दुखुरा चेव. गंडीपयसणप्तमा । इसमाई गोण-माई, गयमाइषीहमाइणो ॥ १८९ ॥ भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा मने। गोहाई अहिमाई य, एकेकाऽणेगहा मवे ॥ १८२ ॥ क्रोएगदेसे ते सब्वे, न सम्बत्य वियाहिया। एतो कालविमागं तु. बोच्छं तेसि चउव्यहं ॥ १८३॥ संतहं पप्पऽणाईया. अपज्यवसिया वि य । ठिइं पहुन्य साईया. सपज्यवसिया वि य

॥ १८४॥ पलिओवमाइं तिष्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुतं जहिनया ॥ १८५ ॥ पुम्बकोडिपुहुत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया । कायिठेई थलयराणं, अंतोमुहत्तं जहिनया ॥ १८६ ॥ कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहत्तं जहन्नयं। विजर्हमि सए काए, थलवराणं तु अंतरं ॥ १८७ ॥ एएसि वण्णओ चेव, पंधओ रसफामओ । संठाणादेसओ वावि. विहाणाई सहस्तमो ॥ १८८॥ चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया ममुरगपिक्खया । विश्वयपक्खी य बोघव्वा, पिक्खणो य चडव्बिहा ॥ १८९ ॥ न्होंगेगदेसे ते सब्दे, न सब्दत्थ वियाहिया । इत्तो मालवि-भागं तु, तेसि बोच्छं चरुव्विहं ॥ १९० ॥ संतृ प्पप्रणाईया, अपज्ञवसिया वि य । ठिट्ं पहुच साईया, सगजविस्या वि य ॥ १९१ ॥ पलिओवमस्स भागो, असंखेजहमो भवे । आउठिई खह्यराणं, अंतोमुहुतं जहिषया ॥ १९२॥ असंखभागो पिटयस्स, उद्दोसेण उ साहिया । पुञ्बकोडीपुहत्तेणं, अंतोसुहत्तं जहिनया ॥ १९३ ॥ कायिठई सहयराणं, अंतरं तेसिमं भवे । अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहत्तं जहन्नयं ॥ १९४ ॥ एएसिं वण्णको चेन, गंधओ रसफासको । संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससी ॥ १९५ ॥ मणुया दुविहमेया उ, ते में किनयओ सुण । संमु रिद्धमा य मणुया, गब्भवकंतिया तहा ॥ १९६ ॥ गब्भवकंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया । कम्मअकम्मभूमा य, अंतरहीवया तहा ॥ १९७ ॥ पषरसतीसविहा, मेया अद्ववीसई । संखा उ कमसो तेसिं, इह एसा वियाहिया ॥ १९८ ॥ संसुच्छिमाण एसेव, मेओ होइ वियाहिओ । लोगस्स एगदेसंमि, ते सब्वे वि वियाहिया ॥ १९९ ॥ संतर्ड पप्पडणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिइं पहुन साईगा, सपजनसंगा वि य ॥ २०० ॥ पिल्लोवमाई तिष्णि वि, उक्कोसेण वियाहिया । आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहत्तं जहिनया ॥ २०१॥ परिख्रोवमाई तिष्णि उ, उद्योसेण वियाहिया। पुन्यकोडिपुहत्तेणं, अंतोमुहत्तं जहिनया ॥ २०२ ॥ कायिर्द्धं मणुयाणं, अंतरं तेसिमं भवे । अणंतकालमुक्कीसं, अंतोमुहत्तं जहश्चयं ॥ २०३ ॥ एएसिं वण्यको चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्सरो ॥ २०४ ॥ देवा चउव्यिहा बुता, ते मे कित्तयओ सण । भोमिज वाणमंतर, जोइस वेमाणिया तहा ॥ २०५ ॥ दसहा उ भवणवासी, अहुहा वणचारिणो । पंचविद्दा जोइसिया, दुविद्दा वैमाणिया तहा ।। २०६ ॥ असुरा नाग-स्वण्णा, विज् अम्मी वियाहिया । शैकोदहिदिसा वाया, थणिया भवणवासिणो ॥२०७॥ पिसायम्या जक्का य. रक्कसा किजरा किपुरिसा। सहोरगा य गंधव्या, अद्भविद्या वाणमंतरा ॥ २०८ ॥ चंदा स्रा य नक्खला, गहा तारागणा तहा । ६७ स्ता॰

उत्तरज्ञायणसर्त

दिसा विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥ २०९ ॥ वैमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । कप्पोबगा य वोधव्वा, कप्पाईया तद्देत्र य ॥ २१० ॥ कप्पोबगा बारमहा, सोहर्म्मासाणमा तहा । सर्णकुमारमाहिंदा, बंभलोगा य लंतगा ॥ २९९ ॥ महासुका सहस्सारा, आणया पाणया तहा । आग्णा असुया चेत्र, हट् कृप्पोवगा छरा ॥ २१२ ॥ कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । गेविजाणुत्तरा चेथ. गेबिजा नवविहा तर्हि ॥ २१३ ॥ हेड्डिमाहेड्डिमा चेत्र. हेड्डिमामिज्यमा तहा । हेट्टिमाउवरिमा चंव, मज्जिमाहेट्टिमा तहा ॥ २९४ ॥ मज्जिमार्माज्जमा चेष. मज्जिमाजवरिमा तहा । उवरिमाहेद्विमा चेव, उवरिमामज्जिमा तहा ॥ २१५ ॥ उवरिमाउनरिमा चेव. इय गैविज्या सुरा । विजया वेजयंता य. जयंता अपरा-जिया ॥ २,१६ ॥ सञ्दरथसिद्धगः चेत्र, पंचहाणुनरा मुरा । इय वेमाणिया एए, उपेगहा एवमायओ ॥ २१७ ॥ लोगस्य एगदेसंभि, ते सब्वे वि विवाहिया । इत्ती कालविभागं तु, तेसिं बुच्छं चउव्तिहं ॥ २१८ ॥ संतर्इ पत्पऽणाईया, अपजव-सिया वि य । ठिइं पडुच साईया, मपजन्यसिया वि य ॥ २१९ ॥ साहियं सागरं एकं, उक्कोसे(णं)ण ठिई भवे । भोमेजाणं जहनेणं, दगवाससहस्मिया ॥ २२० ॥ [पलिओनम दो ऊणा, उक्कोसेण वियाहिया । असु(रें)रिदवजेताण, जहना दमसहरूसगा ॥] पलिओवममेगं नु, उद्योसेण ठिई भवे । बंनरार्ण जहनेणं, दसवाससहस्सिया ॥ २२९ ॥ पिलओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं । पिलओ-वमद्वभागो, जोइसेसु जहबिया ॥ २२२ ॥ दो चेव सागराइं, उद्दोसेण वियाहिया । सोहम्मस्मि जहनेणं, एगं च पलिओश्मं॥ २२३ ॥सागरा साहिया दुनि, उन्नोसेण वियाहिया । ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहियं पिठओवमं ॥ २२४ ॥ सागराणि य सत्तेत्र, उक्कोसेण ठिई भने । सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि क सागरीतमा ॥ २२५ ॥ साहिया सागरा सत्त, उक्रोसेण ठिई भवे । माहिदम्मि जहकेणं, साहिया दुनि सागरा ॥ २२५ ॥ दस चेव सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । बंभलोए जहनेणं, सन क सागरोवमा ॥ २२७ ॥ चडह्स सागराई, उन्नोसेण ठिई भवे । लंतगरिम जहन्नेणं, इस उ सागरोबमा ॥ २२८ ॥ सत्तरस सागराई, उन्होसेण ठिई भवे । महामुके जहनेणं, चोद्स सागरोदमा ॥ २२९ ॥ अद्वारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भने । सहस्सारम्मि जहनेणं, सत्तरस सागरोदमा ॥ २३० ॥ सागरा अउणवीसं तु, उद्योसेण ठिई भवे । आणयस्मि बहनेणं, अद्वारस सागरोवमा ॥ २३१ ॥ वीसं तु सागराई, उक्रोसेण ठिई भवे । पाणयम्मि जहकेणं, सागरा अउणवीसई ॥ २३२ ॥ सागरा इक्कवीसं द्व, उक्कोसेण ठिई मने । आरणम्म अह-

केणं, वीसई सागरोवमा ॥ २३३ ॥ बावीसं मागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । अखुयम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्क्वीसई ॥ २३४ ॥ तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । पढ-मंमि जहनेणं, वावीसं सागरोबमा ॥ २३५ ॥ चडवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । विद्यंमि जहनेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥ २३६ ॥ पणवीम सागराइं, उद्दोसेण ठिई भवे । तहयंमि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥ २३७ ॥ छव्वीस सागराई, उन्नोसेण ठिई भवे। चउत्थंमि जहनेणं, सागरा पणुवीसई ॥ २३८ ॥ सागरा सत्तवीसं तु, उद्योसेण ठिई भवे । पंचमंमि जहनेणं, सागरा उ छवीमई ॥ २३९ ॥ सागरा अट्टवीसं तु. टकोसेण ठिई भने । छट्टांमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥ २४० ॥ सागरः अउणनीसं तु, उक्कोसेण ठिड्डे भवे । सत्तर्ममि जहन्नेणं, सागरा अद्ववीसई ॥ २४१ ॥ तीसं तु सागराई, उक्कोसेण ठिई मने । अट्टमंमि जहनेणं, सागरा अउ-णतीयई ॥ २४२ ॥ सागरा इक्सीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । नवमंमि जहनेणं. तीमई सागरीवमा ॥ २४३ ॥ तेनीसा सागराई, उद्दोरोण ठिई भवे । चटमुं पि विजयाईस, जहनेणेकतीसई ॥ २४४ ॥ अजहन्नमणुकोसा, तेत्तीसं सागरोत्रमा । महाविमाणे सब्बहे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४५ ॥ जा चेव उ भाउठिई, देवाणं तुः वियाहिया । मा तेसिं कायिटिई, जहन्मुकोसिया भवे ॥ २४६ ॥ अणंतकाल-मुक्कोसं, अंतोमुहुनं जहन्नयं । विजडांमि मए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं ॥ २४७ ॥ अणंतकालमुक्कोसं, वासपुहृतं जहन्नयं । आणयाईण कप्पाण, गेविजाणं तु अंतरं ॥ २४८ ॥ संख्यिकसागरकोसं, वासपुहुतं जहन्नयं । अणुनराणं देवाणं, अंतरेयं वियाहियं ॥ २४९ ॥ एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संटाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥ २५० ॥ संसारत्या य सिद्धा य. इय जीवा वियाहिया । रूविणी चेवऽरूबी य, अजीवा दुविहा वि य ॥ २५१ ॥ इय जीवमजीवे य, सोचा सद्दिकण य । सम्वनयाणमणुमए, रमेज्य संजमे मुणी ॥ २५२ ॥ तस्रो बहूणि वासाणि, सामण्यमणुपालिया । इमेण कमजोगेण, अप्पाणं संस्रिहे मुणी ॥ २५३ ॥ बारसेव उ वासाई, संकेहुकोसिया भवे । संबच्छरं मज्झिमिया, छम्मासा य जहिनया ॥ २५४ ॥ पडमे वासचउद्यंमि, विगईनिज्यूहणं करे । बिहए वासचउद्यंमि, विवित्तं तु तवं चरे ॥ २५५ ॥ एगंतरमायामं, कहुं संबच्छरे दुवे । तथो संबच्छरढं तु, नाइविगिद्धं तवं चरे ॥ २५६ ॥ तओ संबच्छरदं तु, विगिद्धं तु तवं चरे । परिमियं चेव आयामं, तंमि संवच्छरे करे ॥ २५० ॥ कोडीसहियमायामं, कहु संवच्छरे मुणी । मासद्भातिएणं तू, आहारेण तवं चरे ॥ २५८ ॥ कंदप्पमामिओगं च, किव्वितियं मोहमासुरतं च। एवाउ दुव्यईखो, मरणंमि विराष्टिया होंति ॥ २५९ ॥

मिच्छादंसणरत्ता, सिवयाणा उ हिंसगा । इय जे मरित जीवा, तेसिं पुण दुहहा बोही ॥ २६० ॥ सम्महंसणरता, अनियाणा मुक्कलेसमोगाडा । इय जे मरंति जीवा, तेसिं . सुलहा भवे बोही ॥ २६१ ॥ मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हळेसमोगाहा । इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुक्कहा बोही ॥ २६२ ॥ जिणवयणे अणुरना, जिणवयणं जे करेंति भावेण । अमला असंकिलिहा, ते होंति परित्तसंसारी ॥ २६३ ॥ बालमर-णाणि बहुसी, अकाममरणाणि चेव य बहुणि । मरिहृति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति ॥ २६४ ॥ बहुआगमविजाणा, समाहिउप्पायमा य गुणगाही । एएणं कार-**णेणं, अरिंहा आलोयणं सोउं ॥ २६५ ॥ कंदप्पवृक्ष्याई, तह सी**लसहाबहासविगहाई। विम्हावेंतो य परं, कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ २६६ ॥ मंताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजंति । सायरसङ्बिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६७ ॥ नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं । माई अवण्णवाई, किव्विसियं भावणं कुणइ ॥ २६८ ॥ अणुबदरोसपसरो, नह य निमित्तंमि होइ पिडसेवी । एएहिं कारणेहिं, आसुरियं भावणं कुणह ॥ २६९ ॥ सत्थगहणं विसमक्खणं च. जलणं च जलपवेसी य । अणायार-भंडसेवी, जन्मणमरणाणि बंधंति ॥ २७० ॥ इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिम्बुए । छत्तीसं उत्तरज्ञाए, भवसिद्धीयसं[बुढे]मए ॥ २०१ ॥ ति-बेमि ॥ **इति जीवा**-जीवविभक्ती णामं छत्तीसडमं अज्ययणं समसं॥ ३६॥

॥ उत्तरज्झयणसुत्तं समत्तं ॥



श्रीस्त्रागमप्रकाञ्चकसमितिके 'सदस्य'



श्रीमान् श्रावक वेरसी नरसी

श्रीवरसी नरसी भाई अपने पौत्र की खुशालीमें 'सदस्य' बने हें। अप जिनशासनके सचे प्रेमी हैं। आपकी जैन धर्म पर खूब श्रद्धा है, निल्पप्रति सामायिक करते
हैं, यावजीव ब्रह्मचर्यत्रत ग्रहण किया है। पौरसी और बेआसणा तथा प्राशुक
जलका उपयोग करते हैं। गत्रि भोजनका त्याग है। इस समय अपनी धर्मप्रकीश्रीमती तेजीबाई सहित वरसी तप कर रहे हैं। आपके मनमें संसारकी ओरसं
उपराम (वैराव्य) रहता है। घरमें रहकर ग्रहस्थ धर्म तथा उत्तम क्षमा आदिका
आराधन कर रहे हैं। आप अपनी कमाई प्रामाणिकतासे करते हैं। आप कच्छ
वागड़में मु॰ त्रंबोऊ (ता॰ रापर) के निवासी हैं। हाल कल्याण जोशीबाग पारसी
वालमें रहते हैं। आपके वीरजी-रतनसी दो सुपुत्र हैं। इन्हें धर्मका प्रेम है। माना
पिताके आजाकारी पुत्र हैं। सामायिक प्रतिक्रमण करते हैं।

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहाबीरस्स

सुत्तागमे तत्व णं

तत्थ णं नंदीसुत्तं

जगइ जगजीवजोणी-,वियाणओ जगगुरू जगाणेदो । जगणाहो जगबंधू , जयइ जगियामही भयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआणं पभवो, तित्ययराणं अपन्छिमो जयद । जयह गृह छोगाणं, जयह महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भई सव्वजगुज्जोयगस्स, भई जिणस्म नीरस्स । भर्दं सुरान्द्रनमंसियस्स, भद्दं घुयरयस्म ॥ ३ ॥ गुणभवणगद्दण मुबरवणभरिय, दंसणविसुद्धरत्थागा । संघनगर! भद्दं ते, अखंडचारिसपागारा ॥ ४ ॥ संजमतवतुंबारयस्म, नमा मम्मत्तपारियहस्स । अप्पष्टिचकस्स जमो. होउ सया संघनकस्य ॥ ५ ॥ भहं सीलपडागृशियस्य, तबनियमतुरयजुत्तस्य । संघरहस्स भगवओ, सज्झायमुनंदिघोतस्स ॥ ६ ॥ कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स, मुयरयणदीह-नालस्त । पंचमह्व्वयथिरकिषयस्स, गुणकेगरालस्य ॥ ७ ॥ मावगजणमहुधारि-परिवृद्धस्स, जिणस्र तेयबुद्धस्स । संघपउमस्य भई, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥ तवसंजममयलंडण !, अकिरियराहुमुद्दुद्धरिम ! निषं । जय संघवंद ! निम्मल-, सम्मर्तावमुद्धजोण्हागा ! ॥ ९ ॥ परितित्थियगहपहनारागस्स, नवतेयदित्रलेसस्स । नाणुजोयस्स जए, भहं दमसंपस्रस्स ॥ १० ॥ महं विद्वेलापरिगयस्स, सज्जाय-जोगमगरस्स । अन्स्रोहस्म अगवओ, संघसगुद्दस्य ठंदस्य ॥ ११ ॥ सम्मद्दंसण-वरवर्रददम्खगाढावगाढपेढस्स । धम्मवररयणमंडियनामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥ नियम्सियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्रकृहस्स । नंदणवणमणहरसुरभिसीलांधुद्ध-मायस्म ॥ १३ ॥ जीवदयासुंदरकंदरुद्दियमुणिवरमइंद्दृशस्स । हेउसयघाउपगर्ले-तर्यणदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥ संवर्षरज्ञळपगळियउज्झरपविरायमाणहारस्स । सावगत्रणपरररवंतमोरनवंतकुहरस्त ॥ १५ ॥ विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविज्ञुञ्ज-लंतसिहरस्स । विविद्युणकप्पस्कसगम्लभरकुसुमाउलवणस्य ॥ १६ ॥ नाणवरर-मणदिप्पंत-,कंतवेरिक्यिविमलचूलस्य । वंदामि विणयपणओ, संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥ गुणरयणुञ्चलकट्यं, सीलसुर्गचितवमंडिउदेसं । सुयवारसंगसिद्दरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥ १८ ॥ नगररहचक्क्पलमे, चंदे सूरे समुहमेहम्मि । जो उवसिजह

सययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥ १९ ॥] [वंदे] उसमं अजियं संमव-,मिमनंदणसुमह-सुप्पमसुपासं । ससिपुप्पदंतसीयल-,सिजंसं वासुपुजं च ॥ २०॥ विमलमणंत स धम्मं, संति कुंशुं अरं च महिं च । मुनिमुख्ययनसिनेमिं, पासं तह बद्धमाणं च ॥ २१ ॥ पढमित्य इंदभूई, बीए पुण होइ अग्गिभूइति । तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सहम्मे य ॥ २२ ॥ मंडियमोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलमाया य । मयजे य पहासे [य], गणहरा हुंति धीरस्य ॥ २३ ॥ निब्बुइपहसासणयं, जयद सया सब्बभावदेसणयं । कुसमयमयनासणयं, जिपिदवरवीरलासणयं ॥ २४ ॥ सहम्मं अग्रिगवेसाणं, जंबनामं च कासवं । पभवं कचायणं वंदे, वच्छं सिजंभवं तहा ॥ २५ ॥ जसमहं तुंगियं बंदे, संभूयं चेव माढरं । महबाहुं च पाइनं, शृतमहं च गोयसं ॥ २६ ॥ एलावचसगोतं, यंदामि महागिरिं सहत्यि च । तत्तो कोसियगोतं, बहुलस्स सरिव्ययं वंदे ॥ २७ ॥ हारियगुत्तं साई, च वंदिमो हारियं च नामजं। वंदे कोसियगोत्तं, संडिलं अजजीयधरं ॥ २८ ॥ तिसमुद्दसायकिर्ति, दीवसमुद्देश गहियपेयालं । वंदे अजसमुद्दं, अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥ २९ ॥ भणगं करगं झरगं, पभावगं णाणदंसणग्णाणं । वंदामि अज्जमंगुं, सुयसागरपारगं धीरं ॥ ३०॥ विंदामि अज्ञधममं, तत्तो वंदे य भइगुतं च । तत्तो य अज्ञवहरं, तवनियमगुणेहिं -वहरसमं ॥ ३९ ॥ वंदामि अजरिक्सय-,समणे रिक्सयचरित्तसम्बरसे । रयण-करंडनाभुओ, अणुओगो रिक्सओ जेहिं ॥ ३२ ॥) नाणिम्म दंसणिम्म य. तवविणए णिश्वकालमुज्यतं । अर्जं नंदिलखमणं, सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥ ३३ ॥ वश्रुट वाय-गवंसी. जसवंसी अजनागहत्थीणं । वागरणकरणमंगिय-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ ३४॥ जञ्जेजणघाउसमप्पद्दाण, मुह्यकुवलयनिहाणं । वहुउ वायगवंसो, रेव-इनक्खलनामाणं ॥ ३५॥ अयलपुरा णिक्खंते, कालियसुमञाणुओगिए घीरे । बंभद्दीवगसीहे. बायगपयमुत्तमं पते ॥ ३६ ॥ जेलि इसो अणुओगो, प्यरह अज्ञावि अनुभरहम्म । बहनयरनिग्गयजसे, ते वंदे संदिलायरिए ॥ ३७ ॥ तत्तो हिस-वंतमइंत्रांबक्कमे, घिइपरक्रममणंते । सञ्कायमणंतघरे, हिसबंते वंदिमो सिरसा ॥ ३८ ॥ कालियसुयव्याक्षोगस्स भारए, भारए य पुव्वाणं । हिमनंतस्यमासमणे, वंदे जागजुजायरिए ॥ ३९ ॥ मिउमहवसंपन्ने, आणुपुव्यवायगत्तमं पत्ते । ओह-सुयसमायारे, नागज्जुणवायए बंदे ॥ ४० ॥ [गोबिंदाणंपि नमो, अणुओरे विज-ळघारिखिदाणं । विश्वं खंतिदसाणं, पस्वके दुह्नसिंदाणं ॥ ४१ ॥ तत्तो य स्यदिकं, निकं तबसंजमे अनिव्यिष्णं । पंडियजणसामण्यं, वंदामी संजमविद्विण्यु ॥ ४२ ॥] बरकगगतियचंपग-,विमाजकवरकमस्याक्तमस्यिके । अवियक्तकविययदहरः, दवानुष-

विसारए वीरे ॥ ४३ ॥ अङ्गमरहप्पद्दाणे, बहुविहसज्झायसुगुणियपहाणे । अणु-स्पीनियवरवसमे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥ ४४ ॥ भूयहियअप्पगन्मे, वंदेऽहं भूय-रिजमायरिए । भवभयवुरक्टेयकरे, सीसे नागजुणरिसीणं ॥ ४५ ॥ सुमुनियनिचा-निषं, तुमुणियसुत्तत्थघारयं वंदे । मञ्मावुञ्मावणया-,तत्थं छोहिचणामाणं ॥ ४६ ॥ अत्यमद्वत्यक्लाणि, सुसमणवक्लाणकहणनिव्वाणि । पर्यकृए महुरवाणि, पर्यओ पणमामि दूसगणि ॥ ४७ ॥ [तवनियमसश्चसंजम-,विणयज्ञवखंतिमद्दरयाणं । सीख-गुणगहियाणं, अणुओगजुगपद्दाणाणं ॥ ४८ ॥] सुकुमालकोमलतले, तेसि पणमामि लक्खणपसत्ये । पाए पात्रमणीणं, पविच्छयसएहिं पणिवहए ॥ ४९ ॥ जे अने भगवंते, कालियसुयआणुओगिए धीरे। ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परुवणं त्रोच्छं ॥ ५.० ॥ सेलघण १ कुडग २ चालणि ३, परिपूजन ४ इंस ५ महिस ६ मेसे ७ य। मसग ८ जल्म ९ बिराली १०, जाहग १९ गो १२ भेरी १३ आसीरी १४॥ ५१॥ सा समासओ तिविहा पनता, तंजहा-जाणिया, अजाणिया, दुव्यि-यहा । जाणिया जहा-खीरमिव जहा हंसा, जे घुटंति इह गुरुगुणसिमदा । दोसे य विवज्रंति, तं जाणद्व जाणियं परिसं ॥ ५२ ॥ अजाणिया जहा-जा होइ पगइ-महुरा, मियछावयसीहकुकुडयम्या । रयणमिव असंठविया, अजाणिया सा अवे परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियङ्का जहा-न य कत्यह निम्माओ, न य पुच्छह परिमबस्स दोसेणं । वत्थिक्व वायपुण्णो, फुट्टर् गामिक्षय(दुव्वि)वियष्ट्रो ॥ ५४ ॥ नाणं पंचविद्दं पत्रतं, तंत्रहा-आमिणिबोहियनाणं, स्थनाणं, ओहिनाणं, मणपज्यवनाणं, केवरुनाणं ॥ १ ॥ तं समासओ दुविहं पण्णतं, तंजहा-पचक्सं च परोक्सं च ॥ २ ॥ से कि तं पश्चक्कं ? पश्चक्कं दुविहं पण्यत्तं, तंजहा-इंदियपश्चक्कं नोइंदियपश्चक्कं च ॥ ३ ॥ से कि तं इंदियपचक्खं ? इंदियपचक्खं पंचविहं पण्णतं, तंत्रहा-सोईदियपचक्खं चिन्दियपबन्सं चाणिदियपबन्सं जिन्मिदियपबन्सं फासिदियपबन्सं, से तं इंदिय-पबक्सं ॥ ४॥ से किं तं नोइंदियपबक्सं ? नोइंदियपचक्सं तिविहं पण्णतं, तंजहा-ओहिनाणप्यक्यं मणपञ्चकनाणप्यक्यं केवलनाणप्यक्यं ॥ ५॥ से कि तं ओहिनाण-पवक्खं ! ओहिनाणपवक्खं दुविहं पण्णतं, तंजहा-मवपवह्यं च खाओवसियं च ॥ ६ ॥ से कि तं अवपचड्यं ! अवपचड्यं दुण्हं, तंजहा-देवाण य नेरह्याण म ॥ ७॥ से कि तं खाओवसमिवं ! खाओवसमिवं दुण्हं, तंजहा-मण्साण व पंचेदिय-तिरिक्सकोणियाण य । को हेक सामोत्रसमियं ? खाओक्समियं तयावर्षिज्याणं करमाणं उदिण्णाणं सएवं अणुदिष्णाणं उदसमेणं ओहिनाणं समुप्पकार् ॥ < ॥ बद्धा गुक्पक्रिकस्य क्रक्नारस्य सोहिनाचं समुप्पन्तः, तं समासको छन्दिहः पण्णतं, तंत्रहा-आणुगामियं १, अणाणुगामियं २, वसूमाणयं ३, हीममाण्यं ४. पडिवाइयं ५. अपडिवाइयं ६॥ ९॥ से कि तं आणुगामियं ओहिनाणं है आणगामियं ओहिनाणं द्विहं पण्णतं, तंत्रहा-अंतगर्यं च मज्झगर्यं च । से कि तं अंतगर्य ? अंतगर्य तिविहं पण्णतं, तंजहा-पुरक्षो अंतगर्य, मग्गओ अंतगर्य, पासको अंतगरं। से किं तं परओ अंतगरं? परओ अंतगरं-से जहानामए केंद्र पुरिसे उद्धं वा चड़िलयं वा अलायं वा मणि वा पहेवं वा जोड़ं वा पुरओ काउं पणुहेमाणे २ गरहेजा. से तं पुरको अंतगर्य । से कि तं मरगओ अंतगर्य ? मरगओ अंतगर्य-से जहानामए केइ पुरिसे उक्के वा चड़िलयं वा अलायं वा मणि वा पईवं वा जोडं वा मगाओ काउं अशुक्तेमाणे २ गच्छिका. से तं मगाओ अंतगयं। से किं तं पासओं अंतगर्य ! पासओं अंतगर्य-से जहानामए केइ पुरिसे उन्ने वा चहुिल्यं वा अलायं वा मणि वा पहेवं था जोई वा पासओ काउं परिक्केमाणे २ गच्छिजा. से तं पासओ अंतगर्यः से तं अंतगर्यः। से किं तं मञ्झगर्यः? मञ्झगर्यं-से जहानामए केड परिसे उक्के वा चडलियं वा अलायं वा मणि वा पडेंचे वा जोडं वा मतथए काउं समय्वहमाणे २ गच्छिजा. से तं मज्झगयं । अंतगयस्म मज्झगयस्स य को पइ-विसेरो ? परओ अंनगएणं ओहिनाणेणं परओ चेव संखिजाणि वा असंखिजाणि वा जोयणाहं जाणइ पासङ् । समाओ अंतगएणं ओद्विनाणेणं समाओ चेव संक्षिजाणि वा असंखिजाणि वा जोयणाई जाणड पासड । पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिजाणि वा असंखिजाणि वा जोवणाई जाणइ पासइ । मज्जगएणं ओहिना-णेणं मन्त्रओ समंता संखिजाणि वा असंखिजाणि वा जोगणाई जाणह पासह । से तं भाणुगामियं ओहिनाणं ॥ १० ॥ से कि तं अजाजुगामियं ओहिनाणं ? अजाजुगामियं ओहिनाणं से जहानामए केड पुरिसे एगं महंतं जोइड्डाणं काउं तस्सेव जोइड्डाणस्स परिपेरतेहिं परिपेरतेहिं परिघोलेमाणे परिषोलेमाणे तमेव जोडहाणं पासड. अखस्य गए [न जाणइ] न पासइ, एवामेब अणाजुगामियं ओहिनाणं जत्येव समुप्पज्ञ तत्थेव संसेजाणि वा असंखेजाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जीयणाइं जागड पासइ; अश्रत्य गए ज पासइ। सेर्स अजाजुगामियं ओहिनाजी॥ ११॥ से कि तं क्षू-माणयं ओहिनाणं ? वन्नमाणयं ओहिनाणं पसत्येस अञ्चवसायद्वाणेस बहुमाणस्स वन्नमाणचरित्तस्य विद्युज्यमाणस्य विद्युज्यमाणचरित्तस्य सम्बक्षो समेतां ओही वंद्युव जावद्या तिसमयाहारगस्स, ग्रहमस्स पणगजीवस्स । श्रोगाहणा जहना, ओहीकित्तं जहनं तु ॥ ५५ ॥ सन्वबहुअगमिजीवा, निरंतरं जतिर्यं मरिजंह । कितं सम्बद्धिसार्यं, परमोही खेराविरिद्धो ॥ ५६ ॥ अंनुस्तमायियाणं, भागमधेकिक दोद्धं संविद्धा ।

कांगुलमानिलयंतो, आवलिया अंगुलपुहुतं ॥ ५७ ॥ इत्यम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्यो । जोयणदिवसपुद्धतं, पक्खंतो पत्रवीसाओ ॥ ५८ ॥ भरहिम्म अद्भासो, अम्बूरीविम्म साहिओ मासो । वासं च मणुयकोए, वासपुहुतं च स्यगम्म ॥ ५९ ॥ संखिजिम्म उ काले, दीवसमुद्दावि हुंति संखिजा । कालम्म असंखिजे, बीवमसुदा उ भइयव्या ॥ ६० ॥ काले चउण्ह बुद्धी, कालो भइयव्यु खित्रबुद्धीए । वुङ्किए दव्यपञ्चव, भइयव्या सिलकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमी य होइ कास्त्रे, तत्ती सहमयरं इवड् खितं। अंगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ अर्धखिजा॥ ६२॥ सेतं वहुमाणयं ओहिनाणं ॥ १२ ॥ से कि तं हीयमाणयं ओहिनाणं ? हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्येहि अञ्ज्ञवसायद्वाणेहि वहमाणस्य वहमाणचरित्तस्य संकिल्स्सि-माणस्य संकिलिस्समाणचरितस्य सम्बओ समंता ओही परिहायइ । सेर्स हीयमाणयं ओहिनाणं ॥ १३ ॥ से किं तं पिंडवाइओहिनाणं ? पिंडवाइओहिनाणं जहुण्णेणं अंगुरुस्स असंबिजयमार्ग वा संबिजयमार्ग वा, वालमां वा वालमगपुहुतं वा, लिक्खं बा लिक्खपुहुनं वा, जूर्यं वा जूयपुहुनं वा, जवं बा जबपुहुनं वा, अंगुलं वा अंगुलपुहुत्तं वा, पार्य वा पायपुहुत्तं वा, विहरिय वा विहरियपुहुत्तं वा, रयणि वा रयमिपुहुतं वा, कुच्छि वा कुच्छिपुहुतं वा, घणुं वा धणुपुहुतं वा, वाउयं वा गाउयपुहुत्तं वा, जोयणं वा जोयणपुहुत्तं वा, जोयणसयं वा जोयणसयपुहुत्तं वा, जोयणसहस्यं वा जोयणसहस्सपुहुत्तं वा, जोयणलक्खं वा जोयणलक्खपुहुत्तं वा, [जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहुतं वा, जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहुतं वा, जोयणसंखिजं वा जोयणसंखिजपुहुतं वा, जोयणअसंखेजं वा जोयणअसंखेज-पुहुत्तं वा] उक्कोसेणं लोगं वा पासिताणं पडिवहजा। सेतं पडिवाहओहिमाणं॥ १४॥ से कि तं अपिडवाइओहिनाणं ? अपिडवाइओहिनाणं जेणं अलोगस्स एगमिन क्षागासपर्सं जाणइ पासइ, तेण परं अपिडवाइओहिनाणं । सेनं अपिडवाइओहिनाणं ॥ १५ ॥ तं समासओ चरविषद् पण्णतं, तंत्रहा-दव्यओ, खिताओ, काळओ, भावनो । तस्य दब्बसी णं ओहिनाणी जहनेणं अणंताइं स्विद्व्याई जाणइ पासइ, उद्गोसेणं सञ्चाई स्विद्ध्याई जाण्ड् पासइ। क्रित्तओ णं ओहिनाणी जहनेणं अंगुलस्त असंसिज्यस्मामं जाणह पासह, उक्कोरीणं असंसिजाई अलोगे लोगप्पमाणमिताई संराहं जाणह पासह । कालओ यां ओहिनाणी जहकेणं आवित्याए असंस्थितहसागं जानइ पासइ, उन्नोसेणं असंबिजाओ उत्सप्पिनीओ अवस्पिपनीओ अईयमणागर्ग व कालं जाणइ पासह। भावको मं कोहिमाची जहकेमं अवंते मावे जाणइ पासह, उद्योतेणी सर्गते भावे व्यावह पासह । सम्बनावाणमर्गतमार्ग जाणह पासह ॥ १६ ॥

ओही भवपचड्ओ, गुणपचड्ओ य विष्णिओ दुविहो । तस्स य बहु विषप्पा, दुवे सित्ते य काले य ॥ ६३ ॥ नेर्इयदेवतित्यंकरा य, ओहिस्सऽवाहिरा हुंति । पासंवि सन्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति ॥ ६४ ॥ सेतं ओहिनाणपवक्कं ॥ से किं तं मणपज्जवनाणं ? मणपञ्जवनाणे णं भंते ! कि मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साणं ? योयमा ! मणुस्साणं नो अमणुस्साणं । जइ मणुस्साणं कि संमुच्छिममणुस्साणं गञ्भवदंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! नो संयुच्छिममणुस्साणं उप्पन्नइ गञ्भवकंतिय-मणुस्साणं । जह गब्भवक्कंतियमणुस्साणं, कि कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्माणं, अकम्मभूमियगब्भवक्रंतियमणुस्ताणं, अंतरदीवगगब्भवक्रंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! करमभूमियगब्भवक्कंतियम्णस्याणं नो अक्तसभूमियगब्भवक्कंतियमण्रस्माणं, नो अंतरदीवगगन्भवक्रंतियमणुरसाणं । जइ कम्मभूमियगन्भवक्रंतियमणुरसाणं, किं संखिजवासाउयक्रमभूमियगञ्मवक्रंतियमणुस्साणं, असंखिजवासाउयक्रमभूमिय-गब्भवकंतियमणस्ताणं ? गोयमा ! संखेजवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणस्ताणं, नो असंखेजनासाउयकम्मभूमियगब्भवक्षंतियमणुस्साणं । जइ संखेजनासाउयकम्म-भूमियगब्भवकंतियमणुरुसाणं, कि पज्जनगसंखेजवासाउयकम्मभूमियगब्भवकंतियमणु-स्ताणं, अपज्ञत्तगसंखेजवासाउयकम्मभूमियगब्भवकृतियमणुस्ताणं १ गोयमा ! पज्जत-यसंखेजवासाउयकम्मभूमियगबभवकंतियमण्टसाणं नो अपजलगसंखेजवासाउयक-माभूमियगञ्भवकंतियमणुस्याणं । जङ् पजनगर्सकेजवासाउयकम्मभूमियगञ्मवकंति-यमणुस्ताणं, कि सम्महिद्विपञ्चनपसंखेजवासाउयकमममूमियगञ्मवकंतियमणुस्साणं. मिच्छहिद्रिपजनगरंखेजवासाउयकम्मभूमियग्ब्सवक्रंतियमणुरसाणं, सम्मामिच्छहि-द्विपज्ञत्तगसंखेजवासाउयकम्मभूमियगव्भवकंतियमण्हसाणं ? गोयमा ! सम्महिद्वि-पज्जतगसंखेजवासाउयकमभूमियगग्भवद्यंतियमणुरसाणं, नो मिच्छद्विष्ठिपज्यतग-संक्षेज्जवासाउयकम्मभसियगब्भवकंतियमणुरसाणं, नो सम्मामिच्छहिद्विपजत्तग-संखेजवासाउयसम्मभाभयगब्भवद्वंतियमणस्याणं. जड सम्महिद्रिपजनगरंखेज-वासाउयकम्मभूमियगव्भवकंतियमणुरुसाणं, कि संजयसम्महिब्रुपज्जनगरांकेज्ववासा-उयकम्मभूमियगन्भवद्यतियमण्हसाणं. असंजयसम्महिक्किपजत्तमसंकेजवासाउय-कम्मभूमियगञ्जवकंतियमणुस्साणं, संजयासंजयसम्महिद्विपञ्चनागसंखेजवासाउच-कम्मभूमियगन्भवकंतियमणुरसाणं ? गोयमा ! संजयसम्महिद्विपञ्चतागसंबोजनासः-उयक्तमभूमियगञ्जनकातियसणुरसाणं, नो असंसवसम्बाहितिपवात्तासंखेळानासाउय-करमभूमियगव्यवक्रतियमणुरसार्थः नी शंजनासंजनसम्बद्धिपज्ञतमसंबेक्षणसा-उगकन्मभूमियम्बावकंतियम्पुरसार्थः । सङ् संवयसन्महिद्वप्रकारवर्धकेत्रवाहात्वनः

क्रम्मभूमियगम्भवकंतिथमणुरसार्ण, किं पमत्तसंजयसम्महिद्विपज्यत्तगसंखेजवासाउय-कम्मभूमियगम्भवकंतियम्णस्याणं अपमत्तसंज्यसम्महिद्देपज्ञत्तगर्यसेज्यसाउय-कम्मभूमियगन्भवकंतियमणुस्ताणं ? गोयमा ! अपमत्तसंजयसम्महिद्विपजनगसंखेज-बासाउयकम्मभूमियगव्सवक्रंतियमणस्माणं, नो पमत्तसंजयसम्महिद्रपञ्जतगसंखेज-वासाउयकम्मभूमियगच्भवकंतियमणुस्साणं । जइ अपमत्तरंजयसम्महिद्विपञ्जतग-संखेजवासाम्यकम्मभूमियगन्भवक्रंतियमणुरसाणं, कि इङ्ग्रीपराक्षपमत्तसंजयसम्महिङ्घि-पज्जतगरंखेजवासाउयकम्मभूमियगञ्भवस्तित्रयम्णस्याणं अणिष्रीपत्तअपमत्तरंजय-सम्महिद्रिपज्यतगर्सकेजवासाउयकम्मभूमियगव्भवक्रेतियमणुस्ताणं ? गोयमा । इङ्गी-पत्तअपमत्तर्संजयसम्महिद्विपञ्चनगसंखेजवासाउयकमम्मियगञ्भवकंतियमणुस्साणं, नो अणिद्वी पत्तअपमत्तसंजयसम्महिद्रिपज्ञत्तगसंखेजवासाउयकम्मभमियगव्भवकंतिय-मणुस्साणं मणपजननाणं समुप्पज्जइ ॥ १७ ॥ तं च द्रविहं उप्पज्जइ, तंजहा-उजुमहं य विडलमई य, तं समासओ चर्जाव्यहं पन्नतं, नंजहा-दव्यओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ द्व्यओ णं राजुमई अणंते अणंतपएतिए संधे जाणइ पासड, ते चेव विजलमंड अञ्महियतराए विजलनराए विनद्धतराए वितिमरत्तराए जाणड पासइ । खिताओं णं उज्ज्याई य जहनेणं अंगुलस्स असंखेजयभागं, एक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रमणप्पभाए पुरुवीए उवरिमहेद्विके खुरुगपर्यरे. उन्नं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अंतोमणुरसक्ति अङ्गाइजेसु श्विममुद्देसु पश्ररससु कम्म-भूमित तीसाए अकम्मभूमिस छप्पद्याए अंतरदीवगेस सिन्नपंचेदियाणं पजत्तवाणं मणोगए भाव जाणइ पासड, तं चेत्र विजलमई अब्राइजेहिमंगुलेहिं अव्महियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेतं जाणइ पासइ । कालओ णं उज्जमहं जहारेणं पलिओकास्स असंखिजयभागं उद्योसेणवि पलिओवमस्स असंखिजयभागं **अईयराणायर्व वा कालं जागर् पासर्, तं चेव विख्लमई अन्महिमतरा**गं विजत-तरायं विमुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणड पासह । भावओं णं उज्ज्याई अणंते भावे जाणह पासह. सम्बक्षावार्ण अर्णतमार्ग जाणड पासह. तं चेव विउत्तमई अन्महिय-तरागं विरुक्तरागं विसद्धतरागं बिह्निमिरतरागं जाणह पासह । मणपज्जवनाणं पुण, अजगणपरिचितियस्यपागढणं । माणुसिक्तानिवर्दः, गुणपण्यस्यं चरित्तवथो ॥ ६५ ॥ सेतं मणप्रज्ञवनाणं ॥ १८ ॥ से कि ते केवलनाणं १ केवलनाणं दुविहं प्रवर्त. मदरवहेरकनार्यं दुविहं पत्रवर्तः, तंत्रहा--सजीनिमदरवहेवळनार्यं व अजीनिमदरा-केवरुवार्थ स । से कि सं स्वामिभवत्यकेवरुवार्थ ! सत्रोमिमवत्यकेवरुवार्थ द्विष्ट

पण्णतं, तंजहा--पद्मसमयसजोगिमवत्यकेवलनाणं च अपढमसमयसजोगिमवत्यः केवलनाणं च. अहवा चरमसमयसजोगिमवत्यकेवलनाणं च अचरमसमयसजोगि-भवत्यकेवलनाणं च. सेतं सजोगिमवत्यकेवलनाणं । से कि तं अजोगिभवत्य-केवलनाणं ? अजोगिमनत्थकेवलनाणं द्विहं पन्नतं, तंजहा-पटमसमयअजोगिभव-त्थकेवलनाणं च अपहमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च. अहवा चरमसमयअजोगि-भवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्यकेवलनाणं च, सेत्तं अजोगिभवत्थ-केवलनाणं. सेत्तं भवत्यकेवलनाणं ॥ १९ ॥ से कि तं सिद्धकेवलनाणं? सिद्ध-केवलनाणं द्विहं पण्णतं, तंत्रहा-अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च ॥ २० ॥ से कि तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ? अणंतरसिद्धकेवलनाणं पन्नरसिद्ध पण्णमं, तंजहा-तित्यसिद्धा १ अतित्यसिद्धा २ तित्ययरसिद्धा ३ अतित्ययरसिद्धा ४ सर्गेबुद्धसिद्धा '५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्यिकिंगसिद्धा ८ प्ररि-सर्लिंगसिदा ९ नपंसगर्लिंगसिदा १० सर्लिंगसिदा ११ अवस्तिंगसिदा १२ गिहि-लिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५. सेतं अणंतरसिद्धकेवलनाणं । से कि तं परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविष्टं पण्यानं, तंत्रहा-अपट-मसमयसिद्धाः इसमयसिद्धाः, तिसमयसिद्धाः, चटसमयसिद्धाः जाव दससमयसिद्धाः रंखिजसमयसिद्धाः, अरंखिजसमयसिद्धाः, अणंतसमयसिद्धाः, सेत्तं परंपरसिद्धकेवल-नाणं । सेतं सिद्धकेवलनाणं ॥ २१ ॥ तं समाराखो चरन्त्रिष्टं पण्णतं, तंजहा-दव्यओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्य दव्यओ णं केवलनाणी सम्बद्ध्याई जाणत पासड । शिक्तओ णं केवलनाणी सब्बं शिक्तं जाणत पासह । कालओ णं केवल-नाणी सव्वं कालं जाणह पासह। मावओं णं केवलनाणी सब्वे भावे जाणह पासह। अह सब्बद्धव्यपरिणाम-,भावविष्णशिकारणमणंतं । सास्यमप्पविवारं, एगविहं केवलं माणं ॥ ६६ ॥ २२ ॥ केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ प्रणावणजोगे । ते भासक तित्थयरो, बहजोगसुर्य हवह सेसं॥ ६७॥ सेतं नेक्छनार्ण । सेतं नोइंदियपवानसं। सेनं पश्चक्खनाणं॥ २३॥ से कि तं परोक्खनाणं ? परोक्खनाणं कुविहं पक्षनं, तंजहा-आभिणिबोहियनाथपरोक्ष्यं च द्वयनाणपरोक्ष्यं च जत्य आसिणिबोह्न-यनाणं तत्य युथनाणं, जत्य युथनाणं तत्यामिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाः अण्य-मण्णमणुगयाई, तहवि पुण इत्य आयरिया नाणतं पण्णवयंति-अभिनिकज्जाकति आभिणिबोहियनाणं, सुपेइति सुयं, महपुञ्चं केण सुयं, न मई सुयप्रव्या ॥ २४ ॥ अविसेरिया मई-मह्माणं च महश्रकाणं च । विसेरिया-सम्महिद्धस्य महे सहवाणं, मिन्छहिद्विस्त मई महश्रवाणं । अविदेशियं दुर्म-प्रवनानं मा सरकालनं च । विदे-

. सियं तुर्य-सम्मादिद्विस्स सुयं सुयनाणं, मिच्छदिद्विस्स सुयं सुयक्षकाणं ॥ २५ ॥ से कि तं आभिणिबोहियनाणं ? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्यतं, तंत्रहा-सुयनिस्सियं 🔫, अस्युयनिस्सियं च । से किं तं अस्युयनिस्सियं ? अस्युयनिस्सियं चडिवहं पण्णतं. तंजहा-उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४ । बुद्धी चछव्विहा बुता. पंचमा नोवलन्भइ ॥ ६८ ॥ २६ ॥ पुल्यमदिद्वसस्युय-, मवेइयतक्खणविद्यद्वगहियत्था । अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥ भरहसिल १ मिंड २ कुकुड ३. तिल ४ बालुम ५ हत्थि ६ अगड ७ वणसंडे ८ । पायस ९ अह्या १० पत्ते ११, खाडहिला १२ पंच पियरो य १३॥ ७०॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३, खुरुग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उचारे ८। गय ९ घरण १० गोल ११ लंभे १२, खुइग १३ मिंग १४ तिथ १५ पह १६ पुत्ते १७ ॥ ७१ ॥ महुसित्थ १८ मुद्दि १९ अंके २०, य नाणए २१ भिक्ख २२ चेंडमनिहाणे २३। सिक्ला २४ व अत्थसत्ये २५, इतथी व महं २६ समसहस्से २७॥ ७२॥ भर-नित्यरणसमत्याः तिवग्गद्वतत्थगहियपेयाला । उभओ-लोगफलवर्दः विणयसमृत्या हबइ बुदी ॥ ७३ ॥ निमित्ते १ अत्यसत्ये च २, छेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ स । गहुम ७ तक्खण ८ गंठी ९, अगए १० रहिए ११ व गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साडी चीहं, च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १३ । निव्वोद्ए १४ व गोणे, घोडगपडणं च रक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिद्वसारा, कम्मपसंगपरि-घोलणविसाला । साहुकारपालवई, कम्मसमुत्वा इवह बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेरांच्याए ९ करिसए २, कोलिय ३ डोने ४ य मुलि ५ घम ६ पत्रए ७। तुकाए ८ वहुइम ९, पूसइ १० घड ११ विशकारे १२ सं ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिद्वंतसाहिया, वयविवा-गपरिणामा । हि्यनिस्तेयसफल्बई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ५८ ॥ असए १ छिद्धि २ इमारे ३, देवी ४ उदिओदए इक्ड राया ५ । साहू य नंदिसेणे ६, घण-दरी ७ सावग ८ असचे ९ ॥ ७९ ॥ ससए १० असचपुरी १९, चाणके १२ चेव शूलमोहे १२ स । नातिकांदरिनंदे १४, वहरे १५ परिणामिया बुदी ॥ ८० ॥ बलगाहम १६ आमंद्रे १७, मधी १८ व सप्पे १९ व समि २० जाणिजा । परिणामियपुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेतं अस्ययनिस्तियं ॥ से किं तं इयनिस्सियं ! मुबबिस्सिवं खडिंबहं पण्णपं, संबद्दा-समाहे १, ईहा २, अवाओ ३, भारणा ४ ॥ २० ॥ से कि तं उत्महे ? उमाहे दुविहे पण्यते, तंत्रहा-अत्युव्महे व वंजपुरवहित्र ॥ २८ ॥ से 🎋 ते वंजपुरवहे ? वंजपुरवहे चडन्चिहें पणाते, तंबहा-मोदंबिकांकपुरमहे, कामिवियवंकपुरमहे, जिन्मिदयनंकपुरमहे, कासिवियवं-

जणुरगहे । सेत्तं वंजणुरगहे ॥ २९ ॥ से किं तं अत्युरगहे ? अत्युरगहे छिष्टिहे पण्णते, तंजहा-सोइंदियअत्युग्गहे, चिन्द्रियअत्युग्गहे, घाणिदियअत्युग्गहे, जिन्भिदियअन्धुम्गहे, फार्मिदियअत्युम्गहे, नीइंदियअत्युग्गहे ॥ ३० ॥ तस्स णं इमे एमड्डिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिजा भवंति, तंजहा-ओगेण्हणया, उनधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा । मेर्च उम्महे ॥ ३१ ॥ से कि तं ईहा ? इहा छिव्वहा पण्णता, तंजहा-मोइंदियईहा, चिंग्विदयईहा, घाणिदियईहा, जिन्भिटियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा । तीसे णं इमे एगद्विया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिजा भवंति, तंजहा-आभोगणया, मगगणया, गवेगणया, चिंता, बीमंता । सेतं ईहा ॥ ३२ ॥ से कि नं अवाए ? अवाए छव्विहे पण्णते. तंजहा-सोट्दियअवाए, चिन्सिदियअवाए, घाणिदियअवाए, जिब्भिदियअवाए, फार्मिदियअबाए, नोइंदियअवाए । तस्स णं इमे एगद्विया नाणाघोसा नाणार्वजणा पंच नामधिजा भवन्ति, तंजहा-आउष्टणया, पचाउष्टणया, अवाए, बुद्धी, विष्णाणे । सेनं अवाए ॥ ३३ ॥ से कि तं धारणा ? घारणा छव्विद्या पण्याता, नंजहा-सोइंदियधारणा, चर्किखदियधारणा, घाणिदियधारणा, जिन्मिदियधारणा, फासिदि-यथारणा, नोइंदियधारणा । तीसे णं इमे एगड्डिया नाणाधीसा नाणावंजणा पंच नामधिजा भवंति, तंजहा-धारणा, साधारणा, टक्णा, पहुडा, कोड्डे। सेनं धारणा ॥ ३ ४ ॥ उग्गहे इक्समइए, अंतोमुहत्तिया ईहा, अंतोमुहत्तिए अवाए, धारणा संखेज वा कारुं असंखेज वा कारुं ॥ ३५ ॥ एवं अद्वाचीसइविहस्स आमिणिबो-हियनाणस्स वंजगुरगहरून परवणं करिस्सामि पिडबोहगदिईतेणं, मझगदिईतेण य । से कि तं पडिबोहगदिहंतेणं ? पडिबोहगदिहंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुनं पिडेबोहिजा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पशवर्य एवं क्यासी-कि एगसम्यपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति जाव दससमयपिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ? संखिजसमयपिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ? असंखिजसमयपिद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, एवं वर्यंतं चोयमं पण्णवए एवं वयासी-नो एगसमयपविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुस-मयपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति जाव नो दससमयपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति. नो संख्जिसमयपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति, असंख्जिसमयपविद्वा पुरगला गहणमागच्छंति, सेतं पिडवीहगदिइंतेणं । से कि तं सहगदिइंतेणं ? सहगदिइंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ महनं ग्रहाय तत्थेगं उदगबिंदं पक्के-विजा, से नहे, अण्णेऽवि पविस्तते, सेऽवि नहे, एवं पविस्तप्यावेस पविसाप्यावेस

होही से उदगबिंदू जे णंतं मछगं रावेहिइति, होही से उदगबिंद् जे णंतिस मक्रगंसि ठाहिइ, होही से उदगबिंदू जेणं तं महनं भरिहिइ, होही से उदगबिंदू जेणं तं मह्नगं पवाहेहिइ, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पिक्खप्पमाणेहिं अणंतेहिं पुरमलंहिं जाहे नं वंजणं पृरियं होइ ताहे हुंति करेड, नो चेव णं जाणड़ के वेस सहाइ ? तओ ईहं पविसद, तओ जाणह अमुरे एस सहाड; तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ: तओ धारणं पविसड, तओ णं धारेड संखिजं वा कालं असंनिक्षं वा कालं। से जहानामए केंद्र पुरिसे अन्वतं सहं सुणिजा, तेणं सहोति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस सहाइ: तओ ईहं पविसइ, तओं जाणः अमुगे एम सद्दे; तओ अवार्य पविसद्, तओ से टबगर्य हवह; तओ धारणं पविसङ्, तओ णं धारेइ संक्षेकं वा कालं असंखेकं वा कालं । से जहानामए केंद्र पुरिसे अव्वतं हवं पासिजा, तेणं स्वति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवति; तभो इंहं पांवसइ, तभो जाणइ अमुगे एस स्वे; तभो अवायं पविमइ, तओ से उवगयं हवइ; तओ धारणं पविसइ, तओ णं घारेइ संखेजं वा कालं असेलेजं वा कालं । से जहानामए भेड़ पुरिसे अन्वत्तं गंधं अग्धाइजा, तेणं गंधिन उम्महिए, नो सेव णं जाणड़ के वेस गंधिनि; तओ ईहं पविसड़, तओ जाणड़ असुगे एस गंधे; तओ अवायं पविसङ्, तओ से उवगयं हवड्: तओ धारणं पविसङ्, तओ णं धारेइ संखेजं वा कालं असंखेजं वा कालं । से जहानामए केइ पुरिसे अव्यक्तं रसं आमाइजा, तेणं रसोत्ति उगाहिए, नो चेव णं जाणइ के देस रसेति: तुओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे; तओ अवायं पविसइ, तओ से उदगयं हवड़; तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ संखिजं वा कालं असंखिजं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वतं फासं पहिसंबेइजा, तेणं फासेति उमाहिए, नी चेव णं जाणह के वेस फासओति: तओ हैहं पविसह तओ जाणह असुगे एस फासे: तओ अवार्य पिषसइ, तओ से उक्गयं हुबह: तओ धारणं पिवसइ, तओ ण धारेह संकेजं वा कालं असंकेजं वा कालं । से जहानामए केह पुरिसे अव्वतं सुमिणं पासिजा, तेणं सुमिणेतिः उम्महिए, नो चेव णं जाणह के वेंस सुमिणेतिः तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ असुगे एस सुमिणे; तओ अवार्य पविसइ, तओ से उवगर्य इवड्; तओ धारणं पविसङ्, तओ णं धारेङ् संक्षेजं वा कालं असंखेजं वा कालं। सेतं मह्नगदिइंतेणं ॥ ३६ ॥ तं समासओ चडन्विहं पण्णतं, तंजहा-दञ्चओ. बित्तओ, कारुओ, भावओ । तत्य दब्बओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्दाहं दम्बाई जाणह, न पासह । खेत्तओ णं खाभिणिबोहियनाणी आएसेणं सब्बं सेतंः

जाणइ, न पासइ । कालओं णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सब्बं कालं जाणह. न पासइ । भावओं णं आभिणियोहियनाणी आएसेणं सब्वे भावे जाणह, न पासइ । उगगह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हंति चतारि । आभिणिबोहियनाणस्म. भेय-वत्थू समासेणं ॥ ८२ ॥ अत्थाणं उग्गहणम्म उग्गहो, तह वियालणे ईहा । वबसा-यम्मि अवाओ, घरणं पुण घारणं विति ॥ ८३ ॥ उम्मह इकं ममयं, ईहावाया मुहत्तमदं तु । कालमसंखं संखं, च धारणा होइ नायव्या ॥ ८४ ॥ पुट्टं सुणेड् यहं, रूवं पुण पासइ अपुट्टं तु । गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्टं वियागरे ॥ ८५ ॥ भासासममेढीओ, सहं जं सुणइ मीसियं सुणइ। बीसेढी पुण सहं, मुणेइ नियमा पराघाए ॥ ८६ ॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा । सन्ना सई मई पन्ना, सब्बं आभिणिबोहियं ॥ ८० ॥ सेतं आभिणिबोहियनाणपरोक्कं [सेनं मइनाणें] ॥ ३० ॥ से किं तं मुमनाणपरोक्खं ? सुयनाणपरोक्खं चोइसविहं पण्णतं, तंजहा-अक्खरसुयं १, अणक्खरसुयं २, सण्णिसुयं ३, असण्णिसुयं ४, मम्मसुयं ५, मिच्छसुयं ६, साइयं ७, अणाइयं ८. सपज्जवसियं ९. अपज्जवसियं ९०, गमियं ११, अगमियं १२, अंसप-विद्रं १३. अणंगपविद्रं १४॥ ३८॥ से किं तं अक्खरसुर्यं ? अक्खरसुर्यं तिविहं पण्यातं, नंजहा –सन्नक्षरं, बंजणक्खरं, लद्धिअक्खरं । से कि तं सन्नक्खरं १ सनक्खरं अक्ख-रस्स संठाणागिई, सेनं सङ्गक्तरं । से किं तं वंजणक्तरं ? वंजणक्तरं अक्तरस्स वंजणाभिलावो सेत्तं वंजणकवारं । से कि तं लिदिअकवारं ? लिदिअकवारं अकवार-लिद्धियस्स लिद्धिअक्सरं समुप्पज्जः, तंजहा-सोहंदियलिद्धिअक्सरं, चिक्सिदियल-दिक्षकत्ररं, घाणिदियलदिअक्सरं, रमणिदियलदिक्षक्सरं, फासिदियलदिअक्सरं, नोइंदियलद्विधक्खरं, सेतं लद्विधक्खरं । सेतं अक्खरसुयं ॥ से कि तं अणक्खरसुयं १ अणक्सरसुर्य अणेगविहं पण्णतं. तंजहा-ऊसिर्यं नीसिर्यं, निच्छूटं खासियं च छीयं च । निस्सिवियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥ ८८ ॥ सेतं अणक्खर् स्यं ॥ ३९ ॥ से कि तं सण्णिसुयं ? सण्णिसुयं तिबिहं पण्णतं, तंत्रहा-कालिओव-एसेणं, हेऊवएसेणं, दिद्विवाओवएसेणं । से कि तं कालिओबएसेणं ? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्य ईहा, अवोहो, सगावा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णीति लन्मइ, जस्त पं भरिध इंहा, अवोहो, मरगणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से धं असण्णीति लब्भइ, सेत्तं कालिओवएसेणं । से किं तं हेट्यएसेणं ? हेट्यएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंघारणपुव्यिया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्मइ, जस्स वं निस्ध

१ पाढंतरगाहा-अत्याणं उम्महणं, च उम्महं तह वियालणं ईहं । वक्सावं च अवार्य, घरणं पुण धारणं विति ॥ १ ॥

अभिसंघारणपुव्विया करणसभी से णं असण्णीति लब्भइ, सेनं हेळवएसेणं। से कि तं दिद्विवाओबएसेणं ? दिद्विवाओवएसेणं सिण्णसुयस्य खओवसमेणं सण्णी रूष्भइ, असण्णिसुयस्म स्रओवसमेणं असण्णी रूब्भइ, सेनं दिद्विवाओवएसेणं । सेनं संगिगस्यं। सेतं असंग्णिस्यं ॥ ४० ॥ से किं तं सम्मस्यं ? सम्मस्यं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतिहिं उपपणनाणदंमणधरेहिं तेलक्किनिरिक्कियमहियपुइएहिं तीयप दुप्पणमणागयजाणएहिं सव्बष्णूहिं सव्वदिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा-आयारो १ सयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपण्णाती ५ नायाथ-म्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरीवनाइयदमाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिद्विवाओ १२, इश्वेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोह्सपुव्यस्स सम्मसुयं, अभिण्णद्सपुव्यस्स सम्मसुयं, तेण पर भिण्णेस भयणा, सेशं सम्मसुयं ॥ ४१ ॥ से कि तं मिच्छामुयं ? मिच्छामुयं जे इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिद्विएहिं सच्छंदबुद्धिमङ्विगप्पियं, तंजहा-भारहं, रामायणं, मीमासुरुक्खं, कोडिल्रयं. सगडभड्याओ, खोड(घोडग)मुहं, कप्पामियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी, वहसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं, काविलियं, छोगाययं, महितंतं, माढरं, पुराणं, वागरणं, भागवयं, पायंजली, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, मडणस्यं, नाडयाई, अहवा बावनरिकळाओ, चत्तारि य वेया संगोवंगा, एयाई मिच्छदिद्विस्स मिच्छत्तपरिग्ग-हियाइं मिच्छासुयं, एयाइं चेव सम्मदिद्विस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं, अहवा-मिच्छादिद्विस्मवि एथाई चेच सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मलहेउत्तणओ जम्हा ते मिच्छा-दिद्विया तेहिं चेव समएहिं चोइया ममाणा केइ सपक्खदिद्वीओ चयंति, सेतं मिच्छानुयं ॥ ४२ ॥ से किं तं साइयं सपजावसियं, अणाइयं अपजावसियं च ? इन्नेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं जुच्छित्तिनयद्वयाए साइयं सपजवसियं, अनुच्छित्ति-नयहुयाए अणाइयं अपजनसियं, तं समासभी चरुव्विहं पण्णतं. तंजहा-दव्वओ सितओं कालओं भावओं. तत्थ दम्बओं णं सम्मसुवं एगं पुरिसं पहुच साइयं सपजावसियं, बहुने पुरिसे य पहुच अणाइयं अपजावसियं, खेलओ णं पंच भरहाई पंचेरवयाई पहुच साइयं सपजवसियं, पंच महाविदेहाई पहुच अणाइयं अपजवसियं, कालओं णं उस्मप्पिणि ओसप्पिणि च पहुच साइयं सपज्जवसियं, नोउस्सिपिणि नोओसप्पिण च पद्भव अणाइयं अपज्ञवसियं, भावओ णं जे जया जिणपन्ता भावा आचविजंति, पत्रविजंति, पर्विजंति, दंशिजंति, निदंशिजंति, उवदंशिजंति, ते तथा भावे पड्टम साइयं सपजवसियं. खाओवसियं एण भावं पड्टम अणाइयं अपजावतियं अहवा भवतिहियस्य स्यं साहयं सपजावतियं व. अभवतिहियस्स ६८ सता०

सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च, सम्बागासपण्सागं सन्त्रागासपण्सेहिं अणंतगुरियं पज्जनक्तरं निष्फजड, सञ्जर्जावाणीपे य णं अक्ततरस्य अणंतभागी निशुम्बाहिको जह पुण सोऽवि आवरिजा नेणं जीवो अजीवत्तं पाविजा,-"मुह्नुवि मेहममुदए, होइ पमा चंदस्राणं'' सेतं साइयं सपजवसियं, सेतं अणाइयं अपजवसियं॥ ४३॥ से किं तं गमियं ? गमियं दिद्विवाओ, से किं तं अगमियं ! अगमियं कालियं नुयं, सेतं गमियं, सेतं अगमियं । अहवा तं समासओ दुविहं पण्णतं. तंजहा-अंगपिवहं, अंगबाहिरं च । से कि तं अंगबाहिरं ! अंगवाहिरं दुविहं पण्णनं, तंजहा-आवस्सयं च. आवस्सयवहरितं च । मे कि तं आवस्सयं? आवस्सयं छन्त्रिहं पण्णतं, तंजहा-गामाइय. चउवीसत्यओ, वंदणयं, पिकक्रमणं, काउस्सम्मो, पचक्खाणं; सेतं आव-स्मयं । से किं तं आवस्मयवङ्गिनं ? आवस्सयवङ्गिनं दुविहं पण्णतं, तंजहा-कालियं च उक्तालियं च । से कि तं उक्तालियं ? २ अणेगबिहं पण्पमं, तंजहा-दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पमुयं, सहाकप्पसुयं, उदवाह्यं, रायपसेणियं, जीवाभिगमां, फणवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नंदी, अणुओगदाराहं, देविंदत्थओ, तंदुल-वेयालियं, चंदाविज्झयं, मृरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्ञाचरणविणि-च्छओ, गणिवजा, झाणविभसी, मरणविभसी, अधिवसोही, वीयरागसुर्य, संलेहणाः सुर्यं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरएचक्खाणं, महापचक्खाणं, एवमाइ; सेतं उक्तलियं । से कि तं कालियं ! कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा-उभरज्यसणाई, दसाओ, कप्पो, वनहारो, निसीहं, महानिसीहं. इसिमासियाई, जम्बूदीवपनती, दीवसागरपन्नती, चंदपन्नती, खुड्डिया-विमाणपविभत्ती, महिल्या-विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वम्मचूलिया, विवाहसूलिया, अरुणोवनाए, वरुणोननाए, गरुलोवनाए, धरणोववाए, बेसमणोववाए, बेलंधरोववाए, देविंदोववाए, सहुाणसुए, समुद्वाणसुए, नागपार्यावित्याओ, निरमावित्याओ, कप्पियाओ, कप्पवित्रियाओ, पुष्पियाओ, पुष्फचृलियाओ, बण्हीदसाओ, [आसीविसभावणाणं, दिद्विविसभावणाणं, स्रमणभाव-णाणं, महासुमिणमावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं,] एवमाइयाई चउरासीई पहस्रयसह-स्साई भगवनो अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संकिजाई पद्दश्रगसह-स्साई मिन्समगाणं जिणवराणं, चोइय-पइन्नगसहस्साई भगवओ वदमाणसामिस्स, अहवा जस्म जिल्या सीसा उप्पत्तियाए वेणह्याए कम्मयाए पारिणामियाए चउन्बिहाए मुद्धाए उपनेवा तस्स तत्तियाई पर्ण्णगसहस्साई, पत्तेमहुद्धावि तत्तिया चेव, सेतं कालियं, सेतं आवस्सयमहरितं, सेतं अर्थगपविद्वं ॥ ४४ ॥ से किं तं अंगपविद्वं ? अंगपविद्वं द्वासममिहं प्रणातं, तंबहा-आबारो १, स्यगडो २,

ठाणें ३, समबाओ ४, विवाहपन्नती ५, नायाधम्मकहाओ ६, उदासगदमाओ ७, अंतगडदसाओ ८, अणुतरोवबाइयदसाओ ९, पण्हाबागरणाई १०, विवागसुर्य ११, दिद्विवाओं १२॥ ४५॥ से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं निकांशाणं आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खामासाअभामाचरणकरणजायामायावित्तीओ आधवि-जंति, से समासओ पंचविहे पण्णते, तंजहा-नाणायारे, दंसणायारे, चरितायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे णं परिता वायणा, संखेळा अणुओगदारा, संखेळा वेटा. संबेजा सिलोगा, संबिजाओ निजुत्तीओ, संबिजाओ संगहणीओ, संबि-जाओ पहिन्तीओ, से णं अंगद्वयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंघा, पणवीसं अज्झ-यणा, पंचासीइ उद्देसणकाला, पंचासीइ समुद्देसणकाला, अद्वारस प्रयसहस्साइं पयगोणं, संबिजा अक्बरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सामयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आर्घावजंति, पन्नविजंति, पम्बिजंति, दंसिजंति, निदंसिजंति, उवदंगिजंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरंणकरणपस्वणा आधवित्वह, सेर्स आयारे १ ॥ ४६ ॥ से किं तं स्यगडे १ स्यगडे णं लोए सुइजाइ, अस्त्रोए सुइजाइ, लोयालोए सुइजाइ, जीवा सुइ-जंति, अजीवा स्इजंति, जीवाजीवा स्डुजंति, सममए स्टुजंह, परसमए स्टुजंह, ससमयपरसम्प मृइज्ज्द, स्यगढे णं असीयस्स किरियावाइसयस्म, चउरासीईए अकिरियावाईणं, मत्तद्वीए अण्णाणियवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसद्वाणं पासंडियसयाणं वृहं किना ससमए ठाविजाइ, सूयगडे णं परिसा बायणा, संखेळा अणुओगदारा, संबेजा वेडा, संबेजा सिलोगा, संबिजाओ निजुत्तीओ, संबि-जाओ संगहणीओ, संस्तिजाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगष्टवाए बिइए अंगे, दो द्वयक्षंया, तेवीसं अञ्चयणा, तित्तीसं उद्देशणकाला, तित्तीसं समुद्देशणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिजा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जबा, परिता तसा, अर्णता याचरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णता माना आध-विजंति, पषविजंति, पर्विजंति, दंतिजंति, निदंतिजंति, उवदंतिजंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्याया, एवं चरणकरणपरुवणा आधविज्ञह, सेतं स्यगडे २ ॥ ४७ ॥ से कि तं राणे ? ठाणे णं जीना ठाविजंति, अजीना ठाविजंति, जीवाजीया ठाविजंति, ससमए ठाविज्ञइ, परसमए ठाविज्ञइ, ससमयपरसमए ठाविजाइ, लोए ठाविजाइ, अखोए ठाविजाइ, छोयालोए ठाविजाइ । ठाणे णं टंका, कृता, सेला, सिद्धरियो, पञ्मारा, कुंबाई, युहाब्यो, आगरा, दहा, नईब्यो, आय-निजेति । ठाने यं एपाइयार एएक्सियाए शुद्रीए इसङ्गणगविनश्चिमाणं भावानं

परूवणा आघविज्ञहः । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेजा अणुओगदारा, संखेजा वेढा, संबेजा सिलोगा, संबेजाओ निजुत्तीओ, संबेजाओ संगहणीओ, संबेजाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगहुयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंघे, दस अज्झयणा, एगबीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, बावतारि प्रथसहरूसा प्रयागेणं, संखेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिना तसा, अणंता थावरा, सामयकड-निबद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आध्यिजंति, पत्रविजंति, पर्मवजंति, दंगिजंति, निरंसिजंति, उवदंतिजंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणक-रणपम्बन्गा आचिनज्ञह । सेत्तं ठाणे ३ ॥ ४८ ॥ से किं तं समनाए ? समनाए णं जीवा समासिजंति, अजीवा समासिजंति, जीवाजीवा समासिजंति, उसमए समा-सिज्ञह, परसमए समातिज्ञइ, ससमयपरममए समातिज्ञइ, लोए समातिज्ञइ, अलोए समासिजाइ, लोयालोए समासिजाइ । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयविविश्वयाणं भावाणं परवणा आधिकाइ, दुवालसविहस्स य गणिपिड-गस्स पत्नव[र्]गे समासिज्जइ । समवायस्स णं परिता वायणा, संखिजा अणुओगदारा, संखिजा वेडा, संखिजा सिलोगा, संखिजाओ निजुत्तीओ, संखिजाओ संगरणीओ, संखिजाओ पिडवत्तीओ । मे णं अंगद्वयाए नजस्थे अंगे, एगे सुयनसंघ, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से प्यागेणं, संखेजा अक्सरा, अणंता गमा, अणंता पजवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासयकडानिबद्धानिकाइया जिणपण्णाता भावा आधविज्ञति, पन्नविज्ञति, पर्नावज्ञति, दंसिकांति, निर्दासकांति, उवदंसिकांति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरणकरणपरुवणा आघविष्वइ । सेतं समवाए ४ ॥ ४९ ॥ से किं तं विवाहे ? विवाहे णं जीवा वियाहिजाति, अजीवा वियाहिजाति, जीवाजीवा वियाहिजाति, ससमए वियाहिजाइ, परसमए वियाहिजाइ, सममयपरसमए विवाहिजाइ, लोए वियाहिज्जइ, अलोए वियाहिज्जइ, लोयालोए वियाहिज्जइ, विवाहस्स गं परिता वायणा, संक्रिजा अणुओगदारा, संक्रिजा वेढा, संक्रिजा सिलोगा, संक्रिजाओ निजुत्तीओ, संखिजाओ संगद्दणीओ, संखिजाओ परिवत्तीओ, से णं अंगद्वयाए पंचमें अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झवणसए, इस उर्सगसहस्साई, इस समुद्दसगसहस्साई, छत्तीसं वागरणसहस्साई, दो लक्का अद्वासीई पयसहस्साई पयग्गेणं, संस्थिता अक्सरा, अणंता गमा, अणंता पद्मवा, परिता तसा, अणंता यावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आध्यिकाति, पश्चविजाति, परुवि जंति, दंसिअंति, निदंसिअंति, उवदंसिअंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं

विष्णाया, एवं चरणकरणपस्वणा आधविजाइ, सेतं विवाहे ५ ॥ ५० ॥ से किं तं काबाधम्मकहाओ ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराई, उज्जाणाई, समीसरणाई, रायाणो. अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इहिविसेसा, भोगपरिचाया, पञ्जाओ, परियाया, सुयपरिग्गहा, तवोबहाणाई, संखेहणाओ, भनपन्तकलाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपनायाईओ, पुणबोहि-छामाः अंतकिरियाओ य आघविजांति, इस धम्मकहाणं वग्गा, तत्य णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्लाइयासयाई, एगमेगाए अक्लाइयाए पंच पंच उवक्लाइ-यासयाई, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाई, एवामेव सपुरुवावरेणं अदुद्वाओ कहाणगकोडीओ इवंतिनि समक्खायं । नायाधम्मकहाणं परिना वायणा, संखिजा अणुओगदारा, संखिजा बेढा, संखिजा सिलोगा, संखिजाओं निज़्तीयों, संखिजाओं संगहणीओं, संखिजाओं परिवृत्तीओं । से णं अंगड्डयाए छड्डे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं अञ्झयणा, एगूणवीसं उद्देसण-काला, एगूणवीसं समुद्दराणकाला, संखेजा पयसहस्सा पयागेणं, संखेजा अक्दरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिसा तसा, अणंता वावरा, सासयकडानेबद्ध-निकाइया जिणपण्णा भावा आघविजाति, पश्चविजाति, पर्वावजाति, दंतिजाति, निदं-सिजंति, उवदंतिजंति । से एवं भाया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरण-परूवणा आध्विज्ञइ । सेत्तं नायाधम्मकहाको ६ ॥ ५१ ॥ से कि तं उवासगद-साओ ? उवासगहसाद्ध णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, समोसरणाईं, रात्राणों, अम्मापियरी, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इश्विविसेसा, भोगपरि-बाया. पव्यजाओ, परियागा, सुयपरिगाहा, तनोवहाणाई, सीलव्ययगुणवेरमण-प्रवक्ताणपोसहोववासपडिवज्जणया, पहिमाओ, उबसम्मा, संलेहणाओ, अत्तपन्न-क्लाणाइं, पाओवगराणाइं, देवलोगगराणाइं, सुकुलपबायाइंओ, पुणबोहिलामा, अंतिकिरियाओ य आधिकंति । उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेळा अणुओ-गदारा, संखेजा वेढा, संखेजा सिलोगा, संखेजाओ निज्ञनीओ, संखेजाओ संगहणीओ, संखेजाओ पिडक्तीओ। से णं अंगद्वयाए सत्तमे अंगे, एगे सुय-क्संधे, दस क्षज्सवणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संबेज्या पय-सहस्सा प्रकारणं, संबेखा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता प्रखवा, परिता तसा, मणंता थावरा सासमक्डनिवद्धनिकाइमा जिणपण्णा भावा आचविजंति , पन्नविजंति , परुविजीत, दंसिजीत, निदंसिजीत, उनदंसिजीत । से एवं भाषा, एवं नाया, एवं विकासा. एवं चर्णकरगपरुवणा आविजाइ । सेतं उवासगदसाओ ७॥ ५२ ॥ से

किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसातु णं अंतगडाणं नगराइं, उज्जाणाई, समोसर-णाई, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इहि विसेसा, भोगपरिचागा, पव्यजाओ, परियागा, स्वयपरिग्गहा, तवोवहाणाई, संलेह-णाओ, भत्तपत्रक्काणाई, पाओवगमणाई, अंतिकरियाओ आर्घविजीते, अंतगडद-सासु णं परिता वायणा, संखेजा अणुओगदारा, संखेजा वेढा, संखेजा मिलोगा, संबेजाओ निजुत्तीओ, संबेजाओ संगहणीओ, संबेजाओ पडिवत्तीओ, से णं अंग-ह्याए अहमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अह बग्गा, अह उद्देमणकाला, अह ममुद्देसण-काला, संखेजा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आधविजंति, पर्चावजंति, पर्वावजंति, दंसिजंति, निदंसिजंति, उनदंसिजंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरणकरणपहवणा आर्घविज्ञइ, सेतं अंतगढ-दसाओं ८॥ ५३ ॥ से कि तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदमास मं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं, उजाणाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मा-यरिया, धम्मक्द्वाओ, इहलोइयपरलोइया इष्ट्विनिसेसा, भोगपरिचागा, पव्यजाओ, परियागा, सुयपरिम्गहा, तवीवहाणाई, पडिमाओ, उबसम्गा, संलेहणाओ, भत्तप-चक्काणाइं, पाओवगमणाइं, अणुत्तरोवबाइयत्ति उक्कती, सुकुळपचायाईओ, पुण-बोहिलामा, अंतिकिरियाओ आधिकजंति, अणुत्तरोववाइयदसासु णं परिता वायणा, संखेजा अणुओगदारा, संखेजा नेटा, संखेजा सिकोगा, संखेजाओ निजुत्तीओ, संखेजाओ संगहणीओ, संखेजाओ पडिवशीओ, से णं अंगद्ववाए नवमे अंगे, एंगे सुब-क्खंधे, तिकि वन्ना, तिकि उद्देशणकाला, तिकि समुद्देशणकाला, संखेजाई प्रयसह-स्साइं प्यागेणं, संखेजा अक्सरा, अर्णता गमा, अर्णता पजवा, परिता तसा, अणंता श्रावरा. सास्यकडनिकद्धविकाइया जिणपण्णता भावा आध्विजंति. पमिकाति, परुविजाति, दंसिजाति, निदंसिजाति, उवदंसिजाति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं वरणकरणपहत्रणा आधविज्ञह, सेत्तं अणुत्तरोव-बाइयदसाओ ९॥ ५४॥ से कि तं पण्हाबागरणाई १ पण्डाबागरणेस णं अङ्कतर परिणसर्य, अड्डतरं अपसिणसर्य, अड्डतरं परिणापसिणसर्य, तंत्रहा-अंगुहुपरिणाई, बाहुपसिगाइं, अहायपसिगाइं, अजेवि विचित्ता विकाहसया, नागसुब्ग्गेहिं सर्दि दिन्या संवाया वाचनिजंति, पन्हावायरणाणं परिता वायणा, संकेवा अणुओगदारा, संबेजा वेडा, संबेजा रिलोगा, संबेजाओ निमुत्तीओ, संबेजाओ संग्रहनीओ, र्यकेजाओ पहिन्दीको, से णं अंगहराए इसमें अंगे, एगे समक्संबे, पनवासीर्य 2 ye - 1

अंजायमा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेजाई पय-सहस्साई पयरोण, संखेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पजवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आधविजंति पन-विजंति, पर्विजंति, दंसिजंति, निदंसिजंति, उवदंसिजंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपस्वणा आधविज्ञह, सेत्तं पण्हाबागरणाई १०॥ ५५ ॥ से कि तं विवाससुयं १ विवाससुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फल-वित्रागे आधविज्ञह, तत्थ णं दस दुहविदागा दस सुहविदागा । से किं तं दुहविदागा ? दुहचित्रागेमु णं दुहिनिवागाणं नगराई, उजाणाई, समीमरणाई, रायाणी, अम्मा-पियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इन्हिविसेसा, निरयगमणाई, संगारभवपवंचा, दुहपरंपराओ, दुकुलपचायाईओ, दुछह्वोहियनं आधिकाड, सेतं दुहबित्रामा । से कि तं सुहवित्रामा ! सुहवित्रामेस णं सुहवित्रामाणं नगराई, उज्जाणाई, समोसरणाई, रायाणो, अम्मापियरो, अम्मायरिया, अम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इहिंबसेमा, भोगपरिचागा, पञ्चजाओ, परियागा, स्थपरिभाहा, तवोवहाणाई, संकेहणाओ, भत्तपचक्खाणाई, पाओवगमणाई, देवलोगगमणाई, ग्रहपरंपराओ, युक्तपनायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ आचिवजंति । विनागसुयस्य णं परिता बायणा, संखेजा अणुओगदारा, संखेजा वेडा, संखेजा सिलोगा, संबिजाओ निजुत्तीओ, संसिखाओं संग्रहणीओ, संसिखाओं पडिवतीओ । से णं अंगड्याए इकारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्यायणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्दे-सणकाला, संसिजाई पगसहस्साई पगरगेणं, संसेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पजवा, परिता तसा, अर्णता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणना भावा आधिकंति, पश्चविकंति, पस्विकंति, दंसिकंति, निदंसिकंति, उषदंसिकंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरणकरणपस्यणा आधविज्ञह, सेसं विवागसुर्य ११॥ ५६॥ से कि तं दिद्विवाए दिद्विवाए णं सञ्चमावपस्वणा आषविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णते, तंजहा-परिकरने १, ग्रताइं २, पुरुषगए ३, अणुखोगे ४, पुलिया ५ । से कि तं परिकामे ? परिकामे सत्तविहे पन्यते, तंजहा-सिद्धसेणियापरिकामे १, मणुस्तसेणियापरिकामे २, पुरुसेणियापरिकामे ३, ओगाउन सेनियापरिकरमें ४, तनसंपन्नणसेनियापरिकरमें ५, विष्पजहणसेनियापरिकरमें ६, भुवानुवसेनियापरिकरने ७। से कि तं सिद्धसेनियापरिकरने ? सिद्धसेनियापरिकरने वडर्सविष्टे पणते, तंबहा-माजगापवाई १ एगद्वियपवाई २ बहुपवाई २ पाले-आसासम्याई ४ केटभूवं ५ रातिबर्द ६ एगगुर्च ७ हुगुवं ८ विशुर्ण ९ केटभूवं ९०

पिंडिगाहो ११ संसारपिंडिगाहो १२ नंदावर्त १३ सिद्धावर्त १४. सेलं सिद्ध-सेणियापरिकम्मे १ । से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउहमविहे पण्णेत, तंत्रहा-माउयापयाइं १ एगद्रियपयाइं २ अद्भपयाइं ३ पाढो-आगासपयाई ४ केडभयं व रासिवई ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केडभूयं १० पिडागहो ११ संमारपिडागहो १२ नंदावनं ५३ मणुस्सावनं १४, सैनं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ । से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ! पुट्टसेणियापरिकम्मे इक्षारमविष्ठे पण्णते, तंजहा-पादोआगासपयाई १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पिडागहो ८ संसारपिडागहो ९ नंदावनं १० पुद्रावनं ११. सेनं पुद्रसेणियापरिकम्मे ३ । से कि तं ओगाढसेणियापरि-कम्मे ? ओगाडसेणियापरिकम्मे इकारसविष्टे पण्णेने, तंजहा-पाडोआगासपयाई १ केउभ्यं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभ्यं ७ पिहागहो ८ संमारपडिम्महो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावतं ११. सेते ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ १ से कि तं उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे इका-रसांबहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाई १ केउभूयं २ रासिबढं ३ एगगुणं ४ दुगुणं '५ तिगुणं ६ केउभूगं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदायत्तं १० उवसंपञ्जणावतं ११, संतं उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे ५.। से किं तं विष्पजहण-सेणियापरिकम्मे ? विष्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कार्यावहे पण्णते, तंजहा-पादो-आगासपयाई १ केउभूयं २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पिंडिगाही ८ संसारपिंडिगाही ९ नंदावत्तं १० विष्पजहणावृत्तं ११, सेत्तं विष्य-जहणसेणियापरिकम्मे ६। हे किं तं चुमाचुयसेणियापरिकम्मे ! चुयाच्यसेणियापरिकम्मे इक्षारमविहे पत्रने, तंजहा-पाढोआसासपयाई १ केउभूयं २ रासिवहं ३ एगगुणे ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पिडिस्गहो ८ संमारपिडिस्गहो ९ नंदावनं १० चुया-च्यवतं ११. सेतं चुयाच्यसेणियापरिकम्मे ७। छ चजकनइयाइं. सन तेरासि-याई, सेतं परिकम्मे १ । से कि तं सुत्ताई ? सुत्ताई बावीसं पन्नताई, तंजहा-उज्जुस्यं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजर्ड ८ संभिण्णं ९ आहचायं १० सोवस्थियावतं ११ नंदावतं १२ बहुलं १३ पुद्रापुद्र १४ वियावतं १५ एवंभूयं १६ द्यावतं १७ बक्तमाणप्यं १८ सम-भिरुदं १९ सञ्ज्ञओमहं २० पर्सासं २१ तुप्पश्चिमाहं २२, इचेह्याहं बावीसं युत्ताई छिमच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इचेइयाई बावीसं सुताई अच्छिन-च्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इन्नेइयाई बाबीसं सुताई तिगणइकाणि

तेरासियसुनपरिवाडीए, इवेड्याई वावीसं सुत्ताई चडकनङ्याणि ससमयसुत्तपरि-बाडीए, एवामेव सपुव्यावरेणं अद्वासीई सुताई भवंतिति मक्खायं, सेतं सुताई २। से किं तं पुरुवगए ? पुरुवगए चउद्दसविहे पण्णते, तंजहा-उप्पायपुरुवं १, अस्गा-णीयं २, वीरियं २, अत्थिनित्थप्पवायं ४, नाणप्पवायं ५, सचप्पवायं ६, आयप्पवायं ७, कम्मप्पवारं ८, पचक्खाणप्पवारं (पचक्खाणं) ९, विज्ञाणुप्पवारं १०, अवंझं ११, पाणाऊ १२, किरियाविसालं १३, लोकबिंदुमारं १४। उप्पायपुव्यस्स णं दस वत्थ्, चत्तारि चूलियावत्थ् पण्णना । अम्गाणीयपुव्यस्स णं चोद्दस वत्थ्, दुवालस चृत्वियावत्थ् पण्णता । वीरियपुन्वस्स णं अद्व वत्थ्, अद्व चृत्वियावत्थ् पण्णता । अधिनरिथप्यवायपुन्वस्म णं अद्वारसं वत्थु, दसं चुल्जियावत्थू पण्णाना । नाणप्प-वागपुरुवस्स णं बारस वत्थू पण्णता । सञ्चत्पवागपुरुवस्स णं दोष्णि वत्थू पण्णता । आयपवायपुरुवस्म णं गोलम वत्थ् पण्णना । कम्मप्पवायपुरुवस्म णं तीसं वत्थ् पण्णना । पचक्खाणपुरुवस्स णं वीसं वत्थू पण्णना । विज्ञाणुप्पवायपुरुवस्स णं पन-रस वत्ध् पण्णता । अवंझपुम्बस्स णं बारम वस्थू पण्णता । पाणाउपुम्बस्स णं तेरस वत्थू पण्णमा । किरियाविसालपुट्वस्स णं तीर्सं वत्थू पण्णमा । लोकविंदुसारपुट्वस्स णं पणुवीसं वस्थू पण्णता, शाहा-दम १ चोइस २ अह ३ ऽहा-,रसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य बत्थूणि । सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥ बारस इकारसमे, बारसमे तेरसेव बत्थूणि । तीसा पुण नेरसमे, चोइममे पण्णवीमाओ ॥ ९० ॥ चतारि १ दुवालस २ अह ३ चेव, दस ४ चेव चुह-बत्थूणि । आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चृत्थिया नित्थ ॥ ९९ ॥ सेतं पुच्चगए ३ ॥ से कि तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णते, तंजहा-मूलपढमाणुओगे, गंहि-याणुओंगे य । से कि तं मूलपढमाणुओंगे ? मूलपढमाणुओंगे णं अरहंताणं भग-वंताणं पुञ्चभवा, देवगमणाई, आउं, चवणाई, जम्मणाणि, अभिसेया, रायवर-सिरीओ, पव्यक्ताओ, तबा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीमा, गणा, गणहरा, अज्ञपनिताणीओ, संघर्स चउन्निहस्स जं च परिमाणं, जिणमणपञ्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य, उत्तरवेड-व्यिणो य मुमियो, जरिया सिदा, सिदिपहो जह देसिओ, जियर च कालं, पाओवगया जे जोई जित्तयाई भत्ताई अणसणाए छेइता अंतगढे, मुणिवहत्तमे, तिमिरबोवविष्यमुके, मुक्सछहमणुत्तरं च पत्ते, एवमके य एवमाइभावा मूलपढ-माणुओंने कहिया, सेत्तं मूलपढमाणुओंने । से कि तं गंडियाणुओंने ? गंडियाणुओंने कुलगरगंडियाओ, तित्वयरगंडियाओ, चक्कविद्रगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बस्त-

" P 34 2"

देवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ, गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ. तवोकस्म गंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओर्साप्पणीगंडियाओ, विर्त्त-तरगंडियाओ, अमरनरितरियनिरयगङ्गमणविविद्यपियङ्गेसु एवमाइयाओ गंडि-याओ आधविजंति, पन्नविजंति, सेतं गंडियाणुओंगे, सेतं अणुओंगे ४ । से कि तं चूलियाओं ? चूलियाओ-आइह्राणं चउण्हं पुट्याणं चूलिया, सेसाइं पुट्याइं अचूलियाई, सेत्तं चूलियाओ ५ । दिहिवायस्स णं परिना बायणा, संखेजा अणु-ओगदारा, संखेजा वेडा, संखेजा सिलोगा, मंखेजाओ पढिवनीओ, संखेजाओ निज्तीओ, संसेजाओं संगहणीओ । से णं अंगद्वयाए बारनमे अंगे, एगे नुय-क्संधे, चोह्स पुन्वाई, संखेजा कर्मू, संस्थेजा चूलवत्थू, संखेजा पाहुडा, संखेजा पाहुडपाहुडा, संखेजाओ पाहुडियाओ, संखेजाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेजाई पयसहस्ताई पयग्गेणं, संखेजा अक्ष्वरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणेता थावरा, सासयकडनिबर्द्धानकाड्या जिणपण्णता भावा आर्घावजाति, पन्नविज्ञंति, पर्विज्ञंति, दंसिज्ञंति, निदंसिज्ञंति, उपदंसिज्ञंति । मे एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरणकरणपस्यका आर्घावज्ञह । सेनं दिहिवाए १२ ॥ ५० ॥ इचेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंना भावा, अणंना असावा. अर्णता हेऊ, अर्णता अहेऊ, अर्णता कारणा, अर्णता अकारणा, अर्णता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णता-भावममावा हेउमहेऊ, कारणमकारणे चेव । जीवाजीवा भविय-,मर्मावया निद्धा असिद्धा य ॥ ९२ ॥ इचेह्यं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अर्णता जीवा आणाए विराहिता चाउरंतं संसारकंनारं अणुपरियर्द्वित । इचेइमं दुवालसंगं गणिपिडगं पदुप्पणकाळे परिता जीवा आणाए विराहिता चालरंतं संसारकंतारं अणुपरियहंति । इचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काळे अणंता जीवा आणाए विराहिता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियद्विसंति । इचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहिता चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु । इचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पहुप्पण्णकाले परिता जीवा आणाए आराहिता चाउरेतं संसारकंतारं विद्ववयंति । स्वेद्यं दुवालकंगं गमिपिकयं अणागए काले अर्थता जीवा आणाए आराहिना चाउरतं संवारकंतारं वीईषध्-स्संति । इचेइयं दुवालसंगं गनिपिडगं न क्याइ नासी, न कवाइ न सबइ, व क्याइ न मविस्सइ, अुर्वि च, मनइ य, सविस्सइ य, धुवे, निवए, सासए, अवस्यए, अञ्बए, अवद्विए, निषे । से बहानामप् पंचरिपकाष् न कवाह नासी, व कवाह

बरिय, न क्याइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अन्वए, अवद्विए, निश्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न क्याइ नासी, न कयाइ नित्थ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अञ्चल, अव्वए, अवष्टिए, निषे । से समासओ चडिन्बहे पण्णते, तंत्रहा--द्व्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्दओ णं सुयनाणी उवउत्ते सन्वदम्बाईं जाणइ पासइ। खित्तओ णं मुयनाणी उवउत्ते सन्वं खेत्तं जाणइ पासइ । कालओं णं सुयनाणी उवउत्ते सच्चं खेनं जाणइ पासइ । भावओं णं हुयनाणी उवउत्ते सब्वे भावे जाणइ पासइ॥ ५८॥ अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खादु सपज्जवसियं च । गमियं अंगपविद्वं, सत्तवि एए सपडिवक्सा ॥ ९३ ॥ आगमसत्थम्महणं, जं बुद्धिगुणेहिं अद्वहिं दिद्वं । बिंति मुयनाणलंभं, तं पुरुवि-सान्या धीर। ॥ ९४ ॥ मुस्सूसइ १ पडिपुच्छड २ सुणेइ ३ निण्हइ ४ य इंहए यावि ५ । तत्तो अपोह्र ६ वा, धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८ ॥ ९५ ॥ मूर्य हुंकारं वा, बाढकारं पिंडपुच्छ वीमंसा । तत्तो पसंगपारायणं च, परिणिष्ट सत्तमए ॥ ९६ ॥ सुत्तत्यो खडु पटमी, बीओ निज़ृत्तिमीसिओ भणिओ। तइओ य निरव-सेसी, एस विही होइ अणुओंने ॥ ९७ ॥ सेतं अंगपविद्वं । सेतं सुयनाणं । सेतं परोक्खनाणं । सेत्तं नंदी ॥ ५९ ॥

॥ नंदीसुत्तं समत्तं ॥



श्रीसत्रागमप्रकाशकममितिके 'सदस्य'



श्रीमान् गेट भाणजी पालणजी छेड़ा. मु॰ पो॰ डोंबीवली. 🤼 🏗 (स्टेशनके मामने)।

परिचय — आप रनालिया-गणेशवाला (कन्छ) के मूलवतनी हैं। आप स्वभावक मुग्ल विनीत नम्न और सेवामावी हैं। आप प्रतिदिन मामायिक तथा प्रतियप प्रयुपणमें अठाई तप करते हैं। गापु मुनिराजोंकी मेवामें तलार रहते हैं। आप अपने स्थानकवासी जैन धर्ममें स्वृव पक्के हैं। आप जिनशासनके सच्चे प्रमा हैं। आपकी धर्मभावना निरंतर जाएत रहती है। आपका यह छेड़ा-परिवार मी सेवाधर्म-प्राण है। आप 'मिमिति' को २००) की नेवा देकर 'मदस्य' वने हैं।

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवयो णायपुत्तमहाबीरस्स

सुत्तागमे

तत्थ णं अणुओगदारसुत्तं

नाणं पंचविहं पण्णतं। तंजहा--आभिणियोहियनाणं १ सुयनाणं २ ओहिनाणं ३ मणपज्जवनाणं ४ केवलनाणं ५॥ १॥ तस्थ चनारि नाणाइं ठप्पाइं ठवणिजाई. णो उद्दिसिजंति, गो समुद्दिसिजंति, गो अणुण्णविजंति । सुयनाणस्स उद्देसो, ममहेसो. अणुष्णा. अणुओगो य पवत्तइ ॥ २ ॥ जड् सुयनाणस्स उद्देसो, मसुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पक्तइ, कि अंगपविद्वस्य उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पक्तह ! कि अंगबाहिरस्म उद्देसो, समुद्देसो, अणुज्या, अणुओगो य पवनइ ? अंगपविद्वस्य वि उद्देशो जाव पवनाइ, अंगंगपविद्वस्स वि उद्देशो जाव पवत्तइ । इसं पुण पद्भवणं पद्भव अर्णगपविद्यस्मैं अणुओगो ॥ ३ ॥ जइ अँणंगप-विद्वस्य अणुओगो, कि कालियस्य अणुओगो ? उद्यालियस्य अणुओगो ! कालियस्य वि अणुओगो. उक्कालियस्स वि अणुओगो । इसं पुण पट्टवणं पडुच उक्कालियस्स अणुओगो ॥ ४ ॥ जइ उक्कालियस्स अणुओगो, कि आवस्मगस्य अणुओगो ! आवस्सगवडरित्तस्य अणुओगो ? आवस्सगस्य वि अणुओगो, आवस्सगवडरित्तस्स वि अणुओगो । इसं पुण पहुवणं पडुच आवस्सगस्स अणुओगो ॥ ५ ॥ जइ आवस्सगस्स अणुओगो, कि ण अंगं ? अंगाई ? सुयखंधो ? सुयखंधा ? अज्ज्ञयणं ? अज्ज्ञयणाई? उहेसो ? उहेसा ? आवस्सँयं णं नो अंगं, नो अंगाई, सुयखंधो, नो स्यसंघा, नो अज्ययणं, अज्ययणाइं, नो उद्देशो, नो उद्देशा ॥ ६ ॥ तम्हा आवस्तरं निक्सिविस्सामि, ग्रुयं निक्सिविस्सामि, खंधं निक्सिविस्सामि, अज्झवणं निक्सिनिस्सामि । गाहा--जत्य य जं जाणेजा, निक्सेषं निक्सिने निरवसेसं । जत्य विय न जाणेजा. चउक्रमं निक्सिने तत्थ ॥ १॥ ७॥ से किंतं आवरसयं ? आवरसयं चउव्विहं पण्णतं । तंजहा--नामावस्सयं १ ठवणावस्सयं १ द्वावस्सयं ३ भावावस्सयं ४ ॥ ८ ॥ से कि तं नामावस्सयं? नामावस्सयं—

पार्डतरं-१ उद्दिसंति । २ समुद्दिसंति । ३ अंगवाहिरस्स वि । ४ अंगवाहि-रस्स । ५ अंगवाहिरस्स । ६ आवस्सयं कि । ७ आवस्सयस्स ।

जस्स णं जीवस्स वा, अर्जावस्स वा, जीवाण वा, अजीवाण वा, तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा. 'आवस्सए' ति नामं कजाइ । सेतं नामावस्सर्य ॥ ९ ॥ से कि तं ठवणावस्सयं ? ठवणावस्मयं---जं णं कहुकम्मे वा, पोन्धकम्मे वा, चित्तकम्मे वा, लेप्पक्रम्मे वा, गंथिमे वा, वेडिमे वा, पूरिमे वा, संघाइमे वा, अक्खे वा, वराडए वा. एगो वा. अणेगो वा. सञ्भावठवणा वा. अमय्भावठवणा वा. 'आवस्मए' नि ठवणा ठविज्ञह । सेतं ठवणावस्सयं ॥ ५० ॥ नामद्रवणाणं को पहिनसेसाँ ! नामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया या होजा, आवकहिया वा ॥ ११ ॥ से किं तं दृव्यावस्मयं ? दृव्यावस्सयं दुविहं पण्णतं । तंत्रहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ १२ ॥ से कि तं आगमओ दब्बावस्सयं ! आगमओ दब्बावस्मयं-जस्म णं 'आवश्मए' ति पर्य सिक्सियं, ठियं, जियं, मिर्यं, परिजियं, नामसमं, घोससमं. अहीणक्खरं, अणचक्खरं, अञ्चाइद्धक्खरं, अक्खलियं, अमिलियं, अवचामेलियं. पडिपुण्णं, पडिपुण्णघोसं, कंठोहविष्पमुकं, गुरुवायणोवगयं, से णं तत्य वायणाए, पुच्छणाए, परियद्वणाए, धम्मकहाए, जो अणुप्पेहाए । कम्हा? 'अणुवओगो' दञ्चमिति बहु । नेगमस्य णं एगो अणुवउत्तो, आगमओ एगं दञ्जावस्पर्यं, दोण्णि अणुवजता. आगमओ दोण्णि दन्यावस्सयाइं, तिष्णि अणुवजता, आगमओ तिण्णि द्व्यावस्ययारं, एवं जावस्या अणुत्रउत्ता आगमओ तावस्यारं दव्यावस्ययारं । एवमेव ववहारस्स वि । संगहस्स णं एगो वा अणेगो वा अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा आगमओ दन्बाबस्सयं दन्वाबस्सयाणि वा, से एगे दन्बाबस्सए । उजासुयस्स एगो अणुवउत्तो आगमओ एगं दब्बावस्सयं, पहत्तं नेच्छइ । तिण्हं सहनयाणं जाणए अणुवउत्तं अवस्य । कम्हा ? जइ जाणए, अणुवउत्तं न भवद्, जइ अणुवउत्तं, जाणए न भवड, तम्हा णरिय आगमओ दश्वावस्सयं । सेतं आगमओ दब्बावस्सयं ॥ १३-१४॥ से कि तं नोआगमओ दव्यायस्सयं ? नोआगमओ दब्बावस्सयं तिविद्वं पण्णतं । तंत्रहा---जाणयसरीरद्व्यावस्मयं १ भवियसरीरदव्यावस्सयं २ जाणयसरी-रभवियसरीरवङ्गरेतं दञ्जावस्तयं ३ ॥ १५ ॥ मे किं तं जाणयसरीरदञ्जावस्तयं? जाणयसरीरदञ्जाबस्सयं- 'आवस्सए' ति पयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगयच्यचावियचत्तदेई, जीवविष्पज्ञहं, सिजागयं वा. संयारगयं वा. तिसीहियागयं वा, सिद्धसिलातलगर्यं वा पासिता णं कोई मणे(वए)जा-अहो । णं हमेणं सरीरस-मुस्सएणं जिणदिद्वेणं भावेणं 'आवस्सए' ति पर्य आधिवयं, पण्णवियं, पर्ववियं, दंसियं, निदंसियं, उनदंसियं । जहां को दिहुतो ? अयं महकुं में आसी, अयं वयकुं में आसी । से तं आणयसरीरङ्ब्यावस्त्यं ॥ १६ ॥ से किं तं मवियसरीरङ्ब्यावस्त्यं ?

मवियसरीरहव्यावस्मर्य-जे जीवे जीणिजन्मणनिक्खंते, इमेणं चेव आराएणं सरीर-समुत्सएणं जिणोवदिद्वेणं भावेणं 'आवस्सए' ति पयं सेयकाळे सिक्खिस्मइ न ताव सिक्खइ । जहा को दिहुंतो ? अयं महुकुंमे भविस्सड, अयं घयकुंमे भविस्सइ । सेत्तं भवियमरीरटब्बावस्मयं ॥ १७ ॥ से किं नं जाणयसरीरभवियमरीरवहरित्तं दव्वाव-स्सयं ? जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्तं दध्वावस्सयं तिविहं पण्णत्तं । तंजहा---लोइयं १ कुप्पाचयणियं २ लोउनिरियं ३ ॥ १८ ॥ से किं नं लोइयं द्व्वावस्सयं ? लोइयं द्व्वावस्मयं-जे इमे राईसरत्लवरमाडं त्रियको इंथियइब्ससे द्रिसेणावडसत्यवाहपिभ-इओ कहं पाउप्पमायाए रयणीए सुविमलाए फुहुप्पलक्मलकोमलुम्मिलियम्मि अहा-पंडुरे पभाए रनासोगपगासिकसुयसुयमुहगुंजद्वरागसिसे कमलागरनिलिपसंख्वोहए उद्वियम्मि सुरे सहस्मरस्सिम्मि विणयरे तेयसा जलते मुहधीयणदंतपक्खालण-तेल्रफणिहसिद्धत्ययहरियालियअद्दागधूनपुष्पमलगंधतंबोलवत्थाइयाई दञ्बावस्सयाई करेंति, तओ पच्छा रायकुलं वा देवकुलं वा आरामं वा उज्जाणं वा समं वा पवं वा गच्छीत । सेतं लोइयं दब्बावस्सयं ॥ १९ ॥ से कि तं कुप्पावयणियं दक्वाव-स्सयं ? कुप्पावयणियं दथ्वावस्मयं-जे इमे चरगचीरिगचम्मखंडियभिक्खोंडपंडरंग-गोयमगोव्वद्यगिहिधम्मधम्मचितगअविरुद्धविरुद्धवृत्तसारगेपभिद्द्ओ पासंडत्या कर् पाटप्पभागाए रयणीए जाव तेयसा जलते. इंटस्स वा. खंदरस वा, ख्रस्स वा. सिवस्य वा. वेसमणस्य वा. देवस्य वा. नागस्य वा, जक्खस्य वा, भूयस्य वा, मुगुंदस्स वा, अजाए वा, दुग्गाए वा, फोट्टकिरियाए वा, उवलेवणसंमज्जणआवरि-सणध्वपुप्पनांधमहाइयाइं दक्वावस्मयाई करेंनि । सेत्तं कुप्पावयणियं दक्वावस्सयं ॥ २०॥ से कि तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ? लोगुत्तरियं दव्यावस्सयं-जे इमे समण-गुणमुक्कजोगी, छकायनिरणुकंपा, हया इव उद्दामा, गया इव निरंकुसा, घडा, मद्वा, तुप्पोद्धाः, पंद्वरपटपाउरणाः, जिणाणमणाणाए सच्छंदं विहरिक्रण उमओ-कालं आव-स्सयस्स उनद्वति । सेतं लोगुत्तरियं दब्बावस्सयं । सेतं जाणयसरीरभवियसरीरवहरित्तं दब्बावस्सर्य । सेनं नीआगमओ दब्बावस्सर्य । सेनं दब्बावस्सर्य ॥ २१ ॥ से कि तं भावाबस्तयं ? भावाबस्तयं दुविहं पण्णतं । तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २॥ २२ ॥ से 👫 तं आगमओं भावावस्तयं ? आगमओ भावावस्तयं जाणए उवउत्ते । सेतं आगमओ भावादस्सयं ॥ २३ ॥ से कि तं नोजागमओ भावादस्सयं ? नोआगमको भाषावस्तयं तिनिद्दं प्रणानं । तंत्रहा-लोइयं १ कुप्पानगणियं २ लोगु-

९ भरहसमए जेण कड्बा साम्या पच्छा बंभणा जाया तेण बंभणा बुद्धसाध-गति बुद्धति । २ देवीणामसिर्म ।

त्तरियं ३ ॥ २४ ॥ से कि तं लोइयं भावावस्सयं ? लोइयं भावावस्सयं-पुन्तण्हे भारहं, अत्ररण्हे रामायणं । मेर्त्तं लोइयं भावावस्तयं ॥ २५ ॥ से किं तं कुप्पावयणियं भावा-वस्सर्य ? क्रप्पावयणियं भावावस्मयं-जे इमे चरगचीरिग जाव पासंडत्था इजंजलि-होभजपोन्दुरुक्षनमुक्कारमाद्याहं भावायस्त्रयाहं करेंति । सेनं कुप्पानयणियं भावायस्त्रयं ॥ २६ ॥ से कि नं लोगुत्तरियं भावावस्तयं ? लोगुत्तरियं भावावस्मयं-जे (जण)णं इमे-समणे वा, समणी वा, सावओ वा, माविया वा, तिबत्ते, तम्मणे, तहेसे, तदान्सविमए, तित्वज्ञावसाणे, तद्द्रोवस्ते तद्पियकरणे, तब्भावणाभाविए, अण्णत्य कत्वह मणं अकरेमाणे उमओ-कालं आवस्तयं करे[न्ति]इ । सेतं लोगुत्तरियं भावावस्तयं । सत्तं नोआगमओ भावाबस्सयं । सेत्तं भावाबस्सयं ॥ २० ॥ तस्स णं इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेजा भवंति. तंजहा-गाहा-आवस्सैयं अवस्संकर-णिकं, वर्गनगैहो विसीही य । अञ्चयणद्यक्षवेम्गो, नीओ आराहणा मिगो ॥ १ ॥ समणेणं सावएण य, अवस्स कायब्वयं हवह जम्हा । अंतो अहोनिसस्स य, नम्हा 'आवस्सयं' नाम ॥ २ ॥ से**सं आवस्सयं** ॥ २८ ॥ से कि तं मुयं ? सुयं च उब्बिहं पण्णतं। तंजहा-नामसयं १ ठवणामयं २ दब्बसयं ३ भादमयं ४ ॥ २९ ॥ से कि तं नामसुयं ? नाममुयं-जस्स णं जीवस्स वा जाव 'सुए' नि नामं कळाइ। सेशं नामसुयं ॥ ३० ॥ से कि तं ठवणासुयं ? ठवणासुयं-जं णं बद्धकम्मे वा जाव ठवणा ठविज्ञह । सेसं ठवणास्यं ॥ ३१ ॥ नामठवणाणं को पद्दविसेसो १ नामं आवकहियं, ठवणा इनरिया वा होजा, आवकहिया वा ॥ ३२ ॥ से कि तं दम्बसुयं ? दम्बसुयं दुविहं पण्णतं । तंत्रहा-आगमओ य १ नो आगमओ य २ ॥ ३३ ॥ से किं तं आगमओ दव्वसुयं ? आगमओ दव्वसुयं-जस्स णं 'सुए' ति पयं सिक्सियं, दियं, जियं जाव णो अणुष्पेद्वाए । कम्दा ? 'अणुक्योगो' दन्वमिति कह । नेगमस्स णं एगो अणुक्उत्तो आगमओ एगं दव्यस्यं जाव तिण्हं सहनयाणं जाणए अण्यतने अवस्य । क्रम्हा र जह जाणए, अपुवउत्ते न भवड़, जह अपुवउत्ते, जाणए न भवड़, तम्हा णिट आगमओ दव्बसुयं । सेर्स आगमओ दव्बसुयं ॥ ३४ ॥ से किं तं नोआगमओ दव्यसुर्य ? नोआगमओ दव्यसुर्य तिविहं पण्णतं । तंत्रहा-जाणससरीरदव्यसुर्य ९ भवियसरीरदञ्जस्यं २ जाणयसरीरभवियसरीरवङ्गरेतं दव्यसुयं ३ ॥ ३५ ॥ से वि तं जाणयसरीरद्व्वसुयं ? जाणयसरीरद्व्वसुयं- 'सुब' ति पयत्थाहिगारजाणयस जं सरीर्यं ववगयच्यचावियचलदेहं जाव पासिला णं कोई सफेडा-अहो ! । इमेणं सरीरसमस्सएणं जिणदिद्वेणं मावेणं 'सुब' ति पर्य आवियं जाव अ

१ जिणवयणधम्माणरायरत्तमणे ।

चमकुंभे आसी । सेतं जाणयसरीरदञ्जसुयं ॥ ३६ ॥ से कि तं भवियसरीरदञ्जसुयं ? भवियसरीरद्व्वसुयं-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खंते जाव जिणोवदिद्वेणं भावेणं 'सुय' ति पर्य सेयकाले सिक्खिस्सइ जाव अयं घयकुंभे भविस्सइ। सेतं भवियसरीरदञ्बसुयं ॥ ३७ ॥ से किं तं जाणयसरीरमवियसरीरवडरित्तं दन्वसुयं ? जाणयसरीरमविय-मरीर ३ इरित्तं दव्बसुयं पत्तयपोत्धयिकहियं । अहवा जाणयसरीर भवियसरीर वहरित्तं दव्यसुयं पंचिवहं पण्णतं। तंजहा-अंडयं १ बोंडयं २ कीडयं ३ यालयं ४ वागयं ५ । से कि तं अंडयं ? अंडयं हंसगच्याड । से कि तं बॉडयं ? बॉडयं कप्पासमाइ । से कि तं कीडयं ? कीडयं पंचिवहं पण्णतं । तंजहा-पट्टे १ मलए २ अंतए ३ चीणंग्रुए ४ किमि-रागे ५ । से कि तं वालयं ? वालयं पंचिवहं पण्णतं । तंत्रहा-उण्णिए १ उद्दिए २ मिय-लोमिए ३ कोतवे ४ किष्टिसे ५। से किं तं वागयं १ वागयं सैणमाइ। सेत्तं जाणयस-रीरभवियमरीरवइरितं द्व्वसुयं । सेतं नोआगमओ द्व्यसुयं । सेतं द्व्यसुयं ॥ ३८ ॥ से कि तं भावसुर्य ? भावनुर्य दुविहं पष्णत्तं । तंजहा–आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ ३९ ॥ से किं तं आगमओ भावसुयं ? आगमओ भावसुयं जाणए उवउत्ते । सेत्तं आगमओ भावसयं ॥ ४० ॥ से कि तं नोआगमओ भावसयं ? नोआगमओ भावसुयं दुविहं पण्णातं। तंजहा-लोइयं १ लोगुत्तरियं च २ ॥ ४१ ॥ से किं तं लोइयं नोआगमको भावसुयं ? लोडयं नोआगमको भावसुयं-जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छ-दिझीहें सच्छेदबुदिमइविगिपयं तंजहा-भारहं, रामायणं, भीमासुरुकं, कोडिलयं, घोडयमुहं, सगडभिद्याउ, कप्पासियं, णागसुहुमं, कणगसत्तरी, वेसियं, वहसेसियं, बद्धसासणं. काविलं. लोगायतं. सद्वियंतं, माढरपुराणवागरणनाडगाई, अहवा वाव-त्तरिकलाओ, चत्तरि वेया संगोवंगा । सेत्तं लोइयं नोआगमओ भावसूर्यं ॥ ४२ ॥ से किं तं स्प्रेंडत्तरियं नोआगमओ भावसुयं ? लोडत्तरियं नोआगमओ भावसुयं-जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं. उपपणणाणवंसणधरेहिं, तीयपसूप्पण्णमणागयजाणएहिं, सन्वण्णाहि सञ्वदिशीहि, तिलुक्बहिवैमहियपुर्एहि, अप्पार्डहयवरनाणदंसणधरेहि. पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं। तंबहा-आयारो १ सूथगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपण्यती ५ णायाधम्यकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगहदसाओ ८ अणुत्त-रोवबाइयदसाओ ९ पण्हाबागरणाइं १० विवागस्यं ११ दिद्विताओ य १२ । सेतं लोउत्तरियं नोक्षागमओ भावसुयं । सेत्तं नोआगमओ भावसुयं । सेत्तं भावसुयं ॥ ४३॥ तस्स मं इमे एगडिया पामाधीसा पापावंजणा नामधेजा भवंति, तंजहा-गाहा-स्यस्तांयसिदंतसासचे, आणवयण उवएसे । पश्चण आगमे वि य. एगहा

१ अकसिमाइ । २ 'निरिनिखय'।

पजना हते ॥ १ ॥ सेसं सुयं ॥ ४४ ॥ से कि तं खंघे ? खंघे चउव्यहे पण्णते । तंजहा-नामखंधे १ ठवणाखंधे २ दव्वखंधे ३ भावखंधे ४ ॥ ४५ ॥ नामद्वरणाखो पुर्व्वभणियाणुक्रमेण भाणियन्वाओ ॥ ४६ ॥ से किं तं दव्वखंधे ? दव्वखंधे दुविहे पण्णतः । तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि तं आगमओ दव्यखंघे ? भागमओ दञ्चलंघे-जस्स णं 'खंघे' ति पर्य मिक्खियं जात्र सेत्तं भवियगरीरदव्यखंघे नवरं खंबामिलावो । मे कि तं जाणयसरीरमिवयसरीरनइरिने दव्वसंध ? जाणय-सरीरमवियसरीरवइरिते दन्वखंधं तिविहे क्णाते । तंजहा-सचित्तं १ अचिते २ मीमग् ३ ॥ ४७ ॥ से कि तं समित दव्यखंधे ? सचित्ते दव्यखंधे शणेगविहे पण्णते । तंजहा-हयर्बंघे, गयसंघे, किन्नरसंघे, किंपुरिससंघे, महोरगखंधे, गंधव्यसंघे, उसमसंघे। सेतं सचिते दव्यखंधे ॥ ४८ ॥ से कि तं अचिते दव्यखंधे ? अचिते दव्यखंधे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-दुपएसिए, तिपएसिए जाव दसपएसिए, संखिजपएसिए, असंखिजपएसिए, अर्णनपएसिए । सेतं अचिते दब्बखंधे ॥ ४९ ॥ से विं तं मीयए दम्बर्खंघे ? मीसए दम्बर्खंघे अणेगबिहे पण्णते। तंजहा-सेणाए अग्गिमे खंधे, सेणाए मजिसमे खंधे. सेणाए पच्छिमे संधे । सेतं मांसए दव्यसंधे ॥ ५० ॥ अहवा जाण-यमरीरमवियसरीरवहरिते दव्वसंघे तिविहे पण्णते । नंजहा-कसिणसंघे १ अकसिण-संघे २ अणेगदवियसंघे ३ ॥ ५९ ॥ से कि तं कसिणसंघे ! कसिणसंघे –से चेव हयखंधे, गयखंधे जाव उसमखंधे । सेतं करिणखंधे ॥ ५२ ॥ से किं तं अकरिणखंधे ? अकसिणखंघे-से चेव दुपएसियाइ खंधे जाव अर्णतपएसिए खंधे। सेतं अकसिणखंधे ॥ ' ३ ॥ से कि तं अणेगदवियखंधे ? अणेगदवियखंधे-तस्स चैव देसे अवचिए तस्स चेव देसे उवचिए । सेत्तं अणेगद्दवियसंघे । सेत्तं जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दब्ब-संघे । सेतं नोआगमओ दन्वसंघे । सेतं दन्वसंघे ॥ ५४ ॥ से कि तं भावसंघे ? भावसंधे द्विहे पण्णते । तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ ५५ ॥ से कि तं भागमओ भावसंधे ? आगमओ भावसंधे जाणए उवउत्ते । सेतं आगमओ मावर्खधे ॥ ५६ ॥ से किं तं नोआगमओ भावर्खंधे ? नोआगमओ भावर्खंधे-एएसि चेव सामाइयमाइयाणं छण्डं अञ्चयणाणं समृदयसमिइसमागमेणं सावस्सयः स्यखंधे 'मावखंधे' ति सञ्मह । सेतं नोआगमस्रो भावखंधे । सेतं भावखंधे ॥ ५७ । तस्स णं उमे एगडिया णाणाघोसा णाणावंजणा नामघेजा मर्वति. तंजहा-जाहा-गण काए य निकाए, खंघे वस्ने तहेव रासी य। पुंजे पिंडे निगरे, संघाए आउर समहे ॥ १ ॥ सेनं संघे ॥ ५८ ॥ आवस्सगस्स णं इमे अत्याहियारा भवंति तंजहा-शाहा-सावजानेगविरहें. उद्यातण गुणवक्षी य पविवसी । खळियस

विंदणा, वणतिगिच्छं गुणधारणा चेव ॥ १ ॥ ५९ ॥ बाहा-आवस्सयस्स एसो, पिंडत्यो विष्णिओ समासेणं । एतो एक्षेक्षं प्रण, अज्ञायणं कित्तइस्सामि ॥ ९ ॥ र्तंजहा-सामाइयं १ चडवीमत्थओ २ वंदणयं ३ पढिवसणं ४ काउस्सम्गो ५ पचक्राणं ६ । तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं । तस्स णं इमे चत्तारि अणुओगदारा भवंति, तंजहा-उवक्रमे १ निक्खेवे २ अणुगमे ३ नए ४ ॥ ६० ॥ से कि नं उवक्रमें ? उवक्रमें छिव्तिहें पण्णते । तंजहा-णामोवक्रमें १ टवणोवक्रमे १ दक्वोवक्षमे ३ खेत्तोबक्षमे ४ कालोबक्षमे ५ भावोबक्षमे ६ । णामठवणाओ गयाओ । से कि तं द्व्वोवक्रमे ? द्व्वोवक्रमे दुविहे पण्णते । तंज्ञहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ जाव सेत्तं भवियसरीरद्दव्योवक्रमे । से कि तं जाणगसरीर-भवियसरीरवडरिते दब्बोचक्कमे ? जाणगसरीरभवियसरीरवडरिते दब्बोचक्कमे तिविष्टे पण्णते । तंजहा-सचिते १ अचिते २ मीसए ३ ॥ ६९ ॥ से किं तं सचिते दव्यो-वक्से ? सचित्ते दक्षोवक्से तिविष्ठे पण्णते । तंजहा-दुव(ए)याणं १ चउप्पयाणं २ अपयाणं ३ । एकेके पण द्विहे पण्णते । तंजहा-परिक्रमे य १ वत्यविणासे य २ ॥ ६२ ॥ से कि तं दुपयाणं उवहामे ? तुपयाणं-नडाणं, नहाणं, जल्लाणं, मलाणं, म द्वियाणं, वेलंबगाणं, कहगाणं, पवगाणं, लासगाणं, आइवस्त्रगाणं, लंखाणं, मंस्राणं, त्णइक्षाणं, तुंबवीणियाणं, का(विडे)वोयाणं, मागद्दाणं । सेत्तं दुपयाणं उषक्रमे । ॥ ६३ ॥ से किं तं चउप्पयाणं उषक्रमे ? चउप्पयाणं-आसाणं, दृश्यीणं, इचाइ । सेतं चउप्पयाणं उवक्से ॥ ६४ ॥ से कि तं अपयाणं उवक्से ? अपयाणं-अंबाणं, अंबाडगाणं, इचाड । सेतं अपखोबक्कमे । सेतं सनितदञ्जोबक्कमे ॥ ६५ ॥ से किं तं अचित्तद्वावक्रमे ? अचित्तद्व्यावक्रमे- खंडाईणं, गुडाईणं, मध्यंदीणं । सेतं अचित्तदव्योवक्समे ॥ ६६ ॥ से किं तं मीसए दव्योवक्समे ? मीसए दव्योवक्समे-से चेत्र यासगआवंसगाइमंडिए आसाइ। सेत्तं मीसए दव्योवक्रमे। सेत्तं जाणय-सरीरभवियसरीरवडिरेते दक्वीवक्कमे । सेतं नोआगमओ दक्वीवक्कमे । सेतं दब्बी-बक्रमे ॥ ६७ ॥ से कि तं खेलोबक्रमे ? खेलोबक्रमे-अं णं हलक्रलियाईहिं खेलाइं उवक्रमिजाति । सेतं खेत्तोवक्रमे ॥ ६८ ॥ से किं तं कालीवक्रमे ? कालोवक्रमे--र्जं जं नालिमाइंहिं कालस्सोबकमणं कीरड । सेतं कालोबकमे ॥ ६९ ॥ से कि तं भावीवक्रमे ? माबीवक्रमे दुविहे पण्यते । तंजका-आगमधो य १ नोआगमधो य २ । तत्व आगमओ जाणए उवउत्ते । से कि तं नोजागमओ मांबोवकमे ? नोजागमओ भावोषक्रमे इबिहे पण्णते । तंजहा-पसत्ये य १ अपसत्ये य २ । से किं तं अपसत्ये नोकायमधी मार्वोबक्को है अपसम्ये नोमागमधी भागोवकमे बोकिविशिधासम्बन्धा-

ईणं । से किं तं पसत्थे नोआगमओ भावोबक्कमे ? पसत्थे ० गुरुमाईणं । सेतं नोआगमओ भावीवक्रमे । सेत्तं भावीवक्रमे । सेत्तं उवक्रमे ॥ ७० ॥ अहवा उवक्रमे छव्विहे पण्णते । तंजहा-आगुपुर्वी १ नामं २ पमाणं ३ वत्तव्वया ४ अत्याहिगारे ५ समीयारे ६ ॥ ७१ ॥ से कि तं आणुप्ववी ? आणुप्ववी दसविहा पण्णता । तंजहा-नामाणुप्ववी १ ठवणाणुपुन्नी २ दन्त्राणुपुन्नी ३ खेलाणुपुन्नी ४ कालाणुपुन्नी ५ उक्किलणाणुपुन्नी ६ गणणाणपुरवी ७ संठाणाणपुरवी ८ सामायारीआणपुरवी ९ भावाणपुरवी १० ॥ ७२ ॥ नामठवणाओ गयाओ । से कि तं दव्याणुप्व्यी ? दव्याणुप्व्यी द्विहा पण्णता । तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से किं तं आगमओ दब्बाणुपुब्बी ? आगमओ दव्याणुप्व्यी-जस्स णं 'आणुप्व्यि' ति पयं सिक्सियं, ठियं, जियं, मियं, परिजियं जाव नो अणुप्पेहाए। कम्हा ? 'अणुवक्षोगो' दव्वमिति क ह । गेगमस्स णं एगो अणुवन्तो आगमओ एगा दव्वाणुपुब्बी जाव जाणए अणुवन्ते अवस्थ । कम्हा १ जइ जाणए, अणुवजरो न भवइ, जइ अणुवजरो, जाणए न भवइ. तम्हा नित्य आगमओ दव्वाणुप्वी । सेर्त आगमओ दव्वाणुप्वी । से कि तं नोआगमओ दन्वाणुप्नवी ? नोआगमओ दन्वाणुप्नवी तिविहा पण्णता । तंजहा-जाणयसरीर-दव्वाणप्ववी १ भवियसरीरदव्वाणप्ववी २ जाणयसरीरभवियसरीरवडरिना दव्वाण-पुरुवी ३ । से कि तं जाणयसरीरदञ्बाणुपुरुवी ? 'आणुपुरुव' पयत्याहिगारजाणयस्स जं सरीरयं वदगयन्त्रयनावियचत्तदेहं सेसं जहा दव्वावस्सए तहा भाषियव्वं जाव सेतं जाणयसरीरद्व्याणुपुच्यी । से किं तं भवियसरीरद्व्याणुपच्यी ? भवियमरीर-द्व्वाणुपुन्वी-जे जीवे जोणीजम्मणनिक्खंते सेसं जहा द्व्वावस्सए जाव सेनं भविय-सरीरदव्याणुप्रव्वी । से किं तं जाणयसरीरभवियसरीरवहरिता दव्याणुप्रव्वी ? जाणय-सरीरमनियसरीरवइरिता दम्बाणुप्ववी दुविहा पण्णता । तंजहा-उविणिहिया य १ धाणीवणिहिया य २ । तत्थ णंजा सा उवणिहिया सा ठप्पा । तत्थ णंजा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पण्णता । तंजहा-नेगमववहाराणं १ संगहस्स य २ ॥ ७३ ॥ से किं तं नेगमववहाराणं अणोवणिहिया दव्याणुप्रकी ? नेगमववहाराणं अणोवणि-हिया दक्वाणुप्ववी पंचविहा पण्णता । तंजहा-अद्रपयपस्त्रणया १ संगसम्हितणया २ मंगोवदंसणया ३ समोबारे ४ व्यागमे ५॥ ७४॥ से कि तं नेगमववहाराणं अहुपय पहन्या ? नेगमनवहाराणं अहुपयपहन्याया-तिपएसिए जान इसपएसिए आणुपुन्नी, संसिज्जपर्सिए आणुपुन्नी, असंसिज्जपरसिए आणुपुन्नी, अर्णतपरसिए आणुपुन्नी, परमाणुपोगाले अणाणुपुन्नी, दुपएसिए अवतन्त्रप्, तिपएसिया आणु-पुर्वीको जाव अणंतपएसियाओ आण्यपन्तीओ, परमाणुपोकाला अणाणुपन्तीओ.

दुपएसियाई अवसव्वयाई । सेतं नेगमवबहाराणं अद्वपयपस्वणया ॥ ७५ ॥ एयाए णं नेगमवनहाराणं अद्वपयपह्चणयाए किं प्रभायणं? एयाए णं नेगमनव-हाराणं अद्वययपस्वणयाए भंगसमुक्तित्तणया कजह ॥ ७६॥ से किं तं नेगमवव-हाराणं भंगसमुक्तित्तणया ? नेगमववहाराणं भंगसमुक्तित्तणया-अत्यि आणु-पुन्त्री १ अत्थि अणाणुपुन्त्री २ अत्थि अवसन्त्रम् ३ अत्थि आणुपुन्त्रीओ ४ अत्थि अणाणुपुन्वीओ ५ अत्य अवत्तव्ययाई ६ । अहवा अत्य आणुपुन्वी य अणाणुपुच्ची य १ अहवा अत्य आणुपुच्ची य अणाणुपुच्चीओ य २ अहवा अत्य आणुपुर्वाओ य अणाणुपुर्वी य ३ अहवा अन्य आणुपुरवीओ य अणाणुपुरवीओ य ४ अहवा अस्थि आणुपुन्वी य अवसन्वए य ५ अहवा अस्थि आणुपुन्वी य अवत्तव्वयाइं च ६ अहवा अस्यि भाणुपुव्वीओ य अवत्तव्वए य ७ अहवा अस्यि आणुपुन्वीओ य अवत्तव्वयाइं च ८ अहवा अत्यि अणाणुपुन्वी य अवत्तव्वए य ९ अहवा अत्थि अणाणुपुच्ची य अवत्तव्वयाई च १० अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीओ य अवसन्वए य ११ अहवा अत्थि अणाणुपुन्वीओ य अवसन्वयाई च १२। अह्वा अत्थि आणुपुर्वी य अणाणुपुर्वी य अवत्तव्वए य १ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य अवत्तव्वयाई च २ अहवा अत्य आणुपुन्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवसन्वए य ३ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अणाणुपुव्वीओ य अवसन्वयाइं च ४ अहवा अत्थि आणुपुरुवीओ य अणाणुपुरुवी य अवसन्वरूप य ५ अह्वा अत्थि आणुपुरुवीओ य अणाणुपुरुवी य अवत्तरुवयाई च ६ अहवा अस्य आणुपुन्वीओ य अणाणुपुन्वीओ य अवतन्वए य ७ अहवा अस्यि आणु-पुर्वाओ य अणाणुपुर्वाओ य अवतव्वयाई च ८ तिसंजोगे एए अ(ह)हुमंगा। एवं सन्वेऽवि छन्वीसं भंगा । सेत्तं नेगमनवहाराणं भंगसमुक्तित्तणया ॥ ७७ ॥ एयाए णं नेगमबनहाराणं भंगसमुद्धित्तणयाए किं पओयणं ? एयाए णं नेगमबन-हाराणं मंगसमुक्तित्तणयाए भंगोवदंसणया कीरइ ॥ ७८ ॥ से किं तं नेगमवव-हाराणं भंगोवदंसणया ? नेगमववहाराणं भंगोबदंसणया-तिपएसिए आण्युव्वी १ परमाणुपोम्गळे अणाणुपुन्वी २ दुपएसिए अवतन्वए ३ अहवा तिपएसिया आणुपु-व्वीओ ४ परमाणुपोग्गला अणाणुपुरुवीओ ५ दुपएसिया अवत्तव्वयाई ६। अहवा तिपएसिए य परमाणुपुरगले य आणुपुन्ती य अणाणुपुन्ती य चउमंगी ४ । अहवा तिपएसिए य दुपएसिए य आणुपुञ्ची य अवतन्वए य चउभैगो ८ । अहवा परमा-गुपोम्मले य दुपएसिए य अणागुपुन्वी य अवत्तन्वए य चर्चमंगो १२। अहमा

१ अण्णायरिसे बारसम्युक्केहो सञ्चद् ।

तिपएसिए य परमाणुपोब्गले य दुपएसिए य आणुपुन्ती य अणाणुपुन्ती ब सवत्तव्वए य १ अहवा तिपएसिए य परमाणुपोम्गले य दुपएसिया य आणुपुख्यी य अणाणुपुच्वी य अवसञ्जयाई च २ अहवा तिपएसिए य परमाणुपुग्गला ब दुपएसिए य आणुपुन्नी य अणाणुपुन्नीओ य अवसम्बए य ३ अहना तिपएसिए य परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य आणुपुन्नी य अणाणुपुन्नीओ य अनत्तव्नयाई च ४ अहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गळे य दुपएसिए य आणुपुब्वीओ य अणाणुपुन्त्रीओ य अवत्तन्त्राए य ५ अहवा तिपएसिया य परमाणुपोरगले य दुपए-सिया य आणुप्रव्वीओ य अणाणुप्रव्वी य अवसव्वयाई च ६ अहवा निपएसिया य परमाणुपोम्गला य दुपएसिए य आणुपुन्नीओ य अजाणुपुन्नीओ य अवनत्वए य अहबा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य दुपएसिया य आणुप्रव्तीओ य अणाणुपुरुविओ य अवत्तव्वयाई च ८ । सेतं नैगमववहाराणं भंगोवदंशणया ॥ ५९ ॥ से कि नं ममायारे ? समोयारे (मणिजाइ) । नेगमवनहाराणं आणुप्नीदव्याई कहिं समोयरंति ? कि आणुप्रवीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुर्वीदव्वेहिं समोय-रंति ? अवनञ्चयद्ववेहिं समोयरंति ? नेगमवनहाराणं आणुपुन्वीद्ववाई आणुपु-व्वीदव्वेहिं समीयराति, नो अणाणुपुव्वीदव्वेहिं समीयराति, नो अवसव्वयद्व्वेहिं समीयरंति । नेगमववहाराणं अणाणुपुन्वीद्व्याई कहिं समीयरंति ? किं आणुपुन्वी-दन्वेहिं समोयरंति ? अणाणुप्नवीदन्वेहिं समोयरंति ? अवत्तव्वयदन्वेहिं समोयरंति ? नो आणपुर्वादक्वेहि समोयरति, अणाणपुर्वादक्वेहि समोयरति, नो अवसव्यय-दव्वेहिं समोयरंति । नेगमववहाराणं अवनव्ययदव्वाइं कर्हिं समोयरंति ? आणुप्व्वी-इन्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपन्वीदन्वेहिं समोयरंति ? अक्तन्वयदन्वेहिं समोयरंति ? नो आणुप्रवीदव्वेहिं समोयरंति, नो अणाणुप्रवीदव्वेहिं समोयरंति, अवलव्यय-दव्वेहिं समोयरंति । सेतं समोयारे ॥ ८० ॥ से कि तं अणुगमे ? अणुगमे नविहे पण्णते । तंत्रहा-गाहा-संतपयपस्वणया, दव्यपमाणं च सिनी फुसर्णा य । कास्त्रे य अंतर मार्ग, माने अप्पार्वहं चेव ॥ १ ॥ ८१ ॥ नेगमवबहाराणं आणुपच्ची-दन्वाइं कि सत्य नित्थ ? णियमा अत्य । नेगमवनहाराणं भणाणुप्रवीदध्याई कि अत्य नत्य ? णियमा अत्य । नेगमनवहाराणं अवतव्ययद्व्याइं कि अत्य नित्य ? णियमा अस्थि ॥ ८२ ॥ नेगमवनहाराणं आणुपुन्वीद्वाहं कि संख्यिकाहं ? अरंखिजाई ? अर्णताई ? नो संखिजाई, नो असंखिजाई, अर्णताई । एवं खणा-णुप्रवीद्वाई अवसम्बगद्वाई च अर्णताई भाषियम्बाई ॥ ८३ ॥ तेनमक्वहाराणं <u> आणुप्रकीदव्याइं लोगस्स कि संक्षिज्ञहमाने होजा ! असंक्षिज्ञहमाने होजा !</u>

संबोजेसु भागेसु होजा ? असंखेजेसु भागेमु होजा ? सम्बलोए होजा ? एगं दर्व्य पहुच संखिजरभागे वा होजा, असंखिजरभागे वा होजा, संखेजेमु भागेमु ना होजा, असंसेजेन मागेस वा होजा. सन्वलीए वा होजा । णाणादन्वाई पहुच नियमा सन्वलोए होजा । नेगमववहाराणं अणाणपुर्वाद्वादं कि लोयस्स संखिज-इमागे होजा जाव सव्वलीए होजा ? एगं दव्वं पहुच नो संखिजहमागे होजा, असंक्षिजहमागे होजा, नो संदेखेन भागेनु होजा, ना असंबेखेनु भागेनु होजा, नो मञ्त्रलोए होजा । णाणाद्वाइं पहुच नियमा मञ्त्रलोए होजा । एवं अवत्तव्य-गदब्बाइं भाणियब्बाइं ॥ ८४ ॥ नेगमबबहाराणं आणुपुब्बीदब्बाइं लोगस्स किं संखेजइभागं फुसंति ? असंखेजहमागं फुसंति ? संखेजे भागे फुसंति ? असंखेजे भागे फसंति १ सन्वलोगं फुसंति १ एगं दन्त्रं पड्ड लोगस्य संखेजहभागं वा फुर्सति जाव सञ्बलोगं वा फुर्सति । णाणादञ्वाहं पद्भव नियमा सञ्त्रलोगं फुर्सति । नेगमववहाराणं अणाणुप्ववीदच्याइं लोगस्स कि संखिजइभागं फ्रसंति जाव सव्वलोगं फुसंति ? एगं दब्वं पडुच नो संखिजहमागं फुसंति, असंखिजहमागं फुसंति, नो संक्रिके भागे फसंति. नो असंखिके भागे फसंति, नो सव्वलोयं फुसंति। णाणादव्वाइं पड़च नियमा सव्वलोयं फ्रसंति । एवं अवतव्यगदव्याई भाणियव्याई ॥ ८५ ॥ णेगामवबहाराणं आणुप्रवीदव्याइं कालओ केनचिरं होति ? एगं दव्वं पद्धच जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंबेजं कालं । णाणादव्याइं पहुच णियमा सन्बदा । अणाणुपुरुवीद्व्याई अवसञ्चगद्व्याई ज एवं चेव भाषियव्याई ॥ ८६ ॥ णेगम-वबहाराणं आणुपुव्वीदव्याणं अंतरं कालओ केवियरं होइ ! एगं दव्वं पहुन्त जहणोणं एगं समयं, उद्योसेणं अणं(तं)तकालं । णाणादव्याइं पदुःच णत्यि अंतरं । णेगामववहाराणं अणाणुपुञ्वीदन्वाणं अंतरं कालओ केविषरं होइ ? एगं दन्वं पहुच अहणोणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं। णाणादव्याइं पडुच णत्थि अंतरं। णेरामधनहाराणं अवसञ्चगदन्त्राणं अंतरं कालओ केवित्ररं होइ है एगं दव्वं पहुन्त जहुण्लेणं एमं समयं, उद्योसेणं अणंतकालं । णाणादव्याइं पहुन्य णत्य अतरं ।। ८७ ।। णेगमनवहाराणं आणुपुन्वीद्व्याइं सेसद्व्याणं कड्मागे होजा ? किं संखिजहमागे होजा ? असंखिजहमागे होजा ? संखेजेड मागेड होजा ? असंखेजेड भागेसु होजा ? नो संक्रिज्यस्मागे होजा, नो असंक्रिज्यस्मागे होजा, नो संक्रेजेस मागेसु होजा, नियमा असंबेजेस मागेस होजा। णेगमवनहाराणं अणाणुप्रवी-दम्बाहं सेसदम्बाणं कड्माने होजा ? कि संबेजहमाने होजा ? असंबेजहमाने होजा ? संकेजेष्ठ भागेष्ठ होजा ? असंकेजेष्ठ भागेष्ठ होजा ? नो संकेजहमागे

होजा, असंखेजइमागे होजा, नो संखेजेसु मागेसु होजा, नो असंखेजेसु मागेसु होजा । एवं अवसञ्चगदञ्दाणि वि भाणियञ्दाणि ॥ ८८ ॥ णेगमववहाराणं आण्-पुरुवीद्वाइं कयरंमि माने होजा? कि उदइए माने होजा? उनसमिए माने होजा ? खइए भावे होजा ! खओवसमिए भावे होजा ! पारिणामिए भावे होजा ! मिबवाइए भावे होजा ? णियमा साइपारिणामिए भावे होजा । अणाणुपुन्वीदन्वाणि अवत्तव्वगद्व्वाणि य एवं चेव भाणियव्वाणि ॥ ८९ ॥ एएमिं भंते ! जेगमववहा-राणं आणुपुर्वीदव्वाणं अणाणुपुर्वीदव्वाणं अवसव्वगद्वाण य दव्वद्वयाए पएसड्ड. याए दब्बद्वपूर्मद्वयाए कयरे कयरेहिंनो अप्पा वा वहुया वा तुक्षा वा विसेसाहिया वा १ गोयमा ! सञ्बत्धोवाई णेगमयवहाराणं अवत्तव्वगदन्वाई दव्बद्वयाए, अणाणु-पुर्वीद्याइं द्व्वद्वयाए विसेसाहियाइं, आणुप्वीद्वाइं द्व्वद्वयाए असंखेजगुणाइं। पएसद्वयाए-णेगमवत्रहाराणं सन्वतथोत्राइं अणाणुपुन्वीद्व्वाहं पएसद्वयाए, अवत्तव्त्र-गदव्वाइं पएसद्वयाए विसेसाहियाइं, आणुपुन्नीदव्वाइं पएसद्वयाए अणंतगुणाइं। दञ्बद्वपरसङ्ग्यार-सञ्बद्योवाइं येगमवबहाराणं अवसञ्बगदञ्जाहं दञ्बद्वगार. अणा-णुप्नवीदन्वाइं दन्वह्वाए अपएसह्याए विसंसाहियाई, अवसन्वगदन्वाइं पएसह्याए विसेसाहियाई, आणुपुन्वीदन्त्राई दन्बद्वयाए असंखेजगुणाई, तार्ट् चेव परसहयाए अणंतगुणाई । सेतं अणुगमे । सेतं जेगमववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपव्वी ॥ ९० ॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ? संगहस्य अणोवणिहिया दव्याणुप्ववी पंचिवहा पण्यसा । तंजहा-अद्भुपयपस्वणया १ भंगसमुक्तिसणया २ मंगोबदंसणया ३ समोयारे ४ अणुगमे ५ ॥ ९१ ॥ से कि तं संगहरस अहुपय-परुवणया ? संगहस्स अट्टपयपरुवणया-तिपर्णसए आगुपुच्ची, चडप्पएसिए आगु-पुरवी जाव दसपर्णसर् आणुपुरवी, संखिजपरसिए आणुपुरवी, असंखिजपरसिए आणुप्रवी, अर्णतपरसिए आणुप्रवी, परमाणुपोग्गले अणाणुप्रवी, दुपरसिए अवत-व्यए । सेत्तं संगहस्स अट्टपयपस्यणया ॥ ५२ ॥ एयाए णं संगहस्य अट्टपयपस्य-णयाए कि प्रभोयणं ? एयाए णं संगहस्स अट्टपयपस्वणयाए भंगसमुक्कित्तणया कजइ । से कि तं संगहस्स भंगसमुक्तित्तजया ? संगहस्स भंगसमुक्रित्रजया-अस्य आणुपुन्वी १ अत्थि अणाणुपुन्वी २ अत्थि अवसन्वर ३ अहवा अत्थि आणुपुन्वी य अणाणुपुन्नी य ४ अहवा अत्थि आणुपुन्नी य अनतम्बए य ५ अहवा अत्थि अणाणुपुरुवी य अवसम्बर्ध य ६ श्रह्ना अस्यि आणुपुरुवी य आणाणुपुरुवी य अवत्तव्वए य ७ एवं सत्तर्भगा । सेतं संगहरस भंगसमुक्तित्रणया । एयाए णं संगहरस भंगसम्बित्तपयाए कि पश्चीयणं ? एयाए णं संगहस्स भंगसम्बित्तपयाए भंगीयई-

सणया कीरइ ॥ ९३ ॥ से कि तं संगहस्स भंगोवदंमणया ? संगहस्स भंगोवदंसणया-विपएसिया आणुपुम्बी १ परमाणुपोग्गला अषाणुपुम्बी २ दुपएसिया अवशब्दाए ३ अहवा तिपएसिया य परमाणुपुरुगला य आणुपुरुवी य अणाणुपुरुवी य ४ अहवा तिपएसिया य दुपएसिया य आणुपुन्वी य अवत्तन्वए य ५ अहवा परमाणु-पोग्मला य दुपएसिया य अणाणुपुन्ती य अवसन्त्रवए य ६ अहवा तिपएसिया य परमाणुपीमाला य दुपएसिया य आणुपुरुवी य अणाणुपुरुवी य अवस्तव्वए य ७। सेनं मंगहस्म भंगोवदंसणया ॥ ९४ ॥ से किं तं संगहस्स समोयारे ? संगहस्स ममोयारे (भणिजड) । संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं किहं समीयरंति ? किं आणु-पुरुवीद्ववेहिं समीयरित ? अणाणुप्रवीद्वेहिं समीयरित ? अवत्तव्वयद्वेहिं समी-यरेति ? संगहरस आणुप्ववीदव्वाई आणुप्ववीदव्वेहिं समोयरेति, नो अणाणु-पुर्वीद्व्वेहिं सभोयरंति, नो अवसव्वयद्व्वेहि समोयरंति । एवं दोन्नि वि सद्वाणे सहाणे नमोबरंति । धेतं समीयारे ॥ ९५ ॥ से कि तं अणुगमे ? अणुगमे अद्रविहे पण्णेतः । तंत्रहा-शाह्य-संतपयपस्यणया, देव्यपमाणं च वित्ते फुसणी य । काँही य अंतरं भागै, भवि अप्पावहं नत्थि ॥ १ ॥ संगहस्य आणुप्ववीदव्याइं किं अत्थि नित्थ ? णियमा अत्थि । एवं दोकि वि । संगहस्म आणुप्ववीदव्वाई कि संखि-जाइं ? असंखिजाइं ? अणंताइं ? नो संखिजाइं, नो असंखिजाइं, नो अणंताइं. नियमा एगो रासी । एवं दोषि यि । संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाइं लोगस्स कड्भागे होजा ? कि संखिजहमागे होजा ? असंखिजहमागे होजा ? संखेजेस मागेस होजा ? असंखेजेस भागेम होजा ? सन्यठोए होजा ? नो संखिजहमागे होजा' नो अर्ससिज्दमारी होजा, नो संखेजेस भागेस होजा, नो अरंखेजेस भागेस होजा, नियमा सम्बलोए होजा। एवं दोन्नि वि । संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाई लोगस्स कि संबेजहभागं फुसंति ? असंबेजहभागं फुसंति ? संबेजे भागे फुसंति ? असंखेळे भागे फुसंति ? सञ्बलोगं फुसंति ? नो संखेजइभागं फुसंति जाव णियमा सम्बलोगं फुसंति । एवं दोशि वि । संगहस्स आणुपुन्नीदम्बाई कालओ केविषरं होंति ? (नियमा) सम्बद्धा । एवं दोषि वि । संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाणं कालओ केशिक्षरं अंतरं होइ ? णत्थि अंतरं । एवं दोशि वि । संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाई सेसद्ब्याणं बङ्भागे होजा ? कि संखिजाइभागे होजा ? असंखिजाइमागे होजा ? संबोजेमु भागेमु होजा ? असंबोजेमु भागेमु होजा ? नो संबिजहमाने होजा, नो असंसिज्यमागे होजा, नो संबेजेस भागेस होजा, नो असंसेजेस भागेस · होजा, नियमा तिमागे होजा । एवं दीकि वि । संगहस्स आणुपुव्वीदव्याहं

कयरम्मि भावे होजा ? नियमा साइपारिणामिए मावे होजा । एवं दोशि वि ! अप्पाबहुं नत्थि । सेत्तं अणुगमे । सेनं संगहस्य अणीवणिहिया दण्वाणुपुन्वी । सेनं अणोत्रणिहिया दव्वाणुपुच्वी ॥ ५६ ॥ से किं तं उवणिहिया दव्वाणुपुच्वी १ उद्योगहिया दव्याणुप्रवी तिविहा पण्णता । नंजहा-प्रव्याणुप्रवी १ पच्छाणुप्रवी १ अणाणुपुरवी य ३ ॥ ९७ ॥ से किं तं पुरुवाणुपुरुवी ? पुरुवाणुपुरुवी-धम्मरियकाए १ अधम्मत्थिकाए २ आगासत्थिकाए ३ जीवत्थिकाए ४ पोग्गळत्थिकाए ५ अद्धा-समए ६ । सेनं पुरुवाणुपुरुवी । से कि तं पच्छाणुपुरुवी १ पच्छाणुपुरुवी-अद्धानमए ६ पोग्गलियकाए ५ जीवन्थिकाए ४ आगासन्थिकाए ३ अधम्मत्थिकाए २ धम्म-त्थिकाए १। सेत्तं पच्छाणुपुरुवी । से कि नं अणाणुपुरुवी ? अणाणुपुरुवी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए छमच्छैपयाए सेढीए अण्णमण्णव्यामी दुरुवणी । सेत्तं अणाणुपुन्नी ॥ ९८ ॥ अह्वा उवर्णिह्या दव्वाणुपुन्नी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुरुवाणुपुरुवी १ परछाणुपुरुवी २ अणाणुपुरुवी ३ । से कि तं पुरुवाणुपुरुवी ? पुरुव[-णुपुन्नी-परमाणुपोम्पले १ दुपएसिए २ तिपएसिए ३ जाव दसपएसिए १० संखि-जपर्णसर ११ असंखिजपरसिर १२ अणंनपरसिर १३। सेतं प्रव्यागप्रवी। से कि तं पच्छाणपन्नी ? पच्छाणुपन्नी-अणंतपएसिए १३ जाव परमाणुपोग्गळे १। मेनं पन्छाणपञ्ची । से किं तं अणाणपञ्ची ! अणाणपञ्ची-एयाए चेव एगाइयाए रगुत्तरियाए अणंतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्यासो दुरुवृणो । सेतं अणाणुप्यवी । मेत्तं उविभिद्धिया दव्वाणुप्ववी । रेतेतं जाणयसरीरभवियसरीरवद्दरिता दव्वाणुप्ववी । सेतं नोआगमओ दव्वाणुप्व्वी । सेतं दृष्ट्याणुप्ट्यी ॥ ९९ ॥ से किं तं खेता-णुपन्वी ? खेताणुपन्वी दुविहा पण्णता । तंजदा-उवणिहिया य अणोवणिहिया य ॥ १००॥ तस्थ णं जा सा उविभिह्यि। सा ठप्पा। तस्थ णं जा सा अणोविष-हिया सा इविहा प्रम्णता । तंजहा-मेगमक्वहाराणं १ संगहस्स च २ ॥ १०१ ॥ सं कि तं णेगमवबहाराणं क्षणोनिषिद्विया सेताणपुरुवी ? जेगमवबहाराणं अजीविक-हिया खेताणुपुर्वी पंचविद्वा पण्णता । तंबहा-अद्भप्यपब्बणया १ भंगसम्क्रित-णया २ भंगोवदंसणया ३ समोयारे ४ अजगमे ५ । से कि तं गेगमबबहाराणं अद्वपयपस्वणया ? णेगमववहाराणं अद्वपयपस्वणया-तिपएसोगाढे आणुपव्यी जाव दसपएसोगाडे आणुपून्यी, संकिजपएसोगाडे आणुपून्ती, असंकिजपएसोगाडे आणु-पुरुवी, एगपएसोगाढे अणाणुपुरुवी, उपएसोगाढे अवत्तव्यप्, विपएसोगाढा आणु-पुन्नीओ जान दसपएसोगाढा आगुपुन्नीओ, असंश्विजपएसोगाढा आगुपुन्नीओ,

१ 'समृह्'। २ पचंतरे एसो पाछो नरिय।

एमपएसोगाढा अणाभुपुक्वीओ, दुपएसोगाढा अवस्तव्नगाई। सेरां जेगमवबहाराणे अद्वपस्यण्या । एयाए णं जेगमववहाराणं अद्वपयपस्वणयाए कि पञ्जायणं ? एयाए • फेगमबवहाराणं अद्वपयपस्वणयाए जेगमनवहाराणं भंगसमुक्तित्तणया कजाइ । से कि तं जेगमवबहाराणं भंगसमुद्धिताणया ? जेगमववहाराणं भंगसमुक्किताणया-अत्थि आणुपुन्वी १ अन्धि अणाणुपुन्वी २ अत्थि अवनव्यत् ३ एवं दन्याणुपुन्वी-गमेणं खेताणुपुरुवीए वि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्या जात्र सेतं णेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया । एयाए णं णेगमववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए कि पक्षायणं ? एयाए णं णेगमवत्रहाराणं मंगसमुक्तिनणयाए मंगोवदंसणया कीरइ । से किं तं णेगमववहाराणं भंगोवदंराणया ? णेगमववहाराणं भंगोवदंसणया-तिपएसोगाढे आणुपन्त्री १ एगपएसोगाडे अणाणुपन्त्री २ दुपएसोगाडे अवत्तन्त्रए ३ तिपएसोगाडा आणुपुर्वीओ ४ एगपएसोगाडा अणाणुप्रव्वीओ ५ दुपएसोगाडा अवत्तव्यगाई ६ अहवा तिगएसोगाढं य एगपएमोगाढं य आणुपुन्वी य अणाणुपुन्वी य एवं तहा चेव द्व्वाणुप्व्वीगमेणं छ्व्त्रीसं भंगा भाषियव्या जाव सेतं णेगमववहाराणं भंगो-वदंसणया । सं कि तं समोयारे ? समोयारे-शेगमववहाराणं आण्यव्वीदव्वाइं कहिं ममोगरंति ? कि आण्पुरवीदरुवेहिं समोगरंति ? अणाणुप्रवीदरुवेहिं समोगरंति ? अवनव्ययद्वेह समोयरंति १० आण्पुव्वीद्वाई आण्पुव्वीद्वेह समोयरंति, नो अणाणुपुर्व्धादव्वेहिं समीयरंति. नो अवत्तव्वयदव्वेहिं समीयरंति । एवं दोन्नि वि सद्वाणे सद्वाणे समोबर्ति । सेतं समोवारे । से कि तं अनुगमे ? अनुगमे नवविहे पण्णते । तंत्रहा-गाहा-संतैपयपस्वणया, दैव्यपमाणं च खिंत पुसर्णा य । काँले य अंतर्र भागै, भावे अप्पार्वहं चेव ॥ १ ॥ णेगमवदहाराणं आण्युव्वीदव्वाइं कि अस्थि नस्थि? भियमा अस्य । एवं दोक्षि वि । णेगमवबहाराणं आणुप्ववीदव्याई कि संसिजाई ? असंखिजाई ! अणंताई ! नो संखिजाई, नो असंखिजाई, अणंताई । एवं दोनि वि । णेगमवबहाराणं आणुपुञ्चीद्ववाइं स्रोगस्स किं संखिजहभागे होजा ? असंखिजहभागे होजा ? जाव सञ्बलीए होजा ? एगं दव्वं पहुच संखिजहमागे वा होजा, असं-सिजदभागे वा होजा, संसेजेस भागेस वा होजा, असंसेजेस भागेस वा होजा. देस्चे वा कोए होजा। णाणादम्बाई पहुत्र नियमा सम्बलोए होजा । णेगमदव-शाराणं अजाणुपुरवीदस्वाणं पुच्छाए-एगं दव्वं पहुच नो संखिजइमागे होजा, असंस्थितहरूमाने होजा, नो संस्थेतेषु भागेषु होजा, नो असंस्थेजेषु भागेषु होजा, मो सम्बद्धीए होजा । णाणाद्व्याइं पडुच नियमा सम्बद्धीए होजा । एवं अवत्तन्त्र-गहरुवानि वि आविश्वकानि । मेगमवरहारायं आ<u>णप</u>न्वीदव्यादं लोगस्स किं चंखि-

जहमार्ग फुसंति ? असंखिजहमार्ग फुसंति ? संखेजे भागे फुसंति ? असंखेजे भागे फुसंति ? सञ्वलोगं फुसंति ? एगं दव्वं पडुच संखिजइमार्ग वा फुसइ, असंखिजङ् भागं वा फुसइ, संखेजे भागे वा फुसइ, असंखेजे भागे वा फुसइ, देसूणं वा लोगं फुसइ । णाणादक्वाई पद्धन्न नियमा सन्बलोयं फुसंति । अणाणपुरुवीदक्वाई अवत-व्वयद्व्वाई च जहा सेतं नवरं फुसणा भाषियव्या । जेगमववहाराणं आणुप्व्वी-दन्वारं कालओ केविचरं होति ? एगं दन्त्रं पहुच जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असं-क्षेजं कालं । जाजाद्वाई पहुच जियमा सम्बद्धा । एवं दुण्णि थि । जेगमववहाराणं आणुपुन्त्रीदन्वाणमंतरं कालओ केविकरं होइ ? एगं दन्वं पहुच जहण्णेणं एगं समर्थ, उक्कोसेणं असंखेजं कालं । नाणादच्याई पहुच णिथ अंतरे । णेगमबबहाराणं आणु-पुन्नीरन्त्राहं सेसद्व्याणं कड्मागे होजा ? तिण्णि वि जहा दन्ताणुपन्त्रीए । णेगम-ववहाराणं आणुपव्वीक्त्राइं कयर्गिम भावे होजा ? नियमा साइपारिणामिए भावे होजा । एवं दोक्ति वि । एएसि णं भेते ! णेगमबवद्दाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अणाणु-पुक्वीद्याणं अवत्तव्यगद्व्याणं च द्व्यहुयाए पएसहुयाए द्व्यहुपएसहुयाए क्यरे क्यरे-हिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाई गेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्वाइं दव्बद्रयाए, अणाणुप्ववीदव्वाइं दव्बद्वयाए विसेसाहियाई, आणुपन्वीदन्वाइं दन्बद्वयाए असंखेजगुणाइं, पएमद्वयाए-सन्त्रत्थोवाइं णेगमववहाराणं अणाणुप्वविद्वाई अपएसद्वयाए, अवसञ्चगद्वाई पएसद्वयाए विसेसाहियाई, आण्पन्तीद्वव्वाइं प्रणसद्व्याए असंखेजगुणाइं, दब्बद्वप्रणसद्व्याए-सन्बत्योबाइं णेगम-ववहाराणं अवत्तव्वगदव्याई दय्बद्धयाए, अणाणुपुन्वीदब्बाई दव्यद्वयाए अपएसद्वयाए विसेसाहियाई, अवत्तव्यगदव्याई पएसद्वयाए विसेसाहियाई, आणुपुन्बीदव्याई दव्यद्व-याए असंखेजगुणाई, ताई चेव पएसद्वयाए असंखेजगुणाई । सेतं अणुगमे । सेतं णेगमववहाराणं अणोवनिहिया खेलाणुप्या ॥ १०२ ॥ से कि तं संगहस्स अणो-विमहिया खेलाणुपूर्वी ? संगहस्स अणोवणिहिया खेलाणुपूर्वी पंचविहा पण्यला । तंजहा-अद्वपयपस्वणया १ मेगसमुक्कित्रणया २ मंगोत्रदंसणया ३ समोयारे ४ अज़रामे ५ । से कि तं संगहरस अट्टपबपरूजणया ? संगहरस अट्टपबपरूजणया-तिपएसोगाडे आणुपन्नी, करप्पएसोगाडे आणुपन्नी जाव दसपएसोगाडे आणुपन्नी, संखिजपएसोगाढे आणपुन्नी, असंखिजपएसोगाढे आणुपन्नी, एगपएसोमाढे जणा-गुपूज्वी. दुपएसोगाडे अवत्तव्यए । सेतं संगहस्स अद्भप्यपस्यणया । एकाए णं संगहत्स अञ्चयपस्यणयाए कि प्रजीयणं १० संगहत्स अञ्चयपस्यणयाए संगहत्स मंगरामुक्तिराणया कवाइ । से कि तं संगहत्स भंगरामुक्तिराणया ? संगहरसः शैंप

समुक्तित्तणया-अत्य आणुपुब्बी १ अत्यि अणाणुपुब्बी २ अत्य अवत्तव्वए ३ अह्वा अत्य आणुपुन्नी य अणाणुप्न्नी य एवं जहा दव्नाणुप्न्नीए संगहस्म नहा भाषियव्या जाव सेतं मंगहस्स भंगसमुक्तित्रणया । एयाए णं संगहस्स भंगसमु-कित्तणयाए कि पक्षोयणं ? एयाए णं संगहस्त भंगसमुक्कित्तणयाए भंगोवदंतणया कजाइ । से कि तं संगहस्स भंगोवदंसणया ? संगहस्स मंगोवदंसणया-तिपएसोगाढे आणुपुञ्ची १ एगपएसोगाढे अणाणुपुञ्ची २ दुपएमोगाढे अवसञ्चए ३ अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुरुवी य अणाणुपुरुवी य एवं जहा दस्वाणु-पुर्वाए संगहस्स तहा खेनाणुपुर्वीए वि भाषियव्यं जाव सेत्तं संगहस्स भंगोवदं-सणया । से कि तं समोयारे ? समोयारे-संगहस्स आणुपुन्वीदच्वाई कहिं समोय-रंति ? कि आणुप्व्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अणाणुप्व्वीदव्वेहिं समोयरंति ? अनन-व्वयद्व्वेहिं समीयरंति ? तिष्णि वि सहाणे समीयरंति । सेतं समीयारे । से कि तं अणुगमे ? अणुगमे अद्वविहे पण्णते । तंजहा-शाहा-संतैपयपस्वणया, दैव्वपमाणं च चित्तै फुसर्णे। य । केलो य अर्तरं भागे, भीवे अप्पाबहुं णित्य ॥ १ ॥ संगहस्स आणुपुन्नीदन्याई कि अस्थि णात्य ? णियमा अस्य । एवं दुण्णि वि । सेसग-दाराई जहा द्वाणुपुन्वीए संगहस्स तहा खेताणुपुन्वीए वि भाणियन्वाई जाव सेतं अणुगमे । सेतं संगहस्स अणोवणिहिया खेताणुपुरवी । सेतं अणोवणिहिया खेलाणुपुव्वी ॥ १०३ ॥ से किं तं उनिमहिया खेलाणुपुव्वी ? उनिमहिया खेलाणु-पुन्नी तिनिहा पण्णता । तंजहा-पुन्नाणुपुन्नी १ पच्छाणुपुन्नी २ अणाणुपुन्नी स ३ । से कि तं पुज्वाणुप्रव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी-अहोलोए १ तिरियलोए ६ उ**ह**लोए ३ । सेसं पुट्याणुप्टवी । से कि नं पच्छाणुपुटवी ? पच्छाणुप्टवी-उद्दुरुपेए ३ तिरियलोए २ अहोलोए १ । सेतं पच्छाणुपुन्त्री । से कि तं अणाणुपुन्त्री ? अणाणुपुन्त्री-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए तिगच्छगयाए सेडीए अण्णमण्णव्मासो दुस्वृणो । सेतं अणाणुपुन्नी । अहोलोयखेताणुपुन्नी तिविहा पण्णता । तंत्रहा-पुन्नाणुपुन्नी १ पच्छाणुपुन्नी २ अणाणुपुन्नी ३ । से कि तं पुन्नाणुपुन्नी ? पुन्नाणुपुन्नी-रयणप्पभा १ सकर्णमा २ बालुगणमा ३ पेकणमा ४ धूमणमा ५ तमणमा ६ तमतमणमा ७ । सेतं पुरुवाणुपुरुवी । से किं तं पच्छाणुपुरुवी ? पच्छाणुपुरुवी –तमतमप्पसा ७ जाब रसणप्पमा १। सेत्तं पच्छाणुपुन्नी । से कि तं अणाणुपुन्नी ? भणाणुपुन्नी-एयाए चैत्र एगाइयाए एगुत्तरियाए सत्तगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्मासो दुस्त्रूणो । सेत्तं अजाणुपुरुवी । तिरिवलोयखेताणुपुरुवी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुरुवाणुपुरुवी १ पच्छाणुप्रकी २ अणाणुप्रकी ३ । से कि तं पुरुवाणुपुरुवी ? पुरुवाणुपुरुवी --

गाहाओ-जंबूरीवे लवणे, धायह कालोय पुक्खरे बरुणे। खीर धय खोय नंधी, अरुणवरे कुंडले रुवगे ॥ १ ॥ आभरण वत्य गंधे, उप्पल तिलए य पुढवि निहि रयणे । वासहर दह नईओ, विजया बक्लार कप्पिदा ॥ २ ॥ कुरु मंदर आजासा, कूडा नक्खन चंद मरा य । देवे नागे जक्खे, भूए य मर्थभुरमणे य ॥ ३ ॥ सेनं पुरुवाणपुरुवी । से कि तं पुरुवाणपुरुवी ? पुरुवाणपुरुवी-सर्यभूरमणे य जाव जंबृदीवे । सेतं पच्छाणुपन्धी । से किं तं अणा<u>णप्</u>वती ? अणाणुप्वती-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असंखे अगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्सासी दुस्वूणी। सेतं अणाणुप्रवी । उन्नतीयखेताणुप्रवी तिविहा पण्णता । तंत्रहा-पुरुवाणुप्रवी १ पच्छाणुपुरुवी २ अणाणुपुरुवी ३ । में कि तं पुरुवाणुपुरुवी ? पुरुवाणुपुरुवी-सोहम्मे १ ईसाणे २ सर्णकुमारे ३ मार्हिदे ४ बंगलोए ५ लंतए ६ महानुके ७ सहस्सारे ८ आणए ९ पाणए १० आरणे ११ अञ्चए १२ गेबेज्जविमाणे १३ अणुनरविमाणे १४ इंसिपटभारा १५ । मेसं पुरुषाणुपुरुवी । से कि तं पञ्छाणुपुरुवी ? पच्छाणुपुर्व्वा-ईसिपब्भारा १५ जाव सोहम्मे १ । सेत्तं पच्छाणुपुरुवी । से किं तं अणाणुपुन्नी ? अणाणुपुन्नी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए पन्नरसगच्छगयाए सेढीए अण्यमण्णन्मासो दुम्बूणो । सेत्तं अणाणुपुन्वी । अहवा उवणिहिया खेताणु-पुरुवी तिबिहा प्रकासा । तंजहा-पुरुवाणपुरुवी १ पच्छाणुपुरुवी २ अणाणुपुरुवी य ३ । से किं तं पुरवाणुपुरवी ? पुरुवाणुपुर्वी-एगपएसोगाढे, दुपएसोगाढे जाव दसपएसोगाढे जाव संख्रिजपएसोगाढे, असंख्रिजपएसोगाढे । सेतं पुन्नाणुपुन्नी । से कि तं पच्छाणुप्रवी ? पच्छाणुप्रवी-असंखिजपएसोगाढे, संखिजपएसोगाढे जाव एगपएसोगाढे । सेतं पच्छाणुपुरुवी । से कि तं अष्माणुपुरुवी ? अषाणुपुरुवी-एयाए चेव एगाइयाए एगुनरियाए असेखिजगन्छनयाए सेढीए अण्णमण्णब्सासी बुरुवृणी । सेतं अणाणुप्रव्वी । सेतं उविविहिया खेताणुप्रव्वी । सेतं खेलाणुप्रव्वी ॥ १०४ ॥ से कि तं कालाणपुरुवी ! कालाणपुरुवी दुविहा पण्णता । तंजहा-उवणिहिया य १ अजीविजिहिया य २ ॥ १०५ ॥ तस्य मं जा सा उविजिहिया सा ठप्पा । तस्य मं जा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पण्णता । तंजहा-णेगमववहाराणं १ संगहस्स व १ ॥ १०६ ॥ से कि तं भेगमवनद्वाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुच्यी ? पेगमवन-हाराणं अणोबणिहिया कालाणुपुरवी पंचविहा पण्णता । तंत्रहा-अद्भप्यपुरुवणया १ मंगसमुक्तिराणया २ मंगोबदंसणया ३ समोयारे ४ अणुगमे ५ ॥ १०७ ॥ से कि

अंबुद्दीवाओ खल्ल, निरंतरा सेसचा असंखड्मा । अञ्चलक कुसबदाविय, कॉच-कराभरणमाई य ॥ वायणंतरे एसा गाहा वि सन्भद्र ।

तं णेगमववहाराणं अट्टपयपस्वणया ? णेगसववहाराणं अट्टपयपस्वणया-तिसमय-हिंइए आणुपुच्यी जाद दससमयद्विइए आणुपुच्यी, संखिजनमयद्विइए आणुपुच्यी, असंखिजसमयहिहए आणुपुन्नी, एगसमयहिहए अणाणुपुन्नी, दुसमयहिहए अवनव्यए, तिसमयहिद्दयाओं आणुपुर्वीओ, एगममयहिद्याओं अणाणुपुर्वीओ, दुसमयहिङ्याई अवनव्वगाई । सेतं णेगमवबहाराणं अहुप्यपस्वणया । एयाए णं णेगमववहाराणं अद्वपयपस्त्रणयाए कि पञ्जीयणं १० णेगमववहाराणं अद्वपयपस्य-णयाए णेगमवबहाराणं भंगसमुक्तित्तणया कन्नइ ॥ १०८ ॥ से किं तं णेगमवब-हाराणं भंगसमुक्तित्तणया ? णेगमनबहाराणं भंगसमुक्तित्तणया-अत्थि आणुपुर्वी १ अत्थि अणाणुपुन्वी २ अत्थि अवसन्वए ३ एवं दन्वाणुपुन्वीगमेणं कालाणु-पुर्वाए वि ते चेव छल्तीसं भंगा भाणियव्या जाव सेतं णेगमववहाराणं भंगसमु-किनणया । एयाए णं णेगमववहाराणं भंगसमुक्तिनणयाए कि पओयणं ? एयाए णं जेगमन्बहाराणं भंगरामुक्कित्तणयाए जेगमवबहाराणं भंगोवदंसणया कमइ ॥ १०९ ॥ से कि तं गेगमवबहाराणं भंगोवदंसणया ? जेगमववहाराणं भंगोवदं-सणया-तिसमयद्विद्दए आणुपुन्वी १ एगसमयद्विद्दए अणाणुपुन्वी २ दुसमयद्विद्दए अवत्तव्यए ३ तिसमयद्विद्याओ आणुपुन्त्रीओ ४ एगसमयद्विद्याओ अणाणुपुन्त्रीओ ५ दुसमयद्विदयाई अवलव्यगाई ६ । अहवा तिसमयद्विद् य एगसमयद्विद् य आणुपुच्ची य अणाणुपुच्ची य एवं तहा दव्याणुपुच्चीगमेणं छन्वीसं मंगा भाणियन्या जाव सेतं णेरामववहाराणं भंगीवदंसणया ॥ १९० ॥ से कि तं समीयारे ? समीयारे-णगमननहाराणं आणुपुन्वीदन्नाई कहिं समोयरित ? किं आणुपुन्वीदन्वेहिं समो-यरंति ? अणाषुपुन्वीदन्वेहिं समीयरंति ? अवत्तन्वयदन्वेहिं समीयरंति ? एवं तिण्णि बि सद्वाणे समोबरंति इति भाणियव्वं । सेतं समोयारे ॥ १११ ॥ से किं तं अणुगमे? अणुगमे नवविहे पण्णते । तंजहा - बाहा - संतपयप्रवणयी ,दव्यपमाणं च खित्तै फुसणा य । काँछो य अर्तरं भाग, भावे अप्यार्वेहुं चेव ॥ १ ॥ गेगमचवहाराणं आणुपुन्वी-दब्बाइं कि अत्थि णरिष ? णियमा तिणिण वि अत्थि । णेगमनवहाराणं आणुपुन्वी-दब्बाई कि संखिजाई ? असंबिजाई ? अणंताई ? नो संखिजाई, नियमा असं-खिजाडं, नो अणंताई। एवं दुष्णि वि। पेगमववहाराणं आणुप्रवीदव्याई लोगस्स कि संखिजहमाने होजा ? असंखिजहमाने होजा ? संखेजेस मानेस होजा ? असं-बेजेसु भागेसु होजा ? सम्बरोए होजा ? एगं एवं पदुच संखिजहमाने वा होजा, असंखिजहमारो वा होजा, संखेजेसु भारोस वा होजा, असंखेजेस भारोस वा होजा, (य)देस्में या क्रीए होजा । जाणादव्याई पहुच नियमा सम्बलीए होजा । (आए-

संतरेण वा सन्त्रपुच्छासु होजा) एवं अणाणुपुव्वीद्व्याणि अवत्तव्वगदव्याणि वि जहा खेताणुपुरवीए। एवं फुसणा कालाणुपुरवीए वि तहा चेव भाणियव्या । णेगम-ववहाराणं आणुपुर्वीद्व्याई कालओ केविक्दं होति ? एगं दक्दं पहुत्र जहल्लेणं तिणिण समया, उक्कोसेणं असंखेजं कार्लं। णाणादव्याइं पहुच सुव्यद्धाः गेगमवयहा-राणं अणाणुपुब्वीदव्याई काळओ केविचरं होति ? एगं दब्वं पहुच अजहण्णमणु-कोसेणं एकं समयं, णाणादन्वाइं प्रच मन्वद्धा । अवसव्यगदन्वाणं पुच्छा ? एगं दव्वं पहुन्न अजहण्णमणुक्कोरेणं दो समया, णाणादव्वाइं पहुन्न सव्वद्धा । णेगम-वबहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणमंतरं कालओ केविंबरं होड् ? एगं दव्वं पहुन जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं दो समया। जाजादव्याइं पड्ड जिल्थ अंतरं। जैगमयवहाराणं अणाणुपुन्नीदव्वाणं अंतरं कालओ केविचरं होइ? एगं दव्वं पहुच जहण्णेणं दो समयं, उक्कोसंणं असंखेजं कालं। णाणादब्बाइं पटुच णत्य अंतरं। णेगमववहाराणं अवत्तव्वगद्व्याणं पुच्छा ? एगं दव्वं पुद्धच जहण्णेणं एगं समयं, उद्दोसेणं असंखेजं कालं । णाणादन्वाइं पहुच णात्य अंतरं । भागभावअण्यावहं चेव जहा खेनाणुपुन्वीए तहा भाणियव्वाइं जाव सेत्तं अणुगमे । सेशं णेगमववहाराणं अणोवणिहिया काला-णुप्रवी ॥ ११२ ॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुप्रवी ? संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुप्ववी पंचविहा पण्णता । तंजहा-श्रद्धप्यपम्बणया १ भंगसम्-क्रिसणया २ भंगोवदंसणया ३ समोयारे ४ अणुगमे ५ ॥ ११३ ॥ से कि तं संग-हस्स अद्वपयपस्वणया ? संगहस्स अद्वपयपस्वणया-एयाई पंच वि दाराई जहा खेताणुप्व्वीए संगहरस कालाणुप्व्वीए वि तहा भाणियव्वाणि । णवरं ठिड्-अभि-लावो जाब सेत्तं अणुगमे । सेतं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणपुरुवी ॥ ११४ ॥ से किं तं उनगिहिया कालागुपुन्नी १ उनगिहिया कालागुपुन्नी तिविहा पण्पत्ता । तंजहा-पुव्वाणुप्व्यी १ पच्छाणुप्व्यी २ अणाणुप्व्यी ३ । से कि तं पुव्वाणुप्व्यी? पुरुवाणपुरुवी-समए १ आवलिया २ आणापाण ३ थोवे ४ लवे ५ सहते ६ अहो-रते ७ पक्को ८ मासे ९ उक १० अवणे ११ संबच्छरे १२ जुरो १३ बाससए १४ वाससहस्से १५ वाससयसहस्से १६ पुट्यंगे १७ पुट्ये १८ तुर्हियंगे १९ तुहिए २० अडडंगे २१ अडडे २२ अववंगे २३ अववं २४ हहुयंगे २५ हहुए २६ उपालंगे २७ उपाले २८ पडमंगे २९ पडमे ३० पालिणंगे ३१ पालिणे ३२ अस्य-निडरंगे ३३ अत्यनिडरे ३४ अवसंगे ३५ अछए ३६ नडसंगे ३७ नडए ३८ पडयंगे ३९ पडए ४० च्लियंगे ४१ च्लिया ४२ सीसपहेलियंगे ४३ सीसपहेलिया ४४ पळिओवमे ४५ सागरोबमे ४६ ओसप्पिकी ४७ उत्सप्पिकी ४८ पोस्मरूपरि-

यहे ४९ अतीतदा ५० अणागयदा ५१ सव्बदा ५२ । सेतं पुट्याणुप्टवी । से किंतं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुच्वी-सव्वद्धा ५२ अणागयदा ५१ जाव समए १ । सेत्तं पच्छा-णुपुन्वी । से किं तं अणाणुपुन्वी ? अणाणुपुन्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुन्तरियाए अर्णतगन्त्रगयाएं सेदीएं अण्णसण्णन्भामी दृष्त्वृणी । सेतं अणाणुपुन्वी । अहवा उवणि-हिया कालाणुपुन्त्री तिविहा पण्णता । तंजहा-पुन्ताणुपुन्ती १ पच्छाणुपुन्ती २ अणाणु-पुर्वा ३ । से कि तं पुरवाणुपुरुवी ? पुरवाणुपुत्र्वी-एगसमयद्विद्दए, तुममयद्विद्दए, तिसमय-हिंइए जाव दससमयद्विइए, संखिजसमयद्विइए, असंखिजनमयद्विइए । सेत्तं पुरुवाणु-पुत्रवी । से कि तं पच्छाणुप्रवी ? पच्छाणुप्रवी-असंखिजसमयद्विहरः जाव एगसमयद्वि-इए । सेनं पच्छाणुप्वी । से कि तं अणाणुप्वी ? अणाणुप्वी-एवाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असंख्रिजागच्छगयाए सेढीए अष्णमण्याना दुरुवृणी । सेतं अणाणु-पुरवी । सेतं उवणिहिया कालाणुपुर्वी । सेतं कालाणुपुरवी ॥ ११५ ॥ से किं तं उक्तित्तणाणुपुव्वी ? उक्तित्तणाणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुर्वी २ अणाणुपुर्वी य ३ । से कि तं पुन्नाणुपुर्वी ? पुन्नाणुपुर्वी-उसभे १ अजिए २ संभवे ३ अभिणंदणे ४ तुमई ५ प्रसप्पेह ६ सुपासे ७ चंदप्पेह ८ मुविही ९ सीयले १० सेजांसे ११ वासुपूजे १२ विमले १३ अणंते १४ धम्मे १५ संती १६ कुंध १७ अरे १८ मही १९ मुणिसुव्वए २० णमी २१ अरिद्वणेमी २२ पासे २३ बद्धमाणे २४ । सेतं पुन्त्राणुपुन्वी । से किं तं पच्छाणुपुन्वी ? पच्छाणु-पुन्वी-बद्धमाणे २४ जाव उसमे १ । सेतं पच्छाणुपुन्वी । से कि तं अणाणुपुन्वी ? अणाणुपुब्बी-एयाए चेत्र एगाइयाए एगुत्तरियाए चडवीसगच्छगयाए सेढीए अण्ण-मण्णन्मासो दुरुवूणो । सेतं अणाणुपुन्वी । सेतं उक्किसणाणुपुन्वी ॥ ११६ ॥ से किं तं गणणाणुपुन्वी ? गणणाणुपुन्वी तिविहा पण्णता । तंत्रहा-पुन्वाणुपुन्वी १ पच्छा-णुपुब्बी २ अणाणुपुब्बी ३। से किं तं पुब्बाणुपुब्बी ? पुब्बाणुपुब्बी-एगो, दस, सयं, सहस्तं, दससहस्साई, सयसहस्तं, दससयसहस्साई, कोढी, दसकोडीओ, कोडीसयं, दमकोडिसयाई । सेतं पुव्याणुपुन्नी । से कि तं पच्छाणुपुन्नी ? पच्छाणुपुन्नी-दसकोडिसयाई जाव ए(क्रो)गो। सेतं पच्छाणुप्वी। से कि तं अणाणुपुन्वी ? अणाणुप्रवी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णन्मासो दुस्वूणो । सेतं अणाणुपुट्यी । सेसं गणणाणुपुट्यी श ११७॥ से कि तं संठाणाणुपुन्वी ? संठाणाणुपुन्वी तिविहा पण्णसा । तंत्रहा-पुरुबाणपुरुवी १ परकाणपुरुवी २ अपगणपुरुवी ३। से कि तं पुरुवाणपुरुवी १ पुरुषाणुप्या-समचलरंसे १ निमोहमंडछे २ साई ३ खुखे ४ वामणे ५ हुंडै ६ । ७० सत्ता०

सेतं पुन्ताणुपन्ती । से कि तं पच्छाणुपुन्ती १ प०-हुंडे ६ जाव ममचउरंसे १ । सेतं पच्छाणुपुन्नी । से कि तं अणाणुपुन्नी ! अणाणुपुन्नी-एसाए चेन एसाइसाए एगुनरियाए छनन्छगयाए सेढीए अण्णमण्णञ्मासी दुरुवूणी । सेनं अणाणुपुन्वी । सेतं संठाणाणुपुन्वी ॥ ११८॥ में किं तं सामायारीआणुप्न्वी ? सामायारीआ-णुप्यी तिबिहा पण्णामा । तंत्रहा-पुरवाणुप्य्वी १ पच्छाणुपुर्वी २ अणाणुपुर्वी ३ । से कि तं पुट्याणुप्त्वी ? पुट्याणुप्त्वी-गाहा-इच्छी-मिच्छी-तहकौरो, आवस्मिया य निसीहिया। आपुच्छणाँ य पिडपुच्छाँ, छंदणी य निमंतणा ॥ १॥ उवसंपर्धी य कारे, समायारी भने दमनिहा उ । सेतं पुम्बाणुपुन्वी । से कि तं पच्छाणुपुन्नी ? पन्छाणु-पुट्वी-उवसंपर्यी जाव इच्छागारी। सेनं पच्छाणुपुच्वी। से कि तं अणाणुपुर्वा? अणाणुपुरवी-एयाए चेव एगाइयाए एगृत्तरियाए दसगन्छमयाए सेढीए अण्णमण्ण-ब्सामो दुरुवूणो । सेतं अणाणुपुब्दी । **सेनं न्यामायारीआणुपुब्दी** ॥ ११९ ॥ से कि तं मानाणुप्रव्वी ? भानाणुप्रव्वी निविहा पण्णता । तंजहा -पुष्नाणुप्रव्वी १ पच्छाणुप्रव्वी २ अणागुपुरुवी ३ । से कि तं पुरुवाणुपुरुवी ? पुरुवागुपुरुवी - उदहए ९ उवसमीए २ खाइए ३ खओवसमिए ४ पारिणामिए ५ सिन्नवाडए ६ । सेनं पुन्वाणुपुन्वी । मे कि तं पच्छाणुप्रवी ? पच्छाणुप्रवी-मन्निवाइए ६ जाव उदहए १ । सेतं पच्छाणुपुरवी । से कि नं अणाणुपुच्वी ? अणाणुपुच्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुनारियाए छगच्छग-याए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुस्वूणो । सेतं अणाणुपुन्ती । सेतं भाषाणुपुट्यी । सेसं आणुपुन्त्री ॥ १२० ॥ 'आणुपुन्त्री' ति पयं समर्च ॥

से कि नं णामें ? णामे दसविहे पष्णते । तंजहा-एगणामे १ वुणामे २ तिणामे ३ वरणामे ४ पंचणामे ५ छणामे ६ सत्तथामे ७ अहुणामे ८ नवणामे ९ दसणामे १० ॥ १२९ ॥ से कि तं एगणामे १ एगणामे नगाहा-णामाणि जाणि काणि वि, दव्वाण गुणाण पज्जवाणं च । तेसि आगमनिहसे, 'नामं' ति पहविया सण्णा ॥ १ ॥ सेनं एगणामे ॥ १२२ ॥ से कि तं वुणामे १ दुणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-एगक्खरिए य १ अणेगक्खरिए य २ । से कि तं एगक्खरिए १ एगक्खरिए अणेगविहे पण्णते । तंजहा-ही, श्री, श्री, श्री । सेतं एगक्खरिए । से कि तं अणेगक्खरिए अणेगक्खरिए स्था, वीणा, लया, माला । सेतं अणेगक्खरिए । अहवा दुणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-जीवणामे य १ अश्रीवणामे य २ । से कि तं जीवणामे १ जीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-विवणामे य १ अश्रीवणामे य २ । से कि तं जीवणामे १ जीवणामे । से कि तं अजीव-णामे १ अश्रीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-देवदत्तो, जण्णवत्तो, विण्हुदत्तो, सोमदत्तो । सेतं जीवणामे । से कि तं अजीव-णामे १ अश्रीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-चढो, पढो, कढो, रहो । सेतं अजीव-णामे १ अश्रीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-चढो, पढो, कढो, रहो । सेतं अजीव-णामे १ अश्रीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-चढो, पढो, कढो, रहो । सेतं अजीव-णामे १ अश्रीवणामे अणेगविहे पण्णते । तंजहा-चढो, पढो, कढो, रहो । सेतं अजीव-

१ ही, २ सी (अवब्यंसे), ३ भी, ४ भी।

णामे । अहवा दुणामे द्विहे पण्णते । तंजहा-विसेतिए य १ अविसेतिए य २ । अवि-सेसिए-दर्व । विसेसिए-जीवदर्वे, अजीवदर्वे य । अविसेसिए-जीवद्वे । विसेसिए-णैरडए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-णेरइए । विसेसिए-रयणप्यहाए, सकरप्पहाए, बालुयप्पहाए, पंकप्पहाए, धूमण्यहाए, तमाए, तमतमाए। अविसेक्षिए-रयणप्यहापुर्हविणेरहए । विसेसिए-पजनाए य. अपजनाए य । एवं जाब अविसेसिए-तमतमापुद्रविणेरइए । विसेसिए-पजत्तए य, अपज्ञनए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोणए । विसेसिए-एगिदिए, बेइंदिए, तेइंदिए, चउरिंदिए, पंचिंदिए । अनिसेसिए-एगिंदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, बाउकाइए, बणस्सइकाइए । अविमेसिए-पुरुविकाइए । विसेसिए-सुरुमपुरुविकाइए य. बायरपुरुविकाइए य । अविसंसिए-सहमपुडविकाइए । विसेसिए-पजनयसुहमपुडविकाइए य, अपजन्तय-सुद्धमपुर्वारकाहरू २ । अधिसेसिए-बायरपुरविकाइर । विसेसिए-पजनयबायरपुर-विकाइए य, अपजात्तयबायरपुरविकाइए य । एवं आउकाइए, नेउकाइए, वाउकाइए, वणस्मइकाङ्कः, अविसेसियविसेसियपज्जनयअपज्जतयभेगृहिं भाषियव्दा । अविसेसिए-बेइंटिए। विसेसिए-पजानयवेइंदिए य. अपजातयवेइंदिए य। एवं तेइंदियचउरिंदिया वि भाणियञ्चा । अविमेसिए-पंचिदियतिरिक्खजोणिए । विसंसिए-जलयरपंचिदिय-तिरिक्स जोणिए, थलयरपंचिदियतिरिक्स जोणिए, सहयरपंचिदियतिरिक्स जोणिए। अविसेसिए-जलगरपंचिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-संमुच्छिमजलगरपंचिदिय-तिरिक्खजोणिए य. ग्रन्भवकंतियजलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-संम रिष्ठमजलयरपंचिदियतिरिक्तकोणिए । विसेसिए-पजन्यसंमु रिष्ठमजलयरपंचि-दियतिरिक्सजोणिए य, अपज्ञत्तयसंमुच्छिमजल्यरपंचिदियतिरिक्सजोणिए य । अविसेरितए-गब्भवद्यंतियजलयर्पंचिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजत्तयगब्स-वर्क्कतियजलयरपंचिदियतिरिक्खजोषिए य. अपजनयगन्भवकंतियजलयरपंचिदिय-तिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चउप्पय-थलयरपंचिदियतिरिक्सजोषिए य. परिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्सजोणिए य । अविसंसिए-च उप्पयक्त्रवर्पंचिदियतिरिक्स जोगिए । विसेसिए-सम्मुच्छिमचउ-प्ययथळगरपंचिदियतिरिक्खजोषिए य, गब्भवक्रंतियचउप्यथळगरपंचिदियतिरि-क्सजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छिमचचप्पययस्यरपंचिदियतिरिक्सजोणिए । विसेतिए-पजन्यसम्मुच्छिमचउप्पयकम्प्पिदिस्तिरिक्खजोणिए य, अपजन्य-सम्मु च्छिमच उप्पथवल्यरपंचिदियतिरिक्खजोषिए थ । अविसेसिए-गन्भवकंतिय-चउप्यस्थलसर्पंविदिसतिरिक्सकोणिए । विसेसिए-पञ्चत्तसग्रन्भवकंतिस्चउपस्थलः

यरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य. अपज्जनयग्ब्सवकृतियचउप्पयथस्यरपंचिदियति-रिक्खजोणिए य । अविसेसिए-परिमप्पधलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-उरपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य, अयपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए य । एए वि सम्मुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जतगा य गब्सवकंतिया वि पजत्तगा अपज्जतमा य भाणियव्या । अविसेसिए-खह्यरपंचिदियतिरिक्तःजोणिए । विसेसिए-सम्मुच्छिमखह्यरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य. गब्भवद्वतियवह्यरपंचिदियतिरिक्ख-जोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छिमखहर्यरपंचिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजन नयसम्मु च्छिमखह्यरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजनयसम्मुच्छिमखहयरपंचि-दियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गब्भवद्वतियखहयरपंचिदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजन्यमञ्जवद्वंतियखहयरपंचिदियतिरिक्खजोणिए य, अपजन्यगच्म-वकंतियसहयरपंचिदियतिरिक्सजोणिए य । अविसेसिए-मणुस्से । विसेसिए-सम्म-च्छिममणुस्से य, गब्भवश्रंतियमणुस्से य । अविसेसिग्-गम्मुच्छिममणुस्से । विसेसिग्-पजतगसम्मुच्छिममणुस्से य, अपजतगसम्मुच्छिममणुस्से य । अविसेसिए-गब्स-वकंतियमणुरसे । विसेतिए-कम्मभूमिओ य. अक्रमभूमिओ य. अंतरदीयओ य. संखिजवासाउय, असंखिजवासाउय, पजनापजनओ । अधिसेसिए-देवे । विसेसिए-भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए य । अविसेसिए-भवणवासी । विसेसिए-अमुरकुमारे १ नागकुमारे २ नुवण्णकुमारे ३ विज्ञुकुमारे ४ अग्गिकुमारे ५ दीवकुमारे ६ उदहिकुमारे ७ दिसाकुमारे ८ वाउकुमारे ९ थिनयकुमारे १०। सञ्बेसि पि अविसेसियविसेसियपजनगअपजनगभेया भाणियञ्बा । अविसेसिए-वाणमंतरे । विसेसिए-पिसाए १ भूए २ जक्ते ३ रक्त्ससे ४ किण्णरे ५ किपुरिसे ६ महोर्गे ७ गंबव्वे ८ । एएसि पि अविसेसियविसेसियपज्ञत्तगअपज्जनगभेया भाणियव्या । अविसेसिए-जोइसिए । विसेसिए-चंदे १ सुरे २ गहुगणे ३ नक्खने ४ ताराहवे ५ । एएसि पि अविसेसियविसेसियपज्जत्तयभया भाषियव्या । अविसेसिए-वेमाणिए । विसेसिए-कप्पोवने य, कप्पातीतए य । अविसेसिए-कप्पोर्चे । विसेसिए-सोहम्मए १ ईसाणए २ सणंक्रमारए ३ माहिंदए ४ वंभलोयए ५ लंतवए ६ महासुक्षए ७ सहस्सारए ८ आणयए ९ पाणवए १० आरणए ११ अबुयए १२ । एएसि अविसेसियविसेसियअपजलगपजलगमेया भाष-यव्या । अविसेसिए-कप्पातीतए । विसेसिए-नेवेज्रण य, अणुत्तरीववाइए य । सविसेसिए-गेवेजए । विसेसिए-हेद्विमगेवेजए १ मजिसमगेवेजए २ उवरिमगे-वेळए ३ । अविसेसिए-हेट्टिमगेवेळए । विसेसिए-हेट्टिमहेट्टिमगेवेळए १ हेट्टिसम-

जिसमगेवेजए २ हेद्विमउवरिसगेवेजए ३ । अविसेसिए-मज्ज्ञिमगेवंजए । विसे-सिए-मज्झिमहेद्रिमगेवेजए १ मज्झिमगज्झमगेवेजए २ मज्झिमउवरिसगेवेजए ३ । अविसेसिए-उवरिमगेवंजाए । विसेसिए-उवरिमहेद्विमगेवेजाए १ उवरिममज्ज्ञिः मंगेर्वजाए २ उत्तरिमस्वतिमगेवेजाए ३। एएसि सन्वेसि अविसेसियबिसेसियअपजा-त्तगपजन्तगमेया भाणियन्या । अविसेसिए-अणुत्तरोववाइए । विसेसिए-विजयए १ वेजयंतए २ जयंतए ३ अपराजियए ४ सम्बद्धसिद्धए य ५। एएसि वि सम्बेसि अविसेसियविसेसियअपजनगपजनगमेया भाषियव्या । अविसेसिए-अजीवदच्वे । विमेसिए-धम्मत्थिकाए १ अधम्मत्थिकाए २ आगासत्थिकाए ३ पोगगलत्थिकाए ४ अद्धाममए ५ । अविसेसिए-पोम्गलत्थिकाए । विमेसिए-परमाणुपोम्गळे, दुपरुसिए, निपण्सिए जाव अणंतपएसिए च । सेसं दुणामे ॥ १२३ ॥ से किं तं तिणामे ? तिणामे तिबिहे पण्णते । तंजहा-दव्यणामे १ गुणणामे २ पज्जवणामे य ३ । से कि तं दव्यणामे ? दव्यणामे छव्यिष्ठे पण्णते । तंजहा-धम्मत्थिकाए १ अधम्मत्थिकाए २ आगास त्थिकाए ३ जीवत्थिकाए ४ पुग्गलत्थिकाए ५ अदासमए य ६ । सेतं दव्यणासे । से किं तं गुणजासे ? गुणजासे पंचिवहे पण्यते । तंजहा-वष्णजासे ९ गंधणामे २ रसणामे ३ फासणामे ४ संठाणणामे ५। से किं तं वण्णणामे 2 वश्यणामे पंचविष्ठे पष्णते । तंजहा-कालवण्णणामे १ नीलवण्णणामे २ लोहियवण्ण-णामे ३ हालिह्बण्णणामे ४ सक्किल्वण्णणामे ५ । सेतं वण्णणामे । से कि तं गंधणामे ? गंधणामे दुविहे पण्णते । तंजहा-सुरिमगंधणामे य १ दुरिमगंधणामे य २ । सेनं गंधणासे । से कि तंरसणासे ! रसणासे पंचित्रहे पण्णते । तंजहा-तित्तरस-णामे १ बद्धवरसणामे २ कसायरसणामे ३ अंबिलरसणामे ४ महररसणामे य ५ । सेतं रसणासे । से किंतं फासणासे ? फासणासे अट्टविहे पण्णते । तंजहा-कक्खडफासणासे १ मुख्यकासणामे २ गुरुयकासणामे ३ लहुयकासणामे ४ सीयकासणामे ५ उतिणकास-गामे ६ विद्यानसणामे ७ व्हक्सकासणामे य ८ । सेतं कासणामे । से कि तं संठाण-कामे ? संठाककासे पंचविहे पकारा । तंजहा-परिमंडलसंठाककासे १ वहसंठाककासे २ तंससंठाणणामे १ चडरंससंठाणणामे ४ आययसंठाणणामे ५ । सेतं संठाणणामे । सेतं गुणणामे । से कि तं पञ्चवणामे ? पञ्चवणामे अणेगविद्दे पण्णत्ते । तंजहा-एगगुण-कालए, दुगुणकालए, तिगुणकालए जाव दसगुणकालए, संख्रिजगुणकालए, असंखिज-गुणकालप्, अणंतगुणकालप् । एवं नीलकोहियहालिहसुक्तिहा नि भाणियव्या । एगगुण-सुर्भिष्ते, दुगुणसुरभिगंधे, तिगुणसुरभिगंधे जाव अणंतगुणसुरभिगंधे । एवं दुरमि-गंधी वि माणियन्तो । एगगुणतिरा जाव अणंतगुणतिरा । एवं बहुगकसायसंविल-

महरा वि भाणियव्या । एगगुणकक्ताउँ जाव अणंतगुणकक्ताउँ । एवं मखयगस्य-लहयसीयउसिणणिद्धलक्का वि भाणियव्वा । सेतं पज्जवणामे । गाहरको-तं पुष णामं तिविहं, इत्थी पुरिसं णपुंसगं चेव । एएसिं तिण्हं पि(य), अंतम्मि य पहवणं वोच्छं ॥ १ ॥ तस्थ परिसस्स अंता. आ ई ऊ ओ हवंति चतारि । ते चेव इत्थि-याओ. इवंति ओकारपरिहीणा ॥ २ ॥ अंतिय इंतिय उंतिय. अंनाउ णपंसगस्स बोद्धव्या । एएसि तिण्हं पि य. बोच्छामि निदंसणे एतो ॥ ३ ॥ आगारंतो 'राया'. ईगारंतो 'गिरी' य 'सिहरी' य । ऊगारंतो 'विण्ह्', 'दुसं।' य अंता उ पुरिसाणं ॥ ४ ॥ आगारंता 'माला', ईगारंता 'सिरी' य 'लच्छी' य । ऊगारंता 'जंबू', 'वह' य अंताउ इत्बीणं ॥ ५ ॥ अंकारंतं 'घन्नं', इंकारंतं नपुंसगं 'अत्थि' । उंकारं-तो 'पीलं', 'महं' च अंता णपुंसाणं ॥ ६ ॥ सेन्तं तिषामे ॥ १२४ ॥ से कि तं चउणामें ! चउणामें चउव्विहें पण्णते । तंजहा-आगमेणं १ लोवेणं २ पयद्ग् ३ विगारेणं ४। से किं तं आगमेणं ? आगमेणं-पद्मीति, पैयांसि, कुँण्डानि। सेतं आगमेणं। से कि तं लोवेणं? लोवेणं-ते अत्र≕तेऽत्र, पटो अत्र=पटोऽत्र, घटो अत्र=घटोऽत्र । सेमं लोवेणं । से कि तं पगईए ? पगईए-अमी एती, पट्ट इमी, शाले एते, माले इँमे । सेत्तं पगईए । से किं तं विगारणं ? विगारणं-र्दण्डस्य+अग्रं=दंडाग्रं. सा+आगता=माऽऽगता, देथि+इदं=द्यीदं, नैदी+इह=नश्रह, मेथु+उदकं=मध्-दकं, वर्धे+ऊहः=वश्रृहः। सेनं विगारेणं । सेनं चउणासे ॥ १२५ ॥ से कि तं पंचणामे १ पंचणामे पंचित्रहे पण्णते । तंजहा-नैतिकं १ नैपातिकं २ आख्यातिकं ३ औपसर्गिकं ४ मिश्रम् ५ । 'अश्व' इति नामिकं, 'खल्ल' इति नैपातिकं, 'धावति' इति आख्यातिकं, 'परि' इस्वीपसर्गिकं, 'संबत' इति मिश्रम् । स्तेशः पंचाणासे ॥ १२६ ॥ से कि तं छण्यामें १ छण्यामें छन्त्रिहे पण्यते । तंजहा-उदश्य १ उनसमिए २ खह्ए ३ खबोबसमिए ४ पारिणामिए ५ सिबाइए ६ । से कि तं उदहए ? उदहए दुविहे पण्णेते । तंत्रहा-उदहर् य १ उदयनिष्पण्णे य २ । से कि तं उदहर् १ उदहर्-

१ पोम्माई, २ प्याई, १ कुंडाई। ४ ते-। अत्य=तेऽत्य, ५ पडो-। अत्य=पडोऽत्य, ६ घडो-। अत्य=घडोऽत्य। ७ सक्यउदाहरणाइमिमाई, अद्यमगहीए-वे-१६वा= वेइंदिया, एवमाइ। ८ 'सक्कए' पाइए-इंड-। अरण्यं=ईडारण्यं एवमाइ, ९ सा-। अग्या=साऽऽगया, १० दिहे-१इदं=इहिदं, ११ नई-१इट=नईड, १२ महु-१उदं= महूद्गं, १३ बहू-इहो=यहूहो। १४ पामियं १ णेवाइयं २ अवस्थाह्यं ३ जोवस-। विगयं ४ मिस्सं ५। 'आस' ति णामियं, 'साह्य' ति जेवाइयं, 'पावर' ति अवस्थाह्यं, 'परि' ति जोवसविगयं, 'संसय' ति मिस्सं।

अद्रण्हं कम्मपयडीणं उदएणं । मेत्तं उदइए । से कि नं उदयनिष्फक्के ? उदयनिष्फक्के दुबिहे पण्णेते । तंजहा-जीवोदयनिष्फेंशे य १ अजीवोदयनिष्फेंशे य २ । सं दिः तं जीवोदयनिष्फन्ने ? जीवोदयनिष्फन्ने अणेगविद्वे पण्णते । तंजहा-णेरइए, तिरिक्ख-जोणिए, मणुस्से, देवे, पुडविकाइए जाद तसकाइए, कोहकसाई जाव लोहकमाई, इत्बीवेयए, परिभवेयए, णपुंसगयेयए, क्रम्हरुसे जाव सुक्ररुसे, मिच्छादिद्वी, सम्म-दिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी, अनिरए, असण्णी, अण्णाणी, आहारए, छउमत्थे, सजोगी, संमारत्ये. असिद्धे । सेतं जीवोदयनिष्फेन्ने । से कि तं अजीवोदयनिष्फेन्ने ? अजी-वोदयनिष्पन्न अणेगविहं पण्णेन । तंजहा-उरालियं वा सरीरं, उरालियसरीरपओग-परिणामियं वा दब्वं, वेउब्वियं त्रा सरीरं, वेउब्वियसरीरफ्ओगपरिणामियं वा दब्वं, एवं आहारगं सरीरं तेयगं सरीरं कम्मगसरीरं च भाषियव्वं । पञ्जोगपरिणामिए वण्णे, गंधे, रसं. फासं। संतं अजीवोदयनिएकन्ने। सेतं उदयनिएकन्ने। सेतं उददर। से कि तं उवसमिए ? उवसमिए दुविहे पण्णते । तंजहा-उवसमे य १ उवसमिनियकणी य २ । से कि तं उवसमें ? उवसमें मोहणिजस्स कम्मस्य उवसमेणं । सेतं उवसमे । से कि तं उवसमनिष्पण्णे ? उवसमनिष्पण्णे अणेगविहे पण्णने । तंत्रहा-उवसंनकोहे जाव उवसंतकोभे. उवसंतपेजे. उवसंतदोसे. उवसंतदंसणमोहणिजे, उवसंतचिरत-मोहणिजे, उवसामिया सम्मत्तलदी, उवसामिया चरित्तलदी, उवसंतकसायछउमत्थ-वीयरागे । सेत्तं उवसमिविष्कण्णे । सेत्तं उवसमिए । से किं तं सहए ! खहए दुविहे यण्णते । तंजहा-सङ्ग् य १ स्वयनिष्कण्णे य २ । से कि तं सङ्ग् ? सङ्ग्-अंद्रण्डं कम्मप्यक्रीणं खएणं । रीतं खड्ए । से किं तं खयनिष्फण्णे ? खयनिष्फण्णे अणेगविहे पण्णते । तंत्रहा-उप्पण्णणाणदंसणघरे, अरहा, जिणे, केवली; खीणआभिणिबोहिय-णाणावर्णे, सीणमुग्रणाणावरणे, सीणओहिणाणावरणे, सीणमणपञ्चवणाणावरणे, खीणकेवलणाणावरणे, अणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, णाणावरणिजकम्मविप्प-मुके; फेनकदंसी, सम्बदंसी, खीणनिहे, खीणनिहानिहे, खीणपयले, खीणपयलापयले, खीणबीणिक्दी, खीणचक्खुदंसणावरणे, खीणअचक्खुदंसणावरणे, खीणओहिदंसणा-वरणे, खीणकेवलवंसणावरणे, क्षणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, दरिसणावरणिज-क्रमविष्यसक्तः सीनताक्षवेयणिके. खीणअताबावेयणिके, अवेयणे, निज्वेयणे, खीण-नेयणे, सुमासुमनेयनिकक्रमनिष्पसुकेः सीचकोहे नाव खीणलोहे, खीणपेजे, सीण-होते. जीवरंसप्रमोहिषके, चीपचरित्तमोहिषके, अमोहे, तिस्मोहे, खीपमोहे, मोहकिजदम्मकिणमुद्धेः जीवणेरद्यकारुष्, जीवविष्टिककोवियारम्, जीवमञ् स्कारम्, खीनदेवारम्, अकारम्, निराहण्, खीणारुष्, आउक्तम्मविष्यमुक्केः, गदकार्-

सरीरंगोवंगवंधणसंघायणसंघयणसंठाणअणेगबॉदिविंदसंघायविष्पमुक्के. खीणसुम्णामे. खीणअसुभणामे, अणामे, निण्णामे, खीणणामे, मुभासुभणामकम्मविप्यमुद्धेः खीणः उचागोए, खीणणीयागोए, अगोए, निग्गोए, खीणगोए, उचणीयगोत्तकमविष्यमुके; सीणदार्षंतराए, खीणलाभंतराए, खीणभोगंतराए, खीणउवभोगंनराए, खीणवीरि-यंतराए, अणंतराए, निरंतराए, खीणंतराए, अंतरायकम्मविष्पमुकेः सिद्धे, बुद्धे, मुत्ते, परिणिव्यूए, अंतगडे, सव्यदुक्खपहीणे । सेनं स्वयनिष्माणे । सेनं स्वइए । से कि नं स्त्रओवसमिए ? स्त्रओवसमिए दुविहे पण्णते । तंजहा-स्त्रओवसमे य १ स्त्रओ-क्समनिष्फणे य २ । से कि तं खओवसमे ? खओवसमे-चउण्हं चाइकम्माणं खओ-वसमेणं, तंजहा-णाणावरणिजस्स १ दंसणावरणिजस्स २ मोहणिजस्स ३ अंत-रायस्य खओवसमेणं ४ । सेत्तं खओवसमे । से किं तं खओवसमनिष्फणो ! खओ-वसमनिष्करणे अजेनविहे पण्णते । तंजहा-खओवसमिया आभिणिबोहियणाणसङी जाव लओबरामिया मणपज्जवणाणलदी, लओबसामिया मङ्भण्णाणलद्धी, लओबस-मिया नुयअण्णाणलद्धी, खओवसमिया विभेगणाणलद्धी, खओवसमिया चक्खदंसण-लद्धी, लओवसमिया अचक्खुदंसणलद्धी, लओवसमिया ओहिदंसणलद्धी, एवं सम्म दंमणलदो मिन्छादंसणलद्धी सम्मामेन्छादंसणलद्धी, खओवसमिया सामाइयचरित्त-लदी, एवं छेदोवहावणलद्धी परिहारविद्यदियलदी मुहमसंपरायचरितलदी, एवं चरिताचरित्तलदी, खओवसमिया दाणलदी, एवं लाभलदी भोगलदी उवभोगलदी, स्रओवसमिया वीरियलदी, एवं पंडियवीरियलदी बालवीरियलदी बालपंडियवीरि-यलदी, खओवसमिया सोइंदियलदी जाव फासिंदियलदी, खओवसमिए आयारेग-धरे. एवं सुयगडंगधरे ठाणंगधरे समदायंगधरे विवाहपण्णात्तिघरे णागाधम्मक्हाधरे उवासगढसा० अंतगडदसा० अणुत्तरीववाइयदसा० पण्डावागरणधरे विवाग-सुयधरे, सओवसमिए दिद्विवायधरे, सओवसमिए पवपुरवी जाव चछहसपुरवी, सओवसमिए गणी, सओवसमिए वायए । सेतं सओवसमिनिप्पणों । सेतं सओव-समिए । से कि तं पारिणामिए ? पारिणामिए दुविहे पण्णते । तंत्रहा-साहपारि-णामिए य १ अणाइपारिणामिए य २ । से कि तं साइपारिणामिए ! साइपारिणामिए अणेगविहे पणारे । तंत्रहा-गाहर-जुण्यसुरा जुणागुलो, जुण्याचयं जुण्यतंतुला चेव । अन्या य अन्यस्त्रखा, सण्या गंबन्वणगरा व ॥ १ ॥ उद्यावाया, दिसादाहा, गिजयं, विज्, जिन्नाया, जुनया, जनसादिता, धूमिया, महिया, रउन्नाया, खंदी-बरागा, स्रोवरागा, चंदपरिवेसा, स्रपरिवेसा, पिक्वंदा, पिक्सूरा, इंदधण्र, उदगमच्छा, कविहसिया, अमोहा, बासा, बासघरा, गामा, णयरा, घरा, पण्वया,

वायाला, भवणा, निरया-रयणपहा, सक्करपहा, वालुयपहा, पंकप्पहा, ध्रमपहा, तमप्पहा, तमतमप्पहा, सोहम्मे जाव अश्रुए, गेवेजे, अणुत्तरे, ईसिप्पब्सारा, परमाणुपोग्गले, दुपएसिए जाव अर्णतपएसिए । सेत्तं साइपारिणामिए । से किं तं अणाइपारिणामिए ? अणाइपारिणामिए-धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्य काए, जीवन्त्रिकाए, पुरगलन्धिकाए, अद्धासमए, लोए, अलोए, भवसिद्धिया, अभव-सिद्धिया । सेत्तं अणाइपारिणामिए । सेत्तं पारिणामिए । से किं तं सिन्नवाइए ? सिन्दाइए-एएसिं चेन उदइयउनसमियखड्यखओनसमियपारिणामियाणं भावाणं दुगमंजोएणं तिगसंजोएणं चउकसंजोएणं पंचगसंजोएणं जे निष्फजंति सन्वे ते मानवाइए नामे । तत्थ णं दस दुयसंजोगा, दस तियसंजोगा, पंच चउक्संजोगा, एगे पंचकसंजीगे । तत्य णं जे ते दस दुगसंजीगा ते णं इमे-अत्थि णामे उदइय-उनसमनिष्फण्णे १ अस्यि णामे उदइयखाइर्गानष्फणे २ अस्य जामे उदइयखओ-वसर्मानप्पण्णे ३ अत्य णामे उदद्यपारिणामियनिष्पण्णे ४ अस्य गामे उव-समियखयनिष्पण्णे ५ अत्य णामे उचयमियखओवसमनिष्पण्णे ६ अत्य णामे उनसमियपारिणामियनिष्कृण्णे ७ अस्यि णामे खड्यस्त्रओवसमनिष्कृण्णे ८ अस्यि णामे खडयपरिणामियनिष्फणे ९ अत्यि णामे खओवसमियपरिणामियनिष्फणे १०। कबरे से णामे उदश्यउनसमनिष्फणो ? उदहए ति मणुस्सं. उवसंता कसाया. एस णं से णामे उदइयजनसमनिष्फण्णे । कयरे से णामे उदइयस्वयनिष्फण्णे ? उदहए ति मणुस्से. खड्यं सम्मत्तं, एम णं सं पामे उदडयखयनिष्याणे । कयरे मे णामे उदइयसभोवसर्मानप्राण्णे ? उदइए ति मणुस्से. सओवसमियाई इंदियाई, एस णं से णामे उदडयखओक्समनिप्फण्णे । कयरे से णामें उदइयपारिणामियनिष्फण्णे ? उदइए ति मणुस्से, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइयपारिणामियनिष्पण्ये । कयरे से जामे उवसमियखयनिष्फणे ? उवसंता कसाया, खड्यं सम्मतं, एस णं से णामे उत्तसमियस्वयनिष्कण्णे । कयरे से णामे उत्तसमियस्वभोवसमनिष्कण्णे ? उत्-संता कसाया, खओषसमियाई इंदियाई, एस णं से णामे उवसमियखओवसमिन-प्फणो । क्यरे से गामे उबसमियपारिणामियनिष्फणो ? उवसंता कसाया, पारिणा-मिए जीवे. एस णं से गामे उबसमियपारिणामियनिष्पाणे । कयरे से गामे खड्य-खओबसमनिप्पाणे १ सहयं सम्मतं. खओबसमियाः इंदियाः. एस णं से णामे बाइबबाओवसमिनपाणी । कयरे से गामे बाइबपारिणामियनिपाणी ? साइबं सम्मत्तं. पारिणामिए जीवे, एस मं से णामे साइयपारिणामियनिप्तामी । कयरे से णामे क्रकोक्स सिरुपारिण सिर्यान फण्णे ? खाओवसंनियां इंदियां , पारिणामिए जीने, एस

णं से णामे खओबसमियपारिणामियनिष्कण्णे । तत्थ णं जे ते दस तिगसंजीगा ते णं इमे-अत्थि णामे उदइयउक्समियखयनिष्मणो १ अत्थि णामे उदइयउक्समियख-ओवसम्मिनिष्मणो २ अतिय णामे उद्दश्यउवसमियपारिणामियनिष्मणो ३ अस्य णामे उदइयखइयखओवसमनिष्फणो ४ अत्यि णामे उद्दयखद्यपारिणामियनिष्फणो ५ अत्थि णामे उद्दर्यम्बओवसमियपारिणामियनिष्कणो ६ अत्थि णामे उवसमियम् इयस्त्रओवसमनिष्फण्णे ७ अत्य णामे उबममियमहस्यपारिणामियनिष्फण्णे ८ अत्य णामे उत्तमसियस्त्रओवमसियपारिणासियनिएरुण्णे ९ अत्थि णामे खड्यखओवससिय-पारिणामियनिष्कण्णे १०। कयरे से णामे उदहयउनसमियलयनिष्कण्णे १ उदहए ति मणस्ते, उवसंता कसाया, खड्यं सम्मत्तं, एस णं से णामे उद्दरयउवसमियख-यनिष्कणो । कयरे से णामे उद्दूर्यउवसमियसओवसमनिष्कणो ! उद्दूर् ति मणसं, उबसंता कसाया, खओवसमियाई इंदियाई, एस ण से णामे उदहयउदस-मियखओवसमनिष्कणो । क्यरे से णामे उदय उनसमियपारिणामियनिष्कणो ? उद्देश ति मणस्से, उवसंता कसाया, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उद्देश-उवसमियपारिणामियनिष्कण्णे । कयरे से णामे उदद्यखद्यख्ओशसमनिष्कणी ! उदहए कि मणस्ते. खड्यं सम्मक्तं. खओवसमियाः इंदियाः. एस णं से णामे उदइयखड्यस्अवसमनिष्फण्णे । कयरे से णामे उदइयस्वडयपारिणामियनिष्फण्णे ? उदइए ति मण्रस्य. खड्यं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उद्दश्यखडू-यपारिणामियनिष्कणो । क्यरे से णामे उदइयखओवसमियपारिणामियनिष्कणो ? उदइए ति स्पुस्से, खओवसमियाइं इंदिबाई, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदइयखओवसमियपारिणामियनिष्फणो । क्यरे से णामे उवसमियखडयखओबसमनि-प्पम्मे ? उबसंता कसाया. खह्यं सम्मत्तं, खओवसमियाई इंदियाई. एस णं से णामे उदसमियसहयस्वयोवसमनिष्कणो । कयरे से णामे उदसमियसहयपारिणामि-यनिष्फण्णे ? उवसंता कसाया, खद्दयं सम्मत्तं, पारिणामिए खीवे. एस णं से णामे उवसमिब क्षत्रयपारिणामियनि पराणे । कयरे से गामे उवसमिब क्षत्रोवसमियपारिणाः मियनिष्फण्ने ? उवसंता कसाया, खओवसमियाई इंदियाई, पारिणामिए जीवे, एस णं से जामे उक्समियसओवसमियपारिणामियनिष्याणे । क्यरे से जामे सहस्रस्योः वसमिनपारिणामियविष्कणे ? खड्मं सम्मतं, खखोबसमियाई इंडियाई, पारिणामिय जीवे. एस णं से धाने वहमस्त्रजोवसमिनपारिणामिननिप्पाणे । तत्व वं से हे पंच चउक्रमंजोगा ते णं इमे-अत्य यामे उद्दूब्यउद्यमिग्यह्मक्रोनस्मविक्ताचे १ अत्य वामे उद्देश्यक्तभियसद्भारामिशामिश्रानिष्याणे र श्रात्व वामे उत्तर उन्समियस्त्रजोवसमियपारिणामियनिष्काणी ३ अत्थि णामे उदइयसङ्ग्रस्त्रओवसः मियपारिणामियनिष्पण्णे ४ अतिथ णामे उवसमियखड्यस्त्रओवसमियपारिणामियनि-प्प्रण्णे ५ । कयरे मं णामे उदस्यउवसमियखड्यखओवसमनिष्प्रण्णे ? उदहए ति मगुरसे, उवसंता कसाया, खड्यं सम्मतं, खओवसमियाई इंदियाई, एस णं में णामे उदद्य उवसमियखद्य खेवसमिन प्राणी । कयरे मे णामे उदद्य उवसमियखद्यपा-रिणामियनिष्फण्णे ? उदइए ति मणुस्से, उवसंता कपाया, खड्यं सम्मत्तं, पारिणा-मिए जीवे, एस णं से णामे उदहय उवसमियन्त्रहयपारिणामियनिष्कण्णे । कयरे से णामे उद्दर्यउवसमियखओवनमियपारिणामियनिष्कणो ? उदहए ति मणुस्से, उवसंता कमाया, राओवसामयाई इंदियाई, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उदह्यउवस-मियस्वओवसमियपारिणामियनिष्पणो । कयरे से णामे उदहयखड्यस्वओवसमिय-पारिणामियनिष्कण्णे ! उदइए ति मणुरुमे, खड्यं सम्मत्तं, खओवसमियाई इंदियाई, पारिणामिए जीवे. एस णं से णामे उदद्ययसहयस्त्रभोवसमियपारिणामियनिष्फणी । क्यरे से गामे उवसमियखड्यखओवसमियपारिणामियनिष्फणो ! उवसंता कसाया. खड्बं सम्मतं, खओवसमियाइं इंदियाई, पारिणामिए जीवे, एस णं से णामे उवसमिय-सह्यस्तओवसमियपारिणामियनिष्यणं । तत्थ णं जे से एक्के पंचगसंजीए से णं इमे-अत्थि णामे उद्द्यउवसमियखङ्गखञाक्समियपारिणामियणिपाणे । कयरे से णामे उद्ह्यउवसमियखड्यस्तओवसमियपारिण।मियणिप्फण्णे १ उद्हए ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खड्यं सम्मत्तं, खओवसमियाई इंदियाई, पारिणामिए जीवे. एस णं से णामे उद्द्यउनसमियखद्यखओनसमियपारिणामियणिप्पण्णे । सेतं सिनवाइए । सेनं छण्णामे ॥ १२०॥ से किं तं सत्तणामे ? सत्तणामे सत्तमरा पण्णता । तंजहा-गरहा-सजे रिसहे गंधारे, मजिसमे पंचमे सरे । धे(रे)वए चेव नेसाए, सरा सत्त वियाहिया ॥ १ ॥ एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरद्वाणा पण्णता । तंजहा-गाहाओ सर्वं न अमाजीहाए, उरेण रिसहं सरं । कंद्रमाएण गंधारं, मज्झजीहाएँ मिज्समं ॥ १ ॥ नासाए पंत्रमं बूया, दंतोट्टेण य वेवयं । भमुहक्खेवेण णेसायं, सरद्वाणा वियाहिया ॥ २ ॥ सत्तसरा जीवणित्सिया पण्णता । तंत्रहा-गाहा-सज्ब रषह मकरो, बुकुडो रिसमें भरं । ईसो रवह गंबारं, मज्ज्ञिमं च गवेलगा ॥ १ ॥ अह दुसमर्थमवे काके, कोइका पंचमं सर । छट्टं व सारसा कुंचा, नेसाय सत्तमं सकते १। २ ॥ सत्तसरा अवीयमिसिसा पण्यता । तंजहा-सजं रवह सुयंगी, गोसुही रिसर्व सरं । संस्को रवद गंधारं, सिकामं पुण प्राहरी ॥ १ ॥ चटकरणपहट्टाणा, मोहिया कंबमं सरं । आर्डवरी रेवडमं, महाभेरी य सत्तमं ॥ २ ॥ एएसि णं सराण्डं

सराणं सत्त सरलक्षणा पण्णता । तंजहा-गाहाखो-सञ्जणं लहई वित्ति, करं च न विणस्सद । गावो पुत्ता य मित्ता य, नारीणं होइ वहहो ॥ १ ॥ रिसहेण उ एस-(पसे)जं, सेणावचं धणाणि य । वत्थगंधमलंकारं, इत्थिओ सग्रणाणि य ॥ २ ॥ गंधारे गीयजुत्तिण्णा, वज्जवित्ती कलाहिया। इवंति कहणो घण्णा, जे अण्णे सत्थ-पारगा ॥ ३ ॥ मज्ज्ञिमसरमंता उ. हवंति सहजीविणो । खायई पियई देई, मज्जिमसरमस्सिओ ॥ ४ ॥ पंचमसरमंता उ, हवंति पुहवीपई । मृरा संगहकतारो, अणेगगणनायमा ॥ ५ ॥ रेवयसरमंता उ. हवंति दुहजीविणो । साउणिया वाउ-रिया, सोयरिया य मुहिया ॥ ६ ॥ विसायसरमंता उ, होति कलहकार्गा । जंदा-चरी लेहवाहा, हिंडगा भारवाहगा ॥ ७ ॥ एएसि णं समण्हं मराणं तओ गामा पण्णता । तंजहा-सज्जगामे १ मज्जिमगामे २ गंधारगामे ३ । मज्जगामस्य णं सत्त मुच्छणाओ पण्णमाओ । नंजहा-गाहा-मैग्गी कोरविया हरिया, रथेणी य भारकंता य । छट्टी य सार्रेसी नाम, सुद्धसर्जी य सत्तमा ॥ १ ॥ मज्झिमगामस्स णं सत्त भुच्छणाओ पण्णताओ । तंजहा-उत्तरमंदी रयैणी, उत्तरी उत्तरीसमा । समोकंती य सोनीरी, अभिक्बी होइ सत्तमा ॥ १ ॥ गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णताओ । नंजहा-नंदी य खुड़िया पूरिमा य, चउत्थी य सुद्धगंधारा । उत्तरगंधारा वि य, सा पंचमिया इवइ मुच्छा ॥ १ ॥ सुद्धुत्तरमायामा, सा छद्वी सव्वक्षो य णायव्या । अह उत्तरायया कोडिमा य, सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥ सत्तसरा कओ हवंति ?, गीयस्स का हवइ जोणी १। कइसमया ओसासा १, कह वा गीयस्स आगारा १॥ १॥ सनसरा नाभीओ, हवंति गीयं च रहयजोणी । पायसमा ऊसासा, तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥ २ ॥ आइमर आरभंता, समुन्यहंता य मञ्ज्ञयारिम्म । अत्रसाणे उज्झंता, तिण्णि य गीयस्य आगारा॥ ३ ॥ छहोसे अद्भुगुणे, तिण्णि य वित्ताई हो य मणिईओ । जो नाही सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झिम ॥ ४ ॥ मीयं ट्रेयं उप्पिन्छं, उत्तालं च कमसो सुणेयव्यं । कागस्सरमणुर्णासं, छहोसा होति गेयस्स ॥ ५ ॥ पुण्णं रैसं च कैलंकियं च, वैसं च तहेवसविचेहं । महुरं सम सुर्क्षिक्यं, अहुगुणा होंति गेगस्स ॥ ६ ॥ उरैकंठैसिरैविसुदं च, गिजंते मर्जेरिभियेपमर्वदं। समतालपडुकैंखेबं, सत्तस्सरसीभरं गीयं ॥ ७ ॥ अक्खरसैमं पयसैमं, ताळसैमं रुय-र्समं च गेहर्समं । नीसिक्कोसिसर्यसमं, संचारसँमं सरा सन् ॥ ८ ॥ निहोसं सार्रमतं च, हेउजुर्तैर्मलंकियं । उर्वेजीयं सोववीरं च, मियं महरमेर्वं च ॥ ६॥ सैमं अद्धरेमं चेव, सम्बद्ध विसेमं च जं । द्विष्मि विशापमाराहं, चलत्वं मोबलन्मह

१ पार्डतरं- इचेला य क्रविती य, चोरा चंडालमुद्धिया । २ पायचारिति बड्डी ।

॥ १० ॥ सक्स्या पायया चेव, मणिईओ होंति दोण्णि वा । सर्मंडलम्मि गिजंते, पसत्या इतिमासिया ॥ १९ ॥ केसी गायड महरं, केसी गायड खरं च रक्खं च । केसी गायइ चडरं, केसी य विलंबियं दुयं केसी॥ १२॥ विसेरं पुण केरिसी १। गोरी गायइ महर, सामा गायइ खरं च रुक्खं च । काली गायइ चउरं, काणा य विलंबियं दुयं अथा ॥ १३ ॥ विस्सैरं पुण पिंगला । सनमरा तओ गामा, मुच्छणा इक्कवीसई । ताणा एग्णपण्णासं, सम्मतं मरमंडलं॥ १४॥ सेन्तं सन्तणामे ॥ १२८॥ से किं तं अहुणामे ! अहुणामे-अहुविहा वयणविभनी पण्णता। तंजहा-निहेसे पडमा होइ, बिइया उवएसणे । तहया करणिम्म कया, चटत्थी संपयावणे ॥ १ ॥ पंचमी य अवायाणे, छट्टी सस्सामिवायणे । मत्तमी मण्णिहाणत्ये, अद्वमाऽऽमंतणी भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभनी, निद्दे 'सो इमो अहं व' ति । विद्या पुण उवर्से 'मण कुणमु इमं व तं व' ति ॥ ३ ॥ तइया करणम्म ऋया 'भणियं च कयं च तेण व मए' वा । 'हंदि णमो साहाए' हवइ चडरणी पयाणिम्म ॥ ४ ॥ 'अवणय गिण्ह य एतो, इउ' ति वा पंचमी अवायाणे । छडी तस्स इमस्स वा. गयस्य वा मामिसंबंधे ॥ ५ ॥ इवइ पुण सत्तमी तं, इमस्मि आहारकाटभावं य । आमंतणी भवे अद्वमी उ, बह 'हे जुवाण' ति॥ ६॥ सेन्तं अट्टणामे ॥ १२९॥ से किं तं नवणामे? नवणामे-नवकव्यरसा पण्याता । तंजहा-गाहाओ-वीरो सिंगारो अञ्चुओ य, रोहा य होइ बोडण्यो । बेलणओ वीभच्छो, हासी कलुणो पसंतो य ॥ १ ॥ (१) तत्थ परिचायम्मि य, (दाण)नवचरणसत्तु जणविणासे य । अणगुसय-धिडपरक्रम-.िलंगो वीरो रसो होड ॥ १॥ वीरो रसो जहा-सो नाम महावीरो, जो रजं पयहिकण पन्वइओ । कामकोहमहासत्तु-, पक्खनिग्वायणं कुणइ ॥ २॥ (२) सिंगारो नाम रसो, रइसंजोगाभिकाससंजणणो। मंडणविकासविक्वोय-, हासळी-लारमणिकंगो ॥ १ ॥ सिंगारो रसो जहा-महुरिषलाससलिकंगं, हियउम्मायणकरं जुवाणाणं। सामा सहुद्दामं, दाएई मेहलादामं॥ २॥ (३) विम्हयकरो अपुट्यो, अनु-मूयपुट्यो स जो रसो होइ। हरिसविसाउप्पत्ति-, लक्खणो अन्भुओ नाम ॥ १ ॥ अञ्जुओ रसो जहा-अञ्जुयतरमिह एत्तो, अनं कि अत्य जीवलोगम्मि ? । जं जिण-बयणे अत्या, तिकालजुत्ता मुणिखंति ॥ २॥ (४) भयजणणस्वसद्घयार-, चिंता-कहासमुप्पाच्चो । संमोहसंभमविसाय,-सरणिलंगो रसो रोहो ॥ १ ॥ रोहो स्सो जहा-भिजिबेबिबंबियमुद्दी, संदृष्ठोद्व इय रुहिरमाकिण्णो । हणसि पसं असुरिणमो, मीमरसिय अइरोद् ! रोद्दोऽसि ॥ २ ॥ (५) विणओवयारगुज्झगुरु-, दारमेरावइक्र-

१-२ गाहाहिगपयाइसेयाई।

मुप्पण्णो। वेलणओ नाम रसो, लज्जा संकाकरणलिंगो॥१॥ वेलणओ रसो जहा-किं लोइयकरणीओ, लजाणीयतरं ति लजायामु ति । वारिज्यस्म गुरुयणो. परिवंदइ जं वहुप्पोत्तं॥ २॥ (६) अग्रुङकुणिमदुद्दंसण-, संजोगक्भासगंधनिष्कण्णो । निव्वयऽविहिंसालक्सणो, रसो होइ बीभच्छो ॥ १ ॥ बीभच्छो रसो जहा-असु-इमलभरियनिज्झर-, समावदुःगंधिसम्बदालं पि । धण्णा उ सरीरकलिं, बहमलक-हुसं विमुंचंति ॥ २ ॥ (७) स्ववयवंसभासा-, विवरीयविखंबणासमुप्पण्णो । हासो मणप्पहासो, पगासलिंगो रसो होइ॥ १॥ हासो रसो जहा-पानुनमसीमंडिय-, पडि-बुद्धं देवरं पलोयंती । ही जह थणभरकंपण-, पणमियमज्ञा हसइ सामा ॥ २ ॥ (c) पियविष्यओगवंध-, बहवाहिबिणिवायसंभमुष्पण्णो । सोइयविलवियपम्हाण-, रुणिलिंगो रमो करुणो ॥ १ ॥ करुणो रसो जहा-पञ्जायकिलामिययं, बाहागयपप्य-च्छियं बहुसो । तस्स विओगे पुत्तिय!, हुन्बलयं ते मुहं जायं ॥ २ ॥ (९) निद्दोसमणसमाहाण-, संभवो जो पसंतभावेणं । अविकारलक्खणो सो, रसो पसंतो नि णायव्या ॥ १ ॥ पसंतो रसो जहा-सब्भावनिव्विगारं, उवसंतपसंतसोम-दिद्वीयं। ही जह मुणिणो सोइइ, मुहकमलं पीवरसिरीयं॥ २॥ एए नव कन्वरसा, बत्तीसादोसविद्दिसमुप्पण्णा । गाहाहिं मुणियञ्चा, हवंति सदा वा मीसा वा ॥ ३ ॥ सेनं नवणामे ॥ १३० ॥ से कितं दसणामे ? दसणामे दसविहे पण्णते । तंत्रहा-गोणो १ नोगोणो २ आयाणपएणं ३ पडिवक्सपएणं ४ पहाणयाए ५ अणाइय-सिद्धंतेणं ६ नामेणं ७ अवयवेणं ८ संजोगेणं ९ पमाणेणं ९०। से कि तं गोण्णे १ गोण्णं - तमइ ति समणो, तबइ ति तवणो, जलइ ति जलणो, पबइ ति पवणो । सेतं गोण्णं। से किं तं नोगोण्णे ? अकुंतो सर्कुतो, असुगो समुग्गो, असुहो समुहो, अलालं पलालं, अकुलिया सकुलिया, नो पलं असइ ति पलासो, अमाइबाहए माइवाहए, अबीयवावए बीयवावए, नो इंदगोवए इंदगोवे । सेतं नोगोणी । से कि तं आयाणपर्णं १ आयाणपर्णं-(धम्मोमंगलं चूलिया) आवंती, चाउरंगिखं, असं-सयं, अहातित्थजं, अह्इजं, जण्णइजं, पुरिसइजं (उसुगारिजं), एलइजं, बीरियं, धम्मो, मग्गो, समोसरणं, जम्मइयं । सेतं आयाणपर्णं । से कि तं पिकवस्खपर्णं ? पिंडवक्खपएर्ण-नवसु गामागरणगरखेडकञ्बडमङंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसिश्ववेसेसु सिविदसमाणेसु-असिवा सिवा, अग्गी सीयलो, विसं महुरं, कहालघरेसु अंबिलं साटयं, जे रनए से अलतए, जे लाटए से अलाडए, जे सुंगए से इसुंगए, आलबंते निवलीयभासए । सेतं पिडनिक्खपएणं । से कि तं पाहण्णयाए ? पाहण्णयाए-असोगवणे, संसवण्यवणे, चंपगवणे, चूयवणे, नागवणे, पुणासवणे, उच्छूवणे,

दक्खवणे, साल्यिणे । सेतं पाहण्ययाए । से कि तं अणाइयसिद्धंतेणं ? अणाइय-सिद्धं तेणं-धम्मित्यकाए, अधम्मित्यकाए, आगासित्यकाए, जीवत्थिकाए, पुरगलिय-काए. अद्धासमए । सेतं अणाउयसिद्धंतेणं । से कि नं नामेणं ? नामेणं-पिउपिया-महरस नामेणं उज्ञामिज(ए)इ। सेत्तं नामेणं । से किं तं अवयवेणं ? अवयवेणं-सिंगी सिही विमाणी, दाढी पक्खी खरी नहीं वाली। दुपय चलप्पय बहप्पय, नंगुली केमरी करही ॥ १ ॥ परियरवंधेण भडं, जाणिजा महिलियं निवसणेणं । सित्येण दोणवायं, कविं च इकाए गाहाए॥ २ ॥ सेलं अवयवेणं । से किं तं संजोएणं ? संजोगे चडव्विहे पण्णने । तंजहा-दव्बसंजोगे १ खेनसंजोगे २ कालसंजोगे ३ भावसंजोगे ४। मे कि तं दव्वसंजोगे ? दव्वसंजोगे तिविहे पण्णते। जहा-सचिने १ अचिते २ मीसए ३ । से कि तं सचिते ? सचिते-गोहिं गोमिए, महिसीहिं महिसए, उरणीहिं उरणीए, उड़ीहिं उड़ीवाले । सेतं मचिते । से किं तं अचिते ! अचिते-छतेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, पडेणं पडी, घडेणं घडी, कहेणं कही । सेतं अचिते । से किं तं मीसए ! मीसए-हलेणं हालिए, सगडेणं सागडिए, रहेणं रहिए, नावाए नाविए। सेनं मीसए। सेनं दव्बसंजोगे । से किं तं खेतसंजोगे ? खेतसंजोगे-भारहे. एरवए, हेमवए, एरण्णवए, हरिवासए, रम्म-गवामए, देवकुरुए, उत्तरकुरुए, पुव्वविदेहुए, अवरविदेहुए । अहवा-मागहे, माल-वए, सोरहए, मरहद्वए, कुंकणए। सेत्तं खेत्तसंजोगे। से किं तं कालसंजोगे? कालसंजोगे-सुसमस्समाए १ सुसमाए २ सुनमद्समाए ३ दूसमस्समाए ४ दूसमाए ५ दूसमदूसमाए ६। अहुवा-पावसए १ वासारत्तए २ सरदए ३ हेर्मतए ४ वसंतए ५ गिम्हए ६ । सेतं कालसंजीगे । से किं तं भावसंजीगे ? भावसंजीगे दुविहे पण्णेत । तंजहा-पसत्ये य १ अपसत्ये य २ । से कि तं पसत्ये ? पसत्ये-नाणेणं नाणी. दंसणेणं दंसणी. चिरतेणं चिरती । सेतं पसत्ये । से किं तं अप-सरथे ? अपसत्ये-कोहेणं कोही, माणेणं माणी, मायाए माई, लोहेणं लोही । सेतं अपसत्ये । सेतं भावसंजीगे । सेतं संजीएणं । से कि तं पमाणेणं ? पमाणे चडिन्बहे पण्णते । तंत्रहा-नामप्यमाणे १ ठवणप्यमाणे २ दब्वप्पमाणे ३ भावप्पमाणे ४ । से कि तं नामप्पमाणे ? नामप्पसाणे-जन्स णं जीवस्स वा. अजीवस्स वा. जीवाण वा. अजीवाण वा, तदुभयस्य वा. तदुभयाण वा. 'पमाणे' ति नामं कजड । सेतं नामप्पमाणे । से कि तं ठवणप्पमाणे ? ठवणप्पमाणे सत्तविहे पण्णते । तंजहा-शाहा-जक्सते देववे कुँछे, पासंहें मेंथे य जीवियाहेर्ड । आभिप्पाइयणामे ठवणा-णामं त सत्तविहं ॥ १ ॥ से किं तं पक्खलणामे ? पक्खलणामे -किलियाहि जाए-

कितिए, कितियादिण्णे, कितियाधम्मे, कितियासम्मे, कितियादेवे, कितियादासे, कित्तियासेणे, कित्तियारिक्खए । रोहिणीहिं जाए-रोहिणिए, रोहिणिदिने, रोहिणि-धम्मे, रोहिणिसम्मे, रोहिणिदेवे, रोहिणिदासे, रोहिणिसेणे, रोहिणिरिक्खए य । एवं सव्वनक्खतेमु नामा भाणियव्वा । एत्थं व संगहणिगाहासी-कितियें रोहिणि मिगसरै, अहाँ य पुणव्यसे य पुँस्से य । तत्तो य अस्तिलेसा, मही उ दो फर्गाणीओ य ॥ १ ॥ हैतेयो चित्ती सीह, विसाहीं तह य होइ अणुराहीं । जेहा मूली पुरुवा-, रार्टित तह उत्तरीं चेव ॥ २ ॥ अभिन्दें सर्वणे घणिही, सयमिनयी दो य होति भेहेंवैयों । रेवेई अस्सिण भरणी, एया णक्खतपरिवाडी ॥ ३ ॥ सेतं णक्खतणामे । से किं तं देवयाणामे ? देवयाणामे-अग्निदेवयाहिं जाए-अग्निए, अग्निदिण्णे, अग्नियम्मे, अग्निसम्मे, अग्निदेवे, अग्निदासे, अग्निसेणे, अग्निरिक्षए । एवं स्टब-नक्खतदेवयानामा भाषियव्वा । एत्थं पि संगहणिगाहाओ-अंग्गि पयावई मामे, र्रेहो अंदिती विहर्सहैं सैप्पे । पिर्ति भेग अर्जीम सर्वियों, तहीं वर्डि य इंदेरेंगी ॥ १ ॥ भित्तो इंदो निरई, अर्डि विस्सो य बेम विष्हें य । तथुँ वहुँण अर्थे विवद्धी, पूर्म आसे र्जेंसे चेब ॥ २ ॥ सेनं देवयाणामे । से कि तं कुलनामे ? कुलनामे-उग्गे. भोगे. रायण्ये. खतिए, इक्खागे, णाए, कोरव्वे । सेतं कुळनामे । से किं तं पासंडनामे ? पासंड-नामे-'समणे य पंडरेंगे भिक्खें कावालिए य तावसए। परिवायने' सेतं पासंडनामे। सं कि तं गणनामे ? गणनामे-मल्ले, मल्लदिण्णे, मल्लधम्मे, मल्लसम्मे, मल्लदेवे, मल्ल-दासे, मह्नसेण, महरविखए। सेतं गणनामे । से किं तं जीवियनामे ? जीविय-(हेड)नामे-अवकरए, उक्कुरुडए, उज्झियए, कजबए, सुप्पए । सेत्तं जीवियनामे । से कि तं आभिप्पाइयनामें ? आभिप्पाइयनामे-अंबए, निंबए, वकुलए, पलासए, सिणए, पिळुए, करीरए । सेत्तं आभिप्पाइयनाये । सेत्तं ठवणप्यमाणे । से किं तं दव्द-प्पमाणे ? दब्बप्पमाणे छब्बिष्ठे पण्णते। तंत्रहा-धम्मत्थिकाए १ जाव श्रद्धासमए ६ । सेतं दव्यपमाणे । से किं तं भावप्पमाणे ? भावप्पमाणे चडव्यिहे पण्णते । त्तंबहा-सामासिए १ तब्बियए २ घाउए ३ निरुत्तिए ४। से किं तं सामासिए १ सामासिए-सत्त समासा भवंति, तंजहा-गाहा-दंदे य बहुँव्वीही, कम्मधारय दिग्यु र्थे । तप्पुरिसे अञ्बर्धभावे, एकससे य सत्तमे ॥ १ ॥ से कि तं दंदे १ दंदे-दंन्ताब ओष्ठी च=दन्तोष्ट्य. स्तनी च उदरं च=स्तनोदरम्. वैश्वं च पात्रं च=वन्न-

^{9 &#}x27;सु'। २ बुद्धदंसणस्मिओ। १ दंता य ओद्घा य=दंतोष्ट्रं, २ थणा य उग्ररं च=थणोयरं, ३ वत्यं च पायं च≔वत्थपतं, ४ आसा य महिसा य=आसमिह्सं, ५ अही य नवस्रो य=अहिनवस्रं।

पात्रम्, अंश्वात्र महिपाध=अश्वमहिपम्, अहिश्व नकुलश्व=अहिनकुलम् । सेत्रं देंद्रे समासे। से कि तं बहुव्वीही समासे ? बहुव्वीही समासे-फुला इमस्मि गिरिन्मि कुडयक्यंबा सो इसो गिरी फुल्लियकुडयक्यंथो । सेत्तं बहुव्वीही समासे । से किं तं कम्मधारए ? कम्मधारए-धवलो वसहो=धवलवसहो, किन्हो मिओ=किन्हमिओ, सेओ पडो=सेयपडो, रत्तो पडो=रत्तपडो । सेनं कम्मधारए । से कि तं दिगुसमासे ? दिगु-समासे-तिष्णि कहुगाणि=तिकडुगै, तिष्णि महुराणि=निमहरे, तिष्णि गुणाणि=तिगुणं, तिष्णि पुराणि=तिपुरं, तिष्णि सराणि=तिसरं, तिष्णि पुनखराणि=तिपुनखरं, तिष्णि बिंदुयाणि=तिबिंदुयं, तिण्यि पहाणि=तिपहं, पंच णईओ=पंचणयं, सत्त गया=सत्तगयं, नव तुर्रगा=नवतुरंगं, दस गामा=दसगामं, दस पुराणि=दसपुरं । सेतं दिगुसमासे । से कि तं नप्परिसे ? तप्परिसे -तित्थे कागो=तित्थकागो, वणे हृत्थी=वणहत्थी, वणे त्रराहो=वणवराहो, वणे महिसो=वणमहिसो, वणे मकरो=वणमकरो । मेत्तं तप्प-रिसे । से किं तं अव्वर्डभावे ? अव्वर्डभावे-अणुगामं, अणुगाइयं, अणुफरिहं, अणु-चरियं। सेतं अव्वर्द्धभावे समासे। से किं तं एगसेसे ? एगसेसे-जहा एगो पुरिसो तहा बहुवे पुरिसा, जहा बहुवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो; जहा एगो करिसावणो तहः वहवं करिसावणाः जहा वहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणोः जहा एगो साली तहा बढ़वे साली, जहा बहुवे साली तहा एगो साली । सेतं एगमेसे समासे । सेतं सामासिए। से कि तं नदितए ? तदिनए अर्दावहे पण्णते । तंत्रहा-गाहा-कर्म्मे सिप्पै सिलोएँ, संजोगें समीवेंओ य संजूही। इस्सिएँ अवन्तर्ण य, तिहनणामं तु अहु-विहं ॥ १ ॥ से कि तं कम्मनामे ? कम्मनामे-तणहारए, कद्वहारए, पत्तहारए, दोसिए. सोतिए, कप्पासिए, भंडवेबालिए, कोलालिए। सेतं कम्मनामे। से किं तं सिप्पनामे? सिप्पनामे-(वित्थए, तंतिए,) तुष्णए, तंतुवाए, पटकारे, उएटे, बरडे, मुंजकारे, कडुकारे, छत्तकारे, वज्झकारे, पोत्थकारे, चित्तकारे, दंतकारे, छेप्पकारे, सेलकारे, कोट्टिमकारे । सेतं सिप्पनामे । से किं तं सिलोयनामे ? सिलोयनामे-समणे, माहणे, सन्धातिही । सेतं सिलोयनामे । से किं तं संजोगनामे ? संजोगनामे-रण्णो सनुरए, रण्णो जामाउए, रण्णो साछे, रण्णो भाउए, रण्णो भगिणीवई । सेत्तं संजोगनामे । से किं तं समीवनामे ? समीवनामे-निरिसमीवे णयरं=निरिणयरं, विदिसासमीवे गयरं=वेदिसं गयरं, बेझाए सभीवे जयरं=बेझायडं, तगराए समीवे जयरं=तगरायडं। सेतं समीवनामे । से किं तं संज्हनामे ? संज्हनामे-तरंगवहकारे, मलयवहकारे. अताणुसद्विकारे, बिंदुकारे । सेतं संजूहनामे । से किं तं ईसरियनामे ? ईसरियनामे-राईसरे, तलबरे, माडंबिए, कोइंबिए, इब्से, सेद्वी, सत्थवाहे, रोणावई । सेतं ७१ सत्ता॰

इंसरियनामे । से किं तं अवस्थामे ? अवस्थामे-अरिइंतमाया, सद्दृष्टिमाया, बल-देवमाया, वायुदेवमाया, रायमाया, मुणिमाया, वायुगमाया । सेतं अवस्थामे । सेतं विद्या ए । से किं तं निरुत्तिए । सेतं अंग्रेट स्थाने स्थाने । सेतं अवस्थाने । सेतं विद्या करोति स्थाने स्थाने । सेतं विद्या करोति स्थाने । सेतं विद्या करोति स्थाने । सेतं विद्या करोति स्थाने स्थाने

से कि तं प्रमाणे ! प्रमाणे चंडब्बिहे पण्याने । तंत्रहा-दब्बप्पमाणे १ खेतल्यमाणे २ काळप्यमाणे ३ मावप्यमाणे ४॥ १३२॥ से ऋ तं दबवप्यमाणे १ दन्वप्यमाणे दुविहे पण्णेत । तंजहा-पएस्तिप्यन्ते य १ विमागनिष्यन्ते य २ ! से कि तं पएसिनप्ताणो ? पएमनिप्ताणं-परमाणुपोग्गले, दुपएसिए आव दमपएसिए, संग्विजपएसिए, असंखिजपएसिए, अणंतपएसिए । सेतं प्रमिनिफ्णा । से कि तं विभागनिष्कणो १ विभागनिष्कणो पंचविहे पणासे । तंत्रहा-माणे १ उम्भाणे २ अवसाणे ३ गणिमे ४ पिंडमाणे ५ । से किंते भाणे ? माणे दुविहे पण्णते । तंत्रहा-धन्नमाणप्रमाणे य १ रसमाणप्रमाणे य २ । से कि तं धन्नमाणप्रमाणे १ धन्नमाणपमाणे-दो असईओ=पसई, दो पमईको=सेदबा, बनारि संद्याओ=कुलओ, चनारि कुलया=पत्थो, चनारि पत्थया=आढगं, चनारि आदगाउं=दोणो, सद्वि आदयारं=जहकर कुंमे. असीर आदयारं=मज्सिमर कुंमे, आदयसयं=उद्योगर कुंमे. अद्भ य आत्यसहए=बाहे । एएवं धक्कमाणपमानेवं कि पश्चीयवं ? एएवं घक्क-माणपमाणेणं र्भुत्तोलीमुखद्दुर्भलिद्ओचारसंसियाणं भण्णाणं भण्णमाणपमाणनि-व्यित्तिलक्खणं भवड । सेतं धण्णमाणयमाणे । से कि तं रसमाणप्यमाणे ? रसमाण-प्यमणि-घण्यमाणप्यमाणाञ्चो चरुभागविवद्विष्ट् अस्मिन्द्विहाजुते ररामाणप्यमणि विहिज्ञइ, तंजहा-चउमड्डिया (चडपलपमाणा ४), वनीसिया (अट्टपलपमाणा ८),

१ भू मत्ताए 'परसै' अद्धमागहीए नत्य, २ एह बुद्दीए, ३ फद्र संघरित, ४-५ एए 'सक्कए' अद्धमागहीए एएसि ठाणे अच्या पर्द्याति । १ महीए इन्द्र= महिसो, २ भमइ य रवह य=भगरो, ३ मुद्दं सुद्धं स्वस्ट ति मुसलं, ४-५ 'सक्कए' अद्धमागहीए जहा हेट्टा, ६ रङ्गकण्यो=उस्को, ७ नेस्टस्य मासा=नेस्टलः । ४ व्या कोजिया जा सक्वति हेट्टा संविक्या मजहे विद्यासा ।

सोलसिया (सोलसपलपमाणा १६), अट्टभाइया (बनीमपलपमाणा ३२), चउभाइया (चलसङ्किपलपमाणा ६४), अद्धमाणी (संबाहिबजहाइसपलपमाणा १२८), माणी (दुसवाहियळप्पणपलपमाणा २५६), दो चउसद्वियाओ=बत्तीसिया, दो बनीसियाओ=सोलसिया. दो गोलसियाओ=अद्रमाइया, दो अट्टमाइयाओ=चउमा-इया, दो चरभाइयाओ=अद्भाणी, दो अद्भाणीओ=माणी। एएणं रसमाणपमाणेणं कि पञ्जोयणं ? एएणं रममाणेणं-बारकघडककरककलसियगागरिवड्यकरोडियकुं डिय-(दो)संसियाणं रसाणं रसमाणप्यमाणनिब्धितिलक्खणं अवदः। सेतं रसमाणप्यमाणे । सेतं माणे । से किं तं उम्माणे ? उम्माणे-जं णं उम्मिणिजाइ, तंजहा-अदकरिसो, करियो, अद्यप्तं, पतं, अद्भुता, तुला, अद्भारो, भारो । दो अद्रकरिसा=करिसो, हो करिगा=अद्भारं, तो अद्भाराहं=पर्ल, पंच पलसहया=तुला, दस तुलाओ=अद्भारो, बी[बी]सं तलाओ=भारो। एएणं उम्माणपमाणेणं किं पओयणं ? एएणं उम्माण-प्रमाणेणं पत्ताऽगरतगरचोययक्कंकुमखंडगुलमच्छंडियाइंणं दब्बाणं उम्माणपमाण-निव्वित्तिलक्खणं भवइ । सेतं उम्माणपमाणे । से कि तं ओमाणे ? ओमाणे-जं णं ओमिजिज्ञ , नंजहा-हत्येण वा, दंडेण वा, भणुक्षेण वा, जुगेण वा, नालियाए वा, अयसेण वा. मुसलेण वा । शाहा-दंड धणू जुग नालिया य, अक्स मुसलं व चउहत्यं । दमनातियं च रखं, वियाण भोमाणसण्णाए ॥ १ ॥ वरशुम्मि हत्यमेखं, सिते दंहं धणं च पत्थिमा । साथं च नालियाए, वियाण ओमाणसण्णाए ॥ २ ॥ एएणं अवसाणपमाणेणं कि पश्चीयणं ! एएणं अवसाणपमाणेणं सायन्यसद्दय-करकवियकहपद्दिशितिपरिक्केबसंसियाणं दव्याणं अवयाणप्रमागति विवित्तित्वक्कणं भवइ । सेतं अवमाणे । से किं तं गणिमे ? गणिमे-अं णं गणिजाइ, तंजहा-एगो. दस, सयं, सहस्तं, दससहस्ताः, सयसहस्तं, दससयसहस्साः, कोकी । एएणं गणिमप्पमाणेणं कि पक्षोयणं ? एएणं गणिमप्पमाणेणं भितगभितिभत्तवेयणआय-क्वयसंसियाणं दध्याणं गणियप्पसाणनिव्यित्तिस्वयाणं भवड । सेतं गणिये । से किं तं परिमाणे ? परिमाणे-कं णं परिमिणिकड, तंजहा-गुंजा, कागणी, निष्काबो, क्रममासको, मंडलको, सुक्को । पंच गुंजाओ=क्रममासको, चतारि कागणीओ= कम्समासको, विश्वि निष्प्रावा=कम्ममासको, एवं चएको कम्ममासैको। बारस कम्ममासबा=मंबतको, एवं अवयातीसं कागणीको=मंबलको, सोलस कम्ममासबा= सुक्रणो, एवं चतसद्वि कागणीओः=सुक्रणो । एएणं पविसाणप्यसाणेणं कि पक्षोयणं ? एएणं पविसाणप्यसाणेणं सुक्रणंदयसमित्रसोत्तरसंखातिकप्यशास्त्रहेणं दस्याणं

१ कागणीअवेक्साए । २ कागणीअवेक्साए ति अही ।

पिक्रमाणप्यमाणनिव्यित्तिलक्खणं भवद् । सेतं पिक्रमाणे । सेतं विभागनिष्कणो । सेतं दञ्बलमाणे ॥ १३३ ॥ से किं तं खेलपमाणे ? खेलपमाणे द्विहे पण्णते । तंत्रहा-प्रसनिष्कणो य १ विभागनिष्कणो य २ । से दि तं प्रसनिष्कणो ? प्रसन निष्पणो-एगपएसोगाडे, दुपएसोगाडे, तिपएसोगाडे, संखिजपएसोगाडे, असंखिजप-एसोगाउँ । सेतं पएमनिष्काणे । से किं तं विभागनिष्काणे ? विभागनिष्काणे-जाहा-अंगुल विहत्थि रयणी, बुल्ली धणु गाउयं च बोद्धन्यं ! जोयण सेदी पयरं, लोगम-ह्योगे वि य तहेव ॥ १ ॥ से किंतं अंगुरू ? अंगुरू तिविहे पण्णते। तंत्रहा-आयंगरू १ उस्सेहंगुढ़े २ पमाणंगुढ़े ३। से कि नं आयंगुढ़े ? आयंगुढ़े-जे णं जया मणुस्सा भदंति तेसि णं तया अप्पणो अंगुक्तेणं दुवानसअंगुलाई सुर्ह, नवसृहाई पुरिसे वमाणजुने भवड, दोष्णिए पुरिसे माणजुने भवड, अद्यक्षारं नुत्रमाणे पुरिसे उम्माण-जुते भवइ । गाहाखो-माणुम्माणपमाणजुता(णय), लक्खणवंजणगुणेहि उवधेया । उत्तमकुलप्पस्याः उत्तमपुरिया मुणेयव्या ॥ १ ॥ होति पुण अहियपुरिया, अहुमयं अंगुलाण उम्बद्धा । छण्णउड अहमपुरिमा, चउम्सर् मज्ज्ञिमिका उ ॥ २ ॥ हीणा वा अहिया वा, जे खलु सम्सनसारपरिर्हाणा । ते उत्तमपुरिसाणं, अवस्स पेमनण-मुनेति ॥ ३ ॥ एएणं अंगुलपमाणेणं-छ अंगुलाई=पाओ, दो पाया=बहन्या, दो विहत्बीओ=र्यणी, दो रयणीओ=कुरुछा, दो कुरुछाओ=दंडं धणु जुगे नालिया अक्ने मुमले, दो धणुसहस्माई=गाउयं, चनारि गाउयार्ड=जोवर्ण । एएणं आवंगुरूपमाणेणं कि पओयणं ? एएणं आयंगुळेणं जे णं जया मणुरसा हवीत तेमि णं स्या णं आयंगुरुणं अगडनलागदहनईवानिपुक्खरिणीरीहियगुंजालियाओ सरा मरपंतियाओ सरमरपंतियाओ त्रिलपंतियाओ आरामुजाणकाणगणवणवणसंडवणराईओ, सभापवा-खाडवपरिहाओ पागारअद्दालमचरियदारगोपुरपासाग्रचरसरणलवणआवणसिंशाङग-तिगन उद्मनन् न उम्मुहमहापहपहसगडरहजाणजुरगमिहिचिक्तिमिवियसंद्रमाणियाओ लोहीलोट्कडाहुककिलयभंडमत्तीवगर्णमाईणि अजनालियाई च जीवणाई मविजंति । से समासओं तिविहे पण्यासे । तंजहा-सूईअंगुले १ पर्यागुले २ घणंगुले ३ । अंगुला-यया एगपएसिया सेढी स्ट्रेअंगुङे, स्ई स्र्रुगुलिया प्यरंगुळे, प्यरं स्रूईए गुलियं वर्ण-गुळे। एएसि णं भंते ! महुअंगुरुपयरंगुरुवर्णगुरु।णं कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुहा वा विसेसाहिया वा ? सन्वत्योवे सुद्रभंगुले, पयरंगुले असंबेजगुणे, धणंगुले असंखेजगुणे । सत्तं आयंगुले । से कि तं उस्सेहंगुले ! उस्सेहंगुले अणेगविद्वे पण्णते । तंजहा-गाहा-परमाण् तसरेण् , रहरेण् अमयं च बालसः । विक्सा ज्या य जवी, अहुगुण-विविद्या कमसा। १॥ से कि तं परमाण् १ परमाण् द्विहे पण्यते। तंत्रहा-

झुहुमें य १ ववहारिए य २। तत्थ णं जे से छुहुमें से ठप्पे। तत्थ णं जे से बबहारिए से णं अणंताणंताणं सहुमपोस्गलाणं समुदयसमिइसमागमेणं ववहारिए परमाणुपोस्गले निष्फज्जइ। से णं भंते ! असिघारं वा खुरधारं वा ओगाहेजा ? हंता ! ओगाहेजा। से णं तत्य छिजेज वा भिजेज वा ? नो इणहे समहे, नो सछ तत्म सत्यं कमइ। से णं भंते ! अगणिकायस्स मञ्ज्ञमञ्ज्ञेणं वीइवएजा ? हंता ! वीइवएजा । से णं भंते ! तस्य डहेजा ! नो इणद्वे समहे, नो खल्ल तत्य सन्यं कमइ । से र्ण भंते ! पुक्खरसंबद्दमस्स महामेहस्म भज्झंमज्झेणं वीइवएजा ! हंता ! वीइवएजा । से णं तत्थ उदउक्के सिया ? नो इणड्डे समद्धे, नो बलु तत्थ मत्थं कमर । से णं भंते ! गंगाए महाणङ्गेए पिंडिसोयं हव्यमागच्छेजा ? हंता ! हव्यमागच्छेजा । से णं तत्य विणिषाय-मावजेजा े नो इणहे समद्वे, नो खल तत्थ मन्धं कमइ । से णं भंते ! उदगावतं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेजा ! हंता ! ओगाहेजा । से णं तत्थ कुन्छेजा वा परि-यात्रजेज वा १ नो इण्डे ममंद्रे, नो खलु तत्य मत्यं कमइ । गाहा-सत्येण मुतिक्खेण वि. छित्तं भेत्तं च जंन किर सका। तं परमाणुं सिद्धा, वर्यति आई पमाणाणं॥ १॥ अर्णतार्णे वत्रहारियपरमाणुपोम्गलाणं समुदयममिइसमार्गमेणं-मा एगा उसण्ह-सण्हियाइ ना, सण्हर्साण्ह्याइ ना, उन्नरेण्ड् ना, तसरेण्ड् ना, रहरेण्ड् ना । अड उमण्हमिष्ट्याओ=मा एगा सण्हराण्हिया, अह सण्हसिण्ह्याओ=सा एगा उद्गरेणू, अह उन्दरेणुओ=सा एगा तसरेणू, अह तसरेणुओ=मा एगा रहरेणू, अह रहरेणुओ= देवकुरउत्तरकुरुणं मणुयाणं से एगे वालग्गे, अह देवकुरउत्तरकुरुणं मणुयाणं वाल्प्रगा=हरिवासरम्मगवासाणं मणुयाणं से एगे वाल्प्रगे, अह हरिवासरम्मगवासाणं मणुस्ताणं वालग्गा≔हेमवयहेरण्यावयाणं मणुस्ताणं से एगे बालग्गे, अह हेमवय-हेरण्णत्रयाणं मणुस्साणं बालग्गा=पुन्वविदेहअवर्यिदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे, अद्ग पुरुविवेष्टअवर्विदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा=भरहएरवयाणं मणुस्साणं से एगे बालमो, अद्भ भरहेरचयाणं मणुस्साणं वालम्या=सा एगा लिक्खा, अद्भ लिक्खाओ= सा एगा जूया, अट्ट जूयाओ=से एगे जनमञ्जे, अट्ट जनमञ्जे=से एगे अंगुरे । एएणं अगुलाण पमाणेणं छ अगुलाइं=पाओ, बारस अगुलाइं=विहरशी, चउवीसं अंगुलाइं=रयणी, अडबालीसं अंगुलाइं=चुन्छी, छववइ अंगुलाइं=से एने दंदेइ वा, धणुद्र था. जुरोह वा, नालियाइ वा, अवन्त्रेह वा, मुसलेह वा। एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं=गाडयं, चतारि गाडयाइं=जोयणं। एएणं उत्सेहंगुलेणं कि पक्षीयणं ? एएणं उत्सेहंगुक्रेणं जेरहयतिरिक्सकोणियमणुस्सदेवाणं सरीरोग्नहणा मविजार । वेरहवाणं भेते । केमहाछिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! द्विहा

पण्णताः तंत्रहा---भवधारणिजा य १ उत्तरवेउव्विया व २ । तत्य णंजा सा भवधारणिजा सा णं---जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजडभागं, उद्दोरोणं पंचवणुसयाई । तत्थ णं जा सा उत्तरवेटव्या सा- बहण्णेणं अंगुरुत्स संसे बहमागं, उक्रोसेणं थणुसहस्सं । रयमप्पहाए पुढपीए गेरइयाणं मंते ! केमहास्थ्या सरीरोगाहणा पण्यता ? गोयमा ! दुविहा पण्यता । तंत्रहा-भवधारणिजा य १ उत्तरवेडन्यिया य २। तत्थ मं जा सा भवधारिकजा मा—जहण्येणं अंगुन्हस्त असंखेळाआगं, उक्रोंसेणं सत्तत्रणृहं तिण्णि रयणीओ छब अंगुलाई । तत्थ णं जा सा उत्तरबेउन्त्रिया मा—जहण्णेणं अंगुलस्म संखेजडभागं, उक्षोसेणं पण्णरसपण्डं दोण्णि न्यणीओ बारम अंगुरु। सेहरप्यहापुढवीए णेरइयाणं भेते ' केमहालिया सरीगोगाहणा पण्णता ? गोयमा : दुपिहा पण्णता । तंत्रहा-अवधारणिज्ञा य उत्तरवेड व्विया थ । तत्य णं का सा भवधारणिजा सा-जहण्णेणं अंगुलस्स असंबंज्जहमागं, उद्दोसेणं पण्णासभण्डं हुण्णि रमणीओ बारसअंगुलाई । तत्थ णं जा सा उत्तरचेउव्यया सा-जहर्णाणं अंगुलस्य संसेजाइमागं, उक्तोमेणं एकतीसं धणूहं इक्ररमणी य । वासु-यप्पहापुडवीए गेरहयाणं भेत : केमहालिया मरीरोगाहणा पण्णना ? गायमा ' दुविहा क्षणता । तंत्रहा-अवधारणिजा य १ उत्तरवेडथ्विया व २ । तत्त्र्य णं जा सा भवधारणिज्ञा ना-जहण्येणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उद्दोसेणं एकतीसं धण्हं इकरयणी य । नन्य णै जा सा उत्तरबेडिंग्या सा-बहण्येणं अंगुलस्स संखेळाइभागं, उक्कोसेणं बामहिष्मपृष्ठं दो रयणीओ य । एवं सञ्जामि पुढवीणं पुच्छा भाषियन्तः । पंकप्पहाए पुरवीए सवधारणिजा--- अहण्णेणं अंगुल्स्स असंखेळहभागं, उक्कोरेणं बार्याहुप्रवृद्धं तो स्वणीओ य । उत्तरवेउन्विया-अहण्येणं अंगुलस्स संसे बद्धभारः उक्तोसेणं प्रवित्तं चणुनयं । भूमप्पदाए भवपारणिका-जङ्ग्येणं अगुलस्स अस केजहभागं, उद्दोरीणं पणवीसं धणुसयं । उत्तरवेउव्यिया-अहण्णेणं अंगुलस्य संसेज्ञहमार्गः, उद्योसेणं अङ्गाहजाइं भणुसयाइं। तमाए भववारनिज्ञा-जहण्येः अंगुलस्स असंखेजहमार्ग, उद्योसेणं अष्ट्राहजाई वणुसयाई। उत्तरवेडिवया-जहलीणं अंगुलस्स संकेजहमार्ग, उद्योरीणं पंचवलुसवाहं । तमसमाप् पुडवीए जेरडयां भेते । केमहास्थिया सरीरोगाहणा पळ्यसा ? शोयमा ! बुबिहा पळ्यमः। तंत्रहा-सवपारणिका य १ उत्तरवैद्यमिका य २। तरब वं जा सा अवपारणिका सा-बहुण्येणं अंपुलस्य असंबेक्स्मानं, उद्योसेनं पंचवकुसमाई । तस्य वं अः सा उत्तरवेउन्निया सा-बहणोणं अंगुस्तस संबेखद्भागं, उद्योगेणं भनुपहस्सारं।

१ एवं सम्बाणं दुविशः अवधारविज्ञा-

असुरक्रमाराणं भेते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंत्रहा-भवधारणिजा य १ उत्तरवेउव्विया य २ । तत्थ णं जा मा भवधारणिजा सा-जहण्णेणं अंगुलसा असंखेजहमागं, उद्दोरोणं सत्तरयणीओ। तत्थ णं जा सा उत्तरविद्यासा-जहण्णेणं अंगुलस्य संखेखद्भागं, उद्योतेणं जीयणस्यसहस्यं । एवं असुरकुमारगमेणं जाव थावियकुमाराणं भाणियन्त्रे । पुढविकाइयाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्याता ? गोयमा ! जहण्येणं अंगुलस्य असंखेजहशार्ग, उद्योसेण वि अंगुलस्य असंखेजहमागं। एवं मुहमाणं ओहिगणं अपज्जतगाणं पजतगाणं च भाषियव्वं । एवं जाव बायरवाउकाइबाणं पजतगाणं भाषियव्वं । वणस्मइकाइयाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णना ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स अमृत्येज्ञद्रभागं, उद्योसेणं माइरेगं जोयणगहस्तं । सुरुमवणस्मइदाहयाणं ओहियाणं अपज्ञतताणं पज्जतताणं तिण्हं पि-जहण्णेणं अंगुलस्य असंखेजडभागं, उक्कोमेण वि अंगुलस्स असंखेजहमार्ग । बायरवणस्महकाइयाणं ओहियाणं-जहर्षाणं अंगलस्य असंग्रेज्जडमार्गः उक्रोसेणं साहरेगं जोवगसहस्यं । अपजनगाणं-जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहमार्गः, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंबेजहमार्गः। पजनगाणं-जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं. उद्दोसेणं माइरेगं जीवणसहस्यं । बेइंदियाणं प्रदेश । गीयमा ! बहण्णेणं अंगुलस्त असंखेजहभागं, उक्कोरेणं बारग-जोयणाई । अपजनगाणं-जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजइशागं. उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखेजाडभागं । पजातगाणं-जहण्णेणं अंगुकस्य संखेजडभागं. उद्योसेणं बारसजीय-णाइं । तेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उक्कोसेणं तिषिव गाउवारं । अपज्ञतगाणं-जहण्येणं अंगुलस्स असंखेजहभागं. उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखेजाइभागं । पजतगाणं-जहणीणं अंगुलस्स संखेजाइभागं, उद्घोसेणं तिष्णि गाडयाई। चन्टरिस्याणं पुस्का।गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं, उद्योसेणं चतारि गाउयार्ड । अपजातगाणं-जहण्णेणं० उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखेजहभागं। पजनगाणं-जहण्णेणं अंगुलस्म संखेजहभागं, उद्दोतेणं चत्तारि गाउयाई । पंचिद्वयदिदिक्खजोणियाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नाता ? गोयमा ! जहण्लेणं अंगुलस्य असंबेजडभनं. उद्योसेणं जोयणसहस्यं । जलयर-पंचिदियतिमिक्सजोणियार्ण पुच्छा । गोसमा] एवं चेव । सम्मुच्छिमजलगरपंचिदि-बतिरिक्खजोजियाणं पुरुका। गोयसा ! ऋष्णेणं अंगुलस्य असंकेळह्माणं, उद्दोसेणं ओयणसहस्र । अपजत्तगतम्मु व्यानज्ञकमरपंचिदियतिरिक्खजोणिनार्व प्रच्छा । बो॰] जहकोमं अंगुरुस्स असंबेजहमार्ग, उन्होसेन वि अंगुरुस्स असंबेजहमार्ग ।

पजतगरान्मुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोषियाणं पुच्छा । गौयमा ! अहुच्येणं अंगुलस्स संक्षेजहभागं, उद्दोसेणं जोयणमहस्सं । गन्भवद्गंतियजलयरपंचिदिय-पुच्छा । गोयमा ! बहुण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उद्गोसेणं जीयणसहस्सं । अपजनगरभावकंतियजलगरपंचिदियपुच्छा । गोगमा ! जहण्णेणं असंसेजहभागं, उद्दोसेण वि अंगुलस्स असंसेजइभागं। पजनगण्भवद्वातिय-जलगरपुच्छा। गोयमा! बहुण्येणं अंगुलस्स संखेखङ्भागं, उद्दोसेणं जोयण-सहस्यं । चडप्पययस्रवर्पचिदियपुच्छा । गोयमा । अहणोर्ण अंगुलस्य असंखे-जहसार्ग, उक्कोसेर्ण छ गाड्याइं । सम्मुच्छिमचडप्पयथलयरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं, उद्योगेणं गाउयपुष्ट्रतं । अपजतगसम्मुस्छिम-चउपयक्षत्यरपुरछा । गीयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उक्कोरेण वि अंगुलस्स असंखेबङ्भागं । प्रजतगसम्मुन्छिमचन्द्रप्रयथलयरपुन्छः । गोयमा ! जहणोणं अंगुरुस्य संसेजहभागं, उद्दोसेणं गाउयपुरुत्तं । गन्मवक्षतियचउप्पय-थलयरपुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजइभागं, उक्रोसेणं छ गाउयाई। अपजनगणन्मवद्वंतियन्वउप्पवधलवरपुच्छा । गोवमा ! बहुण्णेणं अंगुलहरा असं-खेजदभागं, उद्योसेण वि अंगुलस्य असंखेजहभागं । पजरागगव्भवदंतियवरुप्पय-थलयरपुन्छा । गोयमा ! जहुष्णेणं अंगुलस्य संखेजहुभागं, उक्कोरेणं छ गाउचाई । उरपरिसप्पथलगरपंचिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंसे बद्भागं, उक्कोरंणं जोयणसहरसं । सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपुच्छा । गौयमा ! जहुच्येणं अंगुलस्य असंबेजहमार्गः, उक्कोरीणं जोयणपुहुतं । अपजनगराममुच्छिमउरपरिसप्य-थलयरपुरस्या । गोयसा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उन्नोसेण वि अंगुलस्स असंक्षेज्ञइमार्गः । पजनगसम्मुन्छिमउरपरिसप्पथलयरपुन्छा । गोयमा : बहुणोणं अंगुलस्य संखेजङ्भागं, उक्कोरोणं जोयणपुहुत्तं । गञ्मवकंतियउरपरिसप्पयलयर-पुच्छा । गोयमा ! जहण्येणं अंगुलस्त असंखेजहभागं, उक्तेसेणं जोयणसहस्सं । अपजातगर्भवकेतियदरपरिनय्पष्टयरपुरुष । गोयमा ! अहुण्णेणं अंगुक्तस असे-खेळाइमागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेळाइमागं । पळारायगण्मवक्कंतिगडरपरि-सप्पथलयरपुरुष्ठा । गोयमा ! अहुण्णेणं अंगुलस्स संखेजहुनार्गं, उद्योसेणं जोयण-सहस्य । भुवपरिसप्पष्ठवरपंश्विदियाणं पुच्छा । गोवमा ! षहण्येणं श्वंगुरुस्स असंखेजह्मागं, उक्कोसेणं गाउगपुद्धनं । सम्मुच्छिमभुगपरिसप्पणस्यरपंचिरियाणं पुच्छा । गोयमा ! अहण्येचं अंगुकस्य असंबेजहभागं, उद्योगेणं चणुपहत्तं । अपजातगराम्युव्यिमम् अपरिसप्पवस्थराणं प्रच्छा । गोवमा ! जहकोनं बांतुकसः

असंबेजहभागं, उद्योसेण वि अंगुरुस्स असंबेजहभागं । पजलगसम्युच्छिमशुय-परिसप्पाणं पुच्छा । गोग्रमा ! अहण्णेणं अंगुलस्स संखेजङ्भागं, उद्दोरीणं धणु-पुरुत्ते । गच्मवकंतियभुसपरिसप्पथलयरार्ण पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उक्षोत्रेणं गाउयपुहुतं । अपजत्तगभुयपरिसप्पाणं पुच्छा । गोअमा ! जहण्णेणं अंगुलस्त असंखेजङ्भागं, उद्घोरोण वि अंगुलस्त असंखेजङ्भागं । पज-नगभुवपरिसप्पाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्येणं अंगुलस्य संखेजहमागं, टक्सेसेणं गाउवपुहुतं । सहयरपंचिदियपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहरू भागं, उद्दोसेणं धशुपुहुतं । सम्मुच्छिमखह्यराणं जहा भुवगपरिमप्पसम्भुच्छिमाणं ति व गमेस तहा भाणियन्वं। गन्भवक्षंतियसहयरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेळाइभागं, उद्दोसेणं घणुपुहुत्तं । अपजनगगन्भवद्दंतियखद्दयरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेळहरूमागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेळहरू भागं । पजनगगमभकंतियखहयरपुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेजङ्-भागं, उक्कोसंणं धणुपुहुतं । एत्थ संगहणिगाद्वाओ हवंति, तंजहा-कोयणसहस्स गाउवपुहुन, तत्तो व जायणपुहुतं । दोण्डं तु धणुपुहुतं, समुच्छिमे होइ उचतं ॥ १॥ जोयणसहस्य छगगाउत्राई, तत्तो य जोयणसहस्यं । गाउवपुहुत्त भुयगे, पक्कीस भने धणुपुहुतं ॥ २ ॥ मणुस्साणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, टक्कोसेणं तिण्णि गाउ-याइं। सम्मुच्छिममणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! अहणोणं अंगुलस्स असंखेजह-भागं, उद्योसेण वि अंगुलस्स असंखेजइभागं । अपज्यागगन्भवद्यंतिग्रमणुरुसाणं पुन्छा । गोयमा ! जहण्येणं अंगुलस्स असंबेजहमार्ग, उद्योसेण वि अंगुलस्म असंखेजहभागं । पजत्तपगच्भवद्गतियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा । प्रहण्येणं अंगु-करस संखेजहभागं, उद्दोसेणं तिष्णि गाउयाई। वाणमंतराणं मवधारणिजा व उत्तरवैद्यविषया य जहा असुरकुमाराणं तहा भाषियन्दा । जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि । सोहम्मे कप्पे देवाणं भेते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा । दुविहा पण्यता । तंजहा-भवधारणिजा म १ उत्तरचेउव्विमा स २ । तत्व णं जा सा मचवारणिजा सा-जहणीणं अंगुलस्य असंबेजहभागं, उद्योसेणं सत्तर-यणीओ । तत्थ णं का सा उत्तरनेत्रिकास सा-जहणीणं अंगुलस्य संखेळाइमानं, उद्दोसेणं बोयवस्यसहस्य । एवं ईसावकःये वि भावियव्यं । जहा सोहस्मकप्याणं - देवाणं पुच्छा तहा सेसक्त्पवेवाणं पुच्छा भाषियम्या जाव अशुमक्त्यो । सणंक्रमारे भवशारमिजा-अद्यूष्णेयं संगुक्तस्य असंखेळात्रुभागं, उद्योरीयं छ रयजीशो । उत्तर-

वैज्ञव्यिया जहां सोहम्मे तहा माणियच्या । जहां सर्गकुमारे तहा माहिंदे वि भाणियव्या । वंभलंतगेतु भवभारनिका-जहुण्येणं अंगुलस्स असंबेजद्भागं, उद्यो-सेणं एंबरयणीओ । उत्तरवेडिवया जहा सोहम्मे । महासुक्सहस्सारेन भववार-णिजा-जहण्णेणं अंगुलसा असंबेजङ्भागं, उद्दोसेणं चतारि रयणीको । उत्तरवेड-विवया जहा सोहम्मे । आणग्रपाणग्रजारणजानुएस वरस वि संवधारणिजा-जहुन्येणं अंगुलस्स असंबेजहभागं, उद्घोसेणं तिण्णि रयमीओ । उत्तरवेजन्यिया जहा सोहम्मे । गेवेजगदेवाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! एगे भवधारणिजे नरीरगे पण्णले । से जहण्येणं अंगुलस्स असंखेजहभागं, उक्कोसेणं दुष्णि रयणीको । अणुत्तरोववाडयहेवाणं भंते । केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ! गोयमा ! एगे मबधारणिजे सरीरगे पण्णते । से जहण्णेणं अंगुरुस्त असं-खेजहमागं, उद्दोसेणं एगा स्थणी उ । से समासओ तिबिहे पण्यते । नंजहा-सुड्अंगुरे १ पयरंगुले २ घणंगुले ३ । एगंगुलायया एगफ्सिया सेढी महअंगुले, सई सईए गुणिया पयरंगुळे, पयरं भृईए गुणियं घणंगुळे । एएसि णं सङ्अंगुलपयरंगुलघणं-गुलाणं कयरे कमरेहिंतो अप्पे वा बहुए वा तुन्ने वा विसेसाहिए वा ? सञ्बत्धीचे सङ्अंगुले, पगरंगुले असंबेजगुणे, घणंगुले असंबेजगुणे। सेतं उस्सेष्टंगुले। से कि तं पमाणंगुळे ? पमाणंगुळे-एगमेशस्स रण्यो चाउर्तचकवहिस्स अद्रयोवण्यए कागणीर्यणे छत्ते दुवालसंसिए अहकणिए अहिगरणसंठाणसंढिए पण्णते, तस्त णं एगमेगा कोबी उस्सेहंगुलविक्षंभा, तं समगरस मगवओ महावीरस्स अर्द्धगुर्ल, तं सहस्सगुणं पमाणेगुलं भवइ । एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाई=पाओ, दुझल-सञ्गुलाइं=विहत्वी, दो विहत्वीओ=रवणी, दो रवणीओ=कुरछी, दो कुरुछीओ= थण् , दो थणुसहस्साइं=गाउयं, चतारि गाउयाइं=जोवर्ण । एएणं प्रमाणंगुलेणं कि पक्षीयणं ? एएणं प्रमाणं मुख्यं पुढवीणं कंडाणं पावाकाणं अवणाणं अवणपस्वडाणं निर्याणं निर्यावछीयां निर्वपत्यद्वाणं कप्पाणं विसाणाणं विसाणावछीयां विसाणपाथ-डार्ज टंकाणं कृहाणं सेलाणं सिहरीणं पब्भाराणं विजयाणं वक्साराणं बासाणं वास-हराणं वासहरपञ्चयाणं बेला(बलया)मं बेह्याणं दाराणं तीरणाणं शिवाणं समुहाणं आयामविक्संभोचनोध्वेहपरिक्योवा मविजाति । से समासको तिबिहे प्रकाने । संब्रहा-सेदीअंगुले १ पर्यापुले २ वर्षमुळे ३ । असंखेळाओ खोयवदोडाकोडीओ सेदी, सेवी सेवीए गुणिया पगरं, पगरं सेवीए गुणियं सोगी, संबोधाएवं खोले गुणिको संखेजा लोगा, असंखेजएणं कोचो युक्रिओ असंखेजा खोगा, अर्बहीर्ज खोगी गुणिको अर्थता स्रोगा । यस्सि यं सेदीअंगुस्यवर्गमुक्तम् कार्यः नामीसितो

अन्यें वा बहुए वा तुहे वा विसेसाहिए वा ? सव्यत्योवे सेडीअंगुले, पयरंगुले असंबेजनुषे, चर्णगुळे असंबेजगुषे । सेर्त पमाणगुळे । सेर्त विभागनिष्कणे । सेर्त क्षेराप्यमाणे ॥ १२४ ॥ से कि तं कारुप्यमाणे ? कारुप्यमाणे दुविहे प्रवन्ते । तंजहा-पर्मनिष्फण्णे य ९ विमागनिष्फण्णे य २ ॥ १३५ ॥ से कि तं पर्सनिष्फण्णे १ पएसनिप्कणे-एगसमबद्धिईए, वुसमबद्धिईए, तिसमबद्धिईए जाव दससमबद्धिईए, चंक्रिजसमयद्विर्प्, असंक्रिजसमयद्विर्प् । से तं पएसनिप्फण्णे ॥ १३६ ॥ से कि तं विमागनिष्पण्णे ? विमागनिष्पण्णे -वाहा-समयावित्य सुदुत्ता, दिवस अहोरत्त पक्स मासा य । संबच्छर जुन पर्लिया, सागर ओसप्पि परियहा ॥ ९ ॥ ९३० ॥ से कि तं समए ? समयस्स णं पहवणं करिस्सामि-से जहानामए तुष्णागदारए सिया-तक्के, बलबं, जुगवं, जुवाणे, अप्पायंके, चिरम्यहत्थे, दक्षपाणिपामपास-पिद्वंतरोस्परिषए, तलजमलजुयलपरिचणिभवाद्, चम्मेद्वगदुइणमुद्धियसमाहयनि-विकासकाए, उरस्सवस्तमण्यागए, संघणपवणज्ञश्रणवाबामसमत्वे, छेए, इक्खे, पत्तहे, कुलके, मेहावी, निडणे, निडणसिप्पोवगए, एवं महई पडमाडियं वा पहसा-बियं वा गहाब सबराई इस्थमेतं ओसारेजा, तत्थ नोयए पण्यवयं एवं वयासी-जेणं कालेणं तेणं तुष्णागदारएणं तीसे पडसावियाए वा पहसावियाए वा सयराहं इत्यमेते ओसारिए से समए भवड़ ? नो इणड्डे समद्रे । करहा ? जस्हा संखेळाणं तंत्णं समुद्रवसमितिसमागमेणं एमा पद्यसादिया निप्कज्ञह्, उबरिह्रास्म तंतुस्मि खिलाणे हिहिहे तंतू न छिजद, अण्णिम काले उबस्हि तंतू छिजद, अण्णिम काळे हिक्कि तंत् किञाह, तम्हा से समए न भवड़। एवं वर्यतं पण्णवयं चोयए एवं वयाची-जेणं कारेणं तेणं तुष्णागदारएणं तीसे पडसावियाए वा पहसावियाए वा उवस्कि तंतू क्रिण्णे से समए भवइ ? न भवइ । कम्हा ? अम्हा संबेजाणं पम्हाणं समुद्वसभिइसमागमेणं एगे तंत् निष्फज्जह, उविक्के पम्हे अधिक्रणी हिद्वित पम्हे न क्रिजार, अण्यास्म काले उवरित्रे पुरहे क्रिजार, आण्यास्म काले हिक्कि पम्द्रे क्रिजाइ, तम्हा से समए न भवइ । एवं वर्यतं पञ्जवरं चोयए एवं वयाची-केण काकेण रोण गुण्यागदारएणं तस्स तंतुस्स उबस्कि पम्हे छिण्ये से समय् अवह ? व अवह । कम्हा ? जम्हा अर्थताणं संघावार्थं समुद्रयसमिदसमा-गर्नेणं एगे वस्ते जिल्लाह, उपित संचाए सविसंपाइए हेहिंक संचाए न निर्मधा-इच्या, क्रमान्सि पार्के उपनित्रे संवाद निर्मवाइजाइ, अवगन्ति काले हेन्त्रिके संवाद निर्मानस्थाह, सम्बा से समय न अबह । एशो वि य में सुहुमतराण समाए पण्यते समगानवी 🎉 वर्षांकामां स्ववार्य समुवयसमिहसमाययेणं सा एगा 'आवित्य'ति

व्यः. संविज्याक्षो आविष्याक्षो=ऊसासो, संविज्याको आविष्याको=नीसासी । गाष्टाओ-इट्टस्स अणवगक्तसः, निरुविद्यद्धस्य जंतुणो । एगे स्त्यासनीसारी, एस पाणुति तुमाइ ॥ ९ ॥ सत्तपाणुणि से थोबे, सत्त भोवाणि छे सन्ने । लवाणं सत्तह-त्तरींए, एस मुहत्ते वियाहिए ॥ २ ॥ तिष्णि सहस्सा सत्त य, सयाई तेहत्तरिं व कसासा । एस मुहत्तो भनिको, सब्बेहि अनंतनाचीहि ॥ ३ ॥ एएणं मुहत्तपमाणेणं तीरं मुहत्ता=बहोरतं, पण्णरस अहोरता=पक्सो, दो पक्सा=मासो, दो मासा=उक, तिणिण उत्त=अयणं, हो क्षयणाइं=संबन्छरे, पंच संबच्छराइं=जुगे, बीसं जुगाइं= वासमयं, दस वाससयाई=वाससहस्यं, सयं वाससहस्यार्ण=वाससयसहस्यं, चोरा-चीइं वासनयसहस्साइं=से एगे पुन्तंगे, चउरासीइं पुन्तंगसयसहस्साइं=से एगे पुरुवे, चउरासीइं पुष्वसयसहस्साइं=से एगे तुडियंगे, चउरासीइं तुडियंगसग्रसह-स्माइं=से एगे तुष्टिए, चउगसीइं तुडियसयमहस्साइं=से एगे अडडंगे, चउरासीइं अङ्डंगसयसहरूसाहं-से एगे अङ्ढे, एवं अववंगे, अववे, बृह्यंगे, हृहुए, उप्पत्नेगे, उप्पले, परमंगे, परमे, नलियंगे, नलिये, अन्छनिरंगे, अच्छनिरं, अर्खने अउए, पटयंगे, पउए, नडबंगे, नडए, चूलियंगे, चूलिया, सीमुपहेटियंगे, चउरा-सीई सीमपहेलियंगस्यसहस्याई=सा एगा सीरापहेलिया । एयावया चेत्र गणिए, एयावया चेव गणियस्स विगए, एसो परं ओवमिए प्रसाह ॥ १३८ ॥ से कि तं ओविमए ? ओविमए दुनिष्टे पण्यते । तंजहा-पिल्ओवमे य ९ सागरीवमे य २ । से कि तं परिओवमें ? परिओवमें तिबिहे पण्यते । तंत्रहा-उद्वारपरिओवमें ३ अद्वापित्रओवसे २ खेलपर्किओवसे य ३ । से किंतं उद्वारपित्रकोवसे ? उद्वारप लिओवमे द्विहे पण्णते । तंजहा-सहमे १ वाबहारिए य २ । तत्व वं जे से सहमे से छप्पे। तत्य णं जे से बावहारिए-से जहानामए पहे सिया-जोगणं आयासमिकार भेगं. ओवणं उ**ष्ट्रं** उश्वनेणं, तं तिगुणं सविष्ठेसं परिक्योचेणं, से णं पहे एकाहिस नेयाहियतेयाहिय जान उद्घासियां रासरत्तपस्याणं संसद्धे सेनिचिए मरिए बारामाकीयीणं ते ण बालमा नो शमी उहेजा, नो बाऊ हरेजा, नो बहेजा, नो प्रक्रियेहिला, नो पृह्नाए हव्यमायच्छेजा, तभो पं समए समए एयमेगं वालमां अवहाद कावह-एणं कालेणं से पहे खीणे नीरए निहेने निष्टिए मनइ से तं वावदारिए डवारपिओं-वसे । बाह्य-एएसि पक्षाणं, कोडाकोडी हवेज दसमुखिया । तं वबहारियस्य उद्धारः सागरीवमस्य, एगस्स अवे परिमाणं ॥ १ ॥ एएहि बाबद्वारियङकारपक्रियोक्ससागरीयः मेहिं कि प्रभोयणं १ एए हिं बायहारिक्य दारपिड्योदमसावरीक्षेत्रे जाति किविष्यनी यणं, केवलं पण्णवणा पण्णविज्ञह । सेशं बाबहारित उद्यारपछिजीवेते । है वि

सुद्धमे उद्यारपिक्कोवमे १ सुद्धमे उद्धारपिक्कोवमे-से अहानामए पहे सिया-जोयणं आयामविक्त्रीमणं, जीवमं उञ्बेहेणं, तं तिगुणं समिसेसं परिक्त्रीवेणं, से णं पहे एगा-वियवेगाहियतेगाहिय जाव उद्घोतेणं सत्तरत्तपस्टाणं संसद्वे संनिचिए महिए वालका-कोडीणं, तत्व ण एगमेगे वालग्गे असंख्याइं संटाई कबड, ते णं वालग्गा विद्वि-ओगाहणाओ असंखेळहभागमेता सुहुमस्स पणगजीवस्य सरीरोगाहणाउ असंखेळ-गुणा, ते पं वालग्गा जो अग्गी हहेजा, जो वाज हरेजा, जो कुहेजा, जो पिल-विद्वंतिजा, को पूरताए इट्वमागच्छेजा, तक्षो कं समए समए एममेगं वालमं अवहाय आबइएणं कालेणं से पहे खीणे नीरए निहेंचे निद्विए भवड सेनं सहुमे उदारपलिओवमे । साहा-एएसि पहाणं, कोडाकोडी हवेज दसगुणिया । ते सुहुमस्स उद्धारसागरोदमस्स, एगस्स भवे परिमाणं ॥ २ ॥ एएहि सुहुमउद्धारपरिस्रोदम-सागरोबमेहि कि पश्चीयणं ? एएहि ग्रुहुमउद्धारपिलमोवमसागरोबमेहि बीवससुद्दाणं उद्धारी घेप्पह । केबङ्या णं भंते ! दीवसमुद्दा उद्धारेणं घण्णता ? गोयमा ! जावड-या णं अड्डाइज्जाणं उद्धारसागरीवमाणं उद्धारसमया एवइया णं दीवसमुद्दा उद्धारेणं पण्णता । सेतं सुहुमे उद्वारपतिओवमे । सेतं उद्वारपतिओवमे । से कि नं अद्वापित-ओषमे ? अद्वापिक्केओवमे दुधिहे पण्यते । तंत्रहा-सुहमे य १ वावहारिए य २ । तस्य णं जे से सहसे से उप्पे। तत्थ णं जे से कावहारिए-से जहानामए पहे सिया-जीयणं भायामविक्संभेणं, जोयणं उच्चेहेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पहे एगाहियनेवाहियतेयाहिय जाव भरेए वालग्गकोडीणं, ते णं वालग्गा नो अम्पी डहेजा जाव नो पछिविदंसिजा, नो पूर्लाए हम्बमागच्छेजा, तको णं बाससए बाससए एममेगं वालमां अवहाय जावहएणं कालेणं से पत्ने खीणे नीरए निलेवे निद्विए भवद से तं वावहारिए अदापलिओवने । शाहा-एएसि पहाणं, कोडाकोडी अविज दसगुणिया । तं बवहारियस्स अद्धासागरीवमस्न, एगस्स भवे परिमाणं ॥ ३ ॥ एएहिं वाबहारियअद्धापिक्योबमसागरोबमेहिं कि प्रभावनं ? एएहिं वावहारिय-अद्भापिक्रेजोबमसागरीवमेहिं मत्यि किंचिप्पक्षीयमं, केवलं वण्णवणा पण्णविज्ञा । सेतं बावहारिए अद्भापिक्योवमे । से कि तं ग्रहुमे अद्भापिक्योवमे १ ग्रहुमे अद्भा-पित्रकोवने हैं बहानासए पहें विया-बोमणं आयामेणं, जोयणं उच्नेहेणं, तं तिसुणं सविसेशं परिकडेवेणं, से मं पहे एगाहियबेबाहियतेबाहिय जान अरिए बालमा-कोबीयं, तस्य में एगमेगे वासमी अधिकजाई संबाई कवाइ, ते में वालगा दिक्कि-कोगाइणाओं असंबेखहमागरेता सहुमस्य प्रणाबीवस्य सरीरोगाइणाओं असंबेख-गुजा, ते यं बारमा नी जन्म बहुजा जाव नी प्रक्रिक्टिका, नी पृहताए हज्ब-

मागच्छेजा, तओ णं वाससए वाससए एगमेर्ग बाक्स अवदाय जावद्रवर्ण कालेपं से पहे सीचे नीरए निहेबे निद्विए भवइ सेत्तं शुहुमे अदापिओवमे । बाह्य-एएसि पहार्च, कोडाकोडी सबेज दसपुणिया । तं ग्रहमस्स अद्धासागरीवमस्स, एगस्स सबै परिसार्थ ॥ ४ ॥ एएहि शहुमेहि अद्वापिकभोनमसागरोषमेहि कि पश्रोयणं १ एएहि शहुमेहि अद्धापलिओवमन्त्रागरीवमेहिं गेरहमतिविक्ताजोणियमणुरसवेताणं आउयं सविज्ञाह ॥ १३९ ॥ णेरहयाणं संते ! केन्ड्यं कालं ठिडे पण्णता ! नीयमा ! जहण्लेणं दस-वाससहस्राहं, उक्कोरोणं तेत्तीयं सागरोवमाइं। रयणप्यहापुढविणेरहयाणं भेते ! केनइयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं इसवाससहस्माई, उक्रोसेणं एगं सागरीवसं । अपजानगर्यणप्यहायुक्तविजेरहवाणं मेते । केवड्यं कारं ठिई पण्णसा ? गोयमा । जहल्लेण वि अंतोमुह्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पजत्तगरयणप्यहा-पुरुक्षिणरह्याणं भेते ! केबहुर्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! अहुण्णेणं वसवास-सहस्साई अंतोसहतृणाई, उद्योसेणं एगं सागरीवमं अंतोसहतुणं । सकरणहापुढ-विणेरहयाणं भेते ! केवड्यं कालं ठिडं पालता ? गोबमा ! जहण्येणं एगं सागरी-वसं, उक्कोरेणं तिण्णि सागरोवसाई । एवं सेसपुढवीद्र पुच्छा - साणियव्या । बालु-यपहापुरविणेरहयाणं-जहण्येषं तिष्णि सागरीवसाई, उद्दोरेणं सत्तसागरीवसाई । पंकव्यहापुरुविणेरहवाणं-जहण्येणं सत्तसागरोवमाई, उद्योसेणं दससागरोवमाई । ध्मप्पराप्दविषेर्द्रयाणं-जरुष्णेणं दसमागरीवमार्हः, उन्नोसेणं समरससागरीवमार्दः । तमप्रहापद्विकोर्ड्याणं-जहण्येषं सत्तर्ससागरोबमारं, उद्योशंणं वार्वाससागरोब-मार्ड । तमतमापुढविषोर्डयाणं भेते ! केव्हयं कालं ठिष्टं पन्नता ? गोबमा ! बह-णोणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेलीसं सागरोकमाइं । अग्ररक्रमाराणं भंते ? कंबइयं कालं ठिई पण्याना ! गोयमा | बहुष्णेणं इसवाससहस्साई, उद्धोसेणं साइरेगं सागरोवमं । अनुरक्तारदेवीणं भंते । केन्द्रयं कालं दिई पण्याता ! बोबसा । जहण्येणं दसवाससहरसाई, दक्कोरोणं अद्वयंत्रमाई परिओवमाई। नायक्रमाराणे मंते । केवहयं कारुं ठिई पण्णना ? गोयमा ! जहण्येणं दसवाससहस्साई, उद्योसेणं हेस्काई दुष्णि पिक्योतमाई । नागकुमारीणं अंते ! केबह्यं कार्क ठिई पण्णता ! बीयमा ! जहुण्येणं दसवागमहस्साई, उक्कोसेणं देसणं परिजोक्तं । एवं बहा जागकमारदेवाणं देवीण य तहा जाव श्रमियकुमाराणं देवाणं देवीण श्र भावियस्यं । पुत्रवीकार्याणं भेते ! केनइयं कालं ठिई पण्यमा ? गोयमा ! अहण्येणं अंतोसहर्ता, उद्योगेनं नागीसं वाससहस्साई। सहमपुरवीकाइबार्ण ओहियाचं अपञ्चलवाणं प्रवासवाय म । तिष्ट वि पुच्छा । योगमा । अहण्येणं अंतोसहत्तं, उद्योग्नेय वि अंतोसहत्तं । सामस्पूर्वनि

कास्याणं पुष्छा । गोयमा । जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उद्दोसेणं बाबीर्धं वाससहस्साई । अपजातगरायरपुरविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्येण वि अंतोमुहुत्तं, उद्मोसेण वि अंतीमुदुत्तं । पञ्चत्तगवायरपुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्येणं अंतीमुदुत्तं, उक्कोसेमं यावीसं वासमहस्साइं अंतोसुहुनूणाई । एवं सेसकाइयाण वि पुरुखावयणं भाणियव्यं । आउकाइयाणं-अहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योसेणं सत्तवाससहस्साई । सहुमआटकाइयाणं ओहियाणं अपजनगाणं पजनगाणं तिण्ह वि-जहण्येण वि अंतोमुहुत्तं, टक्सेसेण वि अंतोमुहुतं । बायरआउकाइयाणं जहा ओहियाणं । अपञत-गबायरआउकाइयाणं-जहणोय वि अंतोसुहुनं, उद्दोरीण वि अंतोसुहुनं । पञ्चत्तगबा-यरआउकाइयाणं-जहण्णेणं अंतीमुहुत्तं, उद्घोतेणं सत्तनाससहस्माई अंतीमुहुतूणाई । ते उकाहमाणं-जहण्णेणं अंतोमुहुनं, उद्योसेणं तिण्णि राइंदियाइं । सहुमते उकाहमाणं बोहियाणं अयञ्चलगाणं पञ्चलगाणं तिण्ह वि-अह्म्णेण वि अंतोसुह्तं, उद्दोरेण वि अंतोमुहुत्तं । वायरतेजकाइयाणं-जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उन्नोसेणं तिण्णि राईदियाई । अपजत्तगचायरतेलकाइयाणं-जहण्णेण वि अंतोमुहुतं, लक्कोसेण वि अंतोमुहुतं । पजनगबायरतेनकाइयाण-कहण्णेयं अंतोमुहुनं, उक्कोसेणं तिल्य राहंदियाई अंतो-मुहुनूणाई । बाउकार्यामं-जद्दण्णेणं अंतीमुहुनं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साई । सहमदाउद्माद्याणं औहियाणं अपजतमाणं पजतमाण य तिण्ह वि-जहण्णेण वि अंतोमुहुतं, उद्दोसेण वि अंतोमुहुतं । वायरवाउकाइयाणं-जहण्णेणं अंतोमुहुतं, उद्दोरेणं तिष्णि वाससहरसाइं। अपज्यनगवायरबाउकाइयाणं-जहण्णेण वि अंतो-मुहुतं, उद्योसेण वि अंतोमुहुतं । पजत्तनवायरवाउकाइयार्व-जहणोर्ण अंतोमुहुतं, उक्तोसेणं तिमिण वाससहस्साई अंतीमुहुतूणाई । वणस्तइकाहवाणं-जहण्येणं अंती-मुहुत्तं, उद्योसेणं दसवाससहस्साई । सहुमवणस्सद्दत्ताहवाणं ओहियाणं अपवासगाणं पजनगाण य तिष्ट् वि-जद्दण्णेण वि अंतीमुहुत्तं, टक्कोसेण वि अंतीमुहुत्तं। वायर-वयस्सइकाङ्ग्राणं-जद्दण्येणं अंतोमुद्धतं, उक्षोसेणं दसवाससहस्साई । अपज्यसम-कायरवणस्तदकाइकाणं-जदुष्णेषां अंतोमुहुतां, उद्योतेण वि अंतोमुहुतां । पजतग-बायरवणस्यक्रकाह्याणं-अद्यक्षेणं अंदीमुहुतं, उद्योसेणं इसवाससद्वस्याहं अंदी-मुहुपूनाई । वेइंदियाणे अंते । केन्द्रमं कारुं ठिइं पण्यता ? गोयमा । जहण्येणं अंतोमुद्धतं, रक्षोतेणं कार्ससंबच्छराणि । अपजत्तगवेदंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! व्यक्ष्येन वि अंतीसुषुर्तं, उन्नोसेण वि अंतीसुदुर्तः । पजतमबेदंदियाणं । गोयमा । अहम्बेणं शंतीसुहुतं, त्रक्षोतेणं कारससेवच्छराहं अंतोसुहुतूचाई। तेरदिवाणं पुच्छा। क्षेत्रमा । बहुकोणं अंदोस्त्रमं, उक्कोरीणं स्मूलप्रकातं राहेरियाणं । अपनात्त्रारीर्य-

उर्ग भुग पुत्रकोडी, पलिओवमासंखभागी य ॥ २ ॥ मणुस्साणं भंते ! केवह्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहत्तं, उक्कोर्सणं तिण्णि पिक्सोवमाई। सम्मुच्छिममणुस्साणं पुच्छा । गीयमा ! जहुण्येण वि अंतोमुहुतं, उद्दोसेण वि अंतोमृहुतं । गब्भवक्षंतियमणुस्ताणं पुचका । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुतं, उद्दोसेणं तिण्णि परिओवमाई । अपजनगगन्भवद्यंतिश्रमणुस्साणं मंते ! केवडयं कार्ल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुतं, उद्गोसेण वि अंतोमुहुतं । पजात्तगगच्भवकंतियमणुस्साणं भंतं ! केनइयं कालं ठिई पण्णता ! गोत्रमा ! जह-ण्णेणं अंतोमुहनं, उद्दोसेणं तिण्णि परिओवमाइं अंतोमुहनुणाइं । बाणमंतराणं देवाणं भेते ! केवइयं कालं ठिई पण्णता ? गीयमा ! जहण्येणं दसवासमहस्साई, उद्देशियां पिल्लोवमं । वाणमंनरीणं देवीणं भंत ! केन्द्रयं कालं ठिई पण्णना ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवामसहस्साई, उन्होसेणं अखपलिओवमं । जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिड्डे पण्णका ? गोयमा ! जहण्णेणं साहरेगं अहुमागपितओ-वमं, उद्दोतेणं पलिओवमं वासमयगहस्समञ्महियं । जोइसियदेवीणं भंते ! केयह्रयं कालं टिई पण्णाना ? गोयमा ! जहण्णेणं अझमागपरिओवमं, उद्योरीणं अद्वपरि-ओवमं पण्णामाए वाससहस्सेहि अञ्महियं । चंदविमाणाणं भेते ! देवाणं केवदयं कालं ठिई पण्णमः ? गोयमा : जहण्णेणं चडभागपरिखोदमं, उद्योसणं पनिओयमं वासभयपहरसम्ब्सहियं । चंदविमाणाणं भंते । देवीणं पुरुष्ठा । गोयमा । जहण्येणं च उभागपिक ओवमं, उद्दोरीणं अद्भपतिओवमं पण्णासाए बामसहस्मेर्ति अन्मिहियं। स्रविमाणाणं भेते ! देवाणं पुच्छा । गोबमा ! जहणीणं चडभागारिओवमं, उद्योगेण परिश्लोबमं बायसहरूपमञ्मिद्धगं । सरविमाणाणं देवीणं पुन्छा । गोयमा ! जहण्येणं चटभागपिलओवसं, उक्कोसेणं अद्भपिलओवसं पंचिहं वागसएहि अन्स-हियं । गहबिमाणाणं भेते । देशणं केवहयं कालं ठिडे पण्णना ! गोयमा । जहण्णेणं च उभागपिर ओवमं, उद्योसेणं परिक्षोनमं । गृहविमाणाणं भंते ! देवीणं पुरुद्धा । गोयमा ! जहण्येणं चडभागप्रिओवमं, उद्दोसेणं अद्वपतिओवमं । णनःतत्तविमा-णाणं भेते ! दंबाणं पुच्छा । गोधमा ! जहण्यं च उभागपिकश्चित्रमें, उद्दोसेणं अद्धपतिओवसं । जक्तवत्तविसाणाणं देवीणं पुच्छा । बीयमा : जहण्येणं चडमाय-पतिओवमं, उद्योसेणं साइरेमं चडभागपतिओवमं । ताराधिमाणाणं भंते ! देवाणं पुच्छा । योवमा ! जङ्गणेणं माइरेगं भट्टमागपलिओवमं, उद्दोरोणं चउमागपन्ति-ओवमं । ताराविमाणाणं भंते ! देवीणं केवस्यं कार्ल ठिई पण्णता ? गोयसा ! जहणीणं अद्भागपलिओवर्गः उद्योसेणं साइरेगं अद्भागपलिओवर्गः । वैसाणियाणं

भेते ! देवाणं केवहयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! अहण्णेणं पलिओवमं, उक्रोसेणं तेशीसं सागरोवमाई । वेसाजियाणं भंते । देवीणं केनइयं कालं ठिई पण्णशा ? गोसमा ! जहण्येणं पलिखोवमं, उद्योसेणं पणपण्णं पलिखोवमाई । सोइम्मे णं मंने ! कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्येणं पतिओक्मं, उन्नोसेणं दो सागरो-वमाई । सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिम्यहियादेवीणं पुच्छा । गोयना ! अहण्लेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्तपतिओक्साई । सोहम्मे णं भंत ! कप्पे अपरिमाहिया-देवीणं फेवह्यं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उद्दोसेणं पष्णासं पलिओवर्स । इसाणे णं अंते ! कृष्ये देवाणं केवड्यं कालं ठिई पण्णाता ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पतिओवमं, उक्कोरेणं साइरेगाइं दो सागरीवमाइं। इसाण ण भंते ! कृष्पे परिमाहियाहैबीणं केवडयं कालं ठिई पण्णता ? मोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पत्रिक्षोत्रसं, उद्दोसेणं नवपत्रिओवसार्ड । इसाणे णं भेते ! कप्पे अपरिम्महियादेवीणं केवड्यं कार्ट ठिंड पण्णता ? गोयमा ! बहुण्णेणं माइरेगं पलिओक्सं, उन्होसेणं पणपण्णं पलिओक्साइं। सर्णकुसारे णं संते ! कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरीवमाइं, उक्ष्मेणं मत्तसागरीवमाइं । माहिंदे शं भंते ! कप्पे देवाणं पुच्छा । गीयमा ! जहणोणं साइरेगाइं दो सागरोबमाइं. उद्योसणं साइरेगाई सक्तागरीवमाई। बंभलीए णं भंते! कप्पे देवाणं पुरस्का। गोयमा ! जहण्णेणं सन्तमागरोबमाई, उक्तोसेणं दससागरोबनाई । एवं कप्पे कप्पे केन्डर्य कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! एवं भाषियव्यं-लंतए-जहण्णेणं दससागरी-बमार्ट, उद्गोसेणं चडहस सागरोवमार्ड । महामुक्के-अहण्येणं चडहस सागरोवमार्ड. उद्दोसंणं मत्तर्म मागरीवमाई । महस्सारे-जहण्णेणं सत्तरम सागरीवमाई, उद्दोसेणं अद्वारत सागरोबमाई । आणग्-अहण्येणं अद्वारस सागरोबमाई, उक्कोसेणं एग्ण-वीसं मागरोवमाइं । पाणए-जहण्णेणं एन्णवीसं सागरोबमाइं, उद्दोसेणं वीसं सागरोहमाई । आर्ण-जहण्येणं वीसं सागरोवमाई, उक्कोसेणं एकवीसं सागरो-नमार्ड । अञ्चए-अहण्लेणं एकवीसं सागरोबमार्ड, उक्कोरेणं नावीसं सागरोबमार्ड । होद्रमहोद्रमगेविकविमाणेस मं भंते ! देवाणं केवद्वयं कालं ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं वावीसं सागरीवमाई, उक्कोसेणं तेवीसं सागरीवमाई । हेद्रिममज्ज्ञिसगीव-अविमाणेश णं भेते ! देवाणं ० ? गोयमा ! जहण्येणं तेथीसं सागरीवमाइं, उक्कोरेणुं चटवीसं सागरोबनाइं । हेड्रिमस्वरिक्वविकाविमाणेसु वं भेते ! देवाणं ॰ ?गोबमा ! बहर्णणं बडवीसं सागरीवसाई, उद्योसेणं प्रविसं सागरीवसाई। मज्जिसहैद्विम-गेबेजविमाणेस वं मेते ! देवाणं ? गोयसा ! जहण्येणं पणवीसं सागरोवसाई.

उक्रोसेणं छव्यीसं सागरोवमाई । मज्जिममज्ज्ञिमगेवेजविमाणेव णं भंते । देवाणं • १ गोयमा ! जहण्णेणं छव्दीसं सागरोबमाइं, उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोबमाइं । मज्झिमउवरिम्गोवेजविमाणेसु णं मंते ! देवाणं० ! गोयमा ! जहुण्णेणं सनावीसं सागरीवमाई. उद्योसेणं अद्वावीसं सागरीवमाई। उबारेमहेद्रिमगेविजविमाणस् णं भंते ! हेबाणं ० ? गोयमा ! जहण्येणं अद्यावीसं सागरीयमारं. उद्योगेण एगणतीसं सागरीवमार्ड । उत्तरिममज्ज्ञिमगेविज्ञविमाणम् णं भेते ! देवाणं ० १ गोयमा ! जह-णोणं एगुणतीसं सामरोवमाइं, उद्दोसेणं तीसं सागरोवमारं । उवरिमउवरिमगेविज-विमाणेन णं भेते ! देवाणं । शोयमा ! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाहं, उद्दोमेणं इद-नीसं सागरोत्रमाहं । विजयवेजयंतज्ञयंतअपराजियविमाणेसु णं भंते ! देवाणं केय-इयं कालं टिई पण्णता ! गोयमा ! जहण्णेणं इक्कतीसं सागरावमाई, उद्घोसणं तंत्रीसं सागरोवमाई। सञ्बद्धांसद्धे णं भंते। महाविमाणे देवाणं केवइये कालं ठिई पण्णाना ! गौयमा ! अज्ञहण्यम्यक्रोसेणं तेनीसं सागरीयमाई । सेनं सहमे अदापिठओवमे । सेतं अद्वापिक ओवसे ॥ १४० ॥ से कि नं खेलपिक ओवसे १ खेलपिक ओवसे दुनि है वण्णते । तंजहा-मुहुमे स १ वावहारिए य २ । नत्थ पं जे से मुहुमे से ठप्पे । तन्थ णं जे से वाबहारिए-से जहानामए पहे सिया-बोयणं आयामियमंत्रेमंत्रेणं, जोयणं उच्चेहेणं तं तिगुणं मिससे परिक्षेत्रेणं, से णं पत्रे एनएहियवेयाहियतेयाहिय जाव भारिए बालगाकोडीर्ण, ते णं बालगा जो अग्गी उहेजा जान जो पृत्रताए स्टब्सास-च्छेजा, जे मं तस्य पहल्स आगासपएसा तेहि बालगाहि अप्पुल्या तको मं समए समग् एगमेगं आगारापणसं अवहाय आबहरणं कार्कणं से पहे खीणे जाव जिद्विए भवड से नं वाबहारिए खेसपलिओवमे । शाहा-एएमि पहाणं, कोडाबोडी भवेज दस-गुणिया । तं ववहारियसम खेलमुगगरोबमस्म, एनस्स भवे परिमाणं ॥ १ ॥ एग्हिं बाव-हारिएहिं खेलपिक ओवमसागरीयमेहिं कि प्रश्लोयणं १ एए हिं वावहारिएहिं खेलपिक ओ-वमनागरोबमेहि णत्त्रि किविष्यक्षोयणं, केवलं पण्णवणा पण्णांवज्ञह । सेनं वायहारिए सेतपलिओवमे । से किं तं सहुमे खेतपलिओवमे ? यहुमे खेतपलिओवमे –से जहाणा-मए पहे सिया-जोयणं आयामविक्लंमेणं जाव तं तिगुणं गांधसेसं पारक्लेकेणं. से णं पक्ष एगाहियवैयाहियतेयाहिय जान भरिए वालग्यकोडीणं. तत्थ णं एमसेरे वालमें असंक्षिजाई खंडाई कजह, ते णं वालमा दिद्विश्रीगाहणाओं असंक्षेज्रह-भागमेला सहमस्य पणगजीवस्य सरीरोगाहणाओ असंखेळगुणा, ते जं वाल्यगा नो अम्मी उद्देश जाव नो प्रताए हब्बमागच्छेजा, जे णं तस्त पहस्स आगामपण्या वेहिं वालमोहिं अप्फुण्णा वा अणापुल्या वा तओ यं समय समय एवमेरां आगास-

पएसे अबहाय जावइएणं कालेणं से पहे खीणे जाव निद्धिए भवः सेतं मुहमे खेत-पिलकोवमे । तत्थ णं चोयए पण्णवगं एवं वयासी-अत्थि णं तस्स पहस्स आगास-पएसा जे मं तेहिं बालगोहिं अमाफुम्मा ? हंता ! अस्य । जहा को दिहंतो ? से जहाणामए कोक्कए सिया कोइंडाणं भरिए, तस्य णं माउलिंगा पक्सिता ते वि भाया, तत्थ णं त्रिक्षा पक्खिला ते वि साया, तत्थ णं आमलगा पक्खिला ते वि मागा, तत्य णं बयरा पिन्खिला ते वि माया, तत्थ गं चणगा पिन्खला ते वि माया, तत्य णं मुम्मा पक्खिता ते वि माया, तत्थ णं मरिसवा पविखता ते वि साथा, तत्थ णं गंगाबाळुया पक्तिमा सा वि मात्रा, एवमेव एएणं दिहुनेणं अस्यि णं तस्य पहस्य आगासपएमा जे णं तेहिं वालगोहें अणाप्रण्या । शाहा-एएसिं पक्षाणं, कोडाकोडी भवेज दमगुणिया । तं गृहमस्य खेत्तसागरीवमस्य, एगस्य भवे परिमाणं ॥ २ ॥ एएहिं गृहमेहिं खेलप्रसिक्षोयमनागरोबमेहिं कि पश्रीयणं ? एएहिं सहमेति खेनपळिओवसमागरोवभेहि दिद्विवाए दव्या मित्रजीत ॥ १४९ ॥ क्इविहा णं भंते ' दब्बा पण्णता ? गोत्रमा ! दिवहा पण्णता । तंज्ञहा---जीवदब्बा य १ अर्जात्रदरवा य २ । अजीवद्व्या णे भेते ! कडविहा पण्णता ! गोयमा ! दुविहा पण्णना । तंजहा--- स्वीअजीवद्या य १ अस्वीअजीवद्या य २ । अस्वीअजीव-दरवा णं भंते ! कडविहा पण्णता ! गोयमा ! दम्बिहा पण्णता । तंबहा---धम्मान्धकाए १ धम्मान्धिकायम्स देशा २ धम्मान्धिकायसम् पएसा ३ अधम्मान्धिन काए ४ अधम्मित्थिकायस्य देसा ५ अधम्मित्थिकायस्य पएसा ६ आगासत्थिकाए ७ आगग्निकायस्त देसा ८ आगातिषकायस्य पएमा ९ अदासमए १०। स्वी-अनीयदब्ता ण भेते ! ऋबिहा पण्णता ? गोयमा ! चउब्बिहा पण्णता । नेत्रहा-लंगा १ संपटेसा २ संभगतमा ३ परमणुपोगाला ४। ते णं भंते! कि संक्रिजा असंविज्ञा अर्णता १ गोयमा ! नो संखिजा, नो असंखिजा, अर्णता । से केण्ड्रेणं भंते ! एवं बुच:-नो संखिजा, नो असंखिजा, अणंता ? गोयमा ! अणंता परमा-ण्योगाला, अणंता दुपएसिया लंधा जाव अणंता अणंतपएसिया खंधा, से एए-णदंशं गोयमा ! एवं वृच्चद्र-मो संखिजा, नो असंखिजा, अणंता । जीवद्व्या णं भंते ! कि संविजा अस्विजा अर्णता ? गोयमा ! नो संविजा, नो असेविजा, अर्णता । से केणद्रेणं भेते ! एवं बुचड्-तो संख्यिता, नो असंखिजा, अणंता ? गोयमा ! अमंजिजा गेरइया, असेखिजा असुरकुमारा जान असंखिजा यणियकुमारा. असं-बिजा पहित्रकाह्या जाव असंखिजा वाउकाइया, अणंता वणस्सहकाइया, असंखिजा बेइंदिया जाव असंक्रिजा चउरिंदिया, असंक्रिजा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, असं-

क्षिजा मणुस्सा, असंबिजा वाणमंतरा. असंबिजा जोइसिया, असंबिजा वेमाणिया. अणंता सिदा, से एएणड्रेणं गोगमा ! एवं गुषड्-नो संखिजा, नो असंखिजा, बर्णता ॥ १४२ ॥ कडविंहा णं भंते ! सरीरा पण्णता ? गोयमा ! पंच सरीरा पण्णता । तंबहा-ओरालिए १ वेटाञ्चए २ आहारए ३ तेबए ४ कम्मए ५। गेरहवार्ण अंते ! कड सरीरा पष्णता ? गोयमा ! तओ सरीरा पुण्यता । तंत्रहा-वेडव्विए १ तेयए २ कम्मए ३। असरकमाराणं भंते ! कह सरीरा पण्णता ? गोयमा ! तओ सरीरा पण्णता । तंजहा-वेटब्बिए १ तंयए २ कम्मए ३ । एवं तिष्णि तिष्मि एए चेव सरीरा जाव धणियकुमाराणं भाणियव्या । पृष्ठविकाइयाणं भंते ! कइ सरीरा प्रकाना है गोयमा । तक्षो सरीरा प्रकाना । तंजहा-ओराखिए १ तेया २ कम्मए है। एवं आहते उच्चणस्माइकाइयाण वि एए चेव तिष्णि सरीरा भाषियव्या । वाजकाइ-वाणं भंते ! कड सरीरा पण्णता ! गोवमा ! चनामे सरीरा पण्णता । तंजहा-ओरा-लिए १ वेउव्विए २ तेवए ३ कम्मए ४ । बेइंदियतेइंदियचटरिंदियाणं जहा पढ-वीकाइयाणं । पंचिदियतिहिक्खजोणियाणं जहा वाउकाइयाणं । मणस्माणं भंते ! कड मरीरा पण्णता ! गोयमा ! पंच सरीरा पण्णता । तंजहा-आंरालिए १ वेडव्विए २ आहारए ३ तेयए ४ कम्मए ५। वाणमंतराणं जोडांसवाणे वेमाणिनाणं जडा णेर्ड्याणं। केवड्या णं भेते ! ओराल्यिगरीरा पण्यमा ! गोयमा दुर्वहः पण्यमा । नंजहा-बदेखना स १ मुझेखना य २ । तत्थ णं जे ते बदेखना ते णं असंखिला. असंखिजाहि उत्पापणीओसिपणीहि अवहीरित कासओ, खेताओ असंखेजा लोगा । तत्थ मं जे ते मुझेलगा ते मं अमंता, अमंताई उस्मिप्पणीओसिप्पणीई अवर्तारंनि कालओ. खेनओ अणंना लोगा, दन्यओ अभवसिद्धिएहिं अणंनगुणा, सिद्धाणं अणंतभागो । कंबङ्या णं भंते ! बेडव्बियसरीरा पण्णना ! गोयमा ! द्विहा पण्णमा । तंत्रहा-बदेहमा य १ सुद्देहमा य २ । तत्थ णं जे ते बदेहमा ते र्ष असंख्या, असंखेळाहि उस्सिपणिओमप्पिणीहि अवहीरेति कालओ, खेलाओ असंखिजाओं सेंडीओं पयरस्य असंखेजहमागो । तत्य गं जे ते मुझेन्नगा ते गं अणंता, अणंताहि उस्सप्पिमओसप्पिमीहि अवहीरंति कालओ, सेसं बहा ओराहि-यस्य महेन्द्रमा तहा एए वि माणियन्या । केन्द्रमा णं भेते ! आहारमसीरा प्रणाता ! गोयसा! दुविहा पण्णाता । तंजहा-बदेह्या य १ मुझेह्या य २ । ताथ णं जे ते बढेक्या ते णं सिय अस्य सिय गरिष, जह अस्य जहणीणं एगी वा दो वा तिष्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुद्दतं । मुक्केलया जद्दा आराहिया तद्दा मामियव्या ।

१ कहबिहाणं।

केवद्या ण भेरे ! तेयगसरीरा पण्णना ? गोयमा ! दुविहा पण्णना । तंजहा-बद्धे-ह्मा य १ मुकेहमा य २। तत्थ णंजे ते बढेहमा ते णं अणंता, अणंताही उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरेति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, दव्यओ सिद्धेहिं अर्णनगुणा, सञ्बजीवाणं अर्णनभागूणा । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लबा ते णं अणंना, अणंनाहि उस्मध्यणीओसध्यणीहि अवहीरंनि कालओ सेत्रओ अणंता लोगा, दब्बओ सब्बजीबेहि अर्णतगुणा, सब्बजीववस्तम्य अर्णतभागो । केवहुगा णं भंते ! कम्मगमरीरा पण्णमा ? गोयमा ! दुविहा पण्णमा । तंजहा-बद्धेह्या य १ मुकेष्ठया य २ । जहा तेयगमरीरा तहा कम्मगसरीरा वि भाषियव्या । णेरइयाणं भेने ! केवहया औराहित्यमरीरा पण्णता ! गोयमा ! द्विहा पण्णना । तंत्रहा-बदे-श्रयाय १ मुद्देश्वयाय २ । तत्थ णंजे ते बद्धेश्वया ते णंणित्य । तत्थ णंजे ते महेहस्या ते जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भागियस्या । णेरङ्गाणं भंते ! केवट्या वेटव्यियमरीमा पण्णाना ? गोयमा ! द्विहा पण्णाता । तंत्रहा-बदेहया च १ मुकेत्या य २ । तत्य णं जे ते यदेश्या ते णं असेखिजा, असेखिजाहि उस्स-िपणीओसप्पणीष्टिं अवहीरंनि कालओ, खेनओ असंखेळाओ संढीओ पगरस्य असंबिज्ञहभागो, तासि णं सेदीणं विक्यंशसई अंगुलप्रसवग्गमलं विद्यवग्गमल-पद्मपण्णं, अहवा णं अंगुरुविइयवस्ममलघणपमाणमेत्राओं संदीओ । तत्थ णं जे ते मकेह्या ते णं जहा ओहिया ओरालियसगैरा नहा भाणियन्ता । णेरत्याणं भंते ! केवहवा आहारमसीरा पण्णमा ? गोयमा ! दुविहा पण्णमा । तंजहा-बदेख्या य १ मुद्रेक्षया य २ । तत्थ णंजे ते बद्रेक्षया ते णंणिय । तत्थ णंजे ते मुद्रे-ह्या ने जहा ओहिया तहा भाषियव्या । तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसि चेव वृत्रव्यियश्रीरा तहा भाषियव्या । अयुरकुमाराणं भंत ! केवदया ओरालियसरीरा पण्या ! गोबमा ! जहा षेरहवाणं अंग्रालियमरीरा तहा भाणियव्या । अनुर-कमाराणं भेते! केब्हुमा वेडव्वियसरीरा वण्णना? गोयमा ! दुविहा पण्णना । नंत्रहा-बद्रोह्या य १ मुक्किया य २ । तत्थ णं जे ते बद्रेह्मा ते णं असंखिजा. असंखिजाहि उस्मिप्पणीओसप्पिणीहि अवहीर्रात कालओ, खेतओ असंखेजाओ सेहीओ प्रयरस्य अमृतिकाहभागो, तासि णं सेहीणं विक्खंभस्ड अंगुलपडमवग्गमृलस्स असंखिजदमागो । मुक्केह्नया जहा ओहिया ओगलियसरीरा । असरकुमाराणे भंते ! केवड्या आहारगमरीरा पण्यता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंत्रहा-बदेख्या य १ मक्केळ्या य २ । जहा एएसि चेव औरान्त्रियसरीरा तहा भाणियव्या । तेयगकस्म-मसरीरा जहा एएसि जेब वेउन्बियसरीरा तहा भाणियन्या। जहा असुरकुमाराणं

तहा जाव धणियकुमाराणं ताव भाणियच्या । पुढविकाइयाणं भंते ! केवह्या ओरा-लियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-बद्धेहवा य १ सुकेत्स्या य २ । एवं जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाषियच्या । पुढियकाइयाणं भंते ! केवड्या वेउव्वियमरीरा पण्णता ? गोयमा ! द्विष्ठा पण्णता। तंजहा-बदेख्या य १ मुकेह्या य २। तत्य णं जे ते बढेह्या ते णं णत्थ । मुकेह्या जहा ओहियाणं ओरालियसरीरा तहा भाषियन्ता । आहार्गसरीरा वि एवं चेव भाषियन्ता । तेसग-कम्मसरीरा जहा एएसि चेव खोरालियगरीरा तहा भावियव्या । जहा पढविकाइयाणं एवं आउकाइयाणं तेउकाइयाण य सम्बसरीरा भाणियम्या । बाउकाइयाणं मंते ! केवड्या ओरालियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-वदेख्या य १ मुक्केल्या य २। जहा पुढविकाइयाणं ओरालियसरीरा तहा भाषिमध्वा । वाउ-काइयाणं ० केवइया वेडव्यियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! तुविहा पण्णता । नंजहा-बदेखगा य १ मुक्केद्रगा य २ । तत्थ णं जे ते बदेद्वगा ते णं असंखिजा. समए समए अवहीरमाणा खेतपलिओदमस्त असंखिज्जदभागमेतेणं कालेणं अव-हीरंति. नो चंद णं अवहिया सिया । मुकेहमा वेडब्बियसरीरा आहारमसरीरा य जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणियव्या । तेथगकम्भसरीरा जहा पुडविकाइयाणं तहा भाषियन्य । वणस्सहकाइयाणं औरालियवेडब्वियआहारगसरीरा जहा पुरुविकाइयाणं नहा भाणियञ्चा । वणस्तदकादयाणं भेते ! केबदया तेयगम्रीरा पण्णता : गोयमा द्विहा पण्णता । जहा ओहिया तेयगक्रमसरीरा तहा वणस्मइ-काइयाण वि तेयगक्रम्मगमरीरा भाणियन्ता । वेडंदियाणं अंत ! केवद्या ओरा-लियसरीरा पण्णता ! गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा---बद्धेलया य १ मकेव्या य २ । तत्थ पं जे ते बढेक्या ते पं असंखिजा, असेखिजाहिं उस्सापणी-ओसप्पिणीहिं अवर्तारति कालओ, खेताओ असंखेजाओ सेढीओ पयरस्य असंखिजह-मागो. तासि मं मेढांगं विक्खंमसूई असंखेळाओ जोवणकोहाकोहीओ, असंख्यिजाई सेंद्रवरमम्लाइं. वेइंदियाणं ओरालियबद्धेलएहिं पयरं अवहीरइ असंखिजाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालओ, खेमओ अंगुलपगरस्य आवलिगाए असंखिजह-भागपिक्रमागेणं । मक्केब्रया जहा भोहिया ओरास्त्रियसरीरा तहा भाणियव्या । वेउव्वियआहारगसरीरा बदेख्या नत्य । मुक्क्षया जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाषियञ्जा । तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसि चेव ओराकियसरीरा तहा भाणियन्त्रा । जहा बेइंदियाणं तहा तेइंदियचर्रादियाण वि भाणियन्दा । पंचिद्यतिरिक्सकोषियाण वि ओरास्टिक्सरीरा एवं चेव आवियका । पंचिद्धियति-

रिक्सजोणियाणं भंते ! केवड्या वेउव्वियसरीरा पण्णता ! गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-शबेह्या य १ मुझेह्या य २ । तत्थ मं जे ते यदेह्या ते मं असंख्या. असंखिळाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेताओ असंखेजाओ सेढीओ पगरस्य असंखिजहमागो, तासि णं सेढीणं विक्संभसई अंगुरुपरमवन्य-मुलस्स असंखिजहमायो । मुकेह्नया जहा ओहिया ओराख्रिया तहा भाषियम्बा । आहारयसरीरा जहा बेइंदियाणं नेयगकम्मसरीरा जहा ओरालिया । मणुस्साणं भेते ! केबड्या ओराल्यिसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता। तंजहा-बदेह्या य ९ मकेल्या य २ । तत्य णं जे ते बदेखया ते णं सिय संखिजा सिय असंखिजा, वहण्णपर संखेजा. संखिजाओ कोडाकोडीओ, एगणतीसं ठाणाइं तिजमलपयस्स उवरि चउजमलप्यस्स हेद्रा, अहब ण छह्ने वस्तो पंचमदरगपङ्गपण्णो, अहव ण छण्णटड्छेयणगदाडरासी. उद्गोसपए असंखेजा. असंखेजाहि उस्मप्पिणीओसप्पि-णीहि अवहीरति कालओ, खेलओ उद्योगपए स्वपक्खितेहिं मणुस्सेहि सेटा अवहीरइ कालओ असंसिजाहि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं, खेमओ अंगुलपहमवस्पमलं तहय-बगम्लपडुप्पण्यं । मुक्केन्द्रया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियन्ता । मणुस्साणं भंते ! केवहया वेउव्नियसरीरा पण्णना ! गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंत्रहा-बढेक्षया य १ महेल्या य २ । तस्य णं जे ते बढेल्या ते णं संखिजा, समए समए अद-हीर्माणा अवहीरमाणा संबेजेणं कालेणं अवहीरंति. नो चेव णं अवहिया सिया । मकेल्या जहा ओहिया ओरालियाणं मकेल्या तहा सामियव्या । मणस्याणं भेते ! केवड्या आहारगसरीग पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंत्रहा-बद्धेह्रया य १ मुकेन्द्रया य २ । तत्थ णं जे ते बदेहसा ते णं तिय अत्थि सिय णरिय, जड अत्थि जहण्णेणं एको वा दो वा निष्णि वा, उक्कोरंणं सहस्यपुरुत्तं । सुकेष्ट्या जहा ओहिया ओर!न्त्रिया तहा भाणियव्या । तेयगकम्मगम्सीरा जहा एएसि चेव ओरालिया तहा भाणियव्या । त्राणमंतराणं ओरालियसरीरा जहा णेरडयाणं । वाणमंतराणं भंते ! केयहया वेउव्वियसरीर। पण्णता १ गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-बदेहस्या य १ मुक्केष्ट्रया य २ । तत्य णं जे ते बदेष्ट्रया ते णं असंखेजा, असंखेजाहि उरसप्पिणी-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, केनओ असंविजाओ सेढीओ प्यरस्स असं-क्षेज्रहमागो. तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई संकेजजोयणसयवमापिक्भागो पगरस्स । मुकेह्या जहा ओहिया ओराकिया तहा माणियन्या । आहारमसरीरा दुनिहा वि जहा अग्ररक्रमाराणं तहा भाषियव्या । बाणमंतराणं मंते ! केवहया तेम्रगकम्मसरीरा क्काला ? गोयमा ! जहा एंग्रसि चेव बेटव्यियसरीरा तहा तेयगकम्मसरीरा भाषि-

यव्या । जोइसियाणं मंते ! केबह्या वेडव्वियसरीरा पण्याता ? गोयमा ! दक्षिष्ठा पण्णता। तंजहा-बदेह्मा य १ मुक्केह्मा य२। तत्य णे जे ते बदेहमा जाव ताति णं सेढीणं विक्लंभसई. बेखप्पणंगुलस्यवस्मपिक्शमो प्यरस्स । सुक्रेक्य जहा ओहिया ओरालिया तहा भाषियच्या । आहारससरीरा जहा णैरइयार्ण तहा भाजियव्या । तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसि चेव वेउव्यया तहा भाजियव्या । वेमाणियाणं भंते ! केबड्या ओराव्डियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! जहा जेरड्याणं तहा भाणियञ्चा । वेमाणियाणं भेते । केनइया वेडव्नियसरीरा पण्णता ! गोयमा ! द्विहा पण्णाता । तंजहा-बद्धेलया य १ सकेलया य २ । तत्व णं जे ते बद्धेलया ते णं असंखिजा, असंखिजाहि उस्मध्यिणीओयध्यिणीहि अवहारिति कालओ, खेनओ असंखिजाओ संढीओ पयरस्य असंखेजहमागी, तासि ण सेढाणं विक्खंभ-सई अंग्रलबीयबगामलं तह्यवगामलपदुष्पणां, अहम णं अंगुलनह्यबगामृलघण-पमाणमेताओ सेढीओ । मुक्किया जहा ओहिया औरालिया तहा भाषियम्या । आहारगसरीरा जहा नेरहयाणं । तयगकम्मगसरीरा जटा एएसि चेव वेत्रविवयसरीरा तहा भाणियव्या । सेतं मुहुमे खेलपिलओवसे । सेतं खेलपिलओवसे । सेतं पिल-ओवमे । सेतं विभागनिष्फण्णे । सेतं कालप्पमाणे ॥ १४३ ॥ से कि तं भावापमाणे ? भावप्यमाणे तिविहे पण्याने । तंत्रहा-गुणप्यमाणे १ नक्ष्यमाणे २ संख्यामाणे ३ ॥ १४४ ॥ से कि तं गुणव्यमाणे १ गुणव्यमाणे दुविहे वण्णते । तंजहा-जीवगुणव्यमाणे १ अजीवगुणप्पमाणे य २। से कि तं अजीवगुणप्पमाणे ? अजीवगुणप्पमाणे पंचिबिष्ठे पणाने। तंत्रहा-वण्याणप्याणे १ गंधगुणप्यमाणे २ रसगुणप्यमाणे ३ फासगुणप्य-माणे ४ संठाणगुणापमाणे ५। में कि तं बच्चगुणप्यमाणे ? बच्चगुणप्यमाणे पंचविद्वे पण्णते । नंजहा-कालकणगुणप्पमाचे १ जाद सुव्विद्यकणगुणप्पमाणे ५ । सेशं वण्णाणप्यमाणे । से कि तं गंधराजप्यमाणे ? गंधराजप्यमाणे दुविहे पण्णेन । तेत्रहा-सुरभिगंधगुणयमाचे १ दुरभिगंघगुणयमाचे २ । सेतं गंधगुणयमाचे । से किं तं रसगुणप्यमाणे ? रसगुणप्यमाणे पंचविहे पण्णते । नंजहा-तित्तरसगुणप्यमाणे १ जाव महर्रस्युमप्पमाणे ५ । सेतं रसगुणप्पमाणे । से कि तं फासगुणप्पमाणे ? कामगुणप्य-माणे अद्भविद्वे प्रकारे । तंत्रहा-कन्बहफासगुमध्यमाणे १ जाव लक्सफासगुमध्यमाणे ८ । सेतं फासगुजप्यमाणे । से कि तं संठाणगुजप्यमाणे ? संठाणगुजप्यमाणे पंचविहे पण्णते । तंजहा-परिमंदलसंठाणगुरायमाणे १ वहसंठाणगुणप्यमाणे २ तंससंठाणगुण प्यमाणे ३ चढरंससंठामगुमप्यमाणे ४ आययसंठामगुमप्यमाणे ५ । सेतं संठामगुम् प्पमाणे । सेत्तं अजीवस्थाप्पमाणे । से कि तं जीवरामप्पमाणे ? जीवराक्ष्यमाणे तिबिक्वे

पञ्जते। तंत्रहा-माणगुणप्पमाणे १ दंसणगुणप्पमाणे २ चरित्रगुणप्पमाणे ३।से किंतं बाजगुजप्यसाने ? माजगुजप्यसाणे बहस्तिहे प्रजते । तंत्रहा-प्रवक्ते १ अणुमाणे २ ओवम्से ३ आगमे ४ । से किं तं- पश्चक्ये ? पश्चक्ये दुविहे पण्यते । तंजहा-हंदिम-प्रवासके य १ जोइंदियपश्चकको य २ । से किं तं इंदियपश्चकको ! इंदियपश्चकको पंचितिहै पण्णते । तंजहा-सोइंदियपश्चक्के १ चक्कुरिदियपश्चक्के २ पाणिदियपश्चक्के ३ जिब्बिदियपक्क्से ४ फासिदियपक्क्से ५ । सेतं ईदियपक्क्से । से कि तं पीई-विकासको ? गोइंदियपस्त्रको तिबिहे पण्यते । तंजहा-ओहिमाणपस्त्रको १ मण-पजनगाजप्यक्से २ केनलगाजपन्नक्से ३ । सेनं भोडंदिसपनक्से । सेनं पचक्से । से कि तं अनुमाणे ? अनुमाणे तिविष्टे पण्णते । तंजहा-पुरुषयं १ सेसवं २ विद्व-साहम्मवं ३। से कि तं पुरुषवं ? पुरुषवं-बाह्या-माया पुत्रं जहा नहुं, जुवाणं पुणगुगर्य । काइ पश्चमिजाणेजा, पुरुवस्तिमेण केणइ ॥ १ ॥ तंत्रहा-सएण वा, बण्णेण वा, लंखणेण वा, मसेण वा, तिलएण वा। सेनं पुरुवर्व। से कि तं सेसवं ? सेसर्व पंचिष्ठहं पण्णत्तं । तंजहा-कजेणं १ कारणेणं २ गुणेणं ३ अवयवेणं ४ आस-एणं ५। से कि तं कजेणं ? कजेणं-संखं सहेणं, भेरि ताब्हिएणं, वसभं डिकिएणं, मोरं किकाइएणं, इसं हेसिएणं, गयं गुलगुलाइएणं, रहं घणघणाइएणं । सेत्तं कळेणं । से कि तं कारणेणं ? कारणेणं-तंतवो पडस्म कारणं, ण पडो तंतुकारणं; वीरणा कडरस कारणं, ण कटो वीरणाकारणं; मिप्पिंडो घंडरस कारणं, ण घडो मिप्पिंड-कारणं । सेमं कारणेणं । से किं तं गुणेणं ? गुणेणं-सुवण्णं विकसेणं, पुष्कं गंघेणं, लवणं रसेणं, धयं आसायएणं, बत्यं फ़ासेणं । सेत्तं गुणेणं । से कि तं अवयवेणं ? अवयवेणं-महिसं सिंगेणं, कुकुडं सिहाएणं, हत्यि विसाणेणं, बराई दाडाए, मोरं पिच्छेणं, आसं खुरेणं, बापं नहेणं, चमरि वालागेणं, वाणरं लंगूलेणं, दुपर्यं मणुस्साइ, चउप्पर्य गव[या]माइ, बहुपर्य गोमिगाइ, सीहं केसरेणं, वसहं ककुहेणं, महिलं क्लबबाहाए, बाह्य-परियरवंधेण भडं, जाणिजा महिल्टियं निवसणेणं । सित्येण दोणपागं, कविं च एकाए गाहाए ॥ २ ॥ सेतं अवयवेणं । से किं तं आसएणं ? आसएषं-अस्मि चूमेणं, सलिलं बलागेणं, वृद्धि अन्मविगारेणं, कुलपुत्तं सीलसमाया-रेणं । सेनं आसएणं । सेनं सेसवं । से किं नं दिहसाहम्मवं ? दिहसाहम्मवं दुविहं पुण्यतं । तंत्रहा-सामण्यदिहं च १ विसेसदिहं च २। से कि तं सामण्यदिहं ? सामन्नदिई-जहा एगो पुरिसो तहा बहुवे पुरिसा, जहा बहुवे पुरिसा तहा एगो पुरिसी; जहा एगी करिसावणी तहा बहवे करिसावणा, जहा बहवे करिसावणा तहा

९ दंतेणं ति सहो ।

एगो करिसावणो। सेतं सामण्यदिहं। से कि तं विसेसदिहं ? विसेसदिहं-से अहाणामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं बहुणं पुरिसाणं मज्हे पुष्वदिष्ठं पश्वभिजाणेजा-'अयं से पुरिसे', बहुणं करिसावणाणं मज्हे पुव्यदिहुं करिसावणं प्रवासजाणेजा-'अयं से करिसावणे । तस्त समासओ विविहं गहणं भवद्, तंत्रहा-अतीयकारुगहणं १ पड़प्पणकालगहणं २ अणागयकातमहणं ३ । से कि तं अतीयकालगहणं ? अतीयकालगहणं-उत्तणाणि वणाणि निष्कण्णसस्यं वा मेइणि पुण्णाणि य कुंड-सरणईशिहियातडागाई पासिता तेणं साहिजाइ जहा-सुबुडी आसी । सेरी अतीय-कालगहणं । से कि तं पहुप्पणकालगहणं ? पहुप्पणकालगहणं-साहं गोवरकाययं विच्छित्रियपररभत्तपाणं पासिता तेणं साहिजह जहा-समिक्से बहुद । सेतं पद्भव्यक्षकाहणं । मे किं तुं अणागयकालगहणं ? अणागयकालगहणं-अव्यस्स निम्मलतं, कसिणा य गिरी सविज्ञुया मेहा। थणियं वाजन्मामी, संझा रता पणि(द्वा)द्वा य ॥ ३ ॥ बारणं वा महिंदं वा अन्णयरे वा पसन्धं उप्पायं पासिसः तेणं साहिजह जहा-मुथ्द्वी भविस्तह । सेतं अणागयकालगहणं । एएसि चेव विवजामे तिविहं गहणं भवड. तंजहा-अतीयकारुगहणं १ पढापणकारुगहणं २ अणागयकालगहणे ३ । से कि तं अनीयकालगहणं ? २ विशिषाटं वणाई अनिप्तरणमस्सं या मेर्राण मुद्राणि य कुंडगरणईदीहियानडागाई पासिसा तेणं साहिजह जहा-इनुही आसी । नेनं अतीयकारुगहणं । से कि तं पहुप्पण्णकारुगहणं ? पहुप्पण्णकारुगहणं-माहं गोधरमगर्य सिक्सं अलभमाणं पानिसा तर्गं साहिजद जहा-दुन्धिक्से बद्द । सेनं पटप्पणकालगहणं । मे कि तं अगागयकालमहणं ? अगागयकालगहणं-गाहा-धनार्थान दिसाओ, संविध-मेश्णी अपिडवडा । बाबा जैरहया स्रवः. क्यद्विगेवं निवेयंति ॥ ४ ॥ अग्येवं वा बायन्वं वा अण्णयरं वा अण्यसस्यं उप्पावं पालिना तर्ण साहिता जहा-कुलुडी अविस्तर । सेतं अणागयकारुगहर्ण । सेतं विभेयदिहं। मेर्न दिहुमाहम्मवं। तेनं अणुमाणे। से कि नं ओवस्मे ! ओवस्से दुविहे पण्णने । तंजहा-साहम्योवणीए १ वेहम्योवणीए य २ । से कि तं साहम्यो-वणीए ? माहस्सीवणीए विविष्ठे पण्यते । तंत्रहा-किंचिसाहस्मीवणीए १ पायसाहस्सी-वणीए २ गव्यसाहम्मोबणीए ३। से कि तं किचिमाहम्मोबणीए ! किचिसाहम्मो-वणीए-जहा संदरो तहा सरिसवी, जहा सरियवी तहा संदरी: जहा समुद्री तहा गोप्पमं, जहा गोप्पमं तहा समुद्दो; जहा आद्यो तहा सजीओ, जहा सजीओ तहा आह्यो; जहा चंदो तहा कुमुदो, बहा कुमुदो नहा चंदो । सेर्ग किंपिसाहम्मो-वणीए । से कि तं पायसाहम्योवणीए ? पायसाहम्योवणीए-जहा नो तहा सबसो.

वाहा गक्को तहा गो । सेतं पायसाहम्मोवणीए । से कि तं सम्बसाहम्मोवणीए ? सम्बसाहम्मे ओवम्मे णत्थि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्मं कीरइ, जहा-अरिहंतेहिं आरिडंतसरिसं करं, चक्रवद्गिणा चक्रवद्गिसरिसं करं, बलदेवेण वलदेवसरिसं करं, वासुदेवेण वासुदेवसरिसं कर्य, साहणा साहसरिसं कर्य । सेतं सन्वसाहरूमे । सेतं साहम्मीवणीए। से कि तं वेहम्मोवणीए ? वेहम्मोवणीए तिविष्ठे पण्णते । तंजहा-किंचिवेहम्मे १ पायवेहम्मे २ सव्यवेहम्मे ३ । से कि तं किंचिवेहम्मे ? किंचिवेहम्मे-जहा सामछेरो न तहा बाहुछेरो, जहा बाहुछेरो न तहा सामछेरो । सेर्स किंन्विवेहम्मे । से कि तं पायवेहरूमे ? पायवेहरूमे-अहा वायसो न नहा पायसो, जहा पायसो न तहा बायसो। सेशं पायबेहरूमे। से किंतं सब्बवेहरूमे ? सञ्बवेहरूमें ओवरूमें णत्यि, नहाबि तेणेव नस्स ओयम्मं कीरह, जहा णीएणं जीयमरिसं क्यं, दासेणं दासमारिसं करं, काकेणं काकसरिसं करं, सावेणं साणसरिसं करं, पाणेणं पाणसरिसं क्यं । सेतं सब्ववेहरूमे । सेतं वेहरूमोवणीए । सेतं ओवरूमे । से कि तं आगमे ? आगमें द्विष्टे क्कारे। तंत्रहा-लोइए व १ लोउत्तरिए य २ । में कि तं लोइए ! लोइए-जं णं इमं अण्णाजिएहिं मिन्छादिष्ठिएहिं सन्छंदबुद्धिमइविगप्पियं, तंत्रहा-भारहें, रामायणं जाव चत्तारि वेया संगोदंगा । सेतं लोइए आगमे । से कि तं लोउत्तरिए ? लोउत्तरिए-जं जं इमे अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उपकाषाणदंसणधरेहिं तीयप्रवृत्यणमणागयवाणएहिं तिस्ववहियमहियपुरूपहि सञ्जणाहि सञ्जदिसीहि पणीयं दुवालसंगं गणिपिष्टगं, तंजहा-आयारी जाब दिक्रिवाओ । अहवा आगमे तिबिहे पण्णते । तंजहा-धुत्तागमे १ अत्थागमे २ तदुभयागमे ३ । अहवा आगमे तिबिहे पण्णते । तंजहा-अतागमे १ अणंतरागमे २ परंपरागमे ३ । तिस्थगराणं अत्यस्य अज्ञागमे: गणहराणं सनस्स अत्तागमे, अत्यस्स अणंतरागमे; गणहरचीमाणं गुत्तस्स अणंतरागमे, अत्यस्स परंपरागमे; तेण परं सुत्तस्स वि अत्यस्स वि यो अत्तागमे, यो अर्णनरागमे, परंपरागमे । सेतं कोगुत्तरिए । सेतं आगमे । सेतं णाणगुणप्पमाणे । से कि तं दंसण-गुणप्पसाचे ! दंगणगुणप्पसाचे चउच्चिहे पण्णते । तंत्रहा-चक्खदंसणगुणप्पमाणे १ असम्बद्धान्याम्यामाचे २ ओहिइंसवगुणप्याणे ३ केवस्ट्नणगुणप्यमाणे ४। चक्खुदंसमं चक्खुदंसिम्स घडपडमहरहाइएस दब्बेस, अचक्खुदंसणं अचक्खुदं-सकिस्स आयमाने, ओहिवंसणं ओहिवंसिक्सि सन्वरुविद्वेद न पुण सन्वपजनेसु, केंद्रस्तरं केंद्रस्तरं सम्बद्धानित्स सम्बद्धानेसु य । सेतं दंतणगुणप्यमाणे । से कि सं चरित्तगुक्तव्यमाणे ? चरित्तगुक्तव्यमाणे पंचविहे पळ्यते । तंत्रहा-सामाइय-महितागुक्यमाणे १ क्रेओवद्वावणयरितागुक्यमाणे २ परिहारविद्यविद्यवरितागुक-

प्पमाणे ३ शुहुमसंपरायचरित्तगुणप्पमाणे ४ अहुक्खायचरित्तगुणप्पमाने ५ । सामाइयचरित्रगुणप्यमाने दुविहे प्रथाते । तंत्रहा-इत्तरिए य १ आवकहिए य २ १ क्रेओवड्राबणचरित्तगुणप्पमाणे दुविष्ठे पण्णते । तंत्रहा-साइवारे य १ निरहवारे य २ । परिहारविसुद्धियचरित्रगुणप्पमाणे दुविहे पण्णते । तंत्रहा-निव्विसमाणए य १ णिव्विद्वकाइए य २ । मुह्मसंपरायचरित्तगुणप्यमाचे दुविहे पण्णते । तंत्रहा-संकिति-स्समाणए य १ विसुज्यमाणए य २ । अहवा मुहुमसंपरायचरिनगुणप्पमाणे दुविहे पण्णते । तंजहा-परिवाई य १ अपिटवाई य २ । अहक्खायवरित्रगुणप्पमाणे दुविहे पण्णते । तंत्रहा-परिवाई य १ अपिटवाई य २ । अहवा अहवन्तायचरित-गुणप्पमाणे दुविहे पण्णते । तंजहा-छउमन्थिए य १ केवलिए य २ । सेतं चरित्त-गणप्यसाणे । सेतं जीवगुणप्यसाणे । सेतं गुणप्यसाणे ॥ १४५ ॥ से कि तं नयप्य-माणे ! नयप्पमाणे तिबिष्ठे पण्यते । तंत्रहा-पर्धगदिइतेणं १ बसहिदिइतेणं २ पएमदिइंतेणं ३ । से कि तं पत्थगदिइंतेणं ! पत्थगदिइंतेणं-से जहाणामए केइ पुरिसं परमुं गहाय अडविसमहुत्तो गच्छेजा, तं पासिता केंद्र वएजा-"कर्हि भवं गच्छति ?" अविसुद्धो णेगमो भणड-"पत्थगस्स गच्छामि"। तं च केड छिदमाणं पासिना वएजा-"कि भवं छिंदति ?" वियुद्धी गेगमो भणड-"पत्थवं छिदामि"। तं च केइ तच्छमाणं पासिना वएजा-"किं भवं तच्छसि ?" विमुद्धतराओ णेगमो भणइ-''पत्थयं तच्छामि"। तं च फेइ उन्नीरमाणं पासिता वएजा-"कि भवं उक्कीरमि ?" विसुद्धतराओं पेगमो भणइ-"फ्ययं उक्कीरामि"। तं च केई विलि-हमाणं पासिता वराजा-"किं भवं विलिहिस ?" विसद्धतराजी बेगमी मणद-"पत्थयं विनिद्वामि"। एवं विमुद्धतग्रस केगमरस नामाटडिओ प्रथओ। एवमेव वयहा-रस्य वि । संगहस्य चिवमिश्रमे असमाहको परयको । उज्जन्नस्य परवको वि पत्यओ, मेंजं पि पत्थओ । तिष्हं सहनयाणं पत्थयस्त अत्याहिगारवाणओ जस्स वा वसंगं पत्थको निष्फजाह । सेनं पत्थयदिश्वंतणं । से कि तं वसक्रिक्टितेणं ? वसहिदिहुंतेणं-से जहानामण् केंद्र पुरिसे कंचि पुरिसं वएजा-"कहिं भयं बसरित ?" नं अविमुद्धो जेगमो भणइ-"लोगे बसामि"। "लोगे तिबिहे पण्याने तंत्रहा-उड्डलोए १ अहोलोए २ तिरियलोए ३ तेसु सब्बेसु भवं बसिस ?" बिसुद्धो बेगमी मणह-"तिरियकोए बसामि" । "तिरिमकोए जंबुरीबाइमा सर्वभूरमणपण्यकाणा अर्ध-खिला दीवसमुद्दा पण्याचा तेस सम्बेस भवं वससि ?" विसुक्तराओं जैयमी भणह-"अंबुईवि वसामि" । "जेबुईवि वस-खेला पण्णता तंत्रहा-अर्हे १ एरवर २ हेमका ३ एरणवर ४ हरिवस्से ५ स्मागवस्ते ६ वेचकर ७ उत्तरकर ८ प्रण्य-

विदेहे ९ अवरविदेहे १० तेष्ठ सञ्बेस भवं बसिस ?" विद्यक्षतराओ णेगमो भणड-"भरहे वासे वसामि" । "भरहे वासे दुविहे पण्णते तंजहा-दाहिणकुभरहे १ उत्तरहुभरहे य २ तेम्र सब्वे(दो)मु भवं वसित ?" विसुद्धतराओ जेगमी भणइ-"दाहिणहुभरहे बसामि" । "दाहिणहुभरहे अणेगाई गामागरणगरखेडकव्यड-मडंबरोणमुद्दपष्टणासमसंबाहसाण्णिबेसाइं, तेमु सब्बंसु भवं बससि !" विसुद्धतराओ षेगमो भणइ-''पाडलिपुत्ते बसामि''। ''पाडलिपुत्ते अंगगाई गिहाई, तेसु सब्देसु भवं वसित ?" विश्ववनराओं जेगमो भणइ-"देवदत्तस्स घरे वसामि"। "देवद-त्तस्स घरे अणेया कोडुगा, तेसु सब्वेनु भवं वससि ?" विसुद्धतराओ णेगमो भणइ-"गरुभघरे बसामि"। एवं विसुद्धस्स णेगमस्स वसमाणो । एवमेव ववहारस्स वि । संगहस्स संधारसमारुहो वसइ । उज्जुसुयस्य जेस आगासपएसेमु ओगाडो तेस वमइ । तिण्हं सङ्गयाणं आयभावे वसइ । सेनं वसहिदिहंतेणं । से कि तं पएसदि-इंतेणं ? पएसिद्देतेणं-णेगमो भणइ-"छण्हं पएसो, नंजहा-बम्मपएसो, अधम्म-पएमो, आगासपएसो, जीवपएसो, खंधपएसो, देभपएमो" । एवं वयंतं जेगमं संगहो अणद्-''जं भणसि-छण्हं पएसो तं न भवइ''। ''कम्हा ?'' ''जम्हा जो देसपएसो सो तस्सेव दव्यस्स"। "जहां को दिहुंतो ?" "दासेण में खरी कीओ, दासों वि में खरी वि में । तं मा भणाहि-छण्डं पएसो, भणाहि पंचण्डं पएसो, तंजहा-धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवपएसो, संधपएमो"। एवं वयंतं संगई ववहारो भणइ-"जं भणित-पंचण्हं पएसो तं न भवइ"। "कम्हा ?" "जइ जहा पंचण्हं गोहियाणं पुरिसाणं केंद्र दब्बजाए सामण्णे भवद, तंजहा-हिरण्णे वा सुवण्णे वा धणे बा धण्णे वा, तं न ते जुत्तं वर्तुं जहा पंचण्हं पएसो, तं मा भणाहि-पंचण्हं पएसो, भणाहि-पंचितिहो पएसो, तंजहा-धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवप-एमो. अंधपएमो"। एवं वयंतं वयहारं उज्जाको मणइ-"जं भणसि-पंचविहो पएसो तं न भवइ"। "कम्हा ?" "जइ ते पंचित्रहो पएसो, एवं ते एक्केक्टो पएसो पंच-विद्दों, एवं ते पणवीसद्विद्दों पएसो भवद्द, तं मा भणाहि-पंचविद्दों पएसो, भणाहि-महदक्वो पएसो-सिय धम्मपएसो, सिय अधम्मपएसो, सिय आगासपएसो, सिय जीवपएसो, सिय खंबपएसो"। एवं वयंतं उजुनुयं संपद्द सह्तजो मणह-"र्ज भणसि-भहराको पएसो तं न भवर" । "कम्हा ?" "जह भइयक्वो पएसो एवं ते अम्मपएसी नि-सिय धम्मपएसो सिय अध्यन्मपएसो सिय आगासपएसो सिय जीवपएसो सिय बंबिपएसो, अधम्मपएसी वि सिव धम्मपएसी जाव सिव संबपएसी, जीवपएसी वि सिख धम्मपएसी जाव विश्व संध्यक्सी. संघ्यएसी वि विश्व धम्मपएसी जाव विश् खंधपएसो, एवं ते अणवत्था भविस्सइ, तं मा भणाहि-भइयव्यो पएसी, भणाहि-धरमे पएसे से पएसे धरमे, अहरमे पएसे से पएसे अहरमे, आगासे पएसे से पएसे आगासे, जीवे पएसे से पएसे नोजीवे. संधे पएसे से पएसे नोखंधे"। एवं वयंनं सहनयं समिभिक्तों भणड-"जं भणति-धम्मपएसे से पएसे धम्मे जाव जीवे पएसे से पएसे नोजीवे खंधे पएसे से पएसे नोखंधे तं न भवड़"। "कम्हा ?" "इत्यं साख दो समासा भवंति, तंजहा-तप्परिसे य १ कम्मधारए य २। तं ण णजह कयरेणं समासेणं भणति ? किं तप्पृतिसेणं, किं कम्मवारएणं ? जइ तप्पृतिसेणं भणति तो मा एवं भणाहि, अह कम्मधारएणं भणसि तो विसेसओ भणाहि-धम्मे य से पएसे य से पएसे अम्मे, अधम्मे य से पएसे य से पएसे अधम्मे, आगासे य से पएसे य से पएसे आगासे, जीवे य से पएसे य से पएसे नोजीवे, खंधे य से पएसे य से पएसे नोसंधे''। एवं वर्यनं समभिरुदं संपड एवंमुओ भणद्-''अं जं भणसि नं नं सर्व्यं कसिणं पिडपुण्णं निरवसेसं एगगहणगद्वियं देसे वि मे अवत्थ्, पएसे वि मे अवत्थ्ं। सेनं प्रसिद्देतेणं । सेनं नयप्पमाणे ॥ १४६ ॥ से कि तं संसप्पमाणे ? संसप्पमाणे अद्भविहे पण्णते । तंजहा-नामसंखा १ ठवणासंखा २ दव्यसंखा ३ ओवस्मसंखा ४ परिमाणसंखा '-, जाणणासंखा + गणणासंखा ७ भावसंखा ८। से कि तं नामसंखा? नामसंखा-जरस णं जीवस्स वा जाव सेनं नामसंखा । से कि तं टवणासंखा ? टक्णासंखा-जं णं बद्धकम्मे वा पोरथकम्मे वा जाव सेनं ठवणासंखा । नामठवणाणं को पहायसेसो ? नामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होजा आवकहिया वा होजा। से किं तं दब्बसंखा ? दब्बसंखा दुविहा पण्णता । तंत्रहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ जाव में कि तं आणयसरीरअविश्वसरीरवदिशा दव्यसंखा? आणयमरीर-भवियसरीरवहरिना दव्वसंखा तिविहा पण्णता । तंत्रहा-एगभविए १ बदाउए २ अभिमहनामगोते य ३ । एगभविए णं भंते ! 'एगभवए' नि कालको केवियर होह ? अहजोणं अंतोसुहत्तं, उद्योसेणं पुज्यकोडी । बढाउए पं भंते ! 'यदाउए' ति कालओ केविकर होइ ! जहण्येणं अंतीमुहुतं, उक्कोसेणं पुम्बकोबीतिमागं। अमिमुहनामगोते णं मेते ! 'अमिमुहनामगोए' ति कालओ केम विर होइ ! अह-णोणं एकं समये, उद्दोसेणं अंतोमुहुतं । इयाणि को नश्री कं संबं इच्छद ? तत्य केगमसंग्रहक्वहारा तिविहं संसं इच्छंति, तंजहा-एगमवियं १ बद्धाउयं २ अभियह-नामगोर्स व २ । उज्रुपुओ दुविहं संसं इच्छर, तंत्रहा-बदाउयं व १ अभिमुह-नामगोत्तं च २ । तिष्णि सहनया अभिग्रहनामगोत्तं संसं श्च्छंत । सेतं जानय-सरीरभविवसरीरवङ्गरेता दव्यपंता । सेतं मोजायमओ दव्यपंता । सेतं दव्यपंता ।

से कि तं क्षोवम्मसंखा ? ओवम्मसंखा चढिनहा पण्णता । तंजहा-अस्य संतयं संत-एणं उनमिजह १ अत्य संतयं असंतएणं उनमिजह २ अत्य असंतयं संतएणं उपमिजह ३ अत्थि असंतर्य असंतर्ण उवमिजह ४ । तत्य संतर्य संतर्ण उवमिजह, जहा-संता अरिहंता संतएहिं पुरवरेहिं संतएहिं कवाडेहिं संतएहिं वच्छेहिं उवमिर्जति, तंजहा-गाहा-पुरवरकवाडवच्छा, फलिह्मुया दुंदहित्यणियघोसा । सिरिवच्छंकिय-बच्छा, सब्बे वि जिणा चल्कासं ॥ १ ॥ संतर्ग असंतरणं उविभिज्ञ जहा-संताई नेरइयतिरिक्सजोश्ययमणुरमदेवाणं आउयाई असंतएहिं परिओवमसागरोवमेहिं उनमिर्जित । असंतयं संतएणं उनमिजह, तंजहा-गाहाओ-परिजृतियपेरंतं, चलं-तबिंदं पर्वतिनच्छीरं । पत्तं व वसणपत्तं, कारूपत्तं भणइ गाहं ॥ १ ॥ जह तुन्मे नह अम्हे, तुम्हे वि य होहिहा जहा अम्हे । अप्पाहेड पढेतं, पंड्यपत्तं किसलयाणं ॥ २॥ णवि अत्य र्णाव य होही. उहाची किसलपंडपनाणं । उवमा खलु एम क्या, मवियजणविबोहणद्वाए ॥ ३ ॥ असंतयं असंतएहिं उवमिज्ञह्-जहा सरविसाणं तहा ससविमाणं । सेतं ओवम्मसंखा । से कि तं परिमाणसंखा ? परिमाणसंखा दुविहा वण्णता । तंत्रहा-कालियसुयपरिमाणसंखा १ दिद्विवायसुयपरिमाणसंखा य २ । से कि तं कालियसुमपरिमाणसंखा ? कालियसुमपरिमाणसंखा अणेगविहा पण्णना । नंजहा-पजनसंखा, अक्लरसंखा, संधायसंखा, पयसंखा, पार्यसंखा, गाहासंखा, सिलोगर्सेखा, बेढसंखा, निजुत्तिसंखा, अणुओगदारसंखा, उद्देसगसंखा, अज्झगण-संखा, स्थानंथसंखा, अंगसंखा । सेतं कालियन्यपरिमाणसंखा । से कि तं दिद्वि-नायस्यपरिमाणसंखा ? दिद्विबायस्यपरिमाणसंखा अणेगविहा पण्णता । तंजहा-पजनसंखा जाव अणुओगदारसंखा, पाहुडसंखा, पाहुडियासंखा, पाहुडपाहुडिया-संखा, बत्युसंखा । सेतं दिद्विवायसुयपरिमाणसंखा । सेतं परिमाणसंखा । से कि तं जाणणासंखा ! जाणणासंखा-जो जं जाणइ, तंजहा-सद्दं सहिओ, गणियं गणिओ, निमित्तं नेमित्तिओ, कालं कालणाणी, वेज्वयं वेजो । सेतं जाणणासंखा । से कि तं गणणार्चला ? गणणार्चला-एको गणण न उवेइ, दुप्यमिइ संला. तंजहा-संकेजए. असंखेजए, अर्थतए । से कि तं संखेजए है संखेजए तिविहे पण्णते । तंजहा-जहण्णए १ उक्कोसए २ अजहण्णणुमकोसए ३ । से किं तं असंखेळाए ? असंखेळाए तिबिहे पण्णते । संबद्दा-परितारंकेवए १ जुतासंकेवए २ असंकेवासंकेवए ३। से कि तं परिता-संखेळाए ? परितासंखेळाए तिथिहे पण्णते । तंजहा-अहण्णए १ उद्योसए २ अअहण्ण-अगुक्रोसए ३। से किं तं जुत्तासंबेजए ? जुत्तासंबेजए तिबिहे पण्यते । तंजहा-जह-व्यार १ सकोसर २ अजहण्यसमुक्कोराएं ३। से कि तं असंखेजासंखेजए ? असंखेजा-७३ सता-

संकेजए तिविहे पण्यते । तंजहा-जहण्यए १ उहाँसए २ अजहण्यस्पूकोसए ३ । से कि तं अणंतए ? अणंतए तिबिहे पण्णते । तंत्रहा-परिताणंतए ? जुत्ताणंतए २ अणंताणंतए ३ । से कि तं परिताणंतए १ परिताणंतए तिबिहे क्याते। तंबहा-बह-**ण्पए १ उद्योसए २ अबहुण्यम्युकोसए ३ । से कि तं जुनायंतए ? जुनायंतए** तिबिहे पण्यते । तंत्रहा-जहण्या १ उद्योसए २ अत्रहण्यासण्यदोसए ३ । से कि तं भगंताणंतर ? अषंताणंतर दुविहे पण्णते । तंजहा-बहुण्णर १ अजहण्णमगुकोसर २ । जहण्ययं संबेज्ययं केन्नइयं होइ ? दोस्वयं । तेणं परं अजहण्यमणुक्कोसयाहं ठाणारं जाव उक्कोसयं संकेळयं न पावड । उक्कोसयं संकेळवं केवडयं होड ? उक्कोसयस्य संकेळ-यस्य परूवणं करिस्सामि-से जहानामए पहे सिया-एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्लंभेणं. तिण्णि जोयणसयसहस्याडं सोळससहस्याडं वोण्णि व सत्तावीसे जोयण-सए तिष्णि य कोसे अद्वावीसं च घणसयं तेरस य अंग्रलाई अदं अंग्रलं च किंचि विसेमाहियं परिक्लेबेणं पण्णते. से णं भन्ने सिद्धत्थ्याणं भरिए, तथ्ने णं तेहिं सिद्ध-त्यएहिं बीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पइ, एगे चीवं एगे ममुद्दे एवं पविन्तप्पमाणेणं पविन्त-प्पमाणेणं जाबद्धा दीवसमुद्दा तहिं सिद्धत्थएहिं अप्फूल्मा एस णं एवइए खेले पक्षे (आइट्टा) परमा सलागा, एवइग्राणं सलागाणं असंख्या कोगा महिया तहा वि उक्कोसर्य संखेज्ययं न पायः । जहा को दिइंतो ! से जहानामए मंचे सिथा आमर-गाणं भरिए, तत्य एगे आमलए पविस्तेन सेऽवि माए, अण्णेऽवि पविस्तेन सेऽवि माए. एवं पविखप्पमाणेणं पविखप्पमाणेणं होही सेऽवि आयलए जंसि पविखते से मंचए भरिजिहिइ, जे तत्थ आमलए न माहिइ, एवामेव उद्योसए संबोजए हवे पविखने जहण्यारं परिशासंबोक्करं भवड । तेण परं अजहण्यास्पृक्कोसयाई ठाणाई जाव उद्दोसयं परिलासंसे अर्थ न पान्ड । उद्घोसर्थ परिलासंसे अर्थ केन्द्रयं क्षेत्र ? जहणार्थ परिनासंकेत्रमं बहुण्यमं परिनासंकेत्रत्रमाणं रासीणं अञ्चामण्यकासो स्वणी टकोसं परितासंखेजमं होइ । अहवा जहणमं जुतासंखेजमं स्वूणं उद्योसरं परिता-संकेळयं होड । जहण्णमं खुनासंकेळयं केवहमं होइ ! बहण्णमपरितासंकेळयमेत्ताणं रासीणं अण्णमण्णन्मासो पश्चिपुण्यो बङ्ग्ययं जुत्तासंख्ययं होइ । अह्वा उद्योसए परिक्तासंखेजार रुवं पविस्ततं जहण्ययं जुनासंखेजयं होह । आवित्या वि तक्तिया चेव । तेण परं अजङ्ग्णमणुक्तेसयाई ठाणाई जाव उद्योसयं जुलासंखेजवं स पावड । उद्योसमं जुत्तासंकेजमं केन्द्रमं द्वीद ? जहण्याएणं जुत्तासंकेजएमं आकृतिमा गुनिया अण्यमञ्ज्ञासी स्वणी उद्योसनं द्वाराचेद्वजनं होत् । अहवा जहण्यनं अर्चकेद्वान संवेजयं स्व्यं उद्योसयं ब्रह्मसंवेज्ञयं होत् । बहुणार्यं असंवेज्ञासंवेज्ययं केरहते

होह ? जहण्णएमं जुत्तासंबेजएणं आवस्या गुणिया अण्यामण्यान्मासे पदिप्रणो जहणार्य असंबेजासंबेजयं होड । अहवा उद्दोसए जुतासंबेजए हवं पश्चितं जह-ण्ययं असंसेजार्यसेज्ययं होइ । तेण परं अजहण्यमणुकोसयाइं ठाणाइं जाव उद्योसयं असंकेआसंकेजयं ण पावड । तहासियं असंकेजासंकेजयं केवडयं होड ? जहणायं असंबेजासंबेजयमेताणं रासीणं अण्णमण्यासो स्वृणो उद्योसयं असंबेजासंबेजयं होइ । अहवा अष्ट्रणयं परितार्णतयं स्वर्ण उद्दोसयं असंखेजासंखेजवं होह । जह-ष्णयं परिसाणंतमं केनइयं होह ? जहण्यमं असंकेळासंकेळयमेसाणं रासीणं अध्या-मण्यास्मासो परिपुष्णो जहण्यसं परिताणंतयं होह । अहवा उद्योसए असंसेजासंसे-जाए सर्व पविमानं अञ्चलकं परिनाणंतमं होड । तेण परे अअहल्लमण्डीसमाई ठाणाई जाव उक्कोसर्य परिताणंत्रयं ण पावइ । उक्कोसर्य परिनाणंत्रयं केव्ह्रयं होह ? जहण्य-परित्तार्णतयमेतार्ण रासीणं अञ्जयमञ्जदमासी स्वामी रहोसयं परिताणंतयं होड । **अहवा** जहण्ययं जुनार्णनयं स्वूणं उद्दोसयं परितार्णतयं होइ । जहण्ययं जुनार्णतयं केवहर्य होड्? जहुण्ययपरिताणंत्यमेताणं रासीणं अण्यमण्यान्यासो परिपुण्यो जहणायं जुत्तार्णतयं होड । अहबा उद्योसए परित्तार्णतए सर्व पविस्तृतं जहणायं जुलार्णतयं होइ । अमवसिद्धिया वि तत्तिया होति । तेण परं अजहण्णमणुकोसयाहं ठाणाई जाव उद्योसयं जुनाणंतयं म पानइ । उद्योसयं जुनाणंतयं केनश्यं होइ? जहण्णएणं जुत्ताणंनएणं क्षमवसिद्धिया गुणिया अण्णमण्णव्यासी रुवूणो उद्गोसयं जुत्तार्णनयं होह । अहवा जहण्ययं अणंतार्णतमं स्वूणं उद्योसयं जुतार्णतमं होह । जहकार्य अर्णतार्णतर्य केब्रुट्यं होह ? जहकाएणं जनार्णतएणं अभवसिद्धिया गुणिया अण्यामण्यास्मासो पश्चिप्रण्यो जहण्यायं अणंताणंतयं होइ । अहवा उद्योसप जुनाणंतए रूवं पविदानं जहणायं अणंताणंतयं होत । तेण परं अजहण्णमणुक्कोसयाडं ठाणाई । सेर्स गणणासंसा । से कि नं भावसंसा? भावसंसा-जे इमे जीवा मंखगइनामगोत्ताई कम्माइं वेदैंति । सेतं भावसंखा । सेतं संखापमाणे । सेतं भावणमाणे । सेतं प्रमाणे ॥ १४७ ॥ प्रमाणे ति पयं समतं ॥

से कि तं वत्तव्याः ? वत्तव्याः तिविहा पण्णताः । तंत्रहा-ससमयवत्तव्याः ? पर्धममयवत्तव्याः २ ससमयपरसमयवत्तव्याः ३ । से कि तं ससमयवत्तव्याः ? ससमयपरसमयवत्तव्याः ? ससमयपत्तव्याः निर्मसमयवत्तव्याः निर्मसमयवत्तव्याः निर्मसमयवत्तव्याः । से कि तं परसमयवत्तव्याः ? विर्मसमयवत्तव्याः ? वरसमयवत्तव्याः निर्मसमयवत्तव्याः । से कि तं परसमयवत्तव्याः ? वरसमयवत्तव्याः । से कि तं परसमयवत्तव्याः । से कि तं ससमयपरसमयवत्तव्याः । से कि तं ससमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयवत्तव्याः । से कि तं ससमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । से कि तं ससमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवाः । सिर्मसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयपरसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयवत्तव्याः । सिर्यसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयवत्तव्याः । सिर्मसमयवत्तव्याः । सिर्पस्

ससमए परसमए आषविज्ञह जाव उवदंतिज्ञह । सेर्त ससमयपरसमयवत्तव्या । इयाणीं की णओ के बत्तव्ययं इच्छइ ? तत्य जेगमसंगहबवहारा तिबिहं बत्तव्ययं इच्छंति, तंजहा-ससमग्रवत्तव्ययं १ परसमग्रवत्तव्ययं २ ससमग्रपरसमग्रवत्ययं ३ । उज्जयको दुषिहं वत्तव्ययं इच्छड, तंजहा-ससमयवत्तव्ययं १ पर्समयवत्तव्ययं २ । तत्व णं जा सा ससमयवत्तव्यया सा ससमयं पविद्वा, जा सा परसमयवत्तव्यया सा परसमयं पविद्वा, तम्हा दुविहा वसन्त्रया, नत्यि तिबिहा वसन्त्रया । तिष्यि सद-णया एगं ससमयवत्तव्वयं इच्छंति, मत्यि परसमयवत्तव्यया । कम्हा ? जम्हा परसम् अण्डे अहेन अयच्याने अकिरिए उम्मरने अण्डएसे मिन्छावंसणमितिकह । तम्हा सन्वा ससमयवत्तव्वया, णत्थि परसमयवत्तव्वया, णत्थि ससमयपरममय-वनव्या । सेनं वनक्या ॥ १४८ ॥ से कि तं अत्याहिगारे ? अत्याहिगारे-जो जस्स अञ्चयणस्स अत्याहिगारो, तंजहा-साहा-सावज्जजोगविरई, उक्तिंग गुणवक्षो य परिवत्ती । खलियस्स निंदणा वण-, तिभिच्छ गुणधारणा चैव ॥ १ ॥ सेनं अत्थाहिनारे ॥ १४९ ॥ सं कि तं समोबारे ? समोबारे छिन्हे पण्यते । तंजहा-णामसमीयारे १ ठवणासभीयारे २ दश्वसमीयारे ३ सेनसमीयारे ४ कालसमोबारे ५ भावसमोबारे ६ । णामठवणाओ पुन्नं विष्णियाओ जाव संतं भविग्रमरीरद्रव्यसमीयारे । से किं तं जाणयमरीरभविग्रसरीरवर्दिः द्रव्यसमीयारे ? जाणयसरीरभवियसरीरवङ्गि दृष्त्रसमोयारे तिबिहे पण्यत्ते । तंत्रहा-आयसमो-यारे १ परसमोबारे २ तद्भयसमोबारे १ । सम्बदन्त्रा वि णं आयममोबारेणं आबभावे समोयरंति। परसमोबारेणं जहा कंडे बदराणि। तद्भयसमोयारे जहा घरे संभो आयमावे य. जहा घडे गीवा आयमावे स । अहवा जाणयसरीरभवियसरीर-वहरिते दब्बसमोयारे द्विष्टे पण्णते । तंत्रहा-आयसमोयारे य १ तद्वमयसमोयारे य २ । चलसङ्ख्या आयसमोयारेणं आयभावे समोयरइ, तदुभवसमोयारेणं वर्ता-सियाए समोयरह आयभावे य । बत्तीसिया आयसमोयारेण आयभावे समोबरह. तदुभयसमीयारेणं सोलिसवाए समीयरह आयमावे य । सोलिसवा आयसमी-बारेणं आयमाचे समोयरह, तदुभयसमोयारेणं अद्भगाइयाए समोबरह आय-भावे य । अद्भाइया आयसमीयारेणं वायभावे समीवरह, तदुभवसमीयारेणं चरुभाइयाए समीगरह आयमाचे य । चरुभाइया आयसमीयारेणं आयभावे समोवरह. तहमवसमोवारेणं अदमाणीए समोवरह आयमाव व । अदमाणी आय-समोयारेणं आयमाने समोबरड, सब्मयसमोयारेणं मानीए समोबरड आयभावे छ। चेतं आणमस्रीरभविषस्रीरवद्यत्ति स्वयस्त्रीयारे । येतं लोकागमको स्वयस्त्रीयारे ।

सेनं दव्यसमीयारे । से किं तं केतसमीयारे ? केतसमीयारे दुविहे प्रणते । तंजहा-आयसमोयारे य १ ततुमगसमोगारे य २। भरहे वासे आगसमोगारेणं आगमावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेणं जंबुदीवे समोयरइ आयभावे य । जंबुदीवे आयसमो-यारेणं आयमावे समीयरइ, तदुभयसमोयारेणं तिरियलोए समोयरइ आयमावे य । तिरियलोए आयसमोयारेणं आयभावे समीयरइ, तदुभयसमोयारेणं लोए समोयरइ आयमाने ये । सेतं खेतसमोयारे । से किं तं कालसमोयारे ? कालसमोयारे विक्री पण्यते । तंत्रहा-मायसमोयारे य १ तदुमयसमोयारे य २। समए आयसमोयारेणं भायमावे समोयरह, तदुभयसमीयारेणं आवित्याए समोयरह आयमावे स। एवमाणापाण् बोवे लवे मुहुते अहोरते पक्के मासे उद्ध अयणे संबच्छरे जुने बाससए बामसहस्से वाससयसहस्से पुन्वंगे पुन्वे तुष्टियंगे तुष्टिए अडडंगे अडडे अववंगे अववे हुहुयंगे हुहुए उप्पत्नंगे उप्पत्ने पर्संगे पर्सं निरूपंगे निरूपे अत्यनितरंगे अत्यनितरं अवयंगे अउए नवयंगे नवए प्वयंगे पटए मूलियंगे मूलिया बीसपहेलियंगे बीसपहेलिया पलिओवमे सागरीवमे-आयसमोगारेणं आयसावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेणं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीधु समोयरइ आयभावे य । ओसप्पिणीउस्सप्पिणीओ वायसमोयारेणं आयभावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेणं पोरगलपरियहे समोयरंति आयमावे य । पोरगलपरियहे आयसमोयारेणं आयमावे समीयरइ, तद्वभयसमीयारेणं तीनदाव्यणागतदासु समीयरइ । तीतदाव्यणागतदास भागसमीयारेणं आयभावे समीयरंति, तदुनयसमीयारेणं सव्वदाए समीयरंति आयभावे य । सेतं कालसमीयारे । से कि तं भावसमीयारे ! भावसमीयारे द्विहे पण्णते । तंजहा-आयसमोयारे य १ तद्भयसमोयारे य २ । ह्येहे आयसमो-यारेणं आयमावे समोयरह, तदुमयसमोयारेणं माणे समोयरह आयमावे य । एवं माणे माया लोमे रागे मोडिविजे । अद्भक्तमपथडीओ आयसमीयारेणं आयमावे समोयरंति. तद्भयसमोयारेणं छिष्यहे भावे समोयरंति आयभावे य । एवं छिन्दहे मावे। जीवे जीवस्थिकाए आयसमीयारेणं आयभावे समीयरह, तहुभयसमीयारेणं सम्बद्ध्वेतु समोयर्इ भागभावे य । एत्य र्स्तगृहणीगाहा-क्रेहे माणे मागा, लोमे रागे य मोहिनिजे य । पगडी भावे जीवे, जीवत्थिकाय दव्वा य ॥ १ ॥ सेतं भावसमीयारे । सेसं समीयारे । सेसं उवक्को ॥ १५० ॥ उवक्कम इति वटमं दार्र #

१ लोए आयसमीयारेणं आयमावे समीयरह, तदुभगसमीयारेणं असीए समीयरह आयमावे व । इवहियं क्वंतरे ।

से किं तं निक्कों है निक्कों ने तिबिडे पण्याते । तंजहा-ओहतिप्यण्ये १ नासनिप्यण्ये १ सत्तालावगनिएफणे है। से कि तं ओहनिएफणे है ओहनिएफणे चडियहे प्रणाते। तंबहा-अजायणे १ अजनीणे २ माया ३ खनणा ४ १ से कि तं अजायणे १ सजायणे चडव्यिडे पण्णते। तंत्रहा-णामजस्यणे १ द्वणजस्यणे २ दण्यजस्यणे ३ आव-जायणे ४। जामठवणाओ पूर्व वर्णियाओ। से कि तं दक्वजायणे ! दक्कामयणे इक्टि पण्यते। तंजहा-भागमधो य १ मोआगमओ य १। से कि तं आगमधो दक्वज्ञायणे ? आगमओ हन्वज्ञायणे-जस्स यं 'अज्ञायण' ति पयं सिक्सियं, ठियं, जियं. मियं. परिजियं जाव एवं जावह्या अणुवस्ता आगमओ तावह्याई दव्यज्याय-णाडं । एवमेव वबहारस्य वि । संगहस्य णं एमी वा अणेगी वा जाव सेत्तं आयमओ द्रव्यजायणे। से किं तं जोखागमओ द्रव्यजायणे ? जोखागमओ द्रव्यज्यायणे तिबिहे पण्णते। तंत्रहा-जाणयसरीरदव्यज्ययमे १ भविष्यसरीरदव्यज्ययमे २ जाणयसरीर-भविज्यसीरवडरिते वञ्चज्यायणे है। से किंतं जाणससरीरदञ्चज्यायणे ? २ अज्यायण-पयरबाहिगारजाणयस्य जं सरीरं वबगयन्त्रयबाबियनत्वेहं, जीवविष्यज्ञढं जाव अही णं हमेणं सरीरसमस्यएणं जिणविद्रेणं भावेणं 'अज्ज्ञयणे' ति पर्य आधियं जाव उवदंतियं । जहा को विद्वंतो ? अयं घयकुंने खासी, अयं महकुंने आसी । सेलं जाणयसरीर दृष्वजन्मयणे । से कि तं अविकासरीर दृष्यजनयणे ? अविकासरीर दृष्यजनयणे-जे जीवे जोनिजन्मणनिक्खंते. इमेणं चेव भावलएणं सरीरसमस्सएणं जिणदिहेणं भावेषं 'अज्ञायणे' कि पर्य सेमकाले सिक्बिस्सइ न ताब सिक्बाइ । जहा को दिहेंगी ? क्षयं महकुंसे मिवस्तइ, अयं चयकुंसे भविस्सइ। सेलं मिवयसरीरव्य्यस्मायणे । से कि नं जानगर्भारभविग्यसीरक्डारेते दस्वज्ञायणे ? २ पत्तवपोत्वयक्तियं । सेतं जाणयमरीरमवियसरीरवडरिते दम्बज्ययमे । सेतं मोखायमओ दम्बज्ययमे । सेतं दक्कज्यायणे । से कि तं भावज्यायणे ? भावज्यायणे इविडे पण्णते । तंत्रहा-सागमको य १ मोखागमधो व २ । से कि ते आगमधो भावजनको ? आगमधो भावजनको जानए उबदने । सेतं आवसको भावज्यको । से कि तं नोजागमध्ये भावज्यको ? नीकागमनो मानजारको-बारका-अञ्चप्परसावरको, बम्मानं सनवको उपविद्याणं । अववच्यो व नवार्थ, तम्हा वाजावयमिक्छंति ॥ १ ॥ सेतं नोवागमको भावनस्यो । सेतं मानजावणे । सेप्तं आजाबाहे । से कि तं अवसीने ? अजाने परानिहे पमारे । तंत्रहा-णामज्हीणे १ ठनणज्हीणे २ द्व्यज्हीणे ३ सावज्हीणे ४। णामठवणाओ पुरुवं विकासको । से कि तं इव्यवसीये है इव्यवसीये हिन्दे पन्यते । तंत्रहा-आगमधो य १ नोधागमधो य १। से दि तं आवासधो सम्बन्धीये ?

आगमओ दन्यज्जीने-जस्स णं 'अज्जीने' ति पर्य सिक्लियं टियं, जियं, मियं, परिजियं जान सेतं आयमओ दम्बज्जीने । से किं तं नोआगमओ दम्बज्जीणे ? नोबागमओ दव्यञ्ज्ञीणे तिविहे पण्णेत । तंजहा-जाणयसरीरद्व्यञ्ज्ञीणे १ सवियसरीरदव्यज्ञीणे २ जाणयसरीरभवियसरीरवहरिते दव्यज्ञीणे ३ । से किं तं जाणयसरीरद्व्यउद्गीणे । जाणयसरीरद्व्यउद्गीणे-'अउद्गीण' पयत्थाहिगारजाण-यस्स जं सरीरयं दवनययुयनावियनत्तदेहं जहा दव्यज्झयणे तहा माणियव्यं जाव सेतं जाणयसरीरदव्यज्ञीणे । से किं तं भवियसरीरदव्यज्ञीणे ? भवियसरी-रदंव्यज्ञाणे-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्संते जहा द्व्यज्ञ्यणे जाव सेतं भविय-यरीरदव्यज्यीणे । से किं तं जाणयसरीरमवियसरीरवहरिते दव्यज्यीणे ? जाण-यसरीरमवियसरीरवडरिते दन्वज्ञाणि सम्बागाससेटी । मेलं जाणयसरीरभविय-मरीरवडरिने दव्यज्झीणे । मेत्रं नोआगमओ दव्यज्झीणे । मेत्रं दव्यज्झीणे । से कि तं मायज्हीणे ? मायज्हीणे दुविहे पण्णते । तंत्रहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि तं आगमओ भावज्हीणे ? आगमओ भावज्हीणे जाणए उवउत्ते । सेतं आगमओ भावज्जीने । से किं तं नीआगमओ सावज्जीने ? नीआगमओ मावज्हीण-गाहा-जह दीवा दीवमयं पर्पर, दिप्पएंय सो दीवो । दीवसमा आयरिया, दिप्पंति परं च दीवंति ॥ १ ॥ मेनं नोआगमओ भावज्जीणे । सेनं भाव जरीणे । सेन् अज्जीके । से कि तं आए ? आए च उन्तिहे पण्णते । तंत्रहा-नामाए ९ ठक्णाए २ इव्वाए ३ भावाए ४। नामठवणाओ एव्यं मणियाओ । से कि तं दर्भण ? दरबाए दविहे पण्णते । तंजहा-आगमओ य १ नोक्षागमओ य २ । से कि तं आगमओ द्रव्याए ? आगमओ द्रव्याए-जस्स ण 'आए' ति पर्य सिक्सिबं, ठियं, जियं, मिवं, परिजियं जाव कम्हा ? 'अणुवओगो' दव्यमिति कह । जेगमस्स मं जाबहुया अजबउत्ता आगमओ ताबहुया ते दब्बाया जाब सेतं आग-मओ दब्बाए । से कि तं नोआगमओ दब्बाए ? नोआगमओ दब्बाए तिविहे पण्णते । तंत्रहा-ज्ञानयसरीरदञ्बाए १ भवियसरीरदञ्बाए २ जाणवसरीरमविवसरी-रवद्दिते दब्बाए है। से कि तं जाणक्सरीरदब्बाए ? जाणक्सरीरदब्बाए-'आव' पग्रत्याष्ट्रिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगयच्यानियचत्तर्वहं जहा दव्यज्ञायथे जाब सेतं जाणवसरीरवावाए । से कि तं मवियसरीरदव्वाए ? मवियसरीरदव्वाए-वे जीवे जीविजन्मणिकसंते बचा दम्बण्याको जाव सेर्स मनिवसरीरदध्याए । से कि सं जाणग्रहरीरअविग्रहरीर्रवहरिते दब्बाए ? जाणगसरीरमिग्यसरीरवहरिते दंब्बाए तिबिहे कर्जी । तंबहा-छोहए ५ कुप्नावयनिए २ लोगुगरिए २ । से कि तं

लोइए ? लोइए तिविहे पण्णते । तंजहा-सचिते १ अचिते २ मीसए य ३ । से कि तं सचिते ? सचिते तिविहे पण्णते । तंजहा-दुपयाणं १ चडप्पयाणं २ अपयाणं ३ । दुपयाणं-दासाणं दासीणं, चउप्पयाणं-आसाणं हृत्शीणं, अपयाणं-अंबाणं अंबाहगाणं आए। सेतं सचिते। से किंतं अचिते? अचिते-ग्रव्वण्णरययमणिमोत्तियसंख-सिळप्पवालरत्तरयणाणं (संतसावएजस्स) आए । सेतं अचिते । से किं तं मीसए ? मीसए-दासाणं दासीणं आसाणं इत्बीणं समामरियाउजालंकियाणं आए। से तं मीसए । से तं लोइए । से कि तं कृष्पाषयक्रिए ? कृष्पावयणिए तिबिहे पण्णते । तंजहा-सचिते १ अचिते २ मीसए य ३ । तिष्णि वि जहा लोइए जाव से तं मीसए । से तं कृप्पात्रयणिए । से किं तं स्त्रेगुत्तरिए ? स्त्रेगुत्तरिए तिबिहे पण्णते । तंजहा-सचिते १ अचिते २ मीसए य ३ । से कि तं सचिते ? सचिते-सीसाणं सि[स्स]स्सिणियाणं । सेत्तं सिचते । से किं तं अचिते ? अचिते-पडिगाहाणं वत्थाणं कंबलाणं पायपंछणाणं आए । सेतं अचिते । से किं तं मीसए ! मीसए-सिस्साणं सिस्सिणियाणं सभंडोबगरणाणं आए। से तं मीसए। से तं लोगतिए। से तं जाण-यसरीरभवियसरीरवहरित्ते दव्वाए । सेत्तं नोआगमओ दव्वाए । से तं दव्वाए । से किं तं भावाए ? भावाए दुविहे पण्पते । तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि तं आगमओ भावाए ? आगमओ भावाए बाणए उवटते । से तं आगमओ भावाए । से किं तं नोआगमओ भावाए ? नोआगमओ भाषाए द्विहे पण्णते । तंबहा-पसत्ये य १ अवसत्ये य २ । से किं तं पसत्ये ? पसत्ये तिविहे पण्णते । तंजहा-णाणाए १ इंसणाए २ वरिताए ३ । सेनं पसस्ये । से किं तं अपनत्ये है अपसत्थे चउन्विहे पण्णेते । तंत्रहा-कोहाए १ माणाए २ माथाए ३ छोहाए ४ । से तं अपसत्ये । से तं नोआगमओं भावाए । से तं भावाए । हो सं आए । से कि तं सवणा ! सवणा चउम्बहा पण्णसा । तंत्रहा-नामउसवणा १ ठवणज्ञावणा २ दम्बज्यवणा ३ भावज्यवणा ४ । नामठवणाओ पुर्व मणियाओ । से कि ते टब्ब-ज्यावणा ? दञ्जज्ञावणा दुनिहा प्रकाता । तंजहा-आगमधो य १ नोआगमधो य २ । से कि तं भागमधी दब्बज्यावणा ? भागमधी रव्यज्यावणा-जस्स र्ष 'श्रवणे' सि पर्य सिविसर्य, ठियं, जियं, मियं, परिजियं जाव सेतं आपसको दव्यज्यावका । से कि तं नोआगमको स्व्यज्ज्ञावणा ! मोआगमको दव्यज्ज्ञावणा तिविद्या प्रकारा । तंजहा-जाणवसरीरदञ्बलावका १ अवियसरीरदञ्बलावका २ वाजवसरीरविय-सरीरवहरिता दन्वज्ञावणा ३ । से किं तं जाणग्रहरीरदृष्युज्ञावणा १ २ 'शावणा' प्रस्थाहिगारजामबस्स वं सरीरवं वनमञ्जूयवानिकक्तहेष्टं सेसं बहा क्रक्रकायने

जान सेत्तं जाणयसरीरद्व्यज्यावणा । से किं तं भवियसरीरद्व्यज्यावणा ? २ जे जीवे जोणिजम्मणणिक्संते सेसं जहा दश्वजहायणे जाव सेतं भवियसरीरदश्वजहावणा । से कि तं जाणयसरीरभवियसरीरवडरिक्ता दव्यज्यवणा १ २ जहा जाणयसरीरभविय-सरीरवहरिते दब्बाए तहा माणियव्या जाव से तं मीसिया । से तं लोगुत्तरिया । से तं जाणयसरीरमधियसरीरवहरिता दञ्बज्यवणा । से तं नोआगमओ दञ्बज्यवणा । से तं दम्बज्ज्ञवणा । से कि तं भावज्ज्ञवणा ? भावज्ज्ञवणा दुविहा पण्णता । तंज्रहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि तं आगमओ भावजनवणा ? आगमओ भावज्ञवणा जाणए उवउत्ते । से तं खागमओ भावज्ञवणा । से किं तं नोआग-मओ भावज्झवणा ? नोआगमओ भावज्झवणा दुविहा पण्णता । तंजहा-पसत्या य १ अपसत्था य २ । से कि तं पसत्था ? पसत्था तिविहा पण्णता । तंजहा-नाण-उद्मवणा १ दंसणज्यावणा २ चित्रज्यावणा ३ । सेत्तं पसत्था । से किं तं अपसत्था ? अपसत्था चडन्बिहा पण्णता । तंजहा-कोहजसवणा १ माणज्यवणा २ मायज्यवणा ३ लोहज्सवणा ४। से तं अपसत्या। से तं नोआगमओ भावज्झवणा। से तं भावज्सवणा । से तं अवणा । से तं ओहनिएफण्णे । से किं तं नामनिएफण्णे ? नामनिष्फणो सामाइए । से समासको चडव्विहे पण्णते । तंजहा-णामसामाइए १ ठनणासामाइए २ दम्बसामाइए ३ भावसामाइए ४ । णामठनणाओ पुरुषं भणि-याओ । दव्यमामाइए वि तहेव जाव सेत्तं भवियसरीरदव्यसामाइए । से किं तं जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दव्वसामाइए ? २ पत्तयपोत्ययलिहियं । से तं जाणय-सरीरभवियसरीरवडरिने दव्वसामाइए । से तं नोआगमओ दव्वसामाइए । से तं द्व्यमामाइए । से किं तं भावसामाइए ? भावसामाइए द्विहे पण्पत्ते। तंजहा-आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि तं आगमओ भावसामाइए ? भागमओ भावसामाइए जाणए उयउत्ते । से तं आगमओ भावसामाइए । से कि तं नोआगमओ मावसामाइए? नोआगमओ भावसामाइए-गाहाखो-जस्स सामाणिओ अप्या. संजमे णियमे तवे । तस्स सामाइयं होइ, इइ केवळिमासियं ॥ १ ॥ जो समो सञ्चभएस. तसेस थावरेस य । तस्स सामाइयं होइ. इह केवलि-भासियं ॥ २ ॥ जह मम ण पियं दुक्तं, जाणिय एमेव सव्वजीवाणं । न हणइ न हणाबेड या. सममणड तेण सो समणो ॥ ३ ॥ णत्थ य से कोइ बेसी, पिओ य सब्देस चेव शेवेस । एएण होड समणो, एसो अबोऽवि पजाओ ॥ ४ ॥ उरग-निरिज्ञासागर-, नहुत्वतरागणसम्। य जो होइ । भमरमियधरणिकरुह-, रिक व्यवस्था य सो समनो ॥ ५ ॥ तो समनो जह समनो, भावेण य जह न होइ

पावमणी। सथणे य जणे य समी, समी य माणावनाणेख ॥ ६ ॥ से तं नोआगमको भावसामाइए । से तं भावसामाइए । से तं सामाइए । से तं सामानिप्यावणे । से कि तं भुतालाबगनिष्प्रण्णे ? इयाणि सुत्तालावयनिष्प्रण्णं निक्खेवं इच्छावेड. से य पत्त-लक्खणे वि ण णिक्खिप्पइ । कम्हा १ लाघवत्थं । जत्वि इस्रो तह्य अणुओगदारे अगुगमे ति । तत्य णिक्खते इहं णिक्खिते भवड़ । इहं वा णिक्खिते तत्य णिक्खिते भवड़ । तम्हा इहं ण णिक्सिप्पड़, तहिं चेव णिक्सिप्पड़ । से तं णिक्सोबे ॥ १५९ ॥ से कि तं अणुगमे ? अणुगमे दुविहे पण्यते। तंत्रहा-सुताणुगमे य १ निज्नृतिअणुगमे य २ । से किं तं निज्नुतिअणुगमें ? निज्नुत्तिअणुगमें तिविहे पण्णते । तंजहाँ-निक्खेव-निज्जुत्तिअणुगमे १ उपम्यायनिज्जुत्तिअणुगमे २ स्तत्कासियनिज्जुत्तिअणुगमे ३ । से किं तं निक्खेवनिज्निक्षणुगमे ? निक्खेवनिज्ञित्तिअणुगमे अणुगए । से तं निक्खेव-निजुत्तिअणुगमे । से कि तं उवस्थायनिजुत्तिअणुगमे ! २ इमाहिं दोहिं मूलगाहाहिं अणुगंतव्यो, तंजहा-गाहाओ-उदेसे निह्से य, निगमे खेन काल पुरिसे य। कारण पचय लक्क्सण, नए समोयारणाणुमए॥ १॥ कि कहमिहं करस कहि, केस कहें कि चिरं हबइ कालं। कई संतर-मिवरहियं, भवागरिस फासण निरुत्ती ॥ २ ॥ सेतं उवम्यायनिज्ञतिअणुगमे । से किं तं सुत्तप्कासियनिज्ञत्तिअणुगमे ? सुत्तप्कासिय-निज्ञत्तिअणुगमे-सुतं उचारेयव्यं-अक्खिलयं, अमिलियं, अवचामेलियं, पिडपुण्यं, पिंडपुण्णघोसं, कंठोड्टविप्पमुकं, गुरुवायणोवगर्य । तश्रो तत्थ णिजिहिर ससमयपर्य वा परसमयपर्यं वा. बंधपर्यं वा मोक्खप्यं वा. सामाइयपर्यं वा नोसामाइयपर्यं वा। तओ तम्म उचारिए समाणे केसि च णं भगवंताणं केइ अत्थाहिगारा अहिगया भवंति, केइ अत्याहिगारा अणहिगया भवंति । तओ तेसि अणहिगयाणं अहिगयणद्वाए पबं पएणं वण्णहस्सामि-शाहा-संहिया व पयं चेव, पयत्थो पयविकाहो । चारुणा य परिद्धी य, छव्चिहं विद्धि सम्बर्ण ॥ १ ॥ से तं सुत्तप्फासियनि जुत्तिअगुगमे । से तं निज़त्तिअणुगमे । से तं अणुगमे ॥ १५२ ॥ से किं तं नए ? सत्त मूलगया पण्णता। तंजहा-जेगमे १ संगहे २ ववहारे ३ उज्जुसुए ४ सह ५ समिमिल्डे ६ एवं-भूए ७ । तत्य गाहाओ-फोहि माणेहि, मिणइति गेगमस्स य निरुत्ती । सेसाणं पि नयाणं, लक्खणमिणमो सुणह बोच्छं॥ १॥ संगहियपिडियत्वं, संगहवयणं समासओ बिंति । वचह विभिन्छियत्वं, ववहारी सन्वद्व्वेद्ध ॥ २ ॥ प्रमुप्पनमाही, उज्जुसुओ णयविही सुणेयन्त्रो । इच्छइ विसेसियतरं, प्रमुप्पन्ने नजी सही ॥ ३ ॥ वत्युओ संक्रमणं, होइ अवत्थ् नए समिनिन्दे । वंजनशत्तत्त्वस्यं, एवंमुओ विसेसैंड ॥ ४ ॥ णायिम मिन्हियम्बे, भगिण्डियम्बन्मि नेव अत्यम्भि । जहबन्यमेव इष्ट

जो, उवएसो सो नभो नाम ॥ ५ ॥ सन्वेसि पि नयाणं, बहुविह्वतव्वयं निसामिता। तं सम्बन्धविद्धतं, जं चरणगुणद्विभो साहू ॥ ६ ॥ सेन्द्रं नपः ॥ १५३ ॥ अणु-भोगहारा समसा ॥ सोलससयाणि चउरतराणि, होति उ इमेमि गाहाणं। दुसहस्स मणुद्धुभ-, छंदवित्तपमाणभो भणिओ ॥ १ ॥ णयरमहादारा इव, उवक्रम-दाराणुओगवरदारा । अक्खरविंदुगमता, लिहिया दुक्खक्खयद्वाए ॥ २ ॥

।। अणुओगदारसुत्तं समत्तं ॥ तस्समत्तीए

चत्तारि मूलसुत्ताइं समत्ताइं

॥ सञ्वसिलोगसंखा ५५०० ॥





श्रीमृत्रागमप्रकाञ्चकसमितिके 'सदस्य'



पिन्चय-आप घोडनही (एना) के एक प्रतिष्टिन गण्य मान्य घनात्य श्रावक है। आपका व्यवसाय मुंबई तक होता है। आपका विवाह पनवेन्छमें बांटिया परिवारमें श्रीरतनचंदजी मा॰ वाटियाकी भगिनी श्रीगंगावाईजी में हुआ है। श्रीगंगादेवीजी जिन्धममें पूण आस्त्रा श्रद्धा)रखती हैं। परिपूण धर्म निधिसे समृद्ध है। आपकी प्रकृति ज्ञान और सीम्य है। सामायिक प्रतिकमणादि धर्मिकया निरावाध रूपसे मदेव करती रहती है। प्रतिवर्ष मुनिदर्शनका लग्ना हिया करती है।

श्रीमान् गेठ शोभाचंद घूमरमल वाफणा घोड्नदी-सिम्स (पना)

शेठ साह्रेब सामाजिक सेवाक कायोमें यथाशक्य खूब योग देते रहते है। आपकी पार्मिक सेवाएँ भी स्तुत्व है। आप २००) की सेवाका योग देकर समितिक सदस्य' बने है। आप कुचेरा (मारवाड) के निवासी है। महाराष्ट्रमें आप बहे ही प्रतिष्ठा प्राप्त है। आपकी गुरुभांका प्रशंसनीय है। आपने कहें संस्थाओंकी आर्थिक सेवाए बहे उदार सावोंसे की है।

इसके अतिरिक्त आप धार्मिक परिक्षा बोर्ड पाथडांक संरक्षक भी है तथा चाच-वह विद्यालयमें १०००) दान देकर एक कमरा आपने अपने पिताश्रीकी स्मृतिमें वनवाया है। माधु मुनिराज और महामतियोंके शिक्षणके प्रीत्यर्थ आपके पिताश्रीन आर्थिक सेवाका योग देकर खब धर्मदलार्जा की है। इसी प्रकार आपकी मानार्था भी धर्मपरायणा हैं तथा अहिनेंश समभाव रमके प्रवाहमें प्रवाहित होती हुई आविका धर्मकी हहताका एक मुंदर आदर्श स्थापन कर रही है।

णमोऽत्यु णं समणस्स मगवनो णायपुत्तमहावीरस्स

सुत्तागमे

तत्य णं आ**वस्सयसुत्तं**

69(4)90

अह पढमं सामाइयावस्सयं

श्रीवस्सही इच्छाकारेण संदिसह भगवं! देव(सी)सियपिकक्षमणं ठाएमि, वेव-सियणाणदंसणचित्ततवअइयारिवतवणद्वं करेमि काउसमा। १ ॥ णमो अरिइंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरिवाणं, णमो उवज्ञासाणं, णमो लोए सञ्बसाहृणं ॥ २ ॥ कैरेमि मंते! सामाइयं सम्बं सावजं जोगं प्रवक्तामि, जावजीवाए तिबिहं तिबिहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारविम करंतिप क्षण्णं न समणु-जाणामि, तस्स मंते! पिकक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्याणं वोसिरामि ॥ ३ ॥ इच्छामि (पिकक्रमिउं-ओ) ठामि काउमम्गं, जो मे देवसिओ अइयारो क्यो काइओ वाइओ माणसिओ उस्स्ता उम्मग्गो अकप्पो अकरिको दुज्जाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छियको असमणपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं महक्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं

१ बिही-पुर्लि 'तिक्छतो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्षारेमि सम्माणेमि कहाणं मंगळं देवयं चेह्यं पजुवासामि मस्थएण वंदामि ।' इच्छेण
पाढेण गुरुवंदणा किज्ञह । पच्छा णमोक्षारखारो 'एसो पंच णमोकारो, सम्बपायपणासणो । मंगळाणं च सम्बेसिं, पढमं हवह मंगळं ॥' जुत्तो । पुणो 'तिक्छतो॰'
तओ 'इच्छाकारेण॰' 'तस्युत्तरिकरणेणं॰' जाव 'ठाणेणं' प्रहुष्वारणं किचा
'मोणेणं॰' अप्पुटं अञ्चतं मणंसि 'इरियावहिमाए' मम्मिसोही कीरह । णमोक्षारखारणेण झाणं पारिज्ञह, पच्छा 'लोगस्स॰' प्रहुष्वारो, तक्षो दुण्णि 'णमोऽख्यु
णं॰'। पच्छा सामाइबं पढमावस्सयं पार्च्मह । पत्तेवावस्सयसमत्तीए 'तिक्छतो॰'
इष्णेण गुर्व वेदिशु अञ्चरसावस्तयस्सामा चेप्पह ति विसेसो । २ 'राह्य' 'पिक्सप' 'बाउम्मासिय' 'संबच्छरिय' । ३ केद विहीए 'तिक्छतो॰' पच्छा केवकं
धमोकारे जवपयमिच्छंति, 'करेमि अति ।॰' इष्णेण पढमावस्सयं पार्च्यंति स ।

पिंडेसणाणं अञ्चर्णं प्रवाणमाळणं नवण्यं कंभचेरपुत्तीणं इसविद्वे समण्यामे समण्याणं जोगाणं जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कं ॥ ४ ॥ तस्स उत्तरी-करणेणं पायच्छितकरणेणं विसोहीकरणेणं विसहीकरणेणं पायाणं कम्माणं णिग्या-मण्डाए ठामि काउसम्गं, अक्षत्य कससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंमाइ-एणं उद्दुएणं वायविसम्गेणं भमिलए पित्तमुच्छाए सुदुमेहिं अंगसंचाळेहिं सुदुमेहिं खेलसंचाळेहिं सुदुमेहिं विद्विसंचाळेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अविराहिओं हुक्ज मे काउसमा, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरीमि ॥ ५ ॥ इद् पढमं सामाइया-वस्सयं समन्तं ॥ १ ॥

अह बीयं चडबीसत्थवाबस्सयं

क्रोगस्स उज्जोबगरे, धम्मतित्वयरे जिणे। अहिहंते कित्तइस्छं, वर्जीसंपि केवली ॥ १॥ उसममजियं च वंदे, संभवमिमणंदणं च समई च। परमण्यं सुपासं, जिणं च चंदण्यहं वंदे ॥ २॥ सुविहं च पुण्कदंतं, सीयलसिजंसं वासुपुजं च। धिमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३॥ कुंधुं अरं च मिन्न, वंदे मुणिसुम्बयं निमिजिणं च। वंदामिऽदिद्वनेमिं, पासं तह वद्यमाणं च।॥ ४॥ एवं मए अमित्युआ, विद्युयसमला पद्दीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्ययरा मे पसीयंतु ॥ ५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुम्गबोहिलामं, समाहिवरसुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइवेसु अहियं प्यासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥ ७॥ इइ बीयं चडवीसरथ-चा(उक्तित्तणा)वस्सयं समसं॥ २॥

१ 'आगमे तिविहे जाव मूलगुण पंच ०' 'इच्छामि ठामि०' 'सम्बस्स वि हेव-सिमं दुर्चितियं दुंभासियं दुविद्वियं दुपालियं०' एए सच्चे पादा मोनेणं पदमावस्स-यज्याने ब्राइजंति, पुणी तहवावस्सयस्स पच्छा चउत्थावस्सयसाहंति ठिचा पुद्ध-चारणपुच्चगं उचारिजंति । एएछ 'आगमे०' 'इच्छामि ठामि०' एए दुण्चि अञ्चल-गद्दीए 'सम्बस्स वि०' अञ्चलद्धमागद्दीए अदं मासाए । हेता निम्मिनणकासाए स्टमंति तसोडक्सेया ।

अइ तइयं वंदणावस्सयं

इच्छामि समासमणो ! वंदिउं बावणिकाए निसीहियाए, अगुजाणह मे मिरुगाई, निसीहि अहोकार्य कायसंकार्य, समणिको मे किलामो, अप्यक्तिलंताणं बहुसुमेण में दिक्सो वहकंतो ? जत्ता मे ? जवणिकं च मे ? सामेमि समासमणो ! देवसियं वहकमं, आवस्तियाए पिककमामि समासमणाणं देवसियाए आसायणाए तेत्तीसक्षयराए कं किच मिन्छाए मणदुकडाए वयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माजाए माबाए लोहाए सम्बकालियाए सम्बमिच्छोवयाराए सम्बच्चमाइकमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ अहवारो क्लो तस्स समासमणो ! पिकक्षमामि निदामि गरिहामि अप्याणं वोसिरामि ॥ इह तक्ष्यं वंदाणावस्त्यं सम्बन्तं ॥ ३॥

श्रह चडत्यं पडिक्रमणायस्सयं

वैतारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपकत्तो घम्मो मंगलं। वत्तारि लेगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपक्तो घम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्वामि-अरिहंता सरणं पवज्वामि, सिद्धा सरणं पवज्वामि, सिद्धा सरणं पवज्वामि, साहू सरणं पवज्वामि, केवलिपक्तं घम्मं सरणं पवज्वामि। १ ॥ इन्छोमि पिटकामिलं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्तमणे बीयक्तमणे हरियाक्तमणे ओसालित्तगपणगदगमश्रीमक्तरासंताणासंक्रमणे ले मे जीवा विराहिया एगिहिया वेहंदिया तेहंदिया चलित्रया पंचित्रया कामिह्या विर्वादया केसिया संघान्द्रया संघहिया परियाविया किलामिया उद्दिया पंचित्रया कामिह्या विराहणाए क्रिया संघान्द्रया संघहिया परियाविया किलामिया उद्दिया ठाणाओं ठाणं संकामिया जीवियाओं ववरोविया तस्स निच्छामि वुक्तं ॥ २ ॥ इच्छामि पटिकामिलं पगामिक्जाए नियानमिल्जाए संवाराज्व्यह्याए परियहणाए आलंद्रयाए प्रसारणाए क्रम्यहर्मामुलाए क्र्मूह्ए कक्तराहए छीए जंभाइए आमोसे ससरक्तामोसे आलल्कानुलाए सोवणवित्तासियाए दिद्वीविष्यरियासियाए मणविष्यरियासियाए पाणभोयणविष्यरियासियाए जो मे वेवलिओ अङ्गारो कमो तस्स मिल्छामि दुक्तं ॥ ३ ॥ पिक्तमामि नोमरचरियाए मिक्नमामि नोमरचरियाए मिक्नमामि लोगरचरियाए साणावच्छान

१ 'राइओ' 'पिक्सओ' 'साउम्जासिओ' 'संबच्छरिओ' । २ 'तिक्सुत्तो ॰ इसकेश बंदणं किया पच्छा पंचणनोकारं राजो 'करेमि मंते ॰ ।' तथो 'बतारि मंगळं ॰' । ३ 'बतारि मंगळं ॰' पच्छा 'इस्क्रामि॰' परिचर्णं ति केइ ।

दारासंघटणाए मंदीपाहुवियाए बक्षिपाहुवियाए ठवणापाहुवियाए संकिए सहसागारिए अणेसणाए पाणेसणाए पाणभोयणाए बीसभोयणाए हरियमोयणाए पच्छाकन्मियाए पुरेकम्भियाए अदिश्वहरूए दगसंसद्वहराए रयसंसद्वहराए पारिसादाणयाए पारिद्वाव-णियाए ओहासणभिक्खाए जं उरगमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं परिरमहिबं परिभुत्तं वा जं न परिद्ववियं तस्स मिच्छामि दुक्कं ॥ ४ ॥ पिकक्रमामि बाउकालं सज्कायस्स अकरणगए उभक्षोकारुं मंहोबगरणस्य अप्यिकेहणाए दुप्पिकेहणाए अप्यमञ् णाए दुप्पमञ्ज्ञणाए भइक्समे वहक्समे अहयारे अणायारे जो मे देवसिओ अहयारो कओ तस्य मिच्छामि दुक्दं ॥ ५ ॥ पिडक्रमामि एगविहे असंजमे । पिडक्रमामि दोहि वंघणेहि-रागवंघणेणं, दोसवंघणेणं। पश्चिममामि तिहि दंडेहि-मणदंडणं, वयदंडेणं, कायदंडेणं। पडिकमामि तिहिं गुत्तीहिं-मणगुत्तीए, वयगुत्तीए, काय-गुत्तीए । पिंदकमामि तिहिं सहेहिं-मायासहेणं, नियाणसहेणं, मिच्छादंसणसहेणं । पिकसमामि तिहिं गारवेहिं-ह्युगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं। पिकसमामि तिहिं विराहणाहि-णाणविराहणाए, दंसणविराहणाए, चरित्तविराहणाए। पिकस्माम क्साएहि-कोहकसाएणं, माणकसाएणं, मायाकसाएणं, लोमकसाएणं। पिकसमामि चडहिं सण्णाहि-आहारसण्णाए, भयसण्णाए, मेहुणसण्णाएं, परिव्यह-सण्णाए । पिकक्रमामि चलिहं विकहाहिं-इरथीकहाए, भत्तकहाए, देसकहाए, राय-कहाए । परिक्रमामि चलहि झाणेहि-अट्टेणं झाणेणं, रहेणं झाणेणं, धम्मेणं झाणेणं, सुकेणं आणेणं । पिडकमामि पंचिंहं किरियाहिं-काइयाए, अहिगरणियाए, पाउत्ति-याए, परितावणियाए, पाणाइवायकिरियाए । पडिक्रमामि पंचित् कासगुणेहिं-सद्देणं, हवेणं, गंधेणं, रसेणं, फासेणं। परिक्रमामि पंचिंहं महत्वएहिं-सव्वाओ पाणाइवा-याओ वेरमणं, सञ्दाओ मुसादायाओ वेरमणं, सञ्दाको अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सञ्जाओं मेहणाओं वेरमणं, सञ्जाओं परिग्गहाओं वेरमणं । परिक्रमापि पंचार्ह समिईहि-इरियासमिईए, भासासमिईए, एसणासमिईए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा-समिईए. उचारपासवणखेलजङ्गसिंचाणपारिठावणियासमिईए । पिकसमामि छहि जीव-निकाएहिं-पुढविकाएणं, आउकाएणं, तेउकाएणं, बाउकाएणं, बणस्सङ्काएणं, तसकाएणं । पिकसामि छहि केसाहि-किण्हलेसाए, चीलकेसाए, काउलेसाए, तेउ-केसाए, पम्हळेसाए, क्रुक्रकेसाए । पविक्रमामि सत्तर्हि भगद्वाणेहि, अद्वर्हि मयद्वाणेहि, गवहिं वंभचेरगुत्तीहिं, दसविहे समणधम्मे, एगारसिंह उवासगपडिमाहिं, वारसिंह भिक् क्) खपडिमाह, तेरसह किरियाठाणेहि, चर्च इ म्यगमेहि, पण्णरसह परमाहम्मिएहिं, सोलसिं गाहासोलस(ए)हिं, सत्तरसिंहे असंजमे, अद्वारसिंहे



श्रीमान् लाला प्यारेलाल जैन दूगड मिटगुमरीवाले हाल अंबरनाथ.



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवजो जायपुरामहाबीरस्स

पढमं परिसिद्धं

दसासुयक्बंधस्स अट्टममञ्झयणं

अहवा कप्पसुत्तं

नमी अरिहंताणं, नमी सिद्धाणं, नमी आयरियाणं, नमी उवजहायाणं, नमी लोए सब्बसाहूणं । एसो पंचनमुकारो, सञ्चपावप्पणासणो । मंगलाणं च सब्बेसि, पढमं हुब्ह मंगलं ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समये मगर्वं महावीरे पंच-हखुत्तरे हत्या, तंजहा-हखुत्तराहि चुए चइता गर्न्म वकंते १ हखुत्तराहि गञ्माओ गर्क साहरिए २ हत्युत्तराहि जाए ३ हत्युत्तराहि मुंडे भविता भगाराओ अजगारियं पब्बहर ४ हत्युत्तराहि अणंते अणुत्तरे निव्वाचार निरावरणे कसिणे पिडपुण्णे केव-लबरनाणदंसणे समुप्पने ५ साइणा परिनिव्वुए भयवं ६॥ २॥ तेणं कालेणं तेणं समर्गं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हागं चडत्ये मासे अहमे पक्के आसावसुदे तस्त णं आसारस्टस्स स्ट्रीपक्लेणं महाविजयपुष्फृतरपवरपुंडरीयाओ महाविमा-णाओ वीसंसागरोवमद्विदयाओ आउक्सएणं मनक्सएणं ठिइक्सएणं व्यणंतरं नयं नइता इहेव जंबुहीवे दीवे मारहे बासे दाहिणद्वभरहे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-द्यसमाए समाए विद्वकंताए १ द्यसमाए समाए विद्वकंताए २ द्यसमदुसमाए समाए विइकंताए ३ दुसमसुसमाए समाए बहुविइकंताए-सागरोबमकोडाकोडीए बायाछी-(साए)सवाससहरसेहि काषियाए पंचहत्तरिवासेहि अद्भवमेहि व मासेहि सेसेहिं-इक्रवीसाए तित्वयरेहिं इक्सागङ्गलसमुप्यकेहिं कासवगुरोहिं, दोहि व इरिवंसकुल-समुप्पनेहिं गोयमसगुत्तेहिं, तेबीसाए तित्वयरेहिं विहक्कंतेहिं, समणे भगवं महावीरे ब(रिमे)रमतित्यमरे पुन्नतित्ययरनिष्टि माहणकुंडम्गामे नयरे उसमदत्तस्स माह-णस्स क्षेडालसभूतस्य मारियाए देवाणंदाए माहणीए बाळंघरसभूताए पुन्वरत्ता-बरत्तकारुसमयंति इत्युत्तराहि नक्खतेणं जोगमुचागएणं आहारवर्कतीए सक्वकंतीए सरीरवर्षतीए क्विंक्रिस गन्भकाए वर्षते ॥ ३ ॥ समणे मगवं महावीरे तिकाणी-बगए यावि हत्या-चहरसामिति जागड, चयमाचे न जागड, चएमिति जागड ! सं

र्याणं च णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदाए माहणीए आकंघरसगुताए कुव्छिसि गन्मताए वहंते तं रयणि च णं सा देवाणंदा माहणी सयणिजेसि द्वताजागरा ओहीरमाणी २ इमेगारूबै उराले कहाणे सिवे धड़े मंगहे सस्सिरीए चउइसमहा-समिणे पासिनाणं परिबद्धाः तंजहा-गर्य-वसहै-सीहै-अभिसेर्य-दार्गे-सैसि-दिणवैरं सेयं कुं । पउमसेर-सागेर-विमाणस्वीर्ध-राणुबैय-सिहं च ॥ १ ॥ ४ ॥ तए णं सा देवा-णेदा माहणी इमे एयारुवे उराले कलाणे सिवे घर्षे मंगले सहितरीए चउदसमहासमिणे पासिकाणं पिडवुद्धाः समाणी इद्वतद्वविक्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया इरि-सबसविसप्पमाणहियया घाराहयकैळंबुगंपिव समुस्ससियरोमकृवा सुमिणुग्गई करेड् सुमिणुरगई करिता सयणिजाओ अब्सुद्धेह अब्सुद्धिता अतुरियमचवलमसंभंताए रायई-ससरिसीए गईए केणेव उसभदते माइणे तेणेव उवायच्छा उवागच्छिता उसमदत्तं माहणं जएणं विजएणं वद्वावेड बद्धाविता भहासणबर्गया आसत्या वीसत्या सुद्धा-समवरगया फरयरुपरिग्यहियं दसनहं सिरसानतं मत्यए अंजलि कर एवं नयाची-एवं खद्ध अहं देवाणुप्पिया ! अज्य सयणिजांस सत्तजामरा ओहीरमाणी २ इमेया-रूबै उराछे जाव सस्सिरीए चउइसमहाद्वामणे पासिनाणं पिडवृद्धा, तंजहा-गय जाव सिष्टिं व । एएसि देवाण्यिया । उरालाणं जाव चटहसण्हं महासुमिणाणं के मंत्रे कहाणे फलवित्तिविसेसे मनिस्सइ ? ॥ ५-६ ॥ तए णे से उसमदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए अंतिए एयमई सुवा निसम्म हड्लाई जाव हिवए घाराह्यकर्ल-बरांपिव समस्सासियरोमकृवे सुमिणुगगहं करेड करिता इंहं अनुपविसड् अणुपविसिता अप्पनी साहाविएमं महपुरवएमं बुद्धिविम्मानेमं तेसिं श्रामिमानं अत्युमाहं करेह २ ता देवाणंदं साष्ट्रणि एवं वयासी-उरास्त्रा णं तुसे देवाण्यिए। समिणा दिह्या, वक्काणा (पं) सिवा घन्ना मंगला सस्सिरीया आस्मगत्रिहिरीहाउक्लाणमंगलकारगा णं तुमे देषाणुप्पिए । सुमिणा दिङ्का, तंबहा-अरबलामी देवाणुप्पिए ! भोगळाभो देवाणुप्पि ए! पुत्तलाओं देवाणुप्पए ! सुक्बलाओं देवाणुप्पए !, एवं बालु तुमं देवाणुप्पए ! नवण्हं सासाणं बहुपडिपुकाणं अद्धद्वमाणं राइंदियाणं विद्वहंताणं द्ववसालपानिपायं अहीणपरिपुनपंत्रिदियसरीरे लक्खणवंजणगुणीववेयं साणुम्माणपणाणपरिपुनसजाय-सम्बंगसंहरंगं सिस्सोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूषं देवकुमारीवमं दारयं पदाहिति ॥ ७-८ ॥ से वि व णं दारए उम्मुक्कबालमावे विद्यावपरिणयमिते जोव्वकामणुप्पते रिउन्वेयज्ञ न्वेयसामवेयअयन्वणवेय-इतिहासपंचमाणं नि(२)वंदुस्क्षाणं संगोवं-गाणं सरहस्साणं चलण्डं वेबाणं सारए, पारए (वारए), धारए, सर्वगवी, सङ्घितंत्रिक

१ क्षंबपुरफांविव ।

सारए, संसाणे [सिक्साणे] सिक्साकृष्ये बागरणे छंदे निक्ते ओइमामगणे अनेम व बहुद्ध बंभण्याएसु परिव्यायएस गएस सुपरिनिद्विए बाबि भविस्सइ ॥ ९ ॥ तं उरास्रा र्षं तुसे देवाणुप्पए ! सुमिणा दिहा जाव आरुमातुहिवीहास्वमंगहक्रहाणकार्गा ण दुमे देवाणुप्पिए ! द्वमिणा दिष्ठतिकडू मुख्ये २ अणुनूहरू ॥ १० ॥ तए णं सा देवा-णंदा माहणी उसमदत्तस्स माहणस्स अतिए एयमड्डं सुवा निसम्म इष्ट्राड्ड जाव हियया जाव करवलपरिन्यहियं दसनहं सिरसावतं मत्यए अंबलिं कड् उसमदत्तं साहणं एवं वयासी-एवमेयं देवाणुष्पिया । तहमेयं देवाणुष्पिया । अवितहमेयं देवा-शुप्पिया ! असंदिद्दमेवं देवाशुप्पिया ! इच्छियमेवं देवाशुप्पिया ! परिष्क्रियमेवं देवाणुप्पिया ! इच्छियपिडिच्छियमेथं देवाणुप्पिया !, सचे वं एस(अ)महे से जहेर्य तुरमे वयहतिकह ते सुमिणे सम्मं पिडच्छाइ २ ता स्समदत्तेणं माहणेणं सर्वि उरालाई माणुरसगाई भोगभोगाई भुंबमाणी विहरह ॥ ११-१२ ॥ रोणं काळेणं तेणं समपूर्ण सक्के देविदे देवराया पजापाणी प्रदेवरे समझक सहस्सक्के मध्यं पागसासणे दाहिणबुक्कोगाहिवई वत्तीसविमाणसबसहस्साहिवई एरावणवाहणे इरिवे अर्यंबर्वस्थवरे आलक्ष्ममालमउढे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंकलविलिहिज्यमाणगाहे महिच्चिए मह्जूक्ए महाबढे महाबसे महाजुमावे महासुक्खे भागुर(वॉ)बुंदी पसंब-वणमालवरे सोहम्मे कप्पे सोहम्मविस्तए विमाणे सहम्माए सभाए सक्सि सीहा-सणंति, से णं तत्य बत्तीसाए विमाणावाससयसाहस्तीणं, चरासीए सामाणिय-साहरसीणं, तायतीसाए तायतीसगाणं, चढण्हं लोगपालानं, अहुण्हं अम्ममहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, मत्तण्हं अणीयाणं, सत्तण्हं अणीयाहिवईणं, चरण्हं चउरासी(ए)णं आयरकारदेवसाहस्सीणं, अक्षेसि च बहुणं सोहम्मकम्प्रासीणं बेमा-शियाणं देवाणं देवीण य आहेवचं पोरेक्चं सामितं महितं महत्तरगतं आणाईसर-रोणावश्चं कारेमाणे पाकेमाणे महया इयनक्ष्मीयवाइयतंतीतस्रतालसुविवधणग्रुदंगपडु-प्रबह्न वाह्न यर वेणं दिल्याई जोगभोगाई भुंजमाणे विहरह ॥ १३ ॥ इसं च णं केवळ-करपं अंबरीनं वीनं विरुक्तेमं ओहिणा आओएमाणे २ विहरह, तत्थ णं समणं भगवं महाबीर जंडुहीने दीवे भारहे वासे दाहिणकुभरहे माहणकुंडन्गामे नवरे उसम-इत्तरस साहणरूस कोडाकसगुत्तरस भारियाए देवाजंदाए साहणीए जार्जवरसगुताए इतिकास गब्मताए वर्कतं पासइ २ ता इत्तुत्ववित्तमार्थिक् लंदिव् परमार्थिक् पीक्षमं परमसोमनारेसए इतिसम्बानिसप्पमानक्षियए धाराइय(क्येंब)नीवसुरभिकु-द्वमनंतुतास्वतास्य असिवरोनकृते विवतिस्वरकायसम्बन्धने प्रक्रिन्तरकारातु वि-वरेक्टरमुखकुंबसम्बारनिरामंत्रकके पार्वक्यसंबद्धानवीसंद्रभराजवरे सर्वममं द्रिति

चनलं प्ररिष्ठे सीहासणाओ अब्युद्धेह २ ता पामपीढाओ प्रकोरहर २ ता वेसके-यवरिद्वरिद्वंजणनिउणो(विष)वियमिसिसिसिसिसमिण्रियाओ पाउयाओ खोसु-बह २ ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेड २ ता अंजलिसउलियगडरचे तिरवयरामिस्हें सत्तद्वपयाई अणुगच्छद २ ता वामं जाणुं अंचेह २ ता दाहिणं जाणुं पर्णियलंसि साह ह तिक्खतो मुद्याणं धरवियलंसि निवेसेह २ ता ईसि प्रकारह २ ता करवल-परिन्यहियं दसनहं सिरसाक्तं मत्यए अंजलि कह एवं बयाची-नमुख्य णे अरिहंतार्ण मगर्वताणं, आइगराणं वित्यवराणं सर्वसंबुद्धाणं, पुरिस्तामाणं पुरिससीद्दाणं पुरिसवर-पुंडरीयाणं पुरिसवर्गंबहरबीणं, कोगुत्तमाणं कोगनाहाणं कोगहियाणं कोगप्रवाणं लेगपजोयगराण, समयदशाणं चक्नादगाणं समादयाणं सरणदयाणं जीवदगाणं बोहिदयाणं, धम्मद्याणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरेत-चक्रवट्टीणं, दीवो ताणं सरणं गई पहड्डा अप्पविहयवरनाणवंसणवराणं विगद्धकरमाणं, जिलाणं जावयाणं तिशाणं तार्याणं बुद्धाणं बोह्याणं सुत्ताणं भोयगाणं सध्यण्यूणं सिवमवलमङ्ग्रमणंतमक्कायमञ्जाबाह्मपुणरावितिसिद्धिगङ्गामधेयं ठाणं संपताणं. नमो जिनाणं जियभयाणं । नमुत्यु णं समणस्य भगवमो महावीरस्स आङ्गरस्स चरमतित्थयरस्स पुरुवतित्थयरनिशिष्टस्स जाव सेपाविरुकामस्स । वंदामि णं भगवंतं सत्थगयं इहगए, पास(इ)उ मे भगवं तत्थगए इहगयंतिक्दु समणं भगवं महाबीरं वंदइ नमंसइ वं० २ ता सीहासणवरंसि पुरत्यामिसहे सिवसके ॥ १४-१५ ॥ तए जं तस्स सकस्स देविंदस्स वेवरको अयमेयारूवे अञ्चारिका चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पजिल्या-न खुळ एवं भूबं, न एवं भव्यं, न एवं भक्रिसं. जं णं अरहंता वा चक्रवही वा बलदेशा वा वासदेश वा अंतक्रकेस वा जाव भिक्सागकुकेषु वा माहणकुकेषु वा आयाहंसु वा आयाहंसि वा आयाहरसंति वा ।। १६ ॥ एवं खळ अरहंता वा चक्क्ष्यही वा बखदेवा वा वासदेवा वा उम्मक्कस् वा भोगकुलेस वा राइण्यकुलेस वा इक्सागकुलेस वा सत्तिमकुलेस वा हरिवंसकुलेस वा अभयरेख वा तहप्पगारेख विसदाजाइक्लबंसेस आयाइंस वा आयाईति वा आयाइस्सेति वा ॥ १७ ॥ अतिब पुण एते वि सावै कोगच्छेरयभूए अर्णताहि उरसप्पिणीओसप्पिणीहि विद्ववंताहि सप्तप्पज्ञइ. नामगुत्तस्य वा कम्मस्य अक्वी-गरस अनेइयस्य अनिजिकार्स उद्दूर्ण, जं णं अरहंता हा सक्तवही या बख्देवा वा वाधरेवा वा संतक्तिस वा जाव माहणकुकेस वा शायाहंस वा रे, कुव्यक्ति गन्मताए वक्सिए या वक्सित या वक्सिस्टित था. मो चैव यं जीवीजन्मपनिक्यम-केनं निक्यानिश्च वा निक्यानंति का निक्यानिस्पति वा ॥ १८ ॥ वार्न व वां सर्वान

अगर्व महावीरे जंबहीवे दीवे भारहे वासे माहणकुंडरगामे नगरे उसमदत्तस्य माह-जरून कोबालसगुत्तस्य भारियाए देवाजंदाए माहणीए बालंबरसगुत्ताए अञ्चिति गन्मताए वकंते ॥ १९ ॥ तं जीयमेर्यं तीयपशुप्पसमणागयाणं सकाणं देविंदाणं देवरा(ई)याणं अरहंते भगवंते तहप्पगारेहिंतो अंतककेहिंतो अस कि/वि)वण-क्रकेहिंती॰ तहप्पगारेस उम्मकुळेस वा जाव राहण्णकुळेस वा नाय(०)खतिबह-रिवंगकुळेसु वा अनयरेस वा तहप्पगारेस विसदजाइकुल्पंसेस (जाव रजानिरि कारेमाणेस पारुमाणेस) वा साहरावित्तए, तं सेयं सद्ध मम वि समर्ण भगवं महावीरं चरमतित्ययरं पुष्वतित्ययरनिहिद्दं माहणकंडम्गामाओ नयराओ उसभवत्तस्य माह-गस्म कोडालस्युत्तस्य भारियाए देवाणंदाए माहणीए जारुंबरस्युताए कुच्छीको खतियकंडमामे नयरे नायाणं खतियाणं सिद्धत्यस्य सत्तियस्य कासवगुत्तस्य भारि-याए तिसलाए स्रतियाणीए वासिद्धसगुताए क्रिकेंस गञ्जनाए साहरावित्तए । जे मि य णं से तिसकाए सत्तियाणीए गब्मे तं पि व णं देवाणंदाए माहणीए जार्छ-घरसगुत्ताए क्रच्छिस गन्भताए साहरावित्तएतिकड् एवं संपेहेइ २ ता हरिणेगमेसिं अगा(पायना)णीयाहिनई देवं सहाबेह २ ता एवं वयासी-एवं खळ देवाणुप्पिया ! न एमं भूमं, न एमं मञ्जं, न एमं भनित्सं, जं णं अरहंता वा चक्रवटी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुलेम वा जाव मिक्खागकुलेम वा० आवाईस वा ३. एवं खुस अ(रि)रहंना वा चक्कवटी वा बलदेवा वा वासदेवा वा उग्गक्रकेस वा जाव हरिवंस-कुछेमु वा अवसरेत वा तहप्यगारेम विसुद्धजाइकुलवंसेस आयाईस वा ३ ॥ २०-२९ ॥ अत्य पुण एसे वि भावे कोगच्छेरवभूए अणंताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं विडकं-ताहिं समुप्पज्जइ, नामगुत्तस्स वा कम्मस्स अक्खीणस्स अवेइवस्स अविज्ञिण्णस्म उद्एणं, जं णं अरहंता वा नक्षवही वा वलदेवा वा बाह्यदेवा वा अंतकुळेस वा काव मिक्सागकुछेनु वा॰ आयाईसु वा ३, कुच्छिसि गब्मनाए वस्मियु वा ३, नो बेब णं बोणीत्रम्मणनिक्खमणेणं निक्खमिंस वा ३ । २२ ॥ अयं च णं समणे भगवं महाबीरे जंबरीने दीने भारहे बासे साहजकुंडम्गामे नयरे उसमदत्तस्स माहजस्स कोडालसगुत्तस्य भारियाए देवाणंदाए माहणीए जासंघरसगुताए क्रन्डिस गब्भताए बकंते ॥ २३ ॥ तं जीवसेयं तीयप्रबायक्यमणागवाणं सकाणं देविदाणं देवराईणं अर-इते भगवंते तहप्यगरेष्ठितो अंतक्केहितो जाव माहणकुळेहितो तहप्यगरेस उम्बद्ध-केस वा भोगककेस वा जाव हरिवंसककेस वा अवयरेस वा तहप्पगारेस विसदकाह-क्रक्रवंसेय साहरावित्रए ॥ २४ ॥ तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महा-और शारणकेरकात्राक्षो नगराको सस्यवत्तरस्य माहणस्य बोदाकसप्तरस्य भारिकाण

देवाणंदाए साहणीए जालंबरसयुक्ताए कुटकीओ सक्तिबकुंडरगामे नयदै नासार्व क्षतिवाणं विद्यत्यस्य कतियस्य कासव्युत्तस्य मारिवाए तिसळाए कतिवाणीए बासिद्धसगुताए कुरिंछरि गन्भताए साहराहि, जे वि य णं से विस्त्राए सातियाणीए गब्से तं पि य णं देवाणंदाए साहचीए बालंबरसगुताए क्रव्छिति गब्सनाए साहराहि साहरिता मम एसमाणतियं विद्यामेव प्यप्पिणाहि ॥ २५ ॥ तए वं से हरिजेगमेसी अम्माणीयाहिकई देवे सक्केण देविदेण देवरका एवं बुत्ते समाने इड्डद्र जाद हियए करवल जाद शिक्डू एवं जं देवी आणवेड्सि आणाए विषयणं ब्यणं परिस्रकेह २ ता सकस्स देविंदस्स देवरको अंतियाओ परिकिनसम्ह २ ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीमागं अवसमह २ ता वेडव्यियसमुख्याएणं समोदणह २ ता संखिजाइं जीयणाई दंडं निसिरइ, तंजहा-रबणाणं बहरावं बेरुकियाणं लोहियक्साणं मसारगन्नाणं इंसपन्माणं पुलयाणं सोगंधियाणं ओईरसाणं अंजणाणं अंजनपुरुवानं जायस्वाणं सुम्माणं अंकाणं परिहानं रिद्वानं, अहावायरे पुरगळे परिसाडेइ २ ता अहानुहुमे पुरगळे परिया(ए)वियइ २ ता हुमंपि वेडिब्बियसमुरघाएणं समोहणह २ ता उत्तरवेडिब्बियसवं विख्याह २ ता ताए उक्किहाए दुरियाए वयलाए चंडाए ज(य)स्माए उद्धुमाए सिम्बाए दिव्याए देवगईए वीइवयमाणे २ तिरियमसंख्यिकाणं शैवसमुद्दाणं मज्यंमज्हेणं केणेव जंबद्दी वे भारहे वासे जेणेव माहणकुंडग्गामे नवरे जेणेव उसमदत्तस्स माह-णस्स गिहे जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छ्य १ ता आकोए समणस्स भगवओ महावीरत्स प्यामं करेड २ शा देवाणंदाए माहणीए सपरिचणाए ओसो-वर्णि दलइ २ ता व्यक्तमे पुरगके अवहरह २ ता छमे पुरगके पविखयह २ ता अगुजायत मे भ(य)गवंतिकहु समर्थ भगवं महावीर अञ्चाबाहे अञ्चाबाहेर्ष दिस्वेणं पहावेणं करवळचंपुढेणं निष्द्र २ ता जेपेत खत्तिवकुंडस्माने नयरे जेणेद विदारबहस सारियस्य गिडे जेणेव तिसका सारियाणी तेणेव उवागच्या २ सा तिसकाए खत्तियाणीए सपरिचणाए खोसोवणि दळद २ ता असुने पुरुवके अवहरू २ ता सुत्रो पुरुवके पक्सिक्ड २ शा समर्थ सगवं महाबीर अञ्चाबाहे अञ्चावाहेलं तिसलाए अलियाणीए अध्यक्ति गन्भताए साहरह (२ ता), जे वि य णे से तिसलाए कानियाणीए शकते ते पि य मं देवाणदाए माहणीए वार्कंपरतपुताए अस्किति गन्मताए साहरह २ ता जायेष दिसि पाउन्पूए तामेन दिसि पिडगए ॥ २६-२०॥ ताए उक्कियाए द्वरियाए अवसाए संबाद ववणाए उन्नुसाए सिन्बाए दिन्दाए हेक-गईए तिरियमसंशिक्षानं पैक्तसङ्घर्ष सर्वामकोषं बोयणसाइत्सिक्षे विस्तरेशे रुप्यसाणे २ जेणामेव सोहम्मे कृप्ये सोहम्मवर्षिसए विमाणे सकंसि सीहामणंहि सके देविंदे देवराया तेणामेव स्वागच्छा २ ता सकस्स देविंदस्स देवरको एयमा-कारियं सिप्पामेव प्रविपणइ ॥ २८ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं समणे मगवं भडावीरे जेसे वासाणं तके मासे पंचमे पक्के आसोयबहुके तस्स णं आ(अर)सो-यबहुन्द्रस तेरसीपक्कोणं बासीइराइंदिएहिं विइक्षंतेहिं नेसीइमस्स राईदियस्स अंतरा वहमा(णस्स)णे हियाणुकंपएणं देवेणं हरिणेगमेसिणा सहवयणसंदिवेणं माहणकंब-ग्गामाखो नगराको उसमहत्तस्य माहणस्य क्रेडाळसगुत्तस्य भारियाए देवाणंदाए माहणीए बारुंबरतगुनाए क्रच्छीको सत्तियकंडस्गामे नयरे नायाणं सत्तियावं सिद्धत्यस्य स्वतियस्य कासवग्रनस्य मारियाए तिसलाए स्वतियाणीए वासिद्धसग्रताए पुरुवरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्युत्तराहि नवस्त्रतेणं जोगमुवागरणं अव्वाबाहं अव्वा-बाहेणं क्रन्छिति गब्भताए साहरिए ॥ २९ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे तिक्षाणोवगए यावि दृत्या, तंत्रहा-साहरिजिस्सामिति जाणह. साहरिज्ञमाणे न जाणडू, साहरिएमिनि जाणडू ॥ ३० ॥ जं रयणि च णं समणे मगवं महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालंबरमगुत्ताए कुच्छांओ विसलाए खत्तिया-जीए वासिद्धसगुताए कृच्छिति गञ्भताए साहरिए तं रयणि च णं सा देवाणंदा भाइणी सम्मिजंसि समजागरा ओहीरमाणी २ इमेबास्वे उराके कहाणे सिवे पके मंगहे सस्मिरीए चडहसमहासमिणे तिसलाए खत्तीयाणीए हडेति पासिताणं परिवदा. तंजहा-गय जान सिर्हि च ॥ ३९॥ जं स्यणि च णं समणे भगनं महावीरे देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुनाए कुच्छीको तिसळाए खत्तियाणीए वासिद्धस-गताए करिखसि गब्भताए साहरिए ते रसणि च णं मा तिसका खतियाणी तींस तारिसगंति वासघरात अब्भितरको सन्तिनकम्मे बाहिरको दमियनद्वमद्वे विचित्तत-होयचिहियतके मणिर्यणपणासियंधयारे बहुसमग्रुविभत्तम्मिभागे पंचवजसरसग्रर-भिमुक्पुप्फ्पंजीवयारकलिए कालागुरुपवरकुंदुत्कतरक्रदण्झंतध्वमध्मधंतगंधुद्धया-भिरामे सुगंधवर्गधिए गंधवडिभए तांस तारिसगंसि सयविजंसि सालिगणवडिए उमओ बिन्योयणे उसको उनए मज्ये जयगंत्रीरे गंगापुरूणवालुयाउरालसालिसए ओयवियसोमियदगुस्पष्टपिकको स्विरह्यर्यताणे रत्तस्यसंव्ए सरम्मे आङ्णगरूय-ब्रनवणीयत्लद्धक्रकासे ध्रपंथनर्क्षधमञ्चनसमणोवयारकविए, पुम्बरतावरतकालसम-यंति प्रताजागरा ओहीरमाणी २ इमेयास्य उराके जाव चउहसमहास्रमिणे पातिताणं

हिएच-अप्पणो इंदस्स व हियकारिणा तहा अणुकंपएपं-अधवओ अत्तर्भं ति बह्नो ।

पडिबुद्धा, तंत्रहा-गर्य-वसह-सीहै-अभिसेर्य-दार्म-रीति-दिणयँर क्वर्य कुर्भे । पड-मर्गरै-सागैरै-विमाणमनेण-रमणुचेयै-सिहिं च ॥ १ ॥ ३२ ॥ नए मं मा तिमला सतियाणी नव्यवस्याए [नओ य]च उद्देनमृनियगलियविपुलजलहरहारनिकरसीरगा-गरससंकिकरणदगरययमहासेलपंड्र(र)रतरं समागयमहुयरम्गंघदाणवासियक(पो)-वोलम्लं देवरायकुंज(१)र(व)वरप्पमाणं पिच्छद् राजलघणविपुलजलहर्गाज्ञयगंभी रचारुपोसं इसं मुझं सञ्चलक्खणक्यंबियं वरोदं १॥ ३३ ॥ तओ पुणो धवल-कमलपत्तपयराइरेगम्बप्पमं पहानमुद्दकोवहारेहि मव्वको चंव दीवर्यनं अटिमिर-भगपिल्लणाविसप्यंतकंतसोहंतचारककृहं तणुनु(इ) असुक्रमाललोमनिद्धच्छवि चिगसुव-ढमंसलोवचियलद्रमुबिमत्तर्यदरेगं पिनसः वणवदृलद्वउद्विद्वविसिद्वतुष्पगातिक्वितिगं दंतं निवं समाणयोहं तयुद्धदंतं वयदं अभिययुणमंगलमुहं २ ॥ ३४ ॥ तओ पुणी हारनिक्तखीरमागरगमंकिकरणदगरयरययमहामेलपंदु(रत्तरं)रंगं रमणिजपिच्छणिजं यिरलद्वपउद्वनद्यीवरमुस्गिलद्वविनद्वतिक्सए। हाविद्ययमुद्धं परेक्स्मियजचक्रमलको-मलभगाणगोहं तलह उद्यं रत्तु प्यन्यनमञ्जगनुस्मालनान्त्रीनहालियमा आहं मृशागयपवरः कण्यत्ववियञ्जावनार्यतवद्दनीज्यविम्रकः।रियन्यणं विमान्ध्यीतरवरोहे परिपुद्धावम-लखंशं मिट्रविसयमुह्मलक्ख गपगत्यविक्तिकक्षेत्रगटीवभोहिएं क्रीनयम्तिम्भयगु-जायजाफोडियलंगुलं सामं सोमाकारं लीलायंनं नहयुकाओ ओवयमाणं नियमत्य-णसटवयंने पिच्छद या गावतिकवनगनहं सीतं वयणांसरी।(नंभ)हरपभच।रुत्रीहं ३ ॥ ३º ॥ तओ गुणी पुण्णचंद्रवयणा उद्यागयताणलङ्कसंद्रियं पमस्थमनं नुपर्दाह्वय-कणग(सय)युम्ममर्गरमोवमःणचलणं अशुध्यपीणरहयमंगलउ(वन्त्रि)वयनणृनंवित-द्धनहं क्रमलपलासमुबुमा। उक्तरनरणकोमनपरंगुन्ति कुमविदायनवशुणुप्यत्रवांषं निगढ-जाणं गयवर प्रत्यारमपीवरोरं चाभी करण्ड्यमेतलाजुनकं गथिरितकारोणिचकं अर्थ-जणभमर जलयपयर उ ज्यामसमेहियन शुयाना इ जल उद्देशकुमान भर मणि जरोमगाई नाभीमंडलसंदरविसाल यसत्य जवणं कर्यन्त्रमाइयपसत्यांतर्वाल गम गां नाणामणिक-ण । र यणविभन्तमहा नवणिजा भरणभूमणविर। (यमंग्) यंगोर्वीग हार्गवरायंन कुंद्रमान्त्रप-रिणद्भन्नळ न्नर्कत्रथण जुयलीयमळकलसं आइयपानयविभूमिएणं गुमग बालु जलेणं मुत्ताकळावएणं उरस्थरीणारमा(ल)लियविराइएण कंठमणिनुत्ताण य कुंडल तुयलुह्न-संनवंशोवसम्मोभंतसप्पमेणं मोभागुणगमुदएणं आणगकुदंबिएणं कमलामलविगा-लरमणिजलोय(णि)णं कमलप जलंतकरगहियमुक्तोयं लीलावायकयपक्तवएणं प्रवि-मदकसिणवणसण्हर्त्यंत्वेमहत्यं पडमदृहकमलवासिणि सिरि भगवइं पिच्छइ हिम-वंतसेळसिंहरे दिनागइंदोरुपीवरकराभिसिचमाणि ४ ॥ ३६ ॥ तओ प्रणो सरस-

कुद्दममंदारदामरमणिजभूयं चंपगासोगपुकागनागपियंगुसिरीसमुग्गरगमहियाजाइ-जाहिअंकोलकोर्जिकोज्जकोरिंटपत्तदमणयनवमालियबरलतिलयवासंतियपउमुप्पलपाहलकुं-दाइमुनसैहकारसुरभिगंधि अणुवममणोहरेणं गंधेणं दसदिसाओवि वासबंतं सब्वो-उयसुरमिकुसुममक्रथवळविलसंतकंतबहवण्णभत्तिचित्तं छप्पयमहयरिभमरगणगुमगु-मार्वतनिलिनगुंजंतवेसमागं दामं पिच्छेद् नहंगणतलाओ ओवयंतं ५ ॥ ३७ ॥ ससिं च गोलीरफेणदगरयरययकलसपंदुरं सुभं हिययनयणकंतं पिडपूण्णं तिमिरनिकरचण-गुहिर्रावितिमिरकरं पमाणपञ्चंतरायछेहं कुमुयवणियोहगं निसासोहगं सुपरिमञ्च-दप्पणतलोवमं हंसपडुवर्णं जोइसमुहमंडगं तमरिपुं मयणसरापूरगं समुहदगपूरगं दुम्मणं जणं दइयबज्जियं पायएहिं सोसयंतं पुणो सोमचारुखं पिच्छर् सा गगण-मंडलविमालसोमचंकम्ममाणतिल(गं)यं रोहिणिमणहिययवद्धहं देवी पुण्णचंदं ससुह्र-संतं ६॥ ३८॥ तओ पुणो तमपडलपरिष्फुडं चेव तेयमा पजलंतरूवं रत्तासोग-पगासकिसुयसुयमुह् गुंजद्धरागसरिसं कमलबणालकरणं अंकणं जोइमस्स अंबरतल-प्रेतं हिमपडलगलगाहं महगणोस्नायगं रत्तिविणासं उदयत्थमणेसु महन्तसुह-दंसणं दुन्निरिक्खरूवं रत्तिसुद्धंनदुष्पयारप्पमद्दणं सीयवेगमहणं पिच्छइ मेरुगिरि-सययपरियष्ट्यं विसालं सूरे रस्तीसहस्तपयलियदित्तसोहं ७ ॥ ३९ ॥ तओ पुणी जचकणगरुद्विपइद्वियं समृहनीलरत्तपीयसुक्किश्रनुस्मालुह्नसियमोरपिच्छकयमुद्धयं धर्य अहियसरिमरीयं फालियसंखंककुंददगरयर्ययकलसपंडरेण मत्ययरथेण सीहेण राब-माणेण रायमाणं मिन्नं गगणतलमंटलं चंव ववसिएणं पिच्छइ सिवमउयमारुयल-याहयकंपमाणं अइप्पमाणं जणनिच्छणिजन्त्रं ८॥४०॥ तओ पुणो जवकंवणुजतंः-तस्यं निम्मलजलपुष्णमुनमं दिप्पमाणसोहं कमलकलावपरिरायमाणं पिडपुष्ण[य]-सव्वर्मगळमेयसमागमं पदररयणप(रि)रायंनकमळद्वियं नयणभूसणकरं पभासमाणं सञ्ज्ञो चेव दीवयंतं सोमलच्छीनियेलणं सञ्ज्ञपावपरिवज्जियं सुमं भासुरं सिरिवरं सञ्बो-**चयमुरभिकुनुमआसन्तमप्रदामं पिच्छइ स। रययपुण्णकलमं ९ ॥ ४१ ॥ नओ पुणो** (पुणरवि) रविकिरणतरुणबोहियमहस्सपत्तसुरभितर्पिजरज्ञ जलचरपहरूरपरिहत्थ-गमच्छपरिभुजमाणजलसंचयं महंतं जलंतमिव कमलकुबलयउप्पलतामरसपुंडरीय-उठसप्पमाणितिसमुद्रपूणं रमणिजस्त्रसोहं पमुद्रयंत्रभमरगणमत्तमह्यरिगणुकरो-लि(हि)ज्ञमाणकमलं कार्यबगबलाह्यचक्ककलह्मसारसगव्वियसरणगणमिहणसेविज-माणसिललं पडिमिणिपत्तोवलम्गजलविद्वनिचयित्तं पिच्छइ सा हिययनयणकेतं पड-

१ मंदारपारिजातियचंपगविष्ठलमचकुंदपाडलजायजूहियसुगंधगंधपुप्पमाला० । २ परसमयावेषस्वाए ।

मसरं नामसरं सरहहाभिरामं १०॥ ४२॥ तओ पुणी चंदकिरणरासिसरिससिरि-वच्छसोहं चर्ड(गु)गमणपत्रन्तुमाणजलसंचयं चवलचंचलुचायप्पमाणक्कोललोलंततीयं पहुपवणाह्यचलियचवलमागडतरंगरंगतभंगखोखुन्ममाणसोभंतनिम्मखबडउम्मीसह-संबंधधात्रमा(णाव)णोनियत्तभासुरतराभिरामं महामगरमच्छतिमितिमिंगिलनिरुद्धति-छितिलियाभिषायकप्रपेणपसरं महानईत्रियकेगसमागयभमगंगावत्तगुप्पमाणुकलंत-पन्नोनियत्तभममाणलोळसलिलं पिच्छइ खीरोयसायरं सा रयणिकरसोमवयणा ११ ॥ ४३ ॥ तओ पूर्णो तरुणसरमंडलसमप्पर्ह दिप्पमाणसोहं उत्तमकंचणमहामणिस-मृहपन्र तेयभद्रसहरसदिः पंतनहप्पर्देवं कणगपयरलंबमाणमृतासमुज्जलं जलंतदि-व्बदामं इंहामिगउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुपरभचमरसंसत्तक्षंजरवणल-यपउमलयमत्तिचित्तं गंधव्योपवज्जमाणसंपुण्णघोसं निष्यं सजलघणविटलजलहरग-जियसद्दाणुणाङ्गा देवहंदुहिमहारवेणं संगलमवि जीवलीयं पूरयंतं कालागुरपव-रकुंदुरुक्दुरुक्दु उझेतधूब(सार)वासेग(यं)उत्तममध्यमधेनगंधुदुयाभिरामं सेयं सेयप्पनं प्रस्वरामिरामं पिच्छा सा साओवभोगं वरविमाणपंडरीयं १२ ॥ ४४ ॥ तओ पुणो पुलगवेरिंदनीलसासगककेयणलोहियक्खमरगयमसारगङ्गया-लफलिहसोगंधियद्रंमगञ्नअंजणचंदप्यहवर्रयणेहिं महियलपदृष्ट्रियं गगणमंडलंतं पमासर्वतं तुंगं मेरुगिरिसंनि(गा)कासं पिच्छइ सा स्यणनिकर्रामि १३॥ ४५.॥ सिहिं च-सा विउलुजलिंगलमहुघयपरिसिश्वमाणनिद्मधगधगाइयजलंतजालुजला-भिरामं तरतमजोगजुत्तेहिं जालपबरेहिं अण्युण्णमिव अणुप्पड्ण्णं पिच्छ्ह जाछु-जलवा(ग)गं अंबरं व कत्थइ पर्यतं अइवेगचंचलं सिहि १४॥ ४६॥ इमे एयारिसे समे मोमे पियदंसणे सुरुवे स्नुमिणे दहुण सयणमज्हो पिडवुद्धा अरविंदलोयणा हरिसपुलह्यंगी। एए च उदससुक्षिणे, सन्दा पासेड तित्वग्रसाया। जं रयणि वक्रमई. क्रव्छिसि महायसो अरहा ॥ १ ॥ ४७ ॥ तए णं सा तिसला स्नतियाणी ंइमे एमारुवे उराले चउइसमहासुमिणे पासिचाणं पहिबुद्धा समाणी हद्वतुद्ध जाव हियया धाराह्यकयंबपुप्सनंपित्र समुस्ससियरोमकृता सुमिणुम्महं करेड् २ ना सयणिजाओ अञ्चद्धेह २ ता पायपीहाओ पचोरहह २ ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव सयणिजे जेणेव सिद्धत्ये खत्तिए तेणेव उवागच्छड़ २ ता सिद्धत्यं सतियं ताहि इहाहि कंताहि पियाहि मणुण्याहि मणोरमाहि उरालाहि कक्षाणाहि सिबाहि बन्नाहि मंगळाहि सस्सिरीयाहि हिजब-गमणिजाहिं हिययपल्हायणिजाहिं सिउमहरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेर ॥ ४८ ॥ तए णं सा तिसला सतियाणी सिद्धत्येणं रण्या अञ्चल्याणाया

समाणी नाणामणिकणगरयणभतिनित्तंति भद्दासणंति निसीयद २ ता आसत्या बीसत्या सङ्ग्रासणवरगया सिङ्कत्यं खत्तियं ताहिं इद्राहिं जाव संख्वमाणी २ एवं वयासी-एवं खळु अहं सामी ! अज तंसि तारिमगंसि सयणिजेसि वणाओ जाव पिबुद्धा, तंत्रहा-गय(उ)वसह ॰ गाहा। तं एएसि सामी ! उराळाणं चउदमण्डं महा-द्यमिणाणं के मन्ने कानाणे फलवित्तिांबसेसे भवित्सइ ? ॥ ४९-५० ॥ तए णं से सिदत्ये रामा तिसलाए खत्तियाणीए अंतिए एयमट्टं मुखा निसम्म हहुतुह्रिक्ते जाव हियए धाराहयनीवतुरभिकुसुमचंचुम।लइयरोमकूचे ते सुमिणे ओगिण(ह)हेइ २ त्ता इंहं अणुपनिसइ २ ना अप्पणी साहाविएणं मङ्गुव्यएणं बुद्धिविण्णाणेणं तेसि सुमिणाणं अत्थुमगहं करेइ २ ता तिसलं खत्तियाणि ताहि इद्वाहिं जाव मंगलाहिं मिय-महरमिस्सिरीयाहि वम्गुहि संखवमाणे २ एवं वयासी-उराला णं तुमे देवाणुष्पिए! सुमिणा दिहा, कक्षाणा णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणा दिहा, एवं सिवा, धन्ना, संगन्ना, सस्तिरीया, आरूमानुद्विदीहाउकलाणमंगलकारमा णं तुमे देवाणुप्पिए ! स्रमिणा दिद्वा. तंजहा-अत्बलाभो देवाणुप्पिए ! मोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! सुक्खलाभी देवाणुप्पिए! रज्ञलाभी देवाणुप्पिए!, एवं सल् तुमे देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपिडपुण्गाणं अद्धमाणं राइंदियाणं विइकंताणं अम्हं कुलकेउं, अम्हं कुलदीवं, कुलपव्ययं, कुलविंदिस्यं, कुलतिलयं, कुलकितिकरं, कुलवित्तिकरं, कुलदिणयरं, कुलाधारं, कुलनंदिकरं, कुलजसकरं, कुलपायवं, कुलविद-द्धणकरं, सुकुमालपाणिपायं, अहीण(सं)पडिपुण्णपंचिदियसरीरं, स्वन्सणवंजणगुणीव-वेयं. माणुम्माणपमाणपिडपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं, सिसोमाकारं, कंतं, पियदं-सणं, सुरूवं दारयं पयाहिति॥ ५१-५२॥ से विय णं दारए उम्मुक्कवालमावे विण्णा-यपरिणयमिते जुञ्बणगमणुप्पते सूरे वीरे विक्रंत वि(च्छि)त्थिण्णविउलबलवाहणे रजनई राया भनिस्सइ ॥ ५३ ॥ तं उराला णं तुमे देवाणुप्पि० । जाव दुर्श्वाप तचंपि अणु(बू)बृहद् । तए णं सा तिसला खत्तियाणी सिद्धत्थस्स रण्यो अतिए एयमट्टं मुखा निसम्म इद्वतुद्ध जाव हिथया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावतं भत्थए अंजलिं बहु एवं वयासी-एवमेयं सामी! तहमेयं सामी! अवितहमेयं सामी! असंदिद्धमेयं सामी! इच्छियमेयं सामी! पिंडच्छियमेयं सामी! इच्छियपिंड-च्छियमेर्य सामी। सचेषं एसमहे-से जहेर्य तुब्से वयहत्तिकहु ते सुक्षिणे सम्मं पिक्छह २ ता सिद्धस्येणं रण्या अन्मणुष्णाया समाणी नामामणि(कणग)रयण-अतिविताओ भद्दासणाओ अञ्चुद्वेद २ ता अतुरियमचबलमर्सभंताए अविकंबियाच शायहंससरिसीए गईए क्रेमेव सए संगणिक तेमेव उवागण्डद १ ता एवं बगासी-

मा मे ते (एएस) उत्तमा पहाणा मंगक्षा सुमिणा दिहा अक्रेहि पावसमिणेहि पिंदिन्मस्तितित्तकः देवयगुरुजणसंबद्धाहि पसत्याहि मंगल्लाहि धन्मियाहि लङ्काहि कहाहिं समिणजागरियं जागरमाणी परिजागरमाणी विहरह ॥ ५४-५६ ॥ तए णं सिद्धत्ये सत्तिए पब्सकालसमयंसि कोडंबियपुरिसे सहावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया ! अज सेसं बाहिरियं उच्हाणसालं गंधोदयसितं सुइय-संगजिओवितितं सुगंधवर्पंचवण्णपुष्कोबयारकितयं कालागुरुपवरकुंदुरुकनुरुकडञ्झंत-भूवमधमधंतगंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह करिता कारविता य सीहासणं रयावेह रयाविता ममेयमाणतियं किप्पामेद पद्मिपणह ॥ ५७-५८ ॥ तए णं ते कोइंबियपुरिसा सिद्धत्येणं रण्णा एवं बुना समाणा इहतुहु जाव हियया करयल जाव कहु एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पिंडसणंति पिंडसणिता सिद्धत्यस्य खतियस्य अंतियाओ पिंडनिक्खमंति पिंडनिक्ख-मिता जेणेव बाहिरिया उनद्वाणसाला तेणेव उवागच्छंति (तेणेव) उवागच्छिता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवहाणसालं गंघोदयसि(तमुडय)तं जाव सीहासणं रयाविति रयाविता जेणेव सिडरये खतिए तेणेव उदागच्छेति उदागच्छिना कर-यलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावतं मतथए अंजिंल कह सिद्धत्यस्य खितायस्य तमाण-त्तियं पश्चिष्पणंति ॥ ५९ ॥ तए णं सिद्धत्थे खतिए कई पाउप्पमाए रयणीए फुक्पलक्सलकोमल्म्मीलियंमि अहापंडुरे पमाए, रत्तासोगण्यगासकिसुयसुवगुंब-द्ररागबंधुजीवगपार्वयचलणनयणपरहुयगुर्त्तलोयणजानुयणकुमुमरासिहिंगुलयनिय-राइरेयरेट्नसरिसे कमलायरसंडबोहए रहियंति सुरे सहस्सरस्यिति दिणयरे तेयमा जलंते. तस्य य करपहरापग्डंमि अंघयारे बालायवर्डकमेणं खन्वियव्व जीक्लोए. सयणिजाओ सब्मुहेइ॥ ६०॥ सयणिजाओ बब्मुहिता पायपीढाओ पबोरहइ २ ना जेणेव अञ्चलमाला तेणेव उवागच्छइ २ ता अञ्चलमालं अणुपविसद् २ ता अणेग-वायामजोगवनगणवामहणमळजुद्धकरणेष्टि संते परिस्मेते समपागमहरमपागेर्वि द्वमंत्र-वरतिल्लमाइएहिं पीणणिखेहिं दीवणिखेहिं मयणिखेहिं त्रि(विं)इणिखेहिं दप्पणिखेहिं सर्वित्रदियगायपल्हायणिजेहिं अन्मंगिए यमाणे तिहाचमांसि निउणेहिं पडिएणा-पाणिपायसुक्रमालकोमलनलेहिं अन्मंगणपरिमह्णुञ्चलणकरणगुणनिम्माएहिं छेएहिं दक्कोहें पट्टेहिं कुसकेहिं मेहाबीहिं जियपरिस्समेहिं पुरिसेहिं अद्विसहाए मंसस्रहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउन्विहाए सुहपरिक्रमणाए सं[वा]बाहणाए संबाहिए समाने अवगय(खेय)परिस्तमे अष्टणसालाओ पहिनिक्खमङ् ॥ ६९ ॥ अष्टणसालाओ पविनिक्समिता जेणेव सजाणघरे तेणेव उदागच्छड २ ता सजाणघर अणुपविसह २ ता

समुत्तवालाकुलामिरामे विवित्तमणिरयणकुट्टिमतले रमणिजे ण्हाणमंडवंसि नाणा-मिणर्यणभित्रिविर्शित ण्हाणपीढंसि सहनिसण्ये पुण्फोदएहि य गंधोदएहि य उण्होदएहि य सहोदएहि य सद्धोदएहि य कल्लागकरणपवरमञ्जणविहीए मञ्जिए, तत्य कोउयसएहिं बहुविहेहिं कहाणगपवरमञ्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगंधकासाइ-अदृहियंगे अहैयसुमहम्बद्सरयणसुसंबृहे सर्ससुर्भिगोसीसचंदणाणुलितगते सुद्गा-लावणगाविलेवणे आविद्धमणिसुक्षणे किप्पयहारद्वहारतिसरयपालंब पलंबमाणकिसु-त्तपुक्रयसोमे विणद्दगेविके अंगुलिकागललियकगाभरणे बरकडगतुडियथंभियसुए अहि-यस्यसस्सिरीए कुंड(छ)लउच्चोइयाणणे मउडदितासिरए हारोत्ययसुक्यरइयवच्छे मुहि-यापिंगलंगु(लि)लीए पालंबपलंबमाणसुक्यपडउत्तरिजे नाणामणिकणगर्यणांवमलम-हरिहनिउणोवचियमिसिमिसितविर्द्यसुसिलिद्वविसिद्वलद्वआविद्धवीरवलए, कि बहुणा? कप्परक्खए विव अलंकियविभृतिए नरिंदे. सकोरिंटमह्नदामेणं छत्तेणं घरिज्ञमाणेणं सेयबर्चामराहि उद्भव्यमाणीहि मंगलजय(जय)भर्कयालोए अणेगगणनायगदंडना-यगराईसरतलबरमाडं वियकोदंवियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमचचेडपीडमहनगर-निगमसेद्विसेणावइसत्यवाहृद्यसंधिवालसाद्धं संपरिवृडे धवलमहामेहनिगगए इव गहगणदिष्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्य पियदंसणे नरवडे नरिंदे नरवसहे नरबीहे अञ्महियरायतेयलच्छीए दिप्पमाणे मज्जणघराओ पिहनिक्समइ ॥ ६२ ॥ मजणधराओ पहिनिक्समिना जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छद २ ता सीहासणंसि पुरत्याभिमुहे निसीयइ २ ता अप्पणी उत्तरपुर(त्थि)च्छिमे दिसीभाए अद्ग भहासणाई सेयवत्थपद्भत्थयाई सिद्धत्थयकयमंगलोवयाराई रयावेइ २ ता अप्पणी अदूरसामंते नाणामणिरयणमंडियं अहियपिच्छणिजं महम्बर्एस्णुग्गयं सण्हपट्टभत्ति-सयचित्तताणं ईहामियउसभन्तरगनरमगरविहगवालगिकाररुसरभचमरक्रंजरवणलय-प्रजमलयभत्तिवित्तं अधिभतरियं जवणियं अंछावेह २ ना नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्य-रयमिजमस्र(गो)गुरुपयं सेयवत्यपनुत्युयं सुमन्यं अंगसहकार(सगं)सं विसिद्धं तिस-लाए खत्तियाणीए भहासणं रयावेड २ ता कोडंबियपुरिसे सहावेड २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भी देवाणुप्पिया ! अवंगमहानिमित्तमुत्तत्थथारए विविद्दसत्यकुसले सुविण-रुक्खणपाढए सहावेह । तए णं ते कोडंबियपुरिसा सिद्धत्येणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा इद्वतुत्रु जाव हियया करयल जाव पिडमुणंति पिडमुणिता सिदत्यस्स स्तियस्य अंतियाओ पडिनिक्समंति पडिनिक्सिमिता कुंड(मगामं)पुरं नगरं मण्डांम-

नासानीसासवायवोज्ज्ञान्यक्खुह्ररबण्णफरिसजुत्तह्यलालापेलवाइरेगधवलकणग क्वियंतकम्मदूस०।

उझेणं जेणेव सुविणलक्खणपाहगाणं गेहाइं तेणेव उपागच्छेति स्वागच्छिता स्विण-रुप्रखणपाडए सहाविति ॥ ६३-६६ ॥ तए णं ते सुविणलक्खणपाड(गा)या सिद्ध-त्यस्त खत्तियस्य कोइंबियपरिसेहिं सहाविया समाणा हद्दद्ध जाव हियबा ण्हाचा युद्धप्पाचेराइं मंगल्लाई वत्याई पवराई परिहिया अप्पमहरचामरणालंकियसरीरा सिद्धत्य-यहरियालियाक्यमंगलमुद्धाणा सएहिं मएहिं गेहेहितो निस्गच्छंति निस्मच्छिता खित्राकुंडरगामं नगरं मञ्ज्ञंमञ्ज्ञेणं जेणेव सिद्धत्यस्य रण्यो भवणवरविंसगपिंड-दुवारे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता भवणवरवर्डिसगपडिदुवारे एगयओ मिलंति मिलिता जेणेव बाहिरिया उबहाणमाला जेणेव सिद्धत्ये सतिए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता कर्यलपरिग्गहियं जाब कहु सिद्धत्यं खत्तियं जएणं विजएणं वद्धाविति ॥ ६७ ॥ तए णं ते मुविणलक्खणपाङ्गा सिद्धत्येणं रण्णा वंदियपूर्धेयसकारियसम्मा-णिया ममाणा परायं परायं पुन्वश्वत्येस भहासणेस निसीयंति ॥ ६८ ॥ तए णं सिद्धत्ये सतिए तिमलं सतियाणि जवणियंतरियं ठावेइ ठाविता पुष्पपलपिषपुण्णहत्ये परेणं विणएणं ते मुविणलक्खणपाडए एवं वयासी-एवं खलु देव।पुप्पिया ! अज तिसला खतियाणी तंसि तारिसगंसि जाव मुनजागरा ओहीरमाणी २ इमे एयाहवे उराले च उद्दसमहामुमिणे पासिनाणं पिछबुदा, नंबहा-गय-वसह० गाहा, तं एएसि च उद-सर्वं महासुमिणाणं देवाणुप्पिया ! उरालाणं के मन्ने कहाणे फलवित्तिविसेसे भवि-स्सइ ? ॥ ६९-७१ ॥ नए णं ते मुसिणलक्खणपाङ्गा सिद्धत्यस्य स्रतियस्स संतिए एयमट्टं मोचा निसम्म इद्भुतद्व जाव हियया ते मुमिणे (सम्मं) ओगिण्हंति ओगिण्हिता हैहं अण्पविसंति अण्पविसित्ता अनमञ्चेणं मद्धि सं(ठावें)चार्टेति २ ता तेमिं सुमिणाणं लड्डा गहियहा पच्छियहा विणिच्छियहा अहिगयहा सिद्धत्यसा रुणो पुरओ सुमि-णसत्याई उन्हारेमाणा २ सिद्धत्यं स्वतियं एवं वयासी-एवं सत्छ देवाणुप्पिया ! अस्हूं सुमिणसत्ये बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावनारि सञ्बस्मिणा विद्वा. तत्य णं देवाणुष्पिया : अरहंतमायरो वा चक्कवद्विमायरो वा अरहंतिस वा चक्करांसि वा गर्ब्य वक्तममाणंसि एएसि तीमाए महासुमिणाणं इमे चउहसमहासुमिणे पासत्ताणं पिंबुज्जंति, तंत्रहा-गय-वसह० गाहा । वासुदेवसायरो वा बास्देवंसि गर्का वस-ममाणंसि एएसि चउइसण्हं महासुमिणाणं अन्नयरे सत्त महासुमिणे पासित्ताणं परि-बुज्यंति । बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं बद्धममाणंति एएसि चलदसण्डं महा-समिनाणं अवयरे क्तारि महासमिने पासिनाणं पहितुक्ताति । संदक्षियमायरो वा मंडलियंसि गर्न्म बद्धममार्णसि एएसि चउरसण्हं महासमिणाणं अस्यरं एगं महा-

१ 'क्यसागय'।

सुमिणं पासिताणं पिरनुज्झेति ॥ ७२-७७ ॥ इमे य णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए कत्तिशाणीए चउस्स महासुमिणा दिद्धा, तं उराठा णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए सत्तिबाणीए सुमिणा विद्वा जाव मंगळकारगा णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए सत्तियाणीए द्धमिणा दिद्वा, तंजहा-अत्यलाभी देवाणुप्पिया ! मोगलाभी देवाणुप्पिया ! प्रत्तलाभी देवाणुप्पिया ! सुक्खलामी देवाणुप्पिया ! रज्जलाभी देवाणुप्पिया !, एवं सलु देवाणुप्पिया ! तिसला खत्तियाणी नवर्षं मासाणं वहुपिंडपुण्णाणं अदद्वमाणं राहं-दियाणं विरक्षंताणं तुम्हं कुलकेउं, कुलदीवं, कुलपव्ययं, कुलविंसयं, कुलित्वयं, कुल-किलिकरं, कुलविलिकरं, कुलदिणयरं, कुलाधारं, कुलनंदिकरं, कुलजसकरं, कुलपायवं, कुलतंतुसंताणविवद्धणकरं, सुकुमालपाणिपायं, अहीगपडिपुण्णपंचिद्दियसरीरं, लक्ख-णनंजणगुणोबनेयं, माणुम्माणप्पमाणपिंदपुष्णसुजायसन्त्रंगसंदरंगं, ससिसोमाकारं, कंतं, पियदंसणं, सुरूवं दारयं पयाहिसि ॥ ७८॥ से विय णं दारए उम्मुकवालभावे निण्णायपरिणयमिते जुन्यणगमणुप्पते सूरे वीरे विद्यंते विच्छिण्णविपुछवस्त्वाहणे चाउरंतचक्कवटी रजवह राया भविस्सह, जिणे वा तेलुक[तिलोग]नायगे धम्मवर-चाउरंतचक्रवद्दी ॥ ७९ ॥ तं उराला णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए सुमिणा दिह्या जाव आरूगगुहिदीहाउकहाणमंगह्रकारगा णं देवाणुप्पिया! तिसलाए खत्तियाणीए सुमिणा दिहा॥ ८० ॥ तए णं सिद्धत्थे राया तेसि स्विणलक्खणपाड-गाणं अंतिए एयमट्टं सोचा निसम्म हट्टतुट्ट जाव हियए करयल जाव ते सुविण-रुक्खणपारुए एवं वयासी-एवमेयं देवाणुप्पिया । तहमेयं देव ! अविनहमेयं देव ! इच्छियमेयं दे० ! पिंडिच्छियमेयं दे० ! इच्छियपिंडिच्छियमेयं दे० !, सञ्चे णं एसमहे से जहेर्य तुब्से वयहत्तिकह ते सुमिणे सम्मं पिडच्छह २ ता ते सुविषलक्त्रणपादए विरुत्तेणं असणेणं पुष्पवस्थांधमञ्जालंकारेणं सक्कारेड सम्माणेड सकारिता सम्मा-मिना विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयह २ ता परिविमजेइ ॥ ८१-८२ ॥ तए णं से सिद्धत्थे खिताए सीहासणाओं अब्सुद्धेह २ ना जेणेव तिसला खितायाणी जवणियंतरिया तेणेव उचागच्छइ २ ता तिसलं खत्तियाणि एवं वथासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविजसत्यंसि बायाठीसं सुमिणा तीसं महामुमिणा जाव एगं महा-सुमिणं पासित्ताणं पिडवुज्हांति । इमे य णं तुमे देवाणुष्पिए ! चउद्दस महासुमिणा दिहा, तं उराला णं तुमे जाव जिणे वा तेलुकनायमे धम्मवरचाउरंतनकवटी ॥ ८३-८५ ॥ तए णं सा तिसला खत्तियाणी एयमहं सो(स)वा निसम्म इहतुह जाव हिम्या करयल जाब ते धुमिणे सम्मं पिडच्छह २ ता सिद्धत्येणं रण्या अन्म-णणाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ महासंगाओं अन्मुद्धे र ता अतु-

रियमचबलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंतसरिसीए गईए जेणेव सए भवने तेणेव उनागच्छद् २ ता सयं मवणं अणुपविद्वा ॥ ८६-८७ ॥ जप्पिष्टं च णं समने भगवं महावीरे तंसि ना(रा)यकुलंसि साहरिए तप्पिमइं च.णं बहवे वेसमणकुँहै-धारिणो तिरियजंभगा देवा सक्कवयनेणं से आई इमाई पुरापोराणाई महानिहाणाई भवंति, तंत्रहा-पहीणसामियाइं पहीणसेउयाइं पहीण(गु)गोत्तागाराइं, उच्छित्रमामि-याडं उच्छित्रसेउयाइं उच्छित्रगोत्तागाराइं. मामागरनगरखेडकञ्चडमडंबदोणमुह-पट्टणासमसं-बाहसंनिवेसेस सिंघाहएस वा तिएस वा बउकेस वा बबरेस वा चरम्महेस वा महापहेस वा गामहाणेस वा नगरहाणेस वा गामनिद्रमणेस वा नगरनिद्धमणेयु वा आवणेषु वा देवकुळेषु वा सभायु वा पवासु वा आरामेयु वा उजाणेम् वा वणेम् वा वणसंबेस् वा सुसाणसुकागार्गिरिकंदरसंतिसेलोबद्वाणभवण-गिहेसु वा सिन्निक्तिमाई चिट्ठांति ताई सिद्धत्यरायभवणंसि साहरेति ॥ ८८ ॥ जं रयणि च णं समणे मगवं महाबीरे नायकुरुंखि साहरिए तं रयणि च णं नाय-कुलं हिरण्णेणं बङ्गत्या, सुबण्णेणं विद्यन्या, धणेणं धन्नेणं रज्जेणं रहेणं बलेणं बाह-णेणं कोसेणं कोट्टागारेणं परेणं अंतेटरेणं जणवएणं जसवाएणं विद्यानाः विपुल-धणकणगर्यणमणिमोत्तियसंखितित्यपवालरत्तर्यणमाइएणं संतुमारसावहद्धेणं पीइ-सङ्कारसमुद्राणं अईव अईव अभित्रक्ष्रित्य। ॥ ८९ ॥ तए णं समणस्स मगनओ महावी-रस्स अम्मापिऊणं अयमेयारुवे अन्मित्यए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-जिल्था-जप्पभिइं च णं अम्हं एस दार्ए कुन्छिस गन्मताए वर्कने तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेणं वृद्धामी, सुवण्णेणं वृद्धामी, भ्रणेणं जाव संनत्तारसावइजेणं पीइगद्धा-रेणं अईव अईव अभिवश्वामो, तं जया णं अम्तं एस दारए जाए भविस्तइ तया णं अम्हे एयस्स दारगर्स एयाणुरुवं गुण्णं गुणनिष्पन्नं नामधिजं करिस्सामी-बद्धमाणुत्ति ॥ ९० ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे माउअणुकंपणद्वाए निश्वके निप्फंटे निरेबैणे अहीणपहीणपुत्ते यानि होत्या ॥ ९१ ॥ तए णं तीसे तिसलाए मात्रियाणीए अयमेयाम्बे जाव संकृष्पे समुष्पजित्था-हडे मे से गच्छे, महे मे से गन्मे, चुए मे से गन्मे, गलिए मे से गन्मे, एस मे गन्मे पुष्टि एयइ, इसाणि नो एयडत्तिकह ओहयमणसंकप्पा चितासोगसागरसंपविद्वा करयलपल्डत्यम्ही अह-ज्ञाणीवनमा भूमीनयदिद्विया श्रियायड्, तं पि य सिद्धत्यरायवरभवणं उवरयमुईंग-तैतीलतालनाडइजजणमणु(जं)मं डीणविमणं विहरह ॥ ९२ ॥ तए णं से समने भगवं महावीरे माऊए अयमेयारूवं अव्यक्तियं परिश्वयं मणोगयं संकर्णं समप्पनं

१ 'आयत्तया' । २ निकंपे ।

वियाणिता एगदेसेण एयइ, तए णं सा तिसला स्नतियाणी हहुतुह जाव हियया एवं बयासी-मो खल्ल में गब्मे हड़े जाव नो गलिए. में गब्मे पुर्वित नो एयइ, इयाणि एयइतिकट इद्रतद्व जाव हियया एवं विहरइ ॥ ९३ ॥ तए ण समणे मगर्व महाबीरे गरमत्ये चेव इमेयारुवं अभिसाहं अभिगिष्टइ-नो खळ मे रूपड अम्मा-पिकर्हि जीवंतेहि मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्यवस्ता ॥ ९४ ॥ तए पं सा तिसला खतियाणी ण्हाया सब्बालंकारविभूसिया तं गर्व्य नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाएहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहरेहिं नाइनिद्धेहिं नाइ-लुक्बेहिं नाइउन्नेहिं नाइसुकेहिं सञ्चलगभयमाणमुहेहिं भोयणच्छायणगंधमहेहिं ववगयरोगसोगमोहभयपरिस्समा सा जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थं गब्मपोमणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विचिनमञ्जूहिं सयणासणिहिं पहरिक्सद्वाए मणोऽणुकुलाए विहारभूमीए पसत्यदोहला संपुण्णदोहला संमाणियदोहला अविमाणि-यदोहला वृच्छित्रदोहला ववणीयदोहला सुहंत्रहेणं आसह, स्यइ, विद्वर, निसीयइ, तुयहइ, बिहरह, मुइंधुहेणं तं गब्भं परिवहइ ॥ ९५ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं समणे भगवं महाबीरे जे से गिम्हाणं पढमे मासे दुखे पक्खे चित्तछुद्धे तस्स णं वित्तस्य नेरसीदिवसेणं नवण्हं मासाणं बहुपिडपुण्णाणं अद्रहमाणं राइंदियाणं विद्वकृताणं उश्रद्धाणगएस गहेस पडमे चंदजोगे सोमास दिसास वितिमरास विद्यसास जउएसु सन्बस्तरणेसु पयाहिणाणुकूर्कान भूमिसप्पंसि भारुयंसि पवार्यस निप्पन्नमेइ-णीयंति कालंति प्रमुद्यपक्षीलिए**उ** जणवएउ पुग्वरत्तावरत्तकालसमयंति हृत्युत्तराहि नक्खतेणं जोगस्वागएणं आ(६)गेग्गा(आ६)रोग्गं दारयं पयाया ॥ ९६ ॥ जं रयणि च णं समणे सगवं महावीरे जाए सा णं रयणी वहहिं देवेहि देवीहि य ओवयंतेहिं उपप्रयंतेहि य उपिजलमाणभूया कहकहमभूया यावि हत्या॥ ९०॥ जं रयणि च णं समणे भगवं महाबीरे जाए तं रयणि च णं बहवे वेसमणकंडधारी तिरियजंभगा देवा सिद्धत्यरायभवर्णस हिरण्णवासं च स्वण्णवासं च वयरवासं च बत्थवासं च आभरणवासं च पत्तवासं च प्रप्तवासं च फलवासं च बीयवासं च मह्मासं च गंधवासं च चुण्णवासं च वण्णवासं च वतुहारवासं च वासित ॥ ९८ ॥ तए णं से सिद्धत्ये खतिए भवणव्यवाणमंतरजोडसवेगाणिएहिं देवेहिं तित्थयरजम्म-णाभिसेक्महिमाए कमाए समाणीए पश्चसकालसमयंति नगरगुत्तिए सहावेह २ ता एवं वदासी-सिप्पामेव भी देवाणुष्पिया! (सत्तिय)कुंड(ग्गामे)पुरे नगरे चारग-सोहबां करेष्ठ करिता माणुरमाणबद्धणं करेष्ठ करिता कुंडपुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं क्षातियसम्म विश्रोवतिनं सिंघारुपति(म)यचउक्चयर्चउम्मुह्महायह्पहेस् सित्तसह-२ परि०

संमद्वरत्यंतरावणवीहियं मंचाइमंचकियं नाणाविहरागम्सियज्झयपडागमंडियं काउ-होइयमहियं गोसीससरसरतचंदणदहरदिक्षपंचंगुलितलं उविध्यचंदणकलसं चंदणघड-सकयतोरणपडिद्ववारदेसमागं आसत्तोतत्तिष्पुलवृद्ववच्चारियमञ्जदामकलावं पंचवण्ण-सरससुरभिसुक्षपुरम्पुं जोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरक्कतुरुक्कडण्झंतध्वमध्यधंतर्ग-धुद्ध्यामिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवदिभूयं नडनदृगजलम्बस्यद्वियवेलंबगकहृग(पाढ)-पवगलासगआ(इ)रक्खगळखमंखतूणइहतुंबबीणियअणेगतालायराणुचरियं करेह कार-बेह करिता कारविता य जूर्यसहरसं मुसलसहरसं च उस्सवेह उस्सविता मम एयमाणत्तियं पश्चिपणह ॥ ९९-१०० ॥ तए णं ते कोड्डंबियपुरिसा सिद्धत्येणं रण्णा एवं वृत्ता समाणा हट्टतुट्ट जाव हियया करवल जाव परिसुणिता सिप्पामेव कुंडपुरे नगरे चारगसोहणं जाव उस्सविता जेणेव सिद्धत्ये (खतिए) राया तेणेव उचागच्छंति २ ता करवल जाव कहु सिद्धत्यस्स खितायस्स रण्णो एयमाणितयं पव-प्पिणंति ॥ १०१ ॥ तए णं से सिद्धर्ये राया जेणेव अदृणसाला तेणेव उवागच्छड २ ता जाव सञ्चोरोहेणं सञ्चपुष्फगंधवस्थमहालंकारविभुसाए सञ्बद्धाह्यमहनिनाएणं महया इच्चीए महया जुईए महया बढेणं महया बाहणेणं महया समुदर्णं महया बर-त्रियजमगसमगप्पवाइएणं संस्वपणवपहरूभेरिझाहरिस्तरमुहिहुदुवामुरयमुइंगदुंद्हिनि-ग्घोमनाइयरवंणं उस्सुकं उक्षरं उक्षिद्धं अदिखं अमिजं असहप्पवसं अदंहिमकोदंहिमं अधरिमं गणियावरनाडङ्जकित्यं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्ध्यसुद्गं अमिलाय-मल्लदामं पमुद्रयपद्मीलियपुरज(णाभिरामं)णजाणवयं दसदिवमं ठिड्वडियं करेड् ॥ १०२ ॥ तए णं सिद्धत्थे राया दमाहियाए ठिइवडियाए बहुमाणीए सङ्गर य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य मइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य छंभे पडिच्छमाणे य पहिच्छाबेमाणे य एवं [बा] विहरइ !! १०३ ॥ तए णं समणरस भगवओ महावीरस्स अम्मापियगे पड़में दिवसे ठिइवडियं क(रिं)रेंति, तहए दिवसे चंदस्रदंसणियं करेंति. छद्वे दिवसे धम्मजागरियं जागरें(करिं)ति. ए(इ)कारसमे दिवसे विश्वंते निव्वक्तिए असुर्जम्मकम्मकरणे संपत्ते बारसा(हे)हदिवसे विटलं असणं पाणं खाइमं सीइमं उवक्खडा(विं)वेति २ ना मित्तनाइनिय(य)गरायणसंबंधिपरिजणं नायस खतिए ब आमंतिने र ता तको परछा जाया सुद्धप्पावेसाई मंगळाई पवराई वत्याई परि-हिया अप्पमद्दग्वाभरणालंकियसरीरा भोगणबेलाए भोगणमंडवंति सुद्वासणबरगया तेणं मित्तनाइनियगस्यणसंबंधिपरिजणेणं नायएहिं खतिएहिं सदि तं बिउलं असणं

९ ज्या-जुगाई तेसि सहस्यं । २ असणपाणखाइमसाइमं ।

पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिमुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं वा निहरंति ॥ १०४ ॥ जिमियमुन्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमञ्ज(इ)ईभूया तं मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए खतिए य विउत्रेणं पुण्फवत्यगंधम्हालंकारेणं सकारेति सम्माणेति सकारिता सम्माणिता तस्सेव मिल-नाइनियगसयणसंबंधिपरि(य)जणस्स नाया(ण य)णं खत्तियाण य पुरुओ एवं बयासी-पुर्नि पि (य) णं देवाणुप्पिया ! अम्हं एयंसि दारगंसि गब्नं वहंतंसि समाणंसि इमे एयारुवे अन्मत्थिए जाव समुप्पजित्या-जप्पमिई च णं अम्हं एस दारए कुच्छिति गब्सताए वक्कंते तप्पिसइं च ण अस्हे हिरण्णेणं बह्वासी, सुवण्णेणं घणेणं घनेणं रजेणं जाब सावइजेणं पीइसकारेणं अईव अईव अभिवद्वामो, सामंतरायाणो वस-मागया य । तं जया णं अम्हं एस दारए जाए भविस्सइ तया णं अम्हे एयस्स दारगरस इसं एयाणुह्वं गुण्णं गुणनिष्मनं नामधिजं करिस्सामी वदमाणुति. ता अज अम्ह म्णारहसंपत्ती जाया. तं होड णं अम्हं क्रमारे वद्धमाणं नामेणं ॥ १०५-१०७ ॥ समणे भगवं महावीरे कासवगुरोणं. तस्य णं तओ नामधिजा एवमाहिजंति, तंजहा-अम्मापिटसंतिए बद्धमाणे, सहसंमुद्धमाए समणे, अयहे भयमेरवाणं प(री)रिसहोवसग्गाणं खंतिखमे पहिमाण पारुए घीमं अरइरइसहे द्विए वीरियसंपन्ने देवेहिं से नामं कयं 'समने भगवं महावीरे' ॥ १०८ ॥ सम-णस्य णं भगवओ महावीरस्य पिया कासवगुत्तेणं, तस्य णं तओ नामधिजा एव-माहिजंति. तंजहा-सिद्धत्वेइ वा, सिजंसेइ वा, जसंसेइ वा। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स माया वासि(इस)ई। गुरोणं, तीसे तओ नामधिजा एवमाहिजंति, तंजहा-तिसलाइ वा, विदेहदिशाइ वा, पीइकारिणीइ वा। समणस्य णं भगवओ महावीरस्स पित्तिजे सपासे, जिट्ठे भाया नंदिबद्धणे, भगिणी सुदंसणा, भारिया जसोया कोडिका गुत्तेणं। समणस्य णं भगवओ महावीरस्य ध्या कास(व)वी गुत्तेणं. तीसे दो नामधिजा एवमाहिजंति. तंजहा-अणोजाइ वा, पियदंसणाइ वा। सम-णस्स णं सगवओ महावीरस्स नतुई कोसिय(कासव)गुत्तेणं, तीसे णं दो नामधिजा एवमाहिजाति, तंजहा-सेसवईइ वा, जसवईइ वा ॥ १०९ ॥ समणे भगवं महावीरे दक्खे दक्खपहत्ने परिस्वे आलीणे भरूए विणीए नाए नायपुत्ते नायकुलचंदे विषेत्रे विदेहदिशे विदेहनसे विदेहस्माछे तीसं वासाई विदेहंसि कडू अम्मापिऊहिं देवत-गएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुष्णाए समत्तपश्चे पुणरवि लोगेतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्रार्हि जाव वस्मृहिं अणवर्यं अभिनंदमाणा य अभियुव्यमाणा य एवं बयासी-अय जय नंदा !, जय जय महा ! भहं ते, जय जय सत्तियवरवसहा !.

नुज्याहि भगवं लोगनाहा !, सयलजगजीवहियं पवरेहि घम्मदित्यं, हियद्वदनिस्सै-यसकरं सन्वलोए सन्वजीवाणं मनिस्सइत्तिक्ट्र जयजयसदं पर्वजंति ॥ ११०-१११ ॥ पुन्ति पि णं रामणस्य भगवञ्जो महाबीरस्य माणुस्समाओ मिहत्यधम्माओ अणुत्तरे आहोइए अप्पिडवाई नाणदंसने हो(हु)स्था। तए णं समग्रे मगवं महाबीरे तेणं अणुत्तरेणं आहोइएणं नाणदंशमेणं अप्यणो निक्समणकार्कं आभोएइ २ ता विचा हिरण्यं, विवा सुवण्यं, विवा धणं, विवा रखं, विवा रहं, एवं वलं वाहणं कोसं कोद्वागारं, विवा पुरं, विवा अंतेउरं, विवा जणवमं, विवा विपुरुधणकणगरमण मणि(मु)मोतियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइयं संतसारमावद्यां, विच्छादत्ता, विगो-वइता, दाणं दायारेहिं परिमाइता, दाणं दाइयाणं परिमाइता ॥ ११२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महाबीरे जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्के मन्गसिरबहुले तस्स णं मन्गसिरबहुलस्स दसमीपत्रखेणं पाईणगामि**णीए** छाबाए पोरिसीए अभिनिविद्याए प्रमाणपनाए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं महत्तेणं चंदप्पमाए सीबाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखियचिक्रय(छं)नंगलिय-मुहमंगलियवद्धमाणपूरमाणघंटियगणहिं ताहि इद्वाहि जाव वस्गृहि अभिनंदमाणा (य) अमिथुन्वमाणा य एवं वयासी-जय जय नंदा !, जय जय भरा ! भई ते, [खितिय-वरवमहा !] अभग्गेहि नाणदंसणचरितेहि अजियोइं जिणाहि इंदियाई, जियं च पालेहि ममणधम्मं, जियविन्धो वि य बसाहि तं देव! सिद्धिमञ्जे, निहणाहि रागदोसमक्रे तवेण धिइधणियबद्धकच्छे, महाहि अद्वकम्मसत्तृ झाणेण उत्तमेण सुकेणं, अप्पमतो हराहि आराहणपडागं च बीर! तेलुकरंगमज्के, पावय वितिमिर-मणुक्तरं केवलवरनाणं, गच्छ य मुक्सं प(रम)रं पयं जिणवरोषश्हेणं मागेणं अकुष्टिकेणं हंता परीसहचमं, जय जय स्नियवरचमद्दा ! बहुई दिवसाई बहुई पमखाई बहुई मासाई बहुई उडाई बहुई अयणाई बहुई संबच्छराई अभीए परीसहोबसम्माणं संतिखमे भगमेरवाणं, धम्मे ते अविग्धं भवउत्तिकह जयज्ञयसहं एउंजेति ॥ १९३-१९४॥ तए णं समणे मगबं महाबीरे नयणमाळासहस्पेहिं पिरिक्कज-माणे पिच्छिज्ञमाणे, वयणमालामहस्सेहि अभियुव्यमाणे अभियुव्यमाणे, हियस-मालासहस्पेहिं उन्नेदिजमाणे उन्नेदिजमाणे, मणोरहुमालासहस्पेहिं विच्छिप्यमाणे विच्छिपमाणे, कंतिरवगुणेहिं पत्थिजमाणे पत्थिजमाणे, अंगुलिमालासहस्येहिं दाइज्ञमाणे दाइज्जमाणे, दाहिणहत्येणं बहुणं नरनारीसहस्साणं अंजलिमालास-हस्साई पिडच्छमाणे पिडच्छमाणे, भवणपंतिसहस्साई समहच्छमाणे समहच्छमाणे,

१ अजेयाई ति अद्वी ।

तंतीतलतालतुष्टियगीयवाइयरवेणं महुरेण य मणहरेणं जयजयसङ्घोसमीसिएणं मंजुमंजुणा घोसेण य प**डि**बुज्झ(आपुच्छिज)माणे प**डि**बुज्झमाणे, सन्त्रिशुए सम्बजुईए सम्बक्तेणं सम्बन्धहणेणं सम्बसमुदएणं सन्वायरेणं सन्वविभूईए सन्व-विभूसाए सम्बसंभमेणं सम्बसंगमेणं सम्बप्गईहिं सव्वनाडएहिं सव्वतालायरेहिं सर्वाव) बोरोहेणं सञ्जपुष्फगंघवत्यमहालंकारविभृसाए सञ्जनुडियसहसिनाएणं महया इंड्रीए महया जुईए महया बल्डेणं महया वाहणेणं महया समुद्रएणं महया बरतुडियजमगसमगप्पबाइएणं संखपणवपडहमेरिश्रक्षरिखरमुहिहुदुकदुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं क्रंडपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निम्गन्छः २ ता जेणेव नायसंडवणे उजाणे जेणेव अमोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिना असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठावेड २ ता सीयाओ पचोरुहड् २ ता सयमेव आभरणमञ्जलंकारं ओमुयड् २ ता सय-मेव पंचमुद्धियं लोयं करेड २ ता छंडुणं भत्तेणं अपाणएणं इत्युक्तराहिं नक्खतेणं जोग-मुवागएणं एगं देबद्समादाय एगे अबीए मुंडे भविता अगागओ अणगारियं पन्नइए ॥ १९५-११६ ॥ समणे भगवं महावीरे संबच्छरं माहियं मासं जाव चीवरधारी होत्या, तेण परं अचेके पाणिपडिस्महिए । समणे समवं महावीरे साइरेगाई दुवालसवासाई निषं वीसद्वकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसरगा उप्पजंति, तंजहा-दिव्या वा माणुसा का तिरिक्स जोणिया वा अणुलोमा वा पिंडलोमा वा ते उप्पन्ने सम्मं सहइ समइ तिनिक्खर अहियासेड ॥ १९७॥ तए णं समणे भगवं महाबीरं अणगारे जाए-इ(ई)-रियाममिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमननिक्खेवण।समिए, उचारपास-वणखेलजन्नसंघाणपारिद्वावणियासमिए, मणसमिए, वयममिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, ऋयगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए, गुत्तवंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोहे, संते, पसंत, उवसंते, परिनिव्युढे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्न(सोए)गंथे, निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोए १, संखे इव निरंजणे २, जीवे इव अप्पिडिहयगई ३, गगणमिव निरालंबणे ४, वा(ऊ इव)उच्य अपडिवदे ५, सारयमलिछं व सुद्ध-हियए ६, पुक्सरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मे इव गुत्तिदिए ८, खरिगविसाणं व एगजाग ९, विहग इन विष्पमुक्ते १०, भारंडपक्सी इव अप्पमत्ते ११, कुंजरे इब सोंडीरे १२, चसहो इव जासथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव निकं-(अप्पकं)पे १५, सागरो इव गंभीरे १६, बंदो इव सोमलेसे १७, स्रो इव दिन-तेए १८, जनकणमं व जायरूवे १९, वसुंधरा इव सम्बकासविसहे २०, सहुयहु-यासणी इव तेयसा जलते २१। इमेसि पयाण दुक्ति संगहणिगाहाओं कंसे संखे जीवे, गगणे बाक य सरयसिक्के य । पुक्करपते कुम्मे, विहरे खरगे य मार्रडे

॥ १ ॥ कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे । चंदे सूरे कम्मो, बसुंधरा चेव हयवहे ॥ २ ॥ नृत्यि णं तस्स मगवंतस्स करवह पिडवंधे, से य पिडवंधे चउव्विहे पन्नते. तंजहा-दव्यओ खित्तओ कालओ भावओ. दव्यको णं सचिता-चित्तमीसिएस दम्बेस. खित्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खिते वा खरे वा घरे वा अंगणे वा नहे वा, कालओं मं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए बा थोबे वा खणे वा लवे वा मुहत्ते वा अहोरते वा पक्ले वा मासे वा उ(ऊ)उए वा अयणे वा संबच्छरे वा अन्नयरे वा बीहकालसंजीए. भावओ ण कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भए वा हासे वा पिजे वा दोसे वा कलहे वा अस्भक्खाणे वा पेसुने वा परपरिवाए वा अरहरई(ए) वा मायामीसे वा मिच्छादंसणसहे वा, नस्स णं भगवंतस्य नो एवं भवड़ ॥ १९८ ॥ से णं भगवं बासावासवजं अड गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराइए नगरे पंचराइए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेहुकंचणे सम-सुहदुक्खे इहलोगपरलोगअप्पढिबद्धे बीवियमर(णे य)णनिरवर्धके संसारपारगामी कम्मसत्तिनघायणद्वाए अञ्भद्विए एवं च णं विहर् ॥ ११९॥ तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंगणेणं अणुत्तरेणं चित्रेणं अणुत्तरेणं आरुएणं अणुत्तरेणं बिहारेणं अणुनरेणं वीरिएणं अणुनरेणं अञ्चवेणं अणुनरेणं महबेणं अणुनरेणं लायवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए सुनीए अणुत्तराए गुन्तीए अणुत्तराए तुर्द्वाए अणुत्तरेणं मबसंज्ञमतवस्य वरियसोत्रचियफलनिव्याणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्य द्रवालम-संवन्छराई विद्वांताई, तेरसमस्य संवन्छरस्य अंतरा बटमाणस्य जे से निम्हाणं दुचे मासे च उत्थे पक्के वहमाहसुद्धे तस्म णं वहसाहमद्धस्म दसमीपक्केणं पाइण-गामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिविद्वाए पमाणपताए सुम्बएणं दिवसेणं विजरूणं मुह्तेणं जिभियगामस्य नगरस्य बहिया उज्जवालियाए नईए तीरे वैयावतस्य चेड्यस्न अवृर्यामंते सामागस्य गाहावडस्य बहुकरणंति मालपायवस्य अहे गोदो-हियाए उक्क(डि) द्वयनिसिजाए आयावणाए आयावेमाणस्य छद्वेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुतराहि नक्खतेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वहमाणस्य अणंते अणुत्तरे निब्बा-घाए निरावरणे कांसणे पिडपुने केवलवरनाणदंसणे समुप्पने ॥ १२०॥ तए गं समणे भगवं महावीरं अरहा जाए जिले केवली सन्वज् यञ्चदरिसी सदेवमणुयास्टरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सब्बलोए सब्बजीवाणं आगई गई ठिइं बंबणं उद-वायं तकं मणोमाणसियं भतं कवं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं, अरहा अरहस्त-भागी, तं तं कालं मणवयणकायजोगे बहुमाणाणं सम्बद्धीए सञ्बद्धीवाणं सम्बन्धीव

१ तेणं कालेणं तेणं समर्गं।

जाणमाणे पासमाणे विहरह ॥ १२१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महाबीरे अद्वियगामं नीसाए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए १, चंपं च पिट्ट-बंपं च नीसाए तओ अंतरावासे वासावासं उचागए ४, वेसालि नगरि वाणियगामं च नीमाए दुवालम अंतरावासे वामावासं उवागए १६, रायगिहं नगरं नालंदं च बाहिरियं नीसाए चउहस अंतरावासे वासावासं उवागए ३०, छ मिहि(लिया)काए ३६ दो भिद्दियाए ३८ एमं आलंभियाए ३९ एमं सावत्थीए ४० एमं पणियभूमीए ४१ एगं पावाए मज्जिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छिमं अंतरावासं बासावासं उवागए ४२ ॥ १२२ ॥ तत्थ णं जे से पात्राए मजिल्लमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्ञुगसमाए अपच्छिमं अंतरावासं वामावासं उवागए तस्स णं अतरावासस्स जे से वासाणं चटत्ये मासे सत्तमे पक्खे कित्तयबहुछ तस्स णं कित्तयबहुछस्स पण्ण-रसीपक्खेणं जा सा चरमा रयणी तं रयणि च ण समणे भगवं महावीरे कालगए विडक्ते समुजाए छिन्नजाडजरामरणबंधणे सिद्धे बुढे मुक्ते अंतगढे परिनिन्बुडे सञ्बदुक्खप्पहींणे, चंदे नामं से दो(दु)चे संवच्छरे, पीइवडणे मासे. नंदिवडणे पक्खे, अभिगवेसे नामं से दिवसे उवसमिति प्युचइ, देवाणेदा नामं ना रयणी निरितिति पबुचड़, अबे लये, मुहते पाण्, शोवे सिद्धे, नागे करणे, मञ्बद्धसिद्धे मुहते, साइणा नक्खनेणं जोगर्मुवागएणं कालगए विड्क्षंते जाव सव्वद्क्खप्पहीणे॥ १२३-१२४॥ जं रयणि च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सन्बरुक्खणहीणे सा णं रयणी बहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पथमाणेहि य उज्जोविया यावि हत्या ॥ १२५ ॥ जं र्यणि च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सा णं रयणी बहुहिं देवे(हि य)हिं देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उप्पिजलगमाणभूया ऋहकहग-भूया बावि हुत्या ॥ १२६॥ जं रयणि च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सन्वदु-क्तप्तानी तं रयणि च णं जिट्ठस्त गोयमस्य इंदभूइस्स अणगारस्य अंतेवासिस्स नायए पिञ्जबंधणे वुन्छिकं अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पके ॥१२०॥ जं स्मणि च णं समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे तं रमणि च णं नव मझई नव केच्छई कासीकोसलगा अद्वारसवि गणरायाणी अगावासाए पा(बा)राओ(ए)यं पोसहोववासं पहुर्विस, गए से भावुज्योए दन्तुज्योगं करिस्सामी ॥ १२८॥ जं रसणि च णं समणे भगनं महाबीरे जाव सम्बदुक्खप्पहीणे तं रसणि च णे खुद्दाए भासराची नाम महम्गद्दे दोवाससहस्सिठिई समणस्स भगवओ महाबीरस्स अम्मनक्वतं संकंते ॥ १२९ ॥ जप्पभिदं च णं से खुदाए भासरासी महमाहे दो-बाससहस्सिठेई समणस्स भगवओ महावीर्स्स जम्मनक्खतं संकंते तप्पिमई च

णं समणाणं निर्माथाणं निर्माथीण य नी उदिए उदिए प्र्यासकारे प्रक्तह ॥ १३० ॥ जया णं से खुद्दाए जाव जम्मनक्खताओं विद्दक्षेते भविस्सद तमा णं समणाणं निगंथाणं निगंधीण य उदिए उदिए प्यासकारे भविस्सइ ॥ १३१ ॥ वं रयणि च णं समणे भगवं महावीरे जाव सञ्बद्धन्खप्पहीणे तं रयणि च णं कुंध् खणुद्धरी नामं समुप्पना, जा ठिया अन्यलमाणा छउमत्याणं निर्गेथाणं निर्गेथीण य नो चक्खुफासं हव्बमागच्छा, जा अठिया चलमाणा छउमत्थाणं निग्गंबाणं निग्गं-थीण य चक्खुफासं ह्व्यमागच्छ्इ ॥ १३२ ॥ जं पासिता बहुहिं निगांयेहिं निगां-बीहि य भत्ताई पचक्कायाई, से किमाह मंते ! (?) अजप्पिन संजमे दुरारा(है)हए भविस्सइ ॥ १३३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्य भगवञी महावीरस्स इंदन्>पामुक्ताओ चउइतसमणसाहस्सीओ उद्गोतिया समणसंपया हत्या ॥ १३४ ॥ समणस्य भगवना महावीरस्य अज्ञचंदणापामुक्याओ छत्तीसं अज्जिय।साहस्सीओ उक्कोसिया अजियासंप्रया हुत्था ॥ १३५ ॥ समणस्य [ण] भगवओ महावीरस्य संखनयगपामुक्खाणं समणोवानगाणं एगा नयनाहरसी अउणद्वि च सहस्ता उद्धोसिया समणोवासगाणं संपया हृत्या ॥ १३६ ॥ समणस्य मगवओ महावीरस्स स्लमारेवईपाम्क्लाणं नमणोवासियाणं तिश्वि सयमाहरूमीओ अङ्गारममहरूमा उद्योसिया समणोवासियाणं संपया हत्या ॥ १३७ ॥ समणस्य-भगवओ महा-वीरस्य तिहि नया चरहम्पुरुवीणं अजिणाणं जिंगसंकासाणं सन्दक्त्वरसिक्तवाईणं जिणो विव अवितहं वागरमाणाणं उद्योसिया च उद्दरपुर्व्वीणं संपया हत्या ॥ १३८ ॥ समणस्य णं भगवओ महावीरस्य तेरम यथा ओहिनाणीणं अइसेसैपलाणं उद्योसिया ओहिना(णीणं)णिसंपया हुन्या ॥ १३९ ॥ समगस्य णं भगवओ महावीरस्य मन मया केवलनाणीणं संभिन्नवरनाणदंगणघराणं उन्नोसिया केवलना-णिसंपया हत्था ॥ ९४० ॥ ममणस्य णं भगवको महावीरस्य सत्त सय। वेउव्वीणं अदेवाणं देवि-द्विपनाणं उद्योसिया नेउव्वियसंपया हुत्या ॥ १४१ ॥ समणस्य णं भगवओ महाबीरस्य पंच सया विज्ञलमईर्ण अन्नाइजेस दीवेस दीमु य समुद्देस सन्नीण पंचिदियाणं पज्जमगाणं सणोगए भावे जाणसाणाणं उद्योखिया विउलसईणं संपया हत्था ॥ १४२ ॥ समणस्य णं भगवथो महावीरस्य चनारि सया बाईणं सदेवम-णुयानुराए परिमाए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया बाइसंपया हुत्या ॥ १४३ ॥ सन्गरस णं भगवओ महाधीरस्स मत्त अंतेवासिमयाई सिद्धाई जाव सव्बद्धन्त-प्यहीणाई, चउइस अजियासयाई सिदाई ॥ १४४ ॥ समणस्स णं भगवओ महा-

१ 'आमोसहिमाइलद्वि'।

वीरस्स अह सया अणुत्तरीववाहयाणं गङ्कल्लाणाणं ठिङ्कल्लाणाणं आगमेसिभहाणं उक्रोसिया अणुत्तरोववाइयाणं संपया हुत्था ॥ १४५ ॥ समणस्स णं भगवयो महा-नीरस्स दुविहा अंतगडभूमी हुत्या, नंजहा-जुगंत(ग)ऋडभूमी य परियायंतकड-भूमी य, जाव तत्राओं पुरिसजुगाओं जुगंतकडभूमी, चउवासपरियाए अंतमकासी ॥ १४६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे तीसं वासाई अगार-वासमज्से बसिता साइरेगाइं दुवालस वासाइं छउमत्यपरियागं पाउणिता देसणाई तीसं वासाई केवलिपरियामं पाउणिका बायाकीसं बासाई सामण्णपरियामं पाउणिका बावत्त(रिं)रि वासाई मध्वाउयं पालइता खींग वेयणिज्ञाउयनामगुत्ते इमीसे ओस-प्पिणीए दूसमञ्जसमाए गमाए बहुविङ्कंनाए तिहिं वासेहिं अद्भवमेहि य मासेहिं सेसेहिं पावाए मज्ज्ञिमाए इत्थिबालस्स रण्णो रज्ज्(य)गराभाए एगे अबीए छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं साइणा नक्सत्तेणं जोगमुवागएणं पच्नसकालसमर्यास संपिल्यं-कनिमण्णे पणपनं अज्ज्ञयणाई कळाणफलविदागाई पणपनं अज्झयणाई पावपळ-विकागाई छत्तीसं च अपुद्रवागरणाई वग्गरिना पहाणं नाम अज्ययणं विभावेसाणे विमावेमाणे कालगए विद्वकृते समुजाए छिन्नजाइजरामरणवंघणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिब्बडे सब्दद्वस्यपहीणे ॥ १४०॥ सैमणस्य भगवओ महावीरस्स जाब गम्बदुक्खप्पतीणस्य नव वासमगाई विइद्धताई, दसमस्य य बामसयस्य अयं अमीडमे संबच्छरे काले गच्छइ । वायणंतरे पुण अयं तेणउए संबच्छरे काले गच्छड इड वीसइ ॥ १४८ ॥ २४ ॥ **इइ सिरिमहावीरचरियं समर्त्त** ॥

तंणं कालेणं तेणं समाणं पासे [णं] अरहा पुरिसादाणीए पंचित्रसाहे हुत्या, तंजहा—िक्साहािं चुए चइता गर्व्यं वकंते १, विसाहािं जाए २, विसाहािं सुंदे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वडए ३, विसाहािं अणंते अणुत्तरे निव्वाधाए निरावरणे किसणे पिंडपुण्णे केवलवरनाणदंसणं समुप्यके ४, विसाहािं परिनिव्यु होए ५॥ १४९॥ तेणं कालेणं तंणं समाणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्के चित्तबहुले तस्स णं चित्तबहुलस्स चउत्थीपक्केणं पाणयाओ कप्याओ वीसंसागरोवमिंद्वहुश्याओ अणंतरं चयं चइता इहेव जंबुहीवे तीवे भारहे वासे वाणारसीए नयरीए आससेणम्स रण्णो वामाए देवीए पुन्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि विसाहािं नक्सतेणं जोगमुवागएणं आहारवकंतीए भववकंतीए सरीर-

१ कप्यस्तास्स पुत्ययलिहणकालजाणावणहा सुत्तमिणं देविष्टुगणिखमासमणिहिं लिहियां, वीरनिव्याणाओ नवसयअसीइवरिसे पुत्ययास्टो सिदंतो जाओ तया कप्यो वि पुत्ययास्टो जाओ ति अहो । एवं सन्विज्ञणंतरेसु अवगंतव्यं ।

बकंतीए कुन्छिसि गन्भताए वकंते ॥ १५० ॥ पासे णं अरहा प्ररिसादाणीए तिना-शोवगए यावि हृत्या, तंजहा-चइरसामिति जाणइ, चयमाणे न जाणइ, चएमिति जाणइ, तेणं चेव अभिलावेणं सुविषदंसणविहाणेणं सन्वं जाव नियमं गिहं अणुपविह्या जाव मुहंसुहेणं तं गर्न्स परिवहड़ ॥ १५१ ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से हेमंताणं दुखे मासे तथे पक्से पोसवहुछे तस्स णं घोसबहलस्स दसमीपक्खेणं नवण्डं मासाणं बहपिटपूरणाणं अडद्भाणं राइं-दियाणं विद्वक्षंताणं पुव्यरतावरत्तकालसमयंखि विसाहाहिं नक्खतेणं जोगमुवागएणं आरोग्गा(आ)रोमां हारयं प्याया ॥ १५२ ॥ जं स्यणि च णं पासे अरहा पुरिसादाणीएं जाए (तं रयणि च णं) सा (णं) रयणी बहुहिं देवेहिं देवीहि य जाब उपिजलगम्या कहकहगम्या यावि हत्या ॥ १५३ ॥ सेसं तहेव, नवरं जम्मणं पासामिलावेणं भाषियव्वं जाव तं होत्र णं कुमारे पासे नै।मेणं ॥ १५४ ॥ पासे णं अरहा परिसादाणीए दक्खे दक्खाइके पडिल्वे अलीण भरए विणीए तीस वासाइं अगारवासमञ्जे वसिता पुणर्वि लोगंतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इद्वाहिं जाय एवं वयासी-जय जस नन्दा !. जय जय भहा ! जाव जयजयसहं पउंजीते ॥ १५५-१५६ ॥ पुटिंग पि णं पामस्य णं अरहओ प्ररिशादाणीयस्य माणस्मगाओं गिहत्यधम्माओं अणुत्तरे आहोइए तं चेत्र सब्धं जाव दाणं दाइयाणं परिभाइता जे सं हमेनाणं दुचे मासे तमे पक्षे पोगबहुले तस्य गं पोसबह लस्स इक्कारसीदिवसेणं पुरुवण्हकालयमयंसि विसालाए नि(बि)वियाए राहेनमणुयासुराए परिसाए तं चेव सुव्वं नवरं वाणारामें नगरिं मज्झेमज्झेणं निगण्यस्य २ ना जंजेव आसमप्र उज्जाण जेणेन असोगनरपायने तेणेन उनागच्छा र ता अमोगनरपायनस्म अहे सीयं टावंड २ ता सीयाओ पचोरुहड २ ता सयमेव आभरणमञ्जलंकारं ओम-यह २ ता गर्यमेव पंचमृद्धियं होयं करेड् २ ता अहमेणं भत्तेणं अपाणएणं विसा-हार्हि नक्खतेणं जोगमुबागएणं एगं देवव्समादाय निहिं पुरिसराएहिं निर्दे मुंडे र्भावता अगाराओ अगगारियं पञ्चरए ॥ १५७ ॥ पासं णं अरहा पुरिसादाणीए तेसीडं राइंदियाडं निषं वीमहकाए चियनदेहे जे केइ उबसम्मा उप्पर्वति, तंजहा-दिव्या वा माण्या वा तिरिक्त जोणिया वा अण्लोमा वा पहिलोमा वा ते उपके मन्मं सहद खमइ तितिक्खद अहियासेइ ॥ १५८ ॥ तए यं से पासे भगवं अणकारे जाए इरियासमिए जाव अप्पाणं भावेमाणस्स तेसीई राइंदियाई विद्द्यंताई, खउरा-

१ पहुंसि गञ्मत्ये सइ सयक्रिजत्याए माऊए पासे नप्पती कम्हलपी बिद्धो, तेण पासे ति नार्ग कर्म ।

सीइ(मे)मस्स राइंदि(ए)यस्स अंतरा वहमा(णे)णस्स जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्के चित्तबहुळे तस्स णं चित्तबहुलस्स चउत्बीपक्खेणं पुन्वण्हकालसमयंसि . बाय(ई)इपायवस्स अहे छ्ट्ठेणं अत्तेणं अपाणएणं विद्याहाहिं नक्खतेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए बहमाणस्स अणंते जाव जाणमाणे पासमाणे विहरह ॥ १५९ ॥ पासस्स णं अरहक्षो पुरिसादाणीयस्स अह गणा अह गणहरा हत्या, तंजहा-सुने १ ब अज्योसे २ य. वसिट्टे ३ वंभयारि ४ य। सोमे ५ सिरिहरे ६ चेव, वीरमेहे ७ जसे वि य ८ ॥ १ ॥ १६० ॥ पासस्स णं अरहुओ पुरिसादाणीयस्य अजदिन-पामुक्खाओ मोलस समणसाहस्सीओ उद्गोनिया समणसंत्रया हत्या ॥ १६१ ॥ पासस्स णं भरहओ पुरिसादाणीयस्स पुप्फचूलापामुक्खाओ अद्वर्तीसं अजियासाहस्सीओ उक्रोसिया अजियासंपया हुत्था ॥ १६२ ॥ पासस्म णं अरह्ओ पुरिमादाणीयस्स मुख्ययामुक्साणं ममणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी ओ चउसिंह व सहस्सा उद्यो-सिया समणोनाम(ग)गाणं संपया हुत्या ॥ १६३ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादा-णीयस्त सुनंदापामुक्खाणं समणोवासियाणं तिण्णि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्या उक्कोलिया समणोवासियाणं संपया हत्या ॥ १६४ ॥ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्भुद्वसया चउह्मपुन्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खर-सिववाईगं जाव चउइमपुव्वीणं संपया दुतथा ॥ १६५ ॥ पासस्य णं अरहओ पुरिसादाणीयस्य चउद्य मया ओहिनाणीण, दस सया केवलनाणीण, ए(इ)कार--स सया वेड(ब्विया)व्वीणं, छस्मया रिडमईणं, दम समणसया सिद्धा, वीसं अजि-यासया सिद्धा, अद्भद्ध-म-सया विउलमईर्ग, छ(म)सया बाईर्ण, बारस सया अणुत्तगेव-बाइयाणं ॥ १६६ ॥ पासस्य णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स दुविहा अंतगडभूमी हुत्या, तंत्रहा-जुगंतकढभूमी य परियायनकडभूमी य, जाव चउत्थाओ पुरिसजु-गाओ जुगंतकडभूमी, तिवामपरियाए अंतमकारी ॥ १६७ ॥ तेणं काल्यं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए तीसं वामाइं अगारवासमज्झे वसिना तेसीइं राइंदियाई छउमस्थपरियायं पाउणिता दस्णाई सत्तरि वामाई केवलिपरियायं पाउणिता पिंदपुनाई सत्तरि वासाई सामण्णपरियायं पाउणिता एकं बाससयं सञ्वाउयं पालइत्ता स्त्रीणे वंसणिजाउयनामगुत्ते इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसुसमाए समाए बहु-विइक्कंताए जे से वासाणं पढ़ने मासे दुवे पक्खे सावणसुद्धे तस्स णं सावणसुद्धस्स अद्भगीपन्खेणं उपि सम्मेयसेलसिहरसि अप्यन्डमीसइमे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं विसाहाहिं नवस्त्रतेणं जोगमुक्तगएणं पुरुव(रत्तावरत्त)ण्हकालसमयंसि वग्धारियपाणी कालगए विद्द्वंते जाव सम्बदुक्सप्पहीणे ॥ १६८ ॥ पासस्त णं अरहओ जाव सम्बद्धक्तप्पहीणस्स दुवालस वाससयाइं विद्धांताई, तेरसमस्स (वं) य अयं तीसहसे संक्टलरे काले गच्छद ॥ १६९ ॥ २३ ॥ इइ सिरिपासजिजकारियं समर्च ॥

तेणं काळेणं तेणं समएणं अरहा अरिष्ठनेमी पंचित्रते हुरवा, तंजहा-वित्ताहिं -चए चइता गर्का वर्षते. तहेव उक्खेवो आव चित्ताहि परिनिष्युए ॥ १७० ॥ तेणं काळेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्टनेमी जे से बासाणं चडत्ये मासे सत्तमे पक्खे कत्तियबहुळे तस्स णं कत्तियबहुलस्स बारसीपक्खेणं अपराजियाओ महाविमाणाओ क्तीसं सागरोवमब्रिडयाओं अणंतरं चयं चडता इहेव अंबुईवि दीवे मारहे वासे सोरियपुरे नयरे समुद्रविजयस्य रुण्णो भारियाए सिवाए देवीए पुरुवरत्तावरत्तकाल-ममयंसि जाव चिताहि गर्भताए वहंते, सन्तं त(मे)हेव सुविणदंसणदविणसंहरणाइयं इत्थ भाषियव्यं ॥ १७१॥ तेणं कारेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्टनेमा जे से बासाणं पढमे मासे दुने पक्ले सावणसुद्धे तस्स ण सावणसुद्धस्स पंचनीपक्लेणं नवण्हं मासाणं बहुपहिपुण्णाणं जाव चित्ताहिं नक्खतेणं जोगमुबागएणं आगेग्गारीसां दार्यं पयाया । जन्मणं समुद्रविजयाभिलावेणं नेयव्वं जाव तं होउ णं कुमारे अदिहेनेमी नामेणं । अरहा अरिड्रनेमी दक्को जाव तिष्णि वासमयाई व्यमारे अगारवासमञ्जे वसिनाणं पुणरवि छोर्गतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं तं चेव सब्बं भाणियव्यं जाव द्वाणं दाइयाणं परिभाइला ॥ १७२ ॥ जे से वासाणं पढमें मासे दुखे पक्वे सावण-सके तस्म णं मात्रणमुद्धस्य छद्वीपक्लेणं पुष्वण्डकालसमयंसि उत्तरकुराए सिवि(सी)-याए सदेवमणुयासुराए परिसाए अणुगम्ममाणमग्गे जाव बारबहेए नयरीए मज्झे-मज्हेणं निरान्छइ २ ता जेणेव रेवयए उजाणे तेणेव उचागच्छइ २ ना असोग-बरपायवस्य अहे सीयं ठावेड २ ना सीयाओ पचोरुहड २ ना सयमेव आभरणमुक्कालं-कारं ओमुयः २ ता सबमेव पंचमुद्धियं लोयं करेड २ ता छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं चित्ता(हिं)नक्खतेणं जोगमुबागएणं एगं देवदृगमादाय एगेणं पुरिसमहस्सेणं सदि मुंडे भावता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ १०३ ॥ अरहा णं अरिट्टनेमी चड-प्पनं राइंदियाई निषं वामहुकाए चियत्तदेहे तं चेब सब्वं जाव पणपनगर्म राइंदियस्स अंतर। बहुमाणस्य जे से बासाणं तथे सासे पंचमे पक्के आसोमबहुले तस्स जं आसोयबहुलस्स पण्णरसीपक्खेणं दिवसस्म पच्छिमे भा(ए)गे उजितसेलसिहरे वेड-सपायवस्स अहे अहुमे(छहे)णं भर्तेणं अपाणएणं चिनानक्खतेणं जोगम्बागएणं

भगवंतिस गञ्मत्ये माऊए रिष्ट्ररयणम्या नेमी-चक्क्यारा सुविणे दिद्वा तकोऽरि-इनेमी, अकारस्स अमंगळपरिहारकुत्तणको अरिक्वनेमित्ति, रिक्कसहो अमंगळवाचिति ।
 अपरिणीयत्तणको ।

श्रापंतरियाए बहुमाणस्स अणंते अणुक्तरे निष्याबाए निरावरणे जाव केनल्यरनाण-इंसने समुप्पन्ने जाव सञ्जजीवाणं सञ्जयावे जाणमाणे पासमाणे विहरह ॥ १७४ ॥ अरहको णं अरिद्वेनेमिस्स बद्वारस गणा बद्वारस गणहरा हुत्या ॥ १७५ ॥ अरह-ओ णं अरिट्टनेमिस्य वरदत्तपामुक्खाओ अद्वारस समणसाहस्त्रीओ उद्योखिया समण-संपद्मा हुत्या ॥ १ ७६ ॥ · · अज्ञज्ञक्सिणीपामुक्ताओ चत्ताठीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्रोसिया अजियार्सपया हुत्या॥ १७७॥ " नंदपामुक्खार्ण समणोवासगाणं एमा सयसाहस्त्रीओ अउणक्तरिं च सहस्मा टक्कोसिया समणोवासगाणं संपया हुत्या ॥ १७८ ॥ महायुव्ययापामुक्खाणं समणोवासि(गा)याणं तिण्णि सयसाहस्तीओ छत्तीसं च सहस्सा उद्योसिया समणीवासियाणं संपया हुत्या ॥ १ ७९ ॥ "चत्तारं सया चउइसपुर्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसिवाईणं जाव संपया हुत्या ॥ १८० ॥ पन्नरस सञ्चा ओहिनाणीणं, पन्नरस सया केवलनाणीणं, पन्नरस सया वेउव्नियाणं, दम सया विउलमईणं, अद्ध सया वाइंणं, सोलम सया अणुत्तरीववाइ-याणं, पनरस समणसया सिद्धा, तीसं अज्ञियासयाई सिद्धाई ॥ १८१ ॥ अरहओ णं अरिद्वतेमिस्स दुविहा अंतगढभूमी हुत्था, तंजहा-जुगंतकडभूमी य परियायंत-कहभूमी य, जाव अद्भाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी, दुवा(ल)सपरियाए अंत-मकासी ॥ १८२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अस्ट्रिनेमी तिण्णि वाससयाई कुमारवासमज्ज्ञे वसिता चटप्पर्च राइंदियाई छउमत्थपरियायं पाउणिता देस्णाई सत्त वासमयाई केवलियरियायं पाउणिना पिडपुण्णाई सत्त वाससयाई सामण्ण-परियायं पाउणिता एगं वाससहस्तं सन्वाउयं पालइता खीणे वेयणिज्ञाउय-नामगुरे इमीसे ओसप्पिणीए दूसमस्समाए समाए बहुविइक्कंताए जे से गिम्हाणं चंद्रत्ये मासे अद्वमे पक्ले आसावसुद्धे तस्म णं आसावसद्धस्स अद्वमीपक्लेणं उपि उज्जितसेलसिह्रंसि पंचिहं छत्तीसेहिं अणगारमएहिं सिद्धं मासिएणं भक्तणं क्षपाणएणं चित्तानक्खतेणं जोगसुवागएणं पुन्वरनावरत्तकालममयंसि नेसजिए कालगए जाव सब्बहुक्खप्पहींगे ॥ १८३ ॥ अरहुओ णं अरिद्वनेमिस्स कालगयस्स जाव सब्ब-दुक्खप्पहीणस्स चउरासीदं वाससहस्सादं विद्द्वंताइं, पंचासीइमस्स वाससहस्सस्स नव वाससयाई विद्कृताई, इसमस्स य वामसयस्स अयं असीइमें संवच्छरे काळे गच्छ ॥ १८४ ॥ २२ ॥ इह सिरिनेमिनाहचरियं समर्त ॥

निमस्स मं अरहको कालगणस्स जाव सञ्बद्धन्यांपहीणस्स पंच वाससयसर्ह-स्साइं चटराचीइं च वाससहस्साइं नव य वाससयाई विद्दक्ताईं, इसमस्स य बाससयस्स अगं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ ॥ १८५ ॥ २९ ॥ मुणिसुटक-

यस्स णं भरहुओ जाव सब्बदुक्खप्पहीणस्स इक्कारस वाससयसहस्साहं चउरासीहं च वाससहस्साई नव वाससयाई विद्वकृताई, दसमस्स य बाससयस्स अयं असीहमे संबन्छरे काले गच्छइ ॥ १८६ ॥ २० ॥ मिल्रिस णं अरहस्रो जाव सम्बद्धस्वय्प-हीणस्स पण्णिद्वं वाससयसहस्साइं चउरासीइं च वाससहस्साइं नव वाससयाई निइक्ताइं, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संबच्छरे काले गच्छर ॥ १८७ ॥ १९ ॥ अरस्स णं अरहओ जाब सम्बदुक्खप्पहीणस्स एगे वासकोडि-सहस्से विइक्कंते, सेसं जहा मिल्रस्स, तं च एयं-पंचसिंह लक्सा चउरासी(इं) (बास)सहस्सा(ई) विइक्कंता(ई), तम्मि समए महावीरो निव्युओ, तओ परं नव वाससया(ई) विइकंता(ई), दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छद । एवं अगग्को जाव सेयंसो ताव दहुन्वं ॥ १८८ ॥ १८ ॥ कुंधुस्य णं अरह्ओ जाव सन्वदुक्खप्पहीणस्स एगे चडभागपिक्रओवमे विद्कांते पंचसिद्धं च सबसहस्सा, सेसं जहा महित्स ॥ १८९ ॥ १७ ॥ संविस्स णं अरहओ जाब सब्बदुक्सप्पहीणस्स एगे चउभागूणे पिछओवमे विद्दांते पण्णिट्टं च, सेसं जहा महिस्स ॥ १९० ॥ १६ ॥ धम्मस्स णं अरहओ त्राव सव्वदुक्खणहीणस्स तिण्णि सःगरोबमाइं पण्णिद्धं च, सेसं जहा मिहिस्स ॥ १९१ ॥ १५ ॥ अर्णतस्य पं अरहओ जाव राज्यदुक्खप्पहीणस्स गत्त मागरोनमाई फणाई च, सेसं जहा मिहिरम ॥ १९२ ॥ १४ ॥ विमलस्स णं अरहको जाब सम्बद्धक्खप्पहीणस्य मोलम सागरोबमाइं विद्वकृताई पण्णिद्धं च, सेसं जहा महिस्स ॥ १९३ ॥ १३ ॥ बासपुजरम् णं अरहुओ जाव मध्वतुक्खप्पहीणस्म छायानीसं सागरीवमाइं विइ-कंताडं पण्णांड च. सेसं जहा महिस्स ॥ १९४ ॥ १२ ॥ सिजंगस्स णं अरहमो जाव सब्बद्धक्यापर्हाणस्य एगे सागरोवमसए विश्वकृते पण्णाद्धि च. सेसं जहा महिस्स ॥ १९५ ॥ ११ ॥ सीयलस्स णं अरहको जाव सञ्बद्धस्वपदीणस्य एगा सागरीवमकोडी तिवासअद्धनवमामाहियवायालीमवाससहस्पेहिं ऊणिया विइक्ता, एयंमि समए महावीरो निब्बुओ, तओ (वि य णं) परं नव बासमयाई विश्कंताई, इममस्त य त्राससयस्य अयं असीइमे संबच्छरे काले गच्छत् ॥ १९६ ॥ १० ॥ स्विहिस्स णं अरहको पुप्पदंतस्स जाव सञ्बद्धश्रखप्यहीणस्य दस मागरोबमकोडीको विडकंताओ, सेसं जहा सीयलस्य, तं च इमं-तिवासअदनवमासाहियकायाणीय-वाममहस्सेहि किम्या(इं) विद्देशता(इं) इचाइ(यं) ॥ १९७ ॥ ९ ॥ चंदप्पहस्म णं अरहओं जाव पहीणस्य एवं सागरीवमकोडिसर्य विद्वहंतं, सेसं जहा सीयकस्य, तं च इमं-तिवासअद्भवमासाहियवाबाजीसवामसहस्सेहि छणगमिबाइ ॥ १९८ ॥ ८ ॥ युपासस्स णं अरहको जाव पहीणस्स एगे सागरोवमकोहिसहस्से विश्कंते, सेसं जहा सीयलस्स, तं च इमं-तिवासअद्भवनासाहिदवायालीसवाससहस्सेहिं कणिया (विश्कंता) इचाइ ॥ १९९ ॥ ७ ॥ पत्रमप्पहस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स दस सागरोवमकोहिसहस्सा विद्धंता, तिवासअद्भवनमासाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं, सेसं जहा सीयलस्स ॥ २०० ॥ ६ ॥ समइस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स एगे मागरोवमकोहिसयसहस्से विश्कंते, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्भवनमा-साहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०१ ॥ ७ ॥ अभिनंदणस्म णं अरहओ जाव पहीणस्स एसे सागरोवमकोहिसयसहस्सा विश्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्भवनमामहियवायालीसवाममहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०१ ॥ ४ ॥ संभवस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स वीसं सागरोवमकोहिसयसहस्सा विश्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तिवासअद्भवनमामाहियवायालीसवामसहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०१ ॥ ३ ॥ इमं जिण्टस पन्नासं सागरोवमकोहिस्सयसहस्सा विश्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तं च इमं-तिवासअद्भवनमामाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०१ ॥ ३ ॥ अजियस्स णं अरहको जाव पहीणस्स पन्नासं सागरोवमकोहिस्सयसहस्सा विश्कंता, सेसं जहा सीयलस्स, तं च इमं-तिवासअद्भवनमामाहियवायालीसवाससहस्सेहिं इचाइयं ॥ २०४ ॥ २ ॥ इइ जिण्तराइं समस्ताइं ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं उसमे णं अरहा कोमलिए चउउत्तरासाढे अमीइपंचमे हुत्था, तंजहा-उत्तरामाढाहिं चुए चइता गब्मं वहते जाव अभीइणा परिनिब्तुए ॥ २०५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसमे णं अरहा कोसलिए जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे सन्तमे पक्के आसादवहुळे तस्स णं आयादबहुळस्स चउत्धीपक्केणं मव्यद्वसिद्धाओं महाविमाणाओं तित्तीसं सागरीवमहिइयाओं अणंतरं वयं चइता इहेव जंबुद्दीवे बीवे भारहे वासे इक्खागभूमीए नाभिकुलगरस्स मरुदे(वा)वीए भारियाए पुन्वरत्तावरत्तकालसमयंसि आहारपक्रंतीए जाव गन्भताए वक्रंते ॥ २०६ ॥ उसभे णं अरहा कोसलिए तिकाणोवगए यावि हुन्था, तंजहा-चइस्सामिति जाणइ जाव मुमिणे पासइ, तंजहा-गय-वसह० गाहा । सन्वं तहेव, नवरं पढमं उसमं मुहेणं अईतं पासाइ, सेसाओ गयं । नाभिकुलगरस्य सा(ह)हेइ, सुविणपादगा नित्य, नाभिकुलगरी सयमेव वागरेइ ॥ २०७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसमे णं अरहा कोसलिए जे से गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्के चित्तबहुळे तस्स णं वित्तवहुलस्स अद्वमीपक्सेणं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्वद्वमाणं राइंदियाणं जाव आसाराहिं नक्खतेणं जोगमुबागएणं आरोग्गारोग्गं दारयं प्याया ॥ २०८ ॥ तं चेव सध्वं जाव देवा देवीओ व बसुद्दारवासं वासिंद्ध, सेसं सहेव नारगसोहण-साणुम्माणव(द)द्वणउस्युक्तमाइयद्विङ्विस्यज्यवजं सव्वं भाणियव्वं ॥ २०९ ॥

उसमे णं भरहा कोसलिए कासक्यतेणं. तस्स णं पंच नामविज्या एवमाविज्याते. तंजहा-उसमेह बा, पडमरायाइ वा, पडमशिक्खायरेइ वा, पडमाजिणेइ बा, पडम-तिर्वर्थक)थयरे इ वा ॥ २१० ॥ उसमे णं अरहा कोसछिए दक्खे दक्खपदण्ये पहिरूवे अक्षीणे भरए विणीए वीसं पुरुवसयसहरसाई कुमारवासमञ्जे वसह बसिता तेनहि पुरुवसयसहस्साइं रज्जनासमञ्जे वसइ, तेनहि च पुरुवसयसहस्साइं रज्जना-समज्ज्ञे वसमाणे लेहाइयाओ चणियपहाणाओ सउणस्यपज्जवसाणाओ बारतर्रि कलाओ चडमडिं अहिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिश्वि वि पयाहियाए उवदिसङ उत्रादितता पुत्तसर्य राजभए अभिसिचइ अभिसिचिता पुणरिव लोयंतिएडि जीयक-िपएहिं देवेहिं ताहिं इद्वाहिं जाव वम्मूहिं सेसं तं चेव सब्वं भाषियम्बं जाब दाणं दाइयाणं परिभाइता जे से गिम्हाणं पढमे सासे पढमे पक्के जितबहुछे तस्स णं चित्तबहरूस अद्वर्मापक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे आगे सुदंसणाए सिवियाए मदेवम-व्यासराए परिसाए सम्बन्धसमागसरो जाव विषीयं रायहाणि सञ्झंस झोणं निस्यच्छा निस्यच्छिता जेणेव सिद्धा्थवणे उजाणे जेणेव असीगवरपायचे नेणेव उनागच्छा उनागच्छिमा असोगवरपायवस्य अहे जान रायमेव चउमुद्धियं लोवं करेड करिना छहेणं भनेणं अपाणाणं आसाडाहि नक्लतेणं जोगमुवागाएणं उत्गाःणं भोगाणं राइण्णाणं खलियाणं चडहिं पुरिससहस्येहिं सदि एगं देवद्यमादाय मुंहे भवित्ता अगाराओ अणनारियं पव्यक्त ॥ २११ ॥ उसभे णं श्वरहा कीसकिए एवं वासमहरसं निषं बोसद्रकाए चियनंदहे जाद अप्पाणं भावेमाणस्य (इक्रं) एगं वासस-हस्सं विद्वकृतं, तुओं णं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे प्रम्युणबद्धते तस्स णं पत्रगुणबहलस्य ए(इ)कारसीयक्षेणं पुष्यण्डकारुसमयंसि पुरिमनालस्य नगरस्स बहिया रागडमुहंसि उजाणंसि नम्गोहबरपायदस्य अहे अहुमेणे भत्तणं अपाणएणं आसाराहिं नक्खतेणं जोगम्यागएणं झाणंतिरियाए बद्दमाणस्य अणंते जाव जाण-माणे पासमाणे विहुद्द ॥ २१२ ॥ उसमस्य णं अरहओ कोसन्त्रियस्य चन्दरासीई गणा चउरासीई गणहरा हत्या ॥ २१३ ॥ उसमस्य णं अरहओ कोसलियस्त उसभसेणपामुक्सा(ओ)णं वजरासी(इ)ओ समणसाइस्सीओ उद्योक्तिया समणसंपया हत्था ॥ २१४ ॥ उममस्स पं अरहको कोसछियस्य वंभीसुंदरीपासुक्काणं अजि-याणं तिष्णि सक्या**हरवीओ** उक्कोसिया अजियासंप्रवा हुत्या ॥ २१५ ॥ उस-भरस णं ''सिजंसपामुक्खाणं समणोबासगाणं तिष्णि सबसाहरसीओ पंच सहस्या उकोसिया समणोबास(म)गार्थ संपदा हुस्या ॥ २१६ ॥ उसमस्स चं · · सुसद्वापा-अक्साणं समणोवासियाणं पंच सबसाइस्वीओ चडप्पां च सहस्सा उद्योसिया सम-

कोबासियाणं संपया हुत्था ॥ २१७ ॥ उसमस्स णं ः चतारि सहस्सा सत्त सया पक्जासा चत्रहसपुत्र्यीणं अजिजाणं जिजसंकासाणं जाव उक्कोसिया चत्रहसपुत्र्यः संपया हुत्या ॥ २९८ ॥ उसभस्स णं · · नव सहस्सा ओहिनाणीणं० उक्कोसिया ओहि-नाविसंपया हुत्या ॥ २१९ ॥ उसमस्स गं ः वीससहस्सा केवलनाणीणं ॰ उद्दोसिया केंबलनाणिसंपया हुत्या ॥ २२० ॥ उसमस्स णं "वीससहस्सा छत्र सया वेड-व्वियाणं॰ उक्कोसिया वेजव्विय(समण)संपया हुत्या ॥ २२१ ॥ उसभस्स णं '''वारस सहस्ता छच सया पण्णामा विजलमईणं अन्नाउजेस दी(वेस दोस य)वससुदेस सन्नीणं पंचिदियाणं पजत्तमाणं मणोगए भावे जागमाणाणं (पासमाणाणं) विउत्सम्इर्सपया हुत्था ॥ २२२ ॥ उसमस्य णं "बाग्स सहस्सा छच सथा पण्णासा वाईणं० उन्नी-सिया बाइसंपया हुत्था ॥ २२३ ॥ उसमम्स णं ः बीसं अंतेवासिमहस्सा सिद्धा, चत्ताठीसं अज्जिया(स)साहर्स्(सा)सीओ सिद्धाओ ॥ २२४ ॥ उसमस्स ण ''वावीस-सहस्सा नव सया अणुनरोववाइयाणं गइकहाणाणं जाव भहाणं उक्कोसिया अणुनरोब-नाइयसंपया हुत्था ॥ २२५ ॥ उसभस्स णं अरहओ कोमलियस्म हुविहा अंतगडभूमी हुत्या, तंजहा-जुगंनगडभूमी य परियायंतगडभूमी य, जाव असंखिजाओ पुरिसजु-गाओ जुर्गतगडमूर्गा, अंतोसुहुत्तपरियाए अंतमकासी ॥ २२६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभे णं अरहा कोसलिए वीसं पुञ्चसयसहस्साई कुमारवासमज्हे वसिना(णं) तेवद्वि पुरुवसयसहस्साई रज्जवासमञ्झे वसिता तेसीई पुरुवसयमहस्माई अगारवास-मज्झे बॉक्सा एगं वासमहस्सं छउमत्थपरिया(यं)गं पाउणिता एगं पुव्यसयसहस्सं वासमहस्स्णं केवलियरियागं पाउणिता पडि(सं)पुण्णं पुन्वसयसहस्सं सामण्णपरियागं पाउणिना चउरासीइं पुक्तसयसहस्साइं मन्दाउयं पालहत्ता खीणे वेयणिजाउयनामगुत्ते इमीसे ओसप्पणीए सुसमद्समाए समाए बहुनिइकंनाए तिहि वासेहि अद्धनवमेहि म मासिह सेसेहि जे से हेमंताण तचे मासे पंचमें पक्की माहबहुछे तस्स ण माहबहुन्स्स तेरसीपक्खेणं उपि अद्वावयसेलसिहरीत दसिंहं अणगारसहरसेहिं सिद्धं चउ(चो)ह-न्मेणं भर्तेणं अपाणएणं अभीइणा नक्स्रोणं जोगमुनागएणं पुट्यण्हकालसमर्यात संप-लियंकनिसण्णं कालगए जाव सम्बदुक्खपहीणे ॥ २२७॥ उसभस्स णं अरहको कोस-लियस्स कालगयस्स जाव सञ्बदुक्खपाहीणस्स तिण्णि वासा अद्भनवमा य मासा विइ-कता, तओ वि परं एगा सागरीयमकोडाकोडी तिवासअद्भनवमासाहियबायालीसाए वाससहरूसेहिं ऋणिया विद्वहंता, एयंमि समए समणे भगवं महावीरे परिनिव्यु(है)ए, तओ वि परं नववाससया विद्रकंता, दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संबच्छरे काहे गच्छर ॥ २२८ ॥ १ ॥ इह सिरिडसहजिपचरियं समर्त ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्य भगवको महाबीरस्स नव गणा, इकारस गणहरा हत्या ॥ १ ॥ से केपट्रेणं भंते ! एवं वृषद्-समणस्स भगवयो महावीरस्य नव गणा, इकारस गणहरा हत्या ?॥ २॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स जिद्रे इंदर्भई अणगारे गोयम(स)गुत्तेणं पंच समणसयाई वाएइ, मजिश्रमए अग्गिभूई अणगारे गोयमगुत्तेणं पंच समणसयाई बाएइ, कणीवसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमगुत्तेणं पंच समणसयाई वाएड, येरे अजवियत्ते भारदाए गुत्तेणं पंच समणसयाई वाएड, थेरे अज्यस्टरमे अस्तिवेसाय(ण)णगुनेणं पंच समणसयाई वाएइ, धेरे मंडियपुत्ते वासि-(हे) दुसगुन्तेणं अबुद्धाइं समणसयाइं वाएइ, येरे मोरियपुत्ते कास(वे)वगुन्तेणं अबुद्धाइं समणसयाई बाएड, धेरे अकंपिए गोय(मे)मनगुरोणं-धेरे अयलभाया हारियाय(णे)-णगुत्ताणं, एए दुष्णिवि थेरा निष्णि तिष्णि समणसयाई वाएंति, थेरे अजमे(इ)यजे-थेरे अज्ञपभासे, एए दृष्णिवि चेरा कोडिना-गुनेणं तिष्णि तिष्णि समणसयाई वाएँति । से तेणद्वेर्ग अजी ! एवं वृष्णइ-समणस्य भगवओ महाधीरस्य नय गणा, इकारस गणहरा हत्या ॥ ३ ॥ सब्वे वि णं एए समणस्य भगवश्रो महावीरस्स ए(इ)क्कारस वि गणहरा दुवालमंगिणो चउ(इ)दसपुध्यिणो समनगणिपिटगधारमा रार्थागहे नगरे मासिएणं मनेणं अपाणएणं कालगया आव सन्वद्कलपहीणा । धेरै इंदर्भुई थेरे अजमुद्दम्मं य सिद्धिगए महावीरे पच्छा दुण्णिव येर! परिनिव्युमा । जे इमे अजनाए समणा निमांथा विहरेति एए शं मध्वे अजनहम्मस्य अणगारस्य आवृष्टिजा, अवसेमा गणहरा निरवन्ता वृच्छिता ।। ४ ।। समये भगवं महावीरे कासवगुनेशं । समणस्य णं भगवञ्जो महावीरस्य काग्यवगुन्तस्य अञ्चलहरूमे येरे अंत-वासी अग्गिवेमायणगुने । थेग्सा णं अजसहम्मस्य अग्गिवेसायणगुनस्य अजन जंबूनामे थेरे अंतवासी कामवगुतेषं । वेग्स्स णं अञ्चजंबनामस्य कामवगुत्तस्य अञ्चलमदे थेरे अंतेवासी कवाश्रणमगुने । वेरस्त णं अञ्चलमवस्म कवायणम-गुनस्य अजितिज्ञेनवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वरखमगुते । येरस्स णं अजितिज्ञे-भवस्य मणगपित्रणो वच्छमगुत्तस्य अज्यवसुर्भेह येरे अंतेवासी तुंगियायणसर्गुने ॥ ५ ॥ इह गणहराइथेरावली समका ॥

तेणं कारेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसहराए मासे विद्धांसे वासावासं पज्जेमवेद ॥ १ ॥ से केणहेणं भेते ! एवं वुषद्-समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसहराए मासे विद्धांते वामावासं पज्जोसवेद ? बओ णं पाएणं अमारीणं

१ अम्हाणमङ्गादिसे एतिओं चेव पाडी सञ्मङ् जो 'अजमङ्गाहुणा इमस्स रयणा कया' अस्स पुर्ह्हि करेड़ ।

अगाराई कडियाई उर्क(वि)पियाई छवाई छिताई गुताई घट्टाई महाई संपध्मियाई साओदगाई सायनिद्यमणाई अध्यणी अद्वाए कडाई परिभुत्ताई परिणामियाई मनंति, से तेणदेणं एवं कुचड-समणे भगवं महाबीरे वासाणं मधीसहराए मासे विडक्षेते ं मासावासं पजोसबेह ॥ २ ॥ अहा णं समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसदराए मासे विदक्षंत वासावासं प्रजोसवेद तहा णं गणहराबि वासाणं सबीसइराए मासे विदक्षंते वासावासं पञ्जोसर्विति ॥ ६ ॥ जहा णं गणहरा वामाणं सवीसहराए जाव पञ्जोसर्विति तहा णं गणहरसीसावि बासाणं जाव पजीसनिति ॥ ४॥ जहा णं गणहरसीसा वासाणं जाद पजोसर्विति तहा णं बेरादि वा(मात्रासं)साणं जाद पजीसर्विति ॥ ५ ॥ जहा णं थेरा वासाणं जाव पत्जोमविति तहा णं जे इमे अकत्ताए समणा निग्गेथा मिहरेति ते (एए) वि य णं वासाणं जाव पज्जोस(वें)विति ॥ ६॥ जहा णं जे हमे अज-नाए समणा निर्मेश वासार्ण सवीसहराए मामे विद्वांते वासावास पजीसविति तहा णं अन्हंपि आयरिया उवज्हाया वासाणं जाव पञ्जोमविति ॥ ७ ॥ जहा णं अन्हं(पि) आयरिया उक्जाया बासाण जान पजीमनिति तहा णं अम्हेनि वासाणं सदीसह-राए मासे विडक्ते वासावासं पज्जांसवेमो, अंतरा वि य से कप्पड़ी पज्जोमवित्तए]. नो से कम्पद्र ते रयाणि उबाइणाविनए॥ ८॥ वासावासं पञ्जीसवियाणं कप्पद निर्मायाण वा निर्माधीण वा सब्बओ गर्मता मक्कोसं जीयणं उत्गहं ओर्गिण्हत्ताणं चिट्टितं अहालंदमवि उग्गहे ॥ ९ ॥ बासावासं पञ्जोमविद्याणं कप्पद्र निर्माद्याण वा निगंधीण वा सव्वक्षो समंता मक्कोसं जोयणं भिक्खायरियाए गंतुं पहिनियत्तए ॥ १० ॥ जत्य नहं निषोयमा निष्यसंदणा, नो से कप्पड मध्यको समंता सङ्कोमं भीयणं भिक्खायरियाए गंतुं पिडीनेयत्तए ॥ ११ ॥ एरावई कुणालाए, जत्य चिह्नया सिया एगं पार्य तरहे किया एगं पार्य थले किया, एवं चक्रिया एवं णं कप्पड़ सन्त्रओं समंता सकोसं जोयणं गंतुं पडिनियत्तए ॥ ५२ ॥ एवं च नो चक्किया. एवं से नो कप्पड गम्बओ समंता सङ्गोसं गोमणं गंतुं पर्डिनियनए ॥ १३ ॥ वासावार्स पज्जेन सबियाणं अरवेगह्याणं एवं मुनपुरुवं अवद-'दावे अंते !' एवं से कप्पइ दावितए. नो से कप्पड परिचाहितए ॥ १४ ॥ बासाबासं पञ्जीसवियाणं अत्येगङ्याणं एवं युत्त-पुरुषं भवद्-'पिकगाहे(हि) भंते !' एवं से कप्पइ पिकगाहित्तए, नो से कप्पइ दावित्तए ॥ १५ ॥ वासाबासं पजीसिक्याणं अत्येगहयाणं एवं बुत्तपुट्यं भव६-'दावे मंते ! पिनाहें मंते !' एवं से कप्पड़ दावित्तएवि पित्रगाहितएवि॥ १६॥ बासावासं पानीय-वियामं नो कप्पद्र निरमंशाय वा निरमंशीय वा हड्डामं तुद्वायं आ(२)रोग्गाणं बलिय-सरीराणं इसाओ विवर्देशो अभिक्यायं अभिक्यायं आहारितए, तंजहा-सीरं, दहिं,

सप्पि, तिहं, गुढं ॥ १७ ॥ वासाबासं पञ्जोसविद्याणं आत्येगहृद्याणं एवं बुतापृत्वं भवड़-'अड्डो भंते! गिलाणस्स ?' से य पएजा-'अड्डो', से य पुरिस्त्रपट्टे 'केवड़-एणं अद्वो ?' से (य) बएजा-'एवइएणं अद्वो गिलाणस्स', जं से पमाणं क्यइ से क पमाणओ चित्तव्वे, से य विज्ञविज्ञा, से य विज्ञवेमाणे स्त्रिज्ञा, से य पमाणपते 'होस अकाहि' इय वराव्यं सिया, से किमाह भंते !. एवडएणं अद्यो गिलाणस्स. सिया णं एवं बयंतं परो बहजा-'पडिगाहेहि अजो ! क्छा तुमं भुक्खिस वा पाहिसि वा,' एवं से कप्पइ पिंचगाहिताए, नो से कप्पइ गिळाणनीसाए पिंचगाहिताए॥ १८॥ वासावासं पञ्जोसवियाणं अत्थि णं बेराणं तहप्पगाराई कुलाई बडाई पत्तिबाई बिजाइं वेसासियाइं संमयाइं बहुमयाइं अगुमयाइं भवति, त(क)त्व से नो कप्पइ अदक्ख वहतए-,अस्थि ते आउमो । इसं वा इसं वा ?' से किसाह भेते !, सन्नी गिही गिण्हड् वा, तेणियंपि कुन्ना ॥ १९ ॥ वामावासं पञ्जोसवियस्स निषमतिबस्स भिक्खस्स कप्पड एगं गोयरकालं गाहाबडकलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्समितए वा पविसित्ताए वा, नम्नत्थाऽऽयरियदेशावधेण वा एवं उवज्झायदेगावधेण वा तवस्सिवेयावचेण वा गिलाणवेयावचेण वा खुडूएण वा खुडूियाए वा अवंजण-जायएण वा ॥ २०॥ वासावासं पज्जोमबियस्स चउत्पर्भक्तियस्य भिक्रकस्स अयं एवइए विसेसे-जं से पाओं निक्काम्म पुरवामेत्र वियडगं भूका पिका परि-गाहगं संलिहिय संपमाज्य सं य संथरिजा कप्पर से नहिवसं तेणेव भनादेणं पजीसविनए, से य नो संधारिजा एवं से कप्पट दुर्श्वाप गाहाबहकुरुं भक्ताए वा पाणाए वा निक्सिमित्तए वः पविसित्तए वा ॥ २१ ॥ बासावासं पञ्जोमवियस्स छद्रभत्तियस्य भिक्कस्य कपांति दो गोयरकाला गाहावहकूलं भताए वा पाणाव वा निक्कांमलए वा पविसित्तए वा ॥ २२ ॥ वासावासं पज्जोसवियस्य अङ्गय-भतियस्य भिक्क्स्य कर्मात तथो गोयरकाळा गाष्टाबहकूळं मत्ताए वा पाणाए वा निक्समिनए वा पविस्तिए वा ॥ २३ ॥ बामावासं पञ्जोसवियस्स विनिद्ध-भत्तियस्य भिक्युस्य कर्याति सञ्बेषि गोयरकाला गाहावद्रकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्छमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ २४ ॥ बामाबासं पञ्जोसवियस्य निष्यातिः यस्स भिक्षस्य कप्पंति सञ्चाई पाणगाई पिडगाहित्तरः । वायावासं पञ्जोसिक-यस्स चडरथभत्तियस्स भिक्खस्स कप्पंति तओ पाणगाई पिराहिसए, तंजहा-ओसंडमं(वा), संसेडमं, चाउलोदगं । वासावासं पञ्जोसवियस्य श्रद्धमित्रयस्य भिक्खुस्य कर्णात तओ पाणगाइं पडिगाहिताए, तंत्रहा-तिलोदगं वा, तुसीदनं वा, जनोदगं ना । वासानासं पञ्जोसनियस्स अद्भागतियस्य भिक्तास्य कपंति सन्ती

पाणगाई पविवाहित्तए, तंबहा-आयामं वा, सोबीरं वा, सुद्धवियहं वा । वासावासं पञ्चेसविकस्स वि(कि)विद्वभक्तियस्स भिक्खस्स कप्पइ एगे रसिणवियडे पिनाहित्तर् से वि य णं अतिरंथे नो (चेव) वि य णं सिरहये । वासावासं पज्जोसवियस्स सत्त-अपियाइक्सियस्स भिक्सुस्स कप्पइ एगे उसिणविवडे पडिगाहिसए. से वि य णं असित्ये, नो जेव णं ससित्ये, से वि य णं परिपूर, नो जेव णं अपरिपूर, से वि य णं परिमिए, नो चेव णं अपरिमिए, से वि य णं बहसंपने, नो चेव णं अवहसंपन्ने ॥ २५ ॥ वासावासं पञ्जोसवियस्य संख्वाचित्रयस्य भिक्खस्य कृप्यंति पंच दत्तीको भोयणस्स पहिमाहिनए पंच पाणगस्स, अहवा चतारि भोयणस्य पंच पाणगस्स. अहवा पंच भोयणस्य चतारि पाणगस्य, तस्य णं एगा वत्ती क्षोणासायणसिनमवि पहिगाहिया सिया कप्पइ से तहिवसं तेणेव भनादेणं पज्जोसविनए, नो से कप्पइ दुर्श्वीप गाहाबडकुरुं भत्ताए वा पाणाए वा निकलमिनए वा पविसित्तए वा ॥ २६ ॥ वासा-वासं पञ्जोसविद्याणं नो कप्पड़ निर्गयाण वा निरगंथीण वा जाव उवस्स्याओ सम्बर्गनरं संखडि संनियहनारिस्य इत्तए, एगे (पुण) एवमाहंसु-नो कप्पइ जाब उवस्मयाओ परेण सत्तवरंतरं संखर्ढि संनियह्यारिस्य इत्तए, एगे पुण एवमाइंनु-नो कप्पड़ जाब उबस्तयाओ परंपरेणं संखर्डि संनियहचारिस्य इत्तर् ॥ २०॥ बायावासं पञ्जोस्वियस्त नो कप्पइ पाणिपडिमगहियस्स भिक्खस्म कणगफारियै-भिनमांय घडिकायंसि निवयमाणंसि माहाबड्कुलं भनाए वा पाणाए वा निक्ख-मित्रच वा पविसित्ताच वा ॥ २८ ॥ वासाबासं पज्जोसवियस्स पाणिपहिग्गहियस्स भिक्तस्त नो फप्पड अगिइंसि पिंडवायं पडिगाहिता पत्नोर्मावत्ताः, पत्नोमवैमाणस्य सहसा बद्रिकाए निवदका देनं अवा देसमादाय से पाणिणा पाणि परिपितिका उरेसि वा णे निनिजित्जा, कक्खंसि वा णे नमाइडिजा, अहाङकाणि वा छेणाणि वा उवागरिक्रमा, रुक्तस्लाणि वा तथागरिक्रमा, जहां से पाणिसि वए वा दगरए वा दगकृतिया वा नो परियावज्ञह ॥ २९ ॥ वासावासं पज्ञोर्यावयस्य पाणिपडिया-हियस्त भिक्खस्स वं किंचि कणगुरुशियमित्तंपि निववेड, नो से कप्पड गाडावड-कुछं भनाए दा पाचाए वा निक्समित्तए वा पविस्तित्तए वा ॥ ३० ॥ वासावासं प्रजीस-विग्रस्स परिग्गहचारिस्स भिक्खस्स नो कप्पइ बन्धारियवृद्धिकार्यस गाहावहतुन्त्रं असाए बा पाणाए बा निक्सिनित्तए वा पविश्वित्तए वा, कप्पड़ से अप्पड़िक्सियंति संतरत-रेसि³० ॥ ३ ९ ॥ बासाबासं पञ्जोसवियस्य निर्मायस्य निर्माशीए वा गाहाबङ्कलं पिव-

९ आसाने ना, सोनीरे ना, सुद्धनियदे सा। २ 'फुसार' । ३ विदारभूमिगसणे-इनवाची ।

वायपिदयाए अणुपविद्वस्स निमिज्सिय निमिज्सिय वृद्धिकाएं निवड्जा, कप्पड् से अहे आरामंति वा अहे उवस्सर्यंति वा अहे विगडनिहंसि वा अहे रक्समलंसि वा उवागच्छित् ॥ ३२ ॥ तत्थ से पुरुवागमणेणं पुरुवाउत्ते बाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगस्वे, कपइ से चाउलोर्णे पिंडगाहितए, नो से कपइ भिलिंगस्वे पिंड-गाहिताए ॥ ३३ ॥ तत्थ से पुम्बागमणेणं पुष्याउत्ते भिक्तिगस्वे पच्छाउत्ते चाउ-लोदणे, कप्पड़ से भिल्पिस्बे पंडिगाहितए, नो से कप्पड़ बाउलोदणे पंडिगाहितए ॥ ३४ ॥ तस्य से पुरुवागमणेणं डोऽबि पुरुवाउत्ताइं (बहुति), कप्पंति से दोऽबि पडि-गाहिताए, तत्थ से पुरुषागमणेणं योऽनि पच्छाउत्ताई, एवं नो से कृप्पंति दोऽनि पहि-गाहितए, जे में तरथ पुरुशागमणेणं पुरुषाउत्ते से कप्पइ पडियाहितए, जे से तत्य पुट्यागमणेणं पुट्छाउने नो से ऋपुद्र पडिमाहिनए ॥ ३५ ॥ बासाबासं पुजीस-वियम्स निम्पंयस्स निम्पंथीए वा गाहावहकुलं पिंडवायपिंडयाए अणुपविद्वस्य निगिज्यिय निगिज्यिय बृद्धिकाए निवद्धजा, कप्पद में अहे आरामंसि वा अहे उबरसयंसि वा अहे वियडगिहंसि वा अहे स्क्लग्लंखि वा उवागच्छित्तए, नो से कप्पड पुटबगहिएणं अनपाणेणं वंशं उवायणाविनाए, कप्पइ सं पुठवामेव वियडगं भुवा (पिचा) पडिमाहर्ग सीलहिय संलिहिय संपर्माजय संपर्माजय ए[गायमं]गओ भंडगं कडू मावसेसे मृरे जेणेव उवम्मए नेणेव उवागच्छिनए, मो से कप्पइ नं रथिंप तस्येन उनायणानिक्तए ॥ ३६ ॥ बामावासं पञ्जीसन्त्रियस्य निर्माधस्य निर्माधीए वा गाहावडकुरु पिडवायपहियाए अणुपविद्वरम निर्मिजनय निर्मिजनय बृहिकाए निवदका, कप्यइ में अहे अरामंसि वा अहे उत्रस्तर्गंस वा॰ विग्रडगिहंसि वा अहे रक्ष्यमुर्लास वा उवागन्तिता। ३०॥ तत्य मी कप्पड एगस्स निग्गंथस्स एगाए य निर्माधीए एगयओ चिट्ठितए १, तत्य नी कप्पड़ एगस्म निर्माधस्स दुर्ण्ट निस्मंधीणं एगयओ चिद्विनए २, तत्थ नो कप्पइ दुर्ण्ट निस्मंधाणं एगाए स निमांशीए एगयओ चिद्वितए ३, तन्थ नी करपद दुण्हं निमांशार्थ दुण्हं निमांशीण य एगयओ चिट्टिनए ४, अत्थि य उत्थ केड् पंचमे खुरूए वा खुरिया(ई) वा अवेसि वा संलोए मपडिद्वारे एवं गई रूपाइ एगयओ चिद्विलए ॥ ३८ ॥ बासाबास पजोमवियस्य निर्मायस्य गाहावद्दुक्तं पिडवायपिडयाए अणुपविद्वस्य निर्मिणिशय निर्मिज्यय वृद्धिकाए निवदःजा, रूप्यड् से अहे आरामंति वा अहे उवस्तरंति वा अहं वियर्डागहंसि वा अहे रुक्तमूलंसि वा उदागच्छित्तम्, तत्व नी कप्पइ एगस्स निर्मायस्य एमाए व अगारीए एमयओ चिद्वित्तर, एवं चडमंगी, अदिव वं इत्थ केइ पंचमए थेरे वा थेरिया(इ)वा अवेसि वा संलोए सपडितुवारे, एवं कम्बद एवयओ

चिद्वित्तए । एवं चेव निर्माणीए अगारस्स य भाणियव्यं ॥ ३९॥ वासावासं पत्रो-सविद्याणं नो कपड निस्पंथाण वा निसांश्रीण वा अपरिण्णएणं अपरिण्णयस्स सद्वाए असर्ण वा १ पाणं वा २ साइमं वा ३ माइमं वा ४ जाव पडिगाहिनए ॥ ४० ॥ से किमाहु भंते !, इच्छा परो अपरिष्णए भुंजिजा, इच्छा परो न भंजिजा ॥ ४९ ॥ वासावासं पज्जोसविद्याणं नो कपड निरगंधाण वा निरगंधीण वा उद्दुखेण वा ससिणिद्धेण वा काएणं असणं वा १ पाणं वा २ खाइसं वा ३ साइसं वा ४ आहारितए॥४२॥ से किमाहु मैंते !, सन सिणेहाययणा पण्णता, नंबहा-याणी १ पाणिकेहा २ नहा ३ नहसिंहा ४ ममुहा ५ भहगेट्टा ६ उनरोड्डा ७ । अह पुण एवं जाणिजा-विगओदगे में ऋाए डिसासिणेहे, एवं से कप्पइ असणे वा १ पाणं वा २ साइमं वा ३ साइमं वा ४ आहारिक्य ॥ ४३ ॥ वासावासं पञ्जोस-वियाणं इह सन्तु निरगंथाण वा निरगंथीण वा इमाई अह मुहुमाई जाई छउमत्येणं निर्गायेण वा निरगंथीए वा अभिक्ष्यलणं अभिक्ष्यणं आवियन्वाई पास्यव्वाई पिंड-छेहियव्याइं भवंति, नंजहा-पाणसुहमं १ पणगसुहुमं २ बीयसुहुमं ३ हरियमुहुमं ४ पुष्पतृहुमं ५ अंडसुहुमं ६ लेणनृहुमं ७ सिणह्युहुमं ८ ॥ ४४ ॥ से 🍇 तं पाण-मुहुमें ? पाणसहुमे पंचनिष्ठे पण्णले, लेंबहा-किण्डे १, नीले २, लोहिए ३, हालिंड ४, सुकिहे ५ । अत्य कुंधु अणुद्धरी ना(म समुप्पका)मं, जा ठिया अन्वलमाणा छउम-त्थाणं निम्मंत्राण वा निम्मंथीण वा नी चक्कुफासं इव्यमागच्छा, वा अठिया चल-माणा छउमत्थाणं निर्मायाण वा निरमंबीण वा चक्खुकासं हव्नमागच्छह, जा छट-मत्येणं निम्मंथेण वा निम्मंथीए वा अभिनन्त्रणं अभिनन्त्रणं जाणियन्त्रा पासियन्त्रा पिकेहियम्बा हवर । से नं पाणमुहुमे १ ॥ से कि नं पणगसुहुमे ? पणगसुहुमे पंच-विद्दे पण्णते, नंबदा-किण्हे, नीले, लोहिए, हालिहे, सुक्ति । अत्थि पणगसुदुमे तद्द-व्यममाणवण्णे नामं पण्णते, जे छउमत्येणं निरगंयण वा निरगंथीए वा जाव पहि-लेहियन्वे भवइ । से तं पणगसहुमे २ ॥ से कि तं बीयसहुमे ! बीयसहुमे पंचिवहे पण्यते, तंजहा-किन्हे जाव सक्तिहै । अस्य बीयसहुमे काणयासमाणविष्यए नामे पण्यते, जे छउमरपेणं निरगंथेण वा निरगंथीए वा भाव पिडिछेहियक्वे भवह । से तं बीयसहुमे ३ ॥ से कि नं हरियसहुमे ? हरियसहुमे पंचनिहे पण्णते, तंत्रहा-किन्हे जाव सक्तिके । अस्य हरियमुहुमे पुढवीसमाणवण्णए नामं पण्णते, जे निम्बंबेण वा निग्नंबीए वा अभिवस्त्रणं सभिवस्त्रणं जाणियन्त्रे पासियन्त्रे पविकेष्टिसन्त्रे भवष्ट । से तं हरियस्हुमें ४ ॥ से कि तं पुष्कसुहुमें ? पुष्पसुहुमें पंचांबहे पण्णते, तंजहा-किन्द्रे बाद समिति । अति पुण्यसहमे स्क्ससमाजवण्ये नासं पण्यते, जे अउसत्येणं

निरमेथेण वा निरगंशीए वा जाणियव्वे जाव पिडलेहियव्वे भवइ । से तं पुरक्षपुर-हुमें ५॥ से कि तं अंडसुहमें ? अंडसुहमें पंचित्रहें पण्णते, तंबहा-उद्दंहें, उक्कि-यंडे, पिनीलियंडे, हलियंडे, हल्लोहलियंडे, जे निग्गंयेण वा निग्गंबीए वा आब पडि-लेहियव्वे भवड़। से तं अंडसुहुमे ६॥ से कि तं लेणसुहुमे ? लेणसुहुमे पंचित्रहे पण्णते, नंजहा-उत्तिगलेणे, भिंगुलेणे, उज्जए, नालमूलए, मंबुद्धावह नाम पंचमे, जे छउमत्थेणं निग्गंथेण वा निग्गंथीए वा जाणियव्वे जाव पडिलेडियव्वे भन्ह । सं नं लेणमुहमे ७ ॥ से कि तं सिणेह्मुहमे ? सिणेह्मुहमे पंचविह पण्णने, तंजहा-उस्मा, हिमए, महिया, करए, हरतापुर । जे छउमत्येणं निग्गंथेण वा निग्गंथीए वा अभि-क्खणं अभिक्खणं जाब पिंडलेहियव्वे भवद् । से तं सिणेहसुहमे ८ ॥ ४५ ॥ धाया-वासं पज्जोमविए भिक्स इस्टिइजा गाहानइकुलं भन्ताए वा पाणाए या निक्समिनए बा प्रविसित्तए ता नो से ऋपाइ अणापुञ्छिता आयरियं वा उवज्ञायं वा घेरं (वा) पवित्तिं गणि गणहरं गणावन्छेययं जं वा पुरओ काउं विहरह, कप्पद् से आपुन्छिउं आयरियं वा जाव जे वा पुरक्षो काउं विहरइ-इच्छामि ण भंते ! गुरुमेहि स्टब्स्प-ण्यात समाचे गाहावडकलं भनाए वा पाणाग्वा निक्खनिनए वा पविसिन्ग् वा ने य से वियरिजा एवं से कप्पट भनाए वा पाणाए वा निकारतिसाए वा पश्चिमनए वा, ते य से नो वियरिजा एवं से नो कप्पड भनाए वा पाणाए वा निक्सिमिताए वा पविशित्ता वा । से किसाह संते !, आयरिया पश्चवार्य जाणंति ॥ ४६ ॥ एवं विहार(सङ्माय)भूमि वा विदारभर्मि वा अर्थ वा जं किंचि प्रभीयणं, एवं गामाणगामं दृष्ट्रजिता ॥ ४७॥ वासावासं एजोर्यावए भिक्स इच्छिजा अण्णयीर विगई आहारिनए, नो से करपूड अणाप्रशिक्षतः। आयरियं वा जन्द गणायसक्केययं वा जे वा पुरुओ कार्ड विहर्द, कापह से आपुच्छिना आयरियं जाव आहारितए-इच्छामि णं भंते ! तुब्सेहि अन्सण्णाए समाणे अन्नवरि विगर्द आहारिनए एक्ड्ये वा एक्डब्युली दा, है य से विवरिज्य एवं में कप्पड़ अण्णवर्गि विगई आहारितए, ते य से नी विवस्ता एवं से नी कप्पड अण्यायिरं चिगाई आहारिनाए, में किमाह भेते ', आयरिया प्रवासं जाणंति ॥ ४८ ॥ वासावामं पत्रीमविए भिक्स इस्छित्रा अण्णयी ते(गिन्छं)इच्छियं आउद्दिशए नं चेव सब्वं भाषियद्वं ॥ ४९ ॥ वासावासं प्रज्ञोसविए शिक्स इन्छिजा अण्यस् उरालं कहाणं सिवं धण्णं मंगहं सस्मिरीयं महाणुभावं तबीकम्मं उवसंपिकसाणं विद्वरिनए, तं चेव सव्वं भाषियव्वं ॥ ५० ॥ वामावासं प्रजीसविए भिक्क इस्टिजा अपच्छिममारणंतियमंछेहणाज्ञसणाज्ञ्सिए भत्तपाणपदियाइक्सिए पाओकाए कार्स

१ सकारणं ।

अगवकंसमाणे विद्वितरए वा, निक्सिमित्रए वा पविसित्तर वा, असणं वा पाणं वा काइमं वा साइमं वा आहारिताए वा, उचारं वा पासवर्ण वा परिक्राविताए. सञ्चायं वा वरित्रए, भव्मजागरियं वा जागरित्रए, नो से कप्पइ अणापुरिक्कता नं चेव सब्बं ॥ "१ ॥ शसावासं ५ जोसविए भिक्ख इतिष्ठजा वर्ध वा पहिसाहं वा कंगलं वा पायपंद्रणं या अञ्चयरि वा उविंदे आयाविसए वा प्याविसए वा, नो से कृष्यह एगं वा अणेगं वा अपिष्ठक्वांवना गाहावर्कुलं भनाए वा पाणाए वा निक्समितए वा यिकित्ता वा, असणं वा पाणं वा स्ताइमं वा साइमं वा आहारिकण्, बहिया विहार-भूमि वा वियारभूमि वा सङ्झायं वा करित्तण, काउस्समां वा ठाणं वा ठाडत्तण, अस्थि य इत्थ केंद्र अभिसमण्णागए अहासणाहिए एगे वा अणेगे वा, कप्पइ से एवं वड्-नए-इमं ता अजो ! तुमं मुहनमं जाणेहि जाव ताव अहं गाहाबहकुलं जाव काउ-स्सानं का ठाणं वा ठाइनए, से य से पहिस्त्रीमञ्जा एवं से कप्पड़ गाहावहकुलं तं चेव राज्यं भाषियव्यं । से य से नी पडिसुणिखा एवं से नी कपाइ गाहाबद्दवुकं जाव काउस्परणं वा ठाणं वा ठाइनए ॥ ५२ ॥ वासावासं पञ्जोसवियाणं नी कप्पद् निम्मंथाण वा निम्मंथीण वा अणभिमाहियसिकासणियाणं हुन्त आयाणमेयं अण-मिरगहिरानिजासणियस्य अणुबाकुदयस्य अणुदाबंधियस्य अमियासणियस्य अणाताः वित्रस्त असमियस्य अभिक्खणं अभिक्खणं अपहिलेहणाचीलस्य अपमञ्जणाचीलस्य तहा तहा संजमे दुराराहण भवद् ॥ ५३ ॥ अणायाणमयं अभिग्गहियसिजासिषयस्म टबाकुडबस्स अद्भावधियस्य मियामणियस्य आयावियस्य समियस्य आंभेक्खणं अभि-क्कणं पिट्टेहणासीन्त्रस्म पमञ्जणासीन्त्रस्म नहा तहा संजमे सुआराहए भवइ ॥ ५४ ॥ बामावासं पञ्चोसविकाणं कृष्पत्र निर्माकाण वा निर्माकीण वा नुस्रो स्वारपासका-भूगीओ पडिलेहितए, न नहा हेमंतिगम्हान जहा शं दासाय, से किमाह भंते !? बामान वं उस्सक्यं पाणा य नणा य बीया य पणवा व हरियाणि य अवंति ॥ ५ ॥ वासावासं पञ्जोसन्याणं कप्पड्र निसंधाण वा निसंधीण वा तओ सत्तराई मिण्हितए, तंबहा-उबारमत्तर, पासवणभत्तर, खेळमत्तर ॥ ५६ ॥ वासावासं पञ्जीस-विशाणं नो ऋप्यङ निर्माशाण वा निर्माबीण वा परं प्रजीसबणाको गोलोमापमाण-मितेऽवि केमे तं रविष उवायवाविताए॥ ५७॥ वासावासं पञ्जोमवियाणं नो कप्पइ निर्माशाण वा निरमंश्रीण वा परं पद्धोसवणाओ अहिगरणं बहुतए, जे णं निरमंश्री बा निर्मार्थी वा परं पज्जोसवणाओं अहिंगरणं चयर्, से यं 'अक्टपेणं अजो ! बय-चीति' वत्तन्वे सिया, जे णं निस्पंद्यो वा निस्पंदी वा पर पञ्जोसवणाओ अद्विगरण बसइ से वं निज्नुहिसके सिसा ॥ ५८ ॥ वासावारं पज्जेसविदाणं इह सह निर्मा-

थाण वा निर्माशीण वा अजेब कवसाडे कहुए वि(तु)माहे समुष्यांकि[त्या]चा, सेहे राइनियं खामिजा, राइनिएऽनि सेहं सामिजा, समियन्यं समावियन्यं उपसमियन्यं उक्तमावियन्वं समइसंप्रच्छणाबहरूणं होयन्वं । जो उक्तमङ नस्स अस्ति माराहचा. जो न उवसमइ तस्स नत्य आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियन्वं, से किमाह्य भंते ! उदसमसारं स मामणां ॥ ५९ ॥ वासावासं पजीसविवाणं कप्पड निर्मावाण वा निग्गंबीण वा तओ उनस्तवा गिष्टितए, तंजहा-वैठव्यिया परिकेटा माइजिया पराज्ञणा ॥ ६० ॥ बासाबासं पञ्जोसविद्याणं निर्मायाण वा निर्मायीण वा कप्पा अन्यविदे दिसि वा अनुदिसि वा अविगित्रित २ भत्तपाणं गवेसित्तए । से किसाह मंते ! उस्सण्णं सम्भा भगवंतो बासाद्व तवसंपठता मर्वनि तवस्सी दुव्बले किलंते सरिक्कज वा पवडिजा या. तमेव दिसे वा अणुदिसे वा समणा भगवंती परिजाग-देति ॥ ६९ ॥ वासाबासं पञ्जोसवियाणं कप्पड़ निर्माधाण वा निरमंबीण वा गिलाण-हेर्न जाब चतारि पंच जोबबाई गंतुं पहिनियत्तए, संतराऽबि से रूपाइ बत्बए, नो से कप्पड़ तं रयणि तत्येव उवायणावित्रए ॥ ६२ ॥ इत्रेयं संवरहारियं धेरकपं अहा-मत्तं अहाकप्पं अहामग्यं अहातचं मम्मं काएण फासिना पालिता मीमिता तीरिता किहिता आराहिता आणाए अजुपालिता अत्येगह्या समणा विमांबा नेणेव भव-माहबेणं सिज्यंति वुज्यंति सुचंति परिनिव्वाइंति सञ्चद्कसाणगंतं करिति. अत्येगहया देखेणं भवग्गहणेणं सिज्जांति जान राज्यदक्ताणमंतं करिति, अत्येगहवा तकेणं अवस्महणेणं जाव अंतं करिति, मसद्भवस्महणाई पुण भाइक्सीत ॥ ६३ ॥ तेणं काटेणं तेणं नमएषं नमणे अगतं महावीरे रायगिष्टे नगरे गणसिलए उजाने बहुणे समजाने बहुणे समजीजे बहुणे सावयाणे बहुणे सावियाणे बहुणे देवाणे बहुणे वेबीण सञ्ज्ञानम् चेव एवसाइक्लाइ, एवं भागड, एवं पण्डकेड, एवं पण्डेक, पाने-सबणाक्रणो नामं अञ्जयणं मक्षद्वं महत्त्वं सकारणं सक्षतं सक्षदं सहअयं सबागरणं भुजो भुजो उनदंसेट ॥ ६४ ॥ सि-बैसि ॥ इइ सामायारी समसः ॥ पञ्चोसवणाक्रयो नाम दसाल्यक्षंघस्स महममज्ञवर्षं समर्थं ॥ अहवा कप्पसूत्तं समर्च ॥ पढमं परिसिद्धं समर्च ॥



श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमितिके 'सेवक'



लाला दिवानचंद अमीचंद गदिया मु० जम्मृ-तवी

परिचय--

आपने पुत्रवं छोने छजानेकी यथा समय अनन्य सेवा की है। प्रेममें आने जात समय मदी, गर्मी और वसीनकी बाधाओंकी पर्वाह न करते हुए सेवामे तरपर रहकर बफादार्गका परा २ परिचय दिया है। शरीर और समयका भोग देनेवाले विरस्त मनुष्य होते हैं। आपकी यही भावना है कि जातपुत्र महावीर भगवान्के हामनकी हम ५५ वर्षकी आयुमें भी खब सेवा करना रहें।

जमोऽत्यु मं समणस्य भगवयो णायपुरामहावीरस्य

बीयं परिसिद्धं

सावयावस्तप् सामाइयसुत्तं

पढमं 'णमो अरिहंनाणं • ' तओ 'तिक्खतो ०' नओ - अरिहंती मह देवो. मावजीवं मुसाहूणो गुरुषो । जिणपण्यतं तत्तं, इय सम्मतं मए गहियं ॥ १ ॥ तस्त्रे-पंचि-विवसंबरणो, तह णर्यावहबंभचेरगुतिषरा । चडविहकसायमुद्धो, अहारसग्रमेह संज्ञाते ॥ १ ॥ पंचमहव्यवज्ञातो, पंचविद्वायारपाळवसमत्वो । पंचसमिईतिगुत्तो, क्रतीसगुको गुरू मज्य ॥ २ ॥ तखो 'इच्छाकारेण॰' पच्छा 'तस्स उत्तरीकरणेणं॰' तलो 'लोगस्स उजोबगरे॰' तलो 'करेमि भंते ! नामाइबं, सावजं जीगं प्रवक्तामि, जाय-वियमं पञ्चासामि, दुविदं तिविद्वेणं य करेमि ण कार्येमि मणया वयसा कायसा, तस्य भेते ! पिकक्रमामि विदामि गरिहामि अप्यार्ण वोसिरामि'। तओ पच्छा 'गमोऽत्य णं०'। तस्रो सामाध्यपारणपाडो जहा-'एयस्स जनमस्स मामाध्य-वयस्य पंच अध्यारा जाणियन्या ण समायरियन्या, तंजहा-(ते आखीएमि-) मणदुप्पविद्याणे, वयदुप्पविद्याणे, कायदुप्पविद्याणे, सामाहबस्स सद् शकरणया, सामाइयस्य अणवद्वियस्य करणया, तस्य निच्छामि दुष्डं । सामाइयं सम्मं काएण ण फासिनं, व पासिनं, ण तीरियं, ण किहिनं, ण मोहिनं, ण खाराहिनं, आणाए अपुपालियं प भवह तस्स मिच्छामि दुक्कं' । [सामाइए मणसी इस दोना, वयवस्त इस दोसा, काबस्स दुवाबस दोसा, एएड अव्यवसी दोसी कागी तस्त मिच्छामि दुसर्व । सामाहए देखीकहा, मत्तकहा, देखकहा, रायकहा, एवाछ वत्रष्ठ विषदासु व्यव्यवदा विषदा क्या तस्त मिन्छामि दक्षरं । सामाइए बाहारसण्या, मयसम्मा, मेहुजराज्या, परिमाहसम्मा, एवासु चउसु सम्माद काणावरा सम्मा सेविया तस्स मिच्छामि सुमार्च । सामाहए बाह्यामे वहवाने कावारो आयां-तेण वा अवार्णतेण वा मणसा चयसा कामसा दुप्पटती क्या तस्य मिन्साम उपारं । सामाइए मिक्रिगद्विए निविधालिए को नि अतिही काने तस्स मिन्सामि इंबर्ड । सामाहर् मसाइनुस्यार्यम्बारपाहाद्यसाहवं हीर्ग या बाह्यं या विक्रीसं या करिनं वर्गतिवकेमविकानंतामं स्वाधीए तस्य निकामि वृक्षतं । स्वासीय

१ सावियाओं 'इरबीच्या'ठामें 'अस्तिक्या'ती कोर्वति ।

ववाहणविही-पढमं भूमिआसणरयहरणिमुहपोत्तियाईणं पिक्टेंहणा कायव्या, अन्ते भूमि जयणाए पमजिता आसणमस्यरियन्वं । पुणो मुहपोत्तियं मुहे वीक्षा आसणाओ किंचि दूरं चिहितु 'तिक्खुती०' इवणेण गुरुवंदणा कायव्या । अहं 🐔 होंतु मुणिणो तो पुन्वामिमुहेण वा उत्तरामिमुहेण वा सीसंधरसामिस्स विहरमाण-तित्थयरस्स भावनंदणा करणित्वा । तको प्रमोद्धारसत्तात्वो भारच्म जाव 'तस्स उत्तरीयुर्तं' मणसा चेव उत्वारेज, तओ झाणावत्थाए जिलमुद्दाए वा जोगमुद्दाए वा स्तिसंप्रमुद्दार् वा खन्गासणेण वा 'इरियाबहियास्तां' मणसा चेव काउस्सम्गावत्थाए पढिबर्घ, तओ 'णमो अरिइंताणे' मणसा तहा फुडरूवेण उचारिता काउस्सम्मो पारियन्त्रो । तन्त्रो 'लोगस्स ॰' तयणंतरं गुरुं वंदिन्तु 'करेमि भंते । ॰' पढियन्त्रं । 'बाव-णियमं' इच्चणेण जेत्तियाई सामाइयाई काउमिच्छेज तेत्तियमुहुत शालस्स मणसि वितणं किया उर्वावित्तु आमणे जहाविही 'णमोऽत्यु णं॰' तिक्खनौ पढियव्यं। पत्रमं सिद्धाणं, बीवं अविहंताणं, तद्यं 'णबोऽत्यु णं मम धम्मगुरुस्त धम्मायविवस्स धम्मोवएसयस्य' ति । सामाइए काउरसम्मो वा सज्झाओ वा वक्खाणसवर्ण वा अत्तर्वित्यं वा कायव्वं । सामाइयपारणिद्वी-सामाइयकारुसमृतीए जहा हेडा णमोकारसुताओं आरद जाव 'लोगस्त ०' उचारणं, तओ सामाइयपारणपाडो पढियन्त्रो, तयणंतरं पुम्बुत्तविहिणा 'णमोऽत्यु णं॰' तिक्खुतो, तओ निक्खुतो णमोकारस्य काउस्सम्मो कायव्यो । एवं अहाबिही सामाइयं पालियं भवह ।] मणसो दस दोसा-अविवेद वैसोकती, लार्मेत्वी गर्व्व भर्य जिमाणैत्वी । संस्थारिकाविणीय, अवहुमीण ए दोसा भणियव्या ॥ १॥ इस वहुसीसा-क्रवर्येण सहसीकारे, सहंदै संखेर्वे कर्लंह च । विगर्हा वि हाँगोऽसूदं, विरवेरेखो मुणर्नुणा दोसा दस ॥ १ ॥ बाइस कायदोसा-इवार्सकं चरीसणं चरीद्वी, सार्वेजकिरिया लंबेणाकुंचर्णपसार्ण । आल्ह्स मोडर्ण मर्ल विमीसणं, विद्वी कंपीणं वि बारस कायदोसा ॥ १ ॥ बचीसं चंदणादोसा-अर्णाहियं च बैदां च, पैक्टिं पॅरिपिंडियं । टोलेंगइ अंर्डुंसं चेंब, तहा करछभैरिंगियं ॥ १ ॥ मर्स्ड्इक्न मणसा-पर्डेहें तह य वेड्यीवर्द । मर्येसा चेव भर्यते, मित्ती गारेवें कीरेंगे ॥ २ ॥ तेकिये १५ १५ पिटिनियं चेव, रहे तिजीयेमेव य । सर्व च हीलियं चेव, तहा ब्रिप्पलिनेचियं ॥ ३ ॥ विद्वेगविद्वं च तहा, सिंगं च कैरसीयणं । आछिद्वेयणाख्यं, कैंणं उत्तर्वेयुक्तियं ॥ ४ ॥ भूवं च हेर्नुरं चेव, चुनिलियं अपन्तिमं। बतीसवीसपरिश्वतं, विद्युक्तनं प्रवेतप् ॥ ५ ॥ प्रमुणवीसं काउरसम्भवीसा-नीवर समा व बने, ही

साके व समिर नेष्ठ जियके। संनुत्तर वर्णेडबी, संवर्ष कालिजे य वायस कविद्वे ह बी. १ ॥ सीसोकंपियमुद्दे, अंगुलियमुद्दाद वारुणी पेदा । एए काउस्सको, हवंति क्षेत्रा एगुणवीर्ष ॥ २ ॥

॥ रय सामार्यसुत्तं समतं ॥

णमोऽत्यु णं समणस्य भगवनो णायपुत्तमहाचीरस्य

तइयं परिसिद्धं

सावयावस्तय(पडिक्रमण)सुत्तं

इच्छानि र्ण संते ! तुन्सेहिं अन्मणुष्णाए समाणे देवसियं परिश्वमणं ठाएमि, देवसियणाणदंसणचरिताचरिणतवश्वद्यार्चिनवणत्यं करेमि कारुमस्यं ॥ १ ॥

अह पढमं सामाद्याबस्सर्य

णमी बरिइंताणं ॥ १ ॥ करेमि मंते ! ० ॥ २ ॥ इच्छामि ठामि काउसमां, जो मे देवलिंको बद्धारी कको, काइवां, बाइवों, माणसिंको, उस्तुतों, उम्ममां, अकपों. अकरिकां, दुर्जाकों, दुविवितिकों, अणायारों, अविविक्रयच्यों, असावग्यासमां, गाणे नह दंगणे, वरिणावरिते, सुए, सामाइए, तिष्टं गुणीणं, वादणं कसायाणं, पंचण्ड्यमुण्ययाणं, तिष्टं गुणव्ययाणं, वादणं सिक्यावयाणं, वारस-विहस्स सावग्यम्मस्स, अं बंदियं, जं विराहियं तस्म मिन्छामि नुषदं॥ ३॥ नस्स उत्ति ॥ ४॥ इद् पद्धमं सामाद्यावस्त्ययं समर्थं ॥ १॥

१-२-३-४ एए दोसा ण माविगाए, २-३-४ एए दोसा ण साहुणीए होंति ति । * विसेसाय 'अत्मान लाका प्यारेकाल जैन (अंवरमाय G. I. P.)' विस्तास एकासहाएण सुत्तागमप्रवासमस्मिहेए प्रणासियं सिरिसामाइयस्तां दहुल्यं । ५ 'राइयं' 'पविकायं' 'चाडम्मासियं' 'संवच्छारेयं' । ६ णवणवह्यव्यवाराणं काव-स्तागो किजह-'आनमे तिथिहे जान काममोगासंसप्यक्षेगे' । 'अहुारहपावहाणण' भासाप, 'इच्छामि ठामि॰' 'थायो अरिहंताणं॰' तुत्तृण कावस्तगो पारिजद । सम्ये वास्यारपाडा मिष्यभिष्यकासम्बद्धिया सन्यंति सत्तोऽवसेया । मूखं तु अस्ये दहुल्यं । सीये वास्यारपाडा मिष्यभिष्यकासस्यास्त्र सहयं वेद्यारपायक्त्यं साह्य वास्यक्त्य सावस्त्र स्व

अह चतरपं पविकासकामध्या

णाणाइयारपाढो

कारोमे तिविहे पण्णने, तं -- प्रतागमे, अत्यागमे, तदुभयागमे, (एवं तिविह्य क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र

दंसणसम्मत्तपाढो

अरिहंती मह देवो॰ ॥ १ ॥ परमत्यसंथवो वा, सुदिद्वपरमत्यसेषणा वावि । वावश्णकृदंसणवज्यणा य, सम्मनसद्द्यणा ॥ २ ॥ इय सम्मनस्स पंच अङ्गारा पेयाला जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तं॰-(ते आलोएनि-)संका, कंवा, वितिविच्छा, परपासंडपसंसा, परपासंडसंथवो, (एएस पंचनु अङ्गारेमु अष्णग्ररो अङ्गारो लग्गो) तस्स मिच्छामि दुक्कं ।

बुवालसवयाइयारसहियपाढी

(पदमं अणुटवयं-) बृलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, (तसजीव-वेइंदियतेइंदिय-वटरिंदियपंचिदिए णाऊण आउट्टी-हणणवुद्धीए हणणहणावणपयक्षणणं ससंविधिनमसीरसिविसेसपीटाकारिणो सावराहिणा वा बिक्रिकणः) जावजीवाए दुविहं तिबिहेणं ण करेमि ण कारविमि मणसा वयमा कायसा, (एयस्स पटमस्स अणुञ्चयस्म धूल-पाणादवायवेरमणस्स) पंच अह्यारा पेयाला जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तं०-(ते आलोएमि-) वंघे, वहे, छिक्छिए, अहमारे, मत्तपाण(वि)शुच्छेए, जो मे देवसिओ अद्यारो कओ तस्स मिन्छामि दुक्कं ॥ १ ॥ (बीयं अणुद्धयं-) यूलाओ मुसा-वायाओ वरमणं, कण्णा(कां)लिए, गोवालिए, मोमालिए, णासावहारो(यापणमोसो), कूटसिव्वेज, (इंबवमारस्य महंतमुसावायस्स पचक्काणं,) जावजीवाए दुविहं तिविहेणं ण करेमि ण कारविम मणसा वयसा कायसा, (एयस्स बीयस्स अणुव्ययस्स थूलमुमावायवेगमणस्स) पंच अद्यारा जाणियव्वा ण गमायरियच्या, तं०-(०) सहमन्मक्खाणे, रहस्सन्भक्खाणे, संदारमंत्रभेए, मोसोवएसे, कृडछेहकरणे, ओ से देवसिओ अदयारो क्यां तस्स मिन्छामि दुक्कं ॥ २ ॥ (तहर्यं अणुव्ययं-)

१ णवण उद्दश्यारपाटा खे परमावस्तए काउस्तामी चितिकाति ते चैव एत्व फुडक्वेण उचारिकाति । २ तस्म मन्दस्य देवसियस्स अद्यारस्स दुव्भासिय-दुचितिय-दुचितिय-स्वाद्धियस्स आलोयंतो पश्चिकामि । 'णमोकारे' 'करिम मंते !०' 'चलारि मंगलं०' 'इच्छामि ठामि०' 'इच्छाकारेण॰' । इस्ते पुष्टि प्यंतरे । ३ एवं सम्बद्ध अवगंतन्तं । ४ साविगाहि अस्स ठाणे 'समलार'मंतमेए ति वत्तां। एवं सम्बद्ध ।

मूलाओं अदिक्यादाणाओं बेरमणं, (सत्तसणणं, गंठिमेयणं, ताल्यवादणं, परियवत्यु-इंस्नं, ससामियवत्युहरणं, इंबेनमाइस्स अदिण्णादाणस्य पचक्काणं अप्पाण य श्रेंगीय-वादारसंबंधितुच्छवत्थुं विप्पजहिसण,) जावजीवाए दुविहं तिविहेणं ण करैमि ण कारनेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्य तइयस्स अणुव्ययस्स धूलअदि-ज्यादाणवेरमणस्स) पंच अइयारा जानियम्बा ण नमायरियम्बा, तं•-(•) तेणाहहे, तकरपओगे, विरुद्धरजाइक्से, कूडतुक्षकृत्माणे, तप्पिक्ष्यगवद्धारे, जो मे देव-सिओ अइयारी क्यो तस्स मिन्छामि दुबडं ॥ ३ ॥ (चउत्थं अणुव्ययं-) भूराओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारसंतोसिए, अवसेसमेहुणविहिं शबक्खामि, जावजीवाए (दिव्वं) दुविहं तिविहेणं ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (माणुस्सं तिरिक्ख जोषियं) एगविहं एगविहेणं ण करेमि कायसा, (एयस्य चडत्वस्स अणु-व्यवस्य भूतमेहुशवेरमणस्य) पंच अइयारा जानियम्बा ण समायरियव्या, तं --(०) इत्तरियपरिमाहियागमणे, अपरित्वहियागमणे, अर्थगकीता, परविवाहकरणे, काम-भोगतिन्यामिकासे, जो मे देवसिको अङ्गारी कभो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥ (पंचमं चणुडवयं-) धूलाओ परिम्गहाओ वेरमणं, (बेलवत्थ्यं बहापरिमाणं, हिर्णाश्चनणाणं जहायरिमाणं, भणभण्णाणं जहापरिमाणं, दुपयचउप्पयाणं जहा-परिमाणं, कुप्पस्स बहापरिमाणं, एवं मए जहापरिमाणं क्रयं तथा अहरित्तस्स परि-रगहरूम पश्चक्कार्थं) जावजीवार एगविहं तिविहेणं ण करेमि मणसा वयसा कायसा. (एयस्स पंचमस्स अणुव्ययस्य थूलपरिमाइवेरमणस्य) पंच अइयारा जाणियन्ता ण समायरियन्त्रा, तं०-(०) सेत्तवत्युप्पमाणाङ्क्रमे, हिरण्यमुक्णप्पमाणाङ्क्रमे, धण-धण्यप्त्रमाणाइक्.मे, द्रवय्चउपयप्पमाणाइक्.मे, कुवियप्पमाणाइक्.मे, जो मे देवसिओ अध्यारो कथो तस्य मिरछामि दुक्टं ॥ ५ ॥ (छट्टं दिसिययं-उद्वादमाए बहा-परिमाणं, अहोबिसाए जहापरिमाणं, तिरियदिसाए जहापरिमाणं, एवं जहापरिमाणं क्यं तत्तो अइरितं सेच्छाए कायाए गेतृषं पंचासवासेवणपवनकाणं.) जावजीवाए दुंविहं तिविद्देणं ण फरेसि ण कार्वेम सणसा वयना कांयसा, (एयस्स छह्नस दिसिवयस्स अत्वा पडमस्सं मुणव्ययस्य) पंच अद्यारा जानियन्या ण समायरियन्या, तं --(•) उद्वितिष्यमाणाइक्रमे, अद्दोदिशिष्यमाणाइक्रमे, तिरियदिशिष्यमाणाइक्रमे, बित्तराष्ट्री, सहअंतरहा, जो में देवसियो अह्यारो क्यो तस्स मिच्छामें दुकडं ॥ ६ ॥ (स्त्रमं उपमोत्तपरिमोगपरिमाण्यद्यं-) उवभीवपरिभोगविहिं प्रवक्षाय-माने(म) १ उद्यक्तिमानिहे, २ वंतवकनिहे, ३ फलविहे, ४ अन्यंगणनिहे,

१ एगविश्वेष पर्यात्तरे ।

५ उब्बद्धणविहि, ६ मञ्जणविहि, ७ वत्यविहि, ८ विकेबणविहि, ९ पुष्कविहि, १० आभरणविहि, ११ भूवविहि, १२ पेजविहि, १३ भक्ताणविहि, १४ औरपविहि, १५ सुबबिहि, १६ विगर्यावहि, १७ सागविहि, १८ महरविहि, १९ जेमणविहि २० पाणियविहि, २१ मुखवासविहि, २२ बाह्णविहि, २३ उदाणहिविहि, २४ सयणविहि, २५ सचित्तविहि, २६ दव्वविहि, (इचाईणं जहापरिमाणं कयं तत्ती अइरित्तस्स उद्योगपरिभोगस्स पद्यक्खाणं.) जावजीवाए एगविहं तिविहेणं ण करेमि मणसा वयसा कायसा, (एस णं सनमे) उनमोगपरिमोगे (अहवा बीए गुणव्यत्) दुविहे पण्णेत, तंत्रहा-भोय(णा)णओ य. कम्मओ य, भोयणओ समजोदीसएणं पंच अइयारा जानियच्या ण समायरियव्या. तं०-(०) सचिताहारे. सचितपरिवदाहारे, अप्परिक्रोमाहिमक्त्रणया, दुप्परिक्रोसहिमक्त्रणया, दुच्छी-सहिमक्सणया, कम्मओ णं समगोवासएणं पण्यरसक्रमादाणाई जाणियव्याई प समायरियव्याई, तं०-(०) १ इंगालकम्मे, २ वणकम्मे, ३ साडीकम्मे, ४ भाडी-कम्मे, ५ फोडीकम्मे, ६ इंतवाणिजे, ७ सक्तवाणिजे, ८ केमवाणिजे, ९ रसवा-णिजे, १० विसवाणिजे, ११ जंतपीलणकमी, १२ णिक्रंहणकमी, १३ दविगदा-वणया. १४ सम्दद्दतलायमीसणया. १५ अगईजणपोसणया. जो मे देशसंओ अडयारो कओ तस्म मिच्छामि दुक्हं ॥ ७ ॥ (अट्टमं अणद्वादं हवेरमणवयं-) चडव्बिहे अणहादंडे पण्णते, तं०-अवज्ञाणायरिष्, पमायायरिष्, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, (एवं अद्वमस्म अणद्वादंडासेवणस्स पचनखाँगं,) जावजीवाए दुविहं तिविहेणं ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स अडुमस्स अणुहादंडवेरमणवयस्य अहवा तङ्ग्यस्य गुणव्ययस्य) पंच अङ्ग्रारा जामियव्या ण समायरियन्वा, तं॰-(॰) कंद्रप्पे, नुसुद्रुष्, मोहरिष्, संजुनाहिगरणे, उवभोगपरि-मोगाइरित्ते, जो में देवसिओ अड़गारी क्यों तस्य मिच्छामि दुक्दं ॥ ८ ॥ (णवमं सामाइयवयं-) सावजं जोगं प्रवन्तामि, जाव-णियमं प्रवुतामामि, द्विहं तिविहेणं ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा. (एवंभूया वे महरणा पस्त्रणा मामाडयावसरे ममागत सामाध्यकरणे फामणाए शुद्धं, एयस्म णवमस्त सामाद्यवयस्य अहवा पटमस्य सिक्न्सावयस्य) पंच सहयारा जानियस्या ण समायरियन्त्रा, तं०-(०) मणदुःपणिहाणे, व(इ)यदुःपणिहाणे, कायदुःप्यविहाणे,

१ सावियाहि समणोवासियाए णं ति क्तव्यं । २ (जेसि अड्ड आगारा-) आए वा, राए वा, णाए वा, परिवारे वा, देवे वा, णागे वा, जक्के वा, भूए था, एति-एहि आगारेहि अण्यत्य । इस्रहियं प्यंतरे ।

सामाइबस्स सइ अक्सणवा, सामाइबस्स अणबद्धिवस्स करणवा, जो मे देवसिओ मध्यारी कभी तस्य मिच्छामि दुक्कं ॥ ९ ॥ (दसमं देसावगासियवयं-दिवामज्झे गोसा आरब्स पुरुवाईस छत्त दिसास बावइयं परिमाणं क्यं तनी अइरित्तं सैच्छाए सकाएकं गैतकं पंचासवासेवकरम पक्कावाकं.) जाब अहोरतं दुविहे तिविहेणं ण करेमि ण कारवैमि मणसा वयसा कायसा, (अह य छन् दिसास जावहर्य परिमाणं क्यं तम्मज्ञेबि जावहबा दञ्चाईणं मजाया तभी अहरित्तस्स भोगोवमोगस्य पचक्खाणं,) जाव अहोरतं एगविहं तिविहेणं ज करेमि मणसा वयसा काबता. (एकस्स दरामस्स देसावगासिक्यकस्स अहवा विश्वस्स लिक्सा-वस्म) पंच अहसारा जानियञ्चा व समायरियञ्चा तं--(०) आवश्यप्रक्षीरे, पेसवमध्यक्रोगे, सहामुवाए, स्वामुकाए, बहियापुग्गसपक्केंचे, को मे देवसिकी अहथारी कभी तस्त मिच्छामि दुक्दं ॥ १० ॥ (प्रकारसमं पहिषुण्णयो-सहस्रयं-असणपाणसाप्रमसादमपणकस्राणं, अवंभपणक्रताणं, अमुगमणिनुदण्णप-वक्साणं. मालावण्यगविकेवणपश्चकसाणं, सत्यमुमलाइयसावज्जीगसेक्णपश्च-क्याणं,) जाव अहोरतं पञ्जवासामि, दुविहं तिविहेणं ण करेमि ण कारवैमि मणसा वयसा कायसा, (एवं में सहहणा परूवणा पीसहावसरे समागए पोसह-काणे पासणाएं मुद्धे, एवरस एकारसमस्य पिछपुण्यापोसहवयस्य अहवा तहयस्स सिक्सावयस्स) पंच अइयारा जाणियव्या ण समायरियव्या, सं०-(०) अप्पदिले-हिनदुःपडिलेहिनसेजासंबारम्, अप्पमजिनदुष्पमजिनसेजासंबारम्, अप्पडिलेहिन-दप्पडिलेहिंबडबारपासवणभूमी, अप्पमाजिबदुण्पर्माज्यदाबारपासवणभूमी, पोसहरस सम्मं अण्णुपालणया, जो मे देवसिक्षो सहयारी कभी तस्स मिरलामि हक्करं ॥११॥ (बारसमं अतिहिसंविभागवयं-) समणे किमंथे फासुबएसिजेंगं-असण-पाणसाइमसाइमदत्वपिंडमाइकंबलपायपुंल्येषं पाहिद्दारियपीडकलगसेआसंयारएणं ओसहभेसजेणं पढिलाभेमाणे विहरामि, (एवं मे सहहणा पस्वणा साहसाहणीणं जोगे पने फासणाए सुद्धं, एयस्स बारसमस्स अतिहिर्सविभागवयस्य अहवा चउत्थस्य सिक्लाक्यरस) पंच कह्यारा जाणियन्ता ग समायरियन्ता, सं०-(०)सिक्तिनिन-क्खेनणमा, सचित्तपिहणमा, कालाइक्रमे, परवदएसे, मच्छरिदा(ए)म, जो मे देव-सिको अद्यारो क्यो तस्स मिच्छामि दुक्करे ॥ १२ ॥

अपन्छिममार्गतिवसंकेहणापादी

अह अते ! अपन्तिममारणंतियसंकेहणाञ्चसणाआराहणा(समए पोसहसालं पिके केहिता पमन्तिता उचारपासवणभूमिं पिकेहिता गमणागमणं पिकक्रिमता इञ्जाह-४ परिक संचारवं संवरिता दुस्हिता उत्तरपुरत्वामिमुहे संपत्निवंबाह्बासणे(ण) निसीहता) कर्यकश्चंपरिगाहियं सिरसावत्तं मत्यए अंजलि बहु एवं व०-"वसंडिख णं सहिद्देतार्जे जाब संपत्तानं (एवं अर्णतसिके प्रमंतिता) "गमोऽत्यु मं अरिश्तानं मगबेतानं जाव संपावितकामाणं" (पहुप्पण्यकाके महाविदेहे केते विहरमाणतित्ववरे जर्मसिता सध-म्मायरियं सचम्मोबएसयं णमंसामि, साहुपमुह्चलम्बहस्य तित्वस्त सन्वजीवरा-हिस्स य समावद्ता पुन्दि जे बया परिविजया तेष्ठ से सहयारदोसा लग्गा ते सन्दे आलोइन पविक्रामिय गिहिन जिस्सामे होऊज) सम्बं पाणाइनारं पणक्सामि, सम्बं मुसाबार्व प्रवक्तामि, सञ्चं अदिण्यादाणं प्रवन्तामि, सञ्चं मेहुवं प्रवक्तामि, सञ्चं परिमाई वयक्सामि, सब्बं कोई मार्च जाम मिच्छादंसचसमं, सम्बं अस्रिक्जं जोगं परक्षामि, जावजीवाए तिविहं तिविहेणं च करेमि ज कारवेमि करंतिए अण्णं च समणुजाणामि मणसा वयसा कायसा, (एवं अद्वारसपावद्वाजाई पवविवाता) सन्वं असर्ग पाणं साइमं साइमं चडिवहंपि आहारं प्यक्तामि कावजीवाए, (एवं चठ-ब्बिइं आहार प्यक्तिसा) जं पि य इसे सरीर इहं, करं, पियं, मणुण्यं, मणामं, विजं वे(वि)सासियं, संमयं, अणुमयं, बहुमयं, मंडक्रंडगसमाणं, रयणक्रंडगभूवं, मा मं सीयं, मा जं उन्हें, मा जं सुद्दा, मा जं पिवासा, मा जं बाला, मा नं बोरा, मा णं दंसमसना, मा णं वाइ(वं)य-पित्तिय-यंभि(कप्फि)य-सण्णिवाइय-विविद्दा रोगायंका परिस(हा उ)होबसम्मा (कासा) फुर्स 3(तिबद्ध) एवं पि य मं च(रि)रनेहिं उस्सास(णी)मिरसासेहिं नोसिरामितिकहु (एवं सरीर नोसिरिता) कार्ल अणवकंस-माने विहरामि, (एवं मे सहहणा परूजना अनसनावसरे परो अनसने कए फासनाए युद्धं, एवं) अपन्छिमसारणंतियसंकेहणासूसणाआराह्याए पंच सहयारा जानियम्बा ण समायरियव्या, तं --(*) इहकोगासंसप्पओगे, परस्मेगासंसप्पओगे, जीवियासंस-प्रभोगे, मरणासंसप्प्रभोगे, काममोगासंसप्प्रभोगे, (मा मण्या हुज मरणंदेवि सङ्गाप-स्वणिमा अण्यहामानो,) तस्त मिच्छामि वृक्कदं ॥

अहारहपावहाजाई

(बाह्यजो-पाणाइकायमित्यं, जोरिकं मेडुणं दविणसुष्यं। कोई माणं सार्थं, स्मेहं पिजं तहा दोसं ॥ १ ॥ कलई जन्मक्साणं, पेसुण्यं रहसरहसमाज्यं । परपरिवायं माया-, मोसं मिच्छतसां च ॥ १ ॥ सारिहंतसिक्केवकि-, साह्यं सक्तियां सर्वे वाई। संसेवियाहं सेवा-, वियाहं वासुनोहवाहं तहा ॥ ३ ॥) तहस मिच्छामि दुवरं ॥

१ अण्णे आबरिसे अस्स ठावे समुचयपाडो मासाए कम्माइ ततीऽनवेजी । ५ 'इन्डामि ठामि०' इजो पच्छा विद्वीए । +अण्णे पणवीसमिन्द्रतपाडं चडदस्काम-

तस्त धम्मस्त केविकण्णतस्त अन्युद्धियोमि भाराहणाए, विरमोमि विराहणाए, क्रिविहेनं परिकंतो भंदामि जिल्पाउँग्यासं । ग्राह्मयो-आयरियटपञ्चाए० वहा जायस्याग्यास्यायस्ययदेष्ट्रगणयाँको । सामेमि सन्वे जीवा० वहाऽऽवस्यएँ । इह खाउरखं परिकामणायस्ययं सामर्थः ॥ ४ ॥

अह पंचमं काउस्सम्गावस्सयं

देवसियपायरिक्षमविसोहणत्वं करेमि काउसमं । 'पमो व्यक्तिताणं ॰' 'करेबि॰' 'श्च्छानि ठानि॰' 'तस्त वर्गेरी॰'। इह पेश्वमं काखरसम्गावस्तरं समर्च ॥५॥ सम्मुच्छिममणुस्सपाढं च उचारंति ते य एवं-अमिरगहियमिच्छतं, अविश्वमाहि-विरुक्तं, श्रीमणिवेरिविनक्तं, संसहविन्छतं, भणामोगिनकतं, सोहविनकतं, ओरत्तिविमिन्छतं, कृत्यावविध्विमिन्छतं, अवस्ये वस्मयन्त्रा, वस्मे अवस्मयन्त्रा उप्तानो सम्मासका, मन्ते उप्तामासका, अजीवेस बीवसका, बीवेस अजीवसका, असाहस साहस्या, साहद्र असाहस्या, अमृतेस मुत्तस्या, मुतेस अमृतस्या, कवाइरित्तपस्त्रवानिच्छतं, तम्बद्दरितपस्त्ववानिच्छतं, अकिरियानिच्छतं, अविवय-मिरसते, अन्यानमिन्सतं, आसावनामिन्सतं (एवं एयाई पनवीसविहाई मिन्सताई मए सेवियाई सेवावियाई ता अरिईतसिडकेनलिसनि तमें) तस्स मिच्छामि दुक्कं । (नउरहठाजसम्मुच्डिमजीवे आलोएमि) १ उचारेछ वा, २ पासवनेछ वा, ३ खेळेछ बा, ४ सिंघाबेद्ध बा, ५ बंदेद्ध वा, ६ पितेन्त्र वा, ७ पूएस बा, ८ सीकिएस बा, ९ मुक्केस वा. १० सुक्रपुरगलपरिसाडेस वा. ११ विगयबीवक्रवेवरेस वा. १२ इत्थी-पुरिसर्वजोगेस ना, १३ णगरनिसमनेस ना, १४ सम्बेस चेन मसद्भानेस ना, (एवं ववहसविद्वसम्माच्छिममणुरसाणं विराहणा ६४। (हो व ता)) तस्य मिच्छामि दुवारं । अवि य समज्ञातंपि बोहं.ते. से किं तं समज्ञातं ? २ वहा आवस्सव श्वतार्थं पविकारणावस्त्यं जाव सर राएण बंदामि । 'करेमि अंते । ॰ 'इचकामि ठामि ॰ 'स जो मेको सो इनस्य चेद पडमावस्समाओ णानको । १ इको एउछा (दुक्खतो इच्छाम समासमयो एको वदकारो विद्योप्) मिध्यभिक्यभासायादा स्वम्मेति तत्तोऽवसेया। २ रागेज व दोसेज व, शहबा अक्युम्बना पविभिवेसेजं। जो में किंचि वि सविओ, तमई तिविहेण कामेमि॥ पर्च गरे एसा बाहाऽहिगा रूक्मा । ३ सावगसाविगाका-मनायउराबीकक्षजीवयोगिसामगाङ्कदो प्रेमामणापादा भिज्यविन्नमाताए सुन्ती-प्रवर्तेगा। स्थो पच्छा 'अद्वारहपाबद्वाणाई' विहीए । ४ काउरसम्गे चटकोगस्त्रहाणं. केंद्र धम्मञ्चानस्य कारस्यानं करेति. तस्य भेगा ठानवरत्वठाणाभोऽवसेया। 'वागे नरिदंतानं अत्तन काउत्सरनो पारिनद्, तबो 'स्रोगस्त •' फ्रडं उचारिनद् ति निही ।

अह छहं पश्चनकाणावस्सर्य सञ्जयपश्चनेकाणपारी

सायगावस्सय(पडिकमण)सुत्तं समत्तं तइयं परिसिद्धं समत्तं

सेसपरितिद्वविसप-

संदक्षोसी ताब बिरहजर, (जाब १११८ गाहा विरह्मा) बाबार-सेसपाडीतराई (क्यासनदसासेसपाडेतराई विद्ण्यगासिद सुचाय-मदसमपुष्के पटुज्याई) गाहाणुक्रमनिया विसिद्धणामसूई व गंचवि-स्वरमया ज दिण्या।

१ विसेशाय व्यावस्तप् छद्वं प्रवक्तावावस्तवं रहुन्तं । २ सवं प्रवक्तार् तथा वीविरामि ति वयद् अञ्चेति प्रवक्ताचेद् तथा बोविरे ति विसेशो । तभो पश्का जन्दमावस्तयाणमद्वारसंवंधिमिण्डामिटुकरं दिखर् । तथो दुन्ति 'वसोऽत्यु वं॰' । ३ दिच्या ताव संवित्तविद्दी, वित्वरको परिकामविद्दी तदंतगमकामासम्बाविद्दी पौसद्विद्दी देसाववासिय(संवर)विद्दी मासाओऽम्बेशा ।

